मत्स्यपुराण सटीक ॥

जिसमें

जगत्की रचनाकाहेतु और मत्स्यअवतार धारणकरनेका कारण, प्रलयके होने
का कालपूर्वक वर्णन, ब्रह्माजीके चारमुख होजानेका कारण और अपनी-
ही अतिस्वरूपवती पुत्री में आसक्तहोनेके दोषका परिहार, देवदानव,
गन्धर्वादिकोंकी उत्पत्ति, सूर्य्यवंश और चन्द्रवंशका वर्णन
इत्यादि कथा विस्तार पूर्वक वर्णित हैं ॥

जिसको

भार्गव वंशावतंस सकल कला चातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई)
ने अपने व्ययसे आगरा पीपलमंडी निवासि चौरासिया गौड वंशावतंस
पण्डित गोकुलचन्द्र सूनु लखनऊ केनिंगकालेजके संस्कृताध्यापक
पण्डित कालीचरण और बेरीनिवासि पण्डित वस्तीरामसे
संस्कृत मत्स्यपुराण का यथातथ्य प्रत्येक श्लोकका
भाषामें टीका रचना कराया है ॥

वाजपेयि पं० रामरत्न के प्रबंधसे

पहलीबार
लखनऊ
मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानें में छपा
अगस्त सन् १८९२ ई०

मनुस्मृतिसटीकका विज्ञापनपत्र ॥

सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का अग्रणी व सकल धर्मानुरागियों से पूजित यह मनुस्मृतिग्रन्थ जिसकी मान्यता व मर्यादाका विस्तार अच्छेप्रकार संसारमें है—यद्यपि इसग्रन्थके बहुतसे अनुवाद व्रज, यामिन्यादि भाषाओंमें कियेगये हैं परंतु उनमेंसे कोई भी ऐसानहींहै जिससे प्रत्येक वार्तोंओंका समाधान सब कोई सुगमता से समझकर उसके तात्पर्य्य को जानलेवे इसकारण सम्पूर्ण धर्मकर्मानुरागियों व विद्यारसविलासियों के उपकारार्थ व अलीगढ़की भाषा संवर्द्धिनी सभाकी सहायतार्थ सकलकर्म धर्मधुरीन मर्य्यादावलंबलीन पुण्य पीन गुणिगणप्रवीन सर्वैश्वर्य्य भूषित दोषदूषित उत्तम वंशी दुष्टाशयध्वंशी श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसाद्रव्य व्ययकरके धर्मशास्त्राग्रगण्य सकलगुणिगणमण्डलीमण्डन महामहोपाध्याय श्रीपण्डित मिहिरचन्द्रजीसे अन्यधर्मशास्त्र ग्रन्थों के तात्पर्य्यों से संवलित व सारोंसे मिश्रित और सकलटीकाओं के रहस्यसे युक्त उक्त ग्रंथका पदच्छेद अन्वय तात्पर्य्य व भावार्थ से भूषित अच्छेप्रकार देशभाषामें विवरणकराय मन्वर्थभास्करनामतिलक मूलश्लोकों सहित लक्ष्मणपुरस्थ स्वयन्त्रालयमें मुद्रितकर प्रकाशित किया संसारमें यावत् कर्म धर्म चतुर्वर्ण अर्थात् ब्राह्मण,क्षत्रिय वैश्य,शूद्र व चतुराश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यासादि के हैं सविस्तर इसमें वर्णन कियेगयेहैं-इसके सिवाय और भीसारे जगत् का वृत्त अर्थात् जगदुत्पत्ति स्वर्गभूम्यादि सृष्टिवर्णन देवगणादिकों की सृष्टि धर्माधर्मविवेकमनुजी की उत्पत्ति व यक्ष गन्धर्वादिकों की उत्पत्ति व मेघ, पशु,पक्षी,कृमि,कीट,जरायुज,अंडज,स्वेदज,उद्भिज, वनस्पति,गुल्मलता वृक्षादिकोंकी उत्पत्ति,दिनरात्रिप्रमाण व युगोंकाप्रमाण, व्रतादिकोंके अनेका नियम व फल, देशोंकाकथन,मनुष्योंके जातकर्म व नामकरण व चूड़ाकरण यज्ञोपवीतादिकी क्रिया कथन वेदके अध्ययन करने का ढंग व नियम व इंद्रियोंके संयमों के उपायोंका कथन आचार्य उपाध्याय व गुरुआदिका वर्णन पितृकर्ममें श्राद्धादि करने का नियमादि निषेध व प्रायश्चित्तादि वार्तायें सब इसमें उत्तमरीतिसे सविस्तार वर्णन कीगई हैं-आशाहै कि जो विद्वद्वर धर्मशास्त्र व ग्रंथप्रिय महाशय इसको अवलोकन करेंगे वे परमानन्दितहो कृपाकटाक्ष से ग्रंथकर्त्ता व यंत्रालयाध्यक्षको आशीर्वाद देंगे औरकदाचित् ऐसे बृहद् ग्रन्थ के मुद्रण करने में कोई अशुद्धि रहगई होतो उसका अपराध क्षमाकरेंगे ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकलनिगम पुराण स्मृतिसांख्यादि सभूत परम रहस्य गीताशास्त्र का सर्व्वविद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणपन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परमअधिकारी जानके हृदयजनितमोहनाशार्थ सवप्रकार पारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही-उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदांत योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धिसे पार नहीं पासके तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसके हैं—

मत्स्यपुराणसटीक की भूमिका ॥

प्रकटहो कि यहमत्स्यपुराण जिसको श्रीभगवान् मत्स्यावतार नारायणने सूर्य्यके पुत्र राजामनुसे चराचर जगत्की रचना उत्पत्ति नाश आदिके नाना इतिहास और शिवजी महाराजमें भैरवरूप त्रिपुर दैत्यसे शत्रुता और कपालोंके धारण करनेका कारण वर्णन कियाहै और मनुजीने जैसे तपस्या करके यह वर मांगाहै कि मैं प्रलयकाल होनेके समय सव प्रकारके स्थावर जंगमजीवोंकी रक्षाके निमित्त समर्थ होकर परिपूर्ण होजाऊं इसकाभी वर्णनहै और जैसे मत्स्यावतारकी उत्पत्तिहुई और राजामनुने जैसे २ वह वडी होतीगई उसी २ प्रकारसे उसको बड़े नद आदिसे लेकर समुद्रमें धारण किया उसकाभी व्योरेवार वर्णनहै तात्पर्य्य यहहै कि हजारों इतिहास ऋषियोंकी उत्पत्ति मन्वन्तरोंका समय संख्या और अनेक राजनीति मंत्र यंत्र तन्त्र और अद्भुत २ औषधी आदिका वर्णनहै इसकी संपूर्ण व्यवस्था तो क्रमपूर्व्वक देखनेसेही विदितहोगी यह थोड़ासा वृत्तान्त लिखा है इस बड़े अद्भुत पुराणको सबके उपकारार्थ भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर (सी,आई,ई) ने धर्ममार्गकी स्थिति रहने के निमित्त आगरा पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौड़वंशावतंस पंडित गोकुलचन्द्रसूनु लखनऊ केनिंगकालेजके संस्कृत अध्यापक पंडित कालीचरणसे और बेरीनिवासि पंडित वस्तीरामसे यथातथ्य श्लोक २ का भाषानुवाद कराकर अत्यन्त ललित कागज़ पर विचित्र शीसकाक्षरोंमें संस्कृत मूल और भाषा टीका संयुक्त बड़ी सावधानी और शुद्धतापूर्व्वक छपवाया है जिसके पढ़नेसे भाषामात्रके भी जाननेवाले अच्छी रीतिसे इस पुराणके प्रत्येक श्लोकका अर्थ उत्तम प्रकारसे समझसक्तेहैं और पुराण बांचने वालोंका तोऐसा प्रयोजन निकलेगा कि विना परिश्रम पाठमात्रकाभी ज्ञाताहोकर सव पुराण बांचसक्ताहै आशाहै कि सव धर्मके ज्ञाता इसको अपने धर्मके जाननेके निमित्त बड़ी शीघ्रतासे हाथों हाथलेकर परिश्रमको सफलकरें ॥

मैनेजर अवधअखबार

मत्स्यपुराण सटीक का सूचीपत्र ॥

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	मङ्गलात्मक श्लोक जगत् की रचनाका हेतु और मत्स्यावतार धारण करनेका कारणहै ॥	१	३
२	प्रलयके होनेका काल पूर्व्वक वर्णन है ॥	४	६
३	ब्रह्माजी के चार मुखहोजाने का कारण ॥	७	१०
४	अपनी महारूप वाली पुत्रीपर ब्रह्माजी के आसक्त होने के दोषका परिहार ॥	१०	१४
५	देव दानव गन्धर्वादि की उत्पत्ति का वर्णन ॥	१४	१७
६	कश्यपजीकी स्त्रियोंसे जो २ पुत्र उत्पन्न हुए उन का वर्णन है ॥	१७	२०
७	दितिके पुत्र मरुद्गणों की उत्पत्ति का वर्णन है ॥	२०	२५
८	ब्रह्माजी सृष्टि के अधिपतों का वर्णन है ॥	२५	२६
९	पूर्व मे होनेवाले मनुओं का चरित्र है ॥	२६	२९
१०	पृथ्वी किसके योगसे हुई और इसकी गौ आदिक संज्ञा कैसे हुई इसका वर्णन है ॥	२९	३२
११	सूर्य्यवंश और चन्द्रवंश का वर्णन ॥	३२	३६
१२	इलराजाको इसके छोटेभाई इक्ष्वाकु आदि करके वनमें ढूंढना—	३६	४०
१३	पितरों के और सूर्य्य चन्द्रवंशके श्राद्ध देवोंका वर्णन	४१	४५
१४	सोमपलोक मे देव पितरों को देवताओंका पूजना	४५	४७
१५	सुन्दर तेजयुक्त लोकों में हजारो विमानों मे कृपा संकल्पित फल मिलना वर्णन है ॥	४७	५०
१६	श्राद्धोंके काल भोजनकी वस्तु और श्राद्ध के योग्य ब्राह्मणों का वर्णन है ॥	५०	५५
१७	भुक्तिमुक्ति के फल देनेवाले श्राद्धका वर्णन है ॥	५५	६०
१८	विष्णु भगवान्के कहेहुये एकोद्दिष्ट श्राद्धका वर्णनहै॥	६०	६२
१९	कृष्णकव्य सज्ञक पाकल्यके दानका प्रकार है ॥	६२	६३
२०	कौशिक के पुत्रोंका उत्तमयोग का प्राप्त होना ॥	६३	६६
२१	ब्रह्मदत्त का सबजीवोंकी बोलियोंका जाननाहै ॥	६६	६९
२२	अनन्त फल देनेवाले श्राद्ध का समय वर्णनहै ॥	६९	७६
२३	चान्द्र चन्द्रमा पितरोंका पति कैसे हुआ और उस चन्द्रयशी राजाकीर्त्ति के बढानेवाले कैसे हुए इन का वर्णन है ॥	७६	८०
२४	चन्द्रमा पुत्र बुधकैसे हुआ उसका वर्णन है ॥	८०	८५
२५	पौरव वंश इस पृथ्वीपर कैसे श्रेष्ठ हुआ इसका वर्णन है ॥	८५	९१
२६	गुरु से आज्ञापाके जब कच स्वर्ग जानेलगा तब शुक्र की पुत्री देवयानी कचसे जो बोली उसका वर्णनहै ॥	९१	९२
२७	स्वर्गमें पहुंचे हुए कचसे देवताओं के मिलने का वर्णन है ॥	९२	९५
२८	देवयानीको शुक्रजी का समझाना है ॥	९५	९६
२९	देवयानी की बातोंसे क्रोध युक्त शुक्रजी राजा वृष-पर्वा से जो बोले हैं ॥	९६	९९
३०	फिर बहुत कालतक देवयानीका उसी वनमें सखि-यों सहित विचरना ॥	९९	१०१
३१	राजा ययातिका देवयानीको अपने महलमें रखना और देवयानी के कहनेसे शर्मिष्ठाको अशोक वनमे पृथक् रखना ॥	१०१	१०३
३२	शर्मिष्ठाके पुत्र होने को सुनकर देवयानी का दुःखी होकर शर्मिष्ठा से पूछना ॥	१०३	१०७
३३	वृद्धहोके राजा ययाति का बड़े पुत्रसे वचनकहना ॥	१०७	१०९
३४	शुक्रजी का स्मरण करके राजा ययातिने अपनी वृद्धावस्था पुरु कोदी उसका वर्णन है ॥	१०९	१११
३५	राजाययाति का अपने पुत्र पुरुको राज्यदेकर वान प्रस्थ होना ॥	१११	११२
३६	स्वर्ग मे राजाययातिका पहुचकर देवताओं से पू-जित होना ॥	११२	११३
३७	राजा ययाति से इन्द्रका पूछना ॥	११३	११५
३८	इन्द्रसे राजा ययाति ने अपना सब वृत्तान्त कहा उसका वर्णन है ॥	११५	११७
३९	अष्टकसे और ययाति से वार्त्तालाप होना ॥	११७	१२०
४०	अष्टकने राजा ययाति से जो २ धर्म पूछे है उनका वर्णन ॥	१२०	१२१
४१	राजाययाति से अष्टकका धर्म पूछना ॥	१२१	१२३
४२	वसुमान और राजाययाति का सभाषण ॥	१२३	१२६
४३	राजाकार्त्तवीर्य्य करके शौनक मुनिको रत्नादिक दान देना ॥	१२६	१३०
४४	कार्त्तवीर्य्यके वन जलाने का हेतु ऋषियों करके सूतजी से पूछना ॥	१३०	१३६
४५	वृष्णिकी गान्धारी और माद्री दोनों स्त्रियोंकी स-न्तानों का वर्णन है ॥	१३६	१३९
४६	इक्ष्वाकुकी ऐक्ष्वाकी पुत्रीमें शौरपसे शूर पुत्रादि का होना ॥	१३९	१४१
४७	पूर्व क्रीडाके निमित्त श्रीकृष्णजीकी उत्पत्तिकावर्णनहै॥	१४१	१६०
४८	तुर्वसुके पुत्र पौत्रादिकी उत्पत्तिका वर्णन ॥	१६०	१६८

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
४९	पुरुके पुत्र जनमेजय और उसकेभी पुत्र पौत्रादिका वर्णन है ॥	१६८	१७४
५०	अजमीढ़ के वंशका वर्णन है ॥	१७४	१८०
५१	ब्राह्मणों में अग्निपूजक ब्राह्मणों के वंशका क्रमसे वर्णन है ॥	१८०	१८३
५२	स्तुतियां करके सूतजी से मानवधर्म का पूछना ॥	१८३	१८५
५३	सब पुराणोंकी संख्या और दानधर्मों का वर्णनहै ॥	१८५	१९१
५४	मत्स्यावतार के कहे हुये दानधर्म और नियमोंका वर्णन है ॥	१९१	१९३
५५	व्रतकरनेमें असमर्थ होनेवाले को ऋषियोंको भोजन कराना और फलदायक वर्णन कियाहै ॥	१९४	१९६
५६	सब फलको देनेवाली कृष्णाष्टमीका वर्णन है ॥	१९६	१९७
५७	महादेवजी से सौभाग्य आरोग्य कुलको वृद्धि होने वाला व्रत नारदजी करके पूछा गया है ॥	१९७	१९९
५८	मत्स्यजी से मनुजीने सरोवर बाग कूपादि मन्दिर की प्रतिष्ठा की सर्वरीति पूछी है ॥	१९९	२०३
५९	वृक्षोंके उद्यापनादिककी विधि वर्णन की है ॥	२०३	२०५
६०	इच्छाकामना देनेवाले सौभाग्य शयन व्रतकावर्णनहै ॥	२०५	२०८
६१	कुम्भ अगस्त्यादिकोंका वर्णन है ॥	२०८	२१४
६२	सर्वकामना देनेवाले धर्म मनुजीने मत्स्यावतार से पूछे हैं ॥	२१४	२१७
६३	सब पापोंको दूर करनेवाली अनन्ततृतीयाकावर्णनहै ॥	२१७	२२०
६४	सब पाप नाशिनी आर्द्रानन्दकरी तृतीयाका वर्णन शिवजीने नारदजी से किया है ॥	२२०	२२२
६५	शिवजीने नारद से उस अक्षय तृतीया का वर्णन कियाहै जिसके दिन सब दान स्नानादिक अनन्त फलदायी हैं ॥	२२२	२२४
६६	चन्द्रसूर्य्य ग्रहण के स्नान दानादि का माहात्म्य मत्स्य भगवान्ने मनुजीसे वर्णन किया है ॥	२२४	२२६
६७	जिनके दुष्ट ग्रहोंमें क्या करना चाहिये यह मनुजीने मत्स्य भगवान् से पूछा है ॥	२२६	२३०
६८	रथन्तर कल्पमें शिवजी से ब्रह्माजीने जो पूछा है उसका वर्णन है ॥	२३०	२३४
६९	ब्रह्माजीने शिवजी से उत्तम स्त्रियोंके सदाचार को पूछा है ॥	२३४	२४०
७०	तथा शिवजी से यह प्रश्न पूछा है जिस से कि स्त्री पुरुषका वियोग न होगा और शोक दुःखादि भी नहीं ॥	२४०	२४२
७१	शिवजीने ब्रह्माजी से यह अन्यव्रत कहाहै जिसका श्रवण युधिष्ठिरादि से और पिप्पलादि ऋषियों से हुआ है ॥	२४२	२४६
७२	शुक्र दोषकी शान्ति का वर्णन है ॥	२४६	२४७
७३	शिवजी से ब्रह्माजीने संसारसे उद्धार होनेका व्रत पूछा है ॥	२४७	२४८
७४	विशोक सप्तमी का वर्णन है ॥	२४८	२४९
७५	पापमोचनी सप्तमीका वर्णन है ॥	२४९	२५०
७६	शर्करा सप्तमी का वर्णन है ॥	२५०	२५२
७७	कमल सप्तमीका वर्णन ॥	२५२	२५३
७८	मन्दार सप्तमी का वर्णन ॥	२५३	२५४
७९	शुभ सप्तमी का वर्णन ॥	२५४	२५५
८०	प्रियजनों का वियोग शोक न होय और ऐश्वर्य्य होय यह व्रत वर्णन किया है ॥	२५५	२५८
८१	गुड़ धेनुका विधान ॥	२५८	२६०
८२	पर्वत दान के माहात्म्य का वर्णन ॥	२६०	२६४
८३	लवणाचल पर्वत के दान का फल ॥	२६४	२६५
८४	गुड़के पर्वत का विधान ॥	२६५	२६६
८५	धान्याचल का विधान ॥	२६६	२६६
८६	तिलके पर्वत का विधान ॥	२६६	२६७
८७	कपास के पर्वतका विधान ॥	२६७	२६८
८८	घृताचलका विधान ॥	२६८	२६८
८९	रत्नाचल का विधान ॥	२६८	२६९
९०	रौप्याचल का विधान ॥	२६९	२८०
९१	उत्तम शर्कराचल का विधान ॥	२८०	२८३
९२	पुष्टि और शान्ति का उपाय ॥	२८३	२८५
९३	कमलासनादि पूर्वक सूर्य्यकी मूर्त्तिबनाना चाहिये इसका वर्णनहै ॥	२८५	२८६
९४	उक्त विधानसे विशेष भुक्ति मुक्तिदेनेवाले अन्य विधानका वर्णनहै ॥	२८६	२८८
९५	व्रतके फलके त्यागकरने का माहात्म्य अक्षय फलदायी होनेका वर्णन ॥	२८८	२९१
९६	सब पापोंके नाशानन्दकारी अनन्त फलदायी व्रतका वर्णन ॥	२९१	२९३
९७	सर्वफलोंके त्यागन का वर्णन ॥	२९३	२९४
९८	विष्णुभगवान् के उत्तम व्रतका वर्णन ॥	२९४	२९६
९९	राजा पुष्पवाहनको ब्रह्माजीने प्रसन्नहोकर अन्य इच्छाचारी सुवर्णका कमल दिया उसकी कथा ॥	२९६	३००
१००	शिवजीके षडक्षर ६० व्रतोंका वर्णन ॥	३००	३०७
१०१	नारायण नामसे से ध्यानकरना उसके बिनाभी कहाहै ॥	३०७	३१०
१०२	प्रयाग माहात्म्य इसकी मार्कण्डेयजी को कहीहुई कथा का वर्णनहै ॥	३१०	३१२
१०३	प्रयाग तीर्थपर किसविधिसे जानायोग्य इसका वर्णन ॥	३१२	३१४
१०४	प्रयागजी के अन्य माहात्म्यका वर्णन ॥	३१४	३१६
१०५	प्रयाग में जानेकी विधिकही है ॥	३१६	३२०

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१०६	मार्कण्डेय प्रोक्त प्रयागमाहात्म्य ॥	३२०	३२१
१०७	प्रयागमाहात्म्यके सुननेसे हृदयशुद्धहोनेकी कथाहै ॥	३२४	३२१
१०८	युधिष्ठिरकी तीर्थोंके विषयमें मार्कण्डेयजीसे शंका करनेका वर्णन है ॥	३२४	३२६
१०९	सब तीर्थोंका प्रयागजी में निवास होनावर्णनहै ॥	३२६	३२८
११०	प्रयागजीकीही महिमा का वर्णन है ॥	३२८	३२९
१११	मार्कण्डेयजी के वचनपर श्रद्धाकरके युधिष्ठिरका प्रयागमें स्नानादि करना ॥	३२९	३३१
११२	द्वीप, समुद्र और नदी आदिका वर्णनहै ॥	३३१	३३६
११३	सब मनुओंने प्रजाओं को जैसे रचनाकरी उसका वर्णनहै ॥	३३६	३४२
११४	बुधके पुत्रराजा पुरूरवाके स्वरूपकावर्णनहै ॥	३४२	३४४
११५	पुरूरवा का तीर्थादि गमनहै ॥	३४४	३४६
११६	पुरूरवाने हिमवान् गिरिको देखा उसका वर्णन ॥	३४६	३४७
११७	उसी हिमवान्की नदी आदिकी शोभाकावर्णन ॥	३४७	३५२
११८	बड़े आश्चर्यकारी आश्रममें राजापुरूरवा का प्रवेशकरना वर्णनहै ॥	३५२	३५५
११९	राजा पुरूरवाका अप्सरा गन्धर्वादिकी क्रीड़ादेखना वर्णनहै ॥	३५५	३५९
१२०	कैलाश और अलकापुरी समेत कुवेरका वर्णनहै ॥	३५९	३६५
१२१	शाकद्वीपकी लंबाई आदिका वर्णनहै ॥	३६५	३७२
१२२	गोमेदनाम छठेद्वीप का वर्णन ॥	३७२	३७७
१२३	सूर्य्य और चन्द्रमाकी गतिका वर्णन ॥	३७७	३८४
१२४	सूर्य्यमण्डलमें तारादिके भ्रमनेकीव्यौरेवारकथा ॥	३८४	३८९
१२५	सूर्य्यका रथ प्रतिमास देवताओंसे संयुत रहताहै उसका सब वर्णनहै ॥	३८९	३९४
१२६	ताराग्रह और राहुके रथ का वर्णन ॥	३९४	३९६
१२७	सूर्य्य चंद्रमाआदिक देवताओंके घर कैसे हैं इनका वर्णन ॥	३९६	४०२
१२८	शिवजी जैसे कित्रिपुरके घरजातेभये उसका वर्णन ॥	४०२	४०५
१२९	मयदैत्यने जैसे प्रकारसे त्रिपुरका स्थान बनाया उसका वर्णन ॥	४०५	४०७
१३०	उस मयदैत्यने त्रिपुरका स्थान ऐसाबनाया जो देवताओं से दुर्गमथा उसका वर्णन ॥	४०७	४११
१३१	दुष्ट दैत्योंने ऋषियोंके स्थान जैसे उजाड़े उनका वर्णन ॥	४११	४१३
१३२	ब्रह्मादिक देवताओंसे स्तुतिकियेहुए शिवजीने कहा कि भयमतकरो उसका वर्णन ॥	४१३	४१८
१३३	सब देवोंसे स्तुति कियेहुए महादेवजी उस रथपर बैठे जो त्रिपुरके विजयकरने को रचाथा ॥	४१८	४२०
१३४	नारदजी रणभूमि में आकर देवताओं की सभामें प्रगटहुए उसका वर्णन ॥	४२०	४२७
१३५	मय दैत्य देवताओंपर प्रहार करके त्रिपुरमें प्रवेशकर गया उसका वर्णन ॥	४२७	४३२
१३६	शिवगणों से ताड़ित हुए दैत्य शिवगणों के तोड़े हुए स्थानोंमें प्रवेशकरगये इसका वर्णन ॥	४३२	४३५
१३७	दैत्यों के मारनेको लोकपालों समेत इन्द्रका जाना वर्णन है ॥	४३५	४३९
१३८	तारकासुरके मरनेके पीछे मय दैत्य शिवगणों को भगाकर भयभीत दैत्योंसे जो बोला-उसकावर्णन ॥	४३९	४४३
१३९	सुमेरु पर्व्वतपर सूर्य्योदय होनेपर दैत्योंकी, समुद्रों के समान गर्जना हुई उसका वर्णन ॥	४४३	४५०
१४०	ऋषियों करके पूछे हुए सूतजीने पुरूरवा का प्रताप कहा उसका वर्णन ॥	४५०	४५६
१४१	स्वायम्भुव के मन्वन्तरमें चारों युगोंके स्वभाव संख्या का वर्णन है ॥	४५६	४६२
१४२	त्रेताकी आदि में यज्ञोंकी प्रवृत्ति जैसे हुई उसका वर्णन ॥	४६२	४६५
१४३	द्वापर युगकी विधिका वर्णन ॥	४६५	४७३
१४४	चौदह मनुओंमें जो व्यतीत हुए और होनेवाले हैं उनका विस्तार से वर्णन ॥	४७३	४८१
१४५	जैसे कि तारकासुरका वध मत्स्यावतारने कहा है उसका वर्णन ॥	४८१	४८६
१४६	वरांगी बोली है कि मुझको इन्द्रने भयभीत किया है और ताड़न किया है उसका वर्णन ॥	४८६	४८८
१४७	तारकासुर दैत्यने सब दैत्योंसे कहा कि आपने कल्याणमें बुद्धिकरो इसका वर्णन ॥	४८८	४९६
१४८	बड़े भारी युद्धमें देव दानवों के दारुण युद्धका वर्णन ॥	४९६	४९७
१४९	धर्मराजने क्रोधितहोकर ग्रसन दैत्यपर बाणोंकीवर्षा करी इसका वर्णन ॥	४९७	५१४
१५०	विष्णुजी के ऊपर दैत्य मुद्गरकी मक्खियोंके समान आचिपटे इसका वर्णन ॥	५१४	५१७
१५१	दैत्योंके सेनापति ग्रसन दैत्यके मरनेपर सब दैत्य बेमर्य्याद विष्णुसे लड़े उसका वर्णन ॥	५१७	५१९
१५२	टूटे अस्त्र शस्त्रोंसे विष्णुको भागता देखकर इन्द्र अपनी पराजय मानताभया ॥	५१९	५२५
१५३	नीले वस्त्रवाला द्वारपालघोंटूटेककर तारकासुरसे बोला उसका वर्णन ॥	५२५	५२८
१५४	शिवजी ने श्रीपार्वतीजी से अपनी श्वेत कान्ति वर्णन करीहै इसका वर्णन ॥	५२८	५८१
१५५	पार्वतीजी-पर्व्वतकी देवता कुसुमामोदिनी नाम सखीके सन्मुखहोगो इसका वर्णन ॥	५८१	५५३
१५६	वीरभद्रपर क्रोधयुक्त होकर शापदियाहै कि तेरी		

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
	माता कृष्णशिलाके समान होजायगी इसका वर्णनहै ॥	५८३	५८७
१५७	वीरभद्र ने पार्वतीको यही उत्तरदिया कि मेरी माताने कहाहै कि किसी अन्य स्त्रीको भीतर मत जानेदेना इसका वर्णन ॥	५८७	५८८
१५८	अग्निके वीर्यके प्रभावसे पार्वतीजी के वाम कन्धे को फाड़कर दूसरा बालक निकला उसकी सब कथाहै ॥	५८८	५९२
१५९	तारकासुर सब वृत्तान्त सुनकर ब्रह्माजी के कहेहुए अपने कालको स्मरण करताभया उसकीकथाहै ॥	५९२	५९४
१६०	ऋषियों ने सूतजीसे हिरण्यकशिपु वध और नृसिंह माहात्म्य पूछाहै ॥	५९४	६००
१६१	नृसिंह शरीर में छिपेहुए प्रह्लादने आयेहुये विष्णुभगवान्‌कोदेखाहै ॥	६००	६०२
१६२	नाना मुखवाले दैत्योंने नृसिंहजी पर शस्त्र वर्षा करी उससे उनको कुछ पीड़ानहुई इसका वर्णन ॥	६०२	६०९
१६३	सूतजीने नृसिंहजीके अन्य माहात्म्यको ऋषियोंसे वर्णन कियाहै ॥	६०९	६११
१६४	मत्स्यजी ने मनुसे सत्ययुगकी संख्यादि वर्णन कीहै ॥	६११	६१३
१६५	योगीश्वर नारायण सूर्य्यहोकर समुद्र पर्य्यन्तादिके जलोंको शोषण कर लेते है इसका वर्णन ॥	६१३	६१५
१६६	एकार्णव जल होजानेके समय भगवान् जलमें शयन करते हैं इसका वर्णन ॥	६१५	६१९
१६७	जलही अपने कुलसे उत्पन्न आत्माको आच्छादित करके तप करताभया इसकी कथा ॥	६१९	६२१
१६८	ब्रह्माजी को स्वर्ण कमलसे जैसे विष्णुजी उत्पन्न करते हैं उसकी कथाहै ॥	६२१	६२२
१६९	जब ब्रह्माजी कमलहीमें तपकरते हैं तब मधुदैत्य विघ्नकरताहै उसकी कथा ॥	६२२	६२४
१७०	ब्रह्माजी ऊर्ध्वभुजा करके तपकरतेभये उसकीकथा ॥	६२४	६२९
१७१	सत्ययुग में विष्णुको हरिस्वर्गमें वैकुंठ और श्रीकृष्णकहते हैं इसकी कथाहै ॥	६२९	६३२
१७२	दैत्य दानवलोग विष्णु के वचनको सुनकर युद्धमें विजयके निमित्त बहुतसा उद्योग करतेभये ॥	६३२	६३५
१७३	मत्स्यने मनुको दैत्योंकी सेना सुनाकर देवताओंकी भी सेनाका विस्तार सुनायाहै ॥	६३५	६३८
१७४	दैत्यदानवोंकी सेना परस्पर खड़े होकर पर्व्वतों के समान दीखे ॥	६३८	६४३
१७५	इस अध्यायमें दैत्योंसे युद्धकरने के लिये चन्द्रमा को आज्ञाहुई है ॥	६४३	६४७
१७६	दैत्योंकी सेनामें कालनेमि दैत्य अपने तेजको ऐसा बरसाताभया जैसे कि तपनेके अन्तकीघोर वृष्टि होती है ॥	६४७	६४९
१७७	विपरीत कर्मी कालनेमिके पास वेद, धर्म, अर्थ, काम, लक्ष्मी यह पाचों नहींआये ॥	६४९	६५०
१७८	ऋषिलोग विष्णु माहात्म्यको सुनकर शिवजी और भैरवके माहात्म्यको सूतजी से पूछनेलगे ॥	६५०	६६३
१७९	अन्धकके वधको सुनकर ऋषिलोग सूतजीसे काशी जीके माहात्म्यको पूछते हैं ॥	६६३	६७०
१८०	शिवजीने जो यक्षको गणेश्वर बनाया उसकी कथा आदिकहै ॥	६७०	६७२
१८१	सनकादिकों ने स्वामिकार्तिकजी से अविमुक्त तीर्थ की महिमा पूछी है ॥	६७२	६७५
१८२	पार्वतीजी ने शिवजीसे अविमुक्त तीर्थकी महिमा पूछी है ॥	६७५	६८२
१८३	अविमुक्त तीर्थपर मोक्षके चाहनेवाले वासकरते हैं ॥	६८२	६८७
१८४	अविमुक्तके वासी ऋषिमुनि तीर्थका माहात्म्य स्वामिकार्त्तिकसे पूछते हैं ॥	६८७	६९२
१८५	ऋषिलोग सूतजी से नर्मदा नदीका माहात्म्य पूछते है ॥	६९२	६९७
१८६	मुनियोंने जो नर्मदाका विभागकियाहै उसको मार्कण्डेय वर्णन करते हैं ॥	६९७	७००
१८७	महेश्वर तीर्थकी महिमा मार्कण्डेय जी युधिष्ठिर से वर्णन करते हैं ॥	७००	७०७
१८८	ऋषिलोग सूतजीसे कावेरीनदीके संगमको पूछतेहै ॥	७०७	७०९
१८९	नर्मदाके उत्तर तटपर भन्वेश्वर तीर्थका वर्णन मार्कण्डेय जी धर्मराज को सुनाते हैं ॥	७०९	७१०
१९०	नर्मदानदी का सेवन क्रोधरागादि से रहित लोग करते हैं इसकी कथाहै ॥	७१०	७१९
१९१	मार्कण्डेय जी कहते हैं कि भार्गवेश तीर्थपर जाना योग्यहै ॥	७१९	७२२
१९२	तथा अनरक तीर्थका माहात्म्य कहते हैं ॥	७२२	७२८
१९३	तथा शंकुकेश्वर तीर्थ माहात्म्य कहते हैं ॥	७२८	७३२
१९४	ऋषियोंके गोत्र वंश और अवतारोंको पूछते हैं ॥	७३२	७३५
१९५	मत्स्यजी ने मरीचिके सुरूपा नामसे प्रसिद्ध दशपुत्रों का नाम और गुण वर्णन कियाहै ॥	७३५	७३८
१९६	मत्स्यजी अत्रिवंशी गोत्र प्रवर्त्तक ऋषियोंका वर्णन मनुजी से करते हैं ॥	७३८	७३९
१९७	मत्स्यजी अत्रिके अन्य वंशका वर्णन करते हैं ॥	७३९	७४१
१९८	मत्स्यजी मरीचिके पुत्र कश्यपकुलके गोत्र कारक ऋषियों को बताते हैं कि अमुकहै ॥	७४१	७४२
१९९	वशिष्ठ वंशमें उत्पन्नहुए ब्राह्मणों को मत्स्यजी मनुसे वर्णन करते है ॥	७४२	७४३

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
२००	बड़े तेजस्वी वशिष्ठजी जब राजा निमिके पुरोहित हुए तब निमिने बहुतसे यज्ञ किये ॥	८४३	८४६
२०१	अगस्त्यके वंशमें होनेवाले ब्राह्मणोंका वर्णन मत्स्य जी करते हैं ॥	८४६	८४७
२०२	वैवस्वत मनुने धर्मराजसे दक्षकी पुत्रियोंने जो देवं वंश हुए उनका वर्णनहै ॥	८४७	८४८
२०३	इन उत्तमवर्णों में होनेवाले ब्राह्मण श्राद्धमें भोजन करवानेयोग्य हैं इसकावर्णनहै ॥	८४८	८५०
२०४	मनुजीनेमत्स्यजीसेप्रसूतागौके दानकीविधिपूछीहै ॥	८५०	८५१
२०५	कालेमृगकेचर्मदानकीविधिमनुनेमत्स्यजीसेपूछी है ॥	८५१	८५३
२०६	मनुजीमत्स्यजीसेवृषभकेलक्षणपूछतेहैंइसकावर्णनहै॥	८५३	८५६
२०७	सूतजी कहतेहैं कि राजाको पतिव्रता स्त्रियोंका देश पूछकर उनकी कथा भी सुननी चाहिये यहवर्णनहै ॥	८५६	८५८
२०८	सत्यवान् अपनी स्त्रीको वनकी बटानेवाली वनकी शोभा दिखाते है ॥	८५८	८६०
२०९	काष्ठतोड़ने में सत्यवान्‌के शिरमें दर्दहुआ तब अपनी स्त्री सावित्रीसे जो वचनबोला उसका वर्णनहै ॥	८६०	८६२
२१०	श्रेष्ठ पुरुषके मिलने में किसी को दुःखनहीं होता यह सावित्री अपने पतिसे बोली है ॥	८६२	८६४
२११	सावित्री बोलीहै कि धर्म सञ्चयकरने मे कभी खेद और शोक नहीं होता ॥	८६४	८६७
२१२	सावित्रीनेकहा कि हे प्राणपति आपही यमकेसमान कर्मानुसार सबको शिक्षादेतेहो इसीसे आपको यम कहते हैं ॥	८६७	८६८
२१३	वह सावित्री पतिके स्थानपर आ उसके शिरको गोदीमें रखकर बैठती भई और सूर्य्यास्त होगया उसके सब वृत्तान्त का वर्णन है ॥	८६८	८६९
२१४	मनुजीने मत्स्यजी से पूछाहै कि राजगद्दीपर बैठे हुये राजाको कौन २ सा कार्य्य करना योग्यहै ॥	८६९	८७७
२१५	मत्स्यजीने मनुसे कहा राजाके राज्यमें रहनेवाले भृत्योंको अमुक २ बातें जो नहीं करनी चाहिये उनको सुनो ॥	८७७	८८०
२१६	राजा अपनी प्रजाके सुखके लिये सब वस्तुओं से संपन्न पृथ्वीमें किला बनवावे उसका वृत्तान्तहै ॥	८८०	८८५
२१७	मनुजी मत्स्यजी से वह औषधिया पूछते है जो राक्षसों की नाश करनेवाली और विषोंकी हरने वाली है उनका वर्णन ॥	८८५	८८८
२१८	राजाको अपने किलेमें कौन२ सी वस्तुएं रखना चाहिये उनका वर्णन मनुजी मत्स्यजीसे पूछते हैं ॥	८८८	८९२
२१९	मत्स्यजी कहतेहैं कि राजाको अपने पुत्रकी रक्षाके निमित्त और गौरव बढ़ाने के लिये दूतनसे भृत्य रखने चाहियें इसका वर्णन है ॥	८९२	८९४
२२०	मनुजी पूछते हैं कि हे प्रभो भाग्य और पुरुषार्थ इनदोनों में कौनसा बड़ा और श्रेष्ठ है ॥	८९४	८९५
२२१	मनुने मत्स्यजीसे सामादिक उपायोंको पूछा है ॥	८९५	८९६
२२२	मनुजी से मत्स्य भगवान् कहतेहैं कि दुष्ट क्रोधी और अभिमानियों में भेद उपाय करना योग्य है इसका वर्णन है ॥	८९६	८९७
२२३	सब उपायोंमें दानही श्रेष्ठहै ॥	८९७	८९८
२२४	लोगोंके न डरनेमें दण्ड उपायही श्रेष्ठ है ॥	८९८	८९९
२२५	सबकेदण्डके निमित्त सब देवताओंके अंशसे ब्रह्मा ने राजाको बनाया है ॥	८९९	९००
२२६	धरोहड़ मारने वाले को राजा धरोहड़ के धनके समान दण्ड देवे ॥	९००	९१६
२२७	मनुजी मत्स्यजी से आकाश पृथ्वी देवलोक और भौम दिव्यादि से उत्पन्न होनेवाले महान् उत्पातों की शान्ति पूछते हैं ॥	९१६	९१८
२२८	मनु मत्स्यजी से अद्भुत उत्पातोंके फल और शान्ति को पूछते हैं ॥	९१८	९२०
२२९	देवताओं की मूर्त्ति नृत्यकरें कांपें ज्वलितहोयं धुआं रक्तस्नेह और वसा आदि का वमन करें रोवें हँसें पसीना आवे खड़ीहोयं श्वासलें भोजनकरें ध्वजादिक को दूर फेंक दें नीचेको मुखकरें वहां किसी भी स्थानमें वास न करना चाहिये इसप्रकार की बहुतसी बातोंका वर्णन है ॥	९२०	९२१
२३०	जहां विना इंधन के अग्नि जले वा कहीं इन्धन सेभी नहीं जले वह राज्य शत्रु अन्य राजाओं से पीड़ित होताहै इत्यादि वर्णन है ॥	९२१	९२२
२३१	जिसपुरमें देव दोलित हुए हंसते रोवते बहुत देरसे को गिरने और विना वायुके शाखा टूटें इत्यादि होतेहैं वहांभीपूर्वोक्तहीनष्टफलजानो इसका वर्णनहै ॥	९२२	९२३
२३२	अति वृष्टि अनावृष्टि दोनो उपद्रवोंसे दुर्भिक्षका भय होता है इसका वर्णनहै ॥	९२३	९२४
२३३	नदी नगरके समीप आकाश सरोवरादि के जल अकस्मात् होजावें इत्यादि अशुभ वर्णन है ॥	९२४	९२४
२३४	निकाल स्त्रियों की सन्तान वा बालक मनुष्यों में अन्यरूपि हो यह अशुभ हैं ॥	९२४	९२५
२३५	उत्तम सवारी चलानेसे भी न चलें और निकृष्ट सवारी अच्छी चलें यह अशुभ है ॥	९२५	९२५
२३६	वनके जीव ग्राममें आजाय ग्रामके कुत्ते आदि वनमें चले जाय इत्यादि अशुभ वर्णन है ॥	९२५	९२६
२३७	राजा के सुन्दर महल अकारण गिर पड़ें वहां से राजाको मृत्यु का भय होता है ॥	९२६	९२८
२३८	यह यज्ञ लक्ष होम और कोटि होम कैसेकरे इसको		

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
	विधि वर्णन की है ॥	८२८	८३०
२३९	राजाओं के यात्रा काल का वर्णन है ॥	८३०	८३२
२४०	मनुष्योंकेशुभाशुभलक्षणोंकोमनुमत्स्यजीसेपूछतेहैं ॥	८३२	८३३
२४१	अङ्ग के सन्मुख विचार करनेवाले राजाको कैसे स्वप्न का कैसा फल होता है इसका वर्णन ॥	८३३	८३६
२४२	राजा की यात्रा के समय कौन से शकुन सन्मुख होने उत्तम हैं ॥	८३६	८३८
२४३	उत्पातोंकी अशुभतासमेतस्वप्नदर्शनकेफलवर्णनहै ॥	८३८	८४२
२४४	बलि दैत्य दैत्योंको तेजहत देखकर अपने बाबा प्रह्लादजीसे इसका कारण पूछताहै और प्रह्लाद उस विष्णुभगवान्के निन्दक बलिको शापदेताहै ॥	८४२	८४८
२४५	पृथ्वीको चलायमान देखकर राजाबलि अपने गुरु शुक्राचार्यजी से हाथ जोड़कर कारण पूछताहै तब शुक्रजी ध्यानसे वामनावतार को बताते हैं ॥	८४८	८५५
२४६	अर्जुनशौनकजीसेशुक्रावत रहोनेकाकारणपूछताहै ॥	८५५	८५८
२४७	शौनकजी अर्जुन से वेदकी श्रुति के आशय से ब्रह्माण्ड रचना कहते हैं ॥	८५८	८६४
२४८	सूतजी से ऋषिलोग देवताओं के अमर होने का हेतु पूछते हैं और सूतजी समुद्र मथन से अमृत होने और पान करने का कारण बताते हैं ॥	८६४	८६९
२४९	नारायण के वचनसे देव दानव समुद्र को सब मथते भये और लक्ष्मी आदि रत्न निकले ॥	८६९	८७४
२५०	फिर समुद्र मथनेमें धन्वन्तरिवैद्य मदिरा अमृत सुरभिगौ आदि निकले और सबका विभाग होगया ॥	८७४	८७७
२५१	महल आदि बनानेकी विधि और वास्तुशास्त्र के जितने आचार्य हैं उनकी संख्या नाम सहित सूतजी ऋषियों से कहते हैं ॥	८७७	८७८
२५२	गृहके बनाने और चिनने के समयका वर्णन है ॥	८७८	८८२
२५३	चारशाला के स्थान के स्वरूप द्वार चौखट स मेत का वर्णनहै ॥	८८२	८८६
२५४	स्तम्भ अर्थात् खम्भ बनाने की विधि ॥	८८६	८८८
२५५	प्रत्येक दिशाकी झुकावाली भूमिका प्रत्येक वर्ण के अर्थ शुभाशुभ का वर्णन ॥	८८८	८९१
२५६	घरके काष्ठकेलिये वृक्ष काटनेकीविधि और उसके गिरने का शुभाशुभ लक्षण ॥	८९१	८९३
२५७	गृहस्थी के क्रियायोग की सिद्धि और ज्ञानयोग से कर्मयोग की प्रधानता का वर्णन ॥	८९३	८९८
२५८	देवताओंकी मूर्तियोंके भेदप्रमाणआदिका वर्णन ॥	८९८	९००
२५९	अर्द्धनारीश्वर शिवजी की मूर्ति का वर्णन और बनाने की विधि वर्णनहै ॥	९००	९०५
२६०	सूर्य की मूर्ति विधि और उनका शृंगार और शिवजी की मूर्ति का वर्णन है ॥	९०५	९०९
२६१	शिवजी की जलहरी आदि मूर्तिस्थापनकी पृथ्वी का लक्षण और मूर्ति की उचाई के सोलह भागों का यथा विभाग ॥	९०९	९११
२६२	उत्तम लिंग का लक्षण और स्थान के प्रमाण से सुवर्णादि के लिंग का शुभाशुभ लक्षण ॥	९११	९१२
२६३	देवताओं की उत्तम प्रतिष्ठा और कुण्ड मण्डपादि की विधि का वर्णन ॥	९१२	९१५
२६४	मूर्ति के स्थापित करनेवाले और रक्षा करनेवाले पुरुषों के लक्षण ॥	९१५	९१९
२६५	देवताओं के अधिवासादिक और जल से मन्दिरों में छिड़काव आदिक का वर्णन है ॥	९१९	९२४
२६६	देवताओंकेअर्घपाद्य औरस्नानपूजनकीसंक्षेपविधि ॥	९२४	९२६
२६७	देवमन्दिर कैसे बनावे और उनके प्रमाण कितने२ हों इसका वर्णन ॥	९२६	९२९
२६८	वास्तुपूजन बलिपूर्वक प्रासादादि के १६ भागों में से चार भाग का गर्भ अर्थात् स्नान का चौक और बारहभागोंमेंगृह औरमन्दिरआदिकेबनानेकाक्रम ॥	९२९	९३२
२६९	सब मण्डपोंकेलक्षण और वर्णन और उनके उत्तम मध्यम और निकृष्टतापूर्वक नाम हैं ॥	९३२	९३५
२७०	सूर्यवंशियों का और कलियुग में होनेवाले कीर्ति-वर्द्धक देववंश के भी राजाओं का वर्णन ॥	९३५	९३७
२७१	वीतहोत्र सञ्जक वृहद्रथोंके पीछे पुलक आदि राजाओं के जीवन चरित्र और जितने २ वर्ष राज्य करेंगे उसका वर्णन ॥	९३७	९४०
२७२	शुंग राजाओंमें जो बलवान् होगा उसको अन्ध्र जाति का शिशुकराजा मारेगा इसका वर्णन ॥	९४०	९४५
२७३	धनी विद्वान् कौन २ से दानसे कृत कृत्य होता है इसका वर्णन और मुख्य २ तुलाआदिक दानों के सोलहों प्रकार का वर्णन ॥	९४५	९५१
२७४	हिरण्यगर्भादिक महा दानोंका वर्णन ॥	९५१	९५३
२७५	पूर्व्वोक्तही दानोंकी प्रशंसा वर्णन ॥	९५३	९५५
२७६	महापातकनाशककल्पपादपदानकीविधिकावर्णन ॥	९५५	९५७
२७७	बड़े पुण्यकारी गोसहस्रनामक उत्तम दानकावर्णन ॥	९५७	९५९
२७८	कामधेनु दानकी विधिका वर्णन ॥	९५९	९६०
२७९	हिरण्याश्व दानकी विधि वर्णन ॥	९६०	९६१
२८०	अश्वरथ दानका वर्णन ॥	९६१	९६३
२८१	बड़े सुन्दर हेमहस्ती रथके दानका वर्णन ॥	९६३	९६४
२८२	पञ्चलाङ्गलक प्रमाण भूमिके दानका माहात्म्य ॥	९६४	९६६
२८३	धरा अर्थात् भूमिदानका वर्णन ॥	९६६	९६७
२८४	विश्वचक्रनाम उत्तम दानका वर्णन ॥	९६७	९६९
२८५	महापुण्यकारी कल्पलता नाम दानका वर्णन ॥	९६९	९७१
२८६	महापापोंकानाशकसप्तसागरनाम उत्तमदानकावर्णन ॥	९७१	९७२

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
२८७	गोलोक में फलदेनेवाले रत्नधेनु दानका वर्णन ॥	९७२	९७३
२८८	सब पापों के नाशक महाभूत घट नाम उत्तम दान का वर्णन ॥	९७३	९७५
२८९	मन्वन्तरयुगोंमें कल्पोंके क्रमपूर्व्वकनाम कीर्तन और पाठका माहात्म्य ॥	९७५	९७७
२९०	इस अध्याय में संपूर्ण मत्स्यपुराण भरमें जो कथा आदिक विषयहैं उनसबके नाम क्रमपूर्व्वक लिखेहैं इसी एक अध्यायके देखनेसे मत्स्यपुराणकी सबबातें देखनेवाले को विदित होजायगी तात्पर्य्य यहहै कि यह २९० काअन्तअध्यायमत्स्यपुराणकासूचीपत्रहै ॥	९७७	९७९

इति मत्स्यपुराण सूचीपत्रम् ॥

मत्स्यपुराण सटीक ॥

प्रचण्डताण्डवाटोपे प्रक्षिप्तायेनदिग्गजाः । भवन्तुविघ्नभंगायभवस्यचरणाम्बुजाः १
पातालादुत्पतिष्णोर्मकरवसतयो यस्यपुच्छाभिघातादूर्ध्वं ब्रह्माण्डखण्डव्यतिकरविहि
तव्यत्ययेनापतन्ति । विष्णोर्म्मत्स्यावतारे सकलवसुमतीमण्डलंव्यंशुमानं तस्या
स्योदीरितानां ध्वनिरपहरतादश्रियम्वः श्रुतीनाम् २ नारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैवनरो
त्तमम् । देवींसरस्वतींव्यासं ततोजयमुदीरयेत् ३ अजोऽपियःक्रियायोगान्नारायण
इतिस्मृतः । त्रिगुणायत्रिवेदाय नमस्तस्मैस्वयम्भुवे ४ सूतमेकान्तमासीनं नैमिषारण्य
वासिनः । मुनयोदीर्घसत्रान्ते पप्रच्छुर्दीर्घसंहिताम् ५ प्रवृत्तासुपुराणीषु धर्म्यासुललि
तासुच । कथासुशौनकाद्यास्तु अभिनन्द्यमुहुर्मुहुः ६ कथितानिपुराणानि यान्यस्माकं
त्वयानघ । तान्येवामृतकल्पानि श्रोतुमिच्छामहेपुनः ७ कथंससर्जभगवान् लोकनाथ

मंगलात्मकश्लोकः ॥

नत्वामृडानी तनयम्प्रवन्द्यं देवांघ्रियुग्मं नितरान्ततोवै । वेय्यांख्यपूःस्थेन महीसुरेणविरच्यतेम
त्स्यपुराणभाषा १ रसाब्धिनवभून्यब्देवस्तीरामद्विजेनवै । वैशाखस्याऽसितेपक्षेग्रन्थःप्रारभ्यतेमया २॥

जिन्होंने तांडव नृत्यकरनेके समयदिशाओं के दिग्गजोंको उखाड़ा उन शिवजीमहाराजके चरण कमल विघ्नोंको नाशकरें १ मत्स्यावतार लेनेकेसमय जलसेबाहर आनेकी इच्छावाले जिस विष्णु भगवानकी पूंछके फटकारेसे पातालके बसनेवाले मकर मत्स्यादिक जलकेजीव, ब्रह्माण्ड खण्डके उथलनेकी शंकाकरके ऊपरको आकर गिरतेभये और सबपृथ्वी सूर्य्यकी किरणोंसे रहितहोगई वह विष्णु सब विघ्नोंकोहरें २ नारायणको नमस्कारकर नरोत्तमनररूप सरस्वतीदेवी और श्रीवेदव्यास जीको नमस्कार करके जयनाम मंगलको वर्णनकर ग्रंथको प्रारम्भ करते हैं ३ जन्मादिकोंसे रहित जो भगवान् नारायण कहातेहैं और जिनका त्रिगुणात्मक त्रिवेदरूपहै उस परमेश्वरके अर्थ नमस्कार है ४ दीर्घयज्ञके अन्तमें एकान्तमें बैठेहुए नैमिषारण्यक्षेत्रके बासी मुनिलोग और शौनकादिक ऋषि बड़े आदर पूर्व्वक सूतजीकी प्रशंसाकरके धर्म सम्बन्धी पुराणोंमें कहीहुई उत्तम कथाओं को उनसेपूछने लगे ५ । ६ कि हे अनघ आपने जो पूर्व्वमें हमारे आगे अमृतरूपी कथा वर्णनकरीं उनके श्रवणसे हम तृप्तनहींहुए इसहेतुसे हम उनकेसुननेकी फिर इच्छाकरतेहैं ७ हे सूतजी लोकनाथ भगवान् ने

श्चराचरम्। कस्माच्च भगवान्विष्णुर्मत्स्यरूपत्वमाश्रितः ८ भैरवत्वंभवस्यापि पुरारि त्वञ्चगद्यते। कस्यहेतोःकपालित्वं जगामवृषभध्वजः ९ सर्वमेतत्समाचक्ष्व सूत! विस्तरशःक्रमात्। त्वद्वाक्येनामृतस्येव नतृप्तिरिहजायते १० (सूतउवाच) पुण्यंपवित्र मायुष्यमिदानीं शृणुतद्विजाः। मात्स्यम्पुराणमखिलं यज्जगादगदाधरः ११ पुराराजा मनुर्नाम चीर्णवान्विपुलन्तपः। पुत्रेराज्यंसमारोप्य क्षमावान्रविनन्दनः १२ मलयस्यैक देशेतु सर्वात्मगुणसंयुतः। समदुःखसुखोवीरः प्राप्तवान्योगमुत्तमम् १३ बभूववरद श्चास्य वर्षायुतशतेगते। वरम्वृणीष्वप्रोवाच प्रीतःसकमलासनः १४ एवमुक्तोऽब्रवी द्राजा प्रणम्यसपितामहम्। एकमेवाहमिच्छामि त्वत्तोवरमनुत्तमम् १५ भूतग्रामस्य सर्वस्य स्थावरस्यचरस्यच। भवेयंरक्षणायालं प्रलयेसमुपस्थिते १६ एवमस्त्वितिविश्वात्मा तत्रैवान्तरधीयत। पुष्पवृष्टिःसुमहती खात्पपातसुरार्पिता १७ कदाचिदाश्रमेतस्य कुर्वतःपितृतर्पणम्। पपातपाण्योरुपरि शफरीजलसंयुता १८ दृष्ट्वातच्छफरीरूपं सदयालुर्महीपतिः। रक्षणायाकरोद्यत्नं सतस्मिन्करकोदरे १९ अहोरात्रेणचैकेन षोडशांगुलविस्तृतः। सोऽभवन्मत्स्यरूपेण पाहिपाहीतिचाब्रवीत् २० सतमादायमणिके प्राक्षिपज्जलचारिणम्। तत्रापिचैकरात्रेण हस्तत्रयमवर्धत २१ पुनःप्राहार्तनादेन सहस्रकिरणात्मजम्। समत्स्यःपाहिपाहीति त्वामहंशरणङ्गतः२२ततःसकूपेतंमत्स्यं प्राहिणो

इस चराचर जगत्को केसेरचा और मत्स्यावतार किसलिये धारणकिया ८ और शिवजी महाराज में भैरवरूप त्रिपुरदैत्यसे शत्रुता और कपालोंका धारण यह सब किसकारणसे हुए ९ हे सूतजीइन सब कथाओंको क्रमपूर्वक विस्तारसहित आपवर्णन कीजिये क्योंकि आपके अमृतरूपी वचनोंकेश्रवणरूपी पानसे हमारी तृप्तिनहींहोती है १० सूतजीबोले हे मुनिश्रेष्ठलोगो जिसमहापुण्यकारी आयुरारोग्यके बढ़ानेवाले मत्स्यपुराणको गदाधर भगवानने कहाहै उसकोही मैं कहताहूं तुम श्रद्धापूर्वक चित्तलगाकरसुनो ११ पूर्व समयमें सूर्य्यका पुत्र एकमनुनाम राजा बड़ी तपस्या करताभया अर्थात् वह बड़ा शूरराजा अपनेपुत्रको राज्यदेकर क्षमाधैर्य्य और आत्मगुणों समेत सुखदुःखादि में समानहोकर हिमालयपर्व्वतके एकदेशमें उत्तमयोगको प्राप्तहोताभया १२। १३ इसके अनन्तर जब दशलाख वर्ष व्यतीत होगये तब इसकी तपस्यासे ब्रह्माजी प्रसन्नहोकर वरदानदेनेके लिये प्रकटहोकर यहवचनबोले कि हेपुत्र वरमांगो १४ ब्रह्माजी के इसवचनको सुनकर वहराजा बोला कि हेब्रह्माजी जोआपमुझपर प्रसन्नहैं तो मैंआपसे यहवर मांगताहूं कि प्रलयकाल होनेकेसमय सबप्रकारकेस्थावर जंगम जीवोंकी रक्षाकेनिमित्त मैंसमर्थहोकर परिपूर्णरहूं १५।१६ तबब्रह्माजी तथास्तु कहकर वहीं अन्तर्द्धान होगये और देवताओंने आकाशसे पुष्पोंकी वर्षाकरी १७फिर दैवयोगसे किसीसमय अपनेही आश्रममें उस राजाके तर्पणकरनेकेसमय तर्पणके जलयुक्त हाथोंमें अकस्मात् एकमछलीप्राप्तहोतीभई १८उसमछलीको देख वहदयालु राजा अपनेहाथोंहीमें उसमछलीकी रक्षाकरताभया १९और वहमछली एकही दिनरात में सोलहअंगुल लम्बीहोगई और मेरी रक्षाकरो रक्षाकरो ऐसाबोलती भई २० फिर राजाने उसमछलीको लंबीहोजानेके हेतु अपने हाथसे एकघड़े में छोड़ा वहां भी वहमत्स्य तीनहाथ

द्रविनन्दनः। यदानमातितत्रापि कूपेमत्स्यःसरोवरे २३ क्षिप्तोऽसौपृथुतामागात्पुनर्योजनसम्मिताम्। तत्राप्याहपुनर्दीनःपाहिपाहिनृपोत्तम २४ तत्रःसमनुनाक्षिप्तो गङ्गायामप्यवर्धत। यदातदासमुद्रेतं प्राक्षिपन्मेदिनीपतिः २५ यदासमुद्रमखिलं व्याप्यासौ समुपास्थितः। तदाप्राहमनुर्भीतः कोऽपित्वमसुरेतरः २६ अथवावासुदेवस्त्वमन्यईदृक्कथंभवेत्। योजनायुतविंशत्या कस्यतुल्यंभवेद्वपुः २७ ज्ञातस्त्वंमत्स्यरूपेण माखेदयसि केशव!। हृषीकेश! जगन्नाथ! जगद्धाम! नमोस्तुते २८ एवमुक्तःसभगवान् मत्स्यरूपीजनार्दनः। साधुसाध्वितिचोवाच सम्यग्ज्ञातस्त्वयानघ! २९ अचिरेणैवकालेन मेदिनीमेदिनीपते!। भविष्यतिजलेमग्ना सशैलवनकानना ३० नौरियंसर्वदेवानां निकायेनविनिर्मिता। महाजीवनिकायस्य रक्षणार्थंमहीपते! ३१ स्वेदाण्डजोद्भिजोयेवैयेचजीवाजरायुजाः। अस्यांनिधायसर्वांस्ताननाथान्पाहिसुव्रत! ३२ युगान्तवाताभिहता यदाभवतिनौर्नृप। शृंगेऽस्मिन्ममराजेन्द्र! तदेमांसंयमिष्यसि ३३ ततोलयांते सर्वस्य स्थावरस्यचरस्यच। प्रजापतिस्त्वंभविता जगतःपृथिवीपते! ३४ एवंकृतयुगस्यादौ सर्वज्ञोधृतिमान्नृपः। मन्वन्तराधिपश्चापि देवपूज्योभविष्यसि ३५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेप्रथमोऽध्यायः १॥

लंबाएकही दिनमें होगया २१ और रक्षाकरो रक्षाकरो यहीशब्द बोला तब उससूर्य्य के पुत्र राजा मनुने उसको एककूपमें डाला वहांभी जबबड़ी होनेसे नसमाई तब सरोवरमेंरक्खा २२। २३ उस सरोवरमें भी वहमछली एकहीदिनमें एकयोजन लंबीहोगई अर्थात् चारकोशकी होगईवहांभी दीनतापूर्वक रक्षाकरो रक्षाकरो यहीशब्दबोलतीभई २४ फिर राजाने उसको गंगाजीमें छोड़ा वहांभी जब अत्यन्त बढ़गई तबउसमत्स्यको समुद्रमेंछोड़ा २५ इसके उपरान्त जब कि वहसंपूर्ण समुद्रमेंव्याप्त होगया तब तो राजामनुने भयभीत होकर उनसे यहवचनकहा कि आप कौनहैं २६ क्या आपसाक्षात् विष्णुहीहो क्योंकि आपकेसिवाय ऐसाकौनकरसकाहै कि थोड़ेहीकालमें जिसकाशरीर चालीस हजारकोशका होजाय २७ मैंने आपको जानलिया है कि आपमत्स्यरूप होकर मेरीपरीक्षा करने को मुझे खेद दिखातेहो हेकेशव जगन्नाथ हृषीकेश और जगत्के तेजरूप मैं आपको नमस्कारकरता हूं २८ राजाके इसवचन को सुनकर वहमत्स्यरूप भगवान् बोले कि हेअनघ तू बड़ाधर्मज्ञ औरसाधु है तैंने मुझे यथार्थही जानलिया २९ हेराजन् अबथोड़ेहीकाल में वनपर्व्वत और समुद्रों समेत यह पृथ्वी जलमें डूबजायगी ३० यह पृथ्वीदेवताओं के स्थानकरके तो नौकारूप है और महान्जीवोंकी रक्षाके निमित्त स्थानरूपहै ३१ हेसुव्रत यह जो अंडज स्वेदज जरायुज और उद्भिज इनचारों प्रकार के जीवहैं इनसब जीवमात्रों को तू इसनौकारूप पृथ्वी में स्थापितकरके पालनकर ३२ और जब यहपृथ्वीरूपी नौका युगके अन्तकी वायुसे नष्टहोनेलगे तब इन सबजीवोंको मेरे शृंगपर स्थापित करदेना ३३ फिर सबस्थावर जंगम जीवोंकी प्रलयहोजानेके अन्तमें हेनृप तू इसजगत्का प्रजापति होगा ३४ इसरीतिसे हेराजा तू सत्ययुग के आदिमें सर्वधर्मज्ञ धृतिमान् और मन्वन्तरों का अधिपतिहोगा ३५॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांप्रथमोऽध्यायः १॥

(सूतउवाच) एवमुक्तोमनुस्तेन पप्रच्छमधुसूदनम्। भगवन्! कियद्भिर्वर्षैर्भविष्यत्य
न्तरक्षयः १ सत्वानिचकथंनाथ! रक्षिष्येमधुसूदन!। त्वयासहपुनर्योगः कथंवाभविता
मम २ (मत्स्यउवाच) अद्यप्रभृत्यनावृष्टिर्भविष्यतिमहीतले। यावद्वर्षशतंसाग्रन्दु
र्भिक्षमशुभावहम् ३ ततोऽल्पसत्वक्षयदा रश्मयःसप्तदारुणाः। सप्तसप्तेर्भविष्यन्ति
प्रतप्ताङ्गारवर्षिणः ४ औवानलोऽपिविकृतिङ्गमिष्यतियुगक्षये। विषाग्निश्चापिपाता
लात्सङ्कर्षणमुखच्युतः॥ भवस्यापिललाटोत्थ तृतीयनयनानलः ५ त्रिजगन्निर्दहन्
क्षोभं समेष्यतिमहामुने!। एवंदग्धामहीसर्वा यदास्याद्भस्मसन्निभा ६ आकाशमूष्म
णातप्तम्भविष्यतिपरन्तप!। ततःसदेवनक्षत्रं जगद्यास्यतिसंक्षयम् ७ सम्बर्त्तोभीमना
दश्च द्रोणश्चण्डोबलाहकः। विद्युत्पताकःशोणस्तु सप्तैते लयवारिदाः ८ अग्निप्रस्वे
दसम्भूतां प्लावयिष्यन्तिमेदिनीम्। समुद्राःक्षोभमागत्य चैकत्वेनव्यवस्थिताः ९ एत
देकार्णवंसर्वंकरिष्यंतिजगत्त्रयम्। वेदनावमिमांगृह्य सत्वबीजानिसर्वशः १० आरोप्य
रज्जुयोगेन मत्प्रदत्तेनसुव्रत!। संयम्यनावंमच्छृङ्गे मत्प्रभावाभिरक्षितः ११ एकःस्था
स्यसिदेवेषु दग्धेष्वपिपरन्तप!। सोमसूर्यावहंब्रह्मा चतुर्लोकसमन्वितः १२ नर्म्मदा
च नदीपुण्या मार्कण्डेयोमहानृषिः। भवोवेदाःपुराणाश्च विद्याभिःसर्वतोवृतम् १३

सूतजी बोले कि मत्स्यभगवान्के इन वचनोंको सुनकर राजामनुने पूछा कि हे भगवन् वह प्रलय कितने वर्षोंके पीछे होगी १ हे नाथ मैं जीवोंकी रक्षा कैसे करूंगा और मेरा संयोग आपकेसंग कैसे होगा २ मत्स्यजी बोले अबसे लेकर सौवर्षतक पृथ्वीपर वर्षा नहीं होवेगी और सब वस्तुओं का अत्यन्त दुर्भिक्ष होजायगा ३ तदनन्तर जीवोंकी नाश करनेवाली संतप्त अंगारों के समान महा दारुण अशेष पदार्थोंकी भस्म करनेवाली सूर्य्यकी किरणें होजायँगी ४ और युगके अन्तमें वड़वानल अग्निभी प्रचण्ड होजायगा शिवजीके मुखसे निकसाहुआ विषरूपी अग्निभी पातालसे उठेगा और उसीसमय शिवजीके मस्तकके तीसरे नेत्रवाला महाभयंकर अग्निभी ऐसा कोपित होगा कि वही अकेला त्रिलोकीको भस्म करदेगा इसरीतिसे संपूर्ण पृथ्वी दग्धहोकर भस्म के समान होजायगी ५। ६ हे परन्तप यह आकाशभी भाफोंसे महा संतप्त होजायगा तब देवता और नक्षत्रों समेत सब जगत् नष्टहोजायगा ७ इसके पीछे संवर्त्त भीमनाद शेण चंड बलाहक विद्युत्पातक औ शोण इन नामोंवाले सात प्रलयकालीन मेघ इस अग्निसे जलीहुई पृथ्वीको जलोंसे डुबोदेंगे और सब समुद्रभी परस्परमें कोपित होकर मिलजायँगे ८। ९ इसप्रकारसे संपूर्ण पृथ्वीपर एकार्णव होकर जलही जल फैलजावेगा हे सुव्रत उससमय तू मेरे प्रभावसे देवताओंकी नौकारूप इसपृथ्वी को और सम्पूर्ण जीवोंके बीजको मेरीदीहुई रस्सीमें बाँधकर नौकाको मेरेशृंगपर ठहराकर मेरेप्रभावसे रक्षित होकर सम्पूर्ण देवताओंके भीभस्महोजाने के पीछे तूअकेलाही शेषरहैगा औरमैं चन्द्रमासूर्य्य चारोंलोकोंसमेत ब्रह्मा पवित्रनर्मदानदी मार्कण्डेयमहानृषि और वेद पुराणों समेत शिवजी भी अपनीमायासे सबओरको आवृतहोकर इसीजगत्में स्थितहोजायँगे १०।११।१२।१३ युगकेअन्तमें

त्वयांसार्द्धमिदंविश्वं स्थास्यत्यन्तरसंक्षये। एवमेकार्णवेजाते चाक्षुषान्तरसंक्षये १४
वेदान्प्रवर्त्तयिष्यामि त्वत्सर्गादौमहीपते!। इत्युक्त्वासभगवांस्तत्रैवान्तरधीयत १५
मनुरप्यास्थितोयोगं वासुदेवप्रसादजम्। अभ्यसन्यावदाभूत संप्लवंपूर्वसूचितम् १६
कालेयथोक्तेसंजाते वासुदेवमुखोद्गते। शृंगीप्रादुर्बभूवाथ मत्स्यरूपीजनार्दनः १७ भुजं
गोरज्जुरूपेण मनोःपार्श्वमुपागमत्। भूतान्सर्वान्समाकृष्य योगेनारोप्यधर्मवित् १८
भुजङ्गरज्वामत्स्यस्य शृङ्गेनावमयोजयत्। उपर्युपस्थितस्तस्याः प्रणिपत्यजनार्दन
म् १९ आभूतसंप्लवेतस्मिन्नतीतेयोगशायिना। पृष्टेनमनुनाप्रोक्तं पुराणंमत्स्यरूपिणा।
तदिदानींप्रवक्ष्यामि शृणुध्वमृषिसत्तमाः २० यद्भवद्भिःपुरापृष्टः सृष्ट्यादिकमहन्द्विजाः।
तदेवैकार्णवेतस्मिन् मनुःपप्रच्छकेशवम् २१ (मनुरुवाच) उत्पत्तिंप्रलयञ्चैव वंशा
न्मन्वन्तराणिच। वंश्यानुचरितञ्चैव भुवनस्यचविस्तरम् २२ दानधर्म्मविधिञ्चैव श्रा
द्धकल्पञ्चशाश्वतम्। वर्णाश्रमविभागञ्च तथेष्टापूर्त्तसंज्ञितत् २३ देवतानांप्रतिष्ठादि
यच्चान्यद्विद्यतेभुवि। तत्सर्वंविस्तरेणत्वं धर्म्मंव्याख्यातुमर्हसि २४ (मत्स्यउवाच) म
हाप्रलयकालान्त एतदासीत्तमोमयम्। प्रसुप्तमिवचातर्क्यमप्रज्ञातमलक्षणम् २५ अ
विज्ञेयमविज्ञातंजगत्स्थास्नुचरिष्णुच। ततःस्वयम्भूरव्यक्तः प्रभवःपुण्यकर्म्मणाम् २६

प्रलयकालके समय तुम्हसमेत यहविश्वस्थित रहेगा जब इसप्रकारसे एकार्णव प्रलय होजायगी तब हे राजन् चाक्षुषमनुके अंतमें तेरेसर्गकी आदिमें मैंवेदोंको प्रवृत्तकरूंगा ऐसाकहकर वह मत्स्यरूपी भगवान् वहांहीं अन्तर्द्धान होगये १४।१५ फिरवहमनुभी भगवान्के प्रसादसे उत्पन्न हुये योगमें स्थित होकर प्रलयकालपर्य्यंत पूर्वसूचितही योगकाअभ्यास करताभया १६ इसकेपीछे जबविष्णु भगवान् के मुखसे कहाहुआ वहीसमय आगया तब शृंगयुक्त मत्स्यरूपको धारणकियेहुए विष्णुभगवान् प्रकटहुए १७ उस समय रज्जुके स्वरूपको धारणकरके कालरूपीसर्प उसमनुके समीप आताभया तब धर्मकाज्ञाता वह राजा उससर्परूपी रस्सी से सम्पूर्ण प्राणियोंको बांधकरयोगमें आरोपणकर उससर्परूप रज्जुसे बँधी हुई पृथ्वीरूप नौकाको मत्स्यावतारके सींगपर आरोपणकर और उस नौकापर आपभी स्थितहो भगवान्को नमस्कार करताभया १८।१९ जब प्रलयकाल व्यतीतहोचुका तबमनुजी से पूछेहुए योगमें शयन करने वाले मत्स्यरूपी भगवान्ने जो२ कथा और इतिहास राजासे कहे हैं वही अब मैं तुमसे कहताहूं उसको तुम सब उत्तममुनिलोग चित्तलगाकर सुनो २० हे द्विजवर्य्यलोगो जो आपलोगोंने सृष्टिकी रचनाका वृत्तान्त मुझसे पूछाहै वहीप्रलयके अन्तमें मनुजीने भी भगवान्से पूछाथा २१ अर्थात् मनुजीने भगवान् से पूछा कि हे भगवन् उत्पत्ति प्रलय मन्वन्तर वंश वंशों के चरित्र भुवनोंके विस्तार दानधर्म की विधि शाश्वतश्राद्ध वर्णाश्रमोंका विभाग यज्ञोंकी विधि और देवताओं की प्रतिष्ठा आदिक जोपृथ्वी पर विद्यमानहैं इनसबधर्मोंको आप विस्तारपूर्व्वक वर्णन कीजिये २२।२३।२४ मत्स्यरूप भगवान् बोले हे राजा महाप्रलयके अन्तमें यह तमोमय अन्धकार सुषुप्तिके समान अतर्क्य और अज्ञान लक्षणसे रहित होताभया २५ और जानने के अयोग्य और अविज्ञात रूप यह सब स्थावर जंगम जगत्भी अदृष्ट होताभया तब उत्तमकर्मोंसे उत्पन्न होनेवाले अप्रकट स्वयंभूतरूप ब्रह्माजी उत्पन्न

व्यञ्जयन्नेतदखिलं प्रादुरासीत्तमोनुदः। योऽतीन्द्रियःपरोव्यक्ता दणुर्ज्यायान्सनातनः।
नारायणइतिख्यातःसएकःस्वयमुद्बभौ २७ यःशरीरादभिध्याय सिसृक्षुर्विविधंजगत्।
अपएवससर्जादौ तासुबीजमवासृजत् २८ तदेवाण्डंसमभवेद्धेमरूप्यमयंमहत्।
सम्वत्सरसहस्रेण सूर्य्यायुतसमप्रभम् २९ प्रविश्यान्तर्महातेजाः स्वयमेवात्मसम्भवः।
प्रभावादपितद्व्याप्त्या विष्णुत्वमगमत्पुनः ३० तदन्तर्भगवानेष सूर्य्यःसमभवत्पुरा।
आदित्यश्चादिभूतत्वात् ब्रह्माब्रह्मपठन्नभूत् ३१ दिवंभूमिंसमकरोत्तदण्डशकलद्वयम्।
सचाकरोद्दिशःसर्व्वा मध्येव्योमचशाश्वतम् ३२ जरायुर्मेरुमुख्याश्च शैलास्तस्याभवं
स्तदा। यदुल्वन्तद्भून्मेघस्तडित्संघातमण्डलम् ३३ नद्योऽण्डनाम्नःसम्भूताः पित
रोमनवस्तथा। सप्तयेऽमीसमुद्राश्च तेऽपिचान्तर्जलोद्भवाः। लवणेक्षुसुराद्याश्च नाना
रत्नसमन्विताः ३४ ससिसृक्षुरभूद्देवः प्रजापतिररिन्दम!। तत्तेजसश्चतत्रैष मार्तण्डः
समजायत ३५ मृतेऽण्डेजायतेयस्मा न्मार्तण्डस्तेनसंस्मृतः। रजोगुणमयंयत्तद्रूपंत
स्यमहात्मनः।चतुर्मुखःसभगवानभूल्लोकपितामहः ३६ येनसृष्टंजगत्सर्वं सदेवासुरमा
नुषम्। तमवेहिरजोरूपं महत्सत्वमुदाहृतम् ३७ इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्वितीयोऽध्यायः२॥

हुए उन्होंनेही इससब अन्धकारको दूर किया जो इन्द्रियोंसे अगोचर सूक्ष्मसेभी सूक्ष्म बड़ों से भी बड़ा ऐसा नारायण कहाताहै वही एक ब्रह्मारूप होकरप्रकट होताभया २६।२७ जो अपने शरीर से ध्यानमात्रही करके अनेकप्रकारसे जगत् के रचनेकी इच्छाकरताभया और उसीभगवान् ने प्रथम जलोंकोरचा उनजलोंमें बीजोंको रचताभया २८ फिर वही बीज सुवर्ण के समान कान्तिवाला महान् अण्डकोश होताभया हजारही वर्ष में दशहजार सूर्य्यकी कान्तियोंके समानहोगया २९ आपसे ही उत्पन्नहोनेवाले बड़ेतेजस्वी भगवान् उस अण्डकोशके भीतरप्रवेशितहोकर सब स्थानोंपर व्याप्त होनेसे विष्णुनाम से विख्यात हुए फिर वहीभगवान् अपनेही प्रभावसे सूर्य्यरूप होगये यह सूर्य्य आदि में होनेसेही आदित्यकहाते हैं और वेदपढ़तेहुए ब्रह्माजी वहांउत्पन्नहोकर उसअंडेके दोखंड करके ऊपर के खण्डमें स्वर्गरचतेभये और नीचेके खण्डमें पृथ्वीको रचतेभये और दोनों खण्डों के मध्यमें ध्रुव आकाश होताभया ३०।३१। ३२ उस अंडेकी जेरसे सुमेरुआदिक पर्व्वत उत्पन्नहुए उनपर्वतों के मस्तकों से मेघउत्पन्नहुए और मंडलोंकी कान्ति से बिजली उत्पन्नहुई ३३ औरनदी पितर मनु और सातोंसमुद्र यहसब उस अंडेके जलसे उत्पन्नहुए ३४ फिर वही देवसृष्टि रचने की इच्छासे प्रजापतिरूप भी होताभया उसके तेजसे मार्तंड अर्थात् सूर्य्यलोक उत्पन्नहुआ (जोकि यह मरेहुए अंडेसे उत्पन्नहुआ है इसीसेइसको मार्तण्ड कहते हैं) उसपरमात्माका जो रजोगुण प्रधान रूपहै वहीचतुर्मुख होकर लोकोंका पितामह ब्रह्माहुआ उसीनेदेवता राक्षस और मनुष्य पशु पक्षी आदिकसमेत इससबजगत्को रचाहै इसीरजोगुणरूपको महत्सत्त्वरूप प्रधानकहाहै ३५।३६।३७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वितीयोऽध्यायः २॥

(मनुरुवाच) चतुर्मुखत्वमगमत्कस्माल्लोकपितामहः। कथंतुलोकानसृजत् ब्र-
ह्माब्रह्मविदाम्वरः १ (मत्स्यउवाच) तपश्चचारप्रथमममराणांपितामहः। आविर्भू
तास्ततोवेदाः साङ्गोपाङ्गपदक्रमाः २ पुराणंसर्वशास्त्राणां प्रथमंब्रह्मणास्मृतम्। नित्यं
शब्दमयंपुण्यं शतकोटिप्रविस्तरम् ३ अनन्तरञ्चवक्त्रेभ्यो वेदास्तस्यविनिःसृताः। मी
मांसान्यायविद्याश्च प्रमाणाष्टकसंयुताः ४ वेदाभ्यासरतस्यास्य प्रजाकामस्यमानसाः।
मनसःपूर्वसृष्टावै जातायत्तेनमानसाः ५ मरीचिरभवत्पूर्वं ततोऽत्रिर्भगवानृषिः। अ
ङ्गिराश्चाभवत्पश्चात् पुलस्त्यस्तदनन्तरम् ६ ततःपुलहनामावै ततःक्रतुरजायत।
प्रचेताश्चततःपुत्रो वशिष्ठश्चाभवत्पुनः ७ पुत्रोभृगुरभूत्तद्वन्नारदोऽप्यचिरादभूत्।
दशेमान्मानसान्ब्रह्मा मुनीन्पुत्रानजीजनत् ८ शारीरानथवक्ष्यामि मातृहीनान्प्रजा
पतेः। अंगुष्ठाद्दक्षिणाद्दक्षः प्रजापतिरजायत ९ धर्म्मस्तनान्तादभवत् हृदयात्कुसुमा
युधः। भ्रूमध्यादभवत्क्रोधो लोभश्चाधरसम्भवः १० बुद्धेर्मोहःसमभवदहङ्कारादभू
न्मदः। प्रमोदश्चाभवत्कण्ठान् मृत्युर्लोचनतोनृप! ११ भरतःकरमध्यात्तु ब्रह्मसूनुर
भूत्ततः। एतेनव! सुताराजन्! कन्याचदशमीपुनः। अंगजाइतिविख्याता दशमीब्रह्म
णःसुता १२ (मनुरुवाच) बुद्धेर्मोहःसमभवदितियत्परिकीर्त्तितम्। अहङ्कारःस्मृत
क्रोधा बुद्धिर्नामकिमुच्यते १३ (मत्स्यउवाच) सत्वंरजस्तमश्चैव गुणत्रयमुदाहृतम्।
साम्यावस्थितिरेतेषां प्रकृतिःपरिकीर्तिता १४ केचित्प्रधानमित्याहुरव्यक्तमपरेजगुः।
एतदेवप्रजासृष्टिं करोतिविकरोतिच १५ गुणेभ्यःक्षोभमाणेभ्यस्त्रयोदेवाविजज्ञिरे।

मनुजीबोले कि ब्रह्मकेज्ञाताओं में श्रेष्ठ भगवान ब्रह्माजी चतुर्मुख अर्थात् चारमुखवाले कैसेहोतेभये।
और लोकोंको कैसे रचतेभये १ मत्स्यजी बोले देवताओंके पितामह ब्रह्माजी प्रथमतप करतेभये इसके
पीछे अंग उपांगों समेत वेद उत्पन्नहुए २ प्रथम ब्रह्माजीने सब शास्त्रोंका साररूप नित्यपवित्र शब्दों
सेयुक्त सौकोटि संख्यावाला ऐसाएक महापुराणरचा ३ इसके पीछे उनके मुखसे मीमांसा और न्याय
शास्त्रादिक प्रमाणवाले वेद निकसतेभये ४ वेदके अभ्यासमें अनुरक्तहुए इन ब्रह्माजीको प्रजाके रचनेकी
इच्छाहुई तब मानसपुत्रहुए वह प्रथमही मनसे रचेगये इसीसे मानस कहाते हैं ५ इनमें पहले मरीचि
हुए उसकेपीछे अत्रिऋषि फिर अंगिराऋषि फिर पुलस्त्य ६ तब पुलह फिर क्रतु इनकेअनन्तर प्रचेता
वशिष्ठ भृगु नारद यहभी ब्रह्माजीकेपुत्र उत्पन्नहुए इन दश मानसीपुत्रोंको ब्रह्माजी रचतेभये ७। ८
यह दशोंमाताके बिनाही उत्पन्नहुए हैं अब इनके उत्पत्ति स्थान ब्रह्माजी के अंगों को वर्णनकरते हैं
ब्रह्माजी के दक्षिण अंगुष्ठसे दक्ष प्रजापतिहुए ९ स्तनोंसे धर्म हृदयसे कामदेव भृकुटीसेक्रोध ओष्ठों से
लोभ १० बुद्धिसे मोह अहंकारसेमद कण्ठसे हर्ष नेत्रों से मृत्यु ११ और हाथके मध्यमें से ब्रह्माकापुत्र
भरत उत्पन्नहुआ हे राजा यह नौ पुत्र और दशवीं एककन्या यह तोब्रह्माजीके अंगोंसे उत्पन्नहुए १२
मनुजी बोले हे भगवन् बुद्धिसेमोह और अहंकारसे क्रोधहोना यह जो आपनेकहा तो बुद्धि किसका
नामहै १३ मत्स्यजीबोले सत्त्व रज तम यह तीनगुणकहे हैं इनतीनोंकी समान स्थितिको प्रकृति

एकामूर्त्तिस्त्रयोभागा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः १६ सविकारात्प्रधानात्तु महत्तत्त्वम्प्रजायते।
महानितियतःख्यातिर्लोकानांजायतेसदा १७ अहंकारश्चमहतो जायतेमानवर्धनः।
इन्द्रियाणिततःपञ्च वक्ष्येबुद्धिवशानितु। प्रादुर्भवन्तिचान्यानि तथाकर्म्मवशानितु १८
श्रोत्रंत्वक्चक्षुषीजिह्वा नासिकाचयथाक्रमम्। पायूपस्थंहस्तपादं वाक्चेतीन्द्रियसंग्रहः
१९ शब्दःस्पर्शश्चरूपञ्च रसोगन्धश्चपञ्चमः। उत्सर्गानन्दनादान गत्यालापाश्चत
त्क्रियाः २० मनएकादशंतेषां कर्म्मबुद्धिगुणान्वितम्। इन्द्रियावयवाःसूक्ष्मास्तस्यमूर्त्ति
म्मनीषिणः २१ श्रयन्तियस्मात्तन्मात्राः शरीरंतेनसंस्मृतम्। शरीरयोगाज्जीवोऽपि श
रीरीगद्यतेबुधैः २२ मनःसृष्टिंविकुरुते चोद्यमानंसिसृक्षया। आकाशंशब्दतन्मात्रा द
भूच्छब्दगुणात्मकम् २३ आकाशविकृतेर्वायुः शब्दस्पर्शगुणोऽभवत्। वायोश्चस्पर्श
तन्मात्रात्तेजश्चाविरभूत्ततः २४ त्रिगुणंतद्विकारेण तच्छब्दस्पर्शरूपवत्। तेजोविका
रादभवद्वारिराजंश्चतुर्गुणम् २५ रसतन्मात्रसम्भूतं प्रायोरसगुणात्मकम्। भूमिस्तु
गन्धतन्मात्रादभूत्पञ्चगुणान्विता २६ प्रायोगन्धगुणासातु बुद्धिरेषागरीयसी। एभिः
सम्पादितंभुङ्क्ते पुरुषःपञ्चविंशकः २७ ईश्वरेच्छावशःसोऽपि जीवात्माकथ्यतेबुधैः।
एवंषड्विंशकंप्रोक्तं शरीरइहमानवे २८ सांख्यंसंख्यात्मकत्वाच्च कपिलादिभिरुच्यते।

कहतेहैं १४ और कोई कोई इस प्रकृतिको प्रधानभी कहतेहैं १५ इनगुणोंके क्षोभ और चञ्चलता होनेसे तीन देवता ब्रह्मा विष्णु और शिव यह तीनभागसे उत्पन्नभये वास्तवमें इनकी एकही मूर्त्ति है १६ विकारयुक्त प्रधान प्रकृतिसे महत्तत्त्वहुआ १७ महत्तत्त्वसे मानका बढ़ानेवाला अहंकारहुआ उससे पांच इन्द्रियांहुईं यह पांचों बुद्धिके वशीभूत रहती हैं इनका वर्णन आगेकरेंगे १८ कान त्वचा नेत्र जिह्वा और नासिका यह पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं और गुदा लिंग हाथ पैर और वाणी यहपांच कर्मेन्द्रियहैं १९ शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध यह उनपांचों ज्ञानेन्द्रियोंके विषयहैं और मलका त्यागना आनन्दहोना ग्रहणकरना गमनकरना और बोलना यहपांचों उनकर्मेन्द्रियोंकी क्रिया हैं २० इनमें ग्यारहवां कर्मबुद्धि और गुणसे संयुक्तमनहै इन इन्द्रियोंके सूक्ष्म अवयव उसमनकी मूर्त्तिके आश्रय होतेहैं इसीहेतुसे उनको तन्मात्रा कहतेहैं इसीसे शरीरकहाहै और शरीरके योगहोजानेसे यह जीव भी शरीरी अर्थात् शरीरवाला कहाजाताहै २१। २२ संसारके रचनेकी इच्छाकरके प्रेरितहुआ ब्रह्माजीकामन सृष्टिकोरचताहै यह आकाशतत्त्वहै इसकी तन्मात्रा शब्द गुणहोताहै २३ आकाशसे अर्थात् आकाशके विकारसे वायुहुआ इसके गुणशब्द और स्पर्शमेंहोतेहैं और वायुकी स्पर्शतन्मात्रा से अग्नि प्रकटहोताभया २४ उसअग्निकेशब्द स्पर्श और रूप यह तीनगुण उत्पन्नहुए अग्निके विकार सम्बन्धी चारगुणोंवाला जलतत्त्व अग्निसे उत्पन्नहुआ २५ इसकी तन्मात्रारसहै विशेष करके रसगुणात्मकही जलहै उसरससे गन्धकी तन्मात्रावाली पांचगुणोंसेयुक्त यह पृथ्वीहोतीभई २६ यह पृथ्वीभी विशेषकरके गन्ध गुणवाली है इन सबमें अत्यन्त बड़ीबुद्धि है इनसबसे रचाहुआ पच्चीस तत्त्वोंसेयुक्त पुरुष ईश्वरकी इच्छाकेवशमें होकर जीवात्माकहाता है इनक्रमोंसे इसशास्त्रमें षड्विंशक अर्थात् छब्बीस वस्तुओं समेत शरीरकहाहै २७। २८ इसीको संख्यात्मकहोनेसे कपिलादि-

एतत्तत्त्वात्मकंकृत्वा जगद्वेधाअजीजनत् २९ सावित्रींलोकसृष्टयर्थं हृदिकृत्वासमास्थि
तः। ततःसञ्जपतस्तस्य भित्वादेहमकल्मषम् ३० स्त्रीरूपमर्द्धमकरोदर्द्धंपुरुषरूपवत्।
शतरूपाचसाख्याता सावित्रीचनिगद्यते ३१ सरस्वत्यथगायत्री ब्रह्माणीचपरन्तप!।
ततः स्वदेहसम्भूतामात्मजामित्यकल्पयत् ३२ दृष्ट्वातांव्यथितस्तावत्कामबाणार्दि
तोविभुः। अहोरूपमहोरूपमितिचाहप्रजापतिः ३३ ततोवशिष्ठप्रमुखाः भगिनीमिति
चुक्रुशुः। ब्रह्मानकिञ्चिद्ददृशे तन्मुखालोकनादृते ३४ अहोरूपमहोरूपमितिप्राहपुनः
पुनः। ततःप्रणामनम्रान्तां पुनरेवाभ्यलोकयत् ३५ अथप्रदक्षिणंचक्रे सापितुर्वरवर्णि
नी। पुत्रेभ्योलज्जितस्यास्य तद्रूपालोकनेच्छया ३६ आविर्भूतंततोवक्त्रं दक्षिणंपाण्डु
गण्डवत्। विस्मयस्फुरदोष्ठञ्च पाश्चात्यमुदगात्ततः ३७ चतुर्थमभवत्पश्चाद्वामंका
मशरातुरम्। ततोऽन्यदभवत्तस्य कामातुरतयातथा ३८ उत्पतन्त्यास्तदाकारा आलो
कनकुतूहलात्। सृष्ट्यर्थंयत्कृतंतेन तपःपरमदारुणम् ३९ तत्सर्वंनाशमगमत् स्वसु
तोपगमेच्छया। तेनोर्ध्ववक्त्रमभवत्पञ्चमंतस्यधीमतः। आविर्भवज्जटाभिश्च तद्वक्त्र
ञ्चावृणोत्प्रभुः ४० ततस्तानब्रवीत्ब्रह्मा पुत्रानात्मसमुद्भवान्। प्रजाःसृजध्वमभितः स
देवासुरमानुषीः ४१ एवमुक्तास्ततःसर्वे ससृजुर्विविधाःप्रजाः। गतेषुतेषुसृष्ट्यर्थं प्रणा

कोंने सांख्यकहाहै और इसीको तत्त्वात्मक करके ब्रह्माजी जगत्को रचतेहैं २९ प्रथम ब्रह्माजी लोक की रचनाके निमित्त बड़ी सावधानीसे हृदयमें सावित्रीको धारणकरके उसको जपतेहुए पापरहित देहको भेदनकरके आधे शरीरको स्त्रीरूप और आधेको पुरुषरूप करतेभये इससावित्रीको शतरूपा कहतेहैं और इसीको गायत्री और ब्रह्माणीभी कहते हैं फिर वह ब्रह्माजी अपनेदेहसे उत्पन्नहुई उस स्त्रीको अपनी आत्मजा पुत्रीमाननेलगे ३०। ३१। ३२ तदनन्तर उसको देखकर कामदेवके बाणों से महापीड़ितहुए ब्रह्माजी आश्चर्य्य पूर्वक यह वचन कहनेलगे कि अहो बड़ा आश्चर्य्य है कि इस-का कैसासुन्दर चित्तरोचक रूपहै ३३ फिर वशिष्ठादिक जो ब्रह्माके पुत्रथे वह उसको अपनी बहन समझने और कहनेलगे और ब्रह्माजी सबको त्यागकर उसके मुखहीकीओर देखनेलगे अर्थात् उस नम्रमुखी सावित्रीके रूपको बारम्बार देखकर कहनेलगे कि इसकारूप कैसा आश्चर्य्यकारी सुन्दर है३४।३५ इसकेपीछे वहसुन्दर रूपरंगवाली सरस्वती अपनेपिताकी प्रदक्षिणा करतीभई उससमय पुत्रोंसे लज्जितहोकर ब्रह्माजीकामुख उसके देखनेकी इच्छाकरके दाहिनीओरसे पीलाहोगया और ओष्ठभी फुरनेलगे तब तो आश्चर्य्य करनेसे अपने मुखको पीछेकरलिया ३६। ३७इसके अनन्तर कामदेवकी पीड़ासेयुक्तहोकर ब्रह्माजीका मुख महाकामातुरतासे उसके देखनेको आश्चर्य्यित होके शोभितहुआ उस समयपरही सरस्वती केही समान रूपवाली एकदूसरी स्त्री उत्पन्नहोगई और जो कि ब्रह्माजीने सृष्टि रचनेकेलिये बड़ा दारुण तपकियाथा ३८। ३९ वह ब्रह्माजीका कियाहुआ तप अपनीपुत्रीके संग भोगकरनेकी इच्छाकरनेसे नष्टहोगयाथा इसहेतुसे ब्रह्माजीके ऊपरकीओर पांचवांमुख उत्पन्नहोताभया तब उससमर्थ ब्रह्माजीने उस पांचवें मुखको अपनी जटाओंसे ढककर ४० अपनेपूर्वोक्त पुत्रोंसेकहा कि तुमदेवताराक्षस और मनुष्यादिक सबप्रकारकी प्रजाकोरचो ४१

मावनतामिमाम् ४२ उपयेमेसविश्वात्मा शतरूपामनिन्दिताम् । सम्बभूवतयासार्द्धं मतिकामातुरोविभुः । सलज्जाञ्चकमेदेवः कमलोदरमन्दिरे ४३ यावदब्दशतंदिव्यं यथान्यःप्राकृतोजनः । ततःकालेनमहता तस्याःपुत्रोऽभवन्मनुः ४४ स्वायम्भुवइतिख्यातः सविराडितिनःश्रुतम् । तद्रूपगुणसामान्यादधिपूरुषउच्यते ४५ वैराजायत्रतेजाता बहवःशंसितव्रताः । स्वायम्भुवामहाभागाः सप्तसप्ततथापरे ४६ स्वारोचिषाद्याःसर्वेते ब्रह्मतुल्यस्वरूपिणः । औत्तमिप्रमुखास्तद्वद्येषान्त्वंसप्तमोऽधुना ४७ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

(मनुरुवाच) अहोकष्टतरञ्चैतदङ्गजागमनंविभो ! । कथंनदोषमगमत्कर्म्मणानेनपद्मभूः १ परस्परञ्चसम्बन्धः सगोत्राणामभूत्कथम् । वैवाहिकस्तत्सुतानाञ्छिन्धिमेसंशयंविभो ! २ (मत्स्यउवाच) दिव्येयमादिसृष्टिस्तु रजोगुणसमुद्भवा । अतीन्द्रियेन्द्रियातद्वदतीन्द्रियशरीरिका ३ दिव्यतेजोमयीभूप ! दिव्यज्ञानसमुद्भवा । नमर्त्यैरभितःशक्त्या वक्तुंवैमांसचक्षुभिः ४ यथाभुजङ्गाःसर्पाणामाकाशंविश्वपक्षिणाम् । विदन्तिमार्गंदिव्यानां दिव्याएवनमानवाः ५ कार्य्याकार्य्येनदेवानां शुभाशुभफलप्रदे ।

उनकी आज्ञापातेही वह सब ब्रह्माकेपुत्र अनेकप्रकारकी प्रजाओंकी सृष्टिरचनेको चलेगये उनकेचलेजानेकेपीछे कामके बाणोंसे महापीड़ित ब्रह्माजी नम्रमुखी और अनिन्दित अपनी शतरूपानाम स्त्रीको ग्रहणकरके बड़ी लज्जासे युक्तहोकर देवताओंके सौवर्ष पर्य्यन्त अन्य अज्ञानी मनुष्योंके समान उससे रमणकरतेभये ४२ । ४३ फिर बहुत कालपीछे उसके मनुनाम पुत्रहुआ वह स्वायंभुव नामसे विख्यातहोकर विराटरूपवाला होताभया ४४ और यहभी हमनेसुना है कि उसीके समान गुणरूपवाला होनेसे वह अधि पुरुषभी कहाताहै ४५ उस विराटरूपसे महाभाग तीक्ष्णव्रतवाले चौदह मनुउत्पन्नहुए वह स्वारोचिषनाम आदिक सातमनु ब्रह्माके समान रूपवालेहुए और दूसरे औत्तमि आदिक सातमनुहुए उन्हींमेंसे अब सातवाँतू मनुहै ४६ । ४७ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

मनुजीबोले हे विभो बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि ब्रह्माजीने अपनी पुत्रीकेसाथ रमणक्रिया इस कर्मकरके ब्रह्माजी कैसेदोषको नहींप्राप्तहुए १ एकगोत्रवालोंका परस्पर कैसे सम्बन्धहुआ और उस पुत्रीका विवाह किसकेसंग किसरीतिसेहुआ इसमेरे संदेहको आपदूरकरने को योग्यहैं २ मत्स्यजी बोले यह आदि सृष्टिदिव्यहै रजोगुणसे उत्पन्नहै और पुरुषोंकी इन्द्रियोंसे अग्राह्य इन्द्रियोंवाली होकर इन्द्रियोंके विनाभी शरीररखनेवाली होती है ३ हे राजन् वह सृष्टि दिव्यतेजवाली और दिव्य ज्ञानसे उत्पन्नहोकर मनुष्योंकी चर्मदृष्टिसे देखनेमें और कहनेके योग्यनहीं है ४ जैसे कि सर्पोंकेमार्गको सर्पहीजानतेहैं और उड़नेवाले पक्षियोंके आकाशमार्गको पक्षीहीजानते इसीप्रकार दिव्य देवताओंके मार्गको देवताही लोगजानसक्तेहैं ५ करनेके योग्य कार्य्य और न करनेकेयोग्य अकार्य्य यह दोनों देवताओंको शुभाशुभ फलके देनेवाले नहीं हैं इसहेतुसे हे राजेन्द्र मनुष्योंको देवताओंका वि-

यस्मात्तस्मान्नराजेन्द्र! तद्विचारोनृणांशुभः ६ अन्यच्चसर्ववेदानामधिष्ठाताचतुर्मुखः।
गायत्रीब्रह्मणस्तद्वदंगभूतानिगद्यते ७ अमूर्तंमूर्तिमद्वापि मिथुनंतत्प्रचक्षते। विरंचि
र्यत्रभगवांस्तत्रदेवीसरस्वती। भारतीयत्रयत्रैव तत्रतत्रप्रजापतिः ८ यथातपोनरहित
श्छाययादृश्यतेक्वचित्। गायत्रीब्रह्मणःपार्श्वं तथैवनविमुञ्चति ९ वेदराशिःस्मृतोब्रह्मा
सावित्रीतदधिष्ठिता। तस्मान्नकश्चिद्दोषःस्यात् सावित्रीगमनेविभोः १० तथापिलज्जा
वनतः प्रजापतिरभूत्पुरा। स्वसुतोपगमात्ब्रह्मा शशापकुसुमायुधम् ११ यस्मान्ममा
पिभवता मनःसंक्षोभितंशरैः। तस्मात्त्वदेहमचिराद्रुद्रोभस्मीकरिष्यति १२ ततःप्रसा
दयामास कामदेवश्चतुर्मुखम्। नमामकारणेशप्तुं त्वमिहार्हसिमानद! १३ अहमेवंवि
धःसृष्टस्त्वयैवचतुरानन!। इन्द्रियक्षोभजनकः सर्वेषामेवदेहिनाम् १४ स्त्रीपुंसोरवि
चारेण मयासर्वत्रसर्वदा। क्षोभ्यंमनःप्रयत्नेन त्वयैवोक्तंपुराविभो! १५ तस्मादनपराधेन
त्वयाशप्तस्तथाविभो!। कुरुप्रसादंभगवन्! स्वशरीराप्तयेपुनः १६ (ब्रह्मोवाच) वैव
स्वतेऽन्तरेप्राप्ते यादवान्वयसम्भवः। रामोनामयदामर्त्यो मत्सत्त्वबलमाश्रितः १७ अ
वतीर्य्यासुरध्वंसी द्वारकामधिवत्स्यति। तद्भ्रातुस्तत्समस्यत्वन्तदापुत्रत्वमेष्यसि १८
एवंशरीरमासाद्य भुक्त्वाभोगानशेषतः। ततोभरतवंशान्ते भूत्वावत्सनृपात्मजः १९ वि
द्याधराधिपत्वंच यावदाभूतसंप्लवम्। सुखानिधर्म्मतःप्राप्य मत्समीपंगमिष्यसि २०

चारकरनाभी शुभनहीं है ६ सबवेदोंका अधिष्ठाताब्रह्मा है और गायत्री ब्रह्माजीके अंगसे उत्पन्न होनेवाली कहीजातीहै सो इनका मूर्त्तिरहित वा मूर्त्तिसहित जोड़ाहै जहाँ ब्रह्माजीहैं वहाँ सरस्वती देवीहैं और जहाँ सरस्वतीजी हैं वहाँ ब्रह्माजीभी हैं ७। ८ जैसे कि सूर्य्यकी घाम छायासे रहित कभीनहीं रहती वैसेही गायत्रीभी ब्रह्माजीके पाससे कभी नहीं हटती है ९ ब्रह्माजी वेदकीराशि हैं और गायत्री उसकी अधिष्ठात्री है इसहेतुसे गायत्रीके संगगमन करनेमें ब्रह्माजीको कुछदोषनहीं है १० ऐसाहोनेपरभी पूर्वके प्रजापति ब्रह्माजी अपनी पुत्रीके संगमकरनेसे बड़े लज्जितहुए और क्रोधसे कामदेवको यह शापदेतेभये ११ कि जो तैनेमेराभी मन अपने बाणों से चलायमान करदिया इसहेतुसे शीघ्रही तेरेशरीरको शिवजी भस्मकरेंगे१२ इसकेपीछे कामदेव ब्रह्माजीको प्रसन्नकरके यह वचन बोला कि आपमुझको निरपराध मारनेको योग्यनहीं हैं १३ हे चतुराननजी आपने मुझको ऐसाहीरचा है कि मैं अपने बाणोंसे शरीर धारियोंकी इन्द्रियोंको चलायमान करदेताहूं १४ हेविभो आपने पूर्वही ऐसाकहाथा कि तुझको बड़े २ यत्नोंसेभी जैसेबने तैसे स्त्री पुरुषों के मनोंको विना किसी विचारके चलायमान करदेना योग्यहै १५ हे पिता इसहेतुसे आपने मुझनिरपराधीको शाप दियाहै इससे हेभगवन् आप प्रसन्नहोकर मेरेशरीर प्राप्तहोनेका वरदानदो१६ ब्रह्माजीबोले वैवस्वतमनुकेअन्तमें यादवकुलके बीच राम अर्थात् बलदेवनामनर मेरेसत्त्वप्रधानसे उत्पन्नहोगा १७ और वहीराक्षसोंका मारनेवालाहोकर द्वारकामें बसेगा और उसीके समान उसका छोटाभाई श्रीकृष्णभी होगा उसकातू पुत्रहोगा १८ इसप्रकारसे शरीरको प्राप्तहो सम्पूर्ण भोगोंको भोगकर भरतवंशके अन्तमें तू वत्सराजाका पुत्रहोके विद्याधरोंका अधिपतिहो प्रलयकाल पर्य्यन्त सुखोंको भोगकरधर्म

एवंशापप्रसादाभ्यामुपेतःकुसुमायुधः। शोकप्रमोदाभियुतो जगामसयथागतम् २१
(मनुरुवाच) कोऽसौयदुरितिप्रोक्तो यदुवंशेकामसम्भवः। कथञ्चदग्धोरुद्रेण किम
र्थेकुसुमायुधः २२ भरतस्यान्वयेकस्य काचसृष्टिःपुराभवत्। एतत्सर्वसमाचक्ष्व मूल
तःसंशयोहिमे २३ (मत्स्यउवाच) यासादेहार्धसम्भूता गायत्रीब्रह्मवादिनी। जननी
यामनोर्देवी शतरूपाशतेन्द्रिया २४ रतिर्मनस्तपोबुद्धिर्महदादिसमुद्भवः। ततःसशत
रूपायां सप्तापत्यान्यजीजनत् २५ येमरीच्यादयःपुत्रा मानसास्तस्यधीमतः। तेषामय
मभूल्लोकःसर्वज्ञानात्मकःपुरा २६ ततोऽसृजद्वामदेवं त्रिशूलवरधारिणम्। सनत्कुमार
ञ्चविभुं पूर्वेषामपिपूर्वजम् २७ वामदेवस्तुभगवानसृजन्मुखतोद्विजान्। राजन्यान
सृजद्वाह्वोर्विट्शूद्रानूरुपादयोः २८ विद्युतोऽशनिमेघांश्च रोहितेन्द्रधनूंषिच। छन्दांसि
चससर्जादौ पर्ज्जन्यंचततःपरम् २९ ततःसाध्यगणानीशस्त्रिनेत्रानसृजत्पुनः। कोटी
श्चचतुराशीतिर्जरामरणवर्ज्जिताः ३० वामोऽसृजन्नमर्त्यांस्तान् ब्रह्मणाविनिवारितः।
नैवंविधाभवेत्सृष्टिर्जरामरणवर्ज्जिता ३१ शुभाशुभात्मिकायातु सैवसृष्टिःप्रशस्यते। ए
वंस्थितःसतेनादौ सृष्टेस्थाणुरतोऽभवत् ३२ स्वायम्भुवोमनुर्धीमांस्तपस्तप्त्वासुदुश्च
रम्। पत्नीमेवापरूपाढ्यामनन्तींनामनामतः ३३ प्रियव्रतोत्तानपादौ मनुस्तस्यामजी

के सम्बन्धसे फिर मेरे समीप प्राप्तहोगा १९। २० ऐसे शाप और अनुग्रहसे युक्तहुआ कामदेव बड़े आनन्दको मानकर जहाँ से आयाथा वहाँही चलागया २१ मनुजीबोले हे भगवन् वह यदुकौनथा जिसके वंशमें कामदेव उत्पन्नहुआ और उस कामदेवको शिवजीने किसकारणसे भस्मकर दिया २२ और भरतवंशमें किसके कौनसी सन्तानहुई यहसबमेरे आगेमूल समेत वर्णनकरो २३ मत्स्यजी बोले वह ब्रह्माजी के अर्ध शरीरसे उत्पन्नहोनेवाली जो ब्रह्मवादिनी गायत्री है और मनसे उत्पन्नहोने के कारण से शतरूपा शतेन्द्रिया अर्थात् सैकड़ों इन्द्रियों वाली उस गायत्री के महत्तत्त्व से रतिमन तप और बुद्धि यहसब उत्पन्न हुए और उसी शतरूपा सरस्वती में ब्रह्माजीने सातपुत्र उत्पन्न किये २४। २५ जो मरीच्यादिक सातपुत्र हैं वह तो मानसी हैं अर्थात् ब्रह्माजी के मनसे उत्पन्न हैं उन्हीं का यह भुवर्लोक सर्वज्ञात्मक होताभया २६ इसके अनन्तर ब्रह्माजी त्रिशूलधारी शिवजी को रचतेभये फिर सबसे पूर्वहोनेवाले सनत्कुमारोंको रचा २७ इन शिवजी महाराज ने अपने मुखसे तो ब्राह्मणोंको भुजाओं से क्षत्रियों को जांघोंसे वैश्योंको और पैरों से शूद्रोंकोरचा २८ फिर बिजली वज्र बादल इन्द्रधनुष और वेदोंको रचके परमउत्तम जल रूपमेघोंको भी रचा २९ इसके अनन्तर साध्य देवों के गण अपने तीनों नेत्र और जरामरणसे रहित चौरासीलक्ष योनियों को भी शिवजीरचतेभये ३० ब्रह्माजी से निषेध कियेहुए भी शिवजीने जरामरणादि से रहितही उनमनुष्यादिकों को रचा तब ब्रह्माजीने शिवजी से कहा कि जरामरण से रहित सृष्टिको रचनायोग्य नहीं है ३१ क्योंकि सृष्टिवहीयोग्य है जो कि जरामरण अर्थात् शुभाशुभ इनदोनों से संयुक्त हो ब्रह्माजीके ऐसे वचनोंको सुनकर शिवजी स्थितहोगये इसीसे इनकोस्थाणु कहते हैं ३२ इसकेपीछे बड़े बुद्धिमान् स्वायंभुवने बड़ीभारी दुश्चर तपकरके सुन्दर रूपयुक्त अनन्तीनाम अपनी पत्नीको

जनत्। धर्मस्यकन्याचतुरा सुनृतानामभामिनी ३४ उत्तानपादात्तनयान् प्रापमन्थर
गामिनी। अपस्यतिंमपस्यन्तं कीर्त्तिमंतंध्रुवंतथा ३५ उत्तानपादोऽजनयत् सुनृतायां
प्रजापतिः। ध्रुवोवर्षसहस्राणि त्रीणिकृत्वातपःपुरा ३६ दिव्यमापततःस्थानमचलंब्र
ह्मणोवरात्। तमेवपुरतःकृत्वा ध्रुवंसप्तर्षयःस्थिताः ३७ धन्यानाममनोःकन्या ध्रुवाच्छि
ष्टमजीजनत्। अग्निकन्यातुसुच्छाया शिष्टात्सासुषुवेसुतान् ३८ कृपंरिपुंजयंवृत्तं वृकं
चवृकतेजसम्। चक्षुषंब्रह्मदौहित्र्यां विरिण्यांसरिपुंजयः ३९ वीरणस्यात्मजायांतु चक्षु
र्मनुमजीजनत्। मनुर्वैराजकन्यायां नड्वलायांसचाक्षुषः ४० जनयामासतनयान् दश
शूरानकल्मषान्। ऊरुःपूरुःशतद्युम्नस्तपस्वीसत्यवाक्हविः ४१ अग्निष्टुदतिरात्रश्चसु
द्युम्नश्चापराजितः। अभिमन्युस्तुदशमो नड्वलायामजायत ४२ ऊरोरजनयत्पुत्रांषडाग्ने
यीतुसुप्रभान्। अग्निंसुमनसंख्यातिं क्रतुमंगिरसंगयम् ४३ पितृकन्यासुनीथातुवेनमंगा
दजीजनत्। वेनमन्यायिनंविप्रा ममन्थुस्तत्करादभूत्। पृथुर्नाममहातेजाः सपुत्रौद्वाव
जीजनत् ४४ अन्तर्धानस्तुमारीचं शिखण्डिन्यामजीजनत्। हविर्धानात्षडाग्नेयी धि
षणाऽजनयत्सुतान्। प्राचीनबर्हिषंसाङ्गं यमंशुक्रंबलंशुभम् ४५ प्राचीनबर्हिर्भगवान्
महानासीत्प्रजापतिः। हविर्धाना प्रजास्तेन बहवःसम्प्रवर्त्तिताः ४६ सवर्णायान्तु सामु
द्र्यान्दशाधत्तसुतान्प्रभुः। सर्वेप्रचेतसोनाम धनुर्वेदस्यपारगाः ४७ तत्तपोरक्षिता

प्राप्तकिया ३३ उसी अनन्तीस्त्रीमें मनुने प्रियव्रत और उत्तानपाद इन दोनों पुत्रोंको उत्पन्न किया
और सुनृता नामधर्मकी पुत्री जोकि अत्यन्त चतुरथी उसनेउत्तानपादके योगसे अपस्यति अपस्यन्त
कीर्त्तिमन्त और ध्रुव इनचारों पुत्रोंको उत्पन्न किया ३४ । ३५ अर्थात् प्रजापति उत्तानपाद से उस
सुनृता स्त्री में यहचारपुत्रहुए फिर ध्रुवजीने तीनहजार वर्षतक दारुण तपकिया उसतपके द्वारा
ब्रह्माजी के प्रसन्नहोने से ध्रुवने उत्तम और अचल स्थानपाया ३६ । ३७ उस ध्रुव से धन्यानाम
मनुकी पुत्रीमें शिष्टउत्पन्न हुआ और शिष्टसे अग्निकी पुत्री सुच्छायामें कृपु रिपुंजयवृत्त वृक और
तेजस यह पांच पुत्रहुए रिपुंजय ब्रह्माकी दौहित्री विरिणी नाम स्त्री में चक्षुषको उत्पन्न करताभया
फिर उस विरिणी के पुत्रचक्षुष मनु ने नड्वलानाम कन्या में इन आगे लिखेहुए पापरहित दश
पुत्रों को उत्पन्न किया उनके नाम ऊरु पूरु तपस्वी शतद्युम्न सत्यवाक् हवि अग्निष्टुत अतिरात्र
सुद्युम्न अपराजित और अभिमन्यु यह दशपुत्र नड्वला के हुए ३८ । ४२ । ऊरु मनु से अग्नि
की पुत्री ने अग्नि सुमनस ख्याति क्रतु अंगिरा और गय इन सुन्दर कांतिवाले छः पुत्रों को उ-
त्पन्नकिया और अग्नि राजाके संयोग से पितरोंकी कन्यासुनीथाने राजा वेनको उत्पन्न किया उस
अन्यायी राजावेनको ब्राह्मणों ने मथन किया उसके मथनेसे वेनके हाथसे बड़ा तेजस्वी राजापृथु
उत्पन्नहुआ उस पृथुके दो पुत्रहुए उनदोनों में से बड़े अन्तर्धानने शिखंडिनी स्त्री में मारीच को
उत्पन्न किया और हविर्धान के संकाशसे अग्निकी पुत्री धिषणाने प्राचीनबर्हिष सांग यम शुक्र बल
और शुभ इन छः पुत्रों को उत्पन्न किया ४३ । ४५ प्राचीन बर्हिष बड़ा प्रजापति हुआ उसने बहु-
तसी हविर्धान प्रजा उत्पन्न करी ४६ अर्थात् समुद्र की कन्या सवर्णा में दशपुत्रों को उत्पन्न

वृक्षा बभुर्लोकेसमन्ततः । देवादेशाच्चतानग्निरदहद्रविनन्दन ४८ सोमकन्याऽभव त्पत्नी मारीषानामविश्रुता । तेभ्यस्तुदक्षमेकंसा पुत्रमग्र्यमजीजनत् ४९ दक्षादनन्तरं वृक्षानौषधानिचसर्वशः । अजीजनत्सोमकन्या नन्दींचन्द्रवतींतथा ५० सोमांशस्य चतस्यापि दक्षस्याशीतिकोटयः । तासांतुविस्तरंवक्ष्ये लोकेयःसुप्रतिष्ठितः ५१ द्विपद श्चाभवन्केचित् केचिद्वहुपदानराः । बलीमुखाःशंकुकर्णाः कर्णप्रावरणास्तथा ५२ अश्वऋक्षमुखाःकेचित् केचित्सिंहाननास्तथा । श्वशूकरमुखाःकेचित् केचिदुष्ट्रमुखा स्तथा ५३ जनयामासधर्मात्मा म्लेच्छान्सर्व्वाननेकशः । ससृष्ट्वामनसादक्षः स्त्रियःप श्चादजीजनत् ५४ ददौसदशधर्माय कश्यपायत्रयोदश । सप्तविंशतिसोमाय ददौनक्ष त्रसंज्ञिताः । देवासुरमनुष्यादि ताभ्यःसर्वमभूज्जगत् ५५ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

(ऋषयऊचुः) देवानांदानवानाञ्च गन्धर्व्वोरगरक्षसाम् । उत्पत्तिविस्तरेणैव सूत! ब्रूहियथातथम् १ (सूतउवाच) सङ्कल्पाद्दर्शनात्स्पर्शात् पूर्वेषांसृष्टिरुच्यते। दक्षात्प्राचेतसादूर्ध्वं सृष्टिर्मैथुनसम्भवा २ प्रजासृजेतिव्यादिष्टः पूर्वंदक्षःस्वयम्भुवा।

करताभया वह सब प्रचेतसनामसे प्रसिद्धहोकर धनुर्वेदके पारदर्शी होते भये ४७ उन्हींके तपों से रक्षितहुए वृक्ष इसलोकमें सब ओरको प्रकाशितहुए जब उनवृक्षोंसे सबलोक आच्छादित होगया तब देवताओंकी आज्ञासे उनवृक्षोंको अग्निने भस्मकरदिया फिर उन सब प्रचेतसोंके योगसे चन्द्रमाकी मारीषानाम कन्याने एक उत्तम दक्ष प्रजापतिनाम पुत्रको उत्पन्नकिया ४८।४९ फिर दक्ष के उत्पन्नहोनेकेपीछे उस चन्द्रकन्याने वृक्षों समेत सम्पूर्ण औषधियोंको और चन्द्रवती नदीको उत्पन्नकिया ५० फिर उस सोमके अंशवाले दक्ष प्रजापतिके भी अस्सीकिरोड़ सन्तान उत्पन्न हुई उन्हीं सन्तानोंके विस्तारसे दक्ष प्रजापति विख्यात होरहाहै उसकी सन्तानों में कोई तो दो पैरे वालेहुए कोई बहुत पैरोंवाले मनुष्य कोई बन्दरके समान मुखवाले शंकुके समान तीक्ष्णकानोंवाले उन्हींकानोंसे ढकेहुए और बहुतसे अन्य२ प्रकारकेभी जीवोंको रचताभया५१।५२घोड़े रीछकेसेमुखवाले कोई सिंहकेसमान मुखवाले शूकरकेसमान मुखवाले ऊंटकेसे मुखवाले मनुष्योंको और म्लेच्छोंकोभी वह धर्मात्मादक्ष रचताभया फिर मनसे इस सृष्टिको रचकर स्त्रियोंकोभी मनसेही रचताभया ५३। ५४ फिर दक्षने दशस्त्रियां धर्मकोदीनी तेरह कश्यपजीकोदीनी और नक्षत्र संज्ञक सत्ताईसस्त्रियां चन्द्रमाकोदीनी उन सब स्त्रियोंसे अपने२ पतियोंके योगसे देवता मनुष्य और पशुपक्षी आदिक सबप्रकारका जगत् उत्पन्न होताभया ५५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

ऋषियोंने पूछा हे सूतजी आपहमपर दयाकरके देवता दानव गन्धर्व उरग और राक्षसोंकी उत्पत्ति अच्छेप्रकारसे विस्तार पूर्व्वक वर्णन कीजिये १ सूतजीबोले कि सृष्टिकी आदिमें पूर्व्वकेमनुष्योंकी उत्पत्ति संकल्पसे दर्शनसे और स्पर्शसेभी होतीभई और दक्ष प्राचेतससे पीछे सबसृष्टिकी उत्पत्ति मैथुनसे अर्थात् स्त्री पुरुषके संयोगसे होजाती भई २ प्रथम ब्रह्माजीकी आज्ञासे दक्ष प्रजापति

यथाससर्जचैवादौ तथैवशृणुतद्विजाः ! ३ यदातुसृजतस्तस्य देवर्षिगणपन्नगान्। न वृद्धिमगमल्लोकस्तेदामैथुनयोगतः। दक्षःपुत्रसहस्राणि पाञ्चजन्यामजीजनत् ४ तां स्तुदृष्ट्वामहाभागः सिसृक्षुर्विविधाःप्रजाः। नारदःप्राहहर्यश्वान् दक्षपुत्रान्समागतान् ५ भुवःप्रमाणंसर्वत्र ज्ञात्वोर्ध्वमधएवच। ततःसृष्टिंविशेषेण कुरुध्वमृषिसत्तमाः ! ६ तेतु तद्वचनंश्रुत्वा प्रयाताःसर्वतोदिशम्। अद्यापिननिवर्त्तन्ते समुद्रादिवसिन्धवः ७ हर्यश्वे षुप्रणष्टेषु पुनर्दक्षःप्रजापतिः। विरिण्यामेवपुत्राणां सहस्रमसृजत्प्रभुः ८ शबलानामते विप्राः समेताःसृष्टिहेतवः। नारदोऽनुगतान्प्राह पुनस्तान्पूर्ववत्सतान्। भुवःप्रमाणंस र्वत्र ज्ञात्वाभ्रातॄनथोपुनः ९ आगत्यचाथसृष्टिञ्च करिष्यथविशेषतः। तेऽपितेनैवमा र्गेण जग्मुर्भ्रातॄन्यथापुरा १० ततःप्रभृतिनभ्रातुः कनीयान्मार्गमिच्छति। अन्विषन्दुः खमाप्नोति तेनतत्परिवर्जयेत् ११ ततस्तेषुविनष्टेषु षष्टिंकन्याःप्रजापतिः। वैरिण्याञ्ज नयामास दक्षःप्राचेतसस्तथा १२ प्रादात्सदशधर्माय कश्यपायत्रयोदश। सप्तविंशति सोमाय चतस्रोरिष्टनेमये १३ द्वेचैवभृगुपुत्राय द्वेकृशाश्वायधीमते। द्वेचैवाङ्गिरसेतद्व त्तासान्नामानिविस्तरात् १४ शृणुध्वंदेवमातॄणां प्रजाविस्तरमादितः। मरुत्वतीवसूर्या मी लम्बाभानुररुन्धती १५ सङ्कल्पाचमुहूर्त्ताच साध्याविश्वाचभामिनी। धर्म्मपत्न्यः

जिसप्रकारसे कि आदिमें सृष्टिको रचतेभये सो मैं कहताहूं तुम सब चित्तलगाकर सुनों ३ जब कि दक्ष प्रजापतिने सृष्टिकोरचा और देवता ऋषिगण और सर्पादिक इनसबसेभी लोकका विस्तार न हुआ तब दक्षने पांचजनी नाम स्त्रीमें मैथुनकेयोगसे हजारपुत्र पैदाकिये ४ फिर बहुतसी प्रजारचने की इच्छावाले दक्षके यहाँ महाभाग नारदमुनि आकर प्राप्तहुए और हर्यश्वनामादिक दक्षके दशोंपु- त्रोंसे समझाकर यहवचनकहा कि तुम सब पृथ्वीके ऊपरनीचेके प्रमाणको जानकर अपनी विशेष प्रजाकी रचनाकरो ५।६ इसप्रकारके उसनारदके वचनको सुनकर वह सब दक्षकेपुत्र सब दिशाओंको चलेगये वह आजतकभी लौटकर नहींआये जैसे कि समुद्रमें नदी मिलकर गुप्तहोजाती हैं उसीप्र- कार यहसबपुत्रभी पृथ्वीपर जाकर जहाँ तहाँ वासकरतेहुए रहगये और घरको फिर नहींआये ७ ज- ब इसप्रकारसे हर्यश्वादिक दशोपुत्र नष्टहोगये तब दक्ष प्रजापतिने अपनी विरिणीनाम स्त्रीमें फिर हजारपुत्रोंको उत्पन्नकिया ८ वह सब सबलनामवाले विप्रप्रजारचने के लिये संयुक्तहुए तब फिर पूर्वकेही समान नारदमुनि उनसेभीबोले कि तुमपृथ्वीके प्रमाणको जानकर अपने भाइयोंके ढूंढ़ ने कोजाओ ९ फिर उनको साथलेकर तुम सब सृष्टिको रचोगे ऐसावचन सुनकर वह सबभी उसीमा- र्गहोकर जहाँ कि सबभाई गयेथे उसीमार्गको चलेगये १० इसके पीछे जबयहछोटेभाई उन बड़े भाइयोंके ढूंढ़नेमें महादुखीहुए और वहकहीं न मिले तो वहभी खेदितहोकर जहाँतहाँको चल देते भये ११ जब इसप्रकारसे वह दक्ष के पुत्रभी नष्ट होगये तबदक्ष प्रजापति ने उसी अपनी विरिणी स्त्रीमें साठ कन्या उत्पन्न करीं १२ उनमेंसे दश धर्मराजकोदीं तेरह कश्यपजीको सत्ताईस चन्द्रमा को चार अरिष्टनेमिको दो भृगुजीको दोकृशाश्वको और दोअंगिरसमुनिको देताभया इनसबकेनाम क्रम पूर्वक कहनेके लिये प्रथम देवताओं की माताओं के विस्तारको कहते हैं मरुत्वती वसुः

समाख्यातास्तासांपुत्रान्निबोधत १६ विश्वेदेवांस्तुविश्वायाः साध्यासाध्यानजीजनत्।
मरुत्वत्यांमरुत्वन्तो वसोस्तुवसवस्तथा १७ भानोस्तुमानवस्तद्वन् मुहूर्त्तायांमुहूर्त्तकाः।
लम्बायांघोषनामानो नागवीर्याऽस्तुयामिजाः १८ पृथिवीतलसम्भूतमरुन्धत्यामजाय
त। सङ्कल्पायास्तुसंकल्पो वसुसृष्टिन्निबोधत १९ ज्योतिष्मन्तस्तुयेदेवा व्यापकाःसर्व
तोदिशम्। वसवस्तेसमाख्यातास्तेषांसर्गन्निबोधत २० आपोध्रुवश्चसोमश्च धरश्चै
वानिलोऽनलः। प्रत्यूषश्चप्रभासश्च वसवोऽष्टौप्रकीर्तिताः २१ आपस्यपुत्राश्चत्वारः
शान्तोवैदण्डएवच। शाम्बोऽथमणिवक्त्रश्च यज्ञरक्षाधिकारिणः २२ ध्रुवस्यकालपुत्र
स्तु वर्चाःसोमादजायत। द्रविणोहव्यवाहश्च धरपुत्रावुभौस्मृतौ २३ कल्याण्यांततः
प्राणो रमणःशिशिरोऽपिच। मनोहराऽनिलात्पुत्रानवापाथहरेःसुता २४ शिवामनोज
वम्पुत्रमविज्ञातगतिन्तथा। अवापाचानलात्पुत्रावग्निप्रायगुणौपुनः २५ अग्निपुत्रः
कुमारस्तु शरस्तम्बेव्यजायत। तस्यशाखोविशाखश्च नैगमेयश्चपृष्ठजाः २६ अपत्यं
कृत्तिकानान्तु कार्तिकेयस्ततःस्मृतः। प्रत्यूषस्यऋषिःपुत्रो विभुर्नाम्नाथदेवलः। विश्व
कर्माप्रभासस्य पुत्रःशिल्पीप्रजापतिः २७ प्रासादभवनोद्यान प्रतिमाभूषणादिषु। तडा
गारामकूपेषु स्मृतःसोमरवर्धकिः २८ अजेकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोऽथरैवतः। हरश्च
बहुरूपश्च त्र्यम्बकोभुवनेश्वरः २९ सावित्रश्चजयन्तश्च पिनाकीचापराजितः॥

यामी लम्बा भानु अरुंधती १३।१५ संकल्पा मुहूर्त्ता साध्या और विश्वा यहदश तो धर्मराज की पत्नी कही हैं इनके पुत्र यहहैं कि विश्वाके विश्वेदेवहुए साध्याके साध्य संज्ञक देवता हुए मरुत्वतीके मरुद्गण संज्ञक देवताहुए वसुके वसुसंज्ञक देवताहुए १६।१७ भानुके भानव मुहूर्त्ताके मुहूर्त्तक लंबाके घोषनामक यामीके नागवीर्य्यपुत्र अरुन्धतीके पृथ्वीतलमें होनेवाले देवगण उत्पन्न हुए और संकल्पाके संकल्पनाम पुत्रहुआ इसप्रकारसे तो यहसब पुत्रहुए अब वसुओंकी सृष्टिको सुनो ज्योतिरूप प्रकाशवाले सब दिशाओंमें व्याप्त ऐसे जो देवताहैं वह सबवसव कहाते हैं उनके नाम यहहैं आप ध्रुव सोम धर अनिल अनल प्रत्यूष और प्रभास यह अष्टवसुहैं १८।२१ आपके चारपुत्रहुए शान्त दण्ड शांब और मणिवक्र यहचारो यज्ञकीरक्षाके अधिकारी हैं २२ ध्रुवके कालपुत्रहुआ सोमके वर्चाहुआ और द्रविण और हव्यवाह यह दोपुत्र धरके सकाशसे कल्याणी स्त्रीमें उत्पन्नहुए और प्राण रमण शिशिर इनतीनपुत्रोंको वायुके योगसे हरिकीपुत्री मनोहरा उत्पन्नकरतीभई २३।२४ और अग्निके संयोगसे शिवास्त्रीमें मनोजव और अविज्ञात गति यह दोपुत्र अग्निकेही समान गुणवाले होतेभये २५ फिर शरोंकेगुच्छेमें अग्निकापुत्र स्वामिकार्त्तिक उत्पन्नहुआ इसके अनन्तर कृत्तिकामें शाख विशाख और नैगमेय यह तीनपुत्र उत्पन्नहुए इसीहेतुसे इनको कार्त्तिकेय अर्थात् कृत्तिकाकी सन्तानभी कहते हैं और प्रत्यूषकेपुत्र देवलनाम समर्थऋषि उत्पन्नहुए प्रभासका पुत्र विश्वकर्मा नाम प्रजापति शिल्पी होताभया २६।२७यह विश्वकर्मा देवताओंके मकान बगीचे मूर्त्ति भूषण तड़ाग और क्रीड़ाआदिके स्थानोंके बनानेके निमित्त देवताओंका कारीगरहुआ २८ और अजैकपाद अहि- र्बुध्न्य विरूपाक्ष रैवत बहुरूप त्र्यंबक भुवनेश्वर २९ सावित्र जयन्त अपराजित अर्थात् जो किसीसे

एतेरुद्राःसमाख्याता एकादशगणेश्वराः ३० एतेषांमानसानान्तु त्रिशूलवरधारिणाम्।
कोटयश्चतुराशीतिस्तत्पुत्राश्चाक्षयामताः ३१ दिक्षुसर्वासुयेरक्षां प्रकुर्वन्तिगणेश्वराः।
पुत्रपौत्रसुताश्चैते सुरभीगर्भसम्भवाः ३२ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

(सूत उवाच) कश्यपस्यप्रवक्ष्यामि पत्नीभ्य.पुत्रपौत्रकान्। अदितिर्दितिर्दनुश्चैव
अरिष्टासुरसातथा १ सुरभिर्विनतातद्वत्ताम्राक्रोधवशाइरा। कद्रूर्विश्वामुनिस्तद्वत्तासां
पुत्रान्निबोधत २ तुपितानामयेदेवाश्चाक्षुषस्यान्तरेमनोः। वैवस्वतेऽन्तरेचैते आदित्या
द्वादशस्स्मृताः ३ इन्द्रोधाता भगस्त्वष्टा मित्रोऽथवरुणोयमः। विवस्वान्सवितापूषा अंशु
मान्विष्णुरेवच ४ एतेसहस्रकिरणा आदित्याद्वादशस्स्मृताः। मारीचात्कश्यपादाप
पुत्रानदितिरुत्तमान् ५ भृशाश्वस्यऋषेःपुत्रा देवप्रहरणाःस्मृताः। एतेदेवगणाविप्राः
प्रतिमन्वन्तरेषुच ६ उत्पद्यन्तेप्रलीयन्ते कल्पेकल्पेतथैवच। दितिःपुत्रद्वयंलेभे कश्यपा
दितिनःश्रुतम् ७ हिरण्यकशिपुञ्चैव हिरण्याक्षंतथैवच। हिरण्यकशिपोस्तद्वज्जातंपुत्र
चतुष्टयम् ८ प्रह्लादश्चानुह्लादश्च संह्लादोह्लादएवच। प्रह्लादपुत्रआयुष्मान् शिविर्वा
ष्कलएवच ९ विरोचनश्चतुर्थश्च सबलिंपुत्रमाप्तवान्। बलेःपुत्रशतंत्वासीद्बाणज्येष्ठं
ततोद्विजाः १० धृतराष्ट्रस्तथासूर्यश्चन्द्रश्चन्द्रांशुतापनः। निकुम्भनाभोगुर्वक्षः कुक्षि
भीमोविभीषणः ११ एवमाद्यास्तुबहवो बाणज्येष्ठागुणाधिकाः। बाणःसहस्रबाहुश्च स

विजय न कियाजाय-पिनोंकी यहग्यारहरुद्र गणेश्वरकहाते हैं २९। ३० इनमानस त्रिशूलधारी रुद्रगणों
की चौरासी किरोड़ संख्याकही है और इनकेपुत्रभी अनन्तहैं ३१ और जो गणेश्वर सब दिशाओंमें
रक्षाकरते हैं वह सब इनएकादश रुद्रोंकेपुत्र पौत्रोंकेभी पुत्रकहे हैं ३२ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचमोऽध्यायः ५ ॥

सूतजीबोले अब कश्यपजीकी स्त्रियों से जो२ पुत्र उत्पन्नहुएहैं उनको कहतेहैं अदिति-दिति-दनु
अरिष्टा-सुरसा१ सुरभि-विनता-नम्रा-क्रोधवशा-इरा-कद्रू-विश्वामुनि यहतेरह तो कश्यपजीकी स्त्रियां
होतीभईं अब इनसे जो पुत्रहुए उनकोसुनो २ चाक्षुपमन्वन्तरमें कश्यपजीके पुत्र तुपितनाम देव-
ताहुए फिर वैवस्वत मनु के अन्त में कश्यपजी के बारह आदित्य उत्पन्नहुए ३ उनके नामयह हैं
इन्द्र धाता भृगु त्वष्टा मित्र वरुण यम विवस्वान् सविता पूषा अंशुमान् विष्णु यह सहस्र
किरणवाले बारह आदित्य मरीचिऋषि से उत्पन्नहोकर कश्यपजीके योगसे अदितिको उत्तमपुत्र
होकर प्राप्तहुए ४।५ और भृशाश्वऋषि के पुत्र देवप्रहरण नामसे विख्यातमनु मनु और कल्प-
कल्पके पीछे उत्पन्नहोते हैं और लनिभी होजाते हैं और यहभी सुनाजाता है कि कश्यपजी
से दितिनाम स्त्रीमें दोपुत्र उत्पन्नहुए ६। ७ जिनमें बड़ा हिरण्यकशिपु और दूसरा हिरण्याक्ष
था हिरण्यकशिपुके प्रह्लाद-अनुह्लाद-संह्लाद और ह्लाद यहचारपुत्रहुए ८ प्रह्लादके आयु-
ष्मान् शिवि वाष्कल और विरोचन यह चारपुत्रहुए फिर विरोचन के बलिहुआ और हे
ऋषिलोगो राजाबलिके सौ१०० पुत्रहुए उनमें सबसेबड़ा बाणासुरहुआ ९।१० और धृतराष्ट्र सूर्य्य
चन्द्र- चन्द्रांशु-तापन-निकुम्भ-नाभ गुर्वक्ष-कुक्षिभीम और विभीषणको आदि लेकर बहुतसे बाणा-

र्वास्त्रगणसंयुतः १२ तपसातोषितोयस्य पुरेवसतिशूलभृत्। महाकालत्वमगमत्साम्यं यश्चपिनाकिनः १३ हिरण्याक्षस्यपुत्रोऽभूदुलूकःशकुनिस्तथा। भूतसन्तापनश्चैवं महानाभस्तथैवच १४ एतेभ्यःपुत्रपौत्राणां कोटयःसप्तसप्ततिः। महाबलामहाकाया नानारूपामहौजसः १५ दनुःपुत्रशतंलेभे कश्यपाद्बलदर्पितम्। विप्रचित्तिःप्रधानोऽभूद्येषांमध्येमहाबलः १६ द्विमूर्द्धाशकुनिश्चैव तथाशंकुशिरोधरः। अयोमुखःशम्बरश्च कपिशोनामतस्तथा १७ मारीचिर्मेघवांश्चैव इरागर्भशिरास्तथा। विद्रावणश्चकेतुश्च केतुवीर्यःशतहृदः १८ इन्द्रजित्सप्तजिच्चैव वज्रनाभस्तथैवच। एकचक्रोमहाबाहुर्वज्राक्षस्तारकस्तथा १९ असिलोमापुलोमाच विन्दुर्बाणोमहासुरः। स्वर्भानुर्वृषपर्वाच एवमाद्यादनोःसुताः २० स्वर्भानोस्तुप्रभाकन्या शचीचैवपुलोमजा। उपदानवीमयस्यासीत्तथामन्दोदरीकुहूः २१ शर्मिष्ठासुन्दरीचैव चन्द्राचवृषपर्वणः। पुलोमाकालकाचैव वैश्वानरसुतेहिते २२ बह्वपत्येमहासत्वे मारीचस्यपरिग्रहे। तयोःषष्टिसहस्राणि दानवानामभूत्पुरा २३ पौलोमान्कालकेयांश्च मारीचोऽजनयत्पुरा। अवध्यायेऽमराणांवै हिरण्यपुरवासिनः २४ चतुर्मुखाल्लब्धवरास्तेहतावियेनतु। विप्रचित्तिःसैंहिकेयान् सिंहिकायामजीजनत् २५ हिरण्यकशिपोर्येवै भागिनेयास्त्रयोदश। व्यंसःकल्पश्चराजेन्द्रोनलोवातापिरेवच २६ इल्वलोनमुचिश्चैव श्वसृपश्चाजनस्तथा। नरकःकालनाभश्च

सुरके भाई होतेभये बाणासुरके शरीरमें हजार भुजाहुईं और सम्पूर्ण शस्त्र विद्याओंमें भी बड़ाकुशलथा ११। १२ जिसकी तपस्यासे प्रसन्नहोकर शिवजी उसीकेपुरमें बासकरतेरहे और बहुत काल पर्य्यन्त वह बाणासुर वहाँ रहकर शिवजीके समान गुणवाला होताभया १३ और दूसरेभाई हिरण्याक्षके उलूक शकुनि भूतसन्तापन और महानाभ यह चारपुत्रहुए १४ इसके अनन्तर इसके सबपुत्र पौत्रादिक ७७ किरोड़ होतेभये १५ और कश्यपजीके संयोगसे उनकी दनुनाम स्त्रीमें बड़े बलगर्वित सौ १०० पुत्र उत्पन्नहुए इनसबमें विप्रचित्तिनाम पुत्र बड़ाबलवान् विख्यातहुआ १६ इनके विशेष द्विमूर्द्धा-शकुनि-शंकु-शिरोधर-अयोमुख-शम्बर-कपिश-मारीचि-मेघवान्-इरागर्भ-शिरा-विद्रावण-केतु-केतुवीर्य-शतहृद-इंद्रजित् सप्तजित्-वज्रनाभ-एकचक्र-महाबाहु-वज्राक्ष-तारकासुर १७। १९असिलोमा-पुलोमा-विन्दु-बाण-महासुर-स्वर्भानु-वृषपर्वा इत्यादि नामवाले दनुके पुत्रहुए २०स्वर्भानुके प्रभानाम कन्याहुई-पुलोमाके शचीनाम कन्याहुई और मयअसुरके उपदानवी मन्दोदरी और कुहू यह तीन कन्यापैदाहुईं २१ वृषपर्वाअसुरके शर्मिष्ठा-सुन्दरी और चन्द्रा यह कन्याहुईं और पुलोमा और कालकानाम अग्निकी महापराक्रमी दोनोंकन्या कश्यपकेसंग विवाहीगईंथीं उनदोनों पुलोमा और कालकानाम कन्याओंमें कश्यपजीके प्रसंगसे साठहजार असुर उत्पन्नहुए वह असुरों से अजितहोकर हिरण्यपुरवासी दैत्यहुए २३। २४ ब्रह्माजीसे इनसबको वरमिले युद्धमें इनकी कभी पराजय न हुई और विप्रचित्ति दैत्य अपनी सिंहिका स्त्रीमें सैंहिकेय संज्ञक असुरोंको उत्पन्न करताभया २५ और व्यंस-कल्प-राजेन्द्र-नल-वातापि-इल्वल-नमुचि-श्वसृप-अजन-नरक-कालनाभ

सरमाणस्तथैवच २७ कालवीर्य्यश्चविख्यातो दनुवंशविवर्द्धनाः । संह्लादस्यतुदैत्यस्य निवातकवचास्स्मृताः २८ अवध्याःसर्वदेवानां गन्धर्व्वोरगरक्षसाम् । येहता भर्गमाश्रित्य त्वर्जुनेनरणाजिरे २९ षट्कन्याजनयामास ताम्रामारीचवीजतः । शूकी श्येनीचभासीच सुग्रीवीगृध्रिकाशुचिः ३० शूकीशूकानुलूकांश्च जनयामासधर्म्मतः । श्येनीश्येनांस्तथाभासी कुररानप्यजीजनत् ३१ गृध्रीगृध्रान्कपोतांश्च पारावतविहंगमान् । हंससारसक्रौञ्चांश्च प्लवान्शुचिरजीजनत् ३२ अजाश्वमेषोष्ट्रखरान् सुग्रीवीचाप्यजीजनत् । एषताम्रान्वयःप्रोक्तो विनतायांनिबोधत ३३ गरुडःपततांनाथो अरुणश्चपतत्रिणाम् । सौदामिनीतथाकन्या येयंनभसिविश्रुता ३४ सम्पातिश्च जटायुश्च अरुणस्यसुतावुभौ । सम्पातिपुत्रोबभ्रुश्च शीघ्रगश्चापिविश्रुतः ३५ जटायुषःकर्णिकार. शतगामीचविश्रुतौ । सारसीरज्जुबालश्च भेरुण्डश्चापितत्सुताः ३६ तेषामनन्तमभवत् पक्षिणांपुत्रपौत्रकम् । सुरसायाःसहस्रन्तु सर्पाणामभवत् पुरा ३७ सहस्रशिरसांकद्रूः सहस्रञ्चापिसुव्रत ! । प्रधानास्तेपुविख्याताः षट्विंशतिररिन्दम ! ३८ शेषवासुकिकर्कोट शंखैरावतकम्बलाः।धनञ्जयमहानील पद्माश्वतरतक्षकाः ३९ एलापत्रमहापद्म धृतराष्ट्रबलाहकाः । शंखपालमहाशंख पुष्पदंष्ट्रशुभाननाः ४० शंकुरोमाचबहुलो वामनःपाणिनस्तथा।कपिलोदुर्मुखश्चापि पतञ्जलिरितिस्मृताः४१

सरमाण और कलवीर्य यह तेरह असुर हिरण्यकशिपुके भानजेहोकर दानवोंके वंशके बढ़ानेवाले होतेभये संह्लाद दैत्यके निवात-कवच संज्ञक पुत्रहोतेभये २६ । २८ यह निवात कवच असुर सब देवता उरग गन्धर्व और राक्षसोंसेभी नहीं मारेगयेथे तब द्वापरमें आकर शिवजीकी सहायतासे अर्जुननेरणमें इनकावधकियाहै २९ कश्यपजीके योगसे ताम्राखीकेशूकी-श्येनी-भासी-सुग्रीवा गृध्रिका-शुचि यह छः कन्या उत्पन्नहुई ३० शूकीस्त्री के तोते और उल्लू पक्षी पैदाहुए श्येनीकेबाज पैदाहुए-भासीके चील्ह आदिक पक्षीहुए ३१ गृध्रीकस्त्रीके गिद्ध-कपोत-परेवा पक्षी पैदाहुए शुचिस्त्री के हंस सारस-कूजेपक्षी और मुर्गावी पक्षीहोतेहुए ३२ सुग्रीवाके बकरी घोड़े मेंढ़े ऊंट गधे आदि जीव उत्पन्नहुए यह तो ताम्राका वंश वर्णनहुआ अब विनताके वंशको कहते हैं ३३ विनताके कश्यपजीके संयोगसे पक्षियोंकाराजा गरुड़ सूर्य्यका सारथी अरुण और आकाशमें प्रसिद्ध एक सौदामिनीकन्या यह सन्तान उत्पन्नहुई ३४ यह अरुणभी पक्षियोंका राजाथा इसीसे इसके सम्पाती और जटायु यह दोपुत्र उत्पन्नहुए संम्पातीके बभ्रू और शीघ्रग यहदोपुत्रहुए और जटायुकेकर्णिकार और शतगामी नाम.दोपुत्रहुए इनदोनोंकेसारस रज्जुबाल और भेरुण्ड यहतीन पुत्रहुए३५।३६फिर इनसबपक्षियोंके अनन्तपुत्र पौत्रादिकहुए सुरसाके हजारसर्प उत्पन्नहुए ३७ कद्रूके हजार विच्छू और सर्पादिक उत्पन्नहुए हे सुव्रत इनसबसर्पोंमें छब्बीस सर्प विख्यातहुए ३८ उनके यह नाम हैं शेष वासुकि कर्कोट शंख ऐरावत कंबल धनंजय महानील पद्म अश्वतर तक्षक एलापत्र महापद्म धृतराष्ट्र बलाहक शंखपाल महाशंख पुष्पदंष्ट्र शुभानन शंकुलोमा बहुल वामन पाणिनि कपिल

एषामनन्तमभवत् सर्वेषांपुत्रपौत्रकम्। प्रायशोयत्पुरादग्धं जनमेजयमंदिरे ४२
दंष्ट्रिणांनियुतंतेषां भीमसेनादगात्क्षयम्। रक्षोगणंक्रोधवशा स्वनामानमजीजनत् ४३
रुद्राणाञ्चगणंतद्वद् गोमहिष्योवरांगनाः। सुरभिर्जनयामास कश्यपात्संयतव्रता ४४
मुनिर्मुनीनाञ्चगणं गणमप्सरसांतथा। तथाकिन्नरगन्धर्व्वानरिष्टाऽजनयद्बहून् ४५
तृणवृक्षलतागुल्ममिरासर्वमजीजनत्। विश्वातुयक्षरक्षांसि जनयामास कोटिशः ४६
ततएकोनपञ्चाशन्मरुतःकश्यपाद्दितिः। जनयामासधर्म्मज्ञान् सर्वानमरवल्लभान् ४७
इतिश्रीमत्स्यपुराणेकश्यपान्वयोनामषष्ठोऽध्यायः ६॥

(ऋषय ऊचुः) दितेःपुत्राःकथंजाता मरुतोदेववल्लभाः। देवैर्जग्मुश्चसापत्नैः कस्मात्ते
सख्यमुत्तमम् १ (सूत उवाच) पुरादेवासुरेयुद्धे हतेषुहरिणासुरैः पुत्रपौत्रेषुशोकार्त्ता गत्वाभू
लोकमुत्तमम् २ स्यमन्तपञ्चकेक्षेत्रे सरस्वत्यास्तटेशुभे। भर्तुराराधनपरा तपउग्रंचचा
रह ३ तदादितिर्दैत्यमाता ऋषिरूपेणसुव्रत!। फलाहारातपस्तेपे कृच्छ्रंचान्द्रायणादि
कम् ४ यावद्वर्षशतंसाग्रं जाताशोकसमाकुला। ततःसातपसातप्ता वसिष्ठादीनपृच्छत
५ कथयन्तुभवन्तोमे पुत्रशोकविनाशनम्। व्रतंसौभाग्यफलदमिहलोकेपरत्रच ६ ऊचु

दुर्मुखं और पतंजलि यह छब्बीस सर्पमुख्यहोते भये ३९। ४१ फिर इनसर्पों के अनन्तपुत्र पौत्रादिक होतेभये प्रथम इनसर्पोंमेंसे दशहजार सर्पोंका नाश तो भीमसेनके सम्बन्धसेहुआ फिर असंख्य सर्पोंको यज्ञमें जनमेजय ने भस्मकरवाया क्रोधवशास्त्रीके अपनेनामके अनुसार क्रोधवाले राक्षस उत्पन्नहुए और कश्यपजीकेही सकाशसे सुरभीसे गौ महिषी और सुन्दर स्त्रियां उत्पन्नहोती भईं ४२। ४४ मुनिनामस्त्री मुनियोंके गणोंको उत्पन्न करके अप्सरा गणोंकोभी उत्पन्न करतीभई अरिष्टास्त्रीसे बहुतसे किन्नर गन्धर्वादिक होतेभये ४५ इरानामस्त्री बहुतसे तृण गुल्म बेल लता आदिक बनस्पतियोंको उत्पन्न करतीभई विश्वास्त्री किरोड़ों यक्ष राक्षसोंको पैदाकरतीभई ४६ इसके अनन्तर दितिस्त्रीने कश्यपजीके संयोगसे बड़े धर्मज्ञ और सब देवताओंके प्यारे ४९ मरुद्गण संज्ञक देवताओंको उत्पन्न किया ४७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांकश्यपान्वयोनामषष्ठोऽध्यायः ६॥

शौनकादिऋषिबोले हेसूतजी दितिके पुत्र मरुद्गण देवताओंके प्यारे कैसे होतेभये क्योंकि देवताओंसे और दितिके पुत्र दैत्योंसे तो बड़ीभारी शत्रुताथी ऐसाहोनेपर इनका उत्तम स्नेहकैसे हुआ १ सूतजी बोले प्रथम देवता और दैत्योंके युद्धमें विष्णु भगवान्ने असुरोंको मारडाला तब पुत्र पौत्रादिकों के शोकसे पीड़ितहोकर उनकीमाताादिति इस पृथ्वीतलमें प्राप्त होतीभई २ और सरस्वती नदी के उत्तम तटपर स्यमन्तक नाम क्षेत्रमें अपने स्वामी के आरायनमें तत्पर होकर उग्रतपस्या करती भई ३ उससमय उसदितिने ऋषिकारूप धारणकरके फलोंका आहार करके चान्द्रायण व्रतकोकिया ४ इसकेपीछे उसने दिव्य सौ १०० वर्षतक तपस्याको करके पुत्रोंके शोकसे महापीड़ित होके वसिष्ठादिक ऋषियोंसे पूछा ५ कि आपसब ऋषिलोग मेरे पुत्रोंकेशोक नाशकरनेवाले ऐसे व्रतको बताओ जो कि इसलोकमें सुखका देनेवाला और परलोकमें हितका करनेवालाहोय ६ तब सब

वसिष्ठप्रमुखा मदनद्वादशीव्रतम्। यस्याःप्रभावादभवत् सुतशोकविवर्जिताः ७ (ऋषय ऊचुः) श्रोतुमिच्छामहेसूत! मदनद्वादशीव्रतम्। सुतानेकोनपञ्चाशद् येनलेभे दितिःपुनः ८ (सूतउवाच) यद्वसिष्ठादिभिःपूर्वं दितेःकथितमुत्तमम्। विस्तरेणतदेवेदं मत्सकाशान्निबोधत ९ चैत्रमासिसितेपक्षे द्वादश्यांनियतव्रतः। स्थापयेदव्रणंकुम्भं सिततण्डुलपूरितम् १० नानाफलयुतंतद्वदिक्षुदण्डसमन्वितम्। सितवस्त्रयुगच्छन्नं सितचन्दनचर्चितम् ११ नानाभक्ष्यसमोपेतं सहिरण्यन्तुशक्तितः। ताम्रपात्रंगुडोपेतं तस्योपरिनिवेशयेत् १२ तस्मादुपरिकामन्तु कदलीदलसंस्थितम्। कुर्य्याच्छर्करयोद्वयोपेतं रतिंतस्यचबामतः १३ गन्धंधूपंततोदद्याद् गीतंवाद्यञ्चकारयेत्। तदभावेकथांकुर्य्यात् कामकेशवयोर्नरः १४ कामनाम्नोहरेरर्चां स्नापयेद्गन्धवारिणा। शुक्लपुष्पाक्षततिलैरर्चयेन्मधुसूदनम् १५ कामायपादौसंपूज्य जङ्घेसौभाग्यदायच। ऊरूस्मरायेति पुनर्मन्मथायेतिवैकटिम् १६ स्वच्छोदरायेत्युदरमनङ्गायेत्युरोहरेः। मुखंपद्ममुखायेति वाहूपञ्चशरायवै १७ नमःसर्व्वात्मनेमौलिमर्चयेदितिकेशवम्। ततःप्रभातेतंकुम्भं ब्राह्मणायनिवेदयेत् १८ ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्या स्वयञ्चलवणादृते। भुक्त्वातुदक्षिणांदद्या

वसिष्ठादिक ऋषि उसको मदनद्वादशी १२ का व्रतवतलातेहुए और कहनेलगे कि इसद्वादशीकेव्रत से तू पुत्रों के शोकसे निवृत्त होजायगी ७ ऋषिबोले हे सूतजी हमभी उस मदन द्वादशी के व्रत को सुनने की इच्छाकरते हैं जिसके कि व्रतकरने से दिति के फिर ४९ पुत्रउत्पन्नहुए ८ सूतजी बोले कि जो वसिष्ठादिक मुनियों ने दितिको उत्तमव्रत बतायाथा उसको मैं विस्तारसे वर्णनकरताहूं तुम चित्तलगाकर सुनो ९ चैत्रशुक्ला द्वादशीको नियमपूर्व्वक व्रतधारण करके छिद्रादि रहित उत्तम कलशको श्वेत चांवलों से पूर्ण करे १० फिर उसको ऋतुफल और ईखके गांड़े से युक्तकर श्वेतवस्त्रों से आच्छादित करके श्वेतचंदन से चर्चितकरे ११ फिर अनेकप्रकार के भक्ष्यपदार्थों से और शक्तिके अनुसार सुवर्ण सहित गुड़से भरेहुए तांबेके पात्रको उसके ऊपर स्थापितकरे १२ उसके ऊपर केलेके पत्तेपर कामदेवकी मूर्त्ति स्थापितकरे उस मूर्त्तिको दोस्त्रियों की मूर्त्तिसे युक्त करे फिर कामदेव की मूर्त्तिके बामभाग में कामदेव की स्त्री रतिको स्थापितकरे १३ फिर चन्दनादिगंध धूप दीप नैवेद्यादि से पूजनकर गीत वाद्यकर कामदेव और श्रीकृष्णजी की कथाको वर्णनकरे १४ और कामदेवके नाम से हरि भगवानका पूजनकरे अर्थात् गन्धयुक्त जलसे विष्णुकी मूर्त्तिको स्नान करावे और सफेदचंदन सफेदपुष्प अक्षतआदि से मधुसूदन भगवान्का पूजनकरे १५ अब पूजनका क्रमसुनो कामायनमः ऐसा कहकर भगवान् के चरणोंका पूजनकरे सौभाग्यदायनमः ऐसा कहकर पिंडलियोंका पूजनकरे स्मरायनमः ऐसाकहके जंघाओं का पूजनकरे मन्मथायनमः इसमंत्रसेकमर का पूजनकरे १६ स्वच्छोदरायनमः यहकहके उदर का अनंगायनमः छाती को पद्ममुखाय नमः मुखको पंचशरायनमः बाहुओंको और सर्वात्मनेनमः ऐसाकहकर केशव भगवान् के मस्तकका पूजन करे इस रीति से भगवान् के अंगोंका पूजनकर फिर प्रातःकाल उठकर शुद्धतापूर्वक उसकलश को ब्राह्मणके अर्थदेदे १७। १८ फिर शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंका भोजनकरावे और आप अलोनाभो-

दिमंमन्त्रमुदीरयेत् १९ प्रीयतामत्रभगवान् कामरूपीजनार्दनः। हृदयेसर्वभूतानां य आनन्दोऽभिधीयते २० अनेनविधिनासर्वं मासिमासिव्रतंचरेत्। उपवासीत्रयोदश्याम र्चयेद्विष्णुमव्ययम् २१ फलमेकञ्चसम्प्राश्य द्वादश्याम्भूतलेस्वपेत्। ततस्त्रयोदशेमासि घृतधेनुसमन्विताम् २२ शय्यांदद्यादनङ्गाय सर्वोपस्करसंयुताम्। काञ्चनंकामदेवञ्च शुक्लांगाञ्चपयस्विनीम् २३ वासोभिर्द्विजदाम्पत्यं पूज्यंशक्त्याविभूषणैः। शय्यागन्धादिकंदद्यात् प्रीयतामित्युदीरयेत् २४ होमःशुक्लतिलैःकार्य्यः कामनामानिकीर्त्तयेत्। गव्येनहविषातद्वत् पायसेनचधर्म्मवित् २५ विप्रेभ्योभोजनन्दद्याद्वित्तशाठ्यंविवर्जयेत्। इक्षुदण्डानथोदद्यात् पुष्पमालाश्चशक्तितः २६ यःकुर्याद्विधिनानेन मदनद्वादशीमिमाम्। ससर्वपापनिर्मुक्तः प्राप्नोतिहरिसाम्यताम् २७ इहलोकेवरान्पुत्रान् सौभाग्यफलमश्नुते। यःस्मरःसंस्मृतोविष्णुरानन्दात्मामहेश्वरः २८ सुखार्थीकामरूपेण स्मरेदङ्गजमीश्वरम्। एतच्छ्रुत्वाचकारासौ दितिःसर्वमशेषतः २९ कश्यपोव्रतमाहात्म्यादागत्यपरयामुदा। चकारकर्कशांभूयो रूपयौवनशालिनीम् ३० वरैराच्छन्दयामास सातुवव्रेततोवरम्। पुत्रंशक्रवधार्थाय समर्थममितौजसम् ३१ वरयामिमहात्मानं सर्वामरनिषूदनम्। उवाचकश्यपोवाक्यमिन्द्रहन्तारमूर्जितम् ३२ प्रदास्याम्यहमेवेह किंत्वेत

जनकरें फिर भोजनकराकर जब दक्षिणादे तब इसमंत्रको उच्चारणकरे १९ अर्थात् इस वचन को कहै कि यहां वह कामरूपी भगवान् प्रसन्नहोयँ जो संपूर्ण प्राणियों के हृदय में आनन्दस्वरूप कहे जाते हैं २० इस संपूर्ण प्रकारसे विधिपूर्व्वक प्रतिमास व्रतकरे और इसव्रतका करनेवाला पुरुष त्रयोदशीके दिन विष्णुका पूजनकरे २१ औरद्वादशीके दिनएकफलका भोजनकरके पृथ्वीपरसोवै फिर बारह महीनेपीछे पुरुषोत्तम तेरहवें महीनेमें घृत धेनु अर्थात् घृतकी गौ बनाके उसका दानकरे २२ और कामदेवकी प्रीतिके निमित्त सब वस्तुओंसे युक्त शय्या दानकरे उस शय्यापर सुवर्णकी कामदेव की मूर्ति ब्राह्मणको देकर श्वेत गौकाभी विधि पूर्वक दानकरे २३ और शक्तिके अनुसारब्राह्मण ब्राह्मणीके जोड़ोंको जिमावै और उनका वस्त्राभरणसे पूजनकरे शय्यापरसुगन्धित वस्तुओंकाभी दान करे इसकेपीछे प्रसन्न होकर ब्राह्मणसे सुन्दर वचन बोले २४ कामदेवके नामोंका कीर्त्तन पूर्व्वक श्वेत तिल और गौके दूधकी खीरसे अग्निमें हवनकरे २५ फिर वित्तशाठ्य से रहित यथाशक्ति ब्राह्मणोंका भोजनकराके उनके अर्थ ईखके गांडे और पुष्पोंकी माला अर्पण करे २६ जो पुरुष इस विधिसे इसमदन द्वादशीको करता है वह सब पापोंसे छूटकर विष्णुमें लीनहोजाता है २७ और इसलोकमें उत्तम पुत्रोंको प्राप्तकरके अन्तमें सौभाग्य फलको भोगताहै जो कि कामदेवको विष्णु रूप आनन्दात्मा और महेश्वर रूपकहाहै २८ इसीसे सुखकी इच्छा करनेवाला मनुष्य उस विष्णु के शरीरसे उत्पन्न हुए कामदेवको ध्यानकरे इसप्रकार इस सब माहात्म्यकोदितिने सुनकर इस उत्तम व्रतको किया २९ तब इसव्रतके प्रभावसे उसके समीप बड़े आनन्दमें भरे कश्यपजी आये और तपस्यासे कृशांग होनेवाली उस दितिको रूप यौवनसे संयुक्तकरके यह कहतेभये कि वरदान मांग तब उस दितिने बड़े अतुलबलवाला सब देवताओं समेत इन्द्रकाभी मारनेवाला पुत्रमांगा यह

त्क्रियतांशुभे!। आपस्तम्बःकरोत्विष्टिं पुत्रीयामद्यसुव्रते! ३३ विधास्यामिततोगर्भमि न्द्रशत्रुनिषूदनम्। आपस्तम्बस्ततश्चक्रे पुत्रेष्टिन्द्रविणाधिकाम् ३४ इन्द्रशत्रुर्भवस्वे ति जुहावचसविस्तरम्। देवामुमुदिरेदैत्या विमुखाःस्युश्चदानवाः ३५ दित्यांगर्भमथा धत्त कश्यपःप्राहतांपुनः। त्वयायत्नोविधातव्यो ह्यस्मिन्गर्भेवरानने! ३६ सम्वत्सरश तंत्वेकमस्मिन्नेवतपोवने। सन्ध्यायांनैवभोक्तव्यं गर्भिण्यावरवर्णिनि! ३७ नस्थातव्यं नगन्तव्यं वृक्षमूलेषुसर्वदा। नोपस्करेषूपविशेन् मुसलोलूखलादिषु ३८ जलेचनावगा हेत शून्यागारञ्चवर्जयेत्। वल्मीकायांनतिष्ठेत नचोद्विग्नमनाभवेत्३९ विलिखेन्ननखै र्भूमिन्नाङ्गारेणनभस्मना। नशयालुःसदातिष्ठेद्व्यायामञ्चविवर्जयेत् ४० नतुषांगारभ स्मास्थि कपालेषुसमाविशेत्। वर्जयेत्कलहंलोकैर्गात्रभङ्गंतथैवच ४१ नमुक्तकेशाति ष्ठेत नाशुचिःस्यात्कदाचन। नशयीतोत्तरशिरा नचापरशिराःक्वचित् ४२ नवस्त्रहीना नोद्विग्ना नचार्द्रावरणासती। नामङ्गल्यांवदेद्वाचं नचहास्याधिकाभवेत् ४३ कुर्य्यात्तु गुरुशुश्रूषां नित्यंमाङ्गल्यतत्परा। सर्व्वौषधीभिःकोष्णेन वारिणास्नानमाचरेत् ४४कृत रक्षासुभूषाच वास्तुपूजनतत्परा। तिष्ठेत्प्रसन्नवदना भर्तुःप्रियहितेरता ४५ दानशी लातृतीयायां पार्वण्यंनक्तमाचरेत्। इतिवृत्ताभवेन्नारी विशेषेणतुगर्भिणी ४६ यस्तुत

सुनकर कश्यपजी बोले ३०। ३२ कि तुझे तवहीं बड़े अतुल पराक्रम और तेज ऐश्वर्य्य युक्त इन्द्रादि देवताओंका मारनेवाला पुत्रदूंगा जब कि तू इसतपको छोड़कर आपस्तंवनाम मुनिसे पुत्रसम्बन्धी यज्ञकरावेगी ३३ इसकेपीछे दितिने बहुतसा द्रव्य खर्चकरके आपस्तंबजीसे पुत्रेष्टियज्ञ करवाया और इन्द्रका शत्रुवढ़े ऐसे मंत्रोंसे यज्ञकी अग्निमें हवनकरवाया और जिस समय देवता प्रसन्न होरहेथे और दैत्य दानव विमुखहोरहेथे उस समयपर कश्यपजीने दितिकेगर्भ धारण किया और वहवचन भी दितिसे कहा कि हे बरानने तुझको इस गर्भका बड़ा यत्न करना चाहिये ३४। ३६ हे उत्तम बर्णवाली तुमको इसी तपोवनमें सौ १०० बर्षतक यत्नपूर्वक रहना चाहिये और गर्भिणी होकर तू कभी सन्ध्या समयमें भोजन न करियो ३७ वृक्षोंकी जड़मेंकभी जाकर न ठहरना और वुहारी मूसल और ऊखल इनके समीप कभी न वैठना ३८ जलमें कभी गोतानमारना सूने मकानमें न जाना सर्पकी वामीके पास खड़ी न होना और कभी तुझको उनमनी भी न होना चाहिये ३९ नखोंसे पृथ्वी न खोदना आगके कोयलेसे या राखसे कभी लकीरें न करना हर समय न सोना न किसीप्रकारकी कसरत करना ४० तुप अंगार भस्म अस्थि और कपाल इनपै पैर न रखना मनुष्योंसे कलह न करना अंगड़ाई न तोरना ४१ खुलेबालोंसे कभी न रहना अशुद्ध कभी न रहना उत्तरकीओर शिरकरके अथवा खट्वाकी पगोंतनकी ओर शिरकरके कभी न सोना ४२ नंगी न रहना शोकसे दुखी न रहना गलितवस्त्र न धारण करना अशुभ वचन न बोलना अधिक हास्य न करना ४३ गुरूकी और स्वामीकी सेवाकरना नित्य मंगलमें तत्पररहना सर्वौषधीयुक्त मन्दोष्ण जलसे स्नानकरना ४४ रक्षा विधान पूर्व्वक सुन्दर शृंगारकर वास्तु पूजनमें तत्पररहना प्रसन्न मुखरहना भर्त्ताके हितमें सदैव अनुरक्त रहना पर्वणीकी रात्रिमें दानकरनको तत्पररहना इन सब विधियोंसे

स्याभवेत्पुत्रः शीलायुर्वृद्धिसंयुतः। अन्यथागर्भपतनमवाप्नोतिनसंशयः ४७ तस्मात्
त्वमनयावृत्त्या गर्भेऽस्मिन्यत्नमाचर। स्वस्त्यस्तुतेगमिष्यामि तथेत्युक्तस्तयापुनः ४८
पश्यतांसर्वभूतानां तत्रैवान्तरधीयत। ततःसाकश्यपोक्तेन विधिनासमतिष्ठत ४९ अ
थभीतस्तथेन्द्रोऽपि दितेःपार्श्वमुपागमत्। विहायदेवसदनं तच्छुश्रूषुरवस्थितः ५०
दितेश्छिद्रान्तरप्रेप्सुरभवत्पाकशासनः। विनीतोऽभवदव्यग्रः प्रशान्तवदनोबहिः५१
अजानन्किलतत्कार्य्यमात्मनःशुभमाचरन्। ततोवर्षशतान्तेसा न्यूनेतुदिवसैस्त्रि
भिः ५२ मेनेकृतार्थमात्मानं प्रीत्याविस्मितमानसा। अकृत्वापादयोःशौचं प्रसुप्तामुक्त
मूर्धजा ५३ निद्राभरसमाक्रान्ता दिवापरशिराःक्वचित्। ततस्तदन्तरंलब्ध्वा प्रविष्टस्तु
शचीपतिः ५४ वज्रेणसप्तधाचक्रे तंगर्भंत्रिदशाधिपः। ततःसप्तैवतेजाताः कुमाराःसू
र्य्यवर्चसः ५५ रुदन्तःसप्तवेताला निषिद्धागिरिदारिणा। भूयोऽपिरुदतश्चैतानेकैकं
सप्तधाहरिः ५६ चिच्छेदवृत्रहन्तावै पुनस्तदुदरेस्थितः। एवमेकोनपञ्चाशद्भूत्वाते
रुरुदुर्भृशम् ५७ इन्द्रोनिवारयामास मारोदीष्टपुनःपुनः। ततःसचिन्तयामास किमेत
दितिवृत्रहा ५८ धर्म्मस्यकस्यमाहात्म्यात् पुनःसञ्जीवितास्त्वमी। विदित्वाध्यानयो
गेन मदनद्वादशीफलम् ५९ नूनमेतत्परिणत मधुनाकृष्णपूजनात्। वज्रेणापिहताः

स्त्रियोंको रहना योग्य है और गर्भिणी स्त्रीको तो इस विधिसे अवश्यही रहना योग्यहै ४५। ४६
इस विधिकेपीछे उसस्त्रीके जो पुत्र उत्पन्नहोगा वह उत्तम आयुवाला और वृद्धिसे युक्त होवेगा इस
के विपरीत रहनेमें निस्सन्देह गर्भपातहोजाता है ४७ इसी निमित्त तू इस गर्भकी इसविधिसे बड़े
यत्न पूर्व्वक रक्षाकर तेरा कल्याणहो अवमैं जाताहूं ऐसा कश्यपजीसे सुनकर उस दितिनेभी सब
बातोंको अंगीकार किया ४८ फिरसबके देखतेही देखते कश्यपजी वहीं अन्तर्द्धान होगये और दिति
नेभी अपने गर्भकी इसी विधिसे यत्न पूर्व्वक रक्षाकरी ४९ इसकेपीछे इन्द्र अत्यन्त भयभीत होकर
अपने स्वर्गको छोड़कर दितिके समीपरहकर उसीकी सेवाकरनेलगा ५० और दितिकेछिद्रोंके देखने
की इच्छा करके नम्रतासे बड़ाव्यग्रचित्त वाहरसे प्रसन्न भीतरसे म्लान होकर अपने कार्य्यको श्रे-
ष्ठ न जानकर शुभाचरण करने लगा जबइसी प्रकारसे सौ १००वर्ष व्यतीत होनेमें तीनदिनबाकी
रहगये तबवह दिति अपनेको धन्य और कृतार्थमानतीभई और बड़ीप्रसन्नता करके विस्मित चित्तसे
पैरोंकी शुद्धिकिये विना खुलेही वालोंसे एकदिन सो जाती भई ५१। ५२ और एक समय निद्रा
से व्याकुल होके दिनमेंही शय्यापर विपरीतिशयन करने लगी इस छिद्रको देखतेही इन्द्रने वहाँ
आकर अपने वज्रसे उसगर्भके सातखंड करदिये फिर सूर्य्यके समान तेजवाले सातखंडके सातपुत्र
होगये५४।५५और वहसातोंवेताल रोनेलगे तबइन्द्रने उनरोतेहुओंको बन्दकरके प्रत्येककेसात२टुकड़े
करदिये और वहगर्भ उसके उदरहीमें स्थितरहे इसरीतिके वहउनचासो समयपर उत्पन्नहोकर रोने
लगे ५६।५७ फिरभी इन्द्र उनको रोनेसे निवारण करताभयाकि तुम बारंबारमतरोवो और विचार
किया कि यहमेरे वज्रसे खंड२ होकरभी नहींमरे ऐसा कौनसाधर्म है जिसके कारण यहजीतेहीरहे
ऐसे बहुत ध्यान करनेसे जानाकि यह मदन द्वादशीका फल है और निश्चय करके जानलिया कि

सन्तो नविनाशमवाप्नुयुः ६० एकोऽप्यनेकतामाप यस्मादुदरगोप्यलम्। अवध्यानून मेतेवै तस्माद्देवाभवन्त्विति६१यस्मान्मारुदतेत्युक्ता रुदन्तोगर्भसंस्थिताः।मरुतोनाम तेनाम्ना भवन्तुमखभागिनः ६२ ततःप्रसाद्यदेवेशः क्षमस्वेतिदितिंपुनः। अर्थशास्त्रं समास्थाय मयैतद्दुष्कृतंकृतम् ६३ कृत्वामरुद्गणंदेवैः समानममराधिपः। दितिंविमान मारोप्य ससुतामनयद्दिवम् ६४ यज्ञभागभुजोजाता मरुतस्तेततोद्विजाः। न जग्मुरै क्यमसुरैरतस्ते सुरवल्लभाः ६५ इति श्रीमत्स्यपुराणेमरुदुत्पत्तौमदनद्वादशीव्रतंनाम सप्तमोऽध्यायः ७॥

(ऋषय ऊचुः) आदिसर्गश्चयः सूत! कथितोविस्तरेणतु। प्रतिसर्गश्चयेयेषा मधिपास्तान्वदस्वनः १.(सूत उवाच) यदाभिषिक्तस्सकलाधिराज्ये पृथुर्धरित्र्याम धिपोबभूव। तदौषधीनामधिपचकार यज्ञव्रतानांतपसाञ्चचन्द्रम् २ नक्षत्रताराद्विज वृक्षगुल्मलतावितानस्यचरुक्मगर्भः। अपामधीशंवरुणंधनानां राज्ञांप्रभुंवैश्रवणञ्च तद्वत्३ विष्णुंरवीणामधिपंवसूनामग्निञ्च लोकाधिपतिश्चकार। प्रजापतीनामधिपं चदक्षञ्चकार शक्रंमरुतामधीशम्४ दैत्याधिपानामथदानवानां प्रह्लादमीशञ्चयमंपितृ णाम्। पिशाचरक्षःपशुभूतयक्षवेतालराजन्त्वथशूलपाणिम् ५ प्रालेयशैलञ्चपतिंगि रीणामीशं समुद्रंसरिन्नदानाम्। गन्धर्वविद्याधरकिन्नराणामीशं पुनश्चित्ररथंचका

यह कृष्णके पूजन करने से वज्रसे भी हतहोकर नाशको नहीं प्राप्त हुए हैं ५८। ६० जोकि एकही गर्भ उदरमें अनेकताको प्राप्तहोगया इसहेतुसे इनका मरण निश्चयकरके किसी प्रकारसेभी नहीं होनेके योग्यहै यह अवश्य देवताहोने चाहियें ६१ जोकिमत रोवो इस निषेध करनेसेभी रोतेही रहे इसीसे मरुत्नामसे प्रसिद्ध होवेंगे और यज्ञमेंभी इनका भागहोगा ६२ ऐसा कहकर इन्द्र दितिको प्रसन्न करके यह वचन बोलाकि तुम क्षमाकरो मैंने अपने प्रयोजन के निमित्त यह दुष्कृत किया है ६३ तब इन्द्र इनमरुद्गणोंको देवताओंके समान करके उनपुत्रों समेत दितिको विमानमें बैठाकर स्वर्गमें लेआया ६४ हे द्विजलोगो तभीसे वह सबमरुद्गण यज्ञके भागको ग्रहण करतेभये औरदैत्यों में संयुक्त नहीं रहे और सबदेवताओंके प्यारे होतेभये ६५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां मरुदुत्पत्तौ मदनद्वादशीव्रतं नाम सप्तमोऽध्यायः ७॥

ऋषियोंनेपूछा–हेसूतजी महाराज आपने जोयह आदिसर्ग अर्थात् सृष्टिके आदिकी रचना कहीहै इसके प्रतिसर्ग समेत इनके जो अधिपहैं उन सबको हमारे आगे वर्णन कीजिये १ सूतजीबोले जब सम्पूर्ण पृथ्वीकाअधिपति राजा पृथुहोताभया अर्थात् सब पृथ्वीके राज्यका अभिषेक पृथुके अर्थ होता भया तब ब्रह्माजी ने यज्ञ व्रत और तप.इनकातो स्वामीचन्द्रमाको बनाया और नक्षत्र तारा द्विज वृक्ष गुल्म और वेलआदिका आपअधिकार लिया धनोंके अधिप कुबेर जलोंके वरुण आदित्यों के विष्णु–वसुओं समेत लोकोंकेअधिप अग्नि–प्रजापतियोंके दक्ष और मरुद्गणोंका अधिप इन्द्र होता भया २।४ दैत्यदानवोंका अधिप प्रह्लादको पितरोंका धर्मराजको करके राक्षस पिशाच भूत पशु यक्ष और वेताल इनसबका अधिपति शिवजीको किया ५ पर्व्वतों का राजा हिमाचल नदनदी आदिका

२६ नागाधिपंवासुकिमुग्रवीर्यं सर्पाधिपं तक्षकमादिदेश। दिशाङ्गजानामधिपञ्चकार ग जेन्द्रमैरावतनामधेयम् ७ सुपर्णमीशम्पततामथाश्व राजानमुच्चैःश्रवसञ्चकार। सिंहं मृगाणांवृषभंगवाञ्च वृक्षंपुनःसर्ववनस्पतीनाम् ८ पितामहःपूर्वमथाभ्यषिञ्चच्चैतान्पुनः सर्वदिशाधिनाथान्। पूर्वेणदिक्पालमथाभ्यषिञ्चन्नाम्ना सुधर्माणमरातिकेतुम् ९ ततोऽधिपंदक्षिणतश्चकार सर्वेश्वरंशंखपदाभिधानम्। सकेतुमन्तञ्चदिगीशमीशश्चकार पश्चाद्भुवनाण्डगर्भः १० हिरण्यरोमाणमुदग्दिगीशं प्रजापतिर्देवसुतञ्चकार। अद्यापि कुर्वन्तिदिशामधीशाः शत्रून्दहन्तस्तुभुवोभिरक्षाम् ११ चतुर्भिरेभिःपृथुनामधेयोनृपोऽभिषिक्तःप्रथमंपृथिव्याम्। गतेऽन्तरेचाक्षुषनामधेये वैवस्वताख्येचपुनःप्रवृत्ते १२ प्रजापतिःसोऽस्यचराचरस्य बभूवसूर्य्यान्वयवंशचिह्नः १३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे आधिपत्याभिषेचनं नामाष्टमोऽध्यायः ८॥

(सूत उवाच) एवंश्रुत्वामनुःप्राह पुनरेवजनार्दनम्। पूर्वेषाञ्चरितंब्रूहि मनूनांमधुसूदन! १ (मत्स्य उवाच) मन्वन्तराणिसर्वाणि मनूनांचरितञ्चयत्। प्रमाणञ्चैव कालस्यतच्छृणुष्वसमाहितः २ एकचित्तःप्रशान्तात्माशृणुमार्तण्डनन्दन!। यामानाम पुरादेवा आसन्स्वायम्भुवान्तरे ३ सप्तैवऋषयःपूर्वे ये मरीच्यादयस्स्मृताः। आग्नीध्र-

पति समुद्र गन्धर्व विद्याधर और किन्नरोंका अधिपति चित्ररथहोताभया पर्व्वतादिकों में रहनेवाले बड़े २ नाग सर्पादिकोंका राजा वासुकि सर्प और सबसर्पों काराजा तक्षक होताभया सबदिशाओं के हाथियोंकाराजा ऐरावत इन्द्रका हाथी पक्षियोंका राजा गरुड़ अश्वोंका उच्चैःश्रवा मृगोंका सिंहगौओं का राजा आंकिल वृषभ और वृक्षोंका राजा पीपलको बनाया ६। ८ इसरीतिसे ब्रह्माजी ने इन सबकहेहुए देवतादिकोंको अपने२ स्थानोंपर राज्यदिया अबसब दिशाओंके पृथक् २ अधिपतियों को कहताहूं—पूर्वदिशाका पतिसुधर्मानाम अराति केतुको बनाया ९ दक्षिण दिशाका राजा शंखपदनाम सर्वेश्वरको बनाया पश्चिमदिशाका राजा सकेतुमन्त ईश्वरको बनाया और हिरण्यरोम देवसुतको ब्रह्माजीने उत्तर दिशाकाराजा बनाया यह सबदिशाओंके पति अबभी सबशत्रुओंको दग्धकरते हुए सबपृथ्वीभरकी रक्षा करतेहैं इन चारोंदिशाओं के पतियों समेत सम्पूर्ण पृथ्वीके राज्यका अभिषेक राजा पृथुकोहोकर प्रथमही राज्य तिलकहुआ अर्थात् जब चाक्षुष मनुकाराज्य होचुका तब वैवस्वत मनु प्रवृत्तहुआ उससमय वह सूर्य्यवंशमें उत्पन्न होने वाला राजापृथु इस चराचर जगत्काप्रजापति होताभया १०। १३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामाधिपत्याभिषेचनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ८॥

सूतजीबोले कि इसरीतिसे मनुजी इसकथाको सुनकर फिर मत्स्यरूप विष्णु भगवान् से पूछते भये कि हे मधुसूदनजी आप कृपा करके पूर्वमें होनेवाले मनुओंके चरित्रोंको वर्णनकीजिये १ मत्स्यजीबोले-सब मनुओंके अन्तर, सबके कालके प्रमाण और सबके चरित्रोंको मैं कहताहूं २ हे सूर्य्य के पुत्र तुम एकाग्रचित्त और प्रशान्तात्मासे मनलगाकर सुनो कि प्रथम स्वायंभुवमनुके अन्तर में या-

श्चाग्निबाहुश्च सहःसवनएवच ४ ज्योतिष्मान्द्युतिमान्हव्यो मेधामेधातिथिर्वसुः।
स्वायम्भुवस्यास्यमनोर्दशैतेवंशवर्द्धनाः ५ प्रतिसर्गमिमेकृत्वा जग्मुर्यत्परमम्पदम्।
एतत्स्वायम्भुवम्प्रोक्तं स्वारोचिषमतःपरम् ६ स्वारोचिषस्यतनयाश्चत्वारोदेववर्चसः।
नभोनभस्यप्रसृति भानवःकीर्तिवर्द्धनाः ७ दत्तोनिश्च्यवनस्तम्वः प्राणःकश्यपएवच।
औवोंबृहस्पतिश्चैव सप्तैतेऋषयःस्मृताः ८ देवाश्चतुषितानाम स्मृताःस्वारोचिषेऽन्तरे॥
हव्यीन्द्रःसुकृतोमूर्तिरापोज्योतिरयस्मयाः ९ वसिष्ठस्यसुताःसप्तयेप्रजापतयःस्मृताः। द्वि
तीयमेतत्कथितं मन्वन्तरमतःपरम् १० औत्तमीयंप्रवक्ष्यामि तथामन्वन्तरंशुभम्। मनु
र्नामौत्तमिर्यत्र दशपुत्रानजीजनत् ११ ईषऊर्जश्चतर्जश्च शुचिःशुक्रस्तथैवच। मधुश्च
माधवश्चैव नभस्योऽथनभास्तथा १२ सहःकनीयानेतेषामुदारःकीर्तिवर्द्धन.। भावना
स्तत्रदेवाःस्यु रूर्जाःसप्तर्षयःस्मृता १३ कौकुरुण्डिश्चदाल्भ्यश्च शंखःप्रवहणःशिवः।
सितश्चसस्मितश्चैव सप्तैतेयोगवर्द्धनाः १४ मन्वन्तरंचतुर्थंतु तामसन्नामविश्रुतम्। क
विःपृथुस्तथैवाग्निरकपिःकपिरेवच १५ तथैवजल्पधीमानौ मुनयःसप्तनामतः। साध्या
देवगणायत्र कथितास्तामसेऽन्तरे १६ अकल्मषस्तथाधन्वी तपोमूलस्तपोधनः। तपो
रतितपस्यश्च तपोद्युतिपरन्तपौ १७ तपोभागीतपोयोगी धर्माचाररताःसदा। तामस
स्यसुताःसर्वे दशवंशविवर्द्धनाः १८ पञ्चमस्यमनोस्तद्वद्रैवतस्यान्तरंशृणु। ऐन्द्रबाहुः

मानामवाले देवता होतेभये और प्रथमहोनेवाले मरीच्यादिक ऋषि सप्तऋषि होकर विख्यातहुए और आग्नीध्र आग्निबाहु सहं सवनं ज्योतिष्मानं द्युतिमान् हव्यं मेधा मेधातिथि और वसु यह दश इस स्वायंभुव मनुके वंशको बढ़ानेवालेहुए ३। ५ यहसब प्रतिसर्ग अर्थात् अपनी२ रचना को रचके फिर परमपदको प्राप्तहोतेभये यह तो स्वायंभुव मनुकी रचनाकही इसके पीछे स्वारोचिष मनुहोता भया ६ स्वारोचिष मनुके देवताओंकी समान कांतिवाले चार पुत्र नभ-नभस्य-प्रसृति-और भानव-यह वंशवर्द्धननाम से विख्यातहुए और दत्त-निश्च्यवन स्तम्व-प्राण-कश्यप-और्व और बृहस्पति यह सप्तऋषिहुए ७। ८ स्वारोचिष मनुके अन्तरमें तुषितनाम के देवताहोतेभये और हव्यीन्द्र-सुकृत-मूर्ति-आप-ज्योति-अय-और स्मय यह सातवसिष्ठके पुत्र प्रजापति होतेभये इसप्रकार से यह दूसरा मन्वन्तर होताभया ९। १० अब औत्तमिनाम मन्वन्तरको सुनो-औत्तमिनामवाला मनु ईष ऊर्ज तर्ज शुचि शुक्र मधुमाधव नभस्य नभा और सहइननामवाले दशपुत्रोंको उत्पन्न करता भया ११ और इनके छोटेभाई उदार और कीर्त्तिवर्द्धन नाम उत्पन्नहुए उससमय भावनानामवाले देवताहोते भये और ऊर्ज संज्ञक सप्तऋषि होतेभये १२। १३ उसीकाल में कौकुरुंडि-दाल्भ्य-शंख प्रवहण-शिव-सित और सस्मित यह सात योगीश्वर होतेभये १४ चौथामनु तामसनाम हुआ उस के राज्यमें कवि-पृथु-अग्नि-अकपि-कपि-जल्प-और धीमान् यह सात ऋषिहोतेभये उससमय साध्य-संज्ञक देवताओंका पूजनहोताभया १५। १६ अकल्मषधन्वी-तपोमूल-तपोधन-तपोरति-तपस्य तपो द्युति-परंतप तपोभागी और तपोयोगी यह धर्माचरणवाले दशपुत्र तामस मनुके वंशवढ़ानेवाले उत्पन्न हुए १७। १८ अब पांचवें रैवतमनुके अन्तरको सुनो इसमनुके समयमें ऐन्द्रबाहु-सुबाहु

सुबाहुश्च पर्जन्यःसोमपोमुनिः १९ हिरण्यरोमासप्ताश्वः सप्तैतेऋषयःस्मृताः।देवा
श्चाभूतरजसस्तथाप्रकृतयःशुभाः २० अरुणस्तत्त्वदर्शीच धृतिमान्हव्यवान्कविः।
युक्तोनिरुत्सुकःसत्वो निर्मोहोऽथप्रकाशकः २१ धर्मवीर्यबलोपेता दशैतेरैवतात्मजाः।
भृगुःसुधामाविरजाः सहिष्णुर्नादएवच २२ विवस्वानतिनामाच षष्ठेसप्तर्षयोऽपरे।चा
क्षुषस्यान्तरेदेवा लेखानामपरिश्रुताः २३ ऋभवोऽथऋभाद्याश्च वारिमूलादिवौकसः।
चाक्षुषस्यान्तरेप्रोक्ता देवानाम्पञ्चयोनयः २४ रुरुप्रभृतयस्तद्वच्चाक्षुषस्य सुतादश।
प्रोक्ताःस्वायम्भुवेवंशे येमयापूर्वमेवतु २५ अन्तरंचाक्षुषंचैतन्मया तेपरिकीर्तितम्।सप्त
मंतत्प्रवक्ष्यामि यद्वैवस्वतमुच्यते २६ अत्रिश्चैववसिष्ठश्च कश्यपोगौतमस्तथा।भर
द्वाजस्तथायोगीविश्वामित्रःप्रतापवान् २७ जमदग्निश्चसप्तैते साम्प्रतंयेमहर्षयःकृत्वा
धर्म्मव्यवस्थानं प्रयान्तिपरमम्पदम् २८ साध्याविश्वेचरुद्राश्च मरुतोवसवोऽश्विनौ।
आदित्याश्चसुरास्तद्वत् सप्तदेवगणाःस्मृताः२९ इक्ष्वाकुप्रमुखाश्चास्यदशपुत्राःस्मृता
भुवि।मन्वन्तरेषुसर्वेषु सप्तसप्तमहर्षयः ३० कृत्वाधर्म्मव्यवस्थानंप्रयान्तिपरमम्पदम्।
सावर्ण्यस्यप्रवक्ष्यामि मनोर्भावितथान्तरम् ३१ अश्वत्थामाशरद्वांश्च कौशिकोगालव
स्तथा।शतानन्दःकाश्यपश्च रामश्चऋषयःस्मृताः३२धृतिर्वरीयान्यवसः सुवर्णोदृष्टिरे
वच।चरिष्णुरीड्यःसुमतिर्वसुः शुक्रश्चवीर्यवान् ३३ भविष्यादशसावर्णेर्मनोः पुत्राःप्र
कीर्त्तिताः।रौच्यादयस्तथान्येऽपि मनवःसम्प्रकीर्त्तिताः ३४ रुचेःप्रजापतेःपुत्रोरौच्यो

पर्जन्य सोमप मुनि हिरण्यरोमा और सप्ताश्व यह सात सप्तऋषि होतेभये और रजोगुणकी प्रकृति वालेभूत नाम देवताहोतेभये १९। २० इसरैवत मनुके अरुण-तत्त्वदर्शी-धृतिमान्-हव्यवान्-कवि-युक्त-निरुत्सुक सत्व-निर्मोह-और प्रकाशक यह दशपुत्रधर्मवीर्य्य और पराक्रमोंसे युक्त होकर उत्पन्न होतेभये और छठेमनुकेअन्तरमें भृगु-सुधामा-विरजा-सहिष्णु-नाद२१।२२विवस्वान् और अतिनाम यह सप्तऋषि होतेभये और चाक्षुष मनुके अन्तरमें लेखानामवाले देवताहोतेभये २३ इनके सिवाय ऋभव ऋभाद्य वारिमूला-और दिवौकस यह पांचयोनियों वाले देवताभी चाक्षुषमनुके अन्तर में हुए २४ और रुरुको आदि लेकर दशपुत्र भी इनचाक्षुषमनुके होतेभये दशहीपुत्र स्वायंभुवमनु के भी होतेभये इसरीतिसे यह चाक्षुषमनुका अन्तर मैंने तेरे आगेकहा अब वैवस्वत नाम सातवें मनु कावर्णन करते हैं उसको सुनो २५।२६ अत्रि वसिष्ठ कश्यप गौतम भरद्वाज विश्वामित्र और जमदग्नि यह जो सातों ऋषि आजकल भी वर्त्तमानहैं वह भी धर्मकी व्यवस्था करके परमपदको प्राप्त होजातेहैं २७।२८ साध्या विश्वेदेवा रुद्रा मरुद्गणा वसव अश्विनीकुमार और आदित्य यहसात देवताओंके गणहोतेभये और इक्ष्वाकु आदिक दशपुत्र इस वैवस्वतमनुके होतेभये सब मन्वन्तरों में सातसात महर्षिहोतेहैं और सातोंधर्मकी व्यवस्थाकरके परमपदको प्राप्तहोजाते हैं इसमनुकेपीछे सावर्णिनाम मनुकेजन्मको कहतेहैं २९।३० सावर्णिमनुके राज्यमें अश्वत्थामा-शरद्वान्-कौशिकी-गालव शतानन्द-काश्यप और राम यह सप्तऋषिहुए३१।३२ और धृति-वरीयान्-यवस-सुपर्ण-दृष्टि-चरिष्णु-ईड्य-सुमति-वसु-शुक्र और वीर्य्यवान् यह दशपुत्र सावर्णिमनुके होंयगे इसमनुके सिवायरौच्या-

नामभविष्यति। मनुर्भूतिसुतस्तद्वद्भौत्योनामभविष्यति ३५ ततस्तुमेरुसावर्णिर्ब्रह्मसू
र्नुर्मनुःस्मृतः। ऋतश्चऋतधामाच विष्वक्सेनोमनुस्तथा ३६ अतीतानागताश्चैते म
नवःपरिकीर्तिताः। षड्नंयुगसाहस्रमेभिर्व्याप्तंनराधिप! ३७ स्वेस्वेऽन्तरेसर्वमिदमुत्पा
द्य सचराचरम्। कल्पक्षयेविनिर्वृत्ते मुच्यन्तेब्रह्मणासह ३८ एतेयुगसहस्रान्ते विनश्य
न्ति पुनःपुनः। ब्रह्माद्याविष्णुसायुज्यं यातायास्यन्तिवैद्विजाः ३९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेमन्वन्तरानुकीर्तनं नामनवमोऽध्यायः ९॥

(ऋषय ऊचुः) बहुभिर्धरणीभुक्ता भूपालैःश्रूयतेपुरा। पार्थिवाःपृथिवीयोगात् पृ
थिवीकस्ययोगतः १ किमर्थञ्चकृतासंज्ञा भूमेःकिंपारिभाषिणी। गौरितीयञ्चविख्याता
सूत! कस्माद्ब्रवीहिनः २ (सूत उवाच) वंशेस्वायम्भुवस्यासीदङ्गोनामप्रजापतिः।
मृत्योस्तुदुहितातेन परिणीतासुदुर्मुखा ३ सुनीथानामतस्यास्तु वेनोनामसुतःपुरा। अ
धर्म्मनिरतश्चासीद्बलवान्वसुधाधिपः ४ लोकेऽप्यधर्म्मकृज्जातः परभार्यापहारकः।
धर्म्माचारस्यसिद्ध्यर्थं जगतोऽथमहर्षिभिः ५ अनुनीतोऽपिनददावनुज्ञांसयदाततः।
शापेनमारयित्वैनमराजकभयार्दिताः ६ ममन्थुर्ब्राह्मणास्तस्य बलाद्देहमकल्मषाः। त
त्कायान्मथ्यमानात्तु निपेतुर्म्लेच्छजातयः ७ शरीरेमातुरंशेन कृष्णाञ्जनसमप्रभाः।
पितुरंशस्यचांशेन धार्मिकोधर्म्मचारिणः ८ उत्पन्नोदक्षिणाद्धस्तात्स धनुःसशरोगदी।

दिक अन्यभी मनुकहेहैं ३३। ३४ रुचिनाम प्रजापतिका पुत्ररौच्यनामसे विख्यात होगा भूतिका
पुत्र भौत्यनाम से विख्यातहोगा ३५ फिर ब्रह्माका पुत्र सुमेरु सावर्णिनाम होगा और ऋत–ऋत-
धामा और विष्वक्सेन यहतीनों मनुवारंवार होचुके और होतेहैं और होवेंगे हे राजन् यह सब चौ-
दहमनु ९९४ युगोंतक भोगतेहैं अर्थात् एक १ मनु इकहत्तरयुगोंतक रहताहै यहांयुगके कहनेसे दिव्य-
युगोंको जानना ३६।३७ अपने२ युगोंमें अपनी२ रचनासे यहसबमनु इसचराचर जगत्को रचतेहैं
फिर कल्पके अन्तमें ब्रह्माजी समेत सबमोक्षको प्राप्तहोतेहैं यहसबमनु हजारयुगोंके अन्तमें वारंवार
नष्ट होतेहैं और अन्तको ब्रह्माजी समेत विष्णुभगवान्में सायुज्यमोक्षको प्राप्तहोजातेहैं ३८। ३९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां मन्वन्तरानुकीर्तनंनाम नवमोऽध्यायः ९॥

ऋषियोंने पूछा-हे सूतजी पहले बहुतसे राजा लोगोंने इसपृथ्वीपर राज्यकिया है और सबराजा
पृथ्वीके योगसे पार्थिव कहातेहैं यह पृथ्वी किसके योगसे कहाती है और इस भूमिकी गौ संज्ञा किस
कारणसे हुईहै यह सब हमारे आगे वर्णन कीजिये १। २ सूतजी बोले हे द्विजवर्य्यलोगो स्वायम्भुव
नाम मनुके वंशमें अंगनाम एकप्रजापति होताभया उसने महादुर्मुखा सुनीथानाम मृत्युकी पुत्री से
अपना विवाह किया ३ उस अंगके योगसे सुनीथानाम स्त्रीमें वेननाम पुत्रहुआ उसकेपीछे वही सं
म्पूर्ण पृथ्वीका राजाहुआ परन्तु वह वेन अपनीमाताके अंशसे सदैव अधर्मका कर्त्ता महा पापी पर-
स्त्रीगामी और प्रजाको अनेक प्रकारकी पीड़ा देनेवाला हुआ उसको महर्षि लोगोंने जगत्के धर्माच-
रणकी सिद्धिके और प्रजाके सुखके निमित्त अनेक प्रकारकी शिक्षाभीकरी परन्तु वह किसी प्रकारसे
भी न माना तब तो सब ब्राह्मणोंने उसको शापदेकर मारडाला फिर राज्यके भयसे उन परहित

दिव्यतेजोमयवपुः सरत्नकवचांगदः ९ पृथोरेवाभवद्यत्नात् ततःपृथुरजायत। सविप्रै
रभिषिक्तोऽपि तपःकृत्वासुदारुणम् १० विष्णोर्वरेणसर्वस्य प्रभुत्वमगमत्पुनः। निः
स्वाध्यायवषट्कारं निर्धर्मंवीक्ष्यभूतलम् ११ दग्धुमेवोद्यतःकोपाच्छरेणामितविक्रमः।
ततोगोरूपमास्थाय भूःपलायितुमुद्यता १२ पृष्ठतोऽनुगतस्तस्याः पृथुर्दीप्तशरासनः।
ततःस्थित्वैकदेशेतु किंकरोमीतिचाब्रवीत् १३ पृथुरप्यवदद्वाक्यमीप्सितंदेहिसुव्रते!।
सर्वस्यजगतःशीघ्रं स्थावरस्यचरस्यच १४ तथैवसाब्रवीद्भूमिर्दुदोहसनराधिपः। स्वंके
पाणौपृथुर्वत्सं कृत्वास्वायम्भुवंमनुम् १५ तदन्नमभवच्छुद्धं प्रजाजीवन्तियेनवै। ततस्तु
ऋषिभिर्दुग्धावत्सःसोमस्तदाभवत् १६ दोग्धाबृहस्पतिरभूत्पात्रं वेदस्तपोरसः। दे
वैश्चवसुधादुग्धादोग्धामित्रस्तदाभवत् १७ इन्द्रोवत्सःसमभवत् क्षीरमूर्जस्करंबलम्।
देवानांकाञ्चनंपात्रंपितॄणांराजतंतथा १८ अन्तकश्चाभवद्दोग्धा यमोवत्सःस्वधारसः।
अलाबुपात्रंनागानांतक्षको वत्सकोऽभवत् १९ विषंक्षीरंततोदोग्धा धृतराष्ट्रोऽभवत्पुनः।
असुरैरपिदुग्धेयमायसेशक्रपीडिनीम् २० पात्रेमायाममूद्वत्सः प्राह्लादिस्तुविरोचनः।
दोग्धाद्विमूर्धातत्रासीन्मायायेनप्रवर्त्तिता २१यक्षैश्चवसुधादुग्धापुरान्तर्द्धानमीप्सुभिः।

ब्राह्मणोंने उस वेनके शरीरको मथनकिया उसके मथनेसे उसके शरीरमें जो माताका अंशथा उस अंशके प्रभावसे काले काजलके समान म्लेच्छ जातिके मनुष्य उत्पन्नहुए और पिताके अंशकेकारण उसके दक्षिणहाथसे धर्मका प्रवर्त्तक हाथोंमें धनुषवाणलिये दिव्य और रूपतेजसेयुक्त सुन्दररत्नमयी वाजूवन्द आदि आभूषणोंसे अलंकृत एक परम धार्मिक पुरुष उत्पन्नहुआ उसीको ब्राह्मणोंने पृथुनाम धरकर राज्यपर अभिषेक किया इसके अनन्तर उसपृथुने बड़ाउत्तम तपकिया तब विष्णुजीके वरदानसे वह सम्पूर्ण पृथ्वीका राजाहुआ उस समय इस पृथ्वीपर स्वाध्याय और वषट् कर्मादि धर्मों को न देखकर अतुलवल वाले राजापृथुने क्रोधहोके पृथ्वीको अपने वाणों करके दग्धकरनेका विचारकिया तब यह भूमिगौका रूपधारण करके पृथुके आगे होकरभागी और राजाभी अपने अत्यन्ततेज वाले धनुषवाणको लेकर उसकेपीछेभागा तब वह गौ एकस्थानपर स्थितहोकर यह वचनबोली कि हे महाराज मैं क्याकरूं ४।१३ तबपृथुने कहा कि हे सुव्रते तू सम्पूर्ण चराचर जगत्के हितके निमित्त मेरे मनोवाञ्छित फलको सिद्धकर राजाके इस वचनको सुनकर पृथ्वीनेकहा तथास्तु अर्थात् ऐसाही होगा उस समय राजापृथुने उस गौरूपा पृथ्वीका बछड़ा मनुको बनाकर उसको अपने हाथोंपरही दुहा १४। १५ तब प्रजाका जीवनरूप शुद्ध अन्न उत्पन्नहुआ फिर चन्द्रमाको बछड़ा बनाकर ऋषियोंने उसगौको दोहा और बृहस्पतिजीनेभी दोहा तब वेदपात्रहुए और रस उत्पन्नहुआ फिर जबदेवों ने पृथ्वीको दोहा तब सूर्य्य दोहनेवाला हुआ और इन्द्र बछड़ाबना उस समय बल और तेजरूपी दूध उत्पन्नहुआ जबकाल दोहनेवालाहुआ उस समय यमको बछड़ा देवताओंको सुवर्णका पात्र और पितरोंको चाँदीकापात्र बनाकर अमृतरस उत्पन्न किया और नागोंने तूंबीकापात्र और तक्षक को बछड़ा बनाकर विषरूपी दूधको दोहा-इसकेपीछे इन्द्रको पीड़ादेनेके लिये धृतराष्ट्र और दैत्योंने भी लोहेका पात्रबनाकर उस गौको दोहा उसपात्रमें माया उत्पन्नहुई जब द्विमूर्द्धा असुर दोहनेवाला

कृत्वावैश्रवणंवत्समामपात्रेमहीपते ! २२ प्रेतरक्षोगणैर्दुग्धा धारारुधिरमुल्वणम् । रौ
प्यनाभोऽभवद्दोग्धा सुमालीवत्सएवतु २३ गन्धर्वैश्चपुरादुग्धा वसुधासाप्सरोगणैः ।
वत्संचैत्ररथंकृत्वागन्धान्पद्मदलेतथा २४ दोग्धावररुचिर्नामनाट्यवेदस्यपारगः । गि
रिभिर्वसुधादुग्धारत्नानिविविधानिच २५ औषधानिचदिव्यानि दोग्धामेरुर्महाचलः ।
वत्सोऽभूद्धिमवांस्तत्र पात्रंशैलमयंपुनः २६ वृक्षैश्चवसुधादुग्धा क्षीरंछिन्नप्ररोहणम् ।
पालाशपात्रदोग्धातु शालःपुष्पलताकुलः २७ प्लक्षोऽभवत्ततोवत्सः सर्ववृक्षोधनाधिपः।
एवमन्यैश्चवसुधातदादुग्धायथेप्सितम् २८ आयुर्धनानिसौख्यञ्च पृथौराज्यंप्रशास
ति । नदरिद्रस्तदाकश्चिन्नरोगी नचपापकृत् २९ नोपसर्गभयंकिञ्चित् पृथौराजनिशा
सति । नित्यंप्रमुदितालोका दुःखशोकविवर्जिताः ३० धनुष्कोट्याचशैलेन्द्रानुत्सार्य्य
समहाबलः । भुवस्तलंसमंचक्रेलोकानांहितकाम्यया ३१ नपुरग्रामदुर्गाणि नचायुधध
रानराः । क्षयातिशयदुःखञ्च नार्थशास्त्रस्यचादरः ३२ धर्मैकवासनालोका पृथौ रा
ज्यंप्रशासति । कथितानिचपात्राणि यत्क्षीरञ्चमयातव ३३ येषांयत्ररुचिस्तत्तद्दे

प्रह्लाद और विरोचन बछड़ेभये तब द्विमूर्द्धा ने माया प्रवृत्तकरी १६ । २१ प्रथम गुप्त विचरने की इच्छा करनेवाले यक्षोंने पृथ्वीको दोहा तब कुबेर बछड़ा और कच्ची मृत्तिकाकापात्र बनाया २२ तब नाना माया उत्पन्नहुई जब प्रेत राक्षसोंने पृथ्वीको दोहा तब रौप्यनाभ दुहनेवाला और सुमाली बछड़ाहुआ उस समय उल्वण रुधिरकीधारा उत्पन्नहुई २३ प्रथम अप्सरा और गन्धर्वगणों नेभी जब पृथ्वीको दोहाथा उससमय चैत्ररथ गन्धर्वको बछड़ा और पद्मकेपत्रका पात्र बनायाथा २४ वहाँ नाट्य विद्याका जाननेवाला वररुचिनाम ऋषि दोहनेवालाथा उससे शृंगारहुए जब पर्वतों करके पृथ्वी दोहीगई तब अनेक प्रकारके रत्न उत्पन्नहुए २५ जब बड़ा बलवान् सुमेरु पर्व्वत दोहनेवालाहुआ उस समय हिमवान् बछड़ाहुआ और शिलारूपीपात्रमें औषधियां उत्पन्न हुई २६ जब, वृक्षोंने पृथ्वीको दोहा तब अंकुरोंमें निकसनेवाला दूध उत्पन्न हुआ उस समय ढाककेपत्तोंका पात्र बनायाथा जब पुष्पोंवाली लताओं समेत सालकावृक्ष दोहनेवालाहुआ तबपिलखनका वृक्ष बछड़ा था उसी समयसे वह सालवृक्ष सब वृक्षों के धनका अधिप होकर सबसे ऊंचाहुआ इसरीतिसे इस पृथ्वीको इनसबने और अन्य२ नेभी दोहा-२७। २८ जब राजापृथु राज्यकरताथा उससमय आयुष और धन सबको प्राप्तहुआ उसके समयमें कोईभी दरिद्री रोगी और पाप करनेवाला न हुआ २९ पृथुके राज्यमें चौरादिकोंकाभी भय न हुआ सब लोग दुःख शोकसे रहित होकर सदैव प्रसन्न रहते थे ३० वह महाबल वीर्य्यवाला राजा अपने धनुषके अग्रभागसे पर्व्वतोंको साफकरके प्रजाके सुख के निमित्त पृथ्वीतलको समान करताथा ३१ उसराजाके उत्तम प्रबन्ध और भयसे उसराज्यके पुर ग्रामादिमें भी बाहरके चौरादिक बचावके लिये कोई किला गढ़आदि नहीं बनवातेथे और न कोई किसीके भयसे शस्त्रोंको धारण करताथा उसके समयमें सबके दुःखोंका ऐसा नाशहोगयाथा कि अपनेभी प्रयोजनके निमित्त किसीको कोई उपाय नहींकरना पड़ताथा ३२ सब प्रजामात्रकी धर्ममें ही निष्ठा होगईथी पृथ्वी दोहनेके समय जिन २ लोगोंके जो२ पात्रबने और दूधउत्पन्न हुआ उन २

यंतेभ्योविजानता। यज्ञश्राद्धेषुसर्वेषु मयातुभ्यंनिवेदितम् ३४ दुहितृत्वञ्चतायस्मात् पृ
थोर्धर्म्मवतोमहीम्। तदानुरागयोगाच्च पृथिवीविश्रुताबुधैः ३५ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे वैन्याभिवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः १० ॥

(ऋषय ऊचुः) आदित्यवंशमखिलं वदसूत! यथाक्रमम्। सोमवंशञ्चतत्त्वज्ञ!
यथावद्वक्तुमर्हसि १ (सूत उवाच) विवस्वान्कश्यपात्पूर्वमदित्यामभवत्सुतः। तस्य
पत्नीत्रयंतद्वत्संज्ञाराज्ञीप्रभातथा २ रैवतस्यसुताराज्ञी रेवतंसुषुवेसुतम्। प्रभाप्रभातं
सुषुवेत्वाष्ट्रीसंज्ञातथामनुम् ३ यमश्चयमुनाचैव यमलौतुबभूवतुः। ततस्तजोमयंरूप
मसहन्तीविवस्वतः ४ नारीमुत्पादयामासस्वशरीरादनिन्दिताम्। त्वाष्ट्रीस्वरूपेणनाम्ना
छायेतिभामिनीतदा ५ किङ्करोमीतिपुरतः स्थितांतामभ्यभाषत। छाये! त्वंभजभर्तार
मस्मदीयंवरानने! ६ अपत्यानिमदीयानि मातृस्नेहेनपालय। तथेत्युक्तातुसादेवमग
मत्कापिसुव्रता ७ कामयामासदेवोऽपि संज्ञेयमितिचादरात्। जनयामासतस्यांतु पुत्र
ञ्चमनुरूपिणम् ८ सवर्णत्वाच्चसावर्णिर्म्मनो वैवस्वतस्यच। ततःशनिंचतपतींविष्टिं
चैवक्रमेणतु ९ छायायांजनयामास संज्ञेयमितिभास्करः। छायास्वपुत्रेभ्यधिकं स्नेहंचक्रे
मनौतथा १० पूर्वोमनुस्तुचक्षामनयमः क्रोधमूर्च्छितः। सन्तर्जयामासतदा पादमुद्यम्य

की प्रसन्नताके अर्थ यज्ञोंमें और श्राद्धोंमें वही वही देना योग्य है यह सब विधिमैंने तुमसे वर्णन करी ३३। ३४ इस धर्मात्मा पृथुराजाको यह पृथ्वी पुत्रीभावसे प्राप्त होतीभई इसी योगके कारण से इसभूमिकानाम पृथ्वी विख्यातहुआ ३५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां वैन्याभिवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १०॥

ऋषियोंनेपूछा-हे सूतजी आप यथार्थ क्रमसे सूर्य्यवंश और चन्द्रवंशको वर्णन कीजिये १ सूतजी बोले-प्रथम अदितिस्त्रीमें कश्यपजीसे सूर्य्य उत्पन्नहुए उनकी संज्ञा राज्ञी और प्रभा यह तीनों नाम वाली तीन स्त्रियां होतीभई २ इनमें वह रैवतकीपुत्री राज्ञीनाम सूर्य्यकीस्त्रीने रेवतनाम पुत्रको उ-त्पन्न किया प्रभास्त्रीने प्रभातनामपुत्र उत्पन्न किया और संज्ञानाम स्त्री ने मनुनामपुत्रको उत्पन्न किया और इसीस्त्रीने यम और यमुना इनदोनों पुत्र पुत्रियोंकोभी उत्पन्नकिया फिर वह संज्ञास्त्री जब सूर्य्यके तेजको न सहतीभई तब उसने अपने शरीरसे छायानाम बड़ी उत्तमस्त्रीको उत्पन्न किया ३। ५ वह छायानामस्त्री संज्ञाके आगे खड़ी होकरबोली कि मैं क्याकरूं तब संज्ञानेकहा कि हे वरानने तू इसमेरेपति सूर्य्यकोही भज और मेरीसन्तानको माताके समान अपना स्नेहकरके पा-लनकर फिर तथास्तु अर्थात् ऐसाही करूंगी इसप्रकारसे अंगीकारकर वहछाया सूर्य्यको प्राप्तहुई ६।७ तब सूर्य्यभी उसको संज्ञाकेही समान जानकर बड़े आदरभावसे उसके संग भोग करनेलगे उस में दूसरा मनुनामपुत्र हुआ यह मनु पूर्वके मनुका सवर्णीहोकर सावर्णिनाम मनु विख्यातहुआ-फिर उसीछायामें सूर्य्यसे शनैश्चर तपती और विष्टि यहसन्तान उत्पन्नहुई ८।९ इसके अनन्तर वहछाया अपने पुत्र सावर्णिनाम मनुमें अधिक स्नेह करनेलगी इसबातको प्रथम मनुने तो सहलिया परन्तु

दक्षिणम् ११ शशापचयमंछाया सक्षतःकृमिसंयुतः। पादोऽयमेकोभविता पूयशोणित
विस्रवः १२ निवेदयामासपितुर्धर्म्मं.शापादमर्षितः। निष्कारणमहंशप्तो मात्रादेव! स
कोपया १३ बालभावान्मयाकिञ्चिदुद्यतश्चरणःसकृत्। मनुनावार्यमाणापि ममशाप
मदाद्विभो! १४ प्रायोनमातासास्माकं शापेनाहंयतोहतः। देवोऽप्याहयमंभूयः किङ्करो
मिमहामते! १५ मौर्ख्यात्कस्यनदुःखंस्यादथवाकर्म्मसन्ततेः। अनिवार्य्योभवस्यापि
काकथान्येषुजन्तुषु १६ कृकवाकुर्म्मयादत्तो यःकृमीन्भक्षयिष्यति। क्लेदञ्चरुधिरञ्चै
व वत्सायमपनेष्यति १७ एवमुक्तस्तपस्तेपे यमस्तीव्रंमहायशाः। गोकर्णतीर्थेवैराग्या
त् फलपत्रानिलाशनः १८ आराधयन्महादेवं यावद्वर्षायुतायुतम्। वरंप्रादान्महादेवः
सन्तुष्टःशूलभृत्तदा १९ वव्रेसलोकपालत्वं पितृलोकेनृपालयम्। धर्म्माधर्म्मात्मकस्या
पि जगतस्तुपरीक्षणम् २० एवंसलोकपालत्वमगमच्छूलपाणिनः। पितॄणाञ्चाधिप
त्यञ्च धर्म्माधर्म्मस्यचानघ! २१ विवस्वानथतज्ज्ञात्वा संज्ञायाःकर्म्मचेष्टितम्। त्वष्टुः
समीपमगमदाचचक्षेचरोषवान् २२ तमुवाचततस्त्वष्टा सान्त्वपूर्वंद्विजोत्तमाः। तवास
हन्तीभगवन्! महस्तीव्रंतमोनुदम् २३ वडवारूपमास्थाय मत्सकाशमिहागता। नि
वारितामयासातु त्वयाचैवदिवाकर! २४ यस्मादविज्ञाततया मत्सकाशमिहागता। त

यम न सहसके और महाक्रोधितहोकर यमने उसछायाके पुत्र मनुको दाहिन पैरसे ताडन किया ११ तब छायाने यमको यह शापदियाकि यहतेरा पैर पीपयुक्त कीटोंसे भरे घाववाला होकर राधसेभिरे १२ फिर यम इसशापको न सहकरके अपने पिताके पास जाकर यह बोलेकि हेदेव माताने मुझे निरपराध शापित करदियाहै मैंने बालकपनेसे जरापैरको उठादियाथा उससमय मनुने उसकोनिषेधभी कियाथा परन्तु उसने शापदेहीदिया १३।१४ हेविभो जोकि उसने हमको शापसे हतकरदियाहै इस हेतुसे वह विशेषकरके हमारीमाता नहीं है तब सूर्य्यने कहाकि हेमहामते मैंक्याकरूं १५ मूर्खतासे अथवा कर्मके प्रभावसे कहो किसको दुःखनहींहोताहै शिवजीसेभी कर्मकी रेखा दूरनहींहोतीहै तो अन्यजनोंकी क्याबातहै १६ हेपुत्र मैंतुझे मुरगादूंगावह तेरेकृमियोंको भक्षण करके राधरुधिरकोभी खाकर दूरकरदेगा १७ पिताके इस वचनको सुनकर यम दारुण तपस्या करने लगे अर्थात् गोकर्ण तीर्थपर जाके सब वस्तुओंको त्याग फल मूल पत्र और वायु इनका आहार करने लगे १८ वहाँदश किरोड़ वर्षोंतक यमने महादेवजीका तपकिया तबशूलधारी शिवजी उसपर प्रसन्नहोकर बोले किवर मांग तबयमने संसारकेकियेहुए पापपुरायोंको जानलेनाही वरमांगा १९।२० इसप्रकारकरके वह यम शिवजीके प्रभावसे लोकपालहोजाताभया फिर अधर्मोंकाभी जानने वालाहोकर सब पितरोंकापति होताभया २१ इसकेपीछे सूर्य्यदेवता प्रथमकियेहुए संज्ञाके कर्मको जानकर उसके पितात्वष्टाकेपास गये औरक्रोधहोकर उससे बोले २२ कि तुम्हारी पुत्रीने मेरी विनाआज्ञा ऐसाकर्मकिया यह सुनकर हेऋषियो उस त्वष्टाने सूर्य्यको समझाकरकहाकि हे भगवन् यह मेरीपुत्री आपके तेजको न सहकर घोड़ीकारूप धारण करके मेरे समीप आईथी सो हेसूर्य्यदेव मैंने उससे यहकहकर उसको लौटादिया कि सूर्य्यकी आज्ञालिये विना जो तू मेरे घरआई है इस हेतुसे तू मेरे घरमें प्रवेश करनेको योग्य

स्मान्मदीयंभवनं प्रवेष्टुंनत्वमर्हसि २५ एवमुक्ताजगामाथ मरुदेशमनिन्दिता। वडवा
रूपमास्थाय भूतलेसम्प्रतिष्ठिता २६ तस्मात्प्रसादंकुरुमे यद्यनुग्रहभागहम्। अपने
ष्यामितेतेजो यन्त्रेकृत्वादिवाकर! २७ रूपंतवकरिष्यामि लोकानन्दकरम्प्रभो!। तथे
त्युक्तःसरविणा भ्रमौकृत्वादिवाकरम् २८ पृथक्चकारतत्तेजश्चक्रंविष्णोरकल्पयत्।
त्रिशूलञ्चापिरुद्रस्य वज्रमिन्द्रस्यचाधिकम् २९ दैत्यदानवसंहर्तुः सहस्रकिरणात्मकम्।
रूपञ्चाप्रतिमञ्चक्रे त्वष्टापद्भ्यामृतेमहत् ३० नशशाकाथतद्द्रष्टुं पादरूपंरवेःपुनः।
अर्चास्वपिततःपादौ नकश्चित्कारयेत्क्वचित् ३१ यःकरोतिसपापिष्ठां गतिमाप्नोतिनि
न्दिताम्। कुष्ठरोगमवाप्नोति लोकेस्मिन्दुःखसंयुतः ३२ तस्माद्धर्म्मकामार्थी चित्रेष्वा
यतनेषुच। नकचित्कारयेत्पादौ देवदेवस्यधीमतः ३३ ततःसभगवान्गत्वा भूर्लोक
ममराधिपः। कामयामासकामार्तो मुखएवदिवाकरः ३४ अश्वरूपेणमहता तेजसाच
समावृतः। संज्ञाचमनसाक्षोभमगमद्भयविह्वला ३५ नासापुटाभ्यामुत्सृष्टं परोऽयमिति
शङ्कया। तद्रेतसस्ततोजातावश्विनाविितिनिश्चितम् ३६ दस्रौसुतत्वात्संजातौ नास
त्यौनासिकाग्रतः ३७ ज्ञात्वाचिराच्चतंदेवं सन्तोषमगमत्परम्। विमानेनागमत्स्वर्गं पत्या
सहमुदान्विता ३८ सावर्णोऽपिमनुर्मेरावद्याप्यास्तेतपोधनः। शनिस्तपोबलादाप ग्रह

नहींहै २३।२५ इसमेरेवचनको सुनकर वह मरुस्थलदेशमें जाकरघोड़ीके रूपको धारणकरकेपृथ्वी में विचरती है इसहेतुसे आप प्रसन्नहोकर मेरे ऊपर दयाकरो हे दिवाकरजी मैं आपके तेजको यन्त्रमें करके पृथक् करदूंगा और आपके रूपको मनुष्योंका आनन्द करनेवाला भी करदूंगा तब सूर्य्यनेकहा ऐसाहीकरो तब उस त्वष्टाने सूर्य्यके तेजको यन्त्रमें करके सूर्य्य से पृथक् करदिया फिर उसी पृथक् कियेहुए सूर्य्यके तेजसे विष्णुकाचक्र शिवजीका त्रिशूल इन्द्रकावज्र और अन्य२ देवताओंके अनेक शस्त्रोंकोवनाया २६।२९ इसके अनन्तर दैत्यदानवोंके नाशकर्त्ता सम्पूर्णमूर्तिसे रहित सूर्य को सहस्र किरणवाले विनापैरके सुन्दरमुखमात्रहीरूपको त्वष्टाने ऐसावनाया कि फिर उससूर्य्यके पैरोंके रूप देखनेकोभी त्वष्टासमर्थ न हुआ तभीसे सूर्य्यकी प्रतिमामें कोईउनके पैरोंकी मूर्त्तिको नहींवनवाताहै और जो कोई हठसे वा मूर्खतासे उनके पैरोंकी मूर्त्ति वनवाताहै वह पापियोंकी महानिन्दितगतिको प्राप्तहोकर इस संसारके कठिनदुःखोंको भोगताहुआ कुष्ठरोगको प्राप्तहोताहै ३०।३२ इसहेतुसे धर्म कामादिकी इच्छाकरनेवाला मनुष्य किसी मन्दिर वा स्थानमें किसी स्थानपरभी सूर्य्यकीमूर्त्तिमें पैर न वनवावे ३३ इसके उपरान्त सूर्य्य देवता उसी मुखकेही रूपसे कामदेवसे पीड़ित होकर पृथ्वी-लोकमें जाकर उस संज्ञाकी इच्छा करतेभये ३४ और वड़े तेजवाले घोड़ेका रूप वनाकर उसघोड़ी-रूप संज्ञाकेपास पहुंचे तवसंज्ञामनसे क्षोभको प्राप्तहोकर भयसे विह्वलहोतीभई और उससूर्य्यसेही धारण कियेहुये वीर्य्यको पर पुरुषकी शंकाकरके अपनी नासिकाके दोनोंछिद्रों के द्वारावाहर त्याग-तीभई उसीवीर्य्यसे अश्विनीकुमारउत्पन्न होतेभये ३५।३६ अश्वसे उत्पन्न होनेसेउनको "दस्रौ" कहते हैं और नासिकाके द्वाराहोनेसे "नासत्यौ" ऐसाभीकहतेहैं ३७ फिरवहसंज्ञा वहुतकालमें सूर्य्यको जा-नकर परमसंतोष युक्तहोके अपनेपतिके साथ विमानोंमें वैठकर विचरती भई ३८ और सावर्णिमनु

साम्यंततःपुनः ३९ यमुनातपतीचैव पुनर्नद्यौबभूवतुः। विष्टिर्घोरात्मिकातद्वत्कालत्वे नव्यवस्थिता ४० मनोर्वैवस्वतस्यासन् दशपुत्रा महाबला।इलस्तुप्रथमस्तेषां पुत्रेष्ट्यां समजायत ४१ इक्ष्वाकुःकुशनाभश्च अरिष्टोधृष्णएवच। नरिष्यन्तःकरूषश्च शर्य्यातिश्चमहाबलः ४२पृषध्रश्चाथनाभागःसर्वेतेदिव्यमानुषाः ४३ अभिषिच्यमनुःपुत्रमिलंज्येष्ठंसधार्मिकः। जगामतपसेभूयः समहेन्द्रवनालयम् ४४ अथदिग्जयसिध्यर्थं मिलःप्रायान्महीमिमाम्। भ्रमन्द्वीपानिसर्वाणि क्ष्माभृतःसम्प्रधर्षयन् ४५ जगामोपवनंशम्भोरश्वाकृष्टःप्रतापवान्। कल्पद्रुमलताकीर्णं नाम्नाशरवणंमहत् ४६ रमतेयत्रदेवेशः शम्भुःसोमार्द्धशेखरः। उमयासमयस्तत्र पुराशरवणेकृतः ४७ पुन्नामसत्त्वंयत्किंचिदागमिष्यतितेवने। स्त्रीत्वमेष्यतितत्सर्वं दशयोजनमण्डले ४८ अज्ञातसमयोराजा इल·शरवणेपुरा। स्त्रीत्वमापविशन्नेव वडवात्वंहयस्तदा ४९ पुरुषत्वंहृतंसर्वं स्त्रीरूपेविस्मितोनृपः। इलेतिसाभवन्नारी पीनोन्नतघनस्तनी ५० उन्नतश्रोणिजघना पद्मपत्रायतेक्षणा। पूर्णेन्दुवदनातन्वी विलासोल्लासितेक्षणा ५१ मूलोन्नतायतभुजा नीलकुंचितमूर्धजा। तनुलोमासुदशना मृदुगंभीरभाषिणी ५२ शुभगौरेणवर्णेन हंसवारणगामिनी। कार्मुकभ्रूयुगोपेता तनुताम्रनखांकुरा ५३ भ्रमन्तीचवनेतस्मिन् चिन्तयामासभामिनी। कोमेपिताथवाभ्राता कामेमाताभवेदिह ५४ कस्यभर्तुरहंदत्ताकियद्वत्स्यामिभूत

भी तप करताहुआ सुमेरुपर्व्वतपर विचरताहै और तपकेही प्रभावसे सूर्य्यकेपुत्र शनैश्चर भी ग्रहभावको प्राप्तहुए ३९ यमुना और तापती यहदोनोंनदियां होगईं और विष्टि घोररूप कालकी व्यवस्थामें स्थितहै उसीको भद्राभी कहतेहैं ४० वैवस्वतमनुके बड़ेबलवीर्य्य वाले दशपुत्रहुए उनसबमें पुत्रेष्टि यज्ञमेंहोनेवाला प्रथम इलनामपुत्रहै वहीसबसे बड़ाहै ४१ और इक्ष्वाकु-कुश-नाभ-अरिष्ट-धृष्ण-नरिष्यन्त-करूष-शर्य्याति-पृषध्र और नाभाग यह उसके नौछोटेभाई हैं इनसबको दिव्यमानुष कहतेहैं ४२। ४३ फिर वह धार्मिकमनु अपने प्रथम औरबड़े इलनामपुत्रको अपनेराज्यका अभिषेक करकेमहेन्द्रवनमें तपस्याके निमित्त जाताभया ४४ तबइसइलने दिग्विजय करके पृथ्वीके सबराजाओं को अपने आधीन करलिया ४५ एक समय वह इल अपनेघोड़ेके वेगसे कल्पद्रुमोंकीलता आदिकोंसे आकीर्ण उस शरवण नामवाले शिवजीके उपवनमें प्राप्त होताभया ४६ जहां कि देवेश शिवजी महाराज पार्वतीसमेत वासकरते हैं उसवनमें जो कोई पुरुषजाताथा वह स्त्री होजाताथा वह वन चालीसकोसकाथा ४७। ४८ वह विनाजाननेवाला राजा इल उसवनमें पहुंचतेही स्त्री बनगया और उसकाघोड़ाभी घोड़ीहोगया जब इनदोनोंका पुरुषपनाजातारहा तब स्त्रीरूप होजाने से राजा इलको बड़ा आश्चर्य्यहुआ और वह इलसे इलानाम उन्नतकुचोंवाली स्त्री होगई ४९।५० अर्थात् उन्नत नितम्ब श्रेष्ठ जंघा कमलपत्रके समान नेत्र पूर्णचन्द्रमाके समान मुख और कोमल अंगरूप वाली स्त्री होगई ५१ लंबीभुजा अतिश्यामकेश कोमल रोमावलि-सुन्दरदंतावली-मृदु और गंभीर बोलन ५२ सुन्दर गौरवर्णी हंस और हस्तिनी के समान गमन करनेवाली धनुषके समान सुन्दर भृकुटियों से युक्त और ताम्रनखी ५३ ऐसीस्त्री होकर उसवनमें भ्रमण करनेलगी और विचारनेलगी

ले। इतिचिन्तयतीदृष्टासोमपुत्रेणसांगना ५५ इलारूपसमाक्षिप्तमनसावरवर्णिनीम्।
बुधस्तदाप्तयेयत्न मकरोत्कामपीड़ितः ५६ विशिष्टाकारवान्दण्डी सकमण्डलुपुस्तकः।
वेणुदण्डकृतानेक पवित्रकगणित्रकः ५७ द्विजरूपःशिखीब्रह्म निगदन्कर्णकुण्डलः।
वटुभिश्चान्वितोयुक्तैः समित्पुष्पकुशोदकैः ५८ किलान्विषन्वनेतस्मिन्नाजुहावसतामि
लाम्। बहिर्वनस्यान्तरितः किलपादपमण्डले ५६ ससम्भ्रममकस्मात्तां सोपालम्भ
मिवावदत्। त्यक्ताग्निहोत्रशुश्रूषां क्वगतामन्दिरान्मम ६० इयंविहारवेलाते ह्यतिक्राम
तिसाम्प्रतम्। एह्येहिपृथुसुश्रोणि! सम्भ्रान्ताकेनहेतुना ६१ इयंसायंतनीवेला विहार
स्येहवर्तते। कृत्वोपलेपनंपुष्पै रलंकुरुगृहंमम ६२ सात्वब्रवीद्विस्मृताहं सर्वमेतत्तपोध
न!। आत्मानंत्वाञ्चभर्तारं कुलञ्चवदमेनघ ६३ बुधःप्रोवाचतांतन्वी मिलात्वंवरव
र्णिनि!। अहञ्चकामुकोनाम बहुविद्योबुधःस्मृतः ६४ तेजस्विनःकुलेजातः पितामेब्रा
ह्मणाधिपः। इतिसातस्यवचनात् प्रविष्टाबुधमन्दिरम् ६५ रत्नस्तम्भसमायुक्तं दिव्य
मायाविनिर्मितम्। इलाकृतार्थमात्मानं मेनेतद्भवनस्थिता ६६ अहोवृत्तमहोरूप महो
धनमहोकुलम्। ममचास्यचमेभर्तुरहोलावण्यमुत्तमम् ६७ रेमेचसातेनसममति का
लमिलाततः। सर्वभोगमयेगेहे यथेन्द्रभवनेतथा ६८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकादशोऽध्यायः ११॥

कि कौनमेरापिता कौन भ्राता कौन माता और कौनमेरा भर्त्ता है ५४ मैं पृथ्वीपर कहांवसूंगी इस प्रकार चिन्तवन करतीहुई उस इलास्त्रीको चन्द्रमाके पुत्र बुधने देखा ५५ और उसको देखतेही कामसे पीड़ितहो उसमें अपनेमनको लगा उसकी प्राप्तिके लिये अपनी इच्छाकरी ५६ और दण्ड कमण्डलु पुस्तकधारण किये वेणु दण्ड आदि अनेकपवित्र वस्तुओंसे युक्त कानोंमें कुण्डलोंको पहरे हुए वेदका उच्चारण करता समिध् पुष्प-कुशाजल इत्यादि यज्ञ सामग्रियोंसे और मायारूपी केशोंसे ढकाहुआहोकर उस वनके एकान्त वृक्षों में उस इलास्त्री को बुलावताभया ५७। ५९ और अकस्मात् भ्रमको प्राप्तहोकर भड़कनेके प्रकारसे बोला कि तू अग्निहोत्रकी सेवाको त्यागके मेरेमन्दिरसे कहाँ चलीगई है अब यह विहारके समयकी क्रीड़ा व्यतीतहुई जाती है हेसुन्दर कटिवाली तू किसकारणसे भयभीत होरहीहै ६०। ६१ अब सायंकालका समयहै तुझको यहाँ आकर क्रीड़ाकरना योग्यहै इनचन्दनपुष्पादिसे मेरेघरको शोभितकर यह सुनकर वह बोली हे तपोधन मैं विस्मृतसी होरहीहूं इससे आपमुझको और मेरे कुलको बताइये ६२। ६३ तब बुधबोले कि हे उत्तम वर्णवाली तेरा इलानामहै और मैं बहुतसी विद्याओंसे युक्त बुधनामसे विख्यातहूं ६४ मैं तेजस्वी कुलमें होकर चन्द्रमाकापुत्रहूं इसप्रकारके उसके वचनोंको सुनकर वह इला बुधकेघरमें प्रवेश करगई ६५ दिव्यमायासे रचेहुए रत्नमयस्तंभोंसेयुक्त ऐसे उत्तमगृहमें प्रवेशितहोकर वह इला अपनेको कृतार्थ मानती भई यह बोली कि मेरे वृत्त-रूप पतिको धन-कुल और दोनों की लावण्यताको भी धन्यहै ६६। ६७ ऐसे प्रसन्नहोकर वह इला सम्पूर्ण भोगों से युक्त इन्द्रभवनके समान बुधके गृह में बहुत कालतक बुधसे रमण करतीभई ६८॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकादशोऽध्यायः ११॥

(सूतउवाच) अथान्विषन्तोराजानंभ्रातरस्तस्यमानवाः। इक्ष्वाकुप्रमुखाजग्मुस्त दाशरवणान्तिकम् १ ततस्तेददृशुःसर्वे वडवामग्रतःस्थिताम्। रत्नपर्याणकिरण दीप्त कायामनुत्तमाम् २ पर्याणप्रत्यभिज्ञानात् सर्वेविस्मयमागताः। अयंचन्द्रप्रभोनाम वा जीतस्यमहात्मनः ३ अगमद्वडवारूपमुत्तमंकेनहेतुना। ततस्तुमैत्रावरुणिं पप्रच्छु स्तेपुरोधसम् ४ किमित्येतदभूच्चित्रंवदयोगविदांवर!। वसिष्ठश्चाब्रवीत्सर्वंदृष्ट्वातद्ध्या नचक्षुषा ५ समयःशम्भुदयिता कृत शरवणेपुरा। यःपुमान्प्रविशेदत्र सनारीत्वमवा प्स्यति ६ अयमश्वोऽपिनारीत्व मगाद्राज्ञासहैवतु। पुनः पुरुषतामेति यथासौधनदो पमः ७ तथैवयत्नःकर्तव्यश्चाराध्यंवपिनाकिनम्। ततस्तेमानवाजग्मुर्यत्रदेवोमहेश्व रः ८ तुष्टुवुर्विविधैस्तोत्रैः पार्वतीपरमेश्वरौ। तावूचतुरलंघ्योऽयं समयःकिन्तुसाम्प्र तम् ९ इक्ष्वाकोरश्वमेधेन यत्फलंस्यात्तदावयोः। दत्त्वाकिम्पुरुषोवीरः सभविष्यत्यसं शयम् १० तथेत्युक्तास्ततस्तेस्तु जग्मुर्वैवस्वतात्मजाः। इक्ष्वाकोश्चाश्वमेधेन चेलः किम्पुरुषोऽभवत् ११ मासमेकम्पुमान्वीरः स्त्रीचमासमभूत्पुनः। बुधस्यभवनेतिष्ठन्नि लोगर्भधरोऽभवत् १२ अजीजनत्पुत्रमेकमनेकगुणसंयुतम्। बुधश्चोत्पाद्यतंपुत्रं स्व र्लोकमगमत्ततः १३ इलस्यनाम्नातद्वर्षं मिलावृतमभूत्तदा। सोमार्कवंशयोरादाविलोऽ भून्मनुनन्दनः १४ एवंपुरूरवाःपुंसोरभवद्वंशवर्द्धनः। इक्ष्वाकुरर्कवंशस्य तथैवोक्तस्त

सूतजीबोले-हे ऋषिलोगो इसके अनन्तर उस इलराजाको इक्ष्वाकु आदिक इलके छोटेभाई शरवणनाम वनके समीपमें जाकर ढूंढनेलगे १ तब सूर्य्यकी किरणों के समान आगे खड़ीहुई उस घोड़ीको देखतेभये २ और ऐसे उत्तम रूपवाली उस घोड़ीको देखकर वह सब आश्चर्यको प्राप्तहुए और परस्परमें कहनेलगे कि यह चन्द्रप्रभानामघोड़ा राजाइलकाहै ३ यह घोड़ीके रूपको किसकार-णसे प्राप्तहोगया तब वसिष्ठनाम अपने पुरोहितसे पूछनेलगे ४ कि हे योगियोंमें श्रेष्ठ यहक्या आ-श्चर्य्य है इसको आप विचारपूर्वक कहिये तब वसिष्ठजी ने अपने ज्ञानसे सब वृत्तान्तको जानकर यह वचनकहा ५ कि किसीसमय पार्वतीजीने यह कहाथा कि जो इसवनमें पुरुषआवेगा वह स्त्री होजायगा ६ इसहेतुसे वह राजाइल और घोड़ादोनों स्त्रीरूप होगये हैं अब यह इला जिसरीतिक-रके कुंवरके समान पुरुषहोजाय वही यत्नकरो अर्थात् शिवजीको प्रसन्नकरो यह सुनकर मनुके पुत्र जहाँ शिवजी महाराज विराजमानथे वहाँगये ७। ८ और अनेकप्रकारके स्तोत्रोंसे पार्वती समेत शिवजीको प्रसन्नकरतेभये तब शिवजीने कहा कि इससमय तुम कोईभी इसवनमें मतआओ यह इक्ष्वाकु अपने अश्वमेध यज्ञका फलहमको जब देगा तब यह राजा इल किम्पुरुषरूपहोके यज्ञमें उ-त्पन्नहोकर निस्सन्देह जन्मलेगा ९। ११ इस शिवजीके वचनोंको मानकर वह सबमनुके पुत्रवहाँ से लौटआये फिर इक्ष्वाकुने अश्वमेध यज्ञ करके जब शिवके अर्पण किया उस समय यज्ञमें चेल नाम किन्नर उत्पन्नहुआ वह एकमहीने तक पुरुषरहा और एकमहीने तक स्त्री होके बुधके घरमें स्थितरहा और गर्भ को धारण करता भया १२ फिर उस स्त्री में अनेक गुणरूप से युक्त पुत्र को उत्पन्नकरके बुध देवता स्वर्गको जातेभये १३ इसहितुसे वहइलावर्त्त नाम द्वीपकहाता है इसप्र-

पोधनाः १५ इलःकिम्पुरुषत्वेच सुद्युम्नइतिचोच्यते । पुनःपुत्रत्रयमभूत् सुद्युम्नस्याप
राजितम् १६ उत्कलोवैगयस्तद्वद्धरिताश्वश्चवीर्य्यवान्। उत्कलस्योत्कलानाम गयस्य
तुगयामता १७ हरिताश्वस्यदिक्पूर्वा विश्रुताकुरुभिःसह । प्रतिष्ठानेभिषिच्याथ सपु
रूरवसं सुतम् १८ जगामेलावृतंभोक्तुं वर्षंदिव्यफलाशनम्। इक्ष्वाकोर्ज्येष्ठदायादो मध्य
देशमवाप्तवान् १९ नरिष्यन्तस्यपुत्रोऽभूच्छुचोनाममहाबलः। नाभगस्याम्बरीषस्तु धृ
ष्टस्यचसुतत्रयम् २० धृतकेतुश्चित्रनाथो रणधृष्टश्चवीर्य्यवान्। आनर्तोनामशर्य्यातेः
सुकन्याचैवदारिका २१ आनर्तस्याभवत्पुत्रो रोचमानःप्रतापवान्। आनर्तोनामदेशोऽ
भून्नगरीचकुशस्थली २२ रोचमानस्यपुत्रोऽभूद्रेवो रैवतएवच। ककुद्मीचापरान्नाम ज्ये
ष्ठःपुत्रशतस्यच २३ रेवतीतस्यसाकन्या भार्यारामस्यविश्रुता । करूषस्यतुकारूषा ब
हवःप्रथिताभुवि २४ पृषध्रोगोवधाच्छूद्रो गुरुशापादजायत । इक्ष्वाकुवंशंवक्ष्यामि शृ
णुध्वमृषिसत्तमाः २५ इक्ष्वाकोःपुत्रतामाप विकुक्षिर्नामदेवराट्। ज्येष्ठःपुत्रशतस्यासी
द्दशपञ्चचतत्सुताः २६ मेरोरुत्तरतस्तेतु जाताःपार्थिवसत्तमाः। चतुर्दशोत्तरञ्चान्य
च्छ्रुतमस्यतथाभवत् २७ मेरोर्दक्षिणतोयेवै राजानःसम्प्रकीर्त्तिताः । ज्येष्ठःककुत्स्थो
नाम्नाऽभूत्तत्सुतस्तुसुयोधनः २८ तस्यपुत्रःपृथुर्नाम विश्वगश्चपृथोःसुतः । इन्दुस्त

कार सूर्य्यवंश और चन्द्रवंशकी आदिमें मनुकापुत्र इलहोताभया १४ इसरीतिसे चन्द्रवंशमें तो पु-
रूरवानाम वंश विस्तृत होताभया और सूर्य्यवंशमें इक्ष्वाकुराजाका वंशविस्तृतहोताभया १५ वहइल
किंपुरुष योनिमें सुद्युम्ननामसे प्रसिद्धहुआ उससुद्युम्नके महापराक्रमी उत्कल गय औरहरिताश्व यह
तीनपुत्र उत्पन्नहुए इनमेंसे उत्कलका उत्कलदेश और गयका गयनाम देश विख्यातहुआ और राजा
हरिताश्व पूर्वदिशामें कुरुवंशी राजाओंकेसाथ रहताभया इसके अनन्तर सुद्युम्न अपने पुरूरवा पुत्र
को राज्याभिषेक करके इलावृतखण्डके भोगनेकेलिये चलागया और इक्ष्वाकुका बड़ापुत्र मध्यदेश
में राज्य करताभया १६ । १९ नरिष्यन्तके महाबलवान् शुचनाम पुत्रहुआ नाभग के अम्बरीष
नाम पुत्रहुआ और धृष्टके धृतकेतु चित्रनाथ और रणधृष्ट यह तीनपुत्र उत्पन्नहुए-राजा शर्य्यातिके
एकतो आनर्तनाम पुत्र दूसरी शर्य्यातिनाम एकपुत्री होतीभई २० । २१ आनर्त्तके रोचमान नाम
बड़ा तेजस्वी पुत्रहुआ उसकादेश आनर्त्तनामसे प्रसिद्धहै और मैथिलापुरीभी प्रसिद्धहै—रोचमानके
रेवत और ककुद्मीनाम दोपुत्रहुए और सौ १०० इनके छोटेभाईहुए और रेवतकी पुत्री रैवती नाम
से प्रसिद्ध होकर बलदेवजीकी स्त्री हुई करूपके बहुत कारूपनाम देश प्रसिद्ध हैं २२ । २४ पृष-
ध्रनाम राजा गुरुकेशाप और गोवध करनेसे शूद्रजातिको प्राप्तहोगया यह तो पुरूरवाका वंशहुआ
अब इक्ष्वाकुके वंशको कहताहूं हे ऋषिसत्तम लोगो तुम मनलगाकर सुनो २५ इक्ष्वाकुकापुत्र वि-
कुक्षिनाम देवराजहुआ उसदेवराजके सौ छोटेभाईहुए और १५ पुत्रहुए २६ वह सब १४ पुत्र सुमेरु
से उत्तरकी ओर बड़े प्रसिद्धराजा होतेभये वह उत्तरदिशामें प्रसिद्धहैं और जो सुमेरुसे दक्षिणकी
ओर राजा विख्यातहैं वह केवल उस अकेले पन्द्रहवेंकीही सन्तानहैं इनसबमें बड़ाभाई ककुत्स्थ
नामसे प्रसिद्धहुआ उसकापुत्र सुयोधनहुआ सुयोधनके पृथुनाम पुत्रहुआ पृथुके विश्वगनाम पुत्र

स्यचपुत्रोऽभूद्युवनाश्वस्ततोऽभवत् २९ श्रावस्तश्चमहातेजा वत्सकस्तत्सुतोऽभवत्।
निर्मितायेनश्रावस्तीगौडदेशेद्विजोत्तमाः ३० श्रावस्ताद्बृहदश्वोऽभूत्कुवलाश्वस्ततोऽ
भवत्। धुन्धुमारत्वमगमद्धुन्धुंनाम्नाहतःपुरा ३१ तस्यपुत्रास्त्रयोजाता दृढाश्वोदण्ड
एवच। कपिलाश्वश्चविख्यातो धौन्धुमारिःप्रतापवान् ३२ दृढाश्वस्यप्रमोदश्च हर्य
श्वस्तस्यचात्मजः। हर्यश्वस्यनिकुम्भोभूत् संहताश्वस्ततोभवत् ३३ अकृताश्वोरणा
श्वश्च संहताश्वसुतावुभौ। युवनाश्वोरणाश्वस्य मान्धाताचततोऽभवत् ३४ मान्धातुः
पुरुकुत्सोऽभूद्धर्मसेनश्चपार्थिवः। मुचुकुन्दश्चविख्यातः शत्रुजिच्चप्रतापवान् ३५
पुरुकुत्सस्यपुत्रोऽभूद्वसुदोनर्म्मदापतिः। सम्भूतिस्तस्यपुत्रोऽभूत्त्रिधन्वाचततोऽभव
त् ३६ त्रिधन्वनःसुतोजातस्त्रय्यारुणइतिस्मृतः। तस्मात्सत्यव्रतोनाम तस्मात्सत्यर
थःस्मृतः ३७ तस्यपुत्रोहरिश्चन्द्रो हरिश्चन्द्राच्चरोहितः। रोहिताच्चवृकोजातो वृकाद्बा
हुरजायत ३८ सगरस्तस्यपुत्रोऽभूद्राजापरमधार्मिकः। द्वेभार्य्येसगरस्यापि प्रभाभानु
मतीतथा ३९ ताभ्यामाराधितःपूर्वमौर्वोग्निःपुत्रकाम्यया। और्वस्तुष्टस्तयोःप्रादाद्य
थेष्टंवरमुत्तमम् ४० एकापष्टिसहस्राणि सुतमेकंतथापरा। गृह्णातुवंशकर्तारं प्रभागृह्णा
द्बहूंस्तदा ४१ एकंभानुमतीपुत्रमगृह्णादसमञ्जसम्। ततःषष्टिसहस्राणि सुषुवेयाद
वीप्रभा ४२ खनन्तःपृथिवींदग्धा विष्णुनायेऽश्वमार्गणे। असमञ्जसस्तुतनयो योंशु

हुआ विश्वगका पुत्र इन्दु इन्दुका युवनाश्व २७। २९ युवनाश्वका पुत्र श्रावस्त उसका पुत्र वत्सकहुआ इसी वत्सकने गौड़देशमें श्रावस्तिपुरी बनाई है ३० श्रावस्तसे बृहदश्व उत्पन्नहुआ उसके कुवलाश्वहुआ इसी कुवलाश्वने प्रथम धुन्धुनाम दैत्यकोमाराथा इसीसे इसको धुन्धुमारभी कहते हैं ३१ उस धुन्धुमार के दृढाश्व दंडे और धौंधुमारिनामसे विख्यात कपिलाश्वनामे यहतीन पुत्र उत्पन्नहुए ३२ दृढाश्वके प्रमोदहुआ प्रमोदके हर्य्यश्व–हर्य्यश्वके निकुंम्भ–निकुम्भके संहताश्व संहताश्वके अकृताश्व और रणाश्व यह दोपुत्रहुए रणाश्व के युवनाश्व-युवनाश्व के मांधाता और मांधाताके पुरुकुत्स धर्मसेन और शत्रुओंका विजय करनेवाला मुचुकुन्द हुआ ३३। ३५ और पुरुकुत्सके नर्मदानदीके देशोंकापति वसुद हुआ वसुदके संभूतिहुआ उसके त्रिधन्वा ३६ त्रिधन्वाके त्रय्यारुण त्रय्यारुणके सत्यव्रत उसके सत्यरथ सत्यरथके हरिश्चन्द्र हरिश्चन्द्रके रोहितहुआ उसीको लोकमें रोहितास कहते हैं रोहितासकेवृक-वृकके बाहुनाम पुत्रहुआ ३७। ३८ इसबाहुके सगर नाम परमधार्मिक राजाहुआ इस सगरकी प्रभा और भानुमती नाम दोरानी होतीभई ३९ उन्होंने पुत्रकीइच्छासे और्व संज्ञक अग्निका आराधनकिया तब अग्निने प्रसन्नहोकर उनके इसवाञ्छितवर को दिया ४० कि एकरानी तो ६०००० पुत्रोंको उत्पन्न करेगी और दूसरी एकही पुत्रको प्राप्तकरेगी परन्तु उस एकहीका वंशचलेगा और इन ६०००० हजारकावंश नहींचलेगा तबप्रभाके ६०००० हुए और भानुमतीके एकहीपुत्र वंशचलानेवाला हुआ प्रभाके सबपुत्र किसी समय अश्वके ढूंढने कोगयेथे वहाँ पृथ्वीको खोदाथा वहाँ विष्णुके कोपसे भस्महोगये परन्तु भानुमतीके वंशकाबढ़ानेवा-

मान्नामविश्रुतः ४३ तस्यपुत्रोदिलीपस्तु दिलीपात्तुभगीरथः। येनभागीरथीगङ्गा तपः कृत्वावतारिता ४४ भगीरथस्यतनयो नाभागइतिविश्रुतः। नाभागस्यांबरीषोऽभूत्सिन्धुद्वीपस्ततोऽभवत् ४५ तस्यायुतायुःपुत्रोऽभूदृतुपर्णस्ततोऽभवत्। तस्यकल्माषपादस्तु सर्वकर्माततःस्मृतः ४६ तस्यानरण्यःपुत्रोऽभून्निघ्नस्तस्यसुतोभवत्। निघ्नपुत्रावुभौजातौ अनमित्ररघूनृपौ ४७ अनमित्रोवनमगाद्भवितासकृतेनृपः। रघोरभूद्दिलीपस्तु दिलीपादजकस्तथा ४८ दीर्घबाहुरजाज्जातश्चाजपालस्ततोनृपः। तस्माद्दशरथोजातस्तस्यपुत्रचतुष्टयम् ४९ नारायणात्मकाःसर्वेरामस्तेष्वग्रजोऽभवत्। रावणान्तकरस्तद्वद्रघूणांवंशवर्धनः ५० वाल्मीकिस्तस्यचरितं चक्रेभार्गवसत्तमः। तस्यपुत्रौकुशलवाविक्ष्वाकुकुलवर्धनौ ५१ अतिथिस्तुकुशाज्जज्ञे निषधस्तस्यचात्मजः। नलस्तुनैषधस्तस्मान्नभास्तस्मादजायत५२नभसःपुण्डरीकोऽभूत् क्षेमधन्वाततःस्मृतः। तस्यपुत्रोऽभवद्वीरोदेवानीकःप्रतापवान्५३ अहीनगुस्तस्यसुतः सहस्राश्वस्ततःपरः। ततश्चंद्रावलोकस्तुतारापीडस्ततोऽभवत्५४तस्यात्मजश्चंद्रगिरिर्भानुश्चंद्रस्ततोऽभवत्। श्रुतायुरभवत्तस्माद्भारतेयोनिपातितः ५५ नलौद्वावेवविख्यातौ वंशेकश्यपसम्भवे। वीरसेनसुतस्तद्वन्नैषधश्चनराधिपः५६ एतेवैवस्वतेवंशे राजानोभूरिदक्षिणाः। इक्ष्वाकुवंशप्रभवाःप्राधान्येनप्रकीर्त्तिताः५७॥ श्रीमत्स्यपुराणेसूर्यवंशानुकीर्त्तनोनामद्वादशोध्यायः॥

ला अंशुमान्हीं शेषरहगया ४१। ४३ उसी अंशुमान्के दिलीप उत्पन्नहुआ दिलीपके भगीरथहुआ जिसने कि तपकरके भागीरथी नाम गंगाको पृथ्वीपर लाकर जारीकरदिया ४४ भगीरथके नाभाग पुत्रहुआ उसकापुत्र अम्बरीष हुआ उसका सिन्धुद्वीपहुआ उसका अयुतायुनाम पुत्रहुआ-उसकापुत्र ऋतुपर्णहुआ ऋतुपर्णके कल्माषपाद पुत्रहुआ कल्माषके सर्वकर्माहुआ उसकापुत्र अनरण्य हुआ अनरण्यका पुत्र निघ्नहुआ–निघ्न के अनमित्र और रघु यह दो पुत्रहुए ४५। ४७ अनमित्र सतयुगमें हुआ और वनको चलागया रघुके दिलीप–दिलीपके अज--अजकेदीर्घबाहु-दीर्घबाहुके अजपाल ४८ अजपालके दशरथ [यहाँ पुराणों में अस्त व्यस्तहै] यह दशरथ अजकेहुआ है दशरथके चारपुत्र ४९ नारायणकी कलाथे इनचारोंमें सबसे बड़े रामचन्द्रजीथे जिन्होंने रावणकानाश किया और रघुकावंश चलाया ५० इनका चरित्र वाल्मीकिजीने वर्णन किया है इन रामचन्द्रजीके लव और कुश यह दोपुत्र इक्ष्वाकु वंशके बढ़ानेवालेहुए ५१ कुशसे अतिथि उत्पन्नहुआ उसके निषधनामपुत्रहुआ उसके नल और नलके नभा--नभाके पुंडरीक--उसके क्षेमधन्वा--क्षेमधन्वाके अत्यन्त प्रतापवान् शूरवीर देवानीकनाम पुत्रहुआ ५२। ५३ उसके अहीनगु--अहीनगुके सहस्राश्व--उसके चन्द्राव लोक-चन्द्रावलोकके तारापीडनाम पुत्रहुआ५४उसके चन्द्रगिरि--चन्द्रगिरिके भानुचन्द्र-भानुचन्द्रके श्रुतायु-जो महाभारतमें मारागयाहै ५५ और कश्यपसे चलनेवाले वंशमें दोनलनाम राजाहुए हैं एक तो वीरसेनकापुत्र और दूसरा निषधका पुत्रहुआहै ५६ बहुतसे यज्ञादिक करनेवाले सूर्य्यवंशमें उत्पन्न होनेवालोंमें से इक्ष्वाकुवंशमें उत्पन्न होनेवालोंको यहाँ प्रधानतासे वर्णन कियाहै ५७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां सूर्य्यवंशानुकीर्त्तनं नाम द्वादशोऽध्यायः १२॥

(मनुरुवाच) भगवन्! श्रोतुमिच्छामि पितॄणांवंशमुत्तमम्। रवेश्चश्राद्धदेवत्वं सोमस्यचविशेषतः १ (मत्स्य उवाच) हन्ततेकथयिष्यामि पितॄणांवंशमुत्तमम्। स्वर्गे पितृगणाःसप्त त्रयस्तेषाममूर्त्तयः २ मूर्तिमन्तोऽथचत्वारः सर्वेषाममितौजसः। अमूर्त्त य.पितृगणा वैराजस्यप्रजापतेः ३ यजन्तियान्देवगणा वैराजाइतिविश्रुताः। दिविते योगविभ्रष्टाः प्राप्यलोकान्सनातनान् ४ पुनर्ब्रह्मविदान्तेतु जायन्तेब्रह्मवादिनः। संप्रा प्यतांस्मृतिम्भूयो योगंसांख्यमनुत्तमम् ५ सिद्धिंप्रयान्तियोगेन पुनरावृत्तिदुर्लभाम्। योगिनामेवदेयानितस्माच्छ्राद्धानिदातृभिः ६ एतेषांमानसीकन्यापत्नीहिमवतोमता। मै नाकस्तस्यदायादः क्रौञ्चस्तस्याग्रजोऽभवत् ७ क्रौञ्चद्वीपःस्मृतोयेन चतुर्थोघृतसंवृ तः। मेनाचसुषुवेतिस्रः कन्यायोगवतीस्ततः ८ उमैकपर्णापर्णाच तीव्रव्रतपरायणाः। रुद्रस्यैकासितस्यैका जैगीषव्यस्यचापरा ९ दत्ताहिमवताबालाःसर्वालोकेतपोऽधिकाः। (ऋषय ऊचुः) कस्माद्दाक्षायणीपूर्वं ददाहात्मानमात्मना १० हिमवद्दुहितातद्वत् कथं जातामहीतले। सहरन्तींकिमुक्तासौ सुतावाब्रह्मसूनुना ११ दक्षेणलोकजननी सूत! विस्तरतोवद। (सूत उवाच) दक्षस्ययज्ञेवितते प्रभूतवरदक्षिणे १२ समाहूतेषुदेवेषु प्रोवाचपितरंसती। किमर्थंतात! भर्तामे यज्ञेऽस्मिन्नाभिमन्त्रितः १३ अयोग्यइतिता

मनुजीवोले-हे भगवन् पितरों के उत्तमवंशको तथा चन्द्रवंश और सूर्य्यवंश के श्राद्धदेवोंको भी मैं सुनना चाहताहूं १ मत्स्यजी वोले-हेमनु प्रथम में पितरोंके श्रेष्ठवंशको तुमसे कहूंगा उन पितरों के स्वर्गमें सातगणहैं उनमेंभीतीनितो मूर्तिरहित हैं २ और चार मूर्तिवालेहैं इन सबमें मूर्तिसे रहित अमितपराक्रमवाले पितृगण वैराज प्रजापतिकेहैं ३ उनको देवगणपूजतेहैं और वैराजनामसे प्रसिद्ध हैं औरजो लोगकि स्वर्गसे योगभ्रष्टहोकर सनातनलोकोंसे गिरतेहैं वह ब्रह्मवेत्ताओंकेकुलमें ब्रह्मवादी होकर उत्पन्नहोतेहैं और पूर्वकीही सांख्ययोगरूपीस्मृतिको प्राप्तहोके योगाभ्यासकेद्वारा आवागमनसे रहित दुर्लभसिद्धिको अर्थात् मोक्षको प्राप्तहोजातेहैं इसहेतुसे श्राद्धकर्त्तापुरुषोंने श्राद्धमें योगाभ्यासी पुरुषोंकोही दान देना उत्तम कहाहै और इन पितरोंकी मानसी नामवाली पुत्री हिमवान् पर्व्वतकी स्त्री मैनानाम कहीहै उसी मेनाके मैनाकपुत्र उत्पन्न हुआ और मैनाकका बड़ाभाई वह क्रौंच हुआ ४।७ जोकि घृतका चौथाद्वीप क्रौंचनामसे प्रसिद्ध है और मैनानाम इस हिमवान्कीस्त्री तीन कन्या ओंकोभी जनती भई अर्थात् उमा-एकपर्णा-और पर्णा इनतीनों उत्तम व्रत वाली कन्याओंको उत्पन्न करती भई इनमें पहली उमातो शिवजीको दी दूसरी एकपर्णा शुक्रजीको और तीसरी पर्णानाम नाम कन्या जैगीषव्य ऋषिको व्याहदी इस प्रकारसे हिमवान्ने अपनी इनतीनों कन्याओंको उक्त महात्माओंको अर्पण करीं--ऋषियोंने पूछा--हे सूतजी प्रथम पार्व्वती जीने अपने शरीरको किसहेतु से भस्मकिया और फिर इस पृथ्वीतलमें हिमवान् के घरमें कैसे जन्मलिया और इस संहार करने वालीसे ब्रह्माके पुत्र दक्षने क्या कहाथा इनसबवृत्तान्तोंको आप विस्तारपूर्व्वक वर्णन करिये--सूतजी बोले-किअत्यन्त दक्षिणा आदिद्रव्यों से युक्त बड़े विस्तृत हुए दक्षके यज्ञमें ८।१२ सब देवता बुलाये गये और शिवजीको नहीं बुलाया तब सती शरीरसे पार्वतीजी ने यज्ञमें जाकर अपने पितासे कहा

माह दक्षोयज्ञेषुशूलभृत्। उपसंहारकृद्रुद्रस्तेनामङ्गलभागयम् १४ चुकोपाथसतीदेहं त्यक्ष्यामीतित्वदुद्भवम्। दशानान्त्वञ्चभविता पितॄणामेकपुत्रकः १५ क्षत्रियत्वेऽश्वमेधेच रुद्रात्वंनाशमेष्यसि। इत्युक्त्वायोगमास्थाय स्वदेहोद्भवतेजसा १६ निर्दहन्तीतदात्मानं सदेवासुरकिन्नरैः। किंकिमेतदितिप्रोक्ता गन्धर्वगणगुह्यकैः १७ उपगम्याब्रवीद्दक्षः प्रणिपत्याथदुःखितः। त्वमस्यजगतोमाता जगत्सौभाग्यदेवता १८ दुहितृत्वङ्गतादेवि ममानुग्रहकाम्यया। नत्वयारहितंकिञ्चित् ब्रह्माण्डेसचराचरम् १९ प्रसादं कुरुधर्मज्ञे नमान्त्यक्तुमिहार्हसि। प्राहदेवीयदारब्धं तत्कार्यंमेनसंशयः २० किन्त्ववश्यं त्वयामर्त्ये हतयज्ञेनशूलिना। प्रसादेल्लोकसृष्ट्यर्थं तपःकार्यंममान्तिके २१ प्रजापतिस्त्वंभवितादशानामङ्गजोप्यलम्। मदंशेनाङ्गनाषष्टिर्भविष्यन्त्यंगजास्तव २२ मत्सन्निधौतपःकुर्वन् प्राप्स्यसेयोगमुत्तमम्। एवमुक्तोऽब्रवीद्दक्षः केषुकेषुमयानघे २३ तीर्थेषुच त्वंद्रष्टव्यास्तोतव्याकैश्चनामभिः (देव्युवाच) सर्वदासर्वभूतेषु द्रष्टव्यासर्वतोभुवि २४ सर्वल्लोकेषुयत्किञ्चिद्रहितंनमयाविना। तथापियेषुस्थानेषु द्रष्टव्यासिद्धिमीप्सुभिः २५ स्मर्तव्याभूतिकामैर्वा तानिवक्ष्यामितत्त्वतः। वाराणस्यांविशालाक्षी नैमिषेलिंगधारि

कि हेपिता तुमने इस अपने यज्ञमें मेरे भर्त्ताको क्यों नहीं निमन्त्रणदिया १३ तब दक्षने कहा कि शिवजी यज्ञके योग्य नहीं हैं क्योंकि संहार करने वालेहैं और रुद्र अर्थात् भयानक भी हैं इन हेतुओं से वह अमंगलकारी हैं १४ इतनी बातके सुनतेही सतीजी क्रोधयुक्त होकर यह वचन बोलीं तुझ से उत्पन्नहोनेवाले इस अपने शरीर को मैं त्यागती हूं और तू दशपिताओं के एक पुत्र होवेगा १५ फिर क्षत्रियवंशमें अश्वमेध यज्ञकेबीच शिवजीसेही नाशको प्राप्तहोवेगा ऐसा कहकर योगमें प्राप्तहो अपने शरीरसे तेजको उत्पन्न करके अपने शरीरको भस्मकरदेतीभई तब देवता राक्षस किन्नर गुह्यक आदि सबने क्याहुआ क्याहुआ ऐसाकहकर बड़ा हाहाकार किया उसके भस्म होनेके समय परही यह सब उसकेपास आये और दक्षभी उन सतीजी के पास आया और महादुःखितहो नम्रतापूर्व्वक यहकहनेलगा कि हे सती तू इस जगत्की माताहै सौभाग्यकी देने वाली है हे देवि तुही संसार की देवताहै तू केवलमुझपर अनुग्रह करनेकेलिये मेरीपुत्री हुईथी सोतुझसे रहित इस चराचरब्रह्माण्ड में कुछभीनहीं है १८।१९ तू मुझपर प्रसन्नहोकर मुझे त्यागनेकोयोग्य नहीं है तब पार्वतीजी अर्थात् सतीजी बोलीं कि जो मैंने कार्य्य प्रारम्भ कियाहै अर्थात् जो प्रण कियाहै वह निस्सन्देह अवश्यही होगा २० परन्तु शिवजी से विध्वंस होनेवाले इस यज्ञके कर्त्ता तुझको इस मर्त्यलोकमें शिवजीकी प्रसन्नताके लिये और लोककी रचनाके हेतुसे यहां मेरे समीपमें तपकरनाचाहिये २१ तू दशपुरुषों के शरीर सम्बन्धसे प्रजापति होगा और मेरे अंशकरके तेरे साठपुत्री उत्पन्नहोंगी तू मेरेसमीपमें तप करताहुआ उत्तम योगको प्राप्तहोवेगा यह वचन सुनकर दक्षबोला कि हे अनघे मुझे कौन२ से तीर्थ में तेरा देखना योग्यहै और कौन२ से नामोंकरके तेरी स्तुति करनायोग्यहै यह सुनकर पार्वतीजी ने कहा कि मैं पृथ्वीके सब प्राणियों में देखनेके योग्यहूं २३। २४ जो कुछ कि इससंसारमें वर्त्तमान है वह मुझसे भिन्न नहीं है परन्तु तौभी सिद्धि की इच्छा करनेवाले जनोंको जिन २ स्थानों में मेरा

णी २६ प्रयागेललितादेवीकामाक्षीगन्धमादने।मानसेकुमुदानामविश्वकायातथाम्बरे २७ गोमन्तेगोमतीनाम मन्दरेकामचारिणी। मदोत्कटाचैत्ररथे जयन्तीहस्तिनापुरे २८ कान्यकुब्जेतथागौरी रम्भामलयपर्वते। एकाम्भकेकीर्तिमती विश्वांविश्वेश्वरेविदुः २९ पुष्करेपुरुहूतेति केदारेमार्गदायिनी। नन्दाहिमवतःपृष्ठे गोकर्णेभद्रकर्णिका ३० स्थानेश्वरेभवानीतु विल्वकेविल्वपत्रिका। श्रीशैलेमाधवीनाम भद्राभद्रेश्वरेतथा ३१ जयावराहशैलेतु कामलाकमलालये। रुद्रकोट्यांचरुद्राणी कालीकालञ्जरेगिरौ ३२ महालिङ्गेतुकपिला मर्कोटेमुकुटेश्वरी। शालिग्रामेमहादेवी शिवलिङ्गेजलप्रिया ३३ मायापुर्यांकुमारीतु सन्तानेललितातथा। उत्पलाक्षीसहस्राक्षे कमलाक्षेमहोत्पला ३४ गङ्गायांमङ्गलानाम विमलापुरुषोत्तमे। विपाशायाममोघाक्षी पाटलापुण्ड्रवर्द्धने ३५ नारायणीसुपार्श्वेतु त्रिकूटेभद्रसुन्दरी। विपुलेविपुलानाम कल्याणीमलयाचले ३६ कोटवीकोटितीर्थेतु सुगन्धामाधवेवने। कुब्जाम्रकेत्रिसन्ध्यातु गङ्गाद्वारेरतिप्रिया ३७ शिवकुण्डेसुनन्दातु नन्दिनीदेविकातटे। रुक्मिणीद्वारवत्यान्तु राधावृन्दावनेवने ३८ देवकीमथुरायान्तु पातालेपरमेश्वरी। चित्रकूटेतथासीताविन्ध्येविन्ध्यनिवासिनी ३९ सह्या

स्मरण करनायोग्यहै उन २ स्थानोंको मैं निश्चय करके कहतीहूं काशीजी में विशालाक्षी नामवाली नैमिषारण्य में लिंगधारिणी-प्रयाग में ललितादेवी- गन्धमादन पर्वत में कामाक्षी-मानसक्षेत्र में कुमुदा नामवाली-और आकाशमें विश्वकाया नामवाली मैं जाननी योग्यहूं २५। २७ गोमंतक्षेत्र में गोमतीनाम-मन्दराचलमें कामचारिणी-चैत्ररथमें मदोत्कटा-और हस्तिनापुरमें जयंतीनामवाली मुझको जाननायोग्य है २८ कान्यकुब्ज देश में गौरी-मलयाचल पर्वत में रंभा-एकाम्भक क्षेत्रमें कीर्तिमती और विश्वेश्वरक्षेत्रमें विश्वाजाननी योग्यहूं २९ पुष्करमें पुरुहूता-केदारमें मार्गदायिनी-हिमवान् पर्वत परनन्दा-और गोकर्ण तीर्थ पर भद्रकर्णिका जाननी योग्यहूं ३० स्थानेश्वर क्षेत्रमें भवानी-और विल्वक तीर्थ पर विल्वपत्रिका जाननी योग्य हूं-श्रीशैलपर माधवीनाम-और भद्रेश्वर परमुझे भद्रानाम जाने ३१ वराह शैलपर जयानाम-कमलालयक्षेत्रपर-कामलानाम-रुद्रकोटीनाम पर रुद्राणी-और कालंजर तीर्थ में कालीनाम जानना योग्य है ३२ महालिंग तीर्थ में कपिला-मर्कोटमें मुकुटेश्वरी-शालिग्राम तीर्थ में महादेवी-और शिवलिंग क्षेत्र में जलप्रियानाम वाली मुझको जानना योग्य है ३३ मायापुरी में कुमारी-संतानतीर्थ में ललिता-सहस्राक्षमें उत्पलाक्षी-और कमलाक्षतीर्थ में मुझको महोत्पलानामसे जानना योग्य है ३४ गंगामें मंगलानाम वाली-पुरुषोत्तम तीर्थपै विमलानामवाली-विपाशा नदीपै अमोघाक्षी-औरपुंड्रवर्धन तीर्थपर पाटलानामवाली मुझे जानना योग्य है ३५ सुपार्श्व तीर्थ पै नारायणी नाम-त्रिकूटतीर्थपै भद्रसुन्दरी-विपुलमें विपुलानाम-और मलयाचलपै कल्याणी नामवाली मुझको जानो ३६ कोटीतीर्थपै कोटवी-माधव वनमें सुगन्धा कुब्जाम्रकतीर्थपै त्रिसंध्या-और गंगाद्वारतीर्थपै रतिप्रियानाम वालीजानो ३७ शिवकुंडपै सुनन्दा-देविकातटपै नन्दिनी-द्वारकापुरी में रुक्मिणी- वृन्दावनमें राधा-मथुरामें देवकी-पातालमें परमेश्वरी-चित्रकूट पर्वतपै सीता-और विंध्याचल पर्वतपै मुझे विन्ध्यनिवासिनी जानो-सह्याद्रि पर्वतपै

द्रावेकवीरातु हर्म्यचन्द्रेतिचन्द्रिका। रमणारामतीर्थेतु यमुनायांमृगावती ४० करवीरेम हालक्ष्मीरुमादेवीविनायके। अरोगावैद्यनाथेतु महाकालेमहेश्वरी ४१ अभयेत्युष्ण तीर्थेषु चामृताविन्ध्यकन्दरे। माण्डव्येमाण्डवीनाम स्वाहामाहेश्वरेपुरे ४२ छागल ण्डेप्रचण्डातु चण्डिकामकरन्दके। सोमेश्वरेवरारोहा प्रभासेपुष्करावती ४३ देवमाता सरस्वत्यां पारापारातटेमता। महालयेमहाभागा पयोष्ण्यांपिङ्गलेश्वरी ४४ सिंहिकाकृ तशौचेतु कार्तिकेयेयशस्करी। उत्पलावर्त्तकेलोला सुभद्राशोणसंगमे ४५ मातासिद्ध पुरेलक्ष्मीरङ्गनाभरताश्रमे। जालन्धरेविश्वमुखी ताराकिष्किन्धपर्वते ४६ देवदारुवने पुष्टिर्मेधाकाश्मीरमण्डले। भीमादेवीहिमाद्रौतु पुष्टिर्विश्वेश्वरेतथा ४७ कपालमोचने शुद्धिर्माताकायावरोहणे। शंखोद्धारेधरानाम धृतिःपिण्डारकेतथा ४८ कालातुचन्द्रभा गाया मच्छोदेशिवकारिणी। वेणायाममृतानाम बदर्यामुर्वशीतथा ४९ औषधीचोत्तर कुरौकुशद्वीपेकुशोदका। मन्मथाहेमकूटेतु मुकुटेसत्यवादिनी ५० अश्वत्थेवन्दनीयातु निधिर्वैश्रवणालये। गायत्रीवेदवदने पार्वतीशिवसन्निधौ ५१ देवलोकेतथेन्द्राणी ब्रह्मा स्येषुसरस्वती। सूर्य्यविम्बेप्रभानाम मातृणांवैष्णवीमता ५२ अरुन्धतीसतीनान्तु रा मासुचतिलोत्तमा। चित्तेब्रह्मकलानाम शक्तिःसर्वशरीरिणाम् ५३ एतदुद्देशतःप्रोक्तं ना माष्टशतमुत्तमम्। अष्टोत्तरञ्चतीर्थानां शतमेतदुदाहृतम् ५४ यःस्मरेच्छृणुयाद्वापि

एकवीरा-हर्म्यचन्द्रमें अतिचन्द्रिका-रामतीर्थमें रमणा-और यमुनातीर्थपै मुझे मृगावती नामजानो- ३८।४० करवीर क्षेत्रपै महालक्ष्मी-विनायक क्षेत्रमें उमादेवी-वैद्यनाथ तीर्थपै अरोगा-औरमहाकाल तीर्थ में मुझे महेश्वरी जानो ४१ उष्णतीर्थ पै अभया-विंध्याचलकी गुफाओं में अमृता-मांडव्य में मांडवीनाम औरमाहेश्वर पुरमें स्वाहानामजानो ४२ छागलंडतीर्थपै प्रचंडा-मकरन्दतीर्थपै चंडिका- सोमेश्वर तीर्थपै वरारोहा-प्रभासक्षेत्रपै पुष्करावती ४३ सरस्वतीनदीपै देवमाता पारातट तीर्थपैपारा महालय क्षेत्रपै महाभागा और पयोष्णी नदीपै मैं पिंगलेश्वरी कहीजातीहूं ४४ कृतशौच तीर्थमें सिंहि- का-कार्तिकेयक्षेत्र पै यशस्करी-उत्पलावर्त्तकपै लोलानाम और शोणसंगमतीर्थ में सुभद्रा जानो ४५ सिद्धपुर क्षेत्रमें माता-भर्त्ताश्रमक्षेत्रपै लक्ष्मी-जालन्धरमें विश्वमुखी-और किष्किन्धापर्व्वतपर मुझे ताराजानो ४६ देवदारुवनमें पुष्टी-काश्मीरमंडल में मेधा-हिमाद्रिपर्व्वतपै भीमादेवी-औरविश्वेश्वर तीर्थपैभी पुष्टीजानो ४७ कपालमोचनपै शुद्धि-कायावरोहण तीर्थपै माता शंखोद्धार तीर्थपै धरानाम- और पिंडारक तीर्थपैमुझको धृतिनामवालीजानो ४८ चन्द्रभागानदी पै काला-मच्छोद तीर्थपै शिव- कारिणिवेणानदीपर अमृतानाम और बदरीक्षेत्रपैमुझे उर्व्वशी नामजानो ४९ उत्तर कुरुदेशमें औषधी कुशद्वीपपै कुशोदका-हेमकूटतीर्थ परमन्मथा-और मुकुटतीर्थ पै सत्यवादिनीजानो ५० अश्वत्थतीर्थ में वन्दनीयाजानो और कुवेर के स्थानमें निधिरूपा अर्थात् खजानारूपजानो वेदके मुखमें गायत्री-शि- वजीके संगपार्वती-देवलोकमें इन्द्राणी-ब्रह्माके मुखों में सरस्वती-सूर्य्यके विम्ब में प्रभानामवाली और षोडश मातृकाओं में वैष्णवी कहीजातीहूं ५१। ५२ सतियों में अरुन्धती-अप्सराओं में ति- लोत्तमा कहातीहूं-चित्तमें ब्रह्मकलाहूं-और सब शरीरधारियों में शक्ति रूपहूं ५३ इस उपदेश करके

सर्वपापैःप्रमुच्यते । एषुतीर्थेषुयःकृत्वा स्नानंपश्यतिमांनरः५५सर्वपापविनिर्मुक्तः कल्पं शिवपुरेवसेत् । यस्तुमत्परमंकालं करोत्येतेषुमानवः ५६ सभित्त्वाब्रह्मसदनं पदमभ्येति शाङ्करम् । नाम्नामष्टशतंयस्तु श्रावयेच्छिवसन्निधौ ५७ तृतीयायामथाष्टम्यां बहुपुत्रो भवेन्नरः । गोदानेश्राद्धदानेवा अहन्यहनिवाबुधः ५८देवार्चनविधौविद्वान् पठन्ब्रह्माधि गच्छति । एवंवदन्तीसातत्र ददाहात्मानमात्मना ५९ स्वायम्भुवोऽपिकालेन दक्षःप्रा चेतसोऽभवत् । पार्वतीसाभवद्देवी शिवदेहार्द्धधारिणी६० मेनागर्भसमुत्पन्ना भक्तिमुक्ति फलप्रदा । अरुन्धतीजपन्त्येतत् प्रापयोगमनुत्तमम् ६१ पुरूरवाश्चराजर्षिर्लोकेष्वज यतामगात् । ययातिःपुत्रलाभञ्च धनलाभञ्चभार्गवः ६२ तथान्येदेवदैत्याश्च ब्राह्म णाःक्षत्रियास्तथा । वैश्याःशूद्राश्च बहवः सिद्धिमीयुर्यथेप्सिताम्६३ यत्रैतल्लिखितं ति ष्ठेत् पूज्यतेदेवसन्निधौ । नतत्रशोकोदौर्गत्यं कदाचिदपिजायते ६४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेपितृवंशान्वयेगौरीनामाष्टोत्तरशतकथनंनामत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

(सूत उवाच) लोकाःसोमपथा नाम यत्रमारीचनन्दनाः । वर्तन्तेदेवपितरो देवा यान्भावयन्त्यलम् १ अग्निष्वात्ता इतिख्याता यज्वानोयत्रसंस्थिताः । अच्छोदानाम

एकसौ १०८ उत्तम नामों समेत एकसौही १०८ तीर्थकहेहैं ५४जो पुरुष इननामों समेत इनतीर्थों का स्मरण करेगा वा श्रवण करेगा वह सबपापों से छुटजायगा-जो पुरुष इनकहेहुए तीर्थोंमें स्नान करके मेरे दर्शन करेगा वह सबपापोंसे छुटकर एक कल्पपर्य्यन्त शिवजीके पुरमें वासकरेगा और जो पुरुष इनकहेहुए तीर्थोंमें मेराही स्मरण करताहुआ कालको व्यतीतकरेगा ५५।५६ वह ब्रह्मरन्ध्रको छेदन करके शिवजीके परमपदको जायगा जो इन १०८ नामोंको शिवजीके समीपमें तृतीयाको वा अष्टमीको शिवजीको सुनावेगा वहमनुष्य बहुतसेपुत्रोंको प्राप्तहोगा और प्रतिदिन इननामोंका सुन- नेवाला गोदान और श्राद्धदान के पुण्यफलको पाताहै विद्वान् पुरुष देवताकी पूजनकी विधिमें इस स्तोत्रको पढ़ताहुआ ब्रह्मको प्राप्तहोताहै ऐसे कहतीहुई वह सतीरूप पार्वती अपनेतेजसे अपनेसब शरीरको भस्मकरतीभई इसरीतिसे स्वायंभुव वंशमेंहोनेवाला दक्षभी प्राचेतसदक्ष होताभया और वह सतीदेवीभी पार्वती नामसे शिवजीकी अर्द्धांगी स्त्री होतीभई मैनाकेगर्भसे उत्पन्न होनेवाली भ- क्तिमुक्तिकी दाता यह पार्वती हैं इनके इसी स्तोत्रको जपतीहुई अरुन्धती उत्तम योगको प्राप्त होती भई और पुरूरवा राजानेभी इसीके प्रभावसे विजयपाई ययातिको पुत्रका लाभहुआ और भार्गवको धनका लाभहुआ ५७।६२और इनके विशेष अन्यदेवता दैत्य ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रादिक अनेकजनोंकोभी मनोवाञ्छित सिद्धिप्राप्त हुई ६३ जहाँ यह लिखाहुआ स्तोत्र वर्त्तमानहै और देवता के समीप इसका पूजनहोताहै वहाँ शोक और दुर्गति कभीनहीं होते हैं ६४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपितृवंशान्वयेगौरीनामाष्टोत्तरशतकथनंनामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

सूतजी बोले-कि जहाँ सोमपथ नामवाले लोक हैं वहाँ मरीचि ऋषिके पुत्रदेवपितर वर्त्तमान रहते हैं उनको श्रेष्ठरीति से देवतालोग पूजनकरके उनकी भावना किया करते हैं और अग्निष्वात्ता

तेषान्तु मानसीकन्यकानदी २ अच्छोदन्नामचसरः पितृभिर्निर्मितंपुरा। अच्छोदातुत
पश्चक्रे दिव्यंवर्षसहस्रकम् ३ आजग्मुःपितरस्तुष्टाः किलदातुञ्चतांवरम्। दिव्यरू
पधराःसर्वे दिव्यमाल्यानुलेपनाः ४ सर्वेयुवानोबलिनः कुसुमायुधसन्निभाः। तन्मध्ये
ऽमावसुन्नाम पितरंवीक्ष्यसाऽङ्गना ५ वव्रेवरार्थिनीसङ्गं कुसुमायुधपीड़िता। योगाद्भ्र
ष्टातुसातेन व्यभिचारेणभामिनी ६ धरान्तुनास्पृशत्पूर्वं पपाताथभुवस्तले। तिथावमा
वसुर्यस्यामिच्छां चक्रेन तांप्रति ७ धैर्येणतस्यसालोकैरमावास्येतिविश्रुता। पितॄणांवल्ल
भातस्मा त्तस्यामक्षयकारकम् ८ अच्छोदाधोमुखीदीना लज्जितातपसःक्षयात्। सा
पितॄन्प्रार्थयामास पुरेचात्मप्रसिद्धये ९ विलप्यमानापितृभिरिदमुक्तातपस्विनी। भ
विष्यमर्थमालोक्य देवकार्यञ्चतेतदा १० इदमूचुर्महाभागाः प्रसादशुभया गिरा। दि
विदिव्यशरीरेण यत्किञ्चित्क्रियतेबुधैः ११ तेनैवतत्कर्म्मफलं भुज्यतेवरवर्णिनि!।
सद्यःफलन्तिकर्माणि देवत्वेप्रेत्यमानुषे १२ तस्मात्त्वंपुत्रि! तपसः प्राप्स्यसेप्रेत्यतत्फ
लम्। अष्टाविंशेभवित्रीत्वं द्वापरेमत्स्ययोनिजा १३ व्यतिक्रमात्पितॄणान्त्वं कष्टंकुलम
वाप्स्यसि। तस्माद्राज्ञोवसोःकन्या त्वमवश्यंभविष्यसि १४ कन्याभूत्वाचलोकान् स्वा
न्पुनराप्स्यसिदुर्लभान्। पराशरस्यवीर्येण पुत्रमेकमवाप्स्यसि १५ द्वीपेतुबदरीप्राये वा

नामसे प्रसिद्धहोकर स्वर्गमें देवताओंको यज्ञादिक कर्म कराते हैं उनकी मानसीकन्या अच्छोदानाम नदीरूप होतीभई १। २ प्रथम पितरोंने अच्छोदनामवाला एकसरोवररचाथा वहाँ उस अच्छोदाने देवताओंके दिव्य हजारों वर्षोंतक तप कियाथा तब पितर प्रसन्नहोकर उसको वरदान देने को आये वह सबपितर दिव्यरूपधारी दिव्यमाला चन्दनादिसे अलंकृत कामदेवके समान कान्तिवाले थे उन में अमावसुनाम वाले पितर को देखकर वह अच्छोदा कन्या कामदेव से पीड़ित होके संगकरने के लिये उस्से वरनेकी इच्छाकरती भई उस समय वह उसकेसंग व्यभिचारकरने के दोषसे अपने योगसे भ्रष्टहोगई और स्वर्ग से इस रीतिपर गिरीकि पृथ्वीके स्पर्श से रहित भुवर्लोकमें आनपड़ी सो जिसतिथिमें वह अमावसुपितर उसअच्छोदाकी इच्छानहीं करताभया ३।७ उसतिथिको उसके धैर्य करने से लोगोंने अमावस्यानामसे विख्यातकियाहै इसीसे वह तिथि पितरोंको प्यारी है इसीहेतुसे उस तिथिमें किया हुआ पुण्य अक्षयफलको देता है फिर वह अच्छोदा तपके नाशहोजाने से दीन होकर महालज्जित होती भई और अपनी प्रसिद्धिके लिये उस अपने पुरमेंही पितरोंकी प्रार्थना करती भई ८। ९ फिर उस लज्जासे भरी हुई अच्छोदा तपस्विनीसे अगाड़ी होने वाले देवताओं के कार्य्यको जानके बड़भागवाले पितर अपनी सुन्दरवाणी से यह वचन बोले कि स्वर्ग के बीच देवतालोग अपने दिव्यशरीरोंसे जो कुछकर्मकरते हैं हे वरवर्णिनि उस कर्मके फलको वहअपने उसी शरीरसे भोग लेतेहैं क्योंकि देवताकी योनिमें कर्मोंका भोगतत्कालही होजाताहै और मनुष्य जन्ममें कर्मोंका भोग दूसरेजन्ममें प्राप्तहोताहै इस हेतुसे हे पुत्रि तेरे तपकाफल अन्यजन्ममें होवेगा तू अष्टाविंशति नामवाले युगमें मच्छीकी योनि में जन्मलेगी १०। १३ अपने विपरीत भाव करने से तू पितरों के कुलमें बड़ेकष्टसे प्राप्त होगी तू राजाकी निश्चयकरके कन्याहोगी फिर कन्याहोके अपने

द्रायणमच्युतम्। सवेदमेकंबहुधा विभाजिष्यतितेसुतः १६ पौरवस्यात्मजौद्वौतु समु
द्रांशस्यशन्तनोः। विचित्रवीर्य्यस्तनय स्तथाचित्राङ्गदोनृपः १७ इमावुत्पाद्यतनयौ
क्षेत्रजावस्यधीमतः। प्रौष्ठपद्यष्टकारूपा पितृलोकेभविष्यसि १८ नाम्नासत्यवतीलोके
पितृलोके तथाष्टका। आयुरारोग्यदानित्यं सर्वकामफलप्रदा १९ भविष्यसिपरेकाले
नदीत्वञ्चगमिष्यसि। पुण्यतोयासरिच्छ्रेष्ठा लोकेह्यच्छोदनामिका २० इत्युक्त्वासगण
स्तेषां तत्रैवान्तरधीयत। साप्यवापचतत्सर्वं फलंयदुदितम्पुरा २१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पितृवंशानुकीर्त्तनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः १४॥

(सूत उवाच) विभ्राजानामचान्येतु दिविसंतिसुवर्चसः। लोकाबर्हिषदोयत्रपितरः
संतिसुव्रताः १ यत्रबर्हिणयुक्तानि विमानानिसहस्रशः। सङ्कल्प्यबर्हिषोयत्र तिष्ठन्ति
फलदायिनः २ यत्राभ्युदयशालासु मोदन्तेश्राद्धदायिनः। यांश्चदेवासुरगणा गन्धर्वा
प्सरसांगणाः ३ यक्षरक्षोगणाश्चैव यजन्तिदिविदेवताः। पुलस्त्यपुत्राःशतशस्तपोयो-
गसमन्विताः ४ महात्मानोमहाभागा भक्तानामभयप्रदाः। एतेषांपीवरीकन्या मानसी
दिविविश्रुता ५ योगिनीयोगमाताच तपश्चक्रेसुदारुणम्। प्रसन्नोभगवांस्तस्या वरं

दुर्लभलोकोंको प्राप्त होजावेगी और पराशर ऋषिकेवीर्य्यसे तेरा एक उत्तमपुत्रभी उत्पन्न होगा वह पुत्र जो कि बहुतसे बेरीके वृक्षोंवाले द्वीपमें उत्पन्नहोगा इसीसे उसपुत्रका नामबादरायण भी विख्यात होगा वही तेरापुत्र एकवेदके चार विभागकरेगा १४। १६ और पौरवके दो पुत्रहोंगे उनमें से समुद्रके अंशवाले शंतनुराजाके विचित्रवीर्य और चित्राङ्गद यह दो पुत्रहोंगे सो इन वेदव्यासजी के सम्बन्धसे तू इन क्षेत्रजदोनों पुत्रोंको उत्पन्नकरके प्रौष्ठपदी और अष्टकारूपाहोके पितरोंके लोकमें प्राप्तहोवेगी १७। १८ इससंसारमें तू सत्यवती नामसे प्रसिद्धहोगी और पितरोंके लोकमें अष्टका नामसे विख्यातहोगी तू सदैव आयु आरोग्यादि सबकामनाओंके फलकी देनेवाली होगी इसके अनन्तर किसीसमयमें तू नदीभावको प्राप्तहोजायगी तब भी तेराजल पवित्ररहैगा औरसंसारमें अच्छोदानामवाली उत्तमनदी प्रसिद्धहोगी ऐसी१ बातें कहकर वह सबपितरोंके गणवहीं अन्तर्द्धान होगये वह अच्छोदाभी उनके कहेहुए सबफलोंको प्राप्तहोजाती भई १९। २१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां पितृवंशानुकीर्त्तनंनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

सूतजी बोले—स्वर्गमें विभ्राजनाम सुन्दर तेजवाले लोकहैं वहाँ सुन्दर व्रतवाले बर्हिषदनाम पितरहैं जहाँ बर्हिणनाम अर्थात् कुशाओंसे युक्त हजारों विमानहैं उन विमानों में वह कुशा संकल्पितहोके मनुष्योंके फलदेनेवाले हैं १। २ वहाँ कल्याण करनेवाले और श्राद्धों के दान करनेवाले पुरुष आनन्द करते हैं उन पितरों को देवता दैत्य गन्धर्व और अप्सराओं के गणपूजते हैं ३ और यक्ष राक्षसोंके भी गण उनका पूजन करते हैं यह हजारोंगण तप योगसे युक्त पुलस्त्यजी के पुत्र हैं ४ यह सब महात्मा महाभाग अपने भक्तोंको अभयदान देनेवाले हैं इनगणोंकी मानसी उत्पन्न होनेवाली पीवरी नाम कन्या विख्यातहै ५ वह योगिनी और योगमाता दारुण तपकरतीभई जब भगवान् प्रसन्नहोकर उसको वरदेनेको गये तब उसने हरि से यह वचन कहा कि जो आप मुझपर

वन्नेतुसाहरेः ६ योगवन्तंसुरूपञ्च भर्त्तारंविजितेन्द्रियम् । देहिदेव ! प्रसन्नस्त्वं पतिं मेवदतांवरम् ७ उवाचदेवोभविता व्यासपुत्रोयदाशुकः । भवितातस्यभार्यात्वं योगाचार्य्यस्यसुव्रते ! ८ भविष्यतिचतेकन्या कृत्वीनामचयोगिनी । पाञ्चालाधिपतेर्देया मानुष्यस्यत्वयातदा ९ जननीब्रह्मदत्तस्य योगसिद्धाचगौःस्मृता । कृष्णो गौरःप्रभुःशम्भुर्भविष्यन्तिचतेसुताः १० सहात्मानोमहाभागा गमिष्यन्तिपरम्पदम् । तानुत्पाद्यपुनर्योगात्सवरामोक्षमेष्यसि ११ सुमूर्त्तिमन्तःपितरो वसिष्ठस्यसुताःस्मृताः । नाम्नातु मानसाःसर्वे सर्वेतेधर्म्ममूर्त्तयः १२ ज्योतिर्भासिषुलोकेषु येवसन्तिदिवः परम् । विराजमानाःक्रीड़न्ति यत्रतेश्राद्धदायिनः १३ सर्वकामसमृद्धेषु विमानेष्वपिपादजाः । किंपुनःश्राद्धदाविप्रा भक्तिमन्तःक्रियान्विताः १४गौर्नामकन्यायेषान्तु मानसीदिविराजते । शुक्रस्यदयितापत्नी साध्यानांकीर्त्तिवर्द्धिनी १५ मरीचिगर्भानाम्नातु लोकामार्तण्डमण्डले । पितरोयत्रतिष्ठन्ति हविष्यन्तोऽङ्गिरःसुताः १६ तीर्थश्राद्धप्रदायान्ति येचक्षत्रियसत्तमाः । राज्ञान्तुपितरस्तेवै स्वर्गमोक्षफलप्रदाः १७ एतेषांमानसीकन्या यशोदालोकविश्रुता । पत्नीह्यंशुमतःश्रेष्ठा स्नुषापञ्चजनस्यच १८ जनन्यथदिलीपस्य भगीरथपितामही । लोकाःकामदुघानाम कामभोगफलप्रदाः १९ सुस्वधानामपितरो यत्रतिष्ठन्तिसुव्रताः । आज्यपानामलोकेषु कर्दमस्यप्रजापतेः २०पुलहाङ्गजदायादा वैश्यास्तान्भावयन्तिच ।

प्रसन्नहुए हैं तो मेरे इसवरको दीजिये कि सुन्दररूप यौवनवाला मेरा भर्त्ताहोय ६।७ भगवान् बोले कि व्यासजीका पुत्र शुकदेवहोगा हे सुव्रते तू उस योगाचार्य्यकी भार्य्याहोगी ८ और उनसे कृत्वी नामवाली योगिनी तेरेकन्याहोगी उस कन्याको तुझे पांचालदेशके मनुष्य राजाकेलिये देनीहोगी९ वह कन्या ब्रह्मदत्तनाम पुत्रको उत्पन्न करेगी फिर योगसे प्रसिद्धहोके गौरूप होजायगी और कृष्ण गौर प्रभु शम्भु यह तेरे पुत्रहोवेंगे १० और अपनेशरीरसमेत परमपदको प्राप्तहोंगे और उनपुत्रों को तू फिर अपने योगाभ्याससे उत्पन्नकरके वरको पाकर मोक्षको प्राप्त होजावेगी ११ और जो सुन्दर मूर्त्तिवाले पितरकहे हैं वह सब मानसनामवाले हैं और धर्मकी मूर्त्तिकहाते हैं १२ वह स्वर्गसे ऊपर के ज्योतिष्मन्तनाम लोकोंमें बसतेहैं इनके निमित्त श्राद्धकरनेवाले मनुष्यभी वहाँही विराजमान होकर क्रीडाकरते हैं शूद्रभी सम्पूर्ण समृद्धिवाले विमानोंमें जाके प्राप्तहोते हैं और क्रिया कर्म से संयुक्त भक्तिमान् पुरुष जो भक्तिसे श्राद्ध दानकरते हैं उनका तो क्याही कहनाहै १३ । १४ और गौनामवाली इनपितरोंकी मानसीकन्या जो स्वर्गमें विराजमानहै वह शुक्रकी प्रियपत्नीहै और साध्योंकी कीर्त्ति बढानेवालीहै १५ मरीची गर्भानामवाले लोक सूर्य्यके मण्डलमें हैं वहाँ अंगिरसऋषिकेपुत्र हविष्यन्तनामवाले पितर स्थितहैं उनके निमित्त तीर्थ श्राद्धकरनेवाले उत्तम क्षत्रियलोग उन्हींके लोकोंमें प्राप्तहोते हैं वह राजालोगोंके पितरहोकर स्वर्ग मोक्षके फलदेनेवाले हैं १६ । १७ इनकी कन्या मानसी यशोदानाम विख्यातहै वह अंशुमान् ऋषिकी उत्तम भार्य्या है और पञ्चजन राजाकी पुत्रवधू कहलाती है दिलीपकी माताहै औरभगीरथकी पितामही है और कामभोगके फलोंके देनेवाले कामदुघा नामवाले लोकहैं वहाँ सुन्दरव्रतवाले सुस्वधानामवाले पितरस्थितहैं वह लोकों

यत्रश्राद्धकृतःसर्वे पश्यन्तियुगपद्गताः २१ मातृभ्रातृपितृष्वसृ सखिसम्बन्धिबान्धवान्।
अपिजन्मायुतैर्दृष्टा ननुभूतान्सहस्रशः २२ एतेषांमानसीकन्या विरजानामविश्रुता।
यापत्नीनहुषस्यासीद्ययातेर्जननीतथा २३ एकाष्टकाऽभवत्पश्चाद् ब्रह्मलोकेगतासती।
त्रय एतेगणाःप्रोक्ताश्चतुर्थन्तुवदाम्यतः २४ लोकास्तुमानसानाम ब्रह्माण्डोपरिसंस्थि
ताःयेषान्तुमानसीकन्यानर्मदानामविश्रुता २५सोमपानामपितरोयत्रतिष्ठन्तिशाश्वताः।
कृत्वासृष्ट्यादिकंसर्वं मानसेसाम्प्रतंस्थिताः २६ नर्मदानामतेषान्तु कन्यातोयवहास
रित्। भूतानियापावयति दक्षिणापथगामिनी २७ तेभ्यःसर्वेतुमनवः प्रजासर्गेषुनिर्मि
ताः। ज्ञात्वाश्राद्धानिकुर्वन्ति धर्माभावेऽपिसर्वदा २८ तेभ्यएवपुनःप्राप्तुं प्रसादाद्योगस
न्ततिम्। पितॄणामादिसर्गेतु श्राद्धमेवविनिर्मितम् २९ सर्वेषांराजतंपात्र मथवारजता
न्वितम्। दत्तंस्वधापुरोधाय पितॄन्प्रीणातिसर्वदा ३० अग्नीषोमयमानान्तु कार्य्यमा
प्यायनंबुधैः। अग्न्यभावेऽपिविप्रस्य पाणावपिजलेऽथवा ३१ अजाकर्णेऽश्वकर्णेवा गो
ष्ठेवासलिलान्तिके।पितॄणामम्बरंस्थानं दक्षिणादिक्प्रशस्यते३२प्राचीनावीतमुदकं ति
लाःसव्यांगमेवच। दर्भामांसंचपाठीनं गोक्षीरंमधुरारसाः ३३ खड्गलोहामिषमधु कुश

में आज्यपनामसे प्रसिद्धहैं पुलहसे होनेवाले कर्दमप्रजापति के पुत्रहैं इनके अर्थ श्राद्धादिक वैश्य लोगकरते हैं वह श्राद्धकरनेवाले सब वैश्य जन एकहिवार उन्होंके लोकोंमें प्राप्तहोके सैकड़ों हजारों वर्षोंकेभी मरेहुए अपने अनेक माता भ्राता पिता बहिन प्यारा सम्बन्धी और बान्धव इनसबको देखते हैं और उनसे मिलापभी करते हैं १८।२२ इनसबकी मानसी कन्या विरजानाम से प्रसिद्ध है वही नहुपकी स्त्री और ययातिकी माताहुई है २३ फिर इन पितरों के एक एकाष्टका नामवाली पुत्री हुई वह सती ब्रह्मलोक में जाती भई यह तीनगण तो पितरों के कहे अब चौथागण कहते हैं २४ ब्रह्माण्ड के ऊपर स्थित मानसनामवाले लोक प्रसिद्ध हैं तहां सोमपानाम वाले सनातन पितर वर्त्तमान हैं उनकी मानसी कन्या नर्मदानामसे विख्यातहै वह सब पितर इसरचनाआदिको करके अब उनलोकों में स्थित हैं २५।२६ और वह नर्मदा कन्या जल की बहाने वाली नदी है जो कि दक्षिण की ओर बहतीहुई प्राणियों को पवित्र करती है २७ और उन्हीं पितरों के सकाश से सम्पूर्ण मनु प्रजा की रचना के समय में रचेगये हैं वह मनुभी धर्म के अभाव होजाने में उनकीही प्रसन्नता से योग की उत्पत्ति होने के निमित्त उनकेही अर्थ श्राद्धादिकों को करते हैं और पितरों के आदि सर्गमेंही श्राद्ध रचागया है २८।२९ इनका पात्र चाँदी का है अथवा चाँदी समेत अन्य वस्तुओं के पात्रों को पुरोहितके अर्थ देने से यह सब प्रसन्न होजाते हैं ३० बुद्धिमान् लोगोंको आप्यायन श्राद्ध अग्नि में करना चाहिये अथवा अग्नि के अभाव में ब्राह्मण के हाथ में वा जल में श्राद्धकरे ३१ बकरी के कान अथवा अश्व के कान के समीप वा गौओं के स्थान में तथा जल के समीप में पितरों का स्थान है और श्राद्ध के लिये दक्षिणदिशा उत्तम कही है ३२ अपसव्य होके अंगुष्ठ के समीप तक जलको लाकर तिलों समेत जलको लेकर वामकन्धे पर अँगौछा आदि यज्ञोपवीत रखना कुशा मत्स्यमांस गौ का दूध मधुररस तलवार लोहा मांस मधुकुशा शामक सालिसंज्ञक चावल जौ नी-

श्यामाकशालयः। यवनीवारमुद्गेक्षु शुक्लपुष्पघृतानिच ३४ वल्लभानिप्रशस्तानि पितृ णामिहसर्वदा। द्रष्याणिसम्प्रवक्ष्यामि श्राद्धेवर्ज्यानियानितु ३५ मसूरशणनिष्पाव रा जमाषकुसुम्भिकाः। पद्मविल्वार्कधत्तूर पारिभद्राट्टरूषकाः ३६ नदेयाःपितृकार्येषु पय श्चाजाविकंतथा। कोद्रवोदारचणकाः कपित्थंमधुकातसी ३७ एतान्यपिनदेयानि पि तृभ्यःप्रियमिच्छता। पितॄन्प्रीणातियोभक्त्या तेपुनःप्रीणयन्तितम् ३८ यच्छन्तिपितरः पुष्टिं स्वर्गारोग्यम्प्रजाफलम्। देवकार्यादपिपुनः पितृकार्य्यंविशिष्यते ३९ देवतानांच पितरः पूर्वमाप्यायनंस्मृतम्। शीघ्रप्रसादास्त्वक्रोधा निःशल्याःस्थिरसौहृदाः ४० शा न्तात्मानःशौचपराः सततंप्रियवादिनः। भक्तानुरक्ताःसुखदाः पितरःपूर्वदेवताः ४१ ह विष्मतामाधिपत्ये श्राद्धदेवःस्मृतोरविः। एतद्वःसर्वमाख्यातं पितृवंशानुकीर्त्तनम् ४२ पुण्यंपवित्रमायुष्यं कीर्त्तनीयंसदानृभिः।

इति श्रीमत्स्यपुराणे पितृवंशानुकीर्त्तनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः १५॥

(सूत उवाच) श्रुत्वैतत्सर्वमखिलं मनुःपप्रच्छकेशवम्। श्राद्धकालञ्चविविधं श्राद्धभेदं तथैवच १ श्राद्धेषुभोजनीयाये येचवर्ज्याद्विजातयः। कस्मिन्वासरभागेवा पितृभ्यः श्राद्धमाचरेत् २ (मनुरुवाच) कस्मिन्दत्तंकथंयाति श्राद्धन्तुमधुसूदन!। विधिनाकेनकर्त्तव्यं कथंप्रीणातितत्पितॄन् ३ (मत्स्य उवाच) कुर्य्यादहरहःश्राद्ध म-

चार धान्य मूंग ईख श्वेतपुष्प घृत ३३ यह सबवस्तु इसलोकमें सदैव पितरों की प्रसन्नकरनेवाली कही हैं ३४ अब श्राद्ध में निषेध कीहुई वस्तुओं को कहते हैं ३५ मसूर-शण-मोठ-अरहड़-रार-उड़द कमल के पुष्प-बेलफल-आक-धतूरा-कदम्ब-आंला इत्यादिक वस्तु पितृकर्म में कभी न देवे और ब-करी का दूध-कोदो-धान्य-चना-महुए के पुष्प-और अलसी इन सब वस्तुओंकोभी पितरों से प्यार क-रने की इच्छावाला पुरुष कभी न देवे जो पुरुष भक्तिकरके पितरोंको तृप्तकरता है उसपुरुषको वह पितरभी प्रसन्नहोकर सबबातोंसे तृप्तकरते हैं ३६। ३८ प्रसन्नहोनेवाले पितरस्वर्ग आरोग्य और सन्तान इनसबको देतेहैं यह पितृकर्म देवकर्मसेभी अधिक फलवाला कहाहै ३९ पहले पितर देव-ताओंकेभी प्रसन्नकरनेवाले कहे हैं शीघ्रतासे प्रसन्नहोनेवाले क्रोधरहित स्थिर स्नेहरखनेवाले ४० शान्तात्मा-शौचमें तत्पर-निरन्तर सत्यवक्ता-भक्तोंपर प्रीतियुक्त रहनेवाले और सुखकेदाता ऐसेपितर पूर्वके देवताओं सेभी पूर्वहैं ४१ हविष्मन्त संज्ञक पितरोंमें श्राद्धदेव सूर्यकहे हैं यह पितरोंके वंश का कीर्तन और व्याख्यान सब तुमसे वर्णन किया ४२ यह महापवित्र आख्यान आयुका बढ़ाने वाला है इसका वर्णन करना मनुष्योंको सदैव योग्यहै ४३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपितृवंशानुकीर्त्तननाम पंचदशोऽध्यायः १५॥

सूतजी बोले—इससम्पूर्ण कथाको सुनकर मनुजी मत्स्य भगवान्से श्राद्धों के काल-भेद-वर्जित वस्तु-भोजन करानेके योग्य ब्राह्मण—और पितरों के अर्थ जो श्राद्धका समयकहाहै इनसब बातोंको पूछतेभये १। २ अर्थात् मनुजीने पूछा कि हे मधुसूदनजी कौनसे समयका दियाहुआ श्राद्ध किस समय पितरोंको प्राप्त होताहै किस विधिसे श्राद्धकरना योग्यहै और किसप्रकारसे पितर प्रसन्नहोते

न्नाद्येनोदकेनवा । पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यःप्रीतिमावहन् ४ नित्यन्नैमित्तिकंकाम्यं त्रिविधंश्राद्धमुच्यते। नित्यंतावत्प्रवक्ष्यामि अर्घ्यावाहनवर्जितम् ५ अदैवन्तद्विजा नीयात् पार्व्वणंपर्व्वसुस्मृतम्। पार्व्वणंत्रिविधंप्रोक्तं शृणुतावन्महीपते ६ पार्व्वणेयेनि योज्यास्तु ताञ्छृणुष्वनराधिप !। पञ्चाग्निःस्नातकश्चैव त्रिसुपर्णःषडंगवित् ७ श्रोत्रियःश्रोत्रियसुतो विधिवाक्यविशारदः। सर्व्वज्ञोवेदविन्मन्त्री ज्ञातवंशःकुलान्वितः ८ पुराणवेत्ताधर्म्मज्ञः स्वाध्यायजपतत्परः। शिवभक्तःपितृपरः सूर्य्यभक्तोऽथवै ष्णवः ९ ब्रह्मण्योयोगविच्छान्तो विजितात्माचशीलवान्। भोजयेच्चापिदौहित्रं यत्नतः स्वसुहृद्गुरून् १० विद्वांसंमातुलंबन्धुं ऋत्विगाचार्यसोमपान्। यश्चव्याकुरुतेवाक्यं यश्चमीमांसतेऽध्वरम् ११ सामस्वरविधिज्ञश्च पंक्तिपावनपावनः। सामगोब्रह्मचारीच वेदयुक्तोऽथब्रह्मवित् १२ यत्रैतेभुञ्जतेश्राद्धे तदेवपरमार्थवित्। एतेभोज्याःप्रयत्नेन वर्जनीयान्निबोधमे १३ पतितोऽभिशस्तःक्लीवश्चपिशुनव्यङ्गरोगिणः। कुनखीश्यावदन्तश्च कुण्डगोलाश्वपालकाः १४ परिवित्तिर्नियुक्तात्मा प्रमत्तोन्मत्तदारुणाः। वैडालीवकवृत्तिश्च दम्भोदेवलकादयः १५ कृतघ्नान्नास्तिकांस्तद्वत् म्लेच्छदेशनिवासिनः। त्रिशंकुर्वर्वरद्राव वीतद्रविडकोंकणान् १६ वर्जयेल्लिंगिनःसर्वान् श्राद्धकालेविशेषतः।

हैं ३ मत्स्यजी बोले–पितरोंकी प्रसन्नताका करनेवाला मनुष्य अन्नसे जल से दूधसे और कन्दमूल फलादिकोंसे प्रतिदिन श्राद्धकरे ४ नित्य नैमित्तिक और काम्य इततीन प्रकारोंका श्राद्धकहाहै इनमें प्रथम अर्घ आवाहनसे रहित नित्यश्राद्ध कहाहै यह श्राद्ध अर्घदानसे रहितकहाहै और जो पर्व में किया जाताहै वह पार्वणश्राद्ध तीनप्रकारका है हे राजन् इस पार्वण श्राद्धमें जो २ युक्त किये जाते हैं उनको सुन-पंचाग्नि विधान करनेवाले स्नातक सुपर्ण संज्ञक वेदके षडंगके जाननेवाले ५।७ वेदपाठी-वेदपाठीका पुत्र विधिवाक्यका जाननेवाला पण्डित सर्वज्ञ वेदोंकाज्ञाता मन्त्रों से युक्त उत्तम वंशवाला प्रसिद्धवंशवाला ८ पुराणोंका जाननेवाला-धर्मज्ञ स्वाध्याय जपमें तत्पर-शिवभक्त-पिताकी भक्तिमें तत्पर-सूर्य्यभक्त-वैष्णव धर्मवाला ९ ब्रह्मण्य-योगवेत्ता-शान्त–विजितात्मा–और शीलवान् ऐसे ब्राह्मणको भोजन करावे अथवा यत्न पूर्वक दौहित्रेको मित्रको और गुरुओंको भोजनकरावे १० विद्वान्-मामा-बन्धु ऋत्विक्-आचार्य्य-यज्ञमें विधिपूर्वक सोमपान करनेवाला-वाक्य का उपदेश करनेवाला-यज्ञका विचारकरनेवाला ११ सामवेदके स्वरोंकी विधिका जाननेवाला श्राद्ध पंक्तिके पुरुषोंका पवित्र करनेवाला-सामवेदका जाननेवाला ब्रह्मचारी-वेदयुक्त ब्रह्मवेत्ता १२ यहसब ब्राह्मण जिसके श्राद्धमें भोजनकरते हैं वही परमार्थका जाननेवालाहै इसीहेतुसे इन्हीं ब्राह्मणोंको जिमावे-अब जो निषेधकियेहुए वर्जनेके योग्यहैं उनको भी चित्तसेसुनो १३ ज्ञाति में पतित-शापादिसे युक्त-नपुंसक चुगलखोर-बुरेनखोंवाला–कालेदांतोंवाला–कुण्डक–गोलक–जातिवाला–अश्वपालक १४ परिवित्तिसंज्ञक–अजितेन्द्रिय–प्रमत्त–उन्मत्त–भयानक-बिडालवृत्तिवाला-बकवृत्तिवाला–धूर्त-देवता की पूजाकी नोकरी करनेवाला-कृतघ्नी-नास्तिक म्लेच्छोंके देशमेंरहनेवाला-त्रिशंकु-वर्बर-द्राव-द्रविड कोंकण-इन सब जातिवाले-और रक्तवस्त्र आदिक चिह्नवाले साधु आदिक इनसबोंको श्राद्धकाल में

पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा विनीतात्मानिमन्त्रयेत् १७ निमन्त्रितान्हिपितर उपतिष्ठन्तितान्द्विजा
न्। वायुभूतानुगच्छंति तथासीनानुपासते १८ दक्षिणंजानुमालभ्य त्वम्मयातुनिमंत्रि
तः। एवंनिमंत्र्यनियमं श्रावयेत्पितृबान्धवान् १९ अक्रोधनैःशौचपरैः सततंब्रह्मचा
रिभिः। भवितव्यंभवद्भिश्च मयाचश्राद्धकारिणा २० पितृयज्ञंविनिर्वत्य तर्पणाख्यंतुयो
ऽग्निमान्। पिण्डान्वाहार्यकंकुर्य्याच्छ्राद्धमिन्दुक्षयेसदा २१ गोमयेनोपलिप्तेतु दक्षिणप्र
वणेस्थले। श्राद्धंसमाचरेद्भक्त्या गोष्ठेवाजलसन्निधौ २२ अग्निमान्निर्वपेत्पित्र्यं चरु
ञ्चसममुष्टिभिः। पितृभ्योनिर्वपामीति सर्वंदक्षिणतोन्यसेत् २३ अभिघार्यततःकुर्य्या
न्निर्वापत्रयमग्रतः। तेऽपितस्यायताःकार्य्याश्चतुरंगुलविस्तृताः २४ दर्व्वीत्रयन्तुकुर्व्वी
त खादिरंरजतान्वितम्। रत्निमात्रम्परिश्लक्ष्ण हस्ताकाराग्रमुत्तमम् २५ उदपात्रञ्च
कांस्यञ्च प्रोक्षणञ्चसमित्कुशान्। तिलाःपात्राणिसद्वासो गन्धधूपानुलेपनम् २६ आ
हरेदपसव्यन्तु सर्वंदक्षिणतःशनैः। एवमासाद्यतत्सर्वंभवनस्याग्रतोभुवि २७ गोमये
नोपलिप्तायां गोमूत्रेणतुमण्डलम्। अक्षताभिःसपुष्पाभिस्तदभ्यर्च्यापसव्यवत् २८
विप्राणांक्षालयेत्पादावभिनन्द्यपुनःपुनः। आसनेषूपक्लृप्तेषु दर्भवत्सुविधानवत् २९
उपस्पृष्टोदकान्विप्रानुपवेश्यानुमन्त्रयेत्। द्वौदैवे पित्र्यकृत्ये त्रीनेकैकमुभयत्रच ३०

अवश्यवर्जे देवे और युक्तात्मा श्राद्ध कर्त्तापुरुष एकदिनवा दोदिनपहले योग्य ब्राह्मणोंको निमंत्रण देवे १५। १७ क्योंकि निमन्त्रित कियेहुए उन ब्राह्मणोंको पितर प्राप्त होजातेहैं और वायुरूप होकर उनके साथ चलेहुए उनकी प्रार्थनाभी करतेहैं १८ दक्षिण जंघा नवाकर ब्राह्मणोंसे यह वचन कहे कि मैंने आपको निमंत्रण कियाहै ऐसाकहकर फिर अपनेमाता पिता बाँधवादिक लोगों से ब्राह्मणों के इसनियमकोकहै कि तुमलोगोंको और मुझ श्राद्ध करनेवालेको क्रोधसे रहित शौचमेंतत्पर और सदैव ब्रह्मचर्य्य में रहना योग्यहै १९। २० इसरीतिसे पितृयज्ञको निवृत्तकरके तर्पणकरे और जो कोई अग्निहोत्री होय वह सदैव अमावश्याके दिन पिंडान्वाहार्य्यक संज्ञक श्राद्धकरे २१ गौके गोबर से लिपेहुए दक्षिणदिशाके स्थानमें वा गौशालामें अथवा जलके समीपमें भक्तियुक्त होकर श्राद्धकरे २२ और अग्निहोत्री पुरुष पितृसम्बन्धी चरुको समान मुट्ठियों करके(पितृभ्यो निर्वपामि) इसऋचाकरके दक्षिणकी ओर अग्निमें वपनकरे २३ फिर अपनेआगे अभिघार्य विधिसे तीन-वार आक्षिप्तकरे अर्थात् तीनघृतकी आहुतिदेवे और श्राद्ध के स्थंडिलों को चार अंगुल विस्तार वाला बनावे और तीन दर्वी अर्थात् करछी के समान पात्र बनावे उनपात्रों को चाँदी से युक्त खैर की लकड़ीके हथेलीके समान चौड़े और हाथकी समान लम्बे बनवावे कांसी का उदकपात्र बनवावे और प्रोक्षणनाम पात्र-समिध्-कुशा-तिलपात्र-उत्तमवस्त्र-गन्ध-धूप और चन्दन २४। २६ इन सब वस्तुओं को धीरे२ अपसव्य होकर दाहिने हाथ से ग्रहण करे इसप्रकारसे इस सब विधि को करके अपने म-कान के आगे पृथ्वी को गोबर से लीप के गोमूत्र से मंडलकर अक्षत पुष्पादि से अपसव्य हाथ से पूजनकर २७। २८ वारंवार सराह के ब्राह्मणों के चरणों को धोवे फिर विधिपूर्वक पूर्वकल्पित आ-सनोंपर उनको बैठावे फिर आचमनादिक करके उन ब्राह्मणोंको अनुमंत्रितकरे दोब्राह्मण विश्वेदेवों

भोजयेदीश्वरोऽपीह नकुर्य्याद्विस्तरंबुधः। दैवपूर्वंनियोज्याथ विप्रानर्घ्यादिनाबुधः ३१अ
ग्नौकुर्यादनुज्ञातो विप्रैर्विप्रोयथाविधि। स्वगृह्योक्तविधानेन कांस्येकृत्वाचरुंततः ३२
अग्नीषोमयमाभ्यान्तु कुर्यादाप्यायनंबुधः। दक्षिणाग्नौप्रतीतेवा यएकाग्निर्द्विजोत्त
मः ३३ यज्ञोपवीतीनिर्वर्त्य ततःपर्युक्षणादिकम्। प्राचीनावीतिनाकार्य मतःसर्वंविजा
नता ३४ षट्चतस्माद्धविःशेषात् पिण्डान्कृत्वाततोदकम्। दद्यादुदकपात्रैस्तु सति
लंसव्यपाणिना ३५ जान्वाच्यसव्यंयत्नेन दर्भयुक्तोविमत्सरः। विधायलेखांयत्नेन निर्वा
पेष्ववनेजनम् ३६ दक्षिणाभिमुखःकुर्य्यात्करेदर्वींनिधायवै। निधायपिण्डमेकैकं सर्व
दर्भेष्वनुक्रमात् ३७ निनयेदथदर्भेषु नामगोत्रानुकीर्तनैः। तेषुदर्भेषुतंहस्तं निमृज्याल्ले
पभागिनाम् ३८ तथैवचततःकुर्यात् पुनःप्रत्यवनेजनम्। षडप्येतान्नमस्कृत्य गन्धधूपा
र्हणादिभिः ३९ एवमावाह्यतत्सर्वं वेदमन्त्रैर्यथोदितैः। एकाग्नेरेकएवस्यान्निर्वापोद
र्विकातथा ४० ततःकृत्वान्तरेदद्यात् पत्नीभ्योऽन्नंकुशेषुसः। तद्वत्पिण्डादिकेकुर्यादा
वाहनविसर्जनम् ४१ ततोगृहीत्वापिण्डेभ्यो मात्राःसर्वाःक्रमेणतु। तानेवविप्रान्प्रथमं
प्राशयेद्यत्नतोनरः ४२ यस्मादन्नात्धृतामात्रा भक्षयन्तिद्विजातयः। अन्वाहार्यकमि
त्युक्तं तस्मात्तच्चन्द्रसंक्षये ४३ पूर्वंदत्त्वातुनद्धस्ते सपवित्रंतिलोदकम्। तत्पिण्डाग्रंप्रय

के तीन पितरोंके अथवा दोनों स्थानोंमें एक एक २९। ३० हीकरके इसरीतिसे ब्राह्मणोंको भोजन करवावे श्राद्धमें धनवान् पुरुषभी अधिक विस्तारनकरे प्रथमतो विश्वेदेवासम्बन्धी ब्राह्मणोंका अर्घा-दिककरे और ब्राह्मणोंकी आज्ञालेकर वह पुरुष अपनी गृह्योक्त विधिसे अग्निमें ऐसे हवनकरे कि कांसीकेपात्रमें चरुको स्थापित करके अग्निमें(सोमायस्वाहा)इस विधिसे आप्यायन विधिकरे और जो दक्षिणाग्निसंज्ञक ब्राह्मणहोवे अथवा एकाग्निसंज्ञक ब्राह्मणहोवे तो सव्यहोके पर्य्युक्षण आदि करे और सम्पूर्णविधिके जाननेवाले पुरुषको यह सब कृत्य अपसव्यही होकर करनी चाहिये ३१।३४ फिर उस शेष बचेहुए हविष् अन्न के छः पिंडबना के उदक पात्रोंसमेत तिल सहित पिंडको दाहिने हाथमें कर बामजंघासे अपसव्यहोके कुशाके ऊपरधरदे और क्रोधादिसे रहित विधिपूर्व्वक पिण्डके नीचे रेखाकरदे फिर उस दियेहुए पिण्डपर अवनेजनकरे ३५। ३६ फिर दक्षिणाभिमुख होके हाथ में दर्वीसंज्ञक पात्रकोलेके उसपर एक एक पिण्डको स्थापितकर अनुक्रमसे सम्पूर्ण कुशाओं पै नाम सहितगोत्रका उच्चारणकरके पिण्डदान करताजावे और उनकुशाओं पै लेपभागी पितरोंके निमित्त अपनेहाथको झाड़ताजावे ३७। ३८ फिर पिण्डोंके ऊपर प्रत्यवनेजनदेवे तब छःओं पितरोंको नम-स्कार करके गन्ध पुष्प और धूपदानदेवे ३९ इसप्रकारसे यथोक्त वेदके मंत्रोंसे सम्पूर्ण आवाहनादि विधिकोकरे और एकाग्नि पुरुषको एकहीबार निर्वापकरना और दर्वीका पात्रबनाना योग्य है इस प्रकारसे पिता पितामहादिकोंके अर्थ श्राद्धकरके फिर उनकी पत्नियोंके अर्थ कुशाओं पै अन्नदानदेवे और इसी उक्तप्रकारसे इन पिण्डादिकोंकाभी आवाहन विसर्जनादिककरे ४०। ४१ फिर इनपिंडों मेंसे क्रमपूर्वक थोड़ा २ अन्नलेकर इकट्ठाकरे और उसीसे यत्नपूर्व्वक पूर्वके ब्राह्मणोंको जिमावे जो कि उन पिण्डोंमेंसे ग्रहणकीहुई अन्नकी मात्राओंको वह ब्राह्मण भक्षण करते हैं इसीहेतुसे अमाव-

च्छेत स्वधैषामस्त्वितिब्रुवन् ४४ वर्णयन्भोजयेदन्नं मिष्टंपूतञ्चसर्वदा। वर्जयेत्क्रोध
परतांस्मरन्नारायणंहरिम् ४५ तृप्तान्ज्ञात्वाततःकुर्याद्विकिरन्सार्ववर्णिकम्। सोदकं
चान्नमुद्धृत्य सलिलंप्रक्षिपेद्भुवि ४६ आचान्तेषुपुनर्दद्याज्जलपुष्पाक्षतोदकम्। स्वस्ति
वाचनकंसर्वं पिण्डोपरिसमाहरेत् ४७ देवाद्यन्तंप्रकुर्वीत श्राद्धनाशोऽन्यथाभवेत्। विसृ
ज्यब्राह्मणांस्तद्वत्तेषांकृत्वाप्रदक्षिणम् ४८ दक्षिणांदिशमाकाङ्क्षन् पितॄन्याचेतमानवः।
दातारोनोऽभिवर्धन्तांवेदाःसन्ततिरेवच ४९ श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयञ्चनोऽस्त्विति।
अन्नञ्चनोबहुभवेदतिथींश्चलभेमहि ५० याचितारश्चनःसन्तु माचयाचिष्मकञ्चन।
एतदस्त्वितितत्प्रोक्तमन्वाहार्यन्तुपार्वणम् ५१ यथेन्दुसंक्षयेतद्वदन्यत्रापिनिगद्यते।
पिंडांस्तुगोऽजविप्रेभ्योदद्यादग्नौजलेऽपिवा ५२ विप्राग्रतोवाविकिरेद्वयोभिरभिवाशयेत्।
पत्नीतुमध्यमम्पिण्डं प्राशयेद्विनयान्विता ५३ आधत्त पितरोगर्भमत्रसन्तानवर्धनम्।
तावदुच्छेषणंतिष्ठेद्यावद्विप्राविसर्जिताः ५४ वैश्वदेवंततःकुर्य्यान्निवृत्तेपितृकर्मणि। इ
ष्टैःसहततःशान्तोभुञ्जीतपितृसेवितम् ५५ पुनर्भोजनमध्वानं यानमायासमैथुनम्।
श्राद्धकृच्छ्राद्धभुक्चैव सर्वमेतद्विवर्जयेत् ५६ स्वाध्यायंकलहंचैव दिवास्वप्नञ्चसर्वदा।
अनेनविधिनाश्राद्धं निरुद्धस्येहनिर्वपेत् ५७ कन्याकुम्भवृषस्थेऽर्के कृष्णपक्षेषुसर्वदा ५८

श्याके दिन वह श्राद्ध अन्वाहार्य्यक नाम कहलाताहै ४१।४३ प्रथम सपवित्र तिलोदक सहित उस
पिण्डार्थ भागको ब्राह्मणके हाथमेंदेके(स्वधैषामस्तु)ऐसा उच्चारणकरे ४४ और मिष्टहै पवित्रहै इस
प्रकारसे कहताहुआ ब्राह्मणोंको भोजनकरावे उससमय श्राद्धका करनेवाला क्रोधादिसे रहित होकर
नारायणका स्मरण करतारहै ४५ फिर तृप्तहुए ब्राह्मणोंको जानके सबप्रकारके भोजनको जलसंयुक्त
करके विकर संज्ञक पितरोंके निमित्त पृथ्वीमें प्रक्षिप्तकरे ४६ और जब ब्राह्मण आचमनादिक कर-
चुकें तब उनको जल पुष्प अक्षत दे स्वस्तिवाचन कराके सम्पूर्ण पिण्डोंपर उनअक्षतादिकोंको बिखर
वादे और देवताओंका विस्तार करवावे इससे अन्यथा करनेमें श्राद्धका नाशहोजाताहै फिर ब्राह्मणों
की प्रदक्षिणा करके इनका विसर्जन करदेवे ४७।४८ इसकेपीछे दक्षिणदिशाके सन्मुखहोकर पितरों
से यह याचनाकरे कि तुम हमारे दातारहौ वेद सदैव बनारहै हमारी श्रद्धा बनीरहै बहुतसे दान देने-
वालेहोंय अभ्यागत हमारेआवें अन्य मनुष्य हमसे याचनाकरें और हम किसीसे याचना न करें फिर
आचार्य्य ब्राह्मण यहकहै कि ऐसाहीहो इसप्रकारसे यह अन्वाहार्य्य श्राद्ध पार्वणहोताहै ४९।५१
इसप्रकारसे यहश्राद्ध अमावस्याके दिनहोताहै औरअन्यदिनमेंभी होताहै श्राद्धकेपिंडको गौ बकरीवा
ब्राह्मणको देवे अथवा जलमें अग्निमें गेरे व ब्राह्मणोंके आगे परोसके भोजन करादेवे औरमध्यपिण्ड
को श्राद्धकर्ताकीस्त्री विनयसे युक्तहोकर भोजन करलेवे ५२।५३ और सन्तानको बढ़ानेवाला(आधत्त
पितरोगर्भम्)इसमंत्रको उच्चारणकरे जबतक कि ब्राह्मणोंका विसर्जन नहींहोताहै तबतक उसअन्नकी
उच्छेषण संज्ञारहती है-जब पितरकर्म निवृत्तहोचुके तब विश्वदेव कर्मकरे फिर अपने मित्रबांधवों
समेत प्रशान्त चित्तहोकर आपभी भोजनकरे फिर भोजनकरनेके पीछे मार्गका चलना परिश्रम और
मैथुन इनसब बातोंको श्राद्धका करनेवाला न करे ५५।५६ स्वाध्याय-कलह-और दिनमेंसोना इन

यत्रयत्रप्रदातव्यं सपिण्डीकरणात्परम्। तत्रानेनविधानेन देयमग्निमतासदा ५९॥
इति श्रीमत्स्यपुराणे अग्निमच्छ्राद्धे श्राद्धकल्पो नाम षोडशोऽध्यायः १६॥
(सूत उवाच) अतःपरंप्रवक्ष्यामि विष्णुनायदुदीरितम्। श्राद्धंसाधारणंनाम भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् १ अयनेविषुवेयुग्मे सामान्येचार्कसंक्रमे। अमावास्याष्टकाकृष्णपक्षे पञ्चदशीषुच २ आर्द्रामघारोहिणीषु द्रव्यब्राह्मणसंगमे। गजच्छायाव्यतीपातेविष्टि वैधृतिवासरे ३ वैशाखस्यतृतीयायां नवमीकार्तिकस्यच। पञ्चदशीचमाघस्य नभस्येच त्रयोदशी४युगादयःस्मृताह्येता दत्तस्याक्षय्यकारिकाः। तथामन्वन्तरादौच देयंश्राद्धंवि जानता५ अश्वयुक्शुक्लनवमी द्वादशीकार्तिकेतथा। तृतीयाचैत्रमासस्य तथाभाद्रपदस्य च६ फाल्गुनस्यह्यमावास्या पौषस्यैकादशीतथा। आषाढस्याऽपिदशमी माघमासस्यसप्त मी७ श्रावणस्याष्टमीकृष्णा तथाषाढीचपूर्णिमा। कार्तिकीफाल्गुनीचैत्री ज्येष्ठपञ्चदशी सिता। मन्वन्तरादयश्चैता दत्तस्याक्षयकारिकाः८ यस्यांमन्वन्तरस्यादौ रथमास्तेदिवा करः। माघमासस्यसप्तम्यां सातुस्याद्रथसप्तमी ९ पानीयमप्यत्रतिलैर्विमिश्रं दद्यात्पि तृभ्यःप्रयतोमनुष्यः। श्राद्धंकृतंतेनसमाःसहस्रं रहस्यमेतत्पितरोवदन्ति १० वैशाख्या मुपरागेषु तथोत्सवमहालये। तीर्थायतनगोष्ठेषु द्वीपोद्यानगृहेषुच ११ विविक्तेषूपलि

बातोंकोभी न करे इस विधिसे सम्पूर्ण श्राद्धको निवृत्तकरे ५७ जब कन्याके कुम्भके और वृषराशि के सूर्य्यहोंय तब कृष्णपक्षमें श्राद्धकरना सदैव योग्यहै और सपिण्डीकर्म श्राद्ध होजानेकेपीछे जहाँ जहाँ श्राद्ध कर्मकरे उस उस स्थानमें अग्निहोत्री पुरुष को तीनों के अर्थ पार्वण श्राद्ध करना उचित है ५८। ५९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामग्निमच्छ्राद्धे श्राद्धकल्पो नाम षोडशोऽध्यायः १६॥

सूतजीबोले-इससेभी पूर्वमें जो विष्णु भगवान्ने भुक्ति मुक्ति आदिफलका देनेवाला श्राद्धकहा है और साधारण है उसको भी तुम सबसुनो १ जिस समय विषुव संज्ञकयुग्म अयन अर्थात् वर्ष में दो २ बार समान रात्रि दिनके संक्रमकालमें और अमावस्या अन्वष्टका और पूर्णिमा इन तिथि यों के दिन आर्द्रा-मघा-और रोहिणी नक्षत्रों के दिन अथवा द्रव्य और सत्पात्र ब्राह्मण की जभी प्राप्ति होजाय तभी गजच्छाया योग विष्टियोग-और वैधृतियोगमें वैशाखशुक्ला तृतीया कार्त्तिकशुक्ला नवमी ९ माघकी पूर्णिमा भाद्रपदकी प्रथमत्रयोदशी यह युगादितिथि कहाती हैं इनमें दियाहुआ अक्षय फलवाला होता है इसहेतु से इनमें व मन्वन्तरादि तिथियों में बुद्धिमान् पुरुष को श्राद्ध करना चाहिये ५ आश्विन शुक्ला ९ कार्त्तिकशुक्ला १२ चैत्र और भाद्रपद की तृतीया फाल्गुन की अमावस्या पौषकी ११ आषाढ़की १० माघकी ७ यहसब शुक्लपक्ष की हैं-श्रावण कृष्ण अष्टमी-आषाढ़की पूर्णिमा-कार्त्तिक-फाल्गुन-चैत्र और ज्येष्ठ इनमहीनोंकी पूर्णिमा यह सब मन्वन्तरादि तिथि कहाती हैं इनतिथियोंमें जोदानदेताहै उसकाअक्षयफल होताहै ८।८ और जो कि माघशुक्ला ७ मन्वन्तरादि तिथि है उसमें सूर्य्यरथ में बैठते हैं इसीसे वह रथसप्तमी कहाती है इसतिथिकेदिन जो मनुष्य सावधान होके पितरोंके अर्थ तिलसंयुक्त जलदान करताहै उसको हजार वर्षतक श्राद्ध

ष्येषु श्राद्धंदेयंविजानता। विप्रान्पूर्वेपरेचाह्नि विनीतात्मानिमन्त्रयेत् १२ शीलवृत्त
गुणोपेतान् वयोरूपसमन्वितान्। द्वौदैवेत्रींस्तथापैत्र्ये एकैकमुभयत्रवा १३ भोजयेत्
सुसमृद्धोऽपि नप्रसज्जेतविस्तरे। विश्वान्देवान्यवैः पुष्पैरभ्यर्च्यासनपूर्वकम् १४ पूर
येत्पात्रयुग्मन्तु स्थाप्यदर्भपवित्रकम्। शन्नोदेवीत्यपःकुर्य्याद्यवोसीतियवानपि १५
गन्धपुष्पैश्चसंपूज्य वैश्वदेवंप्रतिन्यसेत्। विश्वेदेवासइत्याभ्यामावाह्यविकिरेद्यवान् १६
गन्धपुष्पैरलंकृत्य यादिव्येत्यपउत्सृजेत्। अभ्यर्च्यताभ्यामुत्सृष्टं पितृकार्य्यंसमारभेत्
१७ दर्भासनन्तुदत्त्वादौ त्रीणिपात्राणिपूरयेत्। सपवित्राणिकृत्वादौ शन्नोदेवीत्यपःक्षिपे
त् १८ तिलोऽसीतितिलान्कुर्याद्गन्धपुष्पादिकंपुनः। पात्रंवनस्पतिमयं तथापर्णमयंपु
नः १९ जलजंवाथकुर्व्वीत तथासागरसम्भवम्। सौवर्णंराजतंवापि पितॄणाम्पात्रमु
च्यते २० रजतस्यकथावापि दर्शनंदानमेववा। राजतैर्भाजनैरेषामथवारजतान्वितैः २१
वार्य्यपिश्रद्धयादत्तमक्षयायोपकल्पते। तथार्घ्यपिण्डभोज्यादौ पितॄणांराजतंमतम् २२
शिवनेत्रोद्भवंयस्मात्तस्मात्तत्पितृवल्लभम्। अमंगलंतद्यत्नेन देवकार्येषुवर्जयेत् २३

करनेका फल प्राप्तहोताहै इसहेतुसे वैशाखकी पूर्णिमा-पर्व-उत्सव-कनागतोंकी तिथि तीर्थोंके स्थान दीपदानसे युक्त मन्दिर-बगीचे और विधिपूर्व्वक गौके गोबरसे लिपेहुए शुद्ध घर इनसब स्थानों में बुद्धिमान् पुरुषको अवश्य श्राद्धदान देनाचाहिये और श्राद्धके ब्राह्मणोंको एक दिन वा दोदिन पहले निमन्त्रण देनाचाहिये शीलस्वभाव उत्तमगुणयुक्त सुन्दर अवस्थारूप और विद्यासे सम्पन्न ऐसे दो ब्राह्मण तो देवकर्ममें और तीन पितर कर्म में अथवा दोनोंप्रकार के कर्मों में एकएकही ब्राह्मणको भोजनकरावे धनाढ्य पुरुषभी इससे अधिकविस्तार न करे-विश्वेदेवोंको तो जव पुष्पादिकों से पूर्व कीओर पूजनकरे उनके पास दोपात्र रक्खे एकमें तो (शन्नोदेवीत्यादि) मंत्रसे जलभरे और दूसरे में (यवोसीति) इसमन्त्रसे जव डाले ९।१५ और इसीप्रकार गन्धपुष्पादिकों से विश्वेदेवोंको पूजे फिर (विश्वेदेवा स) इसमन्त्र करके उनका आवाहन करके यवों को आसनपर बखेरदे १६ फिर गन्ध पुष्पादिसे अलंकृतकरके(यादिव्या)इसमन्त्रसे आसनपर जल छोड़े इसरीतिसे उनकेपूजनसे निवृत्तहो पितृ कार्य्यका आरम्भ करे १७ पितृ कार्य्य में प्रथम कुशाओंका आसनदेके तीन पात्रदेवे फिर उनपात्रोंमें पवित्रागेरे(शन्नोदेवी)इसमन्त्रसे जलडाले १८ फिर (तिलोसि) इसमन्त्रसे तिल डालकर गन्ध पुष्पादि डालै कैतो काष्ठका पात्र बनावे अथवा समुद्रके जल में उत्पन्न होने वाले कमल आदिका पात्र बनावे १९ यहतो धनाभावमें है परन्तु सामर्थ्यवान्को सोने चाँदीके पात्रपितृ कर्ममें बनाना लिखाहै अथवा चाँदीसे भिन्न धातुओं के बनवानेमें चाँदीका जल फिरवाना वा उसी धातु में कुछ चाँदी गिरवा देना अथवा उसके लिये चाँदी की दक्षिणा देना भी योग्य है २०।२१ क्योंकि श्रद्धासे दियाहुआ जलभी अक्षयफलका देनेवाला होताहै और अर्घदान पिंडदान और भोजनपात्र यह सब पात्र तो पितरोंके अर्थचाँदी केही बनानेकहेहैं इसकायह हेतुहै कि चाँदी शिवजीके नेत्रोंसे उत्पन्नहुईहै इसलिये वह पितरोंको अतिप्रिय है और अमंगल होने से उसको देवकार्य्य में निषेधकरदे इसप्रकारसे शक्तिके अनुसार पात्रोंको कल्पितकरे और (यादिव्या) इसऋचाको कहकर

एवंपात्राणिसंकल्प्य यथालाभंविमत्सरः। यादिव्येतिपितुर्नाम गोत्रैर्दर्भकरोन्यसेत् २४
पितृनावाहयिष्यामि कुर्वित्युक्तस्तुतैःपुनः। उशन्तस्त्वातथायन्तु ऋग्भ्यामावाहयेत्पि
तृन् २५ यादिव्येत्यर्घ्यमुत्सृज्य दद्याद्गन्धादिकांस्ततः। हस्तात्तदुदकंपूर्वं दत्त्वासंश्र
वमादितः २६ पितृपात्रेनिधायाथ न्युब्जमुत्तरतोन्यसेत्। पितृभ्यःस्थानमसीति निधा
यपरिषेचयेत् २७ तत्रापिपूर्ववत्कुर्यादग्निकार्यंविमत्सरः। उभाभ्यामपिहस्ताभ्यामाहृ
त्यपरिवेषयेत् २८ प्रशान्तचित्तःसततं दर्भपाणिरशेषतः। गुणाढ्यैःसूपशाकैस्तु नाना
भक्ष्यैर्विशेषतः २९ अन्नन्तुसदधिक्षीरं गोघृतंशर्करान्वितम्। मासम्प्रीणातिवैसर्वान्
पितृनित्याहकेशवः ३० द्वौमासौमत्स्यमांसेन त्रीन्मासान्हारिणेनतु। औरभ्रेणाथचतुरः
शाकुनेनाथपञ्चवै ३१ षण्मासंच्छागमांसेन तृप्यंतिपितरस्तथा। सप्तपार्षतमांसेनतथा
ष्टावेणजेनतु ३२ दशमासांस्तुतृप्यन्ति वराहमहिषामिषैः। शशकूर्मजमांसेन मासानेका
दशैवतु ३३ संवत्सरन्तुगव्येन पयसापायसेनच। रौरवेणचतृप्यन्ति मासान्पञ्चदशै
वतु ३४ व्याघ्रयासिंहस्यमांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी। कालशाकेनचानन्ता खड्गमांसेनचै
वहि ३५ यत्किञ्चिन्मधुसंमिश्रं गोक्षीरंघृतपायसम्। दत्तमक्षयमित्याहुःपितरःपूर्वदेवताः
३६ स्वाध्यायंश्रावयेत्पित्र्यं पुराणान्यखिलानिच। ब्रह्मविष्णवर्करुद्राणांस्तवानिविविधा

अपने पिताका नामगोत्रादि उच्चारण करताहुआ कुशाको स्थापनकरे २३।२४ फिर(पितृन्-आवाहयिष्यामि) इसमन्त्रसे तिल छोड़े अथवा(उशंतस्त्वाआयंतुनः)इन दो मन्त्रों से पितरोंका आवाहन करे और(यादिव्या)इसमंत्रसे अर्घदानदेके पीछे गन्धादिक दानकरे-फिर संस्रवप्राशनं-अर्थात् प्रथमहस्त से जलदानदेके फिर संस्रवपात्रसे जलदान देवे २५।२६ और पितामहादिकों के पात्रको पिताके पात्र पर रखकर उत्तरकीओरऔंधे करदे फिर (पितृभ्यःस्थानमसि) इसमन्त्रसे स्थापित कर उनमें जल छिड़कदे फिर पूर्व के समान अग्नि कर्म करे फिर दोनों हाथों से भोजन को परोसे और प्रसन्नचित्त होके हाथमें कुशाको धारण किये हुए सुस्वादु और गुणोंसे युक्त सुन्दर दाल शाक आदिक व्यंजन और नानाप्रकारके अन्नों से ब्राह्मणों को भोजन करावे २७। २९ दही दूध घृत खांड़ इन्हों से युक्त अन्नका भोजन कराने से पितर एकमहीने तक तृप्त रहते हैं ३० और मत्स्यमांससे दो महीने तक-हिरणके मांससे तीन महीने तक औरभ्र अर्थात् मेढ़ेके मांससे चारमहीनेतक पक्षियोंके मांससेपांच महीने तक ३१ बकरेके मांससे छःमहीनेतक- विन्दुओं वाले हिरणके मांससे सात महीनेतक एण-संज्ञक मृगके मांस से आठमहीनेतक शूकर भैंसा इनके मांस से दशमहीने तक शशा कछुवा इनके मांससे ग्यारह महीनेतक३२।३३गौके दूध वा खीरके भोजनसे वर्षदिनतक रौरवसंज्ञक हिरणकेमांस से१५महीनेतक३४मेढ़ा और सिंह इनकेमांससे १२वर्षतक कालशाकजीव और गैंडेकेमांससे अनन्तवर्षोंतक पितर तृप्तरहतेहैं ३५ औरदेवतासंज्ञक-पितरोंका यहभी वचनहै कि जो शहद आदिकमिष्ट पदार्थ से बनेहुए पदार्थ हैं वा गौके दूध और उसी दूधकी तस्मै के भोजनकराता है वह उसके पितरों को अक्षयगुण होकर प्राप्तहोताहै और यहभी वचनहै कि पितर कर्म में पितृसंहिता आदि मन्त्रोंका पाठकरवावे अथवा संपूर्ण पुराणोंका पाठ करावे यह बनना कठिनहै तो ब्रह्मा विष्णु रुद्र और सूर्य

निच ३७ इन्द्राग्निसोमसूक्तानि पावनानिस्वशक्तितः। बृहद्रथन्तरंतद्वज्ज्येष्ठसामसरौहि
णम् ३८ तथैवशान्तिकाध्यायं मधुब्राह्मणमेवच। मण्डलंब्राह्मणंतद्वत् प्रीतिकारितुय
त्पुनः ३९ विप्राणामात्मनश्चैव तत्सर्वंसमुदीरयेत्। भुक्तवत्सुततस्तेषु भोजनोपान्ति
केन्नृप ४० सार्ववर्णिकमन्नाद्यं सन्नीयाप्लाव्यवारिणा। समुत्सृजेद्भुक्तवतामग्रतोवि
किरेद्भुवि ४१ अग्निदग्धास्तुयेजीवा येऽप्यदग्धाःकुलेमम। भूमौदत्तेनतृप्यन्तु प्रया
न्तुपरमांगतिम् ४२ येषांनमातानपितानबन्धुर्नगोत्रशुद्धिर्नतथान्नमस्ति। तत्तृप्तयेऽन्नं
भुविदत्तमेतत् प्रयातुलोकेषुसुखायतद्वत् ४३ असंस्कृतप्रमीतानां त्यक्तानांकुलयोषि
ताम्। उच्छिष्टभागधेयःस्याद्दर्भेविकिरयोश्चयः ४४ तृप्ताञ्ज्ञात्वोदकंदद्यात् सकृद्विप्रक
रेतथा। उपलिप्तेमहीपृष्ठे गोशकृन्मूत्रवारिणा ४५ निधायदर्भान्विधिवद्दक्षिणाग्रान्
प्रयत्नतः। सर्ववर्णेनचान्नेन पिण्डांस्तुपितृयज्ञवत् ४६ अवनेजनपूर्वन्तु नामगोत्रेण
मानवः। गन्धधूपादिकंदद्यात्कृत्वाप्रत्यवनेजनम् ४७ जान्वाच्यसव्यंसव्येन पाणि
नाथप्रदक्षिणम्। पित्र्यमानीयतत्कार्यं विधिवद्दर्भपाणिना ४८ दीपप्रज्वालनंतद्वत्कु
र्य्यात्पुष्पार्चनम्बुधः। अथाचान्तेषुचाचम्य वारिदद्यात्सकृत्सकृत् ४९ अथपुष्पाक्षता
न्पश्चादक्षय्योदकमेवच। सतिलन्नामगोत्रेण दद्याच्छक्त्याचदक्षिणाम् ५० गोभूहि
रण्यवासांसि भव्यानिशयनानिच। दद्याद्यदिष्टंविप्राणामात्मनःपितुरेवच ५१ वित्त

इनके अनेकप्रकारके स्तोत्रोंका पाठकरावे अथवाशक्तिके अनुसार इन्द्र अग्नि सोम इत्यादिकोंके पवित्र सूक्तसंज्ञक मन्त्रोंकोजपै और बृहद्रथन्तर वा ज्येष्ठ सामरौहिण-शान्तिका अध्याय मधुब्राह्मण संज्ञक मन्त्र-मण्डल ब्राह्मण संज्ञकमन्त्र-इनका पाठकरे वा पितरोंके प्रसन्नकरनेवाले अन्य २ मन्त्रोंका जप पाठकरे यह सब आपकरे वा ब्राह्मणोंसे करवावे और जब ब्राह्मण भोजन करचुकें तब भोजन के समीपआके ३९।४० सबप्रकार के अन्नोंको जलमें मिलाके भोजन कियेहुए ब्राह्मणोंके आगे पृथ्वी में बखेर देवे और अग्निदग्धाश्चये जीवा येप्यदग्धाः कुलेमम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायांतु परांग तिम्॥ येषां न माता न पितानबन्धुर्न गोत्रशुद्धिर्न तथान्नमस्ति। तत्तृप्तयेन्नंभुविदत्तमेतत्प्रयान्तु लोके सुखायतद्वत् ४१।४३ इत्यादिक श्लोकोंका उच्चारण करके कुलसे त्यागेहुए जोकोई स्त्रीपुरुषादि-क मरगये हैं उनके अर्थयह उच्छिष्टभाग दिया जाताहै और कुशापै विकरसंज्ञक भाग दियाजाताहै ४४ ब्राह्मणोंको तृप्तहुआ जानके उनके हाथोंको धुलावे फिर गोमूत्र और जल आदिसे लीपीहुई पृथ्वी पर बैठावे ४५ फिर विधिपूर्वक दक्षिणकी ओर अग्रभागकरके कुशाओंको बिछावे और सबप्रकारके भोजनको मिलाके पितृयज्ञके समान पिण्डदान देवे ४६ प्रथम तो नामगोत्रका उच्चारण करके अवनेजन देवे फिर पिण्डदान के पीछे प्रत्यवनेजनदेके गन्धपुष्पधूपादिका दानदेवें ४७ वाम जंघाको झुकाके अपसव्यहोकर हाथ में कुशा दक्षिणासंयुक्त गन्धादिका दानकरे ४८ दीपकप्रकाश करे पुष्पोंसेही आचमनादिपूर्वक एकएकवार सबको जलदेवे ४९ फिर पुष्प अक्षतादि देनेकेपीछे अक्षय्योदक दानदेवे फिर नाम गोत्रका उच्चारण करके तिलजल हाथमें लेके दक्षिणाकादान दे उस दक्षिणामें गौ-पृथ्वी-सुवर्ण उत्तमवस्त्र ५० और सुन्दर शय्यादक्षिणादे अथवा उन ब्राह्मणोंको वा

शाठ्येनरहितः पितृभ्यःप्रीतिमावहन्। ततःस्वधावाचनकं विश्वेदेवेषुचोदकम्५२दत्त्वा
शीःप्रतिगृह्णीयाद्द्विजेभ्यःप्राङ्मुखोबुधः। अघोराःपितरःसन्तु सन्त्वित्युक्तःपुनर्द्विजैः५३
गोत्रंतथावर्द्धन्तान्नस्तथेत्युक्तश्चतैः पुनः। दातारोनोऽभिवर्द्धन्तामितिचैवमुदीरयेत्
५४ एताःसत्याशिषः सन्तु सन्त्वित्युक्तश्चतैःपुनः। स्वस्तिवाचनकंकुर्यात्पिण्डानुद्
त्यभक्तितः ५५ उच्छेषणन्तुतत्तिष्ठेद्यावद्विप्राविसर्जिताः। ततोगृहबलिंकुर्यादितिधर्म्म
व्यवस्थितिः ५६ उच्छेषणंभूमिगतमजिह्मस्यास्तिकस्यच। दासवर्गस्यतत्पित्र्यंभाग
धेयंप्रचक्षते ५७ पितृभिर्निर्मितम्पूर्वमेतदाप्यायनंसदा। अपुत्राणांसपुत्राणां स्त्रीणाम
पिनराधिप! ५८ततस्तानग्रतःस्थित्वापरिगृह्योदपात्रकम्। वाजेवाजइतिजपन् कुशाग्रेण
विसर्जयेत् ५९ वहिःप्रदक्षिणान्कुर्य्यात्पदान्यष्टावनुव्रजन्। बंधुवर्गेणसहितःपुत्रभार्य्या
समन्वितः ६० निवृत्यप्रणिपत्याथ पर्युक्ष्याग्निंसमंत्रवत्। वैश्वदेवंप्रकुर्वीत् नैत्यकंब
लिमेवच ६१ ततस्तुवैश्वदेवांते सभृत्यसुतबांधवः। भुञ्जीतातिथिसंयुक्तः सर्वंपितृ
निषेवितम् ६२ एतच्चानुपनीतोऽपि कुर्य्यात्सर्वेषुपर्वसु। श्राद्धंसाधारणंनाम सर्वकामफ
लप्रदम् ६३ भार्याविरहितोऽप्येतत् प्रवासस्थोऽपिभक्तिमान्। शूद्रोऽप्यमन्त्रवत्कुर्याद
नेनविधिनाबुधः ६४ तृतीयमाभ्युदयिकं वृद्धिश्राद्धंतदुच्यते। उत्सवानन्दसम्भारे य-

अपने पिता आदिकोंको जो प्रियवस्तु होय वहीदान ५१ अपनी शक्तिके अनुसारसे न्यून न हो दक्षि-
णामें देदे इसके पीछे स्वधाशब्दका उच्चारणकरे और विश्वेदेवों के ऊपर जल छिड़के ५२ इस रीति
से सब विधिकर पूर्वाभिमुखहो विश्वेदेवोंसे आशीर्वाद लेवे अघोराः पितरस्सन्तु ऐसाकहनेपर ब्राह्मणों
को सन्तु ऐसाशब्द कहनायोग्य है ५३ हमारा गोत्रवढ़े ऐसे श्राद्धकर्त्ताके कहने पर ब्राह्मण कहें कि
तथास्तु हमारेदाता बढ़ें फिर श्राद्धकर्त्ताकहे कि यह सब आशीर्वाद सत्यहो ऐसा कहने पर ब्राह्मणक-
हें कि सत्यही होवेंगे इसके पीछे स्वस्तिवाचनपूर्वक भक्ति से पिंडोंका विसर्जन करदेवे ५४। ५५
जबतक ब्राह्मणों का विसर्जन न होजाय तबतक उसश्राद्धकी उच्छेषण संज्ञारहती है इसकेअनन्तर
ग्रहबलि कर्मादिककरे फिर पृथ्वीमें गिराहुआ वह श्राद्धका उच्छेषणअन्न कुटिलतारहित स्वस्तिसे
युक्त दास भृत्यादिकों के गणका भाग है ५६। ५७ इसप्रकारसे यह आप्यायनश्राद्ध प्रथम पितरों
काही रचा है हे राजन् विष्णुका वचन है कि पुत्ररहित वा सपुत्रस्त्री पुरुषों को यह करना योग्य है
उनपिंडों के अगाड़ी स्थित होके जलके पात्रको लेकर वाजे वाजे इस मन्त्रको पढ़ताहुआ कुशा
के अग्रभाग से पिंडोंका विसर्जनकरदे ५८। ५९ और आठकदम चलकर घरसे बाहरकी ओर
गमनकरे और अपने बन्धुजन तथा पुत्र भार्य्या आदि से युक्तहोकर इसश्राद्धको निवृत्त करके
प्रणामपूर्वक मन्त्रसहित अग्निका पर्य्युक्षणकरे फिर वैश्वदेवकर्मादि से लेकर अपने सब नित्य
नेमके बलिदानादिक कर्मकरे १ फिर वैश्वदेव कर्मके अन्तमें पुत्र बांधव भृत्य और अभ्यागतों समेत
पितरोंसे सेवित कियेहुए अन्नको आपभी भोजनकरे इसप्रकारसे सम्पूर्ण पर्वयोगोंमें करना चाहिये
यह साधारणनामका सब कामनाओंके फलोंका देनेवाला श्राद्धकहाहै ६०। ६२ इसश्राद्धको इसी
विधिसे भार्य्याकेविना बुद्धिमान् पुरुष भक्तिमान् संन्यासी अथवा मन्त्रसे रहित शूद्रभीकरे ६४ और

ज्ञोद्वाहादिमंगले ६५ मातरःप्रथमंपूज्याः पितरस्तदनंतरम् । ततोमातामहाराजन्! विश्वेदेवास्तथैवच ६६ प्रदक्षिणोपचारेण दध्यक्षतफलोदकैः । प्राङ्मुखोनिर्वपेत्पिण्डान् दूर्वयाचकुशैर्युतान् ६७ सम्पन्नमित्यभ्युदयेदद्यादर्घ्यंद्वयोर्द्वयोः। युग्माद्विजातयः पूज्या वस्त्रकार्तस्वरादिभिः ६८ तिलार्थस्तुयवैःकार्यो नान्दिशब्दानुपूर्वकः । माङ्गल्यानिचसर्वाणि वाचयेद्द्विजपुङ्गवैः ६९ एवंशूद्रोऽपिसामान्यवृद्धिश्राद्धेऽपिसर्वदा । नमस्कारेणमन्त्रेण कुर्यादामान्नतःसदा ७० दानप्रधानःशूद्रःस्यादित्याहभगवान्प्रभुः । दानेनसर्वकामाप्तिरस्यसञ्जायतेयतः ७१ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसाधारणाभ्युदयकीर्तनोनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

(सूत उवाच) एकोद्दिष्टमतोवक्ष्ये यदुक्तंचक्रपाणिना । मृतेपुत्रैर्यथाकार्यमाशौचञ्चपितर्यपि १ दशाहंशावमाशौचं ब्राह्मणेषुविधीयते । क्षत्रियेषुदशाद्वेच पक्षंवैश्येषुचैवहि २ शूद्रेषुमासमाशौचं सपिण्डेषुविधीयते । नैशंवाऽकृतचूडस्य त्रिरात्रम्परतःस्मृतम् ३ जाननेऽप्येवमेवस्यात् सर्ववर्णेषुसर्वदा । तथास्थिसञ्चयादूर्ध्वमङ्गस्पर्शोविधीयते ४ प्रेतायपिण्डदानन्तु द्वादशाहंसमाचरेत् । पाथेयंतस्यतत्प्रोक्तं यतः प्रीति

तीसरा आभ्युदयिक अर्थात् नांदीमुख श्राद्ध कहाता है यह नान्दीमुख श्राद्धका उत्सव आनन्द यज्ञ विवाहादिक मंगलोंके आरम्भमें कियाजाताहै ६५ इसमें प्रथम माताओंका पूजनहोताहै फिर पितरोंका फिर मातामहादिकों का और फिर विश्वेदेवाओं का पूजन होता है ६६ इसश्राद्धमें प्रदक्षिणादिपूर्व्वक दही–अक्षत फल जल दूध और कुशाओं से युक्त पिण्डों को पूर्वाभिमुखहो के देना होताहै इसप्रकार से आभ्युदयश्राद्धमें दो दो के अर्थ अर्घ्य दे और युग्म द्विजाति अर्थात् सपत्नीक ब्राह्मण सुवर्ण वस्त्रादिसे पूजन करनेके योग्य है ६७। ६८ यहाँ तिलोंकी जगह यवोंसे पूजनकरना योग्यहै इसीको नान्दीमुख श्राद्ध कहते हैं इसश्राद्धमें ब्राह्मणोंको सबमांगलिकहीमंत्रोंका उच्चारण करना योग्यहै ६९ इसप्रकारसे इस सामान्यवृद्धिश्राद्धमें इससंपूर्ण विधिको शूद्रभी करे और नमस्काररूपी मंत्रकरके सदैव कच्चे अन्नसे करे ७० क्योंकि शूद्रसदैव दान करने केयोग्यहै और दानहीं करनेसे इसकी सबकामना सिद्ध होजाती हैं शूद्रमंत्र विधानके योग्य नहीं है ऐसा विष्णु भगवान् का वचन है ७१ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसाधारणाभ्युदयकीर्त्तननामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

सूतजीबोले–कि अबविष्णु भगवान्के कहेहुए एकोद्दिष्टश्राद्धको कहतेहैं-पिताके मरनेकेपीछे शौचकालतक तथा वर्षदिनतक पुत्रोंको एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना चाहिये १ ब्राह्मणों के दशदिनतक अशौच रहताहै क्षत्रियोंके बारह १२ दिनतक वैश्योंके पन्द्रह १५ दिनतक अशौचरहताहै और तीनोंद्विजातियोंके सपिण्ड भाइयोंकेभी अपने २ वर्णके अनुसार अशौच रहताहै २ और शूद्रोंके एकमहीनेतक होताहै–चूडाकर्म न होनेवाले बालकका एकदिनका और चूडाकर्म होनेवाले का तीन ३ दिनका अशौचरहताहै ३ इसीप्रकारसे सब वर्णोंमें जन्म समयकाभी अशौच जानना योग्यहै और मृतशौच में अस्थिसंचयन करनेके पीछे मृतकके गोत्रवाले लोगोंका अंग स्पर्श करनेके योग्य होता है प्रेतके निमित्त बारह १२ दिन में पिण्ड देना चाहिये यह सब पिण्ड जो दिये जाते हैं वह पाथेय अर्थात्

करम्महत् ५ तस्मात्प्रेतपुरंप्रेतो द्वादशाहंननीयते । गृहंपुत्रंकलत्रञ्च द्वादशाहंप्रप
श्यति ६ तस्मान्निधेयमाकाशे दशरात्रंपयस्तथा । सर्वदाहोपशान्त्यर्थमध्वश्रमविना
शनम् ७ ततएकादशाहेतु द्विजानेकादशैवतु । क्षत्रादिःसूतकान्तेतु भोजयेदयुतोद्वि
जान् ८ द्वितीयेऽह्निपुनस्तद्वदेकोद्दिष्टंसमाचरेत् ।आवाहनाग्नौकरणं दैवहीनंविधानतः९
एकंपवित्रमेकोर्घं एकःपिण्डोविधीयते । उपतिष्ठतामित्यतद्देयंपश्चात्तिलोदकम् १० स्वा
दितंविकिरेद्ब्रूयाद्विसर्गेचाभिरम्यताम् । शेषंपूर्ववदत्रापि कार्यंवेदविदापितुः ११ अ
नेनविधिनासर्वमनुमासंसमाचरेत् । सूतकान्ताद्द्वितीयेऽह्नि शय्यांदद्याद्विलक्षणाम् १२
काञ्चनंपुरुषंतद्वत् फलवस्त्रसमन्वितम् । संपूज्यद्विजदाम्पत्यं नानाभरणभूषणैः १३
वृषोत्सर्गंप्रकुर्वीत देयाचकपिलाशुभा । उदकुम्भश्चदातव्यो भक्ष्यभोज्यसमन्वितः १४
यावदब्दंनरश्रेष्ठ ! सतिलोदकपूर्वकम् । ततःसंवत्सरेपूर्णे सपिण्डीकरणंभवेत् १५ स
पिण्डीकरणादूर्ध्वं प्रेतःपार्वणभाग्भवेत् । वृद्धिपूर्वेषुयोग्यश्च गृहस्थश्चभवेत्ततः १६
सपिण्डीकरणेश्राद्धे देवपूर्वंनियोजयेत् । पितॄनेवासयेत्तत्र पृथक्प्रेतंविनिर्दिशेत् १७ ग
न्धोदकतिलैर्युक्तं कुर्यात्पात्रचतुष्टयम् । अर्घार्थंपितृपात्रेषु प्रेतपात्रंप्रसेचयेत् १८ तद्व

उस प्रेतके जानेवाले मार्गमें उसकी प्रीति करनेवाले कहे हैं ४ । ५ इसी हेतुसे अर्थात् बारहवें दिन के पिण्डदेनेसे वह प्रेत बारहवें दिन प्रेतपुरमें नहींजाताहै और बारह दिनोंतक अपनेघर पुत्र और स्त्री इनको देखताहै इसीकारणसे दशदिन १० तक आकाशमें घटको बाँधकर उसमें जलदान दियाकरे इस जलसे उसके दाहकी शान्ति होतीहै और मार्गमें के श्रमका भी नाश होताहै ६ । ७ फिर ग्यारहवेंदिन ११ ब्राह्मणोंको जिमावे और क्षत्रियादिक अपने सूतकके अन्तमें ब्राह्मणोंको जिमावे ८ फिर उसके दूसरेदिन एकोद्दिष्ट श्राद्धकरे फिर आवाहन अग्नौकरणकरे परन्तु विश्वेदेव कर्मादिक न करे ९ एक पवित्रा एकपिण्ड और एक अर्घदेके फिर तिलोदक दानदेवे इसको एकोद्दिष्टश्राद्ध कहते हैं और विकरदानकरे और विसर्जन होनेकेपीछे अभिरम्यतां ऐसा उच्चारणकरे बाकी सब विधि उक्त प्रकारसे करना वेदज्ञ ब्राह्मणों ने कहा है १० । ११ इसविधि से सम्पूर्ण कर्म्म महीने महीने पीछेकरे और सूतकके अन्त में दूसरे दिन अर्थात् एकादशाह के दिन उत्तम शय्यादानकरे और फल वस्त्रादिकों से युक्त सुवर्णका पुरुष बनाकर ब्राह्मण और ब्राह्मणीका पूजन करके उनकेअर्थ उस नाना भरण युक्त सुवर्ण के पुरुषका दानकरदे १२ । १३ फिर वृषोत्सर्ग करे और सुन्दर कपिला गौकादानकरे भक्ष्यभोज्यपदार्थों से युक्त जलका घटदानकरे १४ भक्तिमान् उत्तम मनुष्य वर्ष दिनतक तिलजल सहित कलशकादान और हर महीने एकोद्दिष्ट श्राद्धकरे फिर वर्षदिन व्यतीत होने पर सपिंडी श्राद्धकरे १५ सपिण्डीश्राद्ध किये पीछे वह प्रेत पार्वणश्राद्ध का भागी होता है और वहगृहस्थी पुरुषभी नान्दीमुख आदिक श्राद्धों के करने कराने के योग्यहोताहै १६ सपिण्डी श्राद्ध में प्रथम विश्वेदेवों का पूजनकरे फिर पितरों का आवाहन करके कर्मको करे १७ फिर गन्ध जल और तिल इत्यादिकों से युक्त ४ पात्रबनावे अर्घ के निमित्त पितरों के पात्र में प्रेतपात्र का जल डाले १८ और संकल्पकरके १ प्रेतका और ३ पितरोंके यहचार पिंड देवे फिर (ये समाना) इत्यादि

त्संकल्प्यचतुरः पिण्डान्पिण्डप्रदस्तदा।येसमानाइतिद्वाभ्या मन्त्यन्तुविभजेत्रिधा१९
चतुर्थस्यपुनःकार्यं नकदाचिदतोभवेत्।ततःपितृत्वमापन्नः सर्वतस्तुष्टिमागतः २० अ
ग्निष्वात्तादिमध्यत्वं प्राप्नोत्यमृतमुत्तमम्।सपिण्डीकरणादूर्ध्वं तस्मैतस्मान्नदीयते २१
पितृष्वेवतुदातव्यं तत्पिण्डोयेषुसंस्थितः। ततःप्रभृतिसंक्रान्तावुपरागादिपर्वसु २२
त्रिपिण्डमाचरेच्छ्राद्धमेकोद्दिष्टंमृताहनि। एकोद्दिष्टंपरित्यज्य मृताहेयःसमाचरेत् २३
सदैवपितृहासस्यान्मातृभ्रातृविनाशकः। मृताहेपार्वणंकुर्वन्नधोऽधोयातिमानवः २४
संपृक्तेष्वाकुलीभावः प्रेतेषुतुयतोभवेत्। प्रतिसंवत्सरंतस्मादेकोद्दिष्टंसमाचरेत् २५
यावदब्दन्तुयोदद्यादुदकुम्भंविमत्सरः। प्रेतायान्नसमायुक्तं सोऽश्वमेधफलंलभेत् २६
आमश्राद्धंयदाकुर्याद्विधिज्ञःश्राद्धदस्तदा।तेनाग्नौकरणंकुर्यात्पिण्डांस्तेनैवनिर्वपेत्२७
त्रिभिःसपिण्डीकरणे अशेषत्रितयेपिता। यदाप्राप्स्यतिकालेन तदामुच्येतबन्धना
त् २८ मुक्तोऽपिलेपभागित्वं प्राप्नोतिकुशमार्जनात्। लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याःपि
ण्डभागिनः २९ पिण्डदःसप्तमस्तेषां सापिण्ड्यंसाप्तपौरुषम् ३०॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसपिण्डीकरणकल्पोनामाष्टादशोऽध्यायः १८॥

(ऋषय ऊचुः) कथंकव्यानिदेयानि हव्यानिचजनैरिह। गच्छन्तिपितृलोकस्था

दो २ मंत्रोंकरके प्रेतपिंडके तीन खंडकरदेवे १९ इसके विशेष चौथे प्रेतपिंड करनेका कोईभी कार्य्य नहीं है फिर पितरभावको प्राप्तहुआ वहप्रेत प्रसन्नता को प्राप्त होजाता है २० अग्निष्वात्तादि पितरोंके मध्यमें उत्तम अमृतको प्राप्तहोताहै इस हेतु से सपिण्डकिरणश्राद्धहुए पीछे केवल उस पिता आदिके नामसेही श्राद्धनहीं करना २१ किन्तु उसका पिण्ड जिन पितरोंमें मिलाहै उनसवों समेत उसके निमित्त श्राद्धादिक करना योग्यहै जब संक्रान्ति और ग्रहणादिक पर्व्वोंमें श्राद्धकरे तब तीनही पिंडोंका आचरणकरे और क्षयाह आदिक श्राद्धमें एकोद्दिष्ट कर्मकरे और क्षयाहिकके दिन जो पुरुष एकोद्दिष्टश्राद्धको त्यागके अन्यथा अर्थात् औरका और करताहै वह विश्वेदेव पितर माता और भ्राता इत्यादिकों का नाशकरनेवाला कहा है २२। २४ क्योंकि मिलेहुए प्रेतों में व्याकुलता पड़जाती है इस हेतुसे वार्षिक क्षयाहिकमें एकोद्दिष्टही करना योग्यहै २५ जोपुरुष प्रसन्नचित्त से वर्ष दिनतक प्रेतके निमित्त जलके घटका दानदेताहै वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै २६ जोविधिज्ञ श्राद्धकर्त्ता पुरुष कच्चेही अन्नसे श्राद्धकरे तो उसी अन्नसे अग्नौकरण करके उसीके पिण्ड भी करे २७ तीनोंके साथ सपिण्डीकर्म होनेमें उन तीनोंसे युक्त जब पिता होजाताहै तभी वहबन्धनसे छुटताहै २८ और उनमें जब तीसरा पिता मिलगया तब एकछुटाहुआ पुरुष लेपभागी संज्ञक होजाताहै और कुशाके मार्जनसे अपने भागको भी प्राप्त होजाताहै पितासे आदिलेकर तीन पुरुष पिंडके भागी हैं और चौथेसे आदिलेकर लेपभागी हैं इनमें सातवां पिंडकादेनेवाला है इसी हेतुसे यह सापिण्ड्य साप्तपौरुष अर्थात् सापिंड्य सातपुरुषोंका कहाताहै २९। ३० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसपिण्डीकरणकल्पोनामाष्टादशोऽध्यायः १८॥

ऋषियोंने पूछा—हे सूतजी इससंसारमें मनुष्योंको हव्यकव्यसंज्ञक शाकल्य किसप्रकारसे देना

नू प्रापकःकोऽत्रगद्यते, १ यदिमर्त्योद्विजोभुङ्क्तेहूयतेयदिवानले। शुभाशुभात्मकैःप्रेतै र्दत्तन्तद्भुज्यतेकथम् २ (सूतउवाच) वसूनूवदन्तिचपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांस्तथादित्यानित्येवंवैदिकीश्रुतिः ३ नामगोत्रंपितॄणान्तुप्रापकंहव्यकव्ययोः। श्राद्धस्यमन्त्राःश्रद्धाच उपयोज्यातिभक्तितः ४ अग्निष्वात्तादयस्तेषामाधिपत्येऽव्यव स्थिताः। नामगोत्रकालदेशाभवान्तरगतानपि ५ प्राणिनःप्रीणयन्त्येते तदाहारत्व मागतान्। देवोयदिपिताजातः शुभकर्म्मानुयोगतः ६ तस्यान्नममृतंभूत्वा दिव्यत्वे ऽप्यनुगच्छति। दैत्यत्वेभोगरूपेण पशुत्वेचतृणंभवेत् ७ श्राद्धान्नंवायुरूपेण सर्पत्वेप्यु पतिष्ठति। पानंभवतियक्षत्वे गृध्रत्वेऽपितथामिषम् ८ दनुजत्वेतथामाया प्रेतत्वेरुधिरो द्रकम्। मनुष्यत्वेऽन्नपानानि नानाभोगरसंभवेत् ९ रतिशक्तिस्त्रियःकान्ता भोज्यंभो जनशक्तिता। दानशक्तिःसविभवा रूपमारोग्यमेवच १० श्रद्धापुष्पमिदम्प्रोक्तं फलं ब्रह्मसमागमः। आयुःपुत्रान्धनंविद्यां स्वर्गंमोक्षंसुखानिच ११ राज्यंचैवप्रयच्छन्ति प्रीताःपितृगणानृणाम्। श्रूयतेचपुरामोक्षं प्राप्ताःकौशिकसूनवः १२ पंचभिर्जन्मसम्बन्धै र्गताविष्णोःपरंपदम् १३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेश्राद्धकल्पे फलानुगमनोनामैकोनविंशोऽध्यायः १९॥

(ऋषयऊचुः) कथंकौशिकदायादाः प्राप्तास्तेयोगमुत्तमम्। पंचभिर्जन्मसम्बन्धैः

योग्यहै और मनुष्य किसप्रकारसे पितरोंके लोकोंमें प्राप्तहोते हैं और इनका उनलोकोंमें प्राप्तकरने वाला कौनहै १ ब्राह्मणोंका भोजन कराना और अग्निमें हवन करना इत्यादिक सबप्रकारके दियेहुए दानोंको प्रेत किसप्रकारसे भोगताहै २ सूतजीबोले–पिता वसुसंज्ञक कहाताहै पितामहादिक रुद्र-संज्ञक और प्रपितामह आदिक आदित्यस्वरूप कहातेहैं यह वेदकी श्रुतिहै ३ पितरोंका जोनाम गोत्रा-दिकहै वही उनको हव्य कव्यकी प्राप्तिकरताहै श्राद्धके मंत्रोंका उच्चारण और श्रद्धा अत्यन्त भक्ति से करनी चाहिये ४ और अग्निष्वात्तादिक पितर उनके अधिपति व्यवस्थित हैं और नामगोत्रकाल और देश यह चारोंवस्तु दूसरे भी जन्मोंमें प्राप्तहोनेवाले प्राणियोंको उसीस्थानमें भोजनादिकोंसे तृप्तकरते हैं और जो कदाचित् पिताशुभकर्मादिकों के योगसे देवताहोजाय तो उसको वह अन्न अमृतहोके स्वर्गमें प्राप्त होताहै यक्ष योनिमें पानरूपहोके गृध्रयोनिमें मांसरूपसे ५।८ दानव योनिमें मायारूपसे-प्रेतयोनिमें जलरुधिररूपसे-और मनुष्य योनिमें अन्नपानादिक अनेक प्रकारके भोग रसहोके प्राप्तहोताहै ९ उत्तम स्त्रियोंमें रमण करनेकी शक्तिहोना-भोजनके पदार्थोंमें भोजन करनेकी शक्तिहोना और रूप आरोग्यआदिहोना इनसब वस्तुओंमें श्रद्धारूपी पुष्पहै औरब्राह्मणोंका समागम करना फल है अर्थात् यहसब हेतुहैं इनहेतुओंसे पितर प्रसन्नहोकर श्राद्धकर्त्ता पुरुषको आयु–पुत्र–धन-विद्या-स्वर्ग-मोक्ष-सुख और राज्य इत्यादिक पदार्थ देते हैं–सुनाजाता है कि कौशिक ऋषिकेपुत्र पांच प्रकारके जन्म सम्बन्धोंकरके मोक्ष रूप विष्णुके परमपदको प्राप्त होगये हैं १०। १३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांश्राद्धकल्पेफलानुगमनोनामैकोनविंशोऽध्यायः १९॥

ऋषियोंने पूछा–हे सूतजी वह कौशिकके पुत्र उत्तमयोगको कैसे प्राप्तहुये और पांच जन्म सम्ब-

कथंकर्म्मक्षयोभवत् १ (सूतउवाच) कौशिकोनामधर्म्मात्मा कुरुक्षेत्रेमहान्ऋषिः।
नामतःकर्म्मतस्तस्य सुतान्सप्तनिबोधत २ स्वसृपःक्रोधनोहिंस्रः पिशुनःकविरेवच।
वारदुष्टःपितृवर्तीच गर्गशिष्यास्तदाभवन् ३ पितर्य्युपरतेतेषामभूद्दुर्भिक्षमुल्वणम्। अ-
नावृष्टिश्चमहती सर्वलोकभयङ्करी ४ गर्गादेशाद्वनेदोग्ध्रीं रक्षन्तस्तेतपोधनाः। खादा
मःकपिलामेतां वयंक्षुत्पीड़िताभृशम् ५ इतिचिन्तयतांपापं लघुःप्राहतदानुजः। यद्य
वश्यमियंवध्या श्राद्धरूपेणयोज्यताम् ६ श्राद्धेनियोज्यमानेयं पापात्त्रास्यतिनो ध्रुवम्।
एवंकुर्वित्यनुज्ञातः पितृवर्तीतदानुजैः ७ चक्रेसमाहितःश्राद्धमुपयुज्यचतांपुनः। द्वौदेवे
भ्रातरौकृत्वापित्र्येत्रीनप्यनुक्रमात् ८ तथैकमतिथिंकृत्वा श्राद्धदःस्वयमेवतु। चकार
मन्त्रवच्छ्राद्धं स्मरन्पितृपरायणः ९ विनागवावत्सकोऽपि गुरवेविनिवेदितः। व्याघ्रेण
निहताधेनुर्वत्सोऽयं प्रतिगृह्यताम् १० एवंसाभक्षिताधेनुः सप्तभिस्तैस्तपोधनैः। वैदि-
कंबलमाश्रित्यक्रूरेकर्म्मणिनिर्भयाः ११ ततःकालावकृष्टास्ते व्याधादासपुरेऽभवन्।
जातिस्मरत्वंप्राप्तास्तेपितृभावेनभाविताः १२ यत्कृतंक्रूरकर्म्मापि श्राद्धरूपेणतैस्तदा।
तेनतेभवनेजाता व्याधानांक्रूरकर्म्मिणाम् १३ पितृणाञ्चैवमाहात्म्याज्जाताजातिस्मरा

क्यों करके उनके कर्मोंकानाश कैसेहोगया इसको आपवर्णन कीजिये १ सूतजी बोले—कौशिक
नाम बड़े धर्मात्मा ऋषि कुरुक्षेत्रमें रहतेथे और उनके स्वसृप१क्रोधन २ हिंस्र ३ पिशुन ४ कवि५
वारदुष्ट६और पितृवर्त्ती ७ इन नामोंवाले और अपने २ नामोंकेही समान कर्मवाले सातपुत्र होते
भये वहसातोंगर्गऋषिके शिष्यहोगये और उनकापितामरगया तब एकसमय महाघोर दुर्भिक्षकालपड़ा
सबलोगोंकी महाभयकारी अनावृष्टि अर्थात् वर्षा न हुई२।४उससमय वहसातों गर्गऋषिकी आज्ञासे
वनमें उनकी गौ की रक्षाकररहेथे कि अन्नके न मिलनेसे वहक्षुधासे अत्यन्त पीड़ितहोगये तब इन
का विचारहुआ कि इसकपिला गौ का भक्षणकरें ऐसा चिन्तवन करतेही प्रथमछोटाभाई बोलाकि
जो इसका अवश्यही वधकरते हो तो इसको श्राद्धमें युक्तकरो श्राद्धमें युक्तकीहुई यह गौ हमको अव-
श्य पापोंसे तारदेगी उस समयइस पितृवर्ति नामछोटे भाईके कहनेको सबभाइयों ने मानलिया
५।७ तब उसने बड़ी सावधानीसे उस गौ को श्राद्धमें नियुक्तकिया और भाइयोंको देवकर्ममें युक्त
किया-तीनको पितरकर्ममें एकको अभ्यागत बनाया और आप श्राद्ध करनेमें नियुक्तहुआ इसरीतिसे
पितरोंकी भक्तिमें तत्परहोकर मन्त्रविधि से श्राद्ध करताभया ८। ९ और विना गौ के वह बछड़ा
गुरूके अर्थ निवेदनकिया और गुरूसे यह कहदिया कि उस गौ को सिंहने भक्षण करलिया १० इस
प्रकारसे उनसातोंने उसगौको भक्षण करलिया और वेदके वचनके आश्रय होकर निर्भयहोगये ११
फिर कालान्तरमें मृत्युहोनेके पीछे वह सातों दासपुरमें व्याध जातिमें उत्पन्नहोतेभये परन्तु पितरों
की कृपासे उनसातोंको दासपुरकी व्याधयोनिमें भी अपने पूर्व जन्मका स्मरण रहा १२ श्राद्धरूप
करके जो उन्होंने क्रूरकर्म कियाथा इसी हेतु से उसक्रूरकर्म के फलसे वह व्याधोंके घरों में उत्पन्न
हुए १३ और पितरोंके माहात्म्यके प्रभावसे उनको अपनी पूर्व ज्ञातिकास्मरणरहा इसी से उन्होंने
वहां भी वैराग्य योगसे अनशन व्रत अर्थात् अन्नके त्यागदेनेसेही अपने शरीरको त्यागा फिर काल-

स्तुते। तेतुवैराग्ययोगेन आस्थायानशनंपुनः १४ जातिस्मराःसप्तजाता मृगाःकालंजरे
गिरौ। नीलकण्ठस्यपुरतः पितृभावानुभाविताः १५ तत्रापिज्ञानवैराग्यात् प्राणानुत्सृ
ज्यधर्म्मतः। लोकैरवेक्ष्यमाणास्ते तीर्थान्तेऽनशनेनतु १६ मानसेचक्रवाकास्ते सञ्जा
ताःसप्तयोगिनः। नामतःकर्मत सर्व्वान् शृणुध्वंद्विजसत्तमाः! १७ सुमनाःकुमुदःशुद्ध
श्छिद्रदर्शीसुनेत्रकः। सुनेत्रश्चांशुमांश्चैव सप्तैतेयोगपारगाः १८ योगभ्रष्टास्त्रयस्तेषां
बभ्रमुश्चाल्पचेतनाः। दृष्ट्वाविभ्राजमानंतमुद्यानेस्त्रीभिरन्वितम् १९ क्रीडन्तंविविधै
र्भावैर्महाबलपराक्रमम्। पाञ्चालान्वयसम्भूतं प्रभूतबलवाहनम् २० राज्यकामोभव
च्चैकस्तेषां मध्येजलौकसाम्। पितृवर्तीचयोविप्रः श्राद्धकृत्पितृवत्सलः २१ अपरौम
न्त्रिणौदृष्ट्वा प्रभूतबलवाहनौ। मन्त्रित्वेचक्रतुश्चेच्छामस्मिन्मर्त्यैद्विजोत्तमाः २२ त
न्मध्येयेतुनिष्कामास्तेबभूवुर्द्विजोत्तमाः। विभ्राजमानस्त्वेकोऽभूत् ब्रह्मदत्तइतिस्मृतः
२३ मन्त्रिपुत्रौतथाचोभौ कण्डरीकसुबालकौ। ब्रह्मदत्तोऽभिषिक्तःसन् पुरोहितविप-
श्चिता २४ पाञ्चालराजोविक्रान्तः सर्वशास्त्रविशारदः। योगवित्सर्वजन्तूनांरुतवेत्ताऽ
भवत्तदा २५ तस्यराज्ञोऽभवद्भार्य्या देवलस्यात्मजाशुभा। सन्नतिर्नामविख्याता कपि
लायाभवत्पुरा २६ पितृकार्य्येनियुक्तत्वादभवद्ब्रह्मवादिनी। तयाचकारसहितः सराज्यं
राजनन्दनः २७ कदाचिदुद्यानगतस्तयासहसपार्थिवः। ददर्शकीटमिथुनमनङ्गकल

जर पर्व्वतमें मृगयोनिको प्राप्तहुए वहांभी पूर्व ज्ञातिका स्मरण रहा और नीलकण्ठ महादेवके आगे पितरोंके भावमें युक्तरहे वहां उन्होंने सबमनुष्योंके देखतेहुए किसी तीर्थपर जाकर अपने ज्ञानभाव से प्राणोंको त्यागा १२। १६ फिर वह सातों योगीजन मानस तीर्थपर चकवाकी योनिमें प्राप्तहुए वहां उन सबके नाम और गुणजो होतेहुए उन्होंको सुनो १७ सुमना १ कुमुद २ शुद्ध ३ छिद्रदर्शी ४ सुनेत्रक ५ सुनेत्र ६ और अंशुमान् ७ यहतो उन योगियों के नामहुए इनमें से तीनजने तो योगसे भ्रष्ट और अल्पबुद्धिवाले होकर भ्रमनेलगे १८ उनमें भी एकजना अत्यन्त प्रकाशित होकर किसी उद्यानके बगीचे में स्त्रीसे युक्तहोकर अनेक भावों से क्रीड़ा करताभया और पाञ्चाल देशमें उत्पन्न होनेवाले महाबलवान् पराक्रमी राजाको बहुतसी सेनाओं से युक्त देखकर राज्यकी इच्छा करता भया और जो उन सातोंमें पितृवर्त्ती नाम श्राद्धका कर्त्ता दूसरा भाई महायोग में वर्त्तमानथा वही राज्यकी इच्छा करने से उस राजाका पुत्र होगया १९। २१ और अन्य दो जने अत्यन्त वाहना-दिक वाले दोनों जनों को देखके मन्त्री होने की इच्छा करतेभये २२ और जो शेष रहे इच्छाओं से रहितथे वह उत्तम ब्राह्मण के कुलमें जन्मे राज्यकी इच्छा करनेवाला वह एक तो ब्रह्मदत्त नाम वाला हुआ और वहदोनों कंडरीकमन्त्रीके सुन्दर पुत्रहुए फिर राजाकी आज्ञासे पण्डितजन आदि पुरोहितोंने उस ब्रह्मदत्त को राज्याभिषेकमें युक्त करदिया फिर वह सर्वशास्त्रज्ञ महापराक्रमी सब प्राणियोंके शब्दोंकाज्ञाता और योगीहोकर पांचालदेशका राजा हुआ २३। २५ उसराजाकी रानी देवलकी पुत्री सन्नति नामसे प्रसिद्धहुई वही पूर्वजन्ममें कपिला गौथी वह पितर कार्य्य में युक्त करनेसे ब्रह्मवादिनी हुई उस रानी समेत होकर वह राजा अपने राज्यको करनेलगा फिर किसी

ह्याकुलम् २८ पिपीलिकामनुनयन् परितःकीटकामुकः । पञ्चबाणाभितप्ताङ्गः सगद्गद मुवाचह २९ नत्वयासदृशीलोकेकामिनीविद्यतेक्वचित् । मध्यक्षामातिजघना वृहद्वक्षोऽभिगामिनी ३० सुवर्णवर्णासुश्रोणी मञ्जूक्ताचारुहासिनी । सुलक्षनेत्ररसना गुड़शर्करवत्सला ३१ भोक्ष्यसेमयिभुक्तेत्वं स्नासिस्नातेतथामयि । प्रोषितेसतिदीनात्वं क्रुद्धेऽपिभयचञ्चला ३२ किमर्थंवदकल्याणि ! सरोषवदनास्थिता । सातमाहसकोपातु किमालपसिमांशठ ! ३३ त्वयामोदकचूर्णन्तु मांविहायविनेष्यता । प्रदत्तंसमतिक्रान्ते दिनेऽन्यस्याःसमन्मथ ! ३४ (पिपीलिकउवाच)त्वत्सादृशान्मयादत्तमन्यस्यैवरवर्णिनि !। तदेकमपराधंमे क्षन्तुमर्हसिभामिनि ! ३५ नैतदेवंकरिष्यामि पुनःक्वापीहसुव्रते ! । स्पृशामिपादौसत्येन प्रसीदप्रणतस्यमे ३६ (सूतउवाच) इतितद्वचनंश्रुत्वा साप्रसन्नाऽभवत्ततः । आत्मानमर्पयामास मोहनायपिपीलिका ३७ ब्रह्मदत्तोऽप्यशेषन्तं ज्ञात्वा विस्मयमागमत् । सर्वसत्वरुतज्ञत्वात् प्रसादाच्चक्रपाणिनः ॥ ३८ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेश्राद्धकल्पेश्राद्धमाहात्म्येपिपीलिकावहासोनामविंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥

(ऋषय ऊचुः) कथंसत्वरुतज्ञोऽभूद् ब्रह्मदत्तोधरातले । तच्चाभवत्कस्यकुले च क्रवाकचतुष्टयम् १ (सूत उवाच) तस्मिन्नेवपुरेजातास्तेचचक्राङ्कयास्तदा। वृद्धद्वि

समय वह राजा उसके संग क्रीड़ा करनेको वनमें गया वहाँ कामदेवके वेगसे युक्त एक दो कीड़ियों के जोड़ेको देखताभया २६।२८ कि वहकीट कामदेवसे पीड़ित कीड़ीके पीछे २ जाता हुआ कामके बाणोंसे महाव्याकुल होकर अपनी कीड़ीसे बड़ी गद्गद वाणीसे यह वचन बोला कि हे कामिनी इस संसारमें तेरेसमान कोई नहीं है तेरेसूक्ष्मकटि-सुन्दर जंघा-बड़ीछाती-उत्तम गमन-सुन्दरवर्ण उत्तमनितम्ब—उत्तम भाषण—हसन—उत्तमनेत्र जिह्वा-और मधुर रसकेमीठेलगनेसे और मेरेखाने के पीछे आप भोजन करना स्नानसे पीछे स्नान-मेरे दूरजानेमें दीनरूप और क्रोधहोनेमें तूभयभीत और चंचल होजातीहै २९।३२ सोहे कल्याणि इससमय तूक्रोध मुखवाली काहेसे होरहीहै तबवह कीड़ीभी उससे बड़े क्रोधसे बोलीकि हेशठ मूर्ख मुझसे क्याबोलताहै ३३ तैंने मेरेबिना पूछे कल के दिन लड्डुओंको चुरालेजाकर दूसरीकीड़ियोंको दियाथा ३४ कीटबोला-हेभामिनिउत्तमवर्णवाली मैंनेतेरेही समान तेरीही भ्रान्तिसे दूसरी को दियाथा सोमेरे इस एक अपराधकोक्षमाकर हे सुव्रते में ऐसाअब कभी न करूंगा सत्यसे मैंतेरे चरणको स्पर्श करताहूं मुझ प्रणत होनेवाले परतू प्रसन्न हो ३५।३६ सूतजी कहतेहैंकि वहकीड़ी उसके ऐसे वचनोंको सुनके बड़ीप्रसन्नतापूर्वक उसके मोहने के लिये अपने शरीरको स्पर्श कराती भयी ३७ वह ब्रह्मदत्तभी सम्पूर्ण प्राणियों के शब्द जाननेसे और विष्णु भगवान् के प्रसादसे इस कीड़े और कीड़ी के सब वृत्तान्त को जानकर आश्चर्य्य को प्राप्त होताभया ३८ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांश्राद्धमाहात्म्येपिपीलिकावहासोनामविंशोऽध्यायः २० ॥

ऋषियोंनेपूछा--किवह ब्रह्मदत्त सब प्राणियोंकी बोलियों का जानने वाला कैसे होता भया और वह शेषबचे हुए चारों चक्रवाक अर्थात् चकवे किसके कुलमें उत्पन्न होते भये १ सूतजी बोले

जस्यदायादा विप्रा जातिस्मराःपुरा २ धृतिमांस्तत्त्वदर्शी च विद्याचण्डस्तपोत्सुकः। नामतःकर्म्मतश्चैते सुदरिद्रस्यतेसुताः ३ तपसेबुद्धिरभवत्तदातेषांद्विजन्मनाम्। यास्यामःपरमांसिद्धिमित्यूचुस्तेद्विजोत्तमाः ४ ततस्तद्वचनंश्रुत्वा सुदरिद्रोमहातपाः। उवाच दीनयावाचा किमेतदितिपुत्रकाः ५ अधर्म्मएषइतिवः पितातानभ्यवारयत्। वृद्धंपितरमुत्सृज्य दरिद्रंवनवासिनः ६ कोनुधर्म्मोऽत्रभविता मत्त्यागाद्गतिरेववा। ऊचुस्तेकल्पितावृत्तिस्तवतात! वदस्वतत् ७ वित्तमेतत्पुरोराज्ञः सतेदास्यतिपुष्कलम्। धनंग्रामसहस्राणि प्रभातेपठतस्तव ८ येविप्रमुख्याःकुरुजाङ्गलेषु दासास्तथादासपुरेम्गाश्च। कालञ्जरेसप्तचचक्रवाका येमानसेतेवयमत्रसिद्धाः ९ इत्युक्त्वापितरंजग्मुस्तेवनं तपसेपुनः। वृद्धोऽपिराजभवनं जगामात्मार्थसिद्धये १० अनघोनामवैभ्राजः पांचालाधिपतिःपुरा। पुत्रार्थीदेवदेवेशं हरिन्नारायणंप्रभुम् ११ आराधयामासविभुं तीव्रव्रतपरायणः। ततःकालेनमहता तुष्टस्तस्यजनार्दनः १२ वरंवृणीष्वभद्रंते हृदयेनेप्सितंनृप!। एवमुक्तस्तुदेवेन वव्रेसवरमुत्तमम् १३ पुत्रंमेदेहिदेवेश! महाबलपराक्रमम्। पारगंसर्वशास्त्राणां धार्मिकंयोगिनाम्परम् १४ सर्वसत्वरुतज्ञम्मे देहियोगिनमात्मजम्। एवम

किवह सब चकवेभी उसी पुरमें एक वृद्धब्राह्मणके पुत्र हुए और उनको अपने पूर्व जन्मकी जातिका स्मरण बनारहा २ वह धृतिमान्-तत्त्वदर्शी-विद्याचंड और तपोत्सुक इनचार नामवाले और नामोंके समान गुणवाले होकर उस दरिद्री ब्राह्मणके पुत्रहोतेभये वहाँ उनकी तपस्या करनेमेंबुद्धि होती भई और कहनेलगे कि हम परम सिद्धिको प्राप्तहोवेंगे ३।४ तबवह दरिद्री ब्राह्मण उनअपने पुत्रोंके इस वचनको सुनकर बड़ी दीन वाणीसे बोला कि हेपुत्रो यहतुम क्याकरतेहो ५ ऐसाकरनेसे तुमको अधर्महोगा ऐसे पिताके समझाने परभी वहचारों उस बनवासी दरिद्री वृद्ध ब्राह्मण अपने पिताको त्यागकरके चले ६ उस समय वह ब्राह्मण फिर उनसे बोला कि मेरे त्यागनेसे तुमको कौनसाधर्म और गतिप्राप्त होगी तब पुत्रोंने कहाकि हेपिता हम लोगोंने आपकी जीविका की वृत्तिकल्पित करदीनीहै ऐसा तुमजानो ७ परन्तुजैसा हम कहें वही आपकीजिये अर्थात् इस पुरका राजा तुमको बहुतसा धन देगा उससे तुम प्रातःकालही जाकर यह कहोकि जो कुरुजांगल देशों में मुख्य ब्राह्मणथे और दास पुरमें दासहोकर कालिंजर पर्व्वतमें मृगहुए और मानस तीर्थ परचकवे हुएथे उनमेंके हम सिद्ध हैं ऐसा कहने पर वहतुमको बहुतसा धन और बहुत से ग्रामादिकभी दे देगा-ऐसे पितासे कहकर वहचारों वनको तपस्याके अर्थ चलेगये फिरवह वृद्ध ब्राह्मणभी द्रव्यके निमित्त राजाके यहाँगया ८। १० परन्तु इसके जाने से पूर्व्वही राजाका जो वृत्तान्त हो चुकाथा उसको भी सुनो-अर्थात् किसी समय वह अनघनाम पांचाल देशका राजा पुत्रकी इच्छा करके देवदेवेश हरि नारायणका आराधन करताभया और बड़े तीव्र व्रतोंसे बहुतकालमें प्रसन्नहोकर भगवान् ने कहा कि हे राजा अपने वाञ्छित वरकोमांग तेरा कल्याणहोगा ऐसे विष्णु भगवान्के वचन सुनकर उसने यह वरमांगा ११। १३ कि हे देवेश महाबली सर्वशास्त्रपारगामी योगियों में परमधार्मिक सबप्राणी मात्रों के शब्दों का ज्ञाता महाउत्तम योगी ऐसा एक पुत्र मेरे होय तब तथा-

स्त्वितिविश्वात्मा तमाहपरमेश्वरः १५ पश्यतांसर्वदेवानां तत्रैवान्तरधीयत। ततःस
तस्यपुत्रोऽभूत् ब्रह्मदत्तःप्रतापवान् १६ सर्वसत्वानुकम्पीच सर्वसत्वबलाधिकः। सर्व
सत्वरुतज्ञश्च सर्वसत्वेश्वरेश्वरः १७ अहसत्तेनयोगात्मा सपिपीलिकरागतः। यत्रत
त्कीटमिथुनं रममाणमवस्थितम् १८ ततःसासन्नतिर्दृष्ट्वा तंहसन्तंसुविस्मिता। किम
प्याशङ्क्यमनसा तमपृच्छन्नरेश्वरम् १९ (सन्नतिरुवाच) अकस्मादतिहासस्ते कि
मर्थमभवन्नृप!। हास्यहेतुन्नजानामि यदकालेकृतन्त्वया २० (सूत उवाच) अव
दद्राजपुत्रोऽपि सपिपीलिकभाषितम्। रागवाग्भिःसमुत्पन्नमेतद्धास्यंवरानने! २१ न
चान्यत्कारणंकिंचिद्धास्यहेतौशुचिस्मिते!। नसामन्यत्तदादेवीप्राहालीकमिदंवचः २२
अहमेवाद्यहसिता नजीविष्येत्वयाधुना। कथंपिपीलिकालापम्मर्त्योवेत्तिविनासुरान् २३
तस्मात्त्वयाहमेवेह हसिताकिमतःपरम्। ततोनिरुत्तरोराजा जिज्ञासुस्तत्पुरोहरेः २४
आस्थायनियमन्तस्थौ सप्तरात्रमकल्मषः। स्वप्नेप्राहहृषीकेशः प्रभातेपर्यटन्पुरम् २५
वृद्धद्विजोयस्तद्वाक्यात्सर्वज्ञास्यस्यशेषतः। इत्युक्त्वान्तर्दधेविष्णुःप्रभातेऽथनृपःपुरात्
२६ निर्गच्छन्मन्त्रिसहितः सभार्योवृद्धमग्रतः। गदन्तंविप्रमायान्तं तंवृद्धंसन्ददर्शह २७

स्तु अर्थात् ऐसाही होगा इस वचनको कहकर विष्णु भगवान् सब देवताओंके और उसके देखतेही देखते वहीं अन्तर्द्धान होगये इसके पीछे उसके उन्हीं योगिजनोंमें से एक महाप्रतापी ब्रह्मदत्तनाम पुत्रहुआ १४। १६ सबजीवों में दयावान् सबसे बल पुरुषार्थ में अधिक प्राणिमात्रों के शब्दों का ज्ञाता सबजनों का ईश्वर वह ब्रह्मदत्तहुआ वही ब्रह्मदत्त राजा उस कीड़े और कीड़ीके वचनोंको सुनकर उसी स्थानपर हंसा जहाँ कि वह कीड़ी और कीड़ीका पति रमणकरने को उपस्थित होरहाथा वहीं अकस्मात् हँसनेलगा १७।१८ उससमय वह उसकी सन्नतिनाम रानी जो संगमेंथी उसने राजाको हँसताहुआ देखकर अपने मनमें कुछ शंकाकरके आश्चर्य्यपूर्व्वक कहा कि हे राजन् आप यहाँ अकस्मात् कैसे हँसे आपने यहाँ निष्प्रयोजन हास्य क्योंकिया इसको मैं नहीं जानती आपमुझेभी बताइये—सूतजी कहतेहैं कि उसके पूछनेपर राजाने उन कीड़ी कीड़े के सब वृत्तान्तको कहा कि मुझे इन्हीं दोनों कीड़ी कीड़ेके वृत्तान्तके सुननेसे हंसी आगईहै हेसुन्दर हास्यवाली इसके विशेष मेरे हँसनेका कोई दूसराकारण नहींहै परन्तु वह न मानी और बोली कि यहआपका कहना अयोग्यहै १९।२२ आपने मेराही हास्य कियाहै मैं अबप्राणदूंगी क्योंकि देवताओं के बिना कीड़ीआदिक जीवोंकी बोलीको कौनसा मनुष्य जानसक्ताहै इस हेतुसे आपने मेराही अवश्य हास्यकिया है यह सुनकर राजा निरुत्तर होकर उसकेही आगे हरिभगवान्के नियममें वर्त्तमान होगया सातरात्रितक व्रतमें नियतहोकर पापसे रहितहोगया तब विष्णुभगवान् उससे स्वप्नमें बोले कि प्रातःकाल तेरेपुरमें विचरताहुआ ब्राह्मण तेरेपास आकर जो कुछ कहेगा उस ब्राह्मणके वचनसे तू सबवृत्तान्तको जान जायगा ऐसाकहकर विष्णुभगवान् अन्तर्द्धान होगये फिर जब वह राजा प्रातःकालही अपनीस्त्री और मंत्रियों समेत निजपुरसे बाहर निकला तब बड़ी गद्गद २ वाणीसे बोलताहुआ वह वृद्ध ब्राह्मण सन्मुख आताहुआ दीखा और समीपमें आकर उसने राजासे कहा कि जो कुरुजांगल देशोंमें उत्तम

(ब्राह्मण उवाच) येविप्रमुख्याःकुरुजाङ्गलेषु दासास्तथादासपुरेमृगाश्च । कालञ्ज
रेसप्तचचक्रवाका येमानसेतेवयमत्रसिद्धाः २८ (सूत उवाच) इत्याकर्ण्यवचस्ताभ्यां
सपपातशुचाततः । जातिस्मरत्वमगमत्तौचमन्त्रिवरावुभौ २९ कामशास्त्रप्रणेताच वा
भ्रव्यस्तुसुबालकः । पांचालइतिलोकेषु विश्रुतःसर्वशास्त्रवित् ३० कण्डरीकोऽपिधर्मा
त्मा वेदशास्त्रप्रवर्तकः । भूत्वाजातिस्मरोशोकात् पतितावग्रतस्तदा ३१ हावयंयोगवि
भ्रष्टाःकामतःकर्मबन्धनाः । एवंविलप्यबहुशस्त्रयस्तेयोगपारगाः ३२ विस्मयाच्छ्राद्धमा
हात्म्यमभिनंद्यपुनःपुनः । ततस्तस्मैधनंदत्त्वा प्रभूतग्रामसंयुतम् ३३ विसृज्यंब्राह्मण
न्तञ्च वृद्धंधनमुदान्वितम् । आत्मीयंनृपतिःपुत्रं नृपलक्षणसंयुतम् ३४ विष्वक्सेनाभि
धानन्तु राजाराज्येऽभ्यषेचयत् । मानसेमिलिताःसर्वे ततस्तेयोगिनोवराः ३५ ब्रह्मदत्ता
दयस्तस्मिन् पितृसक्ताविमत्सराः । सन्नतिश्चाभवद्भ्रष्टा मयैतत्किलकारितम् ३६
राज्यत्यागफलंसर्वं यदेतदाभिलष्यते । तथेतिप्राहराजातु पुनस्तामभिनन्दयन् ३७
त्वत्प्रसादादिदंसर्वं मयैतत्प्राप्यतेफलम् । ततस्तेयोगमास्थाय सर्वएववनौकसः ३८
ब्रह्मरन्ध्रेण परमम्पदमापुस्तपोधनाः । एवमायुर्धनंविद्यां स्वर्गंमोक्षंसुखानिच ३९ प्रय
च्छन्तिसुतान्राज्यं नृणांप्रीताःपितामहाः । यइदंपितृमाहात्म्यं ब्रह्मदत्तस्यचाद्विजाः ४०
द्विजेभ्यःश्रावयेद्योवा शृणोत्यथपठेतवा । कल्पकोटिशतंसाग्रं ब्रह्मलोकेमहीयते ४१ ॥
इति श्रीमत्स्यपुराणेश्राद्धकल्पेपितृमाहात्म्यंनामैकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

ब्राह्मण हुएथे वह दासपुरमें दासहोकर कालंजर पर्वतमें मृगहोके मानस तीर्थपर सात चकवेहुएथे वही हमसव इस सिद्धपुर में सिद्धहोकर उत्पन्नहुएहैं -इस रीतिका अपने पुत्रों का कहाहुआ वचन उसने राजासेकहा२३।२८सूतजी कहते हैं-कि वह राजा ब्राह्मणके इसवचनको सुनकेशोकसे व्याकुलहो पृथ्वीमें गिरपड़ा और अपनी पूर्व जातिका स्मरणकिया और दोनोंमंत्रियोंने भी अपनी पूर्व जातिका स्मरणकिया २९ फिर कामशास्त्र का प्रवर्त्तक सुन्दर बाल्यावस्थावाला सर्व शास्त्रज्ञ पांचाल देशका वह राजा और कंडरीकके पुत्र वहदोनों मन्त्री अपनी २ पूर्वजातिका स्मरण करके शोकसे गिरपड़े और यह कहनेलगे कि हम सब योगसे भ्रष्ट होगये इसप्रकारका बहुतसा विलापकरके वह योगीजन आश्चर्य्य से श्राद्धके माहात्म्यको वारंवार सराहने लगे और उस ब्राह्मण के अर्थ बहुतसे ग्राम और नानाप्रकारके धनों को देकर ३० । ३३ और आनन्द से उस ब्राह्मण का विसर्ज्जन कर राजाओं के लक्षणों से युक्त विष्वक्सेन नाम अपने पुत्र को राज्याभिषेक करके वह सब योगीजन मानसतीर्थपर जाकर इकट्ठे हुए ३४।३५ और ब्रह्मदत्त आदिक वह सातों पितरों में तत्परहो कुटिलतासे रहित होजाते भये और उस सन्नति रानीने अपने चित्तमें दुखित होकर यह विचार किया कि इसराज्यके त्यागकरनेका सबकर्म मेरेही कारणसे हुआहै तब उसकी प्रशंसा करके राजाने कहा ३६ । ३७ कि मुझको यह सब कर्म फल तेरेही योगसे हुआहै ऐसे कहकर वह वनको चलागया और सबोंने वनमें जाकर योगको साधा तब योगको प्राप्तहो ब्रह्मरन्ध्र द्वारसे वहसातों परमपदको प्राप्तहुए इस प्रकारसे यह पितर लोग अपने पुत्रों को आयु-धन-विद्या-स्वर्ग-मोक्ष-सुख और राज्य

(ऋषय ऊचुः) कस्मिन्कालेचतच्छ्राद्धमनन्तफलदंभवेत् । कस्मिन्वासरभागे
तु श्राद्धकृच्छ्राद्धमाचरेत् १ तीर्थेषुकेषुचकृतं श्राद्धंबहुफलंभवेत् । (सूत उवाच) अप
राह्णातुसंप्राप्तेअभिजिद्रौहिणोदये २ यत्किञ्चिद्दयितेतत्र तदक्षयमुदाहृतम् । तीर्थानि
यानिशस्तानि पितॄणांवल्लभानिच ३ नामतस्तानिवक्ष्यामि संक्षेपेणद्विजोत्तमाः ! । पि
तृतीर्थंगयानाम सर्वतीर्थवरंशुभम् ४ यत्रास्तेदेवदेवेशः स्वयमेवपितामहः । तत्रैषापितृ
भिर्गीता गाथाभागमभीप्सुभिः ५ एष्टव्याबहवःपुत्रा यद्येकोऽपिगयांव्रजेत् । यजेतवा
श्वमेधेन नीलंवावृषमुत्सृजेत् ६ तथावाराणसीपुण्या पितॄणांवल्लभासदा । यत्राविमु
क्तसान्निध्यं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ७ पितॄणांवल्लभंतद्वत् पुण्यञ्चविमलेश्वरम् । पितृ
तीर्थंप्रयागन्तु सर्वकामफलप्रदम् ८ वटेश्वरस्तुभगवान् माधवेनसमन्वितः । योगनि
द्राशयस्तद्वत् सदावसतिकेशवः ९ दशाश्वमेधिकंपुण्यं गङ्गाद्वारंतथैवच । नन्दाथल
लितातद्वत्तीर्थं मायापुरीशुभा १० तथामित्रपदंनाम ततःकेदारमुत्तमम् । गङ्गासागर
मित्याहुःसर्वतीर्थमयंशुभम् ११ तीर्थंब्रह्मसरस्तद्वच्छतद्रुसलिलेह्रदे । तीर्थन्तुनैमिषंनाम
सर्वतीर्थफलप्रदम् १२ गङ्गोद्भेदस्तुगोमत्यां यत्रोद्भूतःसनातनः । तथायज्ञवराहस्तुदेव

इन सब पदार्थोंको प्रसन्न होकर देदेते हैं जो कोई इस ब्रह्मदत्तके पितृमाहात्म्यको ब्राह्मणोंके मुखसे
सुनेगा वा आपपढ़ेगा अथवादूसरोंकोसुनावेगावहकिरोड़ोंकल्पोंतक ब्रह्मलोकमेंप्राप्तरहेगा३८।४१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांश्राद्धकल्पेपितृमाहात्म्यंनामैकविंशतितमोऽध्यायः २१॥

ऋषियोंनेपूछा कि हेसूतजी वह श्राद्ध किस कालमें अनन्तफल वाला होताहै दिनके किसभागमें
श्राद्धकरे और किन २ तीर्थोंमें कियाहुआ श्राद्ध बहुतसे फलोंको देताहै १ सूतजीनेकहा हेऋषिलोगो
अपराह्ण अर्थात् मध्याह्नके थोड़ेहीपीछे दिनके तीसरे भागमें अभिजित् वा रोहिणी नक्षत्रके दिन जो
कुछ दान दियाजाताहै वह अक्षय फल वालाहोकर हजारों गुणाहोजाताहै और जो पितरों के प्रिय
तीर्थ हैं२।३ उनके नाम संक्षेपसे कहते हैं-गयानामसे प्रसिद्ध पितृ तीर्थ सब तीर्थोंमें उत्तम तीर्थ है
वहाँहीं आप ब्रह्माजी स्थित हैं उसतीर्थमें भागकी इच्छावाले पितरोंने यहकथागाईहै ४।५ बहुत से
पुत्रोंकी इच्छाकरनातो ठीकहीहै परन्तु जोएकभी पुत्र गयाजीको जाय वा अश्वमेध यज्ञ करे अथवा
नीले वृषभको छोड़े वह सबसे उत्तमहै ६ और काशीजी महापवित्र होकर पितरोंको सदैव प्यारी
वर्णनकीहै जहाँ मुक्ति सहित जनोंके समीपमें भुक्तिमुक्तिके फलोंके देने वाले पितरोंके प्यारे महा-
दानी और पवित्र ऐसे विमलेश्वर महादेवजी हैं और वहाँही सब कामनाओंका देनेवाला पितृतीर्थ
प्रयागकहाहै ७।८ वहाँवटेश्वर महादेव विष्णुभगवान्ने स्थापित किये हैं और केशव भगवान् भी वहाँ
सदैव योगनिद्रासे युक्तहोकर विराजमान रहते हैं ९ और दशाश्वमेधिक पुण्यक्षेत्र गंगाद्वार नन्दा
ललितापुरी हरद्वार मित्रपद नामतीर्थ-केदार क्षेत्र और गंगासागर--सब तीर्थोंमें पवित्र कहे हैं और
शतद्रुनदी के उत्तम ह्रदमें ब्रह्मसरतीर्थ सर्व तीर्थों के फलका देने वाला नैमिष तीर्थ--१०।१२
गंगोद्भेद--गोमती, यज्ञ वराहक्षेत्र, जहाँ शूलधारी महादेव और अठारह भुजाओंको धारण किये
शिवजी स्थित हैं और जहाँविष्णुके चक्रकी नेमि अर्थात् हलका गिरगया है वह सबतीर्थों से उत्तम

देवश्चशूलभृत् १३ यत्रतत्काञ्चनंद्वारमष्टादशभुजोहरः। नेमिस्तुहरिचक्रस्य शीर्णा
यत्राभवत्पुरा १४ तदेतन्नैमिषारण्यं सर्वतीर्थनिषेवितम्। देवदेवस्यतत्रापिवाराहस्यतुद
र्शनम् १५ यःप्रयातिसपूतात्मा नारायणपदंव्रजेत्। कृतशौचंमहापुण्यंसर्वपापनिषूदनम्
१६ यत्रास्तेनारसिंहस्तु स्वयमेवजनार्दनः। तीर्थमिक्षुमतीनाम पितॄणांवल्लभंसदा १७
सङ्गमेयत्रतिष्ठन्ति गङ्गायाःपितरःसदा। कुरुक्षेत्रम्महापुण्यं सर्वतीर्थसमन्वितम् १८ त
थाचसरयूःपुण्या सर्वदेवनमस्कृता। इरावतीनदीतद्वत् पितृतीर्थाधिवासिनी १९ य
मुनादेविकाकाली चन्द्रभागादृषद्वती। नदीवेणुमतीपुण्या परावेत्रवतीतथा २० पितॄणां
वल्लभाह्येताः श्राद्धेकोटिगुणामताः। जम्बूमार्गंमहापुण्यं यत्रमार्गोहिलक्ष्यते २१ अ
द्यापिपितृतीर्थंतत्सर्वकामफलप्रदम्। नीलकुण्डमितिख्यातं पितृतीर्थंद्विजोत्तमाः २२
तथारुद्रसरःपुण्यं सरोमानसमेवच। मन्दाकिनीतथाच्छोदा विपाशाथसरस्वती २३
पूर्वमित्रपदन्तद्वद्वैद्यनाथम्महाफलम्। क्षिप्रानदीमहाकालस्तथाकालञ्जरंशुभम् २४
वंशोद्भेदंहरोद्भेदं गंगोद्भेदंमहाफलम्। भद्रेश्वरंविष्णुपदं नर्म्मदाद्वारमेवच २५ गयापि
ण्डप्रदानेन समान्याहुर्महर्षयः। एतानिपितृतीर्थानि सर्वपापहराणिच २६ स्मरणाद
पिलोकानां किमुश्राद्धकृतांनृणाम्। ओङ्कारंपितृतीर्थञ्च कावेरीकपिलोदकम् २७ सम्भे
दश्चण्डवेगायास्तथैवामरकण्टकम्। कुरुक्षेत्राच्छतगुणं तस्मिन्स्नानादिकंभवेत् २८

नैमिषारण्य तीर्थ कहाता है वहाँभी वराहजी के दर्शन होते हैं इस तीर्थपर जो कोई पवित्रात्मा पुरुष जाता है वह शुद्ध महापुण्यात्मा अपने सब पापों से छूटकर नारायण के परमपदको पाता है १५। १६ और जहाँ पितरों का प्रिय इक्षुमतीनाम तीर्थ है वहाँ नृसिंह भगवान्के दर्शन होते हैं और गंगा के संग में सब पितर सदैव स्थित रहते हैं सब तीर्थों से युक्त महापुण्यदायी कुरुक्षेत्र है १७। १८ सब देवताओं से नमस्कार कीहुई पवित्र सरयू नदी है और इरावती नदी भी सब पितृ तीर्थों में श्रेष्ठ है १९ यमुना देविका--काली-चन्द्रभागा-दृषद्वती-वेणुमती-और वेत्रवती यह पवित्र नदियांभी पितरोंकोप्रियहैं श्राद्धमें कोटिगुण फलकी देनेवाली हैं और जम्बूमार्गनामक क्षेत्र भी महापुण्यदायी है वहाँसे पितरोंका मार्ग दीखताथा और अबभी वहाँ पितृतीर्थ है जिसको कि सब पितरों के फलकादेनेवाला वर्णनकियाहै और हेद्विजोत्तमलोगो वहाँ एकनीलकुण्डसंज्ञक पितृतीर्थभी है और पुण्यकारी रुद्र सरोवर-मानसरोवर-मन्दाकिनी-अच्छोदा-विपाशा-सरस्वती २०।२३ पूर्व मित्रपद-वैद्यनाथ-औरशिव यहभी महाफलदायीहैं क्षिप्रानदी महाकालतीर्थ-शुभकालंजर पर्वत २४ वंशोद्भेद-हरोद्भेद और-गंगोद्भेद-यह महाफलदायी क्षेत्रहैं भद्रेश्वर-विष्णुपद-और नर्मदाद्वार-यह सब क्षेत्रगयाजीमें पिण्डदेनेके फलके समान महर्षिजनोंने वर्णन कियेहैं यह पितृतीर्थ सब पापोंके हरनेवाले विख्यातहैं २५।२६ इनके स्मरण करनेसेभी मनुष्योंको उत्तमफलमिलताहै औरश्राद्धकरने वालोंका तो क्याहीकथनहै-ओंकारसंज्ञक पितृतीर्थ है कावेरी कपिलोदकक्षेत्र-चण्डवेगानदी का सम्भेद संज्ञकतीर्थ अमरकण्टकक्षेत्र,जो कि स्नानकरने से कुरुक्षेत्रसेभी सौ १०० गुणा पुण्यदायीकहा

शुक्रतीर्थञ्चविख्यातं तीर्थं सोमेश्वरंपरम् । सर्वव्याधिहरंपुण्यं शतकोटिफलाधिकम् २९
श्राद्धेदानेतथाहोमे स्वाध्यायेजलसन्निधौ । कायावरोहणंनाम तथाचर्मण्वतीनदी ३०
गोमतीवरुणातद्वत्तीर्थमौशनसम्परम् । भैरवंभृगुतुङ्गञ्चगौरीतीर्थमनुत्तमम् ३१ तीर्थं
वैनायकंनाम भद्रेश्वरमतःपरम् । तथापापहरंनाम पुण्याथतपतीनदी ३२ मूलतापीप
योष्णीच पयोष्णीसंगमस्तथा । महाबोधिःपाटलाचनागतीर्थमवन्तिका ३३ तथावेणा
नदीपुण्या महाशालंतथैवच । महारुद्रंमहालिङ्गं दशार्णाचनदीशुभा ३४ शतरुद्राश
ताह्वाच तथाविश्वपदंपरम् । अङ्गारवाहिकांतद्वन्नदौतौशोणघर्घरौ ३५ कालिकाच
नदीपुण्या वितस्ताचनदीतथा । एतानिपितृतीर्थानि शस्यन्तेस्नानदानयोः ३६ श्राद्ध
मेतेषु यद्दत्तन्तदनन्तफलंस्मृतम् । द्रोणीवाटनदीधारा सरित्क्षीरनदीतथा ३७ गोकर्णं
गजकर्णञ्च तथाचपुरुषोत्तमः । द्वारकाकृष्णतीर्थञ्च तथार्बुदसरस्वती ३८ नदीमणि
मतीनाम तथाचगिरिकर्णिका । धूतपापंतथातीर्थं समुद्रोदक्षिणस्तथा ३९ एतेषुपितृ
तीर्थेषु श्राद्धमानन्त्यमश्नुते । तीर्थंमेघकरंनाम स्वयमेवजनार्दनः ४० यत्रशार्ङ्गधरो वि
ष्णुर्मेखलायामवस्थितः । तथामन्दोदरीतीर्थं तीर्थंचम्पानदीशुभा ४१ तथासामलना
थञ्च महाशालनदीतथा । चक्रवाकंचर्म्मकोटं तथा जन्मेश्वरंमहत् ४२ अर्जुनंत्रिपुरंचैव
सिद्धेश्वरमतःपरम् । श्रीशैलंशाङ्करंतीर्थं नारसिंहमतःपरम् ४३ महेन्द्रञ्चतथापुण्य

है २७।२८ शुक्रतीर्थ और पिण्डारा सोमेश्वरउत्तमतीर्थ कहा है यह तीर्थ सवव्याधों का हरनेवाला महापवित्र किरोड़ों श्राद्धोंके फलोंका दाता कहाहै इसके जलके समीप श्राद्ध और दानादिक करना बड़ाउत्तमहै--कायावरोहणनाम उत्तमतीर्थ है चर्मण्वतीनाम उत्तमनदी है--और गोमती वरुणानदी भी उत्तमहै--उशनाऋषिका उत्तमतीर्थहै--भैरवक्षेत्र भृगुतुंगतीर्थ, और गौरीतीर्थ यह सव उत्तमतीर्थ कहे हैं २९।३१ वैनायकनामतीर्थ भद्रेश्वर तीर्थ यह पापोंके हरनेवाले कहेहैं तपतीनाम नदी उत्तम है ३२ मूलतापी--पयोष्णी इननामोंवाली नदी पयोष्णी--संगमतीर्थ--महाबोधि--पाटलानाम तीर्थ उज्जैनपुरी तीर्थ और वेणानदी यह अतिपवित्र वर्णनकिये हैं महारुद्र और महालिंग यह तो क्षेत्र और दशार्णानदी यहभी शुभ हैं शतरुद्रा और शताह्वानदी विश्वपद--परमतीर्थ अंगारवाहिकानदी शोणानदी--घाघरानदी--कालिकानदी और वितस्तानदी--यह सव पितृतीर्थ पितरोंके दानकर्ममें श्रेष्ठ कहे हैं इन्होंमें दियाहुआ श्राद्ध अनन्तफलवाला कहाहै--द्रोणी नदी वाटनदी--धारासरित्--क्षीरनदी ३३।३७ गोकर्णक्षेत्र गजकर्ण पुरुषोत्तम, द्वारकाजी, अर्बुदक्षेत्र, सरस्वतीनदी ३८ मणिमतीनदी--गिरिकर्णिकानदी धूतपापतीर्थ और दक्षिणकासमुद्र इनतीर्थोंमें कियाहुआ श्राद्ध अनन्तफलदायी होताहै औरमेघकरनाम तीर्थमें आपजनार्दन भगवान् स्थितहैं वहाँही विष्णुभगवान् मेखलामें अर्थात् तागड़ीमें स्थित होरहेहैं और मन्दोदरी चम्पानदीभी उत्तम तीर्थ हैं सामलनाथ--महाशालनदी--चक्रवाक--चर्मकोटतीर्थ--जन्मेश्वरतीर्थ--अर्जुनक्षेत्र--त्रिपुरतीर्थ--सिद्धेश्वर--श्रीशैल--और नारसिंहयह उत्तमतीर्थ हैं ३९।४३ महेन्द्रतीर्थ--श्रीरंगसंज्ञकतीर्थ--इनतीर्थों में भी श्राद्धकरना सदा अनन्त फल

मथश्रीरङ्गसंज्ञितम् । एतेष्वपिसदाश्राद्धमनन्तफलदंस्मृतम् ४४ दर्शनादपिचैतानि सद्यः पापहराणिवै । तुङ्गभद्रानदीपुण्या तथाभीमरथीसरित् ४५ भीमेश्वरंकृष्णवेणा कावेरीकुड्मलानदी । नदीगोदावरीनाम त्रिसन्ध्यातीर्थमुत्तमम् ४६ तीर्थंत्रैयम्बकंनाम सर्वतीर्थनमस्कृतम् । यत्रास्तेभगवानीशः स्वयमेवत्रिलोचनः ४७ श्राद्धमेतेषुसर्वेषु कोटिकोटिगुणंभवेत् । स्मरणादपिपापानि नश्यन्तिशतधाद्विजाः ४८ श्रीपर्णीताम्रपर्णीच जयातीर्थमनुत्तमम् । तथामत्स्यनदीपुण्या शिवधारंतथैवच ४९ भद्रतीर्थंचविख्यातं पम्पातीर्थंचशाश्वतम् । पुण्यंरामेश्वरन्तद्वदेलापुरमलम्पुरम् ५० अंगभूतंचविख्यातमानन्दकमलंबुधम् । आम्रातकेश्वरन्तद्वदेकाम्भकमतःपरम् ५१ गोवर्द्धनंहरिश्चन्द्रं कृपुचन्द्रंपृथूदकम् । सहस्राक्षंहिरण्याक्षं तथाचकदलीनदी ५२ रामाधिवासस्तत्रापि तथासौमित्रिसङ्गमः । इन्द्रकीलंमहानादन्तथाचप्रियमेलकम् ५३ एतान्यपिसदाश्राद्धे प्रशस्तान्यधिकानितु । एतेषुसर्वदेवानां सान्निध्यंदृश्यतेयतः ५४ दानमेतेषुसर्वेषु दत्तंकोटिशताधिकम् । बाहुदाचनदीपुण्या तथासिद्धवनंशुभम् ५५ तीर्थंपाशुपतंनाम नदीपार्वतिकाशुभा । श्राद्धमेतेषुसर्वेषु दत्तंकोटिशतोत्तरम् ५६ तथैवपितृतीर्थन्तु यत्रगोदावरी नदी । युतालिङ्गसहस्रेण सर्वान्तरजलावहा ५७ जामदग्न्यस्यतत्तीर्थं क्रमादायातमुत्तमम् । प्रतीकस्यभयाद्भिन्ना यत्रगोदावरीनदी ५८ तत्तीर्थंहव्यकव्यानामप्सरोयुगसंज्ञितम् । श्राद्धाग्निकार्य्यदानेषु तथाकोटिशताधिकम् ५९ तथासहस्रलिङ्गञ्च राघवेश्व

देने वालाकहाहै यह तीर्थ दर्शन करनेसेभी तात्कालिकपापके हरनेवाले कहे हैं तुंगभद्रानदी--भीमरथीनदी ४५ भीमेश्वर महादेव--कावेरीनदी--कुड्मलानदी--गोदावरी--त्रिसन्ध्या--उत्तमतीर्थ और त्रैयम्बक तीर्थ सब देवताओंसे नमस्कृत हैं जहाँ त्रिलोचन शिवजी महाराज स्थित हैं इनसबतीर्थों में कियाहुआ श्राद्ध कोटि गुणफलका देनेवालाहै और इनके स्मरण करनेसेभी सैकड़ोंपापोंका नाश होजाताहै ४६।४८श्रीपर्णीनदी--ताम्रपर्णीनदी--उत्तम जयातीर्थ-पवित्र मत्स्यनदी--शिवधारतीर्थ ४९ भद्रतीर्थ पम्पानदी--पवित्र रामेश्वरजी--एलापुर--अलंपुर--अंगभूततीर्थ--आनन्दकमल--बुधदेव--आम्रातकेश्वर--एकाम्भक--गोवर्द्धनपर्वत--हरिश्चन्द्र--कृपुचन्द्र पृथूदक--सहस्राक्षतीर्थ--हिरण्याक्ष कदलीनदी जहाँ रामचन्द्रजीका वास है और लक्ष्मणजीका संगम है इन्द्रकील महानाद एलक क्षेत्र५०।५३यहभी तीर्थ श्राद्धके लिये बड़े श्रेष्ठहैं इनतीर्थों में सबदेवताओंकी समीपताहै इसीहेतुसे इनमें दियेहुए दानादिक अनन्त फलवाले होतेहैं पवित्र बाहुदानदी शुभसिद्धवन ५४।५५ पाशुपत तीर्थ--पार्वतिकानदी इनमें दियाहुआ श्राद्धसैकड़ोकोटिगुणा फलदायी है५६पितृतीर्थ जहाँ गोदावरी उत्तमनदी है औरउसीपर शिवजीके हजारों लिंगस्थापितहैं वहभी महाउत्तम कहाताहै ५७ उसको जामदग्निका तीर्थ कहते हैं वहाँही प्रतीक ऋषिके भयसे गोदावरीनदीका भेदहोगयाहै ५८ वह तीर्थ पितर और देवताओंका तीर्थ कहाताहै अप्सरो युगनाम से प्रसिद्धहै इनमें श्राद्ध अग्निहोत्र कर्म और अन्य २ दान किरोड़ों गुण फल देनेवाले होते हैं ५९ और सहस्र लिंग राघवेश्वर शिव पवित्र नदी

रमुत्तमम्। सेन्द्रफेनानदीपुण्या यत्रेन्द्रःपतितःपुरा ६० निहत्यनमुचिंशक्रस्तपसा स्व र्गमाप्तवान्। तत्रदत्तंनरैःश्राद्धमनन्तफलदंभवेत् ६१ तीर्थन्तुपुष्करंनाम शालग्रामंत थैवच। सोमपानञ्चविख्यातं यत्रवैश्वानरालयम् ६२ तीर्थंसारस्वतंनाम स्वामितीर्थं तथैवच। मलन्दरानदीपुण्या कौशिकीचन्द्रिकातथा ६३ वेदभीवाथवैराच पयोष्णीप्रा ङ्मखापरा। कावेरीचोत्तरापुण्या तथाजालन्धरोगिरिः ६४ एतेषुश्राद्धतीर्थेषु श्राद्धमा नन्त्यमश्नुते। लोहदण्डंतथातीर्थं चित्रकूटस्तथैवच ६५ विन्ध्ययोगश्चगंगायास्तथा नदीतटंशुभम्। कुब्जाम्रन्तुतथातीर्थं उर्वशीपुलिनंतथा ६६ संसारमोचनंतीर्थं तथैव ऋणमोचनम्। एतेषुपितृतीर्थेषु श्राद्धमानन्त्यमश्नुते ६७ अट्टहासंतथातीर्थं गौतमे श्वरमेवच। तथावसिष्ठंतीर्थन्तु हारितंतुततःपरम् ६८ ब्रह्मावर्तंकुशावर्तं हयतीर्थंतथै वच। पिण्डारकञ्चविख्यातं शङ्खोद्धारंतथैवच ६९ घण्टेश्वरंबिल्वकञ्च नीलपर्वतमे वच। तथाचधरणीतीर्थंरामतीर्थंतथैवच ७० अश्वतीर्थञ्चविख्यातमनन्तंश्राद्धदानयोः। तीर्थंवेदशिरोनाम तथैवौघवतीनदी ७१ तीर्थंवसुप्रदंनामच्छागलाण्डन्तथैवच। एतेषु श्राद्धदातारःप्रयांतिपरमंपदम् ७२ तथाचबदरीतीर्थंगणतीर्थंतथैवच। जयन्तंविजयंचैव शुक्रतीर्थंतथैवच ७३ श्रीपतेश्चतथातीर्थं तीर्थंरैवतकंतथा। तथैवशारदातीर्थं भद्रकाले श्वरंतथा ७४ वैकुण्ठतीर्थञ्चपरं भीमेश्वरमथापिवा। एतेषुश्राद्धदातारःप्रयान्तिपरमांग तिम् ७५ तीर्थंमातृगृहंनाम करवीरपुरंतथा। कुशेश्वरञ्चविख्यातं गौरीशिखरमेवच ७६ नकुलेशस्यतीर्थञ्च कर्दमालंतथैवच। दिण्डिपुण्यकरंतद्वत् पुण्डरीकपुरंतथा ७७

सेन्द्रफेना जहाँ प्रथम इन्द्र पतितहुआ है ६० वहाँहीं इन्द्रने नमुचि दैत्यको मारकर तपस्याकरके स्वर्ग प्राप्तकियाहै यहाँ मनुष्योंका कियाहुआ श्राद्ध अनन्त फलदायी होता है और पुष्करतीर्थ-शाल ग्रामतीर्थ-प्रसिद्ध सोमपान तीर्थ-वैश्वानर स्थान ६१। ६२ सारस्वत तीर्थ-स्वामीतीर्थ-मलंदरा-नदी-कौशिकीनदी-चन्द्रिकानदी ६३ वेदभीनदी वैरा-पयोष्णीनदी-प्राङ्मखानदी-उत्तरवाहिनी कावेरीनदी-जालन्धरपर्व्वत ६४ इनश्राद्धतीर्थोंमें दियाहुआ श्राद्ध अनन्त फलवालाहोताहै-लोहदण्ड तीर्थ-चित्रकूट पर्व्वत ६५ विन्ध्याचलके योगयुक्त जहाँ गंगानदीका सुन्दरतट कुब्जाम्रतीर्थ-उर्व-शीनदीका किनारा-संसारमोचनतीर्थ-ऋणमोचन तीर्थ-इन पितृतीर्थोंमें कियाहुआ श्राद्ध अनन्त फलदायी होताहै ६६। ६७ अट्टहासतीर्थ-गौतमेश्वरशिव-वसिष्ठतीर्थ-हारिततीर्थ ६८ ब्रह्मावर्त्त कुशावर्त्त-हयतीर्थ-पिण्डारकतीर्थ शंखोद्धारतीर्थ ६९ घंटेश्वरशिवजी-बिल्वकेश्वर-नीलकेश्वर-धर-णीधरतीर्थ-रामतीर्थ ७० अश्वतीर्थ-यह सवतीर्थभी दानके अनन्तफलदायी हैं-वेदशिरनाम तीर्थ-ओघवतीनदी ७१ वसुप्रदतीर्थ-छागलाण्डतीर्थ-इन्हों में श्राद्ध करनेवाला पुरुष परमपदको प्राप्त होताहै ७२ बद्रीतीर्थ-गणतीर्थ-जयन्त विजयशुक्रतीर्थ ७३ श्रीपति भगवान्कातीर्थ- रैवतनामक तीर्थ-शारदातीर्थ-भद्रकालेश्वर तीर्थ ७४ वैकुण्ठतीर्थ-भीमेश्वर महादेवतीर्थ-इनमेंभी श्राद्धकरने वाले पुरुष परमगतिकोपातेहैं ७५ मातृगृहनामकतीर्थ-करवीरपुर-कुशेश्वर-गौरीशिखर ७६ नकु-

सप्तगोदावरीतीर्थं सर्वतीर्थेश्वरेश्वरम्। तत्रश्राद्धंप्रदातव्यमनन्तफलमीप्सुभिः ७८
एषतूद्देशतःप्रोक्तस्तीर्थानांसंग्रहोमया। वागीशोऽपिनशक्नोति विस्तरात्किमुमानुषः७९
सत्यंतीर्थंदयातीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः। वर्णाश्रमाणांगेहेऽपि तीर्थन्तुसमुदाहृतम् ८०
एतत्तीर्थेषुयच्छ्राद्धं तत्कोटिगुणमिष्यते। यस्मात्तस्मात्प्रयत्नेन तीर्थेश्राद्धंसमाचरेत्
८१ प्रातःकालोमुहूर्तांस्त्रीन्संगवस्तावदेवतु। मध्याह्नस्त्रिमुहूर्तःस्यादपराह्णस्ततःपर
म् ८२ सायाह्नस्त्रिमुहूर्तःस्याच्छ्राद्धंतत्रनकारयेत्। राक्षसीनामसावेला गर्हितासर्वकर्म
सु ८३ अह्नोमुहूर्ताविख्याता दशपञ्चचसर्वदा। तत्राष्टमोमुहूर्तोयः सकालःकुतपःस्मृ
तः ८४ मध्याह्नेसर्वदायस्मान्मन्दीभवतिभास्करः। तस्मादनन्तफलदस्तदारम्भोभविष्य
ति ८५ मध्याह्नखड्गपात्रञ्च तथानेपालकम्बलः। रूप्यंदर्भास्तिलागावो दौहित्रश्चा
ष्टमःस्मृतः ८६ पापंकुत्सितमित्याहुस्तस्यसन्तापकारिणः। अष्टावेतेयतस्तस्मात् कुत
पाइतिविश्रुताः ८७ ऊर्ध्वंमुहूर्तात्कुतपाद्यन्मुहूर्तचतुष्टयम्। मुहूर्तपञ्चकञ्चैतत्स्वधाभ
वनमिष्यते ८८ विष्णोर्देहसमुद्भूताः कुशाःकृष्णास्तिलास्तथा। श्राद्धस्यरक्षणायाल
मेतत्प्राहुर्दिवौकसः ८९ तिलोदकाञ्जलिर्देयो जलस्थैस्तीर्थवासिभिः। सदर्भहस्तेनै
केन श्राद्धमेवंविशिष्यते ९० श्राद्धसाधनकालेतु पाणिनैकेनदीयते। तर्पणन्तूभयेनैव
विधिरेषसदास्मृतः ९१ (सूत उवाच) पुण्यंपवित्रमायुष्यं सर्वपापविनाशनम्। पुरा

लेशतीर्थ--कर्दमालतीर्थ--दिण्डि पुण्यकरतीर्थ--पुण्डरीकपुर ७७ गोदावरीतीर्थ जहाँ सर्व तीर्थेश्वरे-
श्वरमहादेवहैं वहाँ कियाहुआ श्राद्ध अनन्त फलदायक कहाहै७८यहतीर्थोंकासंग्रह मैंने उद्देशमात्रसे
कहाहै इनको विस्तारपूर्वक कहनेको बृहस्पतिजीभी समर्थ नहीं हैं मनुष्यकी क्यासामर्थ्य है ७९
सत्यतीर्थ--दयातीर्थ--इन्द्रियोंका रोकनातीर्थ-- यह सब तीर्थ तो सब वर्णाश्रमी लोगोंके घरहीमेंकहे
हैं ८० इन तीर्थोंमें जो श्राद्ध कियाजाताहै वह कोटिगुणा फलदायी है इसहेतुसे यत्नपूर्वक तीर्थपर
श्राद्धकरनाचाहिये ८१ प्रातःकालमें तीनमुहूर्त्त अर्थात् छःघड़ीदिन चढ़ेतक संगवसंज्ञककालहैमध्याह्न
में तीनमुहूर्त्त और अपराह्णमें तीनमुहूर्त्त यहउत्तमकालहैं८२सन्ध्याकालमेंजोतीनमुहूर्त्तहैं उसमेंश्राद्ध
न करे वह राक्षसीनाम वेला सबकर्मोंमें निन्दितहै दिनभरके१५ मुहूर्त्तकहे हैं उनमेंजो आठवाँमुहूर्त्तहै
उसको कुतुपसंज्ञक काल कहते हैं ८३।८४ मध्याह्न समयमें सूर्यकी मन्दगतिहोजातीहै इसहेतुसे उस
समयका दियाहुआ श्राद्ध अनन्तफलदायी है मध्याह्न खड्गपात्र अर्थात् खड्गके समान आकार
वालापात्र-नैपाल देशकाकम्बल-चाँदी-कुशा-तिल गौ-दौहित्र-यह आठों श्राद्धमें उत्तमकहेहैं ८५।८६
पापकानाम कुत्सित कहाता है और यह उक्त आठों पदार्थ उस पापके नाश करने वाले हैं इसीहेतु
से यह आठों कुतपा नामसे विख्यात हैं और कुतपसंज्ञक मुहूर्त्तसे पीछे के जो चार मुहूर्त्तों समेत
पांच मुहूर्त्त हैं वह स्वधा शब्दके आश्रय अर्थात् स्थानरूप हैं ८७।८८ कुशा और काले तिल विष्णुके
शरीरसे उत्पन्नहुए हैं इसीहेतुसे यह श्राद्धकी रक्षामें परिपूर्ण हैं और देवताओंनेभी कहाहै ८९ कितिल
मिश्रित जलकी अंजलीको एक हाथमें कुशालेके जोतीर्थवासीलोग देते हैं वहभी उत्तम श्राद्धकहाता
है ९० श्राद्धके साधन कालमें एकही हाथसे देना योग्यहै और तर्पण देना दोनों हाथोंसे करे ऐसी

मत्स्यनकथितं तीर्थश्राद्धानुकीर्त्तनम् ६२ शृणोतियःपठेद्वापिश्रीमान्सञ्जायतेनरः ६३ श्राद्धकालेचवक्तव्यंतथातीर्थनिवासिभिः। सर्वपापोपशान्त्यर्थमलक्ष्मीनाशनंपरम् ६४ इदंपवित्रंयशसोनिधानमिदंमहापापहरञ्चपुंसाम्। ब्रह्मार्करुद्रैरपिपूजितञ्च श्राद्धस्य माहात्म्यमुशन्तितज्ज्ञाः ६५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेश्राद्धकल्पेद्वाविंशतितमोऽध्यायः २२॥

(ऋषयऊचुः) सोमःपितॄणामधिपः कथंशास्त्रविशारदः। तद्वंश्यायेचराजानो बभूवुःकीर्त्तिवर्धनाः १ (सूत उवाच) आदिष्टोब्रह्मणापूर्वमत्रिःसर्गविधौपुरा। अनुत्तम न्नामतपःसृष्ट्यर्थंतप्तवान्प्रभुः २ यदानन्दकरंब्रह्म जगत्क्लेशविनाशनम्। ब्रह्मविष्णुर्करुद्राणामभ्यन्तरमतीन्द्रियम् ३ शान्तिकृच्छान्तमनसस्तदन्तर्नयनेस्थितम्। माहात्म्यात्तपसाविप्राः परमानन्दकारकम् ४ यस्मादुमापतिःसार्द्धमुमयातमधिष्ठितः। तंदृष्ट्वाचाष्टमांशेन तस्मात्सोमोऽभवच्छिशुः ५ अथःसुस्रावनेत्राभ्यां धामतच्चाम्बुसम्भवम् । दीपयद्विश्वमखिलं ज्योत्स्नयासचराचरम् ६ तद्दिशोजगृहुर्धाम स्त्रीरूपेणसुतेच्छया। गर्भोभूत्वोदरेतासामास्थितोऽब्दशतत्रयम् ७ आशास्तंमुमुचुर्गर्भं

विधि कहीहै ९१ सूतजी कहते हैं कि आयुका हितकारी पापोंका नाशक महापुण्यकारी और पवित्र यह तीर्थ है पूर्वमें इसका कीर्तन मत्स्यजीने कियाहै ९२ श्राद्ध कालमें यह माहात्म्यकहना योग्य है इसको जोपढ़ताहै वा सुनताहै वह मनुष्य लक्ष्मीवान् होजाताहै इसीसे तीर्थ वासियोंको सबपापों के नाश के लिये और दरिद्रकेभी दूर करनेके निमित्त इसका पाठ करना योग्यहै९३।९४ यह पवित्र और यशका स्थानहोकर पुरुषोंके महापापों का नाश करने वालाहै यह शिव ब्रह्मा और सूर्य्य से पूजितहै ऐसा यह श्राद्धका माहात्म्य पण्डितजनों ने कहा है॥ ९५

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांश्राद्धकल्पेद्वाविंशतितमोऽध्यायः २२॥

ऋषियों ने पूछा—कि शास्त्रोंकाज्ञाता चन्द्रमा पितरोंकापति कैसे होगया और उसचन्द्रवंश में उत्पन्नहोनेवाले राजालोग कीर्त्तिके बढ़ानेवाले कैसेहुए १ सूतजीने कहा—कि पूर्व्व प्रजाके रचने में आज्ञादियेहुए अत्रिमुनि सृष्टिके निमित्त अतिउत्तम तपकरते भये २ जो आनन्द करनेवाला ब्रह्मा जगत् के क्लेशोंका नाशकहै और विष्णु रुद्र और सूर्य्य इनसबके भी आभ्यन्तरमें स्थितहै ३ इन्द्रियों से अग्राह्यहोकर शान्तिका करनेवाला है वह शान्तचित्तवाले लोगोंके नेत्रोंके भीतर स्थितहै हेविप्रवर लोगो वह ब्रह्मतपके माहात्म्यकरके उस अत्रिऋषि को परम आनन्दका करनेवालाहुआ अर्थात् अत्रिमुनिके नेत्रोंसे चन्द्रमाउत्पन्नहुआ उससमय शिवजीमहाराज उसउत्पन्नहुए चन्द्रमाको देखके बड़ीप्रसन्नतापूर्व्वक पार्वती समेत अर्थात् दोनों शिवपार्वती ने चन्द्रमाको मस्तकमें धारणकरलिया और उससे उत्पन्नहोकर अत्रिके नेत्रों से झिरताहुआ तेज अपनी कान्तिसे संपूर्ण चराचर जगत् को प्रकाशित करताभया ४।६ उसतेजको सब दिशा स्त्रीरूपहोकर पुत्रकी इच्छाकरके ग्रहणकर लेतीभई फिर उनके उदरमें वहगर्भहोके तीनसौवर्षतक स्थितरहा ७ फिर उसकेधारणको असमर्थ

मशक्ताधारणेततः । समादायाथतं गर्भमेकीकृत्यचतुर्मुखः ८ युवानमकरोद्ब्रह्मास
र्वायुधधरंनरम् । स्यन्दनेऽथसहस्राश्वे वेदशक्तिमयेप्रभुः ९ आरोप्यलोकमनयदात्मीयं
सपितामहः । तत्रब्रह्मर्षिभिःप्रोक्तमस्मत्स्वामीभवत्वयम् १० पितृभिर्देवगन्धर्वैरो
षधीभिस्तथैवच । तुष्टुवुःसोमदैवत्यैर्ब्रह्माणंमन्त्रसंग्रहैः ११ स्तूयमानस्यतस्याभूद
धिकोधामसम्भवः । तेजोवितानादभवद्भुविदिव्यौषधीगणः १२ तद्दीप्तिरधिकात
स्माद्रात्रौभवतिसर्वदा । तेनौषधीशःसोमोऽभूद्द्विजेशश्चापि गद्यते १३ वेदधामरस
ञ्चापि, यदिदंचन्द्रमण्डलम् । क्षीयतेवर्द्धतेचैव शुक्लेकृष्णेचसर्वदा १४ विंशतिञ्च
तथासप्त दक्षःप्राचेतसोददौ । रूपलावण्यसंयुक्तास्तस्मैकन्याःसुवर्चसः १५ ततःपद्म
सहस्राणां सहस्राणिदशैवतु । तपश्चचारशीतांशुर्विष्णुध्यानैकतत्परः १६ ततस्तुष्ट
स्तुभगवांस्तस्मैनारायणोहरिः । वरंवृणीष्वप्रोवाच परमात्माजनार्दनः १७ ततोवव्रे
वरान्सोमः शक्रलोकंजयाम्यहम् । प्रत्यक्षमेवभोक्तारो भवन्तुममसन्दिरे १८ राजसूये
सुरगणाब्रह्माद्याःसन्तुनेद्विजाः । रक्षःपालःशिवोऽस्माकमास्तांशूलधरोहरः १९ तथेत्यु
क्तःसमाजह्रे राजसूयन्तुविष्णुना । होतात्रिर्भृगुरध्वर्युरुद्गाताभूच्चतुर्मुखः २० ब्रह्मत्वमग
मत्तस्यउपद्रष्टाहरिःस्वयम् । सदस्याःसनकाद्यास्तु राजसूयविधौस्मृता २१ चमसाध्वर्य

होके सब दिशाओंने उसतेजगर्भ को निकालदिया तब ब्रह्माजी ने उसगर्भको इकट्ठाकरके सबशस्त्रों का धारण करनेवाला महाबली एकपुरुष बनाया और फिर उसको वेदशक्तियोंसे युक्त हजार घोड़ों के रथपर बैठाकर ब्रह्माजी अपने लोकमें लेआये वहाँ उसको देखकर ब्रह्मऋषियोंने कहा कि यह हमारा स्वामीहो ८।१० फिर पितर देवता गन्धर्व और औषधियां इनसबको साथलेकर इन्द्रादिक देवता सोमदैवत्यसंज्ञक मंत्रोंकरके ब्रह्माजीकी स्तुति करनेलगे ११ तब स्तुति कियेहुए ब्रह्माजी के योगसे वह अधिक तेजहोकर चन्द्रमामें प्राप्त होजाताभया उसतेजके प्रभावसे पृथ्वी में दिव्य औषधियोंके गण विस्तृतहुए और चन्द्रमाकी कान्ति रात्रिमें सदैव अधिक होजातीभई इसीहेतुसे चन्द्रमा औषधियोंका ईश और ब्राह्मणोंका अधिपति होताभया १२।१३ यह चन्द्रमण्डल वेदकाधाम और रसरूपी है शुक्लपक्षमें बढ़कर कृष्णपक्षमें घटताहै १४ पूर्व में इसचन्द्रमाको प्राचेतस दक्षप्रजापतिने रूपलावण्यतासे युक्त चन्द्रकान्तिवाली एकउत्तमकन्यादीथी १५ इसके अनन्तर यह चन्द्रमा लक्षगुण पद्मसंख्या वर्ष पर्य्यन्त विष्णुके आराधनमें तदाकारहोकर तपस्या करताभया १६ फिर भगवान् प्रसन्नहोकर वरमांगनेकी आज्ञादेतेभये १७ तब चन्द्रमाने कहा कि मैं इन्द्रके लोककोविजयकरूं मेरे मन्दिरमें देवतालोग प्रत्यक्ष साक्षात्रूपसे आकर राजसूययज्ञमें मेरे ब्राह्मणबनें और शूलधारी शिवजी महाराज मेरेयज्ञकी रक्षाकरनेवाले होंय १८।१९ जब विष्णुने तथास्तु कहकर वरदान देदिया तब चन्द्रमाने यज्ञकिया उसयज्ञमें अत्रिमुनि तो होताहुए भृगुअध्वरी ब्रह्मा उद्गाता और आपहरि भगवान् ब्रह्मवेदरूपी होके उपद्रष्टाहुए और उसराजसूययज्ञमें सनकादिक ऋषि सदस्य अर्थात् सभापतिहुए२०।२१दश विश्वेदेवा चमसा अध्वर्य्युहुए वहाँ उसचन्द्रमाने ऋत्विजों को

वस्तत्रविश्वेदेवादशैवतु। त्रैलोक्यंदक्षिणातेन ऋत्विग्भ्यःप्रतिपादितम् २२ ततःसमाप्तेऽवभृथे तद्रूपालोकनेच्छवः। कामबाणाभितप्तांग्योनवदेव्यःसिषेविरे २३ लक्ष्मीर्नारायणंत्यक्त्वा सिनीवालीचकर्दमम्। द्युतिर्विभावसुंतद्वत्तुष्टिर्धातारमव्ययम्२४प्रभाप्रभाकरंत्यक्त्वा हविष्मन्तंकुहूःस्वयम् कीर्तिर्जयन्तंभर्तारंवसुर्मारीचकश्यपम् २५ धृतिस्त्यक्त्वापतिंनन्दिंसोममेवाभजंस्तदा। स्वकीयाइवसोमोऽपि कामयामासतास्तदा २६ एवं कृतापचारस्यतासाम्भर्तृगणस्तदा। नशशांकापचारायशापैःशस्त्रादिभिःपुनः २७ तथाप्यराजतविधुर्दशधाभावयन्दिशः। सोमःप्राप्याथदुष्प्राप्यमैश्वर्यमृषिसंस्कृतम्। सप्तलोकैकनाथत्वमवापतपसातदा २८ कदाचिदुद्यानगतामपश्यदनेकपुष्पाभरणैश्च शोभिताम्। बृहन्नितम्बस्तनभारखेदात् पुष्पस्यभंगेऽप्यतिदुर्बलांगीम् २९ भार्याञ्च तांदेवगुरोरनंगबाणाभिरामायतचारुनेत्राम्। तारांसताराधिपतिःस्मरार्तः केशेषुजग्राहविविक्तभूमौ ३० सापिस्मरार्तासहतेनरेमे तद्रूपकान्त्याहृतमानसेन। चिरंविहृत्याथजगामतारां विधुर्गृहीत्वास्वगृहंततोपि ३१ नतृप्तिरासीच्चगृहेऽपितस्य तारानुरक्तस्यसुखागमेषु। बृहस्पतिस्तद्विरहाग्निदग्धस्तद्ध्याननिष्ठैकमनाबभूव ३२ शशाकशापञ्चदातुमस्मै नमन्त्रशस्त्राग्निविषैरशेषैः। तस्यापकर्तुंविविधैरुपायैर्नैवाभिचारैरपि

त्रिलोकीकी दक्षिणादी २२ जब वह यज्ञ समाप्तहोचुका तब चन्द्रमाके रूपके देखने की इच्छाकरके कामके बाणोंसे तापितहुईं नव ९ देवियां उसको सेवतीभईं २३ उनकेनाम यहहैं एक तो नारायण को त्यागकर लक्ष्मीआई--कर्दमको त्यागकर सिनीवाली आई--विभावसुको त्यागकर द्युतिआई ब्रह्माजीको त्यागकर तुष्टीआई २४ सूर्य्यको त्यागकर प्रभाआई--हविष्मन्तको त्यागकर कुहूआई जयन्तपतिको त्यागकर कीर्त्तिआई--कश्यपके पुत्र मारीचिको त्यागकर वसुनाम स्त्री आई २५ और नन्दीपतिको त्यागकर धृतिआई--यह सब स्त्रियां आकर एकचन्द्रमाकोही भजतीभईं तब चन्द्रमा भी उनकी इच्छा अपनी स्त्रियोंकेही समान करताभया २६ इसप्रकारसे उन स्त्रियों का व्यभिचार होजानेपरभी उनके भर्त्तालोग अपने शापरूपी शस्त्रादिकोंसे चन्द्रमाका तिरस्कार नहीं करतेभये२७ और चन्द्रमा दशोंदिशाओंको प्रकाशित करके आपप्रकाशवान् होताभया इसऋषियोंसे भी दुष्प्राप्य ऐश्वर्य्यको प्राप्तहोकर तपके प्रभावसे यहचन्द्रमा सातलोकोंका अकेला मालिक होताभया२८किसी समय यह चन्द्रमा अनेक पुष्पादि आभरणोंसे अलंकृत भारी नितम्ब और कुचाओंसे युक्त पुष्पक तोड़नेमेंभी दुर्बलांगी ऐसी बृहस्पतिकी स्त्री ताराको बगीचेमें जाताहुआ देखकर कामदेवके बाणोंसे युक्त उस सुन्दरनेत्रों वालीको एकान्तमें जाकर कामसे महापीड़ित होकर केशोंके स्थान में ग्रहण करताभया अर्थात् उसके बालोंके स्थानको हाथसे पकड़ताभया फिर वह ताराभी चन्द्रमाकी कांति को और उसके रूपको देखकर मोहितहोगई और कामदेवसे पीड़ितहोकर उसके संगरमणकरती भई फिरबहुतकालतक रमणकरताहुआ चन्द्रमा उसको अपनेघरमें लाताभया२९।३१फिर चन्द्रमा अपनेघरमें भी लाकर उसमें ऐसाअनुरक्त होगया कि उससे भोगकरते २ तृप्तिको नहींप्राप्तहोताभया तब बृहस्पतिजी उसताराके विरहकी अग्निसे दग्धहोकर उसकाध्यान करतेभये तब उसके सब

वागधीशः ३३ सयाचयामासततस्तुदैन्यात् सोमंस्वभार्यार्थमनंगतप्तः। सयाच्य मानोऽपिददौनतारां वृहस्पतेस्तत्सुखपाशबद्धः ३४ महेश्वरेणाथचतुर्मुखेन साध्यै र्मरुद्भिःसहलोकपालैः। ददौयदातान्नकथञ्चिदिन्दुस्तदाशिवःक्रोधपरोबभूव ३५ योवामदेवःप्रथितःपृथिव्यामनेकरुद्रार्चितपादपद्मः। ततःसशिष्योगिरिशःपिनाकी वृहस्पतिस्नेहवशानुबद्धः ३६ धनुर्गृहीत्वाजगवंपुरारिर्जगामभूतेश्वरसिद्धजुष्टः। युद्धाय सोमेनविशेषदीप्ततृतीयनेत्रानलभीमवक्त्रः ३७ सहैवजग्मुश्चगणेशकाद्या विंशच्चतुः षष्टिगणास्तयुक्ताः। यक्षेश्वरःकोटिशतैरनेकैर्युतोऽन्वगात्स्यन्दनसंस्थितानाम् ३८ वे तालयक्षोरगकिन्नराणां पद्मेनचैकेनतथार्बुदेन। लक्षैस्त्रिभिर्द्वादशभीरथानां सोमोऽप्य गात्तत्रविवृद्धमन्युः ३९ नक्षत्रदैत्यासुरसैन्ययुक्तः शनैश्चराङ्गारकवृद्धतेजाः। जग्मु र्भयंसप्ततथैवलोकाश्चचालभूर्द्वीपसमुद्रगर्भा ४० ससोममेवाभ्यगमत्पिनाकी गृही तदीप्तास्त्रविशालवह्निः। अथाभवद्भीषणभीमसेनसैन्यद्वयस्यापिमहाहवोऽसौ ४१ अ शेषसत्वक्षयकृत्प्रवृद्धस्तीक्ष्णायुधास्त्रज्वलनैकरूपः। शस्त्रैरथान्योन्यमशेषसैन्यं द्वयो र्जगामक्षयमुग्रतीक्ष्णैः ४२ पतन्तिशस्त्राणितथोज्ज्वलानि स्वर्भूमिपातालमथादहन्ति।

कर्मको जानकरभी वृहस्पतिजी अपने शाप मन्त्र शस्त्र अग्नि और विष इत्यादिक अभिचारोंसे उस चन्द्रमापर प्रहारकरनेको समर्थ न होतेभये अर्थात् वृहस्पतिजी अनेक उपायोंसेभी चन्द्रमाका तिरस्कार न करसके ३२।३३तब कामदेवसे पीड़ितहोकर बड़ेदीनहोकर चन्द्रमासे अपनीभार्य्याको मांगतेभये तब ताराके सुखसे बंधाहुआ चन्द्रमा वृहस्पतिजीके मांगनेपरभी उनकी तारास्त्रीको नहींदेता भया ३४ फिर यहाँतक हुआ कि शिवजी ब्रह्माजी साध्यदेवता मरुद्गण इत्यादिकोंके मांगनेपरभी चन्द्रमाने ताराको न दिया उससमय शिवजी क्रोधयुक्त होगये और पृथ्वी में वामदेव रूपसे विख्यात रुद्रगणोंसे सेवित पिनाक धनुषधारी शिवजी वृहस्पतिजीके स्नेहमें युक्त होकर अपने अजगवनाम धनुषको लेकर भूतेश्वर सिद्धादिकों समेत चन्द्रमासे युद्धकरनेके अर्थ आतेभये तब चन्द्रमाकरके विशेष प्रकाशितहोकर अपने तीसरेनेत्ररूपी अग्निसे उन शिवजीकारूप महाभयकारी दिखाईपड़ा ३५।३७ उससमय शिवजीके गणेशादिक गणभी चौरासी प्रकारके अस्त्र शस्त्रादिकोंको ग्रहणकियेहुए उनके संगचले और असंख्यसेनाओंको साथलेकर कुबेरभी शिवजीके पीछेपीछे आया ३८ उससमय वेताल यक्ष उरग इनकी एक पद्म और एक अर्बुद सेना और १५ लक्ष रथोंसे युक्त बड़े क्रोधमें भरा हुआ चन्द्रमाभी युद्धके निमित्त सन्मुखआया ३९ यह चन्द्रमा नक्षत्र दैत्य-देवता इत्यादिकों से युक्त शनैश्चर मंगल इत्यादि ग्रहोंके तेजसे बड़ा तेजयुक्तहोकर युद्धमें प्राप्तहुआ तब सातों लोकों में भयहुआ और समुद्र द्वीप और पर्वतादि समेत पृथ्वी चलायमान हुई ४० वह शिवजी धनुषसमेत अग्निके समान प्रकाशमान अस्त्रशस्त्रोंको धारणकर चन्द्रमाके सन्मुख आये तब दोनोंकी सेनाओंमें महा भयंकर युद्ध होताभया ४१, वह युद्ध अनेकप्रकारके अस्त्रशस्त्र और आयुधों से सबजीवमात्रोंका भयकारी ऐसा भयंकरहुआ कि सब सेनाओं का नाश होगया ४२ उससमय स्वर्ग भूमि और पाताल इनसबके भी दग्धकरनेवाले उज्ज्वल तीक्ष्ण शस्त्रचले तब शिवजी क्रोधित होकरके ब्रह्मशर अस्त्रको

रुद्रःकोपाद्ब्रह्मशीर्षमुमोचसोमोऽपिसोमास्त्रममोघवीर्यम् ४३ तयोर्निपातेनसमुद्रभूम्यो रथान्तरिक्षस्यचभीतिरासीत्।तदस्त्रयुग्मंजगतांक्षयायप्रवृत्तमालोक्यपितामहोऽपि ४४ अन्तःप्रविश्याथकथंकथञ्चिन्निवारयामाससुरैःसहैव। अकारणंकिंक्षयकृज्जनानांसोम! त्वयापीत्थमकारिकार्यम् ४५ यस्मात्परस्त्रीहरणायसोम त्वयाकृतंयुद्धमतीवभीमम्। पापग्रहस्त्वंभविताजनेषु शान्तोऽप्यलंनूनमथासितान्ते ४६ भार्यामिमामर्पयवाक्पते स्त्वं नचावमानोऽस्तिपरस्वहारे ४७ (सूत उवाच) तथेतिचोवाचहिमांशुमाली युद्धाद् पाक्रामदतःप्रशान्तः। बृहस्पतिःस्वामपगृह्यतारां हृष्टोजगामस्वगृहंसरुद्रः ४८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसोमवंशाख्यानेसोमापचारोनामत्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३॥

(सूतउवाच) ततःसंवत्सरस्यान्ते द्वादशादित्यसन्निभः। दिव्यपीताम्बरधरो दिव्याभरणभूषितः १ तारोदराद्विनिष्क्रान्तः कुमारश्चन्द्रसन्निभः। सर्वार्थशास्त्रविद्धीमान् हस्तिशास्त्रप्रवर्तकः २ नामयद्राजपुत्रीयं विश्रुतंगजवैद्यकम्। राज्ञःसोमस्य पुत्रत्वाद्राजपुत्रोबुधःस्मृतः ३ जातमात्रःसतेजांसि सर्वाण्येवाजयद्बली। ब्रह्माद्यास्तत्रचाजग्मुर्देवादेवर्षिभिःसह ४ बृहस्पतिगृहेसर्वे जातकर्मोत्सवेतदा। अपृच्छंस्तेसुरास्तारां केनजातःकुमारकः ५ ततःसालज्जितातेषां नकिञ्चिदवदत्तदा। पुनःपुनस्तदापृष्टा लज्जयन्तीवराङ्गना ६ सोमस्येतिचिरादाह ततोऽगृह्णाद्विधुःसुतम्। बुधइत्यकरोन्नाम्ना

छोड़तेभये उत्तसमय चन्द्रमा ने अमोघ वीर्यवाले सोमास्त्र को छोड़ा दोनों के आघातसे पृथ्वी और आकाशमें भय होताभया तब ब्रह्माजी बढेहुए उनशस्त्रोंको लोकोंके क्षयकारी जानके किसी रीतिसे उन दोनोंके मध्यमें प्रवेशकरके देवताओं समेत चन्द्रमाको निवारण करतेभये और चन्द्रमासे कहा कि हेसोम तैनेभी यह मनुष्यों का नाशकारी महाघोर युद्ध अयोग्य कार्य्यके निमित्त कियाहै सो जोतैने पराईस्त्री हरनेके निमित्त ऐसा भयानक युद्धकियाहै इसहेतुसे तू शान्त होजाने परभी कृष्णपक्षके अन्तमें पापग्रह होजायगा ४३। ४६ और इन बृहस्पति जीकी स्त्रीको देदे पराया द्रव्यहरनेमें युद्धसे हटजानेका कुछ अपमान नहीं होता ४७ सूतजीने कहा—कि तब वह चन्द्रमा ब्रह्माजीके वचनको अंगीकार करके शान्त हो युद्धसे हटगया और बृहस्पतिजी भी बड़े प्रसन्नहो अपनी तारानाम स्त्रीको ग्रहणकर स्त्री समेत अपने घरमें आये ४८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसोमवंशाख्यानेसोमापचारोनामत्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

सूतजीबोले कि फिर वर्षदिनकेपीछे बारह सूर्योंकेसमान कान्तिवान् सुन्दरदिव्य पीतवस्त्रधारी दिव्याभरणसे भूषित चन्द्रमाकी कान्तिके समान ऐसाबालक ताराके उदरसे उत्पन्नहुआ और सर्वशास्त्रज्ञ हस्तियोंके शास्त्रका प्रवृत्त करनेवाला राजपुत्रनामसे प्रसिद्ध हस्तियोंका वैद्यहोकर वह लड़का चन्द्रमा राजाकापुत्र होनेसे राजपुत्र बुध कहाताभया १।३ उसने जन्मलेतेही सब तेजोंकोजीत लिया फिर ऋषियों समेत सब ब्रह्मादिक देवता उसके जातकर्मके उत्सवकेलिये बृहस्पतिजीके घरमें आये और तारासे पूछनेलगे कि यह बालक किसके संयोगसे हुआहै ४।५ यह सुनकर वहतारा प्रथम तो लज्जायुक्त होकर कुछ न बोली फिर वारंवार पूछने से बहुतकालमें लज्जायुक्तहोकर बोली

प्रादाद्राज्यञ्चभूतले ७ अभिषेकंततःकृत्वायुवानमकरोद्विभुः। ग्रहसाम्यंप्रदायाथ ब्रह्मा ब्रह्मर्षिसंयुतः ८ पश्यतांसर्वदेवानां तत्रैवांतरधीयत। इलोदरेचधर्मिष्ठं बुधःपुत्रमजीजनत् ६ अश्वमेधशतंसाग्रमकरोद्यःस्वतेजसा। पुरूरवाइतिख्यातःसर्वलोकनमस्कृतः१० हिमवच्छिखरेरम्ये समाराध्यजनार्दनम्। लोकैश्वर्यमगाद्राजा सप्तद्वीपपतिस्तदा ११ केशिप्रभृतयोदैत्याः कोटिशोयेनदारिताः। उर्वशीयस्यपत्नीत्वमगमद्रूपमोहिता १२ सप्तद्वीपावसुमती सशैलवनकानना। धर्मेणपालितातेन सर्वलोकहितैषिणा १३ चामरग्राहिणीकीर्तिः सदाचैवांगवाहिका। विष्णोःप्रसादाद्देवेन्द्रो ददावर्धासनन्तदा १४ धर्मार्थकामान्धर्मेण सममेवाभ्यपालयत्। धर्मार्थकामाःसन्द्रष्टुमाजग्मुःकौतुकात्पुरा १५ जिज्ञासवस्तच्चरितं कथंपश्यतिनःसमम्। भक्त्याचक्रेततस्तेषामर्घ्यपाद्यादिकंनृपः १६ आसनत्रयमानीय दिव्यंकनकभूषितम्। निवेश्याथाकरोत्पूजा मीषद्धर्मेऽधिकांपुनः १७ जग्मतुस्तेनकामार्थावतिकोपंनृपंप्रति। अर्थःशापमदात्तस्मै लोभात्त्वंनाशमेष्यसि १८ कामोप्याहतवोन्मादो भवितागन्धमादने। कुमारवनमाश्रित्य वियोगादुर्वशीभवात् १६ धर्मोऽप्याहचिरायुस्त्वं धार्मिकश्चभविष्यसि। संततिस्तवराजेंद्र यावच्चंद्रार्कतारकम् २०

कि यह बालक चन्द्रमाकाहै यह सुनतेही चन्द्रमाने उस बालकको ग्रहण करलिया और उसकाबुध नाम धरकर उसे पृथ्वीमें राज्य देताभया ६। ७ तब ब्रह्मर्षियों समेत ब्रह्माजी उसको पृथ्वीतलमें राज्याभिषेक करके उसमें ग्रहोंकी समानता करतेभये यह करके ब्रह्माजी सब देवताओंके देखतेही देखते वहाँ अन्तर्धान होगये और बुध अपनी इलानामस्त्रीमें धार्मिष्ठ पुत्रको उत्पन्न करताभया ८।६ वह पुत्र अपने तेजसेही करोड़ों अश्वमेध यज्ञ करताभया और पुरूरवा नामसे प्रसिद्ध होकर सब जनोंसे वन्दित होताभया और हिमाचल पर्व्वतके रमणीक शिखरपर भगवान्का आराधन करके लोकोंके सब ऐश्वर्य्यों समेत सातोंद्वीपोंका राजा होताभया १०।११ इसने केशीआदि अनेक दैत्य मारे और उर्वशी अप्सरा जिसके रूपसे मोहितहोकर उसकी स्त्रीबनी जिसने पर्वतादि समेत इस सप्तद्वीपा पृथ्वीको धर्मसेपाला औरसबलोकोंका हितकिया१२।१३ इसके विशेष इसने सबदेवताओं के समान उत्तम कीर्त्तिपाई और विष्णुकी कृपासे जिसको इन्द्रभी अर्धासन देताथा और धर्म अर्थ और कामनाकोभी जिसने धर्मके समानपाला ऐसे इसराजाके देखनेको प्रथम धर्म अर्थ और काम यहतीनों इस विचारसे आतेभये कि यहराजा हमारे चरित्रोंको समान भावसेही कैसे देखताहै उनको आयाजानकर राजा अर्घपाद्यादि सत्कार करताभया १४।१६ और सुन्दरतनिरत्न जटित आसनों पर तीनोंको बैठाकर भक्तिसे पूजनकिया परन्तु धर्म में कुछ अधिक भक्तिरक्खी १७ तब काम और अर्थ यह दोनों उसराजापर क्रोधितहुए और अर्थने राजाको यह शापदिया कि तू लोभसे नाशको प्राप्तहोजायगा १८ और कामने शाप दिया कि गन्धमादन पर्व्वत के कुमारवनमें तुझको उर्वशी के वियोगसे उन्मादहोजायगा-इन दोनोंके दियेहुए शापोंको सुनकर धर्मने कहा कि तू बहुतसी आयु वालाहोकर बड़ा धार्मिक होगा और हेराजा जबतक सूर्य्य और चन्द्रमा रहेंगे तबतक तेरी सन्तान रहेगी १६।२० हजारोंबार तेरीवृद्धिहोगी औरइसपृथ्वीपरसे तेरी सन्ततिकानाश न होगा ऐसा कहकर

शतशोवृद्धिमायातु ननाशम्भुवियास्यति। इत्युक्त्वान्तर्दधुःसर्वे राजाराज्यंतदन्वभूत २१ अहन्यहनिदेवेंद्रं द्रष्टुंयातिसराजराट्। कदाचिदारुह्यरथं दक्षिणांवरचारिणम् २२सार्द्धमर्केणसोऽपश्यन्नीयमानामथांवरे। केशिनादानवेंद्रेणचित्रलेखामथोर्वशीम् २३तंविनिर्जित्य समरेविविधायुधपाणिना। बुधपुत्रेणवायव्यमस्त्रंमुक्तायशोर्थिना २४तथाशक्रोऽपिसमरेयेनचैवंविनिर्जितः। मित्रत्वमगमद्देवैर्ददावेंद्रायचोर्वशीम् २५ततःप्रभृतिमित्रत्वमगमत्पाकशासनः। सर्वलोकातिशायित्वंवलमूर्जोयशःश्रियम् २६ प्रादाद्वज्रीतिसन्तुष्टो गेयतांभरतेनच। सापुरूरवसःप्रीत्या गायन्तीचरितंमहत् २७ लक्ष्मीस्वयंवरंनामभरतेनप्रवर्त्तितम्। मेनकामुर्वशींरंभां नृत्यतेतितदादिशत् २८ ननर्त्तसलयंतत्रलक्ष्मीरूपेणचोर्वशी। सापुरूरवसंदृष्ट्वा नृत्यन्तीकामपीडिता २९ विस्मृताभिनयंसर्वं यत्पुराभरतोदितम्। शशापभरतःक्रोधाद्वियोगादस्यभूतले ३० पञ्चपञ्चाशदब्दानि लतासूक्ष्माभविष्यसि। पुरूरवाःपिशाचत्वं तत्रैवानुभविष्यति ३१ ततस्तमुर्वशीगत्वा भर्तारमकरोच्चिरम्। शापान्तेभरतस्याथ उर्वशीबुधसूनुतः ३२ अजीजनत्सुतानष्टौ नामतस्तान्निवोधत। आयुर्दृढायुरश्वायुर्धनायुर्धृतिमान्वसुः ३३ शुचिविद्यःशतायुश्च सर्वेदिव्यवलौजसः। आयुषोनहुषःपुत्रो वृद्धशर्मातथैवच ३४ रजिर्दम्भोविपाप्माच वीराःपञ्चमहारथाः। रजेःपुत्रशतंजज्ञेराजेयमितिविश्रुतम् ३५ रजिराराधयामास नारायणमकल्म

वह सब वहीं अन्तर्धानहोगये और राजाभी अपने राज्यके कार्य्योंमें प्रवृत्तहोगया २१ वहराजा प्रतिदिन इन्द्रके दर्शन करनेको जायाकरताथा एकसमय दक्षिणांवरचारी रथमें वैठकर वहराजा चला जाताथा २२ कि अकस्मात् चित्ररेखा उर्व्वशीको पकड़कर आकाश में लेजातेहुए केशी दैत्यको इसनेदेखा २३ और फिर युद्धमें उसको अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे जीतकर अपने यशके निमित्तवायव्य अस्त्रकोछोड़ा और इसीप्रकारसेही इसने पहले इन्द्रकोभी जीताथा ऐसे उसबुधकेपुत्रनें उस दैत्यको जीतके उस उर्व्वशी को इन्द्रके अर्थ देदिया और उर्व्वशी को देकर इन्द्रसे प्रीतिकरताभया २४।२५ तव इन्द्रभी उसका मित्र होगया उससमय इन्द्रने अत्यन्त प्रसन्नहोकर सवलोकोंमें उसको अत्यन्त वलवान् पराक्रमी और यश लक्ष्मीसे युक्तकरके कीर्त्तिमान् करदिया और वह अप्सराभी प्रसन्नहोकर पुरूरवा वंशके उत्तमचरित्रों को गातीभई २६।२७ और राजा भरतने लक्ष्मी स्वयंवर नाम एकस्वयंवर प्रवृत्त कर रक्खाथा उसमें मेनका और रंभा उर्व्वशियोंको उसने नृत्यकरनेकी आज्ञादी थी २८ तव तालस्वर आदिके साथ वहउर्व्वशी लक्ष्मीरूपकरके नृत्यकरती भई और उसी नृत्यको करतीहुई वह उर्व्वशी पुरूरवाके रूपकोदेखकर कामसे महापीड़ित होजातीभई २९ और जोपूर्व्वमें भरतने नीति कहीथी उसको भूलगई तवभरतने यह शापदिया कि इसी पुरूरवाके वियोगसे पृथ्वीमें सूक्ष्मरूप लता होजायगी और यह पुरूरवा पिशाच होगा ३०।३१ इसके अनन्तर वह उर्व्वशी पृथ्वी तलपै आकर उसको अपना भर्त्ता करतीभई फिर जब शापका अन्तहोगया तव बुधके पुत्रके संयोगसे आठ पुत्रों को उत्पन्न करतीभई अर्थात् आयु—दृढायु—अश्वायु—धनायु—धृतिमान्—वसु—शुचिविद्य—और शतायु इन दिव्य वल पराक्रमवाले आठ पुत्रोंको उत्पन्न करतीभई प्रथम पुत्र आयु

षम् । तपसातोषितोविष्णुर्वरान्प्रादान्महीपते ३६ देवासुरमनुष्याणामभूत्सविजयी तदा। अथदेवासुरंयुद्धमभूद्वर्षशतत्रयम् ३७ प्रह्लादशक्रयोर्भीमं नकश्चिद्विजयीतयोः। ततोदेवासुरैःपृष्टः प्राहदेवश्चतुर्मुखः ३८ अनयोर्विजयीकःस्यात्रजिर्यत्रेतिसोऽब्रवीत्। जयायप्रार्थितोराजा सहायस्त्वंभवस्वनः ३९ दैत्यैःप्राहयदिस्वामी वोभवामिततस्त्व लम् । नासुरैःप्रतिपन्नं तत्प्रतिपन्नंसुरैस्तथा ४० स्वामीभवत्वमस्माकं संग्रामेनाशयद्वि षः।ततोविनाशिताःसर्वेयेऽवध्यावज्रपाणिनः ४१ पुत्रत्वमगमत्तुष्टस्तस्येंद्रःकर्मणाविभुः। दत्त्वेंद्रायतदाराज्यं जगामतपसेरजिः ४२ रजिपुत्रैस्तदाच्छिन्नं बलादिन्द्रस्यवैभवम्। य ज्ञभागंचराज्यंच तपोबलगुणान्वितैः ४३ राज्याद्भ्रष्टस्तदाशक्रो रजिपुत्रैर्निपीडितः। प्राहवाचस्पतिंदीनःपीडितोऽस्मिरजेःसुतैः ४४ नयज्ञभागोराज्यंमेनिर्जितश्चबृहस्पते!। राज्यलाभायमेयत्नं विधत्स्वधिषणाधिप! ४५ ततोबृहस्पतिःशुक्रमकरोद्बलदर्पितम्। ग्रहशान्तिविधानेन पौष्टिकेनचकर्मणा ४६ गत्वाथमोहयामास रजिपुत्रान्बृहस्पतिः। जिनधर्मंसमास्थाय वेदबाह्यंसवेदवित् ४७ वेदत्रयीपरिभ्रष्टांश्चकारधिषणाधिपः। वेद

के नहुष–वृद्धशर्मा–रजि–दंभ और विपाप्मा इन नामोंवाले पांच महारथी शूरवीर पुत्रहुए इनपांचों मेंसे रजिके सौ १०० पुत्रहुए वह राजेय नामसे प्रसिद्धहुए फिर वह रजि नारायणका उत्तम आराधन करताभया तब तपस्या से प्रसन्नहुए विष्णु भगवान् राजाको वर देते भये ३२। ३६ इसीसे वह देवता राक्षस और मनुष्य इन सबका जीतनेवाला हुआ एकसमय देवता और दैत्योंका तीन सौ ३०० वर्ष पर्य्यन्त युद्ध होताभया वहाँ प्रह्लादका और इन्द्रका महाभयानक युद्धहुआ उनमें कोईभी न जीतताहुआ तब देवता और दैत्य दोनोंने ब्रह्माजी से पूछा ३७।३८ कि इनदोनोंमें कौन जीतेगा तब ब्रह्माजीने कहा कि जिधरको रजिनाम राजा रहैगा उसीकी विजय होगी तब अपनी विजयके निमित्त देवताओंने उस राजासे प्रार्थनाकरी कि तुम हमारे सहायक होजाओ ३९ फिर दैत्यों ने भी प्रार्थनाकरी उस समय उसने देवताओंसे कहा कि मैं तुम्हारा सहायकरहूंगा ऐसाकहकर वह दैत्योंको नहीं प्राप्तहुआ परन्तु देवताओंको प्राप्तहोगया क्योंकि देवताओंकी प्रार्थनाको उसने अंगीकार करलिया तब देवताओं ने कहा कि तुम हमारे स्वामी होकर दैत्यों का नाशकरो तब जो दैत्य इन्द्रसे भी नहीं जीते गयेथे उन सबको इसने नाश करदिया ४०। ४१ इस कर्मसे इन्द्र बहुत प्रसन्न होकर उसका पुत्र होकर उत्पन्नहुआ तब वह रजि उस अपने पुत्र इन्द्रको राज्य देकर तपकरने को जाताभया ४२ तब बल गुण इत्यादिसे युक्तहोनेवाले रजिके अन्य पुत्रोंने इन्द्रका ऐश्वर्य्य राज्य और सब यज्ञभाग लूटलिया तब राज्यसे भ्रष्ट और रजिके पुत्रोंसे महापीडितहुआ इन्द्र बड़ीदीनता पूर्व्वक बृहस्पतिजीसेबोला कि मैं रजिके पुत्रोंसे पीड़ित होरहाहूं ४३।४४ हेबृहस्पतिजी मुझ हारेहुए का राज्य और यज्ञकाभाग दोनों नहीं हैं सो राज्यके मिलजानेका कोई उपाय बतलाइये तब बृहस्पतिजी उस इन्द्रको ग्रहशांति विधानसे और पौष्टिक बलसे संयुक्त करते भये ४५। ४६ और उन रजि के पुत्रों को भी बृहस्पतिजी ने उनके पास जाकर मोहा और आज्ञादी कि तुम सब जैनधर्म के आश्रय होजाओ ऐसा कहकर बृहस्पतिजीभी वेदसे बाह्यमतको चलातेभये और वेदसे रहितवेद

बाह्यान्परिज्ञाय हेतुवादसमन्विताम् ४८ जघानशक्रोवज्रेण सर्वान्धर्मबहिष्कृतान्। नहुषस्यप्रवक्ष्यामि पुत्रान्सप्तैवधार्मिकान् ४९ यतिर्ययातिःसंयातिरुद्धवःपाचिरेवच। सर्यातिर्मेघजातिश्च सप्तैतेवंशवर्धनाः ५० यतिःकुमारभावेऽपि योगीवैखानसोऽभवत्। ययातिश्चाकरोद्राज्यं धर्मैकशरणःसदा ५१ शर्मिष्ठातस्यभार्याभूद्दुहितावृषपर्वणः। भार्गवस्यात्मजातद्वद्देवयानीचसुव्रता५२ ययातेःपञ्चदायादास्तान्प्रवक्ष्यामिनामतः। देवजानीयदुंपुत्रं तुर्वसुञ्चाप्यजीजनत् ५३ तथाद्रुह्यमनुंपूरुं शर्मिष्ठाजनयत्सुतान्। यदुःपूरुश्चाभवतां तेषांवंशविवर्धनौ ५४ ययातिर्नाहुषश्चासीत् राजासत्यपराक्रमः। पालयामाससमहींमीजेचविविधैर्मखैः ५५ अतिभक्त्याचापितॄनर्च्य देवांश्चप्रयतःसदा। अथाजयत्प्रजाःसर्वा ययातिरपराजितः ५६ सशाश्वतीःसमाराजा प्रजाधर्मेणपालयत्। जरामार्च्छन्महाघोरां नाहुषोरूपनाशिनीम् ५७ जराभिभूतःपुत्रान्स राजावचनमब्रवीत्। यदुंपूरुंतुर्वसुंच द्रुह्यंचानुञ्चपार्थिवः ५८ यौवनेनचलान्कामात् युवायुवतिभिःसह। विहर्तुमहमिच्छामि साहाय्यंकुरुतात्मजाः ५९ तंपुत्रोदेवयानेयः पूर्वजोयदुरब्रवीत्। साहाय्यंभवतःकार्यमस्माभिर्यौवनेनकिम् ६० ययातिरब्रवीत्पुत्रान् जरांमे प्रतिगृह्यताम्। यौवनेनाथभवतां चरेयंविषयानहम् ६१ यजतोदीर्घसत्रैर्मे शापाच्चोशनसोमुनेः। कामार्थःपरिहीनोमे ऽतृप्तोऽहंतेनपुत्रकाः ६२ स्वकीयेनशरीरेण जरामेनां

अर्थीभी बनातेभये तब वेदसे बाह्य रहनेवाले और हेतुवादमेंयुक्त उन सबरजिके पुत्रोंको धर्मसे बहिष्कृत जानकर अपने वज्रसे मारताभया--अब नहुषके सात७धार्मिकपुत्रोंका वर्णनकरते हैं ४७।४९ यति--ययाति--संयाति--उद्धव--पाचि--सर्य्याति--और मेघजाति--यह सात ७ नहुष के पुत्र वंश के बढ़ानेवाले उत्पन्नहोतेभये ५० यह यति पुत्र बाल्यावस्थामेंही वैखानस योगिजन होताभया और ययाति धर्मकेही आश्रयहोके राज्यकरताभया ५१ ययातिकी शर्मिष्ठानाम स्त्री वृषपर्वा की पुत्रीथी और दूसरीस्त्री शुक्रकीकन्या देवयानी होतीभई ५२ ययातिकेपुत्र इसक्रमसेहुए कि देवयानी स्त्रीमें तो यदु और तुर्वसु यह दो पुत्र उत्पन्नहुए और शर्मिष्ठाके द्रुह्य अनु और पूरु यह तीनपुत्र होतेभये इन सबमें यदु और पूरु यह तो वंशके बढ़ानेवाले हुए--यह राजा ययाति सत्यपराक्रमवाला होके पृथ्वीका पालन करताहुआ अनेक यज्ञोंका भी पूजन करताभया ५३।५५ इस राजाने यज्ञोंके विशेष बड़ीभक्तिसे पितरोंका भी पूजन किया इस विजयी राजाने अपनी सब प्रजाको आधीनकर धर्म की विधिसे उसका पालन किया इसके पीछे कालपाकर रूप यौवनकी नाशकारी जराअवस्था उस राजाको प्राप्तहुई उस जराअवस्थासे तिरस्कृत हुआ वह ययाति अपने यदु-अनु-तुर्वसु-द्रुह्य और पूरु नाम पुत्रोंसे यह वचन बोला हे पुत्रो मैं तरुणहोके स्त्रियों के संग रमणकरना चाहताहूं तुम मेरी सहायताकरो ५६।५९ तब देवयानी का बड़ापुत्र यदु बोला कि हमको अपने यौवनसे आपकी कौन सी सहायता करनी योग्यहै ६० तब ययातिने अन्य पुत्रों से भी कहा कि तुम मेरी जराअवस्थाको ग्रहणकरो और मुझे अपनी तरुणअवस्था देदो मैं उसतुम्हारी तरुण अवस्थासे भोगोंको भोगूंगा ६१ हे पुत्रलोगो बहुतसे यज्ञ करनेसे मुझको शुक्रजीके शापके द्वारा यह जराअवस्था प्राप्त होगई है और

प्रशास्तुवः। अहंतन्वाभिनवया युवाकामानवाप्नुयाम् ६३ नतेऽस्यप्रत्यगृह्णन्त यदु प्रभृतयोजराम्। चतुरस्तान्सराजर्षिरशपच्चेतिनःश्रुतम् ६४ तमब्रवीत्ततःपूरुः कनी यान्सत्यविक्रमः। जरांमादेहिनवया तन्वामेयौवनात्सुखी ६५ अहंजरान्तवादायराज्ये स्थास्यामिचाज्ञया। एवमुक्तःसराजर्षि स्तपोवीर्य्यसमाश्रयात् ६६ संस्थापयामासजरां तदापुत्रेमहात्मनि। पौरवेणाथवयसा राजायौवनमास्थितः ६७ ययातेश्चाथवयसा रा ज्यंपूरुरकारयत्। ततोवर्षसहस्रान्तेययातिरपराजितः ६८ अतृप्तइवकामानां पूरुंपुत्र मुवाचह। त्वयादायादवानस्मित्वंमेवंशकरःसुतः ६९ पौरवोवंशइत्येषख्यातिंलोकेगमि ष्यति। ततःसनृपशार्दूलःपूरुंराज्येऽभिषिच्यच ७० कालेनमहतापश्चात्कालधर्ममुपेयिवा न्। पूरुवंशंप्रवक्ष्यामिशृणुध्वमृषिसत्तमाः ७१ यत्रतेभारताजाताभरतान्वयवर्द्धनाः ७२

इतिसोमवंशेययातिचरितेचतुर्विंशतितमोध्यायः २४॥

(ऋषय ऊचुः।) किमर्थंपौरवोवंशः श्रेष्ठत्वंप्रापभूतले। ज्येष्ठस्यापियदोर्वंशः किमर्थंहीयतेश्रिया १ अन्यद्ययातिचरितं सूत ! विस्तरतोवद। यस्मात्तत्पुण्यमा युष्यमभिनन्द्यंसुरैरपि २ (सूत उवाच) एतदेवपुरापृष्टः शतानीकेनशौनकः। पुण्यं

कामके भोगसे तृप्त नहींहुआहूं ६२ तुम अपना शरीर देकर मेरी जराअवस्था को ग्रहणकरो मैं तुम्हारी कोमल तरुणावस्थासे कामोंको भोगूंगा तब यदु आदिक चारों भाई तो उसकी जराअवस्था को नहीं ग्रहण करतेभये इसीहेतुसे ययातिने उन अपने चारोंपुत्रोंको यहशापदिया कि तुम्हारेवंशमें कोई राज्यपर न बैठेगा ऐसा सुनाजाताहै ६३।६४ फिर छोटापुत्र पूरुबोला कि आप अपनी जराअवस्था मुझको दीजिये और मेरी युवाअवस्था आप लेकर सुखोंको भोगिये ६५ मैं तुम्हारी आज्ञासे इस जराअवस्थावाले राज्यपर प्राप्तहूंगा ऐसा कह वह राजऋषि ययाति बलवीर्य्यके आश्रय होके उस महात्मा पुत्रमें जराअवस्थाको स्थापित कर और उसके शरीर की यौवनावस्थाको आपलेकर यौवनावस्थाको प्राप्तहोगया ६६।६७ और वह पूरु ययाति की वृद्धावस्था से राज्य करताभया फिर हजार वर्षमें भी कामों से तृप्त न होकर वह राजा ययाति अपने पुत्र पूरुसे बोला कि तू मेरेवंशका बढ़ानेवाला पुत्र है और तेरेही पुत्रहोने से मैं पुत्रवानहूं इसलोकमें यह मेरा वंश पौरव नामसे विख्यातहोगा फिर ययाति राज्यपर पूरुका अभिषेक कराताभया तदनन्तर बहुतकाल पीछे वहराजा मरगया हेऋषिसत्तमहो अब मैं उस पूरुके वंशको कहताहूं जिसमें कि भरत वंशके बढ़ानेवाले भारत संज्ञक राजालोग होवेंगे उसको तुम चित्तसे सुनो ६८।७२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसोमवंशेययातिचरित्रोनामचतुर्विंशतितमोऽध्यायः २४॥

ऋषियों ने पूछा-कि इस पृथ्वी में पौरव वंश किसहेतु से श्रेष्ठहुआ और बड़े भाई यदुके वंशकी क्यों हीनतारही हे सूतजी इसके विशेष जो राजा ययातिका अन्य चरित्रहोय इस सबको आप विस्तारपूर्व्वक वर्णन कीजिये क्योंकि इनका पुण्य आयु का बढ़ानेवाला होकर देवताओंसे भी वन्दित है १।२ सूतजी बोले हे ऋषिलोगो यह प्रश्न पूर्व्वमें शतानीकने भी शौनकसे कियाथा कि ययाति

पवित्रमायुष्यं ययातिचरितंमहत् ३ (शतानीक उवाच ।) ययातिः पूर्वजोऽस्माकं दशमोयःप्रजापतिः। कथंसशुक्रतनयां लेभेपरमदुर्लभाम् ४ एतदिच्छाम्यहंश्रोतुं विस्तरेणतपोधन ! । आनुपूर्व्याच्चमेशंस पूरोर्वंशधरान्नृपान् ५ (शौनक उवाच ।) ययातिरासीद्राजर्षिर्देवराज समद्युतिः । तंशुक्रवृषपर्वाणौ वव्राथेवैयथापुरा ६ तत्तेऽहंसम्प्रवक्ष्यामि पृच्छतोराजसत्तम ! । देवयान्याश्चसंयोगं ययातेर्नाहुषस्यच ७ सुराणामसुराणाञ्च समजायतवैमिथः । ऐश्वर्यप्रतिसंघर्षस्त्रैलोक्येसचराचरे ८ जिगीषयाततो देवा वव्रुरांगिरसंमुनिम् । पौरोहित्येचयज्ञार्थे काव्यंतूशनसंपरे ९ ब्राह्मणौताबुभौनित्यमन्योन्यंस्पर्धिनौभृशम् । तत्रदेवानिजघ्नुर्यान् दानवान्युधिसंगतान् १० तान्पुनर्जीवयामास काव्योविद्याबलाश्रयात् । ततस्तेपुनरुत्थाय योधयांचक्रिरेसुरान् ११ असुरास्तुनिजघ्नुर्यान् सुरान्समरमूर्द्धनि । नतान्संजीवयामास बृहस्पतिरुदारधीः १२ नहिवेदसतांविद्यां यांकाव्योवेदवीर्य्यवान् । संजीवनीन्ततोदेवा विषादमगमन्परम् १३ अथदेवाभयोद्विग्नाः काव्यादुशनसस्तदा । ऊचुःकचमुपागम्य ज्येष्ठंपुत्रंबृहस्पतेः १४ भजमानान् भजस्वास्मान् कुरुसाहाय्यमुत्तमम् । यासौविद्यानिवसति ब्राह्मणेमिततेजसि १५ शुक्रेतामाहराक्षिप्रं भागभाग्नोभविष्यसि । वृषपर्वणःसमीपेऽसौ शक्योद्रष्टुंत्व

का चरित्र पुण्यदायी पवित्र और आयुका वढ़ानेवाला है ३ अर्थात् शतानीकने कहा कि हे शौनक हमारा वड़ा ययाति जो दशमाहै उसका विवाह शुक्रजीकी परम दुर्लभाकन्यासे कैसेहोताभया ४ हे तपोधन यह मैं सुननेकी इच्छाकरताहूं और इसके विशेष मैं पूरुवंशके राजाओंके वंशका आनुपूर्विक वृत्तान्तभी सुनना चाहताहूं आप विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये ५ शौनकने कहा—राजाययाति इन्द्रके समान कान्तिवालाहुआ उसको पूर्वमें शुक्र और वृषपर्वा इन दोनोंने वरदियाथा ६ उसकोमुझसे सुनो—और नहुषके पुत्रययातिके और देवयानीके संयोगकोभी कहताहूं ७ एकसमय इसत्रिलोकीके ऐश्वर्य निमित्त देवता और दैत्योंमें परस्पर विरोध होताभया ८ तब जीतनेकी इच्छाकरके देवतालोग वृहस्पतिजीको यज्ञमें पुरोहित वनातेभये और दैत्यलोग शुक्रजीको पुरोहित करतेहुए ९ इनदोनों ऋषियोंमें परस्पर वहुतसी ईर्षाहोतीभई फिर युद्धमें प्राप्तहोनेवाले दैत्योंको देवता मारतेभये उनको शुक्रजी अपनी विद्याके वल से जिलादेतेभये तव वह उठउठकर देवताओंसे फिर युद्धकरनेलगे १० ११ और जिन देवताओंको दैत्यमारडालतेथे उनको वृहस्पतिजी नहीं जिवासक्तेथे क्योंकि जिस संजीविनी विद्याको शुक्रजी जानतेथे उसको वृहस्पतिजी नहीं जानतेथे इसहेतुसे देवता परमदुखी हुए १२।१३ तव देवता भयसे व्याकुलहोकर वृहस्पतिजीके वड़ेपुत्र कचनामवालेसे आकरबोले १४ कि हम तुम्हारी शरणहैं तुम हमारी रक्षाकरो आपसे यह प्रार्थनाहै कि अतुल तेजवाले शुक्रजीकेपास जो संजीविनी विद्याहै उस विद्याको उनकेपाससे किसीरीतिकरके हरलाओ फिर तुम हमारे भागके ग्रहण करनेवाले होजाओगे यहशुक्र आपको वृषपर्वाके समीप देखनायोग्यहै १५।१६ जो कि यह वृषपर्वा दानवोंकी रक्षाकरताहै और देवताओंकी नहीं करता है उसकी आराधना करनेको आपके सिवाय दूसराकोई समर्थ नहीं है १७ और जिसमहात्मा,शुक्रकी देवयानी पुत्री है उसके आराधन

या द्विजः १६ रक्षतेदानवांस्तत्र नसरक्षत्यदानवान्। तमाराधयितुंशक्तो नान्यःकश्चि
द्वतेत्वया १७ देवयानीचदयिता सुतातस्यमहात्मनः। तामाराधयितुंशक्तो नान्यःक
श्चनविद्यते १८ शीलदाक्षिण्यमाधुर्य्यैराचारेणदमेनच। देवयान्यान्तुतुष्टायां विद्यान्तांप्रा
प्स्यसिध्रुवम् १९ तदाहिप्रेषितोदेवैः समीपेवृषपर्वणः। तथेत्युक्त्वातुसप्रायाद्बृहस्पति
सुतःकचः २० सगत्वात्वरितोराजन्! देवैःसंपूजितःकचः। असुरेन्द्रपुरेशुक्रं प्रणम्येद
मुवाचह २१ ऋषेरङ्गिरसःपौत्रंपुत्रं साक्षाद्बृहस्पतेः। नाम्नाकचेतिविख्यातं शिष्यंगृ
ह्णातुमांभवान् २२ ब्रह्मचर्य्यंचरिष्यामि त्वय्यहंपरमंगुरो! अनुमन्यस्वमांब्रह्मन्! स
हस्रपरिवत्सरान् २३ (शुक्र उवाच) कच! सुस्वागतन्तेऽस्तु प्रतिगृह्णामितेवचः।
अर्चयिष्येऽहमर्च्यंत्वामर्चितोऽस्तुबृहस्पतिः २४ (शौनक उवाच) कचस्तुतंतथेत्युक्त्वा
प्रतिजग्राहतद्व्रतम्। आदिष्टङ्कविपुत्रेण शुक्रेणोशनसास्वयम् २५ व्रतञ्चव्रतकाल
ञ्च यथोक्तंप्रत्यगृह्णत। आराधयन्नुपाध्यायं देवयानीञ्चभारत! २६ संशीलयन्देव
यानीं कन्यांसम्प्राप्तयौवनाम्। पुष्पैःफलैःप्रेषणैश्च तोषयामासभार्गवीम् २७ देवया
न्यपितविप्रं नियमव्रतचारिणम्। अनुगायन्तीललना रहःपर्य्यचरत्तदा २८ पञ्चव
र्षशतान्येवं कचस्यचरतोभृशम्। ततस्तीव्रंव्रतंबुध्वा दानवास्तंततःकचम् २९ गार
क्षन्तंवनेदृष्ट्वा रहस्येनममर्षिताः। जघ्नुर्बृहस्पतेर्द्वेषान्निजरक्षार्थमेवच ३० हत्वाशा
लावृकेभ्यश्च प्रायच्छंस्तिलशःकृतम्। ततोगावोनिवृत्तास्ता अगोपाःस्वनिवेशन

करनेमें भी कोई समर्थनहीं है १८ शीलता, चतुरता, मधुरता और दमन इत्यादि बातोंसे देवयानी
को प्रसन्न करनेसे आप उसविद्याको प्राप्तहोगे १९ इसप्रकार की बातें कहकर देवताओं ने कचको
वृषपर्वा के पास भेजा उस समय देवताओं ने कचका पूजन किया और वह उनसे पूजित होकर
शीघ्रही शुक्रजी के समीपमें पहुंचा और शुक्रजीको प्रणामकरके यह वचन बोला २०।२१ कि हे
आचार्य्यजी अंगिरसके पौत्र बृहस्पतिजी के पुत्र मुझ कचनाम विख्यातको आपअपने शिष्यभावमें
करने के निमित्त ग्रहणकीजिये २२ हे गुरो मैं तुम्हारे विषयमें परमब्रह्मचर्य्य का आचरण करूंगा
हे ब्रह्मन् हजारोंवर्षोंतक मुझको आप अपनाशिष्यरक्खो २३ शुक्रजीनेकहा हे कच तेरा आना उत्तम
है हम तेरे वचनको ग्रहण करेंगे और बृहस्पतिजीका पूजनकरके तेरा भी पूजनकरेंगे-शौनकनेकहा
कि फिर वहकच शुक्रजीके सबकहेहुए वृत्तान्तको अंगीकार करके २४।२५ व्रत और व्रतके कालको
यथोक्त विधिसे ग्रहणकर शुक्रका और देवयानीका आराधन करताभया २६ शुक्रकी कन्या देवयानीको
फल पुष्पादिकोंसे सेवाकरके प्रसन्नकरता हुआ अपने शीलस्वभावमें रहा २७ तब देवयानी भी
उसनियम व्रतमें रहनेवाले ब्राह्मणकी सेवापरिचर्य्या में रहतीभई २८ इसप्रकार पांचसोवर्षतक कच
ने बहुतसा तपका आचरण किया तब दैत्यलोग कचके उस तीव्रव्रतकोजानके वनमें गौचरातेहुए
उसकचको क्रोधकरके बृहस्पतिजीके वैरसे अपनी रक्षाकेअर्थ एकान्तमें लेजाकर मारडालतेभये २९
३० और उसके शरीरके खंड२ करके भेड़िये और शृगालोंको खिलादेतेभये तब अपने पालकसे

म् ३१ तादृष्ट्वारहितागास्तु कचेनाभ्यागतावनात्। उवाचवचनंकाले देवयान्यथ भार्गवम् ३२ हुतञ्चैवाग्निहोत्रन्ते सूर्यश्चास्तङ्गतःप्रभो!। अगोपाश्चागतागावः कचस्तात! नदृश्यते ३३ व्यक्तंहतोमृतोवापिकचस्तात! भविष्यति। तंविनानैवजीवामिवचःसत्यंब्रवीम्यहम् ३४ (शुक्र उवाच) अयेहीहीतिशब्देन मृतंसञ्जीवयाम्यहम्। ततःसञ्जीवनींविद्यां प्रयुक्ताकचमाह्वयत ३५ आहूतःप्राद्रवद्दूरात् कचःशुक्रंननामसः। ततोऽहमितिचाचख्यौ राक्षसैर्धिषणात्मजः ३६ सपुनर्देवयान्युक्तः पुष्पाहारेयदृच्छया। वनंययौकचोविप्रः पठन्ब्रह्मचशाश्वतम् ३७ वनेपुष्पाणिचिन्वन्तं ददृशुर्दानवाश्च तम्। ततोद्वितीयेतंहत्वापुनः कृत्वाचचूर्णवत्। प्रायच्छन्ब्राह्मणायैव सुरायामसुरास्तदा ३८ देवयान्यथभूयोऽपि पितरंवाक्यमब्रवीत्। पुष्पाहारप्रेषणकृत्कचस्तात! नदृश्यते ३९ व्यक्तंहतोमृतोवापिकचस्तात! भविष्यति। तंविनानैवजीवामि वचःसत्यंब्रवीमिते ४० (शुक्र उवाच) बृहस्पतेःसुतःपुत्रि! कचःप्रेतगतिंगतः। विद्ययाजीवितोऽप्येवं हन्यतेकरवाणिकिम् ४१ मैनंशुचोमारुददेवयानि! नत्वादृशीमर्त्यमनुप्रशोचेत्। यस्यास्तवब्रह्मचब्राह्मणाश्च सेन्द्रादेवावसवोऽश्विनौच ४२ सुरद्विषश्चैवजगच्चसर्वमुपस्थितंमत्तपसःप्रभावात्। अशक्योऽयंजीवयितुंद्विजातिःसञ्जीवितोयोवध्यतेचैवभूयः ४३

रहित होकर वह गौएंभी अपने घरको आतीभईं ३१ तवकचसे रहित वनसे आईहुई उनगौओंको देखकर देवयानी शुक्रजीसे यह वचनबोली ३२ हेप्रभो आपने अग्निहोत्र कर्म किया और सूर्य्यअस्त होचुका यह गौएं अपने पालकसे रहितहैं और आज कच नहीं दीखताहै ३३ आज अवश्यही एकान्त में कच मारागयाहै और यह सत्यहै तो मैं उसके विना नहीं जीऊंगी ३४ शुक्रजीबोले कि अभी मैं एहि एहि ऐसा शब्दकरके उस मरेहुए कचको जिलाताहूं इसकेपीछे संजीविनी विद्याको युक्तकरके वह शुक्रजी उसकचको बुलातेभये ३५ तब वह बुलायाहुआ कच दूरसेही भगाहुआ आकर शुक्रजी को नमस्कार करताभया और जिसप्रकारसे राक्षसोंने माराथा वह सब वृत्तान्त गुरूजीसे निवेदन किया ३६ फिर एकसमय पुष्पलाने के निमित्त देवयानीका भेजाहुआ वह कच ब्राह्मण अपने वेद को पढ़ताहुआ वनमेंगया ३७ तब वनमें पुष्पोंको लेतेहुए कचको दैत्योंनेदेखा और देखतेही उसको पूर्व्वकेही समान मारचूर्णकर मदिरा में मिलाकर अपने गुरु शुक्राचार्य्यकोही पिलादिया ३८ फिर देवयानी उसको न देखकर दूसरीबार अपने पितासे बोली कि हेतात मैंने पुष्पोंके निमित्त कच को भेजाथा वह अबनहीं दीखताहै ३९ अबभी कच एकान्तमें अवश्यमारागयाहै सो उसके विना मैंनहीं जीऊंगी यह मैं सत्यहीसत्य वचनकहती हूं ४० शुक्रजी बोले हे देवयानी वह बृहस्पतिका पुत्र कच प्रेतयोनि को प्राप्तहोगया हमने संजीविनी विद्यासे जिलाभी दियाथा परन्तु अब वह फिर मारागया हम क्याकरें ४१ हे देवयानी शोचमतकर तू रोनेको योग्यनहीं है इस लोकमें तुम्हसरीके लोगों को शोचकरना योग्यनहीं है जिस तुमको ब्रह्मा ऋषि अश्विनीकुमार इन्द्रादिकदेवता दैत्य और संपूर्ण जगत् यह सब मेरे तपके प्रभावसे प्राप्तहोरहे हैं तो इसकाशोच करना वृथाहै क्योंकि जो यहब्राह्मण एकबार जियाहुआभी फिर मारागयाहै इसीसे इसके जिवानेको अब मेरी सामर्थ्य नहीं है ४२।४३

(देवयान्युवाच)यस्याङ्गिराट्वृद्धतमःपितामहो वृहस्पतिश्चापिपितातपोनिधिः। ऋषेःसु पुत्रन्तमथापिपौत्रंकथं नशोचेयमहन्नरुद्याम् ४४ सब्रह्मचारीचतपोधनश्चसदोत्थितः कर्म्मसुचैवदक्षः। कचस्यमार्गंप्रतिपत्स्येनभोक्ष्येप्रियोहिमेतात! कचोभिरूपः ४५ (शौनक उवाच) सत्वेवमुक्तोदेवयान्यामहर्षिः संरम्भेणव्याजहाराथकाव्यः। असंशयं मामसुराद्विषन्तियेमे शिष्यानागतान्सूदयन्ति ४६ अब्राह्मणंकर्तुमिच्छन्तिरौद्रा एभि र्व्यथंप्रस्तुतोदानवैर्हि। तत्कर्म्मणाप्यस्यभवेदिहान्तः कंब्रह्महत्यानदहेदपीन्द्रम् ४७ सतेनापृष्टोविद्ययाचोपहूतोशनैर्वाचंजठरेव्याजहार। तमब्रीत्केनचेहोपनीतो ममोदरे तिष्ठसिब्रूहिवत्स! ४८ (कच उवाच) भवत्प्रसादान्नजहातिमांस्मृतिः सर्वस्मरेयंयच्च यथाचवृत्तम्।नत्वेवंस्यात्तपसःक्षयोमेततः क्लेशंघोरतरंस्मरामि ४९ असुरैःसुरायांभवतो ऽस्मिदत्तोहत्वादग्ध्वाचूर्णयित्वाचकाव्य!ब्राह्मीमायान्त्वासुरीत्वत्रमाया त्वयिस्थितेकथमे वाभिवाधते ५० (शुक्र उवाच) किंतेप्रियंकरवाण्यद्यवत्स! विनैवमेजीवितंस्यात्कचस्य। नान्यत्रकुक्षेर्ममभेदनाच्चदृश्येत् कचोमद्गतोदेवयानि! ५१ (देवयान्युवाच) द्वौमांशोकाव ग्निकल्पौदहेतांकचस्यनाशस्तवचैवोपघातः। कचस्यनाशेममनास्तिशर्मतवोपघातेजी वितुंनास्मिशक्ता५२ (शुक्र उवाच) संसिद्धरूपोऽसिवृहस्पतेःसुत! यत्त्वांभक्तंभजतेदेवया नी। विद्यामिमांप्राप्नुहिजीवनीन्त्वं नचेदिन्द्रःकचरूपीत्वमद्य ५३ ननिवर्तेतपुनर्जीवन्

देवयानी बोली–जिसका वृद्धपितामह अंगिरामुनिहै और जिसका पिता तपोनिधि वृहस्पति है ऐसे उत्तमऋषियों के पुत्र पौत्रका मैं कैसे शोचनहीं करूं और कैसे नहीं रोऊं यह कचकर्म्मों में श्रेष्ठ चतुर और तपोधनब्रह्मचारी है मुझको अत्यन्तप्याराहै हेतात इसहेतुसे मैं कचके मार्गमें ढूंढने को प्राप्तहूंगी और उसके बिना भोजन भी नहीं करूंगी ४४। ४६ शौनककहते हैं कि देवयानी से ऐसे वचन सुनकर वह महर्षिशुक्र ऐसा विचार करते भये कि दैत्य अवश्य मेरे साथ शत्रुता रखते हैं क्योंकि जो आयेहुए मेरे शिष्योंको मार देतेहैं ४७ यह दुष्टजन लोग इस पृथ्वीपर ब्राह्मणोंका बीज- नाश किया चाहते हैं इस हेतुसे मैं इन सबका वृथागुरू होकर स्तुत कियाजाताहूं यह ब्रह्माग्नि जब कि इन्द्रकोभी भस्म करदेती है तो ऐसाघोरकर्म किसको नहींभस्मकरसक्ताहै ऐसाविचारकर शुक्रजी ने फिर अपनी संजीविनी विद्यासे कचको बुलाया तब धीरे २ शुक्रजीके पेटमेंसेबोला तब शुक्रजीने पूछा कि मेरेउदरमें तू कैसे प्राप्त होगयाहै ४८। ४९ कच बोला कि आपके प्रतापसे मुझको सम्पूर्ण वृत्तान्त स्मरणहै इसप्रकारसे मेरा तपतो क्षीण नहीं होताहै परन्तु अत्यन्त क्लेशको प्राप्तहोरहाहूं हे भृगुजी दैत्योंने मुझकोमार चूर्णकर मदिरामें मिलाकर आपको पिलादिया है परन्तु आपके शरीरमें स्थितहुआ मैं आपकी ब्राह्मीमायाकेप्रभावसे असुरोंकीमायाकरके बाधाकोनहींप्राप्तहुआहूं तबशुक्रजी अपनी देवयानी पुत्रीसे कहनेलगे कि हे देवयानी मैं तेरा क्या प्रियकरूं मेरे जीवतेहुए इसकचका जीवनाकठिनहै क्योंकि मेरीकुक्षकेबिनाफाड़ेहुए यहकच मेरेउदरसेबाहरकैसेनिकले देवयानीबोली– कि अग्निके समान यह दोनों दुःख मुझको भस्मकरेडालतेहैं अर्थात् एक तो कचकानाश और दूसरा आपका मरना कचकेनाशसे तो मेरासुखनहीं और आपके मरनेसे मेरा जीवन नहीं है–तब शुक्रजी

कश्चिदन्योममोदरात्। ब्राह्मणंवर्जयित्वैकं तस्माद्विद्यामवाप्नुहि ५४ पुत्रोभूत्वानिष्क्रम स्वोदरान्मे भित्त्वाकुक्षिञ्जीवयमांचतात ! अवेक्ष्येथोधर्म्मवतीमवेक्षांगुरोः सकाशात्प्राप्यविद्यांसविद्यः ५५ (शौनकउवाच) गुरोःसकाशात्समवाप्यविद्यां भित्त्वाकुक्षिंनिर्विचक्रामविप्रः। प्रालेयाद्रेःशुक्लमुद्भिद्यशृङ्गं रात्र्यागमेपौर्णमास्यामिवेन्दुः ५६ दृष्ट्वाचतं पतितंवेदराशिमुत्थापयामासततःकचोऽपि। विद्यांसिद्धान्तामवाप्याभिवाद्यस्ततःकचस्तंगुरुमित्युवाच ५७ निधिंनिधीनांवरदंवराणां येनाद्रियन्तेगुरुमर्चनीयम्। प्रालेयाद्रिप्रोज्ज्वलभालसंस्थं पापाँल्लोकांस्तेव्रजन्त्यप्रतिष्ठाः ५८ (शौनक उवाच) सुरापानाद्वञ्चनात्प्रापयित्वा संज्ञानाशञ्चैतसश्चापिघोरम्। दृष्ट्वाकचञ्चापितथाभिरूपं पीतंतथासुरयामोहितेन ५९ समन्युरुत्थायमहानुभावस्तदोशनाविप्रहितंचिकीर्षुः। काव्यःस्वयंवाक्यमिदञ्जगाद सुरापानंप्रत्यसौजातशङ्कः ६० (शुक्र उवाच) योब्राह्मणोऽद्यप्रभृतीह कश्चिन्मोहात्सुरांपास्यतिमन्दबुद्धिः। अपेतधर्माब्रह्महाचैवसस्यादस्मिँल्लोकेगर्हितःस्यात्परेच ६१ मयाचेमांविप्रधर्मोक्तसीमांमर्यादांवैस्थापितांसर्वलोके। सन्तोविप्राःशुश्रुवांसोगुरूणांदेवादैत्याश्चोपशृण्वन्तुसर्वे ६२ (शौनक उवाच) इतीदमुक्त्वासमहाप्रभावस्तपोनिधीनांनिधिरप्रमेयः। तान्दानवांश्चैवनिगूढबुद्धीनिदंसमाहूयवचोऽभ्युवाच ६३ (शुक्र उवाच) आचक्षाणोदानवावालिशास्थशिष्यःकचोवत्स्यातिमत्स

बोले हे बृहस्पतिकेपुत्र जिसतुझभक्तको देवयानी भजती है इससे तू सिद्धहो और इसमेरी संजीविनी विद्याको प्राप्तहोजा मेरे उदरमें प्राप्तहोकर ब्राह्मणके सिवाय दूसरा कोईभी जीवनेको समर्थ नहीं है इसहेतुसे तू इसमेरी विद्याको प्राप्तहोजा ५०।५४ मेरापुत्रहोकर तू मेरी कोषसे बाहर निकल अर्थात् मेरीकोखको फाड़कर जबबाहर होजाय तब तू मुझको जिलादीजो अब तू इसधर्मवतीविद्याको मेरे सकाशसे प्राप्तहोजा ५५ शौनकजीबोले—तब वह ब्राह्मणगुरूसे विद्याको प्राप्तहोकर उनकी कोखको विदीर्ण करके पूर्णमासी के चन्द्रमाके उदयके समान उदरको फाड़कर बाहर निकला ५६ फिर पड़ेहुए अपने गुरूको वह कचदेखके जिवाताभया और उस सिद्धविद्याको प्राप्तहोकर अपनेगुरू शुक्राचार्य्यजीसे यह वचनबोला—आप सम्पूर्ण निधिरूपहो वरदेनेवालोंमें श्रेष्ठ वरदहो ऐसे आपका जो गुरुभावसे आदरनहीं करतेहैं वह पापीपुरुष नरकगामी होकर भ्रष्टलोकोंको प्राप्तहोते हैं ५७।५८ शौनकजीबोले—कि सुरापानसे ठगेहुए शुक्रजी कचको प्राप्तकरके और कचके तपरूपी प्रभाव और रूपको देखके और मदिरा पानके मोहसे प्राप्तहुए क्रोधको जानके ५९ ब्राह्मणके हितकी इच्छाकरने वाले शुक्रजी बड़ेक्रोध पूर्व्वक मदिराको उठाकर और मदिरामें बड़ी शंका करके यह वचनबोले ६० अर्थात् शुक्रजीने कहा कि अबसेलेकर जो कोई मन्दबुद्धी ब्राह्मण अज्ञानसेभी मदिरापीवेगा वहधर्मसे रहितहोकर ब्रह्महत्यावालाहोके इसलोक और परलोक दोनोंलोकोंमें निन्दितहोगा ६१ मैंने सम्पूर्ण लोकमें ब्राह्मणोंकेधर्मकी यह मर्य्यादा स्थापितकरदीहै इसगुरुओंकी आज्ञाको सन्त ब्राह्मणलोगजानें और देवताओंसमेत दैत्यभी इसवचनकोसुनें ६२ शौनकजीकहते हैं कि तपकरनेवालोंमें उत्तमअतुल तेजवाले शुक्रजी ऐसे अपने इसवचनको कहकर उन मूढबुद्धिवाले दैत्योंको बुलाके यह वचन बोले

मीपे। सञ्जीवनींप्राप्यविद्यांममायंतुल्यप्रभावोब्राह्मणोब्रह्मभूतः ६४ (शौनक उवाच) गुरोरुष्यसकाशेच दशवर्षशतानिसः। अनुज्ञातःकचोगन्तुमियेषत्रिदशालयम्६५॥
इति श्रीमत्स्यपुराणे कचचरित्रे पञ्चविंशोध्यायः २५॥

(शौनक उवाच)समापितव्रतंतन्तु विसृष्टंगुरुणातदा। प्रस्थितंत्रिदशावासंदेवयानी दमब्रवीत् १ (देवयान्युवाच) ऋषेरङ्गिरसःपौत्र! वृत्तेनाभिजनेनच। भ्राजसेविद्यया चैव तपसाचदमेनच २ ऋषिर्यथाङ्गिरामान्यः पितुर्ममहायशाः।तथामान्यश्चपूज्यश्च ममभूयोवृहस्पतिः ३ एवंज्ञात्वाविजानीहि यद्ब्रवीमितपोधन!। व्रतस्थेनियमोपेते यथावर्त्ताम्यहंत्वयि ४ ससमापितविद्यो मांभक्तान्नत्यक्तुमर्हसि। गृहाणपाणिंविधिवन् ममम‌न्त्रपुरस्कृतम् ५ (कच उवाच) पूज्योमानश्चभगवान् यथाममपितातव। तथा त्वमनवद्याङ्गि!पूजनीयतमामता ६ आत्मप्राणैःप्रियतमाभार्गवस्यमहात्मनः।त्वंभद्रे!ध र्म्मतःपूज्या गुरुपुत्रिसदामम ७ यथाममगुरुर्नित्यं मान्यःशुक्रःपितातव। देवयानि!तथै वत्वंनैवंमांवक्तुमर्हसि ८ (देवयान्युवाच) गुरुपुत्रस्यपुत्रोमेनतुत्वमसिमेपितुः।तस्मान्मा न्यश्चपूज्यश्च ममापित्वंद्विजोत्तम! ९ असुरैर्हन्यमानेतु कचेत्वयिपुनःपुनः। तदाप्र भृतियाप्रीतिस्तां त्वमेवस्मरस्वमे १० सौहार्देचानुरागेच वेत्थमेभक्तिमुत्तमाम्। नमा

कि हे मूर्ख दैत्यो तुम सब सुनो मेरे समीप में यह मेरा शिष्य कच बसता है सो यह मुझसे संजीविनी विद्याको प्राप्तहोकर मेरेही समान तुल्य प्रभाववाला ब्राह्मण होगया है ६३। ६४ शौनकजी कहते हैं कि वह कच उन अपने गुरूके समीप सौ १०० वर्षतक निवास करके गुरूसे आज्ञा मांग स्वर्ग में आनेकी इच्छा करताभया ६५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां पंचविंशतितमोऽध्यायः २५॥

शौनकजी कहते हैं कि गुरूसे व्रतसमाप्त करके और आज्ञापाकर जबकच स्वर्गको जानेलगा तब देवयानी कचसे यह वचन बोली १ कि हे अंगिराऋषि के पौत्र आपके वृत्त कुल कान्ति विद्या तप और दम इत्यादिकों करके २ आपके पिता वृहस्पतिजी और उत्तम यशवाले पितामह अंगिराऋषि यह दोनों महायशवाले हैं मुझकोभी यह दोनों अपने पिताकेही समान मानने योग्य हैं हे तपोधन यह जानके मैं ऐसाविचार करतीहूं-कि तेरेही साथमें मैं सदैव नियम व्रतमें स्थितरहूं ३। ४ आप-सरीके विद्वान् समाप्तविद्यावाले होकर मुझको त्यागने के योग्य नहीं हो सोमन्त्र विधानकरके आप मेरे पाणिग्रहण अर्थात् मुझसे विवाहकरने को योग्यहो ५ कचबोला कि तेरा पिता मेरे पिताके समान होकर गुरूरूपसे मुझको पूज्य और मान्यहै और हेउत्तमांगी उसीप्रकार तूभी मुझकोमाननीय होकर पूजनीय है हे भद्रेतू महात्मा भृगुजीको प्राणोंसेभी प्यारी है गुरुकी पुत्री है इसीसे धर्मकरके पूज्यहै ६। ७ तेरापिता महात्माभृगु मेरा पूज्यगुरुहै इस हेतुसे तू मुझसे ऐसा कहनेको योग्यनहीं है ८ देवयानीबोली-तुम वृहस्पतिजी के पुत्रहो मेरे पिताके पुत्रनहीं हो इसहेतुसे तुम मेरेभी मान्य और पूज्यहो ९ जब तुम दैत्योसे मारेगयेथे तबसे लेकर अबतक जो आपमें मेरीप्रीतिहुईथी उसको आप स्मरण कीजिये १० प्यारमें और अनुराग में मेरी उत्तम भक्तिको आपजानों मुझ निरपराध

महंसिधर्मज्ञ! त्यक्तुंभक्तामनागसम् ११।(कच उवाच)अनियोज्येनियोगेमां नियुनक्षिशु भव्रते!। प्रसीदसुभ्रु! मह्यन्त्वं गुरोर्गुरुतराशुभे ! १२ यत्रोषितंविशालाक्षि! त्वया चन्द्रनिभानने । तत्राहमुषितोभद्रे! कुक्षौकाव्यस्यभामिनि ! १३ भगिनीधर्म्मतोमे त्वं मेवंवोचःशुभानने!। सुखेनाध्युषितोभद्रे! नमन्युर्विद्यतेमम १४ आपृच्छेत्वांगमि ष्यामि शिवमस्त्वथमेपथि। अविरोधेनधर्मस्य स्मर्तव्योऽस्मिकथान्तरे १५ अप्रमत्तो द्यतानित्य माराधयगुरुंमम।(देवयान्युवाच) दैत्यैर्हतस्त्वंयद्भर्तृबुद्ध्यात्वंरक्षितोमया १६ यदिमांधर्म्मकामार्थं प्रत्याख्यास्यसिधर्म्मतः। ततःकच! नतेविद्या सिद्धिरेषागमिष्य ति १७ (कच उवाच)। गुरुपुत्रीतिकृत्वाहं प्रत्याख्यास्येनदोषतः। गुरुणाचाभ्यनुज्ञा- तः काममेवंशपस्वमाम् १८ आर्षधर्मंब्रुवाणोऽहं देवयानि! यथात्वया। शप्तुंनार्होऽस्मि कल्याणि! कामतोऽद्यचधर्म्मतः १९ तस्माद्भवत्यायःकामो नतथासंभविष्यति। ऋषि पुत्रोनतेकश्चित् जातुपाणिंग्रहीष्यति २० फलिष्यतिनमेविद्या त्वद्वचश्चेतितत्तथा अध्यापयिष्यामिचयं तस्यविद्याफलिष्यति २१ (शौनक उवाच) एवमुक्त्वानृपश्रेष्ठ! देवयानींकचस्तदा। त्रिदशेशालयंशीघ्रं जगामाद्विजसत्तमः २२ तमागतमभिप्रेक्ष्य दे वाःसेन्द्रपुरोगमाः। बृहस्पतिंसभाज्येदं कचमाहुर्मुदान्विताः २३ (देवा ऊचुः) त्वंक चास्मद्धितंकर्म्म कृतवान्महदद्भुतम्। नतेयशःप्रणशिता भागभाक्चभविष्यसि २४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेकचस्वर्गागमनवर्णनोनामषड्विंशोऽध्यायः २६॥

भक्तिकरनेवाली को आप त्यागने को योग्यनहीं हो ११ कचबोला—हे सुव्रते विना युक्त करनेवाले नियोगमें मुझको तू नियुक्तकरती है हे शुभे तू गुरूसे गुरुतरा है इसहेतुसे प्रसन्नहो १२ हे चन्द्रकान्ति वाली भामिनी जहाँतैंने वासकियाथा वहाँही अर्थात् शुक्रजी के उदरमें मैंनेभी वासकरलियाहै १३ हे शुभानने इसहेतुसे तू मेरी धर्मसे वहिनहै मैंने सुखपूर्वक यहाँ वासकियाहै कुछ मेराअपराधभी नहीं है १४ अवमैं तुझसे आज्ञालेकर गमन करताहूं मेरे मार्गमें सुखरहे धर्मके विरोधसे रहित किसी प्रयोजन में मेरा स्मरण करना तुझको योग्यहै १५ मदसे रहित सदैव उद्योगमें तत्परहोके तुझको प्रीतिपूर्वक मेरे गुरूका आराधन करनायोग्य है देवयानीवोली—जब तुमको दैत्योंने माराथा तबमैंने अपने भर्त्ताकीही बुद्धिसे तुम्हारी रक्षाकीथी १६ अब जो तुम धर्म कामके निमित्त वृथा त्यागकरतेहो इसीसे यह विद्या तुमको सफल न होवेगी १७ कचबोला तुझको गुरुकी पुत्रीजानकर मैंने तेरात्याग कियाहै कुछ दोषसे नहीं कियाहै मैं गुरूसे आज्ञालेकर जाताहूं मुझको क्यों शापदेती है १८ हेदेव- यानी मुझ आर्ष धर्मके कहनेवाले को कामसे और धर्मसे तू शापदेनेको योग्यनहीं है और जो कि तैंने मुझे शापदिया है इसहेतुसे तैंने जो यह कामना विचारी है सो संपूर्ण न होगी ऋषिका पुत्र होकर कोई भी तुझको ग्रहण नकरेगा १९।२० और मेरी विद्या तेरे वचनसे नहीं फलेगी परन्तु जिसको मैं पढ़ाऊंगा उसको यह विद्या अवश्य फल देवेगी २१ शौनक जी कहते हैं—हे राजन् वह कच देवयानी से ऐसा कहकर शीघ्रही स्वर्ग में जातभया तब इन्द्रादिक सब देवता उस आयेहुए कचको देखकर बड़े प्रसन्नहोकर उस्से वोले २२।२३ देवताओं ने कहा है कच तुमने हमारे हितके

(शौनक उवाच)। कृतविद्ये कचेप्राप्ते हृष्टरूपादिवौकसः। कचादधेत्यतांविद्यां कृतार्थाभरतर्षभ! १ सर्वएवंसमागम्य शतक्रतुमथाब्रुवन्। कालस्त्वद्विक्रमस्याद्य जहि शत्रून्पुरन्दर! २ एवमुक्तस्तुसहितैस्त्रिदशैर्मघवांस्तदा। तथेत्युक्त्वोपचक्राम सोपश्यद्विपिनेस्त्रियः ३ क्रीडन्तीनान्तुकन्यानां वनेचैत्ररथोपमे। वायुर्भूतःसवस्त्राणि सर्वाण्येव व्यमिश्रयत् ४ ततोजलात्समुत्तीर्य्य ताःकन्याःसहितास्तदा। वस्त्राणिजगृहुस्तानि यथासंस्थान्यनेकशः ५ तत्रवासोदेवयान्याः शर्मिष्ठाजगृहेतदा। व्यतिक्रममजानन्ती दुहितावृषपर्वणः ६ ततस्तयोर्मिथस्तत्र विरोधःसमजायत। देवयान्याश्चराजेन्द्र! शर्मिष्ठायाश्चतत्कृते ७ (देवयान्युवाच) कस्माद्गृह्णासिमेवस्त्रं शिष्याभूत्वाममासुरि!। समुदाचारहीनाया नतेश्रेयोभविष्यति ८ (शर्मिष्ठोवाच) आसीनञ्चशयानञ्च पिता तेपितरंमम। स्तौतिपृच्छतिचाभीक्ष्णं नीचस्थःसुविनीतवत् ९ याचतस्त्वञ्चदुहिता स्तुवतःप्रतिगृह्णतः। सुताहंस्तूयमानस्य ददतोनतुगृह्णतः १० अनायुधासायुधायाः किन्त्वंकुप्यसिभिक्षुकि!। लप्स्यसेप्रतियोद्धारं नचत्वांगणयाम्यहम् ११ (शौनक उवाच) साविस्मयंदेवयानीं गतांसक्ताञ्चवाससि। शर्मिष्ठाप्राक्षिपत्कूपे ततःस्वपुरमाविशत् १२ हतेयमितिविज्ञाय शर्मिष्ठापापनिश्चया। अनवेक्ष्ययर्यौतस्मात् क्रोधवे

निमित्त बड़ा अद्भुतकर्म कियाहै इसीसे तुम्हारायश कभी नष्ट न होगा तुम्हारायश अत्यन्त उत्तमता से प्राप्तहोकर फैलेगा २४॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपड्विंशतितमोऽध्यायः २६॥

शौनकजीबोले–हे भरतर्षभ फिर विद्या प्राप्तकरके आयेहुए कचको देखकर देवता लोग बड़ीप्रसन्नतासे उससेमिले और उसविद्याको कचसे ग्रहणकरके अत्यन्त कृतार्थ होतेभये १ और फिर सब मिलके इन्द्रसे बोलतेभये कि हे इन्द्र इसकालमें अबतू शत्रुओंकोमार देवताओंके इसवचनको सुनतेही इन्द्रने उसी समय यात्राकरी वहाँसे चलकर इन्द्र गह्वरवनमें स्त्रियोंको देखताभया और कुवेर केवनमें क्रीड़ाकरतीहुई के समान बहुतसी कन्याओंकोभी देखताभया उसके देखनेकेही समय वायुने अपनेवेगसे उनके सबवस्त्रोंको मिलादिया ३।४ तबवह कन्या एकबारही जलसेनिकसकर जैसेकेतैसेही धरेहुए अपने वस्त्रोंको धारण करतीभई तब देवयानीके वस्त्रोंको वृषपर्व्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा विना जाने लेलेतीभई तब उस शर्मिष्ठा और देवयानीका परस्पर बड़ाविरोध होताभया ५।७ देवयानीकहने लगी कि हे आसुरी तू मेरी दासीहोके मेरेवस्त्रोंको कैसे ग्रहण करती है हे आचारसे हीन होनेवाली तेरा कल्याण नहीं होवेगा तब शर्मिष्ठा बोली कि तेरापिता बैठे वा सोते सबदशा में मेरे पिताकीही नीतिसे वारम्वार स्तुति करताहै ८।९ सो उस मांगनेवाले स्तुति करनेवाले और ग्रहण करनेवाले ऐसे अपने पिताकी तू पुत्रीहै और स्तुति करने के योग्य दानदेनेवाले और मैं किसी से किसी वस्तु की याचना न करनेवाले अपनेपिताकी पुत्रीहूं १० तू अनायुधा होकर मुझ शस्त्र वाण रखनेवाली से क्या क्रोध करती है हे भिक्षुकी मैं तुझको कुछभी नहीं गिनतीहूं ११ शौनकजी कहते हैं कि ऐसा कह कर वह शर्मिष्ठा बड़े आश्चर्य्य और क्रोधमें युक्त वस्त्रोंको ग्रहण करतीहुई देवयानीको एक कूपमें गिरा कर अपने पुरमें आतीभई १२ अर्थात् पापमें निश्चय करनेवाली शर्मिष्ठा ने अपने चित्तमें यह वि·

गपरायणा १३ अथतंदेशमभ्यगाद्ययातिर्नहुषात्मजः। श्रान्तयुग्यःश्रान्तरूपो मृगलि
प्सुःपिपासितः १४ नाहुषिःप्रेक्ष्यमाणोहि सनिपानेगतोदके। ददर्शकन्यांतांतत्र दीप्ताम
ग्निशिखामिव १५ तामपृच्छत्सदृष्ट्वैव कन्याममरवर्णिनीम्। सान्त्वयित्वानृपश्रेष्ठः सा
म्नापरमवल्गुना १६ कात्वञ्चारुमुखीश्यामा सुमृष्टमणिकुण्डला। दीर्घंध्यायसिचात्यर्थं
कस्माच्छ्वसिषिचातुरा १७ कथञ्चपतिताह्यस्मिन् कूपेवीरुत्तृणावृते। दुहिताचैवकस्यत्वं
वदसर्वंसुमध्यमे! १८ (देवयान्युवाच) योऽसौदेवैर्हतान् दैत्यानुत्थापयातिविद्यया। त
स्यशुक्रस्यकन्याहन्त्वंमांनूनंनबुध्यसे १९ एषमेदक्षिणोराजन्! पाणिस्ताम्रनखाङ्गुलिः।
समुद्धरगृहीत्वामांकुलीनस्त्वंहिमेमतः २० जानामित्वाञ्चसंशान्तंवीर्य्यवन्तंयशस्विनम्।
तस्मान्मांपतितांकूपादस्मादुद्धर्त्तुमर्हसि २१ (शौनक उवाच) तामथब्राह्मणींस्त्रींच वि
ज्ञायनहुषात्मजः। गृहीत्वादक्षिणेपाणावुज्जहारततोबलात् २२ उद्धृत्यचैनान्तरसा त
स्मात्कूपान्नराधिपः। आमन्त्रयित्वासुश्रोणीं ययातिःस्वपुरंययौ २३ (देवयान्युवाच) त्व
रितंघूर्णिकेगच्छसर्वमाचक्ष्वमेपितुः। नेदानींतुप्रवेक्ष्यामि नगरंवृषपर्वणः २४ (शौनक
उवाच) सातुवैत्वरितंगत्वा घूर्णिकासुरमन्दिरम्। दृष्ट्वाकाव्यमुवाचेदं कम्पमाना
विचेतना २५ आचख्यौचमहाभागा देवयानीवनेहता। शर्मिष्ठयामहाप्राज्ञ! दुहित्रा
वृषपर्वणः २६ श्रुत्वादुहितरंकाव्यस्तदा शर्मिष्ठयाहताम्। त्वरयानिर्ययौदुःखात् मा

चारलिया कि देवयानी मरगई ऐसा विचार क्रोधमें तत्परहो वहांसे अपने पुरको आतीभई १३ इस
के पीछे उसकुएपर नहुषकापुत्र ययाति जलपीने के निमित्त आताभया तब वहराजा कुएमें झाँकने
लगा तो उस कुएमें अग्निके समान कान्तिवाली कन्याको देखताभया १४।१५ और उसे देखतेही
उसको उसीजगह धीरज दिलाके यह परमप्रिय वाणीवोला १६ कि हे सुन्दर मुखवाली उत्तम मणि-
मय कुण्डलादि, भूषणधारी और षोड़शवार्षिकी ऐसी तू होकर इस कूपमें किसहेतुसे कष्टको प्राप्त
होरही है और तृण घास आदिसे आवृतहुए कूपमें तू कैसे गिरगई है और हे सुमध्यमे तू किसकी पुत्री
है यह सब वृत्तान्त अपना मुझसे कह तब देवयानी बोली जो अपनी विद्या करके दैत्योंको जीव-
दान देते हैं उन शुक्रजीकी मैं पुत्रीहूं तुम मुझको अच्छीरीतिसे नहीं जानतेहो १७। १९ हे राजन्
तुम मेरे इस दक्षिणहाथको अँगुलियों समेत ग्रहणकरके वाहर निकासके ग्रहणकरो और तुम उत्तम
कुलवाले होकर मेरे योग्यहो २० हे सुन्दरयश वल वीर्य्य शान्तस्वरूप तुमको मैं जानतीहूं इसहेतु
से आप मुझ कूपमें गिरीहुईका उद्धारकरनेको योग्यहो २१ शौनकजी कहतेहैं कि वहराजाययाति उस
स्त्रीको ब्राह्मणकी पुत्री जानके उसका दाहिनाहाथ पकड़कर अपने वलसे उसको उस कूपसे बाहर
निकालताभया २२ उसको निकालकर उस्से वहुतसी सलाहकरके राजाययाति अपने पुरमें आता
भया २३ फिर देवयानी अपनी एक घूर्णिका सखीसे कहनेलगी कि हे सखि घूर्णिके तू शीघ्रहीजाकर
मेरे पितासे यह सब वृत्तान्त कहदे अब मैं वृषपर्वा राजाके नगरमें कभी न जाऊंगी २४ शौनकजी
कहते हैं कि वह घूर्णिका शीघ्रही शुक्रजीके मन्दिरमें जाकर कांपतीहुई शुक्रजीसे यह वचनबोली २५
हे महाप्राज्ञवृषपर्व्वाराजाकी पुत्री शर्मिष्ठाने देवयानीको हतकरदिया २६ तब शुक्रजी शर्मिष्ठाकरके

गेमाणःसुतांवने २७ दृष्ट्वादुहितरंकाव्यो देवयानींतपोवने। बाहुभ्यांसंपरिष्वज्य दुःखि तोवाक्यमब्रवीत् २८ आत्मदोषैर्नियच्छन्ति सर्वेदुःखसुखेजनाः। मन्येदुश्चरितंतस्मि न् तस्येयंनिष्कृतिःकृता २९ (देवयान्युवाच) निष्कृतिर्वास्तुवामास्तुशृणुष्वावहि तोमम। शर्मिष्ठयायदुक्तास्मि दुहित्राद्वृषपर्वणः ३० सत्यंकिलैतत्साप्राह दैत्यानामस्मि गायना।एवंहिमेकथयतिशर्मिष्ठावार्षपर्वणी३१ वचनन्तीक्ष्णपरुषं क्रोधरक्तेक्षणाभृशम्। स्तुवतोदुहितासित्वंयाचतःप्रतिगृह्णतः ३२ सुताहंस्तूयमानस्यददतोऽप्रतिगृह्णतः। इतिमामाहशर्मिष्ठा दुहितावृषपर्वणः। क्रोधसंरक्तनयना दर्पपूर्णाननाततः ३३ यद्यहं स्तुवतस्तातदुहिताप्रतिगृह्णतः। प्रसादयिष्येशर्मिष्ठामित्युक्ताहिसखीमया ३४ (शुक्र उवाच) स्तुवतोदुहितानत्वंभद्रे! नप्रतिगृह्णतः। अतस्त्वंस्तूयमानस्य दुहितादेव यान्यसि ३५ वृषपर्वैवतद्वेद शक्रोराजाचनाहुषः। अचिन्त्यंब्रह्मनिर्द्वन्द्वमैश्वरंहि बलंमम ३६॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे शुक्रात्मजोपाख्याने सप्तविंशोऽध्यायः २७॥

(शुक्रउवाच) यःपरेषांनरोनित्यमतिवादांस्तितिक्षते। देवयानि! विजानीहितेनसर्व मिदञ्जितम् १ यःसमुत्पतितंक्रोधं निगृह्णातिहयंयथा। संयंतेत्युच्यतेसद्भिर्नयोरश्मिषु लम्बते २ यःसमुत्पतितंक्रोधमक्रोधेननियच्छति। देवयानि!विजानीहितेनसर्वमिदञ्जि

हतहुई अपनी पुत्री को सुनकर शीघ्रही दुःख से युक्तहोके वनमें अपनी पुत्री के ढूंढने को आतेभये २७ फिर उस तपोवनमें शुक्रजी अपनी पुत्री देवयानी को देखकर अपनी भुजाओं से मिल बड़े दु-खितहोके यह वचनबोले कि संपूर्णजन अपनेही दोषों करके सुख दुःखादि को प्राप्तहोते हैं इसहेतु से इसदुष्टाचरणकोभी मैं उन्हीं दोषों में जानताहूं और उसशर्मिष्ठा ने यह तेरे अपराधका प्राय-श्चित्त किया है २८। २९ देवयानी ने कहा पापकाप्रायश्चित्त होय वा नहो परन्तु वृषपर्वाकी पुत्री ने जो मुझसे कहा है सो सुनो ३० जो उसने कहाहै सो सत्यही कहा है क्योंकि मैं दैत्यों के घर में गानकरनेवालीहूं यही उसने कहाहै ३१ और यहभी उसने कहा है कि मैं दान देनेवाले स्तुति के योग्य ऐसेराजाकी पुत्रीहूं यहहास्यसे नहीं कहा किन्तु वृषपर्वा की पुत्री ने बड़े क्रोधमें लाल नेत्रकर बड़े अभिमानभरे पूर्णमुख से कहाहै—हेतात तब मैंने शर्मिष्ठासे यह वचन कहा है कि जो मैं स्तुतिकरनेवाले की पुत्रीहूंगी तो तुझकोभी मैं स्तुतिकरके प्रसन्नकरूंगी ३२। ३४ शुक्राचार्य्य ने कहा हेभद्रे तू स्तुतिकरनेवाले और प्रतिग्रहलेनेवाले की पुत्री नहीं है किन्तु स्तुतिकरने के योग्य की पुत्री है ३५ इसबातको वृषपर्वा राजा और ययातिराजा यहदोनों जानते हैं कि अ-चिन्त्य निर्द्वन्द्व ब्रह्मऐश्वर्य्य मेराबलहै ३६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७॥

शुक्रजीबोले हे देवयानी जोमनुष्य अन्यलोगोंके विवाद वचनोंको सहताहै उसने मानों यहसब जगत् जीतलियाहै ऐसाजानो १ जो मनुष्य उत्पन्नहुए क्रोधको लगामसे घोड़ेके समानरोकलेताहै ऐसेमनुष्यको श्रेष्ठलोगोंने क्रोधकासंयन्ता वर्णन कियाहै २ जो मनुष्य प्राप्तहुए क्रोधको क्षमाकरके शान्तकरताहै उसनेभी इसजगत्को जीताहै ऐसे निश्चयजानो जैसे कि सर्प अपनी कांचलीकोत्या-

तम् ३ यःसमुत्पतितंकोपं क्षमयैवनिरस्यति। यथोरगस्त्वचंजीर्णां सवैपुरुषउच्यते४यस्तु भावयतेधर्मं योतिमात्रन्तितिक्षति। यश्चतप्तोनतपति भृशंसोऽर्थस्यभाजनम् ५ योय जेदश्वमेधेन मासिमासिशतंसमाः। यस्तुकुप्येन्नसर्वस्य तयोरक्रोधनोवरः ६ येकुमाराः कुमार्यश्च वैरंकुर्युरचेतसः। नैतत्प्राज्ञस्तुकुर्वीत विदुस्तेनबलाबलम् ७ (देवयान्युवाच) वेदाहन्तात! बालापि कार्याणान्तुगतागतम्। क्रोधेचैवातिवादेवा कार्यस्याऽपिबलाब ले ८ शिष्यस्याशिष्यवृत्तेर्हिनक्षन्तव्यंबुभूषुणा। असत्संकीर्णवृत्तेषु वासोममनरोचते९ पुंसोयेनाभिनन्दन्ति वृत्तेनाभिजनेनच। नतेषुनिवसेत्प्राज्ञः श्रेयोऽर्थीपापबुद्धिषु १० ये नैनमभिजानन्तु वृत्तेनाभिजनेनच। तेषुसाधुषुवस्तव्यं सवासःश्रेष्ठउच्यते ११ तन्मे मथ्नातिहृदयमग्निकल्पमिवारणिम्। वाग्दुरुक्तंमहाघोरं दुहितुर्वृषपर्वणः १२ नह्यतो दुष्करंमन्ये तातलोकेष्वपित्रिषु। यःसपत्नश्रियंदीप्तां हीनश्रीःपर्युपासते १३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे भृगुतनयोपाख्यानेऽष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८॥

(शौनक उवाच) ततःकाव्योभृगुश्रेष्ठः समन्युरुपगम्यह। वृषपर्वाणमासीनमित्यु वाचाविचारयन् १ नाधर्मश्चरितोराजन्! सद्यःफलतिगौरिव। शनैरावर्त्यमानस्तु मू लान्यपिनिकृन्तति २ यदिनात्मनिपुत्रेषु नचेत्पश्यतिनप्तृषु। पापमाचरितंकर्म त्रिवर्ग

गकरताहै उसीप्रकार जो क्षमाकरके अपने क्रोधको त्यागताहै वह महाउत्तम पुरुषकहाताहै ३। ४ जो धर्मकी भावना करताहै वह सबप्राणीमात्रोंकी सहताहै—जो बहुतसा दुखितहोकर भी किसी दूसरेको दुःखनहीं देताहै वह उत्तम अर्थकापात्र कहाताहै ५ जो प्रतिमास सैकड़ोंवर्ष पर्य्यन्त अश्व-मेधयज्ञकरताहै और दूसरा जो कोई पुरुष किसी पर क्रोध नहीं करताहै इनदोनोंमें यहीक्रोधनकर-नेवालाही श्रेष्ठहै ६ जैसे बालकअवस्थामें लड़का या लड़की अपनी मूर्खतासे शत्रुताकरते हैं वैसे बुद्धिमान्जन बलाबल विचारकर वैरभाव नहीं करते ७ देवयानीबोली—हे तात मैंबालकभी होकर क्रोध और अतिवादमें कार्य्यके बलाबलमें यथार्थ बातको जानतीहूं ८ उत्तम पुरुषको शिष्यके अयो-ग्यशिष्यके समानकियेहुए वृत्तान्तको न सहना चाहिये इसहेतुसे दुष्टवृत्तान्तोंसे भरेहुए अन्तःकरण वालोंमें मेरी बसनेकी इच्छा नहीं है उत्तम कुल और श्रेष्ठ आचरणवाले पुरुष जिस पुरुषकी प्रशंसा नहीं करतेहैं ऐसेपापबुद्धिवाले बहुतसे पुरुषोंमें कल्याणकी इच्छा करनेवाला पुरुष नहीं वासकरे ९। १० और जिनको उत्तम कुल और आचरणोंसे श्रेष्ठलोग उत्तमजानते हैं उनउत्तम पुरुषोंमें वा-सकरना कहाहै ११ इसहेतुसे वृषपर्वाकी पुत्रीके कहेहुए घोर वचन मेरे हृदयको ऐसे मथन करतेहैं जैसे अरणी नामतंत्र काष्ठमें अग्निको उत्पन्न करताहै १२ हे तात जो लक्ष्मीसेहीन पुरुष अग्नि के समानप्रकाश मान शत्रुकी लक्ष्मीकी उपासना करताहै इस्से बढ़कर मेरी बुद्धिसे इससंसारमें दूसरा बुराकर्मनहींहै॥ १३ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८॥

शौनकजी कहते हैं कि देवयानीकी इन बातोंको सुनकर शुक्रजी क्रोधयुक्तहो सिंहासनपर बैठे हुए राजा वृषपर्वा से यह वचन बोले १ हेराजन् अधर्मका आचरण करनेवाला पुरुष तत्कालनहीं दण्ड-रूप भोगकोपाता है वह ऐसे मूलनमेत नाशहोता है जैसे कि गौका अपराध करनेवाला जड़ मूल

मतिवर्त्तते ३ फलत्येवंध्रुवंपापं गुरुभुक्तमिवोदरे । यदाघातयसेविप्रं कचमांगिरसन्त
दा ४ अपापशीलंधर्म्मज्ञं शुश्रूषुंमद्गृहेरतम्। बधादनर्हतस्तस्य बधाच्चदुहितुर्मम ५
वृषपर्वन्निबोधत्वं त्यक्ष्यामित्वांसबान्धवम् । स्थातुंत्वद्विषयेराजन् ! नशक्नोमित्वयास
ह ६ अद्यैवमभिजानामि दैत्यंमिथ्याप्रलापिनम् । यतस्त्वमात्मनोदीर्णां दुहितांकिमुपे
क्षसे ७ (वृषपर्वोवाच) नावद्यंनमृषावादं त्वयिजानामिभार्गव ! । त्वयिसत्यञ्चधर्म्म
ञ्च तत्प्रसीदतुमांभवान् ८ अद्यास्मानपहायत्वमितोयास्यसिभार्गव ! । समुद्रंसम्प्र
वेक्ष्यामि नान्यदस्तिपरायणम् ९ (शुक्र उवाच) समुद्रंप्रविशध्वंवा दिशोवाव्रजतासु
राः ! दुहितुर्नाप्रियंसोढुं शक्तोऽहंदयिताहिमे १० प्रसाद्यतांदेवयानी जीवितंयत्रमेस्थि
तम् । योगक्षेमकरस्तेऽहमिन्द्रस्येवबृहस्पतिः ११ (वृषपर्वोवाच) यत्किञ्चिदसुरेन्द्रा
णां विद्यतेवसुभार्गव ! । भुविहस्तिरथाश्वंवा तस्यत्वंममचेश्वरः १२ (शुक्र उवाच) यत्कि
ञ्चिदस्तिद्रविणं दैत्येन्द्राणांमहासुर ! । तस्येश्वरोऽस्मियद्येतद्देवयानि ! प्रसाद्यताम् १३ ॥
(शौनक उवाच) ततस्तुत्वरितःशुक्रस्तेनराज्ञासमंययौ । उवाचचैनांसुभगे ! प्रतिप
न्नवचस्तव १४ (देवयान्युवाच) यदित्वमीश्वरस्तात ! राज्ञोवित्तस्यभार्गव ! । नाभि
जानामितत्तेऽहं राजावदतुमांस्वयम् १५ (वृषपर्वोवाच) यंकाममभिजानासि देवया

समेत नष्टहोजाता है २ जो राजा अपने पुत्र पौत्र और पुत्री आदिके अपराधोंको नहीं देखताहै उसके त्रिवर्ग अर्थात् अर्थ धर्म और काम यह तीनों नष्टहोजाते हैं ३ जब तुमने अंगिरसके पौत्र वृहस्पति के पुत्रको मारा और फिर दूसरीवार उसको चूर्णकरके गुरूके उदरमें प्राप्तकरदिया वह पाप अपना फल अवश्यकरेगा हे राजा निष्पाप महाधर्मज्ञ मेरे घरमें शुश्रूषा करनेवाले ऐसे अवध्य मेरे शिष्यके वधके योगसे और मेरीपुत्री के भी वधकेयोगसे मैं तुझको बांधवों समेत त्यागताहूं तेरे संग इसराज्यमें ठहरनेके योग्य नहींहूं ४।६ जो कि तू अपनी दुष्ट पुत्रीको नहीं जानता इसी से तुझ मिथ्या बोलनेवाले दैत्यको मैंभी नीचजाननाहूं—वृषपर्वाबोला—हे भार्गवजी आपका कहनामें असत्य और अयोग्य नहीं मानताहूं आपके सत्य धर्मको मैं अच्छीरीतिसे जानताहूं इस हेतुसे आप मुझपर प्रसन्न हूजिये जो आपही मुझको त्यागकर जाओगे तो मैं समुद्रमें डूबजाऊंगा आपके सिवाय मेराकोई रक्षक नहीं है ७।९ शुक्रजीने कहा—किचाहे तुम समुद्रमें डूबो अथवा दिशाओंको जाओ परन्तुमुझको अपनी पुत्री बड़ी प्यारीहै उसका अप्रिय मैं नहीं सहसका १० तुम देवयानी को प्रसन्नकरो जहाँ वहरहैगी वहीं मेरीभी स्थितिरहेगी जो उसकी प्रसन्नता करोगे तो जैसे वृहस्पतिजी इन्द्रादिक देवताओंकी कुशल रखते हैं उसी प्रकार मैंभी तुम्हारी रक्षाकरूंगा वृषपर्वाने कहा हेभार्गवजी दैत्योंका जो गज रथ और अश्वादिक सबद्रव्यहै अथवा जो मेराद्रव्य है उस सबके आप मालिक हैं—शुक्रजी ने कहा—हेमहाअसुर जो आप देवयानीको प्रसन्नकरोगे तो हम दैत्योंके द्रव्यके अधिपति रहेंगे११।१२ शौनकजी कहते हैं—यह बात सुनतेही वृषपर्वा शुक्रजी समेत देवयानी के प्रसन्न करने के लिये यह वचन बोला हे देवयानी शुक्रजी सब दैत्यों समेत मेरे सब द्रव्योंके स्वामी हैं तुम प्रसन्न होजाओ-देवयानी ने अपने पितासे कहा कि हेतात आप राजाकेद्रव्यके मालिकहो इसबातको मैं

नि ! शुचिस्मिते ! । तत्तेऽहंसम्प्रदास्यामि यद्यपिस्यात्सुदुर्लभम् १६ (देवयान्युवाच) दासींकन्यासहस्रेण शर्मिष्ठामभिकामये । अनुयास्यतिमांतत्र यत्रदास्यतिमेपिता १७ (वृषपर्वोवाच) उत्तिष्ठधात्रि ! गच्छत्वं शर्मिष्ठांशीघ्रमानय । यञ्चकामयतेकामं देवयानीकरोतुतम् १८ (शौनक उवाच) ततोधात्रीतत्रगत्वा शर्मिष्ठामिदमब्रवीत् । उत्तिष्ठभद्रे ! शर्मिष्ठे ! ज्ञातीनांसुखमावह १९ त्यजतिब्राह्मणःशिष्यान् देवयान्याप्रचोदितः । यंसाकामयतेकामं सकार्योऽद्यत्वयानघे ! । दासीत्वमभिजातासि देवयान्याःसुशोभने ! २० (शर्मिष्ठोवाच) यंचकामयतेकामं करवाण्यहमद्यतम् । मागान्मन्युवशंशुक्रो देवयानीचमत्कृते २१ (शौनकउवाच) ततःकन्यासहस्रेण वृताशिविकयातदा । पितुर्निदेशात्त्वरिता निश्चक्रामपुरोत्तमात् २२ (शर्मिष्ठोवाच) अहंकन्यासहस्रेण दासीते परिचारिका । ध्रुवंत्वांतत्रयास्यामि यत्रदास्यतितेपिता २३ (देवयान्युवाच) स्तुवतो दुहिताचाहंयाचतःप्रतिगृह्णतः । स्तूयमानस्यदुहिता कथंदासीभविष्यसि २४ (शर्मिष्ठोवाच) येनकेनचिदार्तानांज्ञातीनांसुखमावहेत् । अनुयास्याम्यहन्तत्र यत्रदास्यति तेपिता २५ (शौनक उवाच) प्रतिश्रुतेदासभावे दुहित्रावृषपर्वणः । देवयानीनृपश्रेष्ठ पितरंवाक्यमब्रवीत् २६ प्रविशामिपुरन्तात तुष्टास्मिद्विजसत्तम ! । अमोघंतवविज्ञान

नहीं जानती मुझको आप राजा कहो यहसुनकर वृषपर्व्वाने कहा हे देवयानी जिस कामनाको तू चाहती है वह चाहे कैसाभी दुर्लभहोय मैं तुझको अवश्य दूंगा देवयानीने कहा कि जो तुम दुर्लभ भी देनेको कहतेहो तो हज़ार कन्याओं समेत शर्मिष्ठा मेरी दासीरहे और मेरा पिताजिसको मुझेदे वहां यह सवदासियों समेत मेरी दासीहोकर संगजाय १४।१७वृषपर्वा बोला-हेधात्रि तू शीघ्रही शर्मिष्ठाको लेआ यह देवयानी जिस कामनाको चाहती है वही मैं करूंगा-शौनकजी कहतेहैं कि राजाकी आज्ञा पातेही वह धात्री शर्मिष्ठाके पास जाकर यह वचनबोली कि हेशर्मिष्ठे उठकर ज्ञातिबांधवोंको प्रसन्नकर १८।१९ क्योंकि देवयानी से प्रेरित कियेहुए शुक्राचार्य्यजी अपने शिष्योंको त्यागते हैं और देवयानी जिसवातको चाहती है वह तेरेही करके हैं तू देवयानीकी दासी होगई है २० शर्मिष्ठाबोली जो काम वह चाहती है सो मैंकरूंगी शुक्राचार्य्य और देवयानीक्रोधयुक्त न होंय २१ शौनकजी कहते हैं कि तब पिताकी आज्ञासे शर्मिष्ठा हज़ारों कन्याओं से युक्तहो डोली में बैठ देवयानी के पास आई २२ और वहाँ आकर बोली कि हे देवयानी मैं हज़ारकन्याओंसमेत तेरी सेवाकरनेवालीदासी हूं और जहाँ तेरापिता तुझको देगा वहाँ मैंचलूंगी २३ देवयानी बोली-स्तुति करनेवाले मांगनेवाले और प्रतिग्रह लेनेवाले ऐसे भिक्षुककी मैं पुत्रीहूं और तू स्तुतिमान् राजाकी पुत्री होकर कैसे दासी होगी २४ शर्मिष्ठा बोली--जिस किसी उपायसे हमारे पीड़ितहुये बांधव सुखको प्राप्तहोयँ सोई मुझको कर्त्तव्यहै इसी से मैं तेरे पीछे चलूंगी और जहां तेरापिता तुझेदेगा वहाँभी साथमें चलूंगी २५ शौनक बोले कि वृषपर्वा राजाकी पुत्रीने जब दासीहोनेकी प्रतिज्ञा करली तब देवयानी अपनेपिता से यहवचनबोली २६ हेतात मैं प्रसन्न होगईहूं तेरा विज्ञान बड़ा अमोघ है और विद्याका बल भी

मस्तिविद्यावलंचते २७ एवमुक्तोद्विजश्रेष्ठो दुहित्रासुमहायशाः। प्रविवेशपुरंहृष्टःपूजि
तःसर्वदानवैः २८॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे एकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

(शौनक उवाच) अथदीर्घेणकालेन देवयानीनृपोत्तम!।वनंतदेवनिर्याता क्रीड़ा
र्थंवरवर्णिनी १ तेनदासीसहस्रेण सार्धंशर्मिष्ठयातदा। तमेवदेशंसम्प्राप्ता यथाकामंच
चारसा २ ताभिःसखीभिःसहिताः सर्वाभिर्मुदिताभृशम्। क्रीड़न्त्योऽभिरताःसर्वाः
पिवन्त्योमधुमाधवम् ३ खादन्त्योविविधान्भक्ष्यान् फलानिविविधानिच। पुनश्चना
हुषोराजा मृगलिप्सुर्यदृच्छया ४ तमेवदेशंसंप्राप्तो जललिप्सुःप्रतर्षितः। ददर्शदेव
यानीञ्च शर्मिष्ठान्ताश्चयोषितः ५ पिवन्त्योललनास्ताश्च दिव्याभरणभूषिताः। उप
विष्टाञ्चददृशे देवयानींशुचिस्मिताम् ६ रूपेणाप्रतिमांतासां स्त्रीणांमध्येवराङ्गनाम्।
शर्मिष्ठयासेव्यमानां पादसम्वाहनादिभिः ७ (ययातिरुवाच) द्वाभ्यांकन्यासहस्राभ्यां
द्वेकन्येपरिवारिते। गोत्रेचनामनीचैव द्वयोःपृच्छाम्यतोह्यहम् ८ (देवयान्युवाच)
आख्यास्याम्यहमादत्स्व वचनंमेनराधिप!।शुक्रोनामासुरगुरुःसुतांजानीहितस्यमाम् ९
इयंचमेसखीदासी यत्राहंतत्रगामिनी। दुहितादानवेन्द्रस्य शर्मिष्ठावृषपर्वणः १०
(ययातिरुवाच) कथंतुतेसखीदासी कन्येयंवरवर्णिनी। असुरेन्द्रसुतासुभ्रु! परं

सफलहै अब मैं पुरमें प्रवेशकरूंगी २७ पुत्री के इसप्रकारके वचनोंको सुनकर शुक्राचार्य्यजी सब
दानवों से पूजितहो बड़ी प्रसन्नतासे पुरमें प्रवेश करतेभये २८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

शौनकजी बोले–हे राजन् इसके पीछे बहुतकालमें वह देवयानी उसी वनमें फिर क्रीड़ाके निमित्त
जातीभई और शर्मिष्ठा समेत हज़ारों दासियों समेत उसबनमें इच्छापूर्व्वक विचरतीभई १।२
अर्थात् उन सबसखियोंसे युक्त अन्य बहुतसी स्त्रियोंके साथ क्रीड़ाके निमित्त वसन्तके पुष्पोंको ग्रह-
ण करतीभई और अनेक प्रकारके भक्षणकरने के फलादिक पदार्थोंको खातीभई फिर वहांही इच्छा-
पूर्वक आखेट करनेकी इच्छासे राजा ययातिभी आताभया और फिर जलकी तृषासे वहां आकर
देवयानी और शर्मिष्ठादिक सबस्त्रियोंको देखताभया ३।५ उनमें सब आभूषणोंको धारणकिये सखियों
समेत बैठीहुई उत्तमरूपवाली शर्मिष्ठादिक दासियोंसे सेवित देवयानीकोदेखा ६।७ तबराजाययाति
पूछनेलगा कि दोहज़ार कन्याओंसे युक्त दोरूपगुणवाली कन्याहो मैं तुम्हारा गोत्रऔर नामपूछताहूं
देवयानी बोली हे राजन् मैं जो कहतीहूं उसको आप सुनिये मैंतोशुक्राचार्य्यकीपुत्रीहूं औरयहसखी
दानवेन्द्र वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा नामवाली मेरी दासी है जहां मैं जातीहूं तहांही यह जाती है इस
वातको सुनकर ययातिने कहा कि हेसुन्दरि यह राजाकी पुत्री होकर तेरी दासी कैसे होगई यह मुझे
बड़ा आश्चर्य्य है–देवयानी बोली हेराजन् यह सम्पूर्ण विधान ब्रह्माका कियाहुआहै इसमें आश्चर्य्य
मतकरो तुम राजाके समान उत्तमरूप वेषवाले होकर श्रेष्ठ मधुर वाणीको धारण करतेहो तुम्हारा
नाम क्याहै और आप किसके पुत्रहो यह सब हमसे भी कहो तब ययातिने कहा कि मैंने ब्रह्मचर्य्य
धारण करके सम्पूर्ण वेद पढ़ेहैं और नहुष राजाकापुत्र ययातिनाम राजाहूं–देवयानी बोली–हेराजन्

कौतूहलंहिमे ११ (देवयान्युवाच) सर्वमेवनरव्याघ्र! विधानमनुवर्त्तते। विधिनाविहितंज्ञात्वा माविचित्रंमनःकृथाः १२ राजवद्रूपवेषौते ब्राह्मींवाचंबिभर्षिच। किंनामा त्वंकुतश्चासि कस्यपुत्रश्चशंसमे १३ (ययातिरुवाच) ब्रह्मचर्येणवेदोमे कृत्स्नः श्रुतिपथंगतः। राजाहंराजपुत्रश्च ययातिरितिविश्रुतः १४ (देवयान्युवाच) केन चार्थेननृपते! ह्येनंदेशंसमागतः। जिघृक्षुर्वारियत्किञ्चिदथवामृगलिप्सया १५ (ययातिरुवाच) मृगलिप्सुरहंभद्रे! पानीयार्थमिहागतः। बहुधाप्यनुयुक्तोऽस्मि त्वमनुज्ञातुमर्हसि १६ (देवयान्युवाच) द्वाभ्यांकन्यासहस्राभ्यांदास्याशर्मिष्ठयासह। त्वदधीनास्मिभद्रंतेसखे! भर्त्ताचमेभव १७ (ययातिरुवाच) विध्यौशनसिभद्रंते नत्वदर्होऽस्मिभामिनि!। अविवाह्याःस्मराजानोदेवयानि! पितुस्तव १८ (देवयान्युवाच) संसृष्टंब्रह्मणाक्षत्रं क्षत्रंब्रह्माणिसंश्रितम्। ऋषिश्चऋषिपुत्रश्च नाहुषाद्यभजस्वमाम् १९ (ययातिरुवाच) एकदेहोद्भवावर्णाश्चत्वारोऽपिवरानने!। पृथक्धर्माःपृथक्शौचास्तेषांवैब्राह्मणोवरः २० (देवयान्युवाच) पाणिग्रहोनाहुषायं नपुंभिःसेवितःपुरा। त्वमेनमग्रहीदग्रे वृणोमित्वामहंततः २१ कथंतुमेमनस्विन्याः पाणिमन्यःपुमान्स्पृशेत्। गृहीतमृषिपुत्रेण स्वयंवाप्यृषिणात्वया २२ (ययातिरुवाच) क्रुद्धादाशीविषात्सर्पाज्ज्वलनात्सर्वतोमुखात्। दुराधर्षतरोविप्रः पुरुषेणविजानता २३ (देवयान्युवाच) कथमाशीविषात्सर्पाज्ज्वलनात्सर्वतोमुखात्। दुराधर्षतरोविप्र इत्यात्थपुरुषर्षभ २४ (ययातिरुवाच) दशेदाशीविषस्त्वेकं शस्त्रेणैकश्चवध्यते। हन्तिविप्रःसराष्ट्राणि पुराण्यपिहि

तुम किसप्रयोजनसे यहां आयेहो जलपीनेको आयेहो वा शिकारखेलनेको पधारेहो ८। १५ ययाति बोला-हेभद्रे मैं शिकारखेलताहुआ यहां जलपीनेके निमित्त आयाहूं बहुतप्रकारसे तुझको प्राप्तहूं सो तुमआज्ञाकरनेको योग्यहो-देवयानीबोली हेसखे दोहजार कन्या और शर्मिष्ठादासीसे युक्त मैंआपके आधीनहूं आपमेरे भर्त्ताहूजिये ययातिबोला हेभामिनी तू शुक्राचार्य्यकी पुत्री है इससे हमारे योग्य नहींहै अर्थात् ब्राह्मणकी कन्याहोनेसे राजाओंके विवाहनेके योग्य नहीं है १६।१८ देवयानीबोली हे राजाब्रह्माजीने जो क्षत्रियरचेहैं वह सबब्राह्मणोंहीमें मिलेहुएहैं हे नहुषके पुत्र तुमऋषिके समानहो आप निस्सन्देह मुझकोवरो १९ ययातिबोला-हेवराननेचारोंवर्ण एकहीईश्वरके शरीरसेउत्पन्नहुएहैं परन्तु चारोंवर्णों के धर्म और आचरण जुदे२ हैं उन चारों में ब्राह्मण श्रेष्ठहैं २० देवयानी बोली हे नहुषनन्दन यह मेराहाथ अन्य पुरुषसे नहीं सेवित किया गयाहै और तुम इसहाथको पहले एक समय ग्रहण करचुकेहो इसीहेतुसे मैंतुमको वरतीहूं मुझ उत्तममनवालीके हाथको दूसरा कौनपकड़ सक्ताहै आप ऋषिकेही पुत्रहैं इसीसे आपने मेरा हाथ ग्रहण कियाथा २१। २२ ययाति बोला-क्रोधयुक्त विषवाला सर्प और अग्नि-इन दोनोंके भी मुखसे अतिदुस्तर ब्राह्मण है यह ज्ञानवान् महात्मा पुरुषोंका कथनहै २३ देवयानी बोली-हे उत्तमपुरुष क्रोधयुक्त विषभरे सर्प और अग्नि इनके मुखसे अत्यन्त उग्र तुम ब्राह्मणको कैसे बतलातेहो २४ ययाति बोले-कि उग्र विषवाले सर्प के काटनेसे तथाशस्त्रके मारनेसे तो एकहीका विनाशहोताहै और क्रोधहुए ब्राह्मणसे तो राज्यसमेत

कोपितः २५ दुराधर्षतरोविप्रस्तस्माद्भीरु! मतोमम। अतोदत्ताञ्चपित्रात्वां भद्रे! नविवहाम्यहम् २६ (देवयान्युवाच) दत्तांवहस्वपित्रामां त्वंहिराजन्! वृतोमया। अयाचतोभयंनास्ति दत्ताञ्चप्रतिगृह्णतः २७ (शौनक उवाच) त्वरितंदेवयान्याथ प्रेषिता पितुरात्मनः। सर्वंनिवेदयामास धात्रीतस्मैयथातथम् २८ श्रुत्वैवचसराजानं दर्शयामास सभार्गवः। दृष्ट्वैवमागतंविप्रं ययातिःपृथिवीपतिः २९ ववन्देब्राह्मणंकाव्यं प्राञ्जलिः प्रणतःस्थितः। तंचाप्यभ्यवदत्काव्यः साम्नापरमवल्गुना ३० (देवयान्युवाच) राजायं नाहुषस्तात दुर्गमेपाणिमग्रहीत्। नमस्तेदेहिमामस्मै लोकेनान्यंपतिंवृणे ३१ (शुक्र उवाच) वृतोऽनयापतिर्वीर! सुतयात्वंममेष्टया। गृहाणेमांमयादत्तां महिषींनहुषात्मज! ३२ (ययातिरुवाच) अधर्मोमांस्पृशेदेवं पापमस्याश्चभार्गव! वर्णसंकरतोब्रह्मन्! इतित्वाम्प्रवृणोम्यहम् ३३ (शुक्र उवाच) अधर्मात्त्वाम्विमुञ्चामि वरंवरयचेप्सितम्। अस्मिन्विवाहेत्वंश्लाघ्यो रहोपापन्नुदामिते ३४ वहस्वभार्य्यांन्धर्मेण देवयानीं शुचिस्मिताम्। अनयासहसम्प्रीति मतुलांसमवाप्नुहि ३५ इयंचापिकुमारीते शर्मिष्ठा वार्षपर्वणी। सम्पूज्यसन्ततराजन्! नचैनांशयनेह्वयः ३६ (शौनक उवाच) एवमुक्तो ययातिस्तु शुक्रंकृत्वाप्रदक्षिणम्। जगामस्वपुरंहृष्टःसोऽनुज्ञातोमहात्मना ३७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेदेवयान्युद्वाहवर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ३०॥

देशभर नष्टहोजाताहै हेभीरु इसहेतुसे मैंने ब्राह्मणको दुराधर्षकहाहै सोतेरे पिताके दियेविना मैं तुमको नहीं विवाहसक्ता–देवयानीबोली–हेराजाजबमेरा पिताही मुझेतेरे अर्थदेगा तब तोतुममुझसे विवाहकरोगे और तुमबिनायाचना करनेवालेहो इससे प्रतिग्रहकाभी भयनहीं है मैंने तुमको वर लियाहै २७ शौनकजी कहतेहैं कि इसके पीछे देवयानीकी भेजीहुई धात्रीनाम दूती शुक्राचार्य्य के पासजाकर इस सबवृत्तान्तको कहतीभई २८ तब शुक्राचार्य्यजी इससबवृत्तान्तको सुनकर उसराजाके पासआये और उसको देखकर प्रसन्नहुए और राजाभी उनके दर्शनकरके प्रसन्नहोता भया २९ और अंजलीबांध खड़ाहोकर शुक्राचार्य्य को प्रणाम किया तबशुक्राचार्य्यजी भी बड़ी नम्रतापूर्वक मधुरवाणीसे बोलते भये ३० तब देवयानी ने कहा किहे तात इसराजाययातिने प्रथम मेरा हाथ ग्रहण करलियाहै इस हेतुसे इसराजाके अर्थही मुझे देदो मैं इसके सिवाय दूसरेको नहीं वरूंगी ३१ तब शुक्राचार्य्यजी बोले–हेनहुषके पुत्र राजा तुम मेरीपुत्रीसे पूर्व्व वरेहुयेहो इसीसे अब मेरेदेनेसे तुम इसको ग्रहणकरो ३२ ययाति बोला–हे भार्गवजी इसप्रकार के कार्य्य करनेसे मुझको पापरूप अधर्म होगा सो वर्णसंकर होजानेके दोषकी निवृत्तिकेअर्थ मैं आपकोही वरणकरताहूं ३३ शुक्रजीने कहाकि मैं तुझकोअधर्मसेछुटादूंगा तेरेपापको एकांतमेंदूरकरदूंगा इसविवाहमें तूप्रशंसनीयहोगा ३४ अवतू इससुन्दरहास्यवाली देवयानीको भार्य्याकर इसकेसाथ तू अत्यन्तप्रीतिपूर्वक भोगोंकोभोगेगा हेराजन् यह वृषपर्वाकीपुत्री शर्मिष्ठा तेरीसेवामेंरहेगी इसको तुम अपनीशय्यापरमत बुलाना ३५।३६ शौनकजीबोले कि शुक्राचार्यके इसवचनकोसुनके वहराजाययाति उनकीप्रदक्षिणाकर उनकीआज्ञासे बड़ीप्रसन्नतासे अपनेपुरमेंआताभया ३७॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिंशोऽध्यायः ३०॥

(शौनक उवाच) ययातिःस्वपुरंप्राप्य महेन्द्रपुरसन्निभम् । प्रविश्यान्तःपुरंतत्र देवयानींन्यवेशयत् १ देवयान्याश्चानुमते सुतांतांवृषपर्वणः । अशोकवनिकाभ्यासे गृहं कृत्वान्यवेशयत् २ वृतांदासीसहस्रेण शर्मिष्ठामासुरायणीम् । वासोभिरन्नपानैश्च संविभज्यसुसंवृताम् ३ देवयान्यातुसहितः सनृपोनहुषात्मजः । विजहारबहूनब्दान् देववन्मुदितोभृशम् ४ ऋतुकालेतुसंप्राप्ते देवयानीवराङ्गना । लेभेगर्भंप्रथमतः कुमारश्चव्यजायत ५ गतेवर्षसहस्रेतु शर्मिष्ठावार्षपर्वणी । ददर्शयौवनंप्राप्ता ऋतुंसाकमलेक्षणा ६ चिन्तयामासधर्मज्ञा ऋतुप्राप्तेचभामिनी । ऋतुकालश्चसंप्राप्तो नकश्चिन्मेपतिर्वृतः ७ किंप्राप्तंकिञ्चकर्त्तव्यं कथंकृत्वासुखंभवेत् । देवयानीप्रसूतासौ वृथाहंप्राप्तयौवना ८ यथातयावृतोभर्ता तथैवाहंवृणोमितम् । राज्ञापुत्रफलंदेय मितिमेनिश्चितामतिः ९ अपीदानींसधर्मात्मा रहोमेदर्शनंव्रजेत् १० (शौनक उवाच) अथनिष्क्रम्यराजासौ तस्मिन्कालेयदृच्छया । अशोकवनिकाभ्यासे शर्मिष्ठांप्रत्यधिष्ठितः ११ तमेकंरहसि दृष्ट्वा शर्मिष्ठाचारुहासिनी । प्रत्युद्गम्याञ्जलिंकृत्वा राजानंवाक्यमब्रवीत् १२ (शर्मिष्ठोवाच) सोमश्चेन्द्रश्चवायुश्च यमश्चवरुणश्चवा । तववानाहुषगृहे कःस्त्रियंद्रष्टुमर्हति १३ रूपाभिजनशीलैर्हि त्वंराजन् वेत्थमांसदा । सात्वांयाचेप्रसाद्येऽहं रन्तुमेहिनराधिप ! १४ (ययातिरुवाच) वेद्मित्वांशीलसम्पन्नां दैत्यकन्यामनिन्दिताम् । रूपन्तुतेनपश्यामि सूच्यग्रमपिनिन्दितम् १५ मामब्रवीत्तदाशुक्रो देवयानींयदावहम् ।

शौनकजी बोले—कि वह राजा ययाति इन्द्रपुरी के समान अपने पुरमें जाकर देवयानीको अपने जनाने महलोंमें प्राप्त करताभया और वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठाको देवयानी के कहनेसे अशोकवन के पृथक् मकानमें रखताभया १।२ हजार दासियों समेत शर्मिष्ठाको वस्त्र अन्नपान और अलंकारादि से युक्त करके जुदीकर देताभया ३ फिर वह राजा देवयानी को संगलिये देवताओं के समान बहुत वर्षोंतक क्रीडा करताभया ४ ऋतुकाल प्राप्तहोकर देवयानीने गर्भको धारण किया और दशमास व्यतीत होनेपर एकपुत्रको जनतीभई ५ फिर हजार वर्ष व्यतीत होजानेपर वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा यौवनको प्राप्तहोके ऋतुकालमें चिन्तवन करतीभई कि मेरा कोई पति नहीं है ६।७ मुझको क्या करना योग्य है मुझे कैसे सुखहोय देवयानीके तो पुत्र होगया मेरा यौवन वृथाहुआ जाताहै जैसे कि उसने राजाको भर्त्ता बनाया है वैसेही मैं भी उसी राजाको वरूंगी मैं राजासे कहूंगी कि आप मुझ को भी पुत्ररूपी फल दीजिये ऐसा विचार करके एकान्त में राजाके दर्शनको चाहतीभई ८।९ शौनकजी बोले—कि इसके अनन्तर वह राजा इच्छापूर्वक अपने अशोक वनमें शर्मिष्ठा को प्राप्त होताभया १० तब एकान्तमें प्राप्तहुए उसराजासे शर्मिष्ठा अंजली बांधकर यह वचन बोली ११ कि हे राजन् सोम इन्द्र वायु और वरुण इनमेंसे भी कोई तेरे घरमें स्त्रियोंके देखने को समर्थ नहीं है १२ हेराजन् रूप कुल और शीलमें आपमुझको उत्तमजानो मैं आपसे याचनाकरतीहूं कि आप मेरेसंग रमणकरो १३ ययातिने कहा शील युक्त निन्दासे रहित और उत्तम दैत्यकी कन्या तू है तेरे सबगुणों को मैं जानताहूं परन्तुमैं तेरे रूपको सूचीके अग्रभागकी समानभी नहीं देखसकाहूं १४।१५ क्योंकि देव-

नेयमाह्वयितव्याते शयनेवार्षपर्वणी १६ (शर्मिष्ठोवाच।) ननर्मयुक्तंवचनंहिनस्ति नस्त्रीषुराजन्नविवाहकाले। प्राणात्यये सर्वधनापहारे पञ्चानृतान्याहुरपातकानि १७ पृष्टास्तुसाक्ष्येप्रवदन्तिचान्यथा भवन्तिमिथ्यावचनानरेन्द्रते। एकार्थतायान्तुसमाहितायां मिथ्यावदन्तंह्यनृतंहिनस्ति १८ (ययातिरुवाच) राजाप्रमाणंभूतानां संविनश्येन्मृषावदन्। अर्थकृच्छ्रमपिप्राप्य न मिथ्याकर्तुमुत्सहे १९ (शर्मिष्ठोवाच) समावेतौमतौराजन्! पतिःसख्याश्चयःपतिः। समंविवाहइत्याहुः सख्यामेऽसिपतिर्यतः २० (ययातिरुवाच) दातव्यंयाचमानस्य हीतिमेव्रतमाहितम्। त्वञ्चयाचसिकामंमां ब्रूहिकिङ्करवाणितत् २१ (शर्मिष्ठोवाच) अधर्मात्त्राहिमांराजन्! धर्मञ्चप्रतिपादय। त्वत्तोऽपत्यवतीलोके चरेयंधर्ममुत्तमम् २२ त्रयएवाधनाराजन्! भार्यादासस्तथासुतः। यत्तेसमधिगच्छन्ति यस्यतेतस्यतद्धनम् २३ देवयान्याभुजिष्यास्मि वश्याचतवभार्गवी। साचाहंचत्वयाराजन्! भरणीयाभजस्वमाम् २४ (शौनक उवाच) एवमुक्तस्तयाराजा तथ्यमित्यभिजज्ञिवान्। पूजयामासशर्मिष्ठां धर्मंचप्रतिपादयत् २५ ससमागम्यशर्मिष्ठां यथाकाममवाप्यच। अन्योन्यंचाभिसंपूज्य जग्मतुस्तौयथागतम् २६ तस्मिन्समागमेसुभ्रुः शर्मिष्ठावार्षपर्वणी। लेभेगर्भंप्रथमतः तस्मान्नृपतिसत्तमात् २७ प्रजज्ञेचततःकाले राज्ञीराजीवलोचना। कुमारंदेवगर्भाभ मादित्यसमतेजसम् २८ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेशर्मिष्ठापुत्रोत्पादनन्नामैकत्रिंशोध्यायः ३१॥

यानीके विवाहके समय शुक्राचार्य्य ने कहदियाहै कि शर्मिष्ठाको शय्यापर न बुलाना १६ शर्मिष्ठा बोली हेराजन् क्रीडा समयमें विवाह कालमें प्राणोंके नाश समयमें सम्पूर्ण धनके जानेके समयमें और स्त्रियोंके विषयमें इनपांचोंस्थानों में असत्यबोलनेका कुछ पाप नहीं होता १७औरकिसीकी गवाहीमें वा समाहित कियेहुये प्रयोजनमें जो कोई मिथ्या बोलताहै उनका मिथ्याबोलना नाशकारी होताहै १८ ययाति बोले कि सब प्राणियोंका प्रमाण राजाहै वह मिथ्या बोलने से नष्ट होजाताहै इसहेतुसे आपत्तिकालमें भी राजाको मिथ्या बोलना न चाहिये १९ शर्मिष्ठा बोली—हेराजा अपना पति और सखीका पति यह दोनों समानहैं सो तुम मेरीसखी के पतिहो इसहेतुसे मेरा भी विवाह तुम्हारेही साथ हुआ जानो २० ययातिबोला मांगनेवाले को यथाशक्ति देनाचाहिये और तेरेसंग मैथुन न करनेका मेराव्रतहै यह दोनों बातें प्राप्तहुई हैं सो तुही बता मैं इनदोनों बातों में से कौनसी बातकरूं २१ शर्मिष्ठाबोली—हे राजन् तुमअधर्म से मेरीरक्षाकरो और धर्मकाप्रतिपालनकरो अर्थात् मैं तुमसे संतानको प्राप्तहोकर उत्तमधर्मका आचरणकरूंगी २२ हेराजा स्त्री दास और पुत्र यहतीनों निर्धनकहे हैं जो यह किसी द्रव्यका संचयकरते हैं वह सबद्रव्य इनके मालिकका है २३ और मैंभी देवयानी के साथ भोजन करती हुई उसीके वशमें रहनेवाली दासी हूं इस हेतुसे मुझ पोषण करने के योग्यको आपभजिये २४ शौनकजी कहतेहैं उसके ऐसे२ वचनोंको सुनकर राजाययाति शर्मिष्ठा को सराहकर उसकेधर्मका प्रतिपालन करताभया फिर शर्मिष्ठाकेसंग इच्छापूर्वक संभोगकियाउस समय वहदोनों परमानन्दकोप्राप्तहोतेभये २५।२६ उससम्भोगकरके वह वृषपर्वाकीपुत्री शर्मिष्ठा गर्भ

(शौनक उवाच) श्रुत्वाकुमारञ्जातंसा देवयानीशुचिस्मिता। चिन्तयाविष्टदुःखा तां शर्मिष्ठांप्रत्यभाषत १ ततोऽभिगम्यशर्मिष्ठां देवयान्यब्रवीदिदम्। किमर्थंत्वजिनं सुभ्रु! कृतन्तेकामलुब्धया २ (शर्मिष्ठोवाच) ऋषिरभ्यागतःकश्चिद्धर्मात्मावेदपारगः। समयात्तुवरःकामं याचितोधर्म्मसंहतम् ३ नाहमन्यायतःकाम माचरामिशुचिस्मिते!। तस्मादृषेर्ममापत्य मितिसत्यंब्रवीमिते ४ (देवयान्युवाच) यद्येतदेवंशर्मिष्ठे नमन्युर्विद्यतेमम। अपत्यंयदितेलब्धं ज्येष्ठाच्छ्रेष्ठाच्चवैद्विजात् ५ शोभनंभीरु! सत्यंचेत् कथं सज्ञायतेद्विजः। गोत्रनामाभिजनतः श्रोतुमिच्छामितंद्विजम् ६ (शर्मिष्ठोवाच) ओजसातेजसाचैव दीप्यमानंरविंयथा। तंदृष्ट्वाममसंप्रष्टुं शक्तिर्नासीच्छुचिस्मिते! ७ (शौनकउवाच) अन्योन्यमेवमुक्त्वाच संप्रहस्यचतेमिथः। जगामभार्गवीवेश्म तथ्यमित्यभिजानती ८ ययातिर्देवयान्यासु पुत्रावजनयन्नृपः। यदुञ्चतुर्वसुञ्चैव शक्रविष्णूइवापरौ९ तस्मादेवतुराजर्षेःशर्मिष्ठावार्षपर्वणी।द्रुह्युंचानुञ्चपूरुञ्चत्रीन्कुमारानजीजनत्१० ततःकालेतुकस्मिंश्चित् देवयानीशुचिस्मिता। ययातिसहिताराजन्! जगामहरितंवनम् ११ ददर्शचतदातत्र कुमारान्देवरूपिणः। क्रीडमानान्सुविश्रब्धान् विस्मितावेदमब्रवीत् १२ कस्यैतेदारकाराजन्! देवपुत्रोपमाःशुभाः। वर्चसारूपतश्चैव दृश्यन्ते सदृशास्तव १३ एवंपृष्ट्वातुराजानं कुमारान्पर्यपृच्छत। किंनामधेयगोत्रंवः पुत्रका

को धारण करतीभई २७ फिर समय आनेपर सूर्य्य के समान कान्तिवाले पुत्रको जनती भई २८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

शौनकजी बोले-उसके पुत्र जन्मने के समाचारको देवयानी सुनकर चिन्ता से महादुखी होके पासजाकर शर्मिष्ठासे पूछनेलगी १ कि कामदेवके वशहोकर तैंने ऐसा पाप क्यों किया २ शर्मिष्ठा ने कहा कि वेदके जाननेवाले एक धर्मात्मा ऋषि आयेथे उनको मैंने वररूपकरके याचनासे प्रसन्नकियाथा उन्हींके संयोगसे यह पुत्रहुआहै ३ हेशुचिस्मिते मैंनेअन्यायसे कामका आचरण नहीं कियाहै यह ऋषिका पुत्रहै इसको सत्यही सत्यजान ४ देवयानीने कहा कि हे शर्मिष्ठे जो यहीबात सत्य सत्य है तो मुझको क्रोधनहीं है तैंने जो किसी उत्तम ब्राह्मणसे संतान प्राप्तकी है वह ब्राह्मण किसप्रकारसे जानाजाय उसका गोत्रनाम और कुलमैं सुननाचाहतीहूं ५।६ शर्मिष्ठाबोली हेवरानने उसके पराक्रम और सूर्य्यके समान तेजस्वी होनेसे उसकेतेजसे दबीहुई मैं उससे किसी बातके पूछनेको समर्थ न होतीभई ७ शौनकजी कहते हैं इसप्रकार वहपरस्पर कहकर और हँसकर इसवचन को सत्यमानके देवयानी अपने स्थानको आतीभई ८ फिर राजा ययाति उस देवयानी में इन्द्र और विष्णुके समान कान्तिवाले यदु और तुर्वसु इन दोपुत्रोंको उत्पन्न करताभया ९ और शर्मिष्ठाने उस ययातिके संयोग से द्रुह्यु अनु और पूरु इन तीनपुत्रों को उत्पन्न किया १० इसके अनन्तर किसी कालमें वह देवयानी राजा ययाति के साथ हरित संज्ञक वनमें जातीभई ११ वहां देवस्वरूप सनत्कुमारोंके समान रूपवाले क्रीडा करतेहुए उन बालकोंको देखतीभई और आश्चर्य्ययुक्त होकर यह वचनबोली १२ हे राजन् यह देवताओंके पुत्रोंके समान कान्तिवाले स्वरूपवान् जो बालक दीख

ब्राह्मण पिता १४विब्रूतमेयथातथ्यं श्रोतुकामास्म्यंतोह्यहम्। तेदर्शयन्प्रदेशिन्या तमेव नृपसत्तमम् १५ शर्मिष्ठांमातरञ्चैव तस्याऊचुःकुमारकाः। (शौनक उवाच) इत्युक्त्वा सहितास्तेन राजानमुपचक्रमुः १६ नाभ्यनन्दततान्राजा देवयान्यास्तदान्तिके। रुदन्तस्तेऽथशर्मिष्ठा मभ्ययुर्बालकास्तदा १७ दृष्ट्वातेषान्तुबालानां प्रणयंपार्थिवंप्रति। बुध्वाचतत्त्वतोदेवी शर्मिष्ठामिदमब्रवीत् १८ (देवयान्युवाच) मदधीनासतीकस्मादकार्षीर्विप्रियंमम। तमेवासुरधर्मत्व मास्थितानबिभेषिकिम् १९ (शर्मिष्ठोवाच) यदुक्तमृषिरित्येव तत्सत्यञ्चारुहासिनि!। न्यायतोधर्मतश्चैव चरन्तीनबिभेमिते २० यदा त्वयावृतोराजा वृतएवतदामया। सखिभर्ताहिधर्मेण भर्ताभवतिशोभने! २१ पूज्यासि ममपान्याच श्रेष्ठाज्येष्ठाचब्राह्मणी। त्वत्तोहिमेपूज्यतरो राजर्षिःकिन्नवेत्सितत् २२ (शौनक उवाच) श्रुत्वातस्यास्ततोवाक्यं देवयान्यब्रवीदिदम्। राजन्नाद्येहवत्स्यामि विप्रियंमेत्वयाकृतम् २३ सहसोत्पतितांश्यामां दृष्ट्वातांसाश्रुलोचनाम्। तूर्णंसकाशंकाव्यस्य प्रस्थितांव्यथितस्तदा २४ अनुवव्राजसम्भ्रान्तः पृष्ठतःसान्त्वयन्नृपः। न्यवर्ततन साचैव क्रोधसंरक्तलोचना २५ अविब्रुवन्तीकिञ्चिच्च राजानंसाश्रुलोचना। अचिरादेवसंप्राप्ता काव्यस्योशनसोऽन्तिकम् २६ सातुदृष्ट्वैवपितरमभिवाद्याग्रतःस्थिता। अ

रहे हैं और आपकेही रूपके समान विदित होते हैं सो यह किसके पुत्रहैं १३ इसप्रकार राजासे पूछ कर फिर उन बालकोंसे भी पूछतीभई कि हे बालको तुम्हारा नाम और गोत्र क्याहै और किसके पुत्रहो यह सत्य सत्य मुझसे कहो तब वह बालक अपनी उँगलीसे इंगित करके ययातिको अपना पिता और शर्मिष्ठाको अपनी माता बतातेभये शौनकजी बोले कि बालकोंसे इसबातके सुनतेही देवयानी राजाके समीप आई १४।१६ तब देवयानी के समक्षमें वह राजा उन बालकोंको भिड़कने लगा तब वहबालक रोतेहुये शर्मिष्ठाके पास आये और देवयानी उनपुत्रोंको राजाहीके योगसे जन्मे हुए जानके शर्मिष्ठासे यहवचनबोली १७।१८ हेअसती तू मेरेहीआधीन होकर मेराअप्रिय क्योंकरतीहै तू उसी आसुर धर्ममेंही तत्पर होकर मुझसे नहीं डरती है १९ शर्मिष्ठा बोली हेसुन्दर हास्य वाली मैंने तुमसे जो प्रथम यह ऋषि कहाथा सो सत्य सत्यही कहाथा न्यायपूर्वक धर्मसे आचरण करतीहुई मैं तुझसे नहीं डरतीहूं हे शोभने जब तैंने इसराजाको अपना पति बनायाथा तभी सखीका पति होनेसे यह मेरा भी भर्त्ता होचुका २०।२१ तू मेरी पूज्य और मान्यहै ब्राह्मणी होनसे महापूज्य और बड़ी है इसहेतुसे तुमसे भी अधिक मेरा पूज्यतम यह राजऋषि है इसबातको, क्या तू नहीं जानती है २२ शौनकजी बोले उसके बचनको सुनकर देवयानी राजासे यह बचनबोली कि हेराजा अब मैं यहां न रहूंगी तैंने मेरा वियोग करदिया यह कहकर एकवारही नेत्रों में जलभरकर अपने पिता शुक्राचार्य्य के समीप जातीभई २३।२४फिर उसके पीछेपीछे राजाभी चला और उसको अनेकप्रकार से समझानेलगा परन्तु मारे क्रोधके लालनेत्र करतीहुई बहुत से समझानेपर भी नहीं लौटी २५ और नेत्रोंसे आंसू डालतीहुई राजाको यह बह कहतीभई शीघ्रही शुक्राचार्य्य के पास पहुंचती भयी उसके साथही शीघ्रतापूर्व्वक वह राजा भी शुक्रजीके पासपहुंचा २६ वहांस्थितहोकर

नन्तरंययातिस्तु पूजयामासभार्गवम् २७ (देवयान्युवाच) अधर्मेणजितोधर्म्मः प्रवृत्तमधरोत्तरम्। शर्मिष्ठायातिवृत्तास्ति दुहितावृषपर्वणः २८ त्रयोऽस्याञ्जनितापुत्रा राज्ञानेनययातिना। दुर्भगायाममद्वौतु पुत्रौतात! ब्रवीमिते. २९ धर्म्मज्ञइतिविख्यात एषराजाभृगूद्वह!। अतिक्रान्तश्चमर्यादां काव्यैतत्कथयामिते ३० (शुक्र उवाच) धर्म्मज्ञस्त्वंमहाराज ! योऽधर्म्ममकृथाःप्रियम्। तस्माज्जरात्वामचिराद्धर्षयिष्यतिदुर्जया ३१ (ययातिरुवाच) ऋतुंयोयाच्यमानाया नददातिपुमान्वृतः। भ्रूणहेत्युच्यतेब्रह्मन्! सचेहब्रह्मवादिभिः ३२ ऋतुकामांस्त्रियंयस्तु गम्यांरहसियाचितः। नयातियोहिधर्मेण ब्रह्महेत्युच्यतेबुधैः ३३ इत्येतानिसमीक्ष्याहङ्कारणानिभृगूद्वह!। अधर्म्मभयसंविग्नः शर्मिष्ठामुपजग्मिवान् ३४ (शुक्र उवाच) नत्वहंप्रत्यवेक्ष्यस्ते मदधीनोऽसि पार्थिव!। मिथ्याचरणधर्मेषु चौर्यंभवतिनाहुष! ३५ (शौनक उवाच) क्रोधेनोशनसाशप्तो ययातिर्नाहुषस्तदा। पूर्ववयःपरित्यज्य जरांसद्योऽन्वपद्यत ३६ (ययातिरुवाच) अतृप्तोयौवनस्याहं देवयान्यांभृगूद्वह!। प्रसादंकुरुमेब्रह्मन्! जरेयंमाविशेतमाम् ३७ (शुक्र उवाच) नाहंमृषावदाम्येतज्जरांप्राप्तोऽसिभूमिप!। जरान्त्वेतांत्वमन्यस्मिन् संक्रामय यदिच्छसि ३८ (ययातिरुवाच) राज्यभाक्सभवेद्ब्रह्मन्! पुण्यभाक्कीर्तिभाक्तथा। योदद्यान्मेवयःशुक्रस्तद्भवाननुमन्यताम् ३९ (शुक्र उवाच)

देवयानी अपने पिताको नमस्कार करतीभयी और राजा ययातिने भी शुक्राचार्य्यका पूजनकिया २७ फिर देवयानीबोली हे पिता अधर्मसे धर्मका नाश होगया क्योंकि जो वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठा त्यागी हुईथी उसके गर्भसे इस ययाति राजाने तीनपुत्र उत्पन्न करदिये हैं और मुझ अभागिनी के इसने दोही पुत्र उत्पन्न किये हैं हे तात पदसेही धर्मज्ञ जानाजाताहै परन्तु यह राजा मर्य्यादा का तोड़ने वाला है २८। ३० शुक्रजी बोले—हे महाराज धर्मज्ञहोकर जो तुमने अधर्म कियाहै इसअपराधसे तुमको महादुर्जया वृद्धावस्था प्राप्तहोगी ३१ ययाति बोला—हे ब्रह्मन् ऋतुकालको मांगनेवाली स्त्रीको जो ऋतुदान नहीं देताहै वह ब्रह्महत्या करनेवाला कहाता है ३१ और ऋतुकालकी इच्छा करनेवाली प्राप्तहोने के योग्य स्त्री को जो उसके कहने से भी ऋतुदान नहीं देता वह महाब्रह्महत्यावाला कहाता है ३३ हे आचार्य्यजी मैं इत्यादिक कारणों को देखके अधर्म के भयसे डरता हुआ शर्मिष्ठाको प्राप्त होताभया ३४ तब शुक्राचार्य्य जीने कहा हेराजन् तूमेरे आधीनहै इस हेतुसे मेरी आज्ञाके विना तेरा धर्मसे भी आचरण करना चोरीही कहाताहै ३५ शौनकजी बोले—कि क्रोधपूर्वक शुक्राचार्य्य के शाप देतेही वह राजा ययाति अपनी तरुण अवस्थाको त्यागकर तत्क्षणही जरा अवस्थाको प्राप्त होजाताभया ३६ यह देखकर राजा ययातिने कहा हे शुक्राचार्य्यजी मैं आपकीपुत्री इस देवयानी में यौवन करके तृप्तनहीं हुआहूं सो ऐसी कृपाकरो कि जरा अवस्था मुझको प्राप्त नहो ३७ शुक्राचार्य्य बोले—हे राजा मेरावचन मिथ्या नहीं होसका अवस्था तो तुझको अवश्य प्राप्तहोगी परन्तु जो तू भोगकी इच्छाकरता है तो इस जरावस्थाको तू किसी तरुण अवस्थावाले से बदललीजो—ययाति बोला—हे ब्रह्मन् जो मुझको अवस्था देगा वही राज्यका भोगनेवाला और कीर्त्तिमान

संक्रामयिष्यसिजरां यथेष्टंनहुषात्मजः। मामनुध्यायतत्त्वेन नचपापमवाप्स्यसि ४०
वयोदास्यतितेपुत्रो यःसराजाभविष्यति। आयुष्मान्कीर्तिमांश्चैव बहपत्यस्तथैवच ४१

इतिश्रीमत्स्यपुराणे ययातिचरित्रे द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

(शौनक उवाच)जरांप्राप्ययथातिस्तु स्वपुरंप्राप्यचैवहि। पुत्रंज्येष्ठंवरिष्ठंच यदुमित्य ब्रवीद्वचः१ (ययातिरुवाच) जरावलीचमांतात! पलितानिचपर्यगुः। काव्यस्योशनसः शापान्नचतृप्तोऽस्मियौवने२ त्वंयदो! प्रतिपद्यस्वपाप्मानञ्जरयासह। यौवनेनत्वदीयेन चरेयंविषयानहम्३ पूर्णेवर्षसहस्रेतु त्वदीयं यौवनंत्वहम्। दत्त्वासंप्रतिपत्स्यामि पाप्मान ञ्जरयासह ४(यदुरुवाच) सितश्मश्रुधरोदीनो जरसाशिथिलीकृतः। वलीसन्ततगात्र श्च दुर्दर्शोदुर्बलःकृश ५ अशक्तःकार्यकरणे परिभूतःसयौवने। सहोपजीविभिश्चैव त ज्जरांनाभिकामये ६ सन्तितेवहवःपुत्रा मत्तःप्रियतरान्नृप!। जरांग्रहीतुंधर्मज्ञ! पुत्र मन्यंवृणीष्ववै ७ (ययातिरुवाच) यस्त्वंमेहृदयाज्जातो वयस्त्वंनप्रयच्छसि। पापा न्मातुलसम्बन्धाद्दुष्प्रजातेभविष्यति ८ तुर्वसो! प्रतिपद्यस्व पाप्मानञ्जरयासह। यौ वनेनचरेयंवै विषयांस्तवपुत्रक! ९ पूर्णेवर्षसहस्रेतु पुनर्दास्यामि यौवनम्। तथैवप्रति पत्स्यामि पाप्मानञ्जरयासह १० (तुर्वसुरुवाच)नकामयेजरांतात! कामभोगप्रणा शिनीम्। वलरूपान्तकरणीं बुद्धिमानविनाशिनीम् ११ (ययातिरुवाच) यस्त्वंमेहृद याज्जातो वयस्त्वंनप्रयच्छसि। तस्मात्प्रजासमुच्छेदं तुर्वसो! तवयास्यति १२

होय ऐसी आप कृपाकरो ३८। ३९ शुक्राचार्य्यने कहा हेराजा मेरी कृपासे तू जराअवस्था को तरुणा वस्थासे वदललेगा और तुझको पापनहीं लगेगा ४० जो कोई तेरापुत्र तुझको अपनी तरुणअव- स्था देगा वह वहुतसी सन्तानों से युक्त दीर्घायु और कीर्त्तिमान् राजा होगा ४१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२॥

शौनकजी वोले–कि जराअवस्था को प्राप्तहोकर राजा ययाति अपने पुरमें जाकर अपने बड़ेपुत्र यदुसे यह वचन बोला १ कि हेपुत्र शुक्राचार्य्य के शापसे मुझको दारुण जरावस्था अर्थात् वृद्धावस्था प्राप्तहोगई है और यौवनसे मेरी तृप्ति नहीं हुईहै २ सो इस जराअवस्था सहित मेरे पापके शरीरको तू ग्रहणकर मैं तेरे यौवनसे भोगोंको भोगूंगा ३ फिर हज़ारवर्ष पीछे तेरे यौवनको तुझे देकर मैं अप- नी जरावस्था को ग्रहण करलूंगा ४ यदुवोला–जरावस्था से शिथिल अंग दुर्बल सिल्वटों समेतकृश ५ और कामकरने में असमर्थ ऐसी इस जरावस्थाको मैं यौवनावस्थामें नहीं चाहता ६ हे राजा आपके अन्यपुत्र मुझसे भी प्यारे हैं उनको अपनी जरा अवस्था देदो ७ ययाति वोला–जो तू मेरे हृदयसे उत्पन्नहुआ भी मुझको अपनी अवस्था नहीं देताहै इस हेतुसे तेरे कुलमें पापरूप मामाके सम्बन्धसे दुष्टरूप सन्तानहोवेगी ८ फिर तुर्वसु से कहा कि तू मेरी इस वृद्धावस्थाको ग्रहणकर तेरी अवस्थासे मैं भोगोंको भोगूंगा ९ फिर हज़ारवर्ष पीछे तेरे यौवनको देदूंगा और अपनी जरावस्था लेलूंगा १० तुर्वसुने कहा–हेतात काम भोग वलरूप बुद्धि और मान इन सवकी नाशकरनेवाली वृद्धावस्थाको मैं नहीं चाहता ११ ययातिने कहा–कि मेरे शरीरसे उत्पन्नहुआ तू जो अपनी अवस्था मुझको नहीं

संकीर्णश्चोरधर्मेषु प्रतिलोमचरेषुच। पिशिताशिषुलोकेषु नूनंराजाभविष्यसि १३
गुरुदारप्रसक्तेषु तिर्य्यग्योनिरतेषुच। पशुधर्मिषुम्लेच्छेषु पापेषुप्रभविष्यसि १४
(शौनक उवाच)एवंसतुर्वसुंशप्त्वा ययातिःसुतमात्मनः। शर्मिष्ठायाःसुतंज्येष्ठं द्रुह्यंवचन
मब्रवीत् १५ (ययातिरुवाच) द्रुह्य! त्वंप्रतिपद्यस्व वर्णरूपविनाशिनीम्। जरांवर्षस
हस्रंमे यौवनंस्वंप्रयच्छताम् १६ पूर्णेवर्षसहस्रेतु तेप्रदास्यामियौवनम्। स्वञ्चादास्यामि
भूयोऽहंपाप्मानञ्जरयासह १७ (द्रुह्यउवाच) नराज्यंनरथंनाश्वं जीर्णोभुङ्क्तेनच
स्त्रियम्। नरागश्चास्यभवति तञ्जरान्तेनकामये १८ (ययातिरुवाच) यस्त्वंमेहृदया
ज्जातो वयःस्वंनप्रयच्छसि। तद्द्रुह्य!वैप्रियःकामो नतेसपत्स्यतेक्वचित् १९ नौरूपप्ल
वसञ्चारो यत्रनित्यंभविष्यति। अराज्यभोजशब्दन्त्वं तत्रप्राप्स्यसिसान्वयः २० (य
यातिरुवाच) अनो!त्वंप्रतिपद्यस्व पाप्मानञ्जरयासह। एकंवर्षसहस्रन्तु चरेयंयौवने
नते २१ (अनुरुवाच) जीर्णःशिशुरिवादत्ते कालेऽन्नमशुचिर्यथा। नजुहोतिचकाले
ऽग्निं तांजरांनाभिकामये २२ (ययातिरुवाच) यस्त्वंमेहृदयाज्जातो वयःस्वंनप्रयच्छ
सि। जरादोषस्त्वयोक्तो यस्तस्मात्त्वंप्रतिपद्यसे २३ प्रजाश्चयौवनंप्राप्ता विनश्यन्ति
ह्यनो! तव। अग्निप्रस्कन्दनगतस्त्वञ्चाप्येवंभविष्यसि २४ (ययातिरुवाच) पूरो!
त्वंप्रतिपद्यस्व पाप्मानंजरयासह। त्वंमेप्रियतरःपुत्रस्त्वं वरीयान्भविष्यसि २५ जरा
वलीचमांतात! पलितानिचपर्यगुः। काव्यस्योशनसःशापान्नचतृप्तोऽस्मियौवने २६

ता है इस हेतुसे तेरा वंश नष्ट होजायगा १२ और चोर कर्मी विपरीत चाल चलनेवाले मांसभक्षी
गुरुकी स्त्रीसे भोगकरनेवाले और पशुओंसे भोगकरनेवाले ऐसे पापी म्लेच्छोंका तू राजाहोगा १३।
१४ शौनकजी बोले कि इस प्रकारसे शापदेके वह ययाति शर्मिष्ठा के बड़े पुत्र द्रुह्य से बोला १५ हे
द्रुह्य वर्णरूपकी नाशकरनेवाली वृद्धावस्थाको तू ग्रहणकर और हज़ार वर्षतक अपनी यौवनावस्था
मुझकोदे १६ फिर हज़ार वर्षपीछे तेरी यौवनावस्था तुझको देकर तुझसे अपनी जरावस्थालेलूं
गा १७ द्रुह्य बोला—जिस अवस्थामें राज्य रथ अश्व—और स्त्री इत्यादिकों का भोगनहीं करसक्ता
और न कुछ प्रीति रहसक्ती ऐसी तेरी अवस्थाको मैं नहीं चाहता १८ ययातिने कहा कि जो तू मेरे
शरीरसे उत्पन्नहुआ भी मुझको अपनी अवस्था नहीं देताहै इस हेतुसे तेरे वाँछित मनोरथ कभी
उत्पन्न न होंगे १९ और जहाँ हमारे तुम्हारे रूपादिकों के बदलनेका कुछ विचारहोगा वहाँ सब राजाओं
में तुम राज्य पदवी से रहित कहलाओगे २० फिर राजा ययातिने अनुसेकहा कि हे अनु तू मुझको
हज़ारवर्षतक अपना यौवन दे उस्से मैं विषयोंको भोगूंगा और मेरी वृद्धावस्था को तू ग्रहणकर २१
तब अनुबोला—कि हेतात वृद्धहुआ मनुष्य बालकके समान सब समयमें अपवित्रहोकर भोजनको
ग्रहणकरता है और किसी समयपर भी अग्निमें हवनादिक नहीं करसक्ताहै ऐसी वृद्धावस्थाको मैं
नहीं ग्रहण करता २२ ययातिने कहा कि मेरे हृदयसे उत्पन्नहोकर भी जो मुझे अपना यौवन नहीं
देताहै इस हेतुसे हे अनु जरावस्थामें जो तू दोष बताताहै ऐसीही अवस्था तुझकोभी कभी प्राप्तहोवेगी
और युवावस्था की तेरी सन्तान नष्ट होजावेंगी २३।२४ फिर अपने पुत्र पूरुसे ययाति बोला कि हे पूरु

किञ्चित्कालंचरेयंवै विषयान्वयसातव। पूर्णेवर्षसहस्रेतु प्रतिदास्यामियौवनम् २७
स्वञ्चैवप्रतिपत्स्येऽहं पाप्मानंजरयासह। एवमुक्तःप्रत्युवाच पूरुःपितरमञ्जसा २८
यथात्थत्वंमहाराज! तत्करिष्यामितेवचः।प्रतिपत्स्यामितेराजन्! पाप्मानंजरयासह२९
गृहाणयौवनंमत्तश्चर कामान्यथेप्सितान्। जरयाहंप्रतिच्छन्नो वयोरूपधरस्तव ३०
यौवनंभवतेदत्त्वा चरिष्यामियथेच्छया ३१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे ययातिचरित्रवर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

(शौनक उवाच) एवमुक्तःसराजर्षिः काव्यंस्मृत्वामहाव्रतम्। संक्रामयामासजरां तदापुत्रेमहात्मनि १ पौरवेणाथवयसा ययातिर्नहुषात्मजः। प्रीतियुक्तोनरश्रेष्ठश्चचार विषयान्प्रियान् २ यथाकामंयथोत्साहं यथाकालंयथासुखम्। धर्माविरुद्धान्राजेन्द्रो यथार्हतिसएवहि३देवानतर्पयद्यज्ञैः श्राद्धैरपिपितामहान्। दीनाननुग्रहैरिष्टैः कामैश्च द्विजसत्तमान् ४ अतिथीनन्नपानैश्च विशश्चप्रतिपालनैः। आनृशंस्येनशूद्रांश्चदस्यून्निग्रहणेनच ५ धर्मेणचप्रजाःसर्व्वा यथावदनुरञ्जयन्। ययातिःपालयामाससाक्षादिन्द्रइवापरः ६ सराजासिंहविक्रान्तो युवाविषयगोचरः। अविरोधेनधर्मस्य चचारसुखमुत्तमम् ७ ससम्प्राप्यशुभान्कामान् तृप्तःखिन्नश्चपार्थिवः। कालंवर्षसहस्रान्तं सस्मारमनुजाधिपः ८ परिचिन्त्यसकालज्ञःकलाःकाष्ठाश्चवीर्य्यवान्।पूर्णमत्वाततःका-

पापरूपी इसवृद्धावस्थाको तू ग्रहणकर तूहीमेरा अत्यन्तप्यारा पुत्रहोवेगा हे पुत्र मुझको शुक्राचार्य्य के शापसे वृद्धावस्था प्राप्तहोगई है और यौवनसे मैं तृप्तनहीं हुआहूं मैं कुछकालतक तेरी अवस्थासे सुखोंको भोगूंगा फिर हज़ारवर्ष के पीछे तेरी अवस्था तुझे देदूंगा २५। २७ और अपनी वृद्धावस्था कोग्रहण करलूंगा.इस बातके सुनतेही पूरु शीघ्रही पितासे बोला हेमहाराज जो तुमकहतेहो उसी को मैं ग्रहणकरूंगा और जो आज्ञाकरोगे उसीका प्रतिपालनकरूंगा अर्थात् तुम्हारी जरावस्थाको ग्रहणकरूंगा २८। २९ मुझसे आप यौवन लेकर यथेच्छ भोगोंको भोगो और अपनी सबकामनाओं को पूर्णकरो ३० और तुम्हारी वृद्धावस्थाको प्राप्त होकर मैं अपनी यौवनावस्था आपको देकर कहीं विचरूंगा ३१॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

शौनकजी कहते हैं कि पूरु के इसप्रकार कहनेके पीछे वह राजा ययाति शुक्राचार्य्य का स्मरण करके उस महात्मा पूरु नाम पुत्रमें अपनी वृद्धावस्थाको स्थापन करताभया १ फिर वह नहुषका पुत्र राजाययाति बड़ी प्रसन्नतासे विषयोंको भोगनेलगा २ और कालके अनुसार इच्छापूर्वक उत्साहयुक्तहोकर धर्मके अनुसार यथार्थ रीतिसे देव पितृ तर्पण पितृश्राद्ध यज्ञ और दीनपुरुषोंपर अनुग्रह ब्राह्मणोंका मनोवांछित करना अभ्यागतोंको अन्नपानादि देना वैश्योंकी पालनाकरनी शूद्रोंपर क्रूरदृष्टि न रखना चोरोंका बधकरना इत्यादि सब धर्मोंकरके यह राजा ययाति अपनी सब प्रजाको साक्षात् इन्द्रकेही समान विराजमानहोकर पालताभया ३। ६ सिंहके समान पराक्रमवाला विषयोंको भोगताहुआ वहराजा धर्मके विरोधसे रहितहोके उत्तम सुखका आचरण करताभया ७ फिर हज़ार वर्ष पर्य्यन्त सुन्दर भोगों के भोगसे तृप्तहोकर उससमयका चिन्तवन करताभया ८ फिर चिन्तवन

त्वं पूरुंपुत्रमुवाचह ९ नजातुकामःकामानामुपभोगेनशाम्यति। हविषाकृष्णवर्त्मेव भूयएवाभिवर्द्धते १० यत्पृथिव्यांव्रीहियवं हिरण्यंपशवःस्त्रियः। नालमेकस्यतत्सर्वमितिमत्वाशमंव्रजेत् ११ यथासुखंयथोत्साहं यथाकाममरिन्दम!। सेविताविषयाःपुत्र! यौवनेनमयातव १२ पूरो! प्रीतोऽस्मिभद्रंते गृहाणेदंस्वंयौवनम्। राज्यञ्चैवगृहाणेदं त्वंहिमेप्रियकृत्सुतः १३ (शौनक उवाच) प्रतिपेदेजरांराजा ययातिर्नाहुषस्तदा। यौवनंप्रतिपेदे सपूरुःस्वंपुनरात्मनः १४ अभिषेक्तुकामञ्चनृपं पूरुंपुत्रंकनीयसम्। ब्राह्मणप्रमुखावर्णा इदंवचनमब्रुवन् १५ कथंशुक्रस्यदौहित्रं देवयान्याःसुतंप्रभो!। ज्येष्ठंयदुमतिक्रम्यराज्यं पूरोःप्रदास्यसि १६ ज्येष्ठोयदुस्तवसुतस्तुर्वसुस्तदनन्तरम्। शर्मिष्ठायाःसुतोद्रुह्यु स्तथानुःपूरुरेवच १७ कथंज्येष्ठमतिक्रम्य कनीयान्राज्यमर्हति। एतत्सम्बोधयामस्त्वां स्वधर्ममनुपालय १८ (ययातिरुवाच) ब्राह्मणप्रमुखावर्णाः सर्वेशृण्वन्तुमेवचः। ज्येष्ठंप्रतियतोराज्यं नदेयंमेकथञ्चन १९ ममज्येष्ठेनयदुना नियोगोनानुपालितः। प्रतिकूलःपितुर्यश्च नसपुत्रःसतांमतः २० मातापित्रोर्वचनकृद्धितःपथ्यश्चयःसुतः। सपुत्रःपुत्रवद्यश्च वर्त्ततेपितृमातृषु २१ यदुनाहमवज्ञातस्तथातुर्वसुनापिवा। द्रुह्युणचानुनाचैव मय्यवज्ञाकृताभृशम् २२ पूरुणामेकृतंवाक्यं मानितञ्चविशेषतः। कनीयान्ममदायादो जरायेनधृताम‍म २३ ममकामःसचकृतः पूरुणापुत्ररूपिणा। शुक्रेणचवरोदत्तः काव्येनोशनसास्वयम् २४ पुत्रोयस्त्वनुवर्तेत सराजापृथिवीपतिः। भव

करतेहुए उसकालको पूर्णहुआ जानकर अपने उस पूरुनाम पुत्रसे बोला ९ कि हे पुत्र भोगों से मनुष्यकी कभीतृप्ति नहींहोती जैसे कि घृतगेरने से अग्निदीप्त होती है उसीप्रकार कामाग्निभी प्रतिदिनके भोगोंसे बढ़ती है शान्तनहींहोती १० जो पृथ्वीके धान्य पशु और स्त्री आदिक पदार्थ हैं वह एकहीके नहीं होसके ऐसाविचारकर मैं शान्तहोगयाहूं ११ हेपुत्र मैंने तेरे यौवनसे अपनी शक्ति के अनुसार सुखपूर्वक विषयभोगों को कियाहै १२ इससे मैं भवतेरेऊपर प्रसन्नहूं तू अपने यौवन को ग्रहणकर और मेरे सबराज्यकोभी स्वीकारकर तूहीमेराप्यारा और हितकारी पुत्रहै १३ शौनकजी कहतेहैं–कि तबवह ययाति अपनी वृद्धावस्थाको प्राप्तहोगया और पूरु फिर अपने यौवनको प्राप्त होगया १४ और उसीछोटे पुत्रपूरुको राज्याभिषेक करनेको उपस्थितहुआ तबब्राह्मणादिक वर्णऐसा कहनेलगे कि १५ शुक्रका दौहित्र देवयानी के बड़पुत्र यदुको छोड़कर पूरुको राज्य कैसे देतेहो १६ तुम्हारा बड़ापुत्रतो यदुहै उससेछोटा तुर्वसुहै तीसरा शर्मिष्ठाकापुत्र द्रुह्युहै उससेछोटा अनुहै और इनसबसे पिछलापूरुहै १७ सो इनबड़े पुत्रोंको छोड़कर छोटेपुत्रको कैसेराज्य देतेहो आपको धर्म की पालनाकरनी योग्यहै १८ तब ययातिने कहाकि ब्राह्मणआदि सबलोगमेरे वचनको सुनो किमेरे बड़ेपुत्रयदुने मेरे वचनको नहींमाना इसहेतु से उसको राज्यनहींदेताहूं क्योंकि जो अपने पिताकी आज्ञा नहीं करताहै उसको श्रेष्ठपुरुष पुत्रनहीं कहते हैं १९।२१ और तुर्वसु द्रुह्यु और अनु इनतीनोंनेभी मेरीआज्ञा बहुत भंगकरी २२ और पूरुने मेरावचनमाना इसी से यहमेरा छोटापुत्र पूरुही राज्यका भागी है इसपूरुने मेरीवृद्धावस्था धारणकरी है और इसी पुत्रके कारणसे मैंने सब अपनी कामनाओं

न्तःप्रतिजानन्तु पूरुंराज्येभिषिच्यताम् २५ (प्रकृतयऊचुः) यःपुत्रोगुणसम्पन्नो मा
तापित्रोर्हितःसदा। सर्वसोऽर्हतिकल्याणं कनीयानपिसप्रभुः २६ अर्हःपूरोरिदंराज्यं यः
प्रियःप्रियकृत्तव। वरदानेनशुक्रस्य नशक्यंवक्तुमुत्तरम् २७ (शौनक उवाच) पौरजा
नपदैस्तुष्टैरित्युक्तोनाहुषस्तदा। अभिषिच्यततःपूरुं राज्येस्वसुतमात्मजम् २८ दत्त्वा
चपूरवेराज्यं वनवासायदीक्षितः। पुरात्सनिर्ययौराजा ब्राह्मणैस्तापसैःसह २९ यदोस्तु
यादवाजाता तुर्वसोर्यवनाःसुताः। द्रुह्यस्यतुसुताभोजा अनोस्तुम्लेच्छजातयः ३०
पूरोस्तुपौरवोवंशो यत्रजातोऽसिपार्थिव! इदंवर्षसहस्राणि राज्यंकुरुकुलागतम् ३१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेनाहुषोपाख्यानेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

(शौनक उवाच) एवंसनाहुषोराजा ययातिःपुत्रमीप्सितम्। राज्येऽभिषिच्यमुदि
तो वानप्रस्थोऽभवन्मुनिः १ उषित्वावनवासं सब्राह्मणैःसहसंश्रितः। फलमूलाशनो
दान्तो यथास्वर्गमितोगतः २ सगतःस्वर्गवासन्तु न्यवसन्मुदितःसुखी। कालस्यना
तिमहतःपुनःशक्रेणपातितः ३ विवशःप्रच्युतःस्वर्गादप्राप्तोमेदिनीतलम्। स्थितश्चा
सीदन्तरिक्षे सतदेतिश्रुतंमया ४ ततएवपुनश्चापिगतःस्वर्गमितिश्रुतिः। राज्ञावसुम
तासार्द्धं मष्टकेनचवीर्य्यवान्। प्रतर्दनेनशिविना समेत्यकिलसंसदि ५ (शतानीकउ

को पूर्णकियाहै प्रथम शुक्राचार्य्यने वरदियाथा कि २३।२४जोतेरी आज्ञाके अनुसार चलेगा वहपृथ्वी
पति राजाहोगा इनहेतुओंसे तुमपूरुकोही राज्याभिषेक होनेके योग्य समझो २५ तबराजाके पुरज
नलोगबोले कि जो पुत्रसब गुणशीलसे युक्तहोकर मातापिताका हितकारीहो वह चाहेछोटाभीहोय
परन्तुवही राज्यादिके प्राप्तहोने के योग्यहै २६ जिसने तुम्हारा हितकियाहै उसी पूरुको राज्यदेना
योग्यहै और शुक्राचार्य्यकाभी यहीवरदानहै इसहेतुसे इसमेंकुछभी कहनायोग्य नहीं है २७ शौनक
जी बोले—जब सबपुरवासियों ने इसप्रकारके वचनकहे तबतो राजा ययाति अपनेछोटे पूरुको राज
गद्दीपर बैठाताभया २८ और पूरुको राज्यदेकर वहराजा संन्यास धारणकरबहुतसे ब्राह्मण और तप-
स्वियों से युक्तहो अपने नगरसे बाहर निकलकर वनको जाताभया २९ यदुके यादव पुत्रहुए—तुर्वसु
के यवन संज्ञकपुत्रहुए—द्रुह्युके भोजसंज्ञकपुत्रहुए—अनुके म्लेच्छजातिवाले पुत्रहुए ३० और पूरुका
पौरवनाम वंशहोताभया राजापूरुकावंश हज़ारवर्ष पीछे कुरुवंशनामसे प्रसिद्धहोताभया ३१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

शौनकजी बोले—कि इसप्रकारसे राजा ययाति अपने पुत्र पूरुको राज्य देकर आप वानप्रस्थ
संज्ञक मुनिहोताभया १ वहराजा ब्राह्मणों समेत फलमूल इत्यादि भोजनोंको करताहुआ बहुतदिन
वनमें वासकर फिर कालपाकर स्वर्गको गया २ वहाँ स्वर्गमें जाकर सुखपूर्वक वासकरताभया फिर
थोड़ेही कालमें इन्द्रने पृथ्वीपर पटकना चाहाथा परन्तु गिरते गिरते राजा आकाशहीमें खड़ारहगया
और अष्टकआदिक राजाओंके सत्संगसे फिर लौटकरस्वर्गकोगया ऐसा सुनाजाता है ३। ४ कि वसु
मान् अष्टकराजा और प्रतर्दनशिविराजाके साथहोकर यह ययाति आकाशहीसे फिर स्वर्गको जाता-
भया ५ शतानीकने पूछा—हे भगवन् उस राजाययातिको इन्द्रने नीचे कैसे गेरा और किस कर्मकरके

वाच) कर्मणाकेनसदिवं पुनःप्राप्तोमहीपतिः । कथमिन्द्रेणभगवन् ! पातितोमेदिनी तले ६ सर्वमेतदशेषेण श्रोतुमिच्छामितत्त्वतः । कथ्यमानंत्वयाविप्र ! देवर्षिगणसन्निधौ ७ देवराजसमोह्यासीद्ययातिःपृथिवीपतिः । वर्द्धनःकुरुवंशस्य विभावसुसमद्युतिः ८ तस्यविस्तीर्णयशसः सत्यकीर्तेर्महात्मनः । श्रोतुमिच्छामिदेवेश ! दिविचेहचसर्वशः ९ (शौनक उवाच) हन्ततेकथयिष्यामि ययातेरुत्तमांकथाम् । दिविचेहचपुण्यार्थां सर्वपापप्रणाशिनीम् १० ययातिर्नाहुषोराजा पूरुंपुत्रं कनीयसम् । राज्येऽभिषिच्यमुदितः प्रवव्राजवनंतदा ११ अन्तेषुसविनिक्षिप्य पुत्रान्यदुपुरोगमान् । फलमूलाशनोराजा वनेऽसौन्यवसच्चिरम् १२ सजितात्माजितक्रोधस्तर्पयन्पितृदेवताः । अग्नींश्चविधिवज्जुह्वन् वानप्रस्थविधानतः १३ अतिथीन्पूजयन्नित्यं वन्येनहविषाविभुः । शिलोञ्छवृत्तिमास्थाय शेषान्नकृतभोजनः १४ पूर्णंसहस्रंवर्षाणामेवंवृत्तिरभून्नृपः । अम्बुभक्षःसमाब्दांस्त्रीनासीन्नियतवाङ्मनाः १५ ततस्तुवायुभक्षोऽभूत्संवत्सरमतन्द्रितः । पञ्चाग्निमध्येचतपस्तेपे संवत्सरंपुनः १६ एकपादस्थितश्चासीत् षण्मासाननिलाशनः । पुण्यकीर्तिस्ततःस्वर्गं जगामावृत्यरोदसी १७ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे ययातिचरित्रे पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

(शौनक उवाच) स्वर्गतस्तुसराजेन्द्रो न्यवसद्देवसद्मनि । पूजितस्त्रिदशैःसाध्यैर्मरुद्भिर्वसुभिस्तथा १ देवलोकाद्ब्रह्मलोकं सञ्चरन्पुण्यकृद्वशी । अवसत्पृथिवीपालोदीर्घं

फिर स्वर्गमें प्राप्तहोगया इस सबकथाको हमसब देवर्षिगणों से आपकहनेको योग्य हैं ६।७ वहराजा ययाति इन्द्रके समान प्रतापी सूर्य्यके समान कांतिवाला और कुरुवंशका बढ़ानेवालाथा ८ हे देवेश उस महात्माके यहाँके और स्वर्गके विस्तृत कियेहुए यशोंको हमसुनना चाहते हैं ९ शौनकजीबोले-अब सबपापोंकी नाशकरनेवाली उत्तम और महापवित्र राजा ययातिकी कथाको मैं कहताहूं तुम मनलगाकर सुनो १० राजा ययाति अपने छोटे पुत्र पूरुको राज्यपर बैठाकर संन्यास धारणकर बड़ी प्रसन्नतासे वनकोगया ११ अर्थात् पूरुको राज्यपर बैठाके और यदुआदिक अन्य बड़े भाइयोंको राज्य के नीचे कर्मोंपर स्थित करके कन्दफल मूलादिका भक्षणकरताहुआ बहुत कालतक वनमें वासकरताभया १२ मनको वशकर क्रोधकोजीत पितर और देवताओंके तर्पण अग्निहोत्रादि कर्म यह सब वनमें वानप्रस्थ आश्रमकीविधिसे करताभया १३ प्रतिदिन वनकेफलादिकों से अभ्यागतका पूजना शिलोंछवृत्तिसे उपार्जन किये अन्नका भोजनकरना इत्यादि नियमोंको एक हजार १००० वर्षतक करताभया फिर तीनवर्षतक जलहीका भक्षणकिया और मौनधारण किया फिर एकवर्षतक पंचाग्नि तपा और छःमहीनेतक एकचरण से खड़ेहोके तप किया और वायुका भक्षणकिया १४ । १७ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

शौनकजी कहतेहैं-कि स्वर्गमें प्राप्तहुआ वहराजा साध्य मरुद्गण वसु और देवताओं के गणों से पूजित होताभया १ फिरपुण्यके प्रभावसे इच्छापूर्वक विचरताहुआ ब्रह्मलोकमें प्राप्तहुआ और वह

कालमितिश्रुतिः २ सकदाचिन्नृपश्रेष्ठः ययातिःशक्रमागतः । कथान्तेतत्रशक्रेण पृष्टः सपृथिवीपतिः ३ (शक्र उवाच) यदासपूरुस्तवपुत्रेषुराजन्! जरांगृहीत्वाप्रचचारलोके। तदाराज्यंसम्प्रदायैवत्वमस्मै त्वयाकिमुक्तःकथयेहसत्यम् ४ (ययातिरुवाच) प्रकृत्यनुमतेपूरुं राज्येकृत्वेदमब्रुवम् । गङ्गायमुनयोर्मध्ये कृत्स्नोऽयंविषयस्तव । मध्येपृथिव्यास्त्वंराजा भ्रातरोऽन्तेऽधिपास्तव ५ अक्रोधनःक्रोधनेभ्योविशिष्टस्तथातितिक्षुरतितिक्षोर्विशिष्टः। अमानुषेभ्योमानुषश्चप्रधानो विद्वांस्तथैवाविदुषःप्रधानः ६ आक्रोश्यमानोनाक्रोशेन्मन्युमेवतितिक्षति । आक्रोष्टारंनिर्दहतिसुकृतंचास्यविन्दति ७ नारुन्तुदस्यान्ननृशंसवादी नहीनतःपरमभ्याददीत । ययाऽस्यवाचापरउद्विजेत नतांवदेद्रुशतीपापलोल्याम् ८ अरुन्तुदंपुरुषंतीव्रवाचं वाक्कण्टकैर्वितुदन्तंमनुष्यान्। विन्द्यादलक्ष्मीकतमंजनानां मुखेनिबद्धांनिर्ऋतिंवहन्तम् ९ सद्भिःपुरस्तादभिपूजितःस्यात् सद्भिस्तथापृष्ठतोरक्षितःस्यात् । सदासतामतिवादांस्तितिक्षेत् सतांवृत्तंपालयन्साधुवृत्तः १० वाक्सायकावदनान्निःपतन्ति यैराहतःशोचतिरात्र्यहानि।परस्यनोमर्मसुतेपतन्तितान् पण्डितोनावसृजेत्परेषु ११ नास्तीदृशंसम्वननं त्रिषुलोकेषुकिञ्चन । यथामैत्रीचलोकेषु दानञ्चमधुराचवाक् १२ तस्मात्सान्त्वंसदावाच्यं पुरुषंनैवकुत्रचित् । पूज्यान्सम्पूजयेद्द्यान्नाभिशापंकदाचन १३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे नाहुषोपाख्याने षट्त्रिंशोध्यायः ३६ ॥

भी सुनाजाताहै कि उसब्रह्मलोकमें बहुतकालतक वासकिया २ फिर एकसमय स्वर्गमें आकर इन्द्र के स्थानको प्राप्तहुआ ३ तबइन्द्रने इससेपूछा हे राजन् तेरे पुत्रोंमेंउत्तम पूरुतेरी वृद्धावस्थाको ग्रहण करके सबसंसारमें विचरा फिरतेंने जब उसको राज्यदियाथा उससमय जो तुमने कहाथा उसको सत्य २ कहो ४ ययातिने कहा कि मैंने अपनेमंत्री आदिकोंकी अनुमतिसे राज्यदेके अपने पूरुनाम पुत्रसे यहकहाथा कि गंगायमुनाके मध्यका जो सब देशहै वह तेराहै और तूही पृथ्वीके मध्यमेंराजा होगा और अन्यतेरे भाई तुझसे नीचेरहेंगे ५ और आगे लिखीहुई शिक्षादी कि क्रोधवालोंसे क्रोध रहित श्रेष्ठहै- क्षमारहित पुरुषोंसे सहनशील श्रेष्ठहै--वसुआदि जातियोंमें मनुष्य प्रधानहै--मूर्खोंसे विद्वान्श्रेष्ठहै-जो क्रोधसे गालीआदि देनेवालेपर क्षमाकरे वही उसक्रोधीको भस्मकरदेताहै और उसके सुकृतको आपलेलेताहै६।७और पेट पकड़ताही रहजाय ऐसाकिसीसे कठोर वचन न कहै--चांडाला-दिसे कोई उत्तमवस्तु न ग्रहणकरे--जिस वाणीसे दूसरेको खेदहो ऐसी कठोरवाणी न बोले--दरिद्री कठोर बोलनेवाला--और वाणीरूपी कांटोसे अन्य लोगोंको छेदनेवाला इन सबलोगों को नरकमें प्राप्तहोनेवालोंके समान और महानीचजनोंके तुल्यहीजाने ८।९ श्रेष्ठ पुरुषोंसे प्रशंसनीयरहै परोक्षमें भी श्रेष्ठपुरुषोंसे रक्षितरहै उनश्रेष्ठ पुरुषोंके विवाद वचनोंकोभी सहे--उनके कहेहुए वचनोंकी पालनाकरे--उत्तम व्रतमेंरहे १० जिनकेमुखसे वाणीरूपी बाण गिरतेहैं उन्होंसे छिदाहुआ पुरुष तीन दिनतक शोकसेयुक्त रहताहै इसहेतुसे बुद्धिमान् पुरुष दूसरोंसे मर्मभेदी बाणके समान वचन नकहे ११ इसत्रिलोकी में जैसे कि मित्रता--दान--और मीठाबोलना यह तीनों उत्तम हैं वैसा और कोई

(इन्द्रउवाच) सर्वाणिकार्याणिसमाप्यराजन्! गृहान्परित्यज्यवनंगतोऽसि। तत्त्वां पृच्छामिनहुषस्यपुत्र! केनापितुल्यस्तपसाययाते १ (ययातिरुवाच) नाहंदेवमनुष्येषु नगन्धर्वमहर्षिषु। आत्मनस्तपसातुल्यं कञ्चित्पश्यामिवासव! २ (इन्द्रउवाच) यदावमंस्थाःसदृशःश्रेयसश्च पापीयसश्चाविदितप्रभावः। तस्माल्लोकाऽह्यन्तवन्तस्तवेमे क्षीणेपुण्येपतितोऽस्यद्यराजन्!३ (ययातिरुवाच) सुरर्षिगन्धर्वनरावमानात् क्षयंगतामे यदिशक्रलोकाः। इच्छाम्यहंसुरलोकाद्विहीनः सतांमध्येपतितुंदेवराज! ४ (इन्द्रउवाच) सतांसकाशेपतितोऽसिराजन्! च्युतःप्रतिष्ठांयत्रलब्धासिभूयः। एवंविदित्वातुपुनर्यथाते नतेऽवमान्याःसदृशःश्रेयसेच ५ (शौनक उवाच) ततःपपातामरराजजुष्टात् पुण्याल्लोकात्पतमानंययातिम्। संप्रेक्ष्यराजर्षिवरोष्टकस्तमुवाचसद्धर्मविधानगोप्ता ६ (अष्टकउवाच) कस्त्वंयुवावासवतुल्यरूपः स्वतेजसादीप्यमानोयथाग्निः। पतस्युदीर्णोऽम्बुधरप्रकाशः खेखेचराणांप्रवरोयथार्कः ७ दृष्ट्वाचत्वांसूर्यपथात्पतन्तं वैश्वानरार्कद्युतिमप्रमेयम्। किन्नुस्विदेतत्पततीवसर्वे वितर्कयन्तःपरिमोहिताःस्मः ८ दृष्ट्वाचत्वाधिष्ठितंदेवमार्गे शक्रार्कविष्णुप्रतिमप्रभावम्। प्रत्युद्गतास्त्वांवयमद्यसर्वे तस्मात्पातेतवजिज्ञासमानाः ९ नचापित्वांधृष्णवःप्रष्टुमग्रे नचत्वमस्मान्पृच्छसिकेवयंस्म। तत्वांपृ

पदार्थ नहीं उत्तमहै १२ इसहेतुसे सदैव शांतिकेही वचनकहे उत्तम पुरुषों को माने और किसी को शापकभी न दे १३॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

इन्द्रने कहा हे राजन् मैं तुमसे यह पूछताहूं कि जब तुम सबकार्यों को समाप्तकर गृहको त्याग वनमें गयेथे तब वहाँ वनमें जाकर तुमने किसके समान तपकियाथा १ ययाति बोला—देवता—मनुष्य—गन्धर्व—और महर्षि इन सबका तपमैं अपने तपके समान नहीं समझताहूं २ तब इन्द्रने कहा हे राजा तू श्रेष्ठ पुरुषों के प्रभावको नहीं जानता है और अपनेसमान पुरुषोंका अपमान करता है इस हेतुसे अब इनलोकों में तू निवासकरने के योग्य नहीं है क्योंकि इसपापसे यहाँके तेरे निवास का नाश होकर तू पुण्यक्षीणहोकर पतित होगया ३ ययातिने कहा हे इन्द्र जोसुर ऋषि और गन्धर्व इन सबके अपमान से यह मेरे लोक क्षीणहोगये तो मैं स्वर्ग लोकसे हीनहोके श्रेष्ठपुरुषों में पड़ना चाहताहूं ४ इन्द्रनेकहा तू अभी श्रेष्ठ पुरुषों में गेराजाता है फिर उन श्रेष्ठपुरुषोंके प्रतापसे प्रतिष्ठाको प्राप्तहोगा हे ययाति ऐसाजानकर अबतुझको श्रेष्ठपुरुषों का अपमान कभी न करनाचाहिये ५ शौनकजी कहते हैं—कि इसके अनन्तर वह राजा स्वर्गसे गेरागया उस समय उस गिरतेहुए राजाको मध्यलोकमें स्थित होनेवाले श्रेष्ठधर्मके ज्ञाता अष्टकनाम राजऋषिने देखकर यह वचनकहा ६ कि हे तरुण अवस्थावाले इन्द्रके सदृशरूपवाले अग्निके समान कान्तिसे युक्त और ताराओं में सूर्य्यके समान ऐसा होकर भी जो तू स्वर्गसे गिरता है सो तू कौनहै हे सूर्य्याग्निकेसमान कान्तिवाले तुझ सूर्य्यके मार्गसे गिरनेवाले को हम सब लोग देखके तेरे गिरनेही के सदृश अपनेको भी मानकर तर्कणा करके मोहित होगये हैं स्वर्गके मार्गमें इन्द्र सूर्य्य और विष्णुके समान कान्तिवाला तुझको देख कर तेरेपास आकर खड़ेहुये हैं और तुझसे पूछनेकी तो इच्छाकरते हैं परन्तु तेरेतेजके प्रतापसे हम

च्छामिस्पृहणीयरूपं कस्यत्वंवाकिन्निमित्तंत्वमागाः १० भयन्तुतेऽव्येतुविषादमोहौ त्य
जाशुदेवेन्द्रसमानरूप!। त्वांवर्तमानंहिसतांसकाशे नालंप्रसोढुंबलहापिशक्तः ११ स
न्तःप्रतिष्ठाहिसुखच्युतानां सतांसदैवामरराजकल्प!। तेसङ्गताःस्थावरजंगमेशाः प्रति
ष्ठितस्त्वंसदृशेषुसत्सु १२ प्रभुरग्निःप्रतपने भूमिरावपनेप्रभुः । प्रभुःसूर्य्यःप्रकाशाच्च
सतांचाभ्यागतःप्रभुः १३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेनाहुषोपाख्यानेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

(ययातिरुवाच)अहंययातिर्नहुषस्यपुत्रः पूरोःपितासर्वभूतावमानात्। प्रभ्रंसितोऽहंसुर
सिद्धलोकात् परिच्युतःप्रपताम्यल्पपुण्यः १ अहंहिपूर्वोवयसा भवद्भ्यस्तेनाभिवादंभव
तांप्रयुञ्जे। योविद्ययातपसाजन्मनावा वृद्धःसवैसम्भवतिद्विजानाम् २ (अष्टकउवाच)
अवादीस्त्वंवयसास्मिवृद्ध इतिवैराजन्नाधिकःकथञ्चित्। योवैविद्वांस्तपसाचवृद्धः सएव
पूज्योभवतिद्विजानाम् ३ (ययातिरुवाच)प्रतिकूलंकर्म्मणांपापमाहुस्तद्वर्तिनांप्रवणंपाप
लोकम्।सन्तोसतोनान्ववर्तन्ततेवै यदात्मनैषांप्रतिकूलवादी ४ अभूद्धनंमेविपुलंमहद्वै
विचेष्टमानोऽधिगन्तातदस्मि।एवंप्रधार्य्यात्महितेनिविष्टो योवर्ततेसविजानातिधीरः ५
नानाभावाबहवोजीवलोके दैवाधीनानष्टचेष्टाधिकाराः। तत्तत्प्राप्यनविहन्येतधीरो दिष्टं
बलीयइतिमत्वात्मबुध्या ६ सुखंहिजन्तुर्यदिवापिदुःखं दैवाधीनंविन्दन्तिनात्मशक्त्या।

पूछनेको समर्थ नहीं हैं और हम कौन हैं इसको तूभी नहीं हमसे पूछता है इसहेतुसे हम पूछते हैं कि तेरे स्वर्गसे गिरनेका क्या कारण है ७। १० हे इन्द्रके समानबल रूपवाले पुरुष तू भय विषाद और मोह इनसबको त्यागकरदे श्रेष्ठ पुरुषों के समीप स्थितहोनेवाले तुझको कोई तिरस्कार नहीं करसक्ता है ११ सुखसे गिरेहुये पुरुषोंके थांभनेको श्रेष्ठही पुरुष योग्य हैं सो यहाँ सब स्थावर जंगमों के ईश श्रेष्ठ पुरुष हैं इसप्रकार के लोगोंमें तू वर्तमान होकर अग्नि तपनेमें समर्थ है पृथ्वी बीज के बोने में समर्थ है-सूर्य्य प्रकाश करनेमें समर्थ है और श्रेष्ठ पुरुषों का अभ्यागतही प्रभुहै १२। १३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

ययातिबोला-कि मैं नहुषका पुत्र राजा ययातिहूं पूरुका पिताहूं मुझको सबलोगों के अपमान करने से इन्द्रने मुझको पटका है सो क्षीणपुण्य होकर गिरताहूं १ मैं तुमसे अवस्थाकरके बड़ाहूं तौभी तुमको अभिवाद करताहूं अर्थात् नमस्कार करताहूं क्योंकि द्विजोंमें जो विद्या और तपमेंवृद्ध है वही वृद्ध कहाता है २ अष्टकनेकहा हे राजा जो तैंनेकहा कि मैं अवस्थासे तुमसे बड़ाहूं यह भी एक प्रकारका बड़प्पन है परन्तु द्विजातियोंमें जो विद्यावान् होकर तपसे बड़ाहै वहीपूज्यहै ३ ययातिबोला कर्मोंका विपरीतभाव करना पापहै और उसी विपरीत भावमें जो वर्त्तावकरे उसको पापवालों का लोक मिलताहै इसहेतु से जो विपरीत व्यवहार करता है उस दुष्टजनको साधुजन नहीं प्राप्त होते हैं ४ ज्ञानी पुरुषको अपने आत्माके हितके निमित्त ऐसा विचार करना योग्य है कि मेरे कर्मोंका बड़ा भारी बन लगरहा है उसीको मैं भोगूंगा-धैर्य्यवान् पुरुष इसजीवलोकमें सब पदार्थों को दैवके आधीनही जाने परन्तु भाग्यको प्रबल जानकर उन पदार्थोंमें आसक्त नहोवे ५। ६ यह जीव सबसुख

तस्माद्दिष्टंबलवन्मन्यमानो नसंज्वरेन्नापिहृष्येत्कदाचित् ७ भयेनमुह्याम्यष्टकाहंकदाचित् सन्तापोमेमानसोनास्तिकश्चित्। धातायथामांविदधातिलोके ध्रुवंतदाहंभवितेतिमत्वा ८ संस्वेदजाह्यण्डजाह्युद्भिदश्च सरीसृपाःकृमयोऽप्यप्सुमत्स्याः। तथाश्मानस्तृणकाष्ठञ्चसर्वं दिष्टक्षयेस्वांप्रकृतिंभजन्ते९ अनित्यतांसुखदुःखस्यबुध्वा कस्मात्सन्तापमष्टकाहंभजेयम्। किंकुर्य्यांवैकिञ्चकृत्वानतप्ये तस्मात्सन्तापंवर्जयाम्यप्रमत्तः १० (शौनक उवाच) एवंब्रुवाणंनृपतिंययाति मथाष्टकःपुनरेवान्वपृच्छत्। मातामहंसर्वगुणोपपन्नंयत्रस्थितंस्वर्गलोकेयथावत् ११ (अष्टक उवाच) येयेलोकाःपार्थिवेन्द्रप्रधानास्त्वयाभुक्तायञ्चकालंयथाच। तन्मेराजन्ब्रूहिसर्वंयथावत् क्षेत्रज्ञवद्भाषसेत्वंहिधर्मम् १२ (ययातिरुवाच) राजाहमासन्त्विहसार्वभौमस्ततोलोकान्महतश्चार्जयंवै। तत्रावसंवर्षसहस्रमात्रंततोलोकान्परमानभ्युपेतः १३ ततःपुरींपुरुहूतस्यरम्यां सहस्रद्वारांशतयोजनान्ताम्। अध्यावसंवर्षसहस्रमात्रं ततोलोकान्परमानभ्युपेतः १४ ततोदिव्यमजरंप्राप्यलोकं प्रजापतेर्लोकपतेर्दुरापम्। तत्रावसंवर्षसहस्रमात्रं ततोलोकान्परमानभ्युपेतः १५ देवस्यदेवस्यनिवेशनेच विजित्यलोकान्न्यवसंयथेष्टम्। संपूज्यमानस्त्रिदशैःसमस्तैस्तुल्यप्रभावद्युतिरीश्वराणाम् १६ तथावसन्नन्दनकामरूपी संवत्सराणामयुतंशतानाम्। सहाप्सरोभिर्विचरन्पुण्यगन्धान् पश्यन्नगान्पुष्पितांश्चारुरूपान् १७

दुःखादिकों को दैवाधीनही जाने अपनी शक्तिके अनुसार कभी न समझे इसहेतुसे भाग्यको बली जानके दुखसुखमें आसक्त न होना चाहिये ७ हे अष्टक इसप्रकारसे मैं दैवको प्रधान जानके कभी भय नहीं करताहूं मेरे मनमें कभी भी सन्ताप नहीं है जहाँ विधाता मुझे प्राप्त करेगा वहाँही जाऊंगा ८ अण्डज स्वेदज जरायुज और उद्भिज यह चारोंप्रकार के जीव और पत्थर तृण काष्ठादिक यह सब भाग्यके क्षयहोनेपर अपनी प्रकृतिको अर्थात् असलीरूपको प्राप्तहोजाते हैं ९ हे अष्टक मैं सुखदुःखादि को अनित्य जानके सन्ताप नहीं करता अर्थात् मैं क्याथा क्या होगया इत्यादि बातोंके सन्ताप से रहितहूं १० शौनकजीबोले--कि वह अष्टक अपने मातामह ययाति के ऐसे २ वचनों को सुनकर फिर पूछताभया ११ हे राजेन्द्र तुमने जिन जिन प्रधान लोकोंको जितने २ कालतक भोगा है उन सबको आप यथार्थ रीतिसे मेरे आगे वर्णन कीजिये क्योंकि आप ज्ञानियों के समान धर्मका वर्णन करतेहो १२ ययातिबोला--कि प्रथम तो मैं इसलोकमें सम्पूर्ण भूमिका राजाहुआ फिर अपने पुण्यादिकों से बड़े २ लोकोंको उपार्जनकरके वहाँ एकहज़ार वर्ष वासकिया फिर वहाँ से चारसौकोस विस्तारवाली इन्द्रकी अति रमणीक सुन्दर वाजोंवाली पुरीमें एकहज़ार वर्षतक वास किया फिर उन उपार्जन किये लोकोंमें प्राप्तहुआ १३।१४ फिर बड़े दिव्य देवता और लोकपालों से भी दुर्लभ ऐसे प्रजापति के लोकमें मैंने हजार वर्षतक वास किया १५ फिर अपनी इच्छापूर्वक इन्द्रलोक में आके उत्तमकान्ति और रूपवाले देवताओं से पूजित होकर वास किया १६ फिर इन्द्रके नन्दनवन में १०००० वर्ष तक वासकिया वहाँ गन्धर्व और अप्सराओं के सुन्दर रूपों समेत पुष्पादिकों की शोभा देखताभया १७ और बहुत कालतक वहां सुखोंको भोगा तब एक बड़े उग्ररूप देवदूतने आ-

ष्णुसहायेन महेन्द्रेणनिवर्तितः। हतोध्वजेमहेन्द्रेण मायाच्छन्नस्तुयोगवित्। ध्वजल
क्षणमाविश्य विप्रचित्तिःसहानुजः ५० दैत्यांश्चदानवांश्चैवसंयतान्किलसंयुतान्। ज
यन् कोलाहलेसर्वान् देवैःपरिवृतोवृषा। यज्ञस्यावभृथेदृश्यौ शण्डामर्कौतुदैवतैः ५१
एतेदेवासुरेवृत्ताः संग्रामाद्वादशैवतु। देवासुरक्षयकराः प्रजानान्तुहितायवै ५२ हिरण्य
कशिपूराजावर्षाणामर्बुदंबभौ। द्विसप्ततितथान्यानि नियुतान्यधिकानिच। अशीतिश्च
सहस्राणि त्रैलोक्यैश्वर्यताङ्गतः ५३ पर्यायेणतुराजाभूद्बलिर्वर्षायुतंपुनः। षष्टिवर्षसहस्रा
णि नियुतानिचविंशतिः ५४ बलेराज्याधिकारस्तु यावत्कालंबभूवह। तावत्कालन्तुप्रह्ला
दो निवृत्तोह्यसुरैःसह ५५ इन्द्रास्त्रयस्तेविज्ञेया असुराणांमहौजसः। दैत्यसंस्थमिदंस
र्वमासीद्दशयुगंपुनः ५६ त्रैलोक्यमिदमव्यग्रं महेन्द्रेणानुपाल्यते। असपत्नमिदंसर्वमा
सीद्दशयुगंपुनः ५७ प्रह्लादस्यहतेतस्मिन् त्रैलोक्येकालपर्ययात्। पर्यायेणतुसंप्राप्ते
त्रैलोक्यंपाकशासने। ततोऽसुरान्परित्यज्य शुक्रोदेवानगच्छत ५८ यज्ञेदेवानथगता
न्दितिजाःकाव्यमाह्वयन्। किंत्वंनोमिषतांराज्यं त्यक्त्वायज्ञंपुनर्गतः ५९ स्थातुंनशक्नु
मोह्यत्र प्रविशामोरसातलम्। एवमुक्तोऽब्रवीद्दैत्यान्विषण्णान्सान्त्वयन्गिरा ६०
माभैष्टधारयिष्यामितेजसास्वेनवोऽसुराः। मन्त्रांश्चैवौषधींश्चैव रसांवसुचयत्परम् ६१

मारा है फिर धात्रसंज्ञक दशयें युद्धमें और हालाहल युद्धमें घोर दैत्यमारे हैं-फिर योगको जाननेवाले अपनी मायासे छिपेहुए ध्वजाके चिह्नमें प्रविष्ट अपने छोटे भाई और अन्य दैत्यों से युक्त विप्रचित्ति दैत्यको अन्य सब दैत्यों समेत कोलाहल युद्धमें इन्द्रने मारा है जब यज्ञ के अवभृथ स्नानके लिये शण्डामर्क नाम युद्धहुए हैं तबहीं इन्द्रने उस विप्रचित्ति दैत्यको मारा है ४९।५१ इस रीतिसे यह बारह युद्ध देवता और दैत्योंके हुएहैं इन सबयुद्धोंमें देवता असुर और मनुष्योंकाभी नाश हुआहै५२ हिरण्यकशिपु एक अर्बुद बहत्तर करोड़ अस्सीहज़ार वर्षोंतक इस त्रिलोकीका राजा रहा और त्रिलोकीका सब ऐश्वर्य्य भी उसीको प्राप्तहुआ ५३ इसके पीछे राजा बलिका राज्य दोकरोड़ अस्सीहजार २००८०००० वर्षतकरहा फिर इतनेही कालतक असुरों समेत प्रह्लादका राज्य रहा ५४।५५ यह तीनों असुरों के राजा अर्थात् स्वामी महापराक्रमवाले हुए हैं फिर दश युगोंतक उन सब दैत्यों का नाशहीरहा उससमय इन्द्रने बड़ी कुशलतापूर्वक त्रिलोकी का राज्यकिया ५६।५७ जबसे प्रह्लादका राज्य समाप्तहुआ तबसे कालके वश इन्द्रहीका राज्य होजाताभया-इस के पीछे शुक्राचार्य्यजी दैत्यों को त्यागकर देवताओं के पास आते भये ५८ एक समय शुक्राचार्य्य जी देवताओं के यज्ञमें चले गये तब दैत्यों ने शुक्राचार्य्य को बुलाकर यह बातकही कि क्या तुम हमारे देखते हुएही राज्यको त्यागकर देवताओं के यज्ञमें चले गये ५९ इससे अब हम इस लोक में स्थितनहीं रहसके पातालको चले जांयगे इस बातके सुनने से शुक्राचार्य्य दुःखित होकर दैत्योंसे यह शान्ति के वचन कहते भये ६० कि हे दैत्य लोगो तुमभयमतकरो तुमको मैंअपने तेज करके धारण करूंगा मंत्र औषध रस और परम उत्तमद्रव्य यह सब मेरेही पास पूर्ण हैं और देवताओं के पास इन सब का चतुर्थांशमात्र है सो इन सब वस्तुओंको मैं तुम्हीं को दे दूंगा क्योंकि मैं ने तुम्हारेही निमित्त ध-

कृत् स्नानिमग्नितिष्ठन्ति पादस्तेषांसुरेषुवै । तत्सर्वंवःप्रदास्यामि युष्मदर्थैधृताम
या ६२ ततोदेवास्तुतान्दृष्ट्वा श्रुतान्काव्येनधीमता । संमन्त्रयन्तिदेवावै संविग्ना
स्तुजिघृक्षया ६३ काव्योह्येषइदंसर्वं व्यावर्तयतिनोवलात् । साधुगच्छामहतूर्णं या
वन्नाध्यापयिष्यति ६४ प्रसह्यहत्वाशिष्टांस्तु पातालंप्रापयामहे । ततोदेवास्तुसंर
ब्धा दानवानुपसृत्यह ६५ ततस्तेवध्यमानास्तु काव्यमेवाभिदुद्रुवुः । ततःकाव्यस्तु
तान्दृष्ट्वा तूर्णंदेवैरभिद्रुतान् ६६ रक्षांकाव्येनसंहृत्य देवास्तेऽप्यसुरार्दिताः । काव्यं
दृष्ट्वास्थितंदेवा निःशङ्कमसुरान्जहुः ६७ ततःकाव्योऽनुचिन्त्याथ ब्रह्मणोवचनंहि
तम् । तानुवाचततःकाव्यः पूर्ववृत्तमनुस्मरन् ६८ त्रैलोक्यंवोहृतंसर्वं वामनेनत्रि
भिःक्रमैः । बलिर्बद्धोहतोजम्भो निहतश्चविरोचनः ६९ महासुराद्वादशसु संग्रामेषु
सुरैर्हताः । तैस्तैरुपायैर्भूयिष्ठं निहतावःप्रधानतः ७० किञ्चिच्छिष्टास्तुयूयंवै युद्धंमा
स्त्वितिमेमतम् । नीतयोवोऽभिधास्यामि तिष्ठध्वंकालपर्ययात् ७१ यास्याम्यहंमहादे
वं मन्त्रार्थंविजयावहम् । अप्रतीपांस्ततोमन्त्रान् देवात्प्राप्यमहेश्वरात् । युध्यामहेपुन
र्देवांस्ततःप्राप्स्यथवैजयम् ७२ ततस्तेकृतसंवादा देवानूचुस्तदासुराः । न्यस्तशस्त्राव
यंसर्वे निःसन्नाहारथैर्विना ७३ वयंतपश्चरिष्यामः संवृतावल्कलैर्वने । प्रह्लादस्यवचः
श्रुत्वा सत्याभिव्याहृतन्तुतत् ७४ ततोदेवान्यवर्तन्त विज्वरामुदिताश्चते । न्यस्तशस्त्रे

रण कररक्खी हैं ६१ । ६२ इस के अनन्तर शुक्राचार्य्य से संयुक्त हुए उन दैत्योंको जानकर देवता
लोग भी सब वस्तुओं के ग्रहण करने की इच्छासे आपसमें सलाहकरके कहने लगे कि यह शुक्रा-
चार्य्य इस सबहमारी द्रव्योंको बलकरके हमसे छीनते हैं सो जबतक कि वह उन दैत्योंको न बतावें
उससे पूर्वही हम उनके पास जायगे और हठकरके उनदैत्योंको पातालमें प्राप्तकरेंगे इसके अनन्तर
देवता लोग दैत्योंके समीप जाकर उनको पीड़ादेने लगे ६३ । ६५ तब महादुःखित होकर वह स-
ब दैत्य वहां से भगकर शुक्राचार्य्य के पास आये तब देवताओं से भयभीत हुए उन दैत्यों की शुक्रा-
चार्य्यजी शीघ्रही रक्षाकरते भये फिर दैत्यों से पीड़ित हुए देवता शुक्राचार्य्यकी कीहुई रक्षाकानाश
कर निश्शंकहो दैत्योंका नाशकरते भये ६६ । ६७ फिर शुक्राचार्य्य जी पूर्व के वृत्तान्त को स्मरण
करके हितको चिन्तवन कर दैत्योंसे बोले ६८ कि वामन ने तुम्हारी सब पृथ्वी तीन चरणसे मा-
पकर हरलीनी और बलिको बांधलिया इसके विशेष जंभासुर और विरोचनको भी मारा ६९ और
बारह संग्रामों में देवताओंने बड़े २ उपाय करके तुम्हारे बड़े २ प्रधान दैत्योंको मारा है और तुम
थोड़े से शेष रहेहो इस हेतुसे तुम मेरी मतिसे युद्धमतकरो तुमकुछकाल तक ठहरो में तुमको उ-
त्तम नीति बताऊंगा में विजय करनेवाले मंत्रके लिये महादेवजी के पासजाऊंगा उन महादेवजीसे
अतुलबलपराक्रम वाले मंत्रोंको प्राप्तकरके फिर तुम्हारा देवताओंसे युद्धकरवाकर तुम्हारी विजयकर
वाऊंगा ७०।७२ इसप्रकारके संवादको सुनकर दैत्यलोग देवताओं से बोले कि हे देवता लोगो हम
शस्त्रों से रहित हैं हमारे कवच संजोवा आदिक टूटगये रथोंसे रहित हैं इस हेतुसे हमवल्कल धारण
करके वनमें तपस्या करेंगे यह सुनकर और प्रह्लाद के वचनको सत्यमानकर वह देवता लोग भी

षुदैत्येषु विनिवृत्तास्तदासुराः ७५ ततस्तानब्रवीत्काव्यः कञ्चित्कालमुपास्यथ। निरुत्सिक्तास्तपोयुक्ताः कालंकार्यार्थसाधकम् ७६ मातुर्ममाश्रमस्थावै मांप्रतीक्षथदानवाः। तत्संदिश्यासुरान्काव्यो महादेवंप्रपद्यत ७७ (शुक्र उवाच) मन्त्रानिच्छाम्यहंदेव! ये न सन्तिबृहस्पतौ। पराभवायदेवानामसुराणांजयायच ७८ एवमुक्तोऽब्रवीद्देवो व्रतंत्वञ्चरभार्गव!। पूर्णंवर्षसहस्रंतु कणधूममवाक्शिराः। यदिपास्यसिभद्रंते ततोमन्त्रानवाप्स्यसि ७९ तथेतिसमनुज्ञाप्य शुक्रस्तुभृगुनन्दनः। पादौसंस्पृश्यदेवस्य बाढमित्यब्रवीद्वचः। व्रतंचराम्यहंदेव! त्वयादिष्टोऽद्यवैप्रभो! ८० ततोऽनुसृष्टोदेवेन कुण्डधारोऽस्यधूमकृत्। तदातस्मिन्गतेशुक्रे ह्यसुराणांहितायवै। मन्त्रार्थंतत्रवसति ब्रह्मचर्यंमहेश्वरे ८१ तद्बुद्ध्वानीतिपूर्वंतु राज्येन्यस्तेतदासुरैः। अस्मिंश्छिद्रेतदामर्षाद्देवास्तान्समुपाद्रवन् ८२ दंशिताःसायुधाःसर्वे बृहस्पतिपुरःसराः ८३ दृष्ट्वाऽसुरगणा देवान् प्रगृहीतायुधान्पुनः। उत्पेतुःसहसातेवै सन्त्रस्तास्तान्वचोऽब्रुवन् ८४ न्यस्तेशस्त्रभयेदत्ते आचार्येव्रतमास्थिते। दत्त्वाभवन्तोह्यभयं संप्राप्ता नोजिघांसया ८५ अनाचार्यावयंदेवा!स्त्यक्तशस्त्रास्त्ववस्थिताः। चीरकृष्णाजिनधरानिष्क्रियानिष्परिग्रहाः ८६ रणे विजेतुंदेवांश्च नशक्ष्यामःकथञ्चन। अयुद्धेनप्रपत्स्यामः शरणंकाव्यमातरम् ८७

संताप से रहित होकर प्रसन्नताले शस्त्ररहित दैत्योंके विषय युद्धकरनेसे निवृत्त होगये अर्थात् युद्धकरने से हटगये ७४। ७५ इस के अनन्तर कुछ काल के पीछे दैत्यों से शुक्राचार्य्य ने कहा कि तुम अपने कार्य्य की सिद्धिके अर्थ अपने २ तपोंमें युक्तरहो और हे दानवलोगो तुम मेरी माताके स्थान में रहकर मेरी बाट देखते रहना ऐसा उनदैत्यों से कहकर आचार्य्य जी महादेवजीके पास जाते भये ७६। ७७ और उनसे बोले कि हे महादेव जी जो बृहस्पति के पास नहीं हैं उन मंत्रोंको मैं चाहताहूं और मैं देवतों की पराजय और दैत्यों की विजय के निमित्त उन मंत्रों को चाहता हूं ७८ शुक्रजीके इसवचनको सुनकर महादेवजीबोले कि हे भार्गव पूर्ण हज़ार वर्षतक नीचाशिरकर जो तुमधूमवायु आदिका भक्षणकरके तपस्याकरोगे तो मंत्रोंको प्राप्तकरोगे ७९ तबशुक्राचार्य्यने उस आज्ञाकोमान शिवजीके चरणों को छूकर बड़े निश्चय पूर्वक यह वचनकहाकि हेप्रभु आपकीआज्ञा से मैं उसतपका आचरण करताहूं ८० यह कहकर शिवजीसे रचेहुए कुंडधारमें जहां कि धूम्रानिकलताथा वहां दैत्योंके हितके निमित्त मंत्रकी प्राप्तिकेअर्थ शुक्राचार्य्यजी ब्रह्मचर्य्यमें स्थितहोनिवास करनेलगे ८१ तब नीतिपूर्वक उसवार्त्ताको देवतालोगजानकर राज्यमें स्थितहुए दैत्योंके उसछलको जानकर क्रोधकरके उनदैत्योंको भगादेतेभये ८२ अपने गुरुबृहस्पतिजी समेत देवतालोगशस्त्रों को धारणकर कवचपहर दैत्योंके सन्मुखचले तब उन शस्त्रधारी देवताओंको अकस्मात् आतादेखं बड़े दुःखितहोकर दैत्यबोले ८३। ८४ शस्त्रोंका भयतो तुमने त्यागदियाथा और हमारे आचार्य्य व्रतमें स्थित हैं सो तुमहमको अभयदानदेके फिर मारनेकी इच्छासे कैसेप्राप्तहुएहो ८५ हमलोग आचार्य्यजीसे रहित शस्त्रोंसे विहीन प्राचीन कृष्णादि मृगचर्मोंको धारणकर रहेहैं हमसव युद्धकरनेकी सामग्री से रहितहैं ८६ हे देवताओ हमतुम्हारेसाथ युद्धकरनेको किसीप्रकारसेभी समर्थ नहीं हैं हम बिनायुद्ध

यापयामःकृच्छ्रमिदंयावदभ्येतिनोगुरुः। निवृत्तेचतथाशुक्रे योत्स्यामोदंशितायुधाः ८८
एवमुक्तासुरान्योन्यं शरणंकाव्यमातरम्।प्रापद्यन्तततोभीतास्तेभ्योऽदादभयन्तुसा८९
नभेतव्यंनभेतव्यं भयन्त्यजतदानवाः! मत्सन्निधौवर्ततांवो नभीर्भवितुमर्हति ९०
तयाचाभ्युपपन्नांस्तान् दृष्ट्वादेवास्ततोसुरान्। अभिजग्मुःप्रसह्यैतानविचार्यबलाबल
म् ९१ ततस्तान्बाध्यमानांस्तु देवैर्दृष्ट्वासुरांस्तदा। देवीक्रुद्धाऽब्रवीद्देवाननिन्द्रान्वःक
रोम्यहम् ९२ संभृत्यसर्वसम्भारानिन्द्रंसाभ्यचरत्तदा। तस्तम्भदेवीबलवद्योगयुक्तात
पोधना ९३ ततस्तंस्तम्भितंदृष्ट्वा इन्द्रंदेवाश्चमूकवत्। प्राद्रवन्ततोभीता इन्द्रंदृष्ट्वा
वशीकृतम् ९४ गतेषुसुरसंघेषु शक्रंविष्णुरभाषत। मांत्वंप्रविशभद्रंते नयिष्येत्वांसुरो
त्तम! ९५ एवमुक्तस्ततोविष्णुं प्रविवेशपुरन्दरः। विष्णुनारक्षितंदृष्ट्वा देवीक्रुद्धावचोऽ
ब्रवीत् ९६ एषात्वांविष्णुनासार्धन्दहामिमघवन्!बलात्। मिषतांसर्वभूतानां दृश्यतांमे
तपोबलम् ९७ तयाभिभूतौतौदेवा विन्द्रविष्णूबभूवतुः।कथमुच्येऽवसहितो विष्णुरिन्द्र
मभाषत ९८ इन्द्रोऽब्रवीज्जहिह्येनां यावन्नौनदहेत्प्रभो!। विशेषेणाभिभूतोऽस्मित्वत्तो
हञ्जहिमाचिरम् ९९ ततःसमीक्ष्यविष्णुस्तां स्त्रीबधेकृच्छ्रमास्थितः। अभिध्यायत
तश्चक्रमापदुद्धरणंतुतत् १०० ततस्तुत्वरयायुक्तः शीघ्रकारीभयान्वितः। ज्ञात्वा

कियेही शुक्राचार्य्यकी माताके शरणमें जांयगे ८७ वहां जबतक कि हमारे गुरू न आवेंगे तबतकहम कष्टसे रहितरहेंगे और जबशुक्राचार्य्यजी व्रतसे निवृत्तहोजांयगे तबहम तुमसे युद्धकरेंगे ८८ इस प्रकारकीबातें कहके और आपसमें सलाहकरके डरतेहुए सबदैत्य शुक्राचार्य्य की माताके शरणमें प्राप्तहुए तब उस माताने उनको अभयदानदिया ८९ अर्थात् यह कहाकि हे दानवलोगो भयमतकरो अपने चित्तसे भयको दूरकरके मेरे समीपमें रहतेहुए तुमको किसीबातका डरनहीं है ९० तब उस मातासे रक्षितहुए दैत्योंको देखकर बलाबलका विनाविचारकिये देवता हठसे दैत्योंके पासजातेभये तब देवताओंसे पीड़ितकियेहुए उन असुरोंको शुक्राचार्य्यकी मातादेखकर बड़े क्रोधसे बोली कि हे देवताओ मैं तुमको इन्द्रसे रहितकरूंगी ९१। ९२ यह कहके सबभारको इकट्ठाकर इन्द्रके समीप चली अर्थात् वहतपोधनवाली योगमें युक्तरहनेवालीदेवी इन्द्रको बांधकरलेआई तब बंधनमें फंसेहुये इन्द्रको देखकर सबदेवताचुपकेहो वशमें कियेहुएइन्द्रकोजान भागजातेभये ९३। ९४ जब देवताओंके समूह भागकर चलेगये तब इन्द्रसे विष्णुभगवान् बोलतेभये कि हे इन्द्र तू मुझमें प्रवेशितहो जामें तेरा कल्याणकरूंगा ९५ विष्णुके इस वचनको सुनकर इन्द्र शीघ्रही विष्णुमें प्रवेश करताभया तब विष्णुसे रक्षित कियाहुआ इन्द्रको देखकर वह देवी यह वचन बोली ९६ कि हेइन्द्र मैं अपनी सामर्थ्यके बलसे विष्णु समेत तुझको सब प्राणियों के देखतेहुएही भस्मकरदूंगी ऐसा मुझमें तपो बलहै ९७ उसके ऐसे वचनको सुनकर विष्णु और इन्द्र दोनों यह विचारतेभये कि अब क्या होगा तब इन्द्रसे विष्णु बोले कि अब कैसे इससे छुटेंगे उससमय इन्द्रने कहा हेविभो जबतक यह हमको भस्मनकरे उससे प्रथमही आप इसकोमारडालो ९८ और हेविष्णुजी मैं तो आपही से रक्षितहूं इसको शीघ्रमारो विलम्ब न करो तब विष्णुने स्त्री के मारने का पाप चिन्तवन किया परन्तु तोभी

ग्रामेवावसतोऽरण्यं समुनिःस्याज्जनाधिप ! ९ (अष्टक उवाच) कथंस्विद्वसतो ऽरण्ये ग्रामोभवतिपृष्ठतः। ग्रामेवावसतोऽरण्यं कथंभवतिपृष्ठतः १० (ययातिरुवाच) नग्राम्यमुपयुंजीत यआरण्योमुनिर्भवेत्। तथास्यवसतोऽरण्ये ग्रामोभवतिपृष्ठतः ११ अनग्निरनिकेतश्चाप्यगोत्रचरणोमुनिः। कौपीनाच्छादनंयाव त्तावदिच्छेच्चचीवरम् १२ यावत्प्राणाभिसन्धानं तावदिच्छेच्चभोजनम्। तदास्यवसतोग्रामे ऽरण्यंभवतिपृष्ठतः १३ यस्तुकामान्परित्यज्यत्यक्तकर्माजितेन्द्रियः। आतिष्ठेतमुनिर्मौनं सलोकेसिद्धिमाप्नुयात् १४ धौतदन्तंकृत्तनखं सदास्नातमलंकृतम्। असितंसितकर्मस्थं कस्तन्नार्चितुमर्हति १५ तपसाकर्शितःक्षामः क्षीणमांसास्थिशोणितः। यदाभवतिनिर्द्वन्द्वो मुनिर्मौनंसमास्थितः १६ अथलोकमिमञ्जित्वा लोकञ्चापिजयेत्परम्। आस्येनतुयदाहारं गोवन्मृगयतेमुनिः। अथास्यलोकःसर्वोयःसोऽमृतत्वायकल्पते १७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे चत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

(अष्टक उवाच) कतरस्त्वेतयोःपूर्वं देवानामेतिसात्म्यताम्। उभयोर्धावतोराजन्! सूर्य्याचन्द्रमसोरिव १ (ययातिरुवाच) अनिकेतगृहस्थेषु कामवृत्तेषुसंयतः। ग्रामएव चरन्भिक्षुस्तयोःपूर्वतरंगतः २ अप्राप्यंदीर्घमायुश्च यःप्राप्तोविकृतिंचरेत्। तप्येतयदि

कहाताहै--अष्टकने पूछा कि वनमें बसनेवालेको ग्रामपीठपीछे कैसेहै और ग्राममें बसनेवालेके वन पीठपीछे कैसेहै ९।१० ययातिनेकहा जो मुनिवनमें बसाहुआ ग्रामादिकी किसीवस्तुका भोजन नहीं करताहै अर्थात् वनके फलादिकोंसेही अपना निर्वाह करताहै उसकेही ग्रामपीठपीछे है ११ जोमुनि घरमें अग्नि आदिक नहीं रखता और स्थान गोत्रादिसेभी रहितहै केवल कोपीनमात्र रखताहै अथवा जो कुछ कहींसे जीर्णादिक वस्त्रमिलतेहैं उन्हींको धारणकरताहै १२ और केवल प्राणकी रक्षामात्र ही भोजनकरताहै उसमुनिके ग्राममें रहतेहुएभी वनपीठकी ओरहै १३ जो कामोंको त्यागके जितेन्द्रियहो मौनको धारण करताहै वहमुनि इसलोकमें सिद्धिको प्राप्तहोताहै १४ श्वेतदन्त नख शुद्धि-स्नान और अलंकारसेयुक्त शरीरवाले अपने शुद्धकर्मोंमें स्थितहोनेवाले पुरुषकोभी उसवाहै जैसे मलीनहोनेवाले मुनिकापूजन करनायोग्यहै १५ जिसके कि तपसेक्षीण मांसरुधिर और अस्थिभी क्षीणहोगयेहैं सुख दुःखादिसे रहितहोकर जो ध्यानमें तत्परहोताहै वहीमौनमें स्थितकहाता है १६ इसप्रकारसे वह मुनि जब अन्नको गौके समान मुखमें पपोलकर धारण करलेताहै और गौकेहीसमान चुपका रहताहै उसके यह लोक और परलोक जीतेहुएहैं और वही मोक्षकेभी योग्यहै १७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

अष्टकनेकहा—वनमें वासकरनेवाला और ग्राममें रहनेवाला इन दोनोंमेंसे कौनसा पुरुषदेवताओंके समानहोजाताहै-हे राजन् यहदोनों चन्द्रमा और सूर्य्यके समानहैं १ ययातिनेकहा-जो गृहस्थी पुरुष काममें आसक्तहोरहेहैं और घर नहीं रखकर वनमें विचरतेहैं ऐसे लोगों में ग्राममें विचरनेवाला भिक्षुकही उत्तम है २ अष्टकने कहा हे राजा जो पुरुष बड़ीदुर्लभ दीर्घ आयुको भी प्राप्त होकर

तत्कृत्वा चरेत्सोग्रंतपस्ततः ३ यद्वैनृशंसन्तदपथ्यमाहुर्य स्सेवतेऽधर्ममनर्थबुद्धिः ।असाव नीशःसतथैवराजन् तदार्जवंसंसमाधिस्तदार्यम् ४ (अष्टक उवाच)केनाद्यत्वन्तुप्रहितो ऽसिराजन् युवास्रग्वीदर्शनीयःसुवर्चाः।कुतआगतःकतमस्यांदिशित्व मुताहोस्वित्पार्थिवस्थानमस्ति ५ (ययातिरुवाच)इमंभौमंनरकंक्षीणपुण्यः प्रवेष्टुमुर्वीगगनाद्विप्रकीर्णः। उक्त्वाहंवःप्रपतिष्याम्यनन्तरन्त्वरन्त्वमीब्रह्मणोलोकपाये ६सतांसकाशेतुवृतःप्रपातस्ते सङ्गतागुणवन्तस्तुसर्वे। शक्राच्चलब्धोहिवरोमयैष प्रतिष्यताभूमितलंनरेन्द्र! ७(अष्टक उवाच) पृच्छामित्वांप्रपतन्तंप्रपातंयदिलोकाःपार्थिवसन्तिमेऽत्र। यद्यन्तरिक्षेयदिवादिविश्रिताः क्षेत्रज्ञंत्वांतस्यधर्मस्यमन्ये ८ (ययातिरुवाच) यावत्पृथिव्यांविहितंगवाश्वं सहारण्यैःपशुभिःपक्षिभिश्च। तावल्लोकादिवितेसंस्थितावै तथाविजानीहिनरेन्द्रसिंह ९(अष्टक उवाच)तांस्तेददामिमाप्रपतप्रपातं येमेलोकादिविराजेन्द्रसन्ति।यद्यन्तरिक्षे यदिवादिविश्रितास्तानाक्रमक्षिप्रममित्रहासि १० (ययातिरुवाच) नास्मद्विधोब्राह्मणो ब्रह्मविच्चप्रतिग्रहेवर्ततेराजमुख्य !। यथाप्रदेयंसततंद्विजेभ्यस्तथाददेपूर्वमहंनरेन्द्र ११ नाब्राह्मणःकृपणोजातुजीवेद्यद्यपिस्यात्ब्राह्मणीवीरपत्नी। सोऽहंयदेवाकृतपूर्वंचरेयं विवित्समानःकिमुतत्रसाधुः १२(प्रतर्दनउवाच)पृच्छामित्वांस्पृहणीयरूपप्रतर्दनोहंयदिमेसन्तिलोकाः। यद्यन्तरिक्षेयदिवादिविश्रुताःक्षेत्रज्ञंत्वांतस्यधर्मस्यमन्ये १३(ययातिरुवाच)

दूषित कर्मोंको करताहै अथवा किसी दुष्टकर्मको करके पूछता है तो उसको महाउग्र तपकरना चाहिये—क्रूरकर्म करनेवाला अपथ्यहै—अधर्मका आचरण करनेवाला अबुद्धिहै—जैसे कि अधर्मका आचरणकरनेवाला अनर्थी कहाताहै वैसेही समाधिमें रहकर सरलमार्गमें रहनेवाला पुरुष आर्य्यकहाताहै—अष्टकने पूछा कि आप किसकारणसे यहां प्राप्तहुएहो युवावस्थावाले उत्तममालासे युक्त और शरीरमें कान्तिसे भरेहुए आप कौनदिशामें रहनेवाले होकर किसदिशाको आयेहो ३।५ययातिबोला-मैं क्षीण पुण्यवालाहोकर आकाशसे गिरकर इसपृथ्वीके नरकमें आयाहूं इसप्रकारकी वातें कहकर मैं अब तुम्हारे पाससे नरकमें प्राप्तहूंगा और यह सबब्राह्मण तथा तुमसब राजालोग इससंसारसे पार उतर जाओगे ६ मैं इस पृथ्वीतलके तुमसब श्रेष्ठ पुरुषोंके समीप इन्द्रके वरदानसे प्राप्तहुआ हूं और तुमसब गुणी महात्मालोगभी मुझको इन्द्रकेही वरसे प्राप्तहुएहो ७ अष्टकनेकहा—हेमहाराज गिरतेहुए आपसे मैं पूछताहूं कि कहीं स्वर्गमें मेरेभीलोक आपनेसुनेहैं क्योंकि आपको मैं धर्मज्ञ मानताहूं ८ ययातिने कहा—पृथ्वीपर जितने गौअश्वादिक पशु और पक्षियों समेत वनतेरे राज्यमें हैं स्वर्गमें उतनेही तेरेलोकहैं इसको निश्चयजानो ९ अष्टकने कहा हेराजेन्द्र मैं तुम्हे गिरतेहुएके अर्थ अपने उनसब स्वर्गके लोकोंको देताहूं तू उनलोकोंमें शीघ्रही प्राप्तहो १० ययातिने कहा—हेराजन् मुझ सरीका कोई ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण प्रतिग्रह दानको नहीं ले सक्ताहै जैसे कि सदैव ब्राह्मणोंको दानदिया जाताहै वैसेही मैंनेभी पूर्वसमयमें ब्राह्मणोंको बहुतसा दानदियाहै ब्राह्मणके विना अन्यजातिका कृपणमनुष्यभी ऐसे प्रतिग्रहको नहीं लेसकाहै और जिसके सूरवीर पतिहोय वैसी ब्राह्मणीभी प्रतिग्रहको नहींलेती है ऐसेविचार करताहुआ मैं अकर्त्तव्य कार्य्यको कैसे करसक्ताहूं ११।१२

सन्तिलोकाबहवस्तेनरेन्द्र! अप्येकैकंसप्तशतान्यहानि । मधुच्युतोघृतवन्तो विशोका स्तेनान्तवन्तःप्रतिपालयन्ति १४ (प्रतर्दन उवाच) तांस्तेददामिपतमानस्यराजन्! येमेलोकास्तवतेवैभवन्तु । यद्यन्तरिक्षेयदिवादिविश्रितास्तानाक्रमक्षिप्रमपेतमोहः १५ (ययातिरुवाच) नतुल्यतेजाःसुकृतंहिकामये योगक्षेमंपार्थिवात्पार्थिवःसन् । दैवादेशादापदंप्राप्यविद्वान् चरेन्नृशंसंहिनजातुराजा १६ धर्म्यंमार्गंचिन्तयानोयशस्यंकुर्य्यात्तपोधर्ममवेक्षमाणः। नमद्विधोधर्मबुद्धिर्हिराजा ह्येवंकुर्य्यात्कृपणंमांयथात्थ १७ कुर्य्यामपूर्वंनकृतंयदन्यैर्विवित्समानःकिमुतत्रसाधुः। ब्रुवाणमेवंनृपतिंययातिंनृपोत्तमोवसुमानब्रवीत्तम् १८ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे एकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

(वसुमानुवाच) पृच्छाम्यहंवसुमानोषदश्विर्यद्यस्ति लोकोदिविमह्यंनरेन्द्र! । यद्यंतरिक्षेप्रथितोमहात्मन् क्षेत्रज्ञंत्वांतस्यधर्मस्यमन्ये १ (ययातिरुवाच) यदंतरिक्षंपृथिवी दिशश्च यत्तेजसातपतेभानुमांश्च । लोकास्तावन्तोदिविसंस्थितावै तेत्वांभवन्तंप्रतिपालयंति २ (वसुमानुवाच) तांस्तेददामिपतमाप्रपातं येमेलोकास्तवतेवैभवंतु । क्रीणीष्वैनांस्तृणकेनापिराजन् प्रतिग्रहस्तेयदिसम्यक्प्रदुष्टः ३ (ययातिरुवाच) नमिथ्याहं विक्रियंवैस्मरामि मयाकृतंशिशुभावेऽपिराजन् । कुर्य्याञ्चैवाकृतपूर्वं मन्यैर्विवित्समानो

फिर प्रतर्दनराजा बोला–कि हे उत्तमरूपवालेजन में प्रतर्दननामवाला राजाहूं सो कहीं तैंने मेरेभी लोक सुनेहैं यहबात तुमको धर्मज्ञ समझकर पूछताहूं १३ ययातिने कहा–हेराजन् तेरे बहुतसेलोक हैं वह एकएकलोक सातसौ ७०० दिनतक प्रतिदिन और अनवच्छेद मधुके चूनेवाले हैं और घृतकी धाराओंसे युक्तहैं जोकि तैंने सातसौ दिनतक अग्निमें निरन्तर घृतकी धारा समेत मधुकी धारादीहैं इसहेतुसे वहलोक शोकसे रहित मधुके चूनेवाले हैं परन्तु अन्तवाले हैं १४ प्रतर्दन राजाने कहा कि हेराजन् तुझ गिरतेहुएके निमित्तमैंभी अपने लोकोंको देताहूं जोस्वर्गमें अथवा आकाशमें मेरे लोकहैं उनमें शीघ्रही तू प्राप्तहो १५ ययातिबोला–हे राजन् समानतेजवाला पुरुष बराबरके राजासे कुशलक्षेम और सुकृतकी इच्छानहीं करताहै दैवयोगसे आपत्तिकालको प्राप्तहोकेभी राजाको निन्दितकर्म करना योग्य नहीं है १६ धर्मकार्य्यको चिन्तवनकरताहुआ यश और धर्मका देखनेवाला मुझ सरीका बुद्धिमान्जन ऐसेछोटे कर्मको कभी नकरे जैसे कि तुम कहतेहो १७ जोपूर्व्वमें किसीने भी नहीं किया ऐसे कार्य्यको विचारताहुआ मैं कभी भी नहीं करसक्ताहूं–इसप्रकारकी बातेंकरनेवाले राजा ययातिसे राजा वसुमान् बोला १८ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

वसुमान् बोला–हे राजेन्द्र वसुनामवालामैं राजाहूं आपने मेरेभी कहीं कोई लोकसुने हैं इस अपने धर्मको मैं आपसे पूछताहूं १ ययातिबोला–हे राजा जिस तेरेतेजसे सब दिशाओं समेत पृथ्वी प्रकाशमान होरहीहै ऐसेही स्वर्गमेंभी सूर्य्यके समान प्रकाशमान तेरेभी लोकहैं वह सबलोक तेरीहीपालना कररहे हैं २ वसुमान् बोला–कि उन सब अपने लोकोंको मैं तुझ गिरतेहुए के अर्पण करताहूं और हे राजन् जो आप प्रतिग्रह को नहीं लेतेहो तो थोड़ासा मूल्य देकर मुझसे मोललेलीजिये ३

वसुमन्नसाधु ४ (वसुमानुवाच) तांस्त्वंलोकान् प्रतिपद्यस्वराजन् ! मयादत्तान्य
दिनेष्टःक्रयस्ते । नाहन्तान्वैप्रतिगन्तानरेन्द्र सर्वेलोकास्तावकावैभवन्तु ५ (शिविरु
वाच) पृच्छामित्वांशिविरौशीनरोऽहं ममापिलोकायदिसन्तितात ! यद्यन्तरिक्षेय
दिवादिविश्रिताः क्षेत्रज्ञंत्वांतस्यधर्मस्यमन्ये ६ (ययातिरुवाच) नत्वंवाचाहृदये
नापिराजन् ! परीप्समानोमावमंस्थानरेन्द्र । तेनानन्तादिविलोकाःस्थिता वै विद्युद्रूपाः
स्वनवन्तोमहान्तः ७ (शिविरुवाच) तांस्त्वंलोकान्प्रतिपद्यस्वराजन् मयादत्तान्यदि
नेष्टःक्रयस्ते। नचाहन्तान्प्रतिपद्यदत्त्वा यत्रत्वंतातगन्तासिलोके ८ (ययातिरुवाच)
यथात्वमिंद्रप्रतिमप्रभावस्तेचाप्यनंतानरदेवलोकाःतथाद्यलोकेनरमेन्यदत्ते तस्माच्छि
वेनाभिनन्दामिवाचम् ९ (अष्टक उवाच) नचेदेकैकशोराजन् ! लोकान्नःप्रतिनंदसि।
सर्वेप्रदायतान्लोकान् गंतारोनरकंवयम् १० (ययातिरुवाच) यदर्हास्तद्वदध्वंवः सं
तःसत्यादिदर्शिनः । अहंतुनाभिगृह्णामि यत्कृतंनमयापुरा ११ अलिप्समानस्यतुमेयदु
क्तं नतत्तथास्तीहनरेंद्रसिंह !। अस्यप्रदानस्ययदेवयुक्तं तस्यैवचानंतफलंभविष्यम् १२
(अष्टक उवाच) कस्यैतेप्रतिदृश्यन्ते रथाःपञ्चहिरण्मयाः। उच्चैःसंतःप्रकाशंते ज्वल
न्तोऽग्निशिखाइव १३ (ययातिरुवाच) भवतांममचैवैते रथा भांति हिरण्मयाः । आ
रुह्यैतेषुगंतव्यंभवद्भिश्चमयासह १४ (अष्टक उवाच) आतिष्ठस्वरथंराजन् विक्रमस्व

ययातिने कहा हेराजन् मिथ्या मोललेने का व्यवहार मैंनेकभी बाल्यावस्थामें भी नहींकिया विचार-वान् पुरुष ऐसे अयोग्य कार्य्यको कभी भी नहीं करता है ४ तब वसुमान्ने कहा कि जो आप मूल्य से नहीं लेतेहो तो मेरे दियेहुए दानसे उनलोकोंको ग्रहणकरो हेराजन् मैं उनलोकों में नहीं जाऊंगा वह लोक तेरेही होंय ५ फिर शिविने कहा हेतात मैं शिविराजाहूं मैंभी तुमको धर्मज्ञ जानकर यह पूछताहूं कि स्वर्गादिकों में कहीं मेरेभी लोक हैं ६ ययातिबोला—हे राजा तुमने वाणी वा हृदयसेभी किसीका अपमान नहीं किया है इस हेतुसे विजली के समान कान्तिवाले तेरेलोक स्वर्गमें वर्त्तमान हैं ७ शिविने कहा—हे राजन् मेरेदियेहुए उनलोकोंको ग्रहणकरो जो प्रतिग्रह नहीं ग्रहणकरतेहो तो कुछ मूल्य देकरही ग्रहणकरो मैं उनलोकों में नहीं जाऊंगा आपही ग्रहणकीजिये ८ ययातिने कहा-हे राजन् जैसे कि इन्द्रके समान प्रभाव वाला तूहै वैसेही वह तेरेलोकभी अनन्त कान्तिवाले हैं परन्तु अन्यके दियेहुए लोकोंमें मैं नहीं जाना चाहताहूं और तुम्हारी इस वाणीकीभी मैं प्रशंसा नहीं करता अष्टकबोला—हे राजन् जो तुमहमारे सबलोकोंको और सबके कथनको नहीं सराहतेहो तो हम सब अपने अपने लोकोंको तुम्हारे अर्थ देकर नरकमें जायँगे ९।१० ययाति बोला—आप सत्य वक्ता और उत्तम दर्शनवाले श्रेष्ठजनहोकर योग्य वचनको कहो मैं तो दूसरेके कियेहुए कर्मको ग्रहण नहीं करताहूं हे राजन् जो मुझ विना इच्छा करनेवाले से आपने कहाहै वह इसप्रकारसे न होगा और इसवाणी से दियेहुए दानका अनन्त गुणाफलहोगा ११।१२ अष्टकबोला—सुवर्ण के समान कान्ति वाले ५ यह रथ किसके दीखते हैं १३ ययातिने कहा कि सुवर्णकी कान्तिके समान कान्तिवाले यह रथ तुम्हारे और हमारे दीखते हैं इनमें बैठकर आपको मुझ समेत स्वर्ग में गमन करना योग्य

विहायसा। वयमप्यनुयास्यामो यदाकालोभविष्यति १५ (ययातिरुवाच) सर्वैरि
दानींगंतव्यं सहस्वर्गोजितोयतः। एषवोविरजाःपंथा दृश्यतेदेवसद्मगः १६ (शौनक
उवाच) तेऽभिरुह्यरथंसर्वेप्रयातान्नृपतन्नृपाः।आक्रमंतोदिवंभांतिधर्मेणावृत्यरोदसी १७
(अष्टकउवाच) अहंमन्येपूर्वमेकोऽभिगता सखाचेन्द्रःसर्वथामेमहात्मा। कस्मादेवंशि
विरौशीनरोऽयमेको ऽत्ययात्सर्ववेगेनवाहान् १८ (ययातिरुवाच) अददाद्देवयानाय
यावद्वित्तमनिन्दितः। उशीनरस्यपुत्रोऽयं तस्मात्श्रेष्ठोहिवःशिविः १९ दानंशौचंसत्य
मथोह्यहिंसा ह्रीःश्रीस्तितिक्षासमतानृशंस्यम्। राजन्त्येतान्यथसर्वाणिराज्ञि शिवौस्थि
तान्यप्रतिमेसुबुद्ध्या। एवंवृत्तंह्रीनिषेवोबिभर्ति तस्माच्छिविरभिगंतारथेन २० (शौनक
उवाच) अथाष्टकःपुनरेवान्वपृच्छन् मातामहंकौतुकादिन्द्रकल्पम्। पृच्छामित्वांनृपते
ब्रूहिसत्यं कुतश्चकश्चासिकथंत्वमागाः।कृतंत्वयायद्धिनतस्यकर्ता लोकेत्वदन्योब्राह्मणः
क्षत्रियोवा २१ (ययातिरुवाच) ययातिरस्मिनहुषस्यपुत्रो पूरोःपितासार्वभौमस्त्विहा
सम्। गुह्यंमन्त्रंमामकेभ्योब्रवीमि मातामहोभवतांसुप्रकाशः २२ सर्वामिमांपृथिवींनिर्जि
गायरवृद्धांमहीमदद्ब्राह्मणेभ्यः। मेध्यानश्वान्नैकशस्तान्सुरूपान् तदादेवाःपुण्यभाजो
भवन्ति २३ अदामहंपृथिवींब्राह्मणेभ्यः पूर्णामिमामखिलान्नैःप्रशस्ताम्। गोभिःसुवर्णै
श्चधनैश्चमुख्यैरश्वाःसनागाःशतशस्त्वर्बुदानि २४ सत्येनमेद्यौश्चवसुन्धराच तथैवा

है १४।१५ अष्टकबोला हे राजा तुम रथमें वैठके आकाश मार्गके द्वारा स्वर्गको जाओ जब हमारा कालहोगा तब हमभी आवेंगे तुम सबको अभी गमनकरना योग्यहै क्योंकि तुम सबने स्वर्ग जीत- लिया है यह स्वर्गमें प्राप्तहोनेवाला तुम्हारा उत्तम मार्ग दीखरहा है १६ शौनकजी बोले- तब वह सब राजालोग रथोंमें बैठकर अपने धर्मोंसे पृथ्वी समेत स्वर्गको पूरितकरते गमन करतेसमय अति शोभित होतेभये १७ अष्टकबोला--कि मैं प्रथम यही मानताथा कि मैं सबसे अच्छे मार्गमें जाऊंगा और इन्द्रमेरा सखाहै सो अब सबसे श्रेष्ठ वेगवाले अश्वोंसेयुक्त रथमें बैठाहुआ यह शिवि राजा कैसे जाता है १८ तब ययातिबोला -स्वर्गके मार्गमें जानेके लिये शिविराजाने निन्दासे रहितहोके संपूर्ण वित्तका दान दियाहै इसी हेतुसे उशीनरका पुत्र राजाशिवि तुम सबों में श्रेष्ठहै १९ हे राजन् दान-- शौच--सत्य--अहिंसा--लज्जा -लक्ष्मी--शान्ति--समता--और सरलता यह सब बातें राजा शिवि में स्थित होतीभई इस हेतुसे यह शिवि राजा उत्तमरथमें बैठाजाता है २० शौनकजी बोले--कि वह अष्टक इसप्रकारसे अपने मातामह ययातिसे फिर भी यह पूछताभया कि हे राजन् सत्यकहो कि आप कौनहो कहाँसे आये कैसे आयेहो और जो उत्तम कर्म आपने किये हैं ऐसे उत्तम कर्मोंका करनेवाला कोई ब्राह्मण क्षत्रियोंमें से अन्यभी है या नहीं २१ ययातिने कहा कि मैं नहुप का पुत्र और पूरुका पिता संपूर्णपृथ्वी का ययातिनामराजाहूं मैं किसीके आगे असत्य वचन नहीं कहताहूं और तुम्हारा मैं मातामह अर्थात् नानाहूं २२ मैंने इस संपूर्ण पृथ्वीको जीतकर ब्राह्मणों के अर्थदी और बहुत से अनेक सुन्दर रूपवाले अश्वों को भी ब्राह्मणोंके अर्पणकिया ऐसाकर्मकरनेवाला मुझे देखकर देवता लोग मेरे पुण्यके ग्रहण करनेवाले हुए २३ मैंने संपूर्ण अन्नों से पूर्ण हुई इस पृथ्वी को ब्राह्मणोंको

ग्निर्ज्वलतेमानुषेषु । नमेवृथाव्याहृतमेववाक्यं सत्यंहिसन्तःप्रतिपूजयन्ति २५ साष्ट
ष्टकप्रब्रवीमीहसत्यं प्रतर्दनंवसुमन्तंशिविञ्च । सर्वेदेवामुनयश्चलोकाः सत्येनपूज्या
इतिमेमनोगतम् २६ योनःसर्गजितंसर्वं यथावृत्तंनिवेदयेत् । अनसूयुर्द्विजाग्रेभ्यःसम
जेन्नसलोकताम् २७ (शौनक उवाच) एवंराजन्समहात्माययातिः स्वदौहित्रैस्तारितो
मित्रवर्यैः । त्यक्त्वामहींपरमोदारकर्मा स्वर्गंगतःकर्मभिर्व्याप्यपृथ्वीम् २८ एवंसर्वंवि
स्तरतोयथावदाख्यातंतेचरितन्नाहुषस्य । वंशोयस्यप्रथितःकौरवेयो यस्मिंजातस्त्वम्म
नुजेन्द्रकल्पः २९ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे नाहुषोपाख्याने द्विचत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४२ ॥

(सूत उवाच) इत्येतच्छौनकाद्राजा शतानीकोनिशम्यतु । विस्मितःपरयाप्रीत्या पू
र्णचन्द्रइवाबभौ १ पूजयामासनृपति र्विधिवच्चाथशौनकम् । रत्नैर्गोभिःसुवर्णैश्च वासो
भिर्विविधैस्तथा २ प्रतिगृह्यततःसर्वं यद्राज्ञाप्रहितंधनम् । दत्त्वाचब्राह्मणेभ्यश्च शौन
कोऽन्तरधीयत ३ (ऋषय ऊचुः) ययातेर्वंशमिच्छामः श्रोतुंविस्तरतोवद । यदुप्रभृति
भिःपुत्रैर्यदालोकेप्रतिष्ठितः ४ (सूत उवाच) यदोर्वंशंप्रवक्ष्यामि ज्येष्ठस्योत्तमतेजसः ।
विस्तरेणानुपूर्व्याच गदतोमेनिबोधत ५ यदोःपुत्राबभूवुर्हि पञ्चदेवसुतोपमाः । महा

देकर सैकड़ों अर्बुद संख्या गौ सुवर्ण अश्व और हस्ती इत्यादि धनोंका भी दानकिया २४ मेरे सत्य के प्रतापसे पृथ्वी और स्वर्गमें सब मनुष्योंके आगे अग्नि जलने लगती है मैंने इन सब बातोंमें कोई बातभी असत्यनहीं कहीहै क्योंकि सत्यही की श्रेष्ठजन प्रशंसाकरते हैं हे अष्टक मैं सत्यही वचनकहता हूं और प्रतर्दन, वसुमान और राजा शिवि तुम सब भी सुनो यह मेरामतहै कि सब देवता मुनि और लोक यह सब सत्यकरकेही पूजनेके योग्यहैं जो इसप्रकारसे हमारे आगे अपने मनके स्वभावको जी तकर संपूर्ण वृत्तान्तकोकहैगा वह निन्दाआदिकोंसे रहित होके हमारे समान लोकोंमें प्राप्तहोगा२५।२६ २७ शौनकजी बोले–हे राजन् वह महात्माराजा ययाति इसप्रकार से अपने दौहित्रके प्रभावसेपार उतर पृथ्वी को त्याग परमउदार कर्मवालाहोकर स्वर्ग में गया २८ यह राजा ययातिका चरित्र मैंने विस्तारपूर्वक तुम्हारे आगे कहा और इसी का वंश कौरव संज्ञक होकर पृथ्वी में प्रसिद्ध हुआ है और इसी वंश में तुम मनु उत्पन्न हुए हो २९ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

सूतजी बोले–इस प्रकार करके राजा शतानीक शौनकके मुखसे सब वृत्तान्त सुन बड़े आश्चर्य कोकर परम प्रीतिसे चन्द्रमाके समान प्रकाशित होताभया १ और शौनकमुनिको रत्न गौ सुवर्ण और अनेक प्रकारके वस्त्रादिकों से पूजन करताभया २ तबशौनक मुनिभी राजासे प्राप्तहुए धनको ग्रहणकर ब्राह्मणों को विभागकरके उसीस्थानपर अन्तर्धान होगये ३ ऋषियों ने पूछा-हे सूतजी हम अब ययाति के वंशको सुनाचाहते हैं अर्थात् उसके यदुआदिक पुत्रोंकरके जो लोकमें प्रसिद्ध हुआ है उस वंशको कहो ४ सूतजी बोले–अब ययाति के बड़े पुत्र यदुके वंशको मैं विस्तारपूर्वक कहताहूं उसको सुनो ५ देवता के समान उपमावाले महारथी यदुके जो पांचपुत्रहुए उन के नामों

रथामहेष्वासा नामतस्तान्निबोधत ६ सहस्रजिरथोज्येष्ठः क्रोष्टुर्नीलोऽन्तिकोलघुः । स हस्रजेस्तुदायादो शतजिर्नामपार्थिवः ७ शतजेरपिदायादास्त्रयःपरमकीर्त्तयः । हैहय श्चहयश्चैव तथावेणुहयश्चयः ८ हैहयस्यतुदायादो धर्म्मनेत्रःप्रतिश्रुतः । धर्म्मनेत्र स्यकुन्तिस्तु संहतस्तस्यचात्मजः ६ संहतस्यतुदायादो महिष्मान्नामपार्थिवः । आसी न्महिष्मतःपुत्रो रुद्रश्रेण्यःप्रतापवान् १० वाराणस्यामभूद्राजा कथितंपूर्वमेवतु । रुद्र श्रेण्यस्यपुत्रोऽभूद्दुर्दमोनामपार्थिवः ११ दुर्दमस्यसुतोधीमान् कनकोनामवीर्य्यवान् । कनकस्यतुदायादाश्चत्वारोलोकविश्रुताः १२ कृतवीर्य्यःकृताग्निश्च कृतवर्मातथैवच। कृतोजाश्चचतुर्थोऽभूत् कृतवीर्य्यात्तुसोऽर्जुनः १३ जातःकरसहस्रेण सप्तद्वीपेश्वरोनृ पः । वर्षायुतंतपस्तेपे दुश्चरंपृथिवीपतिः १४ दत्तमाराधयामास कार्तवीर्य्योऽत्रिसम्भ वम् । तस्मैदत्तावरास्तेन चत्वारःपुरुषोत्तम ! १५ पूर्वंबाहुसहस्रन्तु सवव्रेराजसत्तमः । अधर्मंचरमाणस्य सद्भिश्चापिनिवारणम् १६ युद्धेनपृथिवींजित्वा धर्मेणैवानुपालनम्। संग्रामेवर्त्तमानस्य वधश्चैवाधिकाद्भवेत् १७ तेनेयंपृथिवीसर्वा सप्तद्वीपासपर्वता। समो दधिपरिक्षिप्ता क्षात्रेणविधिनाजिता १८ जज्ञेबाहुसहस्रंवै इच्छतस्तस्यधीमतः । रथो ध्वजश्चसंजज्ञे इत्येवमनुशुश्रुमः १९ दशयज्ञसहस्राणि राज्ञाद्वीपेपुवैतदा । निरर्ग लानिवृत्तानि श्रूयन्तेतस्यधीमतः २० सर्वेयज्ञामहाराज्ञस्तस्यासन्भूरिदक्षिणाः । स र्वेकाञ्चनयूपास्ते सर्वाःकाञ्चनवेदिकाः २१ सर्वेदेवैःसमंप्राप्तैर्विमानस्थैरलंकृताः ।

को सुनो बड़े पुत्रका नाम सहस्रजी दूसरेका क्रोष्टु-तीसरे का नील चौथेका अंतिक पांचवें का लघु इन नामों वाले पांचपुत्रहुए सहस्रजीके शतजी नाम वाला पुत्रराजाहुआ ६ । ७ शतजी के हैहय-हय और वेणु इन नामों के तीनपुत्रहुए ८ हैहयका पुत्र धर्मनेत्र हुआ-धर्मनेत्रका कुन्तिना-मपुत्रहुआ कुन्तिके संहतनाम पुत्रहुआ-संहत के महिष्मान राजा हुआ महिष्मान् के रुद्रश्रेण्य नाम प्रतापी पुत्रहुआ ६।१० वह काशीजी में प्रसिद्ध राजाहुआ-रुद्रश्रेण्यके दुर्दमनाम पुत्रहुआ ११ दुर्दमकापुत्र बुद्धिमान् और वीर्य्यवान् कनकनाम पुत्रहुआ कनकके लोकमें प्रसिद्ध कृतवीर्य्य १ कृताग्नि २ कृतवर्मा ३ और कृतोजा इननामोंवाले ४ पुत्र हुए १२ कृतवीर्य्यका पुत्रसातों द्वीप का राजा अर्जुनहुआ-उस अर्जुन राजाने दशहजार वर्ष तक तप किया तब प्रसन्नहोकर अत्रि ऋषि ने उसको चार वरदान दिये १३।१५ उसने प्रथमतो अपनी हजार भुजाचाहीं फिर श्रेष्ठ पुरुषों के संग अधर्मकरनेवाले का निवारण करदेना वरमांगा फिर पृथ्वी को युद्ध में जीतकर धर्म से उसका पालन करना मांगा और संग्राम में वर्त्तमानहोके अपने से अधिक बलवान् से अपना वध यह चौथावरमांगा इस प्रकार के चारों वरों को पाकर सप्तद्वीपसमुद्र और पर्व्वतों समेत इस सब पृथ्वी को अपने क्षत्रियधर्म करके जीतलिया १६ । १८ उस बुद्धिमान् के इच्छाकरतेही हजार बाहु उत्पन्न होगईं और यह भी सुनाजाता है कि उसकी इच्छाही से रथ ध्वजाआदिक भी उत्पन्न होगये १९ उसराजाने दशहजारयज्ञकिये सातोंद्वीपों में वह वेरोकजाताथा अर्थात् सबस्थानों पर उसकी गतिहोती भई उसने सबयज्ञोंमें बहुतसी दक्षिणादीं उसके यज्ञों में सुवर्ण के स्तंभ और

गन्धर्वैरप्सरोभिश्च नित्यमेवोपशोभिताः २२ तस्ययज्ञेजगौगाथां गन्धर्वोनारदस्त
था। कार्तवीर्य्यस्यराजर्षे र्महिमानंनिरीक्ष्यसः २३ ननूनंकार्तवीर्य्यस्य गतिंयास्य
न्तिक्षत्रियाः। यज्ञैर्दानैस्तपोभिश्च विक्रमेणश्रुतेनच २४ सहिसप्तसुद्वीपेषु खड्गी
चक्रीशरासनी। रथीद्वीपान्यनुचरन् योगीपश्यतितस्करान् २५ पञ्चाशीतिसहस्रा
णि वर्षाणांसनराधिपः। ससर्वरत्नसम्पूर्णश्चक्रवर्तीबभूवह २६ सएवपशुपालोऽभूत्
क्षेत्रपालःसएवहि। सएववृष्ट्यापर्जन्यो योगित्वादर्ज्जुनोऽभवत् २७ योऽसौबाहु
सहस्रेण ज्याघातकठिनत्वचा। भातिरश्मिसहस्रेण शारदेनेवभास्करः २८ एषना
गंमनुष्येषु माहिष्मत्यांमहाद्युतिः। कर्कोटकसुतंजित्वा पुर्य्यांतत्रन्यवेशयत् २९ एषवे
गंसमुद्रस्यप्रावृट्कालेभजेतवै। क्रीडन्नेवसुखोद्भिन्नः प्रतिस्रोतोमहीपतिः ३० ललता
क्रीडतातेन प्रतिस्रग्दाममालिनी। ऊर्मिभ्रूकुटिसन्त्रासाच्चकिताभ्येतिनर्म्मदा ३१ एको
बाहुसहस्रेणवगाहेसमहार्णवः। करोत्युद्धतवेगान्तु नर्म्मदांप्रावृडुद्धताम् ३२ तस्यबाहु
सहस्रेण क्षोभ्यमाणेमहोदधौ। भवन्त्यतीवनिश्चेष्टा पातालस्थामहासुराः ३३ चूर्णीकृत
महावीचि लीनमीनमहातिमिम्। मारुताविद्धफेनौघ मावर्त्ताक्षिप्तदुःसहम् ३४ करोत्या
लोडयन्नेव दोःसहस्रेणसागरम्। मन्दरक्षोभचकिताह्यमृतोत्पादशङ्किताः ३५ तदानि

सुवर्णही की वेदीबनाई गई उसके यज्ञों में विमानों में बैठे देवता गन्धर्व और मनुष्यादिक यह सब अप्सराओं समेत शोभितहुए २०। २१ उसराजा की महिमा को देखकर नारद और गन्धर्वादिक उसके यज्ञकी स्तुति करते भये २३ इससहस्राबाहु राजाके समान यज्ञदान तप पराक्रम और शास्त्रों का सुनना इनसबबातों में कोई क्षत्री नहीं होताभया २४ वही राजा अपने सातों द्वीपोंमें खड्ग-चक्र-बाण-रथ इत्यादिकों करके तस्कर और दुष्टलोगों को दंड देताहुआ सर्वत्र विचरताथा २५ इस राजाने पञ्चासी ८५ हजार वर्षतक इस पृथ्वीपर संपूर्ण रत्नोंसे युक्त चक्रवर्त्तीहोकर राज्यकिया २६ यही राजा पशुपाल क्षेत्रपाल वर्षाकरनेवाला मेघरूप और योगीहोकर धर्म से पृथ्वीको पालन करता सहस्रार्जुन नामसे विख्यातहुआ २७ यह राजा जब अपनी हजारभुजाओं से धनुषको टंकोरकरता था उस समय इसकी खिंचीहुई त्वचाकी ऐसी शोभाहोती भई जैसे कि हजारों किरणोंकरके शरद ऋतुमें सूर्य्यकी शोभाहोती है २८ यह राजा माहिष्मतिपुरीमें कर्कोटकके पुत्र नागको जीतकरआप राज्यकरताभया और उसीको अपनी राजधानी भी बनाया यह राजा वर्षाकाल में समुद्रके वेग को प्राप्तहोकर अपनी क्रीडाहीकरके नर्मदानदी के स्रोतोंको समुद्रमें भेदनकरताभया २९। ३० जबउस ने क्रीडामें अत्यन्त चंचलताकरी तब उसकी भृकुटियोंके त्राससे महाचकित होके नर्मदानदी उसी सहस्राबाहु को प्राप्तहोती भई वह अकेलाही अपनी हजार भुजाओंसे समुद्रको गाहकर वर्षाकालमें नर्मदानदी को अत्यन्त वेगवाली बनाताभया जब इसकी हजारबाहुओं से समुद्रक्षोभको प्राप्त होगया तब पातालवासी सब महाअसुर चेष्टासे अत्यन्त रहित होते भये ३१। ३३ वह राजा अपनी हजार भुजाओंसे समुद्रकी बड़ी २ तरंगोंको और मकरमत्स्यादि जीवोंको जब चूर्णके समान करदेताथा तब वायुके वेगसे उठेहुए झाग और भ्रमरोंके उत्पन्नहोनेसे वह इसदुस्सह समुद्रको भी चूर्णकरनेकेही

श्चलमूर्द्धानो भवन्तिचमहोरगाः। सायाह्नेकदलीखण्डा निर्वातस्तिमिताइव ३६ एवंब
ध्वाधनुर्ज्यायां मुत्सिक्तंपञ्चभिःशरैः। लङ्कायांमोहयित्वातु सबलंरावणंबलात् ३७ नि
र्जित्यबध्वाचानीयमाहिष्मत्याम्बबन्धच। ततोगत्वापुलस्त्यस्तुअर्जुनंसंप्रसादयेत् ३८
मुमोचरक्षःपौलस्त्यं पुलस्त्येनेहसान्त्वितम्। तस्यबाहुसहस्रेण बभूवज्यातलस्वनः३९
युगान्ताभ्रसहस्रस्यआस्फोटस्वशनेरिव। अहोवतविधेर्वीर्यंभार्गवोऽयंयदाच्छिनत् ४०
तद्वैसहस्रंबाहूनां हेमतालवनंयथा। यत्रापवस्तुसंक्रुद्धो ह्यर्जुनंशप्तवान्प्रभुः ४१ यस्मा
द्वनंप्रदग्धंवै विश्रुतंममहैहय!। तस्मात्तेदुष्करंकर्म्म कृतमन्योहरिष्यति ४२ छित्वाबा
हुसहस्रन्ते प्रथमन्तरसावली। तपस्वीब्राह्मणश्चत्वां सवधिष्यतिभार्गवः ४३ (सूत
उवाच) तस्यरामस्तदात्वासीन् मृत्युःशापेनधीमता। वरश्चैवन्तुराजर्षेः स्वयमेववृतः
पुरा ४४ तस्यपुत्रशतंत्वासीत् पञ्चतत्रमहारथाः। कृतास्त्राबलिनःशूरा धर्म्मात्मानो
महाबलाः ४५ शूरसेनश्चशूरश्च धृष्टःक्रोष्टुस्तथैवच। जयध्वजश्चवैकर्ता अवन्तिश्च
विशाम्पते! ४६ जयध्वजस्यपुत्रस्तु तालजंघोमहाबलः। तस्यपुत्रशतान्येव तालजं
घाइतिश्रुताः ४७ तेषांपञ्चकुलाख्याताःहैहयानांमहात्मनाम्। वीतिहोत्राश्चशार्याता

समान विलोवताथा उससमय मंदराचलपर्वतकेक्षोभसे चकितहोकर अमृतउत्पन्न करनेकीशंकावाले महानाग दुखितहोकर ऐसे कंपायमान होतेथे जैसे कि सायंकालके समय केलेकेपत्ते वायुचलने के विनाही अलकसातेहुए विदितहोते हैं३४।३६ यह राजा एकसमय रावणको अपने धनुषकीप्रत्यंचामें बांधकरपांचवाणोंसे उसीवली रावणको लंकामेंही मोहितकरताभया३७फिर उसको जीतकर अपनी माहिष्मती पुरीमें लाकर बांधदेताभया तब पुलस्त्यजी आये और सहस्रावाहुको प्रसन्न करते भये उस समय पुलस्त्यके पुत्र रावणको वह सहस्रावाहु छोड़देताभया उस सहस्रावाहुकी भुजाओं का शब्द संपूर्ण पृथ्वीपर ऐसाहुआ करताथा ३८।३९ जैसे कि प्रलयकालके मेघके गर्जनेका शब्द होता है परन्तु जिनवाहुओंका ऐसा शब्दहोताथा उन भुजाओंको परशुरामजीने काटडाला यह वड़ा आश्चर्य्य है ४० उस सुवर्णके तालवृक्षों के समान भुजावाले सहस्रावाहुने आपवऋषिका वनजलादियाथा तब आपवऋषिने क्रोधितहोकर सहस्रावाहुको यह शापदेदिया था कि तैंने जो मेरे इस विख्यात वनको दग्धकरदियाहै इस हेतुसे तेरे इस दुष्कर्मके करने से परशुरामजी तेरे सबमानको हरकर तेरी सबभुजाओंको काटेंगे ४१।४२ वही महावली तपस्वीब्राह्मण प्रथम तेरी सबभुजाओंको काटकर फिर तेरावधभी करैगा ४३ सूतजी बोले कि इस प्रकार से आपव ऋषि के शापके हेतुकर के उस सहस्रावाहु राजाकी परशुरामके हाथसे मृत्युहोती भई और इस ने पूर्व्वमें अपने आपभी यह वर मांगलिया था कि मैं किसी उत्तम तेजस्वी बड़े वलवान् ब्राह्मणके हाथसे मरूं ४४ इस सहस्रावाहु के सौ १०० पुत्रहुए उनमें पांचपुत्र बड़े शूरवीर योद्धा धर्मात्मा वलवान् और प्रतापी होतेभये इनमें पहला शूरवीर धृष्टतासे रहने वाला शूरसेन-दूसरा क्रोष्टु-तीसरा जयध्वज-चौथा वैकर्त्ता और पांचवां अवन्तिहुआ ४५। ४६ जयध्वज के बड़ावलवान् तालजंघनाम पुत्रहोता भया उस के तालजंघनामसे प्रसिद्ध सौ१००पुत्रहुए ४७ फिर उनहैहय वंशके राजाओं के वीतिहोत्र १शार्य्यात २

भोजाश्चावन्तयस्तथा ४८ कुण्डिकेराश्चविक्रान्ता स्तालजंघास्तथैवच। वीतिहोत्र सुतश्चापि आनर्तोनामवीर्य्यवान्। दुर्जेयस्तस्यपुत्रस्तु बभूवामित्रकर्शनः ४९ सद्धा वेनमहाराज! प्रजाधर्मेणपालयन्। कार्तवीर्यार्जुनोनाम राजाबाहुसहस्रवान् ५० येन सागरपर्यन्ता धनुषानिर्जितामही। यस्तस्यकीर्तयेन्नामकल्यमुत्थायमानवः ५१ न तस्य वित्तनाशः स्यान्नष्टञ्चलभतेपुनः। कार्त्तवीर्यस्ययोजन्म कथयेदिहधीमतः। यथावत् स्विष्टपूतात्मा स्वर्गलोके महीयते ५२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

(ऋषय ऊचुः) किमर्थन्तद्वनन्दग्धमापवस्यमहात्मनः। कार्तवीर्येणविक्रम्य सूत! प्रब्रूहितत्त्वतः १ रक्षितासतुराजर्षिः प्रजानामितिनःश्रुतम्। सकथंरक्षिताभूत्वा अदह त्तत्तपोवनम् २ (सूत उवाच) आदित्योद्विजरूपेण कार्तवीर्यमुपस्थितः। तृप्तिमेकां प्रयच्छस्व आदित्योऽहंनरेश्वर! ३ (राजोवाच।) भगवन्! केनतृप्तिस्ते भवत्येव दिवाकर!। कीदृशंभोजनंदद्मि श्रुत्वातुविदधाम्यहम् ४ (आदित्य उवाच) स्थावरन्दे हिमेसर्वं माहारन्ददतांवर!। तेनतृप्तोभवेयंवै सामेतृप्तिर्हिपार्थिव! ५ (कार्तवीर्य उवाच)नशक्याःस्थावराःसर्वे तेजसाचबलेनच। निर्दग्धुंतपतांश्रेष्ठ! तेनत्वांप्रणमाम्यहम् ६ (आदित्य उवाच) तुष्टस्तेऽहंशरान्दद्मि अक्षयान्सर्वतोमुखान्। येप्रक्षिप्ताज्ज्वलिष्यन्ति ममतेजःसमन्विताः ७ आविष्टाममतेजोभिः शोषयिष्यन्तिस्थावरान्। शुष्कान्भस्मी

भोज ३ अवन्ति ४ और कुंडकेर यह पांचवंश विख्यात होते भये वीतिहोत्रके महाबलवान् आनर्त नामपुत्र हुआ उसके शत्रुनाशक दुर्जेयनाम पुत्र भया ४८।४९ हे महाराज बड़े उत्तम प्रभाववाला धर्म से प्रजाका पालनकरने वाला सहस्रार्जुन नाम से विख्यात राजाहुआ ५० इसने अपने धनुषबाण सेही समुद्रपर्य्यन्त पृथ्वीको विजयकिया जो मनुष्य प्रातःकाल सहस्राबाहु राजाके नामका उच्चारण करताहै उसके धनकानाश कभी नहीं होता और नाशहुआ धनभी मिलजाताहै इसकृतवीर्य्यके पुत्र सहस्राबाहुके जन्मको जो पवित्र होकरयथार्थरीतिसे वर्णनकरेगावहस्वर्गलोकमें प्राप्तहोवेगा ५१।५२

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

ऋषियों ने पूछा हे सूतजी इस सहस्राबाहु ने उस ऋषिके वनको क्यों जलादियाथा इसके कारण को आपसुनाइये १ क्योंकि वह राजऋषि तो हमने प्रजाकी रक्षा करनेवाला सुनाहै रक्षक होकर उसने उसतपोवनको किस निमित्त जलादिया २ सूतजी बोले—कि एकसमय सूर्य्यदेवताब्राह्मण का रूप धारणकरके सहस्राबाहुके समीप आकर यहवचन बोले कि हेराजा मैं सूर्य्यहूं तुमतृप्तिकरो ३ राजा बोला हेभगवन् सूर्य्य आपकी तृप्ति कैसे होनी योग्यहै आपके अर्थ मैं कैसा भोजनदूं जिस्से कि आपकी तृप्तिहोय इसे मुझे बताइये ४ सूर्य्य बोले—हे उत्तमदान देने वाले तुममुझको स्थावरवृक्षोंका भोजनदो इसी से मेरीतृप्तिहोगी—सहस्राबाहु बोला—हेदेव मैं अपने तेजसे वा बलसे सबवृक्षों के दग्ध करनेको समर्थ नहींहूं इसहेतुसे मैं आपको प्रणाम करताहूं ५।६ आदित्यजी बोले कि हेराजा मैं तुझपर प्रसन्नहूं मैं तुझको सबओर को मुखहोनेवाले बाणदूंगा वह बाण मेरे तेजसेयुक्त होंगे उनको तू

करिष्यन्ति तेनतृप्तिर्नराधिप! ८ (सूत उवाच) ततःशरांस्तदादित्य स्त्वर्जुनायप्रयच्छत।
ततोददाहसंप्राप्तान् स्थावरान्सर्वमेवच ९ ग्रामांस्तथाश्रमांश्चैव घोषाणिनगराणिच।
तथावनानिरम्याणिवनान्युपवनानिच १० एवंप्राचींसमदहत् ततःसर्वांश्चपक्षिणः।
निर्वृक्षानिस्तृणाभूमिर्हताघोरेणतेजसा ११ एतस्मिन्नेवकालेतु आपवोजलमास्थितः।
दशवर्षसहस्राणितत्रास्तेसमहानृषिः १२ पूर्णेव्रतेमहातेजा उदतिष्ठंस्तपोधनः। सोऽप
श्यदाश्रमं दग्धमर्जुनेनमहामुनिः १३ क्रोधाच्छशापराजर्षिं कीर्तितंवोयथामया। क्रोष्टोः
शृणुतराजर्षेर्वंशमुत्तमपौरुषम् १४ यस्यान्ववायेसम्भूतो विष्णुर्वृष्णिकुलोद्वहः। क्रो
ष्टोरेवाभवत्पुत्रो वृजिनीवान्महारथः १५ वृजिनीवतश्चपुत्रोऽभूत्स्वाहोनाममहाबलः।
स्वाहपुत्रोऽभवद्राजन्! रुषङ्गुर्वदतांवरः १६ सतुप्रसूतिमिच्छन्वैरुषङ्गुःसौम्यमात्मज
म्। चित्रश्चित्ररथश्चास्य पुत्रःकर्मभिरन्वितः १७ अथचैत्ररथिर्वीरोजज्ञेविपुलदक्षिणः।
शशविन्दुरितिख्यातश्चक्रवर्तीबभूवह १८ अत्रानुवंशश्लोकोऽयं गीतस्तस्मिन्पुराभव
त्। शशविन्दोस्तुपुत्राणां शतानामभवच्छतम् १९ धीमतांचाभिरूपाणांभूरिद्रविणते
जसाम्। तेषांशतप्रधानानांपृथुसाह्वामहाबलाः २० पृथुश्रवाःपृथुयशाः पृथुधर्मापृथु
ञ्जयः। पृथुकीर्त्तिःपृथुमनाराजानःशशविन्दवः २१ शसन्तिचपुराणज्ञाः पृथुश्रवसमु
त्तमम्। अन्तरस्यसुयज्ञस्य सुयज्ञस्तनयोऽभवत् २२ उशनातुसुयज्ञस्य योरक्षन्पृथि

जबवृक्षोंपर डालेगा तो तत्कालही दग्धहोजायेंगे ७ वह बाण मेरे तेजसेयुक्त होकर सबवृक्षोंको शोप लेंगे और फिर सूखजाने के पीछे भस्म भी करदेंगे उससेही मेरी तृप्तिहोगी ८ सूतजीकहते हैं कि इस के पीछे सूर्य्यने राजाको बाणदिये तब वहराजा सबवृक्षों को जलादेताभया ९ अर्थात् ग्राम घोपजा- तियों की बस्ती बड़ेनगर वन और रमणीकबाग इनसबको दग्ध करताभया—इस प्रकारसे जब इसने पूर्व दिशाजलाई तब बड़े घोरतेज से सबपक्षी आदिक जीव और तृण वृक्षादिकोंको दग्धकरके सब पृथ्वी को हतकरदिया १० । ११ उस समय आपवनाम बड़े महात्माऋषि जल में स्थितहोकर दशहजार वर्षोंसे तपकर रहेथे उन्होंने जब आकर सहस्रबाहुसे दग्ध कियेहुये अपने आश्रमकोदेखा १२ । १३ तब क्रोधकरके यही शाप दिया जो मैंने तुमसे वर्णन किया अब क्रोष्टुराजाके उत्तम वंश और उसके पुरुषार्थ को सुनो १४ इसी क्रोष्टुराजाके वंशमेंवृष्णिवंशके बढ़ानेवाले विष्णुभगवान् श्री कृष्णचन्द्रजीने अवतारलिया उसके क्रमको कहताहूं—क्रोष्टुके महारथी वृजिनीवान् पुत्रहुआ वृजि- नीवान् के बड़ाबलवान् स्वाहनाम पुत्रहुआ और स्वाहके रुषंगुनाम पुत्रहुआ १५ । १६ रुषंगु के सौम्य पुत्रहुआ और सौम्यके उत्तमकर्मी चित्र और चित्ररथनाम दोपुत्रहुए १७ चित्ररथके विपुल दक्षिणादेने वाला शूरवीर शशविन्दुनाम चक्रवर्त्तीराजाहुआ १८ इसवंशकायश प्रथम अत्यन्तप्रसिद्ध हुआ शशविन्दु के सौपुत्र उत्पन्नहुए और उन सौ पुत्रोंके योगसे सौहीपुत्रहुए १९ इन सौ पुत्रों में बड़ेतेजस्वी बुद्धिमान् सुन्दररूपयुक्त बड़ेधनी छःपुत्र पृथुनाम से प्रसिद्ध बड़ेबलवान् होतेभये अर्थात् पृथुश्रवा १ पृथुयशा २ पृथुधर्मा ३ पृथुंजय ४ पृथुकीर्त्ति ५ और पृथुमना इननामोंवाले छःपुत्रशश- विन्दुके कुल में राजा भये २० । २१ इनसबों में पुराणवेत्तालोग राजापृथुश्रवाकी अधिक प्रशंसा

वीमिमाम्। आजहाराश्वमेधानां शतमुत्तमधार्म्मिकः २३ तितिक्षुरभवत्पुत्र औशनः शत्रुतापनः। मरुत्तस्तस्यतनयो राजर्षीणामनुत्तमः २४ आसीन्मरुत्ततनयो वीरःकम्बलबर्हिषः। पुत्रस्तुरुक्मकवचोविद्वान् कम्बलबर्हिषः २५ निहत्यरुक्मकवचः परान्कवचधारिणः। धन्विनोविविधैर्बाणैरवाप्यपृथिवीमिमाम् २६ अश्वमेधेददौराजा ब्राह्मणेभ्यस्तुदक्षिणाम्। यज्ञेतुरुक्मकवचः कदाचित्परवीरहा २७ जज्ञिरेपञ्चपुत्रास्तु महावीर्याधनुर्भृताः। रुक्मेषुःपृथुरुक्मश्चज्यामघःपरिघोहरिः २८ परिघंचहरिंचैव विदेहेऽस्थापयत्पिता। रुक्मेषुरभवद्राजा पृथुरुक्मस्तदाश्रयः २९ तेभ्यःप्रव्राजितोराज्यात् ज्यामघस्तुतदाश्रमे। प्रशान्तश्चाश्रमस्थश्च ब्राह्मणेनावबोधितः ३० जगामधनुरादायदेशमन्यंध्वजीरथी। नर्म्मदांनृपएकाकी केवलंवृत्तिकानतः ३१ ऋक्षवन्तंगिरिंगत्वा भुक्तमन्यैरुपाविशत्। ज्यामघस्याभवद्भार्या चैत्रापरिणता सती ३२ अपुत्रोन्यवसद्राजा भार्यामन्यान्नविन्दत। तस्यासीद्विजयोयुद्धे तत्रकन्यामवाप्यसः ३३ भार्यामुवाचसन्त्रासात्स्नुषेयंतेशुचिस्मिते!। एवमुक्ताब्रवीदेनं कस्यचेयंस्नुषेतिच ३४ (राजोवाच) यस्तेजनिष्यतेपुत्रस्तस्य भार्याभविष्यति। तस्मात्सातपसाग्रेणकन्यायाःसम्प्रसूयत३५ पुत्रंविदर्भंसुभगाचैत्रा परिणतासती। राजपुत्र्यांचविद्वान्सस्नुषायांक्रथकैशिकौ। लोमपादं तृतीयन्तु पुत्रं परमधार्मिकम् ३६ तस्यां विदर्भोऽजनयच्छूरान् रणविशारदान्।

करते हैं इससुन्दरयज्ञ करनेवाले पृथुश्रवाके सुयज्ञनाम पुत्रहुआ २२ सुयज्ञके पृथ्वीकारक्षक उशनानामपुत्रहुआ उशनाधर्मज्ञने सौ अश्वमेधयज्ञ किये २३ उशनाकापुत्र शत्रुनाशक तितिक्षु हुआ उसके मरुत्तनाम उत्तमपुत्रहुआ २४ मरुत्तके कम्बल बर्हिष रुक्मकवचनाम बड़ा विद्वान् पुत्रहुआ—वहरुक्मकवच भी अपने शत्रुओं को जीत के और इसपृथ्वी को प्राप्तहोकर अश्वमेधयज्ञ करताभया उसयज्ञमें ब्राह्मणों को बहुतसी दक्षिणादी तब यज्ञमें से धनुषबाणधारी महापराक्रमी पांचपुत्र उत्पन्नहुए—पहला रुक्मेषु दूसरा पृथुरुक्म तीसरा ज्यामघ चौथा परिघ और पांचवांहरि यह पांचपुत्रहुए२५।२८ फिर पिताने परिघ और हरिनाम अपने दोपुत्रोंको विदेह देशमें स्थापित किया और रुक्मेषु और पृथुरुक्म इन दोनोंको उसीदेशके राजाकिये २९ और ज्यामघ अपनेसबकुटुंबसे विरक्तहो घरसेबाहर निकल प्रशान्त चित्तहोकर ब्राह्मणके सदुपदेश से बोधको प्राप्तहोताभया ३० फिर बोधितहो धनुषबाण धारणकर ध्वजासमेतवाले रथमें बैठ अकेलाही अपनी वृत्तिकी कामनासे नर्मदानदीके ऊपर किसीअन्यदेशमेंगया फिर ऋक्षवंतनाम पर्व्वतपैजाके दूसरेराजाओंसे युक्तहोके वहांही स्थितहोगया वहाँही इसज्यामघकी एक चैत्रानामवाली महाउत्तम सतीभार्य्याहुई३१।३२इसस्त्रीमें जब कोईपुत्र न हुआ तबभी इसने दूसरा विवाह नहींकिया फिर एकसमय यह राजायुद्धमें जीतकर एकउत्तम कन्याकोलाया ३३ और बड़े संत्राससे शीघ्रता पूर्व्वक अपनी स्त्रीसे यह वचनबोला कि यह हमारी पुत्रवधूहै स्त्रीने कहा किसके पुत्रकी वधूहै ३४ तबराजाने कहा कि जो तेरे पुत्र उत्पन्नहोगा उसकी यह भार्य्याहोवेगी तब उसकन्याके उग्रतपके प्रभावसे वह चैत्रानामरानी विदर्भनाम पुत्रको उत्पन्न करतीभई उसविदर्भके उसीराजपुत्रीमें क्रथ-कैशिक औरलोमपाद यहतीनउत्तमपुत्रहोतेभये२५।३६

लोमपादान्मनुःपुत्रोज्ञातिस्तस्यतुचात्मजः ३७ कैशिकस्यचिदिःपुत्रोतस्माच्चैद्यानृपाःस्मृताः। क्रथोविदर्भपुत्रस्तुकुन्तिस्तस्यात्मजोऽभवत् ३८ कुन्तेर्धृष्टःसुतोजज्ञेरणधृष्टःप्रतापवान्। धृष्टस्यपुत्रोधर्मात्मा निर्वृतिःपरवीरहा ३९ तदेकोनिर्वृतेःपुत्रो नाम्नासतुविदूरथः। दशार्हस्तस्यवैपुत्रोव्यामस्तस्यचवैस्मृतः। दाशार्हाच्चैवव्योमात्तुपुत्रोजीमूतउच्यते ४० जीमूतपुत्रोविमलस्तस्यभीमरथःसुतः। सुतोभीमरथस्यासीत्स्मृतोनवरथःकिल ४१ तस्यचासीद्दृढरथःशकुनिस्तस्यचात्मजः। तस्मात्करम्भःकारम्भिर्देवरातोबभूवह ४२ देवक्षत्रोऽभवद्राजा दैवरातिर्महायशाः। देवगर्भसमोजज्ञे देवनक्षत्रनन्दनः ४३ मधुर्नामहातेजा मधोःपुरवसस्तथा। आसीत्पुरवसःपुत्रःपुरुद्वान्पुरुषोत्तमः ४४ जन्तुर्जज्ञेथवैदर्भ्यांभद्रसेन्यांपुरुद्वतः। ऐक्ष्वाकीचाभवद्भार्य्या जन्तोस्तस्यामजायत ४५ सात्वतः सत्वसंयुक्तः सात्वतांकीर्तिवर्द्धनः। इमांविसृष्टिंविज्ञाय ज्यामघस्यमहात्मनः। प्रजावानेतिसायुज्यं राज्ञःसोमस्यधीमतः ४६ सात्वतान्सत्वसम्पन्नान् कौशल्यासुषुवेसुतान्। भजिनंभजमानन्तु दिव्यंदेवावृधंनृप! ४७ अन्धकञ्चमहाभोजं वृष्णिंचयदुनन्दनम्। तेषान्तुसर्गाश्चत्वारो विस्तरेणैवतच्छृणु ४८ भजमानस्यसृञ्जय्यांबाह्यकायाञ्चबाह्यकाः। सृञ्जयस्यसुतेद्वेतु बाह्यकास्तुतदाभवन् ४९ तस्यभार्य्येभगिन्यौद्वे सुषुवातेबहून्सुतान्। निमिञ्चकृमिलञ्चैव वृष्णिंपरपुरञ्जयम्। तेबाह्यकायांसृञ्जय्यां भजमानाद्विजज्ञिरे ५० यज्ञेदेवावृधोराजा बन्धूनांमित्रवर्द्धनः। अपुत्रस्त्वभवद्राजा चचारपरम

यह तीनों बड़े शूरवीर और प्रतापी हुए फिर लोमपाद के मनु नाम पुत्र हुआ उस मनु के ज्ञाति पुत्रहुआ ३७ कैशिकके चिदिनाम पुत्रहुआ चिदिके चैद्यनामवाले पुत्रराजा होतेभये-क्रथके कुन्ति नामपुत्रभया कुन्तिके धृष्टपुत्रहुआ वह धृष्ट बड़ाप्रतापी धर्मात्मा और रणमें शूरवीर होताभया-धृष्ट के निर्वृतिनाम पुत्रहुआ ३८।३९ निर्वृतिके विदूरथनाम पुत्रहुआ-विदूरथके दशार्ह पुत्रहुआ उसके व्योमपुत्र व्योमके जीमूतहोताभया ४० जीमूतके विमल पुत्रहुआ उसकेभीमरथ भीमरथके नवरथ ४१ नवरथके दृढरथ-उसके शकुनी तिसके करम्भ करम्भके देवरात-देवरातके बड़ायशी देवक्षत्र देवक्षत्रके देवनक्षत्रादिकोंका प्रसन्न करनेवाला मधुपुत्रहुआ-मधुके पुरूरवा पुत्रहुआ उसका पुत्र पुरुद्वान्-पुरुद्वानके भद्रसेनीनाम स्त्रीमें जन्तुनाम पुत्रहुआ उसजन्तुके इक्ष्वाकुवंशकी कन्यामें सात्वतनाम पुत्रहुआ वह सात्वत सतोगुणीहोकर सबयादवोंकी कीर्त्तिका बढ़ानेवालाहुआ जो इस ज्यामघ सोमवंशकी सृष्टिको सुनताहै वह सन्तानसेयुक्त होजाताहै ४२।४६ और कौशल्यानाम स्त्री सतोगुणी सात्वत संज्ञक पुत्रोंको उत्पन्न करती भई और भजिन-भजमान-उत्तम देवावृध ४७ अन्धक-महाभोज और वृष्णी इननामोंसे युक्त यदुवंशी राजा हुए उनके चार भेद हैं उनको भी विस्तारपूर्व्वक सुनो ४८ भजमानके सृंजा नामवाली और बाह्यानामवालीदोनों स्त्रियों में बाह्यक संज्ञक पुत्र उत्पन्नहुए-राजासृंजके दो पुत्रीहुईथीं वह दोनों बहिन उस भजमान राजाकी स्त्री हुई फिर वह सृंजा और बाह्यानामवाली दोनों स्त्रियां निमि-कृमिल-वृष्णि और पुरञ्जय इनचारपुत्रों को उत्पन्न करतीभई ४९।५० देवावृध राजा बन्धुओं के संग मित्रताका बढ़ानेवाला हुआ परन्तुपुत्र

न्तपः। पुत्रःसर्वगुणोपेतो ममभूयादितिस्पृहन् ५१ संयोज्यमन्त्रमेवाथ पर्णाशाजल
मस्पृशत्। तदोपस्पर्शनात्तस्य चकारप्रियमापगा ५२ कल्याणत्वान्नरपतेस्तस्मै सा
निम्नगोत्तमा। चिन्तयाथपरीतात्मा जगामाथविनिश्चयम् ५३ नाधिगच्छाम्यहं नारीं
यस्यामेवंविधःसुतः। जायेततस्माद्द्याहं भवाम्यथसहस्रशः ५४ अथभूत्वाकुमारी
साविभ्रतीपरमंवपुः। ज्ञापयामासराजानं तामियेषमहाव्रतः ५५ अथसानवमेमासि
सुषुवेसरितांवरा। पुत्रंसर्वगुणोपेतं बभ्रुन्देवावृधान्नृपात् ५६ अनुवंशेपुराणज्ञा गा
यन्तीतिपरिश्रुतम्। गुणान्देवावृधस्यापि कीर्त्तयन्तोमहात्मनः ५७ यथैवंशृणुमो
दूराद्पश्यामस्तथान्तिकात्। बभ्रुःश्रेष्ठोमनुष्याणां देवैर्देवावृधःसमः ५८ षष्टिश्च
पूर्वपुरुषाः सहस्राणिचसप्ततिः। एतेऽमृतत्वंसम्प्राप्ता बभ्रोर्देवावृधान्नृप! ५९ य
ज्वादानपतिर्वीरो ब्रह्मण्यश्चदृढव्रतः। रूपवान्सुमहातेजाः श्रुतवीर्य्यधरस्तथा ६०
अथकंकस्यदुहिता सुषुवेचतुरःसुतान्। कुकुरंभजमानञ्च शशिंकम्बलबर्हिषम् ६१ कु
कुरस्यसुतोवृष्णिर्वृष्णेस्तुतनयोधृतिः। कपोतरोमातस्याथ तैत्तिरिस्तस्यचात्मजः ६२
तस्यासीत्तनुजःपुत्रो सखाविद्वान्नलःकिल। ख्यायतेतस्यनाम्नास नन्दनोदरदुन्दुभिः ६३
तस्मिन्प्रवितते यज्ञे अभिजातःपुनर्वसुः। अश्वमेधंचपुत्रार्थमाजहारनरोत्तमः ६४ त

रहितथा फिर इसने इस विचारसे परम उत्तम तपकिया कि मेरे सम्पूर्ण गुणोंसेयुक्त पुत्रहोय ऐसी इच्छाकरके मंत्रको उच्चारण करके पर्णाशानदीके जलको स्पर्श करताभया तब उसजलके स्पर्श करनेसे वह नदी उसराजाके अभीष्टहितको चिन्तवन करतीभई ५१। ५३ और यह निश्चय किया कि जैसा मैं चाहती हूं वैसाही पुत्रहो परन्तु ऐसी स्त्रीको मैं कहीं नहीं देखती हूं इस हेतुसे हज़ारों प्रकार से होनेवाले भवमेंहीं हूंगी ५४ ऐसे विचारकर वह उत्तम कन्याका रूप धारणकर राजाको ज्ञान करातीभई उस समय महाव्रतवाले उसराजाने उस कन्याको देखा ५५ और परस्पर प्रीति युक्त दोनों होगये फिर नवें महीने में राजाके योगसे उस कन्यारूप नदी ने सर्व्व गुणयुक्त एक बभ्रु नाम पुत्र उत्पन्नकिया ५६ उस महात्मा देवावृध राजाके गुणों को पुराणवेत्ता पंडितलोग गान करते और वर्णनकरते हैं ऐसाहमने सुनाहै ५७ जैसे कि हम दूरसे उसके गुणोंको सुनतेथे उसीप्रकार अबहम समीपमें भी देखते हैं वह बभ्रु सब मनुष्यों में श्रेष्ठहुआ अर्थात् देवावृध केही समान हुआ ५८ देवावृधके पुत्र बभ्रुके प्रतापसे प्रथम कुलके सत्तरहज़ार साठ ७००६० मनुष्य मोक्षको प्राप्तहुए ५९ यह राजा बभ्रु यज्ञकरने वाला-दान देनेवाला शूरवीर, दृढव्रत रूपवान् सुन्दर महा तेजस्वी शास्त्रका सुनना और पराक्रम इन सबसे युक्त होताभया ६० इसके अनन्तर कंकराजाकी पुत्री इस बभ्रुके सकाशसे कुकुर १, भजमान २ शशि ३ और कंबलबर्हिष इन नामवाले चारपुत्रोंको उत्पन्न करतीभई ६१ कुकुरके वृष्णि नाम पुत्रहुआ वृष्णिके धृति पुत्रहुआ उसके, कपोतरोमा पुत्र भया कपोतरोमा के तैत्तिर पुत्रहुआ ६२ तैत्तिरके विद्वान् नलनाम पुत्रहुआ इसका नलनाम शंख-रूपी दुन्दुभियों से प्रसिद्धहुआ ६३ इसने यज्ञकिया तब इसके पुनर्वसुनाम पुत्र यज्ञमेंहुआ प्रथम यह राजापुत्रके निमित्त अश्वमेध यज्ञकरताभया तब इसके यज्ञमें तीनदिनके भीतर सभाके बीच

स्यमध्येत्रिरात्रस्य सभामध्यात्समुत्थितः। अतस्तुविद्वान्कर्मज्ञो यज्वादातापुनर्वसुः ६५ तस्यासीत्पुत्रमिथुनं बभूवाविजितंकिल। आहुकश्चाहुकीचैव ख्यातंमतिमतांवर! ६६ इमांश्चोदाहरन्त्यत्र श्लोकान्प्रतितमाहुकम्। सोपासङ्गानुकर्षाणां सध्वजानांवरूथिनाम् ६७ रथानांमेघघोषाणां सहस्राणिदशैवतु। नासत्यवादीनातेजा नायज्वानासहस्रदः ६८ नाशुचिर्नाप्यविद्वान् हियोभोजेष्वभ्यजायत। आहुकस्यभृतिंप्राप्ता इत्येतद्वैतदुच्यते ६९ आहुकश्चाप्यवन्तीषु स्वसारंचाहुकींददौ। आहुकात्काश्यदुहिता द्वौपुत्रौसमसूयत ७० देवकश्चोग्रसेनश्च देवगर्भसमावुभौ। देवकस्यसुतावीरा जज्ञिरेत्रिदशोपमाः ७१ देववानुपदेवश्च सुदेवोदेवरक्षितः। तेषांस्वसारःसप्तासन् वसुदेवायताददौ ७२ देवकीश्रुतदेवीच यशोदाचयशोधरा। श्रीदेवीसत्यदेवीच सुतापीचेतिसप्तमी ७३ नवोग्रसेनस्य सुताः कंसस्तेषान्तुपूर्वजः। न्यग्रोधश्चसुनामाच कंकःशंकुश्चभूयसः ७४ सुतन्तूराष्ट्रपालश्च युद्धमुष्टिःसुमुष्टिदः। तेषांस्वसारःपञ्चासन् कंसाकंसवतीतथा ७५ सुतन्तूराष्ट्रपालीच कंकाचेतिवरांगनाः। उग्रसेनःसहापत्यो व्याख्यातःकुकुरोद्भवः ७६ भजमानस्यपुत्रोऽथ रथिमुख्योविदूरथः। राजाधिदेवःशूरश्च विदूरथसुतोऽभवत् ७७ राजाधिदेवस्यसुतौ जज्ञातेदेवसम्मितौ। नियमव्रतप्रधानौ शोणाश्वःश्वेतवाहनः ७८ शोणाश्वस्यसुताःपञ्च शूरारणविशारदाः। शमीचवेदशर्माच निकुन्तःशक्रशत्रुजित् ७९

पुनर्वसु नाम पुत्रहुआथा इसीसे यह राजा पुनर्वसु बड़ा यज्ञ करनेवाला धर्मात्मा कर्मज्ञ और महा दाता होताभया ६४।६५ उस पुनर्वसुके आहुक और आहुकी नाम दोयुग्म पुत्र पुत्री उत्पन्नहुए ६६ अब इस आहुक राजाके यशको कहते हैं यह राजा ध्वजा रथआदि अंगोंसे युक्त सेना और मेघकेसमान शब्दकरनेवाले दशहजार रथोंसमेत सदैव रहताथा कभी असत्य नहीं बोलताथा तेजसे कभी हत नहींहुआ यज्ञके बिना कभी नरहा और कभी इसने हजार संख्यासे कमदान नहींदिया ६७।६८ मूर्खता रहित होकर सदैव पवित्ररहा ऐसा यह आहुक राजा भोज कुलमें उत्पन्न होताभया इससे पीछे आहुक आदिक वंश प्रसिद्धहुए ६९ इसआहुक ने अपनी आहुकी नाम बहिनको अवन्तिनाम राजासे विवाही और इसने काश्यनाम राजाकी पुत्रीमें ७० देवक और उग्रसेन नाम दोपुत्र उत्पन्न किये वह दोनों उत्तम देवताके गर्भकेसमान होतेभये देवकके भी महा उत्तम देवताओंके समान हैं देववान्–उपदेव–सुदेव–और देवरक्षित आदिक सात पुत्र और देवकी–श्रुतदेवी–यशोदा–यशोधरा श्रीदेवी सत्यदेवी और सुतापी यह सातपुत्री उत्पन्न होतीभईं और सातों वसुदेवजीको विवाहीगईं ७१।७२ उग्रसेनके कंस १ न्यग्रोध २ सुनामा ३ कंक ४ शकु ५ सुतन्तु ६ राष्ट्रपाल ७ और युद्धमुष्टि ८ सुमुष्टिद ९ इननामोंके नौ तो पुत्रहुए और पांचबहिन कंसा १ कंसवती २ सुतन्तू ३ राष्ट्रपाली ४ और कंका इननामोंवाली उत्पन्नहुईं यह मैंने कुकुर वंशमें होनेवाले उग्रसेनकी सन्तानका वर्णन करदिया ७४।७६ राजा भजमानके महारथी विदूरथ नाम पुत्रहुआ–विदूरथका शूरवीर पुत्र राजाधिदेवनाम विख्यात हुआ ७७ राजाधिदेवके देवताओं के समान नियम व्रतधारी शोणाश्व और श्वेतवाहन इन नामोंवाले दो पुत्रहुए ७८ शोणाश्व के रणमें महाशूरवीर शमी १

शमिपुत्रःप्रतिक्षत्रः प्रतिक्षत्रस्यचात्मजः। प्रतिक्षेत्रःसुतोभोजो हृदीकस्तस्यचात्मजः
८० हृदीकस्याभवन्पुत्रा दशभीमपराक्रमाः। कृतवर्माग्रजस्तेषां शतधन्वाचमध्यमः
८१ देवार्हश्चैवनाभश्च भीषणश्चमहाबलः। अजातोवनजातश्च कनीयककरम्भकौ
८२ देवार्हस्यसुतोविद्वान् जज्ञेकम्बलवर्हिषः। असमञ्जाःसुतस्तस्य तमोजास्तस्य
चात्मजः ८३ अजातपुत्राविक्रान्तास्त्रयःपरमकीर्त्तयः। सुदंष्ट्रश्चसुनाभश्च कृष्ण
इत्यन्धकास्मृताः ८४ अन्धकानामिमंवंशं यःकीर्तयतिनित्यशः। आत्मनोविपुलंवंशं
प्रजावानाप्नुतेनरः ८५॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेसोमवंशेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

(सूत उवाच।) गान्धारीचैवमाद्रीच वृष्णिभार्येबभूवतुः। गान्धारीजनयामास
सुमित्रंमित्रनन्दनम् १ माद्रीयुधाजितंपुत्रं ततोवैदेवमीढुषम्। अनमित्रंशिविञ्चैव
पञ्चमंकृतलक्षणम् २ अनमित्रसुतोनिघ्नो निघ्नस्यापितुद्वौसुतौ। प्रसेनश्चमहावीर्यः
शक्तिसेनश्चतावुभौ ३ स्यमन्तकःप्रसेनस्य.मणिरत्नमनुत्तमम्। पृथिव्यांसर्वरत्नानां
राजावैसोऽभवन्मणिः ४ हृदिकृत्वातुबहुशो मणिन्तमभियाचितम्। गोविन्दोऽपिनतं
लेभे शक्तोऽपिनजहारसः ५ कदाचिन्मृगयांयातः प्रसेनस्तेनभूषितः। यथाशब्दंसशु
श्राव बिलेसत्त्वेनपूरिते ६ ततःप्रविश्यसबिलं प्रसेनोऋक्षमैक्षत। ऋक्षःप्रसेनञ्चतथा
ऋक्षंचैवप्रसेनजित् ७ हत्वाऋक्षःप्रसेनन्तु ततस्तंमणिमाददात्। अदृष्टस्तुहतस्तेन

वेदशर्मा २ निकुंत ३ शक्र ४ और शत्रुजित् इन नामोंसे प्रसिद्ध पांच पुत्रहुए ७९ शमीके प्रतिक्षत्र पुत्रहुआ--प्रतिक्षत्र के प्रतिक्षेत्रहुआ उसकापुत्र भोज संज्ञक हृदीकहुआ ८० हृदीकके महापराक्रमी दशपुत्रहुए उनमें बड़ाकृतवर्मा हुआ बिचला शतधन्वा हुआ ८१ और देवार्ह-नाभ-भीषण-महाबल-अजात-वनजात-कनीयक और करंभक इननामोंवाले शेष आठहुए—देवार्हके कंबलवर्हिष संज्ञकबड़ा विद्वान् पुत्रहुआ उसका पुत्र असमंजाहुआ असमंजाका पुत्रतमोजाहुआ ८२।८३अजातकेबड़ेकीर्त्ति प्रतापवाले सुदंष्ट्र-सुनाभ-और कृष्ण यहतीनों पुत्र अंधकसंज्ञक हुए ८४ इन अन्धकों के बंशका जो नित्य कीर्तन करेगा वह बहुत से वंशसे युक्त होगा और प्रजावान् कहलावेगा ८५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसोमवंशेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

सूतजी बोले—गान्धारी और माद्री यह दो स्त्रियां वृष्णिकी होती भईं गान्धारीके मित्रों का आनन्द करनेवाला सुनन्दनामपुत्रहुआ १ माद्रीके युधाजित १ देवमीढुष २ अनमित्र ३ शिवि ४ और कृतलक्षण यह पांच पुत्र हुए २ अनमित्रके निघ्ननामपुत्रहुआ निघ्नके महापराक्रमी प्रसेन और शक्तिसेन जो सत्राजित नामसे भी प्रसिद्ध था यह दो पुत्रहुए ३ प्रसेन के घरमें स्यमन्तक नाममहाउत्तम मणिथी वह मणिपृथ्वी के सबरत्नों में श्रेष्ठ प्रसिद्धथी और वह राजाभी सबसे उत्तमहुआ ४ वह राजा उस मणिको सदैव अपने हृदयमें पहरता था उस मणिको श्रीकृष्णजी ने भी बहुत बार मांगी परन्तु उनको भी न मिली यद्यपि श्रीकृष्णजी समर्थ थे तथापि इन्होंने छीनकरनली ५किसी समय यह प्रसेनमणिकोपहरकर आखेट को गया था वहां यह प्रसेन किसी जीवों से पूरित गुफा में शब्दसुनताभया तब यह उसगुफामें जाकर जो देखने लगा तब वहां एकरीछ को देखा उस रीछसे

अन्तर्विलगतस्तदा ८ प्रसेनन्तुहतंज्ञात्वा गोविन्दःपरिशङ्कितः। गोविन्देनहतोव्यक्तं
प्रसेनोमणिकारणात् ६ प्रसेनस्तुगतोऽरण्यं मणिरत्नेनभूषितः। अपश्यन्भ्रातरंभ्राता
सत्राजित्पर्य्यतप्यत १० प्रायःकृष्णेननिहतः मणिग्रीवोवनंगतः ११ अथदीर्घेणका-
लेन मृगयांनिर्गतःपुनः। यदृच्छयाचगोविन्दो विलस्याभ्यासमागमत् १२ तंदृष्ट्वातु
महाशब्दं सचक्रेऋक्षराड्बली। शब्दंश्रुत्वातुगोविन्दः खड्गपाणिःप्रविश्यसः १३
अपश्यज्जाम्बवन्तंतं ऋक्षराजंमहाबलम्। ततस्तूर्णंहृषीकेशस्तमृक्षपतिमञ्जसा १४
जाम्बवन्तंसजग्राह क्रोधसंरक्तलोचनः। तुष्टावैनंतदाऋक्षः कर्मभिर्वैष्णवैःप्रभुम् १५
ततस्तुष्टस्तुभगवान् वरेणैनमरोचयत्। (जाम्बवानुवाच) इच्छेचक्रप्रहारेण त्वत्तो
ऽहंमरणंप्रभो! १६ कन्याचेयंममशुभा भर्तारंत्वामवाप्नुयात्। योऽयंमणिःप्रसेनन्तु
हत्वाप्राप्तोमयाप्रभो! १७ ततःसजाम्बवन्तंतं वैहत्वाचक्रेणवैप्रभुः। कृतकर्मामहा
बाहुः सकन्यंमणिमाहरत् १८ ददौसत्राजितायैनं सर्वसात्वतसंसदि। तेनमिथ्याप
वादेनसन्तप्तायेजनार्दने १६ ततस्तेयादवाःसर्वेवासुदेवमथाब्रुवन्। अस्माकन्तुमति
र्ह्यासीत्प्रसेनस्तुत्वयाहतः २० कैकेयस्यसुताभार्या दशसत्राजितःशुभाः। तासूत्प

प्रसेन युद्ध करनेलगा परन्तु युद्धमें उस रीछने प्रसेनको मारडाला और मणिको लेकर वह रीछ अपने बिलमें जाकर गुप्तहोगया और प्रसेन का मरना प्रसिद्ध हुआ ६।८ तब प्रसेन को मराहुआ जानके श्रीकृष्णजी को शंकाहुई और यहभी किसी २ ने प्रसिद्ध किया कि मणिके कारण से श्रीकृष्णजी ने प्रसेन को मारकर मणिलेली यह दोष लगाकि ९ उस मणिरत्नसे भूषित होकर प्रसेनवनमें गया था सो अवश्य उसको श्रीकृष्णजीनेही माराहोगा यह शोच प्रसेन के भाई सत्राजित्ने क्रिया कि मणिपहरकर गया था इसको श्रीकृष्णनेही मारकर मणिली है १०। ११ इसके अनन्तर कुछदिन पीछे श्रीकृष्णजी भी आखेट करनेको वनमें गये वहां श्रीकृष्णजी अपनी इच्छापूर्वक उस रीछके बिलके समीप चले गये १२ तब वह रीछ इन श्रीकृष्ण जी को भी देखकर शब्द करने लगा उसशब्दको सुनकर श्रीकृष्णजी हाथमें खड्गलेकर बिलके भीतर प्रवेशकरगये १३ और वहां जाकर उससबरीछोंकेराजा जाम्बवन्तको देखतेभये और बड़ीशीघ्रतासे विष्णुभगवान् श्रीकृष्णजीने अपने बलपराक्रमसे उसरीछको पकड़ा और महाक्रोधसे रक्तनेत्र करतेभये उससमय उसजाम्बवन्त ने बड़े सत्कार और वैष्णवी पूजनसे श्रीकृष्णजीको प्रसन्नकिया १४। १५ तब श्रीकृष्णजी प्रसन्न होकर उसको वरदेनेकोबोले उससमय जाम्बवन्तनेकहा हेप्रभो मैंआपके सुदर्शनचक्रसे मराचाहताहूं और अपनीकन्या आपके अर्पण करताहूं और मैंनेही प्रसेनको मारकर इसमणिको लियाहै १६।१७ इसके अनन्तर वह श्रीकृष्णचन्द्रजी उस ऋक्षपति जाम्बवन्तकोअपने सुदर्शनचक्रसे मारतेभयेफिर सबकार्य्य सिद्धकर उसमणिसमेत जाम्बवन्तकीकन्या जाम्बवतीको लेआतेभये १८ फिरश्रीकृष्णजी सबयादवोंकी सभामें आकर वह मणिसत्राजितको देतेभये फिर उसमिथ्या अभिशापसे जो श्रीकृष्ण जीके ऊपर दुखितहोरहेथे वह सबयादव श्रीकृष्णजी से कहनेलगे कि हम सबको तो यही निश्चय होरहाथा कि प्रसेन को आपनेही माराहै १९। २० परन्तु यह आपपर दोष मिथ्यालगाथा अपराध

न्नाःसुतास्तस्य सर्वलोकेषुविश्रुताः २१ ख्यातिमन्तोमहावीर्य्या भङ्गकारस्तुपूर्वजः। अ
थव्रतवतीतस्माद्भङ्गकारात्तुपूर्वजात् २२ सुषुवेसुकुमारीस्तुतिस्रःकमललोचनाः। सत्य
भामावराखीणां व्रतिनीचदृढव्रता २३ तथापद्मावतींचैव ताश्चकृष्णायसोऽददात् २४
अनमित्रात्शिनिर्जज्ञे कनिष्ठाद्वृष्णिनन्दनात्। सत्यवांस्तस्यपुत्रस्तु सात्यकिस्तस्य
चात्मजः २५ सत्यवान्युयुधानस्तु शिनेर्नप्ताप्रतापवान्। असङ्गोयुयुधानस्य द्युम्निस्त
स्यात्मजोऽभवत्। द्युम्नेर्युगन्धरःपुत्रइतिशैन्याःप्रकीर्त्तिताः २६ अनमित्रान्वयोह्येषव्या
ख्यातोवृष्णिवंशजः। अनमित्रस्यसंजज्ञे पृथ्व्यांवीरोयुधाजितः २७ अन्यौतुतनयौवी
रौवृषभःक्षत्रएवच। वृषभःकाशिराजस्य सुतांभार्यामविन्दत २८ जयन्तस्तुजयन्त्यान्तु
पुत्रःसमभवच्छुभः। सदायज्ञोऽतिवीरश्च श्रुतवानतिथिप्रियः २९ अक्रूरःसुषुवेतस्मात्
सदायज्ञोऽतिदक्षिणः। रत्नाकन्याचशैव्यस्यअक्रूरस्तामवाप्तवान् ३० पुत्रानुत्पादयामा
स एकादशमहाबलान् ३१ उपलम्भःसदालम्भो वृकलोवीर्य्यएवच। सिरीततोमहाप
क्षः शत्रुघ्नोवारिमेजयः ३२ धर्म्मभृद्धर्मवर्माणौ धृष्टमानस्तथैवच। सर्वेचप्रतिहोतारो
रत्नायांजज्ञिरेचते ३३ अक्रूराद्ग्रसेनायां सुतौद्वौकुलवर्द्धनौ। देववानुपदेवश्च जज्ञाते
देवसन्निभौ ३४ अश्विन्यांचतत पुत्राःपृथुर्विपृथुरेवच। अश्वत्थामासुबाहुश्च सुपार्श्व
कगवेषणौ ३५ वृष्टिनेमिःसुधर्माच तथाशर्यातिरेवच। अभूमिर्वज्रभूमिश्चश्रमिष्ठः

क्षमाकीजिये-केकय राजाकी दशपुत्रीथीं वह दशों सत्राजित्की भार्य्याहोतीभई उन स्त्रियोंसेउत्पन्न हुए पुत्र संसार में विख्यात महापराक्रमवाले होतेभये उनमें ज्येष्ठपुत्र भंगकारथा उसभंगकार की सत्यभामा—दृढव्रता और पद्मावती यह तीनमहासुन्दर कन्याथीं यह तीनों सबस्त्रियोंमें श्रेष्ठव्रतवाली हुईं और तीनों में अधिक उत्तम सत्यभामाथी सत्राजित्ने इन तीनों अपनी कन्याओं को श्रीकृष्ण के प्रसन्न करनेके अर्थ उनकेही संग विवाहदीं—वृष्णि के छोटेभाई अनमित्र के शिनिनामपुत्रहुआ उसकापुत्र सत्यवान् और सत्यवान्का सात्यकिहुआ और शिनिके पौत्र सत्यवान् और युयुधान यह दोनों अत्यन्त प्रतापवान् हुए युयुधानका पुत्र असंगहुआ असंगका पुत्र द्युम्निहुआ २१। २५ द्युम्नि के युगंधर पुत्र हुआ इसप्रकार से शिनिके वंशके पुरुषवर्णन करे हैं २६ यह वृष्णिवंशमें अनमित्रका कुलकहा है—अनमित्र के युधाजितपुत्र इसपृथ्वीपर बड़ाशूरवीर हुआ और बाकीवृषभ और क्षत्र यह दोपुत्रहुए वृषभको काशीके राजाकी पुत्री विवाही २७। २८ इस जयन्ती नामवाली स्त्री में इसका जयन्तनाम पुत्र सदैव यज्ञकरनेवाला और शूरवीर होताभया २९ इस जयन्तका पुत्र बड़ा याज्ञिक अक्रूर उत्पन्नहुआ शैव्यनाम राजाकी रत्नानाम कन्यासे अक्रूरका विवाहहुआ उसरत्ना स्त्रीमें अक्रूरने ग्यारह पुत्र उत्पन्न किये ३० उनकेनाम उपलंभ—सदालंभ—वृकल—वीर्य—सिरी—महापक्ष शत्रुघ्न—वारिमेजय धर्मभृत् धर्मवर्मा और धृष्टमान प्रसिद्धहैं ३१। ३२ और इसी अक्रूर के देववान् और उपदेव यह दोनोंपुत्र उग्रसेना नाम स्त्रीसे उत्पन्नहुए यह दोनों देवताओं के समान सुन्दर थे ३४ इनके सिवाय अक्रूरकी अश्विनी नाम स्त्रीमें पृथु—विपृथु—अश्वत्थामा—सुबाहु—सुपार्श्वक—गवेषण—वृष्टिनेमि—सुधर्मा—शर्य्याति—अभूमि—वज्रभूमि—श्रमिष्ठ और श्रवण यह सब पुत्र

श्रवणस्तथा ३६ इमांमिथ्याभिशस्तियो वेदकृष्णादपोहिताम्। नसमिथ्याभिशापेन अभिशाप्योऽथकेनचित् ३७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

(सूत उवाच)ऐक्ष्वाकीसुषुवेशूरं ख्यातमद्भुतमीढुषम्।पौरुषाज्जज्ञिरेशूरात् भोजायां पुत्रकादश १ वसुदेवोमहाबाहुः पूर्वमानकदुन्दुभिः। देवमार्गस्ततोजज्ञे ततोदेवश्रवाः पुनः २ अनाधृष्टिः शिनिश्चैव नन्दश्चैवसमृञ्जयः। श्यामःशमीकःसंयूपः पञ्चचास्य सुतास्तथा३श्रुतकीर्तिः पृथाचैव श्रुतदेवीश्रुतश्रवाः। राजाधिदेवीचतथा पञ्चैतावीरमातरः४कृतस्यतुश्रुतादेवी सुग्रहंसुषुवेसुतम्। कैकय्यांश्रुतकीर्त्यान्तु जज्ञेसोऽनुव्रतोनृपः५ श्रुतश्रवसिचैद्यस्य सुनीथःसमपद्यत। वार्षिकोधर्मशारीरः सबभूवारिमर्दनः ६ अथसख्येनवृद्धेऽसौ कुन्तिभोजेसुतांददौ। एवंकुन्तीसमाख्याता वसुदेवस्वसापृथा७ वसुदेवेनसादत्ता पाण्डोर्भार्य्याह्यनिन्दिता। पाण्डोरर्थेनसाजज्ञे देवपुत्रान्महारथान् ८ धर्मोद्युधिष्ठिरोजज्ञे वायोर्जज्ञेवृकोदरः। इन्द्राद्धनञ्जयश्चैव शक्रतुल्यपराक्रमः ९ माद्रवत्यांतु जनितावश्विभ्यामितिशुश्रुमः। नकुलःसहदेवश्च रूपशीलगुणान्वितौ १० रोहिणी पौरवीसातु ख्यातमानकदुन्दुभेः। लेभेज्येष्ठंसुतंरामं सारणञ्चसुतम्प्रियम् ११ दुर्दम

भी अक्रूरके होतेभये जो मिथ्याचोरी मणिके कारणसे श्रीकृष्णजीकोलगी वह श्रीकृष्णने जाम्बवान्को मारकर दूरकरी इस मिथ्याभिशस्ति को जो सुने वा सुनावे वह मिथ्या चोरी के अभिशाप से कभी ग्रसित न होगा ३५। ३७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

सूतजी बोले–कि इक्ष्वाकु राजाकीपुत्री ऐक्ष्वाकी पौरुषके सकाशसे शूरसंज्ञक पुत्रको उत्पन्नकरती भई शूरसे भोजास्त्री में वसुदेव–देवमार्ग देवश्रवा–अनाधृष्टि–शिनि–नन्दन–सृंजय–श्याम–शमीक और संयूप यह दश तो बलपराक्रमवाले पुत्र उत्पन्नहुए और श्रुतकीर्त्ति–पृथा–श्रुतदेवी –श्रुतश्रवा और राजाधिदेवी यह पांचपुत्री होतीभई यह पांचोंवीरों की माता होतीभई १। ४ कृतराजाकापुत्र श्रुतदेवी स्त्रीसे सुग्रहनामहुआ कैकयराजाकी स्त्री श्रुतकीर्त्तिके अनुव्रत राजाहुआ ५ चैद्यराजाकी स्त्री श्रुतश्रवाके सुनीथपुत्रहुआ यह राजा प्रतिवर्ष के शरीर संबंधी धर्मोंकाकर्त्ता और शत्रुओंका नाशकरनेवाला होताभया ६ इसके अनन्तर यह राजा शूर अपनी पृथानामपुत्री को मित्रभाव से वृद्धावस्थावाले राजाकुन्तिभोज के अर्थ पुत्री करके गोद देताभया इसी हेतुसे यह पृथा वसुदेव की बहिन कुन्तीभी कहाती है फिर उसकुन्ती को वसुदेव ने राजापांडु को विवाहदी फिर पांडुके योग से यह कुन्ती पांचशूरवीर पुत्रोंको उत्पन्नकरती भई ७। ८ इसकुन्ती के धर्मके प्रभाव से तो युधिष्ठिरहुआ–वायुके योगसे भीमसेन हुआ–इन्द्र के प्रभावसे इन्द्रकेही समान पराक्रमवाला अर्जुन जन्मा ९ और माद्री में अश्विनीकुमारों के प्रभावसे नकुल और सहदेव यह दोपुत्र रूप गुण शील और पराक्रम युक्तहोतेभये १० वसुदेवकी स्त्री पुरुवंशमें प्रसिद्ध होनेवाली जो रोहिणी नामथी उसके बड़ेपुत्रबलदेवजी हुए और इनके छोटेभाई सारण–दुर्द्दम–दमन–सुभ्रु–पिंडारक–और महाहनु यह छः उत्पन्न

न्दमनंसुभ्रुं पिण्डारकमहाहनू। चित्राख्यौद्वेकुमार्य्यौतु रोहिण्याञ्जज्ञिरेतदा १२ देव
क्यांजज्ञिरेशौरेः सुषेणःकीर्तिमानपि। उदासीभद्रसेनश्च ऋषिवासस्तथैवच। षष्ठोभद्र
विदेहश्च कंसःसर्वानघातयत् १३ प्रथमाथाश्रमावास्या वार्षिकीतुभविष्यति। तस्यां
जज्ञेमहाबाहुः पूर्वं कृष्णःप्रजापतिः १४ अनुजात्वभवत्कृष्णात् सुभद्राभद्रभाषिणी। दे
वक्यान्तुमहातेजा जज्ञेशूरोमहायशाः १५ सहदेवस्तुताम्रायां जज्ञेशौरिःकुलोद्वहः। उ
पासंगधरंलेभे तनयंदेवरक्षिता। एकांकन्याञ्चसुभगां कंसस्तामभ्यघातयत् १६ विज
यंरोचमानञ्च वर्द्धमानन्तुदेवलम्। एतेसर्वेमहात्मानो ह्युपदेव्याःप्रजज्ञिरे १७ अवगा
होमहात्पाच वृकदेव्यामजायत। वृकदेव्यांस्वयंजज्ञे नन्दकोनामनामतः १८ सप्तमंदे
वकीपुत्रं मदनंसुषुवेनृप!। गवेषणंमहाभागं संग्रामेष्वपराजितम् १९ श्रद्धादेव्याविहा
रेतु वनेहिविचरन्पुरा। वैश्यायामदधात्शौरिः पुत्रंकौशिकमग्रजम् २० सुतनूरथराजीच
शौरेरास्तांपरिग्रहौ। पुण्ड्रश्चकपिलश्चैव वसुदेवात्मजौबलौ २१ जरानामनिषादोऽभू
त् प्रथमःसधनुर्धरः। सौभद्रश्चभवश्चैव महासत्वौबभूवतुः २२ देवमार्गसुतश्चापि ना
म्नासावुद्धवःस्मृतः। पण्डितंप्रथमंप्राहु र्देवश्रवःसमुद्भवम् २३ ऐक्ष्वाक्यलभतापत्यम
नाधृष्टेर्यशस्विनी। निर्धूतसत्वंशत्रुघ्नं श्राद्धस्तस्मादजायत २४ करूषायानपत्याय कृष्ण
स्तुष्टसुतन्ददौ। सुचन्द्रन्तुमहाभागं वीर्य्यवन्तम्महाबलम् २५ जाम्बवत्याःसुतावेतौ

हुए इनपुत्रोंके सिवाय इस रोहिणीकी बड़ी सुन्दररूपवाली दोकन्याभी उत्पन्न होतीभईं ११।१२
और वसुदेवजीकी दूसरी देवकीनाम स्त्रीके सुषेण-कीर्त्तिमान्-उदासी-भद्रसेन-ऋषिवास और भद्र
विदेह यह छः पुत्रहुए इनसबको जन्मतेही कंसने मारडाला १३ संवत्सरकी पहली अमावास्या
जो वैशाखमें होतीहै उस पूर्व्वकल्पमें प्रजापति श्रीकृष्णजी उत्पन्नहुए १४ यह पुराणोंमें कल्पभेद
से लिखाहै नहीं तो श्रीमद्भागवतमें भाद्रपद कृष्णा अष्टमीको श्रीकृष्णजीका जन्महै-श्रीकृष्णजीके
पीछे सुन्दररूप गुण और मृदुभाषिणी उनकी छोटी वहिन सुभद्रा उत्पन्नहुई यह सब सन्तान वसु
देवजीने देवकीमें उत्पन्नकीं १५ और वसुदेवजीने अपनी ताम्रास्त्रीमें सहदेवनाम पुत्रको उत्पन्न
किया इसकेपीछे उपासंगनाम पुत्रहुआ और एक कन्याभी उत्पन्नहुई उसकोभी कंसने मारा १६
वसुदेवकी उपदेवी स्त्रीमें रोचमान वर्द्धमान और देवल यह तीनपुत्र उत्पन्नहुए और वसुदेवकी वृक
देवी स्त्रीमें महात्मा अवगाह और नन्दकनाम पुत्रहुए १७।१८ फिर वसुदेवजीने देवकी स्त्री में
सातवाँपुत्र मदन उत्पन्न किया और श्रद्धादेवी में वसुदेवजीके योगसे युद्धमें विशारद गवेषण नाम
पुत्रहुआ-पूर्व्वमें वसुदेव जीने वैश्यजातिकी स्त्रीमें बड़ापुत्र कौशिकनाम उत्पन्न किया २० औरसु
तनु और रथराजी इन दोनों वसुदेवकी स्त्रियोंमें पुंड्र और कपिलनाम दोपुत्रहुए २१ इनमें पहला
जरानामसे प्रसिद्ध निषाद जाति संज्ञक धनुषधारी हुआ-इनके पीछे उसी वैश्या स्त्रीमें सौभद्र और
भव यह दो पुत्रहुए २२ देवमार्गका पुत्र उद्धव नामसे विख्यातहुआ इस उद्धवको बड़ाउत्तम पण्डित
कहते हैं २३ अनाधृष्टि के इक्ष्वाकु पुत्री में शत्रुघ्न नाम पुत्रहुआ उसका श्राद्ध नाम पुत्रहुआ २४
और करूष राजाके कोई सन्तान न थी उसको श्रीकृष्णने महा बलवान् चन्द्रनाम पुत्रदिया २५श्री

द्यौचसत्कृतलक्षणौ। चारुदेष्णश्चसाम्बश्च वीर्य्यवन्तौमहाबलौ २६ तन्तिपालश्च तन्तिश्चनन्दनस्यसुतावुभौ। शमीकपुत्राश्चत्वारो विक्रान्ताःसुमहाबलाः। विराजश्च धनुश्चैव श्याम्यश्चसृञ्जयस्तथा २७ अनपत्योऽभवच्छ्यामः शमीकस्तुवनंययौ। जुगुप्समानोभोजत्वं राजर्षित्वमवाप्तवान् २८ कृष्णस्यजन्माभ्युदयं यःकीर्तयतिनित्यशः। शृणोतिमानवोनित्यं सर्वपापैःप्रमुच्यते २९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसोमवंशेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

(सूतउवाच) अथदेवोमहादेवः पूर्वंकृष्णःप्रजापतिः। विहारार्थंसदेवेशो मानुषेष्विहजायते १ देवक्यांवसुदेवस्य तपसापुष्करेक्षणः। चतुर्बाहुस्तदाजातो दिव्यरूपोज्ज्वलन्श्रिया २ श्रीवत्सलक्षणंदेवं दृष्ट्वादिव्यैश्चलक्षणैः। उवाचवसुदेवस्तं रूपंसंहरवैप्रभो! ३ भीतोऽहंदेव! कंसस्य ततस्त्वेतद्ब्रवीमिते। ममपुत्राहतास्तेन ज्येष्ठास्तेभीमविक्रमाः ४ वसुदेववचःश्रुत्वा रूपंसंहरतेऽच्युतः। अनुज्ञाप्यततःशौरिं नन्दगोपगृहेऽनयत् ५ दत्त्वैनंनन्दगोपस्य रक्ष्यतामितिचाब्रवीत्। अतस्तुसर्वकल्याणं यादवानां भविष्यति ६ (मुनय ऊचुः) कएषवसुदेवस्तु देवकीचयशस्विनी। नन्दगोपश्चकस्त्वेषयशोदाचमहाव्रता ७ योविष्णुंजनयामास यञ्चतातेत्यभाषत। यागर्भंजनयामासया चैनंत्वभ्यवर्द्धयत् ८ (सूत उवाच) पुरुषःकश्यपस्त्वासीददितिस्तुप्रियास्मृता। ब्रह्म

कृष्णजीके जाम्ववती स्त्रीमें महाबलवाले चारुदेष्ण और सांब यह पुत्रहुए २६ नन्दनके तन्तिपाल और तन्ती यह दो पुत्रहुए-शमीकके विराज-धनु-श्याम्य-और सृंजय यह चार पुत्रहुए २७ श्याम्य के कोई सन्तान नहीं हुई और शमीक वनमें चलागया वहाँ जाकर भोजकुलको गुप्तकरके राजऋषि होताभया २८ इसप्रकारसे उत्पन्न होनेवाले श्रीकृष्णचन्द्रके कुटुम्बका जो प्रतिदिन कीर्त्तन करेगा अथवा सुनेगा वह सब पापोंसे छूटकर स्वर्गवास करेगा २९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसोमवंशेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सूतजीबोले-महान्देव श्रीपरमात्मा प्रजाकेपति पहले श्रीकृष्णरूपसे क्रीडाके निमित्त उत्पन्न होतेभये १ यह श्रीकृष्णजी वसुदेवके तपके प्रभावसे देवकीके गर्भसे कमलनेत्र दिव्यरूप शोभायमान चारभुजाधारी श्रीवत्सादि लक्षणों समेत उत्पन्नहुए-उससमय वसुदेवने हाथजोड़कर इनसे कहा कि हे विभो आप इसरूपको गुप्तकरलो २। ३ हे देव मैंने कंससे भयभीतहोकर आपसे कहा है आपके बड़े छः भाई इसकंसने मारडाले हैं ४ वसुदेवके इसवचनको सुन श्रीकृष्णजी अपने रूपको गुप्तकरके वसुदेवजीसे शिक्षापूर्व्वक यह वचनबोले कि मुझको नन्दजीके घरलेचलो ५ इसके पीछे वसुदेवजी इनको नन्दजीके सुपुर्दकरके यह वचनकह आये कि आपइसकी रक्षा अपनेही बालक के समान करना इससे सब यादवोंका कल्याणहोगा ६ मुनिजनोंने पूछा कि हे सूतजी वह वसुदेव कौनथे और वह उसकी स्त्री देवकी कौनथी नन्दगोप और यशोदा कौनथे ७ क्योंकि जिन्होंने विष्णु भगवान्‌को पुत्रकिया और विष्णु भगवान् जिनको पिता माता कहकर बोलतेभये इन विष्णुजीको देवकीने गर्भमें धारणकिया और यशोदाने बालचरित्रोंको देखा और बड़े प्रेमसे पालनकिया ८ सूत

एः कश्यपस्त्वंशः पृथिव्यास्त्वदितिस्तथा ९ अथकामान्महाबाहुर्देवक्याःसमपूरयत्।
येतयाकांक्षितानित्यमजातस्यमहात्मनः १० सोऽवतीर्णोमहादेवः प्रविष्टोमानुषींतनुम्।
मोहयन्सर्वभूतानि योगात्मायोगमायया ११ नष्टेधर्मेतथाजज्ञेविष्णुर्वृष्णिकुलेप्रभुः।
कर्तुंधर्म्मस्यसंस्थानमसुराणांप्रणाशनम् १२ रुक्मिणीसत्यभामाच सत्यानाग्नजिती
तथा। सुभामाचतथाशैव्या गान्धारीलक्ष्मणातथा १३ मित्रविन्दाचकालिन्दीदेवीजा
म्बवतीतथा। सुशीलाचतथामाद्री कौशल्याविजयातथा। एवमादीनिदेवीनांसहस्राणि
चषोडश १४ रुक्मिणीजनयामास पुत्रंरणविशारदम्। चारुदेष्णंरणेशूरं प्रद्युम्नञ्च
महाबलम् १५ सुचारुंभद्रचारुंच सुदेष्णंभद्रमेवच। परशुञ्चारुगुप्तञ्च चारुभद्रंसु
चारुकम्। चारुहासंकनिष्ठञ्च कन्यांचारुमतींतथा १६ जज्ञिरेसत्यभामायां भानुर्भ्र
मरतेक्षणः। रोहितोदीप्तिमांश्चैव ताम्रश्चक्रोजलन्धमः १७ चतस्रोजज्ञिरेतेषां स्वसार
स्तुयवीयसीः। जाम्बवत्याःसुतोजज्ञे साम्बःसमितिशोभनः १८ मित्रवान्मित्रविन्द
श्च मित्रविन्दावरांगना। मित्रबाहुःसुनीथश्च नाग्नजित्याःप्रजाहिसा १९ एवमादीनि
पुत्राणांसहस्राणिनिबोधत। अशीतिश्चसहस्राणिवासुदेवसुतास्तथा। लक्षमेकंतथाप्रो
क्तं पुत्राणाञ्चद्विजोत्तमाः २० उपासंगस्यतुसुतौ वज्रःसंक्षिप्तएवच। भूरीन्द्रसेनोभूरि
श्च गवेषणसुतावुभौ २१ प्रद्युम्नस्यतुदायादोवैदर्भ्यांबुद्धिसत्तमः। अनिरुद्धोरणेरुद्धो

जी बोले प्रथम कश्यपजी पुरुषथे और उनकीस्त्री अदितिथी वह कश्यपजी ब्रह्माजीके अंशसे हुए और अदिति पृथ्वीके अंशसेहोतिभई ९ इसके अनन्तर जब अदितिरूप देवकीने जो२मनोरथ विचारेथे उनसबकामनाओंको विष्णु भगवान्ने पूरण किया १० वह विष्णुजी पृथ्वीपर मनुष्य शरीरमें अवतार धारणकर अपनी योगमायासे सब प्राणियोंको मोहतेभये ११ इसका वृत्तान्त यहहै कि जब पृथ्वीपर धर्मनष्टहोगया और असुरोंकी वृद्धिहोगई उससमय विष्णुधर्मकी स्थिति और असुरोंके नाशकरने के निमित्त इसपृथ्वीपर वृष्णिकुलमें आकर जन्मलेतेभये १२ इनश्रीकृष्णजीकी रुक्मिणी-सत्यभामा-सत्या-नाग्नजिती-सुभामा शैव्या गान्धारी-लक्ष्मणा १३ मित्रविन्दा कालिन्दी जाम्बवती-सुशीला-माद्री-कौशल्या-और विजया इनसब मुख्यस्त्रियोंको आदिले सोलहहज़ार स्त्रियांथीं१४रुक्मिणीस्त्रीके रणमेंश्रेष्ठ चारुदेष्ण और महाबलवान् उत्तम पुत्र प्रद्युम्न१५सुचारु-भद्रचारु-सुदेष्ण-भद्र-परशु-चारुगुप्त-चारुभद्र-सुचारुक-और चारुहास यहसबपुत्रउत्पन्नहुए औरचारुमतीनाम एककन्याभी उत्पन्नहोतीभई१६ सत्यभामाकेभानु-भ्रमरतेक्षण-रोहित-दीप्तिमान् ताम्र चक्र-औरजलन्धम-यहसातपुत्रहुए१७ औरइनसबसे छोटीचार बहिनभी इनकी उत्पन्नहोतीभईं-जाम्बवतीके सभाका शोभितकरनेवाला सांबनामपुत्र उत्पन्नहोताभया१८मित्रविन्दाके मित्रवान् औरमित्रविन्द यहदोपुत्रहुए-नाग्नजितीकेमित्रबाहु औरसुनीथयहदोपुत्रहोतेभये१९इत्यादिनामवाले श्रीकृष्णकेअस्सी८०हजारपुत्रउत्पन्नहोतेभये-हेद्विजोत्तमलोगो इनश्रीकृष्णजीके पुत्रोंकीसंख्या१८००००होतिभई२०उपासंगके वज्र औरसंक्षिप्त यह दोपुत्र होतेभये गवेषणके भूरीन्द्रसेन और भूरि यहदोपुत्र उत्पन्नहुए २१ प्रद्युम्नकापुत्र विदर्भराजाकी पुत्रीमें बड़ा बुद्धिमान् और बली अनिरुद्ध हुआ यहरणमें कहीं नहींरुका इसीसे इसकानाम

जज्ञेऽस्यमृगकेतनः २२ काश्यासुपार्श्वतनया साम्बाल्लेभेतरस्विनः। सत्यप्रकृतयोदे वाः पञ्चवीरा.प्रकीर्तिताः २३ तिस्रःकोट्यःप्रवीराणां यादवानांमहात्मनाम्। षष्टिःश तसहस्राणिवीर्यवन्तोमहाबलाःदेवांशाःसर्वेएवेह उत्पन्नास्तेमहौजसः २४ देवासुरेहता येच असुरायेमहाबलाः। इहोत्पन्नामनुष्येषु बाधन्तेसर्वमानवान् २५ तेषामुत्सादनार्था य उत्पन्नोयादवेकुले। कुलानांशतमेकञ्च यादवानांमहात्मनाम् २६ सर्वमेतत्कुलंयावद्व र्ततेवैष्णवेकुले। विष्णुस्तेषांप्रणेताच प्रभुत्वेचव्यवस्थितः। निदेशस्थायिनस्तस्य क थ्यन्तेसर्वयादवाः २७ (ऋषय ऊचुः) सप्तर्षयःकुबेरश्च यक्षोमाणिचरस्तथा। शाल किर्नारदश्चैव सिद्धोधन्वन्तरिस्तथा २८ आदिदेवस्तथाविष्णुरेभिस्तुसहदैवतैः। कि मर्थंसंघशोभूताः स्मृता.सम्भूतयःकति २९ भविष्याःकतिचैवान्ये प्रादुर्भावामहात्मनः। ब्रह्मक्षत्रेषुशान्तेषु किमर्थमिहजायते ३० यदर्थमिहसम्भूतो विष्णुर्वृष्ण्यन्धकोत्तमः। पुन.पुनर्मनुष्येषु तन्नःप्रब्रूहिपृच्छताम् ३१ (सूतउवाच) त्यज्यदिव्यान्तनुंविष्णुर्मा नुषेष्विहजायते। युगेत्वथपरावृत्ते कालेप्रशिथिलेप्रभुः ३२ देवासुरविमर्देषुजायतेहरि रीश्वरः। हिरण्यकशिपौदैत्ये त्रैलोक्यंप्राक्प्रशासति ३३ बलिनाधिष्ठितेचैवपुरालोक त्रयेक्रमात्। सख्यमासीत्परमकं देवानामसुरैःसह ३४ युगाख्यासुरसम्पूर्णं ह्यासीदत्या कुलंजगत्। निदेशस्थायिनश्चापि तयोर्देवासुराःसमम् ३५ मृधोबलिविमर्दायसंप्रवृद्धः

अनिरुद्धहुआ--इसकापुत्र मृगकेतन हुआ २२ सांबके सुपार्श्व राजाकी पुत्री काश्यानाम स्त्री में बड़े बलवान् सत्यवादी पांच ५ पुत्रउत्पन्न होतेभये २३ कहाँतक कहें कि इन महाबली यादवोंकी तीन करोड़ संख्याहोतीभई इनमें ६०००० यादव तो बड़े पराक्रमी शूरवीर देवताओंके अंशसे इसपृथ्वी पर जन्मलेतेभये २४ देवता और असुरोंके युद्धमें जो महाबलवन्त दैत्यमारेगयेथे वह इसपृथ्वीपर लेकर मनुष्योंको बाधाकररहेथे इसीहेतुसे उनके नाशकरनेको यादवकुलमें भगवान्ने जन्मलिया इनमहात्मा यादवोंके सौ १०० कुलहुए इनसबके पालन पोषण करनेवाले विष्णु भगवान् प्रभुथे इसीसे यह वैष्णव यादवकुल प्रतिदिन बढ़तागया सब यादवलोग श्रीकृष्णजीकेही समीपवर्त्ती हुए २५।२७ऋषियोंने पूछा हे सूतजी सप्तऋषि--कुबेर--यक्ष--माणिचरऋषि--शालकिमुनि--नारद--सिद्ध और धन्वन्तरि इत्यादिकों समेत आदिदेव विष्णु भगवान् किसहेतुसे इसपृथ्वीपर इकट्ठे होकर प्राप्त होतेभये विष्णुकी विभूति कितनी है और आगे कितनी विभूतिहोवेंगी और ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इन्हींमें भगवान् किस हेतुसे जन्म लेते हैं २८।३० हे सूतजी जिस २ हेतुसे यह उत्तम विष्णु भगवान् वृष्णि--अन्धक आदिकुलमें जन्मलेते हैं और वारंवार मनुष्योंहीमें जिसहेतुसे जन्मलेते हैं यह सब वृत्तान्त हमको आपसुनाइये ३१ सूतजीबोले--कि युगके अन्तमें धर्मकेनष्ट होजानेपर विष्णु भगवान् अपने दिव्य शरीरको त्यागकर मनुष्य शरीरको धारण करतेहैं ३२ और जब देवतालोग असुरोंसे पीड़ित होते हैं तब प्रकटहोतेहैं--पूर्व समयमें हिरण्यकशिपुनाम दैत्य सम्पूर्ण पृथ्वीपर राज्य. करताथा ३३ और बलिने जब तीनोंलोक जीतलियेथे उससमय देवता और दैत्य लोगोंकी परम मित्रता होतीभई ३४ फिर उन युगोंमें असुरों से पूरितहुआ जगत् अत्यन्त व्याकुल होजाताभया

सुदारुणः। देवानामसुराणांच घोरःक्षयकरोमहान् ३६ कर्तुंधर्म्मव्यवस्थानं जायतेमा नुषेष्विह। भृगोःशापनिमित्तन्तुदेवासुरकृतेतदा ३७ (मुनयऊचुः) कथंदेवासुरकृते व्यापारंप्राप्तवान्स्वतः। देवासुरंयथावृत्तन्तन्नः प्रब्रूहिपृच्छताम् ३८ (सूत उवाच) तेषांदायनिमित्तंते संग्रामास्तुसुदारुणाः। वराहाद्यादशद्वौच शण्डामर्कान्तरेस्मृताः ३९ नामतस्तुसमासेन शृणुतैषांविवक्षतः। प्रथमोनारसिंहस्तु द्वितीयश्चापिवामनः ४० तृतीयस्तुवराहश्चचतुर्थोऽमृतमन्थनः। संग्रामःपञ्चमश्चैव सञ्जातस्तारकामयः ४१ षष्ठोह्याडीवकाख्यस्तु सप्तमस्त्रैपुरस्तथा। अन्धकाख्योऽष्टमस्तेषां नवमोवृत्रघातकः ४२ धात्रश्चदशमश्चैव ततोहालाहलःस्मृतःप्रथितोद्वादशस्तेषां घोरःकोलाहलस्तथा४३ हिरण्यकशिपुर्दैत्यो नारसिंहेनपातितः। बामनेनबलिर्बद्धस्त्रैलोक्याक्रमणेपुरा ४४ हिरण्याक्षोहतोद्वन्द्वे प्रतिघातेतुदैवतैः। दंष्ट्रयातुवराहेण समुद्रस्तुद्विधाकृतः ४५ प्रह्लादोनिर्जितोयुद्धे इन्द्रेणामृतमन्थने। विरोचनस्तुप्राह्लादिर्नित्यमिंद्रवधोद्यतः ४६ इन्द्रेणैवतुविक्रम्य निहतस्तारकामये। अशक्नुवन्संदेवानां सर्वंसोढुंसदैवतम् ४७ निहतादानवाःसर्वे त्रैलोक्येत्र्यम्बकेणतु। असुराश्चपिशाचाश्च दानवाश्चान्धकाहते ४८ हतादेवमनुष्यैस्ते पितृभिश्चैवसर्वशः। संपृक्तोदानवैर्वृत्रोघोरोहालाहलेहतः ४९ तदाविं

और हिरण्यकशिपु और बलि इन दोनोंके समीप रहनेवाले दैत्य और देवतालोग सब समानथे ३५ अर्थात् इन दोनोंके राज्यमें दैत्य देवता दोनों समान होकर कोई किसीसे अधिक न था उसीसमय राजा बलिके पीड़ा देनेके निमित्त दैत्योंका और देवताओंका महादारुण युद्धहुआ उससमय विष्णु भगवान् देवता और असुरोंके कार्य्यके लिये शुक्राचार्य्य के शापके कारणसे धर्मकी व्यवस्थाके अर्थ उससमय मनुष्यों में जन्मे हैं ३६। ३७ ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी देवासुरों के युद्धमें विष्णुभगवान् आपही इस व्यापारमें कैसे प्राप्तहुए और देवता असुरोंका क्या वृत्तान्तथा यह सबहमारे आगे वर्णन कीजिये ३८ सूतजी बोले—कि देवता और असुरोंके विभागके निमित्त उनके बारह बड़े २ दारुण युद्धहुए और दो युद्ध शंडामर्क संज्ञक कल्पान्तरों में हुएहैं और प्रतियुद्ध अवतारभी हुए प्रथम नृसिंह—दूसरा वामन—तीसरावराह—चौथा अमृतमंथन पांचवां तारकामय युद्धहुआ—छठाआडीवक—सातवाँ त्रैपुर युद्ध—आठवाँ अन्धक—नवाँ वृत्रासुर नाशक ३९।४२ दशवाँ धात्रयुद्ध—ग्यारहवाँ हालाहलयुद्ध ४३ नृसिंह अवतारने हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा—वामनने बलिदैत्यको बाँधा और त्रिलोकी मापली ४४ वराह अवतारमें अपनी दंष्ट्रासे हिरण्याक्ष दैत्यकोमारा और समुद्रके दोखंड कर दिये ४५ और अमृतमथन अवतारमें इन्द्रने प्रह्लादको जीता फिर प्रह्लादका पुत्र विरोचन सदैव इन्द्रके बधकी इच्छा करतारहा तब तारकामय युद्धमें उसको इन्द्रने अपने पराक्रमसे मारा यह दैत्य देवताओं के कर्मको कभीनहीं सहताथा ४६। ४७ फिर जब आडीवकनाम युद्धहुआ तब त्रैपुर युद्धहुआ उससमय शिवजीने त्रिपुरासुरदैत्यको मारा और अन्य सब दानवोंको भी मारा इनके सिवाय अन्धक युद्धमेंभी शिवजीने असुर और पिशाचादिक सब मारे हैं ४८ और वृत्रनाशक युद्धमें देवता मनुष्य पितर और दानव इनसबों में संयुक्तहुए वृत्रासुर को विष्णुकी सहायतासे इन्द्रनेही

ष्णुसहायेन महेन्द्रेणनिवर्तितः। हतोध्वजेमहेन्द्रेण मायाच्छन्नस्तुयोगवित्। ध्वजल क्षणमाविश्य विप्रचित्तिःसहानुजः ५० दैत्यांश्चदानवांश्चैवसंयतान्किलसंयुतान्। जयन् कोलाहलेसर्वान् देवैःपरिवृतोवृषा। यज्ञस्यावभृथेदृश्यौ शण्डामर्कौतुदैवतैः ५१ एतेदेवासुरैर्वृत्ताः संग्रामाद्वादशैवतु। देवासुरक्षयकराः प्रजानान्तुहितायवै ५२ हिरण्यकशिपूराजावर्षाणामर्बुदंबभौ। द्विसप्ततितथान्यानि नियुतान्यधिकानिच। अशीतिञ्च सहस्राणि त्रैलोक्यैश्वर्यंताङ्गतः ५३ पर्यायेणतुराजाभूद्बलिर्वर्षायुतंपुनः। षष्टिवर्षसहस्राणि नियुतानिचविंशतिः ५४ बलेराज्याधिकारस्तु यावत्कालंबभूवह।तावत्कालन्तुप्रह्लादो निवृत्तोह्यसुरैःसह ५५ इन्द्रास्त्रयस्तेविज्ञेया असुराणांमहौजसः। दैत्यसंस्थमिदंसर्वमासीद्दशयुगंपुनः ५६ त्रैलोक्यमिदमव्यग्रं महेन्द्रेणानुपाल्यते। असपत्नमिदंसर्वमासीद्दशयुगंपुनः ५७ प्रह्लादस्यहतेतस्मिन् त्रैलोक्येकालपर्ययात्। पर्यायेणतुसंप्राप्ते त्रैलोक्यंपाकशासने। ततोऽसुरान्परित्यज्य शुक्रोदेवानगच्छत ५८ यज्ञेदेवानथगतान्दितिजाःकाव्यमाव्रुवन्। किंत्वंनोमिषतांराज्यं त्यक्त्वायज्ञंपुनर्गतः ५९ स्थातुंनशक्नुमोह्यत्र प्रविशामोरसातलम्। एवमुक्तोऽब्रवीद्दैत्यान्विषण्णान्सान्त्वयन्गिरा ६० माभैष्टधारयिष्यामितेजसास्वेनवोऽसुराः। मन्त्रांश्चैवौषधींश्चैव रसांवसुचयत्परम् ६१

मारा है फिर धात्रसंज्ञक दशयें युद्धमें और हालाहल युद्धमें घोर दैत्यमारे हैं--फिर योगको जाननेवाले अपनी मायासे छिपेहुए ध्वजाके चिह्नमें प्रविष्ट अपने छोटे भाई और अन्य दैत्यों से युक्त विप्रचित्ति दैत्यको अन्य सब दैत्यों समेत कोलाहल युद्धमें इन्द्रने मारा है जब यज्ञ के अवभृथ स्नानके लिये शण्डामर्क नाम युद्धहुए हैं तबहीं इन्द्रने उस विप्रचित्ति दैत्यको मारा है ४९।५१ इस रीतिसे यह बारह युद्ध देवता और दैत्योंके हुएहैं इन सबयुद्धोंमें देवता असुर और मनुष्योंकाभी नाश हुआहै५२ हिरण्यकशिपु एक अर्बुद बहत्तर करोड़ अस्सीहजार वर्षोंतक इस त्रिलोकीका राजा रहा और त्रिलोकीका सब ऐश्वर्य्य भी उसीको प्राप्तहुआ ५३ इसके पीछे राजा बलिका राज्य दोकरोड़ अस्सीहजार २००८०००० वर्षतकरहा फिर इतनेही कालतक असुरों समेत प्रह्लादका राज्य रहा ५४।५५ यह तीनों असुरों के राजा अर्थात् स्वामी महापराक्रमवाले हुए हैं फिर दश युगोंतक उन सब दैत्यों का नाशहीरहा उससमय इन्द्रने बड़ी कुशलतापूर्वक त्रिलोकी का राज्यकिया ५६।५७ जबसे प्रह्लादका राज्य समाप्तहुआ तबसे कालके वश इन्द्रहीका राज्य होजाताभया--इस के पीछे शुक्राचार्य्यजी दैत्यों को त्यागकर देवताओं के पास आते भये ५८ एक समय शुक्राचार्य्य जी देवताओं के यज्ञमें चले गये तब दैत्यों ने शुक्राचार्य्य को बुलाकर यह बातकही कि क्या तुम हमारे देखते हुएही राज्यको त्यागकर देवताओं के यज्ञमें चले गये ५९ इससे अब हम इस लोक में स्थितनहीं रहसक्ते पातालको चले जांयगे इस बातके सुनने से शुक्राचार्य्य दुःखित होकर दैत्योंसे यह शान्ति के वचन कहते भये ६० कि हे दैत्य लोगो तुमभयमतकरो तुमको मैं अपने तेज करके धारण करूंगा मंत्र औषध रस और परम उत्तमद्रव्य यह सब मेरेही पास पूर्ण हैं और देवताओं के पास इन सब का चतुर्थांशमात्र है सो इन सब वस्तुओंको मैं तुम्हीं को दे दूंगा क्योंकि मैं ने तुम्हारेही निमित्त धा-

कृत् स्नानिमयितिष्ठन्ति पादस्तेषांसुरेषुवै । तत्सर्वंवःप्रदास्यामि युष्मदर्थंधृताम
या ६२ ततोदेवास्तुतान्दृष्ट्वा वृतान्काव्येनधीमता । संमन्त्रयन्तिदेवावै संविग्ना
स्तुजिघृक्षया ६३ काव्योह्येषइदंसर्वं व्यावर्तयतिनोबलात् । साधुगच्छामहतूर्णं या
वन्नाध्यापयिष्यति ६४ प्रसह्यहत्वाशिष्टांस्तु पातालंप्रापयामहे । ततोदेवास्तुसंर
ब्धा दानवानुपसृत्यह ६५ ततस्तेवध्यमानास्तु काव्यमेवाभिदुद्रुवुः । ततःकाव्यस्तु
तान्दृष्ट्वा तूर्णंदेवैरभिद्रुतान् ६६ रक्षांकाव्येनसंहत्य देवास्तेऽप्यसुरार्दिताः। काव्यं
दृष्ट्वास्थितंदेवा निःशङ्कमसुरान्जहुः ६७ ततःकाव्योऽनुचिन्त्याथ ब्राह्मणोवचनंहि
तम् । तानुवाचततःकाव्यः पूर्ववृत्तमनुस्मरन् ६८ त्रैलोक्यंवोहृतंसर्वं वामनेनत्रि
भिःक्रमैः । बलिर्बद्धोहतोजम्भो निहतश्चविरोचनः ६९ महासुराद्वादशसु संग्रामेषु
सुरैर्हताः । तैस्तैरुपायैर्भूयिष्ठं निहतावःप्रधानतः ७० किञ्चिच्छिष्टास्तुयूयंवै युद्धंमा
स्त्वितिमेमतम् । नीतयोवोऽभिधास्यामि तिष्ठध्वंकालपर्ययात् ७१ यास्याम्यहंमहादे
वं मन्त्रार्थंविजयावहम् । अप्रतीपांस्ततोमन्त्रान् देवात्प्राप्यमहेश्वरात् । युध्यामहेपुन
र्देवांस्ततःप्राप्स्यथवैजयम् ७२ ततस्तेकृतसंवादा देवानूचुस्तदासुराः । न्यस्तशस्त्रा व
यंसर्वे निःसन्नाहारथैर्विना ७३ वयंतपश्चरिष्यामः संवृतावल्कलैर्वने । प्रह्लादस्यवचः
श्रुत्वा सत्याभिव्याहृतन्तुतत् ७४ ततोदेवान्यवर्तन्त विज्वरामुदिताश्चते । न्यस्तशस्त्रे

रण कररक्खी हैं ६१ । ६२ इस के अनन्तर शुक्राचार्य्य से संयुक्त हुए उन दैत्योंको जानकर देवता लोग भी सब वस्तुओं के ग्रहण करने की इच्छासे आपसमें सलाहकरके कहने लगे कि यह शुक्राचार्य्य इस सबहमारी द्रव्योंको बलकरके हमसे छीनते हैं सो जबतक कि वह उन दैत्योंको न बतावें उस्से पूर्व्वही हम उनके पास जांयगे और हठकरके उनदैत्योंको पातालमें प्राप्तकरेंगे इसके अनन्तर देवता लोग दैत्योंके समीप जाकर उनको पीड़ादेने लगे ६३ । ६५ तब महादुःखित होकर वह सब दैत्य वहां से भगकर शुक्राचार्य्य के पास आये तब देवताओं से भयभीत हुए उन दैत्यों की शुक्राचार्य्यजी शीघ्रही रक्षाकरते भये फिर दैत्यों से पीड़ित हुए देवता शुक्राचार्य्यकी कीहुई रक्षाकानाश कर निश्शंकहो दैत्योंका नाशकरते भये ६६ । ६७ फिर शुक्राचार्य्य जी पूर्व के वृत्तान्त को स्मरण करके हितको चिन्तवन कर दैत्योंसे बोले ६८ कि वामन ने तुम्हारी सब पृथ्वी तीन चरणसे मापकर हरलीनी और बलिको बांधलिया इसके विशेष जंभासुर और विरोचनको भी मारा ६९ और बारह संग्रामों में देवताओंने बड़े २ उपाय करके तुम्हारे बड़े २ प्रधान दैत्योंको मारा है और तुम थोड़े से शेष रहेहो इस हेतुसे तुम मेरी मतिसे युद्धमतकरो तुमकुछकाल तक ठहरो मैं तुमको उत्तम नीति बताऊंगा मैं विजय करनेवाले मंत्रके लिये महादेवजी के पासजाऊंगा उन महादेवजीसे अतुलबलपराक्रम वाले मंत्रोंको प्राप्तकरके फिर तुम्हारा देवताओंसे युद्धकरवाकर तुम्हारी विजयकराऊंगा ७०।७२ इसप्रकारके संवादको सुनकर दैत्यलोग देवताओं से बोले कि हे देवता लोगो हम शस्त्रों से रहित हैं हमारे कवच संजोवा आदिक टूटगये रथोंसे रहित हैं इस हेतुसे हमवक्कल धारण करके वनमें तपस्या करेंगे यह सुनकर और प्रह्लाद के वचनको सत्यमानकर वह देवता लोग भी

षुदैत्येषु विनिवृत्तास्तदासुराः ७५ ततस्तानब्रवीत्काव्यः कञ्चित्कालमुपास्यथ। नि
रुत्सिक्तास्तपोयुक्ताः कालंकार्यार्थसाधकम् ७६ मातुर्ममाश्रमस्थावै मांप्रतीक्षथदान
वाः। तत्संदिश्यासुरान्काव्यो महादेवंप्रपद्यत ७७ (शुक्र उवाच) मन्त्रानिच्छाम्यहं
देव! ये न सन्तिबृहस्पतौ। पराभवायदेवानामसुराणांजयायच ७८ एवमुक्तोऽब्रवीद्
देवो व्रतंत्वञ्चरभार्गव!। पूर्णंवर्षसहस्रंतु कणधूममवाक्शिराः। यदिपास्यसिभद्रंते
ततोमन्त्रानवाप्स्यसि ७९ तथेतिसमनुज्ञाप्य शुक्रस्तुभृगुनन्दनः। पादौसंस्पृश्यदेव
स्य वाढमित्यब्रवीद्वचः। व्रतंचराम्यहंदेव! त्वयादिष्टोऽद्यवैप्रभो! ८० ततोऽनुसृष्टोदेवे
न कुण्डधारोऽस्यधूमकृत्। तदातस्मिन्गतेशुक्रे ह्यसुराणांहितायवै। मन्त्रार्थंतत्रवस
ति ब्रह्मचर्यंमहेश्वरे ८१ तद्बुद्ध्वानीतिपूर्वंतु राज्येन्यस्तेतदासुरैः। अस्मिंश्छिद्रेतदाम
र्षाद्देवास्तान्समुपाद्रवन् ८२ दंशिताःसायुधाःसर्वे बृहस्पतिपुरःसराः ८३ दृष्ट्वाऽसुरग
णा देवान् प्रगृहीतायुधान्पुनः। उत्पेतुःसहसातेवै सन्त्रस्तास्तान्वचोऽब्रुवन् ८४ न्य
स्तेशस्त्रभयेदत्ते आचार्येव्रतमास्थिते। दत्त्वाभवन्तोह्यभयंसंप्राप्ता नोजिघांसया ८५ अना
चार्यावयंदेवा! स्त्यक्तशस्त्रास्त्ववस्थिताः। चीरकृष्णाजिनधरानिष्क्रियानिष्परिग्रहाः ८६
रणे विजेतुंदेवांश्च नशक्ष्यामःकथञ्चन। अयुद्धेनप्रपत्स्यामः शरणंकाव्यमातरम् ८७

संताप से रहित होकर प्रसन्नतासे शस्त्ररहित दैत्योंके विषय युद्धकरनेसे निवृत्त होगये अर्थात् युद्धक-
रने से हटगये ७३। ७५ इस के अनन्तर कुछ काल के पीछे दैत्यों से शुक्राचार्य्य ने कहा कि तुम
अपने कार्य्य की सिद्धिके अर्थ अपने २ तपोंमें युक्तहो और हे दानवलोगो तुम मेरी माताके स्था-
न में रहकर मेरी बाट देखते रहना ऐसा उनदैत्यों से कहकर आचार्य्य जी महादेवजीके पास जाते
भये ७६। ७७ और उनसे बोले कि हे महादेव जीजो बृहस्पति के पास नहीं हैं उन मंत्रोंको मैं
चाहताहूं और मैं देवतों की पराजय और दैत्यों की विजय के निमित्त उन मंत्रों को चाहता हूं ७८
शुक्रजीके इसवचनको सुनकर महादेवजीबोले कि हे भार्गव पूर्ण हजार वर्षतक नीचाशिरकर जो
तुमधूमवायु आदिका भक्षणकरके तपस्याकरोगे तो मंत्रोंको प्राप्तकरोगे ७९ तबशुक्राचार्य्यने उस
आज्ञाकोमान शिवजीके चरणों को छूकर बड़े निश्चय पूर्व्वक यह वचनकहाकि हेप्रभु आपकीआज्ञा
से मैं उसतपका आचरण करताहूं ८० यह कहकर शिवजीसे रचेहुए कुंडधारमें जहां कि धुआंनिक-
लताथा वहां दैत्योंके हितके निमित्त मंत्रकी प्राप्तिकेअर्थ शुक्राचार्य्यजी ब्रह्मचर्य्यमें स्थितहोनिवास
करनेलगे ८१ तब नीतिपूर्व्वक उसवार्त्ताको देवतालोगजानकर राज्यमें स्थितहुए दैत्योंके उसछलको
जानकर क्रोधकरके उनदैत्योंको भगादेतेभये ८२ अपने गुरुबृहस्पतिजी समेत देवतालोगशस्त्रों को
धारणकर कवचपहर दैत्योंके सन्मुखचले तब उन शस्त्रधारी देवताओंको अकस्मात् आतादेख बड़े
दुःखितहोकर दैत्यबोले ८३। ८४ शस्त्रोंका भयतो तुमने त्यागदियाथा और हमारे आचार्य्य व्रतमें स्थित
हैं सो तुमहमको अभयदानदेके फिर मारनेकी इच्छासे कैसेप्राप्तहुएहो ८५ हमलोग आचार्य्यजीसे
रहित शस्त्रोंसे विहीन प्राचीन कृष्णादि मृगचर्मोंको धारणकर रहेहैं हमसब युद्धकरनेकी सामग्री से
रहितहैं ८६ हे देवताओ हमतुम्हारेसाथ युद्धकरनेको किसीप्रकारसेभी समर्थ नहीं हैं हम विनायुद्ध

यापयामःकृच्छ्रमिदंयावदभ्येतिनोगुरुः। निवृत्तेचतथाशुक्रे योत्स्यामोदंशितायुधाः ८८
एवमुक्तासुरान्योन्यं शरणंकाव्यमातरम्।प्रापद्यन्तततोभीतास्तेभ्योऽदादभयन्तुसा८९
नभेतव्यंनभेतव्यं भयन्त्यजतदानवाः! मत्सन्निधौवर्ततांवो नभीर्भवितुमर्हति ९०
तथाचाभ्युपपन्नांस्तान् दृष्ट्वादेवास्ततोसुरान्। अभिजग्मुःप्रसह्यैतानविचार्यबलाबल
म् ९१ ततस्तान्बाध्यमानांस्तु देवैर्दृष्ट्वासुरांस्तदा। देवीक्रुद्धाऽब्रवीद्देवाननिन्द्रान्वःक
रोम्यहम् ९२ संभृत्यसर्वसम्भारानिन्द्रंसाभ्यचरत्तदा। तस्तम्भदेवीबलवद्योगयुक्तात
पोधना ९३ ततस्तंस्तम्भितंदृष्ट्वा इन्द्रंदेवाश्चमूकवत्। प्राद्रवन्तततोभीता इन्द्रंदृष्ट्वा
वशीकृतम् ९४ गतेषुसुरसंघेषु शक्रंविष्णुरभाषत। मांत्वंप्रविशभद्रंते नयिष्येत्वांसुरो
त्तम! ९५ एवमुक्तस्ततोविष्णुं प्रविवेशपुरन्दरः। विष्णुनारक्षितंदृष्ट्वा देवीक्रुद्धावचोऽ
ब्रवीत् ९६ एषात्वांविष्णुनासार्धन्दहामिमघवन्बलात्। मिषतांसर्वभूतानां दृश्यतांमे
तपोबलम् ९७ तयाभिभूतौतौदेवा विन्द्रविष्णूबभूवतुः।कथमुच्येऽवसहितौ विष्णुरिन्द्र
मभाषत ९८ इन्द्रोऽब्रवीज्जहिह्येनां यावन्नौनदहेत्प्रभो!। विशेषेणाभिभूतोऽस्मित्वत्तो
हञ्जहिमाचिरम् ९९ ततःसमीक्ष्यविष्णुस्तां स्त्रीबधेकृच्छ्रमास्थितः। अभिध्यायत
तश्चक्रमापदुद्धरणेतुतत् १०० ततस्तुत्वरयायुक्तः शीघ्रकारीभयान्वितः। ज्ञात्वा

कियेही शुक्राचार्य्यकी माताके शरणमें,जांयगे ८७ वहां जबतक कि हमारे गुरू न आवेंगे तबतकहम कष्टसे रहितरहेंगे और जबशुक्राचार्य्यजी व्रतसे निवृत्तहोजांयगे तबहम तुमसे युद्धकरेंगे ८८ इस प्रकारकीबातें कहके और आपसमें सलाहकरके डरतेहुए सबदैत्य शुक्राचार्य्य की माताके शरणमें प्राप्तहुए तब उस माताने उनको अभयदानदिया ८९ अर्थात् यह कहाकि हे दानवलोगो भयमतकरो अपने चित्तसे भयको दूरकरके मेरे समीपमें रहतेहुए तुमको किसीबातका डरनहीं है ९० तब उस मातासे रक्षितहुए दैत्योंको देखकर बलाबलका विनाविचारकिये देवता हठसे दैत्योंके पासजातेभये तब देवताओंसे पीड़ितकियेहुए उन असुरोंको शुक्राचार्य्यकी मातादेखकर बड़े क्रोधसे बोली कि हे देवताओ मैं तुमको इन्द्रसे रहितकरूंगी ९१। ९२ यह कहके सबभारको इकट्ठाकर इन्द्रके समीप चली अर्थात् वहतपोधनवाली योगमें युक्तरहनेवालीदेवी इन्द्रको बांधकरलेआई तब बंधनमें फंसेहुये इन्द्रको देखकर सबदेवताचुपकेहो वशमें कियेहुएइन्द्रकोजान भागजातेभये ९३। ९४ जब देवता-ओंके समूह भागकर चलेगये तब इन्द्रसे विष्णुभगवान् बोलतेभये कि हे इन्द्र तू मुझमें प्रवेशितहो जामैं तेरा कल्याणकरूंगा ९५ विष्णुके इस वचनको सुनकर इन्द्र शीघ्रही विष्णुमें प्रवेश करताभया तब विष्णुसे रक्षित कियाहुआ इन्द्रको देखकर वह देवी यह वचन बोली ९६ कि हेइन्द्र मैं अपनी सामर्थ्यके बलसे विष्णु समेत तुझको सब प्राणियों के देखतेहुएही भस्मकरदूंगी ऐसा मुझमें तपो बलहै ९७ उसके ऐसे वचनको सुनकर विष्णु और इन्द्र दोनों यह विचारतेभये कि अब क्या होगा तब इन्द्रसे विष्णु बोले कि अब कैसे इससे छुटेंगे उससमय इन्द्रने कहा हेविभो जबतक यह हम-को भस्मनकरे उससे प्रथमही आप इसकोमारडालो ९८ और हेविष्णुजी मैं तो आपही से रक्षितहूं इसको शीघ्रमारो विलम्ब न करो तब विष्णुने स्त्री के मारने का पाप चिन्तवन किया परन्तु तौभी

विष्णुस्ततस्तस्याः क्रूरन्देव्याश्चिकीर्षितम्। क्रुद्धःस्वमस्त्रमादाय शिरश्चिच्छेदवैभिया
१०१ तंदृष्ट्वास्त्रीबधंघोरं चुक्रोधभृगुरीश्वरः। ततोभिशप्तोभृगुणाविष्णुर्भार्याबधेतदा
१०२ यस्मात्तेजानतोधर्म मवध्यास्त्रीनिषूदिता। तस्मात्त्वंसप्तकृत्वेह मानुषेषूपपत्स्यसि
१०३ततस्तेनाभिशापेननष्टेधर्मेपुनःपुनः।लोकस्यचहितार्थायजायतेमानुषेष्विहि १०४
अनुव्याहृत्यविष्णुंसतदादायशिरत्वरन्। समानीयततःकायमसौगृह्येदमब्रवीत्१०५ए
षात्वंविष्णुनादेवि! हतासञ्जीवयाम्यहम्। ततस्तांयोज्यशिरसा अभिजीवेतिसोऽब्रवी
त्१०६यदिकृत्स्नोमयाधर्मोज्ञायतेचरितोपिवा। तेनसत्येनजीवस्वयदिसत्यंवदाम्यहम्
१०७ततस्तांप्रोक्ष्यशीताभिरद्भिर्जीवेतिसोऽब्रवीत्। ततोऽभिव्याहृतेतस्यदेवीसंजीविता
तदा१०८ततस्तांसर्वभूतानिदृष्ट्वासुप्तोत्थितामिव।साधुसाध्वितिचक्रुस्तेवचसासर्वतोदि
शम् १०९ एवंप्रत्याहृतातेन देवीसाभृगुणातदा। मिषतांदेवतानांहि तदद्भुतमिवाभवत्
११०असम्भ्रान्तेनभृगुणापत्नीसञ्जीवितापुनः।दृष्ट्वाचेन्द्रोनालभतशर्मकाव्यभयात्पुनः
प्रजागरेततश्चेन्द्रो जयन्तीमिदमब्रवीत् १११ सञ्चित्यमतिमान्वाक्यं स्वांकन्यांपाक
शासनः। एषकाव्योह्यमित्राय व्रतञ्चरतिदारुणम्। तेनाहंव्याकुलःपुत्रि! कृतोमति
मताभृशम् ११२ गच्छसंसाधयस्वैनं श्रमापनयनैःशुभैः। तैस्तैर्मनोऽनुकूलैश्च ह्युप

विपत्ति दूरकरने के लिये अपने सुदर्शनचक्र को उठाया १०० और शीघ्रही भय से युक्त हो-कर विष्णुभगवान् उसके क्रोधके कर्त्तव्यको विचारकर अपने क्रोधसे डरतेहुएभी अपनेशस्त्र से उस का शिरकाटतेभये तब उसघोरस्त्री के वधको देखकर शुक्राचार्य्यजी क्रोधितहोकर विष्णुको यहशाप देतेभये १०१। १०२ कि हेविष्णु तुमने स्त्रीके वधको अयोग्यजानकर भी जो स्त्रीकावध किया इस हेतु से तुम सातवार इससंसारमें मनुष्योंके शरीर से उत्पन्नहोगे १०३ तभीसे धर्म नष्टहोजाने के समय शुक्रके शापसे मनुष्योंके हितकेलिये विष्णु वारंवार जन्मलेते हैं १०४ शापदेनेके पीछे शुक्रा-चार्य्यने शीघ्रतासे उसकटेहुए अपनी माताके शिरको उठाकर उसके धड़पर फिर रखकर यह वचन कहा कि हेदेवि तुमको विष्णु भगवान् ने मारा है और अव मैं तुमको जिलाताहूं यह कह उसशिरको जोड़ (अभिजीव) इसमंत्रको वोलतेभये १०५।१०६ और यह कहा कि जो मैंने सव यथार्थ धर्मों के आचरण किये हैं उससत्य के प्रभावसे यह जिये यह मैं सत्यहीसत्य कहताहूं १०७ फिर शीतलजल के छींटेमारकर"अभिजीव"इसवचन को कहतेभये ऐसाकहतेही वह शुक्राचार्य्यकी मातादेवीजीउठी १०८ इसकेपीछे सव लोग उसको सोतेसेजगेहुए के समान जीउठनेसे बहुत अच्छाहुआ इसशब्द को वारंवार कहनेलगे १०९ शुक्राचार्य्य ने सबदेवताओं के देखतेही देखते उस अपनी माता को इसप्रकार जिवालिया यह सवको बड़ाआश्चर्य्य हुआ ११० और उसमाताको शुक्रजीने अकस्मात् जिवालिया इसवातको इन्द्रदेखकर बड़ेभारी शुक्रके भयसे सुखसे रहित होगया १११ और अपनी जयन्तीनाम पुत्रीसे चिन्तापूर्वक यह वचनकहनेलगा कि हेपुत्रि यहशुक्राचार्य्य मेरे शत्रुओंके निमित्त दारुणव्रत करता है इसहेतु से मैं उस्से अत्यन्त दुःखितहोरहाहूं ११२ सो तू उसकेपासजाके बड़ी सुन्दरसेवा परिचर्य्यादिकों से उसकी टहल आलस्यछोड़कर और उसके मनके अनुकूल आचरण

चारैरतन्द्रिता ११३ काव्यमाराधयस्वैनं यथातुष्येतसद्विजः। गच्छत्वंतस्यदत्तासि प्र
यत्नंकुरुमत्कृते ११४ एवमुक्ताजयन्तीसा वचःसंगृह्यवैपितुः। अगच्छद्यत्रघोरंस तप
आरभ्यतिष्ठति ११५ तंदृष्ट्वातुपिबन्तंसा कुण्डधूममवाङ्मुखम्। यक्षेणपात्यमानञ्च
कुण्डधारेणपातितम् ११६ दृष्ट्वाचतम्पात्यमानं देवीकाव्यमवस्थितम्। स्वरूपध्यान
शाम्यन्तं दुर्बलंभूतिमास्थितम्। पित्रायथोक्तंवाक्यंसाकाव्येकृतवतीतदा ११७ गीर्भि
श्चैवानुकूलाभिः स्तुवतीवल्गुभाषिणी। गात्रसंवाहनैःकाले सेवमानात्वचःसुखैः। व्रत
चर्य्यानुकूलाभिरुवासबहुलाःसमाः ११८ पूर्णेधूमव्रतेतस्मिन् घोरेवर्षसहस्रके। वरेण
च्छन्दयामास काव्यम्प्रीतोभवस्तदा ११९ (महादेव उवाच) एतद्व्रतंत्वयैकेन ची
र्णन्नान्येनकेनचित्। तस्माद्वैतपसाबुद्ध्या श्रुतेनचबलेनच १२० तेजसाचसुरान्सर्वा
स्त्वमेकोऽभिभविष्यसि। यच्चाभिलषितम्ब्रह्मन्! विद्यतेभृगुनन्दन! १२१ प्रपत्स्यसेतु
तत्सर्वं नानुवाच्यन्तुकस्यचित्। सर्वाभिभावीतेनत्वंभविष्यसिद्विजोत्तम! १२२ एतां
न्दत्त्वावरांस्तस्मै भार्गवायभवःपुनः। प्रजेशत्वंधनेशत्व मबध्यत्वञ्चवैददौ १२३ एतान्
लब्ध्वावरान्काव्यः सम्प्रहृष्टतनूरुहः। हर्षात्प्रादुर्भवन्तन्तु दिव्यस्तोत्रंमहेश्वरम्। तथा
तिर्यक्स्थितश्चैव तुष्टुवेनीललोहितम् १२४ (शुक्र उवाच) नमोऽस्तुशितिकण्ठाय
कनिष्ठायसुवर्चसे। लेलिहानायकाव्याय वत्सरायान्धसःपते! १२५ कपर्दिनेकरालाय

करके उसको प्रसन्नकर ११३ अर्थात् जिसप्रकार से वह शुक्रजी प्रसन्नहोंय वही आचरणकर तू जा
मैं ने तुझे उसीकोदेदी तू उसकाआराधन कर और मेरे कार्य्य में अनेक प्रकारसे यत्नकर यहसुनकर
वह जयन्ती अपने पिताके वचनको ग्रहणकर वहां गई जहां कि शुक्राचार्य्यजी घोरतपस्या कररहेथे
वहां कुंडकी ओर नीचाशिर कियेधुएंको पीनेकेलिये नीचेमुखकियेहुए शुक्राचार्य्य को ११४।११६
अपने स्वरूपमें और ध्यानमें विभूतियों समेत दुर्बलांग देखकर यह देवी जयन्ती उनकी सेवा में
स्थितहो पिताके कहेहुए वचनको करतीभई अर्थात् सुन्दर भाषण उत्तम अनुकूल वाणियोंसे स्तुति
करना और पैर दावना इत्यादि वातोंसे उनके शरीरकी सुखदायी सेवाकरनेलगी और बहुत वर्षोंतक
उनके अनुकूलहोके तपस्या करतीभई इसके अनन्तर जब हज़ार वर्ष व्यतीत होगये तब शिवजी
प्रसन्न होकर शुक्रको वरदान देनेके लिये यह वचन बोले हेशुक्र यह व्रतकेवल तुम्ह अकेलेनेही किया
है दूसरे किसीने नहीं किया इस हेतुसे तपबुद्धि शास्त्रका सुनना और तेज बल इत्यादिकोंसे तुम
सब देवताओं,को जीतके अकेलेही विराजमानरहोगे और हे भृगुनन्दनइसके विशेष जो कुछ
अन्यतेरामनोरथ है वहभी तेरा सब प्रकारसे सिद्धहोगा यहवात किसीके आगे मत कहना तूही
सबको प्राप्त करनेवाला होगा ११७। १२१ शिवजी इन सब वरोंको शुक्राचार्य्य के अर्थ देकर
प्रजाकापति धनकापति और वधनहोना इनसब वरोंको भी देते भये १२२। १२३ इन सब
वरोंको प्राप्तहोकर शुक्रजी बड़े प्रसन्नहोते भये देहकी रोमावली खड़ी होगई इसके पीछे शुक्राचार्य्य
तिरछे खड़े हो बड़ी नम्रता पूर्वक आगे लिखे हुए स्तोत्र से शिवजी को प्रसन्न करते भये १२४
शुक्रजी बोले—सफ़ेद कंठवाले कनिष्ठरूपवाले सुन्दर कांतिवाले अतिशय भक्षण करनेवाले कवि

हर्यक्षणेवरदायच। संस्तुतायसुतीर्थाय देवदेवायरंहसे १२६ उष्णीषिणेसुवक्त्रायबहुरूपायवेधसे। वसुरेतायरुद्राय तपसेचित्रवाससे१२७ ह्रस्वायमुक्तकेशाय सेनान्येरोहितायच। कवयेराजवृक्षाय तक्षकक्रीडनायच १२८ सहस्रशिरसेचैव सहस्राक्षायमीढुषे। वरायभव्यरूपाय श्वेतायपुरुषायच १२९ गिरिशायनमोऽर्काय वलिनेआज्यपायच। सुतृप्तायसुवस्त्राय धन्विनेभार्गवायच १३० निषङ्गिणेचतारायस्वक्षायक्षपणायच। ताम्रायचैवभीमाय उग्रायचशिवायच १३१ महादेवायशर्वायविश्वरूपशिवायच। हिरण्यायवरिष्ठाय ज्येष्ठायमध्यमायच १३२ वास्तोष्पते·पिनाकाय मुक्तयेकेवलायच। मृगव्याधायदक्षाय स्थाणवेभापणायच १३३ बहुनेत्रायधुर्य्यायत्रिनेत्रायेश्वरायच। कपालिनेचवीराय मृत्यवेत्र्यम्बकायच १३४ बभ्रवेचपिशङ्गाय पिङ्गलायारुणायच। पिनाकिनेचेषुमते चित्रायरोहितायच १३५ दुन्दुभ्यायैकपादाय अजायबुद्धिदायच। आरण्याय गृहस्थाय यतयेब्रह्मचारिणे १३६ सांख्यायचैवयोगायव्यापिनेदीक्षितायच। अनाहतायशर्वाय भव्येशाययमायच १३७ रोधसेचेकितानाय ब्रह्मिष्ठायमहर्षये। चतुष्पदाय मेध्याय रक्षिणेशीघ्रगायच १३८ शिखण्डिनेकरालाय दंष्ट्रिणेविश्ववेधसे। भास्वराय प्रतीताय सुदीप्तायसुमेधसे १३९ क्रूरायाविकृतायैव भीषणायशिवायच। सौम्यायचैव मुख्याय धार्मिकायशुभायच १४० अवध्यायामृतायैव नित्यायशाश्वतायच। व्यापृता

रूप वर्परूप अन्यलोक पति ऐसे तुम्हारे वास्ते नमस्कार है १२५ कपर्दी जटा वाले विकरालरूपी, हर्यक्षण, वरद, संस्तुत, सुतीर्थ, देवदेव, वेगरूप-ऐसे तुमको नमस्कार है १२६ शिरपै वस्त्रमुकुट धारण करने वाले सुन्दर मुख वाले बहुरूपी विधातारूपी वसुवीर्यवाले, रुद्र, तपरूप, विचित्रवस्त्रोंवाले, ऐसे तुम० १२७ ह्रस्वरूप, खुले केशोंवाले, सेनाकेपति, रोहितरूप, कवि, राजवृक्ष, तक्षकक्रीडन, ऐसे तुम० १२८ हज़ारशिरोंवाले, हज़ारनेत्रोंवाले, मीढ्वान्, वररूप, भव्यरूप, श्वेत, पुरुष, ऐसे तुमको नमस्कारहै १२९ पर्व्वतमें शयन करनेवाले, सूर्य्यरूप, वलीरूप आज्यप सुतृप्त, सुन्दर वस्त्रोंवाले धनुषधारीभार्गवरूप ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै १३० निषंगी, तार, स्वक्ष, क्षपण, ताम्रस्वरूप, भयंकर, उग्ररूप, शान्तस्वरूप ऐसे तुम्हारे वास्ते नम० १३१ महादेव, शर्व विश्वरूपी, शिवरूपी, हिरण्यरूपी, वरिष्ठ ज्येष्ठ, मध्यम ऐसे तुम्हारे वास्ते नमस्कारहै १३२ वास्तोष्पति, पिनाकी, मुक्तिरूपकेवल स्वरूप, मृगव्याधरूप, दक्षरूप, स्थाणुरूप, भापणरूप, ऐसे तुमकोन० १३३ बहुत नेत्रोंवाले, धूर्यरूप, त्रिनेत्र, ईश्वर कपालधारी, वीर, मृत्युरूप, त्र्यम्बक ऐसे तुमको न० १३४ विपुल शरीरवाले, पिशंगवर्णवाले, पिंगल वर्णवाले, लालवर्ण वाले, पिनाकी, बाणधारी, विचित्ररूप, रोहितरूप, ऐसे तुमकोन० १३५ दुन्दुभ्यरूप एकपादस्वरूप अज, बुद्धिद, अरण्य में रहनेवाले, गृहस्थ, यति, ब्रह्मचारी-ऐसे तुमको नमस्कार है १३६ सांख्यरूप, योगरूप व्यापकरहनेवाले, दीक्षित, अनाहत, शर्व, भव्येश, यम, ऐसे तुमको न० १३७ रोधस, चेकितान, ब्रह्मिष्ठ, महर्षि, चतुष्पद, मेध्यरूप, रक्षावाले, शीघ्रगमन करने वाले-तुमको नमस्कार है १३८ शिखंडी, कराल, दंष्ट्री, विश्वके रचनेवाले, भास्वररूप प्रतीत सुन्दरदीप्तिवाले सुंदरबुद्धिवाले ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कार है १३९ क्रूर अविकृत, भीषण, शिव, सौम्य, मुख्य, धार्मिक

यविशिष्टाय भरतायचसाक्षिणे १४१ क्षेम्यायसहमानाय सत्यायचामृतायच। कर्त्रेपर
शवेचैव शूलिनेदिव्यचक्षुषे १४२ सोमपायाज्यपायैव धूमपायोष्मपायच। शुचयेपरि
धानाय सद्योजातायमृत्यवे १४३ पिशिताशायसर्व्वाय मेघायविद्युतायच। व्यावृत्ताय
वरिष्ठाय भरितायतरक्षवे १४४ त्रिपुरघ्नायतीर्थाय वक्रायरोमशायच। तिग्मायुधाय
व्याख्याय सुसिद्धायपुलस्तये १४५ रोचमानायचण्डाय स्फीतायऋषभायच। व्रतिने
युञ्जमानाय शुचयेचोर्ध्वरेतसे १४६ असुरघ्नायस्वाघ्नाय मृत्युघ्नेयज्ञियायच। कृशा
नवेप्रचेताय वह्नयेनिर्मलायच १४७ रक्षोघ्नायपशुघ्नायाविघ्नायश्वसितायच। वि
भ्रान्तायमहान्तायअत्यन्तंदुर्गमायच १४८ कृष्णायचजयन्ताय लोकानामीश्वरायच।
अनाश्रितायवेध्याय समत्वाधिष्ठितायच १४९ हिरण्यबाहवेचैव व्याप्तायचमहायच।
सुकर्मणेप्रसह्याय चेशानायसुचक्षुषे १५० क्षिप्रेषवेसदश्वाय शिवायमोक्षदायच।
कपिलायपिशङ्गाय महादेवायधीमते १५१ महाकायायदीप्ताय रोदनायसहायच। दृढ
धन्विनेकवचिने रथिनेचवरूथिने १५२ भृगुनाथायशुक्राय गह्वरिष्ठायवेधसे। अमो
घायप्रशान्ताय सुमेधायवृषायच १५३ नमोऽस्तुतुभ्यम्भगवन्! विश्वायकृत्तिवाससे
पशूनांपतयेतुभ्यंभूतानांपतयेनमः १५४ प्रणवेऋग्यजुःसाम्नेस्वाहायचस्वधायच।
वषट्कारात्मनेचैव तुभ्यंमन्त्रात्मनेनमः १५५ त्वष्ट्रेधात्रेतथाकर्त्रे चक्षुःश्रोत्रमयायच।
भूतभव्यभवेशाय तुभ्यंकर्मात्मनेनमः १५६ वसवेचैवसाध्याय रुद्रादित्यसुरायच।

शुभ–इनरूपोंवाले तुमको न० १४० अवध्य अमृत, नित्य, शाश्वत, व्याप्त विशिष्ट, भरत, साक्षी–इन स्वरूपोंवाले तुमको नम० १४१ क्षेम्य, सहमान, सत्य, अमृत, कर्ता, परशु, शूलि, दिव्यचक्षुष–इनस्व रूपोंवाले तुमकोनम० १४२ सोमप, आज्यप, धूमप, ऊष्मप, शुचि, परिधान, सद्योजात मृत्यु-इनस्वरूपों वालेतुमकोनमस्कारहै १४३ पिशिताश अर्थात् मांसकेआहारकरनेवाले, सर्व, मेघ, विद्युत, व्यावृत्त, वरिष्ठ पुष्टिकरनेवाले और रक्षा करनेवाले ऐसे तुमको नम० १४४ त्रिपुरासुरनाशक, तीर्थस्वरूप, वक्र रोमोंवाले तीक्ष्णशस्त्रोंवाले व्याख्यानरूप, सुसिद्ध, पुलस्ति, इनरूपोंवाले, तुमको० १४५ रोचमान, चंड स्फीत ऋषभ व्रती, युंजमान, शुचि, ऊर्ध्वरेता ऐसे तुमको० १४६ असुरनाशक स्वाघ्न मृत्युघ्न, यज्ञिय, कृशानु, प्रचेता, वह्नि, निर्मल इन तुम्हारे रूपोंके अर्थन० १४७ राक्षसों के नाशक पशुघ्न विघ्नों से रहित प्राणस्वरूप विभ्रांत, महान्त, अत्यंतदुर्गम ऐसे तुमको न० १४८ कृष्ण, जयन्त, लोकों के ईश्वर, अनाश्रित, वेध्य, समत्वके अधिष्ठित ऐसे तुमको न० १४९ हिरण्यबाहु, व्याप्त, महान्स्वरूप सुकर्मा, प्रसह्य, ईशान, सुचक्षु इन रूपोंवाले तुमको० १५० उत्तमबाणोंवाले, श्रेष्ठअश्वोंवाले, शिव स्वरूप, मोक्षदायी, कपिल वर्णवाले, पिशंग वर्णवाले, महादेव बुद्धिमान् ऐसे तुम० १५१ महाकाया वाले, दीप्त, रोदन, सहाय इनरूपोंवाले दृढधन्वा, कवची, रथी, वरूथी इनस्वरूपोंवाले तुमको० १५२ भृगुनाथ शुक्र गह्वरिष्ठ, वेधस, अमोघ, प्रशांत, सुमेध, वृष इनरूपोंवाले तुमको० १५३ हे भगवन् विश्व रूपी, मृगचर्म्म के वस्त्रोंवाले, पशुओं के पति, भूतों के पति, तुमको नमस्कार है १५४ ओंकार स्वरूप, ऋक्, यजु, साम, स्वाहा, स्वधा, वषट्कार इनकीआत्मा मंत्रात्मा ऐसे स्वरूपवाले तुमको० १५५

विषायमारुतायैव तुभ्यंदेवात्मनेनमः १५७ अग्नीषोमविधिज्ञाय पशुमन्त्रौषधायच। स्व
यम्भुवेह्यजायैव अपूर्वप्रथमायच। प्रजानांपतयेचैव तुभ्यंब्रह्मात्मनेनमः १५८ आत्मे
शायात्मवश्याय सर्वेशातिशयायच। सर्वभूतांगभूताय तुभ्यंभूतात्मनेनमः १५९ निर्गु
णायगुणज्ञाय व्याकृतायामृतायच। निरुपाख्यायमित्राय तुभ्यंसांख्यात्मनेनमः १६०
पृथिव्यैचान्तरिक्षाय दिव्यायचमहायच। जनस्तपायसत्याय तुभ्यंलोकात्मनेनमः १६१
अव्यक्तायचमहते भूतादेरिन्द्रियायच। आत्मज्ञायविशेषाय तुभ्यंसर्वात्मनेनमः १६२
नित्यायचात्मलिंगाय सूक्ष्मायैवेतरायच। बुद्ध्यायविभवेचैव तुभ्यंमोक्षात्मनेनमः १६३
नमस्तेत्रिषुलोकेषु नमस्तेपरतस्त्रिषु। सत्यान्तेषुमहाद्येषु चतुर्षुचनमोऽस्तुते १६४ नम
स्तोत्रेमयाह्यस्मिन् यदिनव्याहृतंभवेत्। मद्भक्तइतिब्रह्मण्य तत्सर्वंक्षन्तुमर्हसि १६५
(सूत उवाच) एवमाभाष्यदेवेश मीश्वरंनीललोहितम्। प्रह्वोऽभिप्रणतस्तस्मै प्राञ्ज
लिर्वाग्यतोऽभवत् १६६ काव्यस्यगात्रंसंस्पृश्य हस्तेनप्रीतिमान्भवः। निकामंदर्शनंद
त्वा तत्रैवान्तरधीयत १६७ ततःसोऽन्तर्हितेतस्मिन् देवेशेऽनुचरीन्तदा। तिष्ठन्तींपा
र्श्वतोदृष्ट्वा जयन्तीमिदमब्रवीत् १६८ कस्यत्वंसुभगे! कावा दुःखितेमयिदुःखिता। म
हतातपसायुक्ता किमर्थंमांनिषेवसे १६९ अनयासंस्तुतोभक्त्या प्रश्रयेणदमेनच। स्ने
हेनचैवसुश्रोणि! प्रीतोऽस्मिवरवर्णिनि! १७० किमिच्छसिवरारोहे! कस्तेकामःसमृ

त्वष्टा,धाता,कर्त्ता,चक्षु,श्रोत्रमय,भूतभव्यभवेश,कर्मकी आत्मा ऐसे रूपवाले तुमको० १५६ वसु
साध्य,रुद्र,आदित्य,सुर,विष,मारुत, देवात्मा इनरूपोंवाले तुमको० १५७ अग्नीषोम यज्ञविधि के
जाननेवाले,पशु,मंत्र,औषध,स्वयंभू,अज,अपूर्व,प्रथम,प्रजाकेपति, ब्रह्मात्मा ऐसे तुम्हारे अर्थ न०
१५८ आत्मेश,आत्मवश्य,सर्वेश,अतिशय,सर्वभूतांगभूत, भूतात्मा इन रूपोंवाले तुम्हारे अर्थ न०
१५९ निर्गुण,गुणज्ञ, व्याकृत,अमृत,निरुपाख्य,मित्र,सांख्यात्मा इनरूपोंवाले तुमको न० १६०
पृथिवी,अंतरिक्ष,दिव्य,महान्स्वरूप, जन,तप,सत्य इनलोकों के आत्मा ऐसे स्वरूपोंवाले तुम्हारे
अर्थ नमस्कार है १६१ अव्यक्त,महत्, भूतादि, इन्द्रिय, आत्मज्ञ, विशेष,सर्वात्मा, ऐसे तुम्हारे अर्थ
नमस्कार है १६२ नित्य, आत्मलिंग, सूक्ष्म, इतर, बुध्य, विभु, मोक्षात्मा ऐसे तुम्हारे अर्थ नम-
स्कार है १६३ तीनोंलोकों में रहनेवाले, तथा तीनोंलोकोंसे भी परे, सत्य आदि चार महालोकों
में रहनेवाले ऐसे तुम्हारे अर्थ नम० १६४ और हे शिवजी इसस्तोत्रमें जो मुझसे कछु आपका
स्वरूप वर्णननहीं कियागयाहो उसको आप अपना भक्तजानके सवक्षमाकरो आपब्रह्मण्यहो १६५
सूतजीबोले इस प्रकार नीललोहित देवेश महादेव को प्रणामकर अंजली बाँधकर मौन होकर
स्थित होताभया १६६ तब शिवजी प्रसन्न होकर अपने हाथसे शुक्रजी के अंगको स्पर्शकर और उत्तम
दर्शन देकरके वहीं अन्तर्द्धान होगये १६७ इसके अनन्तर जब कि शिवजी अन्तर्द्धान होगये तबसमीप
में खड़ीहुई उस जयन्ती अनुचरी से शुक्रजी यह वचन कहतेभये १६८ हे सुभगे तू किसकी कौनहै
जो तू मेरे दुखितहोने में दुखितहोरहीहै तू इस महातपसेयुक्त होकर मुझको किस हेतुसे सेवती है
१६९ हे सुश्रोणि उत्तम वर्णवाली तेरी इस भक्ति विनय दमन और स्नेहसे मैं प्रसन्न होगयाहूं १७०

च्छतम्। तत्तेसंपादयाम्यद्य यद्यपिस्यात्सुदुष्करः १७१ एवमुक्ताब्रवीदेनं तपसाज्ञा तुमर्हसि। चिकीर्षितंहिमेब्रह्मन्! त्वंहिवेत्थ यथातथम् १७२ एवमुक्तोऽब्रवीदेनां दृष्ट्वा दिव्येनचक्षुषा। मयासहत्वंसुश्रोणि! दशवर्षाणिभामिनि! १७३ देवि! चेन्दीवरश्यामे! वरार्हे! वामलोचने!। एवंवृणोषिकामंत्वं मत्तोवैवल्गुभाषिणि! १७४ एवंभवतुगच्छामो गृहान्नोमत्तकाशिनि!। ततःस्वगृहमागत्य जयन्त्याःपाणिमुद्वहन् १७५ तयासहावसद्देव्या दशवर्षाणिभार्गवः। अदृश्यःसर्वभूतानां माययासंवृतःप्रभुः १७६ कृतार्थमागतंदृष्ट्वा काव्यंसर्वेदितेःसुताः। अभिजग्मुर्गृहंतस्य मुदितास्तेदिदृक्षवः १७७ यदागतानपश्यन्ति माययासंवृतंगुरुम्। लक्षणंतस्यतद्बुद्ध्वा प्रतिजग्मुर्यथागतम् १७८ बृहस्पतिस्तुसंरुद्धं काव्यंज्ञात्वावरेणतु। तुष्ट्यर्थंदशवर्षाणि जयन्त्याहितकाम्यया १७९ बुद्ध्वातदन्तरंसोपि दैत्यानामिन्द्रनोदितः। काव्यस्यरूपमास्थाय असुरान्समुपाह्वयत् १८० ततस्तानागतान्दृष्ट्वा बृहस्पतिरुवाच ह। स्वागतंममयाज्यानांप्राप्तोऽहंवोहिताय च १८१ अहंवोऽध्यापयिष्यामिविद्याःप्राप्तास्तु या मया। ततस्तेहृष्टमनसोविद्यार्थमुपपेदिरे १८२ पूर्णेकाव्यस्तदातस्मिन् समयेदशवार्षिके। समयान्तेदेवयानीतदोत्पन्नाइति

हे वरारोहे तू क्या इच्छा करती है क्या तेरे कामबढ़रहा है चाहे जैसा दुष्करभी जो तेराकाम होगा उसको भी मैं अवश्य करूंगा १७१ ऐसे वचन सुनकर वह जयन्ती बोली हेब्रह्मन् आप अपने तप केही प्रभावसे मेरे मनोरथ को जानलीजिये १७२ जयन्ती के इस वचनको सुनकर शुक्रजी दिव्य दृष्टिसे देखकर इससे बोले कि हे भामिनि तू दशवर्षतक मेरे साथ रमणकर हेइन्दीवरश्यामे वाम लोचने हे सुन्दर बोलनेवाली तैंने यहीकाम मुझसे वराहै १७३। १७४ अर्थात् यहकामना मुझसे मांगी है सो इसीप्रकारसे होगा हमारे घरकोचलो फिर अपने घरमें लाकर शुक्रजी ने अपना विवाह जयन्तीकेसाथ किया १७५ फिर शुक्राचार्य्यजी उस देवीके साथ दशवर्षतक रमण करने के निमित्त अपनी माया से ऐसे आच्छादित होगये कि किसीको नहीं दीखे १७६ तदनन्तर अपने प्रयोजनको सिद्धकरके शुक्राचार्य्यको आयाहुआ जानकर सब दैत्य प्रसन्न होकर शुक्राचार्य्य के स्थानपर उनके दर्शन करनेको जातेभये १७७ फिर वहाँ जाकर मायासे आच्छादितहुए अपनेगुरू शुक्राचार्य्य को नहींदेखा उससमय उसके लक्षण न जानकर उलटेही चलेआये १७८ फिर इसप्रकार से रुकेहुए शुक्राचार्य्यको बृहस्पतिजी जानगये कि शुक्राचार्य्य जयन्तीके हितके निमित्त दशवर्षतक इसीप्रकार से आच्छादित रहेंगे फिर सब देवताभी बृहस्पतिजीके द्वारा जानकर विचार करनेलगे और दैत्योंके उस छिद्रको जानकर बृहस्पतिजी से कहनेलगे कि अब आप हमारा कुछकार्य्य कीजिये तबदेवताओंसे प्रेरितहोकर बृहस्पतिजी शुक्राचार्य्यकारूप धरके दैत्योंको बुलातेभये १७९।१८० फिरसमीप में आयेहुए दैत्योंसे बृहस्पतिजी ने उसी शुक्रकेरूपके द्वारा कहा कि हे मेरे यजमान लोगो तुम्हारा आना श्रेष्ठहै मैंभी तुम्हारेही हितके निमित्त यहाँ आयाहूं १८१ जो मैंने शिवजीसे विद्यापढ़ीहै वहमैं तुमको पढ़ाऊंगा तब वह दैत्य प्रसन्नहोकर विद्यापढ़नेका प्रारम्भ करतेभये १८२ फिर दशवर्ष व्यतीतहोनेपर शुक्राचार्य्यभी जयन्तीकेभोगोंसे निवृत्तहोगये और सुनाजाताहै कि उसी जयन्ती में देव

श्रुतिः। बुद्धिंचक्रेततःसोऽथ याज्यानांप्रत्यवेक्षणे १८३ देवि! गच्छाम्यहंद्रष्टुं ममयाज्यान् शुचिस्मिते!। विभ्रान्तवीक्षिते! साध्वि! त्रिवर्णायतलोचने १८४ एवमुक्ताब्रवीदेनं भजभक्तान् महाव्रत!। एषधर्म्मःसतांब्रह्मन्! नधर्मंलोपयामिते १८५ ततोगत्वासुरान् दृष्ट्वा देवाचार्येणधीमता। वञ्चितान्काव्यरूपेण ततःकाव्योऽब्रवीत्तुतान् १८६ काव्यंमां वोविजानीध्वन्तोषितोगिरिशोविभुः। वञ्चितावतयूयंवैसर्वेशृणुतदानवाः! १८७ श्रुत्वात थाब्रुवाणन्तंसंभ्रांतास्तेतदाऽभवन्। प्रेक्षन्तस्तावुभौतत्रस्थितासीनौसुविस्मिताः १८८ स म्प्रमूढास्ततःसर्वे नप्राबुध्यन्तकिञ्चन। अब्रवीत्सम्प्रमूढेषु काव्यस्तानसुरांस्तदा १८९ आचार्योवोह्यहंकाव्यो देवाचार्योऽयमङ्गिराः। अनुगच्छतमांदैत्यास्त्यजतैनंबृहस्पतिम् १९० इत्युक्ताह्यसुरास्तेन तावुभौसमवेक्ष्यच। यदासुराविशेषन्तु नजानन्त्युभयोस्त योः १९१ बृहस्पतिरुवाचैनान संभ्रान्तस्तपोधनः। काव्योवोऽहंगुरुर्दैत्या! मद्रूपोऽयंबृ हस्पतिः १९२ संमोहयतिरूपेण मामकेनैषवोऽसुराः!। श्रुत्वातस्यततस्तेवै समेत्यतु ततोऽब्रुवन् १९३ अयंनोदशवर्षाणि सततंशास्तिवैप्रभुः। एषवैगुरुरस्माकमन्तरेस्फु रयन्द्विजः १९४ ततस्तेदानवाःसर्वे प्रणिपत्याभिनन्द्यच। वचनञ्जगृहुस्तस्य चिराभ्या सेनमोहिताः १९५ ऊचुस्तमसुराःसर्वे क्रोधसंरक्तलोचनाः। अयंगुरुर्हितोऽस्माकं ग

यानी कन्या उत्पन्नहुई फिर शुक्राचार्य्यजी अपने यजमान दैत्यलोगोंके ढूंढ़नेमें बुद्धिकरतेभये १८३ और जयन्तीसे कहा हे देविसुन्दरहास्यवाली कटाक्षसे देखनेवाली साध्वी और विस्तृत नेत्रोंवाली में अपने यजमान दैत्योंके देखनेको जाताहूं १८४ ऐसा उनका वचन सुनकर जयन्तीने कहा कि हे महाव्रतवाले आप अपने भक्तोंके ढूँढ़नेको जाइये हे ब्रह्मन् श्रेष्ठ पुरुषोंका यही धर्म है मैं आपके व्रत-का लोप नहीं करसक्ती १८५ तब शुक्राचार्य्यने बृहस्पतिसे ठगेहुए अपने दैत्योंको जानके उनदैत्यों से यह वचनकहा १८६ कि हे दानवलोगो मुझको तुम शुक्राचार्य्य जानों मैंनेही शिवजीको प्रसन्न कियाहै तुम सबको बृहस्पतिने ठगलिया है १८७ इसप्रकारसे कहतेहुए शुक्रके वचनोंको सुनकर वह सबदैत्य भ्रांतचित्तसे आश्चर्य्यित होके उनदोनों बैठेहुओंको देखतेभये १८८ उससमय अज्ञान को प्राप्तहोकर वह दैत्य कुछभी न कहसके और निश्चयभी नहीं करसके तब उन मूर्खदैत्योंसे शुक्रा-चार्य्यनेकहा १८९ हे दैत्यो मैं शुक्र तुम्हारा आचार्य्यहूं और यह देवताओंका आचार्य्य बृहस्पति है तुम इस बृहस्पतिको त्यागकरमेरे साथचलो १९० यह सुनकर वह सबदैत्य उनदोनोंको देखतेभये परन्तुदोनोंमें कुछभी भेदनहीं जाना १९१ उससमय वह तपोधन बृहस्पतिजी शीघ्रही उनदैत्योंसे बोले कि हे दैत्यो तुम्हारा गुरुशुक्राचार्य्य मैंहूं यह तो मेरारूप बनाकर बृहस्पति आयाहै १९२ हे दैत्यो यह बृहस्पति मेरा रूपधरके तुमको छलताहै ऐसे उन बृहस्पतिजीके वचनको सुनकर वहसब दैत्य परस्पर संयुक्त होकर बतरानेलगे १९३ कि यह प्रभु हमलोगोंको दशवर्षसे पढ़ारहाहै हमारे अन्तष्करणसे यही द्विज हमारा गुरूमालूम होताहै १९४ फिर वह सबदैत्य उस बृहस्पतिको प्रणा-मकर उनकेही कहेहुए वचनको ग्रहणकरके प्रमाण करतेभये क्योंकि बहुत दिनोंके अभ्याससे मोहित होरहेथे १९५ इसके पीछे वह सब दैत्य उनशुक्रजीसे बड़े क्रोधपूर्वक लालनेत्र करके बोले कि

च्छत्वंनासिनोगुरुः १९६ भार्गवोवांगिरावापि भगवानेषनोगुरुः। स्थितावयंनिदेशेऽस्य
साधुत्वंगच्छमाचिरम् १९७ एवमुक्तासुराःसर्वे प्रापद्यन्तबृहस्पतिम्। यदानप्रतिपद्य
न्तकाव्येनोक्तंमहद्धितम् १९८ चुकोपभार्गवस्तेषामवलेपेनतेनतु। बोधिताहिमया
यस्मान्नमांभजथदानवाः! १९९ तस्मात्प्रनष्टसंज्ञावै पराभवमवाप्स्यथ। इतिव्याहृत्य
तान्काव्यो जगामाथयथागतम् २०० शप्तांस्तानसुरान्ज्ञात्वा काव्येनसबृहस्पतिः।
कृतार्थःसतदाहृष्टः स्वरूपंप्रत्यपद्यत २०१ बुध्याऽसुरान्हतान्ज्ञात्वा कृतार्थोऽन्तरधीय
त। ततःप्रणष्टेतस्मिंस्तु विभ्रान्तादानवाभवन् २०२ अहोविवञ्चिताःस्मेति परस्पर
मथाब्रुवन्। पृष्ठतोऽभिमुखाश्चैव ताडिताङ्गिरसेनतु २०३ वञ्चिताःसोपधानेन स्वेस्वे
वस्तुनिमायया। ततस्त्वपरितुष्टास्ते तमेवत्वरितायमुः। प्रह्लादमग्रतःकृत्वा काव्यस्या
नुपदम्पुनः २०४ ततःकाव्यंसमासाद्य उपतस्थुरवाङ्मुखाः। समागतान्पुनर्दृष्ट्वा का
व्योयाज्यानुवाचह २०५ मयासम्बोधिताःसर्वे यस्मान्मानाभिनन्दथ। ततस्तेनावमाने
न गतायूयंपराभवम् २०६ एवंब्रुवाणंशुक्रन्तु वाष्पसन्दिग्धयागिरा। प्रह्लादस्तन्तदो
वाच मानत्वन्त्यजभार्गव! २०७ स्वाश्रयान्भजमानांश्च भक्तान्स्त्वम्भजभार्गव!।
त्वय्यदृष्टेवयंतेन देवाचार्य्येणमोहितान्। भक्तानर्हसिवैज्ञातुं तपोदीर्घेणचक्षुषा २०८

यही हमारा हितकारी गुरू है तूहमारा गुरूनहीं है इसीसे चलाजा १९६ यह चाहै शुक्रहै वा बृह
स्पति है परन्तु यही हमारा गुरू है हमतो अच्छे प्रकारसे इसीके समीप स्थित हैं और सदैव रहैंगे
तू यहाँ से शीघ्रही चलाजा देरन कर १९७ ऐसे कहके वह सब दैत्य बृहस्पतिजीकोही प्राप्त होते
भये जब कि शुक्रसे कहेहुए अपने हितको वह दैत्य नहीं प्राप्तहुए तब शुक्राचार्य्यने क्रोध करके उन
को यह शाप दिया कि हे दानवो जो कि मेरे बोधकरानेपर भी तुम सब अभिमान करके मेरे पास
नहीं आये इस हेतुसे तुम्हारा ज्ञान नष्ट होजायगा और देवताओंसे तुम्हारी हारहोवेगी ऐसा शाप
असुरोंको देके शुक्राचार्य्य जैसे आयेथे वैसेही चलेगये १९८।२०० तब बृहस्पतिजी शुक्रसे शापित
हुए दैत्योंको जानकर बड़े कृतार्थ हुए और अपने प्रयोजनको सिद्धकरके फिर अपने निजस्वरूपको
प्राप्तहोगये अर्थात् अपनावही बृहस्पतिका रूप बनालिया २०१ और बुद्धिसे दैत्योंको हतजान
कृतार्थहो अन्तर्द्धान होगये और उस शुक्रके रूपको दूर करदिया इसके नष्टहोजाने के पीछे दानवों
को भ्रमहोगया २०२ तब परस्परमें कहनेलगे कि बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि हमको बृहस्पति ने
ठगलिया और शापित करदिया २०३ यह जानकर बड़े अप्रसन्न होके शीघ्रता पूर्वक प्रह्लादको
आगेकरके सबदैत्य शुक्रजीके समीपगये २०४फिर उन शुक्रजीको प्राप्तहो नीचे मुखकर उनकी स्तुति
करनेलगे तब आयेहुए शिष्योंको देखकर शुक्रजीकहनेलगे२०५ कि हे असुरदैत्यो मेरे शिष्यहोकर जो
तुमनेमुझे निन्दितकिया इसीअपराधसे तुमसब तिरस्कारको प्राप्तहुए २०६ शुक्रजीके इसवचनको
सुनकर आंसुओं से भरे नेत्र और रुकीहुई गद्गद वाणीसे प्रह्लादने कहा कि हे भार्गवजी आप सब
दैत्योंसमेत मुझको मत त्यागो २०७ और आपके आश्रयमें आपकेही भजनेवाले हमभक्तोंको आप
शरणदें और आपके नहीं देखनेसे उस बृहस्पति से मोहितहुए हमलोगोंको हेदीर्घचक्षुपे आपजानने

यदि नस्त्वंनकुरुषे प्रसादम्भृगुनन्दन!।अपध्यातास्त्वयाह्यद्य प्रविशामोरसातलम् २०९
ज्ञात्वाकाव्योयथातत्त्वं कारुण्यादनुकम्पया। एवम्प्रत्यनुनीतोवै ततःकोपंनियम्यसः।
उवाचैतान्नभेतव्यं नगंतव्यंरसातलम् २१० अवश्यंभाविनोह्यर्थाः प्राप्तव्यामयिजाग्रति।
नशक्यमन्यथाकर्तुं दिष्टंहिबलवत्तरम् २११ संज्ञाप्रणष्टायावोऽद्यतामेतांप्रतिपत्स्यथ। दे
वान्जित्वासकृच्चापि पातालम्प्रतिपत्स्यथ २१२ प्राप्तेपर्यायकालेच हीतिब्रह्माभ्यभाष
त। मत्प्रसादात्त्वत्रैलोक्यं भुक्तंयुष्माभिरूर्जितम् २१३ युगाख्यादशसम्पूर्णा देवानाक्र
म्यमूर्द्धनि। एतावन्तञ्चकालंवै ब्रह्माराज्यमभाषत २१४ राज्यंसावर्णिकेतुभ्यं पुनःकि
लभविष्यति। लोकानामीश्वरोभाव्यस्तवपौत्रःपुनर्बलिः २१५ एवंकिलमिथःप्रोक्तः
पौत्रस्तेविष्णुनास्वयम्। वाचाहृतेषुलोकेषु तास्तास्तस्याभवन्किल २१६ यस्मात्प्रवृ
त्तयश्चास्य सकाशादभिसन्धिताः। तस्माद्वृत्तेनप्रीतेन तुभ्यंदत्तंस्वयम्भुवा २१७
देवराज्येबलिर्भाव्य इतिमामीश्वरोऽब्रवीत्। तस्माददृश्योभूतानां कालापेक्षःसतिष्ठति
२१८ प्रीतेनचापरोदत्तो वरस्तुभ्यंस्वयम्भुवा। तस्मान्निरुत्सुकस्त्वंवै पर्यायंसहितो
ऽसुरैः २१९ नहिशक्यंमयातुभ्यं पुरस्ताद्विप्रभाषितुम्। ब्रह्मणाप्रतिषिद्धोऽहं भविष्य
ञ्जानताविभो! २२० इमौचशिष्यौद्वौमह्यं समावेतौबृहस्पतेः। दैवतैःसहसंसृष्टान् स
र्वान्वोधारयिष्यतः २२१ इत्युक्ताह्यसुराःसर्वे काव्येनाक्लिष्टकर्मणा। हृष्टास्तेनययुःसार्द्धं

को योग्यहो २०८ और हेभृगुनन्दनजी जो आप हमलोगोंपर प्रसन्न न होंगे तो आपसे तिरस्कारहुए हम सब पातालमें प्रवेशकरजांयगे २०९ फिर उनके दीन वचनों से दयालुहो शुक्रजी यथावत् तत्त्व को जानकर अपने प्रज्वलित क्रोधको रोकके यह वचनबोले कि तुमको भय न करनाचाहिये और पातालमें भी जाना योग्यनहीं है २१० और मेरे चैतन्य होनेवाले अर्थ अवश्य प्राप्तहोने योग्य हैं और मेरे बलवाले भाग्यको कोई अन्यथा करनेको समर्थ नहीं है २११ और जो तुम्हारी संज्ञा और बुद्धिनष्टहोगई है उसकोभी तुम प्राप्तहोगे और एकवार देवताओंको जीतकर पातालमें चलेजाओगे २१२ जब वैसाही काल प्राप्तहुआ तब ब्रह्माने प्रह्लादसे कहा कि मेरे प्रसादसे तुमने पूरेदशयुगों पर्य्यन्त देवताओंको दबाकर ऐसे बढ़ेहुए त्रैलोक्यके भोगोंको भोगाहै तुमको इतनेही समय पर्य्यन्त मैंनेराज्य करनाकहाथा २१३।२१४ और सावर्णि मन्वन्तरमें फिर तेराराज्यहोगा इसके पीछे तेरे पोतेराजाबलिको लोकोंके ऐश्वर्य्य समेत राज्यहोगा वहसबलोकोंका राजाहोगा इसकेपीछेजबविष्णु भगवान् राजाबलिसे सबलोकोंको हरलेंगे तब सब प्रजा उनकी होजायगी इसहेतुसे तूउनके द्वारा प्रीति और संधिकर इसवृत्तान्तसे प्रसन्नहोकर ब्रह्मातुझको राज्यदेगा और देवताओंके राज्य पर बलि होनेवालाहै ऐसामुझसे सब जगत् के ईश्वर शिवजी ने कहा है इसीलिये विष्णुभूतों से अदृश्यकालकी अपेक्षा करताहुआ स्थितहै २१५।२१८ और हे प्रह्लाद प्रसन्नहोकर ब्रह्माने तुझको देवताओं करके अनुत्साह जानकर २१९ और भी वरदियाहै हे दैत्येश उसवरकोमें तुझसे कहने को समर्थ नहींहूं क्योंकि भविष्यत् कालके ज्ञाताब्रह्माने मुझे रोकदियाहै २२० और यहभी कहाहै कि दोनों शिष्यहमारे समानहैं तुमदेवताओं समेत बृहस्पतिकी सम्पूर्ण विद्याओंको धारण करोगे २२१

प्रह्लादेनमहात्मना २२२ अवश्यम्भाव्यमर्थन्तु श्रुत्वाशुक्रेणभाषितम्। सकृदाशंसमा
नास्तु जयंशुक्रेणभाषितम्।दंशिताःसायुधाःसर्वे ततोदेवानसमाह्वयन् २२३ देवास्तदा
सुरान्दृष्ट्वा संग्रामेसमुपस्थितान् । सर्वेसंभृतसम्भारा देवास्तान्समयोधयन् २२४
देवासुरेतदातस्मिन् वर्तमानेशतंसमाः । अजयन्नसुरादेवांस्ततोदेवाह्यमन्त्रयन् २२५
यज्ञेनोपाह्वयामस्तीततोजेष्यामहेसुरान्।तदोपामन्त्रयन्देवाःशण्डामर्कौतुतावुभौ२२६
यज्ञेचाहूयतौप्रोक्तौत्यजेतामसुरान्द्विजौ। वयंयुवांभजिष्यामःसहजित्वातुदानवान्२२७
एवंकृताभिसन्धीतौशण्डामर्कौसुरास्तथा।ततोदेवाजयंप्रापुर्दानवाश्चपराजिताः२२८
शण्डामर्कपरित्यक्ता दानवाह्यबलास्तथा।एवंदैत्याःपुराकाव्यशापेनाभिहतास्तदा २२९
काव्यशापाभिभूतास्ते निराधाराश्चसर्वशः । निरस्यमानादेवैश्च विविशुस्तेरसातलम्
२३०एवंनिरुद्यमादेवैःकृताःकृच्छ्रेणदानवाः।ततःप्रभृतिशापेनभृगोर्नैमित्तिकेनतु २३१
जज्ञेपुनःपुनर्विष्णुर्द्धर्मेप्रशिथिलेप्रभुः। कुर्वन्धर्मव्यवस्थानमसुराणाम्प्रणाशनम् २३२
प्रह्लादस्यनिदेशेतु नस्थास्यन्त्यसुराश्चये।मनुष्यवध्यास्तेसर्वे ब्रह्मेतिव्याहरत्प्रभुः २३३
धर्मान्नारायणस्यांशः सम्भूतश्चाक्षुषेऽन्तरे। यज्ञंवैवर्तयामासुर्देवावैवस्वतेऽन्तरे २३४
प्रादुर्भावेततस्तस्य ब्रह्माह्यासीत्पुरोहितः। युगाख्यायांचतुर्थ्यान्तुआपन्नेषुसुरेषुवै २३५

बड़े क्लिष्टकर्मी शुक्रजी के ऐसे वचनों को सुनकर बड़े प्रसन्न होके प्रह्लाद समेत सब दैत्यचले जाते भये २२२ और उन्हीं आचार्य्यजी से अवश्य होनेवाले अपने प्रयोजनको अर्थात् एकबार अपनीजयको शुक्रजीसे सुनके उनके वचनोंकी सराहना करके सब दैत्य अपने २ कवच धारण करके देवताओंकोयुद्धके लिये बुलावते भये २२३ तबतो सब देवता युद्धमें खड़ेहुए असुरोंको देख कर सब युद्धकी सामग्री लेकर असुरोंसे युद्धकरनेलगे २२४ इन असुर और देवताओंका युद्धसौवर्ष तकहुआ इसमें असुरोंसे देवताहारे उस समयदेवताओंने परस्पर यह सलाहकरी कि यज्ञमें प्रथम शंडामर्कोंको बुलावें फिरजब युद्धकरेंगे तो असुरोंको जीतेंगे यह विचार करके देवताओंने दोनों शंडामर्कों को यज्ञमें बुलाकर यह वचन कहाकि हे द्विजो तुम असुरोंको त्यागदो हम तुम्हारे साथ असुरोंको जीतकर फिरतुम्हींको भजेंगे २२५।२२७ इस प्रकार शंडामर्कों से देवताओंने सन्धि करके उनको साथमें लेकर युद्धकिया तब देवताओंकी विजयहुई और असुरोंकी पराजयहुई २२८ जैसे कि शंडामर्कों से त्यागेहुए देवता निर्बलहोगयेथे उसी प्रकार शुक्रजीके शापसे दैत्यलोगभी हारगये २२९ इस प्रकार शुक्रके शापसे तिरस्कृत और सबओरसे निराधार होके देवताओं से निकालेहुए दैत्य पातालमें घुसतेभये २३० तब देवताओंने कष्टित और उद्यमों से रहितभी उसी शुक्रके शापके हेतुसे असुरोंको करदिया २३१ फिरजब धर्मकी न्यूनता हुई तबविष्णुने अवतारलेकर असुरोंको नाशकिया और धर्मको स्थापनकिया २३२ और ब्रह्माजीकी आज्ञाहुई किजो असुरप्रह्लाद की आज्ञासे वाहर होंगे वह मनुष्योंसे वध्यहोंगे २३३ इसी आज्ञाके अनुसार चाक्षुषमन्वन्तरमें नारायण का अंश उत्पन्न हुआ और वैवस्वत मन्वन्तरमें देवताओंने यज्ञकिया उसमें ब्रह्मापुरोहित हुआ तब भगवान् उत्पन्नभये और जब देवता विपत्तियुक्त हुए तब युगाख्याचतुर्थीको २३४ समुद्रके तटपर

सम्भूतस्तुसमुद्रान्तेहिरण्यकशिपोर्वधे।द्वितीयेनरसिंहाख्ये रुद्रोह्यासीत्पुरोहितः २३६
वलिसंस्थेषुलोकेषु त्रेतायांसप्तमम्प्रति। तृतीयेवामनस्यार्थे धर्मेणतुपुरोधसा २३७
एतास्तिस्रःस्मृतास्तस्य दिव्याःसम्भूतयोद्विजाः। मानुषाःसप्तयान्यास्तु शापजास्ता
निबोधत २३८त्रेतायुगेतुप्रथमे दत्तात्रेयोबभूवह। नष्टेधर्मेचतुर्थांशे मार्कण्डेयपुरःसरः
२३९ पञ्चमःपञ्चदश्याञ्च त्रेतायांसम्बभूवह। मान्धाताचक्रवर्तीतु तदोत्तङ्कपुरःसरे
२४० एकोनविंश्यांत्रेतायां सर्वक्षत्रान्तकृद्विभुः। जामदग्न्यस्तथाषष्ठो विश्वामित्रपुरः
सरः २४१ चतुर्विंशेयुगेरामो वसिष्ठेनपुरोधसा। सप्तमोरावणस्यार्थे जज्ञेदशरथात्मजः
२४२अष्टमेद्वापरेविष्णुरष्टाविंशेपराशरात्।वेदव्यासस्तथाजज्ञेजातूकर्ण्यपुरःसरः२४३
कर्त्तुन्धर्म्मव्यवस्थानमसुराणाम्प्रणाशनम्। बुद्धोनवमकोजज्ञे तपसापुष्करेक्षणः। देव
सुन्दररूपेण द्वैपायनपुरःसरः २४४ तस्मिन्नेवयुगेक्षीणे सन्ध्याशिष्टेभविष्यति। क
ल्कीतुविष्णुयशसः पाराशर्य्यपुरःसरः। दशमोभाव्यसम्भूतो याज्ञवल्क्यपुरःसरः २४५
सर्वांश्चभूतांस्तिमितान् पाषण्डांश्चैवसर्वशः।प्रगृहीतायुधैर्विप्रैर्वृतःशतसहस्रशः २४६
निःशेषान्शूद्रराज्ञस्तु तदासतुकरिष्यति। ब्रह्मद्विषःसपत्नांस्तु संहत्यैवचतद्वपुः २४७
अष्टाविंशेस्थितःकल्किश्चरितार्थःससैनिकः। शूद्रान्संशोधयित्वातु समुद्रान्तञ्चवैस्व
यम् २४८ प्रवृत्तचक्रोबलवान् संहारन्तुकरिष्यति। उत्सादयित्वावृषलान् प्रायशस्ता

विष्णुका जन्महुआ वही विष्णु फिर हिरण्यकशिपुके वधके निमित्त जब नरसिंह हुए तब रुद्रपुरोहित हुए २३५। २३६ और सातवें मन्वन्तरके त्रेता युगमें जब राजा बलिहुआ तब धर्म पुरोहित समेत तीसरे वामनजी हुए २३७ हे द्विजलोगो यह तीनतोभगवत्की दिव्य विभूति वर्णनकी हैं और सात शापके हेतुसे मानुषी विभूति हुई हैं ऐसा तुम जानो २३८ जब धर्मका चौथाभाग नष्टहुआ तबत्रेता युगमें प्रथम मार्कण्डेयजी समेत दत्तात्रेयहुए २३९ पांचवें त्रेतामें पूर्णमासीकेदिन चक्रवर्ती मांधाता राजा हुआ और उसका पुरोहित उत्तंगहुआ २४० उन्नीसवें त्रेतामें सम्पूर्ण क्षत्रियोंका नाश करने वाला बड़ा समर्थ छठापरशुरामजीका अवतार हुआ उससमय विश्वामित्र पुरोहित हुआ २४१ चौबीसवें युगके त्रेतामें वसिष्ठ पुरोहित समेत सातवाँ अवतार दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रजीकाहुआ यह अवतार रावणके वधके निमित्त हुआ २४२ विष्णुभगवान्का वेदव्यासरूपसे आठवां अवतार अट्ठाईसवें द्वापरमें हुआहै तब जातूकर्ण्य ऋषि इनका पुरोहित हुआहै २४३ और धर्मकी स्थिति और असुरोंके नाश करने के अर्थ तपकरके कमल सदृशनेत्र वाला नवांअवतार देवताके समान सुन्दर रूपवाला बुद्धकाहुआ और उनके पुरोहित द्वैपायन अर्थात् वेदव्यासजी होतेभये २४४ और जब यह कलियुग क्षीणहोजायगा तब संध्याशमें विष्णुयश वाले ब्राह्मणके यहाँ कल्की अव-तार होंगे और पाराशर्य्य वेदव्यास पुरोहित होंगे यह दशवाँ अवतार होगा और इसके आगेही याज्ञवल्क्यभीहोगा २४५ यह अवतार सम्पूर्ण दुष्टप्राणी पाषण्डी शस्त्रधारी हजारों ब्राह्मणोंसमेत २४६ शूद्रराजाओंको और पाषण्ड मात्रको नष्ट करदेगा और यही शरीर ब्राह्मणों के शत्रु और अन्य शत्रुओंका संहार करके २४७ अट्ठाईसवें युगमें सेना समेत विचरताहुआ शूद्रोंको मार अपने आप

नधार्मिकान् २४६ ततस्तदासवैकल्किश्चरितार्थःससैनिकः। प्रजास्तंसाधयित्वातु समृ
द्धास्तेनवैस्वयम् २५० अकस्मात्कोपितान्योन्यं भविष्यन्तीहमोहिताः। क्षपयित्वातु
तेऽन्योन्यं भाविनार्थेनचोदिताः २५१ ततःकालेव्यतीतेतु सदेवोऽन्तरधीयत। नृपेष्व
थप्रनष्टेषु प्रजानांसंग्रहात्तदा २५२ रक्षणेविनिवृत्तेतु हत्वाचान्योन्यमाहवे। परस्परंनि
हत्वातु निराक्रन्दाःसुदुःखिताः २५३ पुराणिहित्वाग्रामांश्च तुल्यत्वेनिष्परिग्रहाः। प्रन
ष्टाश्रमधर्म्माश्च नष्टवर्णाश्रमास्तथा २५४ अट्टशूलाजानपदाः शिवशूलाश्चतुष्पथाः।
प्रमदाःकेशशूलाश्च भविष्यन्तियुगक्षये २५५ ह्रस्वदेहायुषश्चैव भविष्यन्तिवनौकसः।
सरित्पर्वतवासिन्यो मूलपत्रफलाशनाः २५६ चीरचर्माजिनधराः संकरंघोरमाश्रिताः।
उत्पातदुःखाःस्वल्पार्थाः वहुबाधाश्चताःप्रजाः २५७ एवंकष्टमनुप्राप्ताः कालेसन्ध्यंश
केतदा। ततःक्षयंगमिष्यन्ति सार्द्धकलियुगेनतु २५८ क्षीणेकलियुगेतस्मिंस्ततःकृत
मवर्त्तत। इत्येतत्कीर्त्तितंसम्यक् देवासुरविचेष्टितम् २५९ यदुवंशप्रसंगेन समासाद्वै
ष्णवंयशः। तुर्वसोस्तुप्रवक्ष्यामि पूरोर्द्रुह्योस्तथाह्यनोः २६० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्तचत्वारिंशोध्यायः ४७ ॥

(सूतउवाच) तुर्वसोस्तुसुतोगर्भो गोभानुस्तस्यचात्मजः। गोभानोस्तुसुतोवीर

समुद्रकेअन्तमें २४८ सेनाको लेकर संहार करेगा वहाँ विशेप करके पापी शूद्रोंको मारकर सेना
समेत अपनेको कृतकृत्य मानकर यह कल्की प्रजाको शोधन करके आपवृद्धावेगा २४९।२५० तद
नन्तर अपने आपप्रजाकुपित होकर मोहितहोजायगी औरभावीकेवशीभूतोंको परस्परमें नष्टकरदेगी
२५१ फिर कालव्यतीतहोजानेपर यह कल्की जब अन्तर्द्धान होजायगा फिर प्रजाओंके नाशसे
राजानष्टवृद्धीहोके २५२ अपना कोई रक्षक न देख राजाओं समेत सबजन परस्पर युद्ध करके
और एक एकको मारकर महादुखितहोजावेंगे २५३ फिरग्राम नगरादिकोंका मरणहोकर कुछ न
रहेगा और वर्ण आश्रम धर्म नष्ट होजावेंगे २५४ उस कलियुगके अन्तमें राजाअन्न वेचने वाले
ब्राह्मण वेदबेचने वाले और स्त्रियां भग वेचनेवाली यह सबवातें होजांयगी २५५ और छोटा शरीर
थोड़ी आयु और वनमें स्थान ऐसेपुरुप होजांयगे और नदी पर्व्वत पर वसने वाली होजांयगी सब
मनुष्य कन्द मूलफलादिके भोजन करनेवाले होकर २५६ फटेवस्त्र मृगचर्मादिक धारण करेंगे
सबजाति परस्परमें मिलजांयगी और उत्पातोंसे क्लेशित अल्प धनवाली और बहुतसी पीड़ावाली
ऐसी सब प्रजाहोजावेंगी २५७ फिर ऐसे कष्टोंसे महाकष्टित होकर प्रजा कलियुगकरके सहित
संध्यंशकालमें नाशको प्राप्तहोजावेंगी २५८ फिर कलियुगकेक्षीण होतेही सतयुग प्रवर्त्त होगा सूत
जीनेकहा कियह मैंने तुम्हारे आगे देवता और असुरोंका किया हुआ कर्म अच्छे प्रकारसे वर्णनकिया
२५९ अब यदुवंशके प्रसंग करिके साधारण रीतिसे तुर्वसु—पूरु—द्रुह्यु—और अनुइनसब समेतविष्णु
का यशवर्णन करूंगा २६० ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

सूतजीबोले कि तुर्वसुके गर्भनाम पुत्रहुआ गर्भकापुत्र गोभानु और गोभानुका बड़ा शूरवीर सं

स्त्रिसारिरपराजितः १ करन्धमस्तुत्रैसारिर्भरतस्तस्यचात्मजः। दुष्यन्तःपौरवस्यापि तस्य पुत्रोह्यकल्मषः २ एवंययातिशापेन जरासंक्रमणेपुरा। तुर्वसोःपौरववंशं प्रविवेशपुरा किल ३ दुष्यन्तस्यतुदायादो वरूथोनामपार्थिवः। वरूथात्तुतथाडीरः सन्धानस्तस्य चात्मजः ४ पाण्ड्यश्चकेरलश्चैव चोलःकर्णस्तथैवच। तेषांजनपदाःस्फीताः पाण्ड्या श्चोलाःसकेरलाः ५ द्रुह्यस्यतनयौशूरौ सेतुःकेतुस्तथैवच। सेतुपुत्रःशरद्वांस्तु गन्धा रस्तस्यचात्मजः ६ ख्यायतेयस्यनाम्नासौ गन्धारविषयोमहान्। आरट्टदेशजास्तस्य तुरगावाजिनांवराः ७ गन्धारपुत्रोधर्म्मस्तु धृतस्तस्यात्मजोऽभवत्। धृताच्चविदुषो जज्ञेप्रचेतास्तस्यचात्मजः ८ प्रचेतसःपुत्रशतंराजानःसर्वएवते। म्लेच्छराष्ट्राधिपाःसर्वे उदीचीन्दिशमाश्रिताः ९ अनोश्चैवसुतावीरास्त्रयःपरमधार्मिकाः। सभानरश्चाक्षुषश्च परमेषुस्तथैवच १० सभानरस्यपुत्रस्तु विद्वान्कोलाहलोनृपः। कोलाहलस्यधर्म्मात्मा संजयोनामविश्रुतः ११ सञ्जयस्याभवत्पुत्रो वीरोनामपुरञ्जयः। जन्मेजयोमहाराज! पुर ञ्जयसुतोऽभवत् १२ जन्मेजयस्यराजर्षेर्महाशालोऽभवत्सुतः। आसीदिन्द्रसमोराजा प्रतिष्ठितयशाभवत् १३ महामनाःसुतस्तस्य महाशालस्यधार्मिकः। सप्तद्वीपेश्वरोजज्ञे चक्रवर्तीमहामनाः १४ महामनास्तुद्वौपुत्रौ जनयामासविश्रुतौ। उशीनरञ्चधर्म्मज्ञं तितिक्षुंचैवतावुभौ १५ उशीनरस्यपत्न्यस्तु पञ्चराजर्षिसम्भवाः। भृशाकृशानवादर्शा याचेदेवीदृषद्वती १६ उशीनरस्यपुत्रास्तु तासुजाताःकुलोद्वहाः। तपसातेतुमहता जा

विजयी त्रिसारिनाम पुत्रहुआ १ त्रिसारिके करन्धम पुत्रहुआ और करन्धमके वंशका बढ़ानेवाला भरतही हुआ क्योंकि पूरुराजाके वंशमें दुष्यन्तराजा उत्पन्नहुआथा उसीके भरत जन्माथा और जो वृद्धावस्था लेकर तरुणावस्था नहींदी इसहेतुसे राजा ययातिके शापसे तुर्वसुका वंश प्रसिद्धनहींरहा किन्तुपूरुकेही वंशमें लीनहोगयाथा २।३ दुष्यन्तके वरूथनाम एकपुत्रहुआ उसकापुत्र डीरहुआडीर के सन्धानहुआ ४ और पांड्य-केरल-चोल और कर्ण यहभी उत्पन्नहुए इनके देशभी बहुत वृद्धि युक्त पाण्ड्य-केरल चोल इत्यादि नामोंसेही प्रसिद्धहैं ५ और द्रुह्यराजा के शूर-सेतु और केतु इन नामोंवाले पुत्रहुए सेतुकापुत्र शरद्वान् हुआ उसका गन्धार पुत्रहुआ ६ इसीके नामसे बड़ा भारी गन्धारदेश प्रसिद्धहै इसराजाके यहाँ आरट्टदेशके पैदाहोनेवाले बहुत उत्तम घोड़े वर्त्तमानथे ७ गंधार के धर्मनाम पुत्रहुआ उसके धृतहुआ-धृतके विदुषहुआ-विदुषके प्रचेताहुआ ८ प्रचेताके सौ १०० पुत्रहुए वहसब उत्तरदिशामें म्लेच्छदेशके राजाहोतेभये ९ और राजाअणुके बड़ेधर्मवाले शूरवीर सभा नर-चाक्षुप और परमेषु यह तीनपुत्रहोतेभये १० सभानरके बड़ाविद्वान् कोलाहल नामपुत्र राजा होताभया कोलाहलके धर्मात्मा सञ्जयनाम पुत्र प्रसिद्धहुआ ११ सञ्जयकापुत्र शूरवीर पुरञ्जयहुआ पुरञ्जयके जनमेजयहुआ जनमेजयके महाशालहुआ महाशालकापुत्र धर्मात्मा सातोंद्वीपोंकापति चक्रवर्त्ती महामनानाम प्रसिद्धहोताभया महामनाकेउशीनरऔरतितिक्षुयहदोपुत्र उत्पन्नहुए १२।१५ उशीनर के भृशा-कृशा-नवा-दर्शा और दृषद्वती इन नामोंवाली पांच पटरानी हुईं १६ फिर उन्हीं

ता वृद्द्रथस्यधार्मिकाः १७ भृशायास्तुनृगःपुत्रो नवायानवएवच। कृशायास्तुकृशोजज्ञे दर्शायाःसुव्रतोऽभवत्। दृषद्वत्याःसुतश्चापिशिविरौशीनरोनृपः १८ शिवेस्तुशिवयःपुत्राश्चत्वारोलोकविश्रुताः।पृथुदर्भःसुवीरश्चकेकयोभद्रकस्तथा१९तेषांजनपदास्फीताः केकयाभद्रकास्तथा। सौवीराश्चैवपौराश्च नृगस्यकेकयास्तथा २० सुव्रतस्यतथाम्बष्ठा कृशस्यवृषलापुरी। नवस्यनवराष्ट्रन्तु तितिक्षोस्तुप्रजांशृणु २१ तितिक्षुरभवद्राजा पूर्वस्यान्दिशिविश्रुतः। वृषद्रथःसुतस्तस्य तस्यसेनोऽभवत्सुतः २२ सेनस्यसुतपाजज्ञे सुतपस्तनयोबलिः।जातोऽमानुषयोन्यान्तु क्षीणेवंशेप्रजेच्छया २३ महायोगीतुसबलिर्बद्धोबन्धैर्महात्मना। पुत्रानुत्पादयामास क्षेत्रजान्पञ्चपार्थिवान् २४ अङ्गंसजनयामास वङ्गंसुह्मंतथैवच। पुण्ड्रङ्कलिङ्गञ्चतथा बालेयंक्षेत्रमुच्यते। बालेयाब्राह्मणाश्चैव तस्य वंशकराःप्रभोः २५बलेश्चब्रह्मणादत्तो वरःप्रीतेनधीमतः।महायोगित्वमायुश्च कल्पस्य परिमाणकम् २६ संग्रामेचाप्यजेयत्वं धर्मेचैवोत्तमामतिः। त्रैकाल्यदर्शनंचैव प्राधान्यं प्रसवेतथा२७ जयञ्चाप्रतिमंयुद्धे धर्मेतत्त्वार्थदर्शनम्। चतुरोनियतान्वर्णान् सर्वैःस्थापयिताप्रभुः२८तेषाञ्चपञ्चदायादावङ्गाङ्गःसुह्मकास्तथा। पुण्ड्राःकलिङ्गाश्चतथा अङ्गस्यतुनिबोधत २९(मुनयऊचुः)कथंबलेःसुताजाताः पञ्चतस्यमहात्मनः। किंनाम्नीमहिषीतस्य जनिताकतमोऋषिः३०कथंचोत्पादितास्तेन तन्नःप्रब्रूहिपृच्छताम्।माहात्म्यं

पटरानियोंमें उशीनरके तपके प्रभावसे बड़े तेजस्वी धार्मिक कुलीन और उत्तमपुत्र इसक्रमसे हुए १७ कि भृशाके नृगपुत्रहुआ नवाके नवहुआ कृशाके कृशहुआ दर्शाके सुव्रत--दृषद्वतीके शिवि और औशीनर यह दोपुत्र उत्पन्न हुए शिविके लोक में प्रसिद्ध पृथुदर्भ--सुवीर--केकय--और भद्रक यह चारपुत्र होतेभये १८। १९ इनके देश बड़े वृद्धियुक्त केकय--भद्रक--सौवीर--और पौरइन नामों से प्रसिद्धहुए और राजानृगके भी देश केकय नामही से प्रसिद्धहुए २० सुव्रतराजा की अंबष्ठ नाम नगरी हुई कृशकीपुरी वृषलापुरी और नवका नवनाम देशहुआ अब तितिक्षुकी प्रजाको कहते हैं २१ यह तितिक्षुराजा पूर्व दिशामें प्रसिद्ध होताभया उसकापुत्र वृषद्रथ उसकापुत्र सेननामहुआ २२सेनके सुतपाहुआ सुतपाके बलिनाम पुत्रहुआ यह महायोगी राजा बलिक्षीण वंशहुआ तब प्रजाकी इच्छाकरनेसे २३ इसमहात्माको विष्णुने बन्धनों से बाँधा फिर यह बन्धनोंसे बँधाहुआई अपनी धर्मपत्नी में ब्राह्मणकेद्वारा क्षेत्रजअंग--वंग--सुह्म--पुंड्र और कलिंग इनपांचपुत्रों को उत्पन्न करताभया--अब बलिका और क्षेत्रकहते हैं अर्थात् इससमर्थ बलि के वंशको करनेवाले ब्राह्मणहो तेभये २४।२५ इस बुद्धिमान् बलिको प्रसन्नहोकर ब्रह्माजीने यह वरदियाथा कि तू महायोगी और कल्पके प्रमाण आयुवाला होकर २६ युद्धमें सबसे अजित धर्ममें उत्तम बुद्धि, त्रिकालज्ञ और ज्ञाति में प्रधानहोगा २७ इसके सिवाय युद्धमें उत्तम जयवाला धर्ममें तत्त्वार्थका देखनेवाला नियतचारों वर्णोंका स्थापन करनेवाला समर्थहो २८ इसबलिके जो अंग--वंग--सुह्म पुंड्र और कलिंग यह पांच पुत्रहुए इनमेंसे अंगकावंश वर्णन करते हैं २९ मुनियों ने कहा हेसूतजी उस महात्मा बलिके पांच पुत्र कैसेहुए और जिसरानीसे हुए उसकानाम क्याहै कौनसेऋषि उत्पन्न करतेभये ३० और किस

चप्रभावञ्चनिखिलेनवदस्वतत् ३१ (सूत उवाच) अथोशिजइतिख्यातआसीद्विद्वानृषिः
पुरा। पत्नीवैममतानामतस्याभूवास्यमहात्मनः ३२ उशिजस्ययवीयान्वैभ्रातृपत्नीमकामयत्।
बृहस्पतिर्म्महातेजाममतामेत्यकामतः ३३ उवाचममतातन्तुदेवरंवरवर्णिनी। अंतर्वत्न्य
स्मितेभ्रातुर्ज्येष्ठस्यतुविरम्यताम् ३४ अयंतुमेमहाभाग! गर्भःकुप्येद्बृहस्पते!। औशिजो
भ्रातृजन्यस्तेसोपांगंवेदमुद्गिरम् ३५ अमोघरेतास्त्वञ्चापिनमांभजितुमर्हसि। अस्मिन्ने
वगतेकालेयथावामन्यसेप्रभो! ३६ एवमुक्तस्तथासम्यक्बृहत्तेजाबृहस्पतिः। कामात्मास
महात्मापि नमनःसोऽभ्यवारयत् ३७ सम्बभूवैवधर्मात्मा तयासार्द्धमकामया। उत्सृजन्त
न्तुतद्रेतो वाचंगर्भोऽभ्यभाषत ३८ भोतात! वाचामधिप! द्वयोर्नास्तीहसंस्थितिः।
अमोघरेतास्त्वञ्चापि पूर्वंचाहमिहागतः ३९ सोऽशपत्तंततःक्रुद्धएवमुक्तोबृहस्पतिः।
पुत्रंज्येष्ठस्यवैभ्रातुर्गर्भस्थंभगवानृषिः ४० यस्मात्त्वमीदृशेकाले गर्भस्थोऽपिनिषेधसि।
मामेवमुक्तवांस्तस्मात्तमोदीर्घंप्रवेक्ष्यसि ४१ ततोदीर्घतमानामशापादृषिरजायत। अ
नोऽऽशजोबृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिरिवौजसा ४२ ऊर्ध्वरेतास्ततःतोऽसौ वैवसतेभ्रातुराश्रमे।
सधर्म्मान्सौरभेयांस्तुवृषभाच्छ्रुतवांस्ततः ४३ तस्यभ्रातापितृव्योयश्चकारभरणंतदा।
तस्मिन्निवसतस्तस्य यदृच्छेवागतोवृषः ४४ यज्ञार्थमाहृतान्दर्भाँ श्चचादसुरभीसुतः।

रीतिसे उसने उत्पन्नकिये यह सबआप हमसे वर्णनकीजिये औरउसऋषिका माहात्म्य और प्रभाव भी सम्पूर्णकहो ३१ यह सुनकर सूतजी कहनेलगे कि हेऋषिलोगो प्रथमएक उशिजनामसे विख्यातबड़ा विद्वान्ऋषि होताभया और इस महात्माकी स्त्री ममतानामवाली होतीभई ३२ उशिजका छोटाभाई बृहस्पति भाईकीस्त्रीमें कामकी इच्छा करताभया ३३ तब यह महासुन्दरी ममता अपने देवरसे कहनेलगी किमैं तेरे बड़ेभाईसे गर्भधारण करेहुएहूं तू मुझसे भोगमतकर ३४ और हे महाभाग बृहस्पति यह तेरे बड़े भाईका गर्भ जो मेरे उदरमें है यह कुपित होजायगा और तू अंगसहित वेदको कहताहुआ अमोघ वीर्य्यवालाहै इसहेतुसे तुममुझको सेवनकरने को योग्यनहींहो इसगर्भ कालके व्यतीत होनेपर जो आपकहेंगे वह मैं मानलूंगी ३५। ३६ ऐसे अच्छे प्रकारसे समझानेपर भी यह बड़े तेजवाला बृहस्पति महात्माभीथा परन्तु ऐसाहोनेपरभी यह कामसे मनको नहींनिवारणकरसका और अनिच्छावाली धर्मात्मा स्त्रीसे भोगकरताभया जब इसने वीर्य्यको छोड़नाचाहा तब प्रथम गर्भबोला ३७।३८ हेतात हेवाणियोंके स्वामी यहाँ दोगर्भोंकी स्थिति नहीं है क्योंकि तुमभी अमोघवीर्य्यहो और प्रथम मैं यहाँ आगयाहूं यह वचनसुनकर यह समर्थ बृहस्पति क्रोधयुक्तहोकर उस बड़ेभाईके गर्भवाले पुत्रको यह शापदेताभया कि जो तूगर्भमें स्थितहो ऐसेकालमें भी मुझको रोकता है इस हेतुसे तू दीर्घतम अर्थात् अन्धेपनको प्राप्तहोगा ३९। ४१ इसके पीछे शाप के कारणसे वह गर्भ दीर्घतमा नामसे उत्पन्न होकर बृहस्पतिकेही समान कीर्त्ति और पराक्रमसे युक्त होताभया और यह ऊर्ध्वरेताहोंके भ्राताके आश्रम में बसताहुआ वृषसे गौओंके धर्मोंको सुनताभया और इसका पोषण इसका भ्राता और चचा दोनों करतेभये अर्थात् उस अंधतमाको पालते भये इसीप्रकार उसके बसतेहुए केकुछ काल पीछे अपनी इच्छासे एक वृष आताभया ४२। ४४ और यज्ञके निमित्त

जग्राहतंदीर्घतमाःशृङ्गयोस्तुचतुष्पदम् ४५ तेनासौनिगृहीतश्च नचचालपदात्पदम् ।
ततोऽब्रवीद्वृषस्तंवै मुञ्चमाम्बलिनांवर ! ४६ नमयासादितस्तात ! बलवांस्त्वत्स
मःक्वचित् । ममचान्यःसमोवापि नहिमेबलसंख्यया । मुंचताततिचपुनः प्रीतस्तेऽहंवरं
वृणु ४७ मुंचताततिचपुनःप्रीतस्तेऽहंवरंवृणु । एवमुक्तोऽब्रवीदेनं जीवन्मेत्वंक्वयास्यसि ।
एषत्वांनविमोक्ष्यामि परस्वादंचतुष्पदम् ४८ (वृषभउवाच) नास्माकंविद्यतेतात! पातकं
स्तेयमेवच । भक्ष्याभक्ष्यंतथाचैव पेयापेयंतथैवच ४९ द्विपदांबहवोह्येते धर्मएषगवां
स्मृतः । कार्याकार्येनवागम्यागमनञ्चतथैवच ५० (सूतउवाच) गवांधर्म्मन्तुवैश्रुत्वा
सम्भ्रान्तस्तुविसृज्यतम् । शक्त्यान्नपानदानात्तु गोपतिंसम्प्रसादयन् ५१ प्रसादितेग
तेतस्मिन्गोधर्मंभक्तितस्तुसः । मनसैवसमादध्यौ तन्निष्ठस्तत्परोहिसः ५२ ततोयवीयसः
पत्नीं गौतमस्याभ्यपद्यत । कृतावलेपान्तांमत्वासोऽनड्वानिवनक्षमे ५३ गोधर्म्मन्तुपरं
मत्वा स्नुषान्तामभ्यपद्यत । निर्भर्त्स्यैचैनंरुदाचबाहुभ्यांसम्प्रगृह्यच ५४ भाव्यमर्थन्तुतं
ज्ञात्वा माहात्म्यात्तमुवाचसा । विपर्ययन्तुत्वंलब्ध्वा अनड्वानिववर्त्तसे ५५ गम्याग
म्यंनजानीषे गोधर्मात्प्रार्थयन्सुताम् । दुर्वृत्तंत्वान्त्यजाम्यद्य गच्छत्वंस्वेनकर्मणा ५६
काष्ठेसमुद्रेप्रक्षिप्य गङ्गाम्भसिसमुत्सृजत् । यस्मात्त्वमन्धोवृद्धश्च भर्त्तव्योदुरधिष्ठि
तः ५७ तमुह्यमानंवेगेन स्रोतसोऽभ्यासमागतः । जग्राहतंसधर्मात्मा बलिर्वैरोचनि

लाईहुई कुशाओंको वह सुरभीका पुत्र खाताभया उस वृषको यह दीर्घतमा सींगोंसे पकड़ताभया
४५ उस करके पकड़ाहुआ वह बैल एक चरणभी नहीं चलसका तब बैलबोला कि हे बलियों में
श्रेष्ठ तू मुझको छोड़ दे ४६ मैंने तुझसरीखा बलवान् कोई नहींदेखा और मेरे समान भी दूसराबल-
वान् नथा हे तात तू मुझे छोड़दे मैं तुझपर प्रसन्नहुआहूं तू जोचाहै सो मुझसे वरमांग ४७ इसवचन
को सुनकर दीर्घतमा ने कहा कि मेरे जीतेजी तू कहाँजायगा मैं आज तुझपराई वस्तुके आस्वादन
करनेवालेको नहींछोडूंगा ४८ बैल कहनेलगा कि हेतात नतो हमारे पातकहै न चोरीहै और न कोई
ऐसा नियमहै कि अमुक वस्तुखाना न खाना पीना न पीना अर्थात् यह नियम नहीं है कि अमुकवस्तु
खाना चाहिये अमुक न खानाचाहिये ४९ यह बहुतसे धर्म मनुष्योंकेहैं गौओंके नहीं हैं और कार्य्य
में जाना अकार्य्यमें न जाना इसका नियम हमारे नहीं है ५० सूतजी बोले कि ऐसे गौओंके धर्मों
को सुनकर उसका भ्रम दूरहोगया तब उसको छोड़कर बड़ी प्रसन्नता और श्रद्धासे उसको यथाश-
क्ति अन्नपानादि करवाके गौओंकी बुद्धिको स्वीकार करताभया ५१ जब प्रसन्न होकर वह वृषभ
चलागया तब भक्तिपूर्वक गौओंके धर्मको मनसेही विचारता उसमें नैष्ठिकहोकर तत्पर होताभया
फिर यह अपने छोटेभाई गौतमकी स्त्रीको प्राप्तहोताभया और उसको गर्भवतीभी जानकर बैलके
समान नहीं सहसका अर्थात् गोधर्मको उत्तममानके उसस्त्रीको झटकेसे पकड़ भुजाओंसे रोकयथे-
च्छ भोगकरताभया ५२।५४ और भाविअर्थको जानकर उसके माहात्म्यको कहनेलगा तब उस
स्त्रीनेकहा कि तू विपर्य्यय कालको प्राप्तहोकर बैलके समान वर्त्तताहै और तैंने मुझपुत्री के समान
को मेरी इतनी प्रार्थना करनेपरभी गम्यागम्यको नहीं जानतेहुएके समान कर्म किया इसहेतुसे मैं

स्तदा ५८ अन्तःपुरेजुगोप्यैनं भक्ष्यभोज्यैश्चतर्पयन्। प्रीतश्चैवंवरेणैवच्छन्दयामास वैबलिम् ५६ तस्माच्चसवरंवव्रे पुत्रार्थैदानवर्षभः। सन्तानार्थंमहाभाग! भार्यायांममभा नद!। पुत्रान्धर्मार्थतत्त्वज्ञानुत्पादयितुमर्हसि ६० एवमुक्तोऽथदेवर्षिस्तथास्त्वित्युक्त वान्प्रभुः। सतस्यराजास्वाम्भार्य्यां सुदेष्णान्नामप्राहिणोत्। अन्धंवृद्धञ्चतंज्ञात्वा न सादेवीजगामह ६१ शूद्रान्धात्रेयिकांतस्मै अन्धायप्राहिणोत्तदा। तस्यांकाक्षीवदादीं इच शूद्रयोनावृषिर्वशी ६२ जनयामासधर्मात्मा शूद्रानित्येवमादिकम्। उवाचतंबली राजा दृष्ट्वाकाक्षीवदादिकान् ६३ (राजोवाच) प्रवीणानृषिधर्म्मस्य चेश्वरान्ब्रह्मवा दिनः। विद्वान्प्रत्यक्षधर्माणां बुद्धिमान्वृत्तिमान्शुचीन् ६४ ममैवचेतिहोवाच तंदीर्घत मसम्बलिः। नेत्युवाचमुनिस्तंवै ममैवमितिचाब्रवीत् ६५ उत्पन्नाःशूद्रयोनौतु भवच्छ न्देसुरोत्तम!। अन्धंवृद्धंचमांज्ञात्वा सुदेष्णामहिषीतव। प्राहिणोदवमानान्मे शूद्रांधा त्रेयिकांनृप! ६६ ततःप्रसादयामास बलिस्तमृषिसत्तमम्। बलिःसुदेष्णान्ताम्भार्य्यां भर्त्सयामासदानवः ६७ पुनश्चैनामलंकृत्य ऋषयेप्रत्यपादयत्। तांसदीर्घतमादेवीं त थाकृतवतीतदा ६८ दध्नालवणमिश्रेण स्वसक्तम्मधुकेनतु। लिह्मामजुगुप्सन्ती आ पादतलमस्तकम्। ततस्त्वंप्राप्स्यसेदेवि! पुत्रान्वैमनसेप्सितान् ६९ तस्यसातद्वचोदे

खोटे वृत्तान्तवालेको त्यागतीहूं तू अपनेकर्मोंकरकेजा ५५।५६ ऐसाकह उसको सन्दूकमेंबन्दकर गंगा जीमें गेरदेतीभई और कहतीहुई कि तू अन्धाहोकर मुझकोप्राप्तहुआहै इसीसे मैं तुझेत्यागतीहूं ५७ फिर वह बहता बहता किनारेआलगा तबविरोचनकापुत्र महात्माबलि इसको ग्रहणकरताभया और रणवासमें इसकीरक्षाकरके इसको भक्ष्यभोज्यादि पदार्थोंसे तृप्तकिया तब यहऋषिकापुत्र राजाबलि को वरसे लुभाताभया ५८।५९ तब इसदानवोंके राजाबलिने इससे पुत्रका वरमांगा और कहा कि हे महाभाग मानके देनेवाले तुममेरीस्त्रीमें सन्तान उत्पन्नकरो ६० यहसुनकर उस समर्थऋषिनेकहा कि तथास्तु अर्थात् ऐसाहीहोगा यहसुनकर राजाबलिभी अपनी सुदेष्णानामरानी को उसकेपास भेजताभया परंतु वहरानी उसको अन्धा और वृद्धजानके नहींप्राप्तहोतीभई ६१ और अपनीशूद्राधायको इसरानीने उसके पास भेजा उसदासी में उसऋषिके योगसे काक्षीवत् इत्यादि नामवाले पुत्रों की शूद्र योनिमें उत्पत्ति होती भई ६२ तब राजाबलि काक्षीवदादि शूद्रों को देखकर यहवचन कहता भया ६३ अर्थात उस बुद्धिमान् राजाने उनपुत्रों को ऋषिधर्ममें प्रवीण समर्थ ब्रह्मवादी और महापवित्र देखकर दीर्घतमासे कहा कि यह मेरे पुत्रहैं मुनिनेकहा कि तेरे नहीं यह मेरे पुत्रहैं ६४।६५ क्योंकि शूद्रयोनिमें हुए हैं और हे राजा तेरी रानी सुदेष्णाने मुझको अंधा और वृद्ध जानके अपमान करके मेरे पास शूद्राधाय को भेजा ६६ इसके पीछे वह राजा बलि उस ऋषि सत्तमको प्रसन्न करता भया और सुदेष्णारानी को ललकारता भया ६७ फिर इसरानीको शृंगार करके उसके पास भेजा तब दीर्घतमा ऋषि उस रानी से कहता भया ६८ कि मेरे शरीर को दधि लवण और शहद को लगाकर लज्जाको त्यागके पैरों से लेकर मस्तक पर्य्यन्त जिह्वा से चाट हे देवि इसके करने से तू अपने वांछित पुत्रों को पावेगी ६९ रानी ने ऋषिके वचन को सुनकर वैसाही किया परन्तु जब

वी सर्वंकृतवतीतदा। तस्यसापानमासाद्य देवीपरिहृत्तदा ७० तामुवाचततःसोऽथ य-
त्तेपरिहृतंशुभे!। विनापानंकुमारन्तु जनयिष्यसिपूर्वजम् ७१ (सुदेष्णोवाच) नार्हसित्वं
म्महाभाग! पुत्रम्मेदातुमीदृशम्। तोषितश्चयथाशक्त्या प्रसादंकुरुमेप्रभो! ७२(दीर्घ
तमोवाच)तवापचारादेव्येष नान्यथाभविताशुभे!। नैवदास्यतिपुत्रस्ते पौत्रोवैदास्यते
फलम् ७३ तस्यापानंविनाचैव योग्यभावोभविष्यति। तस्मादीर्घतमांगेषु कुक्षौस्पृष्ट्वेद
मब्रवीत् ७४ प्राशितंयद्यदग्रेषु नसोपस्थंशुचिस्मिते!। तेनतिष्ठन्तितेगर्भे पौर्णमास्यामि
वोडुराट् ७५ भविष्यन्तिकुमारास्ते पञ्चदेवसुतोपमाः। तेजस्विनःसुवृत्ताश्च यज्वानो
धार्मिकाश्चते ७६ (सूत उवाच)तदंशस्तुसुदेष्णाया ज्येष्ठःपुत्रोऽभ्यजायत। अङ्गस्तथाक
लिङ्गश्चपुण्ड्रः सुह्मस्तथैवच ७७ वङ्गराजस्तुपञ्चैते बलेःपुत्राश्चक्षेत्रजाः। इत्येतेदीर्घ
तमसाबलेर्दत्ताःसुतास्तथा ७८ प्रतिष्ठामागतानांहि ब्राह्मण्यंकारयंस्ततः ततोमानुषयो
न्यांसजनयामासवैप्रजाः ७९ ततस्तंदीर्घतमसं सुरभिर्वाक्यमब्रवीत्। विचार्ययस्माद्गोधर्मं
प्रमाणन्तेकृतंविभो! ८० भक्त्याचानन्ययास्मासु तेनप्रीतास्मितेऽनघ!। तस्मात्तुभ्यंत
मोदीर्घमाघ्रायापनुदामिवै ८१ बार्हस्पत्यस्तथैवैषपाप्मावैतिष्ठतित्वयि। जरांमृत्युंतमश्चै
व आघ्रायापनुदामिते ८२ सद्यःसघ्रांतमात्रस्तु असितोमुनिसत्तम!। आयुष्मांश्चवपु
ष्मांश्च चक्षुष्मांश्चततोऽभवत् ८३ गोभ्याहृतेतमसिवै गौतमस्तुततोऽभवत्। काक्षी

सब अंगचाटती हुई गुदा के पास आई तब गुदाको चाटने से छोड़ दिया ७० तब ऋषिने कहा कि
हे शुभे जो तैं ने गुदा को त्याग दियाहै इस हेतुसे तेरा बड़ा पुत्र गुदासे रहित होगा ७१ यह सुनकर
रानी ने कहा कि हे महाभाग ऐसा पुत्र आप देनेको योग्य नहीं हो हे प्रभो आप यथा शक्ति मेरे प्र
सन्न करने से मुझपर कृपा कीजिये ७२ दीर्घतमा कहने लगा हे देवि हे शुभे तेरे अपराधसे यह तो
ऐसाही होगा और पुत्र तुझको कुछ फल नहीं देगा तेरा पोता तुझे फलदेगा ७३ और उसके बिना
गुदाकेही योग्य भावहो जायगा फिर दीर्घतमा ऋषि रानी के अंगोंमें से कुक्षिको स्पर्शकरके यह
वचन कहने लगा ७४ कि हे सुन्दरहास्य वाली तैंने उपस्थ लिंग चाटा इस हेतुसे तेरे ऐसा गर्भ
होवेगा जैसा कि पूर्णमासी का चन्द्रमा होता है ७५ और देव पुत्रों के समान तेरे पांच कुमार
होवें गे वह अच्छे तेजस्वी सुन्दर वृत्तान्त वाले और यज्ञकरनेवाले धर्मात्मा होवें गे ७६ सूतजी
कहने लगे कि हे ऋषीश्वरो सुदेष्णाके दीर्घतमा के अंशसे बड़ापुत्र अंगहुआ पीछे कलिंग-पुंड्र-सुह्म
और वंगराज यह पांच बलि के क्षेत्रज पुत्रउत्पन्न हुए इस रीतिसे यह सब पुत्र दीर्घतमा ऋषिने
राजा बलिको दिये ७७।७८ फिर उनसब उत्पन्नहुए पुत्रोंकी प्रतिष्ठा और ब्रह्मत्वादिक रीति कराता
भया इस रीतिसे मानुषयोनि में प्रजाओं को उत्पन्न कराता भया ७९ फिरउस दीर्घतमासे सुरभी
यह वचन कहती भई कि हे विभो जोकि तैंने गोधर्मको उत्तम विचारके बड़ी भक्तिसे उसकोप्रमाण
करके ग्रहण किया इस हेतुसे हे अनघ मैं तुझपर प्रसन्नहूं और प्रसन्न होकर तुझको सूंघकर तेरे
दीर्घतम को दूर करती हूं ८०–८१ और बृहस्पति का पापतुझमें वर्त्तमान है इसलिये तेरीवृद्धावस्था
को मृत्युको और तमको सूंघकर दूरकरूंहूं ८२ हे मुनिसत्तमहो दीर्घतमा ऋषि तिस वृषसे सूंघा

वांस्तुततोगत्वा सहपित्रागिरिव्रजम् ८४ दृष्ट्वास्पृष्ट्वापितुःसोवै ह्युपविष्टश्चिरन्तपः। ततःकालेनमहता तपसाभावितस्तुसः ८५ विधूयमातृजंकायं ब्राह्मण्यंप्राप्तवान्विभुः। ततोऽब्रवीत्पितातंवै पुत्रवानस्म्यहंत्वया ८६ सत्पुत्रेणतुधर्मज्ञ ! कृतार्थोऽहंयशस्विना। मुक्तात्मानंततोऽसौवै प्राप्तवान् ब्रह्मणःक्षयम् ८७ ब्राह्मण्यंप्राप्यकाक्षीवान् सहस्रमसृजत्सुतान्। कौष्माण्डागौतमाश्चैवस्मृताःकाक्षीवतःसुताः ८८ इत्येषदीर्घतमसोबलेर्वैरोचनस्यच। समागमोवःकथितः सन्ततिश्चोभयोस्तथा ८९ बलिस्तानभिनन्द्याहपञ्च पुत्रानकल्मषान्। कृतार्थःसोऽपिधर्मात्मा योगमायावृतःस्वयम् ९० अदृश्यःसर्वभूतानां कालापेक्षःसर्वप्रभुः। तत्राङ्गस्यतुदायादो राजासीद्दधिवाहनः ९१ दधिवाहनपुत्रस्तुराजा दिविरथःस्मृतः। आसीद्दिविरथापत्यं विद्वान्धर्मरथोनृपः ९२ सहिधर्मरथःश्रीमांस्तेन विष्णुपदेगिरौ। सोमःशुक्रेणवैराज्ञासहपीतोमहात्मना ९३ अथधर्मरथस्याभूत्पुत्रश्चित्ररथःकिल। तस्यसत्यरथःपुत्रस्तस्माद्दशरथःकिल ९४ लोमपादइतिख्यातस्तस्य शान्तासुताभवत्। अथदाशरथिर्वीरश्चतुरङ्गो महायशाः ९५ ऋष्यशृङ्गप्रसादेन जज्ञेस्वकुलवर्धनः। चतुरङ्गस्यपुत्रस्तु पृथुलाक्षइतिस्मृतः ९६ पृथुलाक्षसुतश्चापि चम्पनामा बभूवह। चम्पस्यतुपुरीचम्पापूर्वं यामालिनोऽभवत् ९७ पूर्णभद्रप्रसादेन हर्यङ्गोऽस्यसुतो

हुआ होकर तत्कालही उत्तम आयु-शरीर और नेत्रों वाला होजाताभया ८३ जब कि गौने उसके तमको हरलिया इस कारण से उसका नाम गौतम होताभया फिर शूद्राधायकापुत्र काक्षीवान् पिता समेतगिरिव्रजमें जाकर ८४ अपने उसदीर्घतमा पिताको देखके औरस्पर्शकरके बहुत कालतक तपस्या करता भया फिर बहुत काल के तपसे शुद्धहुए इस समर्थ मातासे उपजे शरीर को त्यागकर ब्राह्मण शरीरको प्राप्तहोताभया तब उसका पिता उस्से कहने लगा कि हे पुत्रतुझकरकेही मैं पुत्रवानहूं ८५।८६ और हे धर्मज्ञ यशवाले तुझसत्पुत्रके होनेसे मैं कृतार्थहुआ फिर वह भी अपने आत्माकोत्यागकर ब्रह्मको प्राप्तहोताभया ८७ वह काक्षीवान् ब्राह्मण शरीरको प्राप्तहोकर हज़ार पुत्रोंको उत्पन्नकरताभया वह काक्षीवान्के उत्पन्न हुए पुत्र कौष्माण्ड और गौतम कहाते हैं ८८ इसप्रकार करके दीर्घतमा और विरोचन के पुत्र बलिका जैसे समागमहुआ वह सब तुमसे कहा और दानवों की सन्ततिभी कही ८९ इनमें पापरहित जो पांच पुत्रथे उनकी प्रशंसाकरके राजाबलि उनसे यह वचन कहता भया कि मैं तुमकरके कृतार्थहोकर धर्मात्माहूं ९० उसीवंशमें अंगकापुत्र अतिसमर्थ संपूर्णजीवोंका कालापेक्ष राजा दधिवाहन नाम उत्पन्नहुआ ९१ दधिवाहनका पुत्र राजा दिविरथ हुआ दिविरथ का पुत्र विद्वान्राजा धर्मरथ हुआ ९२ वह श्रीमान् धर्मरथ महात्मा राजा विष्णुपद पर्व्वतमें शुक्रके साथ अमृत पीताभया ९३ इस के पीछे धर्मरथके चित्ररथपुत्रहुआ चित्ररथके सत्यरथ तिसका दशरथनाम पुत्रहुआ ९४ जिसको कि लोमपाद भी कहते हैं उसकी शान्तानाम पुत्री होती भई दशरथकापुत्र शूरवीर महायशा चतुरंगहुआ ९५ वह राजा ऋष्यशृंग के प्रसाद से अपने कुलका बढ़ानेवाला हुआ चतुरंग का पुत्र पृथुलाक्षहुआ ९६ पृथुलाक्षके चंपनाम पुत्रहुआ उसी चंपकी चंपापुरी प्रसिद्ध है वह पुरी प्रथम मालिकी थी ९७ चंपके पूर्ण भद्रके प्रसाद से हर्यंगनाम

ऽभवत् ।जज्ञेविभाण्डकाच्चास्य वारणःशत्रुवारणः ९८ अवतारयामासमहीं मन्त्रैर्वाहनमु
त्तमम् । हर्यङ्गस्यतुदायादो जातोभद्ररथःकिल ९९ अथभद्ररथस्यासीत् बृहत्कर्माजने
श्वरः । बृहद्भानुःसुतस्तस्य तस्माज्जज्ञेमहात्मवान् १०० बृहद्भानुस्तुराजेन्द्रो जनयामास
वैसुतम् नाम्नाजयद्रथंनाम तस्माद्बृहद्रथोनृपः १०१ आसीद्बृहद्रथाच्चैव विश्वजिज्जन
मेजयः । दायादस्तस्यचाङ्गोवै तस्मात्कर्णोऽभवन्नृपः १०२ कर्णस्यवृषसेनस्तु पृथुसे
नस्तथात्मजः । एतेऽङ्गस्यात्मजाःसर्वे राजानःकीर्तितामया । विस्तरेणानुपूर्व्याच्च पूरो
स्तुशृणुतद्विजाः ! १०३ (ऋषय ऊचुः) कथंसूतात्मजःकर्णः कथमङ्गस्यचात्मजः । ए
तदिच्छामहेश्रोतुमत्यन्तकुशलोह्यसि १०४ (सूत उवाच) बृहद्भानुसुतोजज्ञे राजा
नाम्नाबृहन्मनाः । तस्यपत्नीद्वयंह्यासीच्छैव्यस्यतनयेह्युभे । यशोदेवीचसत्याच तयोर्वंश
ञ्चमेशृणु १०५ जयद्रथन्तुराजानं यशोदेवीह्यजीजनत् । साबृहन्मनसःसत्या विजयंना
मविश्रुतम् १०६ विजयस्यबृहत्पुत्रस्तस्यपुत्रोबृहद्रथः । बृहद्रथस्यपुत्रस्तु सत्यक
र्मामहामनाः १०७ सत्यकर्मणोऽधिरथः सूतश्चाधिरथःस्मृतः । यःकर्णंप्रतिजग्राह ते
नकर्णस्तुसूतजः । तच्चेदंसर्वमाख्यातं कर्णंप्रतियथोदितम् १०८ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

पूरोःपुत्रोमहातेजा राजासजनमेजयः । प्राचीततःसुतस्तस्ययःप्राचीमकरोद्दिशम् १

पुत्रहुआ इसके विभांड पुत्रहुआ विभांड के शत्रुओंका रोकने वाला वारणनामपुत्रहुआ ९८ यह मन्त्रों करके उत्तमवाहनोंको पृथ्वीमें उतारताभया और हर्यंगके भद्ररथ पुत्रहुआ ९९ भद्ररथका पुत्र बृहत्कर्मा राजाहुआ उसका पुत्रमहाबृहद्भानु उत्पन्नहुआ १०० हे राजेन्द्र बृहद्भानुकापुत्र जयद्रथ नाम हुआ जयद्रथके राजा बृहद्रथहोता भया १०१ बृहद्रथका पुत्रदिग्विजयकरने वालाजनमेजय होता भया उसका पुत्र अंगहुआ अंगका पुत्रराजा कर्णहुआ १०२ कर्णका पुत्रवृषसेन उसका पुत्र पृथुसेन हुआ हे ऋषियो यह सब अंगके वंशके आनुपूर्वी राजाओंका विस्तार वर्णन किया अबपूरुके वंशको कहताहूं १०३ यह सुनकर ऋषियों ने कहा हे सूतजी कर्ण कैसेहुआ और यह अंगकापुत्रकैसे होगया यह हमसुनाचाहते हैं क्योंकि आप सर्वज्ञहो १०४ यह सुनकर सूतजी बोले कि हे ऋषियो बृहद्भानु का पुत्रराजा बृहन्मनाहोता भया उसकी शैव्यराजा की पुत्री दोरानियां हुईं एक का नाम यशोदेवी दूसरी सत्या उन दोनोंके वंशको सुनो १०५ जयद्रथ राजा को तो यशोदेवी उत्पन्न करती भई और बृहन्मनाकी सत्यानाम रानी विजयनामपुत्रको जन्मतीभई १०६ उस विजयका पुत्र बृहत्नामहुआ उसका पुत्रबृहद्रथ हुआ बृहद्रथका पुत्र महामना सत्यकर्मा हुआ १०७ सत्यकर्माका पुत्र अधिरथ हुआ यह अधिरथ सारथी हुआ सो इसने कर्णको ग्रहणकर लिया था इसी से कर्णको सूतज कहते हैं यह सब कर्णकी कथा मैं ने सम्पूर्ण तुमसेकही १०८ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

पूरुका पुत्र महातेजस्वी राजाजनमेजय हुआ उसके प्राचीततनाम पुत्रहुआ वह पूर्वदिशाका राज्य

प्राचीततस्यतनयो मनस्युश्चतथाभवत्। राजापीतायुधोनाम मनस्योरभवत्सुतः २
दायादस्तस्यचाप्यासीद् धुन्धुर्नाममहीपतिः। धुन्धोर्बहुविधःपुत्रः सम्पातिस्तस्यचा
त्मजः ३ सम्पातेस्तुरहंव्रचा भद्राश्वस्तस्यचात्मजः। भद्राश्वस्यघृतायांतु दशाप्सरसि
सूनवः ४ औचेयुश्चहृषेयुश्च कक्षेयुश्चसनेयुकः। घृतेयुश्चविनेयुश्च स्थलेयुश्चैवसत्त
मः ५ धर्मेयुःसन्नतेयुश्च पुण्येयुश्चेतितेदश। औचेयोर्ज्वलनानामभार्य्यावैतक्षकात्मजा ६
तस्यांसजनयामास अन्तिनारंमहीपतिम्। अन्तिनारोमनस्विन्यां पुत्रान्जज्ञेपरान्शुभा
न् ७ अमूर्तरयसंवीरंत्रिवनञ्चैवधार्मिकम्। गौरीकन्यातृतीयाच मान्धातुर्जननीशुभा ८
इलिनातुयमस्यासीत्कन्यायाजनयत्सुतान्। ब्रह्मवादपराक्रांतांश्लुंभदाविलिनाह्यभूत् ९
उपदानवीसुतान्लेभे चतुरस्त्विलिनात्मजात्। ऋष्यन्तमथदुष्यन्तं प्रवीरमनघंतथा १०
चक्रवर्तीततोजज्ञेदुष्यन्तात्समितिञ्जयः। शकुन्तलायांभरतोयस्यनाम्नाचभारताः ११
दौष्यन्तिंप्रतिराजानं वागूचेचाशरीरिणी। माताभस्त्रापितुःपुत्रो येनजातःसएवसः १२
भरस्वपुत्रंदुष्यन्त ! मावमंस्थाःशकुन्तलाम्। रेतोधांनयतेपुत्रः परेतंयमसादनात्।
त्वंचास्यधातागर्भस्य सत्यमाहशकुन्तला १३ भरतस्यविनष्टेषु तनयेषुपुराकिल। पु
त्राणांमातृकात्कोपात् सुमहान्संक्षयःकृतः १४ ततोमरुद्भिरानीय पुत्रःसतुबृहस्पतेः।
संक्रामितोभरद्वाजो मरुद्भिर्भरतस्यतु १५ (ऋषय ऊचुः) भरतस्यभरद्वाजः पुत्रार्थे

करताभया १ प्राचीतके मनस्युनाम पुत्रहोताभया मनस्युके पीतायुधनाम राजाहोताभया २ पीता
युधके धुंधुनाम राजा होताभया धुंधुके बहुविध नाम पुत्रहुआ उसका पुत्र संपातिनाम हुआ ३ संपा-
तिके अहंवर्चा पुत्रहुआ उसके भद्राश्व पुत्रहुआ भद्राश्वके घृता अप्सरामें ४ औचेयु १ हृषेयु २ कक्षे-
यु ३ सनेयुक ४ घृतेयु ५ विनेयु ६ स्थलेयु ७ धर्मेयु ८। ५ सन्नतेयु ९ और पुण्येयु यहदश पुत्रहुए
औचेयुके तक्षककी पुत्री ज्वलनानाम भार्य्याहोती भई ६ तिस में औचेयुसे अन्तिनारराजा उत्पन्न
हुआ अन्तिनारके मनस्विनी स्त्रीसे वीर अमूर्तरय १ और धार्मिक त्रिवन २ यह दोपुत्रउत्पन्नहुए तीसरी
गौरीनाम एककन्याभी हुई वह मान्धाताकी माताहोतीभई ७। ८ इलिना जो यमकी पुत्री है सो
ब्रह्मवादके जाननेवाले पुत्रोंको उत्पन्नकरतीभई और इलिनाशुभदा होतीभई ९ इलिनाकेपुत्रसे उप-
दानवी स्त्री ऋष्यन्त १ दुष्यन्त २ प्रवीर ३ और अनघ इनचारों पुत्रोंको जन्मती भई १० दुष्यन्त
के चक्रवर्त्ती समितिञ्जय पुत्रहुआ उसी दुष्यन्तका पुत्र शकुन्तला स्त्री में भरतहुआ इसीके नामसे
इस देशकानाम भारतहुआ ११ दुष्यन्तके पुत्र समितिंजय राजाको यह आकाश वाणी होतीभई
कि माता तो चर्मरूपहै और पुत्र पिताकाही होताहै और जिसका जो पुत्रहै वह उसीका आत्माहै १२
इस हेतुसे हेदुष्यन्त तू अपने पुत्रकापालनकर शकुन्तलाका तिरस्कार मतकर पुत्रमरेहुए पिताको
धर्मराजके स्थानसे लेआताहै और इस गर्भका धारण करानेवाला तू है अर्थात् इस शकुन्तलाके उद-
रमें तेराही गर्भ है शकुन्तला सत्यकहती है १३ इसके भरतहुए और भरतके जब सबपुत्रोंका माता
के कोपसे क्षयहोगया तब यज्ञमें मरुत् देवताओं ने बृहस्पति के पुत्र भरद्वाजको लाके राजा भरतको
दिया १४। १५ ऋषियों ने पूछा हेसूतजी मरुत् देवताओंने महातेजवाला भरद्वाज भरतको कैसे

मारुतैःकथम्। संक्रामितोमहातेजास्तन्नोब्रूहियथातथम् १६ (सूत उवाच) प्रत्य
मापन्नसत्वायामुशिजःसंस्थितोभुवि। भ्रातुर्भार्य्यांसदृष्ट्वातु बृहस्पतिरुवाचह १७
उपतिष्ठस्वलंकृत्य मैथुनायचमांशुभे!। एवमुक्ताऽब्रवीदेनं स्वयमेवबृहस्पतिम् १८
भेःपरिणतश्चायं ब्रह्मव्याहरतेगिरा। अमोघरेतास्त्वञ्चापि धर्मेचैवंविगर्हितम् १९
एवमुक्तोऽब्रवीदेनां स्वयमेवबृहस्पतिः। नोपदेष्टव्योविनयस्त्वयामेवरवर्णिनि! २०
र्षमाणःप्रसह्यैनां मैथुनायोपचक्रमे। ततोबृहस्पतिंगर्भो धर्षमाणमुवाचह २१ सन्निवि
ष्टोह्यहंपूर्वमिहनामबृहस्पते!। अमोघरेताश्चभवान् नावकाशइहद्वयोः २२ एवमुक्त
सगर्भेण कुपितःप्रत्युवाचह। यस्मात्त्वमीदृशेकाले सर्वभूतेप्सितेसति। अभिषेधसि
तस्मात्त्वं तमोदीर्घंप्रवेक्ष्यसि २३ ततःकामंसन्निवर्त्य तस्यानन्दाद्बृहस्पतेः। तद्रेतस्त्व
पतद्भूमौ निवृत्तंशिशुकोऽभवत् २४ सद्योजातंकुमारन्तु दृष्ट्वातंममताब्रवीत्। गमिष्या
मिगृहंस्वंवै भरस्वैनंबृहस्पते! २५ एवमुक्त्वागतासातु गतायांसोऽपितन्त्यजत्। मातापित
भ्यांत्यक्तन्तु दृष्ट्वातंमारुतःशिशुम्। जगृहुस्तंभरद्वाजं मरुतःकृपयास्थिताः २६ तस्मि
न्कालेतुभरतो बहुभिःक्रतुभिर्विभुः। पुत्रनैमित्तिकैर्यज्ञैरयजत्पुत्रलिप्सया २७ यदासय
जमानस्तु पुत्रंनासादयत्प्रभुः। ततःक्रतुंमरुत्सोमं पुत्रार्थेसमुपाहरत् २८ तेनतेमरुतस्त
स्य मरुत्सोमेनतुष्टुवुः। उपनिन्युर्भरद्वाजं पुत्रार्थंभरतायवै २९ दायादोऽङ्गिरसःसूनोरौर

प्राप्तकरदिया इसको आप यथार्थतासे वर्णन कीजिये १६ सूतजीने कहा कि जो बृहस्पतिजीने अपने भाईकी स्त्रीको देखकर यह वचन कहाथा कि १७ हेशुभे तू शृंगार करके मेरे मैथुनके निमित्त मुझे प्राप्तहो इसको सुनकर उसने बृहस्पतिजी से कहाथा १८ कि यह आपके भाईका पूर्व्व गर्भ है और आपभी वाणीसे वेदके वक्ताहो इसीसे तुम अमोघ वीर्य्यहो यह निन्दित कर्म आपको अयोग्य है १९ यह सुनकर बृहस्पतिने कहा कि हेशुभे मेरी आज्ञा तुझको भंगकरना योग्यनहीं है २० ऐसा कहकर कामसे पीड़ितहुए बृहस्पति हठ करके उससे मैथुनकरतेभये तब वीर्य्य पतनहोनेके समय उस गर्भ स्थित बालकने बृहस्पतिसे कहा कि २१ हे बृहस्पतिजी यहाँ पूर्व्व में स्थितहोचुकाहूं और तुम अमोघ वीर्यहो इस हेतुसे दोगर्भोंका यहाँ अवकाशनहीं है २२ जब इसप्रकार उसगर्भने कहा तब बृहस्पति जी उसपर कोपयुक्त होकर यह कहतेभये कि जो तू सर्वजीवों के सुखकारी और वाञ्छित कालमें मुझ को निषेध करताहै इससे तू दीर्घतमको प्राप्तहोगा २३ पीछे उस आनन्ददायक कामके रोकने से बृहस्पतिका वीर्य्य पृथ्वीमें गिरताभया उसीसे एक बालक होताभया २४ इस तत्काल होनेवाले बालकको देखकर उसकी माता यह वचन कहतीभई कि हेबृहस्पतिजी मैं अपने घरजातीहूं तुम इस बालकका पोषणकरो २५ ऐसा कहकर यह तो चलीगई और बृहस्पतिभी इसको त्यागकर देतेभये फिर माता पितासे त्यागेहुए इस बालकको देखकर कृपाकरके मरुत् आये और भरद्वाज नामवाले उस बालकको ग्रहणकरतेभये २६ और उसीकालमें समर्थ राजाभरत बहुतसी ऋतुओं में पुत्रकी वाञ्छाकरके यज्ञों को करता भया २७ फिर इस समर्थ यजमान राजाको उनयज्ञों से भी पुत्रकी प्राप्तिनहीं हुई तब पुत्रके निमित्त इसने मरुत्सोम यज्ञको किया २८ उस मरुत्सोम यज्ञके करने से

सस्तुबृहस्पतेः। संक्रामितोभरद्वाजो मरुद्भिर्भरतंप्रति ३० भरतस्तुभरद्वाजं पुत्रम्प्राप्य विभुर्ब्रवीत्। आदावात्महितायत्वं कृतार्थोऽहंत्वयाविभो!३१ पूर्वन्तुवितथेतस्मिन् कृतेवै पुत्रजन्मनि। ततस्तुवितथोनाम भरद्वाजोनृपोऽभवत्३२तस्मादपिभरद्वाजाद् ब्राह्मणाः क्षत्रियाभुवि। द्व्यामुष्यायणकौलीनाः स्मृतास्तेद्विविधेनच३३ततोजातेहिवितथे भरत श्चदिवंययौ। भरद्वाजोदिवंयातो ह्यभिषिच्यसुतंऋषिः ३४ दायादोवितथस्यासीद्भुव मन्युर्महायशाः। महाभूतोपमाःपुत्रा श्चत्वारोभुवमन्यवः ३५ वृहत्क्षेत्रोमहावीर्यः नरोग र्गश्चवीर्यवान्। नरस्यसंकृतिःपुत्रस्तस्य पुत्रोमहायशाः३६गुरुधीरन्तिदेवश्च सत्कृत्या न्तावुभौस्मृतौ। गर्गस्यचैवदायादःशिविर्विद्वानजायत ३७ स्मृताःशैव्यास्ततोगर्गाः क्ष त्रोपेताद्विजातयः। आहार्यतनयश्चैव धीमानासीदुरुक्षवः३८तस्यभार्याविशालातु सुषु वेपुत्रकत्रयम्। त्र्यूषणंपुष्करिंचैव कविंचैवमहायशाः ३९ उरुक्षवाःस्मृताह्येते सर्वेब्राह्म णताङ्गताः। काव्यानान्तुवराह्येते त्रयःप्रोक्तामहर्षयः ४० गर्गाःसंकृतयःकाव्याःक्षत्रोपे ताद्विजातयः। संभृताङ्गिरसोदक्षाः वृहत्क्षत्रस्यचक्षितिः ४१ वृहत्क्षत्रस्यदायादो हस्ति नामावभूवह। तेनेदंनिर्मितंपूर्वं पुरन्तुगजसाह्वयम् ४२ हस्तिनश्चैवदायादास्त्रयःपरम कीर्त्तयः। अजमीढोद्विमीढश्च पुरुमीढस्तथैवच ४३ अजमीढस्यपत्न्यस्तुतिस्रःकुरु कुलोद्वहाः। नीलिनीधूमिनीचैव केशिनीचैवविश्रुताः ४४ सतासुजनयामास पुत्रान्वैदेव वर्चसः। तपसोऽन्तेमहातेजा जातावृद्धस्यधार्मिकाः ४५ भारद्वाजप्रसादेन विस्तरंतेषुमे

मरुत् देवता भरतकी स्तुति पूर्वक प्रशंसा करके उसको वह भरद्वाज नाम पुत्र देतेभये २९ इसप्र-कारसे अंगिराके पुत्र बृहस्पतिका औरसपुत्र भरद्वाज मरुतोंने भरतको देदिया ३० फिर भरत उस समर्थ भरद्वाज पुत्रको प्राप्तहोकर यह वचन कहताभया कि हेविभो मैं अपने हितके निमित्त तुमको प्राप्तहोकर कृतार्थहुआ ३१ और प्रथम पुत्र जन्ममें वितथ अर्थात् मिथ्यामनोरथ होताभया इसहेतुसे भरद्वाजका वितथ नामहुआ ३२ उस भरद्वाजसे पृथ्वीपर जो ब्राह्मण और क्षत्री होतेभये वहद्वया-मुष्यायण और कौलीन इननामों से दोप्रकारकेहुए जब यह वितथहोगया तब भरतजी स्वर्गको जाते भये और ऋषि भरद्वाज भी पुत्रका अभिषेककरके स्वर्गमेंगये ३३।३४ वितथके महायशवाला भुवमन्यु नाम पुत्रहुआ भुवमन्युके महाभूतोंके सदृश ३५ बृहत्क्षेत्र१ महावीर्य्य २ नर और गर्ग यह चार पुत्र हुए नरके संकृति पुत्रहुआ उसके महायशाहुआ ३६ और गर्गके बहुत बुद्धिवाला विद्वान् शिविहोता भया ३७ शिविके क्षत्र संज्ञक पुत्र क्षत्र करके ब्राह्मणहुए महावीरका पुत्र बुद्धिमान् उरुक्षवहुआ ३८ उसके विशालानाम स्त्रीमें त्र्यूषण १ पुष्करि २ औरबड़े यशवालाकवि ३९ यह तीनपुत्रहुए यह सब उरुक्षवके सम्बन्धसे ब्राह्मणशरीरको प्राप्तहुएहैं औरइनतीनोंको काव्योंके श्रेष्ठमहर्षि कहते हैं ४०।४१ और गर्ग संकृति—काव्य और क्षत्रयुक्त यह ब्राह्मण हुए हैं और बड़े चतुरभी हुए हैं बृहत्क्षत्रका पुत्र क्षिति और हस्तिनामसे प्रसिद्धहै इसने प्रथम गजसाह्वयनाम पुर अर्थात् हस्तिनापुर रचाहै ४२ और हस्तीके सुन्दरकीर्तिमान् अजमीढ़ १ द्विमीढ़ २ और पुरुमीढ़ यह तीन पुत्र हुए ४३ अजमीढ़ के कुरुकुलकी बढ़ानेवाली नीलिनी १ धूमिनी २ और केशिनी यहतीन स्त्रियां विख्यातहैं ४४ उन

शृणु। अजमीढस्यकेशिन्यां कण्वःसमभवत्किल ४६ मेधातिथिःसुतस्तस्य तस्मात्का
ण्वायनाद्विजाः। अजमीढस्यभूमिन्यां जज्ञेबृहदनुर्नृपः ४७ बृहदनोर्बृहन्तोऽथबृहन्त
स्यबृहन्मनाः। बृहन्मनःसुतश्चापि बृहद्धनुरितिश्रुतः ४८ बृहद्धनोर्बृहदिषुः पुत्रस्तस्य
जयद्रथः। अश्वजित्तनयस्तस्य सेनजित्तस्यचात्मजः ४९ अथसेनजितःपुत्राश्चत्वारो
लोकविश्रुताः। रुचिराश्वश्चकाव्यश्च राजादृढरथस्तथा ५० वत्सश्चावर्तकोराजा य
स्यैतेपरिवत्सकाः। रुचिराश्वस्यदायादः पृथुसेनोमहायशाः ५१ पृथुसेनस्यपौरस्तु पौ
रान्नीपोऽथजज्ञिवान्। नीपस्यैकशतन्त्वासीत् पुत्राणाममितौजसाम् ५२ नीपाइति स
माख्याता राजानःसर्वएवते। तेषांवंशकरःश्रीमान् नीपानांकीर्त्तिवर्द्धनः ५३ काव्याच्च
समरोनाम सदेष्टसमरोऽभवत्। समरस्यपारसम्पारौ सदश्वइतितेत्रयः ५४ पुत्राःसर्व
गुणोपेता जातावैविश्रुताभुवि। पारपुत्रःपृथुर्जातः पृथोस्तुसुकृतोऽभवत् ५५ जज्ञे
सर्वगुणोपेतो विभ्राजस्तस्यचात्मजा। विभ्राजस्यतुदायादस्त्वणुहोनामवीर्य्यवान् ५६
वभूवशुकजामाता कृत्वीभर्तामहायशाः। अणुहस्यतुदायादो ब्रह्मदत्तोमहीपतिः ५७
युगदत्तःसुतस्तस्य विष्वक्सेनोमहायशाः। विभ्राजःपुनराजातो सुकृतेनेहकर्म्मणा ५८
विष्वक्सेनस्यपुत्रस्तु उदक्सेनोबभूवह। भल्लाटस्तस्यपुत्रस्तु तस्यासीज्जनमेजयः।
उग्रायुधेनतस्यार्थे सर्वेनीपाःप्रणाशिताः ५९ (ऋषय ऊचुः) उग्रायुधःकस्यसुतःकस्य

तीनों स्त्रियोंमें अजमीढ देवताओंकेसे तेजवाले पुत्रोंको उत्पन्नकरता भया यह पुत्र तपके अन्तमें
वृद्धिमान् और परम धार्मिक हुए हैं ४५ और भरद्वाजकी कृपासेहुए हैं उनकोविस्तार समेत सुनो
अजमीढके केशिनी स्त्रीमें कण्वहोताभया ४६ उसकापुत्र मेधातिथिहुआ उसीसे काण्वब्राह्मण हुए
औरअजमीढकी धूमिनीस्त्रीमें राजाबृहदनु उत्पन्नहुआ ४७ बृहदनुके बृहन्त हुआ बृहन्तके बृहन्मना
हुआ और बृहन्मनाका पुत्र बृहद्धनु हुआ ४८ बृहद्धनुका पुत्र बृहदिषुहुआ उसकापुत्र जयद्रथहुआ
उसका पुत्र अश्वजित् उसका पुत्र सेनजित् हुआ ४९ इससेनजित्के रुचिराश्व १ काव्य २ राजा
दृढरथ यहतीन हुए और चौथा चक्रवर्ती वत्सराजहुआ ५० और चक्रवर्ती वत्सराजके परिवत्सक
हुए और रुचिराश्वकापुत्र बड़ायशवाला पृथुसेनहुआ ५१ पृथुसेनकेपौरहुआ पौरके नीपहुआ नीपके
बड़ेपराक्रमी सौ१००पुत्र उत्पन्नहुए ५२ और सबनीपसे विख्यातहुए और राजाहुए उनमें श्रीमान्
वंशकाकर्त्ता और कीर्तिका बढ़ानेवाला हुआ ५३ अब काव्यकावंश कहते हैं—काव्यके समर नाम
पुत्रहुआ उसको युद्धही प्रियथा इससमरके पार—संपार और सदश्व यह तीन पुत्रहोते भये ५४
यह तीनों पुत्र सबगुणों से युक्त पृथ्वीपर विख्यातहुए इनमें से पारकापुत्र पृथुनामहुआ पृथुकेसुकृत
हुआ ५५ सुकृतका सर्वगुण संपन्न विभ्राजपुत्रहुआ विभ्राजके बड़े पराक्रमवाला अणुहनामपुत्रहुआ
यह महायशी अणुह शुक्रकाजामाता और कृत्वीकाभर्त्ताहुआ अणुहकापुत्र राजाब्रह्मदत्तहुआ ५६।५७
ब्रह्मदत्तके युगदत्तहुआ उसके महायशी विष्वक्सेनहुआ यह सुकृतकर्मोंसे राजाहुआ ५८ विष्वक्सेन
के उदक्सेनहुआ उसके भल्लाटहुआ उसके जनमेजयहुआ फिर उग्रायुधने संपूर्ण नीपसंज्ञक राजा
नष्टकरदिये ५९ यहसुनकर ऋषियोंने पूछा कि हेसूतजी उग्रायुध किसकापुत्रहुआ और किसके वंश

वंशेसकथ्यते। किमर्थंतेनतेनीपास्सर्वेचैवप्रणाशिताः ६० (सूत उवाच) उग्रायुधःसूर्य्य वंश्यस्तपस्तेपेवराश्रमे। स्थाणुभूतोऽष्टसाहस्रन्तंभेजेजनमेजयः ६१ तस्यराज्यंप्रतिश्रु त्यनीपानाजघ्निवान्प्रभुः। उवाचसांत्वंविविधंजघ्नुस्तेवैह्युभावपि ६२ हन्यमानागतान् चेयस्माद्धेतोर्नमेवचः। शरणागतरक्षार्थंतस्मादेवंशपामिवः६३यदिमेऽस्तितपस्तप्तंसर्वा न्नयतुवोयमः। ततस्तान्कृष्यमाणांस्तुयमेनपुरतःसतु ६४ कृपयापरयाविष्टोजनमेजयमू चिवान्। गतानेतानिमान्वीरांस्त्वंमेरक्षितुमर्हसि६५ (जनमेजयउवाच) अरेपापा! दुरा चारा! भविताशेऽस्यकिंकराःतथेत्युक्तस्ततोराजायमेनयुयुधेचिरम् ६६ व्याधिभिर्नारकै र्घोरैर्यमेनसहतान्बलात्।विजित्यमुनयेप्रादात्तदद्भुतमिवाभवत्६७यमस्तुष्टस्ततस्तस्मै मुक्तिज्ञानंददौपरम्। सर्वेयथोचितंकृत्वाजग्मुस्तेकृष्णमव्ययम् ६८ येषान्तुचरितंगृह्यह न्यन्तेनापमृत्युभिः। इहलोकेपरेचैवसुखमक्षय्यमश्नुते ६९ अजमीढस्यधूमिन्यांविद्वान् जज्ञेयवीनरः। धृतिमांस्तस्यपुत्रस्तु तस्यसत्यधृतिःस्मृतः। अथसत्यधृतेःपुत्रो दृढनेमिः प्रतापवान्७०दृढनेमिसुतश्चापिसुधर्मानामपार्थिवः।आसीत्सुधर्मतनयःसार्वभौमःप्रता पवान् ७१ सार्वभौमेतिविख्यातःपृथिव्यामेकराट्विभौ। तस्यान्ववायेमहति महापौरवन न्दनः ७२ महापौरवपुत्रस्तु राजारुक्मरथःस्मृतः। अथरुक्मरथस्यासीत् सुपार्श्वोनाम पार्थिवः ७३ सुपार्श्वतनयश्चापिसुमतिर्नामधार्मिकः।सुमतेरपिधर्मात्माराजासन्नतिमान

में हुआ और इसने किसहेतुसे संपूर्णनीपराजाओं को नष्टकिया इसको विस्तारपूर्वक कहिये ६० सूतजीने कहा कि हेऋषियो उग्रायुधसूर्य्यवंश में हुआ और श्रेष्ठआश्रम में लक्कड़साहोकर अठारह हज़ार वर्षतक तपकरतारहा और राज्यके निमित्त इसको जनमेजय भजताभया ६१ यह जनमेजय को राज्यकी आज्ञादेकर नीपोंको मारताभया फिर उग्रायुधने शान्ति के वचनभी कहे तो भी नीपों ने इन दोनोंको मारा ६२ फिर उग्रायुध कहनेलगा कि जो तुमने शरणागतकी रक्षाके निमित्तमेरा वचन नहीं माना इसहेतुसे मैं तुमको शापदेताहूं ६३ कि जोमैंने कुछ तपकियाहै तो तुमसबलोगों को यमदेवताक्षेजांय फिर इसवचन के कहतेही यमराज इनसबको खेंचताभया ६४ फिर कृपाकरके उग्रायुध जनमेजय से यह वचन कहनेलगा कि हेजनमेजय तू इनवीरोंकी रक्षाकरनेको योग्यहै ६५ यह सुनकर उनसबसे कहनेलगा रेपापी दुराचारियो तुम उग्रायुधके किंकरहोजाओ ऐसे कहकर जनमेजय यमसे युद्धकरनेलगा ६६ फिर व्याधियों समेत घोरनरक और यम सहित नीपोंकोजीत कर वह जनमेजय मुनिउग्रायुध को देताभया यह बड़ाआश्चर्य्यसा हुआ ६७ पीछे यम प्रसन्नहोकर जनमेजयको मुक्तिज्ञान देताभया फिर वह सबनीपभी यथोचित कर्म करके अव्यय अविनाशीकृष्णको प्राप्तहुए ६८ जो कोई इनके चरित्रोंको सुनताहै वह अपमृत्यु से नहींमरता और इसलोक वा पर-लोक दोनों में अक्षय सुखकोप्राप्तहोता है यह अजमीढकी एकरानीका वंशहुआ ६९ और अजमीढ की धूमिनी नामरानी में विद्वान् यवीनर उत्पन्नहुआ उसके धृतिमान् पुत्रहुआ उसके सत्यधृतिहुआ सत्यधृति के प्रतापी दृढनेमिहुआ ७० दृढनेमिकापुत्र सुधर्मानाम राजाहुआ सुधर्माकापुत्र प्रताप-वान् सार्वभौमहुआ ७१ यह सब पृथ्वीका चक्रवर्तीहुआ इसके उत्तमवंशमें महापौरवहुआ ७२ महा-

पि७४तस्यासीत्सन्नतिमंतः कृतोनामसुतोमहान्।हिरण्यनाभिनःशिष्यः कौशल्यस्यमहा त्मनः७५चतुर्विंशतिधायेन प्रोक्तावैसामसंहिताः।स्मृतास्तेप्राच्यसामानःकार्त्तानामेहसा मगाः ७६कार्तिरुग्रायुधःसोवै महापौरववर्द्धनः।बभूवयेनविक्रम्यपृथुकस्यपिताहतः ७७ नीलोनाममहाराजःपञ्चालाधिपतिर्वशी। उग्रायुधस्यदायादःक्षेमोनाममहायशाः ७८ क्षेमात्सुनीथःसंजज्ञे सुनीथस्यनृपञ्जयः। नृपञ्जयाच्चविरथ इत्येतेपौरवाःस्मृताः७९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपौरववंशवर्णनोनामैकोनपञ्चाशत्तमोध्यायः ४९॥

(सूत उवाच)अजमीढस्यनीलिन्यां नीलःसमभवन्नृपः।नीलस्यतपसोग्रेणसुशान्ति रुपपद्यत१पुरुजानुःसुशान्तेस्तु पृथुस्तुपुरुजानुतः। भद्राश्वःपृथुदायादोभद्राश्वतनया नृशृणु २मुद्गलश्चजयश्चैव राजाबृहदिषुस्तथा। जवीनरश्चविक्रान्तःकपिलश्चैवपञ्च मः३पञ्चानाञ्चैवपञ्चालानेतान् जनपदान्विदुः।पञ्चालंरक्षिणोह्येते देशानामितिनः श्रुतम् ४ मुद्गलस्यापिमौद्गल्याः क्षत्रोपेताद्विजातयः। एतेह्याङ्गिरसःपक्षं संश्रिताःकाण्वः मुद्गलाः ५ मुद्गलस्यसुतोजज्ञे ब्रह्मिष्ठःसुमहायशाः। इन्द्रसेनःसुतस्तस्य विन्ध्याश्वस्त स्यचात्मजः ६ विन्ध्याश्वान्मिथुनंजज्ञे मेनकायामितिश्रुतिः। दिवोदासश्चराजर्षिरह ल्याचयशस्विनी ७ शरद्वतस्तुदायादमहल्यासम्प्रसूयत। शतानन्दमृषिश्रेष्ठं तस्या पिसुमहातपाः ८ सुतःसत्यधृतिर्नाम धनुर्वेदस्यपारगः। आसीत्सत्यधृतेःशुक्रममोघं

पौरवका पुत्र राजा रुक्मरथहुआ रुक्मरथ के सुपार्श्वनाम राजा होताभया ७३ सुपार्श्वकापुत्रबड़ा धर्मिष्ठ सुमतिनामहुआ सुमति के महात्मा सन्नतिमानहुआ ७४ सन्नतिमान् के कृतनाम पुत्रहुआ वह हिरण्यनाभि कौशल्यमहात्मा का शिष्यहुआ ७५ इसकृतने चौबीसप्रकार की सामसंहिताकही है उस सामके गानेवालों का नाम कार्त्तसंज्ञक सामगहुआ है ७६ कृतकापुत्र उग्रायुध जोहुआ वह महापौरववंश का बढ़ानेवाला हुआ उसीने अपने पराक्रम से पृथुक के पिताको मारा ७७ वह पृथुकका पिता नीलनाम से विख्यात पंजाबकाराजाथा और उग्रायुधका पुत्र महायशवाला क्षेम हुआ ७८ क्षेम के सुनीथहुआ सुनीथ के नृपंजयहुआ और नृपंजय के विरथ हुआ इस प्रकारसे यह पौरव राजा हुए हैं ७९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९॥

सूतजीबोले कि हे ऋषियो अजमीढ़के नीलिनीनाम रानीमें नीलनाम पुत्रहुआ नीलके उग्रतप करके सुशान्तिनाम पुत्रहुआ १ सुशान्तिके पुरुजानु हुआ पुरुजानुके पृथुहुआ पृथुका पुत्र भद्राश्व हुआ हे ऋषिलोगो अब भद्राश्वके पुत्रोंको सुनो २ मुद्गल-जय-बृहदिषु-जवीनर और कपिल यह पांचपुत्र हुए ३ यह पांचों पंजाबके पांचोंदेशोंके राजाहुए और धर्म से पंजाबकी रक्षाकरतेभये सूत जी कहतेहैं कि हमने यहसुनाहै ४ कि इनमेंसे मुद्गलके मौद्गल जो विख्यातहुए वह क्षत्रधर्म युक्त ब्राह्मणहुए यह मौद्गल और पूर्व्वकहेहुए काण्व दोनों अंगिराके पक्षके आश्रयहोते भये ५ मुद्गल के महायशी ब्रह्मिष्ठनाम पुत्रहुआ उसकापुत्र इन्द्रसेनहुआ उसकापुत्र विंध्याश्व हुआ ६ विंध्याश्व के मेनका नामरानीमें राजर्षि दिवोदास और एक महायशवाली अहल्यानाम पुत्रीहुई ७ अहल्या के शरद्वान् से ऋषियों में श्रेष्ठ महातपवाले शतानन्द हुए ८ शतानन्द के सत्यधृति पुत्रहुआ यह

धार्मिकस्यतु ९ स्कन्नंरेतःसत्यधृतेर्दृष्ट्वा चाप्सरसंजले। मिथुनंतत्रसम्भूतं-तस्मिन्स
रसिसम्भृतम् १० ततःसरसितस्मिंस्तु क्रममाणंमहीपतिः। दृष्ट्वाजग्राहकृपया शन्त
नुर्मृगयांगतः ११ एतेशरद्वतःपुत्राआख्यातागौतमावराः। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि दिवो
दासस्यवैप्रजाः १२ दिवोदासस्यदायादो धर्मिष्ठोमित्रयुर्नृपः। मैत्रायणावरःसोऽथ मैत्रे
यस्तुततःस्मृतः १३ एतेवंश्यायतेःपक्षाः क्षत्रोपेतास्तुभार्गवाः। राजाचैद्यवरोनाम मैत्र
यस्यसुतःस्मृतः १४ अथचैद्यवरात्विद्वान्सुदासस्तस्यचात्मजः। अजमीढःपुनर्जातः
क्षीणेवंशेतुसोमकः १५ सोमकस्यसुतोजन्तुर्हतेतस्मिन् शतं बभौ। पुत्राणामजमीढस्य
सोमकस्यमहात्मनः १६ महिषीत्वजमीढस्य धूमिनीपुत्रवर्द्धिनी। पुत्राभावेतपस्तेपे श
तंवर्षाणिदुश्चरम् १७ हुत्वाग्निंविधिवत्सम्यक् पवित्रीकृतभोजना। अग्निहोत्रक्रमेणै
व सासुष्वापमहाव्रता १८ तस्यांवैधूमवर्णायामजमीढःसमीयिवान्। ऋक्षंसाजनया
मास धूमवर्णंशताग्रजम् १९ ऋक्षात्संवरणोजज्ञे कुरुःसंवरणात्ततः। यःप्रयागमति
क्रम्य कुरुक्षेत्रमकल्पयत् २० कृष्यतस्तुमहाराजो वर्षाणिसुबहून्यथ। कृष्यमाणस्ततः
शक्रो भयात्तस्मैवरन्ददौ २१ पुण्यञ्चरमणीयञ्च कुरुक्षेत्रन्तुतत्स्मृतम्। तस्यान्ववा
यःसुमहान् यस्यनाम्नातुकौरवाः २२ कुरोस्तुदयिताःपुत्राः सुधन्वाजह्नुरेवच। परीक्षि
च्चमहातेजाः प्रजनश्चारिमर्दनः २३ सुधन्वनस्तुदायादः पुत्रोमतिमतांवरः। च्यवन

धनुर्विद्याका बड़ाज्ञाताहुआ इस धार्मिक सत्यधृतिका अमोघवीर्य्य होताभया ९ इससत्यधृतिका वीर्य्य अप्सराको देखकर जलमें गिरा उसजलगतवीर्य्यसे सरोवरमें एकपुत्र और पुत्री यह दोउत्पन्न हुए १० फिर उसीसमयमें राजा शन्तनुशिकारको गया वहाँ सरोवरमें उस पुत्र पुत्रीके जोड़ेको देख कृपाकरके ले आताभया ११ यह सब शरद्वान्के पुत्र गौतमवर विख्यातहुए अब इसकेपीछे सूतजी दिवोदासकी संतानकावर्णन करतेभये १२ दिवोदासका पुत्र बड़ा धर्मिष्ठ मित्रयुहुआ और मित्रयुके मैत्रेय पुत्र हुआ १३ यह सब क्षत्र जातियुक्त भार्गवहुए मैत्रेयकापुत्र राजा चैद्यवर नाम होताभया १४ चैद्यवरका पुत्र विद्वान् सुदासहुआ सुदासके दूसरा अजमीढ़ हुआ अजमीढ़ के सोमकहुआ १५ सोमक के जन्तुनाम पुत्र हुआ और अजमीढ़के पुत्रोंके मध्यमें महात्मा सोमकहुआ १६ जब सोमक मारागया तब अजमीढ़कीरानी धूमिनी पुत्रके बढ़ानेवाले पुत्रके अभावसे महादुष्कर तप करतीभई १७ वह धूमिनी विधिवत् अग्निमें अग्निहोत्रादि कर्मसे और पवित्र भोजनादिकोकर महाव्रतमें संयुक्त होकर सोतीभई १८ और उस धूम्रवर्णासे अजमीढ़ विषय करताभया तब वह धूम्रवर्ण ऋक्ष को जन्मती भई यह ऋक्ष बड़ा पराक्रमी हुआ १९ ऋक्षसे संवरण हुआ संवरणसे कुरुहुआ जो कुरु कि प्रयागको उल्लंघन करके कुरुक्षेत्रको रचताभया २० यह महाराज बहुत वर्षतक इन्द्रके आवाहन के लिये तपकरताभया तब भयसे इन्द्र उसकेपास आकर उसकोवर देताभया २१ इसीसे कुरुक्षेत्र महापवित्र और रमणीय कहाहै उस कुरुकेवंशकी वृद्धि हुई जिसकेनामसे कौरव कहाते हैं २२ कुरु के प्रियपुत्र सुधन्वा--जह्नु--परीक्षित्--प्रजन और अरिमर्दन यह पांचों महातेजस्वी और धर्मात्मा हुएहैं २३ इनमें सुधन्वाका पुत्र बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ च्यवनहुआ च्यवनकापुत्र धर्म अर्थका जाननेवाला

स्तस्यपुत्रस्तु राजाधर्मार्थतत्त्ववित् २४ च्यवनस्यकृमिःपुत्र ऋक्षाज्जज्ञेमहातपाः। कृ
मेःपुत्रोमहावीर्यः ख्यातइन्द्रसमोविभुः २५ चैद्योपरिचरोवीरो वसुर्नामान्तरिक्षगः। चै
द्योपरिचराज्जज्ञे गिरिकासप्तवैसुतान् २६ महारथोमगधराट् विश्रुतोयोबृहद्रथः। प्र
त्यश्रवाःकुशश्चैव चतुर्थोहरिवाहनः २७ पञ्चमश्चयजुश्चैव मत्स्यःकालीचसप्तमी।
बृहद्रथस्यदायादः कुशाग्रोनामविश्रुतः २८ कुशाग्रस्यात्मजश्चैव वृषभोनामवीर्यवान्।
वृषभस्यतुदायादः पुण्यवान्नामपार्थिवः २९ पुण्यःपुण्यवतश्चैव राजासत्यधृतिस्ततः।
दायादस्तस्यधनुषस्तस्मात् सर्वश्चजज्ञिवान् ३० सर्वस्यसम्भवःपुत्रस्तस्माद्राजाबृह
द्रथः। द्वेतस्यशकलेजातेजरयासन्धितश्चसः ३१ जरयासन्धितोयस्माज्जरासन्धस्ततः
स्मृतः।जेतासर्वस्यक्षत्रस्यजरासन्धोमहाबलः३२जरासन्धस्यपुत्रस्तुसहदेवःप्रतापवान्
सहदेवात्मजःश्रीमान्सोमवित्समहातपाः३३श्रुतश्रवास्तुसोमादेर्मागधाःपरिकीर्तिताः।
जह्नुस्त्वजनयत्पुत्रंसुरथंनामभूमिपम् ३४ सुरथस्यतुदायादो वीरोराजाविदूरथः। विदू
रथसुतश्चापिसार्वभौमइतिस्मृतः ३५ सार्वभौमाज्जयत्सेनोरुचिरस्तस्यचात्मजः। रुचि
रात्तुततोभौमस्त्वरितायुस्ततोऽभवत् ३६ अक्रोधनस्त्वायुसुतस्तस्माद्देवातिथिःस्मृतः।
देवातिथेस्तुदायादो दक्षएवबभूवह ३७ भीमसेनस्ततोदक्षात् दिलीपस्तस्यचात्मजः।
दिलीपस्यप्रतीपस्तु तस्यपुत्रास्त्रयःस्मृताः ३८ देवापिःशन्तनुश्चैव बाह्लीकश्चैवतेत्र
यः। बाह्लीकस्यतुदायादाः सप्तबाह्लीश्वरानृपा। देवापिस्तुह्यपध्यातः प्रजाभिरभवन्
मुनिः ३९ (मुनयऊचुः) प्रजाभिस्तुकिमर्थंवै अपध्यातोजनेश्वरः। कोदोषोराजपुत्रस्य

ऋक्षहुआ ऋक्षका पुत्र बड़ातपस्वी कृमिनामपुत्रहुआ कृमिके इन्द्रके समान प्रसिद्धशूरवीरमहावीर्य
अन्तरिक्षमें चलनेवाला चैद्योपरिचरनामपुत्रहुआ जिसका दूसरानाम वसुकहतेहैं उसचैद्योपरिचरसे
गिरिकानाम रानी सातपुत्रोंको उत्पन्न करतीभई उनकेनाम महारथ मगधका राजाबृहद्रथ १ प्रत्य-
श्रवा २ कुश ३ हरिवाहन ४ यजु ५ मत्स्य ६ और सातवीं कालीनाम कन्याहुई इनमें बृहद्रथकापु-
त्र कुशाग्रनामहुआ२४।२८कुशाग्रकापुत्र वीर्य्यमान् वृषभनामहुआ वृषभका पुत्र राजापुण्यवान्हुआ
२९ पुण्यवान्के पुण्यनाम राजाहुआ उसकापुत्र सत्यधृति सत्यधृतिके धनुषनाम और धनुषनामके
सर्वनाम वाला पुत्रहुआ ३० सर्वका संभव नाम पुत्रहुआ उसका पुत्रराजा बृहद्रथहुआ राजाबृहद्रथ
केपुत्रके दोखण्डहुए उनदोनोंखण्डोंको जरा नाम राक्षसीने जोड़दिया ३१ तबजराके जोड़देनेसे उस
का नामजरासन्ध हुआ वहसब क्षत्रियोंका जीतनेवाला औरमहापराक्रमीहुआ ३२ जरासन्धका पुत्र
प्रतापवान् सहदेव हुआ सहदेवके पुत्रश्रीमान् और बड़ा तपस्वी सोमवित् हुआ ३३ श्रुतश्रवा और
सोमादिसे मागधराजा कहेगये हैं और राजा जह्नुकापुत्र सुरथनाम राजाहुआ३४सुरथका पुत्रराजा
विदूरथहुआ विदूरथकापुत्र सार्वभौमनामराजा हुआ ३५ सार्वभौम के जयत्सेन हुआ उसका पुत्र
रुचिरनामहुआ रुचिरके भौमहुआ उसकापुत्र त्वरितायुनामहुआ ३६ उसके अक्रोधन अक्रोधनके
देवातिथि और देवातिथिका पुत्र दक्षहोताभया ३७ दक्षसेभीमसेन उसकापुत्र दिलीपहुआ दिलीप
कापुत्र प्रतीपहुआ३८उसकेदेवापि शन्तनु और बाह्लीक यहतीनपुत्रहुए हेराजा इनमें बाह्लीकके

प्रजाभिःसमुदाहृत ४० (सूतउवाच) किलासीद्राजपुत्रस्तु कुष्ठितंनाभ्यपूजयन्। भवि
ष्यंकीर्तयिष्यामि शन्तनोस्तुनिबोधत ४१ शन्तनुस्त्वभवद्राजा विद्वान्सोवैमहाभिष
क्। इदंचोदाहरन्त्यत्र श्लोकंप्रतिमहाभिषक् ४२ यंयंकराभ्यांस्पृशति जीर्णरोगिणमे
वच। पुनर्युवाचभवति तस्मात्तंशन्तनुंविदुः ४३ ततस्यशन्तनुत्वंहि प्रजाभिरिहकी
र्त्यते। ततोवृणुतभार्यार्थं शन्तनुर्जाह्नवींनृप! ४४ तस्यांदेवव्रतंनाम कुमारंजनयद्
विभुः। कालींविचित्रवीर्य्यन्तु दाशेय्यजनयन्सुतम् ४५ शन्तनोर्दयितंपुत्रं शान्ता
त्मानमकल्मषम्। कृष्णद्वैपायनोनाम क्षेत्रेवैचित्रवीर्य्यके ४६ धृतराष्ट्रञ्चपाण्डुञ्च
विदुरंचाप्यजीजनत्। धृतराष्ट्रस्तुगान्धार्य्यां पुत्रानजनयच्छतम् ४७ तेषांदुर्योधनः
श्रेष्ठः सर्व्वक्षत्रस्यवैप्रभुः। माद्रीकुन्तीतथाचैव पाण्डोर्भार्येबभूवतुः ४८ देवदत्ताःसुताः
पञ्च पाण्डोरर्थेऽभिजज्ञिरे। धर्माद्युधिष्ठिरोजज्ञे मारुताच्चवृकोदरः ४९ इन्द्राद्धनञ्जय
श्चैव इन्द्रतुल्यपराक्रमः। नकुलंसहदेवञ्च माद्र्यश्विभ्यामजीजनत् ५० पञ्चै
तेपाण्डवेभ्यस्तु द्रौपद्यांजज्ञिरेसुताः। द्रौपद्यजनयच्छ्रेष्ठं प्रतिविन्ध्यंयुधिष्ठिरात् ५१
श्रुतसेनंभीमसेनाच्छ्रुतकीर्तिंधनञ्जयात्। चतुर्थंश्रुतकर्माणं सहदेवादजायत ५२ न

बाह्लीश्वर सातपुत्रहुए और देवापि प्रजाओं करके त्यागाहुआ मुनिहोताभया ३९ मुनिलोग बोले कि हेसूतजी उसदेवापिको राजाओंने और प्रजालोगोंने किस हेतुसे त्यागा ऐसाउसराजपुत्रका क्या दोषथा जिससे किसीप्रजानेभी उसको अंगीकार नहीं किया ४० सूतजीने कहा हे ऋषियो यहराज पुत्रकुष्ठी होगया था इस हेतुसे सबने त्याग दिया हे मुनिलोगो अब मैं भविष्य शन्तनु के वंशको कहताहूं उसको मनलगाकर सुनो ४१ यह शन्तनु बड़ा वैद्य और विद्वान् राजा होताभया वैद्यक में इसका ऐसायश वर्णन करते हैं ४२ कि जिस जीर्णरोगी का यह स्पर्श करताथा वह असाध्यरोगीभी रोगसे रहित होकर तरुण होजाताथा इसी हेतुसे इसको शन्तनु अर्थात् कल्याण करनेवाला कहा है सब प्रजाओं ने इसके शन्तनु भावको वर्णन किया है हे राजा यह शन्तनु श्रीजाह्नवी गंगाजीको अपनी भार्य्या बनावता भया ४३।४४ उसी जाह्नवी से यह समर्थ देवव्रत भीष्मजी उत्पन्नहुए और शन्तनुकी कालीनाम भार्य्यासे विचित्रवीर्य्य उत्पन्न होताभया और शन्तनु के प्रियपुत्र शान्तात्मा पापरहित वेदव्यासजी विचित्रवीर्य्य के क्षेत्रमें ४५।४६ धृतराष्ट्र पाण्डु और विदुर इनतीन पुत्रों को उत्पन्न करतेभये इनमें धृतराष्ट्रके गान्धारीस्त्रीमें सौपुत्र हुए ४७ इन सौपुत्रोंमें सबसे बड़ा दुर्योधन सम्पूर्ण क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ और समर्थहुआ और दूसरे धृतराष्ट्रके छोटेभाई पाण्डुकी कुन्ती और माद्री यहदोरानी होतीभई ४८ फिर पाण्डुके देवताओं के दियेहुए पांच पुत्रहुए प्रथम धर्मराजसे बड़ापुत्र युधिष्ठिरहुआ दूसरा पवनसे भीमसेनहुआ ४९ और तीसराइन्द्रसे इन्द्रकेही समान अर्जुन हुआ और पाण्डुकी दूसरी माद्री स्त्रीमें अश्विनी कुमारोंके सम्बन्धसे नकुल और सहदेव यह दोपुत्र होते भये ५० इन पाण्डुराजाके पांचों पुत्रोंकी एकरानी द्रौपदी हुई इसमें पांचों भर्त्ताओंके पांच पुत्रहुए युधिष्ठिरसे द्रौपदीमें प्रतिविन्ध्यहुआ ५१ भीमसेनसे श्रुतसेनहुआ—अर्जुनसे श्रुतकीर्तिहुआ सहदेव से चौथाश्रुतकर्मा हुआ ५२ और नकुलसे पांचवाँ शतानीक उत्पन्न होताभया इसरीतिसे द्रौपदीके

कुलाच्चशतानीकं द्रौपदेयाःप्रकीर्त्तिताः । तेभ्योऽपरेपाण्डवेया षडेवान्येमहारथाः ५३
हैडम्बोभीमसेनात्तु पुत्रोजज्ञेघटोत्कचः । काशीबलधरात्भीमात् जज्ञेवैसर्वगंसुतम् ५४
सुहोत्रंतनयंमाद्री सहदेवादसूयत । करेणुमत्यांचैद्यायांनिरमित्रस्तुनाकुलिः ५५ सुभद्रा
यांरथीपार्थादभिमन्युरजायत । यौधेयंदेवकीचैव पुत्रंजज्ञेयुधिष्ठिरात् ५६ अभिमन्योः
परीक्षित्तु पुत्रःपरपुरञ्जयः । जनमेजयःपरीक्षितः पुत्रःपरमधार्मिकः ५७ ब्रह्माणंकल्पया
मास सवैवाजसनेयकम् । सवैशम्पायनेनैव शप्तःकिलमहर्षिणा ५८ नस्थास्यतीहदुर्बुद्धे
तवैतद्वचनंभुवि । यावत्स्थास्यासित्वंलोके तावदेवप्रपत्स्यंति ५९ क्षत्रस्यविजयंज्ञात्वा
ततःप्रभृतिसर्वशः । अभिगम्यस्थिताश्चैव नृपञ्चजनमेजयम् ६० ततःप्रभृतिशापेन
क्षत्रियस्यतुयाजिनः । उत्सन्नायाजिनोजज्ञे ततःप्रभृतिसर्वशः ६१ क्षत्रस्ययाजिनःकेचि
त् शापात्तस्यमहात्मनः । पौर्णमासेनहविषा इष्ट्वातस्मिन्प्रजापतिम् । सवैशम्पायने
नैव प्रविशन्वारितस्ततः ६२ परीक्षितःसुतःसोवै पौरवोजनमेजयः । द्विरश्वमेधमाहृत्य
महावाजसनेयकः ६३ प्रवर्तयित्वातंसर्वं मृषिंवाजसनेयकम् । विवादेब्राह्मणैस्साधमभि
शप्तोवनंययौ ६४ जनमेजयाच्छतानीकस्तस्माज्जज्ञेसवीर्यवान् । जनमेजयःशतानीकं
पुत्रंराज्येऽभिषिक्तवान् ६५ अथाश्वमेधेनततः शतानीकस्यवीर्यवान् । जज्ञेऽधिसोमकृ
ष्णाख्यः साम्प्रतंयोमहायशाः ६६ तस्मिन्शासतिराष्ट्रेतु युष्माभिरिदमाहृतम् । दुरा
पंदीर्घसत्रंवै त्रीणिवर्षाणिपुष्करे । वर्षद्वयंकुरुक्षेत्रे दृषद्वत्यांद्विजोत्तमाः! ६७ (मुनयऊ
पांचोंसे पांचपुत्रहुए उनपाण्डवों से इनके पांचों भाई के सिवाय और छःपुत्र होतेभये ५३ भीम
सेनसे हिडम्बाराक्षसीमें घटोत्कच और इसी काशिबलधारी भीमसेनसे सर्वगनाम पुत्रहुआ ५४ सह
देवसे सुहोत्र पुत्रहुआ और नकुलसे करेणुमती स्त्रीमें निरमित्र पुत्रहुआ ५५ सुभद्रास्त्रीमें अर्जुनसे
अभिमन्युनाम रथीपुत्रहुआ औरयुधिष्ठिरसे देवकी स्त्री सौधेय पुत्रको जनतीभई ५६ अभिमन्युसे पर
पुरकाजीतनेवाला परीक्षितहुआ परीक्षितसे परमधार्मिक जनमेजय नामपुत्रहुआ ५७ वहजनमेजय
जबब्रह्माको वाजसनेयक रचताभया तबवैशम्पायनमहर्षिने यहशापदेदिया ५८ किहेदुर्बुद्धे तेरायहवचन
पृथ्वीपर नहींठहरेगा औरजबतक तू इसलोकमेंठहरेगा तबतक तेराराज्य क्षत्र विजयको प्राप्तहोगा ५९
इसप्रकार सम्पूर्णराजा लोग क्षत्रविजयको जानकर जनमेजय राजाके पास आकर वर्त्तमानहुए ६०
उसदिनके शापसे क्षत्रियोंका यज्ञकरानेवाला यज्ञमें अतिदुःखयुक्तरहताभया ६१ औरबहुतसे क्षत्रियोंके
यज्ञकराने वाले क्षत्रयाजी उसमहात्माके शाप से पूर्णमास यज्ञसे प्रजापतिका पूजनकरके अग्नि में
प्रवेशकरनेलगे तबउनको वैशम्पायनने निवारण किया फिर वह परीक्षितकापुत्र जनमेजय दोमहावा
जसनेयक यज्ञोंकोकरके ६२।६३ और उसवाजसनेयक सर्वऋषिको प्रवृत्तकरके ब्राह्मणोंकेसाथ विवा
दके करने से शापित होकर बनको चलागया ६४ जनमेजयकापुत्र शतानीक बड़ापराक्रमी होताभया
औरजनमेजय शतानीकको राज्यतिलक देताभया ६५ फिर शतानीक अश्वमेध यज्ञ करके बड़े यशी
और महापराक्रमी अधिसोम कृष्णनाम पुत्रको उत्पन्न करताभया ६६ सूतजीनेकहा हेऋषियोवही
अब राज्यकररहाहै और इसीके राज्यमें तुमने पुष्कर तीर्थमें तीन वर्षतक अतिविस्तृतयज्ञ रचकर

चुः) भविष्यंश्रोतुमिच्छामः प्रजानांलोमहर्षणे। पुराकिलयदेतद्वै व्यतीतंकीर्तितंत्वया
६८ येषुवैस्थास्यतक्षत्रं उत्पत्स्यन्तेनृपाश्चये।तेषामायुःप्रमाणंच नामतश्चैवतान्नृपान्
६९ कृतयुगप्रमाणञ्च त्रेताद्वापरयोस्तथा। कलियुगप्रमाणंच युगदोषयुगक्षयम् ७०
सुखदुःखप्रमाणञ्च प्रजादोषंयुगस्यतु। एतत्सर्वंप्रसंख्याय पृच्छतांब्रूहिनःप्रभो! ७१
सूतउवाच)यथामेकीर्तितंपूर्वं व्यासेनाक्लिष्टकर्म्मणा। भाव्यंकलियुगञ्चैव तथामन्वन्त
राणिच ७२ अनागतानिसर्वाणि ब्रुवतोमेनिबोधत। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि भविष्यायेनृपा
स्तथा७३ऐडेक्ष्वाकान्वयेचैव पौरवेचान्वयेतथा। येषुसंस्थास्यतेतच्च ऐडेक्ष्वाकुकुलंशुभ
म्। तान्सर्वान्कीर्त्तयिष्यामि भविष्येकथितान्नृपान्७४तेभ्योऽपरेऽपियेत्वन्ये ह्युत्पत्स्य
न्तेनृपाःपुनः। क्षत्राःपारशवाःशूद्रास्तथान्येयेमहीश्वराः ७५ अन्धाःशकाःपुलिन्दाश्च
चूलिकायवनास्तथा। कैवर्त्ताभीरशवरा येचान्येम्लेच्छसम्भवाः। पर्य्यायतःप्रवक्ष्यामि
नामतश्चैवतान्नृपान्७६ अधिसोमकृष्णश्चैतेषां प्रथमंवर्त्ततेनृपः। तस्यान्वयायेवक्ष्या
मि भविष्येकथितान्नृपान् ७७ अधिसोमकृष्णपुत्रस्तु विवक्षुर्भवितानृपः। गंगयातुहृते
तस्मिन् नगरेनागसाह्वये ७८ त्यक्त्वाविवक्षुर्नगरं कौशाम्ब्यान्तुनिवत्स्यति। भविष्या
ष्टौसुतास्तस्य महाबलपराक्रमाः ७९ भूरिर्ज्येष्ठःसुतस्तस्य तस्यचित्ररथःस्मृतः। शुचिद्र
वश्चित्ररथात् वृष्णिमांश्चशुचिद्रवात् ८० वृष्णिमतःसुषेणश्च भविष्यतिशुचिर्नृपः।
तस्मात्सुषेणात्भविता सुनीथोनामपार्थिवः८१ नृपात्सुनीथाद्भविता नृचक्षुःसुमहायशाः

दोवर्ष कुरुक्षेत्रमें और एकवर्षदृषद्वतीके तीरपर यज्ञकिया है ६७ इससब वृत्तान्तको सुनकर ऋषियों
ने कहाकि हेसूतजी यहतो तुमने व्यतीतकथा वर्णनकरी अबहम आपसे आगे होनेवाली भविष्य
प्रजाओंकी कथाओंको सुनना चाहते हैं ६८ जिन प्रजाओंमें क्षत्रिय स्थितहोंगे और उत्पन्नहोंगेउन
राजाओंकी आयुका प्रमाण और नामव्योरे समेत कहिये ६९ इनसबवृत्तान्तोंके सिवाय सत्ययुग १
त्रेता-द्वापर और कलियुग इनचारोंका प्रमाणभी कहिये और युगदोष वा युगक्षयकोभी संख्यापूर्वक
वर्णन कीजिये ७०।७१ यहसुनकर सूतजीबोले हेऋषिलोगो जैसे कि व्यासजीने होनेवालेकलियुग
और मन्वन्तर मेरे आगे कहे हैं ७२ उनआगे होनेवाले सम्पूर्ण युगादिकों और उनयुगोंमें होनेवाले
राजाओं को मुझसेसुनो ७३ ऐडइक्ष्वाकुकेवंशमें पूरुवंशमें और पूरुके जिन वंशों में ऐडइक्ष्वाकुकुल
बहुत शुभहै उन भविष्यकालमें होनेवाले सम्पूर्ण राजाओंको७४और उन राजाओंसे उत्पन्नहोनेवाले
अन्यराजाओंको ब्राह्मण क्षत्रियशूद्रोंको अंधवंशके राजाओंको-अंध-शक पुलिन्द-चूलिक-यवन-/
कैवर्त्त-आभीर-शबर और म्लेच्छ राजाओंको पृथक्२ नामसहित वर्णन करताहूं ७५। ७६ इनसबमें
पहला अधिसोम कृष्णराजाहोताभया उसके वंशके भविष्य राजाओंको प्रथम वर्णनकरताहूं ७७ अ-
धिसोम कृष्णकापुत्र विवक्षुहोगा इसके हस्तिनापुर नगरको जबगंगाबहालेजायगी तबयहराजा उस
नगरको त्यागकर कौशम्बीमें बसेगा औरविवक्षुके महाबलपराक्रमवाले आठपुत्रहोंगे७८।७९उनसबमें
बड़ाभूरिहोगा उसके चित्ररथहोगा चित्ररथके शुचिद्रव शुचिद्रवके वृष्णिमानहोगा ८० वृष्णिमानके
राजासुषेणहोगा सुषेणके सुनीथनाम राजाहोगा८१सुनीथसे महायशवाला नृचक्षुहोगा नृचक्षुकापुत्र

नृचक्षुषस्तुदायादो भवितावैसुखीबलः ८२ सुखीबलसुतश्चापि भावीराजापरिष्णवः। परिप्णवसुतश्चापि भवितासुतपान्नृपः ८३ मेधावीतस्यदायादो भविष्यतिनसंशयः। मेधाविनःसुतश्चापि भविष्यतिपुरञ्जयः ८४ उर्वोभाव्यःसुतस्तस्य तिग्मात्मातस्यचात्मजः। तिग्मात्बृहद्रथोभाव्यो वसुदामाबृहद्रथात् ८५ वसुदाम्नःशतानीको भविष्योदयनस्ततः। भविष्यतेचदयनात् वीरोराजावहीनरः ८६ वहीनरात्मजश्चैव दण्डपाणिर्भविष्यति। दण्डपाणेर्निरामित्रो निरामित्रात्तुक्षेमकः ८७ अत्रानुवंशश्लोकोऽयंगीतो विप्रैःपुरातनैःब्रह्मक्षत्रस्ययोयोनिर्वंशोदेवर्षिसत्कृतः। क्षेमकंप्राप्यराजानं संस्थास्यतिकलौयुगे ८८ इत्येषपौरवोवंशो यथावदिहकीर्तितः। धीमतःपाण्डुपुत्रस्य अर्जुनस्यमहात्मनः ८९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेपंचाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

(ऋषयऊचुः) येपूज्यास्युर्द्विजातीनामग्नयःसूत! सर्वदा। तानिदानींसमाचक्ष्व तद्वंशंचानुपूर्वशः १ (सूतउवाच) योऽसावग्निरभीमानी स्मृतःस्वायम्भुवेऽन्तरे। ब्रह्मणोमानसःपुत्रस्तस्मात् स्वाहाव्यजीजनत् २ पावकंपवमानञ्च शुचिरग्निश्चयःस्मृतः। निर्मथ्यःपवमानोऽग्निर्वैद्युतःपावकात्मजः ३ शुचिरग्निःस्मृतःशौरः स्थावराश्चैवतेस्मृताः। पवमानात्मजोह्यग्निर्हव्यवाहःसउच्यते ४ पावकिःसहरक्षस्तु हव्यवाहमुखःशुचिः। देवानांहव्यवाहोग्निः प्रथमोब्रह्मणःसुतः ५ सहरक्षोऽसुराणान्तु त्रयाणान्तेत्रयोग्नयः। एतेषांपुत्रपौत्राश्च चत्वारिंशत्तथैवच ६ प्रवक्ष्येनामतस्तान्वै प्रतिभागेनतान्

सुखीवलहोगा ८२ सुखीवलके परिष्णवहोगा परिष्णवके सुतपाराजाहोगा ८३ सुतपाके मेधावी होगा मेधावीकापुत्र पुरञ्जय होगा ८४ उसके उर्व पुत्रहोगा उर्वका पुत्रतिग्मात्मा होगा तिग्मात्मासे बृहद्रथहोगा बृहद्रथ से वसुदामाहोगा ८५ वसुदामाके शतानीक पुत्रहोगा तिसके दयननामपुत्र होगा दयनके शूरवीर राजा वहीनरहोगा ८६ वहीनरके दंडपाणि दंडपाणिके निरामित्र और निरामित्रके क्षेमक नामपुत्रहोगा ८७ यह क्षेमके वंशमें पुरातन ब्राह्मणोंने श्रेष्ठ वर्णनकिया है यह ब्राह्मण क्षत्रियोंका वंश देवर्षियोंने सत्कार किया है और कलियुगमें क्षेमकको प्राप्तहोकर यह वंश नष्टहोजायगा ८८ सूतजीने कहा हेऋषियो पाण्डुकेपुत्र अर्जुन महात्माका यह पौरववंश मैंने तुमसे यथावत्हीकहा है ८९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

यहसुनकर ऋषियोंने कहा कि हेसूतजी ब्राह्मणों के मध्यमें जो संपूर्ण कालोंसे अग्निपूजक हैं उनको और उनके वंशोंको आप क्रमपूर्वक वर्णनकीजिये १ यह सुनकर सूतजी कहने लगे कि हे ऋषियो जो स्वायंभुव मन्वन्तरमें अग्नि अभिमानी अधिष्ठाताकहा है वह ब्रह्माके मनसे उत्पन्नहोता भया उसकापुत्र स्वाहा होताभया २ पावक और पवमान रूपसे अग्निहोताभया एक शुचि अग्नि कहाहै उनमें से पवमान तो मथनसे हुआ और पावक से वैद्युतहुआहै ३ शुचि सूर्य्य से हुआहै वह स्थावर अग्निकहा है और पवनका पुत्र हव्यवाहन कहाहै ४ पावकका पुत्र सहरक्ष अग्निहुआ हव्यवाहनका मुख पवित्रहै क्योंकि देवताओंका हव्यवाह अग्निहै यह ब्रह्माका प्रथमपुत्र कहाहै ५ सहरक्ष अग्नि असुरोंकाहै यह तीनोंकेतीन अग्नि हैं इनके पुत्र पौत्रादिक चालीसवर्णन किये हैं ६ अब

पृथक्। पावनोलौकिको ह्यग्निःप्रथमोब्रह्मणश्चयः ७ ब्रह्मौदनाग्निस्तत्पुत्रो भरतोना मविश्रुतः। वैश्वानरोहव्यवाहोवहन्हव्यंममारसः ८ सम्मतोऽथर्वणःपुत्रो मथितःपुष्करो दधिः। योऽथर्वालौकिको ह्यग्निर्दक्षिणाग्निःसउच्यते ९ भृगोःप्रजायताथर्वा ह्यङ्गिराथ र्वणःस्मृतः। तस्यह्यलौकिकोह्यग्निर्दक्षिणाग्निःसवैस्मृतः १० अथयःपवमानस्तु निर्म थ्योऽग्निःसउच्यते। सचवैगार्हपत्योऽग्निः प्रथमोब्रह्मणःस्मृतः ११ ततःसभ्यावसथ्यौ च संशत्यास्तौसुतावुभौ। ततःषोडशनद्यस्तु चकमेहव्यवाहनः। यःखल्वाहवनीयोग्नि रभिमानीद्विजैःस्मृतः १२ कावेरीकृष्णवेणीञ्चनर्मदांयमुनांतथा। गोदावरींवितस्ता ञ्चचन्द्रभागामिरावतीम् १३ विपाशांकौशिकीञ्चैव शतद्रूंसरयूंतथा। सीतांमनस्वि नीञ्चैव ह्रदिनींपावनांतथा १४ तासुषोडशधात्मानं प्रविभज्यपृथक्पृथक्। तदातुविह रंस्तासु धिष्णेच्छःसत्रभूवह १५ स्वाभिधानस्थिताधिष्ण्यास्तासूत्पन्नाश्चधिष्णवः धिष्ण्येषुजज्ञिरेयस्मात् ततस्तेधिष्णवःस्मृताः १६ इत्येतेवैनदीपुत्रा धिष्ण्येषुप्रतिपे दिरे। तेषांविहरणीयाये उपस्थेयाश्चतांञ्छृणु। विभुःप्रवाहणोऽग्नीध्रस्तत्रस्थाधिष्ण वोऽपरे १७ विहरन्तियथास्थानं पुण्याहेसमुपक्रमे। अनिर्देश्यानिवार्याणामग्नीनांशृ णुतक्रमम् १८ वासवोऽग्निःकृशानुर्योद्वितीयोत्तरवेदिकः। सम्राडग्निसुतोह्यष्टावुपति ष्ठन्तितान्द्विजाः १९ पर्जन्यःपावमानस्तु द्वितीयःसोऽनुदृश्यते। पावकोष्णःसमुह्यस्तु वोत्तरेसोऽग्निरुच्यते २० हव्यसूदोह्यसंमृज्यः शामित्रःसविभाव्यते। शतधामासुधा

उनके पृथक् २ विभागपूर्वक नामों को कहता हूं प्रथम ब्रह्माजी से लौकिक पावन अग्निहुआ ७ उसकापुत्र ब्रह्मौदनहुआ उसका पुत्र भरतहुआ और वैश्वानर अग्नि हव्यको प्राप्तकरके मरा ८ वही अथर्वकामराहुआ पुत्र जब मथागया तब पुष्करोदधि हुआ और जो लौकिक अथर्वाग्निहै वही दक्षि- णाग्नि कहाहै ९ भृगुसे अथर्वाहुआ अथर्वसे अंगिराहुआ उसके अलौकिक दक्षिणाग्निहुआ १० और पवमान निर्मथ्य अग्निकहाहै वहीब्रह्मासे प्रथम गार्हपत्य अग्निकहा है ११ तिस्से संशतिमें सभ्य और आवसथ्यहुआ है फिर हव्यवाहन सोलह नदियों को रचताभया जो आहवनीय अग्निहै उस को ब्राह्मणोंने अभिमानीकहाहै १२ वह १६ नदियां यहहैं कावेरी १ कृष्णवेणी २ नर्मदा ३ यमुना ४ गोदावरी ५ वितस्ता ६ चन्द्रभागा ७ इरावती ८ विपाशा ९ कौशिकी १० शतद्रू ११ सरयू १२ सीता १३ मनस्विनी १४ ह्रदिनी १५ और पावना १६ इननदियों में पृथक् २ सोलह प्रकार से आत्माको विभागकरके विहार करताहुआ धिष्णेच्छ होताहुआ १३।१५ अपनेनाममें स्थित जो धिष्णहै उस्सेधिष्णुहुए और धिष्णोंके मध्यमें जन्मलेनेसे धिष्णुकहाताहै १६ यह सबनदियों के पुत्र धिष्णों में उत्पन्न होतेभये इनमें जो विहरणीय और उपस्थेय हैं उनको सुनो प्रवाहणनाम जो अग्नि है और जो धिष्णु वर्तमान हैं १७ वह पुण्यदिवस के आनेपर यथास्थान विहारकरते हैं-अनिर्देश्य और निवार्य्य अग्नियोंकेनाम क्रमसे सुनो १८ वासव अग्नि और कृशानु यह दोनों द्वितीयउत्तर की वेदी हैं अग्निकापुत्र सम्राट्हुआ और आठअग्नियों को ब्राह्मण सेवनकरते हैं १९ पर्जन्य और पावमान यह दोभी अग्निहैं,पावकोष्ण और समुह्य यह दोनों उत्तरमें अग्निकहे हैं २० हव्यसूद और

ज्योती रौद्रैश्वर्यःसउच्यते २१ ब्रह्मज्योतिर्वसुधामा ब्रह्मस्थानीयउच्यते। अजैकपादुप स्थेयः सवैशालामुखोयतः २२ अनिर्देश्योह्यहिर्बुध्नो बहिरन्तेतुदक्षिणो। पुत्राह्येतेतुस र्वस्य उपस्थेयाद्विजैःस्मृताः २३ ततोविहरणीयांस्तुवक्ष्याम्यष्टौतुतान्सुतान्। हौत्रिय स्यसुतोह्यग्निर्बर्हिषोहव्यवाहनः २४ प्रशंस्योऽग्निः प्रचेतास्तु द्वितीयःसंसहायकः। सुतोह्यग्नेर्विश्ववेदा ब्राह्मणाच्छंसिरुच्यते २५ अपांयोनिःस्मृतःस्वाम्भः सेतुर्नामवि भाव्यते। धिष्ण्यश्राहरणाह्येते सोमेनेज्यन्तवैद्विजैः२६ ततोयःपावकोनाम्नायःसद्भिर्यो गउच्यते। अग्निःसोऽवभृथेइज्योवरुणेनसहेज्यते २७ हृदयस्यसुतोह्यग्नेर्जठरेऽसौनृणां पचन्। मन्युमान्जाठरश्चाग्निर्विद्धाग्निःसततंस्मृतः २८ परस्परोत्थितोह्यग्निर्भूतानीह विभुर्दहन्। अग्नेर्मन्युमतःपुत्रो घोरःसंवर्त्तकःस्मृतः २९ पिबन्नग्निःसवसति समुद्रेव डवामुखे। समुद्रवासिनःपुत्रः सहरक्षोविभाव्यते ३० सहरक्षस्तुवैकामान् गृहेसवसतेनृ णाम्। क्रव्यादग्निःसुतस्तस्य पुरुषान्योऽत्तिवैमृतान् ३१ इत्येतेपावकस्याग्नेर्द्विजैः पु त्राःप्रकीर्त्तिताः। ततःसुतास्तुसौवीर्य्याद्गन्धर्वैरसुरैर्हृताः ३२ मथितोयस्त्वरण्यान्तु सो ऽग्निरापसमिन्धनम्। आयुर्नाम्नातुभगवान् पशौयस्तुप्रणीयते ३३ आयुषोमहिमान् पुत्रो दहनस्तुततःसुतः। पाकयज्ञेष्वभीमानी हुतंहव्यंभुनक्तियः ३४ सर्वस्माद्देवलोका च्च हव्यंकव्यंभुनक्तियः। पुत्रोऽस्यसहितोह्यग्निरद्भुतःसमहायशाः ३५ प्रायश्चित्तेष्व

असंसृज्य यह दोनोंशामित्र कहाते हैं-शतधामा और सुधाज्योती अग्नियोंको रौद्रैश्वर्य्य वर्णनकिया है ब्रह्मज्योति और वसुधामा इनको ब्रह्मस्थानीय कहाहै अजैकपाद से जो उपस्थेय अग्निहुआ है वह शालामुख वर्णनकियाहै २१।२२ अनिर्देश्य और अहिर्बुध्न दक्षिणाग्नि कहे हैं यहसबब्राह्मणलोगोंने उपस्थके पुत्रकहे हैं २३ अब विहरणीय आठपुत्रोंको कहताहूं हौत्रियकापुत्र अग्नि हव्यवाहनहुआ २४ प्रचेता अग्नि सुन्दरकहा है दूसरा संसहायक अग्निकहा है अग्निका विश्ववेदा पुत्र ब्राह्मणाच्छंसि कहाताहै २५ जलोंकी योनिको स्वाम्भअग्नि वर्णनकियाहै उसकानाम सेतुहै यह धिष्ण्य और आ- हरण अग्नि ब्राह्मणोंने सोमयज्ञसे यजनाकियेहैं २६ इनमें पावक अग्निको श्रेष्ठलोगोंने योगकहा है वह अग्नि अवभृथ स्नानमें वरुणकेसाथ पूजनकीजातीहै २७ हृदयकापुत्र अग्नि जो उदरमें अन्ना- दिकको पकाताहै उसको मन्युमान्-जाठराग्नि और विद्धाग्नि कहते हैं २८ आपसे आप उठाहुआ अग्नि जो जीवोंको दग्धकरताहै सो मन्युमान् अग्निकापुत्र घोर संवर्त्तक कहाताहै २९ और जो अग्नि समुद्रमें वसताहै वह समुद्रवासिकापुत्र सहरक्ष कहाताहै ३० सहरक्ष अग्नि मनुष्योंके घरों में वासकरताहुआ कामनाओंको पूरणकरताहै सहरक्षकापुत्र क्रव्याद अग्नि मरेपुरुषों को भक्षणकरता है ३१ हे ऋषीश्वरो यहसब अग्नि ब्राह्मणलोगोंने पावक अग्निकेपुत्र कहे हैं और सौवीरनाम अग्नि के पुत्रोंको गन्धर्व और असुरोंने हरलियाहै ३२ अरणीमें मथितहुई जो अग्निहै सो समिंधन अर्थात् पलशियोंको प्राप्तहुआहै वह भगवान् आयुनामसे पशुओंमें कहाहै ३३ आयुके महिमान् पुत्रहुआ उसकापुत्र दहनहुआ और जो पावक कि यज्ञोंमें हवन कियेहुए हव्योंको भोजन करताहै ३४ और सम्पूर्ण देवलोकसेभी हव्यकव्योंको भोजन करताहै उसकापुत्र महायशा अद्भुत वर्णन कियागया है

भीमानी हुतंहव्यंभुनक्तियः। अद्भुतस्यसुतोवीरो देवांशस्तुमहान्स्मृतः ३६ विविधाग्नि स्ततस्तस्य तस्यपुत्रोमहाकविः। विविधाग्निसुतादर्कोदग्नयोऽष्टौसुताःस्मृताः ३७ काम्यास्विष्टिष्वभीमानी रक्षोहायतिकृच्चयः। सुरभिर्वसुमानूनादो हृर्य्यश्वःसोऽभवत्पु रा ३८ प्रवर्ग्यःक्षेमवांश्चैव इत्यष्टौचप्रकीर्त्तिताः। शुच्यग्नेस्तुप्रजाह्येषा अग्नयश्च च तुर्दश ३९ इत्येतेह्यग्नयःप्रोक्ताः प्रणीतायेहिचाध्वरे। समतीतेतुसर्गेये यामैःसहसुरो त्तमैः ४० स्वायम्भुवेन्तरेपूर्व मग्नयस्तेऽभिमानिनः। एतेविहरणीयेषु चेतनाचेतनेष्वि ह ४१ स्थानाभिमानिनोऽग्निधाः प्रागासन्हव्यवाहनाः। काम्यनैमित्तिकाद्येषु येतेक र्म्मस्ववस्थिताः ४२ पूर्वेमन्वन्तरेऽतीते शुक्रैर्यामैश्चतैःसह। एतेदेवगणैःसार्द्धं प्रथम स्यान्तरेमनोः ४३ इत्येतायोनयोह्युक्ताः स्थानाख्याजातवेदसाम्। स्वारोचिषादिषुज्ञेयाः सवर्णान्तेषुसप्तसु ४४ तैरेवन्तुप्रसंख्यातं साम्प्रतानागतेष्विह। मन्वन्तरेषुसर्वेषु लक्ष णंजातवेदसाम् ४५ मन्वन्तरेषुसर्वेषु नानारूपप्रयोजनैः। वर्त्तन्तेवर्त्तमानैश्च यामैर्देवैः सहाग्नयः ४६ अनागतैःसुरैःसार्द्धं वत्स्यन्तोनागतास्त्वथ। इत्येषप्रचयोऽग्नीनां मया प्रोक्तोयथाक्रमम्। विस्तरेणानुपूर्व्याच किमन्यच्छ्रोतुमिच्छथ ४७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

(ऋषय ऊचुः) इदानीम्प्राहयद्विष्णुः पृष्टःपरममुत्तमम्। तमिदानींसमाचक्ष्व

३५ यह प्रायश्चित्तोंका अभिमानी हुत और हव्यको भोजन करता है अद्भुतकेवीरनाम पुत्रहुआ उसको देवताओंका अंश वर्णन कियाहै ३६ उससे विविधाग्नि हुआ उसकापुत्र महाकविहुआ और विविधाग्निके दूसरे अर्कनाम पुत्रसे आठ पुत्रहुए हैं ३७ यह आठों काम्य यज्ञोंमें अभिमानी हैं वह आठोंयहहैं रक्षोहा-यतिकृत्-सुरभि-वसुमान्-नाद- हर्य्यश्व ३८ प्रवर्ग्य-और क्षेमवान् यह आठों अग्नि कहे हैं और शुचिअग्निकी सन्तान यह चोदह अग्निकहे हैं ३९ जिन२ यज्ञोंमें जो २ विधान किये हैं वह यहहैं अतीतरचनामें याम संज्ञक देवताओं समेत ४० स्वायम्भुवमनुमें यह अग्निअभि-मानी कहे हैं यह सम्पूर्ण विहरणीय चेतन और अचेतनोंमें कहेहैं ४१ यह स्थानाभिमानी अग्निध्र प्रथम हव्यवाहन होतेभये और यही सम्पूर्ण काम्य और नैमित्तिक कर्मोंमें अवस्थित हैं ४२ प्रथम व्यतीतहुए मन्वन्तर में शुक्र और याम देवगणों करके सहित होतेभये इनको अग्नियोंकी स्थानाख्य योनिकहाहै यह स्वारोचिषादि सावर्णि पर्य्यन्त सात मन्वन्तरोंमें जानना ४३। ४४ हे ऋषियो यह सब तो मैंने व्यतीत मन्वन्तरोंके अग्नि वर्णनकिये अब आनेवालोंको कहते हैं इनमें सम्पूर्ण मन्व-न्तरोंके अग्नियोंके लक्षणकहे हैं ४५ सम्पूर्णमन्वन्तरोंमें अनेकरूप और प्रयोजनों करके वर्त्तमान जो यामदेव हैं इनसबों समेत अग्निवर्त्ते हैं ४६ आनेवाले देवताओंके साथ आनेवाले अग्नि वसते हैं इसरीतिसे यह अग्नियोंके प्रचयके व्यवहार मैंने तुमसे क्रमपूर्व्वक वर्णनकिये हे ऋषियो अब और क्या विस्तारपूर्व्वक सुनना चाहतेहो ४७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाधिकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

ऋषियोंने पूछा कि हे सूतजी मनुके पूछनेसे जो धर्माधर्म का परमउत्तम विस्तार विष्णुभगवान्

धर्म्माधर्म्मस्यविस्तरम् १ (सूत उवाच) एवमेकार्णवेतस्मिन् मत्स्यरूपीजनार्दनः ।
विस्तारमादिसर्ग्गस्य प्रतिसर्ग्गस्यचाखिलम् २ कथयामासविश्वात्मा मनवेसूर्य्यसून
वे । कर्म्मयोगञ्चसांख्यञ्च यथावद्विस्तरान्वितम् ३ (ऋषय ऊचुः) श्रोतुमिच्छाम
हेसूत ! कर्म्मयोगस्यलक्षणम् । यस्मादविदितंलोके नकिञ्चित्तवसुव्रत ! ४ (सूतउ
वाच) कर्म्मयोगंचवक्ष्यामि यथाविष्णुविभाषितम् । ज्ञानयोगसहस्राद्धि कर्म्मयोगः
प्रशस्यते ५ कर्म्मयोगोद्भवंज्ञानं तस्मात्तत्परमम्पदम् । कर्म्मज्ञानोद्भवंब्रह्म नचज्ञान
मकर्म्मणः ६ तस्मात्कर्म्मणियुक्तात्मा तत्त्वमाप्नोतिशाश्वतम् । वेदोऽखिलोधनंमूल
माचारश्चैवतद्धितम् ७ अष्टावात्मगुणास्तस्मिन् प्रधानत्वेनसंस्थिताः दयासर्वेषुभूतेषु
क्षान्तीरक्षातुरस्यतु ८ अनसूयातथालोके शौचमन्तर्बहिर्द्विजाः । अनायासेषुकार्येषु
माङ्गल्याचारसेवनम् ९ नचद्रव्येषुकार्पण्यमार्तेषूपार्जितेषुच । तथास्पृहापरद्रव्ये परस्त्री
षुचसर्वदा १० अष्टावात्मगुणाःप्रोक्ताः पुराणस्यतुकोविदैः । अयमेवक्रियायोगो ज्ञान
योगस्यसाधकः ११ कर्मयोगंविनाज्ञानं कस्यचिन्नेहदृश्यते । श्रुतिस्मृत्युदितंधर्ममुप
तिष्ठेत्प्रयत्नतः १२ देवतानांपितृणांच मनुष्याणांचसर्वदा । कुर्यादहरहर्यज्ञैर्भूतर्षिगण
तर्पणम् १३ स्वाध्यायैरर्चयेच्चर्षीन् होमैर्विद्वान्यथाविधि । पितॄन्श्राद्धैरन्नदानैर्भूतानि
बलिकर्म्मभिः १४ पञ्चैतेविहितायज्ञाः पंचसूनापनुत्तये । कण्डनीपेषणीचूल्ली जलकुम्भी

ने वर्णन कियाहै उसको आप हमें सुनाइये १ सूतजी ने कहा हेऋषियो इसीप्रकार प्रलयमें मत्स्यरूपी भगवान्ने सर्ग और प्रतिसर्गके सब विस्तारको विश्वात्मा भगवान् सूर्य्यके पुत्र मनुजीके अर्थ कर्म योग और सांख्यको बड़े विस्तारपूर्व्वक यथावत् कहा है २ । ३ यह सुनकर फिर ऋषियों ने कहा कि हे सूतजी हमभी कर्मयोगके सुननेकी बड़ी इच्छा करते हैं क्योंकि हे सुव्रत सूतजी आपसे इसलोकमें कोई वस्तुगुप्त नहीं है आपसर्वज्ञ हैं ४ सूतजी बोले हे ऋषिसत्तमहो जैसा कि विष्णुजी ने कहा है उस कर्म योगको मैं कहताहूं हज़ार ज्ञानयोगों से भी कर्मयोग श्रेष्ठहै क्योंकि कर्मयोगसे उत्पन्न हुए ज्ञानके द्वारा परमपद मिलताहै कर्मज्ञानसे ब्रह्म उत्पन्न होताहै अकर्मज्ञानसे नहीं होता ५ । ६ इसहेतुसे कर्मसे युक्त जो आत्माहै वही निरन्तर तपको प्राप्त होताहै सम्पूर्ण वेद मूलधनरूप हैं आचारही उसकाहितकारी है ७ उस कर्ममें आठगुण प्रधानतासे रहते हैं प्रथम सम्पूर्ण भूतोंपर दया१शान्ति२रोगीकी रक्षा ३-८लोकमें किसीकी बुराई न करना ४ बाहर भीतरसे पवित्ररहना५ अकस्मात् होनेवाले कार्यों में मंगलाचारपूर्व्वक वर्त्तना ६-९ अपने पैदा कियेहुए धनमें दुखियाके निमित्त कृपणता न करना ७ दूसरे की द्रव्यमें और पराई स्त्री में कभी इच्छा न करना ८-१० यह आत्माके आठोंगुण पुराण के जाननेवाले पण्डित वर्णन करते हैं यही क्रियायोग ज्ञानयोगके साधकहैं ११ कर्मयोग के विना इससंसारमें किसीको ज्ञान नहींहोता इसहेतुसे श्रुति स्मृतियों के कहे हुए धर्मोंको प्रयत्न पूर्व्वक करना योग्यहै १२ सदैव प्रतिदिन देवता ऋषि पितर मनुष्य और भूत गण इनसबको यज्ञ और तर्पणादिसे पूजनकरे १३ इनमें देवताओंको यज्ञोंसे ऋषियोंको स्वाध्याय हवन और तर्पणसे विद्वान् लोग विधिपूर्व्वक पूजनकरें पितरोंको श्राद्ध और अन्नदानसे भूतगणोंको

प्रमार्जनी १५ पञ्चसूनागृहस्थस्य तेनस्वर्गेनगच्छति। तत्पापनाशनायामी पंचय ज्ञाःप्रकीर्तिताः १६ द्वाविंशतितथाष्टौच येसंस्काराःप्रकीर्तिताः। तद्युक्तोऽपिनमोक्षाय यंस्त्वात्मगुणवर्जितः १७ तस्मादात्मगुणोपेतः श्रुतिकर्म्मसमाचरेत्। गोब्राह्मणानांवि त्तेन सर्वदाभद्रमाचरेत्१८गोभूहिरण्यवासोभिर्गन्धमाल्योदकेनच। पूजयेद् ब्रह्मविष्णु कं रुद्रवस्वात्मकंशिवम् १९ व्रतोपवासैर्विधिवत् श्रद्धयाचविमत्सरः। योऽसावतीन्द्रि यःशान्तःसूक्ष्मोऽव्यक्तःसनातनः। वासुदेवोजगन्मूर्तिस्तस्यसम्भूतयोह्यमी २० ब्रह्मा विष्णुश्चभगवान् मार्त्तण्डोवृषवाहनः। अष्टौचवसवस्तद्व देकादशगणाधिपाः। लोक पालाधिपाश्चैव पितरोमातरस्तथा २१ इमाविभूतयःप्रोक्ताश्चराचरसमन्विताः। ब्रह्मा द्याश्चतुरोमूल मव्यक्ताधिपतिःस्मृतः २२ ब्रह्मणाचाथसूर्येण विष्णुनाथशिवेनवा। अ भेदात्पूजितेनस्यात्पूजितंसचराचरम् २३ ब्रह्मादीनांपरन्धाम त्रयाणामपिसंस्थितिः। वेदमूर्तावतःपूषा पूजनीयःप्रयत्नतः २४ तस्मादग्निद्विजमुखान् कृत्वासंपूजयेदिमान्। दानैर्व्रतोपवासैश्च जपहोमादिना नरः २५ इतिक्रियायोगपरायणस्य वेदान्तशास्त्रस्मृ तिवत्सलस्य। विकर्म्मभीतस्यसदानकिंचित् प्राप्तव्यमस्तीहपरेचलोके २६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

वलिकर्मादिकसे पूजनकरे १४ पंचसूना अर्थात् पांचहत्याओंके दूरकरनेकेलिये यह पांचों यज्ञ कहे गये हैं अर्थात् ओखली-सिल-चूल्हा-पलहड़ी-और वुहारी १५ इनपांचों कर्मोंसे गृहस्थीको पांच हत्या होतीहैं इनकोही पंचसूना कहते हैं इनहत्याओं के विनादूरकिये गृहस्थी स्वर्गमें नहीं जासका है इन्हीं पांचोंपापोंके नाशके अर्थयह पांचोयज्ञ लिखेहैं १६ वाईस तथा आठजो संस्कार लिखे हैं यहसव मिलकर भी आत्माके गुणोंसे रहितहोनेवालेको मोक्षनहीं दे सक्तेहैं १७ इसीसे आत्मगुण युक्तहोकर वेदोक्त कर्मोंकोकरे धनकरके गौ और ब्राह्मणोंका कल्याणकरे १८ गौ भूमि सुवर्ण वस्त्र गन्धमाला और जलके द्वारा ब्रह्मा विष्णु रुद्र और वसुआत्मक शिवका पूजनकरे १९ अथवा श्रद्धा-युक्त मत्सरतासे रहित विधिपूर्वक व्रतादिकोंसे उस अतीन्द्रिय सूक्ष्म अव्यक्त सनातन जगन्मूर्ति वासुदेवको पूजनकरे जिसकी कि ब्रह्मा विष्णु सूर्य्य शिव अष्टवसु एकादशगणाधिप लोकपालों के अधिपति पितर और मातृगण यह सव चराचर संयुक्त विभूति वर्णन की हैं २०। २१ यह चराचर सयुक्त सम्पूर्ण विभूति उसीभगवत्की हैं जो कि इन ब्रह्मा विष्णु शिव और सूर्य्य इनचारोंका मूल ईश्वरहै २२ जिसने इनचारोंका भेदसे रहित पूजन कियाहै उसने सव चराचर जगत्का पूजन किया है २३ यह सूर्य्य देवता ब्रह्मादिक तीनोंका परमधामहै अर्थात् ब्रह्मा विष्णु और शिव इनतीनों की स्थिति इसीमें रहती है इसहेतुसे इसवेदमूर्तिकापूजन अनेकयत्नोंसे करनायोग्यहै २४ यहब्रह्मादिक तीनों देवता अग्नि और द्विजमुखवाले हैं इसहेतुसे जप होम दान और व्रतउपवासादिकोंसे इनका अर्चनकरे २५ जो पुरुष ऐसेक्रियायोगमें तत्पररहते हैं वह वेदान्तशास्त्र स्मृतियोंकेप्रेमसे माननेवालेहैं ऐसेक्रियावान्पुरुषोंको इसलोक और परलोक दोनोंलोकोंमें ऐसीकोईवस्तुनहीं है जोउन्हेंनप्राप्तहो अर्थात्उनकोसववस्तुप्राप्तहोतीहैं २६॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

(मुनय ऊचुः) पुराणसांख्यमाचक्ष्व सूत ! विस्तरशःक्रमात्। दानधर्म्ममशेषन्तु यथावदनुपूर्वशः १ (सूत उवाच) इदमेवपुराणेषु पुराणपुरुषस्तदा। यदुक्तवान्सविश्वात्मा मनवेतान्निबोधत २ (मत्स्यउवाच) पुराणंसर्वशास्त्राणां प्रथमंब्रह्मणास्मृतम्। अनन्तरञ्चवक्त्रेभ्यो वेदास्तस्यविनिर्गताः ३ पुराणमेकमेवासीत् तदाकल्पान्तरेऽनघ!। त्रिवर्गसाधनंपुण्यं शतकोटिप्रविस्तरम् ४ निर्दग्धेषुचलोकेषु वाजिरूपेणवैमया। अङ्गानिचतुरोवेदाः पुराणंन्यायविस्तरम् ५ मीमांसांधर्म्मशास्त्रञ्च परिगृह्यमयाकृतम्। मत्स्यरूपेणचपुनः कल्पादावुदकार्णवे ६ अशेषमेतत्कथितमुदकान्तर्गतेनच। श्रुत्वा जगादचमुनीन् प्रतिदेवांश्चतुर्मुखः ७ प्रवृत्तिःसर्वशास्त्राणां पुराणस्याभवत्ततः। कालेनाग्रहणंदृष्ट्वा पुराणस्यततोनृप ! ८ व्यासरूपमहंकृत्वा संहरामियुगेयुगे। चतुर्लक्षप्रमाणेन द्वापरेद्वापरेसदा ९ तथाष्टादशधाकृत्वा भूर्लोकेऽस्मिन्प्रकाश्यते। अद्यापिदेवलोकेऽस्मिन् शतकोटिप्रविस्तरम् १० तदर्थोऽत्रचतुर्लक्षं संक्षेपेणविशेषितम्। पुराणानिदशाष्टौच साम्प्रतंतदिहोच्यते ११ नामतस्तानिवक्ष्यामि शृणुध्वंमुनिसत्तमाः! ।ब्रह्मणाभिहितंपूर्वं यावन्मात्रंमरीचये १२ ब्राह्मन्त्रिदशसाहस्रं पुराणंपरिकीर्त्यते। लिखित्वातच्चयोदद्यात् जलधेनुसमन्वितम्। वैशाखपूर्णिमायाञ्च ब्रह्मलोकेमहीयते १३ एतदेवयदापद्ममभूद्धैरण्मयंजगत्। तद्वृत्तान्ताश्रयंतद्वत् पाद्ममित्युच्यतेबुधैः। पाद्मंतत्पञ्चपंचाशत्सहस्राणीहकथ्यते १४ तत्पुराणंचयोदद्यात् सुवर्णकमलान्वितम्।

यह सुनकर मुनियों ने कहा कि हे सूतजी अब आप कृपाकरके सब पुराणोंकी संख्या औरसम्पूर्ण दान धर्म यथावत् आनुपूर्व्वी विस्तारपूर्वक वर्णनकीजिये १ सूतजीबोले हेऋषि लोगो जो विश्वात्मा मत्स्यभगवान् ने प्राचीन मनुसे वर्णन किया है वही मैं तुमसे कहताहूं २ मत्स्यभगवान् ने कहा कि हे मनु पुराण धर्मशास्त्रादिकों से प्रथमब्रह्मा हुआ है फिर उसके चार मुखसे चारोंवेद प्रकटहुए ३ हे अनघ उस कल्पान्तरमें एकही पुराण होता भया और सौकिरोड़ विस्तारवाला पुण्य धर्म अर्थ और कामकासाधनहुआ ४ फिर जब सब लोक भस्महोगये तब घोड़े का रूपधरके मैंनेवेद के सब अंगों समेत चारवेद पुराण न्याय ५ मीमांसा और धर्मशास्त्र यह सबरचे फिर मत्स्यरूप करके कल्पकी आदिमें प्रलय के जलों में ६ जलमेंही प्रवेशितहोकर मैंने ब्रह्मासे कहा और ब्रह्माने फिर इन सब वेद शास्त्रादिकों को देखता और मुनियों से कहा इस के पीछे सम्पूर्ण शास्त्रोंकी और पुराणोंकी प्रवृत्ति होती भई फिर कालके योगसे पुराणोंका अग्रहण देखकर ७।८ मैं व्यासरूपसे अवतार धारण करके युग युग में इन सबको विस्तार करताहूं और द्वापर द्वापरमें चारलाख प्रमाणसे रचताहूं ९ और अठारह पुराणों करके मैं पृथ्वी के लोकों में प्रकाशकरताहूं अबभी यह पुराण देवलोकमें सौ कोटि के विस्तार से है १० यहां संक्षेप करके चारलाखही है इसीमें अठारहपुराण कहे हैं ११ सूतजी कहते हैं कि हे मुनियो उनके नाम जो ब्रह्माने मरीचिसे कहेहैं वह मैं भी कहताहूं तुमसुनो १२ ब्राह्मपुराण तेरह हज़ारहै इसको लिखकर जल और गौ समेत वैशाखकी पूर्णमासीको दानकरे तो ब्रह्मलोक में आनन्दभोगे १३ और इसी प्रकार जब हिरण्मय अर्थात् सुवर्णमय कमल हुआ और सब

ज्येष्ठमासितिलैर्युक्तमश्वमेधफलंलभेत् १५ वाराहकल्पवृत्तान्तमधिकृत्यपराशरः।
यत्राहधर्मानखिलान् तद्युक्तंवैष्णवंविदुः १६ तदाषाढेचयोदद्यात् घृतधेनुसमन्वितम्
पौर्णमास्यांविपूतात्मा सपदंयातिवारुणम्।त्रयोविंशतिसाहस्रं तत्प्रमाणंविदुर्बुधाः १७
श्वेतकल्पप्रसङ्गेन धर्मान्वायुरिहाब्रवीत्। यत्रतद्वायवीयंस्यात् रुद्रमाहात्म्यसंयुतम्।
चतुर्विंशत्सहस्राणि पुराणंतदिहोच्यते १८ श्रावण्यांश्रावणेमासि गुडधेनुसमन्वितम्।
योदद्याद्वृषसंयुक्तं ब्राह्मणायकुटुम्बिने। शिवलोकेसपूतात्मा कल्पमेकंवसेन्नरः १९
यत्राधिकृत्यगायत्रीं वर्ण्यतेधर्मविस्तरः। वृत्रासुरवधोपेतं तद्भागवतमुच्यते २०
सारस्वतस्यकल्पस्य मध्येयेस्युर्नरोत्तमाः। तद्वृत्तान्तोद्भवंलोके तद्भागवतमुच्यते २१
लिखित्वातच्चयोदद्याद्धेमसिंहसमन्वितम्। पौर्णमास्यांप्रौष्ठपद्यां सयातिपरमांगतिम्।
अष्टादशसहस्राणि पुराणंतत्प्रचक्षते २२ यत्राहनारदोधर्मान् बृहत्कल्पाश्रयाणिच।
पंचविंशत्सहस्राणि नारदीयंतदुच्यते २३ तदिदंपंचदश्यान्तु दद्याद्धेनुसमन्वितम्। प
रमांसिद्धिमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभाम् २४ यत्राधिकृत्यशकुनीन् धर्माधर्मविचारणा।
व्याख्यातावैमुनिप्रश्ने मुनिभिर्धर्मचारिभिः २५ मार्कण्डेयेनकथितं तत्सर्वंविस्तरेणतु।
पुराणंनवसाहस्रं मार्कण्डेयमिहोच्यते २६ प्रतिलिख्यचयोदद्यात् सौवर्णकरिसंयुतम्।
कार्त्तिक्यांपुण्डरीकस्य यज्ञस्यफलभाग्भवेत् २७ यत्तदीशानकंकल्पं वृत्तान्तमधिकृत्य

जगत् उसके आश्रयहुआ तवपाद्मपुराणहुआ वह पचपन हज़ारकहाहै १४ उसपाद्मपुराणको सुवर्णके कमलसेयुक्त ज्येष्ठमास में तिलोंसमेत दान करे तो अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोवे १५ इसीप्रकार वाराहकल्पको अधिकारकरके जो पराशरजी संपूर्णधर्मोंको कहतेभये वहवाराहपुराण विष्णुकाहै १६ इसपुराणको पंडित तेईस हज़ारकहतेहैं इसउत्तमपुराणको आषाढ़कीपूर्णिमाकेदिन घृत और गौसमेत जो विधिपूर्वक दानकरताहै वह वरुण लोकमें जाकर आनन्दकरताहै १७ और श्वेतकल्पके प्रसंगकर के जिनधर्मोंको वायुने कहाहै वह रुद्रजीके माहात्म्य समेत वायवीय पुराणहै इसकी संख्या चौबीस हज़ार है १८ इसको श्रावणमासमें सलूनोंके दिवस गुड़धेनु और बैलसंयुक्त कुटुम्बी ब्राह्मणके अर्थजो दानदे वह पुरुष पवित्र होकर एककल्प पर्य्यन्त शिवलोकमें वासकरताहै १९ जिसमें कि गायत्रीको अधिकारकरके वृत्रासुरके वधयुक्त धर्मका विस्तारपूर्वक वर्णनहै २० और सारस्वतकल्पके उत्तमनरों के वृत्तान्तसे संयुक्तहै वह भागवतहै २१ उस भागवतको लिखाकर सुवर्णके सिंहासन समेत जो भाद्रपदकी पूर्णमासीको दानकरताहै वह परमगतिको प्राप्तहोताहै उस भागवतकी संख्या अठारहहज़ार है २२ जिसमें कि बृहत्कल्पके आश्रयसे नारदजीने धर्मोंको कहाहै वह नारदीय पुराण पच्चीसहज़ार है २३ इसपुराणको गौसमेत कोईसीभी पूर्णमासीको जो दानकरताहै वह परमसिद्धिको प्राप्तहोता है और पुनर्जन्मकोभी नहींपाताहै २४ जिसमें कि शकुनियों अर्थात् पक्षियोंको आश्रयकरके धर्माधर्मका विचारकहाहै और जिसको कि मुनियोंके प्रश्नसे मार्कण्डेय ऋषिने विस्तारपूर्वक कहाहै और संख्यामें नवहज़ारहै वह मार्कण्डेय पुराणहै २५। २६ इसमार्कण्डेय पुराणको लिखकर जो सुवर्णकेहाथी समेत कार्त्तिककी पूर्णमासीको दानकरताहै वह पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्त होता है

च । वशिष्ठायाग्निनाप्रोक्तमाग्नेयंतत्प्रचक्षते २८ लिखित्वातच्चयोदद्याद्धेमपद्मसम
न्वितम् । मार्गशीर्ष्यांविधानेन तिलधेनुसमन्वितम् । तच्चषोडशसाहस्रं सर्वक्रतुफलप्र
दम् २९ यत्राधिकृत्यमाहात्म्यमादित्यस्यचतुर्मुखः । अघोरकल्पवृत्तान्त प्रसंगेनजग
त्स्थितिम् । मनवेकथयामास भूतग्रामस्यलक्षणम् ३० चतुर्दशसहस्राणि तथापंचश
तानिच । भविष्यचरितप्रायं भविष्यन्तदिहोच्यते ३१ तत्पौषेमासियोदद्यात् पौर्णमा
स्यांविमत्सरः । गुड़कुम्भसमायुक्तमग्निष्टोमफलंभवेत् ३२ रथन्तरस्यकल्पस्य वृत्ता
न्तमधिकृत्यच । सावर्णिनानारदाय कृष्णमाहात्म्यमुत्तमम् ३३ यत्रब्रह्मवराहस्य चोद
न्तंवर्णितंमुहुः । तदष्टादशसाहस्रं ब्रह्मवैवर्त्तमुच्यते ३४ पुराणंब्रह्मवैवर्त्तं योदद्यान्माघ
मासिच । पौर्णमास्यांशुभदिने ब्रह्मलोकेमहीयते ३५ यत्राग्निलिंगमध्यस्थः प्राहदेवो
महेश्वरः । धर्मार्थकाममोक्षार्थमाग्नेयमधिकृत्यच ३६ कल्पान्तेलैंगमित्युक्तं पुराणंब्रह्म
णास्वयम् । तदेकादशसाहस्रं फाल्गुन्यांयःप्रयच्छति । तिलधेनुसमायुक्तं सयातिशिव
साम्यताम्३७महावराहस्यपुनर्माहात्म्यमधिकृत्यच। विष्णुनाभिहितंक्षोण्यै तद्वाराहमि
होच्यते ३८ मानवस्यप्रसङ्गेन कल्पस्यमुनिसत्तमाः । चतुर्विंशत्सहस्राणि तत्पुराणमि
होच्यते ३९ कांचनंगरुडंकृत्वा तिलधेनुसमन्वितम् । पौर्णमास्यांमधौदद्यात् ब्राह्मणा
यकुटुम्बिने । वराहस्यप्रसादेन पदमाप्नोतिवैष्णवम् ४० यत्रमाहेश्वरान्धर्मानधिकृत्य

२७ जिसमें कि ईशानकल्पके वृत्तान्तको अधिकार करके जो अग्निने वशिष्ठजीके अर्थधर्म वर्णनकि-
याहै वह आग्नेयपुराणहै उसकी संख्या सोलहहज़ार है २८ इसपुराणको जो सुवर्णके कमलसमेत
लिखकर तिलगौसमेत मार्गशिरकी पूर्णमासीको दानकरताहै वह सम्पूर्ण यज्ञोंके फलको प्राप्तहोता
है २९ जिसमें कि अघोरकल्पके वृत्तान्तकरके सूर्यके माहात्म्यको और जगत्की स्थितिसमेत भूतग्रा-
मके लक्षणोंको ब्रह्माजीने मनुकेअर्थ कहाहै ३० वह भविष्यचरित्रवाला चौदहहज़ार पांचसौसंख्या
वाला भविष्योत्तर पुराणकहाहै ३१ इस भविष्योत्तरपुराणको जो मनुष्य पौषकी पूर्णिमाके दिन
मत्सरता और कुटिलतासे रहितहोकर गुड़केकुम्भ समेत दानकरताहै वह अग्निष्टोमयज्ञके फलको
प्राप्तहोताहै ३२ जिसमें रथन्तरकल्पके वृत्तान्तके अधिकारकरके कृष्णके उत्तम माहात्म्यको मनुने
नारदमुनिसे कहाहै ३३ और ब्रह्मवाराहकाभी जिसमें वृत्तान्त वारंवार वर्णनकियाहै वह अठारहह-
ज़ार संख्यावाला ब्रह्मवैवर्त्त पुराणकहाहै ३४ जो इसपुराणको माघकी पूर्णिमाके शुभदिन और अच्छे
मुहूर्तमें ब्राह्मणको दानकरताहै वह ब्रह्मलोकमें आनन्द करताहै ३५ जिसमें कि अग्निलिंगमेंस्थित
होकर महादेवजीने अग्निके धर्म अर्थ काम मोक्षोंको कहाहै ३६ उसको ब्रह्माजीने कल्पके अन्तमें
लिंगपुराण कहाहै वह संख्यामें ग्यारहहज़ार है इस लिंगपुराणको जो पुरुष फाल्गुनकी पूर्णमासी
केदिन गौ समेत दानकरताहै वह शिवकी रूपताको प्राप्तहोताहै ३७ जिसमें कि महावराह अवतार
को अधिकार करके विष्णुने पृथ्वीके अर्थ धर्मका वर्णनकियाहै ३८ हे ऋषिलोगो वह मानव कल्पके
प्रसंगसे चौबीसहज़ार संख्यावाला वाराहपुराण कहाहै ३९ इसपुराणको जो पुरुष सुवर्णके गरुड़
और तिलधेनुके साथ चैत्रकी पूर्णिमाकेदिन कुटुम्बी ब्राह्मणको देताहै वह वराहजीकी प्रसन्नतासे

चषण्मुखः।कल्पेतत्पुरुषंवृत्तंचरितैरुपबृंहितम् ४१ स्कन्दंनामपुराणंचह्येकाशीतिनिगद्य
ते।सहस्राणिशतंचैकमितिमर्त्येषुगद्यते ४२ परिलिख्यचयोदद्याद्धेमशूलसमन्वितम्।
शैवम्पदमवाप्नोति मीनेचोपागतेरवौ ४३ त्रिविक्रमस्यमाहात्म्यमधिकृत्यचतुर्मुखः।
त्रिवर्गमभ्यधात्तच्च वामनंपरिकीर्त्तितम् ४४ पुराणंदशसाहस्रं कूर्मकल्पानुगंशिवम्।
यःशरद्विषुवेदद्याद् वैष्णवंयात्यसौपदम् ४५ यत्रधर्मार्थकामानां मोक्षस्यचरसातले।
माहात्म्यङ्कथयामास कूर्मरूपीजनार्दनः ४६ इन्द्रद्युम्नप्रसङ्गेन ऋषिभ्यःशक्रसन्निधौ।
अष्टादशसहस्राणि लक्ष्मीकल्पानुषङ्गिकम् ४७ योदद्यादयनेकूर्मं हेमकूर्मसमन्वितम्।
गोसहस्रप्रदानस्य फलंसम्प्राप्नुयान्नरः ४८ श्रुतीनांयत्रकल्पादौ प्रवृत्त्यर्थंजनार्दनः।
मत्स्यरूपेणमनवे नरसिंहोपवर्णनम् ४९ अधिकृत्याऽब्रवीत्सप्त कल्पवृत्तंमुनीश्वराः।
तन्मात्स्यमितिजानीध्वं सहस्राणिचतुर्दश ५० विषुवेहेममत्स्येन धेन्वाचैवसमन्वितम्।
योदद्यात्पृथिवीतेन दत्ताभवतिचाखिला ५१ यदाचगारुडेकल्पे विश्वाण्डाद्गरुडोद्भ
वम्। अधिकृत्याऽब्रवीत्कृष्णो गारुडन्तदिहोच्यते ५२ तदष्टादशकंचैव सहस्राणीहप
ठ्यते। सौवर्णहंससंयुक्तं योददातिपुमानिह। ससिद्धिंलभतेमुख्यां शिवलोकेचसंस्थि
तिम् ५३ ब्रह्माब्रह्माण्डमाहात्म्यमधिकृत्याब्रवीत्पुनः। तच्चद्वादशसाहस्रं ब्रह्माण्डंद्विश
ताधिकम् ५४ भविष्याणांचकल्पानां श्रूयतेयत्रविस्तरः। तद्ब्रह्माण्डपुराणंच ब्रह्मणा

वैष्णवपदको प्राप्तहोताहै ४० जिसमें कि महादेवजीके धर्मोंको अधिकार करके स्वामिकार्त्तिकजीने उत्तम पुरुषोंसे धर्मोंका वर्णन कियाहै उस स्कन्दपुराणकी इक्यासी हजार एकसौ संख्याहै ४१।४२ जो पुरुष इस स्कन्दपुराणको सुवर्णके त्रिशूलसमेत लिखकर मीनकेसूर्य्यमें ब्राह्मणको दानकरताहै वह शिवजीके धामको प्राप्तहोताहै ४३ और जिसमें वामनजीके माहात्म्यको अधिकार करके ब्रह्माजीने देवतादिकोंसे धर्मअर्थ और कामका वर्णनकियाहै वहवामनपुराण संख्यामेंदशहजारहै इसपुराणको जो सुन्दर लिखवाकर दक्षिणासमेत शरदऋतुमें दानकरताहै वह विष्णुपदको प्राप्तहोताहै ४४।४५ और जिसमें कच्छपरूप धारण करके इन्द्रकेपास इन्द्रद्युम्नके प्रसंगकरके विष्णु भगवान् ने पाताल में ऋषियोंकेपास अर्थ धर्म काम और मोक्षके माहात्म्यका वर्णन किया है यह लक्ष्मी कल्पमें होने वाला और संख्यामें अठारहहजार कूर्मपुराणहै ४६। ४७ जो पुरुष इसपुराणको सुवर्णके कच्छप समेत उत्तरायणमें दानकरताहै वह हजारगौओंके दानके फलको प्राप्तहोताहै ४८ जिसमें कि कल्प की आदिमें श्रुतियोंकी प्रवृत्ति के निमित्त जनार्दन भगवान्ने मत्स्यरूपसे नरसिंहकी कथा मनुको सुनाई है ४९ और सातकल्पोंका वृत्तान्तभी कहाहै उसको मात्स्यपुराण कहतेहैं वह संख्यामें चौदहहजारहै ५० इसपुराणको जो पुरुष सुवर्णके मत्स्य और गौ समेत उत्तरायणसूर्य्य में दानदे तो सम्पूर्ण पृथ्वीके दानदेनेके समान फलको प्राप्तहोय ५१ जहाँ गरुड़कल्पमें गरुड़को अधिकार करके धर्मोंको कृष्णने कहाहै वह गरुड़पुराण अठारहहजार है ५२ इसपुराणको सुवर्णके हंस समेत जो पुरुषदान करताहै वहशिवलोकमें मुख्य सिद्धियों समेत निवासको पाताहै ५३ और जिसमें ब्रह्माण्ड माहात्म्यको अधिकारकरके भविष्यकल्पोंका विस्तार देवताओंसे ब्रह्माने कहाहै वह ब्रह्माण्ड पुराण

समुदाहृतम् ५५ योदद्यात्तद्व्यतीपाते पीतोर्णायुगसंयुतम्। राजसूयसहस्रस्य फल
माप्नोतिमानवः। हेमधेन्वायुतंतच्च ब्रह्मलोकफलप्रदम् ५६ चतुर्लक्षमिदंप्रोक्तं व्यासेना
द्भुतकर्म्मणा। मत्पितुर्ममपित्राच मयातुभ्यंनिवेदितम् ५७ इहलोकहितार्थाय संक्षिप्तंपर
मर्षिणा। इदमद्यापिदेवेषु शतकोटिप्रविस्तरम् ५८ उपभेदान्प्रवक्ष्यामिलोकेयेसम्प्रतिष्ठि
ताः। पाद्मेपुराणेतत्रोक्तं नरसिंहोपवर्णनम्। तच्चाष्टादशसाहस्रं नारसिंहमिहोच्यते ५९
नन्दायायत्रमाहात्म्यं कार्तिकेयेनवर्ण्यते। नन्दीपुराणंतल्लोकैराख्यातमितिकीर्त्यते ६०
यत्रसाम्बंपुरस्कृत्य भविष्येऽपिकथानकम्। प्रोच्यतेतत्पुनर्लोकेसाम्बमेतन्मुनिव्रताः ६१
पुरातनस्यकल्पस्य पुराणानिविदुर्बुधाः। धन्यंयशस्यमायुष्यं पुराणानामनुक्रमम्। एव
मादित्यसंज्ञाच तत्रैवपरिगद्यते ६२ अष्टादशभ्यस्तुपृथक् पुराणंयत्प्रदिश्यते। विजानी
ध्वंद्विजश्रेष्ठा! स्तदेतेभ्योविनिर्गतम् ६३ पंचाङ्गानिपुराणेषु आख्यानकमितिस्मृतम्।
सर्गश्चप्रतिसर्गश्च वंशोमन्वन्तराणिच। वंशानुचरितंचैव पुराणंपञ्चलक्षणम् ६४
ब्रह्मविष्ण्वर्करुद्राणां माहात्म्यंभुवनस्यच। ससंहारप्रदानाञ्च पुराणेपञ्चवर्णके ६५
धर्म्मश्चार्थश्चकामश्च मोक्षश्चैवात्रकीर्त्यते। सर्वेष्वपिपुराणेषु तद्विरुद्धञ्चयत्फल
म् ६६ सात्विकेषुपुराणेषुमाहात्म्यमधिकंहरेः। राजसेषुचमाहात्म्यमधिकंब्रह्मणोविदुः ६७
तद्वदग्नेश्चमाहात्म्यं तामसेषुशिवस्यच। संकीर्णेषुसरस्वत्याः पितृणाञ्चनिगद्यते ६८

संख्यामें बारहहजार दोसौहै ५४। ५५ इसपुराणको जो पुरुष पीताम्बर समेत व्यतीपातमें देताहै वहहजार राजसूय यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै और जो इसको सुवर्णकी गौसमेत दानदेताहै वह ब्रह्मलोकको प्राप्तहोताहै ५६ सूतजी कहतेहैं कि अद्भुत कर्म्मी व्यासजीने यह चारलाख संख्या सबपुराणों की मेरे पितासे वर्णन की है मेरे पिताने मुझसे कहा और हे ऋषियो मैंने तुमसे कहाहै ५७ यहां लोकके हितकेलिये परमपूज्य ऋषिने बड़ी संक्षेपतासे वर्णन कियाहै नहीं तो यह पुराण अबभी सौ कोटि संख्यासे वर्त्ततेहैं ५८ जो लोकमें स्थितपुराणहैं उनके उपभेदोंको कहताहूं पद्मपुराणमें नरसिंहका वर्णनहै वह अठारहहजार नारसिंह पुराणकहाहै ५९ और स्वामिकार्त्तिकने जहां नन्दाका माहात्म्यकहाहै उसको लोग नन्दीपुराणकहते हैं ६० और जहां शिवजीने गौरीको आगेकरके भविष्य कथावर्णन की है उसको लोकमें मुनिलोग सांब पुराणकहते हैं ६१ पुरातन कल्पके पुराणोंको और पुराणोंके अनुक्रमको जो पंडितलोग कहतेहैं सो धन आयु और यशको प्राप्तहोतेहैं इसीप्रकार आदित्योंकेभी नामकहेहैं ६२ अठारह पुराणोंसे जो पृथक् पुराणकहे हैं वह ऋषियोंने इन्हीं पुराणोंमें से निकालेहैं ६३ पुराणोंके विषयमें पांचअंगवर्णन किये हैं सर्ग—प्रतिसर्ग—वंश—मन्वन्तर और वंशके चरित यही पांचपुराणके लक्षणहैं ६४ इनपांचोंलक्षणोंवाले पुराणोंमें ब्रह्मा—विष्णु—सूर्य्य रुद्र और भुवन इन सबका माहात्म्य कहाहै और यही पांच संहारादिक करनेवालेभी कहेहैं ६५ इनसबपुराणोंमें धर्म अर्थ काम और मोक्ष कहाहै और इनका फलभी वर्णन कियाहै ६६ सात्विक पुराणोंमें अधिककरके हरिकामाहात्म्य कहाहै राजस पुराणोंमें ब्रह्माका अधिकमाहात्म्य कहाहै ६७ और तामसपुराणोंमें शिव और अग्निके माहात्म्यकहे हैं तीनों गुणवाले पुराणों में सरस्वती और पितरोंका

अष्टादशपुराणानि कृत्वासत्यवतीसुतः। भारताख्यानमखिलं चक्रेतदुपबृंहितम्। लक्षै
णैकेनयत्प्रोक्तं वेदार्थपरिबृंहितम् ६९ वाल्मीकिनातुयत्प्रोक्तं रामोपाख्यानमुत्तमम्। ब्र
ह्मणाभिहितंयच्च शतकोटिप्रविस्तरम् ७० आहृत्यनारदायैव तेनवाल्मीकयेपुनः। वा
ल्मीकिनाचलोकेषु धर्म्मकामार्थसाधनम्। एवंसपादाःपंचैते लक्षामर्त्यैप्रकीर्त्तिताः ७१
पुरातनस्यकल्पस्य पुराणानिविदुर्बुधाः। धन्यंयशस्यमायुष्यं पुराणानामनुक्रमम्। यः
पठेच्छृणुयाद्वापि सयातिपरमाङ्गतिम् ७२ इदंपवित्रंयशसोनिधानं इदंपितॄणामतिवल्ल
भञ्च। इदञ्चदेवेष्वमृतायितंच नित्यंत्विदंपापहरञ्चपुंसाम् ७३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

(सूत उवाच) अतःपरंप्रवक्ष्यामि दानधर्मानशेषतः। व्रतोपवाससंयुक्तान् यथाम
त्स्योदितानिह १ महादेवस्यसंवादे नारदस्यचधीमतः। यथावृत्तंप्रवक्ष्यामि धर्म्मका
मार्थसाधकम् २ कैलासशिखरासीनमपृच्छन्नारदःपुरा। त्रिनयनमनङ्गारिमनङ्गाङ्गहरं
हरम् ३ (नारद उवाच) भगवन्! देव! देवेश! ब्रह्मविष्णवन्द्रिनायक!। श्रीमदारो
ग्यरूपायुर्भोग्यसौभाग्यसम्पदा। संयुक्तस्तवविष्णोर्वा पुमान्भक्तःकथंभवेत् ४ नारीवा
विधवासर्व गुणसौभाग्यसंयुता। क्रमान्मुक्तिप्रदन्देव! किञ्चिद्व्रतमिहोच्यताम् ५
(ईश्वर उवाच) सम्यक्पृष्टंत्वयाब्रह्मन्! सर्वलोकहितावहम्। श्रुतमप्यत्रयच्छान्त्यैत

माहात्म्य कहाहै ६८ व्यासजी अठारहपुराणोंको रचकर फिर इनकी वृद्धिके अर्थ भारतको वर्णन करतेभये वह भारतवेदके अर्थों समेत एकलक्षकहाहै ६९ और वाल्मीकि ऋषिने जो उत्तम रामचन्द्रजीका उपाख्यानकहाहै और ब्रह्माजीने भी कहाहै वह सौ कोटि संख्यावाला कहाहै ७० यहरामायण ब्रह्माने नारदसे कहीहै नारदने वाल्मीकिजीसे और वाल्मीकिने लोकोंमें कही है इसप्रकार सवापांचलाख रामायण मनुष्योंमें वर्त्तमानहै ७१ पुरातन कल्पको पण्डितलोग पुराण कहतेहैं जो इनकी संख्याकरताहै वा सुनताहै वह धन यश और आयुको प्राप्तहोताहै और जो पढ़तासुनता और पूजनकरताहै वह परमगतिको पाताहै ७२ इनसबपुराणोंमें यह मत्स्यपुराण बड़ा पवित्र यशकामूल पितरोंका प्रिय देवताओंके अमृततुल्य और पुरुषोंके पापोंका हरनेवालाहै ७३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

सूतजीनेकहा है ऋषिवर्य्यो अब इसकेआगे मत्स्यावतारके कहेहुए सम्पूर्ण दान धर्म व्रत नियम और उपवासोंका वर्णन १ जिसमें कि श्री महादेवजी और नारदमुनिका सम्वाद और धर्म अर्थ काम का साधकहै वर्णन करताहूं २ कैलास पर्व्वतके शिखरपर विराजमान त्रिनेत्र कामारि और कामके शरीरके दहन करनेवाले महादेवजीसे प्रथम नारदजीने पूछा ३ कि हे देवदेव भगवन् देवेश ब्रह्मा और विष्णुमें मुख्य शिवजी आपका और विष्णुकाभक्त लक्ष्मी आयु आरोग्य रूप भाग्य सौभाग्य और सम्पति इनसबको कैसे प्राप्तहोताहै ४ और विधवानारीको गुण सौभाग्यसेयुक्त मुक्तिका देने वाला कौनसाव्रत करनायोग्यहै इनसबको आपवर्णन कीजिये ५ नारदके इसवचनको सुनकर महादेवजीने कहा कि हे नारदजी आपने सब लोकोंका हितकारी अच्छा प्रश्न किया है हे नारदजी

द्व्रतंशृणुनारद ! ६ नक्षत्रपुरुषंनाम व्रतंनारायणात्मकम् । पादादिकुर्याद्विधिवत् वि
ष्णुनामानुकीर्त्तनम् ७ प्रतिमांवासुदेवस्य मूलर्क्षादिषुचार्चयेत् । चैत्रमासंसमासाद्यकृ
त्वाब्राह्मणवाचनम् ८ मूलेनमोविश्वधरायपादौ गुल्फावनन्तायचरोहिणीषु । जंघेऽभि
पूज्येवरदायचैवद्वेजानुनीवाश्विकुमार ऋक्षे ९ पूर्वोत्तराषाढयुगेतथोरू नमःशिवायेत्यभि
पूजनीयौ । पूर्वोत्तराफल्गुनियुग्मकेचमेढ्रंनमः पञ्चशरायपूज्यम् १०कटिंनमःशार्ङ्गधराय
विष्णोःसंपूजयेन्नारद!कृत्तिकासुयथार्चयेत् भाद्रपदाद्वयेचपार्श्वेनमःकेशिनिषूदनाय ११
कुक्षिद्वयंनारद!रेवतीषु दामोदरायेत्यभिपूजनीयम् । ऋक्षेऽनुराधासुचमाधवाय नमस्त
थोरस्थलमेवपूज्यम् १२ पृष्ठंधनिष्ठासुचपूजनीयमघौघविध्वंसकरायतद्वत् । श्रीशंखचक्रा
सिगदाधराय नमोविशाखासुभुजाश्चपूज्याः १३ हस्तेतुहस्तामधुसूदनायनमोऽभिपूज्या
इतिकैटभारेः । पुनर्वसावङ्गुलिपूर्वभागाः साम्नामधीशायनमेऽभिपूज्याः १४भुजङ्गनक्ष
त्रदिनेनखानि संपूजयेन्मत्स्यशरीरभाजः । कूर्मस्यपादौशरणंव्रजामि ज्येष्ठासुकण्ठंह
रिरर्चनीयः १५ श्रोत्रेवराहायनमोऽभिपूज्या जनार्दनस्यश्रवणेनसम्यक् । पुष्येमुखंदानव
सूदनाय नमोनृसिंहायचपूजनीयम् १६ नमोनमःकारणवामनाय स्वातीषुदन्ताग्रमथा
र्चनीयम् । आस्यंहरेर्भार्गवनन्दनाय सम्पूजनीयंद्विजवारणेतु १७ नमोऽस्तुरामायमघा
सुनासासंपूजनीयारघुनन्दनस्य । मृगोत्तमाङ्गेनयनेऽभिपूज्ये नमोऽस्तुतेरामविघूर्णिताक्ष!
१८बुद्धायशान्तायनमोललाटं चित्रासुसम्पूज्यतमंमुरारेः । शिरोऽभिपूज्यंभरणीषुविष्णो
र्नमोऽस्तुविश्वेश्वर ! कल्किरूपिणे १९ आर्द्रासुकेशाःपुरुषोत्तमस्य सम्पूजनीयाहरये

विधवाके शान्ति कल्याणके अर्थ व्रतको सुनों ६ एकनक्षत्र पुरुष नामव्रत है वह नारायणका अंग है विष्णुके नामसे युक्त उसपादादि व्रतको करे ७ ब्राह्मण के वचनसे भगवान्की मूर्त्ति वनाकर चैत्रमाससे लेकर मूलनक्षत्रादिकों में पूजनकरे ८ महाराजके चरणों में तो मूलनक्षत्रयुक्त विश्वधरका पूजनकरे टकनों में रोहिणीयुक्त अनन्तजीका–पिंडिलियोंमें वरदकापूजनकरे दोनों घुटनोंमें अश्विनी कुमारोंका ९ पूर्वापाढ़ और उत्तरापाढ़में जंघाओंका शिवयुक्त पूजन करे- पूर्वा और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें लिंगस्थानमें कामसहित पूजनकरे १० विष्णुकी कटिमें शार्ङ्गधरसहित कृत्तिकाका पूजनकरे केशिनिषूदनसमेत-पसलियोंमें पूर्वा और उत्तराभाद्रपदका पूजन करे ११ हे नारद दोनोंकोखोंमें रेवतीयुक्त दामोदरका--हृदयमें अनुराधायुक्त माधवका पूजनकरे १२ पीठमें धनिष्ठायुक्त पापहारी विष्णुकापूजनकरे और भुजाओंमें विशाखायुक्त शंख चक्रादिधारी विष्णुका पूजनकरे १३ हस्तनक्षत्रयुक्त हाथोंमें मधुसूदनका और कैटभारिका पूजनकरे और पुनर्वसुसहित अंगुलियोंके पूर्वभागमें सामवेदके अधीश्वरका पूजनकरे १४ नखोंमें मत्स्यावतारयुक्त श्लेषाका पूजनकरे ज्येष्ठायुक्त कण्ठमें हरिकापूजनकरे १५ श्रवणयुक्त जनार्द्दनका कानोंमें पूजनकरे पुष्ययुक्त नृसिंहजीका मूर्त्तिकेमुखमें पूजनकरे १६ दांतोंके अग्रभागमें स्वातीयुक्त वामनजीका पूजनकरे फिर हरिके मुखमें परशुरामजीका पूजनकरे १७ मूर्त्तिकी नासिकामें मघायुक्त रामचन्द्रका पूजनकरे और मृगशिरयुक्त रामचन्द्रजीका मस्तक और नेत्रोंमें पूजनकरे १८ बुद्ध अवतार सहित मूर्त्तिके माथेमें

नमस्ते। उपोषितेनर्क्षदिनेषुभक्त्या सम्पूजनीयाद्विजपुङ्गवाःस्युः २० पूर्णेव्रतेसर्वगुणा न्विताय वाग्रूपशीलायचसामगाय। हैमींविशालायतबाहुदण्डां मुक्ताफलेन्दूपलवज्रयुक्ताम् २१ जलस्यपूर्णेकलशेनिविष्टा मर्चांहरेर्वस्त्रगवासहैव। शय्यांतथोपस्करभाजनादि युक्तांप्रदद्याद्द्विजपुंगवाय २२ यद्यस्तियत्किंचिदिहास्तिदेयं दद्याद्द्विजायात्महितायसर्वम्। मनोरथंनःसफलीकुरुष्व हिरण्यगर्भाच्युत! रुद्ररूपिन्! २३ सलक्ष्मीकंसभार्याय काञ्चनंपुरुषोत्तमम्। शय्यांचदद्यान्मन्त्रेणग्रन्थिभेदविवर्जितम् २४ यथानविष्णुभक्तानां वृजिनंजायतेक्वचित्। तथास्वरूपतारोग्यं केशवेभक्तिमुत्तमाम् २५ यथानलक्ष्म्याशयनं तवशून्यंजनार्दन!। शय्याममाप्यशून्यास्तु कृष्ण! जन्मनिजन्मनि २६ एवंनिवेद्यतत्सर्वं वस्त्रमाल्यानुलेपनम्। नक्षत्रपुरुषज्ञाय विप्रायाथविसर्जयेत् २७ भुञ्जीतातैललवणंसर्वक्षेष्वप्युपोषितः। भोजनञ्चयथाशक्त्यावित्तशाठ्यंविवर्जयेत् २८ इतिनक्षत्रपुरुषं उपास्यविधिवत्स्वयम्। सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोकेमहीयते २९ ब्रह्महत्यादिकंकिंचिदिहवामुत्रवाकृतम्। आत्मनावाथपितृभि स्तत्सर्वंक्षयमाप्नुयात् ३० इतिपठतिशृणोतियश्चभक्त्या पुरुषवरोव्रतमंगनाथकुर्यात्। कलिकलुषविदारणंमुरारेः सकलविभूतिफलप्रदञ्चपुंसाम् ३१ ॥इति श्रीमत्स्यपुराणेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४॥

चित्राकापूजनकरे भरणीसहित मूर्त्तिके शिरमें कल्कीका पूजनकरे १९ मूर्त्तिके बालोंमें आर्द्रासहित हरिका पूजनकरे और व्रतकेदिन श्रेष्ठब्राह्मणोंका पूजनकरे २० जबव्रतपूर्णहोजाय तब सर्वगुणयुक्त बाणी रूप शीलयुक्त सामवेद के जाननेवाले ब्राह्मणको सुवर्णकी सुन्दरमूर्त्ति बनाकर सुवर्णका दंड मोतीहीरे आदिरत्नों से युक्त करके २१ उसमूर्त्तिको जलका कलश स्थापनकर वस्त्रगौ शय्याइत्यादि उपस्करों समेत श्रेष्ठकुलीन ब्राह्मणको दानदेवे २२ और अपने हितकारी वस्तुओंमें से जो वस्तु ब्राह्मणके देनेके योग्यसमझे वह सबब्राह्मणको देदे इसकेपीछे ऐसेप्रार्थनाकरे कि हेअच्युत हेहिरण्य गर्भ हेरुद्ररूपिन् हमारा मनोरथ सफलकरो २३ लक्ष्मीसहित भगवान्की सुवर्णकीमूर्त्ति और शय्या अपने सरलचित्तसे सस्त्रीक ब्राह्मणकोदेवे २४ और विष्णुभक्तोंको जिसरीतिसे कोई दुखनहींहोवे उसीरीतिके द्वारा उत्तमभक्तिकरे २५ और यह प्रार्थनाकरे कि हेजनार्द्दन जैसे तुम्हारीशय्यालक्ष्मी के विनाशून्यनहींरहती उसीप्रकार मेरीभी शय्याजन्म २ में शून्यनरहै २६ नक्षत्रपुरुष और ब्राह्मण के अर्थ इसप्रकारसे वस्त्रमाला और गन्धादि निवेदन करके विसर्जन करदेवे २७ और सबनक्षत्रोंमें तेल नोन भोजन न करे यथाशक्ति भोजन करावे और आपभीकरे धनमें शठता न करे २८ इस प्रकार नक्षत्रपुरुषकी विधिवत् उपासना करके सम्पूर्ण कामनाओंको प्राप्तहोकर विष्णुलोकमें आनंद भोगते हैं ऐसे व्रतकरनेसे इसलोक और परलोक दोनोंलोकोंमें कियेहुए ब्रह्महत्यादि पापअपने और अपने पितरोंकेभी नष्टहोजातेहैं २९। ३० जो स्त्री अथवा पुरुष इस व्रतकी कथाको भक्ति पूर्वक पढ़ेगा वा सुनेगा अथवा व्रतको भक्तिपूर्वक करेगा उसके सम्पूर्णपाप-इस व्रतके करने सुनने और पढ़नेसे नाशको प्राप्तहोजायंगे यह व्रतपुरुषोंको सम्पूर्ण बिभूतियोंसमेत अनेक फलोंको देताहै ३१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

(नारद उवाच) उपवासेष्वशक्तस्य तदेवफलमिच्छतः। अनभ्यासेनरोगाद्वाकिमिष्टं व्रतमुत्तमम् १ (ईश्वर उवाच) उपवासेप्यशक्तानां नक्तम्भोजनमिष्यते। यस्मिन्व्रतेतद्प्यत्र श्रूयतामक्षयम्महत् २ आदित्यशयनन्नाम यथावच्छङ्करार्चनम्। येषुनक्षत्रेयोगेषु पुराणज्ञाःप्रचक्षते३ यदाहस्तेनसप्तम्यां आदित्यस्यदिनंभवेत्। सूर्यस्यचाथसंक्रांतिस्तिथिःसासार्वकामिकी ४ उमामहेश्वरस्यार्चामर्चयेत्सूर्यनामभिः। सूर्यार्चांशिवलिंगेच प्रकुर्वन्पूजयेद्यतः ५ उमापतेरवेर्वापि नभेदोदृश्यतेक्वचित्। यस्मात्तस्मान्मुनिश्रेष्ठ! गृहेशंभुंसमर्चयेत् ६ हस्तेचसूर्यायनमोस्तुपादावर्कायचित्रासुचगुल्फदेशम्। स्वातीषुजंघेपुरुषोत्तमाय धात्रेविशाखासुचजानुदेशम् ७ तथानुराधासुनमोऽभिपूज्यमूरुद्वयञ्चैवसहस्रभानोः। ज्येष्ठास्वनंगायनमोऽस्तुगुह्यमिन्द्रायसोमायकटीचमूले, ८ पूर्वोत्तराषाढयुगेचनाभिन्त्वष्ट्रेनमःसप्ततुरंगमाय। तीक्ष्णांशवेचश्रवणेचकुक्षौ पृष्ठंधनिष्ठासुविकर्तनाय ९ चक्षुस्थलंध्वान्तविनाशनाय जलाधिपर्क्षेपरिपूजनीयम्। पूर्वोत्तराभाद्रपदाद्वयेचबाहूनमश्चण्डकरायपूज्यौ १० साम्नामधीशायकरद्वयञ्च संपूजनीयंद्विज! रेवतीषु। नखानिपूज्यानितथाश्विनीषु नमोऽस्तुसप्ताश्वधुरन्धराय ११ कठोरधाम्नेभरणीषुकण्ठं दिवाकरायेत्यभिपूजनीया। ग्रीवाग्निनक्षत्रेधरमम्बुजेशे संपूजयेन्नारद! रोहिणीषु १२ मृगोत्तमाङ्गंदशनामुरारेः सम्पूजनीयाहरयेनमस्ते। नमःसवित्रेरसनांशङ्करेच नासाभिपूज्याचपुनर्व्वसौच १३ ललाटमम्भोरुहवल्लभाय पुष्येलकावेदशरीरधारिणे। सार्पे

यहसुनकर नारदजीने कहाकि हेईश्वर जोइसव्रतकरनेमें रोगसे अथवा अन्यकिसी कारण से वह करनेमें असमर्थ होतो उसको कौनसा उत्तमव्रत करनाश्रेष्ठहै १ईश्वरने कहा जो व्रत करनेमें समर्थ नहो वहभी रात्रिमें भोजनकरे उसकाभी बड़ा अक्षयफल कहाहै २ और पुराणोंके जानने वाले जिन नक्षत्रोंमें आदित्य शयन शंकरार्चन व्रतको वर्णनकरते हैं वहसुनो ३ जिसदिनसप्तमी तिथिको हस्त नक्षत्रहोय वहसूर्य्यकादिनहै अथवा संक्रान्तिकादिनहै यहसम्पूर्ण कामनाओंके देनेवाले हैं ४ इनदिनों में उमा महेश्वरकी मूर्त्तियोंको सूर्य्यके नामोंसे पूजे औरसूर्य्यकी मूर्त्तिको शिवलिंगमें पूजनकरे ५ हे मुनियोंमें श्रेष्ठ नारद सूर्य्यमें और शिवमें कुछभेदनहीं है इसहेतुसेघरमें जबमहादेवका पूजनकरे ६ तबहस्तयुक्त सूर्य्यको मूर्त्तिके चरणोंमें नमस्कारकरे और चित्रायुक्त सूर्य्यको टकनोंमें स्वातीयुक्त सूर्य्य को पिंडिलियोंमें पुरुपोत्तम नामसे नमस्कारकरे विशाखायुक्त धाताको घोटुओंमें ७ अनुराधायुक्त सूर्य्य को दोनों जंघाओंमें ज्येष्ठायुक्त कामदेवको गुह्यमें मूलयुक्त इन्द्रवा चन्द्रमाको कटिमें ८ पूर्वाषाढ़युक्त त्वष्टाको नाभिमें और श्रवणयुक्त तीक्ष्णांशु सूर्य्यको कुक्षिमें—धनिष्ठायुक्त विकर्त्तन नामसूर्य्यको पीठमें नमस्कारकरे ९ शतभिषायुक्त ध्वान्त विनाशसूर्य्यकोनेत्रोंमें पूजनकरे औरपूर्व्वाभाद्रपद औरउत्तराभाद्र युक्तचंडकरनाम सूर्य्यको भुजाओंमें पूजनकरे १० हेद्विजवर्य्य नारदरेवतीयुक्त सामोंको अधीश्वरसूर्य्य को दोनों हाथोंमें पूजे अश्विनी नक्षत्रमें सातघोड़ों वाले सूर्य्यका नखोंमें पूजन करे ११ भरणीमें कठोरधामा सूर्य्यका कंठमें पूजनकरे हेनारद कृत्तिकामें अम्बुजेश सूर्य्यका ग्रीवामें पूजनकरे—रोहिणीमें दिवाकर सूर्य्यका कन्धोंमें पूजन करे १२ मृगशिरमें मस्तकके बीच मुरारिका पूजनकरे-आर्द्रा

ऽथमौलिंविबुधप्रियाय मघासुकर्णाविति गोगणेशे १४ पूर्व्वासुगोब्राह्मणवन्दनाय ने त्राणिसम्पूज्यतमानिशम्भोः। अथोत्तराफल्गुनिभेभ्रुवौच विश्वेश्वरायेतिच पूजनीये १५ नमोऽस्तुपाशांकुशशूलपद्मकपालसर्पेन्दुधनुर्धराय। गजासुरानंगपुरान्धकादि विनाश मूलायनमःशिवाय १६ इत्यादिचास्त्राणिच पूज्यनित्यं विश्वेश्वरायेतिशिराभिपूज्य। भो क्तव्यमत्रैवमतैलशाकममांसमक्षारमभुक्तशेषम् १७ इत्येवंद्विज! नक्तानिकृत्वादद्यात्पुन र्वशी। शालेयतण्डुलप्रस्थमौदुम्बरमयेघृतम् १८ संस्थाप्यपात्रेविप्राय सहिरण्यंनिवे दयेत्। सप्तमेवस्त्रयुग्मञ्चपारणेत्वधिकंभवेत् १९ चतुर्दशेतुसंप्राप्तेपारणेनारदाब्दिके। ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्यागुड़क्षीरघृतादिभिः२० कृत्वातुकाञ्चनंपद्ममष्टपत्रंसकर्णिकम्। शुद्धमष्टांगुलंतच्चपद्मरागदलान्वितम् २१ शय्यांविलक्षणांकृत्वा विरुद्धग्रन्थिवर्जिताम्। सोपधानकविश्रामस्वास्तरव्यजनानिच २२ भाजनोपानहच्छत्र चामरासनदर्पणैः। भूषणैरपिसंयुक्तां फलवस्त्रानुलेपनैः २३ तस्यांविधायतत्पद्ममलंकृत्यगुणान्वितम्। कपिलांवस्त्रसंयुक्तां सुशीलाञ्चपयस्विनीम् २४ रौप्यखुरींहेमशृङ्गीं सवत्सांकांस्यदोह नाम्। दद्यान्मन्त्रेणपूर्व्वाह्णे नचैनामभिलंघयेत् २५ यथैवादित्यशयनमशून्यंतवस र्व्वदा। कान्त्याधृत्याश्रियारत्या तथामेसन्तुसिद्धयः २६ यथानदेवाःश्रेयांसंत्वदन्यमन

में सवितायुक्त जिह्वाका पूजन करे–पुनर्वसुमें सूर्य्यकी नासिका का पूजनकरे १३ पुष्यमें कमल वल्लभ सूर्य्यका मस्तकमें पूजनकरे–श्लेषामें देवप्रियं सूर्य्यका मुकुटमें पूजनकरे–मघामें गोगणेश सूर्य्यका कानोंमें पूजनकरे १४ पूर्वाफाल्गुनी में ब्राह्मण मुखसूर्य्यका नेत्रों में पूजनकरे उत्तरा फाल्गुनीमें शम्भु और विश्वेश्वरका भृकुटियोंमें पूजनकरे १५ पीछे शिवजीकी इसप्रकार प्रार्थना करे कि हे पाश–अंकुश–शूल–पद्म–कपाल–सर्प और चन्द्रमाके धारण करने वाले ईश्वर आप जैसे हैं वैसेको नमस्कारहै और गज–असुर–अनंग और पुरान्धक इनसबके नाशकरनेवाले आपको नमस्कारहै १६,इनके उक्त सब अस्त्रोंका पूजन करके और विश्वेश्वर महादेवको शिरसे प्रणाम करके प्रतिदिन तेल–मांस–शाक–और लवण इनचारोंसे रहित भोजनकरे १७ हेनारद इसप्रकार रात्रियोंमें भोजन करके फिर गूलरकी लकड़ीके पात्रमें सांठीके चावल और घृत स्थापन करे १८ और उसमें कुछ सुवर्ण रखकर ब्राह्मणको देवे फिर व्रतके सातवें दिन दो वस्त्रदेवे १९ और वर्षके मध्यवर्ती चौदहवें पारणमें गुड़ क्षीर और घृतसे ब्राह्मणोंको भोजनकरावे २० तदनन्तर आठअंगुल लम्बा सुवर्णका शुद्धपुखराजके आठपत्तों वाला कमल पंखड़ी समेत बनवावे उसके साथ तोशक तकिया सोड़चांदनीतकिया २१। २२ पात्र जूते छत्र–चमर–आसन–दर्पण–भूषण–फल वस्त्र और चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओं समेत शय्यास्थापन कर उसकमलको वस्त्रोंसे शृंगारकरके चाँदीकेखुर सुवर्णके शृंगवाली सवत्सा गौ समेत पूर्व्वाह्णकालमें इनसबवस्तुओंका दान ब्राह्मणको करे दान कभी गौसेरहित न करे २३। २५ फिरसूर्य्यसे यहप्रार्थनाकरे कि हेसूर्य्य जैसेआपकी शय्या शून्यनहीं और कान्ति–धृति–श्री और रति इन सबसे युक्तहै वैसीही मुझेभी सिद्धिहोय २६ हेसूर्य्यदेवता आपके सिवाय और कौन कल्याणका करने वालाहै इसहेतुसे आपही मुझको इसदुःखरूपी संसार

घंविदुः। तथामामुद्धराशेष दुःखसंसारसागरात् २७ ततःप्रदक्षिणीकृत्य प्रणिपत्यविस
र्जयेत्। शय्यागवादितत्सर्वं द्विजस्यभवनन्नयेत् २८ नैतद्विशीलायनदाम्भिकायकुतर्के
दुष्टायविनिन्दकाय। प्रकाशनीयंव्रतमिन्दुमौले र्यश्चापिनिन्दामधिकांविधत्ते २९ भक्ता
यदान्तायचगुह्यमेतदाख्येयमानन्दकरंशिवस्य। इदंमहापातकभिन्नराणामप्यक्षयंवेद
विदोवदन्ति ३० नवन्धुपुत्रेणवलैर्वियुक्तः पत्नीभिरानन्दकरःसुराणाम्। नाभ्येतिरो
गंनचशोकदुःखं यावाथनारीकुरुतेऽतिभक्त्या ३१ इदंवसिष्ठेनपुरार्जुनेन कृतंकुवेरेणपु
रन्दरेण। यत्कीर्तनेनाप्यखिलानिनाशमायान्तिपापानिनसंशयोऽस्ति ३२ इतिपठति
शृणोतिवायइत्थं रविशयनंपुरुहुतवल्लभःस्यात्। अपिनरकंगतान्पितॄनशेषानपिदि
वमानयतीहयःकरोति ३३॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

(श्रीभगवानुवाच) कृष्णाष्टमीमथोवक्ष्ये सर्वपापप्रणाशिनीम्। शान्तिर्मुक्तिश्चभ
वति जयःपुंसांविशेषतः १ शंकरंमार्गशिरसि शम्भुम्पौषेऽभिपूजयेत्। माघेमहेश्वरंदेवं
महादेवञ्चफाल्गुने २ स्थाणुंचैत्रेशिवंतद्वद्वैशाखेत्वर्चयेन्नरः। ज्येष्ठेपशुपतिंचार्चेदा
षाढेउग्रमर्चयेत् ३ पूजयेत्श्रावणेशर्वं नभस्येत्र्यम्बकन्तथा। हरमाश्वयुजेमासि तथे
शानञ्चकार्तिके ४ कृष्णाष्टमीषुसर्वासु शक्तःसम्पूजयेद्द्विजान्। गोभूहिरण्यवासोभिः
शिवभक्तानुपोषितः ५ गोमूत्रघृतगोक्षीर तिलान्यवकुशोदकम्। गोशृङ्गोदशिरीषार्क

सागर से उद्धार करो २७ ऐसेकह परिक्रमाकर प्रणाम नमस्कार करके विसर्जन करे और शय्या गौ आदिक सम्पूर्ण दानकी वस्तुब्राह्मणके घरभेजदे अपने स्थानमें न रक्खे २८ यह महादेवजीका व्रत शील रहित दम्भी–कुतर्की–दुष्ट–निन्दक आदि कुत्सित पुरुषोंके आगे प्रकाश करना न चाहिये क्योंकि वह अधिक निन्दाकरेगा तो महापापहोगा २९ इस आनन्ददायक गुप्त शिवजीके व्रतको भक्तजन–दान्त और जितेन्द्री पुरुषको देना योग्यहै वेदज्ञपुरुष इस व्रतको महापातकोंका नष्टकरने वाला और अक्षय फलका देनेवाला वर्णन करते हैं ३० जो स्त्री अथवा पुरुष इस व्रतको भक्तिसे करता है उसके बंधु और पुत्रोंका वियोग नहीं होता और स्त्रियोंसमेत देवताओं के आनन्दको प्राप्त होताहै रोग शोक और दुःखकोकभी नहीं प्राप्तहोता है ३१ इस व्रतको प्रथम वशिष्ठ–अर्जुन–कुबेर और इन्द्र इन सबने कियाहै इसव्रतके कीर्त्तनहीसे निस्सन्देह सबपापनाशको प्राप्तहोजाते हैं ३२ इस रविशयन व्रतको जो पढ़ताहै वा सुनताहै वह इन्द्रको प्रियहोता है और नरकमें भी गयेहुए पितरों को स्वर्गमें प्राप्तकरता है ३३॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

श्रीभगवान् कहते हैं कि अब संपूर्ण पापोंकी नाशकरनेवाली जो कृष्णाष्टमी है उसके फलको वर्णन करते हैं विशेष करके इस व्रतसे पुरुषोंकी जय शान्ति और मुक्तिहोती है १ शंकरका तो मार्गशिरमें पूजनकरे–पौषमें शंभुका–माघमें महेश्वरका–फाल्गुनमें महादेवजी का २ चैत्रमें स्थाणुका–वैशाख में शिवका ज्येष्ठमें पशुपतिका और आषाढमें उग्रका पूजनकरे ३ श्रावणमें शर्वका–भाद्रपदमें त्र्यम्बकका–आश्विनमें हरका–कार्त्तिकमें ईशानका पूजनकरे ४ और संपूर्ण कृष्णपक्षकी अष्टमियों में ब्राह्मणोंका पूजनकरे और गौ भूमि सुवर्ण वस्त्र इन सबका दानदेकर शिवका व्रतकरे ५ पंचगव्य

विल्वपत्रदधीनिच। पञ्चगव्यञ्चसम्प्राश्य शंकरंपूजयेन्निशि ६ अश्वत्थञ्चवटञ्चैवो दुम्बरंप्लक्षमेवच। पलाशंजम्बुवृक्षञ्च विदुषञ्चमहर्षयः ७ मार्गशीर्षाढमासाभ्यां द्वा भ्यान्द्वाभ्यामितिक्रमात्। एकैकंदन्तपवनं वृक्षेष्वेतेषुभक्षयेत् ८ देवायदद्यादर्घ्यंचकृष्णां गांकृष्णांवाससम्। दद्यात्समाप्तेदध्यन्नं वितानध्वजचामरम् ९ द्विजानामुदकुम्भांश्च प ञ्चरत्नसमन्वितान्। गावःकृष्णाःसुवर्णंच वासांसिविविधानिच। अशक्तस्तुपुनर्दद्या द्वा मेकामपिशक्तितः १० नवित्तशाठ्यंकुर्वीत कुर्वन्दोषमवाप्नुयात्। कृष्णाष्टमीमुपोष्यैव सप्तकल्पशतत्रयम्। पुमान्सम्पूजितोदेवैः शिवलोकेमहीयते ११॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

(नारद उवाच) दीर्घायुरारोग्यकुलाभिवृद्धियुक्तःपुमान्भूपकुलायुतः स्यात्। मुहु र्मुहुर्जन्मनियेनसम्यक्व्रतंसमाचक्ष्वतदिन्दुमौले! १ श्रीभगवानुवाच। त्वयापृष्टमिदं सम्यक्उक्तंचाक्षय्यकारकम्। रहस्यंतववक्ष्यामि यत्पुराणविदोविदुः २ रोहिणीचन्द्रश यनं नामव्रतमिहोत्तमम्। तस्मिन्नारायणस्यार्च्या मर्चयेदिन्दुनामभिः ३ यदासोमदिने शुक्ला भवेत्पञ्चदशीक्वचित्। अथवाब्रह्मनक्षत्रं पौर्णमास्यांप्रजायते ४ तदास्नानन्नरः कुर्यात् पंचगव्येनसर्षपैः। आप्यायस्वेतितुजपेद्विद्वानष्टशतंपुनः ५ शूद्रोऽपिपरयाभ क्त्या पाषण्डालापवर्जितः। सोमायवरदायाथ विष्णवेचनमोनमः ६ कृतजप्यःस्वभव

लेकर गोमूत्र–घृत–गौकादूध–तिल–जव–कुश–जल–गौकेसींगके धोवनका जल–सिरसका पत्ता–आककापत्ता–बेलपत्र और दधि इन सबसे रात्रिको शिवका पूजनकरे ६ पीपल–बड़–गूलर–पिल- खन–ढाक–जामन–इन वृक्षोंके नीचे विद्वान् और महर्षियोंको मार्गशिरसे आदिलेकर दोदो महीनों में ब्राह्मणोंका भोजनकराना योग्यहै ७।८ देवताको अर्घदानकरे कालेवस्त्रदे और व्रतकी समाप्तिमें दधि–अन्न–वितान–ध्वजा–चामरआदिक दानकरे ९ ब्राह्मणोंको पांचरत्नोंसे युक्त जलके कलश दानदे और कालीगौ सुवर्ण और अनेक प्रकारके वस्त्र यहभी देवे जो सबदानोंकी सामर्थ्य न होये तो एक गौदे १० दानमें वित्तकी शठतानकरे जो वित्तशाठ्य करता है उसको दोष प्राप्तहोताहै–इस प्रकार कृष्णपक्षकी अष्टमीका व्रतकरके इक्कीस कल्प पर्य्यन्त देवताओं से पूजित होकर शिवलोकमें आनन्द करताहै ११॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

यह सबकथा सुनकर नारदमुनिने कहा हे महादेवजी जिस व्रतके करनेसे दीर्घआयु–आरोग्य–कुलकी वृद्धि–राज्य कुलसेयुक्त इत्यादिक फल वारंवार जन्मोंमें प्राप्तहोतेहैं उसव्रतको आप श्रेष्ठता से वर्णन कीजिये १ यह सुनकर भगवान् बोले कि हेनारद तेरे पूछेहुए अक्षय फलवाले व्रतको मैंने तुम्हसे अच्छे प्रकारसे कहा अब उसरहस्यकोभी कहताहूं जिसको पुराणके जाननेवाले वर्णन करते हैं २हेनारद रोहिणी चन्द्र शयनव्रत महाउत्तम है उसव्रतमें नारायणकी मूर्त्तिको चन्द्रमाके नामोंकर के पूजनकरे ३ जब कभी सोमवारके दिन शुक्लपक्षकी पूर्णिमाहोय अथवा पूर्णिमाको रोहिणी नक्षत्र होय४तबविद्वान् पंचगव्य और सिरसोंसे स्नानकरे पीछे (आप्यायस्व) इस मंत्रका एकसौ आठ संख्याजप करे५औरशूद्रभी परमभक्तिसे पाखंडआदिसे वर्जितहोकर वरदायकसोमको और विष्णुको

नादागत्यमधुसूदनम्। पूजयेत्फलपुष्पैश्च सोमनामानिकीर्तयन् ७ सोमायशान्तायनमो
ऽस्तु पादावनन्तधाम्नेतिचजानुजंघे। ऊरुद्वयंचापिजलोदराय सम्पूजयेन्मेढ्रमनन्तबा
हवे ८ नमोनमःकामसुखप्रदाय कटिःशशांकस्यसदार्चनीया। तथोदरंचाप्यमृतोदराय
नाभिःशशांकायनमोऽभिपूज्या ९ नमोऽस्तुचन्द्रायमुखंचपूज्यं दन्ताद्विजानामधिपायपू
ज्याः। हास्यंनमश्चन्द्रमसेऽभिपूज्य मोंष्ठौकुमुद्वन्तवनप्रियाय १० नासाचनाथायवनौ
षधीना मानन्दभूतायपुनर्भ्रुवौच। नेत्रद्वयंपद्मनिभन्तथेन्दो रिन्दीवरश्यामकरायशौरेः
११ नमःसमस्ताध्वरवन्दिताय कर्णद्वयंदैत्यनिषूदनाय। ललाटमिन्दोरुदधिप्रियाय के
शाःसुषुम्नाधिपतेःप्रपूज्याः १२ शिरःशशांकायनमोमुरारे र्विश्वेश्वरायेतिनमःकिरीटिने।
पद्मप्रियेरोहिणिनामलक्ष्मीः सौभाग्यसौख्यामृतचारुकाये १३ देवींचसम्पूज्यसुगन्ध
पुष्पै र्नैवेद्यपुष्पादिभिरिन्दुपत्नीम्। सुप्त्वाथभूमौपुनरुत्थितेन स्नात्वाचविप्रायहविष्य
युक्तः १४ देयःप्रभातेसहिरण्यवारि कुम्भोनमःपापविनाशनाय। सम्प्राश्यगोमूत्रममां
समन्न मक्षारमष्टावथविंशतिंचाग्रासान्पयःसर्पिर्युतानुपोष्य भुक्तेतिहासंश्रृणुयान्मुहूर्त्तम्
१५ कदम्बनीलोत्पलकेतकानि जातीसरोजंशतपत्रिका च। अम्लानकुब्जान्यथसिन्दु
वारं पुष्पम्पुनर्नारद! मल्लिकायाः। शुभ्रंचविष्णोःकरवीरपुष्पं श्रीचम्पकंचन्द्रमसःप्र
देयम् १६ श्रावणादिषुमासेषु क्रमादेतानिसर्वदा। यस्मिन्मासेव्रतादिःस्यात्तत्पुष्पैरर्च
येद्धरिम् १७ एवंसंवत्सरंयावदुपास्यविधिवन्नरः। व्रतान्तेशयनन्दद्यात् दर्पणोपस्क

नमस्कारकरे ६ भगवत्के मन्दिरमें जपकरके फिर फलपुष्पादिकोंसे नारायणकापूजनकरे और चन्द्रमा
के नामोंका कीर्त्तनकरे ७ भगवत्की मूर्त्तिमें चन्द्रमाका पूजन और नमस्कारकर चरणोंमें शान्तरूप
सोमको नमस्कारकरे और पूजनकरे घोंटू और पिंडियोंमें अनन्तधामाका पूजनकरे जंघाओंमें जलो
दरका लिंगमें अनन्तबाहुका पूजनकरे ८ कटिमेंकाम सुखप्रदको पेटमें अमृतोदरका नाभिमें शशांकका
९ मुखमें चन्द्रमाका-दांतोंमें द्विजाधिपका हास्य में चन्द्रमाका होठोंमें कुमुद्वन प्रियका पूजनकरे
१० नासिकामें वनौषधि नाथका-भृकुटियोंमें आनन्दभूतका-कमलरूपी दोनों नेत्रोंमें इन्दीवरके
समान श्यामकरका पूजनकरे ११ दोनोंकानोंमें सर्वअध्वरवन्दित और दैत्यनिषूदनका और ललाट
में इन्दुका और सुषुम्नाधिपतिका पूजनकरके केशोंमें उदधिप्रियका पूजनकरे १२ शिरमें शशांक
का और भगवत्के मुकुटमें विश्वेश्वरका पूजनकरे और रोहिणी का इसरीतिसे पूजनकरे कि पद्म
प्रिये हेरोहिणी नामलक्ष्मी-हे सौभाग्यसौख्यामृतचारुकाये १३ ऐसाकहकर सुगन्धितपुष्प और
नैवेद्यादिकों करके देवीरोहिणी का पूजनकरके रात्रिको पृथ्वीमें शयनकर प्रातःकाल उठकर प्रातः
कालही पापनाशके निमित्त सुवर्ण और हविष्यान्नयुक्त ब्राह्मणके अर्थ जलकेकुम्भ का दानकरे फिर
गोमूत्र पीकर मांस लवण रहित अट्ठाईस ग्रास घृतयुक्त भोजनकरके दो मुहूर्त्ततक इतिहास श्रवणकरे
१४।१५ फिर कदंब-नीलाकमल-केतकी-जुही-कमल-सेवती-कुब्जवृक्ष-संभालू-चमेली-सफेद
कनेर और चंपा इनसबप्रकारके पुष्पोंसे विष्णुका और चन्द्रमाका पूजनकरे १६ श्रावणके महीनेसे
आदि लेकर सम्पूर्ण कालमें जैसे पुष्पहोंय उनसे हरिका पूजनकरे १७ इसप्रकार मनुष्य संवत्सरप-

शान्वितम् १८ रोहिणीचन्द्रमिथुनं कारयित्वाथकांचनम्। चन्द्रःषडंगुलःकार्यो रोहिणी चतुरंगुला १९ मुक्ताफलाष्टकयुतं सितनेत्रपटावृतम्। क्षीरकुम्भोपरिपुनः कांस्यपात्राक्षतान्वितम् । दद्यान्मन्त्रेणपूर्वाह्णे शालीक्षुफलसंयुतम् २० श्वेतामथसुवर्णास्यां खुरै रौप्यैःसमन्विताम्। सवस्त्रभाजनान्धेनुं तथाशंखंचशोभनम् २१ भूषणैर्द्विजदाम्पत्य मलंकृत्यगुणान्वितम्। चन्द्रोऽयंद्विजरूपेण सभार्य्यइतिकल्पयेत् २२ यथानरोहिणी कृष्ण शय्यांसन्त्यज्यगच्छति। सोमरूपस्यतेतद्वन् ममाभेदोऽस्तुभूतिभिः २३ यथा त्वमेवसर्वेषां परमानन्दमुक्तिदः भुक्तिर्मुक्तिस्तथाभक्ति स्त्वयिचन्द्रास्तुमेसदा २४ इति संसारभीतस्य मुक्तिकामस्यचानघ ! । रूपारोग्यायुपामेत द्विधायकमनुत्तमम् २५ इदमेवपितॄणांच सर्वदा वल्लभंमुने ! । त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सप्तकल्पशतत्रयम् । चन्द्रलोकमवाप्नोति विद्युद्भूत्वातुमुच्यते २६ नारीवारोहिणीचन्द्र शयनंयासमाचरेत् । साऽपितत्फलमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभम् २७ इति पठति शृणोतिवायइत्थं मधुमथनार्चनमिन्दुकीर्तनेननित्यम् । मतिमपिचददाति सोऽपिशौरेर्भवनगतःपरिपूज्यतेऽमरौघैः २८॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणे सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

(सूत उवाच) जलाशयगतं विष्णुमुवाच रविनन्दनः। तडागारामकूपानां वापीषु नलिनीषुच १ विधिंपृच्छामिदेवेश ! देवतायतनेषुच। केतत्रचर्त्विजोनाथ ! वेदीवा

र्थंत विधिपूर्व्वक पूजनकरके व्रतकेअन्तमें दर्पण और सवसामग्री सहित शय्यादान देवे १८ फिररोहिणी और चन्द्रमाकी सुवर्णमयी मूर्त्तिवनावे इनमेंचन्द्रकी छः अंगुलकी रोहिणीकी चारअंगुलकीविनाकर १९ आठमोती सफ़ेदवस्त्र-दूधकाकलश-कांसीकापात्र-अक्षत और गुड़ इनसवकादान पूर्वाह्णकालमें ब्राह्मणकोदेवे २० तिसपीछे सफ़ेदगौ-सोनेकेसींग और चांदीकेखुर वस्त्र-पात्रोंसमेत दान करे और शंखकाभी दानकरे २१ स्त्रीसमेत ब्राह्मणको वस्त्रादिकों से शोभित करके यह कल्पनाकरे कि यह रोहिणी युक्त चन्द्रमाहै २२ ऐसाअनुभव करके यह प्रार्थनाकरे कि हेकृष्णचन्द्र तेरी रूपेकी उत्तम शय्याको जैसे रोहिणी नहीं त्यागती है वैसीही मेरीविभूति से युक्त मेरीशय्यारहै २३ और हे चन्द्रजैसे कि तुमसवको परमानन्द और मुक्तिके देनेवालेहो इसीप्रकार मेरीभीभुक्ति और मुक्तिहोय और सवकालमें तुझहीमें मेरीभक्तिरहै २४ हेपापरहितचन्द्र मुक्तिकी वांछाकरनेवाला इससंसारमें भयभीत जो मैं हूं मुझको उत्तमरूप और आरोग्यदो २५ ईश्वर कहते हैं कि हे नारद यहव्रत सर्व काममें पितरोंको अतिप्रिय है इसव्रतका करनेवाला इक्कीस कल्पतक त्रैलोक्यका अधिपति होकर चन्द्रलोकको प्राप्तहोताहै फिर उसकी मुक्ति होजाती है २६ अथवा जो स्त्रीभी इसव्रतको करे तो वहभी इसीफलको प्राप्तहोतीहै और फिर उसकाजन्मनहींहोता २७ इस भगवत्के पूजनको जो चन्द्रमा समेत पढ़ता वा सुनताहै उसको ईश्वर शुद्धबुद्धि देताहै और वैकुंठमें जाकर देवताओं से पूजित होताहै २८॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

सूतजीबोले हे ऋषियो जलाशयमें प्राप्तहुए मत्स्यभगवान् से मनुजी कहनेलगे कि हे भगवन् सरोवर-वाग-कूप-तड़ाग १ और देवताका मन्दिर इनको वनाकर इनकी प्रतिष्ठाके निमित्त कैसा

कीदृशीभवेत् २ दक्षिणावलयःकालः स्थानमाचार्य्यएवच। द्रव्याणिकानिशस्तानि स
र्वमाचक्ष्वतत्त्वतः ३ (मत्स्य उवाच) शृणुराजन्महाबाहो! तडागादिषुयोविधिः। पु
राणेष्वितिहासोयं पठ्यतेवेदवादिभिः ४ प्राप्यपक्षंशुभंशुक्कमतीतेचोत्तरायणे। पुण्ये
ऽह्निविप्रकथितेकृत्वाब्राह्मणवाचनम् ५ प्रागुदक्प्रवणेदेशेतडागस्यसमीपतः।चतुर्हस्तां
शुभांवेदीं चतुरस्रांचतुर्मुखाम् ६ तथाषोडशहस्तःस्यान्मण्डपश्चचतुर्मुखः। वेद्याश्चप
रितोगर्तारत्निमात्रास्त्रिमेखलाः ७ नवसप्ताथवापञ्च नातिरिक्तान्नृपात्मज! । वितस्ति
मात्रायोनिः स्यात्षट्सप्तांगुलिविस्तृता ८ गर्ताश्चतस्रःशस्ताः स्युस्त्रिपर्वोच्छ्रितमेख
लाः। सर्वतस्तुसवर्णाःस्युःपताकाध्वजसंयुताः ९ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटशाखाकृतानितु
मण्डपस्यप्रतिदिशं द्वाराण्येतानिकारयेत् १० शुभास्तत्राष्टहोतारो द्वारपालास्तथाष्ट
वै। अष्टौतुजापकाःकार्य्याः ब्राह्मणावेदपारगाः ११ सर्व्वलक्षणसम्पूर्णो मन्त्रविद्विजि
तेन्द्रियः। कुलशीलसमायुक्तः पुरोधाःस्याद्द्विजोत्तमः १२ प्रतिगर्तेषुकलशायज्ञोप
करणानिच। व्यजनञ्चामरेशुभ्रे ताम्रपात्रेसुविस्तृते १३ ततस्त्वनेकवर्णाःस्युश्चरवः
प्रतिदैवतम्। आचार्य्यःप्रक्षिपेद्भूमा वनुमन्त्र्यविचक्षणः १४ त्र्यरत्निमात्रोयूपःस्यात्
क्षीरवृक्षविनिर्म्मितः। यजमानप्रमाणोवा संस्थाप्योभूतिमिच्छता १५ हेमालङ्कारिणः
कार्य्याः पञ्चविंशतिऋत्विजः। कुण्डलानिचहैमानि केयूरकटकानिच १६ तथांगुल
यःपवित्राणि वासांसिविविधानिच। पूजयेत्तुसमंसर्वान् आचार्य्योद्विगुणंपुनः। दद्या

ऋत्विज और किसप्रकारकी वेदीका वनाना इत्यादि विधिका आपवर्णन कीजिये २ वहां दक्षिणा
वलय—काल—स्थान—आचार्य्य और द्रव्यादिक कौन२ सी श्रेष्ठ हैं यहसब आप विचार पूर्व्वककहिये
३ यह सुनकर मत्स्य भगवान्‌बोले हे लम्बी भुजावालेराजा मनुतुमसुनो पुराणों में वेदके कहने
वालोंने यह इतिहास कहाहै ४ कि जव उत्तरायण व्यतीतहोजाय तव शुक्लपक्ष में ब्राह्मण से शुभ
दिन पूछकर उसमें स्वस्ति वाचन करावे ५ फिर तडागादिकके पास पूर्व औरउत्तरके मध्यमें चार
हाथकी चौखूंटी चारमुखवाली सुन्दर वेदीवनावे ६ और सोलह हाथका चारमुखवाला मंडपवनावे
और वेदीके चारोंओर उसी गर्त्तके प्रमाण मेखलावनावे ७ वह मेखला संख्यामें नव—सात—अथवा
पांचवनावे और एकविलस्तलंवी चौदहअंगुल चौड़ीयोनिवनावे ८ और चारगर्त्तवनावे और चारोंओर
से पताका ध्वजाओं से युक्तकरे ९ मंडपकी चारों दिशाओं में पीपल—गूलर—पिलखन औ वड़—इन
वृक्षोंकी डालियों का द्वार वनावे १० फिर वेदज्ञ आठ ब्राह्मणोंको होता वनावे आठद्वारपाल और
आठही जापक ब्राह्मण वनावे ११ और सर्वगुणसम्पन्न मन्त्रज्ञ जितेन्द्रिय कुलशीलयुक्त ऐसे उत्तम
ब्राह्मणको पुरोहित वनावे १२ चारोंगर्त्तो में कलश और यज्ञके उपकरण स्थापनकरे फिर वड़े ताम्र
पात्रमें सफ़ेदपंखा और चमर स्थापनकरे १३ पश्चात् अनेकप्रकार का चरु पृथक् २ देवताओं का
वुद्धिमान् आचार्य्य मंत्रपढ़कर पृथ्वीमें फेंके १४ और तीनअरत्नी अर्थात् मूठीवनाकर कनिष्ठिका स
हित तीनहाथलम्वा थूहरके वृक्षका यूपवनावे अथवा यजमानके प्रमाण वनवानाभी शुभहै १५ फिर
सुवर्णके आभूषणवाले पच्चीस ऋत्विक् वनावे और सुवर्णके कुण्डल वाजूवन्द कड़ूले १६ अंगूठी

च्छयनसंयुक्त मात्मनश्चापियत्प्रियम् १७ सौवर्णकूर्म्ममकरौ राजतौमत्स्यदुन्दुभौ। ताम्रौकुलीरमण्डूका वायसःशिशुमारकः। एवमासाद्यतत्सर्व्वं मादावेवविशाम्पते! १८ शुक्लमाल्याम्बरधरः शुक्लगन्धानुलेपनः। सर्वौषध्युदकैस्तत्र स्नापितोवेदपारगैः १९ यजमान सपत्नीकः पुत्रपौत्रसमन्वितः। पश्चिमंद्वारमासाद्य प्रविशेद्यागमण्डपम् २० ततोमंगलशब्देन भेरीणांनिस्वनेनच। अञ्जसामण्डलंकुर्य्यात् पञ्चवर्णेनतत्त्ववित् २१ षोडशारन्ततश्चक्रं पद्मगर्भंचतुर्मुखम्। चतुरस्रञ्चपरितो वृत्तंमध्येसुशोभनम् २२ वेद्याश्चोपरितत्कृत्वा ग्रहान्लोकपतींस्ततः। सन्यसेन्मन्त्रतःसर्वान् प्रतिदिक्षुविचक्षणः २३ कूर्मादिस्थापयेन्मध्ये वारुण्यांमन्त्रमाश्रितः। ब्रह्माणंचशिवंविष्णुं तत्रैवस्थापयेद्बुधः २४ विनायकंचविन्यस्य कमलामम्बिकांतथा। शान्त्यर्थंसर्वलोकानां भूतग्रामंन्यसेत्ततः २५ पुष्पभक्ष्यफलैर्युक्त मेवंकृत्वाधिवासनम्। कुम्भान्सजलगर्भांस्तान् वासोभिः परिवेष्टयेत् २६ पुष्पगन्धैरलंकृत्य द्वारपालान्समन्ततः। पठध्वमितितान्ब्रूया दाचार्यं स्त्वभिपूजयेत् २७ बह्वृचौपूर्वतःस्थाप्यौ दक्षिणेनयजुर्विदौ। सामगौपश्चिमेतद्वदुत्तरे णत्वथर्वणौ २८ उदङ्मुखोदक्षिणतो यजमानउपाविशेत्। यजध्वमितितान्ब्रूयाद् हौत्रिकान्पुनरेवतु २९ उत्कृष्टान्मन्त्रजापेन तिष्ठध्वमितिजापकान्। एवमादिश्यतान्सर्वान् पर्युक्ष्याग्निंसमन्त्रवित् ३० जुहुयाद्वारुणैर्मन्त्रै राज्यंचसमिधस्तथा। ऋत्विग्भि

और अनेकप्रकारके वस्त्र इनसब वस्तुओं से सम्पूर्ण ऋत्विजोंका पूजनकरे आचार्य्यको द्विगुण आभूषणों से पूजनकरे इसकेपछि जो अपने को प्रिय वस्तुहैं उनवस्तुओंकादान शय्यासमेतकरे १७ हे राजा सुवर्णके कछुए मकर चांदीकीमछली तांबेकेकुलीर मेढकबनावे और लोहेका शिशुमार मत्स्य इनसबको आदिमें बनाकर १८ दुन्दुभी बनावे फिर श्वेतमाला वस्त्र और श्वेतचन्दन धारण करके वेदज्ञोंकेद्वारा सर्वौषधि के जलसे स्नानकरायाहुआ १९ यजमान अपनी स्त्री समेत पुत्र पौत्रादि से युक्तहो के पश्चिम के द्वारमें होकर यज्ञमंडप में प्रवेशकरे २० फिर तत्त्वज्ञ पंडित मंगल रूपभेरी आदिक शब्दों को करके पांच वर्णोंका सुन्दर मंडप बनवावे २१ सोलह आरोंका चक्रबनावे उसके बीच में चारमुखका सुन्दरगोल कमल बनावे २२ तबवेदी के ऊपर ग्रहलोकपालादिकों को दिशाओं में मंत्रोंकरके पंडित स्थापनकरे २३ फिर उनकछुए आदिजलजीवों को मध्यमें वरुणके मंत्रोंसे स्थापन करके ब्रह्मा शिव और विष्णु इनतीनों को पंडित स्थापनकरे २४ फिर गणेशजी का स्थापन करके लक्ष्मी और अम्बिका को स्थापितकर सम्पूर्ण लोकोंकी शांतिके अर्थ भूत समूहों को स्थापन करे २५ फिर पुष्प और भक्ष्यफल आदिसे सुगन्धितकर जलके भरे कलशों को वस्त्रों से लपेटे २६ फिर गन्ध पुष्पादिसे द्वारपालोंको भूषित करके आचार्य्य उनसे यह कहैकि आपवेद पढ़ो २७ पूर्वमेंतो बह्वृचोंको स्थापन करे दक्षिणमें यजुर्विदोंको पश्चिममें सामगोंको और उत्तरमें अथर्वणियों को २८ स्थापन करे और दक्षिणकी ओर उत्तरको मुख करके यजमान बैठे फिर यजमान हौत्रिकोंसे यह वचन कहे कि महाराज आपयजन कीजिये २९ और सबहेतु एजापक लोगोंसे यहकहै कि आप बैठ जाओ इसप्रकार इनसबोंको आज्ञा करके मन्त्रका जानने वाला

श्चाथहोतव्यं वारुणैरेवसर्वतः ३१ ग्रहेभ्योविधिवद्धुत्वा तथेन्द्रायेश्वरायच । मरुद्
भ्योलोकपालेभ्यो विधिवद्विश्वकर्मणे३२रात्रिसूक्तंचरौद्रञ्च पावमानंसुमंगलम् । जपेयुः
पौरुषंसूक्तं पूर्वतोबह्वृचाःपृथक् ३३ शाक्रंरौद्रञ्चसौम्यंच कूष्माण्डंजातवेदसम् । सौर
सूक्तंजपेन्मन्त्रं दक्षिणेनयजुर्विदः ३४ वैराज्यंपौरुषंसूक्तं सौवर्णंरुद्रसंहिताम् । शैशवं
पञ्चनिधनं गायत्रंज्येष्ठसामच ३५ वामदेव्यंबृहत्साम रौरवंसरथन्तरम् । गवांव्रतंचकाण्व
एवञ्च रक्षोघ्नंवयसस्तथा । गायेयुःसामगाराजन् ! पश्चिमंद्वारमाश्रिताः ३६ अथर्वण
श्चोत्तरतः शान्तिकंपौष्टिकंतथा । जपेयुर्मनसादेव माश्रित्यवरुणंप्रभुम् ३७ पूर्वेद्युरभि
तोरात्रा वेवंकृत्वाधिवासनम् । गजाश्वरथ्यावल्मीकात् सङ्गमाद्ध्रदगोकुलात् । मृदमादाय
कुम्भेषु प्रक्षिपेच्चत्वरात्तथा३८रोचनांचससिद्धार्थां गन्धंगुग्गुलमेवच।स्नपनंतस्यकर्त्तव्यं
पंचभंगसमन्वितम्३९प्रत्येकन्तुमहामन्त्रै रेवंकृत्वाविधानतः । एवंक्षपातिवाह्याथ विधि
युक्तेनकर्मणा४०ततःप्रभातेविमले संजातेऽथशतंगवाम् । ब्राह्मणेभ्यःप्रदातव्य मष्टषष्टि
श्चवापुनः । पञ्चाशद्वाथषट्त्रिंशत् पञ्चविंशतिरप्यथ ४१ ततःसांवत्सरप्रोक्ते शुभे
लग्नेसुशोभने । वेदशब्दैश्चगान्धर्वैर्वाद्यैश्चविविधैःपुनः ४२ कनकालंकृतांकृत्वा जले
गामवतारयेत् । सामगायचसोदेया ब्राह्मणायविशाम्पते ! ४३ पात्रीमादायसौवर्णी
पञ्चरत्नसमन्विताम् । ततोनिक्षिप्यमकरमत्स्यादींश्चैवसर्वशः । धृतांचतुर्विधैर्विप्रैर्वेदवे

अग्निका पर्य्युक्षणकरे ३० और वरुणके मन्त्रोंकरके घृत और समिध होमे और चारों ओरसे वरुण केभी मन्त्रोंकरके ऋत्विजोंसे होमकरावे ३१ फिर विधिपूर्वक ग्रहोंके अर्थ हवनकरके इन्द्र और ईश्वर के अर्थ हवनकरे फिर मरुत् लोकपाल औरविश्वकर्मा इनतीनोंका विधि पूर्वक हवनकरे ३२ पीछे रात्रि सूक्त-रुद्र-पवमान सुमंगल-पौरुपसूक्त और पूर्व दिशामें बह्वृच इनसबका पृथक् २ जप करे ३३ और दक्षिण में यजुर्वेद वाले इन्द्र–रुद्र–सोम–कूष्माण्ड–अग्नि और सूर्य्य–इनसबका सूक्त और मन्त्रपढ़े ३४ पश्चिम द्वारमें स्थित सामग जाननेवाले वैराज्य– पौरुष सौवर्ण–रुद्रसंहिता–शैशव पंचनिधन गायत्र सूक्त–ज्येष्ठसाम ३५ वामदेव्य–बृहत्साम–रौरव–रथंतर–गवोंकाव्रत–काण्व–रक्षोघ्न और वयस–इनसबकोगावें ३६ पश्चात् अथर्वके जाननेवाले उत्तरमें मनसेप्रभु वरुण देवके आश्रयहोके शान्तिक और पौष्टिकोंको जपें३७प्रथम दिन ऐसेकर्मकरके रात्रिको अधिवासन (गन्ध माल्य और धूप आदिसे जो संस्कार वस्त्र ताम्बूल आदिका सुगन्धिके बढ़ानेके लिये किया जाता उसे अधिवासन कहते हैं) करे फिर गजशाला–अश्वशाला–बॉवी–गली–कुंड–गोशाला और चौराहा इनसब स्थानोंसे मृत्तिका लेकर कलशोंमें गेरे ३८ फिर गोरोचन–सरसों–गन्ध–गूगल–और पंचभंग इनसब औषधियोंसे यजमानका स्नानकरावे ३९ महा मन्त्रोंसे सविधिकर्म करकेएक एक कलशके प्रति ऐसी विधि करके ४० जब प्रातःकालहो तबगौओंकादान ब्राह्मणोंको करें अर्थात् अड़सठ गौओंका दानकरे फिर पचासगौओंका–फिर पच्चीसका इसरीति से गौओंका दानकरे ४१ पीछे एक वर्षमें शुभ दिन लग्नादि मुहूर्त्तमें वेदकेशब्दोंसे और गान्धर्व अनेक प्रकारके बाजोंसे ४२ एकगौ सुवर्णसे भूषित करके हे राजा सामवेदके जानने वाले ब्राह्मणको दानकरे ४३ इसके अन-

दांगपारगैः ४४ महानदीजलोपेतां दध्यक्षतसमन्वितांम् । उत्तराभिमुखींधेनुं जलमध्ये तुकारयेत् ४५ आथर्वणेनसंस्नातां पुनर्मामेत्यथेतिच । आपोहिष्ठेतिमन्त्रेण क्षिप्त्वाग त्यचमण्डलम् ४६ पूजयित्वासरस्तत्र बलिंदद्यात्समन्ततः । पुनर्दिनानिहोतव्यं च त्वारिमुनिसत्तमाः! ४७ चतुर्थीकर्मकर्तव्यं देयातत्रापिशक्तितः । दक्षिणाराजशार्दूल! वरुणक्ष्मापनंततः ४८ कृत्वातुयज्ञपात्राणि यज्ञोपकरणानिच । ऋत्विग्भ्यस्तुसमंदत्त्वा मण्डपंविभजेत्पुनः । हेमपात्रीञ्चशय्याञ्च स्थापकायनिवेदयेत् ४९ ततःसहस्रंविप्रा णामथवाष्टशतंतथा । भोजनीयंयथाशक्ति पञ्चाशद्वाथविंशतिः । एवमेषुपुराणेषुतड़ा गविधिरुच्यते ५० कूपवापीषुसर्वासु तथापुष्करिणीषुच । एषएवविधिर्दृष्टःप्रतिष्ठासुतथै वच ५१ मन्त्रतस्तुविशेषःस्यात् प्रसादोद्यानभूमिषु । अयन्त्वशक्तावर्द्धेन विधिर्दृष्टःस्वय म्भुवा । अल्पेष्वकाग्निवत्कृत्वा वित्तशाठ्याद्दतेनृणाम् ५२ प्रावृट्कालेस्थितेतोये ह्यग्नि ष्टोमफलंस्मृतम्! शरत्कालेस्थितंयत्स्यात्तदुक्तफलदायकम् । वाजपेयातिरात्राभ्यां हे मन्तेशिशिरेस्थितम् ५३ अश्वमेधसमंप्राह वसन्तसमयेस्थितम् । ग्रीष्मेऽपितत्स्थित न्तोयं राजसूयाद्विशिष्यते ५४ एतान्महाराज! विशेषधर्मान्करोतियोऽप्यागमशुद्धबुद्धिः। सयातिरुद्रालयमाशुपूतःकल्पाननेकान्दिविमोदतेच ५५ अनेकलोकान्समहत्तमादीन् भुक्त्वापरार्द्धद्वयमंगनाभिः । सहैवविष्णोःपरमम्पदंयत्प्राप्नोतितद्यागफलेनभूयः ५६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेअष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

न्तर सुवर्णकेपात्रको लेकर उसमें पांच प्रकारके पांच रत्न गेरकर दानकरे और मकर मत्स्यादिकोंको तड़ागमें छोड़े फिर चारों वेदके ज्ञाता ब्राह्मणोंसे पकड़ी हुई गौका गंगा जलसे और दधि अक्षतोंसे पूजन करके उसको उत्तरकी ओर करते हुए जलमें पैरावे ४४।४५ फिर अथर्व वेदके मन्त्रों करके गौका स्नान करावे और'आपोहिष्ठेत्यादि, मन्त्रों करके मंडलकामार्जन करे ४६ फिर उस सरोवर का पूजन करके उसके चारोओर वलिदेवे—सूतजी कहते हैं कि हे ऋषियो फिर चार दिनतक हवन करे ४७ इसके पीछे चतुर्थी कर्मकरे और उसमें अपनी सामर्थ्यसे दक्षिणादेवे और वरुणकी प्रार्थना करे ४८ फिर यज्ञके पात्र और यज्ञकी सामग्री और मण्डप ऋत्विजों को बराबर बाँटकर देदे और सुवर्णके पात्रोंवाली शय्या स्थापकको देदे ४९ फिर हजार—आठसौ—पचास—अथवा बीसही ब्राह्मणोंको अपनी शक्ति के अनुसार जिमावै यह पुराणों में तड़ाग विधि वर्णनकी है ५० और कूपनदी आदिककीभी प्रतिष्ठामें यही विधि कहीहै ५१ और बाग भूमिमें तड़ागकी विधिसे मंत्रोंकरके विशेष है यह विधि ब्रह्माकी देखी है थोड़े काममें अग्निमें हवनकरावे मनुष्योंको धनकी शठता वर्जितहै ५२ वर्षा कालमें सरोवरकी प्रतिष्ठामें अग्निष्टोम यज्ञकाफल होताहै हेमन्त शिशिर में वाजपेय और अतियज्ञोंका फलहोताहै ५३ वसन्तऋतुमें अश्वमेध यज्ञका फल होताहै—ग्रीष्ममें राजसूय यज्ञका फल कहाहै ५४ भगवान् कहते हैं कि हेराजा शुद्धि बुद्धिवाला मनुष्य जो इनसब कर्मोंको करता है वह पवित्र होकर रुद्रलोकमें जाताहै और अनेक कल्पोंतक स्वर्गमें आनन्दकरता

(ऋषय ऊचुः) पादपानांविधिंसूत! यथावद्विस्तराद्वद। विधिनाकेनकर्तव्यं पाद पोद्यापनम्बुधैः। येचलोकाःस्मृतास्तेषान्तानिदानींवदस्वनः १ (सूत उवाच) पाद पानांविधिंवक्ष्ये तथैवोद्यानभूमिषु। तडागविधिवत्सर्व मासाद्यजगदीश्वर! २ ऋत्वि ङ्मण्डपसम्भार इचाचार्यश्चैवतद्विधः। पूजयेद्ब्राह्मणांस्तद्व द्धेमवस्त्रानुलेपनैः ३ सर्वौ पध्युदकैःसिक्तान् पिष्टातकविभूषितान्। वृक्षान्माल्यैरलंकृत्य वासोभिरभिवेष्टयेत् ४ सूच्यासौवर्णयाकार्यं सर्वेषांकर्णवेधनम्। अंजनंचापिदातव्यं तद्वद्धेमशलाकया ५ फला निसप्तचाष्टौवा कालधौतानिकारयेत्। प्रत्येकंसर्ववृक्षाणां वेद्यान्तान्यधिवासयेत् ६ धूपो ऽत्रगुग्गुलःश्रेष्ठः ताम्रपात्रैरधिष्ठितान्। सर्वान्धान्यस्थितान्कृत्वा वस्त्रगन्धानुलेपनैः ७ कुम्भान्सर्वेषुवृक्षेषु स्थापयित्वानरेश्वर!। साहिरण्यानशेषांस्तान् कृत्वाबलिनिवेदनम् ८ यथास्वंलोकपालानामिन्द्रादीनांविशेषतः। वनस्पतेश्चविद्वद्भिर्होमः कार्योद्विजातिभिः ९ ततःशुक्लाम्बरधरां सौवर्णकृतभूषणाम्। सकांस्यदोहांसौवर्णश्रृंगाभ्यामतिशालिनीम्। पयस्विनींवृक्षमध्यादुत्सृजेत्गामुदङ्मुखीम् १० ततोऽभिषेकमन्त्रेण वाद्यमंगलगीत कैः। ऋग्यजुःसाममन्त्रैश्च वारुणैरभितस्तथा। तैरेवकुम्भैःस्नपनं कुर्याद्ब्राह्मणपुंग वः ११ स्नातःशुक्लाम्बरस्तद्वद्यजमानोऽभिपूजयेत्। गोभिर्विभवतःसर्वान् ऋत्विजस्ता न्समाहितः १२ हेमसूत्रैःसकटकै रंगुलीयपवित्रकैः। वासोभिःशयनीयैश्च तथोपस्कर

है ५५ पीछे वह मनुष्य अंगनाओं समेत दो परार्द्ध महत्तमादि लोकोंको भोगकर उस यज्ञके फलसे फिर विष्णुके परमपदको प्राप्त होता है ५६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥

ऋषिबोले कि हेसूतजी वृक्षोंकी विधि यथावत् विस्तार पूर्वक कहो पंडितोंको किस विधिसेवृक्षों का उद्यापन करनायोग्यहै और उद्यापन करनेवाले कौनसे लोकोंकोजातेहैं यहआप वर्णनकीजिये१ सूतजीबोले हे ऋषियो बाग भूमियोंमें वृक्षोंकीभी विधिकहताहूं इनवृक्षोंको विधिमें तड़ागकीविधि के समान सबविधि करके वृक्षारोपणकरे २ऋत्विज—मंडप और आचार्य्य यह सब वैसेही बनावे और सुवर्ण वस्त्र चन्दनादि करके ब्राह्मणोंका पूजनकरे ३ पीछे सर्वौषधिके जलसे सींचे और मालाओंसे वृक्षोंको भूषितकरके वस्त्रोंसे लपेटे ४ फिर सुवर्णकी सूईबनाकर संपूर्ण वृक्षोंका कर्णवेधनकरे और उसी प्रकार सुवर्ण शलाकासे नेत्रोंमें अंजनलगावे ५ संपूर्ण वृक्षोंके ऋतुके पकेहुए फल सात वा आठ धारण करावे ६ इस स्थानमें धूप गूगलकी उत्तम होती है तांबेके पात्रोंमें संपूर्ण कलशोंको स्थापनकरके उन्हींके समीप संपूर्ण धान्य स्थापनकरे फिर वस्त्र गन्धादिसे पूजनकरे ७फिर सुवर्णादिसे युक्त उन कलशोंको वृक्षोंमें स्थापनकरे और बलि निवेदनकरे इसकेपीछे विधिपूर्वक इन्द्रादि लोकपालोंका और वनस्पतियोंका हवनकरना योग्यहै ८।९ फिर श्वेत वस्त्र उढ़ाकर स्वर्णसे भूषितकर कांस्य पात्र युक्त सुवर्ण शृंगी दूधवाली गौ उत्तरको मुखकरके वृक्षोंके नीचे छोड़े १० फिर मंगली गीत वाद्ययुक्त अभिषेक के मंत्रोंकरके ऋक्यजु और सामकेमन्त्रों से और वरुणके मंत्रोंसे उनकलशोंके जलोंसे वृक्षोंका स्नानकरावे ११ फिर यजमान स्नानकर श्वेतवस्त्र पहर सावधान होकर सब

पादुकैः । क्षीरेणभोजनंदद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् १३ होमश्चसर्षपैःकार्य्यो यवैःकृष्ण तिलैस्तथा। पलाशसमिधःशस्ताश्चतुर्थेऽह्नितथोत्सवः । दक्षिणाचपुनस्तद्वद्देयातत्रा पिशक्तितः १४ यद्यदिष्टतमंकिञ्चित् तत्तद्दद्यादमत्सरी। आचार्य्येद्विगुणंदद्यात्प्रणिप त्यविसर्जयेत् १५ अनेनविधिनायस्तु कुर्य्याद्वृक्षोत्सवंबुधः। सर्व्वान्कामानवाप्नोति फलञ्चानन्त्यमश्नुते १६ यश्चैकमपिराजेन्द्र! वृक्षंसंस्थापयेन्नरः। सोऽपिस्वर्गेवसे द्राजन्! यावदिन्द्रायुतत्रयम् १७ भूतान्भव्यांश्चमनुजांस्तारयेद्द्रुमसम्मितान्। परमां सिद्धिमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभाम् १८ यइदंशृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वापिमानवः। सोऽपि सम्पूजितोदेवैर्ब्रह्मलोकेमहीयते १९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

(मत्स्य उवाच) तथैवान्यत्प्रवक्ष्यामि सर्व्वकामफलप्रदम्। सौभाग्यशयनंनाम यत्पुराणविदोविदुः १ पुरादग्धेषुलोकेषु भूर्भुवःस्वर्महादिषु। सौभाग्यंसर्वभूतानामेक स्थमभवत्तदा। वैकुण्ठंस्वर्ग्गमासाद्य विष्णोर्वक्षस्थलस्थितम् २ ततःकालेनमहता पुनः सर्गविधौनृप!। अहङ्कारावृतेलोके प्रधानपुरुषान्विते ३ स्पर्धायाञ्चप्रवृत्तायां कमला सनकृष्णयोः। लिङ्गाकारासमुद्भूता वह्नेर्ज्वालातिभीषणा। तयाभितप्तस्यहरेर्वक्षसस्त

ऋत्विज लोगोंका गौओं के दान और द्रव्यों के दानों से पूजन करे १२ और सुवर्ण के यज्ञोपवीत कंकण अंगूठी वस्त्र शय्या और अन्य सामग्री और खड़ाउओं से पूजन करे और चारदिन तक दूधका भोजन करावे १३ सरसों जो कालेतिल और ढाककी श्रेष्ठसमिध इन सबसे हवन करावे फिरचौथे दिन उत्सव करके शक्तिके अनुसार दक्षिणा देवे १४ और जो वस्तु अपने को प्रिय होय उसीका दान सरल चित्तसे करे और आचार्य्यको द्विगुण दानदे नमस्कार कर विसर्जन करे १५ जो बुद्धिमान् इस विधिसे वृक्षका उत्सव करताहै वह संपूर्ण कामनाओं समेत बड़े उत्तम फलोंको पाताहै १६ हे राजा जो विधिसे एकवृक्षभी लगाताहै वह तीसहजार इन्द्रोंके समयतक स्वर्ग में बसताहै १७ और जितने वृक्ष लगावे उतनेही व्यतीत और आगे होने वाले पितरोंको उद्धार करताहै और परमसिद्धि को भी प्राप्त होताहै उसका जन्म भी फिर इस पृथ्वी पर नहीं होता १८ जो मनुष्य इस विधिको सुनताहै वा दूसरे को सुनाताहै वहभी देवताओंसे पूजित होकर ब्रह्मलोकमें आनन्द करताहै १९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

मत्स्यजी बोले–कि अब सब कामनाओं के देने वाले उस सौभाग्य शयन नाम व्रतको कहते हैं जिसको पुराणके जाननेवाले जानतेहैं १ प्रथम भूः भुवः स्वर् और मह इत्यादिक लोक जब भस्म होगये तब सब प्राणियोंका सौभाग्य एक स्थानमें स्थित होकर वैकुण्ठमें भगवान्के हृदयमें जाकर विराजमान होजाताभया २ हे राजा फिर बहुत कालपीछे अन्य सर्गकी रचनाकी विधिमें प्रधान पुरुष अर्थात् मायासहित ब्रह्म सब जगत् समेत अहंकारयुक्त होगया ३ तब ब्रह्मा और विष्णुकी परस्पर ईर्षा होतीभई उससमय लिंगके आकार वाली अति भयानक अग्निकी ज्वाला उठतीभई फिर

द्विनिःसृतम् ४ वक्षस्थलंसमाश्रित्य विष्णोःसौभाग्यमास्थितम्। रसरूपन्ततोयावत् प्राप्नोतिवसुधातलम् ५ उत्क्षिप्तमन्तरिक्षेतद् ब्रह्मपुत्रेणधीमता। दक्षेणपीतमात्रन्तद्रूप लावण्यकारकम् ६ बलंतेजोमहज्जातं दक्षस्यपरमेष्ठिनः। शेषंयदपतद् भूमावष्टधासम जायत ७ ततोजनानांसञ्जाता अष्टसौभाग्यदायकाः। इक्षवोरसराजाश्च निष्पावा जाजिधान्यकम् ८ विकारवच्चगोक्षीरं कुसुम्भंकुंकुमन्तथा। लवणंचाष्टमन्तद्वत् सौभा ग्याष्टकमुच्यते ९ पीतंयद् ब्रह्मपुत्रेण योगज्ञानविदापुनः। दुहितासाभवत्तस्य यासती त्यभिधीयते १० लोकानतीत्यलालित्यात् ललितातेनचोच्यते। त्रैलोक्यसुन्दरीमेनां मुपयेमेपिनाकधृक् ११ यादेवीसौभाग्यमयी भुक्तिमुक्तिफलप्रदा। तामाराध्यपुमान्भ क्त्या नारीवाकिन्नविन्दति १२ (मनुरुवाच) कथमाराधनंतस्या जगद्धात्र्याजनार्द न! तद्विधानंजगन्नाथ! तत्सर्व्वञ्चवदस्वमे १३ (मत्स्यउवाच) वसन्तमासमासाद्य तृतीयायांजनप्रिय!। शुक्लपक्षस्यपूर्वाह्ने तिलैःस्नानंसमाचरेत् १४ तस्मिन्नहनिसादे वी किलविश्वात्मनासती। पाणिग्रहणकैर्मन्त्रैरवसद्वरवर्णिनी १५ तयासहैवदेवेशंतृती यायामथार्चयेत्। फलैर्नानाविधैर्धूपैर्दीपनैवेद्यसंयुतैः १६ प्रतिमांपञ्चगव्येन तथाग न्धोदकेनतु। स्नापयित्वार्चयेद्गौरीमिन्दुशेखरसंयुताम् १७ नमोऽस्तुपाटलायैतु पादौ

उस ज्वाला से तप्त हुई विष्णुकी छाती से वह हृदयमें घुसाहुआ सौभाग्य ऊष्मा पाकर बाहर नि- कला ४ और विष्णुकी छातीसे निकलकर वह सौभाग्य जब तक पृथ्वीतलमें आकर रसरूप होकर प्राप्त हुआ तबतकही ब्रह्मा के पुत्र बुद्धिमान् दक्षने उस तेजको आकाश में फेंक दिया और फेंकने के पीछे उस रूपकी सुन्दरता करने वाले तेजको आपही पान करलिया तब दक्ष सौभाग्य पानकर्त्ता होगया ५। ६ उस समय दक्षके बड़ाबल और तेज होजाताभया फिर बाकीका तेज जो पृथ्वीमें गिरता भया उसके आठ विभाग होतेभये ७ इसके पीछे ईखका गांडा १ शुद्धजीरा २ धनियां ३ गौका दूध ४ दही ५ कुसुंभ ६ केशर ७ और आठवां नमक यह आठों वस्तु मनुष्योंको सौभाग्य- दायक कहाती हैं ८। ९ जो प्रथमही योगके जाननेवाले दक्षने यह तेजरूपी रस पियाथा इसीहेतु से सती नाम पार्वती उसकी पुत्री होतीभई १० वह सबलोगोंको सुन्दरपने से उल्लंघन करनेवाली हुई इसीकारणसे उसको ललिता कहते हैं फिर इस त्रैलोक्य सुन्दरीको शिवजीने विवाहा वह सती रूपा पार्वती भुक्ति मुक्तिकी देनेवाली सौभाग्यमयी देवी कहाती है उसको जो पुरुष वा स्त्री भक्तिसे पूजन करते हैं वे सब फलोंको प्राप्त होतेहैं ११।१२ मनुने पूछा कि हे जनार्दन जगन्नाथ उस जगद्धात्री का पूजन और आराधन कैसे करना चाहिये इसको कृपा करके कहिये १३ मत्स्यजी बोले-कि हे मनुष्योंके प्रिय मनुजी वसन्त ऋतुके चैत्रमासमें शुक्लपक्षकी तृतीयाको मध्याह्नसे पूर्व तिलोंसे स्नानकरे क्योंकि उस दिन वह देवी वैवाहिक मंत्रों करके शिवजीके साथ वास करतीहुई और सदैव पास रहती है १४। १५ सो इस तृतीयाको पार्वती समेत शिवजीको जो अनेक प्रकारके फल फूल धूप और नैवेद्यादिकसे पूजन करताहै १६ और मूर्तिको पंचगव्यसे अथवा सुगन्धित जलोंसे स्नान

देव्याःशिवस्यतु।शिवायेतिचसंकीर्त्य जयायैगुल्फयोर्द्वयोः १८ त्रिगुणायेतिरुद्राय भवान्यैजंघयोर्युगम्। शिवांरुद्रेश्वरायैच विजयायेतिजानुनी। संकीर्त्यहरिकेशाय तथोरू वरदेनमः १९ ईशायैचकटिन्देव्याः शंकरायेतिशंकरम्। कुक्षिद्वयञ्चकोटव्यै शूलिनेशूलपाणये २० मङ्गलायैनमस्तुभ्यमुदरञ्चाभिपूजयेत्। सर्वात्मनेनमोरुद्रमीशान्यैच कुचद्वयम् २१ शिवंवेदात्मनेतद्वद्रुद्राण्यैकण्ठमर्चयेत्। त्रिपुरघ्नायविश्वेशमनन्तायै करद्वयम् २२ त्रिलोचनायचहरं बाहुकालानलप्रिये। सौभाग्यभवनायेति भूषणानिसदार्चयेत्। स्वाहास्वधायैचमुखमीश्वरायेतिशूलिनम् २३ अशोकमधुवासिन्यै पूज्यावोष्ठौचभूतिदौ। स्थाणवेतुहरन्तद्वद्धास्यञ्चन्द्रमुखप्रिये २४ नमोऽर्द्धनारीशहरम सितांगीतिनासिकाम्। नमउग्रायलोकेशं ललितेतिपुनर्भ्रुवौ २५ शर्वायपुरहन्तारं वासव्यैतुतथालकान्। नमःश्रीकण्ठनाथायै शिवकेशांस्ततोऽर्चयेत्। भीमोग्रसमरूपिण्यै शिरःसर्व्वात्मनेनमः २६ शिवमभ्यर्च्यविधिवत्सौभाग्याष्टकमग्रतः। स्थापयेद्घृतनिष्पावकु

कराके गौरी और शंकरको इसप्रकारसे पूजे १७ कि पाटलायै नमः इस मंत्रसे पार्वती और शिवजीके चरणोंका पूजन करे शिवायनमः जयायैनमः इन दोनों मंत्रोंसे दोनोंकी पिंडलियों के नीचे एड़ीके ऊपरके स्थानको पूजे त्रिगुणात्मक रुद्र और भवानी को नमस्कार ऐसे कह दोनों की पिंडलियोंको पूजे—शिवाको और रुद्रेश्वर विजयको नमस्कार यह कहकर दोनोंके घुटनोंको पूजे—हरिकेशशिवको और वरदा देवीको नमस्कार करके जंघाओंको पूजे १८। १९ ईशायैनमः ऐसे देवीकी कटिको और शंकरको नमस्कार ऐसे कह शिवजीकी कटिको पूजे—कोटवी को नमस्कार शूलपाणि शिवको नमस्कारहै ऐसे कह दोनोंकी संयुक्त कोखियोंको पूजे २० मंगला तुमको नमस्कार ऐसे उदरको पूजे—सर्वात्मा शिवको नमस्कार ऐसे कह शिवजीके उदरको पूजे—ईशानीको नमस्कार ऐसे कह पार्वतीके स्तनोंको पूजे २१ वेदात्मने नमः यह कहकर शिवके कण्ठको—रुद्राण्यै नमः इसमंत्रसे पार्वतीके कण्ठको पूजे—त्रिपुरघ्नाय नमः अनन्तायै नमः यह कह दोनोंके हाथोंको पूजे २२ त्रिलोचनाय नमः कालानल प्रियायै नमः इस मंत्रसे शिव और पार्वतीकी भुजाओंको और सौभाग्यभवनाय नमः यह कहके भूषणोंको पूजे—स्वाहायै स्वधायै नमः ईश्वराय नमः इन मंत्रोंसे इनके मुखोंको पूजे २३ अशोक मधुवासिन्यै नमः इस मंत्रसे ऐश्वर्य्यौंके देनेवाले पार्वतीके ओष्ठोंको पूजे—और स्थाणुको नमस्कार यह कहके शिवके हास्यको पूजे २४ अर्द्धनारीके ईश्वर हर श्वेतवर्णवाली पार्वती ऐसे शिव पार्वतीको नमस्कार यह कहकर नासिकाको पूजे उग्र शिवको और ललिता देवीको नमस्कार यह कहके देवीकी भृकुटियोंको पूजे २५ शर्वनाम और पुर हंता शिवको नमस्कार कर शिवजीकी भृकुटियोंको पूजे वासवीको नमस्कार यह कहकर पार्वती जीकी अलकोंको पूजे और श्रीकण्ठनाथा पार्वतीको प्रणामकर शिवके बालोंका पूजनकरे—भीमोग्रसमरूपिणी को अथवा सर्वात्मा शिवको नमस्कार कर शिरके स्थानमें पूजन करे २६ इस विधिसे शिवजीका पूजनकर फिर उनके आगे सौभाग्य अष्टक दही१ पछोड़ाहुआ शुद्ध कुसुंभ २ दूध ३ जीरा४ ईखकागांडा ५ घृत ६ लवण ७ धनियां ८ इन आठ वस्तुओंको स्थापितकरे यह आठों सौभाग्यदायी हैं इसी हेतुसे यह सबमिली

सुम्भक्षीरजीरकान् २७ रसराजाज्यलवणं कुस्तुम्बरुमथाष्टकम्। दत्तंसौभाग्यमित्यस्मा
त्सौभाग्याष्टकमित्यतः २८ एवंनिवेद्यतत्सर्वमग्रतःशिवयोःपुनः। रात्रौशृङ्गोदकंप्राश्य
तद्वद्भूमावरिन्दम! २९ पुनःप्रभातेतुतथा कृतस्नानजपःशुचिः। सम्पूज्यद्विजदाम्प
त्यं वस्त्रमाल्यविभूषणैः ३० सौभाग्याष्टकसंयुक्तं सुवर्णचरणद्वयम्। प्रीयतामत्रललिता
ब्राह्मणायनिवेदयेत् ३१ एवंसंवत्सरंयावत्तृतीयायांसदामनो!। कर्त्तव्यंविधिवद्भ
क्त्या सर्वसौभाग्यमीप्सुभिः ३२ प्राशनेदानमन्त्रेच विशेषोऽयन्निबोधमे। शृंगोदकञ्चै
त्रमासे वैशाखेगोमयम्पुनः ३३ ज्येष्ठेमन्दारकुसुमं विल्वपत्रंशुचौस्मृतम्। श्रावणेदधि
सम्प्राश्यं नभस्येचकुशोदकम् ३४ क्षीरमाश्वयुजेमासि कार्त्तिकेपृषदाज्यकम्। मार्गेमा
सेतुगोमूत्रं पौषेसम्प्राशयेद्घृतम् ३५ माघेकृष्णतिलंतद्वत्पञ्चगव्यञ्चफाल्गुने। ल
लिताविजयाभद्रा भवानीकुमुदाशिवा ३६ वासुदेवीतथागौरी मंगलाकमलासती। उमा
चदानकालेतु प्रीयतामितिकीर्त्तयेत् ३७ मल्लिकाशोककमलं कदम्बोत्पलमालतीः।
कुब्जकंकरवीरञ्च वाणमम्लानकुंकुमम् ३८ सिन्दुवारञ्चसर्वेषु मासेषुक्रमशःस्मृतम्।
जपाकुसुम्भकुसुमम्मालतीशतपत्रिका ३९ यथालाभंप्रशस्तानि करवीरञ्चसर्वदा।
एवंसंवत्सरंयावदुपोष्यविधिवन्नरः ४० स्त्रीभक्तावाकुमारीवा शिवमभ्यर्च्यभक्तितः।

हुई सौभाग्याष्टक नामसे विख्यातहैं २७। २८ शिवजी और पार्वतीजीके अर्थ इन सब वस्तुओंको निवेदन करके रात्रिमें गौओंके सींगोंको धो उस जलको पिये और पृथ्वीमें शयन करे २९ फिर प्रातःकाल स्नानसे शुद्ध होकर जपकरे और वस्त्र माला और आभूषणादिकों से ब्राह्मण ब्राह्मणीके युग्म को पूजे ३० इस सौभाग्य अष्टकके साथ सुवर्णके दो चरण बनवाकर ब्राह्मणको देदे और यह वचन कहे इस पूजन दानादिकसे ललिता देवी प्रसन्नहो ३१ इसीप्रकार वर्ष दिनतक हर तृतीयाको प्रसन्नमन से भक्तिपूर्वक सौभाग्यकी इच्छावालोंको पूजन करना चाहिये ३२ प्राशन करनेमें और दानमंत्र में यह विशेषहै उसको भी सुनो–चैत्रमें गौके सींगका जल–वैशाखमें गोवर ३३ ज्येष्ठमें कल्पवृक्ष का पुष्प–आषाढ़में वेलपत्र–श्रावणमें दही–भाद्रपदमें कुशाका जल ३४ आश्विनमें दूध–कार्त्तिक में घृतकी बूंद–मार्गशीर्ष में गोमूत्र–पौषमें घृतका प्राशन अर्थात् किंचित् भोजन करे ३५ माघमें काले तिलोंका भोजन करे–फाल्गुनमें पंचगव्यका भोजन करे–और ललिता–विजया–भद्रा–भवानी–कुमुदा–शिवा ३६ वासुदेवी–गौरी–मंगला–कमला–सती–और उमा यह सब प्रसन्न होयँ ऐसादान कालमें कीर्त्तन करे अर्थात् चैत्र आदि महीनोंमें क्रमपूर्वक एक एकका लेकर दानकरे ३७ मल्लिका–अशोक–कमल–कदंब–कुमोदिनी–मालती–कुब्जकवृक्ष–कनेर–शेवती–इनके पुष्प–केशर सभालूके पुष्प–इनको सब महीनोंमें क्रमसे चढ़ावे अथवा जुही–कुसुंभ–मालती–और कमल इन के पुष्पोंको चढ़ावे ३८। ३९ अथवा इनमेंसे जितने मिलजायँ उतनेही चढ़ावने योग्यहैं–और कनेरके पुष्प सदैव चढ़ावे इस विधिसे वर्ष दिनतक सब तृतीयाओंका व्रतकरे ४० भक्ति करनेवाली स्त्री अथवा कुमारी कन्या भक्तिपूर्वक शिवका पूजनकर व्रतके अन्तमें सबवस्तुओंसे युक्तहुई शय्या

व्रतान्तेशयनंदद्यात्सर्वोपस्करसंयुतम् ४१ उमामहेश्वरंहैमं वृषभञ्चगवासह। स्थापयित्वाथशयने ब्राह्मणायनिवेदयेत् ४२ अन्यान्यपियथाशक्त्या मिथुनान्यम्बरादिभिः। धान्यालङ्कारगोदानैरभ्यर्चेद्धनसञ्चयैः। वित्तशाठ्येनरहितःपूजयेद्गतविस्मयः ४३ एवं करोतियःसम्यक्सौभाग्यशयनव्रतम्। सर्वान्कामानवाप्नोति पदमत्यन्तमश्नुते। फलस्यैकस्यत्यागेन व्रतमेतत्समाचरेत् ४४ यइच्छन्कीर्त्तिमाप्नोति प्रतिमासन्नराधिपः। सौभाग्यारोगरूपायुर्वस्त्रालंकारभूषणैः। नवियुक्तोभवेद्राजन्! नवार्बुदशतत्रयम् ४५ यस्तु द्वादशवर्षाणि सौभाग्यशयनव्रतम्। करोतिसप्तचाष्टौवा श्रीकण्ठभवनेऽमरैः। पूज्यमानोवसेत्सम्यक्यावत्कल्पायुतत्रयम् ४६ नारीवाकुरुतेवापि कुमारीवानरेश्वर!। सापि तत्फलमाप्नोति देव्यनुग्रहलालिता ४७ शृणुयादपियश्चैव प्रदद्यादथवामतिम्। सोऽपिविद्याधरोभूत्वा स्वर्गलोकेचिरंवसेत् ४८ इदमिहमदनेनपूर्वमिष्टं शतधनुषाकृतवीर्यसूनुनाच। कृतमथवरुणेननन्दिनावा किमुजननाथततोयदुद्भवःस्यात् ४९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे षष्टितमोऽध्यायः ६०॥

(नारद उवाच) भूलोकोऽथभुवर्लोक स्वर्लोकोऽथमहर्जनः। तपःसत्यञ्चसप्तैतेदेवलोकाःप्रकीर्तिताः १ पर्यायेणतुसर्वेषामाधिपत्यंकथंभवेत्। इहलोकेशुभंरूपमायुःसौभाग्यमे

का दान करे ४१ सुवर्ण के महादेव पार्व्वती और गौ सहित बैलकी मूर्त्ति बनवाके शय्यापर स्थापितकर ब्राह्मणको दानकरे ४२ और शक्तिके अनुसार अन्य ब्राह्मण ब्राह्मणियोंके जोड़ोंकोभी वस्त्र धान्य अलंकार-गोदान इत्यादिकोंके धन समुदायसे पूजनकरे द्रव्यका संकोच न करे आश्चर्य्य से रहित होकर पूजनकरे ४३ इस विधिसे जो अच्छेप्रकार करके इस सौभाग्य शयन व्रतको करता है उसके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं और परम पदको प्राप्त होताहै इस व्रतको फलमात्रकी इच्छा विना करना योग्यहै ४४ जो मनुष्य इच्छासे प्रतिमास इस व्रतको करताहै उसके सौभाग्य आरोग्य रूप आयु वस्त्र अलंकार और आभूषण यह सब पदार्थ नौ अरब तीन सौ ९००००००३०० वर्षोंतक बने रहते हैं और जो इस व्रतको बारह वर्षतक नियमसेकरताहै अथवासात७वा आठ८वर्षतक करताहै वह शिवलोकमें देवताओंसे पूजित होकर तीन कल्पोंतक वास करताहै ४५। ४६ नारी अथवा कुमारी कन्या जो इस व्रतको करती हैं वहभी देवीके प्रभावसे इसी फलको प्राप्तहोजाती हैं४७ जो इस व्रतको सुनताहै वा इसके सुननेकी मति देताहै वह विद्याधर होके बहुत कालतक स्वर्ग में वासकरताहै ४८ इस व्रतको प्रथम कामदेवने किया फिर कृत वीर्य्यके पुत्र सहस्रबाहुने किया वरुणने और नन्दिकेश्वरने किया इस हेतुसे इस लोकमें यह व्रत उत्तम कहाहै ४९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषष्टितमोऽध्यायः ६०॥

नारदजी बोले कि हे शिवजी भू १ भुव २ स्वर्लोक ३ महः ४ जन ५ तप ६ और सत्य ७ यह सात आपने देवलोक कहे हैं १ इन लोकों के बदले जब दूसरे नामसे लोक बदलते हैं तब इनके अधिपति कैसे होते हैं और लोकोंके शुभ फल रूप आयु सौभाग्य और अत्यन्त लक्ष्मी इन सब की

वच। लक्ष्मीश्चविपुलानाथ! कथंस्यात्पुरसूदन! २ (शिवउवाच) पुराहुताशनःसा
र्द्धं मारुतेनमहीतले। आदिष्टःपुरुहूतेन विनाशायसुरद्विषाम् ३ निर्दग्धेषुततस्तेन दा
नवेषुसहस्रशः। तारकःकमलाक्षश्च कालदंष्ट्रःपरावसुः। विरोचनश्चसंग्रामादपला
यंस्तपोधन! ४ अम्भःसामुद्रमाविश्य सन्निवेशमकुर्वत। अशक्याइतितेऽप्यग्निमारु
ताभ्यामुपेक्षिताः ५ ततःप्रभृतितेदेवान् मनुष्यान्सहजंगमान्। सम्पीड्यचमुनीन्सर्वा
न्प्रविशन्तिपुनर्जलम् ६ एवंवर्षसहस्राणि वीराःपञ्चचसप्तच। जलदुर्गबलाद्ब्रह्मन्!
पीडयन्तिजगत्त्रयम् ७ ततःपरमथोवह्निमारुतावमराधिपः। आदिदेशचिरादम्बुनि
धिरेषविशोष्यताम् ८ यस्मादस्मद्द्विषामेष शरणंवरुणालयः। तस्माद्भवद्भ्यामद्यैव
क्षयमेषप्रणीयताम् ९ तावूचतुस्ततःशक्रमुभौशम्बरसूदनम्। अधर्म्मएषदेवेन्द्र! सा
गरस्यविनाशनम् १० यस्माज्जीवनिकायस्य महतःसंक्षयोभवेत्। तस्मान्नपापमद्यावा
ङ्करवावःपुरन्दर! ११ अस्ययोजनमात्रेऽपि जीवकोटिशतानिच। निवसन्तिसुरश्रेष्ठ!
सकथन्नाशमर्हति १२ एवमुक्तःसुरेंद्रस्तु कोपात्संरक्तलोचनः। उवाचेदंवचोरोषान्निर्दह
न्निवपावकम् १३ नधर्म्माधर्म्मसंयोगम्प्राप्नुवन्त्यमराःक्वचित्। भवतस्तुविशेषेण माहा
त्म्यंचाधितिष्ठति १४ यदाज्ञालंघनंयस्मान्मारुतेनसमन्त्वया। मुनिव्रतमहिंसादि परि
गृह्यत्वयाकृतम्। धर्मार्थशास्त्ररहितं शत्रुम्प्रतिविभावसो! १५ तस्मादेकेनवपुषा मुनिं

प्राप्ति कैसे होती है २ शिवजीने कहा—कि प्रथम पृथ्वीतलमें वायु सहित अग्नि अत्यन्त प्रचंड होती
भई वायुने दैत्योंके नाशकरने के अर्थ अग्निको प्रेराथा ३ उस अग्निने हज़ारों दैत्य दानव भस्म
करडाले उस समय तारकासुर—कमलाक्ष—कालदंष्ट्र—परावसु और विरोचन यह दैत्य देवताओं के
युद्धसे भाजतेभये ४ समुद्रके जलमें प्रवेशकरके छुपजातेभये वहाँ उनको अग्निभी भस्मकरने को
समर्थ न रहा ५ इसकेपीछे वह दैत्य देव मनुष्यादिकोंसमेत मुनि और सब जंगम जीव इनसबलोगों
को पीड़ादेकर फिर समुद्रमें प्रवेश करजानेलगे ६ इसीप्रकार हज़ारवर्षतक वह दैत्य शूरवीर बनेरहे
और पांचसातहजारवर्षतक जलके आश्रयहोकर त्रिलोकीको बाधाकरतेभये ७ पीछे अग्नि और वायुको
इंद्रने आज्ञा दी कि तुमदोनों मिलकर इससमुद्रकेजलको सुखादो ८ क्योंकि यहसमुद्र हमारेशत्रुओं
की रक्षाकरताहै इसहेतुसे अभी इसकानाशकरदेनाचाहिये ९ इसके इसवचनको सुनकर अग्नि और
वायु दोनों इन्द्रसे बोले कि हे देव समुद्रका नाशकरना महा अधर्म्म है १० क्योंकि इसमें अनेक
जीव हैं उनके स्थानोंका नाशहोताहै हे इन्द्र इस कारणसे हम इस समुद्रकानाश नहीं करसक्ते ११
इसके एक एक योजन में लाखों जीव रहतेहैं इसका नष्ट करना हमको योग्य नहीं है १२ यह सु
नतेही इन्द्र ऐसा क्रोधित हुआ मानोंअग्नि और वायु इन दोनोंको भस्म करदेगा और रक्तनेत्र कर
क्रोधसे यह वचन बोला १३ कि देवताओं के विशेष करके धर्माधर्म का संयोग नहीं कहाहै और
तुम्हारा माहात्म्य तो और भी अधिक सुनाजाता है हे अग्नि वायु तुम दोनों ने जो मेरी आज्ञाभंग
करी है और अहिंसा आदि मुनियों का व्रत धारण करलिया है शत्रुके प्रति तुमने धर्म अर्थ रहित

रूपेणमानुषे। मारुतेनसमंलोके तवजन्मभविष्यति १६ यदात्रमानुषत्वेऽपि त्वयाग स्त्येनशोषितः। भविष्यत्युदधिर्वह्ने! तदादेवत्वमाप्स्यसि १७ इतीन्द्रशापात्पतितौ त त्क्षणात्तौमहीतले। अवाप्तावेकदेहेन कुम्भाज्जन्मतपोधन! १८ मित्रावरुणयोर्व्वीर्य्या द्वसिष्ठस्यानुजोऽभवत्। अगस्त्यइत्युग्रतपाः सम्बभूवपुनर्मुनिः १९ (नारद उवाच) सम्भूतःसकथंभ्राता वसिष्ठस्याभवन्मुनिः। कथञ्चमित्रावरुणौ पितरावस्यतौस्मृतौ। जन्मकुम्भादगस्त्यस्य कथंस्यात्पुरसूदन! २० (ईश्वर उवाच) पुरापुराणपुरुषः कदा चिद्गन्धमादने। भूत्वाधर्मसुतोविष्णुश्चचारविपुलन्तपः २१ तपसातस्यभीतेन वि घ्नार्थंप्रेषितावुभौ। शक्रेणमाधवानंगावप्सरोगणसंयुतौ २२ तदातद्गीतवाद्येन नांगरा गादिनाहरिः। नकाममाधवाभ्यांच विषयान्प्रतिचुक्षुभे २३ तदाकाममधुस्त्रीणां विषाद मगमद्गणः। संक्षोभायततस्तेषां स्वोरुदेशान्नराग्रजः। नारीमुत्पादयामास त्रैलोक्य जनमोहिनीम् २४ संक्षुब्धास्तुतयादेवास्तौतुदेववरावुभौ। अप्सरोभिःसमक्षंहि देवाना मब्रवीद्धरिः २५ अप्सराइतिसामान्या देवानामब्रवीद्धरिः। उर्वशीतिचनाम्नेयं लोके ख्यातिंगमिष्यति २६ ततःकामयमानेन मित्रेणाहूयसोर्वशी। उक्तामांरमयस्वेति बाढ़ मित्यब्रवीत्तुसा २७ गच्छन्तीचाम्बरन्तद्वत्स्तोकमिन्दीवरेक्षणा। वरुणेनधृतापश्चात्व

शास्त्रका मत धारण किया है इस कारण तुम एक रूपसे मुनिरूप मनुष्य योनि होकर दोनों मृत्यु लोकमें उत्पन्नहोगे १४। १६ फिर मनुष्य शरीर में भी तुम अगस्त्य मुनि होकर समुद्रको शोषण करोगे इसके पीछे फिर अपनी देवयोनि को प्राप्तहोगे १७ ऐसे इन्द्र के शाप होने से उसी क्षण वह दोनों पृथ्वी पर गिरते भये और हे तपोधन नारद यहां आकर वह दोनों एकही शरीर से वह कुंभ अर्थात् घड़ेसे उत्पन्न होते भये यह मित्रावरुणी के वीर्य्य से उत्पन्न हुये और वसिष्ठजीके छोटे भाई हुए और बड़े उग्रतपस्वी अगस्त्य नाम मुनि विख्यात हुए १८। १९ नारद मुनि ने पूछा कि हे शिवजी यह अगस्त्य जी वसिष्ठ जी के भ्राता कैसे हुए और उनकेपिता मित्रावरुणी कैसे हुए और इनका जन्म कलशसे कैसे हुआ २० शिवजीने कहा कि प्रथम किसीसमय गन्धमादनपर्वतपै पुराण पुरुष विष्णुभगवान् धर्मके पुत्रहोकर दुश्चर तपकरतेभये २१ तवउनके तपके भयसेइन्द्रने वसन्तऋतु समेत कामदेवको अप्सरा गणोंसे युक्त करके उन विष्णुजी के पास उनकी तपस्या भंग करनेकेलिये भेजा २२ तव इन सबके गीत रागादिकोंसे हरि नारायण विषय भोगादिकोंसे चलायमान नहीं हुए २३ उस समय वसन्त ऋतु कामदेव और अप्सरादिकोंके चरित्रोंसे जब विष्णु भगवान् रागसे मोहित नहीं हुए तब यह सब भयसे कंपायमान हुए उस समय नारायणजीने अपनी जंघासे त्रिलोकी को मोहनेवाली एक उत्तम स्त्री उत्पन्नकी २४ उसको देखकर सब देवता चलायमानहोगये उस समय वह नर नारायण देव सब देवताओंसे यह वचन बोले २५ कि हे देवताओ यह उर्व्वशी नाम अप्सरा है यह भी हमने तुम्हारी अप्सराओं में विख्यात होनेवाली उत्पन्नकी है तब उस उर्वशी की इच्छाकरनेवाला मित्र देवता उसको बुलाकर कहनेलगा कि तू मेरे संग रमणकर उस समय उर्वशी

रुणश्चाभ्यनन्दत २८ मित्रेणाहंवृतापूर्वमद्यभार्यानतेविभो!। उवाचवरुणश्चित्तंमयिसं
न्यस्यगम्यताम् २९ गतायांवाढमित्युक्त्वा मित्रःशापमदात्तदा। तस्यैमानुषलोकेत्वं ग
च्छसोमसुतात्मजम् ३० भजस्वेतियतोवेश्या धर्म्मएषत्वयाकृतः। जलकुम्भेततोवीर्यं
मित्रेणवरुणेनच। प्रक्षिप्तमथसञ्जातौ द्वावेवमुनिसत्तमौ ३१ निमिर्नामसहस्त्रीभिः पु
राद्यूतमदीव्यत। तत्रान्तरेभ्याजगाम वसिष्ठोब्रह्मसम्भवः ३२ तस्यपूजामकुर्वन्तं श
शापसमुनिर्नृपम्। विदेहस्त्वंभवस्वेति ततस्तेनाप्यसौमुनिः ३३ अन्योन्यशापाच्चतयो
र्विगतेइवचेतसी। जग्मतुःशापमानाय ब्रह्माणञ्जगतःपतिम् ३४ अथब्रह्मणआदेशा
ल्लोचनेष्ववसन्निमिः। निमेषाःस्युश्चलोकानांतद्धिश्रामायनारद! ३५ वसिष्ठोऽप्यभव
त्तस्मिन् जलकुम्भेचपूर्ववत्। ततःश्वेतश्चतुर्बाहुः साक्षसूत्रकमण्डलुः। अगस्त्यइति
शान्तात्मा वभूवऋषिसत्तमः ३६ मलयस्यैकदेशेतु वैखानसविधानतः। सभार्यःसंवृतो
विप्रैस्तपश्चक्रेसुदुश्चरम् ३७ ततःकालेनमहता तारकादतिपीडितम्। जगद्वीक्ष्यस
कोपेन पीतवान्वरुणालयम् ३८ ततोऽस्यवरदाःसर्वे वभूवुःशंकरादयः। ब्रह्माविष्णुश्च

ने भी उनके वचनको अंगीकारकरलिया २६। २७ फिर कमलके समान प्रफुल्लित नेत्रोंवाली उ-
र्वशी आकाशमें जातीभई और वरुणने उसको ग्रहणकरलिया तब उर्वशी बोली कि तुमने यह अ-
च्छा नहीं किया २८ क्योंकि मुझको प्रथम मित्रने ग्रहणकरलियाथा अब मैं तुम्हारी भार्य्या नहीं
होसकी वरुणने कहा कि तू मुझमें चित्तलगाकर फिर दूसरी जगह जइयो २९ तब वह वरुणमें चित्त
लगाकर चलीगई तब मित्रने उसको शाप देदिया कि तू मनुष्य लोकमें जा वहाँ बुधके पुत्रको ग्र-
हणकर क्योंकि तैंने यह वेश्याका धर्म आचरण करलियाहै ऐसा कहकर मित्रने और वरुण दोनोंने
अपना वीर्य्य जलके घटमें स्थापित करदिया उसमें दो उत्तम मुनि उत्पन्नहुए ३०।३१ उनका वर्णन
सुनो—कि एक समय राजा निमि अपनी स्त्रियोंके साथ क्रीडा कररहाथा वहाँ ब्रह्माजीके पुत्र वसि-
ष्ठजी आगये उस समय राजा निमिने उनका पूजन नहीं किया इस हेतुसे वसिष्ठजीने क्रोध करके
राजाको शापदेदिया तू विदेह अर्थात् देहरहित होजा तब राजा निमिने भी कहा कि आप भी देह-
रहित होजाओ ३२। ३३ इस प्रकार वह दोनों परस्परमें शापोंको ग्रहण करके शरीर चित्तसे रहित
होकर जगत्के पति ब्रह्माजीके पास जातेभये ३४ फिर ब्रह्माजीकी आज्ञा पाके निमितो मनुष्यों के
नेत्रों में प्रवेश करगया हे नारद उसके हितके लिये लोकों के नेत्रोंका खोलना मूंदना होगया और
वसिष्ठ मुनि प्रथम के समान उस जलके कलशमें प्रवेशकरके उत्पन्न होतेभये एक तो यह मुनि हुए
इनके पीछे श्वेतरूप चारभुजा अक्षमाला यज्ञोपवीत और कमंडलु इन सबको धारण किये हुए अ-
गस्त्य नाम शान्तात्मा उत्तम ऋषि उत्पन्नहुए ३५—३६ फिर यह अगस्त्य ऋषि मलयाचल पर्वत
पर एकान्त स्थानमें जाकर स्त्री सहित अनेक ऋषियोंसे व्याप्तहोकर दारुण तपस्या करनेलगे ३७
जब बहुत काल व्यतीतहोगया तब किसी समय तारकासुरसे पीडितहुए सब जगत्को देखकर यह
ऋषि क्रोध करके सब समुद्रको पान करतेभये ३८ उस समय ब्रह्मा विष्णु और शिवजी इसको व-

भगवान् वरदानायजग्मतुः। वरंवृणीष्वभद्रन्ते यदभीष्टञ्चवैमुने! ३६ (अगस्त्य उवाच) यावद्ब्रह्मसहस्राणां पञ्चविंशतिकोटयः। वैमानिकोभविष्यामि दक्षिणाचलवर्त्मनि ४० मद्विमानोदयेकुर्याद्यःकश्चित्पूजनम्मम। ससप्तलोकाधिपतिःपर्यायेणभविष्यति ४१ (ईश्वर उवाच) एवमस्त्वितितेऽप्युक्त्वा जग्मुर्देवायथागतम्। तस्मादर्घःप्रदातव्यो ह्यगस्त्यस्यसदाबुधैः ४२ (नारद उवाच) कथमर्घप्रदानन्तु कर्तव्यन्तस्यवैविभो!। विधानंयदगस्त्यस्य पूजनेतद्वदस्वमे४३ (ईश्वर उवाच) प्रत्यूषसमयेविद्वान्कुर्यादस्योदयेनिशि। स्नानंशुक्लतिलैस्तद्वच्छुक्लमाल्याम्बरोगृही ४४ स्थापयेदव्रणंकुम्भं माल्यवस्त्रविभूषितम्। पञ्चरत्नसमायुक्तं घृतपात्रसमन्वितम् ४५ अंगुष्ठमात्रम्पुरुषन्तथैवसौवर्णमेवायतबाहुदण्डम्।चतुर्मुखंकुम्भमुखेनिधायधान्यानिसप्ताम्बरसंयुतानि४६ सकांस्यपात्राक्षतशुक्तियुक्तम्मन्त्रेणदद्याद्द्विजपुंगवाय। उत्क्षिप्यलम्बोदरदीर्घबाहुमनन्यचेतायमदिङ्मुखःसन्४७श्वेताञ्चदद्याद्यदिशक्तिरस्ति रौप्यैःखुरैर्हेममुखींसवत्साम्। धेनुन्नरःक्षीरवतींप्रणम्य सवत्सघण्टाभरणांद्विजाय ४८ आसप्तरात्रोदयमेतदस्य दातव्यमेतत्सकलन्नरेण। यावत्समाःसप्तदशाथवास्युरथोर्ध्वमप्यत्रवदन्तिकेचित् ४९ काशपुष्पप्रतीकाश! अग्निमारुतसम्भव!। मित्रावरुणयोःपुत्र! कुम्भयोने! नमोऽस्तुते।

देनेके लिये आते भये और इनसे यह वचन बोले कि हे मुने जो आपको अभीष्टहोय वह वरमांगो ३९ अगस्त्यजीने कहा कि जबतक हजार ब्रह्माओंकी पच्चीस किरोड़ वारियां व्यतीतहोंय तबतक मैं दक्षिणाचल पर्व्वतपर रहनेवाले विमानोंपर बैठनेवाला रहूं ४० मेरे विमानके उदयहोनेके समय जो पुरुष मेरा पूजनकरै वह सप्तलोक पतियोंके बदलनेतक सातलोकों का पति होय ४१ शिवजी कहनेलगे कि ऐसाही होगा फिर सब देवता अपने २ स्थानोंको जातेभये इस हेतुसे अगस्त्यजी के निमित्त बुद्धिमान् लोगोंको सदैव अर्घ दानदेना योग्य है ४२ नारदमुनिने कहा हे विभो अगस्त्यजी को अर्घदान कैसेकरै अगस्त्यजीके पूजनका जो विधानहै वह मेरे आगे वर्णन कीजिये ४३ शिवजी बोले कि इनके उदयहोनेके समय प्रातःकालही विद्वान गृहस्थी पुरुष श्वेत तिलोंसे स्नानकरे श्वेतपुष्पोंकीमाला और श्वेतही वस्त्रोंको भी धारणकरे ४४ और एक सुन्दर छिद्रादिसे रहित कलश स्थापितकरे उस कलशको पुष्प वस्त्रादिसे विभूषित पंचरत्नोंसे पूरित और घृतके पात्रसे युक्तकरै ४५ और एक लंबी चौड़ी भुजावाला अंगुष्ठ प्रमाण सुवर्णका पुरुष चारमुख वाला बनवाकर उसके मुख पर स्थापितकरे इसके पीछे उस कलशको सप्त धान्य और वस्त्रादिसे युक्त करके ४६ कांसीके पात्र अक्षत औरसीपी इन सब समेत संकल्प करके ब्राह्मणके अर्थ दे दे फिर उस लंबी चौड़ी उदरवाली मूर्त्तिको उठाके दक्षिणकी ओर मुख करके दानकरे ४७ जो अधिक शक्तिहोय तो चाँदीके खुर सुवर्ण के शृंग सवत्सा घंटा आदिक भूषणों समेत दूधवाली गौको ब्राह्मणके अर्थ दानकरै ४८ यह विधि अगस्त्यजी के उदय से सात दिनतक मनुष्यको करनी योग्यहै कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि यह विधि सत्रह १७ वर्षतक हरसाल करनी उचितहै ४९ श्वेत पुष्पके समान कान्तिवाले अग्नि और

प्रत्यब्दन्तुफलैर्याग मेवंकुर्वन्नसीदति ५० होमंकृत्वाततःपश्चाद्वर्जयेन्मानवःफलम्। अ नेनविधिनायस्तु पुमानर्घ्यंनिवेदयेत् ५१ इमंलोकंसचाप्नोति रूपारोग्यसमन्वितः। द्वि तीयेनभुवर्लोकं स्वर्लोकञ्चततःपरम् ५२ सप्तैवलोकानाप्नोति सप्तार्घ्यान्यःप्रयच्छति। यावदायुश्चयःकुर्यात्परम्ब्रह्माधिगच्छति ५३ इहपठतिशृणोतिवायएतद्युगलमुनिप्रभवा र्घ्यसम्प्रदानम्। मतिमपिचददातिसोऽपिविष्णोर्भवनगतःपरिपूज्यतेऽमरौघैः ५४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे अगस्त्यार्घप्रदानन्नामैकाधिकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

(मनुरुवाच) सौभाग्यारोग्यफलदममुत्राक्षय्यकारकम्। भक्तिमुक्तिप्रदन्देव! त न्मेब्रूहिजनार्दन! १ (मत्स्य उवाच) यदुमायाःपुरादेव! उवाचपुरसूदनः। कैलासशि खरासीनो देव्यापृष्टस्तदाकिल २ कथासुसम्प्रवृत्तासु धर्म्यासुललितासुच। तदिदानीं प्रवक्ष्यामि भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ३ (ईश्वर उवाच) शृणुष्वावहितादेवि! तथैवानन्त पुण्यकृत्। नराणामथनारीणा माराधनमनुत्तमम् ४ नभस्येवाथवैशाखे पुण्यमार्गशिर स्यच। शुक्लपक्षेतृतीयायां सुस्नातोगौरसर्षपैः ५ गोरोचनंसगोमूत्र मुष्णंगोशकृतन्त था। दधिचन्दनसम्मिश्रं ललाटेतिलकंन्यसेत्। सौभाग्यारोग्यदंयस्मात्सदाचललिता

वायुके अंशसे उत्पन्नहोने वाले मित्र और वरुणके पुत्र कलशसे उत्पन्न जो आपहैं उनके अर्थ नमः स्कारहै इस विधिसे वर्ष २ के प्रति फल पुष्पादिकों से पूजन करता हुआ पुरुष कभी किसी प्रकार से दुखित नहीं रहताहै ५० फिर हवनकरै और फलकी इच्छाको त्यागदे इस विधिसे पुरुषको अर्घ दान करना योग्यहै ५१ पहलीवार इस विधिसे अर्घदान करनेवाला पुरुष इस लोकमें रूप आरोग्य युक्त होकर सुखी होताहै और दूसरीवार करनेवाला भुवर्लोकको और तीसरीवार वाला स्वर्गलोक को प्राप्तहोताहै इस विधिसे सातवार अर्घदान करनेवाला पुरुष क्रमसे सातों लोकों में प्राप्तहोताहै और जो जीवनपर्य्यन्त अगस्त्यजीके निमित्त यहअर्घदानदेताहै वहपरब्रह्ममेंलीनहोजाताहै ५२।५३ इस अगस्त्यमुनिके अर्घदानको जो पुरुष इससंसारमें पढ़ताहै वा सुनताहै अथवा दूसरेको उपदेश करताहै वह विष्णु लोकमें प्राप्त होकर देवताओंसे पूजित होताहै ५४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाधिकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

मनुजी कहते हैं कि हे भगवन जो सौभाग्यारोग्य का देनेवाला और परलोकमें अक्षय फल दे नेवाला तथा भुक्ति मुक्ति का देनेवाला धर्म होय उसको आप वर्णन कीजिये १ मत्स्य भगवान् बोले कि सुन्दर कैलास पर्वत में पार्वती से पूछे हुए शिवजी जो पार्वती जी से कहते भये उसको मैं तुम्हें सुनाता हूं २ धर्म संबन्धी सुन्दर ललित कथाओंकी प्रवृत्तिमें अब उत्तम भुक्ति मुक्ति के देने वाले धर्म को कहता हूं ३ शिवजी बोले हे देवि पार्वती तू अनन्त पुण्य दायक स्त्री पुरुषों के आराधन करने के योग्य धर्मकोसुन ४ श्रावण वा वैशाखमासमें वा मार्गशिरमासके शुक्लपक्षकी तृतीयाको अच्छे प्रकार से स्नानकर श्वेतसरसों गोरोचन गरम २ गोमूत्र गोबर दही और चन्दन इन सब को मिला मस्तक पर लेप करे अर्थात् तिलककरे क्योंकि यह तिलक सौभाग्य आरोग्यका देनेवालाहै और ल-

प्रियम् ६ प्रतिपक्षंतृतीयासु पुमानापीतवाससी। धारयेद्रथरक्तानि नारीचेदथसंयता ७ विधवाधातुरक्तानि कुमारीशुक्लवाससी। देवींतुपञ्चगव्येन ततःक्षीरेणकेवलम्। स्नापयेन्मधुनातद्वत्पुष्पगन्धोदकेनच ८ पूजयेच्छुक्लपुष्पैश्च फलैर्नानाविधैरपि। धान्यकाजाजिलवणैर्गुडक्षीरघृतान्वितैः ९ शुक्लाक्षततिलैरर्च्यांततोदेवींसदार्चयेत्। पादाद्यभ्यर्चनंकुर्य्यात्प्रतिपक्षंवरानने। १० वरदायैनमःपादौ तथागुल्फौनमःश्रियै। अशोकायैनमो जंघे पार्वत्यैजानुनीतथा ११ ऊरूमंगलकारिण्यै वामदेव्यैतथाकटिम्। पद्मोदरायैजठरमुरःकामश्रियैनमः १२ करौसौभाग्यदायिन्यैबाहूदरमुखंश्रियै। मुखंदर्पणवासिन्यै स्मरदायैस्मितन्नमः १३ गौर्यैनमस्तथानासा मुत्पलायैचलोचने। तुष्ट्यैललाटमलकान् कात्यायन्यैशिरस्तथा १४ नमोगौर्यैनमोधिष्ण्यै नमःकान्त्यैनमःश्रियै। रम्भायैललितायैच वासुदेव्यैनमोनमः १५ एवंसम्पूज्यविधिव दग्रतःपद्ममालिखेत्। पत्रैर्द्वादशभिर्युक्तं कुंकुमेनसकर्णिकम् १६ पूर्वेणविन्यसेद्गौरी मपर्णाञ्चततःपरम्। भवानींदक्षिणेतद्वद्रुद्राणीञ्चततःपरम् १७ विन्यसेत्पश्चिमेसौम्यां सदामदनवासिनीम्। वायव्येपाटलामुग्रा मन्तरेणततोऽप्युमाम् १८ मध्येयथास्वंमासांगां मंगलांकुमुदांसतीम्। रुद्रञ्च

लिता देवी को परम प्रिय है ५-६ और पक्ष पक्षकी तृतीया के दिन पुरुषतो पीले वस्त्र धारण करे और स्त्री लाल वस्त्र पहरे ७ विधवा स्त्री गेरू के रंगे हुए वस्त्रों को पहरे और कुमारी कन्या श्वेत वस्त्र धारण करे फिर पंचगव्य से अथवा दूधसे देवी को स्नानकरावे फिर शहद से स्नानकर कर पुष्पगन्ध और जलसे स्नान करावे फिर श्वेतपुष्प अनेक प्रकार के फल धनियां जीरा नमक गुड़ दूध और घृत इत्यादिकों से और श्वेत अक्षत और तिल इन वस्तुओं से देवीका पूजनकरै हे वरानने पक्ष २ की तृतीया के दिन पाद्य अर्घ आदिकों से पूजे ८।१० वरदायैनमः इस मंत्र से पैरों को पूजे लक्ष्म्यैनमः इसमंत्र करके टकनों को अशोकादेव्यै नमः इस मंत्रसे पिंडिलियोंको और पार्वत्यैनमः इस मंत्रसे घोटओं को पूजे ११ मंगलकारिण्यैनमः इससे जंघाओं को वामदेव्यैनमः इस मंत्रसे कटिको पद्मोदरायैनमः इस मंत्रसे उदरको कामश्रियैनमः इस मंत्र से छाती को १२ सौ भाग्य दायिन्यैनमः इस मंत्रसे हाथोंको--श्रियैनमः यह कह कर भुजा–उदर और मुखका पूजन करै दर्पणवासिन्यैनमः मुखको स्मरदायैनमः ऐसाकहकर दांतों को पूजे १३ गौर्य्यैनमः इससे नासिकाको उत्पलायैनमः मंत्र से नेत्रोंको तुष्ट्यैनमः इस मंत्रसे मस्तकके बालों को और कात्यायन्यै नमः इसमंत्रसे शिरको पूजे १४ गौरीके अर्थ नमस्कार ऐसाकहकर धिष्णी बुद्धिरूपादेव्यैनमः इस मंत्रसे कान्तिको श्रीरंभायैनमः ललितादेव्यैनमः वासुदेव्यैनमः १५ इन सब मंत्रोंसे विधिपूर्वक देवीजी की मूर्त्तिका पूजनकर अपने अग्रभागमें बारह पत्तों से युक्तनाली समेत एक कमल केसरसे लिखे १६ पूर्वके पत्रपै गौरीको स्थापित करै अग्नि कोणमें अपर्णाको दक्षिण में भवानी को नैर्ऋत में रुद्राणीको १७ पश्चिम में सौम्यरूपवाली को मदनवासिनी देवीको वायव्य में उग्रापाटला देवीको उत्तरमें उमाको १८ और ईशान कोणमें उत्तम अंगवाली कुमुदा देवीको स्थापित करे और

मध्येसंस्थाप्य ललितांकर्णिकोपरि। कुसुमैरक्षतैर्वाभिर्नमस्कारेणविन्यसेत् १९ गीतमं
गलनिर्घोषान्कारयित्वासुवासिनीः। पूजयेद्रक्तवासोभी रक्तमाल्यानुलेपनैः। सिन्दूरंस्ना
नवर्णञ्च तासांशिरसिपातयेत् २० सिन्दूरकुंकुमस्नान मतीवेष्टतमंयतः। तथोपदेष्टा
रमपि पूजयेद्यत्नतोगुरुम्। नपूज्यतेगुरुर्यत्र सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः २१ नभस्येपूजयेद्गौ
री मुत्पलैरसितैःसदा। बन्धुजीवैराश्वयुजे कार्त्तिकेशतपत्रकैः २२ जातीपुष्पैर्मार्गशीर्षे
पौषेपीतैःकुरण्टकैः। कुन्दकुंकुमपुष्पैस्तु देवींमाघेतुपूजयेत्। सिन्दुवारेणजात्यावा फा
ल्गुनेऽप्यर्चयेदुमाम् २३ चैत्रेतुमल्लिकाशोकै र्वैशाखेगन्धपाटलैः। ज्येष्ठेकमलमन्दारै
राषाढेचनवाम्बुजैः। कदम्बैरथमालत्या श्रावणेपूजयेत्सदा २४ गोमूत्रंगोमयंक्षीरं दधि
सर्पिःकुशोदकम्। विल्वपत्रार्कपुष्पञ्च यवान्गोशृंगवारिच २५ पञ्चगव्यञ्चविल्वञ्च
प्राशयेत्क्रमशस्तदा। एतद्भाद्रपदाद्यन्तु प्राशनंसमुदाहृतम् २६ प्रतिपक्षञ्चमिथुनं तृ
तीयायांवरानने। पूजयित्वार्चयेद्भक्त्या वस्त्रमाल्यानुलेपनैः। पुंसःपीताम्बरेदद्यात्स्त्रियै
कौसुम्भवाससी २७ निष्पावाजाजिलवणमिक्षुदण्डगुडान्वितम्। तस्यैदद्यात्फलंपुष्पं
सुवर्णोत्पलसंयुतम् २८ यथानदेवि! देवेशस्त्वाम्परित्यज्यगच्छति। तथा मामुद्धर

इन सर्वोंके मध्यमें रुद्रजीको स्थापित करे कमलकी डंडी पर ललितादेवीको स्थापित करे इनसब देवियोंको पुष्प अक्षत और जलसे स्थापित करे १९ फिर मंगला चरण के गीतोंको गावै उत्तम शब्द करै सुन्दर वस्त्रों वाली देवीको लालवस्त्र लालपुष्प और लालचन्दन इनसब से पूजै और उन देवियोंको स्नानकराकर उनके शिरोंपर सिंदूरचढ़ावै २० सिंदूररोली चढ़ाना और स्नानकराना यह अत्यन्त योग्य है इस हेतु से इस पूजाके उपदेश देनेवाले गुरूकी भी यत्नपूर्वक सिंदूरही से पूजा करे क्योंकि जहां गुरूकी पूजा नहीं कीजाती है वहां सब क्रिया निष्फल होती हैं २१ भाद्रपद के महीने में सदैव नीले कमलोंके पुष्पोंसे गौरीको पूजै आश्विन में बन्धुजीव अर्थात् लाल रंग दुपहरियाके पुष्पोंसे कार्त्तिकमें शतपत्रक श्वेत कमल के पुष्पों से पूजै २२ मार्ग शिर में चमेली के पुष्पोंसे पौषमें कुरंटक के पीले पुष्पों से माघमें कुंदके पुष्पोंसे अथवा केशर के पुष्पोंसे देवीको पूजै फाल्गुनमें उमादेवीको संभालूके पुष्पोंसे अथवा चमेलीके पुष्पोंसे पूजै २३ चैत्रमें चंपा और अशोक वृक्ष इन दोनोंके पुष्पोंसे पूजै—वैशाखमें सुगन्धित पाटल वृक्षके पुष्पोंसे ज्येष्ठमें उत्तम खिले हुए कमलके पुष्पोंसे—आषाढमें नवीन कमलोंसे—और श्रावणमें कदंबके और मालतीके पुष्पोंसे भगवतीको पूजै २४ और गोमूत्र—गोबर—गौका दूध—दही—घृत—कुशाकाजल—बेलपत्र—आकके पुष्प—जव गौके सींगोंके धोवनका जल—पंचगव्य और बेलगिरी—इन सबको भाद्रपदके महीनेसे क्रम पूर्वक भोजनकरे जैसे कि भाद्रपदकी तृतीया ३ को गोमूत्र—आश्विनकी ३ को गोबर २५। २६ इसी प्रकार हे वरानने हर पक्षकी तृतीयाके दिन ब्राह्मण और ब्राह्मणीके जोड़ेको भक्ति पूर्वक पूजकर वस्त्र माला—पुष्प और चन्दन इत्यादिसे पूजै ब्राह्मणको पीले वस्त्र पहरावे स्त्रीको दोनों लाल वस्त्र पहरावै २७ और साफ कियाहुआ शुद्ध जीरा १ नमक—ईखका गांडा—गुड़—फल पुष्प और सुवर्णका बनायाहुआ कमलका पुष्प यह सब वस्तु उस ब्राह्मणीके अर्थ दे दे २८ और यह वचन कहै कि हे

शेष दुःखसंसारसागरात् २९ कुमुदाविमलानन्ता भवानीचसुधाशिवा। ललिताकमला गौरी सतीरम्भाथपार्वती ३० नभस्यादिषुमासेषु प्रीयतामित्युदीरयेत्। व्रतान्तेशयनं दद्यात्सुवर्णकमलान्वितम् ३१ मिथुनानिचतुर्विंशद्दशद्वौचसमर्चयेत्। अष्टौषड्वाप्यथ पुनश्चानुमासंसमर्चयेत् ३२ पूर्वन्दत्वातुगुरवे शेषानप्यर्चयेद्बुधः। उक्तानन्ततृतीयैषा सदानन्तफलप्रदा ३३ सर्वपापहरान्देवि ! सौभाग्यारोग्यवर्धिनीम्। नचैनांवित्त शाठ्येन कदाचिदपिलंघयेत्। नरोवायदिवानारी वित्तशाठ्यात्पतत्यधः ३४ गर्भिणी सूतिकानारी कुमारीवाथरोगिणी। यद्यऽशुद्धातदान्येन कारयेत्प्रयतास्वयम् ३५ इमामनन्तफलदां यस्तृतीयांसमाचरेत्। कल्पकोटिशतंसाग्रं शिवलोकेमहीयते ३६ वित्तहीनोऽपिकुरुते वर्षत्रयमुपोषणैः। पुष्पमन्त्रविधानेन सोऽपितत्फलमाप्नुयात् ३७ नारीवाकुरुतेयातु कुमारीविधवाथवा। सापितत्फलमाप्नोति गौर्यनुग्रहलालिता ३८ इतिपठतिशृणोतिवायइत्थं गिरितनयाव्रतमिन्द्रवाससंस्थः। मतिमपिचददातिसोऽपि देवैरमरवधूजनकिन्नरैश्चपूज्यः ३९ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

अथान्यामपिवक्ष्यामि तृतीयांपापनाशिनीम्। रसकल्याणिनीमेताम्पुराकल्पविदो

देवि जैसे तुमको त्यागकर देवेश शिवजी महाराज कहीं नहीं जाते हैं उसीप्रकार तुम मुझको इस संसाररूपी समुद्रके दुःखसे पार उतारो २९ कुमुदा—विमला—अनन्ता—भवानी—सुधा—शिवा—ललिता—कमला—गौरी—सती—और रंभा पार्वती ३० इन सबका नाम क्रमसे भाद्रपद आदि महीनों के क्रमसे कहकर(प्रीयताम्)अर्थात् प्रसन्नहो और तृप्तहो ऐसा वचनकहै जब व्रत पूराहोजाय तबसुवर्णके कमलसे युक्तकीहुई शय्याका दानकरै ३१ प्रतिमास चौबीस ब्राह्मण ब्राह्मणीके जोड़ोंको अथवा १२ जोड़ोंको वा ६ जोड़ोंको स्त्री पुरुष दोनों पूजें ३२ प्रथम गुरुके अर्थ दानदेके फिर बुद्धिमान् पुरुष अन्य ब्राह्मणोंका पूजनकरै यह अनन्त फलकी देनेवाली अनन्त तृतीया ३ वर्णनकी है ३३ हे देवि पार्वति यह सब पापोंकी हरनेवाली और सौभाग्य आरोग्यकी बढ़ानेवाली है इस तृतीयाको वित्त शाठ्यसे रहित होकर कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिये क्योंकि चाहै पुरुषहो वा स्त्रीहो जो कोई वित्तशाठ्य करताहै वह नरकलोकमें जाताहै ३४ गर्भिणी—सूतिका स्त्री—कुमारी—विधवा—यह अशुद्धहोने के कारण जो आप व्रत नहीं करसकें तो अनेक यत्नोंसे दूसरेको व्रत करवावें ३५ इस अनन्तफलदा तृतीया ३ को जो पुरुष श्रद्धापूर्व्वक करताहै वह सौ १०० किरोड़ कल्पों तक शिवलोक में प्राप्त रहताहै ३६ द्रव्यसे हीन पुरुष भी जो तीन वर्षतक इस व्रतको भक्तिपूर्व्व कहे हुए पुष्प मंत्र विधानसे पुष्प बनाकर पूजताहै वह भी इसी फलको प्राप्त होताहै ३७ कुमारी अथवा विधवा नारी जो इस व्रतको करती हैं वह भी गौरी देवीके अनुग्रहसे इसी फलको प्राप्तहोकर सौ १०० किरोड़ वर्षोंतक शिवलोकमें निवास करती हैं ३८ इस माहात्म्यको जो पढ़ता है वा सुनताहै वह स्वर्गवासी कहलाताहै और उसको गौरी पार्वती बुद्धिदेती है और देवता देवताओं की स्त्री और किन्नर इन सबसे पूजा जाताहै ३९ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वयधिकषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

इसके अनन्तर अब पापोंकी नाश करने वाली उस अन्य तृतीयाके माहात्म्यको कहते हैं जिसको

विदुः १ माघमासेतुसम्प्राप्ते तृतीयांशुक्लपक्षतः । प्रातर्गव्येनपयसा तिलैःस्नानंसमाच
रेत् २ स्नापयेन्मधुनादेवीं तथैवेक्षुरसेनच । दक्षिणांगानिसम्पूज्य ततोवामानिपूजयेत् ३
ललितायैनमोदेव्याः पादौगुल्फौततोऽर्चयेत् । जंघांजानुंतथाशान्त्यै तथैवोरुंश्रियैनमः ४
मदालसायैतुकटिममलायैतथोदरम् । स्तनौमदनवासिन्यै कुमुदायैचकन्धराम् ५ भु
जम्भुजाग्रम्माधव्यै कमलायैमुखस्मिते । भ्रूललाटेचरुद्राण्यै शङ्करायैतथालकान् ६
मुकुटंविश्ववासिन्यै शिरःकान्त्यैतथार्चयेत् । मदनायैललाटन्तु मोहनायैपुनर्भ्रुवौ ७ ने
त्रेचन्द्रार्द्धधारिण्यै तुष्ट्यैचवदनम्पुनः । उत्कण्ठिन्यैनमःकण्ठ ममृतायैनमःस्तनौ ८
रम्भायैवामकुक्षिञ्च विशोकायैनमःकटिम् । हृदयम्मन्मथाधिष्ण्यै पाटलायैतथोदरम् ९
कटिंसुरतवासिन्यै तथोरुञ्चम्पकप्रिये ! । जानुजंघेनमोगौर्यै गायत्र्यैघुटिकेनमः १०
धराधरायैपादौतु विश्वकार्यैनमःशिरः । नमोभवान्यैकामिन्यै कामदेव्यैजगत्प्रिये ! ११
एवंसम्पूज्यविधिवद्विजदाम्पत्यमर्चयेत् । भोजयित्वान्नपानेन मधुरेणाविमत्सरः १२ ज
लपूरितन्तथाकुम्भं शुक्लाम्बरयुगद्वयम् । दत्त्वासुवर्णकमलं गन्धमाल्यैःसमर्चयेत् १३

कि पूर्व कल्पके जानने वाले पुरुष रसकल्याणिनी नाम तृतिया वर्णन करते हैं १ उसकी यह विधि है कि माघमहीने के शुक्ल पक्षकी तृतियाको गौके दूध और तिलोंसे तो आप स्नानकरे २ और शहद तथा ईखके रससे देवीजीको स्नान करावै प्रथम देवीजी के दक्षिण अंगोंका पूजनकरै फिर वामअंगों को पूजै ३ और ललिता देवीके अर्थ नमस्कार करके चरण और टकनोंको पूजै शान्त्यैनमः इसमन्त्र से पिंडिलियोंका और घोटुओंका पूजन करे और श्रियैनमः कहकर जंघाओं का पूजनकरै ४ महा- लसायैनमः ऐसा कहकर कटिको अमलायैनमः ऐसा कहकर उदरको मदनवासिन्यैनमः कहकर स्तनोंको और कुमुदायैनमः कहकर कन्धोंको पूजै ५ माधव्यैनमः इसकरके भुजाओं समेत भुजाओं के अग्रभागको पूजै कमलायैनमः इस मंत्रसे मुख के हास्यको पूजै इन्द्राण्यैनमः इस मन्त्र से भृकुटी और मस्तकमें पूजै और शंकरायैनमः ऐसा कहकर जुल्फके वालोंको पूजै ६ विश्ववासिन्यै नमः यह कहकर मुकुटको पूजै--कान्त्यैनमः यह कहकर शिवको पूजै--मदनायैनमः यह कहकर म- स्तकको पूजै मोहनायैनमः यह कहकर फिर भृकुटियोंको पूजै ७ चन्द्रार्धधारिण्यैनमः यह कहके नेत्रोंको--तुष्ट्यैनमः इसमंत्रसे मुखको पूजै उत्कण्ठिन्यैनमः इसको कहकर कंठको और अमृतायैनमः इस मंत्रसे स्तनोंको पूजै ८ रंभायैनमः यह कहकर वामकुक्षिको--विशोकायैनमः यह कहके कटिको मन्मथाधिष्ण्यैनमः यह कहकर हृदयको पूजै और पाटलायैनमः इस मंत्रसे उदरको पूजै ९ सुरत- वासिन्यैनमः ऐसा कहकर कटिको पूजै--चंपकप्रियायैनमः ऐसा कहकर जंघाओंको--गौर्यैनमः ऐसा कहके गुल्फ और पिंडिलियोंको गायत्र्यैनमः यह कहके टकनोंको पूजै १० धराधरायैनमः यह कहके पैरोंको--विश्वकार्यैनमः यह कहके शिरको--यह सब वामअंगोंकी पूजाकही है--हे जगत्प्रिये भवान्यै- नमः कामिन्यैनमः कामदेव्यैनमः ऐसे भी कहै ११ इस विधिसे देवीका पूजनकरै फिर कुटिलता से रहित ब्राह्मण ब्राह्मणीके जोड़े को पूजकर उनको मिष्टान्नसे भोजनकरावै १२ जलसे पूर्ण श्वेत वस्त्रोंसे आच्छादित दो कलशोंको और सुवर्णके कमलको गन्धपुष्पादि से पूजकर ब्राह्मणके निमित्त

प्रीयतामत्रकुमुदा गृह्णीयाल्लवणव्रतम्। अनेनविधिनादेवीं मासिमासिसदार्चयेत् १४
लवणंवर्जयेन्माघे फाल्गुनेचगुडम्पुनः। तैलंराजिन्तथाचैत्रे वर्ज्यंचमधुमाधवे १५ पान
कंज्येष्ठमासेतु आषाढेचाथजीरकम्। श्रावणेवर्जयेत्क्षीरन्दधिभाद्रपदेतथा १६ घृतमा
श्वयुजेतद्वदूर्जेवर्ज्यञ्चमाक्षिकम्। धान्यकम्मार्गशीर्षेतु पौषेवर्ज्याचशर्करा १७ व्रता
न्तेकरकम्पूर्णमेतेषांमासिमासिच। दद्याद्द्विकालवेलायाम्पूर्णपात्रेणसंयुतम् १८ ल
ड्डुकाञ्श्वेतवर्णांश्च संयावमथपूरिकाः। घारिकानप्यपूपांश्च पिष्टापूपांश्चमण्डकान् १९
क्षीरंशाकञ्चदध्यन्न मिण्डर्योशोकवर्तिकाः। माघादिक्रमशोदद्यादेतानिकरकोपरि २०
कुमुदामाधवीगौरी रम्भाभद्राजयाशिवा। उमारतिःसतीतद्वन्मङ्गलारतिलालसा २१
क्रमान्माघादिसर्वत्र प्रीयतामितिकीर्त्तयेत्। सर्वत्रपञ्चगव्येन प्राशनंसमुदाहृतम्। उ
पवासीभवेन्नित्यमशक्तेनक्तमिष्यते २२ पुनर्माघेतुसम्प्राप्ते शर्कराङ्करकोपरि। कृत्वातु
काञ्चनींगौरीं पञ्चरत्नसमन्विताम् २३ हैमीमंगुष्ठमात्राञ्च साक्षसूत्रकमण्डलुम्। च
तुर्भुजामिन्दुयुतां सितनेत्रपटावृताम् २४ तद्वद्गोमिथुनंशुक्लं सुवर्णास्यंसिताम्बरम्। स
वस्त्रभाजनन्दद्याद्भवानीप्रीयतामिति २५ अनेनविधिनायस्तु रसकल्याणिनीव्रतम्।
कुर्यात्ससर्वपापेभ्यस्तत्क्षणादेवमुच्यते २६ नवार्बुदसहस्रन्तु नदुःखीजायतेनरः। सुव

दानकरदे १३ फिर यह कहे कि कुमुदादेवी प्रसन्न होकर इस लवण व्रतको ग्रहण करो इसविधिसे हर महीने देवीजीका पूजनकरै १४ माघके महीने में नमकका भोजन नहीं करे फाल्गुनमें गुड़नखाय चैत्रमें तेल और राई इनदोनों को न खाय वैशाखमें मीठापदार्थ न खाय १५ ज्येष्ठमें पन्ना बनाकर न पिये आषाढ़में जीरानखाय श्रावणमें दूध न खाय और भाद्रपदमें दही न खाय १६ आश्विन में घृत न खाय कार्तिकमें शहद न खाय मार्गशिर में धनियां त्यागे पौषमें खांडको त्यागे १७ जब व्रत समाप्त होजाय तब महीने महीने परजल आदिसे भरे कमण्डलुको पूर्णपात्रसे युक्तकर दोनों समय दानकरै १८ और श्वेत वर्णके लड्डू-मोहनभोग-पूरी-घेवर-मालपुए-मीठेपुए-माड़े-दूध शाक-दहीभात-इमरती-गूंझे-इन सब पदार्थोंको कमण्डलु पर स्थापित करके माघ आदि महीनोंमें क्रम से दान करे अर्थात् क्रमसे माघादिक एक२महीनेमें एक२मिठाई कमण्डलुपै रखकर दानकरै१९।२० कुमुदा-माधवी-गौरी-रंभा-भद्रा-जया-शिवा-उमा-रति-सती-मंगला-और रतिलालसा २१ इनका नाम माघादिक महीनों में क्रमसे उच्चारण करके प्रसन्नहो ऐसा वचनकहै सब महीनों में पंचगव्यका आचमन करै प्रतिदिन निराहार व्रतकरै-जो श्रद्धा न होय तो रात्रिमें भोजनकर लेवे२२ फिर जब माघका महीना आवे तब कमण्डलुपै खांडको स्थापित करै और सुवर्णकी पार्वती बनवाके उसको पंचरत्नोंसे युक्तकर सुवर्णकी अंगूठी के प्रमाण लम्बी बनवाके उसको अक्षमाला-सूत्र-और कमण्डलु इनतीनों समेत चारभुजावाले चन्द्रमा श्वेतनेत्र औरश्वेतही वस्त्र इनसबसे युक्तकरै-और इसीप्रकार श्वेतवर्णकी गौके जोड़ेको सुवर्ण संयुक्त श्वेत वस्त्रसे आच्छादितकर दोहनीपात्र संयुक्त ब्राह्मणके अर्थ दानकरै और हे भवानी आप प्रसन्नहूजिये ऐसावचन कहै २३।२५ इसविधिसे जो इस कल्याणिनी नामवाली तृतीयाका व्रतकरताहै वह क्षणमात्रमेंही सब पापों से छूटकर नौअरब एक

र्णकमलङ्गौरी मासिमासिददन्नरः। अग्निष्टोमसहस्रस्य यत्फलन्तदवाप्नुयात् २७ ना
रीवाकुरुतेयातु कुमारीवावरानने!। विधवायातथानारी सापितत्फलमाप्नुयात्। सौभा
ग्यारोग्यसम्पन्ना गौरीलोकेमहीयते २८ इतिपठतिशृणोतियःप्रसंगात्कलिकलुषविमुक्तः
पार्वतीलोकमेति। मतिमपिचनराणांयोददातिप्रियार्थं विबुधपतिविमाने नायकःस्या
दमोघः २९॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे त्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥

(ईश्वर उवाच) तथैवान्याम्प्रवक्ष्यामि तृतीयाम्पापनाशिनीम्। नाम्नाचलोकेवि
ख्यातामार्द्रानन्दकरीमिमाम् १ यदाशुक्लतृतीयायामाषाढर्क्षंभवेत्क्वचित्। ब्रह्मर्क्षंवाम्
गर्क्षंवा हस्तोमूलमथापिवा। दर्भगन्धोदकैःस्नानं तदास्मयक्समाचरेत् २ शुक्लमाल्या
म्बरधरः शुक्लगन्धानुलेपनः। भवानीमर्चयेद्भक्त्या शुक्लपुष्पैःसुगन्धिभिः। महादेवेनस
हितामुपविष्टाम्महासने ३ वासुदेव्यैनमःपादौ शङ्करायनमोहरम्। जंघेशोकविनाशि
न्यै आनन्दायनमःप्रभो! ४ रम्भायैपूजयेदूरू शिवायचपिनाकिनः। अदित्यैचकटिन्दे
व्याः शूलिनःशूलपाणये ५ माधव्यैचतथानाभिमथशम्भोर्भवायच। स्तनावानन्दका
रिण्यै शंकरस्येन्दुधारिणे ६ उत्कण्ठिन्यैनमःकण्ठन्नीलकण्ठायवैहरम्। करावुत्पलधा
रिण्यै रुद्रायचजगत्पते!। बाहूचपरिरम्भिण्यै त्रिशूलायहरायच ७ देव्यामुखंविला

हजार१००००००१००० वर्ष तक कभी दुखी नहीं रहताहै और प्रतिमास सुवर्ण कमलसे युक्तकीहुई
पार्वतीकी मूर्त्तिका जो दानकरताहै वह पुरुष हज़ार अग्निष्टोम यज्ञोंके फलको प्राप्त होताहै २६।२७
हे वरानने इस व्रतको जो स्त्री वा कुमारी अथवा विधवा स्त्री भी करै वह भी इसी फलको प्राप्त हो-
ती हैं और सौभाग्य आरोग्य युक्त होकर पार्वतीके लोकमें प्राप्त होती हैं २८ इस कथाको जो पढ़ता
है वा सुनताहै वह कलियुगके पापोंसे छूटकर पार्वतीके लोकमें प्राप्त होताहै--और जो अन्य पुरुषों
को इस कथाकी अनुमति देताहै वह भी देवताओंका राजाहोके उत्तम विमानमें विचरताहै २९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥

शिवजी बोले कि हे नारद अब सब पापोंकी नाशकरनेवाली आर्द्रानन्दकरी नामसे विख्यात
अन्य तृतीयाका माहात्म्य वर्णन करते हैं १ जब कभी शुक्लपक्षकी तृतीयाके दिन पूर्वाषाढ़--रोहिणी
मृगशिर--हस्त और मूल इन नक्षत्रोंमेंसे कोईसा नक्षत्रहोय तब कुशा गन्ध--जल इनसे स्नानकरके२
श्वेत पुष्पोंकी माला व श्वेत वस्त्र और श्वेतगन्ध चन्दन इनको धारणकरै फिर उत्तम विधिसे श्वेत
पुष्प और सुगन्धित द्रव्योंसे महादेवजी समेत पार्वतीको पूजनकरके आसनपर बैठावे--३ फिर वा-
सुदेव्यैनमः यह कहकर चरणोंका पूजनकरै शंकरायनमः कहकर शिवके चरणोंका पूजनकरै शोक-
विनाशिन्यै आनन्दायनमः यह कहकर दोनोंकी पिंडियोंको पूजै ४ रंभायै पिनाकिने शिवायनमः
यह कहकर दोनोंकी जंघाओंको पूजै अदित्यैच शूलपाणयेनमः यह कहकर कमरों का पूजनकरै ५
माधव्यैच शम्भवेनमः यह कहकर नाभियोंका पूजनकरै--आनन्दकारिण्यैच इन्दुधारिणेनमः यह
कहकर इनके स्तनोंका पूजै ६ उत्कण्ठिन्यैनमः नीलकण्ठायनमः यह कहकर कंठोंका पूजनकरै उ-
त्पलधारिण्यैच जगत्पतयेनमः यह कहके इनके हाथोंका पूजनकरै--परिरंभिण्यैच त्रिशूलिनेनमः यह

सिन्यै वृषेशायपुनर्विभोः। स्मितंसस्मेरलीलायै विश्ववक्काय वै विभोः८नेत्रेमदनवासि न्यै विश्वधाम्नेत्रिशूलिनः। भ्रुवौनित्यप्रियायैतु ताण्डवेशायशूलिनः ९ देव्याललाटमि न्द्राण्यै हव्यवाहायवैविभोः। स्वाहायैमुकुटन्देव्या विभोर्गङ्गाधरायवै १० विश्वकायौ विश्वमुखौ विश्वपादकरौशिवौ। प्रसन्नवदनौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ११ एवंसम्पूज्यवि धिवदग्रतःशिवयोःपुनः। पद्मोत्पलानिरजसा नानावर्णैनकारयेत् १२ शङ्खचक्रेसकटके स्वस्तिकांकुशचामरान्। यावन्तःपांसवस्तत्र रजसःपतिताभुवि। तावद्वर्षसहस्त्राणि शि वलोकेमहीयते १३ चत्वारिघृतपात्राणि सहिरण्यानिशक्तितः। दत्त्वाद्विजाय करक मुद कान्नसमन्वितम्। प्रतिपक्षञ्चतुर्मासं यावदेतन्निवेदयेत् १४ ततस्तुचतुरोमासान्पूर्वव त्करकोपरि। चत्वारिसक्तुपात्राणि तिलपात्राण्यतःपरम् १५ गन्धोदकम्पुष्पवारिचन्द नंकुंकुमोदकम्। अपक्वन्दधिदुग्धञ्च गोशृङ्गोदकमेवच १६ पिष्टोदकंतथावारि कुष्ठचू र्णान्वितम्पुनः। उशीरसलिलन्तद्वद्यवचूर्णोदकम्पुनः १७ तिलोदकञ्चसम्प्राश्य स्वपे न्मार्गशिरादिषु। मासेषुपक्षद्वितयं प्राशनंसमुदाहृतम् १८ सर्वत्रशुक्लपुष्पाणि प्रशस्ता नि सदार्चने। दानकालेचसर्वत्र मन्त्रमेतमुदीरयेत् १९ गौरीमेप्रीयतान्नित्य मघनाशा यमङ्गला। सौभाग्यायास्तुललिता भवानीसर्वसिद्धये २० संवत्सरान्तेलवणंगुडकुम्भ

कहकर भुजाओंको पूजै ७ विलासिन्यैनमः कहकर देवीके मुखको और वृषेशायनमः कहकर शिवके मुखको पूजै--सुस्मेरलीलायै विश्ववक्त्रायच यह कहके इनके हास्यका पूजनकरै ८ मदनवासिन्यैवि श्वधाम्नेचनमः यह कहकर इनकीभृकुटियोंको--नित्यप्रियायैनमः तांडवेशायनमः कह इनके ललाटों को--इन्द्राण्यैनमः हव्यवाहायनमः कह इनके मस्तकको--और स्वाहायैनमः गंगाधरायनमः यह कहके इनके मुकुटको पूजे ९।१० विश्वकायौ विश्वमुखौ विश्वपादकरौ शिवौ। प्रसन्नवदनौ वन्दे पार्वतीपर- मेश्वरौ ११ इस विधिसे आगे स्थितकियेहुए शिव पार्वतीको और कमलकी रजसे अनेक वर्णवाले शंख--चक्र--ध्वज--अंकुश और चमर बनाके कमंडलुपै स्थापितकरै कमलकी रजके जितने कण पृथ्वी पर गिरते हैं उतनेही हज़ार वर्षोंतक इस विधिकर्त्ताका शिवलोकमें निवास होताहै १२। १३ और चार घृतके पात्र रखके उनपर सुवर्ण स्थापितकर तथा शक्तिके अनुसार कमण्डलुपै भी सुवर्ण स्था- पितकरके जल तथा अन्नसे पूर्णकर ब्राह्मणके अर्थ दानकरै--चार महीनेतक पक्ष पक्षमें यही दान करना योग्यहै १४ फिर चारमहीनोंतक कमंडलुपै चार सत्तूके पात्र रक्खे और चारमहीनोंतक ति- लके पात्र रखकर दानकरै और गन्ध-पुष्प-जल-चन्दन-केशर-लड्डू--दही--कच्चादूध--गौके सींग का जल १५। १६ पिट्टीका जल--कमलके पुष्पोंका जल--खश खशका जल--जवोंके चूर्णका जल--१७ और तिलोंका जल- इन सबका क्रमसे मार्ग-शिर माससे लेकरअन्ततक एक२जलका आचमनकरै दोनों पक्षोंकी तृतीयाके दिन इन्होंका प्राशन अर्थात् आचमनादिक करना कहाहै १८ इस देवी की पूजा विधिमें सदैव श्वेत पुष्प श्रेष्ठ कहे हैं दान करने के समय इस आगे कहे हुए मंत्रका उच्चारण करै १९ गौरीदेवी मुझपर प्रसन्नहो और मंगला पापोंका नाशकरो ललिता सौभाग्य को बढ़ाओ--

ञ्चसर्जिकाम्। चन्दनंवस्त्रपट्टञ्च साहिरण्याम्बुजेनतु २१ उमामहेश्वरंहैमन्तद्वदिक्षुफ लैर्युतम्। सतूलावरणांशय्यां सविश्रामांनिवेदयेत्। सपत्नीकायविप्राय गौरीमेप्रीयता मिति २२ आर्द्रानन्दकरीनाम्ना तृतीयैषासनातनी। यामुपोष्यनरोयाति शम्भोर्यत्परम् म्पदम् २३ इहलोकेसदानन्द माप्नोतिधनसम्पदः। आयुरारोग्यसन्तसो नकश्चिच्छो कमाप्नुयात् २४ नारीवाकुरुतेयातु कुमारीविधवाचया। सापितत्फलमाप्नोति देव्यनुग्र हलालिता २५ प्रतिपक्षमुपोष्यैवम्मन्त्रार्चनविधानवित्। रुद्राणीलोकमभ्येति पुनरावृ त्तिदुर्लभम् २६ यइदंशृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वापि मानवः। शक्रलोके स गन्धर्वैः पूज्यते ऽपियुगत्रयम् २७आनन्ददांसकलदुःखहरान्तृतीयां यास्त्रीकरोत्यविधवाऽविधवाथवापि सास्वे गृहेसुखशतान्यनुभूयभूयो गौरीपदंसदयितादयिताप्रयाति २८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे चतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४॥

(ईश्वर उवाच)अथान्यामपिवक्ष्यामि तृतीयांसर्वकामदाम्। यस्यान्दत्तंहुतंजप्तं सर्वं भवतिचाक्षयम् १ वैशाखशुक्लपक्षेतु तृतीयायैरुपोषिता। अक्षयंफलमाप्नोति सर्वस्य सुकृतस्यच २ सातथाकृत्तिकोपेता विशेषेणसुपूजिता। तत्रदत्तंहुतञ्जप्तं सर्वमक्षयमुच्य ते ३ अक्षयासन्ततिस्तस्या स्तस्यांसुकृतमक्षयम्। अक्षतैस्तुनराःस्नाता विष्णोर्दत्वा

भवानी सबबातोंकी सिद्धिकरो २० जब वर्षदिन पूरा होजाय तब नमक गुड़का भराहुआ कलश सज्जी चन्दन पाटकावस्त्र--सुवर्ण सहित कमल २१ सुवर्ण के शिव और पार्वती ईखका गांडा रुई--तकिया--और गद्दे आदि से युक्त शय्या इनसब वस्तुओंको सपत्नीक ब्राह्मणके अर्थदान करै और हे गौरी मुझपर प्रसन्नहो ऐसा मन्त्रकहै २२ यह आर्द्रानन्दकरी नाम वाली सनातनी तृतीया कहलाती है इस वृतके करने से मनुष्य शिवजीके उत्तम लोकमें प्राप्त होताहै और इस लोकमें धन संपत्तियोंसे आनन्दको प्राप्त होताहै इसवृतका करने वाला आयु आरोग्य युक्त होकर शोक दुःखोंको कभी नहीं पाताहै २३।२४ स्त्री--कुमारी--और विधवास्त्री यह सबभी इसव्रतके करने से देवीजी के अनुग्रहसे इसी फलको प्राप्त होजाती हैं २५ मंत्र पूजन आदि की विधिका जानने वाला पुरुषपक्ष २ के प्रति जो इस पूजनको करताहै वह पार्वती जीके अचललोकमें प्राप्त होताहै २६ जो पुरुष इस वृतको सुनताहै वा सुनाता है वह इन्द्रके लोकमें प्राप्त होकर तीन युगोंतक गन्धर्वादिकों से पूजित होताहै २७जो सौभाग्यवतीस्त्री अथवा विधवा स्त्री इस गौरीके वृतको करतीहै वह अपने घरमें अनन्त सुखोंको भोगकर अन्तकाल में अपने पति समेत पार्वतीके लोकमें प्राप्त होती है २८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायाञ्चतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४॥

शिवजीबोले कि सब कामनाओंकी की सिद्धिकरने वाली उस अन्य तृतियाकोभी कहतेहैं जिसके दिनदान दियाहुआ हवन कियाहुआ और जप कियाहुआ सब अनन्त फलदायी होताहै १ वैशाखके शुक्ल पक्षकी तृतियाको जो वृत करताहै वह सब सुकृतपुण्यों के अनन्त फलको प्राप्त होताहै २ और वही तृतीया जो कृत्तिका नक्षत्रसे युक्त होवे तो विशेषही पूजनीय है उसके दिन दान होम और जप

तथाक्षताम् ४ विप्रेषुदद्यात्तानेव तथासक्तून्सुसंस्कृतान्। यथान्नभुक्महाभागः फलम क्षयमश्नुते ५ एकामप्युक्तवत्कृत्वा तृतीयांविधिवन्नरः। एतासामपिसर्वासां तृतीयानां फलम्भवेत् ६ तृतीयायांसमभ्यर्च्य सोपवासोजनार्दनम्। राजसूयफलम्प्राप्य गतिम ग्र्याञ्चविन्दति ७ (मनुरुवाच) मधुराभारतीकेन व्रतेनमधुसूदन!। तथैवजनसौभाग्यं मतिविद्यासुकौशलम् ८ अभेदश्चापिदम्पत्यो स्तथाबन्धुजनेनच। आयुश्चविपुलम्पुंसां तन्मेकथयमाधव! ९ (मत्स्य उवाच) सम्यक्पृष्टन्त्वयाराजन्! शृणुसारस्वतंव्रतम्। यस्यसंकीर्तनादेव तुष्यतीहसरस्वती १० योयद्भक्तःपुमान्कुर्यादेतद्व्रतमनुत्तमम्। तद्वासरादौसम्पूज्य विप्रानेतान्समाचरेत् ११ अथवादित्यवारेण ग्रहताराबलेनच। पायसम्भोजयेद्विप्रान्कृत्वाब्राह्मणवाचनम् १२ शुक्लवस्त्राणिदद्याच्च सहिरण्यानिशक्तितः। गायत्रीम्पूजयेद्भक्त्या शुक्लमाल्यानुलेपनैः १३ यथानदेवि! भगवान् ब्रह्मलोकेपितामहः। त्वाम्परित्यज्यसन्तिष्ठे त्तथाभववरप्रदा १४ वेदाःशास्त्राणिसर्वाणि गीतनृत्यादिकञ्चयत्। नविहीनन्त्वयादेवि! तथामेसन्तुसिद्धयः १५ लक्ष्मीर्मेधाधरा पुष्टिर्गौरीतुष्टाप्रभामतिः। एताभिःपाहिअष्टाभि स्तनूभिर्मांसरस्वति! १६ एवंसम्पूज्य

यहसब अनन्त और अक्षय फलवाले होजाते हैं ३ इस तृतीयाको मनुष्य अक्षतोंसहित जलसे स्नान करै विष्णुके अर्थभी अक्षत निवेदन करै तथा ब्राह्मणकोभी अक्षतोंकाहीदान करै अथवा अच्छे प्रकार से बनाये हुए सत्तू ब्राह्मणोंके अर्थ देवै और आप भी सत्तुओंकाही भोजनकरै ऐसे करनेवाला महाभागी पुरुष अक्षय फलको प्राप्त होताहै ४—५ जो पुरुष इस एक तृतीयाको भी विधिसे व्रतकरताहै वह इन सब तृतीयाओंके फलको प्राप्त होताहै इस तृतीयाको निराहार व्रतकरके जो जनार्दन भगवान्को पूजताहै उसको राजसूय यज्ञका फलहोकर उत्तम गति मिलती है ६। ७ मनुजीने पूछा हे मधुसूदनजी प्रवीण और उत्तम बुद्धिकैसे होती है और मनुष्य-सौभाग्य तथा उत्तम विद्याको कैसे प्राप्त होताहै ८ स्त्री पुरुषका संयोग—बन्धुजनोंका मिलाय—और दीर्घ आयु यह सब मनुष्यों को कैसे प्राप्तहो इसको यथार्थतासे आप कहिये ९ यह सुनकर मत्स्यजी बोले कि हे राजा यह तैंने उत्तम बात पूछी है अब तू अच्छी रीतिसे सारस्वत व्रतको मुझसे सुन जिसके वर्णन करनेसेही सरस्वती प्रसन्न होजाती है १० इस व्रतको जो जिस देवकी भक्तिसे करै वह उसी तिथिके दिन ब्राह्मणोंको पूजन करके भोजन करवावै अथवा रविवारके दिन ग्रह सूर्य्य चन्द्र तारा बल आदि विचारकर खीरसे ब्राह्मणोंको भोजनकरवाके स्वस्तिवाचन करवावै ११। १२ शक्तिके अनुसार श्वेत वस्त्र समेत सुवर्णका दानकरै फिर श्वेत पुष्प श्वेत चन्दनआदि से गायत्रीका पूजनकरै १३ और ऐसा कहै कि हे देवि जिसप्रकार ब्रह्मलोक में पितामह ब्रह्माजी तुमको कभी नहीं त्यागते हैं वैसेही तुम मुझे भी वरकी देनेवाली होजाओ १४ वेद शास्त्र गीत और नृत्य यह सब तुमसे पृथक् नहीं हैं हे देवि इसीप्रकार मेरे पास भी सदा सिद्धिरूप रहो १५ हे सरस्वती लक्ष्मी मेधा धरा पुष्टी गौरी तुष्टा और प्रभामति इन आठ शरीरों करके मेरी रक्षाकर १६ वाणीके नाशके

गायत्रीं वाणींक्षयनिवारिणीम्। शुक्लपुष्पाक्षतैर्भक्त्या सकमण्डलुपुस्तकाम् १७ मौनव्र
तेनभुञ्जीत सायम्प्रातस्तुधर्म्मवित्। पञ्चम्याम्प्रतिपक्षञ्च पूजयेद्ब्रह्मवासिनीम् १८
तथैवतण्डुलप्रस्थं घृतपात्रेणसंयुतम्। क्षीरन्दद्याद्धिरण्यञ्च गायत्रीप्रीयतामिति १९
सन्ध्यायाञ्चतथामौन मेतत्कुर्वन्समाचरेत्। नान्तराभोजनंकुर्याद्यावन्मासास्त्रयोदश २०
समाप्तेतुव्रतेकुर्यादभोजनंशुक्लतण्डुलैः। पूर्वंसवस्त्रयुग्मञ्च दद्याद्विप्रायभोजनम् २१ दे
व्यावितानंघण्टाञ्च सितनेत्रे पयस्विनीम्। चन्दनंवस्त्रयुग्मञ्च दद्याच्चशिखरम्पुनः २२
तथोपदेष्टारमपि भक्त्यासम्पूजयेद्गुरुम्। वित्तशाठ्येनरहितो वस्त्रमाल्यानुलेपनैः २३
अनेनविधिनायस्तु कुर्यात्सारस्वतंव्रतम्। विद्यावानर्थसंयुक्तो रक्तकण्ठश्चजायते २४
सरस्वत्याःप्रसादेन ब्रह्मलोकेमहीयते। नारीवाकुरुतेयातु सापितत्फलगामिनी। ब्रह्म
लोकेवसेद्राजन्! यावत्कल्पायुतत्रयम् २५ सारस्वतव्रतंयस्तु शृणुयादपियःपठेत्।
विद्याधरपुरेसोऽपि वसेत्कल्पायुतत्रयम् २६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

(मनुरुवाच) चन्द्रादित्योपरागेतु यत्स्नानमभिधीयते। तदहंश्रोतुमिच्छामि द्र
व्यमन्त्रविधानवित् १ (मत्स्य उवाच) यस्यंराशिं समासाद्य भवेद्ग्रहणसंप्लवः। तस्य

दूर करनेवाली गायत्रीको इस रीतिसे पूजकर श्वेत पुष्प अक्षतादिसे कमण्डलु पुस्तक धारण करने वाली सरस्वतीका पूजनकरै १७ धर्मज्ञ पुरुष सायंकाल प्रातःकाल मौन धारण करके भोजनकरै और पक्ष२ की पंचमीको गायत्रीका पूजनकरै १८ और वैसेही प्रस्थभर अर्थात् एकसेर प्रमाण चावलों को पात्रमें डाल घृतयुक्त करके दानकरै और दूध तथा सुवर्णका भी दानकरै और गायत्री प्रसन्नहो ऐसा वचनकहै १९ इस विधिको करताहुआ पुरुष संध्यासमयमें मौन धारण रक्खे इसी प्रकार जबतक तेरह महीने व्यतीतहोयं तबतक इस व्रतका करनेवाला पुरुष दोवार भोजन न करै २० जब व्रत समाप्तहोजाय तब सफेद चावलोंका भोजनकरै व्रतके पूर्ण करनेके समय प्रथम ब्राह्मणको भोजनकरवाके दो वस्त्र दानकरै २१ और देवीकी मूर्त्तिकी ध्वजा घंटा और चाँदी आदि के श्वेत नेत्र चन्दन दो वस्त्र सुवर्णके शृंग इत्यादि वस्तुओंसे और दुहनी पात्र समेत गौका दानकरै फिर उपदेश करनेवाले गुरुको वस्त्र गंध चंदनादिसे पूजे पूजाकरनेके समय वित्तकी शठता अर्थात् कृपणता नहीं करै २२। २३ इस विधिसे जो पुरुष सरस्वती का व्रत करताहै वह विद्यावान्होके उत्तम कण्ठवाला होताहै और धनवान् भी होजाताहै २४ इसके विशेष वह पुरुष सरस्वतीके प्रसाद से ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै--जो इस व्रतको स्त्री भी करै तो उसको भी यही फल प्राप्त होताहै हे राजा ऐसे पुरुषोंका तीन कल्पतक ब्रह्मलोकमें वास रहताहै २५ इस सरस्वतीके व्रतको जो सुनताहै वा पढ़ताहै वह भी विद्याधरोंके लोकमें तीन कल्प पर्य्यन्त वास करताहै २६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५॥

मनुजीने पूछा हे दिव्य मन्त्रके विधानके ज्ञाता मत्स्य भगवान् मैं आपसे चन्द्र सूर्य्यके ग्रहण के

स्नानंप्रवक्ष्यामि मन्त्रौषधविधानतः २ चन्द्रोपरागंसम्प्राप्य कृत्वाब्राह्मणवाचनम्।
संपूज्यचतुरोविप्रान् शुक्लमाल्यानुलेपनैः ३ पूर्व्वमेवोपरागस्य समासाद्यौषधादिकम्।
स्थापयेच्चतुरःकुम्भानव्रणान् सागरानिति ४ गजाश्वरथ्यावल्मीकसङ्गमाद् ह्रदगोकुला
त्। राजद्वारप्रदेशाच्च मृदमानीयचाक्षिपेत् ५ पञ्चगव्यञ्चकुम्भेषु शुद्धमुक्ताफलानिच।
रोचनांपद्मशङ्खौच पञ्चरत्नसमन्वितम् ६ स्फटिकंचन्दनंश्वेतं तीर्थवारिससर्षपम्। रा
जदन्तंसकुमुदं तथैवोशीरगुग्गुलम्। एतत्सर्वंविनिक्षिप्य कुम्भेष्वावाहयेत्सुरान् ७
सर्वेसमुद्राःसरितस्तीर्थानि जलदानदाः। आयान्तुयजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ८
योऽसौवज्रधरोदेव आदित्यानांप्रभुर्मतः। सहस्रनयनश्चेन्द्रो ग्रहपीडांव्यपोहतु ९ मुखं
यःसर्व्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युतिः। चन्द्रोपरागसम्भूतामग्निःपीडांव्यपोहतु १०
यःकर्मसाक्षीभूतानां धर्मोमहिषवाहनः। यमश्चन्द्रोपरागोत्थां ममपीडांव्यपोहतु ११
नागपाशधरोदेवः साक्षान्मकरवाहनः। सजलाधिपतिश्चन्द्र ग्रहपीडांव्यपोहतु १२
प्राणरूपेणयोलोकान् पातिकृष्णमृगप्रियः। वायुश्चन्द्रोपरागोत्थां पीडामत्रव्यपोहतु
१३ योऽसौनिधिपतिर्देवः खड्गशूलगदाधरः। चन्द्रोपरागकलुषं धनदोमेव्यपोहतु
१४ योऽसाविन्दुधरोदेवः पिनाकीवृषवाहनः। चन्द्रोपरागजांपीडां विनाशयतुशंकरः
१५ त्रैलोक्येयानिभूतानि स्थावराणिचराणिच। ब्रह्मविष्ण्वर्कयुक्तानि तानिपापंदहन्तु

स्नानकी विधिको सुनना चाहताहूं १ मत्स्यजी बोले जिसकी राशिका ग्रहणहोय उसको मन्त्र और ओषधियोंसे स्नान करना योग्यहै उसको सुनो २ चन्द्रमाके ग्रहणमें ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन करवाके श्वेत पुष्प चन्दनादि से चार ब्राह्मणोंका पूजनकरै ग्रहण लगनेसे पूर्वही चार कलशोंमें ओषधी गेरकर जलसे भरे स्थापितकरै ३। ४ फिर गजशाला--अश्वशाला--रथशाला--सर्पकीबामी--सरोवर गोशाला और राजद्वार इन सब स्थानोंकी मृत्तिकाओंको लाकर कलशोंमें गेर पंचगव्य समेत उत्तम सच्चेमोती--गोरोचन--कमल--शंख--पंचरत्न--पन्ना--श्वेतचन्दन--गंगाजल--सरसों--अमरवेल--कुमोदिनी--खशखश--और गूगल इन सब वस्तुओं को गेरकर कलशों में देवताओं का आवाहनकरै ५।७ सब तीर्थ--समुद्र--नदी--उत्तम सरोवर और छोटी नदी यह सब यजमान के पाप नाश करने को आओ ८ और जो वज्रधारी देवताओंका प्रभु इन्द्रहै वह आकर ग्रहोंकी पीड़ाको दूरकरो ९ जो सब देवताओंका मुख रूप सात ज्वालों युक्त अतुल कान्तिवाला अग्निदेवहै वह चन्द्रमाके ग्रहणसे उपजीहुई पीड़ाको दूरकरो १० जो सब प्राणियोंका साक्षी महिषारूढ़ धर्मराजहै वह चन्द्रग्रहणसे उत्पन्नहुई पीड़ाको शान्तकरो ११ नागफांशका धारण करनेवाला मकर मत्स्यादिपर आरूढ़होने वाला वरुणदेवहै वह चन्द्रग्रहणसे उत्पन्नहोनेवाली पीड़ाको शान्तकरो १२ जो प्राणरूपसे सबलोकोंका पालन करताहै वह वायुदेव चन्द्रग्रहणकी पीड़ाको शान्तकरे १३ जो धनोंका अधिपति और खड्ग शूल गदा आदिका धारण करनेवाला कुबेरहै वह चन्द्रग्रहण से उत्पन्नहुई पीड़ाको दूरकरो १४ जो चन्द्रमाको धारण करनेवाले पिनाक धनुषधारी वृषभपर सवारी करनेवाले शिवजी हैं वह चन्द्र

वै १६ एवमामन्त्र्यतैःकुम्भैरभिषिंचेद्गुणान्वितैः। ऋग्यजुःसाममन्त्रैश्च शुक्लमाल्या
नुलेपनैः। पूजयेद्वस्त्रगोदानैर्ब्राह्मणानिष्टदेवताः १७ एतानेवततोमन्त्रान् विलिखेत्क
रकान्वितान्। वस्त्रपट्टेऽथवापद्मे पञ्चरत्नसमन्वितान् १८ यजमानस्यशिरसि नि
दध्युस्तेद्विजोत्तमाः। ततोऽतिवाहयेद्वेलामुपरागानुगामिनीम् १९ प्राङ्मुखःपूजयि
त्वातु नमस्यन्निष्टदेवताम्। चन्द्रग्रहेविनिर्वृत्ते कृतगोदानमंगलः। कृतस्नानायतंपट्टं
ब्राह्मणायनिवेदयेत् २० अनेनविधिनायस्तु ग्रहस्नानंसमाचरेत्। नतस्यग्रहपीडा
स्यान्नचबन्धुजनक्षयः २१ परमांसिद्धिमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभाम्। सूर्यग्रहेसूर्यनाम
सदामन्त्रेषुकीर्तयेत २२ अधिकाःपद्मरागाःस्युःकपिलाञ्चसुशोभनाम्। प्रयच्छेद्
दिशाम्पत्ये चन्द्रसूर्योपरागयोः २३ यइदंशृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वाऽपिमानवः। सर्व
पापविनिर्मुक्तो शक्रलोकेमहीयते २४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे षट्षष्टितमोऽध्यायः ६६॥

(नारद उवाच।) किमुद्वेगाद्भुतेकृत्यमलक्ष्मीःकेनहन्यते। मृतवत्साभिषेकादि का
र्येपुचकिमिष्यते १ (श्रीभगवानुवाच) पुराकृतानिपापानि फलन्त्यस्मिंस्तपोधन॥

ग्रहण से उत्पन्नहुई पीड़ाको शान्तकरो १५ जो त्रिलोकीके स्थावर जंगम भूत प्राणीमात्रके कारणहैं वह ब्रह्माजी विष्णु और सूर्य्यसे युक्त होकर मेरे पापोंका नाशकरो १६ इस प्रकारसे सब देवताओं का आमंत्रणकर फिर गुणयुक्त हुए उन कलशोंके जलसे अभिषेक मार्जनकरै पश्चात् श्वेत पुष्प और चन्दनादिकसे ऋग्यजुस्साम वेदके मंत्रोंकरके ब्राह्मणोंका तथा अपने इष्टदेवताका पूजनकरै और वस्त्र समेत गौका दान ब्राह्मणके अर्थ करै १७ इनहीं मंत्रोंको वस्त्रोंकी पट्टीपर लिखकर उन पट्टियोंको कलशोंपर स्थापितकरै फिर कमलोंकी मढ़ौवना उसपर पंचरत्न स्थापितकर इन सब व स्तुओंको ब्राह्मण यजमानके शिरपर स्थापितकरै फिर जब ग्रहणका समय आवै तब पूर्वाभिमुख हो कर इष्टदेवताको नमस्कार करताहुआ पूजनकरै जब चन्द्रग्रहण समाप्त होजाय तब गोदान और स्वस्तिवाचनादिककरै फिर स्नानकरके विस्तृतकिये हुए उस पट्टी किये हुए वस्त्रको ब्राह्मणके अर्थ निवेदन करै १८। २० जो इस विधिसे ग्रहण में स्नान करता है उसको कभी ग्रहोंकी पीड़ा नहीं होती है और बन्धुजनोंका नाश भी नहीं होताहै २१ ऐसा करनेवाला मनुष्य परमसिद्धिको अर्थात् आगमनरहित मोक्षको प्राप्त होताहै और सूर्य्यके ग्रहणमें इन पिछले मंत्रों समेत सूर्य्यका भी नाम उच्चारण करना इसमें पुखराज रत्नका दानकरना विशेष फलदायी है—चन्द्रग्रहणमें तथा सूर्यग्रहण में सुन्दर कपिला गौका दान करनायोग्यहै २२। २३ जो पुरुष इस व्रतको सुनताहै वह सब पापों से छूटकर इन्द्रलोकमें प्राप्त होताहै २४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६॥

नारदमुनि बोले हे भगवन् चित्त उद्वेगहोजानेमें क्या करना योग्यहै और दरिद्र कैसे नष्ट होताहै मृतवत्सा अर्थात् जिस स्त्रीकी संतानहोकर नहीं जीती है उसके अभिषेक कार्य्योंमें क्या करना योग्य

रोगदौर्गत्यरूपेण तथैवेष्टवधेनच २ तद्विघातायवक्ष्यामि सदाकल्याणकारकम्। सप्तमीस्नपनंनाम जनपीड़ाविनाशनम् ३ वालानांमरणंयत्र क्षीरपानांप्रदृश्यते। तद्वद्वृद्धेतराणाञ्च यौवनेचापिवर्ततास् ४ शान्तयेतन्नवक्ष्यामि मृतवत्साभिषेचनम्। एतदेवाद्भुतोद्वेगचित्तभ्रमविनाशनम् ५ भविष्यतिचवाराहो यत्रकल्पस्तपोधन!। वैवस्वतश्चतत्रापि यदातुमनुरुत्तमः ६ भविष्यतिचतत्रैव पञ्चविंशतिमं यदा। कृतं नामयुगं तत्र हैहयान्वयवर्द्धनः। भवितानृपतिर्वीरः कृतवीर्यःप्रतापवान् ७ सप्तद्वीपमखिलं पालयिष्यतिभूतलम्। यावद्वर्षसहस्राणि सप्तसप्ततिनारद! ८ जातमात्रञ्चतस्यापि यावत्पुत्रशतंतथा। च्यवनस्यतुशापेन विनाशमुपयास्यति ९ सहस्रबाहुश्चयदा भवितातस्यवैसुतः। कुरंगनयनःश्रीमान् सम्भृतोनृपलक्षणैः १० कृतवीर्यस्तदाराध्यसहस्रांशुं दिवाकरम्। उपवासैर्व्रतैर्दिव्यैर्वेदसूक्तैश्चनारद!। पुत्रस्यजीवनायालमेतत्स्नानमवाप्स्यति ११ कृतवीर्य्येणवैपृष्ट इदंवक्ष्यतिभास्करः। अशेषदुष्टशमनंसदाकल्मषनाशनम् १२ (सूर्य्यउवाच) अलंक्लेशेनमहतापुत्रस्तवनराधिप!। भविष्यतिचिरंजीवी किन्तुकल्मषनाशनम् १३ सप्तमीस्नपनंवक्ष्येसर्वलोकहितायवै। जातस्यमृतवत्सायाःसप्तमेमासिनारद!। अथवाशुक्लसप्तम्यामेतत्सर्वंप्रशस्यते १४ ग्रहताराबलंलब्ध्वा कृत्वाब्राह्मणवाचनम्।

है १ श्रीभगवान् बोले कि हे तपोधन पूर्व्वके किये हुए पाप इस जन्ममें फल देते हैं–रोग–दुर्गति और इष्ट वस्तुका नाश यह सब पूर्व जन्मकाफल है २ सो इन सब पापोंके नाशकरनेके अर्थ मनुष्योंकी पीड़ाका नाशकर्त्ता सप्तमी तिथि स्नपन नाम अर्थात् सप्तमीके दिन स्नानकरनेकी विधि और ३ दूधपीनेवाले बालकोंका मरना तथा तरुण बालकोंका मरना इन दोनोंकी शान्तिके अर्थ मृतवत्सा स्त्रीके अभिषेक कर्मको कहते हैं यह अद्भुत कर्मसे होनेवाला अभिषेक चित्तके वेगका और भ्रमका नाशकरनेवाला है ४–५ हे तपोधन जब वाराह कल्प होगा तब वैवस्वत मनु होगा ६ तभी पचीसवाँ सत्ययुग होगा उस युगमें हैहय कुलका बढ़ानेवाला महाप्रतापी और उत्तम कृत वीर्य्यनाम राजा होगा ७ हे नारद वह राजा सतत्तर हज़ार वर्षतक सातों द्वीपों समेत सब पृथ्वीका श्रेष्ठ रीतिसे पालनकरैगा ८ उसके सौ १०० पुत्र उत्पन्नहोंगे वह सब पुत्रच्यवन ऋषिके शापसे नष्ट होजायँगे ९ इसके कुछ काल पीछे जब उसका सहस्राबाहु नाम श्रीमान् उत्तम राजाओंके लक्षणोंसे युक्त पुत्र होगा १० कृतवीर्य्य राजा दिव्य व्रत और वेद सूक्त मंत्रों करके सूर्य्यका आराधन करनेसे पुत्र जीवनेके निमित्त इस स्नानको प्राप्तहोगा ११ तब कृतवीर्य्यसे पूछेहुए सूर्य्यदेवता सब रोगोंका शान्त करने वाला और सब पापोंका नाशकर्त्ता व्रत वर्णन करेंगे १२ अर्थात् सूर्य्य देवताकहेंगे कि हे राजा तेरे बहुत क्लेशों से और स्तुतियों से मैं अत्यन्त प्रसन्न होगयाहूं इससे मैं वरदान देताहूं कि सब दुःखोंका दूर करने वाला यह तेरा पुत्र दीर्घायु वाला होगा १३ सब लोकोंके हितकेलिये अब सप्तमी स्नानको भी तुमसे कहताहूं जब मृतवत्सा स्त्रीकी जन्मीहुई सन्तान सात महीने की होजाय तब शुक्ल पक्षकी सप्तमी के दिन यह स्नानकरना योग्य है १४ अपना ग्रहतारा आदिके बल विचारकर

बालस्यजन्मनक्षत्रं वर्जयेत्तांतिथिम्बुधः। तद्वद्वृद्धेतराणाञ्च कृत्यंस्यादितरेषुच १५ गोमयेनानुलिप्तायाम्भूमावेकाग्निवत्तदा। तण्डुलैरक्तशालीयैश्चरुञ्चक्षीरसंयुतम्। निर्वपेत्सूर्य्यरुद्राभ्यांतन्मन्त्राभ्यांविधानतः १६ कीर्तयेत्सूर्य्यदैवत्यंसप्तर्चिञ्चघृताहुतीः। जुहुयाद्रुद्रसूक्तेन तद्वद्रुद्रायनारद! १७ होतव्याःसमिधश्चात्र तथैवार्कपलाशयोः। यवकृष्णतिलैर्होमः कर्तव्योऽष्टशतम्पुनः १८ व्याहृतीभिस्तथाज्येन तथैवाष्टशतम्पुनः। हुत्वास्नानञ्चकर्तव्यं मंगलंयेनधीमता १९ विप्रेणवेदविदुषा विधिवद्दर्भपाणिना। स्थापयित्वातुचतुरः कुम्भान्कोणेषुशोभनान् २० पञ्चमञ्चपुनर्मध्ये दध्यक्षतविभूषितम्। स्थापयेदव्रणंकुम्भं सप्तर्चेनाभिमन्त्रितम् २१ सौरेणतीर्थतोयेन पूर्णंरत्नसमन्वितम्। सर्वान्सर्वौषधैर्युक्तान्पञ्चगव्यसमन्वितान्। पञ्चरत्नफलैःपुष्पैर्वासोभिःपरिवेष्टयेत् २२ गजाश्वरथ्यावल्मीकात्संगमाद्ध्रदगोकुलात्। संशुद्धांमृदमानीय सर्वेष्वेवविनिक्षिपेत् २३ चतुर्ष्वपिचकुम्भेषुरत्नगर्भेषुमध्यमम्। गृहीत्वाब्राह्मणस्तत्रसौरान्मन्त्रानुदीरयेत् २४ नारीभिःसप्तसंख्याभिरव्यंगाभिरत्रच। पूजिताभिर्यथाशक्त्या माल्यवस्त्रविभूषणैः। सविप्राभिश्चकर्तव्यं मृतवत्साभिषेचनम् २५ दीर्घायुरस्तुबालोऽयं जीवत्पुत्राचभामि

ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचनकरवावे बालकके जन्मनक्षत्र की तिथिको बचावे इसी प्रकार युवावस्था आदि में मरनेवाले पुत्रोंका भी अभिषेककरना चाहिये १५ एक अग्नि वाले पुरुषों के विधानके समान गोवरसे लिपीहुई पृथ्वीमें अग्नि स्थापितकर लाल सांठीके चावलों के साकल्य से सूर्य्य तथा रुद्रके मंत्रों करके हवनकरै १६ सूर्य्य देवता वाले अग्नि में सूर्य्य के मंत्रों करके घृतकी आहुति से हवनकरै इसप्रकार शिवसूक्त मन्त्रों करके रुद्रके अर्थ आहुति देवे १७ यहां आक और ढाक की लकड़ी की समिधमें होम करना योग्य है उसमें जौ और काले तिलोंसे १०८ बार हवनकरै इसी प्रकार व्याहृतिसंज्ञक मंत्रोंसे केवलघृतहीसे १०८ बार आहुतिडाले इसके उपरान्त मंगलपूर्व्वक स्नानकरना योग्यहै १८। १९ वेदज्ञ ब्राह्मण हाथोंमें कुशाधारण करके पृथक् २ कोणोंमें सुन्दर चार कलशोंको स्थापितकरै उनकलशोंके बीचमें छिद्ररहित पांचवां कलश दही अक्षत आदि से विभूषित करके स्थापितकरै और अग्नि के मन्त्रसे अभिमन्त्रितकरै २०। २१ और सूर्य्य कुंडल तीर्थ के जल वा संपूर्ण रत्नों से उस कलश को युक्त करै और उन चारों कलशोंमें सर्वौषधि पंचगव्य पंचरत्न फल और पुष्प इन सब वस्तुओं को डालके वस्त्रों से लपेटकर स्थापित करै २२ गजशाला रथशाला अश्वशाला सर्पकीबामी सरोवर गोशाला और राजद्वार इन सब स्थानों की शुद्धमृत्तिका भी लाकर उन कलशोंमें गेरै २३ फिर रत्नों से पूरित कियेहुए उस मध्यवाले कलशको ब्राह्मण उठाके वेदोक्त सूर्य्य के मन्त्रोंका उच्चारणकरै २४ यहां सूर्य्य के स्थानमें सात ब्राह्मणियों को शक्तिके अनुसार माला वस्त्र और अलंकारादि से पूजनकरै फिर वह पूजित कीहुई ब्राह्मणी ब्राह्मणों समेत होके उस मृतवत्सा स्त्री का अभिषेक करावें और इन आगे कहे हुए वचनोंको उच्चारणकरै कि यह बालक दीर्घायु वालाहो यह स्त्री जीवत वत्साहो अर्थात् सन्तान जीने वाली हो सूर्य्य चन्द्रमा ग्रह

नी। आदित्यश्चन्द्रमास्सार्द्धं ग्रहनक्षत्रमण्डलैः २६ सशक्रालोकपालावै ब्रह्मविष्णुमहे
श्वराः। एतेचान्येचदेवौघाः सदापान्तुकुमारकम् २७ मित्रोशनिर्वीहुतभुक्येचबालग्र
हाःक्वचित्। पीड़ांकुर्वन्तुबालस्य मामातुर्जनकस्यवै २८ ततःशुक्लाम्बरधरा कुमारपति
संयुता। सप्तकम्पूजयेद्भक्त्या स्त्रीणामथगुरुम्पुनः २९ काञ्चनीञ्चततःकुर्यात्ताम्रपात्रो
परिस्थिताम्। प्रतिमान्धर्मराजस्य गुरवेविनिवेदयेत् ३० वस्त्रकाञ्चनरत्नौघैर्भक्ष्यैःसघृ
तपायसैः। पूजयेद्ब्राह्मणांस्तद्वद्वित्तशाठ्यविवर्जितः ३१ भुक्ताचगुरुणाचेयमुच्चार्यौम
न्त्रसन्ततिः। दीर्घायुरस्तुबालोऽयं यावद्वर्षशतंसुखी ३२ यत्किंचिदस्यदुरितं तत्क्षिप्तंव
डवानले। ब्रह्मारुद्रोवसुःस्कन्दो विष्णुःशक्रोहुताशनः ३३ रक्षंतुसर्वेदुष्टेभ्यो वरदाःसंतु
सर्वदा। एवमादीनिवाक्यानिवदंतंपूजयेद्गुरुम् ३४ शक्तितःकपिलांदद्यात्प्रणम्यचवि
सर्जयेत्। चरुंचपुत्रसहिता प्रणम्यरविशंकरौ ३५ हुतशेषंतदाश्नीयादादित्यायनमोऽ
स्त्विति। इदमेवाद्भुतोद्वेगदुःस्वप्नेषुप्रशस्यते ३६ कर्तुर्जन्मदिनर्क्षंचत्यक्त्वासंपूजयेत्सदा।
शान्त्यर्थंशुक्लसप्तम्यामेतत्कुर्वन्नसीदति ३७ सदानेनविधानेन दीर्घायुरभवन्नरः। सं
वत्सराणांप्रयुतं शशासपृथिवीमिमाम् ३८ पुण्यंपवित्रमायुष्यं सप्तमीस्नपनंरविः।
कथयित्वाद्विजश्रेष्ठ! तत्रैवान्तरधीयत ३९ एतत्सर्वंसमाख्यातं सप्तमीस्नानमुत्तमम्।

नक्षत्र मंडल इन्द्रादिक देवता लोकपाल और ब्रह्मा विष्णु शिव तथा अन्यदेवताओं के समूह इस बालककी सदैव रक्षाकरो २५। २७ मित्र देवता इन्द्रका वज्र-अग्नि-और बालग्रह यह सब बालक को तथा बालकके माता पिताको कभी पीड़ामत करो २८ फिर अपने बालक और पतियों समेत शुक्ल वस्त्र धारण करने वाली उन सातों स्त्रियोंको और अपने गुरूको भक्तिपूर्व्वक पूजै २९ फिर तांबेके पत्रपर स्थितकीहुई सुवर्णसे बनाई हुई धर्मराजकी मूर्त्तिको गुरूके अर्थ दान करै ३० फिर वित्तशाठ्य और कुटिलतासे रहित सुवर्ण वस्त्र रत्न घृत दूध आदिके पदार्थों से भक्तिपूर्व्वक ब्राह्मणोंको पूजे ३१ और उनको भोजन करा आपभी भोजन करै भोजन के पीछे गुरू इन वचनों से आशीर्वाद देकि यह बालक सौ १०० वर्ष की आयु वालाहोके सदैव सुख से रहै ३२ जो कुछ इस का पापहै वह सब शीघ्रही वड़वानल अग्नि में दग्धहोजाय ब्रह्मा-शिव-वसु-स्वामिकार्तिक-विष्णु इन्द्र और अग्नि यह सब देवता इस बालक की दुष्ट वस्तुओं से सदैव रक्षाकरो और वरदायकरहो इत्यादि वचन कहते हुए गुरूको यजमान पूजे ३३।३४शक्तिके अनुसार कपिला गौ का दानदेफिर प्रणाम करके विसर्जन करे और पुत्रको लियेहुए स्त्री सूर्य्य और शिवको नमस्कार करके हवनसे बचे हुए साकल्य को भोजन करै फिर आदित्यायनमः यह कहै इसी विधिको आश्चर्य्य उद्वेग और दुःस्वप्न इन सब में भी करनी योग्य है ३५। ३६ करने वाले को अपने जन्म नक्षत्रके दिन के विनाअन्य दिनों में दुस्स्वप्न आदिकों की शान्तिके निमित्त शुक्लपक्षकी सप्तमीको इस विधिका करने वाला पुरुष दुखित नहीं होता ३७ इस विधानसे सदैव करने वाला नरोत्तम राजा सहस्रबाहु बड़ा दीर्घायु वाला होकर इस पृथ्वी पर दशहजार वर्ष तक राज्य करता भया ३८ सप्तमी रविवार को इस

सर्वदुष्टोपशमनं बालानांपरमंहितम् ४० आरोग्यंभास्करादिच्छेद्धनमिच्छेद्धुताशनात्।
ईश्वराज्ज्ञानमिच्छेन्मोक्षमिच्छेज्जनार्द्दनात् ४१ एतन्महापातकनाशनंस्यात्परंहितंबा
लविवर्द्धनञ्च। शृणोतियश्चैनमनन्यचेतास्तस्यापिसिद्धिंमुनयोवदन्ति ४२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

(मत्स्य उवाच) पुरारथन्तरेकल्पे परिपृष्टोमहात्मनः। मन्दरस्थोमहादेवः पिना
कीब्रह्मणास्वयम् १ (ब्रह्मोवाच) कथमारोग्यमैश्वर्य्यमनन्तममरेश्वर!। स्वल्पेनतप
सादेव! भवेन्मोक्षोऽथवानृणाम् २ किमज्ञातंमहादेव! त्वत्प्रसादादधोक्षज!। स्वल्पके
नाथतपसा महत्फलमिहोच्यताम् ३ (मत्स्य उवाच) एवंपृष्टःसविश्वात्मा ब्रह्मणालो
कभावनः। उमापतिरुवाचेदं मनसःप्रीतिकारकम् ४ (ईश्वर उवाच) अस्माद्रथन्तरा
त्कल्पात् त्रयोविंशात्पुनर्यदा। वाराहोभविताकल्पस्तस्यमन्वन्तरेशुभे ५ वैवस्वताख्ये
सञ्जाते सप्तमेसप्तलोककृत्। द्वापराख्यंयुगन्तद्वदष्टाविंशतिमञ्जगुः ६ तस्यान्तेसम
हादेवो वासुदेवोजनार्द्दनः। भारावतरणार्थाय त्रिधाविष्णुर्भविष्यति ७ द्वैपायनऋषि
स्तद्वद्रौहिणेयोऽथकेशवः। कंसादिदर्पमथनः केशवःक्लेशनाशनः ८ पुरींद्वारवतींनाम

स्नानका बड़ा माहात्म्यहै यह पवित्र स्नान आयुका हितकारी है यह कहकर हे द्विजश्रेष्ठ वह सूर्य्य देवता अन्तर्द्धान होजाते भये ३९ यह सप्तमी का स्नान महापवित्र सब दुष्टों का नाशकारी बालकों का परमकल्याणरूप है ४० सूर्य्यसे अपने आरोग्यकी इच्छाकरै अग्निसे धनकी इच्छा करै ईश्वरसे ज्ञानकी इच्छा करै और परब्रह्मसे मोक्षकी इच्छाकरै ४१ यह स्नान महापापों का नाशक और बालकोंकी वृद्धि करनेवालाहै इस महा हितकारी व्रतको जो एकाग्रचित्त से सुनताहै उस को भी सिद्धि प्राप्त होती है ऐसा मुनिलोग कहते हैं ४२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७॥

मत्स्यजी बोले-पूर्व्वके समय रथन्तर कल्पमें मन्दराचल पर्व्वतपर स्थित होकर बैठेहुए शिवजी से ब्रह्माजी यह बात पूछते भये कि १ हे शिवजी मनुष्योंके आरोग्य और ऐश्वर्य्य कैसे होते हैं और थोड़ेसे तपकरनेसे मोक्ष कैसे होती है २ और हे महादेवजी आपके प्रसन्न होनेमें कौनसी वस्तुप्राप्त रहती है इस हेतुसे आप अल्पतपसे विशेष फलवाली कृत्यका वर्णन कीजिये ३ मत्स्यजी कहते हैं कि इसप्रकार ब्रह्माके पूछनेसे लोकोंके कर्त्ता उमापति महादेवजी इसमनके प्रसन्न करनेवाले व्रत को कहतेभये ४ अर्थात् महादेव जीने कहा कि इस तेईसवें रथन्तर कल्पसे पीछे जब वाराह कल्प होगा तब उस सातवें वैवस्वत मनुके उत्पन्न होनेमें जब अट्ठाईसवां द्वापरयुग होगा उसके अन्तमें विष्णुभगवान् वासुदेव पृथ्वी के भार उतारने के निमित्त तीनप्रकारसे उत्पन्न होंगे ५।७ वेदव्यासजी-बलदेवजी-और श्रीकृष्णमहाराज इस क्रमसे उत्पन्न होके कंसादि दुष्टोंके अभिमान का नाश करके संसारके क्लेशोंको हरेंगे और द्वारवती द्वारिकानामसे प्रसिद्ध जो अब कुशस्थलीहै सो होवेगी उसको दिव्य तेजोंसे युक्त श्रीकृष्णजीके रहनेके निमित्त त्वष्टा विश्वकर्मा मेरी आज्ञासे रचेगा

साम्प्रतंयाकुशस्थली। दिव्यानुभावसंयुक्ता मधिवासायशार्ङ्गिणः। त्वष्टामम्माज्ञयातद्वत्
करिष्यतिजगत्पतेः ९ तस्यांकदाचिदासीनः सभायाममितद्युतिः। भार्य्याभिर्वृष्णिभि
श्चैव भूभृद्भिर्भूरिदक्षिणैः १० कुरुभिर्देवगन्धर्वैरभितःकैटभार्दनः। प्रवृत्तासुपुराणासु
धर्म्मसंवर्द्धिनीषुच ११ कथान्तेभीमसेनेन परिपृष्टःप्रतापवान्। त्वयापृष्टस्यधर्म्मस्य
रहस्यस्यास्यभेदकृत् १२ भवितासतदाब्रह्मन्! कर्त्ताचैववृकोदरः। प्रवर्त्तकोऽस्यधर्म
स्य पाण्डुपुत्रोमहाबलः १३ यस्यतीक्ष्णोवृकोनाम जठरेहव्यवाहनः। मयादत्तःसधर्मा
त्मा तेनचासौवृकोदरः १४ मतिमान्दानशीलश्च नागायुतबलोमहान्। भविष्यत्यर
जाःश्रीमान् कन्दर्पइवरूपवान् १५ धार्म्मिकस्याप्यशक्तस्य तीव्राग्नित्वादुपोषणे।
इदंव्रतमशेषाणां व्रतानामधिकंयतः १६ कथयिष्यतिविश्वात्मा वासुदेवोजगद्गुरुः।
अशेषयज्ञफलदमशेषाघविनाशनम् १७ अशेषदुष्टशमनमशेषसुरपूजितम्। पवित्रा
णाम्पवित्रञ्च मङ्गलानाञ्चमङ्गलम्। भविष्यञ्चभविष्याणाम्पुराणानाम्पुरातनम् १८
(वासुदेव उवाच) यद्यष्टमीचतुर्दश्योर्द्वादशीष्वथभारत!। अन्येष्वपिदिनर्क्षेषु नश
क्तस्त्वमुपोषितुम् १९ ततःपुण्यान्तिथिमिमां सर्वपापप्रणाशिनीम्। उपोष्यविधिनानेन
गच्छविष्णोःपरम्पदम् २० माघमासस्यदशमी यदाशुक्लाभवेत्तदा। घृतेनाभ्यञ्जनंकृ
त्वा तिलैःस्नानंसमाचरेत् २१ तथैवविष्णुमभ्यर्च्य नमोनारायणेतिच। कृष्णायपादौ
सम्पूज्य शिरःसर्वात्मनेनमः २२ वैकुण्ठायेतिवैकुण्ठ मुरःश्रीवत्सधारिणे। शङ्खिनेचक्रि

८। ९ उस पुरीकी धर्मसभामें अतुल कांतिवाले स्त्रियों समेत वृष्णि यादव और अन्य उत्तम कौरव
राजा लोगोंमेंसे पाण्डव भीमसेन धर्मसम्बन्धी पुराणोंकी कथाओं के प्रवृत्त होनेमें कथाकी समाप्ति
होनेपर देवता गन्धर्वादिसे युक्तहुए श्रीकृष्ण जीसे पूछेगा तब वह प्रतापवान् श्रीकृष्णजी तेरे पूछे
हुए इस धर्मका निर्णय करेंगे १०।११ हे ब्रह्मन् तब वह भीमसेन इस तेरे पूछेहुए धर्मका
प्रवृत्त करनेवाला होवेगा वह पाण्डु पुत्र भीमभी बड़ा बलवान् होगा १३ जिसके उदरमें मेरादिया
हुआ वृकनाम तीक्ष्ण अग्निहै इस लिये उस धर्मात्मा भीमसेनको वृकोदर कहते हैं १४ मतिमान्
दानकर्त्ता दशहजार हाथियों के समान बलवाला श्रीमान् कामदेवके समानरूपवाला होगा १५
जो धार्मिक पुरुष तीक्ष्ण अग्निवाला व्रत उपवासादिक करनेमें समर्थनहो उसकेलिये सबव्रतों से
अधिक यही व्रतहै १६ इस हेतुसे विश्वात्मा वासुदेव भगवान् सब यज्ञोंका फल देनेवाला और सब
पापोंका नाशकरनेवाला सब दुष्टोंका नाशकरनेवाला देवताओंसे पूजित महापवित्र मंगलोंका मंग-
ल होनेवालोंमें होनेवाला प्राचीनोंमें प्राचीन ऐसे व्रतको वर्णनकरेंगे १७। १८ वही वासुदेवजीने
कहाहै कि जो पुरुष अष्टमी चतुर्दशी और द्वादशी इन तिथियोंमें तथा अन्यदिवसके किसी नक्षत्रमें
उपवास व्रतकरनेमें असमर्थहोय १९ वह सब पापोंकी नाशकरनेवाली इस पवित्र तिथिको उपवास
करके विष्णुके परमपदको प्राप्त होताहै २० माघमासमें शुक्लपक्षकी दशमीके दिन शरीरमें घृतका
मर्दन करके तिलोंसे स्नानकरे २१ और ॐनमोनारायणाय इस मन्त्रसे विष्णुका पूजनकरे कृष्णा-

येतद्वद्दिनेवरदायवे। सर्वेनारायणस्यैव सम्पूज्यावाहवःक्रमात् २३ दामोदरायेत्युदर म्मेढ्रम्पञ्चशरायवै। ऊरूसौभाग्यनाथाय जानुनीभूतधारिणे २४ नमोनीलायवैजंघे पादौविश्वसृजेनमः। नमोदेव्यैनमःशान्त्यै नमोलक्ष्मैनमःश्रियै २५ नमःपुष्ट्यैनमस्तु ष्ट्यै धृष्ट्यैहृष्ट्यैनमोनमः। नमोविहंगनाथाय वायुवेगायपक्षिणे। विषप्रमाथिनेनित्यं गरुडञ्चाभिपूजयेत् २६ एवंसम्पूज्यगोविन्दं उमापतिविनायकौ। गन्धैर्माल्यैस्तथाधूपै र्भक्ष्यैर्नानाविधैरपि २७ गव्येनपयसासिद्धं कृसरामथवाग्यतः। सर्पिषासहभुक्त्वाच ग त्वांशतपदम्बुधः २८ नैयग्रोधन्दन्तकाष्ठमथवाखादिरम्बुधः। गृहीत्वाधावयेद्दन्ताना चान्तःप्रागुदङ्मुखः २९ ब्रूयात्सायन्तनींकृत्वा सन्ध्यामस्तमितेरवौ। नमोनारायणाये ति त्वामहंशरणंगतः ३० एकादश्यांनिराहारः समभ्यर्च्यचकेशवम्। रात्रिञ्चसकलां स्थित्वा स्नानञ्चपयसातथा ३१ सर्पिषाचापिदहनं हुत्वाब्राह्मणपुंगवैः। सहैवपुण्डरी काक्ष! द्वादश्यांक्षीरभोजनम् ३२ करिष्यामियतात्माहं निर्विघ्नेनास्तुतन्मे। एवमुक्त्वा स्वपेद्भूमावितिहासकथाम्पुनः ३३ श्रुत्वाप्रभातेसञ्जाते नदींगत्वाविशाम्पते!। स्नानं कृत्वामृदातद्वत्पाषण्डानभिवर्जयेत् ३४ उपास्यसन्ध्यांविधिवत्कृत्वाचपितृतर्पणम्। प्र

यनमः इस मंत्रसे चरणों को सर्वात्मनेनमः इस मंत्रसे शिरको २२ वैकुंठायनमः इस मंत्रसे कंठको श्रीवत्सधरायनमः इस मंत्रसे हृदयको, फिर शंखिनेनमः चक्रिणे नमः गदिनेनमः और वरदायनमः इस रीतिसे क्रमसे प्रत्येक चारों भुजाओंको पूजे २३ दामोदरायनमः कहके उदरको–पंचशरायनमः कहके लिंगको–सौभाग्यनाथायनमः कहकर जंघाओंको पूजे भूतधारिणेनमः यह कह के गुल्फोंको २४ नीलकंठायनमः कहकर पिंडिलियों को–विश्वसृजेनमः कहकर पदों को और देव्यैनमः शान्त्यैनमः लक्ष्म्यैनमः श्रियैनमः २५ पुष्ट्यैनमः तुष्ट्यैनमः धृष्ट्यैनमः और हृष्ट्यैनमः इस प्रकार देवियोंको नमस्कार करके पक्षिके राजा वायु समान वेगवाले, नित्यप्रति सर्पों के मथनेवाले गरुड पक्षीको नमस्कार करके २६ गोविन्दको पूजके शिव पार्वतीको गन्ध पुष्प धूप और अनेक प्रकारके भोज्य पदार्थोंसे पूजे. २७ गौके दूधमें बनाई हुई खीरको घृत संयुक्त भोजन करके बुद्धिमान् जन सौपद गमनकरै २८ फिर वट वृक्ष तथा खैरके वृक्षकी दांतनकरै फिर पूर्व वा उत्तरकी ओर मुख करके कुश हाथमें लेकर आचमनकरै जब सूर्य्यास्तहोजाय तब सायंकालकी संध्याकरै ॐनमोनारायणाय त्वामहं शरणंगतः इस मन्त्रको कहै २९। ३० एकादशीको निराहार व्रतकरके नारायणका पूजन और जागरणकरै दूधसे स्नानकरै द्वादशीको ब्राह्मणोंसे अग्निमें घृतकी आहुतिकरवावै और उस दिन दूधका भोजनकरै ३१। ३२ फिर नियतात्माहोकर ऐसा संकल्पकरै कि मैं सत्य बुद्धिसे इस व्रतको करूंगा यह मेरा व्रत निर्विघ्नपूर्वक हो ऐसा कहकर पृथ्वी पै शयन करै और इतिहासादि कथाओंकोवर्णनकरै ३३ जब प्रभात समयहो तब नदी पै जाके मृत्तिकालगाकर स्नान करै और पाषण्ड असत्य सम्भाषणादिक न करै ३४ फिर विधिपूर्वक संध्योपासनादि कर पितृतर्पण करै समलोकों के एक ईश्वर हृषीकेश भगवान् को प्रणामकर घरके आगे बड़ी भक्तिपूर्वक

णम्यचहृषीकेशं सप्तलोकैकमीश्वरम् ३५ गृहस्यपुरतोभक्त्या मण्डपङ्कारयेद्बुधः। दशंहस्तमथाष्टौवा करान्कुर्याद्विशाम्पते! ३६ चतुर्हस्तांशुभांकुर्याद्वेदीमरिनिषूदन!। चतुर्हस्तप्रमाणञ्च विन्यसेत्तत्रतोरणम् ३७ प्रणम्यकलशन्तत्र शुद्धवस्त्रेणसंयुतम्। छिद्रेणजलसंम्पूर्णं पथकृष्णाजिनेस्थितः ३८ तस्यधाराञ्चशिरसाधारयेत्सकलान्निशाम्। तथैवविष्णोःशिरसि क्षीरधाराम्प्रपालयेत् ३९ अरत्निमात्रंकुण्डञ्चकुर्यात्तत्रत्रिमेखलम्। योनिवक्त्रञ्चतत्कृत्वा ब्राह्मणैःपयसर्पिषी ४० तिलांश्चविष्णुदैवत्यैर्मन्त्रैरेकाग्निवत्तदा। हुत्वाचवैष्णवंसम्यक् चरुंगोक्षीरसंयुतम् ४१ निष्पावार्द्धप्रमाणांवै धारामाज्यस्यपात येत्। जलकुम्भान्महावीर्य्य! स्थापयित्वात्रयोदश ४२ भक्ष्यैर्नानाविधैर्युक्तान् सितव स्त्रैरलंकृतान्। युक्तानौदुम्बरैःपात्रैः पञ्चरत्नसमन्वितान् ४३ चतुर्भिर्बह्वृचैर्होमस्तत्र कार्य्यउदङ्मुखैः। रुद्रजापश्चतुर्भिश्च यजुर्वेदपरायणैः ४४ वैष्णवानितुसामानि चतुरः सामवेदिनः। अरिष्टवर्गसहितान्यभितःपरिपाठयेत् ४५ एवंद्वादशतान्विप्रान् वस्त्र माल्यानुलेपनैः। पूजयेदंगुलीयैश्च कटकैर्हेमसूत्रकैः ४६ वासोभिःशयनीयैश्च वित्तशा ठ्यविवर्जितः। एवंक्षपातिवाह्याच गीतमंगलनिस्वनैः ४७ उपाध्यायस्यच पुनर्द्विगुणंस र्वमेवतु। ततःप्रभातेविमले समुत्थायत्रयोदश ४८ गावोदद्यात्कुरुश्रेष्ठ! सौवर्णमुख

दश हाथ का अथवा आठ हाथ का मंडप बनावे ३५। ३६ और वहां मंडपमें चार हाथ प्रमाण की वेदी बनावे और चारही हाथके प्रमाण की तोरण अर्थात् वदनवार बांधै ३७ तहां शुद्ध वस्त्रसे संयुक्त कियाहुआ और जलसे भराहुआ कलश मध्यमें छिद्रकरके मस्तक पर धारणकर काली मृगछाला के आसनपर बैठकर उस कलशकी जलधारा को रात्रिमें शिरपै धारणकरै इसी प्रकार विष्णुकी मू- र्त्तिके शिरपर दूधकीधारा गिरवावै ३८। ३९ और तीन मेखला बनवाके एकहाथका कुंड बनवावै उसमें योनि के मुखकी आकृति बनवावै फिर ब्राह्मणों से दूध घृत और तिल इन सब की आहुति डलवावै और विष्णु देवता के मन्त्रों से एकाग्नि विधिके द्वारा हवनकरै गौके दूधसे युक्त किये हुए साकल्य से विष्णु के अर्थ हवनकरके ४०। ४१ मोठ बराबर छिद्रके द्वारा घृतकी आहुति डलवावै फिर तेरह कलशों को जलसे भरके स्थापितकरै ४२ और उनको अनेक प्रकारके भक्ष्य पदार्थ और सफ़ेद वस्त्र आदिकों से शोभितकरै फिर गूलरके पत्तों समेत पंचरत्न से युक्तकरै ४३ इस के पीछे बह्वृच अर्थात् बहुतसी ऋचाबोलनेवाले चारब्राह्मणोंको उत्तराभिमुखकरके उनसे हवनकरवावै और यजुर्वेद के जानने वाले चारब्राह्मणों से रुद्रके मन्त्रों का जपकरवावै ४४ और चार सामवेदी ब्रा- ह्मणों से अरिष्ट वर्ग सहित पाठकरवावै ४५ इस प्रकारसे युक्तहुए इन बारह ब्राह्मणोंको सुवर्ण की अंगूठी कड़े सुवर्णके यज्ञोपवीत और अनेकप्रकारके वस्त्रादिकों से पूजे और शय्यादानादि में द्रव्यादिक के खर्चनेमें कृपणता न करे इसरीतिसे गीतवाद्यादि मंगलवार्तोंसे उसरात्रिको व्यतीत करै ४६।४७ और इस व्रतके पढ़ानेवाले उपदेश देनेवाले आचार्य्य को दूनी दक्षिणा देनी चाहिये हे कुरुश्रेष्ठ भीमसेन फिर जब प्रभात होय तब उठकर सुवर्णशृंगी रौप्यखुरी कांसी के दोहनी पात्र समेत दूध

सयुताः। पयस्विन्यःशीलवत्यः कांस्यदोहसमन्विताः ४९ रौप्यखुराःसवस्त्राश्च चन्दने नाभिपेचिताः। तास्तुतेषांततोभक्त्या भक्ष्यभोज्यान्नतर्पितान् ५० कृत्वावैब्राह्मणान् सर्वानन्नैर्नानाविधैस्तथा। भुक्त्वाचाक्षारलवणमात्मनाचविसर्जयेत् ५१ अनुगम्यपदाष्टौ पुत्रभार्यासमन्वितः। प्रीयतामत्रदेवेशः केशवःक्लेशनाशनः ५२ शिवस्यहृदयेविष्णुर्विष्णोश्चहृदयेशिवः। यथान्तरंनपश्यामि तथामेस्वस्तिचायुषः ५३ एवमुच्चार्यतान् कुम्भान् गाश्चैवशयनानिच। वासांसिचैवसर्वेषां गृहाणिप्रापयेद्बुधः ५४ अभावेबहुशय्यानामेकामपिसुसंस्कृताम्। शय्यांदद्याद्द्विजातेश्च सर्वोपस्करसंयुताम् ५५ इतिहासपुराणानि वाचयित्वातिवाहयेत्। तद्दिनंनरशार्दूल! यइच्छेद्विपुलांश्रियम् ५६ तस्मात्त्वंसत्वमालम्ब्य भीमसेन! विमत्सरः। कुरुव्रतमिदंसम्यक् स्नेहात्तवमयेरितम् ५७ त्वयाकृतमिदंवीर! त्वन्नामाख्यंभविष्यति। साभीमद्वादशीह्येषा सर्वपापहराशुभा ५८ यातुकल्याणिनीनाम पुराकल्पेषुपठ्यते ५९ त्वमादिकर्ताभवसौकरेऽस्मिन्कल्पेमहावीरवर प्रधान! यस्याःस्मरन्कीर्तनमप्यशेषं विनष्टपापस्त्रिदशाधिपःस्यात् ६० कृत्वाचयाम्प्सरसामधीशा वेश्याकृताह्यन्यभवान्तरेषु। आभीरकन्यातिकुतूहलेन सैवोर्वशीसम्प्रतिनाकपृष्ठे ६१ जाताथवावैश्यकुलोद्भवापि पुलोमकन्यापुरुहूतपत्नी। तत्रापितस्याः

वाली शील युक्त वस्त्र चन्दनादि से पूजित भक्ष्य भोज्य पदार्थोंसे तृप्तकियेहुए सुन्दर तेरह गौओंका दानकरै ४८। ४९ अर्थात् प्रथम ब्राह्मणोंको भक्ष्य भोज्यादि अनेक प्रकारके पदार्थोंसे तृप्तकरके वस्त्र चन्दनादि से चर्चित तेरह गौदान करै ५० इसके पीछे नम्रतापूर्वक भक्ष्यभोज्यादि उत्तम पदार्थों से अन्य सब ब्राह्मणों को तृप्तकरके विसर्जन अर्थात् विदाकरै ५१ और पुत्र स्त्री आदिकों से युक्त होकर उन ब्राह्मणों के पीछे आठवें पैंडतक गमन करै और यह वचन कहै कि हे क्लेशनाशक केशव भगवान् प्रसन्नहूजिये ५२ शिवके हृदय में विष्णु और विष्णु के हृदय में शिव हैं इसप्रकार से जैसे मैं इनमें भेद नहीं देखताहूं उसी प्रकार मेरी भी आयुमें कल्याण होय ५३ ऐसे कहकर उन कलश गौ और वस्त्रादिकों को सब ब्राह्मणों के घर पहुंचादे ५४ बहुत शय्या दान न करसकै तो अच्छे प्रकार से वस्तुओं करके पूर्ण कीहुई एक शय्याको एकही ब्राह्मण को दानकरै ५५ हे राजन् जो पुरुष अधिक लक्ष्मीवान्होनेकी इच्छाकरताहो वह उस दिन इतिहास पुराणादिकोंका पाठकरै ५६ हे भीमसेन इस हेतु से तू भी आलस्यरहित होके मेरे कहेहुए इस व्रतको अच्छे प्रकारसे कर मैंने यह व्रत तेरे स्नेह से कहदिया है ५७ हे भीम तेराकियाहुआ यह व्रत तेरेही नाम से प्रसिद्ध होगा— इस प्रकारसे वर्णन कीहुई यह भीमसेनानाम द्वादशीसबपापोंकी हरनेवाली है यह द्वादशी पहले कल्पों में कल्याणिनीनामसे विख्यात थी ५८। ५९ हे महावीर तू इस वाराह कल्पमें इस व्रतका प्रथम करनेवालाहोगा इस द्वादशी को जो स्मरण करता है वह सब पापों से छूटकर स्वर्ग लोक में जाकर सब देवताओंका अधिपति होता है ६० और जो इस द्वादशी का व्रतकरताहै वह अप्सराओं का पति होता है और उस के घरमें अप्सराओं का वास होता है मुख्यकर स्वर्ग में उर्वशी अप्सराके

रिचारिकेयम्ममप्रियासम्प्रतिसत्यभामा ६२ स्नातःपुरामण्डलमेषतद्वत्तेजोमयंवेदशरी रमाप। अस्याञ्चकल्याणतिथौविवस्वान्सहस्रधारेणसहस्ररश्मिः ६३ इदमेवकृतम्महे न्द्रमुख्यैर्वसुभिर्देवसुरारिभिस्तथातु। फलमस्यनशक्यतेऽभिवक्तुंयदिजिह्वायुतकोटयोमु खेस्युः ६४ कलिकलुषविदारिणीमनन्तामितिकथयिष्यतियादवेन्द्रसूनुः। अपिनरकग तान्पितृनशेषानलमुद्धर्तुमिहैवयःकरोति ६५ यइदमघविदारणंशृणोति भक्त्यापरिपठ तीहपरोपकारहेतोः। तिथिमिहसकलार्थभाङ्नरेन्द्रस्तवचतुराननं! साम्यतामुपैति ६६ कल्याणिनीनामपुराबभूव याद्वादशीमाघदिनेपुपूज्या। सापाण्डुपुत्रेणकृताभविष्यत्यन न्तपुण्यानघ! भीमपूर्वा ६७॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

(ब्रह्मोवाच) वर्णाश्रमाणांप्रभवः पुराणेषुमयाश्रुतः। सदाचारस्यभगवन्! धर्म्म शास्त्रविनिश्चयः। पुण्यस्त्रीणांसदाचारं श्रोतुमिच्छामितत्त्वतः १ (ईश्वर उवाच) त स्मिन्नेवयुगेब्रह्मन्! सहस्राणितुषोडश। वासुदेवस्यनारीणांभविष्यन्त्यम्बुजोद्भव! २ ताभिर्वसन्तसमये कोकिलालिकुलाकुले। पुष्पितेपवनोत्फुल्ल कह्लारसरसस्तटे ३ नि र्भरापानगोष्ठीषु प्रसक्ताभिरलंकृतः। कुरङ्गनयनःश्रीमान्मालतीकृतशेखरः ४ गच्छन्स मीपमार्गेण साम्बःपरपुरञ्जयः। साक्षात्कन्दर्परूपेण सर्वाभरणभूषितः ५ अनंगशरत

संग रमण करताहै ६१ इसीव्रतके प्रभाव से वैश्यकुलमें भी उत्पन्नहोनेवाली पुलोमकीकन्या इन्द्रकी पत्नी होतीभई और इसीव्रतके प्रभाव से सत्यभामा मेरी प्रियास्त्री हुई है ६२ और इसी कल्याण द्वादशीके दिन पहले सूर्य्य भी सहस्र धाराओं से स्नानकरके तेजोमय मण्डल वेदशरीर और सहस्र किरणोंसे युक्त होकर प्राप्तहोताभया ६३ और यही व्रत प्रथमवसुआदिक महेन्द्र और देवताओंनेभी किया है जो कभी मुखमें कोटिजिह्वाहोजांय तौभी इसव्रतकी महिमाके कहने को कोई समर्थ नहीं है ६४ कलियुग के सबपापोंकी नाशकरनेवाली इसअनन्त फलवाली द्वादशी के व्रतको श्रीकृष्णजी कहते हैं कि इसव्रतको जो करताहै वह नरकमें प्राप्तहुए सबपितरोंको उद्धार करता है ६५ जो पुरुष भक्तिसे इसव्रतको सुनताहै अथवा पढ़ता है वह परोपकार करनेवाला पुरुष ब्रह्माजीके तुल्यहोजा- ताहै ६६ जो पहले कल्पों में माघके महीनेकी कल्याणिनीनाम द्वादशी कही जातीथी वह भीमा द्वादशी नामसे प्रसिद्ध होवेगी यह वचनपूर्व कल्पमें कहाहै ६७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

ब्रह्माजीबोले-हे शिवजी मैंने पुराणोंमें वर्ण आश्रमोंकी उत्पत्ति और धर्मशास्त्रका निश्चयसुनाहै अब उत्तमस्त्रियों के सदाचारको सुनना चाहताहूं १ शिवजी बोले हे ब्रह्माजी इसी द्वापर युगमें श्री कृष्ण के सोलह हजार स्त्रियां होंगी तब एकसमय वसन्तऋतु में कोकिला भ्रमरादिकों से कूजित खिलेहुए कमलों से शोभित सरोवरोंवाले पुष्पित वनमें एकान्त स्थानों के सरोवरों के तटों पै विराजमानहुई वह स्त्रियां अपने समीप में मृगकेसेनेत्र चमेली के सुगन्धित पुष्पोंको धारण किये उत्तम आभूषणों से शोभित साक्षात् मानों कामदेवही रूपको धारण किये चले आते हुए श्रीमान्

स्त्राभिः साभिलाषमवेक्षितः । प्रवृद्धोमन्मथस्तासाम्भविष्यतियदात्मनि ६ तदावेक्ष्यजग न्नाथःसर्वतोध्यानचक्षुषा । शापंवक्ष्यतिताःसर्वावोहरिष्यन्तिदस्यवः । मत्परोक्षंयतःकाम लौल्यादीदृग्विधंकृतम् ७ ततःप्रसादितोदेवइदंवक्ष्यतिशार्ङ्गभृत् । ताभिःशापाभितप्ताभि र्भगवान्भूतभावनः ८ उत्तारभूतन्दासत्वंसमुद्राद्ब्राह्मणप्रियः । उपदेक्ष्यत्यनन्तात्माभावि कल्याणकारकम् ९ भवतीनामृषिर्दाल्भ्योयदूव्रतङ्कथयिष्यति । तदेवोत्तारणायालंदासत्वे ऽपिभविष्यति । इत्युक्त्वाताःपरिष्वज्यगतोद्वारवतीश्वरः १० ततःकालेनमहताभारावतर णेकृते । निवृत्तेमौसलेतद्वत्केशवेदिवमागते ११ शून्येयदुकुलेसर्वैश्चौरैरपिजितेऽर्जुने । हृतासुकृष्णपत्नीषुदासभोग्यासुचाम्बुधौ १२ तिष्ठन्तीषुचदौर्गत्यसन्तप्तासुचतुर्मुखः । आगमिष्यतियोगात्मादाल्भ्योनाममहातपाः १३ तास्तमर्घेणसंपूज्यप्रणिपत्यपुनःपुनः । लालप्यमानाबहुशोबाष्पपर्याकुलेक्षणाः १४ स्मरन्त्योविपुलान्भोगान्दिव्यमाल्यानुलेप नम् । भर्तारञ्जगतामीश मनन्तमपराजितम् १५ दिव्यभावान्ताञ्चपुरीं नानारत्नगृ हाणिच । द्वारकावासिनःसर्वान्देवरूपान्कुमारकान् । प्रश्नमेवङ्करिष्यन्ति मुनेरभिमुखं स्थिताः १६ (स्त्रिय ऊचुः) दस्युभिर्भगवन् ! सर्वाः परिभुक्तावयम्बलात् । स्वधर्मा च्च्यवतेऽस्माक मस्मिन्नःशरणम्भव १७ आदिष्टोऽसिपुराब्रह्मन् ! केशवेनचधीमता ।

साम्बको देखकर कामदेवके बाणोंसे पीड़ितहोकर भोगकी इच्छासे उसको देखेंगी तब उनके चित्तमें कामकी वृद्धिहोवेगी २-६ उसवार्त्ताको अन्तर्यामी श्रीकृष्ण जी जानकर उनसब स्त्रियोंको यहशाप देंगे कि जो तुमने मेरेपीछे ऐसी कामदेवकी चंचलताकरी है इसहेतुसे तुमसबोंको चोरहरेंगे ७ फिर इस शापसे दुःखितहोकर वह स्त्रियां श्रीकृष्णको प्रसन्नकरेंगी उस समय श्रीकृष्णजी उनके दासपने के शापदूरकरने और आगे होनेवाले मनुष्यों के कल्याण करनेवाले इस व्रतको कहेंगे कि हे स्त्रियो तुम्हारे आगे जो दाल्भ्यऋषि व्रतकहेंगे वहीव्रततुम्हारे दासभावको दूरकरेगा ऐसाकहकर श्रीकृष्ण जी उनस्त्रियों से मेलमिलाप करके चलेजावेंगे ८।१० अर्थात् बहुतकाल व्यतीत होजाने पर पृथ्वीकाभार उतारने के पीछे श्रीकृष्णचन्द्रजी परमधामको चलेजावेंगे ११ इनके चलेजानेके पीछे जब मुसल युद्धहोकर यादवनष्टहोजावेंगे उस समय अर्जुनकी रक्षितकीहुई कृष्णकी स्त्रियोंकोअर्जुन के समीप से शूद्रलोग छीनकर समुद्रपर लेजाकर भोगकरेंगे १२ वहां उनके पास महातपस्वी योगात्मा दाल्भ्य ऋषि आवेंगे १३ तब वह स्त्रियां उन ऋषिको अर्घदानसे पूजनकर प्रणाम करके अश्रुओं से व्याकुल १४ अनेक भोग दिव्यमाला पुष्पचन्दनादिकों को स्मरण करतीहुई जगतों के पति अपने भर्त्ताका अनेक प्रकारके रत्नों से युक्त द्वारकापुरीका अपने उत्तम २ स्थानों का देवताओं के समान रूपवाले द्वारकावासियों का और अपने पुत्रभ्राता आदिक सुहृदों का स्मरण करतीहुई दाल्भ्यमुनि के समीप सन्मुख खड़ीहोके यह प्रश्न करेंगी कि १५।१६ हे भगवन् हमसबको और धाड़ियोंने बलकर छीनलिया और घरोंपर लेजाकर भोग किया अब हम अपने धर्मसे हीन होगई हैं तो आपकी शरणहैं १७ हे महात्मन् प्रथम श्रीकृष्णजीके दियेहुए शापसे हम वेश्या भावको प्राप्त

कस्मादीशेनसंयोगम्प्राप्यवेश्यात्वमागताः १८ वेश्यानामपियोधर्म्मस्तन्नोब्रूहितपोध
न!। कथयिष्यत्यतस्तासां सदाल्भ्यश्चैकितायनः १९ (दाल्भ्य उवाच) जलक्रीडा
विहारेषु पुरासरसिमानसे। भवतीनाञ्चसर्वासां नारदोऽभ्यासमागतः २० हुताशनसु
ताःसर्व्वा भवन्त्योऽप्सरसःपुरा। अप्रणम्यावलेपेन परिपृष्टःसयोगवित्। कथन्नाराय
णोस्माकं भर्तास्यादित्युपादिश २१ तस्माद्वरप्रदानंवः शापश्चायमभूत्पुरा। शय्याद्व
यप्रदानेन मधुमाधवमासयोः २२ सुवर्णोपस्करोत्सर्गो द्वादश्यांशुक्लपक्षतः। भर्तानारा
यणोनूनं भविष्यत्यन्यजन्मनि २३ यदकृत्वाप्रणामम्मे रूपसौभाग्यमत्सरात्। परिपृ
ष्टोऽस्मितेनाशु वियोगोवाभविष्यति। चोरैरपहृताःसर्वा वेश्यात्वंसमवाप्स्यथ २४ एवं
नारदशापेन केशवस्यचधीमतः। वेश्यात्वमागताःसर्वा भवन्त्यःकाममोहिताः। इदानी
मपियद्वक्ष्ये तच्छृणुध्वंवराङ्गनाः! २५ (दाल्भ्य उवाच) पुरादेवासुरेयुद्धे हतेषुशतशः
सुरैः। दानवासुरदैत्येषु राक्षसेषुततस्ततः २६ तेषांव्रातसहस्राणि शतान्यपिचयोषि
ताम्। परिणीतानियानिस्युर्बलाद्भुक्तानियानिवै। तानिसर्वाणिदेवेशः प्रोवाचवदतांव
रः २७ (इन्द्र उवाच) वेश्याधर्म्मेणवर्तध्वमधुनानृपमन्दिरे। भक्तिमत्योवरारोहास्त
थादेवकुलेषुच २८ राजानःस्वामिनस्तुल्याः सूतावापिचतत्समाः। भविष्यतिचसौभा

होगई हैं हमारे उपदेशकर्त्ता आपही नियत कियेगये हैं १८ हे तपोधन आप कृपाकरके वेश्याओंका धर्म वर्णनकीजिये—इस प्रकारसे पूछेहुए दाल्भ्यऋषि उन स्त्रियों से वेश्याओं के धर्म कहेंगे १९ कि हे स्त्रियो पूर्व्वकालमें तुम सब किसी समय मानसरोवर में क्रीड़ाकर रहीथीं उस समय तुम्हारे समीप नारद मुनि आय गयेथे २० उसकालमें तुम अग्निकी पुत्री अप्सरा रूपथीं उस समय तुमने नारदजीको प्रणामनहीं कियाथा और विना प्रणाम कियेही तुमने उस योगी से यह प्रश्नकियाथा कि हे मुने हमको जगन्नाथ श्रीकृष्ण भर्त्ता कैसे प्राप्तहोयँ उसको कहिये २१ उस समय तुमको नारदमुनिने श्रीकृष्णजीके मिलनेका वरदियाथा और प्रणाम नहीं करनेसे शाप भी दियाथा अर्थात् यह कहाथा कि चैत्र वैशाख इन दोनों महीनों की शुक्लपक्षकी द्वादशी के दिन दो शय्या दान और सुवर्णका दानकरने से दूसरे जन्ममें तुम्हारा निश्चय करके नारायण पति होगा २२।२३ और जो कि तुमने अपने रूप और सौभाग्यके अभिमान से मुझको प्रणाम विना कियेही प्रथम प्रश्नकियाहै इस हेतुसे तुम्हारा इस प्रकारसे वियोग भी होगा कि तुम चोरोंसे हरी जाओगी और वेश्याभावको प्राप्तहोजाओगी २४ इसीसे तुम सब नारदजीके और श्रीकृष्णजीके शापसे कामसे मोहित होकर वेश्यापनेको प्राप्तहोगई हो—हे स्त्रियो अब जो मैं कहताहूं उसको तुम चित्तसे सुनो २५ दाल्भ्यने कहा कि प्रथम देवता और दैत्योंके युद्धमें जहाँ तहाँ के हज़ारों राक्षस मरगये तब उन राक्षसोंकी हज़ारों स्त्रियोंको देवताओंने अपने बलसे छीनकर ग्रहण करके उनके साथमें भोगकिया उस समय उन सब स्त्रियोंसे इन्द्रने कहाथा कि तुम सब वेश्याओंके धर्ममें रहो और राजाओंके मन्दिरोंमें और देवताओंमें प्रीति रक्खो २६। २८ तुमको राजा—अपनास्वामी—सूत और शूद्रादिक यह सब समानवर्त्तने चाहियें

र्यंसर्वासामपिशक्तितः २६ यःकश्चिच्छुल्कमादाय गृहंनेष्यतिवः सदा। निधनेनोपचा
र्योवः सतदान्यत्रदाम्भिकात् ३० देवतानांपितृणाञ्च पुण्याहेनमुपस्थिते। गोभूहिर
ण्यधान्यानिप्रदेयानिस्वशक्तितः। ब्राह्मणानांनरारोहाः कार्याणिवचनानिच ३१ यच्चाप्य
न्यद्व्रतंसम्यगुपदेक्ष्याम्यहन्ततः। अविचारेणसर्वाभिरनुष्ठेयञ्चतत्पुनः ३२ संसारोत्तार
णायालमेतद्वेदविदोविदुः। यदासूर्यदिनेहस्तःपुष्योवाथपुनर्वसुः ३३ भवेत्सर्वौषधीस्नान
सम्यङ्नारीसमाचरेत्। तदापञ्चशरस्यापि सन्निधानात्वमेष्यति। अर्चयेत्पुण्डरीकाक्ष
मनङ्गस्यानुकीर्तनैः ३४ कामायपादौसम्पूज्य जंघेवैमोहकारिणे। मेढ्रङ्कन्दर्पनिधये कटि
म्प्रीतिमतेनमः ३५ नाभिंसौख्यसमुद्राय रामायचतथोदरम्। हृदयंहृदयेशायस्तनावा
ह्लादकारिणे ३६ उत्कंठायेतिवैकंठमास्यमानन्दकारिणे। वामाङ्गम्पुष्पचापायपुष्पबाणा
यदक्षिणम् ३७ मानसायेतिवैमौलिंविलोलायेतिमूर्द्धजम्। सर्वात्मनेचसर्वांगंदेवदेवस्यपू
जयेत् ३८ नमःशिवायशांतायपाशांकुशधरायच। गदिनेपीतवस्त्रायशङ्खचक्रधरायच ३९
नमोनारायणायेति कामदेवात्मनेनमः। सर्वशान्त्यैनमःप्रीत्यै नमोरत्यैनमःश्रियै ४० नमः
पुष्ट्यैनमस्तुष्ट्यै नमःसर्वार्थसम्पदे। एवंसंपूज्यदेवेशमनंगात्मकमीश्वरम्। गन्धैर्माल्यै

तुम सबको शक्तिके अनुसार सौभाग्य प्राप्तहोगा २९ जो कोई पुरुष तुमको तुम्हारे समानमूल्य देकर
तुम्हारे घरपर आवेगा उसके साथतुम छलछिद्र कभी न करना ३० और जब कोई देवता औरपितर
आदिके उत्सवका दिन आजाय उसदिन गौ-पृथ्वी-सुवर्ण और धान्य इन सबकादानशक्तिके अनुसार
तुमको करना चाहिये हेसुन्दर स्त्रियो तुमकोसदैव ब्राह्मणोंका वचन करना योग्यहै ३१ इसकेविशेष जो
तुम्हारे योग्य व्रतहै उसकोभी मैं कहताहूं वहव्रत तुमको निस्सन्देह करना योग्य है ३२ इस व्रतको
वेदज्ञ पुरुषोंने संसारके उद्धारके निमित्त उत्तमकहा है—जब कभी रविवारके दिन हस्त—पुष्य—अथवा
पुनर्वसु इन तीनों में से कोई नक्षत्र आजाय उस दिवस स्त्रियोंको सर्वौषधी के जलसे स्नान करना
योग्य है उस समय कामदेवभी इन स्त्रियों के समीप आजाता है इस हेतु से कामदेवके नामों का
उच्चारण करके विष्णुभगवान् का पूजनकरै ३३।३४ फिर कामदेवको नमस्कारकरके विष्णुकेचरणों
को पूजै उसके पीछे मोहकारी को नमस्कारकर पिंडिलियों को पूजै—कन्दर्पनिधिको नमस्कारकर
लिंगको पूजै—प्रीतिमान् को नमस्कारकर कटिको पूजै—३५ सौख्य समुद्रको नमस्कारकर नाभिको
पूजै—रामको नमस्कारकर उदरकोपूजै—हृदयेशको नमस्कारकर हृदयको पूजै—आह्लादकारीको
नमस्कारकर विष्णुके स्तनों को पूजै—३६ उत्कण्ठायनमः यह कहकर कण्ठको पूजै—आनन्दकारि-
णेनमः यह कहकर मुखको पूजै—पुष्पधन्विनेनमः कहकर वामअंगको पूजै—पुष्पेषवेनमः यहकहकर
दक्षिणअंगको पूजै ३७ मानसायनमः यह कहके मस्तकको पूजै—विलोलायनमः यह कहकर केशोंको
पूजै—सर्वात्मनेनमः यह कहके सर्वांगों को पूजै—३८ शिवशान्तस्वरूप पाशअंकुशधारिणेनमः और
गदाधराय शंखचक्रधारिणे पीताम्बर विष्णवेनमः ३९ नारायणाय कामदेवात्मरूपाय सर्वशान्त्यै
यनमः प्रीतयेनमः रतयेनमः श्रियैनमः ४० पुष्ट्यैनमः तुष्ट्यैनमः सर्वार्थसंपदेनमः इन सब म

स्तथाधूपैर्नैवेद्येनचकामिनी ४१ ततआहूयधर्म्मज्ञं ब्राह्मणंवेदपारगम्। अव्यङ्गावयवं पूज्य गन्धपुष्पार्चनादिभिः ४२ शालेयतण्डुलप्रस्थं घृतपात्रेणसंयुतम्। तस्मैविप्राय सादद्यान्माधवःप्रीयतामिति ४३ यथेष्टाहारयुक्तंवै तमेवद्विजसत्तमम्। रत्यर्थंकामदेवो यमितिचित्तेऽवधार्य्यतम् ४४ यद्यदिच्छतिविप्रेन्द्रस्तत्तत्कुर्य्याद्विलासिनी। सर्व्वभावे नचात्मानं सर्पयेत्स्मितभाषिणी ४५ एवमादित्यवारेण सर्वमेतत्समाचरेत्। तण्डुल प्रस्थदानञ्च यावन्मासास्त्रयोदश ४६ ततस्त्रयोदशेमासि संप्राप्तेतस्यभामिनी। वि प्रस्योपस्करैर्युक्तां शय्यांदद्याद्विलक्षणाम् ४७ सोपधानकविश्रामां सास्तरावरणांशु भाम्। प्रदीपोपानहच्छत्र पादुकासनसंयुताम् ४८ सपत्नीकमलंकृत्य हेमसूत्रांगुलीय कैः। सूक्ष्मवस्त्रैःसकटकैर्धूपमाल्यानुलेपनैः ४९ कामदेवंसपत्नीकं गुडकुम्भोपरिस्थि तम्। ताम्रपात्रासनगतं हैमनेत्रपटावृतम् ५० सकांस्यभाजनोपेतमिक्षुदण्डसमन्वि तम्। दद्यादेतेनमन्त्रेण तथैकांगांपयस्विनीम् ५१ यथान्तरंनपश्यामि कामकेशवयोः सदा। तथैवसर्वकामाप्तिरस्तुविष्णो! सदामम ५२ यथानकमलादेहात् प्रयातितवके शव!। तथाममापिदेवेश! शरीरेस्वेकुरुप्रभो ५३ तथाचकाञ्चनंदेवं प्रतिगृह्णन्द्विजो

न्त्रों से कामदेवस्वरूपी विष्णु भगवान्को गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्यादिक वस्तुओंसे स्त्रीको पूजन करना चाहिये ४१ इसके पीछे वेदके पारके जाननेवाले धर्मज्ञ व्यंग अंगरहित ब्राह्मणको बुलवाकर गन्ध पुष्प धूप दीप और नैवेद्यादि पदार्थोंसे स्त्री पूजे ४२ और उसी ब्राह्मणके अर्थ घृत पात्र संयुक्त एकसेर चावलोंके भरेपात्रको माधव भगवान् प्रसन्नहो यह कहकर दानकरे ४३ और उसी उत्तम ब्राह्मणको अपने चित्तसे कामदेवके समान मानकर इच्छापूर्व्वक भोजनकरवावे ४४ और जिसजिस वस्तुकी वह ब्राह्मण इच्छाकरे वह सब उस सुन्दर हास्यवाली स्त्रीको आत्मभावसे उसकी तृप्ति पर्य्यन्त देना चाहिये ४५ इस रीतिसे हर रविवारके दिन सुन्दर आचरण करतीहुई तेरह महीनेतक प्रत्येक रविवारको एकसेर चावलोंका दान करतीरहै जब तेरहवाँ महीना आवे तब उसी ब्राह्मण के निमित्त सर्व सामग्री समेत शय्या दानकरै अर्थात् शय्यापर उत्तम तकिया बिछौना दीपक जूतीका जोड़ा-छत्री-खड़ाऊं-धोतीका जोड़ा-आसन इन सब वस्तुओंसे शोभितकीहुई शय्याको स्त्री समेत होकर सपत्नीक ब्राह्मणको देवे इसके सिवाय उत्तम रेशमी वस्त्र सुवर्ण के भूषण बाजूबन्द देकर धूप दीप पुष्प और चन्दनादिक से कामदेव का पूजन करे ४६। ४९ स्त्री सहित कामदेवकी मूर्त्ति बनवाके गुड़से भरेहुए पात्रपर स्थापितकर उसके आसनकी जगह तांबे के पत्र लगाकर सुवर्ण के नेत्र युक्त वस्त्र पहराय कांसीके पात्र समेत ईख संयुक्तकर आगे लिखेहुए मंत्रसे उसका दानकरै और एक उत्तम दूधवाली गौकाभी दानकरै ५०। ५१ मंत्र-जैसे कि मैं विष्णुमें और कामदेवमें कुछ अन्तरका भाव भेद नहीं रखतीहूं इसीप्रकार सदैव विष्णु भगवान् मेरे मनोरथोंको सिद्धकरो ५२ हे केशव भगवान् जैसे कि लक्ष्मीजी तुम्हारे शरीरसे कभी पृथक् नहीं रहती हैं उसी प्रकार मुझेभी आप अपने शरीरमें लीनकरो ५३ इसके पीछे सुवर्णकी मूर्त्तिको ग्रहण करताहुआ ब्राह्मण कइवं

त्तमः। कइदंकस्मादादिति वैदिकंमन्त्रमीरयेत् ५४ ततःप्रदक्षिणीकृत्य विसर्ज्यद्विजपुं गवम्। शय्यासनादिकंसर्वं ब्राह्मणस्यगृहंनयेत् ५५ ततःप्रभृतियोविप्रो रत्यर्थंगृहमागतः। समान्यःसूर्यवारेच समन्तव्योभवेत्तदा ५६ एवंत्रयोदशंयावन्मासमेवंद्विजोत्तमान्। तर्पयेतयथाकामं प्रोषितेऽन्यंसमाचरेत् ५७ तदनुज्ञयारूपवान्यो यावदभ्यागतो भवेत्। आत्मनोऽपियथाविघ्नं गर्भभूतिकरम्प्रियम् ५८ दैवंवामानुषंवास्यादनुरागेण वाततः। साचारानष्टपञ्चाशद्यथाशक्त्यासमाचरेत् ५९ एतद्धिकथितंसम्यक् भवतीनांविशेषतः। अधर्मोऽयंततोनस्याद्वेश्यानामिहसर्वदा ६० पुरुहूतेनयत्प्रोक्तं दानवीषु पुरामया। तदिदंसाम्प्रतंसर्वं भवतीष्वपियुज्यते ६१ सर्वपापप्रशमनमनन्तफलदायकम्। कल्याणीनांप्रकथितं तत्कुरुध्वंवराननाः ६२ करोतियाशेषमखण्डमेतत्कल्याणिनीमाधवलोकसंस्था। सापूजितादेवगणैरशेषैरानन्दकृत्स्थानमुपैतिविष्णोः ६३ (श्रीभगवानुवाच) तपोधनःसोऽप्यभिधायचैवं तदाचतासांवृतमंगनानाम्। स्वस्थानमेष्यन्तिसमस्तमित्थं व्रतंकरिष्यन्तिचदेवयोने! ६४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे नवषष्टितमोऽध्यायः ६९॥

(ब्रह्मोवाच) भगवन्! पुरुषस्येहस्त्रियाश्चविरहादिकम्। शोकव्याधिभयन्दुःखं नाभवेद्येनतद्वद १ (श्रीभगवानुवाच) श्रावणस्यद्वितीयायांकृष्णायाम्मधुसूदनः। क्षीरा

कस्मादादिति ऐसे वेदके मन्त्रको उच्चारणकरै ५४ फिर प्रदक्षिणा करके ब्राह्मणका विसर्जनकरदे ५५ इसके अनन्तर जो ब्राह्मण रमणकरनेके निमित्त रविवारके दिन इन स्त्रियोंके घरपर आजाय तो उसका मानकरके उसका प्रसन्नतापूर्वक पूजनकरना योग्य है ५६ इस रीति से तेरह महीनों तक उत्तम ब्राह्मणों को इच्छापूर्वक तृप्तकरतीरहै औरवह ब्राह्मण कदाचित् कहींपरदेशमें चलाजाय तो इसी प्रकार दूसरे अन्य ब्राह्मण को भी पूजै ५७ उसी ब्राह्मणसे आज्ञालेकर विघ्नरहित अपनेको प्रिय जो ब्राह्मण रूपवान्हो और अभ्यागतहो उसको पूजै ५८ इसके पीछे श्रेष्ठकुलीनअट्ठालीस ४८ ब्राह्मणों को शक्तिके अनुसार भोजन करवावै ५९ यहधर्म विशेष करके तुम्हीं वेश्याओंका कहा है ऐसे करने से तुमको अधर्म नहीं लगेगा ६० पूर्व समयमें जो धर्म इन्द्रने दानवों की स्त्रियों से कहा है वही धर्म अब मैंने तुमसे भी वर्णन किया है ६१ हे श्रेष्ठमुखवाली स्त्रीलोगो यह सबपापों का शान्तकरने वाला अनन्त फल वालाव्रत मैंने तुमसे कहाहै ६२ जो वेश्यास्त्री इस व्रतकोकरती है वह विष्णुके लोकको प्राप्तहोकरसब देवताओं से पूजित होती है ६३ श्रीभगवान् कहते हैं कि वह दाल्भ्य ऋषि इस प्रकार से उन स्त्रियोंको उपदेश करताभया हे राजा जो इसीप्रकारसे इस व्रतको अन्य स्त्रियां भी करेंगी वह भी स्वर्गमें प्राप्तहोकर देवताओं के उत्तम विमानोंमें स्थित होकर विहार करेंगी ६४॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

ब्रह्माजी बोले कि हेभगवन् इसलोकमें जिसव्रतकरके स्त्री और पुरुषका वियोगनहो और शोक व्याधि

एवैसपत्नीकः सदावसतिकेशवः २ तस्यांसम्पूज्यगोविन्दं सर्वान्कामान्समश्नुते। गोभू हिरण्यदानादि सप्तकल्पशतानुगम् ३ अशून्यशयनन्नाम द्वितीयासम्प्रकीर्त्तिता। तस्यांसम्पूजयेद्विष्णुमेभिर्म्मन्त्रैर्विधानतः ४ श्रीवत्सधारिन्! श्रीकान्त! श्रीधामन्! श्रीपतेऽव्यय!। गार्हस्थ्यंमाप्रणाशम्मे यातुधर्म्मार्थकामदम् ५ अग्नयोमाप्रणश्यन्तु देवताःपुरुषोत्तम!। पितरोमाप्रणश्यन्तु मास्तुदाम्पत्यभेदनम् ६ लक्ष्म्याावियुज्यतेदेव! नकदाचिद्यथाभवान्। तथाकलत्रसम्बन्धोदेव! मामेवियुज्यताम् ७ लक्ष्म्यानशून्योवरद! शय्यांत्वंशयनंगतः। शय्याममाप्यशून्यास्तु तथैवमधुसूदन! ८ गीतवादित्रनिर्घोषं देवदेवस्यकीर्त्तयेत्। घण्टाभवेदशक्तस्य सर्ववाद्यमयीयतः ९ एवंसम्पूज्यगोविन्दमश्नीयात्तैलवर्जितम्। नक्तमक्षारलवणं यावत्तत्स्याच्चतुष्टयम् १० ततःप्रभातेसञ्जाते लक्ष्मीपतिसमन्विताम्। दीपान्नभाजनैर्युक्तां शय्यांदद्याद्विलक्षणाम् ११ पादुकोपानहच्छत्र चामरासनसंयुताम्। अभीष्टोपस्करैर्युक्तां शुक्लपुष्पाम्बरावृताम् १२ सोपधानकविश्रामां फलैर्नानाविधैर्युताम्। तथाभरणधान्यैश्चयथाशक्त्यासमन्विताम् १३ अव्यंगांगायविप्रायवैष्णवायकुटुम्बिने। दातव्यावेदविदुषेभावेनापतितायच १४ तत्रोपविश्य दाम्पत्यमलंकृत्यविधानतः। पत्न्यास्तुभाजनंदद्याद्भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् १५ ब्राह्मण

और दुःख नहो उसको आप वर्णनकीजिये १ श्रीभगवान्बोले कि श्रावणमासके कृष्णपक्षकी द्वितीयाका सदैव केशव भगवान्क्षीरसागरमें लक्ष्मीजीसमेत शयनकरतेहैं २ उसतिथिको गोविन्द भगवान् का पूजन करने से सबकामना सिद्धहोजाती हैं उसदिन गौ पृथ्वी सुवर्ण इनसबका दानकरनेसे सातसौकल्प तक विष्णुलोकमें वासरहताहै ३ यह अशून्यशयना नामवाली द्वितीया कहाती है इस द्वितीयाके दिन इस आगे वर्णनहोनेवाली विधिसे और मंत्रोंके विधानसे विष्णु भगवान् का पूजनकरै ४ कि हे श्रीवत्सधारी श्रीकान्त हे श्रीधामन् हे श्रीपति अविनाशी यह धर्म अर्थ कामका देनेवाला मेरा गृहस्थपना कभी नष्ट न होय ५ हे पुरुषोत्तम मेरे अग्निदेवता और पितर इन सबका नाश न हो और स्त्री पुरुषका भी वियोग न हो ६ हे देव जैसे कि आप अपनी लक्ष्मीजीसे कभी वियोग नहीं करते हैं इसीप्रकार मेरा भी कभी स्त्रीसे वियोग न हो हे मधुसूदनजी जैसे कि आप लक्ष्मीजीसे शून्य शय्यापर कभी शयन नहीं करतेहो उसीप्रकार मेरी भी शय्या अशून्यरहै ७।८ ऐसा कहनेके पीछे विष्णुके गीत गावे और सबप्रकारके बाजेबजावे सब न होसकें तो केवल घंटाही बजावे ९ इसप्रकारसे गोविन्दका पूजनकर तैलरहित पदार्थोंका भोजनकरे और खारी आदि पांचों नोन न खाय १० जब प्रभातहोजाय तब लक्ष्मीपति विष्णुकी मूर्त्ति समेत दीपक अन्न और वस्त्र पात्रादिसे युक्तहुई शय्याका दान करै ११ पादुका-जूतीका जोड़ा-छत्री-चमर-आसन इन सब वस्तुओंसे युक्त तथा अपनी वांछित वस्तुओं समेत श्वेत वस्त्र संयुक्त शय्याका दानकरै १२ तकिया बिछौना-अनेक प्रकारके फल आभूषण यह सब शक्तिके अनुसार तैयारकर शय्यासमेत कुटिलतारहित वेदज्ञ वैष्णव कुटुम्बी ब्राह्मण को उत्तमभावसे अर्पणकरै १३।१४ यहांदानकरनेकेसमय उसशय्यापर ब्राह्मण ब्राह्मणीको बैठाकर

स्यापिसौवर्णीमुपस्करसमन्विताम्। प्रतिमांदेवदेवस्यसोदकुंभांनिवेदयेत् १६ एवयस्तुपु
मान्कुर्यादशून्यशयनंहरेः। वित्तशाठ्येनरहितोनारायणपरायणः १७ नारीवाविधवाब्रह्म
न्! यावच्चन्द्रार्कतारकम्। नविरूपोनशोकार्त्तोदम्पतीभवतःक्वचित् १८ नपुत्रपशुरत्नानि
क्षयंयांतिपितामह! । सप्तकल्पसहस्राणिसप्तकल्पशतानिच। कुर्वन्नशून्यशयनंविष्णुलोके
महीयते १९ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

(ईश्वर उवाच) शृणुचान्यद्व्रतंश्रेष्ठं यद्रूपसम्पद्विधायकम्। भविष्यतियुगेतस्मिन्द्वा
परान्तेपितामह! । पिप्पलादस्यसंवादो युधिष्ठिरपुरःसरैः १ वसन्तंनैमिषारण्ये पिप्प
लादंमहामुनिम्। अधिगम्यतदाचैनम्प्रश्नमेकङ्करिष्यति। युधिष्ठिरोधर्म्मपुत्रो धर्म्मयुक्त
स्तपोधनम् २ (युधिष्ठिर उवाच) कथमारोग्यमैश्वर्य्यम्मतिर्धर्मेगतिस्तथा। अव्यङ्ग
ताशिवेभक्तिर्वैष्णवोवाभवेत्कथम् ३ (ईश्वर उवाच) तस्योत्तरमिदम्ब्रह्मन्! पिप्पला
दस्यधीमतः। शृणुष्वयद्वक्ष्यतिवै धर्म्मपुत्रायधार्मिकः ४ (पिप्पलाद उवाच) साधुपृष्टं
त्वयाभद्र! इदानींकथयामिते। अङ्गारव्रतमित्येतत्तवक्ष्यतिमहीपतेः ५ अत्राप्युदाहर
न्तीममितिहासम्पुरातनम्। विरोचनस्यसंवादं भार्गवस्यचधीमतः ६ प्रह्लादस्यसुत
न्दृष्ट्वा द्विरष्टपरिवत्सरम्। रूपेणाप्रतिमङ्कान्त्या सोऽहसद्भृगुनन्दनः ७ साधुसाधुम

विधिसे अलंकार पहरावै और ब्राह्मणीको भक्ष्य भोज्य पदार्थसे भराहुआ पात्र दे दे १५ और ब्राह्मण
के अर्थ विष्णु भगवान्‌की मूर्त्ति जलके कलशपर स्थापितकर सब वस्तुओं समेत दानकरै १६ इस
रीतिसे जो पुरुष अशून्य शयन नामवाले इस व्रतको करताहै और द्रव्य शाठ्य नहीं करताहै वह
स्वर्गमें वासकरता है और सौभाग्यवती स्त्री अथवा विधवा स्त्री कैसीहीहो वह सब जबतक सूर्य्य
चन्द्रमा और तारागण रहैं तबतक शोकसे रहित अपने पुरुष समेत रहती हैं और उनका वियोग भी
कभी नहीं होता १७-१८ हे पितामह उसके पुत्र पशु और रत्न इन सबका नाश भी नहीं होता-
इस अशून्य शयन व्रतको करताहुआ पुरुष सातहजार सातसौ ७७०० कल्पोंतक विष्णुलोकमें प्राप्त
रहताहै १९ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

शिवजी बोले-हे ब्रह्माजी अब द्वापर युगके अन्तमें होनेवाले रूप सम्पत्ति विधायक उस अन्य
व्रतको तुम सुनो जिसमें कि युधिष्ठिरादिकोंके साथ पिप्पलादिक ऋषियोंका संवादहै १ नैमिषा-
रण्यक्षेत्रमें वसतेहुए पिप्पलादादिक महामुनियोंके पास जाकर धर्मका पुत्र युधिष्ठिर एकप्रश्नकरैगा २
अर्थात् युधिष्ठिरने पूछा कि हे महामुने आरोग्य-ऐश्वर्य्य और धर्ममें बुद्धि यह सब कैसे बनेरहैं और
शिवजीमें तथा विष्णुमें कुटिलता रहित भक्ति कैसे होय ३ शिवजी कहते हैं कि हे ब्रह्मन् उन पि-
प्पलादादिक मुनियोंसे जैसे जो२प्रश्न युधिष्ठिरादिनेकिये उनको मैं तुमसेकहताहूं ४ पिप्पलादादि
कहतेभये कि हे महीपते तैंने यह बहुत अच्छा प्रश्नकिया अब मैं इस प्रश्नको तुमसे कहताहूं ५
इस इतिहासमें विरोचनका और भार्गवका पुरातन संवादहै-६ किसी समय सोलहवर्षकी आयुवाले
उत्तम कान्तियुक्त स्वरूपवान् प्रह्लादके पुत्र विरोचनको देखकर शुक्राचार्य्यजी हंसतेहुए यह कहने

हाबाहो विरोचन ! शिवन्तव । तत्तथाहसितन्तस्य पप्रच्छसुरसूदनः ८ ब्रह्मन् किमर्थमे तत्ते हास्यमाकस्मिकंकृतम् । साधुसाध्वितिमामेव मुक्तवांस्त्वंवदस्वमे ९ तमेवंवादिनं शुक्र उवाच वदतांवरः । विस्मयाद्व्रतमाहात्म्याद्धास्यमेतत्कृतम्मया १० पुरादक्षविनाशाय कुपितस्यतुशूलिनः । अथतद्भीमवक्त्रस्य स्वेदविन्दुर्ललाटजः ११ भित्त्वाससप्तपातालानदहत्सप्तसागरान् । अनेकवक्त्रनयनो ज्वलज्ज्वलनभीषणः १२ वीरभद्रइतिख्यातः करपादायुतैर्युतः । कृत्वासौयज्ञमथनम्पुनर्भूतलसम्भवः । त्रिजगन्निर्दहन्भूयः शिवेन विनिवारितः १३ कृतन्त्वयावीरभद्र ! दक्षयज्ञविनाशनम् । इदानीमलमेतेन लोकदाहेन कर्म्मणा १४ शान्तिप्रदातासर्व्वेषां ग्रहाणाम्प्रथमोभव । प्रेक्षिष्यन्तेजनाःपूजां करिष्यन्तिवरान्मम १५ अङ्गारकइतिख्यातिङ्गमिष्यसिधरात्मज ! । देवलोकेद्वितीयञ्च तवरूपम्भविष्यति १६ येचत्वाम्पूजयिष्यन्ति चतुर्थ्यान्त्वद्दिनेनराः । रूपमारोग्यमैश्वर्यन्तेष्वनन्तम्भविष्यति १७ एवमुक्तस्तदाशान्तिमगमत्कामरूपधृक् । सञ्जातस्तत्क्षणाद्राजन् ! ग्रहत्वमगमत्पुनः १८ सकदाचिद्व्रतांस्तस्य पूजार्घ्यादिकमुत्तमम् । दृष्ट्वा न्क्रियमाणञ्च शूद्रेणाचव्यवस्थितः ! १९ तेनत्वंरूपवाञ्जातः सुरशत्रुकुलोद्वह ! । विविधाचरुचिर्ज्जातायस्मात्तवविदूरगा २० विरोचनइतिप्राहुर्य्यस्मात्त्वान्देवदानवाः ।

लगे कि हे महाबाहु विरोचन साधु साधु अर्थात् आनन्द कुशलहै इस प्रकार हास्यपूर्वक कुशल पूछनेके पीछे वह दैत्यराज पूछने लगा ७।८ कि हे ब्रह्मन् आप सत्य २ कहिये कि आपने मुझसे साधु साधु कहके किस निमित्त हास्यकियाहै ९ विरोचनके इसवचनको सुनकर शुक्राचार्य्य बोले कि मैंने तेरे व्रतके माहात्म्यके आश्चर्य्यसे यह हास्य कियाहै १० अब व्रतके माहात्म्यको कहते हैं—पहले दक्षके शापके नाशके निमित्त शिवजीने जो क्रोधकिया तब शिवजीके मस्तकसे पसीनेकी बूंद गिरी ११ वह बूंद सात पातालोंको भेदकर सातों समुद्रोंको भस्मकरडालतीभई फिर वही बूंद अनेक मुखोंकी ज्वालाओंसे जलतेहुए नेत्रवाला महाभयंकर हाथ पैरों से युक्त होकर वीरभद्रनाम से उत्पन्न होताभया वही दक्षके यज्ञको विध्वंसकरके पृथ्वी में उत्पन्नहोकर जब त्रिलोकीको भस्म करनेलगा तब शिवजीने निवारणकरदिया १२ । १३ अर्थात् शिवजीने कहा कि हे वीरभद्र तैंने दक्षका यज्ञ विध्वंसकरदिया अब त्रिलोकीको भस्म मतकर तू शान्तिकरनेवाला ग्रहोंमें मुख्य और प्रथम होगा मेरे वरसे सब लोग तेरी पूजाकरेंगे १४ । १५ तू अंगारक नाम पृथ्वीका पुत्र भौम कहलावेगा देवलोकमें तेरा दूसरा रूप होगा १६ चतुर्थी मंगलवारके दिन जो मनुष्य तेरा पूजन करेंगे उनके रूप आरोग्य और ऐश्वर्य्य यह सब अनन्त फलदायक होंगे १७ शिवजी के ऐसे वचन सुनतेही वह पृथ्वीका पुत्र उसीसमय शान्तहोगया, फिर इसके पीछे वह ग्रहहोताभया १८ उसग्रहकी पूजा कोई शूद्र कररहाथा उससमय उसपूजनको तू देखताभया इसीसे तू ऐसा रूपवान् हुआहै और दूर पहुंचनेवाली तेरी उत्तम कान्ति होगई है इस हेतुसे तुझको देवता दानव आदिक सब विरोचन कहते हैं शूद्रके करतेहुए व्रतके देखने से तेरी रूपकी सम्पत्ति होगई इस बातको देखके मैं

शूद्रेणक्रियमाणस्यव्रतस्यतवदर्शनात् २१ ईदृशींरूपसम्पत्तिंदृष्ट्वाविस्मितवानहम्। सा धुसाध्वितितेनोक्तं महीमाहात्म्यमुत्तमम्। पश्यतोऽपिभवेद्रूपमैश्वर्यंकिमुकुर्वतः २२ य स्माच्चभक्त्याधरणीसुतस्य विनिन्द्यमानेनगवादिदानम्। आलोकितन्तेनसुरारिगर्भेसम्भू तिरेषातवदैत्य! जाता २३ (ईश्वर उवाच) अथतद्वचनंश्रुत्वा भार्गवस्यमहात्मनः। प्रह्लादनन्दनोवीरः पुनःपप्रच्छविस्मितः २४ (विरोचन उवाच) भगवंस्तद्व्रतंसम्यक् श्रोतुमिच्छामितत्त्वतः। दीयमानन्तुयद्दानं मयादृष्टंभवान्तरे २५ माहात्म्यञ्चविधिंतस्य यथावद्वक्तुमर्हसि। इतितद्वचनंश्रुत्वा पुनःप्रोवाचविस्तरात् २६ (शुक्र उवाच) चतुर्थ्य ङ्गारकदिने यदाभवतिदानव!। मृदास्नानंतदाकुर्यात् पद्मरागविभूषितः २७ अग्निर्मूर्द्धा दिवोमन्त्रं जपन्नास्तेउदङ्मुखः। शूद्रस्तूष्णींस्मरन्भौममास्तेभोगविवर्जितः २८ तथास्त मितआदित्ये गोमयेनानुलेपयेत्। प्राङ्गणंपुष्पमालाभिरक्षताभिःसमन्ततः २९ अभ्य र्च्याभिलिखेत्पद्मं कुंकुमेनाष्टपत्रकम्। कुंकुमस्याप्यभावेतु रक्तचन्दनमिष्यते ३० चत्वा रःकरकाःकार्या भक्ष्यभोज्यसमन्विताः। तण्डुलैरक्तशालीयैःपद्मरागैश्चसंयुताः ३१ चतुः कोणेषुतान्कृत्वा फलानिविविधानिच। गन्धमाल्यादिकंसर्वं तथैवविनिवेदयेत् ३२ सुव र्णशृङ्गींकपिलामथार्च्य रौप्यैःखुरैःकांस्यदोहांसवत्साम्। धुरन्धरंरक्तमतीवसौम्यं धान्यानि सप्ताम्बरसंयुतानि ३३ अंगुष्ठमात्रंपुरुषंतथैव सौवर्णमत्यायतबाहुदण्डम्। चतुर्भुजंहैम

आश्चर्य्य से हंसताथा और साधु साधु ऐसा वचन कहाथा कि अहो इस व्रतके देखनेका भी ऐसे माहात्म्य हुआ और जो कदाचित् इस भौम के व्रतको करे तो न जानिये उसको क्या फल होय १९। २२ हे दैत्यराज तैंने भौमके व्रत में निन्दा से रहितहोकर भक्तिपूर्व्वक गौ आदिका दान दे खाथा इसीसे दैत्य कुलमें भी तेरा ऐसा उत्तम रूप होगयाहै २३ शिवजी कहते हैं कि इसके पीछे वह विरोचन शुक्राचार्य्यके वचनों को सुनकर आश्चर्य्य से फिर पूछनेलगा २४ कि हे भगवन् उस व्रतको और पूर्व्वजन्ममें दियेहुए दानको मैं अच्छी रीतिसे विस्तारपूर्व्वक सुनना चाहताहूं २५ आप उस व्रतके माहात्म्य और विधिको यथार्थ रीतिसे वर्णन कीजिये इस प्रकार उसके वचनको सुनकर शुक्राचार्य्यजी विस्तारसे कहनेलगे २६ शुक्रजीने कहा—हे दानव मंगलवारी चतुर्थीके दिन मृत्तिकासे स्नानकर पुखराज रत्नसे शरीरको भूषितकरै २७ अग्निर्मूर्द्धादिव—इस मंत्रको उत्तराभि मुखहोकर जपै और जो शूद्रजाति होय तो मौनहोकर भौमका ध्यानकरै उस दिन स्त्री से भोग न करै २८ सायंकालके समय अपने आंगनको गोबरसे लीपकर चारोंओर पुष्पोंकी माला और अक्ष तोंको स्थापितकरै २९ वहां मंगलका पूजन करके केशरका अष्टदल कमल लिखे केशर न होय तो लालचन्दन से लिखना श्रेष्ठहै ३० उस स्थानमें भक्ष्य भोज्य पदार्थोंसे युक्त कियेहुए चार कलशों को स्थापितकरै उनमें साठीके चांवल और पुखराजको डाले ३१ यह सब करके उनको चारों कोनों में स्थापित करदे और उनपर अनेक प्रकारके फल पुष्प और गन्धादिक भी स्थापितकरै ३२ फिर सुवर्णके शृंग चांदीके खुर और कांस्य दोहिनी इनसबसेयुक्त सवत्सा कपिला गौ और धुरन्धर बैलका

मयेनिविष्टंपात्रे गुडस्योपरिसर्पियुक्तम् ३४ समस्तयज्ञायजितेन्द्रियायपात्रायशीलान्वयसंयुताय। दातव्यमेतत्सकलंद्विजायकुटुम्बिनेनैवतुदाम्भिकाय। समर्पयेद्विप्रवरायभक्त्या कृताञ्जलिःपूर्वमुदीर्यमन्त्रम् ३५ भूमिपुत्र! महाभाग! स्वेदोद्भव! पिनाकिनः। रूपार्थी त्वाम्प्रपन्नोहं गृहाणार्घ्यंनमोऽस्तुते ३६ मन्त्रेणानेनदत्त्वार्घ्यं रक्तचन्दनवारिणा। ततोऽर्चयेद्विप्रवरं रक्तमाल्याम्बरादिभिः ३७ दद्यात्तेनैवमन्त्रेणभौमङ्गोमिथुनान्वितम्। शय्याञ्चशक्तितोदद्यात्सर्वोपस्करसंयुताम् ३८ यद्यदिष्टतमंलोके यच्चास्यदयितंगृहे। तत्तद्गुणवतेदेयन्तदेवाक्षयमिच्छता ३९ प्रदक्षिणंततःकृत्वाविसर्ज्यद्विजपुङ्गवम्। नक्तमक्षारलवणमश्नीयाद्घृतसंयुतम् ४० भक्त्यायस्तुपुनःकुर्यादेवमङ्गारकाष्टकम्। चतुरोवाथवातस्य यत्पुण्यन्तद्वदामिते ४१ रूपसौभाग्यसम्पन्नः पुनर्जन्मनिजन्मनि। विष्णौवाथशिवे भक्तः सप्तद्वीपाधिपोभवेत् ४२ सप्तकल्पसहस्राणि रुद्रलोकेमहीयते। तस्मात्त्वमपिदैत्येन्द्र! व्रतमेतत्समाचर ४३ (पिप्पलाद उवाच) इत्येवमुक्त्वाभृगुनन्दनोऽपि जगामदैत्यश्चचकारसर्वम्। त्वंचापिराजन्! कुरुसर्वमेत यतोऽक्षयंवेदविदोवदन्ति ४४ (ई

ब्राह्मणको दानकरै उस गौ और वृषभके साथ सप्तधान्योंकाभी सात वस्त्रोंमें बांधकर दानकरै ३३ अंगुष्ठ प्रमाण सुवर्णका पुरुष बनवावै परन्तु उसकी भुजा लंबी बनवावै उस चार भुजावाली मूर्तिको सुवर्णकेही पात्रमें स्थापितकरै और उस मूर्ति समेत पात्रको घृत युक्त गुड़पर स्थापितकरै ३४ फिर संपूर्ण यज्ञकरनेवाला जितेन्द्रिय पुरुष सत्पात्र शील गुण युक्त कुटुम्बी ब्राह्मणको वह सब दानकरदे पाखण्डीको कभी न दे उत्तम ब्राह्मणके अर्थ दानदेकर अंजली बांध खड़ाहोकर इस आगे कहे हुए मंत्रका उच्चारणकरै ३५ मन्त्र—हे भूमि पुत्र हे महाभाग तुम शिवजीके पसीनेसे उत्पन्नहुए हो मैं रूपके निमित्त तुम्हारी शरणहुआहूं आप प्रसन्न हूजिये आपके अर्थ नमस्कारहै मेरे अर्घको ग्रहण करो ३६ इस मन्त्र करके रक्तचन्दनसे मिश्रित जलका अर्घदानकरै फिर लालचन्दन पुष्प और वस्त्रादिकोंसे उत्तम ब्राह्मणका पूजनकरै ३७ और इसी मन्त्रसे भौमके निमित्त गो मिथुन अर्थात् एक गौ और बैलका दानकरै फिर शक्तिके अनुसार संपूर्ण वस्तुओंसे संयुक्तकीहुई सुन्दर शय्याका दानकरै ३८ संसारमें जो२ उत्तम वस्तुहैं अथवा व्रतकरनेवालेको जो२ प्रिय वस्तुहोय वह सब अक्षय गुणों की इच्छाकरनेवाला पुरुष ब्राह्मणके अर्थ दानकरै ३९ इसके अनन्तर ब्राह्मणकी प्रदक्षिणाकरके विसर्जन करदेवै फिर रात्रिमें घृत संयुक्त अलौना अन्न भोजनकरै ४० जो पुरुष इस मंगल के आठवा चार व्रतोंको भक्तिपूर्वक उक्तरीति से करता है उसको जो पुण्य फल होताहै, उसको मैं कहताहूं ४१ कि व्रतकरनेवाला रूप सौभाग्य से सम्पन्न जन्म जन्ममें विष्णु और शिवजीकी भक्तिका करनेवाला होकर सातोंद्वीपों का राजाहोता है ४२ मरनेकेपीछे सातहज़ार कल्पोंतक शिवलोकमें निवासकरता है हे दैत्येन्द्र इस हेतु से तुमभी इस व्रतको करो ४३ पिप्पलाद मुनिकहते हैं कि इस प्रकारसे इस व्रतको कहकर वह शुक्राचार्य्य जी चलेजातेभये और वह दैत्य उसीप्रकार से इस व्रतको विधिपूर्वक करताभया हे राजन् इस अक्षय व्रतको तुमभी भक्तिसेकरो ४४ इसप्रकार पिप्प-

श्वर उवाच) तथेतिसंपूज्यसपिप्पलादं वाक्यञ्चकाराद्भुतवीर्यकर्मा। शृणोतियश्चैनमनन्यचेतास्तस्यापिसिद्धिंभगवान्विधत्ते ४५ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

(पिप्पलाद उवाच) अथातःशृणुभूपाल ! प्रतिशुक्रंप्रशान्तये। यत्रारम्भेऽवसानेच तथाशुक्रोदयेत्विह १ राजतेवाथसौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवापुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते सिततण्डुलपूरिते २ विधायराजतंशुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। मन्त्रेणानेनतत्सर्वं सामगायनिवेदयेत् ३ नमस्तेसर्वलोकेश ! नमस्तेभृगुनन्दन !। कवे ! सर्वार्थसिद्ध्यर्थं गृहाणार्घ्यंनमोऽस्तुते ४ एवमस्योदयेकुर्वन् यात्रादिषुचभारत !। सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोकेमहीयते ५ यावच्छुक्रस्यनहृता पूजासामाल्यकैःशुभैः। वटकैःपूरिकाभिश्च गोधूमैश्चणकैरपि। तावदन्नंनचाश्नीयात् त्रिभिःकामार्थसिद्धये ६ तद्वद्वाचस्पतेःपूजां प्रवक्ष्यामियुधिष्ठिर !। सुवर्णपात्रेसौवर्णममरेशपुरोहितम् ७ पीतपुष्पाम्बरयुतं कृत्वास्नात्वाथसर्षपैः। पलाशाश्वत्थयोगेन पञ्चगव्यजलेनच ८ पीताङ्गरागवसनो घृतहोमन्तुकारयेत्। प्रणम्यचगवासार्द्धं ब्राह्मणायनिवेदयेत् ९ नमस्तेऽङ्गिरसान्नाथ ! वाक्पते ! चबृहस्पते !। क्रूरग्रहैःपीडितानामस्मतायनमोनमः १० संक्रान्तावस्यकौन्तेय ! यात्रास्वभ्युदयेषुच। कुर्वन्बृहस्पतेःपूजां सर्वान्कामान्समश्नुते ११ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

लाद मुनिके वचनों को सुनकर अद्भुत पराक्रमवाले राजायुधिष्ठिर भी इसव्रतको करतेभये जो पुरुष इस व्रतको एकाग्र चित्तसे सुनेगा उसकी भी सिद्धिहोगी ४५ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

पिप्पलाद बोले—हे राजन् अब शुक्रदोषकी प्रशान्तिको सुनो शुक्रके उदय होनेमें तथा अस्तहोने में चांदी वा सुवर्ण अथवा कांसीका पात्र बनवाकर उसको श्वेत पुष्प वस्त्र और चावलों से पूरित करके १ । २ चांदीकाही शुक्रबनवा मोतियों से आभूषितकर उस पात्र पर स्थापित करके आगे लिखेहुए वचनोंकोकहकर सामवेदज्ञ ब्राह्मणके अर्थ दानकरै ३ मन्त्रवाक्य—हे सर्वलोकेश हे भृगुनन्दन हे कवे आपको नमस्कार है इसप्रकार शुक्रके उदय होने के समय इनवस्तुओंका दानकरनेवाला पुरुष यात्रादिकों में सब कामनादिकों को प्राप्तहोकर विष्णुलोकमें प्राप्तहोता है और जब तक श्वेत पुष्प बड़े पूरी और गेहूं चने आदिके बनेहुए पक्वान्नसे शुक्रकी पूजानहीं करले तब तक आपभोजन नहींकरै ऐसे नियमकरनेवाले पुरुषके अर्थ धर्म और काम यह तीनों पूरेहोतेहैं अर्थात् सिद्धहोतेहैं ४।६ हे युधिष्ठिर इसीप्रकार से बृहस्पतिका भी पूजन कहते हैं उसको भी सुनो बृहस्पतिकी सुवर्णमयी मूर्त्ति बनवाकर उसको भी सुवर्ण पात्रमेंही स्थापितकर पीतवस्त्रपहनावै और आप सरसोंसे संयुक्त जल वा ढाक और पीपल इनके योगका जल और पंचगव्य इन सबसे स्नानकरै ७ । ८ और पीले वस्त्र पहन पीलाही चन्दन लगाकर घृतसे हवनकरै फिर बृहस्पतिको प्रणामकर गोदान समेत उसे

(ब्रह्मोवाच) भगवन्! भव संसार सागरोत्तारकारक!। किञ्चिद्व्रतंसमाचक्ष्व स्वर्गारोग्यसुखप्रदम् १ (ईश्वर उवाच) सौरंधर्मंप्रवक्ष्यामि नाम्नाकल्याणसप्तमीम्। विशोकसप्तमींतद्वत् फलाढ्यांपापनाशिनीम् २ शर्करासप्तमींपुण्यां तथाकमलसप्तमीम्। मन्दारसप्तमींतद्वच्छुभदांशुभसप्तमीम् ३ सर्वानन्तफलाःप्रोक्ताः सर्वादेवर्षिपूजिताः। विधानमासांवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ४ यदातुशुक्लसप्तम्यामादित्यस्यदिनंभवेत्। सातु कल्याणिनीनाम विजयाचनिगद्यते ५ प्रातर्गव्येनपयसा स्नानमस्यांसमाचरेत्। ततः शुक्लाम्बरःपद्ममक्षताभिःप्रकल्पयेत् ६ प्राङ्मुखोऽष्टदलंमध्ये तद्वद्वृत्ताञ्चकर्णिकाम्। पुष्पाक्षताभिर्देवेशं विन्यसेत्सर्व्वतःक्रमात् ७ पूर्व्वेणतपनायेति मार्त्तण्डायेतिचानले। याम्येदिवाकरायेति विधात्रइतिनैर्ऋते ८ पश्चिमेवरुणायेति भास्करायेतिचानिले। सौम्येवैकर्तनायेति रवयेचाष्टमेदले ९ आदावन्तेचमध्येच नमोऽस्तुपरमात्मने। मन्त्रैरेभिः समभ्यर्च्य नमस्कारान्तदीपितैः १० शुक्लवस्त्रैःफलैर्भक्ष्यैर्धूपमाल्यानुलेपनैः। स्थण्डिले पूजयेद्भक्त्या गुडेनलवणेनच ११ ततोव्याहृतिमन्त्रेण विसर्जेद्द्विजपुङ्गवान्। शक्तितः

गुरुमूर्तिका दानकरै ९ और यह कहै कि हे वृहस्पति जी आपक्रूरग्रहोंसे पीड़ित हुए पुरुषोंको कुशल देने वाले हो आपके अर्थ नमस्कार है १० जब वृहस्पति राशिपर गमनकरैं अथवा यात्राकरनेके दिन जो पुरुष इस रीतिसे वृहस्पतिकी पूजाकरता है वह सब कामनाओंको प्राप्तहोता है ११॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२॥

ब्रह्माजी बोले–हेभगवन् शिवजी आप संसारसागरसे पारउतारनेवाले हैं इसीसे संसारसे उद्धार होनेका कोई व्रत ऐसा कहिये जो स्वर्गका और आरोग्यकाभी देनेवालाहोय १ शिवजीबोले–हेब्रह्माजी मैं उस सूर्य्य के व्रतको कहताहूं जिसका नाम कल्याणसप्तमी और विशोकसप्तमी विख्यातहै यह दोनों नामवाली सप्तमीपापोंकी नाशकरनेवाली और उत्तम फलोंकी देनेवाली हैं २ इसीप्रकार शर्करासप्तमी-पवित्रकमलसप्तमी–मन्दारसप्तमी–और शुभसप्तमी–यह सब सप्तमी अनन्त फलकी देनेवालीवर्णन करीहैं यह सब सप्तमियां संपूर्ण देवता और ऋषियों से पूजित हुईहैं इनसबका विधान मैं यथार्थ क्रमसे वर्णन करताहूं ३। ४ जब शुक्लपक्षकी सप्तमीको रविवारहोवे वह कल्याणिनी और विजयानामवाली सप्तमीकहाती है ५ उसदिन प्रातःकाल पंचगव्य से स्नानकर श्वेत वस्त्रोंको धारण कियेहुए कमल अक्षत आदिकों समेत पूर्वाभिमुख बैठकर अष्टदल कमलबनावे उसकमलकी गोलकर्णिका बनावै फिर उस कमल के ऊपर पुष्प अक्षतादिकों से सूर्य्यदेवताको स्थापितकर पूर्वकी ओर तपनायनमः मार्त्तण्डायनम यह कहकर अग्निकोणमें अक्षतधरै दिवाकरायनमः कहकर दक्षिणमें विधात्रेनमः कहकर नैर्ऋत्यकोणमें ६। ८ और वरुणायनमः यह कहकर पश्चिममें अक्षतधरै–भास्करायनमः कहके वायव्यमें और वैकर्त्तनायनमः कहकर उत्तरकी ओर अक्षत रक्खे और आठवेंदलपर रवयेनमः यह कहकर अक्षत स्थापित करे ९ आदिअन्त और मध्यमें परमात्मनेनमः यह उच्चारणकरै इन सबमन्त्रों से दिग्देवताओंको नमस्कारकरै १० श्वेतवस्त्र–फल–भक्ष्यपदार्थ धूप–पुष्पऔर चन्दनादिकों से

पूजयेद्भक्त्या गुडक्षीरघृतादिभिः। तिलपात्रंहिरण्यञ्च ब्राह्मणायनिवेदयेत् १२ एवंनिय-
मकृत्सुप्त्वा प्रातरुत्थायमानवः। कृतस्नानजपोविप्रैः सहैवघृतपायसम् १३ भुक्त्वाचवेद
विदुषे विडालव्रतवर्जिते। घृतपात्रंसकनकं सोदकुम्भन्निवेदयेत् १४ प्रीयतामत्रभगवा
न्परमात्मादिवाकरः। अनेनविधिनासर्वम्मासिमासिव्रतञ्चरेत् १५ ततस्त्रयोदशेमासि गा
वेदद्यात्त्रयोदश। वस्त्रालङ्कारसंयुक्ताः सुवर्णास्याःपयस्विनीः १६ एकामपिप्रदद्याद्वा वि
त्तहीनोविमत्सरः। नवित्तशाठ्यंकुर्वीत यतोमोहात्पतत्यधः १७ अनेनविधिनायस्तु कु
र्यात्कल्याणसप्तमीम्। सर्वपापविनिर्मुक्तः सूर्य्यलोकेमहीयते। आयुरारोग्यमैश्वर्यमनन्त
मिहजायते १८ सर्वपापहरानित्यं सर्वदैवतपूजिता। सर्वदुष्टोपशमनी सदाकल्याणसप्त
मी १९ इमामनन्तफलदांयस्तुकल्याणसप्तमीम्। शृणोतिपठतेचेहसर्वपापैःप्रमुच्यते २०

इति श्रीमत्स्यपुराणे त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३॥

(ईश्वर उवाच) विशोकसप्तमीन्तद्वद्वक्ष्यामिमुनिपुङ्गव!। यामुपोष्यनरःशोकं नक
दाचिदिहाश्नुते १ माघेकृष्णतिलैःस्नात्वा षष्ठ्यांवैशुक्लपक्षतः। कृताहारःकृसरया दन्त
धावनपूर्वकम्। उपवासव्रतंकृत्वा ब्रह्मचारीभवेन्निशि २ ततःप्रभातउत्थाय कृतस्नानंज

वेदीके ऊपर सूर्य्यका पूजनकरै गुड़तथा नमककादानकरै ११ इसके पीछे भक्तिपूर्वक उत्तम ब्रा-
ह्मणोंका गुड़घृत और दूधसे पूजनकरके शक्तिके अनुसार तिलपात्र और सुवर्णका उन ब्राह्मणों के
अर्थ दानकरै १२ फिर व्याहृति के मन्त्रों से द्विजोत्तमों का विसर्जन करदे ऐसेनियमकरके शयनकरै
फिर प्रातःकाल उठ स्नानजपादिकर ब्राह्मणोंके साथही घृत खीरका भोजनकरै १३ भोजन करनेके
पीछे वेदज्ञहिंसा रहित ब्राह्मणको सुवर्ण से युक्त घृतपात्र जलके कलश समेत दानकरदे १४ और
यह वचनकहे कि परमात्माभगवान् सूर्य्य प्रसन्नहो-इसविधिसे प्रतिमास सूर्य्यकाव्रतकरै फिरतेरहवें
महीने में वस्त्रालंकार और सुवर्ण के सींगों समेत दूध वाली तेरह १३ गौओं का दानकरै १५।१६
जो द्रव्यहीन होयतो एकगौका भी दानदेना योग्यहै इसव्रतका करनेवाला कुटिलता और वित्तशाठ्य
आदि न करै जो अज्ञानी पुरुष ऐसा करते हैं वह नरकमें प्राप्तहोते हैं १७ इसविधिसे जो कल्याण सप्त-
मीका व्रतकरताहै वह सब पापों से छुटकर सूर्य्यलोक में प्राप्तहोताहै और उसके आयुआरोग्य और
ऐश्वर्य्यादिक भी अनन्तगुणवाले होजातेहैं १८ यह सप्तमी सबपापोंकी हरनेवाली सम्पूर्ण दुःखोंकी
दूरकरनेवाली सब देवताओं से पूजित हुई सदाकल्याणसप्तमी कहाती है १९ जो कोई इस अनन्त
कल्याणवाली और अनन्तफलवालीकल्याणसप्तमी को सुनताहै अथवा पढ़ता पढ़ाताहै वह सब
पापों से छुटजाताहै २० ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिसप्ततितमोध्यायः ७३॥

शिवजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ अब विशोकसप्तमीका वर्णनकरते हैं इसका व्रतकरनेवाला मनुष्य
शोकको कभी नहीं प्राप्त होताहै १ माघशुक्लाषष्ठीको तिलोंसेस्नानकरके मूंगखिचड़ीअथवा दाल चा-
वलका भोजनकरै फिर प्रातःकाल सप्तमी के दिन दन्तधावनपूर्वक स्नानकरके जपादिक करता
हुआ ब्रह्मचर्य्यमेंरहै और अर्कायनमः यह कहकर सुवर्णके कमलको पूजे फिर लालकनेर अथवा दो

पःशुचिः। कृत्वातुकाञ्चनम्पद्ममर्कायेतिचपूजयेत् ३ करवीरेणरक्तेन रक्तवस्त्रयुगेनच।
यथाविशोकम्भुवनन्त्वयैवादित्य! सर्वदा। तथाविशोकतामेऽस्तु त्वद्भक्तिःप्रतिजन्मच ४
एवंसम्पूज्यषष्ठ्यान्तु भक्त्यासम्पूजयेद्द्विजान्। सुप्त्वासम्प्राश्यगोमूत्रमुत्थायकृतनै
त्यकः ५ सम्पूज्यविप्रानन्नेन गुडपात्रसमन्वितम्। तद्वस्त्रयुग्मम्पद्मञ्च ब्राह्मणायनिवेदये
त् ६ अतैललवणम्भुक्त्वासप्तम्याम्मौनसंयुतः। ततःपुराणश्रवणंकर्तव्यम्भूतिमिच्छता ७
अनेनविधिनासर्वमुभयोरपिपक्षयोः। कृत्वायावत्पुनर्माघशुक्लपक्षस्यसप्तमी ८ व्रतान्तेक
लशन्दद्यात्सुवर्णकमलान्वितम्। शय्यांसोपस्करान्दद्यात् कपिलाञ्चपयस्विनीम् ९ अने
नविधिनायस्तु वित्तशाठ्यविवर्जितः। विशोकसप्तमींकुर्यात् सयातिपरमाङ्गतिम् १० या
वज्जन्मसहस्राणां साग्रंकोटिशतंभवेत्। तावन्नशोकमभ्येति रोगदौर्गत्यवर्जितः ११ यंयं
प्रार्थयतेकामं तन्तमाप्नोतिपुष्कलम्। निष्कामःकुरुतेयस्तु सपरंब्रह्मगच्छति १२ यःपठे
च्छृणुयाद्वापिविशोकाख्याञ्चसप्तमीम्। सोऽपीन्द्रलोकमाप्नोतिनदुःखीजायतेक्वचित् १३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

(ईश्वर उवाच) अन्यामपिप्रवक्ष्यामि नाम्नातुफलसप्तमीम्। यामुपोष्यनरःपापा
द्विमुक्तःस्वर्गभाग्भवेत् १ मार्गशीर्षेशुभेमासि सप्तम्यांनियतव्रतः। तामुपोष्याथकमलं

रक्तवस्त्रों समेत करके उसका दानकरदे और ऐसावचनकहै कि हे सूर्य्यदेवता जैसे तुम्हारा लोक सदा शोकरहितरहताहै इसीप्रकार मैं भी शोकसेरहितरहूं और मेरी भक्तिकाउदयहोय २।४ इसीप्रकार भक्तिसेषष्ठी के दिन ब्राह्मणोंका पूजनकरै और प्रातःकाल उठ गोमूत्रका आचमनकर नित्यक्रिया पूर्व्वक ५ अन्नसे ब्राह्मणोंका पूजनकरके गुडसे वा दो वस्त्रोंसे युक्तकियेहुए उस पूर्व्वोक्त कमलको ब्राह्मणके अर्थ दानकरै ६ सप्तमीके दिन तेलका और नमकका भोजननहींकरै मौन धारणरक्खे फिर ऐश्वर्य्यकी इच्छाकरनेवाला पुरुष पुराणको सुनै ७ इस सब विधिसे दोनों पक्षोंमें इसव्रतको अगले माघकी शुक्लपक्षकी सप्तमीतककरै ८ फिरव्रतके अन्तमें सुवर्ण के कमलसे युक्तकियेहुए कलशका दानकरै और सर्व सामग्री समेत शय्याका दानकरै इसके साथदूधवाली गौका भी दानकरै जो पुरुष वित्तकीशठता से रहित इस विधिके अनुसार भक्तिपूर्वक विशोक सप्तमीका व्रतकरताहै वह परमगति को प्राप्तहोताहै ९।१० उसको दशपद्मजन्मोंतक कभी शोक नहीं होताहै और रोग दुःखादि से भी रहित होताहै ११ इस व्रतकाकर्त्ता जिन २ कामनाओंकी इच्छाकरताहै वह सब कामनाउसको प्राप्त होती हैं और जो निष्कामहोकर करताहै वह परब्रह्ममें लीनहोजाताहै १२ इस व्रतको जो पढ़ता सुनता अथवा सुनाताहै वहभी इन्द्रलोक में प्राप्त होकर कभी दुखी नहीं होता १३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां चतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

शिवजीबोले-कि अब उसफलवाली सप्तमीका वर्णन करते हैं जिसके दिन व्रतकरनेवाला पुरुष पापोंसे छूटकर स्वर्गमें जाता है १ मार्गशिरकी शुक्लासप्तमीके दिन इसरीतिसे व्रतकरै कि एक सुवर्ण का कमल बनाकर खांड़से संयुक्तकरके उसको किसी कुटुम्बी ब्राह्मणके अर्थ दानकरै और चारतोले

कारयित्वातुकाञ्चनम् २ शर्करासंयुतंदद्याद् ब्राह्मणायकुटुम्बिने । रविंकाञ्चनकंकृत्वा पलस्यैकस्यधर्म्मवित् । दद्याद्विकालवेलायां भानुर्मेप्रीयतामिति ३ भक्त्यातुविप्रान्संपूज्य चाष्टम्यांक्षीरभोजनम् । दत्त्वाकुर्यात्फलयुतं यावत्स्यात्कृष्णसप्तमी ४ तामप्युपोष्यविधिवदनेनैवक्रमेणतु । तद्वद्धेमफलंदत्त्वा सुवर्णकमलान्वितम् ५ शर्करापात्रसंयुक्तं वस्त्रमाल्यसमन्वितम् । संवत्सरञ्चतेनैव विधिनोभयसप्तमीम् ६ उपोष्यदद्यात्क्रमशः सूर्यमन्त्रमुदीरयेत् । भानुरर्कोरविर्ब्रह्मा सूर्यःशक्रोहरिःशिवः । श्रीमान्विभावसुस्त्वष्टा वरुणःप्रीयतामिति ७ प्रतिमासञ्चसप्तम्यामेकैकंनामकीर्त्तयेत् । प्रतिपक्षंफलत्याग मेतत्कुर्वन्समाचरेत् ८ व्रतान्तेविप्रमिथुनम्पूजयेद्वस्त्रभूषणैः । शर्कराकलशंदद्याद्धेमपद्मदलान्वितम् ९ यथानविफलाःकामास्त्वद्भक्तानांसदारवे । तथानंतफलावाप्तिरस्तुमेसप्तजन्मसु १० इमामनंतफलदां यःकुर्यात्फलसप्तमीम् । सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्य्यलोकेमहीयते ११ सुरापानादिकङ्किञ्चिद्यदत्रामुत्रवाकृतम् । तत्सर्वंनाशमायाति यःकुर्यात्फलसप्तमीम् १२ कुर्वाणःसप्तमीञ्चेमां सततंरोगवर्जितः । भूतान्भव्यांश्चपुरुषांस्तारयेदेकविंशतिम् । यःशृणोतिपठेद्वापि सोऽपिकल्याणभाग्भवेत् १३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

सुवर्णकी मूर्त्तिबनवाके सप्तमीकेदिन प्रदोषकालमें धर्मज्ञपुरुष ब्राह्मणको दानकरै और यह वचनभी कहै कि हे सूर्य्यमुझपर प्रसन्नहूजिये २।३ फिर भक्तिसे अष्टमीके दिन ब्राह्मणोंका पूजनकरके उनको दूधका भोजन करवावै और प्रतिमास कृष्णपक्षकी सप्तमीके दिनफलकादानकरै ४ इसविधिसे सुवर्णकाफल और कमल शर्करायुक्त पात्र वस्त्र और पुष्प इनसबका दान वर्ष दिनतक महीने २ की दोनोंपक्षकीसप्तमीके दिनकरना योग्य है ५। ६ ऐसे व्रतकरके महीनों के क्रमसे भानु १ अर्क २ रवि ३ ब्रह्मा ४ सूर्य्य ५ शुक्र ६ हरि ७ शिव ८ श्रीमान् ९ विभावसु १० त्वष्टा ११ वरुण १२ इनदेवताओंके उद्देश से दानकरै ७ महीने २ की सप्तमीको एक २ नामकाउच्चारणकरै-पक्ष २ की सप्तमीको फलोंकादानकरै ८ व्रतके अन्तमें ब्राह्मण ब्राह्मणी के जोड़ेका पूजनकरै वस्त्राभरण देकर सुवर्णके कलशसे संयुक्तकिया खांड़सेभराहुआ कलशदानकरै ९ और यह वचनकहै कि हे सूर्य जैसे तेरे भक्तोंके मनोरथ कभी निष्फल नहीं होतेहैं उसीप्रकार जन्म जन्मान्तरों में मुझको भी अनन्त फलोंकी प्राप्तिहो १० इस अनन्तफलदेनेवाली सप्तमी को जो व्रतकरता है वह सब पापोंसे विमुक्त होकर सूर्य्य लोकमें प्राप्तहोता है ११ और मदिरा पानादिक जो कुकर्म कियेहोंय वह सब तत्कालही नष्टहोजाते हैं १२ इस प्रकारसे इस सप्तमी के व्रत करनेवाले को कभी रोग नहीं होता और आगे पीछे होनेवाले इक्कीस पुरुषों को उद्धार करताहै सो इस व्रतको पढ़ता सुनता अथवा सुनाताहै वह भी कल्याण का अधिकारी होताहै १३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

(ईश्वर उवाच) शर्करासप्तमींवक्ष्ये तद्वत्कल्मषनाशिनीम् । आयुरारोग्यमैश्वर्यं ययानन्तम्प्रजायते १ माधवस्यसितेपक्षे सप्तम्यान्नियतव्रतः । प्रातःस्नात्वातिलैःशुक्लैः शुक्लमाल्यानुलेपनः २ स्थण्डिलेपद्ममालिख्य कुंकुमेनसकर्णिकम् । तस्मिन्नमःसवित्रेतु गन्धधूपौनिवेदयेत् ३ स्थापयेदुदकुंभञ्च शर्करापात्रसंयुतम् । शुक्लवस्त्रैरलंकृत्य शुक्लमाल्यानुलेपनैः । सुवर्णेनसमायुक्तं मन्त्रेणानेनपूजयेत् ४ विश्ववेदमयोयस्माद्वेदवादीतिपठ्यसे । सर्वस्यामृतमेवत्वमतःशान्तिम्प्रयच्छमे ५ पञ्चगव्यन्ततःपीत्वा स्वपेत्तत्पार्श्वतःक्षितौ । सौरसूक्तंस्मरन्नास्ते पुराणश्रवणेनच ६ अहोरात्रेगतेपश्चादष्टम्यांकृतनैत्यकः । तत्सर्वंविदुषेतद्वद्ब्राह्मणायनिवेदयेत् ७ भोजयेच्छक्तितोविप्राञ्छर्करा घृतपायसैः । भुञ्जीतातैललवणं स्वयमप्यथवाग्यतः ८ अनेनविधिनासर्वं मासिमासि समाचरेत् । संवत्सरान्तेशयनं शर्कराकलशान्वितम् ९ सर्वोपस्करसंयुक्तं तथैकांगांपयस्विनीम् । गृहञ्चशक्तिमान्दद्यात्समस्तोपस्करान्वितम् १० सहस्रेणाथनिष्काणां कृत्वा दद्याच्छतेनवा । दशभिर्वाथनिष्केण तदर्द्धेनापिशक्तितः ११ सुवर्णाश्वःप्रदातव्यः पूर्ववन्मंत्रवादनम् । नवित्तशाठ्यंकुर्वीत कुर्वन्दोषंसमश्नुते १२ अमृतम्पिवतोवक्त्रात्सूर्य्यस्या

शिवजी कहते हैं कि इसीप्रकार उस सबपापोंकी नाशकरनेवाली शर्करा सप्तमीको भी वर्णनकरताहूं जिसके कि प्रभावसे आयु आरोग्य और ऐश्वर्य्य यह सब प्राप्तहोते हैं-१ वैशाख शुक्ला सप्तमीको प्रातःकाल श्वेततिल युक्त जलसे स्नानकर श्वेतपुष्प अनुलेप और चन्दनादिक धारणकरै २ वेदीमें केशरसे उत्तम दलोंसमेत कमल लिखे उसमें सवित्रेनमः इस मंत्रसे पुष्प गंधादिचढ़ावै ३ फिर शर्कराके पात्रसमेत जलका कलश उसपर स्थापितकरै और श्वेत चन्दन अक्षत पुष्प और वस्त्रसे उसको आच्छादितकरै और सुवर्ण से युक्तकरके इन वचनों से पूजनकरै ४ कि विश्वमें आप वेदमय हो इस हेतुसे वेदवादी कहातेहो तुम सबको अमृतरूप हो इस कारण आप मेरी शान्तिकरो यह सूर्य्य के मंत्रका अर्थ है ५ फिर पंचगव्य पीकर उसमूर्त्तिकेही समीप पृथ्वीपर शयनकरै सूर्य्यकेही मंत्रका पाठकरै--पुराणकोसुनै ६ जब एकदिन और रात्रि व्यतीत होजाय तब अष्टमी के दिन नित्य कर्मकरके वह सब वस्तु ब्राह्मणको दे दं ७ शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों का भोजनकरवावे परन्तु शर्करा--घृत और खीर इन्हीं वस्तुओं को खिलावे तेल और निमक का भोजन नहीं करावै और आपभी नियमपूर्वक इसी विधिसे भोजनकरै इस विधिसे प्रतिमास संपूर्ण आचरणकरै जब एकवर्ष व्यतीत होजाय तब शर्कराके पात्रसमेत कलश संपूर्ण शय्याकी सामग्रियों से और उत्तम गौसे युक्त शय्याका दानकरै और जो सामर्थ्यहोय तो सबखानेपीने आदि गृहस्थीकी द्रव्योंसे पूर्ण कियाहुआ गृहका दानकरै फिर यथाशक्ति सौ १०० निष्कका (एकनिष्कचाररुपयेका) वा दश निष्कका अथवा पांचही निष्कों का एक सुवर्णका घोड़ाबनवाके पूर्व्व कहेहुए मंत्रोंसे दानकरै वित्तशाठ्य न करै और खर्चकरने में लोभ न करै क्योंकि लोभकरनेमें दोषहोता है ८।१२ अमृत पीतेहुए सूर्य्यके मुखसे अमृत की बूंदगिरतीहुई उसीसे शाली चावल मूंग और ईख यह तीनों वस्तु उत्पन्न होतीभईं इनतीनों में परम उत्तम

मृतबिंदवः। निपेतुर्यैतदुत्थामी शालिमुद्रेक्षवःस्मृताः १३ शर्करातुपरातस्मादिक्षुसारो
ऽमृतात्मवान्। इष्टारवेरतःपुण्या शर्कराहव्यकव्ययोः १४ शर्करासप्तमीचेयं वाजिमेध
फलप्रदा। सर्वदुष्टप्रशमनी पुत्रपौत्रप्रवर्द्धिनी १५ यःकुर्यात्परयाभक्त्या सर्वैसद्गतिमाप्नु
यात्। कल्पमेकंवसेत्स्वर्गे ततोयातिपरम्पदम् १६ इदमनघंयःशृणोतिस्मरेद्वा परिपठती
हसुरेश्वरस्यलोके। मतिमपिचददातिसोऽपिदेवैरमरवधूजनमालयाभिपूज्यः १७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे षट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

(ईश्वर उवाच) अतःपरम्प्रवक्ष्यामि तद्वत्कमलसप्तमीम्। यस्याःसङ्कीर्तनादेव तु
ष्यतीहदिवाकरः १ वसन्तामलसप्तम्यां स्नातःसन्गौरसर्षपैः। तिलपात्रेचसौवर्णं विधा
यकमलंशुभम् २ वस्त्रयुग्मावृतंकृत्वा गंधपुष्पैःसमर्चयेत्। नमःकमलहस्ताय नमस्तेवि
श्वधारिणे ३ दिवाकर! नमस्तुभ्यं प्रभाकर! नमोऽस्तुते। ततोद्विकालवेलायामुदकुम्भ
समन्विताम् ४ विप्रायदद्यात्सम्पूज्य वस्त्रमाल्यविभूषणैः। शक्त्याचकपिलांदद्यादलंकृ
त्यविधानतः ५ अहोरात्रेगतेपश्चादष्टम्याम्भोजयेद्द्विजान्। यथाशक्त्याथभुञ्जीत मां
सतैलविवर्जितम् ६ अनेनविधिनाशुक्लसप्तम्यांमासिमासिच। सर्वसमाचरेद्भक्त्या वि
त्तशाठ्यविवर्जितः ७ व्रतांतेशयनंदद्यात्सुवर्णकमलान्वितम्। गाश्चदद्यात्स्वशक्त्यातुसु

ईखसे खांड़बनी है क्योंकि ईखका सार अमृतासव के समान है इस हेतुसे हव्य कव्य दानमें सूर्य्य को शर्कराही प्रियहै १३-१४ इस शर्करा सप्तमीको अश्वमेध यज्ञके समान फलदेनेवाली वर्णनकी है यह सप्तमी संपूर्ण रोगोंको शान्तकरती है पुत्र पौत्रोंको बढ़ाती है १५ जो इस व्रतको परमभक्ति से करताहै उसकी सद्गतिहोतीहै वह व्रत कर्त्ता पुरुष एक कल्पतक तो स्वर्गलोकमें वासकरताहै और फिर परमपदको प्राप्तहोजाता है १६ जो कोई इस व्रतको सुनताहै स्मरण करताहै वा पढ़ताहै वह इन्द्रके लोकमें प्राप्तहोताहै जो इस व्रतके करनेकी किसीको अनुमति देताहै वहभी देवताओं की स्त्रियों से पूजित होकर स्वर्ग में वास करता है १७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६॥

शिवजी कहते हैं कि अब मैं उस कमल सप्तमीको कहताहूं जिसके संकीर्त्तनमात्र सेही सूर्य्य प्रसन्नहोते हैं १ वसन्त ऋतुमें शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन गौरी सरसोंसे स्नानकरके तिलोंका पात्र बनावै उसमें एकसुवर्णका कमल बनावै २ उसको दो वस्त्रोंसे आच्छादितकर गन्धपुष्पादिसे पूजन करै कमलहस्तायनमः विश्वधारिणेनमः इनमन्त्रोंका उच्चारणकरै ३ और कहै कि हे दिवाकर तुम को नमस्कार और हे प्रभाकर तुमको नमस्कार है यह कहकर सायंकाल के समय जलके कलश से युक्त उस कमलका दानकरै ४ और दानलेनेवाले ब्राह्मणको वस्त्र माला और आभूषणादिकसे पूजनकर शक्तिके अनुसार कपिलागौको आभूषितकरके दानकरै ५ जब एकदिनव्यतीतहोजाय तब अष्टमी के दिनमांस और तेलके विना सामर्थ्यके अनुसार ब्राह्मणों को भोजन करवावै ६ इसविधिसे महीने २ की शुक्लपक्षकी सप्तमीके दिन वित्तशाठ्य से रहित सम्पूर्ण आचरणकरै किसी वस्तुमें भ

वर्णाढ्याम्पयस्विनीम् ८ भाजनासनदीपादीन्दद्यादिष्टानुपस्करान्। अनेनविधिनायस्तु कुर्यात्कमलसप्तमीम्। लक्ष्मीमनन्तामभ्येति सूर्य्यलोकेमहीयते ९ कल्पेकल्पेततोलोकान् सप्तगत्वापृथक्पृथक्। अप्सरोभिःपरिवृतस्ततोयातिपराङ्गतिम् १० यःपश्यतीदं शृणुयाच्चमर्त्यः पठेच्चभक्त्याथमतिंददाति। सोऽप्यत्रलक्ष्मीमचलामवाप्य गन्धर्वविद्याधरलोकभाक्स्यात् ११ इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

(ईश्वर उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम्। सर्वकामप्रदांरम्यां नाम्नामन्दारसप्तमीम् १ माघस्यामलपक्षेतु पञ्चम्यांलघुभुङ्नरः। दन्तकाष्ठंततःकृत्वा षष्ठीमुपवसेद्बुधः २ विप्रान्संपूजयित्वातु मन्दारंप्राशयेन्निशि। ततःप्रभातउत्थाय कृत्वास्नानं पुनर्द्विजान्-३ भोजयेच्छक्तितःकृत्वा मन्दारकुसुमाष्टकम्। सौवर्णंपुरुषंतद्वत् पद्महस्तं सुशोभनम् ४ पद्मंकृष्णतिलैःकृत्वा ताम्रपात्रेषुपत्रकम्। हैममन्दारकुसुमैर्भास्करायेतिपूर्वतः ५ नमस्कारेणतद्वच्च सूर्य्यायेत्यानलेदले। दक्षिणेतद्वदर्काय यथार्यम्णेतिनैर्ऋते ६ पश्चिमेवेदधाम्नेच वायव्येचण्डभानवे। पूष्णेत्युत्तरतःपूज्यमानन्दायेत्यतःपरम् ७ कर्णिकायाञ्चपुरुषं स्थाप्यसर्वात्मनेतिच। शुक्लवस्त्रैःसमावेष्ट्य भक्ष्यैर्माल्यफलादिभिः ८ एव

लोभ न करै ७ जब व्रत समाप्तहोजाय तब सुवर्ण के कमल समेत शय्याका दानकरै और सुवर्णयुक्तगौका भी दानकरै इन सबके साथपात्र आसन और दीपकादिका भी दानकरै इसविधिसे जो कमल सप्तमीका व्रत करता है वह अनन्त लक्ष्मीसे युक्त होकर सूर्य्यलोकमें प्राप्तहोताहै ८। ९ और कल्प २ के अन्तमें एक २ लोकमें प्राप्तहो सातोंलोकोंमें विचरता अप्सराओंके साथ रमण करता है और फिर मोक्षको प्राप्तहोजाता है १० इस व्रतको जो देखतासुनता कहता और आपभी कर्त्ता दूसरेको अनुमति देकरपढ़ता है वह भी इसलोकमें परमालक्ष्मीको प्राप्तहोके अन्तमें स्वर्गकोप्राप्तहोकर अप्सराओंके साथरमण करता है ११॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

शिवजी कहते हैं-कि अब मैं सब कामनाओं की देनेवाली रमणीक मन्दार नामवाली सप्तमी को कहताहूं- १ माघशुक्लापंचमी के दिनहलका भोजनकरै फ़िर षष्ठीके दिन दन्तधावनकर जलमेंप्रवेशकरके स्नानकरै २ ब्राह्मणोंका पूजनकर रात्रिमें नींबके पत्तोंका भक्षणकरै फिर सप्तमीको प्रातःकाल उठ स्नानादिसे निवृत्तहो शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंका भोजन करवावै तदनन्तर नींबके आठ फूल सुवर्ण और काले तिल इनको तांबेके पात्रमें रखकर पत्रबनावै फिर नीबके तथा सुवर्णके पुष्पों से पूर्व्व के समान सूर्य्य का आवाहनकरै ३। ५ और सूर्य्य को नमस्कारकर अग्निकोणमें अक्षत और पुष्पोंको स्थापितकरै--दक्षिणदिशामें-अर्कायनम नैर्ऋत्यमें--अर्य्यम्णनमः पश्चिममें-वेदधाम्नेनमः--वायव्यमें--चंडभानवेनमः इस रीतिसे सूर्य्यको नमस्कारकर उत्तरको पूजनकरै आनन्दायनमः यह कहकर ईशानका पूजनकरै ६। ७ कमलकी कर्णिकापर पुरुषकी मूर्त्ति स्थापितकर सर्वात्मनेनम. ऐसा कहकर उस मूर्त्तिपर श्वेत वस्त्र चढ़ावै और भक्ष्य पदार्थ समेत पुष्प फलादिकों

मभ्यर्च्यतत्सर्वं दद्याद्वेदविदेपुनः। भुञ्जीतातैललवणंवाग्यतःप्राङ्मुखोगृही ६ अनेन
विधिनासर्वं सप्तम्यांमासिमासिच। कुर्य्यात्संवत्सरंयावद्वित्तशाठ्यविवर्जितः १० एत
द्देवव्रतान्तेतु निधायकलशोपरि। गोभिर्विभवतःसार्द्धं दातव्यंभूतिमिच्छता ११ नमोम
न्दारनाथाय मन्दारभवनायच। त्वंरवे! तारयस्वास्मान्संसारभयसागरात् १२ अनेन
विधिनायस्तु कुर्य्यान्मन्दारसप्तमीम्। विपाप्माससुखीमर्त्यः कल्पश्चदिविमोदते १३ इमा
मघौघपटलभीषणध्वान्तदीपिकाम्। गच्छन्प्रगृह्यसंसारे सर्वार्थांश्चलभेन्नरः १४ मन्दार
सप्तमीमेता मीप्सितार्थफलप्रदाम्। यःपठेच्छृणुयाद्वापि सर्वपापैःप्रमुच्यते १५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

(श्रीभगवानुवाच) अथान्यामपिवक्ष्यामि शोभनांशुभसप्तमीम्। यामुपोष्यनरोरोग
शोकदुःखैःप्रमुच्यते १ पुण्येचाश्वयुजेमासि कृतस्नानजपःशुचिः। वाचयित्वाततोविप्रा
नारभेच्छुभसप्तमीम् २ कपिलांपूजयेद्भक्त्या गन्धमाल्यानुलेपनैः। नमामिसूर्य्यसम्भू
तामशेषभुवनालयाम्। त्वामहंशुभकल्याणशरीरांसर्वसिद्धये ३ अथकृत्वातिलप्रस्थं ता
म्रपात्रेणसंयुतम्। काञ्चनंवृषभंतद्वद्गन्धमाल्यगुडान्वितैः ४ फलैर्नानाविधैर्भक्ष्यैर्घृतपाय
ससंयुतैः। दद्यात्द्विकालवेलायामर्य्यमाप्रीयतामिति ५ पञ्चगव्यञ्चसंप्राश्य स्वपेद्भूमौवि

से पूजनकरै ८ फिर वेदज्ञ ब्राह्मणके अर्थ दानकरदे और तेल तथा निमकसे रहित भोजनकरै गृह-
स्थी पुरुष तो मौन धारणकर पूर्व्वाभिमुख होकर भोजनकरै ९ इसी विधिसे प्रतिमासकी सप्तमीके
दिन एक वर्षतक इस व्रतको करै धनके खर्चनेमें कृपणता नहीं करै १० जब व्रत समाप्तहोजाय तब
इसप्रकारसे बनायेहुए कमलको कलशपर स्थापितकरके दानकरै जो ऐश्वर्य्य होनेकी इच्छाकरताहै
उसको गौदानकरना उचितहै ११ मन्दरनाथके अर्थ नमस्कार मन्दरभवनके अर्थ नमस्कारहै हे
सूर्य्य आप हम सबको इस संसार रूपी भवसागरसे पार उतारो १२ इस विधिसे जो मन्दारस-
प्तमीका व्रतकरताहै वह पापसे रहितहोकर एक कल्पतक स्वर्गमें वासकरताहै १३ संसारके पाप रूप
भयंकर अन्धकारके निवृत्तकरनेके निमित्त यह दीपक रूप सप्तमी कही है इस व्रतके करनेसे संसार
में विचरताहुआ पुरुष सब मनोरथोंको प्राप्तहोजाताहै १४ इस वांछित फलकी देनेवाली मन्दार
सप्तमीको जो पढ़ता और सुनताहै वह सब पापोंसे छूटजाताहै १५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

श्रीभगवान् कहते हैं कि अब उस शुभ सप्तमीको कहताहूं जिसका व्रतकरके मनुष्य सब दुःखोंसे
छूटजाताहै १ पवित्र आश्विनके महीनेमें शुभ शुक्ल पक्षकी सप्तमीके दिन स्नान जपादिसे पवित्रहो
ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन करवाके व्रतका प्रारम्भकरै २ गन्ध पुष्प और चन्दनादिकसे कपिला गौके
पूजनकरै और यह वचन कहै कि हे सूर्य्यसे उत्पन्नहोनेवाली हे सर्व भुवनोंमें स्थानवाली तुभको
नमस्कारहै मैं संपूर्ण सिद्धि और कल्याणोंके निमित्त तेरी शरण हुआहूं ३ इसके पीछे सवासेर तिल
तांबेके पात्रमें धरै सुवर्णका बैल गंध माला गुड़ अनेक प्रकारके भक्ष्य पदार्थ दूध घृतके पदार्थ इन

मत्सरः। ततःप्रभातेसञ्जाते भक्त्यासंपूजयेद्द्विजान् ६ अनेनविधिनादद्यान्मासिमासि
सदानरः । वाससीवृषभंहैमं तद्वद्गांकाञ्चनोद्भवाम् ७ संवत्सरान्तेशयनमिक्षुदण्डगुडा
न्वितम्। सोपधानकविश्रामं भाजनासनसंयुतम् ८ ताम्रपात्रेतिलप्रस्थं सौवर्णंवृषभंत
था। दद्याद्वेदविदेसर्वं विश्वात्माप्रीयतामिति ९ अनेनविधिनाविद्वान्कुर्याद्यःशुभसप्तमी
म्। तस्यश्रीर्विपुलाकीर्तिर्भवेज्जन्मनिजन्मनि १० अप्सरोगणगन्धर्वैः पूज्यमानःसुराल
ये। वसेद्गणाधिपोभूत्वा यावदाभूतसंप्लवम्। कल्पादाववतीर्णस्तु सप्तद्वीपाधिपोभवेत्
११ ब्रह्महत्यासहस्रस्य भ्रूणहत्याशतस्यच। नाशायालमियंपुण्या पठ्यतेशुभसप्तमी १२
इमांपठेद्यःशृणुयान्मुहूर्तं पश्येत्प्रसङ्गादपिदीयमानम्। सोऽप्यत्रसर्वाघविमुक्तदेहः प्राप्नो
तिविद्याधरनायकत्वम् १३ यावत्समाःसप्तनरःकरोति यःसप्तमींसप्तविधानयुक्ताम्। स
सप्तलोकाधिपतिःक्रमेण भूत्वापदंयातिपरंमुरारेः १४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेनवसप्ततितमोऽध्यायः ७९ ॥

(मनुरुवाच) किमभीष्टवियोगशोकसंघादलमुद्धर्तुमुपोषणंव्रतंवा। विभवोद्भवका
रिभूतलेऽस्मिन् भवभीतेरपिसूदनञ्चपुंसः १ (मत्स्यउवाच) परिपृष्टमिदंजगत्प्रियन्ते वि

सब वस्तुओंसमेत उसको सायंकालके समय यह कहकर दानकरै कि हे अर्य्यमासूर्य्य प्रसन्नहूजिये ४।५
पंचगव्यका प्राशनकरे तब भोजनकरै कुटिलतासे रहितरहै पृथ्वीपर शयनकरै जब प्रातःकालहोय
तब भक्तिसे ब्राह्मणोंका पूजनकरे इस विधिसे प्रतिमास दानकरै जब एक वर्ष पूराहोजाय तब सुन्दर
वस्त्र सुवर्ण का बैल सुवर्ण की गौ शय्या इक्षु दंड--गुड--बिछोना--तकिया--पात्र--और आसन इत्या-
दिकों से युक्त शय्या दानकरै ६। ८ फिर तांबे के पात्रमें सवासेर तिल--और सुवर्ण का बैल इन
दोनोंको स्थापितकरके वेदज्ञ ब्राह्मणके अर्थ दानकरै और कहे कि विश्वात्मा प्रसन्नहो ९ इस विधि
से जो विद्वान् इस शुभ सप्तमीका व्रतकरताहे उसके गृहमें बहुतसी लक्ष्मी होती है और जन्म२ में
कीर्त्तिकी वृद्धि होती है १० इसके विशेष अप्सराओंके गणसे पूजितहोकर स्वर्गमें प्राप्त होताहै और
प्रलयकालतक बहुतसे गणोंका अधिपति रहताहै फिर कल्पके अन्तमें पृथ्वीपर जन्मलेकर सातों
द्वीपोंका अधिपति होताहै अर्थात् राजा होताहै ११ हज़ारों ब्रह्महत्या और सैकड़ों भ्रूणहत्याओं का
नाश होजाताहै पढ़नेवालोंको यह शुभ सप्तमी पुण्यदात्री कहीहै १२ इस शुभ सप्तमीको जो पठन
पाठनादिक करताहै अथवा सुनताहै वा एक मुहूर्त्त मात्र भी इस दिनके दियेहुए दानादिको देखता
है वह सब पापोंसे छूटकर विद्याधरोंका नायक होताहै १३ सात वर्षतक सात प्रकारके विधानवाली
इन सप्तमियोंको जो पुरुष करताहै वह क्रमसे सात लोकोंका अधिपति होकर फिर विष्णुलोकमें
प्राप्त होताहै अर्थात् परमपदवाली मोक्षको प्राप्त होजाताहै १४ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

मनुजी बोले-हे भगवन् प्रियजनोंका वियोग न होना शोक न होना जिसका फलहोय और जिसके
प्रभावसे इस लोक में ऐश्वर्य्य भी बहुतसा होय ऐसा कौनसा व्रत है उसको कृपा करके कहिये १

दुर्ध्यानामपिदुर्लभंमहत्वात्। तवभक्तिमतस्तथापिवक्ष्येव्रतमिन्द्रासुरमानवेषुगुह्यम् २पुण्य माश्वयुजेमासि विशोकद्वादशीव्रतम् । दशम्यांलघुभुग्विद्वानारभेन्नियमेनतु ३ उदङ्मुखःप्राङ्मुखोवा दन्तधावनपूर्वकम् । एकादश्यांनिराहारः समभ्यर्च्यतुकेशवम् । श्रियंवाभ्यर्च्यविधिवद्भोक्ष्यामित्यपरेऽहनि ४ एवंनियमकृत्सुप्त्वा प्रातरुत्थायमानवः । स्नानंसर्वौषधैःकुर्यात्पञ्चगव्यजलेनतु । शुक्लमाल्याम्बरधरः पूजयेच्छ्रीशमुत्पलैः ५ विशोकायनमः पादौ जंघेचवरदायवै । श्रीशायजानुनीतद्वदूरूचजलशायिने ६ कन्दर्पायनमोगुह्यं माधवायनमःकटिम् । दामोदरायेत्युदरम्पार्श्वेचविपुलायवै ७ नाभिञ्चपद्मनाभाय हृदयंमन्मथायवै । श्रीधरायविभोर्वक्षः करौमधुजितेनमः ८ चक्रिणेवामबाहुञ्च दक्षिणङ्गदिनेनमः । वैकुण्ठायनमःकण्ठमास्यंयज्ञमुखायवै ९ नासामशोकनिधये वासुदेवायचाक्षिणी । ललाटंवामनायेति हरयेतिपुनर्भ्रुवौ १० अलकान्माधवायेति किरीटंविश्वरूपिणे । नमः सर्वात्मनेतद्वच्छिरइत्यभिपूजयेत् ११ एवंसंपूज्यगोविन्दं फलमाल्यानुलेपनैः । ततस्तुमण्डलंकृत्वा स्थण्डिलंकारयेन्मृदा १२ चतुरस्रंसमन्ताच्च रत्निमात्रमुदक्प्लवम् । श्लक्ष्णं हृद्यंचपरितो विप्रत्रयसमावृतम् १३ अंगुलेनोच्छ्रिताविप्रास्तद्विस्तारस्तुद्व्यंगुलः । स्थ

मत्स्यजी बोले-हे मनु तेंने जोप्रश्नकियाहै वहजगत्का हितकारी है और देवताओंको भी वड़ादुर्लभहै मैंतेरी भक्तिसे उस गूढ़ व्रतको कहताहूं २ पवित्र आश्विनके महीनेमें विशोक द्वादशीका व्रतहोताहै उसकीयहविधिहै कि दशमीके दिन अल्पाहारी होकर मौन धारणकर उस व्रतकाप्रारंभकरै ३ एकादशी को उत्तर वा पूर्वकी ओर मुख करके दन्तधावनकरै फिर स्नानकरके स्वल्प भोजनकर केशवभगवान्को और लक्ष्मीजीका पूजन करके दूसरे दिन द्वादशी को विधिपूर्व्वक भोजनकरै ४ ऐसे नियम करके शयनकरै फिर प्रातःकाल उठ सर्वौषधी तथापंचगव्यके जलसे स्नानकर श्वेतपुष्प औरवस्त्रोंको धारण करै फिर लक्ष्मी नारायण का पूजन श्वेतकमलोंसे करै ५ विशोकायनमः इसमंत्रसे चरणोंको पूजन करै-वरदायनमः इसमंत्रसे पिंडलियों को-श्रीशायनमः इसमंत्रसे घोंटुओंको-जलशायिनेनमः इस मन्त्रसे जंघाओंको-कन्दर्प्पायनमः इस मंत्रसे गुदाको-माधवायनमः इस मंत्रसे कटिको-दामोदरायनमः इस मंत्रसे उदरको-विपुलायनमः इस मंत्रसे पसलियोंको-पद्मनाभायनमः इस मंत्रसे नाभिको-मन्मथायनमः इस मंत्रसे हृदयको-श्रीधरायनमः इस मंत्रसे विष्णुकी छातीको-और मधुजितेनमः इस मन्त्रसे हाथोंको पूजै ६ । ८ चक्रिणेनमः इस मंत्रसे वामभुजाको-गदिनेनमः इस मंत्रसे दक्षिण भुजाको-वैकुण्ठायनमः यह कहकर कण्ठको-यज्ञमुखायनमः इस मंत्रसे मुख को ९ अशोकनिधयेनमः इस मंत्रसे नासिकाको-वासुदेवायनमः इस मंत्रसे आंखोंको-वामनाय नमः इस मंत्रसे मस्तकको-हरयेनमः इस मंत्रसे भृकुटियोंको-माधवायनमः इस मंत्रसे केश कुन्तलों को-विश्वरूपिणेनमः इस मंत्रसे मुकुट को-और सर्व्वात्मनेनमः इस मंत्रसे मूर्त्ति के शिरको पूजै १० । ११ इस क्रमसे चन्दन पुष्पादिकों से विष्णुकी सर्वांगों समेत मूर्त्तिका पूजनकरके पृथ्वी में मंडलाकार कर मृत्तिकाने वेदी बनावे १२ चौखूंटी रत्निपुटप्रमाण वेदी बनावे उसके बराबरमें सुन्दर छोटी २ ब्राह्मणों की मूर्त्ति बनवावे एक अंगुल ऊंची दोअंगुल लंबी मूर्त्तियां बनानी चाहिये

ण्डिलस्योपरिष्टाच्च भित्तिरष्टांगुलाभवेत् १४ नदीबालुकयाशूर्पे लक्ष्म्याःप्रतिकृतिंन्यसेत्
स्थण्डिलेशूर्पमारोप्य लक्ष्मीमित्यर्चयेद्बुधः १५ नमोदेव्यैनमःशान्त्यै नमोलक्ष्म्यैनमः
श्रियै। नमःपुष्ट्यैनमस्तुष्ट्यै वृष्ट्यैहृष्ट्यैनमोनमः १६ विशोकादुःखनाशाय विशोका
वरदास्तुमे। विशोकाचास्तुसम्पत्त्यै विशोकासर्वसिद्धये १७ ततःशुक्लाम्बरैःशूर्पं वेष्ट्य
संपूजयेत्फलैः। वस्त्रैर्नानाविधैस्तद्वत् सुवर्णकमलेनच १८ रजनीषुचसर्वासु पिबेद्द
र्भोदकंबुधः। ततस्तुगीतनृत्यादि कारयेत्सकलांनिशाम् १९ यामत्रयेव्यतीतेतु सुप्ता
प्युत्थायमानवः। अभिगम्यचविप्राणां मिथुनानितदार्चयेत् २० शक्तितस्त्रीणिचैकंवा
वस्त्रमाल्यानुलेपनैः। शयनस्थानिपूज्यानि नमोऽस्तुजलशायिने २१ ततस्तुगीतवाद्येन
रात्रिजागरणेकृते। प्रभातेचततःस्नानं कृत्वादाम्पत्यमर्चयेत् २२ भोजनञ्चयथाशक्त्या
वित्तशाठ्यविवर्जितः। भुक्त्वाश्रुत्वापुराणानि तद्दिनञ्चातिवाहयेत् २३ अनेनविधिना
सर्वं मासिमासिसमाचरेत्। व्रतान्तेशयनन्दद्याद् गुडधेनुसमन्वितम्। सोपधानक
विश्रामं सास्तरावरणंशुभम् २४ यथानलक्ष्मीर्देवेश! त्वाम्परित्यज्यगच्छति। तथा
सुरूपतारोग्यमशोकश्चास्तुमेसदा २५ यथादेवेनरहिता नलक्ष्मीर्जायतेक्वचित्। तथा
विशोकतामेऽस्तुभक्तिरग्र्याचकेशवे २६ मन्त्रेणानेनशयनं गुडधेनुसमन्वितम्। शूर्पंच

फिर उस वेदीके ऊपर आठ अंगुल ऊंची एक दीवारबनावे १३।१४ और उस भीतके ऊपर नदीकी वालूकी लक्ष्मीकी मूर्त्ति सूपमें रखकर स्थापित करै फिर उसका आगे लिखीहुई रीतिसे पूजन करै देव्यैनमः शांत्यैनमः लक्ष्म्यैनमः श्रियैनमः पुष्ट्यैनमः तुष्ट्यैनमः वृष्ट्यैनमः हृष्ट्यैनमः इन सबमंत्रों से लक्ष्मीका पूजनकरै १५।१६ और यह कहै कि हे विशोका देवी दुःखका नाशकरो वरदानदो विशोका सम्पत्ति करो विशोका सर्वसिद्धिकरो १७ यह कहकर श्वेतवस्त्रोंसे सूपकोलपेटकर फलोंसे वा अनेक प्रकारके वस्त्रोंसे और सुवर्णके कमलसे लक्ष्मीका पूजन करै १८ उस दिनकी सब रात्रि भर कुशाका जलपिये और गीत नृत्यादिक भी रात्रिभरकरै १९ जब तीनपहर रात्रि व्यतीत होचुके तब उठकर ब्राह्मण ब्राह्मणियों का पूजनकरै शक्तिके अनुसार तीनोंको अथवा एकही को चन्दन पुष्पादिक और वस्त्रोंसे पूजै शय्यापर स्थित करके उनब्राह्मण ब्राह्मणियोंका पूजनकरना योग्यहै- जलशायी विष्णुके अर्थ नमस्कारहै यह कहकर जब गीत नृत्य और वाद्यादिकों के मंगल करतेहुए- रात्रि व्यतीत होजाय तब प्रभात होनेके समय ब्राह्मण ब्राह्मणियोंको पूजकर शक्तिके अनुसार भो- जन करवावे धन खर्चनेमें कृपणता न करै भोजन कर कराकर पुराणोंका पाठसुने इस रीतिसे उस दिनकोभी व्यतीत करदे २०।२३ इस विधिसे महीने२ प्रति सम्पूर्ण आचरणकरै जब व्रत समाप्त होजाय तब शय्या दानकरै इस शय्याके साथ गुड धेनु अर्थात् गुड़से बनाई हुई गौ तकिये बिछौने और चद्दरआदिक वस्त्र इनसबकाभी दानकरै२४ फिर यह मन्त्रार्थ कहै कि हे देवेश जैसे कि आप को त्यागकर लक्ष्मीजी कहीं नहीं जाती हैं उसीप्रकार सुन्दररूप आरोग्य और अशोक यहसब सदैव मेरे भी बनेरहैं २५ जैसे विष्णुके विनालक्ष्मी नहींजाती हैं उसीप्रकार मेरेविशोकता बनीरहै अर्थात्

लक्ष्म्यासहितन्दातव्यम्भूतिमिच्छता २७ उत्पलंकरवीरञ्च वाणमम्लानकुंकुमम्। केतकीसिंदुवारंचमल्लिकागन्धपाटला। कदम्बंकुब्जकंजातिःशस्तान्येतानिसर्वदा२८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

(मनुरुवाच) गुडधेनुविधानंमे समाचक्ष्वजगत्पते!। किंरूपंकेनमन्त्रेण दातव्यं तदिहोच्यताम् १ (मत्स्य उवाच) गुडधेनुविधानस्य यद्रूपमिहयत्फलम्। तदिदानीं प्रवक्ष्यामि सर्व्वपापविनाशनम् २ कृष्णाजिनञ्चतुर्हस्तं प्रागग्रंविन्यसेद्भुवि। गोमये नानुलिप्तायां दर्भानास्तीर्य्यसर्व्वतः ३ लघ्वेणकाजिनन्तद्वद्वत्सस्यचपरिकल्पयेत्। प्राङ्मुखींकल्पयेद्धेनुमुदक्पादांसवत्सकाम् ४ उत्तमागुडधेनुःस्यात् सदाभारचतुष्टयम्। वत्संभारेणकुर्वीत द्वाभ्यांवैमध्यमास्मृता ५ अर्द्धभारेणवत्सःस्यात् कनिष्ठाभारकेण तु। चतुर्थांशेनवत्सःस्याद्गृहवित्तानुसारतः ६ धेनुवत्सौघृतास्यौच सितसूक्ष्माम्बरावृतौ। शुक्तिकर्णाविक्षुपादौ शुचिमुक्ताफलेक्षणौ ७ सितसूत्रशिरालौतौ सितकम्बलकम्बलौ। ताम्रगण्डकपृष्ठौतौ सितचामररोमकौ ८ विद्रुमभ्रूयुगोपेतौ नवनीतस्तनावुभौ। क्षौमपुच्छौकांस्यदोहाविन्द्रनीलकतारकौ ९ सुवर्णशृङ्गाभरणौ राजतैःखुरसंयुतौ।

शोककभी न होय मेरी भक्ति सदैव विष्णुमें रहै २६ इसमन्त्रसे शय्या गुड़ धेनु लक्ष्मीकीमूर्त्ति और सूप यह सब ब्राह्मणकोदेदे २७ इसपूजनमें कमल--कनेर--भिंटीकेपुष्प--चमेली--गन्धपाडल--कदंब कुब्जक--और चंपा यह सब पुष्प सदा योग्य कहे हैं २८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

मनुजीबोले--हे जगत्पते आपकृपाकरके गुड़धेनुका विधान मुझसे वर्णन कीजिये इसका कैसा रूपहै और किस मन्त्रसे दानकरना योग्यहै १ मत्स्यजीबोले--हे राजा गुड़धेनुका जो विधानरूप और फलहै वह मैं तुमसे कहताहूं यह विधानही सब पापोंका नाशकरनेवालाहै २ उसकी यह विधिहै कि चारहाथकी काली मृगछालाको पूर्व्वाग्ररक्खे और गोबर से लिपीहुई पृथ्वी पर चारों ओर कुशाको बिछावे ३ छोटीमृगछालाबिछाकर इसको गौकाबछड़ा कल्पितकरै गौको पूर्व्वाभिमुख जाने और बछड़ेको उत्तराभिमुख जाने ४ चारमनगुड़की गौ एकमन गुड़का बछड़ाबनावे यह उत्तम गुड़धेनु कहातीहै--दो मनगुड़कीगौ और आधेमनका बछड़ा यह मध्यमगुड़धेनुहै एक मनकीगौ और दशसेरका बछड़ा यह कनिष्ठागुड़धेनुहै ऐसे अपने वित्तके अनुसार गुड़धेनु बनानी कहीहै ५। ६ उस गौका और बछड़ेका मुख घृतका बनावे उनको सुन्दर रेशमी वस्त्रउढ़ावै सीपके कानबनावै ईखके पैर और सुन्दर मोतियों के नेत्रबनावै ७ ग्रीवापर श्वेतवस्त्र उढ़ावे पूंछके स्थानपर काला कंबल उढ़ावे पीठपर तांबेकी शिला स्थापितकरै--रोमोंके स्थानपर श्वेतचमरोंके बाललगावे ८ भृकुटियों के स्थानपर मूंगा स्तनोंके स्थानपर नवनीतघृत और रेशमी वस्त्रकी पूंछबनावै कांसेकी दोहिनी के स्थानमें कोई पात्ररक्खे सुवर्ण के सींग और नेत्रकेतारेके स्थानमें इन्द्रनीलमणिरक्खे ९ सींग और आभूषण सुवर्ण के चांदीके खुर अनेक प्रकारकी सुगन्धिसे युक्तफलोंको नासिका के स्थानमें

नानाफलसमायुक्तौ घ्राणगन्धकरण्डकौ । इत्येवंरचयित्वातौ दीपधूपैरथार्चयेत् १० या लक्ष्मीःसर्वभूतानां याचदेवेष्ववस्थिता । धेनुरूपेणसादेवी ममशान्तिप्रयच्छतु ११ देहस्थायाचरुद्राणी शङ्करस्यसदाप्रिया । धेनुरूपेणसादेवी ममपापंव्यपोहतु १२ विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीः स्वाहायाचविभावसोः । चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्या धेनुरूपास्तुसाश्रिये १३ चतुर्मुखस्ययालक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनदस्यच । लक्ष्मीर्यालोकपालानां साधेनुर्वरदास्तुमे १४ स्वधायापितृमुख्यानां स्वाहायज्ञभुजाञ्चया । सर्वपापहराधेनुस्तस्माच्छान्तिंप्रयच्छमे १५ एवमामन्त्र्यतांधेनुं ब्राह्मणायनिवेदयेत् । विधानमेतद्धेनूनां सर्वासामभिपठ्यते १६ यास्ताःपापविनाशिन्यः पठ्यन्तेदशधेनवः । तासांस्वरूपंवक्ष्यामि नामानिचनराधिप ! १७ प्रथमागुडधेनुःस्याद् घृतधेनुस्तथापरा । तिलधेनुस्तृतीयातु चतुर्थीजलसंज्ञिता १८ क्षीरधेनुश्चविख्याता मधुधेनुस्तथापरा । सप्तमीशर्कराधेनुर्दधिधेनुस्तथाष्टमी । रसधेनुश्चनवमी दशमीस्यात्स्वरूपतः १९ कुम्भास्स्युर्द्रवधेनूनामितरासान्तुराशयः । सुवर्णधेनुमप्यत्र केचिदिच्छन्तिमानवाः २० नवनीतेनरत्नैश्च तथान्येतुमहर्षयः । एतदेवविधानंस्यात्तएवोपस्कराःस्मृताः २१ मन्त्रावाहनसंयुक्ताः सदापर्वणिपर्वणि । यथाश्रद्धंप्रदातव्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदाः २२ गुड़धेनुप्रसंगेन सर्वास्ताव

रक्खे इसप्रकार गौ और वछड़ेको रचके धूपदीपादिकों से पूजनकरे १० मन्त्र--जो देवी सबभूतों में लक्ष्मीरूप से स्थित है और जो देवताओं में भी धेनुरूप से स्थितहै वह धेनु मुझको शांति देवे ११ देहमें स्थितहुई जो शिवकी प्रिया रुद्राणी कहाती है वह देवी धेनुरूप करके मेरे पापोंको दूरकरे १२ जो देवी विष्णुके हृदय में स्थितहै अग्निमें स्वाहा रूपसे और चन्द्रमा सूर्य्य इन्द्रकी शक्ति कहाती है वह धेनु रूप देवी मेरे लक्ष्मी प्राप्त करो १३ जो ब्रह्माकी लक्ष्मी कुबेरकी लक्ष्मी और लोकपालोंकी लक्ष्मी है वह धेनु रूपहोकर मुझको वरदेनेवालीहो १४ पितरोंके यज्ञमें जो स्वधाहै देवताओंके यज्ञमें स्वाहाहै वह देवी धेनुरूप सब पापों को हरो और मुझे शान्तिदेवे १५ इसप्रकार मन्त्र विधिसे बनाई हुई इस धेनुको ब्राह्मणके अर्थ निवेदनकरदे और सब प्रकारकी धेनुओंका भी यही प्रकारहै १६ दशप्रकारकी धेनु पाप नाशकरनेवाली कही हैं हे राजा अब उनके नाम और स्वरूपोंको वर्णन करते हैं १७ प्रथम गुड़ धेनु १ दूसरी घृतधेनु २ तीसरी तिल धेनु ३ चौथी जल धेनु ४ । १८ पांचवीं क्षीरधेनु ५ छठी मधु धेनु ६ सातवीं शर्करा धेनु ७ आठवीं दधि धेनु ८ नवीं रस धेनु ९ और दशवीं स्वरूपवाली यह साक्षात् धेनु अर्थात् गौ हैं १९ इन धेनुओं के द्रव्यसंज्ञक कलश होते हैं अन्य द्रव्यकी धेनुकी राशि अर्थात् समूह बनायाजाताहै कितनेही आचार्य्योंने सुवर्ण धेनु भी कही है २० कितनेही ऋषि नवनीत घृत अर्थात् मक्खनकी गौका दानकरना कहते हैं सब प्रकारकी गौओं में यही विधान और यही सामग्री करनी योग्य है २१ मन्त्र आवाहनों से युक्त पर्व २ के विषे श्रद्धाके अनुसार इन धेनुओं का दान भुक्ति मुक्तिके निमित्त करना योग्यहै २२ गुड़ धेनुके प्रसग करके यहाँ मैंने सब प्रकारकी गौएं कहदी हैं संपूर्ण यज्ञोंके फलकी देनेवाली और सब पापोंकी हर-

न्मयोदिताः। अशेषयज्ञफलदाः सर्वाःपापहराःशुभाः २३ व्रतानामुत्तमंयस्माद्विशोक द्वादशीव्रतम्। तदङ्गत्वेनचैवात्र गुडधेनुःप्रशस्यते २४ अयनेविषुवेपुण्ये व्यतीपाते ऽथवापुनः। गुडधेन्वादयोदेयास्तूपरागादिपर्वसु २५ विशोकद्वादशीचैषा पुण्यापापहरा शुभा। यामुपोष्यनरोयाति तद्विष्णोःपरमम्पदम् २६ इहलोकेचसौभाग्यमायुरारोग्यमे वच। वैष्णवंपुरमाप्नोति मरणेचस्मरन्हरिम् २७ नवार्बुदसहस्राणि दशचाष्टौचधर्मवि त्। नशोकदुःखदौर्गत्यं तस्यसञ्जायतेनृप २८ नारीवाकुरुतेयातु विशोकद्वादशीव्रत म्। नृत्यगीतपरानित्यं सापितत्फलमाप्नुयात् २९ तस्माद्ग्रेहरेर्नित्यमनन्तंगीतवाद नम्। कर्त्तव्यंभूतिकामेन भक्त्यातुपरयान्नृप! ३० इतिपठतियइत्थं यःशृणोतीहसम्य क् मधुमुरनरकारेरर्चनंयश्चपश्येत् ३१ मतिमपिचजनानां योददातीन्द्रलोके वसतिस विबुधौघैः पूज्यतेकल्पमेकम् ३१॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे एकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

(नारद उवाच) भगवन्! श्रोतुमिच्छामि दानमाहात्म्यमुत्तमम्। यदक्षयंपरेलो के देवर्षिगणपूजितम् १ (उमापतिरुवाच) मेरोःप्रदानंवक्ष्यामि दशधामुनिपुङ्गव!। यत्प्रदानान्नरोलोकानाप्नोतिसुरपूजितान् २ पुराणेषुचवेदेषु यज्ञेष्वायतनेषुच। नतत्फ लमधीतेषु कृतेष्विहयदश्नुते ३ तस्माद्विधानंवक्ष्यामि पर्वतानामनुक्रमात्। प्रथमोधान्य

नेवाली यह शुभ गौ कही हैं २३ सब व्रतोंमें अशोक द्वादशीका व्रत उत्तमहै उसके अंगसे यहां गुड़ धेनु दानकरना श्रेष्ठहै २४ विषुव अयन अर्थात् दिन रात्रि समान होनेके समय में अथवा व्यतीपात में तथा ग्रहणमें गुड़ धेनु आदिक धेनुओंका दानकरना योग्यहै २५ यह विशोक द्वादशी महापवित्र है पापनाशकहै शुभ है उसका व्रतकरनेवाला पुरुष विष्णुके परमपदको प्राप्त होताहै २६ और इस लोकमें सौभाग्य तथा आरोग्य को प्राप्त होताहै और रण समयमें हरिका स्मरण करताहुआ विष्णु लोकमें प्राप्त होताहै २७ धर्मज्ञ पुरुष नौ अर्बुद अठारह हज़ार वर्षोंतक शोक दुःख और दुर्गति आ दिकोंसे युक्त कभी नहीं होताहै २८ जो स्त्री इस व्रतको करती है वह भी नृत्य गीतमें तत्पर रहनेसे इसी फलको प्राप्त होती है २९ इस हेतुसे हरि भगवान्के आगे नृत्य गीतादिक जो परमभक्तिसे करै तो परम ऐश्वर्यको प्राप्त होती है ३० इस व्रतको जो पढ़ताहै सुनताहै अथवा मधुसूदन भगवान्के पूजनको देखताहै और जो कोई इस व्रतके करने की किसीको अनुमति देता है वह इन्द्रलोक में प्राप्त होकर एक कल्पतक देवताओंसे पूजित होताहै ३१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

नारदजी कहते हैं कि हे भगवन् मैं उस उत्तम दानके माहात्म्यको सुनाचाहताहूं जो परलोकमें अक्षय गुणकरनेवालाहोय और देवर्षियों से भी पूजितहो १ शिवजी बोले कि हे मुनिपुंगव अब मैं तुम्हें सुमेरु पर्वतके दानको दशप्रकारसे सुनाताहूं जिसके कि दानसे देवताओंसे पूजित होकर पुरुष उत्तम लोकोंको प्राप्तहोता है २ पुराण वेद यज्ञ और उत्तम देवताओं की मूर्त्ति इन सबमें वह फल नहीं है जो कि इसदानसे होताहै ३ इस हेतुसे मैं अनुक्रम से पर्वतोंके विधानको कहताहूं एक धान्य

शैलःस्याद्द्वितीयोलवणाचलः ४ गुडाचलस्तृतीयस्तु चतुर्थोहेमपर्वतः । पञ्चम
स्तिलशैलःस्यात्षष्ठःकार्पासपर्वतः ५ सप्तमोघृतशैलश्च रत्नशैलस्तथाष्टमः। राजतो
नवमस्तद्वद्दशमःशर्कराचलः ६ वक्ष्येविधानमेतेषां यथावदनुपूर्वशः।अयनेविषुवेपुण्ये
व्यतीपातदिनेतथा ७ शुक्लपक्षेतृतीयायामुपरागेशशिक्षये।विवाहोत्सवयज्ञेषु द्वादश्या
मथवापुनः ८ शुक्लायांपञ्चदश्यांवा पुण्यर्क्षेवाविधानतः। धान्यशैलादयोदेया यथाशा
स्त्रंविधानतः ६ तीर्थेष्वायतनेवापि गोष्ठेवाभवनांगणे। मण्डपंकारयेद्भक्त्या चतुरस्रमु
दङ्मुखम् १० गोमयेनानुलिप्तायां भूमावास्तीर्यवैकुशान्। तन्मध्येपर्वतंकुर्यात् विष्क
म्भपर्वतान्वितम् ११ धान्यद्रोणसहस्रेण भवेद्गिरिरिहोत्तमः। मध्यमःपञ्चशतिकः क
निष्ठःस्यात्त्रिभिःशतैः १२ मेरुर्महाव्रीहिमयस्तुमध्येसुवर्णवृक्षत्रयसंयुतःस्यात्। पूर्वेण
मुक्ताफलवज्रयुक्तो याम्येनगोमेदकपुष्परागैः १३ पश्चाच्चगारुत्मतनीलरत्नैः सौम्येन
वैदूर्यसरोजरागैः। श्रीखण्डखण्डैरभितःप्रवालैर्लतान्वितःशुक्तिशिलातलःस्यात् १४
ब्रह्माथविष्णुर्भगवान्पुरारिर्दिवाकरोऽप्यत्रहिरण्मयःस्यात्। मूर्द्धन्यवस्थानममत्सरेण
कार्यंत्वनेकैश्चपुनर्द्विजौघैः १५ चत्वारिशृङ्गाणिचराजतानि नितम्बभागेष्वपिराजतः
स्यात्। तथेक्षुवंशावृतकन्दरस्तु घृतोदकप्रस्रवणैश्चदिक्षु १६ शुक्लाम्बराण्यंबुधरावली
स्यात्पूर्वेणपीतानिचदक्षिणेन। वासांसिपश्चादथकर्बुराणिरक्तानिचैवोत्तरतोघनाली १७

का पर्व्वत १ दूसरालवणकापर्व्वत २-तीसरा गुड़कापर्व्वत ३ चौथाहेमकापर्व्वत ४ पांचवांतिलका
पर्व्वत ५छठाकपासकापर्व्वत ६ सातवांघृतकापर्व्वत ७ आठवारत्नकापर्व्वत ८ नवांचांदीका पर्व्वत ९
और दशवांखांड़का पर्व्वत है ४।६ अब यथार्थ क्रमसे इनके विधानको कहताहूं जबदिन रात्रि समान
हो ऐसे विषुव संज्ञक अयनमें अथवा व्यतीपात में ७ शुक्लपक्षकी तृतीयाके दिन ग्रहणमें अमावास्या
के दिन विवाह उत्सव यज्ञ--द्वादशी--पूर्णिमा--अथवा पवित्रनक्षत्रके दिन शास्त्रकी रीतिके अनुसार
धान्यादिक पर्व्वतोंके दान करनेचाहिये ८।९ देवताके मन्दिरमें-तीर्थपर-गौओंकेस्थानमें-अथवा अपने
घरकेही आंगनमें भक्तिपूर्व्वक चौकोना मंडप बनावे उत्तरको मुखकरै गोवरसे भूमिको लीपकर वहां
कुशाविछावे उसस्थानमें विष्कंभ पर्वत और चारोंओरको चारपर्वतोंसेयुक्त सुमेरुपर्वत बनावे हजार
द्रोण अर्थात् सोलह हजार १६००० सेर धान्यका उत्तमपर्व्वत कहाहै पांचसौद्रोणोंका अर्थात् ८००
सौ सेरोंका मध्यम और तीनसौ द्रोणोंका कनिष्ठ अर्थात् छोटापर्वत होताहै १०।१२ मध्यमें चावलों
का सुमेरु पर्व्वत बनावे तीन सुवर्णके वृक्ष बनावै पूर्वकीओर मोती हीरे--दक्षिणमें गोमेद पुखराज
पश्चिममें गारुत्मत् नीलमणि और उत्तरमें वैदूर्यमणि पुखराज ऐसे प्रकारके रत्न सब ओरको जड़ने
चाहियें--चारों ओर नारियल और मूंगोंकी लता सीपकी शिला १३। १४ और ब्रह्मा विष्णु शिव
और अनेक ब्राह्मण इनकी सुवर्णकी मूर्त्तिबनवाके पर्व्वतके मस्तकपर स्थापितकरै १५ चारों भाग
चॉदीके बनावे पीठकी ओर भी चाँदीलगावै ईखके बांस घृतकी गुफा और जलके झिरनोंके स्थानमें
घृत रक्खे इस विधिसे १६ श्वेत वस्त्रोंके बादलबनावे पूर्व्व और दक्षिणको पीलेवस्त्र -पश्चिममें

रौप्यान्महेन्द्रप्रमुखांस्तथाष्टौ संस्थाप्यलोकाधिपतीन्क्रमेण। नानाफलालींचसमन्ततः स्यान्मनोरमम्माल्यविलेपनञ्च १८ वितानकञ्चोपरिपञ्चवर्णं मम्लानंपुष्पाभरणांसितञ्च। इत्थंनिवेश्यामरशैलमग्र्यं मेरोस्तुविष्कम्भगिरीन्क्रमेण १९ तुरीयभागेनचतुर्दिशञ्च संस्थापयेत्पुष्पविलेपनाढ्यान्। पूर्वेणमन्दरमनेकफलावलीभिर्युक्तंयवैःकनकभद्रकदम्बचिह्नैः २० कामेनकाञ्चनमयेनविराजमान माकारयेत्कुसुमवस्त्रविलेपनाढ्यम्। क्षीरारुणोदसरसाथवनेनचैवं रौप्येणशक्तिघटितेनविराजमानम् २१ याम्येनगन्धमदनश्चनिवेशनीयो गोधूमसञ्चयमयःकलधौतयुक्तः। हैमेनयक्षपतिनाघृतमानसेन वस्त्रैश्चराजतवनेनचसंयुतःस्यात् २२ पश्चात्तिलाचलमनेकसुगन्धिपुष्पसौवर्णपिप्पलहिरण्मयहंसयुक्तम्। आकारयेद्रजतपुष्पवनेनतद्वद्वस्त्रान्वितन्दधिसितोदसरस्तथाग्रे २३ संस्थाप्यतंविपुलशैलमथोत्तरेण शैलंसुपार्श्वमपिमाषमयंसुवस्त्रम्। पुष्पैश्च हेमवटपादपशेखरन्तमाकारयेत्कनकधेनुविराजमानम् २४ माक्षीकभद्रसरसाथवनेन तद्वद्रौप्येणभास्वरवताचयुतन्निधाय। होमश्चतुर्भिरथवेदपुराणविद्भिर्दान्तैरनिन्द्यचरिताकृतिभिर्द्विजेन्द्रैः २५ पूर्वेणहस्तमितमत्रविधायकुण्डं कार्यस्तिलैर्यवघृतेनसमित्कुशैश्च। रात्रौचजागरमनुद्धतगीततूर्यैरावाहनञ्चकथयामिशिलोच्चयानाम् २६ त्वंसर्वदेवगणधामनिधे! विरुद्धमस्मद्गृहेष्वमर! पर्वतनाशयाशु। क्षेमंविधत्स्वकुरुशांतिमनु

सुनहरी वस्त्र और उत्तरकी ओरमें लालवस्त्र पहरावे उत्तरकीही ओर बादलोंकी पंक्तिभी बनावे १७ अनेक प्रकारकेफल–मनोहर पुष्पोंकीमाला और चन्दन यह सबओरको लगाने चाहिये आठलोकपाल रूपेकेबनावे उनको क्रमसे स्थापितकरै इसरीतिसे उसपर्व्वतको महाशोभितबनावे १८ पांच रंगोंकी बन्दनवार और श्वेतपुष्पोंके आभूषण पहरावै इसप्रकार सुमेरुपर्व्वतको मध्यमें स्थापित कर चारोंओर विष्कम्भ नामपर्व्वतोंको यथार्थ क्रमसे स्थापितकरै चारोंभागोंमें पुष्पचन्दनादिसे युक्तकियेहुए उनपर्व्वतों को स्थापितकरना चाहिये फिर अनेक फलोंकी पंक्तियोंसे युक्त जवासा सुन्दरकदंब और पीलेपुष्प–इनसबसे युक्त मन्दराचल पर्व्वतको पूर्व्वमें स्थापितकरै १९।२० सुवर्णसे युक्तसुन्दर पुष्प चन्दन और वस्त्रादिसे युक्त दूधका सरोवर और सुन्दर पुष्पोंकावन शक्तिके अनुसार इन सब वस्तुओं समेत चांदीसे रचाहुआ वह पर्व्वतहोना चाहिये २१ दक्षिण में गेहूं धान्य का गन्धमादनपर्व्वत सुवर्ण समेत बनावे सुवर्णसेयुक्त घृतका मानसरोवर बनावे सफेदवस्त्र और चांदीका बगीचाबनावे २२ पश्चिममें तिलकापर्व्वत अनेक सुगन्धिके पुष्प–सुवर्णका पीपल हंस चांदीकेपुष्पोंकावन–श्वेतवस्त्र और दहीका सरोवर इन सबसेभी युक्तकरै २३ उत्तरकी ओर बड़ा सुन्दर उड़दोंकासुपार्श्व पर्व्वत बनावे सुन्दरशिखर तक ऊंचासुवर्णकावृक्ष–सुवर्णकीगौ शहदका सरोवर और सुन्दर चांदीकावन इन सबसे भी युक्तबनावे इसके विशेष वेदपुराणोंके ज्ञाता जितेन्द्रिय ब्राह्मणोंको होमकरनेवाले होता बनावे पूर्वकी ओर एक हाथभरका कुंडबनावे उसमें तिल घृत समिध और कुशादिकोंसे हवनकरवावे रात्रिमें जागरणकरै शंखआदि बाजेबजावै गीतगावे–अब इन

त्तमान्नः सम्पूजितःपरमभक्तिमतामयाहि २७ त्वमेवभगवानीशो ब्रह्माविष्णुर्दिवाकरः। मूर्तामूर्तात्परंवीजमतःपाहि सनातन ! २८ यस्मात्त्वंलोकपालानां विश्वमूर्तेश्चमन्दिरम्। रुद्रादित्यवसूनाञ्च तस्माच्छान्तिम्प्रयच्छमे २९ यस्मादशून्यममरैर्नारीभिश्चशिवेनच। तस्मान्मामुद्धराशेषदुःखसंसारसागरात् ३० एवमभ्यर्च्यतम्मेरुम्मंदरञ्चाभिपूजयेत्। यस्माच्चैत्ररथेनत्वं भद्राश्वेनचवर्षतः ३१ शोभसेमन्दर! क्षिप्रमतस्तुष्टिकरोभव। यस्माच्चूडामणिर्जम्बू द्वीपेत्वंगन्धमादन! ३२ गन्धर्ववनशोभावानतःकीर्त्तिर्दृढ़ास्तुमे। यस्मात्त्वंकेतुमालेनवैभ्राजेनवनेनच, ३३ हिरण्मयाश्वत्थशिरास्तस्मात् पुष्टिर्ध्रुवास्तुमे। उत्तरैःकुरुभिर्यस्मात् सावित्रेणवनेनच ३४ सुपार्श्व! राजसेनित्यमतः श्रीरक्षयास्तुमे। एवमामन्त्र्यतान्सर्व्वान्प्रभातेविमलेपुनः। स्नात्वाथगुरवेदद्यान्मध्यमंपर्व्वतोत्तमम् ३५ विष्कम्भपर्वतान् दद्यादृत्विग्भ्यःक्रमशोमुने!। गाश्चदद्याच्चतुर्विंशअथवादशनारद! ३६ नवसप्ततथाष्टौवा पञ्चदद्यादशक्तिमान्। एकापिगुरवेदेया कपिलाचपयस्विनी ३७ पर्वतानामशेषाणामेषएवविधिःस्मृतः। तएवपूजनेमन्त्रास्तएवोपस्करामताः ३८ ग्रहाणांलोकपालानां ब्रह्मादीनाञ्चसर्वदा। स्वमन्त्रेणैवसर्वेषु होमःशैलेषुपठ्यते ३९ उपवासीभवेन्नित्यमशक्तेनक्तमिष्यते। विधानंसर्वशैलानां क्रमशःशृणु

सब पर्वतों का आवाहन कहते हैं २४। २६ अर्थात् ऐसेवचनकहे कि हे देवपर्व्वततुमसब देवताओं के स्थानरूपहो हमारेगृहमें शीघ्रतासे कुशलमंगल और आनन्दकरो मैंने परमभक्तिसे पूजाकी है आपमुझको परमशान्ति दीजिये २७ तुमही भगवान् शिव ब्रह्मा और सूर्य्य इनके स्वरूपहो सब मूर्त्तियों से परमश्रेष्ठहो इसहेतुसे मेरी रक्षाकरो २८ तुम सबलोकपाल और विश्वमूर्त्ति के मन्दिरहो तुम्हीं रुद्र सूर्य्य और वसु इनकेभी मन्दिरहो इसहेतु से मुझको शान्तिदो २९ तुमसब्लोकदेवता और शिवजी इनसे कभी शून्यनहीं रहतेहो इसकारण मुझकोदुःखरूपी संसारसागरसे पार उतारो ३० इसरीतिसे उस सुमेरु पर्व्वतका पूजनकरके मन्दराचलपर्व्वतकाभी पूजनकरे और यह मन्त्रकहे कि हे मन्दराचलतुमकुवेरकरके और भद्राश्वखण्डकरके शोभितहो इसलिये शीघ्रहीमेरीतुष्टिकरो हे गन्धमादनपर्व्वत तुमचूडामणिजंबूद्वीप से शोभितहो और गन्धर्वके वनकीशोभावालेहो इसलिये मेरीदृढकीर्त्तिहो तुमकेतुमालपर्व्वतसे और कुवेरकेवनसे शोभितहो सुवर्णकापीपल तुम्हारे मस्तक परहै इस निमित्तमेरी पुष्टिअचलाहोय उत्तरकेकुरुदेशोंसे और सावित्रीके वनसेशोभितहुआ सुपार्श्व पर्व्वत विराजमानहै इस हेतुसे मेरेअचलालक्ष्मीकरो इसप्रकार उन पर्व्वतोंको मन्त्रित करके प्रातःकाल स्नानकर मध्यके उत्तम पर्व्वतको गुरूके अर्थदेवे ३१। ३५ और चारों ओर के विष्कंभ नाम पर्व्वतोंको क्रमसे ऋत्विक् आदिकों के अर्थदानकरे और हे नारद चौबीस अथवा दशगौओंको भी देनायोग्यहै ३६ नौ आठ अथवा सात-पांच-अथवा एकहीकपिला गौ शक्तिके अनुसार गुरूके अर्थदेनी चाहिये ३७ सब पर्वतोंकी यही विधिकही है सबमें यहीपूजाकेमन्त्र और यही सामग्री है यह लोकपाल ब्रह्मादिकदेवता इन सबोंका होमभी इन्हींकेमन्त्रोंकरके करना यह विधि पर्व्वतों के दानमें

नारद ! ४० दानकालेचयेमन्त्राः पर्वतेषुचयत्फलम् । अन्नंब्रह्मयतःप्रोक्तमन्ने प्राणाः प्रतिष्ठिताः ४१ अन्नाद्भवन्तिभूतानि जगदन्नेनवर्त्तते । अन्नमेवततोलक्ष्मीरन्नमेवजनार्दनः ४२ धान्यपर्व्वतरूपेण पाहितस्मान्नगोत्तम ! । अनेनविधिनायस्तु दद्याद्धान्यमयं गिरिम् ४३ मन्वन्तरशतंसाग्रंदेवलोकेमहीयते । अप्सरोगणगन्धर्वैराकीर्णेनविराजता ४४ विमानेनदिवःपृष्ठमायातिस्मनिषेवितः । धर्म्मक्षयेराजराज्यमाप्नोतीहनसंशयः ४५

इति श्रीमत्स्यपुराणेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

(ईश्वर उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि लवणाचलमुत्तमम् । यत्प्रदानान्नरोलोकानाप्नोतिशिवसंयुतान् १ उत्तमःषोडशद्रोणैः कर्त्तव्योलवणाचलः । मध्यमःस्यात्तदर्द्धेन चतुर्भिरधमःस्मृतः २ वित्तहीनोयथाशक्त्या द्रोणादूर्द्ध्वन्तुकारयेत् । चतुर्थांशेनविष्कम्भपर्वतान्कारयेत्पृथक् ३ विधानंपूर्ववत्कुर्य्याद्ब्रह्मादीनाञ्चसर्वदा । तद्वद्धेममयान्सर्व्वान् लोकपालान्निवेशयेत् ४ सरांसिकामदेवादींस्तद्वदत्रापिकारयेत् । कुर्य्याज्जागरणञ्चापि दानमन्त्रान्निबोधत ५ सौभाग्यरससम्भूतो यतोऽयंलवणोरसः । तद्दानकर्तृकत्वेन त्वंमांपाहिनगोत्तम ! ६ यस्मादन्नरसाःसर्वे नोत्कटालवणंविना । प्रियञ्चशिव

कहीहै नित्यनिर्जलव्रतकरे जो शक्तिनहोयतो रात्रिमें भोजन करलेवे हे नारद अब क्रमपूर्व्वक सब पर्व्वतोंके विधानकोसुन ३८।४० पर्व्वतोंके दानकालके जो मन्त्रहैं वहभी सुनो अन्न ब्रह्महै मंत्रोंमें प्राणप्रतिष्ठा कही है ४१ अन्नसे भूत प्राणीमात्रहोते हैं अन्नसे जगत्प्रवृत्तहोरहा है इसहेतुसे अन्नही लक्ष्मी है अन्नही विष्णुभगवान् है ४२ हे पर्व्वतोत्तमतुमधान्यपर्व्वतके रूपसे मेरी रक्षाकरो इस विधिसे जो अन्नके पर्व्वत का दान करता है वह सौ १०० मनुओं के राज्यतक देवलोकमें वास करता है और अप्सरा और गन्धर्वगणोंसे शोभित हुए विमान में बैठकर स्वर्गमें विचरता है जब उसका धर्म क्षीण होजाता है तब उत्तम राजा के कुलमें जन्मलेता है ४३।४५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

शिवजी बोले अबमें उत्तम लवणाचलपर्व्वत के दानको कहताहूं जिसका दानकरनेवाला पुरुष उत्तमशिवके लोकोंमें प्राप्त होता है १ दोसौ छप्पन २५६ सेर नमकका उत्तम लवणाचलपर्व्वत होता है एकसौ अट्ठाईस सेर १२८ नमकका मध्यम और चौसठ ६४ सेरका कनिष्ठलवणाचलहोता है २ जो निर्धन होय वह १६ सेरसे ऊपर जितना होसके अपनी शक्तिकेअनुसार बनाले-इसपर्व्वत के प्रमाणकी चौथाई के चारोंओर वाले अलग २ चारों विष्कंभ संज्ञकपर्व्वतों को बनावै ३ और ब्रह्मादिक देवताओं का विधान पूर्वके समानकरै और पूर्व्वकेही तुल्य सुवर्ण के लोकपालोंको स्थापितकरै ४ सरोवर और कामदेवादि वन यह सबभी पूर्व्वकेही समान करने चाहियें-रात्रिमें जागरणकरै-अब दानके मन्त्र कहताहूं इनको इसप्रकार से कहै कि हे लवण तू सौभाग्य सरोवर से उत्पन्न भयाहै इसीसे उत्तम रस कहाताहै ऐसे लवणके दान करनेसे वह लवणाचल पर्व्वत संसार

योर्नित्यं तस्माच्छान्तिंप्रयच्छमे ७ विष्णुदेहसमुद्भूतं यस्मादारोग्यवर्द्धनम्। तस्मात्पर्वं तरूपेण पाहिसंसारसागरात् ८ अनेनविधिनायस्तु दद्याल्लवणपर्वतम्। उमालोकेव सेत्कल्पं ततोयातिपरांगतिम् ९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे त्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३॥

(ईश्वर उवाच) अतःपरम्प्रवक्ष्यामि गुड़पर्वतमुत्तमम्। यत्प्रदानान्नरःस्वर्गमाप्नोतिसुरपूजितम् १ उत्तमोदशभिर्भारैर्मध्यमःपञ्चभिर्मतः। त्रिभिर्भारैःकनिष्ठःस्यात्तदर्द्धेनाल्पवित्तवान् २ तद्वदामन्त्रणम्पूजां हेमवृक्षसुरार्चनम्। विष्कम्भपर्वतांस्तद्वत्सरांसिवनदेवताः ३ होमजागरणन्तद्वल्लोकपालाधिवासनम्। धान्यपर्वतवत्कुर्यादिमम्मन्त्रमुदीरयेत् ४ यथादेवेषुविश्वात्मा प्रवरोऽयंजनार्दनः। सामवेदस्तुवेदानां महादेवस्तुयोगिनाम् ५ प्रणवःसर्वमन्त्राणां नारीणाम्पार्वतीयथा। तथारसानाम्प्रवरः सदैवेक्षुरसोमतः ६ ममतस्मात्परांलक्ष्मीं गुड़पर्वत! देहिवै। यस्मात्सौभाग्यदायिन्या भ्राता त्वंगुड़पर्वत!। निवासश्चापिपार्वत्यास्तस्माच्छान्तिम्प्रयच्छमे ७ अनेनविधिनायस्तु दद्याद्गुड़मयंगिरिम्। पूज्यमानःसगन्धर्वैर्गौरीलोकेमहीयते ८ ततःकल्पशतान्तेतु सप्तद्वीपाधिपोभवेत्। आयुरारोग्यसम्पन्नः शत्रुभिश्चापराजितः ९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे चतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

सागरसे मेरी रक्षाकरो ६ सब अन्नोंके रस लवणके विना स्वादु नहीं होतेहैं इसीसे शिवजीको भी नित्य प्रिय है वह लवण मुझको शान्तिदे ७ जो कि विष्णुकी देहसे उत्पन्नभया है इस हेतुसे लवण आरोग्य बढ़ानेवाला है सो पर्वतरूप करके संसारसागर से मेरी रक्षाकरै ८ इस विधिसे जो लवणके पर्वतकादान करताहै वह शिवपार्वतीके लोकमें एक कल्पवासकरके परमपद मोक्षको प्राप्तहोताहै९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३॥

शिवजी कहते हैं कि अब गुड़के पर्व्वतका विधान कहताहूं जिसको दानकरनेवाला पुरुष देवताओंसे पूजितहोकर स्वर्गलोकमें वासकरताहै १ दशभार अर्थात् ५० मनगुड़का उत्तम–पच्चीसमनका मध्यम और साढ़े बारह मनका कनिष्ठ पर्व्वत होताहै निर्धन पुरुष डेढ़भार काभी बनालेवे २ पूर्व्व केही समान आमन्त्रण--पूजा--सुवर्ण का वृक्ष--देवताओं का पूजन चारोंओर को विष्कंभसंज्ञक पर्व्वत सरोवर--वन और देवता इनको भी बनाकर ३ होमकरै--रात्रिमें जागरणकरै लोकपालों का पूजनकरै यह सबविधि धान्य पर्व्वतके समान करै और इस मंत्रका उच्चारणकरै४ कि जैसे देवताओं में विष्णु श्रेष्ठ हैं -वेदोंमें सामवेद श्रेष्ठ है–योगियों में महादेव श्रेष्ठ हैं--मंत्रोंमें ॐकार श्रेष्ठहै स्त्रियोंमें पार्वती श्रेष्ठ हैं इसी प्रकार सबरसों में ईखका रस श्रेष्ठहै ५।६ इस हेतुसे मुझको गुड़का पर्व्वत परम लक्ष्मी देवे हे गुड़के पर्व्वत तुम सौभाग्यदायिनी पार्व्वतीजी के भ्राताहो और निवासरूप हो इस निमित्त मुझको शान्ति दो--७ इस विधिसे जो गुड़के पर्व्वतका दान करता है वह गन्धर्वों से पूजित होकर पार्व्वतीजी के लोकमें प्राप्त होता है ८ फिर सात कल्पोंके अन्तमें पृथ्वीपर आकर सातोंद्वीपों

अथपापहरंवक्ष्ये सुवर्णाचलमुत्तमम् । यस्यप्रदानाद्भवनं वैरिञ्च्यंयातिमानवः १
उत्तमःपलसाहस्रो मध्यमःपंचभिःशतैः। तदर्द्धेनाधमस्तद्वदल्पवित्तोऽपिशक्तितः २ द
द्यादेकपलादूर्ध्वं यथाशक्त्याविमत्सरः । धान्यपर्वतवत्सर्वं विदध्यान्मुनिपुङ्गवः ३ वि
ष्कम्भशैलांस्तद्वच्च ऋत्विग्भ्यःप्रतिपादयेत् । नमस्तेब्रह्मबीजाय ब्रह्मगर्भायतेनमः ४
यस्मादनन्तफलदस्तस्मात्पाहि शिलोच्चय ! । यस्मादग्नेरपत्यंत्वं यस्मात्पुण्यंजगत्पते!
५ हेमपर्वतरूपेण तस्मात्पाहिनगोत्तम ! । अनेनविधिनायस्तु दद्यात्कनकपर्वतम् ६ स
यातिपरमंब्रह्मलोकमानन्दकारकम् । तत्रकल्पशतंतिष्ठेत्ततो यातिपराङ्गतिम् ७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामि तिलशैलंविधानतः । यत्प्रदानान्नरोयाति विष्णुलोकंसनातनम्१
उत्तमोदशभिर्द्रोणैर्मध्यमःपञ्चभिःस्मृतः । त्रिभिःकनिष्ठोविप्रेन्द्र ! तिलशैलःप्रकीर्तितः २
पूर्ववच्चापरान्सर्वान्विष्कम्भानभितोगिरीन्।दानमन्त्रान्प्रवक्ष्यामियथावन्मुनिपुङ्गव!३
यस्मान्मधुवधेविष्णोर्देहस्वेदसमुद्भवाः।तिलाःकुशाश्चमाषाश्चतस्माच्छन्नोभवत्विह ४

का अधिपति राजा होताहै और आयु आरोग्य से युक्तहो कभी शत्रुओंसे पीड़ित नहीं होताहै ९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४ ॥

अब सब पापोंके हरनेवाले सुवर्णाचल पर्व्वतके दानको कहते हैं इसके दानकरने से मनुष्य ब्रह्मा के लोकमें प्राप्तहोता है १ हजार पल अर्थात् ४००० तोलोंका उत्तम सुवर्णाचल होताहै पांचसौ पल अर्थात् दोहज़ार तोले सुवर्णका मध्यम और एक हज़ार तोले सुवर्णका कनिष्ठ पर्व्वत होताहै और अल्पधन वाला पुरुष अपनी शक्तिके अनुसार थोड़ेही सुवर्णका बनावे २ परन्तु चार तोले से कम वह भी नहीं बनावे जितना अधिकहोय उतनाही श्रेष्ठहै बनाने में कुटिलता न करै पूर्व्व कहेहुए धान्य पर्व्वत केही समान सब विधानकरै ३ चारोंओर विष्कंभ पर्व्वतोंको बनाके पूर्वकेही तुल्य ऋत्विक् पुरोहित आदिकों के अर्थ दानकरै और यह मंत्रकहै कि ब्रह्म बीजरूप गर्भसे उत्पन्नहोनेवाले तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै ४ हे सुवर्णाचल तुम अनन्तफल देनेवाले हो जो कि सुवर्ण अग्निसे उत्पन्न हुआहै इसीसे परमपवित्र है इस हेतुसे हे नगोत्तम सुवर्णके पर्व्वतके दानकरने से मेरी रक्षाकर इस विधिसे जो सुवर्ण के पर्व्वतका दानकरताहै वह परमानन्दकारक ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै और वहाँ सौ १०० कल्पतक वासकरके फिर मोक्षको प्राप्त होजाताहै ५।७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

अब तिलोंके पर्व्वतका विधानकहते हैं इसके दानसे मनुष्य सनातन विष्णुलोकमें प्राप्त होता है १ एकसौ साठ १६० सेर तिलोंका उत्तम अस्सी ८० सेरोंका मध्यम और ४८ सेर तिलोंका कनिष्ठ पर्व्वत होताहै इस प्रकारसे तिल पर्व्वतका विधान कहाहै २ पूर्व्वके समान चारों ओर को विष्कंभ संज्ञक पर्व्वतों को स्थापितकरै हेनारद अब इस के दानके मंत्रोंको कहताहूं ३ मधु दैत्यके वधकरने में विष्णुके शरीर के पसीनेसे तिल कुशा और उड़द यह तीनों उत्पन्न हुएहैं इस हेतुसे है

हव्येकव्येचयंस्माच्चतिलाएवाभिरक्षणम्। भवादुद्धरशैलेन्द्र! तिलाचल! नमोऽस्तुते ५ इत्यामन्त्र्यचयोदद्यात् तिलाचलमनुत्तमम्। सवैष्णवंपदंयाति पुनरावृत्तिदुर्लभम् ६ दीर्घायुष्यंसमाप्नोति पुत्रपौत्रैश्चमोदते। पितृभिर्देवगन्धर्वैः पूज्यमानोदिवंव्रजेत् ७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेषडशीतितमोऽध्यायः ८६॥

कार्पासपर्वतस्तद्वद्विंशद्भारैरिहोत्तमः। दशभिर्मध्यमःप्रोक्तः पंचभिस्त्वधमःस्मृतः। भारेणाल्पधनो दद्याद्वित्तशाठ्यविवर्जितः १ धान्यपर्वतवत्सर्वमासाद्यमुनिपुङ्गव!। प्रभातायान्तुशर्वर्यां दद्यादिदमुदीरयेत् २ त्वमेवावरणंयस्माल्लोकानामिहसर्वदा। कार्पासाद्रे! नमस्तुभ्यमघौघध्वंसनोभव ३ इतिकार्पासशैलेन्द्रं योदद्याच्छर्वसन्निधौ। रुद्रलोके वसेत्कल्पं ततोराजाभवेदिह ४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामि घृताचलमनुत्तमम्। तेजोऽमृतमयंदिव्यं महापातकनाशनम् १ विंशत्याघृतकुम्भानामुत्तमः स्याद्घृताचलः। दशभिर्मध्यमःप्रोक्तः पञ्चभिस्त्वधमःस्मृतः २ अल्पवित्तोऽपियः कुर्याद्द्वाभ्यामिहविधानतः। विष्कम्भपर्वतांस्तद्वच्चतुर्भागेनकल्पयेत् ३ शालितण्डुलपात्राणि कुम्भोपरिनिवेशयेत्। कारयेत्संहतानुच्चान्यथाशोभंविधा

तिल पर्व्वत तूमेरा कल्याणकर हव्य कव्य और देव पितर कर्ममें तिलही उत्तमहै इस हेतुसे हे तिलाचल मेरीरक्षाकरो मैं आपको नमस्कार करताहूं ४।५ इसरीतिसे मंत्रितकरके जो तिलके पर्व्वतका दान करताहै वह विष्णुके परमपद को प्राप्त होताहै और इस संसारमें फिर कभी नहीं आताहै ६ दीर्घायुहोती है पुत्र पौत्रों से युक्तहो आनन्द करताहै और देवता पितर गन्धर्वादिकों से पूजित हो स्वर्गमें प्राप्त होताहै ७॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषडशीतितमोऽध्यायः ८६॥

कपासका पर्व्वत वीसभार अर्थात् १०० मनका बनाना उत्तमहै पचासमन ५० का मध्यम और पच्चीसमनका निकृष्ट पर्व्वत होता है थोड़े धनवाला पुरुष एकही भारका पर्व्वत बनावे द्रव्यका लोभ नहींकरै १ हे नारदमुनि पूर्व्व कहेहुए धान्य पर्व्वतके समान सब विधिकरै जबरात्रि व्यतीत होजाय तब प्रातःकाल दानदेने के समय इस मंत्रका उच्चारणकरै २ कि हे कपासके पर्व्वत तुम सब लोगों को वस्त्रादिक के द्वारा आच्छादनकरते हो आपको मैं नमस्कार करताहूं आप अनुग्रह करके मेरे पापोंका नाशकरो ३ इस विधिसे जो कोई कपासके पर्व्वतको शिवजी के समीप दानकरताहै वह एक कल्पतक शिवलोकमें वासकरके फिर पृथ्वी पर राजा होताहै ४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७॥

अब घृतके पर्व्वतके दानको कहते हैं घृताचलका तेज अमृतरूप है दिव्य है महापातकों का नाशकहै १ घृतके बीस कलशोंका उत्तम घृताचल होताहै दशघटों का मध्यम और पांचकलशों का कनिष्ठ होताहै २ थोड़े धनवाला पुरुष दोकलश घृतका पर्व्वत बनावे यहाँ एक कलश अनुमान के तुल्य बनावे उसके चारोंओर को विष्कंभ संज्ञक पर्व्वतों को स्थापितकरै ३ शाली चावलों से युक्त

नतः ४ वेष्टयेच्छुक्लवासोभिरिक्षुदण्डफलादिकैः। धान्यपर्वतवच्छेषं विधानमिहपठ्यते५
अधिवासनपूर्वञ्च तद्वद्धोमसुरार्चनम्। प्रभातायांतुशर्व्यां गुरवेतन्निवेदयेत् ६ विष्कम्भ
पर्वतांस्तद्वद्दात्विग्भ्यः शान्तमानसः। संयोगाद् घृतमुत्पन्नं यस्मादमृततेजसोः ७ तस्मा
द् घृतार्चिर्विश्वात्मा प्रीयतामत्रशङ्करः। यस्मात्तेजोमयंब्रह्म घृतेतद्धिव्यवस्थितम् ८ घृत
पर्वतरूपेणतस्मात्त्वं पाहिनोऽनिशम्। अनेनविधिना दद्याद् घृताचलमनुत्तमम् ९ महा
पातकयुक्तोऽपि लोकमाप्नोतिशाङ्करम्। हंससारसयुक्तेन किङ्किणीजालमालिना १० वि
मानेनाप्सरोभिश्च सिद्धविद्याधरैर्वृतः। विहरेत्पितृभिःसार्द्धं यावदाभूतसंप्लवम् ११॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामि रत्नाचलमनुत्तमम्। मुक्ताफलसहस्रेण पर्वतःस्यादनुत्तमः १ म
ध्यमःपञ्चशतकस्त्रिशतेनाधमःस्मृतः। चतुर्थांशेनविष्कम्भपर्वताःस्युःसमन्ततः २ पूर्वेण
वज्रगोमेदैर्दक्षिणेनेन्द्रनीलकैः। पद्मरागयुतःकार्य्यो विद्वद्भिर्गन्धमादनः ३ वैदूर्य्यविद्रुमैः
पश्चात्संमिश्रोविमलाचलः। पद्मरागैःससौवर्णैः रुत्तरेणचविन्यसेत् ४ धान्यपर्वतवत्सर्व
मत्रापिपरिकल्पयेत्। तद्वदावाहनंकुर्य्याद् वृक्षान्देवांश्चकाञ्चनान् ५ पूजयेत्पुष्पग

पात्र घृतके कलशों पै स्थापितकरके एक स्थानपर इकट्ठेकरे उंचाई में शोभापूर्व्वक कलशोंको स्थापि-
तकरै ४ ईखका गांड़ा और सफेदवस्त्र इनसे लपेटदेवै और बाकीका विधान धान्य पर्व्वतके समान
समझलेना योग्यहै ५ पूर्वके समान रात्रिमें जागरणकरै होमकरै देवताओंका पूजनकरै जब प्रातःकाल
होजाय तब सब वस्तुओं को गुरूके अर्थ देदेवै ६ पूर्व्वके समान विष्कंभसंज्ञक पर्व्वतों को ऋत्विक्
आदिकों के अर्थदेवै फिर शान्तमन होके ऐसाकहै कि अमृतके और अग्नितेजके योगसे घृत उत्पन्न
हुआ है इस हेतुसे इसके दानकरनेसे विश्वात्मा शंकर प्रसन्नहो तेजरूपही ब्रह्महै सो घृतमें व्यवस्थित
हैं इस निमित्त घृत पर्व्वतके दानसे मेरी निरन्तर रक्षाहो--इस विधिसे जो उत्तम घृताचल पर्व्वतका
दानकरताहै वह महापातकी भी चाहे होय परन्तु अवश्यही शंकरके लोकमें प्राप्तहोता है और हंस
सारस पक्षी किंकिणी जाली और झरोखे इनसबसे शोभितहुए विमानपर बैठकर अप्सरा विद्याधर
और पितर इन सबसंयुक्त हो प्रलय कालतक स्वर्गमें रहताहै ७।११॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥

अबरत्नाचल पर्व्वतके विधानको कहताहूं हज़ार मोतियोंका उत्तम पर्व्वतकहा है १ पॉचसौ मो-
तियोंका मध्यम औरतीन ३०० सौ मोतियोंका छोटाकनिष्ठ पर्व्वत कहाताहै इस पर्वतके चतुर्थांश
मोतियोंसे उसके चारों ओर चार विष्कंभ पर्व्वत बनावे २ पूर्व्व में हीरा गोमेदमणि—दक्षिणमें
इन्द्रनीलमणि तथा पुखराजसे युक्त गन्धमादन पर्व्वत बनावै ३ वैडूर्य्यमणि मूंगा इनसे युक्त वि-
मलाचलपर्व्वत पश्चिममें बनावे—पुखराज और सुवर्णसे उत्तरका पर्व्वत बनावै यहॉं से सबविधि
धान्यपर्व्वत केही समान करनी चाहिये उसीप्रकार आवाहनपूर्व्वक वृक्षलगा सुवर्ण के देवताबना
कर ४।५ गन्ध पुष्पादिकों से पूजा करै जब प्रातःकाल होजाय तब सरलस्वभाव से पूर्व के समान

न्धाद्यैः प्रभातेचविमत्सरः। पूर्ववद्गुरुमृत्विग्भ्य इमान्मन्त्रानुदीरयेत् ६ यद्वादेवगणाःसर्वे सर्वरत्नेष्ववस्थिताः। त्वञ्चरत्नमयोनित्यं नमस्तेऽस्तुसदाचल ! ७ यस्माद्रत्नप्रदानेन तुष्टिम्प्रकुरुतेहरिः। सदारत्नप्रदानेन तस्मान्नःपाहिपर्वत ! ८ अनेनविधिना यस्तुदद्याद्रत्नमयंगिरिम्। सयातिविष्णुसालोक्यं ममरेश्वरपूजितः ९ यावत्कल्पशतं साग्रं वसेच्चेहनराधिप !। रूपारोग्यगुणोपेतः सप्तद्वीपाधिपोभवेत् १० ब्रह्महत्यादिकङ्किञ्चिद्यदत्रामुत्रवाकृतम्। तत्सर्वंनाशमायाति गिरिर्वज्रहतोयथा ११ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे नवाशीतितमोऽध्यायः ८९॥

अतःपरम्प्रवक्ष्यामि रौप्याचलमनुत्तमम्। यत्प्रदानान्नरोयाति सोमलोकमनुत्तमम् १ दशभिःपलसाहस्रैरुत्तमोरजताचलः। पञ्चभिर्मध्यमःप्रोक्तस्तदर्द्धेनाधमःस्मृतः २ अशक्तोविंशतेरूर्ध्वंकारयेच्छक्तितस्तदा। विष्कम्भपर्वतांस्तद्वत्तुरीयांशेनकल्पयेत् ३ पूर्ववद्राजतान्कुर्वन्मन्दरादीन्विधानतः। कलधौतमयांस्तद्वल्लोकेशानर्चयेद्बुधः ४ ब्रह्मविष्ण्वर्कवान्कार्यो नितम्बोऽत्रहिरण्मयः। राजतंस्याद्यदन्येषां सर्वंतदिहकाञ्चनम् ५ शेषन्तुपूर्ववत्कुर्याद्धोमजागरणादिकम्। दद्यात्ततःप्रभातेतु गुरवेरौप्यपर्वतम् ६ विष्कम्भ

गुरू ऋत्विक् आदिकोंके अर्थदेदे और इनमंत्रोंका उच्चारण करे ६ जबकि सबदेवता सबरत्नोंमें स्थितहैं और तुम रत्नरूपी पर्व्वतहो इसहेतुसे तुम सदा अचलहो ऐसे आपके अर्थ नमस्कार है ७ रत्न के दानकरने से हरि भगवान् प्रसन्नहोते हैं इसलिये रत्नोंके दान करने से हमारी सदा रक्षाकरो ८ इसविधिसे जो रत्नोंके पर्व्वतका दान करता है वह इन्द्रादिक देवताओंसे पूजितहोके विष्णुलोक में प्राप्त होता है ९ वहाँ विष्णुके लोकमें दिव्य कल्पतक वास करके फिर पृथ्वी पै जन्म लेकर सातों द्वीपों का महाराजहोता है १० और ब्रह्महत्यादि सब पापों का नाशहोजाता है जैसे कि इन्द्रके वज्र पातसे पर्व्वतोंका नाश होजाता है वैसेही इस दानसे सब पापोंका नाश होता है—११ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

हेनारद अब इसकेपीछे उत्तम रौप्याचल अर्थात् चाँदीके पर्व्वतका विधान कहते हैं इसरौप्याचलके दानसे उत्तम चन्द्रलोक प्राप्तहोता है १ दशहज़ार पल अर्थात् ४०००० तोले चाँदीका उत्तम पर्व्वत कहाहै बीसहजार २०००० तोले चाँदीका मध्यम और दशहज़ार १०००० तोले चाँदीका कनिष्ठपर्व्वत कहा है २ जो असमर्थ होतो अस्सीतोले चाँदीसे अधिक अपनीशक्तिके अनुसार जितनाहोसके उतनाही बनावे और पूर्वके समान चतुर्थांशचाँदीका एक २ पर्व्वत चारों ओरको विष्कंभसंज्ञक बनावे ३ पूर्व्वकेतुल्य मन्दराचलके विधानके अनुसार इनको चाँदी के बनावे और सुवर्णके लोकपाल बनावे उनका पूजनकरे ४—इसपर्व्वतपै ब्रह्मा विष्णु और सूर्य्य इनतीनोंकी जुदी २ मूर्त्ति बनावे इसकी पीठका भाग सुवर्णका बनावे और अन्य पर्व्वतोंकी पठिका भाग चाँदीका बनावे सबदेवतादिकों की मूर्त्ति चाँदीकीबनावे ५ और शेष होमादिककी विधि पूर्व्वकेसमान करके रात्रिमें जागरणादिक कर्म करे जब प्रातःकालहोय तब उसचाँदी के पर्व्वतको गुरूके अर्थदेदे और

शैलान्नृत्विग्भ्यः पूज्यवस्त्रविभूषणैः। इमम्मन्त्रम्पठन्दद्याद्दर्भपाणिर्विमत्सरः ७ पितॄणां वल्लभोयस्माद्धरिन्द्राणांशिवस्यच । पाहिराजत ! तस्मात्त्वं शोकसंसारसागरात् ८ इत्थंनिवेद्ययोदद्याद्रजताचलमुत्तमम्। गवामयुतदानस्य फलम्प्राप्नोतिमानवः ९ सोम लोकेसगन्धर्वैः किन्नराप्सरसांगणैः। पूज्यमानोवसेद्विद्वान्यावदाभूतसम्प्लवम् १०॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे नवतितमोऽध्यायः ९०॥

अथातःसम्प्रवक्ष्यामि शर्कराशैलमुत्तमम्। यस्यप्रदानाद्विष्णवर्करुद्रास्तुष्यन्ति सर्वदा १ अष्टाभिःशर्कराभारै रुत्तमःस्यान्महाचलः। चतुर्भिर्मध्यमःप्रोक्तो भाराभ्या मधमःस्मृतः २ भारेणवार्द्धभारेण कुर्याद्यःस्वल्पवित्तवान्। विष्कम्भपर्वतान्कुर्यात्तु रीयांशेनमानवः ३ धान्यपर्वतवत्सर्वं मासाद्यामरसंयुतम्। मेरोरुपरितद्वच्च स्थाप्य हेमतरुत्रयम् ४ मन्दारःपारिजातश्च तृतीयःकल्पपादपः। एतद्वृक्षत्रयंमूर्ध्नि सर्वेष्वपिनियोजयेत् ५ हरिचन्दनसन्तानौ पूर्वपश्चिमभागयोः। निवेश्यौसर्वशैलेषु विशेषाच्छर्कराचले ६ मन्दरेकामदेवस्तु प्रत्यग्वक्त्रःसदाभवेत्। गन्धमादनशृङ्गेतु धनदःस्यादुदङ्मुखः ७ प्राङ्मुखोवेदमूर्तिस्तु हंसःस्याद्विपुलाचले। हैमीसुपार्श्वेसुर भिर्दक्षिणाभिमुखाभवेत् ८ धान्यपर्वतवत्सर्वमावाहनविधानकम्। कृत्वातुगुरवेदद्या

चारों ओरके विष्कंभ संज्ञक पर्व्वतोंको वस्त्रालंकारादिसे पूजकर ऋत्विक् आदिकोंको दान करदे फि रहाथमें कुशा धारणकर सरल चित्तसे इसमंत्रका उच्चारणकरै ६। ७ कि पितरोंको चाँदी प्रिय है निर्धनको ८ और शिवजीकोभी चाँदीप्रिय है इसहेतुसे हेराजत अर्थात् चाँदीके पर्व्वत तुमहमारी रक्षाकरो इसविधिसे जोचाँदीके पर्व्वतका दान करताहै वह पुरुष दश हज़ार गौओंके दानके समान पुण्यको प्राप्त होता है ९ और गन्धर्व किन्नर अप्सरादिकोंसे पूजितहोके चन्द्रलोक में प्राप्तहो प्रलय कालतक वासकरता है १० इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांनवतितमोऽध्यायः ९०॥

अब उत्तम शर्कराशैल अर्थात् खांडके पर्व्वतका विधान कहते हैं जिसके दानकरनेसे विष्णु शिव और सूर्य्य यह तीनों सदा प्रसन्न रहते हैं आठभार अर्थात् बीस २० मन खांडका उत्तम शर्कराशैल बनताहै दशमन खांडका मध्यम और पांचमन खांडका निकृष्ट अर्थात् छोटा बनताहै १।२ जो थोड़े धनवाला पुरुष होय वह एकही भारका अथवा आधे भारकाही बनावे इस पर्व्वत के चतुर्थांश भाग के चारों ओरके विष्कंभसंज्ञक पर्व्वत बनावे ३ धान्यके पर्व्वतके समान सबविधि करै देवतों की मूर्त्तिसे युक्त पर्व्वत बनावे और सुमेरु पर्व्वत पै पूर्व्वके तुल्य सुवर्ण के मन्दार पारिजात और क ल्पद्रुम इन तीन वृक्षोंको स्थापित करै यह तीनों वृक्ष सबप्रकारके पर्व्वतों के मस्तक पर स्थापित करने कहे हैं ४। ५ पूर्व्व पश्चिम के भाग में हरिचन्दन और सन्तान इन वृक्षोंको स्थापित करै यह सब प्रकारके पर्व्वतों में विधि कही है और शर्कराचलपर्व्वतमें तो अवश्यही करै ६ मन्दराचल पै पश्चिमकी ओर मुख करके कामदेव की मूर्त्तिको स्थापित करै--गन्धमादन पै उत्तराभिमुख कुबेर को स्थापित करै ७ विपुलाचल पै पूर्व्वाभिमुख वेद मूर्त्ति स्वरूप हंसको स्थापित करै--सुपार्श्व पै

न्मध्यमंपर्वतोत्तमम् । ऋत्विग्भ्यश्चतुरःशैलानिमान्मन्त्रानुदीरयन्, ९ सौभाग्यामृतसारोऽयं पर्वतःशर्करायुतः । तस्मादानन्दकारीत्वं भवशैलेन्द्र! सर्वदा १० अमृतं पिवतांयेतु निपेतुर्भुविशीकराः। देवानांतत्समुत्थस्त्वं पाहिनःशर्कराचल! ११ मनो भवधनुर्मध्यादुद्भूताशर्करायतः ।. तन्मयोऽसिमहाशैल ! पाहिसंसारसागरात् १२ योदद्याच्छर्कराशैलमनेनविधिनानरः। सर्वपापैर्विनिर्मुक्तः सयातिपरमम्पदम् १३ चंद्र तारार्कसङ्काशमधिरुह्यानुजीविभिः ।.सहैवयानमातिष्ठेत्तत्रविष्णुप्रचोदितः १४ ततः कल्पशतांतेतु सप्तद्वीपाधिपोभवेत्। आयुरारोग्यसम्पन्नो यावज्जन्मार्बुदत्रयम् १५ भो जनंशक्तितःकुर्यात् सर्वशैलेष्वमत्सरः । सर्वत्राक्षारलवणमश्नीयात्तदनुज्ञया । पर्वतो पस्करान्सर्वान् प्रापयेद्ब्राह्मणालयम् १६ (ईश्वर उवाच) आसीत्पुराबृहत्कल्पे धर्म्ममूर्तिर्जनाधिपः। सुहृच्छक्रस्यनिहता येनदैत्याःसहस्रशः १७ सोमसूर्यादयोयस्य तेजसाविगतप्रभाः। भवंतिशतशोयेन शत्रवश्चापराजिताः। यथेच्छारूपधारीच मनुष्योऽप्यपराजितः १८ तस्यभानुमतीनाम भार्यात्रैलोक्यसुंदरी। लक्ष्मीवद्दिव्यरूपेण निर्जितामरसुंदरी १९ राज्ञस्तस्याग्रमहिषी प्राणेभ्योऽपिगरीयसी। दशनारीसहस्राणां मध्येश्रीरिवराजते २० नृपकोटिसहस्रेण नकदाचित्समुच्यते । कदाचिदास्थानगतः

र्व्वत पै दक्षिणाभिमुखवाली सुवर्णकी गौ स्थापित करै ८ और सव आवाहनादिक विधि धान्य पर्व्वत के समान करै फिर मध्य के पर्व्वतको गुरूके अर्थ निवेदन करै और विष्कंभसंज्ञक पर्व्वतों को ऋत्विक्आदिकों के अर्थ अर्पण करै और पीछे इनमंत्रों का उच्चारण करै ९ कि खांड़ से वनाया हुआ यह पर्व्वत सौभग्याऽमृतसार नामक कहाताहै इसहेतुसे मुझको सदा आनन्द करनेवाला हो१० हे शर्कराचल अमृत को पीते हुए देवताओंके पाससे जो विन्दु गिरे हैं उन विन्दुओं से खांड़ शर्करादिक की उत्पत्ति हुई है इसलिये तुम मेरी रक्षाकरो ११ और कामदेवके पुष्पोंके धनुषसे भी शर्करा उत्पन्नहुई है सो शर्करा स्वरूप तुम पर्व्वतहो इसहेतु करके संसार सागरसे मेरी रक्षा करो १२ जो मनुष्य इस विधिसे शर्कराचलपर्व्वत का दान करता है वह सव पापोंसे छुटकर परमपदको प्राप्त होता है १३ विष्णुकी आज्ञासे चन्द्रतारागणके समान कान्तिवाले विमानपर बैठकर स्वर्गमें विचरता है फिर सौ १०० कल्पोंके अन्तमें सातों द्वीपों का महाराज होताहै तीन अर्बुद जन्मोंतकआयु आरोग्य से सम्पन्न रहता है १४। १५ सवपर्व्वतों के विधान में नमकरहित भोजन शक्तिके अनुसार थोड़ा आहार करै और पर्व्वतकी सव सामग्री ब्राह्मणों के घरों पर पहुंचा दे १६ शिव जी कहते हैं कि पूर्व्व बृहत्कल्पमें धर्ममूर्त्ति इन्द्रका मित्र एकराजा हुआ जिसने हजारों दैत्य मारे १७ और जिसके तेज से सूर्य्य चन्द्रमादिक भी मन्द तेजवाले दीखने लगे वह राजा यद्यपिमनुष्य भी था परन्तु इच्छापूर्व्वक सवस्थानों में विचरता हुआ सैकड़ों शत्रुओं को जीतता भया १८ उसकी भानुमती नाम स्त्री सव त्रिलोकी में परम सुन्दरी होती भई और लक्ष्मी के समान अपने दिव्य रूपसे सब देवताओं की स्त्रियोंको सुन्दरतामें जीतलेती भई १९ वह मुख्यरानी उसराजाको प्राणों

पप्रच्छसपुरोधसम्। विस्मयेनाद्वतोराजा वसिष्ठमृषिसत्तमम् २१ भगवन्! केनधर्मेण ममलक्ष्मीरनुत्तमा। कस्माच्चविपुलन्तेजो मच्छरीरेसदोत्तमम् २२ (वसिष्ठ उवाच) पुरालीलावतीनाम वेश्याशिवपरायणा। तयादत्तश्चतुर्दश्यांगुरवेलवणाचलः। हेमवृक्षादिभिःसार्द्धं यथावद्विधिपूर्वकम् २३ शूद्रःसुवर्णकारश्च नाम्नाशौण्डोऽभवत्तदा। भृत्योलीलावतीगेहे तेनहेम्नाविनिर्मिताः २४ तरवःसुरमुख्याश्च श्रद्धायुक्तेनपार्थिव! अतिरूपेणसंपन्नाघटयित्वाविनाभृतिम्। धर्म्मकार्य्यमितिज्ञात्वानगृह्णातिकथञ्चन २५ उज्ज्वालिताश्चतत्पत्न्यासौवर्णामरपादपाः। लीलावतीगिरेःपार्श्वे परिचर्य्योश्चपार्थिव! २६ कृत्वाताभ्यामशाठ्येनगुरुशुश्रूषणादिकम्। साचलीलावतीवेश्याकालेनमहतापिच २७ कालधर्म्ममनुप्राप्ता कर्म्मयोगेननारद!। सर्वपापविनिर्मुक्ता जगामशिवमन्दिरम् २८ योऽसौसुवर्णकारस्तु दरिद्रोऽप्यतिसत्त्ववान्। नमौल्यमादाद्वेश्यातःसंभवानिहसाम्प्रतम् २९ सप्तद्वीपपतिर्जातः सूर्य्ययुतसमप्रभः। यथासुवर्णकारस्य तरवोहेमनिर्मिताः। सम्यगुज्ज्वालिताःपत्न्या सेयम्भानुमतीतव ३० उज्ज्वालनादुज्ज्वलरूपमस्याः सञ्जातमस्मिन् भुवनाधिपत्यम्। यस्मात्कृतंतत्परिकर्म्मरात्रावनुद्धताभ्यांलवणाचलस्य। तस्माच्चलोके

से भी अधिक प्रिय होती भई वह अकेलीही दश हज़ार स्त्रियों में लक्ष्मी के सदृश शोभित थी २० उसराजा के संगमें सैकड़ों राजा रहा करतेथे ऐसा प्रतापी भी वह राजा किसी समय अपने पुरोहित समेत वसिष्ठजी के स्थान पर जाकर आश्चर्य्य से पूछने लगा २१ कि हे भगवन् मेरे किस धर्मके प्रभावसे उत्तम लक्ष्मी प्राप्त होरही है और मेरे शरीर में यह उत्तम तेज कैसे होगया है इसको कृपा करके कहिये २२ वसिष्ठजी बोले--कि प्रथम लीलावती नाम वेश्या शिवजी की परमभक्तिमें तत्पर थी उसने चतुर्दशी के दिन गुरुके अर्थ लवणाचल पर्व्वतका दान सुवर्ण के वृक्षादिकोंसे युक्त विधिपूर्व्वक दिया था २३ और लीलावती वेश्या के घरमें एक शूद्र सुनार जाति अति चतुर भृत्य रहा करता था उसने उन सुवर्ण के वृक्षों को बड़ी श्रद्धा से अतिसुन्दर गढ़ दिया था और उनकी बनवाई कुछ नहीं ली थी वह धर्मके काम करनेमें कभी अपनी मेहनत नहीं लिया करताथा २४।२५ हे राजा उस सुवर्णकार की स्त्री ने वह सुवर्ण के वृक्ष उजालकर लीलावती के पर्व्वतपै अच्छी रीति से स्थापित कर दिये २६ और भक्तिसे उन दोनोंने गुरुकी भक्तिकी और सेवा टहल करते रहे फिर वह लीलावती वेश्या बहुत समय व्यतीत होने के पीछे मृत्युको प्राप्त होगई वही उस कर्म के योग से सब पापों से छूट कर शिवलोक में प्राप्त हुई २७।२८ और उसके घरमें जो सुनार था वह अति दरिद्री और कुटुम्बीथा परन्तु जो कि उसने मूर्त्ति और वृक्षादिकों के बनानेका मूल्य नहीं लियाथा वही अब तू यहां राजा हुआ है २९ और उसी धर्म के प्रभाव से सातों द्वीपोंका राजा और सूर्य्य के समान कान्तिवाला हुआ है और जैसे कि तुमने मूर्त्ति वृक्षादिक बनाये थे उसी प्रकार तुम्हारी स्त्री ने सुवर्ण के वृक्षादिकों को उजाल कर पर्व्वत पर जमा दियेथे इसीसे वह स्त्री अब तेरी रानी हुई है ३० वृक्षों के उजाल देने से इसका उत्तम रूप हुआ है और शुद्धचित्त से तुम दोनों ने रात्रि के

ष्वपराजितत्वमारोग्यसौभाग्ययुताचलक्ष्मीः ३१ तस्मात्त्वमप्यत्रविधानपूर्वं धान्याचला दीन्दशधाकुरुष्व। तथेतिसत्कृत्यसधर्म्ममूर्तिर्वचोवसिष्ठस्यददौचसर्वान्। धान्याच लादीन्कृतशोमुरारेर्लोकं जगामामरपूज्यमानः ३२ पश्येदपीमानधनोऽतिभक्त्या स्पृशे न्मनुष्यैरपिदीयमानान्। शृणोतिभक्त्याथमतिंददाति विकल्मषःसोऽपिदिवंप्रयाति ३३ दुःस्वप्नप्रशममुपैतिपठ्यमानैः शैलेन्द्रैर्भवभयभेदनैर्मनुष्यः। यःकुर्यात्किमुमुनिपुङ्गवेहस म्यक् शान्तात्मासकलगिरीन्द्रसम्प्रदानम् ३४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकाधिकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

(सूत उवाच) वैशम्पायनमासीनमपृच्छच्छौनकःपुरा। सर्वकामाप्तयेनित्यं कथंशा न्तिकपौष्टिकम् १ (वैशम्पायन उवाच) श्रीकामःशान्तिकामोवा ग्रहयज्ञंसमारभेत्। वृ द्ध्यायुःपुष्टिकामोवा तथैवाभिचरन्पुनः। येनब्रह्मन्! विधानेनतन्मे निगदतःशृणु २ सर्व शास्त्राण्यनुक्रम्यसंक्षिप्यग्रन्थविस्तरम्। ग्रहशान्तिंप्रवक्ष्यामि पुराणश्रुतिनोदिताम् ३ पुण्येऽह्निविप्रकथिते कृत्वाब्राह्मणवाचनम्। ग्रहान्ग्रहाधिदेवांश्च स्थाप्यहोमंसमारभेत् ४ ग्रहयज्ञस्त्रिधाप्रोक्तः पुराणश्रुतिकोविदैः। प्रथमोऽयुतहोमःस्याल्लक्षहोमस्ततःपरम् ५ तृतीयःकोटिहोमस्तु सर्वकामफलप्रदः। अयुतेनाहुतीनांच नवग्रहमखःस्मृतः ६ तस्य

समय लवणाचल की टहल करी थी इस हेतु से राज्य आरोग्य और लक्ष्मी यह सबभी तुमको प्राप्त हुए हैं ३१ इसलिये अब तुम इस जन्ममें भी दश प्रकारके धान्यादि पर्व्वतों का विधिपूर्व्वक दान करो वसिष्ठजी के ऐसे वचनों को सुनकर वह राजा धान्यादिक दश पर्व्वतों का विधिपूर्व्वक दान करके विष्णुलोक में प्राप्त होजाता भया ३२ जो कोई पुरुष इन पर्व्वतों के दान को भक्ति से देखता स्पर्श करता और सुनता है अथवा दान करने की अनुमति देता है वह भी सब पापों से छुट कर स्वर्गलोक में प्राप्त होता है ३३ इसके पढ़ने से दुष्ट दुस्स्वप्नों का नाश होता है और शान्त मन से जो इन पर्व्वतों का दान करता है वह तो अवश्यही संसाररूपी भयों का नाश करदेता है इसमें कुछ सन्देह नहीं है ३४– इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाधिकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

सूतजी कहते हैं–कि पूर्व्व समय के बीचबैठेहुए वैशंपायनजी से शौनक मुनि पूछते भये कि हे ऋषे सब कामनाओंकी सिद्धिके लिये नित्यप्रति पुष्टिशान्तिके लिये क्या कर्त्तव्यहै आप वर्णनकीजिये १ वैशंपायनजी ने कहा कि लक्ष्मीकी इच्छा करनेवाले शान्ति के चाहनेवाले अवस्था की वृद्धिचाहनेवाले अभिचार–मारण और उच्चाटनादि करनेवाले पुरुषको जो ग्रहशान्ति करनी चाहिये उसको अबमें कहताहूं तुम सुनो २ सब शास्त्रों का सारदेखकर वेदपुराणोंमें कहीहुई ग्रहशान्तिको सामान्य विधिसे कहताहूं ३ पवित्र दिनमें ब्राह्मणोंके द्वारा ग्रह अधिग्रह और इन्द्रादिक देवताओं को स्थापितकरके हवनकरे और ब्राह्मणोंको भोजन करवावै ४ पुराणके जाननेवालों ने ग्रहयज्ञ तीनप्रकारका वर्णन कियाहै एकतो दशहज़ार हवनवाला दूसरा लक्षसंख्या जपों का हवनवाला और तीसरा एककिरोड़ जपोंका हवनवाला सब कामनाओंके फलोंका देनेवालाहै दशहज़ार वाले

तावद्विधिंवक्ष्ये पुराणश्रुतिभाषितम्। गर्तस्योत्तरपूर्वेण वितस्तिद्वयविस्तृताम्। ७ वप्रद्व यावृतांवेदिं वितस्त्युच्छ्रयसम्मिताम्। संस्थापनायदेवानाञ्चतुरस्रामुदङ्मुखाम्। ८ अग्निप्रणयनंकृत्वा तस्यामावाहयेत्सुरान्। देवतानांततःस्थाप्याविंशतिर्द्वादशाधिका ९ सूर्य्यःसोमस्तथाभौमोबुधजीवसितार्कजाः। राहुःकेतुरितिप्रोक्ताग्रहालोकहितावहाः १० मध्येतुभास्करंविन्द्याल्लोहितन्दक्षिणेनतु। उत्तरेणगुरुंविन्द्याद्बुधम्पूर्वोत्तरेणतु ११ पूर्वेणभार्गवंविन्द्यात्सोमन्दक्षिणपूर्वके। पश्चिमेनशनिंविन्द्याद्राहुंपश्चिमदक्षिणे। पश्चिमोत्तरतःकेतुं स्थापयेच्छुक्लतण्डुलैः १२ भास्करस्येश्वरंविन्द्यादुमाञ्चशशिनस्तथा। स्कन्दमङ्गारकस्यापि बुधस्यचतथाहरिम् १३ ब्रह्माणञ्चगुरोर्विन्द्याच्छुक्रस्यापिशचीपतिम्। शनैश्चरस्यतुयमं राहोःकालंतथैवच १४ केतोर्वैचित्रगुप्तञ्च सर्वेषामधिदेवताः। अग्निरापःक्षितिर्विष्णुरिन्द्रऐन्द्रीचदेवताः १५ प्रजापतिश्चसर्पाश्च ब्रह्माप्रत्यधिदेवताः। विनायकन्तथादुर्गां वायुराकाशमेवच। आवाहयेद्व्याहृतिभिस्तथैवाश्विकुमारकौ १६ संस्मरेद्रक्तमादित्यमंगारकसमन्वितम्। सोमशुक्रौतथाश्वेतौ बुधजीवौचपिंगलौ। मन्दराहूतथाकृष्णौ धूम्रङ्केतुगणंविदुः १७ ग्रहवर्णानिदेयानि वासांसिकुसुमानिच। धूपामोदोऽत्रसुरभिरुपरिष्टाद्वितानिकम्। शोभनंस्थापयेत्प्राज्ञः फलपुष्पसमन्वितम् १८ गुडौदनंरवेर्दद्यात्सोमायघृतपायसम्। अङ्गारकायसंयावं बुधायक्षीरषाष्टिकं १९

हवनको ग्रहमुख आहुतिवाला कहते हैं इसकी विधि पुराणादिकों में कहीहै उसको सुनो कि उत्तर की ओर दो बिलस्तकी विस्तारवाली वेदी अग्निकुण्डमें बनावे ५।७ उस वेदीकी दो मेखला बनावे वह वेदी एक बिलस्त ऊंची चौखूंटी और उत्तरकी ओर मुखवाली बनावे उसपर देवताओं को स्थापित करे फिर अग्निका आवाहन करके उसी में बत्तीस ३२ देवताओंका आवाहनकरै ८।९ सूर्य्य—चन्द्र—मंगल—बुध—बृहस्पति शुक्र—शनि राहु और केतु यहलोकके हितकारक ग्रहकहाते हैं १० सूर्य्य मध्यमें स्थापितकरै मंगलको दक्षिणमें—बुधको ईशानमें—बृहस्पतिको उत्तरमें—शुक्रकोपूर्वमें—चन्द्रमाको अग्निकोणमें—पश्चिममें शनि—नैर्ऋतमें राहुऔर वायव्यमें केतु इसरीति से इनसब ग्रहों को सफ़ेद चावलों से स्थापितकरै ११। १२ सूर्य्यके अधिदेवताशिव हैं—चन्द्रमाके पार्वती—मंगलके स्वामिकार्त्तिक—बुध केविष्णु—१३ बृहस्पतिके ब्राह्मण शुक्रकेइन्द्र—शनिकेधर्मराज—राहुके काल और केतुके चित्रगुप्त इसरीतिसे इन सबग्रहोंके अधिदेवता कहेहैं और अग्नि जल पृथ्वी और इन्द्र यहऐन्द्र संज्ञक देवता हैं—प्रजापति—सर्प—ब्रह्मा—गणेश दुर्गा—वायु—और आकाश यह प्रत्यधिदेवता हैं—यह सब ३० हुए और दो अश्विनीकुमार इन बत्तीसोंको व्याहृतियों करके आवाहनकरै—सूर्य्यको लालबनावै चन्द्रमाकोश्वेत मंगललाल—बुधपीत—बृहस्पतिभीपीत—शुक्रश्वेत—शनिकाला—राहुकाला औरकेतुधूम्रवर्णका बनाना चाहिये—१४। १७ ऐसे तो इनके स्वरूपजाने ऐसेही वस्त्र और ऐसेही पुष्पचढ़ाने चाहिये इन सबके अर्थ उत्तम सुगन्धिवाली धूपनिवेदनकरै इनकी वेदी के ऊपर वितानसंज्ञक सुन्दर मंडपतानै और फलपुष्पोंसे युक्तकरै १८ सूर्य्यके अर्थ गुड़ओदन निवेदनकरै—चन्द्रमाकेघृत खीर व

दध्योदनञ्चजीवाय शुक्रायचगुडौदनम्। शनैश्चरायकृसरामजामांसञ्चराहवे। चि
त्रौदनञ्चकेतुभ्यः सर्वैर्भक्षैरथार्चयेत् २० प्रागुत्तरेणतस्माच्च दध्यक्षतविभूषितम्।
चूतपल्लवसञ्छन्नं फलवस्त्रयुगान्वितम् २१ पञ्चरत्नसमायुक्तं पञ्चभङ्गसमान्वितम्।
स्थापयेदव्रणकुम्भं वरुणन्तत्रविन्यसेत् २२ गङ्गाद्याःसरितःसर्वाः समुद्राश्चसरांसिच।
गजाश्वरथ्यावल्मीकसङ्गमाद्धदगोकुलात् २३ मृदमानीयविप्रेन्द्र! सर्वौषधिजलान्वि
तम्। स्नानार्थंविन्यसेत्तत्र यजमानस्यधर्म्मवित् २४ सर्वेसमुद्राःसरितः सरांसिचनदा
स्तथा। आयान्तुयजमानस्य दुरितक्षयकारकाः २५ एवमावाहयेदेतानमरान्मुनिसत्त
म!। होमंसमारभेत्सर्पिर्यवव्रीहितिलादिना २६ अर्कःपालाशखदिरावपामार्गोऽथपि
प्पलः। औदुम्बरःशमीदूर्वा कुशाश्चसमिध क्रमात् २७ एकैकस्याष्टकशतमष्टाविंशति
मेववा। होतव्यामधुसर्पिर्भ्यां दध्नाचैवसमन्विताः २८ प्रादेशमात्राअशिफा अशाखा
अपलाशिनीः। समिधःकल्पयेत्प्राज्ञः सर्वकर्म्मसुसर्वदा २९ देवानामपिसर्वेषामुपांशु
परमार्थवित्। स्वेनस्वेनैवमन्त्रेण होतव्याःसमिधःपृथक् ३० होतव्यञ्चघृताभ्यक्तं च
रुभक्ष्यादिकम्पुनः। मन्त्रैर्दशाहुतीर्हुत्वा होमंव्याहृतिभिस्ततः ३१ उदङ्मुखाःप्राङ्मुखा
वाकुर्युर्ब्राह्मणपुङ्गवाः। मन्त्रवन्तश्चकर्त्तव्याश्चरवःप्रतिदैवतम् ३२ हुत्वाचतांश्चरून्
सम्यक् ततोहोमंसमाचरेत्। आकृष्णेतिचसूर्य्याय होमःकार्य्योद्विजन्मना ३३ आप्या

ढ़ावे--मंगलपर मोहनभोग--बुधपै दूधसांठी के चावल चढ़ावै १९ बृहस्पतिपै चावल और दही--
शुक्रपैगुड़भात--शनिपै खिचड़ी राहुपरबकरोकामांस--और केतुपै विचित्र अन्न निवेदनकरै इसप्रकार
के इन भक्ष्यपदार्थों से पूजन करै २० उस वेदीसे ईशानकोणमें दही अक्षतों से विभूषित आम्रके
पत्तों से और फलवस्त्रादिकों से युक्त २१ पंचरत्नों से देदीप्य पांचलहरियोंसे शोभित छिद्ररहित उ-
त्तमकलशको स्थापितकरै उसपर वरुणदेवता स्थापनकरै हस्ती-अश्व-रथ-सर्पकी वामी सरोवर और
गौका स्थान इन सबस्थानोंकी मृत्तिका और सर्वौषधीसे युक्तकरै फिर उस जलसे यजमानका स्नान
करावै और इसमन्त्रकोकहै कि संपूर्ण नदी समुद्र और नद यह सब पाप नाशकरनेके लिये यजमान
के पास आओ २३। २५ हे मुनिसत्तम इसप्रकारसे इन देवताओंका आवाहनकर पीछे घृतजव
चावल और तिलादिकों से हवनकरै २६ आक-ढाक-खैर-ओंगा-पीपल-गूलर-जांटी दूब और कुशा
यह समियें क्रमसे नवग्रहोंकी कही हैं प्रत्येक ग्रहकी १०८ आहुति अथवा २८ आहुति करनी योग्य
हैं शहद घृतसे हवनकरै अथवा दही युक्त साकल्यसे हवनकरै २७। २८ यह सब समिधें प्रादेश-
मात्र प्रमाणवाली जड़शाखा-डाली-और पत्तोंसे रहित ऐसीहोनी चाहिये यही समिध सब कर्मों में
श्रेष्ठकही हैं २९ प्रत्येक देवता की समिध और हरएकके जुदे २ मंत्र देवताके नाम सहित उच्चारण
करके हवनकरै ३० घृतसे भीजाहुआ साकल्य और भक्ष्यादिक पदार्थों से हवनकरै होममें ग्रहों के
मंत्रोंसे दश २ आहुतिकरै और व्याहृति मंत्रोंसे संपूर्ण होमकरै ३१ उत्तम ब्राह्मण उत्तरकी ओर
मुखकरके अथवा पूर्वाभिमुख बैठके पृथक् २ देवताओं के प्रति मंत्रोंसे चरु हवनकरै ३२ उस च-

यस्वेतिसोमाय मन्त्रेणजुहुयात्पुनः । अग्निर्मूर्द्धादिवोमन्त्र इतिभौमायकीर्तयेत् ३४
अग्ने ! विवस्वदुषस इतिसोमसुतायवै । बृहस्पते ! परिदीया रथेनेतिगुरोर्मतः ३५
शुक्रन्तेअन्यदितिचशुक्रस्यापिनिगद्यते । शनैश्चरायेतिपुनः शन्नोदेवीतिहोमयेत् ३६
कयानश्चित्रआभुव इतिराहोरुदाहृतः । केतुंकृण्वन्नपिब्रूयात् केतूनामपिशान्तये ३७
आवोराजेतिरुद्रस्य बलिहोमंसमाचरेत् । आपोहिष्ठेत्युमायास्तु स्योनेतिस्वामिनस्त
था ३८ विष्णोरिदंविष्णुरिति तमीशेतिस्वयम्भुवः । इन्द्रमिदेवतायेति इन्द्रायजुहुया
त्ततः ३९ तथायमस्यचायं गौरितिहोमःप्रकीर्त्तितः । कालस्यब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रःप्र
शस्यते ४० चित्रगुप्तस्यचाज्ञातमितिमन्त्रविदोविदुः । अग्निंदूतंवृणीमहे इतिवह्नेरु
दाहृतः ४१ उदुत्तमंवरुणमित्यपांमन्त्रःप्रकीर्तितः । भूमेःपृथिव्यन्तरिक्षमितिवेदेषुप
ठ्यते ४२ सहस्रशीर्षापुरुष इतिविष्णोरुदाहृतः । इन्द्रायेन्दोमरुत्वत इतिशक्रस्यश
स्यते ४३ उत्तापर्णेसुभगेइति देव्याःसमाचरेत् । प्रजापतेःपुनर्होमः प्रजापतिरितिस्मृ
तः ४४ नमोऽस्तुसर्पेभ्य इतिसर्पाणांमन्त्रउच्यते । एषब्रह्मायऋत्विज्य इतिब्रह्मण्युदा
हृतः ४५ विनायकस्यचानूनमितिमन्त्रोबुधैःस्मृतः । जातवेदसेसुनवामितिदुर्गामन्त्र
उच्यते ४६ आदित्प्रत्नस्यरेतस आकाशस्यउदाहृतः । प्राणाशिशुर्महीनाञ्च वायोर्मन्त्रः
प्रकीर्त्तितः ४७ एषोउषाअपूर्व्यादित्यश्विनोर्मन्त्रउच्यते । पूर्णाहुतिस्तुमूर्द्धानं दिवइत्य
भिपातयेत् ४८ अथाभिषेकमन्त्रेण वाद्यमङ्गलगीतकैः । पूर्णकुम्भेनतेनैव होमान्तेप्रा

रुकाहोम करके ग्रहोंका होमकरै आकृष्णेन–इस मन्त्रसे सूर्य्यके अर्थ आहुतिदे ३३ आप्यायस्व–इसमंत्र से चन्द्रमाको–अग्निर्मूर्धादिव–इस मंत्रसे भौम के अर्थ ३४ अग्ने विवस्वदुषस–इसमंत्र से बुधके अर्थ और बृहस्पतेपरिदीयारथेन–इसमंत्रसे बृहस्पति के अर्थ आहुतिकरै ३५ शुक्रन्तेअन्यत्–इस मंत्र से शुक्रके अर्थ और शन्नोदेवीरभिष्ट–इस मंत्र से शनैश्चर का हवन करै ३६ कयानश्चित्र आभुव–इसमंत्र से राहुके अर्थ–केतुंकृण्वन्–इसमंत्र से केतु के अर्थ ३७ आवोराज–इसमंत्रसे शिव के अर्थ–आपोहिष्ठामयो–इसमंत्र से पार्वतीजी के अर्थ–स्योनापृथिवी–इसमंत्र से स्वामिकार्त्तिक के अर्थ ३८ इदंविष्णु–इसमंत्र से विष्णु के अर्थ–तमीश–इस मंत्र से ब्रह्मा के अर्थ आहुतिदे और इन्द्रमिदेवताय–इसमंत्र से इन्द्रका आवाहन करै ३९ आयंगो–इसमंत्र से धर्मराज का आवाहन करै–ब्रह्मजज्ञानं–इसमंत्रसे कालके अर्थ हवन करना कहाहै ४० अज्ञात–इसमंत्रसे चित्रगुप्त के अर्थ और अग्निंदूतंवृणीमहे–इसमंत्र से अग्नि की आहुति करै ४१ और उदुत्तमंवरुण–यहमंत्र वरुणका कहा है–पृथिव्यंतरिक्षम् यह मंत्र भूमिका है ४२ सहस्रशीर्षापुरुष–यह विष्णु का मंत्र है–इन्द्रायेन्दोमरुत्वत–यहइन्द्र का मंत्र है ४३ उत्तापर्णेसुभगे–यह देवी का मंत्र पढ़ै और प्रजापति–इसमंत्र से प्रजापतिका हवन करै ४४ नमोस्तुसर्पेभ्यः यह सर्पोका मंत्र है–एषब्रह्मायऋत्विज्य–यह ब्रह्माका मंत्रहै ४५ और अनूनम्–यह गणेशजी का मंत्र विद्वानोंने कहाहै–जातवेदसेसुनवाम्–यह दुर्गा का मंत्रकहाहै ४६ आदित्प्रत्नस्यरेतस–यहआकाश का मंत्रहै–प्राणाशिशुर्महीनांच–यहवायुका मंत्रहै ४७

गुदङ्मुखम् ४६ अव्यंगावयवेर्ब्रह्मन्। हेमस्रग्दामभूषितैः। यजमानस्यकर्त्तव्यं चतुर्भिःस्नपनंद्विजैः ५० सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। वासुदेवोजगन्नाथस्तथासङ्कर्षणोविभुः। प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तुविजयायते ५१ आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमोवैनिर्ऋतिस्तथा। वरुणःपवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथाशिवः। ब्रह्मणासहितःशेषो दिक्पालास्त्वामवन्तुते ५२ कीर्त्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिःश्रद्धाक्रियामतिः। बुद्धिर्लज्जावपुःशांतिस्तुष्टिःकान्तिश्चमातरः। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तुधर्म्मपत्न्यःसमागताः५३ आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधोजीवःसितोऽर्कजः। ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुःकेतुश्चतर्पिताः ५४ देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयोमुनयोगावो देवमातरएवच ५५ देवपत्न्योद्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः। अस्त्राणिसर्वशस्त्राणि राजानोवाहनानि च ५६ औषधानिचरत्नानि कालस्यावयवाश्चये। सरितःसागराःशैला स्तीर्थानिजलदानदाः। एतेत्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ५७ ततःशुक्लाम्बरधरः शुक्लगन्धानुलेपनः। सर्वौषधैःसर्वगन्धैः स्नापितोद्विजपुङ्गवैः ५८ यजमानःसपत्नीकः ऋत्विजःसुसमाहितान्। दक्षिणाभिःप्रयत्नेन पूजयेद्गतविस्मयः ५६ सूर्य्यायकपिलांधेनुं शङ्खंदद्यात्तथेन्दवे। रक्तंधुरन्धरंदद्याद्भौमायचककुद्मिनम् ६० बुधायजातरूपन्तु गुरवेपीतवाससी।

एषोउषा अपूर्व्वात्--यह अश्विनीकुमारोंका मंत्र है--मूर्द्धानंदिवः इसमंत्र से पूर्णाहुति करै ४८ इसके अनन्तर अभिषेक मंत्रोंसे बाजे मंगल गीतादि युक्त होमकेअन्तमें पूर्व वा उत्तरकी ओर मुख करके उस कलशके जलसे अभिषेक करवावै ४९ हे ब्रह्मन् अव्यंगअंगवाले सुवर्ण के आभूषण तथा माला आदिकों से भूषितहुए चारब्राह्मणों से यजमानको स्नानकरवाना चाहिये ५० और स्नानकरवाने के समय ब्राह्मण इसमंत्रार्थ को कहै कि ब्रह्मा विष्णु और महेश यह तीनों देवता तुम्हारे अभिषेक को करैं और वासुदेव--जगन्नाथ--बलदेव--प्रद्युम्न और अनिरुद्ध यह सब तुम्हारा विजयकरैं ५१ इन्द्र अग्नि यम राक्षस वरुण वायु कुवेर शिव ब्रह्मा शेषनाग और दिग्पाल यह सब तुम्हारी रक्षा करैं ५२ कीर्त्ति-लक्ष्मी-धृति--मेधा पुष्टि--श्रद्धा--क्रिया--मति--बुद्धि--लज्जा--वपु--शान्ति--तुष्टि और कान्ति यह धर्म पत्नी माता आकर तुम्हारा अभिषेककरैं ५३ सूर्य्य--चन्द्रमा--भौम--बुध--बृहस्पति शुक्र-शनि-राहु और केतु यह सब ग्रहभी तृप्तहोकर तुम्हारा अभिषेककरैं ५४ देवता-दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस पन्नग ऋषि मुनि गौ देवमातर ५५ देवपत्नी-वृक्ष-नाग-दैत्य-अप्सरा-अस्त्र सब प्रकारके शस्त्र राजा-वाहन ५६ औषधी-रत्न-कालके अवयव-नदी-समुद्र-पर्व्वत-तीर्थ-जलके बहानेवाले नद और छोटीनदी यह सब तुम्हारे मनोरथ की सिद्धि के अर्थ तुम्हारा अभिषेककरैं ५७ इसके पीछे सर्वगन्ध-युक्त सर्वौषधीके जलसे उत्तम ब्राह्मणोंकेद्वारा स्नपनमार्जन करवाकर श्वेत वस्त्र धारणकर गन्धचन्द-नादिक धारणकरै ५८ फिर वह यजमान और उसकी स्त्री दोनों ग्रन्थिबंधनपूर्व्वक दक्षिणाभिमुख हो श्रद्धासे ऋत्विक् आदिकोंका पूजनकरै ५९ सूर्य्यके अर्थ कपिला गौ चन्द्रमाके अर्थ शंख मंगलके अर्थ लालबैल ६० बुधके निमित्त सुवर्ण बृहस्पति के निमित्त पीतवस्त्र शुक्रके अर्थ श्वेतअश्व और शनि

श्वेतोऽश्वन्दैत्यगुरवे कृष्णाङ्गामर्कसूनवे ६१ आयसंराहवेदद्यात् केतुभ्यश्छागमुत्तमम्।
सुवर्णेनसमाकार्य्या यजमानेनदक्षिणा ६२ सर्वेषामथवागावो दातव्याहेमभूषिताः। सु
वर्णमथवादद्याद्गुरुर्वायेनतुष्यति। समन्त्रेणैवदातव्याः सर्वाःसर्वत्रदक्षिणाः ६३ पुण्य
स्त्वंशङ्खपुण्यानांमङ्गलानाञ्चमङ्गलम्। विष्णुनाविधृतश्चासितत शान्तिंप्रयच्छमे ६४
धर्म्मस्त्वंवृषरूपेण जगदानन्दकारक।। अष्टमूर्त्तेरधिष्ठानमतःशान्तिंप्रयच्छमे ६५ हि
रण्यगर्भगर्भस्त्वं हेमबीजंविभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतःशान्तिंप्रयच्छमे ६६ पी
तवस्त्रयुगंयस्माद्वासुदेवस्यवल्लभम्। प्रदानात्तस्यमेविष्णो!ह्यतःशान्तिंप्रयच्छमे ६७
विष्णुस्त्वमश्वरूपेण यस्मादमृतसम्भवः। चन्द्रार्कवाहनोनित्यमतःशान्तिंप्रयच्छमे ६८
यस्मात्त्वंपृथिवीसर्वाधेनुःकेशवसन्निभा। सर्वपापहरानित्यमतःशान्तिंप्रयच्छमे ६९ यस्मा
दायसकर्म्माणि तवाधीनानिसर्वदा। लाङ्गलाद्यायुधादीनि तस्माच्छान्तिंप्रयच्छमे ७० य
स्मात्त्वंसर्वयज्ञानामङ्गत्वेनव्यवस्थितः। यानंविभावसोर्नित्यमतःशान्तिंप्रयच्छमे ७१
गवामङ्गेषुतिष्ठन्ति भुवनानिचतुर्दश। यस्मात्तस्माच्छ्रियेमे स्यादिहलोकेपरत्रच ७२ य
स्मादशून्यंशयनं केशवस्यचसर्वदा। शय्याममाप्यशून्यास्तु दत्ताजन्मनिजन्मनि ७३
यथारत्नेषुसर्वेषु सर्वेदेवाःप्रतिष्ठिताः। तथारत्नानियच्छन्तु रत्नदानेनमेसुराः ७४ यथा

के अर्थ कृष्णागौ यह दानकरने योग्य हैं ६१ राहुके अर्थ लोहा केतुके अर्थ बकरादानकरै अथवा यज-
मान चाहै तो सबग्रहोंकी सुवर्णहिकी दक्षिणादानकरै ६२ अथवा सुवर्ण से भूषितकीहुई गौका दान
सबके निमित्तकरै अथवा केवल सुवर्णही दानकरै यहभी न होसकै तो जिससे गुरू प्रसन्नहोंय वह दान
करै सब दक्षिणा अपने २ समान मन्त्रोंकरिकेदेनी चाहिये ६३ मंत्र--हेशंख तुम सब पुण्योंमें पुण्य-
रूपहो--सब मंगलों में मंगलरूपहो विष्णु भगवान् से धारण कियेगयेहो इस हेतुसे मेरे शान्तिको
करो ६४ हेवृष तुम धर्मरूपकरके जगत्के आनन्दकरनेवालेहो और अष्टमूर्त्तिके अधिष्ठानहो इस नि-
मित्तमुझे शान्तिदो ६५ हे सुवर्ण तुम हिरण्यगर्भ ईश्वर के गर्भसे उत्पन्नहुएहो सूर्य्यके भी बीजहो
अनन्त फलदेनेवालेहो इसलिये मुझको शान्तिदो ६६ पीताम्बर श्रीकृष्णकोप्रियहै इसीसे मैंने इसका
दानकिया है सो विष्णु भगवान् मेरे शान्तिकरो अश्वरूप और अमृतरूपसे विष्णुरूपअश्व है और
सूर्य्य चन्द्रमा का भी सदैव से अश्वही वाहनहै इस हेतुसे मेरे अर्थ शान्तिकोदो ६७। ६८ हे गौ तुम
विष्णु के और पृथ्वी के समानहो और सब पापों की हरनेवालीहो इसकारण मुझे शान्तिदो ६९ हे
लोह हल शस्त्रादिकके सब कर्म तुम्हारे आधीन हैं इसहेतुसे आपमुझको शान्तिदो ७० हे सुवर्ण
तुम यज्ञकेअंग और अग्निके कार्य्यहो इसलिये मेरी शान्ति करो ७१ गौओंके अंगोंमें चौदह भुवन
स्थित हैं इसलिये मेरे अर्थ इसलोक और परलोक दोनोंमें लक्ष्मी सम्पत्तिदो यह तो गोदानका मं-
त्रार्थ है ७२ अब शय्याका मंत्रसुनो--जैसे कि विष्णु की शय्या कभी लक्ष्मी से शून्य नहीं है इसी
प्रकार शय्यादानकरने से जन्म २ में मेरी भी शय्या परिपूर्णरहै ७३ जैसे सब रत्नों में देवताओं का
बास है इसीप्रकार रत्नोंके दानकरने से सब देवतामुझको रत्नदें ७४ सब दान भूमिदानके सोलहवें

भूमिप्रदानस्यकलान्नार्हन्तिषोडशीम् । दानान्यन्यानिमेशान्तिर्भूमिदानाद्भवत्विह ७५
एवंसंपूजयेद्भक्त्या वित्तशाठ्येनवर्जितः । रत्नकाञ्चनवस्त्रौघैर्धूपमाल्यानुलेपनैः ७६
अनेनविधिनायस्तु ग्रहपूजांसमाचरेत् । सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्यस्वर्गेमहीयते ७७
यस्तुपीडाकरोनित्यमल्पवित्तस्यवाग्रहः । तञ्चयत्नेनसम्पूज्य शेषानप्यर्चयेद्बुधः ७८
ग्रहागावोनरेन्द्राश्चब्राह्मणाश्चविशेषतः । पूजिताःपूजयन्त्येतेनिर्दहन्त्यवमानिताः ७९
यथाबाणप्रहाराणां कवचम्भवतिवारणम् । तद्वद्दैवोपघातानां शांतिर्भवतिवारणम् ८०
तस्मान्नदक्षिणाहीनंकर्त्तव्यंभूतिमिच्छता । सम्पूर्णयादक्षिणयायस्मादेकोऽपितुष्यति ८१
सदैवायुतहोमोऽयं नवग्रहमखेस्थितः । विवाहोत्सवयज्ञेषु प्रतिष्ठादिषुकर्म्मसु ८२ निर्वि
घ्नार्थंमुनिश्रेष्ठ! तथोद्वेगाद्भुतेषुच । कथितोऽयुतहोमोयं लक्षहोममतःशृणु ८३ सर्वका
मासयेयस्माल्लक्षहोमंविदुर्बुधाः । पितॄणांवल्लभंसाक्षाद्भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ८४ ग्रहता
राबलंलब्धा कृत्वाब्राह्मणवाचनम् । गृहस्योत्तरपूर्वेण मण्डपङ्कारयेद्बुधः ८५ रुद्राय
तनभूमौवा चतुरस्रमुदङ्मुखम् । दशहस्तमथाष्टौवा हस्तान्कुर्याद्विधानतः ८६ प्रागुद
क्प्लवनाम्भूमिं कारयेद्यत्नतोबुधः । प्रागुत्तरंसमासाद्य प्रदेशम्मण्डपस्यतु ८७ शोभ
नङ्कारयेत्कुण्डं यथावल्लक्षणान्वितम् । चतुरस्रंसमन्तात्तु योनिवक्त्रंसमेखलम् ८८ च

भागकेभी समाननहीं हैं इसहेतुकरके भूमिकेदानकरने से मेरेशान्तिहोय ७५ इसप्रकार श्रद्धाकेअनुसार रत्न-सुवर्ण-वस्त्र-धूप-पुष्प और चन्दनादिकोंसे पूजाकरै ७६ इसविधिसे जो ग्रहोंकी पूजाकरताहै वहसब कामनाओंकी सिद्धिको प्राप्तहो अन्तसमय स्वर्गलोकमें प्राप्तहोताहै ७७ जो ग्रह कि पीड़ाकारकहोय उसे यत्नसे विधिपूर्व्वक पूजे अन्यग्रहोंकोभी पूजे ७८ ग्रह गौ राजा ब्राह्मणआदिक सबपूजनेकेयोग्यहैं-- इनकी पूजाकरनेवाले आपभी पूजेजाते हैं अर्थात् कार्य्यसिद्धिको प्राप्तहोते हैं और नहींपूजनेवाले नष्ट होजाते हैं ७९ जैसे कि बाणोंके प्रहारको शरीरपर पहराहुआ संजोवा और कवच सहकर पीड़ित नहीं होने देता अर्थात् पीड़ा दूरकरताहै वैसेही प्रारब्धके कियेहुए कर्मोंकी पीड़ाको शान्ति दूर कर देतीहै अर्थात् ग्रहादिकोंके पूजनसे दुःख निवारण होजाताहै ८० ऐश्वर्य्यके चाहनेवाले पुरुषको द-क्षिणाहीन यज्ञ कभी न करना चाहिये अच्छी पूर्णदक्षिणासे युक्त कियाहुआ एकहीयज्ञ उत्तम कहा है ८१ अयुत होम अर्थात् दशहज़ार मंत्रोंकी आहुतिसे हवन करना योग्यहै यहीविधि नवग्रहों के यज्ञमें और विवाह उत्सव यज्ञ प्रतिष्ठादि कर्मों में भी करनी उचितहै ८२ हे मुनिश्रेष्ठ निर्विघ्नता के लिये तथा पूर्व्वोक्त उद्वेगादिक अद्भुत कर्मोंमें यह अयुत हवनकी विधि कहीहै अब लक्षप्रमाण हव-नको कहताहूं ८३ विद्वान् लोगोंने सब कामनाओंकी सिद्धिके लिये लक्षहवन करना कहाहै वह लक्ष हवन पितरोंका प्रिय और साक्षात् मुक्तिका देनेवालाहै ८४ ग्रह तारादिकोंके बल और उत्तम मुहूर्त में ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन करवाके घरके उत्तर पूर्वको ईशान कोणमें मंडप बनवावै ८५ अ-थवा शिवालयके समीप उत्तर पूर्व्वकी ओर चौखूंटा अठारह हाथ विस्तारका मंडप बनावै ८६ बुद्धिमानीसे ईशानकोणमें वेदी बनावै यह मंडपका ईशान कोण अत्यन्त शोभित बनावै औरचारों

तुरंगुलविस्तारा मेखलातद्वदुच्छ्रिता। प्रागुदक्प्लवनाकार्या सर्वतःसमवस्थिता ८८
शान्त्यर्थंसर्वलोकानां नवग्रहमखःस्मृतः। मानहीनाधिकंकुण्डमनेकभयदम्भवेत्। य
स्मात्तस्मात्सुसम्पूर्णं शान्तिकुण्डंविधीयते ६० अस्माद्दशगुणःप्रोक्तो लक्षहोमःस्वयंभु
वा। आहुतीभिःप्रयत्नेन दक्षिणाभिस्तथैवच ६१ द्विहस्तविस्तृतन्तद्वच्चतुर्हस्तायतम्पु
नः। लक्षहोमेभवेत्कुण्डं योनिवक्त्रन्त्रिमेखलम् ६२ तस्यचोत्तरपूर्वेण वितस्तित्रयसंस्थि
तम्। प्रागुदक्प्रवणन्तच्च चतुरस्रंसमन्ततः ६३ विष्कम्भार्द्धोच्छ्रितम्प्रोक्तं स्थण्डिलं
विश्वकर्म्मणा। संस्थापनायदेवानां वप्रत्रयसमावृतम् ६४ द्व्यंगुलोह्युच्छ्रितोविप्रः प्र
थमःसउदाहृतः। अंगुलोच्छ्रयसंयुक्तं वप्रद्वयमथोपरि ६५ त्र्यंगुलस्यचविस्तारः सर्वे
षांकथ्यतेबुधैः। दशांगुलोच्छ्रिताभित्तिः स्थण्डिलेस्यात्तथोपरि। तस्मिन्नावाहयेद्देवान्
पूर्ववत्पुष्पतण्डुलैः ६६ आदित्याभिमुखाःसर्वाः साधिप्रत्यधिदेवताः। स्थापनीयामुनि
श्रेष्ठ! नोत्तरेणपराङ्मुखाः ६७ गरुत्मानधिकस्तत्र सम्पूज्यःश्रियमिच्छता। सामध्व
निशरीरस्त्वं वाहनम्परमेष्ठिनः। विषपापहरोनित्यमतःशांतिम्प्रयच्छमे ६८ पूर्ववत्कु
म्भमामन्त्र्य तद्वद्धोमंसमाचरेत्। सहस्राणांशतंहुत्वा समित्संख्याधिकंपुनः। घृतकुम्भ
वसोर्द्धारां पातयेदनलोपरि ६६ औदुम्बरींतथार्द्राञ्च ऋज्वींकोटरवर्जिताम्। बाहुमा

ओरसे चोखूंटा समान योनिके आकार मुखवाला मेखलाओंसे युक्त कुंडबनाना चाहिये ८७।८८
मेखला चारअंगुल विस्तारवाली चारअंगुल ऊंची पूर्वसे उत्तरकी ओर ढलीहुई और सब ओरको
समान करै ८६ यह नवग्रहोंका यज्ञ सब मनुष्योंकी शान्तिके अर्थ कहाहै और इस्से न्यूनाधिक अ
ग्निकुंडका बनाना अनेक भयों का देनेवालाहै इसलिये कुंडको अच्छेप्रकारसे ठीक २ बनावे ६०
इस हवनसे दशगुना हवन आहुतियोंसे वा दक्षिणाओं से करै इसको लक्ष हवन कहते हैं यह ब्रह्मा
जीने कहाहै ६१ उस लक्षहवनमें छः हाथ विस्तारका कुंड बनावे और योनिके आकारवाला मुख
बनावे तीन मेखलाबनावे ६२ उस कुंडके ईशान कोणकी ओर तीन बिलस्तकी चोखूंटी वेदी ब
नावे ६३ वह वेदी डेढ़बिलस्त ऊंची और तीन मेखलाओंसे युक्तकरके देवताओंके स्थापनके लिये
बनावे ऐसा विश्वकर्माने कहाहै ६४ प्रथम वप्र अर्थात् मेखला दोअंगुल ऊंची और शेष बाक़ीकी दो
मेखला एक२ अंगुल ऊंची बनावे ६५ सब मेखलाओंका विस्तार तीन अंगुलकाहै उस वेदी पै दश
अंगुलऊंची भीत बनावै वहाँ पूर्वोक्त विधिसे पुष्प अक्षतादिकोंसे देवताओंका आवाहनकरै ६६
मुनिश्रेष्ठ अधिदेवता और प्रत्यधि देवताओंको सूर्य्य के सन्मुख स्थितकरै उत्तरमें पीछेको मुखकर
के स्थापित नहीं करै ६७ लक्ष्मीकी इच्छावाले मनुष्यको वहाँ गरुडजीकाभी पूजनकरना अवश्यहै
मंत्र–तुम सामवेदकी ध्वनिके शरीरहो विष्णुके वाहनहो नित्यही विष और पापों के हरनेवाले हो
इस हेतुसे मुझको शान्तिदो ६८ यह कहकर पूर्वके समान कलश स्थापनादिक करके हवनका आ
रम्भकरै लक्ष आहुतियों का हवनकरै इन आहुतियोंसेभी ग्रहोंकी समिधोंका होम अधिकहै फिर
अन्तमें अग्निपै घृतके कलशसे वसोर्द्धारा देवे ६६ गीली गूलरकी कोंपलें सीधीखादि खोडररहित

त्रांस्रुचंकृत्वा ततस्तम्भद्वयोपरि। घृतधारान्तयासम्यगग्नेरुपरिपातयेत् १०० श्रावये
तूसूक्तमाग्नेयं वैष्णवंरौद्रमैन्दवम्। महावैश्वानरंसाम ज्येष्ठसामचवाचयेत् १०१ स्ना
नञ्चयजमानस्य पूर्ववत्स्वस्तिवाचनम्। दातव्यायजमानेन पूर्ववद्दक्षिणाःपृथक् १०२
कामक्रोधविहीनेन ऋत्विग्भ्यःशान्तचेतसा। नवग्रहमखेविप्राश्चत्वारोवेदवेदिनः १०३
अथवाऋत्विजौशान्तौ द्वावेवश्रुतिकोविदौ। कार्यावयुतहोमेतु नप्रसज्जेतविस्तरे १०४
तद्वद्दशचाष्टौच लक्षहोमेतुऋत्विजः। कर्तव्याःशक्तितस्तद्वच्चतुरोवाविमत्सरः १०५
नवग्रहमखात्सर्वं लक्षहोमेदशोत्तरम्। भक्ष्यान्दद्यान्मुनिश्रेष्ठ ! भूषणान्यपिशक्तितः
१०६ शयनानिसवस्त्राणि हैमानिकटकानिच। कर्णांगुलिपवित्राणि कण्ठसूत्राणिशक्ति
मान् १०७ नकुर्याद्दक्षिणाहीनं वित्तशाठ्येनमानवः। अददन्लोभतोमोहात् कुलक्षयम
वाप्नुते १०८ अन्नदानंयथाशक्त्या कर्तव्यंभूतिमिच्छता। अन्नहीनःकृतोयस्माद्दुर्भिक्ष
फलदोभवेत् १०९ अन्नहीनोदहेद्राष्ट्रं मंत्रहीनस्तुऋत्विजः। यष्टारंदक्षिणाहीनं नास्ति
यज्ञसमोरिपुः ११० नवाप्यल्पधनःकुर्याल्लक्षहोमंनरःक्वचित्। यस्मात्पीडाकरोनित्यं
यज्ञेभवतिविग्रहः १११ तमेवपूजयेद्भक्त्या द्वौवात्रीन्वायथाविधि। एकमप्यर्चयेद्भक्त्या
ब्राह्मणंवेदपारगम्। दक्षिणाभिःप्रयत्नेन नबहूनल्पवित्तवान् ११२ लक्षहोमस्तुकर्तव्यो

भुजाके समान लंबी लाकर उसका स्रुक् बनावै उसको दो आधारों पै स्थापित करके उसके द्वारा अग्निमें घृतकी धारागेरै १०० और आग्नेयसूक्त–वैष्णवसूक्त–रौद्रसूक्त–चन्द्रसूक्त और महावैश्वानर इत्यादिकोंके प्रतिपादक वेद मंत्रों का उच्चारण करै साम और ज्येष्ठसामका पाठकरै १०१ यजमा-न का मार्ज्जन और स्वस्तिवाचन पूर्व के समान करै और यजमान भी पूर्वके समान पृथक्२ द-क्षिणा देवै १०२ और काम क्रोधादिसे रहित शान्तचित्तसे ऋत्विजोंको दक्षिणादे इस नवग्रहयज्ञ में चार वेदपाठी ब्राह्मण होने चाहिये १०३ अथवा शान्त स्वभाववाले दोही वेदपाठी ऋत्विग्-बनावै और दशहजारके हवनमें विशेष विस्तार न करे १०४ लक्ष हवनमें दश अथवा आठ ऋत्वि-क् बनावै अथवा कुटिलतासे रहित शक्तिके अनुसार चारही ऋत्विक् बनावै १०५ पूर्व कहेहुए न-वग्रहने इस लक्षहवनमें सब वस्तु दशगुणी अधिक करै शक्तिके अनुसार भक्ष्य पदार्थ और आभूषण अंगूठी छल्ले आदि पवित्री और कण्ठाभरण इनकोभी शक्तिके अनुसारदे १०६।१०७ अपने वित्तके अनुसार दक्षिणा देवे हीनदक्षिणा नहींकरै जो कोई मनुष्य लोभ मोहादिकोंसे दान नहींकरताहै उस के कुलका नाश होजाताहै १०८ ऐश्वर्य्यकी इच्छा करनेवाला शक्तिके अनुसार अन्नदानभी करै क्योंकि अन्नहीन कियाहुआ कर्म दुर्भिक्ष के फलको देताहै १०९ मंत्रहीन होनेसे ऋत्विक् लोगों का नाशहोताहै दक्षिणाहीन यज्ञ यजमानका नाशकरताहै इसहेतुसे दुष्ट यज्ञके समान मनुष्यका कोई शत्रुनहीहै ११० अल्प धनवाला पुरुष लक्षहवन कभी नहीं करै क्योंकि अल्पधनखर्चनेमें भी पीड़ा और विग्रह होताहै १११ भक्तिसे विधिके अनुसार एकदो वा तीन ब्राह्मणोंका पूजनकरै अल्पधन वाला यजमान भक्तिसे वेदपाठी एकहीब्राह्मणका पूजनदक्षिणाआदिकसेकरै बहुतोंका न करै ११२

यथावित्तंभवेद्गृहे। यतःसर्वानवाप्नोति कुर्वन्कामान्विधानतः ११३ पूज्यतेशिवलोके च वस्वादित्यमरुद्गणैः। यावत्कल्पशतान्यष्टावथमोक्षमवाप्नुयात् ११४ सकामोयः स्त्विमंकुर्याल्लक्षहोमंयथाविधि। सतंकाममवाप्नोति पदमानन्त्यमश्नुते ११५ पुत्रार्थी लभतेपुत्रान् धनार्थीलभतेधनम्। भार्यार्थीशोभनांभार्य्यां कुमारीचशुभंपतिम् ११६ भ्रष्टराज्यस्तथाराज्यं श्रीकामःश्रियमाप्नुयात्। यंयंप्रार्थयतेकामं सर्वंभवतिपुष्कलः। निष्कामःकुरुतेयस्तु सपरंब्रह्मगच्छति ११७ अस्माच्छतगुणःप्रोक्तः कोटिहोमःस्वयम्भुवा। आहुतीभिःप्रयत्नेन दक्षिणाभिःफलेनच ११८ पूर्ववद्ग्रहदेवानामावाहनविसर्ज्जने। होममन्त्रास्तएवोक्ताः स्नानेदानेतथैवच। कुण्डमण्डपवेदीनां विशेषोऽयं निबोधमे ११९ कोटिहोमेचतुर्हस्तं चतुरस्रन्तुसर्व्वतः। योनिवक्त्रद्वयोपेतं तदप्याहुस्त्रिमेखलम् १२० द्व्यंगुलाभ्युच्छ्रिताकार्य्या प्रथमामेखलाबुधैः। त्र्यंगुलाभ्युच्छ्रितातद्वद् द्वितीयापरिकीर्त्तिता १२१ उच्छ्रायविस्तराभ्याञ्च तृतीयाच्चतुरंगुला। द्व्यंगुलश्चेतिविस्तारः पूर्व्वयोरेवशस्यते १२२ वितस्तिमात्रायोनिःस्यात् षट्सप्तांगुलविस्तृता। कूर्म्मपृष्ठोन्नतामध्ये पार्श्वयोश्चांगुलोच्छ्रिता १२३ गजोष्ठसदृशी तद्वदायताच्छिद्रसंयुता। एतत्सर्व्वेषुकुण्डेषु योनिलक्षणमुच्यते। मेखलोपरिसर्व्वत्र अश्व

घर में जितना धन होय उसके अनुसार लक्षहवन करै क्योंकि विधानके अनुसार कर्म करनेवाला जन सबकामनाओं को प्राप्तहोताहै ११३ ऐसे पूजन करनेवाला जन शिवलोक में वसु आदित्य और मरुद्गण आदिकोंसे पूजित होताहै फिर ८०० सौ कल्पोंके अन्तमें मोक्ष को प्राप्त होजाताहै ११४ जो किसी प्रकारकी भी कामना वाला पुरुष यथार्थ विधिसे इस यज्ञको करताहै वह अपनी सब कामनाओं को प्राप्त होताहै और अनन्त पद वैकुंठ लोकमें प्राप्तहोताहै ११५ पुत्रकी इच्छावाला पुत्रको धनकी इच्छावाला धनको स्त्री की इच्छा करने वाला उत्तम स्त्री को और कन्याकरै तो उत्तम पतिको प्राप्तहोतीहै ११६ भ्रष्ट राज्य वालेको राज्य लक्ष्मीके इच्छावालेको लक्ष्मी औरजि-स२ कामना को विचार करताहै वहसब सिद्धहोती है निष्कामनासे करनेवालेको मोक्षकी प्राप्तिहो-तीहै ११७ इस लक्ष हवनसे सौगुनाकोटि हवन ब्रह्माजीने कहाहै इसकी संख्या आहुतियोंसे और दक्षिणाओंसे जानना ११८ इसमें भी पूर्व्व केही समान देवताओंका आवाहन और विसर्जन करै और होम स्नान और दानके मन्त्र नहीं हैं परन्तु इसमें कुंड वेदी और मंडपमें जो विशेषताहै उसको सुनो ११९ कोटि हवनमें चार हाथ प्रमाण सब ओरसेचौखूंटा योनिके आकार दोमुखों वाला तीन मेखलाओं से युक्त तो कुंडबनावे १२० इनमेंसे पहली मेखला दो अंगुलऊंची दूसरी तीन अंगुलकी १२१ और तीसरी मेखलाकी ऊँचाई और विस्तार चार अंगुलहोना चाहिये पहली और दूसरी मे-खलाकाभी विस्तार दोअंगुल होनाचाहिये १२२ योनिका विस्तार एकअंगुल करै परन्तु ऊँचाईतेर-ह१३ अंगुलकी करै मध्यमें कछुएक समान ऊंची बगलोंमें एक२ अंगुल ऊंची बनावे १२३ हथिनी तथा ऊंटनीकी योनिके समान विस्तृत और छिद्रवाली बनावे यही लक्षण सबकुंडों की योनिका कहाहै

त्थदलसन्निभम् १२४ वेदीचकोटिहोमेस्याद्वितस्तीनाञ्चतुष्टयम्। चतुरस्रासम-
न्ताच्च त्रिभिर्वप्रैस्तुसंयुता। वप्रप्रमाणंपूर्वोक्तं वेदीनांचतथोच्छ्रयः १२५ तथाषोडशह
स्त स्यान्मण्डपश्चचतुर्मुखः। पूर्वद्वारेचसंस्थाप्य बह्वृचंवेदपारगम् १२६ यजुर्विदंत
थायाम्ये पश्चिमेसामवेदिनम्। अथर्ववेदिनंतद्वदुत्तरेस्थापयेद्बुधः १२७ अष्टौतुहो
मकाःकार्या वेदवेदाङ्गवेदिनः। एवंद्वादशविप्राः स्युर्वस्त्रमाल्यानुलेपनैः। पूर्ववत्पूजयेद्भ
क्त्या वस्त्राभरणभूषणैः १२८ रात्रिसूक्तंचरौद्रञ्च पावमानंसुमङ्गलम्। पूर्वतोबह्वृचःशा
न्ति पठन्नास्तेह्युदङ्मुखः १२९ शान्तंशाक्रञ्चसौम्यञ्च कौष्माण्डंशान्तिमेवच। पाठ
येद्दक्षिणद्वारि यजुर्वेदिनमुत्तमम् १३० सुपर्णमथवैराजमाग्नेयंरुद्रसंहिताम्। ज्येष्ठसा
मतथाशान्तिञ्छन्दोगःपश्चिमेजपेत् १३१ शान्तिसूक्तञ्चसौरञ्च तथाशाकुनकंशुभ
म्। पौष्टिकञ्चमहाराज्य मुत्तरेणाप्यथर्ववित् १३२ पञ्चभिःसप्तभिर्वापि होमःकार्योऽत्र
पूर्ववत्। स्नानेदानेचमन्त्राः स्युस्तएवमुनिसत्तम! १३३ वसोर्धाराविधानञ्च लक्षहो
मेविशिष्यते। अनेनविधिनायस्तु कोटिहोमंसमाचरेत्। सर्वान्कामानवाप्नोति ततो
विष्णुपदंव्रजेत् १३४ यःपठेच्छृणुयाद्वापि ग्रहयज्ञत्रयंनरः। सर्वपापविशुद्धात्मा पदमि
न्द्रस्यगच्छति १३५ अश्वमेधसहस्राणि दशचाष्टौचधर्मवित्। कृत्वायत्फलमाप्नोति
कोटिहोमात्तदश्नुते १३६ ब्रह्महत्यासहस्राणि भ्रूणहत्यार्बुदानिच। कोटिहोमेन नश्यन्ति

मेखलाके ऊपर वड़केपत्तेके समान वनावे १२४ कोटि होममें चारविलस्तके प्रमाणकी चौखूंटीसमान
तीनमेखलावाली वेदीवनावे इनमेखलाओंका प्रमाण और उंचाई पूर्व्वोक्त वेदियों के समान जानो
१२५ और हाथके प्रमाण विस्तारका चारद्वारेवाला मंडपवनावे पूर्व्वकेद्वारमें बहुऋचु वेदपाठीको
स्थितकरै १२६ दक्षिणमें यजुर्वेदी पश्चिममें सामवेदीको और उत्तरके द्वारमें अथर्ववेदी ब्राह्मणको
स्थापितकरै १२७ वेद वेदांगकेज्ञाता आठब्राह्मणोंको होमकरने में स्थितकरै इसप्रकार बारहब्राह्मणों
को स्थितकरै और उनको भक्तिसे पूर्व्वकेसमान वस्त्र मालाभूषण और चन्दनादिकसे पूजनकरै १२८
रात्रिसूक्त रौद्रसंज्ञकमंत्र—पवमान—सुमंगलिक इत्यादिक वेद मंत्रोंका शान्तिकेनिमित्त बहुऋचु संज्ञ-
क वेदपाठी ब्राह्मण उत्तरमें स्थितहोकर पाठ करै १२९ शान्तिकारक इन्द्रसम्बन्धी सौम्य कौष्मां-
ड और शान्ति इत्यादि मंत्रोंको दक्षिणके द्वारपर स्थित होकर यजुर्वेदी ब्राह्मण पढ़ै १३० सुपर्ण—
वैराज - आग्नेय - रुद्रसंहिता ज्येष्ठसाम शान्ति और छंदोग इनसब मंत्रोंका पाठ पश्चिमके द्वार
वाला ब्राह्मण करै १३१ शांति- सूक्त-सौर-शाकुन- पौष्टिक और महाराज्य इत्यादिक मन्त्रोंको उत्तर
के द्वारवाला अथर्ववेदी ब्राह्मण पढ़ै १३२ पांच वा सात ब्राह्मणोंको पूर्वके समान होम करना चा-
हिये-हेमुनि सत्तम नारद स्नान और दानमें वही पूर्व्वोक्त मंत्र जानो १३३ लक्ष आहुतियोंके होममें
वसोर्द्धारा करनेमें घृतकी धाराका विधान विशेष है इस विधिसे जो कोटि आहुतियोंका हवनकराता
है वह सब कामनाओंको प्राप्त होके विष्णुके पदमें प्राप्त होताहै १३४। १३५ अठारह हज़ार अश्व-
मेधोंका जो फल होता है सो कोटि होमके करनेसे होताहै १३६ हज़ार भ्रूण हत्या और अर्बुद भ्रूण-

यथावच्छिवभाषितम् १३७ वश्यकर्माभिचारादि तथैवोच्चाटनादिकम्। नवग्रहमखंकृत्वा ततःकाम्यंसमाचरेत् १३८ अन्यथाफलदंपुंसां नकाम्यंजायतेक्वचित्। तस्मादयुतहोमस्य विधानंपूर्वमाचरेत् १३९ वृत्तंवोच्चाटनेकुण्डं तथाचवशकर्म्मणि। त्रिमेखलञ्चकवक्त्रमरत्निर्विस्तरेणतु १४० पलाशसमिधःशस्ता मधुगोरोचनान्विताः। चन्द्रेणागुरुणातद्वत् कुंकुमेनाभिषिञ्चिताः १४१ होमयेन्मधुसर्पिभ्यां बिल्वानिकमलानिच। सहस्राणिदशैवोक्तं सर्वदैवस्वयम्भुवा १४२ वश्यकर्मणिबिल्वानां पद्मानांचैवधर्मवित्। सुमित्रियानआपओषधयइतिहोमयेत् १४३ नचात्रस्थापनंकार्यं नचकुम्भाभिषेचनम्। स्नानंसर्वौषधैःकृत्वा शुक्लपुष्पाम्बरोगृही १४४ कण्ठसूत्रैःसकनकैः विप्रान्समभिपूजयेत्। सूक्ष्मवस्त्राणिदेयानि शुक्लागावःसकाञ्चनाः १४५ अवशानिवशीकुर्यात्सर्वशत्रुबलान्यपि। अमित्राण्यपिमित्राणि होमोऽयम्पापनाशनः १४६ विद्वेषणेऽभिचारेच त्रिकोणंकुंडमिष्यते। द्विमेखलंकोणमुखं हस्तमात्रञ्चसर्वशः १४७होमंकुर्युस्ततोविप्रा रक्तमाल्यानुलेपनाः। निवीतलोहितोष्णीषा लोहिताम्बरधारिणः १४८ नववायसरक्ताढ्यपात्रत्रयसमन्विताः। समिधोवामहस्तेन श्येनास्थिबलसंयुताः। होतव्यामुक्तकेशैरतु ध्यायद्भिरशिवंरिपौ१४९ दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तु तथाहुम्फडितीतिच। श्येनाभिचारमन्त्रेण क्षुरंसम

हत्याओंका नाश इस कोटि हवनके करनेसे होता है यह शिवजीने कहाहै १३७ नवग्रह यज्ञ करनेसे वश्यकर्म अभिचारादि और उच्चाटन इन सबका नाश होता है १३८ इन नवग्रह यज्ञोंके समान मनो वांछित फलका देने वाला कोई कर्म नहीं है इसलिये दशहज़ार आहुतियोंका विधान अवश्य करना योग्यहै १३९ वशीकरण मंत्र मारण और उच्चाटन आदिक मंत्रोंके हवनमें तीन मेखलासे युक्त मुष्टि प्रमाण एक मुखवाला कुंड बनावे ढाककी समिध शहद गोरोचन- कपूर और अगर इन सबको केशरके जलसे छिड़कके उसकी आहुति देवे १४०। १४१ शहद घृतमें मिला बेल फल तथा कमलगट्टोंकी आहुति करै इन सब कर्मोंमें सदा दश हज़ार आहुति करना। ब्रह्माजीने कहा है १४२ वशीकरण कर्म में बेलफल और कमलगट्टों की आहुति करे सुमित्रियान आपओषधय इसमंत्र का उच्चारण करे १४३ इस कर्म में कलशस्थापन तथा अभिषेक न करे गृहस्थी पुरुष इस कर्म में स- र्वौषधी के जलसे स्नान करे सफ़ेद वस्त्र और पुष्पों को धारण करे १४४ सुवर्ण का आभूषण कण्ठ के पहरने की जंज़ीर आदि भूषण देके ब्राह्मणों का पूजन करै श्वेत वस्त्र देवै श्वेत गौ का दान करे सुवर्ण की दक्षिणा देवै १४५ यह होम प्रबल शत्रुओं को वश में करता है प्रीति रहितों को मित्र बनाता है पापों का नाश करता है १४६ विद्वेष शत्रुता और दुःख कराने के लिये तीन कोण का मुख करै एक हाथ कुण्डका विस्तार करै १४७ फिर रक्त माला -लालचन्दन-लालयज्ञोपवीत- लालपगड़ी--और लालवस्त्र इन सबको धारण कियेहुए ब्राह्मण हवनकरे १४८ तरुणकाकके रुधिर से भींजेहुए तीनपात्रोंसे युक्तहुई समिधोंको बायेंहाथमें लेकर बाजकीहड्डी मिलाकर अपने शिरके बालखोलके शिवजीका ध्यानकरताहुआ शत्रुके निमित्त आहुतिकरै १४९ दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तु हुं:

भिमन्त्र्यच १५० प्रतिरूपंरिपोःकृत्वा क्षुरेणपरिकर्तयेत्। रिपुरूपस्यशकलान्यथैवाग्नौ विनिक्षिपेत् १५१ ग्रहयज्ञविधानान्ते सदैवाभिचरन्पुनः। विद्वेषणंतथाकुर्वन्नेतदेवसमाचरेत् १५२ इहैवफलदंपुंसामेतन्नामुत्रशोभनम्। तस्माच्छान्तिकमेवात्र कर्तव्यंभूतिमिच्छता १५३ ग्रहयज्ञत्रयंकुर्य्याद्यस्त्वकाम्येनमानवः। सविष्णोःपदमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभम् १५४ यइदंशृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वापिमानवः। नतस्यग्रहपीडास्यान्नचबन्धुजनक्षयः १५५ ग्रहयज्ञत्रयंगेहे लिखितन्तत्रतिष्ठति। नपीडातत्रबालानां नरोगोनचबन्धनम् १५६ अशेषयज्ञफलदं निःशेषाघविनाशनम्। कोटिहोमंविदुःप्राज्ञा भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् १५७ अश्वमेधफलम्प्राहुर्लक्षहोमंसुरोत्तमाः। द्वादशाहमखस्तद्वन्नवग्रहमखः स्मृतः १५८ इतिकथितमिदानीमुत्सवानन्दहेतोः सकलकलुषहारीदेवयज्ञाभिषेकः। परिपठतियइत्थं यःशृणोतिप्रसङ्गादभिभवतिसशत्रूनायुरारोग्ययुक्तः १५९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे द्विनवतितमोऽध्यायः ९२॥

(शिवउवाच) पद्मासनःपद्मकरः पद्मगर्भसमद्युतिः। सप्ताश्वःसप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात्सदारविः १ श्वेत श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वःश्वेतवाहनः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्योवरदःशशी २ रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजःश्वेतरोमा वरदः

फट् इन मंत्रों का उच्चारण करे फिर श्येनाभिचार मंत्र पढ़ के छुरी उठाकर शत्रु की मूर्ति बना के उसके टुकड़े कर अग्नि में आहुति कर देवे १५०।१५१ ग्रह यज्ञके विधान के अनुसार अभिचार कर्म और विद्वेष कर्म करनेवाला पुरुष सदा यही विधि करे १५२ यह कर्म पुरुषों को इसी लोक में फल देनेवाले हैं परलोक में अच्छे नहीं हैं इस निमित्त ऐश्वर्य्य का चाहनेवाला पुरुष सदैव शान्ति केही कर्मकरे १५३ जो पुरुष निष्काम होकर मनसे इन तीन ग्रह यज्ञों को करताहै वह ऐसे विष्णु के परमपद को प्राप्त होता है जहांसे कि फिर आगमन नहीं होता है १५४ जो इस कर्म को सुने वा सुनावैगा उसके कभी रोग बन्धन और पीड़ा आदिक न होवेगा १५५ जिस घरमें यह तीनों ग्रह यज्ञ लिखे हुए होते हैं वहां बालकों की पीड़ा और रोग बन्धनादिक कभी नहीं होते १५६ यह यज्ञ सब यज्ञों के समान फल देनेवाले हैं और सम्पूर्ण पापों के नाश करनेवाले हैं और कोटि हवन तो पण्डितों ने भुक्ति मुक्ति के फल का देनेवाला कहा है और लक्ष हवन करना अश्वमेधयज्ञ के समान फल का देनेवाला है द्वादशाहयज्ञ और नवग्रहयज्ञ समान फल देनेवाले कहे हैं १५७।१५८ इस प्रकारसे यहउत्सव आनन्दके हेतुसे सम्पूर्ण पापों के नाशक देवयज्ञके अभिषेकको कहदियाहै इसको जो पढ़ताहै अथवा सुनताहै वह शत्रुओंका नाश करताहै और आयु आरोग्यसे युक्त होता है १५९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां द्विनवतितमोऽध्यायः ९२॥

शिवजी कहते हैं कि पद्मासनवाला कमलों को खिलानेवाला कमलकोश के समान कान्तिवाला सात अश्वोंवाला सात रज्जुओंवाला दो भुजाओंवाला ऐसा सूर्य्य सदा बनाना चाहिये १ श्वेत श्वेताम्बरधारी श्वेत अश्ववाला श्वेतवाहनवाला गदाधारी दोभुजावाला ऐसा चन्द्रमा बनाना

न्याङ्गारसुतः३ पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्म्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदोबुधः ४ देवदैत्यगुरूतद्वत्पीतश्वेतौचतुर्भुजौ। दण्डिनौवरदौकार्यौसाक्षसूत्रकमण्डलू ५ इन्द्रनीलद्युतिःशूली वरदोगृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरःकर्त्तव्योऽर्कसुतस्तथा ६ नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्रप्रशस्यते। धूम्राद्विबाहवःसर्वे गदिनोविकृताननाः। गृध्रासनगतानित्यं केतवःस्युर्वरप्रदाः ७ सर्वेकिरीटिनःकार्य्या ग्रहालोकहितावहाः। ह्यंगुलेनोच्छ्रिताःसर्वेशतमष्टोत्तरंसदा ८ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे त्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

(नारदउवाच) भगवन्! भूतभव्येश! तथान्यदपियच्छ्रुतम्। भुक्तिमुक्तिफलायालं तत्पुनर्वक्तुमर्हसि १ एवमुक्तोऽब्रवीच्छम्भुरयंवाङ्मयपारगः। मत्समस्तपसाब्रह्मन्! पुराणश्रुतिविस्तरैः २ धर्मोऽयंवृषरूपेण नन्दीनामगणाधिपः। धर्मान्माहेश्वरान्वक्ष्यत्यतःप्रभृतिनारद! ३ (मत्स्य उवाच) शृणुष्वावहितोब्रह्मन्! वक्ष्येमाहेश्वरंब्रतम्। त्रिषुलोकेषुविख्यातं नाम्नाशिवचतुर्दशी ४ मार्गशीर्षत्रयोदश्यां सितायामेकभोजनः। प्रार्थयेद्देवदेवेश! त्वामहंशरणंगतः ५ चतुर्दश्यांनिराहारः सम्यगभ्यर्च्यशङ्करम्। सुवर्णवृषभंदत्त्वा भोक्ष्यामिचपरेऽहनि ६ एवंनियमकृत्सुप्त्वा प्रातरुत्थायमानवः।

श्रेष्ठ कहा है २ लालमाला लालवस्त्र शक्तिशूल और गदा इनको धारण करनेवाला चार भुजाओं से युक्त श्वेतरोमोंवाला ऐसा मंगल बनाना ३ पीली माला पीले वस्त्र कमल की पंखड़ियों के समान आकारवाला खड्ग चर्म्मगुप्ति और गदाको धारण कियेहुए सिंहवाहनवाला ऐसा बुध बनाना योग्य है ४ बृहस्पतिका पीलावर्ण—शुक्रका श्वेतवर्ण इनदोनोंको चतुर्भुजी मूर्त्ति दंड—कमंडलु—और अक्षमाला इनको धारण कियेहुए बनाना शुभ कहा है ५ इन्द्र नीलमणि के समान कान्तिवाला शूलधारी गिद्ध वाहनवाला और बाणों का आसन ऐसा शनैश्चर बनाना चाहिये ६ राहुका नीलासिंहासन बनावे इस की मूर्त्ति धूम्र वर्ण दो भुजावाली गदा धारण किये विकराल आकृतिवाली बनावे और ऐसीही केतु की भी मूर्त्ति बनावे इनका वाहन गिद्ध बनावे इन ग्रहोंकी ऐसी मूर्त्ति वरदेनेवाली कही है ७ लोगों के हित प्रिय करनेवाले सब ग्रह मुकुटधारी बनावे और सब ग्रहों की मूर्त्ति दो दो अंगुल ऊंची बनावे सब ग्रहों के मंत्रों का जप सदैव अष्टोत्तरशत १०८ जपै ८ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

नारदजीबोले हे भगवन् भूतभव्येश सबप्रकारसे भुक्तिमुक्तिके देनेवाले आप अब कोई अन्यविधान को कहिये १ यह सुनकर वचनमनके पारके जानने वाले शिवजी बोले कि हे ब्रह्मन् तप पुराण और श्रुतिके विस्तार करके वृषरूपसे यह नन्दीनाम गणाधिप मेरे समानहै हे नारद यह नन्दिकेश्वरवृषभ शिवधर्मोंको कहेगा २।३ मत्स्यजीकहते हैं कि हेराजा सावधान होकर शिवव्रतको सुन इसत्रिलोकी में शिवचतुर्दशी नामसे एकव्रत प्रसिद्ध है ४ मार्गशिर शुक्ला त्रयोदशी के दिन एक समय भोजनकरै और हे देवदेवेश मैं तुम्हारी शरणहूं इसप्रकारसे शिवकी प्रार्थनाकरै ५ चतुर्दशीको निराहारव्रतकरै और शिवजी का पूजनकरै फिर सुवर्ण के वृषभकादानकरके, दूसरे दिनभोजनकरै ६ ऐसे नियम

कृतस्नानजपः पश्चादुमयासहशंकरम्। पूजयेत्कमलैःशुभ्रैर्गन्धमाल्यानुलेपनैः ७ पादौ नमःशिवायेति शिरःसर्वात्मनेनमः। त्रिनेत्रायेतिनेत्राणि ललाटंहरयेनमः ८ मुखमिन्दुमुखायेति श्रीकण्ठायेतिकन्धराम्। सद्योजातायकर्णौतु वामदेवायवैभुजौ ९ अघोरहृदयायेति हृदयञ्चाभिपूजयेत्। स्तनौतत्पुरुषायेति तथेशानायचोदरम् १० पार्श्वेचानन्तधर्माय ज्ञानभूतायवैकटिम्। ऊरूचानन्तवैराग्य सिंहायेत्यभिपूजयेत् ११ अनन्तैश्वर्य्यनाथाय जानुनीचार्चयेद्बुधः। प्रधानायनमोजंघे गुल्फौव्योमात्मनेनमः १२ व्योमकेशात्मरूपाय केशान्पृष्ठञ्चपूजयेत्। नमःपुष्ट्यैनमस्तुष्ट्यै पार्वतीञ्चापिपूजयेत् १३ ततस्तुवृषभंहैमं मुदकुम्भसमन्वितम्। शुक्लमाल्याम्बरधरं पञ्चरत्नसमन्वितम्। भक्ष्यैर्नानाविधैर्युक्तं ब्राह्मणायनिवेदयेत् १४ ततोविप्रान्समाहूय तर्पयेद्भक्तितःशुभान्। पृषदाज्यञ्चसंप्राश्य स्वपेद्भूमावुदङ्मुखः १५ पञ्चदश्यांततःपूज्य विप्रान्भुञ्जीतवाग्यतः। तद्वत्कृष्णचतुर्दश्या मेतत्सर्वंसमाचरेत् १६ चतुर्दशीषुसर्वासु कुर्य्यात्पूर्ववदर्चनम्। येतुमासेविशेषाःस्युस्तान्निबोधक्रमादिह १७ मार्गशीर्षादिमासेषु क्रमादेतदुदीरयेत्। शंकरायनमस्तेऽस्तु नमस्तेकरवीरक! १८ त्र्यम्बकायनमस्तेऽस्तु महेश्वरमतःपरम्। नमस्तेऽस्तुमहादेव! स्थाणवेचततःपरम् १९ नमःपशुपतेनाथ! नमस्तेशम्भवेपुनः।

करके प्रातःकाल उठ स्नानजपकर उमा समेत शिवजीकापूजनकरै श्वेत कमल गन्धमाला और चन्दनादिक से पूजाकरै ७ शिवायनमः यहकहकर चरणोंकोपूजै--सर्वात्मनेनमः ऐसाकहकर शिरको पूजै--त्रिनेत्रायनमः यह कहकर नेत्रोंकोपूजै--हरयेनमः यहकहकर मस्तककोपूजै ८ इन्दुमुखायनमः कहकर मुखको श्रीकण्ठायनमः कहकर कंठको--सद्योजातायनमः यहकहकर कानोंको-वामदेवायनमः यह कहकर भुजाओं को ९ अघोरहृदयायनमः यह कहकर हृदयको--तत्पुरुषायनमः कहकर स्तनोंको ईशानायनम यहकहकर उदरको-अनन्तायनमः कहकर पशलियोंको-ज्ञानभूतायनमः कहकर कटिको अनन्तवैराग्यसिंहायनमः कहकरजंघाओंको १०।११ अनन्तैश्वर्य्यनाथायनम कहकर श्रीगौरीभगवती कोपूजे -प्रधानायनमः कहकर पिंडलियोंको व्योमात्मनेनमः कहकर गुल्फ और टकनोंकोपूजै १२ व्योमकेशात्मनेरूपायनम. कहकर केशोंको और पीठको पुष्ट्यैनमः तुष्ट्यैनमः यह कहकर पार्वती जीकोपूजै १३ फिर सुवर्ण के वृषभको सुवर्णका कलश श्वेतवस्त्रमाला तथापंचरत्नसे युक्तकरके अनेकप्रकार के भक्ष्यपदार्थों समेत ब्राह्मणके अर्थ दानकरै १४ और सुन्दर ब्राह्मणों को बुलवाकर तृप्तिपर्य्यन्त भोजनकरवावै फिर आहुतियों से शेष बचेहुए घृतका प्राशनकर उत्तराभिमुखहोकरके शयनकरै इसके उपरान्त पूर्णिमाके दिन ब्राह्मणों-को भोजन करवा मौन धारणकरके आप भी भोजनकरै और इसीप्रकार कृष्णपक्षकी चतुर्दशीकोभी करना चाहिये १५।१६ सब चतुर्दशियोंको इसी पूर्वोक्तप्रकारसे पूजनकरै अब जो मासोंमें विशेष हैं उनके विधानको सुनो १७ मार्गशिरआदि महीनोंमें क्रमसे इन आगेकहेहुये नामोंकाउच्चारणकरै-शंकरायनमः १ करवीरकायनमः २ त्र्यंबकायनम ३ महेश्वरायनमः ४ महादेवायनमः ५ स्थाणवेनमः ६-१८। १९ हे पशुपते हे नाथ तुम्हारे अर्थ न-

नमस्तेपरमानन्द!नमःसोमार्द्धधारिणे २० नमोभीमायइत्येवं त्वामहंशरणङ्गतः । गोमू
त्रङ्गोमयंक्षीरं दधिसर्पिःकुशोदकम् २१ पञ्चगव्यन्ततोविल्वं कर्पूरञ्चागुरुंयवाः । ति
लाःकृष्णाश्चविधिवत्प्राशनंक्रमशःस्मृतम् । प्रतिमासञ्चतुर्दश्योरेकैकम्प्राशनंस्मृतम्
२२ मन्दारमालतीभिश्च तथाधत्तूरकैरपि । सिन्दुवारैरशोकैश्च मल्लिकाभिश्चपाटलैः
२३ अर्कपुष्पैःकदम्बैश्च शतपत्र्यातथोत्पलैः । एकैकेनचतुर्दश्योरर्चयेत्पार्वतीपतिम्
२४पुनश्चकार्तिकेमासे प्राप्तेसन्तर्पयेद्द्विजान् । अन्नैर्नानाविधैर्भक्ष्यैर्वस्त्रमाल्यविभूषणैः
२५ कृत्वानीलवृषोत्सर्गं श्रुत्युक्तविधिनानरः । उमामहेश्वरंहैमं वृषभञ्चगवासह २६
मुक्ताफलाष्टकयुतं सितनेत्रपटवृताम् । सर्वोपस्करसंयुक्तां शय्यांदद्यात्सकुम्भकाम् २७
ताम्रपात्रोपरिपुनः शालितण्डुलसंयुतम् । स्थाप्यविप्रायशान्ताय वेदव्रतपरायच २८
ज्येष्ठसामविदेदेयं नवकव्रतिनेक्वचित् । गुणज्ञेश्रोत्रियेदद्यादाचार्येतत्त्ववेदिनि २९ अव्य
ङ्गाङ्गायसौम्याय सदाकल्याणकारिणे । सपत्नीकायसंपूज्य वस्त्रमाल्यविभूषणैः ३० गुरौ
सतिगुरोर्देयं तदभावेद्विजातये । नवित्तशाठ्यंकुर्वीत कुर्वन्दोषात्पतत्यधः ३१ अनेन
विधिनायस्तु कुर्याच्छिवचतुर्दशीम् । सोऽश्वमेधसहस्रस्य फलंप्राप्नोतिमानवः ३२ ब्रह्म
हत्यादिकंकिञ्चिद्यदत्रामुत्रवाकृतम् । पितृभिर्भ्रातृभिर्वापि तत्सर्वंनाशमाप्नुयात् ३३

मस्कारहै७।८शंभवेनमः ९ परमानन्दको नमस्कारहै १० सोमार्द्धधारीको नमस्कारहै ११-२० भीमायनमः १२ तुम्हारेशरणहूं इन सवनामों को मार्गशिर आदि महीने में क्रमसेकहै और गोमूत्र-गोवर-दूध-दही-घृत-कुशोदक २१ पंचगव्य बेलगिरी-कपूर-अगर-यव और कालेतिल इनको प्राशन और भक्षण मार्गशिर आदि महीनोंकी चतुर्दशियों को करै २२ और मंदारके पुष्प चमेली धतूरा-संभालू अशोक-मल्लिका-पाडल-आकके पुष्प-कदंब-उत्तमकमलिनी-कमल इन पुष्पों करके क्रमसे मार्गशिर आदि चतुर्दशियोंको शिवकापूजनकरै २३।२४ फिर जव कार्त्तिक महीना आवे तव अनेकप्रकारके भक्ष्यपदार्थोंसे ब्राह्मणोंको भोजनकरवाके तृप्तकरै और वस्त्रमाला विभूषण आदिकोंसे पूजाकरै २५ फिर वेदोक्तविधिसे नीलवृषभको छोड़ै सुवर्णकेशिव और पार्वतीवनावै और गौसहित वृषभकीमूर्त्ति बनवावै फिर ब्राह्मणकेअर्थ निवेदनकरै आठश्वेतमोती पाटकेवस्त्र तकिया तोशक आदिवस्त्र और कलश इनसवसे युक्त शय्याका दानकरै २६।२७ शिव पार्वतीकी मूर्त्तिको तांबे के पात्रमेंचावल भरकर उसके ऊपर स्थापितकरै और वेदपाठी व्रतमें तत्पर शान्त ब्राह्मणके अर्थ देवै २८ और विशेषकरके ज्येष्ठ सामवेदकेजाननेवाले के अर्थ देनायोग्यहै परन्तु वकवृत्ती दंभी आदिक ब्राह्मणको कभी न दे किन्तु गुणज्ञ श्रोत्रिय तत्त्ववेत्ता आचार्य्यकोदेवै २९ अंग व्यंगरहित सौम्य और सदा कल्याणकारी ऐसे सपत्नीक ब्राह्मणको वस्त्र माला और आभूषणादिक से पूजकर देना उत्तम है गुरु होंय तो उन्हीं को देदे नहीं तो उत्तम ब्राह्मणको वित्तशाठ्यरहित होके देवै क्योंकि कृपणता करने वाला नरकमें जाताहै ३०।३१ इसविधिसे जो शिवचतुर्दशीका व्रत करताहै वह हजार अश्वमेध यज्ञों के फलको प्राप्तहोताहै ३२ और इसजन्ममें तथा पूर्व्वजन्ममें जो ब्रह्महत्यादिक पापहोगयाहो अथवा

दीर्घायुरारोग्यकुलान्नवृद्धिरत्राक्षयामुत्रचतुर्भुजत्वम्। गणाधिपत्यंदिविकल्पकोटिशता न्युपित्वापदमेतिशम्भोः ३४ नवृहस्पतिरप्यनन्तमस्याःफलमिन्द्रोनपितामहोऽपिवक्तुम्। नचसिद्धगणोऽप्यलंनचाहं यदिजिह्वायुतकोट्यपिवक्त्रे ३५ भवत्यमरवल्लभः पठतियः स्मरेद्वासदा शृणोत्यपिविमत्सरः सकलपापनिर्मोचनम्। इमांशिवचतुर्दशीममरका मिनीकोटयः स्तुवन्तितमनिन्दितं किमुसमाचरेद्यःसदा ३६ यावाथनारीकुरुतेतिभ क्त्याभर्तारमापृच्छ्यसुतान्गुरून्वा। सापिप्रसादात्परमेश्वरस्य परम्पदंयातिपिना कपाणेः ३७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेनन्दिनारदसंवादेशिवचतुर्दशीव्रतन्नामचतुर्नवतितमोऽध्यायः९४॥

(नन्दिकेश्वरउवाच) फलत्यागस्यमाहात्म्यं यद्भवेच्छृणुनारद!। यदक्षयंपरंलोके सर्वकामफलप्रदम् १ मार्गशीर्षेशुभेमासि तृतीयायांमुने! व्रतम्। द्वादश्यामथवाष्टम्यां चतुर्दश्यामथापिवा। आरभेच्छुक्लपक्षस्य कृत्वाब्राह्मणवाचनम् २ अन्येष्वपिहिमासेषु पुण्येषुमुनिसत्तम!। सदक्षिणम्पायसेन भोजयेच्छक्तितोद्विजान् ३ अष्टादशानांधा न्यानामवर्ष्यंफलमूलकैः। वर्जयेदब्दमेकन्तु ऋतेऔषधकारणम्। सवृषंकाञ्चनंरुद्रं ध र्म्मराजञ्चकारयेत् ४ कूष्माण्डंमातुलिंगञ्च वार्ताकम्पनसंतथा। आम्राम्रातकपित्था नि कालिंगमथवालुकम् ५ श्रीफलाश्वत्थवदरञ्जम्बीरंकदलीफलम्। काश्मरन्दाडिमं

माता पिताका अपराध होगयाहो वह सब क्षणमात्रमें नष्ट होजाताहै ३३ दीर्घआयु-आरोग्य-कुल और अन्नकी अनन्तगुणी वृद्धि चतुर्भुजी मूर्त्तिकी प्राप्ति और गणोंका अधिपतिहोके किरोड़कल्पोंतक स्वर्गमें वासकरके शिवके पदको प्राप्तहोताहै ३४ इसव्रतके सम्पूर्ण फल कहनेको बृहस्पति इन्द्रादिक देवता और ब्रह्माजी भी समर्थनहीं हैं मत्स्यजी कहते हैं कि सिद्धगणोंसमेत मैंभी अपनी किरोड़ों जिह्वाओं से नहीं कहसका ३५ जो इस व्रतको पढ़ता स्मरणकरता और सुनताहै उसके सबपाप दूरहोजाते हैं इस व्रतकी स्तुति देवताओंकी स्त्रियांभी करती हैं इसहेतुसे निन्दासे रहित होकर पुरुष इसको सदैवकरै ३६ अपने भर्त्ता पुत्र वा गुरुकी आज्ञालेकर जो स्त्री भी इस व्रतको करती है वह शिवजीकी प्रसन्नतासे शिवके परमलोकमें प्राप्तहोती है ३७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांनन्दिनारदसंवादेशिवचतुर्दशीव्रतंनामचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४॥

नन्दिकेश्वरने कहा कि हेनारद जो इस व्रतके फलके त्यागका माहात्म्य परलोकमें अक्षयफलका देनेवालाहै उसकोभी तुमसुनो १ हेमुने मार्गशिरशुक्ला तृतीया द्वादशी १२ अष्टमी ८ औरचतुर्दशी १४ इनतिथियोंमें ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन करवाके व्रतका प्रारंभकरै २ हे नारद इसमहीनेके सिवाय अन्यभी पवित्र महीनोंमें ब्राह्मणोंको खीरका भोजन करवाके शक्तिके अनुसार दक्षिणादे ३ अठारह प्रकारके व्रीहि आदिक धान्योंमें निन्दित कुत्सित धान्य और मूलफलोंको एक वर्षतक वर्जित करदे परन्तु औषधमें कछुदोष न समझै और सुवर्णके वृषभ समेत सुवर्णकी शिवकी मूर्त्ति बनावे इ-सी प्रकार धर्मराजकी भी मूर्त्ति बनावे ४ कोहड़ा-बिजौरा-वार्त्ताकशाक-फालसा-आंव-लिहसौड़ा

शक्त्या कालधौतानिषोडश ६ मूलकामलकंजम्बू तिन्तिडीकरमर्दकम् कङ्कोलैलातु
पिङ्केरी करीरकुटजंशमी ७ औदुम्बरंनालिकेरं द्राक्षाथबृहतीद्वयम्। रौप्यानिकारयेच्छ
क्त्या फलानीमानिषोडश ८ ताम्रंतालफलंकुर्य्यादगस्तिफलमेवच । कैडर्यःकाश्मर्य्य
फलं तथासूरणकन्दकम् ९ रक्तालुकाकन्दकञ्च कनकाङ्कचचिर्मिटम्। चित्रवल्लीफ
लंतद्वत्कूटशाल्मलिजम्फलम् १० आम्रनिष्पावमधुक बटमुद्गपटोलकम्। ताम्राणिषो
डशैतानि कारयेच्छक्तितोनरः ११ उदकुम्भद्वयंकुर्य्याद्धान्योपरिसवस्त्रकम्। ततश्च
कारयेच्छय्यां यथोपरिसुवाससीम् १२ भक्ष्यपात्रत्रयोपेतं यमरुद्रवृषान्वितम्। धेन्वास
हैवशान्ताय विप्रायाथकुटुम्बिने। सपत्नीकायसंपूज्य पुण्येऽह्निविनिवेदयेत् १३ यथाफ
लेषुसर्वेषु वसन्त्यमरकोटयः। तथासर्वफलत्यागव्रताद्भक्तिःशिवेऽस्तुमे १४ यथाशिव
श्चधर्म्मश्च सदानन्तफलप्रदौ। तद्युक्तफलदानेन तौस्यातांमेवरप्रदौ १५ यथाफला
न्यनन्तानि शिवभक्तेषुसर्वदा। तथानन्तफलावाप्तिरस्तुजन्मनिजन्मनि १६ यथाभेदं
नपश्यामि शिवविष्ण्वर्कपद्मजान्। तथाममास्तुविश्वात्मा शङ्करःशङ्करःसदा १७ इति
दत्त्वाचतत्सर्वमलंकृत्यचभूषणैः। शक्तिश्चेच्छयनंदद्यात् सर्वोपस्करसंयुतम् १८ अ
शक्तस्तुफलान्येव यथोक्तानिविधानतः। तथोदकुम्भसंयुक्तौ शिवधर्मौचकाञ्चनौ १९

कैथ-इन्द्रयव-एलुआ-नारियल-पीपल-बेर-जंबीर-खट्टा-केला-शिवणी और अनार इनसब १६फलोंको शक्तिके अनुसार सुवर्णके बनावे ५।६ और मूली आमला-जामन-इमली-करोंदा-कंकोल-इलायची पीलुपर्णी-कैर-कुड़ा-आटी-गूलर-नारियल-दाख और दोप्रकारकी कटेली इनसोलह फलोंको शक्तिके अनुसार चाँदी के बनावे ७।८ ताड़काफल-अगस्तकाफल-कायफल-खंभारी-जिमीकन्द ९ लाललज्जा-वन्तीकाकंद-स्वर्णक्षीरी-जो पिसोला नाम से गुजरात में प्रसिद्धहै चिरमिटी-पृष्ठिपर्णी-साल्लवण-इन का फल--१० आंब-उत्तम महुआ बड़ मूंग परवल इनके फल यह सब १६ फल शक्तिके अनुसार तांबे के बनवावै ११ धान्यके ऊपर दो कलशों को वस्त्रोंसे युक्त करके स्थापित करे और उत्तम शय्या बनावे उस पर भी सुन्दर वस्त्रों को स्थापित करे १२ भोजन के तीन पात्र धर्मराज की मूर्ति वृषभ समेत शिव की मूर्ति और गौ इन सब को किसी शान्त कुटुम्बी सपत्नीक ब्राह्मण के अर्थ निवेदन करे पवित्र दिन में ब्राह्मणका पूजन करके इन सब वस्तुओं का दान करे १३ जैसे कि सब फलों में देवताओं की कोटि वसती है इसी प्रकार सब फलोंके त्याग करने से शिवजी में मेरी भक्तिरहै १४ जैसे शिवजी और धर्मराज सदैव अनन्त फलके देनेवाले कहे जाते हैं इसी प्रकार उनके योग्य फलों का दान करने से वह मुझको वरदान देनेवाले होवें १५ जैसे शिवजी के भक्तों में सदा अनन्तफल होते हैं ऐसेही मेरे भी जन्मजन्मोंमें अनन्त फलों की प्राप्ति रहै १६ जैसे मैं शिव, विष्णु अर्क और ब्रह्मा इन में कुछ भेद नहीं मानता हूं इसी प्रकार विश्वात्मा शंकर सदैव मेरा कल्याण करें १७ इसरीतिसे पूर्व्वोक्त सब वस्तुओं को अलंकृत करके ब्राह्मण को दान करे और श्रद्धा होय तो सब वस्तुओं से पूरित हुई शय्या का दान करे और जो श्रद्धा न होय तो पूर्व्वोक्त फलोंकाही दान करे परन्तु जलके

विप्रायदत्त्वाभुञ्जीत वाग्यतस्तैलवर्जितम्। अन्यान्यपियथाशक्त्या भोजयेच्छक्तितो
द्विजान् २० एतद्भागवतानान्तु सौरवैष्णवयोगिनाम्। शुभंसर्वफलत्यागव्रतंवेदविदो
विदुः २१ नारीभिश्चयथाशक्त्या कर्तव्यंद्विजपुंगव!। एतस्मान्नापरंकिञ्चिदिहलोके
परत्रच। व्रतमस्तिमुनिश्रेष्ठ! यदनन्तफलप्रदम् २२ सौवर्णरौप्यताम्रेषु यावन्तःपर
माणवः। भवन्तिचूर्ण्यमाणेषु फलेषुमुनिसत्तम!। तावद्युगसहस्राणि रुद्रलोकेमही
यते २३ एतत्समस्तकलुषापहरञ्जनानामाजीवनायमनुजेषुचसर्वदास्यात्। जन्मान्त
रेष्वपिनपुत्रवियोगदुःखमाप्नोतिधामचपुरन्दरलोकजुष्टम् २४ योवाशृणोतिपुरुषोऽल्प
धनःपठेद्वा देवालयेषुभवनेषुचधार्मिकाणाम्। पापैर्वियुक्तवपुरत्रपुरम्पुरारेरानन्दकृत्प
दमुपैतिमुनीन्द्र! सोऽपि २५॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चनवतितमोऽध्यायः ९५॥

(नारद उवाच) यदारोग्यकरंपुंसां यदनन्तफलप्रदम्। यच्छान्तयेचमर्त्यानां वद
नन्दीशतद्व्रतम् १ (नन्दिकेश्वर उवाच) यत्तद्विश्वात्मनोधाम परंब्रह्मसनातनम्।
सूर्य्योग्निचन्द्ररूपेणतत्त्रिधाजगतिस्थितम् २ तदाराध्यपुमान् विप्रप्राप्नोतिकुशलंसदा।
तस्मादादित्यवारेण सदानक्ताशनोभवेत् ३ यदाहस्तेनसंयुक्तमादित्यस्यचवासरम्।
तदाशनिदिनेकुर्य्यादेकभक्तंविमत्सरः ४ नक्तमादित्यवारेण भोजयित्वाद्विजोत्तमान्।

कलशों पर सुवर्ण के शिव और धर्मराज बनाके रक्खे १८।१९ फिर इनको ब्राह्मण के अर्थ दान देकर तेलसे वर्जित पदार्थों का मौन धारण करके भोजन करै और ब्राह्मणों को शक्तिके अनुसारभोजन करवावै २० यह विष्णुभक्त सूर्य्यभक्त और योगीजन आदिकों का सर्व कर्म फल त्याग करना वेदज्ञ ब्राह्मणों ने कहा है २१ यह व्रत स्त्रियों को भी शक्ति के अनुसार करना योग्य है हे मुनिश्रेष्ठ नारद इस व्रत के समान इस लोक और परलोक दोनों लोकों में अनन्त फल का देनेवाला कोई व्रत नहीं है २२ हे मुनिसत्तम पूर्व्वोक्त फलों में सुवर्ण चांदी और तांबा इनके चूर्ण के जितने परिमाण हों उतनेही हज़ार युगों तक शिवजी के लोक में वास होता है २३ यह व्रत मनुष्यों के जीवन पर्य्यन्त के सब पापों को नष्ट करता है किसी जन्म में भी पुत्र वियोग का दुःख नहीं होता और देवताओं से सेवित किये हुए धाममें प्राप्त होता है २४ जो अल्प धनवाला पुरुष भी इस को सुनता है अथवा पढ़ता है वह शिवजी के लोक में धार्मिक देवताओं के स्थानोंको प्राप्तहोकर आनन्द करताहै और सब पापों से छुटजाताहै २५॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचनवतितमोऽध्यायः ९५॥

नारद मुनिने पूछा कि हे नन्दिकेश्वर पुरुषोंका अत्यानन्दकारी शान्तिकर्त्ता जो अनन्तफल का देनेवाला व्रतहोय वह मुझसे वर्णनकरो १ नन्दिकेश्वर बोले कि जो परमात्मा का परब्रह्म धाम इसजगत् में सूर्य्य अग्नि और चन्द्रमा इनतीनरूपोंसे प्रसिद्धहोरहाहै २ जिसके कि आराधन करने से पुरुष सदैव कुशलताको प्राप्तहोताहै उसके व्रतको मैंतुमसे कहताहूं कि रविवारके दिन सदैव रात्री में भोजन करै ३ और रविवार के दिन हस्तनक्षत्र भी होय तब शनिवारके दिवस नियमपूर्व्वक एकही वार भोजनकरै ४ और रविवार के दिन रात्रिमें ब्राह्मणों को भोजन करवाकर लालचन्दनसे बारह

पत्रैर्द्वादशसंयुक्तं रक्तचन्दनपङ्कजम् ५ विलिख्यविन्यसेत्सूर्य्यं नमस्कारेणपूर्वतः। दिवाकरन्तथाग्नेये विवस्वन्तमतःपरम् ६ भगन्तुनैर्ऋतेदेवं वरुणम्पश्चिमेदले। महेन्द्रमनिलेतद्वदादित्यञ्चतथोत्तरे ७ शान्तमीशानभागेतु नमस्कारेणविन्यसेत्। कर्णिकापूर्वपत्रेतु सूर्य्यस्यतुरगान्न्यसेत् ८ दक्षिणेऽर्यमनामानं मार्तण्डंपश्चिमेदले। उत्तरे तुरविन्देवङ्कर्णिकायाञ्चभास्करम् ९ रक्तपुष्पोदकेनार्घ्यं सतिलारुणचन्दनम्। तस्मिन्पद्मेततोदद्यादिमम्मन्त्रमुदीरयेत् १० कालात्मासर्वभूतात्मा वेदात्माविश्वतोमुखः। यस्मादग्नीन्द्ररूपस्त्वमतःपाहिदिवाकर! ११ अग्निमीलेनमस्तुभ्य मिषत्वोर्जेचभास्कर!। अग्नआयाहिवरद! नमस्तेज्योतिषाम्पते १२ अर्घ्यंदत्त्वाविसृज्याथ निशितैलविवर्जितम्। भुञ्जीतवत्सरान्तेतु काञ्चनंकमलोत्तमम्। पुरुषञ्चयथाशक्त्या कारयेद्द्विभुजंतथा १३ सुवर्णशृङ्गींकपिलांमहार्घ्यां रौप्यैःखुरैःकांस्यदोहांसवत्साम्। पूर्णेगुडस्योपरिताम्रपात्रे निधायपद्मंपुरुषञ्चदद्यात् १४ संपूज्यरक्ताम्बरमाल्यधूपैर्द्विजञ्चरक्तरथहेमशृङ्गैः। संकल्पयित्वापुरुषंसपद्मं दद्यादनेकव्रतदानकाय। अव्यङ्गरूपायजितेन्द्रियाय कुटुम्बिनेदेयमनुद्धताय १५ नमोनमःपापविनाशनाय विश्वात्मनेसप्ततुरङ्गमाय। सामर्ग्यजुर्द्धामनिधे! विधात्र भवाब्धिपोतायजगत्सवित्रे १६ इत्यनेनविधिनासमाचरेदब्दमेकमिहयस्तुमानवः। सोऽधिरोहतिविनष्टकल्मषः सूर्य्यधामधुतचामरावलिः १७

पत्तोंका कमल बनावे उसमें पूर्व्वकी ओर सूर्य्यके अर्थ नमस्कार लिखे अग्निकोण में दिवाकरको-दक्षिण में विवस्वान्को ५। ६ नैर्ऋत्यमें भगको--पश्चिममें वरुणको--वायव्यमें महेन्द्रको-और उत्तरमें आदित्यको नमस्कार लिखे ७ ईशानमें शान्तको और कमलके पूर्व्वभागमें सूर्य्यके अश्वोंको लिखे-दक्षिणमें अर्य्यमा देवतालिखे-पश्चिममें मार्त्तण्डको और उत्तरके दलमें रविदेवको लिखे कमलकी पँखड़ियोंपर भास्करको लिखे-८। ९ और रक्त पुष्प-तिल-लालचन्दन--इनसबसे उस कमलमें अर्घदानकरै और इसमंत्रका उच्चारणकरै १० कि हे दिवाकर तुम कालात्मा सर्वभूतात्मा और वेदात्माभी हो चारोंओर मुखवालेहो इन्द्र और अग्निके रूपवाले हो इस हेतुसे मेरीरक्षाकरो ११ अग्निमीलेनमस्तुभ्यमिषेत्वोर्जेचभास्कर। अग्नआयाहिवरद नमस्तेज्योतिषांपते १२ इन मंत्रों से अर्घदेकर विसर्ज्जन करदेवै रात्रिमें विनातेलको भोजनकरै जब वर्षदिन होजाय तब शक्तिके अनुसार सुवर्णका कमल और दोभुजावाला पुरुष बनावे १३ सुवर्णकी सींगदी रूपेके खुर उत्तम सवत्सा कपिला गौ कांसेकी दोहनी तांबेके पात्रमें गुड़ पै स्थापित कियाहुआ कमल और सुवर्णका पुरुष इन सबको दानकरै १४ फिर लालचन्दन माला और धूपादिसे ब्राह्मणका पूजनकर लालसुवर्ण के शृंगों से संकल्पकरके अनेक व्रतदानादि करनेवाले व्यंगरहित जितेन्द्रिय कुटुम्बी औरमदरहित ब्राह्मणको उस कमल सहित पुरुषका दानकरदे १५ और यहकहै कि हेपापनाशक विश्वात्मा सप्त अश्ववाले ऋग्यजु और सामवेदके निधि विधाता संसार सागरके नौकारूप आपके अर्थ वारंवार-नमस्कार है १६ जो मनुष्य इसविधिको वर्षदिनतक करताहै वह सबपापोंसे छुटकर चमरोंसे शोभितहो सूर्य

धर्मसंक्षयमवाप्यभूपतिः शोकदुःखभयरोगवर्जितः। द्वीपसप्तकपतिःपुनःपुनर्द्धर्ममूर्तिरमितौजसायुतः १८ याचभर्तृगुरुदेवतत्परा वेदमूर्तिदिननक्तमाचरेत्। सापिलोकममरेशवन्दिता यातिनारद! रवेर्नसंशयः १९ यःपठेदपिशृणोतिमानवःपठ्यमानमथवानुमोदते। सोऽपिशक्रभुवनस्थितोऽमरैः पूज्यतेवसतिचाक्षयंदिवि २० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे षण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

(नन्दिकेश्वर उवाच) अथान्यदपिवक्ष्यामि संक्रान्त्युद्यापनेफलम्। यदक्षयम्परेलोके सर्वकामफलप्रदम् १ अयनेविषुवेवापि संक्रान्तिव्रतमाचरेत्। पूर्वेद्युरेकभक्तेनदन्तधावनपूर्वकम्। संक्रान्तिवासरेप्रातस्तिलैःस्नानंविधीयते २ रविसंक्रमणेभूमौ चन्दनेनाष्टपत्रकम्। पद्मंसकर्णिकंकुर्यात् तस्मिन्नावाहयेद्रविम् ३ कर्णिकायांन्यसेत्सूर्य्यं मादित्यंपूर्वेतस्ततः। नमउष्णार्चिषेयाम्ये नमोऋङ्मण्डलायच ४ नमःसवित्रेनैर्ऋत्ये वारुणेतपनंपुनः। वायव्येतुभगंन्यस्य पुनःपुनरथार्चयेत् ५ मार्तण्डमुत्तरेविष्णुमीशानेविन्यसेत्सदा। गन्धमाल्यफलैर्भक्ष्यैः स्थण्डिलेपूजयेत्ततः ६ द्विजायसोदकुम्भञ्च घृतपात्रंहिरण्मयम्। कमलञ्चयथाशक्त्या कारयित्वानिवेदयेत् ७ चन्दनोदकपुष्पैश्च

लोकमें निवासकरताहै १७ और जबपुण्यकी समाप्ति होजाय तब शोक दुःख भय और रोगादि से वर्जित होकर अतुल पराक्रमी और धर्ममूर्त्तिहोकर सातोंद्वीपोंका महाराज होताहै १८ जो अपने पति-देवता और गुरूकी भक्तिकरनेवाली स्त्री इस व्रतको करती है हेनारद वह स्त्रीभी देवताओं से वन्दितहुए सूर्य्यके लोकमें निस्सन्देह प्राप्तहोती है जो मनुष्य इस व्रतको पढ़ता सुनता अथवा पढ़ते हुएको अनुमोदन करवाताहै वहभी इन्द्रके लोकमें प्राप्तहोकर देवताओं से पूजित हो अनन्तकाल तक स्वर्गमें वासकरता है १९।२० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

नन्दिकेश्वरबोले-हेनारदजी अब परलोकमें सब कामनाओं के फलोंको अक्षयगुणा देनेवाले संक्रान्तिके उद्यापनको कहताहूं १ मकर और कर्ककी संक्रान्तिके दिन अथवा जब रात्रि और दिनसमान होय ऐसे विषुव संज्ञक कालमें संक्रान्तिका व्रतकरै पहलेदिन एकवार भोजनकरै फिर संक्रान्तिके दिन दन्तधावनादिकर तिलोंसे स्नानकरै २ उस सूर्य्य संक्रान्तिके दिन भूमिपर आठपत्रों वाला कमल चन्दनसे लिखै उसके बीचमें कर्णिका अर्थात् कलियां बनावै उसमें रविका आवाहनकरै ३ कर्णिका में सूर्य्यको स्थापितकरै पूर्व में आदित्यको स्थापितकरै उष्णार्चिषेनमः ऋङ्मंडलायनमः यह कह कर दक्षिण में नमस्कारकरै ४ नैर्ऋत्यमें सविताको नमस्कार करै पश्चिममें तपनको नमस्कारकरै और वायव्यमें भगको स्थापित करके वारंवार पूजनकरै ५ उत्तरमें मार्त्तण्डको स्थापित करै और ईशानमें विष्णुको स्थापित करके गन्धपुष्प फल और भक्ष्यपदार्थों से वेदिका पर पूजनकरै ६ जल के कलशपर घृतके पात्रको रख सुवर्ण युक्तकर ब्राह्मणके अर्थ निवेदन करै और कमलको भी शक्तिके अनुसार सुवर्णका बनवाके ब्राह्मणके अर्थ दानकरदे ७ फिर चन्दन जल और पुष्पोंसे सूर्य्यके अर्थ

देवायार्घ्यन्यसेद्भुवि। विश्वायविश्वरूपाय विश्वधाम्नेस्वयम्भुवे। नमोऽनन्त! नमोधात्रे ऋक्सामयजुषाम्पते! ८ अनेनविधिनासर्वं मासिमासिसमाचरेत्। वत्सरान्तेऽथवा कुर्यात्सर्वंद्वादशधानरः ९ संवत्सरान्तेघृतपायसेन सन्तर्प्यवह्निंद्विजपुङ्गवांश्च। कुम्भान्पुनर्द्वादशधेनुयुक्तान्सरत्नहैरण्मयपद्मयुक्तान् १० पयस्विनीःशीलवतीश्चदद्याद्धैमैःशृङ्गैरौप्यखुरैश्चयुक्ताः। गावोऽष्टवासप्तसकांस्यदोहा माल्याम्बरावाचतुरोऽप्यशक्तः। दौर्गत्ययुक्तःकपिलामथैकां निवेदयेद्ब्राह्मणपुङ्गवाय ११ हैमींचदद्यात्पृथिवींसशेषामाकार्यरूप्यामथवाचताम्रीम्। पैष्टीमशक्तःप्रतिमांविधाय सौवर्णसूर्येणसमम्प्रदद्यात्। नवित्तशाठ्यंपुरुषोऽत्रकुर्यात्कुर्वन्नधोयातिनसंशयोऽत्र १२ यावन्महेन्द्रप्रमुखैर्नगेन्द्रैः पृथ्वीचसप्ताब्धियुतेहतिष्ठेत्। तावत्सगन्धर्वगणैरशेषैः सम्पूज्यतेनारद! नाकपृष्ठे १३ ततस्तुकर्म्मक्षयमाप्यसप्तद्वीपाधिपःस्यात्कुलशीलयुक्तः। सृष्टेर्मुखेऽव्यङ्गवपुःसभार्यःप्रभूतपुत्रान्वयवन्दितांघ्रिः १४ इतिपठतिशृणोतिवाथभक्त्या विधिमखिलंरविसंक्रमस्य पुण्यम्। मतिमपिचददातिसोऽपिदेवैरमरपतेर्भवनेप्रपूज्यतेच १५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्तनवतितमोऽध्यायः ९७॥

(नन्दिकेश्वर उवाच) शृणुनारद! वक्ष्यामिविष्णोर्व्रतमनुत्तमम्। विभूतिद्वादशी

पृथ्वीपर अर्घदेवे यह सूर्य्यार्घ है॥ विश्वायविश्वरूपाय विश्वधाम्नेस्वयंभुवे। नमोऽनन्तनमोधात्रे ऋक्सामयजुषांपते॥ इसमंत्रसेदेवै ८ यही विधि प्रतिमास करनी चाहिये जबवर्ष दिन होजाय तब सब विधि बारहगुनी करै ९ वर्षके अन्तमें घृत खीर से अग्निको तृप्तकर ब्राह्मणोंको भोजन करवावै इस विधिमें बारह १२ कलश रत्नयुक्त बारह १२ कमल सुवर्णके सींग चांदीकेखुर कांसेकी दोहनी समेत बारह शीलयुक्त दुग्धवती गौ अथवा वित्तके अनुसार आठ—सात—अथवा चारही गौ कांसेकी दोहनी माला और वस्त्रादिसे युक्त करके और भी दरिद्री पुरुष होय तो एकही कपिला गौको उत्तम ब्राह्मण के अर्थ देवै १०।११ फिर शेषनाग समेत पृथ्वीकी सुवर्णमयी मूर्ति वा चांदी—तांबा—अथवा चूनकी मूर्तिबनाके सुवर्ण के सूर्य्य समेत ब्राह्मणके अर्थ देवै इस कर्ममें जहांतक होसकै धनकी कृपणता न करै क्योंकि होतेहुये धनकी कृपणता करनेवाला निस्सन्देह नरकमेंजाताहै १२हेनारद इसव्रतका करनेवाला पुरुष महेन्द्र शेषनाग पृथ्वी और सातों समुद्र जब तक स्थिर रहते हैं तब तक स्वर्ग में स्थितरहताहै और सब गन्धर्वादिकों से पूजित होताहै १३ जब पुण्यक्षीण होजाय तब शीलस्वभाव से युक्तहोकर उत्तमकुलवाले सातोंद्वीपोंके महाराजके गृहमें जन्मलेता है और अखंड राज्य करता है इसके सिवाय सृष्टिकी रचना के आदिमें व्यंगरहित उत्तम कुलरूप से युक्त बहुत से पुत्रादिकों समेत पृथ्वीपरजन्मलेताहै १४ इस सूर्य्य संक्रान्ति के फलकी विधिको जो भक्तिसे पढ़ताहै सुनता है और दूसरेको अनुमति देताहै वह इन्द्रके लोकमें देवताओं से पूजित होताहै १५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७॥

नन्दिकेश्वर बोले—कि हेनारद अबमें विष्णु के उत्तमव्रतको कहताहूं उसको तुमसुनो यहविभूति

नाम सर्वदेवनमस्कृतम् १ कार्त्तिकेचैत्रवैशाखे मार्गशीर्षेचफाल्गुने। आषाढ़ेवादश म्यान्तु शुक्लायांलघुभुङ्नरः। कृत्वासायन्तनींसन्ध्यां गृह्णीयान्नियमंबुधः २ एकाद श्यांनिराहारः समभ्यर्चजनार्दनम्। द्वादश्यांद्विजसंयुक्तः करिष्येभोजनंविभो! ३ तद विघ्नेनमेयातु सफलंस्याञ्चकेशव!। नमोनारायणायेति वाच्यञ्चस्वपतानिशि ४ ततः प्रभातउत्थाय साविव्यष्टशतञ्जपेत्। पूजयेत्पुण्डरीकाक्षं शुक्लमाल्यानुलेपनैः ५ विभूतयेनमःपादावशोकायचजानुनी। नमःशिवायेत्यूरूच विश्वमूर्त्ते! नमःकटिम् ६ कन्दर्पायनमोमेढ्रं मुष्कंनारायणायच। दामोदरायेत्युदरं वासुदेवायचस्तनौ ७ माध वायेत्युरोविष्णोः कण्ठमुत्कण्ठिनेनमः। श्रीधरायमुखंकेशान् केशवायेतिनारद! ८ पृष्ठंशार्ङ्गधरायेति श्रवणौवरदायवै। स्वनाम्नाशङ्खचक्रासिगदाजलजपाणये। शिरःस र्वात्मनेब्रह्मन्! नमइत्यभिपूजयेत् ९ मत्स्यमुत्पलसंयुक्तं हैमंकृत्वातुशक्तितः। उदकु म्भसमायुक्त मग्रतःस्थापयेद्बुधः १० गुडपात्रंतिलैर्युक्तं सितवस्त्राभिवेष्टितम्। रात्रौ जागरणंकुर्यादितिहासकथादिना ११ प्रभातायान्तुशर्वर्यां ब्राह्मणायकुटुम्बिने। सका ञ्चनोत्पलंदेवं सोदकुम्भंनिवेदयेत् १२ यथानमुच्यसेदेव! सदासर्वविभूतिभिः। तथा मामुद्धराशेषदुःखसंसारकर्दमात् १३ दशावताररूपाणि प्रतिमासंक्रमान्मुने!। दत्त्वा

द्वादशीनाम विष्णुका व्रतसबदेवताओंसे पूजितकियाहुआहै १ इसव्रतकी यहविधिहै कि कार्त्तिक-चैत्र वैशाख-मार्गशिर और फाल्गुन इनमहीनोंके शुक्लपक्षकी दशमीको सूक्ष्मभोजनकर सायंकालकी संध्या पूर्वक नियमग्रहणकरै फिर एकादशीको निराहार व्रतकरके जनार्दन भगवान्का पूजनकरै और द्वादशी को ब्राह्मणों से युक्तहोकर भोजनकरै २।३ और यह बचनकहैकि हेकेशव विघ्नरहित मेराव्रतसफलहोय और रात्रिमेंसोनेकेसमय ॐनमोनारायणायनमः यहमन्त्रपढ़ै ४ फिर प्रातःकालउठकर अष्टोत्तरशत १०८ गायत्रीका जपकरके श्वेतचन्दन पुष्पादिकोंसे तुलसीदलपूर्व्वक विष्णुभगवान्का पूजनकरै ५ इसपूजनमें विभूतयेनमः इसमंत्रसे चरणोंका पूजनकरै-अशोकायनमःकहकर पिंडलियोंका-शिवाय नमःकहकर जांघोंका-विश्वमूर्त्तयेनमःकहकर कटिका ६ कन्दर्पायनमः कहकर लिंगका-नारायणायनमः कहकर वृषणोंका-दामोदरायनमः कहकर उदरका वासुदेवायनम कहकर स्तनोंका-माधवायनमः कहकरछाती का और उत्कण्ठिनेनमः कहकर विष्णुके कण्ठकापूजनकरै और हेनारद श्रीधरायनमः कहकर मुखका-केशवायनमः कहकर केशोंकापूजनकरै ७। ८ शार्ङ्गधरायनमः कहकरपीठका वरदाय नमः कहकर कानोंकापूजनकरै-शंख चक्र गदा खड्ग और कमल इनकोधारणकरनेवाले पृथक् २ नामों का उच्चारणकर सर्वात्मनेनमः कहकर शिरकोपूजे ९ सुवर्णका मत्स्यबनावे और श्रद्धाके अनुसार सुवर्णका कमलबनाकर उसकेआगे जलकाकलश स्थापितकरै १० फिर तिलयुक्त श्वेतवस्त्रसे लपटा हुआ गुडकापात्र स्थापितकरै रात्रिमें जागरणकरै और कथाआदिक इतिहासोंका वर्णनकरै ११ जब प्रभातहोय तब कुटुम्बी ब्राह्मणकेअर्थ मत्स्यावतारी विष्णुकीमूर्त्ति सुवर्णकाकमल और जलका कलश इनसबको देदेवै १२ जैसे विष्णुभगवान् किसीविभूतिसे रहित नहीं हैं इसीप्रकार मुझको भी संसार

न्नेयंतथाव्यासमुत्पलेनसमन्वितम्। दद्यादेवंसमायावत् पाषण्डानभिवर्जयेत् १४ स
माप्यैवंयथाशक्त्या द्वादशद्वादशीःपुनः। संवत्सरान्तेलवणपर्वतेनसमन्विताम्। शय्यां
दद्यान्मुनिश्रेष्ठ ! गुरवेधेनुसंयुताम् १५ ग्रामञ्चशक्तिमान्दद्यात् क्षेत्रंवाभवनान्वितम्।
गुरुंसंपूज्यविधिवद्वस्त्रालङ्कारभूषणैः १६ अन्यानपियथाशक्त्याभोजयित्वाद्विजोत्तमान्।
प्रीतयेद्वस्त्रगोदानैरत्नौघधनसंचयैः। अल्पवित्तोयथाशक्त्यास्तोकंस्तोकंसमाचरेत् १७
यश्चाप्यतीवनिःस्वःस्याद्भक्तिमान्माधवंप्रति। पुष्पार्चनविधानेन सकुर्याद्वत्सरद्वय
म् १८ अनेनविधिनायस्तु विभूतिद्वादशीव्रतम्। कुर्यात्पापविनिर्मुक्तः पितॄणांतारये
च्छतम् १९ जन्मनांशतसाहस्रं नशोकफलभाग्भवेत्। नचव्याधिर्भवेत्तस्य नदारिद्रंन
बन्धनम्। वैष्णवोवाथशैवोवा भवेज्जन्मनिजन्मनि २० यावद्युगसहस्राणां शतमष्टोत्त
रंभवेत्। तावत्स्वर्गेवसेद्ब्रह्मन्! भूपतिश्चपुनर्भवेत् २१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टनवतितमोऽध्यायः ९८॥

(नन्दिकेश्वर उवाच) पुरारथन्तरेकल्पे राजासीत्पुष्पवाहनः। नाम्नालोकेषुविख्या
तस्तेजसासूर्यसन्निभः १ तपसातस्यतुष्टेन चतुर्वक्त्रेणनारद !। कमलङ्काञ्चनन्दत्तं
यथाकामगमम्मुने ! २ लोकैःसमस्तैर्नगरवासिभिःसहितोनृपः। द्वीपानिसुरलोकञ्च
यथेष्टंव्यचरत्तदा ३ कल्पादौसप्तमन्द्वीपं तस्यपुष्करवासिनः। लोकेचपूजितंयस्मात्पु

के दुःखरूपी कीचसे निकालो १३ हेमुने प्रतिमासक्रमसे दशअवतारोंकीमूर्त्ति दत्तात्रेय वेदव्यास और कमल इनकी सुवर्णकी मूर्त्तिबनवाके दानकरै पाखंडोंसे रहितहो १४ इसप्रकार शक्तिके अनुसार बारहमहीनोंकी १२ ही द्वादशियोंको समाप्तकरके वर्षदिनके अन्तमें लवण के पर्व्वत से युक्त कीहुई शय्याको और गौको गुरुके अर्थदानकरै १५ इसमें अधिक शक्तिवाला पुरुष ग्रामका दानकरै अथवावस्त्र आभूषणादिकों से गुरुका पूजनकरके उनकेअर्थ खेत और गृहकादानकरै १६ और अन्य उत्तम ब्राह्मणों को शक्तिके अनुसार भोजनकरवावे उनकोभी वस्त्रगोदान और रत्नदानादिकोंसे शक्ति के अनुसार प्रसन्नकरै और अल्पधनवालापुरुष थोड़ाथोड़ाही आचरणकरै १७ जो अतिदरिद्री और भक्तिमान् पुरुषहोय वह पुष्पों के पूजन विधानसे दोवर्षतक विष्णुका पूजनकरै १८ इस विधिसे जो विभूतिद्वादशीका व्रतकरताहै वह आप सबपापोंसे छुटकरअपने सैकड़ोंपितरोंका उद्धार करता है १९ हजारों जन्मोंतक शोकसे दुःखितनहींहोता व्याधिनहींहोती दरिद्रबन्धन नहींहोता और जन्म २ में विष्णुका वा शिवजीका भक्तहोताहै एकसौ आठ १०८ हजार वर्षोंतक स्वर्गमें वासकरके फिर पृथ्वीपर राजाहोकर जन्मलेताहै २०।२१॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टनवतितमोऽध्यायः ९८॥

नन्दिकेश्वर बोले–कि पूर्व्व रथन्तर कल्प में एक पुष्पवाहन राजा हुआ वह लोक में सूर्य्य के समान तेजवाला विख्यात था १ हे नारदजी उसके तपसे प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने उसको इच्छापूर्व्वक चलनेवाला एक सुवर्ण का कमल दिया २ तब वह राजा अपने नगरनिवासी सब प्रकार के लोगों समेत सातों द्वीपों में और स्वर्ग में इच्छापूर्व्वक विचरने लगा ३ और कल्प की

ष्करद्वीपमुच्यते ४ देवेनब्रह्मणादत्तं यानमस्ययतोऽम्बुजम् । पुष्पवाहनमित्याहु
स्तस्मात्तन्देवदानवाः ५ नागम्यमस्यास्तिजगत्त्रयेऽपिब्रह्माम्बुजस्थस्यतपोऽनुभावात्
पत्नीचतस्याप्रतिमामुनीन्द्र ! नारीसहस्रैरभितोऽभिनन्द्या । नाम्नाचलावण्यवतीबभूव
सापार्वतीवेष्टतमाभवस्य ६ तस्यात्मजानामयुतम्बभूव धर्मात्मनामग्र्यधनुर्धराणाम् ।
तदात्मनःसर्वमवेक्ष्यराजा मुहुर्मुहुर्विस्मयमाससाद । सोऽभ्यागतंवीक्ष्यमुनिप्रवीरं प्राचे
तसंवाक्यमिदम्बभाषे ७ (राजोवाच) कस्माद्विभूतिरमलामरमर्त्यपूज्या जाताचसा
पिविजितामरसुन्दरीणाम् । भार्य्यामामाल्पतपसापरितोषितेन दत्तंममाम्बुजगृहञ्चमुनी
न्द्र ! धात्रा ८ यस्मिन्प्रविष्टमपि कोटिशतंनृपाणां सामात्यकुञ्जररथौघजनावृता
नाम् । नोलक्ष्यतेक्वगतमम्बरमध्यइन्दुस्तारागणैरिव गतःपरितःस्फुरद्भिः ९ तस्मा
त्किमन्यजननीजठरोद्भवेनधर्मादिकंकृतमशेषफलाप्तिहेतुः । भगवन्मयाथतनयैरथवान
यापि भद्रंयदेतदखिलंकथयप्रचेतः १० मुनिरभ्यधादथभवान्तरितंसमीक्ष्य पृथ्वीपतेः
प्रसभमद्भुतहेतुवृत्तम् । जन्माभवत्तवतुलुब्धकुलेतिघोरे जातस्त्वमप्यनुदिनञ्चिलपाप
कारी ११ वपुरप्यभूत्तवपुनःपरुषाङ्गसन्धि दुर्गन्धिसत्वभुजगावरणंसमन्तात् । नचतेसु
हृन्नसुतबन्धुजनोनतात स्त्वादृक्स्वसानजननीचतदाभिशस्ता । अभिसङ्गतापरमभीष्ट

आदि में सातवें उस पुष्करद्वीपवासी राजा का पूजित होता भया इसी से वह पुष्कर द्वीप कहाता है ४ और जो कि ब्रह्माजी ने इसको कमल का वाहन दियाथा इस हेतुसे सब देवता और दैत्यों ने इसका नाम पुष्पवाहन रक्खा ५ तपके प्रभाव से ब्रह्माजी के दिये हुए कमल पर स्थित हुए इस राजाकी गति सर्वत्र होती भई और इसकी लावण्यवतीनामस्त्री भी हज़ारों स्त्रियोंमें श्रेष्ठहोकर शिव जी की पत्नी श्रीपार्वतीजी के समान होती भई ६ उसके दश हज़ार धनुषधारी धर्मात्मा पुत्रहोते भये उस सब ऐश्वर्य्य को देख वह वारंवार आश्चर्य्य को प्राप्त होता भया फिर यह राजा पुष्प वाहन एक दिन प्राचेतस अभ्यागतको आया हुआ देखकर यह वचन बोला ७ कि हे मुनीन्द्र मेरेगृहमें देवता और मनुष्यों से पूजित ऐसी विभूति और देवताओं की स्त्रियों से पूजित स्त्री कैसे प्राप्त हुई है और थोड़ेही तप से प्रसन्न हुए ब्रह्माजी ने कमल का गृह कैसे देदिया है ८ जिस कमल के गृहमें प्रवेश हुए किरोड़ों राजा–मन्त्री हाथी–रथ और जनों के समूह जाने भी नहीं जाते हैं कि कहां हैं जैसे कि आकाश में चन्द्रमा और तारागण चारोंओर प्रकाशित होते हैं उसीप्रकार ९ मेरा भी गृह सब ओर से देदीप्यमान है हे भगवन् इस हेतु से अन्य माताके उदरमें प्राप्त होकर मुझे इन सब वस्तुओं की कैसे प्राप्ति हुई है मैंने मेरे पुत्रों ने और मेरी स्त्रीने ऐसा क्या पुण्य कियाहै जिससे कि ऐसे विभव को भोगते हैं इसको आप विचारपूर्वक कहिये १० यह राजा की बात सुनकर वह मुनि उसके पूर्व जन्म के पुण्य को विचार कर कहते भये कि हे राजा तेरा जन्म प्रथम किसी घोर व्याध के गृह में होता भया और तू प्रतिदिन पापोंको करताभया ११ और तेरा शरीर भी अत्यन्त दुर्गन्धी होताभया तू चारोंओर सर्पोंको लपेटे रहताथा और कोई तेरा मित्र न था पुत्र तथा बन्धुजन-बहन

तमाविमुखीमहीश ! तवयोषिदियम् १२ अभूदनावृष्टिरतीवरौद्रा कदाचिदाहारनिमित्त
मस्मिन्। क्षुत्पीडितेनाथतदानकिञ्चिदासादितन्धान्यफलामिषञ्च १३ अथाभिदृष्ट
म्महृदम्बुजाढ्यं सरोवरम्पंकपरीतरोधः। पद्मान्यथादायततोबहूनि गतःपुरंवैदिशनाम
धेयम् १४ तन्मौल्यलाभायपुरंसमस्तम्भ्रान्तन्त्वयाशेषमहस्तदासीत्। क्रेतानकश्चित्क
मलेषुजातः श्रान्तोभृशंक्षुत्परिपीडितश्च १५ उपविष्टस्त्वमेकस्मिन् सभार्योभवनाङ्गणे।
अथमङ्गलशब्दश्च त्वयारात्रौमहान्श्रुतः १६ सभार्यस्तत्रगतवान् यत्रासौमङ्गलध्वनिः।
तत्रमण्डपमध्यस्था विष्णोरर्चावलोकिता १७ वेश्यानङ्गवतीनामविभूतिद्वादशीव्रतम्।
समाप्तौमाघमासस्य लवणाचलमुत्तमम् १८ निवेदयन्तिगुरवे शय्यांचोपस्कारान्विता
म्। अलंकृत्यहृषीकेशं सौवर्णामरपादपम् १९ तान्तुदृष्ट्वाततस्ताभ्यामिदंचपरिकीर्तित
म्। किमेभिःकमलैःकार्यं वरंविष्णुरलंकृतः २० इतिभक्तिस्तदाजाता दम्पत्योस्तुनरा
धिप !। तत्प्रसङ्गात्समभ्यर्च्य केशवंलवणाचलम्। शय्याचपुष्पप्रकरैः पूजिताभूश्च
सर्वतः २१ अथानङ्गवतीतुष्टा तयोर्धनशतत्रयम्। दातुंत्वामाददेसाथ कलधौतशतत्र
यम् २२ नगृहीतंततस्ताभ्यां बहुसत्त्वावलंबनात्। अनङ्गवत्याचपुनस्तयोरन्नंचतुर्वि
धम्। आनीयव्याहृतञ्चात्र भुज्यतामितिभूपते ! २३ ताभ्यान्तुतदपित्यक्तं भोक्ष्यावो
वैवरानने !। प्रसङ्गादुपवासेन तवाद्यसुखमावयोः २४ जन्मप्रभृतिपापिष्ठौ कुकर्माणौह

और माता आदिक कोईभी तेरा सहायक न था यह तेरी प्रियास्त्रीभी तुझसे विमुख होरहीथी १२ फिर
एकसमय वर्षानहींहुई उसदुर्भिक्षकालमें तुम क्षुधासेआतुरहुएको धान्य फल और मांसादिक कुछन
मिला १३ उससमय किसी कमलोंसे पूरित सुंदरतटवाले सरोवरको देखकर तूवहांसेबहुतसे कमलों
को लेकर एकवैदिशनाम नगरमें जाताभया १४ और उन कमलके पुष्पों के मोल बेचने को तू सब
नगरमें फिरा परन्तु उनका मोललेनेवाला कोईभी न मिला तब तू क्षुधासे महापीडित होकर अत्यंत
थकित होगया १५ और अपनी स्त्रीसमेत किसीकेघरकेआँगनमें जाबैठा वहाँरात्रिमें बड़ेमंगलकेशब्दों
को सुनताभया १६ और जहाँमंगलकी ध्वनिहोरहीथी वहाँही अपनीस्त्रीसमेतगया वहाँतुमने मंडपके
बीचमें विष्णु भगवान्का पूजनदेखा १७ अर्थात् एक अनंगवती नाम वेश्या वहाँ विभूति द्वादशीका
व्रत करतीथी समाप्तहोने पर माघके महीनेमें लवणके पर्व्वतकादान औरसब सामग्री समेत शय्या
का दान तथा विभूषित किये हुए विष्णु भगवान्को और सुवर्णके कल्पवृक्षको अपने गुरुके अर्थ दे
रहीथी उनसब दानोंको देखकर तुम दोनोंने कहाकि इनकमलों का हम क्या करें इस्से यहसब क
मल विष्णु भगवान्के अर्थ निवेदन करतेहैं १८। २० हेराजन् तुम स्त्री पुरुषों की जब ऐसी दृढ़
भक्ति हुई उसके प्रसंगसे विष्णु लवणाचल—शय्या—और भूमि इनसबका पूजनतैंने इन्हीं पुष्पोंसे
किया २१ फिर तुमदोनो पर वह वेश्या प्रसन्न होकर तुम्हारे अर्थ तीनसै रुपये सुवर्ण और बहुत प्र
कारके धनदेनेलगी पर तु तुमदोनोंने नहींलिया तुमने उनपुष्पोंके पूजनकाफल विशेष जानकरवेचे
नहीं तबवह वेश्या तुमको चारों प्रकारके भोजन परोसकर बोलीकि यहाँआकरभोजनकरो २२।२३

दव्रते!। तत्प्रसङ्गात्तयोर्मध्ये धर्मलेशस्तुतेऽनघ! २५ इतिजागरणंताभ्यां तत्प्रसङ्गाद नुष्ठितम्। प्रभातेचतयादत्ता शय्यासलवणाचला २६ ग्रामाश्चगुरवेभक्त्या विप्रेभ्द्वा दशैवतु। वस्त्रालङ्कारसंयुक्ता गावश्चकरकान्विताः २७ भोजनञ्चसुहृन्मित्रदीनान्धकृ पणैःसमम्। तत्रलुब्धकदाम्पत्यं पूजयित्वाविसर्जितम् २८ सभवान्लुब्धकोजातः सप त्नीकोनृपेश्वरः। पुष्करप्रकरात्तस्मात्केशवस्यचपूजनात् २९ विनष्टाशेषपापस्य तवपु ष्करमन्दिरम्। तस्यसत्वस्यमाहात्म्यादल्पेनतपसानृप! ३० यथाकामगमंजातं लोक नाथश्चतुर्मुखः। सन्तुष्टस्तवराजेन्द्र! ब्रह्मरूपीजनार्दनः ३१ साप्यनङ्गवतीवेश्या का मदेवस्यसाम्प्रतम्। पत्नीसपत्नीसञ्जाता रत्याःप्रीतिरितिश्रुता। लोकेष्वानन्दजननी सकलामरपूजिता ३२ तस्मादुत्सृज्यराजेन्द्र! पुष्करंतन्महीतले। गङ्गातटंसमाश्रित्य विभूतिद्वादशीव्रतम्। कुरुराजेन्द्र! निर्वाणमवश्यंसमवाप्स्यसि ३३ (नन्दिकेश्वर उ वाच) इत्युक्तासमुनिर्ब्रह्मन्! तत्रैवान्तरधीयत। राजायथोक्तञ्चपुनरकरोत्पुष्पवाह नः ३४ इदमाचरतोब्रह्मन्नखण्डव्रतमाचरेत्। यथाकथञ्चित्कमलैर्द्वादशद्वादशीर्मु ने! ३५ कर्तव्या.शक्तितोदेया विप्रेभ्योदक्षिणानघ!। नवित्तशाठ्यंकुर्वीत भक्त्यातुष्य

तुमने उसके भोजनको भी त्यागदिया और कहाकि हम अन्य भोजन करेंगे हमको तुम्हारे प्रसंग और इसव्रतके उपवाससे परम सुखहुआहै २४ हमजन्म से लेकर अवतक कुकर्ममें रतथे और महापा- पी थे परन्तु इसप्रसंगसे कुछ पुण्यका लेश होगयाहै २५ इसप्रकार उसके प्रसंगसे तुमने रात्रिको जा- गरण भी किया फिरप्रभातके समय उसवेश्याने लवणाचल पर्व्वत समेत शय्याका दानकरके गुरूके अर्थग्राम दानकिये और बारह १२ ब्राह्मणोंको वस्त्र आभूषण और कमंडलु आदिसे युक्त गौओंका दान किया २६। २७ इसके उपरान्त अपने सुहृद मित्र-दीन पुरुष-अन्धे-कृपण-बराबरवाले और बिरादरी के लोगों को उत्तम भोजन करवाया और तुम्ह लुब्धक व्याध को भी स्त्री समेत पूजन किया यह करके विसर्जन किया २८ सो हेराजा वही स्त्रीसमेत लुब्धक इस जन्ममें तुम दोनों स्त्री समेत उत्पन्न हुएहो उन कमलों को जोतुमने विष्णु पर चढ़ायाथा इसीसे तुम्हारे सब पाप नष्टहो कर तुम दोनों राजा रानी हुएहो और उसी पुण्यके प्रभाव से थोड़ेही तपसे तुमको ब्रह्माजी ने यह कमल का मन्दिर दियाहै २९। ३० अर्थात् हे राजा तुमपर प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने यह इच्छा- पूर्व्वक चलनेवाला कमल गृह दिया है ३१ और वह वेश्या अब कामदेव की स्त्री रति की सपत्नी अर्थात् सौत प्रीति नामवाली होतीभई वह स्त्री लोगों को आनन्द करनेवाली और संपूर्ण देवताओं से पूजित होकर वर्त्तमान सुनी जाती है ३२ हे राजेन्द्र अब भी तू इस पुष्कर द्वीप को त्याग कर श्रीगंगाजी के तीरपर विभूति द्वादशीका व्रतकर जिससे कि तुम मोक्षको प्राप्तहोगे ३३ नन्दिकेश्वर कहते हैं कि हे नारद वह मुनि इसप्रकारकी बातें कहकर वहांही अन्तर्द्धान होगया तब वहपुष्पवा- हन राजा उसीप्रकार व्रत करताभया ३४ हे नारद इस व्रतका करनेवाला पुरुष जैसे बने तैसे अखण्डव्रतकरै अर्थात् बारहमहीनोंकी बारहद्वादशियोंको कमलोंसे विष्णुका पूजनकरै शक्तिके अनु-

निकेशवः ३६ इतिकलुषविदारणंजनानामपिपठतिशृणोतिचाथभक्त्या। मतिमपिच ददातिदेवलोके वसतिसकोटिशतानिवत्सराणाम् ३७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकोनशततमोऽध्यायः ९९॥

(नन्दिकेश्वर उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि व्रतषष्टिमनुत्तमाम्। रुद्रेणाभिहितां दिव्यां महापातकनाशिनीम् १ नक्तमब्दंचरित्वातु गवासार्द्धंकुटुम्बिने। हैमंचक्रंत्रिशूलञ्च दद्याद्विप्रायवाससी २ शिवरूपस्ततोऽस्माभिः शिवलोकेसमोदते। एतद्देवव्रतंनाम महापातकनाशनम् ३ यस्त्वेकभक्तेनसमां शिवंहैमवृषान्वितम्। धेनुंतिलमयीं दद्यात्सपदंयातिशाङ्करम्। एतद्रुद्रव्रतंनाम पापशोकविनाशनम् ४ यस्तुनीलोत्पलंहैमं शर्करापात्रसंयुतम्। एकान्तरितनक्ताशी समान्तेवृषसंयुतम्। सवैष्णवंपदंयाति लीलाव्रतमिदंस्मृतम् ५ आषाढ़ादिचतुर्मासमभ्यङ्गंवर्जयेन्नरः। भोजनोपस्करंदद्यात्सयाति भवनंहरेः। जनेप्रीतिकरंनृणां प्रीतिव्रतमिहोच्यते ६ वर्जयित्वामधौयस्तु दधिक्षीरघृतेक्षवम्। दद्याद्वस्त्राणिसूक्ष्माणि रसपात्रैश्चसंयुतम् ७ सम्पूज्यविप्रमिथुनं गौरीमेप्रीयतामिति। एतद्गौरीव्रतंनाम भवानीलोकदायकम् ८ पौषादौयस्त्रयोदश्यां कृत्वानक्तं

सार ब्राह्मणोंकोदक्षिणादेवे वित्तशाठ्यनहो क्योंकि विष्णुभगवान् भक्तिसे प्रसन्नहोतेहैं ३५। ३६ इस मनुष्योंके पापनष्टकरनेवाले व्रतको जो पढ़ताहै सुनताहै अथवा दूसरे को अनुमतिदेताहै वहहज़ारों कल्पों तक स्वर्गमें वासकरताहै और करनेवालोंका तो क्याहीकहनाहै ३७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनशततमोऽध्यायः ९९॥

नन्दिकेश्वरबोले कि हे नारद अबशिवजीकी कहीहुई व्रतषष्टि अर्थात् ६० व्रतोंको कहताहूंउसको तुमसुनो १ एकवर्षतक रात्रिमें भोजनकरै फिर कुटुम्बी ब्राह्मणकेअर्थ सुवर्णका वृषभ चक्र त्रिशूल और दोवस्त्र इनसबका दानकरै ऐसाकरनेवाला पुरुष शिवलोकमें शिवरूपहोकर हमसबों समेत आनन्दसे वासकरताहै इसव्रतको देवव्रतकहतेहैं यह व्रतमहापातकों का नाशकरनेवालाहै २। ३जो वर्ष पर्य्यन्त एकवार भोजनकरै फिरसुवर्णके वृषभसे युक्ततिलोंसे बनाईहुई गौकादानकरै वह शिवलोक में प्राप्तहोताहै यह रुद्रव्रतकहाताहै-- यह भी पापशोकादिका नाशकरनेवालाहै ४ जो सुवर्ण के नील कमलके पुष्पको खांड़के पात्रमें रखकर दानकरताहै और एकान्तमें रात्रिको भोजनकरताहै फिर वर्षके अन्तमें वृषभयुक्त उसपात्रका दानकरताहै वह वैकुण्ठलोकमें प्राप्तहोताहै यहलीलाव्रतकहाता है ५ आषाढ़ आदिक चातुर्मासमें मैंजेहुए स्वच्छभोजन पात्रोंका दानकरताहै वह विष्णुलोकमें प्राप्त होताहै यह मनुष्योंकी प्रीतिकरनेवाला प्रीतिव्रत कहाताहै ६ जो चैत्रके महीनेमें दही-दूध-घृत-गुड़ बारीकवस्त्र और रसकेपात्र इनसबका दानकरताहै और ब्राह्मण ब्राह्मणीके जोड़ेकोपूज यह कहताहै कि मुझपरगौरीप्रसन्नहो वह पार्वतीके लोकमें प्राप्तहोताहै यह गौरी व्रतकहाताहै ७ पौषवदी त्रयोदशीको और चैत्रबदी १३ को ईखकेगांड़ेसे युक्त दशअंगुलका सुवर्णका अशोक वृक्षबनवाकर वस्त्रसे ढककर ब्राह्मणको दानकरके यह वचनकहै कि हेप्रद्युम्न मुझपर प्रसन्नहो-- वह पुरुष कल्पपर्य्यन्त

मधौपुनः। अशोकंकाञ्चनंदत्त्वा इक्षुयुक्तंदशांगुलम् ९ विप्रायवस्त्रसंयुक्तं प्रद्युम्नःप्रीय तामिति। कल्पंविष्णुपदेस्थित्वा विशोकःस्यात्पुनर्नरः। एतत्कामव्रतंनाम सदाशोक विनाशनम् १० आषाढ़ादिव्रतंयस्तु वर्जयेन्नखकर्तनम्। वार्ताकंचचतुर्मासं मधुसर्पिर्घ टान्वितम् ११ कार्तिक्यांतत्पुनर्हैमं ब्राह्मणायनिवेदयेत्। सरुद्रलोकमाप्नोति शिवव्रत मिदंस्मृतम् १२ वर्जयेद्यस्तुपुष्पाणि हेमन्तशिशिरावृतू। पुष्पत्रयंचफाल्गुन्यां कृत्वा शक्त्याचकाञ्चनम् १३ दद्याद्विकालवेलायां प्रीयेतांशिवकेशवौ। दत्त्वापरम्पदंयातिसौ म्यव्रतमिदंस्मृतम् १४ फाल्गुनादितृतीयायां लवणंयस्तुवर्जयेत्। समाप्तेशयनंदद्याद्गृ हञ्चोपस्करान्वितम् १५ संपूज्यविप्रमिथुनं भवानीप्रीयतामिति। गौरीलोकेवसेत्कल्पं सौभाग्यव्रतमुच्यते १६ सन्ध्यामौनंततःकृत्वा समान्तेघृतकुम्भकम्। वस्त्रयुग्मंतिला न्घण्टां ब्राह्मणायनिवेदयेत् १७ सारस्वतंपदंयाति पुनरावृत्तिदुर्लभम्। एतत्सारस्व तंनाम रूपविद्याप्रदायकम् १८ लक्ष्मीमभ्यर्च्यपञ्चम्यामुपवासीभवेन्नरः। समान्तेहे मकमलं दद्याद्धेनुसमन्वितम् १९ सवैष्णवंपदंयाति लक्ष्मीवान्जन्मजन्मनि। एतत्स म्पद्व्रतंनाम सदापापविनाशनम् २० कृत्वोपलेपनंशम्भोरग्रतःकेशवस्यच। यावद ब्दंपुनर्दद्याद्धेनुञ्जलघटान्विताम् २१ जन्मायुतंसराजा स्यात्ततःशिवपुरंव्रजेत्। एत

विष्णुलोक में रहता है और सदैव शोकोंसे भी रहितहोताहै यह शोककानाशक कामव्रत कहाता है ९। १० जो पुरुष आषाढ़ आदिक महीनों में अपने नख आदिक नहीं कटाता है बैंगनकाशाक नहीं खाताहै और शहद घृत और सुवर्ण से युक्त कलश को कार्तिक महीने में ब्राह्मणके अर्थ दान करता है वह रुद्रके लोक में प्राप्तहोताहै यह शिवव्रत कहाताहै ११। १२ जो हेमन्त और शिशिर ऋतु में पुष्पों को त्याग करै और फाल्गुन में शक्तिके अनुसार सुवर्ण के तीन पुष्प बनवा के सायंकालमें दान करै और शिव विष्णु प्रसन्न होंय ऐसा वचन कहै ऐसा करनेवाला पुरुष परमपद को प्राप्त होता है यह सौम्यव्रत कहाता है १३। १४ फाल्गुन आदि महीनों की तृतीया को जो लवण को त्यागता है--व्रत की समाप्ति में शय्यादान करता है--सब सामग्रियों समेत घरका दान करता है--ब्राह्मण ब्राह्मणी के जोड़े का पूजन करता है और भवानी प्रसन्न हो ऐसा वचन कहता है वह सौ कल्प पर्य्यन्त पार्वती के लोक में वसता है यह सौभाग्यव्रत कहाता है १५। १६ जो संध्याकाल में वर्ष रोज तक मौन धारण रक्खे वर्ष के पीछे घृतका कलश--वस्त्रों का जोड़ा--तिल और घंटा इन सब को ब्राह्मण के अर्थ दान करता है १७ वह सरस्वती के लोक में वसता है वहां जाकर फिर जन्म नहीं होता यह रूप विद्या आदि का देनेवाला सारस्वत नाम व्रत कहाता है--१८ जो पुरुष लक्ष्मी का पूजन करके वर्ष दिन तक पंचमीका व्रत करताहै और वर्ष के अन्त में सुवर्णके कमल से युक्त गौ का दान करता है १९ वह विष्णु लोक में प्राप्त होकर जन्म जन्म में लक्ष्मीवान् होता है--यह सम्पत्ति व्रत कहाता है और पापों का नष्ट करने वाला है २० शिवजी के आगे अथवा विष्णु के आगे जो भूमिको वर्ष दिन तक लीपता है और फिर जल के कलश समेत धेनुका दान क-

दायुर्व्रतंनाम सर्वकामप्रदायकम् २२ अश्वत्थंभास्करंगङ्गां प्रणम्यैकत्रवाग्यतः। एक भक्तंनरःकुर्यादब्दमेकंविमत्सरः २३ व्रतान्तेविप्रमिथुनं पूज्यंधेनुत्रयान्वितम्। वृक्षंहि रण्मयंदद्यात् सोऽश्वमेधफलंलभेत्। एतत्कीर्त्तिव्रतंनामभूतिकीर्त्तिफलप्रदम् २४ घृते नस्नपनंकुर्याच्छम्भोर्वाकेशवस्यच। अक्षताभिःसपुष्पाभिःकृत्वागोमयमण्डलम् २५ ति लधेनुसमोपेतंसमाप्तेहेमपङ्कजम्। शुद्धमष्टांगुलंदद्याच्छिवलोकेमहीयते। सामगायतत श्चैतत् सामव्रतमिहोच्यते २६ नवम्यामेकभक्तन्तु कृत्वाकन्याश्चशक्तितः। भोजयि त्वासमांदद्याद्धेमकञ्चुकवाससी २७ हैमंसिंहञ्चविप्राय दत्त्वाशिवपदंव्रजेत्। जन्मार्बुदं सुरूपः स्याच्छत्रुभिश्चापराजितः। एतद्वीरव्रतंनाम नारीणांचसुखप्रदम् २८ यावत् समाभवेद्यस्तु पञ्चदश्यांपयोव्रतः। समान्तेश्राद्धकृद्दद्यात् पञ्चगास्तुपयस्विनीः २९ वासांसिचपिशङ्गानि जलकुम्भयुतानिच। सयातिवैष्णवंलोकं पितृणांतारयेच्छतम्। कल्पान्तेराजराजःस्यात् पितृव्रतमिदंस्मृतम् ३० चैत्रादिचतुरोमासान् जलंदद्यादया चितम्। व्रतान्तेमणिकंदद्यादन्नवस्त्रसमन्वितम् ३१ तिलपात्रंहिरण्यञ्च ब्रह्मलोकेम हीयते। कल्पान्तेभूपतिर्नूनमानन्दव्रतमुच्यते ३२ पञ्चामृतेनस्नपनं कृत्वा संवत्सरंवि

रता है २१ वह दश हज़ार जन्मों तक इस पृथ्वी पर राजा होता है और अन्त को शिवजी के पुरमें प्राप्त होताहै यह सब कामनाओंका देनेवाला आयुव्रत कहाताहै २२ जो मनुष्य पीपल, सूर्य, और गंगाजी इनको एक स्थान में मौन धारण करके प्रणाम करता हुआ वर्ष दिन तक कुटिलता से रहित एक वार भोजन करता है २३ और व्रत के अन्त में ब्राह्मण ब्राह्मणी के जोड़े का पूजन कर तीन गौओं से युक्त सुवर्ण के वृक्ष का दान करता है वह अश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्त होता है यह ऐश्वर्य्य और कीर्त्ति का देनेवाला कीर्त्तिव्रत कहाता है २४ शिवजी अथवा विष्णु भगवान् को घृतसे स्नान कराकर पुष्प अक्षतादि से युक्त तिलों की धेनु बनावे जब व्रत समाप्त हो जाय २५ तब आठ अंगुल के सुवर्ण के कमल को सामवेद के जाननेवाले उत्तम ब्राह्मण के अर्थ देवे यह सामव्रत कहाता है २६ जो पुरुष नवमी के दिन एकवार भोजन करै फिर कन्या को भोजन करवाके शक्ति के अनुसार सुवर्ण युक्त आंगी समेत उत्तम रेशमी दोनों वस्त्र देता है २७ और सुवर्ण का सिंह बनाके ब्राह्मण के अर्थ देता है वह शिवलोक में प्राप्त होकर अर्बुद जन्मों तक सुन्दर रूपवाला होकर शत्रुओं से कभी पराजय नहीं पाताहै यह स्त्रियों का महासुखदायीवीरव्रत कहाता है २८ जो पुरुष वर्ष दिन तक पूर्णमासी का व्रत करताहै और समाप्त होने पर श्राद्ध करके दूधवाली पांच गौओं समेत सर्वत्ती रंगके वस्त्रों को जलके कलशों समेत ब्राह्मण के अर्थ देताहै २९ वह विष्णु लोक में प्राप्त होकर सैकड़ों पितरों को उद्धार करता हुआ एक कल्पके पीछे राजाओं का भी अधिपति होता है यह पितृ व्रत कहाताहै ३० जो श्रेष्ठ पुरुष चैत्र से आदि लेकर चार महीने तक विना मांगे हुए जल का दान करता है और व्रत पूर्ण होने पर अन्न वस्त्रादि से युक्त सुन्दर मणि का तिल पात्र का और सुवर्ण का दान करता है वह ब्रह्मलोक में प्राप्त होता है और एक कल्प पीछे राजा होता

भोः। वत्सरान्तेपुनर्दद्याद्धेनुंपञ्चामृतेनहि ३३ विप्रायदद्याच्छङ्खञ्च सपदंयातिशाङ्क रम्। राजाभवतिकल्पान्ते धृतिव्रतमिदंस्मृतम् ३४ वर्जयित्वापुनर्मांसमब्दान्तेगोप्रदो भवेत्। तद्वद्धेममृगंदद्यात् सोऽश्वमेधफलंलभेत्। अहिंसाव्रतमित्युक्तं कल्पान्तेभूपति र्भवेत् ३५ माघमास्युषसिस्नानं कृत्वादाम्पत्यमर्चयेत्। भोजयित्वायथाशक्त्या माल्य वस्त्रविभूषणैः। सूर्य्यलोकेवसेत्कल्पं सूर्य्यव्रतमिदंस्मृतम् ३६ आषाढादिचतुर्मासं प्रा तःस्नायीभवेन्नरः। विप्रेषुभोजनंदद्यात् कार्तिक्यांगोप्रदोभवेत्। सवैष्णवंपदंयाति वि ष्णुव्रतमिदंशुभम् ३७ अथनादयनंयावद्वर्जयेत्पुष्पसर्पिषी। तदन्तेपुष्पदामानि घृतं धेन्वासहैववतु ३८ दत्त्वाशिवपदंगच्छेद् विप्रायघृतपायसम्। एतच्छीलव्रतंनाम शीला रोग्यफलप्रदम् ३९ सन्ध्यादीपप्रदोयस्तु समांतैलंविवर्जयेत्। समान्तेदीपिकांदद्यात् चक्रशूलेचकाञ्चने ४० वस्त्रयुग्मञ्चविप्राय तेजस्वीसभवेदिह। रुद्रलोकमवाप्नोति दीप्तिव्रतमिदंस्मृतम् ४१ कार्त्तिकादितृतीयायां प्राश्यगोमूत्रयावकम्। नक्तञ्चरेदब्द मेकमब्दान्तेगोप्रदोभवेत् ४२ गौरीलोकेवसेत्कल्पं ततोराजाभवेदिह। एतद्रुद्रव्रतंना-

है यह आनन्द व्रत कहाता है ३१।३२ जो पुरुष वर्ष दिन तक पंचामृत से स्नान करता हुआ एक वर्ष पूरे होने पर पंचामृत से भरे हुए शंख का और सुन्दर गौका दान ब्राह्मण के अर्थ करता है वह शिवजी के लोक में प्राप्त होताहै और एक कल्प पीछे राजा होता है यह अभीष्ट का देनेवाला धृति-व्रत कहाता है ३३।३४ जो पुरुष अधिक मासके विना प्रति मास गौ का दान करता है वा सुवर्ण के मृग का दान करता है वह अश्वमेधयज्ञ के फल को प्राप्त होता है इस व्रत का करनेवाला एक कल्प तक पुण्य भोगकर राजा होता है यह अहिंसाव्रत कहाता है ३५ जो पुरुष माघके महीने में चारघड़ी के तड़के नित्य स्नान करता हुआ ब्राह्मण और ब्राह्मणी के जोड़ेको पूजन करके शक्तिके अनुसार माला वस्त्र आभूषणों समेत ब्राह्मणों का भोजन करवाता है वह कल्प पर्य्यन्त सूर्य्यलोक में वास करता है यह सूर्य्य व्रत कहाता है ३६ जो पुरुष आषाढ़ आदिक चारमहीनों तक प्रातःकाल स्नान करके ब्राह्मणों का भोजन करवावे और कार्त्तिकके महीने में गौ का दानकरे वह विष्णुलोकमें प्राप्त होता है यह शुभ विष्णु व्रत कहाताहै ३७ जो मनुष्य एक अयनसे अर्थात् मकर और कर्क की संक्रान्ति से दूसरे अयनतक पुष्प और घृतको त्याग देताहै और उसके अन्तमें पुष्पों की माला स-हित घृत धेनु ब्राह्मणके अर्थ दान देकर ब्राह्मणों को घृत खीरका भोजन कराता है वह शिवजी के लोकमें प्राप्त होता है यह शीलव्रत कहाता है यह व्रत भी शील स्वभाव और आरोग्य का देनेवाला है ३८।३९ जोमनुष्य संध्याके समय दीपदान करताहुआ वर्षदिनतक तेलको त्याग देताहै और वर्ष पूरे होने पर सुवर्ण की दीवार सुवर्ण का चक्र और शूल दान करके ब्राह्मण को दो वस्त्र देता है वह इसलोकमें तेजस्विहोताहै और अन्तमें शिवजीके लोकमें प्राप्तहोताहै यह दीप्तिव्रत कहाताहै ४०।४१ जो मनुष्य कार्त्तिक आदि महीनों की तृतीयाके दिन गोमूत्र में भिगोये हुए जवों का भोजन रात्रिमें करताहै और फिर गोदान करताहै ४२ वह एककल्प तक पार्वती के लोकमें वास करताहै फिर इस

म् सदाकल्याणकारकम् ४३ वर्जयेच्चैत्रमासेच यश्चगन्धानुलेपनम्। शुक्तिंगन्धभृतां दत्त्वा विप्रायसितवाससी। वारुणंपदमाप्नोति दृढव्रतमिदंस्मृतम् ४४ वैशाखेपुष्पलवणं वर्जयित्वाथगोप्रदः। भूत्वाविष्णुपदेकल्पं स्थित्वाराजाभवेदिह। एतत्कान्तिव्रतंनाम कान्तिकीर्त्तिफलप्रदम् ४५ ब्रह्माण्डंकाञ्चनंकृत्वा तिलराशिसमन्वितम्। त्र्यहंतिलप्रदोभूत्वा वह्निंसन्तर्प्यसद्द्विजम् ४६ संपूज्यविप्रदाम्पत्यं माल्यवस्त्रविभूषणैः। शक्तितस्त्रिपलादूर्ध्वं विश्वात्माप्रीयतामिति ४७ पुण्येऽह्निदद्यात्सपरंब्रह्मयात्यपुनर्भवम्। एतद्ब्रह्मव्रतंनाम निर्वाणपददायकम् ४८ यश्चोभयमुखींदद्यात् प्रभूतकनकान्विताम्। दिनंपयोव्रतस्तिष्ठेत् सयातिपरमम्पदम्। एतद्धेनुव्रतंनाम पुनरावृत्तिदुर्लभम् ४९ त्र्यहं पयोव्रतेस्थित्वा काञ्चनंकल्पपादपम्। पलादूर्ध्वंयथाशक्त्यातण्डुलैस्तूपसंयुतम्। दत्वाब्रह्मपदंयाति कल्पव्रतमिदंस्मृतम् ५० मासोपवासीयोदद्याद्धेनुंविप्रायशोभनाम्। सवैष्णवंपदंयाति भीमव्रतमिदंस्मृतम् ५१ दद्याद्विंशत्पलादूर्ध्वं महींकृत्वातुकाञ्चनीम्। दिनंपयोव्रतस्तिष्ठेद्रुद्रलोकेमहीयते। धराव्रतमिदंप्रोक्तं सप्तकल्पशतानुगम् ५२ माघेमासेऽथवाचैत्रे गुडधेनुप्रदोभवेत्। गुडव्रतस्तृतीयायां गौरीलोकेमहीयते। महाव्रतमिदंनामपरमानन्दकारकम् ५३ पक्षोपवासीयोदद्याद्विप्रायकपिलाद्वयम्। ब्रह्मलोक

लोकमें राजा होता है यह रुद्रव्रत कहाता है और सदैव कल्याण का करनेवाला है ४३ जो मनुष्य चैत्र के महीने में चन्दनादि सुगन्धित वस्तुओं को अपने शरीर में लेप नहीं करताहै और ब्राह्मणके अर्थ गन्धिसे भरी हुई सीपी समेत दो सफ़ेद वस्त्रोंका दान करता है वह वरुण लोकमें प्राप्तहोता है यह दृढ व्रत कहाताहै ४४ जो मनुष्य वैशाख महीने में पुष्प और नमक को त्याग कर गोदान करता है वह एककल्प तक विष्णु लोकमें वास करके फिर राजा होता है यह कान्ति और कीर्त्तिका देनेवाला कान्ति व्रत कहाताहै ४५ जो मनुष्य बारहतोले सुवर्णका ब्रह्माण्ड बनवाकर तिलोंकी राशिपर स्थित करके तीनदिन तक तिलोंका दान अग्निहोत्र ब्राह्मणोंका भोजन करवाकर माला वस्त्र विभूषण आदि से ब्राह्मण ब्राह्मणीको शक्तिके अनुसार (विश्वात्मा प्रसन्नोभव) इसवचनको कहकर पवित्र तिथिको दान करताहै वह पुनरावृत्तिसे वर्जित ब्रह्मपद को प्राप्त होता है यह मोक्षका देनेवाला ब्रह्मव्रत कहाता है ४६।४८ जो मनुष्य दिनमें दूधके आहारका व्रतकर बहुत से सुवर्ण से बनवाई हुई सर्पिणी का दान करता है वह परमपद को प्राप्त होता है यह धेनुव्रत कहाताहै इससे फिर जन्म नहीं होता ४९ जो मनुष्य तीन दिन तक दूधका व्रतकर शक्तिके अनुसार चार तोलेसे अधिक सुवर्ण के कल्पवृक्ष को बनवाके चावलों से संयुक्तकर दान करता है वह ब्रह्मपदको प्राप्तहोताहै इसको कल्पव्रत कहते हैं ५० जो पुरुष प्रतिमास ब्राह्मणको सुन्दर गौ का दान करता है वह विष्णुलोक में प्राप्त होता है इसको भीमव्रत कहते हैं ५१ जो पुरुष दूधका व्रत रखकर वीस पलसे अधिक सुवर्ण की पृथ्वीका दान करता है वह शिवलोक में सातसौ कल्पों तक वास करता है यह धराव्रत कहाताहै ५२ माघमें अथवा चैत्रमें तृतीया के दिन जो गुड़की धेनु समेत गौ का दान करता है वह गौरी के लोकमें प्राप्त होताहै

मवाप्नोति देवासुरसुपूजितम्। कल्पान्तेराजराजःस्यात्प्रभाव्रतमिदंस्मृतम् ५४ वत्स रन्त्वेकभक्ताशी सभक्ष्यजलकुम्भदः। शिवलोकेवसेत्कल्पं प्राप्तिव्रतमिदंस्मृतम् ५५ नक्ताशीचाष्टमीषुस्याद्वत्सरान्तेचधेनुदः। पौरन्दरंपुरंयाति सुगतिव्रतमुच्यते ५६ वि प्रायेन्धनदोयस्तु वर्षादिचतुरोऽऋतून्। घृतधेनुप्रदोऽन्तेच सपरंब्रह्मगच्छति। वैश्वान रव्रतंनाम सर्वपापविनाशनम् ५७ एकादश्याञ्चनक्ताशी यश्चक्रंविनिवेदयेत्। समान्ते वैष्णवंहैमं सविष्णोःपदमाप्नुयात्। एतत्कृष्णव्रतंनाम कल्पान्तेराज्यभाग्भवेत् ५८ पा यसाशीसमान्तेतु दद्याद्विप्रायगोयुगम्। लक्ष्मीलोकमवाप्नोति ह्येतद्देवीव्रतंस्मृतम् ५९ सप्तम्यान्नक्तभुग्दद्यात्समान्तेगाम्पयस्विनीम्। सूर्य्यलोकमवाप्नोति भानुव्रतमिदंस्मृत म् ६० चतुर्थ्यांनक्तभुग्दद्यादब्दान्तेहेमवारणम्। व्रतंवैनायकंनाम शिवलोकफलप्रद म् ६१ महाफलानियस्त्यक्त्वा चतुर्मासंद्विजातये। हैमानिकार्तिकेदद्याद्गोयुगेनसमन्वित म्। एतत्फलव्रतंनाम विष्णुलोकफलप्रदम् ६२ यश्चोपवासीसप्तम्यां समान्तेहैमपङ्क जम्। गावश्चशक्तितोदद्याद्धेमान्नघटसंयुताः। एतत्सौरव्रतंनाम सूर्य्यलोकफलप्रद म् ६३ द्वादशद्वादशीर्यस्तु समाप्योपोषणेनच। गोवस्त्रकाञ्चनैर्विप्रान् पूजयेच्छक्तितो

यह परमानन्द देनेवाला महाव्रत कहाता है ५३ जो मनुष्य पक्षका उपवास करके ब्राह्मण को क- पिला गौ का दान करताहै वह देवता और दैत्यों से पूजा हुआ ब्रह्मलोक में प्राप्त होताहै और कल्पके अन्तमें सब राजाओं का अधिपति होता है यह प्रभाव्रत कहाता है ५४ जो मनुष्य वर्ष दिनतक एक समय भोजन करके फिर भक्ष्य पदार्थों से युक्त जलके कलश का दान करता है वह कल्प पर्य्यन्त शिवलोक में वास करता है यह प्राप्ति व्रत है ५५ जो वर्ष दिन की प्रति अष्टमी को रात्रिमें भोजन करता है और वर्ष व्यतीत होने पर गौ का दान करता है वह इन्द्रलोक में बसता है यह सुगतिव्रत है ५६ वर्षा आदिक चारों ऋतुओं में जो ब्राह्मण को इन्धन का दानदेता है औरवर्षके अन्तमें घृत की धेनुका दान करताहै वह परब्रह्ममें प्राप्त होता है यह सब पापों का नाशक वैश्वानर व्रत है ५७ एकादशी को रात्रिमें भोजन करके जो विष्णु भगवान् के चक्रको सुवर्ण का बनवाकर दान करताहै वह कल्प पर्य्यन्त विष्णुलोक में प्राप्त होकर अन्तमें उत्तम राजा होता है यह कृष्णव्रत है ५८ जो मनुष्य वर्ष दिनतक दूधके पदार्थ का भोजन करके गौ के जोड़े का दान करता है वह लक्ष्मी के लोक को प्राप्त होता है यह दिव व्रत कहाता है ५९ जो सप्तमी को रात्रिमें भोजन करता हुआ वर्ष दिनतक व्रत करके अन्त में दूधवाली गौकादान करताहै वह सूर्य्य लोक में प्राप्त होता है यह भानु व्रत कहाताहै ६० जो मनुष्य वर्षदिन तक चतुर्थी की रात्रिमें भोजनकरै और अन्तमें सुवर्णके हाथी का दानकरै वहशिवलोकमें प्राप्तकरनेवाला वैनायक व्रतकहाताहै ६१ जोमनुष्य चातुर्मासमें उत्तम२ फलों को त्यागकर कार्त्तिक में सुवर्ण के फल बनवाकर गौ के जोड़े समेत ब्राह्मणको देता है वह विष्णु लोकमें प्राप्तहोताहै यह फलव्रतकहाताहै ६२ जो वर्ष दिनतक सप्तमीको निराहार व्रतकर वर्ष के अन्तमें सुवर्णका कमल और सुवर्ण अन्न कलश इनसबसे युक्त शक्तिके अनुसार गौओंका दान क-

नरः। परमम्पदमाप्नोति विष्णुव्रतमिदंस्मृतम् ६४ कार्त्तिक्याञ्चवृषोत्सर्गं कृत्वानक्तं समाचरेत्। शैवम्पदमवाप्नोति वार्षव्रतमिदंस्मृतम् ६५ कृच्छ्रान्तेगोप्रदःकुर्याद्भोजनंश क्तितःपदम्। विप्राणांशाङ्करंयाति प्राजापत्यमिदंव्रतम् ६६ चतुर्दश्यान्तुनक्ताशी समा न्तेगोधनप्रदः। शैवम्पदमवाप्नोति त्रैयम्बकमिदंव्रतम् ६७ सप्तरात्रोषितोदद्याद्घृत कुम्भंद्विजातये। घृतव्रतमिदम्प्राहुर्ब्रह्मलोकफलप्रदम् ६८ आकाशशायीवर्षासु धेनु मन्तेपयस्विनीम्। शक्रलोकेवसेन्नित्यमिन्द्रव्रतमिदंस्मृतम् ६९ अनग्निपक्वमश्नाति तृतीयान्तुयोनरः। गान्दत्त्वाशिवमभ्येति पुनरावृत्तिदुर्लभम्। इहचानन्दकृत्पुंसां श्रेयोव्रतमिदंस्मृतम् ७० हैमंपलद्वयादूर्ध्वं रथमश्वयुगान्वितम्। ददन्कृतोपवासः स्याद्दिविकल्पशतंवसेत्। कल्पान्तेराजराजःस्यादश्वव्रतमिदंस्मृतम् ७१ तद्वद्धेमरथंद द्यात्करिभ्यांसंयुतंनरः। सत्यलोकेवसेत्कल्पं सहस्रमथभूपतिः ७२ उपवासंपरित्यज्य समान्तेगोप्रदोभवेत्। यक्षाधिपत्यमाप्नोति वारुणंव्रतमुच्यते ७३ निशिकृत्वाजलेवासं प्रभातेगोप्रदोभवेत्। वारुणंलोकमाप्नोति वरुणव्रतमुच्यते ७४ चान्द्रायणञ्चयःकुर्या

रताहै वह सूर्य्यलोकमें प्राप्त होताहै यह सूर्य्यव्रत कहाताहै ६३ जो पुरुष बारह द्वादशियोंको उपवास व्रत करके गौ वस्त्र और सुवर्ण से शक्तिके अनुसार ब्राह्मणको पूजता है वह परमपदको प्राप्त होताहै वह विष्णुव्रत कहाताहै ६४ जो मनुष्य कार्त्तिकमें वृषोत्सर्ग कर्म करके वर्षदिनतक रात्रिमें भोजन करता है वह शिवलोक में प्राप्त होता है यह वार्षव्रत कहाता है ६५ जो मनुष्य कृच्छ्रचान्द्रायणव्रत के अन्त में गौ का दानकर शक्तिके अनुसार ब्राह्मणोंको पद दान करके आप भोजन करता है वह शिवलोक में प्राप्त होता है यह प्राजापत्य व्रत कहाता है ६६ जो मनुष्य वर्षदिनतक चतुर्दशी की रात्रिको भोजन करके अन्त में गौ सहित धनका दान करता है वह शिवलोक में प्राप्त होता है यह त्रैयम्बक व्रत कहाताहै ६७ जो मनुष्य सात रात्रि निराहार व्रत करके ब्राह्मणको घृत के कलश का दान देताहै वहब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै यहघृतव्रत कहाताहै ६८ जो मनुष्य वर्षाऋतुमें आकाशमें शयन करके दूधवाली गौ का दान करताहै वह सदा इन्द्रके लोकमें वास करताहै यहइन्द्रव्रत कहाताहै ६९ जो मनुष्य तृतीयाको अग्निसे विना पकेहुए कच्चे अन्न वा फलादि का भोजन करके अन्तमें गौदानक रताहै वह इसलोकमें आनन्द करता हुआ पुनरावृत्तिसे रहित शिवलोकमें वासकरता है यह कल्याण व्रतकहाताहै ७० जोमनुष्य आठतोलेसे अधिक सुवर्णकारथ दोअश्वोंसे युक्तबनाके दानकरताहै और दिन में निराहार व्रतकरताहै वह सौ कल्पोंतक स्वर्गमें वासकरके अन्तमें राजाओंका अधिपति राजाहोताहै यहअश्वव्रत कहाताहै ७१ और जो इसीप्रकार हस्तियोंसे युक्त सुवर्णके रथकादान करताहै वह हजार कल्पोंतक सत्य लोकमें वासकरके फिर राजा होताहै यहहास्तिव्रत कहाताहै ७२ जोमनुष्य उपवास व्रतकरके वर्षके अन्तमें गौकादान करताहै वह यक्षोंका अधिपति होताहै यहवारुण व्रत कहाताहै ७३ जो मनुष्य जलमें वास करके प्रातःकाल गौ का दान करता है वह वरुण लोकमें वास करता है यह वरुण व्रत कहाता है ७४ जो चान्द्रायणव्रत करके सुवर्ण के चन्द्रमा का दान करताहै वह चन्द्रलोक

हेमचन्द्रंनिवेदयेत्। चन्द्रव्रतमिदंप्रोक्तं चन्द्रलोकफलप्रदम् ७५ ज्यैष्ठेपञ्चतपाःसायं हेमधेनुप्रदोदिवम्। यात्यष्टमीचतुर्दश्यो रुद्रव्रतमिदंस्मृतम् ७६ सकृद्वितानकंकुर्य्यात्तृतीयायांशिवालये। समान्तेधेनुदोयाति भवानीव्रतमुच्यते ७७ माघेनिश्यार्द्रवासाःस्यात् सप्तम्यांगोप्रदोभवेत्। दिविकल्पमुषित्वेह राजास्यात्पवनंव्रतम् ७८ त्रिरात्रोपोषितोदद्यात् फाल्गुन्यांभवनंशुभम्। आदित्यलोकमाप्नोति धामव्रतमिदंस्मृतम् ७९ त्रिसन्ध्यंपूज्यदाम्पत्यमुपवासीविभूषणैः। अन्नङ्गवःसमाप्नोति मोक्षमिन्द्रव्रतादिह ८० दत्त्वासितद्वितीयायामिन्दोर्लवणभाजनम्। समान्तेगोप्रदोयाति विप्रायशिवमन्दिरम्। कल्पान्तेराजराजःस्यात् सोमव्रतमिदंस्मृतम् ८१ प्रतिपद्येकभक्ताशी समान्तेकपिलाप्रदः। वैश्वानरपदंयाति शिवव्रतमिदंस्मृतम् ८२ दशम्यामेकभक्ताशी समान्तेदशधेनुदः। दिशश्चकाञ्चनैर्दद्यात् ब्रह्माण्डाधिपतिर्भवेत्। एतद्विश्वव्रतंनाम महापातकनाशनम् ८३ यःपठेच्छृणुयाद्वापि व्रतषष्टिमनुत्तमाम्। मन्वन्तरशतंसोऽपि गन्धर्वाधिपतिर्भवेत् ८४ षष्टिव्रतंनारद! पुण्यमेतत्तवोदितंविश्वजनीनमन्यत्। श्रोतुन्तवेच्छातदुदीरयामि प्रियेषुकिंवाकथनीयमस्ति ८५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे शततमोऽध्यायः १००॥

में प्राप्त होताहै यह चन्द्रव्रत कहाताहै ७५ जो मनुष्य ज्येष्ठकी अष्टमी को और चतुर्दशी को पांच धूनियों से तप कर सायंकाल में गोदान करताहै वह स्वर्गमें प्राप्त होता है यह रुद्रव्रत कहाता है ७६ जो मनुष्य तृतीया को शिवालयमें बन्दनवार बाँधताहै और वर्षके अन्तमें गौ का दान करताहै वह शिवलोक में प्राप्त होताहै यह भवानी व्रत कहाताहै ७७ जो मनुष्य रात्रिमें गीलेवस्त्र धारण करके सप्तमी को गोदान करता है वह कल्पपर्य्यन्त स्वर्ग में वास करके यहां आकर राजा होताहै यहपवन व्रतहै ७८ जो मनुष्य तीन रात्रितक निराहारव्रत करके फाल्गुनकी पूर्णमासीके दिन घरका दान करताहै वह सूर्य्यलोक में प्राप्त होताहै यह धामव्रत कहाता है ७९ जो मनुष्य निराहार व्रत करके तीनों संधियोंमें ब्राह्मण ब्राह्मणीको भूषणादिकसे पूजै और अन्न समेतगौका दानकरै वह इस इन्द्रव्रत से मोक्षको प्राप्त होता है ८० जो पुरुष शुक्लपक्ष की द्वितियाको चन्द्रमाके निमित्त लवणके पात्रका दान करताहै और वर्ष व्यतीत होजानेपर ब्राह्मणको गोदान देताहै वह शिवलोकमें प्राप्त होताहै और एक कल्पके अन्तमें राजाओं का भी राजा होता है यह सोमव्रत कहाता है-८१ जो कोई हर प्रतिपदाको एकवार भोजन करके वर्षके अन्तमें कपिला गौ कादान करताहै वह अग्निके लोक में प्राप्त होता है यह शिव व्रत कहाता है ८२ जो मनुष्य दशमीको एकवार भोजनकरके वर्ष दिन पीछे दश गौओं समेत सुवर्ण की दिशाओं का दान करताहै वह ब्रह्माण्डका अधिपति होताहै यह विश्व व्रत कहाताहै और सब पातकोंका नाश करनेवाला है ८३ जो पुरुष इन साठ ६० व्रतोंको पढ़ता है वा सुनताहै वह सौ १०० मनु व्यतीत होनेतक गन्धर्वों का अधिपति होताहै ८४ हे नारद यह अति

(नन्दिकेश्वर उवाच) नैर्मल्यंभावशुद्धिश्च विनास्नानंनविद्यते । तस्मान्मनोवि
शुद्ध्यर्थं स्नानमादौविधीयते १ अनुद्धृतैरुद्धृतैर्वा जलैःस्नानंसमाचरेत् । तीर्थञ्चकल्प
येद्विद्वान् मूलमन्त्रेणमन्त्रवित् । नमोनारायणायेति मूलमन्त्रउदाहृतः २ दर्भपाणिस्तु
विधिना आचान्तःप्रयतःशुचिः । चतुर्हस्तंसमायुक्तं चतुरस्रंसमन्ततः । प्रकल्प्यावाह
येद्गङ्गामेभिर्मन्त्रैर्विचक्षणः ३ विष्णोःपादप्रसूतासि वैष्णवीविष्णुदेवता । त्राहिन
स्त्वेनसस्तस्मादाजन्ममरणान्तिकात् ४ तिस्रःकोट्योऽर्द्धकोटीच तीर्थानांवायुरब्रवीत् ।
दिविभूम्यन्तरिक्षेच तानितेसन्तुजाह्नवि ! ५ नन्दिनीत्येवतेनाम देवेषुनलिनीतिच । द
क्षापृथ्वीचविहगा विश्वकायाऽमृताशिवा ६ विद्याधरीसुप्रशान्ता तथाविश्वप्रसादिनी ।
क्षेमाचजाह्नवीचैव शान्ताशान्तिप्रदायिनी ७ एतानिपुण्यनामानि स्नानकालेप्रकीर्त्तये
त् । भवेत्सन्निहितातत्र गङ्गात्रिपथगामिनी ८ सप्तवाराभिजप्तेन करसंपुटयोजितं । मू
र्द्धिकुर्य्याज्जलंभूयस्त्रिचतुःपञ्चसप्तकम् । स्नानंकुर्य्यान्मृदातद्वदामन्त्र्यतुविधानतः ९
अश्वक्रान्तेरथक्रान्ते विष्णुक्रान्तेवसुन्धरे । मृत्तिके ! हरमेपापं यन्मयादुष्कृतंकृतम् १०
उद्धृतासिवराहेण कृष्णेनशतबाहुना । नमस्तेसर्वलोकानां प्रभवारणिसुव्रते ११ एवं

पवित्रव्रत पाहि तेरे आगे वर्णन करदी अब तेरे मनमें क्या सुननेकी इच्छाहै उसको कहो परन्तु ब्रा-
ह्मणोंको इससे विशेष और क्या सुनना योग्यहै ८५ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांशततमोऽध्यायः १०० ॥

नन्दिकेश्वर बोले कि हेनारदजी निर्मल शुद्धिभाव स्नानके विना नहीं होसक्ताहै इस हेतुसे मन
की शुद्धि के लिये प्रथम स्नान करना कहाहै १ (ओंनमो नारायणाय) यह मूलमंत्रहै इस मूलमंत्र से
तीर्थको कल्पित करके जलको शरीर पर गेरकर अथवा ऊपर विनागेरेही जलसे स्नानकरे २ अर्थात्
हाथों में कुशाधारण पूर्व्वक आचमनकर सावधानी से पवित्रहो चार हाथ प्रमाण चौखूंटी गंगाजीको
कल्पितकर वहांजल में आवाहनकरे और यह कहै कि हे गंगाजी तुम विष्णु के चरणों से उत्पन्न हो
के विष्णु देवतावालीहो जन्मसेमरण पर्य्यन्त के पापों से मेरी रक्षाकरो तुम्हीं में साढ़े तीन किरोड़
तीर्थ हैं यह वायुका वचन है स्वर्ग भूमि और आकाशमें जितने तीर्थ हैं वह सब तुममें वासकरें ३।५
और हे गंगे देवताओं में नन्दिनी-नलिनी--दक्षा--पृथ्वी--विहगा--विश्वकाया-अमृता-शिवा-विद्याध-
री--सुप्रशान्ता--विश्वप्रसादिनी--क्षेमा--जाह्नवी--शान्ता-- और शान्तिप्रदायिनी यह तेरे महापवित्र
नाम प्रसिद्धहैं इन नामों को स्नानकालमें जो स्मरण करताहै उसको हे त्रिपथगामिनी गंगा तेरी
समीपता होजाती है ६ । ८ दोनों अंजलियों में जल धारणकर सातवार इनमंत्रोंको जपकर अपने
मस्तक पर धारणकरै फिर तीन चार वा पांचवार इसी मंत्रको पढ़े इसके अनन्तर विधान पूर्व्वक
मृत्तिका लगाकर भी स्नानकरे ९ हे घोड़ेके नीचेकी रथके नीचेकी और विष्णुके मन्दिरकी मृत्तिका
मेरे जन्म २ के संचित कियेहुए पापोंको दूरकरो १० हे मृत्तिके तुमको सौभुजाओं वाले वराहावतार
श्रीकृष्णजी ने निकालाहै तुम सब भूतों के उत्पन्न करने की अरणी हो ऐसी जो तुमहो उनके अर्थ

स्नात्वाततःपश्चादाचम्यचविधानतः। उच्छ्रायवाससीशुक्ले शुद्धेतुपरिधायवै। ततस्तु तर्पणंकुर्य्यात्त्रैलोक्याप्यायनायवै १२ देवायक्षास्तथानागा गन्धर्वाप्सरसोऽसुराः। क्रूराःसर्पाःसुपर्णाश्च तरवोजम्बुकाःखगाः १३ वाय्वाधाराजलाधारास्तथैवाकाशगामिनः। निराधाराश्चयेजीवा येतुधर्म्मेरतास्तथा १४ तेषामाप्यायनायैतद्दीयतेसलिलंमया। कृतोपवीतीदेवेभ्यो निवीतीचभवेत्ततः १५ मनुष्यांस्तर्पयेद्भक्त्या ब्रह्मपुत्रानृषींस्तथा। सनकश्चसनन्दश्च तृतीयश्चसनातनः १६ कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुःपञ्चशिखस्तथा। सर्वेतेतृप्तिमायान्तु मद्दत्तेनाम्बुनासदा १७ मरीचिमत्र्याङ्गिरसं पुलस्त्यंपुलहंक्रतुम्। प्रचेतसंवशिष्ठञ्च भृगुन्नारदमेवच। देवब्रह्मऋषीन्सर्वांस्तर्पयेदक्षतोदकैः १८ अपसव्यंततःकृत्वा सव्यंजान्वाच्यभूतले। अग्निष्वात्तास्तथासौम्या हविष्मन्तस्तथोष्मपाः १९ सुकालिनोबर्हिषदस्तथान्येवाज्यपापुनः। सन्तर्प्यपितरोभक्त्या सतिलोदकचन्दनैः २० यमायधर्मराजाय मृत्यवेचान्तकायच। वैवस्वतायकालाय सर्वभूतक्षयायच २१ औदुम्बरायदध्नाय नीलायपरमेष्ठिने। वृकोदरायचित्राय चित्रगुप्तायवैनमः। दर्भपाणिस्तुविधिना पितॄन्सन्तर्पयेद्बुधः २२ पित्रादीन्नामगोत्रेण तथामातामहानपि। सन्तर्प्यविधिनाभक्त्या इमंमन्त्रमुदीरयेत् २३ येबान्धवाबान्धवेया येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। तेतृप्तिमखिलायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति २४ ततश्चाचम्यविधिवदालिखेत्पद्ममग्रतः। अक्षताभिःसपुष्पाभिः सजलारुणचन्दनम्। अर्घ्यंदद्यात्प्रयत्नेन सू

नमस्कार है ११ ऐसे स्नान करनेके पीछे विधिपूर्वक आचमनकर वस्त्रोंको त्यागकर श्वेत वस्त्रोंको धारणकरै फिर त्रिलोकीकी तृप्ति के निमित्त इस विधिसे तर्पणकरै १२ कि हे देवता यक्ष-नाग-गन्धर्व--अप्सरा दैत्य-क्रूरसर्प--सुपर्णसंज्ञक पक्षी--वृक्ष-शृगालादिक १३ वायुमें वास करनेवाले जीव--जलचरजीव--आकाशगामीजीव--निराधारप्राणी--धर्ममेंरत हुएजीव १४ इनसबकी तृप्ति के निमित्त में इस जलकादान करताहूं सव्य होके देवताओंको जल दान करे कंठी करके सनकादिक मनुष्यों को तृप्त करे और वोढु पंचशिख आदिक यह सब मेरे दियेहुए जल से तृप्तहों १५। १७ इसके पीछे मरीचि-अत्रि अंगिरा--पुलस्त्य--पुलह--क्रतु--प्रचेता--वशिष्ठ--भृगु--नारद--देवताओं के ब्राह्मण और ऋषि इनसबको अक्षत और जलसे तृप्तकरे १८ फिर अपसव्यहोके वामजंघाको पृथ्वीमें लगाकर अग्निष्वात्ता--सौम्या--हविष्मन्त--उष्मप--१९ सुकालिन--बर्हिषद्--और आज्यप--इनपितरोंका तर्पणतिल जलचन्दन आदि से करै २० यमायनमः धर्मराजायनमः मृत्यवेनमः अन्तकायनमः वैवस्वतायनमः कालायनमः सर्वभूतक्षयायनमः २१ औदुम्बरायनमः दध्नायनमः नीलायनमः परमेष्ठिनेनमः वृकोदरायनमः चित्रायनमः चित्रगुप्तायनमः ऐसे यमआदिक देवताओंका तर्पणकरै फिर हाथोंमें कुशा धारणकरके विधिसे पितरोंका तर्पणकरै २२ पिताआदिक के नाम गोत्रादि का उच्चारणकर विधिसे तर्पणकरके इस मंत्रका उच्चारणकरे २३ ये बान्धवा बान्धवेया येन्यजन्मनि बान्धवाः। तेतृप्तिमखिलायान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवांछति २४ फिर आचमनकर विधिसे अपने आगे कमलदल लिखे उसपर

र्घ्यंनामानिकीर्त्तयेत् २५ नमस्तेविष्णुरूपाय नमोविष्णुमुखायवै। सहस्ररश्मयेनित्यंन
मस्तेसर्वतेजसे २६ नमस्तेशिव! सर्वेश! नमस्तेसर्ववत्सल। जगत्स्वामिन्नमस्तेऽस्तु
दिव्यचन्दनभूषित! २७ पद्मासन! नमस्तेऽस्तु कुण्डलाङ्गदभूषित!। नमस्तेसर्वलो
केश! जगत्सर्वंविबोधसे २८ सुकृतंदुष्कृतंचैव सर्वंपश्यसिसर्वग। सत्यदेव! नमस्ते
ऽस्तुप्रसीदममभास्कर! २९ दिवाकरनमस्ते ऽस्तुप्रभाकर! नमोऽस्तुते। एवंसूर्य्यंनम
स्कृत्य त्रिःकृत्वाथप्रदक्षिणम्। द्विजङ्गांकाञ्चनंस्पृष्ट्वा ततोविष्णुगृहंव्रजेत् ३०॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकाधिकशततमोऽध्यायः १०१॥

(नन्दिकेश्वर उवाच) अतःपरंप्रवक्ष्यामि प्रयागस्योपवर्णनम्। मार्कण्डेयेनकथितं
यत्पुरापाण्डुसूनवे १ भारतेतुयदावृत्ते प्राप्तराज्येपृथासुते। एतस्मिन्नन्तरेराजा कुन्तिपु
त्रोयुधिष्ठिरः २भ्रातृशोकेनसन्तप्तश्चिंतयन्सपुनःपुनः। आसीत्सुयोधनोराजा एकादश
चमूपतिः ३ अस्मान्सन्ताप्यबहुशः सर्वेतेनिधनंगताः। वासुदेवंसमाश्रित्य पंचशेषास्तु
पांडवाः ४ हत्वाभीष्मंचद्रोणंच कर्णंचैवमहाबलम्। दुर्योधनंचराजानं पुत्रभ्रातृसमन्वित
म् ५ राजानोनिहताःसर्वे येचान्येशूरमानिनः। किन्नोराज्येनगोविंद! किम्भोगैर्जीवितेनवा
६ धिक्कष्टमितिसंचिंत्य राजावैक्लव्यमागतः। निर्विचेष्टोनिरुत्साहः किंचित्तिष्ठत्यधोमुखः ७

अक्षत जल और लालचन्दन इनसे सूर्य्यको अर्घ्यदेकर यत्नसे सूर्य्यके नामोंका कीर्त्तनकरे २५ हेसूर्य्य
तुम विश्वरूप विष्णुके मुखहो सहस्र किरणवाले हो सब तेजवाले हो ऐसे आपके अर्थ नमस्कार
है २६ हेशिव सर्वेश सर्ववत्सल तेरे अर्थ नमस्कार है हे जगत् के स्वामी चन्दनसे विभूषित अंगवाले
पद्मासनधारी कुंडल बाजूबन्द आदि भूषणों से शोभित सर्वलोकेश ऐसे तुमको नमस्कार है तुम सब
जगत्को बोध कराते हो २७। २८ हे सर्वज्ञ सत्यदेव—तुम सब सुकृत दुष्कृतको देखते हो हे भास्कर
मुझपर प्रसन्नहो तुम्हारे अर्थ नमस्कार है २९ हे दिवाकर हे प्रभाकर तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ऐसे
सूर्य्यको नमस्कार कर तीनवार प्रदक्षिणा करै फिर ब्राह्मण गौ और सुवर्ण इनको स्पर्शकरके विष्णु
के मन्दिर में जाय ३० ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाधिकशततमोऽध्यायः १०१॥

नन्दिकेश्वरनेकहा कि हे नारदजी अब उस कथाको कहताहूं जो पूर्वमें युधिष्ठिर के आगे प्रयाग
माहात्म्यसंबन्धी कथा मार्कण्डेयजीने कही है १ जब महाभारत होकर युधिष्ठिरको राज्य प्राप्त होचुका
तब कुंतीका पुत्र राजायुधिष्ठिर भाइयों के शोकसे दुखितहोकर वारंवार चिन्ता करनेलगा कि राजा
दुर्योधन ग्यारह सेनाओंका अधिपति हुआथा वह और अन्य बहुतसे राजालोग हमको सन्ताप देकर
जो मृत्युको प्राप्तहुए और श्रीकृष्णजी के आश्रयहोके हम पांचोंही पांडव शेष रहगये हैं २। ४ और
हमने भीष्मपितामह—द्रोणाचार्य्य पुत्र भाइयोंसमेत महाबली कर्ण राजा दुर्योधन और अन्य सब
राजालोगोंको माराहै सो हे गोविन्द अब हमारे राज्य करने से और जीवनसे क्याप्रयोजन है ५। ६
हमको धिक्कार है इस प्रकार विकलहोकर राजायुधिष्ठिर चेष्टा और उत्साहसे रहित कुछ नीचामुख

लब्धसंज्ञोयदाराजा चिन्तयन्सपुनःपुनः । कतरोविनियोगोवा नियमंतीर्थमेवच ८ ये
नाहंशीघ्रमामुञ्चे महापातककिल्बिषात् । यत्रस्थित्वानरोयाति विष्णुलोकमनुत्तमम् ९
कथंपृच्छामिवैकृष्णं येनेदङ्कारितोऽस्म्यहम् । धृतराष्ट्रंकथंपृच्छे यस्यपुत्रशतंहतम् १०
एवंवैक्लव्यमापन्नो धर्म्मराजोयुधिष्ठिरः । रुदन्तिपाण्डवाःसर्वे भ्रातृशोकपरिप्लुताः ११
येचतत्रमहात्मानः समेताःपाण्डवाःस्मृताः । कुन्तीचद्रौपदीचैव येचतत्रसमागताः । भू
मौनिपतिताःसर्वे रुदन्तस्तुसमन्ततः १२ वाराणस्यांमार्कण्डे यस्तेनज्ञातोयुधिष्ठिरः ।
यथावैक्लव्यमापन्नो रुदमानस्तुदुःखितः १३ अचिरेणैवकालेन मार्कण्डेयोमहातपाः ।
संप्राप्तोहास्तिनपुरं राजद्वारेह्यतिष्ठत १४ द्वारपालोऽपितंदृष्ट्वा राज्ञःकथितवान्द्रुतम् ।
त्वांद्रष्टुकामोमार्कण्डोद्वारि तिष्ठत्यसौमुनिः । त्वरितोधर्म्मपुत्रस्तुद्वारमागादतःपरम् १५
(युधिष्ठिर उवाच) स्वागतंतेमहाभाग ! स्वागतंतेमहामुने ! । अद्यमेसफलंजन्म अद्य
मेतारितंकुलम् १६ अद्यमेपितरस्तुष्टास्त्वयिदृष्टेमहामुने ! । अद्याहंपूतदेहोऽस्मि यत्त्व
यासहदर्शनम् १७ (नन्दिकेश्वर उवाच) सिंहासनेसमास्थाप्य पादशौचार्चनादिभिः ।
युधिष्ठिरोमहात्मावै पूजयामासतंमुनिम् १८ ततःसतुष्टोमार्कण्डः पूजितश्चाहतंनृपम् ।
आख्याहित्वरितंराजन् ! किमर्थंरुदितंत्वया । केनवाविक्लवीभूतः काबाधातेकिमप्रिय

करके बैठगया ७ और वारंवार चिन्ता करताहुआ विचारनेलगा कि ऐसा व्रत योग और नियम कौनसाहै जिस्से कि मैं शीघ्रही महापापोंसे छूटजाऊं और ऐसा तीर्थ भी कौनसाहै जहां वासकरके मनुष्य विष्णुलोकमें वास करसके ८।९ श्रीकृष्णजी से कैसे पूछूं क्योंकि उन्होंने तो यह सब युद्ध करवायाही है और धृतराष्ट्र से कैसे पूछसक्ता हूं कि जिसके सौ १०० पुत्र मैंने मारे हैं १० ऐसे विकल होकर सब पाण्डव भाइयों समेत घोर दुःखसे दुःखित हो रोदन करनेलगे और इनके विशेष वहां जो २ महात्मा ऋषि मुनिलोग आये थे उन सब समेत पाण्डव और अन्य सब जनों समेत द्रौपदी कुन्ती यहसब भी पृथ्वी में गिरकर रोतेभये ११।१२ उससमय काशीजी में मार्कण्डेय ऋषि वर्त्तमान थे उन्होंने भी जाना कि राजा युधिष्ठिर ऐसी विकलता को प्राप्त होकर महादुःखित रोरहा है १३ ऐसाजानकर शीघ्रही महातपस्वी मार्कण्डेयजी हस्तिनापुरमें प्राप्त होकर राजद्वारमें आये १४ वहां द्वारपाल भी ऋषि को देखकर राजाके आगे निवेदन करता भया कि हे महाराज आप के देखनेके लिये मार्कण्डेय मुनि द्वारपर खड़े विराजमान हैं यह सुनतेही युधिष्ठिर बड़ी शीघ्रतासे द्वारपर आया १५ और यह वचन बोला कि हे महाभाग महामुने आपका आगमन बड़ा उत्तम हुआ अब मेरा जन्म सफल हुआ मेराकुल भर तरगया १६ हे मुने तुम्हारे दर्शनसे अब मेरे पितर भी प्रसन्न हुए और मेरा भी अपावन शरीर पवित्र होगया १७ नन्दिकेश्वर कहतेहैं कि हे नारद इस प्रकारसे मुनिकी प्रशंसाकर पादप्रक्षालनकर राजा युधिष्ठिर सिंहासन पर बैठाकर उनकी पूजा करता भया १८ तब तो राजा से पूजित महाप्रसन्न मार्कण्डेयजी यह वचन बोले कि हे राजा तुम किस निमित्त रोदन करतेहो उसको शीघ्रकहो तुमको किसकारणसे विकलताहुई क्या बाधा और

म् १६ (युधिष्ठिर उवाच) अस्माकंचैवयद्वृत्तं राज्यस्यार्थेमहामुने!। एतत्सर्वंविदित्वातु चिन्तावशमुपागतः २० (मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! महाबाहो! क्षत्रधर्मंव्यवस्थितम्। नैवदृष्टंरणेपापं युद्ध्यमानस्यधीमतः २१ किम्पुनाराजधर्मेण क्षत्रियस्यविशेषतः। तदेवंहृदयंकृत्वा तस्मात्पापंनचिन्तयेत् २२ ततोयुधिष्ठिरोराजा प्रणम्यशिरसामुनिम्। पप्रच्छविनयोपेतः सर्वपातकनाशनम् २३ (युधिष्ठिर उवाच) पृच्छामित्वांमहाप्राज्ञ! नित्यंत्रैलोक्यदर्शिनम्। कथयत्वंसमासेन येनमुच्येतकिल्बिषात् २४ (मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! महाबाहो सर्वपातकनाशनम्। प्रयागगमनंश्रेष्ठं नराणांपुण्यकर्म्मणाम् २५॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे द्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२॥

(युधिष्ठिर उवाच) भगवन्! श्रोतुमिच्छामि पुराकल्पेयथास्थितम्। ब्रह्मणादेवमुख्येन यथावत्कथितंमुने! १ कथंप्रयागेगमनं नराणांतत्रकीदृशम्। मृतानांकागतिस्तत्र स्नातानांतत्रकिम्फलम्। येवसन्तिप्रयागेतु ब्रूहितेषांचकिम्फलम् २ (मार्कण्डेय उवाच) कथयिष्यामितेवत्स! यच्छ्रेष्ठंतत्रयत्फलम्। पुराहिसर्वविप्राणां कथ्यमानंमयाश्रुतम् ३ आप्रयागप्रतिष्ठानादापुराद्वासुकेर्ह्रदात्। कम्बलाश्वतरौनागौ नागश्चवहुमूलकः। एतत्प्रजापतेःक्षेत्रं त्रिषुलोकेषुविश्रुतम् ४ तत्रस्नात्वादिवंयान्ति ये

कौनसा दुःख हुआहै १९ युधिष्ठिरने कहा हे महामुने जो वृत्तान्त हमसे राज्य के निमित्त बनपड़ा है उसको शोच के हम चिन्ताके वशीभूतहोरहे हैं २० मार्कण्डेयजी बोले हे राजन् हे महाबाहो तुम क्षत्रिय धर्मकी व्यवस्थाको सुनो बुद्धिमान् को युद्ध करतेहुए पाप नहीं है और राजधर्मसे युद्ध करते हुए क्षत्रियको तो विशेषकरके पाप नहीं है ऐसे चित्तमें विचारकर पापकी चिन्ता मतकरो २१। २२· यह सुनकर राजायुधिष्ठिर मुनिको साष्टांग प्रणामकर उनसे विनयपूर्वक सब पातकोंके नाश करने वाले उपायको पूछताभया अर्थात् युधिष्ठिरने कहा हे महाप्राज्ञ आप त्रिलोकी के देखनेवाले हैं और सर्वज्ञ हैं आप मुझको पापोंका नाश करनेवाला कोई उपाय संक्षेप से बताइये जिस्से मेरा उद्धारहो २३।२४ मार्कण्डेयजी बोले हे राजा सब पापोंके नाश करनेवाले उपायको मैं कहताहूं उसको तुम सुनो शुभकर्मवाले मनुष्योंका प्रयागतीर्थमें गमन बहुत श्रेष्ठहै २५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२॥

युधिष्ठिर बोले हे ब्रह्मन् पूर्व्वकल्पमें जो देवदेव ब्रह्माजीने अच्छे स्पष्टप्रकारसे कहाहै उस माहात्म्यको मैं सुना चाहताहूं १ मनुष्योंको प्रयाग तीर्थपर किसप्रकारसे और किस रीतिसे गमन करना चाहिये वहां मरनेवालों की क्यागति स्नान करनेवालों का कौन फल और प्रयागजी में निवास करते हैं उनको कोनसा उत्तम फल प्राप्त होताहै यह सब आप मेरे आगे वर्णन कीजिये १ मार्कण्डेयजी बोले—हे वत्स वहां के जो श्रेष्ठ फल हैं उनको मैं वर्णन करताहूं तुम चित्त से श्रवण करो पूर्व्व कालके बड़े २ महात्मा ब्राह्मणोंका कहाहुआ जो मैंने सुना है वह मैं कहताहूं कि प्रयाग प्रतिष्ठान से लेकर वासुकी के ह्रदतक जो कंबल अश्वतर और बहुमूलक नाम नागस्थान हैं

मृतास्तेऽपुनर्भवाः। ततोब्रह्मादयोदेवा रक्षांकुर्वन्तिसङ्गताः ५ अन्येचबहवस्तीर्थाः स र्वपापहराःशुभाः। नशक्ताःकथितुंराजन्! बहुवर्षशतैरपि। संक्षेपेणप्रवक्ष्यामि प्रयाग स्यतुकीर्तनम् ६ षष्टिर्धनुःसहस्राणि यानिरक्षन्तिजाह्नवीम्। यमुनांरक्षतिसदा सविता सप्तवाहनः ७ प्रयागंतुविशेषेण सदारक्षतिवासवः। मण्डलंरक्षतिहरिर्दैवतैःसहसङ्ग तः ८ तंवटंरक्षतिसदा शूलपाणिर्महेश्वरः। स्थानंरक्षन्तिवैदेवाः सर्वपापहरंशुभम् ९ अधर्मेणावृतोलोके नैवगच्छतितत्पदम्। स्वल्पमल्पतरंपापं यदातेस्यान्नराधिप!। प्र यागंस्मरमाणस्य सर्वमायातिसंक्षयम् १० दर्शनात्तस्यतीर्थस्य नामसङ्कीर्त्तनादपि। मृ त्तिकालम्भनाद्वापि नरःपापात्प्रमुच्यते ११ पञ्चकुण्डानिराजेन्द्र! तेषांमध्येतुजाह्नवी। प्रयागस्यप्रवेशेतु पापंनश्यतितत्क्षणात् १२ योजनानांसहस्रेषु गङ्गायाःस्मरणान्नरः। अपिदुष्कृतकर्मातु लभतेपरमाङ्गतिम् १३ कीर्त्तनान्मुच्यतेपापाद् दृष्ट्वाभद्राणिपश्यति। अवगाह्यचपीत्वातु पुनात्यासप्तमकुलम् १४ सत्यवादीजितक्रोधी अहिंसायांव्यवस्थि तः। धर्मानुसारीतत्त्वज्ञो गोब्राह्मणहितेरतः १५ गङ्गायमुनयोर्मध्ये स्नातोमुच्येतकिल्बि षात्। मनसाचिन्तयन्कामानवाप्नोतिसुपुष्कलान् १६ ततोगत्वाप्रयागंतु सर्वदेवाभि रक्षितम्। ब्रह्मचारीवसेन्मासं पितॄन्देवांश्चतर्पयेत्। ईप्सितांल्लभतेकामान् यत्रयत्रा

यह सब मिलकर त्रिलोकी में प्रसिद्ध प्रजापति क्षेत्र कहाते हैं ४ वहां स्नानकरके स्वर्ग में प्राप्त होते हैं मरण होने से पुनर्जन्म नहींहोते और वहां वासकरनेवालों की रक्षा ब्रह्मादिक देवता करते हैं हे राजा अन्य बहुत से शुभतीर्थ पापोंके हरनेवाले हैं उनको सैकड़ों वर्षोंमेंभी वर्णन नहीं करसक्ता इसहेतुसे संक्षेपपूर्व्वक प्रयागजीके माहात्म्यको कहते हैं५।६श्रीगंगाजीकी रक्षा साठहज़ार धनुष करते हैं यमुनाजी की रक्षा सूर्य्य करते हैं प्रयागकी रक्षा इन्द्र करता है और प्रयागजीके मंडलकी रक्षा देवताओं समेत विष्णुभगवान् करते हैं ७।८ अर्थात् प्रयागके अक्षयवटकी रक्षातो शिवजी करते हैं देवता लोग सबपापोंके हरनेवाले स्थानकी रक्षाकरते हैं९ उसप्रयागतीर्थ पर पापीलोग नहीं जासक्ते हैं हे राजा जो तेरा अल्प पाप होगा वह तो प्रयागजी के स्मरण करते ही नष्ट होगा १० उस प्रयाग तीर्थ के दर्शनसे नामके स्मरण करने से अथवा शरीर पर वहां की मृत्तिका लगाने से मनुष्य सब पापों से छूटजाता है ११ हे राजेन्द्र प्रयागजी में पांचकुंडहैं उनके मध्यमें श्रीगंगाजी हैं प्रयागजी में प्रवेश करते ही सब पाप नष्ट होजाते हैं १२ हज़ार योजनसे श्री गंगाजी के स्मरण करने से पाप क्षय होजाते हैं उनके नामोच्चारण से दुष्कृत कर्म करने वाले भी परमगतिको प्राप्त होजाते हैं १३ कीर्त्तनसे तो पाप नष्ट होते हैं दर्शन करने से शुभ मंगलों को देखताहै स्नान करने से और जलपान करने से अपने समेत सात पीढ़ियोंको पवित्र करदेताहै १४ सत्य बोलने वाला क्रोधहिंसासे रहित बुद्धि रखने वाला तत्त्वज्ञ और गौब्राह्मणमें हितरखनेवाला पुरुष गंगायमुनाके मध्यमें स्नान करके दुःखों से छूट मनके विचारे हुए उत्तम कामों को प्राप्त होता है जो मनुष्य सब देवताओंसे रक्षित प्रयागजी में जाके ब्रह्मचर्य्य धारण कर एकमहीने तक वास करके देवता और पितरों का तर्पण

भिजायते १७ तपनस्यसुतादेवी त्रिषुलोकेषुविश्रुता। समागतामहाभागा यमुनातत्रनि
म्नगा। तत्रसन्निहितोनित्यं साक्षाद्देवोमहेश्वरः १८ दुष्प्राप्यंमानुषैःपुण्यं प्रयागन्तुयु
धिष्ठिर। देवदानवगन्धर्वा ऋषयःसिद्धचारणाः। तदुपस्पृश्यराजेन्द्र! स्वर्गलोकमु
पासते १९॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे त्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३॥

(मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! प्रयागस्य माहात्म्यंपुनरेवतु। यच्छ्रुत्वासर्वपापे
भ्यो मुच्यतेनात्रसंशयः १ आर्तानांहिदरिद्राणां निश्चितव्यवसायिनाम्। स्थानमुक्तं
प्रयागन्तु नाख्येयन्तुकदाचन २ व्याधितोयदिवादीनो वृद्धोवापिभवेन्नरः। गङ्गायमुन
योर्मध्ये यस्तुप्राणान्परित्यजेत् ३ दीप्तकाञ्चनवर्णाभैर्विमानैःसूर्य्यसन्निभैः। गन्धर्वा
प्सरसांमध्ये स्वर्गेक्रीडतिमानवः। ईप्सितान्लभतेकामान्वदन्तिऋषिपुङ्गवाः ४ सर्व
रत्नमयैर्दिव्यैर्नानाध्वजसमाकुलैः। वराङ्गनासमाकीर्णैर्मोदतेशुभलक्षणैः ५ गीतवाद्यवि
निर्घोषैः प्रसुप्तःप्रतिबुद्ध्यते। यावन्नस्मरतेजन्म तावत्स्वर्गेमहीयते ६ ततःस्वर्गात्परि
भ्रष्टः क्षीणकर्मादिवश्च्युतः। हिरण्यरत्नसंपूर्णे समृद्धेजायतेकुले। तदेवस्मरतेतीर्थं स्म
रणात्तत्रगच्छति ७ देशस्थोयदिवारण्ये विदेशस्थोऽथवागृहे। प्रयागंस्मरमाणोऽपि
यस्तुप्राणान्परित्यजेत्। ब्रह्मलोकमवाप्नोति वदन्तिऋषिपुङ्गवाः ८ सर्वकामफलावृक्षा

करता है वह जहां २ जन्म लेता है वहां २ सब कामनाओं को प्राप्त होताहै १५।१७ सूर्य्यकी पुत्री यमुना देवी जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध है वह जिस स्थानपर प्रयागजी में आई है उसी स्थानपर साक्षात् महादेवजी की स्थिति है १८ हे युधिष्ठिर यह प्रयागजी का पुण्य मनुष्यों को महादुर्लभ है हे राजेन्द्र देवता दैत्य गन्धर्व ऋषि सिद्ध और चारण यह सब प्रयागजी का स्पर्श करके स्वर्ग में प्राप्त होते हैं १९॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां त्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३॥

मार्कण्डेयजी बोले हे राजा इसके सिवाय और भी प्रयागजी का वह माहात्म्य तुमसे कहताहूं जिस के सुनने से निस्सन्देह मनुष्य सब पापों से छुट जाता है १ मुख्य करके पीड़ित दरिद्री और निश्चल बुद्धि वाले ऐसे पुरुषों के निमित्त तो प्रयागजी का स्थान अत्यन्तही लाभ और पुण्यदायी है इसबातका खंडन करना किसीको न चाहिये २ व्याधिवाला अथवा दीन और वृद्धपुरुष जो गंगा यमुनाके मध्यमें प्राणोंको त्यागताहै वह दीप्त सुवर्णके समान वर्ण वाले वा सूर्य्यके समानकान्तिवाले विमानोंमें बैठकर अप्सराओंके मध्यमें क्रीडा करताहै और वाञ्छित मनोरथोंको प्राप्तहोता है यहश्रेष्ठ ऋषियोंका कथनहै ३।४ इसके विशेष संपूर्ण रत्नोंसेयुक्त अनेक प्रकारकी दिव्यध्वजाओं से और उत्तम स्त्रियों से युक्त शुभ लक्षणोंवाले गीत वाद्यके घोषों समेत विमानों में बैठ जबतक कि जन्मका स्मरण नहीं करता है तबतक स्वर्गमें पूजा जाता है ५।६ फिर क्षीणपुण्य होनेपर स्वर्ग से पतित होकर अनेक दिव्य रत्नोंकी समृद्धिवाले उत्तम कुलमें जन्म लेताहै वहांभी उसी तीर्थका स्मरणकरके प्रयागजी पैही जाताहै ७ जो मनुष्य अपने देशमें अरण्यमें विदेश में अथवा अपनेघरमेंभी बैठा हुआ होकर प्रयागजी का स्मरण करके प्राणोंको त्यागताहै वह ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोता है यह उत्तम

महीयत्राहिरण्मयी। ऋषयोमुनयःसिद्धास्तत्रलोकेसगच्छति ९ स्त्रीसहस्रावृतेरम्ये म
न्दाकिन्यास्तटेशुभे। मोदतेऋषिभिःसार्द्धं सुकृतेनेहकर्म्मणा १० सिद्धचारणगन्धर्वैः
पूज्यतेदिविदैवतैः। ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टो जम्बुद्वीपपतिर्भवेत् ११ ततःशुभानिकर्माणि
चिन्तयानःपुनःपुनः। गुणवान्वित्तसम्पन्नो भवतीहनसंशयः १२ कर्म्मणामनसावाचा
धर्मसत्यप्रतिष्ठितः। गङ्गायमुनयोर्मध्ये यस्तुगांसम्प्रयच्छति १३ सुवर्णमणिमुक्ताश्च
यदिवान्यत्परिग्रहम्। स्वकार्येपितृकार्येवा देवताभ्यर्चनेऽपिवा। सफलंतस्यतत्तीर्थं य
थावत्पुण्यमाप्नुयात् १४ एवंतीर्थेनगृह्णीयात् पुण्येष्वायतनेषुच। निमित्तेषुचसर्वेषु ह्य
प्रमत्तोभवेद्द्विजः १५ कपिलांपाटलावर्णां यस्तुधेनुंप्रयच्छति। स्वर्णशृङ्गीरौप्यखुरां
कांस्यदोहांपयस्विनीम् १६ प्रयागेश्रोत्रियंसन्तं ग्राहयित्वायथाविधि। शुक्लाम्बरधरंशा
न्तं धर्मज्ञंवेदपारगम् १७ सागौस्तस्मैप्रदातव्या गङ्गायमुनसङ्गमे। वासांसिचमहार्हा
णि रत्नानिविविधानिच १८ यावद्रोमाणितस्यागोः सन्तिगात्रेषुसत्तम!। तावद्वर्षसह
स्राणि स्वर्गलोकेमहीयते १९ यत्राऽसौलभतेजन्म सागौस्तस्याभिजायते। नचपश्य
तितंघोरं नरकंतेनकर्मणा। उत्तरान्सकुरून्प्राप्य मोदतेकालमक्षयम् २० गवांशतसहस्रे
भ्यो दद्यादेकांपयस्विनीम्। पुत्रान्दारांस्तथाभृत्यान् गौरेकाप्रतितारयेत् २१ तस्मात्स

ऋषियों का कथन है ८ इस सुकृतकर्म करने से पुरुष ऐसे लोकों में जाता है जहां सब कामनाओं के फलदायी वृक्ष स्वर्णमयी पृथ्वी ऋषि मुनि सिद्ध और हज़ारों स्त्रियों से युक्त रमणीक गंगाजी के तटपर उन्हीं ऋषियों के साथ आनन्द करता हुआ९।१०सिद्ध चारण और गन्धर्वादिकों के साथ स्वर्ग में आनन्द करता है फिर स्वर्ग से पतित होके पृथ्वी पर आनकर जम्बूद्वीपका अधिपति राजा होता है ११ फिर वारंवार शुभ कर्मों को चिन्तवन करता हुआ निस्सन्देह इस संसारमें गुणवान् और धनाढ्य होता है १२ जो मनुष्य मनवाणी और कर्मसे सत्य धर्म में स्थित होकर गंगा यमुना के मध्यमें गोदान करता है और सुवर्ण मणिमुक्तादिक पदार्थोंको अपने वा देवपितृ कर्ममें अथवा देव पूजनमें दान करता है उसका वह तीर्थ सफल होकर यथार्थ पुण्यको प्राप्त कराताहै १३।१४ और ब्राह्मणको भी जहांतक वनपड़े वहांतक तीर्थ पै यज्ञ स्थानादिकों में अथवा सम्पूर्ण निमित्तों में भी प्रमाद से रहित होकर दान नहीं लेना चाहिये १५ जो पुरुष दूधवाली पाटला वा कपिला गौ को स्वर्णशृंगी रूपेकी खुरी कांसेकी दोहनी और वस्त्रादि से युक्त करके प्रयागजी में वेदपाठी शुक्लवस्त्र-धारी शान्त धर्मज्ञ और वेदपारग ब्राह्मणको गंगा यमुनाके संगममें उत्तम रत्नोंसे युक्त करके दानदेता है १६।१८ वह उस गौ के शरीर में जितने रोमहोंय उतनेही वर्षोंतक स्वर्गमें वास करताहै १९ फिर जहां जन्म लेता है वहां वही गौ सन्मुख रक्षा करती हुई घोरनरक में नहीं जाने देती और उत्तर कुरु संज्ञक देशों में प्राप्त होकर अक्षयकालतक आनन्द करताहै २० जो पुरुष हज़ारों गौओंमें से एकही दूधवाली गौ का दान करता है वह एकही गौ उसके पुत्र स्त्री और भृत्यादि लोगोंको पार उतारदेती है २१ इसी हेतुसे सबदानों से गौकाही दान विशेष कहाहै क्योंकि वह एकही गौ बड़े २ विषम दु-

वेषुदानेषु गोदानन्तुविशिष्यते । दुर्गमेविषमेघोरे महापातकसम्भवे । गौरेवरक्षांकुरु
ते तस्माद्देयाद्विजोत्तमे २२॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेचतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४॥
(युधिष्ठिर उवाच) यथायथाप्रयागस्य माहात्म्यंकथ्यतेत्वया । तथातथाप्रमुच्येऽ
हं सर्वपापैर्नसंशयः १ भगवन्! केनविधिना गन्तव्यंधर्म्मनिश्चयैः । प्रयागेयोविधिःप्रो
क्तस्तन्मेब्रूहिमहामुने २ (मार्कण्डेय उवाच) कथयिष्यामितेराजन्! तीर्थयात्राविधि
क्रमम् । आर्षेणविधिनानेन यथादृष्टंयथाश्रुतम् ३ प्रयागतीर्थयात्रार्थी यःप्रयातिनरः
क्वचित् । बलिवर्दसमारूढः शृणुतस्यापियत्फलम् ४ नरकेवसतेघोरेगवांक्रोशेहिदारु
णे । सलिलंनचगृह्णन्ति पितरस्तस्यदेहिनः ५ यस्तुपुत्रांस्तथाबालान् स्नापयेत्पाययेत्
तथा । यथात्मनातथासर्वं दानंविप्रेषुदापयेत् ६ ऐश्वर्यलोभमोहाद्वा गच्छेद्यानेनयोन
रः। निष्फलंतस्यतत्सर्वं तस्माद्यानंविवर्जयेत् ७ गङ्गायमुनयोर्मध्ये यस्तुकन्यांप्रयच्छति
आर्षेणैवविवाहेन यथाविभवसम्भवम् ८ नसपश्यतितंघोरं नरकंतेनकर्म्मणा । उत्त
रान्सकुरून्गत्वा मोदतेकालमक्षयम् । पुत्रान्दारांश्चलभतेधार्मिकान्रूपसंयुतान् ९ त
त्रदानंप्रकर्त्तव्यं यथाविभवसम्भवम् । तेनतीर्थफलञ्चैव वर्धतेनात्रसंशयः । स्वर्गेतिष्ठ
तिराजेन्द्र! यावदाभूतसंप्लवम् १० वटमूलंसमासाद्य यस्तुप्राणान्विमुञ्चति । सर्वलो
कानतिक्रम्य रुद्रलोकंसगच्छति ११ तत्रतेद्वादशादित्यास्तपन्तिरुद्रसंश्रिताः । निर्द

गम और घोर पातकोंमें रक्षा करतीहै इसहेतुसे उत्तम ब्राह्मणके अर्थ अवश्य गौ दानकरनाचाहिये२२॥
इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुरधिकशततमोऽध्यायः १०४॥

युधिष्ठिर बोले कि हे मुने जैसे २ आपने प्रयागका माहात्म्य कहाहै वैसेही वैसे मैं निस्सन्देह सब पापोंसे छूटता जाताहूं १ हे भगवन् अब प्रयागकी विधि में जिसप्रकारसे प्रयागजी में जाना लिखा हैं उसको मेरे आगे वर्णन कीजिये २ मार्कण्डेयजी बोले हे राजा अब मैं तुमको तीर्थयात्रा की विधि के क्रमको सुनाता हूं अर्थात् ऋषियों से जैसी कि मैंने देखी और सुनी है वह सब कहता हूं ३ जो प्रयाग तीर्थकी यात्राकरने वाला पुरुष प्रयागजी मे बैलकी सवारीमें जाताहै वह घोर और दारुण नरकमें जाताहै उसके दियेहुए जलको भी पितरनहीं ग्रहण करतेहैं ४।५ जो पुरुष बैलकी सवारी में बालक पुत्रादिकों को स्नानकराकर वहांका जलपिलाताहै और ब्राह्मणको ऐश्वर्य्य के मदलोभ और मोहादिकों से दान भी करताहै ऐसे करनेवाले पुरुषका दियाहुआ दानादिक सब निष्फल होताहै इस हेतुसे तीर्थपर कभी सवारीमें न जानाचाहिये६।७जो मनुष्य कन्यादान वेदोक्त विधिसे गंगा यमुनाके मध्यमें शक्तिके अनुसार करताहै वह कभी घोरनरकमें नहीं जाता और उत्तरकुरुखंडोंमें जन्म लेकर अच्छे धार्मिक पुत्र और स्त्रियोंसे युक्तहोकर अक्षय कालतक आनन्द करताहै ८।९ हे राजेन्द्र इसीसे तीर्थ पर शक्तिके अनुसार दान करने से तीर्थका फल बढ़ताहै और प्रलय काल तक स्वर्गमें वास होताहै १० जो पुरुष प्रयागजी में अक्षय वटके समीप जाकर अपने प्राणों को त्याग करता है वह सब, लोकोंको उल्लंघन करके उस शिवजीके लोक में प्राप्त होताहै ११ जहां कि शिवजी के

हन्तिजगत्सर्वं बटमूलंनदह्यते १२ नष्टचन्द्रार्कभुवनं यदाचैकार्णवंजगत्। स्थीयतेतत्र वैविष्णुर्यजमानःपुनःपुनः १३ देवदानवगन्धर्वा ऋषयः सिद्धचारणाः। सदासेवन्तित तीर्थं गङ्गायमुनसङ्गमम् १४ ततोगच्छेतराजेन्द्र! प्रयागंसंस्तुवंश्चयत्। यत्रब्रह्माद योदेवा ऋषयःसिद्धचारणाः १५ लोकपालाश्चसाध्याश्च पितरोलोकसंमताः। सनत्कुमारप्रमुखास्तथैवपरमर्षयः १६ अङ्गिरःप्रमुखाश्चैव तथाब्रह्मर्षयःपरे। तथानागाःसुपर्णाश्च सिद्धाश्चक्रधरास्तथा १७ सागराःसरितःशैला नागाविद्याधराश्चये। हरिश्चभगवानास्ते प्रजापतिपुरःसरः १८ गङ्गायमुनयोर्मध्ये पृथिव्याजघनंस्मृतम्। प्रयागंराजशार्दूल! त्रिपुलोकेपुभारत! १९ श्रवणात्तस्यतीर्थस्य नामसंकीर्तनादपि। मृत्तिकालम्भनाद्वापिनरः पापात्प्रमुच्यते २० तत्राभिषेकंयःकुर्यात् सङ्गमेशंसितव्रतः। तुल्यंफलमवाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः २१ नदेववचनात्तात! नलोकवचनात्तथा। मतिरुत्क्रमणीयाते प्रयागगमनम्प्रति २२ दशतीर्थसहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथापराः। तेषांसान्निध्यमत्रैव ततस्तुकुरुनन्दन! २३ यागतिर्योगयुक्तस्य सत्यस्थस्यमनीषिणः। सागतिस्त्यजतःप्राणान् गंगायमुनसंगमे २४ नतेजीवन्तिलोकेऽस्मिन् तत्रतत्रयुधिष्ठिर!। येप्रयागंनसम्प्राप्तास्त्रिपुलोकेषुवञ्चिताः २५ एवंदृष्ट्वातुतत्तीर्थं प्रयागंपरमम्पदम्। मुच्यतेसर्वपापेभ्यो शशाङ्कइवराहुणा २६ कम्ब

आश्रय होकर बारह सूर्य्य सब जगत्को तो भस्म करतेहैं और अक्षयवटकी जड़को नहीं भस्मकरते हैं १२ जब प्रलयकालमें सूर्य्य और चन्द्रमा भी नष्टहोजातेहैं तब उस वटके समीप वारंवार पूजन करतेहुए विष्णु भगवान् स्थितरहते हैं १३ हे राजेन्द्र उस गंगा यमुनाके मध्यवर्त्ती तीर्थको देवता दानव-सिद्ध ऋषि गन्धर्व और चारण यह सब सदैव सेवन कियाकरते हैं इसीसे उस प्रयाग तीर्थ की स्तुतिकरताहुआ पुरुष वहाँजाय जहाँ कि ब्रह्मादिक देवता ऋषि सिद्ध चारण-लोकपाल--साध्य-संज्ञक देवता लोकोंके पितर सनत्कुमारादिक परम ऋषि--अंगिरा आदि ब्रह्मऋषि नाग--सुपर्ण--सिद्ध--समुद्र--नदी--पर्वत विद्याधर और साक्षात् विष्णु भगवान् ब्रह्माजी समेत स्थितहैं १४ । १८ हे राजशार्दूल गंगा यमुनाके मध्यमें पृथ्वीकी जंघा कही है उसीको प्रयाग कहते हैं और वही त्रिलोकी में प्रसिद्धहै १९ इस तीर्थके श्रवणकरनेसे वा नाम कीर्तन करनेसे अथवा मृत्तिकाके स्पर्श करनेसे पुरुष पापोंसे छुटजाताहै उस गंगा यमुनाके स्पर्शकरनेसे पुरुष पापोंसे छुटजाताहै और जो अभिषेककरताहै वह राजसूय अश्वमेध यज्ञके समान पुण्यको प्राप्तहोताहै २० । २१ हे पुत्र प्रयागजीमें गमनकरनेके लिये तेरी बुद्धि देवतादिकके भी कहनेसे हटनेके योग्य नहीं है २२ इस प्रयाग तीर्थके समीप साठकिरोड़ दशहज़ार तीर्थवास करते हैं २३ जो गति कि योगमें होनेवाले सत्यमें स्थितहुए मनिकी होती है वही गति गंगा यमुनाके मध्यमें प्राणोंके त्यागकरनेवालोंकी होती है २४ हे युधिष्ठिर जो प्रयाग तीर्थपर प्राप्त नहीं होते हैं वह जीवतेहुए भी मृतकके समानहैं और त्रिलोकीमें ठगेगये हैं २५ इस प्रकारसे उस परमपद प्रयागजी के जो दर्शन करते हैं वह राहुसे चन्द्रमाके समान सब पापों से छुटजाते हैं २६ कम्बल अश्वतर और नाग नामवाले जो यमुनाजी के उत्तम तटहैं वहाँ

लाश्वतरोनागो विपुलेयमुनातटे। तत्रस्नात्वाचपीत्वाच सर्वपापैःप्रमुच्यते २७ तत्रग
त्वाचसंस्थानं महादेवस्यधीमतः। नरस्तारयतेसर्वान् दशपूर्वान्दशापरान् २८ कृत्वा
भिषेकन्तुनरः सोऽश्वमेधफललंलभेत्। स्वर्गलोकमवाप्नोति यावदाभूतसंप्लवम् २९ पूर्वे
पार्श्वेतुगङ्गायास्त्रिषुलोकेषुभारत। कूपञ्चैवतुसामुद्रं प्रतिष्ठानञ्चविश्रुतम् ३० ब्रह्मचा
रीजितक्रोधस्त्रिरात्रंयदितिष्ठति। सर्वपापविशुद्धात्मा सोऽश्वमेधफललंलभेत् ३१ उत्तरेण
प्रतिष्ठानात् भागीरथ्यास्तुपूर्वतः। हंसप्रपतनंनाम तीर्थंत्रैलोक्यविश्रुतम् ३२ अश्वमे
धफलंतस्मिन् स्नानमात्रेणभारत!। यावच्चन्द्रश्चसूर्य्यश्च तावत्स्वर्गेमहीयते ३३ उ
र्वशीरमणेपुण्ये विपुलेहंसपाण्डुरे। परित्यजतियःप्राणान् शृणुतस्यापियत्फलम् ३४
षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिवर्षशतानिच। सेव्यतेपितृभिःसार्द्धं स्वर्गलोकेनराधिप! ३५ उ
र्वशीन्तुसदापश्येत् स्वर्गलोकेनरोत्तम!। पूज्यतेसततंपुत्र! ऋषिगन्धर्वकिन्नरैः ३६
ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टः क्षीणकर्मादिवश्च्युतः। उर्वशीसदृशीनान्तु कन्यानांलभतेशत
म् ३७ मध्येनारीसहस्राणां बहूनाञ्चपतिर्भवेत्। दशग्रामसहस्राणां भोक्ताभवतिभूमि
पः ३८ काञ्चीनूपुरशब्देन सुप्तोऽसौप्रतिबुद्ध्यते। भुक्त्वातुविपुलान्भोगान् तत्तीर्थंभ
जतेपुनः ३९ शुक्लाम्बरधरोनित्यं नियतःसंयतेन्द्रियः। एककालन्तुभुञ्जानो मासंभूमिप
तिर्भवेत् ४० सुवर्णालंकृतानान्तु नारीणांलभतेशतम्। पृथिव्यामासमुद्रायां महाभूमि

स्नानकर जलके पानकरनेसे सब पापों से छुटजाताहै २७ और जहाँ महादेवजीकी स्थितिहै वहाँ जाकर मनुष्य यह पहलीपीढ़ी के दश पुरुषों को और पिछली पीढ़ी के भी दश पुरुषोंको पार उतार देताहै २८ वहाँ अभिषेक करनेवाला मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै और प्रलय कालतक स्वर्गमें वास करताहै २९ हेभारत गंगाजी के पूर्वभागमें एकसमुद्रकूप त्रिलोकीमें विख्यातहै वहाँ ब्रह्मचर्य्यमें स्थित क्रोधसे रहित जो तीनरात्रि वास करताहै वह सब पापोंसे छुटकर अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्त होताहै ३०। ३१ गंगाजी के पूर्व्वकी ओर उत्तरके स्थानमें जो हंस प्रपतननाम तीर्थ त्रिलोकीमें प्रसिद्धहै ३२ हे भारत वहाँ स्नानमात्रकेही करनेसे अश्वमेध यज्ञके फल को प्राप्त होताहै और जबतक सूर्य्य और चन्द्रमा रहें तब तक स्वर्गमें वास करताहै ३३ पवित्र उर्वशी रमण तीर्थपर विपुल तीर्थपर और हंस पांडुर तीर्थपर जो प्राणोंको त्यागताहै वह पुरुष साठ हज़ार साठसौ ६६००० वर्षोंतक स्वर्गमें वास करके पितरोंके साथ आनन्द करताहै ३४।३५ और हे राजन् सदैव उस स्वर्गमें उर्व्वशी अप्सराके दर्शन करताहुआ ऋषि गन्धर्व और किन्नरादिकोंसे पूजाजाताहै ३६ जब पुण्य क्षीण होकर स्वर्गसे पतित होताहै तब उर्वशी अप्सराओंके समान सैकड़ों कन्याओंको प्राप्त होकर हज़ारों स्त्रियोंका पति होताहै और दशहज़ार ग्रामोंका भोगनेवाला राजा होताहै ३७। ३८ वहाँ क्षुद्रघंटिका और नूपुरवाली स्त्रियोंके झंकार शब्दोंसे सोकर जगताहै फिर उतने भोगोंको भोगकर उसी तीर्थको सेवताहै जो मनुष्य प्रतिदिन श्वेतवस्त्रोंको धारणकर नियम से जितेन्द्रिय होकर एकवार भोजनकरै वह राजा होकर सुवर्णसे आभूषितहुई सैकड़ों उत्तम स्त्रियों

पतिर्भवेत् ४१ धनधान्यसमायुक्तो दाताभवतिनित्यशः। भुक्तातुविपुलान्भोगान् तत्ती र्थंलभतेपुनः ४२ अथसन्ध्यावटेरम्ये ब्रह्मचारीजितेन्द्रियः। उपवासीशुचिःसन्ध्यां ब्र ह्मलोकमवाप्नुयात् ४३ कोटितीर्थसमासाद्य यस्तुप्राणान्परित्यजेत्। कोटिवर्षसहस्राणां स्वर्गलोकेमहीयते ४४ ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टः क्षीणकर्मादिवश्च्युतः। सुवर्णमणिमुक्ताढ्य कुलेजायेतरूपवान् ४५ ततोभोगवतींगत्वा वासुकेरुत्तरेणतु। दशाश्वमेधकंनाम तीर्थं तत्रापरंभवेत् ४६ कृताभिषेकस्तुनरः सोऽश्वमेधफलंलभेत्। धनाढ्योरूपवान्दक्षो दा ताभवतिधार्मिकः ४७ चतुर्वेदेषुयत्पुण्यं यत्पुण्यंसत्यवादिषु। अहिंसायास्तुयोधर्मो ग मनादेवतत्फलम् ४८ कुरुक्षेत्रसमागङ्गा यत्रयत्रावगाह्यते। कुरुक्षेत्राद्दशगुणा यत्रवि न्ध्येनसङ्गता ४९ यत्रगंगामहाभागा बहुतीर्थातपोधना। सिद्धक्षेत्रंहिततज्ज्ञेयं नात्रकार्य्या विचारणा ५० क्षितौतारयतेमर्त्यान्नागांस्तारयतेऽप्यधः। दिवितारयतेदेवांस्तेनत्रिपथ गास्मृता ५१ यावदस्थीनिगंगायां तिष्ठन्तिहिशरीरिणः। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ५२ तीर्थानान्तुपरंतीर्थं नदीनांतुमहानदी। मोक्षदासर्वभूतानां महापातकिना मपि ५३ सर्वत्रसुलभागङ्गा त्रिषुस्थानेषुदुर्लभा। गङ्गाद्वारेप्रयागेच गङ्गासागरसङ्गमे। तत्रस्नात्वादिवंयाति येमृतास्तेपुनर्भवाः ५४ सर्वेषामेवभूतानां पापोपहतचेतसाम्। गति

को प्राप्त होता है और संपूर्ण समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वी का राज्य करता है ३९। ४१ जो मनुष्य धन धान्यसे युक्तहो प्रतिदिन दान करताहै वहभी ऐसे बहुतसे भोगोंको भोगकर इसी तीर्थको प्राप्तहोता है ४२ जो मनुष्य रमणीक संध्यावटपर जितेन्द्रिय और पवित्रहोकर संध्याके समय उपवास व्रत करताहै वह ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै ४३ जो कोटि तीर्थपर प्राप्त होकर--प्राणोंको त्यागताहै वह सैकड़ों किन्तु किरोड़ों वर्षोंतक स्वर्ग लोकमें प्राप्त रहताहै ४४ और क्षीणपुण्य होनेसे स्वर्गसे पतित होनेपर सुवर्ण मणि मुक्तादि धनोंसे सम्पन्न कुलमें जन्म लेताहै और उत्तम रूपवान् होताहै ४५ जो मनुष्य वासुकि सर्पसे उत्तरकी ओर भोगवती नाम पुरीमें जाके दशाश्वमेध नामतीर्थपर अभि- षेक करताहै वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै और धनाढ्य रूपवान् चतुर दाता और महा- धार्मिक होताहै ४६। ४७ जो पुण्य कि सत्य बोलनेमें और अहिंसामें होताहै वह सब प्रयाग तीर्थ पर गमन करनेहीसे होताहै ४८ जहाँ केवल गंगाजी बहती हैं वह कुरुक्षेत्रके समान है और जहाँ विंध्याचल पर्व्वतसे मिली हुईहैं वहाँ कुरुक्षेत्रसे दशगुणा पुण्यहै ४९ जहाँ बहुतसे तीर्थों से मिली हुई महाभागवाली गंगाहैं वह निस्सन्देह सिद्ध क्षेत्रहै ५० यह श्रीगंगाजी इस पृथ्वीपर तो मनुष्यों का उद्धार करती हैं पाताल लोकमें नागोंका उद्धार करती हैं और स्वर्गमें देवताओंका उद्धार करती हैं इसीसे यह त्रिपथगामिनी गंगाजी कहाती हैं ५१ प्राणियोंकी जितनी हड्डियां गंगाजी में पहुँच जाती हैं उतनेही हज़ार वर्षोंतक वह प्राणी स्वर्गमें वास करते हैं ५२ यहगंगा सब तीर्थोंमें उत्तम तीर्थ है नदियों में उत्तम नदी है महापातकवाले सम्पूर्ण प्राणियोंको मोक्ष देनेवाली है ५३ गंगाजी सब स्थानों में सुगम हैं परन्तु गंगाद्वार प्रयाग और गंगासागर संगम इनतीन तीर्थोंपर प्राप्त होनी दुर्लभ

मन्विष्यमाणानां नास्तिगङ्गासमागतिः ५५ पवित्राणांपवित्रञ्च मङ्गलानाञ्चमङ्गलम्। म-हेश्वरशिरोभ्रष्टा सर्वपापहराशुभा ५६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेपञ्चशततमोऽध्यायः १०५ ॥

(मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! प्रयागस्य माहात्म्यंपुनरेवतु। यच्छ्रुत्वासर्वपापेभ्यो मुच्यतेनात्रसंशयः १ मानसंनामतत्तीर्थं गङ्गायाउत्तरेतटे। त्रिरात्रोपोषितोभूत्वा सर्वका-मानवाप्नुयात् २ गोभूहिरण्यदानेन यत्फलंप्राप्नुयान्नरः। सतत्फलमवाप्नोति तत्तीर्थेस्म-रतेपुनः ३ अकामोवासकामोवा गङ्गायांयोऽभिपद्यते। मृतस्तुलभतेस्वर्गंनरकञ्च नपश्य-ति ४ अप्सरोगणसङ्गीतैः सुप्तोऽसौप्रतिबुद्ध्यते। हंससारसयुक्तेन विमानेनसगच्छति। बहुवर्षसहस्राणि स्वर्गेराजेन्द्र! भुञ्जति ५ ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टः क्षीणकर्मादिवश्च्युतः। सुवर्णमणिमुक्ताढ्ये जायतेविपुलेकुले ६ षष्टितीर्थसहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथापगाः। माघ-मासेगमिष्यन्ति गङ्गायमुनसङ्गमम् ७ गवांशतसहस्रस्य सम्यक् दत्तस्ययत्फलम्। प्र-यागेमाघमासेतु त्र्यहस्नानात्तुतत्फलम् ८ गङ्गायमुनयोर्मध्ये कर्षाग्निंयस्तुसाधयेत्। अहीनाङ्गोह्यरोगश्च पञ्चेन्द्रियसमन्वितः ९ यावन्तिरोमकूपाणि तस्यगात्रेषुदेहिनः। ताव-द्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोकेमहीयते १० ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टो जम्बुद्वीपपतिर्भवेत्। सभुक्त्वा

है इनतीनों तीर्थों पर स्नान करने से वैकुण्ठलोक पाताहै और पुनर्जन्म नहीं होताहै ५४ अपनी गति ढूंढनेवाले सबपापी पुरुषोंको गंगाजी के समान कोई गति नहीं है ५५ पवित्रों में पवित्र मंग-लों में मंगलरूप शिवजी के शिरसे गिरीहुई गंगाजी सब पापोंकी हरनेवाली महाशुभ वर्णनकी है५६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचाधिकशततमोऽध्यायः १०५ ॥

मार्कण्डेयजी बोले हे राजा अब मैं तुझे और भी उस प्रयाग के माहात्म्यको सुनाताहूं जिस के सुननेसे मनुष्य सब पापों से निस्सन्देह छूट जाताहै १ गंगाजी के उत्तरतटपर मानस नाम उत्तम तीर्थ है वहां तीन रात्रि उपवासकरके सब पापों से छूटजाता है और सब कामनाभी सिद्ध होजाती हैं २ जो पुण्यकि गौ भूमि और सुवर्ण इनके दान से होता है वही पुण्य इसतीर्थ के स्मरण करने मात्रसे प्राप्त होताहै ३ निष्कामहोके अथवा सकामहोके जो गंगाजी पर वास करता हुआ मरताहै वह स्वर्गको जाताहै और नरक को आंखसे भी नहीं देखता है ४ ऐसा पुरुष अप्सराओं के संगीत-रागों समेत हंस सारस आदि उत्तम पक्षियों से संयुक्त विमान में बैठकर बहुत कालतक स्वर्ग के भोगोंको भोगता है ५ फिर स्वर्ग से पतित होकर सुवर्ण मणि और रत्नों से भरे धनाढ्य कुल में जन्म लेताहै ६ माघके महीनेभर गंगा यमुनाके संगममें साठहज़ार तीर्थ और साठ किरोड़नदी प्राप्त हो-जाती हैं ७ जो पुण्यकि एक लक्ष गौदान काहै वही पुण्य माघमास में प्रयागजी के तीन दिनस्नान करने से प्राप्त होताहै ८ जो पुरुष गंगा यमुनाके मध्य में आरनेउपलों से अग्निको जलादेताहै वह सुन्दर अंगवाला रोगरहित और सब इन्द्रियों से संयुक्त रहताहै और जितने उसके शरीर पर रोम होते हैं उतनेही हज़ार वर्षोंतक स्वर्ग में वास करता है ९।१० और स्वर्ग से पतित होकर सब जंबू

विपुलान्भोगांस्तत्तीर्थंस्मरतेपुनः ११ जलप्रवेशंयःकुर्यात् सङ्गमेलोकविश्रुते। राहुग्र
स्तेतथासोमे विमुक्तःसर्वकिल्बिषैः १२ सोमलोकमवाप्नोति सोमेनसहमोदते। षष्टिवर्ष
सहस्राणि स्वर्गलोकेमहीयते १३ स्वर्गेचशक्रलोकेऽस्मिन् ऋषिगन्धर्वसेविते। परिभ्र
ष्टस्तुराजेन्द्र! समृद्धेजायतेकुले १४ अधःशिरस्तुयोज्वालामूर्ध्वपादःपिबेन्नरः। शतव
र्षसहस्राणि स्वर्गलोकेमहीयते १५ परिभ्रष्टस्तुराजेन्द्र! सोऽग्निहोत्रीभवेन्नरः। भुक्त्वा
तुविपुलान्भोगान् तत्तीर्थंभजतेपुनः १६ यःस्वदेहन्तुकर्तित्वा शकुनिभ्यःप्रयच्छति।
विहगैरुपभुक्तस्य शृणुतस्यापियत्फलम् १७ शतंवर्षसहस्राणां सोमलोकेमहीयते।
तस्मादपिपरिभ्रष्टो राजाभवतिधार्मिकः १८ गुणवान्रूपसम्पन्नो विद्वांश्चप्रियवाचकः।
भुक्त्वातुविपुलान्भोगांस्तत्तीर्थंभजतेपुनः १९ यामुनेचोत्तरेकूले प्रयागस्यतुदक्षिणे। ऋ
णप्रमोचनंनाम तत्तीर्थंपरमंस्मृतम् २० एकरात्रोषितःस्नात्वा ऋणैःसर्वैःप्रमुच्यते। स्व
र्गलोकमवाप्नोति अनृणश्चसदाभवेत् २१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेषडधिकशततमोऽध्यायः १०६॥

(युधिष्ठिर उवाच) एतच्छ्रुत्वाप्रयागस्य यत्त्वयापरिकीर्तितम्। विशुद्धंमेऽद्यहृद
यं प्रयागस्यतुकीर्तनात् १ अनाशकफलंब्रूहि भगवंस्तत्रकीदृशम्। यच्चलोकमवाप्नो·

द्वीपका अधिपति राजा होकर बहुत से भोगोंको भोग उसी तीर्थ को फिर स्मरण करताहै ११ जो पुरुष लोकमें विख्यात गंगासंगम पर चन्द्रग्रहण के समय जलमें प्रवेशकर भजन करता है वह चन्द्र लोकमें प्राप्तहो चन्द्रमा सहित आनन्द करता है और साठ हज़ार वर्षोंतक स्वर्गमें वास करता हुआ सब पापों से छूटजाताहै १२। १३ हे राजेन्द्र जब पुण्यक्षीण हो जाताहै तब ऋषि गन्धर्वादिकों से सेवित इन्द्रलोक से पतितहो के धनाढ्य कुलमें जन्मलेताहै १४ जो पुरुष नीचाशिर और ऊपर को पैर करके अग्निकी ज्वालाओं को पीताहै वह सौहज़ार वर्षोंतक स्वर्ग में वास करताहै १५ और हे राजेन्द्र वहां से पतितहो अग्निहोत्री होकर बहुत से भोगोंको भोग फिर उसी तीर्थको प्राप्त होता है १६ जो मनुष्य अपने शरीर को काटकर पक्षियोंको भक्षण करा देता है उसका यह फलहै १७ कि एक लाख वर्षोंतक चन्द्रमाके लोकमें वासकर वहांसे पतितहो धार्मिक राजाहोताहै १८ और गुणवान् उत्तम रूपवान् विद्वान् प्रियबोलनेवालाहोके बहुतसे भोगोंको भोगता हुआ उसी तीर्थ को सेवताहै हे राजा यमुनाके उत्तर तटपै प्रयागजी से दक्षिणकी ओर ऋणमोचननाम परमउत्तम तीर्थ कहाहै वहां एक रात्रि के वास करने और स्नान करने से सब पापोंसे छुटकर स्वर्गलोक में प्राप्त होता है और कभी ऋणी नहीं होता १९। २१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषडधिकशततमोऽध्यायः १०६॥

युधिष्ठिरने कहा हे भगवन् आपने जो प्रयाग माहात्म्य वर्णन किया उसके सुननेसे अब मेरा हृदय शुद्धहोगयाहै १ हे ऋषे अब वह माहात्म्य वर्णनकीजिये जिससे उत्तम लोकमें सबपापोंसे छूटकर अक्षय फलकी प्राप्तिहो २ मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हेराजन् अब उस अक्षय फलवाले माहात्म्य

ति विशुद्धःसर्वकिल्बिषैः २ (मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! प्रयागेतुअनाशकफलंविभो!। प्राप्नोतिपुरुषोधीमान् श्रद्दधानोजितेन्द्रियः ३ अहीनाङ्गोऽप्यरोगश्चपञ्चेन्द्रियसमन्वितः। अश्वमेधफलंतस्य गच्छतस्तुपदेपदे ४ कुलानितारयेद्राजन्! दशपूर्वान्दशापरान्। मुच्यतेसर्वपापेभ्यो गच्छेत्तुपरमंपदम् ५ (युधिष्ठिर उवाच) महाभाग्यंहिधर्म्मस्य यत्त्वंवदसिमेप्रभो। अल्पेनैवप्रयत्नेन बहून्धर्मानवाप्नुते ६ अश्वमेधैस्तुबहुभिःप्राप्यतेसुव्रतैरिह। इमंमेसंशयंछिन्धि परंकौतूहलंहिमे ७ (मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! महावीर! यदुक्तंब्रह्मयोनिना। ऋषीणांसन्निधौपूर्वं कथ्यमानंमयाश्रुतम् ८ पंचयोजनविस्तीर्णं प्रयागस्यतुमण्डलम्। प्रविष्टमात्रेतद्भूमावश्वमेधःपदेपदे ९ व्यतीतान् पुरुषान्सप्त भविष्यांश्चचतुर्दश। नरस्तारयतेसर्वान् यस्तुप्राणान्परित्यजेत् १० एवंज्ञात्वातुराजेन्द्र! सदासेवापरोभवेत्। अश्रद्दधानाःपुरुषाः पापोऽपहतचेतसः। नप्राप्नुवन्तितत्स्थानं प्रयागंदेवरक्षितम् ११ (युधिष्ठिर उवाच)। स्नेहाद्वाद्रव्यलोभाद्वा ये तुकामवशंगताः। कथंतीर्थफलंतेषां कथंपुण्यफलंभवेत् १२ विक्रयःसर्वभाण्डानां कार्याकार्य्यमजानतः। प्रयागेकागतिस्तस्य तन्मेब्रूहिपितामह! १३ (मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! महागुह्यंसर्वपापप्रणाशनम्। मासमेकन्तुयःस्नायात् प्रयागेनियतेन्द्रियः। मुच्यतेसर्वपापेभ्यःसगच्छेत्परमंपदम् १४ विश्रम्भघातकानान्तु प्रयागेशृणुयत्फलम्।

को सुनो जिस्से कि प्रयागमें श्रद्धावान् जितेन्द्रिय और बुद्धिमान् पुरुष अक्षय फलको प्राप्त होताहै ३ जो पांचों इन्द्रियों समेत नीरोग पुरुष कुटिलतासे रहित प्रयागजीमें देह त्यागकरनेको जाताहै उसको एक२ चरणपर अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होताहै ४ ऐसा पुरुष अपने आगे पीछे की दश २ पीढ़ियोंको उद्धार करके सब पापोंसे रहितहो परम पदको पाताहै ५ युधिष्ठिरने कहा हे प्रभो आपने इस महाफल वाले धर्मका वर्णनकिया यह तो बड़ेही अल्प यत्नसे बहुतसे धर्मोंकी प्राप्तिकरनेवाला है ६ क्योंकि अश्वमेध यज्ञ तो बहुतसे पुण्योंसे प्राप्त होताहै वह अल्पही यत्नसे कैसे ऐसे फलको देताहै आप इस मेरे परम आश्चर्य्यको निवृत्तकरो ७ मार्कण्डेयजीने कहा हे राजा प्रथम ब्रह्माजी ने ऋषियोंके समीप जो कहाहै वह मैंने सुनाहै ८ यह प्रयाग मंडल बीस कोसके प्रमाणवाला है इसकी भूमिमें प्रवेशहुए पीछे एक२ चरणपर अश्वमेध यज्ञका फल होताहै ९ प्रयागजीपै मरनेवाला पुरुष अपने सात पहले और चौदह पिछले पुरुषोंको पार उतारता है १० हेराजेन्द्र इसमाहात्म्यको जानकर तुमको प्रयागजीकी सेवामें सदैव तत्पर रहना चाहिये क्योंकि जो श्रद्धासे रहित पापी पुरुषहैं वह इस देवताओंसे रक्षितकिये हुए प्रयाग क्षेत्रमें प्राप्त नहीं होसक्ते हैं ११ युधिष्ठिरने कहा हे महाराज जो प्रयागजी पै जाकर स्नेह और लोभसे कामके वशीभूत होजाते हैं उनको तीर्थका पुण्य फल कैसा होताहै १२ और जो कार्य्यको वा कुकर्मको नहीं जाननेवाला पुरुष सब पात्रादिक पदार्थोंको बेचताहै उसकी क्या गति होती है यह सब मेरे आगे वर्णनकीजिये १३ मार्कण्डेयजीने कहा हे राजन् सब पापोंके नाशक महागुह्य माहात्म्यको सुनो कि जोजितेन्द्रियपुरुष एक महीनेतक प्रया-

त्रिकालमेवस्नायीत आहारंभैक्ष्यमाचरेत्। त्रिभिर्मासैःसमुच्येत प्रयागेतुनसंशयः १५ अज्ञानेनतुयस्येह तीर्थयात्रादिकंभवेत्। सर्वकामसमृद्धेतु स्वर्गलोकेमहीयते। स्थान ञ्चलभतेनित्यं धनधान्यसमाकुलम् १६ एवंज्ञानेनसम्पूर्णः सदाभवतिभोगवान्। तारि ताःपितरस्तेन नरकात्प्रपितामहाः १७ धर्मानुसारितत्त्वज्ञ! पृच्छतस्तेपुनःपुनः। त्व त्प्रियार्थंसमाख्यातं गुह्यमेतत्सनातनम् १८ (युधिष्ठिर उवाच) अद्यमेसफलंजन्म अद्यमेतारितंकुलम्। प्रीतोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मिदर्शनादेवतेमुने १९ त्वद्दर्शनात्तुधर्मात्म न्! मुक्तोऽहंचाद्यकिल्बिषात्। इदानींवेद्मिचात्मानं भगवन्! गतकल्मषम् २० (मार्क ण्डेय उवाच) दिष्ट्यातेसफलंजन्म दिष्ट्यातेतारितंकुलम्। कीर्तनाद्वर्धतेपुण्यं श्रुता त्पापप्रणाशनम् २१ (युधिष्ठिर उवाच) यमुनायान्तुकिंपुण्यं किंफलन्तुमहामुने!। एत न्मेसर्वमाख्याहि यथादृष्टंयथाश्रुतम् २२ (मार्कण्डेय उवाच) तपनस्यसुतादेवी त्रिषु लोकेषुविश्रुता। समाख्यातामहाभागा यमुनातत्रनिम्नगा २३ येनैवनिःसृतागंगा तेनै वयमुनागता। योजनानांसहस्रेषु कीर्तनात्पापनाशिनी २४ तत्रस्नात्वाचपीत्वाच यमु नायांयुधिष्ठिर!। कीर्तनाल्लभतेपुण्यं दृष्ट्वाभद्राणिपश्यति २५ अवगाह्यचपीत्वाचपुना त्यासप्तमंकुलम्। प्राणांस्त्यजतियस्तत्र सयातिपरमांगतिम् २६ अग्नितीर्थमितिख्यातं

गजी पै स्नानकरताहै वह सब पापोंसे छुटकर परम पदको प्राप्त होताहै १४ विश्वासघात करके किसीको मारनेवाला पुरुष प्रयागजी पै जाकर त्रिकाल स्नानकरता है और भिक्षा का भोजन करताहै वह तीन महीनोंमें निस्सन्देह पापोंसे छुटजाताहै १५ जो पुरुष अज्ञानसे तीर्थ यात्रा करताहै वह सब कामनाओंसे सम्पन्नहोके स्वर्गलोकमें प्राप्त होताहै और क्षीण पुण्यहोके धन धान्यसे युक्तहुए स्थानको प्राप्त होताहै १६ जो पुरुष ज्ञानकरके तीर्थ यात्रा करताहै वह सदैव भोगोंको भोगताहै और सब पितरोंको नरकसे उद्धार करताहै १७ हे धर्मावतार महातत्त्वज्ञ बारंबार पूछतेहुये तेरं हितके लिये यह गुह्य सनातन धर्म कहदियाहै १८ युधिष्ठिर बोला हे मुने अब मेरा जन्म सफलहै मेरे कुलका उद्धार होगयाहै मैं आपके दर्शनसे प्रसन्नहोगयाहूं आपने बड़ा अनुग्रहकिया १९ हे धर्मात्मन् अब मैंतुम्हारे दर्शनकरनेसे पापसे छुटगया हेभगवन् अब मैंअपनेको पापसे रहित मानताहूं २० मार्कण्डेयजी बोले कि बड़ेआनन्द मंगलकी बातहै कि तेरा जन्म सफलहोगया और तेरे कुलका उद्धार होगया इसमाहात्म्यके कीर्त्तन करनेसे पुण्य बढ़ताहै और सुननेसे पापका नाश होताहै २१ युधिष्ठिरजी कहते हैं कि हेमहामुने यमुनाजीके विषय क्या पुण्यहै और क्याफल कहाहै यहसब आपने देखा सुनाहै सो कहो २२ मार्कण्डेयजी कहते हैं—कि सूर्य्यकी पुत्री यमुनाजी महाभागवाली त्रिलोकीमें प्रसिद्धहै २३ जिसमार्ग करके गंगाजी आई हैं उसी मार्गसे यमुनाजीभी आई हैं यहयमुनाजीभी हज़ार योजनसे कीर्त्तन करनेवालेके पापको नाश करनेवाली है २४ हे युधिष्ठिर उनयमुनाजीमें स्नान करके जलपान और कीर्त्तन करनेसे पुण्य प्राप्त होताहै दर्शनसे कल्याणकी प्राप्ति होती है २५ उसमें गोतामार जलपीने से सातपीढ़ीके पुरुषों को पवित्र करदेता है और वहाँ प्राण त्याग

यमुनादक्षिणेतटे। पश्चिमेधर्मराजस्य तीर्थन्तुनरकंस्मृतम् २७ तत्रस्नात्वादिवंयान्तिये मृतास्तेऽपुनर्भवाः। एवंतीर्थसहस्राणि यमुनादक्षिणेतटे २८ उत्तरेणप्रवक्ष्यामि आदित्यस्यमहात्मनः। तीर्थंनिरंजनंनाम यत्रदेवाःसवासवाः २९ उपासतेस्मसंन्ध्यांये त्रिकालं हियुधिष्ठिर !। देवाःसेवन्तितत्तीर्थं येचान्येविबुधाजनाः ३० श्रद्दधानपरोभूत्वा कुरुतीर्थाभिषेचनम्। अन्येचबहवस्तीर्थाः सर्वपापहरास्स्मृताः। तेषुस्नात्वादिवंयान्ति येमृतास्तेऽपुनर्भवाः ३१ गंगाचयमुनाचैव उभेतुल्यफलेस्मृते। केवलंज्येष्ठभावेन गंगासर्वत्रपूज्यते ३२ एवंकुरुष्वकौन्तेय ! सर्वतीर्थाभिषेचनम्। यावज्जीवकृतंपापं तत्क्षणादेवनश्यति ३३ यस्त्विमंकल्पउत्थाय पठतेचशृणोतिच। मुच्यतेसर्वपापेभ्यः स्वर्गलोकंसगच्छति ३४ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७ ॥

(मार्कण्डेय उवाच) श्रुतंमेब्रह्मणाप्रोक्तं पुराणेब्रह्मसम्भवे। तीर्थानान्तुसहस्राणि शतानिनियुतानिच। सर्वेपुण्याःपवित्राश्च गतिश्चपरमास्मृता १ सोमंतीर्थंमहापुण्यं महापातकनाशनम्। स्नानमात्रेणराजेन्द्र ! पुरुषांस्तारयेच्छतान्। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन तत्रस्नानंसमाचरेत् २ (युधिष्ठिरउवाच) पृथिव्यांनैमिषंपुण्यं अन्तरिक्षेचपुष्करम्। त्रयाणामपिलोकानां कुरुक्षेत्रंविशिष्यते ३ सर्वाणितानिसन्त्यज्य कथमेकंप्रशंससि।

करनेसे परमपदको प्राप्त होताहै २६ यमुनाके दक्षिण तटपर अग्निनाम प्रसिद्ध तीर्थहै और पश्चिम तटपर धर्मराजका तीर्थ नरक नामसे प्रसिद्धहै २७ उसमें स्नान करनेसे स्वर्गमें प्राप्त होताहै प्राण त्यागनेसे फिर जन्म नहीं होता ऐसेही यमुनाके दक्षिण तटपर हज़ारों तीर्थ हैं अब उत्तरके तटपर सूर्य्यके निरंजननामवाले तीर्थको कहते हैं जिसमें कि इन्द्रसहित सब देवता वास करते हैं२८।२९ बहुतसे देवता त्रिकाल संध्याकी उपासना करते हैं बहुतसे तीर्थकीही उपासना करतेहैं ३० इससे तुमभी श्रद्धावान् होके उस तीर्थके जलका अभिषेक कराओ हे राजेन्द्र अन्य२ भी बहुतसे तीर्थ हैं उनमें स्नान करनेवाले स्वर्गमें जाते हैं जो लोग वहाँ मरते हैं वहभी फिर जन्म नहीं लेते तीर्थोंमें उत्तम यह गंगा यमुनाभी समान पुण्यवाली कही हैं परन्तु श्रीगंगाजीको महानुभाव लोग सब स्थानोंमें विशेष पूजतेहैं ३१। ३२ हे युधिष्ठिर तुम इसीप्रकार सब तीर्थोंके जलसे अभिषेककरो इसीसे जीवन पर्य्यन्तके सब कियेहुए पाप उसीक्षण नष्ट होजायँगे ३३ जो कोई इसमाहात्म्यको प्रातःकाल पढ़ता वा सुनताहै वह सबपापोंसे छुटकर स्वर्ग लोकमें प्राप्त होताहै ३४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां सप्ताऽधिकशततमोऽध्यायः १०७ ॥

मार्कण्डेयजी बोले-कि मैंने ब्रह्माजीके कहेहुएब्रह्मपुराणमें जो हज़ारों लाखोंतीर्थ सुने हैं वहसब महापवित्र पुण्यकारी और परमगति वालेहैं १ हे राजेन्द्र एक महापवित्र सब पापोंका हरनेवाला सोमतीर्थ है वहाँ स्नानमात्रही के करनेसे मनुष्य सैकड़ों पुरुषोंका उद्धार करदेताहै इस निमित्त वहाँ सब यत्नोंसे स्नान करना योग्यहै २ युधिष्ठिरने कहा कि हे ऋषे पृथ्वीपर नैमिषारण्य तीर्थ है-आकाशमें पुष्कर तीर्थ है और कुरुक्षेत्र तीर्थ तीनों लोकोंमें विशेष कहाहै ३ इन सबोंको त्यागकर आप

अप्रमाण·तुतत्रोक्तमश्रद्धेयमनुत्तमम् ४ गतिश्चपरमांदिव्यांभोगांश्चैवयथेप्सितान्। कि
मर्थमल्पयोगेन वहुधर्मंप्रशंससि। एतन्मेसंशयंब्रूहि यथादृष्टंयथाश्रुतम् ५ (मार्कण्डेय
उवाच) अश्रद्धेयंनवक्तव्य प्रत्यक्षमपियद्भवेत्। नरस्याश्रद्दधानस्य पापोपहतचेत
स· ६ अश्रद्दधानोह्यशुचिर्दुर्मतिरत्यक्तमङ्गलः। एते पातकिनःसर्वे तेनेदंभाषितंत्वया ७
शृणुप्रयागमाहात्म्यं यथादृष्टं यथाश्रुतम्। प्रत्यक्षञ्चपरोक्षञ्च यथान्यस्तंभविष्यति ८
यथैवान्यद्दृष्टञ्च यथादृष्टंयथाश्रुतम्। शास्त्रंप्रमाणंकृत्वाच युज्यतेयोगमात्मनः ९ क्लि
श्यतेचापरस्तत्र नैवयोगमवाप्नुयात्। जन्मान्तरसहस्रेभ्यो योगोलभ्यतमानवैः १० य
थायोगसहस्रेण योगोलभ्येतमानवैः। यस्तुसर्वाणिरत्नानि ब्राह्मणेभ्यःप्रयच्छति ११ ते
नदानेनदत्तेन योगंनाभ्येतिमानवः। प्रयागेतुमृतस्येदं सर्वंभवतिनान्यथा १२ प्रधान
हेतुंवक्ष्यामि श्रद्दधत्स्वचभारत! यथासर्वेषुभूतेषु ब्रह्मसर्वत्रदृश्यते १३ ब्राह्मणेवास्ति
यत् किञ्चिद्ब्राह्ममितिचोच्यते। एवंसर्वेषुभूतेषु ब्रह्मसर्वत्रपूज्यते १४ यथासर्वेषुलोके
षु प्रयागपूजयेद्बुधः। पूज्यतेतीर्थराजस्तु सत्यमेवयुधिष्ठिर! १५ ब्रह्मापिस्मरतेनि
त्यं प्रयागंतीर्थमुत्तमम्। तीर्थराजमनुप्राप्य नचान्यत्किञ्चिदिच्छति १६ कोहिदेवत्व
मासाद्य मनुष्यत्वंचिकीर्षति। अनेनैवोपमानेन त्वंज्ञास्यसियुधिष्ठिर!। यथापुण्यतमं
चास्ति तथैवकथितंमया १७ (युधिष्ठिर उवाच) श्रुतंचेदंत्वयाप्रोक्तं विस्मितोऽहंपुनः

एक प्रयागकीही स्तुति कैसे करते हैं इसमें प्रमाणके विना श्रद्धा नहीं होती है ४ और वहाँ थोड़ा ही वास करनेसे परमगति यथेष्ट दिव्य भोग और वहुतसे धर्म इनकी प्राप्ति कैसे कहतेहो इस मेरे सन्देहको आप जैसे जानतेहो वैसे दूरकरो ५ मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे राजन् पापसे हत श्रद्धा-रहित पुरुषके आगे श्रद्धा न होनेवाली प्रत्यक्ष वातभी न कहनी चाहिये ६ श्रद्धारहित अपवित्र दुष्ट-मति और अमंगली यह सब महापातकी पुरुष होते हैं इसीसे तैंने ऐसा कहाहै अव प्रयागके माहा-त्म्यको जैसा कि मैंने सुना और देखाहै उसको सुन प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष जैसे कि धरीहुई धरोहड़ होती है वैसेही देखे और सुनेहुएके अनुसार शास्त्रको प्रमाणकरके अपने आत्माको युक्तकरै ७। ९ इससे अन्यथा करनेवाला पुरुष क्लेशको प्राप्तहो योगको नहीं पाता है मनुष्योंको हजारों जन्मोंमें योगकी प्राप्ति होती है १० जैसे हजारों योगोंसे मनुष्योंको योगकी लब्धि होती है वैसेही ब्राह्मणों के अर्थ हजारों रत्न दान करनेसे योगकी प्राप्ति नहीं होती परन्तु प्रयागपर मरनेवालेको वहसवफल निस्सन्देह अवश्य प्राप्त होजाताहै ११। १२ हे राजा श्रद्धायुक्त होकर अव प्रधान हेतुको सुन जैसे कि सव प्राणियों में और सव स्थानों में ब्रह्महही दीखताहै ब्रह्मके विना कोई वस्तु नहीं है ऐसेही सव भूतों में ब्रह्महही पूजा जाताहै १३। १४ हे युधिष्ठिर इसीप्रकार सवलोकों में वुद्धिमान् पुरुष प्रयाग तीर्थकोही निस्सन्देह सत्य २ पूजते हैं १५ क्योंकि ब्रह्माजीभी प्रतिदिन तीर्थराज प्रयागजीकाही स्मरण किया करतेहैं इसीसे वुद्धिमान् पुरुष तीर्थराज प्रयागजीको प्राप्त होकर अन्य किसी वस्तुको नहीं चाहताहै १६ हे युधिष्ठिर देवभावको भी प्राप्त होकर मनुष्य होने की कौन इच्छा करताहै इसी

पुनः । कथंयोगेनतत्प्राप्तिः स्वर्गवासस्तुकर्मणा १८ दातावैलभतेभोगान् गांचयत्कर्म
णःफलम् । तानिकर्माणिपृच्छामि पुनस्तैःप्राप्यतेमही १९ (मार्कण्डेय उवाच) शृणु
राजन्महाबाहो ! यथोक्तकरणंमहीम् । गामग्निंब्राह्मणंशास्त्रं काञ्चनंसलिलंस्त्रियः २०
मातरंपितरञ्चैवयेनिन्दन्तिनराधमाः । नतेषामूर्ध्वगमनमिदमाहप्रजापतिः २१ एवंयो
गस्यसम्प्राप्ति स्थानंपरमदुर्लभम् । गच्छन्तिनरकंघोरं येनराःपापकर्मिणः । २२ हस्त्य
श्वङ्गामनड्वाहं मणिमुक्तादिकाञ्चनम् । परोक्षंहरतेयस्तु यश्चदानंप्रयच्छति २३ नतेग
च्छन्तिवैस्वर्गं दातारोयत्रभोगिनः । अनेककर्मणायुक्ताः पच्यन्तेनरकेपुनः २४ एवंयो
गश्चधर्मश्च दातारश्चयुधिष्ठिर ! । यथासत्यमसत्यंवा अस्तिनास्तीतियत्फलम् । निरुक्त
न्तुप्रवक्ष्यामि यथाहस्वयमंशुमान् २५ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८ ॥

(मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन् ! प्रयागस्य माहात्म्यंपुनरेवतु । नैमिषंपुष्करञ्चैव
गोतीर्थंसिन्धुसागरम् १ गयाचचैत्रकंचैव गङ्गासागरमेवच । एतेचान्येचबहवो येचपु
ण्याःशिलोच्चयाः २ दशतीर्थसहस्राणि त्रिंशत्कोट्यस्तथापराः । प्रयागेसंस्थितानित्य
मेवमाहुर्मनीषिणः ३ त्रीणिचाप्यग्निकुण्डानि येषांमध्येतुजाह्नवी । प्रयागादभिनिष्क्रा

उपमारूपी दृष्टान्तसे तुम जानजाओगे कि जैसा अधिक पुण्यवाला और पापोंका हरनेवाला प्रयाग मैंने कहा है १७ युधिष्ठिरने कहा हे ब्रह्मन् आपका कहा हुआ यह माहात्म्य मैंने सुना और वारंवार विस्मित होगया कि कौनसे योगसे वा कर्म से प्रयागकी कैसे प्राप्ति होती है और कैसे स्वर्ग में वास होताहै १८ जिनकर्मों से दान करनेवाला पुरुष भोगोंको और पृथ्वीको भोगताहै और वारंवार पृथ्वी लोकको प्राप्त होताहै उनकर्मोंको मैं आपसे पूछताहूं १९ मार्कण्डेयजी कहते हैं हे राजन् हे महाबाहो अब यथार्थ विधिको मुझसेसुन जो दुष्ट पुरुष पृथ्वी-गौ-अग्नि-ब्राह्मण-शास्त्र-सुवर्ण-जल-स्त्री माता और पिता इन सबकी निन्दा करते हैं वह पुरुष स्वर्गादिक ऊर्ध्वलोकों में नहीं प्राप्त होते हैं यह ब्रह्माजीने अपने मुखसे कहाहै २० । २१ इसी प्रकार योगकी प्राप्तिका भी स्थान परम दुर्लभ कहाहै जो पाप कर्मवाले पुरुष हैं वह घोर नरक में प्राप्त होते हैं २२ जो पुरुष हाथी घोड़ा गौ बैल मणि मोती और सुवर्ण इनको पीछेसे परोक्षमें हरलेताहै वह और जो इनका दान करताहै इनका यह भेदहै कि हरनेवाले तो कभी स्वर्ग में नहीं प्राप्त होते और दानीपुरुष भोगी होने के बदले इस पापकर्म से घोर नरकमें दुःखोंको भोगते हैं इसीप्रकार योग धर्म दाताका शुभाशुभ फल और सत्य असत्य इन सबको जैसे कि पूर्वमें सूर्य्य नारायणने कहाहै वैसेही हमभी कहते हैं २३ । २५ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८ ॥

मार्कण्डेयजी कहते हैं-हे राजन् और भी प्रयाग माहात्म्यको मुझसे सुन नैमिष-पुष्कर-गोतीर्थ-सिन्धुसागर-१ गयाजी चैत्रक तीर्थ-और गंगासागर यह सब और अन्य जो पवित्र तीर्थहैं वह सब दशहज़ार तीर्थ और तीसकिरोड़ अन्य तीर्थ यह सब मिलेहुए प्रयागजीमें स्थितरहते हैं यह मुनियों

न्ता सर्वतीर्थनमस्कृता ४ तपनस्यसुतादेवी त्रिषुलोकेषुविश्रुता। यमुनागङ्गयासार्द्धं सङ्गतालोकभाविनी ५ गङ्गायमुनयोर्मध्ये पृथिव्याजघनंस्मृतम्। प्रयागंराजशार्दूल! कलांनार्हन्तिषोड़शीम् ६ तिस्रःकोट्योऽर्द्धकोटिश्च तीर्थानांवायुरब्रवीत्। दिविभुव्य न्तरिक्षेच तत्सर्वंजाह्नवीस्मृता ७ प्रयागंसमधिष्ठानं कम्बलाश्वतरावुभौ। भोगवत्यथ याचैषा वेदिरेषाप्रजापतेः ८ तत्रवेदाश्चयज्ञाश्च मूर्त्तिमन्तोयुधिष्ठिर!। प्रजापतिमुपा सन्ते ऋषयश्चतपोधनाः ९ यजन्तेक्रतुभिर्देवास्तथा चक्रधरान्नृपाः। ततःपुण्यतमंना स्ति त्रिषुलोकेषुभारत! १० प्रभावात्सर्वतीर्थेभ्यः प्रभवत्यधिकंविभो!। दशतीर्थसह स्राणि तिस्रःकोट्यस्तथापराः ११ यत्रगङ्गामहाभागा सदेशस्तत्तपोधनम्। सिद्धक्षेत्र ञ्चविज्ञेयं गङ्गातीरसमन्वितम् १२ इदंसत्यंविजानीयात् साधूनामात्मनश्चवै। सुहृदश्च जपेत्कर्णे शिष्यस्यानुगतस्यच १३ इदंधन्यमिदंस्वर्ग्यमिदंसत्यमिदंसुखम्। इदंपुण्य मिदंधर्म्यं पावनंधर्ममुत्तमम् १४ महर्षीणामिदंगुह्यं सर्वपापप्रणाशनम्। अधीत्यचद्वि जोऽप्येतन्निर्मलः स्वर्गमाप्नुयात् १५ यइदंशृणुयान्नित्यं तीर्थंपुण्यंसदाशुचिः। जातिस्म रत्वंलभते नाकपृष्ठेचमोदते १६ प्राप्यन्तेतानितीर्थानि सद्भिःशिष्टानुदर्शिभिः। स्नाहि तीर्थेषुकौरव्य! नचवक्रमतिर्भवेत् १७ त्वयाचसम्यक्पृष्टेन कथितं वैमयाविभो!। पितर

का कथनहै २। ३ इनके मध्यमें तीन अग्निकुंडहैं उनके मध्यमें गंगाजी बहती हैं प्रयागसेही निकलीहुई सब तीर्थोंसे नमस्कृत सूर्य्यकी पुत्री श्री यमुनाजी गंगाजीके संगमें प्राप्त हुई हैं ४। ५ गंगा यमुनाके मध्यमें पृथ्वीकी जंघा कही है हे राजशार्दूल वही प्रयागजी हैं उसकी सोलहवीं कलाको भी अन्य तीर्थ नहीं प्राप्त होते हैं वायु पुराणमें कहाहै कि पृथ्वी और आकाशमें साढ़ेतीन किरोड़ तीर्थ हैं उन सबको गंगाजीमें जानो ६। ७ उन सब तीर्थोंका मंडल प्रयागजी हैं कम्बल और अश्वतर नाम दोतटहैं वहाँ भोगवती पुरी है वह प्रजापतिकी वेदी रेखा वर्णनकरी है ८ हे युधिष्ठिर वहाँ वेद और यज्ञ मूर्तिमान् होकर ब्रह्माजीकी उपासना करते हैं—तपोधन ऋषि देवता चक्रधारी और राजा यह सब यज्ञोंकरके प्रयागकी उपासना करते हैं हे भारत त्रिलोकीमें प्रयागजीसे अधिक कोई पदार्थभी पवित्र नहीं है ९। १० यह तीर्थ अपने प्रभावसे सब तीर्थोंमें अधिकहै दशहज़ार तीनकिरोड़ तीर्थ और श्री गंगाजी यह सब जिस स्थानमें हैं वही देश तपोधनहै यह सब देश गंगाजीके तटोंसे युक्त होनेसे सिद्ध क्षेत्र कहलाते हैं ११। १२ साधुजन लोग अपने मित्रजन शिष्य और अनुचर इन सब के कानोंमें ऐसा वचन कहते हैं कि यह प्रयाग धन्यहै स्वर्गका देनेवालाहै सुख रूपहै सत्यहै पवित्र है धर्म देनेवालाहै अति उत्तमहोकर महर्षियों को भी दुर्लभहै सब पापोंका नाशकरनेवाला है इस माहात्म्यको द्विज पढ़के निर्मलहो स्वर्गमें प्राप्त होताहै १३। १५ जो इस तीर्थको पढ़ता सुनता है वह सदैव पवित्रहोकर अपनी ज्ञातिमें स्मरणकरनेके योग्य होता है और स्वर्गमें प्राप्त होकर आनन्द करताहै १६ श्रेष्ठ आचरण करनेवाले उत्तम पुरुषोंको यह तीर्थ प्राप्त होते हैं इसीसे हे युधिष्ठिर तुम भी इन तीर्थोंमें कुटिलतासे रहितहोकर स्नानकरो हे राजा तेंने सब प्रकारसे मुझसे

स्तारिताःसर्वे तथैवचपितामहाः १८ प्रयागस्यतुसर्वेते कलांनार्हन्तिषोडशीम्। एवंज्ञा नञ्चयोगञ्च तीर्थंचैवयुधिष्ठिर! १९ बहुक्लेशेन युज्यन्ते तेनयान्तिपराङ्गतिम्। त्रिकालं जायतेज्ञानं स्वर्गलोकंगमिष्यति २० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे नवाधिकशततमोऽध्यायः १०९ ॥

(युधिष्ठिर उवाच) कथंसर्वमिदंप्रोक्तं प्रयागस्यमहामुने!। एतन्नःसर्वमाख्याहि यथाहिममतारयेत् १ (मार्कण्डेय उवाच) शृणुराजन्! प्रयागेतु प्रोक्तंसर्वमिदंजपेत्। ब्रह्माविष्णुस्तथेशानो देवताःप्रभुरव्ययः २ ब्रह्मासृजतिभूतानि स्थावरंजङ्गमञ्चयत्। तान्येतानिपरंलोके विष्णुःसंवर्द्धतेप्रजाः ३ कल्पान्तेतत्समग्रंहि रुद्रःसंहरतेजगत्। तदाप्रयागतीर्थञ्च नकदाचिद्विनश्यति ४ ईश्वरःसर्वभूतानां यःपश्यति स पश्यति। यत्ने नानेनतिष्ठन्ति तेयान्तिपरमाङ्गतिम् ५ (युधिष्ठिर उवाच) आख्याहिमेयथातथ्यं यथे षातिष्ठतिश्रुतिः। केनवाकारणेनैव तिष्ठन्तेलोकसत्तमाः ६ (मार्कण्डेय उवाच) प्रया गेनिवसन्तेते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। कारणंतत्प्रवक्ष्यामि शृणुतत्त्वंयुधिष्ठिर! ७ पञ्चयो जनविस्तीर्णं प्रयागस्यतुमण्डलम्। तिष्ठन्तिरक्षणायात्र पापकर्मनिवारणात् ८ उत्तरेण प्रतिष्ठानाच्छद्मनाब्रह्मातिष्ठति। वेणीमाधवरूपीतु भगवांस्तत्रतिष्ठति ९ माहेश्वरोवटो

पूछकर अपने पितरोंको उद्धार करदियाहै १७।१८ हे युधिष्ठिर वह पहले कहेहुए तीर्थ प्रयागजीकी सोलहवीं कलाकोभी नहीं पहुँचते हैं यहाँतक कि ज्ञान योग तीर्थभी इसकी सोलहवीं कलाको नहीं पहुँचते हैं क्योंकि यह ज्ञान योगादिक बहुत क्लेशसे प्राप्त होते हैं तब परमगति होती है अर्थात् त्रिकाल ज्ञान जब प्राप्त होजाताहै तभी स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है १९। २० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांनवाधिकशततमोऽध्यायः १०९ ॥

युधिष्ठिर बोले-हे महामुने यह सबमाहात्म्य आपने प्रयागकाही कैसे कहा यह सब मुझसे कहो जिससे कि हमारे कुलका उद्धारहो १ मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे राजा इसबातका श्रवणकरो कि प्रयागमें यह सब कहाहुआ जपना चाहिये क्योंकि ब्रह्मा विष्णु और देवदेव शिवजी यह तीनों अविनाशी हैं २ ब्रह्माजी तो स्थावर जंगम भूतोंको रचते हैं और उन्हीं सब रचनाकिये हुए भूतोंको विष्णु भगवान् पालते हैं ३ और फिर कल्पके अन्तमें उस सबप्रजाको शिवजी संहार करते हैं उस संहारकालमेंभी प्रयाग नष्ट नहीं होता जो इसप्रयाग तीर्थको सब भूतोंका ईश्वर जानताहै वही सब कुछ देखताहै ऐसे यत्नसे जो रहते हैं वह परमगतिको पाते हैं ४। ५ हे मुने जिस कारणसे यह प्रसिद्धि है कि प्रयागमें ब्रह्मा विष्णु और शिव स्थित रहते हैं उस कारणको मेरेअर्थ यथार्थ रीतिसे कहो ६ मार्कण्डेयजी कहते हैं कि हे युधिष्ठिर प्रयागमें जो ब्रह्मा विष्णु और शिवजी रहतेहैं उसका कारण मैं तुमसे कहताहूं ७ बीसकोशमें प्रयागके मंडलका विस्तारहै वहाँ पापकर्मोंके निवारण होनेसे रक्षाके निमित्त उत्तरकी ओर प्रतिष्ठान तीर्थमें ब्रह्माजी स्थितहैं वेणीमाधवरूप विष्णु भगवान्‌हैं और शिवजी बडरूप होकर स्थितहोरहे हैं इन सबके सिवाय देवता गन्धर्व सिद्ध और परम ऋषि

भूत्वा तिष्ठतेपरमेश्वरः। ततोदेवाःसगन्धर्वाः सिद्धाश्चपरमर्षयः १० रक्षन्तिमण्डलंनि
त्यं पापकर्मनिवारणात्। यस्मिन्जुहृन्स्वकंपापं नरकञ्चनपश्यति ११ एवंब्रह्माचविष्णु
श्च प्रयागेसमहेश्वरः। सप्तद्वीपाःसमुद्राश्च पर्वताश्चमहीतले १२ रक्षमाणाश्चतिष्ठ
न्तियावदाभूतसंप्लवम्। येचान्येबहवःसर्वे ते तिष्ठन्तियुधिष्ठिर!१३पृथिवीतत्समाश्रित्य
निर्मितादैवतैस्त्रिभिः। प्रजापतेरिन्द्रक्षेत्रं प्रयागमितिविश्रुतम् १४ एतत्पुण्यंपवित्रं वै
प्रयागञ्चयुधिष्ठिर!। स्वराज्यंकुरुराजेन्द्र! भ्रातृभिःसहितोऽनघ! १५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे दशाधिकशततमोऽध्यायः ११०॥

(नन्दिकेश्वर उवाच) भ्रातृभिःसहिताःसर्वे द्रौपद्यासहभार्यया। ब्राह्मणेभ्योनमस्कृ
त्य गुरून्देवानतर्पयत् १ वासुदेवोऽपितत्रैव क्षणेनाभ्यागतस्तदा। पाण्डवैःसहितैःस
र्वैः पूज्यमानस्तुमाधवः २ कृष्णेनसहितैःसर्वैः पुनरेवमहात्मभिः। अभिषिक्तःस्वराज्येच
धर्मपुत्रोयुधिष्ठिरः ३ एतस्मिन्नन्तरेचैव मार्कण्डेयोमहामुनिः। ततःस्वस्तीतिचोक्त्वातु
क्षणादाश्रममागमत् ४ युधिष्ठिरोऽपिधर्मात्मा भ्रातृभिःसहितोऽवसत्। महादानंततोद
त्त्वा धर्मपुत्रोमहामनाः ५ यस्त्विदंकल्पउत्थाय माहात्म्यंपठतेनरः। प्रयागंस्मरतेनित्यं
सयातिपरमंपदम्। मुच्यतेसर्वपापेभ्यो रुद्रलोकंसगच्छति ६ (वासुदेव उवाच) मम
वाक्यञ्चकर्तव्यं महाराज!ब्रवीम्यहम्। नित्यंजपस्वजुहृस्व प्रयागेविगतज्वरः ७ प्रयागं

यह सब पापकर्म को दूर करके उस प्रयागजी के मंडलकी रक्षा करते हैं जहां मनुष्य अपने पापको त्यागकर कभी नरकको नहीं देखता ८। ११ ब्रह्मा विष्णु शिव और सातों द्वीप समुद्र यह सब रक्षितहुए स्थित रहते हैं हे युधिष्ठिर इनके सिवाय अन्य देवता भी प्रलय कालतक वहां स्थित रहते हैं १२। १३ हे राजेन्द्र ब्रह्मादिक देवताओंने इस प्रयाग के आश्रय होके यह पृथ्वी रची है प्रजापतिका इन्द्रक्षेत्र प्रयाग नामसे प्रसिद्ध है १४ हे युधिष्ठिर यह प्रयाग बड़ा पुण्यकारी और पवित्रहै अब तुम भी पाप रहित होकर अपने भाइयों समेत राज्यकरो १५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांदशाधिकशततमोऽध्यायः ११०॥

नन्दिकेश्वर बोले कि हे नारद मार्कण्डेयजी के वचनों पर दृढ़ विश्वासकर युधिष्ठिरादिक सब पाण्डव प्रयागजी में जाकर ब्राह्मणोंको नमस्कार करके गुरु देवतादिकों का तर्पण करतेभये १ वहां क्षणभर मेंही श्रीकृष्णजी भी आगये तब सब पांडवों से पूजेहुए श्रीकृष्णजी और भीमादिक चारों पाण्डव युधिष्ठिर को राज्य तिलक कर देते भये २। ३ और उसी समय मार्कण्डेय मुनि भी वहां आये और स्वस्तिवचन कहकर अपने आश्रमको जातेभये तब धर्मात्मा युधिष्ठिर अपने भाइयों समेत निवास करता भया और महादान देकर बड़े प्रसन्न मन से राज्य करता भया ४। ५ जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर इस माहात्म्य को पढ़ता है और प्रतिदिन प्रयाग का स्मरण करताहै वह परम पद को प्राप्त होकर सब पापों से छूटाहुआ शिवलोकमें प्राप्त होता है ६ श्रीकृष्णजी कहते हैं कि हे महाराज जो मैं कहता हूं उसको तुम सुनो कि प्रतिदिन सन्ताप रहित होकर प्रयागका स्मरण करोगे

स्मरवैनित्यं सहास्माभिर्युधिष्ठिर!। स्वयंप्राप्स्यसिराजेन्द्र! स्वर्गलोकंनसंशयः ८ प्रया
गमनुगच्छेद्वा वसतेवापियोनरः। सर्वपापविशुद्धात्मा रुद्रलोकंसगच्छति ९ प्रतिग्रहादु
पावृत्तः सन्तुष्टोनियतःशुचिः। अहङ्कारनिवृत्तश्च सतीर्थफलमश्नुते १० अकोपनश्च
सत्यश्च सत्यवादीदृढव्रतः। आत्मोपमश्चभूतेषु सतीर्थफलमश्नुते ११ ऋषिभिःक्रत
वःप्रोक्ता देवैश्चापियथाक्रमम्। नहिशक्यादरिद्रेण यज्ञाःप्राप्तुंमहीपते! १२ बहूपकरणा
यज्ञा नानासम्भारविस्तराः। प्राप्यन्तेपार्थिवैरेतैः समृद्धैर्वानरैःक्वचित् १३ योदरिद्रै
रपिविधिः शक्यःप्राप्तुंनरेश्वर!। तुल्योयज्ञफलैःपुण्यैस्तन्निबोधयुधिष्ठिर! १४ ऋषी
णांपरमंगुह्यमिदंभरतसत्तम!। तीर्थानुगमनंपुण्यं यज्ञेभ्योऽपिविशिष्यते १५ दशतीर्थ
सहस्राणि तिस्रःकोट्यस्तथापगाः। माघमासेगमिष्यन्ति गङ्गायांभरतर्षभ! १६ स्व
स्थोभवमहाराज! भुंक्ष्वराज्यमकण्टकम्। पुनर्द्रक्ष्यसि राजेन्द्र! यजमानो विशेषतः १७
(नन्दिकेश्वर उवाच) इत्युक्त्वासमहाभागो मार्कण्डेयोमहातपाः। युधिष्ठिरस्यनृपते
स्तत्रैवान्तरधीयत १८ ततस्तत्रसमाप्लाव्य गात्राणिसगणोनृपः। यथोक्तेनाथविधिना
परांनिर्वृतिमागमत् १९ तथात्वमपिदेवर्षे! प्रयागाभिमुखोभव। अभिषेकन्तुकृत्वाथ
कृतकृत्योभविष्यसि २० (सूत उवाच) एवमुक्त्वाथनन्दीशस्तत्रैवान्तरधीयत। नार

तो निस्सन्देह आपही स्वर्गलोक प्राप्त होजायगा ७।८ जो मनुष्य प्रयागजीको गमन करे अथवा वहां निवास करे वह सब पापोंसे छुटकर रुद्रलोकमें प्राप्त होता है ९ जो ब्राह्मण प्रतिग्रहादिक दानों से निवृत्त सन्तोषवृत्ती नियमी पवित्र और अहंकार से रहित होता है वह तीर्थके फलको प्राप्त होता है १० जो क्रोधरहित सत्यवक्ता और सब जीवोंको अपने समान देखनेवाला होता है ऐसा पुरुष भी तीर्थ के फलको प्राप्त होता है ११ हे राजा जो ऋषियों ने और देवताओं ने क्रमपूर्वक यज्ञ कहे हैं वह दरिद्री पुरुषों से नहीं होसक्ते १२ इसीसे बहुतसी सामग्री युक्त बहुत से विस्तार और आरंभवाले जो यज्ञ हैं वह राजा वा धनाढ्य पुरुषोंकोही प्राप्त होते हैं निर्धनको नहीं होते १३ इसहेतु से हे युधिष्ठिर जो दरिद्री पुरुषों से होनेके योग्य विधिवाले और बड़े यज्ञों के समान फलवाले यज्ञ हैं उनको भी तुम मुझसे सुनो १४ तीर्थ के प्रतिगमन करना यह ऋषियों का परमगुह्य और यज्ञों से भी अधिक फल वाला कहा है १५ हे राजेन्द्र दश हज़ार तीर्थ और तीन करोड़ नदी माघके महीने में श्रीगंगाजी में आकर वास करती हैं १६ हे महाराज स्वस्थचित्त से राज्यको भोगते और विशेष कर यज्ञों को करते हुए तुमभी प्रयागजी के दर्शन करोगे १७ नन्दिकेश्वर कहते हैं कि इस रीतिसे वह महातपवाले महाभागी मार्कण्डेयजी राजायुधिष्ठिर से वर्णन करके वहाँही अन्तर्द्धान होगये १८ इसके अनन्तर अपनी सेना समेत युधिष्ठिर यथोक्तविधि से उस प्रयागतीर्थ में स्नान करके परमानन्दको प्राप्त होताभया १९ हे देवर्षि नारदजी इसीप्रकार से तुम भी प्रयागजी के सन्मुखहो उसमें अभिषेक करके कृतकृत्य हो जाओगे २० सूतजी ऋषियोंसे कहते हैं कि इसरीति से नन्दिकेश्वर नारदजीसे कहकर वहाँही अन्तर्द्धान होगये और नारदजी भी उसीक्षण प्रयागजी के सन्मुख जातेभये

द्रोऽपिजगामाशु प्रयागाभिमुखस्तदा २१ तत्रस्नात्वाचजप्त्वाच विधिदृष्टेनकर्मणा। दानन्दत्त्वाद्विजाग्र्येभ्यो गतःस्वभवनंतदा २२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११॥

(ऋषय ऊचुः) कतिद्वीपाःसमुद्रावा पर्वतावाकतिप्रभो!। कियन्तिचैववर्षाणि तेषुनद्यश्चकाःस्मृताः १ महाभूमिप्रमाणञ्च लोकालोकस्तथैवच। पर्याप्तिपरिमाणञ्च गतिश्चन्द्रार्कयोस्तथा २ एतत्प्रब्रवीहिनःसर्वं विस्तरेणयथार्थवित्। त्वदुक्तमेतत्सकलं श्रोतुमिच्छामहेवयम् ३ (सूत उवाच) द्वीपभेदसहस्राणि सप्तचान्तर्गतानिच। नशक्यन्तेक्रमेणेह वक्तुंवैसकलंजगत् ४ सप्तैवतुप्रवक्ष्यामि चन्द्रादित्यग्रहैःसह। तेषांमनुष्यतर्केण प्रमाणानिप्रचक्षते ५ अचिन्त्याःखलुयेभावास्तांस्तुतर्केणसाधयेत्। प्रकृतिभ्यःपरंयच्च तदचिन्त्यस्यलक्षणम् ६ सप्तवर्षाणिवक्ष्यामि जम्बुद्वीपंयथाविधम्। विस्तरंमण्डलंयच्च योजनैस्तन्निबोधत ७ योजनानांसहस्राणि शतंद्वीपस्यविस्तरः। नानाजनपदाकीर्णं पुरैश्चविविधैःशुभैः ८ सिद्धचारणसङ्कीर्णं पर्वतैरुपशोभितम्। सर्वधातुपिनद्धैस्तैः शिलाजालसमुद्गतैः ९ पर्वतप्रसवाभिश्च नदीभिस्तुसमन्ततः। प्रागायतामहापार्श्वाः षडिमेवर्षपर्वताः १० अवगाह्यह्युभयतः समुद्रौपूर्वपश्चिमौ। हिमप्रायश्च

२१ वहाँ स्नान जपकर और प्रारब्धकर्म के अनुसार ब्राह्मणोंको दान देकर अपने भवनको जाते भये २२॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११॥

ऋषियोंने कहा हे प्रभो सूतजी द्वीप-समुद्र-पर्व्वत और खण्ड कितने २ हैं नदीकौन २ सी हैं १ महाभूमिका प्रमाण लोकालोक पर्व्वतकी प्रमाण सहित समाप्ति और सूर्य्य वा चन्द्रमाकी गति इन सब हमारे प्रश्नों का उत्तर विस्तारपूर्व्वक आप कहिये क्योंकि हम आपके कथारूपी अमृतपान करनेसे तृप्त नहीं होते २ सूतजी बोले कि सातों द्वीपोंके अन्तर्गत हज़ारों द्वीपकहेहैं इनके क्रम पूर्वक कहनेकोतो सब संसार भी समर्थ नहीं है ३। ४ परन्तु चन्द्रमा-सूर्य्य और ग्रहादिकों समेत उन सातों द्वीपोंको अपनीमतिके अनुसार कहकर मनुष्योंके विचारके अनुसार उनके प्रमाणोंको भी वर्णन करूंगा ५ जो प्रयोजन कि विचार में नहीं आसक्ता उसको अनुमान से और जो मनुष्यकी बुद्धिसे परे है वह अचिन्त्यहै सातों खण्डों समेत जंबूद्वीपको विधिपूर्व्वक कहेंगे जितने योजन और मण्डलमें जंबूद्वीपका विस्तार है उसको सुनो ६। ७ इसद्वीपका विस्तार सौ योजन अर्थात् चार सौ कोशकाहै इसमें अनेकप्रकारके मनुष्य पुर और नगर ग्रामादिक शोभितहैं ८ यह द्वीप सिद्ध चारणों से युक्त पर्व्वतों से मंडित सब धातुओंसे और शिलारूप जालोंसे युक्तहै ९ इनके सिवाय पर्व्वतों से उत्पन्नहुई नदियों से चारोंओर को शोभितहै जिसके पूर्व्वकी ओर तो बड़े विस्तार वाले छः प्रकार के पर्व्वतके खण्ड पर्व्वतहैं प्रथम पूर्व पश्चिम के समुद्रोंमें मिलेहुए दो पर्व्वत हैं पहलाहिमवान् पर्व्वत जिसमें शीत बहुत है दूसरा हेमकूट पर्व्वत है उसमें सुवर्णकी खानहै और चारों वर्णों सेशोभित चौवीस हज़ार कोशके प्रमाणका सुवर्णमयसुमेरुपर्व्वत चारोंदिशाओंमें विस्तृत है १०।१२

हिमवान् हेमकूटश्चहेमवान् ११ चातुर्वर्ण्यस्तुसौवर्णो मेरुश्चोल्वमयःस्मृतः। चतुर्वि शत्सहस्राणि विस्तीर्णश्चचतुर्दिशम् १२ वृत्ताकृतिप्रमाणश्च चतुरस्रःसमाहितः। नानावर्णःसमःपार्श्वैः प्रजापतिगुणान्वितः १३ नाभीबन्धनसम्भूतो ब्रह्मणोव्यक्तजन्मनः। पर्वतःश्वेतवर्णस्तु ब्राह्मण्यंतस्यतेनवै १४ पीतश्चदक्षिणेनासौ तेनवैश्यत्वमिष्यते। भृङ्गिपत्रनिभश्चैव पश्चिमेनसमन्वितः। तेनास्यशूद्रतासिद्धा मेरोर्नामार्थकर्म्मतः १५ पार्श्वमुत्तरतस्तस्य रक्तवर्णस्वभावतः। तेनास्यक्षत्रभावःस्यादितिवर्णाःप्रकीर्तिताः १६ नलश्चवैदूर्यमयःश्वेतः पीतोहिरण्मयः। मयूरबर्हवर्णश्च शातकौम्भःसशृङ्गवान् १७ एतेपर्वतराजानः सिद्धचारणसेविताः। तेषामन्तरविष्कम्भो नवसाहस्रमुच्यते १८ मध्येलिलावृतंनाम महामेरोःसमन्ततः। चतुर्विंशत्सहस्राणि विस्तीर्णोयोजनैःसमः १९ मध्येतस्यमहामेरुर्विधूमइवपावकः। वेद्यर्द्धंदक्षिणंमेरोरुत्तरार्द्धंतथोत्तरम् २० वर्षाणियानिसप्तात्र तेषांवैवर्षपर्वताः। द्वेद्वेसहस्रेविस्तीर्णा योजनैर्दक्षिणोत्तरम् २१ जम्बुद्वीपस्य विस्तारस्तेषामायामउच्यते। नीलश्चनिषधश्चैव तेषांहीनाश्चयेपरे २२ श्वेतश्चहेमकूटश्च हिमवान्शृङ्गवांश्चयः। जम्बुद्वीपप्रमाणेन ऋषभःपरिकीर्त्यते २३ तस्माद्द्वादशभागेन हेमकूटोऽपिहीयते। हिमवान्विंशभागेनतस्मादेवप्रहीयते। अष्टाशीतिसहस्राणि हेमकूटोमहागिरिः २४ अशीतिर्हिमवांश्शैल आयतःपूर्वपश्चिमे। द्वीपस्यमण्डलीभावा

यह पर्वत गोल आकृति भूमिमें समान अनेकप्रकार के रंगके सरोवरों वाला ब्रह्माजी के दियेहुए गुणोंसे युक्त है क्योंकि यह पर्व्वत अव्यक्त जन्मवाले ब्रह्माजी की नाभि के बन्धनसे उत्पन्न हुआ है इस पर्व्वतके एक पक्षमें श्वेतवर्ण है इसहेतु से उसमें ब्राह्मण भाव गिनते हैं दूसरीओर दक्षिण दिशामें पीतवर्ण है इसहेतु वैश्यभावहै पश्चिमकी ओर भौंरोंके समान कालावर्ण है इस कारण से शूद्रभाव है और उत्तर की ओर लालवर्ण है इस निमित्त इसका क्षत्रीपना प्रसिद्धहै ऐसे इसकेचारों वर्ण कहे हैं १३।१६ नल पर्व्वत वैदूर्य्यमणियों से जटितहै और श्वेतपीत होकर सुवर्ण के समान वर्ण मोर पंखके सदृश शोभित बड़े २ शृंगोंवालाहै १७ यह पर्व्वत पूर्व कहेहुए पर्व्वतोंका राजा है और सिद्ध चारणों से सेवितहै इन दोनों में हज़ार योजनका अन्तर कहाहै १८ मध्यमें इलावृतनाम पर्व्वतहै वह महामेरुके चारों ओर है उसका विस्तार चौबीस हज़ार योजनका है १९ इन सबके मध्यमें सुमेरु ऐसा देदीप्यमान है जैसी कि निर्धूम अग्नि होती है यह दक्षिणकी ओर आधा दक्षिण मेरुहै और उत्तर की ओर का उत्तर मेरु है २० जो यहां सातवर्ष कहे हैं उनवर्षों में उत्तर दक्षिण वर्ष दो हज़ार योजनवाले विस्तार में हैं २१ अब जंबूद्वीपका विस्तार और उन पर्व्वतोंकी चौड़ाई कहते हैं इनमें नील और निषध दो पर्व्वत बड़े हैं और बाकीके पर्व्वत छोटे हैं २२ इनमें हेमकूट–हिमवान–शृंगवान् और ऋषभ यह श्वेतपर्व्वत जम्बू द्वीपके प्रमाणसे कहे हैं २३ अन्य पर्व्वतों से हेमकूट बारह गुणा बड़ाहै हेमकूट से हिमवान् बीस भाग बड़ाहै हेमकूट महागिरि अट्ठासी हज़ार योजन वर्णन कियाहै २४ हिमवान् पर्व्वत पूर्व्व पश्चिम अस्सी हज़ार योजन चौड़ा है ऐसे मण्डली

ह्रासवृद्धीप्रकीर्त्तिते २५ वर्षाणांपर्वतानाञ्च यथाभेदंतथोत्तरम्। तेषांमध्येजनपदास्तानि वर्षाणिसप्तवै २६ प्रपातविषमैस्तैस्तु पर्वतैरावृतानितु। सप्ततानिनदीभेदैरगम्यानिपरस्परम् २७ वसन्तितेषुसत्वानिनानाजातीनिसर्वशः। इमंहैमवतंवर्षं भारतंनामविश्रुतम् २८हेमकूटंपरंतस्मान्नाम्नाकिम्पुरुषंस्मृतम्। हेमकूटाश्चनिषधं हरिवर्षंतदुच्यते २९ हरिवर्षात्परश्चापि मेरोस्तुतदिलावृतम्। इलावृतात्परंनीलं रम्यकंनामविश्रुतम् ३० रम्यकादपरंश्वेतं विश्रुतंतद्धिरण्यकम्। हिरण्यकात्परश्चैव शृङ्गशाकंकुरंस्मृतम् ३१ धनुःसंस्थेतु विज्ञेयेदेवर्षे! दक्षिणोत्तरे। दीर्घाणितस्यचत्वारि मध्यमंतदिलावृतम् ३२ पूर्वतोनिषधस्येदं वेद्यर्द्धंदक्षिणंस्मृतम्। परन्त्विलावृतंपश्चाद्वेद्यर्द्धन्तुतदुत्तरम् ३३ तयोर्मध्येतुविज्ञेयो मेरुर्यत्रत्विलावृतम्। दक्षिणेनतुनीलस्य निषधस्योत्तरेणतु ३४ उदगायतोमहाशैलो माल्यवान्नामपर्वतः। द्वात्रिंशतासहस्रेण प्रतीच्यांसागरानुगः ३५ माल्यवान्वैसहस्रैक आनीलनिषधायतः। द्वात्रिंशत्त्वेवमप्युक्तः पर्वतोगन्धमादनः ३६ परिमण्डलयोर्मध्ये मेरुःकनकपर्वतः। चातुर्वर्ण्यसमोवर्णैश्चतुरस्रःसमुच्छ्रितः ३७ नानावर्णःसपार्श्वेषु पूर्वान्तेश्वेतउच्यते। पीतन्तुदक्षिणंतस्य भृङ्गिपत्रनिभम्परम्। उत्तरंतस्यरक्तंवै इतिवर्णसमन्वितः ३८ मेरुस्तुशुशुभेदिव्यो राजवत्सतुवेष्टितः। आदित्यतरुणाभासो विधूमइवपावकः ३९ योजनानांसहस्राणि चतुराशीतिउच्छ्रितः। प्रविष्टःषोडशाधस्तादष्टाविंशतिविस्तृतः ४० विस्तराद्द्विगुणश्चास्य परीणाहःसमन्ततः। सपर्वतोमहादिव्यो दिव्यौषधि

भाव होनेसे द्वीपकी ह्रास अर्थात् घटना और वृद्धि कहदी है २५ वर्ष और पर्व्वतों का जैसा भेद है वैसाही उत्तर है उन वर्षों के बीचमें देशवसते हैं २६ यह वर्ष कि ले के समान पर्व्वतों से आवृत है और इन पर्व्वतोंका परस्पर आना जाना केवल सातही नदियों करके बन्दहै २७ इन खंडों में सब जगह अनेक जाति के जीव बसते हैं २८ हे मकूट नामसे किम्पुरुष कहा है हेमकूटसे निषध पर्य्यन्त हरिवर्ष कहाजाता है २९ हरि वर्ष से परे मेरु मेरु से परे इलावृत और इलावृत से परे नीलरम्यक नामसे विख्यातहै ३० रम्यक से परे श्वेत पर्व्वत है वह हिरण्यकनाम से विख्यातहै हिरण्यक से परे शृंगशाक है उसीको कुर भी कहते हैं ३१ और दक्षिण उत्तर दो वर्ष धनुषाकार चार सौ योजन चौड़े हैं इनके मध्यमें इलावृतहै ३२ इसमें आधा तो दक्षिण इलावृतहै और आधा उत्तर इलावृत है ३३ इनके बीचो बीच सुमेरु-सुमेरु के दक्षिण नीलपर्व्वत और उत्तर में निषधहै ३४ और माल्य वान् पर्व्वत बत्तीस हज़ार योजन लम्बा होकर पश्चिम समुद्रमें प्राप्तहै ३५ यह माल्यवान् नील और निषध पर्व्वत पर्य्यन्त एक हज़ार योजनहै और बत्तीस योजन गन्धमादन है ३६ इस मंडल के बीचमें सुवर्ण का सुमेरु पर्व्वत है वह चारों-वर्णोंके समान चार रंगवाला चौखूंटा और ऊंचा है ३७ पूर्वदिशाके अन्तमें श्वेत पर्व्वत है वह भृंगिपत्र के समान दक्षिणमें पीत है और उत्तरमें रक्त है ३८ उन पर्व्वतों के मध्य में मेरुपर्व्वत तरुण सूर्य्य और निर्धूम अग्नि के समान प्रकाशमान है ३९ वह सुमेरु चौरासी हज़ार योजन ऊंचाहै सोलह हज़ार पृथ्वीमें है और अट्ठाईस हज़ार योजन

समन्वितः ४१ भुवनैरावृतःसर्वैर्जातरूपपरिष्कृतैः । तत्रदेवगणाश्चैव गन्धर्वासुरराक्षसाः। शैलराजेप्रमोदन्ते सर्वतोऽप्सरसाङ्गणैः ४२ सतुमेरुःपरिवृतो भुवनैर्भूतभावनैः। यस्येमेचतुरादेशा नानापार्श्वेषुसंस्थिताः ४३ भद्राश्वंभारतञ्चैव केतुमालञ्चपश्चिमे। उत्तराश्चैवकुरवः कृतपुण्यप्रतिश्रयाः ४४ विष्कम्भपर्वतास्तद्वन् मन्दरोगन्धमादनः। विपुलश्चसुपार्श्वश्च सर्वरत्नविभूषितः ४५ अरुणोदंमानसञ्च सितोदंभद्रसंज्ञितम्। तेषामुपरिचत्वारि सरांसिचवनानिच ४६ तथाभद्रकदम्बस्तु पर्वतेगन्धमादने। जम्बूवृक्षस्तथाश्वत्थो विपुलेऽथवटःपरम् ४७ गन्धमादनपार्श्वेतु पश्चिमेऽमरगण्डिकः। द्वात्रिंशतिसहस्राणि योजनैःसर्वतःसमः ४८ तत्रतेशुभकर्माणः केतुमालाःपरिश्रुताः। तत्रकालानलाःसर्वे महासत्वामहाबलाः ४९ स्त्रियश्चोत्पलवर्णाभाः सुन्दर्यःप्रियदर्शनाः। तत्रदिव्योमहावृक्षः पनसःपत्रभासुरः ५० तस्यपीत्वाफलरसं संजीवन्तिसमायुतम्। तस्यमाल्यवत पार्श्वे पूर्वेपूर्वातुगण्डिका। द्वात्रिंशच्चसहस्राणि तत्रापिशतमुच्यते ५१ भद्रश्च तत्रविज्ञेयो नित्यंमुदितमानसः। भद्रमालवनंतत्र कालाम्रश्चमहाद्रुमः ५२ तत्रतेपुरुषाःश्वेता महासत्वामहाबलाः। स्त्रियःकुमुदवर्णाभाः सुन्दर्यःप्रियदर्शनाः ५३ चन्द्रप्रभाश्चन्द्रवर्णाः पूर्णचन्द्रनिभाननाः। चन्द्रशीतलगात्राश्च स्त्रियोह्युत्पलगन्धिकाः ५४ दशवर्षसहस्राणि आयुस्तेषामनामयम्। कालाम्रस्यरसंपीत्वा तेसर्वेस्थिरयौवनाः ५५ (सूत

चौड़ा है ४० यह ऊपर की ओर इस्से दुगुना चौड़ा होकर पर्व्वतों में महादिव्य उत्तम ओषधियों से युक्त है ४१ इस शैलपर सुवर्ण के स्थानों में देवता गन्धर्व और राक्षस आनन्द करते हैं ४२ वह सुमेरु भूत भावन भुवनों से युक्त है और पक्षमें चार देशस्थित हैं अर्थात् दक्षिणमें भद्राश्वभारत और केतुमाल और उत्तर में पुण्यात्मा कुरुदेश हैं ४३। ४४ इनकी मर्यादा मन्दर-- गन्धमादन--विपुल और सुपार्श्व यह सब अनेक रत्नों से भूषितहैं ४५ और इन पर्व्वतों पर अरुणोदय-- मानस सितोद-- और भद्रसंज्ञिक यह सरोवर और बनहैं ४६ और कदम्ब-- जामन - पीपल और वड यह चार बड़े २ वृक्ष हैं ४७ गन्धमादन के पास पश्चिममें बत्तीस हज़ार योजन का अमर गंडक पर्व्वत है ४८ वहाँ संपूर्ण शुभकर्मी मनुष्य वासकरते हैं उन सबका तेज काल और अग्नि के समान है और बड़े २ शरीर धारी और पराक्रमी हैं वहाँ की स्त्रियां कमलके समान वर्णवाली महा सुन्दर और प्रिय दर्शन वाली हैं उस माल्यवान् पर्व्वत में सुन्दर फाल सों के वृक्ष पत्तों से भूपित हैं ४९। ५० उन फालसों के रसको पीकर वहाँ के बासी दशहज़ार वर्ष जीवते हैं माल्यवान्से पूर्व्वकी ओर गंडकी नदीहै वह बत्तीसहजार योजन विस्तारवाली है ५१ भद्राश्वखंड के वासी मनुष्य सबकालमें आनन्दपूर्व्वक रहतेहैं उसी खंडमें भद्रमाल बनहै जहां बहुतबड़ा कालाम्रका वृक्ष है ५२ वहांके पुरुष श्वेतवर्णवाले महाशरीरी और पराक्रमी हैं स्त्रियां कमलमुखवाली महासुन्दरी और प्रियदर्शनाहैं ५३ उन स्त्रियों का चन्द्रमाके समानवर्ण मुख शीतलता कान्ति तेज और कमलकीसी गन्धिवाला शरीरहै ५४ उनकी आयु रोगोंसे रहित दशहज़ार वर्षोंकी और काले

उवाच) इत्युक्तवान्ऋषीन्ब्रह्मा वर्षाणिचनिसर्गतः। पूर्वमममानुग्रहकृद्भूयः किं वर्णयामिवः ५६ एतच्छ्रुत्वावचस्तेतु ऋषयःसंशितव्रताः। जातकौतूहलाःसर्वे प्रत्यूचुस्तेमुदान्विताः ५७ (ऋषय ऊचुः) पूर्वापरौसमाख्यातौ यौदेशौतौत्वयामुने!। उत्तराणाञ्चवर्षाणां पर्वतानाञ्चसर्वशः ५८ आख्याहिनोयथातथ्यं येचपर्वतवासिनः। एवमुक्तस्तुऋषिभिस्तेभ्यस्त्वाख्यातवान्पुनः ५९ (सूत उवाच) शृणुध्वंयानिवर्षाणि पूर्वोक्तानिचवैमया। दक्षिणेनतुनीलस्य निषधस्योत्तरेणतु ६० वर्षंरमणकनाम जायन्तेयत्रवैप्रजाः। रतिप्रधानाविमला जायन्तेयत्रमानवाः। शुक्लाभिजनसम्पन्नाः सर्वेतेप्रियदर्शनाः ६१ तत्रापिचमहावृक्षो न्यग्रोधोरोहिणोमहान्। तस्यापितेफलरसं पिवन्तोवर्तयन्तिहि ६२ दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानिच। जीवन्तितेमहाभागाः सदाहृष्टानरोत्तमाः ६३ उत्तरेणतु श्वेतस्य पार्श्वेशृङ्गस्यदक्षिणे। वर्षंहिरण्वतंनाम यत्रहैरण्वतीनदी ६४ महाबलामहासत्वा नित्यंमुदितमानसाः। शुक्लाभिजनसम्पन्नाः सर्वेचप्रियदर्शनाः ६५ एकादशसहस्राणि वर्षाणांतेनरोत्तमाः। आयुःप्रमाणंजीवन्ति शतानिदशपञ्चच ६६ तस्मिन्वर्षेमहावृक्षो लकुचःपत्रसंश्रयः। तस्यपीत्वाफलरसं तत्रजीवन्तिमानवाः ६७ शृङ्गसाह्वस्यशृङ्गाणि त्रीणितानिमहान्तिवै। एकंमणिमयंतत्र एकन्तुकनकान्वितम्। सर्वरत्नमयंचैकं भुवनैरुपशोभितम् ६८ उत्तरेचास्यशृङ्गस्य समुद्रान्तेचदक्षिणे। कुरवस्तत्रतद्वर्षं पुण्यंसिद्ध

आम्रके रसके पीनेसे संपूर्ण वासी स्थिर यौवनवालेहैं ५५ सूतजी कहतेहैं कि हेऋषियो इस प्रकार से वर्षोंकी रचना ब्रह्माजीने ऋषियोंसे वर्णनकरीहै और उन्हीं ब्रह्माजीने पूर्व्वके वर्षोंकीरचना मुझ से कहीहै और मैंने तुम्हारेआगे वर्णनकीहै ५६ सूतजीके ऐसे सुन्दर वचन सुनकर संपूर्णऋषि आनंदितहुए और यह वचनबोले ५७ कि हेमुने जो आपने पूर्व और अपर दो देश कहेहैं उनमें से उत्तर वर्षोंका और पर्व्वतोंका यथार्थभेद वर्णनकीजिये ५८ इसके विशेष हे सूतजी आप पर्व्वत वासियोंका भी भेद कहो इसप्रकार ऋषियोंके पूछनेपर सूतजी फिर संपूर्ण वृत्तान्त कहतेभये ५९ हेऋषियो जो मैंने पहलेवर्ष कहेहैं जिनके कि दक्षिणमें नील पर्वत और उत्तरमें निषधहैं उनको कहताहूं तुम श्रवण करो ६० वह रमणकनाम वर्ष है वहांके मनुष्य अति सुन्दर और विषयासक्त हैं परन्तु उनका शुक्लकुल होकर अतिप्रियदर्शन हैं ६१ वहांभी एक बहुत बड़ा वड़कावृक्ष है वहांके मनुष्य उसके फलके रसको पान करते हैं ६२ इसीसे उस रमणक वर्षके मनुष्य ग्यारह हज़ार वर्ष जीते हैं और महाभाग उत्तम कहाकर सदाप्रसन्न रहतेहैं ६३ इसके उत्तरमें श्वेत पर्वत दक्षिणमे शृंग पर्व्वत वह हिरण्वतनाम वर्ष है और वहांही हिरण्वती नाम नदी है ६४ हिरण्वत वर्ष के मनुष्यभी बहुत बली बड़े शरीरधारी आनन्दसे रहनेवाले स्वच्छ कुलवाले और प्रिय दर्शनवाले हैं ६५ इन मनुष्योंकीभी ग्यारहहज़ार पन्द्रहसौ वर्षकी आयुहै और परम उत्तम नर कहलाते हैं ६६ उस वर्षमें लकुच अर्थात् बड़हलके सुन्दर पत्तोंवाले वृक्षहैं उनकेभी फलोंका रस मनुष्य पीकर बहुत वर्ष जीते हैं ६७ और शृंगनाम जो पर्व्वतहै उसके तीन बड़े २ शृंग हैं एक शृंगतो मणियोंसे युक्तहै दूसरा संपूर्ण रत्नोंसे

निषेवितम् ६६ तत्रवृक्षामधुफला दिव्यामृतमयापगाः। वस्त्राणितेप्रसूयन्ते फलैश्चाभ रणानिच ७० सर्वकामप्रदातारः केचिद्वृक्षामनोरमाः। अपरेक्षीरिणोनाम वृक्षास्तत्र मनोरमाः। येरक्षन्तिसदाक्षीरं षट्पञ्चामृतोपमम् ७१ सर्वामणिमयीभूमिः सूक्ष्माकाञ्चन वालुका। सर्वत्रसुखसंस्पर्शा निःशब्दाःपवनाःशुभाः ७२ देवलोकच्युतास्तत्र जायन्तेमा नवाःशुभाः। शुक्लाभिजनसम्पन्नाः सर्वेतेस्थिरयौवनाः ७३ मिथुनानिप्रजायन्ते स्त्रियश्चा प्सरसोपमाः। तेषान्तेक्षीरिणांक्षीरं पिबन्तिह्यमृतोपमम् ७४ एकाहाज्जायतेयुग्मं समञ्चै वविवर्द्धते। समंरूपंचशीलञ्च समञ्चैवम्रियन्तिवै ७५ एकैकमनुरक्ताश्च चक्रवाकमिव ध्रुवम्। अनामयाह्यशोकाश्च नित्यंमुदितमानसाः ७६ दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशता निच। जीवन्तिचमहासत्वा नचान्यास्त्रीप्रवर्त्तते ७७ (सूत उवाच) एवमेवनिसर्गोवै वर्षाणांभारतेयुगे। दृष्टःपरमधर्मज्ञाः किम्भूयःकथयामिवः ७८ आख्यातास्त्वेवमृषयः सू तपुत्रेणधीमता। उत्तरश्रवणंभूयः पप्रच्छुःसूतनन्दनम् ७६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेद्वादशोत्तरशततमोऽध्यायः ११२॥

(ऋषय ऊचुः) यदिदंभारतंवर्षं यस्मिन्स्वायम्भुवादयः। चतुर्दशैवमनवः प्रजासर्गं ससर्जिरे १ एतद्वेदितुमिच्छामः सकाशात्तवसुव्रत!। उत्तरश्रवणंभूयः प्रब्रूहिवदतांवर! २

जटितहै और तीसरा सुन्दर भुवनों करके शोभित है ६८ और जिसके उत्तरमें शृंग और दक्षिण में समुद्रका अन्तहै वह पवित्र कुरुदेश सिद्धोंकरके सेवितहै ६९ वहांकेभी मीठे फलवाले वृक्ष हैं और अमृतमय नदी हैं वह सुन्दरवृक्ष अपने फलोंकरके वस्त्र आभूषणोंको उत्पन्न करतेहैं ७० इनमें बहुतसे सुन्दरवृक्ष सब कामनाओंके देनेवालेहैं और बहुतसे अमृतके तुल्य दूध उत्पन्न करनेवालेहैं ७१ वहांकी सब भूमि मणिमय और सुवर्णकी वालूसे युक्तहै वहांहीएक सब सुखोंका स्पर्श करनेवाला शब्दरहित शुभ पर्व्वतहै ७२ वहां देवलोकसे आयेहुए मनुष्य जन्म लेतेहैं वह शुक्ल कुलसे युक्त होकर स्थिर यौवनवालेहैं ७३ वहां कन्या और पुत्रका जोड़ा उत्पन्न होताहै वह स्त्रीपुरुष इकट्ठे होकर अप्सरा और गन्धर्वोंके समान रूपवाले अमृतके समान वृक्षोंका दूधपीतेहैं ७४ एकही दिन कन्यापुत्र जन्मते बराबर बढतेहुए समानहीं रूप शीलवाले होकर एकही दिन मरतेहैं ७५ उन एक२ जोड़ेमें चकवा चकवीके समान प्रीतिहोतीहै और सदैव रोग शोकसेरहित आनन्द मनवालेहोतेहैं ७६ वह महासत्व वाले ग्यारहहज़ार वर्ष जीवतेहैं और सदैवसुखपूर्व्वक अपनीआयुको व्यतीतकरतेहैं ७७ सूतजीकहते हैं कि हेऋषीश्वरो भारत युगमें ऐसे २ वर्षोंकी रचना देखीहै वह सब मैंने वर्णनकरी हे धर्मज्ञलोगो अब क्या सुनना चाहतेहो ७८ बुद्धिमान् सूतपुत्रके ऐसे वचन सुनकर ऋषिलोग फिर उत्तर श्रवण में सूतनन्दन से पूछतेभये ७९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वादशोत्तरशततमोऽध्यायः ११२॥

ऋषियोंने पूछा हे सूतजी स्वायंभुवादि चौदहमनु भारतवर्ष और प्रजाओंको कैसे रचतेभये १ हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ महाशुभव्रत यह सब रचना और उत्तर श्रवण वर्णन कीजिये २ ऋषियों के ऐसे

एतच्छ्रुत्वाऋषीणांतु प्राब्रवीद्रोमहर्षणिः। पौराणिकस्तदासूत ऋषीणांभावितात्मनाम् ३
बुद्ध्याविचार्य्यबहुधा विमृश्यचपुनःपुनः। तेभ्यस्तुकथयामास उत्तरश्रवणंतदा ४ (सूत उवाच) अथाहंवर्णयिष्यामि वर्षेऽस्मिन्भारतेप्रजाः। भरणात्प्रजनाच्चैव मनुर्भरतउच्यते
५ निरुक्तवचनैश्चैववर्षंतद्भारतंस्मृतम्। यतःस्वर्गश्चमोक्षश्च मध्यमश्चापिहिस्मृतः६
नखल्वन्यत्रमर्त्यानां भूमौकर्म्मविधिःस्मृतः। भारतस्यास्यवर्षस्य नवभेदान्निबोधत ७
इन्द्रद्वीपःकेसरश्च ताम्रपर्णोगभस्तिमान्। नागद्वीपस्तथासौम्यो गन्धर्वस्त्वथवारुणः८
अयंतुनवमस्तेषां द्वीपःसागरसंवृतः। योजनानांसहस्रन्तु द्वीपोऽयंदक्षिणोत्तरः ९ आयतस्तुकुमारीतो गङ्गायाःप्रवहावधिः। तिर्यगूर्ध्वंतुविस्तीर्णः सहस्राणिदशैवतु १० द्वीपो ह्युपनिविष्टोऽयं म्लेच्छैरन्तेषुसर्वशः। यवनाश्चकिराताश्च तस्यान्तेपूर्वपश्चिमे ११ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्या मध्येशूद्राश्चभागशः। इज्यायुतवाणिज्यादिवर्तयन्तोव्यवस्थिताः १२
तेषांसव्यवहारोऽयं वर्तनन्तुपरस्परम्। धर्मार्थकामसंयुक्तोवर्णानान्तुस्वकर्म्मसु १३ सङ्कल्पपञ्चमानान्तु आश्रमाणांयथाविधि। इहस्वर्गापवर्गार्थंप्रवृत्तिरिहमानुषे १४ यस्त्वयंमानवोद्वीपस्तिर्यग्यामःप्रकीर्त्तितः। यएनंजयतेकृत्स्नंससम्राडितिकीर्त्तितः १५ अयंलोकस्तुवैसम्राडन्तरिक्षजितांस्मृतः। स्वराडसौस्मृतोलोकः पुनर्वक्ष्यामिविस्तरात् १६
सप्तचास्मिन्महावर्षे विश्रुताःकुलपर्वताः। महेन्द्रोमलयःसह्यः शुक्तिमानृक्षवानपि
१७ विन्ध्यश्चपारियात्रश्च इत्येतेकुलपर्वताः। तेषांसहस्रशश्चान्ये पर्वतास्तुसमीपतः

वचन सुनकर पुराणोंके ज्ञाता सूतजी ऋषियोंको शुद्धभावयुक्त जानकर बहुत विचार पूर्व्वक वारंवार निश्चयकरके उनके अर्थ उत्तर श्रवण वर्णन करने लगे ३। ४ सूतजीकहतेहैं हे ऋषिलोगो इसभारत वर्ष में प्रजाओंका वर्णन करूंगा और वह भी कहूंगा जैसे कि पोषणकरने और जन्मलेने से भरतमनु कहाताहै ५ इसीसे इसको भारतवर्ष कहाहै इसी भारतवर्षमें स्वर्ग मोक्ष और नरकलोक तक होता है ६ भारतवर्षके विना इसभूमिमें मनुष्योंका कर्म विधान नहीं होताहै इस भारतवर्ष के नौ भेद हैं ७ इन्द्रद्वीप–केसर–ताम्रपर्ण–गभस्तिमान्–नागद्वीप–सौम्य–गन्धर्व–वारुण और नवांद्वीप सागरसे आच्छादितहै यह पूराद्वीप दक्षिण उत्तरकी ओर हज़ार योजनके विस्तारमेंहै ८। ९ और गंगाके प्रवाह पर्य्यन्त चौडाई में दशहज़ार योजनहै १० इसद्वीपके पूर्व्व पश्चिममें म्लेच्छ यवन और किरात लोग वसतेहैं ११ मध्यमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र वसतेहैं और यज्ञ युद्ध वाणिज्य और सेवा कर्ममें चारोंवर्ण अपने अपने कर्मोंको करतेहैं १२ सब वर्ण धर्म अर्थ काममें संयुक्त अपने २ कर्मोंमें स्थितहैं १३ इन चारोंवर्णोंके सिवाय पांचवें आश्रममें मनुष्य शरीरहीमें स्वर्ग मोक्षकी प्रवृत्ति कहीहै १४ इस मानवनामद्वीप को तिर्य्यग् याम भी कहते हैं जो इस सम्पूर्णको जीतलेताहै उसको सम्राट् कहतेहैं १५ यह सम्राट् स्वर्गवासियों के जीतनेवाले को कहतेहैं और लोक स्वराट्है इसको फिर विस्तार पूर्वक कहूंगा १६ इस महावर्षमें सात कुल पर्व्वतहैं उनको कहताहूं महेन्द्र–मलय–सह्य–शुक्तिमान्–ऋक्षवान्–१७ विन्ध्य और पारियात्र यह सातबड़े पर्व्वतहैं और इनके छोटे

१८ अभिज्ञातस्ततश्चान्ये विपुलाश्चित्रसानवः । अन्ये तेभ्यःपरिज्ञाता ह्रस्वाह्रस्वोप जीविनः १९ तेर्विमिश्राजानपदा आर्याम्लेच्छाश्चसर्वतः। पिबन्तिबहुलानद्यो गङ्गासि न्धुःसरस्वती २० शतद्रुश्चन्द्रभागाच यमुनासरयूतथा । ऐरावतीवितस्ताच विशाला देविकाकुहूः २१ गोमतीधौतपापाच बाहुदाचद्दषद्वती । कौशिकीतुतृतीयाच निश्चला गण्डकीतथा। इक्षुर्लौहितमित्येता हिमवत्पार्श्वनिःसृताः २२ वेदस्मृतिर्वेत्रवती वृत्रघ्नी सिन्धुरेवच। पर्णाशानर्मदाचैव कावेरीमहतीतथा २३ पाराचधन्वतीरूपा विदुषावेणु मत्यपि। शिप्राह्यवन्तीकुन्तीच पारियात्राश्रिताःस्मृताः २४ मन्दाकिनीदशार्णाच चित्र कूटातथैवच । तमसापिप्पलीश्येनी तथाचित्रोत्पलापिच २५ विमलाचञ्चलाचैव तथा चधूतवाहिनी । शुक्तिमन्तीशुनीलज्जा मुकुटाह्लदिकापिच। ऋष्यवन्तप्रसूतास्तानद्यो मलजलाःशुभाः २६ तापीपयोष्णीनिर्विन्ध्या क्षिप्राचऋषभानदी। वेणावैतरणीचैव वि श्वमालाकुमुद्वती २७ तोयाचैवमहागौरी दुर्गमातुशिलातथा। विन्ध्यपादप्रसूतास्ताः सर्वाःशीतजलाःशुभाः २८ गोदावरीभीमरथी कृष्णवेणीचवञ्जुला। तुङ्गभद्रासुप्रयोगा वाह्याकावेरीचैवतु। दक्षिणापथनद्यस्ताः सह्यपादाद्विनिःसृताः २९ कृतमालाताम्रपर्णी पुष्पजाह्युत्पलावती। मलयप्रसूतानद्यस्सर्वाः शीतजलाःशुभाः३० त्रिभागाऋषिकुल्या च इक्षुदात्रिदिवाचला। ताम्रपर्णीतथामूली शरवाविमलातथा। महेन्द्रतनयाःसर्वाः प्र ख्याताःशुभगामिनीः ३१ काशिकासुकुमारीच मन्दगामन्दवाहिनी। कृपाचपाशिनीचैव

हजारों पर्वतहैं १८ यह सातोंपर्व्वत विचित्र शिखरोंवालेहैं छोटे पर्व्वत थोड़ी उपजवाले हैं केवल बड़े २ पर्व्वतोंसे जानेजाते हैं १९ इन देशोंमें आर्य्य मनुष्य और म्लेच्छ हैं और जिन नदियोंका जलपीतेहैं उनको कहतेहैं गङ्गा–सिन्धु–सरस्वती २० सतलज–चन्द्रभागा–यमुना–सरयू–ऐरावती वितस्ता–विशाला–देविका–कुहू २१ गोमती–धौतपापा–बाहुदा–दृषद्वती–कौशिकी–निश्चला–गण्डकी–इक्षु और लौहित–यह नदी हिमवान् पर्व्वतसे निकली हैं २२ और वेद स्मृति–वेत्रवती–वृत्रघ्नी–सिन्धु–पर्णाशा–नर्मदा–कावेरी–महती २३ पारा–धन्वती–रूपा–विदुषा–वेणुमती–शिप्रा अवन्ती और कुन्ती यह नदी पारियात्र पर्व्वतसे निकली हैं २४ और मन्दाकिनी–दशार्णा–चित्रकूटा तमसा–पिप्पली–श्येनी–चित्रोत्पला २५ विमला–चंचला–धूतवाहिनी–शुक्तिमन्ती शुनी–लज्जा मुकुटा और ह्रदिका– यह सुन्दर जलवाली नदी ऋष्यवान् पर्व्वतसे निकली हैं २६ और तापी– पयोष्णी– निर्विन्ध्या– क्षिप्रा– ऋषभा– वेणा– वैतरणी– विश्वमाला– कुमुद्वती २७ तोया– महागौरी– दुर्गमा– शिला– यहठंढे जल वाली नदी विन्ध्याचलसे निकली हैं २८ और गोदावरी– भीमरथी– कृष्णवेणी– वंजुला– तुंगभद्रा– सुप्रयोगा– वाह्या– कावेरी– यह सब नदियां दक्षिण में बहने वाली सह्य पर्व्वत से निकली हैं २९ और कृतमाला– ताम्रपर्णी– पुष्पजा और उत्पलावती यह शीतल जलवाली नदी मलयाचलसे निकली हैं ३० और त्रिभागा– ऋषिकुल्या– इक्षुदा– त्रिदिवा– चला ताम्रपर्णी– मूली– शरवा– विमला यह सुन्दर बहने वाली सबनदी महे

शुक्तिमन्तात्मजास्तुताः ३२ सर्वाःपुण्यजलाःपुण्याः सर्वगाश्चसमुद्रगाः। विश्वस्य मातरःसर्वाः सर्वपापहराःशुभाः ३३ तासांनद्युपनद्यश्च शतशोऽथसहस्रशः। तास्विमेकुरुपाञ्चालाः शाल्वाश्चैवसजाङ्गलाः ३४ शूरसेनाभद्रकारा बाह्याःसहपटच्चराः। मत्स्याःकिराताःकुल्याश्च कुन्तलाःकाशिकोशलाः ३५ आवन्ताश्चकलिङ्गाश्च मूकाश्चैवान्धकैःसह। मध्यदेशाजनपदाः प्रायशःपरिकीर्त्तिताः ३६ सह्यस्यानन्तरेचैते तत्रगोदावरी नदी। पृथिव्यामपिकृत्स्नायां सप्रदेशोमनोरमः ३७ यत्रगोवर्द्धनोनाम मन्दरो गन्धमादनः। रामप्रियार्थंस्वर्गायावृक्षादिव्यास्तथौषधीः ३८ भरद्वाजेनमुनिना प्रियार्थमवतारिताः। ततःपुष्पवरोदेशस्तेन जज्ञेमनोरमः ३९ वाह्लीकावाटधानाश्च आभीराःकालतोयकाः। पुरन्ध्राश्चैवशूद्राश्च पल्लवाश्चात्तखण्डिकाः ४० गान्धारायवनाश्चैव सिंधुसौवीरमद्रकाः। शकाद्रुह्याःपुलिन्दाश्च पारदाहारमूर्तिकाः ४१ रामठाः कण्टकाराश्च कैकेयादशनामकाः। क्षत्रियोपनिवेश्याश्च वैश्याःशूद्रकुलानिच ४२ अत्रयोऽथभरद्वाजाः प्रस्थला सदसेरकाः। लम्पकास्तलगानाश्च सैनिकाःसहजाङ्गलैः। एतेदेशाउदीच्यास्तु प्राच्यान्देशान्निबोधत ४३ अङ्गावङ्गामद्गुरका अन्तर्गिरिबहिर्गिरी। सुह्मोत्तराःप्रविजयाः मार्गवागेयमालवाः ४४ प्राग्ज्योतिषाश्चपुण्ड्राश्च विदेहास्ताम्रलिप्तकाः। शाल्वमागधगोनर्दाः प्राच्याजनपदास्स्मृताः ४५ तेषांपरेजनपदा दक्षिणापथवासिनः। पाण्ड्याश्चकेरलाश्चैव चोलाःकुल्यास्तथैवच ४६ सेतुकाःसूतिकाश्चैव कुप

न्द्र पर्व्वत से निकली हैं ३१ और काशिका– सुकुमारी - मंदगा– मन्दवाहिनी– कृपा– पाशिनी– यह नदियां शुक्तिमन्तसे निकली हैं ३२ यह कहीहुई संवनदियां महापवित्र जलवाली समुद्रगामी जगत्की माता और पापों की हरने वालीहैं ३३ इन नदियों के सिवाय पर्व्वतों से हज़ारों नदी उपनदी आदिक निकलती हैं इनके मध्यमें कुरु– पांचाल–शाल्व–जांगल– ३४ शूरसेन भद्रकार- बाह्य– पटच्चर– मत्स्य– किरात– कुल्य– कुंतल– काशिकोशल– ३५ आवन्त– कलिंग– मूक और अन्धक– यह सब मध्यदेशकहे हैं ३६ यह सब देश सह्य पर्व्वतके पास २ हैं और जहाँ जहाँ गोदावरी नदी है वहदेश सुन्दर कहाता है ३७ और जहां गोवर्द्धन–मन्दराचल–गन्धमादन–यहसब पर्व्वत हैं वहाँ रामचन्द्रजी के प्यार के निमित्त स्वर्गमें होने वाली औषध ३८ भारद्वाज मुनिने उतारी हैं उन्हींसे सुन्दर पुष्प वरदेश उत्पन्नहुआ है ३९ और वाह्लीक– वाटधान– आभीर–कालतोयक– यहसब शूद्रों के देश हैं पल्लव– आत्तखंडिक ४० गांधार– यहयवनों के देश हैं सिन्धु– सौवीर– मद्रक– शक– द्रुह्य– पुलिन्द– पारदा– हारमूर्त्तिक ४१ रामठ– कंटकार– और कैकेय इन दश देशों में क्षत्रिय वैश्य– और शूद्रबसते हैं ४२ और आत्रेय– भरद्वाज– प्रस्थल– सदसेरक- लंपक– आस्तल– गान– सैनिक– और जांगल यह देश तो उत्तरमें हैं अबपूर्व के देशों को कहताहूं उनको सुनो ४३ अंग –वंग – मद्गुरक– अन्तर्गिरि–बहिर्गिरि–सुह्म– उत्तर– प्रविजय– मार्ग–वागेय–मालव–४४ प्राग्ज्योतिप–पुण्ड्र–विदेह–ताम्रलिप्तक–शाल्व–मागध और गोनर्द यहसबपूर्वके

थावाजिवासिकाः। नवराष्ट्रामाहिषिकाः कलिङ्गाश्चैवसर्वशः ४७ कारूषाश्चसहैषीका आटव्याःशवरास्तथा। पुलिन्दाविन्ध्यपुषिका वैदर्भादण्डकैःसह ४८ कुलीयाश्चसिरालाश्च रूपसास्तापसैःसह। तथातैत्तिरिकाश्चैव सर्वेकारस्करास्तथा ४९ वासिकाश्चैवये चान्येयेचैवान्तरनर्म्मदाः। भारुकच्छाःसमाहेयाः सहसारस्वतैस्तथा ५० काच्छीकाश्चैव सौराष्ट्रा आनर्ताअर्बुदैःसह। इत्येतेअपरान्तास्तु शृणुयेविन्ध्यवासिनः ५१ मालवाश्च करूषाश्च मेकलाश्चोत्कलैःसह। औण्ड्रामाषादशार्णाश्च भोजाःकिष्किन्धकैःसह ५२ स्तोशलाःकोसलाश्चैव त्रैपुरावैदिशास्तथा। तुमुरास्तुम्बराश्चैव पद्गमानैषधैःसह ५३ अरूपाःशौण्डिकेराश्च वीतिहोत्राअवन्तयः। एतेजनपदाःख्याता विन्ध्यपृष्ठनिवासिनः ५४ अतोदेशान्प्रवक्ष्यामि पर्वताश्रयिणश्चये। निराहाराःसर्वगाश्च कुपथाअपथास्तथा ५५ कुथप्रावरणाश्चैव ऊर्णादर्वासमुद्गकाः। त्रिगर्तामण्डलाश्चैव किराताश्चामरैःसह ५६ चत्वारिभारतेवर्षे युगानिमुनयोऽब्रुवन्। कृतंत्रेताद्वापरञ्च कलिश्चेतिचतुर्युगम्। तेषांनिसर्गंवक्ष्यामि उपरिष्टाच्चकृत्स्नशः ५७ (मत्स्य उवाच) एतच्छ्रुत्वातुऋषयउत्तरंपुनरेवते। शुश्रूषवस्तमूचुस्तेप्रकामं लोमहर्षणिम् ५८ (ऋषय ऊचुः) यच्च किंपुरुषंवर्षं हरिवर्षंतथैवच। आचक्ष्वनोयथातत्त्वं कीर्तितंभारतंत्वया ५९ जम्बूखण्डस्यविस्तारं तथान्येषांविदांवर। द्वीपानांवासिनांतेषां वृक्षाणांप्रब्रवीहिनः ६० पृष्टस्त्वेवं तदा विप्रैर्यथाप्रश्नंविशेषतः। उवाचऋषिभिर्दिष्टं पुराणाभिमतंयथा ६१ (सूत

देश हैं ४५ अब दक्षिण के देशों को सुनो पांड्य- केरल- चोल कुल्य- सेतुक- सूतिक- कुपथ- वाजिवासिक–नवराष्ट्र–माहिषिक–कलिंग ४६। ४७ कारुष–सहैषीक–आटव्य–शवर–पुलिन्द विन्ध्य पुषिक–वैदर्भ–दण्डक ४८ कुलीय–सिराल–रूपस–तापस–तैत्तिरिक–कारस्कर और वासिक यह दक्षिणके देशहैं ४९ और नर्मदाके मध्यवर्ती भारुकच्छ–समाहेय–सारस्वत ५० काच्छीक सौराष्ट्र–आनर्त्त–और अर्बुद यह सब देश विन्ध्याचलके समीप वसतेहैं ५१ मालव–करूप–मेकल उत्कल–औंड्र–माष–दशार्ण–भोज–किष्किन्धक ५२ तोशल–कोसल–त्रैपुर–दिश–तुमुर–तुंबर पद्गम–नैषध ५३ अरूप–शौंडिकेर–वीतिहोत्र और अवन्ति यह सम्पूर्ण देश विन्ध्याचलकी पीठ पर वसतेहैं ५४। ५५ अब पर्वतमें वसनेवाले देशोंकोसुनो निराहार–सर्वग–त्रिगर्त्त–मंडल–किरात और अमर यह देश पर्वतोंमें वसतेहैं ५६ इस भारतवर्षमें चारयुग वर्त्तते हैं सत्ययुग–त्रेता–द्वापर और कलियुग अब इनकी रचना सुनो ५७ मत्स्य भगवान् कहतेहैं कि हे राजन् ऐसा सुनकर ऋषि लोग उत्तर सुननेकी इच्छा करतेहुए सूतजीसे पूछनेलगे ५८ अर्थात् ऋषियोंनेकहा हे सूतजी भारत वर्ष तो आपने हमसे कहा अब आप कृपाकरके किंपुरुष वर्ष और हरिवर्षको कहिये ५९ इसके विशेष जम्बूद्वीपादिकके विस्तारसमेत वहांके निवासी और वृक्षोंका भी वृत्तान्त वर्णन कीजिये ६० ऋषियोंसे यह सुनकर सूतजी पुराणोक्त कथाको कहतेभये ६१ कि हे ऋषियो तुम सावधानहोकर

उवाच) शुश्रूषवस्तुयद्विप्राः शुश्रूषध्वमतन्द्रिताः। जम्बूवर्षःकिंपुरुषः सुमहान्नन्द
नोपमः ६२ दशवर्षसहस्राणि स्थितिःकिम्पुरुषेस्मृता। जायन्तेमानवास्तत्र सुतप्त
कनकप्रभाः ६३ वर्षेकिम्पुरुषेपुण्ये प्लक्षोमधुवहःस्मृतः। तस्यकिम्पुरुषाःसर्वे पिबन्तो
रसमुत्तमम् ६४ अनामयाह्यशोकाश्च नित्यंमुदितमानसाः। सुवर्णवर्णाश्चनराः स्त्रिय
श्चाप्सरसःस्मृताः ६५ ततःपरंकिम्पुरुषात् हरिवर्षंप्रचक्षते। महारजतसङ्काशा जायं
न्तेयत्रमानवाः ६६ देवलोकच्युताःसर्वे बहुरूपाश्चसर्वशः। हरिवर्षेनराःसर्वे पिबन्तीं
क्षुरसंशुभम् ६७ नजराबाधतेतत्र तेनजीवन्तितेचिरम्। एकादशसहस्राणि तेषामायुः
प्रकीर्तितम् ६८ मध्यमंतन्मयाप्रोक्तं नाम्नावर्षमिलावृतम्। नतत्रसूर्यस्तपति नचजीवं
न्तिमानवाः ६९ चन्द्रसूर्य्यौसनक्षत्रावप्रकाशाविलावृते। पद्मप्रभाःपद्मवर्णाः पद्मपत्र
निभेक्षणाः ७० पद्मगन्धाश्चजायन्ते तत्रसर्वेचमानवाः। जम्बूफलरसाहाराः अनिष्प
न्दाःसुगन्धिन ७१ देवलोकच्युताःसर्वे महारजतवाससः। त्रयोदशसहस्राणि वर्षाणान्ते
नरोत्तमाः ७२ आयुःप्रमाणंजीवन्ति येतुवर्षेइलावृते। मेरोस्तुदक्षिणेपार्श्वे निषधस्योत्तरे
णवा ७३ सुदर्शनोनाममहान् जम्बूवृक्षःसनातनः। नित्यपुष्पफलोपेतः सिद्धचारणसे
वितः ७४ तस्यनाम्नासमाख्यातो जम्बूद्वीपोवनस्पतेः। योजनानांसहस्रञ्च शतधाचमहा
नपुनः ७५ उत्सेधोवृक्षराजस्य दिवमावृत्यतिष्ठति। तस्यजम्बूफलरसो नदीभूत्वाप्रसर्पति
७६ मेरुंप्रदक्षिणंकृत्वाजम्बूमूलगतापुनः। तंपिबन्तिसदाहृष्टाजम्बूरसमिलावृते ७७ जम्बू

श्रवण करो यह जम्बूद्वीप और किंपुरुष नन्दन वनके तुल्य बड़े हैं ६२ किंपुरुष खण्डमें मनुष्य तप्त सुवर्णके समान कान्तिवाले होकर दशहज़ार वर्षतक जीतेहैं ६३ और पवित्र किंपुरुष देशमें एक वटके वृक्षसे शहदकी धारा बहतीहै वहांके रहनेवाले सम्पूर्ण किन्नरलोग उस उत्तमरसकोपीतेहैं ६४ इसीसे रोग शोकादिकसे रहित महाप्रसन्न रहते हैं वहां के नरलोग सुवर्णके समान वर्णवालेहैं और स्त्री अप्सराहैं ६५ उस किंपुरुषसे परे हरिवर्ष कहाहै और हरिवर्ष में लाल वर्णवाले मनुष्य जन्म लेतेहैं देवलोक से आयेहुए अनेक वर्णवाले मनुष्य भी जन्मतेहैं इनके सिवाय वहांके सम्पूर्ण मनुष्य ईखका रसपीतेहैं ६६।६७ उनको वृद्धावस्था नहींआती इसीसे बहुतदिनतक जीतेहैं उनकीआयु ग्यारह हज़ार वर्षकी कही है ६८ और मध्यमें जो खण्ड है उसको इलावृत खंड कहते हैं वहां सूर्य्य नहीं तपते इसीसे मनुष्य नहीं जीते ६९ इलावृतमें नक्षत्रों सहित चन्द्रमा और सूर्य्य प्रकाश करते हैं वहां के मनुष्य कमलकीसीकान्ति कमलकेसे नेत्र ७० और पद्मकीसीही सुगन्धिवाले हैं उनके प्रस्वेद नहीं आता जामनके फलोंका रस पीते हैं ७१ यह सब मनुष्य स्वर्गलोक से आते हैं कसूमे वस्त्र पहरते हैं और तेरहहज़ारवर्ष जीते हैं मेरुके दक्षिण और निषधके उत्तरमें ७२।७३ सुदर्शननाम जामनका बहुत बड़ा वृक्षहै वह सदैव पुष्प फलों से युक्त होकर सिद्ध चारणों से सेवित रहताहै ७४ इसका नाम जंबूद्वीप है हज़ार योजन में बसता है और सौ प्रकारके उसके विभाग हैं ७५ और वहांके जामनका वृक्ष इतना ऊंचाहै कि स्वर्गतक फैलरहाहै और उसके फलोंकारस नदीहोकर बहताहै ७६

फलरसंपीत्वा नजराबाधतेऽपितान् । नक्षुधानक्लमोवापि नदुःखञ्चतथाविधम् ७८ तत्र जाम्बूनदंनाम कनकंदेवभूषणम् । इन्द्रगोपकसङ्काशं जायतेभासुरञ्चयत् ७९ सर्वेषांवं पंवृक्षाणां शुभःफलरसस्तुसः । रुक्मन्तुकांचनंशुभ्रं जायतेदेवभूषणम् ८० तेषांमूत्रंपु रीषंवा दिक्ष्वष्टासुचसर्वशः । ईश्वरानुग्रहाद्भूमिर्मृतांश्चग्रसतेतुतान् ८१ रक्षःपिशाचा यक्षाश्च सर्वेहैमवतास्तुते । हेमकूटेतुविज्ञेया गन्धर्व्वाःसाप्सरोगणाः ८२ सर्वेनागानि षेवन्ते शेषवासुकितक्षकाः । महामेरौत्रयस्त्रिंशत् क्रीडन्तेयाज्ञियाःशुभाः ८३ नीलवैदूर्य युक्तेऽस्मिन् सिद्धाब्रह्मर्षयोबसन् । दैत्यानांदानवानाञ्च श्वतःपर्वतउच्यते ८४ शृङ्गवान् पर्वतश्रेष्ठः पितॄणांप्रतिसञ्चरः । इत्येतानिमयोक्तानि नववर्षाणिभारते ८५ भूतैरपिनि विष्टानि गतिमन्तिध्रुवाणिच । तेषांवृद्धिर्बहुविधा दृश्यतेदेवमानुषैः । अशक्यापरिसंख्या तुं श्रद्धेयाचबुभूषता ८६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३ ॥

(मनुरुवाच) चरितंबुधपुत्रस्य जनार्दन ! मयाश्रुतम् । श्रुतःश्राद्धविधिःपुण्यः स र्वपापप्रणाशनः १ धेन्वाःप्रसूतमानायाः फलंदानस्यमेश्रुतम् । कृष्णाजिनप्रदानञ्च वृ षोत्सर्गस्तथैवच २ श्रुत्वारूपंनरेन्द्रस्य बुधपुत्रस्यकेशव ! । कौतूहलंसमुत्पन्नं तन्ममा चक्ष्वपृच्छतः ३ केनकर्म्मविपाकेन सतुराजापुरूरवाः । अवापतादृशंरूपं सौभाग्यमपि

यह रससुमेरुकी परिक्रमाकरके फिर जंबूके वृक्षकीजडके पासचलाआताहै और इलावृतमें प्रसन्नता- पूर्वक लोग उसको पीते हैं ७७ उस जामन के रसके पीनेसे नतो उनको वृद्धावस्था आतीहै और न कभी क्षुधा ग्लानि वा दुःखादिक होते हैं ७८ वहां का जांबूनद नाम सुवर्ण देवताओंका आभूषण है वह बीरबहूटी के समान लाल रंग वाला है उस वर्ष के अन्य वृक्षों के फल और रस भी बड़े सुन्दर हैं उनमें से भी गोंदके समान श्वेत सुवर्ण झिरताहै वहभी देवताओं काही आभूषणहै ७९।८० उनके विष्ठा मूत्रको और मृतकों को ईश्वरके अनुग्रह से वहां की पृथ्वी आठों दिशाओं में ग्रस लेती है ८१ और राक्षस पिशाच यक्ष गन्धर्व और अप्सरा यह सब उस हेमकूट पर्व्वत में सुवर्ण के कहे हैं ८२ और शेष वासुकि और तक्षकादिक सर्प यह सब हेमकूटका सेवन करते हैं और तेंतीस यज्ञ करने वाले यज्ञ करते हैं ८३ यह महामेरु नील वैदूर्य्य मणियों से युक्त सिद्ध ब्रह्मर्षियों से व्याप्त और असंख्य दैत्यदानवों से भी भराहुआ है ८४ अन्य पर्व्वतों से शृंगवान् श्रेष्ठ है भारतखण्ड समेत यह नववर्ष कहाते हैं इन सब वर्षों में बहुतसे स्थावर जंगम जीव वासकरते हैं उनकी इतनीवृद्धिहै कि देवता और मनुष्य उनकी संख्या नहीं करसके ८५।८६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रयोदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११३ ॥

मनुजी कहते हैं कि हे जनार्दनजी मैंने बुधके पुत्रका चरित सुना और संपूर्ण पापोंकी नाशकरने वाली श्राद्धकी भी विधि सुनी १ अर्द्धप्रसूता गोदानकाफल काले मृगचर्म का दान, और वृषोत्सर्ग की सब विधि सुनी २ परन्तु हे केशवजी राजा बुधके पुत्रका रूप सुनकर मुझको बड़ा आनन्द हुआ

चोत्तमम् ४ देवांस्त्रिभुवनश्रेष्ठान् गन्धर्वांश्चमनोरमान्। उर्वशीसङ्गतात्यक्ता सर्वभावे नतंनृपम् ५ (मत्स्य उवाच) शृणुकर्म्मविपाकेन येनराजापुरूरवाः। अवापतादृशंरूपं सौभाग्यमपिचोत्तमम् ६ अतीतेजन्मनिपुरा योऽयंराजापुरूरवाः। पुरूरवाइतिख्यातो मद्रदेशाधिपोहिसः ७ चाक्षुषस्यान्वयेराजा चाक्षुषस्यान्तरेमनोः। सर्वैर्नृपगुणैर्युक्तः केवलंरूपवर्जितः ८ (ऋषय ऊचुः) पुरूरवामद्रपतिः कर्म्मणाकेनपार्थिवः। बभूवकर्म्मणाकेन रूपवांश्चैवसूतज! ९ (सूत उवाच) द्विजग्रामेद्विजश्रेष्ठो नाम्नाचासीत्पुरूरवाः। नद्याःकूलेमहाराजः पूर्वजन्मनिपार्थिवः १० सतुमद्रपतीराजा यस्तुनाम्नापुरूरवाः। तस्मिन्जन्मन्यसौविप्रो द्वादश्यान्तुसदानघ! ११ उपोष्यपूजयामास राज्यकामो जनार्दनम्। चकारसोपवासश्च स्नानमभ्यङ्गपूर्वकम् १२ उपवासफलात्प्राप्तं राज्यंमद्रेषकण्टकम्। उपोषितस्तथाभ्यङ्गाद्रूपहीनोऽभ्यजायत १३ उपोषितैर्नरैरतस्मात् स्नानमभ्यङ्गपूर्वकम्। वर्जनीयंप्रयत्नेन रूपघ्नंतत्परंनृप! १४ एतद्वःकथितंसर्वं यद्वृत्तंपूर्वजन्मनि। मद्रेश्वरस्यचरितं शृणुतस्यमहीपतेः १५ तस्यराजगुणैःसर्वैः समुपेतस्यभूपतेः। जनानुरागोनैवासीद्रूपहीनस्यतस्यवै १६ रूपकामःसमद्रेशस्तपसेकृतनिश्चयः। राज्यंमन्त्रिगतंकृत्वा जगामहिमपर्वतम् १७ व्यवसायद्वितीयस्तु पद्भ्यामेवमहायशाः।

उसका सब वृत्तान्त कहिये ३ कि वह पुरूरवा कौनसे कर्म के फलसे ऐसे रूप और उत्तम सौभाग्य को प्राप्त हुआ ४ और वह उर्व्वशी त्रिभुवनके उत्तम २ देवता और गन्धर्वोंको त्यागकर उस राजा को कैसे प्राप्तहुई ५ ऐसे मनुके वचनोंको सुनकर मत्स्य भगवान् बोले कि हे राजा जिसकर्म के फल से राजा पुरूरवा ऐसे रूप और सौभाग्यको प्राप्त हुआ उसको मैं तुमसे कहताहूं ६ हे राजन् पूर्व्व जन्ममें यह पुरूरवा राजा पुरूरवा इस नामसे विख्यात मद्रदेशका अधिपतिथा ७ और चाक्षुष मनु के अन्तरमें यहराजा राजाओंके गुणसे तो केवल युक्तथा परन्तु रूपसे रहित था ८ इसीप्रश्नको ऋषियोंने भी सूतजी से पूछा कि हेसूतजी पुरूरवा राजा किसकर्म से राजा औरमहारूपवान् होता भया इसका ठीक २ वृत्तान्त आप हमसे वर्णन कीजिये ९ सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो इसका वृत्तान्त मुझसे सुनो कि किसी ब्राह्मणों के ग्राममें एक श्रेष्ठ पुरूरवा नाम ब्राह्मण था वह अगले जन्ममें नदी के तीर पर १० मद्रदेशका अधिपति पुरूरवा राजा विख्यात हुआ क्योंकि यह राजा पूर्व्व ब्राह्मण जन्ममें सदैव द्वादशीका व्रत करके राज्यके निमित्त जनार्दनका पूजन करता भया और मर्दन पूर्व्वक स्नान करता भया ११। १२ सो उस उपवास के फल से जो राज्य प्राप्त हुआ और मर्दन करने से कुरूप होगया १३ क्योंकि व्रतीको मालिश करना वर्जितहै मालिशपूर्व्वक व्रती स्नानकरे तो अगले जन्ममें रूप नष्ट होजाता है १४ यह मैंने मद्रदेशके राजा पुरूरवाके पूर्वजन्म का वृत्तान्त वर्णनकिया अब अगले जन्म में जब मद्रदेशका अधिपति हुआ उसकी भी कथा सुनो १५ कि वह पुरूरवा राजा राजगुणों से युक्त होनेपर भी रूपहीनताके कारण प्रजासे तिरस्कृत होगया अर्थात् उसपर प्रजाकी प्रीति न हुई १६ फिर यह पुरूरवा रूपकी इच्छासे तप करनेका निश्चयकरके अपने राज्यको मंत्रि-

द्रष्टुंसतीर्थसदनं विषयान्तेस्वकेनदीम्। ऐरावतीतिविख्यातान्ददर्शातिमनोरमाम् १८
तुहिनगिरिमहौघवेगान्तुहिनगभस्तिसमानशीतलोदाम् । तुहिनसदृशहैमवर्णपुञ्जा
न्तुहिनयशाःसरितन्ददर्शराजा १६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे चतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४॥

(सूत उवाच) सददर्शनदींपुण्यां दिव्यांहैमवतींशुभाम्। गन्धर्वैश्चसमाकीर्णां नि
त्यंशक्रेणसेविताम् १ सुरेभमदसंसिक्तां समन्तात्तुविराजिताम्। मध्येनशक्रचापाभां त
स्मिन्नहनिसर्वदा २ तपस्विशरणोपेतां महाब्राह्मणसेविताम् । ददर्शतपनीयाभां महा
राजःपुरूरवाः ३ सितहंसावलिच्छन्नाङ्काशचामरराजिताम् । साभिषिक्तामिवसतां प
श्यन्प्रीतिंपरांययौ ४ पुण्यांसुशीतलांहृद्यां मनसःप्रीतिवर्द्धिनीम्। क्षयवृद्धियुतांरम्यां
सोममूर्तिमिवापराम् ५ सुशीतशीघ्रपानीयां द्विजसंघनिषेविताम्। सुतांहिमवतःश्रेष्ठां
चञ्चद्वीचिविराजिताम् ६ अमृतस्वादुसलिलान्तापसैरुपशोभिताम्। स्वर्गारोहणनिः
श्रेणीं सर्वकल्मषनाशिनीम् ७ अग्र्यांसमुद्रमहिषीं महर्षिगणसेविताम् । सर्वलोकस्य
चौत्सुक्यकारिणींसुमनोहराम् ८ हितांसर्वस्यलोकस्य नाकमार्गप्रदायिकाम्। गोकुला
कुलतीरान्तां रम्यांशैवालवर्जिताम् ६ हंससारससंघुष्टां जलजैरुपशोभिताम्। आवर्त
नाभिगम्भीरां द्वीपोरुजघनस्थलीम् १० नीलनीरजनेत्राभां उत्फुल्लकमलाननाम्।

योंके सुपुर्दकर हिमाचल पर्वतको जाता भया १७ फिर यह तीर्थ स्नान देखने के निमित्त अपने देशके पास ऐरावती नदीको बड़ी उत्तमतासे देखताभया और उसकी शोभाको देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ उस नदीका वेग हिमाचल पर्वतके समान था चन्द्रमाकी किरनों के समान ठंढे जल वाली और तुषारके समान स्वच्छ श्वेत वर्णवाली ऐसीनदीको वहस्वच्छयशवालाराजादेखताभया१८।१९

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुर्दशोत्तरशततमोऽध्यायः ११४॥

सूतजीबोले हे ऋषीश्वरलोगो उस शुभपवित्र हैमवतीनदीको गन्धर्वोंसेव्याप्त और इन्द्रसे सेवित भी देखताभया १ इसके विशेषदेवताओंके हाथियोंके मदसे छिड़कीहुई और मध्यमें इन्द्रधनुषाकार विराजमान तपस्वियोंसे आच्छादित ब्राह्मणोंसे सेवित सुन्दर कान्तिवाली श्वेत हंसों की पंक्तियों से युक्त चंवररूप कांससे व्याप्त श्रेष्ठलोगों की अभिषेक कीहुई के समान उसनदी को देखकर महराजा पुरूरवा परम प्रीतिपूर्वक महापवित्र ठंढी मनको प्यारी प्रीतिबढ़ानेवाली ह्रासवृद्धिसे युक्त दूसरी चन्द्रमूर्त्ति के समान रमणीक उस नदी को देखता भया २।५ जिस में कि शीतल और शीघ्रगामी जल ब्राह्मणों के समूहों से सेवित था वह हिमवान् की पुत्री तरंगों से चंचल अमृत स्वादवाली तपस्वियों से सेवित स्वर्गकी नसेनी सबपापोंकी नाश करनेवाली ६।७ समुद्रकी रानी महर्षियों से शोभित सबलोकों की उत्साह करनेवाली महामनोहर सर्वलोकोपकारी स्वर्गका मार्ग देनेवाली गोकुल पर्य्यन्त तीरवाली महारमणीक शैवालसे वर्जित हंस सारसों से शब्दायमान कमलों करके अलंकृत कमलरूप नाभिसे विराजित द्वीपरूपजंघा और पिंडिलियोंसेभूषित ८।१० नीलकमलरूप नेत्रोंवाली

हिमाभफेनवसनाञ्चक्रवाकाधरांशुभाम् । बलाकापङ्क्तिदशनाञ्चलन्मत्स्यावलिभ्रुवम्
११ स्वजलोद्भूतमातङ्गरम्यकुम्भपयोधराम् । हंसनूपुरसंघुष्टां मृणालवलयावली
म् १२ तस्यांरूपमहोन्मत्ता गन्धर्वानुगताःसदा । मध्याह्नसमयेराजन्! क्रीडन्त्यप्सर
साङ्गणाः १३ तामप्सरोविनिर्मुक्तं वहन्तींकुंकुमंशुभम् । स्वतीरद्रुमसम्भूतनानावर्णसु
गन्धिनीम् १४ तरङ्गव्रातसंक्रान्त सूर्य्यमण्डलदुर्द्दशम् । सुरेभजनिताघात विकूलद्वय
भूषिताम् १५ शक्रेभगण्डसलिलैर्देवस्त्रीकुलचन्दनैः । संयुतंसलिलंतस्याः षट्पदैरु
पसेव्यते १६ तस्यास्तीरभवावृक्षाः सुगन्धकुसुमाञ्चिताः । तथापकृष्टसम्भ्रान्त भ्रमर
स्तनिताकुलाः १७ यस्यास्तीरेरतिंयान्ति सदाकामवशामृगाः । तपोधनाश्चऋषयस्त
था देवाःसहाप्सराः १८ लभंतेयत्रपूताङ्गा देवेभ्यःप्रतिमानिताः । स्त्रियश्चनाकबहुलाः
पद्मेन्दुप्रतिमाननाः १९ याबिभर्तिसदातोयं देवसंघैरपीडितम् । पुलिंदैर्नृपसंघैश्च व्या
घ्रवृंदैरपीडितम् २० सतामरसपानीयां सतारगगनामलाम् । सतांपश्यन्नृपयौराजा स
तामीप्सितकामदाम् २१ यस्यास्तीररुहैःकाशैः पूर्णश्चन्द्रांशुसन्निभैः । राजतेविविधा
कारे रम्यंतीरंमहाद्रुमैः । यासदाविविधैर्विप्रैर्देवैश्चापिनिषेव्यते २२ याचसदासकलौ
घविनाशं भक्तजनस्यकरोत्यचिरेण । यानुगतासरितांहिकदम्बैर्यानुगतासततंहिमुनी
न्द्रैः २३ याहिसुतानिवपातिमनुष्यान्याचयुतासततंहिमसंघैः । याचयुतासततंसुरवृन्दै

प्रफुल्लित जलजरूप मुखवाली श्वेतभाग रूप वस्त्रोंवाली चक्रवाक रूप सुन्दर ओष्ठवाली बला-काओं की पंक्तिरूप दांतोंवाली चंचल मछलियों की पंक्ति रूप भृकुटियोंवाली ११ अपने जल से उत्पन्न हस्तीरूप कुचोंवाली हंसरूप नूपुरोंसे शब्दित मृणालरूप कंकणों से भूषित १२ ऐसी नदी में रूपसे उन्मत्त जो गन्धर्व अप्सरादिक मध्याह्न के स्नानादिक करते हैं उनकी क्रीड़ासे शोभित अ-प्सराओं के अंगसे छुटीहुई कुंकुमादिसे सुगन्धित अपने तटके वृक्षोंसे सुगंधकी बहनेवाली तरंगों के चंचल समूहों से और सूर्य्य के प्रतिविम्बों से चमत्कृत देवताओं के हस्तियों के आघात से भूषित तीरोंवाली१३।१५ इन्द्र के ऐरावतादिक हाथियों के मदजलसे और देवताओं की स्त्रियों के चन्दनोंसे युक्त उस नदी के जलको भ्रमर सेवन करते हैं १६ उस नदी के तीर के वृक्षोंके पुष्पोंकी सुगन्धिसे खिंचेहुए भ्रमरों के द्वारा शब्दायमान १७ कामके वशीभूत मृग जिसके तीरपर रतिको प्राप्त होतेहैं वहांही तपोधन ऋषि देवता और अप्सरा आनन्दको प्राप्त होते हैं १८ और कमलाक्षी स्त्रियां जिस पर निवास करती हैं १९ वहनदी देवताओंके संगोंसे पीड़ा रहित जलको धारण करनेवाली पुलिंद नृपसंघ और व्याघ्र वृन्दोंसे सेवितहोकर २० कमलों की शोभासे भूषित तारागणसमेत चन्द्रमासे प्रकाशित ऐसी सुन्दरतासे विराजमानहुई उसनदीको देखता हुआ कि जिसके तीरपर २१ चन्द्रमा कीसी किरणोंवाले तीरके कांसवड़े २ वृक्ष औरदेवता ब्राह्मणोंसे सेवितथे २२ वहांजाकर क्या देखता है कि यहनदी बहुतसे नदनदियोंसे सेवित थोड़ेहीकालमें भक्तोंके अनेकपापोंको नाशकरतीहुई बड़े२ मुनीन्द्रों से सेवित है २३ वहीनदी मनुष्योंको अपनेपुत्रोंके समान पालनकरनेवालीअपनेही हितके

र्यांचजनैःस्वहितायश्रितांवै २४ युक्ताचकेसरिगणैःकरिवृंदजुष्टा सन्तानयुक्तसलिला पिसुवर्णयुक्ता।सूर्य्यांशुतापपरिवृद्धविवृद्धशीता शीतांशुतुल्ययशसाददृशेनृपेण २५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चदशाधिकशततमोऽध्यायः ११५॥

(सूत उवाच) आलोकयन्नदीं पुण्यांतत्समीरहतश्रमः। सगच्छन्नेवददृशे हिमवंतंमहागिरिम् १ खमुल्लिखद्भिर्बहुभिर्वृतं शृङ्गैस्तुपाण्डुरैः। पक्षिणामपिसञ्चारैर्विना सिद्धगतिंशुभम् २ नदीप्रवाहसञ्जातमहाशब्दैःसमन्ततः। असंश्रुतान्यशब्दंतं शीततोयमनोरमम् ३ देवदारुवनैर्नीलैः कृताधोवसनंशुभम्। मेघोत्तरीयकंशैलं ददृशेमनराधिपः ४ श्वेतमेघकृतोष्णीषं चंद्रार्कमुकुटंक्वचित्। हिमानुलिप्तसर्वाङ्गं क्वचिद्धातुविमिश्रितम् ५ चंदनेनानुलिप्ताङ्गं दत्तपञ्चांगुलंयथा। शीतप्रदंनिदाघेऽपि शिलाविकटसङ्कटम्। सालक्तकैरप्सरसां मुद्रितंचरणैःक्वचित् ६ क्वचित्संप्रष्टसूर्य्यांशुं क्वचिच्चतमसावृतम्। दरीमुखैःक्वचिद्भीमैः पिबंतंसलिलंमहत् ७ क्वचिद्विद्याधरगणैः क्रीडद्भिरुपशोभितम्। उपगीतंतथामुख्यैः किन्नराणाङ्गणैःक्वचित् ८ आपानभूमौगलितैर्गन्धर्वाप्सरसांक्वचित्। पुष्पैःसन्तानकादीनां दिव्यैस्तमुपशोभितम् ९ सुप्तोत्थिताभिः शय्याभिः कुसुमानांतथाक्वचित्। मृदिताभिःसमाकीर्णं गन्धर्वाणांमनोहरम् १० निरुद्धपवनेदेशेनीलशाद्वलमण्डितैः। क्वचिच्चकुसुमैर्युक्तमत्यंतरुचिरंशुभम् ११ तपस्विशरणंशैलं कामिनामतिदुर्लभम्। मृगैर्यथानुचरितंदन्तिभिन्नमहाद्रुमम् १२ यत्रासिंहनिनादे

निमित्त देवताओंसे सेवितहै २४ इसके विशेष सिंहहस्ती आदिजीवों से व्याप्त सुवर्णयुक्त जलसे भूषित सूर्य्यकी किरणोंसे प्रकाशित उसनदी को चन्द्रमाकी किरणों के समान यशवाला वह राजा पुरूरवा देखता भया २५॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपञ्चदशोत्तरशततमोऽध्यायः ११५॥

सूतजी कहते हैं कि हे ऋषियो उस पवित्र नदीको देखता और उसके जलसे परिश्रम दूर करके चलता हुआ वह राजा हिमवान् महागिरिको देखता भया १ वह पर्व्वत बहुत से श्वेत शृंगों से आकाशको छूताहुआ पक्षियोंके विना सिद्धोंकी गति वाला था २ इसके विशेष वह हिमवान् नदी के प्रवाह से उत्पन्न हुए महा शब्दों से प्रतिशब्द करता हुआ ठंढे जलों से पूर्ण महासुन्दर ३ देवदारु के नीले वनरूप धोती और मेघरूप डुपट्टेवाला और पगड़ीवाला चन्द्रमासूर्य्यरूप मुकुटवाला हिमसे लिप्त अंगवाला धातुओं सेमिला हुआ चन्दन से लिप्त अंग उष्णऋतुमें भी शीतलता देने वाला विकट शिलाओंसे युक्त कहीं लाल अप्सराओंके चरणोंसे मुद्रित ४।६कहीं सूर्य्यकी किरण पड़ी कहीं अन्धकार से व्याप्त कहीं भयानक गुफाओं से बहुत जलपीता हुआ ७ कहीं क्रीडा करते हुए विद्याधरों के गणोंसे सेवितकहीं मुख्य किन्नरगणोंसे गायाहुआ ८ गन्धर्वअप्सराओंसे भूषित कहींकल्पवृक्षके पुष्पों से शोभित सोते से उठे हुए गन्धर्वोंकी शय्याओंसे व्याप्त मनका हरनेवाला ९।१० कहीं रुकी हुई पवनके देशमें नीलीघास से युक्त और कहीं पुष्पों से अत्यन्त रुचिरथा ऐसे सुन्दर पर्व्वत को देखता हुआ वह राजा ११ उस पर्व्वतकी अन्य शोभाको भी देखता भया अर्थात् कहीं तपस्वियों

न त्रस्तानांभैरवंरवम्। दृश्यतेनचसंभ्रान्त गजानामाकुलंकुलम्१३ तटाश्चतापसैर्यत्र कुब्जदेशैरलंकृताः। रत्नैर्यस्यसमुत्पन्नैस्त्रैलोक्यंसमलंकृतम् १४ अहीनशरणंनित्य म हीनजनसेवितम्। अहीनःपश्यतिगिरिं महीनंरत्नसम्पदा १५ अल्पेनतपसायत्र सिद्धिं प्राप्स्यन्तितापसाः। यस्यदर्शनमात्रेण सर्वकल्मषनाशनम् १६ महाप्रपातसम्पात प्र पातादिगताम्बुभिः। वायुनीतैःसदातृप्ति कृतदेशंक्वचित्क्वचित् १७ समालब्धजलैःशृ ङ्गैः क्वचिच्चापिसमुच्छ्रितैः। नित्यार्कतापविषमैरगम्यैर्मनसायुतम् १८ देवदारुमहावृ क्ष व्रजशाखानिरन्तरैः। वंशस्तम्बवनाकारैः प्रदेशैरुपशोभितम् १९ हिमच्छत्रमहाशृ ङ्गं प्रपातशतनिर्झरम्। शब्दलभ्याम्बुविषमं हिमसंरुद्धकन्दरम् २० दृष्ट्वैवतंचारुनित म्बभूमिं महानुभावःसतुमद्रनाथः। वभ्रामतत्रैवमुदासमेतस्थानं तदाकिञ्चिदथाससा द २१ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे षोडशोत्तरशततमोऽध्यायः ११६॥

तस्यैवपर्वतेन्द्रस्य प्रदेशंसुमनोरमम्। अगम्यंमानुषैरन्यैर्दैवयोगादुपागतः १ ऐरा वतीसरिच्छ्रेष्ठा यस्माद्देशाद्विनिर्गता। मेघश्यामञ्चतंदेशन्द्रुमखण्डैरनेकशः २ शालै स्तालैस्तमालैश्च कर्णिकारैःसशाल्मलैः। न्यग्रोधैश्चतथाश्वत्थैः शिरीषैःशिंशपाद्रुमैः ३ महानिम्बैस्तथानिम्बैर्निर्गुण्डीभिर्हरिद्रुमैः। देवदारुमहावृक्षै स्तथाकालेयकद्रुमैः ४ प द्मकैश्चन्दनैर्बिल्वैः कपित्थैरक्तचन्दनैः। वाताम्रारिष्टकाक्षोटैरब्दकैश्चस्तथार्जुनैः ५ ह

का रक्षक कामियोंको दुर्लभ मृगोंसे युक्त जहां हाथियों के तोड़ेहुए वृक्षोंसे व्याप्त सिंहके भयानक शब्द से हाथियोंका व्याकुल समूह दखिताहै १२।१३ कहीं तपस्वी और कुंजदेशोंसे भूपित तट कहींरत्नोंसे भूषित श्रेष्ठोंकाशरण्य और उन्हींसे सेवित जिसको अच्छेपुरुष देखते हैं वहअच्छे रत्नोंसेयुक्तथा१४।१५ उस पर्व्वतमें तपस्वी थोड़ेही तपसे सिद्धिको प्राप्तथे इस पर्व्वतके दर्शनही मात्रसे संपूर्ण पापनष्ट हो जाते हैं और वायुसे प्राप्तहुए प्रपातडागादिके जल उससे पूर्णहुआ देशतृप्तिको प्राप्तहोरहाहै १६।१७ कहीं ऊंचे शृंगोंसेयुक्त कहीं सजल शृंगोंनेभी युक्त कहीं सूर्य्यका विशेषताप कहीं कमताप १८ और देवदारु महावृक्ष व्रजशाखा- बांसोंके गुच्छे और देशों से भूपित हिमछत्रों से और सैकड़ों भिरनों से व्याप्त जहाँ कि शब्दसे जल लब्धहोताहै जिसकी गुफा हिमसे रुकीहुई १९।२० यहमद्र देशका अ- धिपति महानुभाव ऐसी उस सुन्दर भूमिको देखकर वहाँहीं विचरताभया और बहुतदिनतक बड़े आनन्द पूर्व्वक वास करताभया २१॥

इति श्रीमत्स्यपुराण भाषाटीकायां षोडशोत्तरशततमोऽध्यायः ११६॥

सूतजी कहते हैं हेऋषीश्वरलोगो उसपूर्व्वकहेहुए अन्यदेवताओं से अगम्यपर्वतेन्द्रके सुन्दर देश को वहराजा पुरूरवा प्राप्तहुआ १ और नदियोंमें उत्तम ऐरावतीनदी जिसदेशसे निकली है वह देशभी अनेक प्रकारके वृक्ष समूहोंसे मेघके समान श्याम वर्णहै २ उसदेशमें शाल-ताल-तमाल- कर्णिकार-शामल-वड़-पीपल-सिरस-सीसों-३ बकायन-नींव-निर्गुंडी-हरिद्रुम-देवदारु-म- हावृक्ष-केला-चन्दन-पद्माक-बेलपत्र-कैथ-लालचन्दन-आम-रीठा-अखोट-अर्जुन-४।५ह-

स्तिकर्णैःसुमनसैः कोविदारैःसुपुष्पितैः। प्राचीनामलकैश्चापि धनकैःसमराटकैः ६ ख
र्जूरैर्नारिकेलैश्च प्रियालवाम्रातकेंगुदैः। तन्तुमालैर्धवैर्भव्यैः काश्मीरीपर्णिभिस्तथा ७
जातीफलैःपूगफलैः कट्फलैलावलीफलैः। मन्दारैःकोविदारैश्च किंशुकैःकुसुमांशुकैः ८
यवासैःशमिपर्णासैर्वेतसैरम्बुवेतसैः। रक्तातिरक्तनारङ्गैर्हिंगुभिःसप्रियंगुभिः ९ रक्ताशो
कैस्तथाशोकैराकल्लैरविचारकैः। मुचकुन्दैस्तथाकुन्दै राटरूषपरूषकैः १० किरातैः
किङ्किरातैश्च केतकैःश्वेतकेतकैः। सौभाञ्जनैरञ्जनैश्च सुकलिङ्गनिकोटकैः ११ सुव
र्णचारुवसनैर्द्रुमश्रेष्ठैस्तथासनैः। मन्मथस्यशराकारैः सहकारैर्मनोरमैः १२ पीतयूथि
कयाचैव श्वेतयूथिकयातथा। जात्याचम्पकजात्याच तुम्बरैश्चाप्यतुम्बरैः १३ मोचै
र्लोचैर्म्तुलकुचैस्तिलपुष्पकुशेशयैः। तथासुपुष्पावरणैः चव्यकैःकामिवल्लभैः १४ पु
ष्पांकुरैश्चवकुलैः पारिभद्रहरिद्रकैः। धाराकदम्बैःकुटजैः कदम्बैर्गिरिकूटजैः १५ आदि
त्यमुस्तकैःकुम्भैः कुंकुमैःकामवल्लभैः। कट्फलैर्वदरैर्नीपैर्दीपैरिवमहोज्ज्वलैः १६ रक्तैःपा
लीवनैःश्वेतैर्दाडिमैश्चम्पकद्रुमैः। बन्धूकैश्चसुबन्धूकैः कुञ्जकानान्तुजातिभिः १७ कुसु
मैःपाटलाभिश्च मल्लिकाकरवीरकैः। कुरवकैर्हिमवरैर्जम्बुभिर्नृपजम्बुभिः १८ वीजपूरैः
सकर्पूरैर्गुरुभिश्चागरुद्रुमैः। विम्बैश्चप्रतिविम्बैश्च सन्तानकवितानकैः १९ तथागुग्गु
लवृक्षैश्च हिन्तालधवलेक्षुभिः। तृणशून्यैःकरवीरैरशोकैश्चक्रमर्दनैः २० पीलुभिर्धो
तकीभिश्च चिरि विल्वैःसमाकुलैः। तिन्तिडीकैस्तथालोध्रैर्विडङ्गैःक्षीरिकाद्रुमैः २१ अ
श्मन्तकैस्तथाकालैर्जम्बीरैःश्वेतकद्रुमैः। भल्लातकैरिन्द्रयवैर्वल्गुजैःसिद्धिसाधकैः २२

स्त कर्ण-सुमनस-पुष्पित कचनार-आंवला-धनक-मराटक-खजूर-नालीर-प्रियालु-आम्रातक-गूंदिया-तंतुमाल-भव्य-काश्मीरी-पलाश-जायफल-सुपारीकेवृक्ष-कायफल- लावलीफल मंदार- कचनार-केसू कुसुमांशुक ६।८ धमासा-जांट-पर्णास-वेत-जलवेत हरीड़ा-हींग-चिरोंजी ९ रक्तअशोक- अशोक-आकल्ल-आवि-चारक-मुचकुन्द-कुन्द-अरडू-फालसा १० चिरायता-किंकिरात-केतकी- श्वेतकेतकी-सहोजना-अंजन-बहेड़ा-निकोटक ११ सुवर्णसे वस्त्रोंवाला असना-कामदेवकेवाणोंकी समान सुगन्धिवाला-आम १२ पीली जुही- श्वेतजुही- चंपेकीजाति- तुम्बर १३ मोच- लोच लकुच- अर्थात् बड़हले-तिलपुष्प-कमल-पुष्पावरण कामी को प्यारा चीता पुष्पांकुर-वकुल- पारिभद्र-हरिद्रक- धारा कदंब कूड़ा-कदंब-गिरिकूटज१४।१५ आदित्यमुस्तक-कुंभकामियों को प्यारी कुंकुम अर्थात् केशर-कायफल-बड़बेर-दीपकों के प्रकाश के समानमाननीय अर्थात् कदंब १६ लालपालीवत- चंपा- बंधूक जाति-कुंजकों- की जाति-१७ कुसुम-पाटला-मल्लिका-कनेर-कुरवक- हिमवर- जामन- राजजामन १८ बिजोरा- कर्पूर- अगर- विम्ब- प्रतिविम्ब- सन्तानक- विजानक- गूगल- हिंताल- सुपेदईख-तृणशून्य- करवीर अशोक- पुंवाड़ १९।२० जाल-धाय-अमली- लोध- वायविडङ्ग- थूहर- अश्मन्तक-कालानांबू-भिलांवा-इन्द्रयव-चिलगोजा-सिद्धिसाधक २१।२२ करमर्द-कालमर्द-धविष्टक-बरि-

करमर्दैः कासमर्दैरविष्टकवरिष्टकैः। रुद्राक्षैर्द्राक्षसम्भूतैः सताकैःपुत्रजीवकैः २३ कङ्को
लैश्चलवङ्गैश्च त्वगद्रुमैःपारिजातकैः। प्रतानैःपिप्पलीनाञ्च नागवल्यश्चभागशः २४
मरीचस्यतथागुल्मैर्नवमल्लिकयातथा। मृद्वीकामण्डपैर्मुख्यै रतिमुक्तकमण्डपैः २५ त्रपु
सैर्नर्तिकानाञ्च प्रतानैःसफलैःशुभैः। कूष्माण्डानांप्रतानैश्च अलावूनांतथाक्वचित् २६
चिर्मिटस्यप्रतानैश्च पटोलीकारवल्लिकैः। कर्कोटकीवितानैश्च वार्ताकैर्बृहतीफलैः २७
कण्टकैर्मूलकैर्मूल शाकैस्तुविविधैस्तथा। कह्लारैश्चविदार्या चरुरूटैःस्वादुकण्टकैः २८
सभण्डीरविदूसार राजजम्बुकबालुकैः। सुवर्चलाभिःसर्वाभिः सर्षपाभिस्तथैवच २९
काकोलीक्षीरकाकोलीच्छत्रयाचातिच्छत्रया। कासमर्दीसहासद्भिः शकन्दलसकाण्डकैः
३० तथाक्षीरकशाकेन कालशाकेनचाप्यथ। शिम्बिधान्यैस्तथाधान्यै सर्वैर्निरवशेषितः
३१ औषधीभिर्विचित्राभिर्दीप्यमानाभिरेवच। आयुष्याभिर्यशस्याभिर्बल्याभिश्चनरा
धिप! ३२ जरामृत्युभयघ्नीभिः क्षुद्भयघ्नीभिरेवच। सौभाग्यजननीभिश्च कृत्स्नाभि
श्चाप्यनेकशः ३३ तत्रवेणुलताभिश्च तथाकीचकवेणुभिः। काशैःशशाङ्ककाशैश्च शर
गुल्मैस्तथैवच ३४ कुशगुल्मैस्तथारम्यैगुल्मैश्चेक्षोमनोरमैः। कार्पासजातिवर्गेण दुर्ल
भेनशुभेनच ३५ तथाचकदलीखण्डैर्मनोहारिभिरुत्तमैः। तथामरकतप्रख्यैः प्रदेशैःशा
द्वलान्वितैः ३६ इरापुष्पसमायुक्तैः कुंकुमस्यचभागशः। तगरातिविषामांसी ग्रन्थिकैस्तु
सुरागदैः३७सुवर्णपुष्पैश्चतथाभूमिपुष्पैस्तथापरैः। जम्बीरकैर्भूस्तृणकैःसरसैःसशुकैस्त
था ३८ शृङ्गवेराजमोदाभिः कुवेरकप्रियालकैः। जलजैश्चतथावर्णैर्नानावर्णैःसुगन्धिभिः
३९उदयादित्यसङ्काशैः सूर्य्यचन्द्रनिभैस्तथा।तपनीयसवर्णैश्च अतसीपुष्पसन्निभैः ४०

ष्टक-रुद्राक्ष-सताक-पुत्रजीवक २३ कंकोल-लौंग--भोजपत्र-पारिजातक-पीपलियोंकीबेल-नागरपान
की बेल-२४ मिरचोंका गुच्छा नवीन मल्लिका-सुन्दर दाखोंका मंडप-चंपेका मण्डप- २५ त्रपुस्-नर्ति
काओंकी फलोंसमेत बेल-कोहलाओंकी बेल-घीयाओंकी बेल- २६ चिर्मिटोंकीबेल-परवल-करेलबेल
ककोडाकी बेल-वार्त्ताक-कटेहलीकाफल २७ सिंघाड़ा-अनेक प्रकारके ज़मींकन्द-कमल विदारी--चरु-
रूठ-स्वादु-कंटक २८ भंडीर-विदूसार-राजजामन-नेत्रवाला-सुवर्चला-सिरसों-काकोली-क्षीर काको-
ली-छत्रा-अतिछत्रा-कास मर्दी शकंदल-कांडक-क्षीरशाक-कालशाक-शिंविधान्य-धान्य-३०।३१ प्रका-
शमान अनेक प्रकारकी औषध--आयु बढ़ानेवाली--बल बढ़ानेवाली--यश बढ़ानेवाली जरा मरण
भयक्षुधा इनसबकी नाशकरनेवाली औषध और सौभाग्यकी उत्पन्न करनेवाली संपूर्ण औषध--
बांसों की बेल--छिद्रवाले बांस--चन्द्र मासाकांक-शरों का बोझा ३३।३४ कुशाओं का झुण्ड--
सुन्दर ईखोंकाझुण्ड--दुर्लभ और शुभकपासकीजाति ३५ मनका हरनेवाला केलोंकासमूह--नीली
मणियोंकेसमान घासकी हरियाली ३६ इराकापुष्प-कुंकुमकाभाग--तगर--अतीस--जटामांसी--नेत्र-
वाला--सुरागद ३७ सुवर्णपुष्प--भूमिपुष्प--नींबू--तृणक ३८ अदरक-अजमोद-कुवेरक--चिरोंजी--
अनेकप्रकारके सुगन्धियुक्त कमल ३९ कोई कमल तो उदयहुए सूर्य्यकेसमान कोई सूर्य्य चन्द्रमा

शुकपत्रनिभैश्चान्यैः स्थलपत्रैश्चभागशः। पञ्चवर्णैःसमाकीर्णैर्बहुवर्णैस्तथैवच ४१
द्रष्टृदृष्ट्याहितमुदैः कुमुदैश्चन्द्रसन्निभैः। तथावह्निशिखाकारैर्गजवक्त्रोत्पलैःशुभैः ४२
नीलोत्पलैः सकर्पूरैर्गुञ्जातककसेरुकैः। शृङ्गाटकमृणालैश्च करटैराजतोत्पलैः ४३ जल
जैःस्थलजैर्मूलैः फलैःपुष्पैर्विशेषतः। विविधैश्चैवनीवारैर्मुनिभोज्यैर्नराधिप! ४४ नत
द्धान्यंनतच्छस्यं नतच्छाकंनततत्फलम्। नतन्मूलंनततत्कन्दं नततत्पुष्पंनराधिप! ४५
नागलोकोद्भवंदिव्यं नरलोकमवञ्चयत्। अनूपोत्थंवनोत्थञ्च तत्रयन्नास्तिपार्थिव! ४६
सदापुष्पफलंसर्वं मजर्यमृतुयोगतः। मद्रेश्वरःसददृशे तपसाद्युतियोगतः ४७ ददृशेच
तथातत्र नानारूपान्पतत्रिणः। मयूराञ्छतपत्रांश्च कलविङ्कांश्चकोकिलान् ४८
तदाकादम्बकान्हंसान् कोयष्टीन्खञ्जरीटकान्। कुररान्कालकूटांश्च खट्वाङ्गान्लु
ब्धकांस्तथा ४९ गोक्ष्वेडकान्तथाकुम्भान् धार्तराष्ट्रान्शुकान्बकान्। धातुकांश्च
क्रवाकांश्चकटुकान् टिट्टिभान्भटान् ५० पुत्रप्रियान् लोहपृष्ठान् गोचर्मगिरिवर्त
कान्। पारावतांश्चकमलान् सारिकाजीवजीवकान् ५१ लाववर्तकवार्ताकान् रक्त
वर्त्मप्रभद्रकान्। ताम्रचूडान्स्वर्णचूडान् कुक्कुटान्काष्ठकुक्कुटान् ५२ कपिञ्जलान्
कलविङ्कान् तथाकुंकुमचूड़कान्। भृङ्गराजान्सीरपादान् भुलिङ्गान्डिण्डिमान्न
वान् ५३ मञ्जुलीतकदात्यूहान् भारद्वाजांस्तथाचषान्। एतांश्चान्यांश्चसुबहून्
पक्षिसङ्घान्मनोहरान्। श्वापदान्विविधाकारान् मृगांश्चैवमहामृगान्। व्याघ्रान्

दोनोंकेतुल्य–कोई सुवर्णकेतुल्य–कोई अतसीफूलके समान ४० कोई तोतेके पक्षकीसमान–कोई स्थल पद्मपत्र पांचप्रकारके और प्रकारकेफूल ४१ देखनेवालेकी दृष्टिके हितकारी कमल–चन्द्रमा के सदृश अग्नि शिखाकेतुल्य और हस्तीके मुखके समान कमल ४२ ऐसी २ वनौषधियों से भूषित और नीलकमल–गुंजातक–कसेरू–शृंगाटक अर्थात् सिंघाड़ा–मृणाल–करट–इनसवसे भी शोभित वह पर्व्वतथा ४३ हे राजन् जल और स्थलमें उत्पन्नहोनेवाले मूल फल पुष्प–और अनेकप्रकार के मुनिभोज्य नीवार ४४ हे राजेन्द्र ऐसाकोई धान्य–शस्य–शाक–फल–मूल और कन्द न था जो उस पर्व्वतपर न हो ४५ इनके सिवाय नागलोक–नरलोक–और अनूप–वन इनसबमें होनेवाले फल मूल कन्दोंमें ऐसा कोई पदार्थ न था जो उस पर्व्वतपर न हो ४६ ऐसे पर्व्वतपर मद्रेश्वर पुरूरवा अपने तपके योगसे सबकालोंमें उन वृक्षोंके फल पुष्पोंको देखताहुआ ४७ उसपर निवास करने वाले अनेकप्रकार के आगे लिखेहुए पक्षियोंको देखताभया–मयूर–शतपुत्र–चिड़ा–कोयल ४८ का दंबक–हंस–टटीहरी–खंजरीट–कुरर–कालकूट–खट्वाङ्ग–लुब्धक ४९ गोक्ष्वेडक–कुंभ–श्वेतहंस–तोते–बगले–धातुक–चक्रवाक–कटुक–टिट्टिभ–भट ५० पुत्रप्रिय–लोहपृष्ठ–गोचर्म–गिरिवर्तक–कबूतर–कमल–मैना–चकोर–लवा वतक–रक्तवर्त्म–प्रभद्रक–मुरगा–स्वर्णचूड़–मुरग–खातीवि दा ५१।५२ कपोत–कलविंक–कुंकुमचूड़–भृङ्गराज–अर्थात् भौंरा–सीरपाद–भुलिंग–डिंडिम–नव ५३ मंजुली–दात्यूह–भारद्वाज और पपीहा–इनसबके सिवाय अन्यप्रकारके भी पक्षियों को वह राजा

केसरिणःसिंहान् द्वीपिनःशरभान्वृकान् ५५ ऋक्षांस्तरक्षूंश्चबहून् गोलांगूलान् सवानरान् । शशलोमान्सकादम्बान् मार्जारान्वायुवेगिनः ५६ तथामत्तांश्चमात ङ्गान् महिषान्गवयान्वृषान् । चमरान्सृमरांश्चैव तथागौरखरानपि ५७ उरभ्रांश्च तथामेषान् सारङ्गानथकुंकुरान् । नीलांश्चैवमहानीलान् करालान्मृगमातृकान् ५८ सदंष्ट्रारामसरभान् कोञ्चाकारकशम्बरान् । करालान्कृतमालांश्च कालपुच्छांश्चतोर णान् ५९ दंष्ट्रान्खड्गान्वराहांश्च तुरङ्गान्खरगर्दभान् । एतानद्विष्टान्मद्रेशो विरु द्धांश्चपरस्परम् ६० अविरुद्धान्वनेदृष्ट्वा विस्मयंपरमंययौ । तच्चाश्रमपदंपुण्यं बभू वात्रेःपुरानृप!६१तत्प्रसादात्प्रभायुक्तं स्थावरैर्जङ्गमैस्तथा । हिंसंतिहिंनचान्योन्यं हिंस कास्तुपरस्परम् ६२ क्रव्यादा प्राणिनस्तत्र सर्वेक्षीरफलाशनाः । निर्मितास्तत्रचात्यर्थं मत्रिणासुमहात्मना ६३ शैलान्नितम्बदेशेषु न्यवसच्चस्वयंनृपः । पयःस्रवन्तितेदिव्य ममृतस्वादुकण्टकम् ६४ क्वचिद्राजन्! महिष्यश्च क्वचिद्राजाश्चसर्वशः । शिलाःक्षी रेणसम्पूर्णादध्नाचान्यत्रवाबहिः ६५ सम्पश्यन्परमांप्रीतिमवापवसुधाधिपः । सरांसि तत्रदिव्यानि नद्यश्चविमलोदकाः ६६ प्रणालिकानिचोष्णानि शीतलानिचभागशः । कन्दराणिचशैलस्य सुसेव्यानिपदेपदे ६७ हिमपातोनतत्रास्ति समन्तात्पञ्चयोजनम्। उपत्यकासुशैलस्य शिखरस्यनविद्यते ६८ तत्रास्तिराजन्! शिखरं पर्वतेन्द्रस्यपाण्डु रम्। हिमपातङ्गयत्र कुर्वंतिसहिताःसदा ६९ तत्रास्तिचापरंशृङ्गं यत्रतोयघनाघनाः।

देखताभया ५४ इनको देखकर आगे लिखेहुए इन पशुजीवोंको देखताभया--मृग--रोभ--बघेरा--सिंह--गेंडा--शरभ--भेड़िया ५५ रीछ--चीता--गोलांगूल--वानर--सूंसा -कदंब--वायुकेसे वेगवाले बिलाव ५६ मदवाले हाथी महिप--रोभ--बैल--चमरीगौ--मृगभेद--गर्दभ ५७ उरभ्र- मेढ़ा--सारंग--कुत्ते--नील--महानील--कराल--मृगमातृक ५८ रामसरभ--कूज--सावर-कराल--कृतमाल-कालपुच्छ--तोरण ५९ दंष्ट्र--खड्ग--सूकर--घोड़ा--गर्दभ--इनके सिवाय परस्पर शत्रु और परस्पर मित्रता करने वाले जीवोंको देखताभया ६० यह राजा उन परस्पर मित्रता रखनेवालोंको देखकर बड़ेआश्चर्य्य को प्राप्तहुआ और हे राजा वहांही अत्रिऋषिका पूर्व आश्रमथा ६१।६२ उन ऋषि के प्रभाव और कृपासे तत्रहिंसक और अहिंसक स्थावर जंगमजीव परस्परमें हिंसानहीं करतेथे ६३ आशय यह है कि वहां मंत्रिमहात्माकी कृपासे सब मांसभक्षी जीव दूध अथवा फलोंकाही भोजन करतेथे ६४ उस पर्व्वतीय देशमें आप राजा वासकरके महादिव्य और अकंटक राज्यका भोगकरताथा हेराजन् उस पर्व्वतमें कहीं पटरानी और कहीं राजा वसताभया वहांकी प्रत्येक शिला दूध दही से पूर्णथी ६५ राजा पुरूरवा ऐसे पर्व्वतको देखताहुआ परमप्रीतिको प्राप्तहोताभया वहांही दिव्य सरोवर और सुन्दर जलवाली नदियोंको भी देखताभया ६६ और शीतोष्ण जलवहनेवाले झिरने पर्व्वतकी गुफा यहभी क्षण२ में सेवनके योग्य समझेगये उस पर्व्वत के चारोंओर बीसकोस के बीचमें हिमनहीं पड़ताथा और पर्व्वत के शिखरकेपास पृथ्वी नहीं दीखतीथी क्योंकि उस पर्वतेन्द्र के शिखरपर मेघ

नित्यमेवाभिवर्षंति शिलाभिःशिखरंवरम् ७० तदाश्रमंमनोहारि यत्रकामधराधरा। सुरमुख्योपयोगित्वात् शाखिनांसफलाःफलाः ७१ सदोपगीतभ्रमरं सुरस्त्रीसेवितंपरम्। सर्वपापक्षयकरंशैलस्यैवग्रहारकम् ७२ वानरैःक्रीडमानैश्च देशाद्देशान्नराधिप! । हिमपुञ्जाःकृतास्तत्र चन्द्रबिम्बसमप्रभाः ७३ तदाश्रमंसमन्ताच्च हिमसंरुद्धकन्दरैः। शैलवाटैःपरिवृतमगम्यमनुजैःसदा ७४ पूर्वाराधितभावोऽसौ महाराजःपुरूरवाः। तदाश्रमपदंप्राप्तो देवदेवप्रसादतः ७५ तदाश्रमंश्रमशमनंमनोहरं मनोहरैःकुसुमशतैरलंकृतम्। कृतंस्वयंरुचिरमथात्रिणाशुभं शुभावहंहिददृशेसमद्रराट् ७६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्ताधिकशततमोऽध्यायः ११७॥

(सूत उवाच) तत्रयौतौमहाशृङ्गौ महावर्णौमहाहिमौ। तृतीयन्तुतयोर्मध्ये शृङ्गमत्यन्तमुच्छ्रितम् १ नित्यातप्तशिलाजालं सदाभ्रपरिवर्जितम्। तस्याधस्ताद्वृक्षगणो दिशाभागेचपश्चिमे २ जातीलतापरिक्षिप्तं विवरंचारुदर्शनम्। दृष्ट्वैवकौतुकाविष्टस्तं विवेश महीपतिः ३ तमसाचातिनिविडं नल्वमात्रंसुसङ्कटम्। नल्वमात्रमतिक्रम्य स्वप्रभाभरणोज्ज्वलम् ४ तमुच्छ्रितमथात्यन्तं गम्भीरंपरिवर्तुलम्। नतत्रसूर्य्यस्तपति नविराजतिचन्द्रमाः ५ तथापिदिवसाकारं प्रकाशंतदहर्निशम्। क्रोशाधिकपरीमाणं सरसाचविराजितम् ६ समन्तात्सरसस्तस्य शैललग्नातुवेदिका। सौवर्णैराजतैर्वृक्षैर्विद्रुमैरुप

सदैव हिमकीही वर्षाकरतेथे ६७।६९ और उसके पासही दूसरे शिखरपर सघनमेघ नित्य वर्षाकिया करतेहैं वह शिखर शिलाओं करके बड़ा श्रेष्ठ है वहांहीं मनका हरनेवाला अत्रिका आश्रमहै जहांकी पृथ्वीकामनाकी देनेवालीहै और देवताओंके महाउपयोगी सुन्दर वृक्षोंकेफलहैं७०।७१ वह पर्व्वत भ्रमरोंसे गायाहुआ देवांगणाओं से सेवित सम्पूर्ण पापोंका नाशकरने वालाहै ७२ वहांक्रीड़ा करते हुयेजो देशदेशके वानरहैं उनके श्वेत पुंजोंसे वह चन्द्रमा केही समान कान्तिवालाहै ७३ वह अत्रि ऋषिका आश्रमहिमसे रुकीहुई गुफाओंके कारण मनुष्यों को महाअगम्य है ७४ पूर्वकियाहै आराधनजिसने ऐसा वह पुरूरवा महाराज देवदेव भगवान्की कृपासे उसआश्रमको प्राप्तहोताभया ७५ खेदका हरनेवाला मनका हरनेवाला मनोहर पुष्पोंसे भूषित शुभदायक अत्रिजी का रचाहुआ वह आश्रम यहमद्रदेशाधिपति देखताभया ७६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराण भाषाटीकायां सप्तदशाऽधिक शततमोऽध्यायः ११७॥

सूतजी कहते हैं हे ऋषीश्वरो उस पर्व्वतमें अनेक वर्णके हिमसे ढकेहुये दोशृंगथे जिनके मध्य में एकशृंग बहुत बड़ाथा १ और वहपर्व्वत तप्तशिलाओंके समूहसे व्याप्तहै--मेघों से वर्जित है और पश्चिम भागमें उसके नीचे वृक्षोंके समूहोंसे अद्भुत शोभा होरहीथी २ इसीसे वह आश्रम जातीलताओंसे युक्त और सुन्दर दर्शनवाला है ऐसे आनन्दकारी आश्रम में राजा प्रवेश करता भया ३ उस आश्रमका पूर्व भाग अन्धकार से युक्त और उसको उल्लंघन करके कान्ति से युक्तथा ४ जोकि वहां सूर्य्य नहीं तपता इसीसे वह अत्यन्त गंभीर गोलाकार है और चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतलता

शोभितम् ७ नानामाणिक्यकुसुमैः सुप्रभाभरणोज्ज्वलैः । तस्मिन्सरसिपद्मानि पद्म रागच्छदानितु ८ वज्रकेसरजालानि सुगन्धीनितथायुतम् । पत्रैर्मरकतैर्नीलैर्वैदूर्य्यस्य महीपते ! ९ कर्णिकाश्चतथातेषां जातरूपस्यपार्थिव ! । तस्मिन्सरसियाभूमिर्नसाव ज्रसमाकुला १० नानारत्नैरुपचिता जलजानांसमाश्रया । कपर्दिकानांशुक्तीनां शङ्खा नाञ्चमहीपते ! ११ मकराणाञ्चमत्स्यानां चण्डानांकच्छपैःसह । तत्रमरकतखण्डानि वज्राणाञ्चसहस्रशः १२ पद्मरागेन्द्रनीलानि महानीलानिपार्थिव !। पुष्परागाणिसर्वाणि तथाकर्कोटकानिच १३ तुत्थकस्यतुखण्डानि तथाशेषस्यभागशः। राजावर्तस्यमुख्यस्य रुचिराक्षस्यचाप्यथ १४ सूर्य्येन्दुकान्तयश्चैव नीलोवर्णान्तिमश्चयः । ज्योतीरसस्य रम्यस्य स्यमन्तस्यचभागशः १५ सुरोरगवलक्षाणां स्फटिकस्यतथैवच । गोमेद पित्तकानाञ्च धूलीमरकतस्यच १६ वैदूर्यसौगन्धिकयोस्तथाराजमणेर्नृप ! १७ वज्रस्यै वचमुख्यस्य तथाब्रह्ममणेरपि । मुक्ताफलानिमुक्तानान्ताराविग्रहधारिणाम् १८ सु खोष्णञ्चैवतत्तोयं स्नानाच्छीतविनाशनम्। वैदूर्यस्यशिलामध्ये सरसस्तस्यशोभना १९ प्रमाणेनतथासाच द्वेचराजन् ! धनुःशते । चतुरस्रातथारम्या तपसानिर्मितात्रिणा २० विलद्वारसमोदेशो यत्रतत्राहिरण्मयः । प्रदेशःसतुराजेन्द्र ! द्वीपेतस्मिन्मनोहरे २१ तथापुष्करणीरम्या तस्मिन्राजन् ! शिलातले । सुशीतामलपानीया जलजैश्चविराजि ता २२ आकाशप्रतिमाराजन् ! चतुरस्रामनोहरा । तस्यास्तदुदकंस्वादु लघुशीतंसुग

युक्त विराजमान था यह आश्रम सूर्य्यके आकारके समान अहर्निश प्रकाशकरता था और एक कोससे अधिक विस्तृत और रसों करके सहित एकसरोवर था ६ उस सरोवर के चारोंओर पर्व्वतके समीप सुन्दर वेदियोंसे शोभित यह पर्व्वत सुवर्णचांदी मूंगे और उत्तम वृक्षों से भूपितथा ७ उस सरोवर में माणिक्यके पुष्प श्रेष्ठकान्ति वाले पत्ते और नानावर्ण के कमल शोभायमान थे ८ हे राजन् वह सरोवर वैदूर्य्य मणि नीलमणि और हीरोंसे देदीप्यमानहोकर कमलोंकी सुगन्धियोंसे सुगन्धितथा ९ उस सरोवरके कमल सुवर्णकी पंखड़ियों से युक्त और हीरेमणियों से प्रकाशमान थे और उसकी भूमिभी हीरोंसे जटित १० कौड़ी शंख--कमल--और रत्नोंसेशोभितथी ११ इनकेसिवाय मकरमत्स्य कच्छपमणि और हीरेआदिसे व्याप्त १२ पद्मराग इन्द्रमणि नीलमणि पुखराज-कर्कोटक-१३ तुत्थक राजावर्त्त--मुख्य--रुचिराक्ष १४ सूर्य्यचन्द्रकी कांतिवालीमणि नीलमणि ज्योतीरस-स्यमन्तक १५ सु-रोरगवलक्ष--स्फटिक--गोमेद--पित्तक--धूलीमरकत--१६ वैदूर्य्य--सौगन्धिक--राजमणि--वज्रमणि -मु-ख्यमणि ब्रह्ममणि--मोती--और तारोंके समान मोती--ऐसे रत्नोंसे वह सरोवरव्याप्तहै १७। १८ उस का जलभी मन्दोष्ण शीतका दूर करनेवाला है उस सरोवरमें वैदूर्य्य मणिकी सुन्दर शिलाहै १९ वह आठसौ हाथकी चौखूंटीहै और अत्रि ऋषिने अपने तपोबलसे रचीहै २० हे राजेन्द्र उसमनो-हरद्वीपमें जहां तहां सुवर्णके विलहैं वह देशके द्वारोंके समान विदित होतेहैं और उस शिलाकेनीचे रमणीक नदीहै वह नदी सुन्दर शीतल स्वच्छ जलवाली और कमलोंसे शोभितहै २१। २२ इसके

न्धिकम् २३ नक्षिणोतियथाकण्ठं कुक्षिन्नापूरयत्यपि। तृप्तिंविधत्तेपरमां शरीरेचमहत् सुखम् २४ मध्येतुतस्याःप्रासादं निर्मितंतपसात्रिणा। रुक्मसेतुप्रवेशान्तं सर्वरत्नमयं शुभम् २५ शशाङ्करश्मिसङ्काशं प्रासादेराजितंहितम्। रम्यवैदूर्यसोपानं विद्रुमामल सारकम् २६ इन्द्रनीलमहास्तम्भं मरकतासक्तवेदिकम्। वज्रांशुजालैःस्फुरितं रम्यंदृष्टि मनोरमम् २७ प्रासादेतत्रभगवान् देवदेवोजनार्दनः। भोगिभोगावलीसुप्तः सर्वालङ्कार भूषितः २८ जान्वाचकुञ्चितस्त्वेको देवदेवस्यचक्रिणः। फणीन्द्रसन्निविष्टोऽङ्घ्रिर्द्वितीयश्चतथानघ! २९ लक्ष्म्युत्सङ्गगतोङ्घ्रिस्तु शेषभोगप्रशायिनः। फणीन्द्रभोगसन्यस्त बाहुःकेयूरभूषणः ३० अंगुलीपृष्ठविन्यस्त देवशीर्षधरम्भुजम्। एकंवैदेवदेवस्य द्वितीयन्तुप्रसारितम् ३१ समाकुञ्चितजानुस्थमणिबन्धेनशोभितम्। किञ्चिदाकुञ्चितंचैव नाभिदेशकरस्थितम् ३२ तृतीयन्तुभुजंतस्य चतुर्थन्तुतथाशृणु। आत्तसन्तानकुसुमंघ्राण देशानुसर्पिणम् ३३ लक्ष्म्यासंवाह्यमानांघ्रिः पद्मपत्रनिभैःकरैः। सन्तानमालामुकुटं हार केयूरभूषितम् ३४ भूषितश्चतथादेवमङ्गदैरंगुलीयकैः। फणीन्द्रफणविन्यस्त चारुरत्न शिरोज्ज्वलम् ३५ अज्ञातवस्तुचरितं प्रतिष्ठितमथात्रिणा। सिद्धानुपूज्यंसततं सन्तान कुसुमार्चितम् ३६ दिव्यगन्धानुलिप्ताङ्गं दिव्यधूपेनधूपितम्। सुरसैःसुफलैर्हृद्यैः सिद्धै रुपहृतैःसदा ३७ शोभितोत्तमपार्श्वन्तं देवमुत्पलशीर्षकम्। ततःसन्मुखमुद्वीक्ष्य ववन्दे

सिवाय वहां बहुत मनोहर चौखूंटी आकाशके समान स्वच्छ प्रतिमावाली नदी है जिसकाकि जल अति सुस्वादु शीतल और सुगन्धिवाला है २३ कंठको शीतल उदर में नहीं लगनेवाला अत्यन्त तृप्तिका करनेवाला और शरीरमें सुखका करनेवालाहै २४ उसके मध्यमें अत्रि मुनिने अपने तपसे एक मन्दिर रचाहै वह मंदिर सुवर्णके पुलसे युक्त सम्पूर्ण रत्नोंसे संयुक्त है २५ उस चन्द्रमाकीसी किरणोंवाले मंदिरमें वैदूर्य्यमणिकी सीढ़ीमूंगे और इन्द्रनीलमणि के महास्तंभ मरकत मणिकेदासे हीरेकी जाली और भरोखेहैं ऐसे रमणीक मन्दिरमें २६। २७ जनार्दन भगवान् सम्पूर्ण अलंकारोंसे युक्त शेषशय्या पर शयन करते हैं २८ वहांही विष्णु भगवान् एकपैरके घोंटूको खड़ाकियेहुए पैरको शेषशय्या पर सीधापसारेहुए सोवते हैं २९ लक्ष्मीजीकी गोदीमें पैर धरेहुए शेषशय्यापर शयनकरते हुए बाजूबन्द आदि भूषणोंसे भूषित दीर्घभुजा वालेहैं ३० विष्णु भगवान्ने अपनी एकभुजा तो अंगुलीके स्थानसे अपनीग्रीवापर लगारक्खीहै और दूसरीभुजा पसाररक्खीहै ३१ वहपसारीहुई भुजा खड़ेकियेहुए घोंटूपर पहुंचेके स्थानसे टिकीहुई शोभित होरहीहै तीसरी भुजा कुछ छोटीहोकर नाभि की जगह टिकरहीहै और चौथी भुजामें कल्पवृक्षका पुष्पलियेहुए सूंघरहे हैं ३२। ३३ और लक्ष्मी जी अपने कमलके समान हाथोंसे चरणोंको दाबरहीहैं और कल्पवृक्षके पुष्पोंकी माला पहरे मुकुट और नूपुर पर्य्यन्त सुन्दरहार इनसबसे महासुन्दर ३४ बाजूबंद अंगूठी आदिसे शोभित शेषनागके फणके ऊपर सुन्दररत्नोंसे अलंकृत प्रकाशमान अपने शिरको स्थापित कररहेहैं ३५ अज्ञात वस्तुओं के आचरण करनेवाले अत्रिऋषिसे प्रतिष्ठित कियेहुए सिद्धोंसे पूजेहुए सदैव कल्पवृक्षों के पुष्पोंसे

सनराधिपः ३८ जानुभ्यांशिरसाचैव गत्वाभूमिंयथाविधि। नाम्नांसहस्रेणतदातुष्टावम
धुसूदनम् ३९ प्रदक्षिणमथोचक्रे सतूत्थायपुनःपुनः। रम्यमायतनंदृष्ट्वा तत्रोवासाश्रमे
पुनः ४० जलाद्बहिर्गुहांकाञ्चित् आश्रित्यसुमनोहराम्। तपश्चकारतत्रैव पूजयन्मधु
सूदनम् ४१ नानाविधैस्तथापुष्पैः फलमूलैःसगोरसैः। नित्यंत्रिषवणस्नायी वह्निपूजाप
रायणः ४२ देववापीजलैःकुर्वन् सततंप्राणधारणम्। सर्वाहारपरित्यागं कृत्वातुमनुजे
श्वरः ४३ अनारततगुहाशायी कालंनयतिपार्थिवः। त्यक्ताहारक्रियश्चैव केवलंतोयतो
नृपः। नतस्यग्लानिमायाति शरीरञ्चतदद्भुतम् ४४ एवंसराजातपसिप्रसक्तः संपूज
यन्देववरंसदेव। तत्राश्रमेकालमुवासकञ्चित् स्वर्गोपमेदुःखमविन्दमानः ४५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८॥

(सूत उवाच) सत्वाश्रमपदेरम्ये त्यक्ताहारपरिच्छदः। क्रीडाविहारंगन्धर्वैः पश्यत्यप्स
रसांसह १ कृत्वापुष्पोच्चयंभूरि ग्रथयित्वातथास्रजः। अर्घंनिवेद्यदेवाय गन्धर्वेभ्यस्तदा
ददौ २ पुष्पोच्चयप्रसक्तानां क्रीडन्तीनांयथासुखम्। चेष्टानानाविधाकाराः पश्यन्नपिन
पश्यति ३ काचित्पुष्पोच्चयेसक्ता लताजालेनवेष्टिता। सखीजनेनसन्त्यक्ता कान्तेनाभि
समुज्झिता ४ काचित्कमलगन्धाभा निश्वासपवनाहतैः। मधुपैराकुलमुखी कान्तेनप

पूजेहुए दिव्यगन्धसे लिप्तांग उत्तम धूपसेधूपित सदैव सिद्धोंसे रमणीक रसीले फलोंसे आच्छादित उत्तम करवट लिये कमलके पुष्पोंका तकिया लगाये ऐसे प्रकारसे महा शोभित उनविष्णु भगवान् के सन्मुख होकर वहराजा उनको प्रणाम करताभया ३६। ३८ और यथार्थविधिसे नम्रतापूर्वक समीप जाकर सहस्रनाम स्तोत्रसे विष्णुको प्रसन्नकर ३९ वारंवार परिक्रमा करताहुआ उसी रमणीक आश्रम में वास करताभया और जलसे बाहर निकसकर उस महामनोहर सुन्दर गुफा को देखता भया और वहांही विष्णु भगवान्का पूजन करता तपस्या करने लगा ४०। ४१ अर्थात् प्रतिदिन तीनोंवार स्नानकर अनेक प्रकारके फलपुष्प गन्ध कन्द मूल और गोरस इन सबसे अग्नि की पूजामें तत्पर होकर नदियोंके जलसे प्राणोंका पोषण करता हुआ वह राजा सब आहारोंको क्रमसे त्याग देताभया ४२। ४३ विना विछोने गुफामें शयनकरके भोजनादि क्रियाको त्याग केवल जल पानही करने लगा ४४ उस समय राजाके शरीर में किसी प्रकारका कोई खेद न हुआ किन्तु अद्भुत शरीर से तपमें लगारहा और विष्णु भगवान् को पूजता हुआ स्वर्गके समान उस आश्रममें किसी प्रकार का खेद न मानताभया कुछ काल पर्य्यन्त उसी आश्रम में वास करताभया ४५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टादशोत्तरशततमोऽध्यायः ११८॥

सूतजी कहतेहैं कि फिर वह राजा उसरमणीक आश्रम में भोजन वस्त्रादि को त्याग गन्धर्व और अप्सराओं की क्रीड़ा व्यवहार को देखताभया १ और अनेक प्रकारके पुष्पोंकी सुगन्धित मालाओंको बना विष्णु के अर्थ निवेदनकर गन्धर्वोंको देताभया २ और उन पुष्पोंके समूहोंमें प्रसक्त होकर अप्सराओंकी क्रीड़ाको देखता हुआभी न देखता भया ३ कुछेक अप्सरा लताजाल से वेष्टित होके

रिमोचिता ५ मकरन्दसमाक्रान्तनयनाकाचिदङ्गना । कान्तनिश्वासवातेन नीरजस्क
कृतेक्षणा ६ काचिदुच्चीयपुष्पाणि ददौकान्तस्यभामिनी। कान्तसंग्रथितैःपुष्पै रराजकृत
शेखरा ७ उच्चीयस्वयमुद्ग्रथ्य कान्तेनकृतशेखरा । कृतकृत्यमिवात्मानं मेनेमन्मथवर्द्धि-
नी ८ अम्यस्मिनाह्नेकुञ्जे विशिष्टकुसुमालता। काचिदेवंरहोनीता रमणेनरिरंसुना ९
कान्तसन्नामितलता कुसुमानिविचिन्वती। सर्वाभ्यःकाचिदात्मानं मेनेसर्वगुणाधिकम् १०
काश्चित्पश्यन्तिभूपालं नलिनीषुपृथक्पृथक् । क्रीडमानास्तुगन्धर्वैं रममाणामनोर
माः ११ काचिदाताडयत्कान्तमुदकेनशुचिस्मिता । ताड्यमानाथकान्तेन प्रीतिंकाचि
दुपाययौ १२ कान्तश्चताडयामास जातखेदावराङ्गना । अदृश्यतवरारोहा श्वासनृत्यत्
पयोधरा १३ कान्ताम्बुताडनोत्घृष्टकेशपाशनिबन्धना। केशाकुलमुखीभाति मधुपैरिव
पद्मिनी १४ स्वचक्षुःसदृशैःपुष्पैः सञ्छन्नेनलिनीवने । छन्नाकाचिच्चिरात्प्राप्ता कान्तेना
न्विष्ययत्नतः १५ स्नाताशीतापदेशेन काचित्प्राहाङ्गनाभृशम् । रमणालिङ्गनंचक्रे म
नोऽभिलषितञ्चिरम् १६ जलार्द्रवसनंसूक्ष्ममंगलीनंशुचिस्मिता । धारयन्तीजनंचक्रे
काचित्तत्रसमन्मथम् १७ कण्ठमाल्यगुणैःकाचित् कान्तेनाकृष्यताम्भसि। त्रुट्यत्स्र

पुष्पोंके समूह में आसक्त हुई सखियों के त्यागने से भर्त्ताओंसेभी त्याग करादीगई ४ कोई अप्सरा कमलों के पुष्पोंकी सुगन्धि के समान सुखवाली वायुसे भ्रमतेहुए भौंरोंसे व्याकुलमुख होकर पतियोंसे त्यागी हुई कोई पुष्पोंके रससे भीजेहुए नेत्रोंवाली पतिके श्वास की वायुसे रज रहित खुले नेत्रोंसे महाशोभित हुई ५। ६ कोई कोई पुष्पोंको इकट्ठा करके अपने भर्त्ताओं को देतीभई कोई भर्त्तासे गुंथेहुए पुष्पोंसे शोभित चोटीसे प्रकाशमान होती भई ७ कोई आपही पुष्पों को गूंथ अपने भर्त्ताके समीप जाके उसीसे शिरपर गुंथवाती भई कोई अप्सरा कामदेवकी बढ़ाने वाली वायु से अपनी आत्मा को कृतकृत्य मानती भई ८ किसी अप्सरा को भर्त्ताने इंगितकरके और यहकहकर कि इस कुंजमें बहुत सुन्दर पुष्पवाली बेलि है रमण करने की इच्छा से एकान्त में बुला लिया ९ किसी स्त्रीने अपने भर्त्ता करके नवाई हुई बेलसे पुष्पों को तोड़कर अपनी सखियों को बांटा कोई अपने आत्मा को अधिक गुणवाला और कृतकृत्यमानती भई १० कोई कमलिनियोंमें पृथक् पृथक् गन्धर्वों के संग क्रीडा करती भई फिर उन सुन्दर अप्सराओं ने इसराजा को भी देखा ११ कोई सुन्दर हास्यवाली अप्सरा जल करके अपने पतिको क्रीडा में पीड़ितकरती हुई फिर पतिसे ताड़ितहुई परम प्रीतिको प्राप्तहोतीभई १२ फिर खेदको प्राप्तहुई वरांगना अपने श्वास से कुचाओंको हिलातीभई १३ कोईपतिसे तोड़ेहुए कमलके पुष्पोंसे शिथिल केशोंवाली होकर वालों से व्याकुल मुखवाली ऐसी शोभितहुई जैसीकि कमलिनी शोभित होतीहै १४ कोईअप्सरा अपने नेत्रोंके समान पुष्पोंसे अच्छादितहुए कमलोंके वनमें विस्मरण होकर बड़े यत्नसे पतिको ढूंढ़ती हुई इधर उधर घूमतीथी १५कोई स्नानकरके जाड़के मिससे पतिकेसंग मनोवाञ्छित रमणके समान बहुत कालतक आलिंगन करतीभयी १६ कोई महासुन्दरहास्यवाली अप्सरा बड़े महीन गीलेवस्त्रों

न्दामपतितं रमणंप्राहसच्चिरम् १८ काचिद्भग्नासखीदत्त जानुदेशेनखक्षता। संभ्रान्ता कान्तशरणं मग्नाकाचिद्गताचिरम् १९ काचित्पृष्ठकृतादित्या केशनिस्तोयकारिणी। शिलातलगतांभर्त्ता दृष्टाकामार्तचक्षुषा २० कृत्तमाल्यंविलुलितं संक्रान्तकुचकुंकुमम्। रतिक्रीडितकान्तेव रराजतत्सरोदकम् २१ सुस्नातदेवगन्धर्वं देवरामागणेनच। पूज्यमानञ्चदहशे देवदेवंजनार्दनम् २२ क्वचिच्चददृशेराजा लतागृहगताःस्त्रियः। मडयन्तीः स्वगात्राणि कान्तसंन्यस्तमानसाः २३ काचिदादर्शनकरा व्यग्रादूतीमुखोद्गतम्। शृण्वन्तीकान्तवचनम् अधिकातुतथाबभौ २४ काचित्सत्वरितादूत्या भूषणानांविपर्ययम्। कुर्वाणानैवबुबुधे मन्मथाविष्टचेतना २५ वायुनुन्नातिसुरभिकुसुमोतकरमण्डिते। काञ्चित्पिबन्तींददृशे मैरेयंनीलशाद्वले २६ पाययामासरमणं स्वयंकाचिद्वराङ्गना। काचित्पपौवरारोहा कान्तपाणिसमर्पितम् २७काचित्स्वनेत्रचपलनीलोत्पलयुतम्पयः। पीत्वापप्रच्छतरणं क्वगतौतौममोत्पलौ २८ त्वयैवपीतौतौनूनमित्युक्तारमणेनसा। तथाविदित्वामुग्धत्वाद्बभूवव्रीडिताभृशम् २९ काचित्कान्तार्पितंसुभ्रूः कान्तपीतावशेषितम्। सविशेषरसंपानं पपौमन्मथवर्धनम् ३० अपानगोष्ठीपुतथा तासांसनरपुङ्ग

को पहनकर पुरुषों को कामातुर करतीभयी १७ किसी अप्सराके कंठकी मालाको उसका पति जल से खींचताहुआ मालाके सूत्रके टूटनेसे गिरपड़ा और वहहंसतीभयी १८कोई अप्सरा गिरीहुई सखी के गोड़ेपर बैठीहुई नखक्षतहोनेसे अपनेभर्त्ताकी शरणमें बहुतकालतक होतीभयी १९ कोई सूर्य्यको पीठ पीछेकरके अपनेवालोंको सुखातीभई उससमय शिलातलपर खड़ीहुई उसको देखकर उसका भर्त्ता कामार्त्त नेत्रोंसे उसको आह्वानकरताभया २० उसकाल पुष्पोंकी मालाओं से आच्छादित कुचाओं की केशरसेयुक्त उससरोवरकाजल ऐसाशोभितहुआ जैसे कि रतिकेसमयमें स्त्रीकीशोभाहोरही हो २१ सुन्दरप्रकारसे स्नानकियेहुए देवता गन्धर्व और देवताओंकीस्त्री इनसबसे पूजितहुए विष्णु भगवान्को वह देखताभया २२ और कहींवहराजा बेलों के घरमें प्राप्तहुई स्त्रियोंकोभी देखताभया कहीं अपने पतिमें मनलगायेहुये शरीरको भूषितकरतीहुई स्त्रियों को देखताभया २३ कोई हाथमें सीसालेकर मुखदेखतीहुई व्यग्रहोकर सखी के मुखसे कहेहुए पतिकेवचनको सुनकर अधिक शोभा को प्राप्तहोतीभयी २४ कोईदूती के कहनेसे शीघ्रताकरतीहुई आभूषणोंकोविपरीत धारणकरती काम देवसे युक्तहुए चित्तसे कुछनहीं जानती थी २५ कहीं वायुसे कंपतेहुए सुगन्धिवाले पुष्पों से मंडित नीलीघासपर खड़ीहुई मदिरापीतीहुई अप्सराको देखताभया २६ कोई अंगनाअपनेपतिको अपने हाथसे पिलातीहुई और अपने पतिके हाथसे मदिराको पीतीहुई २७कोईअपने नेत्ररूप चपल नीलकमलोंको दूधमें देखकर और उसदूधकोपीके पतिसे पूछतीभई कि मेरे दोकमलकेपुष्पकहांगये २८ तब उसकेपतिनेकहा कि वेतोनिश्चय तैंने आपहीपीलिये फिर भोलेपनसे उसीप्रकार जानकर अत्यन्त लज्जित होतीभई २९ कोई सुन्दर भृकुटियों वाली अप्सरा पतिके पियेहुए अधिक रसकेसमान काम देवके बढ़ानेवाले दूधको पीतीभयी ३० इसके सिवाय वह राजा उन अप्सराओं के कटाक्षकी गोष्ठीके

वः। शुश्रावविविधङ्गीतं तन्त्रीस्वरविमिश्रितम् ३१ प्रदोषसमयेताश्च देवदेवंजनार्द
नम्। राजन्! सदोपनृत्यन्ति नानावाद्यपुरःसराः ३२ याममात्रेगतेरात्रौ विनिर्गत्यगु
हामुखात्। आवसन्संयुताःकान्तैः परधिरचिताड्गुहाम् ३३ नानागन्धान्वितलतां ना
नागन्धसुगन्धिनीम्। नानाविचित्रशयनां कुसुमोत्करमण्डिताम् ३४ एवमप्सरसांप
श्यन् क्रीडितानिसपर्वते। तपस्तेपेमहाराजन्! केशवार्पितमानसः ३५ तमूचुर्नृपतिङ्ग
त्वा गन्धर्वाप्सरसाङ्गणाः। राजन्! स्वर्गोपमन्देशमिमं प्राप्तोऽस्यरिन्दम! ३६ वयंहि
तेप्रदास्यामो मनसःकांक्षितान्वरान्। तानादायगृहङ्गच्छ तिष्ठेहयदिवापुनः ३७ (रा
जोवाच) अमोघदर्शनाःसर्वे भवन्तस्त्वामितोजसः। वरंवितरतांद्यैव प्रसादंमधुसूदना
त् ३८ एवमस्त्वित्यथोक्तस्तैः सतुराजापुरूरवाः। तत्रोवाससुखीमासं पूजयानोजनार्द
नम् ३९ प्रियएवसदैवासीद्गन्धर्वाप्सरसांनृपः। तुतोषसजनोराज्ञस्तस्यालौल्येनकर्म्म
णा ४० मासस्यमध्येसनृपःप्रविष्टस्तदाश्रमंरत्नसहस्रचित्रम्। तोयाशनस्तत्रउवासमा
सं यावत्सितान्तोनृप! फाल्गुनस्य ४१ फाल्गुनामलपक्षान्ते राजास्वप्नेपुरूरवाः। त
स्यैवदेवदेवस्य श्रुतवान्गदितंशुभम् ४२ रात्र्यामस्यांव्यतीतायामत्रिणात्वंसमेष्यसि।
तेनराजन्! समागम्य कृतकृत्योभविष्यसि ४३ स्वप्नमेवंसराजर्षिर्दृष्ट्वादेवेन्द्रविक्रमः।
प्रत्यूषकालेविधिवत् स्नातःसम्प्रयतेन्द्रियः ४४ कृतकृत्योयथाकामं पूजयित्वाजनार्दनम्।

समयमें वीनकेस्वरसे विभूषित अनेक प्रकारके गीतोंको सुनताभया ३१ हेराजन् प्रदोष समयमें वह अ-
प्सरा देवदेव विष्णुभगवान्के आगेबाजेबजाकर नृत्यकरतीहैं ३२ एकप्रहररात्रि व्यतीतहोजानेपर उस
गुफाके मुखसे बाहर निकसकर महाउत्तम गोलाकार रचीहुई गुफाओंमें अपने २ पतियोंकेसाथरमण
करतीहुई ३३ अनेकप्रकारकी सुगंधिवाली लताओंपर अनेकप्रकारकेपुष्पोंसेआच्छादितहुई शय्याओं
परशयनकरती भयीं ३४ इसप्रकारकी अप्सराओंकी क्रीड़ाकोवह राजा देखताहुआविष्णुमें तदाकार
चित्तकरके तपकरताभया ३५ तब गन्धर्वोंसमेत अप्सराओं के गण उसराजाके समीप जाके बोले कि
हेराजन् तुमस्वर्गके समान इस देशमें प्राप्तहुयेहो ३६ सो हमतुमको तुम्हारे मनोवांछित वरोंको देंगे
उन वरोंको ग्रहणकरके चाहे अपने घरकोजाना अथवा यहाँही ठहरना ३७ राजा बोला-आप सबलोग
अमोघ दर्शन और अतुल पराक्रमवाले हो सो अभी विष्णु भगवान्की प्रसन्नतासे मुझे वर प्राप्तक-
राओ ३८ तब वह सब तथास्तु कहकर चलेगये और वह राजा पुरूरवा उसीस्थानपर सुखपूर्वक
एकमहीने तक निवास करताभया ३९ और गन्धर्वोंसमेत अप्सराओं को सदैव प्रियहोताभया फिर
उस राजाके चंचलकर्मसे विष्णु भगवान् प्रसन्नहोतेभये ४० एकमहीने के पीछे वह राजा रत्नोंसे
विचित्र एक रमणीक आश्रममें प्रवेशकरताभया वहाँ फाल्गुन महीनेके शुक्लपक्षके अन्ततक जलही
में वासकरताभया ४१ फाल्गुनके व्यतीत होजानेपर वह राजा पुरूरवा स्वप्नमें विष्णुके कहेहुए इस
वचनको सुनताभया ४२ कि रात्रिव्यतीत होजानेपर तुम अत्रिमुनिके साथ मुझको प्राप्तहोगे तभी
तुम कृतकृत्य होजाओगे ४३ इस प्रकारके स्वप्नको देखकर वह राजा प्रातःकालही उठ जितेन्द्री हो

ददर्शात्रिंमुनिंराजा प्रत्यक्षंतपसांनिधिम् ४५ स्वप्नन्तुदेवदेवस्य न्यवेदयतधार्मिकः। ततःशुश्रावववचनं देवतानांसमीरितम् ४६ एवमेतन्महीपाल ! नात्रकार्य्याविचारणा। एवंप्रसादंसंप्राप्य देवदेवाज्जनार्दनात् ४७ कृतदेवार्चनोराजा तथाहुतहुताशनः। सर्वान्कामानवाप्तोऽसौ वरदानेनकेशवात् ४८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकोनविंशतिशततमोऽध्यायः ११९॥

(सूत उवाच) तस्याश्रमस्योत्तरतस्त्रिपुरारि निषेवितः। नानारत्नमयैःशृङ्गैः कल्पद्रुमसमन्वितैः १ मध्येहिमवतःपृष्ठे कैलासोनामपर्वतः। तस्मिन्निवसतिश्रीमान् कुवेरःसहगुह्यकैः २ अप्सरोऽनुगतोराजा मोदतेह्यलकाधिपः। कैलासपादसम्भूतं रम्यंशीतजलंशुभम् ३ मन्दारपुष्परजसा पूरितंदेवसन्निभम्। तस्मात्प्रवहतेदिव्या नदीमन्दाकिनीशुभा ४ दिव्यञ्चनन्दनंतत्र तस्यास्तीरेमहद्वनम्। प्रागुत्तरेणकैलासाद्दिव्यंसौगन्धिकंगिरिम् ५ सर्वधातुमयंदिव्यं सुवेलंपर्वतंप्रति। चन्द्रप्रभोनामगिरिः सशुभ्रोरत्नसन्निभः ६ तत्समीपेसरोदिव्यमच्छोदंनामविश्रुतम्। तस्मात्प्रभवतेदिव्या नदीह्यच्छोदिकाशुभा ७ तस्यास्तीरेवनंदिव्यं महच्चैत्ररथंशुभम्। तस्मिन्गिरौनिवसति मणिभद्रःसहानुगः ८ यक्षसेनापतिःक्रूरो गुह्यकैःपरिवारितः। पुण्यामन्दाकिनीनाम नदीह्यच्छोदिकाशुभा ९ महीमण्डलमध्येतु प्रविष्टेतुमहोदधिम्। कैलासदक्षिणेप्राच्यां शिवं

विधिपूर्वक स्नानकरताभया ४४ और कृतकृत्यहोकर बड़ी विधिसे भगवानको पूजताहीथा कि उन महातपोनिधि अत्रिमुनिके प्रत्यक्ष दर्शन करताभया ४५ फिर जनार्द्दन भगवान्के स्वप्नको अत्रिमुनिसे निवेदनकरताभया इसके अनन्तर देवताओं के कहेहुए इसवचनको सुनताभया ४६ कि हेमहाराज ऐसाही है इसमें सन्देहनहीं है इस प्रकारसे विष्णु भगवान्से वरको प्राप्तहोकर पूजन हवनकर विष्णुके दियेहुए वरदानसे वह राजा सब कामनाओं को प्राप्तहोगया ४७।४८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांएकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ११९॥

सूतजी बोलेकि उस आश्रमसे उत्तरकी ओर शिवजी करके सेवित अनेक प्रकारके रत्नोंसे जटित शिखरोंसे संयुक्त कल्पवृक्षोंसे व्याप्त हिमवान् पर्व्वतके पृष्ठ भागके मध्यमें कैलास नाम पर्व्वतहै वहाँ श्रीमान् कुवेरजी अपने गुह्यकों समेत वासकरते हैं १।२ वह अलकापुरीके राजा कुबेर अप्सराओं के सग आनन्द करतेहैं उस कैलासमें रमणीक शीतल जलसे सिंचेहुए मंदारवृक्षके पुष्पोंकी रजसे पूरित देवताओंके समान कान्तिवाला शिखर है उसके तटपर दिव्य मंदाकिनीनदी बहती है उसीकेऊपर बड़ा दिव्य और बहुतबड़ा नन्दनवनहै और उसीके पूर्व्वोत्तर दिशामें संपूर्ण धातुमय सुगन्धिवाला सुन्दर बेलासे युक्त चन्द्रप्रभनाम श्वेत पर्व्वतहै वहरत्नके समान कान्तिवाला है ३।६ उसके समीप अच्छोदनाम सरोवर है जिस्से अच्छोदानामनदी निकलती है उसके तीरपर चैत्ररथनाम दिव्य बन है उस पर्व्वतपर अनुचरोंसमेत मणिभद्र बसताहै७।८यहमणिभद्र यक्षोंकी सेनाकापति महाक्रूर और यक्षोंकोसाथ लियेहुये फिरतारहता है और मंदाकिनीनाम पवित्र अच्छोदा नदी वहाँ बहती है ९

सर्वौषधिंगिरिम् १० मनःशिलामयंदिव्यं सुवेलंपर्वतंप्रति। लोहितोहेमशृङ्गस्तु गिरिः सूर्य्यप्रभोमहान् ११ तस्यपादेमहद्दिव्यं लोहितंसुमहत्सरः। तस्मात्प्रभवतेपुण्यो लौहित्यश्चनदीमहान् १२ दिव्यारण्यंविशोकञ्च तस्यतीरेमहद्वनम्। तस्मिन्गिरौनिवसति यक्षोमणिधरोवशी १३ सौम्यैःसुधार्मिकैश्चैव गुह्यकैःपरिवारितः। कैलासात्पश्चिमोदीच्यां ककुद्मानोषधीगिरिः १४ ककुद्मतिचरुद्रस्य उत्पत्तिश्चककुद्मिनः। तदजनन्त्रैककुदं शैलन्त्रिककुदंप्रति १५ सर्वधातुमयस्तत्र सुमहान्वैद्युतोगिरिः। तस्यपादेमहद्दिव्यं मानसंसिद्धसेवितम् १६ तस्मात्प्रभवतेपुण्या सरयूर्लोकपावनी। तस्यास्तीरेवनंदिव्यं वैभ्राजंनामविश्रुतम् १७ कुवेरानुचरस्तस्मिन् प्रहेतितनयोवशी। ब्रह्मधातानिवसति राक्षसोऽनन्तविक्रमः १८ कैलासात्पश्चिमामाशांदिव्यःसर्वौषधिर्गिरिः। अरुणःपर्वतश्रेष्ठो रुक्मधातुविभूषितः १९ भवस्यदयितःश्रीमान् पर्वतोहेमसन्निभः। शातकौम्भमयैर्दिव्यैः शिलाजालैःसमाचितः २० शतसंख्यैस्तापनीयैः शृङ्गैर्दिवमिवोल्लिखन्। शृङ्गवान्सुमहादिव्यो दुर्गःशैलोमहाचितः २१ तस्मिन्शिरोनिवसति गिरिशो धूम्रलोचनः। तस्यपादात्प्रभवति शैलोदंनामतत्सरः २२ तस्मात्प्रभवतेपुण्या नदी शैलोदकाशुभा। साचक्षुषीतयोर्मध्ये प्रविष्टापश्चिमोदधिम् २३ अस्त्युत्तरेणकैलासाच्छिवः सर्वौषधीगिरिः। गौरन्तुपर्वतश्रेष्ठं हरितालमयंप्रति २४ हिरण्यशृङ्गःसुमहान्

यहनदी पृथ्वीके मंडलपर आकर समुद्रमें प्रवेशकरती है और कैलासके दक्षिणकी ओर पूर्वदिशामें सुन्दर सर्वौषधियां पर्व्वतमें निवास करती हैं १० उसपर्व्वतपर मनशिलके पर्व्वतकी वेलाहै और सूर्य्यके समान कान्तिवाला हेमशृंग पर्व्वतहै ११ उसकेनीचे महादिव्य लालसरोवरहै उससेही बड़े गरूका नद उत्पन्न होताहै उसके तटपर दिव्यारण्य और विशोकनाम दो महावनहैं उनमें मणिधर यक्ष वसताहै १२। १३ वह शीलस्वभाववाले धार्मिक गुह्यकों से युक्त रहताहै और कैलासके पश्चिमोत्तर कोणमें ककुद्मान्नाम औषधियोंका पर्व्वत है उसपर्व्वतपर ककुद्मीरुद्रकी उत्पत्तिहै १४।१५ वहाँ सबधातुओंसे संयुक्त महान् वैद्युत नामवाला पर्व्वतहै उसके नीचे महादिव्य मानसरोवरहै वह सिद्धोंसे सेवितहै उसीसे पवित्र सरयूनदी निकली है और लोकोंको पवित्र करतीहै उसके तीरपर वैभ्राजनाम दिव्यवनहै १६। १७ उसवनमें प्रहेतिकापुत्र कुवेरका अनुचर अनन्तपराक्रमी ब्रह्मधातानाम राक्षस वसताहै १८ कैलाससे पश्चिमकी दिशामें दिव्यसर्वौषधिका लालरंगवाला पर्व्वत सुवर्णधातुसे विभूषित पर्व्वतोंमें श्रेष्ठ १९ शिवजीका प्रिय श्रीमान् हेम सन्निभ सुवर्णशिलावाला सुवर्णकी दिव्यशिलाओंके जालोंसे मंडितहै २० वहपर्व्वत अपने सैकड़ों शृंगोंकी उंचाईसे और कान्तिसे स्वर्गको स्पर्श करताहुआ विदित होताहै इसदिव्य शिखरवाले पर्व्वतमें धूम्रलोचन शिवजी वसतेहैं उसके नीचेसेही शैलोदनाम सरोवर उत्पन्न होताहै २१। २२ उसी सरोवरमें से पवित्र शैलोदानाम नदी बहती है वह चक्षुर्नामसे प्रसिद्ध होकर पश्चिम के समुद्रमें प्रवेशकरती है २३ कैलास से उत्तर की ओर सर्वौषधनाम पर्व्वतहै उसके समीप हरिताल के पर्व्वत की ओर बड़ा

दिव्यौषधिमयोगिरिः। तस्यपादेमहद्दिव्यं सरःकाञ्चनबालुकम् २५ रम्यंविन्दुसरोनाम यत्रराजा भगीरथः। गङ्गार्थेसतुराजर्षिरुवासबहुलाःसमाः २६ दिवंयास्यन्तुमेपूर्वे गङ्गा तोयाप्लुतास्थिकाः। तत्रत्रिपथगादेवी प्रथमंतुप्रतिष्ठिता २७ सोमपादात्प्रसूतासा सप्त धाप्रविभज्यते। यूपामणिमयास्तत्र विमानाश्चहिरण्मयाः २८ तत्रेष्ट्वाक्रतुभिःसिद्धः श क्रःसुरगणैःसह। दिव्यच्छायाम्पथस्तत्र नक्षत्राणान्तुमण्डलम् २९ दृश्यतेभासुरारात्रौ देवीत्रिपथगातुसा। अन्तरिक्षंदिवंचैव भावयित्वाभुवङ्गता ३० भवोत्तमाङ्गपतिता संरुद्धायोगमायया। तस्यायेविन्दवःकेचित् क्रुद्धायाःपतिताभुवि ३१ कृतन्तुतैर्बिन्दुसरस्ततो विन्दुसरःस्मृतम्। ततस्तस्यानिरुद्धाया भवेनसहसारुषा ३२ ज्ञात्वातस्याह्यभिप्रायं क्रूरंदेव्याश्चिकीर्षितम्। भित्त्वाविशामिपातालं स्रोतमागृह्यशङ्करम् ३३ अथावलेपितंज्ञात्वा तस्याःक्रुद्धस्तुशङ्करः। तिरोभावयितुंबुद्धिरासीदङ्गेषुतांनदीम् ३४ एतस्मिन्नेवकालेतु दृष्ट्वाराजानमग्रतः। धमनीसन्ततंक्षीणं क्षुधाव्याकुलितेन्द्रियम् ३५ अनेन तोषितश्चाहं नद्यर्थेपूर्वमेवतु। बुध्वास्यवरदानन्तु ततःकोपंसयच्छतु ३६ ब्रह्मणोवचनंश्रुत्वा यदुक्तंधारयन्नदीम्। ततोविसर्जयामास संरुद्धांस्वेनतेजसा ३७ नदींभगीरथस्यार्थे तपसोग्रेणतोषितः। ततोविसर्जयामास सप्तस्रोतांसिगङ्गया ३८ त्रीणिप्राचीम

श्रेष्ठ गौर पर्व्वतहै २४ और सुवर्णके शृंगवाला बहुत बड़ा दिव्य औषधी का पर्व्वत है उसके नीचे महा दिव्य कांचन बालुक नाम सरोवरहै वह रम्य विन्दु सरोवर नामसे प्रसिद्धहै वहाँही राजा भगीरथ बहुत कालतक श्रीगंगाजी के निमित्त वास करताभया २५।२६ और कहताभया कि मेरे पूर्व्वज अर्थात् पुरखे गंगाजी के जलमें अपने अस्थि स्पर्श करनेवाले होकर स्वर्गमें प्राप्त होयँ इसीसे प्रथम गंगाजी वहाँही प्राप्तहुई हैं २७ सोमपाद तीर्थ से निकसीहुई वह गंगाजी सात भागों में विभाग होगईहैं वहाँ मणियोंके स्तम्भ और सुवर्ण के विमानहैं २८ उसी स्थान पर देवताओं समेत इन्द्र यज्ञ करके सिद्धिको प्राप्तहोताभया उस जगह दिव्यछायाका मार्ग और नक्षत्रोंका मंडल दीखताहै रात्रि में वह गंगाजी देवी कैसी कान्ति वाली दीखती हैं और आकाशीयस्वर्ग को प्राप्त होकर पृथ्वी में प्राप्तहुई हैं २९।३० शिवजी के मस्तक पर पड़तीहैं क्योंकि उन्होंने अपनी योगमाया सेही रोकी हैं इसीसे क्रोधितहुई गंगाजी के जोबिन्दु पृथ्वीपर गिरे हैं उनसे एक सरोवर उत्पन्नहोगया है उसीको विन्दुसरोवर कहते हैं पीछे रोकी हुई गंगाजीके क्रोधका अभिप्राय शिवजीने यहजानाकि गंगाजीकी इच्छाहै कि शिवजीको प्राप्तहोकर पाताल फोड़कर उसमें प्रवेशकर जाऊंगी ३१।३२ ऐसा उसकागर्व जानकर शिवजी भी क्रोधितहीकर यह विचारनेलगे कि मैं इस गंगाको अपने शरीरही में रमालूंगा ३४ उसी समय आगे खड़ेहुए राजाभगीरथको ऐसी दशा में देखतेभयेकि धमनी श्वासासे क्षीणमहाक्षुधित और इन्द्रियोंसे व्याकुलथा ३५ और यहभी जाना कि इस राजानेमुझको प्रथमही नदी के निमित्त प्रसन्न कियाथा तब मैंने उसको वर दियाथा यह सब विचारकर शिवजीने अपने क्रोधको शान्त कर दिया ३६ और ब्रह्माजी के वचनको सुन नदी को धारणकरते हुए शिवजी अपने तेजसे

भिमुखं प्रतीचीन्त्रीण्यथैवतु। स्रोतांसित्रिपथयास्तु प्रत्यपद्यन्तसप्तधा ३९ नलिनीह्ला
दिनीचैव पावनीचैवप्राच्यगा। सीताचक्षुश्चसिन्धुश्च तिस्रस्तावैप्रतीच्यगाः ४० सप्त
मीत्वनुगातासां दक्षिणेनभगीरथम्। तस्माद्भागीरथीसावै प्रविष्टादक्षिणोदधिम् ४१
सप्तचैताःप्लावयन्ति वर्षन्तुहिमसाह्वयम्। प्रसूताःसप्तनद्यस्तु शुभाबिन्दुसरोद्भवाः ४२
तान्देशान्प्लावयन्तिस्म म्लेच्छप्रायांश्चसर्वशः। सशैलान्कुकुरान्रौध्रान् बर्बरान्यवनान्
खसान् ४३ पुलिकांश्चकुलत्थांश्च अंगलोक्यान्चरांश्चयान्। कृत्वाद्विधाहिमवन्तं प्र
विष्टादक्षिणोदधिम् ४४ अथवीरमरूंश्चैव कालिकांश्चैवशूलिकान्। तुषारान्बर्बरान
ङ्कान्पग्रह्लात्पारदान्शकान् ४५ एताञ्जनपदांश्चक्षुः प्लावयित्वोदधिङ्गता। दरदोर्जगुडां
श्चैव गान्धारानौरसान्कुहून् ४६ शिवपौरानिन्द्रमरून् वसतीन्समतेजसम्। सैन्धवा
नुर्वसान्बर्वान् कुपथान्भीमरोमकान् ४७ शुनामुखांश्चोर्दमरून् सिन्धुरेतान्निषेवते। ग
न्धर्वान्किन्नरान्यक्षान् रक्षोविद्याधरोरगान् ४८ कलापग्रामकांश्चैव तथाकिंपुरुषान्न
रान्। किरातांश्चपुलिन्दांश्च कुरून्वैभारतानपि ४९ पाञ्चालान्कौशिकान्मत्स्यान् मा
गधाङ्गांस्तथैवच। ब्रह्मोत्तरांश्चवङ्गांश्च ताम्रलिप्तांस्तथैवच ५० एताञ्जनपदानार्या
न् गङ्गाभावयतेशुभा। ततःप्रतिहताविन्ध्ये प्रविष्टादक्षिणोदधिम् ५१ ततस्तुह्लादिनी
पुण्या प्राचीनाभिमुखाययौ। प्लावयन्त्युपकांश्चैव निषादानपिसर्वशः ५२ धीवरानृषि

रोकीहुई गंगाजीको छोड़ देतेभये ३७ अर्थात् भगीरथके उग्रतपसे प्रसन्नहुए शिवजीने भगीरथके निमित्त उस गंगा नदीको सात स्रोतों करके छोड़ा ३८ तीन स्रोततो पूर्व के सन्मुख तीन पश्चिम को और एक अपने समीप छोड़ा इस प्रकारसे सातस्रोते होते भये ३९ नलिनी १ ह्लादिनी और पावनी यह तीन नाम वाली गंगाजी पूर्वको बहती हैं-सीता-चक्षु और सिन्धु यह तीन पश्चिम को बहती हैं सातवीं गंगाकी समीपवर्तीधारा भगीरथके पीछे २ चलतीहुई दक्षिणकी ओरको बहती है वही भगीरथको प्राप्तहुई इसी हेतुसे वह भागीरथीनामसे प्रसिद्ध होकर दक्षिण समुद्रमें प्रवेशकरती हैं और बिन्दुसरोवरसे उत्पन्नहुई सातशुभनदी हैं ४०।४२ वहसातोंनदी बहुतसे म्लेच्छदेशोंमें और पर्व्वतों में घूमती हुई कुकुर रौध्र-बर्बर-यवन-खस-पुलिन्द-कुलत्थ-और अंगलोक्य इन सब देशों के मध्यमें बहतीहुई हिमवान् पर्व्वत से मिलीहुई दक्षिण समुद्रमें प्रवेश करती हैं ४३।४४ और चक्षु गंगा वीर-मरु-कालिक शूलिक-तुषार बर्व्बर पारद और शक इन देशों में बहती हुई समुद्र में प्राप्त होती है यह गंगाजी दरद-उर्जगुड़-गांधार अर्थात् काबुल कन्धार-नीरस कुहू-शिवपौर-इन्द्रमरु-वसति समतेजा-सिन्धदेश-उर्व्वश-पर्व-कुपथ-भीमरोमक ४५।४७ शुनामुख-उर्दमरु और सिन्धु रेत इनदेशों में गन्धर्व-किन्नर-यक्ष-राक्षस-विद्याधर-सर्प ४८ इनके बहुतसे ग्राम किंपुरुष-नर-व्याध-आभीरजाति कुरुदेशके मनुष्य-पंजाबदेश-मैथिलदेश-मत्स्य देश-मागधदेश-ब्रह्मोत्तर-बंगाला-और ताम्रलिप्तदेश इन आर्यदेशोंको पवित्र करती हैं और विन्ध्याचलके समीपमें बहतीहुई दक्षिणके समुद्रमें प्राप्तहोतीहैं ४९।५१ और ह्लादिनी गंगा उपकदेश और निषादोंके सबदेशोंको पवित्रकरतीहुई ५२ धीवर-ऋषिक-नीलमुख

कांश्चैव तथानीलमुखानपि । केकरानेककर्णांश्च किरातानपिचैवहि ५३ कालिन्दगति
कांश्चैव कुशिकान्स्वर्गभौमकान् । सामण्डलेसमुद्रस्य तीरेभूत्वातुसर्वशः ५४ ततस्तु
नलिनीचापि प्राचीमेवदिशंययौ । कुपथान्स्रावयन्तीसा इन्द्रद्युम्नसरांस्यपि ५५ तथा
खरपथान्देशान् वेत्रशंकुपथानपि । मध्येनोज्जानकमरून् कुथप्रावरणान्ययौ ५६ इन्द्र
द्वीपसमीपेतु प्रविष्टालवणोदधिम् । ततस्तुपावनीप्रायात् प्राचीमाशाञ्जवेनतु ५७ तो
मरान्स्रावयन्तीच हंसमार्गान्समूहकान् । पूर्वान्देशांश्चसेवन्ती भित्त्वासाबहुधागिरिम्
५८ कर्णप्रावरणान्प्राप्य गतासाश्वमुखानपि । सिक्तापर्वतमेरुंसा गत्वाविद्याधरान
पि ५९ शैमिमण्डलकोष्ठन्तु साप्रविष्टामहत्सरः । तासांनद्युपनद्योऽन्याः शतशोऽथसह
स्रशः ६० उपगच्छन्तितानद्यो यतोवर्षतिवासवः । तीरेवंशौकसारायाः सुरभिर्नामत
द्वनम् ६१ हिरण्यशृङ्गोवसति विद्वान्कौवरकोवशी । यज्ञादपेतःसुमहानमितौजाःसुवि
क्रमः ६२ तत्रागस्त्यैःपरिवृता विद्वद्भिर्ब्रह्मराक्षसैः । कुबेरानुचराह्येते चत्वारस्तत्समा
श्रिताः ६३ एवमेवतुविज्ञेया सिद्धिःपर्वतवासिनाम् । परस्परेणद्विगुणा धर्म्मतःकामतो
ऽर्थतः ६४ हेमकूटस्यपृष्ठेतु सर्पाणांतत्सरःस्मृतम् । सरस्वतीप्रभवति तस्माज्ज्योति
ष्मतीतुया ६५ अवगाढोह्युभयतः समुद्रौपूर्वपश्चिमौ । सरोविष्णुपदंनाम निषधेपर्वतो
त्तमे ६६ यस्मादग्रेप्रभवति गन्धर्वानुसुखावहः । मेरोःपार्श्वात्प्रभवति ह्रदश्चन्द्रप्रभो

केकरजाति-व्याध इनमनुष्य देशोंमेंहोकर कलिंदगतिक और कुशिक इन सबस्वर्ग और भूमिके देशों को पवित्रकरतीहुई समुद्रके मण्डलके तीरपर प्राप्तहोती है और नलिनीनाम धाराभी पूर्वकीओर बहतीहुई कुपथ-इन्द्रद्युम्न-सरोवर-खरपथदेश-वेत्र शंकुपथदेश उज्जानक-मरुदेश और कुथ प्रावरण इन देशोंके मध्यमें बहतीहुई इन्द्र द्वीपके समीप खारी समुद्र में प्रवेशकरती है-पावनीनाम धारा-बड़ेवेग पूर्व्वक पूर्वदिशामें तोमर हंसमार्ग--और समूहक इन देशोंको सेवती हुई बहुतसे पर्व्वतों को फोड़तीहुई कर्ण प्रावरण देशोंको प्राप्त होकर अश्वमुख देशोंको प्राप्त सुमेरुपर्व्वतमें प्राप्तहोती हुई विद्याधरों के देशोंमें प्राप्तहोती है ५३।५९। वहांसे वह धारा शैमिमंडल कोष्ठमें प्रवेशहुई है वहां बड़ासरोवर है और उन पूर्व्वोक्त धाराओं से हज़ारों नदियां निकलती हैं ६० वह नदियां जहां प्राप्त हुई हैं उसी स्थान के प्रभावसे इन्द्र वर्षा करताहै वंशौकसारा नामवाली नदीके तीरपर सुरभि नाम वनहै ६१ वहां हेमशृंग पर्व्वतपर यज्ञोंसे त्यागा हुआ अतुलपराक्रमी महाविद्वान् कौवरक नाम ब्राह्मण बसताहै ६२ उसी स्थानपर अगस्ति ऋषि के वंशमें उत्पन्न होनेवाले विद्वान् ब्रह्मराक्षसोंकरके वह नदी व्याप्त है वह ब्रह्मराक्षस चारहैं और कुबेरके अनुचरहैं वहीवहां बसते हैं इसीप्रकार पर्व्वतवासियोंकी परस्पर धर्म से वा कामना से द्विगुनी सिद्धि जाननी योग्य है ६३।६४ हेमकूट पर्व्वतकेमस्तकपर वह सर्पोंका सरोवर कहाताहै उसमें उसीसे ज्योतिवाली सरस्वती नदी उत्पन्न होती है उस नदीके दोनों ओर पर्व्व पश्चिमके समुद्र दृढ़ होकर प्राप्त होरहे हैं ६५ उत्तम निषध पर्व्वत में विष्णुपद नाम सरोवरहै उसके आगे सुमेरु पर्व्वतके पार्श्व से गन्धर्वोंका सुखदेनेवाला चन्द्रप्रभा

महान् ६७ जम्बूश्चैवनदीपुण्या यस्यांजाम्बूनदंस्मृतम्। पयोदस्तुह्रदोनीलः सशुभः पुण्डरीकवान् ६८ पुण्डरीकात्पयोदाच्च तस्माद्ह्रदेसम्प्रसूयताम्। सरसस्तुसरस्त्वेतत् स्मृतमुत्तरमानसम् ६९ मृग्याचमृगकान्ताच तस्माद्ह्रदेसम्प्रसूयताम्। ह्रदाःकुरुषुविख्याताः पद्ममीनकुलाकुलाः ७० नाम्नातेवैजयानाम द्वादशोदाधिसन्निभाः। तेभ्यःशान्तीचमध्वीच ह्रेनद्योसम्प्रसूयताम् ७१ किंपुरुषाद्यानियान्यष्टौ तेषुदेवोनवर्षति। उद्भिदान्युदकान्यत्र प्रवहन्तिसरिद्वराः ७२ बलाहकश्चऋषभो चक्रोमैनाकएवच। विनिविष्टाःप्रतिदिशं निमग्नालवणाम्बुधिम् ७३ चन्द्रकान्तस्तथाद्रोणः सुमहांश्चशिलोच्चयः। उद्गायताउदीच्यान्तु अवगाढामहोदधिम् ७४ चक्रोबधिरकश्चैव तथानारदपर्वतः। प्रतीचीमायतास्तेवै प्रतिष्ठास्तेमहोदधिम् ७५ जीमूतोद्रावणश्चैव मैनाकश्चन्द्रपर्वतः। आयतास्तेमहाशैलाः समुद्रंदक्षिणम्प्रति ७६ चक्रमैनाकयोर्मध्ये दिविसंदाक्षिणापथे। तत्रसम्वर्तकोनाम सोऽग्निःपिबतितज्जलम् ७७ अग्निःसमुद्रवासस्तु औवोऽसौवडवामुखः। इत्येतेपर्वताविष्टाश्चत्वारोलवणोदधिम् ७८ छिद्यमानेषुपक्षेषु पुराइन्द्रस्यवैभयात्। तेषान्तुदृश्यतेचन्द्रे शुक्लेकृष्णासमाप्लुतिः ७९ तेभारतस्यवर्षस्य भेदायेनप्रकीर्तिताः। इहोदितस्यदृश्यन्ते अन्येत्वन्यत्रचोदिताः ८० उत्तरोत्तरमेतेषां वर्षमुद्रिच्यते

नाम बड़ा ह्रद है उसीसे पवित्र जम्बू नदी उत्पन्न होती है उसीमें जांबूनद सुवर्ण उत्पन्न होताहै दूसरा सरोवर दूधके समान स्वच्छ जलवाला शुभ पुंडरीक नामहै उसमेंसे दो सरोवर उत्पन्न हुएहैं एक का उत्तर मानस नामहै उस उत्तर मानस सरोवरमें से मृग्या और मृगकान्ता यह दो नदी उत्पन्न हुई हैं और कुरु देशों में कमल और मत्स्यादिक जीवोंसे समाकुल वैजय नामवाले बारह १२ सरोवर प्रसिद्ध हैं वह समुद्रके समान गंभीर हैं उनमेंसे शान्ती और माध्वी नाम दो नदियां उत्पन्न हुई हैं जो कि किंपुरुष, हरिवर्ष-भद्राश्व- रम्यक -हिरण्य--कुरुवर्ष--केतुमाल और इलावृत यह आठ खण्ड हैं इनमें इन्द्रवर्षा नहीं करता वहां इन्हीं सरोवरों के जलसे नदियां बहती हैं ६६। ७२ और वलाहक--ऋषभ- चक्र और मैनाक यह पर्व्वत हरएक दिशा में निविष्ट लवणोदधि समुद्रमें डूब रहे हैं ७३ चन्द्रकान्त--द्रोण यह सुन्दर बड़े पर्व्वत उत्तर दिशामें फैलरहे हैं और महोदधि पर्व्वत में प्रविष्ट होगये हैं ७४ और चक्र--बधिरक और नारद इन पर्व्वतोंका विस्तार पश्चिम दिशामें है यह भी महोदधि पर्व्वतमें घुसेहुए हैं ७५ जीमूत द्रावण--मैनाक द्रावण और चन्द्र पर्व्वत यह महान् पर्व्वत दक्षिण समुद्रके सन्मुख विस्तृत हैं ७६ चक्र और मैनाक इन पर्व्वतों के मध्य में आकाश के दक्षिण पथ मार्ग मे सम्वर्त्तक नामवाले मेघ बसते हैं उन मेघों के जलको अग्निनाम पर्व्वत पीता है ७७ और अग्नि-समुद्रवास--और्व और वड़वामुख यहचार पर्व्वत खारीसमुद्रमे प्रवेशकररहे हैं ७८ इसका कारणयह है कि जब इन्द्र ने पर्व्वतों के पक्षछेदन किये थे तभी से वह समुद्रमें प्रवेशकर गये हैं सो प्रवेश हुओंकाभी चिह्न शुक्लपक्षके चन्द्रमा में काला २ दीखता है ७९ उनपर्व्वतों केही विभागसे भारतवर्षके भेद होगये हैं इस खण्डमें कहेहुए यहाँ दीखते हैं और अन्य

गुणैः। आरोग्यायुःप्रमाणाभ्यां धर्म्मतःकामतोऽर्थतः ८१ समन्वितानिभूतानि तेषुवर्षे षुभागशः। वसन्तिनानाजातीनि तेषुसर्वेषुतानिवै ८२ इत्येतद्धारयद्विश्वं पृथ्वीजगदिदं स्थिता ८३॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२०॥

(सूत उवाच) शाकद्वीपस्यवक्ष्यामि यथावदिहनिश्चयम्। कथ्यमानंनिबोधध्वं शाकंद्वीपंद्विजोत्तमाः! १ जम्बूद्वीपस्यविस्ताराद्द्विगुणस्तस्यविस्तरः। विस्तारात्त्रिगुणश्चापि परीणाहःसमन्ततः २ तेनावृतःसमुद्रोऽयं द्वितीयोलवणोदकः। तत्रपुण्याजनपदा चिराच्चम्रियतेजनः ३ कुतएवचदुर्भिक्षं क्षमातेजोयुतेष्विह। तत्रापिपर्वताःशुभ्राः सप्तैवमणिभूषिताः ४ शाकद्वीपादिषुत्वेषु सप्तसप्तनगास्त्रिषु। ऋज्वायताःप्रतिदिशं निविष्टाःपर्वतोत्तमाः ५ रत्नाकराद्रिनामानः सानुमंतोमहाचिताः। समोदिताःप्रतिदिशं द्वीपविस्तारमानतः ६ उभयत्रावगाढौच लवणक्षीरसागरौ। शाकद्वीपेतु वक्ष्यामि सप्तदिव्यान्महाचलान् ७ देवर्षिगन्धर्वयुतः प्रथमोमेरुरुच्यते। प्रागायतःससौवर्ण उदयोनामपर्वतः ८ तत्रमेघास्तुवृष्ट्यर्थं प्रभवन्त्यपयान्तिच। तस्यापरेण सुमहान् जलधारोमहागिरिः ९ सवैचन्द्रःसमाख्यातः सर्वौषधिसमन्वितः। तस्मान्नित्यमुपादत्ते वासवःपरमञ्जलम् १० नारदोनामचैवोक्तो दुर्गशैलोमहाचितः। तत्राचलौस

में कहेहुए अन्यत्र दीखते हैं ८० इनपर्व्वतोंके उत्तरोत्तर यह वर्णगुण वाला कहाहै वहाँके सब प्राणी आयु आरोग्य-धर्म और काम इनके प्रमाण क्रमसे उत्तरोत्तर अधिकगुणवाले होतेहैं इस प्रकार के खण्डों में अनेकजाति के प्राणीवसते हैं ऐसी रीतिसे यहपृथ्वी इसजगत् को धारणकियेहुए स्थित होरही है ८१। ८३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२०॥

सूतजीबोले हेद्विजोत्तमलोगो अब यथावत् प्रकारसे शाकद्वीपके निश्चयको सुभसेसुनो १ इसशाकद्वीपकी लंबाई जंबूद्वीपसे द्विगुणितहै और चौड़ाई चारोंओरसे त्रिगुणितहै २ इसद्वीपके एकओरको तो यहीखारी समुद्र आवृतहोरहाहै इसमें देशवड़े पवित्र हैं आयुबड़ी है ३ उनक्षमा तेजआदिकोंसे युक्तहुयेदेशोंमें दुर्भिक्ष कभीनहींहोता इसमें मणियोंसे भूषित सात श्वेत पर्व्वत हैं शाकद्वीपादिक तीनद्वीपोंमें सात २ पर्व्वतहैं और दिशा दिशामें सीधे विस्तारवाले हैं परन्तु रत्नाकर नामवाले पर्व्वत बड़ेउत्तम शिखरवाले हैं यहसब पर्व्वत समानहोकर दिशा २ के प्रतिद्वीपके समान लम्बाई रखते हैं इसद्वीपके दोनोंओर क्षारसमुद्र और क्षीरसमुद्र लगरहेहैं अबशाकद्वीपके सात महाचल पर्व्वतों को कहताहूं ४।७ देवऋषि और गन्धर्व इनसे सेवित पहलासुमेरु पर्व्वत है वहपूर्व में लम्बा सौवर्ण उदयनामहै अर्थात् उसमें सोना उत्पन्नहोताहै ८ वहाँ वर्षाकरनेके निमित्त मेघ आतेहैं और आकर उलटे चलेआतेहैं उसके बराबरमें जलधार महापर्व्वतहै ९ उसको चन्द्रमाके समान वर्णन करतेहैं सब ओषधियोंसे युक्तहै उस पर्व्वतसे इन्द्र अत्यन्त जल ग्रहण करताहै १० इससे आगे नारदनाम महापर्व्वतहै उस पर्व्वतमें प्रथम नारद और पर्व्वत यह दोनों नामकेपर्व्वत उत्पन्नहुएहैं उसपर्व्वत

मुत्पन्नो पूर्वंनारदपर्वतो ११ तस्यापरेणसुमहान् श्यामोनाममहागिरिः। यत्रश्यामत्वमा
पन्नाः प्रजाःपूर्वमिमाःकिल १२ तत्रैवदुन्दुभिर्नाम श्यामपर्वतसन्निभः। शब्दमृत्युःपुरा
तस्मिन् दुन्दुभिस्ताडितःसुरैः १३ रत्नमालान्तरमयः शाल्मलश्चान्तरालकृत्। तस्या
परेणरजतो महानस्तोगिरिःस्मृतः १४ सवैसोमकइत्युक्तो देवैर्यत्रामृतंपुरा। संभृतञ्चहृ
तञ्चैव मातुरर्थेगरुत्मता १५ तस्यापरेचाम्बिकेयः सुमनाश्चैवसस्मृतः। हिरण्याक्षोव
राहेण तस्मिन्शैलेनिषूदितः १६ आम्बिकेयात्परोरम्यः सर्वौषधिनिषेवितः। विभ्राज
स्तुसमाख्यातः स्फाटिकस्तुमहान्गिरिः १७ यस्माद्विभ्राजतेवह्निर्विभ्राजस्तेनसस्मृतः।
सैवेहकेशवेत्युक्तोयतोवायुःप्रवातिच १८ तेषांवर्षाणिवक्ष्यामि पर्वतानांद्विजोत्तमाः!।
शृणुध्वंनामतस्तानि यथावदनुपूर्वशः १९ द्विनामान्येववर्षाणि यथैवगिरयस्तथा। उद
यस्योदयंवर्षं जलधारेतिविश्रुतम् २० नाम्नागतभयंनाम वर्षंतत्प्रथमंस्मृतम्। द्विती
यंजलधारस्य सुकुमारमितिस्मृतम् २१ तदेवशैशिरंनाम वर्षंतत्परिकीर्त्तितम्। नारद
स्यचकौमारन्तदेवचसुखोदयम् २२ श्यामपर्वतवर्षंतदनीचकमितिस्मृतम्। आनन्द
कमितिप्रोक्तं तदेवमुनिभिःशुभम् २३ सोमकस्यशुभंवर्षं विज्ञेयंकुसुमोत्करम्। तदेवा
सितमित्युक्तं वर्षंसोमकसंज्ञितम् २४ आम्बिकेयस्यमैनाकं क्षेमकञ्चैवतत्स्मृतम्। तदे
वध्रुवमित्युक्तं वर्षंविभ्राजसंज्ञितम् २५ द्वीपस्यपरिणाहञ्च ह्रस्वदीर्घत्वमेवच। जम्बूद्वी

की प्रजा प्रथमश्याम वर्णवाली होतीभई ११।१२ उसश्यामपर्व्वतकेसमान बड़ीकान्तिवाला दुन्दुभी नाम पर्व्वतहै वहाँ प्रथम देवताओंने मृत्युका शब्द दुन्दुभी अर्थात् नक्कारोंसे बजायाहै १३ शाल्मल वाला पर्व्वत भीतरसे रत्नजटितहै उसके बराबरमें बड़ाभारी चाँदीका पर्व्वत है वह सोमक नाम कहाताहै वहाँ पहले देवतालोगोंने अमृत पियाहै उसी स्थानपर गरुड़जीने अपनी माताके निमित्त अमृतहराहै १४। १५ तिसके बराबरमें आम्बिकेय पर्व्वत सुमनानामसे प्रसिद्धहै उस पर्व्वतपर वराहजीने हिरण्याक्ष दैत्यको माराहै १६ आम्बिकेय पर्व्वतसेपरे सुन्दर सर्वौषधियोंसे सेवित मणियों का बड़ा पर्व्वत विभ्राजनाम वालाहै १७ उस पर्व्वतमेंसे अग्नि प्रकाशमान होताहै इसी हेतु से उसको विभ्राज कहतेहैं और केशव भी कहतेहैं इसमें वायु भी बहुत चलतीहै १८ हेद्विजोत्तमलोगो अब उन पर्व्वतोंके खंडोंको नामोंसहित कहताहूं तुम यथार्थ रीतिसे सुनो १९ उन खंडोंके दो २ नामहैं पर्व्वत और खंड—उदय पर्व्वतका उदयखंड—और जलधाराका जलधारा खण्डहै २० पहले उदय खंडको गतभय कहतेहैं दूसरे जलधारा खण्डको सुकुमार कहतेहैं २१ यह शीतखण्ड कहाता है और नारद पर्व्वतका कौमार खण्डहै उसको सुखोदय भी कहते हैं २२ श्याम पर्व्वत का अनीचक खंडहै उसीको मुनियोंने आनन्दकभी कहाहै २३ सोमक पर्व्वतका कुसुमोत्कर खंडहै उसे सोमकसंज्ञिक असित भी कहतेहैं २४ आम्बिकेय पर्व्वतका मैनाक खंडहै उसे क्षेमक भी कहतेहैं—विभ्राज पर्व्वतके खंडको ध्रुव और विभ्राज कहतेहैं २५ इस द्वीपकी चौड़ाई ह्रस्वता और दीर्घता जंबूद्वीप के हिसाबसे जानो इसद्वीप के मध्यमें शाकनाम एक बड़ावृक्ष है उसीके

पेनसंख्यातं तस्यमध्येवनस्पतिम् २६ शाकोनाममहावृक्षः प्रजास्तस्यमहानुगाः। एते
षुदेवगन्धर्वाः सिद्धाश्चसहचारणैः २७ विहरन्तिरमन्तेच दृश्यमानाश्चतैःसह। तत्रपु
ण्याजनपदाश्चातुर्वर्ण्यसमन्विताः २८ तेषुनद्यश्चसप्तैव प्रतिवर्षसमुद्रगाः। द्विनाम्ना
चैवताःसर्वा गङ्गासप्तविधास्मृता २९ प्रथमासुकुमारीति गङ्गाशिवजलाशुभा। मुनितप्ता
चनाम्नैषा नदीसम्परिकीर्त्तिता ३० सुकुमारीतपःसिद्धा द्वितीयानामतःसती। नन्दाच
पावनीचैव तृतीयापरिकीर्त्तिता ३१ शिविकाचचतुर्थीस्यात् द्विविधाचपुनःस्मृता। इक्षु
श्चपञ्चमीज्ञेया तथैवचपुनःकुहूः ३२ वेणुकाचामृताचैव षष्ठीसम्परिकीर्तिता। सुकृताच
गभस्तीच सप्तमीपरिकीर्तिता ३३ एताःसप्तमहाभागाः प्रतिवर्षशिवोदकाः। भावयन्ति
जनंसर्वं शाकद्वीपनिवासिनम् ३४ अभिगच्छन्तिताश्चान्या नदनद्यःसरांसिच। बहूद
कपरिस्रावा यतोवर्षतिवासवः ३५ तासान्तुनामधेयानि परिमाणंतथैवच। नशक्यंपरि
संख्यातुं पुण्यास्तासरिदुत्तमाः ३६ ताःपिबन्तिसदाहृष्टा नदीर्जनपदास्तुते। एतेशान्त
भयाःप्रोक्ताः प्रमोदायेचवैशिवाः ३७ आनन्दाश्चसुखाश्चैव क्षेमकाश्चनवैःसह। वर्णा
श्रमाचारयुता देशास्तेसप्तविश्रुताः ३८ आरोग्याबलिनश्चैव सर्वेमरणवर्जिताः। अव
सर्पिणीनतेष्वस्ति तथैवोत्सर्पिणीपुनः ३९ नतत्रास्तियुगावस्था चतुर्युगकृताक्वचित्।
त्रेतायुगसमःकालस्तथातत्रप्रवर्त्तते ४० शाकद्वीपादिषुज्ञेयं पञ्चस्वेतेषुसर्वशः। देश

अनुसार वहाँकी रहनेवाली प्रजाहै इन शाक आदिक द्वीपोंमें देवता गन्धर्व और सिद्ध चारण इनकेसाथ सबप्रजा रमणकरतीहै यहाँ चारोंवर्णोंसे युक्त पवित्र देशहैं २६।२८ उनद्वीपोंमें खंडकेप्रति सात२ नदीहैं वहसब समुद्रगामिहैं और सब दो२ नामवाली सातप्रकारकी गंगाकहातीहैं २९ पहली गंगा सुकुमारी नामवाली सुन्दरजलयुक्तहै उसे मुनिलोग तप्तानदीभीकहतेहैं ३० दूसरीको तपसिद्धा और सती भी कहतेहैं तीसरी नन्दा और पावनी नामसे प्रसिद्धहै ३१ चौथीको शिविका कहतेहैं द्विविधा भी बोलतेहैं-पांचवीं नदीको इक्षु तथा कुहू कहतेहैं ३२ छठी वेणुका और अमृता नामसे प्रसिद्धहै सातवीं सुकृता और गभस्ती कहातीहै ३३ यह सात पवित्र जलवाली महाभागा एक२ खण्डके प्रति बहतीहुई सब शाकद्वीपनिवासी जनोंको पवित्र करतीहैं ३४ उन नदियों के सन्मुख बहुत जलोंसे पूर्ण बहुतसे नद नदी और सरोवरहैं जिनके कि प्रभावसे इन्द्र वर्षा करताहै ३५ उन अन्य नदियोंकी संख्या और प्रमाण करनेको कोई समर्थ नहींहै वह सब नदी पवित्रहैं जो देश कि सदैव प्रसन्नतापूर्वक उन नदियोंका जल पीतेहैं वह देश भयरहित आनन्दयुक्त और कल्याणरूपहैं ३६। ३७ वह आनन्द क्षेमरूप देश नवीन जनोंकेसाथ सुख स्वरूप होतेहैं वह सातों देश वर्णाश्रम और आचारादिकोंसे संयुक्त प्रसिद्धहैं ३८ वह सब देश आरोग्य बलयुक्त मृत्युसे रहित और शरीरका परिणाम घटना बढ़ना कृशहोना आदि विकारों से रहित हैं ३९ वहाँ जुदे २ चारोंयुग अपनी २ अवस्थानहीं वर्त्ततेहैं वहाँकाकाल सदैव त्रेतायुगके समान वर्त्तताहै ऐसे शाकादि पांचद्वीपोंमें देशोंके वि-

स्यन्तिचारेण कालःस्वाभाविकःस्मृतः ४१ नतेषुसङ्करःकश्चित् वर्णाश्रमकृतःक्वचित् ।
धर्मस्यचाव्यभीचारादेकान्तसुखिनःप्रजाः ४२ नतेषुमायालोभोवा ईर्ष्यासूयाभयंकु
तः। विपर्ययोनतेष्वस्ति तद्वैस्वाभाविकंस्मृतम् ४३ कालोनवचतेष्वस्ति नदण्डोनच
दाण्डिकः। स्वधर्मेणचधर्मज्ञास्तेरक्षन्तिपरस्परम् ४४ परिमण्डलस्तुसुमहान् द्वीपोवै
कुशसंज्ञकः। नदीजलैःपरिवृतः पर्वतैश्चाभ्रसन्निभैः ४५ सर्वधातुविचित्रैश्च मणिविद्रु
मभूषितैः। अन्यैश्चविविधाकारै रम्यैर्जनपदैस्तथा ४६ वृक्षैःपुष्पफलोपेतैः सर्वतोधन
धान्यवान्। नित्यंपुष्पफलोपेतः सर्वरत्नसमावृतः ४७ आवृतःपशुभिःसर्वैर्ग्रामारण्यैश्च
सर्वशः। आनुपूर्व्यात्समासेन कुशद्वीपंनिबोधत ४८ अथतृतीयंवक्ष्यामि कुशद्वीपंकृ
त्स्नशः। कुशद्वीपस्तुक्षीरोदः सर्वतःपरिवारितः ४९ शाकद्वीपस्यविस्तारो द्विगुणेनसम
न्वितः। तत्रापिपर्वताःसप्त विज्ञेयारत्नयोनयः ५० रत्नाकरास्तथानद्यस्तेषांनामानिमे
शृणु। द्विनामानश्चतेसर्वे शाकद्वीपेयथातथा ५१ प्रथमःसूर्यसङ्काशः कुमुदोनामपर्व
तः। विद्रुमोच्चयइत्युक्तः सएवचमहीधरः ५२ सर्वधातुमयैःशृङ्गैः शिलाजालसमन्वितैः।
द्वितीयःपर्वतस्तत्र उन्नतोनामविश्रुतः ५३ हेमपर्वतइत्युक्तः सएवचमहीधरः। हरिता
लमयैःशृङ्गैः द्वीपमावृत्यसर्वशः ५४ बलाहकस्तृतीयस्तु जात्यञ्जनमयोगिरिः। द्युतिमा
न्नामतःप्रोक्तः सएवचमहीधरः ५५ चतुर्थःपर्वतोद्रोणो यत्रौषध्योमहागिरौ। विशल्यक

चारते स्वाभाविककाल वर्त्तताहै ४०। ४१ उन देशोंमें वर्णाश्रमों का संकर अर्थात् वर्णसंकरपना नहींहै वहांकी प्रजा धर्मके न बिगड़नेसे निरन्तर सुखवालीहै ४२ उन देशोंमें कपट–लोभ–ईर्षा–असूया अर्थात् गुणोंमें अवगुण बताना और भय यह कभी नहींहोतेहैं जिसमें किसीप्रकारका विपर्यय नहोय ऐसा स्वाभाविक देश कहाताहै ४३ वहाँ कालदंड और दंडका देनेवाला नहींहै धर्मज्ञपुरुष परस्पर मिलकर अपने धर्मसे प्रजाको रक्षाकरतेहैं ४४ और सुन्दर मंडलवाला महाकुशद्वीपहै यह द्वीप नदीके जलोंसे और बादलके समान श्वेत पर्वतोंसे संयुक्तहै ४५ इसके सिवाय सर्वप्रकार की विचित्र धातु मणि मूंगा और रत्नोंसे विभूषित अनेक प्रकारके देशोंसे भी युक्तहै ४६ सर्वत्र पुष्प फल युत वृक्षोंसे समृद्धिवाला धन धान्यसे पूर्ण और सर्वत्र सब रत्नोंसे व्याप्तहै ४७ ग्राम्य और वनवासी पशुओंसे युक्त इस द्वीपको क्रमानुसार सुनो ४८ प्रथम तीसरे कुशद्वीपको संपूर्णतासे कहताहूं इस कुशद्वीप के सबओर क्षीरसागर परिखाके समान आडे आरहाहै अर्थात् शाकद्वीप और कुशद्वीप के मध्यमें क्षीरसागरहै ४९ यह कुशद्वीप शाकद्वीपके विस्तारसे दूनेविस्तारवालाहै इसमें भी रत्नोंकी उत्पत्तिवाले सात पर्वतहैं ५० और सातही रत्नोंकी उत्पन्नकरनेवाली नदियां हैं उनपर्वतोंके नामोंको सुनो वहसब शाकद्वीपके समान दो २ नामवालेहैं ५१ पहला सूर्यके समान कान्तिवाला कुमुद पर्वतहै वह विद्रुमोच्चय कहाताहै ५२ दूसरा संपूर्ण धातुओंके शिखरोंसे युक्त शिलाजालोंसे मंडित उन्नतनाम पर्वतहै उसको हेम पर्वत कहतेहैं ५३ तीसरा हरितालके शिखरोंसे युक्त अंजन की उत्पत्ति करनेवाला बलाहकनाम पर्वत उस द्वीपको सबओरसे आवृत कररहाहै उस पर्वतको

रणीचैव मृतसञ्जीवनीतथा ५६ पुष्पवान्नामसेवोक्तः पर्वतःसुमहाचितः । कङ्कस्तुपञ्च मस्तेषां पर्वतोनामसारवान् ५७ कुशेशयइतिप्रोक्तः पुनःसपृथिवीधरः। दिव्यपुष्पफलो- पेतो दिव्यवीरुत्समन्वितः ५८ षष्ठस्तुपर्वतस्तत्र महिषोमेघसन्निभः। सएवतुपुनःप्रोक्तो हरिरित्यभिविश्रुतः ५९ तस्मिन्सोऽग्निर्निवसति महिषोनामयोऽप्सुजः। सप्तमःपर्वत स्तत्र ककुद्मान्सहिभाषते ६० मन्दरःसैवविज्ञेयः सर्वधातुमयःशुभः । मन्दइत्येषयोधा तुरपामर्थेप्रकाशक ६१ अपांविदारणाच्चैव मन्दरःसनिगद्यते । तत्ररत्नान्यनेकानिस्वयं रक्षतिवासवः ६२ प्रजापतिमुपादाय प्रजाभ्योविदधत्स्वयम् । तेषामन्तरविष्कम्भो द्वि गुणःसमुदाहृतः ६३ इत्येतेपर्वताःसप्त कुशद्वीपेप्रभाषिताः । तेषांवर्षाणिवक्ष्यामि सप्तैव तुविभागशः ६४ कुमुदस्यस्मृतःश्वेत उन्नतश्चैवसस्मृतः। उन्नतस्यतुविज्ञेयं वर्षलोहित संज्ञकम् ६५ वेणुमण्डलकञ्चैव तथैवपरिकीर्त्तितम् । वलाहकस्यजीमूतः स्वैरथाकारमि त्यपि ६६ द्रोणस्यहरिकंनाम लवणञ्चपुनःस्मृतम् । कङ्कस्यापिककुन्नाम धृतिमच्चैव तत्स्मृतम् ६७ महिषंमहिषस्यापि पुनश्चापिप्रभाकरम्। ककुद्मिनस्तुतद्वर्षं कपिलंनाम विश्रुतम् ६८ एतान्यपिविशिष्टानि सप्तसप्तपृथक्पृथक्। वर्षाणिपर्वताश्चैव नदीस्तेषु निबोधत ६९ तत्रापिनद्यःसप्तैव प्रतिवर्षेहिताःस्मृताः । द्विनामवत्यस्ताःसर्वाः सर्वाःपु

द्युतिमान् भी कहतेहैं ५४। ५५ चौथा द्रोण पर्व्वतहै इसमें बाण आदि के घावके अच्छे करनेवाली और मरेहुओंको जिलानेवाली औषधीहै ५६ वह पर्व्वत पुष्पवान् भी कहाताहै पांचवाँ कंकपर्व्वत है इसमें भी अच्छी सार२ वस्तुहैं उसको कुशेशयनामसे कहाकरतेहैं यहदिव्य पुष्प फल और लता- ओंसे युक्तहै ५७। ५८ छठा पर्व्वत मेघके समान काले वर्णवाला महिषनामसे प्रसिद्धहोकर हरि- नामसे भी विख्यात है ५९ उसमें जलमें उत्पन्न होनेवाला महिष अग्निरूप होकर वासकरता है–सातवाँ ककुद्मान्नाम पर्व्वतहै ६० उसीको मंदर भी कहते हैं यह पर्व्वत सब धातुओंसे युक्त मन्दरनामसे विख्यात धातु जलोंके अर्थका प्रकाशकहै जलोंके विदारण करनेसे उसे मन्दर कहतेहैं यह भी सब रत्नोंसे जटितहै इसकीरक्षा इन्द्र आप करतेहैं ६१। ६२ ब्रह्माजीकी आज्ञासे इन्द्र सब प्रजाओं के निमित्त रत्नों को धारण करताथा परन्तु इन पर्व्वतों के मध्य में दूने प्रमाण से धारण करताथा–विष्कंभ–अर्थात् स्तंभरूप पर्व्वत कहेहैं ६३ यह सात पर्व्वत कुशद्वीपमें हैं उनके भी खंडोंको विभाग पूर्व्वक सुनो ६४ कुमुद पर्व्वतका श्वेतद्वीपहै उसे उन्नतभी कहते हैं और दूसरा उन्नतनामवाले पर्व्वतका लोहित खंड है ६५ उसी को वेणुमंडल भी कहते हैं–वलाहक पर्व्वतका जीमूत पर्व्वतहै उसको स्वैरथाकार भी कहतेहैं द्रोण पर्व्वतका हरिकनाम खंडहै उसको लवणभी कहतेहैं–कंकपर्व्वतका ककुद्नाम खंडहै उसको धृतिमत् भी कहतेहैं ६६। ६७महिष पर्व्वतका महिषही खंड है उसको प्रभाकर भी कहते हैं–ककुद्मान् पर्वतका ककुद्मान् खंड है वह कपिल नाम से प्रसिद्ध है ६८ यह सात २ खंड पृथक् १ एक एक द्वीपमें हैं और सात २ पर्व्वत और नदी हैं उनके नामों को सुनो ६९ एक २ खंडमें सात २ नदी हैं वह सब दो २ नामों से विख्यात

ण्यजलाःस्मृताः ७० धूतपापानदीनाम योनिश्चैवपुनःस्मृता । सीताद्वितीयाविज्ञेया साचैवहिनिशास्मृता ७१ पवित्रातृतीयाज्ञेया वितृष्णाहिचयापुनः । चतुर्थीह्लादिनी त्युक्ता चन्द्रभाइतिचस्मृता ७२ विद्युच्चपञ्चमीप्रोक्ता शुक्लाचैवविभाव्यते । पुण्ड्राषष्ठीतु विज्ञेया पुनश्चैवविभावती ७३ महतीसप्तमीप्रोक्ता पुनश्चैषाधृतिःस्मृता । अन्यास्ता भ्योऽपिसञ्जाताः शतशोथसहस्रशः ७४ अभिगच्छन्तितानद्यो यतोवर्षतिवासवः। इ त्येषसन्निवेशोवः कुशद्वीपस्यवर्णितः ७५ शाकद्वीपेनविस्तारः प्रोक्तस्तस्यसनातनः। कु शद्वीपःसमुद्रेण घृतमण्डोदकेनच ७६ सर्वतःसुमहान्द्वीप श्चन्द्रवत्परिवेष्टितः। विस्ता रान्मण्डलाच्चैव क्षीरोदाद्द्विगुणोमतः७७ ततःपरंप्रवक्ष्यामि क्रौञ्चद्वीपंयथातथा। कु शद्वीपस्यविस्ताराद् द्विगुणस्तस्यविस्तरः ७८ घृतोदकःसमुद्रोवै क्रौञ्चद्वीपेनसंवृतः। चक्रनेमिप्रमाणेन वृतोवृत्तेनसर्वशः ७९ तस्मिन्द्वीपेनराःश्रेष्ठा देवनोगिरिरुच्यते। दे वनात्परतश्चापि गोविन्दोनामपर्वतः ८० गोविन्दात्परतश्चापि क्रौञ्चस्तुप्रथमोगि रिः। क्रौञ्चात्परेपावनकः पावनादन्धकारकः ८१ अन्धकारात्परेचापि देवावृन्नामपर्व तः। देवावृतःपरेणापि पुण्डरीकोमहान्गिरिः ८२ एतेरत्नमयाःसप्त क्रौञ्चद्वीपस्यपर्व ताः। परस्परस्यद्विगुणो विष्कम्भोवर्षपर्वतः ८३ वर्षाणितस्यवक्ष्यामि नामतस्तुनिबो धत। क्रौञ्चस्यकुशलोदेशो वामनस्यमनोऽनुगः ८४ मनोऽनुगात्परेचोष्णस्तृतीयो

सुन्दर और पवित्र जलवाली हैं ७० पहली धूतपापा नदी है उसको योनिनदी भी कहतेहैं-दूसरी सीता नदी है उसे निशानदी भी कहते हैं ७१ तीसरी पवित्रा नदी है उसे वितृष्णा भी कहते हैं- चौथी ह्लादिनी नदी है उसको चन्द्रभाकहते हैं ७२ पाँचवीं विद्युत् नदी है उस को शुक्ला भी कहते हैं छठी पुंड्रा नदी है उसको विभावती भी कहते हैं ७३ सातवीं महती नदी है उसको धृति भी कहतेहैं उन नदियोंसे उत्पन्नहुईं अन्य हज़ारों नदियां हैं वह सब समुद्रके सन्मुख जातीहैं इसप्रकार से इस कुशद्वीपका वर्णन किया शाकद्वीपके चारोंओर इसका विस्तार कहाहै यह कुशद्वीपघृत मंडोद अर्थात् घृतसरी के जलवाले समुद्रसे व्यावृत होरहाहै ७४। ७६ यह बड़ाद्वीप सबओरसे चन्द्रमाके मंडलके समान वेष्टित होरहाहै पहले क्षीरसागरके मंडलके विस्तारसे दूने विस्तारवालाहै ७७इससे आगे अब क्रौंचद्वीप का वर्णन करतेहैं इस क्रौंचद्वीपका विस्तार कुशद्वीपके विस्तारसे दूनाहै ७८ यह घृतोद समुद्र क्रौंचद्वीपकरके संयुक्त होरहाहै यह समुद्र इसद्वीपके चारोंओर ऐसा लगाहुआ है जैसे कि पहियेके ऊपर हाल लगाहुआ होताहै ७९ इस द्वीपमें उत्तममनुष्य वसतेहैं वहां पहला देवन नाम पर्व्वतहै देवनसे परे गोविंद नाम पर्व्वतहै ८० गोविंदसे परे उत्तम क्रौंच पर्व्वतहै उससे परे पावनक नाम पर्व्वतहै पावनकसे परे अन्धकारक पर्व्वतहै ८१ अन्धकारकसे परे देवावृत पर्व्वतहै देवावृत से परे महान् पुंडरीक पर्व्वतहै यह सातों क्रौंचद्वीपके पर्व्वत रत्नोंसे जटितहैं परस्पर इनका विष्कम्भ अर्थात् स्तम्भरूप खंडके पर्व्वतका विस्तार दूनाहै अब इस द्वीपके खंडोंका वर्णन करतेहैं उनके यह नामहैं क्रौंचद्वीपका पहलाखंड कुशल नामहै उससे परे मनोनुगखंडहै उससे परे तीसरा

ऽपिसउच्यते। उष्णात्परेपावनकः पावनादन्धकारकः ८५ अन्धकारकदेशात्तु मुनिदेश
स्तथापरः। मुनिदेशात्परेचापि प्रोच्यतेदुन्दुभिस्वनः ८६ सिद्धचारणसङ्कीर्णो गौरप्रा
यःशुचिर्जनः। श्रुतास्तत्रैवनद्यस्तु प्रतिवर्षङ्गताःशुभाः ८७ गौरीकुमुद्वतीचैव सन्ध्यारा
त्रिर्मनोजवा। ख्यातीचपुण्डरीकाच गङ्गाःसप्तविधाःस्मृताः ८८ तासांसहस्रशश्चान्या
नद्यःपार्श्वसमीपगाः। अभिगच्छन्तितानद्यो बहुलाश्चबहूदकाः ८९ तेषांनिसर्गोदेशा
नामानुपूर्वेणसर्वशः। नशक्योविस्तराद्वक्तु मपिवर्षशतैरपि ९० सर्गोयश्चप्रजानान्तु
संहारोयश्चतेषुवै। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि शाल्मलस्यनिबोधत ९१ शाल्मलोद्विगुणोद्वी
पः क्रौञ्चद्वीपस्यविस्तरात्। परिवार्य्यसमुद्रन्तु दधिमण्डोदकंस्थितम् ९२ तत्रपुण्या
जनपदाश्चिराच्चम्रियतेजनः। कुतएवतुदुर्भिक्षं क्षमातेजोयुताहिते ९३ प्रथमःसूर्य्यस
ङ्काशः सुमनानामपर्वतः। पीतस्तुमध्यमश्चासी त्ततःकुम्भमयोगिरिः ९४ नाम्नासर्वसु
खोनाम दिव्यौषधिसमन्वितः। तृतीयश्चैवसौवर्णो भृङ्गपत्रनिभोगिरिः ९५ सुमहान्रो
हितोनाम दिव्योगिरिवरोहिसः। सुमनाःकुशलोदेशः सुखोदर्कःसुखोदयः ९६ रोहितो
यस्तृतीयस्तु रोहिणोनामविश्रुतः। तत्ररत्नान्यनेकानि स्वयंरक्षतिवासवः ९७ प्रजापति
मुपादाय प्रसन्नोविदधत्स्वयम्। नतत्रमेघावर्षन्ति शीतोष्णञ्चनतद्विधम् ९८ वर्णाश्र

उष्णखंडहै उष्णसे परे पावनकखंडहै पावनकसे परे अंधकारखंडहै ८२। ८५ अंधकारखंडसे परे मुनिदेशखंडहै मुनिदेशसे परे दुन्दुभिस्वनखंडहै ८६ दुन्दुभिस्वनखंडमें विशेषकरके गौर मनुष्यहैं वह बड़े पवित्रहैंऔर सिद्धचारणोंसेसेवितहैं वहांएक२ खंडमें प्राप्तहोनेवाली पृथक्२ नदीभी सुनीजाती हैं ८७ गौरी१ कुमुद्वती २ संध्या ३ रात्रि ४ मनोजवा ५ ख्याती ६ और पुंडरीका ७ यह सातप्रकार की गंगा कहीहैं ८८ और उनमेंसे निकसीहुई हजारों नदियां समीपमें बहती हैं वहसब नदी बहुत जलवाली हैं और उन बड़ी नदियोंके सन्मुख आती हैं उन देशोंका स्वभाव और विस्तार यथार्थ रीति से कहनेको कोई भी समर्थ नहींहै इनका विस्तार सैकड़ोंवर्षोंमें भी कोई नहीं कहसक्ता ८९। ९० उन खंडोंकी संख्या और संहारको कौन कहसकाहै—अब शाल्मलद्वीपका वर्णन करतेहैं शाल्मलद्वीप क्रौंचद्वीपसे दूने विस्तारवालाहै इसके चारोंओर दहीका समुद्र व्याप्त होरहाहै ९१। ९२ वहांके पवित्र देशोंके मनुष्योंकी अवस्था बहुतबड़ीहै वहां दुर्भिक्षकभी नहीं होता वहांके वासी क्षमा दया और तेज आदिकोंसे युक्तहैं ९३ वहांका प्रथमपर्वत सूर्य्य के समान कान्तिवाला सुमना नामसे प्रसिद्ध है दूसरा पर्वत मध्यमें पीतवर्ण होकर कुंभमय नामहै उसको सर्वसुखभी कहतेहैं वह दिव्य औषधियों से सम्पन्नहै तीसरा पर्वत तेजपातके समान कान्तिवाला सुवर्णकाहै ९४। ९५ वह महासुंदर लालवर्णहै उस पर्वतका खंड कुशलरूप सुखस्वरूप फलवाला और सुखकी उत्पत्तिवालाहै इस लालवर्णवाले पर्वतको रोहिणभी कहतेहैं वहां अनेकप्रकारके रत्नहैं उनकी रक्षा आप इन्द्र करता है ९६। ९७ इसको प्रजापतिकी आज्ञा से प्रसन्नतापूर्वक इन्द्रने आप रचाहै वहां घनही वर्षा करते हैं परन्तु वर्षाकी शीतलता और उष्णता वहां नहींहै ९८ और इन द्वीपोंमें वर्णाश्रमोंका भी विचार

माणांवार्त्तावा त्रिषुद्वीपेषुविद्यते। नग्रहोनचचन्द्रोऽस्ति ईर्ष्यासूयाभयंतथा ६६ उद्भिदा
न्युदकान्यत्र गिरिप्रस्रवणानिच। भोजनंषड्रसंतत्र तेषांस्वयमुपस्थितम् १०० अधमो
त्तमंनतेष्वस्ति नलोभोनपरिग्रहः। आरोग्यबलवन्तश्च एकान्तसुखिनोनराः १०१
त्रिंशद्वर्षसहस्राणि मानसींसिद्धिमास्थिताः। सुखमायुश्चरूपञ्च धर्मैश्वर्य्यन्तथैवच
१०२ शाल्मलान्तेषुविज्ञेयं द्वीपेषुत्रिषुसर्वतः। व्याख्यातःशाल्मलान्तानां द्वीपानान्तु
विधिःशुभः १०३ परिमण्डलस्तुद्वीपस्य चक्रवत्परिवेष्टितः। सुरोदेनसमुद्रेणाद्विगुणेन
समन्वितः १०४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२१॥

(सूतउवाच)। गोमेदकंप्रवक्ष्यामि षष्ठंद्वीपन्तपोधनाः॥ सुरोदकसमुद्रस्तु गोमेदेनस
मावृतः १ शाल्मलस्यतुविस्तारात् द्विगुणस्तस्यविस्तरः। तस्मिन्द्वीपेतुविज्ञेयौ पर्वतौ
द्वौसमाहितौ २ प्रथमःसुमनानाम जात्यञ्जनमयोगिरिः। द्वितीयःकुमुदोनाम सर्वौषधिस
मन्वितः ३ शातकौम्भमयःश्रीमान् विज्ञेयःसुमहाचितः। समुद्रेक्षुरसोदेन वृतोगोमेदक
श्चसः ४ षष्ठेनतुसमुद्रेण सुरोदाद्द्विगुणेनच। धातकीकुमुदश्चैव हव्यपुत्रौसुविस्तृतौ
५ सौमनंप्रथमंवर्षं धातकीखण्डमुच्यते। धातकिनःस्मृतंतद्वै प्रथमंप्रथमस्यतु ६ गोमे

नहींहै वहां न तो कोई ग्रहहै न चन्द्रमाहै और ईर्षा निन्दादिक कोई भयभी नहींहै ९९ वहां सब
पर्व्वतोंके झिरनोंका जलपीतेहैं और सब मनुष्यादिकोंको षट्रस भोजन आपही प्राप्त होजाताहै १००
उनमें उत्तम अधम कोई नहींहै लोभ नहीं है कोई किसीबस्तु का संग्रह नहींकरता वहां के मनुष्य
आरोग्य बली और निरन्तर सुखवाले हैं १०१ वहाँ तीसहज़ार वर्षोंमें मनुष्य मानसी सिद्धि अर्थात्
मनकी विचारीहुई सिद्धिको प्राप्तहोजातेहैं उन सबको सुख आयुरूप धर्म और ऐश्वर्य इनकी प्राप्ति
सदैव रहतीहै १०२ शाल्मल द्वीपके अन्तमें इनतीनद्वीप अर्थात् खंडोंमें जो रीति व्यवहारकीविधि
है वह कहगई इसद्वीपका मंडलचक्रके समान गोल और मदिराके समुद्रसे वेष्टितहोरहाहै यहमदिरा
का समुद्र इस द्वीपसे दूने प्रमाणकाहै १०३। १०४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेएकविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२१॥

सूतजीबोले-हे ऋषियो अब गोमेदनामवाले छठे द्वीपका वर्णनसुनो-गोमेदद्वीप बाहरकी ओर
सुरोद अर्थात् मदिराके समुद्रसे व्याप्तहो रहाहै इसद्वीपका विस्तार भी शाल्मल द्वीपसे दूनाजानो-
इसद्वीपमें दो उत्तम पर्व्वतहैं १। २ पहला सुमना पर्व्वतहै वह अंजनके समान वर्णनकियाहै दूसरा
कुमुद पर्व्वतहै वह सब औषधियोंसे संयुक्तहै इसमें सुवर्णकी उत्पत्तिहै और बड़ा ऊंचाहै यह गोमेद
नाम द्वीप सुरोद समुद्रसे दूने प्रमाणवाले इक्षुरसोद अर्थात् ईखके रसके समान जलवाले समुद्रसे
वेष्टितहोरहाहै और धातकी और कुमुद यह दो पर्व्वत हव्यके पुत्रकहे हैं यह बहुत बड़े विस्तारवाले
हैं पहले सौमन पर्व्वतको धातकी कहतेहैं इस धातकी पर्व्वतका खंड भी धातकी नामवालाहै वह

दंयत्स्मृतंवर्षं नाम्नासर्वसुखन्तुतत्। कुमुदस्यद्वितीयस्य द्वितीयंकुमुदंततः ७ एतौद्वौ पर्वतौवृत्तौ शेषौसर्वसमुच्छ्रितौ। पूर्वेणतस्यद्वीपस्य सुमना पर्वतःस्थितः ८ प्राक्पश्चिमायतैःपादै रासमुद्रादितिस्थितः। पश्चार्द्धेकुमुदस्तस्य एवमेवस्थितस्तुवै ९ एतैःपर्वतपादैस्तुसदेशोवैद्विधाकृतः। दक्षिणार्द्धेतुद्वीपस्यधातकीखण्डमुच्यते १० कुमुदन्तूत्तरे तस्य द्वितीयंवर्षमुत्तमम्। एतौजनपदौद्वौतु गोमेदस्यतुविस्तृतौ ११ अतःपरंप्रवक्ष्यामि सप्तमंद्वीपमुत्तमम्। समुद्रेक्षुरसंचैव गोमेदाद्द्विगुणंहिसः १२ आवृत्यतिष्ठतिद्वीपः पुष्करःपुष्करैर्वृतः। पुष्करेणावृतःश्रीमांश्चित्रसानुर्महागिरिः १३ कूटैश्चित्रैर्मणिमयैः शिलाजालसमुद्भवैः। द्वीपस्यैवतुपूर्वार्द्धे चित्रसानुःस्थितोमहान् १४ परिमण्डलसहस्राणि विस्तीर्णःपञ्चविंशतिः। ऊर्ध्वंसवैचतुर्विंशद्योजनानांमहाबलः १५ द्वीपार्द्धस्यपरिक्षितः पश्चिमेमानसोगिरिः। स्थितोवेलासमीपेतु पूर्णचन्द्रइवोदितः १६ योजनानांसहस्राणि सार्द्धंपञ्चाशदुच्छ्रितः। तस्यपुत्रोमहावीतः पश्चिमार्द्धस्यरक्षिता १७ पूर्वार्द्धेपर्वतस्यापि द्विधादेशस्तुसस्मृतः। स्वादूदकेनोदधिना पुष्करःपरिवारितः १८ विस्तारान्मण्डलाच्चैव गोमेदाद्द्विगुणेनतु। त्रिंशद्वर्षसहस्राणि तेषुजीवन्तिमानवाः १९ विपर्ययोन तेष्वस्ति एतत्स्वाभाविकंस्मृतम्। आरोग्यंसुखबाहुल्यं मानसीसिद्धिमास्थिताः २०

प्रथम खंड कहाताहै और गोमेद खण्ड सर्व सुख नामवालाहै दूसरे कुमुद पर्व्वतके खण्डको कुमुद कहते हैं २। ७ यह दोनों पर्व्वत गोल हैं और चारों ओरसे एकसे ऊंचे हैं इस द्वीपके पूर्व्व की ओर सुमना पर्व्वत है वह पूर्व्व से पश्चिम की ओर समुद्र पर्य्यन्त स्थित होरहाहै और उस पिछले अर्द्ध भागमें इसीप्रकार कुमुद पर्व्वत स्थित होरहाहै ८। ९ इन पर्व्वतों के पदों से उस देशके दो विभाग होरहेहैं द्वीपके दक्षिणीय अर्द्ध भागमें धातकी खण्ड कहाताहै १० और दूसरा कुमुद खंड उस द्वीपके उत्तरकी ओरहै इस प्रकारसे यह दो देश गोमेद द्वीपके कहेहैं और उत्तम विस्तारवाले हैं ११ अब इससे आगे सातवें द्वीपको कहतेहैं सातवाँ द्वीप इक्षुरसवाले गोमेद पर्व्वतसे दूने प्रमाण वाले समुद्रसे बाहरकी ओर चारोंओर बसताहै उसको पुष्कर द्वीप कहतेहैं वह पुष्कर अर्थात् कमलों से युक्त होरहाहै इस पुष्कर द्वीपमें श्रीमान् चित्रसानु उत्तमपर्व्वतहै और महाउत्तम विचित्रमणियों वाली शिलाओंके शिखरोंसे शोभितहोरहाहै इस द्वीपके पूर्वार्द्ध भागमें यह चित्रसानु पर्व्वत स्थित है १३।१४ इसपर्व्वत के मंडलोंका विस्तार पच्चीसहज़ार योजन और उंचाई चौबीस हज़ार योजन है १५ उसद्वीपके पश्चिमके अर्द्धभागमें मानसनाम पर्व्वतहै यहसमुद्रके समीपमें ऐसा शोभायमान होरहाहै जैसे कि पूर्णमासीका चंद्रमा प्रकाशमान होताहै इस पर्व्वतकी उंचाई साढ़ेपचासयोजन कीहै और इसपर्व्वतका पुत्रमहावीतनामहै वह इसद्वीपके पश्चिमभागकी रक्षाकरताहै १६।१७द्वीपके पूर्वभागमें दोखंडहोरहे हैं उसी पर्व्वतके विभागसे दोदेशबसते हैं यहपुष्करद्वीप स्वादुयुक्त जलके समुद्रसे वेष्टित होरहाहै इसकाविस्तार गोमेदद्वीपके मंडलसे दूने विस्तारमें है इसद्वीपके मनुष्य तीसहज़ार वर्षोंतक जीवते हैं १८। १९ तहाँ कुछ विपर्य्ययनहीं है और आयु आरोग्य-बहुत सुख और

सुखमायुश्चरूपञ्च त्रिषुद्वीपेषुसर्वशः । अधमोत्तमौनतेष्वास्तां तुल्यास्तेवीर्य्यरूप
तः २१ नतत्रवध्यवधकौ नेर्ष्यासूयाभयंतथा । नलोभोनचदम्भोवा नचद्वेषःपरिग्रहः
२२ सत्यानृतेनतेष्वास्तां धर्माधर्मौतथैवच । वर्णाश्रमाणांवार्ताच पाशुपाल्यंवणिक्कृ
षिः २३ त्रयीविद्यादण्डनीतिः शुश्रूषादण्डएवच । नतत्रवर्षंनद्योवा शीतोष्णञ्चनविद्य
ते २४ उद्भिदान्युदकानि स्युर्गिरिप्रस्रवणानिच । तुल्योत्तरकुरूणान्तु कालस्तत्रतुस
र्वदा २५ सर्वदःसुखकालोऽसौ जराक्लेशविवर्जितः । सर्गस्तुधातकीखण्डे महावीतेतथै
वच २६ एवंद्वीपाःसमुद्रैस्तु सप्तसप्तभिरावृताः । द्वीपस्यानन्तरोयस्तु समुद्रस्तत्समस्तु
वै २७ एवंद्वीपसमुद्राणां वृद्धिर्ज्ञेयापरस्परम् । अपाञ्चैवसमुद्रेकात् समुद्रइतिसंज्ञितः २८
ऋषद्वसन्त्योवर्षेषु प्रजायत्रचतुर्विधाः । ऋषिरित्येवरमणे वर्षंत्वेतेनतेषुवै २९ उदय
तीन्दौपूर्वेतु समुद्रःपूर्यतेसदा । प्रक्षीयमाणेबहुले क्षीयतेऽस्तमितेचवै ३० आपूर्यमाणे
ह्युदधिरात्मनैवापिपूर्यते । ततोवैक्षीयमाणेतु स्वात्मन्येवह्यपांक्षयः ३१ उदयात्पयसांयो
गात् पुष्णन्त्यापोयथास्वयम् । तथासतुसमुद्रोऽपि वर्द्धतेशशिनोदये ३२ अन्यूनानति
रिक्तात्मा वर्द्धन्त्यापोह्रसन्तिच । उदयेऽस्तमयेचेन्दोः पक्षयोःशुक्लकृष्णयोः ३३ क्षयवृ

मनोवाञ्छित सिद्धिकी प्राप्ति यहसबसभी पुरुषोंके स्वाभाविकहैं २० इनपिछले तीनद्वीपोंमें सुखरूप और आयु सबके हैं उनपरुषोंमें कोई उत्तम मध्यम और नीचनहीं हैं बल रूपमें सबसमानहैं २१ इसके विशेष वहाँ कोई मरने और मारने वालाभी नहींहै और ईर्षा निन्दा भय लोभ पाखण्ड-द्वेष और संग्रह आदिक भीनहीं हैं २२ सत्य असत्य धर्म अधर्म वर्णाश्रमों का व्यवहार पशुपालता, वणिज और खेती यहसबभीनहीं हैं २३ वेदत्रयी विद्या दंड नीति भी नहीं हैं वहाँ वर्षा नहींहोती नदीभी नहींहै शीतोष्णताकाभी अभावहै २४ वहाँ पर्व्वतोंके झिरनों केही जलहैं उत्तर कुरुदेशके समान सदैव उत्तमकाल बनारहताहै २५ सर्वत्रसुख व्याप्तहै वृद्धावस्था आदिकाभी क्लेशनहीं है इसप्रकार से धातकी खंड और महावीत खंडकी रचना कही है २६ इसरीतिसे सातोंद्वीप सातोंसमुद्रोंसे वेष्टितहोरहेहैं द्वीपके आगेका समुद्र जितने प्रमाणमें है उतनेही प्रमाणमें अगला द्वीपहै इसीप्रकारसे द्वीपोंकी और समुद्रोंकी परस्पर वृद्धिहै जलोंके समूहकी वृद्धिहोनेसे समुद्र कहाताहै २७। २८ इनद्वीपोंके खंडोंमें प्रजा आनन्दसे रमणकरती है और इसीकारणसे वहाँ मेघोंके वर्षनेकी कुछ आवश्यकतानहींहै २९ जब पूर्वमें चन्द्रमा उदय होताहै तब सर्वदा समुद्र पूर्णहोकर उछलताहै जब चन्द्रमा क्षीण होताहै और अस्तहोता है तब समुद्रभी क्षीण होजाताहै ३० उछलताहुआ समुद्र अपनेही जलोंके वेगसे उछलता है जब क्षीणहोताहै तब अपनेहीमें ऐसेक्षीण होजाता है जैसे थोड़ेजलमें बहुत जलोंके मिलनेसे जलको जल आपही पवित्रकरलेताहै इसीप्रकार वहसमुद्रभी चन्द्रोदयके समयमें बढ़ता है ३१। ३२ शुक्ल और कृष्ण पक्षमें चन्द्रोदयके समय और अस्तहोनेके समय समुद्रमें जल बढ़ता और घटता है परन्तु समुद्रका प्रमाण यथावस्थितही बनारहताहै ३३ चन्द्रमा के बढ़ने घटने के अनुसार समुद्र घटता बढ़ताहै पूर्णिमा और अमावास्याके दिनोंमें समुद्र पन्द्रहसौ १५०० अंगुल

द्वीसमुद्रस्य शशिवृद्धिक्षयेतथा। दशोत्तराणिपञ्चाहुरंगुलानांशतानिच ३४ अपांवृद्धिः क्षयोदृष्टः समुद्राणान्तुपर्वसु। द्विरापत्वात्स्मृतोद्वीपो दधनाच्चोदधिःस्मृतः ३५ अपशीर्णान्तुगिरयो पर्वबन्धाच्चपर्वताः। शाकद्वीपेतुशाक पर्वतस्तेनचोच्यते ३६ कुशद्वीपे कुशस्तम्बो मध्येजनपदस्यतु। क्रौञ्चद्वीपेगिरिःक्रौञ्चस्तस्यनाम्नानिगद्यते ३७ शाल्मलिःशाल्मलद्वीपे पूज्यतेसमहाद्रुमः। गोमेदकेतुगोमेदः पर्वतस्तेनचोच्यते ३८ न्यग्रोधःपुष्करद्वीपे पद्मवत्तेनसःस्मृतः। पूज्यतेसमहादेवैर्ब्रह्मांशोऽव्यक्तसम्भवः ३९ तस्मिन्सवसतिब्रह्मा साध्यैःसार्द्धंप्रजापतिः। तत्रदेवाउपासन्ते त्रयस्त्रिंशन्महर्षिभिः ४० सतत्रपूज्यतेदेवो देवैर्महर्षिसत्तमैः। जम्बूद्वीपात्प्रवर्तन्ते रत्नानिविविधानिच ४१ द्वीपेषुतेषु सर्वेषु प्रजानांक्रमशस्तुवै। आर्जवाद्ब्रह्मचर्येण सत्येनचदमेनच ४२ आरोग्यायुःप्रमाणाभ्यां द्विगुणंद्विगुणंततः। द्वीपेषुतेषुसर्वेषु यथोक्तंवर्षकेषुच ४३ गोपायन्तेप्रजास्तत्रसर्वैः सहजपण्डितैः। भोजनञ्चाप्रयत्नेन सदास्वयमुपस्थितम् ४४ षड्रसंतन्महावीर्यं तत्रतेभुञ्जतेजनाः। परेणपुष्करस्याथ आवृत्यावस्थितोमहान् ४५ स्वादूदकसमुद्रस्तु ससमन्तादवेष्टयत्। स्वादूदकस्यपरितः शैलस्तुपरिमण्डलः ४६ प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोकःसउच्यते। आलोकस्तत्रचार्वाक्च निरालोकस्ततःपरम् ४७ लोकविस्तारमात्रन्तु पृथिव्यार्द्धन्तुवाह्यतः। प्रतिच्छन्नंसमन्तात्तु उदकेनावृतंमहत् ४८ भूमेर्दशगुणाश्चापःस

बढ़ता और घटता है दोसमुद्रोंके मध्यमें स्थितहोनेवाला द्वीप कहाता है द्वीपकेही धारण करनेसे समुद्रको उदधि कहते हैं ३४। ३५ जोकि पर्व्वत जलादिकोंमें गलते नहीं हैं इसीसे उनकानाम गिरि बोलाजाता है उनकी पर्व अर्थात् सन्धि बंधीरहती है इसहेतुसे पर्व्वत कहाते हैं शाकद्वीपमें शाकनाम पर्व्वत है इसहेतुसे उसको शाकद्वीप कहते हैं ३६ कुशद्वीपके मध्यमें कुशाकास्तंभहै इसकारण कुशद्वीप कहाताहै क्रौंचद्वीपमें क्रौंचनामवाला पर्व्वतहै ३७ शाल्मलद्वीपमें महा उत्तम संभलका वृक्ष पूजाजाता है गोमेदद्वीप में गोमेदनाम पर्व्वत है ३८ पुष्कर द्वीपमें बटका वृक्षहै और कमलोंके पुष्पहैं वहवृक्ष ब्रह्माके अंशसे उत्पन्न हुआहै उसको सबदेवता पूजते हैं ३९ उसपुष्करद्वीप में साध्य संज्ञक देवताओं समेत प्रजापति ब्रह्मा वसते हैं और ब्रह्मर्षियों समेत तेंतीस देवता उनकी उपासना किया करते हैं ४० सबदेवता ब्रह्माजीकी पूजाकरते हैं जंबूद्वीपमें अनेक प्रकारके रत्न उत्पन्नहोते हैं इनसब द्वीपोंमें प्रजाकी सरलता-ब्रह्मचर्य्यता-सत्यता-इन्द्रियोंकी निग्रहता ४१।४२ नीरोगता और आयुकी दीर्घता से दूनी २ वृद्धिहोती गईहै उनसब खंडोंके द्वीपोंमें स्वाभाविक पंडितजन प्रजाकी रक्षाकरते हैं उनसबको विनाही यत्नके अपने आप भोजनकी प्राप्तिहोती है ४३।४४ वहांके बसनेवाले मनुष्य षट्रस भोजनकरते हैं और पुष्करद्वीपसे परे महासुन्दर स्वादु युक्त जलका समुद्र वेष्टित होरहा है उसी समुद्रके पीछे चारोंओर लोकालोक पर्व्वतहै वहकहीं प्रकाशितहै और कहीं अप्रकाशितहै उसके पूर्व्व की ओर आलोक पर्व्वत है उससे परे निरालोक पर्व्वतहै ४५।४७ उस पर्व्वतकी पृथ्वी लोक के विस्तार के समान है इस पर्व्वतका आधाभाग तो पृथ्वीसे बाहर स्थितहै और चारों ओरको जल

मन्तात्पालयन्तिगाम्। अद्भ्योदशगुणश्चाग्निः सर्वतोधारयत्यपः ४९ अग्नेर्दशगुणोवा
युर्धारयन् ज्योतिरास्थितः। तिर्य्यक्चमण्डलोवायुर्भूतान्यावेष्ट्यधारयन् ५० दशाधिकं
तथाकाशं वायोर्भूतान्यधारयत्। भूतादिर्धारयन्व्योम तस्माद्दशगुणस्तुवै ५१ भूतादि
तोदशगुणं महद्भूतान्यधारयत्। महत्तत्त्वंह्यनन्तेन अव्यक्तेनतुधार्य्यते ५२ आधाराधेय
भावेन विकारास्तेविकारिणाम् ५३ पृथ्व्यादयोविकारास्ते परिच्छिन्नाःपरस्परम्। परस्प
राधिकाश्चैव प्रविष्टाश्चपरस्परम् ५४ एवंपरस्परोत्पन्ना धार्य्यन्तेचपरस्परम्। यस्मात्
प्रविष्टास्तेऽन्योन्यं तस्मात्तेस्थिरतांगताः। आसंस्तेह्यविशेषाश्च विशेषाश्चान्यवेशनात्
५५ पृथ्व्यादयस्तुवाय्वन्ताः परिच्छिन्नास्तुतत्रते। भूतेभ्यःपरतस्तेभ्यो ह्यलोकःसर्वतः
स्मृतः ५६ तथाह्यालोकआकाशे परिच्छिन्नानिसर्वशः। पात्रेमहतिपात्राणि यथाह्यन्तर्ग
तानिच ५७ भवन्त्यन्योन्यहीनानि परस्परसमाश्रयात्। तथाह्यालोकआकाशे भेदास्त्व
न्तर्गतागताः ५८ कृतान्येतानितत्त्वानि अन्योन्यस्याधिकानितु। यावदेतानितत्त्वानि
तावदुत्पत्तिरुच्यते ५९ जन्तूनामिहसंस्कारो भूतेष्वन्तर्गतेषुवै। प्रत्याख्यायेहभूतानि
कार्य्योत्पत्तिर्नविद्यते ६० तस्मात्परिमिताभेदाः स्मृताःकार्य्यात्मकास्तुवै। तेकारणात्मका

में डूबरहाहै ४८ पृथ्वीसे दशगुना जलहै, वह सब ओरसे पृथ्वी की रक्षा करताहै जलोंसे दशगुणित अग्निहै वह सबओरसे जलको धारण कररहा है ४९ अग्निसे दशगुणित वायुहै वह अग्निको धारण करता हुआ स्थित होरहा है वायु मंडलमें तिरछा प्राप्त होकर भूतोंको वेष्टित करके धारण करताहै ५० वायुसे दशगुणा आकाश भूतोंको धारण कररहा है उस आकाशसे दशगुणा महाआकाश है वह महत्तत्त्वादिकों को धारण करता हुआ स्थितहै और महत्तत्त्वको अनन्त अव्यक्त अर्थात् माया धारण कर रही है विकारी अर्थात् सब प्राणियों के आधाराधेय भाव करके वहसब महत्तत्त्वादिक विकारी कहे जातेहैं ५१।५२ पृथिव्यादिक विकार परस्पर परिच्छिन्न अर्थात् ढकेहुए रहते हैं आपसमें अधिक हुए विकार आपसही में मिलेहुए रहते हैं इसप्रकार से आपसमें उत्पन्न हुए महत्तत्त्वादिक विकार परस्परमेंही धारणा को प्राप्त होरहे हैं जोकि वहसब भूतादिक आपसमें प्रविष्ट होरहे हैं इसी हेतु से वह स्थिरताको प्राप्त होगये हैं वह भूतादिक जुदे २ तो विशेष रहित हैं परन्तु अन्यके मिलजाने से विशेष सहित दिखाई पड़ते हैं ५४।५५ पृथिव्यादिक महाभूत जहां मिलेहुए रहते हैं वहां सब दृश्यमान कार्य्य हैं जहां इन महाभूतोंका अभावहै वहां सर्वत्र अलोक है अर्थात् कोई संसारमात्र नहीं है ५६ सबभूतादिक महाआकाश में ऐसे परिच्छिन्न होरहे हैं जैसेकि बड़ेपात्रमें छोटेपात्र घुलरहे हों ५७ सबभूत आपसमें एक दूसरे की अपेक्षा रखते हैं इस निमित्त अन्योन्यहीन हैं महाआकाश के अन्तर्गत इन महाभूतोंके अनेक भेद कहे हैं ५८ और अन्योन्य अधिक पंचीकरणहोने से पांचों तत्त्व अलग २ दीखते हैं जबतक तत्त्व रहते हैं तभीतक संसारकी उत्पत्ति कही है सब जीवमात्रों का संस्कार पंचभूतों के अन्तर्गत है इन भूतोंके खंडन होनेमें कार्य्य की उत्पत्ति नहीं होती है ५९।६० इस हेतुसे यह परिमित भेद कार्य्यात्मक कहेजाते हैं और इनके सूक्ष्म महदादिक कारणात्मक बोले

इवैव स्युर्भेदामहदादयः ६१ इत्येवंसन्निवेशोयं पृथ्व्याक्रान्तस्तुभागशः। सप्तद्वीपसमुद्राणां याथातथ्येनवैमया ६२ विस्तारान्मण्डलाञ्चैव प्रसंख्यानेनचैवहि। विश्वरूपंप्रधानस्यपरिमाणैकदेशिनः ६३ एतावत्सन्निवेशस्तु मयासम्यक्प्रकाशितः ६४ एतावदेवश्रोतव्यं सन्निवेशस्यपार्थिव !। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि सूर्य्याचन्द्रमसोर्गतिम् ६५ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे द्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२२ ॥

(सूतउवाच) अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि सूर्य्याचन्द्रमसोर्गतिम्। सूर्य्याचन्द्रमसावेतौ भ्राजन्तौयावदेवतु १ सप्तद्वीपसमुद्राणां द्वीपानांभातिविस्तरः। विस्तरार्द्धंपृथिव्यास्तु भवेदन्यत्रबाह्यतः २ पर्य्यासपरिमाणञ्च चन्द्रादित्यौप्रकाशतः। पर्य्यासपारिमाण्यात्तु बुधैस्तुल्यंदिवःस्मृतम् ३ त्रीन्लोकान्प्रतिसामान्यात् सूर्य्योयात्यविलम्बतः। अचिरात्तुप्रकाशेन अवनात्तुरविःस्मृतः ४ भूयोभूयःप्रवक्ष्यामि प्रमाणंचंद्रसूर्य्ययोः। महितत्वान्महच्छब्दो ह्यस्मिन्नर्थेनिगद्यते ५ अस्यभारतवर्षस्य विष्कम्भात्तुल्यविस्तृतम्। मण्डलंभास्करस्याथ योजनैस्तन्निबोधत ६ नवयोजनसाहस्रो विस्तारोमण्डलस्यतु। विस्तारात्त्रिगुणश्चापि परिणाहोऽत्रमण्डले ७ विष्कम्भान्मण्डलाञ्चैव भास्कराद्द्विगुणःशशी। अतःपृथिव्यावक्ष्यामि प्रमाणंयोजनैःपुनः ८ सप्तद्वीपसमुद्रायाविस्तारो मण्डलस्यतु। इत्येतदिहसंख्यातं पुराणेपरिमाणतः ९ तद्वक्ष्यामिप्रसंख्याय साम्प्रतआभिमानिभिः। अभिमानिनोह्यतीताये तुल्यास्तेसाम्प्रतैस्त्विह १० देवदेवैरतीता

जाते हैं ६१ इसप्रकार करके पृथ्वी समेत सातों समुद्रों का भेद यथार्थ विधिसे मंडल के विस्तार और संख्याके प्रमाणसे कह दियाहै प्रधान अर्थात् मायासहित ब्रह्मका यह विश्वरूप है यह इतना सन्निवेश मैंने प्रकाश किया है हे राजन् इतनाही सन्निवेश सुनना योग्य है ६२।६५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२२ ॥

सूतजी बोले हे ऋषियो अबमें सूर्य्य और चन्द्रमाकी गतिको अपनी मतिके अनुसार वर्णनकरता हूं जितने स्थानमें सूर्य्य और चन्द्रमाका प्रकाश होरहा है और सदैव होताहै उतनेही विस्तार में सातोंद्वीप और सातों समुद्रोंका विस्तार प्रकाशित होरहा है पृथ्वीका आधाविस्तार अन्यत्र बाहरकी ओर प्रकाशित नहीं है १।२ पृथ्वी के मंडलके प्रमाणमें सूर्य्य चन्द्रमा अपना प्रकाश करते हैं बुद्धिमान् पुरुषों ने पृथ्वी के मंडलके समान स्वर्गका भी मंडल कहाहै ३ सूर्य्य तीनों लोकोंमें शीघ्रही प्रकाश करता है इन सूर्य्यनारायणको शीघ्र प्रकाश करके सबकी रक्षा करनेसे रवि कहते हैं ४ वारंवार इन दोनों सूर्य्य चन्द्रमाके प्रमाणको कहेंगे इनका बड़ा प्रमाण होने से इनके प्रमाण में महच्छब्द कहाहै इस भारतखंडके मंडल प्रमाणके तुल्य सूर्य्य मंडल कहाहै अर्थात् सूर्य्य मंडल की लम्बाई नवहज़ार योजनमें है इससे त्रिगुणित गुलाई कही है ५।७ भारतखंडके मंडलसे और सूर्य्यके मंडलसे चन्द्रमा दूनाहै और पृथ्वी मंडलके योजन फिर कहेंगे ८ सातों द्वीपों समेत समुद्रोंवाली पृथ्वीकेमंडलके प्रमाणकी संख्या पुराणोंमें पृथ्वीके वर्त्तमान और व्यतीत अभिमानी देवताओं

स्तु रूपेर्नामभिरेवच। तस्माद्देसाम्प्रतैर्देवैर्वक्ष्यामिवसुधातलम् ११ दिव्यस्यसन्निवेशो वै साम्प्रतैरेवकृत्स्नशः। शतार्द्धकोटिविस्तारा पृथिवीकृत्स्नशःस्मृता १२ तस्याश्चार्द्ध प्रमाणञ्च मेरोश्चैवोत्तरोत्तरम्। मेरोर्मध्येप्रतिदिशं कोटिरेकातुसास्मृता १३ तथाशतस हस्राणामेकोननवतिंपुनः। पञ्चाशच्चसहस्राणि पृथिव्यर्द्धस्यविस्तरः १४ पृथिव्याविस्त रंकृत्स्नं योजनैस्तन्निबोधत। तिस्रःकोट्यस्तुविस्तारात् संख्यातास्तुचतुर्दिशम् १५ तथाशतसहस्राणामेकोनाशीतिरुच्यते। सप्तद्वीपसमुद्रायाः पृथिव्याःसतुविस्तरः १६ विस्तारंत्रिगुणञ्चैव पृथिव्यन्तरमण्डलम्। गणितंयोजनानांतु कोट्यस्त्वेकादशस्मृताः १७ तथाशतसहस्राणां सप्तत्रिंशाधिकास्तुताः। इत्येतद्वैप्रसंख्यातं पृथिव्यन्तरमण्डलम् १८ तारकासन्निवेशस्य दिवियावत्तुमण्डलम्। पर्याप्तसन्निवेशस्य भूमेस्तावत्तुमण्डलम् १९ पर्यासपरिमाणञ्च भूमेस्तुल्यंदिवःस्मृतम्। मेरोःप्राच्यांदिशायांतु मानसोत्तरमूर्द्धनि २० वस्त्वेकसारामाहेन्द्री पुण्याहेमपरिष्कृता। दक्षिणेनपुनर्मेरोर्मानसस्यतुपृष्ठतः २१ वैवस्वतोनिवसति यमःसंयमनेपुरे। प्रतीच्यांतुपुनर्मेरोर्मानसस्यतुमूर्द्धनि २२ सुषानामपुरीरम्यावरुणस्यापिधीमतः। दिश्युत्तरायांमेरोस्तु मानसस्यैवमूर्द्धनि २३ तुल्यामहेन्द्रपुर्यापि सोमस्यापिविभावरी। मानसोत्तरपृष्ठेतु लोकपालाश्चतुर्दिशम् २४ स्थिताधर्म्मव्यवस्थार्थं लोकसंरक्षणायच। लोकपालोपरिष्टात्तु सर्वतोदक्षिणायने २५ काष्ठागतस्य सूर्य्यस्य गतिस्तत्रनिबोधत। दक्षिणोपक्रमेसूर्य्यः क्षिप्तेषुरिवसर्पति २६ ज्योतिषाञ्चक्र

के समान कहीहै ९।१० रूपनामादिकों करके सब देवता समान हैं इस हेतुसे वर्तमान देवताओं के प्रमाणसे पृथ्वीतलको वर्णन करते हैं ११ पृथ्वीतलका विस्तार सब ओर से पचास किरोड़है १२ इस पृथ्वीका अर्द्धभाग सुमेरु पर्व्वतके उत्तरोत्तर है सुमेरुपर्व्वतके नीचे चारोंओर से दबीहुई पृथ्वी एक किरोड़ योजन कही है और नवासी ८९ लाख पचास हज़ार कोसों में पृथ्वी के अर्द्धमंडलका प्रमाण कहाहै अब सम्पूर्ण पृथ्वी के योजन के प्रमाण को कहते हैं चारोंओर की पृथ्वीका प्रमाण तीन किरोड़ उनासी लाख ३७९००००० योजन है यह सातोंद्वीप और समुद्रों समेत सब पृथ्वी की लम्बाई का प्रमाण है १३।१६ इससे त्रिगुना प्रमाण पृथ्वी के मध्यवर्त्ती भीतरके मंडलका है जिसकी संख्या ग्यारह किरोड़ और सैंतीस लाखहै यह पृथ्वी के भीतरको प्रमाण कहा १७।१८ स्वर्गके बीच जितने स्थलमें नक्षत्रों की स्थितिहै उस सम्पूर्णमंडलके समान पृथ्वीका मंडल जानो और पृथ्वी के चारोंओरको जितना आकाशहै उतनेही प्रमाणमें स्वर्ग कहाहै सुमेरु की पूर्व्वदिशामें मानसोत्तर पर्व्वतपर एकसारानाम महेन्द्रकी पुरी है वह सुवर्णसे भूषितहै सुमेरु से दक्षिण मानस पर्व्वतकी पीठपर धर्मराजकी संयमनीनाम पुरी है वहां धर्मराज वासकरते हैं सुमेरु से पश्चिम मानसपर्व्वतके मस्तकपर महेन्द्र की पुरीके समान विभावरीनाम चंद्रमाकीपुरीहै और मानस पर्व्वत के उत्तरकीओर मस्तकपर चारों दिशाओं में लोकपालहैं वह सब धर्म की व्यवस्थावाले लोकपाल सबलोकों की रक्षाके निमित्त स्थित होरहेहैं उन लोकपालों के ऊपर स्थित होनेवाले दक्षिणायन

मादाय सततंपरिगच्छति। मध्यगश्चामरावत्यां यदाभवतिभास्करः २७ वैवस्वतेसंयमने उद्यन्सूर्य्यःप्रदृश्यते। सुषायामर्द्धरात्रस्तु विभावर्यास्तमेतिच २८ वैवस्वतेसंयमनेमध्याह्नेतुरविर्यदा। सुषायामथवारुण्यामुत्तिष्ठन्सतुदृश्यते २९ विभावर्यामर्द्धरात्रं माहेन्द्र्यामस्तमेवच। सुषायामथवारुण्यां मध्याह्नेतुरविर्यदा ३० विभावर्य्यांसोमपुर्यां उत्तिष्ठति विभावसुः। महेन्द्रस्यामरावत्यामुद्गच्छतिदिवाकरः ३१ अर्द्धरात्रंसंयमने वारुण्यामस्तमेतिच। सशीघ्रमेवपर्येति भानुरालातचक्रवत् ३२ भ्रमन्वैभ्रममाणानि ऋक्षाणिचरते रविः। एवंचतुर्षुपार्श्वेषु दक्षिणान्तेषुसर्पति ३३ उदयास्तमयेवासावुत्तिष्ठतिपुनःपुनः। पूर्वाह्णेचापराह्णेचद्वौद्वौदेवालयौनुसः ३४ पतत्येकन्तुमध्याह्ने भाभिरेवचरश्मिभिः। उदितोवर्द्धमानाभिर्मध्याह्नेतपतेरविः ३५ अतःपरंह्रसन्तीभिर्गोभिरस्तंसगच्छति। उदयास्तमयाभ्यांचस्मृतेपूर्वापरेतुवै ३६ यादृक्पुरस्तात्तपति तादृक्पृष्ठेतुपार्श्वयोः। यत्रोदयस्तुदृश्येत तेषांसउदयःस्मृतः ३७ प्रणाशंगच्छतेयत्र तेषामस्तःसउच्यते। सर्वेषामुत्तरे मेरुर्लोकालोकस्यदक्षिणे ३८ विदूरभावादर्कस्य भूमेरेषागतस्यच। अयन्तेरश्मयोयस्मात्तेनरात्रौनदृश्यते ३९ ऊर्ध्वंशतसहस्रांशुः स्थितस्तत्रप्रदृश्यते। एवंपुष्करमध्येतु यदाभ

सूर्य्य की गतिसुनो यह दक्षिणायन सूर्य्य छूटेहुए बाणके समान शीघ्रगतिसे चलते हैं १९।२६ यह अपनी ज्योतियों के चक्रको लेकर सदैव अहर्निश गमन करता है जब इन्द्र की अमरावती पुरी के मध्यमें सूर्य्य आताहै तब धर्मराजकी संयमनीपुरी में उदय होताहुआ दीखता है और सुषापुरी में अर्द्धरात्रिहोती है विभावरी में अस्तहोताहै २७।२८ जब धर्मराजकी संयमनी पुरी में मध्याह्नहोताहै तब वरुणकी सुषा पुरीमें उदयहोता दीखताहै जब विभावरी में अर्द्धरात्रिहोती है तब इन्द्रकी पुरी में अस्तहोताहै जिस समयवरुणकी सुषापुरी में मध्याह्न होताहै उससमय चन्द्रमाकी विभावरी पुरी में उदयहोताहै औरइन्द्रकी अमरावतीपुरी में जबसूर्य्य उदयहोताहै तब धर्मराजके सयमनपुरमें अर्द्ध-रात्रि होतीहै और वरुणकी पुरीमें अस्त होताहै इसप्रकार आलातचक्र अर्थात् जलतेहुए काष्ठादिकके समान शीघ्रही सब स्थानोंमें प्राप्तहोताहै २९।३१ भ्रमताहुआ सूर्य्यभ्रमतेहुए नक्षत्रोंको प्राप्तहोताहै ऐसे दक्षिणके अन्तवाले चारों कोणोंमें सूर्य्य प्राप्तहोताहै ३२ अथवा उदयाचल पर्व्वतपर यह वारं-वार उदयहोताहै औरपूर्वाह्न तथा अपराह्न में दो२ देवताओं के स्थानमें प्राप्तहोताहै एकदेवताकी पुरी में किरणों से प्रातःकाल के समय प्राप्तहोकर उदयसमयमें और मध्याह्न समयमें सूर्य्य अपनीबढ़ती हुई किरणोंसे तपताहै ३४।३५ मध्याह्नके पीछेघटतीहुई किरणों से गमन करताहुआ अस्तहोताहै उदय और अस्तके पूर्व और पश्चात्को पूर्व और अपर कहते हैं ३६ जैसे सूर्य्य आगे और पीठकी ओर तपताहै वैसेहीबराबरमें भी तपताहै जहाँ उदयहोता दीखताहै वहांका वही उदय होताहै और जहां छिपजाताहै वही उनका अस्तकहाताहै सबसे उत्तरमें सुमेरुपर्व्वतहै लोकालोक पर्व्वतके दक्षिणकी ओर सूर्य्यदूरचलाजाताहै तब भूमिकी रेखाआड़ी आजातीहै वहाँसूर्य्यकी किरणें बन्दहोजाती हैं इसी हेतुसे रात्रिमें नहींदीखताहै ३७।३९ अपने२ देशकेऊपर स्थितहुआ सूर्य्यदिखाईपड़ताहै इसीसे जब

वतिभास्करः ४० त्रिंशद्भागश्चमेदिन्या मुहूर्त्तेनसगच्छति । योजनानांसहस्रस्य इमांसं
ख्यांनिबोधत ४१ पूर्णंशतसहस्राणामे कत्रिंशच्चसास्मृता । पञ्चाशच्चसहस्राणि तथान्यान्य
धिकानिच ४२ मौहूर्त्तिकीगतिर्ह्येषा सूर्य्यस्यतुविधीयते । एतेनक्रमयोगेन यदाकाष्ठान्तु
दक्षिणाम् ४३ परिगच्छतिसूर्य्योऽसौ मासंकाष्ठामुदक्दिनात् । मध्येनपुष्करस्याथ भ्रमते
दक्षिणायने ४४ मानसोत्तरमेरोस्तु अन्तरंत्रिगुणंस्मृतम् । सर्वतोदक्षिणायान्तु काष्ठायां
तन्निबोधत ४५ नवकोट्यःप्रसंख्याता योजनैःपरिमण्डलम् । तथाशतसहस्राणि चत्वारिं
शच्चपञ्चच ४६ अहोरात्रात्पतङ्गस्य गतिरेषाविधीयते । दक्षिणादिङ्निवृत्तोऽसौ विषुव
स्थोयदारविः ४७ क्षीरोदस्यसमुद्रस्योत्तरतोऽपिदिशंचरन् । मण्डलंविषुवच्चापि योजनै
स्तन्निबोधत ४८ तिस्रःकोट्यस्तुसम्पूर्णा विषुवस्यापिमण्डलम् । तथाशतसहस्राणि
विंशत्येकाधिकानितु ४९ श्रावणेचोत्तरांकाष्ठां चित्रभानुर्यदाभवेत् । गोमेदस्यपरद्वीपे
उत्तराञ्चदिशंचरन् ५० उत्तरायाःप्रमाणन्तु काष्ठायामण्डलस्यतु । दक्षिणोत्तरमध्यानि
तानिविन्द्याद्यथाक्रमम् ५१ स्थानंजरद्गवंमध्ये तथैरावतमुत्तरम् । वैश्वानरंदक्षिणतो
निर्दिष्टमिहतत्त्वतः ५२ नागवीथ्युत्तरावीथी ह्यजवीथिस्तुदक्षिणा । उभेआषाढमूलंतु
अजवीथ्यादयस्त्रयः ५३ अभिजित्पूर्वतःस्वाति न्नागवीथ्युत्तरास्त्रयः । अश्विनीकृत्ति
कायाम्या नागवीथ्यस्त्रयःस्मृताः ५४ रोहिण्यार्द्रामृगशिरो नागवीथिरितिस्मृता ।
पुष्याश्लेषापुनर्वस्वोर्वीथीचैरावतीस्मृता ५५ तिस्रस्तुवीथयोह्येता उत्तरामार्गउच्य

पुष्कर द्वीपके मध्यमें सूर्य्य प्राप्तहोताहै तब एक मुहूर्त्त में पृथ्वीके तीसवें भागमें गमनकरजाताहै उस के योजनोंकी संख्या इकतीसलाख पचासहज़ार से भी कुछ अधिक है ४० । ४२ यह सूर्य्य की दो घड़ी की गतिहै इस क्रमयोगसे दक्षिण दिशामें सदा गमन करताहै एक महीनेमें उत्तर दिशामें प्राप्त होताहै पुष्कर द्वीपको मध्यमें करके दक्षिणायन में भ्रमताहै ४३ । ४४ मानसोत्तर मेरु पर्व्वतके अन्तः गैत त्रिगुणित भ्रमताहै जबसे दक्षिणायन आताहै तबसे १ किरोड़ पैंतालीसलाख योजन मंडलमें सूर्यकी गति एक दिनरातमें होतीहै जब दक्षिणायनसे निवृत्त होकर समान अयनमें अर्थात् रात्रि दिन समान होनेपर क्षीरसागरसे उत्तर दिशाकी ओर सूर्य्य की गतिहोतीहै उसको विषुव संज्ञक मंडल कहते हैं ४५ । ४८ विषुव संज्ञक समयमें तीनकिरोड़ इक्कीसलाख योजनमें सूर्य्य प्राप्तहोताहै ४९ श्रावणके महीने में चित्रभानु सूर्य्य उत्तरदिशामें गोमेद द्वीपसे परले पुष्कर द्वीपकी उत्तर दिशामें प्राप्त होताहै ५० उत्तर दिशाके मंडलका और दक्षिण दिशाका तथा मध्यका प्रमाण क्रमपूर्व्वक जानलेना मध्यमें जरद्गवनाम स्थानहै उत्तरमें ऐरावतनाम स्थानहै औरदक्षिणमें वैश्वानर स्थान कहाजाता है ५१ । ५२ नागवीथी उत्तरावीथीहै अजवीथी दक्षिणावीथीहै पूर्वा उत्तराषाढ़ और मूल यहतीनोंअजवीथी कहातीहै ५३ अभिजित्का पूर्वार्द्ध स्वाति और तीनों उत्तरा यह नागवीथी कहातीहैं अश्विनी भरणी और कृत्तिका यहतीनोंभी नागवीथी कहातीहै ५४ रोहिणी, आर्द्रा और मृगशिर इन तीनोंको भी नागवीथी कहते हैं और पुष्य श्लेषा और पुनर्वसु जब इन नक्षत्रों पर सूर्य्य आताहै तब ऐरा

ते। पूर्वउत्तरफल्गुन्यौ मघाचैवार्षभीभवेत् ५६ पूर्वोत्तरप्रोष्ठपदौ गोवीथीरेवतीस्मृता।
श्रवणश्चधनिष्ठाच वारुणञ्चजरद्गवम् ५७ एतास्तुवीथयस्तिस्रो मध्यमोमार्गउच्यते।
हस्तश्चित्रानथास्वाती ह्यजवीथिरितिस्मृता ५८ ज्येष्ठाविशाखामैत्रञ्च मृगवीथीतथोच्यते।
मूलंपूर्वोत्तराषाढे वीथीवैश्वानरीभवेत् ५९ स्मृतास्तिस्रस्तुवीथ्यास्ता मार्गेवैदक्षिणेपुनः।
काष्ठयोरन्तरञ्चैत द्वक्ष्यतेयोजनैःपुनः ६० एतच्छतसहस्राणा मेकत्रिंशत्तुवैस्मृतम्। श
तानित्रीणिचान्यानि त्रयस्त्रिंशत्तथैवच ६१ काष्ठयोरंतरंह्येतद्योजनानांप्रकीर्तितम्। का
ष्ठयोर्लेखयोश्चैव अयनेदक्षिणोत्तरे ६२ तेवक्ष्यामिप्रसंख्याय योजनैस्तुनिबोधत। एके
कमंतरंतद्ध युक्तान्येतानिसप्तभिः ६३ सहस्रेणातिरिक्ताचततोऽन्यापञ्चविंशतिः। लेख
योःकाष्ठयोश्चैव बाह्याभ्यंतरयोश्चरन् ६४ अभ्यन्तरंसपर्येति मण्डलान्युत्तरायणे। बाह्य
तोदक्षिणेनैव सततंसूर्य्यमण्डलम् ६५ चरन्नसावुदीच्याञ्च ह्यशीत्यामण्डलान्शतम्।
अभ्यंतरंसपर्यैति क्रमतेमण्डलानितु ६६ प्रमाणंमण्डलस्यापि योजनानान्निबोधत।
योजनानांसहस्राणि दशाचाष्टौतथास्मृतम् ६७ अधिकान्यष्टपञ्चाशद्योजनानतुवैपुनः। वि
ष्कम्भोमण्डलस्यैव तिर्यक्सतुविधीयते ६८ अहस्तुचरतेनाभेः सूर्य्योवैमण्डलंक्रमात्।
कुलालचक्रपर्यन्तो यथाचन्द्रोरविस्तथा ६९ दक्षिणेचक्रवत्सूर्यस्तथाशीघ्रंनिवर्त्तते।
तस्मात्प्रकृष्टांभूमिंतु कालेनाल्पेनगच्छति ७० सूर्य्योद्वादशभिःशीघ्रं मुहूर्त्तैर्दक्षिणायने।

वती वीथीहोतीहै ५५ इनतीनों वीथियोंमें सूर्य्यकाउत्तरमार्ग कहाताहै पूर्वा, उत्तराफाल्गुनी और मघा जबइनपर सूर्य्य होताहै तब आर्षभी वीथी होजातीहै ५६ पूर्व्वा, उत्तराभाद्रपद और रेवती यह गो-वीथीहै श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा इनकी जरद्गवनाम वीथीहै ५७ यहतीनों वीथी सूर्य्यका मध्यममार्ग कहाती हैं हस्त चित्रा और स्वाती यह अजवीथीहै ज्येष्ठा विशाखा और अनुराधा यहमृगवीथी कहातीहै मूल, पूर्व्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ यह वैश्वानरी वीथीहै ५८। ५९ यहतीनों वीथी सूर्य्यके दक्षिणमार्गकी कही हैं इनदिशाओंके अन्तरके योजनोंको कहते हैं ६० सूर्य्यकी दक्षिण उत्तर दिशाओंका अन्तर इकतीसलाख तेंतीससौ योजनकाहै इसको दक्षिणायन और उत्तरायणका अन्तर जानना ६१। ६२ अब दक्षिणायन और उत्तरायण दिशाओंकी रेखाके योजनोंको कहताहूं उसको श्रवणकरो पृथक् २ अन्तरवाली सातरेखाहैं उनमें हरएक रेखा चोवीसहजार योजनके अन्तर से जानना रेखाके और दिशाके बाहर भीतर गमन करताहुआ सूर्य्य उत्तरायणमें तो भीतरको मंडल करताहै और दक्षिणायनहोनेपर निरन्तर रेखासे बाहर गमन करताहै ६३। ६४ उत्तरायणमें गमन करताहुआ सूर्य्य ८००० मंडलोंको प्राप्त होताहै और मंडलोंपर चलताहुआ भीतरकी ओर प्राप्त होताहै ६६ मंडलोंके योजनोंका यह परिमाणहै कि अठारहहज़ार अट्ठावन योजनका एकमंडल होता है मंडलका स्तंभ तिरछा कहाहै ६७। ६८ सूर्य्य नाभिके क्रमसे दिनमें मंडलको प्राप्त होताहै जैसेकि कुम्हारका चक्रचलताहै इसी प्रकार सूर्य्य और चन्द्रमा चलतेहैं अर्थात् घूमतेहैं ६९ दक्षिणायन में सूर्य्य चक्र के समान शीघ्रता से निवृत्त होजाता है इस निमित्त बहुतसी भूमिको थोड़ेही

त्रयोदशनक्षत्राणां मध्येचरतिमण्डलम् ७१ मुहूर्त्तैस्तानिऋक्षाणि नक्तमष्टादशैश्चरन्। कुलालचक्रमध्यस्थोयथामन्दंप्रसर्पति ७२ उदग्यानेतथासूर्य्यः सर्पतेमन्दविक्रमः। तस्माद्दीर्घेणकालेन भूमिंसोऽल्पांप्रसर्पति ७३ सूर्य्योऽष्टादशभिरह्नोमुहूर्त्तैरुदगायने। त्रयोदशानांमध्येतु ऋक्षाणांचरतेरविः। मुहूर्त्तैस्तानिऋक्षाणि रात्रौद्वादशभिश्चरन् ७४ ततोमन्दतरंताभ्यां चक्रन्तुभ्रमतेपुनः। मृत्पिण्डइवमध्यस्थो भ्रमतेऽसौध्रुवस्तथा ७५ मुहूर्त्तैस्त्रिंशतातावदहोरात्रंध्रुवोभ्रमन्। उभयोःकाष्ठयोर्मध्ये भ्रमतेमण्डलानितु ७६ उत्तरक्रमणेऽर्कस्य दिवामन्दगतिःस्मृता। तस्यैवतुपुनर्नक्तं शीघ्रासूर्य्यस्यवैगतिः ७७ दक्षिणप्रक्रमेचापि दिवाशीघ्रंविधीयते। गतिःसूर्य्यस्यवैनक्तं मन्दाचापिविधीयते ७८ एवंगतिविशेषेण विभजन्रात्र्यहानितु। अजवीथ्यांदक्षिणायां लोकालोकस्यचोत्तरम् ७९ लोकसन्तानतोह्येषवैश्वानरपथाद्बहिः। व्युष्टिर्यावत्प्रभासौरी पुष्करात्संप्रवर्तते ८० पार्श्वेभ्योबाह्यतस्तावल्लोकालोकश्चपर्वतः। योजनानांसहस्राणि दशोर्ध्वंचोच्छ्रितोगिरिः ८१ प्रकाशश्चाप्रकाशश्च पर्वतःपरिमण्डलः। नक्षत्रचन्द्रसूर्याश्च ग्रहास्तारागणैःसह ८२ अभ्यन्तरेप्रकाशन्ते लोकालोकस्यवैगिरेः। एतावानेवलोकस्तु निरालोकस्ततःपरम् ८३ लोकआलोकनेधातुर्निरालोकस्त्वलोकता। लोकालोकौतुसन्धत्ते तस्मात्सूर्यःपरिभ्रमन् ८४ तस्मात्सन्ध्येतितामाहुरुषाव्युष्ट्योर्यथान्तरम्। उषारात्रिःस्मृताविप्रै

काल में उल्लंघन करजाता है ७० अर्थात् दक्षिणायन में बहुत शीघ्रता पूर्व्वक सूर्य्य बारह मुहूर्त्तों में तेरह नक्षत्रों में विचरता है और रात्रि में उतनेही नक्षत्रोंपर अठारह मुहूर्त्तों में विचरता है कुह्मार के चक्र के मध्य में स्थितहोने के समान मन्द २ चलता है ७१। ७२ और उत्तरायण में सूर्य्य दिनमें मन्दगतिसे चलता है इसीहेतुसे बहुतकालमें थोड़ीसी पृथ्वीको उल्लंघन करताहै ७३ उत्तरायण में अठारह मुहूर्त्तोंमें तेरह नक्षत्रोंपर सूर्य्य विचरताहै और रात्रिमें उतनेही नक्षत्रोंपर बारह मुहूर्त्तोंमें विचरता है ७४ तब सूर्य्य और चन्द्रमा चक्रपर ऐसेमन्द २ भ्रमण करतेहैं जैसे कि चाकके मध्यमें स्थितहुआ मट्टीका पिण्ड मन्द २ भ्रमताहै इसीके समान ध्रुवकोभी जानना ७५ तीस मुहूर्त्तोंमें भ्रमता हुआ ध्रुव दोनों दिशाओंके मध्यमें मंडलोंको भ्रमाताहै ७६ उत्तरायणके क्रमसे दिनमें सूर्य्यकी मन्दगति होतीहै और रात्रिमें शीघ्रगति होजाती है ७७ दक्षिणायनके क्रमसे दिनमें सूर्य्यकी शीघ्रगति और रात्रिमें मन्दगति होजातीहै ७८ इसरीतिसे गतिविशेषों करके रात्रिदिनोंका विभाग करताहुआ अजवीथी मार्गमें विचरताहुआ दक्षिण दिशामें लोकालोक पर्व्वतकी उत्तर दिशाकीओर प्राप्तहोताहै ७९ यह सूर्य्यलोक संतान पर्व्वत और वैश्वानर मार्गसे जब बाहरकीओर आताहै तब पुष्कर द्वीपमें सूर्य्यकी बहुतसी कान्ति होती है ८० वहाँ बराबरमें और बाहरकी ओर दशहजार योजन ऊंचा लोकालोक पर्व्वतहै ८१ उस पर्व्वतका मंडल प्रकाश और अप्रकाशवालाहै अर्थात् नक्षत्र चन्द्रमा सूर्य ग्रह और तारागण इनके साथ लोकालोक पर्व्वतके भाग प्रकाशित होते हैं इतना यह आलोक पर्वत कहाहै इससेपरे निरालोक पर्व्वतहै ८२। ८३ लोकंधातु देखनेमें वर्ता जाताहै नहीं देखनेको अलोक

व्युष्टिश्चापिअह्नःस्मृतम् ८५ त्रिंशत्कलोमुहूर्तस्तु अहस्तेदशपञ्चच। ह्रासोवृद्धिरहर्भागै र्दिवसानांयथातुवै ८६ सन्ध्यामुहूर्तमात्रायां ह्रासवृद्धौतुतत्स्मृते। लेखाप्रभृत्यथादित्ये त्रिमुहूर्तागतेतुवै ८७ प्रातःस्मृतस्ततःकालो भागांश्चाहुश्चपञ्च च। तस्मात्प्रातगता त्कालात् मुहूर्ताःसङ्गवस्त्रयः ८८ मध्याह्नस्त्रिमुहूर्तस्तु तस्मात्कालादनन्तरम्। तस्मा न्मध्यन्दिनात्कालात् अपराह्णइतिस्मृतः ८९ त्रयएवमुहूर्तास्तु कालएषस्मृतोबुधैः। अपराह्णव्यतीताच्च कालःसायंसउच्यते ९० दशपञ्चमुहूर्ताह्नो मुहूर्तास्त्रयएवच। द शपञ्चमुहूर्तंवै अहस्तुविषुवेस्मृतम् ९१ वर्धत्यतोह्रसत्येव अयनेदक्षिणोत्तरे। अहस्तु ग्रसतेरात्रिं रात्रिस्तुग्रसतेऽहः ९२ शरद्वसन्तयोर्मध्यं विषुवन्तुविधीयते। आलोका न्तःस्मृतोलोको लोकाच्चालोकउच्यते ९३ लोकपालाःस्थितास्तत्र लोकालोकस्यमध्य तः। चत्वारस्तेमहात्मान स्तिष्ठन्त्याभूतसंप्लवम् ९४ सुधामाचैववैराजः कर्दमश्चप्रजाप तिः। हिरण्यरोमापर्जन्यः केतुमान्राजसश्चसः ९५ निर्द्वन्द्वानिरभिमाना निस्तन्द्रानि ष्परिग्रहा। लोकपालाःस्थितास्त्वेते लोकालोकेचतुर्दिशम् ९६ उत्तरंयदगस्त्यस्य शृङ्गंदे वर्षिसेवितम्। पितृयानःस्मृतःपन्था वैश्वानरपथाद्बहिः ९७ तत्रासतेप्रजाकामाऋषयो येऽग्निहोत्रिणः। लोकस्यसन्तानकराः पितृयानेपथिस्थिताः ९८ भूतारम्भकृतंकर्म्म आ

कहते हैं इसलिये लोकालोक पर्व्वतकी सन्धि में भ्रमताहुआ सूर्य्य जब प्राप्तहोताहै तब संध्या होती है सूर्य्यकी किरणोंके उदयहोनेमें जब थोड़ाकाल बाकी रहताहै उसीको ऊषाकाल कहते हैं किरणों के प्रकाशमें दिन कहलाताहै ८४। ८५ तीस कलाओंका एक मुहूर्त्त और पन्द्रह मुहूर्त्तों का दिनहोताहै दिनों के घटने बढ़नेके विभागसे मुहूर्त्तोंका भी घटना बढ़ना जानना ८६ संध्या एक मु- हूर्त्ततक होतीहै वहां दिनका घटना बढ़ना कहाहै सूर्य्यकी किरण उदयहोनेमें जब तीन मुहूर्त्त व्यतीत होजातेहैं उसको प्रातःकाल कहतेहैं वह पांचवांभाग कहाताहै इसके अनन्तर तीनमुहूर्त्त तक संगव संज्ञाहै ८७। ८८ उसके पीछे तीनमुहूर्त मध्याह्नकहलातेहैं मध्याह्नसे पीछे तीनमुहूर्त्त अपराह्णकहाते हैं अपराह्णके पीछे सायंकाल कहलाताहै ८९। ९० पन्द्रह मुहूर्तोंका दिनहोताहै और पन्द्रह मुहूर्तों की रात्रिहोतीहै यह विषुव अर्थात् समान दिनरात्रि की व्यवस्थाहै ९१ और दक्षिण उत्तरअयनमें दिन घटता बढ़ताहै दिन बढ़कर रात्रिको घटाताहै और रात्रि बढ़कर दिनको घटातीहै ९२ शरद वसन्तऋतुके मध्यमें समकाल आताहै जहांतक दर्शनहोवे वहांतक लोक कहाताहै देखनेसे आलोक कहतेहैं ९३ लोकालोक पर्व्वतके मध्यमें लोकपाल स्थितहैं वह चार महात्माहैं चारों प्रलयकाल तक स्थित रहतेहैं ९४ पहला सुधामा अर्थात् सुन्दर धामवाला वैराज १ दूसरा कर्दम नाम प्रजापति २ तीसरा सुवर्णके समान रोमोंवाला पर्जन्य ३ चौथा रजोगुणी केतुमान् ४ यह चारो सुख दुःखादि द्वन्द्व अभिमान आलस्य और संग्रहसे रहितहैं वह लोकालोक पर्व्वतकी चारोंदिशाओंमें एक२ स्थित होरहेहैं ९५। ९६ अगस्त्य पर्व्वतके उत्तरका शिखर देवता और ऋषियोंसे सेवितहै वैश्वानर मार्ग से बाहर पितृयान संज्ञक अर्थात् पितरोंका मार्ग वर्णन कियाहै ९७ वहां प्रजाकी कामना करनेवाले

शिपश्चविशाम्पते। । प्रारम्भन्तेलोककामास्तेषांपन्थाःसदक्षिणः ९९ चलितन्तेपुनर्धर्मं स्थापयन्तियुगेयुगे । सन्तप्ततपसाचैव मर्यादाभिःश्रुतेनच १०० जायमानास्तुपूर्वेवै प श्चिमानांगृहेष्विते । पश्चिमाश्चैवपूर्वेषां जायन्तेनिधनेष्विह १०१ एवमावर्तमानास्ते व र्तन्त्याभूतसंप्लवम्। अष्टाशीतिसहस्राणि ऋषीणांगृहमेधिनाम् १०२ सवितुर्दक्षिणंमार्ग माश्रित्याभूतसंप्लवम् । क्रियावतांप्रसंख्यैषा येश्मशानानिभेजिरे १०३ लोकसंव्यवहारा र्थं भूतारम्भकृतेनच। इच्छाद्वेषरताच्चैव मैथुनोपगमाच्चवै १०४ तथाकामकृतेनेह सेवना द्विषयस्यच । इत्येतैःकारणैःसिद्धाः श्मशानानीहभेजिरे १०५ प्रजैषिणःसप्तऋषयो द्वाप रेष्विहजज्ञिरे । सन्ततिन्तेजुगुप्सन्ते तस्मान्मृत्युर्जितस्तुतैः १०६ अष्टाशीतिसहस्राणि तेषामप्यूर्ध्वरेतसाम्। उदक्पन्थानपर्यन्त माश्रित्याभूतसंप्लवम् १०७ तेसम्प्रयोगाल्लो कस्य मिथुनस्यचवर्जनात्। ईर्ष्याद्वेषनिवृत्त्याच भूतारम्भविवर्जनात् १०८ इत्येतैःकार णैःशुद्धैस्तेऽमृतत्वंहिभेजिरे। आभूतसंप्लवस्थानाम मृतत्वंविभाव्यते १०९ त्रैलोक्यस्थि तिकालोहि नपुनर्मार्गगामिनाम्। आभूतसंप्लवान्तेतु क्षीयन्तेचोर्ध्वरेतसः ११० ऊर्ध्वोत्त रमृषिभ्यस्तु ध्रुवोयत्रानुसंस्थितः। एतद्विष्णुपदंदिव्यं तृतीयंव्योम्निभास्वरम् १११ यत्र गत्वानशोचन्ति तद्विष्णोःपरमम्पदम्। धर्मेध्रुवस्यतिष्ठन्ति येतुलोकस्यकांक्षिणः ११२

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

अग्निहोत्री ऋषि स्थितहैं लोककी वृद्धिकरनेके लिये पितरोंके मार्ग में स्थित होरहेहैं ९८ हे शौनक और ऋषिलोगो लोकोंकी कामनावाले ऋषि भूतोंके आरंभ कियेहुए कर्मोंको और विचारेहुए मनोरथोंको प्रारंभ करतेहैं उनका दक्षिणा पथ मार्ग कहाहै ९९ और युग २ के प्रचलित धर्मोंको स्थापित करतेहैं मर्य्यादाकरके शास्त्रके सुननेसे सुन्दर तपोंसे युक्तहैं १०० पहलेके लोकपाल पिछले लोकपालोंके घरोंमें जन्म लेतेहैं और दूसरे लोकपाल पहले लोकपालों के घरोंमें जन्मतेहैं इस रीतिसे वह प्रलयकाल तक अदलाबदल करतेहुए वर्त्तते हैं और अट्ठासीहज़ार गृहस्थी ऋषियोंके दक्षिणमार्ग में सूर्य्य प्राप्तहोताहै और क्रियावाले पुरुषों की संख्याके लिये कई देवता श्मशानों में प्राप्तहोरहेहैं लोकोंके उत्तम व्यवहारके निमित्त भूतोंके आरंभ करने से इच्छाद्वेषमें रतहोनेसे मैथुनकरनेसे १०१ १०४ और कामसे कियेहुए विषयके सेवनसे इत्यादिक कारणों से सिद्धपुरुष श्मशानों को प्राप्तहोते भये हैं १०५ प्रजाकी इच्छावाले सप्तऋषि द्वापरयुग में इस लोकके मध्य जन्मते भये और सन्तान की निन्दा करतेभये इसहेतुसे उन्होंने मृत्युको जीतलिया १०६ उन ऊर्ध्वरेता अर्थात् ऊपरको वीर्य चढ़ानेवाले सप्तऋषियोंके उत्तर मार्गमें अट्ठासीहज़ार ऋषिलोग प्राप्तहोगये हैं और प्रलयकाल पर्य्यन्त रहेंगे वह सप्तऋषि संसारके रक्षकहुए उन महात्माओंने कभी मैथुन, ईर्षा, द्वेष और भूतोंका आरंभ नहीं किया इन कारणोंसे अमरताको प्राप्तहोगये और प्रलयकाल तक अमर रहेंगे त्रिलोकी की स्थिति करनेवाला काल उनको दूर नहीं करसक्ता परन्तु प्रलयकाल होनेपर ऐसे २ ऊर्ध्वरेता लोग भी नष्ट होजाते हैं १०७। ११० इन ऊर्ध्वरेतस सप्तऋषियों से ऊपर ध्रुवस्थित है यह दिव्य

एवंश्रुत्वाकथांदिव्यामब्रुवन्लोमहर्षणिम् । सूर्याचन्द्रमसोश्चारं ग्रहाणाञ्चैवसर्वशः १
(ऋषय ऊचुः) भ्रमन्तिकथमेतानि ज्योतींषिरविमण्डले । अव्यूहेनैवसर्वाणि तथाचा
सङ्करेणवा २ कश्चभ्रामयतेतानि भ्रमन्तियदिवास्वयम् । एतद्वेदितुमिच्छामस्ततोनिग
दसत्तम ! ३ (सूत उवाच) भूतसंमोहनंह्येतद्ब्रुवतोमेनिबोधत । प्रत्यक्षमपिदृश्यंतत्
संमोहयतिवैप्रजाः ४ योऽसौचतुर्दशर्क्षेषु शिशुमारोव्यवस्थितः । उत्तानपादपुत्रोऽसौ मे
ढीभूतोध्रुवोदिवि ५ सैषभ्रमन्भ्रामयते चन्द्रादित्यौग्रहैःसह । भ्रमन्तमनुसर्पन्ति नक्षत्रा
णिचचक्रवत् ६ ध्रुवस्यमनसायोवै भ्रमतेज्योतिषाङ्गणः । वातानीकमयैर्बन्धैर्ध्रुवेबद्धःप्रस
र्पति ७ तेषांभेदश्चयोगश्च तथाकालस्यनिश्चयः । अस्तोदयास्तथोत्पाता अयनेद
क्षिणोत्तरे ८ विषुवद्ग्रहवर्णश्च सर्वमेतद्ध्रुवेरितम् । जीमूतानामतेमेघा यदेभ्योजीवस
म्भवः ९ द्वितीयआवहन्वायुर्मेघास्तेत्वभिसंश्रिताः । इतोयोजनमात्राच्च अध्यर्द्धविकृता
अपि १० वृष्टिसर्गस्तथातेषां धाराधारःप्रकीर्तिताः । पुष्करावर्तकानाम येमेघाःपक्षस
म्भवाः ११ शक्रेणपक्षाश्छिन्नावै पर्वतानांमहौजसा । कामगानांसमृद्धानां भूतानांनाश
मिच्छताम् १२ पुष्करानामतेपक्षा वृहन्तस्तोयधारिणः । पुष्करावर्तकानाम कारणेनेह

विष्णुका तीसरापद आकाशमें स्थितहै बड़ी सुन्दर कान्तिवालाहै १११ और जहाँजाकर कोईशोच भी नहीं रहता यही विष्णुका परमपदहै जो लोककी इच्छा करनेवालेहैं वह ध्रुवके धर्ममें स्थितरहतेहैं ११२ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

ऐसे दिव्य कथाको सुनकर ऋषिलोग सूतजीसे बोले कि हेसूतजी सूर्य्यके मंडलमें तारा आदिक कैसे भ्रमते हैं सबमिलेहुएहैं अथवा विनामिलेहुए अलग २ विचरतेहैं १।२ इनसबको कौन भ्रमाताहै अथवा वो आपही भ्रमतेहैं तो कैसे भ्रमते हैं इसको हम सुनाचाहतेहैं आप कृपाकरके सुनाइये ३ सूतजीबोले कि जैसे सब भूतोंको मोह प्राप्तहोताहै वह क्रममें तुमसे कहताहूं प्रत्यक्ष भी देखनेमें आताहै परन्तु प्रजामोहको प्राप्तहोरहीहै ४ जहाँकि चौदह नक्षत्रोंपर शिशुमारचक्र व्यवस्थित होरहाहै वहाँ उत्तानपादका पुत्र ध्रुव एक किनारेपर स्थितहै वह शिशुमारचक्र भ्रमताहुआ चन्द्रमा सूर्य्यादिक ग्रहों को भ्रमाताहै उस चक्रके समान भ्रमतेहुए शिशुमारचक्र पर नक्षत्र भी भ्रमतेहैं ५।६ नक्षत्रोंका गण वायुके समूहोंके द्वारा बंधनोंसे ध्रुवपर बंधरहाहै वह ध्रुवके मनसे भ्रमताहुआ गमनकरताहै ७ उन का भेद, योग, कालकानिश्चय, अस्त, उदय, उत्पात, दक्षिण उत्तर अयन, विषुवसंज्ञक काल और ग्रहण यह सब ध्रुवसे कहेगयेहैं जो जीमूतनाम मेघहैं उनसे जीव उत्पन्नहोताहै ८ । ९ दूसरा आवहन नाम वायुहै उसकेही आश्रयमें वह मेघ रहते हैं यहाँसे एक योजन ऊपरको जाकर वह मेघ विकारको प्राप्तहोते हैं १० उन मेघोंसे वर्षाकी रचनाहोतीहै उन्हींको वर्षाकी धाराके आधार कहते हैं पुष्करावर्त्तक नाम जो मेघहैं वह पर्व्वतोंके पक्षोंसे उत्पन्नहुएहैं ११ बड़े पराक्रमी इन्द्रने इच्छा पूर्व्वक चलनेवाले भूतोंके नाश करनेकी इच्छासे इकट्ठेहोनेवाले पर्व्वतोंके पक्ष जहाँ छेदन कर दियेथे १२ वहाँ पुष्कर नामवाले मेघ बहुत जलोंके धारण करनेवाले उत्पन्नहोते भये उनका पु-

शब्दिताः १३ नानारूपधराश्चैव महाघोरस्वराश्चते। कल्पान्तदृष्टिकर्त्तारः कल्पान्ता ग्नेर्नियामकाः १४ वाय्वाधारावहन्तेवै साम्रताःकल्पसाधकाः। यान्यस्याण्डस्यभिन्नस्य प्राकृतान्यभवंस्तदा १५ यस्मिन्ब्रह्मासमुत्पन्नश्चतुर्वक्त्रःस्वयंप्रभुः। तान्येवाण्डकपाला नि सर्वेमेघाःप्रकीर्तिताः १६ तेषामप्यायनंधूमः सर्वेषामविशेषतः। तेषांश्रेष्ठश्चपर्जन्य श्चत्वारश्चैवदिग्गजाः १७ गजानांपर्वतानाञ्च मेघानांभोगिभिःसह। कुलमेकंद्विधाभूतं योनिरेकाजलंस्मृतम् १८ पर्जन्योदिग्गजाश्चैव हेमन्तेशीतसम्भवम्। तुषारवर्षंवर्षन्ति वृद्धाह्यन्नविवृद्धये १९ षष्ठःपरिवहोनाम वायुस्तेषांपरायणः। योऽसौबिभर्तिभगवन्! ग ङ्गामाकाशगोचराम् २० दिव्यामृतजलांपुण्यां त्रिपथामितिविश्रुताम्। तस्याविस्पन्दि तन्तोयं दिग्गजाःपृथुभिःकरैः २१ शीकरान्सम्प्रमुञ्चन्ति नीहारइतिसस्मृतः। दक्षिणेन गिरिर्योऽसौहेमकूटइतिस्मृतः २२ उदग्घिमवतःशैलस्योत्तरेचैव दक्षिणे। पुण्ड्रंनामसमा ख्यातं सम्यग्वृष्टिविवृद्धये २३ तस्मिन्प्रवर्ततेवर्षं तत्तुषारसमुद्भवम्। ततोहिमवतोवा युर्हिमंतत्रसमुद्भवम् २४ आनयत्यात्मवेगेन सिञ्चयानोमहागिरिम्। हिमवन्तमतिक्रम्य वृष्टिशेषंततःपरम् २५ इमास्येचततःपश्चादिदम्भूतविवृद्धये। वर्षद्वयंसमाख्यातं स म्यग्वृष्टिविवृद्धये २६ मेघाश्चाप्यायनंचैव सर्वमेतत्प्रकीर्त्तितम्। सूर्य्यएवतुवृष्टीनां स्रष्टासमुपदिश्यते २७ वर्षंघर्मंहिमंरात्रिं सन्ध्येचैवदिनंतथा। शुभाशुभफलानीह ध्रुवा

प्करावर्त्तकनाम भी किसी कारणसेही होगयाहै १३ यहमेघ अनेकप्रकारके रूपधारण करनेवाले महा- घोर शब्दवाले कल्पान्तकी वर्षाकरनेवाले और कल्पान्तकी अग्निके शान्त करनेवालेहैं १४ वायुके आ- धारहैं अमरहैं कल्पके साधकहैं इनके विशेष जो अन्यमेघहैं वह इस अण्डकटाहके भिन्नहोनेमें उत्पन्न हुएहैं जिसअण्डमें अपनेआपही चतुर्मुखवाला ब्रह्मा उत्पन्नहुआ वह अण्डकी कपाली मेघ कहीजाती हे १५।१६ उन मेघोंका स्थान धुवां है उनमें सबसे श्रेष्ठ पर्जन्य नाम मेघहै चार दिग्गज हाथी हैं १७ हस्तीपर्व्वत और मेघ इन सबके भोगनेवालों समेत एककुलके दोभेद होगये हैं सबकी योनि एक जलहै १८ पर्जन्य मेघ और दिग्गज हाथी हेमन्तऋतुमें वृद्धिको प्राप्तहोकर शीतसे उत्पन्नहुई धूंवरको अन्नकी वृद्धिके लिये वरसाते हैं १९ छठा परिवह नाम वायु उनका परमस्थानहै वहीवायु आकाश गंगाको धारण करताहै २० दिव्य अमृत जलवाली पवित्र त्रिपथा गंगाहै उससे गिरतेहुए जलको दिग्गज हाथी अपनी२ मोटी सूंडोंमें ग्रहणकरके वायुसे प्रसरित जलको छोडतेहैं उसीको धूंवर ओस कहते हैं दक्षिण दिशामें हेमकूट नाम पर्व्वत कहाहै वह हिमवान् पर्व्वत से उत्तरकी ओरहै और हि- मवान्से दक्षिणकी ओर पुण्ड्र पर्व्वतहै वह सम्पूर्ण वर्षाकी वृद्धिके निमित्त वर्णन कियाहै उस पर्व्वत पर जो वर्षा प्रवृत्तहोतीहै वह वहीपाला अर्थात् बर्फ होजातीहै वहां उसको वायु अपने वेग करके हिमवान् पर्व्वत पर लातीहै और हिमवान्को सींचतीहुई वहांसे चलकर शेष रहीहुई धूंवर ओसको इस खंडमें आकर बरसातीहै २१।२५ और एक वृष्टि वहहै जो हस्तियोंके मुखसे बरसती है इस प्रकारसे यह दोप्रकारकी वृष्टि सम्पूर्ण अन्नादिककी वृद्धिके निमित्त कहीगई हैं २६ सबके स्थान मेघ

त्सर्वंप्रवर्त्तते २८ ध्रुवेणाधिष्ठिताश्चापः सूर्य्योवैगृह्यतिष्ठति। सर्वभूतशरीरेषु त्वापोह्या नुश्रिताश्चयाः २९ दह्यमानेषुतेष्वेह जङ्गमस्थावरेषुच। धूमभूतास्तुताह्यापो निष्क्राम न्तीहसर्वशः ३० तेनचाभ्राणिजायन्ते स्थानमभ्रमयंस्मृतम्। तेजोभिःसर्वलोकेभ्य आ दत्तेरश्मिभिर्जलम् ३१ समुद्राद्वायुसंयोगात् वहन्त्यापोगभस्तयः। ततस्त्वृतुवशात्काले परिवर्तन्दिवाकरः३२नियच्छत्यापोमेघेभ्यःशुक्लाःशुक्लैस्तुरश्मिभिः। अभ्रस्थाःप्रपतन्त्या पोवायुनासमुदीरिताः ३३ ततोवर्षतिषण्मासान् सर्वभूतविवृद्धये। वायुभिस्तनितंचैव वि द्युतस्त्वग्निजाःस्मृताः ३४ मेहनाच्चमिहेर्धातोर्मेघत्वंव्यञ्जयन्तिच। नभ्रश्यन्तेततोह्याप स्तस्मादभ्रस्यवैस्थितिः। सृष्टाऽसौवृष्टिसर्गस्य ध्रुवेणाधिष्ठितोरविः ३५ ध्रुवेणाधिष्ठितो वायुर्वृष्टिंसंहरतेपुनः। ग्रहान्निःसृत्यसूर्य्यात्तु चरतेऋक्षमण्डलम् ३६ चारस्यान्तेविशत्य र्कं ध्रुवेणसमधिष्ठितम्। अतःसूर्य्यरथस्यापि सन्निवेशंप्रचक्षते ३७ स्थितेनत्वेकचक्रेण पञ्चारेणत्रिनाभिना। हिरण्मयेनाणुनावै अष्टचक्रैकनेमिना। चक्रेणभास्वतासूर्य्यः स्यन्द नेनप्रसर्पिणा ३८ शतयोजनसाहस्रो विस्तरायामउच्यते। द्विगुणाचरथोपस्थादीषाद ण्डःप्रमाणतः ३९ सतस्यब्रह्मणासृष्टो रथोह्यर्थवशेनतु। असङ्गःकाञ्चनोदिव्यो युक्तःपर्वत

हैं और वर्षाका उत्पन्न करनेवाला सूर्य्य वर्णन कियाहै १७ वर्षा घाम शीत रात्रि सन्ध्या दिन और शुभाशुभ फल यहसब यहां ध्रुवसे उत्पन्न होतेहैं १८ ध्रुवकरके अधिष्ठित सूर्य्य जलोंको ग्रहण करके स्थितहोजाताहै और जो जल सब भूतोंके शरीरोंमें इकट्ठे होरहेहैं वह सब स्थावर जंगम जीवों के जलनेसे धुवां होकर चारोंओरसे सूर्य्यमें आजातेहैं २९।३० इसहेतुसे वह बादल होतेहैं बादलोंका स्थान सूर्य्यहै वह अपनी किरणों से जलको ग्रहण करताहै सूर्य्यकी किरणें वायु के योग से समुद्रमें से भी जलको ग्रहण करलेतीहैं फिर ऋतु १ में वर्त्तताहुआ सूर्य्य अपनी किरणोंसे मेघों के अर्थशुद्ध जलको देताहै बादलोंमें स्थितहुए जल वायुसे प्रेरितहोकर संतप्त होतेहैं तब छःमहीनोंतक सब भूत-मात्रोंकी वृद्धिके निमित्त वर्षाहोतीहै वायु और अग्निसे उत्पन्नहुई बिजली होतीहै फिर उसीमें उनकी गर्जना होतीहै ३१। ३४ भिरने या सेचन करने से मेघ कहाते हैं यह मेघ शब्द (मिह सेचने) इसधातु से बनाया जाताहै जिस्से नीचे जलनहीं गिरे वह अभ्र कहाताहै इसीहेतुसे अभ्रही बादलोंकी स्थिति होतीहै सूर्य्यवृष्टि सर्गका रचनेवालाहै और ध्रुवकरके अधिष्ठितहै ३५ ध्रुवसेही अधिष्ठित वायु वर्षाको हरलेतीहै नक्षत्रोंका मंडल सूर्य्यकी निवृत्तिसे विचरताहै ३६ और जब सूर्य्यकेसाथ संचारहोताहै तभी सूर्य्यमें प्रवेश होजाताहै और ध्रुवके अधिष्ठितहोकर संयुक्त रहताहै—अब हम सूर्य्यके रथका विस्तार वर्णन करतेहैं ३७ सूर्य्यका रथ एक चक्र पांच आरे और तीन नाभियोंसे स्थितहै ऐसे सुवर्णकी अणुवों से युक्त आठचक्र एकधुरे समेत बड़े प्रकाशित चक्रकेद्वारा गमन करनेवाले रथमें सूर्य्य स्थित रहतेहैं उसरथका विस्तार लाख योजनकाहै इससेदूने विस्तारवाला रथका जुवाहै ३८।३९ वह सूर्य्यकारथ ब्रह्माजीने बड़े प्रयोजनके लिये रचाहै और संगसे रहित स्वर्णमयी महादिव्य पर्व्वतपर चलनेवाले अश्वोंसे युक्तहै उसमें वेद घोड़ोंका रूप धारण कियेहुए चक्रके समान स्थितहैं यह रथ वरुण के रथके

गोहयैः ४० छन्दोभिर्वाजिरूपैस्तैर्यथाचक्रंसमास्थितैः। वारुणस्यरथस्येह लक्षणैःसह शङ्गचसः ४१ तेनाऽसौचरतिव्योम्नि भास्वाननुदिनन्दिवि। अथाङ्गानितुसूर्य्यस्य प्रत्यङ्गानिरथस्यच। संवत्सरस्यावयवैः कल्पितानियथाक्रमम् ४२ अहर्नाभिस्तुसूर्य्यस्य एकचक्रस्यवैस्मृतः। अरात्संवत्सरास्तस्य नेम्यःषड्ऋतवःस्मृताः ४३ रात्रिर्वरूथोधर्म्मश्च ध्वजऊर्ध्वंव्यवस्थितः। अक्षकोट्योर्युगान्यस्य अर्तवाहाःकलाःस्मृताः ४४ तस्यकाष्ठास्मृताघोणा दन्तपङ्क्तिःक्षणास्तुवै। निमेषश्चानुकर्षोऽस्य ईषाचास्यकलास्मृता ४५ युगाक्षकोटीतेतस्य अर्थकामावुभौस्मृतौ। सप्ताश्वरूपाश्छन्दांसि वहन्तेवायुरंहसा ४६ गायत्रीचैवत्रिष्टुप्च जगत्यनुष्टुप्तथैवच। पङ्क्तिश्चबृहतीचैव उष्णिगेवतुसप्तमः ४७ चक्रमक्षेनिबद्धन्तु ध्रुवेचाक्षःसमर्पितः। सहचक्रोभ्रमत्यक्षःसहाक्षोभ्रमतिध्रुवम् ४८ अक्षःसहैवचक्रेण भ्रमतेऽसौध्रुवेरितः। एवमर्थवशात्तस्य सन्निवेशोरथस्यतु ४९ तथासंयोगभागेन सिद्धोवैभास्करोरथः। तेनाऽसौतरणिर्देवो नभसःसर्पतेदिवम् ५० युगाक्षकोटीतेतस्य दक्षिणेस्यन्दनस्यतु। भ्रमतोभ्रमतोरश्मी तौचक्रयुगयोस्तुवै ५१ मण्डलानिभ्रमेतेऽस्य खेचरस्यरथस्यतु। कुलालचक्रभ्रमवन् मण्डलंसर्वतोदिशम् ५२ युगाक्षकोटितेतस्य वातोर्मीस्यन्दनस्यतु। संक्रमेतेध्रुवमहो मण्डलेसर्वतोदिशम् ५३ भ्रमत

लक्षणोंकेसमानहै ४०।४१ उसरथके द्वारा सूर्य्य देवता प्रतिदिन आकाशमें विचरतेहैं—अब उससूर्य्यके रथकेअंग प्रत्यंगोंको संवत्सरके अवयवोंसे कल्पित वर्णन करतेहैं ४२ सूर्य्यके एकचक्रकी नाभिदिनहै रथके पहियोंकी पंखड़ी वर्षहै छओंऋतु उस रथकी पंखड़ियोंकी नेमिहैं ४३ और रथमें लोहादिकके जड़ाओंका समूह रात्रिहै उसकी ऊंचीध्वजा धूपहै घड़ी कला आदि उसके जुवेकेअग्रभागहैं कलादिक घोड़ोंकी नासिकाहै क्षण दाँतोंकी पंक्तिहै निमेष अनुकर्षहै कलाको पणजारा कहतेहैं अर्थ और काम जुवेके अग्रभागहैं सात घोड़ोंके रूपोंको धारण कियेहुए वेदहैं वह वायुके समान वेगसे रथको लेकर चलतेहैं ४४।४६ गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टुप्, पंक्ति, बृहती, और उष्णिग्—यहसातों चक्रके अक्षोंमें युक्त होरहेहैं और वह अक्ष ध्रुवमें बँधरहाहै चक्र समेत अक्ष भ्रमताहै और अक्ष समेत धुरी भ्रमतीहै ४७। ४८ ध्रुवसे प्रेरित अक्ष चक्र समेत भ्रमताहै इसप्रकारके प्रयोजनके लिये उस रथका सन्निवेश कहाहै ४९ सूर्य्यकारथ संयोगके भागसे सिद्धहोरहाहै उस रथके कारणसे सूर्य्य देवता जब आकाशमें गमन करते हैं तब उस रथके जुवेका अग्रभाग दक्षिणमें भ्रमताहै उस भ्रमतेहुए रथमें घोड़ोंकी वाग और चक्रादिक भी भ्रमते हैं आकाशमें विचरनेवाले इस रथके मंडल कुम्हारके चक्रके समान चारोंओरको भ्रमतेहैं जुवेका अग्रभाग दिवसमें चारोंदिशाओंमें भ्रमताहुआ वायुके वेगसे ध्रुवको प्राप्तहोताहै ५०। ५३ उस भ्रमतेहुए रथके जोत उत्तरायण मंडलमें बढ़ते हैं और दक्षिणायनमें घटतेहैं और उसी भ्रमतेहुए रथकेजुवोंके दो अग्रभागोंमें रथ के घोड़ोंकी वाग बँधरहीहै उनको ध्रुव धारण कररहाहै और सूर्य्य देवता भी धारण कररहेहैं जब ध्रुव उन वागोंको खेंचता है तब ध्रुवके आश्रित होनेसे सूर्य्य भीतरके मंडलमें भ्रमताहै इन दक्षिण और उत्तर दोनों दिशाओं

स्तस्यरश्मीते मण्डलेतूत्तरायणे। वर्द्धेतेदक्षिणेष्वत्र भ्रमतोमण्डलानितु ५४ युगाक्षको टीसम्बद्धौ द्वेरश्मीस्यन्दनस्यते। ध्रुवेणप्रगृहीतौतौ रश्मीधारयतारविम् ५५ आकृष्यतेय दातेतुध्रुवेणसमधिष्ठिते। तदासोऽभ्यन्तरेसूर्य्यो भ्रमतेमण्डलानितु ५६ अशीतिमण्ड लशतं काष्ठयोरुभयोश्चरन्। ध्रुवेणमुच्यमानेन पुनारश्मियुगेनच ५७ तथैवबाह्यतःसूर्य्यो भ्रमतेमण्डलानितु। उद्वेष्टयन्वैवेगेन मण्डलानितुगच्छति ५८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेचतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४॥

(सूत उवाच) सरथोऽधिष्ठितोदेवैर्मासिमासियथाक्रमम्। ततोवहत्यथादित्यं बहु भिर्ऋषिभिःसह १ गन्धर्वैरप्सरोभिश्च सर्पग्रामणिराक्षसैः। एतेवसन्तिवैसूर्ये मासौद्वौद्वौ क्रमेणच २ धातार्यमापुलस्त्यश्च पुलहश्चप्रजापती। उरगोवासुकिश्चैव सङ्कीर्णश्चैव तावुभौ ३ तुम्बरुर्नारदश्चैव गन्धर्वौगायताम्बरौ। कृतस्थलाप्सराश्चैव याचसापुञ्जि कस्थली ४ ग्रामण्योरथकृत्तस्य रथौजाश्चैवतावुभौ। रक्षोहेतिःप्रहेतिश्च यातुधानावुभौ स्मृतौ ५ मधुमाधवयोर्ह्येष गणोवसतिभास्करे। वसन्त्ग्रीष्मेतुद्वौमासौ मित्रश्चवरुणश्च वै ६ ऋषीअत्रिर्वसिष्ठश्च नागौतक्षकरम्भकौ। मेनकासहधन्याच हाहाहूहूश्चगायकौ ७ रथन्तरश्चग्रामण्यौ रथकृच्चैवतावुभौ। पौरुषेयोबधश्चैव यातुधानौतुतौस्मृतौ ८ एतेव सन्तिवैसूर्ये मासयोःशुचिशुक्रयोः। ततःसूर्येपुनश्चान्या निवसन्तिस्मदेवताः ९ इन्द्रश्चै वविवस्वांश्च अङ्गिराभृगुरेवच। एलापत्रस्तथासर्पः शङ्खपालश्चपन्नगः १० विश्वावसु सुसेनौच प्रातश्चैवरथश्चहि। प्रम्लोचेत्यप्सराश्चैव निम्लोचन्तीचतेउभे ११ यातुधा

में आठहज़ार ८००० मंडल होतेहैं जब ध्रुवसे रथकीबाग छुटजातीहै तब सूर्य्य बाहरके मंडलों पर भ्रमतेहैं और मंडलोंको लपेटतेहुए बड़ेवेगसे गमन करतेहैं५४। ५८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२४॥

सूतजी बोले कि वह सूर्य्यका रथ प्रतिमास देवताओंसे संयुक्त रहताहै उसको सूर्य्यदेवता बहुत से ऋषियोंके संगहोकर चलाताहै १ गन्धर्व अप्सरा और सर्पोंके समूह यहसब सूर्य्यमें बसतेहैं दोदो महीनेके क्रमसे २ ब्रह्मा, अर्य्यमादेवता, पुलस्त्य,पुलह,प्रजापति,वासुकिसर्प ३ और गानकरनेवाले तुम्बरु और नारद गन्धर्व कृतस्थला और पुंजिकस्थलीयह अप्सरा, और रथकृत् रथौजा यह दोप्रधान पुरुष, और रक्षोहेति, प्रहेति यह दोराक्षस इन सबोंका गण चैत्र वैशाख महीनोंमें सूर्य्य के भीतर बसताहै ग्रीष्मऋतुके दोमहीनोंमें मित्र और वरुण यह दो देवता बसतेहैं ४। ६ इनके सिवाय अत्रि वसिष्ठऋषि तक्षक और रम्भकनाग, मेनका, धन्या, अप्सरा, हाहा हूहू गन्धर्व रथंतर और रथकृत् प्रधानपुरुष,पौरुषेय और बध नाम राक्षस यहसब ग्रीष्मऋतुके दोमहीनों में सूर्य्यके भीतर बसते हैं इनके विशेष अन्य २ देवता भी सूर्य्यमें बसतेहैं ७। ९ इन्द्र, विवस्वान्, अंगिरा और भृगु यह देवता और ऋषि, एलापत्र शंखपाल दोनों सर्प विश्वावसु, सुसेन नाम रथके प्रधानपुरुष प्रम्लोचा, नि

नस्तथाहेतिर्व्याघ्रश्चैवतुतावुभौ। नभस्यनभसौरेतैर्वसन्तश्चदिवाकरे १२ मासौद्वौदेव
ताःसूर्ये वसन्तिचशरद्दतौ। पर्जन्यश्चैवपूषाच भरद्वाजःसगौतमः १३ चित्रसेनश्चगन्ध
र्वस्तथावासुरुचिश्चयः। विश्वाचीचघृताचीच उभेतेपुण्यलक्षणे १४ नागश्चैरावतश्चै
व विश्रुतश्चधनञ्जयः। सेनजिच्चसुषेणश्च सेनानीग्रामणीस्तथा १५ चारोवातश्चद्वावे
तौ यातुधानावुभौस्मृतौ। वसन्त्येतेचवैसूर्येमासयोश्चात्विषोर्जयोः१६ हेमन्तिकौचद्वौमा
सौ निवसन्तिदिवाकरे। अंशोभगश्चद्वावेतौ कश्यपश्चक्रतुश्चतौ१७ भुजङ्गश्चमहापत्य
सर्पःकर्कोटकस्तथा। चित्रसेनश्चगन्धर्वःपूर्णायुश्चैवगायनौ १८ अप्सराःपूर्वचित्तिश्चग
न्धर्वाह्युर्वशीचया। तक्षावारिष्टनेमिश्च सेनानीर्ग्रामणीश्चतौ १९ विद्युत्सूर्यश्चतावुग्रौयातु
धानौतुतौस्मृतौ। सहेचैवसहस्येचवसन्त्येतेदिवाकरे २० ततस्तुशिशिरेचापि मासयोर्नि
वसन्तिते। त्वष्टाविष्णुर्जमदग्निर्विश्वामित्रस्तथैवच २१ काद्रवेयौतथानागौ कम्बलाश्व
तरावुभौ। गंधर्वौधृतराष्ट्रश्च सूर्यवर्चाश्चतावुभौ २२ तिलोत्तमाप्सराश्चैव देवीरम्भाम
नोरमा। ग्रामणीर्ऋतजिच्चैवसत्यजिच्चमहाबलः २३ ब्रह्मोपेतश्चवैरक्षोयज्ञोपेतस्तथैवच।
इत्येतेनिवसन्तिस्मद्वौद्वौमासौदिवाकरे २४ स्थानाभिमानिनोह्येते गणाद्वादशसप्तकाः
सूर्यमापादयन्त्येते तेजसातेजउत्तमम् २५ ग्रथितैस्तुवचोभिश्च स्तुवन्तिऋषयोरविम्
गन्धर्वाप्सरसश्चैव गीतनृत्यैरुपासते २६ विद्याग्रामणिनोयक्षाः कुर्वन्त्याभीषुसंग्रहम्

म्लोचन्तीनाम अप्सरा १०। ११ हेति और व्याघ्र दोनोंराक्षस इन सबका समूह श्रावण और भाद्र-
पद महीनोंमें सूर्य्यके भीतर वसताहै १२ शरदृऋतुके दो महीनोंमें पर्जन्य, पूषा नाम दोनों देवता
वसतेहैं भरद्वाज और गौतमऋषि १३ चित्रसेन और सुरुचि गन्धर्व, विश्वाची, और घृताची नाम
सुन्दरी अप्सरा १४ ऐरावत और धनंजय दोनोंसर्प सेनजित् और सुषेण दोनों प्रधानपुरुष चार और
वात नाम दोनोंराक्षस यहसब आश्विन और कार्त्तिकके महीनेमें सूर्य्यमें बसतेहैं १५। १६ हेमन्त
ऋतुके दोमहीनोंके बीच सूर्य्यमें अंश और भगदेवता और कश्यप ऋतुनाम दोनोंऋषि वसतेहैं१७
महापत्य और कर्कोटक नाम दोनोंसर्प चित्रसेन और पूर्णायु नाम दोनों गन्धर्व पूर्व्वचित्ति और
उर्वशी नाम अप्सरा, और तक्षा अरिष्टनेमि नाम सेनाके प्राप्त करनेवाले प्रधानपुरुष, विद्युत और
सूर्य्य नाम दोनोंराक्षस यह सब मार्गशिर और पौष इन दोमहीनोंमें सूर्य्यके भीतर वसतेहैं १८।२०
शिशिरऋतुके माघ फाल्गुननाम दोमहीनोंके बीच त्वष्टा, विष्णु, जमदग्नि, विश्वामित्र, यहसब देवता
और ऋषिलोग वसतेहैं २१ कद्रूके पुत्र कंबल अश्वतर नाग, धृतराष्ट्र और सूर्य्य वर्चानाम गंधर्व २२
तिलोत्तमा, उत्तमा, और रंभा यह अप्सरा ऋतजित् और सत्यजित् नाम प्रधान पुरुष ब्रह्मोपेत य-
ज्ञोपेत नाम राक्षस सूर्य्य में वसते हैं इस प्रकारसे यह सब देवता आदिक दो दो महीनों के क्रमसे
सूर्य्यमें वसते हैं २३। २४ बारह महीनों में यह सात२ देवता आदिके गण स्थानके अभिमानी देवता
कहे हैं यह सब अपने तेजकरके सूर्य्यको उत्तम तेज प्राप्त करादेते हैं २५ गूढ़ उत्तम वचनों करके
ऋषिलोग सूर्य्यकी स्तुति करते हैं और अप्सरा गन्धर्वादिक नृत्य गीतादिसे सूर्य्यकीउपासना करते

सर्पाःसर्पन्तिवैसूर्य्ये यातुधानानुयान्तिच २७ वालखिल्यानयन्त्यस्तं परिवार्योदयाद्रवि म्। एतेपामेवदेवानां यथावीर्य्यंयथातपः २८ यथायोगंयथाधर्मं यथातत्त्वंयथाबलम्। तथातपत्यसौसूर्य्यस्तेषामिद्धस्तुतेजसा २९ भूतानामशुभंसर्वं व्यपोहतिस्वतेजसा। मानवानांशुभैर्ह्येतैर्ह्रियतेदुरितन्तुवै ३० दुरितंशुभचाराणां व्यपोहन्तिक्वचित्क्वचित्। एतेसहैवसूर्येण भ्रमन्तिसानुगादिवि ३१ तपन्तश्चजपन्तश्च ह्लादयन्तश्चवैप्रजाः। गोपायन्तिस्मभूतानि इहन्तेह्यनुकम्पया ३२ स्थानाभिमानिनांह्येतत्स्थानम्मन्वन्तरेषु वै। अतीतानागतानाञ्च वर्तन्तेसाम्प्रतञ्चये ३३ एवंवसन्तिवैसूर्य्ये सप्तकास्तेचतुर्द श। चतुर्दशेषुवर्त्तन्ते गणामन्वन्तरेषुवै ३४ ग्रीष्मेहिमेचवर्षासुचमुञ्चमानो घर्मंहिमञ्च वर्षञ्चनिशांदिनञ्च। गच्छत्यसावनुदिनंपरिवृत्यरश्मीन्देवान्पितॄंश्चमनुजांश्चसुतर्पय न्वै ३५ शुक्लेचकृष्णेतदहःक्रमेण कालक्षयेचैवसुराःपिबन्ति। मासेनतच्चामृतमस्यसृष्टं सुदृष्टयेरश्मिषुरक्षितन्तु ३६ सर्वेऽमृतन्तत्पितरःपिबन्ति देवाश्चसौम्याश्चतथैवका व्याः। सूर्य्येणगोभिर्हिविवर्द्धिताभिरद्भिःपुनश्चैवसमुच्छ्रिताभिः ३७ वृष्ट्याभिवृष्टाभिर थौषधीभिर्मर्त्याअथान्नेनक्षुधंजयन्ति। तृप्तिश्चाप्यमृतेनार्द्धमासंसुराणां मासेस्वाहाभिः स्वधयापितॄणाम् अनेनजीवन्त्यनिशम्मनुष्याः सूर्य्यःश्रितन्तद्धिबिभर्तिगोभिः ३८ इ

हैं २६ विद्याके प्रधान पुरुष यक्षादिक वाणोंका संग्रह करते हैं सर्प सूर्य्यमें विचरते रहते हैं राक्षस सूर्य्यके साथ२ गमन करते हैं २७ वालखिल्य आदिक ऋषि उदयहोते हुए सूर्य्यको नमस्कार करते हैं इन देवताओंका जैसा वीर्य्य तप, योग, धर्म, तत्त्व, बल, और पराक्रम है वैसेही उनके इन्धन रूप तेजसे सूर्य्य तपताहै २८।२९ भूतों के संपूर्ण दुःखोंको सूर्य्य अपने तेजकरके दूर करदेताहै इन शुभ देवता आदिकोंसे मनुष्योंके पापनष्टहोजाते हैं ३० शुभ आचरण करनेवाले पुरुषोंके भी पाप सूर्य्य नष्ट करताहै और यह सब देवता अपने अनुचरों सहित सूर्य्यके साथही आकाशमें भ्रमते हैं ३१ तप करतेहुए जप करते हुए प्रजाको आनन्द करातेहुए यह सब भूतोंकी रक्षा करते हैं औरकृपाकरके चे- ष्टा करते हैं ३२ स्थानके अभिमानी देवताओंका यह स्थान मन्वन्तरोंमें बदलजाताहै जैसा अब व- र्तमान होरहाहै उसी प्रकार भूत भविष्य में भी जानना ३३ इस रीतिसे सूर्य्यमें यह दो दो के सात गण वर्त्तते हैं सब चौदह हुए यह सब चौदह मन्वन्तरोंमें बदलजाते हैं ३४ ग्रीष्म हेमन्त और वर्षा ऋतु इनमें घाम शीत और वर्षाको रात्रि दिन करताहुआ सूर्य्य प्रतिदिन अपनी किरणोंका विस्तार करताहुआ गमन करताहै देवता पितर और मनुष्य इनको तृप्तकरताहै ३५ शुक्ल और कृष्णपक्ष में कालक्षयके क्रमसे देवता मिष्ट अमृत पीते हैं फिर महीनेके क्रमसे वह अमृत रूप जल सूर्य्यकी कि- रणोंमें रक्षितहोके सुन्दर बरसताहै ३६ सब पितृ देवता सौम्यसंज्ञक देवता और काव्य संज्ञक पितर यह सब साकल्यसे वृद्धिहुई किरणों करके अमृत पीते हैं ३७ वारंवार वर्षा होनेसे औषधियों के और अन्नके द्वारा मनुष्य क्षुधाको जीतलेते हैं पन्द्रह दिनमें स्वाहा करके देवताओंकी तृप्ति अमृतसे होती है एक महीने में स्वधासे पितरोंकी तृप्तिहोतीहै इस सूर्य्यसेही सब जीव मात्र जीवते हैं सूर्य्य अपनी

त्येपएकचक्रेण सूर्य्यस्तूर्णम्प्रसर्पति। तत्रतैरक्रमैरश्वैः सर्पतेऽसौदिनक्षये ३९ हरिर्हरि
द्भिर्ह्रियतेतुरङ्गमैः पिवत्यथापोहरिभिःसहस्रधा। पुनःप्रमुञ्चत्यथताश्चयोहरिः समुह्यमा
नोहरिभिस्तुरङ्गमैः ४० अहोरात्रंरथेनासावेकचक्रेणवैभ्रमन्। सप्तद्वीपसमुद्रांस्तु सप्त
भिःसप्तभिर्द्रुतम् ४१ छन्दोरूपैश्चतैरश्वैर्यतश्चक्रन्ततःस्थितिः। कामरूपैःसकृद्युक्तैः
कामगैस्तैर्मनोजवैः ४२ हरितैरव्यथैःपिङ्गैरीश्वरैर्ब्रह्मवादिभिः। वाह्यतोऽनन्तरश्चैव म
ण्डलन्दिवसःक्रमात् ४३ कल्पादौसम्प्रयुक्ताश्च वहन्त्याभूतसंप्लवम्। आवृतोवालखि
ल्यैश्च भ्रमतेरात्र्यहानितु ४४ ग्रथितैःस्ववचोभिश्च स्तूयमानोमहर्षिभिः। सेव्यतेगी
तनृत्यैश्च गन्धर्वाप्सरसाङ्गणैः ४५ पतङ्गैःपतगैरश्वैर्भ्राम्यमाणोदिवस्पतिः। वीथ्याश्र
याणिचरति नक्षत्राणितथाशशी ४६ ह्रासवृद्धीतथैवास्य रश्मयःसूर्यवत्स्मृताः। त्रिच
क्रोभयतोऽश्वश्च विज्ञेयःशशिनोरथः ४७ अपाङ्गर्भसमुत्पन्नो रथःसाश्वःससारथिः। स
हारैस्तैस्त्रिभिश्चक्रैर्युक्तःशुक्लैर्हयोत्तमैः ४८ दशभिस्तुरगैर्दिव्यैरसङ्गैस्तन्मनोजवैः। स
कृद्युक्तैरथेतस्मिन् वहन्तस्त्वायुगक्षयम् ४९ संग्रहीतारथेतस्मिन् श्वेतश्चक्षुःश्रवाश्च
वै। अश्वास्तमेकवर्णास्ते वहन्तेशङ्खवर्चसः ५० अजश्चत्रिपथश्चैव वृषोवाजीनरोह
यः। अंशुमान्सप्तधातुश्च हंसोव्योममृगस्तथा ५१ इत्येतेनामभिश्चैव दशचन्द्रमसो

किरणोंसे सबकी रक्षाकरताहै ३८ इस प्रकार एक चक्र करके सूर्य्य शीघ्रतासे गमनकरताहै सूर्य्य हरित वर्णवाले अश्वों करके सदैव गमनकरताहै परन्तु अस्त समयमें तीन अश्वोंसे गमन करताहै, हजारों किरणोंसे जल पीताहै जब जलकी वृद्धि होजाती है तब छोडदेता है ३९। ४० एक रात्रि दिनमें सूर्य्य एक चक्रके द्वारा सात घोडोंसे सात समुद्रों समेत सातों द्वीपोंकी सब पृथ्वीभरको उल्लंघन करजाताहै ४१ वह घोडे वेदरूपी हैं इस हेतुसे एक चक्रमें रथकी स्थिति है कामरूपी एक वार जुड़नेवाले मनके वेगके समान चलनेवाले उनका मग अश्वोंसे सूर्य्य सदैव गमन करताहै ४२ हरित वर्णवाले व्यथासे रहित ईश्वर ब्रह्मवादी ऐसे सूर्य्यके घोडे वाहर भीतरसे दिनके क्रम करके सूर्य्यके मंडलको करते हैं ४३ यह घोडे कल्पकी आदिमें जुड़हैं प्रलय काल तक लेचलते हैं वालखिल्य ऋषियों से युक्तहोकर रात्रि दिन भ्रमते हैं ४४ ग्रथेहुए अपनेबचनों करके महर्षि सूर्य्यकी स्तुति करते हैं गन्धर्व अप्सरा गणके गीत नृत्यादि से सेवितहैं यह सूर्य्य पक्षियोंके समान उड़ने वाले अश्वों करके भ्रमायाजाताहै और वीथी के आश्रित होनेवाले नक्षत्रोंको प्राप्तहोताहै और इसी प्रकार चन्द्रमा भी विचरताहै ४५। ४६ चन्द्रमाकी भी घटने वढ़नेकी विधि सूर्य्यकेही समान वर्णन की है चन्द्रमाके रथके तीन चक्रहैं और दोनों ओरको अश्वहैं ४७ चन्द्रमाका रथ अश्व और सारथी सहित जलोंके गर्भमें उत्पन्नहुआहै वह रथ सुन्दर हारोंसे शोभित श्वेत अश्वोंसे अलंकृत और तीन चक्रों से युक्तहै ४८ मनके समान वेगवाले दिव्य असंग दश अश्वोंसे युक्त चन्द्रमाकारथहै वह अश्व एक वार रथमें युक्तहुए प्रलयकाल तक रहेंगे ४९ उस रथमें श्वेतवर्णवाला चक्षुश्रवा नामसारथीहै और उसीके समान वर्ण युक्त शंखके सदृश कान्तिवाले अश्वहैं ५० अज, त्रिपथ, वृष, वाजी, नर, हय,

हयाः। एवंचन्द्रमसन्देवं वहन्तिस्मायुगक्षयम् ५२ देवैःपरिवृतःसोमः पितृभिःसहग च्छति। सोमस्यशुक्लपक्षादौ भास्करेपरतःस्थिते ५३ आपूर्य्यतेपरोभागः सोमस्यतुअ हःक्रमात्। ततःपीतक्षयंसोमं युगपद्व्यापयन्रविः ५४ पीतम्पञ्चदशाहञ्च रश्मिनैकेन भास्करः। आपूरयन्ददौतेन भागम्भागमहःक्रमात् ५५ सुषुम्नाप्यायमानस्य शुक्लेवर्द्ध न्तिवैकलाः। तस्माद्ध्रसन्तिवैकृष्णे शुक्लेह्याप्याययन्तिच ५६ इत्येवंसूर्य्यवीर्य्येण चन्द्र स्याप्यायतेतनुः। पूर्णमास्यांप्रदृश्येत शुक्लःसम्पूर्णमण्डलः ५७ एवमाप्यायतेसोमः शु क्लपक्षेष्वहःक्रमात्। ततोद्वितीयाप्रभृति बहुलस्यचतुर्दशी ५८ अपांसारमयस्येन्दो रस मात्रात्मकस्यच। पिवन्त्यम्बुमयंदेवा मधुसौम्यन्तथामृतम् ५९ सम्भृतन्त्वर्द्धमासेन अ मृतंसूर्य्यतेजसा। भक्षार्थमागतंसोमं पौर्णमास्यामुपासते ६० एकरात्रंसुराःसार्द्धं पितृ भिर्ऋषिभिश्चवै। सोमस्यकृष्णपक्षादौ भास्कराभिमुखस्यवै ६१ प्रक्षीयतेपरेह्यात्मा पी यमानकलाक्रमात्। त्रयश्चत्रिंशतासार्द्धं त्रयस्त्रिंशच्छतानितु ६२ त्रयस्त्रिंशत्सहस्राणि देवाःसोमंपिवन्तिवै। इत्येवंपीयमानस्य कृष्णेवर्द्धन्तिताःकलाः ६३ क्षीयन्तेचततःशु क्लाः कृष्णाह्याप्याययन्तिच। एवंदिनक्रमात्पीते देवैश्चापिनिशाकरे ६४ पीत्वार्द्धमासंग च्छन्ति अमावास्यांसुराश्चते। पितरश्चोपतिष्ठन्ति अमावास्यांनिशाकरम् ६५ ततःप

अंशुमान्, सप्तधातु, हंस, और व्योम, मृग इन दश नामोंवाले दश चन्द्रमाके घोड़े हैं और इसी रीति से वह घोड़े चन्द्रमाके रथको प्रलय कालतक खैंचते हैं ५१।५२ यह चन्द्रमा देवता और पितरों समेत गमन किया करताहै शुक्लपक्षकी आदि में जब सूर्य्य चन्द्रमासे परे स्थित होताहै तब चन्द्रमा का मंडल पूर्ण होताहै यह चन्द्रमाके दिनका क्रमहै इसके पीछे सूर्य्य चन्द्रमाको पानकर क्षयकिये हुए चन्द्रको एकबार ध्यावताहै यह सूर्य्य पन्द्रह दिनमें एक किरणसे चन्द्रमाको पीताहै फिर पूर्ण करताहुआ उस चन्द्रमाके अर्थ प्रतिदिन एक२ भाग देताहै ५३। ५५ सुषुम्ना नाड़ीसे बढ़तेहुए च-न्द्रमाकी कला शुक्लपक्षमें बढ़ती हैं इसलिये कृष्णपक्षमें कला घटती है और शुक्लपक्षमें बढ़तीहै ५६ इस प्रकार सूर्य्यके वीर्य्यसे चन्द्रमाका शरीर भी पुष्ट होताहै पूर्णमासीके दिन चन्द्रमाका संपूर्ण मं-डल श्वेत होजाताहै ५७ इस प्रकारसे शुक्लपक्षमें दिनोंके क्रमसे चन्द्रमा पूर्ण होताहै तब द्वितीयासे चतुर्दशी पर्य्यन्त जलोंका सारभूत रसमात्रात्मक चन्द्रमाके जलरूपी मधुरअमृतको देवता पीते हैं सूर्य्यके तेज करके पन्द्रह दिनमें संचय कियेहुए अमृत के पीनेके लिये पूर्णमासीको चन्द्रमा की उ-पासना करते हैं ५८। ६० एक रात्रि पर्य्यन्त देवतालोग पितर और ऋषियों समेत चन्द्रमाकी उ-पासना करते हैं कृष्णपक्षकी आदि में सूर्य्य के सन्मुखहुआ चन्द्रमाका मंडल क्षीण होजाता है और कला भी क्रम क्रमसे क्षीण होजाती हैं इस चन्द्रमाके अमृतको छत्तीसहजार तीनसौ तेंतीस ३६३३३ देवता पीते हैं इस पानकियेहुए चन्द्रमाकीकला कृष्णपक्षमें बढ़ती है फिर वही शुक्लपक्ष में क्षीण होतीहै फिर कृष्णपक्षमें पूर्णहोजातीहै यह दिनके क्रमसे चन्द्रमाका अमृत पियाजाताहै फिर वह देवता अमृतको पीके अर्द्धमास होजानेपर अमावास्याको चलेजाते हैं और पितर अमावा-

ञ्चदशेभागे किञ्चिच्छेषेनिशाकरे। ततोऽपराह्णेपितरो यदन्यदिवसेपुनः ६६ पिबन्तिद्वि कलङ्कालं शिष्टास्तास्तुकलास्तुयाः। विनिसृष्टन्त्वमावास्यां गभस्तिभ्यस्तदामृतम् ६७ अर्द्धमाससमाप्तौतु पीत्वागच्छन्तितेमृतम्। सौम्यावर्हिषदश्चैव अग्निष्वात्ताश्चयेस्मृताः ६८ काव्याश्चैवतुयेप्रोक्ताः पितरःसर्वएवते । संवत्सराश्चयेकाव्याः पञ्चाब्दावेद्विजाःस्मृताः ६९ सौम्याःसुतपसोज्ञेया सौम्यावर्हिषदस्तथा। अग्निष्वात्तास्त्रयश्चैव पितृसर्गेस्थिताद्विजाः ७० पितृभिःपीयमानायां पञ्चदश्यान्तुवैकलाम्। यावच्चक्षीयतेतस्माद् भागःपञ्चदशस्तुसः ७१ अमावास्यांतथातस्य अन्तरापूर्य्यतेपरः। वृद्धिक्षयौवैपक्षादौ षोडश्यांशशिनःस्मृतौ। एवंसूर्य्यनिमित्तेते क्षयवृद्धीनिशाकरे ७२ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५ ॥

(सूत उवाच) ताराग्रहाणांवक्ष्यामि स्वर्भानोस्तुरथम्पुनः । अथतेजोमयःशुभ्रः सोमपुत्रस्यवैरथः १ युक्तोहयैःपिशङ्गैस्तु दशभिर्वातरंहसैः। श्वेतःपिशङ्गःसारङ्गो नीलः श्यामोविलोहितः २ श्वेतश्चहरितश्चैव पृषतोवृष्णिरेवच। दशभिस्तुमहाभागैरुत्तमैर्वातसम्भवैः ३ ततोभौमरथश्चापि अष्टाङ्गःकाञ्चनःस्मृतः। अष्टभिर्लोहितैरश्वैः सध्वजैरग्निसम्भवैः ४ सर्पतेऽसौकुमारोवै ऋजुवक्रानुवक्रगः। अतश्चाङ्गिरसोविद्वान् देवाचार्योबृहस्पतिः ५ गौराश्वेनतुरौप्येण स्यन्दनेनविसर्पति। युक्तेनाष्टभिरश्वैश्च ध्वजे

स्याको चन्द्रमामें प्राप्तहोतेहैं फिर चन्द्रमाका पन्द्रहवाँ भाग जब बाकी रहजाताहै तब दूसरे दिन अपराह्णकालमें सायंकालके समय शेषरहे हुए अमृतको पीते हैं चन्द्रमाकी किरणों से संचितकिये हुए अमृतको अर्द्धमासकी समाप्तिमें पीकर चलेजाते हैं सौम्य, वर्हिषद अग्निष्वात्ता और काव्यादिक जो पितरहैं वह सब अमृतको पीते हैं वर्षके अधिपति जो काव्य पितर हैं वह द्विज कहाते हैं सौम्य संज्ञक पितर सुन्दर तपवाले हैं, वर्हिषद और अग्निष्वात्ता पितर सदैव पितृमार्गमें स्थितहुए पितरों के ब्राह्मण कहलाते हैं ६१ । ७० पूर्णमासी के दिन चन्द्रमाकी कलाको पीकर जबतक कि चन्द्रमा का पन्द्रहवाँ भाग क्षीण होताहै तबतक अमावास्या पर्य्यन्त चन्द्रमाके भीतर की कला पूर्ण होतीहै पक्षके आदिमें चन्द्रमाके सोलहवें भागकी वृद्धिका क्षय होताहै इस प्रकार से सूर्य्यके कारणसे चन्द्रमाकी वृद्धि क्षय वर्णन करी है ७१ । ७२ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां पंचविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२५ ॥

सूतजी कहते हैं कि अब मैं ताराग्रह और राहुकेरथको कहताहूं, सुन्दर तेजवाला श्वेत रथ बुध काहै १ वह भूरेवर्ण वाले वायुके समान वेगयुक्त दशघोड़ों से युक्तहै अर्थात् श्वेत, पिशंग, सारंग, नील, श्याम, विलोहित, शुभ्र, हरित, पृषत और वृष्णि इन दशमहाभाग उत्तम अश्वोंकरके युक्त है २।३ मंगलका रथ आठ अंगुलवाला सुवर्णका है वह लाल वर्णवाले आठघोड़े और अग्निसे उत्पन्न हुई आठ लाल ध्वजाओं करके युक्त है ४ यह मंगल सरल और वक्र गतिसे चलनेवाला है इसके आगे देवताओंके आचार्य्य बृहस्पति हैं ५ वह भूरे घोड़ों वाले चाँदीके रथमें बैठकर गमन करताहै और

राग्निसमुद्भवैः ६ अब्दंवसतियोराशौ स्वदिशन्तेनगच्छति। ततःशनैश्चरोऽप्यश्वैः सब लैर्वातरंहसैः ७ कार्ष्णायसंसमारुह्य स्यन्दनंयात्यसौशनिः ।.स्वर्भानोस्तुतथाष्टाश्वाः कृष्णावैवातरंहसः ८ रथन्तमोमयन्तस्य वहन्तिस्मसुदंशिताः। आदित्यनिलयोराहुः सोमङ्गच्छतिपर्वसु ९ आदित्यमेतिसोमाच्च तमसांतेषुपर्वसु। ततःकेतुमतस्त्वश्वा अष्टौ तेवातरंहसः १० पलालधूमवर्णाभाः क्षामदेहाःसुदारुणाः। एतेवाहाग्रहाणांवै मयाप्रो क्तारथैःसह ११ सर्वेध्रुवेनिबद्धास्ते निबद्धावातरश्मिभिः। एतेवैभ्राम्यमाणास्ते यथायो गंवहन्तिवै १२ वायव्याभिरदृश्याभिः प्रबद्धावातरश्मिभिः। परिभ्रमन्तितद्बद्धाश्चन्द्र सूर्यग्रहादिवि १३ यावत्तमनुपर्येति ध्रुवंवैज्योतिषांगणः। यथानद्युदकेनौस्तु उदकेनस होह्यते १४ तथादेवगृहाणिस्युरुह्यन्तेवातरंहसा। तस्माद्यानिप्रगृह्यन्ते व्योम्निदेवगृ हाइति १५ यावन्त्यश्चैवताराःस्युस्तावन्तोऽस्यमरीचयः। सर्वाध्रुवनिबद्धास्ता भ्रमन्त्यो भ्रामयंतिच १६ तैलपीडंयथाचक्रं भ्रामतेभ्रामयंतिवै। तथाभ्रमंतिज्योतींषि वातबद्धा निसर्वशः १७ अलातचक्रवद्यान्ति वातचक्रेरितानितु। यस्मात्प्रवहतेतानि प्रवहस्तेन सस्मृतः १८ एवंध्रुवेनियुक्तोऽसौ भ्रमतेज्योतिषाङ्गणः। एषतारामयःप्रोक्तः शिशुमारेध्रु वोदिवि १९ यदह्नाकुरुतेपापन्तं दृष्ट्वानिशिमुञ्चति। शिशुमारशरीरस्था यावन्त्यस्तारका

आठ घोड़ों से युक्त होकर अग्निसे उत्पन्न हुई ध्वजासे संयुक्तहै ६ यह मंगल वर्ष दिनतक राशि पर स्थित रहताहै अपने उस रथके द्वारा अपनी दिशामें जाता है इसके अनन्तर श्यामवर्ण वायु के समान वेगवाले अश्वोंसे युक्त लोहे के रथमें स्थित शनैश्चर गमन करताहै उस अंधकार रूप रथको वह घोड़े चलाते हैं राहुसूर्य्यके स्थानमें पहुंचकर ग्रहणमें चन्द्रमा को प्राप्त होताहै ७। ८ चन्द्रमाके पीछे अंधेरेके अन्तमें पर्व पर्व में सूर्य्य को प्राप्त होताहै उसके पीछे केतुको प्राप्त होजाताहै इस राहु के वायु के समान वेग वाले धूम्रवर्ण के आठ घोड़े हैं ९। १० पलाल और धुएं के समान रूप कृश-देह और महादारुण राहु के वाहन हैं इसरीतिसे यह मैंने इन ग्रहोंके वाहन कहे और रथभी कहे ११ यह सब ग्रह ध्रुवमें बंधेहुए हैं सो वायुके वेगसे भ्रमायेहुए योगके द्वारा लेचलते हैं १२ चन्द्रमा और सूर्य्यादिक ग्रह बद्धहुई अदृश्य वायु समूहोंकरके भ्रमायेहुए ध्रुवमें बंधेहुए भ्रमते हैं १३ जबतक ताराओं का गण उस ध्रुवके पास रहताहै तब तक ऐसे भ्रमता है जैसे कि नदीके जल में नौका जलके साथही चलती है १४ जैसे कि देवताओंके गृह वायु के वेगसे हला करते हैं वैसेही वह जो आकाश में दीखते हैं सोई देवताओंके गृह कहातेहैं जितने तारागण हैं उतनीही ध्रुवकी किरण हैं सब किरणें ध्रुवमें बँधीहुई भ्रमती हैं और ताराओंको भ्रमाती हैं १५। १६ जैसे कि तेलीका कोल्हू भ्रमतारहताहै उसीप्रकार वायु में बंधेहुए सब तारागण भ्रमतेहैं १७ वायु के चक्रसे प्रेरितहुए तारागण अलात चक्र के समान भ्रमते रहतेहैं जो वायु उनको चलाताहै वह वायु प्रवहसंज्ञक वायु कहाता है १८ इसप्रकार ध्रुवमें नियुक्त होकर ताराओं का गण भ्रमता है यह तारागण शिशुमार चक्र में जड़ा हुआ स्वर्ग में ध्रुवहै अर्थात् अचलहै १९ दिनका कियाहुआ पाप रात्रिमें शिशुमार चक्रके दर्शन करने से

न्तुताः २० वर्षाणिदृष्ट्वाजीवेत तावदेवाधिकानितु। शिशुमाराकृतिंज्ञात्वा प्रविभागेतस
वंशः २१ उत्तानपादस्तस्याथ विज्ञेयःसोत्तराहनुः। यज्ञोधरस्तुविज्ञेयो धर्मोमूर्द्धानमाश्रि
तः २२ हृदिनारायणःसाध्या अश्विनौपूर्वपादयोः। वरुणश्चार्यमाचैव पश्चिमेतस्यस
क्थिनी २३ शिश्नेसंवत्सरोज्ञेयो मित्रश्चापानमाश्रितः। पुच्छेऽग्निश्चमहेन्द्रश्च मरी
चिःकश्यपोध्रुवः २४ एषतारामयःस्तम्भो नास्तमेतिनचोदयम्। नक्षत्रचन्द्रसूर्याश्च ग्र
हास्तारागणैःसह २५ तन्मुखाभिमुखाःसर्वे चक्रभूतादिविस्थिताः। ध्रुवेणाधिष्ठिताश्चैव
ध्रुवमेवप्रदक्षिणम् २६ परियान्तिसुरश्रेष्ठं मेढीभूतंध्रुवंदिवि। आग्नीध्रकाश्यपानान्तु ते
षांसपरमोध्रुवः २७ एकएवभ्रमत्येष मेरोरन्तरमूर्द्धनि। ज्योतिषाञ्चक्रमादाय आकर्षंस्त
मधोमुखः २८ मेरुमालोकयन्नेव प्रतियातिप्रदक्षिणम् २९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे षड्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२६॥

(ऋषय ऊचुः) यदेतद्भवताप्रोक्तं श्रुतंसर्वमशेषतः। कथंदेवगृहाणिस्युः पुनर्ज्योतीं
षिवर्णय १ (सूत उवाच) एतत्सर्वंप्रवक्ष्यामि सूर्य्याचन्द्रमसोर्गतिम्। यथादेवगृहाणि
स्युः सूर्याचन्द्रमसोस्तथा २ अग्नेर्व्युष्टौरजन्यांवै ब्रह्मणाव्यक्तयोनिना। अव्याकृतमिदं
त्वासीन्नैशेनतमसावृतम् ३ चतुर्भूतावशिष्टेऽस्मिन् ब्रह्मणासमधिष्ठिते। स्वयम्भूर्भगवां

नष्ट होजाताहै शिशुमार के शरीर में स्थितहुए जितने ताराओं के दर्शन करताहै उतनेही वर्षों तकवह अधिक जीताहै शिशुमार के विभागोंकी आकृति जाननेवाले की भी दीर्घ आयु होती है २०। २१ उत्तानपाद तो शिशुमार की ऊपर वाली ठोढ़ी है यज्ञ नीचेका ओठहै धर्म मस्तकहै हृदयमें नारायण है इसके प्रथम चरण में साध्यसंज्ञक देवता और अश्विनीकुमार हैं वरुण और अर्य्यमा यह पिछले चरणकी जंघाहै २२।२३ लिंगमें वर्ष गुदामें मित्रदेवता और पूंछमें अग्नि, इन्द्र, मरीचि, कश्यप और ध्रुवहै २४ यह तारे नतो कभी अस्तहोते न उदय होते किन्तु स्तंभरूपही जहां के तहां बने रहते हैं नक्षत्र, चन्द्रमा, सूर्य्यग्रह और अन्य तारागण वह सब चक्र रूपहो शिशुमार के अंगवाले तारों के सन्मुख होकर आकाशमें स्थित रहते हैं सब तारागण ध्रुवकरकेही अधिष्ठित होकर ध्रुवकीही प्रदक्षिणा करते हैं मेंढ़के समान स्थित होकर ध्रुवके चारों ओर फिरते हैं और आग्नीध्र और काश्यप इन ऋषियोंका परमध्रुव दूसराहै वह ध्रुव अकेलाही सुमेरु पर्व्वतके मस्तकपर भ्रमण करताहै अर्थात् ज्योति गणोंके चक्रको लेकर नीचेको मुख कियेहुए खैंचताहुआ और सुमेरु पर्व्वतको देखता हुआ प्रदक्षिणा करताहै २५। २६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषड्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२६॥

ऋषियोंने पूछा हे सूतजी जो आपने कहा सो हमने अच्छेप्रकार से जाना परन्तु यह न जाना कि सूर्य्य चन्द्रमा आदिक देवताओंके घर कैसे हैं इसको भी आप कहिये—सूतजी बोले कि अब मैं सूर्य्य चन्द्रमाकी सब गतिको कहताहूं और जैसे कि अन्य देवताओं के घरहैं उसी प्रकारके सूर्य्य चन्द्रमाके भी गृह हैं अप्रकटयोनिवाले ब्रह्माजीने अग्नि की सृष्टि रात्रिमें रात्रिके तमोगुणसे आवृत

स्तत्र लोकतत्त्वार्थसाधकः ४ खद्योतरूपीविचरन्नाविर्भावंव्यचिन्तयत्। ज्ञात्वाग्निंकल्प कालादावपःपृथ्वींश्चसंश्रिताः ५ ससम्भृत्यप्रकाशार्थन्त्रिधातुल्योऽभवत्पुनः। पाचको यस्तुलोकेऽस्मिन् पार्थिवःसोऽग्निरुच्यते ६ यश्चासौतपतेसूर्य्ये शुचिरग्निश्चसस्मृतः। वैद्युतोजठरःसौम्यो वैद्युतश्चाप्यनिन्धनः ७ तेजोभिश्चाप्यतेकश्चित् कश्चिदेवाप्यनिन्धनः। काष्ठेन्धनस्तुनिर्मथ्यः सोऽद्भिःशाम्यतिपावकः ८ अर्चिष्मान्पचनोऽग्निस्तु निष्प्रभःसौम्यलक्षणः। यश्चासौमण्डलेशुक्ले निरूष्माचप्रकाशते ९ प्रभासौरीतुपादेन अस्तंयातिदिवाकरे। अग्निमाविशतेरात्रौ तस्मादग्निःप्रकाशते १० उदितेतुपुनःसूर्य्ये ऊष्माग्नेस्तुसमाविशत्। पादेनतेजसश्चाग्नेस्तस्मात्सन्तपतेदिवा ११ प्राकाश्यञ्चतथौष्ण्यञ्च सौर्याग्नेयेतुतेजसी। परस्परानुप्रवेशादाप्यायेतेदिवानिशम् १२ उत्तरेचैवभूम्यर्द्धे तथाह्यस्मिंस्तुदक्षिणे। उत्तिष्ठतिपुनःसूर्य्ये रात्रिमाविशतेह्यपः १३ तस्मात्ताम्राभवन्त्यापो दिवारात्रिप्रवेशनात्। अस्तङ्गतेपुनःसूर्य्ये अहोवैप्रविशत्यपः १४ तस्मान्नक्तंपुनःशुक्ला ह्यापोदृश्यन्तिभासुराः। एतेनक्रमयोगेन भूम्यर्द्धेदक्षिणोत्तरे १५ उदयास्तमयेह्यत्र अहोरात्रंविशत्यपः। यश्चासौतपतेसूर्य्यः सोऽपःपिबतिरश्मिभिः १६ सहस्रपादस्त्वेषोऽग्नी रक्तकुम्भनिभस्तुसः। आदत्तेसतुनाडीनां सहस्रेणसमन्ततः १७ आपोनदीसमु

हुआ यह सब स्थावर जंगम प्रकट कियाहै ३। ३ कल्पकी आदिमें ब्रह्माजी इन चारप्रकार के भूतों के अधिष्ठाताहुए फिर लोकोंके तत्त्व सिद्धकरनेकेनिमित्त पटवीजनेकारूप करके गमन करतेहुए इस संसारके प्रकट होनेकी चिन्ता करते भये फिर कल्पकी आदिमें अग्निको जल और पृथ्वीमें जानकर प्रकाश करनेके निमित्त इकट्ठा करतेभये फिर तीनप्रकारसे समान अग्नि उत्पन्न होताभया संसार में जो पाचक अर्थात् पकानेवाला अग्नि है वह पृथ्वी से उत्पन्न हुआ है ४। ६ जो अग्नि सूर्य्य में तपताहै वह शुचि अग्नि कहाताहै विजली में होनेवाला जठरअग्नि कहाताहै वह इन्धनसे रहितहै कोई अग्नि अपने तेजोंकरके बढ़ताहै कोई जलकेही इन्धनसे बढ़ताहै जो अग्नि काष्ठ इन्धनके मथनेसे होताहै वह जलोंसे शान्त होजाताहै ७। ८ पकानेवाला अग्नि ज्वालावाला है जो कान्ति रहितहै वह सौम्य अग्नि कहाता है जो सूर्य्यके श्वेतमण्डलमें ज्वालासे रहित अग्नि प्रकाशित हो रहाहै वह सूर्य्यकी प्रभा कहीहै जब सूर्य्य अस्त होजाताहै तब वह प्रभा अग्निमें प्रवेश होजाती है इसी हेतुसे रात्रिको अग्निमें प्रकाश होताहै ९। १० जब सूर्य्यका उदय होजाताहै तब अग्नि का तेज और प्रकाशका भाग सूर्य्यमें प्रवेश कर जाताहै इसी कारण दिनमें सूर्य्य तपताहै ११ सूर्य्य का और अग्निका प्रकाश इन दोनोंकी गरमाई वा तेज परस्परमें प्रवेशित होनेसे रात्रि दिन बढ़तेहैं १२ भूमिके उत्तरार्द्ध भागमें और इस दक्षिणभागमें सूर्य्यका उदय होताहै फिर रात्रिको जलोंमें प्रवेश होजाताहै १३ इसी हेतुसे दिनरात्रियों के प्रवेश होजानेसे जल तांबेके समान होते हैं जब सूर्य्य अस्त होजाते हैं तब रात्रिमें चमकनेवाले सफेद जल दीखते हैं इसी क्रम योगसे भूमिका दक्षिणोत्तर अर्द्धभाग उदय अस्त समयमें अहोरात्र जलोंमें प्रवेश होताहै सूर्य्य जब तपताहै तब अपनी किरणों

द्रेभ्यो ह्रदकूपेभ्यएवच। तस्यरश्मिसहस्रेण शीतवर्षोष्णनिःस्रवः १८ तासाञ्चतुःशतं ना
ड्यो वर्षन्तेचित्रमूर्तयः। चन्दनाश्चैवमेध्याश्च केतनाश्चेतनास्तथा १९ अमृताजीवनाः
सर्वा रश्मयोवृष्टिसर्जनाः। हिमाद्रवोश्चतान्योन्यं रश्मयस्त्रिंशतःस्मृताः। चन्द्रताराग्रहैः
सर्वैः पीताभानोर्गभस्तयः २० एतामध्यास्तथान्याश्च ह्लादिन्योहिमसर्जनाः। शुक्लाश्चक
कुभश्चैव गावोविश्वसृजश्चयाः २१ शुक्लास्तानामतःसर्वास्त्रिंशत्याधर्म्मसर्जनाः। संबिभ्र
तिहिताःसर्वाः मनुष्यान्देवताःपितॄन् २२ मनुष्यानौषधीभिश्च स्वधयाचपितॄनपि। अमृ
तेनसुरान्सर्वान् संततम्परितर्पयन् २३ वसंतेचैवग्रीष्मेच शनैःसंतपतेत्रिभिः। वर्षासुचश
रद्येवं चतुर्भिःसंप्रवर्षति २४ हेमंतेशिशिरेचैव हिमोत्सर्गस्त्रिभिःपुनः। ओषधीषुबलंधत्ते
सुधाञ्चस्वधयापुनः २५ सूर्योऽमरत्वममृते त्रयस्त्रिषुनियच्छति। एवंरश्मिसहस्रन्तु सौरंलो
कार्थसाधनम् २६ भिद्यतेऋतुमासाद्य सहस्रंबहुधापुनः। इत्येवंमण्डलंशुक्लं भास्वरंलोक
संज्ञितम् २७ नक्षत्रग्रहसोमानां प्रतिष्ठायोनिरेवच। चन्द्रऋक्षग्रहाःसर्वे विज्ञेयाःसूर्यस
म्भवाः २८ सुषुम्णासूर्यरश्मिर्या क्षीणंशशिनमेधते। हरिकेशःपुरस्तात्तु योवैनक्षत्रयोनि
कृत् २९ दक्षिणेविश्वकर्मातु रश्मिराप्याययद्बुधम्। विश्वावसुश्चयःपश्चाच्छुक्रयोनि

से जलोंको पीताहै यह सूर्य्य हज़ार चरणवाला अग्निहै लोक कलशके समान कान्ति वालाहै ह-
ज़ारों नाड़ियों के द्वारा चारों ओरसे नदी समुद्र कूप और सरोवर आदिके जलोंको ग्रहण कर लेता
है उसकी हज़ारों किरणों से शीत उष्णता और वर्षा होती है १४ । १८ सूर्य्यकी चारसौ नाड़ी
रूप किरणें विचित्र मूर्त्तिवाली हैं यही वर्षा करती हैं, चन्दना मेध्या, केतना चेतना, अमृता और
जीवना यह सब किरणें वर्षा रचनेवाली हैं शीत से उत्पन्न होनेवाली तीस किरणें हैं उन कि-
रणों को चन्द्रमा और तारागण आदिक पीते हैं १९ । २० यह मध्यकी किरणें और ह्लादिनी
नाम किरणें शीतको उत्पन्न करनेवाली हैं शुक्ला और ककुभ नाम किरणें विश्वको रचनेवाली
हैं शुक्ला नामकी तीस किरण हैं वह सब धर्म की रचनेवाली हैं और मनुष्य देवता पितर इन
की पालन करनेवाली हैं २१।२२ मनुष्योंको औषधियों करके पितरोंको स्वधाकरके और देवताओंको
स्वाहाकरके तृप्त करती हैं २३ वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें सूर्य्य तीन किरणों से धीरे २ तपताहै, वर्षा
और शरद्ऋतुमें चार किरणों से बरसताहै २४ हेमन्त शिशिर ऋतुमें तीन किरणों से शीत बरसा-
ता है औषधियों में बलधारण करता है स्वधा करके अमृतधारण करता है २५ अमृतकी वृद्धि तीन
किरणोंसे होती है इसप्रकार सूर्य्यकी हज़ारों किरणें संसार के प्रयोजनों की सिद्ध करनेवाली हैं २६
ऋतु के आश्रय होकर सूर्य्यका मंडल अनेकप्रकारके भेदोंको प्राप्त होजाताहै इसप्रकार से सूर्य्य भा-
स्वर शुक्ल मंडललोक संज्ञक कहाताहै २७ यही नक्षत्र, ग्रह और चन्द्रमाकी प्रतिष्ठा और योनि है
चन्द्रमा, नक्षत्र और सबग्रह सूर्य्यही से उत्पन्नहुए जानो २८ सूर्य की सुषुम्णा किरणोंकरके क्षीण
हुआ चन्द्रमा बढ़ताहै पूर्व्वदिशामें हरिकेश नाम सूर्य्य है वह नक्षत्रोंकी उत्पत्ति करनेवाला है २९
दक्षिणमें विश्वकर्मा नाम सूर्य्य है वह बुधकी किरणोंका बढ़ानेवाला है, पश्चिममें विश्वावसुनाम

इचसस्मृतः ३० संवर्द्धनस्तुयोरश्मिः सयोनिर्लोहितस्यच । षष्ठस्तुह्यश्वभूरश्मिर्योनिः साहिवृहस्पतेः ३१ शनैश्चरंपुनश्चापि रश्मिराप्यायतेसुराट् । नक्षीयतेयतस्तानि तस्मान्नक्षत्रतास्मृता ३२ क्षेत्राण्येतानिवैसूर्यमापतन्तिगभस्तिभिः । क्षेत्राणितेषामादत्ते सूर्योनक्षत्रताततः ३३ अस्माल्लोकादमुंलोकं तीर्णानांसुकृतात्मनाम् । तारणात्तारकाह्येताः शुक्लत्वाच्चैवशुक्लिकाः ३४ दिव्यानांपार्थिवानाञ्च वंशानाञ्चैवसर्वशः । तपसस्तेजसो योगादादित्यइतिगद्यते ३५ स्रवतिःस्यन्दनार्थे धातुरेषनिगद्यते । स्रवणात्तेजसश्चैव तेनासौसवितास्मृतः ३६ बह्वर्थश्चन्दइत्येष प्रधानोधातुरुच्यते । शुक्लत्वेह्यमृतत्वेच शीतत्वेह्लादनेऽपिच ३७ सूर्याचन्द्रमसोर्दिव्ये मण्डलेभास्वरेखगे । जलतेजोमयेशुक्ले वृत्तकुम्भनिभेशुभे ३८ वसन्तिकर्म्मदेवास्तु स्थानान्येतानिसर्वशः । मन्वन्तरेषुसर्वेषु ऋषिसूर्यग्रहादयः ३९ तानिदेवगृहाणिस्यु. स्थानाख्यानिभवन्तिहि । सौरंसूर्योऽविशत्स्थानं सौम्यंसोमस्तथैवच ४० शौक्रंशुक्रोऽविशत्स्थानं षोडशारंप्रभास्वरम् । बृहस्पतिर्बृहत्वञ्च लोहितञ्चापिलोहितः ४१ शनैश्चरोऽविशत्स्थानमेवंशानैश्चरंतथा । बुधोऽपिवैबुधस्थानं भानुंस्वर्भानुरेवच ४२ नक्षत्राणिचसर्वाणि नाक्षत्राण्यविशन्तिच । ज्योतींषिसुकृतामेते ज्ञेयादेवगृहास्तुवै ४३ स्थानान्येतानितिष्ठन्ति यावदाभूतसंप्लवम् । मन्वन्तरेषुस

है वह शुक्र की योनि कहाहै ३० संवर्धन नाम किरण मंगलकी योनिहै छठी अश्वभू नाम किरण बृहस्पति को उत्पन्न करनेवाली है ३१ सुराट् नाम किरण शनैश्चरकी पुष्टि करनेवाली है जो कभी क्षीण नहीं होते हैं वह नक्षत्र कहाते हैं ३२ यह सब क्षेत्र किरणों करके सूर्य्यको प्राप्त होते हैं सूर्य्य उनके क्षेत्रोंको ग्रहण करता है इसहेतुसे सूर्य्य में नक्षत्रता है ३३ जो इसलोकसे तिरनेकी इच्छा करनेवाले सुकृती पुरुषहैं उनको तारदेते हैं इसी हेतुसे तारका कहते हैं और श्वेत होनेसे शुक्लिका कहते हैं ३४ दिव्य पार्थिव वंशों के तपतेजके योग होनेसे आदित्य कहते हैं स्रवति में स्रवधातु झिरने अर्थ में वर्त्तता है सो तेजके झिरनेसे सविता कहते हैं ३५।३६ चन्द धातु बहुत अर्थों में प्रसिद्ध है अर्थात् शुक्र अर्थ में, अमृत अर्थ में शीत अर्थ में और ह्लाद अर्थ में इस धातु से चन्द्रमा होता है ३७ आकाश में चलनेवाले सूर्य्य और चन्द्रमाके मंडल दिव्य प्रकाशवाले जलवाले अग्निवाले होकर शुक्ल कलश के समानगोल और सुन्दर हैं ३८ इन स्थानों में कर्मरूपी देवता बसते हैं सब मन्वन्तरों में ऋषि सूर्य्य और ग्रहादि देवता होते हैं वही देवताओंके गृह और स्थानके अधिपति हैं सूर्य्य देवता सूर्य्य मण्डल स्थानमें प्रवेशकररहाहै चन्द्रमा सोम मण्डलमें प्रवेशकर रहाहै ३९ । ४० शुक्र के मण्डलमें शुक्र प्रवेशकररहाहै यह शुक्रका मण्डल पंखडियोंवाला होकर बड़ी कान्तिसे भरा हुआ है बृहस्पति के मंडलमें बृहस्पति और मंगल के मंडलमें मंगल प्रवेशकर रहाहै ४१ शनैश्चरके मंडलमें शनैश्चर बुधके में बुध और राहुके में राहु प्रवेशकररहाहै सब नक्षत्र सब नक्षत्रों में प्रवेशकर रहे हैं इसप्रकार जो ज्योतिस्वरूप मण्डल दीखते हैं वह देवताओं के घर समझना ४२ । ४३ इन स्थानों में पूर्वलिखे देवता प्रलयकाल तक ठहरते हैं सब मन्वन्तरों में इन स्थानों के यही अभि-

वेंपु देवस्थानानितानिवै ४४ अभिमानेनतिष्ठन्ति तानिदेवाःपुनःपुनः। अतीतास्तुसहा
तीतेर्भाव्याभाव्यैःसुरैःसह ४५ वर्तन्तेवर्तमानैश्च सुरैःसार्द्धन्तुस्थानिनः। सूर्योदेवोविव
स्वांश्च अष्टमस्त्वदितेःसुतः ४६ द्युतिमान्धर्म्मयुक्तश्च सोमोदेवोवसुःस्मृतः। शुक्रोदै
त्यस्तुविज्ञेयो भार्गवोस्तुसुरयाजकः ४७ बृहस्पतिर्वृहत्तेजा देवाचार्योऽङ्गिरःसुतः। बुधो
मनोहरश्चैव शशिपुत्रस्तुसस्मृतः ४८ शनैश्चरोविरूपश्च संज्ञापुत्रोविवस्वतः। अग्नि
र्विकेश्यांजज्ञेतु युवाऽसोलोहिताधिपः ४९ नक्षत्रनाम्न्यःक्षेत्रेषु दाक्षायण्यःसुताःस्मृताः।
स्वर्भानुःसिंहिकापुत्रो भूतसंसाधनोसुरः ५० चन्द्रार्कग्रहनक्षत्रेष्वभिमानीप्रकीर्त्तितः।
स्थानान्येतानिचोक्तानि स्थानिन्यश्चैवदेवताः ५१ शुक्लमग्निसमंदिव्यं सहस्रांशोर्वि
वस्वतः। सहस्रांशुत्विषःस्थानमन्मयन्तेजसंतथा ५२ आशास्थानंमनोज्ञस्य रविरश्मि
गृहेस्थितम्। शुक्रःषोडशरश्मिस्तु यस्तुदेवोह्यपोमयः ५३ लोहितोनवरश्मिस्तु स्थानं
रक्तन्तुतस्यवै। बृहद्द्वादशरश्मीकं हरिद्राभन्तुवेधसः ५४ अष्टरश्मिशनेस्तत्तुकृष्णंवृ
द्धमयस्मयम्। स्वर्भानोस्त्वायसंस्थानं भूतसन्तापनालयम् ५५ सुकृतामाश्रयास्तारा र
श्मयस्तुहिरण्मयाः। तारणातारकाह्येताः शुक्लत्वाच्चैवतारकाः ५६ नवयोजनसाहस्रो वि
ष्कम्भःसवितुःस्मृतः। मण्डलंत्रिगुणंचास्य विस्तारोभास्करस्यतु ५७ द्विगुणःसूर्य्यवि
स्ताराद्विस्तारःशशिनःस्मृतः। त्रिगुणंमण्डलंचास्य वैपुल्याच्छशिनःस्मृतम् ५८ सर्वोप
रिनिसृष्टानि मण्डलानितुतारकाः। योजनार्द्धप्रमाणानि ताभ्योऽन्यानिगणानितु ५९

मानी देवता वारंवार स्थित होते हैं जैसे व्यतीत होगये हैं उन्होंकेही सदृश होनेवाले देवता हैं ४४। ४५ वर्त्तमानोंके साथ वर्त्तमान देवता वर्त्तरहे हैं विवस्वान् नाम आठवां सूर्य्य अदितिका पुत्र है ४६ कान्तिवाला-धर्मयुक्त चन्द्रदेवता वसुनाम वालाहै शुक्र भार्गव और दैत्योंका पुरोहितहै ४७ बृहस्पति बड़ा तेजस्वी देवताओंका आचार्य्य है और अंगिरा ऋषिका पुत्रहै, बुध बड़ा मनोहर रूप और चन्द्रमा का पुत्रहै ४८ शनैश्चर विरूपहै संज्ञास्त्री में सूर्य्य के सकाशसे हुआहै, मंगल अग्निके सकाश से पृथ्वी में हुआ है ४९ यह सब नक्षत्र दक्षकी सन्तानहैं, राहु सिंहिका राक्षसी का पुत्रहोकर दैत्यहै ५०। इसप्रकार से चन्द्रमा, सूर्य्य, ग्रह और नक्षत्र इन सब पर एक एक अभिमानी देवता कहा है यह कहे हुए मंडल तो स्थान हैं और इनके स्थानी देवता स्थान के पति हैं ५१ और शुक्र अग्निके समान महा कान्तिवाला दिव्य हज़ार किरणोंसे युक्त ऐसा तेजस्वरूप स्थान सूर्य्यका है ५२ सूर्य्य की किरणों में और सूर्य्य की दशामें बुधका स्थान है शुक्र सोलह किरणोंवाला होकर जलका स्थानहै ५३ मंगल नौ किरणोंवाला है उसका स्थान लालहै, बृहस्पति बारह किरणोंवाला और हरिद्राके समान पीत वर्णहै ५४ शनैश्चर की आठ किरणहैं उसका कालावर्ण और लोहेका स्थानहै राहुका लोहे का स्थान है और सब भूतों को संताप देनेवालाहै ५५ सब तारे सुकृतोंके आश्रयहैं सुवर्ण के सदृश किरणों वाले होकर तारण करनवाले हैं इसी से उनको तारका कहते हैं श्वेततासे शुक्लिका कहाते हैं ५६ नौ ९००० हज़ार योजनमें सूर्य्य मंडलके स्तम्भहैं सत्ताईस हज़ार २७०००योजन में सूर्य्य मंडल का

तुल्योभूत्वातुस्वर्भानुस्तदधस्तात्प्रसर्पति । उद्धृत्यपार्थिवींछायां निर्मितांमण्डलाकृति म् ६० ब्रह्मणानिर्मितंस्थानं तृतीयन्तुतमोमयम् । आदित्यात्सतुनिष्क्रम्य सोमंगच्छति पर्वसु ६१ आदित्यमेतिसोमाच्च पुनःसौरेषुपर्वसु । स्वभासातुदतेयस्मात् स्वर्भानुरिति सस्मृतः ६२ चन्द्रतःषोडशोभागो भार्गवस्यविधीयते । विष्कम्भान्मण्डलाच्चैव योजना नान्तुसस्मृतः ६३ भार्गवात्पादहीनश्च विज्ञेयोवैबृहस्पतिः । बृहस्पतेःपादहीनौ केतुव क्रावुभौस्मृतौ ६४ विस्तारमण्डलाभ्यान्तु पादहीनस्तयोर्बुधः । तारानक्षत्ररूपाणि व-पुष्मन्तीहयानिवै ६५ बुधेनसमरूपाणि विस्तारान्मण्डलात्तुवै । तारानक्षत्ररूपाणि हीनानितुपरस्परम् ६६ शतानिपञ्चचत्वारि त्रीणिद्वेचैकमेवच । सर्वोपरिनिसृष्टानि मण्डलानितुतारकाः ६७ योजनार्द्धप्रमाणानि तेभ्योह्रस्वंनविद्यते । उपरिष्टात्तुयेतेषां ग्रहायेक्रूरसात्विकाः ६८ सौरश्चाङ्गिरसोवक्रो विज्ञेयामन्दचारिणः । तेभ्योऽधस्तात्तुचत्वा रः पुनश्चान्येमहाग्रहाः ६९ सोमःसूर्य्योबुधश्चैव भार्गवश्चेतिशीघ्रगाः । यावन्तिचैवऋ क्षाणि कोट्यस्तावन्तितारकाः ७० सर्वेषान्तुग्रहाणांवै सूर्य्योऽधस्तात्प्रसर्पति । विस्तीर्णं मण्डलंकृत्वा तस्योर्ध्वंचरतेशशी ७१ नक्षत्रमण्डलंचापि सोमादूर्ध्वंप्रसर्पति । नक्षत्रेभ्यो बुधश्चोर्ध्वं बुधाच्चोर्ध्वन्तुभार्गवः ७२ वक्रस्तुभार्गवादूर्ध्वंवक्रादूर्ध्वंबृहस्पतिः । तस्माच्छनै श्चरश्चोर्ध्वं देवाचार्योपरि स्थितः ७३ शनैश्चरात्तथाचोर्ध्वं ज्ञेयंसप्तर्षिमण्डलम् । सप्त

विस्तारहै ५७ सूर्य्यके विस्तारसे चन्द्रमा का विस्तार दूनाहै और सूर्य्य के मण्डलकी चौड़ाई से च-न्द्रमा का मंडल तिगुना है ५८ सब से ऊपर ताराओंका मंडलहै और अन्य तारागण दो कोश मंडल के प्रमाण वाले हैं ५९ राहु शय्यारूप होकर नीचेको चला आताहै फिर मंडलकी आकृति के समान रचीहुई पृथ्वीकी छायाको उठाकर ब्रह्माके रचेहुए तीसरे तमोमय स्थानको प्राप्तहो सूर्य्यको उलंघन करता हुआ पर्वो में चन्द्रमाको प्राप्त होताहै ६० । ६१ सूर्य्य ग्रहणमें चन्द्रमा में होकर सूर्य्यको प्राप्त होजाताहै और वहां जाकर अपनी कान्तिसे बाधाकरताहै इसीसे उसका नाम स्वर्भानु कहते हैं चन्द्र-माका सोलहवां भाग शुक्र को कहाहै यह सब भाग स्तंभ और मंडलोंके कहेहैं ६२।६३ शुक्रसे एक भा-गहीन बृहस्पति का है, बृहस्पति से एक पादहीन राहु और केतुका जानो यह राहु केतु सदैव वक्र रहते हैं ६४ इनके विस्तार और मंडलोंसे एक पादहीन बुध है. तारा और नक्षत्रों के रूप जितने शरीर युक्त हैं वह सब बुधके समान हैं यह विस्तार और मण्डलों का प्रमाणहै तारा और नक्षत्रों के रूप परस्परमें हीन हैं ६५ । ६६ पांचसौ चारसौ तीनसौ दोसौ और एकसौ इतने ताराओंके मं-डल सबसे ऊपरहैं वह मंडल दो दो कोशके प्रमाणमें हैं, उनमें कोई भी तारा छोटा नहीं है उनसे ऊपर जो क्रूर ग्रह हैं वह शनैश्चरादिक ग्रह मन्द २ चलनेवाले और वक्र गतिवाले हैं उनसे नीचे चार महाग्रह हैं ६७ । ६९ सोम सूर्य्य बुध और शुक्र यह चारों शीघ्र चलनेवाले हैं जितने करोड़ नक्षत्र हैं उतनेही तारे हैं उनके ऊपर विस्तीर्ण मंडल करके चन्द्रमा विचरता है ७० । ७१ नक्षत्रों का मंडल चन्द्रमासेभी ऊपर गमन करता है नक्षत्रों से ऊपर बुधहै बुधसे ऊपर शुक्रहै शुक्रसे ऊपर

र्षिभ्योध्रुवश्चोर्ध्वं समस्तंत्रिदिवंध्रुवे ७४ द्विगुणेषुसहस्रेषु योजनानांशतेषुच । ग्रहान्तर मथैकैकमूर्ध्वंनक्षत्रमण्डलात् ७५ताराग्रहान्तराणिस्युरुपर्य्युपर्यधिष्ठितम् । ग्रहाश्चचन्द्र सूर्य्यौच दिविदिव्येनतेजसा ७६ नक्षत्रेषुचयुज्यन्ते गच्छन्तोनियतक्रमात् । चन्द्रार्क ग्रहनक्षत्रा नीचोच्चगृहमाश्रिताः ७७ समागमेचभेदेच पश्यन्तियुगपत्प्रजाः । परस्परं स्थिताह्येवं युज्यन्तेचपरस्परम् ७८ असङ्करेणविज्ञेयस्तेषांयोगस्तुवैवुधैः । इत्येवंसन्नि वेशोवै पृथिव्याज्योतिषाञ्चयः ७९ द्वीपानामुदधीनाञ्च पर्वतानांतथैवच । वर्षाणाञ्च नदीनाञ्च येचतेषुवसन्तिवै ८० इत्येषोऽर्कवशेनैव सन्निवेशस्तुज्योतिषाम् । आवर्त्तः सान्तरोमध्ये संक्षिप्तश्चध्रुवात्तुसः ८१ सर्वतस्तेषुविस्तीर्णो वृत्ताकारइवोच्छ्रितः । लोक संव्यवहारार्थमीश्वरेणविनिर्मितः ८२ कल्पादौबुद्धिपूर्वन्तु स्थापितोऽसौस्वयम्भुवा । इत्ये षसन्निवेशोवैसर्वस्यज्योतिरात्मकः ८३ वैश्वरूपंप्रधानस्य परिणाहोऽस्ययःस्मृतः ।तेषां शक्यंन सङ्ख्यातुं याथातथ्येनकेनचित् । गतागतंमनुष्येण ज्योतिषांमांसचक्षुषा ८४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२७॥

(ऋषय ऊचुः) कथंजगामभगवन् ! पुरारित्वंमहेश्वरः । ददाहचकथंदेवस्तन्नोविस्त रतोवद १ पृच्छामस्त्वांवयंसर्वे वहुमानात्पुनःपुनः । त्रिपुरन्तद्यथादुर्गं मयमायाविनि र्मितम् । देवेनैकेषुणादग्धं तथानोवदमानद ! २ (सूत उवाच) शृणुध्वंत्रिपुरंदेवो यथा

मंगल है मंगल से ऊपर बृहस्पति है बृहस्पति से ऊपर शनैश्चर है ७२ । ७३ शनैश्चर से ऊपर सप्तऋषियोंका मंडलहै सप्तऋषियों से ऊपर ध्रुव है ध्रुवही में सम्पूर्णस्वर्ग है ७४ हजार धनुष और सौयोजनोंपर एक एक ग्रहके मंडलका अन्तरहै ७५ तारा और ग्रहोंके अन्तर ऊपर ऊपर जानना और चन्द्र सूर्य्यादिक ग्रह स्वर्गमें दिव्य तेजकरके नक्षत्रोंपर नियत क्रमसे गमन करते हैं चन्द्रमा सूर्य्य ग्रह नक्षत्र नीच और उच्चस्थानपर जब प्राप्त होयँ वा दो ग्रहोंका समागमन अथवा भेद होताहै तब परस्परमें स्थित होकर संयुक्त होतेहैं परिडत लोगोंको इन ग्रहोंका योग संकर जानना चाहिये अर्थात् परस्पर नहीं मिलते हैं इस प्रकारसे पृथ्वी और तारागणोंका सन्निवेश और द्वीप, समुद्र, पर्व्वत तथा खण्ड और नदियोंका सन्निवेश तथा खंडोंमें जो निवास करते हैं उनका सन्निवेश यह सब सूर्य्यकेही वशसे प्रकाशित होरहाहै मध्यमें ध्रुव करके संक्षिप्त होरहाहै इसका विस्तार सब ओरसे गोलेके आकारके समानहै इसप्रकार सब जगत् लोगोंके व्यवहारके निमित्त ईश्वरने रचाहै ७६ । ८२ ब्रह्माजीने कल्पकी आदिमें यह सब पृथ्वी और तारागण आदिका सन्निवेश बुद्धिके अनुसार स्थापित कियाहै ८३ यह सब जो कुछहै सो प्रधान पुरुषका विराट् रूपहै इस सबके कहने को और चर्म दृष्टिसे देखनेको कोई मनुष्यभी समर्थ नहींहै ८४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२७ ॥

ऋषियोंने पूछा हे सूतजी पूर्व्वमें शिवजी महाराज त्रिपुरासुर दैत्यके भुवन कैसे जातेभये और वहाँ जाकर उन्होंने उसके पुरको कैसे भस्मकिया इसको विस्तारपूर्व्वक आप हमारे ऊपर कृपा

दारितवान्भवः। मयोनाममहामायो मायानांजनकोऽसुरः ३ निर्जितःसतुसंग्रामे तताप परमन्तपः। तपस्यन्तन्तुतंविप्रादैत्यावन्यावनुग्रहात्४तस्यैवकृत्यमुद्दिश्यतेपतुःपरमन्तपः। विद्युन्मालीचबलवान् तारकाख्यश्चवीर्यवान् ५ मयतेजःसमाक्रान्तौ तेपतुर्मयपार्श्वगौ। लोकाइवयथामूर्तास्त्रयस्त्रय इवाग्नयः ६ लोकत्रयंतापयन्तस्ते तेपुर्दानवास्तपः हेमन्तेजलशय्यासु ग्रीष्मेपञ्चतपेतथा ७ वर्षासुचतथाकाशेक्षपयन्तःस्तनूःप्रियाः। सेवानाःफलमूलानिपुष्पाणिचजलानिच ८ अन्यदाचरिताहाराःपङ्केनाचितवल्कलाः। मग्नाः शैवालपङ्केषु विमलाविमलेषुच ९ निर्मांसाश्चततोजाताः कृशाधमनिसन्तताः। तेषांतपः प्रभावेन प्रभावविधुतंयथा १० निष्प्रभन्तुजगत्सर्वं मन्दमेवाभिभाषितम्। दह्यमानेषु लोकेषु तैस्त्रिभिर्दानवाग्निभिः ११ तेषामग्रेजगद्बन्धुः प्रादुर्भूतःपितामहः।ततःसाहसकर्त्तारः प्राहुस्तेसहसागतम् १२ स्वकम्पितामहं दैत्यास्तंवैतुष्टुवुरेवच। अथतान्दानवान्ब्रह्मा तपसातपनप्रभान् १३ उवाचहर्षपूर्णाक्षो हर्षपूर्णमुखस्तदा। वरदोऽहंहिवोवत्साःतपस्तोषितआगतः १४ व्रीयतामीप्सितंयच्चसाभिलाषंतदुच्यताम्। इत्येवमुच्यमानन्तु प्रतिपन्नंपितामहम् १५ विश्वकर्मामयःप्राह प्रहर्षोत्फुल्ललोचनः। देवदैत्याःपुरा देवैः संग्रामेतारकामये १६ निर्जितास्ताडिताश्चैवहताश्चाप्यायुधैरपि। देवैर्वैरानुबन्धाच्च

करके वर्णन कीजिये १ मय दैत्यकी मायासे रचाहुआ त्रिपुर श्री महादेवजीने एकही बाणसे दग्ध किया यह सब वृत्तान्त हमारे आगे कहिये २ सूतजी बोले हे ऋषियो जैसे त्रिपुरको महादेवजीने दग्धकिया उसको मुझसे सुनो मय नाम महामायावी दैत्यको जब देवताओंने युद्धकरके जीत लिया तब उसने बड़ी तपस्या करी और उसीके साथ दो अन्य दैत्यभी तपकरने लगे ३। ४ अर्थात् उसी के कर्मके उद्देशसे बलवान् विद्युन्माली और तारकासुर यह दोनों परमतप करने लगे ५ मय दैत्यके तेजसे आक्रान्त मय के समीपमें बैठेहुए जैसे मूर्त्तिको धारण किये तीनों अग्नि तीनों लोकों समेत बैठेहों वैसेही स्थितहोके त्रिलोकीको सन्ताप देतेहुए परमतप करनेवाले हेमन्तमें जल शय्या ग्रीष्ममें पंचाग्नि वर्षामें खुले आकाशमें अपने प्रिय शरीरोंको पटकते हुए फल मूल पुष्प जलादिकर आहार करतेभये ६। ८ शरीरमें कीच लगाये अथवा बक्कल ओढ़ेहुए शिवारकी कीचमें लोटे और कभी निर्मल स्वच्छभी रहतेभये ९ इन तपोंके कारणसे मांस रहित होकर महाकृश होगये ऐसे उनके तपके प्रभावसे सबजगत् कंपायमान होगया और सबकी कान्तियां जाती रहीं मन्द२ भाषणकरने लगे उन अग्निरूप दानवोंके तेजसे सबजगत् जब दग्ध होनेलगा तब उनके आगे जगत्का बन्धु चतुर्मुख ब्रह्मा प्रकट हुआ तब हठ करनेवाले दैत्य ब्रह्माजी से बोले १०। १२ और ब्रह्माजीको स्तुतियों से प्रसन्न करतेभये तब तपसे सूर्य के समान होनेवाले उन दैत्योंसे ब्रह्माजी यह वचन बोले १३ कि हे दैत्यो मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हुआहूं और तुमको वरदान देनेके लिये आयाहूं १४ जो तुम्हारी इच्छाहो सो वर मांगो ब्रह्माजी के इस वचनको सुनकर हर्ष से प्रफुल्लित नेत्रों वाला मय नाम दैत्य बोला कि पूर्वकाल में तारकामय युद्धमें देवताओं ने दैत्यों को जीतकर बड़ी ताड़नापूर्वक शस्त्रों

धावन्तोभयवेपिताः १७ शरणन्नैवजानीमः शर्म्मवाशरणार्थिनः। सोऽहंतपःप्रभावेनत
वभक्त्यातथैवच १८ इच्छामिकर्त्तुंतद्दुर्गं यद्देवैरपिदुस्तरम्। तस्मिंश्चत्रिपुरेदुर्गे मत्कृ
तेकृतिनांवर! १९ भूम्यानांजलजानाञ्च शापानांमुनितेजसाम्। देवप्रहरणानाञ्चदे
वानाञ्चप्रजापते! २० अलङ्घनीयंभवतु त्रिपुरंयदितेप्रियम्। विश्वकर्माइतीवोक्तःस
तदाविश्वकर्मणा २१ उवाचप्रहसन्वाक्यं मयंदैत्यगणाधिपम्। सर्वामरत्वंनैवास्ति
असद्वृत्तस्यदानव! २२ तस्माद्दुर्गविधानंहि तृणादपिविधीयताम्। पितामहवचः
श्रुत्वा तदैवंदानवोमयः २३ प्राञ्जलिःपुनरप्याह ब्रह्माणंपद्मसम्भवम्। शम्भुरेकेषु
णादुर्गं सकृन्मुक्तेननिर्दहेत् २४ समंससंयुगेहन्यादन्यथ्यंशेषतोभवेत्। एवमस्त्विति
चाप्युक्त्वा मयंदेवःपितामहः २५ स्वप्नेलब्धोयथार्थोवै तत्रैवादर्शनंययौ। गतेपितामहेदै
त्या गतामयरविप्रभाः २६ वरदानाद्धिरेजुस्ते तपसाचमहाबलाः। समयस्तुमहाबुद्धिर्दा
नवोवृषसत्तमः २७ दुर्गव्यवसितःकर्त्तुमितिचाचिन्तयत्तदा। कथंनामभवेद्दुर्गं तन्मया
त्रिपुरंकृतम् २८ वत्स्यंहितत्पुरंदिव्यं मत्तोनान्यैर्नसंशयः। यथाचैकेषुणातेन तत्पुरं
हिहन्यते २९ देवैस्तथाविधातव्यं मयामतिविचारणम्। विस्तारोयोजनशतमेकैकस्यपु
रस्यतु ३० कार्यस्तेषाञ्चविष्कम्भश्चैकैकशतयोजनम्। पुष्पयोगेननिर्माणं पुराणञ्चभवि
ष्यति ३१ पुष्पयोगेनचदिवि समेष्यन्तिपरस्परम्। पुष्पयोगेनयुक्तानि यस्तान्यासादयि

करके मारा तब देवताओंके शत्रुभावसे भयके कारण कांपतेहुए हमलोगोंने किसी को अपना रक्षक नहीं जाना और न किसी कल्याणको जाना सो हम तपके प्रभावसे और तुम्हारी भक्ति करके देवताओं से दुस्तर महाकठिन अभेद्यदुर्ग अर्थात् किला बनाया चाहते हैं वह मेरा बनायाहुआ त्रिपुर भूमि के रहनेवाले मनुष्य जलके विचरनेवाले जीव और तेजस्वी मुनियों का शाप इत्यादिक बातोंसे भी किसी प्रकार चलायमान नहीं होसके यह आप वरदाजिये यह मय दैत्यके वचन सुनकर १५। २१ ब्रह्माजी बोले कि हे असत् वृत्ति वाले मय दैत्य दैत्योंको देवताओंका सा सब भाव नहीं होसक्ता इस हेतुसे तुम तृणोंका किला बनालो तब अंजली बांधकर मय दैत्य फिर ब्रह्माजी से बोला कि मैं यह चाहताहूं कि मेरेदुर्गको शिवजी एकही बाणमें भस्मकरदें २२। २४ युद्धमें शिवजी के सिवाय मेरे पुरको कोई दूसरा नहीं भस्म करसके यह आप मुझे वरदान दो तब ब्रह्माजी ऐसाही हो ऐसाकहकर चलेगये २५ अर्थात् स्वप्नमें प्राप्त होनेके समान अन्तर्द्धान होगये जब ब्रह्माजी चलेगये तब रोगरहित सूर्य्य के समान कान्ति वाले वह बड़े बलवान् दैत्य वरदान और तपके प्रभावसे अत्यन्त शोभित होते भये २६। २७ और मयदैत्य उस दुर्गके बनानेकी व्यवस्थाको चिन्तवन करनेलगा कि मैं अपने त्रिपुर को कैसा बनाऊं २८ उस दिव्य त्रिपुरमें मुझकोही बसना योग्यहै यह त्रिपुर ऐसा बनाना चाहिये कि शिवजी से भी एक बाण करके दग्ध न होसके २९ देवतालोग तो ऐसाही करेंगे परन्तु मुझको बुद्धिके विचारसे एक१ पुरका विस्तार सौ १०० योजनका बनाना चाहिये ३० इनत्रिपुरोंकी मोटाई भी सौ २ ही योजनकी होनी चाहिये जब पुष्पयोग होगा उसके योगसे उनका पुरातन निर्माण

ष्यति ३२ पुराण्येकप्रहारेण सतानिनिहनिष्यति। आयसन्तुक्षितितले राजतन्तुनभ स्तले ३३ राजतस्योपरिष्टात्तु सौवर्णंभवितापुरम्। एवंत्रिभिःपुरैर्युक्तं त्रिपुरंतद्भविष्य ति। शतयोजनविष्कम्भैरन्तरैस्तद्दुरासदम् ३४ अट्टालकैर्यन्त्रशतघ्निभिश्च सचक्रशू लोपलकम्पनैश्च। द्वारैर्महामन्दरमेरुकल्पैः प्राकारशृङ्गैःसुविराजमानम् ३५ सतारका ख्येनमयेनगुप्तं खस्थञ्चगुप्तंतडिन्मालिनापि। कोनामहन्तुंत्रिपुरंसमर्थो मुक्तात्रिनेत्रंभग वन्तमेकम् ३६॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२८॥

(सूत उवाच) इतिचिन्त्यमयोदैत्यो दिव्योपायप्रभावजम्। चकारत्रिपुरंदुर्गं मनः सञ्चारचारितम् १ प्राकारोऽनेनमार्गेण इहवामुत्रगोपुरम्। इहचाट्टालकद्वारमिहचाट्टा लगोपुरम् २ राजमार्गइतश्चापि विपुलोभवतामिति। रथ्योपरथ्याःसत्रिका इहचत्वरए वच ३ इदमन्तःपुरस्थानं रुद्रायतनमत्रच। सवटानितडागानि ह्यत्रवाप्यःसरांसिच ४ आरामाश्चसभाश्चात्र उद्यानान्यत्रवातथा। उपनिर्गमोदानवानां भवत्यत्रमनोहरः ५ इत्येवंमानसंतत्रा कल्पयत्पुरकल्पवित्। मयेनतत्पुरंसृष्टं त्रिपुरंत्वितिनःश्रुतम् ६ कार्ष्णा यसमयंयत्तु मयेनविहितंपुरम्। तारकाख्योऽधिपस्तत्र कृतस्थानाधिपोऽवसत् ७ यत्तुपू र्णेन्दुसङ्काशं राजतंनिर्मितंपुरम्। विद्युन्मालीप्रभुस्तत्र विद्युन्मालीत्विवाम्बुदः ८ सुवर्णा

होवेगा पुष्ययोगके कारण से वह परस्पर आकाश में मिलजांयगे पुष्ययोगसे युक्त होना जो उनका जानलेगा वह एकही प्रहार करके उनको नष्ट करदेगा—पृथ्वीतलमें लोहा आकाशमें चाँदी उसके ऊपर सुवर्णका पुर होवेगा इसीप्रकार के तीन पुरोंसे युक्त होकर वह त्रिपुर कहावेगा सौ २ योजन का उनतीनोंका अन्तर रहैगा ३१। ३४ लोहेकी अटारी यंत्र चक्र शूल और पाषाणोंसे युक्त मन्दरा-चल और सुमेरु पर्व्वत के समान द्वारों समेत ध्वजा शृंगादि से शोभित आकाशमें स्थित हुआ तार-कासुर मय और विद्युन्माली इनदोनों से रक्षित कियेहुए पुरको शिवजीके सिवाय कौन नष्ट करस-केगा ऐसा विचार करनेलगा ३५। ३६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२८॥

सूतजी बोले कि वह मय दैत्य ऐसे दिव्य उपायोंको विचारकर मनके विचारसे उस त्रिपुर नाम दुर्गको बनाताभया १ अर्थात् यहाँ क़िला बनानाचाहिये यहाँ द्वार बनाना यहाँ अटारी यहाँ अटारियों के द्वार यहाँ कचहरी यहाँ बैठनेका कमरा सड़क गली कूंचे चौहट्टे बाजार बैठकके मकान यहाँ शि-वजीका स्थान यहाँ वट वृक्षों समेत तड़ाग बनाना यहाँ बावड़ी सरोवर बाग बगीचे सभाके मकान पुष्पवाटिका और यहाँ दैत्योंके आने जानेका सुन्दर मार्ग होगा इस प्रकार मनहीमें पुरकी रचनाकी कल्पना विचार करतेहुए मय दैत्यने उस त्रिपुरनाम पुरको रचा ऐसा हमने सुनाहै २। ६ जहाँ कि असल धातु लोहेका पुर बनायाथा वहाँ तो तारकासुर स्थान बनाकर बसताभया दूसरा जहाँ चन्द्र-माके समान कान्तिवाला चाँदीका पुर बनायाथा उसमें विद्युन्माली दैत्योंका अधिपति होकर बास करनेलगा ७। ८ और जो सुवर्णका पुर बनायाथा उसमें आपमय दैत्य अधिपतिहोकर बासकरताभया ९

विकृतंयच्च मयेनविहितंपुरम्। स्वयमेवमयस्तत्र गतस्तदधिपःप्रभुः ९ तारकस्यपुरंतत्र शतयोजनमन्तरम्। विद्युन्मालिपुरञ्चापि शतयोजनकेऽन्तरम् १० मेरुपर्वतसङ्काशं म यस्यापिपुरंमहत्। पुष्पसंयोगमात्रेण कालेनसमयःपुरा ११ कृतवांस्त्रिपुरंदैत्य स्त्रिनेत्रःपु ष्पकंयथा। येनयेनमयोयाति प्रकुर्वाणःपुरंपुरात् १२ प्रशस्तास्तत्रनत्रैव वारुण्यामाल याःस्वयम्। रुक्मरूप्यायसानाञ्च शतशोऽथसहस्रशः १३ रत्नाचितानिशोभन्ते पुराण्य मरविद्विषाम्। प्रासादशतजुष्टानि कूटागारोत्कटानिच १४ सर्वेषांकामगानिस्युः सर्वलो कातिगानिच। सोद्यानवापीकूपानि सपद्मसरवन्तिच १५ अशोकवनभूतानि कोकिला रुतवन्तिच। चित्रशालाविशालानि चतुःशालोत्तमानिच १६ सप्ताष्टदशभौमानि सत्कृ तानिमयेनच। बहुध्वजपताकानि स्रग्दामालंकतानिच १७ किङ्किणीजालशब्दानि ग न्धवन्तिमहान्तिच। सुसंयुक्तोपलिप्तानि पुष्पनैवेद्यवन्तिच १८ यज्ञधूमान्धकाराणि संपू र्णकलशानिच। गगनावरणाभानि हंसपङ्क्तिनिभानिच १९ पङ्क्तीकृतानिराजन्ते गृहा णित्रिपुरेपुरे। मुक्ताकलापैर्लम्बद्भिर्हसन्तीवशशिश्रियम् २० मल्लिकाजातिपुष्पाद्यैर्ग न्धधूपाधिवासितैः। पञ्चेन्द्रियसुखैर्नित्यं समैःसत्पुरुषैरिव २१ हेमराजतलोहाद्य मणि रत्नाञ्जनाङ्किताः। प्राकारास्त्रिपुरेतस्मिन् गिरिप्राकारसन्निभाः २२ एकैकस्मिन्पुरेतस्मिन् गोपुराणांशतंशतम्। सपताकाध्वजवतीर्दृश्यन्तेगिरिश्टङ्गवत् २३ नूपुरारावरम्याणि

इन तारकासुर और विद्युन्माली के पुरोंमें सौ२ योजनका अन्तरथा इस मय दैत्यने अपने सुमेरु पर्वतकी कान्तिके समान पुरको पुष्पके संयोगमें बनायाथा १०।११ जैसे कि शिवजी अपने पु- ष्पक विमानको बनातेभये उसीप्रकार मय दैत्यने अपने त्रिपुरको बनाया जिस२ मार्ग होकर मय दैत्य एक पुरसे दूसरे पुरमें जाताथा वहाँ२ मार्गोंमें बड़े सुन्दर वारुणी मदिराके पात्रोंकी पंक्ति शो- भित लगती भई और मार्गमेंही सोने चाँदी और लोहेसे जटित दैत्योंके पुर भी बड़े२ उत्तम महलों समेत शोभायमान होतेभये १२।१४ यह सब पुर इच्छापूर्वक सबलोकों में चलनेवाले होतेभये इनपुरों में बागबगीचे कूपवापिका और कमलों समेत सरोवर भी होतेभये १५ अशोक वृक्षोंके वन कोकिलाओंके शब्द विचित्र शाला और चतुःशाला इन सबसे भी युक्त होतेभये १६ वहां मय दैत्य ने एकसौछब्बीस १२६ पृथ्वी के स्थान भी सुन्दरतासे भूषित करे बहुतसी ध्वजा और मालाओं से सुशोभित होतेभये १७ किंकिणी जालियों से युक्त सुन्दर पुष्पोंकी बड़ी २ गन्धमाला और नै- वेद्यादिकसे पूजित १८ यज्ञ धूमके अंधकारों और पूर्ण कलशों से आकाशके विद्युत समेत बादलोंके समान शोभायमान थे कोई २ मकान हंसोंकी पंक्तियों के समान श्वेत १९ जिनमें चन्द्रमाकी कि- रणोंके समान दि० मोती लटकते हुए चमेली जुही आदि के सुगन्धित पुष्पोंसे और गंध धूपादि से महा सुगन्ध युक्त होते भये और नानासुखोंके भोगनेवाले सत्पुरुषों के समान उसमें निवास करने वाले लोग थे उसकोटि के एक २ कंगूरोंमें सोनेचाँदी और लोहे आदि की दृढ़ जड़ावट थी वह ऐसे विदित होतेथे जैसे कि मणिमय पर्वतोंके शिखरहोतेहैं २०।२२ एक२ पुरमें सौ२द्वार सबके ऊपर

त्रिपुरेतत्पुराण्यपि। स्वर्गातिरिक्तश्रीकाणि तत्रकन्यापुराणिच २४ आरामैश्चविहा
रैश्च तडागवटचत्वरैः। सरोभिश्चसरिद्भिश्च वनैश्चोपवनैरपि २५ दिव्यभोगोपभो
गानि नानारत्नयुतानिच । पुष्पोत्करैश्चसुभगास्त्रिपुरस्योपनिर्गमाः । परिखाशतग
म्भीराः कृतामायानिवारणैः २६ निशम्यतद्दुर्गविधानमुत्तमम् कृतंमयेनाद्भुतवीर्यकर्म
णा। दितेःसुतादैवतराजवैरिणः सहस्रशःप्रापुरनन्तविक्रमाः २७ तदासुरैर्दर्पितवैरिमर्द
नैर्जनार्दनैःशैलकरीन्द्रसन्निभैः। बभूवपूर्णंत्रिपुरंतथापुरा यथाम्बरंभूरिजलैर्जलप्रदैः२८॥
इति श्रीमत्स्यपुराणेएकोनत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १२९॥

(सूत उवाच) निर्मितेत्रिपुरेदुर्गे मयेनासुरशिल्पिना । तद्दुर्गंदुर्गतांप्राप बद्धवैरैःसु
रासुरैः १ सकलत्राःसपुत्राश्च शस्त्रवन्तोऽश्चकोपमाः। मयादिष्टानिविविशुर्गृहाणिहृषि
ताश्चते २ सिंहावनमिवानेके मकराइवसागरम् । रोषैश्चैवातिपारुष्यैः शरीरमिवसंह
तैः ३ तद्वद्बलिभिरध्यस्तं तत्पुरंदेवतादिभिः । त्रिपुरंसंकुलंजातं दैत्यकोटिशताकुल
म् ४ सुतलादपिनिष्पत्य पातालाद्दानवालयात् । उपतस्थुःपयोदाभा येचगिर्युपजीवि
नः ५ योयंप्रार्थयतेकामं संप्राप्तस्त्रिपुरात्त्रयात् । तस्यतस्यमयस्तत्र माययाविदधाति
सः ६ सचन्द्रेषुचदोषेपु साम्बुजेपुसरःसुच । आरामेषुसचूतेषु तपोधनवनेषुच ७ स्व

ध्वजा पताका टँगरहीं वह वृक्षों समेत सुन्दर पर्व्वतोंके शिखरसमान विदित होतेथे २३ उसपुरमें दैत्योंकीकन्याओंके महल उनके नूपुरोंकीध्वनियोंसे स्वर्गके समानहोरहेथे इन सबबातोंके सिवाय वहपुर बाग,बगीचे,क्रीड़ाकेस्थान,तड़ाग,चौहटे,बाजार,सरोवर,नदी व वन,छोटेवन,दिव्यभोगऔरअनेकप्रकार के रत्नादिकोंसे भी संयुक्तथे उसत्रिपुरके सबमार्ग पुष्पोंकी वाटिकाओंसे शोभितरहतेथे उसपुरमें सैकड़ों बड़ी २ खाइयांथीं २४।२६ उस मयदैत्य के रचेहुए त्रिपुरके उत्तम विधानको देवताओंके शत्रु बड़े २ बलवान् दैत्य सुनकर हजारों उसपुरमें आकर प्राप्त होतेभये २७ पर्व्वत हाथियोंकेसमान आकार वाले देवताओं के पीड़ादेनेवाले महाअभिमानी दैत्योंके समूहोंसे वहपुर ऐसापूर्णहोगया जैसेकि बहुत जलवाले काले २ मेघोंसे आकाश पूर्ण होजाताहै २८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांएकोनत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १२९॥

सूतजीबोले दैत्योंमें बड़ेशिल्पी उसमय दैत्यने वहत्रिपुरनाम दुर्गऐसारचा जो दैत्योंकेशत्रु देवतादिकोंसे बड़ा दुर्गम और अभेद्यथा १ उसमयके रचेहुये भवनोंमें स्त्री पुत्रादिकों समेत क्रोधयुक्त शस्त्रधारी बड़ी प्रसन्नता पूर्वक दैत्यबास करने लगे २ वहघरोंमें ऐसे प्रवेशकरतेभये जैसे घनेवनमें सिंह और अथाह समुद्रमें मकरादिक क्रोधसे श्वासकोंलेकर प्रवेश करजातेहैं ३ उन देवदुःखदायी किरोड़ोंदैत्यों से वहत्रिपुर दुर्गपूरित होगया ४ सुतलादिक पाताल और पर्व्वतोंसे निकलकर वह मेघके समान कांतिवाले असंख्यदैत्य उसमें आकर वासकरनेलगे ५ उसपुरके दैत्य जो २ इच्छाकरतेथे वहसब मय दैत्य अपनी मायासे उनको प्राप्तकरदेताथा ६ चन्द्रमाके समान कान्तिवाले कमलोंके पुष्पोंसे भरे हुए सरोवरोंमें और आमके वृक्षोंसे युक्त बागवनोंमें चन्दनसे लिप्तअंगोंवाले दैत्य मदोन्मत्तहाथियोंके

ङ्गाश्चन्दनदिग्धाङ्गाः मातङ्गाःसमदाइव । मृष्टाभरणवस्त्राश्च मृष्टस्रगनुलेपनाः ८ प्रि
याभिःप्रियकामाभिर्हावभावप्रसूतिभिः । नारीभिःसततंरेमुर्मुदिताश्चैवदानवाः ९ मये
ननिर्मितेस्थाने मोदमानामहासुराः । अर्थेधर्मेचकामेच निदधुस्तेमतीःस्वयम् १० ते
षांत्रिपुरयुक्तानां त्रिपुरेत्रिदशारिणाम् । व्रजतिस्मसुखंकालः स्वर्गस्थानांयथातथा ११
शुश्रूषन्तेपितॄन्पुत्रा पत्न्यश्चापिपतींस्तथा । विमुक्तकलहाश्चापि प्रीतयःप्रचुराभव
न् १२ नाधर्मस्त्रिपुरस्थानां बाधतेवीर्य्यवानपि । अर्चयन्तोदितेःपुत्रास्त्रिपुरायतनेहर
म् १३ पुण्याहशब्दानुच्चैरुराशीर्वादांश्चवेदगान् । स्वनूपुररवोन्मिश्रान् वेणुवीणार
वानपि १४ हासश्चवरनारीणां चित्तव्याकुलकारकः । त्रिपुरेदानवेन्द्राणां रमतांश्रूयते
सदा १५ तेषामर्चयतांदेवान् ब्राह्मणांश्चनमस्यताम् । धर्मार्थकामतन्त्राणां महान्का
लोऽभ्यवर्तत १६ अथालक्ष्मीरसूयाच तृड्बुभुक्षेतथैवच । कलिश्चकलहश्चैव त्रिपु
रंविविशुःसह १७ सन्ध्याकालंप्रविष्टास्ते त्रिपुरञ्चभयावहाः । समध्यासुःसमंघोराः श
रीराणियथामयाः १८ सर्वएतेविशन्तस्तु मयेनत्रिपुरान्तरम् । स्वप्नेभयावहादृष्टा आवि
शन्तस्तुदानवान् १९ उदितेचसहस्रांशौ शुभभासाकरेरवौ । मयःसभामाविवेश भास्क
राभ्यामिवाम्बुदः २० मेरुकूटनिभेरम्ये आसनेस्वर्णमण्डिते । आसीनाःकाञ्चनगिरेः

समान उज्ज्वल आभूषण वस्त्र अतर आदिक गन्धोंको लगाये हुए विचरतेहुए ७। ८ और हाव भाव कटाक्ष करनेवाली प्रिय कामनावाली अपनी प्यारी स्त्रियोंसे अत्यन्त प्रसन्नहोकर रमण करनेलगे ९ मयसे रचेहुए स्थानोंमें आनन्द करतेहुए दैत्य धर्म अर्थ और कामोंमें अपनी बुद्धि करतेभये १० उस त्रिपुरमें रहनेवाले दैत्योंका काल सुखसे ऐसे व्यतीत होताभया जैसे कि स्वर्गमें स्थितहोनेवालोंका व्यतीत होताहै ११ दैत्योंके पुत्र तो अपने पिता माताओं की और स्त्रियां अपने पतियोंकी सेवाकरती भईं और सब मिलेहुए कलहसे रहितहोकर आपसमें अत्यन्त प्रसन्न रहतेभये ११ त्रिपुरमें स्थितहुआ कोई बलवान् दैत्य भी किसी छोटेपर अन्याय और अधर्म नहीं करताथा सब दैत्यमात्र उस त्रिपुरमें शिवजीकाही पूजन करते भये १३ यहाँतक कि दैत्य होकर पुण्याहवाचन और वेदपाठ ऊंचेस्वरसे करतेहुए नूपुरकेशब्दोंसे मिलाकर वीणा और बाँसुरीके शब्दोंको करतेथे १४ त्रिपुरमें बसते हुये और अपनी स्त्रियों से भोग विलास करते हुए सदैव चित्तके विनोद करनेवाले उत्तम स्त्रियोंके हास्योंको सुनाकरतेथे १५ इस रीतिसे और देवताका पूजन ब्राह्मणोंको नमस्कारादिक करतेहुए अर्थ धर्म कामनाओंके सिद्धकरनेवाले दैत्योंका काल व्यतीत होताभया १६ इसके थोड़ेही समयपीछे उस त्रिपुर दुर्गमें अलक्ष्मी, असूया, निन्दा, तृषा, कलियुग और कलह यह सब एकहीबार सायंकालके समय प्रवेश करतेभये यह सब दैत्योंके शरीरोंमें घोर रोगोंके समान भयके देनेवाले होतेभये इन सब भयके देनेवालोंको अपनेपुरमें प्रवेश करतेहुए स्वप्नमें मय दैत्यने देखा १७। १९ जब प्रातःकालके सूर्य्यका उदयहुआ तबमयदैत्य सभा में आया उस समय मय दैत्यकी शोभा दोनों दैत्योंसे ऐसी होतीभई जैसे कि दो सूर्य्योंसे मेघ की

शृङ्गेतोयमुचोयथा २१ पार्श्वयोस्तारकाख्यश्च विद्युन्मालीचदानवः । उपविष्टोमय स्यान्ते हस्तिनःकलभाविव २२ ततःसुरारयःसर्वे शेषकोपारणाजिरे । उपविष्टाद्दृढं विद्धा दानवादेवशत्रवः २३ तेष्वासीनेषुसर्वेषु सुखासनगतेषुच । मयोमायाविज नक इत्युवाचसदानवान् २४ खेचराःखेचरारावा भोभोदाक्षायणीसुताः! । निशाम यध्वस्वप्नोऽयं मयादृष्टोभयावहः २५ चतस्रःप्रमदास्तत्र त्रयोमर्त्याभयावहाः । को पानलादीप्तमुखाः प्रविष्टास्त्रिपुरार्दिनः २६ प्रविश्यरुषितास्तेच पुराण्यतुलविक्रमाः । प्रविष्टास्तच्छरीराणि भूत्वाबहुशरीरिणः २७ नगरंत्रिपुरञ्चेदंतमसासमवस्थितम् । सगृ हंसहयुष्माभिः सागराम्भसिमज्जितम् २८ उलूकंरुचिरानारी नग्नारूढाखरंतथा । पु रुषःसिन्दुतिलकश्चतुरंघ्रिस्त्रिलोचनः २९ येनसाप्रमदानुन्ना अहञ्चैवविबोधितः । ईदृशी प्रमदादृष्टा मयाचातिभयावहा ३० एषईदृशिकःस्वप्नो दृष्टोवैदितिनन्दनाः! । दृष्टःकथं हिकष्टाय असुराणांभविष्यति ३१ यदिवोऽहंक्षमोराजा यदिदंवेत्थचेङ्गितम्। निबोधध्वं सुमनसो नचासूयितुमर्हथ ३२ कामंचेर्ष्याञ्चकोपञ्च असूयांसंविहायच । सत्येदमेचधर्मे चमुनिवादेचतिष्ठत ३३ शान्तयश्चप्रयुज्यन्तां पूज्यताञ्चमहेश्वरः। यदिनामास्यस्वप्नस्य ह्येवञ्चोपरमोभवेत् ३४ कुप्येतनोध्रुवंरुद्रो देवदेवस्त्रिलोचनः । भविष्याणिचदृश्यन्ते य तोनस्त्रिपुरेसुराः ३५ कलहंवर्जयन्तश्च अर्जयन्तस्तथार्जवम्। स्वप्नोदयंप्रतीक्षध्वं का

शोभाहोतीहै २० सुमेरु पर्व्वतके शिखरके समान वह सब अपने २ आसनोंपर इस रीतिसे बैठेकि एक ओरको तारकासुर दूसरी ओर विद्युन्माली उन दोनोंके मध्यमें ऐसे बैठताभया जैसे कि अपने बच्चों समेत बड़ा हाथी बैठताहै २१ । २२ इसके पीछे देवताओंके शत्रु दैत्यलोग शेषनागके समान क्रोधकरके दृढ़तासे बैठे २३ जब सब दैत्य अपने २ स्थानके समान आसनोंपर बैठगये तब मय दैत्य उन सबसे यह वचन बोला २४ हे आकाशगामी दैत्यलोगो मेरे इस देखेहुए भयानक स्वप्न को सुनो २५ कि आजकी रातमें चार स्त्री तीन भयानक मनुष्य अग्निके समान क्रोधकियेहुए बड़े देदीप्त मुखसे इस त्रिपुर दुर्गमें घुसआये हैं २६ और उन्होंने प्रवेश करके बड़े पराक्रमी होकर बहुत से शरीरोंको धारणकर लियाहै २७ और इस त्रिपुर नगरको अन्धकारसे युक्त होकर तुमसब समेत उनलोगोंने समुद्र के जलमें डुबोदियाहै २८ उनमें एकनंगी स्त्रीभी उल्लूपर चढ़ी हुई देखीहै और तीन नेत्रवाला चार पैरोंसे युक्त एकपुरुष भी गधेपर चढ़ा देखाहै २९ उस पुरुषने उसस्त्रीको प्रेरणा करके मुझको बोधकराया है ऐसी भयानकस्त्री और वह पुरुष दोनोंमैने देखेहैं ३० हे दैत्यलोगो मैंने यह ऐसा स्वप्ना देखाहै यह स्वप्ना सब दैत्योंको दुःखका देनेवाला होगा इसहेतुसे जो तुम मेरेराजा होनेको मनसे चाहतेहो और इस स्वप्नेकोभी समझगये होतो तुम सब आनन्दपूर्वक प्रसन्न चित्त से रहो और कोई किसीकी चुगली नकरो ३१ । ३२ काम,क्रोध,ईर्षा,असूया, और निन्दा इनसबको त्यागकर सत्य, दम, धर्म और मुनियोंका संभाषण इन सब धर्मोंमें तत्पररहो ३३ शान्तिको धारण करके शिवजीका पूजनकरो इसआचरण के करनेसे इस स्वप्नकी शान्ति होगी ३४ ऐसा न होने पर

लोदयमथापिच ३६ श्रुत्वादाक्षायणीपुत्रा इत्येवंमयभाषितम्। क्रोधेर्ष्यावस्थयायुक्ता दृश्यन्तेचविनाशगाः ३७ विनाशमुपपश्यन्तो ह्यलक्ष्म्याध्यापितासुराः। तत्रैवदृष्ट्वातेन्योऽन्यं संक्रोधापूरितेक्षणाः ३८ अथदेवपरिध्वस्ता दानवास्त्रिपुरालयाः। हित्वासत्यञ्चधर्म्मञ्च अकार्य्याण्यपिचक्रमुः ३९ द्विषन्तिब्राह्मणान्पुण्यान्नचार्चन्तिहिदेवताः। गुरुंचैव नमन्यन्ते ह्यन्योन्यञ्चापिचुक्रुधुः ४० कलहेषुचसज्जन्ते स्वधर्मेषुहसन्तिच। परस्परञ्च निन्दन्ति अहमित्येववादिनः ४१ उच्चैर्गुरून्प्रभाषन्त नाभिभाषन्तिपूजिताः। अकस्मात्साश्रुनयना जायन्तेचसमुत्सुकाः ४२ दधिसक्तून्पयश्चैव कपित्थानिचरात्रिषु। भक्षयन्तिचशेरन्त उच्छिष्टाःसंवृतास्तथा ४३ मूत्रंकृत्वोपस्पृशन्ति चाकृत्वापादधावनम्। संविशन्तिचशय्यासु शौचाचारविवर्जिताः ४४ संकुचन्तिभयाच्चैव मार्जाराणांयथाखुकः। भार्य्यांगत्वानशुध्यन्ति रहोवृत्तिषुनिस्त्रपाः ४५ पुरासुशीलाभूत्वाच दुःशीलत्वमुपागताः। देवांस्तपोधनांश्चैव बाधन्तेत्रिपुरालयाः ४६ मयेनवार्यमाणापि तेविनाशमुपस्थिताः। विप्रियाण्येवविप्राणां कुर्व्वाणाःकलहैषिणः ४७ वैभ्राजंनन्दनंचैव तथाचैत्ररथंवनम्। अशोकंचवराशोकं सर्वर्त्तुकमथापिच ४८ स्वर्गंचदेवतावासं पूर्वदेववशानुगाः। विध्वं

हम सबपर त्रिलोचन शिवजी कोपयुक्त होजायंगे इस त्रिपुरमें प्राप्तहोने वाले देवता लोग दीखते हैं ३५ तुम सब लोग कलहको त्यागकर सरलताको प्राप्तकरके इस स्वप्नके उदय और कालको देखो ३६ इस प्रकारके मयके कहेहुये वचनोंको सुनकर वह सब क्रोध ईर्षामें युक्तहोके विनाशवाले दिखाई पड़े ३७ अलक्ष्मीके प्रभावसे दैत्यलोग विनाशके ध्यानमें तदाकार होगये अर्थात् उसी स्थान पर वह सब परस्पर में देखकर क्रोधसे पूरित नेत्रोंवाले होजाते भये ३८ इसकेअनन्तर दैवसेध्वस्त कियेहुए दानव सत्यधर्मोंको त्यागकर कुकर्मोंको करतेभये ३९ प्रथम तो ब्राह्मणोंसे शत्रुता करतेभये देवताओं की पूजाकरना छोड़दिया गुरुकी पूजासे बहिर्मुख हुए और परस्परही में क्रोध करते भये ४० कलहकरने में आसक्त होकर अपने धर्मों का हास्य करके परस्पर निन्दा करने लगे प्रत्येक को यही अहंकार होगया कि मैंहीहूं दूसरा कोई नहीं है ४१ गुरूलोगों से कठोर वचन कहने लगे जिनका प्रतिदिन पूजन करते थे उनसेभी नहीं बोलतेभये बात २ में नेत्रोंको लालकर लेतेथे कभी उत्सव नहीं करते थे ४२ दही, सत्तू, दूध, कैथ इन सब को रात्रिमें भोजन करके उच्छिष्ट मुखसेही शयन करते थे मूत्रपुरीषादिक करके सब वस्तुओंको स्पर्श करलेतेथे बिना मूत्रकिये पैर धोवते और मूत्र करके नहीं धोवते शौचाचारसे रहितहो शय्यापर शयन करतेभये ४३। ४४ बिलावोंसे मूसोंके समान भयसे संकोच करते थे स्त्री का संग करके भी शुद्धता नहीं करते और रमण आदिक कर्मोंके करनेमें किसी की लज्जा नहीं करते प्रथम सुन्दर शीलस्वभाव वाले होकर भी दुष्ट स्वभावको प्राप्त होतेभये देवता और तपोधन ऋषि लोगोंको बाधा करनेलगे ४५।४६ मयसे निषेध कियेहुये भी दैत्य ब्राह्मणोंसे विरोध करतेहुए नाशको प्राप्त होजातेभये ४७ विभ्राज, नन्दनवन, चैत्ररथवन, अशोकवन, वराशोकवन, सब ऋतुओंके पुष्पोंसे फूलेहुये इन वनोंको और देवताओंके वासस्थान स्वर्ग को

सयन्तिसंक्रुद्धास्तपोधनवनानिच ४६ विध्वस्तदेवायतनाश्रमंच संभग्नदेवद्विजपूज कंतु। जगद्बभूवामरराजदुष्टैरभिद्रुतंसस्यमिवालिवृन्दैः ५० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३० ॥

(सूत उवाच) अशीलेषुप्रदुष्टेषु दानवेषुदुरात्मसु । लोकेषूत्साद्यमानेषु तपोधन वनेषुच १ सिंहनादेव्योमगानान्तेषु[illegible]षजन्तुषु । त्रैलोक्येभयसंमूढे तमोन्धत्वमुपा गते २ आदित्यावसवःसाध्याः पितर[illegible]ताङ्गणाः । भीताःशरणमाजग्मुर्ब्रह्माणंप्रपिता महम् ३ तेतंस्वर्णोत्पलासीनं ब्रह्माणंसमुपागताः । नेमुरूचुश्चसहिताः पञ्चास्यंचतु राननम् ४ वरगुप्तास्तवैवेह दानवास्त्रिपुरालयाः । बाधन्तेस्मान्यथाप्रेष्य ननुशाधिततो ऽनघ ! ५ मेघागमेयथाहंसा मृगाःसिंहभयादिव । दानवानांभयात्तद्वद्बभ्रामप्रपिता महः ६ पुत्राणांनामधेयानि कलत्राणांतथैवच । दानवैर्भ्राम्यमाणानां विस्मृतानिततोऽ नघ ! ७ देववेश्मप्रभङ्गाश्च आश्रमभ्रंशनानिच । दानवैर्लोभमोहान्धैः क्रियन्तेचश्रम न्तिच ८ यदिनत्रायसेलोकं दानवैर्विद्रुतंद्रुतम्। धर्षेणानेननिर्देवं निर्मनुष्याश्रमंजगत् ६ इत्येवंत्रिदशैरुक्तः पद्मयोनिःपितामहः । प्रत्याहत्रिदशान्सेंद्रानिन्द्रतुल्याननःप्रभुः १० मयस्ययोवरोदत्तो मयामतिमतांवराः ! । तस्यान्तएषसंप्राप्तो यःपुरोक्तोमयासुराः ! ११

और ऋषियोंके वनोंको क्रोधसे विध्वंस करतेभये ४८ । ४९ देवताओंके स्थान, आश्रम, और देवपूजक लोगोंका नाशकरतेभये देवताओंके दुःख देनेसे सब जगत् ऐसे नष्टहोगया जैसे कि टीड़ियोंसे सब खेती नष्ट होजाती हैं ५० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३० ॥

सूतजी बोले—कि जब दुष्ट स्वभाववाले दुरात्मा दैत्य लोगोंको उजाड़नेलगे ऋषियोंकेवन तपो- वनोंको बिगाड़नेलगे उस समय सबजीव भयभीत होगयेउन आकाशमें चलनेवाले दैत्योंका सिंह- नादके समान शब्द होताभया सर्वत्र अन्धकार होगया १ । २ यह समय देखकर आदित्य—वसु— साध्य संज्ञक देवता, पितर और मरुद्गण यहसब भयभीत होकर ब्रह्माजीकी शरणमें जातेभये और वहाँ जाकर उनसब देवताओंने सुवर्णके आसन पर विराजमान चारमुखवाले ब्रह्माजीको नमस्कार किया ३ । ४ और कहा कि हेदेवदेव तुम्हारे वरदानसे रक्षित कियेहुए त्रिपुरमें बसनेवाले दैत्यलोग हम को पीड़ादेतेहैं सो आप इनको शिक्षाकरो ५ जैसे कि मेघके आगमनसे हंस और सिंहके आगमनसे मृग भागजातेहैं वैसेही इनदानवोंके भयसे हमलोग भागेहुए घूमतेहैं ६ हेअनघ दानवोंसे दुःखितकियेहुए हमलोग अपनेपुत्र स्त्रियोंकेभी नामभूलगयेहैं ७ इनलोभ मोहसे अंधेहुए दैत्योंने देवताओंके मन्दिर तोड़डाले और ऋषियोंके आश्रमभी भंगकरदिये ८ जो आप इन दानवोंसे दुःखित कियेहुए लोककी रक्षा शीघ्रतासे नहीं करोगे तो यहसब जगत् देवता और ऋषियोंके आश्रमोंसे रहित होजायगा ९ दे- वताओंके ऐसे वचनोंको सुनकर ब्रह्माजी इन्द्रादिक सब देवताओंसे यहवचनबोले १० कि हेदेवता लोगो मैंने जो पूर्व मयदैत्यको वरदान दियाथा उसमेरे कहेहुए वरदानका भोग अबतकहुआ और अब

नत्वतेषामधिष्ठानं त्रिपुरंत्रिदशर्षभाः । एकेषुपातमोक्षेण हन्तव्यंनेषुवृष्टिभिः १२ भव
तोऽत्रनपश्यामि कमप्यत्रसुरर्षभाः । यस्तुचैकप्रहारेण पुरंहन्यात्सदानवम् १३ त्रिपुरं
नाल्पवीर्येण शक्यंहन्तुंशरेणतु । एकंमुक्त्वामहादेवं महेशानंप्रजापतिम् १४ तेयूयंयदि
अन्येच क्रतुविध्वंसकंहरम् । याचामःसहितादेवं त्रिपुरंसहनिष्यति १५ कृतःपुराणांवि
ष्कम्भो योजनानांशतंशतम् । यथाचैकप्रहारेण हन्यतेवैभवेनतु । पुष्पयोगेनयुक्तानि
तानिचैकक्षणेनतु १६ ततोदेवैश्चसंप्रोक्तो यास्यामइतिदुःखितैः । पितामहश्चतैःसार्द्धं
भवसंसदमागतः १७ तंभवंभूतभव्येशं गिरिशंशूलपाणिनम् । पश्यन्तिचोमयासार्द्ध
न्नन्दिनाचमहात्मना १८ अग्निवर्णमजन्देव मग्निकुण्डनिभेक्षणम् । अग्न्यादित्यसह
स्राभ मग्निवर्णविभूषितम् १९ चन्द्रावयवलक्ष्माणं चन्द्रसौम्यतराननम् । आगम्य
तमजन्देवमथतंनीललोहितम् २० स्तुवन्तोवरदंशम्भुं गोपतिंपार्वतीपतिम् २१
(देवा ऊचुः) नमोभगवतेशाय रुद्रायवरदायच । पशूनाम्पतयेनित्यमुग्रायचकपर्दि
ने २२ महादेवायभीमाय त्र्यम्बकायचशान्तये । ईशानायभयघ्नाय नमस्त्वन्धकघाति
ने २३ नीलग्रीवायभीमाय वेधसेवेधसास्तुते । कुमारशत्रुनिघ्नाय कुमारजनकायच २४
विलोहितायधूम्राय वरायक्रथनायच । नित्यंनीलशिखण्डाय शूलिनेदिव्यशायिने २५

अन्त प्राप्तहोगयाहै ११ अबयह त्रिपुरदुर्ग एकही बाणसे नष्टकरनेके योग्यहै इसका नाश बहुतबाणोंसे नहीं होसका १२ हे देवता लोगो तुमसबमें ऐसा मैं किसीको भी नहीं देखताहूं जो एकही बाणसे त्रिपुरसमेत मय दैत्यका नाशकरसके १३ वह त्रिपुरदुर्ग एक महेशान शिवजीके विना दूसरे किसी स्वल्पपराक्रम वालेसे एकही बाणके द्वारा नष्ट नहीं होसका १४ जो तुम अथवा अन्य सब देवता लोग मिलकर दक्षके यज्ञ विध्वंस करनेवाले महादेवजीसे जाकर प्रार्थना करोगे तो वही त्रिपुरका नाशकरसकेंगे १५ क्योंकि उनपुरों की मुटाई सौ २ योजन की है और सब पुष्पयोग करके रचेहैं सो तुम अबवही उपायकरो जिस्से कि शिवजी एकही बाणसे क्षणभरमें उसको नष्टकरदें १६ इसके होनेकेलिये हमभी चलेंगे ऐसे कहकर उनदुःखित देवताओं के साथ ब्रह्माजीभी शिवजीके स्थानपर जातेभये १७ उनभूत भव्येश महादेवजीको पार्वती और नांदिये समेत देखतेभये १८ अर्थात् अग्निके समान वर्णयुक्त अग्निके कुंडके समान नेत्रवाले अग्नि और सूर्य्यके समान कान्तिवाले अग्निकेही वर्णसे विभूपित चन्द्रवर्ण चन्द्रमाकेही तुल्य प्रकाशित नेत्र ऐसे नीललोहित वर्णवाले श्रीमहादेवजी को सब देवतालोग देखतेभये १९। २० दर्शन करके उन पार्वतीश पशुपतिनाथ महावर दायक शिवजी महाराजकी स्तुति करके सब ब्रह्मादिक देवता प्रसन्न करते भये २१ और यह वचन बोले कि हे भगवन् ईश रुद्र वरदायक पशुपति उग्र जटाधारी आपके अर्थ नमस्कारहै २२ हेमहादेव भीमत्र्यंबक शान्तरूप ईशान भवनाशक अन्धक के नाशक आपके अर्थ नमस्कार है २३ हे नीलग्रीव भीम वेधा स्वामिकार्तिक के शत्रुके नाशक और स्वामिकार्त्तिक के उत्पन्न करनेवाले आपकेअर्थ नमस्कार है २४ विलोहित धूम्रवरक्रथन नीलशिखंडी शूली दिव्यशायी इननामोंवाले आपके अर्थ नमस्कार

उरगायत्रिनेत्राय हिरण्यवसुरेतसे। अचिन्त्यायाम्बिकाभर्त्रे सर्वदेवस्तुतायच २६ वृषध्वजायमुण्डाय जटिनेब्रह्मचारिणे। तप्यमानायसलिले ब्रह्मण्यायाजितायच २७ विश्वात्मनेविश्वसृजे विश्वमावृत्यतिष्ठते। नमोऽस्तुदिव्यरूपाय प्रभवेदिव्यशम्भवे २८ अभिगम्यायकाम्याय स्तुत्यायार्च्यायसर्वदा। भक्तानुकम्पिनेनित्यं दिशतेयन्मनोगतम् २९॥ इतिश्री मत्स्यपुराणेएकत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३१॥

(सूत उवाच) ब्रह्माद्यैस्तूयमानस्तु देवैर्देवोमहेश्वरः। प्रजापतिमुवाचेदं देवानांक्कभयंमहत् १ भो! देवाः! स्वागतंवोऽस्तु ब्रूतयद्वोमनोगतम्। तावदेवप्रयच्छामि नास्त्यदेयंमयाहिवः २ युष्माकंनितरांशंवै कर्ताहंविबुधर्षभाः!। चरामिमहदत्युग्रं यच्चापिपरमंतपः ३ विद्विष्टावोममद्विष्टाः कष्टाःकष्टपराक्रमाः। तेषामभावःसम्पाद्यो युष्माकंभवएवच ४ एवमुक्तास्तुदेवेन प्रेम्णासब्रह्मकाःसुराः। रुद्रमाहुर्महाभागं भागार्हाःसर्वएवते ५ भगवंस्तैस्तपस्तप्तं रौद्रंरौद्रपराक्रमैः। असुरैर्वध्यमानाःस्म वयंत्वांशरणंगताः ६ मयोनामदितेःपुत्रस्त्रिनेत्रकलहप्रियः। त्रिपुरंयेनतद्दुर्गं कृतंपाण्डुरगोपुरम् ७ तदाश्रित्यपुरंदुर्गं दानवावरनिर्भयाः। बाधन्तेऽस्मान्महादेव प्रेष्यमस्वामिनंयथा ८ उद्यानानिचभग्नानि नन्दनादीनियानिच। वराश्चाप्सरसःसर्वा रम्भाद्यादनुजैर्हृताः ९ इन्द्रस्यबाह्याश्चगजाः कुमुदाञ्जनवामनाः। ऐरावताद्यापहृता देवतानांमहेश्वर! १० येचेन्द्ररथमु

है २५ हे उरग, त्रिनेत्र, हिरण्यवसुरेता, अचिन्त्य अम्बिका के भर्त्ता सब देवताओं से स्तुतिमान आपके अर्थ नमस्कारहै २६ हे वृषध्वज मुंड, जटी, ब्रह्मचारी, तप्यमान सलिल ब्रह्मण्य इननामों वाले आपके अर्थ नमस्कार है २७ हे विश्वात्मा, विश्वके रचनेवाले, विश्वको आवरण करके ठहरने वाले दिव्यरूप युक्त आपके अर्थ नमस्कारहै २८ हे अभिगम्य, काम्य, स्तुत्य, सबकालमें स्तुतिकरने के योग्य भक्तोंपर अनुग्रह करनेवाले मनोवाञ्छित फलोंके देनेवाले इन सब गुण युक्त आपके अर्थ नमस्कार है २९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३१॥

सूतजी बोले कि ब्रह्मादिक देवताओंसे स्तुति कियेहुए महादेवजी देवताओं से बोले कि देवताओं को भय नहीं है १ हे देवताओं तुम्हारा आना श्रेष्ठ और सफलहै तुम अपने मनोरथको कहो तुम्हारे लिये कोई अदेय वस्तुनहीं है जो तुममांगोगे सो सबदूंगा २ हे देवता लोगो मैं तुम्हारा निरन्तर कल्याण करूंगा जो परन्तपहै उसकोभी मैं करूंगा ३ तुमसे और अपनेसे वैर करनेवालेका मैं नाश करूंगा ४ महादेवजी के इसवचनको सुनकर देवता शिवजी से बोले कि हेभगवन् आप अतुल पराक्रम वालेहैं और महापराक्रमी दैत्योंने उग्रतप कियाहै उनदैत्यों से पीड़ितहुए हमसब आपकी शरण हैं ५। ६ यह मयनाम दैत्य बड़ीकलहका करनेवाला है उसने तीन पुरोंवाला अपना गढ़रचाहै ७ उस पुरके आश्रय होकर सबमहाबली दानव निर्भय होकर हमको पीड़ा देतेहैं वह हमको ऐसेप्रकार से पीड़ित करतेहैं जैसे कि विना स्वामीके भृत्यको पीड़ादेते हैं ८ नन्दन आदिक बगीचे तोड़डाले रंभादिक उत्तम अप्सराओं को हरलियाहै इन्द्रके कुमुद, अंजन, वामन, और ऐरावत नाम हाथी हर

श्व्याश्च हरयोऽपहृतासुरैः। जाताश्चदानवानान्ते रथयोग्यास्तुरङ्गमाः ११ येरथायेग जाश्चैव याःस्त्रियोवसुयच्चनः। तन्नोऽप्यपहृतंदैत्यैः संशयोजीवितेपुनः १२ त्रिनेत्रएवमु क्तस्तु देवैःशक्रपुरोगमैः। उवाचदेवान्देवेशो वरदोवृषवाहनः १३ व्यपगच्छतुवोदे वामहद्दानवजम्भयम्। तदहंत्रिपुरन्धक्ष्ये क्रियतांयद्ब्रवीमितत् १४ यदीच्छथमया दग्धुं तत्पुरंसहदानवम्। रथमौपयिकंमह्यं सज्जयध्वंकिलास्यते १५ दिग्वाससात थोक्तास्ते सपितामहकाःसुराः। तथेत्युक्त्वामहादेवञ्चक्रुस्तेरथमुत्तमम् १६ धराकूबर कौतुह्यौ रुद्रपार्श्वचरावुभौ। अधिष्ठानंशिरोमेरो रक्षोमन्दरएवच १७ चक्रेश्चन्द्र श्चसूर्य्यश्च चक्रेकाञ्चनराजते। कृष्णपक्षंशुक्लपक्षं पक्षद्वयमपीश्वराः १८ रथनेमिद्वयंचक्रु र्देवाब्रह्मपुरःसराः। आदिद्वयंपक्षयन्त्रं यन्त्रमेताश्चदेवताः १९ कम्बलाश्वतराभ्याञ्च नागाभ्यांसमवेष्टितम्। भार्गवश्चाङ्गिराश्चैव बुधोऽङ्गारकएवच २० शनैश्चरस्तथात्रा त्र सर्वेतेदेवसत्तमाः। वरूथंगगनंचक्रुश्चारुरूपंरथस्यते २१ कृतंद्विजिह्वनयनं त्रिवेणुं शातकौम्भिकम्। मणिमुक्तेन्द्रनीलैश्च वृतंह्यष्टमुखैःसुरैः २२ गङ्गासिन्धुःशतद्रूश्च चन्द्र भागासरस्वती। वितस्ताचविपाशाच यमुनागण्डकीतथा २३ सरस्वतीदेविकाच तथा चसरयूरपि। एताःसरिद्वराःसर्वा वेणुसंज्ञाःकृतारथे २४ धृतराष्ट्राश्चयेनागास्तेचवैश्या त्मकाःकृताः। वासुकेकुलजायेच येचरैवतवंशजाः २५ तेसर्पादर्पसम्पूर्णाश्चापतूणेष्वनु

लियेहैं ९।१० और इन्द्रके रथमें जो मुख्य घोड़ेथे वह हरलिये हैं वह दानवोंके रथोंकेयोग्य होगये हैं हमारे रथ हाथी स्त्री और जो २ धनथे वह सब हरलिये अब हमको फिर उनके जीतने में भी सन्देह है ११। १२ इसप्रकार इन्द्रादिक देवताओंसे कहेगये शिवजी वरदान देनेके लिये देवताओंसे बोले १३ हे देवताओ तुम दानवोंके बड़े भयको त्यागदो मैं त्रिपुर को दग्धकरूंगा परन्तु जो मैं कहूं उसे तुमको करना योग्यहै १४ जो मुझसेही उस पुर समेत दैत्योंको दग्ध कराया चाहतेहो तो मेरे उप योगी रथको सजाकर तैयारकरो १५ दिगम्बर रूपहुए वह सब ब्रह्मादिक देवता उनकी आज्ञाको अंगीकार करके उसीप्रकार के उत्तम रथको बनाते हुए,१६ पृथ्वीको आधार करके रुद्रके समीपवर्ती पार्षदोंको तो दोनों जुएबनाये सुमेरु पर्व्वत को और कुवेर के मन्दिर को बैठनेका पीढ़ा और सूर्य्य चन्द्रमाको चांदीके दोनों चक्रबनाये शुक्ल और कृष्णदोनों पक्षोंको रथके पहियोंकी धारा बनाया रथ के मंत्रोंके स्थानमें देवता लगतेभये १७। १९ कम्बल और अश्वतर नाम दोनोंसर्पोंसे रथको बांधते भये और शुक्र, बृहस्पति, बुध, मंगल और शनैश्चर यह सब देवसत्तम रथके वरूथ अर्थात् आकाश में ले जानेवाले गुब्बारे बने २०। २१ और प्रसन्न मुखवाले देवताओंने दो जिह्वा दोनेत्र और तीन सुवर्णके बांस मणि, मोती, और इन्द्रनील मणियोंसे भी युक्त बनाया २२ गंगा, समुद्र, शतद्रूनदी चन्द्रभागा, सरस्वती, वितस्तानदी, विपाशा, यमुना, गंडकी, देविका, और सरयू यहसबनदियांरथ के बांसोंकी जगह पनजारों में लगाई गईं २३। २४ धृतराष्ट्र संज्ञक सर्प, वैश्यात्मकसर्प, वासुकिके कुल के सर्प, रैवत वंशके सर्प यह सब सर्प तूणीर संज्ञक धनुषके बाण रखने के पात्रमें प्रवेश करगये,

नगाः। अवतस्थुःशराभूत्वा नानाजातिशुभाननाः २६ सुरसासरमाकद्रूर्विनताशुचिरेव च। तृषाबुभुक्षासर्वोग्रा मृत्युःसर्वशमस्तथा २७ ब्रह्मवध्याचगोवध्या बालवध्याःप्रजाभयाः। गदाभूत्वाशक्तयश्च तदादेवरथेऽभ्ययुः २८ युगंकृतयुगश्चात्र चातुर्होत्रप्रयोजकाः। चतुर्वर्णाःसलीलाश्च बभूवुःस्वर्णकुण्डलाः २९ तद्युगंयुगसङ्काशं रथशीर्षेप्रतिष्ठितम्। धृतराष्ट्रेणनागेन बद्धंबलवतामहत् ३० ऋग्वेदःसामवेदश्च यजुर्वेदस्तथापरः। वेदाश्चत्वारएवैते चत्वारस्तुरगाभवन् ३१ अन्नदानपुरोगाणि यानिदानानिकानिचित्। तान्यासन्वाजिनांतेषां भूषणानिसहस्रशः ३२ पद्मद्वयंतक्षकश्च कर्कोटकधनञ्जयौ। नागावभूवुरेवैते हयानांबालबन्धनाः ३३ ओङ्कारप्रभवास्तावा मन्त्रयज्ञक्रतुक्रियाः। उपद्रवाःप्रतीकाराः पशुबन्धेष्टयस्तथा ३४ यज्ञोपवाहान्येतानि तस्मिन्लोकरथेशुभे। मणिमुक्ताप्रवालैस्तु भूषितानिसहस्रशः ३५ प्रतोदोङ्कारएवासीत्तदग्रश्चवषट्कृतम्। सिनीवालीकुहूराका तथाचानुमतीशुभा ३६ योक्त्राण्यासंस्तुरङ्गाणामपसर्पणविग्रहाः ३७ कृष्णान्यथचपीतानि श्वेतमाञ्जिष्ठकानिच। अवदाताःपताकास्तु बभूवुःपवनेरिताः ३८ ऋतुभिश्चकृतःषड्भिर्धनुःसंवत्सरोऽभवत्। अजराज्याभवच्चापि साम्बिकाधनुषोदृढा ३९ कालोहिभगवान्रुद्रस्तञ्चसंवत्सरंविदुः। तस्मादुमाकालरात्रिर्धनुषोज्याजराभवत् ४० सगर्भेत्रिपुरंयेन दग्धवान्सत्रिलोचनः। सइषुर्विष्णुसोमाग्नित्रिदैवतमयोऽभवत् ४१ आननंह्यग्निरभवच्छल्यंसोमस्तमोनुदः। तेजसःसमवायोऽथ चेषोस्तेजोरथाङ्गधृत् ४२ तस्मिं

वहाँ पात्रमें जाकर अनेकप्रकारके मुख धारणकरके बाणरूपहोके स्थित होतेभये २५। २६ सुरसा-सरमा-कद्रू-विनता-शुचि, तृषा,बुभुक्षा,सर्वोग्रा-सबका शान्तकरनेवाला मृत्यु, ब्रह्महत्या,गोहत्या, और बालहत्या, यहसब गदा और बरछी रूपहोके शिवजीके रथपर प्राप्तहोती भयीं २७। २८ चारों युगजुवेबने, चातुर्होत्र करने वाले चारोंवर्ण सुवर्णके कुंडलहोते भये वह रथका जुवा युगोंके समान कान्तिवाला होकर रथके शिरपर स्थितहुआ और बलवान् धृतराष्ट्र सर्पसे बाँधागया २९। ३० ऋग्वेद-सामवेद-यजुर्वेद और अथर्वण यह चारोंवेद रथके घोड़े होतेभये ३१ अन्नदानादिक जितने दानहैं वह सब उनघोड़ों के आभूषणहोते भये तक्षक, कर्कोटक और धनंजय यह सर्प अश्वोंके बाल बांधनेके उपयोगी होतेभये ३२। ३३ ॐकारसे उत्पन्नहुए मंत्र, यज्ञ और पशुवधवाले यज्ञ यहसब उपद्रवोंके नाशकरनेवाले होते भये और लाखों संख्यामें होकर मणि मोती और मूंगोंसे विभूषितहो रथपर लगतेभये ३४। ३५ ॐकार घोड़े हाँकनेका चाबुकबना उसके अग्रभागमें वषट्लगा सिनी-वाली, कुहू, अमावास्या, राका और अनुमती यह सब घोड़ों की लगामें औ रथपर काली पीली, श्वेत, लाल और भूरी ध्वजा होती भयीं छःऋतुओंसे कियाहुआ वर्षधनुष होता भया-अम्बिका सहित अजरामाया धनुषकी दृढ़प्रत्यंचा होतीभयी ३६। ३९ काल भगवान् रुद्र वर्षहुए इसीसे कालरात्रि और पार्वतीजीको धनुषकी प्रत्यंचा जानों वह अजराहै ४० जिस बाण से कि त्रिलोचन शिवजी त्रिपुरको भस्म करते भये वहबाण विष्णु सोम और अग्नि इन तीन देवताओं से संयुक्त

श्चवीर्य्यवृद्ध्यर्थं वासुकिर्नागपार्थिवः। तेजःसंवसनार्थंवै मुमोचातिविषोविषम् ४३ कृ
त्वादेवारथञ्चापि दिव्यंदिव्यप्रभावतः। लोकाधिपतिमभ्येत्य इदंवचनमब्रुवन् ४४ सं
स्कृतोऽयंरथोऽस्माभिस्तवदानवशत्रुजित्। इदमापत्परित्राणं देवान्सेन्द्रपुरोगमान् ४५
तंमेरुशिखराकारं त्रैलोक्यरथमुत्तमम्। प्रशस्यदेवान्साध्विति रथंपश्यतिशङ्करः ४६
मुहुर्दृष्ट्वारथंसाधु साध्वित्युक्त्वामुहुर्मुहुः। उवाचसेन्द्रानमरानमराधिपतिःस्वयम् ४७ या
दृशोऽयंरथःक्लृप्तो युष्माभिर्ममसत्तमाः। ईदृशोरथसम्पत्त्या यन्ताशीघ्रंविधीयताम् ४८
इत्युक्तादेवदेवेन देवाविद्धाइवेषुभिः। अवापुर्महतींचिन्तां कथंकार्यमितिब्रुवन् ४९ महा
देवस्यदेवोऽन्यः कोनामसदृशोभवेत्। मुक्त्वाचक्रायुधंदेवं सोपास्यइषुमाश्रितः ५० धुरि
युक्ताइवोक्षाणो घटन्तइवपर्वतैः। निश्वसन्तःसुराःसर्वे कथमेतदितिब्रुवन् ५१ देवोऽह
श्यतदेवांस्तु लोकनाथस्यधूर्गतान्। अहंसारथिरित्युक्त्वा जग्राहाश्वांस्ततोऽग्रजः ५२
ततोदेवैःसगन्धर्वैः सिंहनादोमहान्कृतः। प्रतोदहस्तंसंप्रेक्ष्य ब्रह्माणंसूततांगतम् ५३ भ
गवानपिविश्वेशो रथस्थेवैपितामहे। सदृशःसूतइत्युक्त्वा चारुरोहरथंहरः ५४ आरोह
तिरथंदेवे ह्यश्वाहरभरातुराः। जानुभिःपतिताभूमौ रजोग्रासश्चग्रासितः ५५ देवोदृष्ट्वा

बनाया गयाथा ४१ बाणकामुख अग्निहुआ आगेके शल्यमें अंधेरेको दूरकरनेवाला चन्द्रमा
हुआ उस बाणमें तेजस्वरूपी विष्णु भगवान् हुए ४२ उस बाणमें पराक्रमकी वृद्धिके निमित्त तेज
फैलानेके लिये वासुकि सर्प अपने विषको छोड़ताभया ४३ देवतालोग दिव्य प्रभावसे इस दिव्य
रथको बनाकर लोकों के अधिपति शिवजीके समीप जाकर यह वचन बोले ४४ हे दानव शत्रुओं के
जीतनेवाले शिवजी हमने यह रथ तैयारकियाहै यह रथ इन्द्रादिक देवताओंकी विपत्तिका दूरकरने
वालाहै ४५ इसके पीछे सुमेरु पर्व्वतके शिखरके समान आकारवाले उसउत्तम दिव्यरथको शिव
जीने देखकर बड़ी प्रशंसाकरी और साधु २ शब्दोंसे देवताओंकी सराहनाकरी ४६ और वारंवार
उस रथको देखकर सराहना समेत शिवजी इन्द्रादिक देवताओंसे बोले ४७ हे श्रेष्ठदेवताओ जैसा
तुमने यह रथ रचाहै ऐसाही इसके हाँकनेवाला सारथी भी तुमको शीघ्र बनाना चाहिये ४८
यह महादेवके वचन सुनकर देवतालोग बाणोंसे बिंधेहुओंके समान परमचिन्ताको प्राप्तहोते भये
और विचारकरने लगे कि यहकाम अबकैसे होगा ४९ शिवजीके समान दूसरा कौनसा देवताहै एक
विष्णुजी के विनाकोई नहींहै इस हेतुसे अब विष्णुकी उपासना करनी चाहिये ५० जैसेकि धुरीमें
युक्त हुए चक्र पर्व्वत परचलते हुए घिसजाते हैं उसी प्रकार श्वासोंको लेते हुए सब देवता लोग बो
ले कि यहकार्य्य कैसेहोगा ५१ संसारके भारमें प्राप्तहुए देवताओंको विकल देखकर ब्रह्माजी बोले कि
मैंसारथीहूं यह कहकर रथके घोड़ोंको पकड़तेभये इसके अनन्तर देवता और गन्धर्वों ने सिंहनादके
समान प्रसन्न होकर शब्दकिया और ब्रह्माजी सारथी होकर रथको हाँकने लगे तब शिवजी महाराज
बोले कि मेरेही समान यह सारथी है ऐसा कहकर रथके ऊपर सवार होजाते भये ५३। ५४ जब
शिवजी रथपर सवारहुए तब शिवजी के भयसे घोड़ोंके घोंटू पृथ्वी परगिरे और मुखधूलमेंलगगये ५५

थवेदांस्तानभीरुग्रहयान्भयात्। उज्जहारपितॄनार्त्तान् सुपुत्रइवदुःखितान् ५६ ततःसिं
हरवोभूयो बभूवरथभैरवः। जयशब्दश्चदेवानां संबभूवार्णवोपमः ५७ तदोङ्कारमयंगृ
ह्य प्रतोदंवरदःप्रभुः। स्वयम्भूःप्रययौवाहाननुमन्त्र्ययथाजवम् ५८ ग्रसमानाइवाकाशं
मुष्णन्तइवमेदिनीम्। मुखेभ्यःससृजुःश्वासानुच्छ्वसन्तइवोरगाः ५९ स्वयम्भुवाचोद्यमा
नाश्चोदितेनकपर्दिना। व्रजन्तितेऽश्वाजवनाः क्षयकालइवानिलाः ६० ध्वजोच्छ्रयविनि
र्माणे ध्वजयष्टिमनुत्तमाम्। आक्रम्यनन्दीवृषभं तस्थौतस्मिञ्छिवेच्छया ६१ भार्गवाङ्गि
रसौदेवौ दण्डहस्तौरविप्रभौ। रथचक्रेतुरक्षेते रुद्रस्यप्रियकाङ्क्षिणौ ६२ शेषश्चभग
वान्नागः अनन्तोऽन्तकरोऽरिणाम्। शरहस्तोरथम्पाति शयनंब्रह्मणस्तदा ६३ यमस्तू
र्णसमास्थाय महिषञ्चातिदारुणम्। द्रविणाधिपतिर्व्यालं सुराणामधिपोद्विपम् ६४ अर
अतमयूरंनिकूजन्तंकिन्नरंयथा। गुहआस्थायवरदोयुगोपमरथंपितुः ६५ नन्दीश्वरश्च
भगवान्शूलमादायदीप्तिमान्। पृष्ठतश्चापिपाश्वाभ्यां लोकस्यक्षयकृद्यथा ६६ प्रमथा
श्चाग्निवर्णाभाः साग्निज्वालाइवाचलाः। अनुजग्मूरथंशार्थं नक्राइवमहार्णवम् ६७
भृगुर्भरद्वाजवसिष्ठगौतमाः क्रतुःपुलस्त्यःपुलहस्तपोधनाः। मरीचिरत्रिर्भगवानथाङ्गिराः
पराशरागस्त्यमुखामहर्षयः ६८ हरमजितमजंप्रतुष्टुवुर्वचनविशेषैर्विचित्रभूषणैः। रथ

उस समय उन वेदरूप घोड़ोंको शिवजी गिराहुआ जानके उनका उद्धार ऐसे करते भये जैसे कि श्रेष्ठ लायक पुत्र अपने पीड़ित और दुःखी पितरोंका उद्धार करतेहैं ५६ इसके पीछे रथका भयंकर शब्द सिंहके शब्दके समान होताभया और प्रलयके समुद्रोंके समान बड़ाघोर देवताओंके जय २ कारका ऊंचा शब्द होताभया ५७ तब वरदायी ब्रह्माजी ओंकार रूपी चाबुकको पकड़के बड़े वेगपूर्वक रथके घोड़ोंको प्रेरतेभये ५८ मानों आकाशको ग्रसलेंगे और पृथ्वीको चुरालेंगे ऐसे मुखोंके ऊंचे श्वासोंको छोड़तेहुए बड़ेभारी सर्पोंके समान गमन करते भये ५९ ब्रह्मासे और शिवजीसे प्रेरेहुए अश्व प्रलय कालके वायुके समान अतिशीघ्र वेगयुक्त होकर चलते भये ६० शिवजीकी उत्तम ध्वजाकी यष्टीको ग्रहण करके शिवजीकी आज्ञासे उसके ऊपर नन्दिकेश्वर स्थितहोता भया ६१ और सूर्य्य की समान कान्तिवाले बृहस्पति और शुक्र दोनों ग्रह शिवजीके प्रियकी इच्छा करते हुए रथके चक्रोंकी रक्षामें स्थितहुए ६२ जब ब्रह्माजी निद्रामेंहोंय तब शेषनागजी हाथमें बाण ग्रहणकरके रथकी रक्षाकरते भये ६३ धर्मराज दारुणभैंसेपर आरूढ़होकर आये कुवेर सर्पकी रक्षामें रहे कूजते हुए मोरकी सवारीपर स्वामिकार्त्तिक आये वह अपने पिताके रथकी रक्षा करतेभये ६४। ६५ नन्दीश्वर शूलको ग्रहण करके आये सबलोग आगेपीछे और बराबरसे ऐसेआये मानों लोकोंका नाश करेंगे ६६ अग्निके समान वर्णवाले शिवजीके गण ज्वलित पर्व्वतोंके शिखरोंके सदृश बड़े प्रकाशित होकर शिवजीके रथके पीछे प्राप्त होतेभये यहसब ऐसे विदितहोतेथे जैसे कि समुद्रमें बड़े भयानक ग्राहादिक होतेहैं ६७ भृगु, भरद्वाज, वसिष्ठ, गौतम, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, मरीचि, अत्रि, अंगिरा, और पराशरादिक ऋषि इन अजित शिवजीको उत्तम विचित्र वचनोंकी स्तुतियोंके द्वारा प्रसन्न करतेभये

स्त्रिपुरेसकाञ्चनाचलो व्रजतिसपक्षइवाद्रिरम्बरे ६९ करिगिरिरविमेघसन्निभाः सजल पयोदनिनादनादिनः। प्रमथगणाःपरिवार्य्यदेवगुप्तं रथममरापिययुःस्मदर्पयुक्ताः ७०म करतिमितिमिङ्गिलावृतः प्रलयइवातिसमुद्धतोऽर्णवः। व्रजतिरथवरोऽतिभास्वरो ह्यश निनिपातपयोदनिस्वनः ७१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेद्वात्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३२॥

(सूत उवाच) पूज्यमानेरथेतस्मिन्लोकैर्देवैरथेस्थिते। प्रमथेषुनदत्सूग्रं प्रवदत्सुच साध्विति १ ईश्वरस्वरघोषेण नर्दमानेमहावृषे। जयत्सुविप्रेषुतथा गर्ज्जत्सुतुरगेषुच २ रणाङ्गणात्समुत्पत्य देवर्षिर्नारदःप्रभुः। कान्त्याचन्द्रोपमस्तूर्णं त्रिपुरंपुरमागतः ३ औत्पा तिकन्तुदैत्यानां त्रिपुरेवर्त्ततेध्रुवम्। नारदश्चात्रभगवान्प्रादुर्भूतस्तपोधनः ४ आगतंज लदाभासं समेताःसर्वदानवाः। उत्तस्थुर्नारदंदृष्ट्वा अभिवादनवादिनः ५ तमर्घ्येणचपा द्येन मधुपर्केणचेश्वराः। नारदंपूजयामासुर्ब्रह्माणमिववासवः ६ तेषांसपूजांपूजार्हः प्रति गृह्यतपोधनः। नारदःसुखमासीनः काञ्चनेपरमासने ७ मयस्तुसुखमासीने नारदेनारदो द्भवे। यथार्हदानवैःसार्द्धमासीनोदानवाधिपः ८ आसीनंनारदंप्रेक्ष्य मयस्त्वथमहासुरः अब्रवीद्वचनंतुष्टो हृष्टरोमाननेक्षणः ९ औत्पातिकंपुरेऽस्माकं यथानान्यत्रकुत्रचित्। व

उस इसप्रकारसे चलनेवाले शिवजी के रथकी ऐसीशोभा होतीभई मानों परोंसे उड़ताहुआ सुवर्ण का सुमेरु पर्व्वत जाताहो ६८। ६९ हाथी पर्व्वत सूर्य्य और जल सहित मेघोंके गर्जनेके समान शब्दवाले इनसबकी समानरूप और कान्तिवाले शिवजी के गण देवताओंसे रक्षितकिये हुए रथको प्राप्त होते भये और अभिमानी देवता भी प्राप्त होते भये मकर मत्स्य और ग्राहादिकों से आवृत जैसा कि प्रलयका समुद्र होताहै वैसेही इन सबरक्षकों समेत बिजली समेत मेघके शब्दके समान गर्जना करनेवाला वह रथ अत्यन्त कान्तिसे युक्त होकर चलता भया ७०। ७१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वात्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३२॥

सूतजी कहते हैं सब लोकों से पूजित कियेहुए उसरथमें महादेवजी दृढ़तासेस्थित होगये और शिवजीके गण उग्रनाद करने लगे देवता साधु१ कहने लगे शिवजी के घोषसे नादिया गर्जने लगा उस समय उस रणभूमिमें चन्द्रमाकी समान कान्ति वाले नारद मुनिभी बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक त्रिपुरमें पहुंचे और दैत्योंके आगे प्रकट होगये ३।४ उनको देखकर मेघके समान कान्तिवाले सब दैत्य लोग उनके दर्शनके लिये खड़े होकर उनको नमस्कार करने लगे ५ और अर्घ पाद्य और मधुपर्क से नारद मुनिका पूजन ऐसे करते भये जैसे कि ब्रह्माजीका इन्द्रादिक देवताओं ने किया ६ पूजाके योग्य वह नारदजी पूजाको ग्रहण करके सुखपूर्व्वक सुवर्णके आसन पर बैठते भये ७ जब आनन्द- पूर्व्वक नारदजी आसन पर बैठगये तब मय दैत्यभी दानवों समेत सुखसे आसन पर बैठा ८ उस समय आनन्दपूर्व्वक आसन पर बैठे हुए नारदजी से बड़े प्रसन्न मुख होकर मय दैत्यने पूछा कि हेनारदजी जैसा कि आनन्द हमारे पुरमें है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं है आप भूत भविष्य वर्त्तमानके

तेतेवर्तमानज्ञ ! वदत्वंहिचनारद १० दृश्यन्तेभयदाःस्वप्ना भज्यन्तेचध्वजाःपरम्। वि
नाचवायुनाकेतुः पततेचतथाभुवि ११ अट्टालकाश्चनृत्यन्ते सपताकाःसगोपुराः। हिंस
हिंसेतिश्रूयन्ते गिरश्चभयदाःपुरे १२ नाहंबिभेमिदेवानां सेन्द्राणामपिनारद ! । मुक्त्वैक
वरदंस्थाणुं भक्ताभयकरंहरम् १३ भगवन्नास्त्यविदितमुत्पातेषुतवानघ ! । अनागत
मतीतञ्च भवान्जानातितत्त्वतः १४ तदेतन्नोभयस्थानमुत्पाताभिनिवेदितम् । कथय
स्वमुनिश्रेष्ठ ! प्रपन्नस्यतुनारद ! १५ इत्युक्तोनारदस्तेन मयेनामयवर्जितः । (नारद
उवाच) शृणुदानव ! तत्त्वेनभवन्त्यौत्पातिकायथा १६ धर्मेतिधारणेधातुर्माहात्म्येचै
चपठ्यते । धारणाच्चमहत्त्वेन धर्म्मएषनिरुच्यते १७ सइष्टप्रापकोधर्म्म आचार्य्यैरुपदि
श्यते । इतरश्चानिष्टफल आचार्य्यैर्नोपदिश्यते १८ उत्पथान्मार्गमागच्छेन्मार्गाच्चैव वि
मार्गताम् । विनाशस्तस्यनिर्दिश्य इतिवेदविदोविदुः १९ सस्वधर्म्मरथारूढः सहैभिर्मत्त
दानवैः । अपकारिपुदेवानां कुरुषेत्वंसहायताम् २० तदेतान्येवमादीनि उत्पातावेदिता
नि च । वैनाशिकानिदृश्यन्ते दानवानांतथैवच २१ एषरुद्रःसमास्थाय महालोकमयंरथ
म् । आयातित्रिपुरंहन्तुंमय ! त्वामसुरानपि २२ सत्वंमहोजसंनित्यं प्रपद्यस्वमहेश्वरम्।
यास्यसेसहपुत्रेण दानवैःसहमानद ! २३ इत्येवमावेद्यभयं दानवोपस्थितंमहत् । दान

ज्ञाताहो जो दूसरे किसी स्थानमें होय उसको आप बताइये ९।१० परन्तु हेमुने यह क्या बातहै कि भयकारी स्वप्न दीखते हैं विनावायुके ध्वजा टूटती है पताका पृथ्वी पर गिरती है ११ स्थान के चौबारे पताका और द्वार यह सब नृत्य करते दीखते हैं और इस पुरमें मारो२ ऐसा भयानक शब्द सुनते हैं १२ हेनारद मैं इन्द्रादिक सब देवताओं से नहीं डरताहूं भक्तोंके अभय करने वाले एक शिवजीके विना मैं किसी से नहीं डरताहूं १३ हे भगवन् आपसे कोई उत्पात छुपा नहीं है आप अपनी तत्त्व दृष्टिसे तीनोंकालके वृत्तान्तोंको जानते हो १४ इसी हेतुसे हमने इसभयके स्थानको उत्पात कहाहै हेमुनियों में श्रेष्ठ मुझ शरणागत से उस उत्पातको कहिये १५ यह मयदैत्यके वचन सुनकर नारदजी बोले हेमय तुम तत्त्वसे अपनी सब उत्पत्तिका वृत्तान्तसुनो १६ कि धर्मधातुधारण अर्थमें और माहात्म्य अर्थमें वर्त्तताहै इस हेतुसे धारण करने से और महत्त्वकरने सेही उसको धर्म कहते हैं १७ सो वह धर्म आचार्य्योंने इष्ट कहाहै इसके विपरीत अधर्म अनिष्ट फलका देनेवाला है वह आचार्य्योंने नहीं कहाहै १८ जो कोई उत्पथ मार्गसे उत्तम मार्गमें आताहै और उत्तममार्ग से कुमार्ग में चलने लगजाताहै उनका नाश होजाताहै यह वेदज्ञ लोगोंने कहाहै १९ सो तुम अपने धर्ममें आरूढ होकर भी इनमदोन्मत्त दानवोंके कारण से तिरस्कारको प्राप्त होजाओगे इन दानवोंसे तुम्हारी कुछ सहायता न होगी और जो तुमने स्वप्नमें उत्पात देखेहैं वह सब नाश करनेवाले हैं अर्थात् यहसब उत्पात सबदानवों समेत तुम्हारे नाशके हेतुहैं २०।२१ यह रुद्र महादेवजी छन्नरूपी रथमें बैठकर तेरे त्रिपुर और सबदैत्यों समेत तुझको नाश करनेको आते हैं २२ सोतुम अपना भला चाहतेहो तो अपने सब परिवार पुत्रपौत्रादि और दैत्यों समेत होके महादेवजीकी शरण

वानांपुनर्देवो देवेशपदमागतः २४ नारदेतुमुनौयाते मयोदानवनायकः । शूरसंमतमित्ये वंदानवानाहदानवः २५ शूराःस्थजातपुत्राःस्थ कृतकृत्याःस्थदानवाः । युध्यध्वंदेवतैः सार्द्धं कर्तव्यंचापिनोभयम् २६ जित्वावयंभविष्यामः सर्वेऽमरसभासदः । देवांश्चसेन्द्रकान्हत्वालोकान्भोक्ष्यामहेसुराः २७ अट्टालकेषुचतथा तिष्ठध्वंशस्त्रपाणयः । दंशितायुद्धसज्जाश्च तिष्ठध्वंप्रोद्यतायुधाः २८ पुराणित्रीणिचैतानि यथास्थानेषुदानवाः । तिष्ठध्वंलङ्घनीयानि भविष्यन्तिपुराणिच २९ नभोगतास्तथाशूरा देवताविदिताहिवः । ताःप्रयत्नेनवार्याश्च विदार्याश्चैवसायकैः ३० इतिदनुतनयान्मयस्तथोक्त्वा सुरगणवारणवारणेवचांसि । युवतिजनविषण्णमानसंतत् त्रिपुरपुरंसहसाविवेशराजा ३१ अथरजतविशुद्धभावभावो भवमभिपूज्यदिगम्बरंसुगीर्भिः । शरणमुपजगामदेवदेवं मदनार्यन्धकयज्ञदेहघातम् ३२ मथमभयपदैषिणंप्रपन्नं नकिलबुबोधततीयदीप्तनेत्रः । तदभिमतमदान्ततःशशाङ्की सचकिलनिर्भयएवदानवोऽभूत् ३३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेत्रयस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३३ ॥

(सूत उवाच) ततोरणेदेवबलं नारदोऽभ्यगमत्पुनः । आगत्यचैवत्रिपुरात्सभायामास्थितःस्वयम् १ इलावृतमितिख्यातं तद्वर्षविस्तृतायतम् । यत्रयज्ञोबलेर्वृत्तोबलिर्यत्रचसंयतः २ देवानांजन्मभूमिर्या त्रिषुलोकेषुविश्रुता । विवाहाःक्रतवश्चैव जातकर्मादिकाःक्रियाः ३ देवानांयत्रवृत्तानि कन्यादानानियानिच । रेमेनित्यंभवोयत्र सहायैःपार्षदैर्गणैः ४

में प्राप्त होजाओ २३ इस प्रकारसे नारदमुनि सब दानवोंको भय दिखाकर देवताओंके स्थानको चलेगये नारद मुनिके चलेजानेपर मय दैत्यने सब शूरवीर दानवोंको यह सलाह बताई कि हेवीर पुत्रो तुम अब कृतकृत्यहुए देवताओंके साथ युद्धकरो और कुछ भी भय मतकरो तुमको कभी भयकरना न चाहिये २४ । २६ हमसबदेवताओंको जीतकर स्वर्गकी सभामें प्राप्त होवेंगे और इन्द्र समेत सब देवताओंको मारकर सब लोकोंको भोगेंगे २७ हाथोंमें शस्त्रलेके अपनी २ अटारियोंपर चढ़जाओ अपने कवच पहनकर युद्धमें खड़ेहोजाओ २८ हे दैत्यो इन तीनों पुरोंमें अपने २ स्थानोंपर चढ़जाओ अपना स्थाननहीं छोड़ना चाहिये २९ आकाशमें आतेहुए देवताओंको तुम जानजाओगे उन देवताओंको तुम अपने बाणोंके प्रहारोंसे यत्नपूर्वक निवारण करनेको योग्यहो ३० मय इसप्रकार का वचन सब दानवोंसे कहकर स्त्रियोंकी चिन्तासे दुःखितचित्त होकर पुरमें प्रवेश करता भया ३१ फिर मय दैत्य चाँदीके समान स्वच्छहो कामादिकोंके शत्रु शिवजीको सुन्दर वचनोंसे पूजकर उन्हीं महादेवजीकी शरणमें प्राप्तहुआ ३२ उस समय दैत्यके अभिमानसे क्रोधयुक्त तीसरे नेत्रकी प्रज्वलित अग्निसे युक्तहोकर शरणागत और अभय पदके प्राप्त होनेकी इच्छा करनेवाले मय दैत्यको नहीं जानते भये और वह दैत्य निर्भय होजाता भया ३३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रयस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३३ ॥

सूतजीबोले इसके पीछे नारद मुनि रणभूमिमें आकर देवताओंकी सभामें प्राप्त होतेभये १ और

लोकपालाःसदायत्र नस्थुर्मेरुगिरौयथा। मधुपिङ्गलनेत्रस्तु चन्द्रावयवभूषणः। देवानाम धिपंप्राह गणपांश्चमहेश्वरः ५ वासवैतदरीणांते त्रिपुरंपरिदृश्यते। विमानैश्चपताकाभि र्ध्वजैश्चसमलंकृतम् ६ इदंवृत्तमिदंख्यातं वह्निवद्भृशतापनम्। एतेजनागिरिप्रख्याः सकुण्डलकिरीटिनः ७ प्राकारगोपुराट्टेषु कक्षान्तेदानवाःस्थिताः। इमेचतोयदाभासा दनुजाविकृताननाः ८ निर्गच्छन्तिपुरोदैत्याः सायुधाविजयैषिणः ९ सत्वंशरशतैःसार्द्धं ससहायोवरायुधः। सहद्भिर्मामकैर्भृत्यैर्व्यापादयमहासुरान् १० अहंचरथवर्येण निश्चलाचलवत्स्थितः। पुरःपुरस्यरन्ध्रार्थीस्थास्यामिविजयायवः ११ यदातुपुष्ययोगेन एकत्वंस्थास्यतेपरम्। तदैतन्निर्दहिष्यामि शरेणैकेनवासव! १२ इत्युक्तोवैभगवता रुद्रेणेहसुरेश्वरः। ययौतत्त्रिपुरंजेतुं तेनसैन्येनसंवृतः १३ प्रक्रान्तरथभीमैस्तैः सदेवैःपार्षदाङ्गणैः। कृतसिंहरवोपेतैरुन्नच्छद्भिरिवाम्बुदैः १४ तेननादेनत्रिपुराद्दानवायुद्धलालसाः। उत्पत्य दुद्रुवुश्चेलुः सायुधाःखेगणेश्वरान् १५ अन्येपयोधरारावाः पयोधरसमावभुः। ससिंहनादंवादित्रं वादयामासुरुद्धताः १६ देवानांसिंहनादश्च सर्वतूर्यरवोमहान्। ग्रस्तोभूद्दैत्यनादैश्च चन्द्रस्तोयधरैरिव १७ चन्द्रोदयात्समुद्भूतः पौर्णमासइवार्णवः। त्रिपुरंप्रभव

जो बड़े विस्तारवाला इलावृत नाम खण्ड बलिराजाका यज्ञस्थान जहाँ राजाबलि बाँधागयाथा वही देवताओंकी जन्मभूमि त्रिलोकीमें प्रसिद्ध है जिसमें कि विवाहयज्ञ और जातकर्मादिक क्रिया होतीहैं देवताओंके व्रतहोतेहैं सब कन्यादान करतेहैं अपने गणोंसमेत शिवजी नित्य विहारकरतेहैं २।४ और सुमेरु पर्वतपर लोकपाल स्थितहोकर रहतेहैं वहाँदेवताओंके अधिपति शिवजी देवताओंसे और अपने गणोंसे यह वचन बोले कि हे इन्द्र यह शत्रुओंका त्रिपुर दिखाई देताहै यहत्रिपुर विमान ध्वजा और पताकादिकोंसे युक्तहै और यह अग्निके समान देदीप्यमान वृत्रासुरहै और यह पर्वताकार मुकुट कुंडलोंको धारण कियेहुए गढ़द्वार और अटारी इत्यादिकोंपर खड़ेहुए दैत्यलोग दिखते हैं यह मेघके समान आकार वाले हाथोंमें शस्त्रलिये महाविकृत मुख जीतनेकी इच्छा करने वाले दैत्यलोग गमन करतेहैं सो तुम मेरे भृत्योंसे युक होकर अपने असंख्य शस्त्रोंसे दैत्योंको दूरकरो ५।१० मैं उत्तमरथके द्वारा निश्चलाचल पर्वतपर स्थितहोके इसपुरके छिद्रको देखूंगा और तुम्हारी विजय करूंगा ११ जब पुष्ययोग करके यह तीनों पुर एक स्थानपर मिलेंगे तब एकही बाणसे मैं इसत्रिपुरको दग्धकर दूंगा १२ देवेन्द्र शिवजीके इस वचनको सुनकर अपनी सेनाको साथ लेकर उस पुरके विजय करने के लिये प्रस्थान करता भया अर्थात् इन्द्र अपने भयंकर देवता और शिवजीके पार्षदों समेत होकर जबचला उससमय देवता मेघोंके समान गर्जने और सिंहों के समान शब्दकरने लगे १३।१४ उस शब्दको सुनकर युद्धकी लालसावाले दैत्य त्रिपुरसे निकसकर आकाशमें दौड़तेहुए आये १५ बहुत से दैत्य मेघके समान गर्जनाकर मदोन्मत्त होकर सिंहके नादोंके समान बाजा बजाने लगे १६ देवताओं की भेरियों के शब्द जो सिंहके शब्दों के समान हो रहेथे वह दैत्यों के शब्दोंसे ऐसे नष्ट होगये जैसे कि बादलोंमें चन्द्रमा नष्टहोजाताहै और जैसे चन्द्रमाके उदयहोने पर समुद्र चढ़ताहै इसी प्रकार

तदद्भुतमरूपमहासुरैः १८ प्राकारेषुपुरेतत्र गोपुरेष्वपिचापरे । अट्टालकान्समारुह्य के
चिन्नलितवादिनः १९ स्वर्णमालाधराःशूराः प्रभासितकराम्बराः । केचिन्नदन्तिदनुजा
न्तोयमुक्ताइवाम्बुदाः २० इतश्चेतश्चधावन्तः केचिद्धूतवाससः । किमेतदितिपप्रच्छु
रन्योन्यंगृहमाश्रिताः २१ किमेतन्नैवजानामि ज्ञानमन्तर्हितंहिमे । ज्ञास्यसेनन्तरेणेति
कालोविस्तारतोमहान् २२ सोऽप्यसौपृथिवीसारं सिंहःचरथमास्थितः । तिष्ठतेत्रिपुरंपीड्य
देहंव्याधिरिवोच्छ्रितः २३ यएषोऽस्तिसएषोऽस्तु काचिन्तासंभ्रमेसति । एहिमायुधमादा
य क्षमेपृच्छाभविष्यति २४ इतितेऽन्योन्यमाविद्धा उत्तरोत्तरभाषिणः । आसाद्यपृच्छन्ति
तदा दानवास्त्रिपुरालयाः २५ तारकाख्यपुरेदैत्यास्तारकाख्यपुरःसराः । निर्गताःकुपितास्तूर्णं
विलादिवमहोरगाः २६ निर्द्धावन्तस्तुतेदैत्याः प्रमथाधिपयूथपैः । निरुद्धागजराजानो यथा
केसरियूथपैः २७ दर्पितानांततश्चैषां दर्पितानामिवाग्निनाम् । रूपाणिजज्वलुस्तेषामग्नी
नामिवधम्यताम् २८ ततोऽवहन्तिचापानि भीमनादानिसर्वशः । निकृष्यजघ्नुरन्योन्यमिषु
भिःप्राणभोजनैः २९ मार्जारमृगभीमास्यान्पार्षदान्विकृताननान् । दृष्ट्वादृष्ट्वाहसन्तुर्वैदान
वारूपसम्पदा ३० बाहुभिःपरिघाकारैः कृष्यतांधनुषांशराः । भटवर्मसुविविशुस्तडागानी

दैत्योंके उदय होने से त्रिपुर दुर्गका भयंकर रूप होजाता भया १७।१८ कुछ दैत्य लोग गढ़ द्वार और अपने २ स्थानोंपर चढ़े हुए बाजोंको बजाते थे कितनेही अटारियों पर और कितनेही चलते हुए अपने बाजोंको बजातेभये १९ कितनेही सुवर्णमाला धारण कियेहुए शोभित हाथोंवाले कितनेही मेघोंके समान नाद करने वाले होकर भी बाजे बजाने लगे कितनेही वस्त्रोंको कंपातेहुए जहां तहां भागतेहुए फिरनेलगे कितनेही अपने २ घरोंमें आकर परस्पर पूछतेहुए कि यहक्याहै २०।२१ किसी ने कहा कि मैं नहीं जानता मेरे भीतरका ज्ञान आच्छादित होगया कुछकाल पीछे सब जाना जायगा यह कालबड़ा विस्तार कर रहाहै २२ और सुमेरु पर्वत पर सिंहरूपसे रथमें बैठाहै त्रिपुर के पीड़ित करनेकेनिमित्त इसप्रकारसे स्थितहुआहै जैसे कि शरीरके पीड़ादेनेको रोगशरीरमें स्थित होताहै २३ जो होयसोहोय हमको संभ्रम क्यों करनाचाहिये क्या चिन्ताहै तुमशस्त्रलेकरआओ मुझसे क्या पूछनाचाहतेहो २४ त्रिपुरवासी दैत्य इसप्रकार संभाषणकरके परस्परपूछनेलगे कि तारकासुरके पुरवासी दैत्य तारकासुरसमेत क्रोधकरके बड़ीशीघ्रतापूर्वक पुरसे ऐसे निकलते भये जैसेकि क्रोधयुक्तसर्प अपने२ बिलों से शीघ्रतापूर्वक निकलतेहैं २५।२६ उनभागतेहुए दैत्योंको शिवजी के गणोंने ऐसेरोकलिया जैसे कि सिंहोंकेगण बड़े २ हाथियोंको रोकलेतेहैं २७ तब अभिमानकरनेवाले धुमायेहुए अग्नियोंकेसमान इनदेवता और दैत्योंकेरूप देदीप्यमानहोतेभये २८ इसके अनन्तर बहुतसे धनुषधारी भयंकर शब्दकरतेहुए प्राणोंके नाशकारक बाणोंको परस्परमें खींचकर मारतेभये २९ दैत्यलोग उनबिलाव और मृगोंके समान बिकराल मुखवाले शिवजीके गणोंको देख २ कर ऊंचे स्वरोंसे हँसनेलगे ३० मूसलोंकेसमान आकारवाली भुजाओंसे खैंचेहुए धनुषों से बाण शूरवीरोंकेशरीरों में ऐसेप्रवेश करजाते भये जैसेकि तड़ागों में मत्स्य और वृक्षों में पक्षी घु

चपार्षिणः ३१ मृता स्थक्नुयास्येथ हनिष्यामोनिवर्त्तताम्। इत्येवंपरुषाण्युक्त्वा दानवाःपा
र्षदर्षभाम् ३२ विभिदुःसायकैस्तीक्ष्णैः सूर्य्यपादाइवाम्बुदाम् । प्रमथाअपिसिंहाक्षाः सिंह
विक्रान्तविक्रमाः । खण्डशैलशिलावृक्षैर्विभिदुर्दैत्यदानवान् ३३ अम्बुदैराकुलमिव हं
साकुलमिवाम्बरम् । दानवाकुलमत्यर्थं तत्पुरंसकलंबभौ ३४ विकृष्टचापादैत्येन्द्राः सृज
न्निशरदुर्दिनम् । इन्द्रचापांकितोरस्का जलदाइवदुर्दिनम् ३५ इषुभिस्ताड्यमानास्ते भू
योभूयोगणेश्वराः । चक्रुस्तेदेहनिर्यासं स्वर्णधातुमिवाचलाः ३६ तथावृक्षशिलावज्रशूल
पट्टिपरश्वधैः । चूर्ण्यन्तेऽभिहतादैत्याःकाचाष्टङ्कहताइव ३७ चन्द्रोदयात्समुद्भूतः पौर्ण
मास्इवार्णव । त्रिपुरंप्रभवत्तद्दुर्गीमरूपमहासुरैः ३८ तारकाक्षोजयत्येषइतिदैत्याअघो
षयन् । जयतीन्द्रश्चरुद्रश्च इत्येवचगणेश्वराः ३९ वारितादारिताबाणैर्योधास्तस्मिन्ब
लोभये। निःश्वनन्तोऽम्बुसमये जलगर्भाइवाम्बुदाः ४० करैश्छिन्नैःशिरोभिश्च ध्वजैश्छ
त्रैश्चपाण्डुरैः । युद्धभूमिर्भयवती मांसशोणितपूरिता ४१ व्योम्निचोत्प्लुत्यसहसा ताल
मात्रंवरायुधैः । दृढाहता पतन्पूर्वं दानवाःप्रमथास्तथा ४२ सिद्धाश्चाप्सरसश्चैव चार
णाश्चनभोगताः। दृढप्रहारंहर्षिताःसाधुसाध्वितिचुक्रुशुः ४३ अनाहताश्चवियति देव

जातेहैं ३१ हम गयेहैं कहाँ जाओगे तुम को मारेंगे हटजाओ ऐसे२ कठोर वचन दैत्य लोग शिवजी के पार्षदों से कहते भये ३२ वह दैत्य शिवगणों को तीक्ष्ण बाणोंसे ऐसे वेधते भये जैसे कि बादलों को सूर्य्यकी किरणें भेदती हैं सिंहके समान नेत्रवाले महा पराक्रमी शिवके पार्षदभी शिला वृक्षादिकों करके दानवों को मारते भये जैसे कि मेघ और हंसोंसे संकुल आकाश होताहै उसी प्रकार दानवोंसे आकुल संपूर्ण त्रिपुर होताभया ३३।३४ जैसे कि इन्द्रधनुषसे शोभितहुए मेघ दुर्दिनको भेदन कर-तेहैं उसी प्रकार सब दैत्य बाणोंको खींचकर बाणरूपी दुर्दिन को मारतेथे ३५ बाणों करके ताडित कियेहुए गणेश्वर देहोंको ऐसे त्याग करते थे जैसे कि पर्व्वतों के समूह सुवर्ण धातुको अलग काढ देते हैं ३६ इसके पीछे वृक्ष शिला, वज्र, शूल, पट्टिश, फरसे और अनेक शस्त्र विशेषों से हतहुए दैत्यों के शरीर ऐसे चूर्ण होजाते भये जैसे कि पत्थर आदिक वस्तुओं से काच चूर्ण होजाते हैं ३७ जैसे कि चन्द्रमाके उदयहोनेसे समुद्र उभलताहै उसी प्रकार भयकर रूप महाअसुरों से त्रिपुर दुर्ग उभलताभया ३८ फिर दैत्योंने तो पुकारा कि यह तारकासुरजीतता है और गणेश्वरोंने पुकारा कि इन्द्र और शिवजीततेहैं ३९ उन दोनों सेनाओं में बाणोंसे विदारित हुए योद्धा ऐसे श्वास लेतेभये जैसे कि जलसे भरेहुए मेघश्वास लेतेहैं ४० कटेहुए हाथ, शिर, ध्वजा, छत्रादिकों से मांसरुधिरसे भरी हुई वह रणभूमि महा भयकारी होजातीभई ४१ वह सब गणेश्वर हाथोंसे ताल बजाकर आ-काशमें उछलते हुए फिर श्रेष्ठ शस्त्रों को भी धारण करते भये उस समय जब सब प्रकार से हतहो-कर दानव गिरते भये तब गणेश्वर, सिद्ध, अप्सरा और चारणादिक यह सब आकाशमें स्थित होकर प्रहार कर२ प्रसन्नहो२ साधुसाधु शब्द करतेभये ४२ । ४३ आकाश में देवताओं के नगाड़े बजे वह समय ऐसा शोभित मालूम होताथा जैसे कि मेघकेगर्जनसे क्रोधयुक्त कुत्तोंके भोंकनेपर शोभा होती

दुन्दुभयस्तथा। नदन्तोमेघशब्देन सरमाइवरोषिताः ४४ तेतस्मिंस्त्रिपुरेदैत्या नद्यःसिन्धुपताविव। विशन्तिक्रुद्धवदना वल्मीकमिवपन्नगाः ४५ तारकाक्षपुरेतस्मिन्सुराःशूराः समन्ततः। सशस्त्रानिपतन्तिस्म सपक्षाइवभूधराः ४६ योधयन्तित्रिभागेन त्रिपुरेतुगणेश्वराः। विद्युन्मालीमयश्चैव भग्नौचद्रुमवद्रणे ४७ विद्युन्मालीसदैत्येन्द्रो गिरीन्द्रसदृशद्युतिः। आदायपरिघंघोरं ताडयामासनन्दिनम् ४८ सनन्दीदानवेन्द्रेण परिघेणादृढाहतः। भ्रमतेमधुनाव्यक्तः पुरानारायणोयथा ४९ नन्दीश्वरेगतेतत्र गणपाख्यातविक्रमाः। दुद्रुवुर्जातसंरम्भा विद्युन्मालिनमासुरम् ५० घण्टाकर्णःशंकुकर्णौ महाकालश्चपार्षदाः। ततश्चसायकैःसर्वान् गणपाञ्गणपाकृतीन् ५१ भूयोभूयःसविव्याधगणेश्वरसंहत्तमान्। भित्वाभित्वारुरावोच्चैर्नभस्यम्बुधरोयथा ५२ तस्यारम्भितशब्देन नन्दीदिनकरप्रभः। संज्ञांलभ्यततःसोऽपि विद्युन्मालिनमाद्रवत् ५३ रुद्रदत्तंतदादीप्तं दीप्तानलसमप्रभम्। वज्रंवज्रनिभाङ्गस्य दानवस्यससर्जह ५४ तन्नन्दिभुजनिर्मुक्तं मुक्ताफलविभूषितम्। पपातवक्षसितदावज्रंदैत्यस्यभीषणम् ५५ सवज्रंनिहतोदैत्यो वज्रसंहननोपमः। पपातवज्राभिहतः शक्रेणाद्रिरिवाहतः ५६ दैत्येश्वरंविनिहतं नन्दिनाकुलनन्दिना। चुक्रुशुर्दानवाःप्रेक्ष्यदुद्रुवुश्चगणाधिपाः ५७ दुःखामर्षितरोषास्ते विद्युन्मालिनिपातिते। द्रुमशैल

है ४४ उस समय वह शेष बचे हुए दैत्य त्रिपुर में ऐसे प्रवेश करते भये जैसे कि समुद्रमें नदी और बिलोंमें सर्प प्रवेश करतेहों ४५ उस तारकाक्ष पुरमें सब दैत्य शस्त्रों को धारण करके ऐसे पड़तेभये जैसे कि सपक्ष पर्व्वत उड़२ कर गिरतेहों ४६ उसपुरमें जाकर गणेश्वर लोग तीन स्थानमें युद्धकरते भये तब उसरणमें मय दैत्य और विद्युन्माली यह दोनों भी आतेभये उस समय हस्ती के समान स्थूल शरीर वाले विद्युन्माली ने मूसलको ग्रहण करके शिवजीके नन्दीको ताड़न किया उस मूसल के प्रहार से नन्दी ऐसे भ्रमण करता भया जैसे कि नारायण के प्रहार से मधुदैत्य भ्रमता हुआ था ४७। ४९ फिर वहाँ से नन्दिकेश्वर चला गया तब बड़े प्रसिद्ध पराक्रम वाले शिवजीके गणवेगसे दौड़तेहुए विद्युन्माली दैत्यके पासआये ५० अर्थात् घंटाकर्ण, शंकुकर्ण, और महाकाल यहतीन पार्षदआये इनसबको विद्युन्मालीदैत्यने बाणोंसेवेधा ५१ और गणेशादिक गणेश्वरोंको बहुत पीड़ादेकर मेघकी गर्जनाकेसमान भयंकर शब्दकरनेलगा ५२ फिर तो उसके उच्चस्वर के शब्दोंकरके सूर्यके समान कान्तिवाले नन्दिकेश्वरको संज्ञाहुई तब फिर वहभी विद्युन्माली दैत्यके सन्मुख आया ५३ और शिवजीके दियेहुए अग्निके समान कान्तिवाले वज्रको उसने दैत्यके ऊपरछोड़ा ५४ तब नन्दिकेश्वरके हाथसे छूटाहुआ मोतियोंसे भूषित महाभयंकर वह वज्र उसदैत्यकी छातीमें लगताभया ५५ उसवज्रके लगतेही वज्रके समान कठोर शरीरवाला वह दैत्यपृथ्वीपरऐसे गिरताभया जैसे कि इन्द्रके वज्रसे हतहुआ पर्व्वत गिरताहै ५६ फिर नन्दिकेश्वरसे हतहुए विद्युन्माली दैत्यको अन्य दानव देखकर पुकारे और सेनाओंके सब स्वामी भागे ५७ तब तो महादुःख के क्रोधसे युक्त होकर दैत्य लोग शिवजीके पार्षदोंपर वृक्ष और पर्व्वतोंकी ऐसे वर्षा करते भये जैसे

महावृष्टिंपयोदाःसस्रुजुर्यथा ५८ तेपीड्यमानागुरुभिर्गिरिभिश्चगणेश्वराः। कर्तव्यंन विदुःकिञ्चिदुवन्ध्यमाधार्मिकाइव ५९ ततोऽसुरवरः श्रीमांस्तारकाक्षःप्रतापवान्। सतरूणांगिरीणांवै तुल्यरूपधरोविभौ ६० भिन्नोत्तमाङ्गाङ्गगणपा भिन्नपादाङ्किताननाः। विरेजुभुजगामन्त्रैर्वार्यमाणायथातथा ६१ मयेनमायावीर्येणवध्यमानागणेश्वराः। भ्रमन्तिबहुशब्दालाःपञ्जरेशकुनाइव ६२ तथासुरवरःश्रीमांस्तारकाक्षः प्रतापवान्। ददाहचबलंसर्वं शुष्केन्धनमिवानलः ६३ तारकाक्षेणवार्यन्ते शरवर्षैस्तदागणाः। मयेनमायानिहतास्तारकाख्येणचेपुभिः ६४ गणेशाविधुराजाता जीर्णमूलायथाद्रुमाः ६५ भूय.सम्पततेचाग्निर्ग्रहान्ग्राहान्भुजङ्गमान्। गिरीन्द्रांश्चहरीन्व्याघ्रान् वृक्षान्सृमरवर्णकान् ६६ शरभानष्टपादांश्चआपःपवनमेवच। मयोमायाबलेनैव पातयत्येवशत्रुषु ६७ तेतारकाक्षेणमयेन मायया संमुह्यमानाविवशागणेश्वराः। नशक्नुवंस्तेमनसापिचेष्टितुं यथेन्द्रियार्थामुनिनाभिसंयताः ६८ महाजलाग्न्यादिसकुञ्जरोरगैर्हरीन्द्रव्याघ्रर्क्षतरक्षुराक्षसैः। विबाध्यमानास्तमसाविमोहिताःसमुद्रमध्येष्विवगाधकाङ्क्षिणः६९संमर्द्यमानेषु गणेश्वरेषु सन्नर्दमानेषुसुरेतरेषु। ततःसुराणांप्रवराभिरक्षितुं रिपोर्बलंसंविविशुः सहायुधाः ७० यमोगदास्त्रो वरुणश्चभास्करस्तथाकुमारोऽमरकोटिसंयुतः। स्वयंचशक्रःसितनागवाहनःकुलीशपा

कि जलकी वर्षा मेघ करते हों ५८ बहुत भारी २ पर्वतों से पीड़ित हुए शिवजीके गणेश्वर कुछ कर्त्तव्यको भी भूलगये अर्थात् कुछ अपना करतव न करसके ५९ इसके अनन्तर तारकासुर दैत्य वृक्षों से युक्त पर्वताकार शरीर धारण करताभया ६० उस समय कटेहुए शिर चरण और मुखों वाले वह गणेश्वर ऐसे शोभितहुए जैसे कि मंत्रों से कीले हुए सर्प होते हैं ६१ मायाके पराक्रम वाले मयदैत्यसे बांधेहुए शिवजीके गण ऐसे भ्रमते भये जैसे कि बहुत शब्दोंवाले पक्षी पिंजरे में भ्रमते हैं ६२ और श्रीमान् तारकासुर दैत्य देवताओं की सेनाको ऐसे दग्ध करता भया जैसे कि प्रबलअग्नि सूखे इंधनको जलाताहै ६३ उस समय तारकासुर और मयदैत्यने बाणोंकी वर्षाकरके शिवजीके गणोंको महाहत करदिया तब शिवजीके गण ऐसे कांपने लगे जैसे कि जीर्णहोने वाले वृक्षवायुके वेगसे कंपायमान होते हैं ६४। ६५ फिर मयदैत्यकी मायाके बलसे वहां अग्नि उत्पन्न होता भया वह अग्नि देवता और शिवजीके गणों पर ग्रह,ग्राह, सर्प, पर्वत,सिंह, व्याघ्र, वृक्ष कटी हुई परोंवाली टीड़ी जल और वायु इन सबको छोड़ता भया ६६।६७ मयदैत्यकी मायासे मोहके द्वारा विवश हुए वह गणेश्वर दैत्योंके साथमन करके भी युद्ध करने को ऐसे समर्थ नहीं होते भये जैसे कि मुनियोंसे रोके हुए विषय अपनी२ सामर्थ्य से रहित होजाते हैं महा जल, अग्नि, हाथी, सर्प, सिंह, व्याघ्र, रीछ और राक्षस इनसे पीड़ित और अन्धकारसे मोहित हुए गणेश्वर ऐसे महा दुःखको प्राप्त होते भये जैसे कि थाहको ढूंढ़ता समुद्रमें डूबता हुआ पुरुष विकल होताहै ६८।६९ जब गणेश्वर पीड़ित होने लगे दैत्य शब्द करनेलगे तब देवताओंकी रक्षाके निमित्त शस्त्रोंको धारण किये हुए आगे कहे हुए गण प्राप्त हुए ७० गदाको धारण किये हुए धर्मराज, वरुण, सूर्य्य, देवता·

णिःसुरलोकपुङ्गवः ७१ सचोडुनाथःससुतोदिवाकरः ससान्तकस्त्र्यक्षपतिर्महाद्युतिः।
एतेरिपूणांप्रबलाभिरक्षितं तदाबलंसंविविशुर्मदोद्धताः ७२ यथावनंदर्पितकुञ्जराधिपा
यथानभःसाम्बुधरंदिवाकरः। यथाचसिंहैर्विजनेषुगोकुलं तथाबलंतत्त्रिदशैरभिद्रुतम् ७३
कृतप्रहारातुरदीनदानवं ततस्त्वभज्यन्तबलंहिपार्षदाः। स्वज्योतिषांज्योतिरिवोप्मवान्
हरिर्यथातमोघोरतरंनराणाम् ७४ विशान्तयामासयथासदैव निशाकरःसञ्चितशार्वरन्त
मः। ततोऽपकृष्टेचतमःप्रभावे अस्त्रप्रभावेचविवर्द्धमाने ७५ दिग्लोकपालैर्गणनायकै
श्च कृतोमहान्सिंहरवोमुहूर्तम्। संख्येविभग्नाविकराविपादाश्छिन्नोत्तमाङ्गाःशरपूरिता
ङ्गाः ७६ देवेतरादेववरैर्विभिन्नाः सीदन्तिपङ्केषुयथागजेन्द्राः। वज्रेणभीमेनचवज्रपाणिः
शक्त्याचशक्त्याचमयूरकेतुः ७७ दण्डेनचोग्रेणचधर्मराजः पाशेनचोग्रेणचवारिगोप्ता।
शूलेनकालेनचयक्षराजो वीर्येणतेजस्वितयासुकेशः ७८ गणेश्वरास्तेसुरसन्निकाशाः पू
र्णाहुतीसिक्तशिखिप्रकाशाः। उत्सादयन्तेदनुपुत्रवृन्दान्यथैवइन्द्राशनयःपतन्त्यः ७९ म
यस्तुदेवान्परिरक्षितारमुमात्मजंदेववरंकुमारम्। शरेणभित्त्वासहितारकासुतं सतारका
ख्यासुरमाबभाषे ८० कृत्वाप्रहारंप्रविशामिवीरं पुरंहिदैत्येन्द्रबलेनयुक्तः। विश्राममूर्ज
स्करमप्यवाप्य पुनःकरिष्यामिरणंप्रपन्नैः ८१ वयंहिशस्त्रक्षतवीक्षिताङ्गा विशीर्णशस्त्रध्व

ओंकी कोटिसे युक्त स्वामिकार्त्तिक, ऐरावत हाथीपर वज्रको हाथमें लिये इन्द्र ७१ और महाकान्ति
वाले नवग्रह यह सब मदोन्मत्त ग्रहों समेत वैरियों की सेनामें ऐसे प्रवेश करतेभये जैसे मदो-
न्मत्त हाथीवनको तोड़े और मेघवाले बादल में सूर्य्य चमकता होय उनके प्रवेश करतेही दैत्यों की
सेना ऐसे भागी जैसे कि निर्जन वनमें सिंहों के मारे गौएं भाजती चलीजाती हैं ७२ । ७३
प्रहारों से पीड़ितहुए दैत्योंको देवतालोग ऐसेदूर करदेतेभये जैसेकि बड़ेघोर अन्धकारको सूर्य्य दूर
करदेते हैं ७४ जैसेकि रात्रिके संचितहुए अंधेरेको चन्द्रमा दूर करदेताहै उसीप्रकार शिवजीकी कृपा
से दैत्यों के अन्धकाररूपी शस्त्रोंका प्रभाव दूरहोगया उससमय दिग्पाल, लोकपाल और गणेश्वरों
ने सिंहके शब्दके समान महानाद किया उसयुद्धमें सब दैत्यकटेहुए हाथपैर और शिरोंवाले बाणोंसे
भिदे अंगवाले होतेभये ७५।७६ देवताओंसे भेदन कियेहुए दैत्य ऐसेदुःख पातेभये जैसेकि कीचमें
फँसे हुए हाथी दुःखपाते हैं उसकालमें इन्द्रने वज्रसे ताड़न किया, स्वामिकार्त्तिकने अपनी शक्तिसे
७७धर्मराजने उग्रदंडसे, वरुणजीने फाँसीसे और कुबेरने अपने पराक्रमके द्वारा बड़ेतेजयुक्त त्रिशूल
से दैत्योंका नाशकिया ७८ वह गणेश्वरलोग पूर्णाहुति से प्रकाशित अग्निके समान देदीप्यमानहो-
कर युद्धमेंसे दैत्योंको भजातेहुए विद्युतोंके समान इधरउधर कड़कतेभये ७९ तब मयदैत्य देवताओं
के रक्षक स्वामिकार्त्तिकको बाणोंसे बेधकर तारकासुर दैत्यसे बोला ८० हे दैत्य अबमैं प्रहार करके
इस त्रिपुर में प्रवेशकरूंगा तू भी यहां पुरमें विश्रामकर फिर इन प्राप्त होनेवाले देवताओं से युद्ध
करेंगे ८१ हमशस्त्रों के लगने से कटेहुए अंगवाले होरहे हैं हमारे शस्त्र, ध्वजा और वाहनोंको सजो
यद्यपि यहसब शिथिल होरहे हैं तो भी सजो क्योंकि यहसब गणेश्वर लोग हमारे जीतने कीइच्छा

जवमेवाहाः। जयैषिणस्तेजयकाशिनश्च गणेश्वरालोकवराधिपाश्च ८२ मयस्यश्रुत्वादि वितारकाख्यो वचोऽभिकाङ्क्षन्क्षतजोपमाक्षः। विवेशतूर्णंत्रिपुरन्दितेःसुतैः सुतैरदित्या युधिनृद्धहर्षैः ८३ ततःसशङ्खानकभेरिभीमं ससिंहनादंहरसैन्यमावभौ। मयानुगंघोरग भीरगह्वरं यथाहिमाद्रेर्गजसिंहनादितम् ८४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेचतुस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३४॥

(सूत उवाच) मयःप्रहारंकृत्वातु मायावीदानवर्षभः। विवेशतूर्णंत्रिपुरमभ्रंनीलमिवाम्बरम् १ सदीर्घमुष्णंनिश्वस्य दानवान्वीक्ष्यमध्यगान्। दध्यौलोकक्षयेप्राप्ते कालंकाल इवापरः २ इंद्रोऽपिविभ्यतेयस्य स्थितोयुद्धेप्सुरग्रतः। सचापिनिधनंप्राप्तो विद्युन्माली महायशाः ३ दुर्गंवैत्रिपुरस्यास्य नसमंविद्यतेपुरम्। तस्याप्येषोनयःप्राप्तो नदुर्गंकारणं क्वचित्४कालस्यैववशेसर्वं दुर्गंदुर्गतरञ्चयत्। कालेक्रुद्धेकथंकालात्त्राणंनोऽद्यभविष्यति५ लोकेषुत्रिषुयत्किञ्चिद् बलंवैसर्वजन्तुषु। कालस्यतद्वशंसर्वमितिपैतामहोविधिः ६ अस्मिन्कःप्रभवोयोगोह्यसन्धार्यमितात्मनि। लङ्घनेकःसमर्थःस्यादृतेदेवंमहेश्वरम् ७ बिभेमिनेन्द्राद्वियमाद्वरुणान्नचवित्तपात्। स्वामीचैषान्तुदेवानां दुर्जयःसमहेश्वरः ८ ऐश्वर्यस्यफलंयत्तत् प्रभुत्वस्यचयत्फलम्। तदद्यदर्शयिष्यामि यावद्वीराःसमन्ततः ९ वापीममृततोयेन पूर्णांस्रक्ष्येवरौषधीः। जीविष्यन्तितदादैत्याः सञ्जीवनवरौषधीः १० इति

करहे हैं ८२ इसमयके वचनको तारकासुर दैत्य सुनकर शीघ्रही सब दैत्यों समेत पुरमें प्रवेश करता भया ८३ तब देवताओं की सेना में शंखढोल और भेरीआदिक का शब्द सिंहनादके समान होता भया वह ऐसाशब्दहुआ मानों हिमाचलपर्वत में सिंह और हाथी गर्जना कररहे हों ८४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुस्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३४॥

सूतजी बोले कि दानवोंमें उत्तम बड़ा मायावी मयनाम दैत्य देवतोंपर प्रहारकरके त्रिपुरमें ऐसे प्रवेश करगया जैसेकि नीले अम्बरमें नीलाबादल प्रवेश करजाता है १ फिर वह दैत्य बड़े २ दीर्घ श्वासोंको लेकर अपनेको दानवों के मध्यमें प्राप्तहुआ देखकर लोकके नाशमें कालका ध्यान करने लगा कि वह विद्युन्माली जो दूसरे कालके बराबरथा और जिसके भयसे वज्रधारी इन्द्रयुद्धसे हट कर जलोंमें स्थितहुआ था ऐसा महायशवाला भी होकर नाशको प्राप्तहोगया २।३ इस त्रिपुरनाम पुरके समान कोई गढ़नहीं है ऐसा विचारकर उससमय इस दैत्यको यह नीति प्राप्त हुई कि यहां कुछ यह पुरही कारण नहीं होसका है क्योंकि यहगढ़ और इस्से भी बड़े २ गढ़ यह सब कालही के वशीभूत हैं जब कि हमारे क्रोधसे कालही हमारा शत्रु है उस्से युद्धकैसे होसकाहै तीनों लोकों के जीवमात्रमें जो बल पराक्रमहै वह सब कालकेही आधीनहै यह ब्रह्माजीकी युक्त विधिहै ६ ऐसे कालमें कौनसा उद्योग सफल होसक्ताहै शिवजीके विना इसप्रबल कालको कौनउल्लंघनकर सकाहै ७ मैं इन्द्र, वरुण, यम और कुबेरादिकोंसे भी नहीं डरताहूं परन्तु जो काल इन सबकाभी स्वामी है उसकालका जीतनाबड़ा कठिनहै ८ मैं अब सब वीरोंके सन्मुख अपनी ईश्वरता, प्रभुता

सञ्चिन्त्यबलवान् मयोमायाविनांवरः। माययासमृजेवापीं रम्भामिवपितामहः ११ द्वियो
जनायतांदीर्घां पूर्णयोजनविस्तृताम्। आरोहसंक्रमवतीं चित्ररूपांतथैवच १२ इन्दोः
किरणकल्पेन मृष्टेनामृतगन्धिना। पूर्णांपरमतोयेन गुणपूर्णामिवाङ्गनाम् १३ उत्पलैःकु
मुदैःपद्मैर्वृतांकादम्बकैस्तथा। चन्द्रभास्करवर्णाभैर्भीमैरावरणैर्वृताम् १४ खगैर्मधुररावै
श्च चारुचामीकरप्रभैः। कामैषिभिरिवाकीर्णां जीवानामरणीमिव १५ तांवापींसृज्यसम
यो गङ्गामिवमहेश्वरः। तस्यांप्रक्षापयामास विद्युन्मालिनमादितः १६ सवाप्यांमज्जि
तोदैत्यो देवशत्रुर्महाबलः। उत्तस्थाविन्धनैरिद्धः सद्योहुतइवानलः १७ मयस्यचाञ्जलिं
कृत्वा तारकाख्योऽभिवादितः। विद्युन्मालीतिवचनं मयमुत्थायचाब्रवीत् १८ कनन्दीस
हरुद्रेण वृतःप्रमथजम्बुकैः। युद्धामोनन्दिनंपीड्य दयादेहेषुकाहिनः १९ अन्वास्येवच
रुद्रस्य भवामःप्रभविष्णवः। तैर्वाविनिहतायुद्धे भविष्यामोयमाशनाः २० विद्युन्माले
र्निशम्यैतन्मयोवचनमूर्जितम्। तंपरिष्वज्यसाद्रांक्ष इदमाहमहासुरः २१ विद्युन्मालिन्न
मेराज्य मभिप्रेतन्नजीवितम्। त्वयाविनामहाबाहो! किमन्येनमहासुर! २२ महामृतम
यीवापी ह्येषामायाभिरीश्वर!। सृष्टादानवदैत्यानां हतानांजीववर्द्धिनी २३ दिष्ट्यात्वांदे

और पराक्रमका जो फलहै वह अच्छेप्रकारसे दिखाऊँगा मैं एक अमृत जलसेभरीहुई बावड़ी बना-
ऊंगा और ऐसी श्रेष्ठ औषधीको भी बनाऊंगा जिस्से कि मेरे सब दैत्य उस संजीविनी औषधीसे जी-
वेंगे९।१०उस महामाया रचने वालोंमें श्रेष्ठ बड़े बलवान् मयदैत्यने ऐसा विचारकर अपनी माया
करके आठकोसलंबी चारकोस चौड़ी सुन्दर सीढ़ियों वाली अनेकरूपयुक्त चन्द्रमाकी किरणोंके स-
मान स्वच्छ अमृत के समान सुगन्धियुक्त जलसे पूर्ण सुन्दर गुण सम्पन्न स्त्री के समान ऐसी बा-
वड़ी रची जैसीकि ब्रह्माजीने रंभाको रचाया११।१३कमल कुमोदिनी पद्म और कदम्बों समेत सूर्य
चन्द्रमाके वर्णवाले भयानक आवरणोंसे युक्त उस बावड़ी को चारों ओर से सुन्दर मीठे भमीरी के
समान शब्दकरने वाले और कामदेवके इच्छाकरानेवाले पक्षियों से व्याप्तवृक्षोंसे शोभितकिया यह
ऐसी बावड़ीथी जैसी कि जीवोंसे भरीहुई नौकाहोतीहै जैसे कि गंगाजीको शिवजीने प्रकटकिया उसी
प्रकार मय दैत्यने उस बावड़ीको रचकर उसमें विद्युन्मालीकी लासको स्नानकरवाया उसमें स्नान
करातेही वह देवताओंका शत्रु मराहुआ विद्युन्माली जीकर ऐसे उठबैठा जैसे कि बुझीहुई अग्नि घृत
के डालने से दीप्तहोजाती है १४।१७ फिर वह सत्कार कियाहुआ तारकनाम दैत्य अंजली बाँधकर
मयके आगेबोला और विद्युन्माली भी बोला १८ कि नन्दी प्रेतादिक गण और शृगालादिकों समेत
शिवजी कहाँ हैं हम उन्हीं शिवजीकेसंग युद्धकरेंगे और नादियेको मारकर सबसेनाको जीतेंगे और
शिवजीको निकासकर सब जगत् के स्वामीहोंगे अथवा सेनासमेत शिवजीसे मारेहुए होकर धर्मराज
के स्थानमें चलेजावेंगे१९।२०विद्युन्माली के इसवचनको सुनकर मयदैत्य बड़ेप्रसन्ननेत्रहृदयसे उससे
मिलकर यह वचनबोला २१ हे विद्युन्माली तेरे विनामुझे राज्यसमेत अपना जीवनभी अच्छानहीं
लगता तो और वस्तु क्या अच्छीलगेगी २२ और हेवीर यह महा अमृतमयी बावड़ी जो मैंने माया

त्य ! पश्यामि यमलोकादिहागतम् । दुर्गतावनयग्रस्तं भोक्ष्यामोऽद्यमहानिधिम् २४ द
ष्ट्वादृष्ट्वाचतांवापीं माययामयनिर्मिताम् । हृष्टाननाक्षादैत्येन्द्रा इदंवचनमब्रुवन् २५ दान
वा ! युद्ध्यतेदानीं प्रमथैःसह निर्भयाः । मयेननिर्मितावापी हतान्सञ्जीवयिष्यति २६ त
तःक्षुब्धाम्बुधिनिभाभेरीसानुभयङ्करी । वाद्यमानाननादोच्चै रौरवीसापुनःपुनः २७ श्रुत्वा
भेरीरवंघोरं मेघारम्भितसन्निभम् । न्यपतन्नसुरास्तूर्णं त्रिपुराद्युद्धलालसाः २८ लोहरा
जतसौवर्णैः कटकैर्मणिराजितैः । आमुक्तैःकुण्डलैर्हारैर्मुकुटैरपिचोत्कटैः २९ धूमायि
ताह्यत्रिरमा ज्वलन्तइवपावकाः । आयुधानिसमादाय काशिनोदृढविक्रमाः ३० नृ
त्यमानाइवनटा गर्जन्तइवतोयदाः । करोच्छ्रयाइवगजा सिंहाइवचनिर्भयाः ३१ ह्र
दाइवचगम्भीराः सूर्य्याइवप्रतापिताः । द्रुमाइवचदैत्येन्द्रास्त्रासयन्तोवलंमहत् ३२ प्र
मथाअपिसोत्साहा गरुडोत्पातपातिनः । युयुत्सवोऽभिधावन्ति दानवान्दानवारयः ३३
नन्दीश्वरेणप्रमथास्तारकाख्येणदानवाः । चक्रुःसंहत्यसंग्रामंक्षोद्यमानावलेनच ३४
तेऽसिभिश्चन्द्रसङ्काशैः शूलैश्चानलपिङ्गलैः । बाणैश्चदृढनिर्मुक्तैरभिजघ्नुःपरस्परम्
३५ शराणांसृज्यमानानामसीनाञ्चनिपात्यताम् । रूपाण्यासन्महोल्कानां प्रतन्तीना
मिवाम्बरात् ३६ शक्तिभिर्भिन्नहृदया निर्दयाइवपातिताः । निरयेष्विवनिर्मग्नाः कूजन्ते

करके वनाई है सो मरेहुए दैत्य दानवोंकी जिलानेवाली है २३ हे दैत्य मैंने तुम्हें यमलोकसे आयेहुये
को देखाहै यह बड़े कल्याणकी वातहै हमारी दुर्गतिदशामें जो २ खजाने अन्यायकरके लूटगयेथे उन
सब खजानोंको अब फिर करके हम भोगेंगे २४ फिर उस मयदैत्यकी बनाईहुई वावड़ीको सब दैत्य
वारंवार देखकर बड़ेप्रसन्न मुखसे यह वचनवोले २५ कि हे दानवलोगो इस समय प्रेतादिकों के
गणोंसे निर्भयहोकर युद्धकरो और यहमयकी बनाई वावड़ी सबमरेहुए दैत्योंको जिवावेगी क्योंकि
संजीविनी वापी वनाई है २६ इसके पीछे क्षुभित समुद्रके समान कान्तिवाले दैत्य भेरी पटह आ-
दिक अनेक वाजे वजाते और गंभीर शब्दोंको करतेहुए कोलाहल करने लगे २७ तबमेघके समान
भेरीके घोर शब्दोंको सुनकर सब दैत्य युद्धकरनेकी लालसा करके त्रिपुर नगरसे उतरे २८ लोहे
चाँदी और सुवर्ण इनधातुओंके कड़ूले मणि मुक्ताओंके विभूषण और कुंडल हार मुकुट इनसब उत्त-
म भूषणोंसे शोभित ज्वलित अग्निके समान कान्तिवाले शस्त्रोंको ग्रहण कियेहुए सब दैत्य नटों के
समान नाचते भये और मेघोंके सदृश गर्जनाकरते हाथीके समान सूंड़ोंसे फुंकारमारते बड़े निर्भय
सिंहनादकरतेहुए गर्जने लगे २९।३१ तड़ागोंके समान गंभीर सूर्य्यके समान संतप्त ऊंचे २ वृक्षोंके
समान दैत्यलोग देवताओंकी सेनाको पीड़ादेने लगे ३२ तब शिवजीकेभी गण गरुड़के वेगकी समान
कूदयुद्धकी इच्छा करके दैत्यों के सन्मुख आये ३३ नन्दिकेश्वरके साथ शिवजीके गण और तारका-
सरके साथ दैत्यलोग आपसमें मिलकर इकट्ठे होहो वारंवार युद्ध करने लगे ३४ उस समय वह
दोनों दैत्य और शिवजीके गण चन्द्रमाकीसी कान्तिवाले खड्गों से अग्निके समान कान्तिवाले शू-
लोंसे और तीक्ष्णवाणोंसे युद्धमें परस्पर प्रहार करते भये ३५ गिरते हुए वाण और खड्गादिकोंके

प्रमथासुराः ३७ हेमकुण्डलयुक्तानि किरीटोत्कटवन्तिच। शिरांस्युर्व्यांपतन्तिस्म गिरिकूटानिवात्यये ३८ परश्वधैःपट्टिशैश्च खड्गैश्चपरिघैस्तथा। छिन्नाःकरिवराकारा निपेतुस्तेधरातले ३९ गर्जन्तिसहसाहृष्टाः प्रमथाभीमगर्जनाः। साधयन्त्यपरेसिद्धा युद्धगान्धर्वमद्भुतम् ४० बलवान्भासिप्रमथ दर्पितोभासिदानव!। इतिचोच्चारयन्वाचं वारणारणधूर्गताः ४१ परिघैराहताःकेचिद्दानवैःशङ्करानुगाः। वमन्तेरुधिरंवक्त्रैः स्वर्णधातुमिवाचलाः ४२ प्रमथैरपिनाराचैरसुराःसुरशत्रवः। द्रुमैश्चगिरिशृङ्गैश्च गाढमेवाहवेहताः ४३ सूदितानथतान्दैत्या नन्येदानवपुङ्गवाः। उत्क्षिप्यचिक्षिपुर्वाप्यां मयदानवनोदिताः ४४ तेचापिभास्वरैर्देहैः स्वर्गलोकइवामराः। उत्तस्थुर्वापीमास्याद्य सद्रूपाभरणाम्बराः ४५ अथैकेदानवाःप्राप्य वापीप्रक्षेपणादसून्। आस्फोट्यसिंहनादश्च कृत्वाधावंस्तथासुराः ४६ दानवाःप्रमथानेतान्प्रसर्पतकिमासथ। हतानपिहिवोवापी पुनरुज्जीवयिष्यति ४७ एवंश्रुत्वाशंकुकर्णो वचोऽग्र्यग्रहसन्निभः। द्रुतमेवैत्यदेवेशमिदंवचनमब्रवीत् ४८ सूदिताःसूदितादेव! प्रमथैरसुराह्यमी। उत्तिष्ठन्तिपुनर्भीमाः सस्याइवजलोक्षिताः ४९ अस्मिन्किलपुरेवापी पूर्णामृतरसाम्भसा। निहतानिहतायत्र क्षिप्ताजीवन्तिदानवाः ५० इतिविज्ञापयदेवं शंकुकर्णोमहेश्वरम्। अभवन्दानवबल उत्पातावैसुदारुणाः ५१

रूप आकाशमें ऐसे दीखतेभये मानो तारे टूटतेहों ३६ शक्तियोंसे कटेहुए हृदयवाले दैत्य और शिवजीके पार्षद ऐसे गिरते हुए पुकारे जैसेकि नरकोंमें पड़ेहुए नानाप्रकारके जीव पुकारते हैं ३७ सुवर्णके कुंडल और मुकुटोंसे युक्तशिर पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे कि पर्व्वतों के शिखर कटकटकर गिरपड़े हों ३८ फरसे, पट्टिश, शस्त्र, खड्ग, और मूसल इनसबसे कटेहुए दैत्य हाथियोंके समान पृथ्वीमें गिरते भये ३९ शिवजीके गण प्रसन्नहोकर गर्जतेभये और सिद्ध गन्धर्वादिक भी प्रबल युद्ध करते भये ४० हे प्रमथ पार्षद तू बड़ा बलवान् दीखताहै और हेदानव तूबड़ा अभिमानी दीखताहै ऐसेपरस्पर बोलतेहुए दोनों युद्धकरने लगे ४१ दानवोंके मूसलोंसे हतहुए कितनेही शिवजीके पार्षद मुखोंसे रुधिर वमनकरते भये ऐसे विदितहुए मानों पर्व्वत सुवर्णकी धातुको उगलतेहों ४२ शिवजीके गणोंनेभी बाणोंसे वृक्षोंसे और पर्व्वतोंके खंडोंसे युद्धमें दैत्योंकोमारा ४३ उस समय उन मरे हुए दैत्योंको मयके भेजेहुए अन्यदानव वहाँसे उठाकर उससमय दैत्यकी बावड़ी में पटकतेहुए ४४ और उस बावड़ी में प्राप्तहोकर श्रेष्ठरूप और आभूषणों समेत बड़ी कान्तिवाले शरीरों को धारण किये ऐसे उठते भये जैसे कि स्वर्गसे देवता उठते हैं ४५ कितनेही मरेहुए दैत्य उस बावड़ी में प्राप्तहोकर प्राणों को धारणकर सिंहनाद करतेहुए वहाँ से भागते भये ४६ उससमय दैत्य लोग पुकारे कि हे दानवलोगो तुम शिवके गणों से निर्भय युद्धकरो बैठोमत तुममरेहुओं को यह बावड़ी फिर जिलादेगी यह दैत्यका वचन शिवका पार्षद शंकुकर्ण सुनकर बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक शिवजी के पासजाकर बोला ४७। ४८ हे देवदेव यह मरेहुए सब दैत्य जलसे सींची हुई खेतीके समान फिर जीजीकर उठआते हैं ४९ इसपुरमें अवश्य अमृतके जलसे भरी हुई बावड़ी है जिसमें जाकर सब

तारकाख्यःसुभीमाक्षो दारितास्योहरिर्यथा । अभ्यधावत्सुसंक्रुद्धो महादेवरथंप्रति ५२
त्रिपुरेतुमहान्घोरो भेरीशङ्खरवोबभौ । दानवानिःसृताद्दृष्ट्वा देवदेवरथेसुरम् ५३
भूकम्पश्चाभवत्तत्र शताङ्गोभूगतोऽभवत्। दृष्ट्वाक्षोभमगादुद्रः स्वयम्भूश्चपितामहः ५४
ताभ्यांदेववरिष्ठाभ्यामन्वितःसरथोत्तमः। अनायतनमासाद्य सीदत्तेगुणवानिव ५५ धा
तुक्षयेदेहइव ग्रीष्मेचाल्पमिवोदकम्। शैथिल्यंयातिसरथः स्नेहोविप्रकृतोयथा ५६ रथा
दुत्पत्यात्मभूर्वै सीदन्तंतुरथोत्तमम्। उज्जहारमहाप्राणो रथंत्रैलोक्यरूपिणम् ५७ तदा
शराद्विनिष्पत्य पीतवासाजनार्दनः। वृषरूपंमहत्कृत्वा रथंजग्राहदुर्धरम् ५८ सविषा
णाभ्यांत्रैलोक्यं रथमेवमहारथः। प्रगृह्योद्वहतेसज्जं कुलंकुलवहोयथा ५९ तारकाख्यो
ऽपिदैत्येन्द्रो गिरीन्द्रइवपक्षवान्। अभ्यद्रवत्तदादेवं ब्रह्माणंहतवांश्चसः ६० सतारका
ख्याभिहतः प्रतोदंन्यस्यकूबरे । विज्वालमुहुर्ब्रह्मा श्वासंवक्त्रात्समुद्गिरन् ६१ तत्रदै
त्यैर्महनादो दानवैरपिभैरवः । तारकाख्यस्यपूजार्थं कृतोजलधरोपमः ६२ रथचरणक
रोऽथमहामृधे वृषभवपुर्वृषभेन्द्रपूजितः। दितितनयबलंविमर्द्यसर्वं त्रिपुरपुरंप्रविवेशके
शवः ६३ सजलजलदराजितांसमस्तां कुमुदवरोत्पलफुल्लपङ्कजाढ्याम्। सुरगुरुर
पिवत्पयोमृतन्त द्रविरिवसञ्चितशार्वरन्तमोऽन्धम् ६४ वापीपीत्वासुरेन्द्राणां पीतवासा

मरेहुए दैत्य स्नान कर करके जीजाते हैं ५० इसप्रकार जब शिवजी के पार्षद शंकुवर्ण ने कहा तब दैत्योंकी सेनामें दारुण उत्पात होतेभये ५१ उस समय भयंकर नेत्रों वाला तारकासुर दैत्य महादेवके रथके प्रति ऐसे भागताभया मानो मुखफाड़े हुए क्रोधभरा सिंह भागता आताहो ५२ त्रिपुर दुर्गमें महाघोर भेरीका शब्द होताभया उस समय त्रिपुर दुर्गसे निकले हुए राक्षसोंने रथमें बैठे हुए महादेवजीको देखा ५३ उस समय भूकम्पादिक महा उत्पात हुए उन उत्पातों को देख कर शिवजी और ब्रह्माजी क्रोधको प्राप्तहोतेभये ५४ उनदोनों देवताओं से युक्तहुआ वह रथ विना स्थानमें प्राप्तहुए गुणवान् पुरुषके समान शिथिल होताभया ५५ जैसे कि धातुकी क्षीणतासे शरीर ग्रीष्म ऋतुमें जलके न मिलनेसे थोड़ा और वियोगसे स्नेह शिथिल होजाताहै उसी प्रकार वह रथ भी महाशिथिल होगया उस समय ब्रह्माजी ने तो रथसे उतर कर उस त्रिलोकीके रूपवाले रथका उद्धारकिया और पीतवस्त्रधारी जनार्दन भगवान्ने वृषभरूप धारणकर अपने सींगोंके द्वारा उस दुर्धर त्रिलोकी के रूपवाले महारथको अपने पराक्रम से धारण किया तब तारकासुर दैत्यभी सपक्ष पर्वतके समान उछलकर आया और ब्रह्माजी पर प्रहार करता भया ५६। ६० उस समय तारकासुर से हत हुए ब्रह्माजी रथहांकने के चाबुकको जुएपर रखकर बारंबार मुख से श्वासलेते हुए संतापको प्राप्तहुए तब दैत्य दानवोंने महाभयंकर नाद किया और तारकासुर दैत्यकी प्रसन्नता के लिये वह सब दैत्य मेघके समान गर्जे ६१। ६२ तब सुदर्शनचक्रके धारण करनेवाले विष्णुभगवान् बैलकारूप धारण कर दैत्योंकी सब सेनाका मर्दन करते हुए त्रिपुरमें प्रवेश करते भये और अमृत रूपी जलोंसे पूर्ण फूलीहुई कुमुदिनी और कमलोंसे युक्त उस बावड़ीके अमृत रूपी जलको ऐसे

जनार्दनः। नर्दमानोमहाबाहुः प्रविवेशशरन्ततः ६५ ततोसुराभीमगणेश्वरैर्हताः प्रहा
रसंवर्द्धितशोणितापगाः। पराङ्मुखाभीममुखैःकृतारणे यथानयाभ्युद्यततत्परैर्नरः ६६
सतारकाख्यस्तडिमालिरेवच मयेनसार्द्धप्रमथैरभिद्रुता। पुरंपराद्वत्यनुतेशरार्दिता यथा
शरीरंपवनोदयेगता ६७ गणेश्वराभ्युद्यतदर्पकाशिनो महेन्द्रनन्दीश्वरषण्मुखायुधि। वि
नेदुरुच्चैर्जहसुश्चदुर्मदा जयेमचन्द्रादिदिगीश्वरैःसह ६८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेपञ्चत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३५॥

(सूत उवाच) प्रमथैःसमरेभिन्नास्त्रैपुरास्तेसुरारयः। पुरंप्रविविशुर्भीताः प्रमथैर्भ
ग्नगोपुरम् १ शीर्णदंष्ट्रायथानागा भग्नशृंगायथावृषाः। यथाविपक्षाःशकुना नद्यःक्षीणो
दकायथा २ मृतप्रायास्तथादैत्या दैवतैर्विकृताननाः। बभूवुस्तेविमनसः कथंकार्यमिति
ब्रुवन् ३ अथतान्म्लानमनसस्तदातामरसाननः। उवाचदैत्योदैत्यानां परमाधिपतिर्म
यः ४ कृत्वायुद्धानिघोराणि प्रमथैःसहसामरैः। तोषयित्वातथायुद्धे प्रमथानमरैःसह ५
यूयंयत्प्रथमंदैत्याः पश्चाद्बलपीड़िताः। प्रविष्टानगरन्त्रासात् प्रमथैर्भृशमर्दिताः ६
अप्रियंक्रियतेव्यक्तं देवैर्नास्त्यत्रसंशयः। यत्रनाममहाभागाः प्रविशन्तिगिरेर्वनम् ७
अहोहिकालस्यबलमहोकालोहिदुर्जयः। यत्रेदशस्यदुर्गस्य उपरोधोऽयमागतः ८ मये

पान करगये जैसे कि रात्रिके अन्धकारको सूर्य्य नष्टकर देताहै ६३।६४ जब दैत्योंकी बावड़ीका जल शोषणकर लिया तब पीताम्बरधारी महाभुजाधारी विष्णुभगवान् फिर बाणमें प्रवेशगये ६५ इसके अनन्तर गणेश्वरोंसे मारे हुए और दानवोंके प्रहारसे बढ़े हुए रुधिरकीनदी चलती भई और सब दानव पराङ्मुख होकर ऐसे भागे जैसे कि नीतिशास्त्रके जाननेवाले के भागे से मूर्ख भागजाते हैं ६६ इसके पीछे तारकासुर, विद्युन्माली और मयनाम दैत्य यह तीनों बाणों से पीड़ित होकर शीघ्रही भागकर त्रिपुरमें प्रवेश करजाते भये ६७ उस समय शिवजीके महेन्द्र, नन्दीश्वर, और स्वामिका-र्तिक आदि बड़े २ गण युद्धमें उच्चस्वरसे हास्य करते भये कि चन्द्रमादिक दिग्पालों समेत हम तुमको जीतेंगे ६८॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३५॥

सूतजी बोले कि वह सब दैत्य शिवके गणोंसे ताड़ित होकर शिवगणों से तोड़ेहुए द्वारवाले पुर में भयभीत होकर प्रवेश करते भये १ जैसे दांत कटे सर्प, सींग कटे बैल, पंखरहित पक्षी और जैसे जलरहित नदी होती हैं उसी प्रकार वह मरेहुओंके समान विकराल मुखवाले दैत्य लोग बुरे मन वाले होकर क्या २ करना चाहिये ऐसा विचार करनेलगे उससमय उनकास्वामी मयनाम दैत्य बड़े क्रोधपूर्वक लाललाल नेत्र करके बोला २।३।४ कि हे दैत्यो तुम शिवजीके गणोंके साथ घोर युद्ध करके इस त्रिपुरमें घुस आयेहो अथवा उनसे भयभीत होकर देवतादिकों की स्तुति कर-के इस त्रिपुरमें आगयेहो निस्सन्देह देवता लोगोंसे तुम्हारा बिगाड़ और विध्वंस होगा क्योंकि तुम इस वनरूपी पुर में प्रवेश भयेहो ५।७ अहो काल बड़ा बली और दुर्जयहै जिसने कि इस पुरका रोध कियाहै ८ मेघकी गर्जना के समान मयदैत्य के विवाद करते हुए सब दैत्य ऐसे कान्ति

विवदमानेतु नर्द्दमानइवाम्बुदे। बभूवुर्निष्प्रभादैत्या ग्रहाइन्दूदयेयथा ६ वापीपालास्त तोऽभ्येत्यनभःकालइवाम्बुदाः। मयमाहुर्यमप्रख्यं साञ्जलिप्रग्रहाःस्थिताः १० यासा मृतरसागूढा वापीवैनिर्मितात्वया। समाकुलोत्पलवना समीनाकुलपङ्कजा ११ पीतासा वृषरूपेण केनचिद्दैत्यनायक!। वापीसासाम्प्रतंदृष्टा मृतसंज्ञाइवाङ्गना १२ वापीपालव चःश्रुत्वा मयोऽसौदानवप्रभुः। कष्टमित्यसकृत्प्रोच्य दितिजानिदमब्रवीत् १३ मयामा याबलकृता वापीपीतात्वियंयदि। विनष्टाःस्मनसन्देहस्त्रिपुरंदानवागतम् १४ निहतान्नि हतान्दैत्यानाजीवयतिदैवतैः। पीतावायदिवावापी पीतावैपीतवाससा १५ कोऽन्योम न्माययागुप्तां वापीममृततोयिनीम्। पास्यतेविष्णुमजितं वर्जयित्वागदाधरम् १६ सुगु ह्यमपिदैत्यानां नास्त्यस्याविदितम्भुवि। यत्रमद्वरकौशल्यं विज्ञातंनत्वतंबुधैः १७ समो ऽयंरुचिरोदेशो निर्द्रुमोनिर्द्रुमाचलः। लभेमन्दूरतःकृत्वा बाधन्तेऽस्मान्गणामराः १८ तेयूयंयदिमन्यध्वं सागरोपरि धिष्ठिताः। प्रमथानांमहावेगं सहामःश्वसनोपमम् १९ ए तेषाञ्चसमारम्भास्तस्मिन्सागरसंप्लवे। निरुत्साहाभविष्यन्ति एतद्रथपथावृताः २० यु ध्यतांनिघ्नतांशत्रून् भीतानाञ्चद्रविष्यताम्। सागरोऽम्बरसङ्काशः शरणन्नोभविष्यति २१ इत्युक्त्वासमयोदैत्यो दैत्यानामधिपस्तदा। त्रिपुरेणययौतूर्णं सागरंसिन्धुबान्धवम् २२

से रहित होजाते भये जैसे कि चन्द्रमाके उदयमें तारागणों की कान्ति क्षीण होजाती है ९ इस के अनन्तर बावड़ी की रक्षा करने वाले दैत्य मयके पास आये और अम्बर में स्थित हुए मेघके समान अंजली बांधकर खड़े होते भये १० और यह वचन बोले कि हे दैत्यपते आपने जो अमृतरूपी जलकी बावड़ी कमलोंकेवन और मक्षिकाओंके कुलों से संयुक्त रचीथी उस बावड़ी को कोई बैल कारूप बनाकर देवतापीगया वह अब ऐसी दिखाई देती है जैसे कि मूर्च्छितहुई स्त्रीकुरूप होजा- तीहै ११।१२ इस प्रकारके उन बावड़ी के रक्षक दैत्यों के वचनोंको मय दैत्य सुनकर बड़ा कष्ट ऐसा कहकर यह वचन बोला १३ कि मैंने इस बावड़ीको अपनी मायाके बलसे रचाथा जो इस कोभी कोई पीगया तो अबहम सब निस्सन्देह नष्ट हुए १४ यह बावड़ी देवता ओंके मारे हुए दैत्यों को वारंवार जिलादेती इसको विष्णु भगवान्‌ही पीगये क्योंकि मेरी माया से रची हुई बावड़ीको विष्णु भगवान् के विना कोई पीनेकी सामर्थ्य नहीं रखता १५। १६ यह बावड़ी बड़ी गुप्तरूपथी इसको दैत्यभी नहीं जानतेथे और जब यह वर मुझको हुआथा उसको देवताभी नहीं जानते थे १७ यह देशसमहै वृक्षोंसे रहितहै इसीसे देखकर देवता हमारे पास आजाते हैं और हमको बाधाकरतेहैं जोतुम इसको श्रेष्ठजानो तो हम समुद्रके ऊपर चलेजांय वहां वायुके समान शिवजी गणों का वेग हम सहलेंगे १८।१९ क्योंकि समुद्रमें देवताओं का और शिवगणोंका वेग शिथिल होजायगा यह लोग वहां उत्साहसे रहितहोजायंगे इनके रथकामार्ग रुकजायगा २० मारते हुए शत्रुओंके साथ युद्धकरना और भयभीतोंको युद्धसे भगाना वहां होगा क्योंकि अंबर के समान कान्तिवाला यहसमुद्र हमारी रक्षा करनेवाला होगा २१ दैत्योंका अधिपति वह मय दैत्य ऐसा

सागरेजलगम्भीर उत्पपातपुरंवरम्। अवतस्थुःपुराण्येव गोपुराभरणानिच २३ अप क्रान्तेतुत्रिपुरे त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः। पितामहमुवाचेदं वेदवादविशारदम् २४ पितामह! ह्यद्यभीता भगवन्! दानवाहिनः। विपुलंसागरन्तेतु दानवाःसमुपाश्रिताः २५ यतएव हितेयातास्त्रिपुरेणतुदानवाः। ततएवरथंतूर्णं प्रापयस्वपितामह! २६ सिंहनादंततःकृत्वा देवादेवरथञ्चतम्। परिवार्ययचुर्हृष्टाः सायुधाःपश्चिमोदधिम् २७ ततोऽमरामरगुरुं परिवार्यभवंहरम्। नर्दयन्तोययुस्तूर्णं सागरंदानवालयम् २८ अथचारुपताकभूषितं पटहाडम्बरशंखनादितम्। त्रिपुरमभिसमीक्ष्यदेवता विविधवल्गाननदुर्यथाघनाः २९ असुरवरपुरेऽपिदारुणोजलधरारवमृदंगगह्वरः। दनुतनयनिनादमिश्रितः प्रतिनिधिसंक्षुभितार्णवोपमः ३० अथभुवनपतिर्गतिःसुराणापरिमृगयांप्रददात्सुलब्धबुद्धिः। त्रिदशगणपतिर्ह्युवाचशक्रं त्रिपुरगतंसहसानिरीक्ष्यशत्रुम् ३१ त्रिदशगणपते! निशामयेतत् त्रिपुरनिकेतनमुत्तमंसुरेन्द्र!। यमवरुणकुबेरषण्मुखैस्तत् सहगणपैरपिहन्मितावदेव ३२ विहितपरबलाभिघातभूतं व्रजजलधेस्तुयतःपुराणितस्थुः। सरथवरगतोभवःसमर्थो ह्युदधिमगात्त्रिपुरंपुनर्निहन्तुम् ३३ इतिपरिगणयन्तोदितेःसुता ह्यवतस्थुर्लवणार्णवोपरिष्टात्। अभिभवतत्रिपुरंसदानवेन्द्रं शरवर्षैर्मुसलैश्चवज्रमिश्रैः ३४ अह

कहकर उस त्रिपुर करके सहित शीघ्रही समुद्रके ऊपर जाताभया २२ और वह त्रिपुर उस गंभीर जल वाले समुद्रपर गिरताभया और वहांही द्वार गढ़ और बड़े २ रंगमहलों समेत वह त्रिपुर अर्थात् तीनोंपुर स्थित होतेभये तब शिवमहाराज ब्रह्माजीसे यह वचन बोले कि हे पितामह हमसे भयभीतहोकर दानव समुद्र के ऊपर चलेगये हैं २३। २५ सो त्रिपुर दुर्ग समेत जहाँ वह सब दानव चलेगयेहैं उसी स्थानपर मेरे इस रथको प्राप्तकरो २६ तब देवता लोग सिंहोंके समान शब्दों को करके बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उस रथको उठाके पश्चिमके समुद्रके पास जाते भये २७ अर्थात् देवताओं समेत शिवजीके गणों के समूह अपने स्वामी महादेवजीके साथ बड़ी शीघ्रतासे गर्जना करते हुए समुद्रमें दैत्योंके स्थानपर प्राप्त होते भये २८ वहाँ विचित्र ध्वजाओं से विभूषित ढोलको बजातेहुए त्रिपुर को देखकर शंखोंकी ध्वनि करनेलगे और मेघोंके समान वारंवार गर्जनेलगे २९ फिर उनदैत्योंके भी त्रिपुरमें दारुण गर्जनेके समान मृदंगों का शब्द होताभया और दैत्योंकी गर्जनाओंसे समुद्रकी गूंजका शब्द दारुण होजाता भया ३० इसके पीछे शिवजी देवता लोगोंको दैत्यों के मारने की बुद्धिदेते भये और त्रिपुर में प्राप्तहुए शत्रुको देखकर इन्द्र से यह वचन बोले ३१ कि हे इन्द्र तू इस उत्तम त्रिपुर को देख अबमें यम, वरुण, कुबेर और स्वामिकार्त्तिक आदि से संयुक्त होके इस त्रिपुर को दग्ध करताहूं ३२ इस समुद्र पर जहाँ त्रिपुर स्थित है और घातहोसकाहै वहाँ तू जा यह कहकर शिवजी रथमें बैठकर त्रिपुरके दग्ध करनेके निमित्त ऐसा कहते हुए समुद्र को प्राप्तहोते भये कि दैत्य लोग समुद्रपर स्थितहोरहे हैं इसी से यहत्रिपुरदैत्य और दानवोंसेयुक्त है इसको तुम जाकर मूसल बाण और वज्रइत्यादिकों से तिरस्कृत करो, मैं भी रथमें बैठकर दैत्यों के मारने के अर्थ

मपिरथवर्य्येमारिथतः सुरवरवर्य्य! भवेयपृष्ठतः। असुरवरवधार्थमुद्यतानां प्रतिविदधा
मिसुखायतेऽनघ! ३५ इतिभववचनप्रचोदितो दशशतनयनवपुःसमुद्यतः। त्रिपुरपुरजि
घांसयाहरिः प्रविकसिताम्बुजलोचनोययौ ३६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेषट्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३६॥

(सूत उवाच) मघवातुनिहन्तुंतानसुरानमरेश्वरः। लोकपालांययुःसर्वे गणपाला
श्चसर्वशः १ ईश्वरामोदिताःसर्वे उत्पेतुश्चाम्बरेतदा। खगतास्तुविरेजुस्ते पक्षवन्तइ
वाचलाः २ प्रययुस्तत्पुरंहन्तुं शरीरमिवव्याधयः। शङ्खाडम्बरनिर्घोषैः पणवान्पटहान
पि। नादयन्तःपुरोदेवा दृष्टास्त्रिपुरवासिभिः ३ हरःप्राप्तइतीवोक्का बलिनस्तेमहासुराः।
आजग्मुःपरमंक्षोभमत्यर्येष्विवसागराः ४ सुरतूर्य्यरवंश्रुत्वा दानवाभीमदर्शनाः। निनेदु
र्वादयन्तश्च नानावाद्यान्यनेकशः ५ भूयोदीरितवीर्य्यास्ते परस्परकृतागसः। पूर्वदेवाश्च
देवाश्च सूदयन्तःपरस्परम् ६ आक्रोशेऽपिसमप्रख्ये तेषांदेहनिकृन्तनम्। प्रवृत्तंयुद्धम
तुलं प्रहारकृतनिस्वनम् ७ श्वसन्तइवनागेन्द्रा भ्रमन्तइवपक्षिणः। गिरीन्द्राइवकम्प
न्तो गर्जन्तइवतोयदाः ८ जृम्भन्तइवशार्दूलाः प्रवान्तइववायवः। प्रवृद्धोर्मितरङ्गालाः
क्षुभ्यन्तइवसागराः ९ प्रमथाश्चमहाशूरा दानवाश्चमहाबलाः। युयुधुर्निश्चलाभूत्वा
वज्राइवमहाचलैः १० कार्मुकाणांनिकृष्टानां बभूवुर्दारुणारवाः। कालानुगानांमेघानांय
थावियतिवायुना ११ आहुश्चयुद्धेमाभैषीः क्वयास्यसिम्रतोह्यसि।प्रहराशुस्थितोऽस्म्यत्र

पीछे से आताहूं और आनन्द से रहना ३४।३५ऐसे शिवजीके वचनोंसे प्रेरितहुआ प्रफुल्लित हज़ार
नेत्रों वाला इन्द्र त्रिपुर के नष्टकरने की इच्छा से गमन करता भया ३६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३६॥

सूतजी बोले कि उनदैत्यों के मारनेकेनिमित्त लोकपाल और गणेश्वरों समेत इन्द्र जाताभया १
वह शिवजी से प्रसन्न कियेहुए देवता और गणेश्वर आकाशमें सपक्ष पर्व्वतों के समान उड़तेभये २
जैसे कि शरीरके दग्धकरने को व्याधि जाती हैं उसी प्रकार उस त्रिपुरके नष्टकरनेको यह सबचले
तब तो त्रिपुरवासी दैत्योंनेभी शंख ढोलआदिक बाजोंको बजातेहुए सब देवताओंको देखा ३ और
शिवजी आयाहै ऐसाकठोर शब्दकहकर बड़ेक्रोधसे वह दैत्य ऐसे आये जैसे कि प्रलयकाल का समुद्र
बड़े वेगसे आताहै ४ भयंकररूप दानव देवताओं की भेरीका शब्द सुनकर अपनेभी अनेक प्रकारके
बाजे बजातेभये ५ फिर वह दैत्य और दानव परस्परही में क्रोधपूर्व्वक युद्धकरनेलगे ६ उस समय
उन दैत्योंके क्रोधोंसे उनकेही शरीर फटगये तब अतुल युद्ध प्रवृत्तहुआ और प्रहारोंके दारुण शब्द
होनेलगे ७ जैसे कि हाथी श्वासलेतेहों, पक्षी भ्रमणकरतेहों, पर्व्वत कांपतेहों, मेघगर्जते हों, शार्दूल
चिंघाड़तेहों, प्रचंड वायुचलतेहों, और बढ़ी हुई तरंगोंवाले समुद्र क्षोभित होरहेहों, उसीप्रकार
यह महाबल वाले दानव और शिवजीके गण निश्चल होकर युद्धकरते भये ८।१० उस युद्धमें
खैंचे हुए धनुषोंके शब्द ऐसे होते भये जैसे कि वायुके वेगों से आकाशमें मेघों के दारुण शब्द होते

एहिदर्शयपौरुषम् १२ गृहाणच्छिन्धिभिन्धीति खादमारयदारय। इत्यन्योऽन्यमनूचाव्यं प्रययुर्यमसादनम् १३ खङ्गापवर्जिताःकेचित्केचिच्छिन्नाःपरश्वधैः। केचिन्मुद्गरचूर्णाश्च केचिद्बाहुभिराहताः १४ पट्टिशैःसूदिताःकेचित्केचिच्छूलविदारिताः। दानवाः शरपुष्पाभाः सवनाइवपर्वताः। निपतन्त्यर्णवजले भीमनक्रतिमिंगिले १५ व्यसुभिःसुनिवद्धांगैः पतमानैःसुरेतरैः। सम्बभूवार्णवेशब्दः सजलाम्बुदनिस्वनः १६ तेनशब्देनमक्रा नक्रास्तिमितिमिङ्गिलाः। मत्तालोहितगन्धेन क्षोभयन्तोमहार्णवम् १७ परस्परेणकलहं कुर्वाणाभीममूर्त्तयः। भ्रमन्तेभक्षयन्तश्च दानवानाञ्चलोहितम् १८ सरथान्सायुधान्साश्वान् सवस्त्राभरणावृतान्। जग्रसुस्तिमयोदैत्यान् द्रावयन्तोजलेचरान् १९ मृधं यथासुराणाञ्च प्रमथानांप्रवर्त्तते। अम्बरेऽम्भसिचतथा युद्धंचक्रुर्जलेचराः २० यथाभ्रमन्तिप्रमथाःसदैत्यास्तथाभ्रमन्तेतिमयःसनक्राः। यथैवछिन्दन्तिपरस्परन्तु तथैवक्रन्दन्तिविभिन्नदेहाः २१ व्रणाननैरङ्गरसंस्रवद्भिः सुरासुरैर्नक्रतिमिङ्गिलैश्च। कृतोमुहूर्त्तेनसमुद्रदेशः सरक्ततोयःसमुदीर्णतोयः २२ पूर्वमहाम्भोधरपर्वताभन्द्वारंमहान्तंत्रिपुरस्यशक्रः। निपीड्यतस्थौमहताबलेन युक्तोऽमराणांमहताबलेन २३ तथोत्तरंसस्तनुजोहरस्य बालार्कजाम्बूनदतुल्यवर्णः। स्कन्दःपुरद्वारमथारुरोह वृद्धोऽस्तशृंगंप्रपतन्निवार्कः २४ यमश्च

हैं ११ तब परस्पर ऐसे कहते भये कि मत भयकर कहां जायगा मरगया है मैं यहां खड़ाहूं प्रहारकर अपना पुरुषार्थ दिखा १२ शस्त्र ग्रहण कर काट, तोड़, खा, मार और फाड़ यह शब्द परस्पर कहते हुए मृत्युको प्राप्त होते भये १३ कोई खड्गोंसे कोई फरशोंसे कटेहुए और कोई मुसलोंसे चूर्णहुए कटीहुई बाहु वाले पट्टिशशस्त्रों से मारेहुए और शूलोंसे मारे हुए भयंकर दानवलोग मगर मत्स्यों के समान और पर्व्वतोंके सदृश समुद्रमें गिरते भये १४।१५ मरे हुए दानव जब समुद्रमें गिरते थे उस समय ऐसा शब्द होताथा जैसे कि जलवाला मेघ गर्जता होताहै १६ उस शब्दसे और रुधिर की गन्धसे जलके बड़े २ मकरादिक जीव मदोन्मत्त होकर समुद्रको क्षोभित करते भये १७ जलमें भयंकर मूर्त्ति वाले मकर मत्स्यादिक परस्परमें कलह और भ्रमण करते हुए दानवोंके रुधिरादिकों का भक्षण करते भये १८ और बड़े २ मकर मत्स्यादिक अपने से छोटे जीवोंको भजाते हुए रथ शस्त्र अश्व और आभूषणादिकों समेत दानवों को निगलते भये १९ जिस प्रकारसे कि पृथ्वी और आकाशमें दानवोंका और शिवजीके गणोंका युद्ध होता भया उसी प्रकार समुद्रके जलमें मगर मत्स्यादिक जीवोंका भी परस्पर युद्ध होता भया २० जैसे कि शिवजीके पार्षद और दैत्य लोग भ्रमते भये उसी प्रकार तिमिङ्गिल और नाकादिक भी भ्रमण करतेभये जैसे कि यह युद्धमें परस्पर काटते थे उसी प्रकार मकरादिक भी परस्पर काटते थे २१ घायल मुखदेह वाले देवता और दैत्यों के शरीरोंसे जो रुधिर निकलता भया उस रुधिर करके वह समुद्रभर एक मुहूर्त्त मात्रमें लालवर्ण होगया २२ उस पुरके पूर्व्वीद्वारको तो महाबल वाला इन्द्र रोकता भया, उत्तरके द्वारको स्वामिकार्त्तिकने रोका और धर्मराज और कुबेर अपने २ दंडपाशोंसे युक्त होकर अस्ताचल पर सूर्य्य के

वित्ताधिपतिश्चदेवो दण्डान्वितःपाशवरायुधश्च। देवारिणस्तस्यपुरस्यद्वारं ताभ्यांतुतत्प श्चिमतोनिरुद्धम् २५ दक्षारिरुद्रस्तपनायुताभः समास्वतादेवरथेनदेवः। तद्दक्षिणद्वार मरेःपुरस्य रुद्ध्वावतस्थौभगवांस्त्रिनेत्रः २६ तुंगानिवेश्यानिसगोपुराणि स्वर्णानिकैला सशशिप्रभाणि। प्रह्लादरूपाःप्रमथावरुद्ध्वा ज्योतींषिमेवाश्वचाश्मवर्षाः २७ उत्पा ट्यचोत्पाट्यगृहाणितेषां सशैलमालासमवेदिकानि। प्रक्षिप्यप्रक्षिप्यसमुद्रमध्ये काला म्बुदाभाःप्रमथाविनेदुः २८ रक्तानिचाशेषवनैर्युतानि साशोकखण्डानिसकोकिलानि। गृ हाणि हेनाथ! पितः! सुतेति भ्रातेतिकान्तेतिप्रियेतिचापि। उत्पाट्यमानेषुगृहेषुनार्य्य अ नार्यशब्दान्विविधान्प्रचक्रुः २९ कलत्रपुत्रक्षयप्राणनाशे तस्मिन्पुरेयुद्धमतिप्रवृत्ते। महासुराःसागरतुल्यवेगा गणेश्वराःकोपवृताःप्रतीयुः ३० परश्वधैस्तत्रशिलोपलैश्च त्रिशूलवज्रोत्तमकम्पनैश्च। शरीरसद्मक्षपणंसुघोरं युद्धंप्रवृत्तंदृढवैरबद्धम् ३१ अन्योन्य मुद्दिश्यविमर्दताच प्रधावतांचैवविनिघ्नताञ्च। शब्दोबभूवामरदानवानां युगान्तकाले ष्विवसागरान्तः ३२ मार्गाःपुरेलोहितकर्दमालाः स्वर्णेष्टकास्फाटिकभिन्नचित्राः। कृत्ता मुहूर्त्तेनसुखेनगन्तुं छिन्नोत्तमाङ्गाङ्घ्रिकराःकरालाः ३३ कोपावृताक्षःसतुतारकाख्यः सं ख्येसवृक्षःसगिरिर्निलीनः। तस्मिन्क्षणेद्वारवरंरिरक्षो रुद्धंभवेनाद्भुतविक्रमेण ३४ सतत्र प्राकारगतांश्चभूतांश्छातन्महानद्भुतवीर्य्यसत्त्वः। चचारचातेन्द्रियगर्वहस्तःपुराद्विनिष्क्र

समानस्थित होकर पश्चिमके द्वारकोरोकते भये २३। २५ और दशहजार सूर्य्यके समान कान्ति वाले शिवजी उस पुरके दक्षिण द्वारकोरोककर स्थित होते भये २६ त्रिपुरके ऊंचे २ द्वार और चन्द्रमाकीसी कान्ति वाले शिखर इनसब स्थानोंको महाप्रसन्न हुए शिवजी के गण ऐसे रोकते भये जैसे कि तारागणोंको मेघ रोकलेते हैं २७ उन दैत्योंके गृहोंको और शोभितअटारी आदिकोंको देवता और शिवगण उखाड़ २ कर समुद्रमें फेंकते भये और प्रलयकाल के मेघोंके शब्दों के समान उच्चस्वरसे शब्दोंको भी करनेभये २८ यह उपद्रवकरके शिवजीके गण बाग बगीचे और कोकिला-दिक पक्षियोंसे सेवित अशोकके वृक्षोंको भी उखाड़ उखाड़ कर फेंकने लगे फिर दैत्योंकी स्त्रियां हे पुत्र हेभ्राता हेकान्त इत्यादिक अनेक प्रकारके विलापोंके शब्दोंको करतीभईं २९ तात्पर्य्ययह है कि उस पुरमें अत्यन्त युद्ध प्रवृत्तहुआ और पुत्र स्त्री आदिक नष्ट होने लगे तबतो समुद्रके समान वेग-वाले क्रोधसे युक्त वहसब दानव गणेश्वरोंसे युद्ध करनेको आये ३० उनके आतेही कुल्हाड़े, शिला, वज्र और शूलादिकों करके महाघोर युद्ध होताभया ३१ उससमय परस्पर मारते मर्दन करते और भागते हुओंका ऐसा शब्द होताभया मानों प्रलयकालके मेघही गर्जना कररहे हैं ३२ उसपुरके मार्ग लोहूकी कीच और फूटीहुई सुवर्णकी ईंट वा मणियोंसे युक्त होजाते भये और एकमुहूर्त्तही मात्रमें वह दैत्यकटेहुए शिरपैर और हाथों वाले होकर महाविकरालरूप होगये तबतो क्रोध करके वृक्षों स-मेत पर्व्वतों को उखाड़ताहुआ तारकासुर पुरसे बाहर निकलनेलगा उससमय अतुल पराक्रमवाले शिवजी ने उसको द्वारहीपर रोकदिया ३३। ३४ फिरवह अतुल पराक्रमवाला दैत्य खाईको तोड़

न्यरराससघोरम् ३५ ततःसदैत्योत्तमपर्वताभोयथाञ्जसानागइवाभिमत्तः।निवारितोरुद्ररथंजिघृक्षुर्यथार्णवःसर्पतिचातिवेलः ३६ शेषःसुधन्वागिरिशश्चदेवश्चतुर्मुखोयःसत्रिलोचनश्च। तेतारकाख्यामिगतागताजौ क्षोभंयथावायुवशात्समुद्राः ३७ शेषोगिरीशःसपितामहेशश्चोत्क्षुभ्यमाणःसरथेऽम्बरस्थः। विभेदसन्धीषुबलाभिपन्नःकूजन्निनादांश्चकरोतिघोरान् ३८ एकन्तुऋग्वेदतुरङ्गमस्य पृष्ठेपदंन्यस्यवृषस्यचैकम्। तस्थौभवःसोद्यतबाणचापः पुरस्यतत्संगमभीक्षमाणः ३९ तदाभवपदन्यासाद्धयस्यवृषभस्यच।पेतुःस्तनाश्चदंताश्च पीडिताभ्यांत्रिशूलिना ४० ततःप्रभृतिचाश्वानांस्तनादंतागवांतथा। गूढाःसमभवंस्तेन चादृश्यत्वमुपागताः ४१ तारकाख्यस्तुभीमाख्यो रौद्ररक्तान्तरेक्षणः। रुद्रान्तिकेसुसंरुद्धो नन्दिनाकुलनंदिना ४२ परश्वधेनतीक्ष्णेन सनंदीदानवेश्वरम्। तक्षयामासवैतक्षा चन्दनंगन्धदोयथा ४३ परश्वधहतःशूरः शैलादिःसरभोयथा। दुद्रावखड्गं निष्कृष्य तारकाख्योगणेश्वरात् ४४ यज्ञोपवीतमादाय चिच्छेदचनिनादच। ततःसिंहरवोघोरः शङ्खशब्दश्चभैरवः। गणेश्वरैःकृतस्तत्र तारकाख्येनिषूदिते ४५ प्रमथारसितंश्रुत्वा वादित्रस्वनमेवच। पार्श्वस्थःसुमहापार्श्वं विद्युन्मालिंमयोऽब्रवीत् ४६ बहुवदनवतांकिमेषशब्दोनदतांश्रूयतेभिन्नसागराभः। वदवचनंतडिमालिन्किङ्क्मितद्गणपालायुयुधर्ययुर्गजेन्द्राः ४७ इतिमयवचनांकुशार्दितस्तंतडिमालीरविरिवांशुमाली। रणशिरसिसमागतःसुराणां निजगादेदमरिन्दमोऽतिहर्षात् ४८ यमवरुणमहेंद्ररुद्रवीर्यस्तवय

कर पुरसे बाहर आया और अत्यन्त घोरशब्द करनेलगा ३५ और उसपर्व्वतके समान कान्तिवाले मदोन्मत्त हाथीकेतुल्य दैत्यने आयकर शिवजी के रथके पकड़ने की इच्छाकी तब शेषनाग, उत्तम धनुषधारी ब्रह्मा और शिवजी यह तीनों उसतारकासुर पर ऐसे कोपयुक्तहुए जैसेकि वायुके वेगसे समुद्रकोपको करता है शेषनाग समेत ब्रह्माजी और रथपर बैठेहुए शिवजी यह तीनों बलकी संधियों को देखकर कूजतेहुए घोरनादोंको करतेभये ३६।३८ और उसपुरको देखतेहुए महादेवजी एकचरण को ऋग्वेदरूपी घोड़ेकी पीठपर और दूसरे पैरको अपने बैलकी पीठपर रखकर स्थित होतेभये ३९ तब शिवजीके पैरोंकी स्थिति होने से उसघोड़ेके और नादियेके स्तन और दाँतटूटकर गिरजाते भये तभीसे घोड़े और बैलोंकेस्तन और दाँतदृढ़ बनायेगये और ऐसे लगायेगये कि दीखें नहीं ४०।४१ वहांयुद्धमें भयंकर तारकासुर दैत्य क्रोधसे लालनेत्र कर शिवजीके पास आनेलगा तब नादियेने रोक दिया ४२ उसको रोककर नन्दीने तीक्ष्ण कुल्हाड़ेसे उसको हतकिया तब कुल्हाड़ेसे हतहुआ वह दैत्य खड्गको ग्रहणकरके गणेश्वरके सन्मुखसे भाजता भया ४३।४४ तब गणेश्वरने तारकासुरके यज्ञोपवीत छेदन करके बड़ा निनाद शब्द किया इसके अनन्तर सब गणेश्वरों ने भी महाघोर शब्द किया ४५ तब शिवजीके गणोंके नादोंको सुनकर मयदैत्य समीपमेंस्थितहुए विद्युन्मालीसेबोला ४६ कि हेविद्युन्माली यह इन गणोंके नादोंका शब्द होरहा है वा गणेश्वर युद्ध करते हैं अथवा हस्ती गमनकरते हैं इसबातको तुम निश्चय करके कहो ४७ विद्युन्माली मयदैत्यके इसप्रकारके अंकुश रूप

शसोनिधिर्धीरतारकाख्यः। सकलसमरशीर्षपर्वतेन्द्रो युद्धायस्तपतिर्हितारकोगणेन्द्रैः
४९ मृदितमुपनिशम्यतारकाख्यं रविदीप्तानलभीषणायताक्षम्। हृषितसकलनेत्रलोम
सत्वाः प्रमथास्तोयमुचोयथानदन्ति ५० इतिसुहृदोवचनंनिशम्यतत्वं तडिमालेःसम
यस्तुवर्णमाली। रणशिरस्यसिताञ्जनाचलाभो जगदेवाक्यमिदंनवेन्दुमालिम् ५१ वि
द्युन्मालिन्ननःकालः साधितुंह्यवहेलया। करोमिविक्रमेणैतत् पुरंव्यसनवर्जितम् ५२
विद्युन्मालीततःक्रुद्धो मयश्चत्रिपुरेश्वरः। गणान्जघ्नुस्तुद्राधिष्ठाः सहितास्तैर्महासुरैः
५३ येनयेनततोविद्युन्मालीयातिमयश्चसः। तेनतेनपुरंशून्यं प्रमथोपहृतंकृतम् ५४ अ
यमवरुणमृदङ्गघोषैः पणवडिण्डिमज्यास्वनप्रघोषैः। सकरतलपुटैश्चसिंहनादैर्भवम
भिपूज्यसुरावतस्थुः ५५ संपूज्यमानोऽदितिजैर्महात्मभिः सहस्त्ररश्मिप्रतिमौजसैर्विभुः।
अभिष्टुतःसत्यरतैस्तपोधनैर्यथास्तशृङ्गाभिगतोदिवाकरः ५६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्तत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३७॥

(सूत उवाच) तारकाख्येहतेयुद्धे उत्सार्यप्रमथान्मयः। उवाचदानवान्भूयो भूयःस
तुभयावृतान् १ भोःसुरेन्द्राधुनासर्वे निबोधध्वंप्रभाषितम्। यत्कर्त्तव्यंमयाचैव युष्माभि
श्चमहाबलैः २ पुष्यंसमेष्यतेकाले चन्द्रश्चन्द्रनिभाननाः। यदेकंत्रिपुरंसर्वं क्षणमेकंभ
विष्यति ३ कुरुध्वंनिर्भया! काले कोकिलाशंसितेनच। सकालःपुष्ययोगस्य पुरस्यच

वचनोंको सुनकर बडेहर्षपूर्व्वक यह वचनबोला ४८ कि तेरे यशका भंडाररूप बड़ा शूरवीर तारकासुरदैत्य युद्धमें शिवजी के गणोंसे संतप्तहोकर बड़े सन्तापको प्राप्तहोरहाहै ४९ इसप्रकारसे तारकासुरको मरेहुए के समान सुनकर सब गणेश्वर प्रसन्नहो होकर मेघोंकी समान गर्जरहे हैं ५० इसके पीछे वह मयदैत्य इसप्रकार से अपने मित्र विद्युन्माली दैत्यके वचनको सुनकर रणमें श्वेत पर्व्वत के समान स्थितहोकर विद्युन्मालीसे बोला ५१ कि हे विद्युन्माली हमारा काल आगयाहै उसके दूर करनेके लिये मैं अब पराक्रम करताहूं और इस त्रिपुरकोभी कष्टसे रहित करूंगा ५२ यह कहकर विद्युन्माली और मय दैत्य दोनों बड़े क्रोधपूर्वक सबबड़े २ दैत्यों समेत युद्धमें जाकर शिवके गणों को मारते भये ५३ जिस २ मार्ग करके विद्युन्माली और मयदैत्य यह दोनों निकले उस २ मार्गमें कोई भी शिवका गण न रहा अर्थात् सब भागगये ५४ इसके अनन्तर धर्मराज और वरुणके मृदंगोंके शब्दों करके सब देवतालोग शिवजीकी स्तुतिकरतेभये अर्थात् हथेलियोंको नचाकर सिंहोंके समान नादकरके स्थितहोतेभये ५५ अतुल पराक्रमवाले सत्यमेंरत रहनेवाले देवताओंसे पूजितहुए शिवजी ऐसे शोभितहुए मानोंअस्ताचल पर्व्वतके शिखरपर सूर्य्यही स्थित होरहाहै ५६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३७॥

सूतजीबोले कि युद्धमें जब तारकासुर मारागया तब मयदैत्य शिवजी के पार्षदोंको भजाकर वारंवार भयसे युक्तहुए दानवलोगों से बोला १ कि हे दैत्यलोगो अब जो मैं कहताहूं उसको सुनो और हेमहाबली लोगो अब जो हमको और तुमको करनाहै उसकोजानो २ जिसकालमें कि चन्द्रमा पुष्य

मयाकृतः ४ कालेतस्मिन्पुरेयस्तु सम्भावयतिसंहतिम्। सएनंकारयेच्चूर्णं वलिनैकेषुणा सुरः ५ योधांप्राणोबलंयच्च याचवोवैरितासुराः ! । तत्कृत्वाहृदयेचैव पालयध्वमिदंपुरम् ६ महेश्वररथंह्येकं सर्वप्राणेनभीषणम्। विमुखीकुर्वतात्यर्थं यथानोत्सृजतेशरम् ७ ततएवंकृतेऽस्माभिस्त्रिपुरस्यापिरक्षणे। प्रतीक्षिष्यन्तिविवशाः पुष्ययोगंदिवौकसः ८ निशम्यतन्मयस्यैवं दानवास्त्रिपुरालयाः। मुहुःसिंहरवंकृत्वा मयमूचुर्यमोपमाः ९ प्रयत्नेनवयंसर्वे कुर्मस्तवप्रभाषितम्। तथाकुर्मोयथारुद्रो नमोक्ष्यतिपुरेशरम् १० अद्ययास्यामःसंग्रामे तद्रुद्रस्यजिघांसवः। कथयन्तिदितेःपुत्रा हृष्टाभिन्नतनूरुहाः ११ कल्पंस्थास्यन्तिवाखस्थं त्रिपुरंशाश्वतंध्रुवम्। अदानवंवाभविता नारायणपदत्रयम् १२ वयंनधर्महास्यामो यस्मिन्प्रोक्षतितोभवान्। अदैवतमदैत्यंवा लोकंद्रक्ष्यन्तिमानवाः १३ इतिसंमन्त्र्यहृष्टास्ते पुरान्तर्विबुधारयः। प्रदोषेमुदिताभूत्वा चेरुर्मन्मथचारताम् १४ मुहुर्मुक्तोदयोभ्रान्त उदयाग्रेमहामणिः। तमांस्युत्सार्यभगवांश्चन्द्रोजृम्भतिसोऽम्बरम् १५ कुमुदालंकृतेहंसो यथासरसिविस्तृते। सिंहोयथाचोपविष्टो वैदूर्येशिखरेमहान् १६ विष्णोर्यथाचविस्तीर्णे हारश्चोरसिसंस्थितः। तथावगाढेनभसि चन्द्रोत्रिनयनोद्भवः। भ्राज

नक्षत्रमें आवेगा उससमय यह त्रिपुर क्षणमात्रमें एक होजायगा ३ सो तुमनिर्भयहोकर कोकिलाओंकेसे शब्दकरो वही पुष्य योग मैंने इस पुरकाकाल वनायाहै ४ उस समयपर जो कोई इस पुरमें सब दैत्योंके समूहोंको रोकेगा वह एकही बाणकरके इस पुरको दग्धकर देगा ५ हे योधाओ प्राण, बल और वैरी देवतालोग इन सवको हृदयमें धारणकरके इस पुरकी पालनाकरो और शिवजी के भयंकर रथको एते विमुख करदो जिस्से कि वह बाणको नहीं छोड़सकें ६।७इसप्रकारसे जब हम त्रिपुरकी रक्षाकरलेंगे तव विवशहुए देवता पुष्ययोगको देखेंगे ८ त्रिपुरवासी दानवमयके इसप्रकारके वचनको सुन. कर वारंवार सिंहनादको करके धर्मराजके सदृश मयदैत्य से बोले ९ कि हम सब तुम्हारे कहे. हुए को यत्नपूर्वक करेंगे और वही उपाय करेंगे जिस्से कि शिवजी पुरमें बाणको न छोड़सकेंगे १० अबहम उन शिवजी के मारनेके निमित्त युद्ध में जायँगे ऐसी २ बातें दैत्य लोग प्रसन्नता से कहनेलगे ११ चाहे यहत्रिपुर आकाशमें स्थित सदैवरहे अथवा दानवों से रहितहोकर नारायणके चरणों से युक्त होजाय परन्तु हमको आप जहां भेजोगे या जो कुछ उपदेशकरोगे वह हमकभी न त्यागेंगे १२ सबमनुष्य कै तो देवताओंसे रहित अथवा दैत्यों से रहित इसपृथ्वी समेत लोकको देखेंगे १३ प्रसन्न हुए दैत्य ऐसी सलाहकरके रात्रिके समय आनन्दसे कामदेवकी क्रीड़ाकरनेमें प्राप्तहोगये १४ और परस्पर में कहनेलगे कि उदयाचल पर्व्वतके अग्रभाग पर वारंवार महामणिके समान भ्रान्तियुक्तहुआ यहचन्द्रमा अंधकारको दूरकरके आकाशमें उदयहोगया १५ जैसे कि कमलोंसे अलंकृत बड़े सरोवर पर हंस बैठाहो, वैदूर्यमणि के शिखरपर बड़ासिंह बैठाहो और जैसे कि विष्णुजी के वक्षःस्थलपर मुक्ताओं का हारपड़ाहो उसी प्रकार अंधेरी रात्रि के समय आकाशमें उदयहुआ चन्द्रमा अपने बलसे किरणोंको छोड़ताहुआ और सबलोकों को प्रकाशित कर-

तेभ्राजयन्लोकान् सृजन्ज्योत्स्नारसंबलात् १७ शीतांशावुदितेचन्द्रे ज्योत्स्नापूर्णेपुरेऽसुराः। प्रदोषेललितंचक्रुर्गृहमात्मानमेवच १८ रथ्यासुराजमार्गेषु प्रासादेषुगृहेषुच। दीपाऽश्चम्पकपुष्पाभा नाल्पस्नेहप्रदीपिताः। तदामठेषुतेदीपाः स्नेहपूर्णाःप्रदीपिताः १९ गृहाणिवसुमन्त्येषां सर्वरत्नमयानिच। ज्वलतोदीपयन्दीपान् चन्द्रोदयमिवग्रहाः २० चन्द्रांशुभिर्भासमानमन्त्रदीपैःसुदीपितम्। उपद्रवैःकुलमिव पीयतेत्रिपुरेतमः २१ तस्मिन्पुरेवै तरुणप्रदोषे चन्द्राट्टहासे तरुणप्रदोषे। रत्यर्थिनोवै दनुजागृहेषुसहाङ्गनाभिःसुचिरंविरेमुः २२ विनोदितायेतुवृषध्वजस्य पञ्चेषवस्तेमकरध्वजेन। तत्रासुरेष्वासुरपुङ्गवेषु स्वाङ्गाङ्गनाःस्वेदयुताबभूवुः २३ कलप्रलापेषुचदानवीनां वीणाप्रलापेषुचमूर्च्छितांस्तु। मत्तप्रलापेषुचकोकिलानां सचापबाणोमदनोममंथ २४ तमांसिनैशानिद्रुतंनिहत्य ज्योत्स्नावितानेनजगद्वितत्य। खेरोहिणीताञ्चप्रियांसमेत्य चंद्रःप्रभाभिःकुरुतेऽधिराज्यम् २५ स्थित्वैवकांतस्यतुपादमूले काचिद्वरस्त्रीस्वकपोलमूले। धत्तेविशोकंरुदतीकरोति तेनाननंस्वंसमलंकरोति २६ दृष्ट्वाननंमण्डलदर्पणस्थं महाप्रभामेमुखजेति जप्त्वा। स्मृत्वावरङ्गीरमणेरितानि तेनैवभावेनरतीमवाप २७ रोमाञ्चितैर्गात्रवरैर्युवभ्योरतानुरागाद्रमणेनचान्याः। स्वयंद्रुतंयान्तिमदाभिभूताः क्षपायथाचार्कदिनावसाने २८

ताहुआ आपभी प्रकाशितहोरहाहै १६।१७ वह शीतल किरणों वाला चन्द्रमा उस पुरमें उदयहुआ तब वह दैत्य अपने गृहसमेत आत्माको ललित करतेभये १८ साधारण मार्ग, राजमार्ग महल चौमहल इनपर धरेहुए तैलादिकों से भरेहुए भी दीपक चम्पे के पुष्पों के समान प्रकाशित होते भये और द्रव्यों समेत सबरत्नोंवाले अन्यदैत्यों के घर प्रकाशमान दीपकोंको भी फिर ऐसे अधिक प्रकाशित करनेलगे जैसे कि चन्द्रमाके उदयमें अन्य२ ग्रहप्रकाशित होजाते हैं १९।२० चन्द्रमा और दीपकोंके प्रकाशोंसे उस पुरके बाहरभीतरका अन्धकार ऐसे दूरहोगया जैसे कि उपद्रव और कलह होनेसे कुलकानाश होजाताहै २१ जब उसपुर में चन्द्रमाकी किरणें अच्छेप्रकार से खिलकर प्रकाशितहुईं तब रमणकरनेकी इच्छावाले दैत्य अपनी २ स्त्रियों के साथ अच्छेप्रकारसे रमणकरतेभये २२ तब शिवजी के बाणोंमें जो कामदेवने अपने पांच बाण युक्तकर रक्खेथे वहसब बाण उन दैत्यों की स्त्रियोंके अंगमें पसीना रूपहोकर प्राप्तहोजाते भये २३ उसकामदेवके प्रभावसे दानवों की स्त्रियां सुन्दर बोलने लगीं श्रेष्ठवीनाओं का शब्दकरनेलगीं कोकिलाओं के शब्द होनेलगे तब धनुषबाण से युक्तहुआ कामदेव बाधाकरनेलगा २४ चन्द्रमा शीघ्रता से रात्रि के अन्धकारको दूरकरके संसारमें अपनी किरणोंको फैलाताहुआ अपनी प्रियारोहिणीको प्राप्तहोके किरणों से आकाश में राज्यकरता भया २५ कोई दैत्यकीस्त्री अपने पतिके पैरों में स्थितहो अपने कपोलोंपर हाथधरकर प्रेमके आंसुओं से रुदनकरती अपनेमुखको अलंकृतकरतीभयी २६ कोई अपने मुखको दर्पणमें देखकर यहकहनेलगी कि मेरे मुखकी बड़ीकान्तिहै इसकेपीछे रमणका स्मरणकरके परमानन्दको प्राप्तहोतीभयी २७ कोई स्त्रियां अपने तरुणपतियोंके अनुरागसे रोमांचितों से युक्तहो शीघ्रही पतियोंके समीप ऐसे जातीभयीं जैसे

पेपीयतेचातिरसानुविद्धा विमार्गितान्याचप्रियंप्रसन्ना । काचित्प्रियस्यातिचिरात्प्रसन्ना
आसीत्प्रलापेषुचसम्प्रसन्ना २९ गोशीर्षयुक्तैर्हरिचंदनैश्च पङ्काङ्किताक्षीरधरासुरीणाम् ।
मनोज्ञरूपारुचिरावभूवुः पूर्णामृतस्येवसुवर्णकुम्भाः ३० क्षताधरोष्ठाकृतदोषरक्ताललंति
दैत्यादयितासुरक्ताः । तन्त्रीप्रलापास्त्रिपुरेषुरक्तास्त्रीणांप्रलापेषुपुनर्विरक्ताः ३१ कचित्प्र
वृत्तंमधुराभिगानं कामस्यबाणैःसुकृतंनिधानम् । आपानभूमीषुसुखप्रमेयं गेयंप्रवृत्तन्त्वथ
साधयंति३२गेयंप्रवृत्तंत्वथशोधयंति केचित्प्रियांतत्रचसाधयंति।केचित्प्रियांसम्प्रतिबो
धयंतिसम्बुध्यसम्बुध्यचरामयंति३३चूतप्रसूनप्रभवःसुगन्धःसूर्येगतेवैत्रिपुरेवभूवासमं
रोनूपुरमेखलानां शब्दश्चसम्बाधतिकोकिलानाम् ३४ प्रियावगूढादयितोपगूढा काचित्प्र
रूढाङ्करुहापिनारी।सुचारुवाष्पांकुरपल्लवानां नवाम्बुसिक्ताइवभूमिरासीत् ३५ शशाङ्क
पादैरुपशोभितेषु प्रासादवर्येषुवराङ्गनानाम् । पानेनस्विन्नादयितातिवेलङ्कपोलमाप्राति
चकिंममेदम् ३६ आरोहमेश्रोणिमिमांविशालांपीनोन्नताङ्काञ्चनमेखलाढ्याम् ।रथ्यासुचंद्रो
दयभासितासुसुरेन्द्रमार्गेषुचविस्तृतेषु ३७ दैत्यांगनायूथगताविभान्ति तारायथाचंद्रमसो
दिवान्ते ३८ घण्टाट्टहासेषुचचामरेषु प्रेङ्खासुचान्यामदलोलभावात् । सन्दोलयन्तेकल
सम्प्रहासाः प्रोवाचकाञ्चीगुणसूक्ष्मनादा ३९ अम्लानमालान्वितसुन्दरीणां पर्यायए

कि दिनकेअन्तमें शीघ्रहीरात्रि आजाती है कोईस्त्रीकापति अपनीप्यारीस्त्रीके मुखकोपानकरताहै कोई अपने पतिके वारंवार बोलनेसे आप संभाषण करके प्रसन्नहोती है २८।२९ उन दानवोंकी स्त्रियोंकी कुचा गोरोचन, चन्दन आदिक गन्ध से ऐसी शोभितहुई जैसे कि अमृतसे भरेहुए सुवर्णके कलशों की शोभाहोती है ३० उस रात्रिमें सब दैत्य अपनी ललित स्त्रियों के वशमें होतेभये स्त्रियोंके पुर में वीनोंके वाजे और बोलनेसे भी अत्यन्तही प्रीतिको प्राप्तहोते भये ३१ कोई स्त्री मधुर२ गानकर के कामके वाणोंको छोड़तीहुई एकान्त स्थानमें ललित गीतोंके गाने का प्रारंभ करतीभई ३२ कितनेही दैत्य अन्य स्त्रियों के गानको आप गाकर अपनी प्रिया स्त्रीको सुनाकर नानाप्रकार से बोधितकरते हुए रमणकरते भये ३३ उस त्रिपुर में आमोंके पुष्पों की सुगन्धि होतीभई उस समय स्त्रियों के नूपुर क्षुद्रघंटिका और किंकिणी आदि के शब्द कोकिलाओं के भी शब्दों को लज्जित करतेथे ३४ किसी दैत्य की स्त्री अपने पतिको दृढ़ आलिंगन करने के कारण रोमांचों के उठ आनेसे ऐसी शोभितहुई जैसे कि नवीन जल वर्षनेसे अंकुर उत्पन्न होजाने के कारण पृथ्वी की शोभा होजाती है ३५ उत्तम स्थानों पर सोती हुई स्त्रियों की शोभा चन्द्रमाकी किरणों करके अत्यन्तही होती भई क्योंकि वह वारंवार सुन्दर मीठी२ वाणी करके अपने पतियोंसे कहतीथीं कि तुम मेरे इस कपोलको क्यानहीं देखतेहो तुम मेरी ऊंची और सुवर्ण की किंकिणी से शोभित बड़ी विशाल कटि पर चढ़जाओ, जब चन्द्रमाके उदय होने से पुरके उत्तम राजमार्ग प्रकाशित होगये उस समय दैत्यों की स्त्रियों के समूह ऐसे शोभित हुए जैसे कि चन्द्रमा की किरणों के आगे तारागण चिमचिमाते हुए शोभितहोते हैं ३६ । ३८ कोई स्त्री घण्टाओं के शब्द और चमरों से कामदेव की चंचलता

षोऽस्तिचहर्षितानाम् । श्रूयन्तिवाचःकलधौतकल्पा वापीषुचान्येकलहंसशब्दाः ४०
काञ्चीकलापश्चसहाङ्गरागः प्रेङ्खासुतद्वासकृताश्चभावाः । छिन्दन्तितासामसुराङ्गनानां
प्रियालयान्मन्मथमार्गणानाम् ४१ चित्राम्बरश्चोद्धृतकेशपाशः सन्दोल्यमानः शुशु
भेऽसुरीणाम् । सुचारुवेषाभरणैरुपेतस्तारागणैर्ज्योतिरिवासचन्द्रः ४२ सन्दोलनादु
च्छ्रसितैश्छिन्नसूत्रैः कांचीभ्रष्टैर्मणिभिर्विप्रकीर्णैः । दोलाभूमिस्तैर्विचित्राविभाति चन्द्र
स्यपार्श्वोपगतैर्विचित्रा४३सचन्द्रिकेसोपवनेप्रदोषे रुतेषुछन्देषुचकोकिलानाम्।शरव्य
यंप्राप्यपुरेऽसुराणां प्रक्षीणबाणोमदनश्चचार ४४ इतितत्रपुरेऽमरद्विषाणां सपदिद्विप
श्चिमकौमुदीलदासीत् । रणशिरसिपराभविष्यतांवै भवतुरगैःकृतसंक्षयाश्चरीणाम् ४५
चन्द्रोऽथकुन्दकुसुमाकरहारवर्णो ज्योत्स्नावितानरहितोऽभ्रसमानवर्णः । विच्छायतांहि
समुपेत्यनभातितद्वद्भाग्यक्षयेधनपतिश्चनरोविवर्णः ४६ चन्द्रप्रभामरुणसारथिनाभिभू
य सन्तप्तकाञ्चनरथाङ्गसमानविम्बः । स्थित्वोदयाग्रमुकुटेबहुरेवसूर्य्यो भात्यम्बरेतिमिर
तोयवहान्तरिष्यन् ४७ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे ऽष्टात्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३८ ॥
(सूत उवाच) उदितेतुसहस्रांशौ मेरौभासाकरेरवौ । नदद्देवकुलंकृत्स्नं युगान्तइव

के कारण खेलने की क्रीड़ा करती हुई किंकिणी के सूक्ष्मनादों को करती भयी ३९ सुन्दर मालाओं से भूषित उन महास्वरूपा स्त्रियों की वाणी ऐसी शोभादेरहीथी जैसे कि वापिका और तड़ागों पर राजहंसों के शब्द शोभित मालूम होतेहैं ४० उन स्त्रियों की किंकिणियों के शब्दों का श्रवण अंगों की शोभा और सुन्दर हावभाव यह सब उन स्त्रियों के कामदेवकी पीड़ा के दूर करनेवाले होते भये ४१ उनके सुन्दर विचित्र वस्त्र गुंथेहुए केश और सुन्दर रूप उत्तम आभूषणों से युक्त होकर एस शोभित हुए जैसी कि तारागणों से चन्द्रमा की किरणें शोभायमान होजाती हैं ४२ कितनीहीं स्त्रियां हिंडोले में क्रीड़ा करतीभयीं उससमय उनके उछलने से सूत्रोंके टूटजाने के कारण उनकी किंकिणी टूट गई और मणियां खिंडिगईं उन मणियों के कारण से झूलने के स्थान की भूमि विचित्र होकर प्रकाशित होती भयी ४३ चन्द्रमा की किरणों से खिली हुई रात्रिमें बाग बगीचों के भीतर कोकिलाओं के शब्द होतेभये जब ऐसी शोभा में कामदेवके बाण क्षीणहोगये तबक्षीणबाणों वाला कामदेव दैत्योंके पुरमें विचरताभया ४४ इसी प्रकार क्रीड़ाही करते हुए चन्द्रमा की किरणें पश्चिममें जातीहुई तब रणभूमि में शिवजीके घोड़ों करके दैत्यों का तिरस्कार होताभया ४५ इस के पीछे कुन्दके पुष्पों और रक्त बादलके समान वर्ण वाला लाल चन्द्रमा होकर ऐसेप्रकाशित नहीं रहा जैसे कि भाग्यके नष्टहोजाने पर धनीपुरुषकी कांति नहीं रहती है ४६ चन्द्रमा की कान्ति सूर्य्य से तिरस्कृतहोकर तप्तसुवर्ण के समान विम्बवाली होगई उससमय सूर्य्यउदयाचल पर्वतके अग्रभागपरस्थित होकर सब अन्धकारको दूर करताभया ४७ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३८ ॥

सूतजीबोले कि जब सुमेरु पर्वत पर सूर्य्यका उदय होगया तब देवताओंके समूह ऐसेनाद क-

सागराः १ सहस्रनयनोदेवस्ततःशक्रःपुरन्दरः। सवित्तदःसवरुणस्त्रिपुरंप्रययौहरः २
तेनानाविधरूपाश्च प्रमथातिप्रमाथिनः। ययुःसिंहरवैर्घोरैर्वादित्रनिनदैरपि ३ ततोवा
दितवादित्रैश्चातपत्रैर्महाद्रुमैः। बभूवतद्बलंदिव्यं वनंप्रचलितंयथा ४ तदापतन्तंसंप्रेक्ष्य
रौद्रंरुद्रबलंमहत्। संक्षोभोदानवेन्द्राणां समुद्रप्रतिमोबभौ ५ तेचासीन्पट्टिशाञ्छक्तीः
शूलदण्डपरश्वधान्। शरासनानिवज्राणि गुरूणिमुसलानिच ६ प्रगृह्यकोपरक्ताक्षाः
सपक्षाइवपर्वताः। निजघ्नुःपर्वतप्राय घनाइवतपात्यये ७ सविद्युन्मालिनस्तेवै समया
दितिनन्दनाः। मोदमानाःसमासेदुर्देवदेवैःसुरारयः ८ मर्तव्यकृतबुद्धीनां जयेचानिश्चि
तात्मनाम्। श्रवलानाञ्चमूह्यासीदवलावयवाइव ९ विगर्जन्तइवाम्भोदा अम्भोदसदृश
त्विषः। प्रयुद्धायुद्धकुशलाः परस्परकृतागसः १० धूमायन्तोज्वलद्भिश्च आयुधैश्चन्द्र
वर्चसैः। कोपाद्वायुद्धलुब्धाश्च कुट्टयन्तेपरस्परम् ११ वज्राहताःपतन्त्यन्ये बाणैरन्येवि
दारिताः। अन्येविदारिताश्चक्रैः पतन्तिह्युदधेर्जले १२ छिन्नस्रग्दामहाराश्च प्रनष्टाम्ब
रभूषणाः। तिमिनक्रगणेचैव पतन्तिप्रमथाःसुराः १३ गदानांमुसलानाञ्च तोमराणांपर
श्वधाम्। वज्रशूलर्ष्टिपातानां पट्टिशानाञ्चसर्वतः १४ गिरिशृङ्गोपलानाञ्च प्रेरितानांप्रम
न्युभिः। सजवानांदानवानां सधूमानांरवित्विषाम्। आयुधानांमहानोघः सागरौघेपत
त्यपि १५ प्रवृद्धवेगैस्तैस्तत्र सुरासुरकरेरितैः। आयुधैस्त्रस्तनक्षत्रः क्रियतेसंक्षयोमहा

रते भये जैसे कि युगके अन्त में समुद्रों के शब्द होते हैं १ तदनन्तर सहस्राक्ष इन्द्र, कुबेर और वरुण इनसब समेत शिवजी त्रिपुर में जातेभये २ और अनेकप्रकारके रुप वाले शिवजी के गणं सिंह के समान शब्दोंको करतेहुए बाजे बजाकर त्रिपुरमें जातेभये ३ तब बाजोंके बजानेसे उनगणों समेत देवताओंकी सेना ऐसी शोभित विदितहोतीथी जैसेकि वृक्षोंसमेत वनजाताहो ४ फिर शिवजी की बड़ीभारी सेनाको आताहुआ देखकर दैत्योंने समुद्रके समान क्षोभाकिया ५ और क्षोभयुक्तहोकर खड्ग, पट्टिश, शस्त्रवरछी, शूल, दण्ड, कुल्हाड़े, बाण, वज्र और भारी२ मूसलोंको ग्रहण करके क्रोधसे रक्तनेत्र सपक्ष पर्वतोंके समान आकर ऐसे शस्त्रोंको मारने लगे जैसे कि वर्षाऋतुमें मेघों की वर्षाहोती है ६-७ विद्युन्माली दैत्यसे आनन्दित कियेहुए वहसब दैत्य देवताओंसे युद्ध करनेलगे ८ मरने में बुद्धिकिये जीतनेकी आशासे रहितहुई वह दैत्यों की सेना ऐसी होजाती भयी जैसे कि बलसे रहित शरीर होजाता है ९ मेघके समान कान्तिवाले दैत्य मेघोंके समान गर्जकर परस्पर प्रहार करके युद्धकरतेभये १० धूम्रके से वर्णवाले दैत्य ज्वलित अग्नि और चन्द्रमा के समानप्रकाशितशस्त्रोंको ग्रहणकरके बड़े युद्धपूर्वक शत्रुओंको कूटतेभये ११ कोई दैत्यवज्रसेहत होकर गिरे कोई बाणोंसे और चक्रसे कटेहुए होकर समुद्रके जलमें गिरे १२ और कटीहुई माला हार और आभूषणोंसे युक्त मरेहुए शिवगण और देवतालोग भी मकर मत्स्य और नाकेआदिकोंके गणोंमें गिरते भये १३ उससमय गदा, मुसल, तोमर, कुल्हाड़े, वज्र, शूल और बरछी इनसबके आघात शब्द, क्रोधसे पटकीहुई शिलाओं के शब्द और धूम्रवर्णवाले समुद्र में गिरतेहुए दैत्यों का शब्द महादारुण होता

न् १६ क्षुद्राणाङ्गजयोर्युद्धे यथाभवतिसंक्षयः। देवासुरगणैस्तद्वत्तिमिनक्रक्षयोऽभवत् १७ विद्युन्मालीचवेगेन विद्युन्मालीइवाम्बुदः। विद्युन्मालघनोन्नादो नन्दीश्वरमभिद्रुतः १८ सतन्तमोऽरविदनं प्रनदन्वदतांवरः। उवाचयुधिशैलादिन्दानवोऽम्बुधिनिस्वनः १९ युद्धाकांक्षीतुबलवान् विद्युन्माल्यहमागतः। यदिलिदानीमेजीवन्मुच्यसेनन्दिकेश्वर!। नविद्युन्मालिहननं वचोभिर्युधिदानवः २० तमेवंवादिनंदैत्यं नन्दीशस्तपताम्बरः। उवाचप्रहरंस्तत्र वाद्यलङ्कारवद्वचः २१ दानवा! धर्म्मकामानां नैषोऽवसरइत्यतः। शक्तोहन्तुंकिमात्मानं जातिदोषाद्विबृंहसि २२ यदितावन्मयापूर्वं हतोऽसिपशुवद्यथा। इदानींवाकथंनाम नाहिस्येकतुदूषणम् २३ सागरंतरतेदोर्भ्यां पातयेद्योदिवाकरम्। सोऽपिमांशक्नुयान्नैव चक्षुर्भ्यांसमवीक्षितुम् २४ इत्येवंवादिनंतत्र नन्दिनंतन्निभोबले। विभेदैकेषुणादैत्यः करणार्कइवाम्बुदम् २५ वक्षसःसशरस्तस्य पपौरुधिरमुत्तमम्। सूर्य्यस्त्वात्मप्रभावेण नद्यर्णवजलंयथा २६ सतेनसुप्रहारेण प्रथमश्चातिरोषितः। हस्तेनवृक्षमुत्पाट्य चिक्षेपगजराडिव २७ वायुनुन्नःसचतरुः शीर्णपुष्पोमहारवः। विद्युन्मालिशरैश्छिन्नः पपातपतगेशवत् २८ वृक्षमालोक्यतंछिन्नं दानवेनवरेषुभिः। रोषमाहारयत्तीव्रं नन्दीश्वरसुविग्रहः २९ सोद्यम्यकरमारावे रविशक्रकरप्रभम्। दुद्रावहन्तुंसक्रूरं महिषं

भया१४।१५ आकाशमें बढ़ेहुए वेगवाले देवता और दैत्योंके छोड़े हुए अस्त्रशस्त्रों के नक्षत्रोंकावड़ा क्षय हुआ १६ जैसे कि हाथियोंके युद्धमें छोटे २ जीवोंका क्षयहोजाता है इसी प्रकार देवता और दैत्यों के युद्धमें मकर मत्स्यादिक जीवोंका नाश होताभया १७ जैसे कि बिजलियों वाला मेघ बड़े वेगसे आता है उसी प्रकार बड़े वेगपूर्वक विद्युन्माली दैत्य नन्दिकेश्वर के सन्मुख आताभया १८ सूर्य्य केसमान कान्तिवाला विद्युन्माली दैत्य समुद्रके समानगर्जकर नन्दिकेश्वरसे बोला १९ कि हे नन्दिकेश्वर युद्धकी इच्छाकरनेवाला मैं विद्युन्माली दैत्य अब आयाहूं सोतुममें सामर्थ्य होय तो मेरे जीवको छुटा २० इसप्रकार कहते हुए उसदैत्यके ऊपर नन्दिकेश्वर प्रहार करके यहवचन बोला हे दानव यहाँ धर्मकामोंका अवसर नहींहै जो आत्माके मारनेमें समर्थहै ऐसातू अपनी जातिके दोषसे क्या बढ़सक्ताहै २१।२२जोतू अबपशुकेही समान मुझसेहत होसक्ताहै तो क्यामैं तुझयज्ञमें दोष करनेवाले को नहीं मारूंगा अर्थात् अवश्यही मारूंगा २३ जो समुद्रमें हाथोंसेतिरै और सूर्य्यको भी चाहैनीचे गिरालै वहभी मुझको नेत्रोंसे देखनेको समर्थ नहीं है २४ इसप्रकार कहते हुए नन्दिकेश्वरको वहदैत्य एकवाणसे ताड़ितकरता भया २५ वहबाण नन्दिकेश्वरकी छाती के रुधिरको ऐसे पीताभया जैसे कि सूर्य्य अपने प्रभावसे नदीके जलको शोपण करलेताहै २६ तबवह नन्दिकेश्वर उसके प्रथम प्रहारसे क्रोधितहोकर अपने हाथसे एकवृक्षको उखाड़ उसदैत्यपर फेंकताभया २७ वायुसे प्रेरित शिथिल पुष्पोंसे युक्त बड़े शब्द समेत वहवृक्ष विद्युन्माली दैत्यके बाणोंसे कटकर पक्षीके समान गिरताभया २८ फिर उत्तम बाणों करके उसदानवसे गिराये हुए उसवृक्षको देखकर नन्दिकेश्वर अत्यन्त क्रोधित हुआ २९ फिर हाथों को उठाके सूर्य्यकी समान कान्तिवाले उसक्रूर दैत्यके

गजराडिव ३० तमापतन्तंवेगेन वेगवान्प्रसभंबलात्। विद्युन्मालीशरशतैः पूरयामास नन्दिनम् ३१ शरकण्टकिताङ्गोवै शैलादिःसोऽभवत्पुनः। अरेर्गुह्यरथंतस्य महतःप्रययौजवात् ३२ विलम्बिताश्वोविशिरो भ्रमितश्चरणेरथः। पपातमुनिशापेन सादित्योऽर्करथोयथा ३३ अन्तरान्निर्गतश्चैव माययासदितेःसुतः। आजघानतदाशक्त्या शैलादिंसमवस्थितम् ३४ तामेवतुविनिष्क्रम्य शक्तिंशोणितभूषिताम्। विद्युन्मालिंसमुद्दिश्य चिक्षेपप्रमथाग्रणीः ३५ तयाभिन्नतनुत्राणो विभिन्नहृदयस्त्वपि। विद्युन्माल्यपतद्भूमौ वज्राहतइवाचलः ३६ विद्युन्मालिनिनिहते सिद्धचारणकिन्नराः। साधुसाध्वितिचोक्त्वा तेपूजयन्तउमापतिम् ३७ नन्दिनासादितेदैत्ये विद्युन्मालौहतेमथः। ददाहप्रमथानीकं वनमग्निरिवोद्धतः ३८ शूलनिर्दारितोरस्का गदाचूर्णितमस्तकाः। इषुभिर्गाढविद्धाश्च पतन्तिप्रमथार्णवे ३९ अथवज्रधरोयमोर्थदः सचनन्दीसचषण्मुखोगुहः। मयमसुरवीरसम्प्रवृत्तं विविधुःशस्त्रवरैर्हतारयः ४० नागन्तुनागाधिपतेःशताक्षं मयोविदार्येषुवरेण तूर्णम्। मयश्चवित्ताधिपतिश्चविद्धा ररासमत्ताम्बुदवत्तदानीम् ४१ ततःशरैःप्रमथगणैश्च दानवा दृढाहताश्चोत्तमवेगविक्रमाः। भृशानुबिद्धास्त्रिपुरंप्रवेशिता यथाशिवश्चक्रधरेण संयुगे ४२ ततस्तुशङ्खानकभेरिमर्दलाः ससिंहनादादनुपुत्रभञ्जदाः। कपर्दिसैन्येप्रबभुः समन्ततो निपात्यमानायुधिवज्रसन्निभाः ४३ अथदैत्यपुराभावे पुष्ययोगोबभूवह। बभू

सन्मुख नन्दिकेश्वर हाथी के समान दौड़ताभया उस वेगसे आतेहुए नन्दीको विद्युन्माली दैत्य सैकड़ों बाणोंकरके ताड़ित करता भया ३०।३१ बाणोंसे बिंधेहुए अंगवाला वह नन्दिकेश्वर उस दैत्यके गुप्तरथके प्रति बड़े वेगकरके प्राप्त होताभया ३१ तबरणमें भ्रमायाहुआ वह अश्वोंसे रहित रथ शिखासे रहित होकर ऐसे गिरताभया मानों किसीमुनिके शापसे सूर्य्यसमेत सूर्य्यकारथ गिरापड़ाहो, तब उसरथमेंसे वहदैत्य अपनी मायासे बाहर निकलकर नन्दिकेश्वर को बरछीसे ताड़न करताभया ३३। ३४ फिर नन्दिकेश्वरभी रुधिरसे भरीहुई उसीबरछीको विद्युन्माली दैत्यके मारता भया ३५ उस बरछीसे कटेहुए अंग और छाती वाला वह विद्युन्माली पृथ्वीपर ऐसे गिरता भया मानो वज्रके लगनेसे पर्व्वत गिरपड़ाहो ३६ जब विद्युन्माली दैत्य मारागया तब सिद्धचारण और गन्धर्वादिकोंके समूह जय २ शब्द करके शिवजीका पूजनकरते भये ३७ जब नन्दिकेश्वरने विद्युन्माली दैत्य को मारा तब मयदैत्य शिवजीके गणोंकी सेनाको अपनी मायासे ऐसे दग्धकरता भया मानों वनको अग्निही दग्ध कररहाहै ३८ शूलसे कटीहुई छातीवाले, गदासे चूर्णहुए मस्तकोंवाले, बाणोंसे दृढ़ बिंधेहुए शिवके पार्षद समुद्रके जलमें गिरते भये ३९ इसके पीछे वज्रधारी धर्मराज, कुबेर, नन्दिकेश्वर, और स्वामिकार्तिक यहसब मयदैत्यको अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे ताड़ना करते भये ४० तब मयदैत्य इन्द्रके ऐरावत हाथीको और कुबेरको बाणोंसे पीड़ितकरके मेघके समान गर्जता भया ४१ उस समय गणेश्वरोंके बाणोंसे पीड़ित हुए दानव त्रिपुरमें प्रवेश करनेके लिये ऐसे भागे जैसेकि पूर्व्वमें विष्णुके आगेसे शिवजी भागेथे ४२ इसपीछे शंख, भेरी और मृदंगादिकोंके शब्द होतेभये और सब दैत्यसिंहकेसे शब्द

वचापिसंयुक्तं तद्योगेनपुरत्रयम् ४४ ततोबाणंत्रिधादेवस्त्रिदैवतमयंहरः। मुमोचत्रिपुरे तूर्णं त्रिनेत्रस्त्रिपदाधिपः ४५ तेनमुक्तेनबाणेन बाणपुष्पसमप्रभम्। आकाशंस्वर्णसङ्काशं कृतंसूर्येणरञ्जितम् ४६ मुक्तात्रिदैवतमयं त्रिपुरेत्रिदशःशरम्। धिग्धिङ्मामितिच क्रन्द कष्टंकष्टमितिब्रुवन् ४७ वैधुर्यंदैवतंदृष्ट्वा शैलादिर्गजवद्गतः। किमिदन्त्वितिपप्रच्छ शूलपाणिंमहेश्वरम् ४८ ततःशशाङ्कतिलकः कपर्दीपरमार्तवत्। उवाचनन्दिनंभक्तः स मयोऽद्यविनंक्ष्यति ४९ अथनंदीश्वरस्तूर्णं मनोमारुतवद्बली। शरेत्रिपुरमायातित्रिपुरंप्रविवेशसः ५० समयम्प्रेक्ष्यगणपः प्राहकाञ्चनसन्निभः। विनाशस्त्रिपुरस्यास्य प्राप्तोमय!सुदारुण. ५१ अनेनैवगृहेणत्वमपक्रामब्रवीम्यहम्। श्रुत्वातन्नन्दिवचनं दृढभक्तोमहेश्वरे। तेनैवगृहमुख्येन त्रिपुरादपसर्पितः ५२ सोऽपीषु पत्रपुटवद्दग्ध्वातन्नगरत्रयम्। त्रिधाइवहुताशश्चसोमोनारायणस्तथा ५३ शरतेजःपरीतानि पुराणिद्विजपुङ्गवाः!। दुष्पुत्रदोषाद्दह्यन्ते कुलान्यूर्ध्वंयथातथा ५४ मेरुकैलासकल्पानि मंदराग्रनिभानिच। सकपाटगवाक्षाणि वलिभिःशोभितानिच ५५ सप्रासादानिरम्याणि कूटागारोत्कटानिच। सजलानिसमाख्यानि सावलोकनकानिच ५६ बद्धध्वजपताकानि स्वर्णरौप्यमयानिच। गृहाणितस्मिंस्त्रिपुरे दानवानामुपद्रवे। दह्यंतेदहनाभानि दहनेनसहस्रशः ५७ प्रासादाग्रेषुरम्येषु व

करतेहुए चारोंओरसे शिवजीकी सेनामें प्राप्तहोतेभये ४३ इसके अनन्तर दैत्यके पुरका नाशकारी पुष्ययोग आया उसयोगमें तीनोंपुर इकट्ठे होजातेभये ४४ तब तीननेत्रोंवाले शिवजी तीन देवताओंसे युक्तहुए बाणको उस त्रिपुरमें शीघ्रही छोड़ते भये ४५ उस बाणसे वरिवहुटी और सुवर्णके समान लाल आकाश होगया ४६ उस समय शिवजी उस त्रिदेवमय बाणको त्रिपुरमें छोड़कर ऐसा कहतेभये कि बड़ाकष्टहै कष्टहै और मुझेभी धिक्कारहै ४७ इसप्रकारसे शोचकरतेहुए शिवजीको नन्दिकेश्वर देखकर पूछने लगा कि यहक्याहै ४८ तब शिवजी परमदुःखित हुएके समान नन्दिकेश्वरसे बोले कि अबमेरा भक्त मय दैत्य नष्ट होजायगा ४९ इसके पीछे बड़ी शीघ्रतासे वह नन्दिकेश्वर वायुके समान वेग करके त्रिपुरमें प्रवेश करजाता भया ५० वहाँ दैत्योंके अधिपति मय दैत्यको देखकर यह वचन बोला कि हे मय अब इसपुरके दारुण नाशका समय आगया है सो मैं यहकहताहूं कि तू इस स्थानसे निकलजा इस वचनको सुनकर वह शिवजीका दृढभक्त मय दैत्य उस त्रिपुर गृहसे निकल जाताभया ५१। ५२ तबउस बाणने पत्तों के समूहों के समान उस त्रिपुरको दग्धकरडाला उस बाणमें अग्नि, चन्द्रमा और नारायण इनतीन देवताओंका तेजथा इसी हेतुसे इसबाणके द्वारा वह त्रिपुर ऐसे दग्ध होगये जैसे कि कुकर्मी पुत्रके दोषसे कई ऊपर नीचे के कुलोंका नाश होजाताहै ५३। ५४ सुमेरु, कैलास और मन्दराचल इनके शिखरके समान अग्रभागवाले कपाट झरोखे और छज्जेआदिकों से शोभित सुन्दर जल आदिकों के स्थान बहुतसी ध्वजा सोने चाँदीकी वन्दनवारसे सुशोभित दानवोंके हज़ारोंगृह त्रिपुरमें अग्निसे दग्ध होते भये ५५। ५७ स्थानों के ऊपर बगीचो के भीतर अपने पतियों करके ग्रहण कीहुई पतियों के साथ रमण

नेषूपवनेषुच। वातायनगताश्चान्याश्चाकाशस्थतलेषुच ५८ रमणैरुपगूढाश्च रमंत्यो रमणैःसह। ददृशंतेदानवेंद्राणामग्निनाह्यपिताःस्त्रियः ५९ काचित्प्रियंपरित्यज्य अश क्तागंतुमन्यतः। पुरःप्रियस्यपञ्चत्वंगताग्निवदनेक्षयम् ६० उवाचशतपत्राक्षी साक्षाक्षीव कृताञ्जलिः। हव्यवाहन! भार्याहं परस्यपरतापन! धर्म्मसाक्षीत्रिलोकस्य नमांस्प्रष्टु मिहार्हसि ६१ शायितश्चनयादेव! शिवयाचशिवप्रभ!। परेणप्रैहिमुक्तेदं गृहञ्चदयितं हिमे ६२ एकापुत्रमुपादाय वालकंदानवाङ्गना। हुताशनसमीपस्था इत्युवाचहुताशन म् ६३ बालोऽयंदुःखलब्धश्च मयापावक! पुत्रकः। नार्हस्येनमुपादातुं दयितंषण्मुख प्रिय! ६४ काश्चित्प्रियान्परित्यज्य पीडितादानवाङ्गनाः। निपतंत्यर्णवजले शिञ्जमा नविभूषणाः ६५ तातपुत्रेतिमातेति मातुलेतिचविक्लवम्। चकम्पुस्त्रिपुरेनार्यः पावकज्वा लवेपिताः ६६ यथादहतिशैलाग्निः साम्बुजंजलजाकरम्। तथास्त्रीवक्त्रपद्मानि चादह त्रिपुरेऽनलः ६७ तुषारराशिःकमलाकराणां यथादहत्यम्बुजकानिशीते। तथैवसोऽग्नि स्त्रिपुराङ्गनानां ददाहवक्त्रेक्षणपङ्कजानि ६८ शराग्निपातात्समभिद्रुतानां तत्रांगनाना मतिकोमलानाम्। बभूवकाञ्चीगुणनूपुराणामाक्रंदितानाञ्चरवोऽतिमिश्रः६९ दग्धार्द्धचंद्रा णिसवेदिकानि विशीर्णहर्म्याणिसतोरणानि। दग्धानिदग्धानिगृहाणितत्र पतंतिरक्षार्थ मिवार्णवौघे ७० गृहैःपतद्भिर्ज्वलनावलीढैरासीत्समुद्रेसलिलंप्रतप्तम्। कुपुत्रदोषैःप्रहता नुविद्धं यथाकुलंयातिधनान्वितस्य ७१ गृहप्रतापैःक्वथितंसमंतात्तदार्णवेतोयमुदीर्णवेगम्।

करती हुई दैत्यों की स्त्रियांभी अग्निसे दग्ध होजाती भयी ५८।५९ कोई स्त्री पतिको त्यागकर अन्य कहीं नहीं जासकी पतिही के आगे अग्निसे मृत्युको प्राप्त होगई ६० कोई कमलाक्षी स्त्री नेत्रों में उंगलीलगाकर यहवचन बोली कि हे अग्ने मैं अन्यकी स्त्री हूं त्रिलोकीका धर्मसाक्षी है तुम मुझको स्पर्श करनेको योग्य नहीं हो हे देव मैंने अपना पति सुलारक्खा है सो मेरे गृह समेत पतिको छोड़ कर चलेजाओ ६१। ६२ एक स्त्री अपने वालकपुत्रको लेकर अग्नि के समीप में स्थित हो इस प्र कार कहने लगी कि हे पावक यह वालक मैंने दुःखसे पायाहै इस मेरे प्यारेपुत्र को तुमको जलाना योग्य नहीं है ६३। ६४ कई दैत्यों की स्त्रियां अपने पतियों को छोड़ २ कर समुद्रके जलमें गिरती भयीं ६५ इसप्रकार हे तात पुत्र माता मामा इन शब्दोंको करती हुई दैत्योंकी स्त्रियां त्रिपुर में वि ह्वल होकर अग्नि की झलों से कांपती भयीं ६६ जैसेकि पर्व्वतकी अग्नि कमलों सहित सब वृक्षा दिकों को जलादेती है उसी प्रकार उस त्रिपुरमेंही अग्निने स्त्रियों के मुखरूप कमलों समेत शरीरों को जलादिया ६७ जैसेकि शीतऋतुमें शीतल वर्फ कमलों को दग्ध करदेती है वैसेही त्रिपुरमें वह अग्निमुख नेत्र कमलों को जलाताभया ६८ वाणकी अग्नि के गिरने से अति शीघ्र भाजती हुई कोमल अंगोंवाली दानवों की स्त्रियों की किंकिणियों के विछुओं के और उनके पुकारने के शब्द इन सबके मिलने से गंभीरनाद होताभया ६९ अर्द्धचन्द्राकार गृहों के सुन्दर विचित्र स्थान और तोर णादिक यहसब गृहों से युक्त होकर समुद्रके जलमें गिरतेभये ७० जबकि जलते हुए गृह समुद्रमें

विन्त्रासयामासतिमीन्सनक्रांस्तिमिङ्गिलांस्तत्कथितांस्तथान्यान् ७२ सगोपुरोमन्दरपा
दकल्पःप्राकारवर्यस्त्रिपुरेचसोऽथ। तैरेवसार्द्धंभवनैःपपात शब्दंमहान्तंजनयन्समुद्रे ७३
सहस्रशृङ्गैर्भवनैर्यदासीत् सहस्रशृङ्गःसइवाचलेशः। नामावशेषंत्रिपुरंप्रजज्ञे हुताशनाहा
रबलिप्रयुक्तम् ७४ प्रदह्यमानेनपुरेणतेन जगत्सपातालदिवंप्रतप्तम्। दुःखंमहत्प्राप्य
जलावमग्नं यस्मिन्महान्सोधवरोमयस्य ७५ तद्देवेशोवचःश्रुत्वा इन्द्रोवज्रधरस्तदा।
शशापतद्गृहञ्चापि मयस्यादितिनन्दनः ७६ असेव्यमप्रतिष्ठञ्च भयेनचसमावृतम्।
भविष्यतिमयगृहं नित्यमेवयथाऽनलः ७७ यस्ययस्यतुदेशस्य भविष्यतिपराभवः। द्र
क्ष्यन्तित्रिपुरंखण्डं तत्रेदंनाशगा जनाः। तदेतदद्यापिगृहं मयस्यामयवर्जितम् ७८ (ऋ
षय ऊचुः) भगवन्! समयोयेन गृहेणप्रपलायितः। तस्यनोगतिमाख्याहि मयस्यच
मसोद्भव! ७९ (सूत उवाच) दृश्यतेदृश्यतेयत्र ध्रुवस्तत्रमयास्पदम्। देवद्विड्तुमय
श्चातः सतदाखिन्नमानसः। ततश्च्युतोऽन्यलोकेस्मिंस्त्राणार्थंवैचकारसः ८० तत्रापि
देवताःसन्तिआप्तोर्यमाःसुरोत्तमाः। तत्राशक्तंततोगन्तुं तच्चैकंपुरमुत्तमम् ८१ शिवःसृ
ष्ट्वागृहंप्रादान् मयञ्चैवगृहार्थिनम्। विरराामसहस्राक्षः पूजयामासचेश्वरम्। पूज्यमानञ्च
भूतेशं सर्वेतुष्टुवुरीश्वरम् ८२ संपूज्यमानंत्रिदशैःसमीक्ष्य गणैर्गणेशाधिपतिन्तुमुख्यम्।
हर्षाद्दवल्गुर्जहसुश्चदेवा जग्मुर्ननर्दुस्तुविषाक्तहस्ताः ८३ पितामहंवन्द्यततोमहेशं प्रगृ

गिरने लगे तब समुद्रका जल ऐसा उष्णहोगया जैसेकि कुपुत्रके दोषसे कुलभर संतप्त होजाता है
७१ जब जलतेहुए घरोंकी गरमाई से चारोंओर वेगवाला समुद्रका जल संतप्त होजाता भया तब
मकर मत्स्य और नाकादिक जीवोंको बड़ा त्रास होताभया ७२ उस त्रिपुरके द्वार गढ़ और खाई आ-
दिक सब मकानों सहित होकर जो समुद्रमें गिरते भये उनके गिरनेका बड़ाशब्द होता भया ७३
हज़ारों शिखरोंवाले पर्व्वतके समान मकानों से शोभित वह त्रिपुर था वहसब दैत्यों समेत अग्नि
का आहार होजाता भया अर्थात् बलिमें दिया गया ७४ उस जलतेहुए त्रिपुरसे संपूर्ण पाताल और
स्वर्ग संतप्त होगये फिर संपूर्ण त्रिपुर मयदैत्यके मकान समेत समुद्रके जलमें डूबगया ७५ इसके
पीछे मयदैत्य के जीवनेको महादेवजी के वचनको सुनकर इन्द्र मयदैत्यके घरको यह शापदेता भया
७६ कि यह मयसमेत गृहसेवनके योग्य नहींरहैगा सदैव अग्निकेभयके समानइसमें भय रहैगा७७
जिस २ देशकानाशहोगा तिस २ देशमें त्रिपुरका खंड नाश होनेवाले मनुष्योंकोदीखेगा ७८ऋषियों
ने पूछा हे भगवन् जिसघरके द्वारा मयदैत्य भाजकर निकला था उसघरकी भी जो गतिहुईवह हमें
सुनाओ ७९ सूतजीनेकहा कि जहांध्रुव दीखताहै वहांमयदैत्यकास्थान दीखताथापरन्तु अबमयदैत्य
अपनी रक्षाके निमित्त अन्य लोकमें अपना निवास करताहै ८० वहां भी अर्य्यमा संज्ञक देवता तो
प्राप्तहैं परन्तु और कोई नहीं जासक्ता वहां वह एकही पुर है जिस पुरमें शिवभी महाराजने उत्तम
गृह बनाकर गृहकी इच्छा करनेवाले अपने भक्त मय दैत्यको दिया है फिर इन्द्र भी स्वस्थ होकर
निर्भय अपने स्वर्ग लोकमें बैठता भया उन पूज्यतम शिवजी महाराजको सब देवता पूजते भये

ह्यचापंप्रविसृज्यभूतान्। रथाच्चसम्पत्यहरेषुदग्धं क्षिप्तंपुरंतन्मकरालयेच ८४ यइमंरु द्रविजयं पठतेविजयावहम्। विजयन्तस्यकृत्येषु ददातिवृषभध्वजः ८५ पितॄणांवापिश्रा द्धेषु यइमंश्रावयिष्यति। अनन्तंतस्यपुण्यंस्यात् सर्वयज्ञफलप्रदम् ८६ इदंस्वस्त्ययनं पुण्य मिदंपुंसवनंमहत्। इदंश्रुत्वापठित्वाच यान्तिरुद्रसलोकताम् ८७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकोनचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३९॥

(ऋषय ऊचुः) कथंगच्छत्यमावास्यां मासिमासिदिवंनृपः। ऐलःपुरूरवाःसूत! त र्पयेतकथंपितॄन्। एतमिच्छामहेश्रोतुं प्रभावन्तस्यधीमतः १ (सूत उवाच) तस्यचाहं प्रवक्ष्यामि प्रभावंविस्तरेणतु। ऐलस्यदिविसंयोगं सोमेनसहधीमता २ सोमाच्चैवामृत प्राप्तिः पितॄणांतर्पणंतथा। सौम्याबर्हिषदःकाव्या अग्निष्वात्तास्तथैवच ३ यदाचन्द्र श्चसूर्य्यश्च नक्षत्राणांसमागतौ। अमावास्यांनिवसत एकस्मिन्नथमण्डले ४ तदास गच्छतिद्रष्टुं दिवाकरनिशाकरौ। अमावास्याममावास्यां मातामहपितामहौ ५ अभि वाद्यतुतौतत्र कालापेक्षःसतिष्ठति। प्रचस्कंदततःसोम मर्चयित्वापरिश्रमात् ६ ऐलः पुरूरवाविद्वान् मासिश्राद्धचिकीर्षया। ततःसदिविसोमंवै ह्युपतस्थेपितॄनपि ७ द्विल

और आनन्द पूर्वक गर्जने लगे ८१।८३ इसके अनन्तर ब्रह्माजी को नमस्कार करके शिवजी के धनुषको ग्रहण कर देवता लोग सब भूतोंके दुःख दूर करते भये, शिवजी रथसे नीचे उतरते भये, जला हुआ त्रिपुर समुद्रमें गिर पड़ता भया ८४ विजय करने वाले शिवजी की जो इस विजयको पढ़ताहै उसकी विजय शिवजी करते हैं ८५ पितरोंके श्राद्धमें जो मनुष्य इस कथाको सुनवावेगा उसको सवयज्ञोंका फल अथवा अनन्त फल प्राप्त होगा ८६ यह महापवित्र चरित्र महाकल्याण का करने वाला है इसको जो कोई पढ़ैगा वा सुनेगा वह शिव लोकमें प्राप्त होकर आनन्दों को भोगेगा ८७॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३९॥

ऋषियों ने पूछा हेसूतजी पुरूरव वंशमें होने वाला ऐलनाम राजा प्रतिमास अमावास्या के दिन स्वर्गमें कैसे जाकर पितरोंको तृप्त करताहै इस प्रकारके उसके प्रतापको हम पूछने की इच्छा करते हैं १ सूतजी बोले कि हेऋषियो हम उसके प्रभावके विस्तार सहित चन्द्रमाके साथ स्वर्गमें उसके संयोगको भी वर्णन करेंगे २ चन्द्रमासे अमृतकी प्राप्तिहोती है उसीसे पितरोंका तर्पणहोताहै और सौम्य,बर्हिषद, काव्य, औरअग्निष्वात्ता इननामोंवाले पितरहैं ३ जब चंद्रमा नक्षत्रोंके समागम में एक मंडलपर अमावास्याके दिन वास करते हैं ४ तब प्रति अमावास्याको वह ऐल राजा, सूर्य चन्द्रमा समेत अपने मातामह और पितामहादिकों के देखने के निमित्त आया करता है ५ वहां उन दोनोंको नमस्कार करके कालकी अपेक्षा करताहुआ ठहरताहै और बड़ेपरिश्रमसे चन्द्रमाका पूजन करके वहां से गमन करता है ६ पुरूरवा वंशमें होने वाला राजा ऐल चन्द्रमाकी इच्छा से चन्द्रमाको प्राप्तहो पितरोंकी उपासना करता है ७ दो क्षणमात्रके कुहूमात्र कालमें उन दोनोंग्रहों का ध्यानकर सिनी वाली अमावास्याके अल्पप्रमाणवाले व्रतके उदयमें पितरों की उपासना

वङ्कुहुमात्रञ्च तावुभौतुनिधायसः। सिनीवालीप्रमाणाल्पकुहूमात्रव्रतोदये ८ कुहूमा त्रंपितृदेशं ज्ञात्वाकुहुमुपासते। तमुपास्यततःसोमं कलापेक्षीप्रतीक्षयेत् ९ स्वधामृतन्तु सोमाद्दै वसंस्तेषाञ्चतृप्तये। दशभिःपञ्चभिश्चैव स्वधामृतपरिस्रवैः। कृष्णपक्षभुजांप्रीति र्दुह्यतेपरमांशुभिः १० सद्योभिक्षरतातेन सौम्येनमधुनाचसः। निर्वापेष्वथदत्तेषु पित्र्ये णविधिनातुवै ११ स्वधामृतेनसौम्येन तर्पयामासवैपितॄन्। सौम्यावर्हिषदःकाव्या अ ग्निष्वात्तास्तथैवच १२ ऋतुरग्निःस्मृतोविप्रैर्ऋतुंसंवत्सरंविदुः। जज्ञिरेऋतवस्तस्मा दृतुभ्योह्यार्त्तवाभवन् १३ पितरोर्त्तवोर्द्धमासा विज्ञेयाऋतुसूनवः। पितामहास्तुऋतवो ह्यमावास्याब्दसूनवः। प्रपितामहाःस्मृतादेवाः पञ्चाब्दाब्रह्मणःसुताः १४ सौम्यावर्हिष दःकाव्या अग्निष्वात्ताइतित्रिधा। गृहस्थायेतुयज्वानो हविर्यज्ञार्त्तवाश्चये। स्मृतावर्हि षदस्तेवै पुराणेनिश्चयंगताः १५ गृहमेधिनश्चयज्वानो अग्निष्वात्तार्त्तवाःस्मृताः। अ ष्टकापतयःकाव्याः पञ्चाब्दांस्तुनिबोधत १६ तेषुसंवत्सरोह्यग्निः सूर्य्यस्तुपरिवत्सरः। सोमस्त्विद्वत्सरश्चैव वायुश्चैवानुवत्सरः १७ रुद्रस्तुवत्सरस्तेषां पञ्चाब्दायेयुगात्मकाः। कालेनाधिष्ठितस्तेषु चन्द्रमाःस्रवतेसुधाम् १८ एतेस्मृतादेवकृत्याः सोमपाश्चोष्मपाश्च ये। तांस्तेनतर्पयामास यावदासीत्पुरूरवाः १९ यस्मात्प्रसूयतेसोमो मासिमासिविशेष तः। ततःस्वधामृतंतद्दै पितॄणांसोमपायिनाम्। एतत्तदमृतंसोम मवापमधुचैवहि २०

करताहै ८ कुहूमात्र अमावास्यामें पितरोंका उद्देश जानकर पितरोंकाही पूजनकरताहै और चन्द्रमा की कलाकी अपेक्षाके लिये ठहरताहै ९ वहाँवसताहुआ चन्द्रमामें से पन्द्रह तिथियोंकरके स्वधारूप अमृतको ग्रहणकरताहै, कृष्णपक्षमें भोगकरनेवालों कीप्रीति सूक्ष्म किरणोंसे पूर्ण की जाती है १० तत्काल रक्षाकियेहुए उस अमृतके द्वारा निर्वाप विधिकरके पितरोंकी विधिके अनुसार देनेसे स्वधा-रूप चन्द्रमाके अमृतसे पितरोंको तृप्तकरताहै और सौम्य वर्हिषद, काव्य और अग्निष्वात्ता यह सब पितर तृप्तहोतेहैं ११।१२ ब्राह्मणोंने ऋतु अग्नि कहाहै ऋतुहीको संवत्सर कहतेहैं वर्षसे ऋतु उत्पन्नहुई ऋतुओं से आर्त्तव होतीभई १३ पितर, आर्त्तव और अर्द्धमास यह ऋतुओंके पुत्रहैं, ऋतुओं को पितामह कहतेहैं अमावास्या वर्षकेपुत्र कहाते हैं देवता प्रपितामह कहातेहैं पांचवर्ष ब्रह्मा के पुत्र कहलातेहैं १४ सौम्य, वर्हिषद, काव्य, और अग्निष्वात्ता यह पितर तीनप्रकारसे वर्णन किये हैं, जो गृहस्थी हैं यज्ञकरनेवाले हैं और हविर्दान लेतेहैं वह वर्हिषद संज्ञक पितर कहाते हैं १५ अग्नि ष्वात्त पितरभी गृहस्थी और यज्ञकरनेवाले होकर आर्त्तव संज्ञक कहलाते हैं औरकाव्य संज्ञक पितर अष्टकाके पति कहेजातेहैं—अबपांचोंवर्षोंका वृत्तान्तसुनो १६ इनमें अग्नि संवत्सरहै, सूर्य्य परिवत्स-रहै, सोम इद्वत्सरहै, वायु अनुवत्सरहै, और रुद्रवत्सरहै यह युगसंज्ञक पांचवर्ष कहे हैं कालकर के इनपर अधिष्ठितहुआ चन्द्रमा अमृत को चुआताहै यह सब देवकृत्य कहे हैं, सोमप और उष्मप जो पितरहैं उनको यह पुरूरवा उस अमृत करके तृप्त करताहै १७।१९ प्रतिमास चन्द्रमा अमृत को उत्पन्न करताहै उस स्वधारूप अमृतको सोमपायी पितर प्राप्तहोजाते हैं २० जब अमृत पिया

ततःपीतसुधंसोमं सूर्य्योऽसावेकरश्मिना। आप्यायतेसुषुम्णेन सोमन्तुसोमपायिनम् २१
निःशेषावैकलाःपूर्वा युगपद्व्यापयन्पुरा। सुषुम्णाप्यायमानस्य भागंभागमहःक्रमात् २२
कलाःक्षीयन्तिकृष्णास्ताः शुक्लाह्याप्याययन्तिच। एवंसासूर्यवीर्येण चन्द्रस्याप्यायिता
तनुः २३ पौर्णमास्यांसदृश्येत शुक्लःसम्पूर्णमण्डलः। एवमाप्यायितःसोमः शुक्लपक्षेष्व
हःक्रमात्। देवैःपीतसुधंसोमं पुरापश्चात्पिबेद्रविः २४ पीतंपञ्चदशाहन्तु रश्मिनैकेनभा
स्करः। आप्यायत्सुषुम्णेन भागंभागमहःक्रमात् २५ सुषुम्णाप्यायमानस्य शुक्लावर्द्ध
न्तिवैकलाः।तस्माद्ध्रसन्तिवैकृष्णाःशुक्लाप्याययन्तिच २६ एवमाप्याय्यतेसोमः क्षीयतेच
पुनःपुनः।समृद्धिरेवंसोमस्य पक्षयोःशुक्लकृष्णयोः २७ इत्येषपितृवान्सोम स्मृतस्तद्वत्सु
धात्मकः। कान्तःपञ्चदशैःसार्द्धं सुधामृतपरिस्रवैः २८ अतःपरंप्रवक्ष्यामि पर्वाणांसंधयश्च
याः।यथाग्रथ्नन्तिपर्वाणि आवृत्तादिक्षुवेणुवत् २९ तथाब्दमासाःपक्षाश्चशुक्लाःकृष्णास्तुवै
स्मृताः। पौर्णमास्यास्तुयोभेदो ग्रन्थयःसन्धयस्तथा ३० अर्द्धमासस्यपर्वाणि द्वितीयाप्र
भृतीनिच। अग्न्याधानक्रिया यस्मात्क्रियन्तेपर्वसन्धिषु ३१ तस्मात्तुपर्वणोह्यादौ प्रतिप
द्यादिसन्धिषु। सायाह्नेअनुमत्याश्च द्वौलवौकालउच्यते ३२ लवौद्वावेवराकायाःकालो
ज्ञेयोऽपराह्णिकः ३३ प्रकृतिःकृष्णपक्षस्य कालेऽतीतेऽपराह्णिके। सायाह्नेप्रतिपद्येष स
कालःपौर्णमासिकः ३४ व्यतीपातेस्थितेसूर्ये लेखादूर्ध्वंयुगान्तरम्। युगान्तरोदितेचैव

जाताहै तब चन्द्रमा को सूर्य्य एक किरण और सुषुम्णा नाड़ी करके पूर्ण कर देताहै २१ शेषबाकी बचीहुई पहली कलाओं को एक बारध्याके सुषुम्णाके द्वारा पूर्ण होताहुआ चन्द्रमाका एक भाग दिनके क्रमसेबढ़ताहै २२ जो कला कि कृष्णपक्ष में क्षीण होती हैं वहशुक्लपक्षमें पूर्णहोजाती हैं इस रीतिसे सूर्य्यके प्रभावसे चन्द्रमाका शरीर पुष्टहोताहै २३ पूर्णमासीको वहचन्द्रमा श्वेत और पूर्ण मंडलवाला दीखताहै इसप्रकार शुक्ल पक्षमें दिनके क्रमसे पूर्णहुए और प्रथम देवतीसे अमृतपियेहुए चन्द्रमाको सूर्य्य अपनी एककिरणकरके पीताहै फिरसुषुम्णानाड़ीके द्वारा क्रमपूर्व्वक एक२ भागको बढ़ाताहै २४।२५ सुषुम्णा करकेपूर्ण होतेहुए चन्द्रमाकी शुक्लपक्षकी कला जोबढ़ती हैं वहकृष्णपक्षमें घटती हैं इस रीतिसे चन्द्रमा पूर्ण होताहै और बारंबार क्षीण होता है इसी से चन्द्रमाकी समृद्धि होकर २६।२७ चन्द्रमा अमृतात्मक कहा जाताहै यहचन्द्रमा अमृतकी स्रवनेवाली पन्द्रह कलाओं करके प्रकाशित है २८ अब इसके आगे पर्वोंकी संधियोंका वर्णन करेंगे जैसे कि ईख, बांस आदिकों की पोहियों में गांठेंहोती हैं उसीप्रकार पर्व्वोंमें भी सन्धियांहोती हैं २९ वर्ष महीने औरशुक्ल कृष्ण पक्ष यह पर्वहैं और जो पूर्णमासीका भेदहै वही ग्रन्थि औरसन्धि हैं ३० अर्द्धमासके पर्व्व द्वितीया- दि तिथियों से होतेहैं उन पर्व सन्धियोंमें अग्न्याधानादि क्रियाहोती हैं ३१ पर्वकी आदि में प्रति- पदादिक सन्धियों में सायंकालके समय पूर्णमासीका दोलव अर्थात् अणुमात्र कालहै राका पूर्णमा- सीके अपराह्णमें दोलवकालहै ३२।३३ कृष्णपक्षकी प्रतिपदा अपराह्णकालमें होती है और जो सायंकालमें प्रतिपदा आजाय वह पूर्णमासी का काल कहाताहै ३४ जब व्यतीपातपर सूर्य्य स्थित

चन्द्रेलेखोपरि स्थिते ३५ पूर्णमासव्यतीपातौ यदापश्येतपरस्परम्। तौतुवैप्रतिपद्यावत्त स्मिन्कालेव्यवस्थितौ ३६ तत्कालंसूर्यमुद्दिश्य दृष्ट्वासंख्यातुमर्हसि । सचैवसतुक्रिया कालः षष्ठकालोऽभिधीयते ३७ पूर्णेन्दुःपूर्णपक्षेतु रात्रिसन्धिषुपूर्णिमा । तस्मादाप्याय तेनक्तं पौर्णमास्यांनिशाकरः ३८ यदान्योन्यवतीपाते पूर्णिमांप्रेक्षतेदिवा। चन्द्रादित्यौऽ पराह्णेतु पूर्णत्वात्पूर्णिमास्मृता ३९ यस्मात्तामनुमन्यन्ते पितरोदैवतैःसह । तस्मादनु मतिर्नाम पूर्णत्वात्पूर्णिमास्मृता ४० अत्यर्थंराजतेयस्मात् पौर्णमास्यांनिशाकरः। रञ्ज नाच्चैवचन्द्रस्य राकेतिकवयोविदुः ४१ अमावसेतामृक्षेतु यदाचन्द्रदिवाकरौ। एकापञ्च दशीरात्रि रमावास्याततःस्मृता ४२ उद्दिश्यताममावास्यां यदादर्शसमागतौ। अन्योऽ न्यंचन्द्रसूर्यौतु दर्शनाद्दर्शउच्यते ४३ द्वौद्वौलवावमावास्यां सकालःपर्वसन्धिषु। द्व्यक्ष रःकुहुमात्रश्च पर्वकालस्तुसस्मृतः ४४ दृष्टचन्द्रात्वमावास्या मध्याह्नप्रभृतीहिवै । दिवा तदूर्ध्वंरात्र्यान्तु सूर्यंप्राप्तेतुचन्द्रमाः । सूर्येणसहसोद्गच्छेत्ततः प्रातस्तनात्तुवै ४५ समा गम्यलवौद्वौतु मध्याह्नान्निपतन्रविः । प्रतिपच्छुक्लपक्षस्य चन्द्रमाःसूर्यमण्डलात् ४६ निर्मुच्यमानयोर्मध्येतयोर्मण्डलयोस्तुवै । सतदान्वाहुतेःकालो दर्शस्यचवषट्क्रियाः। ए तदृतुमुखंज्ञेयममावास्यान्तुपार्वणम् ४७ दिवापर्वत्वमावास्यां क्षीणेन्दौधवलेतुवै । तस्मा

होताहै तब लेखाके ऊपर युगान्तरहोताहै और युगान्तरमें जब सूर्य्यका उदयहोय तब चन्द्रमा लेखा के ऊपर स्थितहोताहै ३५ पूर्णमासी और व्यतीपात यह दोनों जब परस्परमें देखे जावें चाहैं प्रतिप-दाके भी भेदमेंहोयँ तौभी सूर्य्यके उदयहोनेपर सत्क्रियाका कालकहाताहै उसको छठा कालकहते हैं ३६।३७ जब पक्ष पूर्णहोजाय तब रात्रियों की सन्धियों में पूर्णिमाहोती है तभी पूर्ण चन्द्रमाहोता है इस निमित्त पूर्णमासी को रात्रिके समय चन्द्रमाका मंडल पूर्ण होताहै ३८ जब परस्परके पात होने में पूर्णिमा को दिन देखताहो तब अपराह्णकाल में चन्द्रमा सूर्य्य के पूर्ण होने से पूर्णमासी कही जाती है ३९ उसको देवताओं समेत सब पितरमानते हैं इस हेतुसे अनुमति कहते हैं और पूर्णचन्द्रमा होने से पूर्णिमा कहते हैं ४० पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा अत्यन्त प्रकाशित होता है इसीसे उसको राका बोलते हैं ४१ चन्द्रमा और सूर्य्य एकही नक्षत्रपर अमा अर्थात साथ में बास करते हैं इसलिये कृष्णपक्ष में अमावास्या कहते हैं ४२ उस अमावास्या के उद्देशसे जब सूर्य्य और चन्द्रमा दीखते हैं उस समय सूर्य्य और चन्द्रमा आपस में दर्शन को प्राप्त होते हैं इसलिये उसको दर्शभी कहते हैं ४३ अमावास्याके दिन दो दो लवकालपर्य्यन्त पर्वकी सन्धिरहती है और दोक्षण तक कुहूमात्र पर्वकाल रहताहै ४४ जिस अमावास्या में चन्द्रमा नहीं दीखता है उसदिन मध्याह्न से पीछे रात्रिमें चन्द्रमा सूर्य्य में प्राप्तहोते हैं और प्रातःकाल सूर्य्य के साथ शुक्लपक्ष की प्रति पदामें उदयहोताहै तब दोलव पर्य्यन्त सूर्य्यके साथ रहकर मध्याह्न में सूर्य्य मंडलसे निक-लताहै ४५। ४६ जब उनका मंडल पृथक् पृथक् होताहै वह अमावास्या का अन्वाहुति संज्ञक कालहै जिसमें वषट् क्रिया करनी कही है वह ऋतुसंज्ञक कालहै अमावास्यामें पार्वण श्राद्ध करना

द्विवात्वमावास्यां गृह्यतेयोदिवाकरः ४८ कुहेतिकोकिलेनोक्तं यस्मात्कालात्समाप्यते। तत्कालसंज्ञिताह्येषा अमावास्याकुहूःस्मृता ४९ सिनीवालीप्रमाणन्तु क्षीणशेषोनिशाकरः। अमावास्याविशत्यर्कं सिनीवालीतदास्मृता ५० अनुमतिश्चराकाच सिनीवालीकुहूस्तथा। एतासांद्विलवःकालः कुहूमात्राकुहूःस्मृता ५१ इत्येषुपर्वसन्धीनां कालोवैद्विलवःस्मृतः। पर्वणान्तुल्यकालस्तु तुल्याहुतिवषट्क्रियाः ५२ चन्द्रसूर्य्यव्यतीपाते समेवैपूर्णिमेउभे। प्रतिपत्प्रतिपन्नस्तु पर्वकालोद्विमात्रकः ५३ कालःकुहूसिनीवाल्योः समुद्रोद्विलवःस्मृतः। अर्कनिर्मण्डलेसोमे पर्वकालःकलाःस्मृताः ५४ यस्मादापूर्यतेसोमः पञ्चदश्यान्तुपूर्णिमा। दशभिःपञ्चभिश्चैव कलाभिर्दिवसक्रमात् ५५ तस्मात्पञ्चदशेसोमे कलावैनास्तिषोडशी। तस्मात्सोमस्यविप्रोक्तः पञ्चदश्यांमयाक्षयः ५६ इत्येतेपितरोदेवाः सोमपाःसोमवर्द्धनाः। आर्त्तवाऋतवोऽथाब्दा देवास्तान्भावयन्तिहि ५७ अतःपरंप्रवक्ष्यामि पितॄन्श्राद्धभुजस्तुये। तेषांगतिञ्चसत्तत्त्वं प्राप्तिंश्राद्धस्यचैवहि ५८ नमृतानाङ्गतिःशक्या ज्ञातुंवापुनरागतिः। तपसाहिप्रसिद्धेन किंपुनर्मांसचक्षुषा ५९ अत्रदेवान्पितॄंश्चैते पितरोलौकिकाःस्मृताः। तेषान्तेधर्म्मसामर्थ्यात् स्मृताःसायुज्यगाद्विजैः ६० यदिवाश्रमधर्मेण प्रज्ञानेपुण्यवस्थितान्। अन्येचात्रप्रसीदन्ति श्राद्धयुक्तेषुकर्म्मसु ६१ ब्रह्मच

चाहिये ४७ अमावास्यामें चन्द्रमा क्षीणहोजाताहै तब दिनमें पर्वहोताहै इस निमित्त दिनमें सूर्य्यहीं प्राप्त होनेसे अमावास्या कहीजाती है ४८ और जिसकालमें चन्द्रमा और सूर्य्य इकट्ठे होजाते हैं वह कुहूसंज्ञक अमावास्या कहीजाती है ४९ सिनीवाली अमावास्या वह कहीजाती है जिसमें कि चन्द्रमा क्षीणहोता २ बाकीरहजाता है ५० अनुमति, राका, सिनीवाली, और कुहू इनका दोदो अणुसंज्ञक कालकहाहै ५१ पर्व्वोंकेतुल्य कालतक समान आहुति और वषट् क्रिया होनी उचितहै ५२ जब चन्द्रमा सूर्य्यका व्यतीपातहोय और वह दोनों पूर्णिमा समान होयँ तब प्रतिपदाके दिन दोमात्रा पर्वकालहोताहै ५३ कुहू और सिनीवाली अमावास्या का दोमात्रा कालकहाहै जब सूर्य्य के निर्मल मंडलमें चन्द्रमा प्राप्तहोताहै तब पर्वकालकी कलाहोती है ५४ पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा एक २ दिनके क्रमसे पन्द्रह कलाओंके द्वारा पूर्णकियाजाताहै ५५ इसी हेतुसे चन्द्रमामें सोलहवीं कलानहींहोती और इसीकारणसे पन्द्रहवेंदिन अमावास्याको चन्द्रमाका क्षयहोना वर्णनकियाहै ५६ इसप्रकारसे देवता, अमृतके पीनेवाले पितर, आर्त्तव ऋतु और वर्ष यह सब सोममंडलको बढ़ाते हैं और देवतालोग इन सबको बढ़ाते हैं ५७ अब श्राद्धके भोक्ता पितरोंका और उनकी तत्त्व श्राद्ध की प्राप्ति इन सबका वर्णनकरते हैं ५८ मरेहुए पुरुषों के आवागमनकी गतिको कोई पुरुष तपस्या करके भी जानने को योग्यनहीं होसक्ता फिर चर्म दृष्टिवाले कैसे जानकर देखसक्ते हैं यहाँ देवता और पितर इन लौकिक पितरोंको कहते हैं ब्राह्मणों ने धर्मकी सामर्थ्य से उनदेवता और पितरों के सहचारी लौकिक पितरही वर्णनकिये हैं ५९।६० और आश्रम धर्मकरके जो श्राद्ध युक्त कर्मोंमें परिश्रमकरते हैं वह देवता पितरों के सहचारी होते हैं, ब्रह्मचर्य्य, तप, यज्ञ, प्रजा, श्राद्ध, विद्या, और

येणतपसा यज्ञेनप्रजयाभुवि। श्राद्धेनविद्ययाचैव चान्नदानेनसप्तधा ६२ कर्म्मस्वेतेषुये सक्ता वर्त्तन्त्यादेहपातनात्। देवैस्तेपितृभिःसार्द्धं मूष्मपैःसोमपैस्तथा। स्वर्गतादिविमोदन्ते पितृम तउपासते ६३ प्रजावतांप्रसिद्धैषा उक्ताश्राद्धकृताञ्चवै। तेषांनिवापेदत्तंहि तत्कुलीनैस्तुबान्धवैः ६४ मासश्राद्धंहिभुञ्जानास्तेऽप्येतेसोमलौकिकाः। एतेमनुष्याः पितरो मासश्राद्धभुजस्तुवै ६५ तेभ्योऽपरेतुयेत्वन्ये सङ्कीर्णाःकर्म्मयोनिषु। भ्रष्टाश्चाश्रमधर्मेषु स्वधास्वाहाविवर्जिताः ६६ भिन्नेदेहेदुरापन्नाः प्रेतभूतायमक्षये। स्वकर्माण्यनुशोचन्तो यातनास्थानमागताः ६७ दीर्घाश्चैवातिशुष्काश्च श्मश्रुलाश्चविवाससः। क्षुत्पिपासाभिभूतास्ते विद्रवन्तित्वितस्ततः ६८ सरित्सरस्तडागानि पुष्करिण्यश्च सर्वशः। परान्नान्यभिकांक्षन्तः काल्यमानाइतस्ततः ६९ स्थानेषुपात्यमानाये यातनास्थेषुतेषुवै। शाल्मल्यांवैतरिण्याञ्च कुम्भीपाकेद्धवालुके ७० असिपत्रवनेचैव यात्यमानाःस्वकर्म्मभिः। तत्रस्थानान्तुतेषांवै दुःखितानामशायिनाम् ७१ तेषांल्लोकान्तरस्थानां बान्धवैर्नामगोत्रतः। भूमावसव्यंदर्भेषु दत्ताःपिण्डास्त्रयस्तुवै। प्राप्तांस्तु तर्पयन्त्येव प्रेतस्थानेष्वधिष्ठितान् ७२ अप्राप्तायातनास्थानं प्रभ्रष्टायेचपञ्चधा। पश्चाद्येस्थावरान्तेवै भूतानीकेस्वकर्मभिः ७३ नानारूपासुजातीनां तिर्यग्योनिषुमूर्तिषु। यदाहाराभवन्त्येते तासुतास्विहयोनिषु ७४ तस्मिंस्तस्मिंस्तदाहारे श्राद्धंदत्तन्तुप्रीणये

अन्नदान यह सातप्रकारके आश्रम धर्म हैं ६१। ६२ इन कर्मोंमें जो जीवनपर्य्यन्त प्रवृत्त रहते हैं वह उष्मप, सोमप पितर और देवताओं के भी साथ आनन्दसे स्वर्गमें प्राप्तहोकर पितरोंकी उपासना करते हैं ६३ यह सन्तानवालों की सिद्धिकही है इसीसे उत्तम कुलीन सबांधव श्राद्धकरनेवालों को अवश्य श्राद्ध करनाचाहिये ६४ प्रतिमास श्राद्ध में भोजनकराकर आप भोजन करनेवाले और चन्द्रमाके लोकमें रहनेवाले मनुष्य पितर कहाते हैं ६५ इनके विशेष अन्यलोग जो कर्म योनियों में मिलेहुए होकर आश्रमधर्मों में भ्रष्टहैं स्वाहा स्वधा से रहित हैं वह भिन्न २ देहोंमें प्राप्त प्रेत होकर धर्मराज के पुरमें प्राप्तहोते हैं और अपने कर्मोंको शोचतेहुए बड़े २ कष्टके स्थानों में प्राप्तहोते हैं ६६। ६७ लंबे २ शुष्कशरीर डाढ़ीवाले वस्त्रों से रहित नंगे और क्षुधा तृषासे युक्तहोकर वह प्रेत जहाँ तहाँ भ्रमते फिरते हैं ६८ नदी, सरोवर, तड़ाग, कूप, नहर और अन्य जलाशयआदि पर जाकर पराये अन्नकी इच्छाकरके मांगते फिरते हैं ६९ जो कुंभीपाकादि नरकों में पड़े हैं उन को उन महाक्लेशोंमें पड़ाहुआ समझकर उनके बान्धव पुत्रादिकोंको उचित है कि उनके नाम गोत्रादिका उच्चारण कर अपसव्य हो पृथ्वीपर कुशाके ऊपर उनके निमित्त तीन पिंडदेने चाहियें उन पिण्डों से उन प्रेतस्थानोंमें स्थित होनेवालों की तृप्ति होजाती है ७०। ७२ और जो नरकके स्थान में प्राप्त नहीं हैं, पांचप्रकारसे भ्रष्ट होरहे हैं, जो स्थावर योनियों के अन्तमें अपने कर्मों करके भूत समूहमें, अनेक प्रकारके रूपवाली जातियोंमें अथवा पशु आदिक शरीरोंमें हैं उनको जो दियाहुआ आहार है वही आहार उनको उन योनियोंमें भी प्राप्त होजाताहै ७३। ७४ श्रेष्ठकालमें विधिपूर्वक

तु। कालेन्याथागतम्पात्रे विधिनाप्रतिपादितम्। प्राप्नुवन्त्यन्नमादत्तं यत्रयत्रावतिष्ठति७५
यथागोषुप्रनष्टासु वत्सोविन्दतिमातरम्। तथाश्राद्धेषुदृष्टान्तो मन्त्रःप्रापयतेतुतम् ७६
एवंह्यविकलंश्राद्धं श्रद्धादत्तंमनुर्ब्रवीत्। सनत्कुमारःप्रोवाच पश्यन्दिव्येनचक्षुषा ७७
गतागतज्ञःप्रेतानां प्राप्तिंश्राद्धस्यचैवहि। कृष्णपक्षस्त्वहस्तेषां शुक्लःस्वप्नायशर्वरी ७८
इत्येतेपितरोदेवा देवाश्चपितरश्चवै। अन्योन्यपितरोह्येते देवाश्चपितरोदिवि ७९ ए
तेतुपितरोदेवा मनुष्याःपितरश्चये। पितापितामहश्चैव तथैवप्रपितामहः ८० इत्येषवि
षयःप्रोक्तः पितॄणांसोमपायिनाम्। एतत्पितृमहत्वंहि पुराणेनिश्चयंगतम् ८१ इत्येष
सोम सूर्य्याभ्यामैलस्यचसमागमः। अवाप्तिंश्रद्धयाचैव पितॄणाञ्चैवतर्पणम् ८२ पर्व
णाञ्चैवयःकालो यातनास्थानमेवच। समासात्कीर्तितस्तुभ्यं सर्गएषसनातनः ८३ वैरू
प्यंयेनतत्सर्वं कथितन्त्वेकदेशिकम्। अशक्यंपरिसंख्यातुं श्रद्धेयंभूतिमिच्छता ८४ स्वा
यम्भुवस्यदेवस्य एषसर्गोमयेरितः। विस्तरेणानुपूर्व्याच्च भूयःकिंकथयामिवः ८५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४०॥

(ऋषय ऊचुः)। चतुर्युगानियानिस्युः पूर्वेस्वायम्भुवेऽन्तरे। एषांनिसर्गंसंख्याञ्च
श्रोतुमिच्छामिविस्तरात् १ (सूत उवाच) पृथिवीद्युप्रसङ्गेन मयातुप्रागुदाहृतम्। एत-

पात्र को दियाहुआ अन्नदान चाहे जिस योनिमें प्राप्त होनेवाले पितरों को आहाररूप होकर प्राप्तहो जाताहै ७५ जैसे कि अनेक गौओंमें छुपीहुई भी गौ को उसका बछड़ा पहचानलेता है उसीप्रकार मन्त्र पूर्वक श्राद्धोंमें दियाहुआ सबदान भी अपने पितरको प्राप्त होजाताहै ७६ इसप्रकार श्रद्धासे दियाहुआ श्राद्ध सबस्थानमें प्राप्त होता है यह मनुजी का वचन है और दिव्यचक्षु से देख देखकर सनत्कुमार भी कहते हैं कि गतागत प्रेतोंको श्राद्धकी प्राप्ति होजाती है उन पितर लोगोंका दिन तो कृष्णपक्ष है और रात्रि शुक्लपक्ष है ७७। ७८ इसरीतिसे यह पितृदेवता और देव पितर यहसब स्वर्ग में परस्पर पितृ हैं ७९ यह पितर देवताहैं और मनुष्य पितर पिता पितामह और प्रपितामहादिक हैं इसप्रकारसे यह मैंने अमृत पीनेवाले पितरोंका विषय कहदियाहै इन पितरोंका महत्त्व पुराणों में निश्चय करके कहाहै ८०। ८१ इसरीतिसे चन्द्रमा और सूर्य्य से ऐलराजा का समागम होताहै पितरोंकी प्राप्ति होती है तब यह श्रद्धापूर्व्वक उनका तर्पण करताहै ८२ यह पर्वोंका और नरक आदिक यातनाओं का स्थान तुमसे संक्षेपपूर्व्वक कहदिया है यह सनातन सर्ग है ८३ एक २ देश करके संपूर्ण वर्णन करदिया इनकी संख्या ठीक २ अच्छी रीतिसे नहीं करसक्ते ऐश्वर्य्य की इच्छा वाले पुरुषको इनसब प्रकारों में श्रद्धाकरना योग्यहै ८४ यह मैंने स्वायंभुव देवका आनुपूर्व्वक विस्तार समेत सर्गवर्णन किया अब और क्या सुनना चाहते हो ८५॥

इति श्री मत्स्यपुराणभाषाटीकायां चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४०॥

ऋषियोंने कहा कि स्वायंभुव मनुके अन्तरमें चारोंयुगोंके स्वभाव और उनकी संख्याको हम विस्तारपूर्व्वक सुनना चाहते हैं १ सूतजी बोले कि यद्यपि मैंने पृथ्वी आकाशके प्रसंगसे प्रथम कहदिये

चतुर्युगंत्वेवं तद्वक्ष्यामिनिबोधत। तत्प्रमाणंप्रसंख्याय विस्तराच्चैवकृत्स्नशः २ लौकि केनप्रमाणेन निष्पाद्याब्दन्तुमानुषम्। तेनापीहप्रसंख्याय वक्ष्यामितुचतुर्युगम् ३ का ष्ठानिमेषादशपञ्चचैव त्रिंशच्चकाष्ठाङ्गणयेत्कलान्तु। त्रिंशत्कलाश्चैवभवेन्मुहूर्तस्तैस्त्रिं शताराञ्यहनीसमेते ४ अहोरात्रेविभजते सूर्योमानुपलौकिके। रात्रिःस्वप्नायभूतानाञ्चेष्टा येकर्म्मणामहः ५ पित्र्येराञ्यहनीमासः प्रविभागस्तयोःपुनः। कृष्णपक्षस्त्वहस्तेषां शु क्लःस्वप्नायशर्वरी ६ त्रिंशद्येमानुषामासाः पैत्रोमासःसउच्यते। शतानित्रीणिमासानां ष ष्ट्याचाभ्यधिकानितु। पैत्रःसंवत्सरोह्येष मानुषेणविभाव्यते ७ मानुषेणैवमानेन वर्षाणां यच्छतंभवेत्। पितॄणांतानिवर्षाणि संख्यातानितुत्रीणिवै। चत्वारश्चाधिकामासाः पितृ संख्येहकीर्तिता ८ लौकिकेनप्रमाणेन अब्दोयोमानुषःस्मृतः। एतद्दिव्यमहोरात्रमित्ये षावैदिकीश्रुतिः ९ दिव्येराञ्यहनीवर्षं प्रविभागस्तयोःपुनः। अहस्तुयदुदक्चैव रात्रि र्यादक्षिणायनम् १० एतेराञ्यहनीदिव्ये प्रसंख्यातेतयोःपुनः। त्रिंशद्यानितुवर्षाणि दिव्यो मासस्तुसस्मृतः ११ मानुषाणांशतंयच्च दिव्यामासास्त्रयस्तुवै। तथैवसहसंख्यातो दि व्यएषविधिःस्मृतः १२ त्रीणिवर्षशतान्येवं षष्टिवर्षस्तथैवच। दिव्यःसंवत्सरोह्येष मा नुषेणप्रकीर्तितः १३ त्रीणिवर्षसहस्राणि मानुषेणप्रमाणतः। त्रिंशदन्यानिवर्षाणि स्मृतः सप्तर्षिवत्सरः १४ नवयानिसहस्राणि वर्षाणांमानुषाणिच। वर्षाणिनवतिश्चैव ध्रुवसंव त्सरःस्मृतः १५ षट्त्रिंशत्तुसहस्राणि वर्षाणांमानुषाणिच। षष्टिश्चैवसहस्राणि संख्या- तानितुसंख्यया १६ दिव्यंवर्षसहस्रन्तु प्राहुःसंख्याविदोजनाः। इत्येतदृषिभिर्गीतंदिव्य

हैं परन्तु अब फिरभी मुझसे चारोंयुगों को सुनो २ लौकिक प्रमाण करके मनुष्यों के वर्ष को सि- द्धकरके उसवर्ष के प्रमाण से चारों युगोंकी संख्या कहताहूं ३ पन्द्रह निमेष अर्थात् पन्द्रहबार नेत्रों के खोलने मूंदने को काष्ठा कहते हैं तीस काष्ठाओंकी कला होती है तीसकलाओं का मुहूर्त, ती- समुहूर्त्तों का अहोरात्र अर्थात् दिन रात्र होता है दिनरात्रिका विभाग सूर्य्य करता है उनमें रात्रि सोने के लिये है और दिन कर्मों की चेष्टाकरनेके निमित्त है ४।५ मनुष्योंका महीना पितरोंका अहो- रात्रहै उसका विभाग यहहै कि कृष्णपक्ष उनका दिनहै शुक्लपक्ष रात्रि है ६ तीनसौ साठ ३६० महीनोंका पितरों का वर्षहोताहै यह सब मनुष्यों के महीने जानना ७ मनुष्यों के सौवर्षोंके पितरों के तीनवर्ष और चारमहीने होते हैं यह पितरों के वर्षादिककी संख्याहै ८ लौकिक प्रमाणसे जो मनु- ष्योंका वर्षहोताहै वह देवताओंका अहोरात्रहै यह वैदिकीश्रुति है एकवर्षका जो दिनरातहै उसका विभाग ऐसाहै कि उत्तरायण तो दिनहै दक्षिणायनमें रात्रिरहती है ९।१० यह देवताओंका दिनरातहै तीसवर्षका देवताओंका महीना होताहै ११ मनुष्यों के सौवर्षोंके देवताओं के तीनमहीने और कुछ दिनहोते हैं यह देवताओं की विधिहै १२ मनुष्यों के तीनसौ साठ ३६० वर्षोंका देवताओं का एक वर्षहोताहै १३ मनुष्यों के तीनहजार तीस ३०३० वर्षोंमें सप्तऋषियों का वर्षहोताहै १४ मनुष्यों

यासंख्ययाद्विजाः १७ दिव्येनैवप्रमाणेन युगसंख्याप्रकल्पिता। चत्वारिभारतेवर्षे युगा
निऋषयोऽब्रुवन् १८ कृतन्त्रेताद्वापरञ्च कलिश्चैवंचतुर्युगम्। पूर्वंकृतयुगंनाम ततस्त्रे
ताभिधीयते १९ द्वापरश्चकलिश्चैव युगानिपरिकल्पयेत्। चत्वार्याहुःसहस्राणि वर्षाणां
तत्कृतंयुगम् २० तस्यतावच्छतीसन्ध्या सन्ध्यांशश्चतथाविधः। इतरेषुससन्ध्येषु स
सन्ध्यांशेषुचत्रिषु २१ एकपादेनिवर्तन्ते सहस्राणिशतानिच। त्रेतात्रीणिसहस्राणि युगसं
ख्याविदोविदुः २२ तस्यापित्रिशतीसन्ध्या सन्ध्यांशःसन्ध्ययासमः। द्वेसहस्रेद्वापरन्तु स
न्ध्यांशौतुचतुःशतम् २३ सहस्रमेकंवर्षाणां कलिरेवप्रकीर्तितः। द्वेशतेचतथान्येच स
न्ध्यासन्ध्यांशयोःस्मृते २४ एषाद्वादशसाहस्री युगसंख्यातुसंज्ञिता। कृतन्त्रेताद्वापरञ्च
कलिश्चेतिचतुष्टयम् २५ तत्रसंवत्सराःसृष्टा मानुषास्तान्निबोधत। नियुतानिदशद्वेच
पञ्चैवात्रसंख्यया २६ अष्टाविंशत्सहस्राणि कृतंयुगमथोच्यते। प्रयुतन्तुतथापूर्णे द्वे
चान्येनियुतेपुनः २७ षण्णवतिसहस्राणि संख्यातानिचसंख्यया। त्रेतायुगस्यसंख्यैषा
मानुषेणतुसंज्ञिता। अष्टौशतसहस्राणि वर्षाणांमानुषाणितु २८ चतुःषष्टिसहस्राणि वर्षा
णांद्वापरंयुगम्। चत्वारिनियुतानिस्युर्वर्षाणितुकलियुगम् २९ द्वात्रिंशच्चतथान्यानि स
हस्राणितुसंख्यया। एतत्कलियुगंप्रोक्तं मानुषेणप्रमाणतः ३० एषाचतुर्युगावस्था मानु
षेणप्रकीर्तिता। चतुर्युगस्यसंख्याता सन्ध्यासन्ध्यांशकैःसह ३१ एषाचतुर्युगाख्यातु सा

के नौहज़ार नव्वे ९०९० वर्षोंमें ध्रुवका संवत्सर अर्थात् वर्षहोताहै १५ मनुष्यों के छत्तीस हज़ार साठ ३६०६० वर्षोंके देवताओं के दिव्य हजार वर्षहोते हैं हेऋषियो इस रीतिसे संख्या के जानने वाले ऋषियों ने कहाहै १६। १७ इस दिव्यसंख्या केही प्रमाणसे युगोंकी संख्याकही है इस भारतखंड में चारयुगकहे हैं १८ कृतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग, यह चारयुगहैं इनमें प्रथम कृतयुग अर्थात् सत्ययुगहै दूसरा त्रेतायुग, १९ द्वापर औरकलियुग यहचारोंयुग कल्पित हैं चारहज़ार दिव्य वर्षोंका सत्युगहै दिव्यचारसौ ४०० वर्षोंकी संध्या और चारसौ ४०० वर्षों का संध्यांशकहाताहै शेष तीनोंयुगोंकी संख्यामें और संध्या संध्यांशोंमें हजार और सैकड़ोंकी संख्यामें से एक १ पादहीन होगयाहै अर्थात् त्रेता तीनहज़ार दिव्य वर्षोंतक रहताहै यह सब संख्याके जाननेवालों ने कहा है २०।२२ इसकी संध्या दिव्य ३०० सौवर्षकी है और इतनाही संध्यांश है, द्वापर दिव्य दोहजार वर्षोंकाहै और संध्या संध्यांश चारसौ ४०० वर्षकेहैं २३ कलियुग एक हज़ार वर्षोंकाहै उसके संध्या संध्यांश दोसौ २०० वर्षकेहैं २४ सतयुग,त्रेता,द्वापर औरकलियुग इनचारोंकी सबसंख्या बारहहजार वर्षोंकी है अब मनुष्योंके जितने वर्ष व्यतीतहोते हैं उनको कहताहूं सत्रहलाख अट्ठाईस हज़ार १७२८००० वर्षका सत्युगहै, बारहलाख छयानवे हज़ार १२९६००० वर्षोंका त्रेतायुगहै मनुष्योंके आठलाख चौंसठहज़ार ८६४००० वर्षोंका द्वापर युग है, और चारलाख बत्तीसहज़ार ४३२००० वर्षोंका कलियुग कहाताहै यह सबप्रमाण मनुष्यों के वर्षोंके हिसाबसेहैं २५। ३० यहचारोंयुगों की और उनकेसंध्या संध्यांशोंकी संख्या मनुष्यों के वर्षके हिसाबसेकहदी ३१ यहचारोंयुगों की संख्या

धिकाह्येकसप्ततिः। कृतत्रेतादियुक्तासा मनोरन्तरमुच्यते ३२ मन्वन्तरस्यसंख्यातु मानुषेणनिबोधत। एकत्रिंशत्तथाकोट्यः संख्याताःसंख्ययाद्विजैः ३३ तथाशतसहस्राणि दशचान्यानिभागशः। सहस्राणितुद्वात्रिंशच्छतान्यष्टाधिकानिच ३४ अशीतिश्चैववर्षाणि मासाश्चैवाधिकास्तुषट्। मन्वन्तरस्यसंख्येषा मानुषेणप्रकीर्तिता ३५ दिव्येनचप्रमाणेन प्रवक्ष्याम्यन्तरंमनोः। सहस्राणांशतान्याहु रष्टवैपरिसंख्यया ३६ चतुःषष्टिसहस्राणि विंशत्यारहितानिच। मन्वन्तरस्यकालस्तु युगैःसहप्रकीर्तितः ३७ एषाचतुर्युगाख्यातु साधिकाह्येकसप्ततिः। क्रमेणपरिवृत्तासा मनोरन्तरमुच्यते ३८ एतच्चतुर्दशगुणं कल्पमाहुस्तुतद्विदः। ततस्तुप्रलयःकृत्स्नः सतुसंप्रलयोमहान् ३९ कल्पप्रमाणोद्विगुणो यथाभवतिसंख्यया। चतुर्युगाख्याव्याख्याता कृतंत्रेतायुगञ्चवै ४० त्रेतासृष्टिंप्रवक्ष्यामि द्वापरंकलिमेवच। युगपत्समवेतौद्वौ द्विधावक्तुंनशक्यते ४१ क्रमागतंमयाप्येतत्तुभ्यंनोक्तंयुगद्वयम्। ऋषिवंशप्रसङ्गेन व्याकुलत्वात्तथाक्रमात् ४२ नोक्तंत्रेतायुगेशेषं तद्वक्ष्यामिनिबोधत। अथत्रेतायुगस्यादौ मनुःसप्तर्षयश्चये ४३ श्रौतस्मार्तंब्रुवन्धर्मं ब्रह्मणातुप्रचोदिताः। दाराग्निहोत्रसम्बन्धं ऋग्यजुःसामसंहिताः ४४ इत्यादिबहुलंश्रौतं धर्मंसप्तर्षयोऽब्रुवन्। परम्परागतंधर्मं स्मार्तंत्वाचारलक्षणम् ४५ वर्णाश्रमाचारयुक्तं मनुःस्वायम्भुवोऽब्रवीत्। सत्येनब्रह्मचर्येण श्रुतेनतपसातथा ४६ तेषांसुतप्ततपसा मार्गेणानुक्रमेणह। सप्तर्षीणांमनोश्चैव आदौत्रेतायुगेततः ४७ अबुद्धिपूर्वकंतेन सकृत्पूर्वक

जबइकहत्तरवार होजाय अर्थात् चारोंयुगोंकी चौकड़ी जबइकहत्तरवार व्यतीतहोजाय तबमनुबदलते हैं उसीको मन्वन्तर कहते हैं ३२ इस मन्वन्तरकी संख्याको अब मनुष्यों के वर्षोंसे तुमको समझाताहूं इकतीस किरोड़ दशलाख बत्तीस हजार आठसौ अस्सी वर्ष और छःमहीनों ३११०३२८८० में मनु बदलता है यह सब मनुष्यों केही वर्षकी संख्या है ३३। ३५ अब दिव्य देवताओं के वर्षों से मनुके अन्तरका प्रमाण कहते हैं आठलाख तरेसठहज़ार नौसौ अस्सी ८६३९८० दिव्य वर्षों में मनुका अन्तर होताहै यही इकहत्तर चौकड़ी दिव्य युग कहाते हैं क्रमसे इसी युग संख्यामें एकमनु बदलताहै ३६।३८ इस्सेचौदहगुने कालमें जब कल्पपूरा होताहै तब महाप्रलय होती है, यहप्रलय कल्पसे दूने काल तक रहती है इस प्रकार यह चारयुगों की संख्या कहदी है ३९।४० अब त्रेता, द्वापर और कलियुग इनकी सृष्टिको कहता हूं एकवार प्राप्त हुए दो नहीं कहे जाते हैं क्रम से प्राप्त होने वाले भी दोयुग तुम्हारे सन्मुख इकट्ठे नहीं कहे हैं, ऋषियोंके वंशके प्रसंगसे संकीर्णता होनेके कारण प्रथम त्रेता युगका वर्णन भी नहीं किया है इसीसे अब त्रेतायुगको सुनो, त्रेतायुगकी आदि में मनु हुआ है उस समय जो ७ऋषि हुए उन्होंने ब्रह्माजी की प्रेरणासे श्रुतिस्मृतियों के धर्मोंको कहा है स्त्री सहित होकर अग्नि होत्रका संबंध और ऋग् यजु और साम इन वेदों की संहिता आदिक धर्मोंको कहाहै ४१।४४ यह सब पूर्वोक्त धर्म कहे हैं और स्मृतियोंके कहे हुए आचारों का लक्षण कहाहै स्वायंभुव मनुने वर्णाश्रमों के आचार कहे हैं, त्रेता युगकी आदिमें उन सप्तऋषियों के सत्य

मेवच। अभिवृत्तास्तुतेमन्त्रा दर्शनैस्तारकादिभिः ४८ आदिकल्पेतुदेवानां प्रादुर्भूतास्तु
तेस्वयम्। प्रमाणेष्वथसिद्धानामन्येषाञ्चप्रवर्तते ४९ मन्त्रयोगोव्यतीतेषु कल्पेष्वथस
हस्रशः। तेमन्त्रावैपुनस्तेषां प्रतिमायामुपस्थिताः ५० ऋचोयजूंषिसामानि मन्त्रा
श्चाथर्वणास्तुये। सप्तर्षिभिश्चयेप्रोक्ताः स्मार्त्तन्तुमनुरब्रवीत् ५१ त्रेतादौसंहतावेदाः
केवलंधर्म्मसेतवः। संरोधादायुषश्चैव व्यस्यन्तेद्वापरेचते ५२ ऋषयस्तपसावेदान
होरात्रमधीयत ४८ अनादिनिधनादिव्याः पूर्वंप्रोक्ताःस्वयम्भुवा ५३ स्वधर्म्मसंवृ
ताःसाङ्गा यथाधर्मंयुगेयुगे। विक्रियन्तेस्वधर्म्मन्तु वेदवादाद्यथायुगम् ५४ आरम्भ
यज्ञाःक्षत्रस्य हविर्यज्ञाविशःस्मृताः। परिचारयज्ञाःशूद्राश्च जपयज्ञाश्चब्राह्मणाः ५५
ततःसमुदितावर्णास्त्रेतायांधर्म्मशालिनः। क्रियावन्तःप्रजावन्तः समृद्धिसुखिनश्चवै ५६
ब्राह्मणैश्चविधीयन्ते क्षत्रियाःक्षत्रियैर्विशः। वैश्यान्शूद्रानुवर्तन्ते शूद्रान्परमनुग्रहात् ५७
शुभाःप्रकृतयस्तेषां धर्मावर्णाश्रमाश्रयाः। सङ्कल्पितेनमनसा वाचावाहस्तकर्म्मणा ५८
त्रेतायुगेह्यविकले कर्मारम्भःप्रसिद्ध्यति। आयूरूपंबलंमेधा आरोग्यंधर्म्मशीलता ५९
सर्वसाधारणंह्येतदासीत्त्रेतायुगेतुवै। वर्णाश्रमव्यवस्थानमेषांब्रह्मातथाकरोत् ६० संहि
ताश्चतथामन्त्रा आरोग्यंधर्म्मशीलता। संहिताश्चतथामन्त्रा ऋषिभिर्ब्रह्मणःसुतैः ६१

ब्रह्मचर्य्य श्रुत और तपस्याओं करके क्रमपूर्व्वक मनुष्यादिके तारक अर्थात् उद्धार करने वाले मंत्र प्रवृत्त भये हैं और आदि कल्पमें देवताओं के निमित्त आपही मंत्र प्रकट होगये थे परन्तु जब वह मंत्र अन्य २ सिद्धोंके प्रमाणोंमें होगये और हज़ारों कल्प भी व्यतीत होगये उस समय वह मंत्र उन देवताओं की प्रतिमाओंमें प्राप्त होजाते भये ४९।५० ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम, और अथर्वण इन वेदोंके मंत्रतो अच्छी रीतिसे स्पष्ट करके सप्तऋषियोंने कहे हैं और मनुजीने स्मृतिकही है ५१ त्रेताकी आदिमें इकट्ठे हुए मंत्रही धर्मरूप हुए हैं फिर द्वापरमें हीन आयु होने से इनके अलग २ विभाग किये गये हैं ५२ इस आदि अन्तसे रहित दिव्यवेदको ऋषियोंने ब्रह्माजीके मुखसे एकअहो-रात्रमें पढ़ाहै ५३ जैसे कि सब युगोंमें सब लोकभर अपने २ धर्ममें रहे हैं उसी २ प्रकार से सबवेदों का भी अभिप्राय है ५४ क्षत्रियको यज्ञ आरंभ करना, वैश्यको हविर्यज्ञ करना, शूद्रको परिचार अर्थात् सेवारूप यज्ञ करना, और ब्राह्मणको जपयज्ञ करना, चाहिये ५५ इस प्रकारमें युक्तहुए सब जन त्रेता युगकी धर्म क्रियामें युक्त होते भये और सन्तानोंसे युक्त होकर सुख वाले होते भये ५६ ब्राह्मणोंको क्षत्रियोंपर प्रेरणा करनी चाहिये, क्षत्रियोंको वैश्योंपरप्रेरणा करनी चाहिये और वैश्यों को परम अनुग्रह पूर्व्वक शूद्रोंको शिक्षादेनी चाहिये ५७ इसरीतिसे वर्ण धर्म और आश्रमके आश्रय होने वाली राजाकी प्रकृति अच्छी और शुभकारी होती है त्रेता युगमें मन वाणी और हस्त आदिकों से किया हुआ संकल्परूप कर्मसिद्ध होताथा और आयु आरोग्य, रूप, बलधर्म, और शीलता आदिक गुण यह सब उस युगमें सबको साधारण अर्थात् स्वभावहीसे होजाते भये और वर्णाश्रमादिकों की व्यवस्था ब्रह्माजी ठीक २ करते भये ५८।६० संहिता, मंत्र, धर्म और शीलता यह सब ब्रह्माजी के

यज्ञःप्रवर्तितश्चैव तदाह्येवतुदैवतैः। यामैःशुक्रैर्जयैश्चैव सर्वसाधनसंभृतैः ६२ विश्वसृ
ग्भिस्तथासार्द्धं देवेन्द्रेणमहौजसा। स्वायम्भुवेन्तरेदेवै स्तेयज्ञाःप्राक्प्रवर्तिताः ६३ स
त्यंजपस्तपोदानं पूर्वधर्मोयउच्यते। यदाधर्म्मस्यह्रसते शाखाधर्म्मस्यवर्द्धते ६४ जाय
न्तेचतदाशूरा आयुष्मन्तोमहाबलाः। न्यस्तदण्डामहायोगा यज्वानोब्रह्मवादिनः ६५
पद्मपत्रायताक्षाश्च पृथुवक्षाःसुसंहताः। सिंहोरस्कामहासत्वा मत्तमातङ्गगामिनः ६६
महाधनुर्द्धराश्चैव त्रेतायांचक्रवर्त्तिनः। सर्वलक्षणपूर्णास्ते न्यग्रोधपरिमण्डलाः ६७ न्य
ग्रोधौतुस्मृतौबाहू व्यामोन्यग्रोधउच्यते। व्यामेनतूच्छ्रयोयस्य अतऊर्ध्वन्तुदेहिनः ६८
समुच्छ्रयोपरीणाहो न्यग्रोधपरिमण्डलः। चक्रंरथोमणिर्भार्या निधिरश्वोगजस्तथा ६९
प्रोक्तानिसप्तरत्नानि पूर्वस्वायम्भुवेऽन्तरे। विष्णोरंशेनजायन्ते पृथिव्यांचक्रवर्तिनः ७०
मन्वन्तरेषुसर्वेषु ह्यतीतानागतेषुवै। भूतभव्यानियानीह वर्तमानानियानिच ७१ त्रेतायु
गानितेष्वत्र जायन्तेचक्रवर्तिनः। भद्राणामानितेषाञ्च विभाव्यन्तेमहीक्षिताम् ७२ अ
त्यद्भुतानिचत्वारि बलंधर्मंसुखंधनम्। अन्योन्यस्याविरोधेन प्राप्यन्तेनृपतेःसमम् ७३
अर्थोधर्म्मश्चकामश्च यशोविजयएवच। ऐश्वर्येणाणिमाद्येन प्रभुशक्तिबलान्विताः ७४
श्रुतेनतपसाचैव ऋषींस्तेऽभिभवन्तिहि। बलेनाभिभवन्त्येते तेनदानवमानवान् ७५
लक्षणैश्चैवजायन्ते शरीरस्थैरमानुषैः। केशास्थितालललाटेन जिह्वाचपरिमार्जनी ७६

पुत्र ऋषियोंने जब वर्णन किये थे उसी दिन से देवताओंने यज्ञोंकी प्रवृत्ति करी है स्वायंभुव मनु के अन्तरमें सबसे पहले इन्द्रने याम, शुक्र, जय और विश्वसृक् आदिक देवताओंके साथयज्ञकी प्रवृत्त करी है ६१।६३ सत्य, जप, तप और दान यह प्रथमही का धर्म कहा है जब इस धर्मकी शाखाघट जाती है तभी अधर्म बढ़ जाताहै ६४ फिर अधर्मके दूर करनेके निमित्त बड़े शूरवीर आयु वाले दंड- धारी महाबली योगी यज्ञकरनेवाले ब्रह्मवादी कमलपत्राक्ष दीर्घमुख सिंहके समान वक्षस्थल वाले मदोन्मत्त गजगामी महाधनुर्धारी और चक्रवर्त्ती जिनके शरीर और भुज वटके समान महाउन्नत और विस्तृत होते हैं ऐसे राजा त्रेतायुगमें होतेहैं ६५।६८ वटकेही समान उनके राज्य मंडलका विस्तार होकर रथ, चक्र, भार्य्या, मणि, घोड़े, हाथी और सुवर्णादिकधन यही उनका खजाना होता है यह सातोंरत्न पहले स्वायंभुवमनुके अन्तरमें होते भये और विष्णुके अंशसे इस पृथ्वीपर चक्रवर्त्तीराजा उत्पन्न होतेहैं ६९।७० भूत भविष्य और वर्त्तमानकालिक सब मन्वन्तरों में सब चक्रवर्त्ती राजालोग विष्णुकेही अंशसे होते हैं उन उत्तम राजाओंके बल, धर्म, सुख और धन यहचार वस्तु अति अद्भुत होती हैं परस्पर विरोध रहित होने वाले राजाके अर्थ, धर्म, काम, यश और विजय यह सब होते हैं अणिमादिक ऐश्वर्य्योंसे प्रभुताकी शक्ति और बलसेयुक्त होनेसे विजयकभी प्राप्ति होती है ७१।७४ वह राजा अपने श्रुत तपस्यादिकों करके ऋषियोंको भी जीत लेते भये और बल पुरुषार्थ करके सब दैत्य और मनुष्योंका तिरस्कार करते भये ७५ ऐसे देव शरीरों वाले उत्तम लक्षणों से युक्त उत्पन्न होते भये कि जिनके बालमस्तक पर जिह्वा मार्जनी के समान श्याम कान्ति ऊर्ध्वरेता आजानुबाहु

श्यामप्रभाश्चतुर्दंष्ट्राः श्रवसाश्चोर्ध्वरेतसः। आजानुबाहवश्चैव तालहस्तौवृषाकृती७७ परिणाहप्रमाणाभ्यां सिंहस्कन्धाश्चमेधिनः। पादयोश्चक्रमत्स्यौतु शङ्खपद्मेचहस्तयोः ७८ पञ्चाशीतिसहस्राणि जीवन्तिह्यजरामयाः।असङ्गागतयस्तेषां चतस्रश्चक्रवर्त्तिनाम्७९ अन्तरिक्षेसमुद्रेषु पातालेपर्वतेषुच।इज्यादानन्तपःसत्यन्त्रेताधर्मास्तुवैस्मृताः८० तदाप्रवर्ततेधर्मो वर्णाश्रमविभागशः। मर्यादास्थापनार्थञ्च दण्डनीतिःप्रवर्तते ८१ हृष्टपुष्टाजनाःसर्वे अरोगाःपूर्णमानसाः। एकोवेदश्चतुष्पादस्त्रेतायान्तुविधिःस्मृतः ८२ त्रीणिवर्षसहस्राणि जीवन्तेतत्रताःप्रजाः। पुत्रपौत्रसमाकीर्णा म्रियन्तेचक्रमेणताः। एष त्रेतायुगेभावस्त्रेतासंख्यांनिबोधत ८३ त्रेतायुगस्वभावेन सन्ध्यापादेनवर्तते। सन्ध्यापादःस्वभावाच्च योंऽशःपादेनतिष्ठति ८४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४१॥

(ऋषय ऊचुः) कथंत्रेतायुगमुखे यज्ञस्यासीत्प्रवर्तनम्। पूर्वेस्वायम्भुवेसर्गे यथावत्प्रब्रवीहिनः १ अन्तर्हितायांसन्ध्यायां सार्द्धकृतयुगेनहि। कालाख्यायांप्रवृत्तायां प्राप्तेत्रेतायुगेतथा २ ओषधीषुचजातासु प्रवृत्तेवृष्टिसर्जने। प्रतिष्ठितायांवार्तायां ग्रामेषुचपुरेषुच ३ वर्णाश्रमप्रतिष्ठानं कृत्वामन्त्रैश्चतैःपुनः। संहितास्तुसुसंहत्य कथंयज्ञःप्रवर्त्तितः। एतच्छ्रुत्वाब्रवीत्सूतः श्रूयतांतत्प्रचोदितम् ४ (सूत उवाच) मन्त्रान्वैयोजयित्वातु इहामुत्रचकर्म्मसु। तथाविश्वभुगिन्द्रस्तु यज्ञंप्रावर्त्तयत्प्रभुः ५ दैवतैःसहसंहत्य सर्वसाधनसं-

वृषभस्कन्ध ७६।७७ सिंहके समान ग्रीवा चरणोंमें चक्र और मत्स्य और हाथोंमें शंख पद्मादिक चिह्न जिनकी अवस्था पच्चासी हज़ार वर्षकी होतीभयी वह जरावस्थाके क्लेशोंसे रहित होतेभये ऐसे उन चक्रवर्ती राजाओंकी आकाश, समुद्र, पाताल और पर्व्वत इनचारों स्थानोंमें बेरोकगति होतेभयी यज्ञ,तप और सत्य यह सबधर्म त्रेतायुगके होतेभये ७८।८० उस त्रेतायुगमें धर्माश्रमों के विभाग मर्यादाके स्थापनकरने को दंडनीतिभी वैसीही प्रवृत्तहोती भयी ८१ सब जन हृष्ट पुष्ट आरोग्य सकल मनोरथ वाले होते भये और उसयुगमें एकही वेद चारोंचरणयुक्त होता है यह त्रेतायुगकी विधिहै इस युगमें सबप्रजा क्रमसे तीन हज़ारवर्षतक जीवती हैं सब मनुष्य पुत्र पौत्रादिकों से युक्त रहतेहैं यह त्रेता युगका स्वभाव वर्णनकियाहै यह स्वभाव त्रेतायुगकी संध्यातकरहताहै ८२।८४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांएकचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४१॥

ऋषियोंने पूछा हेसूतजी त्रेतायुगकी आदिमें स्वायंभुवमनुके सर्ग में यज्ञों की प्रवृत्ति कैसे होती भयी यह आपहमको समझाइये १ जबसत्ययुगकी संध्या समाप्तहोजाने पर त्रेतायुगकी प्राप्ति होती है तब बहुतसी ओषध उत्पन्न होती हैं अधिकवर्षा होती है ग्रामपुर आदिकों में उत्तम प्रतिष्ठित बातें होने लगती हैं उससमय सबवर्णाश्रम इकट्ठे होकर मन्त्रको इकट्ठा करके वेद संहिताओंसे यज्ञों की कैसे प्रवृत्ति करतेहैं ऋषियोंके इनवचनोंको सुनकर सूतजीने कहा कि हे ऋषिलोगो—इससंसारके औरपरलोकके कर्मों में मंत्रोंको युक्तकरके विश्वका भोगनेवाला इन्द्र संपूर्ण साधनों और देवताओं

वृतः। तस्याश्वमेधेवितते समाजग्मुर्महर्षयः ६ यज्ञकर्म्मण्यवर्तन्तकर्मण्यग्रेतथर्त्विजः।
हूयमानेदेवहोत्रेअग्नौबहुविधंहविः ७ सम्प्रतीतेषुदेवेषु सामगेषुचसुस्वरम्। परिक्रान्तेषु
लघुषु अध्वर्युपुरुषेषुच ८ आलब्धेषुचमध्येतु तथापशुगुणेषुवै। आहूतेषुचदेवेषु यज्ञभुक्षु
ततरतदा ९ यइन्द्रियात्मकादेवा यज्ञभागभुजस्तुते। तान्यजन्तितदादेवाः कल्पादिषुभव
न्तिये १० अध्वर्युप्रैषकालेतुव्युत्थिताऋषयस्तथा।महर्षयश्चतान्दृष्ट्वा दीनान्पशुगणां
स्तदा। विश्वभुजन्तेत्वपृच्छन् कथंयज्ञविधिस्तव ११ अधर्मोवलवानेष हिंसाधर्मेप्स
यातव। नवःपशुविधिस्त्विष्टस्तवयज्ञेसुरोत्तम! १२ अधर्मोधर्म्मघाताय प्रारब्धःपशु
भिस्त्वया। नायंधर्मोह्यधर्मोऽयं नहिंसाधर्म्मउच्यते। आगमेनभवान्धर्मं प्रकरोतुयदी
च्छति १३ विधिदृष्टेनयज्ञेन धर्मेणाव्यसनेनतु। यज्ञबीजैःसुरश्रेष्ठ! त्रिवर्गपरिमोषितैः
१४ एषयज्ञोमहानिंद्रःस्वयम्भुविहितःपुरा। एवंविश्वभुगिन्द्रस्तुऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।
उक्तोनप्रतिजग्राह मानमोहसमन्वितः १५ तेषांविवादःसुमहान् जज्ञेइन्द्रमहर्षिणाम्।
जङ्गमैःस्थावरैःकेन यष्टव्यमितिचोच्यते १६ तेतुखिन्नाविवादेन शक्त्यायुक्तामहर्षयः।
सन्धायसममिन्द्रेण पप्रच्छुःखचरंवसुम् १७ (ऋषयऊचुः) महाप्राज्ञ! त्वयादृष्टः कथं
यज्ञविधिर्नृप!। औत्तानपादेप्रब्रूहि संशयंनस्तुदप्रभो! १८ (सूतउवाच) श्रुत्वावाक्यं

से युक्तहोकर जब यज्ञकरताभया तब उसयज्ञमें बड़े२ ऋषिलोग आये ५।६ ऋत्विक् ब्राह्मण यज्ञोंके कर्मोंको करके उसबड़े यज्ञकी अग्निमें बहुत प्रकारसे हवन करतेभये ७ सामवेदी ब्राह्मणतो उच्च-स्वरसे पाठकरते भये अध्वर्यु आदिक अन्य ब्राह्मण अपने कर्म करने लगे यज्ञमें कहेहुए पशुओंका आलंभन होने लगा यज्ञभोक्ता ब्राह्मण और देवता आनेलगे,हेऋषियो जो इन्द्रियोंके भोगकी इच्छा करने वाले देवताहैं वही यज्ञके भागको भोगते हैं अन्यसब देवता उन्हींका पूजनकरतेहैं वेहीफिर कल्पकी आदिमें उत्पन्न होतेहैं ८।१० उसयज्ञमें जबअध्वर्यु के प्रेरणेका समयआया तब ऋषिलोग खड़ेहोगये और उन दीनपशुओं को देखकर विश्वभुक् देवताओं से यहवचन बोले कि तुम्हारे इस यज्ञकी कैसी विधिहै ११ इस हिंसाकरनेका महाअधर्म है और हे इन्द्र तेरे इसयज्ञमें यहविधि उत्त-मनहीं है १२ तैंने पशुओंके मारने करके यहअधर्म प्रारंभकियाहै इसहिंसारूपी यज्ञसेधर्मनहीं होता किन्तु महा अधर्म होताहै जोतुम उत्तम कर्म चाहतेहो तो शास्त्रोंकेअनुसार धर्म करो १३ हेइन्द्र तैंने त्रिवर्गकी नाशकरनेवाली महादुर्व्यसनरूप हिंसासम्बन्धी विधियों करके अपनेयज्ञको रचाहै इस प्रकार ऋषियोंसे शिक्षाकियाहुआभी इन्द्र अपने अभिमानसे मोहको प्राप्तहोकर उनतत्त्वदर्शी ऋषियों के वचनको नहीं ग्रहणकरताभया १४।१५ उससमय उनऋषियोंका और इन्द्रकायह बड़ाभारी विवाद होताभया कि यज्ञ जंगम पशुओंसे होनाचाहिये अथवा स्थावर वस्तुओंके शाकल्यादिकोंसे होनाचा-हिये १६ वह बड़े२ शक्तिमान्महर्षि उसविवादसे महादुःखितहोकर आकाशमें विचरनेवाले वसु राजा को इन्द्रकेही समान जानकर उससे यहपूछनेलगे १७ कि हेमहाप्राज्ञ तुमने यज्ञकीविधि देखी है जो दे-खीहोयतो हमारे सन्देहको दूरकरो १८ सूतजी कहते हैं किवह वसुराजा ऋषियों के वचनको सुनकर

वसुस्तेषामांवचार्यंबलावलम्। वेदशास्त्रमनुस्मृत्य यज्ञतत्त्वमुवाचह १९ यथोपनीतंयष्ट
व्यमितिहोवाचपार्थिवः। यष्टव्यंपशुभिर्मेध्यै रथमूलफलैरपि २० हिंसास्वभावोयज्ञस्य
इतिमेदर्शनागमः। तथैतेभाविताामन्त्रा हिंसालिङ्गामहर्षिभिः २१ दीर्घेणतपसायुक्तैस्ता
रकादिनिदर्शिभिः। तत्प्रमाणंमयाचोक्तं तस्मात्क्षमितुमर्हथ २२ यदिप्रमाणंस्वान्येव म
न्त्रवाक्यानिवोद्विजाः!। तथाप्रवर्त्ततांयज्ञो ह्यन्यथामानृतंवचः २३ एवंकृतोत्तरास्तेतु
युञ्ज्यात्मानंतपोधिया। अवश्यम्भाविनंदृष्ट्वा तमधोह्यशपंस्तदा २४ इत्युक्तमात्रोनृप
तिः प्रविवेशरसातलम्। ऊर्ध्वचारीनृपोभूत्वा रसातलचरोऽभवत् २५ वसुधातलचारी
तु तेनवाक्येनसोऽभवत्। धर्माणांसंशयच्छेत्ता राजावसुधरोगतः २६ तस्मान्नवाच्योह्ये
केन बहुज्ञेनापिसंशयः। बहुधारस्यधर्म्मस्य सूक्ष्मादुरनुगागतिः २७ तस्मान्ननिश्चया
द्वक्तुं धर्म्मःशक्योहिकेनचित्। देवानृषीनुपादाय स्वायम्भुवमृतेमनुम् २८ तस्मान्नहिंसा
यज्ञेस्याद्यदुक्तमृषिभिःपुरा। ऋषिकोटिसहस्राणि स्वैस्तपोभिर्दिवङ्गताः२९ तस्मान्नहिंसा
यज्ञञ्च प्रशंसन्तिमहर्षयः। उञ्छोमूलंफलंशाकमुदपात्रंतपोधनाः ३० एतद्दत्त्वाविभ
वतः स्वर्गलोकेप्रतिष्ठिताः। अद्रोहश्चाप्यलोभश्च दमोभूतदयाशमः ३१ ब्रह्मचर्यंतपः
शौचमनुक्रोशंक्षमाधृतिः। सनातनस्यधर्म्मस्य मूलमेवदुरासदम् ३२ द्रव्यमन्त्रात्मको
यज्ञस्तपश्चसमतात्मकम्। यज्ञैश्चदेवानाप्नोति वैराजंतपसापुनः ३३ ब्रह्मणःकर्म्मसं

बलाबलको विचार वेदशास्त्रको स्मरणकर यज्ञके तत्त्वको कहनेलगा १९ कि शास्त्रमें यज्ञके योग्य उ-त्तमपशुओंकरके अथवा मूल फलादिकोंकरके यथार्थविधिसे यज्ञकरनाचाहिये २० यज्ञका हिंसाहीस्व-भावहै इसी से वेदमें हिंसाके चिह्नवाले मंत्र कहे हैं यहमैंने तत्त्वज्ञ ऋषियोंकेही प्रमाणसेकहाहै,इस-को आप क्षमाकरियेगा हेद्विजोत्तमलोगो तुमजो अपनेहीवचन और मंत्रोंको मुख्यमानतेहो तो अन्य-थाही यज्ञकरो मेरे वचनोंको सत्यमतजानो २१। २३ जबउसने ऐसाउत्तर दिया तबवह ऋषि अपनी आत्माको युक्तकर और अवश्यभावीको देखकर उस वसुको नीचे जानेका शाप देते भये २४ उस समय वह वसुराजा पाताललोक में प्राप्त होताभया ऋषियोंके शापसे ऊपरके लोकोंकाभी विचरने वाला होकर नीचेके लोकोंको प्राप्तहोता भया २५ उस वचनके कहने से वह धर्मज्ञ भी राजापाताल में प्राप्त होता भया इस हेतुसे अकेले बहुत जानने वाले भी पुरुषको बहुतसी धारणावाले धर्मका खंडन करना योग्य नहीं है क्योंकि धर्मकी बड़ी सूक्ष्म गतिहै २६।२७ इस कारण से किसी पुरुषको भी निश्चय करके कोई धर्म न कहना चाहिये क्योंकि देवता और ऋषियों के प्रति स्वायंभुव मनु के बिना दूसरा कोई पुरुषभी कहने को नहीं समर्थ है २८ ऋषिलोग यज्ञमें कभी हिंसानहीं करते और किरोड़ों ऋषि तपस्या केही प्रभावसे स्वर्गमें प्राप्तहुए हैं २९ इसी हेतुसे बड़े महात्मा ऋषि हिंसा धर्मकी प्रशंसा नहीं करते हैं तपोधन ऋषि शिलोंछवृत्ति, मूल फल, शाक, जल और पात्र इनहीं के दानकरने से स्वर्गमें प्राप्त हुए हैं द्रोह मोहसे रहित जितेन्द्री भूतोंपर दया,शान्ति,ब्रह्मचर्य तप, शौच, क्रोध नकरना, क्षमा और धृति यह सब सनातन धर्मके मूल हैं ३०।३१ द्रव्यतो मंत्रा-

न्यासाद् वैराग्यात्प्रकृतेर्लयम् । ज्ञानात्प्राप्नोतिकैवल्यं पञ्चैतागतयःस्मृताः ३४ एवं
विवादःसुमहान् यज्ञस्यासीत्प्रवर्तने । ऋषीणांदेवतानाञ्च पूर्वेस्वायम्भुवेऽन्तरे ३५
ततस्तेऋषयोदृष्ट्वा हृतंधर्मंबलेनते । वसोर्वाक्यमनादृत्य जग्मुस्तेवैयथागतम् ३६ ग
तेषुऋषिसङ्घेषु देवायज्ञमवाप्नुयुः । श्रूयन्तेहितपःसिद्धा ब्रह्मक्षत्रादयोनृपाः ३७ प्रियव्र
तोत्तानपादौ ध्रुवोमेधातिथिर्वसुः । सुधामाविरजाश्चैव शङ्खपाद्राजसस्तथा ३८ प्राची
नबर्हिःपर्ज्जन्यो हविर्धानादयोनृपाः । एतेचान्येचबहवस्ते तपोभिर्दिवङ्गताः ३९ रा
जर्षयोमहात्मानो येषांकीर्त्तिःप्रतिष्ठिता । तस्माद्विशिष्यतेयज्ञात्तपःसर्वैस्तुकारणैः ४०
ब्रह्मणातमसासृष्टं जगद्विश्वमिदंपुरा । तस्मान्नाप्नोतितद्यज्ञात्तपोमूलमिदंस्मृतम् ४१ य
ज्ञप्रवर्तनंह्येव मासीत्स्वायम्भुवेऽन्तरे । तदाप्रभृतियज्ञोऽयं युगैःसार्द्धंप्रवर्तितः ४२ ॥
इतिश्रीमत्स्यपुराणेमन्वन्तरानुकल्पेदेवर्षिसंवादेद्विचत्वारिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः १४२
(सूत उवाच) अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि द्वापरस्यविधिंपुनः । तत्रत्रेतायुगेक्षीणे द्वापरंप्र
तिपद्यते १ द्वापरादौप्रजानान्तु सिद्धिस्त्रेतायुगेतुया । परिवृत्तेयुगेतस्मिंस्ततःसावैप्रण
श्यति २ ततःप्रवर्तितेतासां प्रजानांद्वापरेपुनः । लोभोधृतिर्वणिग्युद्धं तत्त्वानामविनिश्च
यः ३ प्रध्वंसश्चैववर्णानां कर्म्मणान्तुविपर्ययः।याञ्चावधःपरोदण्डो मानोदर्पोऽक्षमाबल

त्मकयज्ञहै, तप समतात्मकयज्ञहै यज्ञोंसेही देवयोनि प्राप्त होती है तपकरके विराट्शरीर प्राप्त होता है ३३ कर्मों के त्यागकरने से ब्रह्माके शरीरको प्राप्तहोताहै, वैराग्य से मायाका नाशहोताहै और ज्ञान से कैवल्य मोक्षप्राप्त होती है यह पांचगति कही हैं ३४ प्रथम स्वायंभुवमनु के अन्तरमें ऐसे यज्ञके प्रवृत्त होने में ऋषियोंका और देवताओंका बड़ा विवाद हुआ है ३५ इसके पीछे वह ऋषि बल से हत हुए धर्मको देखकर राजावसुका अनादर कर अपने स्थानको जातेभये ३६ जब ऋषि चलेगये तब देवता लोग यज्ञको प्राप्त होते भये, यहभी हमने सुनाहै कि राजाप्रियव्रत उत्तानपाद, ध्रुव, मेधातिथि, वसु, सुधामा, विरजा, शखपाद, राजस्, प्राचीनवर्हि, और हविर्धान, इत्यादि राजा और अन्य भी अनेक राजा तप करके ही स्वर्गको प्राप्त होतेभये ३७। ३९ जो राजऋषि महात्मा भये हैं उनकी कीर्त्ति आजतक पृथ्वीपर स्थित होरही है इसीसे अनेक कारणों करके यज्ञों से तपहीको अधिककहाहै ४० इसी तपके प्रभावसे ब्रह्माजीने भी सृष्टिकी रचनाकरीहै इसीकारण यज्ञसे अधिक तपहै सब पदार्थोंका मूल तपहै ४१ इसरीतिसे स्वायंभुवमुनि के अन्तरमें यज्ञ प्रवृत्तहुए हैं तभीसे लेकर यह यज्ञ सबयुगों में प्रवृत्त होरहाहै ४२ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांमन्वंतरानुकल्पेदेवर्षिसंवादेद्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४२

सूतजी कहते हैं अब इसके अनन्तर द्वापरयुग की विधिको कहते हैं जब त्रेतायुग क्षीणहोजाताहै तब द्वापरयुग प्रवर्त्तहोताहै १ द्वापरके आदिमें तो मनुष्यों की सिद्धि त्रेतायुग के समान होतीहै जब द्वापरयुग अच्छे प्रकारसे प्रवृत्त होजाताहै तब वह सिद्धि नष्टहोजातीहै २ द्वापरयुगमें लोगोंको लोभ, धृति, वणिज और युद्ध इनसबकी उत्पत्ति होजाती है और मनुष्य तत्त्वोंका निश्चयनहीं करते हैं ३

मू० ४ तथारजस्तमोभूयः प्रवृत्तेद्वापरेपुनः। आद्येकृतेनाधर्मोऽस्ति सत्रेतायांप्रवर्तितः ५ द्वापरेव्याकुलोभूत्वा प्रणश्यतिकलौपुनः। वर्णानांद्वापरेधर्माः सङ्कीर्यन्तेतथाश्रमाः ६ द्वैधमुत्पद्यतेचैव युगेतस्मिञ्श्रुतेस्मृतौ। द्विधाश्रुतिःस्मृतिश्चैव निश्चयोनाधिगम्यते ७ अनिश्चयावगमनाद्धर्मतत्त्वंनविद्यते। धर्मतत्त्वेह्यविज्ञाते मतिभेदस्तुजायते ८ परस्परंविभिन्नास्ते दृष्टीनांविभ्रमेणतु। अतोदृष्टिविभिन्नैस्तैः कृतमत्याकुलत्विदम् ९ एकोवेदश्चतुष्पादः संहृत्यतुपुनःपुनः। संक्षेपादायुषश्चैव व्यस्यतेद्वापरेष्विह १० वेदश्चैकश्चतुर्धातु व्यस्यतेद्वापरादिषु। ऋषिपुत्रैःपुनर्वेदा भिद्यन्तेदृष्टिविभ्रमैः ११ तेतुब्राह्मणविन्यासैः स्वरक्रमविपर्ययैः। संहृताऋग्यजुःसाम्नां संहितास्तैर्महर्षिभिः १२ सामान्याद्वैकृताश्चैव दृष्टिभिन्नैःक्वचित्क्वचित्। ब्राह्मणंकल्पसूत्राणि भाष्यविद्यास्तथैवच १३ अन्येतुप्रस्थितास्तान्वै केचित्तान्प्रत्यवस्थिताः। द्वापरेषुप्रवर्तन्ते भिन्नार्थैस्तैःस्वदर्शनैः १४ एकमाध्वर्यवंपूर्व मासीद्द्वैधन्तुतत्पुनः। सामान्यविपरीतार्थैः कृतंशास्त्राकुलन्त्विदम् १५ आध्वर्यवञ्चप्रस्थानैर्बहुधाव्याकुलीकृतम्। तथैवाथर्वणांसाम्नां विकल्पैःस्वस्यसंक्षयैः १६ व्याकुलोद्वापरेष्वर्थः क्रियतेभिन्नदर्शनैः। द्वापरेसन्निवृत्तेते वेदानश्यन्तिवैकलौ १७ तेषांविपर्ययोत्पन्ना भवन्तिद्वापरेपुनः। अदृष्टिर्मरणंचैव तथैवव्याध्युपद्रवाः १८ वाङ्मनःकर्म

वर्णोंका लोप और कर्मोंका विपर्य्यय यह दोनोंहोजाते हैं, यात्राकावध, परमदंड, मान, गर्व, क्रोध और बल यह सब उत्पन्नहोते हैं ४ द्वापरमें रजोगुण और तमोगुणकी वृद्धिहोती है जो अधर्म कि सत्युग में नहीं होताहै वह त्रेतामें उत्पन्नहोकर प्रवृत्तहोताहै ५ द्वापरमें धर्मव्याकुलहोताहै औरकलियुगके आतेही नष्टहोजाताहै द्वापुरयुगमें वर्णोंके धर्म और आश्रमोंकी संकीर्णता अर्थात् घेलमेलीहोजाती है ६ द्वापरमें श्रुति स्मृतियों के अर्थोंमें सन्देह होजाते हैं ७ श्रुति स्मृतियोंका निश्चय नहोनेसे धर्मका तत्त्वभी नहीं रहताहै जब धर्मका तत्त्व नहीं जानाजाताहै तब बुद्धियों में भेद होजाताहै ८ दृष्टियों के विभ्रम और बुद्धिके भेदोंसे वह पुरुष परस्पर भिन्न२ होजाते हैं इसहेतुसे भिन्न दृष्टिवालेही लोग इस युगको व्याकुल करदेते हैं ९ द्वापरमें एकही चतुष्पाद वेदको संग्रह करके अल्पायुहोनेके कारण एक वेदका विभाग होजाताहै अर्थात एक वेदके चार विभाग पृथक् २ कियेजाते हैं ब्राह्मणों के विन्यास और स्वर क्रम विपर्य्यय होनेसे इनवेदोंकी ऋग्यजु और साम यह पृथक् १ संहिता महर्षियोंने बनाली है १०। ११ सामान्य विकृति होनेसे ब्राह्मण, मंत्र, कल्प, सूत्र, भाष्य और विद्या इत्यादिक पृथक् २ कियेजाते हैं १३ कितनेही अन्य ऋषि इनवेदोंको पृथक् २ मानते और कोई एकही मानते इसप्रकारसे द्वापरमें भिन्न दृष्टि होजातीभयी १४ प्रथम अध्वर्युके कर्मोंका एकमंत्रथा उसके दोभेदहुए इसीप्रकारसे सामान्य और विपरीत अर्थोंकरके शास्त्र व्याकुलहोजाताहै १५ अध्वर्युलोगों के वेदोंके बहुतसे भेद होतेभये उसीप्रकार अथर्वण और सामवेदके विकल्पोंकरके वह क्षीणताको प्राप्त होजाते हैं भिन्नदर्शी पुरुष द्वापरमें वेदोंका अर्थ व्याकुलकरादेते हैं इसीसे द्वापर व्यतीत होजानेके पीछे वह वेदनष्ट होजाते हैं १६।१७ जबद्वापर युगमें भिन्न २ दृष्टियोंके विपर्य्ययकरनेसेपुरुषोंके व्याधि का

भिर्दुःखैर्निर्वेदोजायतेततः। निर्वेदाज्जायतेतेषां दुःखमोक्षविचारणा १६ विचारणायां वैराग्यं वैराग्याद्दोषदर्शनम्। दोषाणांदर्शनाच्चैव ज्ञानोत्पत्तिस्तुजायते २० तेषांमेधा विनांपूर्वं मर्त्येस्वायम्भुवेऽन्तरे। उत्पत्स्यन्तीहशास्त्राणां द्वापरेपरिपन्थिनः २१ आयुर्वेदविकल्पाश्च अङ्गानांज्योतिषस्यच। अर्थशास्त्रविकल्पाश्च हेतुशास्त्रविकल्पनम् २२ प्रक्रियाकल्पसूत्राणां भाष्यविद्याविकत्थनम्। स्मृतिशास्त्रप्रभेदाश्च प्रस्थानानि पृथक्पृथक् २३ द्वापरेष्वतिवर्त्तन्ते मतिभेदास्तथानृणाम्। मनसाकर्म्मणावाचा कृच्छ्राद्वार्त्ताप्रसिध्यति २४ द्वापरेसर्वभूतानां कालःक्लेशपरःस्मृतः। लोभोधृतिर्वणिग्युद्धन्तत्त्वानामविनिश्चयः २५ वेदशास्त्रप्रणयनं वर्णानांसङ्करस्तथा। वर्णाश्रमपरिध्वंसः कामद्वेषौतथैवच २६ पूर्णवर्षसहस्रेद्वे परमायुस्तदानृणाम्। निःशेषेद्वापरेतस्मिंस्तस्यसन्ध्यातुपादतः २७ गुणहीनास्तुतिष्ठन्ति धर्म्मस्यद्वापरस्यतु। तथैवसन्ध्यापादेन अंशस्तस्यांप्रतिष्ठितः २८ द्वापरस्यतुपर्य्येषा पुष्यस्यचनिबोधत। द्वापरस्यांशशेषेतु प्रतिपत्तिःकलेस्थ २९ हिंसास्तेयानृतंमाया दम्भश्चैवतपस्विनाम्। एतेस्वभावाःपुष्यस्य साधयन्तिचताःप्रजाः ३० एषधर्म्मःस्मृतःकृत्स्नो धर्म्मश्चपरिहीयते। मनसाकर्म्मणावाचा वार्त्ताःसिद्ध्यन्तिमानवाः ३१ कलिःप्रमारकोरोगःसततंचापिक्षुद्भयम्। अनावृष्टिभयञ्चैव देशानाञ्चविपर्य्ययः ३२ नप्रमाणेस्थितिर्ह्यस्ति पुष्येघोरेयुगेकलौ। गर्भस्थोम्रियतेकश्चिद्

दिक उपद्रव होते हैं १८ तब मनवाणी और कर्म जन्य दुःखोंकरके उनको निर्वेद उत्पन्नहोताहै उस निर्वेदके होनेसे वहपुरुष उस दुःखसे छुटनेका विचारकरतेहैं १९ विचारकरनेसे वैराग्य उत्पन्न होता है वैराग्यसे सबवस्तुओंमें दोष दीखनेलगता है फिर दोषोंके देखनेसे ज्ञानकी उत्पत्ति होती है २० इसप्रकारसे उनमेधावी पुरुषोंको स्वायम्भुव मन्वन्तरमें ज्ञान उत्पन्न होताहै द्वापरमें शास्त्रोंके वंचक अर्थात् ठगनेवाले आयुर्वेदके विकल्प, ज्योतिश्शास्त्रके विकल्प, अर्थशास्त्रके विकल्प, धर्म शास्त्रके विकल्प, कल्प सूत्रोंकी प्रक्रिया, भाष्य विद्याका विवाद और स्मृति शास्त्रके भेदादिक वार्त्ताओंसे मनुष्योंकी बुद्धियोंके अनेकभेद होजातेहैं फिरकर्म मनवाणी आदिसे मनुष्योंकी आजीविका कष्टकरके सिद्ध होती है २१। २४ द्वापरमें सबप्राणियोंको विशेषकरके क्लेशही रहताहै जब लोभ धैर्य्य युद्ध और तत्त्वोंके निश्चयका अभाव, वेद शास्त्रका संघात, गुप्तहोना, वर्णाश्रमों का मिलना ध्वंसहोना और कामद्वेष यहसब होजाते हैं तबमनुष्योंकी दोहजार वर्षोंकी पूर्णायु होती है जबद्वापरका कुछ शेषरह जाताहै तबउसके संध्या संध्यांश व्यतीत होते हैं उनमेंभी गुणहीन पुरुष रहते हैं फिरजब द्वापरका थोड़ासा अंश शेषरहजाता है तब कलियुगकी उत्पत्ति होती है २५। २९ इस कलियुगमें सब लोग हिंसा, चोरी, मिथ्या, और छल आदिक दोषोंमें लिप्त होजातेहैं और तपस्वी लोगोंके माया, पाखंड और दंभ यहसब स्वभावहीसे उत्पन्न होजाते हैं ३० जो २ धर्म कहे हैं वहसब कलियुगमें नष्टहोजातेहैं सबमनुष्य मनवाणी और कर्मोंकरके अपनी आजीविका करनेमें प्रवृत्त रहते हैं ३१ कलियुगमें मारनेवाले रोगहैं और अनावृष्टिभय औरदेशोंका विपर्य्यय यहसब हुआकरते हैं ३२ जब घोरकलि-

यौवनस्थस्तथापरः ३३ स्थावर्यैमध्यकौमारे म्रियन्तेचकलौप्रजाः । अल्पतेजोबला पा
पा महाकोपाह्यधार्मिकाः ३४ अनृतव्रतलुब्धाश्च पुष्येचैवप्रजाःस्थिताः । दुरिष्टैर्दुरधी
तैश्च दुराचारैर्दुरागमैः ३५ विप्राणांकर्म्मदोषैस्तैः प्रजानांजायतेभयम्। हिंसामानस्त
थेर्ष्याच क्रोधोऽसूयाऽक्षमाऽधृतिः ३६ पुष्येभवन्तिजन्तूनां लोभोमोहश्चसर्वशः। संक्षो
भोजायतेऽत्यर्थं कलिमासाद्यवैयुगम् ३७ नाधीयन्तेतथावेदान्यजन्तेवैद्विजातयः। उत्सी
दन्तियथाचैव वैश्यैःसार्द्धन्तुक्षत्रियाः ३८ शूद्राणांमन्त्रयोनिस्तु सम्बन्धोब्राह्मणैःसह।
भवतीहकलौतस्मिन् शयनासनभोजनैः ३९ राजानःशूद्रभूयिष्ठाः पाषण्डानांप्रवृत्तयः।
काषायिणश्चनिष्कच्छास्तथाकापालिनश्चह ४० येचान्येदेवव्रतिनस्तथायेधर्म्मदूषकाः।
दिव्यवृत्ताश्चयेकेचिद् वृत्त्यर्थंश्रुतिलिङ्गिनः ४१ एवम्विधाश्चयेकेचिद्भवन्तीहकलौयुगे
अधीयतेतदावेदाञ्शूद्राधर्मार्थकोविदाः ४२ यजन्तिह्यश्वमेधैस्तु राजानःशूद्रयोनयः।
स्त्रीबालगोवधंकृत्वा हत्वाचैवपरस्परम् ४३ उपहृत्यतथान्योन्यं साधयन्तितदाप्रजाः।
दुःखप्रचुरताल्पायुर्देशोत्सादःसरोगता ४४ अधर्माभिनिवृत्तत्वं तमोवृत्तंकलौस्मृतम्।
भ्रूणहत्याप्रजानाञ्च तथाह्येवंप्रवर्त्तते ४५तस्मादायुर्बलंरूपं प्रहीयन्तेकलौयुगे। दुः
खेनाभिप्लुतानांच परमायुःशतंनृणाम् ४६ भूत्वाचनभवन्तीह वेदाःकलियुगेऽखिलाः।
उत्सीदन्तेयथायज्ञाः केवलंधर्म्महेतवः ४७ एषाकलियुगावस्था सन्ध्यांशौतुनिबोधत।

युग आता है तब प्रमाण नहींरहता कोईतो गर्भमेंही स्थितहुआ मरजाताहै कोई बाल्यावस्थामें और कोई युवावस्थामेंही मरजाता है ३३ किसी वस्तुकाठिक प्रमाण नहीं रहता कलियुगके लोग अल्पतेज बलवाले पापी, महाक्रोधी अधर्मी मिथ्यावादी और महालोभी होते हैं ३४ सबप्रजा मिथ्यावादी और लोभी होजाती है और बुरेइष्ट, बुरापढ़ना दुराचार और दुरागम इत्यादिक ब्राह्मणोंके कर्मों से प्रजाको बड़ाभयउत्पन्न होताहै हिंसा, अभिमान, ईर्षा, क्रोध,निन्दा. क्षमानकरना, अधैर्य्य, लोभ और मोह यहसब बातें कलियुगके जीवोंमें होजाती हैं इसयुग में विषय भोगादिक बहुत बढ़जाते हैं ३५ । ३७ ब्राह्मण वेदोंको नहीं पढ़ते, यज्ञोंको नहींकरते, वैश्योंके साथ क्षत्री नष्टहोजाते हैं ३८ शूद्रोंको मंत्र संस्कार होताहै ब्राह्मणोंसे संबंध होताहै बहुधा लोग शय्यापरही बैठेहुए या सोतेहुए भोजन करनेलगते हैं ३९ बहुत शूद्रराजा होकर पाखंडों की प्रवृत्ति करते हैं, शूद्ररंगे वस्त्र पहिर कर संन्यास धारण करते हैं देवता के नियमवाले दिव्य वृत्तान्तवाले ब्राह्मणोंके धर्ममें दोष निकालते हैं आजीविकाके निमित्त वेदोक्त चिह्नों को धारण करते हैं ४० । ४१ इसप्रकारसे कलियुगमें धर्म अर्थके जाननेवाले शूद्रही वेदोंको पढ़ते हैं ४२ शूद्रजातिके राजा अश्वमेधादिक यज्ञों से पूजनकरते हैं और सब प्रजा परस्पर में स्त्रीवध, बालकवध, और गोवध करकेभी अपनेकार्य्यको सिद्ध करती है,बहुत से दुःखों से स्वल्पआयु से, और नानारोगों से युक्तहोकर देश उजड़जाते हैं ४३।४४ कलियुग में अधर्म और तमोगुण के उत्पन्नहोने से लोग भ्रूणहत्या करते हैं इसी से मनुष्यों के आयु और रूपबल आदिक क्षीण होजाते हैं दुःखसे युक्तहुए मनुष्योंकी पूर्णआयु सौ १०० वर्षकी है ४५।४६ इस

युगेयुगेतुहीयन्ते त्रीस्त्रीन्पादांश्चसिद्धयः ४८ युगस्वभावाःसन्ध्यासु अवतिष्ठन्तिपादतः। सन्ध्यास्वभावा स्वांशेषु पादेनैवावतस्थिरे४९ एवंसन्ध्यांशकेकाले सम्प्राप्तेतुयुगान्तिके। तेषामधर्मिणांशास्ता भृगूणाञ्चकुलेस्थितः ५० गोत्रेणवैचन्द्रमसे नाम्नाप्रमतिरुच्यते। कलिसन्ध्यांशभागेषु मनोःस्वायम्भुवेऽन्तरे ५१ समात्रिंशत्तुसम्पूर्णाः पर्यटन्वैवसुन्धराम्। अश्वकर्मासवैसेनां हस्त्यश्वरथसंकुलाम् ५२ प्रगृहीतायुधैर्विप्रैः शतशोऽथसहस्रशः। स तदातै परिवृतोम्लेच्छान्सर्वान्निजघ्निवान् ५३ सहत्वासर्वशश्चैव राजानःशूद्रयोनयः। पाषण्डान्सतदासर्वान्नि:शेषानकरोत्प्रभुः ५४ अधार्मिकाश्चयेकेचित्तान्सर्वान्हन्तिसर्वशः। औदीच्यान्मध्यदेशांश्च पार्वतीयांस्तथैवच ५५ प्राच्यान्प्रतीच्यांश्चतथा विन्ध्यपृष्ठापरान्तिकान्। तथैवदाक्षिणात्यांश्च द्रविडान्सिंहलैःसह ५६ गन्धारान्पारदांश्चैव पह्लवान्यवनाञ्शकान्। तुषारान्बर्बरांश्वेतान् पुलिन्दान्बर्बरान्खसान् ५७ लम्पकानान्धकांश्चापिचोरजातींस्तथैवच। प्रवृत्तचक्रोबलवान्शूद्राणामन्तकृद्बभौ ५८ विद्राव्यसर्वभूतानि चचारवसुधामिमाम्। मानवस्यतुवंशेतु नृदेवस्येहजज्ञिवान् ५९ पूर्वजन्मनिविष्णुश्च प्रमतिर्नामवीर्यवान्। स्वतःसवैचन्द्रमसः पूर्वकलियुगेप्रभुः ६० द्वात्रिंशेऽभ्युदितेवर्षे प्रक्रान्तोविंशतिंसमाः। निजघ्नेसर्वभूतानि मानुषाण्येवसर्वशः ६१ कृत्वाबीजावशिष्टान्तां पृथ्वींक्रूरेणकर्म्मणा। परस्परनिमित्तेन कालेनाकस्मिकेनच ६२ संस्थितासहसायासे से

कलियुग में सबवेद होनेपरभी प्रवृत्त नहींहोते और धर्म के हेतु यज्ञादिकोंकाभी विध्वंस होजाताहै ४७ यह कलियुग की व्यवस्थाहै अब सन्ध्या और सन्ध्यांशकोंकोभी सुनो प्रत्येक युगमें तीन ३ चरण सिद्धि से हीनहोजाते हैं सन्ध्याओं में एकपादमात्रही युगों के स्वभावस्थित रहते हैं सन्ध्याके स्वभाव एक चरणमात्र अपने सन्ध्यांशों में स्थित रहते हैं ४८।४९ इस रीतिसे जब सन्ध्यांशकाल प्राप्तहुआ तब उन अधर्मियों को दण्डदेनेवाला भृगुवंशी चन्द्रमस गोत्र में होनेवाला प्रमतिनाम राजा स्वायंभुव मनु के अन्तरमें कलियुग के सन्ध्यांशों में उत्पन्न होताभया ५०।५१ वह राजा तीसवर्षकी अवस्थाको प्राप्त होकर हाथी घोड़े समेत उत्तम सेनाको साथ ले शस्त्रों को धारण कियेहुए हजारों ब्राह्मणों से युक्त होकर सम्पूर्ण म्लेच्छों को मारताभया ५२। ५३ शूद्रजातिके सब राजाओं को मारकर उसने सब पाखण्डोंकाभी नाशकरदिया ५४ जितने अधर्मीलोग थे उनको मारकर उत्तर के रहनेवाले मध्यदेशके रहनेवाले पर्वतों के रहनेवाले, पूर्व पश्चिम के रहनेवाले, विंध्याचल की पीठपर रहनेवाले, दक्षिणात्य, द्रविड़, सिंहल, म्लेच्छदेश के अर्थात् काबुल कन्धारके रहनेवाले, पारद, पह्लव, शक, तुषार, बर्बर, श्वेत, पुलिन्द, बर्बर, खस, लंपक और अन्धक, चोरजातियों समेत इन जातियों को मारता हुआ वह बलवान् राजा अपने चक्रको प्रवृत्त करके शूद्रोंको शिक्षा देताभया ५५।५८ यह प्रमतिनाम राजा पूर्व जन्ममें मानववंशमें पैदाहोकर सबभूतों को भगाता हुआ पृथ्वीपर विचराथा फिर कलियुग में चन्द्रवंशमें उत्पन्न होकर बत्तीसवें वर्षमें सबदुष्ट भूत मनुष्यादिकों को मारता भया ५९। ६१ बड़े २ क्रूरकर्मों से पृथ्वीपर बीजमात्र छोड़के अकस्मात् कालसे परस्पर निमित्त करके उसप्रमति राजाकी

नाप्रमतिनासह। गङ्गायमुनयोर्मध्ये सिद्धिंप्राप्तारसमाधिना ६३ ततस्तेषुप्रनष्टेषु सन्ध्यां शेक्रूरकर्म्मसु। उत्साद्यपार्थिवान्सर्वान्तेष्वतीतेषवैतदा ६४ ततःसन्ध्यांशकेकाले सं प्राप्तेचयुगान्तके। स्थिताःस्वल्पावशिष्टासु प्रजास्विहक्कचित्क्वचित् ६५ स्वाप्रदानास्त दातेवै लोभाविष्टास्तुवृन्दशः। उपहिंसंतिचान्योन्यं प्रलुम्पन्तिपरस्परम् ६६ अराजके युगांशेतु संक्षयेसमुपस्थिते। प्रजास्तावैतदासर्वा परस्परभयार्दिताः ६७ व्याकुलास्ताः परावृत्तास्त्यज्यदेवगृहाणितु। स्वान्स्वान्प्राणानवेक्षन्तो निष्कारुण्यात्सुदुःखिताः ६८ नष्टेश्रौतस्मृतेधर्मे कामक्रोधवशानुगाः निर्मर्यादानिरानन्दा निःस्नेहानिरपत्रपाः ६९ नष्टे धर्मेप्रतिहता ह्रस्वकाः पञ्चविंशकाः। हित्वादारांश्चपुत्रांश्च विषादव्याकुलप्रजाः ७० अनावृष्टिहतास्तेवै वार्त्तामुत्सृज्यदुःखिताः। चीरकृष्णाजिनधरा निष्क्रुद्धाःनिष्परिग्रहाः ७१ वर्णाश्रमपरिभ्रष्टाः सङ्करङ्घोरमास्थिताः। एवंकष्टमनुप्राप्ता ह्यल्पशेषाःप्रजास्ततः ७२ जन्तवश्चक्षुधाविष्टा दुःखान्निर्वेदमागमन्। संश्रयन्तिचदेशांस्तांश्चक्रवत्परिवर्त्तनाः ७३ ततःप्रजास्तुताःसर्वा मांसाहाराभवन्तिहि। मृगान्वराहान्वृषभान्येचान्येवनचारिणः ७४ भक्ष्यांश्चैवाप्यभक्ष्यांश्च सर्वांस्तान्भक्षयन्तिताः। समुद्रंसंश्रितायास्तु नदीश्चैवप्रजास्तुताः ७५ तेऽपिमत्स्यान्हरन्तीह आहारार्थंचसर्वशः। अभक्ष्याहारदोषेण एकवर्णगताःप्रजाः ७६ यथाकृतयुगेपूर्वमेकवर्णमभूत्किल। तथाकलियुगस्यान्ते शूद्री

सेना राजा समेत होकर गंगा यमुनाके मध्यमें समाधि के द्वारा परमसिद्धिको प्राप्त होती भई ६२। ६३ संध्या के अंशमें जब वह क्रूरकर्म नष्ट होगये और सब दुष्टराजा मारेगये तब युगके अन्त में संध्यांश कालके बीच कहीं २ थोड़ीसी प्रजा बाकीरही वह शेष बचे जीव लोभसे युक्तहोकर परस्पर हिंसाकरके लूट मार करनेलगे इस हेतु से राजासे रहितहुए युगांश में वह सब प्रजा आपस के भयसे महापीड़ित होतीभयी ६४। ६७ उस समय व्याकुलहोकर प्रजा अपने २ घरोंको त्यागकर निर्दयतासे महादुःखितहो अपने २ प्राणबचाने की इच्छा करतीभयी ६८ जब श्रुति और स्मृतियों के धर्म नष्टहोगये तब काम क्रोधके वशमेंहुए सबजन मर्यादा, आनन्द, स्नेह, और लज्जा, इनसबसे रहित होजातेभये ६९ जब धर्म नष्टहोगया तब पच्चीसवर्षकी अवस्थावाले छोटे२ पुरुष स्त्री और पुत्रोंको त्यागतेभये विषादसे सबप्रजा व्याकुलहुई वर्षा नहींहोने से महादुःखी पुरुष अपनी२ आजीविकाको छोड़कर चीर,मृगचर्म,आदि धारणकर क्रोधकेद्वारा परिग्रहसे और वर्णाश्रमों से रहित हो वर्ण संकरपने को प्राप्त होतेभये इसप्रकारसे वह शेष बचेहुए प्रजाके लोग कष्टोंको प्राप्त होतेभये ७०। ७२ क्षुधातुरजीव दुःखी हो देश देशान्तरों में चक्रके समान भ्रमतेभये इसके अनन्तर सबप्रजा मांसके आहार करनेवाली होतीभई जबक्षुधातुर होकर मृग, बैल, और अन्य वनचारी जीव इन सब भक्ष्य और अभक्ष्य जीवोंको भक्षण करतेभये नदी समुद्रादिकों पर जाकर मत्स्यादिक जीवों को मारमार कर प्रजा खातीभई फिर अभक्ष्य वस्तुओं के आहारके दोषसे सब प्रजा एकवर्णवाली होगई ७३। ७६ जैसे कि पहले सतयुगमें एकही वर्णथा इसीप्रकार सब प्रजा शूद्रहोकर एकजाति

भूताःप्रजास्तथा ७७ एवंवर्षशतंपूर्णं दिव्यंतेषांन्यवर्त्तत । षट्त्रिंशच्चसहस्राणि मानुषाणितुतानिवै ७८ अथदीर्घेणकालेन पक्षिणःपशवस्तथा। मत्स्याश्चैवहृता सर्वैः क्षुधाविष्टैश्चसर्वशः ७९ निःशेषेष्वथसर्वेषु मत्स्यपक्षिपशुष्वथ । सन्ध्यांशेप्रतिपन्नेतु निःशेषास्तुतदाकृताः ८० ततःप्रजास्तुसम्भूय कन्दमूलमथाऽखनन् । फलमूलाशनाःसर्वे अनिकेतास्तथैवच ८१ वल्कलान्यथवासांसि अधःशय्याश्चसर्वशः । परिग्रहोनतेष्वस्ति धनशुद्धिमवाप्नुयुः ८२ एवंक्षयंगमिष्यन्ति ह्यल्पशिष्टाःप्रजास्तदा । तासामल्पावशिष्टानामाहाराद्वृद्धिरिष्यते ८३ एवंवर्षशतंदिव्यं सन्ध्यांशस्तस्यवर्त्तते। ततोवर्षसहस्रान्ते अल्पशिष्टाःस्त्रिय सुताः ८४ मिथुनानितुता सर्वा ह्यन्योन्यंसंप्रजज्ञिरे। ततस्तास्तुम्रियन्तेवै पूर्वोत्पन्नाःप्रजास्तुयाः ८५ जातमात्रेष्वपत्येषु ततःकृतमवर्त्तत । यथास्वर्गेशरीराणि नरकेचैवदेहिनाम् ८६ उपभोगसमर्थानि एवंकृतयुगादिषु। एवंकृतस्यसन्तानः कलेश्चैवक्षयस्तथा ८७ विचारणात्तुनिर्वेदः साम्यावस्थात्मनातथा । ततश्चैवात्मसम्बोधः सम्बोधाद्धर्म्मशीलता ८८ कलिशिष्टेषुतेष्वेवं जायन्तेपूर्ववत्प्रजाः। भाविनोऽर्थस्य चवलात्ततःकृतमवर्त्तत ८९ अतीतानागतानिस्युर्य्यानिमन्वन्तरेष्विह । एतेयुगस्वभावास्तु मयोक्तास्तुसमासतः ९० विस्तरेणानुपूर्व्याच्च नमस्कृत्यस्वयम्भुवे । प्रवृत्तेतुततस्तस्मिन् पुनःकृतयुगेतुवै ९१ उत्पन्नाःकलिशिष्टेषु प्रजाःकार्त्तयुगास्तथा। तिष्ठन्तिचे

होजातीभई ७७ इसीप्रकार से इन मनुष्यों के दिव्य सौवर्ष व्यतीत होगये और मनुष्योंके छत्तीस हजारवर्ष व्यतीत होगये इसके अनन्तर वहुतसे कालमें क्षुधासे युक्तहोकर उन मनुष्यों ने पशुपक्षी और मत्स्यादिक जीव सब नष्ट करदिये ७८। ७९ संध्यांशमें स्थितहुए शेषबचेहुए पशुपक्षी और मत्स्यादिक जीव उन मनुष्यों ने नष्ट करदिये इसके अनन्तर सब मनुष्य वारंवार कन्दमूल और फलोंको भक्षण करतेभये अपने रहनेके निमित्त कोई स्थानादिक नहीं रखतेभये वक्कलोंकोही ओढ़ते और विछातेभये किसीके पास कुछ संग्रह नहीं रहा धन की कुछ चाह नहीं रही इसप्रकार वाकीरही सब प्रजाभी नष्ट होजाती है उनमेंसेभी जो और कुछ वाकीरहे उनकी वृद्धि आहारकरने में होतीभई ऐसे दिव्य सौवर्षोंतक उस कलियुगका संध्यांशरहता है फिर हज़ारवर्षके अन्तमें थोड़े से शेषवचेहुए पुत्र और स्त्री उनके परस्पर मैथुन होनेसे अन्य सन्तान उत्पन्न होतीभयी उनके पीछे उनके पिता माता आदिक पहले की सब प्रजा नष्टहोजाती है और उनसे उत्पन्नहुए पुत्रोंसे आदिलेके सत्ययुग प्राप्त होताहै जैसे कि स्वर्ग वासी शरीर और नरकवासी यहदोनों शरीर अपने कियेहुए कर्मों के भोगों को भोगते हैं इसी प्रकार सतयुगकी सन्तान कलियुग के क्षीण होनेसे अच्छेप्रकार प्रवृत्तहोती है ८०। ८७ आत्माकी साम्यावस्थाके विचारमेंसे ज्ञान होताहै आत्मज्ञान होनेसे धर्म में शीलताकी वृद्धि होती है ८८ इस पूर्वोक्त प्रकारसे कलियुग के अन्त में शेषरही हुई प्रजा में भावी की प्रवलता के द्वारा सतयुग वर्त्तने लगजाताहै ८९ व्यतीत और आनेवाले सब मन्वन्तरों में मैंने यह युगों के स्वभाव संक्षेपमात्र से कहदिये हैं ९० अनुपूर्वक विस्तार करके उस सतयुगके प्रवृत्तहोने

ह्येसिद्धा अदृष्टाविहरन्तिच ९२ सहसप्तर्षिभिर्येतु तत्रयेचव्यवस्थिताः। ब्रह्मक्षत्रवि
शःशूद्रा बीजार्थेयइहस्मृताः ९३ तेषांसप्तर्षयोधर्मं कथयन्तीहतेषुच। वर्णाश्रमाचारयुतं
श्रौतस्मार्त्तविधानतः ९४ एवंतेषुक्रियावत्सु प्रवर्त्तन्तीहवैकृते। श्रौतस्मार्त्तस्थितानान्तु
धर्मेसप्तर्षिदर्शिते ९५ तेतुधर्मव्यवस्थार्थं तिष्ठन्तीहकृतेयुगे। मन्वन्तराधिकारेषु तिष्ठ
न्तिऋषयस्तुते ९६ यथादावप्रदग्धेषु तृणेष्वेवापरक्षितौ। वनानांप्रथमंदृष्टा तेषांमूले
पुसम्भवः ९७एवंयुगादुयुगानांवै सन्तानस्तुपरस्परम्। प्रवर्त्ततेह्यविच्छेदाद्यावन्मन्वन्त
रक्षयः ९८सुखमायुर्बलंरूपं धर्मार्थौकामएवच।युगेष्वेतानिहीयन्ते त्रयःपादाःक्रमेणतु९९
इत्येषप्रतिसन्धिर्वः कीर्तितस्तुमयाद्विजाः॥ चतुर्युगाणांसर्वेषामेतदेवप्रसाधनम् १००
एषांचतुर्युगाणान्तु गणिताह्येकसप्ततिः। क्रमेणपरिवृत्तास्ता मनोरन्तरमुच्यते १०१
युगाख्यासुतुसर्वासु भवतीहयदाचयत्। तदेवचतदन्यासु पुनस्तद्वैयथाक्रमम् १०२
सर्गेसर्गेयथाभेदा ह्युत्पद्यन्तेतथैवच। चतुर्दशसुतावन्तो ज्ञेयामन्वन्तरेष्विह१०३ आसु
रीयातुधानीच पैशाचीयक्षराक्षसी। युगेयुगेतदाकाले प्रजाजायन्तिताःशृणु १०४ यथा
कल्पंयुगेःसार्द्धं भवन्तेतुल्यलक्षणाः। इत्येतल्लक्षणंप्रोक्तं युगानांवैयथाक्रमम् १०५ म
न्वन्तराणांपरिवर्त्तनानि चिरप्रवृत्तातियुगस्वभावात्। क्षणंनसंतिष्ठतिजीवलोकः क्षयो

के पीछे के वृत्तान्तको भी संक्षेपता से कहताहूं उसको तुम सुनो ९१ कलियुगके सध्यांशों में सतयुगकी प्रजा उत्पन्न होती है तब जो २ सिद्धलोग रहते हैं वह अदृष्ट होकर विहार करते हैं ९२। ९३ सप्तऋषियों समेत सिद्धपुरुष इससंसारमें उत्पन्न होते हैं वह उत्पन्न हुए सब लोग सप्तऋषियों के धर्मको कहते हैं ९४ इस प्रकारसे सतयुग में उनक्रियावानों के श्रुति स्मृत्युक्त धर्मको कहतेहुए वह ऋषि मन्वन्तरों के अधिकारों में धनकी व्यवस्था कहने के लिये स्थित रहते हैं जैसे कि वनमें दावानल अग्निसे तृणादिके समूह जलजाते हैं और उनकी दग्धहुई जड़ें फूटकर फिर झुंडके झुंड होजाते हैं इसीप्रकार एकयुगसे अगले युगकी सन्तान बढ़ती है मन्वन्तरों के अन्त तक इसीप्रकार युगोंकी सन्तान निरन्तर चलीजाती है ९५।९८ सुख, आयु, बल, रूप, धर्म,अर्थ और काम यह सत्ययुग २ में तृतीयांश हीन होजाते हैं ९९ हे द्विज लोगो मैंने यह युगोंकी सन्धि तुम्हारे आगे वर्णन करीहै चारोंयुगों का यहीप्रकार है इन चारोंयुगों की जो इकहत्तर चौकड़ी होतीहैं उनमेंही मनुकाअन्तर अर्थात् बदलना होताहै पहले युगोंमें जो २ व्यवहार होते हैं वहीसब अन्य २ युगोंमें भी होते हैं जैसी रचना एकसर्ग में कही है इसीप्रकार से उतनीही रचना चौदहों मन्वन्तरों में होती है १००।१०३ आसुरी, यातुधानी, पैशाची,यक्ष-और राक्षसी यहसब प्रजा युग २ में जिस२ समयमें उत्पन्न होती है उनको अब मुझसे तुम सुनो १०४ कल्पके अनुसार युगोंकेसाथ तुल्य लक्षणवाली प्रजा उत्पन्न होती है यह इस प्रकारके लक्षणवाला युगोंका क्रम मैंने तुमसे वर्णन किया १०५ बहुतकालमें प्रवृत्तहुए युगोंके बदलने से मन्वन्तर बदलते हैं जन्ममरणसे भ्रमताहुआ जीव

दयाभ्यांपरिवर्त्तमानः १०६ एतेयुगस्वभावाद्वः परिक्रान्तायथाक्रमम्।मन्वन्तराणियान्य स्मिन् कल्पेवक्ष्यामितानिच १०७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे मन्वन्तरानुकीर्त्तनोनाम त्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४३॥

(सूत उवाच) मन्वन्तराणियानिस्युः कल्पेकल्पेचतुर्दश। व्यतीतानागतानिस्युर्यानिमन्वन्तरेष्विह १ विस्तरेणानुपूर्व्याच्च स्थितिंवक्ष्येयुगेयुगे। तस्मिन्युगेचसम्भूतिर्यासांयावच्चजीवितम् २ युगमात्रन्तुजीवन्ति न्यूनंतत्स्याद्द्वयेनच। चतुर्दशसुतावन्तो ज्ञेयामन्वन्तरेष्विह ३ मनुष्याणांपशूनाञ्च पक्षिणांस्थावरैःसह। तेषामायुरुपक्रान्तं युगधर्मेषुसर्वशः ४ तथैवायुःपरिक्रान्तं युगधर्मेषुसर्वशः। अस्थितिश्चकलौदृष्ट्वा भूतानांमानुषेतथा ५ परमायुःशतन्त्वेतन्मानुषाणांकलौस्मृतम्। देवासुरमनुष्याश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ६ परिणाहोच्छ्रयेतुल्या जायन्तेहकृतेयुगे। षण्णवत्यंगुलोत्सेधो अष्टानांदेवयोनिनाम् ७ नवांगुलप्रमाणेन निष्पन्नेनतथाष्टकम्। एतत्स्वाभाविकंतेषां प्रमाणमधिकुर्वताम् ८ मनुष्यावर्त्तमानास्तु युगसन्ध्यांशकेष्विह। देवासुरप्रमाणन्तु सप्तसप्तांगुलंक्रमात् ९ चतुराशीतिकेश्चैव कलिजैरंगुलैःस्मृतम्। आपादतलमस्तको नवतालोभवेत्तुयः १० संहत्याजानुबाहुश्च दैवतैरभिपूज्यते। गवाश्वहस्तिनांचैव महिषस्थावरात्मनाम् ११ क्रमेणैतेनविज्ञेये ह्रासवृद्धीयुगेयुगे। षट्सप्तत्यंगुलोत्सेधः पशुराककुदोभवेत् १२ अंगु

क्षणमात्र नहीं ठहरताहै इसप्रकारसे यह युगोंके स्वभाव मैंने तुमसे क्रमपूर्व्वक कहे हैं अब इसकल्प में मन्वन्तरों को कहूंगा १०६।१०७

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांमन्वन्तरानुकीर्त्तनंनामत्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४३॥

सूतजीबोले कि कल्प २ में जो चौदह मनु होते हैं उनमें से जो व्यतीत होगये हैं और आगे होने वाले हैं उनसबोंकी विस्तारपूर्व्वक स्थिति युग२के प्रतिकहके उसयुगमें जो उनकी विभूति और जैसा जीवन है वहसब वर्णन करते हैं १।२ चौदह मनुओंमें मनुष्य पशुपक्षी और स्थावर वृक्षादिक इन सब समेत यह जगत् युग पर्य्यन्त उसीयुगके स्वभाववाला रहताहै और इनसबों की आयुभी युगों के अनुसार रहती है कलियुगमें भूतों की अस्थिति देखकर मनुष्यों की परम आयु सौ १०० वर्ष की कही गई है ३।५ और देवता, असुर, राक्षस, मनुष्य, यक्ष और गन्धर्व यहसब सतयुगमें स्थूलता और ऊँचाई में एकही से होते भये देवयोनि आठ प्रकारकी होतीहै उनके शरीर छानवे ९६ अंगुल ऊँचेहोतेहैं और उनके शरीरों की मुटाई बहत्तर ७२ अंगुलमें होती है यहतो उनके शरीरका स्वाभाविक प्रमाणहै और मायारचने के समय चाहे जितना न्यूनाधिक करसक्ते हैं ६।८ युगों की संध्याओं में वर्त्तेतेहुए मनुष्य देवता और दैत्योंका प्रमाण अपने २ उनचास ४९ अंगुलोंका रहताहै९ कलियुगमें जो पुरुष अपने चौरासी ८४ अंगुलोंका होताहै और पैरोंसे मस्तक पर्य्यन्त जो नौ ९ ताल प्रमाणका है और आजानुबाहु होय वह पुरुष देवताओं से भी पूजाजाताहै गौ हाथी भैंस और स्थावर वृक्षादिक इनसबों के शरीर युग २ में घटते बढ़ते हैं बैल आदिक पशुग्रीवा पर्य्यन्त छिहत्तर

लानामष्टशतमुत्सेधो ह्रस्तिनांस्मृतः। अंगुलानांसहस्रन्तु द्विचत्वारिंशदंगुलम् १३
शतार्द्धमंगुलानान्तु ह्युत्सेधःशाखिनाम्परः। मानुषस्यशरीरस्य सन्निवेशस्तुयादृशः १४
तल्लक्षणन्तुदेवानां दृश्यतेऽन्वयदर्शनात्। बुद्ध्यातिशयसंयुक्तो देवानांकायउच्यते १५
तथानातिशयश्चैव मानुषःकायउच्यते। इत्येवंहिपरिक्रान्ता भावायेदिव्यमानुषाः १६
पशूनांपक्षिणांचैव स्थावराणांचसर्वशः। गावोऽजाश्वाश्चविज्ञेया ह्रस्तिनःपक्षिणोमृगाः
१७ उपयुक्ताःक्रियास्वेते यज्ञियास्त्विहसर्वशः। यथाक्रमोपभोगाश्च देवानांपशुमूर्त्तयः
१८ तेषांरूपानुरूपैश्च प्रमाणैःस्थिरजङ्गमाः। मनोज्ञैस्तत्रतेभोगैः सुखिनोह्युपपेदिरे
१९ अथसन्तःप्रवक्ष्यामि साधूनथततश्चवै। ब्राह्मणा श्रुतिशब्दाश्च देवानांपशुमूर्त्तयः
२० संयुज्यब्रह्मणाह्यन्तस्तेनसन्तःप्रचक्षते। सामान्येषुचधर्मेषु तथावैशेषिकेषुच २१
ब्रह्मक्षत्रविशोयुक्ताः श्रौतस्मार्तेनकर्म्मणा। वर्णाश्रमेषुयुक्तस्य सुखोदर्कस्यस्वर्गतो २२
श्रौतस्मार्तौहियोधर्मो ज्ञानधर्मःसउच्यते। दिव्यानांसाधनात्साधुर्ब्रह्मचारीगुरोर्हितः२३
कारणात्साधनाच्चैव गृहस्थःसाधुरुच्यते। तपसश्चतथारण्ये साधुर्वैखानसःस्मृतः२४
यतमानोयतिःसाधुः स्मृतोयोगस्यसाधनात्। धर्मोधर्मगतिःप्रोक्तः शब्दोह्येषक्रियात्मकः
२५ कुशलाकुशलौचैव धर्माधर्मौब्रवीत्प्रभुः। अथदेवाश्चपितर ऋषयश्चैवमानुषाः
२६ अयंधर्मोह्ययंनेति ब्रुवतेमौनमूर्त्तिना। धर्मेतिधारणेधातुर्महत्त्वेचैवमुच्यते २७ आ

७६ अंगुल के होते हैं १० । १२ हाथी आठसौ ८०० अंगुल ऊँचा होता है एकहज़ार बानवे १०९२ अंगुल की परम ऊँचाई वृक्षों की कही है जैसा लक्षण मनुष्य के शरीरका है वैसाही सब लक्षण देवताओं के शरीरका होताहै देवताओं का शरीर अत्यन्तबुद्धिसे युक्तरहताहै १३।१४ मनुष्यों के शरीर में अत्यन्त बुद्धिनहीं रहती है इसप्रकारसे दिव्यभाव और मानुषीभाव वर्णन किये हैं गौ बकरी अश्व हस्ती पक्षी और मृग पशु पक्षी और स्थावर वृक्षादि यह सब जीव यथाक्रम सब क्रियाओं में युक्तरहते हैं, पशुओं की मूर्त्ति देवताओं के निमित्त उपभोग रूपकही है उन देवताओं के रूप और प्रमाण के अनुसार सब स्थावर जंगम भूतों की व्यवस्था है सो देवता उन पशुओं के मनोहर उपभोगों को प्राप्तहोते हैं १६ । १९ इसके अनन्तर अब सन्त और साधुलोगों का वर्णनकरते हैं वेदकेपढ़ेहुए ब्राह्मण देवताओं की मूर्त्तिके समानहैं २० जो पुरुष सामान्य धर्मोंमें और वैशेपिक धर्मोंमें सर्वत्र ब्रह्मके साथ अपने सिद्धान्तको युक्तकरते हैं वह सन्त कहाते हैं २१ ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यह सब श्रुतिस्मृति सम्बन्धी कर्मोंके अनुसार कामकरते हैं उनके सुखका उत्तर फल स्वर्गगत्ति है २२ श्रुतिस्मृति में जो कहाहुआ धर्म है वह ज्ञान धर्म कहाताहै दिव्य वस्तुओं के साधन करनेवालों को साधु कहते हैं गुरूके हितमें रहनेवाला ब्रह्मचारी कहाताहै कारणके सिद्धकरने से गृहस्थी साधुकहाताहै वनमें तपकरने से वैखानस साधुकहाताहै २३।२४ जो सब इन्द्रिय आदिको शान्तरखकर योगको सिद्धकरताहै वह यतिसाधु कहाताहै यह धर्मका शब्द क्रियात्मक धर्मकीगतिमें रहनेवालाहै, धर्म और अधर्म यह दोनों कुशल और अकुशल रूपहैं ऐसा

धारणेमहत्त्वेवा धर्म्मःसतुनिरुच्यते । तत्रेष्टप्रापकोधर्म्म आचार्यैरुपदिश्यते २८ अ
धर्म्मश्चानिष्टफल आचार्यैर्नोपदिश्यते । वृद्धाश्चालोलुपाश्चैव आत्मवन्तोह्यदाम्भि
काः २९ सम्यग्विनीतामृदवस्तानाचार्यान्प्रचक्षते । धर्मज्ञैर्विहितोधर्म्मः श्रौतस्मार्तौ
द्विजातिभिः ३० दाराग्निहोत्रसम्बन्धमिज्याश्रौतस्यलक्षणम् । स्मार्त्तोवर्णाश्रमाचारो
यमैश्चनियमैर्युतः ३१ पूर्वेभ्योवेदयित्वेह श्रौतंसप्तर्षयोऽब्रुवन् । ऋचोयजूंषिसामानि
ब्रह्मणोऽङ्गानिवैश्रुतिः ३२ मन्वन्तरस्यातीतस्य स्मृत्वातन्मनुरब्रवीत् । तस्मात्स्मार्तः
स्मृतोधर्म्मो वर्णाश्रमविभागशः ३३ एवंवैद्विविधोधर्म्मः शिष्टाचारःसउच्यते । शिषे
र्धातोश्चनिष्ठान्ताच्छिष्टशब्दंप्रचक्षते ३४ मन्वन्तरेषुयेशिष्टा इहतिष्ठन्तिधार्मिकाः । म
नुःसप्तर्षयश्चैव लोकसन्तानकारिणः ३५ तिष्ठन्तीहचधर्मार्थं ताञ्छिष्टान्सम्प्रचक्षते ।
तैःशिष्टैश्चलितोधर्मः स्थाप्यतेवैयुगेयुगे ३६ त्रयीवार्त्तादण्डनीतिः प्रजावर्णाश्रमेप्स
या । शिष्टैराचर्य्यतेयस्मात् पुनश्चैवमनुक्षये ३७ पूर्वैःपूर्वैर्मतत्वाच्च शिष्टाचारःसशा
श्वतः । दानंसत्यंतपोलोको विद्येज्यापूजनन्दमः ३८ अष्टौतानिचरित्राणि शिष्टाचा
रस्यलक्षणम् । शिष्टायस्माच्चरन्त्येनं मनुःसप्तर्षयश्चह ३९ मन्वन्तरेषुसर्वेषु शिष्टा

मनुजी का वचनहै देवता पितर ऋषि और मनुष्य यह सब मौन मूर्त्तिकरके धर्मके होने नहोनेको कहते हैं अर्थात् यह धर्महै यह धर्म नहीं है ऐसा कहते हैं वह धर्म धातु धारणकरने में और महत्त्व अर्थमें वर्त्तताहै अर्थात् धारणकरने से महत्त्व अर्थमें धर्मकहाताहै वहाँ इष्ट सिद्धिको प्राप्तकरनेवाला धर्मका उपदेश आचार्य्योंने कहाहै, अधर्म अनिष्ट फलवालाहै उसको आचार्य्योंने नहीं कहाहै अव-स्थामें वृद्ध लोभसेरहित आत्मज्ञानवाले दंभ पाखंडसे रहित सम्यक् नीतिवाले और सरलचित्तजन आचार्य्य कहाते हैं उन धर्मके जाननेवाले ब्राह्मणों ने श्रुतिस्मृत्युक्त धर्मका उपदेशकियाहै २५।३० स्त्रीसहित होकर अग्निहोत्र करना और यज्ञकरना यह श्रुतिके अर्थ हैं, यमनियमोंकरके युक्तहोना. वर्णाश्रमों के आचारमें युक्तरहना, यहस्मृतिका अर्थकहाहै ३१ पूर्व्वके आचार्य्यों से अच्छेप्रकार जान कर श्रुतिविहित धर्मोंको सप्तऋषियों ने कहाहै कि ऋक्यजु और साम यह तीनों वेद ब्रह्माके अंग हैं-३२ व्यतीतहुए मन्वन्तरके वृत्तान्तको अगलामनु स्मरणकरके वर्णाश्रमों के विभाग द्वारा जो स्मृ-तिके धर्मका वर्णन करताभया वही स्मार्त्त धर्मकहाताहै इसप्रकारसे दोप्रकारके धर्मको शिष्टाचार कहते हैं,(शासु अनुशिष्टौ)इसधातुका शिष्ट शब्द बनताहै ३३।३४ मन्वन्तरों में धार्मिक शिष्ट पुरुषरहते हैं और मनु समेत सप्तऋषि यह सबलोकों की वृद्धिकरनेवाले कहे हैं ३५ धर्मके निमित्त जो शिष्टपुरुष स्थितहोते हैं उन्हींको शिष्टकहते हैं वह शिष्ट पुरुष युग २ में बिगड़तेहुए धर्मका स्थापन करते हैं ३६ मनुके अन्तमें वेदत्रयीकी जीविका दण्डनीति और वर्णाश्रमोंकरके शिष्टपुरुष प्रजाको सुधारदेते हैं ३७ पूर्व्व २ के आचार्य्यों के मतके अनुसार शिष्टपुरुषों का आचार होता है, दान,सत्य, तप,विद्या,यज्ञ, पूजन,अहिंसा, और इन्द्रियों का निग्रह ३८ यह आठलक्षण शिष्टपुरुषों के आचरणके हैं शिष्ट पुरुष, मनु और सप्तऋषि यह सब जिसधर्मका आचरण करते हैं वह शिष्टाचार कहाताहै सदैवसे जिस

चारस्ततःस्मृतः। विज्ञेयःश्रवणाच्छ्रौतः स्मरणात्स्मार्त्तउच्यते ४० इज्यावेदात्मकःश्रौ
तः स्मार्तोवर्णाश्रमात्मकः। प्रत्यङ्गानिप्रवक्ष्यामि धर्मस्येहतुलक्षणम् ४१ दृष्टानुभूतमर्थ
ञ्च यःपृष्टोनाविगूहते। यथाभूतप्रवादस्तु इत्येतद्धर्मलक्षणम् ४२ ब्रह्मचर्यंतपोमौनं नि
राहारत्वमेवच। इत्येतत्तपसोरूपं सुघोरन्तुदुरासदम् ४३ पशूनांद्रव्यहविषामृक्सामं
यजुषांतथा। ऋत्विजांदक्षिणायाश्च संयोगोयज्ञउच्यते ४४ आत्मवत्सर्वभूतेषु योहिता
यशुभायच। वर्त्ततेसततंहृष्टः क्रियाश्रेष्ठादयास्मृता ४५ आक्रुष्टोऽभिहतोयस्तु नाक्रोशे
त्प्रहरेदपि। अदुष्टोवाङ्मनःकायैस्तितिक्षुःसाक्षमास्मृता ४६ स्वामिनारक्ष्यमाणानामुत्
सृष्टानाञ्चसम्भ्रमे। परस्वानामनादानमलोभइतिसंज्ञितः ४७ मैथुनस्यासमाचारो ज
ल्पनाच्चिन्तनात्तथा। निवृत्तिर्ब्रह्मचर्यञ्च तदेतच्छमलक्षणम् ४८ आत्मार्थेवापरार्थेवा इ
न्द्रियाणीहयस्यवै। विषयेनप्रवर्त्तन्ते दमस्यैतत्तुलक्षणम्४९ पञ्चात्मकेयोविषये कारणेचा
ष्टलक्षणे। नक्रुध्येतप्रतिहतः सजितात्माभविष्यति ५० यद्यदिष्टतमंद्रव्यं न्यायेनैवागतं
श्चयत्। तत्तद्गुणवतेदेयमित्येतद्दानलक्षणम् ५१ श्रुतिस्मृतिभ्यांविहितो धर्मोवर्णाश्रमा
त्मकः। शिष्टाचारप्रवृद्धश्च धर्मोऽयंसाधुसम्मतः ५२ अप्रद्वेष्योह्यनिष्टेषु इष्टंवैनाभिनन्द
ति। प्रीतितापविषादानां विनिवृत्तिर्विरक्तता ५३ संन्यासःकर्मणांन्यासः कृतानामकृतैस्सह।

धर्मको सुनते आयेहों और वही धर्म सब करते चलेआतेहों वह श्रौत धर्महै जो धर्म कि स्मरणकरने
से चलाआताहै वह स्मार्त्त धर्मकहाताहै ३९। ४० जिसमें वेदके मंत्र और यज्ञोंकी विधिकही है वह
श्रौतधर्म है वर्णाश्रमों का जो धर्म चलाआताहै वह स्मार्त्तधर्म है, अब धर्मके प्रत्यंग लक्षणोंका वर्णन
करते हैं ४१ जो पुरुष देखेहुए धर्मका निश्चय कररहाहो वह दूसरे के पूछनेपर उसको नहीं छुपावे
अर्थात् जैसाहै वैसाही ठीक २ कहताहै वह धर्मका लक्षणहै ४२ ब्रह्मचर्य, तप, मौन, निराहार यह
सुन्दर घोरतपका स्वरूप है ४३ पशु द्रव्यादिक शाकल्य वा ऋग् यजु सामवेद और ऋषियों की द
क्षिणा इनसबों के योगकरने को यज्ञकहते हैं ४४ जो पुरुष सबभूतोंमें अपने प्रियतमोंके समान स
दैव हितरखताहै वह उसकी दयाही परम श्रेष्ठक्रिया कहाती है ४५ जो अन्यके क्रोधकरने से अथवा
किसी के धमकाने से भी मनवाणी और शरीरकेद्वारा क्रोध नहीं करता वही तितिक्षु और परमक्षमा
वान् कहाताहै ४६ स्वामी ने जो किसीवस्तुकी रक्षाकरने के निमित्त भृत्य छोड़ रक्खे हैं वह भृत्य
उस पराये द्रव्यको जो ग्रहण नहीं करे उसीको निर्लोभ कहते हैं ४७ कहने से और चिन्तवन करने
से जिसको कि मैथुन करने की कभी इच्छा नहीं होती है और निरन्तर ब्रह्मचर्य्य में रहता है यह
शमका लक्षण कहाता है ४८ जिसकी इन्द्रियां अपने वा पराये अर्थ विषयमें प्रवृत्त नहीं होती हैं यह
दमका लक्षण कहाताहै ४९ जो पुरुष पांच प्रकारके विषयोंमें और आठ प्रकारके कारणोंमें प्रतिहत
होकर क्रोध नहीं करताहै वह जितात्मा कहाताहै ५० जो अत्यन्त प्रिय द्रव्यको न्यायसे संचितकरके
गुणवानोंको देताहै यह दानका लक्षणहै ५१ श्रुतिस्मृतियों से विहित जो शिष्टाचारों से बढ़ाया हुआ
धर्महै वह उत्तम धर्महै ५२ बुरीवस्तु और उत्तमवस्तु इन दोनोंमें द्वेष और प्रीतिदोनों नहीं करना,

कुशलाकुशलाभ्यांतु प्रहाणंन्यासउच्यते ५४ अव्यक्तादिविशेषान्त विकारेऽस्मिन्निवर्त्तते। चेतनाचेतनंज्ञात्वा ज्ञानेज्ञानीसउच्यते ५५ प्रत्यङ्गानितुधर्मस्य चेत्येतल्लक्षणंस्मृतम् । ऋषिभिर्द्धर्मतत्त्वज्ञैः पूर्वेस्वायम्भुवेऽन्तरे ५६ अत्रवोवर्णयिष्यामि विधिंमन्वन्तरस्यतु। तथैवचातुर्होत्रस्य चातुर्वर्ण्यस्यचैवहि ५७ प्रतिमन्वन्तरंचैव श्रुतिरन्याविधीयते । ऋचोयजूंषिसामानि यथावत्प्रतिदैवतम् ५८ विधिस्तोत्रंतथाहोत्रं पूर्ववत्संप्रवर्तते । द्रव्य स्तोत्रंगुणस्तोत्रं कर्मस्तोत्रंतथैवच ५९ तथैवाभिजनस्तोत्रं स्तोत्रमेवंचतुर्विधम् । मन्वन्तरेषुसर्वेषु यथावेदाद्भवन्तिहि ६० प्रवर्तयन्तितेषांवै ब्रह्मस्तोत्रंपुनःपुनः । एवंमन्त्रगुणानान्तु समुत्पत्तिश्चतुर्विधा ६१ अथर्वऋग्यजुःसाम्नां वेदेष्विहपृथक्पृथक् । ऋषीणांतप्यतांतेषां तपःपरमदुश्चरम् ६२ मन्त्राःप्रादुर्भवन्त्यादौ पूर्वमन्वन्तरस्यह । असन्तोषाद्भयाद्दुःखान्मोहाच्छोकाच्चपञ्चधा ६३ ऋषीणांतारकायेन लक्षणेनयदृच्छया । ऋषीणांयादृशत्वंहि तद्वक्ष्यामीहलक्षणम्६४अतीतानागतानाञ्च पञ्चधाह्यार्षकंस्मृतम्। तथाऋषीणांवक्ष्यामि ह्यार्षस्येहसमुद्भवम् ६५ गुणसाम्येनवर्त्तन्ते सर्वसम्प्रलयेतदा। अविभागेनवेदानामनिर्देश्यतमोमये ६६ अबुद्धिपूर्वकंतद्वै चेतनार्थंप्रवर्तते । तेनार्षबुद्धिपूर्वन्तु चेतनेनाप्यधिष्ठितम् ६७ प्रवर्ततेयथातेतु यथामत्स्योदकावुभौ । चेतनाधिकृतं सर्वं प्रावर्त्ततगुणात्मकम् । कार्यकारणभावेन तथातस्यप्रवर्तते ६८ विषयोविषयित्वञ्च

प्रीति दुःख और विषाद इन सबकी निवृत्ति करनी यह विरक्तता कहाती है ५३ किये हुए कर्मों को और शुभाशुभ फलोंके त्यागने को संन्यास कहते हैं ५४ अव्यक्त माया आदि, विशेष पदार्थों पर्य्यन्त सब चेतन अचेतनोंको जानकर सबसे निवृत्त होजाताहै वह ज्ञानी कहाताहै ५५ इतने लक्षणोंवाले धर्मके प्रत्यंग कहे हैं पहले स्वायंभुव मन्वन्तरमें तत्त्वज्ञ ऋषियोंने यह लक्षण वर्णन किये हैं ५६ अब मन्वन्तर, चातुर्होत्र, और चारोंवर्णोंकी जो विधिहै उन सबको कहताहूं५७प्रत्येक मनुमें अन्य२ श्रुति का विधान होताहै-ऋक् यजु और साम यहतीनों वेद यथार्थ देवताओंसे युक्त हुए रहते हैं ५८ विधि स्तोत्र और अग्निहोत्र यह सब प्रथमके समान वर्तते हैं द्रव्यके स्तोत्र, गुणस्तोत्र, कर्मकेस्तोत्र, और कुलकेस्तोत्र यहचार प्रकारके स्तोत्र सब मन्वन्तरों में वेदसेही उत्पन्न होते हैं ५९।६०उनहींसे बार-बार ब्रह्मस्तोत्र प्रवर्त्त होताहै ऐसे मन्त्रगुणोंकी उत्पत्ति चार प्रकारसे कही है६१अथर्वण ऋक् यजु और साम इन वेदोंमें पृथक् २ तपस्या करते हुए उन ऋषियोंका परमदुश्चर तप होता भया ६२ पहले मन्वन्तरकी आदिमें मंत्र प्रकट भये हैं फिर सन्तोष न होने से, भयसे, दुःखसे, मोहसे, और शोकसे वह मन्त्र पांच प्रकारके होते भये ६३ जिस लक्षण करके वे मन्त्र ऋषियों के उद्धार करनेवालेहुए उस सब लक्षणको कहता हूं ६४ व्यतीत होनेवाले और आने वाले ऋषियोंके जो पांचप्रकारके आर्ष मंत्र कहे हैं उनकी भी उत्पत्तिको कहूंगा ६५ प्रलय काल में वह मंत्र गुण सामान्यता करके वर्त्तते हैं वेदोंके बिना विभाग हुएही अबुद्धि पूर्वक चेतनोंके निमित्त रहगये हैं और फिर चेतनोंही करके प्रवृत्त हुए हैं इसी हेतुसे आर्ष कहाते हैं ६६।६७ जैसे कि जल में मछली जलस्वरूप से उत्पन्न भयी है

तदाह्यर्थपदात्मको। कालेनप्रापणीयेन भेदाश्चकारणात्मकाः ६९ सांसिद्धिकास्तदावृत्ताः क्रमेणमहदादयः। महतोऽसावहङ्कारस्तस्माद्भूतेन्द्रियाणिच ७० भूतभेदाश्चभूतेभ्यो जज्ञिरेतुपरस्परम्। संसिद्धिकारणंकार्य्यं सद्यएवविवर्त्तते ७१ यथोल्मुकात्तुविटपा एककालाद्भवन्तिहि। तथाप्रवृत्ताःक्षेत्रज्ञाः कालेनैकेनकारणात् ७२ यथान्धकारेखद्योतः सहसा सम्प्रदृश्यते। तथानिवृत्तोह्यव्यक्तः खद्योतइवसज्वलन् ७३ समहात्माशरीरस्थस्तत्रैवेह प्रवर्त्तते। महतस्तमसःपारे वैलक्षण्याद्विभाव्यते ७४ तत्रैवसंस्थितोविद्वान् तपसान्त इतिश्रुतम्। बुद्धिर्विवर्द्धतस्तस्य प्रादुर्भूताचतुर्विधा ७५ ज्ञानंवैराग्यमैश्वर्यं धर्मश्चेति चतुष्टयम्। सांसिद्धिकान्यथैतानि अप्रतीतानितस्यवै ७६ महात्मनःशरीरस्य चैतन्यात्सिद्धिरुच्यते। पुरिशेतेयतःपूर्वं क्षेत्रज्ञानंतथापिच ७७ पुरेशयनात्पुरुषः क्षेत्रज्ञानात्क्षेत्रज्ञउच्यते। यस्माद्धर्मात्प्रसूतेहि तस्माद्वैधार्मिकस्तुसः ७८ सांसिद्धिकेशरीरेच बुद्ध्याव्यक्तस्तुचेतनः। एवंविवृतःक्षेत्रज्ञः क्षेत्रंह्यनभिसन्धितः ७९ निवृत्तिसमकालेतुपुराणन्तदचेतनम्। क्षेत्रज्ञेनपरिज्ञातं भोग्योऽयंविषयोमम ८० ऋषिर्हिंसागतौधातुर्विद्यासत्यंतपःश्रुतम्। एषसन्निचयोयस्माद् ब्रह्मणस्तुततस्त्वृषिः ८१ निवृत्तिसमकालाद्बुद्ध्याव्यक्तऋषिस्त्वयम्। ऋषतेपरमंयस्मात्परमर्षिस्ततःस्मृतः ८२ गत्यर्थादृषतेर्धातो

इसी प्रकार सब गुणात्मक जगत् चेतनकरके अधिष्ठितहै कार्य्य कारणभाव करके जगत् की प्रवृत्ति है विषय और विषयी यह अर्थपद हैं प्राप्त करने वाले कालसे कारणात्मक भेद होरहे हैं ६८।६९ सिद्ध हुए महदादिक विकार क्रमपूर्वक आवृत होते हैं महत्तत्त्वसे अहंकार होता है अहंकार से भूतेन्द्रिय होती है फिर पंच महाभूतोंसे भूतोंके अनेक भेद होते हैं सिद्ध हुए कारण से कार्य्य तत्काल उत्पन्न होता है ७०।७१ जैसे जलती और भ्रमाई हुई अग्निके उल्मुक से एकही बारचक्र बँधजाताहै उसी प्रकार क्षेत्रज्ञ जीवभी एकही कालमें प्रवृत्त होजाते हैं ७२ जैसे अन्धकारमें पटवीजना एकवारचमकता है इसी प्रकार प्रकट होता हुआ जीव प्रवृत्त होजाताहै ७३ महान् तमोगुणके पारमें शरीर में स्थित हुआ भी वह महात्मा ब्रह्म वैलक्षण्य प्रकारसे विदित होताहै ७४ वहां जीवरूपहुए ब्रह्मकी बुद्धि तपों के प्रभाव से बढ़ती है और चारप्रकारसे प्रकट होती है ७५ ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य्य, और धर्म, यह चार प्रकारके भेद उसकी बुद्धिमें सांसिद्धिक रहते हैं परन्तु प्रतीत नहीं होतेहैं ७६ महात्मा पुरुषके शरीर में स्थित हुए चैतन्यसे सब वस्तुओंकी सिद्धि वर्णनकी है प्रथमपुरीमें शयन करताहै तब भी क्षेत्रका ज्ञान रहताहै उस पुरीमेंही शयनकरने से वह पुरुष कहाता है क्षेत्रका ज्ञान होने से क्षेत्रज्ञ कहाताहै जो धर्महीसे उत्पन्न होते हैं उनको धार्मिक कहते हैं ७७।७८ सांसिद्धिक शरीरमें बुद्धिसे युक्तहुए चेतनके विवृत होनेसे क्षेत्रज्ञ कहाताहै निवृत्ति समकालमें, पुरातन अचेतन विषयको क्षेत्रज्ञ जानता है और यह मेरा भोग्य है ऐसा मान लेताहै ७९।८० ऋषिधातु हिंसा और गति अर्थ में वर्त्तता है, इसीसे जो ब्राह्मण विद्या, तप, और श्रुत इनका संचय करता है वह ऋषि कहाताहै ८१ जो निवृत्ति समकाल में बुद्धि से युक्त चेतनरूप रहता है और परम स्वरूपको जानता है वह परमऋषि कहा-

नामनिर्वृत्तिकारणम्। यस्मादेषस्वयम्भूतस्तस्माच्चऋषितामता ८३ सेश्वराःस्वयमुद्भूता ब्रह्मणोमनसाःसुताः। निवर्तमानैस्तैर्बुद्ध्या महान्परिगतःपरः ८४ यस्माद्दृश्यपरत्वेन सहतस्मान्महर्षयः। ईश्वराणांसुतास्तेषां मानसाश्चौरसाश्चवै ८५ ऋषिस्तस्मात्परत्वेन भूतादिर्ऋषयस्ततः। ऋषिपुत्राऋषीकास्तु मैथुनाद्गर्भसम्भवाः ८६ परत्वेनऋषन्ते वै भूतादीन्ऋषिकांस्ततः। ऋषीकाणांसुतायेतु विज्ञेयाऋषिपुत्रकाः ८७ श्रुत्वाऋषंपरत्वेन श्रुतास्तस्माच्छ्रुतर्षयः। अव्यक्तात्मामहात्मावाहङ्कारात्मातथैवच ८८ भूतात्माचेन्द्रियात्माच तेषांतद्ज्ञानमुच्यते। इत्येवमृषिजातिस्तु पञ्चधानामविश्रुता ८९ भृगुर्मरीचिरत्रिश्च अङ्गिराःपुलहःक्रतुः। मनुर्दक्षोवसिष्ठश्च पुलस्त्यश्चापितेदश ९० ब्रह्मणो मानसाह्येते उत्पन्नाःस्वयमीश्वराः। परत्वेनर्षयोयस्मान्मतास्तस्मान्महर्षयः ९१ ईश्वराणांसुतास्त्वेषा मृषयस्तान्निबोधत। काव्योबृहस्पतिश्चैव कश्यपश्च्यवनस्तथा ९२ उतथ्योवामदेवश्च अगस्त्यःकौशिकस्तथा। कर्दमोवालखिल्याश्च विश्रवाःशक्तिवर्द्धनः ९३ इत्येतेऋषयःप्रोक्तास्तपसाऋषिताङ्गताः। तेषांपुत्रानृषीकांस्तु गर्भोत्पन्नान्निबोधत ९४ वत्सरोनग्नहूश्चैव भरद्वाजश्चवीर्यवान्। ऋषिर्दीर्घतमाचैव बृहद्वक्षाःशरद्वतः ९५ वाजिश्रवाःसुचिन्तश्च शावश्चसपराशरः। शृङ्गीचशङ्खपाच्चैव राजावैश्रवणस्तथा ९६ इ

ताहै ८२ गत्यर्थकऋषि धातुसे निवृत्ति का कारण यह ऋषिनाम सिद्धहोताहै जो यह आपही होता है इसीसे ऋषिपनाहै ८३ ब्रह्माके मनसे उत्पन्नहुए पुत्र ईश्वरसहित होकर आपही उत्पन्न भये हैं फिर निवर्त्तमान होनेसे उनको बुद्धिकेद्वारा परम पदकी प्राप्तिहोतीहै ८४ वह ब्रह्माके पुत्र महर्षिहोतेभये फिर उन ईश्वरोंके पुत्रमनसे होतेभये और स्त्रीधर्मसे भी होतेभये ८५ सबभूतोंके आदि में ऋषिहोतेभये फिर ऋषियोंके मैथुन करनेसे पुत्रहोतेभये वहऋषिपुत्र, भूतादिकोंको परमार्थमें त्याग देते हैं इसीसे ज्ञानीहोते हैं, इसप्रकारसे ऋषिलोग पहलेसेही सुनेजाते हैं उन्हींको श्रुतऋषि कहते हैं अव्यक्तात्मा १ महात्मा २ अहंकारात्मा ३ भूतात्मा ४ और इन्द्रियात्मा ५ यह पांचप्रकारके ऋषियोंके पुत्र इसरीतिसे होते हैं इनको अपने २ आत्माका ज्ञान होताहै ८६। ८९ भृगु १ मरीचि २ अत्रि ३ अंगिरा ४ पुलह ५ क्रतु ६ मनु ७ दक्ष ८ वसिष्ठ ९ पुलस्त्य १० यहदश ब्रह्माजी के मानसपुत्र हैं अर्थात् मनसे उत्पन्न हुए हैं आपही ईश्वरहैं परत्वसे ऋषि हैं इसलिये इनको परमऋषिकहते हैं ९०।९१ इन ईश्वरों के पुत्रजो ऋषिहैं उनकोभी सुनो, शुक्राचार्य्य बृहस्पति, कश्यप, च्यवन, उतथ्य, वामदेव, अगस्त्य, कौशिक, कर्दम, वालखिल्य, विश्रवा, और शक्तिवर्द्धन, यह इतने ऋषि हैं यहसब तपकरनेसे ऋषिपनेको प्राप्तभयेहैं, अबजो इनके पुत्रगर्भसे उत्पन्न भयेहैं उनको सुनो ९२। ९४ वत्सर, नग्नहू, भरद्वाज, दीर्घतमा, बृहद्वक्षा, शरद्वान्, ९५ वाजिश्रवा, सुचिन्त, शाव, पराशर, शृंगीऋषि शंखपाद, वैश्रवण और राजा यहसब ऋषियोंके पुत्रहैं यहसत्यबोलनेसे ऋषिपनेको प्राप्त हुएहैं, यह ईश्वर, ऋषि और ऋषीक अर्थात् ऋषियोंके इतनेपुत्रहैं– अबमंत्र कृत् ऋषियोंको सुनो, भृगु, काश्यप, प्राचेता, दधीचि, ऊर्व, जमदग्नि, सारस्वत, आर्ष्टिषेण, च्यवन, वीतहव्य, वेधा

स्त्येतेऋषिकाःसर्वे सत्येनऋषितांगताः। ईश्वराऋषयश्चैव ऋषीकायेचविश्रुताः ६७
एवंमन्त्रकृतःसर्वे कृत्स्नशश्चनिबोधत। भृगुःकाश्यपःप्राचेता दधीचोह्यात्मवानपि ६८
ऊर्वोऽथजमदग्निश्च वेदःसारस्वतस्तथा। आर्ष्टिषेणश्च्यवनश्च पीतहव्यःसवेधसः ६६
वैण्यःपृथुर्दिवोदासो ब्रह्मवान्गृत्सशौनकौ। एकोनविंशतिह्येते भृगवोमन्त्रकृत्तमाः १००
अङ्गिराश्चैवत्रितश्च भरद्वाजोऽथलक्ष्मणः। कृतवाचस्तथागर्गः स्मृतिस्संकृतिरेवच १०१
गुरुवीतश्चमान्धाता अम्बरीषस्तथैवच। युवनाश्वःपुरुकुत्सः स्वश्रवस्तुसदस्यवा
न् १०२ अजमीढःस्वहार्यश्च ह्युत्कलःकविरेवच। पृषदश्वोविरूपश्च काव्यश्चैवाथमु
द्गलः १०३ उतथ्यश्चशरद्वांश्च तथावाजिश्रवाअपि। अपस्यौषःसुचित्तिश्च वामदेव
स्तथैवच १०४ ऋषिजोबृहच्छुल्कश्च ऋषिर्दीर्घतमाअपि। कक्षीवांश्चत्रयस्त्रिंशत्स्मृ
ताह्यङ्गिरसांवराः १०५ एतेमन्त्रकृतःसर्वे काश्यपांस्तुनिबोधत। कश्यपःसहवत्सारो
नैध्रुवोनित्यएवच १०६ असितोदेवलश्चैव षडेतेब्रह्मवादिनः। अत्रिरर्द्धस्वनश्चैव शा
वास्योऽथगविष्ठिरः १०७ कर्णकश्चऋषिःसिद्धस्तथापूर्वातिथिश्चयः १०८ इत्येतेत्वत्र
यःप्रोक्ता मन्त्रकृत्षण्महर्षयः। वसिष्ठश्चैवशक्तिश्च तृतीयश्चपराशरः १०९ ततस्तुइ
न्द्रप्रतिमः पञ्चमस्तुभरद्वसुः। षष्ठस्तुमित्रावरुणः सप्तमःकुण्डिनस्तथा ११० इत्येतेसप्त
विज्ञेया वासिष्ठाब्रह्मवादिनः। विश्वामित्रश्चगाधेयो देवरातस्तथाबलः १११ तथाविद्वा
न्मधुच्छन्दा ऋषिश्चान्योऽघमर्षणः। अष्टकोलोहितश्चैव भृतकीलश्चमाम्बुधिः ११२
देवश्रवादेवरतः पुराणश्चधनञ्जयः। शिशिरश्चमहातेजाः शालङ्कायनएवच ११३
त्रयोदशैतेविज्ञेया ब्रह्मिष्ठाःकौशिकावराः। अगस्त्योऽथदृढद्युम्नो इन्द्रबाहुस्तथैवच ११४

वैण्य, पृथु, दिवोदास, गृत्स, और शौनक, यह उन्नीसऋषि मंत्रकृत् हैं और भृगुवंशमें होते हैं ६६। १०० अंगिरा, त्रित, भरद्वाज, लक्ष्मण, कृतवाच, गर्ग, स्मृति, संकृति, गुरुवीत, मांधाता, अंबरीष, युवनाश्व, पुरुकुत्स, स्वश्रव, सदस्यवान्, १०१। १०२ अजमीढ़, स्वहार्य्य, उत्कल, कवि, पृषद-श्व, विरूप, काव्य, मुद्गल, उतथ्य, शरद्वान्, वाजिश्रवा, अपस्यौष, सुचित्ति, वामदेव, ऋषिज, बृहच्छुल्क, दीर्घतमाऋषि, कक्षीवान्, यह तेंतीसऋषि अंगिरसगोत्रमें होनेवाले हैं १०३।-१०५ यह मंत्रकृत्ऋषिहैं-अबकश्यप गोत्रमेंहोने वाले ऋषियोंको सुनो, कश्यप, सहवत्सार, नैध्रुव, नित्य, असित और देवल यहछः ब्रह्मचारी ऋषि होतेभये और अत्रि१, अर्द्धस्वन२, शाव ३ गविष्ठिर ४ कर्णक ५ सिद्ध, पूर्वातिथि६ यहमहर्षि मंत्रकृत्कहाते हैं और वसिष्ठ१ शक्ति२ पराशर३ इन्द्रप्रतिम४ भरद्वसु५ मित्रावरुण ६ और कुंडिन यहसात ऋषि वसिष्ठ गोत्रवाले होकर ब्रह्मवादी हैं और विश्वामित्र गाधेय, देवरात, बल, विद्वान् मधुच्छन्दा, अघमर्षण, अष्टक, लोहित, भृतकील, देवश्रवा, देवरत, पुराण, धनंजय, शिशिर महातेजा, और शालंकायन यह तेरह ऋषि ब्रह्मनिष्ठ कौशिक गोत्रमें हुए हैं और अगस्त्य, दृढद्युम्न, इन्द्रबाहु, यहतीनों अगस्त्य गोत्रमें होनेवाले परम कीर्तिमान् कहेहैं औरवै-

अग्निष्ठागस्तयोह्येते त्रयःपरमकीर्त्तयः। मनुर्वैवस्वतश्चैव ऐलोराजापुरूरवाः ११५ क्ष
त्रियाणांवरोह्येतौ विज्ञेयौमन्त्रवादिनौ। भलन्दकश्चवासाश्वः सङ्कीलश्चैवतेत्रयः ११६
एतेमन्त्रकृतोज्ञेया वैश्यानांप्रवराःसदा। इतिद्विनवतिःप्रोक्ता मन्त्रायैश्चबहिष्कृताः ११७
ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्या ऋषिपुत्रान्निबोधत। ऋषीकाणांसुताह्येते ऋषिपुत्राःश्रुतर्षयः ११८
इतिश्रीमत्स्यपुराणेमन्वन्तरकल्पवर्णनोनामचतुश्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४४

(ऋषय ऊचुः) कथंमत्स्येनकथितस्तारकस्यवधोमहान्। कस्मिन्कालेविनिर्वृत्ता कथेयंसूतनन्दन! १ त्वन्मुखक्षीरसिन्धूत्था कथेयममृतात्मिका। कर्णाभ्यांपिबतांतृप्तिरस्माकंनप्रजायते २ इदंमुने! समाख्याहि महाबुद्धे! मनोगतम्। (सूत उवाच) पृष्टस्तुमनुनादेवो मत्स्यरूपीजनार्दनः ३ कथंशरवनेजातो देवःषड्वदनोविभो!। एतत्तुवचनंश्रुत्वा पार्थिवस्यामितौजसः ४ उवाचभगवान्प्रीतो ब्रह्मसूनुर्महामतिम्। (मत्स्य उवाच) वज्राङ्गोनामदैत्योऽभूत्तस्यपुत्रस्तुतारकः ५ सुरानुद्रासयामास पुरेभ्यःसमहाबलः। ततस्तेब्रह्मणोऽभ्यासं जग्मुर्भयनिपीडिताः ६ भीतांश्चत्रिदशान्दृष्ट्वा ब्रह्मातेषामुवाचह। सन्त्यज्यध्वंभयंदेवाः! शङ्करस्यात्मजःशिशुः ७ तुहिनाचलदौहित्रस्तंहनिष्यतिदानवम्। ततःकालेतुकस्मिंश्चिद्दृष्ट्वावैशैलजांशिवः ८ स्वरेतोवह्निवदने व्यसृजत्कारणान्तरे। तत्प्राप्तंवह्निवदने रेतोदेवानतर्पयत् ९ विदार्यजठराण्येषामजीर्णंनिर्गतंमुने!।

वस्वतमनु १ और पुरूरवा वंशमें होनेवाले ऐलराजा यहदो मंत्रवादी कहेहैं, और भलंदक, वासाश्व संकीलि यहतीनों मन्त्रकृत् होकर वैश्यजातिमें प्रधान कहे हैं इसप्रकारसे यहबानवे ९२ पुरुष मंत्रकृत् कहे हैं इन्हीं पुरुषोंने मंत्रप्रकट किये हैं और ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य-यहतीनों जाति ऋषियोंसे हुई हैं यहसब श्रुतऋषि कहाते हैं १०६। ११८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांमन्वन्तरकल्पवर्णनोनामचतुश्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४४

ऋषियोंने पूछा हेसूतजी तारकासुर दैत्यका महावध मत्स्यावतारने कैसे कहा है और यहकथा किस कालमें प्रवृत्तहुई है १ आपके क्षीरसागररूपी मुखसे निकलीहुई इसअमृतरूपी कथाको कानों से पीनेवाले हमलोगोंको सुनते २ भी तृप्तिनहींहोती २ हेमुने आप इसहमारे मनोरथको कहिये यहसुनकर सूतजी बोले कि मत्स्यरूपी भगवान्से पहले मनुने पूछाकि हे भगवन् वह स्वामिकार्तिक शरोंके झुंडमें कैसे उत्पन्नभये, इसवचनको सुनकर भगवान् प्रसन्नहोकरबोले कि पूर्वकालमें एकवज्रांग नाम दैत्यहुआथा उसकापुत्र तारकासुर होताभया ३।५ उसमहाबली तारकासुरने त्रिपुरके द्वारा सब देवताओंकोभगादिया फिरभयसेपीड़ितदेवता ब्रह्माजीकीशरणमें जातेभये ६ उनभयभीतहुए देवताओं कोदेखकरब्रह्माजीबोले कि हेदेवतालोगो तुमभयको त्यागदो,शिवजीकापुत्र हिमाचलकादौहित्र स्वामिकार्तिक उसदानवकोमारेगा तदनन्तर शिवजी महाराज किसी समयपर पार्वतीजीकोदेखकर किसी हेतुसे अपनेवीर्य्यको अग्निके मुखमें छोड़तेभये फिरअग्निके मुखमें प्राप्त हुआ वहवीर्य्य देवताओंको अपने से तृप्तकरताभया ७।९ फिरदेवताओंके उदरको फोड़कर वहवीर्य्य अजीर्णहुआही निकसा फिर

पतितंतत्सरिद्वरे ततस्तुशरकानने १० तस्मात्तुससमुद्भूतो गुहोदिनकरप्रभः। ससप्त दिवसोबालो निजघ्नेतारकासुरम् ११ एवंश्रुत्वाततोवाक्यं तमूचुर्ऋषिसत्तमाः। (ऋषय ऊचुः)। अत्याश्चर्यवतीरम्या कथेयंपापनाशिनी १२ विस्तरेणहिनोब्रूहि यथा तथ्येनशृण्वताम्। वज्राङ्गोनामदैत्येन्द्रः कस्यवंशोद्भवःपुरा १३ तस्याभूत्तारकःपुत्रः सुरप्रमथनोबली। निर्मितःकोवधेचाभूत्तस्यदैत्येश्वरस्यतु १४ गुहजन्मतुकात्स्न्र्येन अस्माकंब्रूहिमानद!। (सूत उवाच)। मानसोब्रह्मणःपुत्रो दक्षोनामप्रजापतिः १५ षष्टिंऽसोजनयत्कन्या वैरिण्यामेवनःश्रुतम्। ददौसदशधर्माय कश्यपायत्रयोदश १६ सप्तविंशतिसोमाय चतस्रोऽरिष्टनेमये। द्वेवैबाहुकपुत्राय द्वेचान्येऽङ्गिरसेतथा १७ द्वे कृशाश्वायविदुषे प्रजापतिसुतःप्रभुः। अदितिर्दितिर्दनुर्विश्वा ह्यरिष्टासुरसातथा १८ सुरभिर्विनताचैव ताम्राक्रोधवशाइरा। कद्रूर्मुनिश्चलोकस्य मातरोगोषुमातरः १९ तासांसकाशाल्लोकानां जङ्गमस्थावरात्मनाम्। जन्मनानाप्रकाराणां ताभ्योऽन्येदेहिनःस्मृताः २० देवेन्द्रोपेन्द्रपूजाद्याः सर्वेतेदितिजामताः। दितेःसकाशाल्लोकास्तु हिरण्यकशिपादयः २१ दानवाश्चदनोःपुत्रा गावश्चसुरभीसुताः। पक्षिणोविनतापुत्रा गरुडप्रमुखाःसुताः २२ नागाःकद्रूसुताज्ञेयाः शेषाश्चान्येऽपिजन्तवः। त्रैलोक्यनाथंशक्रन्तु सर्वामरगणप्रभुम् २३ हिरण्यकशिपुश्चक्रे नीत्वाराज्यंमहाबलः। ततःकेनापिकालेन हिरण्यकशिपादयः २४ निहताविष्णुनासंख्ये शेषाश्चेन्द्रेणदानवाः। ततोनिहतपुत्राभूद्दितिर्वि

नदी में गिरकर वहाँ से बहताहुआ शरों के झुंडोंमें प्राप्त होताभया १० फिरउसशरोंके झुंडमेंसे वह सूर्य्यकेसमान कान्तिवाला स्वामिकार्तिकउत्पन्न होताभया वहसातदिनका बालकही तारकासुरकोमारताभया ११ ऐसीकथाको सुनकर ऋषियोंने कहा हे सूतजी यह पापनाशिनी कथा अत्यन्त आश्चर्य्यकारी है १२ इसको आप विस्तार पूर्व्वक कहिये हम यथार्थ रीतिसे इसको सुनेंगे प्रथम वज्रांगदैत्य किसके वंशमें हुआहै जिसका कि पुत्र महाबली तारकासुरनामदैत्य हुआ उस दैत्यका वध कैसे हुआ और स्वामिकार्तिकजी के जन्मकोभी अच्छी रीतिसे वर्णन करो यह सुनकर सूतजी कहते भये कि ब्रह्माका मानसपुत्रदक्ष प्रजापति होताभया१३।१५फिर वैरिणीनाम स्त्रीमें वह दक्ष साठकन्याओं को उत्पन्न करता भया जिनमें से दश १० धर्मको दी तेरह १३ कश्यपको दी सत्ताईस २७ चन्द्रमाको चार ४ अरिष्टनेमिको, दो बाहुक राजाको, दो अंगिराऋषिको,१६।१७और दो कृशाश्वको दी इनमें अदिति१ दिति२ दनु३ विश्वा४ अरिष्टा ५ सुरसा ६ सुरभि७ विनता८ ताम्रा९ क्रोधवशा१० इरा११ कद्रू१२और मुनि यह तेरह कश्यपजीकी स्त्री लोकोंकी माताहोती भयीं१८।१९उन्हीं के द्वारा स्थावर जंगम लोकोंका जन्म हुआहै जिनके कि अनेक प्रकारके देहधारी जीव हुए हैं २० देवता,इन्द्र,उपेन्द्र इत्यादिक सबअदितिकेहुए और दिति से हिरण्यकशिपु आदिक दैत्यउत्पन्नभये २१ दनुके पुत्रदानवहुए, सुरभि के गोएं उत्पन्नहुईं विनताके गरुड़आदिक पक्षीउत्पन्नभये हैं२२कद्रूके शेषनागआदिक सर्पउत्पन्न भये हैं यह हिरण्यकशिपु दैत्य त्रिलोकी समेत सब देवताओं के अधिपति इन्द्रको भी वशमें करके

रमयाचत २५ भर्त्तारंकश्यपंदेवं पुत्रमन्यंमहाबलम्। समरेशक्रहन्तारं सतस्याअददा त्प्रभुः २६ नियमेवर्तेहेदेवि! सहस्रंशुचिमानसा। वर्षाणांलप्स्यसेपुत्रमित्युक्तासातथा करोत् २७ वर्त्तन्त्यानियमेतस्याः सहस्राक्षःसमाहितः। उपासामाचरत्तस्याः साचैनमन्व मन्यत २८ दशसँव्वत्सरशेषस्य सहस्रस्यतदादितिः। उवाचशक्रंसुप्रीता वरदातपसि स्थिता २९ (दितिरुवाच) पुत्रोत्तीर्णव्रतांप्रायः विद्धिमांपाकशासन!। भविष्यतिच तेभ्राता तेनसार्द्धमिमांश्रियम् ३० भुङ्क्ष्ववत्स! यथाकामं त्रैलोक्यंहतकण्टकम्। इत्यु क्त्वानिद्रयाविष्टा चरणाक्रान्तमूर्द्धजा ३१ स्वयंसुष्वापानियता भाविनोऽर्थस्यगौरवात्। तत्तुरन्ध्रंसमासाद्य जठरंपाकशासनः ३२ चकारसप्तधागर्भं कुलिशेनतुदेवराट्। एकैक न्तुपुनःखण्डं चकारमघवाततः ३३ सप्तधासप्तधाकोपात् प्रबुध्यततोदितिः। विबुध्यो वाचमाशक्र! घातयेथाःप्रजांमम ३४ तच्छ्रुत्वानिर्गतःशक्रः स्थित्वाप्राञ्जलिरग्रतः। उवाचवाक्यंसन्त्रस्तो मातुर्वैवदनेरितम् ३५ (शक्रउवाच) दिवास्वप्नपरामातः! पादा क्रान्तशिरोरुहा। सप्तसप्तभिरेवातस्त्वगर्भःकृतोमया ३६ एकोनपञ्चाशत्कृता भागाव ज्रेणतेसुताः। दास्यामितेषांस्थानानिदिविदैवतपूजिते ३७ इत्युक्तासासदादेवी सैवम स्त्वित्यभाषत। पुनश्चदेवीभर्तारमुवाचासितलोचना ३८ पुत्रंप्रजापते! देहि शक्रजे

विश्वभरका राज्य आपही करता भया, इसके अनन्तर किसी कालमें हिरण्यकशिपु आदि दैत्योंको तो विष्णुजीने मारा और शेषरहेहुए दानवोंको इन्द्रने मारा जबदितिके सबपुत्र मारेगये उससमय शोकसे व्याकुलहुई दिति अपने भर्त्ता कश्यपजीसे यह वरमांगती भयीकि२३।२५इन्द्रका मारनेवाला मेरापुत्रहोय तब कश्यपजीने कहाकि एकहज़ार वर्षतक जोतुम नियमोंसे रहोगीतो तुम्हारे वैसाही इन्द्रकामारनेवाला पुत्रहोगा इसवचनको सुनके दिति उसीप्रकार करनेलगी२६।२७फिर उस नियम में वर्त्तमान होनेवाली दितिकी उपासना इन्द्र करताभया इसबातको वहदितिभी जानतीथी जबदशवर्ष बाकीरहे तबतपमें स्थितहुई दिति इन्द्रको वरदेनेके लिये २८ यहवचन बोली कि हेपुत्र तूमुझको उग्र व्रतकरनेवालों में अग्रगणनीयजान तेरे भाई होगा उसके साथमें होकर तू इस लक्ष्मीको इच्छापूर्वक अकण्टक भोगकरताहुआ त्रिलोकीका राज्यकर ऐसे कहकर वहदिति निद्राके वशीभूत होकर सोजातीभई और उसकेबाल चरणोंपरगिरतेभये २९।३१ वहदिति भावीके वशमें होकर सोगई उसछिद्रको देखकर इन्द्र उसके उदरमेंप्रवेशकरगया३२और अपने वज्रसे उसगर्भके सातखंड करदेता भया और अत्यन्त क्रोधसे एक२ खंडकेभी सात२ टुकड़े करताभया तब दिति जागी और कहनेलगी कि हे इन्द्र मेरी सन्तानको मतमारे ३३।३४ इसप्रकारके वचनको सुनकर इन्द्र उदरसे बाहर निकलकर माताके आगे खड़ाहोके भयभीतहो अंजली बांधकरबोला कि हेमातः तुम शिरके बाल खोले हुए दिनमें सोगयीं इसहेतुसे मैंने इसगर्भके उनचासटुकड़े करदिये हैं अर्थात् अपनेवज्रसे तेरे पुत्रों को उनचासटुकड़े करदिये हैं सो इनसबको मैं देवताओं से भी पूजित उत्तम२ स्थानों को दूंगा ३५।३७ यह वचन सुनकर दिति बोली कि अच्छा ऐसाही हो—फिर वह दिति अपने भर्त्तासे जाकर कहती

तारमूर्जितम्। योनास्त्रशस्त्रैर्वध्यत्वं गच्छेत्त्रिदिववासिनाम् ३९ इत्युक्तःसतथोवाच तांप त्नीमतिदुःखिताम्। दशवर्षसहस्राणि तपःकृत्वातुलप्स्यसे ४० वज्रसारमयैरङ्गैरच्छेद्यै रायसैर्दृढैः। वज्राङ्गोनामपुत्रस्ते भवितापुत्रवत्सले ४१ सातुलब्धवरादेवी जगामतपसे वनम्। दशवर्षसहस्राणि सातपोघोरमाचरत् ४२ तपसोऽन्तेभगवती जनयामासदुर्जय म्। पुत्रमप्रतिकर्माणमजेयंवज्रदुश्छिदम् ४३ सजातस्तत्रएवाभूत् सर्वशास्त्रास्त्रपारगः। उवाचमातरंभक्त्या मातःकिङ्करवाण्यहम् ४४ तमुवाचततोहृष्टा दितिर्दैत्याधिपञ्चसा। बहवोमेहताःपुत्राः सहस्राक्षेणपुत्रक! ४५ तेषांत्वंप्रतिकर्तुंवै गच्छशक्रवधायच। बाढ मित्येवतामुक्त्वा जगामत्रिदिवंबली ४६ बद्ध्वाततःसहस्राक्षं पाशेनामोघवर्चसा। मातुर न्तिकमागच्छद्व्याघ्रःक्षुद्रमृगंयथा ४७ एतस्मिन्नन्तरेब्रह्मा कश्यपश्चमहातपाः। आग तौतत्रयत्रास्तां मातापुत्रावभीतकौ ४८ दृष्ट्वातुतमुवाचेदं ब्रह्माकश्यपएवच। मुञ्चैनंपुत्र! देवेन्द्रं किमनेनप्रयोजनम् ४९ अपमानोवधःप्रोक्तः पुत्रसम्भावितस्यच। अस्मद्वाक्येन योमुक्तो विद्धितंमृतमेवच ५० परस्यगौरवान्मुक्तः शत्रूणांभारमावहेत्। जीवन्नेवमृतोव त्स! दिवसेदिवसेसतु ५१ महतांवशमायाते वैरंनैवास्तिवैरिणि। एतच्छ्रुत्वातुवज्राङ्गःप्र णतोवाक्यमब्रवीत्५२नमेकृत्यमनेनास्ति मातुराज्ञाकृतामया। त्वंसुरासुरनाथोवैममचप्र

भयी ३८ हेप्रजापते इन्द्रका जीतने वाला शस्त्र अस्त्रोंसे नहीं मरने वाला और स्वर्गमें जानेवाला पुत्र मुझको दीजिये ३९ उसके ऐसे वचन सुनकर वह ऋषि अपनी पत्नी से कहने लगे कि तू दश हज़ार वर्ष तपस्या करने से पुत्रको प्राप्त होगी ४० हेपुत्रवत्सले वज्र और लोहे के समान दृढ़अंगों वाला वज्रांग नामतेरा पुत्रहोगा ४१ फिर वह देवी वरको प्राप्तहो तपके निमित्त वनमें जाती भयी, और दशहज़ार वर्षतक घोरतपको करती भयी ४२ वह दिति तपके अन्तमें वज्रसे भी न कटसके किसी से जीता न जाय ऐसे पुत्रको जनती भयी ४३ वह जन्मतेही सब अस्त्रशस्त्रोंको सीखताभया फिर भक्तिपूर्वक अपनी मातासे कहने लगा कि हे मातः आज्ञा करो कि मैं तुम्हारे निमित्त क्या करूं ४४ तबदिति अपने पुत्रको देखकर बोली कि हे पुत्र मेरे बहुतसे पुत्रमारे हैं उनका बदलालेने के लिये तू इन्द्र के मारनेके निमित्त जा तब बहुत अच्छा ऐसा दृढ़वचन कहकर वह महाबली दैत्य स्वर्गमें जाताभया ४५।४६ वहां जाकर वह अमोघतेज वाला दैत्य इन्द्रको फांसीमें बांधकर अपनी माताके समीपमें आता भया वह इन्द्रको पकड़कर ऐसे ले आया जैसे कि छोटे सेमृगको सिंहपकड़ लाता है ४७ इसके अनन्तर जहां वह निर्भय हुए माता और पुत्र दोनों बैठेथे वहाँ ब्रह्माजी और महातप वाले कश्यपजी यह दोनों आवतेभये ४८ फिर इन्द्रको देखकर ब्रह्मा और कश्यप दोनों बोले कि हे पुत्र इस देवेन्द्रको छोड़दे इससे क्या प्रयोजन है ४९ अपमान अर्थात् निरादर होनाही अच्छे पुरुषका मरण है-हमारे वचनसे यह छुटेगा यही इसका मरण है ५० हे पुत्र जो पराये बड़प्पनसे छुटे उनके शिरपर शत्रुओंका बोझारहताहै वह प्रतिदिन जीताहुआही मरेके समानहै ५१ महान् पुरुषों के वशमें आये हुए वैरीके वैरनहीं रहताहै इसप्रकारके वचनोंको सुनकर वह वज्रांगदैत्य बड़ी नम्रता

पितामहः ५३ करिष्येत्वद्वचोदेव! एषमुक्तःशतक्रतुः। तपसेमेरतिर्देव! निर्विघ्नंचैवमेभवेत् ५४त्वत्प्रसादेनभगवन्नित्युक्त्वाविरराम सः। तस्मिंस्तूष्णींस्थितेदैत्येप्रोवाचेदंपितामहः ५५ (ब्रह्मोवाच) तपस्त्वंक्रूरमापन्नो अस्मच्छासनसंस्थितः। अनयाचित्तशुद्ध्याते पर्याप्तंज न्मनःफलम् ५६ इत्युक्त्वापद्मजःकन्यां ससर्जायतलोचनाम्। तामस्मैप्रददौदेवः पत्न्यर्थं पद्मसम्भवः ५७ वराङ्गेतिचनामास्याः कृत्वायातःपितामहः। वज्राङ्गोऽपितयासार्द्धं ज गामतपसेवनम् ५८ ऊर्ध्ववाहुःसदैत्येन्द्रोऽचरदब्दसहस्रकम्। कालंकमलपत्राक्षः शुद्ध बुद्धिर्महातपाः ५९ तावच्चावाङ्मुखःकालं तावत्पञ्चाग्निमध्यगः। निराहारोघोरतपास्त पोराशिरजायत ६० ततःसोऽन्तर्जलेचक्रे कालंवर्षसहस्रकम्। जलान्तरंप्रविष्टस्यतस्य पत्नीमहाव्रता ६१ तस्यैवतीरेसरसस्तप्स्यन्तीमौनमास्थिता। निराहारातपोघोरं प्रविवे शमहाद्युतिः ६२ तस्यांतपसिवर्त्तन्त्यामिन्द्रश्चक्रेविभीषिकाम्। भूत्वातुमर्कटस्तत्र तदा श्रमपदंमहान् ६३ चक्रेविलोलंनिःशेषं तुम्बीघटकरण्डकम्। ततस्तुमेषरूपेणकम्पंत स्याकरोन्महान् ६४ ततोभुजङ्गरूपेण बध्वाचचरणद्वयम्। अपकृष्टाततोदूरं भ्रमंस्त स्यामहीमिमाम् ६५ तपोबलाढ्यासातस्य नबध्यत्वंजगामह। ततोगोमायुरूपेण तस्यादू षयदाश्रमम् ६६ ततस्तुमेघरूपेण तस्याःक्लेदयदाश्रमम्। भीषिकाभिरनेकाभिस्तांक्लि श्यन्पाकशासनः ६७ विररामयदानैवं वज्राङ्गमहिषीतदा। शैलस्यदुष्टतांमत्वा शापन्दा

से यह वचनबोला ५१ कि मेरा कृत्य कुछ इन्द्रसे नहीं है मैंनेतो अपनी माताकी आज्ञाकी है तुम देवता और दैत्योंके मालिकहो और मेरेभी पिता और प्रपितामहहो इस निमित्त आपके वचनोंको करूंगा-मैंने यह इन्द्र छोड़दिया, हे देव मेरी प्रीति तपकरनेमें है इस्से मुझको निर्विघ्नकरो ५३।५४ हे भगवन् तुम्हारी कृपासे मुझे आनन्दरहै ऐसा कहकर वह दैत्य चुपकाहोगया तब ब्रह्माजी बोले ५५ हे पुत्र तू हमारी शिक्षाके अनुसार उग्रतपकरने में स्थित होजा ऐसी चित्तकी शुद्धीकरनेसे तेरे जन्म का फल सफल होजायगा ५६ ऐसाकहकर ब्रह्माजी उत्तम नेत्रोंवाली कन्याको रचतेभये फिर उस कन्याको पत्नी के निमित्त इसदैत्यके अर्थ देतेभये ५७ उस स्त्रीकानाम ब्रह्माजीने वरांगीकिया फिर अपने स्थानको जातेभये-वह वज्रांगदैत्य उस स्त्रीको पाकर तपकरनेको चलागया ५८ और वहाँ जाकर वह महातप करनेवाला दैत्य ऊपरको हाथकियेहुए हजारवर्ष तक तपकरताभया हज़ारवर्ष अधोमुख होकर और हज़ारवर्षतक पंचाग्नियों में तपको करके निराहार घोरतपस्याको करके तपकी राशि होजाताभया ५९।६० फिर हज़ारवर्षतक जलकेभीतर तपकरताभया उससमय उसकी स्त्रीभी मौनतासे निराहारहो उसी सरोवरके किनारेपर तप करनेलगी ६१।६२ उस स्त्रीके तपकरतेहुए उस आश्रमके समीपमें इन्द्र आया और बन्दरका रूप धारणकरके उसको डराताभया ६३ चपलता करके तुंबी घट आदिकोंको बजानेलगा फिर मेढ़ाबनकर डरानेलगा फिर सर्पहोकर उसके दोनों पैरोंको बांधकर दूर खैंच ले जाताहुआ और पृथ्वी में भ्रमानेलगा तब वह बलवाली स्त्री उसके बंधनमें नहीं आई तब वह इन्द्र शृगालबनकर उसके आश्रमको दूषित करनेलगा ६४।६६ फिर मेघरूपसे उसके

तुंव्यवस्थिता ६८ सशापाभिमुखांदृष्ट्वा शैलःपुरुषविग्रहः। उवाचतांवरारोहां वराङ्गीं भ रुचेतनः ६९ नाहंवराङ्गने ! दुष्टःसेव्योऽहंसर्वदेहिनाम् । विभ्रमन्तुकरोत्येष रुषितःप कशासनः ७० एतस्मिन्नन्तरेजातः कालवर्षसहस्रिकः । तस्मिन्गतेतुभगवान् कालेव मलसम्भवः ७१ तुष्टःप्रोवाचवज्राङ्गं तमागम्यजलाश्रयम् । (ब्रह्मोवाच) ददामिसर्व कामांस्तेउत्तिष्ठदितिनन्दन! ७२ एवमुक्तस्तदोत्थाय दैत्येन्द्रस्तपसांनिधिः । उवाचप्राञ्ज लिर्वाक्यं सर्वलोकपितामहम् ७३ (वज्राङ्ग उवाच) आसुरोमास्तुमेभावः सन्तुलोकाम माक्षयाः। तपस्येवरतिर्मेऽस्तु शरीरस्यास्तुवर्तनम् ७४ एवमस्त्वितितन्देवो जगामस्वक मालयम् । वज्राङ्गोऽपिसमाप्तेतु तपसिस्थिरसंयमः ७५ आहारमिच्छन्भार्यांस्वान्नदद र्शाश्रमेरवके । क्षुधाविष्टःसशैलस्य गहनम्प्रविवेशह ७६ आदातुंफलमूलानि सचत स्मिन्व्यलोकयत् । रुदन्तींतांप्रियान्दीनां तनुप्रच्छादिताननाम् ७७ तांविलोक्यसदै त्येन्द्रःप्रोवाचपरिसान्त्वयन्। (वज्राङ्ग उवाच) केनतेऽपकृतंभीरु!यमलोकंयियासुना७८ कंवाकामंप्रयच्छामि शीघ्रंमेब्रूहिमानिनि ७९ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेतारकासुरोपाख्यानेपञ्चचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४५॥

(वरांग्युवाच) त्रासितास्म्यपविद्धास्मि ताडितापीडितापिच । रौद्रेणदेवराजेन नष्टनाथेवभूरिशः १ दुःखपारमपश्यन्ती प्राणांस्त्यक्तुंव्यवस्थिता । पुत्रंमेतारकंदेहि दुः

आश्रमको गीलाकरनेलगा ऐसे अनेक भयपूर्वक दुःखकोदेताहुआ इन्द्र जब वन्दनहींहुआ तब वज्रां गदैत्यकी पत्नी उस पहाड़के दोषकोजानकर पर्वतको शापदेने के लिये तैयारहुई तब वह पर्वत पुरुषका रूप धारणकरके उस भयंकर चित्तवाली वरांगीसे बोला ६७। ६९ हे वरांगने मैं दुष्टनहींहूं मैं तो सबके सेवनेलायकहूं यह इन्द्र तुझपर क्रोधकरके नानाभय दिखाताहै ७० इसके अनन्तर उन दोनोंके जब हज़ारवर्ष पूरेहोचुके तब ब्रह्माजी प्रसन्नहोकर उस जलाशयपर आये और वज्रांग दैत्य से बोले कि हे दितिनन्दन तू खड़ाहो मैं तुझको सबकामनादूंगा ७१।७२ ऐसे वचनको सुनकर वह तपोनिधि दैत्य हाथजोड़कर लोकोंके पितामह ब्रह्माजी से बोला ७३ हे पितामह मेरे आसुरीभाव और दैत्यपना न हो मुझको अक्षयलोक की प्राप्ति हो और मेरा शरीर सदैव तपही करने मेंरहै यह सुनकर ब्रह्माजी ने कहा ऐसाहीहोगा यह कहकर ब्रह्माजी अपने स्थानको चलेगये तब वज्रांगदैत्य भी तपके समाप्तहोनेपर अपने नियमोंको समाप्त करताभया ७४। ७५ और भोजनकी इच्छाकरके आश्रमको गया वहाँ जाकर अपनी स्त्रीको नहीं देखताभया तब तो क्षुधासे युक्तहोकर पर्वत के गह्वर वनमें प्रवेश करताभया वहाँ फल मूलोंको ग्रहणकरती और रोतीहुई दीन अपनी स्त्रीको देखके शिक्षा करताहुआ यह वचनबोला ७६ । ७८ हे भीरुप्रिये धर्मरायकी पुरीमें जानेकी इच्छा करनेवाले किसने तेरानिरादर कियाहै मैं तेरे किस मनोरथ को करूं यह तू मुझसे शीघ्र कह ७९ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांतारकासुरोपाख्यानेपंचचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४५॥

वरांगी बोली—कि मुझको भयंकर इन्द्रने भयभीत किया है और बहुतताड़ना करके मुझको

खशोकमहार्णवात् २ एवमुक्तःसदैत्येन्द्रः कोपव्याकुललोचनः। शक्तोऽपिदेवराजस्य प्रतिकर्तुंमहासुरः ३ तपःकर्तुंपुनर्दैत्यो व्यवस्यतमहाबलः। ज्ञात्वातुतस्यसंकल्पं ब्रह्मा क्रूरतरंपुनः ४ आजगामतदातत्र यत्रासौदितिनन्दनः। उवाचतस्मैभगवान्प्रभुर्मधुरया गिरा ५ (ब्रह्मोवाच) किमर्थंपुत्रभूयस्त्वं नियमंक्रूरमिच्छसि। आहाराभिमुखोदैत्यस्त न्नोब्रूहिमहाव्रत ६ यावदब्दसहस्रेण निराहारास्यतत्फलम्। क्षणेनैकेनतल्लब्धा त्यक्त्वा हारमुपस्थितम् ७ त्यागोह्यप्राप्तकामानां कामेभ्योनतथागुरुः। यथाप्राप्तंपरित्यज्य का मंकमललोचन! ८ श्रुत्वेतद्ब्रह्मणोवाक्यं दैत्यःप्राञ्जलिरब्रवीत्। चिंतयंस्तपसायुक्तो हृदिब्रह्ममुखेरितम् ९ (वज्राङ्ग उवाच) उत्थितेनमयादृष्टा समाधानात्त्वदाज्ञया। म हिषीभीपितादीना रुदन्तीशाखिनस्तले १० सामयोक्तातुतन्वङ्गी दूयमानेनचेतसा। किमेवंवर्त्तसेभीरु! वदत्वंकिंचिकीर्षसि ११ इत्युक्तासामयादेव! प्रोवाचस्खलिताक्षरम् वाक्यंवाचस्पते! भीता तन्वङ्गहेतुसंहितम् १२ (वरांग्युवाच) त्रासितास्म्यपविद्धा स्मि कर्षितापीडितास्मिच। रौद्रेणदेवराजेन नष्टनाथेवभूरिशः १३ दुःखस्यान्तमपश्य न्तीप्राणांस्त्यक्तुंव्यवस्थिता। पुत्रंमेतारकंदेहि ह्यस्माद्दुःखमहार्णवात् १४ एवमुक्तस्तु संक्षुब्धस्तस्याःपुत्रार्थमुद्यतः। तपोघोरंकरिष्यामि जयायत्रिदिवौकसाम् १५ एतच्छ्रु त्वावचोदेवः पद्मगर्भोद्भवस्तदा। उवाचदैत्यराजानं प्रसन्नश्चतुराननः १६ (ब्रह्मोवाच)

उसने ऐसा पीड़ित किया है जैसे कि कोई विधवास्त्रीको पीड़ादेताहै मैं अपनेदुःखसे पार न होनेके कारण अपने प्राणों के त्यागनेकी इच्छा कररहीहूं हे पति अब आपमुझको दुःखशोकसे तारनेवाला पुत्रदो १। २ यहवात सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्रवाला वहदैत्य यद्यपि इन्द्रसे बदलालेनेको समर्थभीथा परन्तु तपही करने में उपस्थित होताभया तब ब्रह्माजी उनके क्रूरतप को जानकर उस दैत्यके समीप आये और उससे मधुर २ वचन बोले ३।५ कि हे पुत्र इसक्रूर नियमको तू फिर किस नि-मित करताहै और क्यों नहीं भोजनकरताहै यह हमसे वर्णन करो ६ हज़ार वर्षतक जो निराहार रहनेका फलहै उसको तू इसप्राप्तहुए आहारके त्यागनेसेही प्राप्त होगयाहै ७ जिनकी कामना प्राप्त नहीं होती है उनका त्याग ऐसाबड़ानहीं है जैसाकि प्राप्त वस्तुके त्यागनेका माहात्म्यहोताहै ८ इस प्रकार ब्रह्माके वचनको सुनकरवह दैत्य अंजली बांधकर हृदयमें ब्रह्माके वचनोंको चिंतवनकरताहुआ यह वचनबोला ९ कि हे ब्रह्माजी आपकीहीआज्ञासे समाधिसे उठेहुए मैंनेयहअपनीस्त्री वृक्षके नीचे खड़ीहुई भयभीत दीन औररोती हुई देखी १० तब मैंने चित्तसे दुःखितहोकर उससे पूछाकि हेभीरु तू इस प्रकार उदासहोकर क्योंरोरही है औरक्याचाहती है ११ मेरेइसवचनको सुनकर वहस्त्री गद्गद वाणीसे भयभीतहोकर हेतुसमेत यह वचन बोली १२ कि हे प्राणपति मुझको भयंकर रूप इन्द्रने डरायाहै और महादुःखित करके ताड़नाकरीहै मुझको उसने ऐसापीड़ित कियाहै जैसाकि कोई अनाथस्त्रीको दुःखदेताहै १३ में दुःखके पारका नदेखकर अपने प्राणोंको त्यागतीहूं नहीं तो दुःख-शोक से तारने वाला पुत्रमुझकोदो १४ ऐसे उसके वचनों से क्षोभको प्राप्तहुआ मैं उसके पुत्रके

अलन्तेतपसावत्स ! माक्लेशेदुस्तरेविश । पुत्रस्तेतारकोनाम भविष्यतिमहाबलः ।
देवसीमन्तिनीकान्त धम्मिल्लस्यविमोक्षणः । इत्युक्तोदैत्यनाथस्तु प्रणिपत्यपितामहम्
१८ आगत्यानन्दयामास महिषींहर्षिताननः । तौदम्पतीकृतार्थौतु जग्मतुःस्वाश्रमंमु
दा १९ वज्राङ्गेनाहितंगर्भं वराङ्गवरवर्णिनी । पूर्णवर्षसहस्रञ्च दधारोदरएवहि २० त
तोवर्षसहस्रान्ते वराङ्गीसुषुवेसुतम् । जायमानेतुदैत्येन्द्रे तस्मिन्लोकभयङ्करे २१ चचा
लसकलापृथ्वी समुद्राश्चचकम्पिरे । चेलुर्महीधराःसर्वे ववुर्वाताश्चभीषणाः २२ जेपु
र्जप्यंमुनिवरा नेदुर्व्यालमृगाअपि । चन्द्रसूर्यौजहुःकान्ति सनीहारादिशोऽभवन् २३
जातेमहासुरेतस्मिन्सर्वेचापिमहासुराः । आजग्मुर्हर्षितास्तत्र तथाचासुरयोषितः २४
जगुर्हर्षसमाविष्टा ननृतुश्चासुराङ्गनाः । ततोमहोत्सवोजातो दानवानांद्विजोत्तमाः!२५
विषण्णमनसोदेवाः समहेन्द्रास्तदाभवन् । वराङ्गीस्वसुतंदृष्ट्वा हर्षेणापूरितातदा २६ बहु
मेनेनदेवेन्द्र विजयन्तुतदैवसा । जातमात्रस्तुदैत्येन्द्रस्तारकश्चण्डविक्रमः २७ अभिषि
क्तोऽसुरैःसर्वैः कुजम्भमहिषादिभिः । सर्वासुरमहाराज्ये पृथिवीतुलनक्षमैः २८ सतुप्रा
प्यमहाराज्यं तारकोमुनिसत्तमाः !। उवाचदानवश्रेष्ठान्युक्तियुक्तमिदंवचः २९ ॥
इति श्रीमत्स्यपुराणे तारकासुरोपाख्याने षट्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४६॥

उद्योगके निमित्त देवताओं के जीतनेके लिये फिर घोरतप करूंगा १५ वह चतुरानन ब्रह्माजी उस के वचनको सुनकरवज्रांग दैत्यसे यह वचन बोले १६ कि हेपुत्र बस अवतेरातप होचुका तू फिर दुस्तर क्लेश को मतकरै तेरे तारकासुर नाम एक महाबली पुत्र होगा १७ तब वह वरांगीका पति वज्रांग दैत्य ब्रह्माजी से इस वरदानको सुनकर ब्रह्माजीको नमस्कारकर प्रसन्न मुखसे अपनी स्त्रीके पास आया और दोनों स्त्रीपुरुष कृतार्थ और प्रसन्नहोकर अपने आश्रममें आवतेभये १८।१९ इसके उपरान्त वज्रांग दैत्यसे स्थापित हुए गर्भको उसकी स्त्री धारणकरती भयी और एक हज़ार वर्षतक उसने गर्भकोधारणरक्खा २० तदनन्तर वह वरांगी ऐसे महाबली लोकों के भयकारी पुत्रको जन्मती भयी कि जिस समय वह लोकोंका भयकारी उत्पन्नहुआ उससमय संपूर्णपृथ्वी औरसमुद्रों समेत सब पर्व्वतकांपे और भयंकर वायु चलतेभये २१।२२ उत्तम मुनिलोग मंत्रोंका जप करते भये सर्प मृग आदिक जीवशब्दकरते भये चन्द्रमा सूर्य्य अपनी कान्ति को त्यागतेभये सब दिशा धूम्रवर्ण होगईं २३ उस महादैत्य के जन्मतेही सब दैत्य और दैत्यों की स्त्रियां बड़े प्रसन्नचित्तों में आतीहुईं २४ दैत्योंकी स्त्रियां मगन हो २ नृत्य और गानकरनेलगीं और दानवों के गृहों में बड़े भारी उत्सव होतेभये २५ इन्द्रादिक देवता महादुःखित मनहुए और वह वरांगीस्त्री अपने पुत्रको देखके बड़े हर्षसे पूरित होतीभयी उस समय वरांगी इन्द्रके जीतनेको कुछ बड़ी बात न समझती भयी और वह तारकासुर दैत्य जन्मतेही अत्यन्त पराक्रमवाला होताभया २६।२७ फिर कुजंभ और महिषासुर इत्यादिक दैत्यों ने तारकासुर दैत्य का राज्याभिषेक किया अर्थात् अपना अधिपति बनाया २८ हे मुनि सत्तम लोगो वह तारकासुर दैत्य राज्यतिलक को प्राप्तहो कर बड़े २ दानवों से यह युक्ति पूर्वक वचन कहताभया २९ ॥ इति षट्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४६ ॥

(तारक उवाच) शृणुध्वमसुराः! सर्वे वाक्यंममहाबलाः!। श्रेयसेक्रियतांबुद्धिः स
र्वैःकृत्यस्यसंविधौ १ वंशक्षयकरादेवाः सर्वेषामेवदानवाः। अस्माकंजातिधर्मोवै विरूढं
वैरमक्षयम् २ वयमद्यगमिष्यामः सुराणांनिग्रहायतु। स्वबाहुबलमाश्रित्य सर्वएवमसं
शयः ३ किन्तुनातपसायुक्तो मन्येऽहंसुरसङ्गमम्। अहमादौकरिष्यामि तपोघोरन्दितेः
सुताः! ४ ततःसुरान्विजेष्यामो भोक्ष्यामोऽथजगत्त्रयम्। स्थिरोपायोहिपुरुषः स्थिर-
श्रीरपिजायते ५ रक्षितुंनैवशक्नोति चपलश्चपलाःश्रियः। तच्छ्रुत्वादानवाःसर्वे वाक्यं
तस्यासुरस्यतु ६ साधुसाध्वित्यवोचंस्ते तत्रदैत्याःसविस्मयाः। सोऽगच्छत्पारियात्रस्य
गिरेःकन्दरमुत्तमम् ७ सर्वर्तुकुसुमाकीर्णं नानौषधिविदीपितम्। नानाधातुरसस्रावचित्रं
नानागुहागृहम् ८ गह्वरैःसर्वतोगूढं चित्रकल्पद्रुमाश्रयम्। अनेकाकारबहुलंपृथक् प
क्षिकुलाकुलम् ९ नानाप्रस्रवणोपेतं नानाविधजलाशयम्। प्राप्यतत्कन्दरं दैत्यश्च
चारविपुलंतपः १० निराहारःपञ्चतपाः पत्रभुग्वारिभोजनः। शतंशतंसमानान्तु तपां
स्येतानिसोऽकरोत् ११ ततःस्वदेहादुत्कृत्य कर्षंकर्षंदिनेदिने। मांसस्याग्नौजुहावा
सौ ततोनिर्मांसताङ्गतः १२ तस्मिन्निर्मांसतांयाति तपोराशित्वमागते। ज़्ज्वलुःसर्व
भूतानितेजसातस्यसर्वतः १३ उद्विग्नाश्चसुराःसर्वे तपसातस्यभीषिताः। एतस्मिन्न
न्तरेब्रह्मापरमंतोषमागतः १४ तारकस्यवरंदातुं जगामत्रिदशालयात्। प्राप्यतंशैल

तारकासुर बोला कि हे महाबली दैत्यलोगो तुममेरे इसवचनको सुनो कि सबको अपने कल्याण में बुद्धि करनी योग्यहै १ हे दानवो यह सब देवता हमारे वंशों के नाश करनेवाले हैं इन देवताओं से हमारी जातिका वैर सदैवसे दृढ चला आताहै २ अबहम देवताओं के रोकने के लिये गमन करेंगे हमसब अपनी भुजाओं के बलमें आश्रितहोकर उनको निस्सन्देह जीतेंगे ३ परन्तु हम विना तप किये देवताओं के साथ युद्ध करनेको उचितनहीं मानते इसलिये में प्रथम महाघोर तप करूंगा ४ क्योंकि जिसपुरुष का उपाय स्थिर होताहै उसकी लक्ष्मीभी स्थिर होजाती है और जो चपलहोताहै वह चपल लक्ष्मी की रक्षा नहीं करसकाहै ऐसे उसके वचनोंको सुनकर सबदानव आश्चर्य्ययुक्त होकर साधु २ वचन बोलतेभये वह तारकासुर दैत्य पारियात्र पर्व्वत की उत्तरवाली गुफामें गमनकरता भया ५।७ सब ऋतुओंके पुष्पों से और सर्वौषधियोंसे युक्त नानाप्रकारकी धातुओं से विचित्र अनेक गुफारूपीगृहों से शोभित ८ विचित्र वृक्षादिकों से गह्वर अनेक छिद्रोंसे चित्रित बहुतसे ऋषियों से सेवित ९ अनेक झरनों और जलाशयों से युक्त ऐसी उस पर्व्वतकी कन्दराको प्राप्तहोकर वह दैत्य आगेलिखे प्रकारोंसे बहुतसा तप करनेलगा १० निराहार रहना, पंचाग्निमें तपना और पत्तों का और जलोंका भोजन करना, इनसब तपोंको सौ २ वर्षतक करताभया ११ फिर प्रतिदिन अपने शरीरमें से सवातोले मांसको काट २ कर अग्निमें हवन करनेलगा फिरजब मांस रहित शरीर हो गया तब केवल तपो मूर्त्ति होगया उससमय सब भूतमात्र उसके तेजसे दंदीप्त होते भये १२।१३ और उसतपसे सब देवता कांपते भये इसके अनन्तर ब्रह्माजी अत्यन्त प्रसन्न होकर स्वर्ग से उस

राजानं सगिरेःकन्दरस्थितम् १५ उवाचतारकंदेवो गिरामधुरयायुतः। (ब्रह्मोवाच)
पुत्रालंतपसातेऽस्तु नास्त्यसाध्यंतवाऽधुना १६ वरंवृणीष्वरुचिरं यत्तेमनसिवर्त्तते।
इत्युक्तस्तारकोदैत्यः प्रणम्यात्मभुवंविभुम् १७ उवाचप्राञ्जलिर्भूत्वा प्रणतःपृथुवि
क्रमः (तारक उवाच) देव ! भूतमनोवास ! वेत्सिजन्तुविचेष्टितम् १८ कृतप्रतिकृ
ताकांक्षी जिगीषुःप्रायशोजनः। वयञ्चजातिधर्मेण कृतवैराःसहामरैः १९ तैश्चनिःशेषि
तादैत्याः क्रूरैःसन्त्यज्यधर्मिताम्। तेषामहंसमुद्धर्त्ता भवेयमितिमेमतिः २० अवध्यःसर्व
भूतानामस्त्राणाञ्चमहौजसाम्। स्यामहंपरमोह्येष वरोममहृदिस्थितः २१ एतन्मेदेहिदेवे
श ! नान्योमेरोचतेवरः। तमुवाचततोदैत्यं विरिञ्चिःसुरनायकः २२ नयुज्यन्तेविनामृत्यु
देहिनोदैत्यसत्तम!। यतस्ततोऽपिवरयमृत्युंयस्मान्नशङ्कसे २३ ततःसञ्चिन्त्यदैत्येन्द्रः शि
शोर्वैसप्तवासरात्। वव्रेमहासुरोमृत्युमवलेपनमोहितः २४ ब्रह्माचास्मैवरंदत्त्वा यत्कि
ञ्चिन्मनसेप्सितम्। जगामत्रिदिवंदेवो दैत्योऽपिस्वकमालयम् २५ उत्तीर्णतपसस्तंतुदै
त्यंदैत्येश्वरास्तथा। परिवव्रुःसहस्राक्षं दिविदेवगणायथा २६ तस्मिन्महतिराज्यस्थे
तारकेदैत्यनन्दने। ऋतवोमूर्त्तिमन्तश्च स्वकालगुणबृंहिताः २७ अभवन्किङ्करास्तस्य
लोकपालाश्चसर्वशः। कान्तिर्द्युतिर्धृतिर्मेधा श्रीरवेक्ष्यचदानवम् २८ परिवव्रुर्गुणाकीर्णे
निश्छिद्राःसर्वएवहि। कालागुरुविलिप्ताङ्गं महामुकुटभूषणम् २९ रुचिराङ्गदनद्धाङ्गम

तारकासुरको वरदान देनेको आये और उसपर्व्वतकी कन्दरापर प्राप्तहोकर उस दैत्यके प्रति बड़ी मधुरवाणी से बोले कि हे पुत्र अब तेराव्रत समाप्त हुआ अबतुझको किसी बातकी अपेक्षा नहीं रही १४। १६ जो अभीष्टहो वह वरमांग यह सुनकर वह तारकासुर दैत्य हाथ जोड़कर कहनेलगा कि हे देव आपसब जीवोंके मनकी चेष्टाको जानते हो १७। १८ सब मनुष्य अपने शत्रुसे बदला लेने के निमित्त उसके जीतनेकी इच्छा करते हैं हमारा स्वाभाविक सदैवसे जाति धर्म के द्वारा देवताओंसे वैर चला आता है १९ क्योंकि उन देवताओं ने सबजगहसे दैत्योंको निकालदियाहै सो मैं आपकी कृपासे उन देवताओं का मारनेवाला होजाऊं ऐसी मेरीबुद्धिहै २० मैं सब भूतमात्रों से शस्त्र अस्त्रादिके द्वारा नहीं मरूं यही परमवर मेरे हृदयमें स्थित है हे देवेश इसवरको आप मुझेदो इसके सिवाय और कोई वरनहीं चाहता उसके इसवचनको सुनकर ब्रह्माजी बोले २१। २२ हे दैत्य कोई भी जीवधारी मृत्युसे नहीं बचसकाहै इसलिये तू जिससेकुछशंका नहींमानताहो उससेही अपनीमृत्यु मांगले २३ फिर अभिमान से युक्तहुआ वह दैत्य अपने मनमें चिन्तवन करके सातदिनके बालक से अपनी मृत्युको मांगता भया २४ इसके इसअभीष्टवरको देकर ब्रह्माजी स्वर्गको गये और यह दैत्य भी अपने स्थानको चला आया २५ तब सब दैत्येश्वर इस तपसे निवृत्त होनेवाले तारकासुरसे युद्धकीवार्त्ता कहने लगे और देवता लोग स्वर्गमें इन्द्रसे कहतेभये २६ जबतारकासुर राज्य करने लगा तब अपने कालके गुणोंसे वृद्धियुक्त ऋतु मूर्तिमान् होती भयीं सब लोकपाल उसके किंकर होतेभये कान्ति, द्युति, धृति, मेधा, श्री और यह सब वस्तु उस दानवको देखकर इसको अपना

हासिंहासनेस्थितम्। वीजयन्त्यप्सरःश्रेष्ठाः भृशंमुञ्चन्तिनैवताः ३० चन्द्रार्कौदीपमार्गे षु व्यजनेषुचमारुतः। कृतान्तोऽग्रेसरस्तस्यबभूवुर्मुनिसत्तमाः! ३१ एवंप्रयातिकाले तु विततेतारकासुरः। बभाषेसचिवान्दैत्यः प्रभूतवरदर्पितः ३२ (तारक उवाच) रा ज्येनकारणंकिंमे त्वनाक्रम्यत्रिविष्टपम्। अनिर्याप्यसुरैर्वैरं काशान्तिर्हृदयेमम ३३ भुञ्ज तेऽद्यापियज्ञांशा नमरानाकएवहि। विष्णुःश्रियंनजहति तिष्ठतेचगतभ्रमः ३४ स्वस्था भिःस्वर्गनारीभिः पीड्यन्तेऽमरवल्लभाः। सोत्पलामदिरामोदा दिविक्रीडायनेषुच ३५ लब्ध्वाजन्मनयःकश्चिद्घटयेत्पौरुषंनरः। जन्मतस्यवृथाभूतमजन्मातुविशिष्यते ३६ मातापितृभ्यांनकरोतिकामान् बन्धूनशोकान्नकरोतियोवा। कीर्तिंहिवानार्जयतेहिमाभां पुमान्सजातोऽपिमृतोमतंमे ३७ तस्माज्जयायामरपुङ्गवानां त्रैलोक्यलक्ष्मीहरणायशी घ्रम्। संयोज्यतांमेरथमष्टचक्रं बलञ्चमेदुर्जयदैत्यचक्रम्। ध्वजश्चमेकाञ्चनपट्टनद्धश्छत्रञ्चमे मौक्तिकजालबद्धम् ३८ तारकस्यवचःश्रुत्वा ग्रसनोनामदानवः। सेनानीर्दैत्यराजस्य त था चक्रेबलान्वितः ३९ आहत्यभेरींगम्भीरां दैत्यानाहूयसत्वरः। तुरगाणांसहस्रेणचक्रा ष्टकविभूषितम् ४० शुक्लाम्बरपरिष्कारं चतुर्योजनविस्तृतम्। नानाक्रीडागृहयुतं गीतवा

स्वामी बनाके सब छिद्रों से रहितहो उसके पास रहती भयीं उस नाना सुगन्धियुक्त शरीर वाले महामुकुट बाजूबन्द आदिसे शोभित और सिंहासन पर बैठे हुए दैत्यके ऊपर अप्सरागण चँवर डुलाती हुई किसी समय पर भी खाली नहीं छोड़तीं दीपकोंके स्थानापन्न चन्द्रमा और सूर्य्य हुए व्यजनोंके स्थानापन्न वायुहुआ धर्मराज आगे चलनेवाला हुआ ३०।३१ ऐसेप्रतापसे राज्यकरतेहुए तारकासुरका जब बहुत समय व्यतीत होचुका तब तारकासुर अभिमानी होकर यहवचनबोला ३२ कि स्वर्ग में पहुंचे विना इसराज्यसे क्या लाभहै देवताओंसे शत्रुता किये विना मेरे हृदयमें शान्ति नहीं है ३३ अबभी देवता लोग स्वर्गमें बैठे हुए यज्ञों के भागों को भोगते हैं विष्णु लक्ष्मीजीको नहीं छोड़ते वह विष्णु निर्भय होकर बैठाहै ३४ कमलाक्षी मदिरा की गंधसे युक्त देवताओं की स्त्रियों स्वर्ग के क्रीड़ा स्थानोंमें देवताओंके साथ रमण करती हैं ३५ जो पुरुष इससंसार में जन्म लेकर अपना कुछ भी पुरुषार्थ नहीं दिखाताहै उसका जन्म वृथाहै इस्से तो जन्मका न होनाहीश्रेष्ठहै ३६ जो अपने मातापिताओंके मनोरथों को सिद्ध नहीं करता है अथवा बंधुओंके शोकोंको दूर नहींकरता और कीर्तियों का संग्रह नहीं करताहै वह जन्माहुआ भी पुरुष मृतककेही समान है ३७ इस हेतु से त्रिलोकी की लक्ष्मीके हरनेके निमित्त बड़ी शीघ्रतासे देवताओंसे युद्ध करेंगे, आठ चक्रोंवाला मेरा रथ बनाओ हेदुर्जय दैत्य चक्रसेयुक्त मेरा बलकरो सुवर्णके वस्त्रों से युक्त मेरीध्वजाबनाओ और मोतियों की जालीसे युक्त मेरा छत्र बनानाचाहिये ऐसे तारकासुरके वचनों को सुनकर ग्रसन नाम सेनापति दैत्य उसके सब विचारोंको यथावस्थित पूराकरता भया ३८। ३९ भेरी के बाजे बजा-कर शीघ्रही दैत्यों को बुलाता भया फिर हज़ार घोड़ों से युक्त आठ चक्रों से विभूषित श्वेत वस्त्रों से जटित चार योजन में विस्तृत हुए रथमें बैठकर जहां जहां तारकासुर आताभयावहाँ २ अनेक

धमनोहरम् ४१ विमानमिवदेवस्य सुरभर्त्तुःशतक्रतोः। दशकोटीश्वरादैत्या दैत्यास्ते चण्डविक्रमाः ४२ तेषामग्रेसरोजम्भः कुजम्भोऽनन्तरस्ततः। महिषःकुंजरोमेघः कालनेमिर्निमिस्तथा ४३ मथनोजम्भकःशुम्भो दैत्येन्द्रादशनायकाः। अन्येऽपिशतशस्तस्य पृथिवीदलनक्षमाः ४४ दैत्येन्द्रागिरिवर्ष्माणः सन्तिचण्डपराक्रमाः। नानायुधप्रहरणा नानाशस्त्रास्त्रपारगाः ४५ तारकस्याभवत्केतू रौद्रःकनकभूषणः। केतुनामकरेणापि सेनानीर्ग्रसनोऽरिहा ४६ पैशाचंयस्यवदनं जम्भस्यासीदयोमयम्। खरंविधूतलांगूलं कुजम्भस्याभवद्ध्वजे ४७ महिषस्यतुगोमायुर्ह्केतोर्हैमंतदाभवत्। ध्वांक्षंध्वजेतुशुम्भस्यकृष्णायोमयमुच्छ्रितम् ४८ अनेकाकारविन्यासाश्चान्येषान्तुध्वजास्तथा। शतेनशीघ्रवेगानां व्याघ्राणांहेममालिनाम् ४९ ग्रसनस्यरथोयुक्तो किङ्किणीजालमालिनाम्। शतेनापिच सिंहानांरथोजम्भस्यदुर्जयः ५० कुजम्भस्यरथोयुक्तः पिशाचवदनैःखरैः। रथस्तुमहिषस्योष्ट्रैर्गजस्यतुतुरङ्गमैः ५१ मेघस्यद्वीपिभिर्भीमैः कुञ्जरैःकालनेमिनः। पर्वताभैःसमारूढो निमिर्मत्तैर्महागजैः ५२ चतुर्दन्तैर्गन्धवद्भिः शिक्षितैर्मेघभैरवैः। शतहस्तायतेकृष्णे तुरङ्गेहेमभूषणैः ५३ सितचामरजालेन शोभितेदक्षिणांदिशम्। सितचन्दनचार्वङ्गो नानापुष्पस्रजोज्ज्वलः ५४ मथनोनामदैत्येन्द्रः पाशहस्तोव्यराज्यत। जम्भकःकिङ्किणीजालमालमुष्ट्रंसमास्थितः ५५ कालशुक्लमहामेषमारूढः शुम्भदानवः। अन्येऽपिदानवा

प्रकार के गीत मंगल होते भये इस दैत्य का रथ इन्द्रके विमानकेही समान शोभित हुआ उसके साथ अतुल पराक्रमवाले दशकिरोड़ दैत्य युद्धके निमित्तचले ४० । ४२ उससेना में जंभ, कुजंभ, महिष, कुंजर, मेघ कालनेमि, मथन, जंभक, निमि और शुंभ यह दश दैत्य सेनापति की पदवी पर नायक होते भये इनके विशेष और २ बहुत से दैत्य भी महाबली नियत होते भये ४३ । ४४ पर्व्वत के समान शरीरवाले अतुल पराक्रमी नानाप्रकार के अस्त्र शास्त्रों को धारण कियेहुए भयानक दैत्य युद्धकरने को आये ४५ तारकासुर की ध्वजा सुवर्ण से भूषित और महाभयंकर थी, ग्रसन दैत्य की मगरमच्छकी आकृतिवाली थी, जंभदैत्य की ध्वजा पिशाचरूप लोहेकी थी कुजंभकी ध्वजामें कटीहुई पूंछवालागधा था, शुंभदैत्यकी ध्वजामें कालेलोहेका ऊंचाकाक होताभया, ४६ । ४८ और अन्य २ दैत्योंकी ध्वजाओंमें भी नानाप्रकार के आकार होतेभये और शीघ्रगामी सुवर्णकी मालाओं से युक्त सौ १०० सिंह ग्रसन दैत्यके रथमें जुड़तेभये उसीप्रकार सौ सिंहोंसे युक्त महादुर्जय रथमें जंभदैत्य बैठा कुजंभदैत्यके रथमें पिशाच और गधेजुड़े महिषासुरके रथमें ऊंटलगे, कुंजर दैत्यके रथमें घोड़े जोतेगये ४९ । ५१ मेघ दैत्यके रथमें भयंकर गैंड़ेजुते, कालनेमिके रथमें हाथीजुते, सौहाथके विस्तृत कालेघोड़ोंसे युक्त श्वेतचँवर और जालियों से शोभित दक्षिणदिशा में अनेक पुष्पोंकी मालाओं से युक्त रथमें सुन्दर अंगवाला मथनदैत्य हाथमें फांसीलेकर बैठा और किंकिणी जाली और मालाओंसे शोभित सुन्दर ऊंटपर जंभकदैत्य स्थितहोता भया शुंभदैत्य बहुतबड़े

वीरा नानावाहनगामिनः ५६ प्रचण्डचित्रकर्माणः कुण्डलोष्णीषभूषणाः। नानाविधोत्त
रासङ्गा नानामाल्यविभूषणाः ५७ नानासुगन्धिगन्धाढ्या नानावन्दिजनस्तुताः। नाना
वाद्यपरिष्पन्दाश्चाग्रेसरमहारथाः ५८ नानाशौर्यकथासक्तास्तस्मिन् सैन्येमहासुराः।
तद्बलंदैत्यसिंहस्य भीमरूपंव्यजायत ५९ प्रमत्तचण्डमातङ्गतुरङ्गरथसंकुलम्। प्रत
स्थेऽमरयुद्धाय बहुपत्तिपताकिनम् ६० एतस्मिन्नन्तरेवायुर्देवदूतोऽम्बरालये। दृष्ट्वासदा
नवबलं जगामेन्द्रस्यशंसितुम् ६१ सगत्वातुसभांदिव्यां महेन्द्रस्यमहात्मनः। शशंस
मध्येदेवानां तत्कार्यंसमुपस्थितम् ६२ तच्छ्रुत्वादेवराजस्तु निमीलितविलोचनः। बृह
स्पतिमुवाचेदं वाक्यंकालेमहाभुजः ६३ (इन्द्र उवाच) संप्राप्नोतिविमर्दोऽयं देवानांदा
नवैःसह। कार्यंकिमत्रतद्ब्रूहि नीत्युपायसमन्वितम् ६४ एतच्छ्रुत्वातुवचनं महेन्द्रस्य
गिरांपतिः। इत्युवाचमहाभागो बृहस्पतिरुदारधीः ६५ सामपूर्वास्मृतानीतिश्चतुरङ्गा
स्पताकिनीम्। जिगीषतांसुरश्रेष्ठ! स्थितिरेषासनातनी ६६ सामभेदस्तथादानं दण्ड
श्चाङ्गचतुष्टयम्। नीतौक्रमोदेशकालेरिपुयोग्यक्रमादिदम् ६७ सामदैत्येषुनैवास्ति यत
स्तेलब्धसंश्रयाः। जातिधर्मेणवाभेद्यादानंप्राप्तश्रियेचकिम् ६८ एकोऽभ्युपायोदण्डोऽत्र
भवतायदिरोचते। दुर्जनेषुकृतंसाममहद्यातिचबन्ध्यताम् ६९ भयादितिव्यवस्यन्तिक्रूराः
साममहात्मनाम्। ऋजुतामार्य्यबुद्धित्वं दयानीतिव्यतिक्रमम् ७० मन्यन्तेदुर्जनानित्यं

श्वेत मेढ़ेकी सवारीपर बैठा इनके विशेष अनेक वाहनोंवाले महाशूरवीर असंख्य दानव आये ५२।५६
महाविचित्रकर्मी कुंडल वेष्टनीधारे अनेक प्रकारके दुपट्टोंसे शोभित अनेक सुगन्धित मालाओंसे भू-
षित वन्दीजनों से स्तुति कियेहुए उन दैत्यों के आगेबड़े उत्तमबाजे बजतेभये वहसब महाअसुर और
अनेक शूरवीरों की कथाओं में आसक्तहुए दैत्यों की सेना महाभयंकररूप होतीभयी ५७। ५९ रथ
हाथी घोड़े और ध्वजाओंसे समाकुल वह दैत्योंकी सेना देवताओं से युद्धकरने को तैयारहोती भयी
६० इसके अनन्तर आकाशमें विचरनेवाला देवताओंका दूतरूप वायु दैत्योंकी सेनाको देखकर इन्द्र
से कहनेके लिये जाताभया ६१ और इन्द्रकी दिव्यसभामें पहुंचकर प्राप्तहुए देवताओं के कार्य्यको
कहताभया ६२ इसबातको इन्द्र सुनकर बृहस्पतिजी से यह वचन बोला ६३ हे गुरूजी अब देव-
ताओं का दैत्योंके साथ मरनेका काल प्राप्त होगयाहै सो हमको अब क्या करना योग्यहै आप नीति
पूर्वक उपायको कहिये ६४ इन्द्रके इसवचन को सुनकर महाउदार बुद्धिवाले बृहस्पतिजी यह
वचन बोलतेभये ६५ कि हे सुरश्रेष्ठ चारों अंगों में साम अर्थात् समझाकर मेलकरने की नीति
श्रेष्ठहै यह विजय करनेवालों की सनातनी स्थिति है ६६ साम, दाम, दंड और भेद यह चारोंअंग
नीतिके हैं सो देशकाल और शत्रु इनके यथायोग्य क्रमके अनुसार वर्त्तने चाहिये ६७ दैत्यों के
सामनीति नहीं है इसी से जातिधर्म करके उनका भेद करना योग्य है और जिनको लक्ष्मी प्राप्त
होरहीहो उनको दानदेनेसे क्या लाभ है ६८ इसलिये जोआपकी सलाह होय तो उनका केवल
एकदण्ड देनेहीका उपायहै क्योंकि दुर्जनको जोसामनीति समझाताहै वहबँधजाताहै ६९ महात्मा

सामचापिभयोदयात्। तस्माद्दुर्जनमाक्रान्तुं श्रेयान्पौरुषसंश्रयः ७१ आक्रान्तेतुक्रियायुक्ता सतामेतन्महाव्रतम्। दुर्जनःसुजनत्वाय कल्पतेनकदाचन ७२ सुजनोऽपिस्वभावस्य त्यागंवाञ्छेत्कदाचन। एवंमेबुद्ध्यतेबुद्धिर्भवन्तोऽत्र व्यवस्यताम् ७३ एवमुक्तः सहस्राक्षएवमेवेत्युवाचतम्। कर्त्तव्यतांससञ्चिन्त्य प्रोवाचामरसंसदि ७४ (इन्द्र उवाच) सावधानेनमे वाचंशृणुध्वंनाकवासिनः!। भवन्तोयज्ञभोक्तारस्तुष्टात्मानोऽतिसात्विकाः ७५ स्वेमहिम्निस्थितानित्यं जगतःपरिपालकाः। भवतश्चानिमित्तेन बाधन्तेदानवेश्वराः ७६ तेषांसामादिनैवास्ति दण्डएवविधीयताम्। क्रियतांसमरोद्योगः सैन्यंसंयुज्यतांमम ७७ आद्रियन्तांचशस्त्राणि पूज्यन्तामस्त्रदेवताः। वाहनानिचयानानि योजयन्तुसद्मसु ७८ यमंसेनापतिंकृत्वा शीघ्रमेवंदिवौकसः। इत्युक्ताःसमनह्यन्त देवानांयेप्रधानतः ७९ वाजिनामयुतेनाजौ हेमघण्टापरिष्कृतम्। नानाश्चर्यगुणोपेतं संप्राप्तंसर्वदैवतैः ८० रथं मातलिनाक्लृप्तं देवराजस्यदुर्जयम्। यमोमहिषमास्थायसेनाग्रेसमवर्त्तत ८१ चण्डकिङ्करवृन्देन सर्वतःपरिवारितः। कल्पकालोद्धतज्वालापूरिताम्बरलोचनः ८२ हुताशनश्छागरूढः शक्तिहस्तोव्यवस्थितः। पवनोऽङ्कुशपाणिस्तु विस्तारितमहाजवः ८३ भुजगेन्द्रसमारूढो जलेशोभगवान्स्वयम्। नरयुक्तरथेदेवो राक्षसेशोवियच्चरः ८४ तीक्ष्णखड्गयुतोभीमः

पुरुप जब सामनीति करते हैं तब क्रूरपुरुप यह जानताहै कि यह हमसे भयमानकर हमको समझाताहै सरलपुरुषों की बुद्धि तो समझाने से सुधरती है और क्रूरपुरुषों की विपरीत होती है ७० दुर्जन पुरुप सदैव सामनीति को भयसे उत्पन्न हुई जानते हैं इसकारण दुर्जन के दवाने के निमित्त पुरुपार्थही करना श्रेष्ठहै ७१ समझाने की क्रिया तो श्रेष्ठही पुरुषों के आगे करनी योग्य है दुर्जन पुरुप कभी सज्जन पुरुप नहीं होताहै ७२ चाहे सुजन पुरुप किसी समय को पाकर अपने स्वभाव के त्यागने की इच्छा कर भी लेताहै परन्तु दुर्जन कभी भी अपने स्वभाव के त्यागने की इच्छा नहीं करता यह मेरामतहै तुम भी विचारलो यह सुनकर इन्द्र बहुतसा चिन्तवनकरके देवताओं की सभामें यह वचन बोला ७३। ७४ कि हे स्वर्गवासियो तुम सावधान होकर मेरे वचन को सुनो तुम यज्ञ भोक्ताहो आत्मामें प्रसन्न रहनेवाले और अति सात्विकीहो ७५ अपनी महिमा में स्थित हुए तुम नित्यही जगत् की पालना करतेहो तुमको विनाही कारणके दानव दुःख देतेहैं ७६ इन दैत्योंके सामआदिक नीति नहींहैं दंडही देना योग्यहै अब उपाय करना चाहिये और मेरी सेनाको तैयार करो शस्त्रों का आदर करके अस्त्रोंके देवताओं का पूजन करना योग्यहै सब वाहनों को सजो ७७। ७८ और धर्मराजको सेनापति बनाकर बड़ी शीघ्रता से चलो यहसुनकर प्रधान २ देवता अपने २ कवचादिक पहरनेलगे सुवर्ण के घंटे आदिसे शोभित दशहजार घोड़ों से व्याप्त सेना को रणभूमिमें निकासतेभये ७९। ८० मातलि सारथी इन्द्रके रथको लाया उसमें इन्द्र सवार हुआ धर्मराज भैंसेपर चढ़कर आगे चले ८१ और प्रचंड किंकरों के समूहों से युक्त प्रलय की अग्नि के समान रक्तनेत्रवाला अग्नि बकरे की सवारी पर हाथ में शक्ति धारण किये हुए तैयार होता

समरेसमवस्थितः। महासिंहरवोदेवो धनाध्यक्षोगदायुधः८५ चन्द्रादित्यावश्विनौच चतुरङ्गबलान्वितौ। राजभिःसहितास्तस्थुर्गन्धर्वाहेमभूषणाः ८६ हेमपीठोत्तरासङ्गाश्चित्रवर्मरथायुधाः। नाकपृष्ठशिखण्डास्तु वैदूर्य्यमकरध्वजाः ८७ जपारक्तोत्तरासङ्गा राक्षसारक्तमूर्द्धजाः। गृध्रध्वजामहावीर्या निर्मलायोविभूषणाः ८८ मुसलासिगदाहस्ता रथेचोष्णीषदंशिताः। महामेघरवानागा भीमोल्काशनिहेतयः ८९ यक्षाःकृष्णाम्बरभृतो भीमबाणधनुर्द्धराः। ताम्रोलूकध्वजारौद्रा हेमरत्नविभूषणाः९० द्वीपिचर्मोत्तरासंगं निशाचरबलंबभौ। गार्धपत्रध्वजप्रायमस्थिभूषणभूषितम् ९१ मुसलायुधदुष्प्रेक्ष्यं नानाप्राणिमहारवम्। किन्नराःश्वेतवसनाः सितपत्रिपताकिनः ९२ मत्तेभवाहनप्रायास्तीक्ष्णतोमरहेतयः। मुक्ताजालपरिष्कारो हंसोरजतनिर्मितः९३ केतुर्जलाधिनाथस्य भीमधूमध्वजानलः।पद्मरागमहारत्न विटपंधनदस्यतु ९४ ध्वजंसमुच्छ्रितंभाति गन्तुकाममिवाम्बरम्। वृकेणकाष्ठलोहेन यमस्यासीन्महाध्वजः ९५ राक्षसेशस्यकेतौवै प्रेतस्यमुखमाबभौ। हेमसिंहध्वजौदेवौ चन्द्रर्कावमितद्युती ९६ कुम्भेनरत्नचित्रेण केतुरश्विनयोरभूत्। हेममातंगरजितं चित्ररत्नपरिष्कृतम् ९७ ध्वजंशतक्रतोरासीत् सितचामरमण्डितम्। सनागयक्षगन्धर्व महोर

भया वायु अपने महावेगका विस्तारकर अंकुश धारणकरके आया ८२।८३ सर्पकी सवारी पर वरुण आये आकाशमें विचरने वाला राक्षसों का अधिपति देव नरों से युक्त हुए रथपर खड्ग धारण करके आता भया ८४ तीक्ष्ण खड्ग और गदाधारी महासिंहके समान शब्द वाला कुबेरआया ८५ चन्द्रमा सूर्य्य और अश्विनीकुमार यह सब चतुरंगिणीसेना समेत आये और सुवर्ण से विभूषित सुगन्धित अंगवाले गन्धर्व राजा लोगों में युक्त होकर आये ८६ सुवर्णासन दुपट्टा विचित्र कवच रथ शस्त्र वैदूर्य्यमणि और मत्स्यादिकों की ध्वजा इन सब लक्षणों वाले देवता युद्ध में आते भये ८७ लाल वस्त्र वाले खुले हुए रक्तकेशों से युक्त गृध्र की ध्वजा वाले महापराक्रमी लोहे के आभूषणवाले राक्षस आते भये ८८ मूसल, खड्ग, और गदा हाथोंमें लिये वागरी कवचधारी रथमें बैठे हुए महा मेघ के समान शब्द वाले भयंकर नाग आते भये ८९ काले वस्त्रों को पहरे भयंकर धनुष बाणधारी ताम्र के उल्लू की ध्वजा वाले महाभयंकर हेमरत्नों से विभूषित यक्ष आवते भये ९० गेंडे के चर्म वस्त्र धारी गृद्धपक्ष की ध्वजा हस्तियों के विभूषणधारी राक्षस और भूत प्रेतादिक आवते भये ९१ मुसलधारी अनेक प्राणियों के समान शब्दवाले श्वेत वस्त्र युक्त श्वेत ध्वजाधारी किन्नर आते भये ९२ और सब किन्नर लोग मदोन्मत्त हाथियों पर चढ़कर पैने २ खड्ग धरेहुए शोभितहुए ९३ मोतियों की जालियोंसे युक्त चाँदी का हंस वरुणने अपनी ध्वजा पर लगाया अग्नि की ध्वजा पर भयंकर धूमलगा पद्मक आदि महारत्नोंसे शोभित वृक्ष कुबेरकी ध्वजा पर लगा ९४ धर्मराजकी ध्वजा काष्ठ और लोहेके भेड़ियोंकी बनाई गयी ९५ राक्षसेश केतुकी ध्वजामें प्रेतका मुख लगरहाथा, चन्द्रमा और सूर्य्य इनदोनोंकी ध्वजाओंमें सुवर्णका सिंह लगरहाथा ९६ अश्विनीकुमारोंकी ध्वजा रत्नोंके विचित्र कलशोंसे युक्त होती भयी सुवर्णके हाथी से युक्त विचित्र रत्नों से

गनिशाचरा ९८ सेनासादेवराजस्य दुर्जयाभुवनत्रये। कोटयस्तास्त्रयस्त्रिंशद्देवदेवनिकायिनाम् ९९ हिमाचलाभेसितकर्णचामरे सुवर्णपद्मामलसुन्दरस्रजि। कृताभिरागोज्ज्वलकुंकुमांकुरे कपोललीलालिकदम्बसंकुले १०० स्थितस्तदैरावतनामकुञ्जरे महाबलश्चित्रविभूषणाम्बरः। विशालवज्रांशुवितानभूषितः प्रकीर्णकेयूरभुजाग्रमण्डलः। सहस्रदृक् वन्दिसहस्रसंस्तुतास्त्रिविष्टपेऽशोभतपाकशासनः १०१ तुरंगमातंगबलौघसंकुलासितातपत्रध्वजराजिशालिनी। चमूश्चसादुर्जयपत्रिसन्तता विभातिनानायुधयोधदुस्तरा १०२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेतारकोपाख्यानेसप्तचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४७॥

(सूतउवाच) सुरासुराणांसम्मर्दस्तस्मिन्नत्यन्तदारुणे। तुमुलोऽतिमहानासीत् सेनयोरुभयोरपि १ गर्जतांदेवदैत्यानां शङ्खभेरीरवेणच। तूर्याणाञ्चैवनिर्घोषैर्मातङ्गानाञ्चबृंहितैः २ ह्रेषतांहयवृन्दानां रथनेमिस्वनेनच। ज्याघोषेणचशूराणान्तुमुलोऽतिमहानभूत् ३ समासाद्योभयेसेने परस्परजयैषिणाम्। रोषेणातिपरीतानान्त्यक्तजीवितचेतसाम् ४ समासाद्यतुतेऽन्योन्यं प्रक्रमेणविलोमतः। रथेनासक्तपादातो रथेनचतुरंगमः ५ हस्तीपदातिसंयुक्तो रथिनाचक्वचिद्रथी। मातंगेनापरोहस्ती तुरंगैर्बहुभिर्गजः ६ पदातिरेकोबहुभिर्गजैर्मत्तैश्चयुज्यते। ततःप्रासाशनिगदा भिन्दिपालपरश्वधैः ७ शक्तिभिःपट्टिशैःशूलैर्मुद्गरैः कडपैर्गण्डैः। चक्रैश्चशंकुभिश्चैव तोमरैरंकुशैःशितैः ८ कर्णिकालीकनाराच वत्सदन्तार्द्ध-

शोभित श्वेत चंवरसे मंडित हुई ध्वजा इन्द्रकी होतीभयी ९७।९८ नाग, यक्ष, गन्धर्व, महोरग और निशाचर इन्होंसे युक्त हुई देवताओं की सेना त्रिलोकी में दुर्जय होकर तेंतीस कोटि होती भयी ९९ हिमाचल पर्व्वतके समान श्वेत श्वेत चंवर सुवर्ण मालासे शोभित कपोलोंपर केशर रोली आदि से चिह्नित क्रीड़ा करते हुए भ्रमरोंसे युक्त ऐसे ऐरावत नामहाथी पर विराजमान महाबली विचित्र वस्त्रालंकारों से विभूपित बाजूबन्दों वाले भुजोंसे शोभित वन्दीजनों से स्तुतिमान सहस्राक्ष इन्द्र स्वर्गमें शोभित होताभया १००।१०१ घोड़े हाथियों के बलसे युक्त श्वेतचंवर और ध्वजा आदिकों की पंक्तिमें शोभित और अनेक अस्त्रोंसे दुस्तर ऐसी देवताओंकी सेना प्रकाशित होतीभयी १०२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांतारकोपाख्यानेसप्तचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४७॥

सूतजी बोले कि उस अत्यन्त दारुण रणमें देवता और असुरोंकी सेनाओं का महादारुण शब्द होता भया १ देवता और दैत्य दोनों शंखभेरी आदिके शब्दोंसे गर्जना करते भये मदोन्मत्त हाथियों की चिघाड़ोंके घोड़ोंकी हिनहिनाटके रथों के चक्रों के और धनुषकी प्रत्यंचा के शब्द इनसब शब्दों करके शूरवीरोंका महातुमुल घोष होताभया २।३ दोनों सेनाओंमें परस्पर जीतने की इच्छा वाले जीवनको त्यागे हुए क्रोध युक्त देवता और दैत्य आपसमें विलोम युद्ध करते भये रथके साथ प्यादे आसक्त होगये और रथीसे घोड़े वाले लड़ने लगे कहीं हाथी के साथ प्यादे हुए कहीं रथीके साथ रथीही होताभया कहीं हाथीके साथ दूसरी सेनाका हाथीही बहुतसे घोड़ोंसे लड़ने लगा ४।६ कहीं एक प्यादाही बहुत से मदोन्मत्त हाथियों से युद्ध करने लगा फिर वज्र, गदा, गोफियायंत्र, फरसा

चन्द्रकैः। भल्लैश्चशतपत्रैश्च शुकतुण्डैश्चनिर्म्मलैः ९ वृष्टिरत्यद्भुताकारा गगनेसमह
श्यत। संप्रच्छाद्यदिशःसर्वास्तमोमयमिवाकरोत् १० नप्राज्ञायतते ऽन्योऽन्यं तस्मिंस्तम
सिसंकुले। अलक्ष्यंविसृजन्तस्ते हेतिसङ्घातमुद्धतम् ११ पतितंसेनयोर्मध्ये निरीक्ष
न्तेपरस्परम्। ततोध्वजैर्भुजैश्छत्रैः शिरोभिश्चसकुण्डलैः १२ गजैस्तुरंगैःपादातैः
पतद्भिःपतितैरपि। आकाशसरसोभ्रष्टैः पङ्कजैरिवभूस्तता १३ भग्नदन्ताभिन्नकुम्भाश्छि
न्नदीर्घमहाकराः। गजाःशैलनिभा पेतुर्धरण्यांरुधिरस्रवाः १४ भग्नेषादण्डचक्राक्षा र
थाश्चशकलीकृताः। पेतुःशकलतांयातास्तुरङ्गाश्चसहस्रशः १५ ततोऽसृक्ह्रदुस्तारा
पृथिवीसमजायत। नद्यश्चरुधिरावर्ता हर्षदाःपिशिताशिनाम् १६ वेतालाक्रीडमभव
त्तत्संकुलरणाजिरम् १७ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेतारकासुरोपाख्यानेदेवासुरयुद्धेअष्ट
चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४८॥

(सूत उवाच) अथग्रसनमालोक्य यमःक्रोधविमूर्च्छितः। ववर्षशरवर्षेण विशेषेणा
ग्निवर्चसाम् १ सविद्धोबहुभिर्बाणैर्ग्रसनोऽतिपराक्रमः। कृतप्रतिकृताकाङ्क्षी धनुरानम्य
भैरवम् २ शतैःपञ्चभिरत्युग्रैः शराणांयममर्दयन्। सविचिन्त्ययमोबाणान् ग्रसनस्यातिपौ
रुषम् ३ बाणवृष्टिभिरुग्राभिर्यमोग्रसनमर्दयन्। कृतान्तशरवृष्टिन्तां वियतिप्रतिसर्पि
णीम् ४ चिच्छेदशरवर्षेण ग्रसनोदानवेश्वरः। विफलांतांसमालोक्य यमस्तांशरसन्तति
म् ५ सविचिन्त्यशरत्रातं ग्रसनस्यरथंप्रति। चिक्षेपमुद्गरंघोरन्तरसातस्यचान्तकः ६ स

बरछी, पट्टिश, शस्त्र,शूल, मुद्गर,चक्र, शंकु,तोमर और तीक्ष्णअंकुश खड्ग खांड़े छुरीभाले, शतपत्र शस्त्र और शुकतुंड इन शस्त्रोंकी अत्यन्त वर्षासी आकाशमें होने लगी सबदिशा अन्धकारके समान आच्छादित होने लगीं ७।१० उसे युद्धका ऐसा अन्धकार हुआ कि कोई आपसमें पहिचाना नहीं गया दोनों सेनाओंमें शस्त्रही शस्त्र दीखने लगे ११ उनदोनों सेनाओंमें कटीहुई ध्वजाछत्र शिर हाथी घोड़े और प्यादे यह सब गिरतेभये उस समय ऐसीशोभाहोगई मानों आकाश रूपी सरोवरोंमें से गिरेहुए कमलोंकरके पृथ्वी विस्तृत होरही है १२।१३ कटेदांत टूटे मस्तकों वाले महाउन्नतहाथी रुधिर गिरते हुएही पर्व्वतोंके समान गिरतेभये १४ और चक्र धुरी, दंड और जूआ आदिक टूटने से रथोंके खण्ड२ होगये हजारों घोड़े गिरपड़े उनके भी टुकड़े२ होगये १५ तब पृथ्वीपर स्थान २ पर रुधिर भरगया और उन सब रुधिरों से रुधिरकी नदी बहनिकली मांसभक्षी जीवोंको बड़ाहर्ष होताभया तब उस रणमें वैताल भूतादिक क्रीड़ा करते भये १६।१७॥ इतिश्रीमत्स्यपुराण भाषाटीकायांतारकासुरोपाख्यानेदेवासुरयुद्धेअष्टचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४८॥

सूतजी कहते हैं कि इसके अनन्तर क्रोधसे मूर्च्छित हुआ धर्मराज ग्रसन दैत्यको देखकर उसके ऊपर बाणोंकी वर्षा करने लगा १ तब बहुत से बाणों से भिदा हुआ ग्रसन दैत्य अपना बदलालेने के निमित्त धनुषको ग्रहणकर अत्यन्त उग्रपांच बाणों करके धर्मराजको बांध लेताभया तब धर्मराज भी ग्रसन दैत्यके अत्यन्त पराक्रमको जान कर उग्रबाणोंकी वर्षा करके तिस दैत्यको पीड़ा देनेलगा

तंमुद्गरमायान्त मुत्प्लुत्यगगनस्थितम्। जग्राहवामहस्तेन याम्यंदानवनन्दनः ७ तमेवमु
द्गरंगृह्य यमस्यमहिषंरुषा।पातयामासवेगेन सपपातमहीतले ८ उत्प्लुत्याथयमस्तस्मान्म
हिषान्निष्पतिष्यत।प्रासेनताड़यामास ग्रसनंवदनेदृढ़म्९सतुप्रासप्रहारेण मूर्च्छितोन्यप
तद्भुवि।ग्रसनंपतितंदृष्ट्वा जम्भोभीमपराक्रमः १० यमस्यभिन्दिपालेन प्रहारमकरोद्धृदि।
यमस्तेनप्रहारेण सुस्रावरुधिरंमुखात् ११ कृतान्तमर्दितंदृष्ट्वा गदापाणिर्धनाधिपः।वृतो
यक्षायुतशतैर्जम्भंप्रत्युद्ययौरुषा१२जम्भोरुषातमायान्तं दानवानीकसंवृतः।उवाचप्रा
ज्ञोवाक्यन्तु यथास्निग्धेनभाषितम्१३ग्रसनीलब्धसंज्ञोऽथ यमस्यप्राहिणोद्गदाम्।मणि
हेमपरिष्कारां गुर्वीमरिविमर्दिनीम् १४ तामप्रतर्क्यांसंप्रेक्ष्य गदांमहिषवाहनः।गदायाः
प्रतिघातार्थं जगद्दलनभैरवम् १५ दण्डंमुमोचकोपेन ज्वालामालासमाकुलम्। संगदां
वियतिप्राप्य ररासाम्बुधरोयथा १६ सङ्घट्टमभवत्ताभ्यां शैलाभ्यामिवदुःसहम्।ताभ्यां
निष्पेषनिर्ह्रादजड़ीकृतदिगन्तरम् १७ जगद्व्याकुलतांयातं प्रलयागमशङ्कया।क्षणा
त्प्रशान्तनिर्ह्रादं ज्वलदुल्कासमाचितम् १८ निष्पेषेणतयोर्भीम मभूद्गगनगोचरम्।नि
हत्याथगदांदण्डस्ततोग्रसनमूर्द्धनि १९ हत्वाश्रियमिवानर्थो दुर्वृत्तस्यापतद्दृढः।सतु

उससमय धर्मराजकी की हुई बाणोंकी वर्षाको ग्रसन दैत्य अपने बाणोंसे छेदन करता भया ।५
तब धर्मराज अपने बाणोंकी वर्षाको विफल हुआ जानकर ग्रसन दैत्यके रथके सन्मुख बड़े बलसे
मुद्गरको फेंकते भये ६ उससमय आकाशमें आतेहुए मुद्गरको देखकर उसमुद्गरको वहदैत्य अपने
बायें हाथसे पकड़ लेता भया ७ और उसी मुद्गरसे बड़े क्रोध पूर्व्वक धर्मराजके भैंसे को मारता
भया तब वह भैंसा पृथ्वीपर गिरपड़ा ८ उससमय उसगिरते हुए भैंसे परसे धर्मराज कूदगये और
ग्रसन दैत्यके शरीरमें भाला मारताभया ९ उसभालेके प्रहारसे वह ग्रसन दैत्य मूर्च्छित होकर पृथ्वी
पर गिरपड़ा तबपड़ेहुए ग्रसन को देखकर भयंकर पराक्रमवाला जंभ दैत्य आया १० और आते
ही धर्मराज के हृदय में गोफिया यंत्रसे प्रहार करताभया उसप्रहार के लगने से धर्मराज के मुख
मेंसे रुधिर निकलने लगा ११ उस समय पीड़ित हुए धर्मराजको देखकर दशहजार यक्षों सं-
मेत कुबेर हाथमें गदा लेकर आये और क्रोधकरके जंभ दैत्यके सन्मुख दौड़तेभये १२ तब दानवोंकी
सेना समेत जंभ दैत्यभी क्रोधसे आताभया और कुबेरको देखकर यद्वातद्वा वचन बोलताभया १३
और ग्रसन दैत्यकोभी चेतहोगया तबवह दैत्य मणि सुवर्णसे जटित महाभारी शत्रुओंकी मारनेवाली
धर्मराजकी गदाको तोड़ताभया तबतो धर्मराजभी उसतोड़ीहुई गदाको देखकर दैत्यकी गदाको तो-
ड़नेके लिये जगत्का दलनेवाला महाज्वलित अपना दण्ड बड़े क्रोधसे फेंकताभया १४।१५ वह
दैत्य गदाको लेकर मेघके समान शब्द करनेलगा उन दोनोंका संग आकाश में ऐसा होताभया
मानों दुस्सह दोपर्व्वत आपसमें भिड़ रहेहों उनके भिड़नेके शब्दोंसे दिशा औरआकाश बधिरहोगये
१७ और प्रलय आनेकी शंकासे जगत् व्याकुल होगया क्षणमात्रमें उनके परस्पर संघर्षणसे अग्निसी
निकली उस समय आकाश भयंकर होताभया इसके अनन्तर धर्मराजका दण्ड गदाको तोड़कर

तेनप्रहारेण दृष्ट्वासतिमिरादिशः २० पपातभूमौनिःसंज्ञो भूमिरेणुविभूषितः। ततोहाहा रवोघोरः सेनयोरुभयोरभूत् २१ ततोमुहूर्त्तमात्रेण ग्रसनःप्राप्यचेतनाम्। अपश्यत्स्वा न्तनुंध्वस्तां विलोलाभरणाम्बराम् २२ सचापिचिन्तयामास कृतेप्रतिकृतिक्रियाम्। मद्विधेवस्तुनिपुंसि प्रभोःपरिभवोदयात् २३ मय्याश्रितानिसैन्यानिजितेमयिविनाशिता। असम्भावितएवास्तु मनःस्वच्छन्दचेष्टितः २४ नतुव्यर्थशतोद्घुष्ट सम्भावितधनोन रः। एवंसञ्चिन्त्यवेगेन समुत्तस्थौमहाबलः २५ मुद्गरंकालदण्डाभं गृहीत्वागिरिसन्निभः। ग्रसनोघोरसङ्कल्पः सन्दष्टोष्ठपुटच्छदः २६ रथेनत्वरितोगच्छन्नाससादान्तकंरणे। समा साद्ययमंयुद्धे ग्रसनोभ्राम्यमुद्गरम् २७ वेगेनमहतारौद्रश्चिक्षेपयममूर्द्धनि। विलोक्यमुद्गरं दीप्तं यमःसम्भ्रान्तलोचनः २८ वञ्चयामासदुर्द्धर्षं मुद्गरंसमहाबलः। तस्मिन्नपसृतेदूरं चण्डानांभीमकर्मणाम् २९ याम्यानांकिङ्कराणान्तु सहस्रंनिष्पिपेषह। ततस्तांनि हतांदृष्ट्वा घोरांकिङ्करवाहिनीम् ३० अगमत्परमंक्षोभं नानाप्रहरणोद्यतः। ग्रसनस्तु समालोक्य तांकिङ्करमयीञ्चमूम् ३१ मेनेयमसहस्राणि सृष्टानियममायया। निग्रा ह्यग्रसनःसेनां विसृजन्नस्त्रवृष्टयः ३२ कल्पान्तघोरसङ्काशो बभूवक्रोधमूर्च्छितः। कांश्चिद्बिभेदशूलेन कांश्चिद्बाणैरजिह्मगैः ३३ कांश्चित्पिपेषगदया कांश्चमुद्गरवृष्टि

ग्रसन दैत्यके मस्तकमें लगताभया १८। १९ जैसेकि दुष्टपुरुषका अनर्थ लक्ष्मी को हरलेताहै उसी प्रकार वह दैत्यभी दंडसे हतहोगया अर्थात् उसदंडके प्रहारसे वहग्रसन दैत्य नेत्रोंसे अन्धासा होकर भूमिमें गिरपड़ा और पृथ्वीकी धूलिसे विभूषित होगया इसके अनन्तर दोनों सेनाओंमें हाहाकार शब्द मचगया २० । २१ जब ग्रसन दैत्यको चेतहुआ तब विध्वस्त हुए अपने शरीरको देखकर धर्मराजसे अपना बदला लेनेकी इच्छा करताभया और यहबचन बोलाकि मुझसरीखे पुरुषसे समर्थ पुरुषकाभी तिरस्कार होनाचाहिये २२। २३ जोमैं जीताजाऊंगा तोमेरे आधीन हुई सब सेनाकाभी नाश होजायगा और यहमेराशत्रु स्वच्छन्दहोकर विचरताहै यहअसंभावि नहीं है क्योंकि समर्थ पुरुष अपने उद्योगके व्यर्थ होजानेपरभी अपने उद्योगको नहीं छोड़ता है ऐसा चिन्तवन करके वहमहाबली दैत्य स्थितहोताभया २४। २५ कालदंड और पर्व्वतके समान दंडको ग्रहण करके घोरसंकल्प युक्त ओष्ठोंको चबाता ग्रसन दैत्य रथमें बैठ शीघ्रही रणमें आवताभया वहाँ आकर मुद्गर भ्रमाकर धर्मराजसे युद्ध करनेलगा २६। २७ और बड़े वेगसे उस भयंकर मुद्गरको धर्मराज के मस्तकपर फेंकताभया उसदीप्त हुए मुद्गरको देखकर संभ्रान्त नेत्रोंवाले धर्मराज वहाँसे दूरहोकर उस मुद्गर से शरीर को बचाते भये जबमुद्गरसे धर्मराज दूरहोगये तब प्रचंडकर्मी हजारों धर्मराजके दूतों का उसके प्रहार से चूर्ण होगया फिर उस अपनी सेनाको निहतहुई देखकर २८। ३० धर्मराज अनेक शस्त्रों को धारण करके परमक्रोधको करते भये और ग्रसन दैत्य उससेना को देखकर यह मानताभया कि यह सेना धर्मराजने अपनीमायासे रची है ऐसाजानके बाणोंकी वर्षा करनेलगा और प्रलयकाल के समुद्रके समान परमक्रोध से उग्ररूप होकर किसीको शूलसे और किसीको बाणों से

भिः। केचित्प्रासप्रहारैश्च दारुणैस्ताडितास्तदा ३४ अपरेबहुशस्तस्य ललम्बु र्बाहुम
एडले। शिलाभिरपरेजघ्नुर्द्रुमैरन्यैर्महोच्छ्रयैः ३५ तस्यापरेतुगात्रेषु दशनैरपिदंशयन्।
अपरेमुष्टिभिःपृष्ठं किङ्कराःप्रहरन्तिच ३६ अभिद्रुतस्तथाघोरैर्ग्रसनःक्रोधमूर्च्छितः।
उत्सृज्यगात्रंभूपृष्ठे निष्पिपेषसहस्रशः ३७ कांश्चिदुत्थायमुष्टीभिर्जघ्नेकिङ्करसंश्रयान्।
सतुकिङ्करयुद्धेन ग्रसनःश्रममाप्तवान् ३८ तमालोक्ययमःश्रान्तं निहताश्वस्ववाहिनीम्।
आजगामसमुद्यम्य दण्डंमहिषवाहनः ३९ ग्रसनस्तुसमायान्तमाजघ्नेगदयोरसि। अचि
न्तयित्वातत्कर्म्म ग्रसनस्यान्तकोऽरिहा ४० जघ्नेरथस्यमूर्द्धन्यान् व्याघ्रान्दण्डेनकोपनः।
सरथोदण्डमथितैर्व्याघ्रैरर्द्धैर्विकृष्यते ४१ संशयःपुरुषस्येव चित्तंदैत्यस्यतद्रथम्। समु
त्सृज्यरथंदैत्यः पदातिर्धरणींगतः ४२ यमंभुजाभ्यामादाय योधयामासदानवः। यमोऽपि
शस्त्राण्युत्सृज्य बाहुयुद्धेष्ववर्त्तत ४३ ग्रसनःकटिवस्त्रेस्तु यमंगृह्यबलोद्धतः। भ्रामयामा
सवेगेन प्रचित्तमिवसंभ्रमन् ४४ यमोऽपिकण्ठेऽवष्टभ्य दैत्यंबाहुयुगेनतु। वेगेनभ्रामया
मास समुत्कृष्यमहीतलात् ४५ ततोमुष्टिभिराजघ्नुरर्दयन्तौपरस्परम्। दैत्येन्द्रस्याति
कायत्वात्ततः श्रांतभुजोयमः ४६ स्कन्धेनिधायदैत्यस्य मुखंविश्रान्तिमैच्छत। तमालक्ष्य
ततोदैत्यः श्रान्तमन्तकमोजसा ४७ निष्पिपेषमहीपृष्ठे बहुशःपार्ष्णिपाणिभिः। यावद
मस्यवदनात् सुस्रावरुधिरंबहु ४८ निर्जीवितंयमंदृष्ट्वा ततःसन्त्यज्यदानवः। जयंप्राप्यो

वेधताभया ३३।३३ किसीको गदासे पीसा किसीको मुद्गरोंसे चूर्ण किया और कितनोंहीको अपने
दारुण भालेके प्रहारोंसे नाश करदिया ३४ कितनेही उसकी भुजासे और कितनेही शिलासे चूर्ण
हुए और कितनोंहीको वह वृक्षोंसे मारताभया ३५ उससमय बहुतसे दूत उसके शरीर,को नोचते
और मुक्कोंसे मारते भये ३६ तव तो घोरदूतों से भगायाहुआ ग्रसन दैत्य क्रोधसे मूर्च्छित होके ह
जारों दूतोंको अपने शरीरसे दूरकरके पृथ्वीमें गेरकर मसलता भया ३७ कितनोंको मुक्कोंसे भी मा
रताभया इस प्रकारसे धर्मराज के दूतों से युद्धकरता हुआ दैत्य बहुतही श्रमित होगया ३८ तब थ
कितहुए उस दैत्यको और हारीहुई अपनी सेनाको देखकर धर्मराज अपने भैंसेपर चढ़कर दंडधारण
करके संग्राममें आतेभये ३९ उससमय ग्रसन दैत्यने उनआतेहुए धर्मराजकी छातीमें एकगदामारी
तब धर्मराज उसके उसकर्मको साधारण मानकर अपने दंडसे उसकेरथमें जुतेहुए भेड़ियोंको मारते
भये फिर दंडसे पीड़ितहुए भेड़ियों से वह रथखैंचा न गया तब सन्देहसे युक्तहोकर वह दैत्य रथको
त्यागकर पैदलहोकर आया ४०।४२ और धर्मराजको अपनी भुजाओं से पकड़कर जब युद्धकरने
लगा तब धर्म्मराज भी शस्त्रोंको त्यागके बाहुयुद्ध करनेलगा ४३ उस समय वह ग्रसनदैत्य धर्मराज
की धोतीको पकड़कर बड़े वेगसे भ्रमाताभया और धर्मराज भी अपनी भुजाओं से दैत्यकी ग्रीवाको
कड़ा पकड़कर भ्रमाकर पृथ्वीमें पटकतेभये फिर वह दोनों परस्पर मुष्टिकाओं से युद्धकरनेलगे दैत्य
का शरीर बहुत बड़ाथा इसहेतुसे धर्मराज थकितहोगये ४४।४६ और दैत्यके कन्धोंपर हाथरखकर
दैत्यके मुखकी हारको देखताभया उस समय वह दैत्य धर्मराजको थकाहुआ जानके पृथ्वी में बहुत

ह्वतंदैत्यो नादंमुक्त्वामहास्वनः ४९ स्वयंसैन्यंसमासाद्य तस्थौगिरिरिवाचलः। धनाधिपस्यजम्भेन सायकैर्मर्मभेदिभिः ५० दिशोऽवरुद्धाःक्रुद्धेन सैन्यंचास्यनिकृन्तितम्। ततः क्रोधपरीतस्तु धनेशोजम्भदानवम् ५१ हृदिविव्याधबाणानां सहस्रेणाग्निवर्चसाम्। सारथिञ्चशतेनाजौ ध्वजंदशभिरेवच ५२ हस्तौचपञ्चसप्तत्या मार्गणैर्दशभिर्धनुः। मार्गणैर्वर्हिपत्राङ्कैस्तैलधौतैरजिह्मगैः ५३ सिंहमेकेनतंतीक्ष्णैर्विव्याधदशभिःशरैः। जम्भस्तुकर्मतद्दृष्ट्वा धनेशस्यातिदुष्करम् ५४ हृदिधैर्यंसमालम्ब्य किञ्चित्सन्त्रस्तमानसः। जग्राहनिशितान्बाणान् शत्रुमर्मविभेदिनः ५५ आकर्णाकृष्टचापस्तु जम्भःक्रोधपरिप्लुतः। विव्याधधनदंतीक्ष्णैः शरैर्वक्षसिदानवः ५६ सारथिंचास्यबाणेन दृढेनाभ्यहनद्धृदि। चिच्छेदज्यामथैकेन तैलधौतेनदानवः ५७ ततस्तुनिशितैर्बाणैर्दारुणैर्मर्मभेदिभिः। विव्याधोरसिवित्तेशं दशभिःक्रूरकर्म्मभिः ५८ मोहंपरमतोगच्छन् दृढविद्धोहिवित्तपः। सक्षणाद्धैर्यमालम्ब्य धनुराकृष्यभैरवम् ५९ किरन्बाणसहस्राणि निशितानिधनाधिपः। दिशःखंविदिशोभूमीरनीकान्यसुरस्यच ६० पूरयामासवेगेन सञ्छाद्यरविमण्डलम्। जम्भोऽपिपरमेकैकं शरैर्बहुभिराहवे ६१ चिच्छेदलघुसन्धानो धनेशस्यातिपौरुषात्। ततोधनेशःसंक्रुद्धो दानवेन्द्रस्यकर्म्मणा ६२ व्यधमत्तस्यसैन्यानि नानासायकवृष्टिभिः। तद्दृष्ट्वादुष्कृतंकर्म्म धनाध्यक्षस्यदानवः ६३ गृहीत्वामुद्गरंभीममायसंहेमभूषितम्।

बार अपनी एड़ियोंसे मसलताभया तब धर्मराजके मुखमे बहुतसा रुधिर निकलनेलगा ४७।४८ तब वह दैत्य धर्मराजको मराहुआ जानकर छोड़देताभया और विजयको प्राप्तहोकर उच्चस्वरसे नाद करतागया ४९ फिर अपनी सेनामें आके पर्व्वतके समान खड़ाहोगया क्रोधसे युक्तहुए जंभदैत्यने कुबेरकी दशोंदिशाओंको रोकदिया और सेनाको मारगेरा फिर कुबेरने भी महाक्रोधयुक्त होकर जंभ दैत्यके हृदयमें अग्निके समान दीप्तिमान् हजार बाणोंको मारा ५०।५१ पिछत्तर बाणोंसे ७५ उसके हाथोंको काटा और बड़े तीक्ष्ण सीधे दशबाणों से धनुषको काटकर एक बाणसे उसके सिंहको वेधा और वैसेही तीक्ष्ण दशबाणों से दैत्यको भी वेधनकिया कुबेरके इन दुष्कर्म को वह जंभदैत्य देखकर हृदयमें धैर्य्य धारणकरके शत्रुके कर्मके भेदन करनेवाले तीक्ष्ण बाणोंको ग्रहणकरताभया ५३।५५ और क्रोधसे अपने धनुषको कानतकखेंचकर उन तीक्ष्ण बाणोंको कुबेरके हृदयमें मारताभया ५६ और एक दृढ बाणसे इसके प्रबलसारथीको मारताभया दूसरे बाणसे इसके धनुषकी प्रत्यंचा को काटताभया ५७ फिर पैने महादारुण दश बाणों करके कुबेरकी छाती को वेधताभया ५८ तब कुबेर क्षणभर मूर्च्छाको प्राप्तहोकर धैर्य्ययुक्त होकर धनुषको खैंचताभया ५९ और हजारों बाणों को छोड़कर दैत्यकी सबदिशा आकाश भूमि और सब स्थानोंपर सेनाके लोगों पर बाणों की वर्षा करताभया उन बाणोंकी वर्षासे सूर्य्यका मंडल छायगया तब जंभ दैत्यभी अपने बहुतसे बाणोंकर के प्रत्येक बाणको काटताभया ६०।६१ अर्थात् कुबेरके बहुतसे पुरुषार्थ को थोड़ेही परिश्रमसे काटतभया तब दैत्य के कर्मको देखकर कुबेर क्रोधकेद्वारा बाणोंकी वर्षाकरके जंभ दैत्यकी सेनाको

धनदानुचरान्यक्षान् निष्पिपेषसहस्रशः ६४ तेवध्यमानादैत्येन मुञ्चन्तोभैरवान्रवान्। रथंधनपतेःसर्वे परिवार्यव्यवस्थिताः ६५ दृष्ट्वातानर्दितान्देवःशूलंजग्राहदारुणम्। तेनदैत्यसहस्राणि सूदयामाससत्वरः ६६ क्षीयमाणेषुदैत्येषु दानवःक्रोधमूर्च्छितः।ज ग्राहपरशुंदैत्यो मर्द्दनंदैत्यविद्विषाम् ६७ सतेनसितधारेण धनभर्तुर्महारथम्। चिच्छेदति लशोदैत्यो ह्याखुःस्निग्धमिवाम्बरम् ६८ पदातिरथवित्तेशो गदामादायभैरवीम्। महा हवविमर्देषु दृप्तशत्रुविनाशिनीम् ६९ अधृष्यांसर्वभूतानां बहुवर्षगणार्चिताम्। नाना चन्दनदिग्धाङ्गां दिव्यपुष्पविवासिताम् ७० निर्मलायोमयींगुर्वीममोघांहेमभूषणाम्। चिक्षेपमूर्ध्निसंक्रुद्धो जम्भस्यतुधनाधिपः ७१ आयान्तींतांसमालोक्य तडित्सङ्घातमं पिडताम्। दैत्योगदाभिघातार्थं शस्त्रवृष्टिंमुमोचह ७२ चक्राणिकोणपःप्रासान् भुशुण्डी पट्टिशानपि। हेमकेयूरनद्धाभ्यां बाहुभ्यांचण्डविक्रमः७३व्यर्थीकृत्यतुतान्सर्वा नापतत् दैत्यवक्षसि। प्रस्फुरन्तीपपातोग्रामहोल्केवाद्रिकन्दरे ७४ गदयाभिहतोगाढं पपातरथ कूबरे। स्रोतोभिश्चास्यरुधिरं सुस्रावगतचेतसः ७५ जम्भन्तुनिहतंमत्वा कुजम्भोभैर वस्वनः। धनाधिपस्यसंक्रुद्धो वाक्येनातीवकोपितः ७६ चक्रेबाणमयंजालं दिक्षुयक्षाधि पस्यतु। चिच्छेदबाणजालंतदर्द्धचन्द्रैःशितैस्ततः ७७ मुमोचशरवृष्टिन्तु तस्ययक्षाधि

उजाड़ताभया ऐसे कुवेरके दुष्कर्मको देखकर जंभ दैत्य सुवर्णसे विभूषित लोहेके मुद्गरको ग्रहणकर उसके द्वारा हज़ारों कुवेरके अनुचरों को चूर्ण करताभया ६२।६४ तब दैत्यसे पीड़ितहुए कुवेर के अनुचर भयकरके कुवेरके रथके चारों ओरको खड़े होतेभये ६५ फिर पीड़ितहुए अनुचरों को देखकर कुवेर दारुण शूलको ग्रहणकर उस्से हज़ारों दैत्यों को मारताभया ६६ उन दानवोंकानाश देखकर क्रोधसे व्याकुल जंभ दैत्य फरसेको ग्रहण करताभया ६७ वह फरसा अपनी तीक्ष्णधारों से कुवेरके रथको ऐसे टुकड़े२ करताभया जैसे कि चिकनेवस्त्रको मूसा टुकड़े २ कर डालताहै ६८ तब पैदलहुआ कुवेरउस भयंकर अभिमान वाली शत्रुओं की मारने वाली भयानक गदाको संग्राम में ग्रहण करताभया ६९ जो किसी प्राणीसे न सहने के योग्य बहुत वर्षोंसे गंधाक्षत पुष्पों से पूजी हुई ७० अच्छे लोहेकी भारी अमोघ सुवर्ण से विभूषितथी ऐसी गदाको उठाकर कुवेर जंभ दैत्य के मस्तकमें मारताभया ७१ तब बिजलीके समान आतीहुई गदाको देखकर जंभदैत्य उसके निवारण करनेकेलिये इनशस्त्रों की वर्षा करताभया चक्र, बरछी भाला, भुशुंडी, भल्ल, और पट्टिश इनसबको अपने सुवर्णके बाजूबन्दोंसे शोभित हुए हाथों से छोड़ताभया ७२।७३ परन्तु इन अस्त्रशस्त्रों के रोकनेपर भी वह कुवेरकी गदा उनसब अस्त्रोंको व्यर्थकरके उस दैत्यके हृदयमें ऐसे लगती भयी जैसे कि पर्वतकी कन्दरामें बिजली गिरती हो ७४ गदाके लगनेसे यहदैत्य रथके जुए के समीप गिरपड़ा इसके मरतेही इसके मुखकान आदिसे बहुतसारुधिर निकलताभया इसप्रकार से मरेहुए जंभदैत्यको देखकर भयंकरशब्दवाला कुजंभदैत्य कुवेरपर अत्यन्त क्रोधकरताभया७५।७६ और कुवेरकी सबदिशाओंमें बाणोंका जाल बाँधदिया तबकुवेर अपने २ तीक्ष्ण अर्द्ध चन्द्रोंकरके उ

पोबली। सतंदैत्यःशरव्रातं चिच्छेदनिशितैःशरैः ७८ व्यर्थीकृतान्तुतांदृष्ट्वा शरवृष्टिंध नाधिपः। शक्तिंजग्राहदुर्द्धर्षी हेमघण्टाट्टहासिनीम् ७९ बाहुनारत्नकेयूर कान्तिसन्तान हासिना। सतांनिरूप्यवेगेन कुजम्भायमुमोचह ८० सकुजम्भस्यहृदयं दारयामासदारु णा।वित्तेशःस्वल्पसत्वस्य पुरुषस्यातिभाविता८१ अथास्यहृदयंभित्त्वा जगामधरणीतलं म्। ततोमुहूर्त्तादस्वस्थो दानवोदारुणाकृतिः ८२ जग्राहपट्टिशंदैत्यः प्रांशुंशितशिलीमु खम्। सतेनपट्टिशेनाजौ धनदस्यस्तनान्तरम् ८३ वाक्येनतीक्ष्णरूपेण मर्मान्तरविस र्पिणा। निर्बिभेदाभिजातस्य हृदयंदुर्जनोयथा ८४ तेनपट्टिशघातेन धनेशःपरिमूर्च्छितः। निपपातरथोपस्थे जर्जरोधूर्वहोयथा ८५ तथागतन्तुतंदृष्ट्वा धनेशंनरवाहनम्। खड्गास्त्रो निर्ऋतिर्देवो निशाचरबलानुगः ८६ अभिदुद्राववेगेन कुजम्भंभीमविक्रमम्। अथदृष्ट्वा तुदुर्द्धर्षं कुजम्भोराक्षसेश्वरम् ८७ चोदयामाससैन्यानि राक्षसेन्द्रबधंप्रति। सदृष्ट्वाचोदि तांसेनां भल्लनानास्त्रभीषणाम् ८८ रथादाप्लुत्यवेगेन भूषणद्युतिभास्वरः। खड्गेनकम लानीव विकोशेनाम्बरत्विषा ८९ चिच्छेदरिपुवक्त्राणि विचित्राणिसमन्ततः। तिर्यकूपृ ष्ठमधश्चोर्ध्वं दीर्घबाहुर्महासिना ९० सन्दष्टौष्ठपुटाटोपभ्रूकुटीविकटाननः। प्रचण्डको परक्ताक्षो न्यकृन्तद्दानवान्रणे ९१ ततोनिःशेषितप्रायां विलोक्यस्वामनीकिनीम्। मुक्त्वा कुजम्भोधनदं राक्षसेन्द्रमभिद्रवत् ९२ लब्धसंज्ञोऽथजम्भस्तु धनाध्यक्षपदानुगान्। जी वग्राहान्सजग्राह बध्वापाशैःसहस्रशः ९३ मूर्तिमन्तितुरत्नानि विविधानिचदानवाः। वा

सके बाणजालको काटताभया ७७ और उस दैत्यपर बड़े तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करताभया तबवह कुजंभ दैत्य अपने बाणोंसे कुबेरके बाणोंको काटताभया ७८ जबबाण व्यर्थ होगये तब सुवर्णके घंटों से शोभितहुई अपनी शक्तिको ग्रहण करताभया ७९ और अपने स्वर्णभूषणोंसे शोभितहुई भुजाओंसे उस शक्तिको बड़ेबेगसे कुजंभके ऊपर छोड़ताभया ८० इस प्रकारसे छोड़ीहुई शक्तिके द्वारा कुबेर कुजंभ दैत्यके हृदयको फाड़ता भया और वह शक्ति हृदयको फाड़कर पृथ्वीमें गिरपड़ी फिर थोड़ेमें वहदानव चैतन्य होकर तीक्ष्ण और ऊंची बरछीसे कुबेरके हृदयको ऐसे बेधता भया जैसेकि दुर्जन पुरुष वचनों करके हृदयको बेधदेताहै ८१। ८४ उस बरछीके घातसे कुबेर मूर्च्छित होकर रथ के जुएके पास ऐसे गिरपड़ा जैसेकि बूढ़ा बैल गिरपड़ाहो ८५ इस प्रकारसे गिरेहुए कुबेरको देखकर निशाचरोंके बलसे युक्तहुआ राक्षसोंका स्वामी हाथमें खड्ग लेकर आया और कुजंभ दैत्यके सन्मुख दौड़ा उस समय उस दुर्धर्ष राक्षसको देखकर कुजंभ दैत्य अपनी सेनाको उसके साथ लड़नेकेलिये प्रेरताभया तब अनेकप्रकारके शस्त्रोंवाली सेनाको देखकर वह राक्षस रथसे नीचेउतर हाथमें खड्ग लेकर सब दैत्योंके शिरोंको काटता भया और क्रोधसे ओष्ठोंको चबाताहुआ दीर्घभुजा विकराल मुख और प्रचंड कोपयुक्त वहराक्षस रणमें उसखड्गसे दानवोंको काटताभया ८६। ९१ उससमय जंभदैत्य थोड़ीसी बाकी रही अपनी सेनाको देखके कुबेरको छोड़ उसराक्षसके सन्मुख भाजताभया ९२ इसके अनन्तर कुजंभदैत्य को भी चेष्टा होगई तब वह दैत्य सेनाके हज़ारों पुरुषोंको फांसी में

हृतानिचदिव्यानि विमानानिसहस्रशः ९४ धनेशोलब्धसंज्ञोऽथ तामवस्थांविलोक्यतु।
निश्वसन्दीर्घमुष्णञ्च रोषात्ताम्रविलोचनः ९५ ध्यात्वास्त्रंगारुडन्दिव्यं बाणंसन्धाय
कार्मुके। मुमोचदानवानीके तंबाणंशत्रुदारणम् ९६ प्रथमङ्कार्मुकात्तस्य निश्चेरुर्धूमराजयः।
अनन्तरंस्फुलिङ्गानां कोटयोदीप्तवर्चसाम् ९७ ततोज्वालाकुलंव्योम चकारास्त्रं
समन्ततः। ततःक्रमेणदुर्वारं नानारूपंतदाभवत् ९८ अभूतश्चाभवल्लोको ह्यन्धकार
समावृतः। ततोऽन्तरिक्षेशंसन्ति तेजस्तेतुपरिष्कृतम् ९९ कुजम्भस्तत्समालोच्य दान
वोऽतिपराक्रमः। अभिदुद्राववेगेन पदातिर्धनदंनदन् १०० अथाभिमुखमायान्तं दैत्यं
दृष्ट्वाधनाधिपः। बभूवसंभ्रमाविष्टः पलायनपरायणः १०१ ततःपलायतस्तस्य मुकुटं
रत्नमण्डितम्। पपातभूतलेदीप्तं रविबिम्बमिवाम्बरात् १०२ शूराणामभिजातानां भर्तव्ये
पसृतेरणात्। भर्तुःसंग्रामशिरसि युक्तन्तद्भूषणाग्रतः १०३ इतिव्यवस्यदुर्द्धर्षा नानाश
स्त्रास्त्रपाणयः। युयुत्सवःस्थितायक्षा मुकुटंपरिवार्यतम् १०४ अभिमानधनावीरा धनद
स्यपदानुगाः। तानमर्षाद्वसंप्रेक्ष्य दानवाश्चण्डपौरुषाः १०५ भुशुण्डींभैरवाकारां गृह्य
त्वाशैलगौरवाम्। रक्षिणोमुकुटस्याथ निष्पिपेषनिशाचरान् १०६ तान्प्रमथ्याथदनुजो
मुकुटन्तत्स्वकेरथे। समारोप्यामररिपुर्जित्वाधनदमाहवे १०७ धनानिरत्नानिचमूर्तिम
न्ति तथानिधानानिशरीरिणश्च। आदायसर्वाणिजगामदैत्यो जम्भःस्वसैन्यन्दनुजेन्द्र
सिंहः। धनाधिपोवित्रिनिकीर्णमूर्धजो जगामदीनःसुरभर्तुरन्तिकम् १०८ कुजम्भनाथसं
बांधकर उनके दिव्य २ रत्न हजारों विमान और वाहनादिकों को हरलेता भया, फिर कुबेरको भी
चेष्टाहुई तब जंभदैत्य के कर्मको देख ऊर्ध्वश्वासले क्रोधसे रक्तनेत्रकर दिव्य गारुडास्त्रका ध्यानकर
बाणको धनुषपर चढ़ाकर दानवोंकी सेनामें छोड़ताभया ९३। ९६ उस बाणमें से एक धुएंकी रेखा
निकली फिर किरोड़ों अग्निके पतंगे निकले ९७ इसके पीछे वह अस्त्रचारोंओर आकाशको व्याप्त
करता भया तबवह क्रम २ से दुर्जयअस्त्र होगया और सबदैत्य अन्धकारसे अन्धे हो २ करमरतेभये
उसके तेजको आकाशके प्राणी सब सराहते भये ९८। ९९ इसकर्मको कुजंभदैत्य देखकर पैदलही
कुबेरके सन्मुख शब्द करताहुआ भागकर आया १०० फिर दैत्यको सन्मुख आताहुआ देखकर कुबेर
भाजताभया १०१ उससमय भाजतेहुए कुबेरका रत्नोंसे जटितमुकुट पृथ्वीपर ऐसेगिरा मानोंआकाश
से सूर्यही गिरपड़ाहो १०२ शूरवीरोंका स्वामी जबरणसे भागजाताहै तबस्वामीका आभूषणही पति
होताहै ऐसा निश्चय करके दुर्धर्ष यक्ष लोग अनेक प्रकारके शस्त्रोंको धारण करके मुकुटके चारोंओर
खड़ेहोगये १०३। १०४ कुबेरकेअनुचर यक्षोंके अभिमानका धनथा ऐसेउनयक्षोंको देखकर अनेक दानव
भयंकर आकार वाली बरछी को ग्रहणकर उनके द्वारा मुकुटके समीपवर्ती खड़े हुए यक्षों को मार
ते भये १०५। १०६ तिन यक्षों को मार मुकुटको अपने रथमें स्थापित कर कुबेर को जीत वह
प्रसन्न होताभया १०७ तब जंभदैत्य मरेहुए यक्षोंके धनों को ग्रहण करके अपनी सेना समेत
चलागया और कुबेर दीनरूप होकर खुले हुए बालोंसे इन्द्र के समीप जाताभया १०८ इसके प

सक्तो रजनीचरनन्दनः। मायाममोघामाश्रित्य तामसींराक्षसेश्वरः १०९ मोहयामासदै
त्येन्द्रं जगत्कृत्वातमोमयम्। ततोविफलनेत्राणि दानवानांबलानितु ११० नशेकुश्च
लितुन्तत्र पदादपिपदन्तदा। ततोनानास्त्रवर्षेण दानवानांमहाचमूम् १११ जघानघन
नीहार तिमिरातुरवाहनाम्। वध्यमानेषुदैत्येषु कुजम्भेमूढचेतसि ११२ महिषोदानवे
न्द्रस्तु कल्पान्ताम्भोदसन्निभः। अस्त्रञ्चकारसावित्र मुल्कासङ्घातमण्डितम् ११३ विजृ
म्भत्यथसावित्रे परमास्त्रेप्रतापिनि। प्रणाशमगमत्तीव्रं तमोघोरमनन्तरम् ११४ ततो
ऽस्त्रंविस्फुलिङ्गाङ्गं तमःकृत्स्नंव्यनाशयत्। प्रफुल्लारुणपद्माभं शरदीवामलंशरः ११५
ततस्तमसिसंभ्रान्ता दैत्येन्द्राःप्राप्तचक्षुषः। चक्रुःक्रूरेणमनसा देवानीकैःसहाद्भुतम् ११६
शस्त्रैरमर्षान्निर्मुक्तैर्भुजङ्गास्त्रविनोदितम्। अथादायधनुर्घोरमिषूंश्चाशीविषोपमान् ११७
कुजम्भोऽधावतक्षिप्रंरक्षोराजबलम्प्रति। राक्षसेन्द्रस्तमायान्तं विलोक्यसपदानुगः ११८
विव्याधनिशितैर्बाणैःक्रूराशीविषभीषणैः। तदादानञ्चसन्धानं नमोक्षश्चापिलक्ष्यते ११९
चिच्छेदास्यशरव्रातान् स्वशरैरतिलाघवात्। ध्वजंपरमतीक्ष्णेन चित्रकर्मामरद्विषः १२०
सारथिञ्चास्यभल्लेन रथनीडादपातयात्। कुजम्भःकर्मतद्दृष्ट्वा राक्षसेन्द्रस्यसंयुगे १२१
रोषरक्तेक्षणयुतो रथादाप्लुत्यदानवः। खड्गंजग्राहवेगेन शरदम्बरनिर्मलम् १२२ चर्मचो
द्यखण्डेन्दु दशकेनविभूषितम्। अभ्यद्रवरणेदैत्यो रक्षोऽधिपतिमोजसा १२३ तंरक्षो

नन्तर राक्षसोंका स्वामी प्रधान राक्षस कुजंभ दैत्यके आगेतामसी माया रचताभया १०९ अर्थात् तमोमय आकाश को करके कुजंभ दैत्य को मोहित करता भया और सब दानव अंधे होकर एकचरण भी न चलसके तब अनेक प्रकार की अस्त्रों की वर्षा करके दानवों की सेनाको मारताभया ११०–१११ शीतकी प्रबलता से पीड़ित हुए दैत्यों के सब वाहन मरते भये इसप्रकार सब दानव मारेगये और कुजंभ को मूर्छा आगई तब प्रलयकाल के मेघके समान आकार वाला महिषासुर दैत्य बिजली के समान कान्तिवाला सावित्र अस्त्रको छोड़ताभया ११२। ११३ जब वह सावित्र अस्त्र प्रकाशित हुआ तब उस घोर अंधकार का नाश होगया ११४ अग्निके कणों वाला वह अस्त्र सब अन्धकार को ऐसे नाशकरदेताभया जैसे कि शरद्ऋतु आकाशको निर्मल करदेतीहै ११५ जब अन्धकार दूरहोगया तब खुले हुए नेत्र वाले दैत्य क्रूरमन करके देवताओं की सेनाके साथ अद्भुत युद्धकरतेभये ११६ भुजंग अस्त्रोंके द्वारा विनोदित शस्त्रोंको क्रोधसे ग्रहण करके घोर धनुषको चढ़ाकर विषवाले बाणोंको छोड़ते भये ११७ कुजंभ दैत्य शीघ्रही राक्षसोंकी सेनाकी ओर भागता भया तब राक्षसोंकी सेनाका नायक आवते हुए दैत्य को सर्पके विष वाले क्रूर बाणों करके बेधताभया उस समय दैत्य के छुटने का कोई मार्ग नहीं रहा ११८। ११९ वह राक्षस इस दैत्य के बाणों का छेदन करता भया और तीक्ष्णबाणों से इसकी ध्वजाकोभी छेदन करताभया १२० फिरइसके सारथीको भालेसे मार कर रथके नीचे गिराता भया ऐसे इसराक्षसके कर्मको कुजंभदैत्य देखकर क्रोधसे रक्तनेत्र कर रथसे नीचे उतर वेगसे अपने तीक्ष्ण खड्गको ग्रहण करता भया १२१। १२२ चन्द्रखण्ड के समान

ऽधिपतिःप्राप्तं मुद्गरेणाहनद्धृदि। सतुतेनप्रहारेण क्षीणःसंभ्रान्तमानसः १२४ तस्था
वचेष्टोदनुजो तथाधीरोधराधरः। समुहूर्तंसमाश्वस्तो दानवेन्द्रोऽतिदुर्जयः १२५ रथ
मारुह्यजग्राह रक्षोवामकरेणतु। केशेषुनिर्ऋतिंदैत्यो जानुनाक्रम्याधिष्ठितम् १२६
ततःखड्गेनचशिरश्छेत्तुमैच्छदमर्षणः। तस्मिन्तदन्तरेदेवो वरुणोऽपांपतिर्द्रुतम् १२७
पाशेनदानवेन्द्रस्य बबन्धचभुजद्वयम्। ततोबद्धभुजंदैत्यं विफलीकृतपौरुषम् १२८
ताडयामासगदया दयामुत्सृज्यपाशधृक्। सतुतेनप्रहारेण स्रोतोभिःक्षतजंवमन् १२९
दधाररूपंमेघस्य विद्युन्मालालतावृतम्। तदवस्थागतंदृष्ट्वा कुजम्भंमहिषासुरः १३०
व्यावृत्तवदनेनाधेग्रस्तु मैच्छत्सुरावुभौ। निर्ऋतिंवरुणञ्चैव तीक्ष्णदंष्ट्रोत्कटाननः १३१
तवाभिप्रायमालक्ष्य तस्यदैत्यस्यदूषितम्। त्यक्तारथपथंभीतौ महिषस्यातिरंहसा १३२
भृशंद्रुतौजवाद्दिग्भ्यामुभाभ्यांभयविह्वलौ। जगामनिर्ऋतिःक्षिप्रं शरणंपाकशासनम् १३३
क्रुद्धस्तुमहिषोदैत्यो वरुणंसमभिद्रुतः। तमन्तकमुखासक्तमालोक्यहिमवद्द्युतिः १३४
चक्रेसोमास्त्रनिसृष्टं हिमसंघातकण्टकम्। वायव्यंचास्त्रमतुलं चन्द्रश्चक्रेद्वितीयकम् १३५
वायुनातेनचन्द्रेण संशुष्केणाहिमेनच। व्यथितादानवाःसर्वे शीतोच्छिन्नाविपौरुषाः १३६
नशेकुश्चलितुंपद्भ्यां नास्त्राण्यादातुमेवच। महाहिमनिपातेन शस्त्रैश्चन्द्रप्रचोदितैः १३७

खड्ग को धारण कियेहुए कुंजंभदैत्य राक्षसों के नायकके सन्मुखं दौड़ता भया १२३ तब समीप में आये हुए उस दैत्यको वह राक्षस मुद्गर से मारताभया उसके उस प्रहारसे वह दैत्य भ्रमने लगा १२४ तबभी धैर्य्य को धारणकिये हुए पर्व्वत के समान खड़ाहोगया और थोड़ी में स्वस्थ-चित्तहो, रथपर चढ़कर उस राक्षसके बायें हाथको पकड़ताभया और पैरोंसे दाबकर उस के बालोंको खैंचताभया १२५। १२६ और जब खड्गसे शिर काटनेलगा तब शीघ्रही वरुणआतेभये और अपनी फांसीसे उस दैत्यके दोनों हाथोंको बाँधतेभये जब उसके दोनों हाथ बंधगये उससमय दैत्यका सब पुरुषार्थ निष्फल होगया १२७। १२८ फिर वरुणदैत्य दयाको त्यागकर उस दैत्यको गदासे ताड़नेलगा उस प्रहारसे वह दैत्य रुधिर वमन करनेलगा १२९ उस समय वरुण बिजलियों से युक्त मेघके रूपको धारण करताभया ऐसी अवस्थामें प्राप्त कुजंभ दैत्यको महिषासुर दानव देखकर तीक्ष्ण डाढ़ोंवाले मुखको फाड़कर कुबेर और राक्षस इनदोनों के निगलने की इच्छा करता भया १३०। १३१ तब दोनों उस महिषासुर के अभिप्रायको जानकर रथसे नीचे उतरकर उसके भयसे भागते भये १३२ बहुत भयभीत होकर दोनों पृथक् २ दिशामें जातेभये राक्षस तो शीघ्रही इन्द्रकी शरणमें जाताभया १३३ फिर क्रोधको प्राप्तहुआ महिषासुर वरुणके सन्मुख भाजताभया तब काल के मुखमें प्राप्तहुए वरुणको चन्द्रमा देखकर शीतके समूहवाले सोमास्त्रको छोड़ता भया और वायव्य अस्त्रको भी छोड़ताभया १३४। १३५ तब चन्द्रमाके छोड़ेहुए हिमअस्त्र और वायव्य अस्त्रसे पीड़ित होकर सबदानव शिथिल होगये पैरोंसे चलनेको समर्थ नहींरहे हाथों से शस्त्र ग्रहण करने की सामर्थ्य नहींरही चन्द्रमाके प्रेरित शस्त्रों से दानवों के शरीर शीतसे ठिठरगये महिषासुर भी कुछ

गात्राण्यसुरसैन्यानामदह्यन्तसमन्ततः। महिषोनिष्प्रयत्नस्तु शीतेनाकम्पिताननः १३८
वक्षोवालम्व्यपाणिभ्यामुपविष्टोह्यधोमुखः। सर्वेतेनिष्प्रतीकारा दैत्याश्चन्द्रमसाजिता
१३९ रणेच्छांदूरतस्त्यक्त्वा तस्थुस्तेजीवितार्थिनः। तत्राब्रवीत्कालनेमिर्दैत्यान्कोपेनदी
पितः १४० भोभोःशृङ्गारिणश्शूराः !सर्वे! शस्त्रास्त्रपारगाः। एकैकोऽपिजगत्सर्वंशक्तस्तुल
यितुंभुजैः १४१ एकैकोऽपिक्षमोग्रस्तुं जगत्सर्वंचराचरम्। एकैकस्यापिपर्याप्ता नसर्वेऽपि
दिवौकसः १४२ कलांपूरयितुंयत्नात्षोडशीमतिविक्रमाः। किंप्रयाताश्चतिष्ठध्वं समरे
ऽमरनिर्जिताः १४३ नयुक्तमेतच्छूराणां विशेषादैत्यजन्मनाम्। राजाचान्तरितोऽस्माकं
तारकोलोकमारकः १४४ विरतानांरणादस्मात्क्रुद्धःप्राणान्हरिष्यति। शीतेनंनष्टश्रुत
यो भ्रष्टवाक्पाटवास्तथा १४५ मूकास्तदाभवन्दैत्या रणदशनपङ्क्तयः। तान्दृष्ट्वानष्ट
चेतस्कान् दैत्यान्शीतेनसादितान् १४६ मत्वाकालक्षमंकार्यं कालनेमिर्महासुरः। आ
श्रित्यदानवींमायां वितत्यस्वंमहावपुः १४७ पूरयामासगगनं दिशोविदिशएवच। निर्म
मेदानवेन्द्रेशः शरीरेभास्करायुतम् १४८ दिशश्चमाययाचण्डैः पूरयामासपावकैः। त
तोज्वालाकुलंसर्वं त्रैलोक्यमभवत्क्षणात् १४९ तेनज्वालासमूहेन हिमांशुरगमच्छमम्।
ततःक्रमेणविभ्रष्टशीतदुर्दिनमावभौ १५० तद्बलंदानवेन्द्राणां माययाकालनेमिनः।
तदृष्ट्वादानवानीकं लब्धसंज्ञंदिवाकरः १५१ उवाचारुणमुद्भ्रान्त कोपाल्लोकैकलो
चनः (दिवाकरउवाच) नयारुणरथंशीघ्रं कालनेमिरथोयतः १५२ विमर्दस्तत्रविषमो

न करसका शीतकेमारे मुख उसका कांपनेलगा १३६।१३८ हाथों से छातीकोपकड़कर और नीचेको मुखकरके बैठगया तात्पर्य्य यहहै कि चन्द्रमाके शीतसे सबदैत्य हारकर कुछ भी न करसके १३९ और रणकी इच्छाको दूरकरके जीवने की इच्छासे खड़ेहोगये तब उन दैत्यों से कालनेमिदैत्य क्रोध करबोला १४० हे शूरवीरो तुम सबशस्त्र अस्त्रों के पारगामी हो तुम एक २ अकेलेही सबजगत् के तोलने को हाथोंसे समर्थहो और सबसंसारके ग्रसनेको एक २ समर्थहो तुम्हारे एकके समान भी सब स्वर्ग नहींहै १४१।१४२ क्या तुम अत्यन्त पराक्रमवाले भी होकर युद्धमें सोलहवीं कलाको पूर्ण करनेके निमित्त खड़ेहो शूरवीर दानवोंको यहबात करनी योग्य नहीं है हमारा राजा तारकासुर दैत्यहै वह सबलोकों को अकेलाही मारसक्ताहै १४३।१४४ युद्धमेंसे भागतेहुए हमसब लोगोंको तारकासुर मारेगा जब कालनेमिने ऐसे वचनकहे उससमय शीतसे बधिर और मूकहुए दैत्य अपनी२ डाढ़ीको चबातेभये ऐसेशीतसे मरतेहुए दैत्योंको देखके कालनेमि दैत्य दानवी मायाके आश्रयहोकर अपनेशरीरको फैलाता भया १४५।१४७ अर्थात् अपनेशरीरको सबदिशाओंमें फैलाकर उसशरीर में हजारों सूर्य्योंको रचता भया सब दिशामाया के प्रभाव से अग्नि करके पूरित होगईं और सब जगत् क्षणमात्रमें अग्निसे व्याकुल होगया १४८। १४९ उस अग्निके तेजसे चन्द्रमा शान्त होगया और शीतवायुकाभी नाश होगया १५० कालनेमिसे बढ़ायेहुए दैत्यों के बलको सूर्य्य ने जानकर बड़े क्रोधसे अपने सारथी अरुण से कहा कि हे अरुण जहाँ कालनेमि दैत्य है वहाँ मेरे रथ

भविताशूरसंक्षयः। एषोऽजितःशशाङ्कोऽत्रतद्बलंबलमाश्रितम् १५३ इत्युक्तश्चोदयामा
सरथंगरुडपूर्वजः। प्रयत्नविधृतैरश्वैःसितचामरमालिभिः १५४ जगद्दीपोऽथभगवान्ज
ग्राहवितंतधनुः। शरांचद्वौमहाभागो दिव्यावाशीविषद्युती १५५ सञ्चारास्त्रेणसन्धाय
बाणमेकंससर्जसः। द्वितीयमिन्द्रजालेन योजितंप्रमुमोचह १५६ सञ्चारास्त्रेणरूपाणां
क्षणाच्चक्रेविपर्ययम्। देवानांदानवंरूपं दानवानाञ्चदैविकम् १५७ मत्वासुरान्स्वकानेव
जघ्नेघोरास्त्रलाघवात्। कालनेमीरुषाविष्टः कृतान्तइवसंक्षये १५८ कांश्चित्खड्गेनती
क्ष्णेन कांश्चिन्नाराचवृष्टिभिः। कांश्चिद्गदाभिर्घोराभिः कांश्चिद्घोरैःपरश्वधैः १५९
शिरांसिकेषाञ्चिदपातयच्च भुजान्रथान्सारथींश्चोग्रवेगः। कांश्चित्पिपेषाथरथस्यवेगा
त् कांश्चित्क्रुधाचोद्धतमुष्टिपातैः १६० रणेविनिहतान्दृष्ट्वा नेमिःस्वान्दानवाधिपः। रूपं
स्वनंप्रपद्यन्त ह्यसुराःसुरधर्षिताः १६१ कालनेमीरुषाविष्टस्तेषांरूपंनबुद्धवान्। ने
मिर्दैत्यस्तुतान्दृष्ट्वा कालनेमिमुवाचह १६२ अहंनेमिःसुरोनैव कालनेमे! विदस्वमाम्।
भवतामोहितेनाजौ निहताभूरिविक्रमाः १६३ दैत्यानांदशलक्षाणि दुर्जयानांसुरैरिह।
सर्वास्त्रवारणंमुञ्च ब्राह्ममस्त्रंत्वरान्वितः १६४ सतेनबोधितोदैत्यः सम्भ्रमाकुलचेतनः।

को लेचलो १५१ । १५२ अब हमारा भारी युद्ध होगा और शूरवीरों का नाश होगा कालनेमिने चन्द्रमाको जीत लियाहै १५३ यह वचन सुनतेही सूर्य्य का सारथी श्वेत चमरों की मालावाले घोड़ों से युक्त हुए रथको शीघ्रही हाँकताभया १५४ और सूर्य्य ने धनुषको धारण किया और धनुष में सर्पके समान दो विषवाले बाणों को लगाया १५५ प्रथम संचार अस्त्रका संधान करके एकबाण को चढ़ाया और दूसरा बाण इन्द्रजाल अस्त्रमे युक्त करके चढ़ाया १५६ संचार अस्त्र करके तो सब दैत्यों का रूप विपर्य्यय होगया अर्थात् देवताओं का रूपतो दानवोंके होगया और दानवों का रूप देवताओं के होगया १५७ जब यह दशा होगई तब वह दैत्य देवता जानकर अपनी सेना को आपही मारने लगे कालनेमि दैत्य बड़े क्रोधसे धर्मराज के समान क्षयकरने लगा किसीको तीक्ष्ण खड्गसे कितनोंही को बाणों की वर्षा से किन्हीं को घोरगदा से किसीको फरसोंसे १५८ । १५९ मारकर किसी के शिरको किसी की भुजाको किसीके रथको और किसी के सारथी को रथके वेग से पीसता भया किसी को क्रोधकरके मुष्टि प्रहारों के द्वारा मारता भया कालनेमि दैत्य जब अपने साथ के दैत्यों को इसप्रकार मारने लगा तब देवताओं से डरते हुए दैत्य अपने गर्जने के शब्द और और रूपों को प्रकट करते भये १६० । १६१ तब क्रोधके वशीभूत हुआ कालनेमि दैत्य उनके रूपको नहीं पहचानता भया उस समय वह नेमि दैत्य उन दैत्यों को देखकर कालनेमि से बोला कि हे कालनेमि मैं नेमि दैत्यहूं मुझको जानलो तुमने अज्ञानता से बहुत से दानव मारडाले १६२।१६३ और देवताओंने भी दशलाखबड़े शूर दैत्य मार डाले हैं सो तुम शीघ्रता से सब अस्त्रों के निवारण करने वाले ब्राह्म अस्त्रको छोड़ो १६४ उसके वचनों को सुनकर उसकीही प्रेरणासे कालनेमि दैत्य ब्राह्म अस्त्र से युक्त किये हुए बाणको छोड़ताभया तब तो उस अस्त्र के तेजसे सब चराचर जगत्

योजयामासबाणंहि ब्रह्मास्त्रविहितेनतु १६५ मुमोचचापिदैत्येन्द्रः सस्वयंसुरकण्टकः। ततोऽस्त्रतेजसाव्याप्तं त्रैलोक्यंसचराचरम् १६६ देवानांचाभवत्सैन्यं सर्वमेवभयान्वित म्। सञ्चरास्त्रश्चसंशान्तं स्वयमायोधनेबभौ १६७ तस्मिन्प्रतिहतेह्यस्त्रे भ्रष्टतेजादिवा करः। महेन्द्रजालमाश्रित्य चक्रेस्वांकोटिशस्तनुम् १६८ विस्फूर्जत्करसम्पात समाक्रा न्तजगत्त्रयम्। ततापदानवानीकं गतमज्जौघशोणितम् १६९ ततश्चावर्षदनलं सम न्तादतिसंहतम्। चक्षूंषिदानवेन्द्राणां चकारान्धानिचप्रभुः १७० गजानामगलन्मेदः पेतुश्चाप्यरवाभुवि। तुरगानिश्वसन्तश्च घर्मार्त्तारथिनोऽपिच १७१ इतश्चेतश्चस लिलंप्रार्थयन्तस्तृषातुराः। प्रच्छायविटपांश्चैव गिरीणांगह्वराणिच १७२ दावाग्निः प्रज्वलंश्चैवघोरार्चिर्दग्धपादपः। तोयार्थिनःपुरोदृष्ट्वा तोयंकल्लोलमालितम् १७३ पुर स्थितमपिप्राप्तुं नशेकुरवमर्दिताः। अप्राप्यसलिलंभूमौ व्यात्तास्यागतचेतसः १७४ तत्रतत्रव्यदृश्यन्त मृतादैत्येश्वराभुवि। रथेगजाश्चपतितास्तुरगाश्चसमापिताः १७५ स्थितावमन्तोधावन्तो गलद्रक्तवसासृजः। दानवानांसहस्राणि व्यदृश्यन्तमृतानितु १७६ संक्षयेदानवेन्द्राणां तस्मिन्महतिवर्तिते। प्रकोपोद्भूतताम्राक्षः कालनेमीरुषातुरः १७७ अभवत्कल्पमेघाभःस्फुरद्भूरिशतह्रदः।गम्भीरास्फोटनिह्रादजगद्धृदयघट्टकः १७८ प्रच्छाद्यगगनाभोगं रविमायांव्यनाशयत्। शीतंववर्षसलिलं दानवेन्द्रबलंप्रति १७९ दैत्यास्तांवृष्टिमासाद्य समाश्वस्तास्ततःक्रमात्। बीजांकुराइवाम्लानाः प्राप्यवृष्टिंधरात

व्याप्तहोगया देवताओंकी संपूर्ण सेना भय से व्याकुल होगई और वह सूर्य्य का संचार अस्त्र भी अपने आप शान्त होगया जब वह अस्त्र शान्त होगया तब सूर्य्यका भी तेज हत होगया उस समय सूर्य्य महेन्द्रजाल अस्त्र के आश्रय होकर अपने किरोड़ोंरूप करताभया १६५। १६८ खिलीहुई किरणों करके उनका तेज त्रिलोकी में व्याप्तहोगया दानवों की सेना में संताप होगया सबकी मज्जा और रुधिर दोनों सूखगये १६९ फिर चारोंओर अग्निकी वर्षा होने लगी और दानव अन्धे होग-ये१७० मोटे २ हाथियों के मांस जलनेलगे और सूख २ कर पृथ्वी पर गिरने लगे घाम से महापी-ड़ितहुए घोड़े श्वास लेने लगे और रथवाले भी श्वास लेने लगगये सब तृषा से पीड़ित होकर जहाँ तहां भ्रमण करतेहुए छायावाले वृक्षों की ओर गह्वर पर्व्वतों की इच्छा करते भये १७१। १७२ दावाग्नि से वृक्ष जलनेलगे लपटों के शब्दों से पीड़ितहुए दानव लोग आगे प्राप्तहुए भी जलके ग्रहण करने को समर्थ नहीं हुए जब उनको पृथ्वी में जल नहीं हाथ आया तब मुखों को फाड़े हुएही मरगये १७३। १७४ जहाँ तहाँ मरेहुए दानव दिखाई देनेलगे रथ में जुड़ेहुए हाथी और घोड़े यह भी गिरनेलगे १७५ उनके मुखों से रुधिर की धारा निकली और हज़ारों मरेहुए दानव दीखे जब इसप्रकार से उन सब महान् दानवों का क्षय होनेलगा तब क्रोध से लाल नेत्रोंवाला कालनेमि दैत्य प्रलय के मेघ के समान रूपको धारण करके जगत् के हृदय के फोड़नेवाले वज्र के समान शब्दको करता भया १७६। १७८ आकाशमें अपने शरीरको फैलाकर सूर्य्यकी माया

ले १८० ततःसमेघरूपीतु कालनेमिर्महासुरः । शस्त्रवृष्टिंववर्षोग्रां देवानीकेषुदुर्जयः
१८१ तयावृष्ट्याबाध्यमाना दैत्येन्द्राणांमहौजसाम् । गतिंकाञ्चनपश्यन्तो गावःशीतार्दि
ताइव १८२ परस्परंव्यलीयन्त पृष्ठेषुव्यस्त्रपाणयः । स्वेषुवाधेव्यलीयन्त गजेषुतुरगे
षुच १८३ रथेषुत्वमरास्तास्तत्रतत्रानिलिल्यिरे । अपरेकुञ्चितैर्गात्रैः स्वहस्तापिहिता
ननाः १८४ इतश्चेतश्चसम्भ्रान्ता बभ्रमुर्वैदिशोदश । एवंविधेतुसंग्रामे तुमुलेदेवसंक्षये
१८५ दृश्यन्तेपतिताभूमौ शस्त्रभिन्नाङ्गसन्धयः । विभुजाभिन्नमूर्धानस्तथाच्छिन्नोरुजा
नवः १८६ विपर्यस्तरथासङ्घा निष्पिष्टध्वजपंक्तयः । निर्भिन्नाङ्गैस्तुरङ्गैस्तुगजैश्चाचलसन्नि
भैः १८७ श्रुतरक्तहृदैर्भूमिर्विकृताऽविकृताबभौ । एवमाजौवलीदैत्यः कालनेमिर्महासुरः
१८८ जघ्नेमुहूर्तमात्रेण गन्धर्वाणांदशायुतम् । यक्षाणांपञ्चलक्षाणि रक्षसामयुतानिषट्
१८९ त्रीणिलक्षाणिजघ्नेस किन्नराणांतरस्विनाम् । जघ्नेपिशाचमुख्यानां सप्तलक्षाणिनि
र्भयः १९० इतरेषामसंख्याताः सुरजातिनिकायिनाम् । जघ्नेसकोटीःसंक्रुद्धश्चित्रास्त्ररण
कोविदः १९१ एवंपरिभवेभीमे तदात्वमरसंक्षये । संक्रुद्धावश्विनौदेवौ चित्रास्त्रकवचो
ज्ज्वलौ १९२ जघ्नतुःसमरेदैत्यं कृतान्तानलसन्निभम् । तमासाद्यरणेघोरमेकैकःषष्टिभिः
शरैः १९३ जघ्नेमर्मसुतीक्ष्णाग्रैरसुरम्भीमदर्शनम् । ताभ्यांबाणप्रहारैःस किञ्चिदायस्त

का नाशकरताभया तब सूर्य्यभी दैत्यकीसेनामें शीतलजलकी वर्षा करतेभये १७९ उसवर्षाको प्राप्त होकर सब दैत्य महादुःखित होगये और वर्षासे ऐसे दबगये जैसे कि पृथ्वी में उगतेहुए बीजोंके अंकुर वर्षाहोनेसे दबजाते हैं १८० तबवह मेघरूपी कालनेमि दैत्य देवताओंकीसेना में दारुण शस्त्रों की वर्षाकरनेलगा १८१ उनशस्त्रोंकी वर्षासे पीड़ितहुए देवता दैत्योंका कुछभी न करसके और ऐसे होगये जैसेकि शीतसे पीड़ितहुई गौदुःखित होरहीहों १८२ फिर शस्त्रोंकोत्यागकर परस्परमें लिपट २ कर अपने २ रथ हाथी और घोड़े आदिपर चिपकतेभये जहाँ तहाँ सब देवतालोग छिपगये कितनेही देवता शरीरको सकोड़कर हाथोंसे अपना २ मुखढकतेभये १८३। १८४ फिर महादुःखीहोकर देवता जहाँ तहाँ भ्रमतेभये ऐसेप्रकारके युद्धहोनेसे बहुतसे देवताओंका नाशहोगया शस्त्रोंसेकटे अंग और भुजावाले फूटेहुए मस्तक कटीहुई जंघा और टूटेहुए घोंटूवाले देवता पृथ्वी में पड़ेहुए दृष्ट पड़े १८५।१८६ ध्वजाओंकी पंक्तिटूटगईं रथऔंधे गिरे टूटेहुए अंगवाले घोड़े और हाथीभी पृथ्वी में गिरतेभये १८७ इनसब जीवोंके लोहूसे भरीहुई पृथ्वी महाविकराल दीखनेलगी इसप्रकारसे कालनेमि महाबली दैत्य युद्धमें अपनाबल करताभया १८८ कि एकमुहूर्त्तमात्रमेंही दशहज़ार गन्धर्व पांचलाख यक्ष साठहज़ार राक्षस तीनलाख बड़ेबली गन्धर्व और सातलाख पिशाचोंकोनिर्भयहोकर मारताभया १८९।१९० इसके विशेष बहुतसे असंख्य देवताओंकोभी वह बलवान् दैत्य मारताभया इसरीतिसे जब देवताओंका क्षयहोगया तब विचित्र उज्ज्वल कवचको पहरेहुए अश्विनीकुमारजी महाक्रोध करतेभये १९१।१९२ और अग्नि के समान कान्तिवाले उस कालनेमि दैत्यको एक२जना साठ२बाणों से वेधताभया इसप्रकारसे वह दोनों अश्विनीकुमार मर्मस्थलों में बाण मारनेलगे तब

चेतनः १९४ जग्राहचक्रमष्टारन्तैलधौतंरणान्तकम्। तेनचक्रेणसोऽश्विभ्याश्छिच्छेदर थकूबरम् १९५ जग्राहाथधनुर्दैत्यःशरांश्चाशीविषोपमान्। ववर्षभिषजोर्मूर्ध्नि सञ्छाद्या काशगोचरम् १९६ तावप्यस्त्रैश्चिच्छिदतुः शितैस्तैर्दैत्यसायकान्। तच्चकर्मतयोर्दृष्ट्वावि स्मितःकोपमाविशत् १९७ महतासतुकोपेन सर्वायोमयसादनम्।जग्राहमुद्गरंभीमं काल दण्डविभीषणम् १९८ सततोभ्राम्यवेगेन चिक्षेपाश्विरथंप्रति। तन्तुमुद्गरमायान्तमा लोक्याम्बरगोचरौ १९९ त्यक्त्वारथौतुतौवेगा दाप्लुतौतरसाश्विनौ। तौरथौसतुनिष्पिष्य मुद्गरोऽचलसन्निभः २०० दारयामासधरणीं हेमजालपरिष्कृतः। तस्यकर्माश्विनौदृष्ट्वा भि षजौचित्रयोधिनौ २०१ वज्रास्त्रन्तुप्रकुर्वातेदानवेन्द्रनिवारणम्। ततोवज्रमयंवर्षम्प्रावर्त दतिदारुणम् २०२ घोरवज्रप्रहारैस्तुदैत्येन्द्रःसपरिष्कृतः। रथोध्वजोधनुश्चक्रंकवचंचा पिकाञ्चनम् २०३ क्षणेनतिलशोजातंसर्वसैन्यस्यपश्यतः। तद्दृष्ट्वादुष्करंकर्मसोऽश्विभ्यां भीमविक्रमः २०४ नारायणास्त्रंबलवान्मुमोचरणमूर्द्धनि। वज्रास्त्रंशमयामासदानवेन्द्रोऽ स्त्रतेजसा२०५तस्मिन्प्रशान्तेवज्रास्त्रेकालनेमिरनन्तरम्। जीवग्राहंग्राहयितुमश्विनौतुप्र चक्रमे २०६तावश्विनौरणाद्भीतौसहस्राक्षरथंप्रति। प्रयातौवेपमानौतुयदाशस्त्रविवर्जितौ २०७तयोरनुगतोदैत्यःकालनेमिर्महाबलः। प्राप्येन्द्रस्यरथंक्रूरोदैत्यानीकपदानुगः२०८ तंदृष्ट्वासर्वभूतानिवित्रेसुर्विक्लवानितु। दृष्ट्वादैत्यस्यतत्क्रौर्यंसर्वभूतानिमेनिरे २०९ पराज

उनके बाणोंसे दुःखको प्राप्तहुआ कालनेमि दैत्य आठधारवाले चक्रको लेकर अश्विनीकुमारोंके रथ के जुएको छेदन करताभया फिर धनुषको और सर्पकेसमान विषवाले बाणोंको ग्रहणकर अश्विनी-कुमार वैद्यों के मस्तक में मारताभया और असंख्य बाणोंसे आकाशको छा देताभया १९३।१९६ फिर वह अश्विनीकुमारभी अपने तीक्ष्णबाणों करके उस दैत्यके बाणोंको छेदनकरतेभये तबउनके कर्मको देखकर वह दैत्य परम आश्चर्य्यको प्राप्त होता भया १९७ और बड़ा क्रोधकरके कालदंड के समान भयंकरलोहे के मुद्गरको लेकर १९८ औरबड़े वेगसे घुमाकर अश्विनीकुमारों के रथके सन्मुख फेंका तब आतेहुए मुद्गरको देखकर शीघ्रही रथसे कूदआये फिर वह मुद्गर रथों का चूर्णकरके पृथ्वी कोभी पीसताभया,ऐसे उसके पराक्रमको देखकर अश्विनीकुमार उसदानवके ऊपर वज्राख्य अस्त्र को छोड़तेभये और उसके ऊपर वज्रों की वर्षा होने लगी १९९।२०२ उस वज्रोंकी वर्षा के प्रहारसे दैत्यका तिरस्कारहोगया रथ,ध्वजा, धनुष,चक्र,और सुवर्णका कवच इनसबके,टुकड़े होगये इस प्रकार,सब सेनाके देखतेहुए उसका निरादरहोगया उस समय वह दैत्य नारायणास्त्रकोछोड़-ताभया और उस नारायणास्त्रके तेज करके वज्रास्त्रको शान्त करताभया २०३। २०५ जब वह वज्रास्त्र शान्त होगया तब वह कालनेमि दैत्य उन अश्विनीकुमारोंके जीवको अस्त्रसे ग्रहण कर नेलगा तबशस्त्रोंसे रहितहोकर कांपते हुए अश्विनीकुमार इन्द्रकी शरणमें जातेभये २०६।२०७ तब वहक्रूर दैत्य दानवोंकी सेनासे युक्त होकर इन्द्रके रथके समीप जाताभया उस दैत्य को देखकर सबभूत त्रास मानतेभये और सब लोको को क्षय करनेवाली इन्द्रकी पराजयको अनुमान करते

यंमहेन्द्रस्य सर्वलोकक्षयावहम्। चेलुःशिखरिणोमुख्याः पेतुरुल्कानभस्तलात् २१०
जगर्जुर्जलदादिक्षु ह्युद्धताश्चमहार्णवाः। तांभूतांवकृतिंदृष्ट्वा भगवान्गरुडध्वजः २११
व्यबुध्यताहिपर्यङ्के योगनिद्रांविहायतु। लक्ष्मीकरयुगाजस्रलालितांघ्रिसरोरुहः २१२
शरदम्बरनीलाब्ज कान्तदेहच्छविर्विभुः।कौस्तुभोद्भासितोरस्कोकान्तकेयूरभास्वरः २१३
विमृश्यसुरसंक्षोभं वैनतेयंसमाह्वयत्। आहूतेऽवस्थितेतस्मिन् नागावस्थितवर्ष्म
णि २१४ दिव्यनानास्त्रतीक्ष्णार्चिरारुह्यागात्सुरान्स्वयम्। तत्रापश्यतदेवेन्द्रमभिद्रु
तमभिद्रुतैः २१५ दानवेन्द्रैर्नवाम्भोदसच्छायैःपौरुषोत्कटैः। प्रयात्वापुरुषैर्घोरै रमा
ग्येर्धनशालिभिः २१६ परित्राणायाशुकृतं सुक्षेत्रेकर्म्मनिर्मलम्। अथापश्यन्तदैतेया वि
यतिज्योतिमण्डलम् २१७ स्फुरन्तमुदयाद्रिस्थं सूर्यमुष्णत्विषाइव। प्रभावंज्ञातुमिच्छ
न्तो दानवास्तस्यतेजसः २१८ गरुत्मन्तमपश्यन्त कल्पान्तानलसन्निभम्। तमास्थि
तश्चमेघौघद्युतिमक्षयमच्युतम् २१९ तमालोक्यासुरेन्द्रास्तु हर्षसंपूर्णमानसाः। अयंवै
देव! सर्वस्त्रञ्जितेऽस्मिन्निर्जितासुराः २२० अयंसदैत्यचक्राणां कृतान्तःकेशवोऽरिहा।
एनमाश्रित्यलोकेषु यज्ञभागभुजोऽमराः २२१ इत्युक्त्वादानवाःसर्वे परिवार्यसमन्ततः।
निजघ्नुर्विविधैरस्त्रैस्तेतमायान्तमाहवे २२२ कालनेमिप्रभृतयो दशदैत्यामहारथाः।
षष्ट्याविव्याधबाणानां कालनेमिर्जनार्दनम् २२३ निमिःशतेनबाणानां मथनोऽशीतिभिः

भये अर्थात् उनको इन्द्रकी पराजय देखपड़ी पर्व्वत गिरनेलगे आकाशसे तारेटूटनेलगे २०८। २१० चारों दिशाओं में मेघगर्जतेभये समुद्रभी क्षोभित होकर गर्जना करतेभये इसप्रकारसे सब भूतोंको दुःखित देखकर गरुड़ध्वज विष्णु भगवान् शेषशय्याकी योगनिद्रा को त्यागदेतेभये अर्थात् लक्ष्मी के हाथों से ललित स्पर्शयुक्त नीलमणिके समान शरीरकी कान्ति वाले कौस्तुभमणिसे विभूषित हृदय उत्तम बाजूबन्दोंसे सुशोभित विष्णुभगवान् उसकालनेमि दैत्यके क्रोधको विचारकर गरुड़को बुलाते भये और अनेक दिव्यअस्त्रोंके समान कान्ति वाले भगवान उस गरुडपर चढ़कर युद्धमें आवते भये और दानवोंसे भगायेहुए इन्द्रको देखतेभये २११।२१५ फिर मेघवर्ण दानवोंसे रुकेहुए इन्द्रकी रक्षा विष्णुभगवान् ऐसेकरतेभये जैसेकि अच्छे पुण्यक्षेत्रपर कियाहुआ सुकर्म परलोकमें रक्षाकरताहै,इसके अनन्तर सब दैत्य आकाशमें विष्णुभगवान् के तेजके मंडलको ऐसा देखतेभये जैसे कि उदयाचल पर्व्वतपर सूर्य्य उदय होताहै ऐसे उसतेजके प्रभावको जाननेकी सबदैत्य इच्छा करतेभये २१६।२१८ प्रलयाग्निके समान कान्तिवाले गरुड़को और उसपर आरूढ़हुए मेघवर्ण भगवान्को वहसब दैत्य देखतेभये २१९ उसको देखकर सब दैत्य प्रसन्नहोकर यह कहतेभये कि यह विष्णुदेवहै इसीअकेलेके जीतनेसे सबदेवताभी जीतेजायंगे यह दैत्योंका नाशकरनेवालाहै इसीके आश्रयमें होकर सब देवता त्रिलोकीमें यज्ञोंको भोगतेहैं २२०।२२१ ऐसाकहकर सबदानव चारोंओर खड़ेहोकर उन आवतेहुए विष्णु भगवानको अनेकप्रकारके शस्त्रोंसे मारनेलगे२२१कालनेमि आदिक दश महाबली दानव युद्ध करनेलगे कालनेमिने साठ ६० बाण,नेमिनेसौ१००मथनने अस्सी८० बाण, जंभकने सत्तर७०बाण

शरैः। जम्भकश्चैवसप्तत्या शुम्भोदशभिरेवच २२४ शेषादैत्येश्वराःसर्वेविष्णुमेकैकशः
शरैः। दशभिश्चैवयन्तास्तेजघ्नुःसगरुडंरणे २२५ तेषाममृष्यतत्कर्म्मविष्णुर्दानवसूद
नः। एकैकंदानवंजघ्ने षड्भिःषड्भिरजिह्मगैः २२६ आकर्णकृष्टैर्भूयश्च कालनेमिस्त्रिभिः
शरैः। विष्णुंविव्याधहृदये क्रोधाद्रक्तविलोचनः २२७ तस्याःशोभन्ततेबाणा हृदयेतप्तका
ञ्चनाः। मयूखानीवदीप्तानि कौस्तुभस्यस्फुटत्विषः २२८ तैर्बाणैःकिञ्चिदायस्तो हरिर्जग्राह
मुद्गरम्। सततंभ्राम्यवेगेन दानवायव्यसर्जयत् २२९ दानवेन्द्रस्तमप्राप्तं वियत्येवशितैः
शरैः। चिच्छेदतिलशःक्रुद्धो दर्शयन्पाणिलाघवम् २३० ततोविष्णुःप्रकुपितःप्रासञ्जग्राह
भैरवम्। तेनदैत्यस्यहृदयं ताडयामासगाढतः २३१ क्षणेनलब्धसंज्ञस्तु कालनेमिर्महा
सुरः। शक्तिञ्जग्राहतीक्ष्णाग्रां हेमघण्टाट्टहासिनीम् २३२ तयावामभुजंविष्णोर्बिभेददि
तिनन्दनः। भिन्नःशक्त्याभुजस्तस्य स्नुतशोणितआबभौ २३३ पद्मरागमयेनेव केयूरेण
विभूषितः। ततोविष्णुःप्रकुपितो जग्राहविपुलन्धनुः २३४ सप्तदशचनाराचांस्तीक्ष्णान्
मर्मविभेदिनः। दैत्यस्यहृदयंषड्भिर्विव्याधचत्रिभिःशरैः २३५ चतुर्भिःसारथिञ्चास्यध्व
जञ्चैकेनपत्रिणा। द्वाभ्यांज्याधनुषीचापि भुजंसव्यञ्चपत्रिणा २३६ सविद्धोहृदयेगाढं दैत्यो
हरिशिलीमुखैः। स्नुतरक्तारुणप्रांशुः पीडाकुलितमानसः २३७ चकम्पेमारुतेनेव नोदि
तःकिंशुकद्रुमः। तमाकम्पितमालक्ष्य गदांजग्राहकेशवः २३८ ताञ्चवेगेनचिक्षेपकालने

शुंभने दशवाण, २२३। २२४ और अन्यसब दैत्योंने एक २ बाण विष्णुके मारा और दशबाण गरुड़के मारे २२५ उनदैत्योंके उसकर्मको नसहतेहुए विष्णु भगवान् एक २ को छः२ बाणोंसे बेधतेभये २२६ फिर कालनेमि दैत्य अपने तीनबाण कानपर्य्यन्त धनुषको खैंचकर विष्णु भगवान्के हृदय में मारताभया २२७ वहबाण विष्णु भगवान्की छाती में ऐसे शोभित हुए मानो कौस्तुभ मणिकी किरणेंही खिलरही हैं २२८ उनबाणोंसे कुछेकही त्रस्तहुए विष्णु भगवान् मुद्गरको ग्रहणकर निरन्तर घुमाके दैत्यके मारतेभये २२९ तबवह दानवभी आवतेहुए मुद्गरको आकाशमें देखकर अपने तीक्ष्ण बाणोंसे खंड २ कर अपनी भुजाओंका बल दिखाताभया २३० फिर विष्णु भगवान् क्रोधकरके भालेको ग्रहणकर उसके द्वारा दैत्यकी छातीको बेधतेभये २३१ फिर कालनेमि थोड़ेही समयमें सचेतहो अपनी तीक्ष्णशक्तिको ग्रहण करताभया २३२ और उसशक्तिसे विष्णुकी बायीं भुजाको काटनेलगा उस कटतीहुई भुजामें रुधिरकी ऐसीशोभा होतीभई मानों भुजपर पद्मराग मणिके बाजूबन्दकी शोभाहोरही है इसके पीछे विष्णु भगवान् क्रोधकरके धनुषको ग्रहणकरते भये उस धनुषमें मर्मभेदी सत्रह बाणोंको लगाते भये—उनमेंसे छः बाणोंकरके दैत्यके हृदयकोहत सात बाणोंसे उसके सारथीको मार एकबाणसे ध्वजाको दो बाणोंसे धनुषको काटकर एकबाणसे उसकी बायींभुजाको बेधतेभये उस समय वहदैत्य पीड़ासे महाव्याकुल होताभया २३३। २३७ और जैसेकि वायुसे सूखावृक्ष हिलताहै उसी प्रकार वहदैत्य काँपने लगा उस काँपतेहुएको देखकर विष्णु भगवान् गदाको ग्रहण करते भये २३८ और कालनेमिके रथके सन्मुख फेंकतेभये वह महाभारी गदा कालनेमि के

मिरथंप्रति। सापपातशिरस्युग्रा विपुलाकालनेमिनः २३९ सञ्चूर्णितोत्तमाङ्गस्तु निष्पिष्ट मुकुटोऽसुरः। स्रुतरक्तौघरन्ध्रस्तु स्रुतधातुरिवाचलः २४० प्रापतत्स्वेरथेभग्नेविसंज्ञः शिष्टजीवितः। पतितस्यरथोपस्थे दानवस्याच्युतोऽरिहा २४१ स्मितपूर्वमुवाचेदंवाक्यं चक्रायुधःप्रभुः। गच्छासुर! विमुक्तोऽसि साम्प्रतंजीवनिर्भयः २४२ ततःस्वल्पेनकालेन अहमेवतवान्तकः। एतच्छ्रुत्वावचस्तस्य सारथिःकालनेमिनः २४३ अपवाह्यरथंदूरम नयत्कालनेमिनः। इति श्रीमत्स्यपुराणेदेवासुरसंग्रामेकालनेमिपराजयोनामएकोनपञ्चा शदधिकशततमोऽध्यायः १४९॥

(सूत उवाच) तंदृष्ट्वादानवाःक्रुद्धाश्चेरुःस्वैस्वैर्बलैर्वृतः। सरघाइवमाक्षीक हरणेसर्व तोदिशम् १ कृष्णचामरजालाढ्ये सुधाविरचितांकुरे। चित्रपक्षपताकेतु प्रभिन्नकरटामु खे २ पर्वताभेगजेभीमे मदस्राविणिदुर्द्धरे। आरुह्याजौनिमिर्दैत्यो हरिंप्रत्युद्ययौब ली ३ तस्यासन्दानवारौद्रा गजस्यपदरक्षिणः। सप्तविंशतिसाहस्राः किरीटकवचोज्ज्व लाः ४ अश्वारूढश्चमथनो जम्भकश्चोष्ट्रवाहनः। शुम्भोऽपिविपुलंमेषं समारुह्याव्रज द्रणम् ५ अपरेदानवेन्द्रास्तु यत्तानानास्त्रपाणयः। आजघ्नुःसमरेक्रुद्धा विष्णुमक्लिष्टका रिणम् ६ परिघेणनिमिर्दैत्यो मथनोमुद्गरेणतु। शुम्भःशूलेनतीक्ष्णेन प्रासेनग्रसनस्तथा ७ चक्रेणमहिषःक्रुद्धो जम्भःशक्त्यामहारणे। जघ्नुर्नारायणंसर्वे शेषास्तीक्ष्णैश्चमार्गणैः ८

मस्तकमें लगी उसके लगतेही दैत्यके मस्तकका चूर्ण होगया मुकुटटूटा और जब बहुतसारुधिर नि- कला उस समय उसकी ऐसीशोभा होतीभयी जैसेकि पर्व्वतमेंसे गेरू निकलताहै और वहदैत्य अ- चेत होकर अपने टूटेरथमें गिरताभया केवल जीवमात्र शेष रहगया तब उस पड़ेहुए कालनेमिसे विष्णुभगवान् बोले कि हे दैत्य अब तू जीवसे निर्भय होकर चलाजा अब छुटगयाहै फिर थोड़ेही कालमें मेरे हाथसे तेरीमृत्यु है ऐसे वचनको सुनकर कालनेमि दैत्य अपने सारथी से लेचलने को कहताभया तब वह सारथी उसको दूर लेजाता भया २३९। २४३ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीका- यांदेवासुरसंग्रामेकालनेमिपराजयोनामएकोनपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १४९॥

सूतजी बोलेकि उन विष्णु भगवान्को देखकर सब दैत्य पराक्रमों से युक्त होकर ऐसे आते भये जैसे मुहारके छत्तेके तोड़ने वाले पुरुषके ऊपर मुहारकी मक्खी आकर चिपट जाती हैं १ उस स- मय कृष्णचंवर जाली और विचित्र ध्वजाओं से युक्त कटेहुए काककी ध्वजासे भयंकर मद गिरने वाले हाथीपर चढ़ाहुआ निमि दैत्य रणमें आया २।३ उस दानवके हाथीकी रक्षाकरने वाले सत्ता- ईसहजार दानवभी आतेभये ४ मथन दैत्य अश्वपर चढ़ कर आया जंभक ऊंटपर और शुंभ दैत्य बड़े मेढ़ेपर चढ़कर युद्ध करनेको आया ५ इनके विशेष अन्य दैत्यभी सावधान होकर हाथोंमें अ- नेक प्रकारके शस्त्रधारणकिये क्रोधकरके विष्णुभगवान् पर प्रहारकरने लगे ६ निमि दैत्य मूसलसे मथन दैत्य मुद्गरसे, शुंभ तीक्ष्ण त्रिशूलसे, ग्रसन भालेसे, और महाक्रोध करनेवाला जंभशक्तिसे प्रहारकरताभया इनके विशेष अन्य सब दानव विष्णुभगवान्को पैने २ बाणोंसे पीड़ा देने लगे उन

तान्यस्त्राणिप्रयुक्तानि शरीरंविविशुर्हरेः । गुरूक्तानुपदिष्टान्वै सच्छिष्यस्यश्रुतानिव ६
असम्भ्रान्तोरणेविष्णु रथंजग्राहकार्मुकम् । शरांश्चाशीविषाकारांस्तैलधौतानजिह्मगा
न् १० ततोऽभिसन्ध्यदैत्यांस्तानाकर्णाकृष्टकार्मुकः । अभ्यद्रवद्रणेक्रुद्धो दैत्यानीकेतुपौ
रुषान् ११ निमिंविव्याधविंशत्या बाणानामग्निवर्चसाम् । मथनंदशभिर्बाणैः शुम्भंपञ्च
भिरेवच १२ एकेनमहिषंक्रुद्धो विव्याधोरसिपत्रिणा । जम्भंद्वादशभिस्तीक्ष्णैः सर्वांश्चै
कैकशोऽष्टभिः १३ तस्यतल्लाघवंदृष्ट्वा दानवाःक्रोधमूर्च्छिताः । नर्दमानाःप्रयत्नेन चक्रुर
त्यद्भुतंरणम् १४ चिच्छेदाहधनुर्विष्णोर्निमिर्भल्लेनदानवः । सन्धयमानंशरंहस्ते चि
च्छेदमहिषासुरः १५ पीडयामासगरुडं जम्भस्तीक्ष्णैस्तुसायकैः । भुजंतस्याहनद्गाढं शु
म्भोभूधरसन्निभः १६ छिन्नेधनुषिगोविन्दो गदांजग्राहभीषणाम् । तांप्राहिणोत्सवेगेनम
थनायमहाहवे १७ तामप्राप्तांनिमिर्बाणैश्चिच्छेदतिलशोरणे । तांनाशमागतांदृष्ट्वाहीनाग्रे
प्रार्थनामिव १८ जग्राहमुद्गरंघोरं दिव्यरत्नपरिष्कृतम् । तंमुमोचाथवेगेन निमिमुद्दिश्यदा
नवम् १९ तमायान्तंवियत्येव त्रयोदैत्यान्यवारयन् । गदयाजम्भदैत्यस्तु ग्रसनःपट्टिशेनतु
२० शक्त्याचमहिषोदैत्यः स्वपक्षजयकांक्षया । निराकृतंतमालोक्य दुर्जनेप्रणयंयथा २१
जग्राहशक्तिमुग्राग्रामष्टघण्टोत्कटस्वनाम् । जम्भायतांसमुद्दिश्य प्राहिणोद्रणभीषणः २२
तामम्बरस्थांजग्राह गजोदानवनन्दनः । गृहीतांतांसमालोक्य शिक्षानिवविवेकिभिः २३

के वह सबशस्त्र विष्णुभगवान्के शरीरमें ऐसे प्रविष्टहोतेभये जैसे कि उत्तम शिष्यके कानोंमें गुरूके उपदेश प्रवेशकर जाते हैं ७।९ तब विष्णुभगवान्भी स्वस्थचित्त होकर अपने धनुषको ग्रहण करते भये १० धनुषबाणको लेकर विष्णुजी क्रोधकरके दैत्योंकी सेनाके सन्मुख भाजतेभये वहाँजाकर निमि दैत्यके बीसबाण,मथनके दशबाण और शुंभके पांचबाण मारतेभये ११।१२ ऐसे विष्णुभगववान् उनकोमारकर क्रोधकरके एकबाणसे महिषासुरको बारहबाणसे जंभ दैत्यको और अन्यसब दैत्योंका एक २ बाणसे मारा १३इसप्रकार विष्णुभगवान्के हाथके पराक्रमको देखकर सब दैत्य गर्जनाकर तेभये और बड़े यत्नसे अत्यन्त युद्धकरनेलगे और मारेक्रोधके मूर्च्छितहोतेभये १४ उस समय निमि दैत्य विष्णुके धनुषको भालेसेतोड़ देताभया और चढ़ाये हुए बाणको महिषासुरकाटताभया १५ जंभदैत्य पैने २ बाणोंसे गरुड़को पीड़ादेताभया शुंभदैत्यगरुड़की भुजाको छेदनकरताभया १६ जब विष्णुके धनुषका छेदनहोगया तब विष्णु गदाको लेकर बहुत भ्रमाकर मथन दैत्यके मारतेभये १७ तब उससमय निमिदैत्य उसगदाको अपने बाणोंकरके खंड२ करदेताभया इसहेतुसे वहगदा ऐसे नष्टहोगई जैसेकि हीनपुरुषके आगे प्रार्थनानष्टहोजाती है १८ फिर विष्णुभगवान् दिव्यरत्नसे जटित घोरमुद्गरकोलेकर बड़े वेगपूर्वक निमि दैत्यके मारतेभये १९ उससमय आकाशमें आतेहुए उस मुद्गरको तीनदैत्य निवारणकरतेभये जंभने गदासे ग्रसन दैत्यने पट्टिश अस्त्र से और महिषासुरने शक्तिकरके उसमुद्गरकानाश ऐसेकरदिया जैसेकि दुर्जनके आगेविनयनष्टहोजाती है नष्टहुएमुद्गरका देखकर विष्णुभगवान् घंटोंके शब्दयुक्त उग्रशक्तिको ग्रहणकर जंभदैत्यके मारतेभये २०। २२ तब

दृढंभारसहंसारमन्यदादायकार्मुकम्। रौद्रास्त्रमभिसन्धाय तस्मिन्बाणंमुमोचह २४ त
तोऽस्त्रतेजसासर्वं व्याप्तंलोकंचराचरम्। ततोबाणमयंसर्वमाकाशंसमदृश्यत २५ भूर्दिशो
विदिशश्चैव बाणजालमयाबभुः। दृष्ट्वातदस्त्रमाहात्म्यं सेनानीर्ग्रसनोऽसुरः २६ ब्राह्ममस्त्र
ञ्चचारासोसर्वास्त्रविनिवारणम्। तेनतत्प्रशमंयातं रौद्रास्त्रंलोकघस्मरम् २७ अस्त्रेप्रति
हतेतस्मिन् विष्णुर्दानवसूदनः। कालदण्डास्त्रमकरोत् सर्वलोकभयङ्करम् २८ सन्धीय
मानेतस्मिंस्तु मारुतःपरुषोववौ। चकम्पेचमहीदेवी दैत्याभिन्नधियोऽभवन् २९ तद
स्त्रमुग्रंदृष्ट्वातु दानवायुद्धदुर्मदाः। चक्रुरस्त्राणिदिव्यानि नानारूपाणिसंयुगे ३० नाराय
णास्त्रंग्रसनोगृहीत्वा चक्रंनिमिःस्वास्त्रवरंमुमोच। एकैकमस्त्रञ्चचकारजम्भस्तत्कालद
ण्डास्त्रनिवारणाय ३१ यावन्नसन्धानदशांप्रयान्ति दैत्येश्वराश्चास्त्रनिवारणाय। तावत्
क्षणेनवजघानकोटीर्दैत्येश्वराणां सगजान्सहाश्वान् ३२ अनन्तरंशान्तमभूत्तदस्त्रं दैत्या
स्त्रयोगेनतुकालदण्डम्। शान्तंतदालोक्यहरिःस्वशस्त्रं स्वविक्रमेमन्युपरीतमूर्तिः ३३
जग्राहचक्रंतपनायुताभमुग्रारसात्मानमिवाद्वितीयम्। चिक्षेपसेनापतयेऽभिसन्ध्य कण्ठ
स्थलंवज्रकठोरमुग्रम् ३४ चक्रंतदाकाशगतंविलोक्य सर्वात्मनादैत्यवराःस्ववीर्यैः। नाश
क्नुवन्वारयितुंप्रचण्डं दैवंयथाकर्म्ममुधाप्रपन्नम् ३५ तमप्रतर्क्यंजनचक्रजर्ज्यंचक्रं पपात
ग्रसनस्यकण्ठे। द्विधातुकृत्वाग्रसनस्यकण्ठं तद्रक्तधारारुणघोरनाभि। जगामभूयोऽपि

आकाशमें आतीहुई शक्तिको देखकर कुंजर दैत्य ऐसे ग्रहण करताभया जैसेकि विवेकी पुरुष शिक्षाको ग्रहण करलेते हैं जबवहशक्ति उसने ग्रहण करली तबउत्तम और दृढ़ अन्यबाणको ग्रहण करके अपने धनुषको रौद्रास्त्रसे युक्तकिया और उसबाणको चढ़ाकर छोड़ा २३। २४ उसअस्त्रके तेजकरके सब चराचर जगत् व्याप्त होगया और संपूर्ण आकाश बाणोंसे पूरितहोगया २५ सबभूमि दिशा विदिशा भी बाणजालोंसे आवृतहोगईं तब सेनाका अधिपति ग्रसन दैत्ययुद्धमें आकर अपने ब्रह्मास्त्रको छोड़ताभया उस ब्रह्मअस्त्रकरके विष्णुके रौद्रास्त्रका नाशहोगया २६। २७ जब रौद्रास्त्र नष्ट होगया तब विष्णुभगवान् सबलोकों के भयकारी कालदंडअस्त्र को छोड़ने भये २८ जब कालदंडास्त्र छोड़ागया उससमय बड़ेकठोर वायुचलने लगी पृथ्वी कांपनेलगी और सबदैत्योंकी बुद्धि नष्टहोगई २९ उस भयंकर अस्त्रको देखकर दुष्ट मदवाले दानव अनेक रूपवाले दिव्य २ अस्त्रोंको छोड़ते भये ३० ग्रसनने नारायणास्त्रको निमिने अपने अस्त्रको और उसीसमय जंभदैत्यने कालदंडअस्त्रके दूरकरनेको अपना २ अस्त्र छोड़ा ३१ जबतक उनदैत्योंने अपने २ अस्त्रोंका संधान नहीं कियाथा कि उसीकालमें क्षणभरहीमें हस्ती और अश्वोंसमेत किरोड़ों दैत्योंका नाशहोगया ३२ इसके पीछे जब दैत्योंके अस्त्रोंका प्रयोग होगया तब वह कालदंडअस्त्र शान्त होगया कालदंडअस्त्र को शान्तहुआ देखकर विष्णुभगवान् महाक्रोध युक्त हुए ३३ और दशहजार सूर्य्यों के समान कान्तिवाले अपने चक्रको सेनापति ग्रसन दैत्यके वज्रसदृश कण्ठके ऊपर छोड़ते भये ३४ तबसब दैत्य आकाशमें आतेहुए चक्रको देखकर अपने पराक्रमों करके ऐसे निवारण नहीं करसके जैसे कि प्राप्तहुए प्रारब्ध

जनार्दनस्य पाणिंप्रवृद्धानलतुल्यदीप्ति ३६ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेदेवासुरसंग्रामेग्रसनवधोनामपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५० ॥

(सूत उवाच) तस्मिन्विनिहते दैत्येग्रसनेलोकनायके। निर्मर्यादमयुध्यन्तहरिणा सहदानवाः १ पट्टिशैर्मुसलैः पाशैर्गदाभिः कुशलैरपि । तीक्ष्णाननैश्चनाराचैश्चक्रैःशक्तिभिरेवच २ तानस्त्रान्दानवैर्मुक्तान् चित्रयोधीजनार्दनः । एकैकंशतशश्चक्रे बाणैरग्निशिखोपमैः ३ ततःक्षीणायुधप्राया दानवाभ्रान्तचेतसः । अस्त्राण्यादातुमभवन्न समर्थायदारणे ४ तदामृतैर्गजैरश्वैर्जनार्दनमयोधयन् । समन्तात्कोटिशोदैत्याः सर्वतःप्रत्ययोधयन् ५ बहुकृत्वावपुर्विष्णुः किञ्चिच्छ्रान्तभुजोऽभवत् । उवाचचगरुत्मन्तं तस्मिन्सुतुमुलेरणे ६ गरुत्मन् ! कच्चिदश्रान्तस्त्वमस्मिन्नपि साम्प्रतम् । अथश्रान्तोऽसितद्याहि मथनस्यरथम्प्रति ७ श्रान्तोऽस्यथमुहूर्तन्त्वं रणादपसृतोभव । इत्युक्तोगरुडस्तेन विष्णुनाप्रभविष्णुना ८ आससादरणेदैत्यं मथनंघोरदर्शनम् । दैत्यस्त्वभिमुखंदृष्ट्वा शङ्खचक्रगदाधरम् ६ जघानभिन्दिपालेन शितबाणेनवक्षसि । तत्प्रहारमचिन्त्यैव विष्णुस्तस्मिन्महाहवे १० जघानपञ्चभिर्बाणैर्मार्जितैश्चशिलाशितैः । पुनर्दशभिराकृष्टै स्तन्तताडस्तनान्तरे ११ विद्धोमर्मसुदैत्येन्द्रो हरिबाणैरकम्पत । समुहूर्तं समाश्वास्य जग्राहपरिघन्तदा १२ जघ्नेजनार्दनेचापि परिघेणाग्निवर्चसा । विष्णुस्तेन

कर्मको कोई निवारण नहीं करसक्ताहै ३५ फिर वह दुर्जयचक्र ग्रसन दैत्यके कण्ठपर गिरकरकण्ठके दो खण्डकरके फिर विष्णुभगवान् के हाथमें आजाता भया ३६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांदेवासुरसंग्रामेग्रसनवधोनामपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५० ॥

सूतजी बोले कि जब दैत्योंका सेनापति ग्रसन दैत्य मरगया तब सबदानव विष्णुके साथ मर्यादा को त्यागकर युद्धकरनेलगे १ पट्टिश, अस्त्र, मुसल, पाश, गदा और उत्तम तीक्ष्णवाण शक्तिआदि को विष्णुभगवान्के ऊपर छोड़ते भये २ दानवोंसे छोड़ेहुए उनअस्त्रोंको देखकर विष्णुभगवान् अग्निके समानतेजवाले अपने बाणोंकरके टुकड़े२ करतेभये ३ उससमय शस्त्रोंसे रहितहुए दानवोंके चित्त भ्रान्ति युक्त होगये और युद्धमें शस्त्रोंके ग्रहण करने कोभी कोई दानव समर्थ नहीं हुआ तब सब दानवमरे हुए हाथीघोड़ों करकेही विष्णुभगवान्से युद्धकरने लगगये उससमय विष्णुने अपने शरीरको बढ़ाया और तब विष्णुके भुजकुछ श्रमित होगये तब उसी रणमें विष्णुने गरुड़से कहा कि हे गरुड़ तुमकुछ थकित तो नहीं हुएहो जो हारगयेहो तौभी मथनदैत्यके रथके सन्मुख चलो ४।७ और जो थकितही होगये हो तो रणमें से दोघड़ी तक हटजाओ जब इस प्रकारसे गरुड़के प्रति विष्णुने कहा तब वह गरुड़ घोरदृष्टि वाले मथनदैत्यके प्रति जाताभया उस समय शंख चक्र गदाधारी विष्णुको सन्मुख देखकर मथनदैत्य गोफिया मंत्रोंसे और तीक्ष्णवाणों से उनको पीड़ित करताभया तब भी विष्णु ने उसके प्रहारोंको कुछ नहीं माना और पैने२ पन्द्रह वाणों करके मथनदैत्यकी छाती में प्रहार किया ८।११ जब विष्णुके बाण उसके मर्मस्थलोंमें लगे तबवह दैत्य दोघड़ी तक श्वासलेकर मूसल

प्रहारेण किञ्चिदाघूर्णितोऽभवत् १३ ततःक्रोधविवृत्ताक्षो गदाञ्जग्राहमाधवः। मथनं सरथंरोषान्निष्पिपेषाथरोषितः १४ सपपाताथदैत्येन्द्रः क्षयकालेऽचलोयथा। तस्मिन्नि पतितेभूमौ दानवेवीर्यशालिनि १५ अवसादंययुर्दैत्याः कर्दमेकरिणोयथा। ततस्तेषुवि पन्नेषु दानवेष्वतिमानिषु १६ कोपरक्ततयानाम महिषोदानवेश्वरः। प्रत्युद्ययौहरिंरौद्रः स्वबाहुबलमास्थितः १७ तीक्ष्णधारेणशूलेन महिषोहरिमर्दयन्। शक्त्याचगरुडंवीरो महिषोऽभ्यहनद्धृदि १८ ततोव्यावृत्तवदनं महाचलगुहानिभम्। ग्रस्तुमैच्छद्रणेदैत्यः सगरुत्मन्तमच्युतम् १९ अथाच्युतोऽपिविज्ञाय दानवस्यचिकीर्षितम्। वदनंपूरयामा सदिव्यैरस्त्रैर्महाबलः २० महिषस्याथससृजे बाणौघंगरुडध्वजः। पिधायवदनंदिव्यैर्दि व्यास्त्रपरिमन्त्रितैः २१ सतैर्बाणैरभिहतो महिषोऽचलसन्निभः। परिवर्तितकायोऽधःपपा तनममारच २२ महिषंपतितंदृष्ट्वा भूमौप्रोवाचकेशवः। महिषासुर! मत्तस्त्वं बधन्नास्त्रै रिहार्हसि २३ योषिद्वध्यःपुरोक्तोऽसिसाक्षात्कमलयोनिना। उत्तिष्ठजीवितंरक्ष गच्छा स्मात्सङ्गरादद्रुतम् २४ तस्मिन्पराङ्मुखेदैत्ये महिषेशुम्भदानवः। सन्दष्टोष्ठपुटःको पाद्भ्रुकुटीकुटिलाननः २५ निर्मथ्यपाणिनापाणिं धनुरादायभैरवम्। सज्जञ्चकारसध नुःशरांश्चाशीविषोपमान् २६ सचित्रयोधीदृढमुष्टिपातस्ततस्तुविष्णुंगरुडञ्चदैत्यः। बाणैर्ज्वलद्वह्निशिखानिकाशैःक्षिप्तैरसंख्यैःपरिघातहीनैः२७विष्णुश्चदैत्येन्द्रशराहतोऽपि

को हाथमें लेकर विष्णुभगवान् पर प्रहार करताभया उसके मूसलके प्रहारसे विष्णुजी कुछेकपीड़ित होकर क्रोधसे गदाको धारण करतेभये और बड़े क्रोधयुक्तहो उस गदा से मथनदैत्यको पीसते भये १३।१४ उस गदाके पिसनेसे वह दैत्य ऐसे गिरपड़ा जैसे कि नाशकालमें मानों पर्व्वतही गिर-पड़ाहै १५ उसके गिरतेही सब दैत्य ऐसे पीड़ित हुए मानों बहुतसी कीचमें हाथीधसक रहेहों इस प्रकारसे बड़े२ अभिमानी दैत्य मरगये तब महिषासुर दानव अपनी भुजाओंके बलके आश्रितहोकर क्रोधपूर्व्वक युद्धमें आया १६।१७ फिर पैनीधार वाले शूलसे विष्णुभगवान्को बाधाकरने लगा और शक्तिसे गरुड़पर प्रहार करनेलगा १८ इसके पीछे बड़े भारी पर्व्वतकी गुफाके समान मुखको फाड़कर गरुड़ समेत विष्णुभगवान्के ग्रसने की इच्छा करताभया १९ फिर भगवान् भी उसदैत्यके मनोरथको जानकर अपने शरीरको दिव्य अस्त्रोंकरके पूरित करतेभये २० और दिव्य मंत्रों से युक्त किये बाणोंको महिषासुरके मारतेभये उनबाणोंसे अभिहत हुआ महिषासुर पृथ्वी में औंधागिरपड़ा परन्तु मरानहीं २१।२२ तब उस पड़े हुऐ महिषासुरको देखकर विष्णुभगवान् बोले कि हेमहिषा-सुर तेरी मृत्यु मेरे हाथसे नहीं है क्योंकि ब्रह्माजीने पूर्व्वही कहाहै कि तेरावध स्त्रीके हाथसे होगा इस हेतुसे खड़ाहो अपने जीवकी रक्षाकर अब तू इस युद्धमें से शीघ्रही चलाजा २३।२४ इसप्रकार से वह महिषासुर दैत्य जब पराङ्मुख होगया तब शुंभदैत्य क्रोधसे ओष्ठचबाता हुआ कुटिल भृकु-टियोंको चढ़ाता अपने हाथोंको मसलकर धनुषको ग्रहणकर उसमें सर्पके विषवाले बाणोंको चढ़ा वताभया २५।२६ फिर वह विचित्र युद्धवाला दैत्य दृढ़ मुष्टिपात करने लगा और जलतीहुई अग्नि

भुशुण्डिमादाय कृतान्ततुल्याम्। तयाभुशुण्ड्याचपिपेषमेषं शुम्भस्यपत्त्रंधरणीधराभम्
२८ तस्मादवप्लुत्यहताच्चमेषाद्भूमौपदातिःसतुदैत्यनाथः। ततोमहीस्थस्यहरिःशरौघान्
मुमोचकालानलतुल्यभासः २९ शरैस्त्रिभिस्तस्यभुजंविभेद षड्भिश्चशीर्षंदशभिश्चकेतु
म्। विष्णुर्विकृष्टेःश्रवणावसानं दैत्यस्यविव्याधविवृत्तनेत्रः ३० सतेनविद्धोव्यथितो
बभूव दैत्येश्वरोविस्रुतशोणितौघः। ततोऽस्यकिञ्चिच्चलितस्यधैर्याद्वाचशङ्खाम्बुजशा
र्ङ्गपाणिः ३१ कुमारिवध्योऽसिरणंविमुञ्च शुम्भासुर! स्वल्पतरैरहोभिः। वधंनमत्तोऽर्ह
सिचेहमूढ! वृथैवकियुद्धसमुत्सुकोऽसि ३२ शुम्भोवचोविष्णुमुखान्निशम्य निमिश्चनि
ष्पेष्टुमियेषविष्णुम्। गदामथोद्यम्यनिमिःप्रचण्डां जघानगाढंगरुडंशिरस्तः ३३ जम्भो
ऽपिविष्णुंपरिघेणमूर्ध्नि प्ररुष्टरत्नौघविचित्रभासा। तौदानवाभ्यांविषमैःप्रहारैर्निपेतुरुर्व्यां
घनपावकाभौ ३४ तत्कर्मदृष्ट्वादितिजास्तुसर्वे जगर्जुरुच्चैःकृतसिंहनादाः। धनूंषिचास्फो
ट्यखुराभिघातैर्व्यदारयन्भूमिमपिप्रचण्डाः। वासांसिचैवादुधुवुःपरेतु दध्मुश्चशङ्खान
कगोमुखौघान् ३५ अथसंज्ञामवाप्याशु गरुडोऽपिसकेशवः। पराङ्मुखोरणात्तस्मात्
पलायतमहाजवः ३६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेदेवासुरसंग्रामेएकपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५१॥

(सूत उवाच) तमालोक्यपलायन्तं विभ्रष्टध्वजकार्मुकम्। हरिंदेवःसहस्राक्षो मेनेभ

के समान बाणोंकोभी छोड़ने लगा २७ फिर दैत्यके बाणों सेहतहुए भी विष्णुभगवान् भुशुंडी अस्त्र को ग्रहणकर उसकेही द्वारा शुंभदैत्यके मेढे समेत बाणोंको हतन करदेते भये २८ तब वह शुंभ दैत्य उस मरे हुए मेढेसे नीचे उतरकर पृथ्वीमें पैदलहोकरही युद्ध करने लगा फिर पृथ्वी में खड़े हुए उस दैत्यके ऊपर विष्णुभगवान् अपने बाणोंको छोड़ते भये २९ तीन बाणों से उसकी भुजाको छः से शिरको और दशबाणों से उसकी ध्वजाको छेदन किया और कानोंके समीप भी दशबाण मारतेभये ३० फिर विष्णुसे पीड़ित हुए उस दैत्यकी देहसे रुधिरकी धारा निकलने लगी और धैर्यनहीं रहा तब शार्ङ्गपाणि विष्णु भगवान् उससे कहने लगे कि हे शुंभ तू मुझसे वृथा क्यों युद्ध करताहै मेरे हाथसे तेरी मृत्यु नहीं है तेरी मृत्यु कन्याके हाथसे है ३१।३२ इस प्रकार के विष्णुके वचनको सुनकर शुंभ और निमि यह दोनोंदानव प्रचंड गदाको धारणकरके विष्णुके मारनेकी इच्छा करतेभये और दौड़कर गरुड़के शिरपर गदामारी ३३ जंभदैत्यभी विष्णुके मस्तकमें मूसल मारता भया फिर मेघवर्ण अग्निके समान आकारवाले विष्णु और गरुड़ दोनोंको दैत्य अनेकप्रकारसे गिरावते भये उस समय सब दानव उस कर्म को देखकर ऊंचेस्वरसे सिंहनाद करते भये और धनुषों को धारणकर २ कोलाहल शब्द मचाने लगे और उत्तम वस्त्रोंको धारणकर शंख बजाने लगे ३४।३५ इसके पीछे जब गरुड़को चेतहुआ तब विष्णुसमेत युद्धसे पराङ्मुख होकर बड़ेवेगसे भागगया ३६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांदेवासुरसंग्रामेएकपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५१॥

सूतजी कहते हैं कि टूटीहुई ध्वजावाले औरखंडित धनुषवाले विष्णुभगवान्को भागताहुआ देख

ग्नंदुराहवे १ दैत्यांश्चमुदितान्दृष्ट्वा कर्तव्यंनाध्यगच्छत। अथायान्निकटेविष्णोः सुरेशः
पाकशासनः २ उवाचचैनंमधुरं प्रोत्साहपरिबृंहकम्। किमेभिःक्रीडसेदेव! दानवैर्दुष्टमान
सैः ३ दुर्जनैर्लब्धरन्ध्रस्य पुरुषस्यकुतःक्रियाः। शक्तेनोपेक्षितोनीचो मन्यतेबलमात्म
नः ४ तस्मान्ननीचमतिमान् दुर्गहीनंहिसंत्यजेत्। अथाग्रेसरसंपत्त्या रथिनोजयमाप्नुयुः५
कस्तेसखाभवन्नाथे हिरण्याक्षवधेविभो!। हिरण्यकशिपुर्दैत्यो वीर्यशालीमदोद्धतः ६
त्वांप्राप्यापश्यदसुरो विषमंस्मृतिविभ्रमम्। पूर्वेऽप्यतिबलायेच दैत्येन्द्राःसुरविद्विषः
७ विनाशमागताःप्राप्य शलभाइवपावकम्। युगेयुगेचदैत्यानां त्वमेवान्तकरोहरे! ८
तथैवाद्येहमग्नानां भवविष्णो! सुराश्रयः। एवमुक्तस्ततोविष्णुर्व्यवर्द्धतमहाभुजः ९
ऋद्ध्यापरमयायुक्तः सर्वभूताश्रयोऽरिहा। अथोवाचसहस्राक्षं कालक्षममधोक्षजः १०
दैत्येन्द्राःसर्ववधोपायैःशक्याहन्तुंहिनान्यतः। दुर्जयस्तारकोदैत्योमुक्त्वासप्तदिनंशिशुम् ११
कश्चित्स्त्रीवध्यतांप्राप्तो वधेऽन्यस्यकुमारिका। जम्भस्तुवध्यतांप्राप्तो दानवःक्रूरविक्र
मः १२ तस्माद्वीर्येणदिव्येन जहिजम्भंजगद्धरम्। अवध्यःसर्वभूतानांत्वां विनासतुदा
नवः १३ मयागुप्तोरणेजम्भं जगत्कण्टकमुद्धर। तद्वैकुण्ठवचःश्रुत्वा सहस्राक्षोऽमरा
रिहा १४ समादिशत्सुरान्सर्वान्सैन्यस्यरचनांप्रति। यत्सारंसर्वलोकेषु वीर्यस्यतपसोऽपि

कर इन्द्र अपनी पराजयमानताभया १ और दैत्योंको प्रसन्नहुआ जानकर कुछकर्तव्यताकोभी न कर
सका इसके पीछे देवताओं का अधिपति इन्द्र विष्णुभगवान्‌के समीपआया २ और बड़ीमधुरवाणी
सेउत्साह बढ़ाताहुआ यह वचन बोलाकि हे देवदेव आप इनदुष्ट दानवोंके साथक्या क्रीड़ाकरते-
हो ३ दुर्जन पुरुष जिसके छिद्रको जानजातेहैं उस पुरुषके फिर कौनसी क्रियाहोती है जब समर्थ
पुरुषनीचको छोड़देताहै तब वही नीचपुरुष अपनेको बलवान् मानलेताहै इसहेतुसे बुद्धिमान् पुरुष
दुर्गहीननीच पुरुषको कभी न छोड़े देवताओंकीही संपत्तिसे यहरथीदैत्य जयको प्राप्तहोजातेभये ४।५
और पूर्वके दैत्योंपर आपने कौनसा प्यारकियाहै हिरण्याक्ष दैत्यके वधमें मदोन्मत्त हिरण्यकशिपुदैत्य
तुमको प्राप्तहोकर तुम्हींसे विरमता करताभया उनपूर्वके अत्यन्त बलवाले देवताओंके शत्रुदानवोंका
आपकेहीद्वारा ऐसा नाशहोगया जैसेकि अग्निमें गिरकर टीड़ियोंकानाश होजाताहै और हे हरे आप
सब युगोंमें दैत्योंका नाशकरतेहो उसी प्रकार हे दैत्यारि अबभी देवताओंके दुःखको निवारण की-
जिये इन्द्रके इस स्तुति युक्त वचनको सुनकर विष्णुभगवान् अपनीभुजाओं को बढ़ातेभये ६।९
और परमऋद्धिको प्राप्तहोकर इन्द्रसे यहवचनबोले कि सब दानव अपने वधके उपायोंकरके आप
ही मरनेको योग्यहैं और तारकासुरदानव सातदिनके बालकके हाथसे मरेगा अन्यकिसीसेभी नहीं
मरेगा १०।११ कोई दैत्य तो स्त्री से वध होने के योग्य है कोई कन्याके हाथसे मरनेयोग्य है परन्तु
जंभ दैत्य यहाँही मरनेके योग्यहै इसहेतुसे बड़े बलवाले जंभ दैत्यको अपनेपराक्रमसेमार यहजंभ
दैत्य तेरेबिना दूसरे किसी से नहींमरेगा १२।१३ मुझसे रक्षितहोकर तू इसजगत्‌के कंटकरूप जंभ दै-
त्यकोमार इस वचनको सुनकर इन्द्र सब देवताओंको सेनारचनेकी आज्ञादेताभया त्रिलोकीमात्रके

च १५ तदेकादशरुद्रांस्तु चकाराग्रेसरान्हरिः। व्यालभोगाङ्गसन्नद्धा बलिनोनीलकन्ध
राः १६ चन्द्रलेखनचूडालामण्डितानुशिखण्डिनः। शूलज्वालीभिषङ्गाढ्या भुजमण्डल
भैरवाः १७ पिङ्गोत्तुङ्गजटाजूटाः सिंहचर्मानुषङ्गिनः। कपालीशादयोरुद्रा विद्रावितमहा
सुराः १८ कपालीपिङ्गलोभीमो विरूपाक्षोविलोहितः। अजेशःशासनःशास्ता शम्भुःख
ण्डोध्रुवस्तथा १९ एतएकादशानन्तबला रुद्राःप्रभाविनः।पालयन्तोबलस्याग्रेदारयन्त
श्चदानवान् २० आप्याययन्तस्त्रिदशान् गर्जन्तइवचाम्बुदाः।हिमाचलाभेमहति काञ्च
नाम्बुरुहस्रजि २१ प्रचलच्चामरेहेमघण्टासङ्घातमण्डिते। ऐरावतेचतुर्दन्ते मातङ्गेऽच
लसंस्थिते २२ महामदजलस्रावे कामरूपेशतक्रतुः। तस्थौहिमगिरेःशृङ्गे भानुमानिव
दीप्तिमान् २३ तस्यारक्षत्पदंसव्यं मारुतोऽमितविक्रमः। जुगोपापरमग्निस्तु ज्वालापू
रितदिङ्मुखः २४ पृष्ठरक्षोऽभवद्विष्णुः ससैन्यस्यशतक्रतोः। आदित्यावसवोविश्वे
मरुतश्चाश्विनावपि २५ गन्धर्वाराक्षसायक्षाः सकिन्नरमहोरगाः। नानाविधायुधाश्चि
त्रादधानाहेमभूषणाः २६ कोटिशःकोटिशःकृत्वावृन्दंचिह्नोपलक्षितम्। विश्रावयन्तःस्वा
ङ्कीर्तिं बन्दिवृन्दपुरःसराः। चेरुर्दैत्यवधेहृष्टाः सहेन्द्राःसुरजातयः २७शतक्रतोरमरनिका
यपालिता पताकिनीगजशतवाजिनादिता। सितातपत्रध्वजपटकोटिमण्डिता बभूवसा
दितिसुतशोकवर्धिनी २८ आयान्तीमवलोक्याथ सुरसेनाङ्कुजासुरः। गजरूपीमहाम्भो
द सङ्काशोभातिभैरवः २९ परश्वधायुधोदैत्यो दंशितोष्ठकसंपुटः। ममर्दचरणेदेवांश्चिक्षे

बल वीर्य्य और तपके प्रभाव समेत ग्यारह रुद्रों को विष्णु अपने आगे करतेभये उस समय सर्प कपालधारी नीलकण्ठ चन्द्रमाकी रेखासे शोभित त्रिशूलादिकों से भयंकर भुजायुक्त पीतजटा समेत सिंहचर्माम्बरधरेहुए महाअसुरों के भगानेवाले १४।१८ कपाली, पिंगल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, अजेश, शासन, शास्ता, शम्भु, खंड, और ध्रुव इननामोंवाले अनन्तबलयुक्त ग्यारह रुद्र महाप्रभावों-समेत विष्णुके आगे भाजने वाले दानवोंको मारनेलगे और मेघोंके समानगर्जतेहुए देवताओं को पुष्टकरतेभये सुवर्णसे शोभित हिमाचलपर्व्वत पर स्वर्णमयी घंटे और चमरसे सुशोभित चारदाँत वाले कामस्वरूपी ऐरावतहाथीपर विराजमानहोकर इन्द्रभी आताभया उस समय उसकी ऐसी शोभाहोती भई मानों पर्व्वत पर दीप्तहुआसूर्य्यही उदयहुआहै १९।२३ उस इन्द्रके वामपादको वायुने रक्षितकिया दक्षिणपादको ज्वालाओं से दिशाओंको पूरितकरनेवाले अग्निने रक्षितकिया २४ सेना समेत इन्द्रकी पृष्ठके पीछे विष्णु रक्षा करतेभये आदित्य वसु विश्वेदेवा मरुद्गण अश्विनी कुमार गन्धर्व, राक्षस, यक्षकिन्नर महोरग, यह सब भी अनेक शस्त्रोंको धारण किये हुए सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत किरोड़ों एकत्र इकट्ठेहोकर युद्धमेंचले इनसब देवतादिकोंको आगे२ बन्दीजन स्तुति करतेये उस समय सब देवता दैत्योंके वधमें प्रसन्न होतेभये २५।२७ इन्द्रसे पालित हज़ारों हाथी घोड़ोंसे शोभित श्वेत छत्रध्वजाओंसे मंडित वह देवताओंकी सेना दैत्योंके शोककी बढ़ाने वाली होतीभयी २८ उस आवती हुई देवताओं की सेनाको कुंजर दैत्य देखकर बड़े मेघ समान हाथी का

पान्यान्करेणतु ३० परान्परशुनाजघ्ने दैत्येन्द्रोरौद्रविक्रमः । तस्यपातयतःसेनांयक्षगन्धर्व किन्नराः३१मुमुचुःसंहताःसर्वेचित्रशस्त्रास्त्रसंहतिम्।पाशान्परश्वधांश्चक्रान् भिन्दिपाला नूसमुद्गरान् ३२ कुन्तान्प्रसानसींस्तीक्ष्णान् मुद्गरांश्चापिदुःसहान् । तान्सर्वान्सोऽग्रस दैत्यः कवलानिवयूथपः ३३ कोपास्फालितदीर्घाग्र करास्फोटेनपातयन् । विचचाररणेदेवा न् दुष्प्रेक्ष्योगजदानवः३४यस्मिन्यस्मिन्निपतति सुरवृन्देगजासुरः।तस्मिन्तस्मिन्महा शब्दो हाहाकारकृतोऽभवत् ३५ अथविद्रवमाणंतद्बलंप्रेक्ष्यसमन्ततः । रुद्राःपरस्परं प्रोचु रहङ्कारोत्थितार्चिषः ३६ भो ! भो ! गृह्णीतदैत्येन्द्रं मर्दतैनंहताश्रयम् । कर्षतैनं शितैःशूलैर्भञ्जतैनञ्चमर्म्मसु ३७ कपालीवाक्यमाकर्ण्य शूलंशितशिखामुखम् । सन्धा र्यत्रामहस्तेन संरम्भविवृतेक्षणः ३८ अधावद्भ्रुकुटीवक्रो दैत्येन्द्राभिमुखोरणे । दृढेन मुष्टिबन्धेन शूलंविष्टभ्यनिर्मलम् ३९ जघानकुम्भदेशेतु कपालीगजदानवम् । ततोद शापितेरुद्रा निर्म्मलायोमयैरणे ४० जघ्नुःशूलैश्चदैत्येन्द्रं शैलवर्ष्माणमाहवे । स्रुतशो णितरन्ध्रस्तु शितशूलमुखादितः ४१ बभौकृष्णच्छविर्दैत्यः शरदीवामलंसरः । प्रोत्फु ल्लारुणनीलाब्जसङ्घातःसर्वतोदिशम् ४२ भस्मशुभ्रतनुच्छायै रुद्रैर्हंसैरिवावृतः । उ पस्थितार्तिर्दैत्योऽथ प्रचलत्कर्णपल्लवः ४३ शम्भुंबिभेददशनैर्नाभिदेशेगजासुरः । दृ ष्ट्वासक्तन्तुरुद्राभ्यां नवरुद्रास्ततोऽद्भुतम् । ततश्चविविधैःशस्त्रैः शरीरममरद्विषःनिर्भया

रूप धारणकर प्रकाशित होताभया २९ वह दैत्यहाथों में फरसा ग्रहणकर होठोंको चाब देवताओं को अपने पैरों से दाब २ कर मसलताभया और बहुतों को हाथोंसे फेकता भी था ३० वह भयंकर पराक्रम वाला दैत्य कितनेही देवताओंको कुल्हाड़ों से भी मारताभया जब इसप्रकारसे उसने यक्ष गन्धर्व और किन्नरोंसे युद्धकिया तब यह सबभी विचित्र शस्त्रअस्त्रों को वा फांसी कुल्हाड़े गोफिया यन्त्र और दुस्सह मुद्गर आदिकोंको उसके ऊपर छोड़तेभये ३१।३२ फिर क्रोधसे भुजाओंकोपट कताहुआ वह कुंजर दानवइनदेवताओंके शस्त्रोंको निवारण करके युद्धमें विचरनेलगा ३४ जिन२ दे वताओंकेसमूहोंमें कुंजरासुरदानव प्राप्तहोताथाउन२देववृन्दोंमें महाहाहाकार शब्दहोताथा३५इसके अनन्तर भागतेहुए देवताओंको देखकर अहंकारस्वरूपी अग्निसे युक्तहुए रुद्र परस्परमें कहनेलगे कि इसदैत्यको बाधादेकर पैने शूलोंसे मर्म स्थलोंमें काटकरमारो ३६।३७ उनके वचनोंको सुनकर क पालीरुद्र तीक्ष्ण धारवाले शूलको ग्रहणकर वामहाथसेघिस नेत्रभृकुटी चढा शूलको दृढतासे पक ड़कर दैत्यके सन्मुख भागताभया ३८। ३९ और उसके मस्तक पर मारताभया इसके पीछे शेषरहे वह दशरुद्रभी रणमें निर्मल लोहेके शूलों से उसदानवको मारतेभये फिर उन पैने शूलोंसे हतहुए दानवके मुखसे रुधिर निकलताभया ४०। ४१ उससमय उस दैत्यकी कालेरंगकी ऐसी शोभाहुई जैसेकि शरदऋतुमें स्वच्छ सरोवरकी शोभाखिलेहुए लालनीले कमलोंसे होतीहै ४२ शरीरपर भस्म लगायेहुए रुद्रोंसे रुकेहुए उसदैत्यकी ऐसी शोभाहोतीभयी मानों कज्जलका पर्व्वत श्वेत हंसों से घिराहो फिर कुंजर दैत्य शंभुरुद्रकी नाभिमें दांतोंका प्रहार करताभया तब बाकीरहे नौ९रुद्र निर्भय

वलिनोयुद्धे रणभूमौव्यवस्थिताः ४४ मृतंमहिषमासाद्य वनेगोमायवोयथा। कपालि
नौपरित्यज्य गतश्चासुरपुङ्गव. ४५ वेगेनकुपितोदैत्यो नवरुद्रानुपाद्रवत्। ममर्द चरणा
घातैर्दन्तैश्चापिकरेणच ४६ सतैस्तुमुलयुद्धेन श्रममासादितोयदा। तदाकपालीजग्राह
करन्तस्यामरद्विषः ४७ भ्रामयामासवेगेन ह्यतीवचगजासुरम्। दृष्ट्वाश्रमातुरंदैत्यं किञ्चि
त्स्फुरितजीवितम् ४८ निरुत्साहंरणेतस्मिन् गतयुद्धोत्सवोद्यमम्। ततःपततएवास्य
चर्मचोत्कृत्यभैरवम् ४९ स्रवत्सर्वाङ्गरक्तौघं चकाराम्बरमात्मनः। दृष्ट्वाविनिहतंदैत्यं दा
नवेन्द्रामहाबला. ५० वित्रेसुर्दुद्रुवुर्जग्मुर्निपेतुश्चसहस्रशः। दृष्ट्वाकपालिनोरूपं गजच
र्माम्बरावृतम् ५१ दिक्षुभूमौतमेवोग्रं रुद्रंदैत्याव्यलोकयन्। एवंविलुलितेतस्मिन् दान
वेन्द्रेमहाबले ५२ द्विपाधिरूढोदैत्येन्द्रो हतदुन्दुभिनाततः। कल्पान्ताम्बुधराभेन दुर्द्ध
रेणापिदानवः ५३ निमिरभ्यपतत्तूर्णं सुरसैन्यानिलोडयन्। यांयांनिमिगजोयाति दिशं
तांतांसवाहनाः ५४ सन्त्यज्यदुद्रुवुर्देवा भयार्तास्त्यक्तहेतयः। गन्धेनसुरमातङ्गा दुद्रुवु
स्तस्यहस्तिनः ५५ पलायितेषुसैन्येषु सुराणांपाकशासनः। तस्थौदिक्पालकैः सार्द्धम
ष्टभिःकेशवेनच ५६ संप्राप्तोनिमिमातङ्गो यावच्छक्रगजंप्रति। तावच्छक्रगजोयातो मु
क्त्वानादंसभैरवम् ५७ ध्रियमाणोऽपियत्नेन नस्वकैरवतिष्ठति। पलायितेगजेतस्मिन्नारू
ढःपाकशासनः ५८ विपरीतमुखोयुद्ध्यद्दानवेन्द्रबलंप्रति। शतक्रतुस्तुवज्रेण निमिंवक्ष

होकर सब दानवोंको अनेक शस्त्रोंसे काटतेभये ४३। ४४ उनकी उससमय ऐसी शोभा दीखतीथी जैसेकि वनमें मरेहुए हाथीपर क्रीड़ाकर शृगालोंके चिपटनेकी शोभाहोतीहै फिर उनदोनों रुद्रों को छोड़ाकर वह कुंजर दैत्य इननौ ९ रुद्रोंके सन्मुख दौड़ताभया और पैर दांत सूंड आदिकसे उनको पीड़ादेनेलगा ४५। ४६ जब वह उन नौ९ रुद्रोंके साथ युद्ध करताहुआ हारगया तब कपाली शिवजी उस कुंजर दैत्य की सूंड़को पकड़कर भ्रमातेभये और भ्रमातेही भ्रमाते जब कुछ प्राण बाकी रहगये तभी वेगसे फेकदेते भये उस समय कुजर दैत्य उद्यम से रहित होकर जब खड़ारहगया तब उसका भयानक चर्म रणभूमिमें गिरपड़ा और चर्म रहित सच्छिद्रदेहसे रुधिर निकलनेलगा इसप्रकार से मरेहुए दानवको देखकर अन्य सब महाबली दानव त्रासको प्राप्त होकर दौड़तेभये और भाजते हुए हज़ारों दैत्य पृथ्वीपर गिरपड़े फिर हस्ती के चर्मको ओढ़ेहुए कपाली शिवको देखकर पृथ्वीपर सब दिशाओं में उनको लोग महारुद्र अर्थात् भयानक देखते भते ४७। ५१ इसप्रकारसे जब वह दानव मारागया तब निमि दैत्य हाथीपर चढ़ नगाड़ावजा प्रलयकालके समान गर्जना करताहुआ रणमें आया ५२। ५३ और जिस २ दिशामें निमि दैत्यआया उस २ दिशाको त्यागकर सब देवता भयभीत होकर भागजातेभये उस दैत्यके हाथी की सुगन्धिसे सबहाथी भागे ५४। ५५— और देवताओंकी सेनाभी जबभागी उससमय इन्द्र अष्ट दिक्पाल और विष्णुजीसे संयुक्तहोकर स्थितहोताभया ५६ जबनिमि दैत्यका हाथी इन्द्रके हाथी ऐरावतके सन्मुख आया उस समय ऐरावतभी भयंकर नादकरके भयभीत होकर भागनेलगा यद्यपि इन्द्रने यत्न पूर्वक रोका तौभीनहींरुका उस

स्यताडयत् ५९ गदयादन्तिनश्चास्य गण्डदेशेऽहनद्दृढम् । तत्प्रहारमचिन्त्यैव निमिर्निर्भयपौरुषः ६० ऐरावतंकटीदेशे मुद्गरेणाभ्यताडयत् । सहतोमुद्गरेणाथ शक्रकुञ्जरआहवे ६१ जगामपश्चाच्चरणैर्धरणींभूधराकृतिः । लाघवात्क्षिप्रमुत्थाय ततोऽमरमहागजः ६२ रणादपससर्पाशु भीषितोनिमिहस्तिना । ततोवायुर्ववौरुक्षो बहुशर्करपांसुलः ६३ सम्मुखोनिमिमातङ्गो जवनाचलकम्पनः । स्रुतरक्तोबभौशैलो घनचारुहृदोयथा ६४ धनेशोऽपिगदांगुर्वीन्तस्यदानवहास्तिनः । चिक्षेपवेगाद्दैत्येन्द्रोनिपपातास्यमूर्द्धनि ६५ गजोगदानिपातेन सतेनपरिमूर्च्छितः । दन्तैर्भित्त्वाधरांवेगात् पपाताचलसन्निभः ६६ पतितेतुगजेतस्मिन् सिंहनादोमहानभूत् । सर्वतःसुरसैन्यानां गजबृंहितबृंहितैः ६७ ह्रेषारवेणचाश्वानां गुणास्फोटैश्चधन्विनाम् । गजन्तंनिहतंदृष्ट्वा निमिश्चापिपराङ्मुखः ६८ श्रुत्वाचसिंहनादञ्च सुराणामतिकोपनः । जम्भोजज्वालकोपेन पीताज्य इवपावकः ६९ ससुरान्कोपरक्ताक्षो धनुष्यारोप्यसायकम् । तिष्ठतेत्यब्रवीत्तावत् सारथिंचाप्यचोदयत् ७० वेगेनचलतस्तस्य तद्रथस्याभवद्द्युतिः । यथादित्यसहस्रस्याभ्युदितस्योदयाचले ७१ पताकिनारथेनाजौ किङ्किणीजालमालिना । शशिशुभ्रातपत्रेण सतेनस्यन्दनेनतु ७२ घट्टयन्सुरसैन्यानां हृदयंसमदृश्यत । तमायान्तमभिप्रेक्ष्य धनु

समय उलटे भागतेहुए हाथीपर चढ़ाहुआ इन्द्र दैत्यकी सेनाके सन्मुख भागा और अपने, वज्रको निमिदैत्यकी छातीमें मारताभया ५७। ५९ और उसदैत्यके हाथीके ऊपरभी एकगदामारी फिर उस प्रहारको कुछभीनमानताहुआ निमिदैत्य निरभय होकर ऐरावतहाथीके मुद्गरमारताभया तब मुद्गर सेहतहुआ इन्द्रकाहाथी अपन पिछले पैरोंसे पृथ्वीपर टिकजाताभया और बड़ी शीघ्रता से फिर उठकर दैत्यके हाथीसे भयभीत होकर भागा उस समय कठोर धूलियुक्त वायुचली ६०। ६३ निमिदैत्यकाहाथी इन्द्रके सन्मुख पर्व्वतके समान स्थित होताभया उससमय उसके शरीरसे भिरतेहुए रुधिरकी ऐसीशोभाहुई जैसेकि पर्व्वतमें गेरूके भिरनेकी शोभाहोती है ६४ उसीसमय कुवेरभी उस दैत्यके हाथीके ऊपर गदाको फेंकताभया उस गदाको निमिदैत्यने यद्यपि बहुतसारोका तौभी उसके हाथीके मस्तकपर लगहीगई गदाके लगनेसे वह उसका हाथी पृथ्वीपर गिरपड़ा उसके गिरते ही देवताओंकी सेनामें सवस्थानपर सिंहनादके समान शब्द होताभया ६५। ६७ घोड़े हिनहिनानेलगे धनुषोंकी टंकारहोने लगी तबमरेहुए हाथीको देखकर निमिदैत्य युद्धसे उलटा भागा ६८ फिर देवताओंके क्रोध पूर्व्वक सिंहनादोंको सुनकर जंभदैत्य क्रोधकरके ऐसे जलताभया जैसेकि घृतके पड़नेसे अग्नि प्रज्वलित होती है ६९ क्रोधसे लालनेत्रकर धनुषबाणचढ़ा देवताओंसे कहने लगा कि अबठहरो ऐसा कहकर अपने सारथीको प्रेरणा करताभया और सारथी समेत उसके वेगसे चलनेके समय पृथ्वीकी ऐसी शोभा होतीभई मानो उदयाचल पर्वतपर हज़ारो सूर्य्योंका उदय होरहाहो ध्वजा किंकिणी और जाली आदिसे शोभित श्वेतछत्रसे अलंकृतहुए रथमें बैठकर वहदैत्य चला उसकारथ देवताओंके हृदयको विदीर्ण करताथा उस समय धनुष बाणहाथमें लिये रथपर बैठेहुए उ

व्याहितसायकम् ७३ शतक्रतुरदीनात्मा दृढमाधत्तकार्मुकम्। बाणञ्चतैलधौताग्रमर्द्धचन्द्रमजिह्मगम् ७४ तेनास्यसशरञ्चापं रणेचिच्छेदवृत्रहा। क्षिप्रंसन्त्यज्यतच्चापंजम्भो दानवनन्दनः ७५ अन्यत्कार्मुकमादायवेगवद्भारसाधनम्। शरांश्चाशीविषाकारांस्तैलधौतानजिह्मगान् ७६ शक्रंविव्याधदशभिर्जत्रुदेशेतुपत्रिभिः। हृदयेचत्रिभिश्चापि द्वाभ्यां स्कन्धयोर्द्वयोः ७७ शक्रोऽपिदानवेन्द्राय बाणजालमपीदृशम्। अप्राप्तान्दानवेन्द्रस्तु शरान्शक्रभुजेरितान् ७८ चिच्छेददशधाकाशे शरैरग्निशिखोपमैः। ततस्तुशरजालेन देवेन्द्रोदानवेश्वरम् ७९ आच्छादयतयत्नेन वर्षास्विवघनैर्नभः। दैत्योऽपिबाणजालन्तद्व्यधमत्सायकैःशितैः ८० यथावायुर्घनाटोपं परिवार्यदिशोमुखे। शक्रोऽथक्रोधसंरम्भान्नविशेषयतेयदा ८१ दानवेन्द्रंतदाचक्रे गन्धर्वास्त्रंमहाद्भुतम्। तदुत्थतेजसाव्याप्तमभूद्गगनगोचरम् ८२ गन्धर्वनगरैश्चापि नानाप्राकारतोरणैः। अस्त्रवृष्टिरद्भुताकारैरस्त्रवृष्टिः समन्ततः ८३ अथास्त्रवृष्ट्यादैत्यानां हन्यमानामहाचमूः। जम्भंशरणमागच्छदप्रमेयपराक्रमम् ८४ व्याकुलोऽपिस्वयंदैत्यः सहस्राक्षास्त्रपीडितः। स्मरन्साधुसमाचारं भीतत्राणपरोऽभवत् ८५ अथास्त्रंमौसलंनाम मुमोचदितिनन्दनः। ततोयोमुसलैःसर्वमभवत्पूरितंजगत् ८६ एकप्रहारकरणैरप्रधृष्यैःसमन्ततः। गन्धर्वनगरन्तेषु गन्धर्वास्त्रविनिर्मितान् ८७ गान्धर्वमस्त्रंसन्धाय सुरसैन्येषुचापरम्। एकैकेनप्रहारेण गजानश्वान्महारथान् ८८ रथा

स दैत्यको आताहुआ देखकर इन्द्रभी अपने धनुषको लेकर तीक्ष्ण बाणको चढ़ाताभया ७१। ७४ और बाणकी वर्षा करके दैत्य के धनुषबाण को छेदन करता भया तब जंभ दैत्य उस धनुष को त्यागकर दूसरे धनुषको लेकर सर्पों के समान विषवाले बाणोंको छोड़ताभया ७५। ७६ दशबाण इन्द्र के जोतों में मारे तीन हृदय में और दोबाणदोनों कन्धों पर मारे ७७ तबइन्द्र भी इसी प्रकार से दैत्य के ऊपर बाण छोड़ने लगा उस समय वह दैत्य इन्द्रके बाणों को आकाशही में अपने अग्निके समान तीक्ष्णबाणों से छेदन करताभया फिर इन्द्र भी अन्य बाणोंको छोड़कर ऐसे आच्छादन करता भया जैसे कि वर्षा ऋतुमें बादलों से आकाश आच्छादित होजाता है उस समय वह जंभ दैत्य इन्द्र के बाणों को ऐसे दूर करदेताभया जैसे कि बादलोंको वायु दूर करके छिन्न भिन्न करदेता है तब तो इन्द्रने क्रोधकरके कुछ विशेष माया रची ७८। ८१ अर्थात् उस दैत्य के ऊपर गन्धर्व अस्त्र को छोड़ा उस अस्त्र के तेजसे सब आकाश व्याप्त होगया ८२ और उसी आकाश में गन्धर्वों के पुर रचे गये उनपुरों में से अस्त्रों की वर्षा होने लगी दैत्यों की सब सेनाका नाश होने लगा उससमय सबदैत्य जंभकी शरणमें जातेभये और जंभदैत्य भी इन्द्रके अस्त्रों से पीड़ित होकर उनदैत्यों के समाचार सुनके अत्यन्त भयभीत होताभया ८३। ८५ इसके अनन्तर वह दैत्य भी मौसल अस्त्रको छोड़ताभया तब उसमस्त्रसे सब जगत् लोहे के मूसलों से व्याकुल होगया और एक२ प्रहारकरके उन गन्धर्व नगरोंका नाश करदेताभया इसकेपीछे वह दैत्य गन्धर्व अस्त्रका संधान करके देवताओं की सेनामें छोड़ताभया तबवह अस्त्र एक २ प्रहार करके हाथी घोड़े रथ और रथके घोड़े इन

श्वान्सोऽहनत्क्षिप्रं शतशोऽथसहस्रशः।ततःसुराधिपस्त्वाष्ट्रमस्त्रञ्चसमुदीरयन् ८९ स
न्धयमानेततस्त्वाष्ट्रे निश्चेरुःपावकार्चिषः।ततोयन्त्रमयान्दिव्यानायुधान्दुष्प्रधर्षिणः९०
तैर्यन्त्रैरभवद्द्वन्द्वमन्तरिक्षेवितानकम्। वितानकेनतेनाथ प्रथमंमौसलेगते ९१ शैला
स्त्रमुमुचेजम्भो यन्त्रसङ्घातताडनम्। व्यामप्रमाणैरुपलैस्ततोवर्षमवर्तत ९२ त्वाष्ट्रस्य
निर्मितान्यासु यन्त्राणितदनन्तरम्। तेनोपलनिपातेन गतानितिलशस्ततः ९३ यन्त्रा
णितिलशःकृत्वा शैलास्त्रंपरिमूर्धसु । निपपातातिवेगेनादारयत्पृथिवींततः ९४ ततो
वज्रास्त्रमकरोत् सहस्राक्षःपुरन्दरः । तदोपलमहावर्षं व्यशीर्यतसमन्ततः ९५ ततःप्र
शान्तेशैलास्त्रे जम्भोभूधरसन्निभः। ऐषीकमस्त्रमकरोद्भीतोऽतिपराक्रमः ९६ ऐषीकेना
गमन्नाशं वज्रास्त्रंशक्रवल्लभम्। विजृम्भत्यथचैषीके परमास्त्रेतिदुर्धरे ९७ जज्वलुर्देवसै
न्यानि सस्यन्दनगजानितु। दह्यमानेष्वनीकेषु तेजसासुरसत्तमः ९८ आग्नेयमस्त्रमक
रोद्बलवान्पाकशासनः । तेनास्त्रेणततस्त्वैन्द्रमग्रसत्तदनन्तरम् ९९ तस्मिन्प्रतिह
तेचास्त्रे पावकास्त्रंव्यजृम्भत । जज्वालकायंजम्भस्य सरथञ्चससारथिम् १०० ततःप्र
तिहतःसोथ दैत्येन्द्रःप्रतिभानवान्। वारुणास्त्रंमुमोचाथ शमनंपावकार्चिषाम् १०१ त
तोजलधरैर्व्योमस्फुरद्विद्युल्लताकुलैः । गम्भीरमुरजध्वानैरापूरितमिवाम्बरम् १०२
करीन्द्रकरतुल्याभिर्जलधाराभिरम्बरम् । पतन्तीभिर्जगत्सर्वं क्षणेनापूरितंबभौ १०३
शान्तमाग्नेयमस्त्रंतत् प्रविलोक्यसुराधिपः। वायव्यमस्त्रमकरोन्मेघसङ्घातनाशनम्१०४

सब हजारोंको शीघ्रही नष्टकरदेता भया फिर इन्द्रने त्वाष्ट्रनाम अस्त्रको छोड़ा ८६। ८९ जब कि त्वाष्ट्र अस्त्रका संधान कियागया उसमें से अग्निके कण निकसतेभये उन अग्निकणों का और दैत्यके दिव्यअस्त्रोंका आकाशमें युद्ध होताभया उस समय पहले मूसलों का नाशहोगया उस समय जंभ दैत्य उनयन्त्रोंके संघातको ताड़ना देनेवाले अपने शैल अस्त्रको छोड़ता भया तब साढ़ेतीन २ हाथ लंबे पाषाण बरसनेलगे ९०। ९२ इसके पीछे त्वाष्ट्र अस्त्रसे रचेहुए यन्त्रों का नाश उन पत्थरों की वर्षा से होगया ९३ सब यन्त्रों के मस्तक पर गिरता हुआ शैल अस्त्र उन यन्त्रों का नाश करके वेगसे पृथ्वी में गिरता भया ९४ इसके अनन्तर इन्द्रने अपने वज्रास्त्र को छोड़ा उस वज्रास्त्र से चारों ओर को पत्थरों की वर्षा होनेलगी ९५ तब जंभ दैत्यका शैल अस्त्र नष्ट होगया इसके पीछे जंभ दैत्यने ऐषीक अस्त्रको छोड़ा उस ऐषीक अस्त्र से इन्द्र के वज्रास्त्र का नाश होगया और वह ऐषीक अस्त्र चारों ओर को फैलगया तब देवताओं की सेनामें रथ हाथी आदिक जलनेलगे और सब सेना भी जलनेलगी उस समय इन्द्रने अपने तेजसे आग्नेय अस्त्र को छोड़ा वह अस्त्र जंभ के अस्त्रको ग्रस लेताभया ९६। ९९ जब दैत्यका अस्त्र नष्ट होगया तब अग्निअस्त्र बढ़ता भया उससे जंभ दैत्यका शरीर और रथसमेत सारथी भी जलनेलगा तब महादुःखित हुआ वह दैत्य अग्निका शान्तकरनेवाला वारुणास्त्र छोड़ताभया १००। १०१ उससमय गर्जने और वर्षनेवाले बड़े २ मेघआकाशमें आच्छादित होगये १०२ हाथी की सूंड़ों के समान गिरतीहुई जलधाराओं से

वायव्यास्त्रबलेनाथ निर्धूतेमेघमण्डले। बभूवविमलंव्योमनीलोत्पलदलप्रभम् १०५
वायुनाचातिघोरेण कम्पितास्तेतुदानवाः। नशेकुस्तत्रतेस्थातुं रणेऽतिबलिनोऽपिये
१०६तदाजम्भोऽभवच्छैलो दशयोजनविस्तृतः।मारुतप्रतिघातार्थं दानवानांभयापहः
१०७ मुक्तनानायुधोदग्रतेजोऽभिज्वलितद्रुमः। ततःप्रशमितेवायौ दैत्येन्द्रेपर्वताकृतौ
१०८ महाशनींवज्रमयीं मुमोचाशुशतक्रतुः।तयाशन्यापतितया दैत्यस्याचलरूपिणः
१०९ कन्दराणिव्यशीर्यन्त समन्तान्निर्भराणितु।ततःसादानवेन्द्रस्य शैलमायान्यवर्त
त ११० निवृत्तशैलमायोऽथ दानवेन्द्रोमदोत्कटः। बभूवकुञ्जरोभीमो महाशैलसमाकृ
तिः १११ सममर्दसुरानीकं दन्तैश्चाप्यहनत्सुरान्। बभञ्जपृष्ठतःकांश्चित्करेणावेष्ट्य
दानवः ११२ ततःक्षपयतस्तस्य सुरसैन्यानिवृत्रहा। अस्त्रंत्रैलोक्यदुर्धर्षं नारसिंहंमुमो
चह ११३ ततःसिंहसहस्राणि निश्चेरुर्मन्त्रतेजसः। कृष्णदंष्ट्राट्टहासानि क्रकचाभन
खानिच ११४ तैर्विपादितगात्रोऽसौ गजमायांव्यपोथयत्। ततश्चाशीविषोघोरोऽभव
न्फणाशताकुलः ११५ विषनिश्वासनिर्दग्धं सुरसैन्यंमहारथः। ततोऽस्त्रंगारुडंचक्रेशक्र
श्चारुभुजस्तदा ११६ ततोगरुत्मतस्तस्मात् सहस्राणिविनिर्ययुः। तैर्गरुत्मभिरासा

सबजगत् क्षणमात्र में जलसे पूरितहोगया १०३ तब इन्द्र अग्निअस्त्रको अस्तहुआ जानकर वायव्य अस्त्रको छोड़ताभया उसवायु अस्त्रसे सब मेघउड़गये और नीलकमलके समान आकाश स्वच्छहोगया उससमयके अतिघोर वायुके वेगसे कंपायमानहुए दानव रणमें खड़े होनेकोभी समर्थ नहींरहे १०४।१०६ उससमय जंभदैत्य वायुके रोकनेके निमित्त अपने शरीरको दशयोजन का पर्व्वत बनाताभया १०७ और उसशरीरमें अनेकप्रकारके शस्त्र उज्ज्वलवृक्षों के समान शोभित होते भये इसप्रकारसे इन्द्रका वायव्यअस्त्रभी शान्तहोगया इसके पीछे इन्द्रने अपने विद्युत्अस्त्रको छोड़ा उसविद्युत् अस्त्रसे दैत्यके पर्व्वतरूपी शरीरका नाशहोगया पर्वतकी कन्दरा और झिरने आदिक सब नष्टहोगये और सब पर्व्वतरूपी मायाभी नष्टहोगई १०८।११० जब पर्व्वतकी सब माया नष्ट होगई उससमय वहदैत्य मदोन्मत्त हाथी के स्वरूपको धारण करताभया उसहाथीकाभी बड़ेभारी पर्व्वतकेही समान आकार होताभया १११ और अपने दाँतों से देवताओं की सेनाको मारताभया किसीको पीठसे दाबता और किसीको सूंड़से लपेटकर मारताथा मरतीहुई अपनी सेनाको देखकर इन्द्र त्रिलोकीमें दुर्धर्ष नारसिंह अस्त्रको छोड़ताभया उसअस्त्रमेंसे मन्त्रकेद्वारा कालीडाढ़ीवाले अट्टहासयुक्त भयंकर नखोंवाले हजारोंसिंह निकलतेभये ११२।११४उन सिंहों ने दैत्योंके देहोंको फाड़ा जब सिंहोंसे सबके शरीर फटनेलगे तब वह दैत्य हस्तीकी मायाको दूर करताभया और सेकड़ोंफणों से युक्त बड़ाभारी घोर सर्पबन जाताभया अपने विषभरी श्वासोंसे देवताओं की सेनाको दग्धकरने लगा तब इन्द्रने गरुड़ास्त्रको छोड़ा उस गरुड़ास्त्र से हज़ारों गरुड़ निकलकर सर्परूपवाले जंभ दैत्य के शरीर पर जालगे ११५।११६ और जंभदैत्यके शरीरके खण्ड १ करडाले तब जंभकी वह मायाभी नष्टहोगई इसके पीछे जंभदैत्यने चन्द्रमा सूर्य्यके मार्गके समान अपने शरीरकोबढ़ाया

ग्रजम्भंभुजगरूपिणम् ११७ कृतन्तुखण्डशोदैत्यं सास्यमायाव्यनश्यत। प्रनष्टायान्तु मायायां ततोजम्भोमहासुरः ११८ चकाररूपमतुलं चन्द्रादित्यपथानुगम्। विवृत्तवदनोग्रस्तु मियेपसुरपुङ्गवान् ११९ ततोऽस्यविविशुर्वक्त्रं समहारथकुञ्जराः। सुरसेनाविशत्भीमं पातालोत्तानतालुकम् १२० सैन्येषुग्रस्यमानेषु दानवेनवलीयसा। शक्रोदैन्यं समापन्नः श्रांतवाहुःसबाहनः १२१ कर्तव्यतांनाध्यगच्छत् प्रोवाचेदंजनार्दनम्। किमनन्तरमत्रास्ति कर्तव्यस्यावशेषितम् १२२ यदाश्रित्यघटामोऽस्य दानवस्ययुयुत्सवः। ततोहरिरुवाचेदं वज्रायुधमुदारधीः १२३ नसाम्प्रतंरणस्त्याज्यस्त्वयाकातरभैरवः। वध्वस्त्राशुमहामायां पुरन्दर! रिपुम्प्रति १२४ मयैषलक्षितोदैत्योऽधिष्ठितःप्राप्तपौरुषः। माशक्र! मोहमागच्छ क्षिप्रमस्त्रंस्मरप्रभो १२५ ततःशक्रःप्रकुपितो दानवंप्रतिदेवराट्। नारायणास्त्रंप्रयतो मुमोचासुरवक्षसि १२६ एतस्मिन्नन्तरेदैत्यो विवृतास्योऽग्रसत्क्षणात्। त्रीणिलक्षाणिगन्धर्व किन्नरोरगराक्षसान् १२७ ततोनारायणास्त्रंतत् पपातासुरवक्षसि। महास्त्रभिन्नहृदयः सुस्रावरुधिरञ्चसः १२८ रणागारमिवोद्गारं तत्याजासुरनन्दनः। तदस्त्रतेजसातस्य रूपंदैत्यस्यनाशितम् १२९ ततएवान्तर्दधेदैत्यो वियत्यनुपलक्षितः। गगनस्थःसदैत्येन्द्रः शस्त्रासनमतीन्द्रियम् १३० मुमोचसुरसैन्यानां संहारेकारणम्परम्। प्रासान्परश्वधांश्चक्रान् बाणान्वज्रान्समुद्गरान् १३१ कुठारान्सहखड्गैश्च भिन्दिपालानयोगुडान्। ववर्षदानवोरौद्रो ह्यवन्ध्यानक्षयानपि १३२ तैरस्त्रैर्दानवैर्मुक्तैर्देवानीकेषु

और बड़ाभारी मुखफाड़कर देवताओं के निगलजानेकी इच्छाकरी और देवताभीभया उसके देखने केही समय हाथियोंवाले महारथियों समेत देवताओंकी सब सेना उसके मुखमें समागई ११७।१२० इसप्रकार से जंभदानवने देवताओंकी सबसेना ग्रसलीनी तब इन्द्रकेभुज और सब वाहनभी थकित होगये और महादीन रूपहोकर कुछभी करसकने को समर्थ न होकर इन्द्र विष्णुके प्रति कहनेलगा कि हे देवदेव अबक्या करनायोग्यहै जो करना उचित होय वह मुझ से कहिये यह सुनकर इन्द्रसे विष्णु भगवान् यह वचनबोले १२१।१२२ कि हेइन्द्र अब तुमको युद्ध त्यागना योग्यनहीं है और शीघ्रही महामायाको बढ़ाओ मैंने इसदैत्यको देखलिया है इसने अपना पुरुषार्थ बढ़ा रक्खा है तुम अज्ञानको प्राप्तमतहो शीघ्रही अस्त्रका स्मरण करो १२३।१२५ यह सुनतेही इन्द्रस्वस्थचित्तहोकर जंभदैत्यकी छाती में नारायणास्त्रको छोड़ताभया १२६ इतनेही अन्तरमेंजंभदैत्य मुखफाड़कर तीन लाख गन्धर्वों को ग्रस लेताभया तदनन्तर जंभदैत्यकी छाती में इन्द्र का छोड़ाहुआ नारायणास्त्र लगा तबतो उसकी छाती टूटगई और रुधिर निकलनेलगा १२७।१२८ उस समय रण में डकारलेकर उसने सब देवताओंको उगलदिया और अस्त्रके तेजसे दैत्यकारूप भी नष्टहोगया १२९ इसके पीछे वहदैत्य आकाशमें अन्तर्द्धान होकर देवताओंकी सेनामें शस्त्रोंकी वर्षा करनेलगा अर्थात भाले, कुल्हाड़े, चक्र, बाण, वज्र, मुद्गर, कुठार, खड्ग, गोफियायंत्र, और लोहे के मूसल इनसब अनन्तगुणवाले अस्त्र शस्त्रों को वह दानव अलक्षित होकर वर्षाने लगा १३०।१३२ उन अर्थ

भीपणैः। बाहुभिर्द्दरणिःपूर्णा शिरोभिश्चसकुण्डलैः १३३ ऊरुभिर्गजहस्ताभैः करीन्द्रै
र्वाचलोपमैः। भग्नेपादण्डचक्राक्षैरथैःसारथिभिःसह १३४ दुःसञ्चाराभवत्पृथ्वी मांस
शोणितकर्दमा। रुधिरौघह्रदावर्ता शवराशिशिलोच्चये· १३५ कवन्धनृत्यसंकुले स्रवद्व
सास्रकर्दमे। जगत्त्रयोपसंहृतौ समेसमस्तदेहिनाम् १३६ शृगालगृध्रवायसाः परंप्रमो
दमादधुः। क्वचिद्विकृष्टलोचनः शवस्यरौतिवायसः १३७ विकृष्टपीवरान्त्रकाः प्रयान्ति
जम्बुकाःक्वचित्। क्वचित्स्थितोऽतिभीषणः स्वतुण्डनिहितोरसः १३८ मृतस्यमांसमा
दाय श्वजातयश्चसंस्थिताः। क्वचिद्वृकोगजासृजम्पपौनिलीयतान्त्रतः १३९ क्वचि
त्तुरङ्गमण्डलीर्विकृष्यतेऽवजातिभिः। क्वचित्पिशाचजातकैः प्रपीतशोणितासवैः १४०
स्वकामिनीयुतैर्द्रुतं प्रमोदमत्तसम्भ्रमैः। ममैतदाननयाननं खुरोयमम्तुमेप्रियः १४१ करो
ऽयमब्जसन्निभो ममास्तुकर्णपूरकः। सरोषमीक्षतेपरावपां विनाप्रियंतदा १४२ पराप्रि
याह्यवापयत् धृतोष्णशोणितासवम्। विकृष्यशावचर्म तत्प्रवद्धसान्द्रपल्लवम् १४३ च
कारयक्षकामिनीतरुं कुठारपाटितम्। गजस्यदन्तमासृजंप्रगृह्यकुम्भसम्पुटम्१४४विपा
ट्यमौक्तिकंपरं प्रियाप्रसादमिच्छते। समांसशोणितासवं पपुश्चयक्षराक्षसाः १४५ मृता
ङ्चकेशवासितं रसंप्रगृह्यपाणिना। प्रियाविमुक्तजीवितं समानयासृगासवम् १४६ नप
श्यतांप्रयातिमे गतंश्मशानगोचरम्। नरस्यतज्जहात्यसौ प्रशस्यकिन्नराननम् १४७

कर अस्त्रशस्त्रोंके गिरने से देवताओंके भुजदंड और कुंडलों समेत शिर कट२ कर गिरने लगे और भुजाशिर आदिसे पृथ्वी पूरित होगई १३३ इसके विशेष बड़े२ पर्वतके समान आकारवाले हाथी गिरतेभये १३४ पृथ्वी पर मांस और रुधिरकी कीचहोगई और रुधिर समूहसे ऐसे तड़ागादिक होकर भरगये जिनपर मृतकोंकी शिलासी बनगई थी कितनेही कटेहुए शिर वाले योद्धाओं के रुंड इधर उधर दौड़नेलगे इस प्रकारसे वह महाभयानक युद्ध होताभया उस रणभूमि में कोई नहीं ठहरसका १३५।१३६ शृगाल काक और गिद्ध यह सबजीव परमानन्दको प्राप्तहुए कहीं मरेहुए मुरदेके नेत्रोंको निकालता हुआ काकस्वरसे शब्द करताभया १३७ कहीं मरेहुए योद्धाओंकी आंतों को शृगाल काटते भये कहीं गिद्ध अपनी चोंचसे मांसखातेथे १३८ भेड़िये आदिक जीव मृतकों के मांस खैंचकर खातेथे और कहीं हाथियोंकी आंतोंमें घुसके रुधिर पीतेथे १३९ यही मांसाहारी जीव कहीं घोड़ोंको भक्षण करते कहीं पिशाच रुधिरको पीते और कहीं मदोन्मत्त राक्षस अपनी २ स्त्रियों समेत दौड़दौड़कर कहतेथे कि यह पशुकामुख और पदमुझको प्रिय है उसकी स्त्री कहतीथी कि यह कमलके समान भुज मुझको कर्णफूल भूषणके समान प्रिय लगताहै कोई राक्षसकी स्त्री अपने पतिको तृपासे कोपयुक्त देखकर मरेहुए योद्धाओंके चर्म्म मांससे गरम २ रुधिर निकालकर पिलाती थी १४०।१४२कोई राक्षसकी स्त्री मरेहुए योद्धाको कुल्हाड़े से वृक्षके समान चीरती थी कोई यक्षहाथीके चर्म्मको उखाड़कर मस्तकके रुधिर समेत मोतीको अपनी स्त्रीके अर्थ देताभया इसी प्रकारसे यक्ष राक्षस अपनी २ स्त्रियों समेत मृतकोंके मांस और रुधिरको खाते और पीतेथे १४४। १४५ कोई २

सनागएषनोभयं दधातिमुक्तजीवितः। तदानतस्यशक्यते मयातदेकयाननम् १४८ इ
तिप्रियायवल्लभा वदन्तियक्षयोषितः। परेकपालपाणयः पिशाचयक्षराक्षसाः १४९ व
दन्तिदेहिमेमम ममातिभक्ष्यचारिणः। परेऽवतीर्यशोणितापगासुधौतमूर्तयः १५०
पितृन्प्रतर्प्यदेवताः समर्चयन्तिचामिषैः। गजोडुपेसुसंस्थितास्तरन्तिशोणितंहृदम् १५१
इतिप्रगाढसङ्कटे सुरासुरेसुसङ्करे। भयंसमुज्झ्यदुर्जया भटाःस्फुटन्तिमानिनः १५२ त
तःशक्रोधनेशश्च वरुणःपवनोऽनलः। यमोऽपिनिर्ऋतिश्चापि दिव्यास्त्राणिमहाबलाः
१५३ आकाशेमुमुचुःसर्वे दानवानभिसन्ध्यते। अस्त्राणिव्यर्थतांजग्मुर्देवानांदानवान्
प्रति १५४ संरम्भेणाप्ययुध्यन्त संहतास्तुमुलेनच। गतिंनविविदुश्चापि भ्रान्तादैत्य
स्यदेवताः १५५ दैत्यास्त्रभिन्नसर्वाङ्गा ह्यकिञ्चित्करताङ्गताः। परस्परंव्यलीयन्त गावःशी
तार्दिताइव १५६ तदवस्थान्हरिर्दृष्ट्वा देवान्शक्रमुवाचह। ब्रह्मास्त्रंस्मरदेवेन्द्र! यस्या
वद्ध्योनविद्यते। विष्णुनाचोदितःशक्रः सस्माराऽस्त्रंमहौजसम् १५७ संपूजितंनित्यमराति
नाशनं समाहितंबाणममित्रघातने। धनुष्यजय्येविनियोज्यबुद्धिमान् अभूत्ततोमन्त्रस
माधिमानसः १५८ समन्त्रमुच्चार्ययतान्तराशयो बधायदैत्यस्यधियाभिसन्ध्यतु। विकृ
ष्यकर्णान्तमकुण्ठदीधितिं मुमोचवीक्ष्याम्बरमार्गमुन्मुखः १५९ अथासुरःप्रेक्ष्यमहास्त्रमा
हितं विहायमायामवनौव्यतिष्ठत। प्रवेपमानेनमुखेनशुष्यता बलेनगात्रेणचसम्भ्रमाकु

राक्षस मृतक योद्धाओं के बालोंको हाथों से पकड़कर रुधिर समेत रसको अपनी २ स्त्रीको पिलाते थे और राक्षसोंकी स्त्रियांभी अपनेपतियोंसे कहतीथीं कि श्मशानमें गयेहुए मृतककारुधिर हमकोगुणकारी नहीं है यह मरा हुआ हाथीहम दोनोंको तृप्तकरदेगा क्योंकि इसकेएकमस्तकहीको मैंअकेली नहींभक्षणकरसक्ती १४६।१४८ इसप्रकारसे यक्षोंकीस्त्रियां अपने२ पतियोंसे कहतीथीं कितनेही पिशाच यक्ष और राक्षस हाथोंमेंकपाल धारणकरके यहशब्द कहतेथे कि हमको भक्षणकेलिये कुछदो कितनेही राक्षस रुधिरकीनदीमें घुसगये १४९।१५० और उसनदीके रुधिरोंसे पितरोंको और मांससे देवताओंको तृप्तकरतेथे कोई राक्षस हाथीरूपी नौकापर चढ़ेहुए रुधिरके तड़ागका स्मरणकरते थे १५१ जब ऐसे प्रकारका भयानकयुद्ध होनेलगा तब अभिमानी योद्धानिर्भय होकर युद्धमें प्रवृत्तहोते भये १५२ इसके अनन्तर इन्द्र,कुबेर,वरुण,वायु,अग्नि,धर्मराज,और राक्षस यहसब महादिव्य अस्त्रोंको छोड़तेभये वहसब देवतादिकों के अस्त्र आकाशमें जाकर व्यर्थहोजाते भये किसी देवतानेभी उस जंभ दैत्यकी गतिकोनहीं जाना १५३।१५५ दैत्यके अस्त्रों से देवताओं के सबअंग टूटने लगे तब परस्परमें ऐसे छुप जातेभये जैसेकि शीतसे पीड़ितहुईगौऐं आपसमें दबकजाती हैं १५६ ऐसीअवस्थाको देखकर विष्णुभगवान् इन्द्रसे बोलेकि हे इन्द्र ब्रह्मास्त्रका स्मरण करो वह अस्त्र अवध्यहै विष्णुके इस वचन को सुनकर इन्द्र उस अस्त्रको स्मरणकर शत्रुओं के नाशके निमित्त पूजनकर मन्त्रके उच्चारण पूर्वक बाणमें युक्त करताभया १५७।१५८ और कानपर्य्यन्त बाणको खैंचकर ऊर्ध्व मुख से आकाश मार्गको देखताहुआ शत्रुके नाशका ध्यान करके अस्त्रको छोड़ताभया १५९ वह

लः १६० ततस्तुतस्यास्त्रवराभिमन्त्रितः शरोऽर्द्धचन्द्रप्रतिमोमहारणे । पुरन्दरस्यास
नबन्धुताङ्गतो नवार्कबिम्बंवपुषाविडम्बयन् १६१ किरीटकोटिस्फुटकान्तिसङ्कटंसुगन्धि
नानाकुसुमाधिवासितम् । प्रकीर्णधूमज्वलनाभमूर्द्धजं पपातजम्भस्यशिरःसकुण्डलम्
१६२ तस्मिन्विनिहतेजम्भे दानवेन्द्राःपराङ्मुखाः । ततस्तेभग्नसंकल्पाःप्रययुर्यत्रता
रकः १६३ तांस्तुत्रस्तान्समालोक्य श्रुत्वारोषमगात्परम् । सजम्भदानवेन्द्रन्तु सुरैरण
मुखेहतम् १६४ सावलेपंससंरम्भं सगर्वंसपराक्रमम् । साविष्कारमनाकारंतारकोभाव
माविशत् १६५ सजैत्रंरथमास्थाय सहस्रेणगरुत्मताम् । सकोपाद्दानवेन्द्राणां सुरैरणमु
खेगतः १६६ सर्वायुधपरिष्कारःसर्वास्त्रपरिरक्षितः । त्रैलोक्यऋद्धिसंपन्नःसुविस्तृतमहा
ननः १६७रणायाभ्यपतत्तूर्णं सैन्येनमहताव्रतः । जम्भास्त्रक्षतसर्वाङ्गंत्यक्त्वैरावतदन्तिनम्
१६८सज्जंमातलिनागुप्तं रथमिन्द्ररयतेजसा।तप्तहेमपरिष्कारंमहारत्नसमन्वितम् १६९
चतुर्योजनविस्तीर्णं सिद्धसङ्घपरिष्कृतम् । गन्धर्वकिन्नरोद्गीतमप्सरोनृत्यसंकुलम् १७०
सर्वायुधमसम्बाधं विचित्ररचनोज्ज्वलम् । तंरथंदेवराजस्य परिवार्यसमन्ततः १७१दंशि
तालोकपालास्तुतस्थुः सगरुडध्वजाः । ततश्चचालवसुधा ततोरूक्षोमरुद्ववौ १७२ त
तोऽम्बुधयउद्धूतास्ततो नष्टारविप्रभा । ततस्तमःसमुद्भूतं नातोऽदृश्यन्ततारकाः १७३
ततोजज्वलुरस्त्राणि ततोऽकम्पतवाहिनी । एकतस्तारकोदैत्यःसुरसङ्घास्तुचैकतः १७४

दैत्य उस छोड़ेहुए अस्त्रको देख अपनी मायाकोत्याग कंपायमान शरीरसे दुःखितहोकर बैठगया १६० इसके अनन्तर इन्द्रके उस अस्त्रका स्वरूप अर्द्धचन्द्रमाके समान लाल आकारवाला होगया फिर मुकुटसे शोभित अनेकगन्धियोंसे सुगन्धित खिलेहुए बालों समेत कुंडलोंसे सुशोभित जंभका शिरपृथ्वीमें गिरपड़ा १६१।१६२ जब जंभ दैत्यमारा गया तब सब दैत्य पराङ्मुख होकर भागगये और तारकासुरके पासपहुचे १६३ उससमय उनभगेहुए दैत्योंको आताहुआ देख और देवताओं के युद्धमें मरेहुए जंभ दैत्यको सुनकर तारकासुर अत्यन्तक्रोधकरताभया १६४ औरसाभिमानहो महा-पराक्रमी तारकासुर अपनेअभिप्रायको कहताहुआ १६५ महाक्रोधयुक्तहोकर जैत्रनामरथ परचढ़ ह-ज़ारोंपक्षियोंसे संयुक्तहो देवदानवोंके युद्धमें प्राप्तहोताभया १६६ अर्थात् सबशस्त्रोंसे युक्त अनेकअस्त्रों से रक्षित त्रिलोकीकी सम्पत्तियोंसे सम्पन्न बड़ेविस्तृत मुखवाला वह तारकासुर बड़ी शीघ्रतापूर्वक बहुतसी सेनासमेत रथमें चढ़ाहुआ युद्धभूमिमें पहुंचा वहाँ जंभ दैत्यके अस्त्रोंसे कटेहुए अंगवाले इन्द्रकेऐरावत हाथीको पीड़ादेताभया १६७।१६८ और इन्द्रके तेजसे युक्त मातलिसारथीसे रक्षित महारत्नोंसे शोभित चारयोजन विस्तार वाले सिद्ध गन्धर्व और किन्नरादिकों से समाकुल इन्द्रके रथको चारोंओरसे घेरलेताभया १६९।१७० तब विष्णु भगवान्से युक्तहुए सबलोकपाल धनुषबाण आदिक शस्त्रोंको धारणकियेहुए युद्धमें आकरखड़ेहोतेभये उससमय पृथ्वीकंपायमानहुई कठोरवायु चली मेघछागये सूर्य्यकी कान्ति क्षीणहोगई अन्धकारहोगया और तारागणभी प्रकाशितनहीं रहे १७१।१७२ इसके पीछे अस्त्रोंका प्रकाशहोताभया देवताओंकी सेनाकांपनेलगी उससमय एक

लोकावसादमेकत्र जगत्पालनमेकतः। चराचराणिभूतानि सुरासुरविभेदतः १७५ तद्
द्विधाप्येकतांयातं ददृशुःप्रेक्षकाइव। यद्वस्तुकिञ्चिल्लोकेषु त्रिषुसत्तास्वरूपकम्। तत्तत्रा
दृश्यदाखिलं खिलीभूतविभूतिकम् १७६ अस्त्राणितेजांसिधनानि धैर्यसेनाबलंवीर्य्यपरा
क्रमौच। सत्त्वौजसांतान्निकरंबभूव सुरासुराणांतपसोबलेन १७७ अथाभिमुखमायान्तं
नवभिर्नतपर्वभिः। बाणैरनलकल्पाग्रैर्बिभिदुस्तारकंहृदि १७८ सतानचिन्त्यदैत्येन्द्रः सु
रबाणानुगतान्हृदि। नवभिर्नवभिर्बाणैःसुरान् विव्याधदानवः १७९ जगद्धरणसम्भूतैः
शल्यैरिवपुरःसरैः। ततश्छिन्नंशरव्रातं संग्रामेमुमुचुःसुराः १८० अनन्तरंचकान्तानाम
श्रुपातमिवानिशम्। तदस्त्रातंवियत्येव नाशयामासदानवः १८१ शरैर्यथाकुचरितै प्र
स्यातंपरमागतम्। सुनिर्मलंक्रमायातंकुपुत्रःस्वंमहाकुलम् १८२ततोनिवार्यतद्बाणजालं
सुरभुजेरितम्। बाणैर्व्योमदिशःपृथ्वीं पूरयामासदानवः १८३ चिच्छेदपुङ्खदेशेषु स्वकैः
स्थानेचलाघवात्। बाणजालैःसुतीक्ष्णाग्रैःकङ्कबर्हिणवाजितैः १८४ कर्णान्तकृष्टैर्विमलैः
सुवर्णरजतोज्ज्वलैः। शास्त्रार्थैःसंशयप्राप्तान् यथार्थान्वैविकल्पितैः १८५ ततःशतेन
बाणानां शक्रंविव्याधदानवः। नारायणंचसप्तत्या नवत्याचहुताशनम् १८६ दशभिर्मा
रुतंमूर्ध्नि यमंदशभिरेवच। धनदञ्चैवसप्तत्यावरुणञ्चतथाष्टभिः १८७ विंशत्यानिर्ऋतिं
दैत्यःपुनश्चाष्टाभिरेवच। विव्याधपुनरेकैकं दशभिर्दशभिःशरैः १८८ तथाचमातलिं

ओरतोतारकासुरहुआ और दूसरीओरको सबदेवताओंकी सेनाहुई एकस्थानपर सबलोकोंका संहार इकट्ठाहुआ एक जगहसबलोकोंकीपालना स्थितहुई देवता और दैत्योंके रूपभेदसे त्रिलोकी के सब चराचरजीव सब पदार्थ और विभूतियों समेत स्थितहोतेभये १७४।१७६ अस्त्रोंकातेज धन, धैर्य्य, सेनाकाबल, वीर्य्य, और पराक्रम इनसबोंका समूह इकट्ठाहोकर देवता और दैत्योंकी सेनामें प्राप्तहोताभया १७७ इसके अनन्तर इन्द्रभी सन्मुख आतेभये उससमय इन्द्रने तारकासुरको देखकर उसके हृदयमें अग्निके समान कान्ति वाले तीक्ष्ण २नौ ९ बाणमारे १७८ परन्तु उस दैत्यने उन प्रहारोंको जराभीनमाना और एक २ देवताकोनौ २ बाणोंसे बेधताभया १७९ उस दैत्यके बाण ऐसेछूटे जैसेकि जगत्के नाशकारी व्रणछूटते हैं उसके पीछे देवतालोगभी अपने२ बाणोंको छोड़तेभये उनसब बाणोंको वहदैत्य आकाशहीमें छेदनकरडालताथा १८०।१८१ देवताओंके बाणोंसे आच्छादित हुआ आकाश तारकासुर दैत्यके बाणोंसे ऐसानिर्मल और स्वच्छ होगया जैसे कि कुपुत्र अपने बड़े उत्तमकुलका नाशकरदेताहै १८२ देवताओं के बाणों को निवारण करके उस दैत्यने अपने बाणों करके आकाश और दिशाओं को पूरित करदिया १८३ बाणों को बड़े उत्तम प्रकार से धनुषपरचढ़ा उज्ज्वल कानोंतकखैंच २ कर देवताओं की सेनामें फेंकताथा सौ १०० बाण इन्द्रके मारे सत्तर विष्णुके मारे नब्बे ९० अग्निके दश १० वायुके मस्तकपर आठ ८कुबेरके राक्षसके बीस २० बाण मारकरभी फिर अठारह बाणमारे और शेषरहे सबदेवताओंके दश२ बाण मारताभया१८४। १८८ इसके पीछे वह तारकासुर दैत्य तीनबाणोंसे इन्द्रके सारथीको घायलकरके दशबाण गरुड़ के

दैत्यो विव्याधत्रिभिराशुगैः। गरुडंदशभिश्चैव सविव्याधपतत्रिभिः १८९ पुनश्चदैत्यो
देवानांतिलशोनतपर्वभिः। चकारवमंजातानिचिच्छेदचधनूंषितु। ततोविकवचादेवाविधा
नुष्काशरैःकृताः १९० अथान्यानिचापानितस्मिन्सरोषारणेलोकपालाग्रहीत्वासमन्तात्।
शरैरक्षयैर्दानवेन्द्रंततस्तु तदादानवोऽमर्षसंरक्तनेत्रः १९१ शरानग्निकल्पानवर्षामरा
णां ततोवाणमादायकल्पानलाभम्। जघानोरसिक्षिप्रमिन्द्रंसुवाहुं महेन्द्रोऽप्यकम्प
द्रथोपस्थएव १९२ विलोक्यान्तरिक्षेसहस्रार्कविम्बं पुनर्दानवोविष्णुमुद्भूतवीर्यम्। श
राभ्यांजघानांसमूलेसलीलं ततःकेशवस्यापतच्छार्ङ्गमग्रे १९३ ततस्तारकःप्रेतनाथंप्र
षत्कैर्वसुंतस्यसव्येस्मरन्क्षुद्रभावम्। शरैरग्निकल्पैर्जलेशस्यकायं रणेशोषयद्दुर्जयो
दैत्यराजः १९४ शरैरग्निकल्पैश्चकाराशुदैत्यस्तथाराक्षसान्भीतभीतान्दिशासु। पृष
त्कैश्चरूक्षैर्विकारप्रयुक्तं चकारानिलंलीलयैवासुरेशः १९५ क्षणाल्लब्धचित्ताःस्वयं
विष्णुशक्रानलाद्याःसुसंहत्यतीक्ष्णैःपृषत्कैः। प्रचक्रुःप्रचण्डेनदैत्येनसार्द्धं महासङ्गरंस
ङ्गरग्रासकल्पम् १९६ अथानम्यचापंहरिस्तीक्ष्णबाणैर्हनत्सारथिंदैत्यराजस्यहृद्यम्।
ध्वजंधूमकेतुःकिरीटंमहेन्द्रो धनेशोधनुःकाञ्चनानद्धपृष्ठम्। यमोवाहुदण्डंरथाङ्गानिवायु
र्निशाचारिणामीश्वरश्चापिवर्म्म १९७ दृष्ट्वातद्युद्धममरैरकृत्रिमपराक्रमम्। दैत्यनाथःकृ
तंसंख्ये स्वबाहुयुगबान्धवः १९८ मुमोचमुद्गरंभीमं सहस्राक्षायसङ्गरे। दृष्ट्वामुद्गरमा
यान्तमनिवार्यमथाम्बरे १९९ रथादाप्लुत्यधरणीमगमत्पाकशासनः। मुद्गरोऽपिरथोप

मारताभया तबवह दैत्य अपने बाणोंसे देवताओंके तूणीर और धनुषोंको तोड़ताभया फिर सबदेव-
ता तूणीर और धनुषसे रहितहोगये यहदशा देखकर देवतालोग लोकपालों समेत महाक्रोधितहो अ-
न्यधनुषोंको ग्रहणकर करके आये और दैत्यके ऊपर अनन्त बाणोंकी वर्षा करनेलगे उस समय वह
दैत्य लाल२ नेत्रकर क्रोधसे देवताओंके बाणोंके ऊपर और इन्द्रकेऊपर अग्निकेसमान बाणोंकोछो-
ड़ताभया जब उसकेबाण इन्द्रकी छातीमेंलगे तबइन्द्र रथपरही बैठाहुआ कांपनेलगा १८९।१९२
इसके पीछे वह तारकासुर हज़ारों सूर्य्य के समान कान्तियुक्त अतुल बलवाले विष्णु भगवान्
के कन्धोंके स्थानमें बाणोंको मारताभया तब विष्णुका धनुष गिरपड़ा फिर विष्णुके वामओर स्थित
हुए राक्षसको और वरुणको अग्निके समान बाणोंसे प्रहारकरनेलगा तदनन्तर वह तारकासुर डरते
हुए राक्षसको सबदिशाओंमें भ्रमण कराके अपने मायावी बाणोंसे अग्निदेवको भी पीड़ा देताभया
१९३।१९५ फिर विष्णु इन्द्र और अग्नियह तीनोंक्षण भरहीमें चेतकर बड़े तीक्ष्णबाणोंसे युद्धकरने
लगे १९६ इसके पीछे विष्णु भगवान् धनुषको ग्रहणकर तीक्ष्ण २ बाणोंसे तारकासुरके सारथीको
मारतेभये,इन्द्र उसकी ध्वजाको काटकर मुकुटोंको तोड़ताभया,कुबेर धनुषको तोड़ताभया धर्मराज
ने उस दैत्यके भुजपर प्रहारकिया, वायुने रथके पहिये तोड़डाले राक्षसने उसके जुवेको तोड़ा १९७
वह तारकासुर दैत्य इसप्रकारके देवताओंके पराक्रमको देखकर युद्धमें भयंकर मुद्गरको इन्द्रके ऊपर
फेंकताभया तब इन्द्र उसके फेंकेहुए मुद्गरको आकाशमें आताहुआ देखकर रथसेकूद पृथ्वी में खड़ा

स्थे पपातपरुषस्वनः २०० सरथंचूर्णयामास नममारचमातलिः। गृहीत्वापट्टिशंदैत्यो जघानोरसिकेशवम् २०१ स्कन्धेगरुत्मतःसोऽपि निषसादविचेतनः। खड्गेनराक्षसेन्द्रश्च चकर्तनरवाहनम् २०२ यमञ्चपातयामास भूमौदैत्योभुशुण्डिना। वह्निञ्चभिन्दिपालेन ताडयामासमूर्द्धनि २०३ वायुञ्चदोर्भ्यामुत्क्षिप्य पातयामासभूतले। जलेशञ्चधनुष्कोट्या कुट्टयामासकोपनः २०४ ततोदेवनिकायानामेकैकंसमरेततः। जघानास्त्रैरसंख्येयैर्दैत्येन्द्रोऽमितविक्रमः २०५ लब्धसंज्ञःक्षणाद्विष्णुश्चक्रंजग्राहदुर्द्धरम्। दानवेन्द्रवसासिक्तं पिशिताशनकोन्मुखम् २०६ मुमोचदानवेन्द्रस्य दृढंवक्षसिकेशवः। पपात चक्रंदैत्यस्य हृदयेभास्करद्युति २०७ व्यशीर्यततततःकाये नीलोत्पलमिवाश्मनि। ततोवज्रंमहेन्द्रस्तु प्रमुमोचार्चितञ्चिरम् २०८ यस्मिन्जयाशाशक्रस्य दानवेन्द्ररणेत्वभूत्। तारकस्यसुसंप्राप्य शरीरंशौर्यशालिनः २०९ व्यशीर्यतविकीर्णार्चिः शतधाखण्डतातङ्गम्। विनाशमगमन्मुक्तं वायुनासुरवक्षसि २१० ज्वलितंज्वलनाभासमंकुशंकालशंयथा। विनाशमागतंदृष्ट्वा वायुश्चांकुशमाहवे २११ रुष्टःशैलेन्द्रमुत्पाट्य पुष्पितद्रुमकन्दरम्। चिक्षेपदानवेन्द्राय पञ्चयोजनविस्तृतम् २१२ महीधरंतनायान्तं दैत्यःस्मितमुखस्तदा। जग्राहवामहस्तेन शैलंकन्दुकलीलया २१३ ततो दण्डंसमुद्यम्य कृतान्तःक्रोधमूर्च्छितः। दैत्येन्द्रंमूर्ध्निचिक्षेप भ्राम्यवेगेनदुर्जयः २१४ सोऽसुरस्यापतन्मूर्ध्नि दैत्यस्तञ्चनबुबुधवान्। कल्पान्तदहनालोक्यामजय्यांज्वलनस्त

होगया और वहमुद्गर रथपरपड़ा उसके गिरतेही रथकाचूर्णहोगया परन्तु इन्द्रका मातलिसारथी नहींमरा इसके पीछे तारकासुर पट्टिश अस्त्रको विष्णुकी छातीमें मारताभया १९८। २०१ उस समय विष्णु भगवान्को मूर्च्छाहोगई और जबगरुडके कन्धेपर चिपटगये तबराक्षसको तो वह खड्ग से काटताभया धर्मराजको भुशुंडी शस्त्रसे पृथ्वी में गिराताभया वरुणको धनुषके अग्रभागसे गिराताभया इसके अनन्तर सब देवताओं को अनेक शस्त्रोंकरके पीड़ित करताभया २०२। २०५ फिर विष्णुजीको चेष्टाहुई और चैतन्य होकर दुर्धर चक्रको ग्रहण करतेभये और उसी चक्रको उस तारकासुरकी छातीपर मारतेभये वह सूर्य्यकी समान कान्तिवाला चक्र दैत्यकी छातीपर पड़कर ऐसेखिंडगया जैसे कि पत्थरपर लगकर नीलाकमल खिंडजाताहै इसकेपीछे इन्द्रउसपर उसवज्रको छोड़ताभया जिसके बलसे कि तारकासुरके जीतने की इच्छा कर रहाथा वह महाकठोर वज्र भी उस तारकासुर दैत्यके शरीर में प्राप्त होकर खिंडकर सैकड़ों टुकड़े होगया २०६। २१० फिर वायुने दैत्यकी छातीमें अंकुश मारा उस अंकुशका भी नाशहोगया तब वायु वृक्षों समेत पांच योजनके पर्व्वतको उखाड़के उस दैत्यके ऊपर मारताभया दैत्य उस आते हुए पर्व्वतको देखकर गेंदखेलनेके समान क्रीड़ाको करके बायें हाथमें ग्रहण करलेताभया २११। २१३ इसके अनन्तर धर्मराज भी क्रोधकरके दैत्यके मस्तक पर बड़े वेगसे भ्रमाकर अपने दंडको मारताभया २१४ वह दंड भी उस दैत्यको नहीं मारताभया तब अग्नि देवता उस दैत्यके शरीरमें अपनी अजय्य शक्तिको मारताभया

·तः २१५ शक्तिंचिक्षेपदुर्द्धर्षी दानवेन्द्रायसंयुगे। नवाशिरीषमालेव सास्यवक्षस्यराज
त २१६ ततःखड्गंसमाकृष्य कोशादाकाशनिर्मलम्। भासितासितदिग्भागं लोकपा
लोऽपिनिर्ऋतिः २१७ चिक्षेपदानवेन्द्राय तस्यमूर्ध्निपपातच। पतितश्चागमत्खड्गः स
शीघ्रंशतखण्डताम् २१८ जलेशस्तूग्रदुर्द्धर्षं विषपावकभैरवम्। मुमोचपाशंदैत्यस्य भु
जबन्धाभिलाषकः २१९ सदत्यभुजमासाद्य सर्पःसद्योव्यपद्यत। स्फुटितक्रूरविक्रूरदश
नाह्निमहाहनुः २२० ततोऽश्विनौसमरुतः ससाध्याःसमहोरगाः। यक्षराक्षसगन्धर्वा दि
व्यनानास्त्रपाणयः २२१ जघ्नुर्दैत्येश्वरंसर्वे संभूयसुमहाबलाः। नचास्त्राण्यस्यसज्जन्त
गात्रेवज्राचलोपमे २२२ ततोरथादवप्लुत्य तारकोदानवाधिपः। जघानकोटिशोदेवान्
करपार्ष्णिभिरेवच २२३ हतशेषानिसैन्यानि देवानांविप्रदुद्रुवुः। दिशोभीतानिसन्त्यज्य
रणोपकरणानितु २२४ लोकपालांस्ततोदैत्यो बबन्धेन्द्रमुखान्रणे। सकेशवान्दृढैःपा
शैः पशुमारःपशूनिव २२५ समूयोरथमास्थाय जगामस्वकमालयम्। सिद्धगन्धर्वसंघु
ष्टविपुलाचलमस्तकम् २२६ स्तूयमानोदितिसुतैरप्सरोभिर्विनोदितः। त्रैलोक्यलक्ष्मी
स्तद्देशे प्राविशत्स्वपुरंयथा २२७ निषसादासनेपद्मरागरत्नविनिर्मिते। ततःकिन्नरगन्धर्व
नागनारीविनोदितैः। क्षणंविनोद्यमानस्तु प्रचलन्मणिकुण्डलः २२८॥ इति श्रीमत्स्य
पुराणे देवासुरसंग्रामे तारकजयलाभोनामद्विपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५२॥

वह शक्ति भी उसकी छातीमें जाकर शोभित होजाती भई परन्तु कुछ पीड़ानहीं देतीभयी तब दिक्पाल यक्ष अपनी तीक्ष्ण तलवारको मियानसे निकाल कर उस दैत्यके मस्तकपर मारताभया उस तलवारके भी मस्तकपर लगतेही सैकड़ों टुकड़े होगये २१५।२१८ फिर वरुण देवता उग्र दुर्धर्ष विषाग्निसेभयंकर सर्पकी फांसीको दैत्यकीभुजाके बांधनेकेलिये छोड़ताभया २१९ वह क्रूरविषवाली फांसीका सर्प भी तारकासुरकी भुजामें प्राप्तहोकर शीघ्रही खंड२होगये २२० उस समय अश्विनी-कुमार, मरुद्गण, साध्यदेवता महोरग, यक्ष, राक्षस और गन्धर्व यह सब अनेक प्रकार के दिव्य अस्त्रोंको ग्रहणकर उस दैत्यको वारंवार मारतेभये तब भी उस दैत्यके शरीरमें शस्त्रनहीं लगते भये२२१।२२२इसके पीछे तारकासुर दैत्य रथसेनीचे उतरकर अपने हाथोंसे और पैरोंकी एड़ियों से किरोड़ों देवताओंको मारताभया२२३ फिर शेषवचीहुई देवताओंकी सेनाभयभीत होकर रणकोत्याग दिशादिशामें भागगई तब वह दैत्य रणके मध्यमें से इन्द्रादिक सब लोकपालों को बांधलेता भया और विष्णु आदिको भी ऐसे बांधताभया जैसे कि व्याध पुरुष पशुओं को बांधलेताहै २२४।२२५ इसके पीछे वह तारकसुर रथमें बैठकर अपने स्थानमें जाताभया–सिद्ध गन्धर्व दैत्य और अप्सरा इत्यादिक सब दैत्यकी स्तुति करतेभये इन सबसमेत प्रसन्नतापूर्वक वह दैत्य त्रिलोकी की सम्पत्तियों से युक्त हुए अपने पुरमें प्रवेश करताभया २२६।२२७ वहां जाकर पुखराज आदिक रत्नों से जटित हुए आसन पर बैठगया और किन्नर गन्धर्वादिकों की स्त्रियों से क्रीड़ा करते हुए उसके कुंडल और मुकुटोंकी महाशोभा होतीभई २२८॥ इति द्विपचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५२॥

(सूत उवाच) प्रादुरासीत्प्रतीहारः शुभ्रनीलांशुकाम्बरः । सजानुभ्यांमहींगत्वा पिहितास्यःस्वपाणिना १ उवाचानातिविलंवाक्यमल्पाक्षरपरिस्फुटम् । दैत्येन्द्रमर्कवृन्दानां विभ्रन्तंभास्वरंवपुः २ कालनेमिःसुरान्बद्धांश्चादायद्वारितिष्ठति । सविज्ञापयतिस्थेयंक्क वन्दिभिरितिप्रभो ! ३ तन्निशम्याब्रवीद्दैत्यः प्रतीहारस्यभाषितम् । यथेष्टंस्थीयतामेभिर्गृहंमेभुवनत्रयम् ४ केवलंपाशबन्धेन विमुक्तैरविलम्बितम् । एवंकृतेततोदेवा दूयमानेनचेतसा ५ जग्मुर्जगद्गुरुंद्रष्टुं शरणंकमलोद्भवम् । निवेदितास्तेशक्राद्याः शिरोभिर्धरणिङ्गताः । तुष्टुवुःस्पष्टवर्णार्थैर्वचोभिः कमलासनम् ६ (देवा ऊचुः) त्वमोङ्कारोऽस्यंकुरायप्रसूतो विश्वस्यात्मानन्तभेदस्यपूर्वम् । सम्भूतस्यानन्तरंसत्वमूर्त्ते ! संहारेच्छोस्तेनमोरुद्रमूर्त्ते ! ७ व्यक्तिंनीत्वात्वंवपुःस्वंमहिम्ना तस्मादण्डात्स्वाभिधानादचिन्त्यः । द्यावापृथिव्योरूर्ध्वखण्डावराभ्यां ह्यण्डादस्मात्त्वंविभागङ्करोषि ८ व्यक्तंमर्त्यव्यञ्जनायुस्तवाभूदेवं विश्वस्त्वत्प्रणीतश्चकास्ति । व्यक्तंदेवाजन्मनःशाश्वतस्य द्यौस्तेमूर्द्धालोचने चन्द्रसूर्यौ ९ व्यालाःकेशाःश्रोत्ररन्ध्रादिशस्ते पादौभूमिर्नाभिरन्ध्रेसमुद्राः । मायाकारःकारणस्त्वंप्रसिद्धो वेदैःशान्तोज्योतिषात्वंविमुक्तः १० वेदार्थेषुत्वांविवृण्वन्तिबुद्धा हृत्पद्मान्तःसन्निविष्टंपुराणम् । त्वामात्मानंलब्धयोगागृणन्ति साङ्ख्यैर्यास्ताःसप्तसूक्ष्माःप्रणीताः ११ तासांहेतुर्याष्टमीचापिगीता तस्यांतस्याङ्गीयसेवैत्वमन्तम् । दृष्टामूर्तिस्थूलसूक्ष्माप्रकार

सूतजी बोले कि इसके पीछे स्वच्छ और निर्मल नीले वस्त्र वाला द्वारपाल आके अपने हाथ से मुखको ढककर पृथ्वीमें घोंटू टेककर बैठताभया १ प्रथम थोड़े२ अक्षर कहताहुआ गंभीर वचन कहनेलगा और सूर्य के समान कान्तिवाले तारकासुर से यह वचन बोला कि कालनेमि दैत्य देवताओं को बांधेहुए द्वारपर खड़ाहै और कहताहै यह बँधे हुए देवता कहां पहुंचाने चाहियें २ । ३ तब तारकासुर ने आज्ञादी कि त्रिलोकीमात्र में मेरे जिस स्थानमें यह रहना चाहें वहांही इनकी इच्छा के समान पहुंचादो ४ इनकी फांसीको शीघ्र खोलो ऐसे आधीन किये हुए देवता दुःखित होकर ब्रह्माजी के दर्शन के निमित्त शरणमें जातेभये फिर इन्द्रादिक देवता भी अपने २ शिरों से पृथ्वीमें प्रणाम करते हुए स्पष्ट वाणियोंसे कहने लगे ५। ६ कि आप इस संसारके अंकुरके निमित्त ॐकारस्वरूपी होतेहो रचना के पीछे सत्वमूर्त्ति होतेहो और संहार समय में रुद्रमूर्त्ति हो जाते हो ऐसे जो आपहैं उसके अर्थ नमस्कारहै ७ तुम अपनी महिमासे मायाको ग्रहणकर अंडको उत्पन्न करके उस अंडके दो विभागकर पृथ्वी और स्वर्गको रचते हो ८ मनुष्योंकी आयुको तुमही रचतेहो सब देवताओंका जन्म भी तुमही से होताहै स्वर्ग तुम्हारा मस्तक है सूर्य्य और चन्द्रमा नेत्र हैं सर्पवालहैं दिशा कानहैं पृथ्वी चरणहैं समुद्र नाभिहै तुमही मायाके रचने वाले प्रसिद्ध कारणहो वेदोंसे शान्तहो ज्योति करके विमुक्तहो वेदोंमें और अर्थोंमें तुमको ढूंढते हैं हृदय कमलमें प्रवेशहुए तुमको योगीजन सांख्य शास्त्रसे पहचानते हैं ९ । ११ सांख्य शास्त्रवालोंने सातसूक्ष्म मूर्त्ति कही हैं उनमें तुम हेतुरूप आठवीं मूर्त्तिहो उन्हीं सब मूर्त्तियों में तुमको गावते हैं देवताओंने जो कई भावकारण

देवैर्भावा:कारणैःकैश्चिदुक्ताः १२ सम्भूतास्तेत्वत्तएवादिसर्गे भूयस्तांतांवासनान्तेऽभ्यु
पेयुः। त्वत्सङ्कल्पेनान्तमायातिगूढः कालोमेघोध्वस्तसंख्याविकल्पः १३ भावाभावव्य
क्तिसंहारहेतुस्त्वंसोऽनन्तस्तस्यकर्त्तासिचात्मन्!। येऽन्येसूक्ष्माःसन्तितेभ्योऽभिगीत:स्थू
लाभावाश्चाद्दतारश्चतेषाम् १४ तेभ्यःस्थूलैस्तैःपुराणैःप्रतीतो भूतंभव्यंचैवमुद्भूतिभा
जाम्। भावेभावेभावितंत्वायुनक्ति युक्तयुक्तंव्यक्तिभावान्निरस्य। इत्थन्देवोभक्तिभाजां
शरण्यस्त्राताऽगोप्तानोभवानन्तमूर्त्तिः १५ विरिञ्चिममराःस्तुत्वा ब्रह्माणमविकारिणम्। त
स्थुर्मनोभिरिष्टार्थ सम्प्राप्तिप्रार्थनास्ततः १६ एवंस्तुतोविरिञ्चिस्तु प्रसादंपरमंगतः। अ
मरान्वरदेनाह वामहस्तेननिर्दिशन् १७ (ब्रह्मोवाच) नारीयाऽभर्तृकाऽकस्मात् तनुस्ते
त्यक्तभूषणा। नराजतेतथाशक्र! म्लानवक्त्राशिरोरुहा १८ हुताशनविमुक्तोऽपि नधूमे
नविराजसे। भस्मनेवप्रतिच्छन्नो दग्धदावश्चिरोषितः १९ यमामयमयेनैव शरीरेत्ववि
राजसे। दण्डस्यालम्बनेनेव ह्यकृच्छ्रुस्तुपदेपदे २० रजनीचरनाथोऽपि किंभीतइवभा
षसे। राक्षसेन्द्रक्षताराते त्वमरातिक्षतोयथा २१ तनुस्तेवरुणोच्छुष्का परीतस्येववह्नि
ना। विमुक्तरुधिरंपाशं फणिभिःप्रविलोकयन् २२ वायो! भवान्विचेतस्कस्त्वंस्निग्धैरि
वनिर्जितः। किन्त्वंबिभेषिधनद! संन्यस्यैवकुबेरताम् २३ रुद्रास्त्रिशूलिनःसन्तो वदध्वं
वहुशूलताम्। भवन्तःकेनतत्क्षिप्तं तेजस्तुभवतामपि २४ अकिञ्चित्करतांयातः करस्ते
नविभासते। अलंनीलोत्पलाभेन चक्रेणमधुसूदन! २५ किंत्वयानुदरालीन भुवनंप्रवि

कहे हैं वह आदि सर्ग में तुमही से उत्पन्न हुए हैं फिर अन्तकालमें तुमही में प्राप्त होजाते हैं तुम्हारे-
ही संकल्पसे प्रलयकाल होताहै १२।१३ सब भाव पृथ्वी आदिक स्थूल व्यक्तियोंके संहारके हेतु हैं
उन सब हेतुओंके कर्ता आपही हैं आपही सूक्ष्म और स्थूलभूतोंके रचनेवाले हो उन प्राचीन स्थूल
भूतोंसे जो यह उत्पन्न हुआ जगत् प्रतीत होताहै वह सब आपकाही स्वरूप है तुमको पण्डितजन
मायासे पृथक् देखते हैं ऐसे आप देवदेवके हम शरण आये हैं आप हमारी रक्षाकरो १४।१५ इस
प्रकारसे देवता अविकारी ब्रह्माजीकी स्तुति करके प्रार्थना करते हुए स्थित होगये इसप्रकार से स्तुति
किये हुए ब्रह्माजी परम प्रसन्न होकर देवताओंको वरदेने के निमित्त बोले १६।१७ ब्रह्माजी कहते हैं
कि हेइन्द्र जिस प्रकार विधवा स्त्री आभूषणोंसे रहितहो स्नानकरके शिर गुँथाकर नहीं शोभितहोती
है उसी प्रकार तूभी शोभित नहीं है यह अग्निदेव धुएँसे रहितहै तौ भी प्रकाशित नहीं है राखमें
दबीहुई अग्निके समान होरहाहै हे धर्मराज तुमभी अपने दण्ड से प्रकाशित होकरभी प्रकाशित
नहीं हो पद पदमें कष्टहोताहै हे चन्द्रमा तुमभी भयभीतों के समान बोलतेहो और हे राक्षस तूभी
लुटेहुए के समान दुखित होरहा है १८।२१ हे वरुण तेरा शरीर भी ऐसा सूखरहाहै मानो चारों को
अग्नि लगगईहो तेरी फांसी तेरेपास नहीं दीखती है हे वायुदेव तुमभी अचेतसे विदित होतेहो हे
कुबेर तुम किस हेतुसे डररहेहो हेरुद्रो तुम सब भी त्रिशूल धारीहो तुम्हारा तेज किसने हरलिया है
ऐसा विदित होताहै मानो तुम्हारे हाथसे कुछ भी कार्य्य नहीं हुआ हे विष्णु क्या तुम्हारा चक्र पूरा

लोकनम्। क्रियतेस्तिमिताक्षेण भवताविश्वतोमुख ! २६ एवमुक्ताःसुरास्तेन ब्रह्मणाब्रह्ममूर्तिना। वाचांप्रधानभूतत्वान्मारुतंतमचोदयन् २७ अथविष्णुमुखैर्देवैः श्वसनःप्रतिबोधितः। चतुर्मुखंतदाप्राह चराचरगुरुंविभुम् २८ नतुवेत्सिचराचरभूतगतं भवभावमतीवमहानुच्छ्रितःप्रभवः। पुनरर्थिवचोविस्तृतश्रवणोपमकौतुकभावकृतः २९ त्वमनन्तकरोषिजगद्भवतां सचराचरगर्भविभिन्नगुणाम्। अमरासुरमेतदशेषमपि त्वयितुल्यमहोजनकोऽसियतः। पितुरस्तितथापिमनोविकृतिःसगुणो विगुणोवलवानवलः ३० भवतोवरलाभनिवृत्तभयः कुलिशाङ्कुसुतोदितिजोऽतिवलः। सचराचरनिर्मथनेकिमितिकितवस्तुकृतोविहितोभवता ३१ किलदेवत्वयास्थितयेजगतां महदद्भुतचित्रविचित्रगुणाः। अपितुष्टिकृतःश्रुतकामफला विहिताद्विजनायकदेवगणाः ३२ अपिनाकमभूल्लयज्ञभुजां भवतोविनियोगवशात्सततम्। अपहृत्यविमानगणंसकृतोदितिजेनमहामरुभूमिसमः ३३ कृतवानसिसर्वगुणातिशयं यमशेषमहीधरराजतया। सममिङ्गितभावविधिःसचगिरिर्गगनेनसदोच्छ्रयतांहिगतः ३४ अधिवासविहारविधावुचितोदितिजेन पविक्षतश्रृङ्गतटः। परिलुण्ठितरत्नगुहानिवहो वहुदैत्यसमाश्रयताङ्गमितः ३५ सुरराज ! सतस्यभयेनगतं व्यदधादशरीरइतोऽपिवृथा। उपयोग्यतयाविवृतंसुचिरं विमलद्युतिपूरितदिग्वदनम् ३६ भवतैवविनिर्मितमादियुगे सुरहेतिसमूहमनुत्थमिदम्। दितिजस्यशरीरमवाप्यगतं शतधामतिभेदमिवाल्पमनाः ३७ आसारधूलिध्वस्ताङ्गा द्वारस्थास्थकद

होगया अथवा क्या तुम आंखमीचकर त्रिलोकीको उलटा किया चाहतेहो २२। २६ जब ब्रह्माजीने तब देवताओंके प्रति ऐसे वचन कहे तब अधिक बोलनेवाले वायुको विष्णु आदिक प्रेरणाकरतेभये तब वायु देवता देवदेव चराचरके गुरू ब्रह्माजीसे कहनेलगे २७। २८ हे ब्रह्मन् तुम चराचर भूतोंके प्रयोजनोंको जानतेहुए भी उनकी प्रार्थना पूरी करनेके निमित्त आश्चर्य्य पूर्व्वक उन भूतोंके वृत्तान्तको पूछतेहो तुम सब चराचर जगत् की सत्त्वादिक गुणोंके विभागके अनुसार देवताओं समेत रचना करतेहो आपसबके जनकहो ऐसे आपके भी मनमें क्या विकार होताहै २९। ३० आपसे वरदान लेकर तारकासुर दैत्य निर्भयहोकर त्रिलोकीको बाधा देरहाहै आपने क्या उसी छली दैत्यको उत्तम और योग्यबनादिया ३१ और हेदेव आपहीने जगत्की स्थितिके निमित्त विचित्रगुणवाले कामनाओंके पूर्ण करने वाले सब देवतालोग रचेहैं ३२ तुम्हारेही विनियोगसे यज्ञों के भोग करनेवाले देवताओंके निमित्त जो स्वर्गरचागया है वह स्वर्ग तारकासुर दैत्यने मरुस्थल देशके समान उजाड़ दियाहै जो पर्व्वत इन्द्र के वज्रसे टूटगयाथा वह पर्व्वत सब दैत्योंके वासकरने सेआकाशके समान उँचाई को प्राप्तहोगयाहै और रत्नसमूहोंसे भररहा है हेदेव वह स्वर्ग उसदैत्यके भय से नष्टहोगयाहै सब देवता मृतकोंके समानहोरहेहैं नंगेहुए देवताओं की कान्ति प्रकाशित होरही है हेदेव यह सब देवताओंका गण सृष्टिकी आदिमें आपहीने रचाहै सो इस दैत्यके आश्रयहोकर ऐसे नष्टहोरहाहै जैसे कि मूर्ख पुरुषकी बुद्धिके मानो सैकड़ोंभेद होगयेहों ३३।३७ उस दैत्यकी सेनाकी

र्थिनः। लब्धप्रवेशाःकृच्छ्रेण वयंतस्यामरद्विषः ३८ सभायाममरादेव! निकृष्टेऽप्युपवे
शिताः। वेत्रहस्तैरजल्पन्तस्ततोऽपहसितास्तुतैः ३९ महार्याःसिद्धसर्वार्था भवन्तः
स्वल्पभाषिणः। चाटुयुक्तमथोकर्म्म ह्यमराबहुभाषत ४० सभयंदैत्यसिंहस्य सशक्र
स्यतुसंस्थिताः। वदतेतिचदैत्यस्य प्रेष्यैर्विहसिताबहु ४१ ऋतवोमूर्तिमन्तस्तमुपा
सन्तेह्यहर्निशम्। कृतापराधसन्त्रासं नत्यजन्तिकदाचन ४२ तन्त्रीत्रयलयोपेतं सि
द्धगन्धर्वकिन्नरैः। सुरागमुपधानित्यं गीयतेतस्यवेश्मसु ४३ हन्ताकृतोपकरणैर्मित्रा
णिगुरुलाघवैः। शरणागतसन्त्यागी त्यक्तसत्यपरिश्रयः ४४ इतिनिःशेषमथवा निः
शेषंवनशक्यते। तस्याविनयमाख्यातुं स्रष्टातत्रपरायणम् ४५ इत्युक्तःस्वात्मभूर्देवः सु
रैर्दैत्यविचेष्टिते। सुरानुवाचभगवांस्ततः स्मितमुखाम्बुजः ४६ (ब्रह्मोवाच) अवध्य
स्तारकोदैत्यः सर्वैरपिसुरासुरैः। यस्यवध्यःसनाद्यापि जातस्त्रिभुवनेपुमान् ४७ मयास
वरदानेन छन्दयित्वानिवारितः। तपसःसाम्प्रतंराजा त्रैलोक्यदहनात्मकात् ४८ सचव
धंवधंदैत्यः शिशुतःसप्तवासरात्। ससप्तदिवसोबालः शङ्कराद्योभविष्यति ४९ तारक
स्यनिहन्तास भास्कराभोभविष्यति। साम्प्रतंचाप्यपत्नीकः शङ्करोभगवान्प्रभुः ५०
यच्चाहमुक्तवान्यस्या ह्युत्तानकरतासदा। उत्तानोवरदःपाणिरेष देव्याःसदैवतु ५१

धूलिसे टूटेअंगवाले हमसबदेवता उसदैत्यके द्वारपाल बनेरहतेहैं ३८ हे देव हम कुछ भी नहींबोल सक्ते हैं तिसपर भी वह दैत्य हमको सभामें नीचे आसनोंपर बैठाकर हाथमें बेत लेकर बहुतसा झिड़कताहै और यह हास्य करताहै ३९ कि हे देवताओ तुम बड़ेश्रेष्ठ हो सब अपना प्रयोजन सिद्ध करनेवाले हो अब बहुत बोलरहेहो ४० अबतुम इसतारकासुरसे क्यों भय करते हो तुम सबइन्द्रके समीप बैठे हो अब किसका भय है ऐसे २ अनेक प्रकारके हास्य कियाकरता है हे देव सब ऋतु भी मूर्तियां धारण करके उसदैत्यकी उपासना करती हैं वह यद्यपि अनेक अपराध भी करताहै तौ भी उसको नहींत्यागतीहैं ४१।४२ उसके घरमें सिद्ध गन्धर्व और किन्नरादिक अच्छेप्रकारसे रागोंकोगाते हैं ४३ भलाकरनेवाले और मित्रता करनेवालों का भी मारनेवाला है शरणागतका और सत्यका त्यागनेवाला है ४४ ऐसे २ अनेक असभ्य उसके व्यवहारोंको कोई भी कहनेको समर्थ नहीं है यह देवताओं के वचनसुनकर ब्रह्माजी हँसकर उनसे कहनेलगे ४५।४६ कि हे देवतालोगो यह तारकासुर दैत्य त्रिलोकी में किसी के भी हाथसे मरनेके योग्य नहीं है इसका मारनेवाला पुरुष अभीतक नहीं पैदाहुआहै ४७ वह दैत्य अपने तपके प्रभावसे मुझसे वरदानलेगयाहै सो मैंने छलकरके निवारण करदिया है वह दैत्य त्रिलोकी मात्रका भस्मकरनेवाला राजा होरहा है उसने अपनीमृत्यु सात दिनके बालकके हाथसे मांगी है सो उसका मारनेवाला बालक शिवजी से उत्पन्न होगा ४८ अर्थात् तारकासुरका मारनेवाला सूर्य्य की समान कान्तिवाला महादेवजी का पुत्र होगा अभी तो शिवजी स्त्रीसे रहित हैं ४९।५० उस दैत्यको वरदेने के समय जिस मूंदेहाथसे वर दियागयाथा वहीमूंदाहाथ देवीको वरदेनेवाला होगा वह देवी हिमाचलकी पुत्री होगी उसके गर्भसे जो पुत्र होगा उसीके हाथ —

हिमाचलस्यदुहितासातुदेवीभविष्यति। तस्या सकाशाद्यःशर्वस्त्वरण्यांपावकोयथा ५२
जनयिष्यतितंप्राप्य तारकोऽसिभविष्यति। मयाप्युपायःसकृतो यथैवंहिभविष्यति ५३
शेषश्चाप्यस्यविभवो विनश्येत्तदनन्तरम्। स्तोककालंप्रतीक्षध्वन्निर्विशङ्केनचेतसा ५४
इत्युक्तास्त्रिदशास्तेन साक्षात्कमलजन्मना। जग्मुस्तंप्रणिपत्येशं यथायोगंदिवौकसः५५
ततोगतेषुदेवेषु ब्रह्मालोकपितामहः। निशांसस्मारभगवान् स्वतनोःपूर्वसम्भवाम् ५६
ततोभगवतीरात्रि रुपतस्थेपितामहम्। तांविविक्तेसमालोक्य ब्रह्मोवाचविभावरीम् ५७
(ब्रह्मोवाच) विभावरि! महत्कार्यं विबुधानामुपस्थितम्। तत्कर्तव्यंत्वयादेवि! शृणुका
र्यस्यनिश्चयम् ५८ तारकोनामदैत्येन्द्रः सुरकेतुरनिर्जितः। तस्याभावायभगवान् जनयि
ष्यतिचेश्वरः ५९ सुतंसभवितातस्य तारकस्यान्तकारकः। शङ्करस्याभवत्पत्नी सती
दक्षसुतातुया ६० साम्प्रताकुपितादेवी कस्मिंश्चित्कारणान्तरे। भविताहिमशैलस्य दुहि
तालोकभावनी ६१ विरहेणहरस्तस्या मत्वाशून्यंजगत्त्रयम्। तपस्यन्हिमशैलस्य कन्द
रेसिद्धसेविते ६२ प्रतीक्षमाणस्तज्जन्म कञ्चित्कालंनिवत्स्यति। तयोःसुतस्ततपसोर्भवि
ताथोमहाबलः ६३ सभविष्यतिदैत्यस्य तारकस्यविनाशकः। जातमात्रातुसादेवी स्वल्प
संज्ञाचभामिनी ६४ विरहोत्कण्ठितागाढं हरसङ्गमलालसा। तयोःसुतस्ततपसोः संयोगः

से तारकासुर मरेगा वह उपाय मैंने कररक्खा है ५१।५३ थोड़ेसे ऐश्वर्य्यका भोग उसदैत्यका बाकी रहगयाहै इसहेतुको जानकर तुम निश्शंक होके कुछ कालतक संतोषरक्खो ५४ जब ब्रह्माजीने देवताओंसे यह बात कही तब सबदेवता अपने २ स्थानको जातेभये जब सबदेवता लोग अपने २ स्थानको चलेगये तब लोकों के पितामह ब्रह्माजी अपने शरीरसे प्रथम उत्पन्नहुई रात्रिको स्मरण करतेभये उस समय भगवती रात्रि ब्रह्माजी के पास आती भयी उसको एकान्तमें देख ब्रह्माजी बोले ५५।५७ कि हेरात्रि अब देवताओंका महाकार्य्य उपस्थितहै सो हे देवी वहकार्य्य तेरेहीकरनेकेयोग्यहै ५८ यह तारकासुरदैत्य देवताओं से नहीं पराजय कियाजाताहै उसके मारने के निमित्त शिवजी पुत्र उत्पन्नकरेंगे शिवजीकी स्त्री दक्षकीपुत्री सतीनाम थी वह सती क्रोधकरके किसी कारणसे भस्महोगई है, वह हिमाचलकेघर मेनास्त्री में जन्मलेंगी और शिवजी उस सतीकेविरहसे त्रिलोकी को शून्यमानकर हिमाचलपर्व्वतकी कन्दरामें तपकररहे हैं वहां उस सतीकी वाटदेखतेहुए कुछ काल पर्य्यन्त शिवजी वासकरेंगे और वहांही उनदोनोंके प्रभावसे महाबली पुत्रउत्पन्नहोगा वह तारकासुरको अवश्यमारेगा और हेशुभानने वह सती जन्मतेही कुछ समर्थहोकर शिवजीकी उत्कण्ठाकरके आवेगी तब उनकासंगम होगा उस समय कुछभी उनका विशेष न होगा इसपर भी तारकासुरके मरनेका सन्देह दीखता है इस हेतुसे उनके मैथुनकी आसक्तिमें तुमको यह विघ्न करदेना चाहिये कि उस सतीकी माताके उदरमें तू प्राप्त होकर सतीको अपने रूपसे रंगदे अर्थात् काला रूपकरदे ऐसा कारण होने से जब सती अर्थात् पार्वतीका और शिवजीका संगम होगा तब शिवजी पार्वतीको हास्यपूर्वक त्याग कर अलग करेंगे तब पार्वती क्रोध करके तपस्या करने चली जायगी फिर शिवजी के सकाशसे त्रिल

स्याच्छुमानने ६५ ततस्ताभ्यान्तुजनितः स्वल्पोवाकलहोभवेत्। ततोऽपिसंशयोभूय स्तारकंप्रतिदृश्यते ६६ तयोःसंयुक्तयोस्तस्मात् सुरताशक्तिकारणे। विघ्नस्त्वयाविधात व्यो यथाताभ्यांतथाशृणु ६७ गर्भस्थानेचतन्मातुः स्वेनरूपेणरञ्जय। ततोविहायशर्व स्तां विश्रान्तोनर्मपूर्वकम् ६८ भर्त्सयिष्यतितांदेवीं ततःसाकुपितासती। प्रयास्यतितप श्चर्तुंतत्तस्मात्तपसेपुनः ६९ जनयिष्यतियंशर्वादमितद्युतिमपिडतम्। सभविष्यतिहन्तावै सुरारीणामसंशयम् ७० त्वयापिदानवादेवि! हंतव्यालोकदुर्जयाः। यावच्चनसतीदेहसंक्रान्त गुणसञ्चया ७१ तत्सङ्गमेनतावत्त्वं दैत्यान्हन्तुंनशक्ष्यसे। एवंकृतेतपस्तप्त्वासृष्टिसंहार कारिणी ७२ समाप्तनियमादेवीयदाचोमाभविष्यति। तदास्वमेवतद्रूपंशैलजाप्रतिपत्स्य ते ७३ तनुस्तवापिसहजा सैकानंशाभविष्यति। रूपांशेनतुसंयुक्ता त्वमुमायांभविष्यसि ७४ एकानंशेतिलोकस्त्वां वरदे! पूजयिष्यति। भेदैर्बहुविधाकारैःसर्वगाकामसाधिनी ७५ ओङ्कारवक्त्रागायत्री त्वमितिब्रह्मवादिभिः। आक्रान्तिरूर्जिताकारा राजभिश्चमहाभु जैः ७६ त्वंभूरितिविशांमाता शूद्रैःशैवीतिपूजिता। क्षान्तिर्मुनीनामक्षोभ्या दयानियमि नामिति ७७ त्वंमहोपायसन्दोहा नीतिर्नयविसर्पिणाम्। परिच्छित्तिस्त्वमर्थानां त्वंमही प्राणिहृच्छया ७८ त्वंमुक्तिःसर्वभूतानां त्वंगतिःसर्वदेहिनाम्। त्वञ्चकीर्तिमतांकीर्तिस्त्वं मूर्तिःसर्वदेहिनाम् ७९ रतिस्त्वंरक्तचित्तानां प्रीतिस्त्वंहृष्टदर्शिनाम्। त्वंकान्तिःकृतभूषा णां त्वंशांतिर्दुःखकर्म्मणाम् ८० त्वंभ्रान्तिःसर्ववोधानां त्वंगतिःक्रतुयाजिनाम्। जलधी नांमहावेला त्वञ्चलीलाविलासिनाम् ८१ सम्भूतिस्त्वंपदार्थानां स्थितिस्त्वंलोकपालि

पुत्र को जनेगी वह अवश्य दैत्यों का मारने वाला होवेगा ६९। ७० हे देवि रात्रि इस लोक में तुमको भी दुर्जय दैत्योंका मारना योग्यहै परन्तु जब तक तू पार्वतीके शरीरको स्पर्श न करेगी तब तक दैत्योंको नहीं मार सकेगी सो तुझको जैसा मैंने कहाहै वैसाही करना योग्यहै अर्थात् उसको वैसाही करदे इसके अनन्तर जब पार्वती तपस्या करचुकेगी और जब उसका नियम समाप्त होजा- यगा तब वह फिर अपने गौर स्वरूपको प्राप्त होजायगी ७१।७३ तेरे भी स्वरूपको वह कई अंशों में प्राप्त करदेगी एक अंशसे तू पार्वतीमें रहेगी-एक अंशसे तू लोकोंको वरदेने वाली होकर पूजीजा- यगी और बहुतसे भेदोंसे सबकामनाओं की सिद्ध करने वाली होवेगी ७४।७५ तुम ॐकार मुख वाली गायत्रीहो ऐसा ब्रह्मवादी वर्णन करते हैं और बड़े २ राजाओंसे बढ़ी हुई आक्रांति कहीजाती हो ७६ वैश्यलोग भू अर्थात् भूमिके समान माता कहते हैं शूद्रलोग शैवी अर्थात् शिवकी भार्य्या मानते हैं मुनि लोग तुझकोक्षमा और दयाकहतेहैं ७७ नीतिके जानने वालोंको तुम महा उपायकी देने वालीहो सब अर्थोंमें रहने वाली होकर सिद्धि रूपहो सब प्राणियोंके रहने के निमित्त पृथ्वीरूप हो तुम्हीं सब भूतोंकी मुक्तिहो और अखिल देहधारियोंकी गतिहो ७८।७९ विषयी लोगों को तुम रति रूपहो प्रसन्न रहने वालोंके लिये प्रीतिहो आभूषण पहरने वालोंके लिये कान्तिहो दुःखकर्मोंकी तुम शान्तिहो ८० सब बोधोंकी तुमभ्रान्तिहो यज्ञकरने वालोंकी गतिहो समुद्रोंकी वेलाहो विलासी

नी। त्वंकालरात्रिर्निःशेषभुवनावलिनाशिनी ८२ प्रियकण्ठग्रहानन्ददायिनीत्वंविभावरी। इत्यनेकविधैर्देवि! रूपैर्लोकेत्वमर्चिता ८३ येत्वांस्तोष्यन्तिवरदे! पूजयिष्यन्तिवापिये। तेसर्वकामानाप्स्यन्ति नियतानात्रसंशयः ८४ इत्युक्तातुनिशादेवी तथेत्युक्ताकृताञ्जलिः। जगामत्वरितातूर्णं गृहंहिमगिरेःपरम् ८५ तत्रासीनांमहाहर्म्ये रत्नभित्तिसमाश्रयाम्। ददर्शमेनामापाण्डुच्छविवक्त्रसरोरुहाम् ८६ किञ्चिच्छ्यामसुखोदग्रस्तनभारावनामिताम्।महौषधिगणाबद्धमन्त्रराजनिषेविताम्८७उद्वहत्कनकोन्नद्धजीवरक्षामहोरगाम्।मणिदीपगणज्योतिर्महालोकप्रकाशिते८८ प्रकीर्णबहुसिद्धार्थेमनोजपरिवारके। शुचिन्यंशुकसच्छन्नभूशय्यास्तरणोज्ज्वले ८९ धूपामोदमनोरम्ये सज्जसर्वोपयोगिके। ततःक्रमेणदिवसे गतेदूरंविभावरी ९० व्यजृम्भतसुखोदर्के ततोमेनामहागृहे। प्रसुप्तप्रायपुरुषे निद्राभूतोपचारिके ९१ स्फुटालोकेशशभृति भ्रान्तिरात्रिविहङ्गमे। रजनीचरभूतानांसङ्घैराघ्रतचत्वरे ९२ गाढकण्ठग्रहालग्नसुभगेष्टजनेततः। किञ्चिदाकुलतांप्राप्ते मेनानेत्राम्बुजद्वये ९३ आविवेशमुखेरात्रिः सुचिरस्फुटसङ्गमा। जन्मदायाजगन्मातुः क्रमेणजठरान्तरे ९४ आविवेशान्तरंजन्म मन्यमानाक्षपातुवै। अरञ्जयच्छविन्देव्या गुहारण्येविभावरी ९५ ततोजगत्पतिप्राणहेतुर्हिमगिरिप्रिया। ब्राह्मेमुहूर्तेसुभगेव्यसूयतगुहारणिम् ९६ तस्यान्तुजायमानायां जन्तवःस्थाणुजङ्गमाः। अभवन्सुखिनःसर्वे

पुरुषोंकी तुम लीलाहो ८१ पदार्थों की तुम संभूतिहो लोकोंकी पालन करनेवाली तुमही स्थितिहो संपूर्ण लोकोंकी नाश करनेवाली कालरात्रिहो प्रियजनोंके कण्ठसे मिलने में तुम आनन्ददायिनी हो हे देवि तुम इस प्रकार करके अनेक रूपोंके द्वारा जगत् में पूजी जातीहो ८२।८३ हे वरदे जो पुरुष तुम को पूजेंगे अथवा स्तुतिकरेंगे उनकी सब कामना निस्सन्देह सिद्ध होजायँगी ८४ इसप्रकारसे ब्रह्माजीसे स्तुति कीहुई रात्रिदेवी हाथ जोड़के ब्रह्माजीकी आज्ञाको ग्रहण कर शीघ्रही हिमाचल पर्व्वतपर चलीजातीभई वहां उत्तम स्थानमें रत्नोंकी दिवारके सहारे बैठीहुई गौरमुखवाली मेना स्त्रीको देखतीभयी ८५।८६ कुछेक काले वर्णके मुखवाले ऊंचे स्तनोंके भारसे नम्रहुई नतरूप महा ओषधियोंकी सेवनकरनेवाली जीवकी रक्षाके निमित्त स्वर्णमय सर्प यन्त्रको धारणकियेहुए वह मेनानामस्त्री मणिदीपकोंके प्रकाशसे शोभित व्यजनादिक सबवस्तुओंसे अलंकृत सुन्दरवस्त्रों से मंडित सुन्दर धूपादि सुगन्धियों से धूपित तकिये आदि उपयोगी वस्तुओं से युक्तहुई शय्यापर सायंकाल में स्थित होतीभई इसके पीछे जब सब पुरुष सोगये उसकाल में वह मेनाभी सुखपूर्व्वक सोगई ८७। ९१ उस रात्रिमें चन्द्रमा प्रकाशितहुए भूत और निशाचर चौराहे पर घूमने लगे ९२ रसिक पुरुष स्त्रियोंके संगरमण करनेलगे ऐसी रात्रि के समयमें मेनास्त्री के भी नेत्र मिचनेलगे वह समय पाकर वह ब्रह्माकी प्रेरित रात्रि उस मेनाके मुख में प्रवेशकर गई और क्रमपूर्व्वक उनके उदरमें भी प्रविष्टहोगई ९३। ९४ फिर जिस समय पार्वती के जन्मका समय हुआ तब रात्रि अपने कालेरूपसे पार्वतीको रंगदेती भई ९५ फिर जगत् के पति शिवजीकी प्राण-

सर्वलोकनिवासिनः ९७ नारकाणामपितदा सुखंस्वर्गसमंमहत्। अभवत्क्रूरसत्वानां चेतःशान्तंचदेहिनाम् ९८ ज्योतिषामपितेजस्त्वमभवत्सुरतोन्नता। वनाश्रिताश्चौषधयः स्वादुवन्तिफलानिच ९९ गन्धवन्तिचमाल्यानि विमलश्चनभोऽभवत्। मारुतश्चसुख स्पर्शो दिशाश्चसुमनोहराः १०० तेनचोद्भूतफलितपरिपाकगुणोज्ज्वलाः अभवत्पृथिवी देवी शालिमालाकुलापिच १०१ तपांसिदीर्घचीर्णानि मुनीनांभावितात्मनाम्। तस्मिन् गतानिसाफल्यं कालेनिर्मलचेतसाम् १०२ विस्मृतानिचशास्त्राणि प्रादुर्भावंप्रपेदिरे। प्र भावस्तीर्थमुख्यानां तदापुण्यतमोऽभवत् १०३ अन्तरिक्षेसुराश्चासन् विमानेषुसहस्रशः। समहेन्द्रहरिब्रह्म वायुवह्निपुरोगमाः १०४ पुष्पवृष्टिप्रमुमुचुस्तस्मिंस्तुहिमभूधरे। जगुर्गन्ध र्वमुख्याश्च ननृतुश्चाप्सरोगणाः १०५ मेरुप्रभृतयश्चापि मूर्तिमन्तोमहाबलाः। तस्मिन्म होत्सवेप्राप्ते दिव्यप्रभृतपाणय. १०६ सरितःसागराश्चैव समाजग्मुश्चसर्वशः। हिमशैलो ऽभवल्लोके तथासर्वैश्चराचरैः १०७ सेव्यश्चाप्यभिगम्यश्चसश्रेयांश्चाचलोत्तमः। अनु भूयोत्सवंदेवा जग्मुःस्वानालयान्मुदा १०८ देवगन्धर्वनागेन्द्रशैलशीलावनीगुणैः। हिम शैलसुतादेवी स्वयंपूर्विकयाततः १०९ क्रमेणवृद्धिमानीता लक्ष्मींवानलसैर्बुधैः। क्रमेण रूपसौभाग्यप्रबोधैर्भुवनत्रयम् ११० अजयद्रूपयच्चापि निःसाधारेणेनगात्मजा। एतस्मि

प्रिया पार्वती को मेना सुन्दर मुहूर्त्तमें जनती भई ९६ जब पार्वतीजीका जन्महुआ तब चराचर सब लोकनिवासी जीवमात्र प्रसन्नहोते भये ९७ उनके जन्मतेही नरकके भी सबजीवों को स्वर्गके समानसुखहोताभया क्रूर स्वभाववाले जीव शान्तप्रकृतिवाले होगये तारागणों में तेजबढ़ गया देवताओंकी उन्नतिहोगई वनके फल और ओषधिया सब सुस्वादुहोगये पुष्प सुगन्धित होगये अच्छी प्रिय त्रिविध अनुकूल वायुचलने लगी आकाश स्वच्छहोगया दिशानिर्मल होगईं और पार्वतीजीकेही प्रभावसे पृथ्वीकी सबखेती अन्न और फूलों से पूरित होगई और निर्मल चित्तवाले मुनि लोगों के बहुत कालतक के कियेहुए तप सफल होगये ९८। १०२ विस्मृतहुए शास्त्र स्मरण होकर प्रकट होगये मुख्य २ तीर्थोंका प्रभाव बढ़गया १०३ आकाशमें हजारों विमानोंपर चढ़ेहुए देवता विचरने लगे ब्रह्मा विष्णु इन्द्र वायु और अग्नि यह सब भी महाप्रसन्न हुए और निर्भय विचरने लगे १०४ उस हिमाचलके ऊपर पुष्पों की वर्षाकरतेभये मुख्य २ गन्धर्व गावनेलगे और अप्सराओं के गण नाचनेलगे १०५ सुमेरु आदिक पर्व्वत मूर्त्तिको धारणकर हिमाचलकी सेवामें आवते भये और सबनदी समुद्रादिक भी इसीप्रकारसे रूपधारण करके हिमाचलके घरआतेभये १०६। १०७ वह हिमाचलपर्व्वत सबपुरुषों के सेवन करने के योग्य मंगलरूप होताभया उस पर्व्वतके दर्शन करके सबदेवता अपने २ स्थानोंको आतेभये १०८ देवता गन्धर्व नागेन्द्र पर्व्वत इनके शीलस्वभावसे युक्त हुई हिमाचल की पुत्री पार्वतीजी आपही क्रम२ से बढ़तीहुई और अपनेरूप सौभाग्यादिक गुणों से त्रिलोकी को भूपित करती भयी इसके अनन्तर इन्द्रने अपने कार्य्यकी सिद्धिके निमित्त नारदमुनिका स्मरण किया और उसी समय नारदजी इन्द्रके भवनमें आतेभये उस

न्तरेशक्रो नारदंदेवसम्मतम् १११ देवर्षिमथसस्मार कार्य्यसाधनसत्वरम्। स्मृतिश्च
क्रस्यविज्ञाय जातान्तुभगवांस्तदा ११२ आजगाममुदायुक्तो महेन्द्रस्यनिवेशनम्। तंतु
दृष्ट्वासहस्राक्षः समुत्थायमहासनात् ११३ यथार्हेणतुपाद्येन पूजयामासवासवः। शक्रप्रणी
तान्तांपूजां प्रतिगृह्ययथाविधि ११४ नारदःकुशलंदेवमपृच्छत्पाकशासनम्। पृष्टेच
कुशलेसक्तः प्रोवाचवचनंप्रभुः ११५ (इन्द्र उवाच) कुशलस्यांकुरेतावत् सम्भूतेभुवन
त्रये। तत्फलोद्भवसम्पत्तौ त्वंभवातन्द्रितोमुने! ११६ वेत्सिचैतत्समस्तंत्वं तथापिप
रिचोदकः। निर्वृतिंपरमांयाति निवेद्यार्थंसुहृज्जने ११७ तद्यथाशैलजादेवी योगंयायात्
पिनाकिना। शीघ्रंतदुद्यमःसर्वैरस्मत्पक्षैर्विधीयताम् ११८ अवगम्यार्थमखिलन्ततश्चा
मन्त्र्यनारदः। शक्रंजगामभगवान् हिमशैलनिवेशनम् ११९ तत्रद्वारेसविप्रेन्द्रश्चित्र
वेत्रलताकुले। वन्दितोहिमशैलेन निर्गतेनपुरोमुनिः १२० सहप्रविश्यभवनं भुवोभूषण
ताङ्गतम्। निवेदितेस्वयंहैमे हिमशैलेनविस्तृते १२१ महासनेमुनिवरो निषसादातुल
द्युतिः। यथार्हंचार्घ्यपाद्यञ्च शैलस्तस्मैन्यवेदयत् १२२ मुनिस्तुप्रतिजग्राह तमर्घंविधिव
त्तदा। गृहीतार्घंमुनिवरमपृच्छच्छ्लक्ष्णयागिरा १२३ कुशलंतपसःशैलः शनैःस्फुलान
नाम्बुजः। मुनिरप्यद्रिराजानमपृच्छत्कुशलन्तदा १२४ (नारद उवाच) अहोऽन्वता
रिताःसर्वे सन्निवेशेमहागिरे!। पृथुत्वंमनसातुल्यं कन्दराणांतथाचल! १२५ गुरुत्व
न्तेगुणौघानां स्थावरादतिरिच्यते। प्रसन्नताचतोयस्य मनसोऽप्यधिकाचते १२६ नल

काल इन्द्रने अपने सिंहासन से खड़ेहोकर पाद्यादि अर्घपूर्व्वक यथार्थरीति से नारदजी का पूजन किया और नारदमुनि ने भी उसका पूजन यथार्थ विधिसे ग्रहण किया फिर इन्द्रकी कुशल पूछी तब इन्द्रने कहा कि हेमुने अब हमारी कुशलका अंकुर उत्पन्न हुआ है सो आपहमारी कुशल की सम्पत्तिके निमित्त आलस्यसे रहितहो १०९।११६ यद्यपि आपसब कुछ जानतेभी हैं तथापिहम प्रार्थना करते हैं क्योंकि प्रियजन जब अपने कार्य्यका निवेदनकर चुकताहै तब परमानन्दको प्राप्त होताहै ११७ जिसप्रकारसे हिमाचल की पुत्री शिवजीके सकाशसे शीघ्रही गर्भको धारणकरे उस उद्यमको आपही कृपा करिके कहिये ११८ यहबात सुन नारदमुनि इन्द्रके वचनको ग्रहणकर हिमाचलपर्व्वत पर जातेभये वहां वेत लता आदिकों से विभूषित द्वारपर स्थितहुए नारदमुनि को हिमाचलपर्व्वत घरसे बाहर निकलकर प्रणाम करताभया और अपने स्थानमें लेजाकर सुवर्ण की शिलाके आसनपर बैठाताभया ११९।१२० जब नारदजी आसनपर विराजमानहुए तब हिमाचल पाद्य अर्घ देकर पूजन करताभया नारदमुनि भी उसके दियेहुए पाद्य अर्घको ग्रहण करते भये फिर हिमाचलने बड़ी मधुरवाणी से नारदजी की कुशल पूछी और नारद ने भी उसकी कुशल पूछी १२१।१२४ नारदजी ने कहा हे हिमाचल तेरे विषे सबगुणोंका प्रादुर्भाव है तेरी कन्दराभी सब प-र्व्वतों से भारी है तुम सब पर्व्वतों से भारी होकर अपने में जल भी महापवित्र धारण करते हो हे हिमाचल तेरे घरके समान लक्ष्मी हमको कहीं भी नहीं दीखती है यहां तुम्हारे समान स्वर्ग में भी

क्षयामःशैलेन्द्र ! शिष्यतेकन्दरोदरात् । नचलक्ष्मीतथास्वर्गे कुत्राधिकतयास्थिता १२७
नानातपोभिर्मुनिभिः ज्वलनार्कसमप्रभैः । पावनैःपावितोनित्यंत्वत्कन्दरसमाश्रितैः १२८
अवमत्यविमानानि स्वर्गवासविरागिणः । पितुर्गृहइवासन्ना देवगन्धर्वकिन्नराः १२९ अ
हो ! धन्योऽसिशैलेन्द्र ! यस्यतेकन्दरंहरः । अध्यास्तेलोकनाथोऽपि समाधानपरायणः
१३० इत्युक्तवतिदेवर्षौ नारदेसादरङ्गिरा । हिमशैलस्यमहिषी मेनामुनिदिदृक्षया १३१
अनुयातादुहित्रातु स्वल्पालिपरिचारिका । लज्जाप्रणयनम्राङ्गीप्रविवेशनिवेशनम् १३२
तत्रस्थितोमुनिवरः शैलेनसहितोवशी । दृष्ट्वातुतेजसोराशिं मुनिंशैलप्रियातदा १३३ व
वन्देगूढवदना पाणिपद्मकृताञ्जलिः । तांविलोक्यमहाभागो महर्षिरमितद्युतिः १३४ आ
शीर्भिरमृतोद्गाररूपाभिस्तांव्यवर्धयत् । ततोविस्मितचित्तातुहिमवद्गिरिपुत्रिका १३५
उद्वेक्ष्यनारदंदेवी मुनिमद्भुतरूपिणम् । एहिवत्सेतिचाप्युक्ता ऋषिणास्निग्धयागिरा १३६
कण्ठेगृहीत्वापितरमुत्सङ्गेसमुपाविशत् । उवाचमातातां देवीमभिवन्दयपुत्रिके ! १३७
भगवन्तंततोधन्यं पतिमाप्स्यसिसम्मतम् । इत्युक्तातुततोमात्रा वस्त्रान्तपिहितानना
१३८ किञ्चित्कम्पितमूर्द्धातु वाक्यंनोवाचकिञ्चन । ततःपुनरुवाचेदंवाक्यंमातासुतान्त
दा १३९ वत्से ! वन्दयदेवर्षिं ततोदास्यामितेशुभम् । रत्नक्रीडनकंरम्यं स्थापितंयच्चिरं
मया १४० इत्युक्तातुततोवेगादुत्थायचरणौतदा । ववन्देमूर्ध्निसन्धाय करपङ्कजकुड्म
लम् १४१ कृतेतुवन्दनेतस्या मातासखिमुखेनतु । चोदयामासशनकैस्तस्याःसौभाग्य

शोभा नहीं है १२५। १२७ अनेक प्रकारके तप करनेवाले अग्निके समान प्रभाववाले मुनियों से तुम नित्यही पवित्र रहते हो १२८ देवता, गन्धर्व और किन्नर यहसब विमानोंका अपमान करके पिताके घरके समान तुममें वास करते हैं १२९ हे शैलेंद्र तू बड़ा धन्यहै क्योंकि तेरी गुफामें लोकों के नाथ महादेवजी समाधि लगायेहुए तप करते हैं १३० जब इसप्रकारके वचन नारदजी कहचुके तब हिमाचलकी स्त्री मेना भी इन मुनिके दर्शन को आई १३१ और अपनी पुत्री समेत मेनाजी लज्जासे युक्तहुई नम्रतापूर्वक एकर्णद्वेपर बैठगई १३२ और हिमाचलके पास बैठेहुए तेजस्वरूपी नारदमुनिको प्रणामके निमित्त मुखछुपाये हुए दोनों हाथों से अञ्जली बांधी उसको देखकर नारद मुनि अमृतके समान आशीर्वादों के वचनोंसे उसके चित्तको प्रसन्न करतेभये फिर हिमाचल की पुत्री नारद मुनिको देखकर आश्चर्य्य से गोदीमें चिपटजाती भई तब नारदमुनिने उसको पुचकार कर कहा कि हे बच्ची हमारे पास आओ १३३। १३६ उससमय पार्वती अपने पिताकी गोदी में जाकर कण्ठ पकड़कर बैठगई तब उसकी माताने कहा हे पुत्री इन मुनिको तू प्रणामकर इनकेही प्रणाम करने से तू उत्तम ईश्वर धन्यवाद के योग्य पतिको पावेगी यह माता की वाणी सुनकर हिमाचल की पुत्री वस्त्र से अपने मुखको ढकलेती भई १३७। १३८ और कुछेक मस्तक तो कपाया परन्तु बोली नहीं तब इसकी माता फिर बोली हे पुत्री तू इनको प्रणाम करले में तुझको बहुत दिनो का धराहुआ सुन्दर रत्नों का खिलौना देऊंगी यह वचन सुनकर शीघ्रही खड़ीहोके उस

शंसिनाम् १४२ शरीरलक्षणानांतु विज्ञानायतुकौतुकात् । स्त्रीस्वभावाद्दुहितुश्चिंतांहृदि
समुद्वहन् १४३ ज्ञात्वातादिङ्गितंशैलोमहिष्याहृदयेनतु अनुद्गीर्णोक्षतिर्मेनरस्यमेतदुपस्थि
तम् १४४ चोदितःशैलमहिषीसस्यामुनिवरस्तदा । स्मिताननोमहाभागोवाक्यंप्रोवाचना
रदः १४५ नजातोऽस्याःपतिर्भद्रे! लक्षणैश्चविवर्जिता । उत्तानहस्तासततंचरणैर्व्यभिचा
रिभिः १४६ स्वच्छाययाभविष्येयंकिमन्यद्बहुभाष्यते । श्रुत्वेतत्सम्भ्रमाविष्टोध्वस्तधैर्योम
हाबलः १४७ नारदंप्रत्युवाचाथसाश्रुकण्ठोमहागिरिः (हिमवानुवाच) संसारस्यातिदोषस्य
दुर्विज्ञेयागतिर्यतः १४८ सृष्टांचावश्यभाविन्यांकेनाप्यतिशयात्मना । कर्त्राप्रणीतामर्या
दास्थितासंसारिणामियम् १४९ योजायतेहियद्बीजोजनितुःसह्यसार्थकः । जनिताचापि
जातस्य नकश्चिदितियत्स्फुटम् १५० स्वकर्मणैवजायन्तेविविधाभूतजातयः । अण्डजो
ह्यण्डजाज्जातः पुनर्जायेतमानवः १५१ मानुषाच्चसरीसृप्यां मनुष्यत्वेनजायते । तत्रा
पिजातौश्रेष्ठायां धर्म्मस्योत्कर्षणेनतु १५२ अपुत्रजन्मिनःशेषाः प्राणिनःसमवस्थिताः ।
मनुजास्तत्रजायन्ते यतोनगृहधर्मिणः १५३ क्रमेणाश्रमसंप्राप्तिर्ब्रह्मचारिव्रतादनु । त
स्यकर्तुर्नियोगेन संसारोयेनवर्द्धितः १५४ संसारस्यकुतोवृद्धिः सर्वेस्युर्य्यदतिग्रहाः । अ
तःकर्त्रातुशास्त्रेषु सुतलाभःप्रशंसितः १५५ प्राणिनांमोहनार्थाय नरकत्राणसंश्रयात् ।

ने मुनिके चरणोंको छुआ और मस्तक नवाकर प्रणामको किया १३९ । १४१ जब पार्वतीजी प्रणाम करचुकीं तब इनकी मातामेना अपनी सखी के मुखसे नारदमुनिको शनैः सुनाकर इस के शरीर के सौभाग्यके लक्षणोंको पूछती भई अपने स्त्रीपने के स्वभाव से पुत्रीकी चिंता हृदय में धारणकर बड़े आश्चर्य्यसे उसके सबवृत्तान्त को पूछतीभयी १४२ । १४३ और वह हिमाचल पर्व्वत भी अपनी स्त्रीके पूछेहुए इसप्रश्नको योग्य समझताभया १४४ इसके अनन्तर हिमाचलकी स्त्रीसे पूछेहुए नारदमुनि हँसकर यहवचन बोले १४५ हेभद्रे इसकापति नहीं जन्माहै यहलक्षणोंसे रहितहै इसके हाथ मुँदेहुएहैं इसके चरणभी अपनी छायाकरके स्वेच्छाचारी हैं अर्थात् अपनीइच्छा-पूर्व्वक विचरने वालेहैं और अधिक क्याकहूं ऐसे वचनको सुनकर महाबली हिमाचलका चित्तभ्रंश होगया धैर्य्य नहीं रहा अश्रुपात आगये ऐसी दशाको प्राप्तहोकर हिमाचल नारदजीसे बोला कि संसारकी बड़ी कठिनगति है १४६ । १४८ संसारी पुरुषोंकी अवश्यहोने वाली भावीकी स्थिति विधाताकी रचीहुई है और जो जिसके बीजसे उत्पन्नहोताहै वह उसके समान नहीं होता जन्मे हुएको उत्पन्न करनेवालाभी कोई नहीं है यह प्रसिद्धि चली आती है क्योंकि अनेक प्रकारकी प्रजा कर्मोंकेही द्वाराहोती है अंडेसे अंडजजाति उत्पन्नहोती है मनुष्यके मनुष्य उत्पन्नहोताहै सर्प बिच्छू आदिकोंके सर्प बिच्छूही उत्पन्न होतेहैं मनुष्य नहीं होते परन्तु वहांभी श्रेष्ठजातिमें धर्म के प्रभावसे जन्म होताहै १४९ । १५२ बहुतसे प्राणियोंके पुत्रोंका जन्म नहीं होताहै उत्तम गृहस्थी पुरुषों के भी कहीं २ पुत्रोंका जन्म नहीं होताहै किन्तु कोई भी प्रजानहीं होती है ब्रह्मचर्य्यादिक आश्रमोंकी क्रमसे स्थितिहै इसी क्रमसे संसारकी वृद्धिहोती है जो सबही संन्यासी होजांय तो संसारकी वृद्धि

स्त्रियाविरहितासृष्टिर्जन्तूनांनोपपद्यते १५६ स्त्रीजातिस्तुप्रकृत्यैव कृपणादैन्यभाषिणी।
शास्त्रालोचनसामर्थ्यमुज्झितंतासुवेधसा १५७ शास्त्रेषूक्तमसन्दिग्धं बहुवारंमहाफल
म्। दशपुत्रसमाकन्या यानस्याच्छीलवर्जिता १५८ वाक्यमेतत्फलभ्रष्टं पुंसिग्लानिकर
म्परम्। कन्याहिकृपणाऽशोच्या पितुर्दुःखविवर्द्धिनी १५९ यापिस्यात्पूर्णसर्वाढ्या पति
पुत्रधनादिभिः। किंपुनर्दुर्भगाहीना पतिपुत्रधनादिभिः १६० त्वंचोक्तवान्सुतायामेशरी
रेदोषसंग्रहम्। अहोमुह्यामिशुष्यामि ग्लामिसीदामिनारद! १६१ अयुक्तमथव
क्तव्यमप्राप्यमपिसाम्प्रतम्। अनुग्रहेणमेछिन्धि दुःखंकन्याश्रयंमुने! १६२ परिच्छि
न्नेऽप्यसन्दिग्धे मनःपरिभवाश्रयम्। तृष्णामुष्णातिनिष्णाता फललोभाश्रयाशुभा १६३
स्त्रीणांहिपरमंजन्म कुलानामुभयात्मनाम्। इहामुत्रसुखायोक्तंसत्पतिप्राप्तिसंज्ञितम् १६४
दुर्लभःसत्पतिःस्त्रीणां विगुणोऽपिपतिःकिल। नप्राप्यतेविनापुण्यैः पतिर्नार्याकदाचन
१६५ यतोनिःसाधनोधर्म्मः परिमाणोज्झितारतिः। धनंजीवितपर्यन्तं पतौनार्याःप्रतिष्ठि
तम् १६६ निर्धनोदुर्भगोमूर्खः सर्वलक्षणवर्जितः। दैवतंपरमंनार्याः पतिरुक्तःसदैवहि
१६७ त्वयाचोक्तंहिदेवर्षे! नजातोऽस्याःपतिःकिल। एतद्दौर्भाग्यमतुलमसंख्यंगुरुदुःस
हम् १६८ चराचरेभूतसर्गेयद्यापिचनोमुने। नसजातइतिब्रूषेतेनमेव्याकुलंमनः १६९

कैसे होय इसी हेतुसे विधाताने शास्त्रोंमें पुत्रकी उत्पत्ति करनी कही है १५३। १५५ प्राणियों के मोहके निमित्त नरककी रक्षाकरनेवाली सन्तान स्त्रीके विना नहीं होतीहै स्त्रीकी जाति, स्वभावसेही कृपण और दीनहै शास्त्रोंमें बहुधास्थानोंमें सन्देहयुक्त फलकहे हैं दशपुत्रों के समान कन्याकही है जो वह कन्याशील स्वभाववाली न होवे तो पुरुषोंको दुःखदेनेवाली है उसका कुछ भी फलनहीं है ऐसी पिता माताकी दुःखदेनेवाली कन्यासदैव शोचकरनेके योग्य है १५६।१५९ जिस स्त्रीकेपति पुत्रधन आदिकी सबसंपत्ति होती है वह पूर्ण भाग्यवाली कहाती है और जो पति पुत्र धनआदि से रहितहोय वह दुर्भगा कहाती है आपने मेरी पुत्रीके शरीरमें दोषका लक्षणकहा है इसीसे मैं आश्चर्य्य पूर्व्वक मोहको प्राप्तहोरहाहूं सूखाजाताहूं बड़ी ग्लानिहोनेसे दुःखपाताहूं १६०।१६१ हे मुने अबजो यह दुःख अयोग्य और असाध्यभी होय तो भी आप इसके दूरकरनेको योग्यहो फलके लोभ के आश्रयहुई तृष्णा मुझको ठगरही है जिन स्त्रियोंको श्रेष्ठ पतिकी प्राप्ति होती है वह इसलोक और परलोक दोनों लोकोंमें अपने दोनों कुलोंको सुखदेती हैं १६२। १६४ स्त्रियोंको प्रियपति मिलना दुर्लभ है पुण्यके विना थोड़े गुणवाला भी पति नहीं मिलताहै क्योंकि स्त्रियोंके तो जीवन पर्य्यन्त साधारण धर्म पतिके संगरमण करनेका है, निर्धन दुर्भगमूर्ख और सब लक्षणों से रहितभी पतिस्त्री का परमदैवत कहा है १६५। १६७ हे देवऋषिजी आपने जो कहा है कि इस के पतिका जन्म नहीं है यह बड़ाभारी निर्भागपना है हेमुने आपने यह भी कहा है कि चराचर जगत् में इसका पतिनहीं जन्मा है इसवार्त्ता से मेरा मन महाव्याकुल होगया है मनुष्य देवता आदिक जातियों के शुभा शुभ लक्षण हाथ पैरोंमें होते हैं सो आपने इसको मुँह

मनुष्यदेवजातीनां शुभाशुभनिवेदकम्। लक्षणंहस्तपादादौ विहितैर्लक्षणैःकिल १७०
सेयमुत्तानहस्तेति त्वयोक्तामुनिपुङ्गव!। उत्तानहस्तताप्रोक्ता यावतामेवनित्यदा १७१
शुभोदयानांधन्यानां नकदाचित्प्रयच्छताम्। स्वच्छायायास्याश्चरणौ त्वयोक्तौव्यभि
चारिणौ १७२ तत्रापिश्रेयसांह्याशामुने! तुप्रतिभातिनः। शरीरलक्षणाश्चान्ये पृथक्फ
लनिवेदिनः १७३ सौभाग्यधनपुत्रायुः पतिलाभानुशंसनम्। तैश्चसर्वैर्विहीनेयं त्वमा
त्थमुनिपुङ्गव! १७४ त्वंमेसर्वंविजानासि सत्यवागसिचाप्यतः। मुह्यामिमुनिशार्दूल!
हृदयंदीर्यतीवमे १७५ इत्युक्त्वाविरतःशैलो महादुःखविचारणात्। श्रुत्वैतदखिलंतस्मा
च्छैलराजमुखाम्बुजात् १७६ स्मितपूर्वमुवाचेदं नारदोदेवचोदितः। (नारद उवाच)
हर्षस्थानेऽपिमहति त्वयादुःखंनिरूप्यते १७७अपरिच्छिन्नवाक्यार्थे मोहंयासिमहागिरे!॥
इमांशृणुगिरंमत्तो रहस्यपरिनिष्ठिताम् १७८ समाहितोमहाशैल! मयोक्तस्यविचारणे।
नजातोऽस्याःपतिर्दिव्यो यन्मयोक्तंमहाचल! १७९ नसजातोमहादेवो भूतभव्यभवोद्भ
वः। शरण्यःशाश्वतःशास्ता शङ्करःपरमेश्वरः १८० ब्रह्मविष्णिन्द्रमुनयो जन्ममृत्युज
रार्दिताः। तस्यैतेपरमेशस्य सर्वेक्रीडनकागिरे! १८१ आस्तेब्रह्मातदिच्छातः संभूतोभु
वनप्रभुः। विष्णुर्युगेयुगेजातो नानाजातिर्महातनुः १८२ मन्यसेमाययाजातं विष्णुञ्चा
पियुगेयुगे। आत्मनोनविनाशोऽस्तिस्थावरान्तेऽपिभूधर! १८३ संसारेजायमानस्यचिय

हाथवाली कहाहै और मुझको यह श्रेष्ठ मालूम होती है क्योंकि शुभभाग्यवाले धनवाले और प्रति-ग्रहनहीलेनेवालों के ऐसे हाथ होतेहैं और इसके चरणों को भी आप इच्छापूर्वक विचरनेवाले कहतेहो इसबातमें भी मुझको मंगल और कल्याणकी प्राप्ति दीखती है अन्यके शरीर लक्षणोंसे इसके लक्षण विलक्षणहैं अर्थात् सर्व शरीरी लोगोंके लक्षणोंसे रहितहै १६८। १७३ हे मुनिश्रेष्ठ आपने इस पुत्रीको सौभाग्य आयु और पुत्र इनसब लक्षणोंसे रहित बतलायाहै सो आपमेरे सब अभिप्रायको जानतेहो में मोहको प्राप्त होरहाहूं मेरा हृदय फटाजाताहै ऐसे कहकर हिमाचल चुपका होरहा तब नारद मुनि इसवचनको सुनकर आश्चर्य्यपूर्वक हर्षकरके बोले कि हे हिमाचल तुम आनन्द स्थानमें भी शोचकरतेहो १७४। १७७ हेमहागिरे तुमने अपरिच्छिन्नवाक्यमें मोह कियाहै अब तुम मुझसे रहस्य अर्थात् गुप्तवचनोंको सुनो हेमहाशैल मेरे कहेहुए के विचारकरने में तू सावधान हो जो मैंने कहाहै वह इसका पति जन्माहुआ नहीं है १७८। १७९ भूत भविष्यत् और वर्त्तमान इन सबके ईश्वर शरण्य शाश्वत शास्ता शंकर महादेव परमेश्वरहैं यहकभी जन्मेनहीं हैं १८० ब्रह्मा विष्णु इन्द्र और मुनि यहतो जन्म मृत्यु और जरावस्था इनसे पीड़ित रहते हैं और महादेवजीके यह सब क्रीड़ाके स्थानहैं उन्हीं महादेवजीकी इच्छासे ब्रह्मा अपने भुवनके पति होरहेहैं विष्णु युग २ में अनेक जातियोंमें महान् शरीरोंको धारण करते हैं १८१। १८२ मायाके वशीभूत युग २ में जन्मेहुए विष्णुकेभी आत्माकानाश नहीं होताहै हे हिमाचल मरनेवाले देहधारीका शरीर संसारमें नष्ट होजाताहै परन्तु आत्माका कभी भी नाश नहीं होता ब्रह्मासे लेकर स्थावर वृक्षादि पर्य्यन्त सब संसार

माणस्यदेहिनः। नश्यतेदेहएवात्र नात्मनोनाशउच्यते १८४ ब्रह्मादिस्थावरान्तोऽयंसं
सारोयःप्रकीर्तितः। सजन्ममृत्युदुःखार्तो ह्यवशःपरिवर्त्तते १८५ महादेवोऽचलःस्थाणु
नेजातोजनकोऽजरः। भविष्यतिपतिःसोऽस्या जगन्नाथोनिरामयः १८६ यदुक्तश्चमया
देवी लक्षणैर्वर्जितातव। शृणुतस्यापिवाक्यस्य सम्यक्त्वेनविचारणम् १८७ लक्षणंदै
विकोह्यङ्कः शरीरावयवाश्रयः। सर्वायुर्द्धनसौभाग्यपरिमाणप्रकाशकः १८८ अनन्त
स्याप्रमेयस्य सौभाग्यस्यास्यभूधर!। नैवाङ्कोलक्षणाकारः शरीरेसंविधीयते १८९ अ
तोऽस्यालक्षणंगात्रे शैल! नास्तिमहामते!। यथाहमुक्तवानस्या ह्युत्तानकरतांसदा १९०
उत्तानोवरदःपाणिरेषदेव्याःसदैवतु। सुरासुरमुनिव्रातवरदेयंभविष्यति १९१ यथा
प्रोक्तंतदापादौ स्वच्छायाव्यभिचारिणी। अस्याःशृणुममात्रापि वाग्युक्तिंशैलसत्तम!
१९२ चरणौपद्मसङ्काशावस्याःस्वच्छनखोज्ज्वलौ। सुरासुराणांनमतां किरीटमणिका
न्तिभिः १९३ विचित्रवर्णैर्भासन्तौ स्वच्छायाप्रतिविम्बितौ। भार्याजगद्गुरोर्ह्येषा वृषा
ङ्कस्यमहीधर! १९४ जननीलोकधर्म्मस्य सम्भूतामूतभावनी। शिवेयंपावनायैव
त्वत्क्षेत्रेपावकद्युतिः १९५ तद्यथाशीघ्रमेवैषा योगंयायात्पिनाकिना। तथाविधेयंविधि
वत्त्वयाशैलेन्द्रसत्तम! १९६ अत्यन्तंहिमहत्कार्यंदेवानांहिमभूधर!। (सूत उवाच)
एवंश्रुत्वातुशैलेन्द्रोःनारदात्सर्वमेवहि १९७ आत्मानंसपुनर्जातं मेनेमेनापतिस्तदा।

जन्म मरण के दुःखसे पीड़ित है महादेवजी अचल हैं स्थाणुहैं कभी जन्म नहीं लेते हैं अजर और रोगों से भी रहित हैं ऐसे जगन्नाथ महादेवजी इसतेरी पुत्री के पति होवेंगे १८३। १८६ मैंने जो कहाथा कि यह लक्षणों से रहित है उसके भी विचारको श्रवण करो हे शैलेन्द्र शरीरों के अवयवों के आश्रय होनेवाला पूर्ण आयु धन और सौभाग्य का सूचक दैविक अंगका लक्षण होता है और इसके अनन्त और अतुल सौभाग्यहै इसहेतुसे इसका अंग लक्षणों से रहित है हे शैल मैंने जो इसके हाथसदैव मूंदे रहनेवाले कहे हैं सो यह देवी वरदान देनेके लिये मूंदे हाथ रक्खेगी यह देवी देवता दैत्य और मुनिगण लोगोंको वरदेनेवाली होगी १८७। १९१ मैंने जो कहा था कि इसके चरण अपनी छायाकरके स्वेच्छाचारी हैं इसवचनकी भी युक्तिको सुनो कि कमलके समान कान्तिवाले इसके पैरस्वच्छ नखोंकी कान्तिसे उज्ज्वल रहेंगे उनमें देवता और दानवों के नवेहुए मुकुट मणियों की कान्तिसे विचित्र वर्णों के द्वारा भासते हुओंके प्रतिविम्वरूप दीखेंगे और यहसव जगत्के गुरू श्री महादेवजी की भार्य्या होगी १९२। १९४ लोकोंके धर्मकी जननी होकर भूतों की उत्पन्न करनेवाली यह शिवा तेरे क्षेत्रमें अग्निके समान कान्तिवाली है १९५ इस हेतुसे यह जिसप्रकार से शीघ्रही महादेवजी के साथ नियोगको प्राप्तहोजाय वही विधान तुमको विधिपूर्व्वक करना योग्य है १९६ हे हिमाचल देवताओंका इससमय अत्यन्त बड़ा-कार्य्य होरहाहै सूतजी कहते हैं कि वह शैलेन्द्र नारदके मुखसे ऐसे सब वृत्तान्तको सुनकर अपने आत्माको फिर जन्मेहुए के समान मानताभया इसके अनन्तर महादेवको नमस्कारकर बड़ीप्रसन्न-

नमस्कृत्यवृषाङ्काय तदादेवायधीमते १९८ उवाचसोऽपिसंहृष्टो नारदन्तुहिमाचलः
(हिमवानुवाच) दुस्तरान्नरकात्घोरादुद्धृतोऽस्मित्वयामुने ! १९९ पातालादहमुद्धृत्य
सप्तलोकाधिपः कृतः । हिमाचलोऽस्मिविख्यातस्त्वयामुनिवराधुना २०० हिमाचलेच
लगुणां प्रापितोऽस्मिसमुन्नतिम् । आनन्ददिवसाहारि हृदयंमेऽधुनामुने ! २०१ ना
व्यवस्यतिकृत्यानां प्रविभागविचारणम् । यदिवाचामधीशः स्यात्त्वद्गुणानांविचारणे
२०२ भवद्विधानांनियतममोघंदर्शनंमुने ! । तवास्मान्प्रतिचापल्यं व्यक्तंमंममहामुने !
२०३ भवद्भिरेयकृत्योऽहं निवासायात्मरूपिणम् । मुनीनांदेवतानांचस्वयंकर्तापिकल्म
षम् २०४ तथापिवस्तुन्येकस्मिन्नाज्ञामेसम्प्रदीयताम् । इत्युक्तवतिशैलेन्द्रेसतदाहर्ष
निर्भरे २०५ तथाचनारदोवाक्यं कृतंसर्वमितिप्रभो ! । सुरकार्येयएवार्थस्तवापिसुम
हत्तरः २०६ इत्युक्त्वानारदःशीघ्रंजगामत्रिदिवंप्रति । सगत्वाशक्रभवनममरंसन्ददर्श
ह २०७ ततोऽभिरूपेसमुनिरुपविष्टोमहासने । पृष्टःशक्रेणप्रोवाच हिमजासंश्रयांक
थाम् २०८ (नारद उवाच) समूह्ययत्तुकर्तव्यं तन्मयाकृतमेवहि । किन्तुपञ्चशरस्यैव
समयोऽयमुपस्थितः २०९ इत्युक्तोदेवराजस्तु मुनिनाकार्यदर्शिना । चूतांकुरास्त्रंसस्मार
भगवान्पाकशासनः २१० संस्मृतस्तुतदाक्षिप्रं सहस्राक्षेणधीमता । उपतस्थेरतियुतः
सविलासोझषध्वजः २११ प्रादुर्भूतन्तुतंदृष्ट्वा शक्रःप्रोवाचसादरम्। (शक्र उवाच) उप
देशेनबहुना किन्त्वांप्रतिवदेप्रियम् २१२ मनोभवासितेनत्वं वेत्सिभूतिमनोगतम्। तय

तालें हिमाचल नारदमुनिसेबोला कि हे मुने आपने महाघोर दुस्तर नरकसे मेरा उद्धार करदिया
१९७। १९९ आपने मुझको पातालसे उठाकर सातोंलोकोंका अधिपति बनादिया हे मुनिवर अब
आपने मुझको हिमाचल नामसे विख्यात करदिया अब मुझमें अचलगुण प्राप्तहोगयेहैं अब मेरा
हृदय आनन्दके दिनका आहार करनेवालाहोगयाहै २००। २०१ कृत्योंके विभागका विचार नहीं
कियाजाताहै आपके गुणोंके विचारोंको बृहस्पतिभी वर्णन नहीं करसक्ते हैं हे मुने आपके सदृश
मुनियोंके दर्शन बड़ेअमोघहैं तुम्हारी चपलता हमारे प्रतिमहासुखदायीहै आपके प्रतापसे मैं कृत-
कृत्यहूं मैं मुनि और देवताओंके भी अपराधोंको करताहूं तौभी मुझे अपना किंकरही समझकर कुछ
आज्ञादीजिये जब हर्षपूर्वक इसप्रकारकी बातें हिमाचलने कहीं तब नारदजी ने कहा कि तुमने सब
कुछ कियाहै देवताओंका जो कार्य्य है वह भी तुमसेही सिद्धहोगा २०२। २०६ ऐसाकहकर नारद
मुनि शीघ्रही स्वर्गको चलेजातेभये वहां इन्द्रके भवनमें जाकर इन्द्रको देखते भये जब नारदमुनि
आसनपर बैठगये तबइन्द्रने पूछा कि कहिये क्यावृत्तान्तहै उससमय नारदजी हिमाचल की पुत्री
की कथा कहतेभये २०७। २०८ नारदजी ने कहा कि हे इन्द्र जो कुछ कि कर्त्तव्य कार्य्य था
वह सब मैंने करदियाहै अब कामदेवका अवतर आने वालाहै अर्थात् अब कामदेवका कामहै १०१
ऐसे कहतेही इन्द्रने कामदेवका स्मरणकिया वह कामदेव इन्द्रके स्मरण करतेही अपनी रतिनामस्त्री
समेत आकर प्रकटहोताभया उसप्रकटहुए कामदेवको देखकर इन्द्र बड़े आदरपूर्वक बोला कि हे

थार्थकमेवत्वंकुरुनाकसदाम्प्रियम् २१३ शङ्करंयोजयाक्षिप्रं गिरिपुत्र्यामनोभव!। संयु
तोमधुनाचैव ऋतुराजेनदुर्जय! २१४ इत्युक्तोमदनस्तेन शक्रेणस्वार्थसिद्धये। (काम
उवाच) अनयादेवसामग्र्यामुनिदानवभीमया २१५ दुःसाध्यःशङ्करोदेवःकिन्नवेत्सिजग
त्प्रभो!। तस्यदेवस्यवेत्थत्वंकरणन्तुयदव्ययम् २१६ प्रायःप्रसादःकोपोऽपिसर्वोहिमह
तांमहान्। सर्वोपभोगसाराहि सुन्दर्यःस्वर्गसम्भवाः २१७ अध्याश्रितश्चयत्सौख्यं भव
तानष्टचेष्टितम्। प्रमादादथविभ्रश्येदीशम्प्रतिविचिन्त्यताम् २१८ प्रागेवचेहदृश्यन्तेभू
तानांकार्यसम्भवाः। विशेषंकांक्षतांशक्र! सामान्याद्भ्रंशनंफलम् २१९ श्रुत्वैतद्वचनं श
क्रस्तमुवाचामरैर्युतः। (शक्र उवाच) वयंप्रमाणास्तेह्यत्ररतिकान्त! नसंशयः २२० सन्दे
शेनविनाशक्तिरपकारस्यनेष्यते। कस्यचिच्चक्वचिद्दृष्टं सामर्थ्यंनतुसर्वतः २२१ इत्युक्तः
प्रययौकामःसखायंमधुमाश्रितः। रतियुक्तोजगामाशु प्रस्थन्तुहिमभूभृतः २२२ सतुतत्रा
करोच्चिन्तांकार्यस्योपायपूर्विकाम्। महार्थायेहिनिष्कम्पामनस्तेषांसुदुर्जयम् २२३ तदादा
वेवसंक्षोभ्य नियतंसुजयोभवेत्। संसिद्धिंप्राप्नुयुश्चैवपूर्वंसंशोध्यमानसम् २२४ कथञ्चवि
विधैर्भावैर्द्वेषानुगमनंविना। क्रोधःक्रूरतरासङ्गाद्रावणेर्ष्यांमहासखीम् २२५ चापल्यमूर्ध्नि
विध्वस्तधैर्याधारांमहाबलाम्। तामस्यविनियोक्ष्यामि मनसोविकृतिम्पराम् २२६ पि

मनोभव हम आपको विशेष क्या उपदेशकरें क्योंकि तुमतो मनहीसे उत्पन्नहोतेहो इसहेतुसे सबके मनकी जाननेवालेहो अब आपयथार्थ रीतिसे स्वर्गकेहितकी वार्ता करनेको योग्यहो शिवजीको बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक पार्वतीजीसे संयुक्तकरदो और अपनी वसन्तऋतुसे युक्तहोजाओ २१०। २१४ जब जब इन्द्रने अपने प्रयोजन की सिद्धिके निमित्त कामदेव से ऐसे वचनकहे तबकामदेव कहनेलगा हे जगत्प्रभो इस मेरीसामग्री से शिवजी दुस्साध्यहैं इसबातको क्या आपनहींजानते हो उन शिवजी के सब कारणोंको आप अच्छीरीतिसे जानतेहो २१५। २१६ विशेषकरके शिवजीका कोप भी प्रसन्नताहै बड़ोंमें बड़प्पनही रहताहै और तुमने जो उनके चित्त बिगड़ने में अपनासुख विचार कियाहै सो हे इन्द्र ईश्वरके प्रति ऐसाविचार करने से सर्वस्व नष्ट होजाता है यहां प्रथमही भूतोंके कार्य्य की उत्पत्ति दीखजाती है उसमें जो विशेष चिन्तवनकरते हैं उससे फलकानाश होजाताहै २१७।२१९. यह वचन सुनकर इन्द्र कामदेव से कहनेलगा कि हे रतिके पति यहां हमही प्रमाण हैं यह वार्त्ता निस्सन्देहहै कि कुछ समाचार पहुंचने विना तिरस्कार करनेकी शक्तिनहीं होती है प्रत्येकमें यत्रकुत्र समय परही सामर्थ्य होती है सर्वत्र नहीं होती है २२०। २२१ यह वचन सुनतेही कामदेव वसन्तऋतु और अपनी स्त्री रति से भी युक्तहो शीघ्रही हिमाचल के शिखर पर जाताभया २२२ वहां जाकरकार्य्य के उपायकी चिन्ताकरनेलगा कि जो अचल महात्मा होतेहैं उनका मनबड़ा दुर्जय होताहै २२३ इससे प्रथम उनके मनकोही चलायमान करनायोग्यहै ऐसा करने के पीछे जयहोतीहै क्योंकि प्रथम मनकेही शोधनेसे सिद्धिकी प्राप्तिहोतीहै २२४ धैर्य्यकी नाशकारी चपल स्वभाववाली धाराको अनेक प्रकारके द्वेषों प्रभाव से क्रोध ईर्षा से रहित इनके मनकी विकृति के निमित्त कैसे

धायधैर्यद्वाराणि सन्तोषमपकृष्यच। अवगन्तुंहिमांतत्र नकश्चिदतिपण्डितः २२७ वि
कल्पमात्रावस्थाने वैरूप्यंमनसोभवेत्। पश्चान्मूलक्रियारम्भ गम्भीरावर्तदुस्तरः२२८
हरिष्यामिहरस्याहं तपस्तस्यस्थिरात्मनः। इन्द्रियग्राममावृत्य रम्यसाधनसंविधिः२२६
चिन्तयित्वेतिमदनोभूतभर्तुस्तदाश्रमम्। जगामजगतीसारं सरलद्रुमवेदिकम् २३०
शान्तसत्वसमाकीर्णमचलप्राणसंकुलम्। नानापुष्पलताजालं गगनस्थगणेश्वरम्२३१
निर्व्यग्रवृषभाध्युष्टनीलशाद्वलसानुकम्। तत्रापश्यत्त्रिनेत्रस्य रम्यंकञ्चिद्द्वितीयकम्
२३२ वीरकंलोकवीरेशमीशानसदृशद्युतिम्। यक्षकुंकुमकिञ्जल्कपुञ्जपिङ्गजटासटम्
२३३ वेत्रपाणिनमव्यग्र मुग्रभोगीन्द्रभूषणम्। ततोनिमीलितोन्निद्रपद्मपत्राभलोचन
म् २३४ प्रेक्षमाणमृजुस्थानस्थितनासाग्रलोचनम्। श्रवस्तरससिंहेन्द्रचर्मलम्बोत्तरी
यकम् २३५ श्रवणाहिफलन्मुक्तनिःश्वासानलपिङ्गलम्। प्रेङ्खत्कपालपर्य्यन्ततुम्बिलं
विजटाचयम् २३६ कृतवासुकिपर्यङ्कनाभिमूलनिवेशितम्। ब्रह्माञ्जलिस्थपुच्छाग्रनि
बद्धोरगभूषणम् २३७ ददर्शशङ्करंकामः क्रमप्राप्तान्तिकंशनैः। ततोभ्रमरझङ्कारमाल
म्बिद्रुमसानुकम् २३८ प्रविष्टःकर्णरन्ध्रेण भवस्यमदनोमनः। शङ्करस्तमथाकर्ण्य मधुरं
मदनाश्रयम् २३९ सस्मारदक्षदुहितान्दयितांरक्तमानसः। ततःसातस्यशनकैस्तिरोभू
यातिनिर्मला २४० समाधिभावनातस्थौ लक्ष्यप्रत्यक्षरूपिणी। ततस्तन्मयतांयाता

छोडूंगा धैर्य्यके द्वारों को रोककर सन्तोषको पृथक् हटाके जो कोई मुझको शिवजी के मनमें प्राप्त करदे ऐसाकोई भी चतुर नहीं है २२५।२२७ विकल्पमात्रा के विचारने में मनकी विकृति होती है फिर मूल क्रियाके आरंभों में दुस्तर भौंरी गिरती है इसलिये मैं उस स्थिर आत्मावाले शिवजी के तप को हरूंगा रमणीक साधनकी विधिसे मैं शिवजी के इन्द्रियगणोंको आच्छादित करूंगा ऐसा चिन्तवनकरके कामदेव शिवजी के आश्रममें जाताभया २२८।२३० संपूर्ण पृथ्वीकासार अनेकप्रकार की मणियों से युक्त नानापुष्पलता और जालीसे शोभितशिखरपरखड़े विराजमान गणेश्वरसे युक्त हरित तृणोंपर स्थित सावधाननन्दीसमेत उस शिवजीके रमणीक आश्रमको और शिवजी के समान कान्ति वाले शूरवीरोंके स्वामी वीरभद्रको देखताहुआ यक्षों की केशरसे रंगीहुई पीतजटावाले हाथमें वेत लिये सर्पोंके भूषणधारी प्रफुल्लित कमलके समान नेत्रोंवाले सरलस्थानको देखतेहुए नासिकाके आगे दृष्टि कियेहुए सिंहके चर्मको धारणकिये अग्निके समान श्वासलेने वाले वासुकि सर्प की शय्यापर विराजमान नाभि पर्य्यन्त उसमें घुसेहुएबंधीहुई ब्रह्मांजलीसे शोभिततेजमूर्ति शिवजीको वह कामदेव देखताभया २३१।२३७ और शनैः२ उनके समीपजा भ्रमरों के झंकार से शोभित वृक्षोंवाले पर्व्वत पर स्थित हुए महादेवजी के कान में वह कामदेव प्रवेश करगया इसके पीछे कामदेवके आश्रयहुए शिवजी भ्रमरों के मधुर शब्दोंको सुनकर मनसे आसक्तहो दक्षकी पुत्री पार्वतीको स्मरण करतेभये और उनके स्मरण करतेही वह पार्वतीशनैः अन्तर्द्धानहोके समाधि भावना में स्थितहोकर लक्ष्यके प्रत्यक्ष रूपवाली होजातीभई फिर अपनेको कामके वशीभूत जान अन्त:

प्रत्यूहपिहिताशयः २४१ वशित्वेनबुबोधेशो विकृतिंमदनात्मिकम्। ईषत्कोपसमावि
ष्टोधैर्यमालम्ब्यधूर्जटिः २४२ निरासेमदनस्थित्या योगमायासमावृतः। सतयामा
ययाविष्टो जज्वालमदनस्ततः २४३ इच्छाशरीरोदुर्जेयो रोषदोषमहाश्रयः। हृदया
न्निर्गतःसोऽथ वासनाव्यसनात्मकः २४४ बहिस्थलंसमालम्ब्य ह्युपतस्थौझषध्वजः।
अनुयातोऽथहृद्येन मित्रेणमधुनासह २४५ सहकारतरौदृष्ट्वा मृदुमारुतनिर्धुतम्। स्तव
कंमदनोरम्यं हरवक्षसिसत्वरम् २४६ मुमोचमोहनंनाम मार्गणंमकरध्वजः। शिवस्यहृ
दयेशुद्धे नाशशालीमहाशरः २४७ पपातपरुषप्रांशुः पुष्पबाणोविमोहनः। ततःकरणस
न्देहो विद्धस्तुहृदयेभवः २४८ बभूवभूधरौपम्य धैर्योऽपिमदनोन्मुखः। ततःप्रभुत्वाद्भा
वानां संक्षोभंसमपद्यत २४९ बाह्यंवहुसमासाद्य प्रत्यूहप्रसवात्मकम्। ततःकोपानलो
द्भूतघोरहुङ्कारभीषणे २५० बभूववदनेनेत्रं तृतीयमनलाकुलम्। रुद्रस्यरौद्रवपुषो ज
गत्संहारभैरवम् २५१ तदन्तिकस्थेमदने व्यस्फारयतधूर्जटिः। तंनेत्रविस्फुलिङ्गेन क्रो
शतान्नाकवासिनाम् २५२ गमितोभस्मसाच्चूर्णं कन्दर्पःकामिदर्पकः। सतुतंभस्मसात्कृ
त्वा हरनेत्रोद्भवोऽनलः २५३ व्यजृम्भतजगद्दग्धुं ज्वालाहुङ्कारघस्मरः। ततोभवोजग
द्धेतोर्व्यभजज्जातवेदसम् २५४ सहकारेमधौचन्द्रसुमनःसुपरेष्वपि। भृङ्गेषुकोकिला
स्येषु विभागेनस्मरानलम् २५५ सबाह्यान्तरविद्धेन हरेणस्मरमार्गणाः। रागस्नेहसमि
द्धान्तर्धावन्तीव्रहुताशनः २५६ विभक्तलोकसंक्षोभकरोदुर्वारजृम्भितः। संप्राप्यस्नेह
संपृक्तंकामिनांहृदयंकिल २५७ ज्वलत्यहर्निशंभीमो दुश्चिकित्स्यमुखात्मकः। विलोक्य

करण आच्छादित होनेमें कामदेवकी विकृतिमें प्राप्तहोके शिवजी बड़े क्रोधपूर्व्वक धैर्य्यकोधारण करते भये और कामदेवका निरादर करके अपनी योगमायासे युक्तहोते भये फिर उसमायासे आच्छादित हुआ कामदेव भस्महोनेलगा फिर कामदेवकी इच्छाका शरीर व्यसनकी वासनासे युक्तहो हृदयसे बाहर निकलताभया २३८।२४४ फिर अपने मित्रवसन्तऋतुसहित कामदेव बाहरखड़ाहोकर सुगन्धित वृक्षके ऊपर कोमलवायुके चलनेकेद्वारा सुगन्धिवाले पुष्पके गुच्छेको मोहनबाण बनाकर शिवजीके हृदयमें मारताभया जबशिवजीके शुद्धहृदयमें पुष्पोंका बाणलगा तब शिवका हृदय बिंधगया उससमय शिवजीके अन्तःकरणमें सन्देहहोगया और पर्व्वतके समानधैर्य्यको धारणकरतेभये इसके पीछे शिवजीके क्षोभ उत्पन्नहोनेसे क्रोधकी अग्नि प्रकटहुई शिवजीका तीसरा नेत्रभी उस अग्निसे व्याकुलहोकर जगत्के संहारकरनेके समान भयंकर शरीरवालाहोगया२४५।२५१ उसनेत्रके खुलने से अग्निके कण झड़नेलगे तब बड़ी शीघ्रतासे उस शिवजी के तीसरे नेत्रकी अग्निने कामदेवको भस्म करदिया फिर जगत्के संहारकरनेवाले शिवजीने जंभाई लेकर उस कामदेवकी अग्निको आमके वृक्ष चैत्रके महीने चन्द्रमा- पुष्प-भ्रमर और कोकिला इनसबको मुखमें विभागपूर्व्वक बांट दिया २५२।२५५ और बाहरसे छोड़ेहुए कामदेवके बाणको भी अपनी तीव्रअग्निसे जलादिया जिन २ स्थानोंमें शिवजीने कामदेवकी अग्निको बांटाहै उन २ स्थानोंको प्राप्तहोकर कामी पुरुषों

हरहुङ्कारज्वालाभस्मकृतंस्मरम् २५८ विललापरतिःक्रूरं बन्धुनामधुनासह। ततोविल
प्यबहुशो मधुनापरिसान्त्विता २५९ जगामशरणंदेव मिन्दुमौलिंत्रिलोचनम्। भृङ्गानु
यातांसंगृह्य पुष्पितांसहकारजाम् २६० लतांपवित्रकस्थाने पाणौपरभृतांसखीम्। निब
ध्यतुजटाजूटं कुटिलैरलकैरतिः २६१ उद्धूल्यगात्रंशुभ्रेण ह्येनस्मरभस्मना। जानुभ्या
मवनींकृत्वा प्रोवाचेन्दुविभूषणम् २६२ (रतिरुवाच) नमःशिवायास्तुनिरामयाय नमः
शिवायास्तुमनोमयाय। नमःशिवायास्तुसुरार्चिताय तुभ्यंसदाभक्तकृपापराय २६३ न
मोभवायास्तुभवोद्भवाय नमोऽस्तुतेध्वस्तमनोभवाय। नमोऽस्तुतेगूढमहाव्रताय नमोऽ
स्तुमायागहनाश्रयाय २६४ नमोऽस्तुशर्वायनमःशिवाय नमोऽस्तुसिद्धायपुरातनाय।
नमोऽस्तुकालायनमःकलाय नमोऽस्तुतेज्ञानवरप्रदाय २६५ नमोऽस्तुतेकालकलातिगाय
नमोनिसर्गामलभूषणाय। नमोऽस्त्वमेयान्धकमर्दकाय नमःशरण्यायनमोऽगुणाय २६६
नमोऽस्तुतेभीमगणानुगाय नमोऽस्तुनानाभुवनादिकर्त्रे। नमोऽस्तुनानाजगतांविधात्रे
नमोऽस्तुतेचित्रफलप्रयोक्त्रे २६७ सर्वावसानेह्यविनाशनेत्रे नमोऽस्तुचित्राध्वरभागभो
क्त्रे। नमोऽस्तुभक्ताभिमतप्रदात्रे नमःसदातेभवसङ्गहर्त्रे २६८ अनन्तरूपायसदैवतुभ्य
मसह्यकोपायनमोऽस्तुतुभ्यम्। शशाङ्कचिह्नायसदैवतुभ्यममेयमानायनमःस्तुताय २६९
वृषेन्द्रयानायपुरान्तकाय नमःप्रसिद्धायमहौषधाय। नमोऽस्तुभक्त्याभिमतप्रदाय नमो
ऽस्तुसर्वार्तिहरायतुभ्यम् २७० चराचराचारविचारवर्यमाचार्यमुत्प्रेक्षितभूतसर्गम्। त्वा
मिन्दुमौलिंशरणंप्रपन्ना प्रियाप्रमेयंमहतांमहेशम् २७१ प्रयच्छमेकामयशःसमृद्धिं पुनः

का हृदय अहर्निश जलताहै २५६। २५७ फिर शिवजीके हुंकार शब्दसे भस्म हुए कामदेवको देखकर उसकी स्त्रीरति उसके भाई चैत्र समेत विलापको करतीभई जब बहुतसा विलापकरचुकी तबचैत्र के समझाने से शिवजीकेही शरणमें जातीभई फिर खिलीहुई वेल और आंबके वृक्षको ग्रहणकर अपने पति कामदेवकी भस्मको शरीर पर लगा पृथ्वीमें घोंटूनवाकर चन्द्रभूषण शिवजीसे बोली २५८। २६२ कि हे रोगादिसे रहित शिवजी आपके अर्थ नमस्कारहै मनोमय शिवको नमस्कारहै देवताओंसे पूजित भक्तोंपैसदैव कृपाकरनेवाले आपको नमस्कारहै २६३ भव भवोद्भव मनोभव अर्थात् कामदेवके भस्मकरनेवाले आपको नमस्कारहै गूढ़ महाव्रतवाले मायासे रहित २६४ शर्व शिव, सिद्ध, पुरातन, काल, कल और ज्ञानवरप्रद आपके अर्थ नमस्कारहै २६५ कालकी कलाके उल्लंघन करनेवाले संहाररूप आभूषणधारी अन्धक दैत्यके मारनेवाले शरण्य और अगुण ऐसे आपके अर्थनमस्कारहै २६६।२६८ अनन्तरूप अतुल क्रोधवाले चन्द्रमाके चिह्नवाले बड़ेमानवाले आपकोनमस्कारहै २६९ बैलकीसवारी करनेवाले त्रिपुरका नाशकरनेवाले प्रसिद्धमहाऔषध भक्तके प्रयोजनके सिद्धकरनेवाले सबकी पीड़ा दूरकरनेवाले ऐसे तुमको नमस्कार है चराचर भूतों के आचारके आचार्य्यमहतोंकेभी महान् ऐसे आपकी मेंशरणमेंहूं २७०।२७१ हे प्रभो मुझको कामकी

प्रभो ! जीवतुकामदेवः । प्रियंविनात्वांप्रियजीवितेषु त्वत्तोऽपरःकोभुवनेष्विहास्ति २७२ प्रभु प्रियायाःप्रभव.प्रियाणां प्रणीतपर्यायपरापरार्थः । त्वमेवमेकोभुवनस्यनाथो दयालुरुन्मूलितभक्तभीतिः २७३ इत्थंस्तुतःशङ्करईड्यईशो वृषाकपिर्मन्मथकान्तयात्। तुतोषदोषाकरखण्डधारी उवाचचैनांमधुरंनिरीक्ष्य २७४ (शङ्करउवाच) भवितेतिचकामोऽयं कालात्कान्तोऽचिरादपि । अनङ्गइतिलोकेषु सविख्यातिंगमिष्यति २७५ इत्युक्ता शिरसावन्द्य गिरिशङ्कामवल्लभा । जगामोपवनंरम्यं रतिस्तुहिमभूभृतः २७६ रुरोदचापिबहुशो दीनारम्येस्थलेतुसा । मरणव्यवसायात्तु निवृत्ताऽऽसाहराज्ञया २७७ अथनारदवाक्येन चोदितोहिमभूधरः । कृताभरणसंस्कारां कृतकौतुकमङ्गलाम् २७८ स्वर्गपुष्पकृतापीडां शुभ्रचीनांशुकांवराम् । सखीभ्यांसंयुतांशैलो गृहीत्वास्वसुतान्ततः २७९ जगामशुभयोगेन तदासंपूर्णमानसः । सकाननान्युपाक्रम्य वनान्युपवनानिच २८० ददर्शरुदतीनारीमप्रतर्क्यमहोजसम् । रूपेणासदृशींलोके रम्येषुवनसानुषु २८१ कौतुकेनपरामृश्य तांदृष्ट्वारुदतींगिरिः । उपसर्प्यततस्तस्या निकटेसोऽभ्यगच्छत २८२ (हिमवानुवाच) कासिकस्यासिकल्याणि ! किमर्थञ्चापिरोदिषि । नैतदल्पंमहासत्वेकारणंलोकसुन्दरि ! २८३ सातस्यवचनंश्रुत्वा उवाचमधुनासह । रुदतीशोकजननं श्वसतीदैन्यवर्द्धनम् २८४ (रतिरुवाच) कामस्यदयितांभार्यां रतिंमांविद्धिसुव्रत ! । गिरावस्मिन्महाभाग ! गिरिशस्तपसिस्थितः २८५ तेनप्रत्यूहदृष्टेन विस्फार्यालोक्यलोचनम् । दग्धो

समृद्धिदीजिये इस कामदेवको जीवदानदो तुम्हारे विना त्रिलोकी में मेरे पतिको जीवदान देनेवाला औरकोई नहीं है २७२ वहकामदेव मेरे प्राणोंका पतिहै मुझे आपही एक दयालु दीखतेहो तुमत्रिभुवनके नाथ हो भक्तोंके भयकोदूरकरतेहो २७३ इस प्रकारसे जबकामदेव की स्त्री रतिने कल्याणकारी महादेवजी की स्तुतिकरी तब दोषोंके नाश करने वाले शिवजी इस रतिको देखकर मधुर वाणीसे बोले २७४ कि यह तेरापति बहुतसे कालमें उत्पन्नहोवेगा उससमय इसकामदेवका नाम अनंगहोगा इस वचनको सुनकररति शिवजीको शिरसे दण्डवत्कर हिमाचल पर्व्वत के बगीचों में जातीभई २७५।२७६ वहाँरमणीकस्थल में अपने पतिके मरने के शोचसे बहुतसा रुदनकरती भयी औरशिवजीने आज्ञाकरी तबरोने से निवृत्तहुई २७७ इसके अनन्तर नारदमुनि के वचनसे प्रेरितहुआ हिमांचल पर्व्वत अपनी पुत्री को आभूषण पहराकर मंगलकर पुष्पोंसेशिर गुंथवा नवीन वस्त्र पहराय सखियोंसे युक्त कर सुन्दरमुहूर्त्तमें प्रसन्नहोके शिवजीके पासलेजाता भया फिर मार्गके गह्वरवनोंको उल्लंघनकर वनके बगीचोंमें जाकर रोवतीहुई स्त्रीको देखताभया असाधारण महारूपवती उस रोवतीहुई स्त्रीको देख आश्चर्य्यसे विचारकरताहुआ उसके समीपमें गया २७८।२८१ वहाँ जाकर हिमाचलने कहा हेकल्याणिनि तूकौन है किसकी भार्य्या है और किस निमित्त रोती है हेसुन्दरि यह तुम्हारांथोड़ा अल्पसा शोकनहीं है २८३ ऐसे हिमाचलके कहेहुए वचनको सुनकर रोतीहुई रति अपनेदीनपन औरशोकके सब वृत्तान्तको कहती भई २८४ हे सुव्रत

ऽसौझषकेतुस्तु ममकान्तोऽतिवल्लभः २८६ अहन्तुशरणंयाता तंदेवंभयविह्वला। स्तु
तवत्यथसंस्तुत्या ततोमांगिरिशोऽब्रवीत् २८७ तुष्टोऽहंकामदयिते! कामोऽयन्तेभविष्य
ति। त्वत्स्तुतिंचाप्यधीयानो नरोभक्त्यामदाश्रयः २८८ लप्स्यतेकांक्षितंकामं निवर्त्यं
मरणादितः। प्रतीक्ष्यतीचतद्वाक्यमाशावेशादिभिह्र्यहम् २८९ शरीरंपरिरक्षिष्ये क
ञ्चित्कालंमहाद्युते!। इत्युक्तस्तुतदारत्या शैलःसम्भ्रमभीषितः २९० पाणावादायहिसु
तां गन्तुमैच्छत्स्वकम्पुरम्। भाविनोऽवश्यभावित्वाद्भवित्रीभूतभाविनी २९१ लज्जमा
नासखीमुखैरुवाचपितरङ्गिरिम्। (शैलदुहितोवाच) दुर्भाग्येनशरीरेण किंममानेनका
रणम् २९२ कथंचतादृशंप्राप्तं सुखंमेसपतिर्भवेत्। तपोभिःप्राप्यतेऽभीष्टं नासाध्यंहितप
स्यतः २९३ दुर्भगत्वंवृथालोको वहतेसतिसाधने। जीवितात्दुर्भगाच्छ्रेयो मरणंह्यतप
स्यतः २९४ भविष्यामिनसन्देहो नियमैःशोषयेतनुम्। तपसिभ्रष्टसन्देहे उद्यमोऽर्थंजि
गीषया २९५ साहन्तपःकरिष्यामि यदहंप्राप्यदुर्लभा। इत्युक्तःशैलराजस्तु दुहित्रास्नेह
विक्लवः २९६ उवाचवाचाशैलेन्द्रो स्नेहगद्गदवर्णया। (हिमवानुवाच) उमेतिचपले!
पुत्रि! नक्षमंतावकंवपुः २९७ ततःसचिन्तयाविष्टो दुहितांप्रशशंसच। ततोऽन्तरिक्षेदि
व्यावागभूद्भुवनभूतले २९८ उमेतिचपले! पुत्रि! त्वयोक्तातनयाततः। उमेतिनामते

मैं कामदेवकी भार्य्याहूं हेमहाभाग इस पर्व्वतमें स्थितहुए महादेव तप कर रहे हैं उसने क्रोधपूर्वक अपने नेत्रको खोलकर मेरेपतिको भस्मकरडाला २८५। २८६ तबभयसे विह्वलहुई मैं उनकी शरणमें जाकर स्तुति करतीभई तब मुझसे महादेवजी बोले कि हे दयिते मैं तुझपर प्रसन्नहूं यह तेरापति कामदेव उत्पन्नहोजायगा औरतेरीकीहुई स्तुतिको जोपुरुषभक्तिसे करेगा वह मेरे आश्रय होकर मनोवांछित फलको प्राप्तहोकर जन्म मरणसे निवृत्तहोगा सो उनके वचनकी आशा करती हुई मैं कितनेही कालतक अपने शरीरकी रक्षाकरूंगी इसप्रकारके रतिके सब वचनोंको सुनकर हिमाचल संभ्रमपूर्व्वक भयसे संयुक्त होगया २८७। २९० फिरअपनी पुत्रीको हाथोंमें लेके अपने पुरमें लौट जानेकी इच्छाकरी तबतो अवश्य भावीके होनेसेयह पार्वतीलज्जाकरके सखियोंके मुखसे वचन कहलाती भई अर्थात् उनके मुखके द्वारा पार्व्वतीने कहा कि मैंने इस दुर्भग शरीरसे कौनसासुकर्म रूपकारण कियाहै जो कि ऐसेपतिका सुखदेगा तपकरनेसे मनोवांछित फलकी प्राप्ति होतीहै तपस्याकरनेवाले को कुछभी असाध्यनहीं है २९१। २९२ साधन होतेहुए भी संसारदुःखों को भोगताहै जीवते हुए दुर्भगमनुष्यसे और तपनहीं करने वाले से मरनाही श्रेष्ठ है २९४ मैं अवश्यही नियम व्रतादिकों से अपने शरीरको सुखाऊंगी भ्रष्टहोजाने में उद्यमभीनष्ट होजाताहै २९५ मैं अवश्यतपकरूंगी पार्वती के इस वचनको सुनकर पुत्रीके स्नेहसे विकलहुआ हिमवान् गद्गदवाणीसे बोला कि हे पुत्री हे उमे और हेचपले तेराशरीर तपस्याकरने को समर्थनहीं है एक चिन्तासे युक्तहो अपनी पुत्रीकी सराहना करता भया उस समय आकाश से देववाणीहुई कि हे हिमाचल जोतुमने इसपार्वतीको उमा चपला यहदो नामसे संबोधनकियाहै यही इसके नाम

नास्या भुवनेषु भविष्यति २९९ सिद्धिंचमूर्तिमत्येषा साधयिष्यतिचिन्तिताम्। इतिश्रुत्वा तुवचनमाकाशात्काशपाण्डुरः ३०० अनुज्ञायसुतांशैलो जगामाशुस्वमन्दिरम्। (सूत उवाच) शैलजापिययौशैलमगम्यमपिदैवतैः ३०१ सखीभ्यामनुयातानु नियतानगरा जजा। शृङ्गंहिमवतःपुण्यं नानाधातुविभूषितम् ३०२ दिव्यपुष्पलताकीर्णं सिद्धगन्धर्व सेवितम्। नानामृगगणाकीर्णं भ्रमराघुष्टपादपम् ३०३ दिव्यप्रस्रवणोपेतं दीर्घिकाभिर लंकृतम्। नानापक्षिगणाकीर्णं चक्रवाकोपशोभितम् ३०४ जलजस्थलजैःपुष्पैः प्रोत्फु ल्लैरुपशोभितम्। चित्रकन्दरसंस्थानं गुहागृहमनोहरम् ३०५ विहङ्गसङ्घसंजुष्टं कल्पपा दपसङ्कटम्। तत्रापश्यन्महाशाखं शाखिनंहरितच्छदम् ३०६ सर्वर्तुकुसुमोपेतं मनोरथ शतोज्ज्वलम्। नानापुष्पसमाकीर्णंनानाविधफलान्वितम् ३०७ नतंसूर्यस्यरुचिभिर्भिन्न संहतपल्लवम्। तत्राम्बराणिसन्त्यज्य भूषणानिचशैलजा ३०८ संवीतावल्कलैर्दिव्यैर्द र्भनिर्मितमेखला। त्रिःस्नातपाटलाहारा बभूवशरदांशतम् ३०९ शतमेकेनशीर्णेन प र्णेनावर्त्तयत्तदा। निराहाराशतंसाभूत् सानानातपसान्निधिः ३१० ततउद्वेजिताःसर्व्वे प्राणिनस्तत्तपोऽग्निना। ततःसस्मारभगवान् मुनीन्सप्तशतक्रतुः ३११ तेसमागम्य मुनयः सर्वेसमुदितास्ततः। पूजिताश्चमहेन्द्रेण पप्रच्छुस्तंप्रयोजनम् ३१२ किमर्थन्तु सुरश्रेष्ठ! संस्मृतास्तुवयन्त्वया। शक्रःप्रोवाचशृण्वन्तु भगवन्तः! प्रयोजनम् ३१३

त्रिलोकी में प्रसिद्धहोंगे २९८।२९९ यह तुम्हारी पुत्री चिन्तवनकीहुई वार्त्ताको सिद्ध करेगी इस आकाशवाणीको सुनकर हिमाचल अपनी पुत्रीकी आज्ञा लेकर अपने स्थानको आताभया सूतजी बोले कि इसके अनन्तर पार्वती भी देवताओंसे भी अगम्य पर्व्वतपर, तपकरने को जातीभई ३००।३०१ सखियों से युक्तहुई पार्वती हिमालय पर्व्वतके उस पवित्र शिखरमें जातीभई, जो अनेक प्रकारकी धातुओंसे विभूषित दिव्य पुष्पलता आदिसे शोभित सिद्धगन्धर्वोंसे सेवित, अनेक मृगगणोंसे आकीर्ण भ्रमरोंसे गुंजायमान वृक्षोंसे युक्त दिव्य जलोंके झिरने और वापियोंसे सुशोभित अनेक प्रकारके पक्षियोंसे व्याप्त चक्रवाकोंसे सुन्दर जल स्थलवाले पुष्पोंसे सुगन्धित विचित्र कन्दराओंके स्थान और गुफाओंसे शोभित ३०२।३०५ पक्षियोंके समूहोंके शब्दोंसे, शब्दायमान कल्पतरु वृक्षोंसे शोभित बहुशाखावाले वृक्षोंसे निविड़सब ऋतुओंके पुष्पोंसे पुष्पित अनेक प्रकार के फलोंसे आढ्य सूर्य्यकी किरणोंसे प्रकाशित और अनेक प्रकारके जीवजन्तुओंसे आनन्दकारी था ऐसे पवित्रतम शिखरपर जाकर वह पार्वती अपने आभूषण वस्त्रोंको त्याग वक्कलके वस्त्रधारण करके डाभकी क्षुद्रघंटिका बांधलेतीभई प्रतिदिन तीनवार स्नानकरती पाटल वृक्षके वक्कलोंके आहारसे सौ १०० वर्ष व्यतीत करतीभई फिर सौ १०० वर्षतक पृथ्वीमें गिरेहुए पत्तोंकोही खाया फिर सौ १०० वर्षतक निराहारहीरही ऐसे २ प्रकारसे और नियमोंसे, पूर्ण तपकरतीभई ३०६।३१० फिर उसके तपकी अग्निसे सबप्रजा कंपायमानहुई तब इन्द्र सप्तऋषियोंका स्मरणकरता भया उससमय वह सप्तऋषिबड़ी प्रसन्नतासे इन्द्रके समीपआये इन्द्रने उनका पूजन किया तब उन्होंने इन्द्र

हिमाचलेतपोघोरं तप्यतेभूधरात्मजा। तस्याह्यभिमतंकामं भवन्तःकर्तुमर्हथ ३१४ त
तःसमापतन्देव्या जगदर्थंत्वरान्विताः। तथेत्युक्त्वातुशैलेन्द्रं सिद्धसङ्घातसेवितम् ३१५
ऊचुरागत्यमुनयस्तामथोमधुराक्षरम्। पुत्रि!किन्तेव्यवसितः कामःकमललोचने! ३१६
तानुवाचततोदेवी सलज्जाचित्रवाङ्मुखी। तपस्यतोमहाभागाः प्राप्यमौनंभवादृशान्
३१७वन्दनायनियुक्ताधीः पावयत्यविकल्पितम्॥प्रश्नोन्मुखत्वाद्भवतां युक्तमासनमादितः
३१८ उपविष्टाःश्रमोन्मुक्तास्ततःप्रक्ष्यथमामतः इत्युक्त्वासाततश्चक्रे कृतासनपरिग्र-
हान् ३१९ सातुतान्विधिवत्पूज्यान् पूजयित्वाविधानतः। उवाचादित्यसंकाशान् मुनीन्
सप्तसतीशनैः ३२० त्यक्त्वाव्रतात्मकंमौनं मौनंजग्राहह्रीमयम्। भावंतस्यास्तुमौनान्तं
तस्याःसप्तर्षयोयथा ३२१ गौरवाधीनतांप्राप्ताः पप्रच्छुस्तांपुनस्तथा। सापिगौरवगर्भे
ण मनसाचारुहासिनी ३२२ मुनीन्शान्तकथालापान् प्रोवाचप्रोज्झ्यवाग्यमम्। भगव
न्तोविजानन्ति प्राणिनांमानसंहितम् ३२३ मनोवागभिरत्यर्थं कन्दर्पैतेहिदेहिनः। केचि
त्तुनिपुणास्तत्र घटन्तेविबुधोद्यमैः ३२४ उपायैर्दुर्लभान्भावान् प्राप्नुवन्तिह्यतन्द्रिताः।
अपरेतुपरिच्छिन्ना नानाकाराभ्युपक्रमाः ३२५ देहान्तरार्थमारम्भमापतन्तिहितप्रदम्।
ममत्वाकाशसम्भूतपुष्पदामविभूषितम् ३२६ वन्ध्यासुतंप्राप्तुकामा मनःप्रसरतेमुहुः ॥
अहंकिलभवंदेवं पतिंप्राप्तुंसमुद्यता ३२७ प्रकृत्यैवदुराधर्षं तपस्यन्तंतुसंप्रति। सुरासु

से पूछा कि हे सुरश्रेष्ठ आपने हमको किस निमित्त स्मरण कियाहै इन्द्रने कहा हे महर्षिलोगो आप मेरे प्रयोजनको सुनिये कि हिमाचल पर्व्वतके शिखरपर पार्वती घोरतपस्या कररही है उसके मनोरथको आप सिद्धकीजिये यह सुनतेही वह सप्तऋषि शीघ्रही उससिद्धोंसे सेवित पार्वतीजीके स्थानमें जातेभये ३११। ३१५ और जाकर उससेबोले कि हे पुत्रीतेरा क्यामनोरथ है तब लज्जाकरती हुई पार्वती उनऋषियोंसे यह वचनबोली कि तपस्या करनेवाले आपसरीखे मुनियोंको प्राप्तहोके, जिसकी बुद्धि प्रणामआदि सत्कारकरनेमें युक्त होतीहै उसको आप पवित्रकर देतेहो और मेरे तो आपसन्मुखहोके प्रश्नकरतेहो और प्रत्यक्षमेंही आगयेहो ऐसा कहकर उनको आसनदेती भई ३१६। ३१९ फिर वह पार्वती उनका विधिपूर्व्वक पूजनकरतीभई पूजन करनेके पीछे उमासूर्यके समान कान्तिवाले सप्तऋषियोंसे ३२० व्रतकी मौनताको त्यागकरबोली और फिर लज्जाकी मौनताको धारण करतीभई जब सप्तऋषि उसके भावको पूछनेलगे तब हँसतीहुईसी होकरमन्द २ वाणीसे यह वचनबोली कि आप सब प्राणियोंके मनकी वार्त्ताको जानतेहो कितनेही पुरुष तो मनवाणी आदि अनेक उद्यमोंसे कामदेवकी चेष्टाको विचारते हैं और अनेक उपायों करके दुर्लभ मनोरथोंको प्राप्तहोजाते हैं कितनेही अनेक कार्य्योंका उपाय किया करतेहैं ३२१। ३२५ बहुत से अपने हितके निमित्त दूसरे शरीरकेलिये कर्मका आरंभकरते हैं परन्तु मेरा मनोरथ ऐसाहै जैसा कि कोई आकाशमें उत्पन्नहुए पुष्पोंकी इच्छा करताहो अथवा वंध्यास्त्री पुत्रकी कामनाकरतीहो जैसे कि यह असंभव वातोंकी इच्छाकरते हैं उसी प्रकार में शिवजी महाराजको अपने पतिबनानेकी

रैरनिर्णीतपरमार्थक्रियाश्रयम् ३२८ साम्प्रतंचापिनिर्दग्धमदनंवीतरागिणम्। कथमारा धयेदीशंमादृशीतादृशंशिवम् ३२९ इत्युक्तामुनयस्तेतु स्थिरतांमनसस्ततः। ज्ञातुमस्या वचःप्रोचुःप्रक्रमात्प्रकृतार्थकम् ३३० (मुनय ऊचुः) द्विविधन्तुसुखन्तावत्पुत्रि!लोकेषुभा व्यते। शरीरस्यास्यसंभोगैश्चेतसश्चापिनिर्वृतिः ३३१ प्रकृत्यासतुदिग्वासाभीमःपितृव नेशयः। कपालीभिक्षुकोनग्नो विरूपाक्षःस्थिरक्रियः ३३२ प्रमत्तोन्मत्तकाकारोबीभत्सकृत संग्रहः। यतिनानेनकःस्वार्थो मूर्त्तानर्थेनकांक्षितः ३३३ यदिह्यस्यशरीरस्यभोगमिच्छसि साम्प्रतम्। तत्कथन्तेमहादेवात्भयभाजोजुगुप्सितात् ३३४ स्रवद्रक्तवसाभ्यक्तकपालकृ तभूषणात्। श्वसदुग्रभुजङ्गेन्द्रकृतभूषणभीषणात् ३३५ श्मशानवासिनोरौद्रप्रमथानुगतात् सति!। सुरेन्द्रमुकुटव्रातनिघृष्टचरणोऽरिहा ३३६ हरिरस्तिजगद्धाताश्रीकान्तोऽनन्तमूर्त्ति मान्। नाथोयज्ञभुजामस्ति तथेन्द्रःपाकशासनः ३३७ देवतानांनिधिश्चास्तिज्वलनःसर्व कामकृत्। वायुरस्तिजगद्धाता यःप्राणःसर्वदेहिनाम् ३३८ तथावैश्रवणोराजा सर्वार्थम तिमान्विभुः। एभ्यएकतमंकस्मात् नत्वंसम्प्राप्तुमिच्छसि ३३९ उत्तानदेहसंप्राप्त्या सुखंतुमनसेप्सितम्। एवमेतत्तवाप्यत्र प्रभवोनाकसम्पदाम् ३४० अस्मिन्नेहपरत्रापि कल्याणप्राप्तयस्तव। पितुरेवास्तितत्सर्वं सुरेभ्योयन्नविद्यते ३४१ अतस्तत्प्राप्तयेक्लेश सवाप्यत्राफलस्तव। प्रायेणप्रार्थितोभद्रे! सुस्वल्पोह्यतिदुर्लभः ३४२ अस्यतेविधियोग

इच्छा करतीहूं ३२६। ३२७ सो यहबात बड़ी दुर्लभहै क्यों कि तपकरतेहुए देवता और दैत्योंसे भी अज्ञात कर्मवाले अभी कामदेवके दग्ध करने वाले रागमोहादिकसे रहित ऐसे शिवजीको मुझसरी की स्त्री कैसे प्राप्तकरसक्ती है यहवचन सुनकर सप्तऋषि अपने मनको स्थितकर उसके मनोरथको जानकर यहवचन बोले कि हेपुत्री संसारमें दोप्रकार के सुख हैं उनमेंसे पहला सुखतो शरीरके सं-भोग करनेसे चित्तकी वृत्तिका निवृत्तहोनाहै सो वह शिवजी स्वभावहीसे नंगे दिगम्बर भयंकर श्मशानवासी कपाली भिक्षुकरूप विरूपाक्ष और स्थिर क्रियावाले हैं ३२८। ३२१ प्रमत्त मदो-न्मत्तके सदृश और भयंकर आकारवाले हैं ऐसे पतिके करने से तेराकौनसा प्रयोजन सिद्धहोगा जो कदाचित् उनके शरीरसे भोगकी इच्छा करतीहो तो इनभयंकर महादेव से तुझको भोगकी प्राप्ति कैसेहोवेगी ३३३। ३३४ रुधिर भिरतेहुए कपालोंके धारण करनेवाले उग्रश्वास लेनेवाले सर्पोंका भूषण धारण करनेवाले श्मशानवासी भयंकरगणों समेत विचरनेवाले शिवजी से कैसे सुखकी प्राप्तिहोगी देखो देवताओंसे वन्दित जगद्धाता लक्ष्मीके पति विष्णु भगवान् देवताओं का पति इन्द्र देवताओंके निधि अग्नि सब कार्य्योंकाकरने वाला वायु जो कि सब देहधारियों का प्राणहै इसीप्रकार सबधनोंका पति कुबेरहै इनमें से किसी एकसे तुम क्यों नहीं विवाह करलेतीहो ३३५। ३३९ तुम्हारे शरीरमें उत्तान हस्तका लक्षणहै इस हेतुसे मनोवाञ्छित सुखकी प्राप्तिहोवेगी और स्वर्गकी संपत्तियोंकी भी प्राप्तिहोगी इसशरीरमें तुझको कल्याणकी प्राप्तिहोगी तेरेपतिकेही घर में ऐसीसंपत्तिहै जो किसी देवताके पास नहीं है ३४०। ३४१ इस हेतुसे उनशिवजीकी प्राप्तिके

स्यधाताकर्तात्रचैवहि (सूत उवाच) इत्युक्तासातुकुपिता मुनिवर्येषुशैलजा ३४३ उवाचकोपरक्ताक्षी स्फुरद्भिर्दशनच्छदैः (देव्युवाच) असद्ग्रहस्यकाप्रीतिर्व्यसनस्य क्वयन्त्रणा ३४४ विपरीतार्थबोद्धारः सत्पथेकेनयोजिताः। एवंमांवेत्थदुष्प्रज्ञां ह्यस्थाना सद्ग्रहप्रियाम् ३४५ नमांप्रतिविचारोऽस्ति यत्रेहासद्ग्रहान्वितौ। प्रजापतिसमाःसर्वे भवन्तःसर्वदर्शिनः ३४६ नूनंनवेत्थतंदेवं शाश्वतंजगतःप्रभुम्। अजमीशानमव्यक्त ममेयमहिमोदयम् ३४७ आस्तान्तद्धर्मसद्भावसम्बोधस्तावदद्भुतः। विदुर्यन्नहरिब्रह्म प्रमुखाहि सुरेश्वराः ३४८ यत्तस्यविभवात्स्वोत्थंभुववेषुविजृम्भितम्। प्रकटंसर्वभूतानां तदप्यत्रनवेत्थकिम् ३४९ कस्यैतद्गगनंमूर्त्तिः कस्याग्निःकस्यमारुतः। कस्यभूःकस्य वरुणः कश्चन्द्रार्कविलोचनः ३५० कस्यार्चयन्तिलोकेषु लिङ्गभक्त्यासुरासुराः। यंब्रुव न्तीश्वरंदेवा विधीन्द्राद्यामहर्षयः ३५१ प्रभावंप्रभवञ्चैव तेषामपिनवेत्थकिम्। अदितिः कस्यमातेयं कस्माज्जातोजनार्दनः ३५२ अदितेःकश्यपाज्जाता देवानारायणादयः। मरीचेःकश्यपःपुत्रो ह्यदितिर्दक्षपुत्रिका ३५३ मरीचिश्चापिदक्षश्च पुत्रौतौब्रह्मणःकिल। ब्रह्माहिरण्मयात्त्वण्डाद्दिव्यसिद्धिविभूषितात् ३५४ कस्यप्रादुरभूद्ध्यानात् प्रक्षुब्धाःप्राकृ तांशकाः। प्रकृतौतुतृतीयायां मधुहिङ्जननक्रिया ३५५ जातासस्रजेषड्वर्गान् बुद्धि

निमित्त तुमको क्लेशहीहोगा और श्रेष्ठफलभी नहीं मिलेगा विशेषकरके प्रार्थित कियाहुआ स्वल्प भी प्रयोजन दुर्लभहोजाता है इसतरे विचार कियेहुए योग का करनेवाला विधाताही है सूतजी कहते हैं कि इसप्रकारके ऋषियों के वचनोंको सुनकर पार्वतीजी उन सप्तऋषियोंपर क्रोध करती भई और कहनेलगीं कि असत्वस्तुके ग्रहण करनेवाले व्यसनी पुरुषको श्रेष्ठ देवताकी क्या प्रीति होती है विपरीत अर्थके जाननेवाले ऋषि सन्मार्ग में किसको युक्तकरसक्ते हैं इसीप्रकार आप सब ऋषि मुझको भी नष्टबुद्धिवाली जानतेहो जहां ऐसे असत्कार्य्यको विचारनेवाले हैं वहां मेरे सम्बन्धी विचारको आप नहीं करसक्ते तुमसब ब्रह्माजी के समानहो परन्तु जगत्के प्रभु शाश्वत अज ईशान अव्यक्त और अतुलमहिमावाले ऐसेमहादेवको तुमनहीं जानतेहो ३४१। ३४७ चाहे विष्णु आदिक देवताओं के धर्मका विचारहोय परन्तु वहभी महादेवजी के विभवको नहींजान सके सबभूतोंकी उत्पत्ति महादेवकेही ऐश्वर्य्य से होती है इसबातको क्या तुमनहीं जानते हो ३४८। ३४९ ऐसी मूर्त्ति किसकी है ऐसा अग्नि ऐसा भूमि और ऐसा जल भी किसकेहैं जैसाकि महादेवजी के पासहे किसके सूर्य्य और चन्द्रमा नेत्रहैं देवता और दैत्य भक्तिपूर्व्वक किसके लिंगको पूजतेहैं ब्रह्मा इन्द्र आदिक जिनको देवता कहतेहैं उनकेप्रभावको और उत्पत्तिको क्यातुम नहींजानतेहो अदिति किसकी माताहै विष्णु किससे उत्पन्न हुएहैं ३५०। ३५२ अदितिमें कश्यपके सकाशसे नारायण आदिक सबदेवता उत्पन्न भये हैं मरीचिके सकाशसे कश्यप उत्पन्न भये हैं दक्षकी पुत्री अदितिहै मरीचि और दक्ष यह दोनों ब्रह्माजी सुवर्णमय अंडकोशमें से किसके ध्यानसे उत्पन्न हुएहैं मायाके अंशने किसको क्षोभकियाहै तीसरी प्रकृतिमें विष्णुकी उत्पत्ति हुई है फिर विष्णुसे युक्त

पूर्वान्स्वकर्म्मजान्। अजातकोऽभवद्द्वेधा ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ३५६ यःस्वयोगेन संक्षो भ्य प्राकृतंकृतवानिदम्। ब्रह्मणःसिद्धसर्वार्थमैश्वर्यंलोककर्तताम् ३५७ विदुर्विष्ण्वादयो यत्रस्वमहिम्नासदैवहि। कृत्वान्यंदेहमन्यादृक् तादृक्कृत्वापुनर्हरिः ३५८ कुरुतेजगतः कृत्यमुत्तमाधममध्यमम्। एवमेवहिसंसारो योजन्ममरणात्मकः ३५९ कर्म्मणश्चफलं ह्येतत् नानारूपसमुद्भवम्। अथनारायणोदेवः स्वकाञ्छायांसमाश्रयत् ३६० तत्प्रेरि तःप्रकुरुते जन्मनानाप्रकारकम्। सापिकर्म्मणएवोक्ताप्रेरणी विवशात्मनाम् ३६१ यथोन्मादादिजुष्टस्य मतिरेवहिसाभवेत्। इष्टान्येवयथार्थानि विपरीतानिमन्यते ३६२ लोकस्यव्यवहारेषु सृष्टेषुसहतेसदा। धर्माधर्म्मफलावाप्तौ विष्णुरेवनिबोधितः ३६३ अ थानादित्वमस्यास्ति सामान्यात्तुतदात्मना। नह्यस्यजीवितंदीर्घं दृष्टंदेहेतुकुत्रचित् ३६४ भवद्भिर्यस्यनोदृष्ट मन्तमग्रमथापिवा। देहिनांधर्म्मएवैष क्वचिज्जायेतक्वचिन्म्रियेत् ३६५ क्वचिद्गर्भगतोनश्येत् क्वचिज्जीवेज्जरामयः। क्वचित्समाःशतंजीवेत् क्वचिद्बाल्येविपद्य ते ३६६ शतायु पुरुषोयस्तु सोऽनन्तःस्वल्पजन्मनः। जीवितोनम्रियत्यग्रे तस्मात्सो ऽमरउच्यते ३६७ अदृष्टजन्मनिधना ह्येवंविष्ण्वादयोमताः। एतत्संशुद्धमैश्वर्यं संसारे कोलभेदिह ३६८ तत्रक्षयादियोगात्तु नानाऽश्चर्य्यस्वरूपिणि। तस्माद्विवश्चरान्सर्वा

हुई प्रकृतिसे अपने कर्मों से उत्पन्न होनेवाले बुद्धि आदिक षड्वर्गादिक उत्पन्न हुए हैं अव्यक्तजन्म वाले ब्रह्मके सकाशसे विष्णुके दो भेदहोतेभये ३५३।३५६ जो अपने योगकरके माया सहित होकर जगत्को उत्पन्न करताहै वही माया सहित ब्रह्मलोकका कर्त्ता ईश्वर होजाताहै ३५७ और विष्णु आदिक देवता अपनी महिमा करके उसब्रह्मको पहचानते हैं विष्णुभगवान् अन्य शरीर में भी अपनी मायाकेद्वारा प्रवेशकरजाते हैं और जगत्के उत्तम मध्यम और अधमकार्य्य को करते हैं इसीप्रकार जन्ममरणात्मक संसारहै इसमें अनेकरूपों की उत्पत्तिका होनाही कर्मोंकाफल है, इसके पीछे नारा- यण देव अपनीमायाके आश्रयहोके और उसीमायाके प्रेरणे से अनेकप्रकार के जन्मोंको करताहै और वह मायाभी कर्मों के वशीभूत होनेवालोंको प्रेरती है ३५८।३६१ जैसे कि उन्माद आदिकमें रहने वालों के वहमाया बुद्धिहोजाती है और उसबुद्धिकेद्वारा पुरुष विपरीत कर्मोंको अच्छे मानलेते हैं३६२ लोकोंके व्यवहारों में धर्म अधर्मकी प्राप्तिकराने के निमित्त विष्णुभगवानही मुख्यकहेजातेहैंसामान्यता सेब्रह्मस्वरूप होजानेके कारण विष्णुको अनादि कहतेहैं शरीरमें तो विष्णुकाजीना बहुतकालतक कहीं नहीं देखाहै ३६३।३६४आपलोगोंनेभी जिसके आदि अन्तको नहीं देखाहै उसको तो कहो देहधारियों का यही धर्म है कि कहीं जन्मतेहैं और कहीं मरतेहैं ३६५ कहीं गर्भमेंही मरजातेहैं कहीं वृद्धावस्थातक जीतेहैं कहीं सौ वर्षतक जीतेहैं कहीं बालकपनेहीमें मरजाते हैं ३६६ जो सौ१००वर्षकी आयुवालाहै वह पूर्ण आयुवाला कहाताहै जो जीवताहुआ कभी नहीं मरताहै वह अमर कहाता है इसप्रकारसे विष्णुआदिक देवता दैवके अनुसार मृत्युवाले हैं इस संसारमें शुद्ध ऐश्वर्य्यको कौन प्राप्तहोसक्ताहै इस हेतुसे मलिन सत्त्वप्रधान आदि स्वल्प ऐश्वर्य्यवाले देवताओंके वरनेकी मैं कभी इच्छा नहीं

न् मलिनान्स्वल्पभूतिकान् ३६६ नाहंभद्राः! किलेच्छामि ऋतेसर्व्वातूपिनाकनः। स्थितंचतारतम्येन प्राणिनांपरमन्त्विदम् ३७० धीबलैश्वर्यकार्यादि प्रमाणंमहतांमहत्। यस्मान्नकिञ्चिदपरं सर्वंयस्मात्प्रवर्त्तते ३७१ यस्यैश्वर्यमनाद्यन्तं तमहंशरणङ्गता। एष मेऽव्यवसायश्च दीर्घोऽतिविपरीतकः ३७२ यातवातिष्ठतैवाथ मुनयो! मद्विधायकाः!। एवंनिशम्यवचनं देव्यामुनिवरास्तदा ३७३ आनन्दाश्रुपरीताक्षाः सस्वजुस्तांतपस्वि नीम्। ऊचुश्चपरमप्रीताः शैलजांमधुरंवचः ३७४ (ऋषय ऊचुः) अत्यद्भुतास्यहोदे वि! ज्ञानमूर्त्तिरिवामला। प्रसादयतिनोभावं भवभावप्रतिश्रयात् ३७५ नतुविद्मोवयन्त स्य देवस्यैश्वर्यमद्भुतम्। त्वन्निश्चयस्यदृढतांवेत्तुंवयमिहागताः ३७६ अचिरादेवतन्वङ्गि! कामस्तेऽयंभविष्यति। क्वादित्यस्यप्रभायाति रत्नेभ्यःक्वद्युतिःपृथक् ३७७ कोऽर्थोवर्णा लिकाव्यक्तः कथंत्वंगिरिशंविना। यामोनैकाभ्युपायेन तमभ्यर्थयितुंवयम् ३७८ अ स्माकमपिवैसोऽर्थः सुतरांहृदिवर्त्तते। अतस्त्वमेवसाबुद्धिर्यतोनीतिस्त्वमेवहि ३७९ अतोनिःसंशयंकार्यं शङ्करोऽपिविधास्यति। इत्युक्ताःपूजितायाता मुनयोगिरिकन्यया ३८० प्रययुर्गिरिशंद्रष्टुं प्रस्थंहिमवतोमहत्। गङ्गाम्बुप्लावितात्मानं पिङ्गबद्धजटासट म् ३८१ भृङ्गानुयातपाणिस्थ मन्दारकुसुमस्रजम्। गिरेःसंप्राप्यतेप्रस्थं ददृशुःशङ्करा श्रमम् ३८२ प्रशान्ताशेषसत्वौघं नवस्तिमितकाननम्। निःशब्दाक्षोभसलिल प्रपा

रखती मैं तो शिवजीकोही वरूंगी वह सब प्राणियों में और देवताओं में भी सबसे बड़े हैं महान् पु रुषोंके बुद्धिबल और ऐश्वर्य्यादिकों का प्रमाणभी महत् होताहै जिस्से भिन्न कुछ नहीं है जिससे कि सब कुछ प्रवर्त्तहोताहै और जो ऐश्वर्य्यादिकों से रहितहै उन महादेवजीकी मैं शरणहूं यह इस प्रकार का मेरा परम निश्चयहै ३६७।३७२ मुझको शिक्षादेनेवाले मुनिजाय अथवा ठहरें इसप्रकारके पा र्वतीजीके वचनोंको सुनकर वह सप्तऋषि आनन्दके अश्रुओंसे युक्त होकर उस तपस्विनी पार्वतीजी से बड़ी प्रसन्नता पूर्वक मिलकर यह वचन बोले ३७३।३७४कि हे देवि बड़ा आश्चर्य्य है तू ज्ञान की मूर्त्तिहै हमारे ऊपर प्रसन्नहो हम उन महादेवजी के ऐश्वर्य्य को तो जानतेही हैं परन्तु तेरे निश्चयके देखने के निमित्त यहां आये हैं ३७५।३७६ हे तन्वंगि यह तेरा मनोरथ शीघ्रही होजायगा जैसे कि सूर्य्यकी प्रभासूर्य्यसे अलग कहां जासक्ती है रत्नोंकी कांति रत्नसे पृथक् कहां जासक्ती है अक्षरोंकी पंक्तिसे अर्थ पृथक् नहीं है इसी प्रकार तू भी शिवजीसे रहित कभी नहीं है हम तो अनेक उपायों करके भी उन महादेवजी कोप्राप्त नहीं होसक्ते हमारे भी हृदयमें यही प्रयोजन है इस कारण तुम्हीं हमारी बुद्धिरूपहोकर नीति स्वरूपहो ३७७। ३७९ शिवजी महाराज भी निश्चय तुम्हारे कार्य्यको करेंगे जब ऐसे उन सप्तऋषियोंने कहा तब पार्वतीजीने उनका फिर पूजनकिया तदनन्तर वह मुनि शिवजी के दर्शनके निमित्त जातेभये और वहां जाकर गंगा जलसे आत्माको पवित्रकियेहुए पीतजटा धारण कियेहुए कल्पवृक्षके पुष्पोंकी माला और भ्रमरोंसे शोभायमान शिवजीको देखतेभये ३८०। ३८१ उस स्थानपर शिवजीके आश्रममें सबजीवोंको शान्तरूप देखा

तंसर्वतोदिशम् ३८३ तत्रापश्यंस्ततोद्वारि वीरकंवेत्रपाणिनम्। सप्ततेमुनयःपूज्या विनी
ताःकार्य्यगौरवात् ३८४ ऊचुर्मधुरभाषिण्या वाचातेवाग्मिनांवराः। द्रष्टुंवयमिहायाताः
शरण्यंगणनायकम् ३८५ त्रिलोचनंविजानीहि सुरकार्य्यप्रचोदिताः।त्वमेवनोगतिस्तत्त्वं
यथाकालानतिक्रमः३८६सत्कारितेषप्रायेण प्रतीहारमयःप्रभुः। इत्युक्तोमुनिभिःसोऽथगौ
रवात्तानुवाचस' ३८७ समन्वास्यापरांसन्ध्यां स्नातुंमन्दाकिनीजले। क्षणेनभवितावित्रा
स्तत्र द्रक्ष्यथशूलिनम् ३८८इत्युक्तामुनयस्तस्थुस्ते तत्कालप्रतीक्षिणः। गम्भीराम्बुधरं
प्रावृट् तृषिताश्चातकायथा३८९ततःक्षणेननिष्पन्न समाधानक्रियाविधिः। वीरासनंविभे
देशोमृगचर्मनिवासितम् ३९०ततोविनीतोजानुभ्या मवलम्ब्यमहीस्थितिम्। उवाचवी
रकोदेवं प्रणामैकसमाश्रयः३९१संप्राप्तामुनयःसप्त त्वांद्रष्टुंदीप्ततेजसः। विभो! समादिश
द्रष्टुमवगन्तुमिहार्हसि ३९२ इत्युक्तोधुर्जटिस्तेन वीरकेणमहात्मना। भ्रूभङ्गसंज्ञयातेषांप्र
वेशाज्ञांददौतदा३९३मूर्द्धकम्पेनतान्सर्वान् वीरकोऽपिमहामुनीन्।आजुहावविदूरस्थान्
दर्शनायपिनाकिनः ३९४ त्वराबद्धार्द्धचूडास्ते लम्बमानाजिनाम्बराः। विविशुर्वेदिकां
सिद्धां गिरिशस्यविभूतिभिः ३९५ बद्धपाणिपुटाक्षिप्त नाकपुष्पोत्करास्ततः। पिनाकिप
दयुगलं यथानाकनिवासिनः ३९६ ततःस्निग्धेक्षिताःशान्ता मुनयःशूलपाणिना। मन्म
थारिंततोहृष्टाः सम्यक्तुष्टुवुरादृताः ३९७ अहोकृतार्थावयमेवसाम्प्रतं सुरेश्वरोऽप्यत्रपु

भिरनोंसे गिरतेहुए जलके शब्दकोभी क्षोभित नहींदेखा शिवजीके द्वारके आगे हाथमें बेतलिये
हुए वीरकनाम गणकोदेखा वह शिवजीका वीरकनाम पार्षद उन सप्तऋषियोंका पूजन करताभया
तब वह सप्तऋषिबोले कि हम शिवजी महाराजके दर्शनकरनेके निमित्त आयेहैं ३८३। ३८५ हम
देवताओंके कार्य्यके निमित्त शिवजीका दर्शन करनाचाहते हैं सो तुम हमारी गतिहो उन महादेवजी
को बताओ यहवचन सुनकर वह वीरकबोला हे ब्राह्मण लोगो सायंकालमें इसमंदाकिनी गंगामें
स्नानकरनेको जबजावँगे तब आपलोग शिवजीके दर्शनकरना ऐसे कहेहुए सप्तऋषि संध्याकालकी
बाटदेखतेहुए उसी स्थानपर ऐसे स्थितहोगयेजैसे कि वर्षाऋतुमें गंभीरमेघकीबाट देखताहुआ चातक
पक्षी स्थितहोता है ३८६।३८९ फिर क्षणमात्रहीमें शिवजीमहाराज अपने वीरआसनकी समाधि
से उठतेभये तब वीरभद्रपार्षद नम्रतापूर्वक शिवजीसेबोला कि हे महाराज आपके दर्शनकेवास्ते
देदीप्ततेजवाले सप्तऋषि आयेहैं वह यहाँआया चाहतेहैं जब ऐसे वीरभद्रने कहा तबशिवजी अपनी
भृकुटीसे उनके आनेकी आज्ञादेतेभये ३९० । ३९२ तब वीरभद्र दूरखड़ेहुए उन सप्तऋषियोंको
शिवजीके दर्शनके निमित्त बुलाताभया ३९४ फिर लम्बी लटकतीहुई मृगछाला वाले वहऋषि
हाथजोड़कर शिवजीके समीप प्राप्तहोतेभये और निकटजाकर चरणोंको स्पर्श करतेभये जैसे
कि स्वर्ग में देवतालोग इन्द्रकेचरणोंको छूतेहुए उसकी प्रशंसाकरते हैं उसी प्रकार शिवजी से
अच्छी सुदृष्टिसे देखेहुए वह शान्तरूपऋषि प्रसन्नहोकर चरण स्पर्शकरके आदरसे यहस्तुति कर-
तेभये ३९५। ३९७ हे शिवजी महाराज अब हम कृतार्थहुए और हमसेभी प्रथम इन्द्र कृतार्थ

रोभविष्यति। भवत्प्रसादामलवारिसेकतः फलेनकाचित्तपसानियुज्यते ३९८ जयत्यसौ
धन्यतरोहिमाचलस्तदाश्रयंयस्यसुतातपस्यति। सदैत्यराजोऽपिमहाफलोदयो विमूलि
ताशेषसुरोहितारकः ३९९ त्वदीयमंशम्प्रविलोक्यकल्मषात् स्वकंशरीरंपरिमोक्ष्यतेहि
यः। सधन्यधीर्लोकपिताचतुर्मुखो हरिश्चयत्सम्भ्रमवह्निदीपितः ४०० त्वदङ्घ्रियुग्मंह
दयेनविभ्रतो महाभितापप्रशमैकहेतुकम्। त्वमेवचैकोविविधकृतक्रियः किलेतिवाचावि
भुरैर्विभाव्यते ४०१ अथाद्यएकस्त्वमवैषिनान्यथा जगत्तथानिर्घृणतान्तवस्पृशेत्। न
वेत्सिवादुःखमिदंभवात्मकं विहन्यतेतेखलुसर्वनिष्क्रिया ४०२ उपेक्षसेचेज्जगतामुपद्रवं
दयामयत्वंतवकेनकथ्यते । स्वयोगमायामहिमागुहाश्रयं नविद्यतेनिर्मलभूतिगौरवम्
४०३ वयंचतेधन्यतराःशरीरिणां यदीदृशंत्वांप्रविलोकयामहे। अदर्शनंतेनमनोरथोयथा
प्रयातिसाफल्यतयामनोगतम् ४०४ जगद्विधानैकविधौजगन्मुखे करिष्यसेतोवलभिद्व
रावयम्। विनेमुरित्थंमुनयोविसृज्यतां गिरंगिरीशश्रुतिभूमिसन्निधौ। उत्कृष्टकेदारइवा
वनीतले सुबीजमाप्टंसुफलायकर्षकाः ४०५ तेषांश्रुत्वाततोरम्यां प्रक्रमोपक्रमक्रियाम्।
वाचंवाचस्पतिरिवप्रोवाचस्मितसुन्दरः४०६(शङ्करउवाच)जानेलोकविधानस्य कन्यास
त्कार्य्यमुत्तमम्।जाताप्रलयशैलस्य सङ्केतकनिरूपणाः ४०७ सत्यमुत्कण्ठिताःसर्वे देव
कार्यार्थमुद्यताः। तेषांत्वरन्तिचेतांसि किन्तुकार्यंविवक्षितम् ४०८ लोकयात्रानुगन्तव्या
विशेषेणविचक्षणैः। सेवन्तेतेयतोधर्मं तत्प्रामाण्यात्परेस्थिताः ४०९ इत्युक्तामुनयोजग्मु

होजायगा प्रसन्नहोने वाले आपका जलसिंचन किसी बड़े तपकाफलहै ३९८ इस हिमाचल को धन्यहै जिसकी कि पुत्री उनके आश्रयहोकर उग्र तपकररहीहै और सबदेवताओंका नाशकरनेवाला वह तारकासुरभी धन्यहै क्योंकि तुम्हारे अंशसे उत्पन्नहुए को देखकर अपने शरीरको छोड़ेगा ब्रह्मा भी धन्यहै विष्णुभी धन्यहै जोकि महासंतापोंके दूरकरनेवाले तुमको अपने हृदयमें ध्यावते हैं तुम अकेलेही अनेकक्रियाओंके करनेवालेहो ऐसे वर्णन कियेजातेहो ३९९। ४०१ तुम एकही आद्यहो तुमसंसारके दुःखोंको दूरकरतेहो तुम्हारी निष्क्रिया नष्टहोजाती है और जो तुम जगत्का संहार करने वाले कहेजाओ तो आपको दयावान् कैसे कहतेहैं इसहेतुसे आप अपनी योगमायाके आश्रयहोकर निर्मल विभूतिवाले रहतेहो ४०२। ४०३ शरीरधारियोंमें हमलोगभी धन्यहैं क्योंकि धन्यनहोते तो आपका दर्शन कैसेहोता आपके दर्शनहोनेसे मनोरथ सफल होजाताहै आपजगत्के विधानकरनेमें तत्परहैं इसहेतुसे हमतुमको नमस्कार करते हैं इसरीतिकी स्तुति करनेसे वह सप्तऋषि अपनी वाणीको ऐसे कहते भये जैसेकि खेतीकरनेवाला किसान अच्छी सुधारीहुई भूमिमें बीजोंको बोताहै ४०४। ४०५ उनऋषियोंकी वाणीकोसुनकर शिवजी बृहस्पतिकेसमान हँसकर यहवचनबोले ४०६ कि हमजानतेहैं कि संसारके सुख केनिमित्त हिमाचलकेघरमें पुत्रीजन्मीहै और तुमभी देवताओंकेकार्य्यके निमित्त उद्यम कररहेहो यहसत्यहै कि बुद्धिमान् पुरुषोंको विशेषकरके लोकोंकी यात्रा करनीचाहिये और श्रेष्ठ पुरुष जिसधर्मका आचरण करतेहैं उसीको अन्य लोगभी कियाकरतेहैं ४०७। ४०९ यह

स्त्वरितास्तुहिमाचलम्। तत्रतेपूजितास्तेनहिमशैलेनसादरम् ४१० ऊचुर्मुनिवराःप्रीताः
स्वल्पवर्णैस्त्वरान्विताः। (मुनयऊचुः) देवोदुहितरंसाक्षात्पिनाकीतवमार्गते ४११ तच्छी
घ्रंपावयात्मानमाहुत्येवानलार्पणात्। कार्यमेतच्चदेवानां सुचिरंपरिवर्ततें ४१२ जगदु
द्धरणायेष क्रियतांवैसमुद्यमः इत्युक्तस्तैस्तदाशैलो हर्षाविष्टोऽवदन्मुनीन् ४१३ असम
र्थोऽभवद्वक्तुमुत्तरंप्रार्थयञ्छिवम्।ततोमेनामुनीन्वन्द्य प्रोवाचस्नेहविक्लवा ४१४ दुहितुस्ता
न्मुनींश्चैव चरणाश्रयमर्थवित्। (मेनोवाच) यदर्थंदुहितुर्जन्म नेच्छन्त्यपिमहाफल
म् ४१५ तदेवोपस्थितंसर्वं प्रक्रमेणैवसाम्प्रतम्। कुलजन्मवयोरूपविभूत्यर्द्धियुतोऽपि
यः ४१६ वरस्तस्यापिचाहूय सुतादेवाह्ययाचतः। तत्समस्ततपोघोरं कथपुत्रीप्रया
स्यति ४१७ पुत्रीवाक्याद्यदत्रास्ति विधेयंतद्विधीयताम्। इत्युक्तामुनयस्तेतु प्रिययाहि
मभूभृतः ४१८ ऊचुःपुनरुदारार्थं नारीचित्तप्रसादकम्। (मुनय ऊचुः) ऐश्वर्यमव
गच्छस्व शङ्करस्यसुरासुरैः ४१९ आराध्यमानपादाब्जयुगलत्वात्सुनिर्वृतैः। यस्योपयोगि
यद्रूपं साचतत्प्राप्स्यतेचिरम् ४२० घोरंतपस्यतेबाला तेनरूपेणनिर्वृतिः। यस्तदूव्रता
निदिव्यानि नयिष्यतिसमापनम् ४२१ तत्रसावहितातावत्तस्मात्सैवभविष्यति। इत्यु
क्तागिरिणासार्द्धन्तेययुर्यत्रशैलजा ४२२ जितार्कज्वलनज्वाला तपस्तेजोमयीह्युमा।
प्रोचुस्तांमुनयःस्निग्धं सन्मान्यपथमागतम् ४२३ रम्यंप्रियंमनोहारि मारूपंतपसा

शिवजीके वचनसुनतेही वहमुनि बड़ीशीघ्रतासे शिवजीको नमस्कारकर हिमाचल पर्व्वतके पासजाते भये वहाँ हिमाचलने उनको आदर भावसे पूजा तब वहमुनि थोड़ेही अक्षरोंको शीघ्रतासे कहते भये ४१० कि हे हिमाचल साक्षात् ईश्वर महादेवजी तेरी कन्याको मांगते हैं इसनिमित्त तू शीघ्रही अपनी आत्माको पवित्र करले यह देवताओं का कार्य प्राप्तहोरहाहै जगत्के उद्धार करने के निमित्त तुझको यहकार्य्य करना उचितहै यह वचन सुनकर वह हिमाचल बड़ा प्रसन्नहोकर बोला और शिवजी की प्रार्थना करताहुआहोकर अच्छे प्रकारसे उत्तर न देसका तब स्नेहसे विह्वलहुई मेना स्त्रीमुनियोंको प्रणाम करके बोली ४११।४१४ अर्थात् अपनी पुत्रीके हितसे मेनाकहनेलगी कि जिस प्रयोजनकेलिये मेरी पुत्रीका जन्महै वही प्रयोजन अब आपही प्राप्तहोरहा है मेरीपुत्रीका वर प्रथम देवताभी मांगतेथे औरमेरी पुत्री तपकररही है सो उसके तपकी समाप्ति कैसेहोवेगी जोकुछमेरी पुत्री को करनायोग्यहै सो आपकहिये ऐसे कहेहुए वह सप्तऋषि उस हिमाचलकी स्त्री को प्रसन्नकरने के निमित्त यह वचन बोले कि शिवजीका ऐश्वर्य्य अतुलहै शिवजी के चरणोंको सबमुनि आराधन करते हैं जिसका उपयोगी जो रूप होता है वह उसी रूपको प्राप्त होजाता है ४१५।४२० तेरी पुत्री बालक है तो भी घोरतपको करती है और उसका व्रत भी दिव्यहै इसलिये वह जिस जगह चित्त लगारही है उसका वही मनोरथ सिद्ध होजायगा ऐसा कहकर वहसप्तऋषि हिमाचलको साथलेकर पार्वतीके पासजातेभये ४२१।४२२ तब सूर्य्यके समान कान्तिवाली तपकी पुजवाली पार्वतीको वह मुनि मधुर २ वचन कहनेलगे कि हेपुत्री रमणीक प्रिय और मनो-

दह। प्रातस्तेशङ्करःपाणिमेषपुत्रि! ग्रहीष्यति ४२४ वयमर्थितवन्तस्ते पितरंपूर्वमाग
ताः। पित्रासहगृहङ्गच्छ वयंयामस्वमन्दिरम् ४२५ इत्युक्तातपसःसत्यं फलमस्तीति
चिन्त्यसा। त्वरमाणाययौवेश्म पितुर्दिव्यार्थशोभितम् ४२६ सातत्ररजनींमेने वर्षा
युतसमांसतीम्। हरदर्शनसञ्जात महोत्कण्ठाहिमाद्रिजा ४२७ ततोमुहूर्तेब्राह्मेतु त
स्याश्चक्रुःसुरस्त्रियः। नानामङ्गलसन्दोहान्यथावत्क्रमपूर्वकम् ४२८ दिव्यमण्डनमङ्ग
नां मन्दिरेबहुमङ्गले। उपासतगिरिंमूर्ता ऋतवःसार्वकामिकाः ४२९ वायवोवारिदा
श्चासन् संमार्जनविधौगिरेः। हर्म्येषुश्रीःस्वयंदेवी कृतनानाप्रसाधना ४३० कान्तिः
सर्वेषुभावेषु ऋद्धिश्चाभवदाकुला। चिन्तामणिप्रभृतयो रत्नाःशैलंसमन्ततः ४३१
उपतस्थुर्नगाश्चापि कल्पकाममहाद्रुमाः। ओषध्योमूर्तिमत्यश्च दिव्यौषधिसमन्वि
ताः ४३२ रसाश्चधातवश्चैव सर्वेशैलस्यकिङ्कराः। किङ्करास्तस्यशैलस्य व्यग्रा
श्चाज्ञानुवर्तिनः ४३३ नद्यःसमुद्रानिखिलाः स्थावरंजङ्गमञ्चयत्। तत्सर्वेहिमशैलस्य
महिमानमवर्द्धयत् ४३४ अभवन्मुनयोनागा यक्षगन्धर्वकिन्नराः। शङ्करस्यापिविबुधा
गन्धमादनपर्वते ४३५ सर्वेमण्डनसम्भारास्तस्थुर्निर्मलमूर्तयः। शर्वस्यापिजटाजूटे च
न्द्रखण्डंपितामहः ४३६ बबन्धप्रणयोदार विस्फारितविलोचनः। कपालमालांविपुलां
चामुण्डामूर्ध्न्यबन्धत ४३७ उवाचचापिवचनं पुत्रंजनयशङ्कर!। योदैत्येन्द्रकुलंहत्वा

हर ऐसे अपने रूपको तपसे दग्धमतकरे प्रातःकाल तेरेहस्तकमलको शिवजी ग्रहणकरेंगे४१३।४२४
हम प्रार्थना करने के निमित्त प्रथम तेरे पिता के पास आयेथे सो तू अपने पिता के साथ अपने
घरकोचल यह वचन सुनकर पार्वती अपने तपको सफल जानके शीघ्रही पिताके घरमें जातीभई
४२५।४२६ वहां अपने पिताके घरमें जाकर पार्वती एकरात्रिको दशहज़ार वर्षके समान मानती
भई और शिवजीके दर्शनकी परमलालसा करतीभई ४२७ इसके अनन्तर प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्तमें
देवताओं की स्त्रियां तपस्या करतीहुई और अनेकप्रकार के मंगल भी करतीभई और उसीमंगलरूपी
गृहमें सबकामनाओं से पूर्णऋतु हिमाचलपर्व्वत की स्तुति करती भई ४२८।४२९ मेघों समेत
वायु आकर उसपर्व्वतका मार्जनकरताभया सबस्थानोंपर लक्ष्मीजी आपआकर विराजमान होतीभई
४३० सब प्रयोजनों में कान्ति और ऋद्धि प्राप्तहोती भई चिन्तामणि आदिक सबरत्न भी उस हि-
माचलपर्व्वतमें आकर प्राप्तहोगये सबपर्व्वत और दिव्य २ औषधी मूर्त्तियोंको धारणकरके उसपर्व्वत
में प्राप्तहोगई रस और धातु आदिक सबपदार्थ उसपर्व्वतके अनुचर होतेभये सबसमुद्र और नदियां
भी अपनी २ मूर्त्ति धारण करके उसीपर्व्वत को सेवतीभई और सबस्थावर जंगम जगत् उस हिमा-
चलपर्व्वत की महिमाको बढ़ाताभया ४३१।४३४ गन्धमादन पर्व्वतके मुनि नाग यक्ष गन्धर्व कि-
न्नर और देवता यह सब शिवजीके अनुचर होतेभये और निर्मल मूर्त्तिधारण करके मण्डपकी सा-
मग्रीकी रचना करतेभये ब्रह्माजी शिवजीके जटाजूटमें चन्द्रमाको बांधतेभये और तीसरे नेत्रकी
अग्निमें प्रणय और उदारताको प्राप्तकरतेभये औरबहुतसी कपालोंकी मालाओंको चामुंडादेवीअपने

मारक्तैस्तर्पयिष्यति ४३८ सौरिर्ज्वलच्छिरोरत्नमुकुटश्चानलोल्वणम्। भुजगाभरणंगृह्य सज्जंशम्भोःपुरोऽभवत् ४३९ शक्रोगजाजिनंतस्य वसाभ्यक्ताग्रपल्लवम्। दध्रेसरभसं स्विद्यद्विस्तीर्णमुखपङ्कजम् ४४० वायुश्चविपुलंतीक्ष्णशृङ्गंहिमगिरिप्रभम्। वृषंविभू षयामास हरयानंमहौजसम् ४४१ वितेनुर्नयनान्तस्थाः शम्भोःसूर्यानलेन्दवः। स्वान्द्यु तिंल्लोकनाथस्य जगतःकर्म्मसाक्षिणः ४४२ चिताभस्मसमाधाय कपालेरजतप्रभम्। मनुजास्थिमयींमालामाबबन्धचपाणिना ४४३ प्रेताधिपःपुरोद्वारे सगदःसमवर्तत। नानाकारमहारत्नभूषणंधनदाहृतम् ४४४ विहायोदग्रसर्पेन्द्रकटकेनस्वपाणिना। कर्णो त्तंसश्चकारेशो वासुकिन्तक्षकंस्वयम् ४४५ जलाधीशाहृतांस्थास्नुप्रसूनावेष्टितांपृथक्। ततस्तुतेगणाधीशा विनयात्तत्रवीरकम् ४४६ प्रोचुर्व्यग्राकृते! त्वन्नो समावेदयशूलि ने। निष्पन्नाभरणंदेवं प्रसाध्येशम्प्रसाधनः ४४७ सप्तवारिधयस्तस्थुः कर्तुंदर्पणविभ्र मम्। ततोविलोकितात्मानं महाम्बुधिजलोदरे ४४८ धरामालिङ्ग्यजानुभ्यां स्थाणुं प्रोवाचकेशवः। शोभसेदेव! रूपेण जगदानन्ददायिना ४४९ मातरःप्रेरयाकामवधूं वैधव्यचिह्निताम्। कालोऽयमितिचालक्ष्य प्रकारेङ्गितसंज्ञया ४५० ततस्ताश्चो दितादेवमूचुःप्रहसिताननाः। रतिःपुरस्तवप्राप्ता नाभातिमदनोज्झिता ४५१ ततस्तां

मस्तकपर धारण करती भई और शिवजी से कहती भई कि तुम तारकासुर दैत्यके मारनेवाले पुत्रको उत्पन्न करो वह तुम्हारा पुत्र दैत्यकुलका नाशकरके उन के रुधिरसे मुझको तृप्तकरे· गा ४३५।४३८ शनैश्चर शिवजी के मुकुट और उल्वण अग्निको ग्रहणकर सर्पोंके आभूषणों को लिये हुए शिवजीके आगे खड़ा होताभया ४३९ वसासमेत गजचर्मको इन्द्र ग्रहण करताभया वायु देवता तीक्ष्ण शृंगवाले शिवजीके वाहननन्दीश्वरको अच्छे प्रकारसे शृंगार करताभया और शिवजी के नेत्रोंमें स्थित हुए सूर्य्य अग्नि और चन्द्रमा यह सब अपनी २ कान्तिको लोकोंके पति शिवजी के शरीरमें बढ़ातेभये ४४०।४४२ प्रेतोंका अधिपति राक्षस कपाल और चिताकी भस्मको ग्रहण करके मुंडोंकी मालाहाथमें लेकर स्थितहोताभया कुबेरअनेक प्रकारके रत्नोंके आभूषणोंको ग्रहणकर शिवजीके पास आताभया वासुकी सर्प शिवजीके हाथ औरकानके आभूषणों को बनाताभया वरुण देवता पुष्पोंसे लिपटीहुई सुन्दरयष्टीको शिवजीके निमित्तलाया इसप्रकारसे यहसबदेवतालोगआकर विनयपूर्व्वक वीरभद्रसे बोले कि तुम हमारे आने के समाचार शिवजीसे निवेदन करदो इसके पीछे सातों समुद्र अपने जलके प्रभावसे उत्पन्न हुए दर्पणको शिवजीके निमित्तलाये तब विष्णुभगवान् उस दर्पणमें शिवजीके मुखको दिखवाकर बोले कि हेदेव आप जगत्के आनन्द देनेवाले अपने स्वरूपसे शोभित होरहेहो ४४३।४४९ इसके पीछे सब देवता षोड़श मातृकाओं को कामदेव की स्त्री रतिके पास भेजतेभये तब वह सब मातृका कामदेवकी स्त्री रतिको शिवजीके आगे लाकर यह वचन बोली कि हेदेव कामसे त्यागीहुई यह रति आपके आगे खड़ी है उसको क्या आपनहीं देखते हैं ४५०।४५१ यह वचन सुनकर शिवजीने उस रतिको क्रीड़ापूर्व्वक वामहाथ से अलग करके

सन्निवार्यह वामहस्ताग्रसंज्ञया । प्रयाणेगिरिजावक्त्रदर्शनोत्सुकमानसः ४५२ ततो
हरोहिमगिरिकन्दराकृतिं समुन्नतंमृदुगतिभिःप्रचोदयन् । महावृषङ्गणतुमुलाहितेक्षणं
सभूधरानशनिरिवप्रकम्पयन् ४५३ ततोहरिर्द्रुतपदपद्धतिःपुरःसरःश्रमातुद्रुमनिकरेषु
विश्रमन् । धरारजःशबलितभूषणोऽब्रवीत् प्रयातमाकुरुतपथोऽस्यसंकटम् ४५४ प्र
भोःपुनःप्रथमनियोगमूर्जयन् सुतोऽब्रवीद्भ्रुकुटिमुखोऽपिवीरकः । वियच्चराविंयतिकि
मस्तिकान्तकं प्रयातनोधरणिधराऽविदूरतः ४५५ महार्णवाःकुरुतशिलोपमम्पयः सुर
द्विषागमनमहातिकर्दमान् । गणेश्वराश्चपलतयानगम्यतां सुरेश्वरैःस्थिरमतिभिश्च
गम्यताम् ४५६ नभृङ्गिणास्वतनुमवेक्ष्यनीयते पिनाकिनःपृथुमुखमण्डमग्रतः । वृथा
यमप्रकटितदन्तकोटरं त्वमायुधंवहसिविहायपञ्जरम् ४५७ पदत्रयद्रथतुरगैःपुरद्विषा
प्रमुच्यतेबहुतरमातृसंकुलम् । अमीसुराःपृथगनुयायिभिर्वृताः पदातयोद्विगुणपथान्हर
प्रियाः ४५८ स्वबाहनैःपवनविधूतचामरैश्चलध्वजैर्व्रजतविहारशालिभिः । सुराःस्वकं
किमितिनरागमूर्जितं विचार्यतेनियतलयत्रयानुगम् ४५९ नकिन्नरैरभिभवितुंहिशक्यते
विभूषणप्रचयसमुद्भवोध्वनिः।स्वजातिकाःकिमितिनषड्जमध्यमपृथुस्वरंबहुतरमत्रवक्ष्य
ते४६०नतानतानतनतनताङ्गताःपृथक्कृतयासमयकृताविभिन्नताम् । विशङ्किताभवदति
भेदशीलिनःप्रयान्त्यमीद्रुतपदमेवगौडकाः४६१विसंहताःकिमितिनषाड्गवादयःस्वगीत
केर्ललितपदप्रयोगजेः।प्रभोःपुरोभवतिहियस्यचाक्षतंसमुद्गतार्थकमितितत्प्रतीयते ४६२
अमीपृथग्विरचितरम्यरासकं विलासिनोबहुगमकस्वभावकम् । प्रयुञ्जतेगिरिशयशोवि

पार्वतीजीके मुखके देखनेकी इच्छाकरी ४५२ फिरहिमालय पर्वतकी कन्दराके समान उच्चवृषभ
पर चढ़कर मन्द२ गतिसे प्रेरणा करते हुए शिवजी हिमालयके स्थानकी ओर गमनकरतेभये ४५३
तब विष्णुभगवान् उनके आगे खड़े होकर बोले कि तुम शीघ्रतासे गमनकरो मार्गमें विलंब मतकरो
उस समय शिवका पुत्र वीरभद्र बोला कि हे महादेव आकाशमें दैत्य दानव आदि विचरते हैं इस
लिये इनके समीपमें गमन मतकरो हे समुद्रो तुम आकाशमें शिलाके समानबादलोंको पूरितकरदो
हेगणेश्वर लोगो तुम चपलता मतकरो हे देवतालोगो तुम भी स्थिरबुद्धिसे चलो हे भ्रमर तू शिव
जीके महान् मुखमंडलको देखकर क्यों वृथा मोहको प्राप्त होरहाहै यह शिवजीके संग चलने वाले
देवता रथ घोड़ोंपर सवारहोरहेहैं पदाती भी शिवजीके संगमें चलतेहैं हेदेवताओ तुमवायुसे फहराती
हुई ध्वजावाले बाहनोंपर क्यों नहीं चढ़कर चलते हो और बढ़ेहुए रागका विचार क्यों नहीं करतेहो
यह किन्नर भी अपनेआभूषणोंकी ध्वनिकररहे हैं इस निमित्त तुमभी अपने षड्ज मध्यमआदि स्वर
में बहुत से रागोंको क्यों नहीं गातेहो ४५९।४६० हेदेवताओ तुमसे शंका करतेहुए किन्नर नीतिके
धर होकर शीघ्रतापूर्व्वक चलते हैं ४६१ तुम सब इकट्ठे होकर उत्तमस्वर और लयसे शिवजी के
आगे स्थित होकर रागोंको गाओ यह विलासी किन्नर रमणीक पदोंवाले शिवजीके यशयुक्त उत्तम

सारिणंप्रकीर्णकंबहुतरनागजातयः ४६३ अमीकथंककुभिकथाःप्रतिक्षणं ध्वनन्तितेवि विधवधूविमिश्रिताः। नजातयोध्वनिमुरजासमीरिता नमूर्च्छिताःकिमितिचमूर्च्छनात्मि काः ४६४ श्रुतिप्रियक्रमगतिभेदसाधनं ततादिकंकिमितिनतुम्बरेरितम्। नहन्यतेबहुवि धवाद्यडम्बरं प्रकीर्णवीणामुरजादिनामयत् ४६५ इतीरितेगिरिमिवधानशालिनःसुरा सुराःसपदितुवीरकाज्ञया। नियामिताःप्रययुरतीवहर्षिताश्चराचरंजगदखिलंह्यपूरयन् ४६६ इतिस्तनत्ककुभिरसन्महार्णवे स्तनद्घनेविदलितशैलकन्दरे। जगत्यभूत्तुमुलइ वाकुलीकृतः पिनाकिनात्वरितगतेनभूधरः ४६७ परिज्वलत्कनकसहस्रतोरणं क्वचिंन् मिलन्मरकतवेश्मवेदिकम्। क्वचित्क्वचिद्विमलवैदूर्यभूमिकं क्वचिद्गलज्जलधररम्यनि र्झरम् ४६८ चलध्वजप्रवरसहस्रमण्डितंसुरद्रुमस्तवकविकीर्णचत्वरम्। सितासितारु णरुचिधातुवर्णकंश्रियोज्ज्वलंप्रविततमार्गगोपुरम् ४६९ विजृम्भिताप्रतिमध्वनिवारिदं सुगन्धिभिःपुरपवनैर्मनोहरम्। हरोमहागिरिनगरंसमासदत् क्षणादिवप्रवरसुरासुरस्तुतः ४७० तंप्रविशन्तमगात्प्रविलोक्यव्याकुलतांनगरंगिरिभर्त्तुः। व्यग्रपुरन्ध्रिजनञ्जवियानं धावितमार्गजनाकुलरथ्यम् ४७१ हर्म्यगवाक्षगतामरनारी लोचननीलसरोरुहमालम्। सुप्रकटासमदृश्यतकाचित् स्वाभरणांशुवितानविगूढा ४७२ काप्यखिलीकृतमण्डनभूषा त्यक्तसखीप्रणयाहरमैक्षत्। काचिदुवाचकलङ्कतमानाकातरतांसखि! माकुरुमूढे! ४७३

रागोंको गाते हैं और यह किन्नर अनेक २ प्रकारकी अपनी सुन्दर स्त्रियों समेत अच्छी ध्वनियों से गारहे हैं हे देवताओ तुमने मृदंगादिक बाजेनहीं बजाये और वीणामें मूर्च्छनादिवाकर रागोंको नहीं गाया ४६३। ४६४ तुंबर गन्धर्व से प्रेरेहुए बीन आदिक बाजोंको बजवाओ अनेक प्रकारके मृदंग बजवाओ यह वचन सुन देवतालोग वीरभद्रकी आज्ञासे बड़ेहर्षके साथ अपने बाजे और गानादि से चराचर जगत् को व्याप्त करतेभये समुद्र और मेघ दोनों गर्जने लगे उस समय महादेव के शीघ्र चलने से वह हिमाचल व्याकुल होताभया ४६५। ४६७ इसकेअनन्तर प्रकाशित स्वर्णमयी हज़ारों तोरणोंवाला मणियोंसे जटित घरोंवाला वैदूर्यमणियों से शोभित भूमि वाला जहां तहां मेघों के बरसने और झिरनोंसे जलवाला फहराती हुई अनेक ध्वजावाला कल्पवृक्षोंके चतुष्पथ स्थानों से शोभित श्वेत कृष्ण और रक्तवर्णकी धातुओं से सुन्दर वर्णवाला लक्ष्मी से उज्ज्वल सड़क और द्वारोंवाला और नगरकी सुगंधित वायु से मनोहर ऐसे हिमाचलके नगरमें जब महादेवजी प्राप्तहोते भये उसी क्षणमें सब देवताभी प्राप्तहोजाते भये ४६८। ४७० नगरमें प्रवेशकरतेहुए महादेवजीको देखकर सब जन विह्वलहोगये और भयभीत होकरभागे उन भाजतेहुए नगरनिवासियों से मार्ग भरगया ४७१ स्थानों के झरोखोंमें बैठीहुई देवताओंकी स्त्रियां नीले कमलोंकी मालाओंसे महाशोभित दीखतीथीं कोई स्त्री तो अपने भूषणोंकी शोभादिखाती थी ४७२ कोई सब शृंगारकरके सखियोंके संगको त्यागकर शिवजीको देखतीथी कोई सखी दूसरी सखी से कहतीथी कि हे मूर्ख बुद्धिवाली तू दर्शन करनेमें चंचलपना मतकरे यह शिवजी

दग्धमनोभवएवपिनाकी कामयतेस्वयमेवविहर्त्तुम्। काचिदपिस्वयमेवपतन्ती प्राहपरां विरहस्खलितांगीम्४७४ माचपलेंमदनव्यतिषंगं शंकरजंस्खलनेनवदत्वम्। कापिकृत व्यवधानमदृष्ट्वा युक्तिवशाद्गिरिशोह्ययमूचे ४७५ एषसयत्रसहस्रमखाद्या नाकसदामधि पाःस्वयमुक्तैः।नामभिरिन्दुजटंनिजसेवा प्राप्तिफलायनतास्तुघटन्ते४७६ एषनचैषसएष यदग्रेघर्मपरीततनुःशशिमौली।धावतिवज्रधरोऽमरराजो मार्गमसुंविवृतीकरणाय ४७७ एषसपद्मभवोऽयमुपेत्य प्रांशुजटामृगचर्मनिगूढः।सप्रणयङ्करघट्टितचक्रं किञ्चिदुवाच मितंश्रुतिमूले ४७८ एवमभूत्सुरनारिकुलानां चित्तविसंष्ठुलतागुरुरागात्। शङ्करसंश्रय णाद्गिरिजाया जन्मफलंपरमन्त्वितिचोचुः ४७९ ततोहिमागेरे वेश्म विश्वकर्मनिवेदितम्। महानीलमयस्तम्भंज्वलत्काञ्चनकुट्टिमम् ४८० मुक्ताजालपरिष्कारं ज्वलितौषधिदीपि तम्। क्रीड़ोद्यानसहस्राढ्यं काञ्चनाबद्धदीर्घिकम् ४८१ महेन्द्रप्रमुखाःसर्वे सुरादृष्ट्वातदद्भु तम्।नेत्राणिसफलान्यद्य मनोभिरितितेदधुः४८२विमर्दकीर्णकेयूराहरिणाद्वारिरोधितः। कथञ्चित्प्रमुखास्तत्र विविशुर्नाकवासिनः ४८३ प्रणतेनाचलेन्द्रेण पूजितोऽथचतुर्मुखः। चकारविधिनासर्वं विधिमन्त्रपुरःसरम् ४८४ शर्वेणपाणिग्रहणमग्निसाक्षिकमक्षतम्। दातामहीभृतान्नाथो होतादेवश्चतुर्मुखः ४८५ वरःपशुपतिःसाक्षात् कन्याविश्वारणि स्तथा। चराचराणिभूतानि सुरासुरवराणिच ४८६ तत्राप्येतेनियमतो ह्यभवन्व्यग्रमूर्त

कामदेवको आपही दग्ध करतेभये और आपही मैथुनकरने की इच्छाभी करते हैं कोई आप गिरी हुई स्त्री विरहसे गिरीहुई दूसरी स्त्रीसेबोली कि हे चपले तू शिवजीके उत्पन्नहुए कामदेवके काम को क्या देखती है कोई स्त्री अपने वस्त्रका घूंघटकाढ़कर युक्तिपूर्व्वक बोली कि यह शिवजी स्वर्ग के पतिदेवताओंसे युक्तहोरहे हैं और सब देवता इनके नामोंका स्मरण करते हैं यह शिवजी की सेवा फलकी प्राप्ति करनेवाली है ४७३।४७६ चन्द्रमा जिनके मस्तकमें हैं ऐसे वह शिवजी घामसे व्या- कुलहोरहे हैं देवताओंका राजा इन्द्र शिवजी के आगे २ मार्गको साफकरताहुआ भागताजाता है ४७७ यह ब्रह्माजीभी इनशिवजीके समीपमें प्राप्तहोकर कानमें कुछबातें कहताहै जब हिमालयमें शिवजी पहुंचे तब देवताओंकी स्त्रियोंका घोष इसवर्णन किये हुए प्रकारोंसे होताभया वह स्त्रियें यह कहरहीथीं कि शिवजीके आश्रयसे इसपार्वतीका जन्म सफल होगया ४७८।४७९ इसके पीछे विश्वकर्मासे रचेहुए महानील मणिके स्तंभोंसे उज्ज्वल सुवर्णकी कुरसियोंवाले मोतियों की जा- लियोंसे पूरित दीप्त ओषधियोंसे प्रकाशित और क्रीड़ाके हजारों बगीचोंसे शोभितहुए हिमालय प- र्व्वतके गृहको सब देवता देखकर अपने नेत्रों समेत चित्तको सफल करतेभये और विष्णु भगवान् उसके द्वारहीपर स्थितहोतेभये फिर सब देवता उस घरमें प्रवेशकरते भये ४८०।४८३ तब नम्र- तापूर्व्वक हिमाचलने विधिपूर्व्वक ब्रह्माका पूजन किया और अग्निदेवको साक्षीकरके शिवजीने पार्वतीजीका पाणिग्रहण किया उस समय महादानी पर्व्वतों का पति राजा हिमाचल दान करने वाला हुआ और चतुर्मुख ब्रह्मा हवन करनेवाला होताभया शिवजी साक्षात् वर हुए और चराचर

यः। मुमोचाभिनवान्सर्वान् सस्यशालीन्रसौषधीः ४८७ व्यग्रातुपृथिवीदेवी सर्वभाव मनोरमा। गृहीत्वावरुणःसर्वरत्नान्याभरणानिच ४८८ पुण्यानिचपवित्राणि नानारत्न मयानितु। तस्थौरत्नाभरणोदेवो हर्षदःसर्वदेहिनाम् ४८९ धनदश्चापिदिव्यानिहैमान्या भरणानिच। जातरूपविचित्राणि प्रयतःसमुपस्थितः ४९० वायुर्ववौसुसुरभिः सुखसं स्पर्शनोविभुः। छत्रमिन्दुकरोद्गारं सुसितञ्चशतक्रतुः ४९१ जग्राहमुदितःस्रग्वी बाहुभि र्बहुभूषणैः। जगुर्गन्धर्वमुख्याश्च ननृतुश्चाप्सरोगणाः ४९२ वादयन्तोऽतिमधुरं जगु र्गन्धर्वकिन्नराः। मूर्त्ताश्चऋतवस्तत्र जगुश्चननृतुश्चवै ४९३ चपलाश्चगणास्तस्थु र्लोलयन्तोहिमाचलम्। उत्तिष्ठन्क्रमशश्चात्र विश्वभुग्भगनेत्रहा ४९४ चकारोद्वाहिकं कृत्यंपत्न्यासहयथोचितम्। दत्तार्घोगिरिराजेन सुरवृन्दैर्विनोदितः ४९५ अवसत्तांक्ष पान्तत्र पत्न्यासहपुरान्तकः। ततोगन्धर्वगीतेन नृत्येनाप्सरसामपि ४९६ स्तुतिभिर्देव दैत्यानां विबुधोविबुधाधिपः। आमन्त्र्यहिमशैलेन्द्रं प्रभातेचोमयासह। जगाममन्दिर गिरिं वायुवेगेनशृङ्गिणा ४९७ ततोगतेभगवतिनीललोहिते सहोमयारतिमलभन्नभूधरः। सबान्धवोभवतिचकस्यनोमनो विह्वलञ्चजगतिहिकन्यकापितुः ४९८ ज्वलन्मणिस्फ टिकहाटकोल्कटं स्फुटद्युतिस्फटिकगोपुरंपुरम्। हरोगिरौचिरमनुकल्पितन्तदा विसर्जिता मरनिवहोऽविशत्स्वकम् ४९९ तदोमासहितोदेवो विजहारभगाक्षिहा। पुरोद्यानेषुरम्ये

सब भूत देवता और राक्षस यह सब नियम करके स्थित होते भये उससमय में पृथ्वीभी उत्तम न-वीन २ खेतियोंको और मनोहर ओषधियोंको उत्पन्न करतीभई वरुण देवता सबरत्नोंको ग्रहणकरके शिवजीके आगे स्थित होतेभये कुबेरभी सबदेहधारियोंके हर्षदायक शिवजी महाराजके निमित्त सुवर्ण के आभूषणोंको लाताभया वायुदेवता सुख स्पर्शपूर्व्वक अनुकूल चलनेलगा इन्द्रचन्द्रमाकी किरणोंके समान श्वेतछत्रको शिवजीकेऊपर लगाताभया ४८४। ४९१ उत्तम २ गन्धर्वगानकरतेभये अप्सरा नृत्य करनेलगीं गन्धर्व औरकिन्नर अत्यन्तमधुर २ बाजेबजाकर गाने औरनाचनेलगे छओंऋतु अप-नी २ मूर्त्तिको धारणकरके नाचती औरगातीभईं शिवजीके चपलगण हिमाचलपर चंचलपनाकरके स्थितहोतेभये ऐसेसमयमें महादेवजी अपनीपत्नी समेतहांविवाहके सबकर्मोंकोकरतेभये ४९२।४९५ विवाहहोनेके पीछे उसरात्रिमें अपनीपत्नी सहितहोकर शिवजी हिमाचलहीके घरमें स्थितहोते भये उससमय गन्धर्वोंने गानकिया अप्सराओंने नृत्यकिया ४९६ फिरप्रातःकालहोतेही महादेवजी हि-माचलपर्व्वतकी आज्ञालेकर पार्वती समेत वायुके समान वेगवाले नादियेपै चढ़कर मन्दराचल पर्व्वतपर जातेभये ४९७ जब महादेवजी चलेगये तब उस पार्वतीके विना हिमाचलका चित्तनहीं लगा क्योंकि कन्याके पिताका चित्त इस संसारमें सर्वत्र विह्वलहोजाताहै ४९८ इसके पश्चात् प्रकाशमानमणियों से शोभितऔरहीरे आदिरत्नोंसेजटित द्वारवाले उसपर्व्वतके बड़ेसुन्दर रमणीक स्थानमें महादेवजी वासकरतेभये औरसब देवताओंको अपने २ स्थानोंको भेजतेभये ४९९ फिर पार्वतीसे संयुक्तहुए महादेव अनेक प्रकारके रमणीक बगीचोंमें और बनों में कामदेवसे युक्तहोकर

पुविविक्तेषुवनेषुच ५०० सुरक्तहृदयोदेव्या मकराङ्कपुरःसरः। ततोवहुतिथेकालेसुतकामा गिरेःसुता ५०१ सखीभिःसहिताक्रीडां चक्रेकृत्रिमपुत्रकैः। कदाचिद्गन्धतैलेन गात्रमभ्यज्यशैलजा ५०२ चूर्णैरुद्वर्तयामास मलिनांतरितान्तनुम्। तदुद्वर्तनकंगृह्य नरंचक्रेगजाननम् ५०३ पुत्रकंक्रीडतीदेवी तंचाक्षिपयदम्भसि। जाह्नव्यास्तुशिवासख्यास्ततःसोऽभूद्बृहत्वपुः ५०४ कायेनातिविशालेनजगदापूरयत्तदा। पुत्रेत्युवाचतंदेवीपुत्रेत्यूचेचजाह्नवी ५०५ गाङ्गेयइतिदेवैस्तु पूजितोऽभूद्गजाननः। विनायकाधिपत्यञ्च ददावस्यपितामहः ५०६ पुनःसाक्रीडनंचक्रे पुत्रार्थंवरवर्णिनी। मनोज्ञमंकुरंरूढ मशोकस्यशुभानना ५०७ वर्द्धयामासतंचापि कृतसंस्कारमङ्गला। बृहस्पतिमुखैर्विप्रैर्देवस्पतिपुरोगमैः ५०८ ततोदेवैश्चमुनिभिः प्रोक्तादेवीत्विदंवचः। भवानिभवतीभव्या संभूतालोकभूयते ५०९ प्रायःसुतफलोलोकः पुत्रपौत्रैश्चलभ्यते। अपुत्राश्चप्रजाःप्रायो दृश्यन्तेदैवहेतवः ५१० अधुनादर्शितेमार्गे मर्यादांकर्तुमर्हसि। फलंकिम्भवितादेवि! कल्पितेस्तरुपुत्रकैः ५११ इत्युक्ताहर्षपूर्णाङ्गी प्रोवाचोमाशुभङ्गिरम्। (देव्युवाच) एवंनिरुदकेदेशेयःकूपंकारयेद्बुधः ५१२ विन्दौविन्दौचतोयस्य वसेत्संवत्सरन्दिवि। दशकूपसमावापी दशवापीसमोह्रदः ५१३ दशह्रदसमःपुत्रो दशपुत्रसमोद्रुमः। एषैवममर्यादानियतालोकभाविनी ५१४ इत्युक्तास्तुततोविप्रा बृहस्पतिपुरोगमाः। जग्मुःस्वमन्दिराण्येव भवानींवन्द्य

विचरतेभये इसकेलिहि में पार्वती पुत्रकी इच्छाकरके कृत्रिमपुत्र वनायेहुए सखियों के संगखेलती भयी किसीसमयपर पार्वती गंधयुक्त तेलकामर्दनकरके चूनका उवटनाकर अपनेमैलको उतार उस मैलयुक्त उवटनेका एकहाथीके मुखवाला मनुष्य बनातीभई फिर खेलतीहुई पार्वतीदेवी उसपुत्रको गंगाजीमेंडालतीभई फिर गंगाजीमें पडेहुए उसपुत्रकाशरीर वहुत वड़ा होगया ५०० । ५०४ और अपने महानसुन्दर शरीरसे वहपुत्र जगत्कोपूर्ण करताभया तव पार्वती उसको देखकर हेपुत्र ऐसा कहकर बोलतीभई उसी समय गंगाजीनेभी उसको हेपुत्र ऐसा उच्चारणकिया तवतो देवताओंने इसकापूजन किया और ब्रह्माजीने इसका विनायकनामरक्खा और इसीको सव गणों का अधिपति भीवनादिया इसप्रकार करके पार्वतीजीसे गणेशकी उत्पत्तिहुई है ५०५ । ५०६ इसके अनन्तर वह पार्वती खेलनेके निमित्त अशोक वृक्षके जमतेहुए अंकुरको पुत्रके निमित्त पालतीहुई सींचनेलगी और संस्कार मंगल करके उस अंकुरको बढ़ावतीभई तव बृहस्पति आदिक देवता ब्राह्मण और मुनि यहसव पार्वतीजीसे कहतेभये किहेभवानी तुम संसारके कल्याण करनेके निमित्त उत्पन्नहुईहो और विशेषकरके संसारको पुत्रकाफल अच्छाहोताहै औरवहुतसी प्रजा दैवकेप्रतापसे प्रजारहितहीं दिखाई पड़तीहै हेदेवि कल्पित कियेहुए वृक्षोंके पुत्रोंसे कौनसाफल सिद्धहोताहै उसको आपकहिये ऐसेकहीहुई पार्वती प्रसन्नहोकर शुभवाणीसे वोलतीभई कि जोकोई इसीप्रकारसे निर्जल देशमें कूपवनवा देताहै वह एक २ विन्दुजलमें एक २ वर्षके हिसावसे स्वर्गमें वास करताहै एक वावड़ी दशकूओं के समानहै दश तड़ागोंके समान उद्धारकरनेवाला एकपुत्रहै दशपुत्रों के समान एक वृक्षहै यह मेरी

सादरम् ५१५ गतेषुतेषुदेवोऽपि शङ्करःपर्वतात्मजाम्। पाणिनालम्ब्यमानेन शनैःप्रावेश यच्छुभाम् ५१६ चित्तप्रसादजननं प्रासादमनुगोपुरम्। लम्बमौक्तिकदामानं मालिका कुलवेदिकम् ५१७ निर्धौतकलधौतंच क्रीडागृहमनोरमम्। प्रकीर्णकुसुमोदाम मत्तालि कुलकूजितम् ५१८ किन्नरोद्गीतसङ्गीत गृहान्तरितभित्तिकम्। सुगन्धिधूपसङ्घातमनःप्रा र्थ्यमलंहितम् ५१९ क्रीडन्मयूरनारीभिर्वृतं वैततवादिभिः। हंससङ्घातसंघुष्टं स्फाटिकस्त म्भवेदिकम् ५२० अनारतमतिप्रीत्या वहुशःकिन्नराकुलम्। शुकैर्यत्राभिहन्यन्तेपद्मराग विनिर्मिताः ५२१ भित्तयोदाडिमभ्रान्त्या प्रतिविम्बितमौक्तिकाः। तत्राक्षक्रीडयादेवो विह र्तुमुपचक्रमे ५२२ स्वच्छेन्द्रनीलभूभागे क्रीडनेयत्राधिष्ठितौ। वपुःसहायतांप्राप्तौविनोदर सनिर्वृतौ ५२३ एवंप्रक्रीडतोस्तत्र देवीशङ्करयोस्तदा। प्रादुर्भवन्महाशब्दस्तद्गृहोदर गोचरः५२४तच्छ्रुत्वाकौतुकाद्देवी किमेतदितिशङ्करम्। पप्रच्छतंशुभतनुर्हरं विस्मयपूर्व कम्५२५उवाचदेवीनैतत्ते दृष्टपूर्वंसुविस्मिते!। एतेगणेशाःक्रीडन्ते शैलेऽस्मिन्मत्प्रियाः सदा५२६तपसाब्रह्मचर्येण नियमैःक्षेत्रसेवनैः। यैरहंतोषितःपूर्वं त एतेमनुजोत्तमाः५२७ मत्समीपमनुप्राप्ता ममहृद्याःशुभानने!। कामरूपामहोत्साहा महारूपगुणान्विताः५२८ कर्मभिर्विस्मयंतेषां प्रयामिवलशालिनाम्। सामरस्यास्यजगतः सृष्टिसंहरणक्षमाः५२९ ब्रह्मविष्ण्विन्द्रगन्धर्वैः सकिन्नरमहोरगैः। विवर्जितोऽप्यहं नित्यमेभिर्विरहितोरमे ५३०

मर्यादा है इसीमर्य्यादासे मैं संसारके पालनेमें स्थितहूं ५०७।५१४ ऐसीबात सुनकर वहवृहस्पति आदिक ब्राह्मण पार्वती को प्रणामकरके अपने २ स्थानोंको जातेभये ५१५ जबवहसव ब्राह्मण अपने २ स्थानों को चलेगये तव महादेवजी अपने हाथसे पार्वती को शनैः उसस्थान के भीतर वुलाते भये ५१६ जो चित्तका प्रसन्नकरने वाला मोतियों की मालाओं के लटकने से शोभित द्वारवाला सुवर्णकी भित्तियों से शोभित क्रीडा के स्थानोंसे आनन्ददायक था और जो कि पुष्पों की मालाओंके ऊपरगुंजार करने वाले भ्रमरों से अतिही सुहावना विदित होताथा ५१७।५१८ उसस्थानके भीतर किन्नर रागोंकोगाते मोर और मोरनी क्रीडाकरते हंसोंके समूह घोषकररहे मणि-योंके स्तंभ जगमगारहे पुखराजकी भीतोंपर बैठे तोते क्रीडाकररहे ऐसे रमणीक स्थानके भीतर शिव-जीके वुलानेसे पार्वतीजी प्राप्तहोकर शिवजीके साथ अक्ष अर्थात् पासोंसे खेलतीभईं शिवजी और पार्वतीजी दोनों विनोदरसमें पूरितहोके जव खेलनेलगे उस समय उसीस्थानके समीप महान् श-ब्द होताभया उसशब्दको सुनकर पार्वतीजी बड़ाआश्चर्य्य करके शिवजीसे पूछनेलगीं कियह कैसा शब्द हुआहै ५१९।५२५ पार्वतीके इस वचनको सुनके शिवजीबोले कि इस पर्व्वतमें मेरे प्रियग-णेश्वर क्रीड़ाकररहेहैं तप व्रत ब्रह्मचर्य्य और तीर्थसेवा इत्यादि नियमों करके इन गणेश्वरोंने मुझ को प्रसन्नकर रक्खाहै यहसव मनुष्यों में उत्तमहैं अपने रूपको इच्छापूर्व्वक वनासक्ते हैं बड़े उत्साह और गुणोंसे संयुक्तहैं ५२६।५२८ इनके कर्मका मुझकोभी आश्चर्य्यहै यहदेवता समेत सब सृष्टि के नाशकरनेको समर्थ हैं ५२९ ब्रह्मा विष्णु इन्द्र गन्धर्व किन्नर और दिव्य सर्प इनसबको चाहै मैं

ह्यामेचारुसर्वाङ्गास्त एतेक्रीडतेगिरौ । इत्युक्तातुततोदेवी त्यक्तातद्विस्मयाकुला ५३१ गवाक्षान्तरमासाद्य प्रेक्षतेविस्मितानना । यावन्तस्तेकृशादीर्घा ह्रस्वास्थूलामहोदराः ५३२ व्याघ्रेभवदनाःकेचित् केचिन्मेषाजरूपिणः । अनेकप्राणिरूपाश्च ज्वालास्याःकृष्णपिङ्गलाः ५३३ सौम्याभीमाःस्मितमुखाः कृष्णपिङ्गजटासटाः । नानाविहङ्गवदना नानाविधमृगाननाः ५३४ कौशेयचर्म्मवसनानग्नाश्चान्येविरूपिणः । गोकर्णागजकर्णाश्च बहुवक्त्रेक्षणोदराः ५३५ बहुपादाबहुभुजादिव्यनानास्त्रपाणयः । अनेककुसुमापीडा नानाव्यालविभूषणाः ५३६ वृत्ताननायुधधरा नानाकवचभूषणाः । विचित्रवाहनारूढा दिव्यरूपावियच्चराः ५३७ वीणावाद्यरवाघुष्टा नानास्थानकनर्तकाः । गणेशांस्तांस्तथादृष्ट्वा देवीप्रोवाचशङ्करम् ५३८ (देव्युवाच) गणेशाःकतिसङ्ख्याताः किंनामानःकिमात्मकाः । एकैकशोममब्रूहिधिष्ठितायेपृथक्पृथक् ५३९ (शङ्कर उवाच) कोटिसङ्ख्याह्यसङ्ख्याता नानाविख्यातपौरुषाः । जगदापूरितंसर्वैरेभिर्भीमैर्महाबलैः ५४० सिद्धक्षेत्रेपुरथ्यासु जीर्णोद्यानेषुवेश्मसु । दानवानांशरीरेषु बालेषून्मत्तकेषुच ५४१ एतेविशन्तिमुदिता नानाहारविहारिणः । ऊष्मपाःफेनपाश्चैव धूमपामधुपायिनः ५४२ रक्तपाःसर्वभक्षाश्च वायुपाह्यम्बुभोजनाः । गेयनृत्योपहाराश्च नानावाद्यरवप्रियाः ५४३ नह्येषांवैअनन्तत्वाद्गुणान्वक्तुंहिशक्यते । (देव्युवाच) मार्गत्वगुत्तरासङ्गः शुद्धाङ्गोमुञ्ज

त्यागकरदूं परन्तु इनगणोंके विना मुझसेनहीं रहाजाताहै ५३० यहसब मेरे हृदयमें बसतेहैं यह सुनकर पार्वतीजी आश्चर्य्ययुक्त होगईं और झरोखोंमें बैठकर उनसबको देखनेलगीं वहसब गणेश्वर ऐसेथे मोटे २ लंबे २ छोटे २ स्थूल महा उदरवाले सिंह और हाथीके समान मुखवाले कोई मेढ़के रूपवाले कोई बकरेके समान मुखवाले कोई अनेक प्राणियोंके समान रूपवाले कोई अग्निके समान रूपवाले काले पीले वर्णवाले सौम्य भयानक और हंसते हुए मुखवाले कृष्णपीत जटावाले अनेक पक्षियोंके समान शरीरवाले अनेक प्रकारके मृगोंके समान मुखवाले कुशा और चर्मके वस्त्रयुक्त नंगे विरूपगौके समान कान हस्तिकेसे कानवड़े २ मुख छोटापेट बहुतसे पैर बहुतसे हाथ और अनेक प्रकारके दिव्य शस्त्रोंको लियेहुए अनेक पुष्प और सर्पोंके आभूषणवाले अनेक प्रकारकी वस्तुवाले विचित्र वाहनोंपर चढ़ेहुए दिव्य रूपोंसे आकाशमें गमन करनेवाले वीनके बजानेवाले अनेक स्थानोंमें नाचनेवाले ऐसेउन गणेश्वरोंको पार्वतीजी देखकर शिवजीसे बोलीं ५३१ । ५३८ हे देव देव आपके गण कितनेहैं क्या २ नामहैं एक २ कोमेरेआगे वर्णनकीजिये ५३९ शिवजीबोले कि मेरे अनेक नामोंवाले गण असंख्यहैं औरमहाबलवाले हैं इनसबोंने जगत्को पूर्णकररक्खाहै ५४० सिद्ध क्षेत्रोंमें वीथियोंमें बगीचोंमें प्राचीन स्थानोंमें दानवोंके शरीरोंमें बालकों में बावलोंमें और श्मशानादि स्थानोंमें इनसबोंमें यहगण प्रसन्नहोकर प्रवेश करजाते हैं अनेक प्रकारकी क्रीड़ाकरते हैं भाफ आग धुंआ और शहद इनकोपीते हैं और सबवस्तुओंको भक्षण करते हैं वायु जलकोभी भक्षणकर गाने बजाने और नाचनेमें आसक्तरहते हैं ५४१ । ५४३ यह असंख्यात गणहैं इसहेतुसे इनकी संख्यानहीं

मेखली ५४४ वामस्थेनचशिक्येन चपलोरञ्जिताननः। मृगदंष्ट्रोह्युत्पलानां स्रग्दामो मधुराकृतिः ५४५ पाषाणशकलोत्तान कांस्यतालप्रवर्तकः। असौगणेश्वरोदेव! किन्ना माकिन्नरानुगः ५४६ यएषगणगीतेषु दत्तकर्णोमुहुर्मुहुः। (शर्वउवाच) सएषवीरको देवि! सदामहृदयप्रियः ५४७ नानाश्चर्य्यगुणाधारो गणेश्वरगणार्चितः। (देव्युवाच) ईदृशस्यसुतस्यास्ति ममोत्कण्ठापुरान्तक! ५४८ कदाहमीदृशंपुत्रं द्रक्ष्याम्यानन्द दायिनम् (शर्वउवाच) एषएवसुतस्तेऽस्तु नयनानन्दहेतुकः ५४९ त्वया मात्राकृतार्थस्तु वीरकोऽपिसुमध्यमे!। इत्युक्ताप्रेषयामास विजयांहर्षणोत्सुका ५५० वीरकानयनायाशु दुहिताहिमभूभृतः। सावरुह्यत्वरायुक्ता प्रासादादम्बरस्पृशः ५५१ विजयोवाचगणपङ्क्तिमध्येप्रवर्तिता। (विजयोवाच) एहिवीरक! चापल्यात् त्वयादेवः प्रकोपितः ५५२ किमुत्तरंवदत्यर्थे नृत्यरङ्गेतुशैलजा। इत्युक्तस्त्यक्तपाषाण शकलोमार्जिताननः ५५३ आहूतस्तुतयोद्भूतमूलप्रस्तावशंसकः। देव्याःसमीपमागच्छज्जययानुगतःशनैः ५५४ प्रासादशिखरोत्फुल्लरक्ताम्बुजनिभद्युतिः। तंदृष्ट्वाप्रस्नुतानल्पस्वादुक्षीरपयोधरा। गिरिजोवाचसस्नेहं गिरामधुरवर्णया ५५५ अथ गद्यानि (उमोवाच) एह्येहियातोऽसिमेपुत्रतान्देव देवेनदत्तोऽधुनावीरक! ५५६इत्येवमङ्केनिधायाथतंपर्यष्वजत् कपोलेकलवादिनम् ५५७ मूर्ध्न्युपाघ्रायसंमार्ज्यगात्राणिभूषयामासदिव्यैः। स्वयंभूषणैः

कहसके ऐसे सुनकर पार्वतीजी पूछने लगी कि हे महादेवजी मृगछालाको ओढ़ेहुए शुद्धांग मूंजकी मेखलावाला बायींओर छींकेको करके चपलता करताहुआ पत्थरों की मालावाला मनोहर आकार युक्त पत्थर के टुकड़े से तालबजाने वाला किन्नरों के पीछे २ चलनेवाला ऐसा वह गणेश्वर है उस का नाम क्याहै ५४४।५४६ यह अन्य गणोंके गीतोंमें वारंवार कानलगाताहै शिवजीने कहा हेदेवि यह वीरक अर्थात् वीरभद्रहै इसमें अनेक आश्चर्य्य के गुणभरे हैं मुझको सदैव प्रियहै पार्वतीजी ने कहा हे शिवजी ऐसेही पुत्रकी मुझको भी लालसाहै ऐसे आनन्दके देनेवाले पुत्रको मैं कबप्राप्तहोऊंगी-शिवजीने कहा कि यही पुत्रतेरे नेत्रोंको आनन्द देनेवालाहै हे सुन्दर कटिवाली यह वीरभद्रभी तुझको माता कहकर कृतार्थ हो जायगा यह वचन सुनकर पार्वतीने विजया सखीको वीरभद्रके बुलानेके निमित्त भेजा तब वह विजया सखी बड़ी शीघ्रतासे ऊंचे स्थानसे नीचे उतरकर यह वचन बोली कि हेवीरभद्र यहाँ आओ तैंने चपलपनेसे महादेवको वशीभूत करलियाहै यह बात सुनतेही वीरभद्र पत्थरके टुकडेको हाथसे पटक मुखकोपोंछकर मूल वार्त्ताके प्रस्तावको कहताहुआ उस विजया सखी के संगमें शनैः आकर पार्वती के पास बैठजाताभया ५४७।५५४ लाल कमलके समान कान्तिवाले उस वीरभद्रको देखकर पार्वती के स्तनों से दूधटपकनेलगा और बड़ेस्नेहकरके पार्वती मधुरवाणीसे बोली ५५५ हेवीरभद्र तू आया अब तुझको महादेवजीने मुझे दियाहै इसप्रकार से कहकर उसको अपनी गोदीमें बैठाकर कपोल चुंबनकरतीभई और उस मीठी २ वाणी बोलने वाले के मस्तकको सूंघकर पुचकारतीभई फिर उसके शरीरको दिव्य आभूषण क्षुद्रघंटिका मणियों

किङ्किणीमेखलानूपुरैर्माणिक्य केयूरहारोरुमूलगुणैः ५५८ कामलैःपल्लवैश्चित्रितैश्चा रुभिर्दिव्यमन्त्रोद्भवैस्तस्यशुभैस्ततो भूरिभिश्चाकरोन्मिश्र सिद्धार्थकैरङ्गरक्षाविधिः ५५९ एवमादायचोवाचकृत्वासंमूर्ध्नि गोरोचनापत्रभङ्गोज्ज्वलैः ५६० गच्छगच्छाधु नाक्रीडसार्द्धङ्गणैरप्रमत्तोवसंश्वभ्रवर्जाशने व्यालमालाकुलाशैलसानुद्रुमदन्तिभिर्भिन्न साराःपरैसङ्गिनः ५६१ जाह्नवीयंजलंक्षुब्धतोयाकुलंकृलमा विशेथात्वहुव्याघ्रदुष्टवने ५६२ वत्सासंस्त्येषुदुर्गागणेशेष्वेतस्मिन्वीरकेपुत्रभावोपतुष्टान्तःकरणातिष्ठतु ५६३ स्वस्यपितृजनप्रार्थितं भव्यमायातिभाविन्यसौभव्यता ५६४ सोऽपिनिभृत्यसर्वगणैःस स्मयमहाबालत्वलीलारसाविष्टधीः ५६५ एषमात्रास्वयंमेकृतभूषणोऽत्र एषपटःपटलै र्विन्दुभिःसिन्दुवारस्यपुष्पैरियं मालतीमिश्रितामालिकामेशिरस्याहिता ५६६ कोऽयमा तोद्यधारीगणस्तस्य दास्यामिहस्तादिदंक्रीडनम् ५६७ दक्षिणात्पश्चिमंपश्चिमादुत्तर मुत्तरात्पूर्वमभ्येत्यसख्यायुता प्रेक्षतीतंगवाक्षान्तराद्वीरकं शैलपुत्रीवहिःक्रीडनंयज्जग न्मातुरेपचित्तभ्रमः ५६८ पुत्रलुब्धोजनस्तत्रकोमोहमायातिन स्वल्पचेताजडोमांसवि ण्मूत्रसङ्घातदेहः ५६९ द्रष्टुमभ्यन्तरन्नाकवासेश्वरैरिन्दुमौलिंप्रविष्टेषुकक्षान्तरम् ५७० वाहनात्यावरोहागणास्तैर्युतोलोकपालास्त्वमूर्त्तोह्ययंखड्गो विखड्गकरोनिर्ममःकृतान्तःक स्यकेनाहतोब्रूतमौनेभवन्तोऽस्त्वदण्डेनकिंदुस्पृहा ५७१ भीममूर्त्याननेनास्तिकृत्यङ्गिरो

के बाजूबन्द और हार इन सब वस्तुओं से शृंगारकर विचित्र पत्र फूल दिव्य औषधी श्वेत सरसों इ- त्यादिक वस्तुओं से उसकी रक्षाकी विधिकरी ५५८।५५९ इसके अनन्तर उसके मस्तकमें गोरोचन का टीका करके यह वचन कहतीभई कि अब जाओ अपने संगके गणोंके साथ धीरे २ खेलो चपल पना मतकरना तेरे संगके अन्यगणतो सर्पोंकी मालापहररहे हैं और पर्व्वत शिखर वृक्ष और हाथियों के दाँत इन सबसे खंडित होरहे हैं तू कभी बड़े वेगसे वहतीहुई गंगाके प्रवाहमें प्रवेश मतकरियो सिंहोंके वनमें मतजइयो ५६०।५६२ हेपुत्र असंख्यात सब गणोंमें प्रसन्नहोकर मैंने तेरेही विषयमें पुत्र भावकियाहै इसके पीछे वीरभद्र अपने पिताकी मायाके प्रभावसे सब गणोंमें ऐसे कहनेलगा कि मेरी माताने मुझको यह आभूषण, वस्त्र, संभालू और मालतीके पुष्पोंकी माला पहराई है ५६३।५६६ ऐसा उत्तम बाजा बजानेवाला कौनसा गणहै जिसको मैं अपने हाथसे इस मालाको दूं इसके पीछे सखी से मिलीहुई पार्वती दक्षिणसे पश्चिमको पश्चिमसे उत्तरको उत्तर से पूर्वको चारोंओर झरो- खोंमें से बाहर खेलतेहुए वीरभद्रको देखतीभयी सूतजी कहते हैं कि बड़े आश्चर्यकी बातहै जब ज- गत्की माता पार्वतीजी को भी इतना मोह आगया तो अल्प बुद्धिवाले विष्ठा मूत्रसे उत्पन्नशरीरवाले अन्य कोनसा पुरुष पुत्रके मोहमें नहीं फँसेगा ५६७।५६९ इसके पीछे पर्व्वतकी किसी कन्दरा में देव देव शिवजी के दर्शन करनेके निमित्त देवतालोग प्रवेश करतेभये तब वाहनों पर चढ़े अन्य गण और लोकपाल भी उसी पर्व्वतमें प्रवेश करते भये उस समय किसी का खड्ग किसीने तोड़डाला उस समय वह वीरभद्र बोला कि यहकिसने तोड़ा है बताओ उस समय देवता कहने लगे कि

य एषोऽस्त्रैर्नकिंबध्यते ५७२ मावृथालोकपालानुगचित्तता एवमेवैतदित्यूचुरस्मैतदा देवताः ५७३ देवदेवानुगंवीरकंलक्षणाप्राहदेवी वनंपर्वतानिर्भैराण्यग्निदेव्यान्यथो भूतपानिर्झराम्भोनिपातेपुनिमज्जत ५७४ पुष्पजालावनद्धेषुधामस्वपिशेतप्रत्तुङ्गनाना द्रिकुञ्जेष्वनुगर्जन्तुहेमारुतास्फोटसंक्षेपणान्कामतः ५७५ काञ्चनोत्तुङ्गशृङ्गावरोहक्षितो हेमरेणूत्करासङ्गद्युतिम्।। खेचराणांवनाधायिनिरम्येबहुरूपसम्पत् प्रकरेगणान्वासितं मन्दरकन्दरेसन्दरमन्दार पुष्पप्रवालाम्बुजेसिद्धनारीभिरापीतरूपामृतं विस्तृतैर्नेत्रपात्रैरनुन्मेषिभिर्वीरकं शैलपुत्रीनिमेषान्तरादस्मरत् पुत्रगृध्नीविनोदार्थिनी ५७६ सो ऽपितादृक्क्षणावाप्तपुण्योदयोयोऽपिजन्मान्तरस्यात्मजत्वङ्गतः ५७७ क्रीडतस्तस्यतृप्तिःकथं जायतेयोऽपिभाविजगद्वेधसातेजसः कल्पितः प्रतिक्षणं दिव्यगीतक्षणो नृत्यलोलोगणेशैः स्वप्रणत्यक्षणःसिंहनादाकुले गण्डशैलेऽसृजद्रत्नजाले वृहत्साल तालेक्षणेफुल्लनाना तमालालिकालेक्षणंवृक्षमुले विलोलोमरालेक्षणेस्वल्पपङ्के जले पङ्कजाढ्येक्षणंमातुरंकेशुभेनिष्कलंके ५७८ परिक्रीडतेबाललीलाविहारी गणेशाधिपोदेवतानन्दकारी निकुञ्जेषुविद्याधरैर्गीतशीलः पिनाकीवलीलाविलासैःसलीलः ५७९ प्रकाश्यभुवनाभोगी ततोदिनकरेगते। देशान्तरंतदापश्चादूरमस्तावनीधरम् ५८० उदयास्तेपुरोभावी योहिचास्तेऽवनीधरः। मित्रत्वमस्यसुदृढं हृदयेपरिचिन्त्यताम् ५८१ नित्यमाराधितःश्रीमान् पृथुमूलःसमुन्नतः। नाकरोत्सेवितुंमेरु रुपहारंपतिप्यतः ५८२ यतिष्येमाव्यवस्थेति संश्रयेणाखिलंबुधः। दिनान्तानुगतोभानुः स्वजनत्व

इस भयंकर मुखवालेका इस पर्व्वतमें कुछ काम नहीं है यहभस्त्र शस्त्रोंको क्या जानताहै लोकपालों के साथ वृथा काहेको चलताहै तब देवताओं के पीछे २ चलने वाले वीरभद्र स लक्षणादेवी बोली कि इस वनमें अग्निकी प्रबलता होरही है इस निमित्त सबगण पर्वत के झिरनों के जलों में प्रवेश करजाओ और पुष्पोंकी जालीवाले बगीचोंमें सोजाओ अथवा पर्व्वतकी ऊंचीकुंजमें खेलो फिर सिद्धोंकी स्त्रियां वीरभद्रके रूपको देखती भईं वह वीरभद्र रमणीक सुवर्णके पर्व्वतमें क्रीड़ा करताभया तबपुत्रकी लालसावाली पार्वती आंखमीचकर वीरभद्रको स्मरणकरतीभई ५७०।५७६ उस समय पूर्वजन्मके पुण्यके प्रभावसे वह पार्वतीका पुत्र हुआ वीरभद्र भी अपने भाग्यको सफल करताभया और क्रीड़ा करता हुआ तृप्तिको नहीं प्राप्त हुआ क्योंकि इसको ब्रह्माजीने अपने तेजसे कल्पित कियाहै किसी समय यह वीरभद्र गीतोंको सुनाकरता कभी अन्यगणोंके साथ सिंहके समान नाद करता कभी पर्व्वतमें कभी खिलेहुए पुष्पोंमें और कभी वृक्षोंकी जड़ोंमें क्रीड़ा करताथा कभी यह देवताओंका आनन्द देने वाला वीरभद्र अपनी माताकी गोदी में क्रीड़ा करताथा इसी प्रकार यह गणोंका अधिपति वीरभद्र शिवजीके समान अनेक लीला करताभया ५७७।५७९ इसके अनन्तर संसारका प्रकाश करने वाला सूर्य्य पश्चिम दिशामें बड़ी दूर अस्ताचल पर्व्वत पर चलागया

मपूरयत् ५८३ सन्ध्यावद्धाञ्जलिपुटा मुनयोऽभिमुखारविम् । याचन्त्यागमनंशीघ्रं नि वार्यात्मनिभाविताम् ५८४ व्यजृम्भदथलोकेऽस्मिन्क्रमाद्वैभावरन्तमः । कुटिलस्येवहृ दयं कालुष्यन्दूषयन्मनः ५८५ ज्वलत्फणिफणारत्न दीपोद्योतितभित्तिके । शयनंशशि सङ्घात शुभ्रवस्त्रोत्तरच्छदम् ५८६ नानारत्नद्युतिलसच्छक्रचापविडम्बकम् । रत्नकिंकि णिकाजालं लम्बमुक्ताकलापकम् ५८७ कमनीयचलल्लोलवितानाच्छादिताम्बरम् । म न्दिरेमन्दसञ्चारः शनैर्गिरिसुतायुतः ५८८ तस्थौगिरिसुताबाहु लतामीलितकन्धरः। शशिमौलिसितज्योत्स्नाशुचिपूरितगोचरः ५८९ गिरिजाप्यसितापांगी नीलोत्पलद लच्छविः । विभावर्याचसंपृक्ता बभूवातितमोमयी । तामुवाचततोदेवः क्रीडाकेलिक लायुतम् ५९० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे त्रिपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५३ ॥

(शर्व उवाच) शरीरेममतन्वंगि! सितेभास्यसितद्युतिः । भुजंगीवासिताशुद्धासंश्लि ष्टाचन्दनेतरौ १ चन्द्रातपेनसंपृक्ता रुचिराम्बरयातथा । रजनीवासितेपक्षे दृष्टिदोषंद दासिमे २ इत्युक्तागिरिजातेन मुक्तकण्ठापिनाकिना । उवाचकोपरक्ताक्षी भ्रुकुटीकुटिला नना ३ (देव्युवाच) स्वकृतेनजनःसर्वो जाड्येनपरिभूयते । अवश्यमर्थात्प्राप्नोति स

तब सुमेरु पर्व्वत अपने चित्तमें यह विचार करने लगा कि इस सूर्य्य की दृढ़ मित्रता उदयाचल पर्व्वत से है इसी विचारसे सुमेरु पर्वतमें छिपतेहुए सूर्य्यकी सेवा नहीं की ५८० । ५८१ दिनके अन्तमें सूर्य्य स्वजन पुरुषोंकोपूर्ण करताभया सायंकालमें मुनिलोग सूर्य्यके सन्मुख अंजली बांधकर खड़ेहोतेभये इसकेपछि क्रमर से शनैःशनैः रात्रिका अंधकार संसारमें ऐसाफैलताभया जैसे कि कुटिल पुरुषके हृदयमें मनकी कालिमा फैल जाती है ५८३ । ५८५ फिर प्रकाशित हुए रत्नोंकी भीतों- वाले स्थानमें चन्द्रमाके समान श्वेत वस्त्रसे शोभित हुई अनेक प्रकारके रत्नोंकी किंकिणी और मोतियोंकी जालीसे जड़ी हुई कान्तिवाली सुन्दर चांदनी जिसके ऊपर तनीहुई ऐसी उत्तमशय्या पर शिवजी महाराज पार्वतीको साथ लेके शयन करतेभये ५८६ । ५८८ जब पार्वतीकी भुजाओंमें अपनी ग्रीवालगाकर शयन करतेभये तब शिवजीकी श्वेत कान्ति अत्यन्त सुन्दर लगती भई और नीले कमलके समान कान्तिवाली पार्वती भी रात्रिके अन्धकारमें अतिकाली विदित होतीभई उस समय शिवजी पार्वती से हास्यके वचन बोले ५८९।५९० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५३ ॥

शिवजी कहतेहैं कि हेतन्वंगि मेरेशरीरमें श्वेतकान्ति झलकरहीहै और तू ऐसे मुझसे लिपटरही है जैसे कि चन्दनके वृक्षमें सर्पिणी लिपटरहीहो १ चन्द्रमाकी किरणों के समान सुन्दर वस्त्रोंसे युक्तहुई ऐसी विदितहोतीहुई जैसे कि कृष्णपक्षमें रात्रि दिखाईदेतीहै २ ऐसे कहीहुई पार्वती शिवजीके कण्ठको छोड़कर क्रोधसे लालनेत्रकर भ्रुकुटी चढ़ाकर बोली ३ कि अपनेही अवगुणों से सब लोगोंका तिरस्कारहोताहै प्रयोजन होनेसे चन्द्रमाका मण्डलभी ग्रहणके समयमें अवश्यही-

एडलंशशिमण्डलम् ४ तपोभिर्दीर्घचरितैर्यच्चप्रार्थितवत्यहम् । तस्यामेनियतस्त्वेषह्यवमानःपदेपदे ५ नैवास्मिकुटिलाशर्व! विषमानैवधूर्जटे! । सविषस्त्वंगतःख्यातिं व्यक्तं दोषाकराश्रयात् ६ नाहंपूष्णोऽपिदशना नेत्रेचास्मिभगस्यहि । आदित्यश्चविजानाति भगवान्द्वादशात्मकः ७ मूर्ध्निशूलजनयसिस्वैर्दोषैर्मामधिक्षिपन् । यस्त्वंमामाहकृष्णेति महाकालेतिविश्रुतः ८ यास्याम्यहंपरित्यक्ता चात्मानंतपसागिरिम् । जीवन्त्यानास्तिमे कृत्यंधूर्त्तेनपरिभूतया ९ निशम्यतस्यावचनं कोपतीक्ष्णाक्षरम्भवः।उवाचाधिकसंभ्रांतः प्रणयेनेंदुमौलिना १० (शर्वउवाच)अगात्मजासिगिरिजे ! नाहंनिंदापरस्तव । त्वद्भक्तिबुद्ध्याकृतवांस्तवाहंनामसंश्रयम् ११ विकल्पःस्वस्थचित्तेऽपिगिरिजे!नैवकल्पना । यद्येवंकुपिताभीरु!त्वन्तवाहन्नवैपुनः १२ नर्मवादीभविष्यामि जहिकोपंशुचिस्मिते! शिरसाप्रणतश्चाहं रचितस्तेमयाञ्जलिः १३ स्नेहेनाप्यवमानेन निन्दितेनैतिविक्रियाम् । तस्मान्नजातुरुष्टस्यनर्मस्पृष्टोजनःकिल १४ अनेकैःस्वादुभिर्देवीदेवेनप्रतिबोधिता। कोपन्तीव्रन्नतत्याज सतीमर्मणिघट्टिता १५ अवष्टब्धमथारफाल्य वासःशङ्करपाणिना । विपर्यस्तालकावेगाद्यातुमैच्छतशैलजा १६ तस्याव्रजन्त्याःकोपेन पुनराहपुरांतकः। सत्यंसर्वैरवयवैः सुतासिसदृशीपितुः १७ हिमाचलस्यश्रृङ्गैस्तै मेघजालाकुलैर्नभः। तथा दुरवगाह्येभ्यो हृदयेभ्यस्तवाशयः १८ काठिन्याङ्कस्त्वमस्मभ्यं वनेभ्योबहुधागता । कुटि

तहोजाता है ४ बहुतसी तपस्याओं से जो मैंने तुम्हारी प्रार्थनाकरी तो उसका मुझको यह फल प्राप्तहुआ कि पद २ में मेरा तिरस्कार होताहै ५ हे शिवजी मैं विषम और कुटिल नहीं हूं हे धूर्जटे दोषोंके सेवनकरने वालेके आश्रयहोकर मुझमें विषउत्पन्न होगया है ६ हेशिव मैं पूषाके दांत नहीं हूं इन्द्र नहीं हूं मुझको सूर्य्य भगवान् देखताहै मेरा तिरस्कार करनेवाला पुरुष अपने दोषों करके अपनेही मस्तक में शूलचुभोताहै जो तुमसुझको कृष्णा और महाकाला यह जो कहतेहो इसलिये मैं अपने आत्माको त्यागकर पर्वतमें तपकरने जातीहूं धूर्त्तके साथलगकर मुझजीवतीहुईका क्या प्रयोजन है ७।९ पार्वतीके ऐसे वचनोंको सुनकर शिवजी संभ्रमको प्राप्तहोकर बड़ी विनयसे यह वचनबोले १० हे पार्वती तू मेरी प्यारी है मैंने तेरी निन्दा नहीं करी है मैंने तो तेरी बुद्धि जानकर कृष्णाकालका यह तेरे नाम निकालेहैं हे गिरिजे स्वस्थ चित्तवालों के विकल्प नहीं होताहै हेभीरु जो तू ऐसी कुपितहोतीहै तो तेरा हास्य में फिर अबकभी न करूंगा अबतो कोपको दूरकर हे सुन्दर हास्यवाली मैं तुझको शिरसे प्रणामकरताहूं और सूर्य्यकी ओर हाथजोड़ताहूं ११।१३ स्नेह से अपमानसे अथवा निन्दा करनेसे जो रुसजाताहै उसके साथ हास्यकभी न करनाचाहिये १४ इस प्रकारके अनेक विनयके वचनोंसे शिवजीने पार्वतीको समझाया परन्तु मर्म में भिदीहुई पार्वती अपने महाक्रोधको नहीं त्यागतीभई १५ शिवजीके हाथसे अपनेवस्त्रको छुटाकर शीघ्रही गमनकरनेकी तैयारी करतीभई १६ तब उसके गमनही के विचार को देखकर शिवजी क्रोध पूर्व्वक फिर बोले कि सत्यहै तूसब प्रकारसे अपने पिताकेही समान है १७ हिमाचलके शिखरों परजैसे मेघोंसे

सत्वङ्गह्वरेभ्यो दुःसेव्यस्त्वंहिमादपि १९ संक्रान्तिसर्वदैवेति तन्वङ्गि ! हिमशैलजः।
इत्युक्तासापुनःप्राह गिरिशंशैलजातदा २० कोपकम्पितमूर्द्धा च प्रस्फुरद्दशनच्छदा।(उमो
वाच) मालत्वान्दोषदानेन निन्द्यान्यान्गुणिनोजनान् २१ तवापिदुष्टसम्पर्कात् संक्रान्तम
खिलंवहि। व्यालेभ्योऽधिकजिह्वात्वं भस्मनास्नेहबन्धनम् २२ हृत्कालुष्यंशशाङ्कात्तु दुर्बो
धित्वंवृषादपि। नयाबहुकिमुक्तेन अलंवाचाश्रमेणते २३ श्मशानवासान्निर्भीतं नग्न
त्वान्नतवत्रपा। निर्घृणत्वंकपालित्वाद्दयातेविगताचिरम् २४ इत्युक्त्वामन्दिरात्तस्मान्निर्ज
गामहिमाद्रिजा। तस्यांनिर्गन्त्यांदेवेश गणैःकिलकिलाध्वनिः २५ कृतानगच्छसित्यक्ता
रुदन्तोवावितापुनः। विष्टभ्यचरणौदेव्या वीरकोबाष्पगद्गदम् २६ प्रोवाचमातः!
किन्त्वेतत् क्ष्यासिकुपितान्तरा। अहंत्वामनुयास्यामि व्रजन्तींस्नेहवर्जिताम् २७
सोऽहंपतिष्येशिखरात्तपोनिष्ठत्वयोज्झितः। उन्नाम्यवदनंदेवी दक्षिणेनतुपाणिना २८
उवाचवीरकंमाता माशोकंपुत्र! भावय। शैलाग्रात्पतितुंनैव नचागन्तुंमयासह २९
युक्तन्तेपुत्र! वक्ष्यामियेनकार्येणतच्छृणु। कृष्णेत्युक्ताहरेणाहं निन्दिताचाप्यनिन्दिता
३० साहंतपःकरिष्यामि येनगौरीत्वमाप्नुयाम्। एषस्त्रीलम्पटोदेवो यातायांमय्यनन्तर
म् ३१ द्वाररक्षात्वयाकार्या नित्यंरन्ध्रान्ववेक्षिणा। यथानकाचित्प्रविशेद्योषिदत्रहरान्ति

व्याकुल हुआ आकाश दुर्गमहोजाता है इसी प्रकारतुम्हारा भी हृदय कठिनहै तूऐसी कठिनहै तभीतो
इनको छोड़कर वनोंमें जातीहै पर्वतमें जैसेकि भयंकर सर्प रहतेहैं उनसेभी तू कुटिलहै औरतेरा
सेवन करना हिमालय से भी कठिन है ऐसे कहीहुई पार्वती क्रोधकरके मस्तकको कंपा कर
दांतोंको चबाकर फिर बोली कि आप अन्य गुणी लोगोंको दोषलगाकर उनकी निन्दाभत करो
१८। २१ आपकेभी दुष्टोंके संपर्कसे नवद्वार हैं तुम सर्पसेभी कठिनहो भस्मके समान स्नेह नहीं
करते चन्द्रमा के कलंकसेभी बुरा तुम्हारा हृदय है इसदुर्गमतेभी कम निर्बुद्धिहो इससे अधिक
बकवाद करने से क्याप्रयोजनहै २२। २३ श्मशानमें वासकरने से तुमभय नहीं करते नंगेहोने से
तुमको लज्जानहीं है कपाल धारण करनेसे तुम्हारी दयाचलीगईहै ऐसा कहकर पार्वती उनस्थान
से चलतीभई तब चलने के समय शिवके गणों का किल किल शब्द हुआ और वीरभद्र रोकर
उस देवीकेचरण पकड़ कर यह कहनेलगा कि हेमाता तू मुझको छोड़कर कहाँजातीहै ऐसे कहकर
पैरोंमें लोटगया और कहनेलगा कि मैं स्नेहको त्यागकर तुम्हजानेवाली के संगचलूंगा २४। २५
और जिस पर्वतसे तू तपकरेगी वहाँसे तुमसे त्यागाहुआ मैं पर्वतके शिखरपर चढ़कर गिरूंगा
जब उसने ऐसी बातेंकहीं तब पार्वती दहिने हाथसे उसके मुखको प्यारकरके बोली हे पुत्र तू
शोचमतकर पर्वतसे नहीं गिरनाचाहिये और मेरे साथभी तुमको नहीं चलनाचाहिये २८। २९
हे पुत्र मेरे करनेके योग्य कामको मैंबतातीहूं सो तू सुन शिवजीने मुझको कृष्णावर्णताका भेदकह
निन्दाकरीहै तासे ऐसातपकरूंगी जिससे कि गौरवर्ण होजाऊं यह शिवजी स्त्री के लालचीहैं तासे
चलीजाऊं उस समयतू इस स्थानके द्वारपर रक्षाकरियो कि कोई अन्यस्त्री इनके पास नआने पावे

कम् ३२ दृष्ट्वापरस्त्रियश्चात्र वदेथाममपुत्रक!। शीघ्रमेवकरिष्यामि यथायुक्तमनन्तरम्
३३ एवमस्त्वितिदेवींस वीरकःप्राहसाम्प्रतम्। मातुराज्ञामृताह्लादप्लाविताङ्गोगतज्वरः
३४ जगामकक्ष्यांसंद्रष्टुं प्रणिपत्यचमातरम् ३५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेचतु.पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५४॥

(सूत उवाच) देवींसापश्यदायान्तीं सतींमातुर्विभूषिताम्। कुसुमामोदिनींनाम त
स्यशैलस्यदेवताम् १ सापिदृष्ट्वागिरिसुतां स्नेहविक्लवमानसा। क्वपुत्रि! गच्छसीत्युच्चै
रालिङ्ग्योवाचदेवता २ साचास्यैसर्वमाचख्यौ शङ्करात्कोपकारणम्। पुनश्चोवाच
गिरिजा देवतांमातृसम्मताम् ३ (उमोवाच) नित्यंशैलाधिराजस्य देवतात्वमनिन्दि
ते!। सर्वतःसन्निधानन्ते ममचातीववत्सला ४ अतस्तुतेप्रवक्ष्यामि यद्विधेयंतदाधिया।
अन्यस्त्रीसंप्रवेशस्तु त्वयारक्ष्यःप्रयत्नतः ५ रहस्यत्रप्रयत्नेन चेतसासततंगिरौ। पिना
किनःप्रविष्टायां वक्तव्यंमेत्वयानघे! ६ ततोऽहंसंविधास्यामि यत्कृत्यंतदनन्तरम्। इ
त्युक्तासातथेत्युक्त्वा जगामस्वगिरिंशुभम् ७ उमापिपितुरुद्यानं जगामाद्रिसुताद्रुतम्।
अन्तरिक्षंसमाविश्य मेघमालामिवप्रभा ८ ततोविभूषणान्यस्य वृक्षवल्कलधारिणी।
ग्रीष्मेपञ्चाग्निसन्तप्ता वर्षासुचजलोषिता ९ वन्याहारानिराहारा शुष्कास्थण्डिलशायि
नी। एवंसाधयतीतत्र तपसासंव्यवस्थिता १० ज्ञात्वातुतांगिरिसुतां दैत्यस्तत्रान्तरेव

हेपुत्र जो अन्यकोई स्त्रीइनके समीप आतीहुई देखे तो अवश्यमुझसे कहदीजो मैं शीघ्रही उसका प्रबन्ध करदूंगी ३०।३३ यहवातसुनकर वीरभद्र बोला कि ऐसाहीकरूंगा यह कहकर माताकी आज्ञा करने में आनन्द युक्तहोताभया और अपनी माताको प्रणामकरके पर्व्वत की कक्षामें चलाजाता भया ३४।३५ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां चतुःपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५४॥

सूतजीबोले इसके अनन्तर वह पार्वती कुसुमामोदिनी नामवाली उस पर्व्वतकी देवता सतीको सन्मुख आतीहुई देखतीभई १ वह सती देवताभी पार्वतीको देखकर स्नेहपूर्व्वक बोली कि हेपुत्री तूकहाँजातीहै २ तब पार्वती उस अपने शिवजीके प्रभावसे उत्पन्नहुए अपने क्रोध रूप कारणको कहतीभई और अपनी माताकेही समान उस सतीको मानकर यह वचन बोली ३ हेअनिन्दिते तूइस पर्वतकी देवताहै सदैवयहाँरहतीहै औरमेरी बड़ीप्यारी है इसहेतुसे मैं तेरे आगे जो कहतीहूं वहतुमको करनाचाहिये इस पर्व्वतमें जोअन्यकोई स्त्रीआवे अथवा शिवजी एकान्तमें किसी अन्य स्त्रीसे वतरावें तो तूमुझको अवश्यखवरदीजो उसके पीछे मैं प्रवन्धकरलूंगी ऐसाकहकर पार्वती अपने हिमालय पर्व्वतमें जातीभई ४।७ पार्वती अपने पिताके वगीचेमें ऐसे जातीभई जैसे कि आकाशमें मेघमालाचलीजातीहै ऐसे प्रकार से आकाशमार्ग होकर उसने गमनकिया और वहाँ जाकर वृक्षोंके वल्कलशरीर परधारणकिये ग्रीष्मऋतुमें पंचाग्नितपी वर्षाऋतुमें जलमें निवासकिया कभी वनके फलोंका आहार किया कभी निराहाररही और पृथ्वीपर शयनकिया ऐसे प्रकारोंसे तपस्या करतीभई ८।१० इसकेपीछे अन्धक दैत्यकापुत्र उस पार्वतीको जानकर अपने पिताकेबधकास्मरण

शी। अन्धकस्यसुतोद्दप्तः पितुर्वधमनुस्मरन् ११ देवान्सर्वान्विजित्याजौ बकत्वान्मार
णोत्कटः। आडिर्नामान्तरप्रेक्षी सततंचन्द्रमौलिनः १२ आजगामामररिपुः पुरन्त्रिपु
घातिनः। सतत्रागत्यददृशे वीरकंद्वार्यवस्थितम् १३ विचिन्त्यासीद्वरंदत्तं सपुरापद्मजन्म
ना। हतेतदान्धकेदैत्ये गिरिशेनामरद्विषि १४ आडिश्चकारविपुलं तपःपरमदारुणम्।
तमागत्याब्रवीद्ब्रह्मा तपसापरितोषितः १५ किमाडे! दानवश्रेष्ठ! तपसाप्राप्तुमिच्छ
सि। ब्रह्माणमाहदैत्यस्तु निर्मृत्युत्वमहंवृणे १६ (ब्रह्मोवाच) नकश्चित्त्वविनामृत्युं नग
दानव! विद्यते। यतस्ततोऽपिदैत्येन्द्र! मृत्युःप्राप्यःशरीरिणा १७ इत्युक्तोदैत्यसिंहस्तु
प्रोवाचाम्बुजसम्भवम्। रूपस्यपरिवर्तोमेयदास्यात्पद्मसम्भव! १८ तदामृत्युर्ममन
वेदन्यथात्वमरोह्यहम्। इत्युक्तस्तुतदोवाच तुष्टःकमलसम्भवः १९ यदाद्वितीयोरूपस्य
विवर्तस्तेभविष्यति। तदातेभविनामृत्युरन्यथानभविष्यति २० इत्युक्तोऽमरतामेने दै
त्यसूनुर्महाबलः। तस्मिन्कालेत्वसंस्मृत्य तद्वधोपायमात्मनः २१ परिहर्तुंदृष्टिपथं
वीरकस्याभवत्तदा। भुजङ्गरूपीरन्ध्रेण प्रविवेशदृशःपथम् २२ परिहृत्यगणेशस्य दान
वोऽसौसुदुर्जयः। अलक्षितोगणेशेन प्रविष्टोऽथपुरान्तकम् २३ भुजङ्गरूपंसन्त्यज्य ब
भूवाथमहासुरः। उमारूपीच्छलयितुं गिरिशंमूढचेतनः २४ कृत्वामायान्ततोरूप मप्रत
र्क्यमनोहरम्। सर्वावयवसंपूर्णं सर्वाभिज्ञानसंवृतम् २५ कृत्वामुखान्तरेदन्तान् दैत्योव
ज्रोपमान्दृढान्। तीक्ष्णाग्रान्बुद्धिमोहेन गिरिशंहन्तुमुद्यतः २६ कृत्वोमारूपसंस्थानं
गतोदैत्योहरान्तिकम्। पापोरम्याकृतिश्चित्रभूषणाम्बरभूषितः २७ तंदृष्ट्वागिरिशस्तुष्ट

कर बदलालेने का उपायकरताभया वह अन्धकका पुत्र आडि नाम दैत्य रणमें देवताओंको जीतकर शिवजीके समीप आताभया वहाँ आकर द्वारपर खड़ेहुए वीरभद्रको देखप्रथम ब्रह्माजीके दियेहुए वरका चिन्तवनकर वहाँ बहुतसातप करताभया तब तपसे प्रसन्नहुए ब्रह्माजी उस आडि दैत्यके समीप आकरबोले कि हे दानव इस तपकरके तू किस बातकी इच्छा करताहै यह सुनकर वह दैत्य बोला कि मैं कभी न मरूं यहवर मांगताहूं ११। १६ ब्रह्माजीने कहा हेदानव मृत्युके बिनातो कोई भी नहींहै इससेतुमे तू किसी कारणसे अपनी मृत्युको मांगले १७ यह सुनकर वहदानव ब्रह्माजीसे बोला कि जबमेरा रूप बदलजावे तभी मेरीमृत्युहो अन्यथा अमरहीरहूं यहसुन ब्रह्माजी प्रसन्नहोकर बोले कि जब तेरा दूसरारूप बदलेगा उसीसमय तेरी मृत्युहोगी १८। २० यहवर पाकर वह दैत्य अपनी आत्माको अमर मानताभया इसके अनन्तर वीरभद्रकी दृष्टिचुरानेके निमित्त सर्पका रूप धारणकर वीरभद्रके बिनादेखे शिवजीके पास जाताभया फिर वह मूढ़चित्तवाला दैत्य शिवजीके छल नेके निमित्त पार्वतीजीकारूप बनालेताभया २१। २४ मायासे मनोहर संपूर्ण अंगोंकी शोभासे युक्त ऐसे रूपको बनाकर मुखमें बड़े २ तीक्ष्ण वज्रके समान दाँतोंको लगाके अपनी बुद्धिके मोह से शिवजीके मारनेका उद्योग करताभया २५। २६ पार्वतीका रूपधारणकर सुन्दर अंगोंमें आभूषण और कृत्रिम वस्त्रोंको पहर शिवजीके समीप जाताभया २७ तब उस महाअसुरको देखकर

स्तदालिङ्गथमहासुरम्। मन्यमानोगिरिसुतां सर्वैरवयवान्तरैः २८ अपृच्छत्साधुतेभा
वो गिरिपुत्रि! नकृत्रिमः। यात्वंमदाशयंज्ञात्वा प्राप्तेहवरवर्णिनि! २९ त्वयाविरहितंशू
न्यं मन्यमानोजगत्त्रयम्। प्राप्ताप्रसन्नवदना युक्तमेवंविधन्त्वयि३० इत्युक्तोदानवेन्द्रस्तु
तदाभाषत्स्मयञ्छनैः। नचाबुध्यदभिज्ञानं प्रायस्त्रिपुरघातिनः ३१ (देव्युवाच) याता
स्म्यहंतपश्चर्तुं वलभ्यायतवातुलम्। रतिश्चतत्रमेनाभूत्ततः प्राप्तात्वदन्तिकम् ३२
इत्युक्तःशङ्करःशङ्कां काञ्चित्प्राप्यावधारयत्। हृदयेनसमाधाय देवःप्रहसिताननः ३३
कुपितामयितन्वङ्गी प्रकृत्याचदृढव्रता। अप्राप्तकामासंप्राप्ता किमेतत्संशयोमम ३४ इ
तिचिन्त्यहरस्तस्य अभिज्ञानंविधारयन्। नापश्यद्वामपार्श्वेतु तदङ्गेपद्मलक्षणम् ३५
लोमावर्तन्तुरचितं ततोदेवःपिनाकधृक्। अबुध्यद्दानवीमाया माकारंगूहयंस्ततः ३६
मेढ्रेवज्रास्त्रमादाय दानवंतमशातयत्। अबुध्यद्वीरकोनैव दानवेन्द्रंनिषूदितम् ३७ हरेण
सूदितंदृष्ट्वास्त्रीरूपंदानवेश्वरम्। अपरिच्छिन्नतत्त्वार्था शैलपुत्र्यैन्यवेदयत् ३८ दूतेनमा
रुतेनाशुगामिनानगदेवता। श्रुत्वावायुमुखाद्देवी क्रोधरक्तविलोचना। अशपद्वीरकंपुत्रं
हृदयेनविदूयता ३९॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेपञ्चपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५५॥

(देव्युवाच) मातरंमांपरित्यज्य यस्मात्त्वंस्नेहविक्लवात्। विहितावसरःस्त्रीणां शङ्कर
स्यरहोविधौ १ तस्मात्तेपुरुषारूक्षा जडाहृदयवर्जितः। गणेशक्षारसदृशी शिलामाता

शिवजी प्रसन्नहोकर पार्वती समझकर यह वचनबोले कि हे पार्वती तेरा स्वभाव अच्छाहै कुछ छल तोनहीं है क्या तू मेरा मनोरथ जानकर मेरे पास आई है तेरे विरहसे मैंने सब जगत् शून्यमान रक्खाहै अब तू मेरे पासआगई यह तैंने बहुत अच्छाकिया २८।३० ऐसे कहाहुआ वहदैत्य हँस कर शिवजीके प्रभावको नहीं जानताहुआ शनैः शनैः यह वचनबोला ३१ अर्थात् वहपार्वतीरूप दैत्य बोला कि मैं तपकरनेके निमित्तगईथी वहाँ तुम्हारे विना मेराचित्त नहींलगा इसकारण तुम्हारे पास आईहूं ३२ ऐसेवचन सुनकर शिवजी कुछेकशंका विचारकर हृदयमें समाधान कर हंसकरबोले ३३ हे तन्वंगि तू मेरे ऊपरक्रोधित होगईथी और दृढ़ विचारकरके चलीथी अब विना प्रयोजन सिद्धकिये हुए कैसे चलीआई यहमुझको सन्देह है ३४ यह कहतेहुए शिवजी उसके लक्षणोंको देखतेभये तब उसकी बाईंपांशूमें कमलका चिह्न नहींपाया ३५ उससमय महादेवजी उसदानवी मायाको जानकर अपने लिंगपर वज्रास्त्रको रखकर उसके संगरमण करके उसको मारतेभये इस प्रकारसे उस मारेहुए दानवको वीरभद्रने नहींजाना और वहपर्वतकी देवतास्त्री उसस्त्री रूपवाले दानवको शिवजीसे माराहुआ देखउस प्रयोजनको अच्छेप्रकारसे विना समझेही वायुको दूतबना करपार्वती के पास भेजतीभई तब पार्वती वायुके द्वारा उस वृत्तान्तको सुन क्रोधसे लाल नेत्र कर बड़े दुःखितहुए हृदयसे वीरभद्रको शाप देतीभई ३६।३९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५५॥

पार्वती कहती हैं हे वीरभद्र तू स्नेह रहितहो मुझमाताको त्यागकर शिवजी के और अन्य स्त्रियों

भविष्यति २ निमित्तमेतद्विख्यातं वीरकस्यशिलोदये। सोऽभवत्प्रक्रमेणैव विचित्रा ख्यानसंश्रयः ३ एवमुत्सृष्टशापाया गिरिपुत्र्यास्त्वनन्तरम्। निर्जगाममुखात्क्रोधः सिंहरूपीमहाबलः ४ सतुसिंहःकरालास्यो जटाजटिलकन्धरः। प्रोद्भूतलम्बलांगूलो दंष्ट्रोत्कटमुखातटः ५ व्यावृत्तास्योल्ललज्जिह्वः क्षामकुक्षिःशिरादिषु। तस्याशुवर्तितुंदेवी व्यवस्यतसतीतदा ६ ज्ञात्वामनोगतंतस्या भगवांश्चतुराननः। आगम्योवाचदेवेशो गिरिजांस्पष्टयागिरा ७ (ब्रह्मोवाच) किंपुत्रि! प्राप्तुकामासि किमलभ्यंददामिते ८ विरम्यतामतिक्लेशात्तपसोऽस्मान्मदाज्ञया। तच्छ्रुत्वोवाचगिरिजा गुरुक्लेशवगर्भितम् ९ वाक्यंवाचाचिरोद्गीर्णवर्णनिर्णीतवाञ्छितम्। (देव्युवाच) तपसादुष्करेणाप्तः पतित्वे शङ्करोमया १० समांश्यामलवर्णेति बहुशःप्रोक्तवान्भवः। स्यामहंकाञ्चनाकारा वाल्लभ्येनचसंयुता ११ भर्तुर्भूतपतेरङ्गमेकतोनिर्विशेऽङ्कवत्। तस्यास्तद्भाषितंश्रुत्वाप्रोवाच कमलासनः १२ एवंभवत्वंभूयश्च भर्तृदेहार्द्धधारिणी। ततस्तरयाजमद्गाङ्गं फुल्लनीलोत्पलत्वचम् १३ त्वचासाचाभवद्दीप्ता घण्टाहस्ताविलोचना। नानाभरणपूर्णाङ्गी पीतकौशेयधारिणी १४ तामब्रवीत्ततोब्रह्मा देवींनीलाम्बुजत्विषम्। निशेभूधरजादेहसम्पर्कात्त्वंममाज्ञया १५ सम्प्राप्ताकृतकृत्यत्वमेकानंशापुराह्यसि। यएषसिंहःप्रोद्भूतो देव्याःक्रोधाद्वरानने! १६ सतेऽस्तुवाहनंदेवि! केतौचास्तुमहाबलः। गच्छविन्ध्याचलंतत्र

के एकान्तसमय में सावधान नहीं रहा इसहेतुसे तेरीमाता रूखीजड़ हृदयसे वर्जित कालीशिलाके समान होजायगी इसप्रकारसे यह वीरभद्रके शिलामें से उदयहोनेका निमित्त होताभया तब वह वीरभद्र विचित्र२ कथाओंको सुनरहाथा और पार्वतीने ऐसा शापदेदिया उससमय पार्वतीके मुखसे सिंहरूप होकर क्रोध निकलताभया १।४ उस विकरालमुख जटाधारी लंबीपूंछयुक्त कराल दाढ़ों समेत मुखफाड़े जिह्वा निकाले और पतलीकटिवाले सिंहको देखकर उसकी वार्त्ताको पार्वती जब चिन्तवन करनेलगी तब उसपार्वती के मनकी वार्त्ताको जानकर ब्रह्माजी आये और बड़ी स्पष्टवाणी से बोले कि हे पुत्री तू क्याचाहतीहै मैं कौनसी अलभ्यवस्तु तुझकोदूं ५।८ तू इस बड़े क्लेशवाले तपको समाप्तकर और मेरीआज्ञाको मानले यह सुनकर पार्वती बहुतदिनके विचारेहुए मनोरथ के वचनको बोली कि मैंने बड़े दुर्लभव्रत और तपोंसे महादेवजीको प्राप्त कियाथा उन्होंने मुझको बहुतबार काली २ ऐसाशब्द कहा सो मैं चाहती हूं कि मेराशरीर कांचन के समान वर्णवाला होजाय जिस्से कि अपनेपति की गोदीमें सुशोभित रहूं यह उसके वचनको सुनकर ब्रह्माजी बोले कि तेराशरीर ऐसाही होजायगा और अपने भर्त्ता के आधेशरीर की धारण करनेवाली भी होजायगी इसके अनन्तर नीलेकमलके समान पार्वती की त्वचा कांचनके वर्ण समान तत्काल होगई और जो उसकी नीलीत्वचा थी वह देवी रात्रीका स्वरूप पीत और कसूमे वस्त्रों से युक्त होकर अलगहोगया तब ब्रह्माजी नीलेकमलके सदृश वर्णवाली उसरात्रीसे बोले हे रात्री तू मेरीआज्ञासे पार्वती के शरीरके स्पर्श करने से कृतकृत्य होगई और हे वरानने इस पार्वती के क्रोधसे जो सिंह निकलाहै

सुरकार्यंकरिष्यसि १७ पञ्चालोनामयक्षोऽयं यक्षलक्षपदानुगः। दत्तस्तेकिङ्करोदेवि! म
यामायाशतैर्युतः १८ इत्युक्ताकौशिकीदेवी विन्ध्यशैलंजगामह। उमापिप्राप्तसङ्कल्पा
जगामगिरिशान्तिकम् १९ प्रविशन्तीतितांद्वारि ह्यपकृष्यसमाहितः। रुरोधवीरकोदे
वीं हेमवेत्रलताधरः २० तामुवाचचकोपेन रूपात्तुव्यभिचारिणीम्। प्रयोजनंनतेऽस्ती
हगच्छयावन्नभेत्स्यसि २१ देव्यारूपधरोदैत्यो देवंवञ्चयितुंत्विह। प्रविष्टोनचदृष्टोऽसौस
वैदेवेनघातितः २२ घातितेचाहमाज्ञप्तो नीलकण्ठेनकोपिना। द्वारेषुनावधानंते यस्मात्
पश्यामिवैततः २३ भविष्यसिनमद्द्वास्थो वर्षपूगान्यनेकशः। अतस्तेऽत्रनदास्यामि
प्रवेशंगम्यतांद्रुतम् २४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेषट्पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५६॥

(वीरक उवाच) एवमुक्तागिरिसुता मातामेस्नेहवत्सला। प्रवेशंलभतेनान्या नारी
कमललोचने! १ इत्युक्तातुतदादेवी चिन्तयामासचेतसा। नसानारीतिदैत्योऽसौ वायु
र्मेयामभाषत २ वृथैववीरकःशप्तो मायाक्रोधपरीतया। अकार्यंक्रियतेमूढैः प्रायःक्रोध
समीरितैः ३ क्रोधेननश्यतेकीर्तिः क्रोधोहन्तिस्थिरांश्रियम्। अपरिच्छिन्नतत्त्वार्था पुत्रं
शापितवत्यहम् ४ विपरीतार्थबुद्धीनां सुलभोविपदोदयः। सञ्चिन्त्यैवमुवाचेदं वीरकंप्र

वही तेरा वाहन होगा और तेरीध्वजामें भी यही सिंह रहैगा तू विन्ध्याचलमें चलीजा वहां जाकर
तू देवताओंके कार्य्योंको करेगी ९। १७ और हेदेवी यहपांचाल नाम यक्ष तेरेनिमित्त अनुचर देताहूं
इस यक्षको हजारों माया आती हैं १८ ऐसे कहीहुई कौशिकी देवी विन्ध्याचलपर्व्वतमें जातीभई
और पार्वती भी अपने मनोरथको सिद्ध करके शिवजी के समीप जाती भई तब उस भीतर जाती
हुई को द्वारपर सावधानहो हाथमें बेतले खड़ा होकर बीरभद्र रोकताभया और व्यभिचारिणी का
रूप जानकर उस्से क्रोधपूर्व्वक बोला कि यहां तेरा कुछप्रयोजन नहीं जोतूनहीं डरतीहै तोचलीजा
यहाँ पार्वतीजीका रूपधरके महादेवके छलने के निमित्त एक दैत्य आयाथा उसको भीतर जातेहुए
मैंने नहीं देखाथा वहशिवजीने मारडाला १९। २२ उसको मारकर मुझसे क्रोधपूर्व्वक कहनेलगे
कि तुम द्वारपर सावधान नहीं रहतेहो इसहेतुसे मैं अबसबकी चौकसी करताहूं सो तुझको भीतर
नहीं जानेदूंगा तू शीघ्रही उलटी चलीजा २३। २४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपट्पंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५६॥

वीरभद्रनेकहा हेकमललोचने मेरीस्नेहकरनेवाली मातानेभी मुझसे यहीआज्ञाकरी है औरकह-
गईहै कि किसी अन्यस्त्रीको भीतरमतजाने देना १ यह सुनकर पार्वती देवी चिन्तवन करने लगी
कि अहो जोवायु मुझसे कहआयाथा वहतो दैत्यथा स्त्री नहींथी मुझक्रोधयुक्तने वीरभद्रको वृथाही
शापदिया विशेषकरके क्रोधसे भरेहुए मूर्ख बुराकार्य्य करडालते हैं २। ३ क्रोधसे कीर्त्ति नष्टहोजाती
है क्रोधसे स्थिर लक्ष्मीकानाश होजाताहै मैंने विनाही विचारेहुए पुत्रको शाप देदिया विपरीति बुद्धि-
वालोंको सहजहीमें विपत्ति प्राप्तहोजाती है ऐसे चिंतवनकरके वह पार्वती लज्जापूर्वकवीरभद्रसे कह

तिशैलजा ५ लज्जासज्जविकारेण वदनेनाम्बुजत्विषा। (देव्युवाच) अहंवीरक! ते माता मातेऽस्तुमनसोभ्रमः ६ शङ्करस्यास्मिदयिता सुतातुहिमभूभृतः। ममगात्रच्छविभ्रान्त्या माशङ्कांपुत्र! भावय ७ तुष्टेनगौरतादत्ता ममेयंपद्मजन्मना। मयाशप्तोऽस्यविदिते वृत्तान्तेदैत्यनिर्मिते ८ ज्ञात्वानारीप्रवेशन्तु शङ्करेरहसिस्थिते। ननिवर्तयितुंशक्यः शापःकिन्तुब्रवीमिते ९ शीघ्रमेष्यसिमानुष्यात् सत्वंकामसमन्वितः। शिरसातुततोवन्द्य मातरंपूर्णमानसः। उवाचार्चितपूर्णेन्दु द्युतिश्चहिमशैलजाम् १० (वीरक उवाच) नतसुरासुरमौलिमिलन्मणि प्रचयकान्तिकरालनखाङ्किते। नगसुते! शरणागतवत्सले! तवनतोऽस्मिनतार्तिविनाशिनि ११ तपनमण्डलमण्डितकन्धरे! पृथुसुवर्णसुवर्णनगद्युते!। विषभुजङ्गनिषंगविभूषिते! गिरिसुते! भवतीमहमाश्रये १२ जगतिकःप्रणताभिमतन्ददौ झटितिसिद्धनुतेभवतीयथा। जगतिकाञ्चनवाञ्छतिशङ्करो भुवनधृतनये! भवतीं यथा १३ विमलयोगविनिर्मितदुर्जय स्वतनुतुल्यमहेश्वरमण्डले!। विदलितान्धकबान्धवसंहतिः सुरवरैःप्रथमन्त्वमभिष्टुता १४ सितसटापटलोद्धतकन्धरा भरमहामृगराजरथास्थिता। विमलशक्तिमुखानलपिंगलायतभुजौघविपिष्टमहासुरा १५ निगदिताभुवनैरितिचण्डिकाजननि! शुम्भनिशुम्भनिषूदनी। प्रणतचिन्तितदानवदानवप्रमथनैकरतिस्तरसाभुवि १६ वियतिवायुपथेज्वलनोज्ज्वलेऽवनितलेतवदेवि! चयद्वपुः। तदजितेऽप्रतिमे प्रणमाम्यहंभुवनभाविनि! तेभववल्लभे १७ जलधयोललितोद्धतवीचयो हुतवहद्युतयश्च

नेलगी४।५हेवीरभद्रमें तेरीमाताहूं तूचित्तमें सन्देहमतकरे मैंशिवजीकीप्यारीस्त्रीहूं हिमाचलकी पुत्री हूं हेपुत्रमेरे शरीरकीकान्तिकरके तूशंकामतकरे मुझको ब्रह्माजीने प्रसन्नहोकर गौरवर्ण देदियाहै हेपुत्र उस दैत्यके वृत्तान्तसे मैंने तुझको विना समझेहुए शापदेदियाहै वहतोदूरनहीं होसकेगा परन्तुयह कहेदेतीहूंकि तुम मनुष्यके प्रभावसे शापसे निवृत्तहोकर शीघ्रही आओगे इसके पीछे वीरभद्र पूर्ण चन्द्रमाके समान कान्तिवाली अपनी माता पार्वतीको शिरसे प्रणामकर स्तुतिकरनेलगा ६।१० वीरभद्र कहताहै हे शरणागतवत्सले देवता दैत्योंके प्रणाम करतेहुए मुकुटोंकी मणियोंसे शोभित चरणारविन्दवाली मैं तुझको प्रणामकरताहूं ११ हेसूर्य्य मंडलके समान शोभित शिरवाली सुवर्ण के पर्व्वतके समान कान्तिवाली सर्पाकार टेढ़ीभृकुटियोंवाली ऐसी जो आपहैं उनकेही मैं आश्रयहूं हे पार्वती प्रणामकरते हुएको जैसे तुमशीघ्रही वरदेतीहो ऐसादूसरावर देनेवाला तेरे सिवाय कौनहै और शिवजीभी तेरेबिना जगत्में किसीकी इच्छानहीं करतेहैं १२।१३ हेनिर्मल योगकेद्वारा अपने शरीरको महादेवजीके शरीरमंडलके समान करनेवाली और दैत्योंकानाश करनेवाली तुझको सब देवतालोगभी शिरसे प्रणामकरतेहैं हेजननी तुमश्वेतकेश और बड़े मुखवाले सिंहपर सवारी करके अपनी निर्मल शक्तिसे जब असुरोंको मारतीहो तब संसार तुमको चंडिका कहताहै तुमही शुंभ निशुंभको मारती और भक्तजनोंके मनोरथोंको सिद्ध करतीहो १४।१६ हेदेवि आकाशमें वायुके मार्गमें जलतीहुई अग्निमें और पृथ्वीतलमें जोतेरारूपहै उसको मैं नमस्कार करताहूं और अ-

चराचरम्। फणसहस्रभृतश्च भुजङ्गमास्त्वदभिधास्यतिमय्यभयङ्कराः १८ भगवति! स्थि
रभक्तजनाश्रये! प्रतिगतोभवतीचरणाश्रयम्। करणजातमिहास्तुममाचलन्नुतिलवाप्ति
फलाशयहेतुतः। प्रशममेहिममात्मजवत्सले! नमोऽस्तुतेदेवि! जगत्त्रयाश्रये! १९ (सूत
उवाच) प्रसन्नातुततोदेवीवीरकस्येतिसंस्तुता। प्रविवेशशुभंभर्तुर्भवनंभूधरात्मजा २०
द्वारस्थोवीरकोदेवान् हरदर्शनकांक्षिणः। व्यसर्जयत्स्वकान्येव गृहाण्यादरपूर्वकः २१
नास्त्यत्रावसरोदेवा देव्यामहद्वृषाकपिः। निभृतःक्रीडतीत्युक्ता ययुस्तेचयथागतम् २२
गतेवर्षसहस्रेतुदेवास्त्वरितमानसः। ज्वलनंचोदयामासुर्ज्ञातुं शङ्करचेष्टितम् २३ प्रवि
श्यजालरन्ध्रेण शुकरूपीहुताशनः। ददृशेशयनेशर्वंरतं गिरिजयासह २४ ददृशेतञ्च
देवेशोहुताशंशुकरूपिणम्। तमुवाचमहादेवः किञ्चित्कोपसमन्वितः २५ यस्मात्तुत्वत्
कृतोविघ्नस्तस्मात्त्वय्युपपद्यते। इत्युक्तःप्राञ्जलिर्वह्नि रपिबद्वीर्यमाहितम् २६ तेनापूर्य
ततान्देवांस्तत्तत्कायविभेदतः। विपाट्यजठरन्तेषां वीर्यमाहेश्वरन्ततः २७ निष्क्रान्तं
तप्तहेमाभं विततेशङ्कराश्रमे। तस्मिन्सरोमहज्जातं विमलंबहुयोजनम् २८ प्रोत्फुल्ल
हेमकमलं नानाविहगनादितम्। तच्छ्रुत्वातुततोदेवी हेमद्रुममहाजलम् २९ तत्रकृत्वा
जलक्रीड़ां तदब्जकृतशेखरा। उपविष्टाततस्तस्यतीरे देवीसखीयुता ३० पातुकामाच
तत्तोयं स्वादुनिर्मलपङ्कजम्। अपश्यन्कृत्तिकाःस्नाताःषडर्कद्युतिसन्निभम् ३१ पद्मपत्रे

लिततरंगोंवाले समुद्र अग्नि और हजारों सर्प यह सवतेरे प्रभावसे मुझको भयनहीं देसक्ते हैं मैं आपके चरणोंके आश्रय होगयाहूं अब किसी फलकी इच्छानहीं करताहूं हे देवि मुझपर शान्तहोकर कृपाकरो मैं आपको प्रणामकरताहूं १७।१९ सूतजी कहतेहैं जबवीरभद्रने इस प्रकारसे स्तुतिकरी तब प्रसन्नहोकर पार्वतीजी अपने पति शिवजीके मंदिरमें प्रवेशकरतीभईं २० फिर द्वारपर खड़ाहुआवीरभद्र शिवजीके दर्शनकरनेकेलिये आयेहुए देवताओंको अपने२ घरोंको भेजताभया यहकहने लगा हे देवताओ अबदर्शन करनेका अवसरनहींहै शिवजी पार्वतीके संगरमण कररहेहैं ऐसेवचनों को सुनकर देवता स्थानोंको चलेगये २१।२२ जबहज़ारवर्ष व्यतीतहोचुके तब देवता शीघ्रताकरके शिवजीके समाचारलेने के निमित्त अग्नि देवताको भेजतेभये २३ अग्नितोतेका रूपधारण करके स्थानके किसी छिद्रके द्वारा स्थान में प्रवेशकरके पार्वतीके संग रमण करतेहुए महादेवजीको देखताभया तबकुछेक क्रोधकरके महादेवजी उस तोतेसेबोले कि तेरा कियाहुआ यहविघ्नहै इसलिये यह विघ्नतुझीमें प्राप्तहोगा ऐसाकहाहुआ अग्नि अंजली बाँधकर महादेवजीके वीर्य्यको पीताभया २४।२६ फिर उस वीर्य्यसेतृप्तहुआ अग्नि देवताओंको तृप्त करताभया उस समय वह शिवजीका वीर्य्य उन देवताओंके उदरको फाड़कर बाहरनिकलताभया और शिवजी के आश्रमकेसमीप प्राप्त होताभया वहाँ एकसरोवर बनगया बड़ास्वच्छ और बहुत योजन विस्तृत सुवर्णकीसी कान्तिवाला फूलेहुए कमलोंसे शोभित उस सरोवरको सुनकर पार्वती देवी सखियों से युक्तहो उसके जलमें क्रीड़ाकरतीहुई तीरपर स्थितहो गए और उसजलके पीनेकीभी इच्छाकरी उस समयस्नान करती

नुतहारिगृहीत्वोपस्थिताग्रहम्। हर्षादुवाचपश्यामि पद्मपत्रेस्थितंपयः ३२ ततस्ताऊ
चुरखिलंकृत्तिकाहिमशैलजम्। (कृत्तिका ऊचुः) दास्यामोयदिते गर्भःसम्भूतोयोम्
विष्यति ३३ सोऽस्माकमपिपुत्रः स्यादस्मन्नाम्नाचवर्ततााम्। भवेल्लोकेषुविख्यातः सर्व
ष्वपिशुभानने! ३४ इत्युक्तोवाचगिरिजा कथंमद्गात्रसम्भवः। सर्वैरवयवैर्युक्तोभवतीभ्यः
सुतोभवेत् ३५ ततस्तांकृत्तिकाऊचु विधास्यामोऽस्यवैवयम्। उत्तमान्युत्तमाङ्गानि यद्वे
वन्तुभविष्यति ३६ उक्तावैशैलजाप्राह भवत्वेवमनिन्दिताः। ततस्ताहर्षसम्पूर्णाः पद्म
पत्रस्थितंपयः ३७ तस्यैददुस्तयाचापि तत्पीतंक्रमशोजलम्। पीतेतुसलिलेतस्मिंस्त
नस्तस्मिन्सरोवरे ३८ विपाट्यदेव्याश्चततो दक्षिणंकुक्षिमुद्गतः। निश्चक्रामाद्भुतोबा
लः सर्वलोकविभासकः ३९ प्रभाकरप्रभाकारः प्रकाशकनकप्रभः। गृहीतनिर्मलोदग्र
शक्तिशूल षडाननः ४० दीप्तोमारयितुंदैत्यान् कुत्सितान्कनकच्छविः। एतस्मात्कार
णाद्देवः कुमारश्चापिसोऽभवत् ४१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्तपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५७॥

(सूत उवाच) वामंविदार्यनिष्क्रान्तः सुतोदेव्याःपुनःशिशुः। स्कन्दाद्ववदनेवह्नेः
शुक्रात्सुवदनोऽरिहा १ कृत्तिकामेलनादेव शाखाभिःसविशेषतः। शाखाभिधाःसमाख्या
ताः षट्सुव क्त्रेषुविस्तृताः २ यतस्ततोविशाखोऽसौ ख्यातोलोकेषुषण्मुखः। स्कन्दोवि

हुई कृत्तिकाभी छः १ सूर्य्योंके समान उस जलको देखती भई तबपार्वती कमलके पत्तेपर स्थितहुए
उस जलको ग्रहण करके आनन्दसेबोली कि कमल पत्रपर स्थितहुए इस जलको मेंदेखतीहूं २७।
३२ऐसे पार्वतीके वचनको सुनकर कृत्तिका पार्वतीसे बोली कि हेशुभानने इसजलसे जोतुम्हारे गर्भ
रहजावे तो वहहमारे नामसे प्रसिद्ध हमाराही पुत्रसंसारमें प्रसिद्ध होवे ऐसीप्रतिज्ञाकरे तो हम
इसजलको देवें यहसुनकर पार्वतीजी बोलीकिमेरे अवयवों से युक्तहुआबालक तुम्हारापुत्र होवेगा
३३।३५ जब पार्वतीने यह वचनकहा तब कृत्तिकाबोली कि हमइसके उत्तम २ अंगोंका विधानकर
देवेंगी यहबात सुनकर पार्वतीजीने कहाकि अच्छा इसी प्रकारहोजायगा तब वह कृत्तिकाप्रसन्नहो
कर उसजलको पार्वतीके निमित्त देतीभई तब पार्वतीनेभी वहजल पीलिया इसके अनन्तर उन
जलकागर्भ पार्वतीकी दाहिनी कोखको फाड़कर बाहर निकला और उसमें से सबलोकोंको प्रका
शितकरने वाला अद्भुत बालकनिकला सूर्य्यके समानतेजस्वी कंचनके समान देदीप्य शक्ति और
शूलको ग्रहणकियेहुए छः मुखवाला वह अद्भुतबालकहोताभया सुवर्ण कीसी कान्ति वाला वह
बालकदुष्ट दैत्योंका मारनेवालाहोताभया इस प्रकारसे स्वामिकार्त्तिककी उत्पत्तिहुईहै ३६।४१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तपंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५७॥

सूतजी बोले इसके अनन्तर अग्निके वीर्य्यके प्रभावसे पार्वती देवीके बायेंकन्धेको फाड़के दूसरा
बालक निकला तब कृत्तिकाने उन दोनों बालकोंको संधि और शाखाओंमें मिलादिया तभीसे इस
के नाम विशाख, षण्मुख, स्कन्द, और कार्त्तिकेय आदिक संसारमें प्रसिद्ध होतेभये चैत्रशुक्लापंचमी

शाखःषड्वक्त्रोकार्त्तिकेयश्चविश्रुतः ३ चैत्रस्यबहुलेपक्षे पञ्चदश्यांमहाबलौ। संभूतावर्क सदृशौ विशालेशरकानने ४ चैत्रस्यैवसितेपक्षे पञ्चम्यांपाकशासनः। बालकाभ्याञ्चका रैकं मत्वाचामरभूतये ५ तस्यामेवततःषष्ठ्यामभिषिक्तोगुहःप्रभुः। सर्वैरमरसङ्घातैर्ब्रह्मे न्द्रोपेन्द्रभास्करैः ६ गन्धमाल्यैःशुभैर्धूपैस्तथाक्रीडनकैरपि। छत्रैश्चामरजालैश्च भूषणै श्चविलेपनैः ७ अभ्यर्चितोविधानेन यथावत्षण्मुखःप्रभुः। सुतामस्मैददौशक्रो देव सेनेतिविश्रुताम् ८ पत्न्यर्थंदेवदेवस्य ददौविष्णुस्तदायुधान्। यक्षाणांदशलक्षाणि ददावस्मैधनाधिपः ९ ददौहुताशनस्तेजो ददौवायुश्चवाहनम्। ददौक्रीडनकन्त्वष्टा कु क्कुटंकामरूपिणम् १० एवंसुरास्तुतेसर्वे परिवारमनुत्तमम्। ददुर्मुदितचेतस्काः स्कन्दा यादित्यवर्चसे ११ जानुभ्यामवनौस्थित्वा सुरसङ्घास्तमस्तुवन्। स्तोत्रेणानेनवरदं षण्मु खंमुख्यशःसुराः १२ (देवा ऊचुः) नमःकुमारायमहाप्रभाय स्कन्दायचस्कन्दितदान वाय। नवार्कविद्युद्द्युतयेनमोऽस्तु नमोस्तुतेषण्मुखकामरूप! १३ पिनद्धनानाभरणा यभर्त्रे नमोरणेदारुणदारुणाय। नमोऽस्तुतेऽर्कप्रतिमप्रभाय नमोऽस्तुगुह्यायगुहायतु भ्यम् १४ नमोऽस्तुत्रैलोक्यभयापहाय नमोऽस्तुतेबाल! कृपापराय। नमोविशालामल लोचनाय नमोविशाखायमहाव्रताय १५ नमोनमस्तेऽस्तुमनोहराय नमोनमस्तेऽस्तुर णोत्कटाय। नमोमयूरोज्ज्वलवाहनाय नमोऽस्तुकेयूरवरायतुभ्यम् १६ नमोधृतोदग्रप ताकिनेनमो नमःप्रभावप्रणतायतेऽस्तु। नमोनमस्तेवरवीर्यशालिने क्रियापराणांभवभ व्यमूर्तये १७ क्रियापरायज्ञपतिश्चस्तुत्वा विरेमुरेवत्वमराधिपाद्याः। एवंतदाषड्वदनन्तु

के दिन शरोंके वनमें सूर्य्यके समान कान्तिवाले दो बालक उत्पन्न हुए उसी पंचमीके दिन उन दोनों बालकोंको एककरदिया और उसीमहीने की षष्ठीको ब्रह्मा इन्द्र और सूर्य इत्यादिकदेवताओं ने स्वामिकार्त्तिक का अभिषेक करदिया ११६ फिर गन्ध, पुष्प, सुगन्धितधूप, छत्र, चमर और आभू षण आदिकोंसे पूजित कियेहुए इस स्वामिकार्त्तिकके निमित्त इन्द्र विधिपूर्व्वक देवसेना नाम अपनी पुत्रीको विवाह देताभया विष्णुभगवान्ने उसको शस्त्रदिये कुबेर दशलाख यक्ष देताभया अग्नि अपने तेजको देताभया वायु वाहन देताभया त्वष्टादेवता कामस्वरूपी मुरगा उसके खेलनेको देता भया ७।१० इस प्रकारसे सब देवता लोग स्वामिकार्त्तिक के निमित्त बहुत प्रसन्न होकर भेटें देते भये और पृथ्वीमें घोंटू नवाकर इस आगे लिखे हुए स्तोत्रसे स्तुति करतेभये ११।१२ देवाऊचुः देवता कहते हैं कि हेमहाकान्तिवाले नवीन सूर्य्य के समान कान्तिवाले षण्मुख आपके अर्थ नम- स्कार है १३ अनेक प्रकारके आभूषण धारण करनेवाले रणमें भयकारी और गुह्य और गुह अर्थात् रक्षक ऐसे आपके अर्थ नमस्कारहै १४ हेत्रिलोकीके भयनाशक बालकोंपर दयाकरने वाले विशाल और स्वच्छ नेत्रोंवाले महाव्रत युक्त आपको नमस्कार है १५ मनके हरने वाले सुन्दर रणमें भया- नक मयूरकी सवारी करनेवाले ऐसे आपको नमस्कार है १६ ऊंची ध्वजा रखनेवाले वरदानियों

सेन्द्रा मुदासुतुष्टश्चगुहस्ततस्तान्। निरीक्ष्यनेत्रैरमरैःसुरेशान् शत्रून्हनिष्यामिगतज्व
राःस्थ १८ (कुमार उवाच) कंवःकामंप्रयच्छामि देवता! व्रूतनिर्वृताः। यद्यप्यसाध्यं
हृद्यंवो हृदयेचिन्तितम्परम् १९ इत्युक्तास्तुसुरास्तेनस्तुत्वाप्रणतमौलयः। सर्वएवमहा
त्मानं गुहंतद्गतमानसाः २० दैत्येन्द्रस्तारकोनाम सर्वामरकुलान्तकृत्। बलवान्दुर्जयो
दुष्टो दुराचारोऽतिकोपनः २१ तमेवजहिहृद्योऽर्थ एषोऽस्माकंभयापह!। एवमुक्तस्तथे
त्युक्त्वा सर्वामरपदानुगः २२ जगामजगतांनाथ स्तूयमानोऽमरेश्वरैः। तारकस्यवधा
र्थाय जगतःकण्टकस्यवै २३ ततश्चप्रेषयामास शक्रोलब्धसमाश्रयः। दूतंदानवसिंह
स्य परुषाक्षरवादिनम् २४ सतुगत्वाब्रवीद्दैत्यं निर्भयोभीमदर्शनः। (दूत उवाच) श
क्रस्त्वामाहदेवेशो दैत्यकेतो!दिवस्पतिः २५ तारकासुर! तच्छ्रुत्वा घटशक्त्यायथेच्छ
या। यज्जगद्दलनादात्तं किल्बिषंदानव! त्वया २६ तस्याहंशासकस्तेऽद्य राजास्मिभु
वनत्रये। श्रुत्वैतद्दूतवचनं कोपसंरक्तलोचनः २७ उवाचदूतंदुष्टात्मा नष्टप्रायविभू
तिकः। (तारक उवाच) दृष्टंतेपौरुषंशक्र! रणेषुशतशोमया २८ निस्त्रपत्वान्नतेलज्जा
विद्यतेशक्र! दुर्मते!। एवमुक्तेगतेदूते चिन्तयामासदानवः २९ नालब्धसंश्रयःशक्रो
वक्तुमेवंहिचार्हति। जितःसशक्रोनोऽकस्माज्जायतेसंश्रयाश्रयः ३० निमित्तानिचदुष्टा

में श्रेष्ठ उत्तम क्रियावानोंके कार्य्योंके सिद्धकरने वाले आपके अर्थनमस्कार है १७ इस रीतिसे जब इन्द्रादिक देवता स्वामिकार्तिककी स्तुति करतेभये तब स्वामिकार्त्तिकजी देवताओंको अपने नेत्रोंसे देखकर बोले कि हे देवता लोगो मैं तुम्हारे शत्रुओं को मारूंगा तुम किसी बातका भी भयमत करो १८ और हे देवता लोगो तुम यहभी कहो कि तुम्हारे कौनसे मनोरथको करूं जो तुम्हारे हृदय में कोई असाध्य भी कार्य्यहोगा उसको भी मैं करूंगा ऐसे कहेहुए देवता अपने२ मस्तकोंको नवा: कर उन महात्मा स्वामिकार्त्तिकजीसे बोले १९।२० हेषडाननजी तारकासुरनाम दानवने सब देव-ताओंका नाश करदिया है वह दैत्य बड़ा बलवान् और दुर्जय है दुष्ट है और अत्यन्त क्रोध करने वालाहै उसको आप मारिये वही हम सबको महाभयकारी है यह वचन सुनकर स्वामिकार्त्तिकजी उसीसमय सबदेवताओंकेसंग गमनकरतेभये और तारकासुरदैत्यकेवधका उपायकरतेभये २१।२२ इसके अनन्तर इन्द्रने तारकासुरकेपास कठोर वचन कहनेवाले अपने दूतको भेजा वहदूत निर्भय होकर उस दैत्यके पास जाकर कहनेलगा किहे तारकासुर इन्द्रने तुमसे कहाहै कि मैं स्वर्गका प-तिहूं और हे दैत्य मैं उसीका दूतहूं जो उसने कहाथा सो तुमसे कहदिया है इसके विशेष इन्द्र ने यहभी कहाहै कि मैंही त्रिलोकीकाराजाहूं इस वचनको सुनकर वहदानव क्रोधसे रक्त नेत्रकरके इन्द्रके दूतसे यह वचन कहने लगा कि हे दूत तू इन्द्रसे कहदीजो कि मैंने तेरा पराक्रम रणमें सैक-ड़ों बार देखाहै २४। २८ हे दुर्मतिवाले इन्द्र तुझको लज्जा नहीं है यह वचन जब दैत्यके सुने त-ब दूत चलाआया फिर तारकासुर दैत्य चिन्तवनकरने लगा कि वह इन्द्र किसी के आश्रयलिये विना ऐसे कहनेको समर्थ नहीं है क्योंकि मैंने उसको युद्धमें कई बार जीतलिया है २९। ३० फिर वह

नि सोऽपश्यद्दुष्टचेष्टितः। पांसुवर्षमसृक्पातं गगनादवनीतले ३१ भुजनेत्रप्रकम्पंच
वक्त्रशोषमनोभ्रमम्। स्वकान्तावक्त्रपद्मानां म्लानताञ्चव्यलोकयत् ३२ दुष्टांश्चप्राणि
नोरौद्रान्सोऽपश्यद्दुष्टवेदिनः। तदचिन्त्यैवदितिजोन्यस्तच्चिन्तोऽभवत्क्षणात् ३३
यावद्गजघटाघण्टा रणत्काररवोत्कटाम्। तद्वत्तुरगसंघातक्षुण्णभूरेणुपिञ्जराम् ३४ च
ञ्चलस्यन्दनोदग्र ध्वजराजिविराजिताम्। विमानैश्चाद्भुताकारैश्चलितामरचामरैः ३५
तांभूषणनिबद्धाश्च किन्नरोद्गीतनादिताम्। नानानाकतरूत्फुल्ल कुसुमापीडधारिणीम् ३६
विकोशास्त्रपरिष्कारां वर्म्मनिर्म्मलदर्शनाम्। वन्युद्घुष्टस्तुतिरवां नानावाद्यनिनादि
ताम् ३७ सेनांनाकसदांदैत्यः प्रासादस्थोव्यलोकयत्। चिन्तयामाससतदा किञ्चिदुद्
भ्रान्तमानसः ३८ अपूर्वःकोभवेद्योद्धा योमयानविनिर्जितः। ततश्चिन्ताकुलोदैत्यः शु
श्रावकटुकाक्षरम् ३९ सिद्धवन्दिभिरुद्घुष्ट मिदंहृदयदारणम्। अथगाथा। जयअतु
लशक्तिदीधितिपिञ्जर! भुजदण्डचण्डरणरभस!! सुखद! कुमुदकाननविकासनेन्दो!
कुमार! जयदितिजकुलमहोदधिवडवानल ४० षण्मुख! मधुररवमयूररथ! सुरमुकुट
कोटिघट्टित चरणनखांकुरमहासन!! जयललितचूडाकलापनवविमलदल! कमलका
न्त! दैत्यवंशदुःसहदानवानल! ४१ जय विशाख! विभो! जयसकललोकतारक! स्क
न्द! जयगौरीनन्दन! घण्टाप्रिय!! प्रिय! विशाख! विभो! धृतपताकप्रकीर्णपटल!
कनकभूषणभासुरदिनकरच्छाय! ४२ जय जनितसंभ्रमलीलालूनाखिलाराते! जयसक
ललोकतारक! दितिजासुरवरतारकान्तक!! स्कन्द! जय बाल! सप्तवासर! जय भुव

तारकासुर दैत्य इन विपरीत लक्षणोंको देखताभया कि धूलिकी वर्षा, आकाशसे पृथ्वीमें रक्त गिर
ना, वामनेत्रका फड़कना, मुखकासूखना, चित्तभ्रमहोना, अपनी स्त्रियोंके कमल समान मुखों को
मालिन देखना भयंकर प्राणी देखना इत्यादि लक्षणोंको देखकर तारकासुर चिन्ताकरने लगा और
इसी चिन्ताके करतेही घंटोंसे युक्त चिंघाड़तेहुए हाथियोंसमेत कालीदीखतीभई फिर चंचल ध्वजा-
वाले रथोंसे और चमरोंसेशोभित अनेक विमानोंवाली किन्नरोंके गानयुक्त अनेकप्रकारके स्वर्गकेपुष्पों
को धारण किये हुए उत्तम अस्त्र और कवचोंको पहरेहुए अनेक प्रकारके बाजोंवाली ऐसी देवता-
ओंकी सेनाको वह दैत्य अपने स्थानके ऊपर स्थितहोकर देखताभया फिर कुछ भ्रमकरके चिन्ता
करके ऐसा विचार करनेलगा कि ऐसा अपूर्व योद्धा कौनहै जिसको कि मैंने पूर्व्वनहीं हरायाहै इ-
सके पीछे वह दैत्य इसकठोर वचनको भी सुनताभया ३१। ३९ अर्थात् देवताओंके वन्दीजनोंके
मुखसे ऐसे वचन सुने कि हे सुख देनेवाले चन्द्रमाके समान कान्तिवाले कुमार हे दैत्य कुलके नाश
करनेमें अग्निके समान षण्मुख हे मधुर शब्द करनेवाले मयूरके रथवाले स्वामिकार्तिक आपके च-
रणोंके नख देवताओंके मुकुटों से घिसे जाते हैं हे विशाख हे सकल लोकतारक तुम्हारी जय होय
हे स्कन्द हे गौरीनन्दन हे घंटाप्रिय हे विभो हे सुवर्ण भूषणधारी जय करो हे स्कन्द हे बाल हे स-

नावलिशोकविनाशन!४३॥इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५८॥
(सूत उवाच) श्रुत्वैतत्तारकःसर्वमुद्घुष्टंदेववन्दिभिः। सस्मारब्रह्मणोवाक्यं वधं
वालादुपस्थितम् १ स्मृत्वाधर्मंह्यवमोङ्गः पदातिरपदानुगः। मन्दिरान्निर्जगामाशु शोक
ग्रस्तेनचेतसा २ कालनेमिमुखादैत्याः संरम्भाद्भ्रान्तचेतसः। योधा! धावतगृह्णीत
योजयध्वंवरूथिनीम् ३ कुमारंतारकोदृष्ट्वा वभाषेभीषणाकृतिः। किं वाल! योद्धुकामोऽ
सि क्रीडकन्दुकलीलया ४ त्वयानदानवादृष्टा यत्सङ्गरविभीषकाः। वालत्वादथवाबुद्धि
रेवं स्वल्पार्थदर्शिनी ५ कुमारोऽपितमग्रम्यं वभाषेहर्षयन्सुरान्। शृणुतारक! शास्त्रार्थ
स्तवचैवनिरूप्यते ६ शास्त्रैरर्थोनदृश्यन्ते समयेनिर्भयेभटैः। शिशुत्वंमावमंस्थामे शि
शुःकालभुजङ्गमः ७ दुष्प्रेक्ष्योभास्करोवाल स्तथाहंदुर्जयःशिशुः। अल्पाक्षरोनमन्त्रःकिं
मुस्फुरोदैत्य! दृश्यते ८ कुमारेप्रोक्तवत्येवं दैत्यश्चिक्षेपमुद्गरम्। कुमारस्तंनिरस्याथ व
ज्रेणामोघवर्चसा ९ ततश्चिक्षेपदैत्येन्द्रो भिन्दिपालमयोमयम्। करेणतज्जग्राह कार्ति
केयोऽमरारिहा १० गदांमुमोचदैत्याय षण्मुखोऽपिखरस्वनाम्। तयाहतस्ततोदैत्यश्च
कम्पेऽचलराडिव ११ मेनेचदुर्जयंदैत्य स्तदाषड्वदनंरणे। चिन्तयामासबुद्ध्यावै प्राप्तः
कालोनसंशयः १२ कुपितन्तुतमालोक्य कालनेमिपुरोगमाः। सर्वेदैत्येश्वराजघ्नुः कुमा

नवातर हे त्रिभुवन शोक विनाशी तुमजय करो ४० । ४३ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्ट
पंचाशदधिकशततमोऽध्यायः १५८ ॥

सूतजीबोले कि इससब वृत्तान्तको तारकासुर सुनकर ब्रह्माजीके कहेहुए वालकके हाथसे अपने ब-
धहोनेको स्मरण करताभया १ फिर पैदल दैत्योंको साथ लेकर शोकसे दुःखितहो अपनेस्थानसे बा-
हर निकलताभया तब कालनेमिआदि दैत्य वेगकरके अपनीसेनाको साथलिये भगकर रणमें प्राप्त
भये २ । ३ वह तारकासुर दैत्य स्वामिकार्तिकको देखकर बोला हे वालक तू क्या युद्ध करनेकी
इच्छा करता है मुझसे गेंद लीला खेलेगा तैंने कभी भयंकर दानव नहींदेखे हैं क्या तू वालकहै इस
हेतुसे तेरी बुद्धि थोड़ी है ४ । ५ यहसुनकर वह कुमार भी देवताओंको प्रसन्न करताहुआ बोला कि
हे तारकासुर तेरे शास्त्रार्थको पीछेसे कहूंगा ६ ऐसे अनिर्भय समय में पंडित लोगोंको शास्त्रोंके अ-
र्थ नहीं विचारने चाहिये तू मुझको वालकमत जाने में काले सर्पका वालकहूं दुष्प्रेक्ष्य और दुर्जयहूं
हे दैत्य क्या अल्पअक्षरोंवाला मंत्रफल नहींदेता है ७ । ८ इस प्रकारसे जब कुमार कहचुका उसी
समय दैत्यने अपने मुद्गरको उसकेऊपरछोड़ा तब कुमारस्वामिकार्त्तिकने अपने वज्रसे उस मुद्गर
का नाश करदिया ९ इसके अनन्तर वह दैत्य गोफिया यंत्र में लोहेके गोलेको डालकर स्वामिका-
र्तिकके मारताभया उस गोलेको स्वामिकार्तिक अपने हाथमेंही ग्रहण करतेभये और तारकासुरदै-
त्यके अपनी गदा मारतेभये उस गदाके लगतेही तारकासुर कांपनेलगा और स्वामिकार्तिकको र-
णमें दुर्जयमानताभया फिर अपनी बुद्धिसे चिन्तवन करनेलगा कि अबमेरा काल आगया है तब
क्रोधहुए स्वामिकार्तिकको देखकर कालनेमि आदिक दैत्य स्वामिकार्तिकको अपने शस्त्रों से प्रहार

रंरणदारुणम् १३ सतैःप्रहारैरस्पृष्टो वृथाक्लेशोमहाद्युतिः। रणशौण्डास्तुदैत्येन्द्राः पुनः प्रासैःशिलीमुखैः १४ कुमारंसामरञ्जघ्नुर्बलिनोदेवकण्टकाः। कुमारस्यव्यथानाभूद्दैत्यास्त्रनिहतस्यतु १५ प्राणान्तकरणोजातो देवानांदानवाहवः। देवान्निपीडितान्दृष्ट्वाकुमारः कोपमाविशत् १६ ततोऽस्त्रैर्वारयामास दानवानामनीकिनीम्। तैरस्त्रैर्निष्प्रतीकारैस्ताडिताःसुरकण्टकाः १७ कालनेमिमुखाःसर्वेरणादासन्पराङ्मुखाः। विद्रुतेष्वथदैत्येषुहतेषुच समन्ततः १८ ततःक्रुद्धोमहादैत्यस्तारकोऽसुरनायकः। जग्राहचगदांदिव्यांहेमजालपरिष्कृताम् १९ जघ्नेकुमारंगदयानिष्टप्तकनकाङ्गदः। शरैर्मयूरंचित्रैश्च चकारविमुखंरणे २० दृष्ट्वापराङ्मुखंदेवोमुक्तरक्तंस्ववाहनम्। जग्राहशक्तिंविमलां रणेकनकभूषणाम् २१ बाहुनाहेमकेयूररुचिरेणषडाननः। ततोजवान्महासेनस्तारकंदानवाधिपम् २२ तिष्ठतिष्ठसुदुर्बुद्धे! जीवलोकंविलोकय। हतोऽस्यद्यमयाशक्त्या स्मरशस्त्रंसुशिक्षितम् २३ इत्युक्त्वाचततःशक्तिं मुमोचदितिजम्प्रति। सकुमारभुजोत्सृष्टा तत्केयूररवानुगा २४ बिभेददैत्यहृदयं वज्रशैलेन्द्रकर्कशम्। गतासुःसपपातोर्व्यां प्रलयेभूधरोयथा २५ विकीर्णमुकुटोष्णीषो विस्रस्ताखिलभूषणः। तस्मिन्विनिहतेदैत्ये त्रिदशानांमहोत्सवे २६ नाभूत्कश्चित्तदादुःखी नरकेष्वपिपापकृत्। स्तुवन्तःषण्मुखंदेवाः क्रीडन्तश्चाङ्गनायुताः २७ जग्मुःस्वानेवभवनान् भूरिधामानउत्सुकाः। ददृशुश्चापिवरंसर्वे देवाःस्कन्दमुखप्रति २८ तुष्टाःसंप्राप्तसर्वेच्छाः सहसिद्धैस्तपोधनैः। (देवा ऊचुः) यःपठेत्स्कन्दसंस्तव

करनेलगे १०। १३ उन प्रहारों से स्वामिकार्तिक कुछभी पीड़ितनहींहुए फिर रणमें प्रवीणहुए दैत्य स्वामिकार्तिकको बाणों से बींधतेभये उनबाणों से भी स्वामिकार्तिकको पीड़ानहींहुई वह दैत्यों का युद्ध देवताओं के प्राणोंका नाशकरनेवाला हुआ जब पीड़ितहुए देवताओंको देखकर स्वामिकार्तिक क्रोधकरके अपने शस्त्रोंसे दानवोंकी सेनाको पीड़ित करतेभये तब उन अस्त्रोंसे पीड़ितहुए कालनेमिआदिक दैत्य रणसे मुखोंको फेरकर भागगये उस समय तारकासुर दैत्य क्रोधकरके सुवर्ण की जाली से शोभितहोंहुई गदाको ग्रहण करके आया १४। १९ और उस गदा से स्वामिकार्तिक को पीड़ादेने लगा और उनके वाहन मयूरको बाणोंकी मारसे रणसे विमुखकर देताभया २० रणसे विमुख रुधिर गेरतेहुए अपने वाहनको देखकर स्वामिकार्तिक अपनी सुवर्णके समान भुजा में शक्तिको ग्रहणकर तारकासुर दैत्यके सन्मुख भागे और यह कहते भये कि हे दुर्बुद्धे ठहर २ इस शक्तिको देख अब तू अपने को मराहुआही जान यहकहकर अपनी उत्तम शक्तिको छोड़ते भये फिर वह स्वामिकार्तिक के हाथसे छूटीहुई शक्ति उस दैत्यके कठोर हृदयको फाड़डालतीभई तब फटेहुए हृदयवाला वह दैत्यमरकर ऐसे गिरताभया मानो प्रलयकालके वज्रपातसे पर्व्वतही गिर पड़ाहो २१।२५ मरेहुए दैत्यके शिरका मुकुट गिरपड़ा पगड़ी बिखरगई सब आभूषण बिखरपड़े ऐसे हतहुए दैत्यको देखकर देवताओं के महान् उत्सव होताभया उस समय कोईभी दुःखनहींरहा नरकमें भी कोई पापी न रहा देवतागण अपनी२ स्त्रियोंसहितहोकर स्वामिकार्तिककी स्तुतिकरते

द्यां कथांमर्त्योमहामतिः २९ शृणुयाच्छ्रावयेद्वापि सभवेत्कीर्तिमान्नरः । बह्वायुःसुभगः श्रीमान्कान्तिमान्शुभदर्शनः ३० भूतेभ्योनिर्भयश्चापि सर्वदुःखविवर्जितः । सन्ध्यामु पास्यवैपूर्वां स्कन्दस्यचरितंपठेत् ३१ समुक्तःकिल्बिषैःसर्वैर्महाधनपतिर्भवेत् । बाला नांव्याधिजुष्टानां राजद्वारञ्चसेवताम् ३२ इदंतत्परमन्दिव्यं सर्वदासर्वकामदम् । तनु क्षयेचसायुज्यं षण्मुखस्यव्रजेन्नरः ३३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकोनषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १५९ ॥

(ऋषय ऊचुः) इदानींश्रोतुमिच्छामो हिरण्यकशिपोर्वधम् । नरसिंहस्यमाहात्म्यं तथापापविनाशनम् १ (सूत उवाच) पुराकृतयुगेविप्रा हिरण्यकशिपुःप्रभुः । दैत्याना मादिपुरुषश्चकार सुमहत्तपः २ दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानिच । जलवासीसमभ वत् स्नानमौनधृतव्रतः ३ ततःशमदमाभ्याञ्च ब्रह्मचर्येणचैवहि । ब्रह्माप्रीतोऽभवत्तस्य तपसानियमेनच ४ ततःस्वयम्भूर्भगवान् स्वयमागम्यतत्रह । विमानेनार्कवर्णेन हंसयु क्तेनभास्वता ५ आदित्यैर्वसुभिस्साध्यैर्मरुद्भिर्दैवतैस्तथा । रुद्रैर्विश्वसहायैश्च यक्षराक्ष सपन्नगैः ६ दिग्भिश्चैवविदिग्भिश्च नदीभिःसागरैस्तथा । नक्षत्रैश्चमुहूर्तैश्च खेचरै श्चमहाग्रहैः ७ देवैर्ब्रह्मर्षिभिःसार्द्धं सिद्धैःसप्तर्षिभिस्तथा । राजर्षिभिःपुण्यकृद्भिर्गन्ध र्वाप्सरसाङ्गणैः ८ चराचरगुरुःश्रीमान् वृतःसर्वैर्दिवौकसैः । ब्रह्माब्रह्मविदांश्रेष्ठो दैत्यं

भये और स्वामिकार्त्तिकको वरदेकर देवता अपने २ स्थानोंको जातेभये २६।२८ फिर देवतालोग प्रसन्न होकर ऐसा वचनकहतेभये कि जो बुद्धिमान् पुरुष इस स्वामिकार्त्तिक की कथाको सुनेगा अथवा किसीको सुनावेगा वह कीर्तिमान् होगा और बहुतसी आयुवाला सुन्दर ऐश्वर्य्यों से युक्त कान्तिवाला होकर सुन्दरदर्शन वाला होवेगा २९।३० इसके विशेष वह पुरुष सबभूतोंसे निर्भय होकर सबदुःखों से भी रहितहोगा प्रथम प्रातःकालकी संध्याकरके जो इस चरितका पाठकरेगा वह सबपापोंसे छूटकर महाधनपति होजायगा और व्याधिसे पीड़ित बालक तथा राज्यमें प्रवृत्त वि षयवाले पुरुषोंको इस चरितकापाठ सदैवकरना योग्यहै उसपाठकरनेवाले को अन्तकालके समय स्वामि कार्त्तिकके साथ सायुज्य मोक्षप्राप्त होजातीहै ३१।३३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १५९ ॥

ऋषियोंनेकहा हे सूतजी अबहमें हिरण्यकशिपु दैत्यके वधको सुनाचाहतेहैं और महापापनाशक नरसिंहजीके माहात्म्यकोभी सुननाचाहतेहैं १ सूतजीबोले हेविप्रो प्रथम सत्ययुगमें हिरण्यकशिपु नाम दैत्य महाबलवान् और समर्थ होताभया उसने बड़ाघोर तपकिया अर्थात् ग्यारह ११००० हजार वर्षतकतो जलमें वासकिया फिर बहुत कालतक स्नानकरके मौनधारणकिया फिर शम दम ब्रह्मचर्य्य और नियमोंको बहुत दिनोंतक करनेसे ब्रह्माजी प्रसन्न होतेभये २।४ और सूर्य्यके समान कान्तिवाले हंसपरचढ़े आदित्य,वसु,साध्य,मरुद्गण,देवता रुद्र,यक्ष,राक्षस,पन्नग,दिशा,विदिशा,नदी, समुद्र,नक्षत्र,मुहूर्त,महान्ग्रह, सिद्ध,सप्तऋषि, राजऋषि, गंधर्व और अप्सरा इनसबोंसे युक्त चराचर

वचनमब्रवीत् ९ प्रीतोऽस्मितवभक्तस्य तपसाऽनेनसुव्रत ! । वरंवरयभद्रंतेयथेष्टंकाम माप्नुहि १० (हिरण्यकशिपुरुवाच) नदेवासुरगन्धर्वा नयक्षोरगराक्षसाः । नमानुषाः पिशाचावा हन्युर्मान्देवसत्तम ! ११ ऋषयोवानमांशापैः शपेयुःप्रपितामह ! । यदिमेभ गवान्प्रीतो वरएषवृतोमया १२ नचास्त्रेणनशस्त्रेण गिरिणापादपेनच । नशुष्केणनचा र्द्रेण नदिवाननिशाथवा १३ भवेयमहमेवार्कः सोमोवायुर्हुताशनः । सलिलञ्चान्तरिक्षञ्च नक्षत्राणिदिशोदश १४ अहंक्रोधश्चकामश्चवरुणोवासवोयमः । धनदश्चधनाध्यक्षोयक्षः किंपुरुषाधिपः १५ (ब्रह्मोवाच) एतेदिव्यावरास्तात ! मयादत्तास्तवाद्भुताः । सर्वान् कामान्सदावत्स ! प्राप्स्यसेत्वंनसंशयः १६ एवमुक्त्वासभगवान् जगामाकाशएवहि । वैराजंब्रह्मसदनं ब्रह्मर्षिगणसेवितम् १७ ततोदेवाश्चनागाश्च गन्धर्वाऋषिभिःसह । वर प्रदानंश्रुत्वैव पितामहमुपस्थिताः १८ (देवा ऊचुः) वरप्रदानाद्भगवन् ! वधिष्यतिस नोऽसुरः । तत्प्रसीदाशुभगवन् ! वधोऽप्यस्यविचिन्त्यताम् १९ भगवन् ! सर्वभूतानामा दिकर्त्तास्वयंप्रभुः । स्रष्टात्वंहव्यकव्यानामव्यक्तप्रकृतिर्बुधः २० सर्वलोकहितंवाक्यं श्रु त्वादेवःप्रजापतिः । आश्वासयामाससुरान् सुशीतैर्वचनाम्बुभिः २१ अवश्यंत्रिदशास्ते न प्राप्तव्यंतपसःफलम् । तपसोऽन्तेऽस्यभगवान् वधंविष्णुःकरिष्यति २२ तच्छ्रुत्वावि बुधावाक्यं सर्वेपङ्कजजन्मनः । स्वानिस्थानानिदिव्यानि विप्राजग्मुर्मुदान्विताः २३ ल

के गुरू ब्रह्माजी उस दैत्यके पास आकर यह वचन बोले ५।९ हेसुव्रत इसतेरे तपकरनेसे मैं प्रसन्न होगयाहूं तू अपनी इच्छाके समान वरको मांग मेरी कृपासे तू अपनीसव कामनाओंको प्राप्त होजा- यगा १० हिरण्यकशिपु बोला हेश्रेष्ठदेव मुझको देवता असुर गन्धर्व यक्ष उरग राक्षस मनुष्य और पिशाच इनमेंसे कोईभी नहीं मारसके ऋषियोंका शापभी मुझे नहीं लगसके इसके विशेष मेरेऊपर जो आप प्रसन्नहैं तो यहभी वरदो कि शस्त्रसे अस्त्रसे पर्वतसे वृक्षसे सूखे गीले आदिसे भी न मरूं दिन में नहीं मरूं रात्रिमें नहीं मरूं मैं सूर्य्य और चन्द्रमाभी होजाऊं वायु अग्नि जल आकाश नक्षत्र दशों दिशा इन सबके कार्योंको करनेवाला मैंहीहोजाऊं क्रोध काम इन्द्र वरुण यम धनपति कुबेर यक्ष और किंपुरुषोंका पतिइन सबकाभी स्वरूप मैंहीहोजाऊं ११।१५ ब्रह्माजीने कहा हेपुत्र मैंने यह दिव्य अ- द्भुत वरतेरे निमित्तदिये इनसबोंको तू निस्सन्देह प्राप्तहोजावेगा १६ ऐसे कहकर ब्रह्माजी देवऋषियों से सेवित कियेहुए अपने वैराज स्थानको आकाश मार्गके द्वाराजातेभये १७ इसके अनन्तर देवता नाग गन्धर्व और ऋषि यह सब ब्रह्माजी से दियेहुए इस वरको सुनकर ब्रह्माजी के समीप आतेभ- ये १८ और कहनेलगे कि हेब्रह्मन् वरदेनेके प्रभावसे यह दैत्यहमको सता सताकर मारेगा तो आप इस दैत्यके मरनेका उपाय विचार कीजिये १९ हे भगवन् आपही सबभूतों के आदि कर्त्ताहो आपही समर्थहो देवता और पितरोंके रचनेवाले हो अव्यक्त मायासे युक्तहो चतुरहो २० ब्रह्माजी देवताओं के ऐसे वचनोंको सुनकर देवताओं को ऐसे शीतल जलरूपी वचनों से शान्तकरतेभये कि हे देवताओ तपके फलका अन्त अवश्य होजायगा इस दैत्यका वध विष्णुभगवान् करेंगे २१।२२ इस वचनको

ब्धमात्रेवरेचाथ सर्वाःसोऽबाधतप्रजाः। हिरण्यकशिपुर्दैत्यो वरदानेनदर्पितः २४ आश्र
मेषुमहाभागान् समुनीन्शंसितव्रतान्। सत्यधर्म्मपरान्दान्तान् धर्षयामासदानवः २५
देवांस्त्रिभुवनस्थांश्च पराजित्यमहासुरः। त्रैलोक्यंवशमानीय स्वर्गेवसतिदानवः २६
यदावरमदोत्सिक्तश्चोदितःकालधर्म्मतः। यज्ञियानकरोद्दैत्यानयज्ञियाश्चदेवताः २७
तदादित्याश्चसाध्याश्च विश्वेचवसवस्तथा। सेन्द्रादेवगणायक्षाः सिद्धद्विजमहर्षयः २८
शरण्यंशरणंविष्णुमुपतस्थुर्महाबलम्। देवदेवंयज्ञमयं वासुदेवंसनातनम् २९ (देवा
ऊचुः) नारायण! महाभाग! देवास्त्वांशरणङ्गताः। त्रायस्वजहिदैत्येन्द्रं हिरण्यकशि
पुंप्रभो! ३० त्वंहिनःपरमोधाता त्वंहिनःपरमोगुरुः। त्वंहिनःपरमोदेवो ब्रह्मादीनांसुरो
त्तम! ३१ (विष्णुरुवाच) भयन्त्यजध्वममरा! अभयंवोददाम्यहम्। तथैवत्रिदिवंदे
वाः प्रतिपद्यतमाचिरम् ३२ एषोऽहंसगणंदैत्यं वरदानेनदर्पितम्। अवध्यममरेन्द्राणां
दानवेन्द्रंनिहन्म्यहम् ३३ एवमुक्त्वातुभगवान् विसृज्यत्रिदशेश्वरान्। वधंसङ्कल्पयामा
स हिरण्यकशिपोःप्रभुः ३४ सहायञ्चमहाबाहुरोङ्कारंगृह्यसत्वरम्। अथोङ्कारसहायस्तु
भगवान्विष्णुरव्ययः ३५ हिरण्यकशिपुस्थानं जगामहरिरीश्वरः। तेजसाभास्कराका
रः शशीकान्त्येवचापरः ३६ नरस्यकृत्वार्द्धतनुं सिंहस्यार्द्धतनुंतथा। नारसिंहेनवपुषा
पाणिंसंस्पृश्यपाणिना ३७ ततोऽपश्यतविस्तीर्णां दिव्यांरम्यांमनोरमाम्। सर्वकामयुतां

सुनकर देवता प्रसन्नहोकर अपने २ स्थानोंको चलेगये इसके पीछे जब इसदैत्यको वरदान मिलचुका तब वह हिरण्यकशिपु दैत्य वरके अभिमानसे सब प्रजाको दुःखदेनेलगा २३। २४ स्वर्गवासी देवताओंको जीतकर त्रिलोकी को अपने वशमें करताभया फिर वरके मदसे विकलहुआ हिरण्यकशिपु अपने कालके वशीभूत होकर आश्रमों में बसनेवाले मुनियोंको दुःखदेनेलगा और सत्यधर्म दयाआदिकों में रहनेवालों को त्रासदेताभया और स्वर्गमें वासकरके देवताओं के भागोंको आप भोजनकरनेलगा २५। २७ आदित्य, साध्य, विश्वेदेवा, वसु, इन्द्र,देवता यक्ष, सिद्ध, द्विज, और महर्षि यह सब मिलकर विष्णुभगवान् की शरणमें जातेभये और देवताओंके देवयज्ञभी मूर्त्तिको धारणकरके गये और सबोंने मिलकर विष्णुकी यह स्तुतिकरी २८। २९ हे नारायण हे महाभाग आपकी शरण में हम देवतालोग आये हैं हेप्रभो इस हिरण्यकशिपु दैत्यको मारो ३० आपही हमारे परम पालक हो गुरू हो हेसुरश्रेष्ठ आप ब्रह्मादिक देवताओं के परम पूज्य देवहो ३१ यह स्तुति सुनकर विष्णुजी बोले कि हे देवताओ तुम भयको त्यागदो तुमको मैं अभय देताहूं तुम स्वर्ग को जाओ विलम्ब मतकरो मैं इस अभिमानी दैत्यको इसके सबगणों समेत मारूंगा इस प्रकारके वचन कहकर विष्णु भगवान् हिरण्यकशिपु दैत्यके वधकरनेकी प्रतिज्ञाकरतेभये ३२। ३४ फिर विष्णुभगवान् ओंकारको अपना सहायक और सेवा करनेवाला बनाकर हिरण्यकशिपु दैत्यके स्थान में जाते भये सूर्य्य के समान तेजस्वी चन्द्रमाके समान कान्तिवाले आधे मनुष्य और आधे सिंह ऐसे रूपको धारण कर अपने हाथों से उस दैत्यके हाथको पकड़ते भये ३५। ३७ उस समय नृसिंहजी उस दैत्य

शुभ्रां हिरण्यकशिपोःसभाम् ३८ विस्तीर्णांयोजनशतं शतमध्यर्द्धमायताम्। वैहायसी
कामगमां पञ्चयोजनविस्तृताम् ३९ जराशोकक्लमापेतां निष्प्रकम्पांशिवांसुखाम्। वेश्म
हर्म्यवतींरम्यां ज्वलन्तीमिवतेजसा ४० अन्तःसलिलसंयुक्तां विहितांविश्वकर्मणा। दि
व्यरत्नमयैर्वृक्षैः फलपुष्पप्रदैर्युताम् ४१ नीलपीतसितश्यामैः कृष्णैर्लोहितकैरपि। अव
तानैस्तथागुल्मैर्मञ्जरीशतधारिभिः ४२ सिताभ्रघनसङ्काशा प्लवन्तीवव्यदृश्यत। रश्मि
वतीभास्वराच दिव्यगन्धमनोरमा ४३ सुसुखानचदुःखासा नशीतानचघर्मदा। नक्षुत्
पिपासेग्लानिंवा प्राप्यतांप्राप्नुवन्तिते ४४ नानारूपैरुपकृतां विचित्रैरतिभास्वरैः। स्त
म्भैर्नविधृतासावै शाश्वतीचाक्षयासदा ४५ अतिचन्द्रञ्चसूर्यञ्च शिखिनञ्चस्वयंप्रभा।
सर्वेचकामाःप्रचुरा येदिव्यायेचमानुषाः ४६ रसयुक्तंप्रभूतञ्च भक्ष्यभोज्यमनन्तकम् ४७
पुण्यगंधस्रजश्चात्रनित्यपुष्पफलद्रुमाः। उष्णेशीतानितोयानि शीतेचोष्णानिसंतिच ४८
पुष्पिताग्रामहाशाखाः प्रवालाङ्कुरधारिणः। लतावितानसञ्छन्नानदीषुचसरःसुच ४९
वृक्षान्बहुविधांस्तत्र मृगेन्द्रोददृशेप्रभुः। गन्धवन्तिचपुष्पाणि रसवन्तिफलानिच ५०
नातिशीतानिनोष्णानितत्रतत्रसरांसिच। अपश्यत्सर्वतीर्थानि सभायांतस्यसोविभुः ५१
नलिनैःपुण्डरीकैश्च शतपत्रैःसुगन्धिभिः। रक्तैःकुवलयैर्नीलैः कुमुदैःसंवृतानिच ५२ सु

की बड़ी मनोहर और दिव्य सभाको देखतेभये जो सब कामनाओं से युक्त श्वेतवर्ण सौयोजन वि-
स्तृत और पचास योजन चौड़ीथी और आकाशमें चलनेवाली स्वेच्छाचारी सभाभी पांचयोजनकी
देखी वह सभा जराशोक ग्लानिसे रहित मंगलयुक्त महा सुखकारी रमणीक स्थान बगीचे आदिकों
से शोभित तेजसे प्रकाशमान ऐसी देखने में आई कि उसके भीतर विश्वकर्माके रचेहुए जलाशयों
में सुन्दर विहार स्थान बनरहेथे उन सब स्थानों से और रत्नजटित पुष्पों वाले वृक्षोंसे वह सभा
शोभायमानथी इसके सिवाय नीले पीले श्वेत और कृष्ण इन वर्णों वाली बेलें और मंजरियोंवाले
गुच्छे और श्वेत बादलोंसे सुन्दर कान्तिवाली होरहीथी उस दिव्य किरणोंवाली दिव्यगंधियों से
सुगन्धित और मनोहर सभामें सुखकी प्राप्ति और दुःखोंका अभावथा वहां घाम शीत क्षुधा तृषा
और ग्लानि भी किसी प्रकारकी नथी उसमें दैत्य बैठे हुएथे ३८।४४ आशय यह है कि अनेक रूपों
से युक्त विचित्र स्तम्भोंवाली चन्द्रमा सूर्य्यादिकोंको अपनी कान्तिसे तिरस्कार करने वाली उत्तम
सभा देखी उसी सभामें देवता और मनुष्योंके सब कामसिद्ध होतेभये उस सभामें सुन्दर रसयुक्त
भक्ष्य भोज्य पदार्थ भी वर्त्तमान थे ४५।४७ वह सुन्दर सुगन्धित मालाओंसे युक्त नित्यफलने फूल
ने वाले वृक्षोंसे संकीर्ण भी थी जहाँ गरमीमें शीतल जल और शीतकालमें उष्णजल रहा करता
था अंकुर फूल फल पत्ते बेल और गुच्छे इन सबसे आच्छादित हुए अनेक वृक्षभी नदी और सरो-
वरोंपर स्थित होरहेथे इस प्रकारके अनेक प्रकारके पदार्थों को वह नृसिंहजी देखतेभये सुगंधित
पुष्प, रसवाले फल मनोहर अनुकूल जलोंसे युक्तसरोवर और तीर्थभी उससभामें देखेगये ४८।५१
सुगन्धित उत्तम कमलोंके नील और लालवर्णके पुष्पोंसे आच्छादित सुन्दर कान्तिवाले हंसों सं

कान्तैर्धार्तराष्ट्रैश्च राजहंसैश्च सुप्रियः। कारण्डवैश्चक्रवाकैः सारसैः कुररैरपि ५३ विमलैः स्फटिकाभैश्च पाण्डुरैश्चन्दनैर्द्विजैः। बहुहंसोपगीतानि सारसाभिरुतानि च ५४ गन्धवत्यः शुभास्तत्र पुष्पमञ्जरिधारिणीः। दृष्टवान्पर्वताग्रेषु नागपुष्पधरा लताः ५५ केतक्यशोकसरलाः पुन्नागतिलकार्जुनाः। चूतानीपाः प्रस्थपुष्पाः कदम्बा बकुला धवाः ५६ प्रियंगुपाटलावृक्षाः शाल्मल्यः सहरिद्रकाः। सालास्तालास्तमालाश्च पञ्चकाश्च मनोरमाः ५७ तथैवान्येऽप्यराजन्त सभायां पुष्पिता द्रुमाः। विद्रुमाश्च द्रुमाश्चैव ज्वलिताग्निसमप्रभाः ५८ स्कन्धवन्तः सुशाखाश्च बहुतालसमुच्छ्रयाः। अर्जुनाशोकवर्णाश्च बहवश्चित्रका द्रुमाः ५९ वरुणो वत्सनाभश्च पनसाः सहचन्दनैः। नीलाः सुमनसश्चैव निम्बाश्चाश्वत्थतिन्दुकाः ६० पारिजाताश्च लोध्राश्च मल्लिकाभद्रदारवः। आमलक्यस्तथा जम्बुलकुचाः शैलवालुकाः ६१ कालीयका द्रुकालाश्च हिङ्गवः पारियात्रकाः। मन्दारकुन्दलताश्च पतङ्गाः कुटजास्तथा ६२ रक्ताः कुरण्टकाश्चैव नीलाश्चागरुभिः सह। कदम्बाश्चैव भव्याश्च दाडिमा बीजपूरकाः ६३ सप्तपर्णाश्च बिल्वाश्च मधुपैरावतास्तथा। अशोकाश्च तमालाश्च नानागुल्मलतावृताः ६४ मधूकाः सप्तपर्णाश्च बहवस्तीरगा द्रुमाः। लताश्च विविधाकाराः पत्रपुष्पफलोपगाः ६५ एते चान्ये च बहवस्तत्र काननजा द्रुमाः। नानापुष्पफलोपेता व्यराजन्त समन्ततः ६६ चकोराः शतपत्राश्च मत्तकोकिलसारिकाः। पुष्पिताः पुष्पिताग्रेश्च सम्पतन्ति महाद्रुमाः ६७ रक्तपीतारुणास्तत्र पादपाग्रगताः खगाः। परस्परमवेक्षन्ते प्रहृष्टा जीवजीवकाः ६८ तस्यां सभायां दैत्येन्द्रो हिरण्यकशिपुस्त

शोभित कारंडव चक्रवाक सारस और कुरैया इनसब पक्षियोंसे शोभित श्वेत और नील वर्णवाले अनेक पक्षियोंसे सेवित बहुतसे हंस और सारसोंके शब्दोंसे मनोहर वहां सरोवर देखे इनके विशेष सुन्दरसुगन्धित उत्तम मंजरीवाली पुष्पोंसे भरीहुई लताओंको पर्व्वतके शिखरोंपर देखतेभये ५३।५५ केतकी, अशोक वृक्ष, सरल, पुन्नाग, तिलक, अर्जुन, आम, कदंबराज छोटेकदंब, बकायन, धवमाल, कागिनी, पाटलवृक्ष, संभालू, हल्दी, साल, ताल, और तमाल इनमनोहर वृक्षोंकोभी देखतेभये ५६।५७ इसीप्रकार उस सभामें पुष्पोंवाले अनेक वृक्षोंकी और अग्निकी समान प्रज्वलित रत्नोंकी अत्यन्त कांति भी देखतेभये ५८ फालसा, चन्दन, नींब. टेटूवृक्ष, कल्पवृक्ष, लोध, मल्लिका, देवदारु, आंवला, जमालगोटा, एलुआ, पारिजातक, आक, कुंद, पतंग, कूड़ा, रक्त कोरटा, अगर, कदंब, अनार, बिजौरा, सातला, बेलगिरी, अशोकवृक्ष तमाल, अनेकप्रकारके गुच्छेलता, महुआ और अन्यबहुत प्रकारकेवृक्ष उससभाके वनमें प्रकाशित होरहेथे और फूलेहुए वृक्षोंके ऊपर बैठेहुए चकोरमदोन्मत्त कोकिल और सारिका यहपक्षी उत्तम २ बोलियां बोलरहेथे वृक्षोंकी डालियोंपर बैठेहुए लालपीले आदि अनेक वर्णके जीवजीवक पक्षी परस्पर प्रसन्न कलोल करतेहुए देखते भये ५९। ६८ उस सभामें बैठाहुआ हिरण्यकशिपु दैत्य सैकड़ों स्त्रियोंके साथ विहार करताथा और विचित्रवस्त्राभूषणोंसे शोभित मणि

दा। स्त्रीसहस्रैःपरिवृतो विचित्राभरणाम्बरः ६९ अनर्घ्यमणिवज्रार्चिशिखाज्वलितकु
ण्डलः। आसीनश्चासनेचित्रे दशनल्वप्रमाणतः ७० दिवाकरनिभेदिव्ये दिव्यास्तर
णसंस्तृते। दिव्यगन्धवहस्तत्र मारुतःसुसुखोववौ ७१ हिरण्यकशिपुर्दैत्य आस्तेज्व
लितकुण्डलः। उपचेरुर्महादैत्यं हिरण्यकशिपुंतदा ७२ दिव्यतानेनगीतानि जगुर्ग
न्धर्वसत्तमाः। विश्वाचीसहजन्याच प्रम्लोचेत्यभिविश्रुता ७३ दिव्याथसौरभेयीच स
मीचीपुञ्जिकस्थली। मिश्रकेशीचरम्भाच चित्रलेखाशुचिस्मिता ७४ चारुकेशीघृता
चीच मेनकाचोर्वशीतथा। एताःसहस्रशश्चान्या नृत्यगीतविशारदाः ७५ उपतिष्ठन्त
राजानं हिरण्यकशिपुंप्रभुम्। तत्रासीनंमहाबाहुं हिरण्यकशिपुंप्रभुम् ७६ उपासन्तदि
तेःपुत्राः सर्वेलब्धवरास्तथा। तमप्रतिमकर्माणं शतशोऽथसहस्रशः ७७ बलिर्विरोचन
स्तत्र नरकःपृथिवीसुतः। प्रह्लादोविप्रचित्तिश्च गविष्ठश्चमहासुरः ७८ सुरहन्तादुःख
हन्ता सुनामासुमतिर्वरः। घटोदरोमहापार्श्वः क्रथनःकठिनस्तथा ७९ विश्वरूपःसुरू
पश्च स्वबलश्चमहाबलः। दशग्रीवश्चवालीच मेघवासामहासुरः ८० घटास्यःकम्पन
श्चैव प्रजनश्चेन्द्रतापनः। दैत्यदानवसंघास्ते सर्वेज्वलितकुण्डलाः ८१ स्रग्विणोवा
ग्मिनःसर्वे सदैवचरितव्रताः। सर्वेलब्धवराःशूराः सर्वेविगतमृत्यवः ८२ एतेचान्येचब
हवो हिरण्यकशिपुंप्रभुम्। उपासन्तिमहात्मानं सर्वेदिव्यपरिच्छदाः ८३ विमानैर्विवि
धाकारैर्भ्राजमानैरिवाग्निभिः। महेन्द्रवपुषःसर्वे विचित्राङ्गदबाहवः ८४ भूषिताङ्गादितेः

हीरे आदिसे प्रकाशित कुंडलों समेत वह हिरण्यकशिपु दैत्य चारसौ हाथ प्रमाण के विचित्र सूर्य्य की समान कान्तिवाले सुन्दर बिछौने बिछेहुए आसनपर जहाँ बैठताथा वहाँ दिव्यसुगन्धि की बहानेवाली सुखस्पर्शयुक्त सुन्दरवायु चलरहीथी ६९।७१ उस स्थानपर प्रकाशित कुंडलधारी हिरण्यकशिपु दैत्य विराजमानथा उस दैत्यके पाससेवाकरतेहुए अनेक गंधर्व गीतोंको गातेथे और विश्वाची, सहजन्या, प्रम्लोचा, सौरभेयी, समीची, पुंजिकस्थली, मिश्रकेशी, रंभा चित्रलेखा, शुचिस्मिता, चारुकेशी, घृताची, मेनका और उर्व्वशी यहहज़ारों नाचने और गानेवाली अप्सरा उस हिरण्यकशिपु राजाकी उपासना करतीथीं ७२। ७६ और वरोंको प्राप्तकियेहुए हज़ारों दैत्यभी उस हिरण्य कशिपु दानवकी उपासना करतेथे ७७ बलि, विरोचन, नरकासुर, प्रह्लाद, विप्रचित्ति, महान गविष्ठनाम दैत्य, सुरहंता, दुःखहंता, सुनामा, सुमति, घटोदर, महापार्श्व, क्रथन, कठिन, विश्वरूप, सुरूप, स्वबल, महाबल, दशग्रीव, वाली, मेघवासा घटास्य, कंपन, प्रजन, इन्द्रतापन, उज्ज्वल कुंडलोंवाले यहसब दानव उससभामें जथा बनाकर बैठतेथे ७८। ८१ यहसब दानव माला पहरेहुए बैठतेथे और सबोंने वरलब्धकर रक्खेथे सब शूर वीर मृत्युसे रहितथे यह और अन्य बहुतसे दानव उस हिरण्यकशिपुकी उपासना करतेथे ८२। ८३ यहसब दैत्य अनेक २ प्रकारके विचित्र विमानोंमें बैठकर प्रकाशित होतेभये उससभामें बैठेहुए पर्व्वतके समान दैत्योंकेरूप कंचनके समान प्रकाशितथे ऐसे २ यहसब दानव हिरण्यकशिपुकी सेवाकरतेथे इस प्रकारसे स्थितहोनेवाले सोने

पुत्रास्त्वमुपासन्तसर्वशः । तस्यांसभायान्दिव्यायामसुराःपर्वतोपमाः ८५ हिरण्यवपुषः
सर्वे दिवाकरसमप्रभाः । नश्रुतन्नैवदृष्टंहि हिरण्यकशिपोर्यथा ८६ ऐश्वर्यंदैत्यसिंहस्य
यथान्यस्यमहात्मनः । कनकरजतचित्रवेदिकायां परिहृतरत्नविचित्रवीथिकायाम् । सददृ
शेमृगाधिपःसभायां सुरचितरत्नगवाक्षशोभितायाम् ८७ कनकविमलहारविभूषिताङ्गं
दितितनयंसमृगाधिपोददर्श । दिवसकरमहाप्रभालसंतन्दितिजसहस्रशतैर्निषेव्यमाण
म् ८८ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६० ॥

(सूत उवाच) ततोदृष्ट्वामहात्मानं कालचक्रमिवागतम् । नरसिंहवपुश्छन्नं भस्मच्छ
न्नमिवानलम् १ हिरण्यकशिपोःपुत्रः प्रह्लादोनामवीर्यवान् । दिव्येनचक्षुषासिंहमपश्य
देवमागतम् २ तंदृष्ट्वारुक्मशैलाभमपूर्वान्तनुमाश्रितम् । विस्मितादानवाःसर्वे हिरण्य
कशिपुश्चसः ३ (प्रह्लाद उवाच) महाबाहो ! महाराज ! दैत्यानामादिसम्भव ! । न
श्रुतंनचनोदृष्टं नारसिंहमिदंवपुः ४ अव्यक्तप्रभवन्दिव्यं किमिदंरूपमागतम् । दैत्यान्त
करणंघोरं संशतीवमनोमम ५ अस्यदेवाःशरीरस्थाः सागराःसरितश्चयाः । हिमवान्पा
रियात्रश्च येचान्येकुलपर्वताः ६ चन्द्रमाश्चसनक्षत्रैरादित्यैर्वसुभिःसह । धनदोवरुण
श्चैव यमःशक्रःशचीपतिः ७ मरुतोदेवगन्धर्वा ऋषयश्चतपोधनाः । नागायक्षाःपिशा
चाश्च राक्षसाभीमविक्रमाः ८ ब्रह्मादेवःपशुपतिर्ललाटस्थाभ्रमन्तिवै । स्थावराणिचस
र्वाणि जङ्गमानितथैवच ९ भवांश्चसहितोऽस्माभिः सर्वैर्देवगणैर्वृतः । विमानशतसङ्कीर्णा
तथैवभवतःसभा १० सर्वंत्रिभुवनंराजन् ! लोकधर्माश्चशाश्वताः । दृश्यन्तेनारसिंहे

चाँदीके तख़्तोंपर बैठेहुए हिरण्यकशिपुको रत्नोंकी झरोखोंवाली सभामें वह नृसिंहजी देखने भये
८६ । ८७ अर्थात् उत्तम स्वर्णहारोंसे भूषित अंग सूर्य्यकी समान कान्तिवाले हज़ारों दैत्योंसे सेवित
हुए हिरण्यकशिपुको नृसिंहजी देखनेभये ८८ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६० ॥

सूतजी कहते हैं कि इसके अनन्तर हिरण्यकशिपु दैत्यकापुत्र प्रह्लादमहात्मा कालचक्रके समान
आयेहुए नृसिंहशरीरमें ऐसे छुपाहुआया जैसेकि राखमें अग्नि छिपीहुई रहती है वही उस आयेहुए
नृसिंह शरीरधारी विष्णु भगवान्को देखताभया १ । २ और उसनृसिंह शरीरमें प्राप्तहुए विष्णु भ-
गवान्को सब दानवलोग देखकर आश्चर्य्यको प्राप्तहोतेभये यह देखकरप्रह्लाद अपनेपिता हिरण्य-
कशिपुसे कहताभया ३ हे महाबाहो हे महाराज हमने यह नृसिंहशरीर कभी देखा है न सुनाहै यह
अव्यक्त उत्पत्ति वाला कौनदिव्यरूपहै मुझको यह घोररूप दैत्योंका नाशकरनेवाला दीखताहै ४।५
इसके शरीरमें देवतास्थित रहतेहैं समुद्र और नदियांभी इसके शरीरमें स्थितहैं हिमवान् पारियात्र
आदिक बड़े २ पर्वत, चन्द्रमा, नक्षत्र, आदित्य, वसु, कुबेर, वरुण, यम, इन्द्र, मरुद्गण, देवता, गन्धर्व,
ऋषि, नाग, यक्ष, पिशाच, राक्षस, ब्रह्मा और शिव यह सब देवता इसके मस्तकमें स्थितहुए भ्रमते

स्मिस्तथेदमखिलंजगत् ११ प्रजापतिश्चात्रमनुर्महात्मा ग्रहाश्चयोगश्चमहीरुहाश्च।
उत्पातकालश्चधृतिर्मतिश्च रतिश्चसत्यञ्चतपोदमश्च १२ सनत्कुमारश्चमहानुभावो
विश्वेचदेवाऋषयश्चसर्वे। क्रोधश्चकामश्चतथैवहर्षो धर्म्मश्चमोहःपितरश्चसर्वे १३
प्रह्लादस्यवचःश्रुत्वा हिरण्यकशिपुःप्रभुः। उवाचदानवान्सर्वान् गणांश्चसगणाधिपः
१४ मृगेन्द्रोगृह्यतामेष अपूर्वसत्वमास्थितः। यदिवासंशयःकश्चिद्वध्यतांवनगोचरः
१५ तेदानवगणाःसर्वे मृगेन्द्रंभीमविक्रमम्। परिक्षिपन्तोमुदितास्त्रासयामासुरोजसा १६
सिंहनादंविमुच्याथ नरसिंहोमहाबलः। बभञ्जतांसभांसर्वां व्यादितास्यइवान्तकः १७
सभायांभज्यमानायां हिरण्यकशिपुःस्वयम्। चिक्षेपास्त्राणिसिंहस्य रोषाद्व्याकुललोच
नः १८ सर्वास्त्राणामथज्येष्ठं दण्डमस्त्रंसुदारुणम्। कालचक्रंतथाघोरं विष्णुचक्रंतथाप
रम् १९ पैतामहंतथात्युग्रं त्रैलोक्यदहनंमहत्। विचित्रामशनींचैव शुष्कार्द्रंचाशनिद्व
यम् २० रौद्रंतथोग्रंशूलञ्च कङ्कालंमुसलंतथा। मोहनंशोषणंचैव सन्तापनविलापनम्
२१ वायव्यंमथनंचैव कापालमथकैङ्करम्। तथाप्रतिहतांशक्तिं क्रौञ्चमस्त्रंतथैवच २२
अस्त्रंब्रह्मशिरश्चैव सोमास्त्रंशिशिरंतथा। कम्पनंशतनञ्चैव त्वाष्ट्रञ्चैवसुभैरवम् २३
कालमुद्गरमक्षोभ्यं तपनञ्चमहाबलम्। संवर्तनंमादनञ्च तथामायाधरंपरम् २४ गान्ध
र्वमस्त्रंदयितमसिरत्नंचनन्दकम्। प्रस्वापनंप्रमथनं वारुणंचास्त्रमुत्तमम्। अस्त्रंपाशुपत
ञ्चैव यस्याप्रतिहतागतिः २५ अस्त्रंहयशिरश्चैव ब्राह्ममस्त्रंतथैवच। नारायणास्त्रमैन्द्र

हैं और स्थावर जंगम भूत तुम हम और अन्य सब देवता और सैकड़ों विमानोंवाली आपकी सभा इसप्रकारसे सब त्रिलोकीभर मुझको इस नृसिंहशरीरमें देखपड़तीहै ६। ११ और प्रजापति मनु ग्रह योग उत्पात काल धृति मति रति सत्य तप दम सनत्कुमार विश्वेदेवा सबऋषि काम क्रोध हर्ष धर्म मोह और पितर यह सब इसके शरीरमें स्थितहैं १२। १३ हिरण्यकशिपु दैत्य प्रह्लादके इस वचनको सुनकर सब दानवों से बोला कि इसअपूर्व सिंहको पकड़नाचाहिये और पकड़ेजानेमें कुछ सन्देहहोय तो इसको मारडालो१४।१५ यह सुनकर वह महाबली दानव उन नृसिंह रूपको अपने बल और शस्त्रोंकरके त्रास देतेभये १६ तब महाबलवाले नृसिंहजी सिंहनादकरके उससभाको फाड़ डालतेभये जब वह सभा फटकर सब ओरसे फूट टूटगई तब क्रोधसे व्याकुल नेत्रवाला वह हिरण्यकशिपु दैत्य नृसिंहजीपर अपने शस्त्रोंको छोड़ताभया १७। १८ प्रथम सब अस्त्रोंमें श्रेष्ठ दारुण दण्ड अस्त्र छोड़ा,कालचक्रछोड़ा, विष्णुअस्त्रछोड़ा त्रिलोकीके दग्धकरनेमें समर्थ ब्राह्मअस्त्रछोड़ा शुष्क और आर्द्र दोनों प्रकारके वज्रअस्त्रोंको छोड़ा भयंकर शूल मूसल मोहन शोषण अस्त्र, संतापन,विलापन, वायव्य, कापाल, और कैंकर इननामोंवाले बहुतसे अस्त्रछोड़े शक्तिछोड़ी क्रौंच अस्त्रछोड़ा १९।२२ ब्रह्मशिरअस्त्र, सोमास्त्र, शिशिरअस्त्र, कंपनअस्त्र, त्वाष्ट्रअस्त्र कालमुद्गरअस्त्र, तपनअस्त्र, सम्वर्त्तन अस्त्र, मादनअस्त्र, मायाधारी गान्धर्व अस्त्र २३। २४ प्रस्वापन और प्रमथनअस्त्र नहीं हतहोनेवाला पाशुपत अस्त्र हयशिरअस्त्र, ब्राह्मअस्त्र, नारायणअस्त्र, ऐन्द्रअस्त्र, सार्पअस्त्र, पैशाचअस्त्र, शोपदअस्त्र,

ञ्च सार्पमस्त्रंतथाद्भुतम् २६ पैशाचमस्त्रमजितं शोषदंशामनंतथा। महाबलंभावनंच प्रस्थापनविकम्पने २७ एतान्यस्त्राणिदिव्यानि हिरण्यकशिपुस्तदा। असृजन्नरसिंहस्य दीप्तस्याग्नेरिवाहुतिम् २८ अस्त्रैःप्रज्वलितैःसिंहमावृणोदसुरोत्तमाः। विवस्वान्धर्मसमये हिमवन्तमिवांशुभिः २९ सह्यमर्षानिलोद्भूतो दैत्यानांसैन्यसागरः। क्षणेनप्लावयामास मैनाकमिवसागरः ३० प्रासैःपाशैश्चखड्गैश्च गदाभिर्मुसलैस्तथा। वज्रैरशनिभिश्चैव साग्निभिश्चमहाद्रुमैः ३१ मुद्गरैर्भिन्दिपालैश्च शिलोलूखलपर्वतैः। शतघ्नीभिश्च दीप्ताभिर्दण्डैरपिसुदारुणैः ३२ तेदानवाःपाशगृहीतहस्ता महेन्द्रतुल्याशनिवज्रवेगाः। समन्ततोऽभ्युद्यतबाहुकायाः स्थितास्त्रिशीर्षाइवनागपाशाः ३३ सुवर्णमालाकुलभूषिताङ्गाः पीतांशुकाभोगविभाविताङ्गाः। मुक्तावलीदामसनाथकक्षा हंसाइवाभान्तिविशालपक्षाः ३४ तेषांतुवायुप्रतिमौजसांवै केयूरमौलीवलयोत्कटानाम्। तान्युत्तमाङ्गान्यभितो विभान्ति प्रभातसूर्यांशुसमप्रभाणि ३५ क्षिपद्भिरुग्रैर्ज्वलितैर्महाबलैर्महास्त्रपूगैःसुमसावृतोबभौ। गिरिर्यथासन्ततवर्षिभिर्घनैः कृतान्धकारान्तरकन्दरोद्रुमैः ३६ तैर्हन्यमानोऽपिमहास्त्रजालैर्महाबलैर्दैत्यगणैःसमेतैः। नाकम्पताजौभगवान्प्रतापस्थितप्रकृत्याहिमवानिवाचलः ३७ सन्त्रासितास्तेनन्रसिंहरूपिणा दितेःसुताःपावकतुल्यतेजसा। भयाद्विचेलुःपवनोद्धुताङ्गा यथोर्मयःसागरवारिसम्भवाः ३८ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६१ ॥

शामनअस्त्र महाबलवाला भावनअस्त्र प्रस्थापन अस्त्र और विकंपन अस्त्र इन सब अस्त्रोंको हिरण्यकशिपु दैत्य नृसिंहजी के ऊपर ऐसे छोड़ताभया जैसेकि देदीप्तअग्निमें आहुति छोड़ीजाती है २५।२८ और जैसे गरमीके समयमें सूर्य्य अपनी किरणोंसे चन्द्रमाको आच्छादित करदेताहै इसी प्रकार यहसब महाबली दैत्य अपनेअस्त्रोंसे नृसिंहजीको आच्छादित करदेतेभये क्रोधसेयुक्त वह दैत्यों की सेनारूपी समुद्र नृसिंहजीको क्षणभर में ऐसे आच्छादित करदेताभया जैसे कि मैनाक पर्व्वतको समुद्र डुबोदेताहै २९।३० भाले फांसी खड्ग गदा मूसल वज्र अशनि बड़े२वृक्ष मुग्दर गोफियायंत्र, शिला ऊखलके पत्थर, भुशुंडी, दारुणदंडआदि अनेक प्रकारके अस्त्रशस्त्रों से नृसिंहजीको आच्छादित करते भये ३१। ३२ हाथों में फांसी लियेहुए महाकठोर वज्रोंको हाथों में लेके नृसिंहजी के चारोंओर वह दैत्य ऐसे खड़े होजातभये जैसे कि नाग फाँस फैल रहेहों ३३ सुवर्णकी मालाओं से विभूषित अङ्ग पीतरक्त वर्णयुक्त मोतियों की विस्तृत मालावाले वह दैत्य ऐसे शोभितहुए जैसे कि विशाल पंखोंवाले हंसोंके समूह फैलेहों वायुके समान वेगवाले उन दैत्योंके बाजूबन्द और मुकुट आदि आभूषण ऐसे शोभित होतेभये जैसेकि प्रातः कालके सूर्य्यकी किरणें शोभित होती हैं ३४।३५ महाबलवाले उन दैत्योंके फेंकेहुए उज्ज्वल२ अस्त्रोंसे नृसिंहजी ऐसेआच्छादित होगये जैसेकि निरन्तर वर्षाकरनेवाले मेघोंसे पर्व्वतमें अन्धकार छारहाहो ३६ उनमहाबली दानवोंके तीक्ष्ण अस्त्रों से हन्यमानहुए नृसिंहजी हिमवान् पर्व्वतके समान कुछेकभी चलायमान नहींहुए ३७ तबअग्नि

(सूत उवाच) खराःखरमुखाश्चैव मकराशीविषाननाः। ईहामृगमुखाश्चान्ये वराहमुखसंस्थिताः १ बालसूर्यमुखाश्चान्ये धूमकेतुमुखास्तथा। अर्द्धचन्द्रार्द्धवक्त्राश्च अग्निदीप्तमुखास्तथा २ हंसकुक्कुटवक्त्राश्चव्याधितास्याभयावहाः। सिंहास्यालेलिहानाश्च काकगृध्रमुखास्तथा ३ द्विजिह्वकावक्त्रशीर्षास्तथोल्कामुखसंस्थिताः। महाग्राहमुखाश्चान्ये दानवाबलदर्पिताः ४ शैलसंवर्ष्मणस्तस्यशरीरेशरवृष्टिभिः। अवध्यस्यमृगेन्द्रस्य न व्यथाञ्चक्रुराहवे ५ एवंभूयोऽपरान्घोरानसृजन्दानवेश्वराः। मृगेन्द्रस्योपरिक्रुद्धाः निश्वसन्तइवोरगाः ६ तेदानवशराघोरा दानवेन्द्रसमीरिताः। विलयंजग्मुराकाशे खद्योताइवपर्वते ७ ततश्चक्राणिदिव्यानि दैत्याःक्रोधसमन्विताः। मृगेन्द्रायासृजन्नाशु ज्वलितानिसमन्ततः ८ तैरासीद्गगनंचक्रैः सम्पतद्भिरितस्ततः। युगान्तेसम्प्रकाशद्भिश्चन्द्रादित्यग्रहैरिव ६ तानिसर्वाणिचक्राणि मृगेन्द्रेणाशमात्मना। ग्रस्तान्युदीर्णानितदा पावकार्चिःसमानिवै १० तानिचक्राणिवदनं विशमानानिभान्तिवै। मेघोदरदरीष्वेव चन्द्रसूर्यग्रहाइव ११ हिरण्यकशिपुर्दैत्यो भूयःप्रासृजदूर्जिताम्। शक्तिंप्रज्वलितांघोरां धौतशस्त्रतडित्प्रभाम् १२ तामापतन्तींसंप्रेक्ष्य मृगेन्द्रःशक्तिमुज्ज्वलाम्। हुङ्कारेणैवरौद्रेण वभञ्जभगवांस्तदा १३ रराजभग्नासाशक्तिर्मृगेन्द्रेणमहीतले। सविस्फुलिङ्गाज्वलिता महोल्केवदिवश्च्युता १४ नाराचपङ्क्तिःसिंहस्य प्राप्तारेजेविदूरतः। नीलोत्पलपलाशानांमालेवोज्ज्वलदर्शना १५ सगर्जित्वायथान्यायं विक्रम्यचयथासुखम्। तत्सैन्यमपा-

के समान तेजवाले नृसिंहजी से दुःखित हुए दानव भयसे ऐसे काँपते भये जैसे कि वायुसे समुद्र की लहरें हिलती हैं ३८॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकषष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः १६१॥

सूतजीबोले कि गधेके समान मुखवाले मकर मत्स्य सर्प मृग शूकर धुएं, अर्द्धचन्द्रमा, ज्वलित अग्नि, हंस, मुर्गा फटेहुए मुखवाले सिंह, काक, गिद्ध, और शृगाल इनसबके समान विकरालमुख वाले इनमें कोई दोमुखे कोई चौमुखे ऐसे बलके अभिमानी दानव उननृसिंहजीके शरीर पर पाषाणोंकी वर्षा करनेलगे और बाणोंकी भी वर्षाकरी परन्तु उनपाषाणादिकोंसे नृसिंहजी को कुछभी पीड़ा न हुई ३।५ इसके पीछे वह दानव सर्प के समान क्रोधकरके नृसिंहजी पर नानाप्रकारके अन्यबाणोंकी वर्षाकरते भये वह सब बाणआकाशहीमें ऐसे नष्टहोगये जैसे कि पर्व्वतपर पटबीजना पक्षी नहीं दिखाई देता ६।७ फिर क्रोधसे मूर्च्छितहुए दानव नृसिंहजी के सन्मुख जलतेहुए चक्रोंको फेंकतेभये उन गिरतेहुए चक्रोंसे आकाश ऐसा देदीप्त विदितहुआ जैसे कि प्रलयकालमें चन्द्रमा और सूर्य्य देदीप्त होजाते हैं ८।९ फिर अग्निके समान ज्वलितहुए वह चक्र नृसिंहजीने ऐसे ग्रसलिये जैसे कि सूर्य्य और चन्द्रमाको बादलढकलेते हैं इसके पीछे हिरण्यकशिपुदैत्य बिजलीके समान महाघोर शक्तिको नृसिंहजीके ऊपर फेंकताभया १०।१२ उस आतीहुई शक्ति को देखकर नृसिंहजीने अपनी हुंकारही से तोड़डाला १३ नृसिंहजीसे टूटीहुई वह शक्ति पृथ्वीमें गिरकर ऐसी शोभितहुई जैसे कि स्वर्गसे टूटकर कोई तारागिराहो १४ और वह नृसिंहजी के शरीर

रितवान् तृणाग्राणीवमारुतः १६ ततोऽश्मवर्षैर्दैत्येन्द्रा व्यसृजन्तनभोगताः। नगमात्रैः शिलाखण्डैर्गिरिशृङ्गैर्महाप्रभैः १७ तदश्मवर्षंसिंहस्य महन्मूर्द्धनिपातितम्। दिशोदश विकीर्णाँवै खद्योतप्रकराइव १८ तदाश्मौघैर्दैत्यगणाः पुनःसिंहनरेन्द्रमम्। छादयाञ्चक्रिरेमेघा धाराभिरिवपर्वतम् १९ नचतंचालयामासुर्दैत्यौघादेवसत्तमम्। भीमवेगोऽचलश्चेष्टं समुद्रइवमन्दरम् २० ततोऽश्मवर्षेविहते जलवर्षमनन्तरम्। धाराभिरक्षमात्राभिःप्रादुरासीत्समन्ततः २१ नभसःप्रच्युताधारास्तिग्मवेगाःसमन्ततः। आवृत्यसर्वतो व्योम दिशश्चोपदिशस्तथा २२ धारादिविचसर्वत्र वसुधायाञ्चसर्वशः। नस्पृशन्तिचतादेवं निपतन्तोऽनिशंभुवि २३ बाह्यतोववृषुर्वर्षं नोपरिष्टाच्चववृषुः। मृगेन्द्रप्रतिरूपस्य स्थितस्ययुधिमायया २४ हतेऽश्मवर्षेतुमुले जलवर्षेचशोषिते। सोऽसृजद्दानवोमायामग्निवायुसमीरिताम् २५ महेन्द्रस्तोयदैःसार्द्धं सहस्राक्षोमहाद्युतिः। महतातोयवर्षेण शमयामासपावकम् २६ तस्यांप्रतिहतायांतु मायायांयुधिदानवः। असृजत्घोरसङ्काशंतमस्तीव्रंसमन्ततः २७ तमसासंवृतेलोके दैत्येष्वात्तायुधेषुच। स्वतेजसापरिवृतो दिवाकरइवाबभौ २८ त्रिशाखांभ्रुकुटीञ्चास्य ददृशुर्दानवारणे। ललाटस्थांत्रिशूलाङ्कां गङ्गांत्रिपथगामिव २९ ततःसर्वासुमायासु हतासुदितिनन्दनाः। हिरण्यकशिपुंदैत्यं विवर्णाः

में लगीहुई बाणोंकी पंक्ति दूरसे ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि नीलेकमलके पत्तोंकीमाला शोभित होरही हो १५ इन सबबातोंके पीछे अच्छेप्रकारसे गर्जकर दानवोंकीसेनाको सुखपूर्व्वक फाड़डालते भये तब सब दैत्य आकाशमें खड़ेहोकर बड़े२ पत्थरोंको फेंकतेभये उससमय नृसिंहजीके मस्तकपर पड़ेहुए पत्थरोंके द्वारा दशोंदिशा पूरितहोगईं और वह पत्थर पटवीजनों के समान शोभितहोगये १६।१८ फिर दैत्योंने पत्थरोंकी वर्षासे नृसिंहजीको ऐसा आच्छादित करदिया जैसेकि वर्षाकी धाराओंसे पर्व्वत आच्छादित होजाताहै १९ तात्पर्य्य यहहै कि वह दैत्य नृसिंहजीको चलायमान ऐसे नहीं करसके जैसेकि वेगवान् समुद्र मंदराचल पर्व्वतको नहीं चलायमान करसक्ताहै २० इसप्रकार से जब पर्व्वत और पाषाणादि की वर्षाहोचुकी तब नृसिंहजी के मारनेके निमित्त चारोंओर जलोंकी धारा वर्षती भई २१ उनआकाशसे गिरतीहुई जलोंकी धाराओंसे सब दिशाओं समेत आकाशपूरित होगया वह आकाशसे पृथ्वीमें गिरतीहुई जलकी धारा युद्धमें मायाके प्रभावसे नृसिंहजीको स्पर्श भी नहीं करसकीं जब इसप्रकारसे रणमें पत्थरोंकी वर्षा नष्टहुई और जलोंकी धारभी शोखीगईं तब हिरण्यकशिपु दैत्य वायुसे मिलीहुई मायाकी अग्निको छोड़ता भया तब इन्द्र उस अग्निको बड़े जलोंकी वर्षासे शान्तकर देताभया जब युद्धमें वह मायाभी नष्टहोगई तब वह दैत्य महाघोर और तीक्ष्ण अन्धकार को छोड़ताभया २२।२७ उस अन्धकारसे सब जगत् व्याप्तहोगया दैत्य लोग अपने हाथोंमें शस्त्रोंको ग्रहणकरनेलगे उस समयनृसिंहजी अपने तेजसे सूर्य्यके समान प्रकाशित होतेभये २८ और नृसिंहजीकी तीन भृकुटियोंको सब दानव देखतेभये और मस्तक त्रिशूलके चिह्न वाली गंगाके तुल्य देखते भये २९ जब सब माया नष्टहोगईं उससमय सबदैत्यदुःखितहोकर हिरण्य

शरणंययुः ३० ततःप्रज्वलितःक्रोधात् प्रदहन्निवतेजसा। तस्मिन्क्रुद्धेतुदैत्येन्द्र तमोभूत
मभूज्जगत् ३१ आवहःप्रवहश्चैव विवहोऽथह्युदावहः। परावहःसंवहश्च महाबलपरा
क्रमाः ३२ तथापरिवहःश्रीमानुत्पातभयशंसनाः। इत्येवंक्षुभिताःसप्त मरुतोगगनेचराः
३३ येग्रहाःसर्वलोकस्य क्षयेप्रादुर्भवन्तिवै। तेसर्वेगगनेदृष्टा व्यचरन्तयथासुखम् ३४
अन्यच्चतेचाप्यचरन्मार्गंनिशिनिशाचरः। सग्रहःसहनक्षत्रैराकापतिररिन्दमः ३५ विवर्ण
तांचभगवान् गतोदिविदिवाकरः। कृष्णंकबन्धंचतथालक्ष्यतेसुमहद्दिवि ३६ अमुञ्चच्चा
र्चिषांवृन्दं भूमिवर्त्तिर्विभावसुः। गगनस्थश्चभगवानभीक्ष्णंपरिदृश्यते ३७सप्तधूम्रनिभा
घोराःसूर्य्यादिविसमुत्थिताः। सोमस्यगगनस्थस्य ग्रहास्तिष्ठन्तिशृङ्गगाः ३८ वामेनदक्षि
णेचैव स्थितौशुक्रबृहस्पती। शनैश्चरोलोहिताङ्गो ज्वलनाङ्गसमद्युती ३९ समंसमधिरोह
न्तः सर्वेतेगगनेचराः। शृङ्गाणिशनकैर्घोरा युगांतावर्तिनोग्रहाः ४० चंद्रमाश्चसनक्षत्रैर्ग्रहैः
सहतमोनुदः। चराचरविनाशाय रोहिणींनाभ्यनंदत ४१ गृह्यतेराहुणाचंद्र उल्काभिरभि
हन्यते। उल्काःप्रज्वलिताश्चन्द्रे विचरंतियथासुखम् ४२ देवानामपियोदेवः सोऽप्यवर्षत्शो
णितम्। अपतन्गगनादुल्का विद्युद्रूपामहास्वनाः ४३ अकालेचद्रुमाःसर्वे पुष्पंतिचफलं
तिच। लताश्चसफलाःसर्वा येचाहुर्दैत्यनाशनम् ४४ फलैःफलान्यजायंत पुष्पैःपुष्पंतथै
वच। उन्मीलंतिनिमीलंति हसंतिचरुदंतिच ४५ विक्रोशंतिचगम्भीरा धूमयंतिज्वलं
तिच। प्रतिमाःसर्वदेवानां वेदयन्तिमहद्भयम् ४६ आरण्यैःसहसंसृष्टा ग्राम्याश्चमृगप

कशिपुकी शरणमें जातेभये तब क्रोधसे ज्वलितहुआ हिरण्यकशिपु अपने तेजसे सबको दग्धकरने के समानहोताभया उस समयपरभी सब जगत्में अन्धकार होजाताभया ३१ और आवह १ प्रवह २ विवह ३ उदावह ४ परावह ५ संवह ६ और परिवह, इननामोंवाले उत्पातके भयके सूचक सातों वायु महाक्षुभितहोकर आकाशमें चलतेभये ३२। ३३ और जो ग्रहप्रलय प्रलयकालमें देखते हैं वह सब ग्रहआकाशमें सुखपूर्व्वक विचरते भये ३४ रात्रिमें भूतप्रेतादिक विचरनेलगे आकाशमें नक्षत्रों समेत चन्द्रमाका ग्रहण होताभया ३५ सूर्य्य भगवान्का तजहतहोगया और हिरण्यकशिपु को विनाशिवाला कालापुरुष आकाशमें दीखताभया ३६ सूर्य्यका वर्णधूलके समान धूम्रहोता भया और धुएंके समान घोरआकारवाले सातसूर्य्य आकाशमें दीखतेभये शुक्र और बृहस्पति यह दोनों बाएंसे दक्षिण ओरको आकर स्थितहोते भये शनैश्चर और मंगल यह दोनों एकही स्थानमें स्थितहोते भये अर्थात्शनैश्चर और मंगलका योगहो जाताभया सबग्रह दारुण और क्रूरदृष्टिसे ऐसे विपरीत होजातेभये जैसे कि प्रलयके समयमें होजाते हैं चन्द्रमाभी अन्य २ नक्षत्र और ग्रहों के संगस्थितहोता भया और रोहिणीके संग आनन्द नहीं करताभया राहुके साथ चन्द्रमाका ग्रहण होनेलगा प्रज्वलितहुई उल्का चन्द्रमामें दीखनेलगीं देवेन्द्र रुधिरकी वर्षाकरनेलगा आकाशसे विद्युत्पातहोनेलगा बड़ा भारी कड़कड़ाहटका शब्दहोनेलगा ३७। ४३ विनाऋतुके सबवृक्षफूलते और फलतेभये दैत्योंके नाशकी सूचक लताफूलतीं और फलती भईं ४४ फलोंसे फलउत्पन्नहुए और

क्षिणः। चक्रुःसुभैरवंतत्र महायुद्धमुपस्थितम् ४७ नद्यश्चप्रतिकूलानि वहन्तिकलुषोद
काः। नप्रकाशन्तिचदिशो रक्तरेणुसमाकुलाः ४८ वानस्पत्योनपूज्यन्ते पूजनार्हाःकथञ्च
न। वायुवेगेनहन्यन्ते भज्यन्तेप्रणमन्तिच ४९ यदाचसर्वभूतानां छायानपरिवर्तते। अ
पराह्णगतेसूर्ये लोकानांयुगसंक्षये ५० तदाहिरण्यकशिपोर्दैत्यस्योपरि वेश्मनः। भाण्डा
गारेयुधागारे निविष्टमभवन्मधु ५१ असुराणांविनाशाय सुराणांविजयायच। दृश्यन्तेवि
विधोत्पाता घोराघोरनिदर्शनाः ५२ एतेचान्येचबहवो घोरोत्पाताःसमुत्थिताः। दैत्येन्द्र
स्यविनाशाय दृश्यन्तेकालनिर्मिताः ५३ मेदिन्यांकम्पमानायां दैत्येन्द्रेणमहात्मना। म
हीधरानागगणा निपेतुरमितौजसः ५४ विषज्वालाकुलैर्वक्त्रैर्विमुञ्चन्तोहुताशनम्। चतुः
शीर्षाःपञ्चशीर्षाः सप्तशीर्षाश्चपन्नगाः ५५ वासुकिस्तक्षकश्चैव कर्कोटकधनञ्जयौ। ए
लामुखःकालिकश्च महापद्मश्चवीर्यवान् ५६ सहस्रशीर्षानागोवै हेमतालध्वजःप्रभुः।
शेषोऽनन्तोमहाभागो दुष्प्रकम्प्यःप्रकम्पितः ५७ दीप्तान्यन्तर्जलस्थानि पृथिवीधरणा
निच। तदाक्रुद्धेनमहता कम्पितानिसमन्ततः ५८ नागास्तेजोधराश्चापि पातालतल
चारिणः। हिरण्यकशिपुर्दैत्यस्तदासंस्पृष्टवान्महीम् ५९ सन्दष्टौष्ठपुटःक्रोधाद्वाराहइव
पूर्वजः। नदीभागीरथीचैव सरयूःकौशिकीतथा ६० यमुनात्वथकावेरी कृष्णवेणीचनिम्न
गा। सुवेणाचमहाभागा नदीगोदावरीतथा ६१ चर्मण्वतीचसिन्धुश्चतथानदनदीपतिः।

पुष्पोंसे पुष्पउत्पन्न होतेभये देवताओंकी मूर्त्ति आंखोंको खोलने मूंदनेलगीं हँसने रोने और गंभीर शब्दको भी करनेलगीं सब मूर्त्तियोंमें धुंआ निकलताभया और जलनेभी लगीं यह सब महाउत्पात होतेभये ४५। ४६ वनके मृगपक्षियोंके साथ ग्रामवासी मृगपक्षी आदिक मिलकर परस्परमें महान् युद्ध करतेभये ४७ नदियोंके जलमलिनहोकर वहनेलगे रक्तधूलिसे आच्छादितहुई सब दिशाप्रका- शितहोती भई ४८ पूजने के योग्य वृक्षोंकी पूजा नहीं होतीभई बड़े २ वृक्षवायुके वेगसे टूट २ कर गिरतेभये ४९ जिस समय सब भूतमात्रकी छायाढलगई ऐसे तीसरे पहरके समय विष्णु भगवान् हिरण्यकशिपुके ऊपरके वरतनके और शस्त्रोंके मकानोंमें प्रवेश करतेभये तब देवताओंकी विजय और दैत्योंके नाशके अर्थघोर दारुण उत्पात दीखतेभये कालके रचेहुए यह कहेहुए उत्पात और अन्यबहुतसे उत्पात हिरण्यकशिपु दैत्यके नाशके निमित्त दीखतेभये ५०। ५३ परन्तु जिससमय उसमहात्मा दैत्यने सब पृथ्वी कंपाई उससमय अतुलपराक्रमी नागोंके गणकांपनेलगे चार शिर- वाले पांचशिरवाले और सातशिरोंवाले सर्प ज्वालासे व्याकुल मुखोंकरके अपनी विष अग्निको छोड़ते भये ५४। ५५ और वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, धनंजय, एलामुख, कालिक, महापद्म और हजारों मुखवाले महाप्रभु शेषनाग यह सब सर्प कांपतेहुए जलके भीतर स्थितहोते भये पर्वतज्व- लितहुए उससमय क्रोधयुक्त महातेजवाले हिरण्यकशिपु दैत्यने पातालवासी महातेजस्वी सर्पोंको भी कंपादिया फिर वह दैत्य क्रोधसे ओष्ठचवाकर पृथ्वीको स्पर्शकरताभया इसकेपीछे गंगा, सरयू, कौशिकी, यमुना, कावेरी, कृष्णवेणी, सुवेणा, गोदावरी, चर्मण्वती, सिन्धु, समुद्र, शोणतीर्थ, सन्दर

कमलप्रभवश्चैव शोणोमणिनिभोदकः ६२ नर्मदाशुभतोयाच तथावेत्रवतीनदी। गोम तीगोकुलाकीर्णा तथापूर्वसरस्वती ६३ महाकालमहीचैव तमसापुष्पवाहिनी। जम्बूद्वी पंरत्नवटं सर्वरत्नोपशोभितम् ६४ सुवर्णप्रकटञ्चैव सुवर्णाकरमण्डितम्। महानदश्चलौहि त्यं शैलकाननशोभितम् ६५ पत्तनंकोशकरणं ऋषिवीरजनाकरम्। मागधाश्चमहाग्रा मा मुण्डाःशुङ्गास्तथैवच ६६ सुह्मामल्लाविदेहाश्च मालवाकाशिकोसलाः। भवनंवैनतेय स्य दैत्येन्द्रेणाभिकम्पितम् ६७ कैलासशिखराकारं यत्कृतंविश्वकर्मणा। रक्ततोयोमहा भीमो लौहित्योनामसागरः ६८ उदयश्चमहाशैल उच्छ्रितःशतयोजनम्। सुवर्णवेदिकः श्रीमान् मेघपङ्क्तिनिषेवितः ६९ भ्राजमानोऽर्कसदृशैर्जातरूपमयैर्द्रुमैः। शालैस्तालैस्त मालैश्च कर्णिकारैश्चपुष्पितैः ७० अयोमुखश्चविख्यातः सर्वतोधातुमण्डितः। तमाल वनगन्धश्च पर्वतोमलयःशुभः ७१ सुराष्ट्राश्चसबाह्लीकाः शूराभीरास्तथैवच। भोजाः पाण्ड्याश्चवङ्गाश्च कलिङ्गास्ताम्रलिप्तकाः ७२ तथैवोड्राश्चपौण्ड्राश्च वामचूडाःसके रलाः। क्षोभितास्तेनदैत्येन सदेवाश्चाप्सरोगणाः ७३ अगस्त्यभवनञ्चैव यदगम्यङ्कृ तंपुरा। सिद्धचारणसङ्घैश्च विप्रकीर्णमनोहरम् ७४ विचित्रनानाविहगं सुपुष्पितमहा द्रुमम्। जातरूपमयैःशृङ्गैर्गगनंविलिखन्निव ७५ चन्द्रसूर्यांशुसङ्काशैः सागराम्बुसमावृ तः। विद्युत्वान्सर्वतःश्रीमानायतःशतयोजनम् ७६ विद्युतांयत्रसङ्घाता निपात्यन्तेनगो त्तमे। ऋषभःपर्वतश्चैव श्रीमान्वृषभसंज्ञितः ७७ कुंजरःपर्वतःश्रीमानगस्त्यस्यगृहंशु भम्। विशालाक्षश्चदुर्धर्षः सर्पाणामालयःपुरी ७८ तथाभोगवतीचापि दैत्येन्द्रेणाभिक म्पिता। महासेनोगिरिश्चैव पारियात्रश्चपर्वतः ७९ चक्रवांश्चगिरिश्रेष्ठो वाराहश्चैवप

जलवाली नर्मदानदी, वेत्रवती, गोमती, सरस्वती, कालमही, पुष्पवाहिनीनदी, जंबूद्वीप रत्नवट सुवर्ण प्रकटकरने वालाद्वीप, लौहित्यपर्व्वत, बहुतसे ऋषि, बहुतसे शूरवीर जनोंवाला नगर, मगध देशके ग्राम, मुण्डी देश, विदेह, मालवा, काशिकोसल और गरुड़का भुवन यह सब देश और नदी पर्व्वतादिकभी उस महाबली दैत्यने कंपितकरदिये ५६।६७ विश्वकर्माने कैलासके शिखरके समान आकारवाला रक्त जलसे पूर्ण लौहित्यनाम सागरबनाया वह समुद्र और शिलाओंवाला सौ १०० योजन ऊंचामेघ की पंक्तियोंसे शोभित सूर्य्य चन्द्रमाकी समानकान्तिवाले वृक्षोंसे सेवित शालतमाल और प्रफुल्लित अमलतास इन वृक्षोंसे युक्त उदयाचल पर्व्वत ६८।७० सब धातुमय अधोमुख पर्व्वत बड़ी सुगन्धवाला मलयाचल पर्व्वत ७१ सौराष्ट्रदेश, वाह्लीक, शूर, आभीर, भोज, पाण्ड्य, कंक, कलिंग, ताम्रलिप्तक, उड़िया, पौण्ड्र, वामचूड़ बंगाला और केरल, यह सबदेशभी उसदैत्यने क्षुभि-तकर दिये और देवताओं समेत अप्सराओंके गण, अगम्य सिद्धचारणोंसे सेवित बड़ा मनोहर अग-स्त्यजी का भुवन ७२।७४ बड़ा विचित्र अनेक पुष्पपक्षी और वृक्षोंसे युक्त सुवर्ण के उन्नत शिखरों वाला चन्द्र सूर्य्यकीसी कान्तिवाले समुद्रके जलोंसे आवृत सौ१००योजन ऊंचा विद्युत्समूहोंवाला श्रीमान्ऋषभ पर्व्वत जो वृषभ नामसे प्रसिद्धहै ७५।७७ कुंजर पर्व्वत, दुर्धर्ष विशालाक्षपर्व्वत, भो-

र्वतः। प्राग्ज्योतिषपुरञ्चापि जातरूपमयंशुभम् ८० यस्मिन्वसतिदुष्टात्मा नरकोनाम दानवः। विशालाक्षश्चदुर्द्धर्षो मेघगम्भीरनिस्वनः ८१ षष्टिस्तत्रसहस्राणि पर्वतानांद्विजोत्तमाः। तरुणादित्यसङ्काशो मेरुस्तत्रमहागिरिः ८२ यक्षराक्षसगन्धर्वैर्नित्यंसेवितकन्दरः। हेमगर्भोमहाशैलस्तथा हेमसखोगिरिः ८३ कैलासश्चैवशैलेन्द्रो दानवेन्द्रेणकम्पिताः। हेमपुष्परसक्षेत्रं तेनवैखानसंसरः ८४ कम्पितंमानसञ्चैव हंसकारण्डवाकुलम्। त्रिशृङ्गपर्वतश्चैव कुमारीचसरिद्वरा ८५ तुषारचयसञ्छन्ना मन्दरश्चापिपर्वतः। उशीरबिन्दुश्चगिरिश्चन्द्रप्रस्थस्तथाद्रिराट् ८६ प्रजापतिगिरिश्चैव तथापुष्करपर्वतः। देवाभ्रपर्वतश्चैव यथावैरेणुकोगिरिः ८७ क्रौञ्चःसप्तर्षिशैलश्च धूम्रवर्णश्चपर्वतः। एते चान्येचगिरयो देशाजनपदास्तथा ८८ नद्यःससागराःसर्वाः सोऽकम्पयतदानवः। कपिलश्चमहीपुत्रो व्याघ्रवांश्चैवकम्पितः ८९ खेचराश्चसतीपुत्राः पातालतलवासिनः। गणास्तथापरोरौद्रो मेघनामाङ्कुशायुधः ९० ऊर्ध्वगोभीमवेगश्च सर्वएवाभिकम्पिताः। गदीशूलीकरालश्च हिरण्यकशिपुस्तदा ९१ जीमूतघनसङ्काशो जीमूतघननिस्वनः। जीमूतघननिर्घोषो जीमूतइववेगवान् ९२ देवारिर्दितिजोवीरो नृसिंहंसमुपाद्रवत्। समुत्पत्यततस्तीक्ष्णैर्मृगेन्द्रेणमहानखैः ९३ तदोङ्कारसहायेन विदार्यनिहतोयुधि। महीचकालश्चशशीनभश्च ग्रहाश्चसूर्यश्चदिशश्चसर्वाः। नद्यश्चशैलाश्चमहार्णवाश्च गताः प्रसादन्दितिपुत्रनाशात् ९४ ततःप्रमुदितादेवा ऋषयश्चतपोधनाः। तुष्टुवुर्नामभिर्दि

गवती नाम दैत्यों की पुरी, महासेन पर्व्वत, पारियात्र पर्व्वत, चक्रवान् पर्व्वत, उत्तमवाराह पर्व्वत और सुवर्णका प्राग्ज्योतिषपुर यहसब भी उसने कंपादिये ७८।८० और जहां दुष्टात्मा नरकासुर दानव रहताथा वह दुर्धर्ष विशालाक्ष पर्व्वत कहाताहै ८१ वहां साठ अन्यभी पर्व्वतहैं सूर्य्यकी समान कान्तिवाला सुमेरुपर्व्वत है जिसकी कन्दराओंको यक्ष राक्षस और गन्धर्व यह प्रतिदिन सेवते हैं हेमगर्भपर्व्वत, हेमसख पर्व्वत, और कैलास यहसब पर्व्वत उस हिरण्यकशिपु दानवने कंपायमान किये वैखानस सरोवर, हंस और कारंडव पक्षियों से सेवित मानस समुद्र, त्रिशृंग पर्व्वत, कुमारीनदी, मंदराचल पर्व्वत, उशीरबिन्दु सरोवर, चन्द्रप्रस्थ पर्व्वत, प्रजापतिपर्व्वत, पुष्कर पर्व्वत, देवाभ्र पर्व्वत, रेणुकपर्वत, क्रौंचपर्व्वत, सप्तऋषियों का पर्व्वत, धूम्रवर्ण पर्व्वत, यहसब पर्व्वत अन्य देश नदी समुद्र और सबलोक भी उसने कँपाये और आकाशमें विचरनेवाले सती के पुत्र, पातालवासी जन ऊर्ध्वग और भीमवेग इत्यादिक शिवजीके गणभी उसने कंपित किये इसके अनन्तर हिरण्यकशिपु दैत्यगदा और त्रिशूलकोधारण करताभया८२।९१ दोनों शस्त्रोंको लेकर मेघकीसी कान्तियुक्त मेघकेही समान गर्जनेवाला मेघही के समान वेगवाला देवताओंका शत्रु वह दैत्य नृसिंहजी के सन्मुख दौड़ताभया फिर ॐकारकी सहायवाले नृसिंहजी कूदके अपने पैने २ नखोंकरके उस हिरण्यकशिपु दैत्य के शरीरको फाड़कर उसको मारडालतेभये उस हिरण्यकशिपु दैत्यके नाशहोजानेके समयमें पृथ्वीकाल चन्द्रमा आकाश ग्रह सूर्य्य सबदिशा नदी पर्व्वत और सबसमुद्र यह सबप्रसन्न

ध्येयादिदेवंसनातनम् ९५ यत्त्वयाविहितंदेव ! नारसिंहमिदंवपुः। एतदेवार्चयिष्यन्ति परावरविदोजनाः ९६ (ब्रह्मोवाच) भवान्ब्रह्माचरुद्रश्च महेन्द्रोदेवसत्तमाः!। भवान् कर्ताविकर्ताच लोकानांप्रभवाप्ययः ९७ पराञ्चसिद्धाञ्चपरञ्चदेवंपरञ्चमन्त्रंपरमंहविश्च। परञ्चधर्मंपरमञ्चविश्वं त्वामाहुरग्र्यंपुरुषंपुराणम् ९८ परंशरीरंपरमञ्चब्रह्म परञ्चयोगंपर माञ्चवाणीम्। परंरहस्यंपरमाङ्गतिञ्च त्वामाहुरग्र्यंपुरुषंपुराणम् ९९ एवंपरस्यापिपरंप दंयत् परंपरस्यापिपरञ्चदेवम्। परंपरस्यापिपरञ्चभूतन्त्वामाहुरग्र्यंपुरुषंपुराणम् १०० परंपरस्यापिपरंनिधानं परंपरस्यापिपरंपवित्रम्। परंपरस्यापिपरंचदान्तन्त्वामाहुरग्र्यं पुरुषंपुराणम् १०१ एवमुक्त्वातुभगवान् सर्वलोकपितामहः। स्तुत्वानारायणंदेवं ब्रह्म लोकंगतःप्रभुः १०२ ततोनदत्सुतूर्येषु नृत्यन्तीष्वप्सरःसुच। क्षीरोदस्योत्तरंकूलं जगा महरिरीश्वरः १०३ नारसिंहंवपुर्देवः स्थापयित्वासुदीप्तिमत्। पौराणंरूपमास्थाय प्रय योगरुडध्वजः १०४ अष्टचक्रेणयानेन भूतयुक्तेनभास्वता। अव्यक्तप्रकृतिर्देवः स्वस्था नंगतवान्प्रभुः १०५ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेद्विषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६२ ॥

(ऋषय ऊचुः) कथितंनरसिंहस्य माहात्म्यंविस्तरेणच। पुनस्तस्यैवमाहात्म्यमन्य द्विस्तरतोवद १ पद्मरूपमभूदेतत् कथंहेममयंजगत्। कथञ्चवैष्णवीसृष्टिःपद्ममध्येऽभव त्पुरा २ (सूत उवाच) श्रुत्वाचनरसिंहस्य माहात्म्यंरविनन्दनः। विस्मयोत्फुल्लनयनः

होतेभये ९२।९४ इसके पीछेप्रसन्नहुए देवता ऋषि और गन्धर्वादिक सब मिलकर उस सनातनदेव विष्णु भगवान् की इन दिव्यनामोंकरके स्तुतिकरतेभये ९५ हे देव आपने जो यह नृसिंह शरीर धारण कियाहै इसको परावरके ज्ञाता विद्वान्लोग पूजते हैं ९६ ब्रह्माजीबोले-तुम्हीं ब्रह्माहोरुद्रहो,महेन्द्रहो, देवताओं में उत्तमहो कर्ता और विकर्ता भी आपहो लोकों के उत्पन्न करनेवालेहो आपहीको परम-सिद्ध और परमदेव कहते हैं आपहीको परममंत्र और परमहवि कहते हैं परमधर्म परमयोग और पुराण पुरुषभी कहते हैं९७।९८आपको परमशरीर परब्रह्म परमवाणी परमरहस्य और परमगतिभी कहते हैं तुम परम्पद के भी परमपदहो परमके भी परमदेव हो इसी से आपको पुराणपुरुष कहते हैं ९९।१०० परमपरानिधानहो परमपवित्रहो और परमश्रेष्ठहो १०१ ब्रह्माजी तो इसप्रकारसे स्तुतिको करके ब्रह्मलोकको प्राप्त होतेभये १०२ फिर अनेकप्रकारके बाजे बजनेलगे अप्सरा नृत्य करनेलगीं तब विष्णु भगवान् क्षीरसागर के उत्तरतटपर जातेभये वहां अपने नृसिंह शरीरको स्था-पित करके अपने पुराणपुरुषपने का रूप धारण करके गरुड़गामी विष्णु भगवान् अष्टचक्रयुक्त बड़ी कान्तिवाले उत्तमरथमें बैठकर अपने स्थानको जातेभये १०३।१०५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां द्विषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६२ ॥

ऋषियोंने पूछा हे सूतजी आपने नृसिंहजीका जो माहात्म्यकहा उससे अभी हमारी तृप्तिनहींहुई इसी हेतुसे उसी भगवान् के अन्य माहात्म्यको विस्तारपूर्वक कहिये १ प्रथम यह जगत् सुवर्ण के कमलमें कैसे उत्पन्नहुआ कमलके मध्यमें विष्णुभगवान् की सृष्टि कैसेहोतीभई इसको आप हमको

पुनःपप्रच्छकेशवम् ३ (मनुरुवाच) कथंपाद्मेमहाकल्पे तवपद्ममयंजगत्। जलार्णव गतस्येह नाभौजातंजनार्दन! ४ प्रभावात्पद्मनाभस्य स्वपतःसागराम्भसि। पुष्करेच कथंभूता देवाःसर्षिगणाःपुरा ५ एतमाख्याहिनिखिलं योगंयोगविदाम्पते!। शृण्वतस्त स्यमेकीर्त्तिंनतृप्तिरुपजायते ६ कियताचैवकालेन शेतेवैपुरुषोत्तमः। कियन्तंवास्वपि तिच कोऽस्यकालस्यसम्भवः ७ कियतावाथकालेन ह्युत्तिष्ठतिमहायशाः। कथञ्चोत्थाय भगवान् सृजतेनिखिलंजगत् ८केप्रजापतयस्तावदासन्पूर्वंमहामुने!। कथंनिर्मितवांश्चै व चित्रंलोकंसनातनम् ९ प्रथमेकार्णवेशून्ये नष्टस्थावरजङ्गमे। दग्धदेवासुरनरे प्रनष्टो रगराक्षसे १० नष्टानिलानलेलोके नष्टाकाशमहीतले। केवलंगह्वरीभूते महाभूतविपर्य ये ११ विभुर्महाभूतपतिर्महातेजामहाकृतिः। आस्तेसुरवरश्रेष्ठो विधिमास्थाययोगवि त् १२ शृणुयांपरयाभक्त्या ब्रह्मन्नेतदशेषतः। वक्तुमर्हसिधर्मिष्ठ! यशोनारायणात्मक म् १३ श्रद्धयाचोपविष्टानां भगवन्! वक्तुमर्हसि। (मत्स्य उवाच) नारायणस्ययश सः श्रवणेयातवस्पृहा १४ तद्वंश्यान्वयभूतस्य न्याय्यंरविकुलर्षभ!। शृणुष्वादिपुरा णेषु वेदेभ्यश्चयथाश्रुतम् १५ ब्राह्मणानाञ्चवदतां श्रुत्वावैसुमहात्मनाम्। तथाचतप साद्दृष्ट्वा बृहस्पतिसमद्युतिः १६ पराशरसुतःश्रीमान् गुरुर्द्वैपायनोऽब्रवीत्। तत्तेऽहंकथ यिष्यामि यथाशक्तियथाश्रुति १७ यद्विज्ञातुंमयाशक्यमृषिमात्रेणसत्तमाः। कःसमु

समझाकर कहो-सूतजीबोले वहसूर्य्यकापुत्रमनु नृसिंहजीके माहात्म्यको सुनकर अत्यन्त आश्चर्य करके विष्णुभगवान्से फिर पूछनेलगा अर्थात् २।३ मनुनेकहा हेजनार्दनजी जलार्णवमें प्राप्तहुए आ पकी नाभिमें प्रथम पाद्मकल्पके मध्य कमलसे कैसे जगत् उत्पन्नहुआ ४ प्रथम समुद्रमें शयनकरने वाले पद्मनाभ विष्णुभगवान्से उत्पन्नहुए कमलमें देवता और ऋषियों के गण कैसे उत्पन्नहुए ५ हे योगविदाम्पते इस संपूर्ण योगको आप वर्णनकीजिये आपकी कीर्त्तिके सुननेसे मेरी तृप्तिनहींहो तीहै ६ कितने कालमें विष्णुभगवान् शयन करते हैं और कितने कालतक निद्रामें सोते हैं इनके कालकी उत्पत्ति कौनसीहै ७ कितने कालमें विष्णुभगवान् शयनसे उठते हैं और उठकर किस प्र कारसे इस जगत्को रचते हैं ८ रचनाके समय प्रजापति कौनहोताहै विचित्र, सनातन, लोकको कैसे रचतेभये ९ जब स्थावर जंगम जीवनष्टहोगये तब एकार्णव जलही जल रहजाताहै देवता दैत्य और मनुष्य यह सब भस्महोजाते हैं पृथ्वी अप् तेज वायु और आकाश यह पांचों महाभूत विपर्य्यय होजाते हैं उस समय महाभूतपति महातेजस्वी और बड़ी आकृतिवाले योगवित् विष्णुभगवान्ही अपनी क्रियाको प्राप्तहोकर शेष रहजाते हैं इससब कथाको मैं सुनना चाहताहूं आप इस नारायण के यशको कहनेके योग्य हैं १० । १३ हे भगवन् मुझे सुननेकी बड़ी श्रद्धा पूर्व्वक इच्छा है मनुजी के इस श्रद्धायुक्त वचनको सुनकर मत्स्यजीबोले हे सूर्य्यवंशावतंसमनुजी तेरी इच्छा नारायण के यशके सुननेमें हुईहै यहबड़ी योग्य है आदि पुराणोंमें जैसाकि वेदोंसे श्रवण हुआ है उसको सुनो १४ । १५ बड़े २ उत्तममहात्मा ब्राह्मणोंसे तपके प्रभाववाले पराशरके पुत्र बृहस्पतिके समान ते-

त्संहतेज्ञातुं परंनारायणात्मकम् १८ विश्वायनस्ययद्ब्रह्मा नवेदयतितत्त्वतः। तत्कर्म्मं विश्ववेदानां तद्रहस्यंमहर्षिणाम् १९ तमीज्यंसर्वयज्ञानां तत्तत्त्वंसर्वदर्शिनाम्। तदध्या त्मविदांचिन्त्यं नरकंचविकर्मिणाम् २० अधिदैवञ्चयद्दैवमधियज्ञंसुसंज्ञितम्। तद्भूतम धिभूतञ्च तत्परंपरमर्षिणाम् २१ सयज्ञोवेदनिर्दिष्टस्तत्तपःकवयोविदुः। यःकर्ताकारको बुद्धिर्मनःक्षेत्रज्ञएवच २२ प्रणवःपुरुषःशास्ता एकश्चेतिविभाव्यते। प्राणःपञ्चविधश्चै व ध्रुवअक्षरएवच २३ कालःशाकश्चयन्ताच द्रष्टास्वाध्यायएवच। उच्यतेविविधैर्देवः स एवायंनतत्परम् २४ सएवभगवान्सर्वं करोतिविकरोतिच। सोऽस्मान्कारयतेसर्वान् सोऽत्येतिव्याकुलीकृतान् २५ यतामहेतमेवाद्यन्तमेवेच्छामनिर्वृताः। योवक्तायच्चवक्तव्यं यच्चाहन्तद्ब्रवीमिवः २६ श्रूयतेयच्चवैश्राव्यं यच्चान्यत्परिजल्प्यते। याःकथाश्चैववर्तन्ते श्रुतयोवाथतत्पराः २७ विश्वंविश्वपतिर्यश्च सतुनारायणःस्मृतः। यत्सत्यंयदमृतमक्ष रंपरंयत् यद्भूतंपरममिदंचयद्भविष्यत्। तत्किञ्चिच्चरमचरंयदस्ति चान्यत् तत्सर्वंपुरुष वरःप्रभुःपुराणः २८॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेत्रिषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६३॥

(मत्स्य उवाच) चत्वार्याहुःसहस्राणि वर्षाणान्तुकृतंयुगम्। तस्यतावच्छतीसन्ध्याद्वि गुणारविनन्दन१यत्रधर्मश्चतुष्पादस्त्वधर्मःपादविग्रहः।स्वधर्मनिरताःसन्तो जायन्तेयत्र मानवाः २विप्राःस्थिताधर्मपरा राजवृत्तौस्थितानृपाः। कृष्यामभिरतावैश्याः शूद्राःशुश्रूष

जस्वी वेद व्यासजीने वर्णन किया है वही मैंभी अपनी शक्तिके अनुसार तेरे आगे कहताहूं १६। १७ प्रथम वेदव्यासजीने ऋषियोंसे कहाकि हेऋषिलोगो उसनारायणके जानने को तो कोईभी समर्थ नहीं है परन्तु जैसाकि अपनी बुद्धिके अनुसार मैंने जानरक्खा है वहतुमसे कहताहूं १८ विश्वका रचने वाला ब्रह्माभी उसके तत्त्वको नहीं जानता है क्योंकि वही सब वेदोंका कर्मोंका सर्वदर्शी ऋषियों का तत्त्व महर्षियोंका रहस्य सबयज्ञोंकापूज्य आत्मज्ञानियोंका चिन्त्य दुष्टकर्मियों का नरक अधिदैव अधियज्ञ अधिभूत और परम ऋषियोंका परमज्ञान है १९। २१ वही वेद में कहाहुआ यज्ञ है कवि- जन उसीको तपकहते हैं वही कर्त्ता कारक और बुद्धि मन क्षेत्रादिका ज्ञाताहै २२ ओंकारहै शिक्षादेने वाला पुरुष है सदाएक है पांचों प्रकारका प्राणहै ध्रुव अक्षर है २३ कालहै शाकाहै यन्ताहै द्रष्टाहै स्वाध्यायहै वही देवहै उससे परे कुछ नहीं है २४ वही भगवान् सबकुछ करताहै वही नष्ट करदेताहै हम सबका करनेवाला है और व्याकुलहुए हमसबोंसे पृथक् रहता है उसीका अब हमसब यत्न कररहे हैं उसीकी इच्छा करतेहैं २५। २६ जो सुनाजाता है सुनने के योग्यहै जो कहाजाताहै जो कथाहै जो श्रुतिहै यह सब उसीमें तत्पर हैं वही विश्व है वही विश्वकापति नारायण कहाजाता है जो सत्य है परम अमृत है अक्षरहै भूत भविष्य वर्त्तमान है चराचर जगत् है और पुराण पुरुषब्रह्म है २७। २८॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६३॥

मत्स्यजी कहते हैं कि हे मनु सत्ययुग की संख्या चारहज़ार दिव्यवर्षोंकी है और दिव्य चार २ सौ वर्षकी संध्या और संध्यांश रहते हैं १ जहांसत्ययुगमें चतुष्पाद धर्मरहताहै और अधम का एकपाद

वःस्थिताः ३ तदासत्यञ्चशौचञ्च धर्मश्चैवविवर्धते। सद्भिराचरितंकर्म क्रियतेस्थायते
चवै ४ एतत्कार्तयुगंवृत्तं सर्वेषामपिपार्थिव!। प्राणिनांधर्मसङ्गानामपिवैनीचजन्मना
म् ५ त्रीणिवर्षसहस्राणि त्रेतायुगमिहोच्यते। तस्यतावच्छतीसन्ध्या द्विगुणापरिकीर्त्य
ते ६ द्वाभ्यामधर्मःपादाभ्यां त्रिभिर्धर्मोव्यवस्थितः। यत्रसत्यञ्चसत्वञ्च त्रेताधर्मोविधी
यते ७ त्रेतायांविकृतिंयान्ति वर्णास्त्वेतेनसंशयः। चतुर्वर्णस्यवैकृत्याद्यान्तिदौर्बल्यमा
श्रमाः ८ एषात्रेतायुगगतिर्विचित्रादेवनिर्मिता। द्वापरस्यतुयाचेष्टा तामपिश्रोतुमर्हसि९
द्वापरन्द्वेसहस्रेतु वर्षाणांरविनन्दन!। तस्यतावच्छतीसन्ध्या द्विगुणायुगमुच्यते १० त
त्रचार्थपराःसर्वे प्राणिनोरजसावृताः। सर्वेनैष्कृतिकाःक्षुद्रा जायन्तेरविनन्दन! ११ द्वा
भ्यांधर्मःस्थितःपद्भ्यामधर्मस्त्रिभिरुत्थितः। विपर्ययाच्छनैर्धर्मः क्षयमेतिकलौयुगे १२
ब्राह्मण्यभावस्यततो तथौत्सुक्यंव्यशीर्यते! व्रतोपवासास्त्यज्यन्ते द्वापरेयुगपर्यये १३
तथावर्षसहस्रन्तु वर्षाणांद्वेशतेऽपि। सन्ध्ययासहसंख्यातं क्रूरङ्कलियुगंस्मृतम् १४
यत्राधर्मश्चतुष्पादःस्यात्धर्मःपादविग्रहः।कामिनस्तपसाच्छन्ना जायन्तेतत्रमानवाः१५
नैवातिसात्विकःकश्चिन्नसाधुर्नचसत्यवाक्। नास्तिकाब्रह्मभक्तावा जायन्तेतत्रमानवाः
१६ अहङ्कारगृहीताश्च प्रक्षीणस्नेहबन्धनाः। विप्राःशूद्रसमाचाराः सन्तिसर्वेकलौ

रहताहै वहां सबलोग अपने धर्म में तत्पर सन्तजन उत्पन्न होते हैं २ सब ब्राह्मण उत्तमधर्मों में प्रवृत्त रहते हैं क्षत्रिय राज्यकार्य्य में तत्परहोते हैं शूद्र सेवाकर्ममें आसक्त रहते हैं ३ उसयुगमें सत्य शौच और धर्म यह बढ़ते हैं और सबलोग श्रेष्ठोंके कियेहुए धर्मोंका आचरण करते हैं और सदैव उसीको प्रसिद्ध करते हैं ४ हे राजन् यह सत्ययुगका वृत्तान्त सब मनुष्यों के इसीप्रकारका रहता है और नीच जातियोंके भी अपने धर्मका आचरण होताहै ५ तीनहज़ार दिव्य वर्षोंतक त्रेतायुग रहता है और छःसौ ६०० वर्षतक उस त्रेताकी संध्या रहती है ६ त्रेतामें अधर्मके दो पाद रहते हैं धर्मके तीनपाद स्थित रहते हैं उस धर्ममें सत्य और सत्वगुण रहताहै त्रेतायुगमें सबवर्ण विकृतिताको प्राप्तहोजाते वहां वर्णोंकी विकृति होने से आश्रम महा दुर्बल होजाते हैं ७।८ इसप्रकारकी दैव से रचीहुई त्रेतायुग की गति वर्णन की है अब हम द्वापरकी चेष्टा वर्णन करते हैं उसको तुम सुनो ९ हेरविनन्दन द्वापर युगकी संख्यादिव्य दोहज़ार वर्षोंतक रहती है और चारसौ वर्ष तक संध्या रहती है १० इसद्वापर युगमें सब प्राणी रजोगुण से वृत रहते हैं और क्षुद्र होकर तुच्छ होते हैं धर्मके दोपादस्थिर रहते हैं अधर्मके तीन पाद रहते हैं फिर कलियुगमें शनैः धर्मनष्ट होजाताहै ११।१२ उस द्वापर युगके अन्त में ब्राह्मणोंका भाव शिथिल होजाता है व्रतोंके उपवास नष्ट होजाते हैं १३ और दिव्य एकहज़ार वर्षतक क्रूर कलियुग रहताहै और दोसौ २०० वर्षतक उसकी संध्या रहती है १४ उसमें अधर्मके चार पद रहते हैं और धर्मका एकपाद रहताहै उस युगमें कामीपुरुष उत्पन्न होते हैं १५ उनपुरुषों में कोई भी अत्यन्त सत्वगुणी नहीं होताहै कोई सत्यवक्ता नहीं होता नास्तिक होकर ब्रह्मकी भक्ति वाले अहंकारसे युक्तस्नेह न रखने वाले और शूद्रों के आचरण करने वाले ऐसे ब्राह्मण कलियुगमें

युगे १७ आश्रमाणांविपर्यासः कलौसंपरिवर्तते । वर्णानाञ्चैवसन्देहो युगान्तेरविनन्द
न! १८ विद्याद्द्वादशसाहस्रीं युगाख्यांपूर्वनिर्मिताम्। एवंसहस्रपर्यन्तं तदहोब्राह्ममुच्य
ते १९ ततोऽह्निगतेतस्मिन्सर्वेषामेवजीविनाम्। शरीरनिर्वृतिंदृष्ट्वा लोकसंहारबुद्धितः
२० देवतानाञ्चसर्वासां ब्रह्मादीनांमहीपते!। दैत्यानांदानवानाञ्च यक्षराक्षसपक्षिणा
म् २१ गन्धर्वाणामप्सरसां भुजङ्गानाञ्चपार्थिव! । पर्वतानांनदीनाञ्च पशूनाञ्चैवस
त्तम!२२ तिर्यग्योनिगतानाञ्च सत्वानांकृमिणान्तथा। महाभूतपतिःपञ्च हत्वाभूतानि
भूतकृत् २३ जगत्संहरणार्थाय कुरुतेवैशसंमहत्। भूत्वासूर्यश्चक्षुषीचाददानो भूत्वावा
युःप्राणिनांप्राणजालम् । भूत्वावह्निर्निर्दहन्सर्वलोकान् भूत्वामेघोभूयउग्रोऽप्यवर्षत् २४

इति श्रीमत्स्यपुराणेचतुःषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६४॥

(मत्स्य उवाच) भूत्वानारायणोयोगी सत्वमूर्तिर्विभावसुः । गभस्तिभिःप्रदीप्ताभिः
संशोषयतिसागरान् १ ततःपीत्वार्णवान्सर्वान् नदीःकूपांश्चसर्वशः । पर्वतानाञ्चसलि
लं सर्वमादायरश्मिभिः २ भित्त्वागभस्तिभिश्चैव महीङ्गत्वारसातलात्। पातालजलमा
दाय पिबन्नुरसमुत्तमम् ३ मूत्रासृक्क्लेदमन्यच्च यदस्तिप्राणिषुध्रुवम् । तत्सर्वमरविन्दा
क्षमादत्तेपुरुषोत्तमः ४ वायुश्चभगवान्भूत्वा विधुन्वानोऽखिलंजगत्। प्राणापानसमा
नाद्यात् वायुनाकर्षतेहरिः ५ ततोदेवगणाःसर्वे भूतान्येवचयानितु। गन्धोघ्राणंशरीरञ्च
पृथिवींसंश्रिताःगुणाः ६ जिह्वारसश्चस्नेहश्च संश्रिताःसलिलेगुणाः । रूपंचक्षुर्विपाक

होते हैं १६।१७ कलियुगमें आश्रमोंका विपर्य्यय होकर युगों के अन्तमें वर्णोंकाभी सन्देह होजाता है १८ प्रथम रची हुई यहद्वादश साहस्री है अर्थात् बारह हज़ार दिव्य वर्षोंमें जब चारो युगव्यतीत होजाते हैं तब ब्रह्माजीका एकदिन होताहै १९ जब ब्रह्माजी का दिन व्यतीत होजाता है तब सब प्राणियोंके शरीरकी निवृत्तिको देख ईश्वर संहार करने की इच्छा करता है ब्रह्मादिक सब देवता दैत्य दानव यक्ष राक्षस पक्षी गन्धर्व अप्सरा सर्प पर्व्वत नदी पशु तिर्य्यग् योनि अर्थात् पशु बिच्छू और अनेक प्रकारके कृमि इनसबका संहारकर पंचमहाभूतों का भी संहार करदता है २०।२३ इस प्रकारसे प्रलयहोतीहै तब सबप्राणियोंके नेत्रोंको विष्णुभगवान् सूर्य्यहोकरग्रहणकरलेते हैं वायुहो कर सबके प्राणोंको शोषणकरलेतेहैं अग्निहोकर सबलोकोंको दग्ध करदेतेहैं और मेघहोकर दारुण वर्षा करते हैं २४ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतु.षष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६४ ॥

मत्स्यजीकहतेहैं कि योगीश्वरनारायण सूर्य्यहोकर अपनी दीप्तकिरणोंकेद्वारा समुद्रों को शोषलेते हैं १ फिर सब समुद्र नदी कूप वापी तड़ागादिकोंके जलोंको शोषकर अपनी किरणोंसे पर्व्वतोंके भी जलोंको ग्रहणकरलेतेहैं २ फिर अपनीकिरणोंहीसे पृथ्वीकोफोड़ पातालमें जाकर पातालकेभी रस कोग्रहण करलेतेहैं और सब प्राणियोंके मूत्र रुधिर और वसा इनसबको शोषण करलेतेहैं ३।४ इस केपीछे विष्णुभगवान् वायुहोके सबजगत्को कँपाकर प्राण अपान समानादिक सब वायुओं को भी खैंचलेते हैं ५ और देवतागण भूत गंध नासिका और शरीर यहसब पृथ्वीके आश्रयहोजाते हैं ६ और जिह्वा

श्च ज्योतिरेवाश्रितागुणाः ७ स्पर्शःप्राणश्चचेष्टाच पवनेसंश्रितागुणाः । शब्दःश्रोत्रञ्च खान्येव गगनेसंश्रितागुणाः ८ लोकमायाभगवता मुहूर्त्तेनविनाशिता। मनोबुद्धिश्चसर्वेषां क्षेत्रज्ञश्चेतियःश्रुतः ९ तंवरेण्यंपरमेष्ठि हृषीकेशमुपाश्रिताः । ततोभगवतस्तस्य रश्मिभिःपरिवारितः १० वायुनाक्रम्यमाणासु द्रुमशाखासुचाश्रितः । तेषांसङ्घर्षणोद्भूतः पावकःशतधाज्वलन् ११ अदहत्तदासर्वं वृतःसम्वर्तकोऽनलः । सपर्वतद्रुमान्गुल्मान् लतावल्लीस्तृणानिच १२ विमानानिचदिव्यानि पुराणिविविधानिच । यानिचाश्रयणीयानि तानिसर्वाणिसोऽदहत् १३ भस्मीकृत्वाततःसर्वान् लोकान्लोकगुरुर्हरिः । भूयोनिर्वापयामास युगान्तेनचकर्म्मणा १४ सहस्रवृष्टिःशतधा भूत्वाकृष्णोमहाबलः । दिव्यतोयेनहविषा तर्पयामासमेदिनीम् १५ ततःक्षीरनिकायेन स्वादुनापरमाम्भसा । शिवेनपुण्येनमहीनिर्वाणमगमत्परम् १६ तेनरोधेनसञ्छन्ना पयसांवर्षतोधरा । एकार्णवजलीभूता सर्वसत्वविवर्जिता १७ महासत्वान्यपिविभुं प्रनष्टान्यमितौजसम्। नष्टार्कपवनाकाशे सूक्ष्मेजगतिसंवृते १८ संशोषमात्मनाकृत्वा समुद्रानपिदेहिनः । दग्ध्वासंप्लाव्यचतथास्वपित्येकःसनातनः १९ पौराणंरूपमास्थाय स्वपित्यमितविक्रमः। एकार्णवजलव्यापी योगीयोगमुपाश्रितः २० अनेकानिसहस्राणि युगान्येकार्णवाम्भसि । नचैनंकश्चिदव्यक्तं व्यक्तंवेदितुमर्हति २१ कश्चैवपुरुषोनाम किंयोगःकश्चयोगवान् । असौकियन्तं

रस और स्नेह यहसवगुण जलमें संस्थितहोजाते हैं और रूप चक्षु और विपाक यहसवगुण अग्निके आश्रयहोजातेहैं ७ और स्पर्श प्राण औरचेष्टा यहगुण वायुके आश्रय होजातेहैं और शब्द श्रोत्र और इन्द्रिय यह आकाशमें स्थितहोजातेहैं ८ भगवान् इसलोकमायाको मुहूर्त्तमात्रमें नष्टकरदेतेहैं तवसव प्राणियोंके मन बुद्धि और क्षेत्रज्ञ यह सव उस वरेण्यपरमेष्ठी और हृषीकेश विष्णुभगवान्में प्राप्तहो जाते हैं इसके अनन्तर सूर्य्यनारायणकी किरणोंसे देदीप्त वायुसेहिलतीहुई शाखाके वृक्षोंके आश्रितहुआ अग्नि संकर्पण नामसे और संवर्त्तकनामसे प्रसिद्ध होकर उस प्रलयकालमें सव जगत्को दग्धकरदेताहै अर्थात् पर्वत वृक्ष गुल्मलता वेल तृण और अनेकप्रकारके दिव्य २ पुरातन विमान इनसव आश्रयस्थानोंको वह अग्नि दग्ध कर देताहै ९ । १३ लोकोंकेगुरु विष्णुभगवान् सवलोकोंकोदग्धकरके फिरयुगके अन्तमें महावली विष्णुहोकर अपने सैकड़ों रूपोंसे वर्षाकरके दिव्य अमृत जलसे पृथ्वीको तृप्तकरदेतेहैं १४ । १५ फिर दूधके समान स्वादयुक्त जलसे पृथ्वी भरजातीहै उसी जलकी वर्षासे पृथ्वी आच्छादितहोजाती है और पृथ्वीपरकोईभी जीवशेषनहीं रहताहै सर्वत्र एकार्णवरूप जलही जलहोजाताहै १६ । १७ सवजीव नष्टहोजातेहैं सूर्य्य वायु और आकाश यहसव सूक्ष्म होकर जगत्मेंही लीनहोजाते हैं उस समय विष्णु भगवान् समुद्रोंको भी अपने प्रभावसे शोषणकरके अकेलेही सोजाते हैं अर्थात् वह अतुल पराक्रमी महायोगी विष्णु भगवान् उसएकार्णव जलमें अनेक हज़ार वर्षोंतक शयनकरते हैं तव इस अव्यक्त विष्णुभगवानको व्यक्तरूपसे अर्थात् प्रकटतासे कोई भी नहीं जानसकाहै १८ । २१ उससमय ऐसा कोई भी नहीं जान सकाहै कि यहां कौनपुरुष

कालञ्च एकार्णवविधिंप्रभुः २२ करिष्यतीतिभगवानितिकश्चिन्नबुध्यते। नद्रष्टानैवगमि तानज्ञातानवपार्श्वगः २३ तस्यनज्ञायतेकिञ्चित्तमृतेदेवसत्तमम्। नमःक्षितिंपवनमपः प्रकाशं प्रजापतिंभुवनधरंसुरेश्वरम्। पितामहंश्रुतिनिलयमहामुनिं प्रशाम्यभूयःशयनं ह्यरोचयत् २४॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे पञ्चषष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः १६५॥

(मत्स्य उवाच) एवमेकार्णवीभूते शेतेलोकेमहाद्युतिः। प्रच्छाद्यसलिलेनोर्वीं हंसो नारायणस्तदा १ महतोरजसोमध्ये महार्णवसरःसुवे। विरजस्कंमहाबाहुमक्षयंब्रह्मयं विदुः २ आत्मरूपप्रकाशेन तमसासंवृतःप्रभुः। मनःसात्त्विकमाधाय यत्रतत्सत्यमास त ३ याथातथ्यंपरंज्ञानं भूतन्तद्ब्रह्मणापुरा। रहस्यारण्यकोद्दिष्टं यच्चौपनिषदंस्मृतम् ४ पुरुषोयज्ञइत्येतत् यत्परंपरिकीर्तितम्। यश्चान्यःपुरुषाख्यःस्यात्सएषपुरुषोत्तमः ५ येचयज्ञकराविप्रा येचर्त्विजइतिस्मृताः। अस्मादेवपुराभूता यज्ञेभ्यःश्रूयतांतथा ६ ब्र ह्माणंप्रथमंवक्त्रादुद्गातारञ्चसामगम्। होतारमपिचाध्वर्युं बाहुभ्यामसृजत्प्रभुः ७ ब्र ह्मणोब्राह्मणाच्छंसि प्रस्तोतारञ्चसर्वशः। तौमित्रावरुणौपृष्ठात् प्रतिप्रस्तारमेवच ८ उ दरात्प्रतिहर्त्तारं पोतारञ्चैवपार्थिव!। अच्छावाकमथोरुभ्यान्नेष्टारञ्चैवपार्थिव! ९ पा णिभ्यामथचाग्नीध्रं सुब्रह्मण्यञ्चजानुतः। ग्रावस्तुतन्तुपादाभ्या मुन्नेतारञ्चयाजुषम् १० एवमेवेषभगवान् षोडशैवजगत्पतिः। प्रवक्तॄन्सर्वयज्ञानामृत्विजोऽसृजदुत्तमान् ११ त

है कौन योगहै कौन योगवान्है यहविष्णुभगवान् कितनेकालतक एकार्णवमें शयनकरेंगे इसबातका द्रष्टा कोई नहीं रहताहै उसी विष्णु भगवान्के विना उनके प्रभावको कोई नहीं जानता है और पृथ्वी जल अग्नि वायु और भुवनोंके अधिपति प्रजापति ब्रह्माजी इन सबोंको नष्टकरके जोशयन करनेकी इच्छाकरता है उस विष्णु भगवान्के अर्थ मेरा नमस्कार है २२। २४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचषष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः १६५॥

मत्स्यजीबोले जब एकार्णवजल होजाताहै उससमय हंसनारायण विष्णु भगवान् उसमें शयन करते हैं १ जो महान् रजोगुणके मध्यमें और महान् जलोंके मध्यमें सोताहै उसको अक्षयब्रह्मकह- तेहैं २ वह प्रभु विष्णु भगवान उस तमोगुणको अपने आत्मप्रकाशसे दूरकरतेहैं सत्वगुणी मनको प्राप्तहोके सत्यके आश्रयहोजाता है प्रथम ब्रह्माजी ने जो याथातथ्यरहस्य औपनिषदज्ञान और पु- रुषयज्ञ वर्णन कियाहै वही यह पुरुषोत्तम भगवान् शयनकरते हैं ३। ५ और यज्ञों के करने कराने वाले ऋत्विक् ब्राह्मण प्रथम इन्हीं विष्णु भगवान् से उत्पन्नहुए हैं ६ प्रथम सामके जाननेवाले उ- द्गाता ब्राह्मणको विष्णु भगवान ने उत्पन्न किया फिर होता अध्वर्यु ब्राह्मणोंको अपनी भुजाओं से रचा, प्रस्तोता ब्राह्मणको अपने सब उत्तम अंगोंसे उत्पन्नकिया मित्र और वरुण इन देवताओं को पीठसे उत्पन्नकिया ७। ८ प्रतिहर्त्ता ब्राह्मणको और पोता ब्राह्मणको उदरसे उत्पन्न किया अच्छा- वाक और नेष्टा इन ब्राह्मणोंको जांघोंसे उत्पन्न किया, अग्नीध्र ब्राह्मणको हाथों से,सुब्रह्मण्य ब्राह्म- णको घोटुओंसे,ग्रावस्तुत ब्राह्मणको चरणों से, यजुर्वेदके ज्ञाता उन्नेता ब्राह्मणको पैरोंकेतले से उ-

देषवैवेदमयः पुरुषोयज्ञसंस्थितः। वेदाश्चैतन्मयाःसर्वे साङ्गोपनिषदक्रियाः १२ स्वपि
त्येकार्णवेचैव यदाश्चर्यमभूत्पुरा। श्रूयन्तांतद्यथाविप्रा! मार्कण्डेयकुतूहलम् १३ गीर्णो
भगवतस्तस्य कुक्षावेवमहामुनिः। वहुवर्षसहस्रायुस्तस्यैववरतेजसा १४ अटंस्तीर्थप्र
सङ्गेन पृथिवीतीर्थगोचरान्। आश्रमाणिचपुण्यानि देवतायतनानिच १५ देशान्राष्ट्रा
णिचित्राणि पुराणिविविधानिच। जपहोमपरःशान्तस्तपोघोरंसमास्थितः १६ मार्कण्डे
यस्ततस्तस्य शनैर्वक्त्राद्विनिःसृतः। सनिष्क्रामन्नचात्मानं जानीतेदेवमायया १७ निष्क्र
म्याप्यस्यवदनादेकार्णवमथोजगत्। सर्वतस्तमसाच्छन्नं मार्कण्डेयोऽन्ववैक्षत १८ त
स्योत्पन्नंभयन्तीव्रं संशयश्चात्मजीविते। देवदर्शनसंहृष्टो विस्मयंपरमङ्गतः १९ चिन्त
यन्जलमध्यस्थो मार्कण्डेयोऽन्ववैक्षत। किन्तुस्याम्ममचिन्तेयं मोहःस्वप्नोऽनुभूयते २०
व्यक्तमन्यतमोभावस्तेषांसम्भावितोमम। नहीदृशंजगत्क्लेशमयुक्तंसत्यमर्हति २१ न
ष्टचन्द्रार्कपवने नष्टपर्वतभूतले। कतमःस्यादयंलोक इतिचिन्तामवस्थितः २२ ददर्श
चापिपुरुषं स्वपन्तंपर्वतोपमम्। सलिलेऽर्द्धमथोमग्नं जीमूतमिवसागरे २३ ज्वलन्त
मिवतेजोभिर्गोयुक्तमिवभास्करम्। शर्वर्य्यांजाग्रतमिव भासन्तंस्वेनतेजसा २४ देवन्द्र
ष्टुमिहायातः कोभवानितिविस्मयात्। तथैवसमुनिःकुक्षिं पुनरेवप्रवेशितः २५ सम्प्रवि

त्पन्नकरते भये इस प्रकारसे विष्णु भगवान् सब यज्ञोंके प्रवक्ता सोलह १६ ऋत्विजोंको रचते भये ९। ११ सो यह यज्ञमूर्त्ति विष्णु भगवान् वेदमय हैं और उपनिषदों सहित चारोंवेद इन विष्णु भगवान् में तत्पररहते हैं १२ जिससमय विष्णु भगवान् एकाकीही एकार्णव जलमें शयनकरते भये उससमय मार्कण्डेयजीने जो आश्चर्य्यदेखा उसको हमकहते हैं १३ विष्णु भगवान् के भीतरलीन हुए अर्थात् विष्णुजीसे निगलेहुए मार्कण्डेय मुनि विष्णु भगवान् की कुक्षिमें प्राप्तहो करके तेजसे हज़ारोंवर्षतक उसीमें विचरतेभये १४और तीर्थके प्रसंगसे सब पृथ्वीमें विचरतेहुए पवित्रआश्रम और देवताओंके स्थानोंमें प्राप्तहोताभया १५ फिर विचित्र २ देश राज्य और अनेक प्रकारके नगर इन सबको देख जपहोम घोरतपादिकों में प्रवृत्तहोकर मार्कण्डेयमुनि शनैः विष्णु भगवान् के मुखसे बाहर निकलताभया तब दैवकी मायासे मोहितहो मुखसे बाहर निकलतेही अपनी आत्माको नहीं जानता भया १६। १७ फिर उस एकार्णव जलमें वह मुनि सब जगत् को तमोगुणसे व्याप्त देखताभया १८ तबतो मार्कण्डेयजीको बड़ाभारी भयउत्पन्न होताभया और अपने जीवनेका भी सन्देह होगया जब विष्णु देवके दर्शन करने से परमआश्चर्य्य को प्राप्तहोगये तब जलके मध्यमें स्थित हुए मुनि चिन्तवन करनेलगे कि यह मुझको मोहहै अथवा मैं स्वप्न देखरहाहूं १९। २० मैंने यह क्या आश्चर्य्य देखाहै यहजगत् ऐसा क्लेशसे युक्त नहीं होवेगा इसप्रकारसे चिन्ताकरतेहुए मार्कण्डेय मुनि चन्द्रमा सूर्य्य वायु पर्वत और पृथ्वी इनसबके नाशकर्त्ता विष्णुभगवान्को उसएकार्णव जल में देखकर विचारकरनेलगे कि पर्वतके समान आधाडूबाहुआ यहकौनहै यह विचारकर उससे कहने लगे कि अग्नि और सूर्य्यके तेजके समान तेजस्वीरूप तू कौनहै क्यातूभी यहां विष्णुदेवके दर्शन

ष्टःपुनःकुक्षिं मार्कण्डेयोऽतिविस्मयः। तथैवचपुनर्भूयो विजानन्स्वप्नदर्शनम् २६ सतथै वयथापूर्वं योधरामटतेपुरा। पुण्यतीर्थजलोपेतां विविधान्याश्रमाणिच २७ क्रतुभिर्यज मानांश्च समाप्तवरदक्षिणान्। अपश्यद्देवकुक्षिस्थान् याजकाञ्छतशोद्विजान् २८ सद्वृत्तमास्थिताःसर्वे वर्णाब्राह्मणपूर्वकाः। चत्वारश्चाश्रमाःसम्यग्यथोद्दिष्टामयातव २९ एवं वर्षशतंसाग्रं मार्कण्डेयस्यधीमतः। चरतःपृथिवींसर्वांन्नकुक्ष्यन्तःसमीक्षितः ३० ततः कदाचिदथवै पुनर्वक्त्राद्विनिःसृतः। सुप्तंन्यग्रोधशाखायां बालमेकंनिरैक्षत ३१ तथैवैका र्णवजले नीहारेणावृताम्बरे। अव्यग्रःक्रीडतेलोके सर्वभूतविवर्जिते ३२ समुनिर्विस्मया विष्टः कौतूहलसमन्वितः। बालमादित्यसङ्काशं नाशक्नोदभिवीक्षितुम् ३३ सचिन्तयंस्त थैकान्ते स्थित्वासलिलसन्निधौ। पूर्वदृष्टमिदंमन्ये शङ्कितोदेवमायया ३४ अगाधसलिले तस्मिन् मार्कण्डेयःसुविस्मयः। प्लवंस्तथार्त्तिमगमत् भयात्सन्त्रस्तलोचनः ३५ सतस्मै भगवानाह स्वागतंबालयोगवान्। बभाषेमेघतुल्येन स्वरेणपुरुषोत्तमः ३६ माभैर्वत्स! नभेतव्यमिहैवायाहिमेऽन्तिकम्। मार्कण्डेयोमुनिस्त्वाह बालन्तंश्रमपीडितः ३७ (मार्क ण्डेय उवाच) कोमान्नाम्नाकीर्तयति तपःपरिभवन्मम। दिव्यंवर्षसहस्राख्यं धर्षयन्निव मेवयः ३८ नह्येषवःसमाचारो देवेष्वपिममोचितः। मांब्रह्मापिहिदेवेशो दीर्घायुरितिभा षते ३९ कस्तपोघोरमासाद्य मामद्यत्यक्तजीवितः। मार्कण्डेयेतिमामुक्त्वा मृत्युमीक्षितुम

करनेको आयाहै ऐसा कहते आश्चर्य्य में भरेहुए वह मुनि फिर विष्णुभगवान्की कुक्षिमें प्रवेशकर-गये २१। २५ तब कुक्षिमें प्रविष्टहुए मार्कण्डेयजी बाहरके दर्शनको आश्चर्य्य से स्वप्नसा मानते भये और विष्णुके उदरमें पूर्वकेही समान सबपृथ्वीपर विचरतेहुए पवित्र तीर्थों के जलों से युक्त अ-नेक उत्तम आश्रमोंमें जातेभये २६। २७ और उसी कुक्षिमें स्थित होतेहुएही यज्ञकरतेहुए यजमानों को और सैकड़ों द्विजोंको देखताभया सब ब्राह्मणादिक वर्ण उत्तम वृत्तिमें लगेहुए देखे और चारों आश्रमोंको भी अपने २ कर्मों में लगाहुआ देखा इसप्रकारसे दिव्य सौ वर्ष पर्य्यन्त मार्कण्डेयजी विष्णुके उदरहीमें पृथ्वीपर विचरतेभये २८। ३० फिर किसीसमयमें विष्णुके उदरसे निकलकर एक वटवृक्षकी शाखापर किसी बालकको देखतेभये ३१ सबभूतों से रहित लोकमें अप्रकटहुआ वह बालक एकार्णव जलमें खेलताहुआ दीखनेलगा ३२ तब वह मुनि आश्चर्य्ययुक्त होकर सूर्य्यके स-मान कान्तिवाले उसबालकको कुछ अच्छीरीतिसे नहीं देखसके फिर जलके समीपमें स्थितहुएमार्क-ण्डेयजी ऐसाविचार करतेभये कि मैंने यहपहलेभी देखाहै परन्तु दैवकीमायासे मैं शंकाकररहाहूं तब आश्चर्य्ययुक्त होकर वहमुनि भयसे महादुःखितहो जलमें पैरतेहुए उसबालकके समीपपहुंचे तब बा-लकके योगयुक्त विष्णुभगवान् मेघके समान शब्दकोकरके मार्कण्डेयसे बोले कि हेपुत्रभय मतकरोयहां मेरे समीपमें आजा यहसुनतेहीं श्रमसे थकेहुए मार्कण्डेयमुनि उसबालकसे यहबचन बोले ३३। ३७ कि मेरे तपका तिरस्कार करताहुआ कौनसा पुरुष मुझको नाम लेकर बोलसक्ताहै मेरी दिव्य हजार वर्षोंकी अवस्थाको कौन तिरस्कृत करताहै देवताओं में भी यह मेरेसमाचार नहीं विदित हैं ब्रह्माभी

हेति ४० एवमाभाष्यतंक्रोधान्मार्कण्डेयोमहामुनिः। तथैवभगवान्भूयो बभाषेमधुसूद
नः ४१ (भगवानुवाच) अहंतेजनकोवत्स ! हृषीकेशःपितागुरुः। आयुःप्रदातापौरा
णः किंमान्त्वन्नोपसर्पसि ४२ मांपुत्रकामःप्रथमं पितातेऽङ्गिरसोमुनिः। पूर्वमाराधयामा
स तपस्तीव्रंसमाश्रितः ४३ ततस्त्वांघोरतपसा प्रावृणोदमितौजसम् ! उक्तवानहमा
त्मस्थं महर्षिममितौजसम् ४४ कःसमुत्सहतेचान्यो योनभूतात्मकात्मजः। द्रष्टुमेका
र्णवगतंक्रीडन्तंयोगवर्त्मना ४५ ततःप्रहृष्टवदनो विस्मयोत्फुल्ललोचनः। मूर्ध्निबद्धाञ्ज
लिपुटो मार्कण्डेयोमहातपाः ४६ नामगोत्रेततःप्रोच्य दीर्घायुर्लोकपूजितः। तस्मैभ
गवतेभक्त्या नमस्कारमथाकरोत् ४७ (मार्कण्डेय उवाच) इच्छेयंतत्त्वतोमाया मि
मांज्ञातुन्तवानघ !। यदेकार्णवमध्यस्थः शेषेत्वंबालरूपवान् ४८ किंसंज्ञश्चैवभगव
न् ! लोकेविज्ञायसेप्रभो !। तर्कयेत्वांमहात्मानं कोह्यन्यःस्थातुमर्हति ४९ (श्रीभगवा
नुवाच) अहंनारायणोब्रह्मन् ! सर्वभूःसर्वनाशनः। अहंसहस्रशीर्षाख्यैर्यैःपदैरभिसंज्ञि
तः ५० आदित्यवर्णःपुरुषो मखेब्रह्ममयोमखः। अहमग्निर्हव्यवाहो यादसांपतिरव्य
यः ५१ अहमिन्द्रपदेशक्रो वर्षाणांपरिवत्सरः। अहंयोगीयुगाख्यश्च युगान्तावर्तएव
च ५२ अहंसर्वाणिसत्वानि दैवतान्यखिलानितु। भुजङ्गानामहंशेषो तार्क्ष्योवैसर्वपक्षि
णाम् ५३ कृतान्तःसर्वभूतानां विश्वेषांकालसंज्ञितः। अहंधर्म्मस्तपश्चाहं सर्वाश्रमनि
वासिनाम् ५४ अहंचैवसरिद्दिव्या क्षीरोदश्चमहार्णवः। यत्तत्सत्यंचपरम महमेकःप्रजा

मुझको दीर्घायुवालाकहतेहैं ३८।३९ घोरतपकोप्राप्तहो अपने जीवनेकी इच्छात्यागकर मुझको मा-
र्कंडेय ऐसाकहकर मृत्युके देखनेको कौनसमर्थहै ४० जब मार्कण्डेयमुनि ऐसेकहचुके तबमधुसूदन
भगवान् फिरबोले ४१ कि हेपुत्र में तेराउत्पन्नकरनेवाला होकर तेरा पिताहूं मैं पुराणपुरुष विष्णुभ-
गवान्हूं तू मेरे समीप क्यों नहींआताहै ४२ पुत्रकी इच्छाकरनेवाला तेरापिता अंगिरामुनि पूर्वमें
अत्यन्ततपकरके मेराआराधनकरताभया ४३ फिरघोरतपकरके अतुलपराक्रमवाले पुत्रकेहोनेकावर
मांगताभया तबमैंनेही उसको वैसाहीवरदिया ४४ तब तूउसकापुत्रहुआ हेमार्कण्डेय मेरेविनाअन्य
कौनसा पुरुष योगमाया से क्रीडाकरताहुआ प्रलयकालमें मुझको देखसक्ताहै ४५ इसकेपीछे दी-
र्घायुवाले मार्कण्डेयमहामुनि मस्तकमें अंजलीबांधकर अपने नामगोत्रका उच्चारणकर उन विष्णु
जीको बड़ीभक्तिसे नमस्कारकरतेभये४६।४७मार्कण्डेयमुनिनेकहा हेभगवन् मैं तत्त्वसे आपकीइस
मायाके जानने की इच्छा करताहूं आपजो इस एकार्णव जलमें शयनकररहेहो और बालक के रू-
पको प्राप्तहोगयेहो सो इस लोकमें आपकी क्यासंज्ञाहै यह सबबातें मैं जाननाचाहताहूं ४८।४९
श्रीभगवान् बोले हेब्रह्मन् मैं नारायणहूं सबका उत्पन्न करनेवालाहूं सबकानाश करताहूं और मैंही
अनन्त शेष सहस्रशीर्षा इत्यादिक नामोंसे प्रसिद्धहूं ५० मैं सूर्य्यके समान वर्णवाला पुरुषहूं यज्ञों
में ब्रह्ममय यज्ञहूं मैंही हव्यवाह अग्निहूं जलोंकापतिहूं इन्द्रके स्थान में इन्द्रहूं वर्षोंकापरिवत्सरहूं
युगाख्ययोगीहूं ५१।५२ सबजीवमात्र मेरेहीरूपहैं सर्पोंमें शेषहूं सबपक्षियोंमें गरुड़हूं ५३ सबभूतों

पतिः ५५ अहंसांख्यमहंयोगो ऽप्यहंतत्परमम्पदम्। अहमिज्याक्रियाचाहमहंविद्याधिपःस्मृतः ५६ अहंज्योतिरहंवायु रहंभूमिरहंनभः। अहमापःसमुद्राश्च नक्षत्राणिदिशोदश ५७ अहंवर्षमहंसोमः पर्जन्योऽहमहंरविः। क्षीरोदसागरेचाहं समुद्रेवडवामुखः ५८ वह्निःसंवर्तकोभूत्वा पिबंस्तोयमयंहविः। अहंपुराणःपरमं तथैवाहंपरायणम् ५९ अहंभूतस्यभव्यस्य वर्तमानस्यसम्भवः। यत्किञ्चित्पश्यसेविप्र! यच्छृणोषिचकिञ्चन ६० यल्लोकेचानुभवसि तत्सर्वंमामनुस्मर। विश्वंसृष्टंमयापूर्वं सृज्यंचाद्यापिपश्यमाम् ६१ युगेयुगेचस्रक्ष्यामि मार्कण्डेयाखिलंजगत्। तदेतदखिलंसर्वं मार्कण्डेयावधारय ६२ शुश्रूषुर्ममधर्मांश्च कुक्षौचरसुखंमम। ममब्रह्माशरीरस्थो देवैश्चऋषिभिःसह ६३ व्यक्तमव्यक्तयोगंमामवगच्छासुरद्विपम्। अहमेकाक्षरोमन्त्रस्त्र्यक्षरश्चैवतारकः ६४ परस्त्रिवर्गादोङ्कारस्त्रिवर्गार्थनिदर्शनः। एवमादिपुराणेशो वदन्नेवमहामतिः ६५ वक्त्रमाहृतवानाशु मार्कण्डेयंमहामुनिम्। ततोभगवतःकुक्षिं प्रविष्टोमुनिसत्तमः ६६ सतस्मिन्सुखमेकान्ते शुश्रूषुर्हंसमव्ययम् ६७ योऽहमेवविविधतनुं परिश्रितोमहार्णवेव्यपगतचन्द्रभास्करे। शनैश्चरन्प्रभुरपिहंससंज्ञितोऽसृजंजगद्विरहितकालपर्यये ६८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेषट्षष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः १६६॥

का कालसंज्ञक धर्मराजहूं मैंही धर्महूं सब आश्रम निवासियोंकातपहूं मैंही दिव्यनदीहूं क्षीरोदसमुद्रहूं परमसत्यहूं एक प्रजापतिहूं ५४।५५ मैंही सांख्य और योगहूं परमपदहूं यज्ञहूं क्रियाहूं विद्याका अधिपतिहूं सूर्य्यहूं वायुहूं भूमि आकाश और जलहूं समुद्रहूं नक्षत्रहूं दशों दिशाहूं ५६ । ५७ वर्षहूं सोमहूं मेघहूं सूर्य्यहूं क्षीरोद समुद्रमें वडवानल अग्नि हूं ५८ संवर्त्तक अग्नि होकर सबजलों को शोषलेताहूं परम पुराणहूं भूत भाविष्य और वर्त्तमान इनका उत्पन्न करनेवालाहूं हेविप्र तू जो कुछ देखताहै अथवा जोकुछ सुनता है और जो लोकमें किसीबात का अनुभव करता है उन सब स्थानों में मेराही स्मरण करना चाहिये प्रथम इस जगत्को मैंनेही रचाहै अबभी इस को मैं ही रचूंगा ५९।६१ हे मार्कण्डेय मुनि मैं युग २ के प्रति इस संपूर्ण जगत् को रचताहूं और पालन करताहूं मेरी कुक्षि में तू सुखपूर्वक विचरताहुआ मेरे धर्मोंको सुन देवता और ऋषियों समेत ब्रह्मा भी मेरे शरीरमें स्थितहै मैं दैत्योंका शत्रुहूं ऐसे मुझको तू प्राप्तहोजा मैं उद्धार करने वाला एकाक्षरमंत्रहूं ६२। ६४ त्रिवर्गके अर्थको कहनेवाला ओंकारहूं जब इस प्रकारसे उस आदि पुरुष विष्णुभगवान्ने मार्कण्डेय मुनिसे कहा तब वह श्रेष्ठमुनि विष्णुभगवान्के उदरमें प्रवेश करजातेभये ६५।६६ उस उदरमें अविनाशी हंसकी गतिके सुननेकी इच्छा करते हुए मुनि सुखपूर्वक विचरतेभये उस समय श्रीनारायण ने मुनिसे कहा कि जो मैं चन्द्र सूर्य्यसे रहित इसएकार्णव जल में शनैः विचरताहूं वही मैं सब से प्रथम इस जगत्को रचताहूं ६७। ६८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्षष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः १६६॥

(मत्स्य उवाच) आपवःसविभुर्भूत्वा चारयामासवैतपः । छादयित्वात्मनोदेहंयाद
सांकुलसम्भवम् १ ततोमहात्मातिबलो मतिंलोकस्यसर्जने । महतांपञ्चभूतानां विश्वो
विश्वमचिन्तयत् २ तस्यचिन्तयमानस्य निर्वातेसंस्थितेऽर्णवे । निराकाशेतोयमयेसु
क्ष्मे जगतिगह्वरे ३ ईषत्संक्षोभयामास सोऽर्णवंसलिलाश्रयः । अनन्तरोर्मिभिःसूक्ष्म
मथाच्छिद्रमभूत्पुरा ४ शब्दंप्रतितदोद्भूतो मारुतश्छिद्रसम्भवः । सलब्ध्वान्तरमक्षोभ्यो
ऽव्यवर्धतसमीरणः ५ विवर्द्धतावलवता वेगाद्विक्षोभितोऽर्णवः । तस्यार्णवस्यक्षुब्धस्य त
स्मिन्नम्भसिमन्थिते ६ कृष्णवर्त्मासमभवत् प्रभुर्वैश्वानरोमहान् । ततःसशोषयामासपा
वकःसलिलंबहु ७ क्षयाज्जलनिधेश्छिद्रमभवद्विस्तृतंनभः । आत्मतेजोद्भवाःपुण्या आ
पोऽमृतरसोपमाः ८ आकाशंच्छिद्रसम्भूतं वायुराकाशसम्भवः । आभ्यांसङ्घर्षणोद्भूतं
पावकंवायुसम्भवम् ९ दृष्ट्वाप्रीतोमहादेवो महाभूतविभावनः । दृष्ट्वाभूतानिभगवांल्लोक
सृष्ट्यर्थमुत्तमम् १० ब्रह्मणोजन्मसहितं बहुरूपोव्यचिन्तयत् । चतुर्युगाभिसंख्याते सह
स्रयुगपर्यये ११ बहुजन्मविशुद्धात्मब्रह्मणेहनिरुच्यते । यत्पृथिव्यांद्विजेन्द्राणां तपसा
भवितात्मना १२ ज्ञानंदृष्टन्तुविश्वार्थे योगिनांयातिमुख्यताम् । तंयोगवन्तंविज्ञाय स
म्पूर्णैश्वर्यमुत्तमम् १३ पदेब्रह्मणिविश्वेशं न्ययोजयतयोगवित् । ततस्तस्मिन्महातोये
महीशोहरिरच्युतः १४ स्वयंक्रीडंश्चविविधंवन्मोदतेसर्वलोककृत् । पद्मंनाभ्युद्भवंचैकं स
मुत्पादितवांस्तदा १५ सहस्रपर्णंविरजं भास्कराभंहिरण्मयम् । हुताशनज्वलितशिखो

सूतजी बोले कि जलही अपने कुल से उत्पन्न हुए आत्माको आच्छादित कर सूर्य्य रूप होकर तपकरताभया १ इसके पीछे महत्तत्त्व जब संसारके रचने में अपनी मति करताहै तब पांचों महा भूतोंकी चिन्ता करता है २ उसी चिन्तवन करने में वायु और आकाश रहित उस एकार्णव जलमें वह समुद्र कुछेक क्षोभको प्राप्त होजाताभया और अनन्तलहरोंके क्षोभसे उसमें कुछछिद्र उत्पन्न होताभया उसीमें शब्द उत्पन्नहुआ उस शब्दसे वायु उत्पन्न हुआ फिर वहवायु बढ़ताभया ३।५ उस बढ़ते हुए बलवान् वायुने क्षोभकिया उससे आकाश मथितहुआ उसीसे महान् अग्नि उत्पन्न होताभया तब वह महान् अग्नि उस जलको शोषलेताभया ६।७ जलके क्षय होने से आकाशका विस्तार फैलजाताभया फिर अपने तेजसे उत्पन्न हुए जल अमृतके समान होजातेभये उस छिद्रसे आकाशहुआ आकाशसे वायुहुआ फिर इनदोनोंके संघर्षण होनेसे वायुके संयोगसे अग्नि उत्पन्न भया है ८।९ फिर सब भूतोंका उत्पन्न करने वाला भगवान् इन पांचों भूतोंको देखकर प्रसन्न होताभया और ब्रह्माके जन्म सहित बहुतसे अपने रूपोंको चिन्तवन करताभया इन चारों युगोंकी संख्याकी चौकडी जितने समयमें हजार वार व्यतीत होजाती है उतने समय तक सगुण ब्रह्म उत्तमयोगियों के तपका आचरण करताभया फिर तपके प्रभावसे सगुण ब्रह्म अर्थात् विष्णु को सृष्टि रचने का ज्ञान होताभया तब सृष्टि रचने में उसको समर्थ जानकर विष्णुभगवान् उसको अपने स्थानपर नियुक्त करतेभये और आप अनेक प्रकारकी क्रीडा करतेभये इसकेपीछे उस विष्णुभगवान्की नाभि

ज्वलत्प्रभमुपस्थितंशरदमलार्कतेजसम्। विराजतेकमलमुदारवर्चसं महात्मनस्तनु रुहचारुदर्शनम् १६॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्तषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६७॥

(मत्स्य उवाच) अथयोगवतांश्रेष्ठमसृजत्भूरितेजसम्। स्रष्टारंसर्वलोकानां ब्रह्माणंसर्वतोमुखम् १ यस्मिन्हिरण्मयेपद्मे बहुयोजनविस्तृते। सर्वतेजोगुणमयं पार्थिवैर्लक्षणैर्वृतम् २ तच्चपद्मंपुराणज्ञाः पृथिवीरूपमुत्तमम्। नारायणसमुद्भूतं प्रवदन्तिमहर्षयः ३ यापद्मासारसादेवी पृथिवीपरिचक्षते। येपद्मसारगुरवस्तान् दिव्यान्पर्वतान्विदुः ४ हिमवन्तंचमेरुंच नीलंनिषधमेवच। कैलासमुञ्जवन्तंच तथान्यंगन्धमादनम् ५ पुण्यंत्रिशिखरञ्चैव कान्तंमन्दरमेवच। उदयंपिञ्जरंचैव विन्ध्यवन्तंचपर्वतम् ६ एतेदेवगणानाञ्च सिद्धानाञ्चमहात्मनाम्। आश्रयःपुण्यशीलानां सर्वकामफलप्रदाः ७ एतेषामन्तरेदेशो जम्बुद्वीपइतिस्मृतः। जम्बुद्वीपस्यसंस्थानं यज्ञियायत्रवैक्रिया ८ एभ्योयत्स्रवतेतोयंदिव्यामृतरसोपमम्। दिव्यास्तीर्थशताधाराःसुरम्याःसरितःस्मृताः ९ स्मृतानियानिपद्मस्य केसराणिसमन्ततः। असंख्येयाःपृथिव्यास्तेविश्वेवैधातुपर्वताः १० यानिपद्मस्यपर्णानि भूरीणितुनराधिप। तेदुर्गमाशैलचिताम्लेच्छदेशाविकल्पिताः ११ यान्यधोभागपर्णानि तेनिवासास्तुभागशः। दैत्यानामुरगाणाञ्चपतङ्गानाञ्चपार्थिव! १२ तेषांमहार्णवोयत्र तद्रसेत्यभिसंज्ञितम्। महापातककर्माणो मज्जन्तेयत्रमानवाः १३ पद्मस्यान्तरतोयत्तदेकार्णवगतामही। प्रोक्ताथदिक्षुसर्वासुचत्वारःसलिलाकराः १४

में से एक ऐसा कमल उत्पन्न होताभया जिसमें हज़ार पत्ते शरदृऋतुके सूर्य्यकी समान कान्ति सुवर्णके समान दीप्त ज्वलित अग्निके समान तेजस्वी इत्यादिक गुणों से युक्त वह कमल शोभित होताभया १०।१६॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६७॥

मत्स्यजी कहते हैं कि इसके अनन्तर उस स्वर्णमय कमलमें योगियों में श्रेष्ठ बड़े तेजस्वी सब लोकोंके रचनेवाले ब्रह्माजीको विष्णु भगवान् उत्पन्न करतेभये १।२ पुराणवेत्ता विद्वान्लोग उस कमलहीको पृथ्वीतल कहते हैं महर्षिजन नारायणसे उत्पन्नहुआ कमल कहते हैं जो रसानाम पद्मा देवी है वही पृथ्वी कहातीहै उसकमलमें जो भारीपनहै वही पर्व्वतहैं ३।४ हिमवान्, सुमेरु, नील, निषद,कैलाश,मुंजवन्त,गन्धमादन,त्रिशिखर,मंदराचल,उदयाचल,पिंजर,विन्ध्याचल यह सबपर्वत देवताओं के गण, सिद्धोंकेगण, और महात्मागण इन्हींके आश्रय सब कामना देनेवाले होते हैं ५।७ इनपर्व्वतोंके अन्तरमें जो देशहै उसको जंबूद्वीप कहतेहैं जंबूद्वीपकी स्थितिका उत्तम लक्षण वहांही जानना जहां यज्ञ होते हैं ८ इन पूर्वोक्त पर्व्वतोंसे जो जल झिरताहै वह दिव्य अमृतके समानहै उसीजलसे सैकड़ों हज़ारों दिव्य २ नदियां बहती हैं ९ और उस कमलकी जो केशरहै वही असंख्यात धातुओं के पर्व्वतहैं और जितने कि उसकमलके पत्तेहोते हैं वही उनदुर्गम पर्व्वतोंमें म्लेच्छों के देशहैं १०।११ और उनपत्तोंका जो नीचेका भागथा वहाँ दैत्य सर्प और पक्षियों के स्थानहैं १२ उन कमलके पत्तोंका जो रसहै उसीका महार्णव समुद्र होजाताभया उसीमें महापातक करनेवाले

एवंनारायणस्यार्थे महीपुष्करसम्भवा। प्रादुर्भावोऽप्ययंतस्मान्नाम्नापुष्करसंज्ञितः १५ एतस्मात्कारणात्तज्ज्ञैः पुराणैःपरमर्षिभिः। याज्ञियैर्वेददृष्टान्तैर्यज्ञेपद्मविधिःस्मृतः १६ एवंभगवतातेन विश्वयाधरयाविधिः। पर्वतानांनदीनाञ्च ह्रदानांचैवनिर्मितः १७ विभुस्तथैवाप्रतिमप्रभावः प्रभाकराभोवरुणासितद्युतिः। शनैःस्वयम्भूःशयनंसृजत्तदाजगन्मयंपद्मविधिंमहार्णवे १८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६८॥

(मत्स्यउवाच) विघ्नस्तपसिसम्भूतोमधुर्नाममहासुरः। तेनैव चसहोद्भूतोरजसाकैटभस्ततः १ तौरजस्तमसौविघ्नसम्भूतौतामसौगणौ। एकार्णवेजगत्सर्वंक्षोभयन्तौमहाबलौ २ दिव्यरक्ताम्बरधरौश्वेतदीप्ताग्रदंष्ट्रिणौ। किरीटकुण्डलोदग्रौ केयूरवलयोज्ज्वलौ ३ महाविक्रमताम्राक्षौ पीनोरस्कौमहाभुजौ। महागिरेःसंहननौ जङ्गमाविवपर्वतौ ४ नवमेघप्रतीकाशावादित्यसदृशाननौ। विद्युदाभोगदाग्राभ्यां कराभ्यामतिभीषणौ ५ तौपादयोस्तुविन्यासादुत्क्षिपन्ताविवार्णवम्। कम्पयन्ताविवहरिंशयानंमधुसूदनम् ६ तौतत्रविचरन्तौस्मपुष्करेविश्वतोमुखम्। योगिनांश्रेष्ठमासाद्यदीप्तंददृशतुस्तदा ७ नारायणसमाज्ञातं सृजन्तमखिलाःप्रजाः। दैवतानिचविश्वानि मानसानसुरानृषीन् ८ ततस्तावूचतुस्तत्र

पुरुष डूबते हैं १३ उस कमलके भीतर जो जलगत पृथ्वी थी वहां चारोंदिशाओं में जलके समूहों के समुद्र होतेभये इसप्रकारसे नारायणके नाभिकमलसे पृथ्वी उत्पन्न होतीभई इसीहेतुसे कमलको पुष्कर कहते हैं और पुराणकेज्ञाता परमऋषियोंने भी इसीहेतुसे यज्ञमें पद्मकी विधिकरना कहाहै १४।१६ इसीविधिसे उन विष्णुभगवान्ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर्व्वत नदी और ह्रद रचे हैं इसके पीछे अतुलपराक्रमी सूर्यकीसी कान्तिवाले विष्णुभगवान् उसकमलको रचकर शयनकरतेभये १७।१८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांअष्टषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६८॥

मत्स्यजी कहनेलगे कि जब ब्रह्माजी कमलमेंही तपकरतेथे उससमय मधुदैत्य विघ्नकरनेको उत्पन्न होताभया और रजोगुणसे युक्तहुआ कैटभदैत्यभी प्रकट होताभया १ तबवह रजोगुण तमोगुणसे भरेहुए विघ्नकरनेवाले महाबली दानव सम्पूर्ण जगत्को त्रासदेनेलगे २ दिव्य रक्तवस्त्रोंके धारण करनेवाले श्वेतउग्र और भयंकर दंष्ट्रावाले मुकुट कुंडल बाजूबन्द आदिक भूषणोंसे शोभित बड़ेभारी पराक्रमसे रक्तनेत्रयुक्त उन्नतछाती और महाभुजावाले पर्व्वतके समान आकारवाले मेघके समान कान्तिवाले सूर्य्य के समानमुखयुक्त बिजली के सदृशगदाको लिये महाभयंकर अपने पैरोंसे समुद्रको चलायमान करके सोतेहुए विष्णुभगवान्को कंपाकर जगाने के निमित्त क्षोभकरतेभये ३।६ तबउस कमलमें विचरतेहुए वहदोनों दैत्य चतुर्मुखी ब्रह्माजीको देखतेभये ७ वहब्रह्माजी नारायणकी आज्ञासे संपूर्ण प्रजाको और देव दानव यक्ष मनुष्य ऋषि और ब्रह्माके मनसेउत्पन्नहुए ऋषि इनसबको रचरहेथे इसरचनेही के समय वहदोनों पराक्रमी दैत्य क्रोधसे व्याकुल

ब्रह्माणमसुरोत्तमौ। दीप्तौमुमूर्षसंक्रुद्धौरोषव्याकुलितेक्षणौ ९ कस्त्वंपुष्करमध्यस्थ सितो ष्णीषश्चतुर्भुज। आधायानियमंमोहादास्तेत्वंविगतज्वरः १० एह्यागच्छावयोर्युद्धंदेहित्वं कमलोद्भव!। आवाभ्यांपरमीशाभ्यामशक्तस्त्वमिहार्णवे ११ तत्रकश्चोद्भवस्तुभ्यंकेनवासि नियोजित। कःस्रष्टाकश्चतेगोप्ताकेननाम्नाविधीयसे १२ (ब्रह्मोवाच) एकइत्युच्यतेलोके रावीचिन्त्यःसहस्रदृक्। तत्संयोगेनभवतोःकर्मनामावगच्छताम् १३ (मधुकैटभावूचतुः) नावयोःपरमंलोके किञ्चिदस्तिमहामते!। आवाभ्यांछाद्यतेविश्वंतमसारजसाथवै १४ रजस्तमोमयावावामृषीणामवलम्बितौ। छाद्यमानौधर्म्मशीलौ दुस्तरौसर्वदेहिनाम् १५ आवाभ्यामुह्यतेलोको दुष्कराभ्यांयुगेयुगे। आवामर्थश्चकामश्च यज्ञःस्वर्गपरिग्रहः १६ सुखंयत्रमुदायुक्तं यत्रश्रीःकीर्त्तिरेवच। येषांयत्कांक्षितंचैव तत्तदावांविचिन्तय १७ (ब्रह्मोवाच) यत्नाद्योगवतोदृष्ट्या योगःपूर्वमयार्जितः। तंसमाधायगुणवत् सत्वंचास्मिसमाश्रितः १८ यःपरोयोगमतिमान् योगाख्यःसत्वमेवच। रजसस्तमसश्चैव यःस्रष्टाविश्वसम्भवः १९ ततोभूतानिजायन्ते सात्विकानीतराणिच। सएवहियुवानाशे वशीदेवोहनिष्यति २० स्वपन्नेवततःश्रीमान् बहुयोजनविस्तृतम्। बाहुंनारायणोब्रह्म कृतवानात्ममायया २१ कृष्यमाणौततस्तस्य बाहुनाबाहुशालिनः। चेरतुस्तौविगलितौ शकुनाविव पीवरौ २२ ततस्ताबाहतुर्गत्वा तदादेवंसनातनम्। पद्मनाभंहृषीकेशं प्रणिपत्यास्थितावु

नेत्र और मरनेकी इच्छावाले होकर ब्रह्माजीसे यहकठोर वचनबोले ८। ९ कि श्वेत वेष्टन धारण किये चतुर्भुजहो खेदसे रहितहो तू इस कमलमें कैसे चुपकावैठा है वहांसे बाहर निकलकर तूहम से युद्धकर और जो तू हमसे युद्धनहीं करसक्ता है तोइस कमलसे बाहर निकल तेरी उत्पत्तिकरने वाला कौन है यहाँ तुझे किसने नियुक्तकियाहै कौन तेरा रक्षकहै और तेरा क्यानामहै १०। ११ ब्रह्माजीनेकहा कि सबसंसार जिसको एककहता है और जिसको सबध्यावते हैं जो हजारों दृष्टिवाला है उस परमेश्वरके योग नाम और कर्म तुमको जाननाचाहिये १२ मधुकैटभ दैत्योंने कहा—हेमहामते संसारमें हमसे उपरान्त कोईनहीं है हमहीतमोगुण और रजोगुणसे सब संसारको आच्छादित करतेहैं १४ हमदोनों रजोगुण और तमोगुणसे युक्त हैं हम सब धर्मवाले ऋषियोंको आच्छादित करतेहैं इसीसे सबप्राणियोंसे दुस्तरहैं १५ सबसंसार हमसे डरता है युग २ में हमहीं यज्ञके अर्थ कामको और स्वर्गको देनेवाले हैं जिनको सुख आनन्द लक्ष्मीकी प्राप्ति और कीर्त्तिकी प्राप्ति है वहसब हमाराही चिन्तवन करतेहैं १६। १७ ब्रह्माजीने कहा कि मैंने यत्न से योगिजनोंकी रीति से योग संचितकिया है सो मैंतो सत्त्वगुण के आश्रय होरहाहूं १८ परन्तु जो अत्यन्त योगवाला सत्त्वरज औरतम इनतीनों गुणोंका रचनेवाला विश्वका कर्त्ता जिस्सेकि सत्त्वगुणी भूत उत्पन्न होतेहैं और अन्य नहीं होते इसलिये वही देव तुम्हारा नाशकरेगा १९। २० उससमय सोतेहुएही विष्णु भगवान् अपनी भुजाओंको विस्तार पूर्वक फैलातेभये तब विष्णु भगवान्की लंबी भुजाओं में वह दोनों दैत्य खिंचकर आजातेभये उन भुजाओंमें वह दोनों प्रबल दैत्य ऐसे लटकतेहुए चले

भो २३ जानीवस्त्वांविश्वयोनिं त्वामेकंपुरुषोत्तमम् । त्वामावाम्पाहिहेत्वर्थमिदंनौबुद्धि कारणम् २४ अमोघदर्शनःसत्वं यतस्त्वांविद्वशाश्वतम् । ततस्त्वामागतावावामभितः प्रसमीक्षितुम् २५ तदिच्छामोवरंदेव ! त्वत्तोऽद्भुतमरिन्दम ! । अमोघदर्शनोऽसित्वं नम स्तेसमितिञ्जय ! २६ (श्रीभगवानुवाच) किमर्थमद्भुतंब्रूथ वरंह्यसुरसत्तमौ ! । दत्तायु ष्कौपुनर्भूयो रहोजीवितुमिच्छथः २७ (मधुकैटभावूचतुः) यस्मिन्नकश्चिन्मृतवान् दे व ! तस्मिन्प्रभो ! बधम् । तमिच्छावोवधंचैव त्वत्तोनोऽस्तुमहाव्रत ! २८ (श्रीभगवानु वाच) वाढंयुवान्तुप्रवरौ भविष्यत्कालसम्भवे । भविष्यतोनसन्देहः सत्यमेतद्ब्रवीमि वाम् २९ वरंप्रदायाथमहासुराभ्यां सनातनोविश्ववरःसुरोत्तमः । रजस्तमोवर्गभवायनौ यमौ ममन्थतावूरुतलेनवैप्रभुः ३० ॥

इति श्री मत्स्यपुराणेएकोनसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १६९ ॥

(मत्स्य उवाच) स्थित्वाचतस्मिंस्तुमुले ब्रह्माब्रह्मविदाम्बरः । ऊर्ध्वबाहुर्महातेजा स्तपोघोरंसमाश्रितः १ प्रज्वलन्निवतेजोभिर्भाभिः स्वाभिस्तमोनुदः । बभासेसर्वधर्म्म स्थः सहस्रांशुरिवांशुभिः २ अथान्यद्रूपमास्थाय शम्भुर्नारायणोऽव्ययः । आजगाम महातेजा योगाचार्योमहायशाः ३ सांख्याचार्योहिमतिमान् कपिलोब्राह्मणोवरः । उभाव पिमहात्मानौ स्तुवन्तौक्षेत्रतत्परौ ४ तौप्राप्तावूचतुस्तत्र ब्रह्माणममितौजसम् । परावर विशेषज्ञौ पूजितौचमहर्षिभिः ५ ब्रह्मात्मदृढबन्धश्च विशालोजगदास्थितः । ग्रामणीः

आये जैसेकि हाथोंमें मोटे२ पक्षी लटकते चलेआतेहैं २१।२२ तब वहदोनों दैत्य स्थितहोकर विष्णु भगवानको प्रणाम करतेभये और यह कहनेलगे कि हम तुमको विश्वकी योनि जानतेहैं आप पुरु- षोत्तमहो हमारी रक्षाकरो हम अज्ञानी हैं आपका अमोघ दर्शनहै आप सत्त्वगुणकी मूर्त्तिहो हम आ- पके दर्शनके निमित्त आयेहैं २३ । २५ हे देव आपका अमोघ दर्शन निष्फल नहीं है आपसे हम वर माँगनाचाहतेहैं और तुमको नमस्कार करतेहैं २६ श्रीभगवान्ने कहा हे दैत्यो तुम वर किस निमित्त मांगतेहो तुमने तो अपनी आयुपूरी करडालीहै क्या अब औरभी जीवनेकी इच्छा है २७ तब मधु कैटभ दैत्य बोले कि हे देव जब कभी हम मरें तब तुम्हारेही हाथसे मरें यह वर हमचाहतेहैं- श्री भगवान् बोले तुम दोनों भविष्यत् कालमें अर्थात् अगले जन्ममें उत्तमहोगे यह सत्यसत्यही है इस में सन्देह नहीं है २८ । २९ इसप्रकारसे उनदानवोंको वरदेकर विष्णु भगवान् उनदोनोंको अपनी जाँघों पर स्थितकरके मारतेभये ३० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांएकोनसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १६९ ॥

मत्स्यजी कहते हैं कि ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजी ऊपरको भुजाकरके महाघोर तपकरतेभये १ और अपने तेजोंकरके सब अन्धकारको दूरकर सूर्य्य के समान प्रकाशित होतेभये २ इसके अनन्तर विष्णुभगवान् अन्यरूपको बनाकर योगके आचार्य्यहो ब्रह्माजी के समीप आवतेभये और सांख्यके आचार्य्य कपिलमुनिभी ब्रह्माजीके पासआये इस रीतिसे यह दोनों महात्मा ब्रह्माजी की स्तुतिको

सर्वभूतानां ब्रह्मात्रैलोक्यपूजितः ६ तयोस्तद्वचनंश्रुत्वा विप्रोऽभ्याहृतयोगवित्। त्रीनि मान्कृतवान्लोकान्यथेयंब्रह्मणःश्रुतिः ७ पुत्रञ्चसम्भवेचैकं समुत्पादितवानृषिः। तस्या ग्रेवाग्यतस्तस्थौ ब्रह्माणमजमव्ययम् ८ सोत्पन्नमात्रोब्रह्माणमुक्तवान्मानसःसुतः। किं कुर्मस्तवसाहाय्यं ब्रवीतुभगवानृषिः९ (ब्रह्मोवाच) यएषकपिलोब्रह्म नारायणमयस्तथा। वदतेभवतस्तत्वं तत्कुरुष्वमहामते! १० ब्रह्मणस्तुतदर्थंतु तदाभूयःसमुत्थितः। शुश्रूषु रस्मियुवयोः किंकरोमिकृताञ्जलिः ११ (श्रीभगवानुवाच) यत्सत्यमक्षरंब्रह्मन्! अष्टा दशविधन्तुतत्। यत्सत्यंयदृतंतत्तु परंपदमनुस्मर १२ एतद्वचोनिशम्यैवययौसदिशमुत्त राम्। गत्वाचतत्रब्रह्मत्वमगमतज्ज्ञानतेजसा १३ ततोब्रह्माभुवन्नामद्वितीयमसृजत्प्रभुः। सङ्कल्पयित्वामनसा तमेवचमहात्मना १४ तत सोऽथब्रवीद्वाक्यं किंकरोमिपितामह! पितामहसमाज्ञातो ब्रह्माणंसमुपस्थितः १५ ब्रह्माभ्यासन्तुकृतवान् भुवश्चपृथिवींगतः। प्राप्तश्चपरसंस्थानं सतयोःपार्श्वमागतः १६ तस्मिन्नपिगतेपुत्रे तृतीयमसृजत्प्रभुः। सां ख्यप्रवृत्तिकुशलं भूर्भुवंनामतोविभुम् १७ गोपतित्वंसमासाद्य तयोरेवागमद्गतिम्। एवं पुत्रास्त्रयोऽप्येते उक्ताःशम्भोर्महात्मनः १८ तान्गृहीत्वासुतांस्तस्य प्रयातःस्वार्जिताङ्ग तिम्। नारायणश्चभगवान् कपिलश्चयतीश्वरः १९ यत्कालन्तौगतौमुक्तौ ब्रह्मातंकाल मेवहि। ततोघोरतमम्भूयः संश्रितःपरमंव्रतम् २० नरेमेऽथततोब्रह्माप्रभुरेकस्तपश्चरन्।

करतेहीहुए आये फिर महर्षियों से पूजित परावर ज्ञानके ज्ञाता यह दोनों महात्मा ब्रह्माजी से बोले तब आत्मसमाधिमें दृढस्थितहुए सबलोकों के पूज्य ब्रह्माजी उनके वचनको सुनकर व्याहृति के ज्ञाताहोकर श्रुतिके अनुसार इन तीनोंलोकों को रचतेभये ३। ७ ब्रह्माने अपने मनसे एक पुत्र उत्पन्न किया वह पुत्र जन्मतेही ब्रह्माके समीप आकर यह कहताभया कि मैं आपकी कौनसी सहायताकरूं ८। ९ ब्रह्माजी बोले कि यह नारायण स्वरूपी कपिलाचार्य्य ब्राह्मण जो तुमको शिक्षाकरे वही तुमभीकरो १० फिर वह ब्रह्माका पुत्र अंजली बांध उन दोनों ब्राह्मणों के आगे खड़ाहोकर कहनेलगा कि मुझको कुछ आज्ञादीजिये ११ तब श्रीभगवान् कहतेभये कि जो सत्यहै और अठारह प्रकारका अक्षरहै उस परमपदको स्मरणकर १२ यह वचनसुनतेही वह ब्रह्माका पुत्र उत्तर दिशामें जाताभया वहां जाकर अपने ज्ञानके तेजसे ब्रह्मभावको प्राप्त होताभया १३ तब ब्रह्माजी भुवनाम वाले दूसरे पुत्रको अपने मनसे रचतेभये वह पुत्रभी ब्रह्माजी से बोला कि मैं क्याकरूं ब्रह्माजी ने कहा कि इन दोनों ब्राह्मणों से पूछो यह सुनकर वह उन ब्राह्मणों के पासजाकर उनकी आज्ञासे पृथ्वी में प्राप्तहोकर परमस्थानको प्राप्तहोगया फिर ब्रह्माजीने भूर्भुवः नामवाले सांख्यशास्त्रके ज्ञाता तीसरे पुत्रको रचा वहभी ब्रह्माजी से पूछ उन्हीं दोनोंके समीप जाताभया इस प्रकारसे यह तीन पुत्र ब्रह्माजी के कहे हैं १४। १८ नारायण भगवान् और कपिलमुनि यह दोनों ब्रह्माजी के तीनों पुत्रों को ग्रहणकरके अपने स्थानमें आतेभये १९ जिस कालमें वह नारायण और कपिलमुनि गमनकरतेभये उसी समय ब्रह्माजी घोर तपकरने का प्रारंभकरतेभये जब तपकरतेहुए अकेले ब्रह्माजी प्रसन्न

शरीरात्तांततोभार्यां समुत्पादितवान्शुभाम् २१ तपसातेजसाचैव वर्चसानियमेनच।
सदृशीमात्मनोदेवीं समर्थांलोकसर्जने २२ ततोजगादत्रिपदाङ्गायत्रींवेदपूजिताम्। सृ
जन्प्रजानांपतयः सागरांश्चासृजद्विभुः २३ ततोजगादत्रिपदाङ्गायत्रींवेदपूजिताम्।
अपरांश्चैवचतुरोवेदान् गायत्रिसम्भवान् २४ आत्मनःसदृशान्पुत्रानसृजद्वैपितामहः।
विश्वेप्रजानांपतयो येभ्योलोकाविनिःसृताः २५ विश्वेशंप्रथमंतावन्महातापसमात्मज
म्। सर्वमन्त्रहितंपुण्यं नाम्नाधर्मंससृष्टवान् २६ दक्षंमरीचिमत्रिञ्च पुलस्त्यंपुलहंक्र
तुम्। वसिष्ठंगौतमञ्चैव भृगुमङ्गिरसम्मनुम् २७ अथैवाद्भुतमित्येते ज्ञेयाःपैतामहर्षयः।
त्रयोदशगुणंधर्ममालभन्तमहर्षयः २८ अदितिर्दितिर्दनुःकाला अनायुःसिंहिकामुनिः।
ताम्राक्रोधाथसुरसा विनताकद्रुरेवच २९ दक्षस्यापत्यमेतावै कन्याद्वादशपार्थिव!। म
रीचेःकश्यपःपुत्रस्तपसानिर्मितःकिल ३० तस्मैकन्याद्वादशान्या दक्षस्ताःप्रददौतदा। न
क्षत्राणिचसोमाय तदावैदत्तवानृषिः ३१ रोहिण्यादीनिसर्वाणि पुण्यानिरविनन्दन!।
लक्ष्मीमरुत्वतीसाध्या विश्वेशाचमताशुभा ३२ देवीसरस्वतीचैव ब्रह्मणानिर्मिताःपुरा।
एताःपञ्चवरिष्ठावै सुरश्रेष्ठायपार्थिव! ३३ दत्ताभद्रायधर्माय ब्रह्मणादृष्टकर्मणा। यारूपा
र्द्धवतीपत्नी ब्रह्मणःकामरूपिणी ३४ सुरभिःसाहिताभूत्वा ब्रह्माणंसमुपस्थिता। ततस्ता
मगमद् ब्रह्मा मैथुनंलोकपूजितः ३५ लोकसर्जनहेतुज्ञो गवामर्थायसत्तमः। जज्ञिरेचसु
तास्तस्यां विपुलाधूमसन्निभाः ३६ नक्तसन्ध्याभ्रसङ्काशाःप्रादहंस्तिग्मतेजसः। तेरुद

चित्तसे नहीं रहे तब अपने शरीरसे एक उत्तमस्त्रीको रचतेभये २०।२१ वह देवी स्त्री अपने तपतेज और नियमोंकरके ब्रह्माजीके समानहोकर संसाररचनेमें समर्थहोतीभई तब उस त्रिपदागायत्रीको बोलकर ब्रह्माजी प्रजापतियों और समुद्रोंको रचतेभये २२।२३ और उसी त्रिपदा गायत्रीको बोलकर चारों वेदोंकोभी रचतेभये इसके पीछे ब्रह्माजी अपनेसमान उनप्रजापति पुत्रोंकोरचतेभयेजिन से कि यहलोक उत्पन्नहुएहैं२४।२५ प्रथम तो महातपस्वी विश्वेश नामवाले प्रजापतिको रचा फिर सवमंत्रोंमें निपुणपवित्र धर्मनाम पुत्रकोरचा इसकेअनन्तर ब्रह्माजी दक्ष,मरीचि,अत्रि,पुलस्त्य,पुलह, क्रतु,वसिष्ठ,गौतम,भृगु,अंगिरा और मनु इनसबको उत्पन्न करतेभये श्रेष्ठ ऋषिलोगोंने धर्म के तरह गुण कहेहैं २६।२८ और अदिति,दिति,दनु,काला,अनायु,सिंहिका,मुनि,ताम्रा,क्रोधा,सुरसा,विनता, और कद्रू यह बारहकन्या दक्षके उत्पन्न हुईहैं मरीचि ऋषिने अपने तेजसे कश्यपनाम पुत्र उत्पन्न किया उन कश्यपजी के अर्थ दक्ष अपनी बारहपुत्रियोंको विवाहकरके देताभया और रोहिणी आदि सत्ताईस नक्षत्र नाम कन्याओंको चन्द्रमाके अर्थ देताभया और लक्ष्मी,मरुत्वती,साध्या,विश्वेशा,स रस्वती देवी यह पांचकन्या ब्रह्माजीने रचीं इनपांचोंको उत्तमकर्मवाले धर्मराजके अर्थ विवाहकरके दिया और जो रूपार्द्धवती नाम उत्तम ब्रह्माजीकी पत्नी है वह सुरभि गौका रूप धारणकरके ब्रह्मा के समीप में खड़ीहोतीभई तब लोकोंसे पूजितहुए ब्रह्माजी संसाररचनेके निमित्त गौओं के उपका रार्थ उस सुरभिसे मैथुन करतेभये फिर उस सुरभिसे धूम्रवर्णवाले बहुतसे पुत्र उत्पन्न होतेभये

न्तोद्रवन्तंश्च गर्हयन्त पितामहम् ३७ रोदनाद्द्रवणाच्चैव रुद्राइतिततःस्मृताः। निर्ऋ
तिश्चैवशम्भुर्वै तृतीयश्चापराजितः ३८ मृगव्याधःकपर्दीच दहनोऽथखरश्चवै। अहिर्बु
ध्न्यश्चभगवान् कपालीचापिपिङ्गलः ३९ सेनानीश्चमहातेजा रुद्रास्त्वेकादशस्मृताः।
तस्यामेवसुरभ्यांच गावोयज्ञेश्वराश्चवै ४० प्रकृष्टाश्चतथामायाः सुरभ्याःपशवोऽक्षराः।
अजाश्चैवतुहंसाश्चतथैवामृतमुत्तमम् ४१ ओषध्यःप्रवरायाश्चसुरभ्यास्ताःसमुत्थिताः।
धर्माल्लक्ष्मीस्तथाकामंसाध्यासाध्यान्व्यजायत ४२ भवञ्चप्रभवञ्चैवहीशञ्चासुरहंतथा।
अरुण्यंचारुणिञ्चैव विश्वावसुबलध्रुवौ ४३ हविष्यञ्चवितानञ्चविधानशमितावपि।
वत्सरञ्चैवभूतिञ्च सर्वासुरनिषूदनम् ४४ सुपर्वाणंबृहत्कान्तिःसाध्यालोकनमस्कृता।
तमेवानुगतादेवी जनयामाससेवसुरान् ४५ वरंवैप्रथमन्देवं द्वितीयंध्रुवमव्ययम्। विश्वा
वसुंतृतीयञ्च चतुर्थंसोममीश्वरम् ४६ ततोऽनुरूपमायश्च यमस्तस्मादनन्तरम्। सप्तम
ञ्चतथावायु मष्टमन्निर्ऋतिवसुम् ४७ धर्मस्यापत्यमेतद्वै सुदेव्यांसमजायत। विश्वेदेवा
श्चविश्वायां धर्माज्जाताइतिश्रुतिः ४८ दक्षश्चैवमहाबाहुः पुष्करस्वनएवच। चाक्षुष
स्तुमनुश्चैव तथामधुमहोरगौ ४९ विश्वान्तश्चवसुर्बाल्हा विष्कम्भश्चमहायशाः। गरु
डश्चातिसत्वौजा भास्करप्रतिमद्युतिः ५० विश्वान्देवान्देवमाता विश्वेशाजनयत्सुता
न्। मरुत्वतीमरुत्वतो देवानजनयत्सुतान् ५१ अग्निचक्षूरविर्ज्योतिः सावित्रंमित्रमे
वच। अमरंशरवृष्टिञ्च सुकर्षञ्चमहाभुजम् ५२ विराजञ्चैववाचञ्च विश्वावसुमतिंतथा।

३९। ३६ रात्रि और संध्यासमय के बादलों के समान वर्णयुक्त तेजवाले वहसब पुत्र रोतेहुए ब्रह्मा
जी की निन्दा करतेभाजे इसीसे रोदनकरने और भाजने से उनको रुद्रकहते भये उनके नामयह हैं
निर्ऋति १ शंभु २ अपराजित ३ मृगव्याध ४ कपर्दी ५ दहन ६ खर ७ अहिर्बुध्न्य ८ कपाली ९ पिं-
गल १० और महातेजयुक्त सेनानी यह ग्यारह ११ रुद्रकहे हैं और उसी सुरभि गौ में यज्ञेश्वरी गौ
उत्पन्न होतीभई प्रकृष्टमाया पशु बकरी हंस और उत्तम २ औषधी यहसबभी उसी सुरभि गौ से उ-
त्पन्न होतीभई और धर्म से लक्ष्मी स्त्री में कामनाम पुत्र उत्पन्न होताभया साध्य स्त्री साध्य नाम
देवताओंको उत्पन्न करतीभई ३७। ४२ भव, प्रभव, अहीश, असुरहन्ता, अरुण्य, अरुणि, विश्वावसु, बल
ध्रुव, हविष्य, वितान, विधान शमित, वत्सर भूति, और सुपर्वा इनसबको साध्यास्त्री धर्म के सकाश
से उत्पन्न करती भई और धर्मकेही सकाशसे सरस्वती देवी देवताओंको जनतीभई वर १ ध्रुव २ वि
श्वावसु ३ सोम ४ ईश्वर ५ और महामायासेयुक्त अपने समानरूपवाले छठेपुत्र धर्मको सातवेंवायुको
और आठवें नैर्ऋतिवसु को धर्म उत्पन्न करतेभये यह सबतो धर्मकी संतानहुई और विश्वास्त्रीमें धर्म
के सकाशसे विश्वेदेवा उत्पन्न भये हैं यह सुनाजाताहै ४३। ४८ महाभुजावाला दक्ष पुष्कर स्वन म-
धुमहोरग चाक्षुपमुनि विश्वन्त, वसु, विष्कंभ, महायशा, अतुलपराक्रमी सूर्य्य के समान कान्तिवाले
गरुड़ इत्यादिनामोंसे प्रसिद्धहुए विश्वेदेवोंको विश्वेशा जनतीभई मरुत्वती मरुद्गण संज्ञक देवताओं
को जनती भई ४९। ५१ अग्नि, चक्षु, रवि, ज्योति, सावित्र, मित्र, अमर, शरवृष्टि, सुकर्ष, महाभुज, ५२

अश्वमित्रंचित्ररश्मिन्तथानिषधनंनृप ! ५३ हूयन्तंवाडवञ्चैव चारित्रंमन्दपन्नगम्। बृ
हन्तंवैबृहद्रूपं तथावैपूतनानुगम् ५४ मरुत्वतीपुराजज्ञे एतान्वैमरुतान्गुणान्। अदितिः
कश्यपाज्जज्ञे आदित्यान्द्वादशैवहि ५५ इन्द्रोविष्णुर्भगस्त्वष्टा वरुणोह्यर्यमारविः। पू
षामित्रश्चधनदो धातापर्जन्यएवच ५६ इत्येतेद्वादशादित्या वरिष्ठास्त्रिदिवौकसः। आ
दित्यस्यसरस्वत्यां जज्ञातेद्वौसुतौवरौ ५७ तपःश्रेष्ठौगुणिश्रेष्ठौ त्रिदिवस्यापिसम्मतौ।
दनुस्तुदानवान्जज्ञे दितिर्दैत्यान्व्यजायत ५८ कालातुवैकालकेया नसुरान्राक्षसांस्तु
वै। अनायुषायास्तनया व्याधयःसुमहाबलाः ५९ सिंहिकाग्रहमातावै गन्धर्वजननीमुनिः
ताम्रात्वप्सरसांमाता पुण्यानांभारतोद्भव ! ६० क्रोधायाःसर्वभूतानि पिशाचाश्चैवपार्थि
व ! । जज्ञेयक्षगणांश्चैव राक्षसांश्चविशाम्पते ! ६१ चतुष्पदानिसत्वानि तथागावस्तुसु
रसाः। सुपर्णान्पक्षिणश्चैव विनताचाप्यजायत ६२ महीधरान्सर्वनागान् देवीकद्रूर्व्य
जायत। एवंवृद्धिंसमगमन् विश्वेलोकाःपरन्तप ! ६३ तदावैपौष्करोराजन् ! प्रादुर्भावो
महात्मनः। प्रादुर्भावःपौष्करस्ते मयाद्वैपायनेरितः ६४ पुराणःपुरुषश्चैव मयाविष्णुर्ह
रिः प्रभुः। कथितस्तेऽनुपूर्वेण संस्तुतःपरमर्षिभिः ६५ यश्चेदमग्र्यंश्रृणुयात्पुराणं सदा
नरःपर्वसुगौरवेण। अवाप्यलोकान्सहिवीतरागः परत्रचस्वर्गफलानिभुङ्क्ते ६६ चक्षु
षामनसावाचा कर्म्मणाचचतुर्विधम्। प्रसादयतियःकृष्णं तंकृष्णोऽनुप्रसीदति ६७

विराजवाच,विश्वावसु,मति,अश्वमित्र,चित्ररश्मि,निषधन ५३ हूयन्त,वाडव,चारित्र,मन्दपन्नग,बृहन्त, बृहद्रूप और पूतनानुग ५४ इन नामोंवाले मरुद्गण हैं और कश्यपके सकाशसे अदिति बारह आदित्यों को जनती भई ५५ इन्द्र, विष्णु, भग, त्वष्टा, वरुण, अर्य्यमा, रवि, पूषा, मित्र, धनद, धाता, पर्जन्य यह बारह आदित्य स्वर्गवासियों में उत्तम हैं आदित्य के सरस्वती के प्रभाव से दो पुत्र उत्पन्न होतेभये वह दोनों श्रेष्ठतपवाले और उत्तमगुणवाले होतेभये दनुके कश्यपके प्रभाव से दानव होतेभये दितिके दैत्यहुए ५६।५८ कालास्त्री कालकेय संज्ञक दैत्योंको और राक्षसोंको जनती भई अनायुषास्त्रीके महाबल वाली व्याधि होतीभई सिंहिकास्त्री ग्रहमाता और पूतना इनकोजनती भई मुनि नाम स्त्रीके गन्धर्व उत्पन्न होतेभये ताम्रास्त्री के अप्सरा उत्पन्नहुईं क्रोधास्त्री के प्रेतपिशाच यक्ष और राक्षस भी उत्पन्न होतेभये ५९।६१ सुरसा स्त्री के चतुष्पदपशु और गौ होतीभईं विनता स्त्रीके गरुड़ और सब पक्षी होतेभये ६२ कद्रूस्त्रीके सब पर्व्वत और सर्प यह उत्पन्न होतेभये इस प्रकारसे यह सब लोक वृद्धिको प्राप्त होताभया ६३ हे राजन् इसप्रकार विष्णुभगवान्से पुष्कर नाम कमल उत्पन्न हुआ है उस कमलमें जो सृष्टि हुई है उसको पद्मसृष्टि कहते हैं यह मैंने तेरे आगे पुराण पुरुष विष्णुभगवान्का वर्णन कर दियाहै इसरीतिसे सब ऋषि इस आदि पुराण विष्णुभगवान्की स्तुति करते हैं ६४।६५ जो पुरुष इस उत्तम पुराणको विशेषकरके पर्व्वसम्बन्धी दिनोंमें सुनता है वह इस संसारमें सब सुखोंको भोगकर अन्त समय स्वर्गमें प्राप्त होताहै ६६ जो पुरुष नेत्र मन और वाणीकरके श्रीकृष्णजीको प्रसन्न करताहै उसके ऊपर श्रीकृष्ण भगवान् कृपा करते

राजाचलभतेराज्यमधनश्चोत्तमन्धनम्। क्षीणायुर्लभतेचायुः पुत्रकामःसुतन्तथा ६८ य
ज्ञावेदास्तथाकामास्तपांसिविविधानिच। प्राप्नोतिविविधंपुण्यं विष्णुभक्तोधनानिच ६९
यद्यत्कामयतेकिञ्चित् तत्तल्लोकेश्वराद्भवेत्। सर्वंविहाययइमं पठेत्पौष्करकंहरेः ७० प्रादु
र्भावंनृपश्रेष्ठ! नतस्यह्यशुभंभवेत्। एषपौष्करकोनाम प्रादुर्भावोमहात्मनः। कीर्तितस्ते
महाभाग! व्यासश्रुतिनिदर्शनात् ७१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७०॥

(मत्स्य उवाच) विष्णुत्वंशृणुविष्णोश्च हरित्वञ्चकृतेयुगे। वैकुण्ठत्वञ्चदेवेषु कृष्ण
त्वंमानुषेषुच १ ईश्वरस्यहितस्यैषा कर्म्मणांगहनागतिः। संप्रत्यतीतान्भव्यांश्च शृणु
राजन्! यथातथम् २ अव्यक्तोव्यक्तलिङ्गस्थो यएषभगवान्प्रभुः। नारायणोह्यनन्ता
त्मा प्रभवोऽव्ययएवच ३ एषनारायणोभूत्वा हरिरासीत्सनातनः। ब्रह्मावायुश्चसोम
श्च धर्म्मःशक्रोबृहस्पतिः ४ अदितेरपिपुत्रत्वं समेत्यरविनन्दन!। एषविष्णुरितिख्यात
इन्द्रस्यावरजोविभुः ५ प्रसादजंह्यस्यविभोरदित्याःपुत्रकारणम्। बधार्थंसुरशत्रूणां दैत्य
दानवरक्षसाम् ६ प्रधानात्मापुराह्येष ब्रह्माणमसृजत्प्रभुः। सोऽसृजत्पूर्वपुरुषः पुराक
ल्पेप्रजापतीन् ७ असृजन्मानवांस्तत्र ब्रह्मवंशाननुत्तमान्। तेभ्योऽभवन्महात्मभ्यो बहु
धाब्रह्मशाश्वतम् ८ एतदाश्चर्यभूतस्य विष्णोःकर्मानुकीर्तनम्। कीर्तनीयस्यलोकेषुकी

है ६७ राजा तो राज्यको प्राप्त होताहै निर्धनको धनकी प्राप्तिहोती है क्षीण आयुवाला दीर्घायुको प्राप्त होताहै और पुत्रकी इच्छावाले के पुत्र उत्पन्न होताहै ६८ यज्ञ वेद काम तप अनेक प्रकारके धन, अनेक प्रकारके पुण्य इन सब पदार्थोंकी प्राप्ति विष्णुके भक्तको होजाती है ६९ जो २ मनसे विचारता है वही उसको प्राप्त होजाताहै हेराजन् जो पुरुष सब वस्तुओंको त्यागकर इस कमल की उत्पत्तिको सुनता है उसके कभी दुःख नहीं होताहै हेमहाभाग इस प्रकार करके विष्णुजी से कमल की उत्पत्ति हुई है सोवे दव्यासजीकी श्रुतिके अनुसार तेरे आगे वर्णन करदी है ७०।७१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७०॥

मत्स्यजी बोले कि विष्णुभगवान्को सत्ययुगमें हरि कहते हैं देवताओंमें वैकुंठ कहते हैं मनुष्यों में श्रीकृष्ण कहते हैं १ ईश्वरके हितके निमित्त कर्मोंकी गहरगति कही है हे राजन् अब बीते हुए और आगे होने वाले विष्णुके अवतारोंको सुन २ अव्यक्त विष्णुभगवान् व्यक्तलिंगमें स्थित होकर नारायणनामसे प्रसिद्धहोतेहैं और अनंतात्मा अविनाशीप्रभु कहातेहैं ३ फिरनारायणहोके वायु सोम इन्द्र धर्म और बृहस्पति इनअपनेरूपोंकोबनाताहै और अदिति केभी पुत्र विष्णुहुएहैं इसीसे उनको इन्द्रके छोटेभाईउपेन्द्र और वामनकहते हैं वही देवताओंकेशत्रु दैत्यदानव और राक्षसादिके मारनेके निमित्त अवतारहुएहैं ४।६ प्रथमयह प्रधानात्मानारायण ब्रह्माको रचतेभये ब्रह्माजीने उत्तमप्रजापति-योंको और मनुओं को रचा इन्हीं महात्माओं से बहुत प्रकारका संसार फैलतागया इस प्रकारसे आश्चर्यसे उत्पन्नहुए विष्णुके इनकर्मोंका वर्णनकियाहै अबलोकमेंजो कीर्त्तन करनेके योग्य माहा-

त्यमानंनिबोधमे ६ वृत्तेस्त्रवधेतत्र वर्तमानेकृतेयुगे । आसीत्त्रैलोक्यविख्यातः संग्राम स्तारकामयः १० यत्रतेदानवाघोराः सर्वेसंग्रामदुर्जयाः । घ्नन्तिदेवगणान्सर्वान् सयक्षो रगराक्षसान् ११ तेवध्यमानाविमुखाः क्षीणप्रहरणारणे । त्रातारंमनसाजग्मुर्देवंनाराय णंप्रभुम् १२ एतस्मिन्नन्तरेमेघा निर्वाणाङ्गारवर्चसः । सार्कचन्द्रग्रहगणञ्छादयन्तोन भस्तलम् १३ वेणुविद्युद्गणोपेता घोरनिह्लादकारिणः । अन्योन्यवेगाभिहताः प्रववुःसप्त मारुताः १४ दीप्ततोयाशनिघनैर्वज्रवेगानलानिलैः । रवैःसुघोरैरुत्पातैर्दह्यमानमिवा म्बरम् १५ ततउल्कासहस्राणि निपेतुःखगतान्यपि । दिव्यानिचविमानानि प्रपतन्त्यु त्पतन्तिच १६ चतुर्युगान्तेपर्याये लोकानांयद्भयंभवेत् । अरूपवन्तिरूपाणि तस्मिन्नुत्पा तलक्षणे १७ जातञ्चनिष्प्रभंसर्वं नप्राज्ञायतकिञ्चन । तिमिरौघपरिक्षिप्तानरेजुश्चदिशो दश १८ विवेशरूपिणीकाली कालमेघावगुण्ठिता । द्यौर्नभात्यभिभूतार्को घोरेणतमसा वृता १९ तान्घनौघान्सतिमिरान् दोर्भ्यामाक्षिप्यसप्रभुः । वपुःस्वन्दर्शयामास दिव्यंकृ ष्णवपुर्हरिः २० वलाहकाञ्जननिभं वलाहकतनूरुहम् । तेजसावपुषाचैव कृष्णंकृष्ण मिवाचलम् २१ दीप्तपीताम्बरधरं तप्तकाञ्चनभूषणम् । धूमान्धकारवपुषं युगान्ताग्नि मिवोत्थितम् २२ चतुर्द्विगुणपीनांसङ्किरीटच्छन्नमूर्द्धजम् । बभौचामीकरप्रख्यैरायुधैरु

त्यहै उसकोभी मुझसे श्रवण कर ७।९ सत्ययुगमें त्रिलोकी में विख्यात वृत्रासुरके वधके विषयमें तारकामयनाम युद्ध होताभया उस युद्धमें सब दानवलोग महाघोर पराक्रमी और दुर्जय होतेभये और देवताओं के गणों समेत सब यक्ष राक्षसादिकों के मारने वाले होते भये १० । ११ फिर वह सब देवता यक्षराक्षसादिक दानवोंसे पराजित होकर विमुखहो अपनेमनसे हारमान प्रभुनारायण- जीकी शरणमें जातेभये और वहबुझेहुए अँगारके समान शरीरधारी दानव मेघ चन्द्रमा और सू- र्य्यादिक सबग्रहोंको आच्छादित करतेहुए आकाशकोभी व्याप्तकरलेतेभये १२।१३ और बिजलियों सेयुक्त घोरशब्दोंके करनेवाले बड़े२ मेघ वर्षाकरनेलगे तब परस्परके वेगोंसे हतहुए सब वायुचलने लगे १४ उस समय दीप्तहुई बिजली मेघ और वायु इनसबके घोरशब्दोंसे ऐसा उत्पात होताभया मानों आकाशभर भस्महोजायगा १५ फिर हज़ारों तारे टूटनेलगे और दिव्य२ विमानभी आकाश में उछल२ कर पृथ्वीपर गिरतेभये उस समय ऐसा भयहोताभया मानो प्रलय कालही होरहाहै और उस भयंकर उत्पात में सबके रूपोंकी कान्ति दूरहोगई कुछभी नहीं दीखताभया अन्धकारके समूहसे आच्छादितहुई दशोंदिशाभी नहींदिखाई देनेलगीं १६।१८ उस कालके समान रूपधारण करनेवाली काली देवी आकाशमें प्रवेशकरतीभई तब आकाशके घोर अन्धकारसे सूर्य्यभी आच्छा- दितहोजातेभये १९ उससमय विष्णुभगवान् उन अन्धकारोंकेसमूहोंको अपनी भुजाओंसे दूरकर- के अपने दिव्यरूपको प्रकटकरतेभये २० मेघ और अंजनकेसमान कान्तिवाले पर्वतकेसमान वर्ण वाले अपने रूपको तेजसे प्रकाशित करतेभये २१ देदीप्त पीताम्बरधारी तप्त सुवर्ण के समान दिव्य आभूषणोंसे युक्त प्रलयकालीन अग्निसे उत्पन्नहुए धूम्रवर्ण बहुत बड़ेस्थूल स्कन्ध मुकुटसे आच्छा-

पशोभितम् २३ चन्द्रार्ककिरणोद्योतं गिरिकूटमिवोच्छ्रितम्। नन्दकानन्दितकरं शरा
शीविषधारिणम् २४ शक्तिचित्रफलोदग्रशङ्खचक्रगदाधरम्। विष्णुशैलं क्षमामूलं श्रीवृ
क्षंशार्ङ्गधन्विनम् २५ त्रिदशोदारफलदं स्वर्गस्त्रीचारुपल्लवम्। सर्वलोकमनःकान्तं स
र्वसत्वमनोहरम् २६ नानाविमानविटपन्तोयदाम्बुमधुस्रवम्। विद्याहङ्कारसाराढ्यं महा
भूतप्ररोहणम् २७ विशेषपत्रैर्निचितं ग्रहनक्षत्रपुष्पितम्। दैत्यलोकमहास्कन्धं मर्त्यलो
केप्रकाशितम् २८ सागराकारनिर्ह्रादं रसातलमहाश्रयम्। मृगेन्द्रपाशैर्विततं पक्षजन्तु
निषेवितम् २९ शीलार्थचारुगन्धाढ्यं सर्वलोकमहाद्रुमम्। अव्यक्तानन्तसलिलं व्य
क्ताहङ्कारफेनिलम् ३० महाभूततरङ्गौघं ग्रहनक्षत्रबुद्बुदम्। विमानगरुतव्याप्तं तोय
दाडम्बराकुलम् ३१ जन्तुमत्स्यजनाकीर्णं शैलशङ्खकुलैर्युतम्। त्रैगुण्यविषयावर्तं सर्व
लोकतिमिङ्गिलम् ३२ वीरवृक्षलतागुल्मं भुजगोत्कृष्टशैवलम्। द्वादशार्कमहाद्वीपं रुद्रै
कादशपत्तनम् ३३ वस्वष्टपर्वतोपेतं त्रैलोक्याम्भोमहोदधिम्। सन्ध्यासङ्ख्योर्मिसलिलं
सुपर्णानिलसेवितम् ३४ दैत्यरक्षोगणग्राहं यक्षोरगझषाकुलम्। पितामहमहावीर्य्यं सर्व
स्त्रीरत्नशोभितम् ३५ श्रीकीर्तिकान्तिलक्ष्मीभिर्नदीभिरुपशोभितम्। कालयोगिमहापर्व प्र
लयोत्पत्तिवेगिनम् ३६ तन्तुयोगमहापारं नारायणमहार्णवम्। देवाधिदेवंवरदं भक्तानां

वितकेश उत्तम२ शस्त्रोंसे शोभित चन्द्रमा और सूर्य्यकी किरणों से युक्त उन्नतपर्व्वतके शिखर समान आकार सर्पाकारबाणोंको धारण कियेहुए और शक्ति शंख चक्र औरगदाको धारणकिये विष्णुशैल अर्थात् भगवान्स्वरूपी पर्वत विदित होताभया उसी पर्वतमें श्रीवृक्षहुआ उस श्रीवृक्षमें देवताओंकाफलदेने वाला शार्ङ्गधनुषहोताभया २१।२५ स्वर्गकीस्त्रियां उसके उत्तमपत्तेबनीं इसप्रकारसे वह सबलोकों के मनका प्रकाशकरनेवाला और चित्तका आनंददेनेवाला होताभया २६ जिसमें अनेकप्रकारके विमान गुद्देहुए मेघोंकेजल मदजल झिग्नेकेसोतहुए विद्या और अहंकारादिक गोंदहोतेभये और सबप्रकार के भूतही उसपर अंकुरहोजातेभये २७ सर्वधर्मपत्रहुए ग्रहनक्षत्रादिक पुष्पहुए दैत्यलोग बड़े२स्कंध हुए ऐसा वह विष्णुशैल इसमर्त्यलोकमें प्रकाशित होताभया २८ समुद्र बिजली और रसातल इन सबका आश्रय होताहुआ सिंहरूप डालियोंसे विस्तृत यक्षरूप पक्षियोंसे सेवित शीलरूपी गन्धयुक्त नानावृक्षोंसे व्याप्त मायारूपी जलहोताभया और उस जलमें अहंकार झागहोताभया २९। ३० महाभूत तरंगहुए ग्रहनक्षत्र बुलबुलेहुए विमानपक्षीभये और उत्तम मनुष्यही उसके जीवजन्तु मत्स्य और शंखहुए त्रिगुण विषयिक भ्रमर अर्थात् जलका आवर्त्त सब लोक मकर मत्स्यहुए वृक्ष लता और गुच्छे इनके स्थानापन्न शूरवीरहुए सर्प सिवारहुए और बारहसूर्य्य महाद्वीप होतेभये ग्यारहरुद्र नगरहोतेभये अष्टवसु पर्व्वतहुए त्रिलोकी का जल महासमुद्रहुआ संध्यारूप लहरों से युक्त जलमें दैत्य और राक्षस ग्राहहुए यक्ष उरग बड़े२मत्स्यहुए ब्रह्माजी महापराक्रमहुए सब स्त्रियां रत्नहुईं श्री, कीर्ति, कान्ति, और लक्ष्मी यह सब नदियांहुईं महापर्व्वही उत्तम वेगवाले होतेभये इसप्रकारके सर्वांगोंसे वह विष्णु भगवान् महायोगी होतेभये ३१। ३६ फिर योगके पारगामी ना·

भक्तिवत्सलम् ३७ अनुग्रहकरंदेवं प्रशान्तिकरणंशुभम् । हयैश्वरथसंयुक्ते सुपर्णध्वजभू-
षिते ३८ ग्रहचन्द्रार्करचिते मन्दराक्षवरावृते । अनन्तरश्मिभिर्युक्ते विस्तीर्णेमेरुगह्व-
रे ३९ तारकाचित्रकुसुमे ग्रहनक्षत्रबन्धुरे । भयेष्वभयदंव्योम्नि देवादैत्यपराजिताः ४०
ददृशुस्तेस्थितंदेवं दिव्येलोकमयेरथे । तेकृताञ्जलयःसर्वे देवाःशक्रपुरोगमाः ४१ जय
शब्दंपुरस्कृत्य शरण्यंशरणङ्गताः । सतेषांतांगिरंश्रुत्वा विष्णुर्दैवतदैवतम् ४२ मनश्च
क्रेविनाशाय दानवानांमहामृधे । आकाशेतुस्थितोविष्णुरुत्तमंवपुरास्थितः ४३ उवाच
देवताःसर्वाः सप्रतिज्ञमिदंवचः । शान्तिंव्रजतभद्रंवोमाभैष्टमरुताङ्गणाः ! ४४ जितामे
दानवाःसर्वे त्रैलोक्यंपरिगृह्यताम् । तेतस्यसत्यसन्धस्य विष्णोर्वाक्येनतोषिताः ४५ दे
वाःप्रीतिंसमाजग्मुः प्राश्यामृतमनुत्तमम् । ततस्तमःसंहृतंतद्विनेशुश्चबलाहकाः ४६
प्रववुश्चशिवावाताः प्रशान्ताश्चादिशोदश । शुद्धप्रभाणिज्योतींषि सोमञ्चक्रुःप्रदक्षिणम्
४७ नविग्रहंग्रहाश्चक्रुः प्रशान्ताश्चापिसिन्धवः । विरजस्काभवन्मार्गा नाकवर्गादयस्त्र
यः ४८ यथार्थमूहुःसरितो नापिचुक्षुभिरेऽर्णवाः । आसंश्शुभानीन्द्रियाणि नराणामन्तरा
त्मसु ४९ महर्षयोवीतशोका वेदानुच्चैरधीयत । यज्ञेषुचहविःपाकं शिवमापचपावकः ५०
प्रवृत्तधर्माःसंवृत्ता लोकामुदितमानसाः । विष्णोर्दत्तप्रतिज्ञस्य श्रुत्वारिनिधनेगिरम् ५१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७१ ॥

रायणस्वरूपी महार्णव देवदेव वरदायी भक्तोंपर दयालु अनुग्रहपूर्व्वक शान्तिकर्त्ता और रथमें वि-
राजमान गरुड़की ध्वजासे शोभितहुए विष्णु भगवानको देखतेभये ३७ । ३८ अर्थात् ग्रह चन्द्रमा
और सूर्य्यकी अनेक विस्तृत किरणोंसे शोभायमान सुमेरु पर्व्वत के समान गह्वर तारेरूपी पुष्पोंसे
अलंकृत अभय देनेवाले दिव्य रथमें बैठेहुए आकाशमार्ग में इन्द्रादिक देवताओंको विष्णु भगवान्
देखतेभये ३९।४१ उनको देखकर सब देवता अञ्जलीबाँधकर जयशब्दपूर्व्वक सब वृत्तान्त वर्णन
करतेभये तब उनके वचनोंको सुनकर विष्णु भगवान् महायुद्धमें दानवोंके मारनेकी इच्छा करतेभये
और आकाशमेंही स्थितहुए दिव्यशरीरको धारणकर प्रतिज्ञाकरके देवताओंसे यह वचन बोलतेभये
कि हे देवताओ तुम शान्तिरक्खो चित्तसे भयकोत्यागो ४२ । ४४ अबमैं इनदानवोंको विजय कर
ताहूं तुम्हीं लोग इसत्रिलोकीके राज्यके भोगोंको भोगना ऐसे विष्णु भगवान्के वचनोंको सुनकर
देवतालोग महाप्रसन्नहो अपने २ स्थानोंपर आकर अमृतपान करतभये इसके अनन्तर वह सब
अन्धकार भी नष्टहोगया मेघ विलीयमानहुए ४५ । ४६ सुन्दर वायु चलनेलगी दशोंदिशा शान्त
होगईं और सब तारागण शुद्ध कान्ति वालेहोकर चन्द्रमाकी प्रदक्षिणा करतेभये ४७ ग्रहोंका युद्ध
होना बन्दहुआ समुद्र शान्तहुए मार्गोंमेंसे धूलिका उड़ना बन्दहुआ और स्वर्गादिक तीनों लोकोंमें
शान्तिहोजातीभई ४८ नदियोंमें क्षोभ न रहा नारायणके भक्तोंकी इन्द्रियां निर्मलहुईं उत्तम महर्षि
जन बड़े उन्नत स्वरोंसे वेदोंका पाठकरनेलगे और यज्ञादिकोंमें अग्नि देवता शाकल्यादिहव्य पदार्थ
को अच्छी रीतिसे ग्रहण करतेभये सब संसार शान्तहोगये श्रेष्ठधर्म कर्मादिक प्रवृत्तहोगये और सब

(मत्स्य उवाच) ततोभयंविष्णुवचः श्रुत्वादैत्याश्चदानवाः। उद्योगविपुलंचक्रुर्युद्धायविजयायच १ मयस्तुकाञ्चनमयं त्रिनल्वायतमक्षयम्। चतुश्चक्रंसुविपुलं सुकल्पितमहायुगम् २ किङ्किणीजालनिर्घोषं द्वीपिचर्मपरिष्कृतम्। रुचिरंरत्नजालैश्च हेमजालैश्चशोभितम् ३ ईहामृगगणाकीर्णं पक्षिपङ्क्तिविराजितम्। दिव्यास्त्रतूणिरधरं पयोधरविनादितम् ४ स्वक्षंरथवरोदारं सूपस्थंगगनोपमम्। गदापरिघसंपूर्णं मूर्तिमन्तमिवार्णवम् ५ हेमकेयूरवलयं स्वर्णमण्डलकूवरम्। सपताकध्वजोपेतं सादित्यमिवमन्दरम् ६ गजेन्द्राभोगवपुषं क्वचित्केसरिवर्चसम्। युक्तमृक्षसहस्रेण समृद्धाम्बुदनादितम् ७ दीप्तमाकाशगंदिव्यं रथंपररथारुजम्। अध्यतिष्ठद्रणाकाङ्क्षी मेरुंदीप्तमिवांशुमान् ८ तारमुत्क्रोशविस्तारं सर्वंहेममयंरथम्। शैलाकारमसम्बाधं नीलाञ्जनचयोपमम् ९ कार्ष्णायसमयंदिव्यं लोहेषाबद्धकूवरम्। तिमिरोद्गारिकिरणं गर्जन्तमिवतोयदम् १० लोहजालेनमहता सगवाक्षेणदंशितम्। आयसैःपरिघैःपूर्णं क्षेपणीयैश्चमुद्गरैः ११ प्रासैःपाशैश्चविततैर्नरसंयुक्तकण्टकैः। शोभितंत्रासयानैश्च तोमरैश्चपरश्वधैः १२ उद्यन्तद्विषतांहेतोर्द्वितीयमिवमन्दरम्। युक्तंखरसहस्रेण सोऽध्यारोहद्रथोत्तमम् १३ विरोचनस्तुसंक्रुद्धो गदापाणिरवस्थितः। प्रमुखेतस्यसैन्यस्य दीप्तग्रहइवाचलः १४ युक्तंरथस

जीवमात्र प्रसन्नमन वालेहोगये इसरीतिसे विष्णु भगवान्के मुखसे शत्रुओंके नाशकरनेकीप्रतिज्ञा को सुनकर सब देवता चित्तसे परमानन्दको प्राप्तहोतेभये ४९। ५१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः१७१॥

मत्स्यजी बोले कि दैत्य और दानवलोग उस महाभयकारी विष्णुके वचनको सुनकर युद्धमें जीतनेके निमित्त बहुतसा उद्योग करतेभये १ उस समय मयनामदैत्य बारहसौ हाथ विस्तृत चारचक्र विस्तृतजुआ किंकिणी आदिक जालियों के शब्दोंसे युक्त गैंडेके चर्मसे महा सुन्दर रत्नोंसे भूषित सुवर्ण जालों से खचित पक्षियोंकी पंक्ति महासुशोभित दिव्य अस्त्रशस्त्रों से पूर्ण मेघकेसमान गर्जने वाला आकाश पर्य्यन्त उन्नतबुर्जियोंसे अलंकृत गदा मुसलों समेत मूर्त्तिमान समुद्रके समान सुवर्ण के मंडलवाला सुवर्णहीकी ध्वजापताकासे दिव्यरूप सूर्य्य समेत मन्दराचलकेसमान कान्तिवाला कालेसर्प सिंहादिके समान वर्णवाला और मेघकेसमान गर्जनेवाले बड़े २ जुड़ेहुए रीछोंसे युक्त ऐसे शत्रुओं के रथों के तोड़नेवाले देदीप्त उत्तमरथमें सवार होताभया ऐसे रथमें बैठाहुआ वह मयनाम दैत्य ऐसा विदित होताथा मानो सुमेरुपर्व्वतपर सूर्य्यही उदयहुआ है २। ८ और तारकासुरदैत्य एककोश ऊंचे ऐसे अति विस्तृत सुवर्णके रथमें बैठताभया जो कि नीले अंजनके समान लोहेसे जटित लोहेकेहीचक्र अन्धकारको दूरकरनेवाली कान्तिसे युक्त मेघके समान शब्दायमान दृढ़लोहे की जालियों से शोभित लोहेकेही मूसल मुद्गर भाले फाँसी कंटक कुल्हाड़े और फरसे इनसब शस्त्रों से पूर्ण शत्रुओंको दूसरेसूर्य्यके समान प्रतीत होनेवाला और हज़ारगधों से जुताहुआथा ९। १३ और विरोचन दैत्य क्रोधकरके हाथमें गदाको धारणकरके आताभया और वह विरोचन उसदैत्यकी सेना-

हस्तेण हयग्रीवस्तुदानवः। स्यन्दनंवाहयामास सपत्नानीकमर्दनः १५ व्यायतंकिष्कुसा
हस्तं धनुर्विस्फारयन्महत्। वाराहःप्रमुखेतस्थौ सप्ररोहइवाचलः १६ खरस्तुविक्षरन्द
र्पान्नेत्राभ्यांरोषजंजलम्। स्फुरद्दन्तोष्ठनयनं संग्रामंसोऽभ्यकांक्षत १७ त्वष्टात्वष्टगजं
घोरं यानमास्थायदानवः। व्यूहितुंदानवव्यूहं परिचक्रामवीर्यवान् १८ विप्रचित्तिवपु
श्चैव श्वेतकुण्डलभूषणः। श्वेतःश्वेतप्रतीकाशो युद्धायाभिमुखेस्थितः १९ अरिष्टोब
लिपुत्रश्च वरिष्ठाद्रिशिलायुधः। युद्धायाभिमुखस्तस्थौ धराधरविकम्पनः २० किशोर
स्त्वभिसंहर्षात् किशोरइतिचोदितः। सबलादानवाश्चैव सन्नह्यन्तेयथाक्रमम् २१ अभ
वद्दैत्यसैन्यस्य मध्येरविरिवोदितः। लम्बस्तुनवमेघाभः प्रलम्बाम्बरभूषणः २२ दैत्य
व्यूहगतोभाति सनीहारइवांशुमान्। स्वर्भानुरास्ययोधीतु दशनौष्ठेक्षणायुधः २३ हसं
स्तिष्ठतिदैत्यानां प्रमुखेसमहाग्रहः। अन्येहयगतास्तत्र गजस्कन्धगताःपरे २४ सिंह
व्याघ्रगताश्चान्ये वराहर्क्षेषुचापरे। केचित्खरोष्ट्रयातारः केचिच्छ्वापदवाहनाः २५ पति
नस्त्वपरेदैत्या भीषणाविकृताननाः। एकपादार्द्धपादाश्च ननृतुर्युद्धकाङ्क्षिणः २६ आ
स्फोटयन्तोबहवः क्ष्वेडन्तश्चतथापरे। हृष्टशार्दूलनिर्घोषा नेदुर्दानवपुङ्गवाः २७ तेगदा
परिघैरुग्रैः शिलामुसलपाणयः। बाहुभिःपरिघाकारैस्तर्जयन्तिस्मदेवताः २८ पाशैःप्रा

में अचलपर्व्वतके समान शोभित होताभया १४ हयग्रीवदैत्य हज़ारों दैत्योंको साथलेकरआया और हज़ारों हाथकी विस्तृत देहवाला वाराहदैत्य धनुषको चढ़ाये रथको हाँकता पर्व्वतकी समान युद्धमें स्थित होताभया खरदैत्य अभिमानके क्रोधपूर्व्वक नेत्रों से जल भाड़ता दाँत ओष्ठ और नेत्रोंको फड़काताहुआ युद्धमें प्राप्त होताभया १५। १७ त्वष्टादैत्य घोर मतवाले हाथीपर चढ़ाहुआ दानवों के समूहों में चक्रदेकर सब दानवोंको इकट्ठा करता भया श्वेतकुंडलों से विभूषितांग होकर विप्रचित्ति दैत्य भी युद्धमें आया बलिकापुत्र अरिष्टदैत्य पर्व्वतकी शिलाओंको ग्रहण कियेआया और वहां आकर पर्व्वतकी शिलाओंको फेंकताभया १८। २० और लंबनाम दैत्य सबसेना में ऐसे शोभितहुआ, जैसे मेघों के समूहों में उदयहुआ सूर्य्य होताहै किशोरदैत्य भी युद्धमेंआया अन्य २ बहुत से दैत्यभी कवचोंको धारणकरके युद्धमें आतेभये मेघके समान वर्णवाला वह लंबदैत्य भी सबसेना में ऐसा शोभितहुआ जैसे कुहरके समूहमें सूर्य्य प्रकाशित होरहाहो राहुदैत्यभी दाँत ओष्ठको चबाता आंखोंको चढ़ाताहुआ युद्धमेंआया २१। २३ यह महाग्रह राहुनाम दैत्य हँसकर सबदैत्यों के सन्मुख खड़ा होताभया और अन्यबहुतसे दैत्य घोड़ोंपर चढ़कर आतेभये कितनेही दैत्य हाथियोंपर सवारहोकर आये २४ कितनेहीसिंह और भेड़ियोंपर कितनेहीरीछों पर कितनेहीगधे ऊंट और श्वापदनाम पशुपर चढ़कर आये कोईविकराल मुखवाले भयंकर दैत्य पैदलही चलेआये उस समय एकपाद अर्द्धपाद वाले दैत्य युद्धकी इच्छाकरके नाचतेभये २५। २६ कितनेही प्रसन्न शार्दूलके समान शब्दकरतेहुए दैत्य अपनी भुजाओंको फड़कातेहुए युद्धमें आये २७ यह मूसल और शिलाधारी दैत्य अपनी महाकठोर भुजाओंसे ताड़नाकरतेभये २८ फांसी, भाला,

सैश्चपरिघैस्तोमरांकुशपट्टिशैः । चिक्रीडुस्तेशतघ्नीभिः शतधारैश्चमुद्गरैः २९ गण्डशैलैश्चशैलैश्च परिघैश्चोत्तमायसैः। चक्रैश्चदैत्यप्रवराश्चक्रुरानन्दितंबलम् ३० एतद्दानवसैन्यंतत्सर्वंयुद्धमदोत्कटम् । देवानभिमुखंतस्थौ मेघानीकमिवोद्धतम् ३१ तदद्भुतं दैत्यसहस्रगाढं वाय्वग्निशैलाम्बुदतोयकल्पम् । बलंरणौघाभ्युदयेऽभ्युदीर्णं युयुत्सयोन्मत्तमिवावभासे ३२ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेद्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७२ ॥

(मत्स्य उवाच) श्रुतस्तेदैत्यसैन्यस्य विस्तरोरविनन्दन ! । सुराणामपिसैन्यस्य विस्तरंवैष्णवंशृणु १ आदित्यावसवोरुद्रा अश्विनौचमहाबलौ । सबलाःसानुगाश्चैव सन्नह्यन्तयथाक्रमम् २ पुरुहूतस्तुपुरतो लोकपालःसहस्रदृक् । ग्रामणीःसर्वदेवानामारुरोहसुरद्विपम् ३ मध्येचास्यरथःसर्वपक्षिप्रवररंहसः । सुचारुचक्रचरणोहेमवज्रपरिष्कृतः ४ देवगन्धर्वयक्षौघैरनुयातःसहस्रशः । दीप्तिमद्भिःसदस्यैश्च ब्रह्मर्षिभिरभिष्टुतः ५ वज्रविस्फूर्जितोद्भूतैर्विद्युदिन्द्रायुधोदितैः । युक्तोवलाहकगणैः पर्वतैरिवकामगैः ६ यमारूढ़ःसभगवान् पर्यैतिसकलंजगत् । हविर्धानेषुगायन्ति विप्रामखमुखेस्थिताः ७ स्वर्गे शक्रानुयातेषु देवतूर्यनिनादिषु । सुन्दर्यःपरिनृत्यन्ति शतशोऽप्सरसाङ्गणे ८ केतुनानागराजेन राजमानोयथारविः । युक्तोहयसहस्रेण मनोमारुतरंहसा ९ सस्यन्दनवरोभा

मूसल, तोमर, अंकुश, पट्टिश, भल्ल, वरछी, और मुद्गर इनसब अस्त्र शस्त्रोंसे देवताओंको ताड़ना देतेभये २९ पर्व्वतकी शिला लोहेके मुद्गर औरचक्र इनशस्त्रोंको फेंकतेहुए सबदानव अपने२ बल कोबढ़ातेभये ३० यह सबदानवोंकी सेनायुद्ध में उत्साह और मदोंको प्रकट करके मेघोंके समूहों के समान इकट्ठीहोकर देवताओंके आगे स्थितहोतीभई ३१ इन हज़ारों दैत्योंकी यह अद्भुतसेना वायु अग्नि पर्व्वत जल औरमेघ इनसबके समान प्रकाशितहोतीभई यह संपूर्ण दैत्य युद्धमें मदोन्मत्तोंके समान आवतेभये ३२ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७२ ॥

मत्स्यजी बोले हेरविनन्दनतैंने दैत्योंकी सेनाका विस्तारसुना अबदेवताओंकीभी सेनाका विस्तार श्रवण करो १ बारह१२ आदित्य अष्ट८ वसु ग्यारह११ रुद्र औरदो२ अश्विनीकुमार यहसब अपने२ अनुचरों समेत कवचधारण करके युद्धमें आवतेभये २ और सब देवताओं का अधिपति सहस्राक्ष इन्द्र अपने ऐरावत हाथी परचढ़कर आया और इन्द्रका रथभी सबसेनाकेमध्यमें स्थित होताभया उस सुन्दर चक्र युक्त सुवर्ण वज्रादिसे खचित देवयक्ष और गन्धर्वोंसे व्याप्तब्रह्मऋषियोंसे स्तुतिमान पर्व्वताकार विद्युत मेघों से संयुक्त रथपर वह इन्द्र विराजमान होताभया उस समय यज्ञोंके मुख में स्थितहुए ब्राह्मण उसकी स्तुति करतेभये ३ । ७ स्वर्ग में अनेक प्रकारके बाजेबजे सैकड़ों अप्सरानाचीं तवउन सबके मध्यमें वहरथ ऐसा शोभितहुआ जैसे कि पर्व्वतपर सूर्य्यका उदयहोताहै उस रथमें मन और वायुके समान वेगवाले हज़ार घोड़े जुततेभये उस समय मातलि सारथी

ति गुप्तोमातलिनातदा। कृत्स्नःपरिवृतोमेरुर्भास्करस्येवतेजसा १० यमस्तुदण्डमुद्य
म्य कालयुक्तश्चमुद्गरम्। तस्थौसुरगणानीके दैत्यान्नादेनभीषयन् ११ चतुर्भिस्सागरैर्यु
क्तो लेलिहानैश्चपन्नगैः। शङ्खमुक्ताङ्गदधरो बिभ्रत्तोयमयंवपुः १२ कालपाशान्समावि
ध्यन् हयैःशशिकरोपमैः। वाय्वीरितैर्जलाकारैः कुर्वन्लीलाःसहस्रशः १३ पाण्डुरोद्धूत
वसनः प्रचलन्रुचिराङ्गदः। मणिश्यामोत्तमवपुर्हारभारार्पितोवरः १४ वरुणःपाशधृ
ङ्मध्ये देवानीकस्यतस्थिवान्। युद्धवेलामभिलषन् भिन्नवेलइवार्णवः १५ यक्षराक्षससै
न्येन गुह्यकानांगणैरपि। युक्तश्चशङ्खपद्माभ्यां निधीनामधिपःप्रभुः १६ राजराजेश्वरःश्री
मान् गदापाणिरदृश्यत। विमानयोधीधनदो विमानेपुष्पकेस्थितः १७ सराजराजःशुशु
भे युद्धार्थीनरवाहनः। उक्षाणमास्थितःसंख्ये साक्षादिवशिवःस्वयम् १८ पूर्वपक्षःसहस्रा
क्षः पितृराजस्तुदक्षिणः। वरुणःपश्चिमंपक्षमुत्तरंनरवाहनः १९ चतुर्षुयुक्ताश्चत्वारो
लोकपालामहाबलाः। स्वासुदिक्षुस्वरक्षन्त तस्यदेवबलस्यते २० सूर्यःसप्ताश्वयुक्तेन र
थेनामितगामिना। श्रियाजाज्वल्यमानेन दीप्यमानैश्चरश्मिभिः २१ उदयास्तगचक्रेण
मेरुपर्वतगामिना। त्रिदिवद्वारचक्रेण तपतालोकमव्ययम् २२ सहस्ररश्मियुक्तेन भ्राज
मानेनतेजसा। चचारमध्येलोकानां द्वादशात्मादिनेश्वरः २३ सोमःश्वेतहयेभाति स्यन्द
नेशीतरश्मिवान्। हिमवत्तोयपूर्णाभिर्भाभिराह्लादयन्जगत् २४ तमृक्षपूगानुगतं शिशि

से रक्षित कियाहुआवहरथ ऐसा शोभायमानहुआ जैसा कि सूर्य्यके तेजसे सुमेरुपर्वत चारोंओर को प्रकाशित होता है ८। १० धर्मराज कालको साथलिये दंडमुसलधारीहो अपने शब्दों से दैत्योंको भयभीत करके देवताओं की सेनाके मध्यमें खड़ा होताभया ११ और चारोंसमुद्रों समेत जिह्वा लटकाते सर्पोंसे युक्त रत्नोंके आभूषण धारी कालपाशधरे चन्द्रकान्ति घोड़ेपर चढ़ाहुआ हजारों जलक्रीड़ा करता हुआ बहुत वर्णके वस्त्रोंको पहरे उत्तम शरीरधारी वरुण भी देवताओंकी सेनाके मध्यमें प्राप्तहोताभया और वहाँ आकर युद्ध करनेके समयकी बाट देखताहुआ समुद्रके समान शोभित होताभया १२। १५ और यक्ष राक्षस और किन्नरोंसमेत द्रव्योंका अधिपति कुबेरभी हाथमें गदालिये पुष्पक विमान में बैठकर आवताभया वह युद्धकरने की लालसा करनेवाला कुबेर साक्षात् शिवजीकेही समान वहाँ शोभित हुआ १६। १८ इन्द्रतो पूर्वदिशामें स्थित होताभया धर्मराज दक्षिण दिशामें, वरुण पश्चिम दिशामें और कुबेर उत्तरकी दिशामें स्थित होताभया १९ चारों दिशाओंमें महाबली दिग्पाल स्थितहोकर अपनी २ दिशाओंकी रक्षा करतेहुए देवताओंकी सेनाकीभी रक्षाकरते भये २० और अतिशीघ्र गामी सातघोड़ोंवाले रथमें विराजमान होकर वह सूर्य्य देवता भी आतेभये जिनके घोड़ोंकी उत्तम बागडोरिथी वह उदयाचल और अस्ताचल पर प्रकाशित स्वर्गके द्वारचक्रसे सबलोकोंको प्रकाशकरते हजारों किरणोंसे युक्त अपनेही तेजसे प्रकाशमान बारह सूर्य्योंके अधिपति उस देव सेनाके मध्यमें प्राप्तहोतेभये २१। २३ और शीत किरणयुक्त शीतल किरणोंसे सबजगत् के आनन्द दायक द्विजोंका ईश्वर शशाङ्क रात्रिके अन्धकारका दूरकरनेवाला ज्योति

रांशुंद्विजेश्वरम्। शशच्छायाङ्कितंतनुं नैशस्यतमसःक्षयम् २५ ज्योतिषामीश्वरंव्योम्नि रसानांरसदंप्रभुम्। ओषधीनांसहस्राणां निधानममृतस्यच २६ जगतःप्रथमंभागं सौम्यंसत्यमयंरथम्। ददृशुर्दानवाःसोमं हिमप्रहरणंस्थितम् २७ यःप्राणःसर्वभूतानां पञ्चधाभिद्यतेनृषु। सप्तधातुगतोलोकांस्त्रीन्दधारचचारच २८ यमाहुरग्निकर्तारं सर्वप्रभवमीश्वरम्। सप्तस्वरगतोयश्च नित्यङ्गीर्भिरुदीयते २९ यंवदन्त्युत्तमंभूतं यंवदन्त्यशरीरिणम्। यमाहुराकाशगमं शीघ्रगंशब्दयोगिनम् ३० सवायुःसर्वभूतायुरुद्धूतःस्वेनतेजसा। ववौप्रव्यथयन्दैत्यान् प्रतिलोमंसतोयदः ३१ मरुतोदिव्यगन्धर्वैर्विद्याधरगणैःसह। चिक्रीडुरसिभिःशुभ्रैर्निर्मुक्तैरिवपन्नगैः ३२ सृजन्तःसर्पपतयस्तीव्रतोयमयंविषम्। शरभूतादिवीन्द्राणांश्चेरुर्व्यात्ताननादिवि ३३ पर्वतैश्चशिलाशृङ्गैः शतशश्चैवपादपैः। उपनस्थुःसुरगणाःप्रहर्तुंदानवेबले ३४ यःसदेवोहृषीकेशः पद्मनाभस्त्रिविक्रमः। युगान्ते कृष्णवर्णाभो विश्वस्यजगतःप्रभुः ३५ सर्वयोनिःसमधुहा हव्यभुक्क्रतुसंस्थितः। भूम्यपोव्योमभूतात्मा श्यामःशान्तिकरोऽरिहा ३६ अरिघ्नममरादीनाञ्चक्रंगृह्यगदाधरः। अर्कैनगादिवोद्यन्तमुद्यम्योत्तमतेजसा ३७ सव्येनालम्ब्यमहतीं सर्वासुरविनाशिनीम्। करेणकालींवपुषाशत्रुकालप्रदाङ्गदाम् ३८ अन्यैर्भुजैःप्रदीप्ताभैर्भुजगारिध्वजःप्रभुः। दधारायुधजातानि शार्ङ्गादीनिमहाबलः ३९ सकश्यपस्यात्मभुवन्द्विजंभुजगभोजनम्। पवनाधिकसम्पातं गगनक्षोभणंखगम् ४० भुजगेन्द्रेणवदने निविष्टेनविराजितम्। अमृ-

गणेश्वर रस हज़ारों औषधी और अमृतका स्थान जगत्का प्रथमभाग महासौम्य चन्द्रमा श्वेत घोड़ोंपर आरूढ़होकरआया इसप्रकारके उसचन्द्रमाको सबदानव देखतेभये २४। २७ और सब भूतमात्रोंके पांचप्रकारके प्राणभेद करनेवाला सप्तधातुओंमें प्राप्तहोकर तीनों लोकोंको धारणकरने वाला अग्निका उत्पादक सातों स्वरों में और वाणीमें प्राप्तहोनेवाला जो शरीररहित उत्तमभूत आकाशमें शीघ्रगामी और शब्दकी योनि कहाता है ऐसा वायुभी अपने तेज से उस देवताओं की सेनामें प्राप्तहोताभया और आतेही वह दैत्योंको दुःख देताहुआ चलनेलगा २८। ३१ और दिव्य गन्धर्व विद्याधर आदिकों समेत क्रीड़ाकरताभया इनसबके विशेष सर्पोंके अधिपति बड़े २ सर्प अपने दारुण विषोंको निकाल २कर देवताओंके बाणों में प्राप्त करतेभये और कितनेही सर्प अपने शरीरों समेत देवताओंके बाणोंमें प्रवेशकरजातेभये बहुतसे देवता पर्व्वत शिला और वृक्षोंको धारण करके दैत्योंकी सेनामें प्राप्तहोतेभये ३२। ३४ जो पद्मनाभ विष्णुभगवान् जगत्के नाशकरनेके निमित्त कृष्णवर्ण धारण करते हैं वह सर्वयोनि हव्यभुक् यज्ञमें स्थितहोने वाले पंचभूतात्मक श्याम शान्तिकर शत्रुनाशक गदाधर नारायणहैं वह भी पर्व्वतपर उदयहोनेवाले सूर्य्यके समान प्रकाशित होकर आतेभये ३५। ३७ वह विष्णुभगवान् सब दैत्योंकी नाश करने वाली महाकाली रूप गदाको बायें हाथमें धारण करतेभये ३८ और अन्य भुजाओंमें शार्ङ्ग धनुष आदिक शस्त्रोंको ग्रहण करतेभये ३९ अर्थात् नारायण भगवान् सर्पभुक् पवनभुक् आकाशगामी मन्दराचल पर्व्वतके समान ऊंचे देव

तारम्भानिर्मुक्तं मन्दराद्रिमिवोच्छ्रितम् ४१ देवासुरविमर्देषु वहुशोदृढविक्रमम्। महेन्द्रे
णामृतस्यार्थे वज्रेणकृतलक्षणम् ४२ शिखिनंवलिनश्चैव तप्तकुण्डलभूषणम्। विचित्र
ग्रवसनन्धातुमन्तमिवाचलम् ४३ स्फीतक्रोडावलम्बेन शीतांशुसमतेजसा। भोगि
भोगावसिक्तेन मणिरत्नेनभास्वता ४४ पक्षाभ्याञ्चारुपत्राभ्यामावृत्यदिविलीलया।
युगान्तेसेन्द्रचापाभ्यान्तोयदाभ्यामिवाम्बरम् ४५ नीललोहितपीताभिः पताकाभिरलं
कृतम्। केतुवेषप्रतिच्छन्नं महाकायनिकेतनम् ४६ अरुणावरजंश्रीमानारुह्यसमरेवि
भुः। सुवर्णस्त्वर्णवपुषा सुपर्णंखेचरोत्तमम् ४७ तमन्वयुर्देवगणा मुनयश्चसमाहिताः।
गीर्भिःपरममन्त्राभिस्तुष्टुवुश्चजनार्दनम् ४८ तद्वैश्रवणसंश्लिष्टं वैवस्वतपुरःसरम्।
द्विजराजपतिक्षिप्तं देवराजविराजितम् ४९ चन्द्रप्रभाभिर्विपुलं युद्धायसमवर्त्तत। स्व
स्त्यस्तुदेवेभ्यइति वृहस्पतिरभाषत। स्वस्त्यस्तुदानवानीके उशनावाक्यमाददे ५० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेत्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७३॥

(मत्स्य उवाच) ताभ्यांबलाभ्यांसंजज्ञे तुमुलोविग्रहस्तदा। सुराणामसुराणाञ्च पर
स्परजयैषिणाम् १ दानवादैवतैःसार्द्धं नानाप्रहरणोद्यताः। समीयुर्युध्यमानावै पर्वताइवप
र्वतैः २ तत्सुरासुरसंयुक्तं युद्धमत्यद्भुतंबभौ। धर्माधर्मसमायुक्तं दर्पेणविनयेनच ३ ततो
रथैर्विप्रयुक्तैर्वारणैश्चप्रचोदितैः। उत्पतद्भिश्चगगनमसिहस्तैःसमन्ततः ४ क्षिप्यमा
णैश्चमुसलैः सम्पतद्भिश्चसायकैः। चापैर्विस्फार्यमाणैश्च पात्यमानैश्चमुद्गरैः ५ तद्युद्ध

दानवोंके अमृत मथन समय वहुत पराक्रम करने वाले अमृतकेही निमित्त इन्द्रके वज्रसे चिह्नित
किये हुए शिखा युक्त महावली कुंडलों समेत विचित्र धातुमय पर्व्वतके समान चन्द्र और मणियों
की समान कान्तिवाले ४०।४४ और महातेजस्वी ऐसे गरुड पर सवार होकर देवताओंकी सेनामें
आतेभये उनके आनेकी ऐसी शोभा होतीभई जैसे कि मेघों समेत दो इन्द्रधनुषों करके आकाशकी
शोभा होती है उन पचरंगी ध्वजाओंसे अलंकृत महाशरीर वाले गरुड़पर चढ़े विष्णुभगवान्के आते
ही सवदेवता और मुनिगण लोग उनके पीछे चलतेभये और परम उत्तम वचनोंकरके उनकी स्तुति
भी करतेभये ४५।४८ उनके आगे धर्मराज और इन्द्रसे प्रेरित चन्द्रमा यह दोनों चले उस समय
वृहस्पतिजी सव देवताओं को स्वस्तिवचन पूर्व्वक आशीर्वाद देनेलगे और शुक्राचार्य्यजी दैत्यों की
सेनामें आशीर्वाद देतेभये ४९।५० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७३॥

मत्स्यजी बोले कि उन दोनों सेनाओंका ऐसे महायुद्ध होताभया कि परस्पर जीतने की इच्छा
करतेहुए देवता और दानव अनेकप्रकारके शस्त्रोंको उठाकर पर्व्वतों के समान खड़ेहोहोकर युद्धकरने
को आवतेभये १।२ और अभिमान समेत धर्माधर्मसे युक्त परस्पर अत्यन्त अद्भुत युद्धप्रवृत्त हुआ ३
इसकेपीछे, रथ, प्रेरित हाथी, और हाथमेंखड्गलिये आकाशमें उछलतेहुएयोद्धा इनसवसे आकाश
चारोंओरसे व्याप्तहोगया ४ गिरतेहुए वाण मुसल मुद्गर और चढ़ायेहुएधनुष इनसवसे देवदानवों का

मभवद्घोरं देवदानवसंकुलम्। जगतस्त्रासजननं युगसम्बर्तकोपमम् ६ हस्तमुक्तैश्चप रिघैर्विप्रयुक्तैश्चपर्वतैः। दानवाःसमरेजघ्नुर्देवानिन्द्रपुरोगमान् ७तेबध्यमानाबलिभिर्दान वैर्जयकाशिभिः। विषण्णवदनादेवा जग्मुरार्तिपरांमृधे ८ तेऽस्त्रशूलप्रमथिताः परिघैर्भि न्नमस्तकाः। भिन्नोरस्कादितिसुतैर्वेमूरक्तंव्रणैर्बहु ९ वेष्टिताःशरजालैश्च निर्यत्नाश्चासुरैः कृताः। प्रविष्टादानवींमायान्नशेकुस्तेविचेष्टितुम् १० अस्तंगतमिवाभाति निष्प्राणसह शाकृति। बलंसुराणामसुरैर्निष्प्रयत्नायुधंकृतम् ११ दैत्यचापच्युतान्घोरांश्छित्त्वावज्रेण ताञ्छरान्। शक्रोदैत्यबलंघोरं विवेशबहुलोचनः १२ सदैत्यप्रमुखान्हत्वा तद्दानवबलं महत्। तामसेनास्त्रजालेन तमोभूतमथाकरोत् १३ तेऽन्योन्यंनावबुध्यन्त देवानांवाहना नि च। घोरेणतमसाविष्टाः पुरुहूतस्यतेजसा १४ मायापाशैर्विमुक्तास्तु यत्नवन्तःसुरोत्त- माः। वपूंषिदैत्यसिंहानान्तमोभूतान्यपातयन् १५ अपध्वस्ताविसंज्ञाश्च तमसानीलव र्चसा। पेतुस्तेदानवगणाश्छिन्नपक्षाइवाद्रयः १६ तद्घनीभूतदैत्येन्द्रमन्धकारइवार्णवे। दानवन्देवकदनन्तमोभूतमिवाभवत् १७ तदासृजन्महामायां मयस्तांतामसीन्दहन्। युगान्तोद्योतजननीं सृष्टामौर्वेणवह्निना १८ सादहत्ततःसर्वान् मायामयविकल्पिता। दैत्याश्चादित्यवपुषः सद्यउत्तस्थुराहवे १९ मायामौर्वीसमासाद्य दह्यमानादिवौकसः।

महाघोर युद्ध जगत्को त्रासदेनेवाला प्रलय कालके मेघोंके समान होताभया ५।६ इसके अनन्तर दैत्यलोग हाथसे फेंकेहुए मूसल और पर्व्वतों करके देवताओंको प्रहारकरतेभये ७ तब बलवाले और विजय करनेकी इच्छावाले दैत्यों से पीड़ितहुए देवता महादुःखीहोकर पीड़ाको प्राप्तहोतेभये उससमय अस्त्रोंकीचोटसे दुःखित मूसलोंसे फूटेहुए मस्तक और दैत्योंसे तोड़ीहुई छातीवाले देवतालोग मुखसे रुधिर थूकनेलगे ८।९ जब बाणोंके जालमें लपेटेहुए देवताओंको दैत्यलोगोंनेरोका उससमय दैत्योंकी मायामें फंसेहुए देवता कुछभी नहीं करसके १० फिर दैत्योंसे पीड़ितहुए देवता हारमान कर मरे हुओंके समान होजातेभये और शस्त्र नहीं चलासके ११ इसके अनन्तर सहस्राक्ष इन्द्र अपने वज्रसे दैत्यों के उनघोर बाणोंको छेदनकरके दैत्योंकी सेनामें प्रवेश करताभया १२ और सबदैत्योंकी सेनाका नाशकरके अपने तामस अस्त्र जालके द्वारा दैत्योंकी सेनामें अन्धकार करदेताभया तब वह दैत्य परस्परमें किसीकोभी नजानतेभये और देवताओंकेभी वाहनघोर अन्धकारसे व्याप्तहो गये उस समय इन्द्रने अपने तेजसे देवताओंकी सेनाका अन्धकार दूरकरदिया फिर मायाके अन्धकारसे छूटेहुए देवता यत्नपूर्व्वक अन्धकारसे युक्तहुए दैत्यों के शरीरोंको शस्त्रोंसे गिरातेभये १३।१५ तब नीलकान्तिवाले अन्धकारसे दुःखितहुए दानव युद्धमें कट२कर ऐसे गिरतेभये जैसे कि पक्षकटे हुए पर्व्वत गिरते हैं १६ जबवह महाघोर अन्धकार दैत्योंकी सेनाका नाशकरनेलगा तब मय दैत्य उस तामसी मायाको दग्धकरके अपनी मायाकी रचनासे प्रलय कालकीसी अग्नि रचताभया १७।१८ फिर मयदैत्य से कल्पितकीहुई वहमाया सब देवताओंको नष्टकरतीभयी और सब दैत्य युद्धमें खड़े होजातेभये १९ उस दैत्यकीमायासे जलतेहुए देवता जलदायी शीतल किरणवाले च-

भेजिरेचेन्द्रविषयं शीतांशुंसलिलप्रदम् २० तेदह्यमानाह्यौर्वेण वह्निनानष्टचेतसः शक्रं
सुर्वेजिर्णेदेवाः सन्तप्ताःशरणैषिणः २१ सन्तप्तेमाययासैन्ये हन्यमानेचदानवैः। चोदितो
देवराजेन वरुणोवाक्यमब्रवीत् २२ और्वोब्रह्मर्षिजःशक्र!तपस्तेपेसुदारुणम्। और्वःस
पूर्वतेजस्वी सदृशोब्रह्मणोगुणैः २३ तंतपन्तमिवादित्यं तपसाजगदव्ययम्। उपतस्थुर्मु
निगणा दिव्यादेवर्षिभिःसह २४ हिरण्यकशिपुश्चैव दानवोदानवेश्वरः। ऋषिंविज्ञापयां
मासुः पुरापरमतेजसम् २५ ऊचुर्ब्रह्मर्षयस्तंतु वचनंधर्म्मसंहितम्। ऋषिवंशेषुभगवं
श्छिन्नमूलमिदंपदम् २६ एकस्त्वमनपत्यश्च गोत्रायान्योनवर्त्तते। कौमारंव्रतमास्थाय
क्लेशमेवानुवर्त्तसे २७ बहूनिविप्र! गोत्राणि मुनीनांभावितात्मनाम्। एकदेहानितिष्ठन्ति
विविक्तानिविनाप्रजाः २८ एवमुच्छिन्नमूलेश्च पुत्रैर्नोनास्तिकारणम्। भवांस्तुतपसाश्रे
ष्ठः प्रजापतिसमद्युतिः २९ तत्रवर्तस्ववंशाय वर्द्धयात्मानमात्मना। त्वयाधर्मोऽर्जितस्तेन
द्वितीयांकुरुवेतनुम् ३० सएवमुक्तोमुनिभिर्ह्यौर्वोमर्मसुताडितः। जगर्हेतान्ऋषिगणान्
वचनंचेदमब्रवीत् ३१ यथायंविहितोधर्मो मुनीनांशाश्वतस्तुसः। आर्षवैसेवतःकर्म्म
वन्यमूलफलाशिनः ३२ ब्रह्मयोनौप्रसूतस्य ब्राह्मणस्यात्मदर्शिनः। ब्रह्मचर्यंसुचरितंब्र
ह्माणमपिचालयेत् ३३ जनानांवृत्तयस्तिस्रो यदूगृहाश्रमवासिनाम्। अस्माकन्तुवरंवृ
त्तिर्वनाश्रमनिवासिनाम् ३४ अब्भक्षावायुभक्षाश्च दन्तोलूखलिनस्तथा। अश्मकुट्टादश

न्द्रमाको भजतेभये और वड़वानलसे दग्धहुए देवता महासंतप्तहोकर इन्द्रकी शरणमें जाके स्तुति करते भये २०। २१ जबमाया करके देवताओंकी सेना संतप्तहोकर मरनेलगी तब इन्द्रसे प्रेरितहुए वरुण देवता इन्द्रसे यह वचनबोले २२ कि हे इन्द्र और्व अर्थात् वड़वानल ब्रह्मर्षिसे उत्पन्न भया है अर्थात् पूर्व्वकालमें ऊर्वनाम एकऋषि तपस्या करतेभये और गुणोंकरके ब्रह्माके समान होजाते भये २३ तब सूर्य्यके समान तपतेहुए उस ऊर्व ऋषिकी देवर्षि और मुनिगण लोग मिलकर स्तुति करतेभये २४ प्रथम तो उस महातेजस्वी ऋषिसे हिरण्यकशिपु दैत्य विज्ञापन करताभया अर्थात् उस हिरण्यकशिपुने उनसे यह धर्मपूर्व्वक वचन कहे कि हे भगवन् यहऋषियों का वंश तो छिन्न मूल अर्थात् कटीहुई जड़वाला होगयाहै केवल आपही एकऋषि हैं सो आपके गोत्रका दूसरा कोई नहीं है तुम कुमार अवस्थाही में व्रतोंको धारणकरके क्लेशोंको भोगतेहो हे महाराज बहुतसे मुनिजनोंके शरीर प्रजाके विना अकेले हैं इसीप्रकार पुत्रोंके विना मुनियोंके वंश नष्टहोगये हैं तुमतो तपस्या करके श्रेष्ठहोकर प्रजापति के समान कान्तिवाले होगयेहो २५। २९ इस हेतुसे आपभी अपने वंशकी वृद्धिके लिये पुत्रकी उत्पत्तिकरो अपने आत्मासे आत्माको बढ़ाकर दूसरा शरीर उत्पन्न करो ३० यह हिरण्यकशिपु के वचन सुनकर मर्ममें ताड़ित हुए वह ऊर्व ऋषि उनऋषियोंकी निन्दाकरके यह वचनबोले कि जिस प्रकारसे मुनियोंको इस आर्ष धर्मके द्वारा वनकरना और वनके मूलफलादिक खानेका कर्म कहाहै वही परमधर्महै क्योंकि ब्रह्मयोनिमें उत्पन्न होनेवाले आत्मदर्शी ब्राह्मणको ब्रह्मचर्यहीका आचरण करनायोग्यहै ३१।३३ गृहस्थवासियोंके तीनप्रकारके कर्महैं उनमेंसे

तथा पञ्चातपसहाश्चये ३५ एतेतपसितिष्ठन्ति व्रतैरपिसुदुष्करैः। ब्रह्मचर्यंपुरस्कृत्यप्रा
र्थयन्तिपराङ्गतिम् ३६ ब्रह्मचर्याद्ब्राह्मणस्य ब्राह्मणत्वंविधीयते। एवमाहुःपरेलोकेब्रह्म
चर्यविदोजनाः ३७ ब्रह्मचर्येस्थितंधैर्यं ब्रह्मचर्येस्थितंतपः। येस्थिताब्रह्मचर्येषु ब्राह्मणा
दिविसंस्थिताः ३८ नास्तियोगंविनासिद्धिर्नवासिद्धिंविनायशः। नास्तिलोकेयशोमूलं
ब्रह्मचर्य्यात्परन्तपः ३९ योनिगृह्येन्द्रियग्रामंभूतग्रामंचपञ्चकम्। ब्रह्मचर्य्यंसमाधत्ते
किमतःपरमन्तपः ४० अयोगेकेशधरणमसङ्कल्पव्रतक्रिया। अब्रह्मचर्य्येचर्य्याच त्रयं
स्याद्दम्भसंज्ञकम् ४१ क्कदाराःक्कचसंयोगः क्कचभावविपर्य्ययः। नन्वियंब्रह्मणासृष्टा
मनसामानसीप्रजा ४२ यद्यस्तितपसोवीर्य्यं युष्माकंविदितात्मनाम्। सृजध्वंमानसान्
पुत्रान् प्राजापत्येनकर्म्मणा ४३ मनसानिर्म्मितायोनिराधातव्यातपस्विभिः। नदार
योगोबीजंवा व्रतमुक्तंतपस्विनाम् ४४ यदिदंलुप्तधर्म्मार्थं युष्माभिरिहनिर्भयैः। व्या-
हृतंसद्भिरत्यर्थमसद्भिरिवमेमतम् ४५ वपुर्दीप्तान्तरात्मानमेतत्कृत्वामनोमयम्। दारयो-
गंविनास्रक्ष्ये पुत्रमात्मतनूरुहम् ४६ एवमात्मानमात्माने द्वितीयंजनयिष्यति। वन्ये
नानेनविधिना दिधिक्षन्तमिवप्रजाः ४७ और्वस्तुतपसाविष्टो निवेश्योरुंहुताशने। मम
न्थैकेनदर्भेण सुतस्यप्रभवारणिम् ४८ तस्योरुंसहसाभित्वा ज्वालामालीह्यनिन्धनः।

जो वनमें वास करते हैं उनको हमारीही वृत्तिमें रहना श्रेष्ठ है ३४ जल पीनेवाले वायुभक्षी दाने चाबनेवाले पत्थरोंपर तप करनेवाले और पचाग्नि के तपनेवाले यहऐसे२ ऋषि दारुण व्रतकरके तपोंमें स्थित होते हैं और ब्रह्मचर्य्यपूर्व्वक परमगतिकी प्रार्थना करते हैं ३५। ३६ ब्रह्मचर्य्यही करने से ब्राह्मणमें ब्राह्मणपना कहाजाताहै ब्रह्मचर्य्यके जाननेवाले अन्य जनभी ऐसा कहते हैं कि ब्रह्मचर्य्यमें धैर्य्य स्थितहै जो २ ब्राह्मण अपने तपमें स्थित हैं वह स्वर्गहीमें स्थितहैं ३७। ३८ योगके विना सिद्धिनहीं है सिद्धिके विना यशनहीं है यशके विना लोकनहीं है इस हेतुसे मूल सबका ब्रह्मचर्य्यही परमतप है ३९ जो इन्द्रियोंके समूहोंको और पंचभूतोंको रोककर ब्रह्मचर्य्यको धारण करता है उससे अधिक कोई तपनहीं है ४० योगके विना वालोंका बढ़ाना संकल्प के विना व्रतकी क्रियाओं का करना और ब्रह्मचर्य्यके विना कोई आचरण करना यहतीनों दंभ अर्थात् पाखंड कहाते हैं ४१ कहाँ स्त्री है कहाँ उसका संयोग है कहाँ उसके भावकी विपरीतता है निश्चयकरके ब्रह्माजी के मनही करके यह सृष्टि रचीहुईहै ४२ जो तुममें तपका वीर्य्यहै तो प्राजापत्य कर्मकरके अपने मनहीसे प्रजाको उत्पन्नकरो ४३ तपस्वियोंको तो अपने मनसेही उत्पन्न कीहुई योनिमें गर्भाधान करना योग्यहै और जो कि तुमने धर्मका लोपकरके ऐसाकहाहै तो यह तुम्हारा कहना मेरे चित्तसे दुष्ट जनोंके कहनेके समानहै ४४। ४५ मैं इस अपने अन्तरात्माको देदीप्त मनोमय शरीर करके स्त्रीके विनाही पुत्रकोरचूंगा ४६ इसप्रकारसे अपने आत्मासे दूसरे शरीरको उत्पन्न करूंगा मैं इसवनकी विधिसे ऐसे पुत्रकोरचूंगा जो कि प्रजामात्रको दग्धकरेगा ४७ इसके अनन्तर वह ऊर्वऋषि तपसे युक्तहो अग्निमें जघाओंको प्रवेशकर एकडाभकरके पुत्रकी उत्पन्न करनेवाली अरणीकाष्ठको मथता

जगतोदहनाकांक्षी पुत्रोऽग्निःसमपद्यत ४९ ऊर्वस्योरुंविनिर्भिद्य औौर्वोनामान्तकोऽन लः। दिधक्षन्निवलोकांस्त्रीन् जज्ञेपरमकोपनः ५० उत्पन्नमात्रश्चोवाच पितरंक्षीणया गिरा। क्षुधामेबाधतेतात! जगद्भक्ष्येत्यजस्रमाम् ५१ त्रिदिवारोहिभिर्ज्वालैर्जृम्भमाणो दिशोदश। निर्दयन्सर्वभूतानि वद्धेसोऽन्तकोऽनलः ५२ एतस्मिन्नन्तरेब्रह्मा मुनिमूर्वं सभाजयन्। उवाचवार्यतांपुत्रो जगतश्चदयांकुरु ५३ अस्यापत्यस्यतेविप्र! करिष्ये स्थानमुत्तमम्। तथ्यमेतद्वचःपुत्र! शृणुत्वंवदतांवर! ५४ (ऊर्व उवाच) धन्योऽस्म्यनु गृहीतोऽस्मियन्मेऽद्यभगवांच्छिशोः। मतिमेतांददातीह परमानुग्रहायवै ५५ प्रभातका लेसंप्राप्ते कांक्षितव्येसमागमे। भगवन्! तर्पितःपुत्रः कैर्हव्यैःप्राप्स्यतेसुखम् ५६ कुत्र चास्यनिवासःस्याद्भोजनंवाकिमात्मकम्। विधास्यतीहभगवान् वीर्यतुल्यंमहौजसः ५७ (ब्रह्मोवाच) वडवामुखेऽस्यवसतिः समुद्रेवैभविष्यति। ममयोनिर्जलंविप्र! तस्यपी तवतःसुखम् ५८ यत्राहमासनियतं पिबन्वारिमयंहविः। तद्धविस्तवपुत्रस्य विसृजाम्या लयश्चतत् ५९ ततोयुगान्तेभूतानामेषचाहञ्चपुत्रक!। सहितौविचरिष्यावो निष्पुत्राणा मृणापहः ६० एषोऽग्निरन्तकालेतु सलिलाशीमयाकृतः। दहनःसर्वभूतानां सदेवासुर रक्षसाम् ६१ एवमस्त्वितितंसोऽग्निः संवृतज्वालमण्डलः। प्रविवेशार्णवमुखं प्रक्षिप्य

भया तब उनकी जंघाको भेदन करके अपने बलसे इंधन के विनाही जगत्को दग्ध करनेकी इच्छा करताहुआ पुत्ररूप अग्नि उत्पन्न होताभया ४८। ४९ इस रीति से वह परमकोप करने वाला औौर्व नाम अग्नि ऊर्वऋषिकी जंघाको भेदनकरके उत्पन्न होताभया ५० यह ऊर्वऋषि का पुत्र उत्पन्न होतेही क्षीणवाणी से अपने पितासे यह वचन कहताभया कि हे तात मुझको क्षुधा बाधा कररही है मुझको आप जगत् के भक्षण करने की आज्ञा दीजिये ५१ ऐसा कहकर वह औौर्वनाम अग्नि स्वर्ग में जा अपनी झलों से दशों दिशाओं को व्याप्तकर सब भूतों के भस्म करने की इच्छा करके बढ़जाता भया ५२ इसके अनन्तर उस ऊर्व को ब्रह्माजी समझाकर यह वचन कहने लगे कि आप इस अपने पुत्रको निवारण कीजिये और जगत्पर दया कीजिये ५३ हे विप्र इस आप की सन्तानके निमित्त में बहुत अच्छा स्थान नियतकरूंगा हे पुत्र इस मेरे वचनको सत्यही सम झनायोग्यहै ५४ ऊर्वऋषिने कहा कि मैं धन्यहूं यहआपने बड़ा अनुग्रहकियाहै जो मेरे पुत्रकेलिये स्थान नियतकरनेका वचनकहा ५५ हे भगवन् प्रातःकालकेहोतेही साकल्यसे तृप्तहुए इसअग्निको कौनसे सुखकी प्राप्तिहोगी इसका निवास कहाँहोगा और इसके भोजनका क्या विधान करोगे५६।५७ ब्रह्माजीबोले कि यह तुम्हारा पुत्र समुद्रके मध्य वड़वा मुखमें प्राप्तहोगा और हे विप्र मेरीभी योनि जलहै उसके पीनेसे इसको सुखहोगा जिस जलरूपी घृतको मैंभी पीताहुआ उसमें वासकरताभया उसी जलको मैं तेरे पुत्रके निमित्तदेताहूं ५८।५९ हे पुत्र इसके अनन्तर युगोंके अन्तमें यह तेरा पुत्र और मैं दोनों मिलकर विचरेंगे तब पुत्ररहित जनोंके ऋणों को यह अग्नि दूरकरेगा और अन्तकाल में यही अग्नि सब लोकोंका नाशकरदेगा इसके विशेष देवता असुर और राक्षस आदि सब भूतमात्रों

पितरिप्रभाम् ६२ प्रतियातस्ततोब्रह्मायेचसर्वेमहर्षयः । ऊर्वस्याग्नेःप्रभांज्ञात्वास्वां स्वाङ्गतिमुपाश्रिताः ६३ हिरण्यकशिपुर्दृष्ट्वा तदातन्महदद्भुतम्। उच्चैःप्रणतसर्वाङ्गो वाक्यमेतदुवाचह ६४ भगवन्नद्भुतमिदं संवृत्तंलोकसाक्षिकम्। तपसातेमुनिश्रेष्ठ! परितुष्टःपितामहः ६५ अहन्तुतवपुत्रस्यतवचैवमहाव्रत!। भृत्यइत्यवगन्तव्यः साध्योयदिहकर्मणा ६६ तन्मांपश्यसमापन्नं तवैवाराधनेरतम्। यदिसीदेमुनिश्रेष्ठ! तवैवस्यात्पराजयः६७ (ऊर्व उवाच) धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मियस्यतेऽहंगुरुस्थितः। नास्तिमेतपसानेन भयमद्येहसुव्रत ६८ तामेवमायांगृह्णीष्व ममपुत्रेणनिर्मिताम्। निरिन्धनामग्निमयीन्दुर्धर्षांपावकैरपि ६९ एषातेस्वस्यवंशस्य वशगारिविनिग्रहे। संरक्षत्यात्मपक्षञ्चविपक्षञ्च प्रधर्षति ७० एवमस्त्वितितांगृह्य प्रणम्यमुनिपुङ्गवम्। जगामत्रिदिवंहृष्टः कृतार्थोदानवेश्वरः ७१ एषादुर्विषहामाया देवैरपिदुरासदा। और्वेणनिर्म्मितापूर्व्वं पावकेनौर्व्वसूनुना ७२ तस्मिंस्तुव्युत्थितेदैत्ये निर्वीर्यैपानसंशयः। शापोह्यस्याःपुरादत्तो सृष्टायेनैव तेजसा ७३ यद्येषाप्रतिहन्तव्या कर्त्तव्योभगवान्सुखी। दीयतांमेसखाशक्र! तोययोनिर्निशाकर ७४तेनाहंसहसङ्गम्य यादोभिश्चसमावृतः। मायामेतांहनिष्यामि त्वत्प्रसादान्नसंशयः ७५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेचतुःसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः॥ १७४॥

का नाशकरदेवेगा ६० । ६१ यहसुनकर उसऋषिने कहा ऐसेहीहो तब वह अग्नि अपने पितामें तेजको प्रक्षिप्तकरके समुद्रके जलमें प्रवेश करताभया ६२ इसके पीछे ब्रह्मा और अन्य सब ऋषि ऊर्वऋषिमें अग्निकी प्रभाको जानकर अपनी गतिको प्राप्तहोतेभये ६३ तब हिरण्यकशिपु दैत्य उस महाअद्भुत चमत्कारको देखकर बहुतसी प्रणामें करके यह वचन कहताभया ६४ कि हे ऋषे यह लोकसाक्षी अग्नि तुमको प्राप्तहोगयाहै और ब्रह्माभी तुम्हारे तपसे प्रसन्नहोगया यह बड़ाही आश्चर्य्य है ६५ हे महाव्रत मैंतो तेरे और तेरेपुत्रके किंकरकी समानहोके तुमदोनोंकी शरणमें आयाहूं आपके आराधनमें युक्तहुए मुझको आप सुदृष्टिसे देखिये हे मुनिश्रेष्ठ जो मैं दुःखपाऊंगा तो तुम्हारी पराजयहोगी ६६ । ६७ ऊर्वऋषिने कहा कि मैं धन्य और कृतार्थहूं इस हेतुसे कि मैं तेरागुरुहोगया हे सुव्रत अब मुझको इसतपके कारणसे भयनहींहै ६८ मेरे पुत्रसे निर्मितकीहुई उसीमायाको तू भी ग्रहणकरले इंधनके विना अग्नियोंमें भी शक्तिनहींहै ६९ यह माया तेरे वंशकी रक्षाकरेगी और शत्रुओंका नाशकरके अपने पक्षकी रक्षापूर्व्वक पराये पक्षसे नहीं सहीजायगी यह सुनकर वह हिरण्यकशिपु दैत्य उसमायाको ग्रहणकर कृतार्थहो स्वर्गमें जाताभया ७० । ७१ यह दुस्सहमाया देवताओंसे भी नहीं सहीगई ऐसे उस ऊर्वऋषिके पुत्रऔर्व अग्निने उस प्रबलमायाको रचाथा७२ जब वह दैत्य अपने बल और उसमायाके प्रभावसे प्रबलहोगया तब जिस ऋषिने उसमायाकी रचनाकरीथी उसीने उसको शापदेदियाहै इसी हेतुसे तुमको यह कथासुनाई है वरुणजी कहतेहैं कि हे इन्द्र जो तुम इसमायाका नाशकराया चाहतेहो तो मुझको चन्द्रमा सहायता के निमित्तदो मैं

(मत्स्य उवाच) एवमस्त्वितिसंहृष्टः शक्रस्त्रिदशवर्धनः। सन्दिदेशाग्रतःसोमं युद्धा
यशिशिरायुधम् १ गच्छसोम! सहायत्वं कुरुपाशधरस्यवै। असुराणांविनाशाय जया
र्थञ्चदिवौकसाम् २ त्वंमत्तःप्रतिवीर्यश्च ज्योतिषाञ्चेश्वरेश्वरः। त्वन्मयंसर्वलोकेषु रसं
सविदोविदुः ३ क्षयवृद्धीतवव्यक्ते सागरस्येवमण्डले। परिवर्तस्यहोरात्रं कालंजगति
योजयन् ४ लोकच्छायामयःलक्ष्म तवाङ्कःशशसन्निभः। नविदुःसोमदेवापि येचनक्षत्र
योनयः ५ त्वमादित्यपथादूर्ध्वं ज्योतिषांचोपरिस्थितः। तमःप्रोत्सार्यसहसा भासयस्य
खिलंजगत् ६ अधिकृत्कालयोगात्मा इष्टोयज्ञश्चसोऽव्ययः। ओषधीशःक्रियायोनिर
ब्जयोनिरनुष्णभाः ७ शीतांशुरमृताधारश्चपलःश्वेतवाहनः। त्वंकान्तिःकान्तिवपुषान्त्वं
सोमःसोमपायिनाम् ८ सौम्यस्त्वंसर्वभूतानां तिमिरघ्नस्त्वमृक्षराट्। तद्गच्छत्वंमहा
सेन! वरुणेनवरूथिना। शमयत्वासुरींमायां ययादह्यामसंयुगे ९ (सोम उवाच) य
न्मांवदसियुद्धार्थे देवराज! वरप्रद!। एवंवर्षामिशिशिरन्दैत्यमायापकर्षणम् १० ए
तान्मच्छीतनिर्दग्धान् पश्यस्वहिमवेष्टितान्। विमायान्विमदांश्चैव दैत्यसिंहान्महाह
वे ११ तेषांहिमकरोत्सृष्टाः सपाशाहिमवृष्टयः। वेष्टयन्तिस्मतान्घोरान् दैत्यान्मेघगणा
इव १२ तौपाशशीतांशुधरौ वरुणेन्दूमहाबलौ। जघ्नतुर्हिमपातैश्च पाशपातैश्चदान
वान् १३ द्वावम्बुनाथौसमरे तौपाशहिमयोधिनौ। मृधेचेरतुरम्भोभिः क्षुब्धाविवमहा

उस चन्द्रमा के साथ होकर जलों से युक्तहो इस मायाको निस्सन्देह नष्ट करदूंगा ७३। ७४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुस्सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७४॥

मत्स्यजी कहतेहैं कि इतकथाको श्रवणकर वरुणके वचनको स्वीकारकरके बड़ीप्रसन्नतासे युद्धके निमित्त चन्द्रमाको आज्ञा देताभया १ और यहवचनबोला कि हेचन्द्रमा तुम जाकर वरुणकी सहायताकरो जिससे कि दैत्योंका नाशहोकर देवताओंका उद्धारहोगा २ तुमश्रेष्ठहो ज्योतिर्गणों के ईश्वर हो सबलोकोंमें तुम्हाराहीरसहै इसको रसज्ञलोग वर्णन करतेहैं ३ तुम्हारे मंडलमें वृद्धिक्षय रहती है तुमही जगत्में कालको युक्त करतेहो लोकोंके छायारूप तुम्हारा पाशाङ्क चिह्न कहाताहै तुम्हारे अमृतको देवता और नक्षत्रादिक भी नहीं जानते हैं ४। ५ तुम सूर्य्य के मंडल से ऊपरस्थितहो और ज्योतिर्गणोंसे भी ऊपर स्थितहोकर तमोगुणरहित सब जगत्को प्रकाश करतेहो ६ कालयोग के आत्मा अविनाशी यज्ञस्वरूप ओषधीश क्रियाकीयोनि जलसे उत्पन्नहोने वाले, महाशीतल ७ अमृतके आधार, चपल, श्वेतवाहन, सब वस्तुओंको कान्ति देनेवाले सोमपायी पुरुषोंको अमृत ८ सब भूतोंमें सौम्य और अन्धकारके दूरकरनेवालेहो इसलिये आप वरुण देवताके साथीहोकर इसदैत्यकी माया को नष्टकरो ९ चन्द्रमाबोले हे देवराज दैत्योंकी नाश करनेवाली शीतलताकी मैं वर्षा करूंगा १० मेरे शीतके कारण मायासे रहित और मदोंसे हतहुए अब दैत्योंकोदेखो ११ फिर चन्द्रमाकी छोड़ी हुई फांसीरूप शीतलताके समूहसे वह सब दानव नष्टहोगये १२ इसके अनन्तर वरुण और चन्द्रमा दोनों शीतलताकी वर्षाकरके दैत्यों का नाशकरतेभये १३ यह दोनों जलाधिप शीतलताके द्वारा

र्णवौ १४ ताभ्यामाप्लावितंसैन्यं तद्दानवमदृश्यत । जगत्संवर्तकाम्भोदैः प्रविष्टैरिव संवृतम् १५ तावुद्यताम्बुनाथौतु शशाङ्कवरुणावुभौ। शमयामासतुर्म्मायां देवौदैत्ये न्द्रनिर्म्मिताम् १६ शीतांशुजालनिर्दग्धाः पाशैश्चस्पन्दितारणे । नशेकुश्चलितुंदै त्या विशिरस्काइवाद्रयः १७ शीतांशुनिहतास्तेतु दैत्यास्तोयहिमार्दिताःहिमाप्लावि तसर्वाङ्गा निरुष्माणाइवाग्नयः १८ तेषान्तुदिविदैत्यानां विपरीतप्रभाणिवै । विमाना निविचित्राणि प्रपतन्त्युत्पतन्तिच १९ तान्पाशहस्तग्रथितांश्छादिताञ्छीतरश्मि भिः । मयोददर्शमायावी दानवान्दिविदानवः २० सशिलाजालविततां खड्गचर्माट्ट हासिनीम्। पादपोत्कटकूटाग्रां कन्दराकीर्णकाननाम् २१ सिंहव्याघ्रगणाकीर्णां नदद्भि र्गजयूथपैः। ईहामृगगणाकीर्णां पवनाघूर्णितद्रुमाम् २२ निर्मितांस्वेनयत्नेन कूजितांदि विकामगाम् । प्रथितांपार्वतींमायामसृजत्ससमन्ततः २३ सासिशब्दैःशिलावर्षैः सम्प तद्भिश्चपादपैः। जघानदेवसङ्घांश्च दानवांश्चाप्यजीवयत् २४ नैशाकरीवारुणीच मा येऽन्तर्दधतुस्ततः। असिभिश्चायसगणैः किरन्देवगणान्रणे २५ साश्मयन्त्रायुधघना द्रुमपर्वतसङ्कटा। अभवत्घोरसञ्चार्या पृथिवीपर्वतैरिव २६ अश्मनाप्रहताःकेचित् शि लाभिःशकलीकृताः। नानिरुद्धोद्रुमगणैर्देवोऽदृश्यतकश्चन २७ तदपध्वस्तधनुषं भग्नप्र हरणाविलम्। निष्प्रयत्नंसुरानीकं वर्जयित्वागदाधरम् २८ सहियुद्धगतःश्रीमानीशानो

संग्राम करके युद्धभूमिमें ऐसे विचरतेभये जैसेकि क्रोधहुए समुद्र विचरते हैं १४ प्रलयकालके मेघोंकी समान वर्षाकरके सब दानवोंको युद्धमें व्यथितकर चन्द्रमा और वरुण अपने, २ उद्योगोंसे दैत्यसे रची हुई उसअग्निकी मायाको नष्टकरदेतेभये १५।१६ फिर चन्द्रमाके शीतजालोंसे और वरुणकी फॉसियोंसे व्याप्तहुए सब दैत्य कहीं चलनेकोभी समर्थ नहींहुए उससमय वह सब दैत्य ऐसे विदित होतेभये जैसेकि शिखर टूटेहुए पर्व्वत दिखाई देतेहैं १७ चन्द्रमाकी किरण,और शीतलजलसे दुः-खितहुए दैत्योंके अंग शिथिल होजातेभये १८ कान्तिसे रहित हुए दैत्योंके विचित्र२ विमान आकाशमें उछल२कर गिरतेभये १९ चन्द्रमाकी शीतलकिरणोंसे ग्रसितहुए दानवोंको मयदैत्यने देखा २० उसको देखकर मयदैत्य शिलापाषाणोंसे वढ़ीहुई तलवार ढालोंसे युक्तहुई विशेष हँसनेवाली कठोर अग्रभागवाली कन्दरा और गह्वर वनोंवाली सिंह वृकादिजीवोंसे आकीर्ण गर्जतेहुए हाथियोंसे युक्त मृगगणोंसे व्याप्त वायुसे आघूर्णित वृक्षोंवाली अपनेही यत्नसेरचीहुई आकाशमें इच्छापूर्व्वक विचर-नेवाली और महाविस्तृत पार्वतीनाम पर्व्वतकी मायाको रचताभया २१। २३ उसके रचतेही खड्ग और शिलाओंकी और वृक्षोंकी वर्षा होनेलगी उससमय देवताओंका तो नाशहुआ और दैत्य जीवतेभये २४ चन्द्रमा समेत वरुणकी सब मायाभी नष्टहोगई उत्तम लोहेके खड्गोंसे सब देवता मरनेलगे पाषाण यन्त्र वर्षे वृक्षवर्षे उन अस्त्रोंसे वह सब सेना ऐसे व्याप्त होजातीभयी जैसेकि घोर तंत्रोंके द्वारा वर्षाहोनेसे पृथ्वी व्याप्तहोजाती है २५।२६ उस समय कितनेही देवता पत्थरोंसे हतहुए कितनेही शिलाओंके लगनेसे खंड२ होगये कितनेही वृक्षों से आच्छादित हुए २७ कितनोंके धनुष

ऊममभ्यकम्पत। सहिष्णुत्वाज्जगत्स्वामी नचुक्रोधगदाधरः २९ कालज्ञःकालमेघाभः समीक्षन्कालमाहवे। देवासुरविमर्दन्तु द्रष्टुकामस्तदाहरिः ३० ततोभगवतादिष्टौ रणेपावकमारुतौ। चोदितौविष्णुवाक्येन तौमायामपकर्षताम् ३१ ताभ्यामुद्भ्रान्तवेगाभ्यांप्रवृद्धाभ्यांमहाहवे। दग्धासापार्वतीमाया भस्मीभूताननाशह ३२ सोऽनिलोनलसंयुक्तः सोऽनलश्चानिलाकुलः। दैत्यसेनान्ददहतुर्युगान्तेष्विवमूर्च्छितौ ३३ वायुःप्रधावितस्तत्रपश्चादग्निस्तुमारुतम्। चेरतुर्दानवानीके क्रीडन्तावनिलानलौ ३४ भस्मावयवभूतेषु प्रपतत्सूत्पतत्सुच। दानवानांविमानेषु निपतत्सुसमन्ततः ३५ वातस्कन्धापविद्धेषु कृतकर्म्मणिपावके। मयावधेनिवृत्तेतु स्तूयमानेगदाधरे ३६ निष्प्रयत्नेषुदैत्येषु त्रैलोक्येमुक्तबन्धने। संप्रहृष्टेषुदेवेषु साधुसाध्विति सर्वशः ३७ जयेदशशताक्षस्य दैत्यानांचपराजये। दिक्षुसर्वासुशुद्धासु प्रवृत्तेधर्म्मविस्तरे ३८ अपावृत्तेचन्द्रमसि स्वस्थानस्थेदिवाकरे। प्रकृतिस्थेषुलोकेषु त्रिषुचारित्रबन्धुषु ३९ यजमानेषुभूतेषु प्रशान्तेषुचपाप्मसु। अभिन्नबन्धनेमृत्यौ हूयमानेहुताशने ४० यज्ञशोभिषुदेवेषु स्वर्गार्थंदर्शयत्सुच। लोकपालेषुसर्वेषु दिक्षुसंयानवर्तिषु ४१ भावेतपसिसिद्धाना मभावेपापकर्म्मणाम्। देवपक्षेप्रमुदिते दैत्यपक्षेविषीदति ४२ त्रिपादविग्रहेधर्मे अधर्मेपादविग्रहे। अपावृत्तेमहा

टूटे कोई कुछ यत्न न करसके तात्पर्य्य यह है कि विष्णुभगवान् के सिवाय देवताओंकी सेनामें कोई भी समर्थ न हुआ २८ युद्धमें प्राप्तहुआ वह समर्थ दैत्य विष्णुभगवान्के ऊपर शिलाओंको कंपाताभया उसके कंपानेसे जगत्के स्वामी विष्णुभगवान् कुछ क्रोध नहीं करतेभये २९ कालमेघके समान विष्णुभगवान् कालकी अपेक्षा करतेहुए देवता और दैत्योंके युद्धको देखतेरहे ३० इसके पीछे विष्णुजीने अग्नि और वायु इन दोनोंको देखा और इन्द्रके कहने से इन दोनोंसे यह वचन बोले कि इस मायाका नाशकरो ३१ तब बढ़ेहुए वेगवाले उन दोनोंने वह पर्व्वत सम्बन्धी मायानष्ट करदी ३२ और अग्निसे मिलाहुआ वह वायु दैत्योंकी सेनाको ऐसे दग्ध करता भया जैसे कि प्रलयकाल में सबको नष्ट करदेताहै ३३ वायुतो शीघ्रतासे चला और उसके पीछे२ अग्नि चलताभया इस रीतिसे यह दोनों देवता उन दैत्योंकी सेनामें क्रीड़ा करतेभये ३४ क्रीड़ाही से सब भूतों समेत चारों ओरको गिरतेहुए दैत्योंके विमानोंको भस्मकर देतेभये ३५ वायुसेयुक्त हुए अग्निदेवताने दैत्योंके कन्धेजला दिये और मयदैत्य किसीकोभी न मारसका उससमय गदाधर भगवान् की सब ओरसे स्तुति होतीभयी ३६ देवता लोग तो जय२शब्द करनेलगे और दैत्योंके सब यत्न बंधगये त्रिलोकीका बन्धन छुटगया देवता प्रसन्न होगये साधु २ शब्द होनेलगा इन्द्रकी विजयहुई दैत्योंकी पराजयहुई सब दिशा शुद्ध होगईं धर्मकी प्रवृत्तिहुई चन्द्रमा और सूर्य्य अपने २ स्थानमें प्राप्तहुए और तीनोंलोक अपनी प्रकृतिमें स्थित हुए ३७।३८ सब लोग यज्ञकरने लगे पाप शान्त हुए मृत्युबँधगई अग्निमें हवनहोने लगगया देवता लोग स्वर्गमें प्राप्तहोकर यज्ञोंकीशोभा देखनेलगे और सबलोकपाल अपनी२दिशाओं में प्राप्तहोगये ३९। ४१ तपमें सिद्ध होनेवाले पुरुषोंकी वृद्धि होतीभयी पापकर्मी लोगों का अभाव

द्वारे वर्त्तमानेचसत्पथे ४३ लोकेप्रवृत्तेधर्मेषु सुधर्मेष्वाश्रमेषुच। प्रजारक्षणयुक्तेषु भ्राजमानेषुराजसु ४४ प्रशान्तकल्मषेलोके शान्तेतमसिदानवे। अग्निमारुतयोस्तत्र वृत्ते संग्रामकर्म्मणि ४५ तन्मयाविपुलालोकास्ताभ्यांतज्जयकृत्क्रिया। पूर्वदेवभयंश्रुत्वा मारुताग्निकृतंमहत् ४६ कालनेमीतिविख्यातो दानवःप्रत्यदृश्यत। भास्कराकारमुकुटः शिञ्जिताभरणाङ्गदः ४७ बाहुभिस्तुलयन्व्योम क्षिपन्पद्भ्यांमहीधरान्। ईरयन्मुखनिश्वासैर्वृष्टियुक्तान्वलाहकान् ४८ तिर्यगायतरक्ताक्षं मन्दरोदग्रवर्चसम्। दिधक्षन्तमिवायान्तं सर्वान्देवगणान्मृधे ४९ तर्जयन्तंसुरगणांश्छादयन्तंदिशोदश। संवर्तकालेतृषितं दृष्टंमृत्युमिवोत्थितम् ५० सुतलेनोच्छ्रयवता विपुलांगुलिपर्वणा। लम्बाभरणपूर्णेन किञ्चिच्चलितकर्म्मणा ५१ उच्छ्रितेनाग्रहस्तेन दक्षिणेनवपुष्मता। दानवान्देवनिहतानुत्तिष्ठध्वमितिब्रुवन् ५२ तंकालनेमिंसमरे द्विषतांकालचेष्टितम्। वीक्षन्तेस्मसुराःसर्वे भयवित्रस्तलोचनाः ५३ तंवीक्षन्तिस्मभूतानि क्रमन्तंकालनेमिनम्। त्रिविक्रमाधिकमतं नारायणमिवापरम् ५४ सोऽत्युच्छ्रयपुरःपादमारुताघूर्णिताम्बरः। प्रक्रामन्नसुरोयुद्धे त्रासयामासदेवताः ५५ समयेनासुरेन्द्रेण परिष्वक्तस्ततोरणे। कालनेमिर्बभौदैत्यः सविष्णुरिव मन्दरः ५६ अथविव्यथिरेदेवाः सर्वेशक्रपुरोगमाः। कालनेमिंसमायान्तं दृष्ट्वाकालमिवापरम् ५७ इति श्रीमत्स्यपुराणेपञ्चसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७५॥

हुआ देवताओं का पक्ष प्रसन्न हुआ दैत्योंका पक्ष दुःखित हुआ धर्मके तीन पाद होगये अधर्मका एकही पाद रहगया श्रेष्ठ मार्ग प्रवृत्त होगया सब लोग धर्ममें प्रवृत्त होगये सब आश्रमी अपने २ धर्मको करने लगे और सब राजालोग प्रजाकी रक्षा करनेमें तत्पर होतेभये ४२। ४४ लोकका पापशान्तहोगया और अग्नियुक्त वायुके कर्मसे दानवोंका तमोगुणदूर होगया४५सब जगत् में अग्निहीकी कान्ति प्रकाशित होगई इस प्रकारके इस अग्नि और वायुके भयको सुनकर कालनेमि नाम दैत्य उस युद्धमें आया सूर्य्यके समान आकार मुकुटादि भूषणोंसे युक्त बाजाबजाता हुआ दैत्य अपनीभुजाओं से आकाशकोतोलता पैरोंसे पर्व्वतोंको फेंकता वर्षासेयुक्त बादलोंको अपने मुखकी श्वासाओं से उड़ाताहुआ नेत्रोंको तिरछाकर सब देवताओंको भस्म और ताड़ित करताहुआ दशों दिशाओं को आच्छादितकर प्रलयकालकी मृत्युके समान आकारवाला वह कालनेमि दैत्य स्थूल उंगलियोंवाले अपने हाथको लंबा पसारके दैत्योंसे यहवचनबोला कि अबतुमसबउठो ४६। ५२ उस कालनेमि दैत्यको देखकर सब देवता महाभयसे विह्वलनेत्रोंवाले होगये ५३ और पराक्रम करतेहुए उस कालनेमि दैत्यको देखकर सब भूतमात्र उसे नारायणही के समान मानतेभये और वह कालनेमि दैत्यसब देवताओंको त्रासदेताहुआ रणमें ऐसाशोभायमानहुआ जैसेकि विष्णुसमेत मन्दराचल पर्व्वत शोभितहोताहै इसके अनन्तरकालके समान आतेहुए उसकालनेमि दैत्यकोदेखकर इन्द्रादिक देवता व्यथाको प्राप्तहोते भये ५४। ५७

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७५॥

(मत्स्य उवाच) दानवानामनीकेषु कालनेमिर्महासुरः। विवर्द्धितमहातेजास्तपान्ते जलदोयथा १ तंत्रैलोक्यान्तरगतं दृष्ट्वातेदानवेश्वराः। उत्तस्थुरपरिश्रान्ताः पीत्वामृतम नुत्तमम् २ तेवीतभयसन्त्रासामयतारपुरोगमाः। तारकामयसंग्रामेसततंजितकाशिन. ३ रेजुरायोधनगता दानवायुद्धकांक्षिणः। मन्त्रमभ्यसतान्तेषां व्यूहश्चपरिधावताम् ४ प्रे क्षताञ्चाभवत्प्रीतिर्दानवंकालनेमिनम्। येतुतत्रमयस्यासन् मुख्यायुद्धपुरःसराः ५ तेतुस र्वे भयन्त्यक्त्वाहृष्टायोद्धुमुपस्थिताः। मयस्तारोवराहश्च हयग्रीवश्चवीर्यवान् ६ विप्रचि त्तिसुतःश्वेतः खरलम्बावुभावपि। अरिष्टोवलिपुत्रश्च किशोराख्यस्तथैवच ७ स्वर्भानु श्चामरप्रख्यो वक्त्रयोधीमहासुरः। एतेऽस्त्रवेदिनःसर्वे सर्वेतपसिसुस्थिताः ८ दानवा कृतिनोजग्मुः कालनेमिंतमुद्धतम्। तेगदाभिर्भुशुण्डीभिश्चक्रैरथपरश्वधैः ९ कालक ल्पैश्चमुसलैः क्षेपणीयैश्चमुद्गरैः। अश्मभिश्चाद्रिसदृशैर्गण्डशैलैश्चदारुणैः १० पट्टिशै र्भिन्दिपालैश्च परिघैश्चोत्तमायसैः। घातनीभिःसुगुर्वीभिः शतघ्नीभिस्तथैवच ११ युगैर्यन्त्रैश्चनिर्मुक्तैर्मार्गणैरुग्रताडितैः। दोर्भिश्चायतदीप्तैश्च प्रासैःपाशैश्चमूर्च्छनैः १२ भुजङ्गवक्त्रैर्लेलिहानैर्विसर्पद्भिश्चसायकैः। वज्रैःप्रहरणीयैश्च दीप्यमानैश्चतोमरैः १३ विकोशैरसिभिस्तीक्ष्णैः शूलैश्चशितनिर्मलैः। दैत्याःसन्दीप्तमनसः प्रगृहीतशरासनाः १४ ततःपुरस्कृत्यतदा कालनेमिंमहाहवे। सादीप्तशस्त्रप्रवरा दैत्यानांरुरुचेचमूः १५ द्यौर्निमीलितसर्वाङ्गा घनानीलाम्बुदागमे। देवतानामपिचमूर्मुमुदेशक्रपालिता १६ उपे

मत्स्यजीबोले कि उनदानवोंकी सेनामें वह कालनेमि दैत्य अपने उत्तम तेजको ऐसेबढ़ाताभया जैसे कि तपने के अन्तमें बड़ीवर्षाहोती है १ उस त्रिलोकीके अन्तर्गतहुए दानवको देखकर सब अन्यदानवलोग उत्तमअमृतको पीकरखड़े होजातेभये २ तब मयसमेत तारकासुर आदिबड़े२ सब दैत्य भयोंको त्यागकर तारकासुर दैत्यके युद्धमें सदैवजीतने की इच्छा करतेभये और सलाह कर. के युद्धकी इच्छाकरतेहुए सब दैत्य वहाँ आकर इकट्ठहुए औरजो२ मुख्य२ दानव मयदैत्यके आगे थे वहसबभी भयकोत्याग२ करयुद्धमें आये, मय, तारकासुर, वराह, हयग्रीव, विप्रचित्तिका पुत्र श्वेत, खर लम्ब, अरिष्ट, किशोर, स्वर्भानु, चामर और वक्त्रयोधी यह सब अस्त्र शस्त्र विद्याके जाननेवाले तपमें स्थितहोगयेथे वह सबगदा, भुशुंडी शस्त्र, चक्र, फरशे, बड़े२ मूसल, मुद्गर, दारुण पर्व्वतोंकी शिला, गो- फियायंत्र, बरछी, भाले और फांसी इनसबको ग्रहणकरके कालनेमि दैत्यकी सहायताके निमित्त युद्धमें प्राप्तहोतेभये ३।१२ और सर्पाकार मुखवाले बाण वज्र तीक्ष्ण खड्ग और शूल इनसबसमेत धनुषोंको ग्रहण किये आये इसके पीछे उस महायुद्धमें कालनेमिको आगे करके उत्तमशस्त्रधारी दैत्योंकी सब सेना अतिशोभितहोतीभई १३।१५ और इन्द्रसे पालितहुई आकाशमें मेघोंके समान फैली हुई अति आनन्द को प्राप्तहो सूर्य्य चन्द्र तारागणोंकी ध्वजावाली वायुकेसमान वेगयुक्त ग्रहनक्षत्रों के हास्य वाली धर्मराज इन्द्र वरुण और कुबेर इन सबसे रक्षित की हुई दीप्त अग्नि के समान नेत्रोंवाली नारायण प्रधानवाली समुद्र के समूह के समान वह देवताओं की महासेना अत्यन्त

तासितकृष्णाभ्यां ताराभ्यांचन्द्रसूर्ययोः। वायुवेगवतीसौम्या तारागणपताकिनी १७ तो
यदाविद्धवसना ग्रहनक्षत्रहासिनी। यमेन्द्रवरुणैर्गुप्ता धनदेनचधीमता १८ सम्प्रदीप्ता
ग्निनयना नारायणपरायणा। सासमुद्रौघसदृशी दिव्यादेवमहाचमूः १९ रराजास्त्रवती
भीमा यक्षगन्धर्वशालिनी। तयोश्चम्वोस्तदानीन्तु बभूवससमागमः २० द्यावापृथिव्योः
संयोगो यथास्याद्युगपर्य्यये। तद्युद्धमभवद्घोरं देवदानवसंकुलम् २१ क्षमापराक्रमपरं
दर्पस्यविनयस्यच। निश्चक्रमुर्बलाभ्यान्तु भीमास्तत्रसुरासुराः २२ पूर्वापराभ्यांसंरब्धाः
सागराभ्यामिवाम्बुदा॥ताभ्यांबलाभ्यांसंहृष्टाश्चेरुस्तेदेवदानवाः २३ वनाभ्यांपार्वतीया
भ्यां पुष्पिताभ्यांयथागजाः॥समाजघ्नुस्ततोभेरीः शङ्खान्दध्मुरनेकशः२४ सशब्दोद्यांभुवं
खञ्च दिशश्चसमपूरयत्। ज्याघाततलनिर्घोषो धनुषांकूजितानिच २५ दुन्दुभीनाञ्चनिनदो
दैत्यमन्तर्दधुःस्वनम्। तेऽन्योन्यमभिसम्पेतुः पातयन्तःपरस्परम् २६ बभंजुर्बाहुभिर्बाहून्
द्वन्द्वमन्येयुयुत्सवः। देवास्तुचाशनिंघोरंपरिघांश्चोत्तमायसान् २७ निस्त्रिंशान्ससृजुःसं
ख्येगदागुर्वीश्चदानवाःगदानिपातैर्भग्नाङ्गा बाणैश्चशकलीकृताः२८परिपेतुर्भृशंकेचित्
पुनःकेचित्तुजघ्निरे। ततोरथैःसतुरगैर्विमानैश्चाशुगामिभिः २९ समीयुस्तुसुसंरब्धारोषाद
न्योन्यमाहवे॥ संवर्तमानाःसमरे सन्दष्टौष्ठपुटाननाः ३० रथारथैर्निरुध्यन्ते पादाताश्चप
दातिभिः। तेषांरथानान्तुमुलः सशब्दःशब्दवाहिनाम् ३१ नभोनभश्चह्यिथा नभस्यैर्जल

प्रकाशित होकर यक्षगन्धर्वों से युक्त शस्त्रों करके महाभयंकर दीखती भयी उस समयदोनों से-
नाओं का समागम होताभया और देवताओं से दानवों का ऐसायुद्ध होताभया जैसे कि प्रल-
यकाल में पृथ्वी और आकाश के मिलने से होता है १६। २१ वहां महाभयंकर देवता और दैत्य
दोनों अपने २ बल पराक्रम और अभिमानको दिखातेभये २२ जैसे कि पूर्व पश्चिम के स-
मुद्र परस्परमें मिलकर महाघोर शब्दोंको करते हैं उसी प्रकार यह दोनों दैत्य दानवोंकी भी सेना
परस्पर मिलकर युद्धकरतीभईं जैसे कि पर्व्वतके फूलेहुए वृक्षोंको हाथी तोड़डालतेहैं इसीप्रकार
दोनों ओरके योद्धाभी परस्पर युद्धकरके एक २ को तोड़डालतेभये और अनेकप्रकारके शंखों को
भी बजावतेभये २३। २४ वह उनके शंखादिका शब्द स्वर्ग आकाश पृथ्वी और दशोंदिशा इन
सबको पूर्ण करदेताभया और धनुषोंकी टंकारके शब्द इनसब पृथ्वी आकाशादिकोंको पूरित कर
देतेभये २५ दुन्दुभी शब्द और दैत्योंके शब्दपूर्वक दोनों ओरके बीर परस्परमें गेरगेरकर शरीरोंको
तोड़तेभये कितनेही भुजाओंसेही कुश्ती लड़तेभये देवतालोग वज्रोंसे और लोहेके मूसलोंसे और
युद्ध करतेभये २६। २७ और दैत्यलोग खड्ग और भारी२ गदाओंसे मारतेभये गदाके लगनेसे टूटे
अंगवाले और बाणोंसे कटे अंगवालेभी बहुतसे योद्धा गिरतेभये कितनेही परस्पर मारतेभये और
फिर क्रोध करके रथ घोड़े और बिमान इनपर चढ़कर युद्ध करतेभये और बड़े क्रोधसे ओष्ठोंकोभी
चाबतेभये २८। ३० रथी रथीसे और पैदल पैदलसे जबयुद्ध होनेलगा तब उनरथोंका बड़ाभारी
शब्दहोताभया ३१ जैसेकि आकाशमें परस्पर मेघ लड़तेहैं उसीप्रकार एकरथीदूसरे रथीके रथको

दस्त्वनेः।बभञ्जुस्तुरथान्केचित् केचित्सम्पाटितारथैः३२सम्बाधमन्येसम्प्राप्य नशेकुश्च लितुंरथान्।अन्योन्यमन्येसमरे दोर्भ्यामुत्क्षिप्यदंशिताः३३संह्लादमानाभरणाजघ्नुस्तत्रा पिचर्मिणः। अस्त्रैरन्येविनिर्भिन्ना वेमूरक्तंहतायुधि ३४ क्षरज्जलानांसदृशा जलदानां समागमे। तैरस्त्रशस्त्रग्रथितं क्षिप्तोत्क्षिप्तगदाविलम् ३५ देवदानवसंक्षुब्धं संकुलंयुद्ध मात्रभो। तद्दानवमहामेघं देवायुधविराजितम् ३६ अन्योन्यबाणवर्षेण युद्धदुर्दिनमात्र भो। एतस्मिन्नन्तरेक्रुद्धः कालनेमीसदानवः ३७ व्यवर्धतसमुद्रौघैः पूर्यमाणइवाम्बुदः। तस्यविद्युच्चलापीडैः प्रदीप्ताशनिवर्षिणः ३८ गात्रेर्नोगगिरिप्रख्या विनिपेतुर्बलाहकाः। क्रोधान्निश्वसतस्तस्य भ्रूभेदस्वेदवर्षिणः ३९ साग्निस्फुलिङ्गप्रतताःमुखान्निष्पेतुरर्चिषः। तिर्यगूर्ध्वञ्चगगने ववृधुस्तस्यबाहवः ४० पर्वतादिवनिष्क्रान्ताः पञ्चास्याइवपन्नगाः। सोऽस्त्रजालैर्बहुविधैर्धनुर्भिःपरिघैरपि ४१ दिव्यमाकाशमावव्रे पर्वतैरुच्छ्रितैरिव। सोऽ निलोद्धूतवसनस्तस्थौसंग्रामलालसः ४२ सन्ध्यातपग्रस्तशिलः साक्षान्मेरुरिवाचलः। ऊरुवेगप्रमथितैः शैलशृङ्गाग्रपादपैः ४३ अपातयद्देवगणान्वज्रेणेवमहागिरीन्। बहुभिः शस्त्रनिस्त्रिंशैश्छिन्नभिन्नशिरोरुहाः ४४ नशेकुश्चलितुंदेवाः कालनेमिहतायुधि। मुष्टि भिर्निहताःकेचित् केचित्तुविदलीकृताः४५ यक्षगन्धर्वपतयः पेतुःसहमहोरगैः। तेनवित्रा सितादेवाः समरेकालनेमिना ४६ नशेकुर्यत्नवन्तोपि यत्नंकर्तुंविचेतसः। तेनशक्रःसहस्रा

तोढ़तेभये ३२ अनेक योद्धा पीड़ितहोकर रथोंके चलानेको समर्थ न हुए कितनेही परस्पर भुजाओं से पकड़ेहुए शत्रुओंको पटकतेभये ३३ कोई ढाल ग्रहण कियेहुएही शत्रुओंको मारतेभये युद्धमें हतहुए कटे अंगवाले योद्धा जलवर्षनेवाले बादलोंके समान रुधिर वमन करतेभये ऐसे १ अनेक प्रकारोंसे शस्त्रोंकी वर्षा करनेवाले देवता और दैत्योंका महान् युद्ध प्रकाशित हुआ ३४। ३६ उसयुद्ध में परस्पर बाणोंकी वर्षा करनेसे घटासी छागई इसके अनन्तर कालनेमि दैत्य क्रोधकरके उछलते समुद्रके समान भावताभया उस बज्रोंकी वर्षा करनेवाले कालनेमि दैत्यके शरीरसे क्रोधरूप वायु के श्वाससे चलतेहुए पसीनेके जलको वर्षा करतेहुए मेघ निकलतेभये ३७। ३९ और उसके मुखसे अग्निके कणोंको वर्षा करतीहुई अग्निकी झलेंभी निकलतीभई और उसकी तिरछी और आकाश की ओर उन्नतकीहुई भुजावृद्धिको प्राप्तहोती हुई ऐसी विदितहुई मानों पांचमुखवाले सर्पही पर्व्वतमेंसे निकलतेहों और अनेक प्रकारके अस्त्र धनुष और मूसल यहसब हाथोंमें ऐसे शोभित हुए मानो आकाशमें पर्व्वतोंके शिखर शोभायमान होरहे हैं ऐसा वहकालनेमिनाम दैत्य युद्धकरने की अत्यन्त इच्छा करताभया ४०। ४२ जैसेकि सायंकालके समय घामसे ग्रस्तहुई शिलाओंवाला साक्षात् सुमेरु पर्व्वत खड़ाहो उसीप्रकार यहभी खड़ाहुआ बहुतसे देवताओंको वज्रोंकरके गिरावताभया फिर अनेकशस्त्र और खड्गोंसे खंडितहुए देवता चलनेकोभी समर्थ नहींहुए कितनेही देवताओंको मुक्कोंसे बहुतोंको शरीरसे दाबकर मारडाला देवता यक्ष गन्धर्व और महोरग यहसबभी कालनेमि दैत्यसेहतहोकर चेष्टारहित होगये कुछ न करसके इसके पीछे इसने हजार नेत्रवाले इन्द्रको

क्षः स्पन्दितः शरबन्धनैः४७ ऐरावतगतःसंख्ये चलितुंनशशाकह। निर्जलाम्भोदसदृशो निर्जलार्णवसप्रभः ४८ निर्व्यापारःकृतस्तेन विपाशोवरुणोमृधे।रणोवैश्रवणस्तेनपरिघैः कामरूपिणा ४९ वित्तदोऽपिकृतःसंख्ये निर्जितःकालनेमिना। यमःसर्वहरस्तेन मृत्युप्रहरणेरणे ५० याम्यामवस्थांसन्त्यज्य भीतःस्वान्दिशमाविशत्। सलोकपालानुत्सार्य कृत्वातेषांचकर्म्मतत् ५१ दिक्षुसर्वासुदेहंस्वं चतुर्थाविदधेतदा। सनक्षत्रपथङ्गत्वा दिव्यंस्वर्भानुदर्शनम् ५२ जहारलक्ष्मींसोमस्य तंचास्यविषयंमहत्। चालयामासदीप्तांशुं स्वर्गद्वारात्सभास्करम् ५३ सायनञ्चास्यविषयं जहारदिनकर्म्मच। सोऽग्निंदेवमुखंदृष्ट्वा चकारात्ममुखाश्रयम् ५४ वायुञ्चतरसाजित्वा चकारात्मवशानुगम्। ससमुद्रान्समानीय सर्वाश्चसरितोबलात् ५५ चकारात्ममुखेवीर्य्याद्देहभूताश्चसिन्धवः। अपःस्ववशगाःकृत्वा दिविजायाश्चभूमिजाः ५६ सस्वयम्भुरिवाभाति महाभूतपतिर्यथा। सर्वलोकमयोदैत्य सर्वभूतभयावहः ५७ सलोकपालैकवपुश्चन्द्रादित्यग्रहात्मवान्। स्थापयामासजगतीं सुगुप्तांधरणीधरैः ५८ पावकानिलसम्पातो रराजयुधिदानवः। पारमेष्ठ्येस्थितःस्थाने लोकानांप्रभवोपमे। तंतुष्टुवुर्दैत्यगणा देवाइवपितामहम् ५९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपट्सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७६॥

भी बाणोंके पिंजरमें बाँधलिया ४३। ४७ उस समय ऐरावतहाथी परचढ़ाहुआ इन्द्र युद्धमें चलनेकोभी समर्थ नहींरहा और जलरहित मेघ और समुद्रोंके समान आकारवाला दीखताभया ४८ इसके पीछे कालनेमिने वरुणकी फाँसी गिरवादी और सबको चेष्टारहित कर कुवेरको मूसलोंसेहत धर्मराजकोभी पराजयकरदिया फिर धर्मराज पराजितहोकर धर्मराजपनेकी व्यवस्थाकोत्याग भयभीतहोकर अपनीदिशामें भागगया इसप्रकार इस दैत्यने सब लोकपालोंको पराजयकर सब दिशाओंमें अपनेही शरीरको चारविभागकरके स्थापित करदिया फिर नक्षत्रोंके मार्गमें प्राप्तहोकर दिव्यराहुका दर्शनकरताभया ४९। ५२ फिर चन्द्रमाकी कान्तिको दूरकर दीप्तकिरणोंवाले सूर्य्यकोभी स्वर्गके द्वारसे बाहर करदेताभया और सूर्य्यके सायन विषय समेत दिनकर्मकोभी हरलेताभया फिर अग्निको देवताओंका मुखजानकर अपने मुखके आश्रय करताभया ५३। ५४ अपने बलसे वायुकोभी जीतके अपनेही आश्रय करताभया इसके पीछे समुद्रों समेत नदियोंको अपनेपराक्रमसे लाकर बलकेद्वारा समुद्रों समेत स्वर्गकी और पृथ्वीकी सबनदियोंको अपने मुखहीमें बसाताभया इसरीतिसे वहदैत्य महाभूतोंकेपति ब्रह्माजीके समान प्रकाशितहोकर सबभूतोंका भयकारी होजाताभया ५५। ५७ और चन्द्रमा सूर्य्य और लोकपाल इनसबके स्थानमें अपनारूप बनाकर पर्व्वतों से गुप्त हुई पृथ्वीको स्थापित करताभया ५८ फिर परम आकाशमें ब्रह्माजीके स्थानमें स्थितहुआ वह दैत्य युद्धमें अग्नि और वायुका उत्पात करके आपही राज्य करताभया तब सब दैत्य उसकी ऐसे स्तुति करतेभये जैसेकि ब्रह्माजीकी स्तुति देवतालोग करते हैं ५९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायां षट्सप्तत्यधिकशततमोऽध्याय १७६॥

(मत्स्य उवाच) पञ्चतत्त्वाभ्यवर्त्तन्त विपरीतेनकर्म्मणा। वेदोधर्म्मःक्षमासत्यं श्री
श्चनारायणाश्रया १ सतेषामनुपस्थानात्सक्रोधोदानवेश्वरः। वैष्णवंपदमन्विच्छन्ययौ
नारायणान्तिकम् २ सददर्शसुपर्णस्थं शङ्खचक्रगदाधरम्। दानवानांविनाशाय भ्रामय
न्तंगदांशुभाम् ३ सजलाम्भोदसदृशं विद्युत्सदृशवाससम्। स्वारूढंस्वर्णपक्षाढ्यं शि
खिनंकाश्यपंखगम् ४ दृष्ट्वादैत्यविनाशाय रणेस्वस्थमवस्थितम्। दानवोविष्णुमक्षोभ्यं
बभाषेलुब्धमानसः ५ अयंसरिपुरस्माकं पूर्वेषांप्राणनाशनः। अर्णवावासिनश्चैव मधो
र्वैकैटभस्यच ६ अयंसविग्रहोऽस्माकमशाम्यःकिलकथ्यते। अनेनसंयुगेष्वद्य दानवा
बहवोहताः ७ अयंसनिर्घृणोलोके स्त्रीबालनिरपत्रपः। येनदानवनारीणां सीमन्तोद्धरणं
कृतम् ८ अयंसविष्णुर्देवानां वैकुण्ठश्चदिवौकसाम्। अनन्तोभोगिनामप्सु स्वपन्नाद्यः
स्वयम्भुवः ९ अयंसनाथोदेवानामस्माकंव्यथितात्मनाम्। अस्यक्रोधंसमासाद्य हिर
ण्यकशिपुर्हतः १० अस्यच्छायामुपाश्रित्य देवामखमुखेश्रिताः। आज्यंमहर्षिभिर्दत्तम
श्नुवन्तित्रिधाहुतम् ११ अयंसनिधनेहेतुः सर्वेषाममरद्विषाम्। यस्यचक्रेप्रविष्टानि कु
लान्यस्माकमाहवे १२ अयंसकिलयुद्धेषु सुरार्थेत्यक्तजीवितः। सवितुस्तेजसातुल्यं च
क्रंक्षिपतिशत्रुषु १३ अयंसकालोदैत्यानां कालभूतःसमास्थितः। अतिक्रान्तस्यकालस्य
फलंप्राप्स्यतिकेशवः १४ दिष्ट्येदानींसमक्षंमे विष्णुरेषसमागतः। अद्यमद्बाहुनिष्पिष्टो
मामेवप्रणमिष्यति १५ यास्याम्यपचितिंदिष्ट्या पूर्वेषामद्यसंयुगे। इमंनारायणंहत्वा दान

मत्स्यजीबोले कि विपरीतकर्म करनेसे उसकालनेमि दैत्यकेपास वेद, धर्म, क्षमा, सत्य, और नारा-
यणके आश्रय होनेवाली लक्ष्मी यहपांचों वस्तुनहीं प्राप्तहोतीभई १ तबइन पांचों वस्तुओंकी प्राप्ति
केनिमित्त वह दैत्य वैष्णवपदकी इच्छाकरके नारायणके आश्रयमें प्राप्तहोताभया २ फिर गरुड़पर
चढ़े शंखचक्र गदा औरपद्मकोधारणकिये दैत्योंके नाशकेलिये गदाको भ्रमाते मेघवर्ण विद्युत्के समा-
न वस्त्रपहरे विष्णु भगवान्को और गरुड़को देखताभया फिर दैत्योंके विनाशके निमित्त रणमें प्राप्त
हुये विष्णुको देखकर वह दैत्य क्रोधकरके बोला ३। ५ कि यह हमारा शत्रुहै हमारे बड़ों का नाश
करनेवालाहै इसीने समुद्रमें बसनेवाले मधुकैटभनाम दैत्योंका नाशकिया है ६ इसके साथ अब ह-
मारा बड़ाभारी युद्धहोगा इसने युद्धमें अनेक दानवोंकोमारा है ७ यहलोकमें महानिर्दयी है इसने
स्त्री और बालकोंपर भी लज्जा और दयानहीं कीहै इसने दैत्योंकी स्त्रियोंके बालउखाड़ेहैं यहविष्णु
है देवताओंका बैकुण्ठहै यह शेषनागपर शयन करनेवाला है आद्यहै यही देवताओंका और हमारा
नाथहै इसीके क्रोधसे हिरण्यकशिपु मारागया ८। १० इसकी छाया के आश्रय होकर देवतायज्ञके
मुखमें स्थित हैं सबदेवता इसीके प्रभावसे महर्षियोंके दियेहुए हव्ययुक्त घृतको ग्रहण करते हैं ११
यहसब दैत्योंका नाशकर्त्ता है इसकेही चक्रसे हमारे कुलोंका नाशहोताहै यह देवताओंके निमित्त अ-
पने जीवनकी आशा त्यागकर सूर्य्यके समान तेजवाले चक्रको शत्रुओं में फेंकताहै १२। १३ यह
दैत्योंका कालकेशव भगवान्है यही विष्णु भगवान् हमारा प्रारब्धहै अबयह विष्णु मेरी बाहुओं के

वानांभयावहम् १६ क्षिप्रमेवहनिष्यामि रणेऽमरगणांस्ततः। जात्यन्तरगतोह्येष बाधते
दानवान्मृधे १७ एषोऽनन्तःपुराभूत्वा पद्मनाभइतिश्रुतः। जघानैकार्णवेघोरे तावुभौम
धुकैटभौ १८ द्विधाभूतंवपुःकृत्वा सिंहस्यार्द्धनरस्यच। पितरंमेजघानैको हिरण्यकशिपुं
पुरा १९ शुभंगर्भमधत्तैनमदितिर्देवतारणिः। त्रींल्लोकानुज्जहारैको क्रममाणस्त्रिभिः
क्रमैः २० भूयस्त्विदानींसंग्रामे संप्राप्तेतारकामये। मयासहसमागम्य सदेवोविनशि
ष्यति २१ एवमुक्त्वाबहुविधं क्षिपन्नारायणंरणे। वाग्भिरप्रतिरूपाभिर्युद्धमेवाभ्यरोचय
त् २२ क्षिप्यमाणोसुरेन्द्रेण नचुकोपगदाधरः।क्षमाबलेनमहतासस्मितंचेदमब्रवीत्२३
अल्पंदर्पबलंदैत्य! स्थिरमक्रोधजंबलम्। हतस्त्वंदर्पजैर्दोषैर्हित्वायद्भाषसेक्षमम् २४
अधीरस्त्वंममतो धिगेतत्तववाग्बलम्। नयत्रपुरुषाःसन्ति तत्रगर्जन्तियोषितः २५
अहंत्वांदैत्य! पश्यामि पूर्वेषांमार्गगामिनम्। प्रजापतिकृतंसेतुं भित्वाकःस्वस्तिमान्व्र
जेत् २६ अद्यत्वांनाशयिष्यामि देवव्यापारघातकम्। स्वेषुस्वेषुचस्थानेषु स्थापयिष्या
मिदेवताः २७ एवंब्रुवतिवाक्यंतु मृधेश्रीवत्सधारिणि। जहासदानवःक्रोधाद्धस्तांश्चक्रे
सहायुधान् २८ सबाहुशतमुद्यम्य सर्वास्त्रग्रहणंरणे। क्रोधाद्द्विगुणरक्ताक्षो विष्णुंवक्ष
स्यताडयत्२९दानवाश्चापिसमरे मयतारपुरोगमाः।उद्यतायुधनिस्त्रिंशा विष्णुमभ्यद्रव
न्रणे ३० सताड्यमानोऽतिबलैर्दैत्यैःसर्वोद्यतायुधैः। नचचालततोयुद्धे कम्पमानइवाच

आश्रयहोके मुझकोही प्रणामकरेगा इसयुद्धमें मैंवृद्धिको प्राप्तहोके दानवोंके भयकारी इस विष्णुको मारके बड़ी शीघ्रतासे सब देवताओंको मारूंगा क्योंकि अन्यजातिमेंभी प्राप्तहुआ यहविष्णु युद्धमें दानवोंको बाधाकरताहै १६।१७ हमने सुनाहै कि इसी ने पहले पद्मनाभहोके एकार्णवजलमें मधु-कैटभ दैत्योंको मारा और इसीने आधानर और आधेसिंहका शरीर धारणकरके हमारे पूर्व पितर हिरण्यकशिपुको माराहै १८। १९ प्रथम जब इसको दितिने गर्भके भीतर धारण कियाथा तब इ-सने तीनही पैंड़करके सब त्रिलोकी भरको मापाथा २० अब तारकामय युद्ध प्रारम्भ हुआहै इस युद्ध में मेरे संग संग्राम करके यह विष्णु भगवान् नष्ट होजावेगा ऐसे २ बहुतसे वचन कहकर शी-घ्रही विष्णु भगवान्के संग युद्धकरनेकी इच्छा करताभया २१। २२ इसके क्रोधपूर्वक तिरस्कृत किये हुएभी विष्णु कुछ क्रोधित नहीं होतेभये किन्तु क्षमापूर्वक हँसकर यहबचन बोले कि हे दैत्य तुझमें थोड़ेसे अभिमानका बलहै तू क्षमाको त्यागकर बोलरहा है २३। २४ इसहेतुसे अभिमानके बलसे हतहुआ तू मेरी बुद्धिसे धैर्य्यवालानहीं है इसतेरे वचनको धिक्कारहै सत्य है जहाँ पुरुष नहीं होतेहैं वहां स्त्रीही गर्जती हैं २५ हे दैत्य तुझको भी मैं पूर्व्वकेही दैत्योंकीगतिमें पहुंचाऊंगा क्योंकि ब्रह्माजी के बनायेहुए धर्म के पुलको तोड़कर कौनसुखी रहसक्ता है २६ हे देवताओं के घातके विचारनेवाले मैं तुझको अवश्य मारूंगा और देवताओं को अपने २ स्थानों में स्थापितकर-दूंगा २७ जब विष्णुभगवान् ने इसप्रकारके वचनकहे तब वह दैत्य क्रोधकरके हँसा और सैकड़ों भुजाओं में शस्त्रोंको ग्रहणकरके बड़े क्रोधपूर्व्वक विष्णुकीछाती में ताड़नकरताभया २८। २९ उस

लः ३१ संसक्तश्चसुपर्णेन कालनेमीमहासुरः । सर्वप्राणेनमहतीं गदामुद्यम्यबाहुभिः ३२ घोरांज्वलन्तींमुमुचे संरब्धोगरुडोपरि । कर्म्मणातेनदैत्यस्य विष्णुर्विस्मयमाविशत् ३३ यदातेनसुपर्णस्य पातितामूर्द्धिसागदा । सुपर्णंव्यथितंदृष्ट्वा कृतञ्चवपुरात्मनः ३४ क्रोध संरक्तनयनो वैकुण्ठश्चक्रमाददे । व्यवर्द्धतसवेगेन सुपर्णेनसमंविभुः ३५ भुजाश्चास्य व्यवर्द्धन्त व्याप्नुवन्तोदिशोदश । प्रदिशश्चैवखंगांवै पूरयामासकेशवः ३६ ववृधेचपुन र्लोकान् क्रान्तुकामइवौजसा । तर्जनायासुरेन्द्राणां वर्द्धमानंनभस्तले ३७ ऋषयश्चैव गन्धर्वास्तुष्टुवुर्मधुसूदनम् । सर्वान्किरीटेनलिहन्साभ्रमम्बरसम्बरैः ३८ पद्भ्यामाक्रम्य वसुधां दिशःप्रच्छाद्यबाहुभिः । ससूर्यकरतुल्याभं सहस्रारमरिक्षयम् ३९ दीप्ताग्निसदृ शंघोरं दर्शनेनसुदर्शनम् । सुवर्णरेणुपर्यन्तं वज्रनाभंभयापहम् ४० मेदोऽस्थिमज्जारु धिरैः सिक्तन्दानवसम्भवैः । अद्वितीयप्रहरणं क्षुरपर्यन्तमण्डलम् ४१ स्रग्दाममालावि ततं कामगंकामरूपिणम् । स्वयंस्वयम्भुवासृष्टं भयदंसर्वविद्विषाम् ४२ महर्षिरोषैराविष्टं नित्यमाहवदर्पितम् । क्षेपणाद्यस्यमुह्यन्ति लोकाःसस्थाणुजङ्गमाः ४३ क्रव्यादानिच भूतानि तृप्तियान्तिमहामृधे । तदप्रतिमकर्माग्रं समानंसूर्यवर्चसा ४४ चक्रमुद्यम्यसमरे क्रोधदीप्तोगदाधरः । समुष्णन्दानवंतेजः समरेस्वेनतेजसा ४५ चिच्छेदबाहूंश्चक्रेण श्रीधरःकालनेमिनः । तच्चवक्त्रशतंघोरं साग्निपूर्णाट्टहासिवै ४६ तस्यदैत्यस्यचक्रेण

युद्धमें मय आदिक बड़े २ दानवभी पैने २ शस्त्रोंको उठाकर विष्णुके सन्मुख भाजतेभये ३० फिर यह विष्णुभगवान् उनमहाबली दैत्योंके शस्त्रोंके प्रहारोंसे पर्व्वतकीसमान चलायमाननहींहुए ३१ इसके अनन्तर कालनेमिदैत्यने बहुतभारी घोरगदा उठाकर उसजलतीहुईगदाको बड़ेबलसे विष्णु के गरुडपरछोड़ा उसदैत्यके कर्मसे विष्णुभगवान् आश्चर्य्यको प्राप्तहोगये जब उसगदाके लगने से गरुड़दुःखितहोगया उस समय विष्णुभगवान्ने अपने सुदर्शनचक्रको उठाकर अपनेरूपको बढ़ाया और अपनेरूपकेही साथगरुड़कोभीबढ़ाया ३२ । ३५ उससमय दशोंदिशाओंमेंतो विष्णुभगवान्की भुजाफैलतीभईं और अपनेबलसे पृथ्वीको और तीनोंलोकोंको पूर्णकरके विष्णुजी आकाशमेंअपने रूपकोबढ़ाके दैत्योंको ताड़नकरतेभये ३६ । ३७ तब ऋषि गन्धर्वादिक विष्णुजीकीस्तुतिकरतेभये उससमयपर विष्णुजीने अपनेमुकुटको बादलोंपरलगादिया पैरोंसे पृथ्वीको आच्छादितकिया और भुजाओंको दशोंदिशाओंमें फैलादिया तब सूर्य्यकी किरणोंके समानकान्तिवाले हज़ारधारयुक्त शत्रु नाशक देदीप्त अग्निकेसदृशघोर दैत्योंके भयकारी दानवोंके मेद मज्जा और रुधिर इनसबके नाश करनेवाले स्वेच्छाचारी ब्रह्माजी के रचेहुए शत्रुनाशक महर्षियोंकेक्रोध और अभिमानसेयुक्त जिसके फेंकनेसे सबस्थावर जंगमजीव मोहको प्राप्तहोजांय और जिसकेप्रभावसे युद्धमें भूत प्रेतादिक तृप्ति को प्राप्तहोतेहैं उस सुदर्शननामचक्रको विष्णुभगवान् क्रोधसेउठाके अपनेतेजकेद्वारा दैत्यके तेजको दूरलेतभये ३८।४५ और उसकालनेमि दैत्यकी भुजाओंसमेत उसके सैकड़ोंमुखोंको काटडालतेभये तब सुदर्शनचक्रसे कटेहुएभुज और शिरवाला वहकालनेमिदैत्य कुछभीनहीं कंपायमानहुआ और

प्रममाथबलाद्धरिः। सच्छिन्नबाहुर्विशिरा नप्राकम्पतदानवः ४७ कबन्धोऽवस्थितःसं
ख्ये विशाखइवपादपः। संवितत्यमहापक्षौ वायोःकृत्वासमञ्जवम् ४८ उरसापातया
मास गरुडःकालनेमिनम्। सतस्यदेहोविमुखोविबाहुश्चपरिभ्रमन् ४९ निपपातदिव
न्त्यक्त्वा क्षोभयन्धरणीतलम्। तस्मिन्निपतितेदैत्ये देवाःसर्षिगणास्तदा ५० साधुसा
ध्विति वैकुण्ठं समेताःप्रत्यपूजयन्। अपसर्पन्तुदैत्याश्च युद्धेदृष्टपराक्रमाः ५१ तेसर्वे
बाहुभिर्व्याप्ता नशेकुश्चलितुंरणे। कांश्चित्केशेषुजग्राह कांश्चित्कण्ठेष्वपीडयन् ५२
चकर्षकस्यचिद्वक्त्रं मध्येऽगृह्णादथापरम्। तेगदाचक्रनिर्दग्धा गतसत्वागतासवः ५३
गगनाद्भ्रष्टसर्वाङ्गा निपेतुर्धरणीतले। तेषुदैत्येषुसर्वेषु हतेषुपुरुषोत्तमः ५४ तस्थौशक्र
प्रियंकृत्वा कृतकर्मागदाधरः। तस्मिन्विमर्देनिर्वृत्ते संग्रामेतारकामये ५५ तंदेशमाजगा
माशु ब्रह्मालोकपितामहः। सर्वैर्ब्रह्मर्षिभिःसार्द्धं गन्धर्वाप्सरसाङ्गणैः ५६ देवदेवोहरिंदे
वं पूजयन्वाक्यमब्रवीत्। कृतंदेवमहत्कर्म सुराणांशल्यमुद्धृतम् ५७ वधेनानेनदैत्यानां
वयंचपरितोषिताः। योऽयंत्वयाहतोविष्णो! कालनेमीमहासुरः ५८ त्वमेकोऽस्यमृधेह
न्ता नान्यःकश्चनविद्यते। एषदेवान्परिभवन्लोकांश्चससुरासुरान् ५९ ऋषीणांकदनं
कृत्वा मामपिप्रतिगर्जति। तदनेनतवाग्र्येण परितुष्टोऽस्मिकर्मणा ६० यदयंकालकल्प
स्तु कालनेमीनिपातितः। तदागच्छस्वभद्रन्ते गच्छामदिवमुत्तमम् ६१ ब्रह्मर्षयस्त्वां

शिरके विनाही युद्धमें वृक्षकेसमान खड़ाहोगया उससमयगरुड़जी अपनेपंखोंकी वायुकेवेगसे और अपनी छाती के धक्कों से उसकालनेमि दैत्यको पृथ्वीपर पटकदेतेभये उस समय उसकाशरीर बड़ेवेग से गिरताभया और गिरतेहीमरगया तब देवता और ऋषिलोग साधु २ शब्दोंकरके इकट्ठे होकर विष्णुजी का पूजनकरतेभये और सबदैत्य युद्धसे मुखफेर २ कर इधर उधरको भागगये ४६। ५१ उस समय वह भागेहुएदैत्य विष्णुभगवान्की फैलीहुई भुजाओं की रोकसे कहीं भी भागने न पाये तब कितनेही दैत्यों के तो विष्णुभगवान् केशपकड़तेभये और कितनोंहि के कण्ठ पकड़तेभये ५२ किसीके मुखकोमरोड़ा किसीकी कटिकोतोड़ा और कितनेही गदाचक्रादि से कटकर मरजातेभये ५३ बहुतसे आकाशसे गिरकरमरे जब इसप्रकारसे वह सबदानव मारेगये तब विष्णु भगवान् इन्द्रके प्यार करनेके निमित्तवहांही स्थितहोजातेभये जब यह तारकामययुद्ध निवृत्त होगया तब ब्रह्माजी ऋषि गन्धर्व और अप्सरादिकों से युक्तहो उसी स्थानपर आतेभये ५४। ५६ और विष्णुभगवान्की पूजाकरके यह वचन बोले कि हे देवदेव यह आपने बड़ा कर्म कियाहै देव-ताओं के शूलोंको निकाल दिया आपने इनदैत्योंके वधकरने से हमसब देवताओंको प्रसन्नकरदिया और यह जो कालनेमिदैत्य आपने माराहै इसको आपके विनाकोई दूसरानहींमारसका था यहदैत्य देवताओं समेत सबलोकों को महादुःख देताथा ऋषियोंको कष्टदेकर मुझको भी दुःखदेने के लिये गर्जना करताथा इसहेतुसे जो आपने यह कालके समान कालनेमिदैत्य माराहै यह मुझपर बड़ा अनुग्रह कियाहै अब आपका कल्याणहो आपउत्तरदिशाको यात्रा कीजिये वहांआपको ब्रह्मऋषि

तत्रस्थाः प्रतीक्षन्तेसदागताः। कस्माहंतवदास्यामि वरंवरवतांवर ! ६२ सुरेष्वथचदे
त्येषु वराणांवरदोभवान्। निर्यातयैतत्त्रैलोक्यं स्फीतंनिहतकण्टकम् ६३ अस्मिन्नेवंमृ
धेविष्णो ! शक्रायसुमहात्मने। एवमुक्तोभगवता ब्रह्मणाहरिरव्ययः ६४ देवाञ्छक्रमुखा
न्सर्वानुवाचशुभयागिरा। (विष्णुरुवाच) शृण्वन्तुत्रिदशाःसर्वे यावन्तोऽत्रसमाग
ताः ६५ श्रवणावहितैःश्रोतैः पुरस्कृत्यपुरन्दरम्। अस्माभिःसमरेसर्वे कालनेमिमुखाह
ताः ६६ दानवाविक्रमोपेताः शक्रादपिमहत्तराः। अस्मिन्महतिसंग्रामे दैतेयौद्वौविनिः
सृतौ ६७ विरोचनश्चदैत्येन्द्रः स्वर्भानुश्चमहाग्रहः। स्वांदिशंभजतांशक्रो दिशंवरुण
एवच ६८ याम्यांयमःपालयिता मुत्तराञ्चधनाधिपः। ऋक्षैःसहयथायोगं गच्छतांचैव
चन्द्रमाः ६९ अब्दंऋतुमुखेसूर्य्यो भजतामयनैःसह। आज्यभागाःप्रवर्तन्तां सदस्यैरभि
पूजिताः ७० हूयन्तामग्नयोविप्रैर्वेददृष्टेनकर्म्मणा। देवाश्चाप्यग्निहोमेन स्वाध्यायेन
महर्षयः ७१ श्राद्धेनपितरश्चैव तृप्तिंयान्तुयथासुखम्। वायुश्चरतुमार्गस्थस्त्रिधादीप्य
तुपावकः ७२ त्रींस्तुवर्णांश्चलोकांस्त्रींस्तर्पयंश्चात्मजैर्गुणैः। क्रतवःसम्प्रवर्तन्तां दीक्ष
णीयैर्द्विजातिभिः ७३ दक्षिणाश्चोपपाद्यन्तां याज्ञिकेभ्यःपृथक्पृथक्। गान्तुसूर्योरसान्
सोमो वायुःप्राणांश्चप्राणिषु ७४ तर्पयन्तःप्रवर्तन्तां सर्वएवस्वकर्म्मभिः। यथावदानुपू
र्व्येण महेन्द्रमलयोद्भवाः ७५ त्रैलोक्यमातरःसर्वाः समुद्रंयान्तुसिन्धवः। दैत्येभ्यस्त्यज्य
तांभीश्च शान्तिंव्रजतदेवताः ! ७६ स्वस्तिवोऽस्तुगमिष्यामि ब्रह्मलोकंसनातनम्। स्व
गृहेस्वर्गलोकेवा संग्रामेवाविशेषतः ७७ विश्रम्भोवोनमन्तव्यो नित्यंक्षुद्राहिदानवाः।

देखेंगे और हे देव मैं आपको क्या वरदूं आपही सबके बरदेनेवाले हो आपने त्रिलोकी का कंटक नष्ट करदिया ५७। ६३ जब ब्रह्माजी ने इसप्रकारसे विष्णुकी प्रशंसाकरी तब विष्णुजी इन्द्रादिक देवताओं से यह बचन बोले कि हे देवताओ तुममेरी वाणीको अच्छी रीतिसे सुनो कि हमने इसयुद्धमें इन्द्रसे भी अधिक बलवाले सबदानवों को माराहै परन्तु इसबड़े युद्धमेंसे दो दानव भागगये हैं एक विरोचन और दूसराराहु यह दोनों गुप्तहोकर भागगये हैं इसहेतुसे इन्द्र और वरुण यहदोनों अपनी २ दिशाओं की रक्षाकरें दक्षिण दिशाकी धर्मराज उत्तरकी कुवेर और नक्षत्रोंसमेत चन्द्रमाभी यथायोग्य अपने स्थानको प्राप्त होजाओ ६४। ६९ सूर्य्य ऋतुके मुखमें अयनों समेत वर्षको भोगो सदस्य ब्राह्मणोंसे पूजेहुए घृतकेभाग प्रवर्त्त होजाओ ७० वेदके कर्मके अनुसार ब्राह्मणलोग अग्निहोत्रकोकरो अग्नि और हवनसे देवता तृप्तहों श्राद्धकरके सुखपूर्व्वक पितर प्रसन्नहों वायु अपने मार्ग में स्थित होकर विचरें तीनोंप्रकार की अग्नि तृप्तरहो अपने गुणों से तीनोंलोक और तीनोंवर्ण तृप्तरहो, दीक्षावाले ब्राह्मणों करके यज्ञप्रवृत्तहों, यज्ञ करनेवालों के निमित्त जुदी २ दक्षिणा कल्पितकरो पृथ्वी को सूर्य्य रसोंको चन्द्रमा और सबप्राणियों के प्राणोंको वायु तृप्तकरो इसप्रकार करके यहसब यथार्थ अनुक्रमसे विचरो ७१। ७५ त्रिलोकीकी मातृका अपनेस्थानमेंजाओ समुद्र समुद्रों में जाओ देवता दैत्यों के भयकोत्यागो शान्तिको प्राप्तहोजाओ तुम्हारा कल्याणहो मैं सनातन ब्रह्मलोक को जाताहूं

च्छिद्रेषुप्रहरन्त्येतेनतेषां संस्थितिर्ध्रुवा ७८ सौम्यानामृजुभावानां भवतामार्जवन्धनम्।
एवमुक्त्वासुरगणान् विष्णुःसत्यपराक्रमः ७९ जगामब्रह्मणासार्द्धं स्वलोकन्तुमहायशाः।
एतदाश्चर्यमभवत्संग्रामेतारकामये॥दानवानाञ्चविष्णोश्च यन्मान्त्वंपरिपृष्टवान् ८०॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्तसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७७॥

(ऋषय ऊचुः) श्रुतःपद्मोद्भवस्तात विस्तरेणत्वयेरितः। समासाद्भवमाहात्म्यं भैरवस्यविधीयताम् १ (सूत उवाच) तस्यापिदेवदेवस्य शृणुध्वंकर्मचोत्तमम्। आसीद्दैत्योऽन्धकोनाम भिन्नाञ्जनचयोपमः २ तपसामहतायुक्तोह्यवध्यस्त्रिदिवौकसाम्। सकदाचिन्महादेवं पार्वत्यासहितंप्रभुम् ३ क्रीडमानंतदादृष्ट्वा हर्तुंदेवींप्रचक्रमे। तस्ययुद्धंतदाघोरमभवत्सहशम्भुना ४ आवन्त्येविषयेघोरे महाकालवनंप्रति तस्मिन्युद्धेतदारुद्रश्चान्धकेनातिपीडितः ५ सुषुवेबाणमत्युग्रं नाम्नापाशुपतंहितत्। रुद्रबाणविनिर्भेदाद्रुधिरादन्धकस्यतु ६ अन्धकाश्चसमुत्पन्नाः शतशोऽथसहस्रशः। तेषांविदार्यमाणानां रुधिरादपरेपुनः ७ बभूवुरन्धकाघोरा यैर्व्याप्तमखिलंजगत्। एवंमायाविनंदृष्ट्वा तञ्चदेवस्तदान्धकम् ८ पानार्थमन्धकास्रस्य सोऽसृजन्मातरस्तदा। माहेश्वरीतथाब्राह्मी कौमारीमालिनीतथा ९ सौपर्णीह्यथवायव्या शाक्रीवैनैर्ऋतीतथा। सौरीसौम्याशिवादूती

तुम अपने स्थान स्वर्गलोक और युद्ध इनसब स्थानों में दैत्यों से कभी भय मतकरो दैत्य तो तुच्छमनवाले हैं छिद्रमें प्रहार करते हैं इनकी स्थिति निश्चलनहीं है ७६। ७८ तुम सौम्य और सरलस्वभाववालेहो तुम्हारे कोमलताहीधनहै वह सत्य पराक्रमवाले विष्णुभगवान् देवताओं से ऐसे२ वचन कहकर ब्रह्माजी को साथलेकर अपने स्थानको जातेभये इसप्रकारसे यह आश्चर्य्य देवता और दैत्यों के तारकामय नाम युद्धमें होताभया यहसब मैंने तेरेआगे वर्णन करदियाहै ७९। ८०॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७७॥

ऋषि कहते हैं–हेसूतजी हमने विस्तारसे कहाहुआ पद्मोद्भव विष्णुका माहात्म्य आपके मुखसे सुना अब आप शिवजीके और भैरवके माहात्म्यको वर्णन कीजिये १ सूतजी बोले कि हेऋषिलोगो प्रथम मैं शिवजी के माहात्म्यको कहताहूं उसको तुम श्रवणकरो,पूर्वकालमें अंजनके समान कृष्णवर्णवाला एक अंधक नामदैत्य होताभया वह अपने तपके प्रभाव से किसी से भी नहीं मरा किसी समय वह दैत्य पार्वतीके संगक्रीड़ा करतेहुए महादेवजी को देखकर पार्वतीजीके हरने की इच्छा करताभया तब उसदैत्यका और महादेवजीका महाघोरयुद्ध होताभया वह युद्ध उज्जैन नगरीके समीप महाकालवनमें हुआथा उससमय उस दैत्यके युद्धसे शिवजी महापीड़ित हुए तब शिवजीके प्रभाव से पाशुपतनाम उग्रबाण उत्पन्नहुआ उस बाणके लगने से अन्धक दैत्यके शरीरके रुधिरसे हज़ारों अन्धक जातिके दैत्य होजातेभये फिर उन उत्पन्न दैत्योंके शरीरसे भी बाणोंके प्रहारोंसे जो रुधिर निकला उस रुधिरसे भी सैकड़ों दैत्य उत्पन्नहुए २।७ इसप्रकारसे बहुतसे घोर अन्धक दैत्य फैल गये ऐसे उस मायावी दैत्यको देखकर महादेवजीने उनके रुधिरोंके पीनेके निमित्त इनमातृकाओं

चामुण्डाचाथवारुणी १० वाराहीनारसिंहीच वैष्णवीचचलच्छिखा। शतानन्दाभगा
नन्दा पिच्छिलाभगमालिनी ११ बलाचातिबलारक्ता सुरभीमुखमण्डिका। मातृनन्दा
सुनन्दाचविडालीशकुनीतथा १२ रेवतीचमहारक्ता तथैवपिलपिच्छिका। जयाचविज
याचैव जयन्तीचापराजिता १३ कालीचैवमहाकाली दूतीचैवतथैवच। सुभगादुर्भगा
चैव करालीनन्दिनीतथा १४ अदितिश्चदितिश्चैव मारीवैमृत्युरेवच। कर्णमोटीतथा
ग्राम्या उलूकीचघटोदरी १५ कपालीवज्रहस्ताच पिशाचीराक्षसीतथा। भुशुण्डीशाङ्क
रीचण्डा लाङ्गलीकुटभीतथा १६ खेटासुलोचनाधूम्रा एकवीराकरालिनी। विशालदं
ष्ट्रिणीश्यामा त्रिजटीकुक्कुटीतथा १७ विनायकीचवैताली उन्मत्तोदुम्बरीतथा। सिद्धि
श्चलेलिहानाच केकरीगर्दभीतथा १८ भ्रुकुटीबहुपुत्रीच प्रेतयानाविडम्बिनी। क्रौञ्चा
शैलमुखीचैव विनतासुरसादनुः १९ उषारम्भामेनकाच सलिलाचित्ररूपिणी। स्वाहा
स्वधावषट्कारा धृतिर्ज्येष्ठाकपर्दिनी २० मायाविचित्ररूपाच कामरूपाचसङ्गमा। मुखे
विलामङ्गलाच महानासामहामुखी २१ कुमारीरोचनाभीमा सदाहासामदोद्धता। अल
म्बाक्षीकालपर्णी कुम्भकर्णीमहासुरी २२ केशिनीशङ्खिनीलम्बा पिङ्गलालोहितामुखी।
घण्टारवाथदंष्ट्राला रोचनाकाकजङ्घिका २३ गोकर्णिकाचमुखिका महाग्रीवामहामुखी।
उल्कामुखीधूम्रशिखा कम्पिनीपरिकम्पिनी २४ मोहनाकम्पनाक्ष्वेला निर्भयावाहुशालि
नी। सर्पकर्णीतथैकाक्षी विशोकानन्दिनीतथा २५ ज्योत्स्नामुखीचरभसा निकुम्भारक्त
कम्पना। अविकारामहाचित्रा चन्द्रसेनामनोरमा २६ अदर्शनाहरत्पापा मातङ्गीलम्ब

को रचा, माहेश्वरी, ब्राह्मी, कौमारी, मालिनी, सौपर्णी, वायव्या, शाक्री, नैर्ऋती, सौरी, सौम्या, शिवा, दूती, चामुंडा, वारुणी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, शतानन्दा, भगानन्दा, पिच्छिला, भगमालिनी, ८।११ बला, अतिबला, रक्ता, सुरभी, मुखमंडिका, मातृनन्दा, सुनन्दा विडाली, शकुनी, १२ रेवती, महारक्ता, पिलपिच्छिका, जया, विजया, जयन्ती, अपराजिता, १३ काली, महाकाली, दूती, सुभगा, दुर्भगा, कराली, नन्दिनी, अदिति, दिति, मारी, मृत्यु कर्णमोटी, ग्राम्या, उलूकी, घटोदरी, कपाली, वज्रहस्ता, पिशाची, राक्षसी, भुशुंडी, सांकरी, चंडा, लांगली, कुटभी, १४।१६ खेटा, सुलोचना, धूम्रा, एकवीरा, करालिनी, विशालदंष्ट्रिणी, श्यामा, त्रिजटी, कुक्कुटी, विनायकी, वैताली, उन्मत्तोदुम्बरी, सिद्धि, लेलिहाना, केकरी, गर्दभी १७।१८ भ्रुकुटी, बहुपुत्री, प्रेतयाना, विडम्बिनी, क्रौंचा, शैलमुखी, विनता, सुरसा, दनु, १९ उषा, रंभा, मेनका, सलिला, चित्ररूपिणी, स्वाहा, स्वधा, वषट्कारा, धृति, ज्येष्ठा, कपर्दिनी २० माया, विचित्ररूपा, कामरूपा, मुखेविला, मंगला, महानासा, महामुखी, कुमारी, रोचना, भीमा, सदाहासा, मदोद्धता, अलंबाक्षी, कालपर्णी, कुंभकर्णी, महासुरी, केशिनी, शंखिनी, लंबा, पिंगला, लोहितामुखी, घंटारवा, दंष्ट्राला, रोचना, काकजंघिका २१।२३ गोकर्णिका, मुखिका, महाग्रीवा, महामुखी, उल्कामुखी, धूम्रशिखा, कंपिनी, परिकम्पिनी, २४ मोहना, कंपना, क्ष्वेला, निर्भया, बाहुशालिनी, सर्पकर्णी, एकाक्षी, विशोका, नन्दिनी. २५ ज्योत्स्नामुखी, र-

मेखला। अवालावञ्चनाकाली प्रमोदालाङ्गलावती २७ चित्ताचित्तजलाकोणा शान्ति काघविनाशिनी। लम्बस्तनीलम्बसटा विसटावासचूर्णिनी २८ स्खलन्तीदीर्घकेशीच सुचिरासुन्दरीशुभा। अयोमुखीकटुमुखी क्रोधनीचतथाशनी २९ कुटुम्बिकामुक्तिकाच चन्द्रिकाबलमोहिनी। सामान्याहासिनीलम्बा कोविदारीसमासवी ३० कंकुकर्णीमहाना दा महादेवीमहोदरी। हुङ्कारीरुद्रसुसटा रुद्रेशीभूतडामरी ३१ पिण्डजिह्वाचलज्ज्वाला शिवाज्वालामुखीतथा। एताश्चान्याश्चदेवेशः सोऽसृजन्मातरस्तदा ३२ अन्धकानांम हाघोराः पपुस्तद्रुधिरंतदा। ततोऽन्धकासृजःसर्वाःपरांतृप्तिमुपागताः ३३ तासुतृप्तासु संभूताभूयएवान्धकप्रजाः। अर्दितस्तैर्महादेवः शूलमुद्गरपाणिभिः ३४ ततःसशङ्करोदे वस्त्वन्धकैर्व्याकुलीकृतः। जगामशरणंदेवंवासुदेवमजंविभुम् ३५ ततस्तुभगवान्विष्णुः सृष्टवान्शुष्करेवतीम्। यापपौसकलन्तेषामन्धकानामसृक्क्षणात्। यथायथाचरुधिरं पिबन्त्यन्धकसम्भवम् ३६ तथातथाधिकंदेवी संशुष्यतिजनाधिप!। पीयमानेतथातेषा मन्धकानांतथासृजि। अन्धकास्तुक्षयन्नीताः सर्वेतेत्रिपुरारिणा ३७ मूलान्धकन्तुविक्र म्य तदाशर्वस्त्रिलोकधृक्। चकारवेगाच्छूलाग्रेसचतुष्टावशङ्करम् ३८ अन्धकस्तुमहा वीर्यस्तस्यतुष्टोऽभवद्भवः। सामीप्यंप्रददौनित्यं गणेशत्वंतथैवच ३९ ततोमातृगणाः सर्वेशङ्करंवाक्यमब्रुवन्। भगवन्! भक्षयिष्यामः सदेवासुरमानुषान् ४० त्वत्प्रसादाज्ज

भसा, निकुंभा, रक्तकम्पना, अविकारा, महाचित्रा, चन्द्रसेना, मनोरमा, अदर्शना, हरत्पापा, मातंगी, लम्बमेखला, अवाला, वंचना, काली, प्रमोदा, लांगलावती, २६।२७ चित्ता, चित्तजला, कोणा, शान्तिका, अघविनाशिनी, लम्बस्तनी, लंबसटा, विसटा, वासचूर्णिनी, २८ स्खलन्ती, दीर्घ, केशी, सुचिरा, सुन्दरी, शुभा, अयोमुखी, कटुमुखी, क्रोधनी, अशनी, कुटुम्बिका, मुक्तिका, चन्द्रिका-बलमोहिनी सामान्या, हासिनी, लंबा, कोविदारी, कंकुकर्णी, महानादा, महादेवी, महोदरी, हुं-कारी, रुद्रसुसटा, रुद्रेशी, भूतडामरी, पिंडजिह्वा, चलज्ज्वाला, शिवा, ज्वालामुखी, इननामोंवाली तथा अन्यनामोंवाली मातृकाओंको महादेवजी रचतेभये२९।३२यहसब मातृका उनअन्धक दैत्यों के रुधिरको पीतीभयीं और उनके रुधिरको पीकर परमतृप्तिको प्राप्तहोतीभयीं३३यहसब जब तृप्त होगईं तब फिर उस अन्धकदैत्यके रुधिरसे दैत्यबढ़नेलगे उससमय उनदैत्योंसे व्याकुलहुए महा-देवजी विष्णुभगवान्की शरणमें जातेभये ३४।३५ इसके अनन्तर विष्णुभगवान् क्रोधकरके शुष्क-रेवतीको उत्पन्न करतेभये वह क्षणमात्रमेंही इन अन्धक दैत्योंके संपूर्ण रुधिरको पीजातीभई और रुधिर पीपीकर कृशहोतीगई इसीरीतिसे उनसब दैत्योंका संपूर्ण रुधिर जब पान करलिया तबवह सबनष्टहोगये ३६। ३७ फिर महादेवजी उस प्रधान अन्धक दैत्यको जब अपने पराक्रमसे त्रिशूल पर चढ़ालेतेभये तब अन्धक दैत्यने महादेवजीकी स्तुतिकी उससमय महादेवजी प्रसन्न होकर अ-न्धक दैत्यको अपना लोकदेकर गणोंका अधिपति बनातेभये ३८। ३९ फिर सबमातृका शिवजीसे कहतीभईं कि हे भगवन् हमसब देवता असुर और मनुष्य इनसब समेत संपूर्ण संसारको आपकी

गतुसर्वंतदनुज्ञातुमर्हसि। (शङ्कर उवाच) भवतीभिःप्रजाःसर्वारक्षणीयानसंशयः४१
तस्माद्घोरादभिप्रायान्मनःशीघ्रंनिवर्त्यताम्। इत्येवंशङ्करेणोक्तमनादृत्यवचस्तदा४२
भक्षयामासुरत्युग्रास्त्रैलोक्यंसचराचरम्। त्रैलोक्येभक्ष्यमाणेतु तदामातृगणेनवै ४३
नृसिंहमूर्तिदेवेशंप्रदध्यौभगवाञ्छिवः। अनादिनिधनंदेवं सर्वलोकभवोद्भवम् ४४दैत्ये
न्द्रवक्षोरुधिरचर्चिताग्रमहानखम्। विद्युत्जिह्वंमहादंष्ट्रं स्फुरत्केसरकण्टकम्। कल्पा
न्तमारुतक्षुब्धं सप्तार्णवसमस्वनम् ४५ वज्रतीक्ष्णनखंघोरमाकर्णव्यादिताननम्। मेरु
शैलप्रतीकाशमुदयार्कसमेक्षणम् ४६ हिमाद्रिशिखराकारं चारुदंष्ट्रोज्ज्वलाननम्। नख
निःसृतरोषाग्निज्वालाकेसरमालिनम् ४७ वज्राङ्गदंसुमुकुटं हारकेयूरभूषणम्। श्रोणी
सूत्रेणमहता काञ्चनेनविराजितम् ४८ नीलोत्पलदलश्यामं वासोयुगविभूषणम्। तेज
साक्रान्तसकलब्रह्माण्डागारसंकुलम् ४९ पवनभ्राम्यमाणानां हुतहव्यवहार्चिषाम्।
आवर्तसदृशाकारैः संयुक्तंदेहलोमजैः ५० सर्वपुष्पविचित्राञ्च धारयन्तंमहास्रजम्।
मध्यातमात्रोभगवान् प्रददौतस्यदर्शनम् ५१ यादृशेनैवरूपेण ध्यातेरुद्रेणधीमता। ता
दृशेनैवरूपेण दुर्निरीक्ष्येणदैवतैः ५२ प्रणिपत्यतुदेवेशं तदातुष्टावशङ्करः। (शङ्कर उ
वाच। नमस्तेऽस्तुजगन्नाथ! नरसिंहवपुर्धर! ५३ दैत्यनाथासृजापूर्ण! नखशक्तिविराजि
त!। ततःसकलसंलग्नहेमपिङ्गलविग्रह! ५४ नतोऽस्मिपद्मनाभ! त्वां सुरशक्र! जग
द्गुरो! कल्पान्ताम्भोदनिर्घोष! सूर्यकोटिसमप्रभ! ५५ सहस्रयमसंक्रोध!। सहस्रेन्द्र
पराक्रम!। सहस्रधनदस्फीत! सहस्रवरुणात्मक! ५६ सहस्रकालरचित!। सहस्रनिय

रूपासे भक्षणकरेंगी सो आप आज्ञादीजिये शिवजीने कहा कि तुमसबकोतो निस्सन्देह अवश्य प्रजाकी रक्षाकरनाचाहिये ४०।४१ इसहेतुसे तुमइसघोर पापरूप अपनेमनोरथसे निवृत्तहोजाओ इसप्रकार के कहेहुए महादेवजीके वचनको उलटकर वहमातृका सबचराचर जगत्को भक्षणकरने लगगई उस समय शिवजी नृसिंहदेवका ध्यानकरतेभये और ध्यानकरतेही वह देवदेव दैत्योंके रुधिरमेंभरेनखयुक्त विद्युत्के समान जिह्वा महाउग्र दंष्ट्रा प्रलयके वायुकेसमान वेगसेभरे समुद्रों के समान शब्दायमान कानतक मुखको फाड़ेहुए सूर्य्यकेसमान रक्तनेत्रकिये क्रोधाग्निकी ज्वालासमेत मुकुट हार और बाजू बन्दादि आभूषणोंसे अलंकृत बड़ी क्षुद्रघंटिका और वस्त्रोंसे शोभित संपूर्ण ब्रह्मांडमें तेजको फैलातेहुए अग्निकी ज्वालाकेसमान चमकतेहुए केशोंसे सुशोभित और सबप्रकारके मनोहर पुष्पोंकी मालाएं धरे ऐसे अपनेस्वरूपके दर्शनकरातेभये ४२।५१ जैसे रूपका कि शिवजी ने ध्यान कियाथा वैसाही अपनारूप उनको दिखाया तब शिवजी उनकोप्रणामकरके यहस्तुति करतेभये कि हेजगन्नाथ नृसिंह शरीरवाले देवदेव आपके अर्थ नमस्कारहै ५२।५३ दैत्यनाथों के रुधिर में भरेहुए नखोंसे शोभित सुवर्णके समान वर्ण पद्मनाभ जगद्गुरु ऐसे नृसिंहदेवको नमस्कार है कल्पकालके मेघके समान शब्द वाले कोटिसूर्य्य के समान कान्तिवाले हज़ार यमों के समान क्रोधयुक्त हजारों इन्द्रों के समान बल वाले हज़ार कुबेरों के समान समृद्धिवाले हज़ारों वरुण और काल इनके आत्मा हज़ारों पृथ्वियों के

तेन्द्रिय!। सहस्रभूमिसद्धैर्य! सहस्रानन्त! मूर्तिमन्!५७ सहस्रचन्द्रप्रतिमसहस्र! ग्रह विक्रम!। सहस्ररुद्रतेजस्क! सहस्रब्रह्मसंस्तुत! ५८ सहस्रबाहुवर्गोग्र! सहस्रास्यनि रीक्षण! सहस्रयन्त्रमथन! सहस्रबंधमोचन! ५९ अन्धकस्यविनाशाय यास्सृष्टामातरो मया। अनादृत्यतुमद्वाक्यम्भक्षयन्त्यद्भुताःप्रजाः ६० कृत्वाताश्चनशक्तोऽहं संहर्तुमपरा जित!। स्वयंकृत्वाकथन्तासां विनाशमभिकारये ६१ एवमुक्तःसरुद्रेण नरसिंहवपुर्धरः। ससर्जदेवोजिह्वायास्तदावाणीश्वरींहरिः ६२ हृदयाच्चतथामाया गुह्याच्चभवमालिनी। अस्थिभ्यश्चतथाकाली सृष्टापूर्वंमहात्मना ६३ ययातद्रुधिरम्पीतमन्धकानांमहात्मना म्। याचास्मिन्कथितालोकेनामतःशुष्करेवती ६४द्वात्रिंशन्मातरःसृष्टागात्रेभ्यश्चक्रिणा ततः। तासांनामानिवक्ष्यामि तानिमेगदतःशृणु ६५ सर्वास्तास्तुमहाभागा घण्टाकर्णी तथैवच। त्रैलोक्यमोहिनीपुण्या सर्वसत्ववशङ्करी ६६ तथाचचक्रहृदया पञ्चमीव्योम चारिणी। शङ्खिनीलेखिनीचैव कालसङ्कर्षणीतथा ६७ इत्येताःप्रष्टगाराजन्! वागीशा नचराःस्मृताः। सङ्कर्षणीतथाऽश्वत्थाबीजभावापराजिता ६८ कल्याणीमधुदंष्ट्रीच कमलो त्पलहस्तिका। इतिदेव्यष्टकंराजन्! मायानुचरमुच्यते। ६९ अजितासूक्ष्महृदया वृद्धावे शाश्मदंशना। नृसिंहभैरवाबिल्वा गरुत्महृदयाजया ७० भवमालिन्यनुचरा इत्यष्टौनृप मातरः। आकर्णनीसम्भटाच तथैवोत्तरमालिका ७१ ज्वालामुखीभीषणिका कामधेनुश्च वालिका। तथापद्मकराराजन्! रेवत्यनुचराःस्मृताः७२ अष्टौमहाबलाःसर्वा देवगात्रसमु

समान धैर्य्ययुक्त हज़ार चन्द्रमा के समान कान्तिसमेत हज़ारों रुद्रोंकेसमान तेजसेभरे हज़ारोंग्रहों क समान पराक्रमवाले सहस्रबाहु और नेत्रोंवाले हज़ारों यंत्रोंके मथनेवाले और हज़ारों बंधेहुओं के छुटानेवाले आपहैं हे देव मैंने अन्धक दैत्यके नाशके निमित्त जो मातृका रचीथीं वहसब मेरे वचनों का निरादरकरके सबजगत्को भक्षण कररही हैं उनको मैंने आपरचाहै इससे मैं आपही उनकानाश कैसेकरूं ५४।६१ शिवजीके ऐसेवचन सुनकर वह नृसिंहदेव अपनी जिह्वासे वाणीश्वरीदेवीको रचतेभये हृदयसे मायारची, गुदासे भवमालिनी रची, और जो शुष्करेवतीनाम भगवान्की माया अंधकदैत्यके रुधिरको पीतीभई वह विष्णुभगवान् ने अपनी हड्डियों से रची और महाकाली नामसे विख्यातहुई ६२।६४ और जो महाभागा बत्तीसमातृका विष्णुने अपने शरीर से रची हैं उनकेनामोंको भी मुझसे श्रवणकरो ६५ घंटाकर्णी १ त्रैलोक्यमोहिनी २ सर्वसत्त्ववशकरी ३ चक्रहृदया ४ व्योमचारिणी ५ शंखिनी ६ लेखनी ७ कालसंकर्षणी ८ यहआठमातृका वाणीश्वरीकी अनुचरी हैं और संकर्षणी १ अश्वत्थामा २ बीजभावा ३ अपराजिता ४ कल्याणी ५ मधुदंष्ट्री ६ कमला ७ उत्पलहस्तिका ८ यह आठदेवीमायाकी अनुचरी कहाती हैं ६६।६९ और हे राजन् अजिता १ सूक्ष्महृदया २ वृद्धा ३ वेशाश्मदंशना ४ नृसिंहभैरवा ५ बिल्वा ६ गरुत्महृदया ७ जया ८ यहआठमातृका भवमालिनी की अनुचरी कहाती हैं और आकर्णनी १ सभटा २ उत्तर मालिका ३ पद्मकरा ४ ज्वालामुखी ५ भीषणिका ६ कामधेनु ७ बालिका ८ यह आठमातृका रेवतीकी अनुचरी

द्भवाः । त्रैलोक्यसृष्टिसंहार समर्थाःसर्वदेवताः ७३ ताःसृष्टमात्रादेवेन क्रुद्धामातृगणा
स्तु । प्रधावितामहाराज ! क्रोधविस्फारितेक्षणाः ७४ अविषह्यतमन्तासां दृष्टितेजः
सुदारुणम् । तमेवशरणंप्राप्तान्नृसिंहोवाक्यमब्रवीत् ७५ यथामनुष्याःपशवःपाल
यन्तिचिरात्सुतान् । जयन्तितेतथैवाशुयथादेवतागणाः ७६ भवत्यस्तुतथालो
कान्पालयन्तुमयेरिताः । मनुजैश्चतथादेवैर्यजध्वंत्रिपुरान्तकम् ७७ नचबाधाप्र
कर्त्तव्या येभक्तास्त्रिपुरान्तके । येचमांसंस्मरन्तीहतेचरक्ष्याःसदानराः ७८ बलि
कर्मकरिष्यन्ति युष्माकंयेसदानराः । सर्वकामप्रदास्तेषां भविष्यध्वन्तथैवच ७९
उच्छासनादिकंयेच कथयन्तिमयेरितम् । तेचरक्ष्याःसदालोका रक्षितव्यंसदासनम् ८०
रौद्रींचैवपरांमूर्त्तिंमहादेवःप्रदास्यति । युष्मन्मुख्यामहादेव्यस्तद्युक्तंपरिरक्षथ ८१
मयामातृगणःसृष्टो योऽयंविगतसाध्वसः । एषनित्यंविशालाक्ष्योमयैवसहरंस्यते ८२
मयासार्द्धंतथापूजांनरेभ्यश्चैवलप्स्यथ । पृथक्सुपूजितालोकैः सर्वान्कामान्प्रदास्यथ ८३
शुष्कांसंपूजयिष्यन्तियेचपुत्रार्थिनोजनाः । तेषांपुत्रप्रदादेवी भविष्यतिनसंशयः ८४
एवमुक्त्वातुभगवान् सहमातृगणेनतु । ज्वालामालाकुलवपुस्तत्रैवान्तरधीयत ८५
तत्रतीर्थंसमुत्पन्नं कृतशौचेतियज्जगुः । तत्रापिपूर्वजोदेवो जगदार्तिहरोहरः ८६ रौद्र
स्यमातृवर्गस्य दत्त्वारुद्रस्तुपार्थिव ! । रौद्रींदिव्यांतनुंतत्र मातृमध्येव्यवस्थितः ८७
सप्ततासांतरौद्रेव्यः सार्द्धनारीनरः शिवः । निवेश्यरौद्रंतत्स्थानं तत्रैवान्तरधीयत ८८
कहाती हैं ७०।७२ यहसब मातृका महाबलवाली हैं विष्णुके शरीरसे उत्पन्नहुई हैं सृष्टिके संहार करने
में समर्थ हैं हे राजन् यह विष्णुसे रचीहुई मातृका उन शिवजीकी मातृकाओंको अपनेक्रोधसे भजादे
तीभई क्योंकि इनका दारुणदृष्टिकातेज किसीसेभीनहीं सहाजाताहै इनको भगाकर सब बत्तीसों मातृ
का नृसिंहजीकी शरणमें प्राप्तहोगईं उस समय नृसिंहजी इनसबसे बोले कि जैसे मनुष्य औरपशुअपने
पुत्रोंकोपालते हैं और देवता प्रजाकी रक्षाकरतेहैं इसीप्रकारतुमभीमेरी आज्ञासेलोकोंकीरक्षाकरो और
मनुष्य तथादेवताओंसे शिवजीका पूजनकरवाओ ७३।७७ जो शिवजीकेभक्तहैं उनकोकभीबाधा नदेना
चाहिये और मेरा स्मरण करते हैं उनकी सदैव रक्षा करनी चाहिये ७८ और जो मनुष्य सदैव तुम्हारे
अर्थ बलिप्रदान करेंगे उनके सदैव वाञ्छित मनोरथ सिद्धहोंगे ७९ और जो मेरे कहेहुए स्तोत्रादिका
पाठकरेंगे उनसब कीभी तुमको रक्षा करनी चाहिये और महादेवजी तुम्हारे अर्थ अपनी परम रौद्री
मूर्त्तिको देंगे वहीमूर्त्ति तुमसबमें मुख्यहोगी उसमें युक्तहोकर तुम संसारकी रक्षाकरना और जोमैंने
मातृगणरचेहैं वहमेरेसाथ विहार करेंगे और मेरेसंगही मनुष्योंकी कीहुई पूजाको प्राप्तहोंगी और जो
उनकी पृथक्पूजा करेंगे उनके सब मनोरथ पूर्णहोंगे ८०।८३ और जोपुत्रकी इच्छाकरने वाले जन
शुष्कदेवताकापूजनकरेंगे उनको वह देवी निस्सन्देहपुत्रदेगी ८४ ऐसे कहकर वहविष्णुभगवान्
वहाँही अन्तर्द्धान होगये फिर वहाँ कृतशौचनाम वालातीर्थ उत्पन्नहोताभया वहाँ जगत्की पीड़ा
हरनेवाले महादेवजी स्थितहैं ८५।८६ शिवजी रौद्रीदेवीको उनमातृकाओं के अर्पणकर उनसबोंके

समातृवर्गस्यहरस्यमूर्त्तिर्यदायदायातिचतत्समीपे। देवेश्वरस्यापिनृसिंहमूर्तेः पूजांविध त्तेत्रिपुरान्धकारिः ८९॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७८॥

(ऋषय ऊचुः) श्रुतोऽन्धकवधःसूत! यथावत्त्वदुदीरितः। वाराणस्यास्तुमाहात्म्यं श्रोतुमिच्छामसाम्प्रतम् १ भगवान्पिंगलःकेन गणत्वंसमुपागतः। अन्नदत्वञ्चसम्प्राप्तो वाराणस्यांमहाद्युतिः २ क्षेत्रपालःकथंजातः प्रियत्वञ्चकथङ्गत.। एतदिच्छामकथितं श्रोतुं ब्रह्मसुत! त्वया३ (सूत उवाच) शृणुध्वंवैयथालेभे गणेशत्वंसपिङ्गलः। अन्नदत्वंचलोका नांस्थानंवाराणसीत्विह४पूर्णभद्रसुत.श्रीमानासीद्यक्षःप्रतापवान्। हरिकेशइतिख्यातोब्र ह्मण्योधार्मिकश्चसः५तस्यजन्मप्रभृत्येव शर्वेभक्तिरनुत्तमा।तदासीत्तन्नमस्कारस्तन्निष्ठस्त त्परायण. ६ आसीनश्चशयानश्च गच्छंस्तिष्ठन्ननुव्रजन्। भुञ्जानोऽथपिबन्वापि रुद्र मेवान्वचिन्तयत्७तमेवंयुक्तमनसम्पूर्णभद्रःपिताब्रवीत्। नत्वांपुत्रमहंमन्ये दुर्जातोयस्त्व मन्यथा ८नहियक्षकुलीनानामेतद्वृत्तंभवत्युत। गुह्यकावतयूयंवै स्वभावात्क्रूरचेतसः९क्र व्यादाश्चैवकिंभक्षा हिंसाशीलाश्चपुत्रक!। मैवंकार्षीर्नतेवृत्तिरेवंदृष्टामहात्मना १०स्व यम्भुवायथादिष्टा त्यक्तव्यायदिनोभवेत्। आश्रमान्तरजंकर्म नकुर्युर्गृहिणस्तुतत् ११हि त्वामनुष्यभावंच कर्मभिर्विविधैश्चर। यत्त्वमेवंविमार्गस्थो मनुष्याज्जातएवच१२ यथा वद्धिविधन्तेषां कर्मतज्जातिसंश्रयम्। मयापिविहितंपश्य कर्मैतन्नात्रसंशयः १३ (सूतउ-

मध्यमेंही स्थित होतेभये फिर वहाँही सबमातृकाओं औरअर्द्धाङ्गी पार्वतीजी समेत शिवजीभी अन्त- र्द्धानहोतेभये औरजिस२ समयमें मातृवर्गसे युक्तहोकर महादेवजी नृसिंहजीकी मूर्त्तिके समीपजाते हैं तबहीं नृसिंहजीका पूजन करतेहैं ८७।८९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७८॥

ऋषियोंने पूछा हे सूतजी आपकेकहेहुए अंधक दैत्यके वधको हमनेसुना अबहम काशीजीके माहा- त्म्यको सुनाचाहतेहैं १ पिंगलभगवान् गणेशपनेको कैसे प्राप्तहुएहैं काशीजीमें अन्नदाता कैसेकहायेहैं क्षेत्रपालकैसेभयेहैं और शिवजीके प्यारे कैसेहुएहैं यहसबहम सुनाचाहतेहैं २।३ सूतजीबोलेकि जैसे प्रकारसेकि पिंगलगणेशहुए और अन्नदाताहुए वह सबमुझसे सुनो ४ एक पूर्णभद्रकापुत्र यक्ष नाम होताभया वहहरिकेश नामसे विख्यातहोताभया वहबड़ाब्रह्मण्य और धार्मिकथा५वह अजिन्मसेही खातेपीते सोते बैठते चलते और फिरते सदैव सबकालमें शिवजीमें भक्तिपूर्वक ध्यानलगाये रहताथा ६।७ उस ऐसे आचरणयुक्त रहनेवालेके पिता पूर्णभद्रने कहा कि हेपुत्र तुझको मैं अपना पुत्रनहीं मानताहूं तूने विलक्षण प्रकारसे उत्पन्नहुआहै यक्षोंके कुलमें ऐसा आचरणकरना योग्यनहीं है हम क्रूर स्वभाववाले होकर मांसभक्षी और हिंसा करनेवालेहैं हे पुत्र ऐसी तेरे सरीखी वृत्ति हमारी ब्र- ह्माजीने नहीं करी है सो अपनी वृत्तिको त्यागकर दूसरे आश्रमकी वृत्ति नहीं करनी चाहिये ८।११ इसलिये मनुष्यभावको त्यागकर अनेककर्मोंका आचरणकर-नहीं तो ऐसे कर्मकरनेवालातू अवश्य मनुष्यहीसे जन्माहै और अपनी इस जातिमें प्राप्तहोनेवाले मेरेभी कर्मको तू देख १२।१३ सूतजी

वाच)एवमुक्त्वासतंपुत्रं पूर्णभद्रःप्रतापवान्। उवाचनिष्क्रमन्क्षिप्रं गच्छपुत्रयथेच्छसि १४
ततःसनिर्गतस्त्यक्त्वा गृहंसम्बन्धिनस्तथा। वाराणसींसमासाद्य तपस्तेपेसुदुश्चरम् १५
स्थाणुभूतोह्यनिमिषः शुष्ककाष्ठोपलोपमः। सन्नियम्येन्द्रियग्राममवातिष्ठतनिश्चलः १६
अथतस्यैवमनिशन्ततत्परस्यतदाशिषः। सहस्रमेकंवर्षाणां दिव्यमप्यभ्यवर्तत १७ व
ल्मीकेनसमाक्रान्तो भक्ष्यमाणःपिपीलिकैः। वज्रसूचीमुखैस्तीक्ष्णैर्विध्यमानस्तथैवच १८
निर्मांसरुधिरत्वक्च कुन्दशङ्खेन्दुसप्रभः। अस्थिशेषोऽभवच्छर्वं देवंवैचिन्तयन्नपि १९
एतस्मिन्नन्तरेदेवी विज्ञापयतशङ्करम्। (देव्युवाच) उद्यानंपुनरेवेह द्रष्टुमिच्छामिसर्व
दा २० क्षेत्रस्यदेवमाहात्म्यं श्रोतुंकौतूहलंहिमे। यतश्चप्रियमेतत्ते तथास्यफलमुत्तम्।
२१ इतिविज्ञापितोदेवः शर्वाण्यापरमेश्वरः। शर्वःपृष्टोयथातथ्यमाख्यातुमुपचक्रमे २२
निर्जगामचदेवेशः पार्वत्यासहशङ्करः। उद्यानंदर्शयामास देव्यादेवःपिनाकधृक् २३
(देवदेव उवाच) प्रोत्फुल्लनानाविधगुल्मशोभितं लताप्रतानावनतंमनोहरम्। विरूढ
पुष्पैःपरितःप्रियंगुभिःसुपुष्पितैःकण्टकितैश्चकेतकैः २४ तमालगुल्मैर्निचितंसुगन्धिभिः
सकर्णिकारैर्बकुलैश्चसर्वशः।अशोकपुन्नागवरैःसुपुष्पितैर्द्विरेफमालाकुलपुष्पसञ्चयैः२५क
चित्प्रफुल्लाम्बुजरेणुरूषितैर्विहङ्गमैश्चारुकलप्रणादिभिः। विनादितंसारसमण्डनादिभिः
प्रमत्तदात्यूहरुतैश्चवल्गुभिः२६ क्वचिच्चचक्राह्वरवोपनादितंक्वचिच्चकादम्बकदम्बकैर्युतम्।
क्वचिच्चकारण्डवनादनादितं क्वचिच्चमत्तालिकुलाकुलीकृतम् २७ मदाकुलाभिस्त्वमराङ्ग

कहतेहैं कि वह प्रतापीपूर्णभद्र अपने पुत्रको इसप्रकारसे समझाकर यह कहताभया कि हे पुत्र तेरी जहांजानेकी इच्छाहो वहां घरसे निकलकर चलाजा १४ जब उसके पिताने ऐसाकहा तब उसकापुत्र अपने घरकोत्याग काशीजीमें जाकर ऐसा दुश्चर तपकरनेलगा कि आंखोंकोमीच शुष्क काष्ठके स्तंभके समान खड़ाहोकर इन्द्रियोंको रोकेहुए निश्चल होजाताभया १५। १६ इसप्रकारसे जब वह दिव्य हज़ारों वर्षोंतक तपस्या करताभया तबउसके शरीरके चारोंओर सर्पोंकी वामीहोगई कीड़ी और दीमक लगगई इसप्रकार उसमहादेवजीके चिन्तवन करनेवालेके शरीरका सबमांस और रुधिर सूखगया शंखके समान श्वेतहड्डियां चमकने लगगई १७। १८ इसके पीछे देवीपार्वतीजी शिवजीसे यह प्रार्थना करतीभई कि हे देव मैं बाग वन और बगीचोंके देखनेकी इच्छा करतीहूं और इसकाशी क्षेत्रके माहात्म्यकोभी सुनाचाहतीहूं वह आपकहिये २०। २१ जब इसप्रकारसे पार्वतीजीने शिवजीसे कहा तब शिवजी यथार्थ माहात्म्य कहनेके निमित्त पार्वतीजीके संग काशीसे बाहर निकलकर पार्वतीजीको बनकीशोभा दिखातेभये २२।२३ महादेवजी बोले कि हे पार्वती अनेक प्रकारके फूलेहुए पुष्पोंके गुच्छे बेल लता केतकीकेपुष्प तमाल अमलतास अशोक पुन्नाग और नाना सुगन्धित पुष्पोंसे शोभित और भ्रमरोंसेयुक्त इसवनकोदेखो २४। २५ इसवनमें कहींतो फूलेहुए कमलोंपर श्रेष्ठवाणी बोलनेवाले पक्षियोंकी शोभाहोरही है कहीं सारस आदि पक्षी बोलते हैं कहीं अनेकप्रकारके मदोन्मत्त चक्रवाकादि पक्षियोंकी शोभा कहीं उत्तमहंस कारंडव और मदोन्मत्त भौंरे

नाभिर्निषेवितश्चारुसुगन्धिपुष्पम् । क्वचित्सुपुष्पैःसहकारवृक्षैर्लतोपगूढैस्तिलकद्रुमै
श्च २८ प्रगीतविद्याधरसिद्धचारणं प्रवृत्तनृत्याप्सरसाङ्गणाकुलम्। प्रहृष्टनानाविधपक्षि
सेवितं प्रमत्तहारीतकुलोपनादितम् २९ मृगेन्द्रनादाकुलसत्त्वमानसैः क्वचित्क्वचित्द्व
न्द्वकदम्बकैर्मृगैः। प्रफुल्लनानाविधचारुपङ्कजैः सरस्तटाकैरुपशोभितंक्वचित् ३० निवि
डनिचुलनीलं नीलकण्ठाभिरामं मदमुदितविहङ्गव्रातनादाभिरामम्॥ कुसुमिततरु
शाखालीनमत्तद्विरेफं नवकिशलयशोभाशोभितप्रान्तशाखम् ३१ क्वचिच्चदन्तिक्षत
चारुवीरुधं क्वचिल्लतालिङ्गितचारुवृक्षकम् । क्वचिद्विलासालसगामिबर्हिणं निषेवि
तंकिम्पुरुषव्रजैःक्वचित् ३२ पारावतध्वनिविकूजितचारुशृङ्गैरभ्रङ्कषैःसितमनोहरचा
रुरूपैः। आकीर्णपुष्पनिकुरम्बविमुक्तहासैर्विभ्राजितंत्रिदशदेवकुलैरनेकैः ३३ फुल्लो
त्पलागुरुसहस्रवितानयुक्तैः स्तोयाशयैस्तमनुशोभितदेवमार्ग्गम् । मार्ग्गान्तरागलि
तपुष्पविचित्रभक्तिसम्बद्धगुल्मविटपैर्विहगैरुपेतम् ३४ तुङ्गाग्रैर्नीलपुष्पस्तवकभर
नतप्रान्तशाखैरशोकैर्म्मत्तालिव्रातगीतश्रुतिसुखजननैर्भासितान्तर्म्मनोज्ञैः । रात्रौ
चन्द्रस्यभासाकुसुमिततिलकैरेकतांसम्प्रयातश्छायासुप्तप्रबुद्धस्थितहरिणकुलालुप्तदर्भा
ङ्कुराग्रम् ३५ हंसानांपक्षपातप्रचलितकमलस्वच्छविस्तीर्णतोयं तोयानांतीरजा
तप्रविकचकदलीवाटनृत्यन्मयूरम् । मायूरैःपक्षचन्द्रैःक्वचिदपिपतितैरञ्जितक्ष्माप्रदे
शं देशेदेशेविकीर्णप्रमुदितविलसन्मत्तहारीतवृक्षम् ३६ सारङ्गःक्वचिदपिसेवितप्रदे

बोलरहे हैं कहीं मदसे भरीहुई देवाङ्गनापुष्पोंको सूँघरहीं कहीं उत्तम सुगन्धि वाले आंबोंके ऊपर चढ़ीहुईलताओंकी शोभाहोरही है इसरीतिसे शिवजी पार्वतीजीको उसवनकी शोभाको दिखाते भये २६।२८ कहीं अनेकविद्याधर गंधर्व गीतगाते कहीं अप्सरानाचरहीं कहींप्रसन्नहुए पक्षीबोलरहे कहीं सिंहोंकी गर्जनासे भयभीत मृगभाजरहे कहीं अनेक प्रकारके प्रफुल्लितकमलोंसंयुक्त सरोवर शोभादेरहे कहीं जलवेतोंकीशोभा कहीं पुष्पितवृक्षोंपर भ्रमरगुंजारकरते कहीं नवीन अंकुरपत्तोंसे वृक्षोंकीडाली शोभित होरहीं २९।३१ कहींहाथियोंके चलनेसे सुन्दरबेलटूटरहीं कहीं लताओं से लिपटेहुए सुन्दरवृक्षदीखरहे कहींक्रीडाकरतेहुए मोरोंकेचलनेकी ओरयक्षोंके चलनेकी शोभाहोरही कहीं कबूतरोंकीध्वनि होरही ऐसे श्वेतादिवर्णके पुष्पोंसमेत देवताओंके कुलोंसेशोभितहोरहे वनको पार्वतीको दिखातेभये ३२।३३ उसवनकेमार्गमें खिलेहुए वृक्षोंकी ऐसीशोभाहोरहीथी जैसी कि देवताओंके मार्गकीशोभाहोतीहै जहाँमार्गके वृक्षोंपरबैठेहुए अनेकप्रकारकेपक्षी शब्दकररहे पुष्पोंकेगुच्छों से नम्रहुई डालियोंवाले अशोकवृक्षोंकी अपूर्व शोभाहोरही मदोन्मत्त भ्रमरोंके गीतोंसे गुंजायमान होने से महा शोभायमान रात्रिके समय फूले हुए पुष्प ओर चन्द्रमाकी किरणोंकी एककान्ति होरही एक ओर वृक्षोंकी छायामें डाभके अंकुरोंमें खड़ेहुए मृगोंकी न्यारीही शोभादेरही हंसोंके परोंकेलगने से सरोवरके जलकी ओर पुष्पोंकी अधिक शोभा दिखाई पड़तीथी जलके सरोवरोंकेही समीपमोरों के नृत्य करने में उनके परोंकी मोरचन्द्रिका जुदीचमकती कहीं सारंगपक्षियोंकी शोभा कहीं खिले

शं सच्छन्नंकुसुमचयैःक्वचिद्विचित्रैः। हृष्टाभिःक्वचिदपिकिन्नराङ्गनाभिः क्षीबाभिःसम-
रगीतवृक्षखण्डम् ३७ संसृष्टैःक्वचिदुपलिप्तकीर्णपुष्पैरावासैःपरिवृतपादपंमुनीनाम्।
आमूलात्फलनिचितैःक्वचिद्विशालैरुत्तुङ्गैःपनसमहीरुहैरुपेतम् ३८ फुल्लातिमुक्तकलता
गृहसिद्धलीलंसिद्धाङ्गनाकनकनूपुरनादरम्यम्। रम्यप्रियंगुतरुमञ्जरिसक्तभृङ्गं भृङ्गाव
लीषुस्खलिताम्बुकदम्बपुष्पम् ३९ पुष्पोत्करानिलविघूर्णितपादपाग्रमग्रेसरोभुविनि
पातितवंशगुल्मम्। गुल्मान्तरप्रभृतिलीनमृगीसमूहं संमुह्यतान्तनुभृतामपवर्गदातृ४०
चन्द्रांशुजालधवलैस्तिलकैर्मनोज्ञैःसिन्दूरकुंकुमकुसुम्भनिभैरशोकैः। चामीकरामनिच
यैरथकर्णिकारैः फुल्लारविन्दरचितंसुविशालशाखैः ४१ क्वचिद्रजतपर्णाभैःक्वचिद्विद्रुमस
न्निभैः। क्वचित्काञ्चनसङ्काशैः पुष्पैराचितभूतलम् ४२ पुन्नागेषुद्विजगणविरुतं रक्ताशो
कस्तवकभरनमितम्। रम्योपान्तंश्रमहरपवनं फुल्लाब्जेषुभ्रमरविलसितम् ४३ सकल
भुवनभर्तालोकनाथस्तदानीन्तुहिनशिखरिपुत्र्याः सार्द्धमिष्टैर्गणेशैः। विविधतरुविशा
लंमत्तहृष्टान्यपुष्टमुपवनतरुरम्यंदर्शयामासदेव्याः ४४(देव्युवाच)उद्यानंदर्शितंदेव! शो
भयापरयायुतम्। क्षेत्रस्यतुगुणान्सर्वान् पुनर्वक्तुमिहार्हसि ४५ अस्यक्षेत्रस्यमाहात्म्यम
विमुक्तस्यतत्तथा। श्रुत्वापिहिनमेतृप्तिरतोभूयोवदस्वमे४६(देवदेवउवाच)इदंगुह्यतम
क्षेत्रं सदावाराणसीमम। सर्वेषामेवभूतानां हेतुर्मोक्षस्यसर्वदा ४७अस्मिन्सिद्धाःसदादे
वि! मदीयंव्रतमास्थिताः। नानालिङ्गधरानित्यं ममलोकाभिकांक्षिणः ४८ अभ्यसन्ति

हुए अनेक विचित्र पुष्पोंके समीप मदोन्मत्त यक्षोंकी स्त्रियोंके गानकी सुरीली वाणी कहीं पुष्पोंसे बिछी हुई पृथ्वीपर मुनियोंका वास कहीं फालसे आम आदिक उत्तम २ फलोंवाले वृक्ष शोभित होरहे कहीं फूलेहुए पुष्पोंके समीपमें चलती हुई सिद्ध चारणोंकी स्त्रियोंके नूपुरोंके शब्द कहीं कदंबके पुष्पों में लगे हुए भ्रमरोंकी श्यामता कहीं पुष्पोंवाले वृक्षोंसे स्पर्श कीहुई वायुकी सुगन्धि फैलरही कहीं वृक्षों के गुच्छों में लगीहुई मृगियों की शोभाहोरही कहीं चन्द्रमाकी किरणों के समान श्वेत पुष्प कहीं सिंदूर केशर और कुसुम्भ इन वर्णोंके समान पुष्प कहीं फूलेहुए कमल और कहीं अशोकादिक वृक्षोंसे शोभितहुए वनकी शोभाको दिखातेहुए ३४। ४१ कहीं चाँदीके क-हीं मूंगेके और कहीं सुवर्णके समान पुष्पोंवाले वृक्षोंसे भूमिकी शोभा होरही ४२ पुन्नागोंपर बैठे हुए पक्षी बोलरहे लाल अशोक वृक्षोंकी शोभामें सुगन्धित वायुचलरही फूलेकमलोंपर भौंरे भ्रमरहे ऐसे उसवनको सकल लोकोंके पति महादेवजी पार्वतीजीसे युक्तहोकर देखतेभये और पार्वतीको दर्शनभी करातेभये ४३। ४४ उस वनको देखकर पार्वतीजीबोलीं—हेदेव आपने इस वनकी परम शोभाको दिखाया अब इस काशीक्षेत्रके गुणोंकोभी वर्णनकीजिये क्योंकि इसक्षेत्रके माहात्म्य सुननेमें मेरी तृप्तिनहीं होतीहै इसीसेमैं फिर सुनना चाहतीहूं ४५।४६ महादेवजी बोले यह काशी मेरा उत्तम क्षेत्र है सबभूतमात्रोंकी सदैव मोक्षकाहेतु है ४७ हेमहादेवि इसक्षेत्रमें अनेक लिंगोंका आचरण कियेहुए मेरे व्रतमें स्थितहोकर सिद्ध पुरुष रहतेहैं ४८ मुक्त आत्मावाले जितेन्द्रिय पुरुष इस

परंयोगं युक्तात्मानोजितेन्द्रियाः। नानावृक्षसमाकीर्णे नानाविहगकूजिते ४९ कमलोत्पल
पुष्पाढ्यैः सरोभिःसमलङ्कृते। अप्सरोगणगन्धर्वैः सदासंसेवितेशुभे ५० रोचतेमेसदा
वासोयेनकार्येणतच्छृणु। मन्मनाममभक्तश्च मयिसर्वार्पितक्रियः ५१ यथामोक्षमिहाप्नोति
ह्यन्यत्रनतथाक्वचित्। एतन्ममपरंदिव्यं गुह्याद्गुह्यतरंमहत् ५२ ब्रह्मादयस्तुजानंतियेऽपि
सिद्धामुमुक्षवः। अतःप्रियतमंक्षेत्रं तस्मादिहरतिर्मम ५३ विमुक्तंनमयायस्मान्मोक्ष्यतेवाक
दाचन। महत्क्षेत्रमिदंतस्मादविमुक्तमिदंस्मृतम ५४ नैमिषेथकुरुक्षेत्रे गङ्गाद्वारेचपुष्करे।
स्नानात्संसेविताद्वापिनमोक्षः प्राप्यतेयतः ५५ इहसंप्राप्यतेयेनतत एतद्विशिष्यते। प्रयागे
चभवेन्मोक्ष इहवामत्परिग्रहात् ५६ प्रयागादपितीर्थाग्र्यादिदमेवमहत्स्मृतम्। जैगीषव्यः
परांसिद्धिं योगतःसमहातपाः ५७ अस्यक्षेत्रस्यमाहात्म्याद्भक्त्याचममभावनात्। जैगी
षव्योमहाश्रेष्ठो योगिनांस्थानमिष्यते ५८ ध्यायतस्तत्रमांनित्यं योगाग्निर्दीप्यतेभृशम्।
कैवल्यंपरमंयाति देवानामपिदुर्लभम ५९ अव्यक्तलिङ्गैर्मुनिभिःसर्वसिद्धान्तवेदिभिःइह
संप्राप्यतेमोक्षो दुर्लभोदेवदानवैः ६० तेभ्यश्चाहंप्रयच्छामि भोगैश्वर्यमनुत्तमम्। आत्म
नश्चैवसायुज्यमीप्सितंस्थानमेवच ६१ कुबेरस्तुमहायक्षस्तथासर्वार्पितक्रियः। क्षेत्रसंव
सनादेव गणेशत्वमवापह ६२ सम्वर्तोभवितायश्च सोऽपिभक्त्याममैवतु। इहैवाराध्य
मांदेवि ! सिद्धिंयास्यत्यनुत्तमाम् ६३ पराशरसुतोयोगी ऋषिर्व्यासोमहातपाः। धर्म्म

उत्तम क्षेत्रमें योगका अभ्यास करते हैं ४९, कमलादि पुष्पोंसे सुशोभित सरोवर अप्सरा गन्धर्वादि
कोंसे सेवित इस सुन्दर क्षेत्रमें मेरावास जिसहेतुसे सदैव रहताहै उस कारणको मैं तुमको सुनाता
हूं इस क्षेत्रमें मुझमें मन लगानेवाले और मेरेहीमें सबकर्म अर्पण करनेवाले भक्तलोग जैसे यहां
मोक्षको प्राप्तहोजाते हैं वैसे अन्यत्रकहीं नहीं होसक्ते यहमेरामत परमदिव्य और दृढ़है ५०। ५२
ब्रह्मादिक देवता और मोक्षकी इच्छा करनेवाले सिद्धलोग यहसबभी इसीक्षेत्रको बड़ामानते हैं इस
हेतुसे यहांपर मेरी परमप्रीति है ५३ इसक्षेत्रकेबिना मैंकभीभी मोक्षनहीं करताहूं इसकारणसे मो-
क्षकी इच्छा करने वालोंको यही महत्क्षेत्र है ५४ नैमिषारण्य, कुरुक्षेत्र, गंगाद्वार और पुष्कर इन
सब में स्नानकरनेसे अथवा इनका सेवनकरनेसे भी जितकी मोक्षनहीं होती है वहइसक्षेत्रमें आकर
मोक्षको प्राप्त होजाता है इसलिये यहबड़ा क्षेत्र है ५५। ५६ मेरेही अनुग्रहसे यद्यपि प्रयागमें और
इसक्षेत्रमें मोक्षहोती है परन्तु प्रयागजीसे भी यहक्षेत्र बड़ाकहाजाता है जो पुरुष योगाभ्याससे यहां
परमसिद्धिकी इच्छा करता है वह महातपस्वी है ५७ इसक्षेत्रके माहात्म्यसे और मेरी भक्तिपूर्वक
भावनासे योगियोंको परमस्थानकी प्राप्ति होती है ५८ इसक्षेत्रमें मेराध्यानकरनेसे योगकी अग्निदीप्त
होजातीहै उसयोगाग्नि दीप्तहोजानेसे वह देवताओंसेभी दुर्लभ परममोक्षको प्राप्तहोजाताहै ५९
अव्यक्तचिह्नवाले शुद्धान्तःकरणयुक्त मुनियोंको यहां ऐसी मोक्षप्राप्तहोजाती है जो देवता और दा-
नवोंकोभी महादुर्लभहै ६० मैं यहां अपने सब भक्तोंको अपनेही साथ सायुज्यमोक्षकी इच्छाकरताहूं
यहीं महायक्षराज कुबेरभी मेरे विषय सब क्रियाओंको अर्पणकरके गणेशभावको प्राप्तहोगयाहै और

कर्त्ताभविष्यश्च वेदसंस्थाप्रवर्तकः ६४ रंस्यतेसोऽपिपद्माक्षि ! क्षेत्रेऽस्मिन् मुनिपुङ्गवः। ब्रह्मादेवर्षिभिःसार्द्धं विष्णुर्वायुर्दिवाकरः ६५ देवराजस्तथाशक्रो येऽपिचान्येदिवौकसः। उपासंतेमहात्मानः सर्वेमामेवसुव्रते ! ६६ अन्येऽपियोगिनःसिद्धाच्छन्नरूपा महाव्रताः। अनन्यमनसोभूत्वा मामिहोपासतेसदा ६७ अलर्कश्चपुरीमेतां मत्प्रसादादवाप्स्यति। सचैनांपूर्ववत्कृत्वा चातुर्वर्ण्याश्रमाकुलाम् ६८ स्फीतांजनसमाकीर्णां भक्त्याचसुचिरंनृपः। मयिसर्वार्पितप्राणो मामेवप्रतिपत्स्यते ६९ ततःप्रभृति चार्वङ्गि ! येऽपिक्षेत्रनिवासिनः। गृहिणोलिङ्गिनोवापिमद्भक्तामत्परायणाः ७० मत्प्रसादाद्भजिष्यंति मोक्षंपरमदुर्लभम्। विषयासक्तचित्तोऽपि त्यक्तधर्म्मरतिर्नरः ७१ इहक्षेत्रेमृतःसोऽपि संसारंनपुनर्विशेत्। येपुनर्निर्ममाधीराः सत्वस्थाविजितेन्द्रियाः ७२ व्रतिनश्चनिरारम्भाः सर्वेतेमयिभाविताः। देहभङ्गंसमासाद्य धीमन्तःसङ्गवर्जिताः। गताएवपरंमोक्षं प्रसादान्ममसुव्रते ! ७३ जन्मान्तरसहस्रेषु युञ्जन्योगमवाप्नुयात्। तमिहैवपरंमोक्षं मरणादधिगच्छति ७४ एतत्संक्षेपतोदेवि ! क्षेत्रस्यास्यमहत्फलम्। अविमुक्तस्यकथितं मयातेगुह्यमुत्तमम् ७५ अतःपरतरंनास्ति सिद्धिगुह्यंमहेश्वरि !। एतद्बुध्यन्तियोगज्ञा येचयोगेश्वराभुवि ७६ एतदेवपरंस्थानमेतदेवपरंशिवम्। एतदेवपरम्ब्रह्म एतदेवपरम्पदम् ७७ वाराणसीतुभुवनत्रयसारभूता रम्यासदाममपुरीगिरिरा

हे देवि जो आगे संवर्त्तनाम एक भक्तहोवेगा वहभी इसीक्षेत्रमें मेरा आराधनकरके परमसिद्धिको प्राप्तहोवेगा ६१। ६२ जो पराशरका पुत्र वेदव्यास योगीन्द्रऋषि महातपस्वी और धर्मकर्त्ता होकर वेदों की स्थितिकरेगा ६४ वहभी इसीक्षेत्रमें रमणकरेगा और देवऋषियों समेत ब्रह्मा विष्णु वायु सूर्य्य और इन्द्र यह सबभी इसीक्षेत्रमें मेरीही उपासनाकिया करतेहैं ६५। ६७ अलर्कराजाभी मेरीही कृपासे इसपुरीको प्राप्तहोकर चारोंवर्णो समेत इसपुरीको पूर्वके समान अच्छे प्रकारसे बढ़ावेगा और पालनाकरेगा इसके पीछे अपनी सबक्रियाओंको मेरेहीमें अर्पणकरके मुझकोही प्राप्तहोजावेगा ६८। ६९ उससे आदिलेके इसक्षेत्रमें रहनेवाले सब गृहस्थी और संन्यासी आदिक मेरेहीमें तत्परहैंगे ७० और मेरी कृपासे परमदुर्लभ मोक्षको प्राप्तहोवेंगे और महाविषयासक्त धर्ममें प्रीति न रखनेवाले पुरुषभी जो इसक्षेत्रमें मरेंगे वह सबभी इससंसारमें नहीं जन्मेंगे और जो ममतारहित धैर्य्य युक्त सतोगुणी और जितेन्द्रिय संन्यासीजन मेरी भक्तिकरके यहाँ शरीरको छोड़ेंगे वहतो निस्सन्देह मेरे प्रसादसे परममोक्षको अवश्यहीप्राप्तहोजांयगे ७१। ७२ हजारों जन्मों में जो पुरुष योगको प्राप्त करके जिस मोक्षको प्राप्तकरतेहैं वह मोक्ष यहाँ सबको यहाँके मरनेसेही प्राप्तहोजातीहै ७३। ७४ हे देवि यह मैंने संक्षेपमात्रसेही इसक्षेत्रका महाफल तुमसे कहदियाहै परन्तु यह अत्यन्त गुह्यफलहै ७५ हे महेश्वरि इससे विशेष कोईभी क्षेत्र सिद्धिका देनेवालानहीं है पृथ्वीपर जो २ बड़े २ योगीश्वरहैं वह सब इसीको परमसिद्धिदायक क्षेत्र कहते हैं यही परमस्थानहै मंगलहै परमब्रह्महै और परमपद है ७६। ७७ यह काशीजी त्रिलोकी भरमें सारहै मुझको सदैव रमणीकहै यहाँ आयेहुए अनेक पापी

जपुत्रि !। अत्रागताविविधदुष्कृतकारिणोऽपि पापक्षयाद्विरजसःप्रतिभान्तिमर्त्याः ७८
एतत्स्मृतंप्रियतमंममदेवि ! नित्यं क्षेत्रंविचित्रतरुगुल्मलतासुपुष्पम्। अस्मिन्मृतास्तनु
भृतःपदमाप्नुवन्ति मूर्खागमेनरहितापिनसंशयोऽत्र ७९ (सूत उवाच) एतस्मिन्नन्तरेदेवो
देवींप्राहगिरीन्द्रजा। दातुंप्रसादाद्यक्षाय वरंभक्तायभामिनि ! ८० भक्तोममवरारोहे !
तपसाहतकिल्बिषः। अहोवरमसौलब्धमस्मत्तोभुवनेश्वरि ! ८१ एवमुक्त्वाततोदेवः सह
देव्याजगत्पतिः। जगामयक्षोयत्रास्ते कृशोधमनिसन्ततः ८२ ततस्तंगुह्यकंदेवी दृष्टि
पातैर्निरीक्षती। श्वेतवर्णविचर्माणं स्नायुबद्धास्थिपंजरम् ८३ देवीप्राहतदादेवं दर्शयंती
चगुह्यकम्। सत्यंनामभवानुग्रो देवैरुक्तस्तुशङ्कर ! ८४ ईदृशेचास्यतपसि नप्रयच्छसि
यद्वरम्। अत्रक्षेत्रेमहादेव ! पुण्येसम्यगुपासिते ८५ कथमेवंपरिक्लेशं प्राप्तोयक्षकुमारकः।
शीघ्रमस्यवरंयच्छ प्रसादात्परमेश्वर ! ८६ एवंमन्वादयोदेव ! वदन्तिपरमर्षयः। रुष्टाद्वा
चाथतुष्टाद्वा सिद्धिस्तूभयतोभवेत् ८७ भोगप्राप्तिस्तथाराज्यमन्तेमोक्षःसदाशिवात्।
एवमुक्तस्ततोदेवः सहदेव्याजगत्पतिः ८८ जगामयक्षोयत्रास्ते कृशोधमनिसन्ततः।
तंदृष्ट्वाप्रणतंभक्त्या हरिकेशंवृषध्वजः ८९ दिव्यञ्चक्षुरदात्तस्मै. येनापश्यत्सशङ्करम्।
अथयक्षस्तदादेशाच्छनैरुन्मील्यचक्षुषी ९० अपश्यत्सगणंदेवं वृषध्वजमुपस्थितम्।
(देवदेव उवाच) वरंददामितेपूर्वं त्रैलोक्येदर्शनंतथा ९१ सावर्ण्यंचशरीरस्यपश्यमां

पुरुषभी पापोंसे छूटजातेहैं ७८ हे देवि यह क्षेत्रमुझको नित्यप्रियहै और विचित्र लता गुल्म और
पुष्पोंसे शोभितहै इसमें मरेहुए पुरुष परमपदको प्राप्तहोकर निस्सन्देह फिरउनका जन्मनहींहो-
ता ७९ सूतजी कहतेहैं कि इसके अनन्तर महादेवजी पार्वतीजीसे उस पूर्वोक्त यक्षके वरदेनेकी वार्त्ता
कहतेभये ८० कि हे वरारोहे यह मेराभक्त तपस्यासे सबपापोंको दूरकरके स्थित होरहाहै इसको वर
देनामुझे अवश्यचाहिये ८१ जगत्पति महादेवजी ऐसा कहकर पार्वतीजी समेत वहींपहुंचे जहाँ कि
वह कृशशरीरहोकर निरन्तर तपकररहाथा ८२ वहाँ उसभक्तको श्वेतवर्णकी शेषरही हड्डियां और
नसोंसे बंधाहुआ महादुर्बल देखकर पार्वतीजीबोलीं कि हे प्राणनाथ आपको जो देवतालोग उग्र वर्णन
करतेहैं वह यथार्थही वर्णन करते हैं क्योंकि ऐसे तपमेंभी स्थितहुए अपने भक्तके निमित्त आप वरनहीं
देतेहो हे महादेवजी इसपवित्रक्षेत्रमें यह यक्षकापुत्र ऐसे क्लेश प्राप्तहोनेको योग्यनहींहै इसहेतुसे आप-
कृपाकरके शीघ्रही इसकोवरदो ८३।८६हेदेव मनुआदिक परमऋषि ऐसावर्णनकरतेहैं किरुष्टहुए शिव-
जीसे अथवा प्रसन्नहुए महादेवजी से अर्थात् दोनोंहीप्रकारसे सिद्धिहोतीहै ८७ सबभूतमात्रोंको इस
संसारमेंतो भोगकीप्राप्ति और मरेपीछे मोक्षकी इच्छाहुआकरती है पार्वती के ऐसेवचन सुनकर ज-
गत्पति महादेवजी उसयक्षके पासजाकर उसे प्रणामकरताहुआ देखकर उसके लिये दिव्यनेत्र देते
भये तब उननेत्रोंसे वहयक्षमहादेवजी को देखताभया और अपने समीपमें गणों समेत आयेहुए शि-
वजीको अच्छेप्रकारसे देखकर बड़ाप्रसन्नहोताभया उससमय तब महादेवजी उससे कहतेभये कि मैं
तुझकोवरदेताहूं कितुझे त्रिलोकी का दर्शनहोगा और तेराशरीरभीमेरेही समान चेष्टावालाहोजायगा

विगतज्वरः। (सूत उवाच) ततःसलब्ध्वातुवरं शरीरेणाक्षतेनच ९२ पादयोःप्रणतस्त स्थौकृत्वाशिरसिसाञ्जलिम्। उवाचाथतदातेन वरदोऽस्मीतिचोदितः ९३ भगवन्! भक्तिमव्यग्रां त्वय्यनन्यांविधत्स्वमे। अन्नदत्वंचलोकानां गाणपत्यंतथाक्षयम् ९४ अ विमुक्तंचतेस्थानं पश्येयंसर्वदायथा। एतदिच्छामिदेवेश त्वत्तोवरमनुत्तमम् ९५ (देवदेव उवाच) जरामरणसन्त्यक्तः सर्वरोगविवर्जितः। भविष्यसिगणाध्यक्षो धनदःसर्वपूजि तः ९६ अजेयश्चापिसर्वेषां योगैश्वर्यसमाश्रितः। अन्नदश्चापिलोकेभ्यः क्षेत्रपालोभ विष्यसि ९७ महाबलोमहासत्त्वो ब्रह्मण्योममचप्रियः। त्र्यक्षश्चदण्डपाणिश्च महा योगीतथैवच ९८ उद्भ्रमःसम्भ्रमश्चैव गणौतेपरिचारकौ। तवाज्ञाञ्चकरिष्येते लोक स्योद्भ्रमसम्भ्रमौ ९९ (सूत उवाच) एवंसभगवांस्तत्र यक्षंकृत्वागणेश्वरम्। जगाम वामदेवेशः सहतेनामरेश्वरः १००॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकोनाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १७९॥

(सूत उवाच) इमांपुण्योद्भवांस्निग्धां कथांपापप्रणाशिनीम्। शृण्वन्तुऋषयःसर्वे सुविशुद्धास्तपोधनाः १ गणेश्वरपतिंदिव्यं रुद्रतुल्यपराक्रमम्। सनत्कुमारोभगवान् पृच्छन्नन्दिकेश्वरम् २ ब्रूहिगुह्यंयथातत्त्वं यत्रनित्यंभवस्थितः। माहात्म्यंसर्वभूतानां परमात्मामहेश्वरः ३ घोररूपंसमास्थाय दुष्करंदेवदानवैः। आभूतसंप्लवंयावत् स्थाणु

तू खेदरहितहोकर मुझकोदेख सूतजी कहते हैं किजबवहयक्ष ऐसेवरकोप्राप्तहोगया तबअक्षत अर्थात् निर्विकार शरीरसे खड़ाहोकर शिवजीके चरणोंमें मस्तकटेक प्रणामकर अंजलीबाँधकर बोला कि हे स्वामीमेरे ऊपर कृपाकरिये तब महादेवजी ने कहाकि मैंनेतेरे निमित्तवरदे दियाहै ९२।९३यहसुनकर वहफिरबोला हे स्वामिन् आप ऐसावर दीजिये जिस्से आपके विषयमें मेरीनिरन्तरभक्ति बनीरहै और मैं लोकोंको अन्नदेनेवाला गणपति कहाऊं९४इसके विशेषयह उत्तमवरभीचाहताहूं कि आपके अविमुक्त स्थानको सदेवदेखूं ९५ महादेवजी कहतेहैं कि हेयक्ष तू जरामरण औररोगादिसे रहितशरीरीहोकेगणोंका पति धनकादेनेवाला सबसे पूजित किसीसे पराजित न होनेवाला होकर योग ऐश्वर्यवान्हो सबभूतोंको अन्नदेने वाला क्षेत्रपालहोगा ९६। ९७ इसके विशेष महाबली सत्त्ववान् ब्रह्मण्य मेरा प्यारा त्रिनेत्रयुक्त हाथमें दंडधारण करनेवाला और महायोगीहोगा ९८ और उद्भ्रम संभ्रम दोगण तेरे अनुचर रहेंगे वह दोनों सदैव तेरी आज्ञाको करेंगे ९९ सूतजी कहते हैं इस प्रकारसे वह भगवान् महादेवजी उसयक्षको गणेश्वर बनाके उसीके साथ गमन करतेभये १००॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १७९॥

सूतजीबोले कि इस पुण्यकी उदय करनेवाली महापवित्र पापोंकी नाशकरनेवाली कथाको सुन्दर तपवाले आप सब ऋषि लोग श्रद्धापूर्वक श्रवणकरो १ एकसमय गणेश्वरों के पति महादिव्यरूपरुद्रके समान पराक्रमी शिवजी के वाहननन्दिकेश्वरसे सनत्कुमार पूछतेभये २ कि हे नन्दिकेश्वर जहाँ शिवजी महाराज नित्य स्थित रहतेहैं उस परमतत्त्वरूप गुह्य स्थानको आपहमारे आगे वर्णन

भूतोमहेश्वरः ४ (नन्दिकेश्वर उवाच) पुरादेवेनयत्प्रोक्तं पुराणंपुण्यमुत्तमम्। तत्सर्वंसं
प्रवक्ष्यामि नमस्कृत्वमहेश्वरम् ५ ततोदेवेनतुष्टेन उमायाःप्रियकाम्यया। कथितंभुवि
विख्यातंयत्रनित्यंस्वयंस्थितः ६ रुद्रस्यार्धासनगता मेरुशृङ्गेयशस्विनी। महादेवंत
तोदेवी प्रणतापरिपृच्छति ७ भगवन्! देवदेवेश! चन्द्रार्द्धकृतशेखर!। धर्मस्त्रिब्रूहिमर्त्या
नां भुविचैवोर्ध्वरेतसाम् ८ जप्तंदत्तंहुतंचेष्टं तपस्तप्तंकृतञ्चयत्। ध्यानाध्ययनसम्पन्नंक
थंभवतिचाक्षयम् ९ जन्मान्तरसहस्रेण यत्पापंपूर्वसञ्चितम्। कथंतत्क्षयमायाति तन्
ममाचक्ष्वशङ्कर! १० यस्मिन्व्यवस्थितोभक्त्या तुष्यसेपरमेश्वर!। व्रतानिनियमाश्चैं
वश्चाचारोधर्म्मएवच ११ सर्वसिद्धिकरंयत्र ह्यक्षय्यगतिदायकम्। वक्तुमर्हसितत्सर्वं
परंकौतूहलंहिमे १२ (महेश्वर उवाच) शृणुदेवि! प्रवक्ष्यामि गुह्यानांगुह्यमुत्तमम्।
सर्वक्षेत्रेषुविख्यातमविमुक्तंप्रियंमम १३ अष्टषष्टिःपुराप्रोक्ता स्थानानांस्थानमुत्तमम्।
यत्रसाक्षात्स्वयंरुद्रःकृत्तिवासाःस्वयंस्थितः १४ यत्रसन्निहितोनित्यमविमुक्तेनिरन्तरम्।
तत्क्षेत्रंनमयामुक्तमविमुक्ततत्तःस्मृतम् १५ अविमुक्तेपरासिद्धिरविमुक्तेपरागतिः। ज
प्तंदत्तंहुतंचेष्टं तपस्तप्तंकृतंचयत् १६ ध्यानमध्ययनंदानं सर्वंभवतिचाक्षयम्। जन्मान्त
रसहस्रेण यत्पापंपूर्वसञ्चितम् १७ अविमुक्तंप्रविष्टस्य तत्सर्वंव्रजतिक्षयम्। अविमु

करो और वही सब भूतोंके पति शिवजी प्रलय कालतक स्थाणुरूप होकर घोर रूपधारण करके जहाँस्थित रहते हैं उस स्थानकोभी विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये ३।४ नन्दिकेश्वरबोले किप्रथम श्रीमहादेवजीने जिस उत्तम पवित्रपुराणको कहाहै उस सबकोमैं तुम्हारे आगे वर्णन करताहूं ५ इस पुराणको सबसे प्रथम प्रसन्नहोकर शिवजीने श्रीपार्वतीजी से कहाहै फिर क्रमसे पृथ्वीपर विख्यात होगयाहै ६ वह इस प्रकारसे है कि किसी समय महायशस्विनी शिवजीकी अर्द्धाङ्गी श्री पार्वतीजी सुमेरु पर्व्वतपर स्थितहो महादेवजी को प्रणामकरके यहपूछती भईं ७ कि हे भगवन् हे देवदेवेश इस पृथ्वी के रहनेवाले जितेन्द्रिय पुरुषोंके जो २ धर्म हैं उनको आप वर्णन कीजिये ८ जप दान हवन अच्छे प्रकारसे कियेहुए तप ध्यान और अध्ययन यह सब कैसे अक्षयगुणवाले होते हैं ९ और हजारों जन्मोंसे संचित कियेहुए पाप कैसे नष्ट होते हैं और जिस रीतिकी भक्ति से भगवान् प्रसन्नहोते हैं वहव्रत नियम आचार धर्म और अक्षय गतिदेनेवाले यत्न इनसबको आप मेरे आगे वर्णनकीजिये क्योंकि मुझे परम आश्चर्य होताहै १० । १२ श्रीमहादेवजी बोले कि हे देवि तू श्रद्धापूर्वक श्रवणकर मैं गुह्योंमें भी गुह्य उस उत्तम तीर्थको तेरे आगेकहताहूं जो सब क्षेत्रोंमें महा उत्तम विख्यात अविमुक्त नामक्षेत्र मुझको प्याराहै १३ प्रथम अड़सठ ६८ तीर्थोंके स्थान कहेहैं उनमेंसे जहाँ रुद्रजी महाराज अपनी स्थिति रखते हैं और कभीभी उसको नहीं त्यागते हैं इसी हेतुसे उस तीर्थकानाम अविमुक्त क्षेत्र विख्यातहै यहक्षेत्र उन पूर्व्वोक्त स्थानोंसे उत्तम है १४ । १५ इस अविमुक्तक्षेत्रमें परमसिद्धि और परमगति है इसमें जप दान हवन तप ध्यान अध्ययन और अन्य २ जो २ सुकृत हैं सब अक्षयपुण्यकारी होते हैं हजारों जन्मोंकाभी संचित कियाहुआ पाप इस

क्ताग्निनादग्धमग्नौतूलमिवाहितम् १८ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याः शूद्रावैवर्णसङ्कराः । कृमिम्लेच्छाश्चयेचान्ये सङ्कीर्णाःपापयोनयः १९ कीटाःपिपीलिकाश्चैव येचान्येमृगप क्षिणः । कालेननिधनंप्राप्ता अविमुक्तेशृणुप्रिये ! २० चन्द्रार्द्धमौलिनःसर्वे ललाटाक्षावृ षध्वजाः । शिवेममपुरेदेवि ! जायन्तेतत्रमानवाः २१ अकामोवासकामोवा ह्यपितिर्यग्ग तोऽपिवा । अविमुक्तेत्यजन्प्राणान् ममलोकेमहीयते २२ अविमुक्तंयदागच्छेत् कदा चित्कालपर्ययात् । अश्मनाचरणौवद्धा तत्रैवनिधनंव्रजेत् २३ अविमुक्तंगतोदेवि ! न निर्गच्छेत्ततःपुनः । सोऽपिमत्पदमाप्नोति नात्रकार्याविचारणा २४ वस्त्रप्रदंरुद्रकोटिं सिद्धेश्वरमहालयम् । गोकर्णंरुद्रकर्णञ्च सुवर्णाक्षंतथैवच २५ अमरञ्चमहाकालं तथाकां यावरोहणम् । एतानिहिपवित्राणि सान्निध्यात्सन्ध्ययोर्द्वयोः २६ कालञ्जरवनञ्चैव शंकु कर्णंस्थलेश्वरम् । एतानिचपवित्राणि सान्निध्याद्धिममप्रिये । अविमुक्तेवरारोहे ! त्रिस न्ध्यंनात्रसंशयः २७ हरिश्चन्द्रंपरंगुह्यं गुह्यमाम्रातकेश्वरम् । जलेश्वरंपरंगुह्यं गुह्यंश्री पर्वतंतथा २८ महालयंतथागुह्यं कृमिचण्डेश्वरंशुभम् । गुह्यातिगुह्यंकेदारं महाभैरव मेवच २९ अष्टावेतानिस्थानानि सान्निध्याद्धिममप्रिये ! । अविमुक्तेवरारोहे ! त्रिसन्ध्यं नात्रसंशयः ३० यानिस्थानानिश्रूयन्ते त्रिषुलोकेषुसुव्रते ! । अविमुक्तस्यपादेषु नित्यं सन्निहितानिवै ३१ अथोत्तरांकथांदिव्यामविमुक्तस्यशोभने । स्कन्दोवक्ष्यतिमाहात्म्य मृषीणांभावितात्मनाम् ३२ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेऽशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८० ॥

अविमुक्त क्षेत्रमें प्रवेश होतेही नष्टहोजाताहै इस क्षेत्रमें पाप ऐसे दग्ध होजाते हैं जैसेकि अग्निमें रुई भस्महोजाती है १६ । १८ और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र वर्णसंकर पातकी जीव कीट पतंग मृ- गपक्षी इनमेंसे कोई भीजो इस अविमुक्त तीर्थपर मरतेहैं वहसब हे देवि मेरे शिवलोकमें प्राप्तहोकर चन्द्रमाको मस्तकमें धारण करनेवाले रुद्रहोजातेहैं १९।२१ कामना विचारे अथवा विनाविचारेहु- एही कोई मनुष्य अथवा पशुआदिकभी जो अविमुक्ततीर्थपर प्राणोंको त्यागताहै वहमेरेलोकमें अवश्य प्राप्त होता है २२ जो कोई अविमुक्त तीर्थ परजाकर पैरोंमें पत्थर बाँधकर मणिकर्णिका घाटपर वि- ना लौटेहुए उसी स्थानपर प्राणोंको त्याग देताहै वह निस्सन्देह मेरेहीलोकमें प्राप्त होताहै २३ । २४ वस्त्रप्रदनामक रुद्रकोटि, सिद्धेश्वरनामक महास्थान गोकर्ण, रुद्रकर्ण सुवर्णाक्ष, अमर, महाकाल और कायावरोहण यहसब महापवित्र तीर्थ हैं इनसब तीर्थोंमें दोनों संधियोंके समय मेरी स्थिति रहती है २५।२६ इनके विशेष कालंजर पर्व्वत शंकुकर्ण और स्थलेश्वर यहसब तीर्थभी मेरेही स्थिति होनेसे पवित्र हैं परन्तु हे प्रिये इस अविमुक्त क्षेत्रमेंतो मेरी स्थिति निस्सन्देह तीनोंही कालोंमें रहती है इसके सिवाय हरिश्चन्द्र तीर्थ परमगुप्त है आम्रातकेश्वर तीर्थ, जलेश्वर तीर्थ श्री पर्व्वत क्षेत्रभी महापवित्रहैं २७ । २८ महालय तीर्थ, कृमिचंडेश्वर केदारनाथजी और महाभैरव क्षेत्र यहसबभी पवित्र हैं हे वरारोहे इनपूर्वकहे हुए आठों स्थानोंमें जैसी मेरी दोनों संधियोंमें स्थिति वैसीही स्थिति इस अविमुक्त तीर्थरूपी क्षेत्रमें मेरी तीनों संधियोंमें रहाकरतीहै २९ । ३० और है

(सूत उवाच) कैलासपृष्ठमासीनं स्कन्दंब्रह्मविदांवरम्। पृच्छन्तिऋषयःसर्वेसन
काद्यास्तपोधनाः १ तथाराजर्षयःसर्वे येभक्तास्तुमहेश्वरे। ब्रूहित्वंस्कन्द ! भूलोके यत्र
नित्यंमवस्थितः २ (स्कन्द उवाच) महात्मासर्वभूतात्मा देवदेवःसनातनः। घोररूपंस
मास्थाय दुष्करंदेवदानवैः ३ आभूतसंप्लवंयावत् स्थाणुभूतस्थितःप्रभुः। गुह्यानांपरमं
गुह्यमविमुक्तमितिस्मृतम् ४ अविमुक्तेसदासिद्धिर्यत्रनित्यंभवस्थितः। अस्यक्षेत्रस्य
माहात्म्यं यदुक्तंत्वीश्वरेणतु ५ स्थानान्तरंपवित्रञ्च तीर्थमायतनंतथा। श्मशानसंस्थितं
वेश्म दिव्यमन्तर्हितञ्चयत् ६ भूलोकेनैवसंयुक्त मन्तरिक्षेशिवालयम्। अयुक्तास्तुन
पश्यन्ति युक्ताःपश्यन्तिचेतसा ७ ब्रह्मचर्यव्रतोपेताःसिद्धावेदान्तकोविदाः। आदेहपत
नाद्यावत् तत्क्षेत्रंयोनमुञ्चति ८ ब्रह्मचर्यव्रतैःसम्यक् सम्यगिष्टंमुखैर्मखैः। अपापा-
त्मागतिःसर्वा यातूक्ताचक्रियावताम् ९ यस्तत्रनिवसेद्विप्रो संयुक्तात्मासमाहितः। त्रि
कालमपिभुञ्जानो वायुभक्षसमोऽभवत् १० निमेषमात्रमपियोह्यविमुक्तेतुभक्तिमान्।
ब्रह्मचर्यसमायुक्तः परमंप्राप्नुयात्तपः ११ यत्रमासंवसेद्धीरो लब्धाहारोजितेन्द्रियः !। स
म्यक्तेनव्रतंचीर्णं दिव्यंपाशुपतंमहत् १२ जन्ममृत्युभयन्तीर्त्वा सयातिपरमाङ्गतिम्।

प्रिये जिन २ स्थानोंमें मेरी स्थिति सुनीजाती है वहसब तीर्थ इस अविमुक्त तीर्थके चरणोंमें नित्य-
ही स्थितरहते हैं इस अविमुक्त तीर्थकी महाउत्तम कथाको आगेके समयमें स्वामिकार्तिक तुम्हारा
पुत्र ऋषियोंसेकहेगा२१।२२॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामशीत्यधिकशततमोऽध्यायः१८०॥
सूतजीबोले कि बड़े ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ कैलासपर बैठेहुए स्वामिकार्तिकजीसे सनकादिक ऋषि
और सबराजर्षि लोग यह पूछनेलगे कि हेब्रह्मन् स्वामिकार्तिकजी इसभूलोकमें जहाँ शिवजी महाराज
नित्य स्थितरहतेहैं उसस्थानको आप कृपाकरके हमें सुनाइये स्वामिकार्तिकजी बोले कि सब भूतोंके
आत्मा महात्मा देवदेवजी तपके आश्रयहो,प्रलय कालपर्य्यन्त स्थाणुरूप अर्थात् स्तंभके समान
स्थितहोकर अविमुक्त तीर्थपर रहतेहैं१।४वहाँ नित्यही शिवजीकी स्थिति होनेसे सदैव सिद्धियोंका
वासरहताहै शिवजीने जैसा कि इस क्षेत्रका माहात्म्य कहाहै वैसा अन्यकिसीभी क्षेत्रकानहीं कहाहै
इस अविमुक्त क्षेत्रके समान पवित्रभीकोई स्थान नहीं है शिवजीकी स्थिति श्मशान आकाश और
शिवालय आदि किसी स्थानमें ऐसीनहीं है जैसीकि इसमें सदैव स्थिति रहती है इनशिवजी महाराज
को अयोग्यपुरुषनहीं देखसक्ते परन्तुयोगी जन लोग अपने चित्तसे ध्यानकरके उनको अविमुक्ततीर्-
थ पर देखते हैं ५।७ ब्रह्मचर्य्य व्रतमें स्थित सिद्धपुरुष और वेदान्ती लोग अपने शरीरके क्षय प-
र्य्यन्त इसक्षेत्रको नहींत्यागते हैं वहसब पुरुष यज्ञों के फलोंको प्राप्तहोकर सबपापों से छूट उत्तम स-
द्गतियोंको प्राप्तहोते हैं ८ और मुक्तात्मा होकर जो कोई ब्राह्मण सावधानतासे वहां वासंकरता है
वह तीनोंकालों में भी भोजन करनेवाला होके वायु भक्षणकरनेवाले के समान पुण्यको प्राप्तहोकर
सद्गतिको प्राप्तहोजाताहै९।१०जो पुरुष पलमात्रभी भक्तिपूर्व्वक ब्रह्मचर्य्य धारणकर सावधानी से
इसक्षेत्रमें रहताहै वह परमतपस्या के फलको प्राप्तहोताहै और जो धैर्य्यवान् पुरुष जितेन्द्रिय होके

नैश्रेयसींगतिंपुण्यां तथायोगगतिंव्रजेत् १३ नहियोगगतिर्दिव्या जन्मान्तरशतैरपि। प्राप्यतेक्षेत्रमाहात्म्यात् प्रभावाच्छङ्करस्यतु १४ ब्रह्महायोऽभिगच्छेत्तु अविमुक्तंकदाच न। तस्यक्षेत्रस्यमाहात्म्याद् ब्रह्महत्यानिवर्तते १५ आदेहपतनाद्यावत् क्षेत्रंयोनविमुञ्च ति। नकेवलंब्रह्महत्या प्राकृताचनिवर्तते १६ प्राप्यविश्वेश्वरंदेवं नसाभूयोऽभिजायते। अनन्यमानसोभूत्वा योविमुक्तंनमुञ्चति १७ तस्यदेवःसदातुष्टः सर्वान्कामान्प्रयच्छ ति। द्वारंयत्सांख्ययोगानां सतत्रवसतिप्रभुः १८ सगणोहिभवोदेवो भक्तानामनुकम्प या। अविमुक्तंपरंक्षेत्रमविमुक्तेपरागतिः १९ अविमुक्तेपरासिद्धि रविमुक्तेपरंपदम्। अ विमुक्तंनिषेवेत देवर्षिगणसेवितम् २० यदीच्छेन्मानवोधीमान् नपुनर्जायतेक्वचित्। मे रोःशक्तोगुणान्वक्तुं द्वीपानाञ्चतथैवच २१ समुद्राणाञ्चसर्वेषां नाविमुक्तस्यशक्यते। अन्त कालेमनुष्याणां छिद्यमानेषुमर्मसु २२ वायुनाप्रेर्यमाणानां स्मृतिर्नैवोपजायते। अविमु क्तेह्यन्तकाले भक्तानामीश्वरःस्वयम् २३ कर्मभिःप्रेर्यमाणानां कर्णजापंप्रयच्छति। म णिकर्ण्यांत्यजन्देहं गतिमिष्टांव्रजेन्नरः २४ ईश्वरप्रेरितोयाति दुष्प्रापामकृतात्मभिः। अ शाश्वतमिदंज्ञात्वा मानुष्यंबहुकिल्बिषम् २५ अविमुक्तंनिषेवेत संसारभयमोचनम्। योगक्षेमप्रदंदिव्यं बहुविघ्नविनाशनम् २६ विघ्नैश्चालोड्यमानोऽपि योविमुक्तंनमुञ्च

वहां एकमहीनेतक वासकरताहै उसको महादिव्य पाशुपतव्रत कियेहुएका पुण्यप्राप्तहोताहै ११।१२ अर्थात् जन्ममृत्युके भयको त्यागकर परमउत्तमगति मोक्षरूपी फलको पाताहै १३ शिवजीकी म- हिमासे जो इसक्षेत्रमें फलप्राप्तहोताहै वह सैकड़ोंजन्मोंतक योगकरनेसेभी कहींनहीं पासकाहै १४ ब्राह्मणकी हत्या करनेवालाभी जो पुरुष इस अविमुक्त तीर्थपर जाताहै उसकी भी ब्रह्महत्या दूर होजाती है १५जो आजन्म इस तीर्थको नहीं छोड़ताहै और एकाग्रचित्तसे इसमेंवासकरताहै उसकी ब्रह्महत्यादूरहोजाती है और वह शिवलोक में प्राप्तहोकर महादेवजी की प्रसन्नतासे उसकी सवका- मनाभी सिद्धहोजाती हैं उसपुरुषकी वहीगतिहोती है जो सांख्ययोगवालों की होती है १६।१८ इस अविमुक्त तीर्थपर महादेवजी अपने गणोंसमेत वासकरते हैं इसीहेतुसे अविमुक्त तीर्थपर परम सिद्धि और परमगति होती है इसतीर्थ के सेवनसे परमपद मिलताहै और जो बुद्धिमान् पुरुष अ- विमुक्त तीर्थको सेवन करताहै वह इस संसारमें फिर जन्म नहीं लेता है और सुमेरुपर्वत के सातों समुद्रों के और सातोंद्वीपों के भी गुणोंको चाहे कोई पुरुषकहदे परन्तु इस अविमुक्त तीर्थके गुण किसी से भी नहीं कहेजासक्के हैंअन्त समय जब मनुष्यों के मर्मछेदन होते हैं तबप्राण वायुके निक- लने के समय किसीको भी स्मृति नहींरहती है परन्तु इस अविमुक्त तीर्थपर भक्तों के अन्तकाल के समय कर्मोंसे प्रेरेहुए आप महादेवजी उनके कानमें महामंत्र पढ़देतेहैं तब मणिकर्णिका आदिक तीर्थोंपर शरीरको त्यागताहुआ भक्तपुरुष अपने मनोवांछित फलको प्राप्तहोताहै १९।२४ और शिव- जीकी आज्ञासे दुर्लभ उत्तमगतिको प्राप्तहोकर सदैव आनन्दकरता है इसमनुष्यको उचितहै कि श- रीरको सदैव अनित्य और पापात्मा जानकर इससंसारके क्लेशों से निवृत्तहोनेके निमित्त इस अवि-

ति। समुञ्चतिजरांमृत्युं जन्मचैतदशाश्वतम्॥ अविमुक्तेप्रसादात्तु शिवसायुज्यमाप्नुया
यात् २७ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८१॥

(देव्युवाच) हिमवन्तंगिरित्यक्त्वामन्दरंगन्धमादनम्। कैलासंनिषधञ्चैव मेरुपृष्ठंमहा
द्युति १ रम्यंत्रिशिखरञ्चैव मानसंसुमहागिरिम्। देवोद्यानानिरम्याणि नन्दनंवनमेवच
२ सुरस्थानानिमुख्यानि तीर्थान्यायतनानिच। तानिसर्वाणिसन्त्यज्य अविमुक्तेरतिःक
थम् ३ किमत्रसुमहत्पुण्यं परंगुह्यंवदस्वमे। येनत्वंरमसेनित्यं भूतसम्पद्गुणैर्युतः ४ क्षे
त्रस्यप्रवरत्वञ्च येचतत्रनिवासिनः। तेषामनुग्रहःकश्चित्तत् सर्वंब्रूहिशङ्कर! ५ (शङ्कर
उवाच) अत्यद्भुतमिमंप्रश्नं यत्त्वंपृच्छसिभामिनि। तत्सर्वंसंप्रवक्ष्यामि तन्मेनिगदतः
शृणु ६ वाराणस्यांनदीपुण्या सिद्धगन्धर्वसेविता। प्रविष्टात्रिपथागङ्गा तस्मिन्क्षेत्रेमम
प्रिये! ७मामेवप्रीतिसन्तुष्टा कृत्तिवासश्चसुन्दरि!। सर्वेषांचैवस्थानानां स्थानन्तत्तु
यथाधिकम् ८ तेनकार्येणसुश्रोणि! तस्मिन्स्थानेरतिर्मम। तस्मिन्लिङ्गेचसान्निध्यं मम
देवि! सुरेश्वरि! ९ क्षेत्रस्यचप्रवक्ष्यामि गुणान्गुणवतांवरे!। यान्श्रुत्वासर्वपापेभ्यो
मुच्यतेनात्रसंशयः १० यदिपापोयदिशठो यदिवाधार्मिकोनरः। मुच्यतेसर्वपापेभ्यो ह्य
विमुक्तंव्रजेद्यदि ११ प्रलयेसर्वभूतानां लोकेस्थावरजङ्गमे। नहित्यक्ष्यामितत्स्थानं

मुक्त तीर्थको सेवे यह दिव्यतीर्थयोग क्षेमका देनेवाला और विघ्नोंका नाश करने वालाहै २५। २६ जो पुरुष अनेकप्रकारके कष्टोंकोभी सहकर अविमुक्त तीर्थका सेवनकरताहै वह जरा जन्ममृत्यु आदि रोगोंसे छूट शिवजीके संग सायुज्य मोक्षको प्राप्त होताहै २७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८१॥

श्रीपार्वतीजी कहती हैं कि हे महादेवजी हिमवान् मन्दराचल, गन्धमादन, कैलास, निषध और सुमेरु इनसब उत्तम पर्व्वतोंको और रमणीक त्रिशिखर पर्व्वत मानस पर्व्वत देवताओंके रमणीक नन्दनादिकवन और देवताओंके मुख्य २ स्थान तीर्थ इनसबको त्यागकर केवल इस अविमुक्त तीर्थही पर आपको ऐसी रुचि किसकारणसेहै इस तीर्थपर क्या महत्गुह्य पुण्यहै जिससे कि आप अपने सबगणों समेत आनन्दसे वासकरतेहो और इसक्षेत्रपर वासकरनेवाले मनुष्योंपर आपकौनसा अनुग्रह करतेहो यह सब मुझसे वर्णनकीजिये १। ५ महादेवजीबोले हे भामिनि यह तेराप्रश्न अत्यन्त अद्भुतहै मैं सबको वर्णन करताहूं तू सावधानहोकर सुन काशीपुरीमें सिद्ध गन्धर्वोंसे सेवितकी हुई महापवित्रनदीहै उसीमें यह त्रिपथा गंगाजी भी प्रवेशहोरहीहैं वह नदी मेरीही प्रीतिकरके प्रसन्न रहती है इसीसे यहस्थान अन्य सबस्थानोंसे बड़ा पुण्यकारी है हे सुश्रोणि इसीसे मेरीभी उस पर परमप्रीतिरहती है हे सुरेश्वरि उसी क्षेत्रके लिङ्गमें मेरी स्थिति रहतीहै ६। ९ अबमें इसक्षेत्रकेउन गुणोंको वर्णनकरताहूं जिनके श्रवणमात्रहीसे मनुष्य निस्सन्देह सबपापोंसे छूटजाताहै १० जोपापी मूर्ख अथवा धर्मवाला इनमेंसे कोईभी जो इस अविमुक्त तीर्थपर जाताहै वह सब पापोंसे छूटजाता है ११ और जब कि सब स्थावर जंगम जगत्की प्रलयहोजाती है उससमयमेंभी मैं इसस्थानको

महागणशतैर्वृतः १२ यत्रदेवाःसगन्धर्वाः सयक्षोरगराक्षसाः। वक्त्रंममममहाभागे ! प्रवि
शन्तियुगक्षये १३ तेषांसाक्षादहंपूजां प्रतिगृह्णामिपार्वति ! । सर्वगुह्योत्तमंस्थानं
ममप्रियतमंशुभम् १४ धन्याःप्रविष्टाःसुश्रोणि ! ममभक्ताद्विजातयः। मद्भक्तिपरमानि
त्यं येमद्भक्तास्तुतेनराः १५ तस्मिन्प्राणान्परित्यज्य गच्छन्तिपरमाङ्गतिम्। सदायज
तिरुद्रेण सदादानंप्रयच्छति १६ सदातपस्वीभवति अविमुक्तस्थितोनरः। योमांपूजय
तेनित्यं तस्यतुष्याम्यहंप्रिये ! १७ सर्वदानानियोदद्यात्सर्वयज्ञेषुदीक्षितः। सर्वतीर्थाभि
षिक्तश्चसप्रपद्येतमामिह १८ अविमुक्तंसदादेवि ! येव्रजन्तिसुनिश्चिताः। तेतिष्ठन्तीह
सुश्रोणि ! त्वद्भक्ताश्चत्रिविष्टपे १९ मत्प्रसादात्तुतेदेवि। दीव्यन्तिशुभलोचने !। दुर्द्ध
र्षाश्चैवदुर्द्धर्षा भवन्तिविगतज्वराः २० अविमुक्तंशुभंप्राप्य मद्भक्ताःकृतनिश्चयाः। निर्धू
तपापविमला भवन्तिविगतज्वराः२१ (पार्वत्युवाच) दक्षयज्ञस्त्वयादेव ! मत्प्रियार्थं
निषूदितः। अविमुक्तगुणानान्तु नतृप्तिरिहजायते २२ (ईश्वरउवाच) क्रोधेनदक्षयज्ञस्तु
त्वत्प्रियार्थेविनाशितः। महाप्रिये ! महाभागे ! नाशितोऽयंवरानने २३ अविमुक्तेयज
न्तेतु मद्भक्ताःकृतनिश्चयाः। नतेषांपुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि २४ (देव्युवाच) दु
र्लभास्तुगुणादेव ! अविमुक्तेतुकीर्तिताः। सर्वांस्तान्ममतत्त्वेन कथयस्वमहेश्वर ! २५

नहींत्यागता १२ और युगोंके अन्तमें इसी स्थानपर सब देवता गन्धर्व यक्ष उरग और राक्षसादिक
जीवमात्र मेरेमुखमें प्रवेश करजातेहैं और उनकी पूजाकोमैं साक्षात् ग्रहणकरताहूं यहमेरास्थान सब
स्थानोंसेउत्तमहै और मुझको परमप्रियहै १३।१४ इस मेरे तीर्थपर जो भक्तजनजातेहैं वह परमधन्यहैं
जो द्विज मेरीभक्तिकरके यहाँ वासकर अपने प्राणोंको त्यागतेहैं वह परमगतिको प्राप्तहोतेहैं, इस
अविमुक्त तीर्थपर स्थितहुआ मनुष्य जो सदैव रुद्र समेत पूजाकरताहै रुद्रही समेत दानकरताहै
और तपस्यायुक्तहै अथवा मुझको पूजता है उसपर में सदैव प्रसन्न रहताहूं १५।१७ जो पुरुष
सर्वस्व दानकरताहै सबयज्ञोंमें दीक्षालेताहै और सब तीर्थोंके जलका अभिषेक करताहै वह मुझको
इस तीर्थपर प्राप्त होताहै १८ हे पार्व्वति अविमुक्त तीर्थपर वासकरनेवाले पुरुष और तेरे भक्तजन
स्वर्ग में प्राप्त होतेहैं और मेरी कृपासे वहाँ दुर्धर्ष होके क्रीड़ा करतेहुए भी सब पापों से रहित रहते
हैं १९।२० मेरे भक्तजन इस शुभ तीर्थपर प्राप्त होकर सब पापों से रहितहो निर्म्मल होजाते
हैं २१ पार्व्वतीजी पूछती हैं कि हे देव आपने मेरे प्यारके निमित्त दक्षके यज्ञका नाश करदियाथा
ऐसी आपकी मेरे ऊपर कृपा रहती है अब मेरी यह प्रार्थनाहै कि मेरी तृप्ति अभी इस अविमुक्त तीर्थ
के गुणोंसे नहींहुई इससे औरभीगुण वर्णनकीजिये जिससे कि मेरी तृप्तिहो २२ महादेवजी बोले कि
हे प्रिये हे महाभागे यह सत्यहै कि मैंने तेरीही प्रीतिके अर्थ अपने क्रोधसे दक्षका यज्ञ विध्वंश कर
दियाथा २३ इस अविमुक्त तीर्थपर मेरे भक्तजन जो निश्चयकरके मेरा पूजनकरतेहैं वह सैकड़ों
कल्पोंतकभी इससंसार में फिरनहीं जन्मलेते २४ पार्वतीजी बोलीं हे देव आपने जो इस अविमुक्त
तीर्थ के बड़े २ दुर्लभगुण वर्णनकियेहैं उनसबको आप तत्त्वपूर्व्वक अच्छी रीतिसे वर्णनकीजिये २५

कौतूहलंमहादेव ! हृदिस्थंममवर्तते। तत्सर्वंममतत्त्वेन आख्याहिपरमेश्वर ! २६ (ई श्वर उवाच) अक्षयाह्यमराश्चैव ह्यदेहाश्चभवन्तिते। मत्प्रसादाद्वरारोहे ! मामेवप्रवि शन्तिवै २७ ब्रूहिब्रूहिविशालाक्षि ! किमन्यच्छ्रोतुमर्हसि। (देव्युवाच) अविमुक्तेमहा क्षेत्रे अहोपुण्यमहोगुणाः २८ नतृप्तिमधिगच्छामि ब्रूहिदेव ! पुनर्गुणान्। (ईश्वर उ वाच) महेश्वरि ! वरारोहे ! शृणुतांस्तुममप्रिये ! २९ अविमुक्तेगुणायेतु तथान्यानपि तच्छृणु। शाकपर्णाशिनोदान्ताः संप्रक्षाल्यामरीचिपाः ३० दन्तोलूखलिनश्चान्ये अश्म कुट्टास्तथापरे। मासिमासिकुशाग्रेण जलमास्वादयन्तिवै ३१ वृक्षमूलनिकेताश्च शि लाशय्यास्तथापरे। आदित्यवपुषःसर्वे जितक्रोधाजितेन्द्रियाः ३२ एवंबहुविधैर्धर्मैरन्य त्रचरितव्रताः। त्रिकालमपिभुञ्जाना येऽविमुक्तनिवासिनः ३३ तपश्चरन्तिवान्यत्र क लांनार्हन्तिषोडशीम्। येऽविमुक्तेवसन्तीह स्वर्गेप्रतिवसन्तिते ३४ मत्समःपुरुषोना स्ति त्वत्समानास्तियोषिताम्। अविमुक्तसमंक्षेत्रं नभूतंनभविष्यति ३५ अविमुक्तेपरो योगो ह्यविमुक्तेपरागतिः। अविमुक्तेपरोमोक्षः क्षेत्रंनैवास्तितादृशम् ३६ परंगुह्यंप्रव क्ष्यामि तत्त्वेनवरवर्णिनि !। अविमुक्तेमहाक्षेत्रे यदुक्तंहिमयापुरा ३७ जन्मान्तरशतैर्दे वि ! योगोऽयंयदिलभ्यते। मोक्षःशतसहस्रेण जन्मनालभ्यतेनवा ३८ अविमुक्तेनसन्दे हो मद्भक्तःकृतनिश्चयः। एकेनजन्मनासोऽपि योगंमोक्षंचविन्दति ३९ अविमुक्तेनरा

हे देव मेरे हृदयमें जो बड़ाभारी आश्चर्य्य होरहाहै इसीसे मैं बारंबार उसके तत्त्व समेत गुणोंके सुननेकी इच्छाकरतीहूं महादेवजीबोले हे देवि अविमुक्त तीर्थकी सेवा करनेवाले पुरुषमेरी कृपासे अक्षय अमरताको प्राप्तहोकर मुझहीको प्राप्तहोजातेहैं हे विशालाक्षि इससे अधिक और क्या सुनने की इच्छाकरतीहो, पार्वतीजीबोलीं हे महादेवजी बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि इसअविमुक्त क्षेत्रके बड़े२ गुणहैं उनसे मेरी तृप्तिनहींहोती है इसहेतुसे फिर उनको वर्णनकीजिये यह सुनकर महादेव-जीने कहा हे पार्वती तू मेरी परमप्यारीहै इससे फिर उसके गुणोंको कहताहूं तू चित्तसेसुन २६।२९ इसके अनन्तगुणहैं जो शाकपत्रादिके भोजन करनेवाले जितेन्द्रिय दाँतोंसे कच्चे अन्नोंके खानेवाले प्रतिमास कुशाके अग्रभागमात्र जलके चाटनेवाले वृक्षोंकीजड़ों में वासकरनेवाले शिलापर सोने वाले सूर्य्यके समान तेजस्वी शरीरवाले क्रोधसे रहित अनेक धर्मोंके आचरण करनेवाले ऋषिजो अन्यत्र वासकरतेहैं उनहींके समान वहपुरुषहैं जो इस अविमुक्त तीर्थपर त्रिकाल भोजनकरते हैं ३०।३३ आशययहहै कि जो अन्यत्रकहीं तपकरतेहैं वह इस अविमुक्त तीर्थकी सोलहवीं कला कोभी नहीं प्राप्तहोतेहैं ३४ हे पार्वति जैसे न मेरे समान कोईपुरुषहै न तेरे समान कोई स्त्रीहै इसी प्रकार इस अविमुक्त तीर्थके समान कोई तीर्थभी नहै न होगा ३५ अविमुक्त तीर्थपर परमयोग परम गति और परममोक्षहै इसीसे इसके समान कोई क्षेत्रनहींहै ३६ हे वरवर्णिनि अवतत्त्वसे परम गुह्य माहात्म्यकोसुन कि सैकड़ों जन्मोंके योगके प्रभावसे इस अविमुक्त तीर्थ की प्राप्तिहोती है इस अविमुक्त तीर्थपर प्राप्तहुआ मेराभक्त एकही जन्मकरके मोक्ष और योगको प्राप्तहोजाताहै ३७।३९

देवि ! येव्रजन्तिसुनिश्चिताः । तेविशन्तिपरंस्थानं मोक्षंपरमदुर्लभम् ४० पृथिव्या
मीदृशंक्षेत्रं नभूतंनभविष्यति । चतुर्मूर्त्तिःसदाधर्मो तस्मिन्सान्निहितःप्रिये ! ४१ चतु
र्णामपिवर्णानां गतिस्तुपरमास्मृता । (देव्युवाच) श्रुतागुणास्तेक्षेत्रस्य इहचान्यत्र
येप्रभो ! ४२ वदस्वभुविविप्रेन्द्राः कंवायज्ञैर्यजन्तिते । (ईश्वर उवाच) दृष्ट्याचै
वतुमन्त्रेण मामेवहियजन्तिये ४३ नतेषांभयमस्तीति भवंरुद्रंयजन्तियत् । अमन्त्रो
मन्त्रकोदेवि ! द्विविधोविधिरुच्यते ४४ साङ्ख्यंचैवाथयोगश्च द्विविधोयोगउच्यते
सर्वभूतस्थितंयोमां भजत्येकत्वमास्थितः ४५ सर्वथावर्तमानोऽपि सयोगीमयिवर्त्तते।
आत्मौपम्येनसर्वत्र सर्वंचमयिपश्यति ४६ तस्याहंनप्रणश्यामि सचमेनप्रणश्यति। नि
र्गुणःसगुणोवापियोगश्चकथितोभुवि ४७ सगुणश्चैवविज्ञेयो निर्गुणोमनसःपरः। एतत्ते
कथितंदेवि ! यन्मांत्वंपरिपृच्छसि ४८ (देव्युवाच) याभक्तिस्त्रिविधाप्रोक्ता भक्तानां
वहुधात्वया । तामहंश्रोतुमिच्छामि तत्त्वतःकथयस्वमे ४९ (ईश्वरउवाच) शृणुपार्वति !
देवेशि ! भक्तानांभक्तिवत्सले । प्राप्यसाङ्ख्यञ्चयोगञ्च दुःखान्तञ्चनियच्छति ५० सदा
यःसेवतेभिक्षां ततोभवतिरञ्जितः । रञ्जनात्तन्मयोभूत्वा लीयतेसतुभक्तिमान् ५१
शास्त्राणान्तुवरारोहे ! वहुकारणदर्शिनः । नमांपश्यन्तितेदेवि ! ज्ञानवाक्यविवादिनः ५२

हेदेवि जो मनुष्य निश्चय करके अविमुक्ततीर्थमें प्राप्त होते हैं वह परममोक्षपदके स्थानको पाते
हैं ४० पृथ्वीपर इस क्षेत्रके समान कोई क्षेत्रनहै न कभी होगा इस क्षेत्रमेंधर्म अपनी चारमूर्तियों
से सदैव प्राप्त रहताहै ४१ यहां चारोंवर्णोंकी परमगति होती है पार्वतीजी कहती हैं हेप्रभो आपके
इस क्षेत्रके गुण तो मैंने अच्छे प्रकारसे सुने परन्तु अब यह भी कृपाकरके बताइये कि ब्राह्मणलोग
इस पृथ्वीपर यज्ञोंकरके किसका पूजन करते हैं महादेवजीने कहा हेसुन्दरि यज्ञ करके और मंत्र
करके सब लोग मेराही पूजन करते हैं ४२।४३ जो रुद्र और महादेवका पूजन करते हैं उनको
इसलोकमें भयनहीं होता हेदेवि मंत्रवाली और विनामंत्रवाली दो प्रकारकी विधि होती है ४४
सांख्य और योग यह दो प्रकारके योग कहाते हैं, जो पुरुष सवभूतों में स्थित हुए मुझको एकरम
मानताहै ४५ वह सब प्रकारसे वर्त्तमान हुआ पुरुष योगी कहाताहै जो पुरुष सवजीवोंमें आत्माके
समान मुझहीको आत्मारूपदेखताहै और उसकी वुद्धिसे मैंकभी अलग नहीं हूं वहभी कभी नष्टनहीं
होताहै निर्गुण और सगुण यह दो प्रकारके योग कहाते हैं उनदोनों में सगुणयोग तो जानाजाताहै
और निर्गुण योग मनसे भी चिन्तवन नहीं किया जाताहै हेदेवि जो २ वातेंतैंने मुझसे पूछीं वहसब
मैंने तेरे आगे वर्णनकीं ४६।४८ पार्वतीजी ने पूछा कि हेशिवजी आपने जो भक्तोंकी तीन प्रकारकी
भक्ति वर्णनकी उसको भी आपसे मैं यत्नपूर्वक सुनना चाहती हूं—महादेवजी वोले हेभक्तोंकी भक्ति
करने वाली पार्वती मनुष्य सांख्य और योगको प्राप्तहोकर अपने दुःखोंका नाशकर देताहै ४९।५०
और जो सदैव भिक्षाका सेवन करताहुआ मुझमें अनुरक्त रहताहै वह भक्तिमान् पुरुष तन्मयहोकर
मेरे विषेही लीन होजाताहै ५१ और जो पुरुष शास्त्रोंके वहुत हेतु देखकर विवाद करनेवाले हैं वह

परमार्थज्ञानतृप्ता युक्ताजानन्तियोगिनः। विद्ययाविदितात्मानो योगस्यचद्विजातयः ५३
प्रत्याहारेणशुद्धात्मा नान्यथाचिन्तयेच्चतत् । तुष्टिश्चपरमांप्राप्य योगंमोक्षंपरंतथा ५४
त्रिभिर्गुणैःसमायुक्तो ज्ञानवान्पश्यतीहमाम् । एतत्तेकथितंदेवि ! किमन्यच्छ्रोतुमर्हसि
५५ भूयएववरारोहे ! कथयिष्यामिसुव्रते !। गुह्यंपवित्रमथवा यच्चापिहृदिवर्तते ५६
तत्सर्वंकथयिष्यामि शृणुष्वैकमना प्रिये !(देव्युवाच) त्वद्रूपंकीदृशंदेव ! युक्ताःपश्य
न्तियोगिनः ५७ पश्यन्मेसंशयंब्रूहि नमस्तेसुरसत्तम ! । (श्रीभगवानुवाच) अमूर्तं
चैवमूर्तंच ज्योतीरूपंहितत्स्मृतम् ५८ तस्योपलब्धिमन्विच्छन् यत्नःकार्योविजानता ।
गुणैर्वियुक्तोभूतात्मा एवंवक्तुंनशक्यते ५९ शक्यतेयदिवक्तुंवै दिव्यैर्वर्षशतैरपिवा । (देव्यु
वाच) किंप्रमाणन्तुतत्क्षेत्रं समन्तात्सर्वतोदिशम् ६० यत्रनित्यंस्थितोदेवो महादेवो
गणैर्युतः । (ईश्वर उवाच) द्वियोजनन्तुतत्क्षेत्रं पूर्वपश्चिमतःस्मृतम् ६१ अर्द्धयोज
नविस्तीर्णं तत्क्षेत्रंदक्षिणोत्तरम् । वाराणसीतदीयाच यावच्छुक्लनदीतुवै ६२ भीष्मच
ण्डिकमारभ्य पर्वतेश्वरमन्तिके। गणायत्रावतिष्ठन्ति सन्नियुक्ताविनायकाः ६३ कूष्माण्ड
राजःशम्भोश्च जयन्तश्चमदोत्कटाः । सिंहव्याघ्रमुखाःकेचिद्विकटाःकुब्जवामनाः ६४
यत्रनन्दीमहाकालश्चण्डघण्टोमहेश्वरः । दण्डचण्डेश्वरश्चैव घण्टाकर्णोमहाबलः ६५

मुझको नहीं देखते हैं ५२ और जो परमार्थज्ञानमें युक्तहोके तृप्तरहते हैं और ब्रह्मविद्याकरके आत्माको जानकर शुद्धात्मावाले हो मेरा अन्यथा चिन्तवन नहीं करते हैं वह परम तुष्टिको प्राप्तहोके योग मोक्षको प्राप्त होजाते हैं ५३।५४ ज्ञानी पुरुष तीनों गुणोंसे युक्तहोकर मुझको देखताहै हेदेवि यह सवतेरे आगे वर्णन किया अब क्या सुनना चाहती है ५५ हेवरारोहे मैं फिर भी तेरे मनकी इच्छाके अनुसार परम गुह्यमाहात्म्यको कहताहूं ५६ उस उत्तम माहात्म्यको एकाग्रचित्तसे श्रवणकर यह सुनकर पार्वतीजी बोलीं कि हेदेवदेव जिसको कि योगीजन देखा करते हैं वह आपका कौनसा और कैसा स्वरूप है हेसुरश्रेष्ठ मैं आपको नमस्कार करती हूं आप मेरे इस सन्देहको दूर कीजिये महादेवजी बोले कि वह मेरा ज्योतिस्स्वरूप मूर्त्ति रहितहै और मूर्त्तिसहित भी है उसके जानने के लिये ज्ञानी पुरुषको परमयत्न करना चाहिये गुणों से युक्त हुआ भूतात्मा पुरुष अच्छीरीति से उसस्वरूप के कहने को समर्थ नहीं है उस स्वरूपको दिव्य सैकड़ों वर्षोंके यत्नसे कहसक्ताहै-पार्वतीजीने पूछाहै महादेवजी जहां आप गुणोंसे युक्त होकर नित्य स्थित रहते हैं उस क्षेत्रका प्रमाणकितनाहै यहसब मेरे आगे कहिये यह सुनकर महादेवजीने कहा कि पूर्व और पश्चिममें दो२ योजन विस्तारवाला वह क्षेत्र है ५७।६१ उस सबमें आधेयोजनके प्रमाण में तो वह अविमुक्ततीर्थ प्रधानतासे वर्त्तमान है और विस्तार उसका दक्षिणोत्तर है वहां पवित्र गंगानदी बहरही है ६२ और भीष्मचंडिक क्षेत्रसे लेकर पर्वतेश्वर शिवजीकेस्थानतक विनायकों समेत शिवजीके वहगणरहते हैं जिनके कि मदोन्मत्त सिंह और भेड़िये आदिकोंके मुखहैं उनमें कोई कुबड़े कोई बौने और टेढ़े ऐसे शिवजी के गणहैं उसी स्थानमें महाकाल, चण्डघंट, दंडचंडेश्वर, और घंटाकर्ण इन नामोंवाले तथाबहुतसे अन्यनाम

एतेचान्येचबहवो गणाश्चैवगणेश्वराः। महोदरामहाकाया वज्रशक्तिधरास्तथा ६६ रक्ष
न्तिसततंदेवि! ह्यविमुक्तंतपोवनम्। द्वारेद्वारेचतिष्ठन्ति शूलमुद्गरपाणयः ६७ सुवर्णशृ
ङ्गींरौप्यखुराश्चैलाजिनपयस्विनीम्। वाराणस्यान्तुयोदद्यात्त्रिवर्णांकञ्जलोदने! ६८
गांदत्त्वातुवरारोहे! ब्राह्मणेवेदपारगे। आसप्तमंकुलंतेन तारितंनात्रसंशयः ६९ यो द
द्याद्ब्राह्मणेकिञ्चित् तस्मिन्क्षेत्रेवरानने!। कनकंरजतंवस्त्रमन्नाद्यंबहुविस्तरम् ७०
अक्षयंचाव्ययंचैव स्यात्तांतस्यसुलोचने। शृणुतत्त्वेनतीर्थस्य विभूतिंपुष्टिमेवच ७१
तत्रस्नात्वामहाभागे! भवन्तिनिरुजानराः। दशानामश्वमेधानां फलंप्राप्नोतिमानवः ७२
लब्धाप्नोतिधर्मात्मा तत्रस्नात्वावरानने!। बहुस्वल्पेचयोदद्याद् ब्राह्मणेवेदपारगे ७३
शुभाङ्गतिमवाप्नोति अग्निवच्चैवदीप्यते। वाराणसीजाह्नवीभ्यांसङ्गमेलोकविश्रुते ७४
दत्वान्नंचविधानेनन सभूयोऽभिजायते। एतत्तेकथितंदेवि! तीर्थस्यफलमुत्तमम् ७५
उपवासन्तुयःकृत्वा विप्रान्सन्तर्पयन्नरः। सौत्रामण्यश्चयज्ञस्य फलंप्राप्नोतिमानवः ७६
एकाहारस्तुयस्तिष्ठेन्मासंतत्रवरानने!। यावज्जीवकृतंपापं सहसातस्यनश्यति ७७ अ
ग्निप्रवेशंयेकुर्यु रविमुक्तेविधानतः। प्रविशन्तिमुखन्तेमे निःसन्दिग्धंवरानने ७८ दश
सौवर्णिकंपुष्पं योऽविमुक्तेप्रयच्छति। अग्निहोत्रफलंधूपे गन्धदानेतथाशृणु ७९ भूमि

वाले महा उदर वाले महाकाया वाले वज्र शक्ति आदि शस्त्रोंके धारण करने वाले होकर उस अवि
मुक्त तपोवनकी रक्षा करते हैं और बहुतसे शूल मुद्गर आदि शस्त्र धारण कियेहुए द्वार २ परखड़े
रहते हैं ६६।६७ और हेपार्वति जो पुरुष सुवर्णकी सींगिड़ियों से युक्त रूपेके खुरों समेत अधिक
दूध देने वाली तीनरंगोंसे युक्त गौको काशीजीमें वाराणसी नदीके ऊपर वेदपारगामी ब्राह्मणकेअर्थ
देताहै वह निस्सन्देह अपनी सातपीढ़ियोंको उद्धार करताहै ६८।६९ हे वरानने उस अविमुक्त तीर्थ
पर जो कोई सुवर्ण चाँदी वस्त्र और अन्नादिकका दान ब्राह्मणके अर्थ देताहै वह सब दान अक्षय
गुणवाले होजातेहैं अब इस तीर्थकी विभूतिके गुणकोसुनो ७० । ७१ हे महाभागे उस क्षेत्रपर स्ना
नकरके सबमनुष्य रोगोंसे रहितहोजातेहैं और दश अश्वमेध यज्ञोंका फलहोताहै ७२ हे वराननेजो
धर्मात्मा पुरुष वहाँ स्नानकरके ब्राह्मणके अर्थ कुछभी दानकरताहै वह शुभगतिको प्राप्तहोकर अग्नि
के समान प्रकाशितहोताहै जहाँ वाराणसी और गंगाजीका संगमलोकमें प्रसिद्धहै वहाँ जो विधि
पूर्वक अन्नका दानकरताहै वह फ़िर जन्म नहीं लेताहै हे देवि ऐसे २ प्रकारसे मैंने इस तीर्थका
फल तेरे आगे वर्णनकिया ७३ । ७५ जो इस तीर्थपर उपवास व्रतकरके ब्राह्मणोंको भोजनकरवा
ताहै वह सौत्रामणि यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै ७६ हे प्रिये वहाँ जो मनुष्य एकमास पर्य्यन्त दिनमें
एकवार भोजन करताहै उसके जन्मभरका सब पापनष्टहोजाताहै ७७ जो कोई इस अविमुक्त तीर्थ
पर विधि पूर्वक अग्निमें प्रवेशकरजाताहै वह निस्सन्देह मेरे मुखमें प्रवेश होजाताहै ७८ जो पुरुष
अविमुक्त तीर्थपर दशस्वर्णमयीमुद्रा (मुहर) दानकरताहै उसको अग्निहोत्र कियेकाफल प्राप्तहोताहै
और जो वहाँ धूप गंध आदिका दानकरता है वह भूमि दान कियेहुएका फल प्राप्तकरता है वहाँ जो

दानेनतत्तुल्यं गन्धदानफलंस्मृतम्। संमार्जनेपञ्चशतं सहस्रमनुलेपने ८० मालया
शतसाहस्रमनन्तंगीतवाद्यतः। (देव्युवाच) अत्यद्भुतमिदंदेव स्थानमेतत्प्रकीर्तित
म् ८१ रहस्यंश्रोतुमिच्छामि यदर्थन्त्वंनमुञ्चसि। (ईश्वर उवाच) आसीत्पूर्ववरारोहे!
ब्रह्मणस्तुशिरोवरम् ८२ पञ्चमंशृणुसुश्रोणि! जातंकाञ्चनसप्रभम्। ज्वलत्तत्पञ्चमंशीर्षं
जातंतस्यमहात्मनः ८३ तदेवमब्रवीद्देवि! जन्मजानामितेह्यहम्। ततःक्रोधपरीतेन सं
रक्तनयनेनच ८४ वामाङ्गुष्ठनखाग्रेण छिन्नंतस्यशिरोमया। (ब्रह्मोवाच) तदानिरपराध
स्य शिरश्छिन्नंत्वयामम ८५ तस्माच्छापसमायुक्तः कपालीत्वंभविष्यसि। ब्रह्महत्याकुलो
भूत्वा चरतीर्थानिभूतले ८६ ततोऽहंगतवान्देवि! हिमवन्तंशिलोच्चयम्। तत्रनारायणः
श्रीमान्मयाभिक्षांप्रयाचितः। ८७ ततस्तेनस्वकंपार्श्वं नखाग्रेणविदारितम्। स्रवतोम
हतीधारा तस्यरक्तस्यनिःसृता ८८ प्रयातासातिविस्तीर्णा योजनार्द्धशतन्तदा। नसंपूर्णं
कपालन्तु घोरमद्भुतदर्शनम् ८९ दिव्यंवर्षसहस्रन्तु साचधाराप्रवाहिनी। प्रोवाचभगवा
न्विष्णुः कपालंकुतईदृशम् ९० आश्चर्यभूतंदेवेश! संशयोहृदिवर्त्तते। कुतश्चसम्भवो
देव! सर्वमेतद्ब्रूहिपृच्छतः ९१ (देवदेव उवाच)। श्रूयतामस्यहेदेव! कपालस्यतुसम्भ
वः। शतंवर्षसहस्राणां तपस्तप्तासुदारुणम् ९२ ब्रह्मासृजद्वपुर्दिव्यमद्भुतंलोमहर्षणम्।

बुहारी दानकरताहै उसको पांचसौ ५०० रुपयोंके दानका फल मिलता है चन्दनदानकरनेवालेको हज़ार रुपयेके दानका फलमिलताहै ७९। ८० पुष्प और पुष्पोंकी माला दानकरनेवालेको लाख रुपयोंके दानका फल मिलता है गीतवाद्य आदि उत्सव करनेवाले को अक्षयगुणा पुण्यहोताहै यह सुनकर पार्वतीजी बोलीं कि हे महादेवजी यहतो आपने अत्यन्त अद्भुतवर्णन किया परन्तु जिस हेतुसे आप इस स्थानको नहीं छोड़ते उस उत्तम हेतुको भी वर्णनकीजिये, यह सुनकर महादेव जी ने कहा कि हेदेवि पूर्व्वकालमें ब्रह्माजी के पांचशिर होतेभये उनमें पांचवाँ शिर सुवर्ण के समान कान्तिवालाथा फिर एक समय वह ब्रह्माजी मुझसे कहनेलगे कि मैं तुम्हारे जन्मको जानताहूं तब मैंने क्रोधकरके अपने बायें अंगूठेके नखसे ब्रह्माका वह पांचवाँ शिर छेदनकर दिया तब ब्रह्माजीने कहा कि तुमने बिनाही अपराधके मेरा शिर काटडाला है इसलिये मेरे शापसे तुमकपालीहोगे अर्थात् तुम्हारेहाथमें कपाली चिपकजायगी तबतुम ब्रह्महत्यासे व्याकुलहोकर तीर्थों पर विचरोगे ८१।८६ उनके शापको सुनकर मैं हिमवान् पर्व्वतपरचलागया वहाँ नारायणकेपाससे मैंने भिक्षामांगी तब नारायणने अपने नखके अग्रभागसे वहमेरे हाथकी कपाली उतारली उसके उतारतेही उसमेंसे बहुतसी रुधिरकी धारानिकलीं और ५० योजनके विस्तारमें वह रुधिरकी धाराफैलगई और कपालीभी फैलकर बड़े अद्भुतभयंकर रूपसे घोर दीखतीभई ८७। ८९ इसकेपीछे वह रुधिरकी धारा दिव्यहजार वर्षोंतक बहतीभई तबविष्णुभगवान् मुझसेकहनेलगे कि यह ऐसाकपाल तुम्हारे हाथमें कैसे लगगयाथा इस मेरे हृदयके सन्देहको आप मेरे आगेकहिये ९०।९१ तब मैंने कहा कि हेदेव आप इस कपालकी उत्पत्तिको श्रवणकीजिये पूर्व्वकालमें हजारोंवर्षोंतक ब्रह्माजीने

तपसश्चप्रभावेण दिव्यंकाञ्चनसन्निभम् ९३ ज्वलत्तत्पञ्चमंशीर्षं जातंतस्यमहात्मनः।
निकृत्तन्तंमयादेव! तदिदंपश्यदुर्जयम् ९४ यत्रयत्रचगच्छामि कपालंतत्रगच्छति।ए
वमुक्तस्ततोदेवः प्रोवाचपुरुषोत्तमः ९५ (श्रीभगवानुवाच) गच्छगच्छस्वकंस्थानं ब्र
ह्मणस्त्वंप्रियंकुरु। तस्मिन्स्थास्यतिभद्रन्ते कपालंतस्यतेजसा ९६ ततःसर्वाणितीर्था
नि पुण्यान्यायतनानिच। गतोऽस्मिपृथुलश्रोणि! नक्वचित्प्रत्यतिष्ठत ९७ ततोऽहंसम
नुप्राप्तो ह्यविमुक्तेमहाशये!। अवस्थितःस्वकेस्थाने शापश्चविगतोमम ९८ विष्णुप्रसा
दात्सुश्रोणि! कपालंतत्सहस्रधा। स्फुटितंबहुधाजातं स्वप्नलब्धंधनंयथा ९९ ब्रह्मह
त्यापहंतीर्थं क्षेत्रमेतन्मयाकृतम्। श्मशानमेतद्वद्रंमे देवानांवरवर्णिनि! १०० कालोभू
त्वाजगत्सर्वं संहरामिसृजामिच। देवेशि! सर्वगुह्यानां स्थानंप्रियतरंमम १०१ मद्भक्ता
स्तत्रगच्छन्ति विष्णुभक्तास्तथैवच। येभक्ताभास्करेदेवि! लोकनाथेदिवाकरे १०२ तत्र
स्थोयस्त्यजेद्देहं मामेवप्रविशेत्तुसः (देव्युवाच) अत्यद्भुतमिदंदेव! यदुक्तंपद्मयोनिना
१०३ त्रिपुरान्तकरस्थानं गुह्यमेतन्महाद्युते!। सन्निधानात्तुतेसर्वे कालंनार्हन्तिषोडशी
म् १०४ यत्रतिष्ठतिदेवेशो यत्रतिष्ठतिशङ्करः। गङ्गातीर्थसहस्राणां तुल्याभवतिवान्यथा
१०५ त्वमेवभक्तिर्देवेश! त्वमेवगतिरुत्तमा। ब्रह्मादीनान्तुतेदेव! गतिरुक्तासनातनी
श्राव्यतेयद्द्विजातीनां भक्तानामनुकम्पया १०६॥

इतिश्री मत्स्यपुराणेद्व्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८२॥

दारुण तपस्याकरके अपने दिव्यशरीरकोरचा उनके तपके प्रभावसे सुवर्णकेसमान कान्तिवाला पांच-
वाँशिरहोताभया उन ब्रह्माजीके पांचवें शिरको मैंने क्रोधकरके काटडाला उसी शिरकी यहकपा-
ली है९३।९४ औरजहाँ२ मैंजाताहूं वहांवहां यहकपालीमेरे संगहीचलतीहै ऐसेमेरेवचनोंको सुनकर
पुरुषोत्तम भगवान् बोलेकि तुमजाकर अपनेस्थानमें प्राप्तहोजाओ औरब्रह्माजीको प्रसन्नकरो ब्रह्मा-
जीके तेज करके यह कपाल तुम्हारे क्षेत्रमें स्थित होजायगा यहसुनकर हेप्रिये मैं सब पवित्रतीर्थोंपर
जाताभया परन्तुमेरायह कपाल कहींनहीं उतरा तबमें अपनेइस अविमुक्तस्थानमें आकर स्थितहो-
ताभया तब मेराशाप शीघ्रही दूरहोगया और विष्णुकी कृपासे वहकपालभी वहांगिरपड़ा और गिर-
तेही उसके हजारोंटुकड़ेहोगये और ऐसाअदृष्टहोगया जैसे कि स्वप्नमें प्राप्तहुआधन कहींभीनहीं दी-
खताहै अर्थात् उसका अभावहोगया ९५। ९९ यहक्षेत्र मेरी ब्रह्महत्याका दूरकरनेवालाहै हेवरवर्णिनि
इसीसे यहक्षेत्र मुझसमेत सब देवताओंका उत्तम श्मशान रूपतीर्थहै १०० मैं इस स्थानकाकाल
रूपहोकर संपूर्ण जगत्का संहारकरताहूं और सबकी रचनाभी करताहूं हे देवि यह मेरास्थान सब
स्थानोंमें गुह्य होकर मुझको परमप्रियहै १०१ मेरेभक्त विष्णुके भक्त और सूर्य्यकेभी भक्तजोयहां
आतेहैं और अपने२ शरीरोंकात्यागतेहैं वहसब मुझही में प्राप्तहोजाते हैं, पार्वतीजीबोलीं हेदेवयहतीर्थ
आपने अत्यन्त अद्भुत कहाहै यह आपका स्थान विष्णुने कहाहै यहाँ आपकी स्थिति रहती है इसी
हेतुसे अन्य तीर्थ इसकी सोलहवीं कलाके भी तुल्यनहीं हैं १०२।१०४ जहाँ विष्णु स्थितरहतेहैं

(महेश्वर उवाच) सेवितंबहुभिःसिद्धैरपुनर्भवकांक्षिभिः। विदित्वातुपरंक्षेत्रमवि
मुक्तनिवासिनाम् १ तद्गुह्यंदेवदेवस्य तत्तीर्थंतत्तपोवनम्। परंस्थानंतुतेयान्ति सम्भ
वन्तिनतेपुनः २ ज्ञानेविहितनिष्ठानां परमानन्दमिच्छताम्। यागतिर्विहितासद्भिः सा
विमुक्तेमृतस्यतु ३ भवस्यप्रीतिरतुलाह्यविमुक्तेह्यनुत्तमा। असंख्येयंफलंतत्रह्यक्षयाचग
तिर्भवेत् ४ परंगुह्यंसमाख्यातंश्मशानमितिसंज्ञितम्। अविमुक्तनसेवन्ते वंचितास्तेनरा
भुवि ५ अविमुक्तेस्थितैःपुण्यैः पांशुभिर्वायुनेरितैः। अपिदुष्कृतकर्माणो यास्यन्तिपरमा
ङ्गतिम् ६ मेरुमन्दरमात्रोऽपि राशिःपापस्यकर्म्मणः। अविमुक्तंसमासाद्य तत्सर्वंव्रज
तिक्षयम् ७ श्मशानमितिविख्यातमविमुक्तंशिवालयम्।तद्गुह्यंदेवदेवस्यतत्तीर्थंतत्तपोव
नम् ८ तत्रब्रह्मादयोदेवानारायणपुरोगमाः। योगिनश्चतथासाध्याभगवन्तंसनातनम् ९
उपासन्तेशिवमुक्ता मद्भक्तामत्परायणाः। यागतिर्ज्ञानतपसां यागतिर्यज्ञयाजिनाम् १०
अविमुक्तेमृतानान्तु सागतिर्विहिताशुभा। संहर्तारश्चकर्त्तारस्तस्मिन्ब्रह्मादयःसुराः ११
सम्राड्विराण्मयालोका जायन्तेह्यपुनर्भवाः। महर्जनस्तपश्चैव सत्यलोकस्तथैवच १२
मनसःपरमोयोगो भूतभव्यभवस्यच। ब्रह्मादिस्थावरान्तस्य योनौसांख्यादिमोक्ष-
योः १३ येविमुक्तंनमुञ्चन्ति नरास्तेनैवचिन्तिताः। उत्तमंसर्वतीर्थानां स्थानानामुत्तमञ्चय

और जहाँ महादेव स्थितरहते हैं वह तीर्थ हजारों तीर्थोंके समानहै १०५ हेदेव तुमहीं मेरी गतिभ-
क्तिहो तुमहीं ब्रह्मादिकोंकी सनातनीगति सुनेजातेहो १०६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्व्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८२ ॥

महादेवजी बोले-मोक्षकी इच्छा करनेवाले पुरुष जो इस अविमुक्ततीर्थका सेवनकरते हैं उनको
यही तपोवन है इस परम उत्तम स्थानमें प्राप्त होनेवाले जन फिर कभी जन्मनहीं लेतेहैं १। २ जो
गति निष्ठा करनेवाले और परमानन्दकी इच्छाकरनेवालों की होती है वहीगति इस तीर्थपर नि-
वासकरने वालोंकी होतीहै ३ इस अविमुक्त तीर्थपर शिवजीकहते हैं कि मेरी अतुल प्रीति रहती है
इसीहेतुसे यहाँ अनन्तफल होकर सबकी अक्षयगति होती है ४ यह अविमुक्त तीर्थ श्मशानसंज्ञक
है परम गुह्यहै, जो पुरुष अविमुक्त तीर्थकी सेवानहीं करते हैं वहठगेहुए होतेहैं अविमुक्त तीर्थपर
स्थित होनेवाले पापी पुरुषोंकेभी जो वहाँकी धूलि उड़के स्पर्श होजातीहै उसीसे वह पुरुष परम
गतिको प्राप्त होजाते हैं ५। ६ सुमेरु और मन्दराचल पर्व्वतोंके समान दीर्घ पापोंकी राशिभी वहाँ
नाश होजाती है ७ श्मशान नाम से प्रसिद्ध अविमुक्त नाम शिवालयहै यही महादेवजी की गुफाहै
और तपोवनहै ८ वहां नारायण ब्रह्मादिक देवता साध्यसंज्ञक देवता और योगीजनलोग यह सब
सनातन शिवजीकी उपासना कियाकरतेहैं और मेरेभक्तजन मेरीही उपासनाकरतेहैं जोगति यज्ञ
करनेवाले और तपकरनेवालोंकी होतीहै वहगति अविमुक्त तीर्थपर मरनेवालोंकी होती है और
संसारके रचने वा संहार करनेवाले ब्रह्मादिक देवता भगवान् विराट् स्वरूप और सातों लोक यह
सब इसी स्थानपर उत्पन्न होतेहैं महर्लोक,जनलोक, तपलोक, सत्यलोक और मनसे विचार हुआ

न् १४ क्षेत्राणामुत्तमंचैव श्मशानानांतथैवच । तटाकानाञ्चसर्वेषां कूपानांस्रोतसान्त
था १५ शैलानामुत्तमश्चैतत्तडागानांतथोत्तमम् । पुण्यकृद्भवभक्तैश्चह्यविमुक्तन्तुसेव्य
ते १६ ब्रह्मणःपरमंस्थानं ब्रह्मणाध्यासितञ्चयत् । ब्रह्मणासेवितंनित्यं ब्रह्मणाचैवरक्षित
म् १७ अत्रैवसतभुवनं काञ्चनोमेरुपर्वतः । मनसःपरमोयोगः प्रीत्यर्थंब्रह्मणःसत् १८
ब्रह्मातुतत्रभगवांस्त्रिसंध्यंचेश्वरेस्थितः । पुण्यात्पुण्यतमंक्षेत्रं पुण्यकृद्भिर्निषेवितम्
१९ आदित्योपासनंकृत्वा विप्राश्चामरताङ्गताः । अन्येऽपियेत्रयोवर्णा भवभक्त्यासमा
हिताः २० अविमुक्तेतनुन्त्यक्त्वा गच्छन्तिपरमाङ्गतिम् । अष्टौमासान्विहारस्य यतीनां
संयतात्मनाम् २१ एकत्रचतुरोमासान् मासौवानिवसेत्पुनः । अविमुक्तेप्रविष्टानां विहा
रस्तुनविद्यते २२ नदेहोभवितातत्र दृष्टंशास्त्रेपुरातने । मोक्षोह्यसंशयस्तत्र पञ्चत्वन्तुग
तस्यवै २३ स्त्रियःपतिव्रतायाश्च भवभक्ताःसमाहिताः। अविमुक्तेविमुक्तास्ता यास्यन्ति
परमाङ्गतिम् २४ अन्यायाःकामचारिण्यः स्त्रियोभोगपरायणाः । कालेननिधनंप्राप्ता
गच्छन्तिपरमाङ्गतिम् २५ यत्रयोगश्चमोक्षश्चप्राप्यतेदुर्लभोनरैः । अविमुक्तंसमासाद्य
नान्यद्गच्छेत्तपोवनम् २६ सर्वात्मनातपःसेव्यं ब्राह्मणैर्नात्रसंशयः । अविमुक्तेवसेद्यस्तु
ममतुल्योभवेन्नरः २७ यतोमयानमुक्तंहि त्वविमुक्तंततःस्मृतम् । अविमुक्तंनसेवन्ते मूढा

परमयोग और ब्रह्माको आदिले सब स्थावरजंगम भूतोंकीयोनि यह सब इसी स्थानपर प्रकट होतेहैं
९।१२ जोपुरुष इस तीर्थको नहीं त्यागते वहसदैवनिश्चिन्त्यरहते हैं यह सबतीर्थ और शुभ स्थानों
में सबसे उत्तमहै १४ क्षेत्रोंमें उत्तमक्षेत्र श्मशानोंमें श्रेष्ठ श्मशान और अन्यसब श्रोत इनसबमेंभी
श्रेष्ठतरहै १५ सबतड़ाग और पर्व्वतों में भी उत्तमहै इसीसे यह अविमुक्ततीर्थ पुण्यात्मा शिवजीके
भक्तजनों से सेवन कियाजाताहै १६ यह अविमुक्ततीर्थ ब्रह्माजीका भी परमस्थानहै इसमें ब्रह्माजी
का निवासहै यह प्रतिदिन ब्रह्माजी से सेवित रहताहै और ब्रह्माही से रक्षितभी है १७ मानोंयहांही
सब भुवनस्थित हैं सुवर्णका सुमेरुपर्व्वत और ब्रह्माजीका कियाहुआ परमयोगभी स्थितहै यहांब्रह्मा
तीनों संधियों में शिवजीकी मूर्त्तिमें स्थितरहताहै यह तीर्थ पवित्रसेभी पवित्रहै इसकोसबपुण्यात्मा
पुरुष सेवन करतेहैं १८।१९ इसतीर्थपर सूर्य्यकी उपासना करनेवाले ब्राह्मणलोग देवभावको
प्राप्तहोगये हैं इनके विशेष तीनमेंसे जो कोई शिवजीकी भक्तिमें सावधान रहते हैं वह अविमुक्ततीर्थ
पर अपने शरीरको त्यागकर परमगतिको प्राप्तहोजाते हैं जो जितेंद्री यतीपुरुष वहां आठमहीनेतक
वासकरते हैं अथवा चातुर्मास में वहां बसकर स्त्री संगनहींकरते हैं वहां निश्चय फिर जन्मनहींलेते
हैं और जिसकाशरीर वहां छूटजाताहै उसकी भी मोक्षहोजाती है इसमें सन्देहनहीं है २०।२३जो
शिवजीकी भक्तिमें सावधान रहनेवाली पतिव्रतास्त्री अविमुक्ततीर्थपर वासकरती है वहभी परमगति
को प्राप्तहोजाती हैं २४ कहांतक इसकी महिमावर्णन करूं कि व्यभिचारिणीस्त्री भी जो वहां शरीर
को त्यागती है वहभी परमगतिको प्राप्तहोजाती है २५ मनुष्यों को इसतीर्थपर दुर्लभयोग और मोक्ष
प्राप्तहोजाते हैं. जो अविमुक्ततीर्थको त्यागकर अन्य किसी तपोवनमें नहींजाताहै वह सर्वात्माकर

येतमसावृताः २८ विण्मूत्ररेतसांमध्येतेवसंतिपुनःपुनः। कामःक्रोधश्चलोभश्च दम्भस्त म्भोऽतिमत्सरः २९ निद्रातन्द्रातथालस्यं पैशून्यमितितेदश। अविमुक्तेस्थिताविघ्ना शक्रे णविहिताःस्वयम् ३० विनायकोपसर्गाश्च सततंमूर्ध्नितिष्ठति। पुण्यमेतद्भवेत्सर्वं भक्ताना मनुकम्पया ३१ परंगुह्यमितिज्ञात्वा ततःशास्त्रानुदर्शनात्। व्याहृतंदेवदेवैस्तु मुनिभिस्तत्त्व दर्शिभिः ३२ मेदसाविप्लुताभूमिरविमुक्तेतुवर्जिता। पूतासमभवत्सर्वामहादेवेनरक्षिता ३३ संस्कारस्तेनक्रियते भूमेरन्यत्रसूरिभिः। येभक्तावरदंदेवमक्षरंपरमंपदम् ३४ देवदानवगं धर्वयक्षरक्षोमहोरगाः। अविमुक्तमुपासंतेतन्निष्ठास्तत्परायणाः ३५ तेविशंतिमहादेवमाज्या हुतिरिवानलम्। तत्रैवप्राप्यमहादेव मीश्वराध्युषितंशुभम् ३६ अविमुक्तंकृतार्थोऽस्मीत्यात्मा नमुपलभ्यते। ऋषिदेवासुरगणैर्जपहोमपरायणैः ३७ यतिभिर्मोक्षकामैश्च ह्यविमुक्तं निषेव्यते। नाविमुक्तेमृतःकश्चिन्नरकंयातिकिल्बिषी ३८ ईश्वरानुगृहीताहि सर्वेयान्ति पराङ्गतिम्। द्वियोजनमथार्धञ्च तत्क्षेत्रंपूर्वपश्चिमम् ३९ अर्द्धयोजनविस्तीर्णं दक्षिणो त्तरतःस्मृतम्। वाराणसीतदीयाच यावच्छुष्कनदीतुवै ४० एतत्क्षेत्रस्यविस्तारः प्रोक्तोदे वेनधीमता। लब्ध्वायोगञ्चमोक्षञ्च कांक्षतोज्ञानमुत्तमम् ४१ अविमुक्तंनमुञ्चन्ति त न्निष्ठास्तत्परायणाः। तस्मिन्वसन्तियेमर्त्या नतेशोच्याःकदाचन ४२ योगक्षेत्रंतपःक्षेत्रं सि

करके ब्राह्मणोंका भी निस्सन्देह पूज्यहै जो अविमुक्त तीर्थपरवास करताहै वह निश्चयमेरीही तुल्यहै २६। २७ जो कि मैं इसतीर्थको कभी नहीं छोड़ताहूं इसीहेतुसे इसकानाम अविमुक्ततीर्थ कहते हैं जो इस अविमुक्तका सेवन नहींकरते हैं वह तमोगुणसेयुक्त मूढ़जनहैं वह विष्ठा मूत्र वीर्य्य अर्थात् गर्भमें वारंवार वासकरते हैं और काम,क्रोध,लोभ,मोह,दंभ,पाखण्ड,मत्सरता, निद्रा, आलस्य, और चुगली यह दश विघ्नइन्द्रके कियेहुए अविमुक्ततीर्थपर स्थितरहते हैं अनेक विघ्न मस्तकपर आकर भी प्राप्तहोते हैं तौ भी भक्तों के निमित्त यहतीर्थ सदैव पवित्ररहताहै इसको परमगुह्यतीर्थ जानना चाहिये इसको सब देवता और परमतत्त्वदर्शी मुनियों ने भी परमउत्तमकहाहै २८। ३२ मेदाकरके व्याप्तहुई भी पृथ्वी अविमुक्ततीर्थपर पवित्रवर्णनकरी है क्योंकि वहां महादेवजी रक्षाकरते हैं इसीसे विद्वान्लोग वहां भूमिका संस्कारभी नहींकरते जो भक्तजन वहां शिवरूपकी उपासना करते हैं वह शिवजी में ऐसे प्राप्तहोजाते हैं जैसेकि घृतकी आहुति अग्निमें लीनहोजाती है ३३। ३६ फिर महा- देवमें प्राप्तहोकर अपने आत्माको कृतार्थ मानते हैं और ऋषिदेवता राक्षस मोक्षकी इच्छाकरनेवाले यतीजन यहसबभी जप होम आदिमें तत्पर होकर अविमुक्ततीर्थ की सेवाकरते हैं और अविमुक्त तीर्थपर मरने वाला कोई भी पुरुष नरकमें नहीं जाताहै वहां शिवजीके अनुग्रहसे सबभूतमात्र प- रमगतिको पाते हैं यह तीर्थपूर्व और पश्चिमकी ओर ढाई २ योजनके विस्तार में है ३७। ३९ उसीमें आधेयोजनमें विस्तृत वाराणसीनदी है आधेही योजनमें शुष्कनदी है ४० इस प्रकारसे इस क्षेत्रका विस्तार महादेवजीने कहाहै उत्तम मोक्षकी इच्छा करनेवाले पुरुष ज्ञान और योगकी प्राप्ति करते हैं और जो कोई पुरुष उस क्षेत्रमेंनिष्ठा पूर्वक भक्तिमें तत्पर होकर उसकोही सदैव सेवन

द्गन्धर्वसेवितम्। सरितःसागराःशैला नाविमुक्तसमाभुवि ४३ भूर्लोकेचान्तरिक्षेच
दिवितीर्थानियानिच। अतीत्यवर्ततेचान्यदविमुक्तंप्रभावतः ४४ येनुध्यानंसमासाद्य
मुक्तात्मानःसमाहिताः। संनियम्येन्द्रियग्रामं जपन्तिशतरुद्रियम् ४५ अविमुक्तेस्थिता
नित्यं कृतार्थास्तेद्विजातयः। भवभक्तिंसमासाद्य रमन्तेतुसुनिश्चिताः ४६ संहत्यशक्ति
तःकामान् विषयेभ्योबहिःस्थिताः। शक्तितःसर्वतोमुक्ताः शक्तितस्तपसिस्थिताः ४७क्ष
णानीहचात्मानमपुनर्भवभाविताः। तंवैप्राप्यमहात्मानमीश्वरंनिर्भयाःस्थिताः४८नतेषां
पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि। अविमुक्तेतुगृह्यन्ते भवेनविभुनास्वयम् ४९ इत्यादितं
महाक्षेत्रं सिध्यन्तेयत्रमानवाः। उद्देशमात्रंकथिता अविमुक्तगुणास्तथा ५० समु
द्रस्येवरत्नानामविमुक्तस्यविस्तरम्। मोहनंतदभक्तानां भक्तानांभक्तिवर्धनम् ५१
मूढास्तेतुनपश्यन्ति श्मशानमितिमोहिताः।हन्यमानोऽपियोविद्वान् वसेद्विघ्नशतैरपि५२
सयातिपरमंस्थानं यत्रगत्वानशोचति। जन्ममृत्युजरामुक्तः परंयातिशिवालयम् ५३
अपुनर्मरणानांहिसागतिर्मोक्षकांक्षिणाम्।यांप्राप्यकृतकृत्यःस्यादितिमन्यंतपण्डिताः ५४
नदानैर्नतपोभिर्वा नयज्ञैर्नापिविद्यया। प्राप्यतेगतिरिष्टायाह्यविमुक्तेतुलभ्यते ५५ नाना
वर्णाविवर्णाश्च चण्डालायेजुगुप्सिताः। किल्बिषैःपूर्णदेहाश्च प्रकृष्टैःपातकैस्तथा ५६

करते हैं उनको किसी बातका भी शोच नहीं रहताहै यहतप और योगका क्षेत्र सिद्ध और गन्धर्वा-
दिकों से सेवित बना रहताहै कोई नदी पर्व्वत समुद्र इस अविमुक्तके समान नहीं है ४१।४२
पृथ्वी आकाश और स्वर्गादिकोंमें जितने तीर्थ हैं उनसबसे यह अविमुक्त तीर्थ उत्तम और फलमें
अधिकहै ४४ जो मुक्तात्मा जितेन्द्रिय पुरुष उस अविमुक्त तीर्थपर सौ १०० बाररुद्रीका पाठ करते
हैं वह शिवजीके भक्तजन निश्चय करके श्रीमहादेवजीकेही साथ क्रीडा करते हैं ४५।४६ जो पुरुष
उस तीर्थपर विषयोंकी कामना त्यागकर शक्तिके अनुसार सब बातोंसे विरक्त रहते हैं और सामर्थ्या-
नुसार तपमें अनुरक्त हैं वह उन महात्मा शिवजीको प्राप्त होकर निर्भय होजाते हैं और फिर जन्म
नहीं लेते हैं ४७।४८ सैकड़ों करोड़ोंकल्पों में भी कभी फिर जन्मनहीं लेता अविमुक्त तीर्थ उद्दे-
मात्रकरके कहाहै जैसे कि समुद्रमें अनन्त रत्न रहते हैं इसी प्रकार इस क्षेत्रमें भी अनन्त गुणभरे
हुए हैं अभक्तोंको मोह करने वाला और शिवभक्तों को भक्तिका देने वाला यह तीर्थ है जो मूर्खजन
हैं वह अज्ञानके वशीभूत होकर इसको श्मशान जानकर उत्तमतीर्थ नहींजानते हैं और जो विद्वान्
पुरुष हैं वह सैकड़ों विघ्नोंके भी होनेपर इस तीर्थको नहीं छोड़ते हैं ५१।५२ वह विद्वान् पुरुष और
शोचसे रहित उत्तम स्थानको जाते हैं जहां से कि जन्म मृत्युजरावस्थादि दुःखोंसे छूटकर शिवजी
के लोकमें प्राप्त होजाते हैं ५३ जो मोक्षकी इच्छा करते हैं उनको ऐसी मोक्षगति प्राप्त होजाती है
जिसके कि प्राप्त होने से कृतकृत्य होजाते हैं ५४ जो गति दान तप यज्ञ और ब्रह्मविद्या आदिसे भी
नहीं मिलती वह उत्तम गति इस अविमुक्त तीर्थ सेवनहीसे प्राप्त होजाती है ५५ अनेक जातिके
चांडाल पापी तथा महाहत्यासंयुक्त इनसब पुरुषोंकी परम औषधि यही है कि अविमुक्त तीर्थको प्राप्त

भेषजंपरमंतेषामविमुक्तंविदुर्बुधाः । जात्यन्तरसहस्रेषु ह्यविमुक्तेम्रियेतयः ५७ भक्तो विश्वेश्वरेदेवे नसभूयोऽभिजायते। यत्रचेष्टंहुतंदत्तं तपस्ततंकृतंचयत् ५८ सर्वमक्ष यमेतस्मिन्नविमुक्तेनसंशयः। कालेनोपरतायान्ति भवेसायुज्यमक्षयम् ५९ कृत्वापापस हस्राणि पश्चात्सन्तापमेत्यवै। योविमुक्तेवियुज्येत सयातिपरमाङ्गतिम् ६० उत्तरंदक्षि णंचापि अयनंनविकल्पयेत् । सर्वस्तेषांशुभःकालो ह्यविमुक्तेम्रियन्तिये ६१ नतत्रका लोमीमांस्यो शुभोवायदिवाशुभः । तस्यदेवस्यमाहात्म्यस्थानमद्भुतकर्मणः ६२ सर्वेषा मेवनाथस्य सर्वेषांविभुनास्वयम्। श्रुत्वेदंऋषयःसर्वे स्कन्देनकथितंपुरा । अविमुक्ताश्र मंपुण्यं भावयेत्करणैःशुभैः ६३ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेत्र्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८३ ॥

(सूत उवाच) अविमुक्तेमहापुण्ये आस्तिकाःशुभदर्शनाः। विस्मयंपरमंजग्मुर्हर्षग द्गदनिस्वनाः १ ऊचुस्तेहृष्टमनसः स्कन्दंधर्मविदांवरम्। ब्रह्मणोदेव! पौत्रस्त्वं ब्रह्मण्यो ब्रह्मणःप्रियः २ ब्राह्मणोब्रह्मविद्ब्रह्मा ब्रह्मेन्द्रोब्रह्मलोककृत् । ब्रह्मकृद्ब्रह्मचारीत्वं ब्र ह्मादिर्ब्रह्मवत्सलः ३ ब्रह्मतुल्योद्भवकरो ब्रह्मतुल्यनमोऽस्तुते। ऋषयोभावितात्मानः श्रु त्वेदंपावनंमहत् ४ तत्त्वन्तुपरमंज्ञातं यत्ज्ञात्वामृतमश्नुते । स्वस्तितेऽस्तुगमिष्यामो भूर्लोकंशङ्करालयम् ५ यत्रासौसर्वभूतात्मा स्थाणुभूतःस्थितःप्रभुः। सर्वलोकहितार्थाय

होजांय जो हज़ारों जातिके लोग अविमुक्त तीर्थपर शिवकी भक्तिकरके मरते हैं वह फिर जन्मनहीं लेते हैं और अविमुक्त तीर्थपर कियाहुआ जप होम तप दान अक्षयगुणा होजाताहै और वहाँ काल करके जो मरजाते हैं वह शिवजीके साथ सायुज्यमोक्षको प्राप्तहोजाते हैं ५६। ५९ जो पुरुष हज़ारों पापकर पछताताहुआ इस अविमुक्त तीर्थपर प्राप्तहोताहै वहभी परमगतिको पाताहै ६० जो पुरुष अविमुक्त तीर्थपर मरते हैं उनको उत्तरायण दक्षिणायन कालकी कुछभी अपेक्षानहीं है उनके निमित्त वहाँ सम्पूर्ण काल शुभदायी हैं ६१ शुभाशुभ विचारका वहाँ कोई काम नहीं है क्योंकि उन शिवजी के प्रभावसे वहस्थान सदैव पवित्रतमहै इसप्रकारके स्थानको वा सबभूतोंके स्वामी महादेवजी के माहात्म्यको सब ऋषिलोग उन स्वामिकार्तिकजीके मुखसे सुनकर उत्तम २ कारणों का विचारांशकरनेलगे ६२।६३ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्र्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः१८३॥

सूतजी कहते हैं हे ऋषिलोगो उस अविमुक्त तीर्थपर स्थितहोनेवाले उत्तम२ आस्तिक ऋषि मुनि जन परमआश्चर्ययुक्तहो गद्गदवाणीसे प्रसन्नहोकर फिर स्वामिकार्तिकसे पूछनेलगे कि हे स्वामिकार्तिकजी तुम ब्रह्माजी और शिवजीके अंशसे उत्पन्न ब्राह्मणोंके प्रिय ब्रह्मकेज्ञाता ब्रह्मेन्द्रहो ब्रह्मलोक की प्राप्ति करनेवाले होकर ब्राह्मणोंपर हितकरनेवालेहो १। २ आप ब्रह्माजीकेही समान सृष्टिकेभी रचनेवालेहो इसहेतुसे आपको हमसब नमस्कार करतेहैं इस कथाको सुनकर हमसब ऋषिमुनिपवित्र आत्मावाले होगयेहैं हमने परमतत्त्वको जानाहै आपका कल्याणहो अब हम सब पृथ्वी लोकमें शिवजीके उस स्थानपर जातेहैं जहाँ सबभूतोंके आत्मा सबके प्रभु शिवजी लोकोंके हितके निमित्त

तपस्युग्रेव्यवस्थितः ६ संयोज्ययोगेनात्मानं रौद्रींतनुमुपाश्रितः । गुह्यकैरात्मभूतस्तु
श्चात्मतुल्यगुणैर्वृतः ७ततोब्रह्मादिभिर्देवैःसिद्धैश्चपरमर्षिभिः । विज्ञप्तःपरयाभक्त्या त्वत्
प्रसादाद्गणेश्वर ! ८ वस्तुमिच्छामनियत मविमुक्तेसुनिश्चिताः । एवंगुणेतथामर्त्याह्यविमु
क्तेवसन्तियेध धर्म्मशीलाजितक्रोधा निर्ममानियतेन्द्रियाः । ध्यानयोगपराःसिद्धिंगच्छन्ति
परमाव्ययाम् १० योगिनोयोगसिद्धाश्च योगमोक्षप्रदंविभुम् । उपासन्तेभक्तियुक्ताः शा
न्तायोगगतिङ्गताः ११ स्थानंगुह्यंश्मशानानां सर्वेषामेतदुच्यते । नहियोगादृतेमोक्षः प्रा
प्यतेभुविमानवैः १२ अविमुक्तेतुवसतां योगोमोक्षश्चसिध्यति । अनेनजन्मनैवेह प्राप्य
तेगतिरुत्तमा १३ एकएवप्रभावोऽस्तिक्षेत्रस्यपरमेश्वर ! । एकेनजन्मनादेव ! मोक्षंपश्य
न्त्यनुत्तमम् १४ अविमुक्तेनिवसता व्यासेनामिततेजसा । नैवलब्धाक्वचिद्भिक्षा भ्रममाणे
नयत्नतः १५ क्षुधाविष्टस्ततःक्रुद्धोऽचिन्तयच्छापमुत्तमम् । दिनंदिनंप्रतिव्यासः षण्मासं
योऽवतिष्ठति १६ कथंममेदंनगरं भिक्षादोषाद्धतन्त्विदम् । विप्रोवाक्षत्रियोवापि विधवाब्रा
ह्मणीपिवा १७ संस्कृतासंस्कृतावापि परिपक्वाःकथन्नुमे । नप्रयच्छन्तिवैलोका ब्राह्मणाश्च
यंकारकम् १८एषांशापंप्रदास्यामि तीर्थस्यनगरस्यतु । तीर्थञ्चातीर्थतांयातु नगरंशापया
म्यहम् १९ माभूत्त्रिपुरुषीविद्या माभूत्त्रिपुरुषंधनम् । माभूत्त्रिपुरुषंसख्यं व्यासोवारा
णसींशपन् २० अविमुक्तेनिवसतां जनानांपुण्यकर्म्मणाम् । विघ्नंसृजामिसर्वेषां येन

अचल समाधिस्थहोकर उग्र तपस्या करते हैं ४। ६ अपने योगकरके रुद्र अर्थात् भयंकर रूपवाले श-
रीरमें प्रवेशकरके गुह्यकों समेत अपने गुणोंसे युक्तरहतेहैं और हे गणेश्वर ब्रह्मादिक देवता सिद्धज-
न और परमभक्त लोग तुम्हारी कृपासे विज्ञापन करके उनके दर्शन किया चाहते हैं इसी हेतुसे उस
अविमुक्त तीर्थपर हमसब वास किया चाहतेहैं क्योंकि वहाँजो पुरुष वास करते हैं वहसब धन्य और
कृतकृत्य होजाते हैं ७। ९ धर्ममें स्वभावरखनेवाले क्रोध ममतासेरहित जितेन्द्रिय ध्यानयोगमें रह-
नेवाले पुरुष वहाँ परम सिद्धिको प्राप्त होते हैं १० वहाँ योगमें सिद्ध भक्तियुक्त योगीजनलोग योग
मोक्षके दाता शिवजी महाराजकी उपासनाकरते हैं और योगकीगतिको प्राप्तहोजाते हैं ११ श्मशानों
में यह परमगुह्य स्थानहै और योगकेविना इसपृथ्वीतलमें किसीको भी मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है १२
अविमुक्त तीर्थपर वासकरतेहुए पुरुषोंको योग और मोक्ष दोनों सिद्धहोजाते हैं अर्थात् इसी जन्ममें
उत्तमगति प्राप्तहोजाती है १३ हे देव इस क्षेत्रका ऐसाप्रभावहै कि एकहीजन्म में उत्तममोक्ष प्राप्तहो
जातीहै १४ एकसमय अविमुक्ततीर्थपर वासकरते हुए वेदव्यासजी को कहीं भिक्षा नहीं मिली तब
क्षुधासे पीड़ित वेदव्यासजी क्रोधकरके शापदेनेकी इच्छा करतेभये और बड़ी चिन्तासे युक्त क्षुधासे
महापीड़ितहुए छःमास व्यतीत होतेभये १५।१६ तब यह विचार करनेलगे कि केवल मेरी भिक्षा
केही दोषसे यह नगर कैसे नष्टहोगा ब्राह्मण क्षत्री विधवा अथवा विवाहिता ब्राह्मणी यहसब मुझको
भिक्षानहीं देते हैं यह बड़ा आश्चर्य्यहै मैं इनसबों समेत सबतीर्थभरको और नगरको यह शापदूंगा
कि इसतीर्थ में तीर्थका प्रभाव मतहो और इसनगरमें तीनों वर्णों में विद्या और धनमतरहो और

सिद्धिर्नविद्यते २१ व्यासचित्तंतदाज्ञात्वा देवदेवउमापतिः। भीतभीतस्तदागौरीं तांप्रि यांपर्य्यभाषत २२ शृणुदेवि! वचोमह्यं यादृशंप्रत्युपस्थितम्। कृष्णद्वैपायनःकोपाच्छा पंदातुंसमुद्यतः २३ (देव्युवाच) किमर्थंशपतेक्रुद्धो व्यासःकेनप्रकोपितः। किंकृतंभ गवंस्तस्य येनशापंप्रयच्छति २४ (देवदेव उवाच) अनेनसुतपस्तप्तं बहून्वर्षगणान् प्रिये!। मौनिनाध्यानयुक्तेन द्वादशाब्दान्वरानने! २५ ततःक्षुधासुसञ्जाता भिक्षामटि तुमागतः। नैवास्यकेनचिद्भिक्षा ग्रासार्द्धमपिभामिनि! २६ एवंभगवतःकाल आसीत्षा ण्मासिकोमुनेः। ततःक्रोधपरीतात्मा शापंदास्यतिसोऽधुना २७ यावन्नेषशपेत्तावदु पायस्तत्रचिन्त्यताम्। कृष्णद्वैपायनंव्यासं विद्धिनारायणंप्रिये! २८ कोऽस्यशापान्नबि भेति ह्यपिसाक्षात्पितामहः। अदैवंदैवतंकुर्य्याद्दैवंचाप्यपदैवतम् २९ आवान्तुमानु षौभूत्वा गृहस्थाविहवासिनौ। तस्यतृप्तिकरींभिक्षां प्रयच्छावोवरानने! ३० एवमुक्तात तोदेवी देवेनशम्भुनातदा। व्यासस्यदर्शनंदत्त्वा कृत्वावेषन्तुमानुषम् ३१ एह्येहिभग वन्! सद्यो भिक्षांग्राह्यसत्तम!। अस्मद्गृहेकदाचित्त्वं नागतोऽसिमहामुने! ३२ एतच्छ्रुत्वाप्रीतमना भिक्षांग्रहीतुमागतः। भिक्षांदत्वातुव्यासाय षड्रसाममृतोपमाम् ३३ अनास्वादितपूर्वासा भक्षितामुनिनातदा। भिक्षांव्यासस्ततोभुक्त्वा चिन्तयन्हृष्टमान सः ३४ ववन्देवरदंदेवं देवीञ्चगिरिजांतदा। व्यासःकमलपत्राक्ष इदंवचनमब्रवीत् ३५

परस्परमें मित्रताभी न रहे और इस अविमुक्त तीर्थपर वासकरनेवाले पवित्र पुरुषों के मैं ऐसा विघ्न रचूंगा जिस्से कि किसीकी भी सिद्धि न होगी १७। २१ इसप्रकार के वेदव्यास के चित्त को जानकर भयभीतहुए महादेवजी अपनीप्रिया पार्वतीजी से यहवचन बोले २२ हे देवि भवत् मेरावचनसुन कि वेदव्यास इससमय शापदेने को उद्युक्त हैं २३ यहसुनकर पार्वतीजी बोलीं कि व्यासजी किसकारण से ऐसे क्रोधयुक्त हैं उनको किसने क्रोधयुक्त करवादिया है उनका कौनसा अपराध बनगया है जिससे कि वह शापदेनेको तैयार हैं २४ महादेव बोले हे प्रिये इन्होंने बहुत कालतक सुन्दर तपकिया है अर्थात् बारहवर्षतक मौनधारण करके ध्यानकिया २५ फिर जब क्षुधा लगी तब भिक्षामांगी तब किसीने भी इनको आधेग्रासमात्रकी भी भिक्षानदी इसीप्रकार से इन व्यासमुनिके छःमहीने व्यतीतहोगये इसीसे अब यह शाप देंगे २६। २७ जबतक कि यह शाप न दें उस समयतक कोई विचार करना चाहिये हे प्रिये वेदव्यासकेपास सिद्धिहै इनके शापसे सबकोई डरते हैं यहचाहे जिसे अदैवसे दैव बनासक्ते हैं दैवको भी हटासक्तेहैं २८। २९ हम तो मनुष्य बनकर गृहस्थियों के समान बातकररहे हैं इससे उनकी तृप्तिके समान भिक्षादेनी चाहिये ३० इसप्रकार से कहीहुई पार्वतीजी मनुष्यकारूप धारणकरके वेदव्यासको दर्शनदेकर यहवचन बोलीं हे भगवन् आप यहाँ आइये और भिक्षाको शीघ्र ग्रहण कीजिये हे महामुने आप हमारे घरमें कभी भी नहीं आये ३१। ३२ यहसुनकर वेदव्यासजीने बड़े प्रसन्नचित्तसे भिक्षा ग्रहणकरली और वह भिक्षा छःहो रसोंसे युक्तथी तब वेदव्यासजी ने उस उत्तम भिक्षाका भोजनकर प्रसन्नमन होकर मनमें विचा-

देवोदेवीनदीगङ्गा मिष्टमन्नंशुभागतिः। वाराणस्यांविशालाक्षि! वासःकस्यनरोचते ३६
एवमुक्तास्ततोव्यासो नगरीमवलोकयन्।चिन्तयानस्ततोभिक्षां हृदयानन्दकारिणीम् ३७
अपश्यत्पुरतोदेवं देवीञ्चगिरिजांतदा। गृहाङ्गणस्थितंव्यासं देवदेवोऽब्रवीदिदम् ३८
इहक्षेत्रेनवस्तव्यं क्रोधनस्त्वंमहामुने। एवंविस्मयमापन्नो देवंव्यासोब्रवीद्वचः ३९
(व्यास उवाच) चतुर्दश्यामथाष्टम्यां प्रवेशंदातुमर्हसि। एवमस्त्वित्यनुज्ञाय तत्रैवान्त
र्धीयत ४० नतद्गृहंनसादेवी नदेवोज्ञायतेक्वचित्। एवंत्रैलोक्यविख्यातः पुराव्या
सोमहातपाः ४१ ज्ञात्वाक्षेत्रगुणान्सर्वान् स्थितस्तस्यैवपार्श्वतः। एवंव्यासंस्थितंज्ञा
त्वा क्षेत्रंशंसन्तिपण्डिताः ४२ अविमुक्तगुणानांतु कःसमर्थोवदिष्यति। देवब्राह्मणवि
द्विष्टा देवभक्तिविडम्बकाः ४३ ब्रह्मघ्नाश्चकृतघ्नाश्च तथानैष्कृतिकाश्चये। लोकद्विषो
गुरुद्विषस्तीर्थायतनदूषकाः ४४ सदापापरताश्चैव येचान्येकुत्सिताभुवि। तेषांना
स्तीतिवासोवै स्थितोसौदण्डनायकः ४५ रक्षणार्थंनियुक्तंवै दण्डनायकमुत्तमम्। पूज
यित्वायथाशक्त्या गन्धपुष्पादिधूपकैः ४६ नमस्कारंततःकृत्वा नायकस्यतुमन्त्रवित्।

रांश किया ३३। ३४ और वरदेनेवाले महादेवजी और पार्वतीजी को नमस्कारकिया तदनन्तर उन मनुष्यरूपा पार्वतीजी से व्यासजी यह वचनबोले कि हे विशालाक्षि यहाँ उत्तम महादेवजी और पार्वतीजी हैं और श्रीगंगानदी बहती है और ऐसा उत्तम मिष्टभोजन मिलता है सुन्दर गतिहोतीहै ऐसी काशीजीमें कौनसा पुरुष वासनहींकरेगा अर्थात् सबको वासकरना योग्यहै ३५।३६ ऐसाकहकर वेदव्यासजी उसनगरीको देखतेहुए हृदयकी आनन्द देनेवाली उस भिक्षाको विचार करनेलगे ३७ फिर अपने आगे महादेव और पार्वतीजी को देखतेभये तब घरके आंगनमें खड़ेहुए वेदव्यासजी से महादेवजी यहवचन बोले ३८ हे महामुने आप क्रोधी हैं इसहेतु से आपको इसक्षेत्रमें बसना न चाहिये यहवचन सुनकर वेदव्यासजी बोले ३९ हे देव आप मुझको यहाँ आनेकी आज्ञा चतुर्दशी और अष्टमी दोदिनकी दीजिये तब शिवजीने कहा ऐसाही होगा ४० ऐसाकहकर महादेवजी अन्तर्द्धान होगये उनके अन्तर्द्धान होतेही वह गृह और पार्वतीजी भी अदृष्टहोगयीं इसप्रकार पूर्वसमय में महातपस्वी वेदव्यासजी उस क्षेत्रके गुणोंको जानके उसी क्षेत्रके समीप वासकरतेभये इसरीति से क्षेत्रके समीप वेदव्यासजी के वसने से सबपण्डित लोग इस उत्तम क्षेत्रकी स्तुति करते हैं ४१ ४२ इससे हे ऋषियो इस अविमुक्त तीर्थके गुणों के कहने को कौन समर्थहै देवता और ब्राह्मणकी निन्दाकरनेवाले देवताकी भक्तिका निरादर करनेवाले ब्रह्महत्या करनेवाले कृतघ्नी अनेकप्रकारके पापी गुरू तीर्थ और देवमन्दिरोंकी निन्दाकरके दोषलगानेवाले सदैव पापकर्मी ऐसे पुरुषोंका वहां वासनहीं होता है क्योंकि वहां शिवजी का दण्डनायकनामगण वर्तमान रहता है ४३। ४५ वह दण्डनायकगण रक्षाकेनिमित्त रहताहै इसनिमित्त गंध पुष्प धूपआदिकोंसे शक्तिकेअनुसार इसदण्डनायक का पूजनकरना चाहिये ४६ और बड़ीनम्रतासे उसको नमस्कारकर उसका मंत्र भी जपना उचितहै इसक्षेत्रमें सबप्रकारके वर्ण वासकरतेहैं और अनेकप्रकार सर्प बिच्छूआदि कीट भी

सर्ववर्णावृतेक्षेत्रे नानाविधसरीसृपे ४७ ईश्वरानुगृहीताहि गतिंगाणेश्वरींगताः। नाना रूपधरादिव्या नानावेषधरास्तथा ४८ सुरावेयेतुसर्वेच तन्निष्ठास्तत्परायणाः। यदि च्छन्तिपरंस्थानं अक्षयन्तदवाप्नुयुः ४९ परंपुरंदैवपुराद्विशिष्यते तदुत्तरंब्रह्मपुरात्पुर स्थितम्। तपोबलादीश्वरयोगनिर्मितं नतत्समंब्रह्मदिवौकसालयम् ५० मनोरमंकामग मंह्यनामयं अतीत्यतेजांसितपांसियोगवत् ५१ अधिष्ठितस्तुतत्स्थाने देवदेवोविराजते। तपांसियानितप्यन्ते व्रतानिनियमाश्चये ५२ सर्वतीर्थभिषेकंतु सर्वदानफलानिच। सर्व यज्ञेषुयत्पुण्यमविमुक्तेतदाप्नुयात् ५३ अतीतंवर्त्तमानञ्च अज्ञानातज्ञानतोऽपिवा। स र्वंतस्यचयत्पापं क्षेत्रंदृष्ट्वाविनश्यति ५४ शान्तैर्दान्तैस्तपस्तप्तं यत्किंचिद्धर्मसंज्ञितम्। सर्वंचतदवाप्नोति अविमुक्तेजितेन्द्रियः ५५ अविमुक्तंसमासाद्य लिङ्गमर्चयतेनरः। क ल्पकोटिशतैश्चापि नास्तितस्यपुनर्भवः ५६ अमराह्यक्षयाश्चैव क्रीडन्तिभवसन्निधौ। क्षेत्रंतीर्थोपनिषदमविमुक्तंनसंशयः ५७ अविमुक्तेमहादेवमर्चयन्तिस्तुवन्तिवै। सर्व पापविनिर्मुक्तास्तेतिष्ठन्त्यजरामराः ५८ सर्वकामाश्चयेयज्ञाः पुनरावृत्तिकाःस्मृताः। अ विमुक्तेमृतायेच सर्वेतेह्यनिवर्तकाः ५९ ग्रहनक्षत्रताराणां कालेनपतनाद्भयम्। अवि मुक्तेमृतानान्तु पतनंनैवविद्यते ६० कल्पकोपिसहस्रैस्तु कल्पकोटिशतैरपि। नतेषां पुनरावृत्तिर्मृतायेक्षेत्रउत्तमे ६१ संसारसागरेघोरे भ्रमन्तःकालपर्ययात्। अविमुक्तं

रहतेहैं वहसब भी महादेवजी के गण होजातेहैं और शिवजीमें निष्ठाकरनेवाले अथवा उनमें तत्पर रहनेवाले देवतालोग जो वहां वासकरतेहैं वहभी जिस २ स्थानकी इच्छा करते हैं उसी २ परम अक्षयस्थानको प्राप्तहोजातेहैं यह स्थान देवताओंके स्वर्गसेभी उत्तमहै ब्रह्मलोकके समानहै इसको महादेवजीने अपने योगबलसे रचाहै इस क्षेत्रके समान अन्य कोई लोकनहीं है ४७। ५० यह क्षेत्र चित्तरोचक कामनाओं का देनेवाला रोगों से रहित तप तेज और योग इनसबका सिद्धकरने वालाहै ५१ इसक्षेत्रमें अधिष्ठितहुए महादेवजी प्रकाशित होरहेहैं जो पुरुष इसअविमुक्त तीर्थपर तपकरतेहैं अथवा नियम व्रतादिक करतेहैं वहसब तीर्थोंके अभिषेक यज्ञ और दानोंके फलको प्राप्त होतेहैं ५२। ५३ व्यतीत और वर्त्तमान तथा अज्ञान से कियाहुआ जो पापहै वहसब इस अ-विमुक्ततीर्थ के दर्शनहीसे नष्टहोजाताहै ५४ शान्त तथा जितेन्द्रिय दान्तपुरुष जो कुछ धर्मकरतेहैं वहीधर्म इस अविमुक्त तीर्थपर अनन्तगुणहोकर प्राप्तहोताहै ५५ जो पुरुष अविमुक्त तीर्थपर प्राप्त होकर शिवजीके लिङ्गका पूजन करतेहैं वह किरोड़ों कल्पोंतक इससंसारमें जन्म नहीं लेते हैं ५६ शिवजीके समीप हजारोंदेवता क्रीड़ाकरतेहैं इसीसे यहक्षेत्र निस्सन्देह सबतीर्थोंका शिरोमणिहै ५७ जो पुरुष इसतीर्थपर महादेव का पूजन करतेहैं और उनकी स्तुति करते हैं वहसब पापों से छुटकर देवता होजातेहैं ५८ जितने कामनावाले यज्ञहैं वहसब फिर जन्मकरानेवालेहैं परन्तु जो इसअवि-मुक्त तीर्थपर मरतेहैं वह फिर कभी जन्म नहींलेतेहैं ५९ ग्रह नक्षत्र तारा आदिक सब अपने २ काल पाकर पतित होजाते हैं परन्तु अविमुक्ततीर्थपर मरनेवाले पुरुष फिर कभी नहीं पतितहोते ६०

समासाद्य गच्छन्तिमणिकर्णिकाम् ६२ ज्ञात्वा कलियुगंघोरं हाहाभूतमचेतनम्। अ
विमुक्तंनमुञ्चंति कृतार्थास्तेनराभुवि ६३ अविमुक्तंप्रविष्टस्तु यदिगच्छेत्ततःपुनः। तदा
हसन्तिभूतानि अन्योन्यंकरताडनम् ६४ कामक्रोधेनलोभेन ग्रस्तायेभुविमानवाः।
निष्क्रमन्तेनरादेवि! दण्डनायकमोहिताः ६५ जपध्यानविहीनानां ज्ञानवर्जितचेतसा
म्। ततोदुःखहतानाञ्च गतिर्वाराणसीनृणाम् ६६ तीर्थानांपञ्चकंसारं विश्वेशानन्दका
नने। दशाश्वमेधंलोलार्कः केशवोविन्दुमाधवः ६७ पञ्चमीतुमहाश्रेष्ठा प्रोच्यतेमणिक
र्णिका। एभिस्तुतीर्थवर्यैश्च वर्ण्यतेह्यविमुक्तकम् ६८ एतद्धेकथितंसर्वं देव्यैदेवेनभा
षितम्। अविमुक्तस्यक्षेत्रस्य तत्सर्वंकथितंद्विजाः ६९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुरशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८४॥

(ऋषयऊचुः) माहात्म्यमविमुक्तस्य यथावत्कथितंत्वया। इदानींनर्मदायास्तु
माहात्म्यंवदसत्तम! १ अत्रोङ्कारस्यमाहात्म्यं कपिलासङ्गमस्यच। अमरेशस्यचैवाहु
र्माहात्म्यंपापनाशनम् २ कथंप्रलयकालेतु ननष्टानर्मदापुरा। मार्कण्डेयश्चभगवान्न
विनष्टस्तदाकिल। त्वयोक्तंतदिदंसर्वं पुनर्विस्तरतोवद ३ (सूत उवाच) एतदेवपुरा
पृष्टः पाण्डवेनमहात्मना। नर्मदायास्तुमाहात्म्यं मार्कण्डेयोमहामुनिः ४ उग्रेणतपसा

जो इस उत्तमक्षेत्र में मरतेहैं वह किरोड़ों कल्पोंमेंभी कभी नहीं जन्मते हैं ६१ जो संसारसागर में भ्रमतेहुए पुरुष काल के वशहोकर अविमुक्त तीर्थपर प्राप्तहो मणिकर्णिकाघाटपर प्राप्तहोतेहैं वहबड़े धन्यहैं ६२ जो पुरुष इसमहाघोर कलियुगको प्राप्तहुआ जानकर अविमुक्ततीर्थ को नहीं त्यागते हैं वहभी कृतार्थ होजातेहैं ६३ अविमुक्त क्षेत्रमें प्रवेशितहुआ पुरुष जब अन्य किसी स्थानको जाताहै तब सबप्राणी तालियां बजाकर परस्पर हास्य करतेहैं ६४ जो पुरुष काम क्रोध और लोभकरके हत होजातेहैं वह दण्डनायक के भयसे उस क्षेत्र में से निकलकर चलेजाते हैं ६५ जप ध्यानसे रहित अज्ञानी और दुःखों से हतहुए पुरुषों की गति श्रीकाशीजी में होतीहै—इसपृथ्वी में पांचतीर्थ सारहैं दशाश्वमेध, लोलार्क, केशव, विन्दुमाधव, और महाश्रेष्ठ मणिकर्णिका इनउत्तम पांचतीर्थोंवाला यह अविमुक्ततीर्थ कहाताहै इसरीतिसे जो अविमुक्ततीर्थ का माहात्म्य महादेवजी ने श्रीपार्वतीजी से वर्णनकियाहै-वहसब मैंने अपनी बुद्धिके अनुसार तुमसे वर्णन कियाहै ६६।६९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुरशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८४॥

ऋषियों ने पूछा—हेसूतजी आपने अविमुक्ततीर्थ का माहात्म्य तो अच्छेप्रकार से कहा अब हम आपसे नर्मदानदी का माहात्म्य श्रवणकिया चाहतेहैं उसको आप कृपाकरके हमें सुनाइये १ उसी स्थानपर ॐकार और कपिलाके संगमका माहात्म्य और अमरेशमहादेव भी पापोंके नाशकरनेवाले सुनेजातेहैं २ पूर्व प्रलयकाल में नर्मदानदी कैसे नष्ट नहींहुई है मार्कण्डेयजी भी किसहेतु से नहीं नष्टहुए यह आप कहचुकेहैं परन्तु अब विस्तारपूर्वक सुननाचाहतेहैं यहसुनकर सूतजी बोले कि इसनर्मदानदी का माहात्म्य प्रथम राजायुधिष्ठिर ने मार्कण्डेयजी से पूछाहै अर्थात् उग्रवनमें वास

युक्तो वनस्थोवनवासिना। एष्टःपूर्वांमहागाथां धर्मपुत्रेणधीमता ५ (युधिष्ठिर उवाच) श्रुतामेविविधाधर्मास्त्वत्प्रसादाद्द्विजोत्तम ! । भूयश्चश्रोतुमिच्छामि तन्मेकथयसुव्रत ! ६ कथमेषामहापुण्या नदीसर्वत्रविश्रुता । नर्मदानामविख्याता तन्मेब्रूहिमहामुने ! ७ (मार्कण्डेय उवाच) नर्मदासरितांश्रेष्ठा सर्वपापप्रणाशिनी । तारयेत्सर्वभूतानि स्थावराणिचराणिच ८ नर्मदायास्तुमाहात्म्यं पुराणेयन्मयाश्रुतम् । तदेतद्धिमहाराज ! तत्सर्वंकथयामिते ९ पुण्याकनखलेगङ्गा कुरुक्षेत्रेसरस्वती । ग्रामेवायदिवारण्ये पुण्यासर्वत्रनर्मदा १० त्रिभिःसारस्वतंतोयं सप्ताहेनतुयामुनम् । सद्यःपुनातिगाङ्गेयं दर्शनादेवनार्मदम् ११ कलिङ्गदेशेपश्चार्द्धे पर्वतेऽमरकण्टके । पुण्येचत्रिषुलोकेषु रमणीयामनोरमा १२ सदेवासुरगन्धर्वा ऋषयश्चतपोधनाः । तपस्तप्त्वामहाराज ! सिद्धिञ्चपरमांगताः १३ तत्रस्नात्वानरोराजन्नियमस्थोजितेन्द्रियः । उपोष्यरजनीमेकां कुलानांतारयेच्छतम् १४ जलेश्वरेनरःस्नात्वा पिण्डंदत्त्वायथाविधि। पितरस्तस्यतृप्यन्ति यावदाभूतसंप्लवम् १५ पर्वतस्यसमन्तात्तु रुद्रकोटिःप्रतिष्ठिता । स्नात्वायः कुरुतेतत्र गन्धमाल्यानुलेपनैः १६ प्रीतस्तस्यभवेच्छर्वो रुद्रकोटिर्नसंशयः । पश्चिमे पर्वतस्यान्ते स्वयंदेवोमहेश्वरः १७ तत्रस्नात्वाशुचिर्भूत्वा ब्रह्मचारीजितेन्द्रियः । पितृकार्य्यञ्चकुर्वीत विधिवन्नियतेन्द्रियः १८ तिलोदकेनतत्रैव तर्पयेत्पितृदेवताः । आस

करतेहुए राजा युधिष्ठिरने इसकथाको मार्कण्डेयजीसे पूछाहै ४।५ युधिष्ठिरनेपूछा हेद्विजोत्तम मैंने आपकी कृपासे अनेकधर्म सुनेहैं परन्तु अब मेरी धर्मके सुननेकी और इच्छाहै उसकोआपकहिये ६ प्रथम तो आप यहसमझाइये कि यह पवित्र नर्मदानदी कैसे उत्पन्न हुई है, मार्कण्डेयजीबोले कि नर्मदानदी सब नदियों में श्रेष्ठ है और स्थावर जंगमभूतों के पापोंको दूरकरके उनकाउद्धारकरने वाली है ७।८ हे महाराज युधिष्ठिर इस नर्मदा नदीका माहात्म्य जो मैंने अन्य २ पुराणों में सुनाहै वहसब तेरे आगे वर्णन करताहूं, कनखलमें गंगानदीहै,कुरुक्षेत्रमें महापवित्र सरस्वती नदी है, यह नर्मदानदी ग्राममें अथवा वनमें सर्वत्र उत्तमहै ९।१० सरस्वतीका जल पांचदिनमें पवित्र करदेताहै यमुनाका जल सातदिनमें पवित्रकरताहै गंगाजल तत्कालपवित्र करताहै और नर्मदानदीका जल दर्शनही मात्रसे पवित्र करदेताहै कलिंगदेशमें अमरकंटकवनमें और तीनोंलोकों में यह नर्मदानदी मनोहर और रमणीक है ११ । १२ हे महाराज देवता असुर गन्धर्व और तपस्वी ऋषि यहसब नर्मदा नदीपर सिद्धिको प्राप्तहुए हैं १३ हे राजा नियममें युक्त जो कोई जितेन्द्रिय पुरुष स्नानकर एक दिन निराहार व्रतका नियम करताहै वह अपनी सात पीढ़ियोंको उद्धार कर देताहै १४ और जलेश्वरतीर्थमें स्नानकर यथार्थ विधिसे पिण्डदान करनेवाले पुरुषके पितर प्रलयकालतकतृप्तरहते हैं १५ जहाँ पर्वतके समीप रुद्रोंकी कोटिहै वहाँ नर्मदा नदीमें स्नानकर जो कोई गन्ध पुष्पादि से रुद्रोंका पूजन करता है उसके ऊपर महादेवजी प्रसन्न होजाते हैं और उसी पर्वत के समीप पश्चिम दिशामें आप महेश्वर महादेवजी विराजमान हैं वहाँ स्नानकर ब्रह्मचर्य्य से जितेन्द्रियहो

तमंकुलंतस्य स्वर्गेमोदेतपाण्डव ! १९ षष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्गलोकेमहीयते । अप्स
रोगणसंकीर्णे सिद्धचारणसेविते २० दिव्यगन्धानुलिप्तश्च दिव्यालङ्कारभूषितः। ततः
स्वर्गात्परिभ्रष्टो जायतेविपुलेकुले २१ धनवान्दानशीलश्च धार्मिकश्चैवजायते। पुनः
स्मरातितत्तीर्थे गमनंतत्ररोचते २२ कुलानितारयेत्सप्त रुद्रलोकंसगच्छति । योजना
नांशतंसाग्रं श्रूयतेसरिदुत्तमा २३ विस्तारेणतुराजेन्द्र ! योजनद्वयमायता । षष्टिस्ती
र्थसहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथैवच २४ सर्वतस्यसमन्तात्तु तिष्ठतेमरकण्टके । ब्रह्मचारी
शुचिर्भूत्वा जितक्रोधोजितेन्द्रियः २५ सर्वहिंसानिवृत्तस्तु सर्वभूतहितेरतः । परंशर्व
समाचारो यस्तुप्राणान्परित्यजेत् २६ तस्यपुण्यफलंराजन् ! शृणुष्वावहितोमम ।
शतंवर्षसहस्राणां स्वर्गेमोदेतपाण्डव ! २७ अप्सरोगणसंकीर्णे सिद्धचारणसेविते । दि
व्यगन्धानुलिप्तश्च दिव्यपुष्पोपशोभितः २८ क्रीडतेदेवलोकस्थो दैवतैःसहमोदते ।
ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टो राजाभवतिवीर्यवान् २९ गृहन्तुलभतेसोवै नानारत्नविभूषितम्।
स्तम्भैर्मणिमयैर्दिव्यैर्वज्रवैदूर्यभूषितैः ३० आलेख्यसहितंदिव्यं दासीदाससमन्वितम्।
मत्तमातङ्गशब्दैश्च हयानांहेषितेनच ३१ क्षुभ्यतेतस्यतद्द्वारमिन्द्रस्यभवनंयथा । रा
जराजेश्वरःश्रीमान् सर्वस्त्रीजनवल्लभः ३२ तस्मिन्गृहेवसित्वातु क्रीडाभोगसमन्विते।
जीवेद्वर्षशतंसाग्रं सर्वरोगविवर्जितः ३३ एवंभोगोभवेत्तस्य योमृतोमरकण्टके। अग्नौ

विधिपूर्वक पितरोंकाश्राद्धादि कर्मकरे १६।१८ यवोंसेदेवताओंका और तिलों से पितरोंका तर्पण करे उसके सातपीढ़ीके पुरुष स्वर्गमें प्राप्त होते हैं और आप अप्सरागणोंसे और सिद्ध चारण गन्धर्वों से युक्त होकर साठहजार वर्षोंतक वहाँ आनन्दपूर्वक वासकरता है १९।२० फिर इस पृथ्वीतलमेंआ कर उत्तम धनाढ्य कुलमें जन्म लेताहै २१ और धनवान् होकर दानधर्मादिक उत्तम कर्मोंका करनेवाला होता है और इस जन्ममेंभी इसी तीर्थका स्मरण करके तीर्थहीपर फिर प्राप्तहोताहै २२ इसके पीछे फिर सातकुलोंका उद्धार करके शिवलोकमें प्राप्त होताहै इस नर्मदा नदीकी लम्बाई सौ योजनकी और चौड़ाई आठकोशकी सुनीजाती है साठ किरोड़ और साठहज़ार ६०००६०००० तीर्थ इस नर्मदा के चारोंओर हैं जो पुरुष ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय क्रोध हिंसादि से रहित होके सबभूतोंका हितकारी होता है और शिवजीकी भक्ति रखताहै और इसी आचरण से उस तीर्थ पर प्राणों को त्यागदेता है हे पाण्डव उसके पुण्यों को तुम सावधान होकर मुझसे सुनो वह देवताओंके दिव्य सौ वर्षतक स्वर्ग में वासकरताहै २३ । २७ और वहाँ अप्सरागणों से सेवित सिद्ध चारण गन्धर्वों से पूजित दिव्य गन्धयुक्त नानापुष्पों से शोभित होताहै २८ और सब देवताओं के संगमें क्रीडाकरताहै फिर स्वर्गलोकसे पतितहोकर बड़ाभारी पराक्रमी राजाहोताहै २९ और उत्तमरत्नों से जटित मणियोंके स्तंभयुक्त बड़े चित्रविचित्रगृहमें दासदासियों समेत वासकरता है उस घरके द्वारपर मतवालेहाथी और उत्तम२ घोड़े हिनहिनाया करतेहैं ३०।३१ उसकाद्वारभी इन्द्रके द्वार के समान प्रकाशित होताहै ऐसेस्थानमें उत्तम२ स्त्रियोंको प्याराहोकर श्रीमान् राजराजेश्वर होताहै

विषजलेवापि तथाचैवह्यनाशके ३४ अनिवर्तिकागतिस्तस्य पवनस्याम्बरेयथा। प
तनंकुरुतेयस्तु अमरेशेनराधिप! ३५ कन्यानांत्रिसहस्राणि एकैकस्यापिचापरे। तिष्ठ
न्तिभुवनेतस्य प्रेषणंप्रार्थयन्तिच ३६ दिव्यभोगैःसुसम्पन्नः क्रीडंतेकालमक्षयम्। पर्व
तस्यसमन्तात्तु रुद्रकोटिःप्रतिष्ठिता ३७ स्नानंयःकुरुतेतत्र गन्धमाल्यानुलेपनैः। प्री
तःसोऽस्यभवेत्सर्वो रुद्रकोटिर्नसंशयः ३८ पश्चिमेपर्वतस्यान्ते ह्ययंदेवोमहेश्वरः। तत्र
स्नात्वाशुचिर्भूत्वाब्रह्मचारीजितेन्द्रियः ३९ पितृकार्यंचकुर्वीत विधिवन्नियतेन्द्रियः।
तिलोदकेनविधिवत्तर्पयेत्पितृदेवताः ४० आसप्तमंकुलन्तस्य स्वर्गेमोदेतपाण्डव!।
षष्टिवर्षसहस्राणिस्वर्गलोकेमहीयते ४१ दिव्यगन्धानुलिप्तश्च दिव्यालङ्कारभूषितः।
ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टो जायतेविपुलेकुले ४२ धनवान्दानशीलश्च धार्मिकश्चैवजायते।
पुनःस्मरतितीर्थंथैगमनन्तत्ररोचते। तारयेत्तुकुलान्सप्त रुद्रलोकंसगच्छति ४३ पृथि
व्यामासमुद्रायामीदृशोनैवजायते। यादृशोऽयंनृपश्रेष्ठ! पर्वतेऽमरकण्टके ४४ तावत्ती
र्थंतुविज्ञेयंपर्वतस्यतुपश्चिमे। ह्रदोजलेश्वरोनाम त्रिषुलोकेषुविश्रुतः ४५ तत्रपिण्डप्र
दानेन सन्ध्योपासनकर्मणा। पितरोदशवर्षाणि तर्पितास्तुभवन्तिवै ४६ दक्षिणेनर्मदाकू
ले कपिलेतिमहानदी। सकलार्जुनसञ्छन्ना नातिदूरेव्यवस्थिता ४७ सापिपुण्यामहा।

ऐसे क्रीडा भोगवाले घरमें वासकरके देवताओं के दिव्य सौवर्ष तक नीरोगहोकर जीवता रहता-
है ३१। ३३ जो पुरुष उसअमरकंटक तीर्थपर मरताहै उसको ऐसाही ऐश्वर्य्य मिलताहै और अग्नि
विष जलआदिसे कभी नष्टनहीं होताहै उसकी गतिवायुके समान आकाशमें गमनकरनेकी होजाती
है और जो अमरेश तीर्थपर अपना शरीर त्यागताहै उसके घरमें तीनहज़ार दासी होकर वह दिव्य
भोगों से युक्तहोकर बहुतकालतक क्रीड़ाकरताहै और पर्व्वतके चारोंओर जो रुद्रोंकी कोटि प्रतिष्ठित
है वहां जो स्नानकरके गन्धपुष्पादिसे उनरुद्रोंका पूजनकरताहै उसकेऊपर निस्सन्देह सबरुद्रकोटि
महादेव प्रसन्न होजाते हैं ३४। ३८ और पर्व्वतके पश्चिमकीओर जो महेश्वर शिवजी स्थितहैं वहां
स्नानादि से पवित्र जितेन्द्रिय और नियमी होकर जो विधिपूर्व्वक जौसे देवता और तिलसे पितरों
का श्राद्ध तर्पण करताहै ३९। ४० हे पाण्डव उसके सातकुल तो स्वर्गवासी होते हैं और आप साठ
हज़ार वर्षोंतक दिव्य गन्ध उत्तम आभूषण औरनानाप्रकारके भोगों समेत स्वर्गमें विराजमान रह-
ताहै फिर स्वर्गसे पतितहोकर धनाढ्य कुलमें उत्पन्नहो महाधनी दानी और धार्मिक होकरभी उ-
सी तीर्थका स्मरणकर वहाँही गमन करनेकी रुचिकरताहै औरसातपीढ़ियोंका फिर उद्धारकरके शिव-
जीके लोकमें प्राप्त होताहै इसके अनन्तर जब इसपृथ्वीपर जन्मलेताहै तबऐसाराजाहोताहै कि उस
के समान दूसरा नहींहोता अकेलाही राज्यकरताहै यह अमरकंटक तीर्थकाप्रभावहै—अब उसपर्वत
के पश्चिम भागके तीर्थोंको सुनो वहाँ जलेश्वरनाम ह्रद पृथ्वीभरमें विख्यातहै वहाँ पिण्ड दान और
सन्ध्योपासन करनेसे दशवर्षतक पितरोंकी तृप्ति रहती है ४१। ४६ नर्मदा नदीके दक्षिण तटपर कपि-
लानाम नदीहै जिसकी सबपृथ्वी अर्जुनआदि अनेक वृक्षोंसेआच्छादित होरही है यहनदी महापवित्र

भागा त्रिषुलोकेषुविश्रुता। तत्रकोटिशतंसाग्रं तीर्थानांतुयुधिष्ठिर! ४८ पुराणेश्रूयतेरा
जन्! सर्वकोटिगुणंभवेत्। तस्यास्तीरेतुयेवृक्षाः पतिताःकालपर्ययात् ४९ नर्मदातो
यसंस्पृष्टास्तेऽपियान्तिपराङ्गतिम्। द्वितीयातुमहाभागा विशल्यकरणीशुभा ५० तत्र
तीर्थेनरःस्नात्वा विशल्योभवतिक्षणात्। तत्रदेवगणाःसर्वे सकिन्नरमहोरगाः ५१ यक्ष
राक्षसगन्धर्वा ऋषयश्चतपोधनाः। सर्वेसमागतास्तत्र पर्वतेऽमरकण्टके ५२ तैश्चस
र्वैःसमागम्य मुनिभिश्चतपोधनैः। नर्मदामाश्रितापुण्या विशल्यानामनामतः ५३ उत्
पादितामहाभागा सर्वपापप्रणाशिनी। तत्रस्नात्वानरोराजन्! ब्रह्मचारीजितेन्द्रियः५४
उपोष्यरजनीमेकांकुलानान्तारयेच्छतम्। कपिलाचविशल्याच श्रूयतेराजसत्तम! ५५
ईश्वरेणपुराप्रोक्ते लोकानांहितकाम्यया। तत्रस्नात्वानरोराजन्नश्वमेधफलंलभेत् ५६
अनाशकन्तुयःकुर्यात् तस्मिंस्तीर्थेनराधिप!सर्वपापविशुद्धात्मा रुद्रलोकंसगच्छति५७
नर्मदायास्तुराजेन्द्र! पुराणेयन्मयाश्रुतम्। यत्रतत्रनरःस्नात्वा चाश्वमेधफलंलभेत्५८
येवसन्त्युत्तरेकूले रुद्रलोकेवसन्तिते। सरस्वत्याञ्चगङ्गायां नर्मदायांयुधिष्ठिर! ५९ समं
स्नानंचदानञ्च यथामेशङ्करोऽब्रवीत्। परित्यजतियःप्राणान् पर्वतेऽमरकण्टके ६० वर्ष
कोटिशतंसाग्रं रुद्रलोकेमहीयते। नर्मदायाजलंपुण्यं फेनोर्मिभिरलंकृतम् ६१ पवित्रंशि
रसावन्द्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते। नर्मदापर्वतःपुण्या ब्रह्महत्यापहारिणी ६२ अहोरात्रोप

भाग्यवाली त्रिलोकीमें विख्यातहै उसके ओर पासभी लाखोंतीर्थ हैं ४७।४८ हे राजन् पुराणोंमें ऐसा सुनाजाताहै कि उसनदी के तीरकेवृक्ष जो कालकेवलसे वहकर उसके जलमें गिरपड़ते हैं वहभीपरम गतिको प्राप्तहोजाते हैं दूसरी विशल्य करणीनाम सुन्दरनदी है ४९।५० उस विशल्यकरणी नदी में स्नान करनेवाला पुरुष तत्कालही पवित्रहोजाताहै औरसबदेवता किन्नर गन्धर्व महोरग यक्ष राक्षस तपस्वी और ऋषि यहसब लोग उस अमरकंटक नाम पर्व्वतपर रहतेहैं इन्हीं सबऋषि मुनियोंने इकट्ठे होकर नर्मदा नदीके ऊपर लाकर महापवित्र विशल्या नामनदी रची है ५१। ५३ यहनदीभी सबपापोंकी नाशकरनेवाली कहीहै जो मनुष्य वहाँ स्नानकर ब्रह्मचारी और जितेन्द्रिय होकर एक-रात्रिका उपवास व्रतकरताहै वह सातपीढ़ियोंका उद्धार करताहै हे राजन्कपिला और विशल्या यह दोनों नदी पूर्व्वकालमें ईश्वरने लोकोंके हितके मनोरथ पूरेकरनेके निमित्त बनाई हैं वहाँ स्नान क-रनेवाला मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको पाताहै जो पुरुष उस तीर्थपर अनशनं व्रतकरके अपने श-रीरको त्यागताहै वहसब पापोंसे छुटकर रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै ५४।५७ हे राजन् नर्मदा नदीके जिसतीर्थमें मनुष्य स्नान करताहै वहाँ सर्वत्रही अश्वमेध यज्ञका फल होता है ५८ जो इस नदीके उत्तर तटपर वासकरते हैं वह रुद्रलोकमें प्राप्त होतेहैं यह शंकरजीका वचनहै कि सरस्वती गंगा और नर्मदा इनतीनोंमें स्नान दानादि धर्म करनेका समान फलहै जो अमरकंटक तीर्थपर वासक-रता है वह सौ किरोड़ वर्षोंतक रुद्रलोकमें वास करता है इस नर्मदा नदी का महापवित्र जल जो झाग और तरंगोंसे शोभितहै वह शिरसे नमस्कार करनेके योग्यहै और सबपापोंका नाश करने

वासेन मुच्यतेब्रह्महत्यया। एवंरम्याचपुण्याच नर्मदापाण्डुनन्दन!६३ त्रयाणामपिलो कानां पुण्याह्येषामहानदी। वटेश्वरेमहापुण्ये गङ्गाद्वारेतपोवने ६४ एतेषुसर्वस्थानेषुद्वि जाःस्युःशंसितव्रताः। श्रुतंदशगुणंपुण्यं नर्मदोदधिसङ्गमे ६५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः१८५॥

(मार्कण्डेय उवाच) नर्मदातुनदीश्रेष्ठा पुण्यात्पुण्यतमाहिता। मुनिभिस्तुमहाभा गै र्विभक्तामोक्षकांक्षिभिः १ यज्ञोपवीतमात्राणि प्रविभक्तानिपाण्डव!। तेषुस्नात्वातुरा जेन्द्र! सर्वपापैःप्रमुच्यते २ जलेश्वरंपरन्तीर्थं त्रिषुलोकेषुविश्रुतम्। तस्योत्पत्तिंकथ यतः शृणुत्वंपाण्डुनन्दन! ३ पुरामुनिगणाःसर्वे सेन्द्राश्चैवमरुद्गणाः। भयोद्विग्नाविरू पाक्षं परित्रायस्वनःप्रभो! ४ (भगवान् उवाच) स्वागतंतुसुरश्रेष्ठाः! किमर्थमिहचा गताः। किंदुःखंकोनुसन्तापः कुतोवाभयमागतम्! ५ कथयध्वंमहाभागा एवमिच्छामिवे दितुम्। एवमुक्तास्तुरुद्रेण कथयन्शंसितव्रताः ६ (ऋषयऊचुः) अतिवीर्य्योमहाघो रो दानवोबलदर्पितः। वाणोनामेतिविख्यातो यस्यवैत्रिपुरंपुरम् ७ गगनेसततंदिव्यं भ्रम तेतस्यतेजसा। ततोभीताविरूपाक्ष! त्वामेवशरणङ्गताः ८ त्रायस्वमहतोदुःखात् त्वंहि नःपरमागतिः। एवंप्रसादंदेवेश! सर्वेषांकर्तुमर्हसि ९ येनदेवाःसगन्धर्वाः सुखमेधन्तिशङ्क र!। परांनिर्वृतिमायान्ति तत्प्रभो! कर्तुमर्हसि १० (भगवानुवाच) एतत्सर्वंकरिष्यामि

वाला है हे पांडुनन्दन इस प्रकारसे यह नर्मदा नदी महापवित्र ब्रह्महत्यादि पापों की नाश करने वाली होकर महा तेजकी दाताहै ५९। ६३ यह महानदी तीनोंलोकोंमें पवित्रहै और वटेश्वर तीर्थ, महापुण्यकारी गंगाद्वारतीर्थ और तपोवन इनसब पवित्र स्थानोंमें रहनेवाले पुरुष तीव्रव्रतवाले व र्णनकियेहैं और नर्मदा नदी तथा समुद्रके संगममें स्नान आदिका दशगुणा पुण्य होता है ६४।६५

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८५॥

मार्कण्डेयजी कहतेहैं–कि नर्मदानदी पवित्र और महाश्रेष्ठ है इसका विभाग मोक्षकी इच्छाकरने वाले पवित्र मुनियों ने कियाहै इसके विभाग यज्ञोपवीतके प्रमाणवाले कियेहैं, हे राजेन्द्र उनतीर्थों में स्नान करके सबपापोंसे छुटजाताहै १।२ जलेश्वरनामतीर्थ त्रिलोकीमें विख्यातहै उसकीउत्पत्तिको कहतेहैं ३ पूर्वकालमें सबमुनि और इन्द्रादिक मरुद्गण भयसे उद्विग्नमनहोकर शिवजीसे बोले कि आप हमारी रक्षाकरो। शिवजीबोलेहेदेवतातुम्हारे चित्तमें कौनसाभयहै जिसकेनिमित्त तुम सब यहाँ आयेहो तुमको कौनसादुःख और संताप है और किस्से भय उत्पन्नहुआहै यहसर्व हमसे वर्णनकरो ऐसे शिवजीके वचन सुनकर मरुद्गण समेत ऋषिगणबोले ४। ६ हे महादेवजी अत्यन्तपराक्रमी घोरबलसे अभिमानी ऐसा बाणासुर दैत्यहै उसके त्रिपुरनाम पुरहै वह पुर उसबाणासुरके तेजसे आकाशमें भ्रमताहै सोउस दैत्यसे भयभीतहोकर हम आपकी शरणमें आयेहैं ७। ८ आपही हमारी परमगतिहो सो उसदैत्यके दुःखसे हमारी रक्षाकरके हम सबपर कृपाकरो ९ हे देव जिसप्रकारसे देवता गन्धर्व और ऋषिमुनि सुखको प्राप्तहों वही आप कीजिये १० भगवान् शिवजीबोले मैं उसका

माविषादंगामिप्यथ। अचिरेणैवकालेन कुर्य्यांयुष्मत्सुखावहम् ११ आश्वास्यसतुतान् सर्व्वान् नर्मदातटमाश्रितः। चिन्तयामास देवेशस्तद्वधंप्रतिमानद!१२अथकेनप्रकारेण हन्तव्यंत्रिपुरंमया।.परंसंचिन्त्यभगवान् नारदंचास्मरत्तदा। स्मरणादेव!संप्राप्तोनारदः समुपस्थितः १३ (नारद उवाच) आज्ञापयमहादेव!किमर्थंअस्मृतोह्यहम्। किंकार्य्यंतुम यादेव!कर्तव्यंकथयस्वमे १४ (भगवानुवाच) गच्छनारद!तत्रैवयत्रतत्त्रिपुरंमहत्।बा णस्यदानवेन्द्रस्य शीघ्रंगत्वाचतत्कुरु १५ ताभर्त्तृदेवतास्तत्र स्त्रियश्चाप्सरसांसमाः। तासांवैतेजसाविप्र!भ्रमतेत्रिपुरन्दिवि १६ तत्रगत्वातुविप्रेंद्र!मतिमन्यांप्रबोधय।देवस्य वचनंश्रुत्वा मुनिस्त्वरितविक्रमः १७ स्त्रीणांहृदयनाशाय प्रविष्टस्तत्पुरंप्रति। शोभतेतत्पुरं दिव्यं नानारत्नोपशोभितम् १८ शतयोजनविस्तीर्णं ततोद्विगुणमायतम्। ततोऽपश्यद्वित त्रैव बाणन्तुबलदर्पितम् १९ मणिकुण्डलकेयूरमुकुटेनविराजितम्। हारदोरसुवर्णैश्च चन्द्रकान्तविभूषितम् २० रशनातस्यरत्नाढ्या बाहूकनकमण्डितौ। चन्द्रकान्तमहावज्र मणिविद्रुमभूषिते २१ द्वादशार्कद्युतिनिभे निविष्टंपरमासने। उत्थितोनारदंदृष्ट्वा दानवे न्द्रोमहाबलः २२ (बाणउवाच) देवर्षे! त्वंस्वयंप्राप्तो अर्घ्यंपाद्यंनिवेदये। सोऽभिवाद्य यथान्यायं क्रियतांकिंद्विजोत्तम! २३ चिरात्त्वमागतोविप्र! स्थीयतामिदमासनम्। एवंस म्भाषयित्वातु नारदंऋषिसत्तमम्। तस्यभार्य्यामहादेवी ह्यनौपम्यातुनामतः २४ (अ

सब उपायकरताहूं तुम किसी प्रकारका खेद मतकरो थोड़ेहीकालमें तुमको सुखप्राप्तहोगा ११ इस प्रकारसे उनसबको विश्वासपूर्वक समझाकर नर्मदानदीके तीरपर स्थितहोके उसदैत्यके मारनेकी यह इच्छा करतेभये १२ कि उसदैत्यको मैं किस प्रकारसेमारूं ऐसे चिन्तवनकरके नारदमुनिका स्मरण करतेभये उनके स्मरण करतेही नारदमुनि आवतेभये १३ और आतेही यह वचनबोले हे महादेवजी महाराज क्या आज्ञाहै आपने मुझे किस निमित्त बुलायाहै जो आपकी आज्ञाहो सोईमैं करूं १४ शिवजीबोले हे नारदजी जहाँ वह बड़ा त्रिपुरहै वहाँ जाकर उस बाणासुर दैत्यके पुरमें पतिव्रता स्त्रियांहैं उन्हींके तेजसे वह त्रिपुर आकाशमें भ्रमताहै १५। १६ इसहेतुसे तुमउस पुरमें जाकर उनस्त्रियोंकी बुद्धिको विपरीतकरदो इसप्रकारसे महादेवजीके वचनको सुनकर नारदमुनि शीघ्रही उसपुरमें पहुंचकर स्त्रियोंके चित्तका नाशकरतेभये वह पुर अनेकप्रकारके रत्नोंसे शोभित सौयोजन चौड़ा और दोसौ योजन लंबाथा ऐसे उसपुरमें नारदजी उसबाणासुर दैत्यको देखते भये १७। १९ जो कुंडल केयूर और मुकुटसे शोभित सुवर्ण और चन्द्रमाके समान कान्तिवाले हारों से भूपित स्वर्ण भूषणों से जटित भुजा चन्द्रकान्तिमणि हीरे आदिके भूषणोंसे अलंकृत बारह सूर्य्योंके समान कान्तिवाले उत्तम आसनपर वर्त्तमानहोकर विराजमानथा इन नारदमुनिको देख कर वह महाबली दानवभी उठकर खड़ाहोगया २०। २२ और बोला हे देवऋषि नारदजी आप अपनीही इच्छासे प्राप्तहुएहो मैं आपको अर्घ्य निवेदन करताहूं फिर इसरीति से नमस्कारकरके बोला कि हेद्विजवर्य मुझको जो आज्ञाकरो सोमैं करूं आप बहुतदिवसमें आयेहो आप इसउत्तम आसनपर

नौपम्योवाच) भगवन् ! केनधर्मेण देवास्तुष्यन्तिनारद ! व्रतेननियमेनाथ दानेनतप
सापिवा २५ (नारद उवाच) तिलधेनुञ्चयोदद्याद् ब्राह्मणेवेदपारगे। ससागरवनद्वी
पा दत्ताभवतिमेदिनी २६ सूर्यकोटिप्रतीकाशैर्विमानैःसार्वकामिकैः। मोदतेसुचिरंकाल
मक्षयंकृतशासनम् २७ आम्रामलकपित्थानि वदराणितथैवच। कदम्बचम्पकाशोकान
नेकविविधद्रुमान् २८ अश्वत्थपिप्पलांश्चैव कदलीवटदाडिमान्। पिचुमन्दंमधूकंचउ
पोष्यस्त्रीददातिया २९ स्तनौकपित्थसदृशावूरूचकदलीसमौ। अश्वत्थेवन्दनीयाच
पिचुमन्देसुगन्धिनी ३० चम्पकेचम्पकाभा स्यादशोकेशोकवर्जिता। मधूकेमधुरंवक्ति
वटेचमृदुगात्रिका ३१ वदरीसर्वदास्त्रीणां महासौभाग्यदायिनी। कुक्कुटीकर्कटीचैवद्रव्य
षष्ठीनशस्यते ३२ कदम्बमिश्रकनकमञ्जरीपूजनंतथा। अनग्निपक्कमन्नञ्च पक्कान्नानाम
भक्षणम् ३३ फलानाञ्चपरित्यागः सन्ध्यामौनंतथैवच। प्रथमंक्षेत्रपालस्य पूजाकार्याप्र
यत्नतः ३४ तस्याभवतिवैभर्ता सुखप्रेक्षःसदानघे! अष्टमीचचतुर्थीच पञ्चमीद्वादशीतथा
३५ संक्रान्तिर्विषुवच्चैव दिनच्छिद्रमुखंतथा। एतांस्तुदिवसान् दिव्यानुपवासन्तियाःस्त्रि
यः। तासान्तुधर्म्मयुक्तानां स्वर्गवासोनसंशयः ३६ कलिकालुष्यनिर्मुक्ताः सर्वपापवि
वर्जिताः। उपवासरतांनारीं नोपसर्पतितांयमः ३७ (अनौपम्योवाच)अस्मत्कृतेन
पुण्येन पुराजन्मकृतेनवा। भवदागमनंभूतं किञ्चित्पृच्छाम्यहंव्रतम् ३८ अस्तिविन्ध्या

विराजिये ऐसे जब वाणासुर कहचुका तब अनौपम्यानाम उसदैत्यकीस्त्री बोली २३।२४हेनारदजी देवतालोग किसधर्मसे प्रसन्नहोतेहैं कौनसे व्रत दान नियमकरके उनकी प्रसन्नताहोतीहै २५ नारदजी बोले कि वेदपाठी ब्राह्मणके निमित्त जो तिलोंकी गौ बनाकर दानदेताहै उसको समुद्रान्त पृथ्वी के दानदेने का पुण्य होताहै २६ ऐसा दान करनेवाला किरोड़ों सूर्य्योंके समान कान्तिवाले उत्तम विमानोंमें बैठकर बहुत कालतक आनन्द करताहै २७ जो स्त्री निराहार व्रतकरके आम्र, आमला, कैथ,बेरी,कदम्ब, चंपा, अशोकवृक्ष, पीपल, केला,वड़, अनार, नींब, और महुआ इन वृक्षोंका दान करती है उसके स्तन कैथके फलके समान होजाते हैं जंघा केलेके समान पीपल के समान वंदित नींवके समान सुगन्धित चंपेकीसी कान्ति अशोकके समान शोकरहित महुएके मीठेके समान मधुर भाषी वटके कोमलपत्तोंके समान अंग और बड़ी बेरीके दानसे स्त्रीको सदैव सौभाग्य मिलताहै और तोंबी आदिक लतावेलोंका दान श्रेष्ठ नहीं है और कदंब वृक्षकी मंजरी से देवताका पूजन करना अग्नि से विनापका हुआ तथा पक्वान्नका भोजन नहीं करना फलोंका त्यागकरना संध्या समयमें मौनका धारण करना प्रथम क्षेत्रपालका पूजन करना ऐसे करनेवाली स्त्रीका पति सदैवसुखी रहता है और जो स्त्री अष्टमी चतुर्थी पंचमी द्वादशी संक्रान्तिके दिन और समान दिनरात्र वाले दिन इन सब दिनों में निराहार व्रत करती है उन धर्मवती स्त्रियोंका निस्सन्देह स्वर्गमें वास होताहै २८।३६ कलियुगके पापों समेत अपने सब पापोंसे छुट जाती है और ऐसे उपवास व्रत करनेवाली स्त्रीको धर्मराज अपने पुरमें नहीं प्रवेश करताहै ३७ यह सुनकर अनौपम्या स्त्रीने पूछा हेऋषे मेरे पूर्व

वलिर्नाम वलिपत्नीयशस्विनी। श्वश्रूर्ममापिविप्रेन्द्र! नतुष्यतिकदाचन ३९ श्वशुरो ऽपिसर्वकालं दृष्ट्वाचापिनपश्यति। अस्तिकुम्भीनसीनाम ननन्दापापकारिणी ४० दृष्ट्वा चैवांगुलीभङ्गं सदाकालंकरोतिच। दिव्येनतुपथायाति ममसौख्यंकथंवद ४१ ऊषरेण प्ररोहन्ति बीजंकुर्यात्कथञ्चन। येनव्रतेनचीर्णेन भवन्तिवशगाममम। तद्व्रतंब्रूहिविप्रेन्द्र! दासभावंव्रजामिते ४२ (नारद उवाच) यदेतत्तेमयापूर्वं व्रतमुक्तंशुभानने! अनेनपार्वतीदेवीचीर्णेनवरवर्णिनि ४३ शङ्करस्यशरीरस्था विष्णोर्लक्ष्मीस्तथैवच। सावित्रीब्रह्मणश्चैव वसिष्ठस्याप्यरुन्धती ४४ एतेनोपोषितेनेह भर्तास्थास्यतितेवशे। श्वश्रूश्वशुरयोश्चैव मुखबन्धोभविष्यति ४५ एवंश्रुत्वातुसुश्रोणि! यथेष्टंकर्तुमर्हसि। नारदस्य वचःश्रुत्वा राज्ञीवचनमब्रवीत् ४६ प्रसादंकुरुविप्रेन्द्र! दानंग्राह्यंयथेप्सितम्। सुवर्णमणिरत्नानि वस्त्राण्याभरणानिच ४७ तवदास्याम्यहंविप्र! यच्चान्यदपिदुर्लभम्। प्रगृह्याण द्विजश्रेष्ठ! प्रीयेतांहरिशङ्करौ ४८ (नारद उवाच) अन्यस्मैदीयतांभद्रे! क्षीणवृत्तिस्तुयो द्विजः। अहन्तुसर्वसम्पन्नोमद्भक्तिःक्रियतामिति ४९ एवंतासांमनोहृत्वा सर्वासान्तुपतिव्रताः। जगामभरतश्रेष्ठ! स्वकीयंस्थानकंपुनः ५० ततोह्यहृष्टहृदया अन्यतोगतमानसा। पुरे छिद्रंसमुत्पन्नं बाणस्यतुमहात्मनः ५१ श्रीमत्स्यपुराणेषडशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८६

जन्मके कियेहुए पुण्यों से यहां आपका आगमन हुआ है सो मैं आपसे कुछ व्रत पूछतीहूं ३८ विप्र। वलि नाम महा उत्तम यशवाली जो राजावलिकी स्त्री है वह मेरी सास है वह मुझ पर कभी प्रसन्न नहीं रहती है और मेरेश्वशुरभी मुझको देखकर कुछ प्रसन्न नहीं होते हैं और कुंभीनसीनाम पापकर्मिणी मेरी ननँद है वह मुझको देखके सदैव अंगुली टेढ़ीकिया करती है अर्थात् ढांसा देती है सो मुझको कैसे आनन्दहो ३९।४१ जिस व्रतके करनेसे वह मेरे वशीभूत होजाय उस व्रतको आपमेरे आगे वर्णन कीजिये मैं आपकी दासी होजाऊंगी ४२ नारदजी बोले, हे शुभानने जो मैंने पहले तेरे आगे व्रत कहाहै इसी व्रतके करने से श्रीपार्वतीजी देवी शिवजी के शरीरमें अर्द्धाङ्गनी होकर पतिप्रिया होगई और इसी व्रतके करनेसे श्रीलक्ष्मीजी भी विष्णुकी महाप्यारी प्रिया होगई सरस्वतीजी ब्रह्माकी प्यारीहुई अरुन्धतीजी वसिष्ठजीकी प्रिया होजातीभई ४३।४४ अबइसीव्रतके करनेसे तेरा पति तेरेवशमें होजायगा और तेरेश्वशुर तथा सासुकीभी वाणी बन्दहोजायगी ४५ ऐसे नारदकेवचन को सुनकर वहरानी यथेष्टव्रत करनेकेनिमित्त वचनबोलतीभई ४६ कि हे विप्रेंद्र आप मुझपरप्रसन्न हूजिये मैं तुमको सुवर्ण मणि रत्न और वस्त्राभूषण इनसबका दानदूंगी सो आप मेरेदानको ग्रहणकरो और मेरेऊपरविष्णुतथा महादेवजीप्रसन्नहोजांय ४७।४८ हे भद्रे जोदुर्बल आजीविकासेरहितब्राह्मणहो उसके अर्थदान देनायोग्यहै मैंतो संपूर्ण संपत्तियोंसे युक्तहूं मेरीतो केवलभक्तिही करनी चाहिये ४९ इसरीतिसे नारदमुनि सबस्त्रियों के मनकोहरके अपने स्थानकोजातेभये इसके अनन्तर उनस्त्रियों कामन अन्यत्रहो नारदमुनिमें चलायमान होगया तब वाणासुरके पुरमें छिद्र उत्पन्न होजाता भया ५०।५१ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषडशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८६ ॥

(मार्कण्डेय उवाच) यन्मांपृच्छसिकौन्तेय! तन्मेकथयतःशृणु। एतस्मिन्नन्तरेरुद्रो
नर्मदातटमाश्रितः १ नाम्नामहेश्वरंस्थानं त्रिषुलोकेषुविश्रुतम्। तस्मिन्स्थानेमहा
देवो चिन्तयत्त्रिपुरेवधम् २ गाण्डीवंमन्दरंकृत्वा गुणंकृत्वाचवासुकिम्। स्थानंकृत्वातुवै
शाखं विष्णुंकृत्वाशरोत्तमम् ३ शल्येचाग्निंप्रतिष्ठाप्य मुखेवायुंसमर्पयन्। हयांश्चच
तुरोवेदान्सर्वदेवमयंरथम् ४ अभीषवोऽश्विनौदेवा वक्षोवज्रधरःस्वयम्। सतस्याज्ञां
समादाय तोरणेधनदःस्थितः ५ यमस्तुदक्षिणेहस्तेवामेकालस्तुदारुणः। चक्रेत्वमर
कोट्यस्तु गन्धर्वालोकविश्रुताः ६ प्रजापतीरथश्रेष्ठे ब्रह्माचैवतुसारथिः। एवंकृत्वातुदे-
वेशः सर्वदेवमयंरथम् ७ सोऽतिष्ठत्स्थाणुभूतस्तु सहस्रपरिवत्सरान्। यदात्रीणिसमे
तानि अन्तरिक्षेस्थितानिवै ८ त्रिपर्वाणित्रिशल्येन तदातानिव्यभेदयत्। शरःप्रचोदि
तस्तेन रुद्रेणत्रिपुरंप्रति ९ भ्रष्टतेजाःस्त्रियोजाता बलन्तासांव्यशीर्यत। उत्पाताश्चपुरे
तस्मिन् प्रादुर्भूताःसहस्रशः १० त्रिपुरस्यविनाशाय कालरूपाभवंस्तदा! अट्टहासं
प्रमुञ्चन्ति हयाःकाष्ठमयास्तदा ११ निमेषोन्मेषणञ्चैव कुर्वन्तेचित्ररूपिणः! स्वप्ने
पश्यन्तिचात्मानं रक्ताम्बरविभूषितम् १२ स्वप्नेतुसर्वेपश्यन्त विपरीतानियानितु। एता
न्पश्यन्तउत्पातांस्तत्रस्थानेतुयेजनाः १३ तेषांबलञ्चबुद्धिश्च हरकोपेननाशिते। ततः
साम्वर्तकोवायुर्युगान्तप्रतिमोमहान् १४ समीरितोऽनलस्तेन उत्तमाङ्गेनधावति। ज्वल

मार्कण्डेयजीबोले हे युधिष्ठिर आपने जोमुझसे पूछाहै उसको सुनोकि जिस स्थानमें नर्मदान-
दीकेतटपर श्रीमहादेवजी स्थितहुएथे वहां महेश्वर नाम त्रिलोकी में विख्यात स्थान होताभया
उसी स्थानमें महादेवजी त्रिपुरके वधकरनेका उपाय चिन्तवन करतेभये १।२ वहांस्थितहुए महा-
देवजीने अपने गांडीव धनुषको मन्दराचलपर्व्वतके समान ऊँचाकरके उसमें वासुकि सर्पकी रस्सी
स्वामिकार्त्तिकशरकास्थान विष्णुको उत्तमबाण बाणके अग्रभागमें अग्निको स्थापितकर बाणके
मुखपर वायुका प्रवेशकरके चारों वेदोंको घोड़े और वेदमयही रथबनाकर घोड़ोंकीबाग अश्विनीकु-
मारको रथकीधुरी इन्द्रको और शिवजी ने अपनी आज्ञासे रथकी तोरण में कुबेरको स्थितकिया
३।५ शिवजीके दक्षिणहाथमें धर्मराज वामहाथमें दारुणकाल और रथकेचक्रमें देवता औरगन्धर्वों
की कोटि स्थितहोतेभई ब्रह्माजी सारथीहुए इस प्रकार महादेव सब देवताओंका रथ बनाकरह-
ज़ारोंवर्षपर्य्यन्त स्थितहोतेभये फिर जिससमय पुष्ययोगपाकर वहतीनोंपुरइकट्ठेहोगये उसी समय
पर महादेवजी उस त्रिपुरपर बाणछोड़ते भये तब उसपुरकी स्त्रीतेजसे और बलसे रहितहोजाती
भई और उस पुरमें हज़ारों उत्पातहोतेभये अर्थात् त्रिपुरके विनाशके अर्थकालरूप उपद्रवहोतेभये
काष्ठके घोड़ोंकीमूर्त्ति अट्टहासकरनेलगीं और आंखों कोभी खोलने और मीचनेलगीं और वहसब
दैत्यसुपनेमें अपने आत्माको लालवस्त्रों से विभूषित देखनेलगे जो पुरुष सुपनेमें विपरीत वस्तु
देखता है उसके बल बुद्धि शिवजी के कोपसे नष्ट होजाते हैं इसके अनन्तर सांवर्त्तकनाम युगके
अन्तवाला वायु चलताभया ६।१४ उस वायुके चलने से अग्नि उत्पन्न हो त्रिपुर के वृक्ष दग्ध

न्तिपादपास्तत्र पतन्तिशिखराणिच १५ सर्वतोव्याकुलीभूतं हाहाकारमचेतनम् । भ
ग्नोद्यानानिसर्वाणि क्षिप्रंतत्प्रत्यभज्यत १६ तेनैवपीडितंसर्वं ज्वलितंत्रिशिखैःशरैः ।
द्रुमाश्चारामखण्डानि गृहाणिविविधानिच १७ दशदिक्षुप्रवृत्तोऽयं समृद्धोहव्यवाहनः ।
मनःशिलानांपुञ्जानि दिशोदशविभागशः १८ शिखाशतैरनेकैस्तु प्रजज्वालहुताशनः ।
सर्वंकिंशुकवर्णाभं ज्वलितंदृश्यतेपुरम् १९ गृहाद्गृहान्तरंनैव गन्तुंधूमेनशक्यते । हर
कोपानलैर्दग्धं क्रन्दमानंसुदुःखितम् २० प्रदीप्तंसर्वतोदिक्षु दह्यतेत्रिपुरंपुरम् । प्रासाद
शिखराग्राणि व्यशीर्यन्तसहस्रशः २१ नानामणिविचित्राणि विमानान्यप्यनेकधा । गृहा
णिचैवरम्याणि दह्यन्तेदीप्तवह्निना २२ धावन्तिद्रुमखण्डेषु वलभीषुतथाजनाः । देवा
गारेषुसर्वेषु प्रज्वलन्तःप्रधाविताः २३ क्रन्दन्तिचानलस्पृष्टा रुदन्तिविविधैःस्वरैः । द
ह्यन्तेदानवास्तत्र शतशोऽथसहस्रशः २४ हंसकारण्डवाकीर्णा नलिन्यःसहपङ्कजाः ।
दृश्यन्तेऽनलदग्धानि पुरोद्यानानिदीर्घिकाः २५ अम्लानपङ्कजच्छन्नाविस्तीर्णायोजना
यताः । गिरिकूटनिभास्तत्र प्रासादारत्नभूषिताः २६ पतन्त्यनलनिर्दग्धा निस्तोयाजल
दाइव । वरस्त्रीबालवृद्धेषु गोषुपक्षिषुवाजिषु २७ निर्दयोव्यदहद्वह्निर्हरकोपेनप्रेरितः ।
सहस्रशःप्रबुद्धाश्च सुप्ताश्चबहवोजनाः २८ पुत्रमालिङ्ग्यतेगाढं दह्यन्तेत्रिपुराग्निना ।
अथतस्मिन्पुरेदीप्ते स्त्रियश्चाप्सरसोपमाः २९ अग्निज्वालाहतास्तत्र ह्यपतन्धरणी

होकर पृथ्वी पर गिरते भये सर्वत्र हाहाकार होताभया शीघ्रही उसके सब बगीचे नष्ट होजाते भ-
ये १५ । १६ अग्निके कोपसे सब जलते हुए वृक्ष और घर उस वायुने क्षणमात्र में ही नष्ट कर
दिये और अग्निका समूह दशों दिशाओं में अत्यन्त बढताभया और उसकी ज्वलित ज्वालाओं
से सम्पूर्ण पुर केशूके वर्ण के समान रक्त होकर प्रकाशित होताभया १७ । १९ धूम के निविड़
अन्धकारके कारण वहसब दैत्य एकघरसे दूसरे घरको नहीं जासके इसप्रकार शिवजी के को-
परूपी अग्निसे दग्धहुआ वहसबपुर महादुःखित होताभया सब दिशाओं में हज़ारोंमहल जल२
कर पृथ्वीमें गिरपड़े २० । २१ उसीदीप्त अग्निसे अनेकप्रकारके चित्रविचित्र विमान और अनेकप्र-
कारके रमणीक स्थानभी भस्महोकर गिरपड़े वहांके सबजन उनघरोंसे निकल२ कर देवनाओं के
स्थानोंकीओर जातेभये और हज़ारों दानव अनेकस्वरों से रोदन करतेहुए दग्धहोजातेभये २२ । २४
और हंस कारंडवआदि पक्षियों से युक्त कमलनी और कमलों सहित बगीचे जलकी बावड़ी सबसब
अग्निसे दग्धहुए दीखतेभये उसपुरमें उत्तमकमलों से आच्छादित एक योजन के विस्तृत पर्वत के
शिखरके समानऊंचे रत्नोंसे जटितहुए महल अग्निसे भस्महोकर ऐसे गिरतेभये जैसे कि थोथे बा-
दल गिरते हैं उस शिवके कोपकी अग्निने दयारहित होके उत्तमस्त्री बालक गौ पक्षी और घोड़ों का
दग्धकर हज़ारों सोते और जागते प्राणियोंको भी भस्मकर दिया २५ । २८ त्रिपुरकी अप्सराओं के
समान स्त्रियां अपने२ पुत्रोंको दृढतासे पकड़२कर अग्निकी ज्वालाओं से दग्धहोकर पृथ्वी में गि-
रपड़ती भईं २९ कोई स्त्रियां मोतियों की मालाओं से विभूषित सुवर्ण और नीलमणिकी मालाओं से

तले। काचिच्छ्यामाविशालाक्षी मुक्तावलिविभूषिता ३० धूमेनाकुलितासातु पतिताध
रणीतले। काचित्कनकवर्णाभा इन्द्रनीलविभूषिता ३१ भर्तारंपतितंदृष्ट्वा पतितातस्यचो
परि। काचिदादित्यसङ्काशा प्रसुप्ताचगृहेस्थिता ३२ अग्निज्वालाहतासातु पतितागा
तचेतना। उत्थितोदानवस्तत्र खड्गहस्तोमहाबलः ३३ वैश्वानरहतःसोऽपि पतितोध
रणीतले। मेघवर्णापरानारी हारकेयूरभूषिता ३४ श्वेतरूपधरानारी बालंस्तन्यंन्यधा
पयत्। दह्यन्तंबालकंदृष्ट्वा रुदतेमेघशब्दवत् ३५ एवंसतुदहन्नग्निर्हरक्रोधेनप्रेरितः।
काचिच्चन्द्रप्रभासौम्या वज्रवैदूर्यभूषिता ३६ सुतमालिङ्ग्यवेपन्ती दग्धापततिभूतले।
काचित्कुन्देन्दुवर्णाभा याशयानागृहेस्थिता ३७ गृहेप्रज्वलितेसातु प्रतिबुद्धासुदुःखिता।
पश्यन्तीज्वलितंसर्वं स्वसुतोमेदिवङ्गतः ३८ सुतंसन्दग्धमालिङ्ग्य पतिताधरणीतले।
काचित्सुवर्णवर्णाभा नीलरत्नैर्विभूषिता ३९ धूमेनाकुलितासातु प्रसुप्ताधरणीतले। अ
न्यागृहीतहस्तातु सखि! दह्यतिबालिकाम् ४० अनेकदिव्यरत्नाढ्या दृष्ट्वादहनमोहिता।
शिरसिह्यञ्जलिंकृत्वा विज्ञापयतिपावकम् ४१ भगवन्! यदिवैरन्ते पुरुषेष्वपकारिषु।
स्त्रियःकिमपराधन्ते गृहपञ्जरकोकिलाः ४२ पापनिर्दयनिर्लज्ज! कस्तेकोपस्त्रियःप्रति।
नदाक्षिण्यंनतेलज्जा नसत्यंशौर्य्यवर्जित!४३ अनेनह्युपसर्गेणतूपा लम्भंशिखिन्यदात्।
किंत्वयानश्रुतंलोके ह्यवध्याःशत्रुयोषितः ४४ किन्तुतुभ्यंगुणाह्येते दहनोत्सादनंप्रति।

अलंकृत धुंएंसे व्याकुल अग्निकी ज्वालाओं से दग्धहोकर पृथ्वी में गिरतीभई ३०।३१कोई सूर्य्यके समान कान्तिवाली स्त्री अपने पतिको गिराहुआ देखकर घरके ऊपरही से अपने पतिके ऊपर गिरती भई और गिरतेही वह स्त्री अग्निसे भस्महोगई परन्तु वह उसकापति दानव हाथमें खड्गलेकर खड़ा होगया और थोड़ेही समयमें वहभी अग्निके तेजसे दग्धहोकरपृथ्वीपर गिरपड़ा कोई मेघके समान वर्णवाली हार तथा बाजूबन्दों से भूपित होकर कोई श्वेतवर्णवाली अपने बालकको स्तन पिलाती हुई अग्निमें दग्धहोगई कोई अपनेबालकको दग्धहुआ देखकर मेघकेसमान उच्चस्वरसे रुदनकरती भई तब शिवजीके क्रोधसे उत्पन्नहुई अग्नि उसबालकको भी दग्धकरदेती भई कोई हीरे पन्नेआदिके भूपणों से भूपित चन्द्रमाकीसी कान्तिवाली स्त्री अपने बालकको गोदी में लियेहुए दग्धहोकर पृथ्वी में गिरती भई कोई शशिवदना युवतीअपने घरमें सोईहुई और घरको जलताहुआ देखकर अपने दग्ध हुएपुत्रका विलापकरती भई ३२।३८कोई सुवर्ण भूपणोंसे अलंकृत स्त्री दग्धहुए बालकको गोदीमें लेकर पृथ्वीमें गिरी कोई धुएंसे व्याकुलहुई सखीकाहाथ पकड़ पृथ्वी में गिरी ३९। ४० कोई स्त्री अग्निसे मोहितहो शिरकेऊपर हाथों की अंजली बाँधकर अग्निसे यह प्रार्थनाकरती भई ४१ कि हे भगवन् अग्नि जो तुम्हाराकोप अपकारी पुरुषोंपर है तो घरमें रुकीहुई पिंजरे की कोकिलाओं के समान स्त्रियोंका कौन अपराधहै ४२ हेपापीनिर्दयी निर्लज्ज स्त्रियोंकेऊपर तेराक्याक्रोधहै तूच-तुरतासे रहित लज्जासेविहीन सत्य और शूरताकोत्यागरहाहै ४३ऐसे २ वचनोंसे तिरस्कारकरतीभई कि हेपापीतैंने संसारमें क्यायहनहीं सुनाहै किशत्रुओंकी स्त्रियोंकोनहीं मारना चाहिये ४४ दग्धकर-

नकारुण्यंदयावापिदाक्षिण्यंनस्त्रियःप्रति ४५ दयांकुर्वन्तिम्लेच्छापिदहन्तींवीक्ष्ययोषितम्।म्लेच्छानामपिकष्टोऽसिदुर्निवारोह्यचेतनः ४६ एतेचैवगुणास्तुभ्यंदहनोत्सादनंप्रति। असावपिदुराचारः स्त्रीणांकिंतेनिपातने ४७ दुष्टनिर्घृणनिर्लज्ज! हुताशिन्! मन्दभाग्यक!। निराशत्वंदुरावासबलाद्दहसिनिर्दय!४८ एवंविलप्यमानास्ता जल्पन्त्यश्चबहून्यपि। अन्याःक्रोशन्तिसंक्रुद्धा बालशोकेनमोहिताः ४९ दहतेनिर्दयोवह्निः संक्रुद्धःपूर्वशत्रुवत्। पुष्करिण्यांजलंदग्धं कूपेष्वपितथैवच ५० अस्मान्सन्दह्यम्लेच्छ! कांगतिंप्रापयिष्यसि। एवंप्रलपतांतासां वह्निर्वचनमब्रवीत् ५१ (अग्निरुवाच) स्ववशेनत्युष्माकं विनाशन्तुकरोम्यहम्! अहमादेशकर्तावै नाहंकर्तास्म्यनुग्रहम् ५२ रुद्रक्रोधसमाविष्टो विविशामियथेच्छया। ततोबाणोमहातेजास्त्रिपुरंवीक्ष्यदीपितम् ५३ सिंहासनस्थःप्रोवाच ह्यहंदेवैर्विनाशितः। अल्पसत्वैर्दुराचारैरीश्वरस्यनिवेदितम् ५४ अपरीक्ष्यत्वहंदग्धः शङ्करेणमहात्मना। नान्यःशक्तस्तुमांहन्तुं वर्जयित्वात्रिलोचनम् ५५ उत्थितःशिरसाकृत्वा लिङ्गंत्रिभुवनेश्वरम्। निर्गतःसपुरद्वारात् परित्यज्यसुहृत्सुतान् ५६ रत्नानियान्यनर्घाणि स्त्रियोनानाविधास्तथा। गृहीत्वाशिरसालिङ्गं गच्छन्गगनमण्डलम् ५७ स्तुवंश्चदेवदेवेशंत्रिलोकाधिपतिंशिवम्। त्यक्तापुरीमयादेव! यदिवध्योऽस्मिशङ्कर! ५८ त्वत्प्रसादान्महादेव! मामेलिङ्गंविनश्यतु। अर्चितंहिमयादेव!

नातोतुझमें गुणहै परन्तु दयाकरुणा और चतुरता कुछभीनहींहै ४५ जलतीहुई स्त्रीको देखकर म्लेच्छोंभीदया आजातीहै अर्थात् उनकोभी दुर्निवार कष्टहोताहै ४६ यहजलाने का गुण भी तुझमें व्यर्थहै यह केवलतेरादुराचारहै क्योंकि स्त्रियोंके मारनेसे तेरा कौनसाफलहै ४७ हे दुष्टनिर्लज्जनिर्दयीमन्दभाग्य अग्नितू बड़ादुर्भाग्यहै हमकोबलसे जलाताहै ४८ ऐसा बहुत प्रकारका विलाप करती हुई स्त्रीक्रुद्धहो बालकों का शोक करतीहुई मोहितहोगई ४९ पूर्वजन्मके शत्रुके समान क्रोधितहुआ अग्नि नदियोंके और कूपबावियोंके भी जलको भस्मकर देताभया ५० हे म्लेच्छ तू हमकोदग्ध करके किसगतिको प्राप्तहोगा ऐसे २ वचन उनके सुनकर अग्नि बोला कि हे स्त्रियो में अपने वशसे तुमको दग्धनहीं करता में तो नाशही करनेको पैदाहुआहूं में कभी अनुग्रह नहीं करताहूं में शिवजी की इच्छासे अपनी इच्छापूर्वक प्रवेशहोताहूं इसके अनन्तरबाणासुरभी अपने त्रिपुरको जलताहुआ देखताभया ५१।५२ और सिंहासनपरबैठ कर यह वचन बोलाकि थोड़े पराक्रमवाले दुराचारी देवताओं ने मेरा नाशकियाहै यह निश्चय शिवजीकाही प्रभावहै ५४ शिवजीने परीक्षाकिये विनाही मुझको दग्धकरदियाहै शिवजीके विना मुझकोकोई भी मारनेको समर्थनहीं है ५५ ऐसे कहकर वह बाणासुर अपने पुत्रमित्रादिकोंको त्याग अपने शिर के ऊपर शिवके लिंगको स्थापितकर नगरसे बाहरनिकला और अनेकस्त्री तथानानाप्रकारके रत्नमणियोंको शिवजीके लिंगके आगे स्थापितकर आकाशमार्गमें खड़ाहो त्रिलोकीके पतिमहादेवजी को नमस्कारकर ऐसे वचनकहताभया कि हेदेवमैंने यहपुरी त्याग दी है आपको मेराबधनहीं करना चाहिये ५६।५८ हे देवजो मेरावध करतेहो तो यह

भक्त्यापरमयासदा ५९ त्वत्कोपाद्यदिवध्योऽहं तदिदंमाविनश्यतु । श्लाघ्यमेतन्महादेव। त्वत्कोपाद्धननंमम ६० प्रतिजन्ममहादेव ! त्वत्पादनिरतोह्यहम्। त्रोटकच्छन्दसादेवं स्तोमित्वांपरमेश्वर ! ६१ शिवशङ्करशर्वहरायनमो भवभीममहेश्वरशर्वनमः। कुसुमायुधदेहविनाशकर त्रिपुरान्तकअन्धकशूलधर ६२ प्रमदाप्रियकान्तविभक्तनमः ससुरासुरसिद्धगणैर्नमित । हयवानरसिद्धगजेन्द्रमुखादतिभास्वददीर्घविशालमुख ६३ उपलब्धुमशक्यतरैरमरैरसुरैःप्रथितोऽस्मिचबाहुशतबहुभिः। प्रणतोऽस्मिभवंभव भक्तिरतो चलचन्द्रकलाकुलदेवनमः ६४ नचपुत्रकलत्रहयादिधनं ममतुत्वदनुस्मरणंशरणम्। व्यथितोऽस्मितुबाहुशतैर्बहुभिर्यमिताचमहानरकस्यगति ६५ ननिवर्ततिजन्मनपापमतिः शुचिकर्मनिवद्धमपित्यजति। अनुकम्पतिविभ्रमतिसति ममचैवकुकर्मनिवारयति ६६ यःपठेतत्रोटकन्दिव्यं प्रयतःशुचिमानसः । बाणस्येवयथारुद्रस्तस्यापि वरदोभवेत् ६७ इमंस्तवंमहादिव्यं श्रुत्वादेवोमहेश्वरः। प्रसन्नस्तुतदातस्य स्वयंदेवो महेश्वरः ६८ (महेश्वर उवाच) नभेतव्यंत्वयावत्स !सौवर्णेतिष्ठदानव !। पुत्रपौत्रसुहृद्वर्गभार्याबन्धुजनैःसह ६९ अद्यप्रभृतिबाण ! त्वमवध्यस्त्रिदशैरपि । भूयस्तस्यवरोदत्तो देवदेवेनपाण्डव ! ७० अक्षयश्चाव्ययोलोके विचरस्वाकुतोभयः। ततोनिवारयामास रुद्रःसप्तशिखंतदा ७१ तृतीयंरक्षितंतस्य पुरंतेनमहात्मना । अमत्तुगगनेदिव्यं

मेरे पूजनका लिंगनहीं भस्म होना चाहिये मैंने इस लिंगका परमभक्तिसे पूजनकियाहै इस हेतुसे वह आपकालिंगकभी दग्ध न होनाचाहिये ५९।६० हेदेव मैंतोजन्म२में तुम्हारेचरणोंमेंहीरतरहताहूं अब आपकी स्तुति करताहूं—हेशिव शंकर शर्व हर भव भीम महेश्वर कामके शरीरके दग्धकरनेवाले त्रिपुरान्तक हे शूलधर आपकेअर्थ नमस्कारहै ६१।६२हेप्रमदाप्रिय कान्त सुर असुरोंसे नमस्कृत घोड़े वानर सिद्ध और गजेन्द्र इन सबके मुखसेभी विलक्षण प्रकाशसहित विशालमुखवाले आप के अर्थ नमस्कार है ६३ मुझको बाधा देनेके अयोग्य देवता और दानव लोग पीड़ादेतेहैं हेदेव मैंतुम्हारी भक्तिमें युक्तहूं मेरे पुत्र स्त्री और अश्वादिक धननहीं है मैंतो केवल आपही का स्मरण करताहूं मैं महा पीड़ित होकर नरक की गतिमें प्राप्त होरहाहूं मेरी जन्मसहित पापकी मति निवृत्तनहीं होती है और मेरी बुद्धिभी शुद्ध कर्मको त्यागदेती है आपकी कृपाहीसे अनुग्रह होता है तभी कुकर्मोंका निवारण होताहै ६४।६६ जो कोई इस अर्थवाले त्रोटक छंदके स्तोत्रको पवित्र मन से पढ़ेगा उसको महादेवजी बाणासुरके वरदानके समान उत्तमवर देवेंगे ६७ इस महादिव्य स्तोत्रको महादेवजी सुनकर बड़ी प्रसन्नतासे बोले ६८ हे पुत्र भयकरना योग्य नहीं है तू इस सुवर्णके पुरमें प्रवेश करजा और अपने पुत्र स्त्री और बन्धुभ्रातिकोंको भी साथही साथलेजा ६९ हे बाणासुर अबसे लेकर जबतक तेरी अवधिहै तबतक तू देवताओंसे नहीं मरेगा इस प्रकारसे महादेवजीने फिर उस दैत्यको वरदेदिया ७० और उससेकहदिया कि अब निर्भय होकर तू इस पृथ्वीपर विचर इसकेअनन्तर अग्निको भी निवारण करदिया ७१ इसीसे कृपाकरके शिवजी ने उसका तीसरापुर दग्धनहींकिया

रुद्रतेजःप्रभावतः ७२ एवंतुत्रिपुरंदग्धं शङ्करेणमहात्मना । ज्वालामालाप्रदीप्तंतत् प
तितंधरणीतले ७३ एकंनिपतितंतत्र श्रीशैलेत्रिपुरान्तके । द्वितीयंपतितंतस्मिन् पर्वते
ऽमरकण्टके ७४ दग्धेषुतेषुराजेन्द्र ! रुद्रकोटिःप्रतिष्ठिता । ज्वलत्तद्पतत्तत्र तेनज्वाले
श्वरःस्मृतः ७५ ऊर्ध्वेनप्रस्थितास्तस्य दिव्यज्वालादिवङ्गताः । हाहाकारस्तदाजातो
देवासुरकृतोमहान् ७६ शरमस्तंभयद्रुद्रो माहेश्वरपुरोत्तमे । एवंवृत्तंतदातस्मिन् पर्वतेऽ
मरकण्टके ७७ चतुर्दशाख्यंभुवनं सभुक्त्वापाण्डुनन्दन ! । वर्षकोटिसहस्रन्तु त्रिशक्रो
द्यस्तथापराः ७८ ततोमहीतलंप्राप्य राजाभवतिधार्मिकः । पृथिवीमेकच्छत्रेणभुङ्क्ते
सतुनसंशयः ७९ एवंपुण्योमहाराज ! पर्वतोऽमरकण्टके । चन्द्रसूर्योपरागेतुगच्छेद्द्योऽ
मरकण्टकम् ८० अश्वमेधाद्दशगुणं प्रवदन्तिमनीषिणः । स्वर्गलोकमवाप्नोति दृष्ट्वातत्र
महेश्वरम् ८१ ब्रह्महत्यागमिष्यन्ति राहुग्रस्तेदिवाकरे । तदेवंनिखिलंपुण्यं पर्वतेऽमर
कण्टके ८२ मनसापिस्मरेद्यस्तं गिरिंत्वमरकण्टकम् । चान्द्रायणशतंसाग्रं लभतेनात्र
संशयः ८३ त्रयाणामपिलोकानां विख्यातोमरकण्टकः । एषपुण्योगिरिश्रेष्ठः सिद्धग
न्धर्वसेवितः ८४ नानाद्रुमलताकीर्णो नानापुष्पोपशोभितः । मृगव्याघ्रसहस्रैस्तु सेव्य
मानोमहागिरिः ८५ यत्रसन्निहितोदेवो देव्यासहमहेश्वरः । ब्रह्माविष्णुस्तथाचेन्द्रो वि

वहपुर शिवजी के प्रभावसे आकाशमें विचरताहै और वह भस्महुए दोपुर अग्निकी ज्वालाओंसे व्याकुल होकर पृथ्वीतलमें गिरजातेभये जहां पहलापुर गिरपड़ा वहांही श्रीशैलपर्व्वत होजाताभया और जहां दूसरापुर गिरा वहां अमरकंटक पर्व्वत होजाताभया ७२।७४ हे राजेन्द्र उन दग्धहुए पुरोंके ऊपर रुद्रोंकीकोटि२प्रतिष्ठित होजातीभई जहां जलताहुआ पुर गिराथा इसहेतुसे वहां ज्वालेश्वर महादेव प्रसिद्धहैं उस जलतेहुए पुरकीझलें जब ऊपरकी ओर स्वर्गमें गईं उससमय देवता और असुरोंका हाहाकार होताभया उससमय महादेवजी अपनेबाणको धनुपसे उतारलेतेभये इस प्रकारसे यह सबवृत्तान्त माहेश्वरपुरमें अमरकंटक पर्व्वतपर होताभया ७५।७७ इस निमित्त अमरकंटक पर्व्वतपर उपवासआदि पुण्यकरनेवाला पुरुप चौदहभुवनोंके भोगोंको भोगकर तीनकिरोड़ एकहज़ारवर्षपीछे इसपृथ्वीपर जन्मले धार्मिकराजाहोकर निस्सन्देह संपूर्ण पृथ्वीभरमें अकेलाही राज्यकरताहै ७८।७९ हे महाराज युधिष्ठिर इसप्रकारसे यहअमरकंटकतीर्थ बड़ा पवित्र है इसी हेतुसे चन्द्र और सूर्य्यग्रहणमें जो पुरुप अमरकंटक तीर्थपर प्राप्त होताहै वह अश्वमेधयज्ञसे भी दशगुणित पुण्यको प्राप्त होताहै और वहां महेश्वर शिवजी के दर्शन करने से स्वर्गलोककी प्राप्ति होती है सूर्य्यग्रहणमें इसतीर्थपर प्राप्तहोनेवाले पुरुपकी ब्रह्महत्या दूर होजाती है इसप्रकार से यह अमरकंटक पर्व्वतका संपूर्ण पुण्य कहा ८०।८२ जो पुरुप इस अमरकंटक पर्व्वतको मन करके भी स्मरण करता है वह भी निश्चय सौ १०० चान्द्रायण व्रतोंके पुण्यको प्राप्तहोताहै ८३ अमरकंटक तीर्थ तीनों लोकों में विख्यात है यह सर्व्वोत्तम पर्व्वत सिद्ध गन्धर्व्वादिकोंसे सेवित है ८४ और अनेकप्रकारके वृक्ष लता पुष्पादिकोंसे शोभितहै हज़ारों मृग और सिद्ध लोग उसमें

द्याधरगणैःसह ८६ ऋषिभिःकिन्नरैर्यक्षैर्नित्यमेव निषेवितः ।,वासुकिःसहितस्तत्र क्रीड
तेयन्नगोत्तमे ८७ प्रदक्षिणन्तुयःकुर्यात् पर्वतेऽमरकण्टके । पौण्डरीकस्ययज्ञस्य फलं प्र
प्नोतिमानवः ८८ तत्रज्वालेश्वरंनाम तीर्थंसिद्धनिषेवितम् । तत्रस्नात्वादिवंयान्ति येमृ
तास्तेपुनर्भवाः ८९ ज्वालेश्वरेमहाराज ! यस्तुप्राणान्परित्यजेत् । चन्द्रसूर्य्योपरागेषु
तस्यापिशृणुयत्फलम् ९० सर्वकर्म्मविनिर्मुक्तो ज्ञानविज्ञानसंयुतः । रुद्रलोकमवाप्नोति
यावदाभूतसंप्लवम् ९१ अमरेश्वरदेवस्य पर्वतस्यउभेतटे । तत्रताऋषिकोट्यस्तु तप
स्तप्यन्तिसुव्रत ! ९२ समन्ताद्योजनक्षेत्रो गिरिश्चामरकण्टकः । अकामोवासकामोवा
नर्मदायांशुभेजले ९३ स्नात्वामुच्यतितैःपापैरुद्रलोकंसगच्छति ९४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्ताशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८७ ॥

(सूत उवाच) पृच्छन्तितेमहात्मानो मार्कण्डेयंमहामुनिम् । युधिष्ठिरपुरोगास्ते
ऋषयश्चतपोधनाः १ आख्याहिभगवन् ! तथ्यं कावेरीसङ्गमोमहान् । लोकानाञ्चहिता
र्थाय अस्माकञ्चविवृद्धये २ सदापापरतायेच नरादुष्कृतकारिणः । मुच्यंतेसर्वपापेभ्यो
गच्छन्तिपरमंपदम् । एतदिच्छामविज्ञातुं भगवन् ! वक्तुमर्हसि ३ (मार्कण्डेय उवाच)
शृण्वन्त्ववहिताः सर्वे युधिष्ठिरपुरोगमाः । अस्तिवीरोमहायक्षः कुबेरःसत्यविक्रमः ४ इद
न्तीर्थमनुप्राप्य राजायक्षाधिपोऽभवत् । सिद्धिंप्राप्तोमहाराज ! तन्मेनिगदतःशृणु ५ का

वसते हैं उसपर्व्वतमें पार्वतीजी समेत महादेवजी विराजमानहैं ब्रह्मा विष्णु इन्द्र विद्याधर ऋषि किन्नर और यक्ष इनसबसे व्याप्त जहां वासुकि सर्पक्रीड़ा करताहै ऐसे उस अमरकंटकतीर्थकी जो प्रदक्षिणा करताहै वह पुण्डरीक यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै ८५।८८ वहांही ज्वालेश्वर नाम महादेव भी सिद्धोंसे सेवितहैं उस तीर्थपर स्नानकर मरनेवाले पुरुष स्वर्गलोकमें प्राप्त होते हैं हे महाराज युधिष्ठिर जो पुरुष ज्वालेश्वर तीर्थपर चन्द्र वा सूर्य्य के ग्रहण में प्राण त्यागताहै वह जिस पुण्यको प्राप्तहोताहै वह सुन ८९।९० सब कर्मोंसे छुट ज्ञान विज्ञानसे युक्तहो रुद्रलोकमें जाकर प्रलयकालतक वास करताहै ९१ अमरेश्वरदेवके पर्व्वतके दोनों तटोंपर किरोड़ों ऋषि तप करते हैं यह अमर कंटक क्षेत्ररूप पर्व्वत चारोंओर से एक २ योजन विस्तृत है इस स्थानपर कामना युक्त अथवा निष्काम जो कोई पुरुष नर्मदानदी में स्नान करे है वह सब पापों से छुटकर रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै ९२।९४ ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्ताशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८७ ॥

सूतजीबोले कि सब तपोधनऋषियों समेत राजा युधिष्ठिरने अपने समीपवर्त्ती मार्कण्डेयजीसे पूंछा १ हे भगवन् आप सबके और हमारे हितके निमित्त इसकावेरी नदीके संगमकी कथाको विधिपूर्वक वर्णनकीजिये २ जोमनुष्य सदैव पापमें युक्त रहते हैं और बुरेही कर्मोंकोकरतेहैं वह मनुष्य भी जिसके स्नानकरने से सबपापों से छुटजाते हैं ऐसी उस कावेरी नदी के उत्तम इतिहासको हम आपसे श्रवण किया चाहते हैं ३ मार्कण्डेयजी बोले कि युधिष्ठिरसे आदिलेके तुमसब ऋषि लोग सावधानी से श्रवणकरो कि सत्यपराक्रमी जो महायक्षराट् कुबेर है वहभी इसी तीर्थको प्राप्तहोकर

वेरीनर्मदायत्रसङ्गमोलोकविश्रुतः । तत्रस्नात्वाशुचिर्भूत्वा कुबेरःसत्यविक्रमः ६ तपोऽत्र
प्यतयक्षेन्द्रोदिव्यंवर्षशतंमहत् । तस्यतुष्टोमहादेवःप्रदातुंवरमुत्तमम् ७भोभोयक्ष! महा
सत्व! वरंब्रूहियथेप्सितम् । ब्रूहिकार्यंयथेष्टन्तु यच्चामनसिवर्तते ८ (कुबेर उवाच) यदि
तुष्टोऽसिमेदेव! यदिदेयोवरोमम । अद्यप्रभृतिसर्वेषां यक्षाणामधिपोभवेत् ९ कुबेरस्य
वचःश्रुत्वा परितुष्टोमहेश्वरः । एवमस्तुततोदेवस्तत्रैवान्तरधीयत १० सोऽपिलब्धवरो
यक्षः शीघ्रंलब्धफलोदयः । पूजितःसंतुयक्षैश्च ह्यभिषिक्तस्तुपार्थिव! ११ कावेरीसङ्गमं
तत्र सर्वपापप्रणाशनम् । येनराानाभिजानन्ति वञ्चितास्तेनसंशयः १२ तस्मात्सर्वप्र
यत्नेन तत्रस्नायीतमानवः । कावेरीचमहापुण्या नर्मदाचमहानदी १३ तत्रस्नात्वातुरा
जेन्द्र! ह्यर्चयेद्वृषभध्वजम् । अश्वमेधफलंप्राप्य रुद्रलोकेमहीयते १४ अग्निप्रवेशंयः
कुर्याद्यश्चकुर्यादनाशकम् । अनिवर्त्यागतिस्तस्य यथामेशङ्करोऽब्रवीत् १५ सेव्यमानो
वरस्त्रीभिः क्रीडतेदिविरुद्रवत् । षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिकोट्यस्तथापराः १६ मोदतेरु
द्रलोकस्थो यत्रतत्रैवगच्छति । पुण्यक्षयात्परिभ्रष्टोराजाभवतिधार्मिकः १७ भोगवान्
दानशीलश्च महाकुलसमुद्भवः । तत्रपीत्वाजलंसम्यक् चान्द्रायणफलंलभेत् १८ स्वर्गं
च्छन्तितेमर्त्या येपिबन्तिशुभंजलम् । गङ्गायमुनयोर्मध्येयत्फलंप्राप्नुयान्नरः।कावेरीसङ्गमे

यक्षोंका अधिपति राजाहोताभया जिस प्रकारसे उसको सिद्धि प्राप्तहुई वह सब मुझसे सुनो ४।५ जहां कावेरी और नर्मदा नदीका संगमहै वहां यक्ष कुबेर स्नानकर पवित्रतापूर्वक दिव्यसौ वर्षोंतक तपस्या करता भया उसपर प्रसन्नहोकर महादेवजी यह वचन बोले कि हे यक्षकुबेर तू अपने मन के अभीष्टको मांग अर्थात् जो तू चाहता है उसको मांग ६।८ कुबेरने कहा हे देवदेव जो आप मुझपर प्रसन्नहैं और कृपाकरके मुझे वर देना चाहतेहैं तो मेरी यह प्रार्थनाहै कि सब यक्षोंका राजा होजाऊं ९ कुबेरके इस वचनको सुन तथास्तु अर्थात् ऐसाही होगा यह कहकर शिवजी वहीं अन्तर्द्धानहोगये १० फिर वह यक्ष कुबेर वरको पाकर शीघ्रही सब यक्षों से पूजितहोकर यक्षोंके राज्य पर प्राप्तहोजाता भया ११ ऐसा यह कावेरी नदीका संगम सब पापोंका नाश करनेवाला है जो मनुष्य इस तीर्थको नहीं जानते हैं वह निश्चय ठगेहुए हैं १२ इसहेतुसे सब यत्नोंसे वहाँ स्नान करना चाहिये यह कावेरी और नर्मदा दोनों नदियां महापुण्यदायी हैं वहां स्नानकरके जो पुरुष महादेवजीका पूजनकरताहै वह अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोकर रुद्रलोकमें प्राप्तहोताहै वहांजो कोई पुरुष अग्निमे भस्महोताहै अथवा अनशन व्रत धारणकरताहै उसकी सर्वत्रजानेकी गतिहो जातीहै यह महादेवजीका वचनहै १३।१५ फिर वहपुरुष सर्वत्र गतिवालाहोकर रुद्रलोकमें उत्तम स्त्रियों से सेवित साठकिरोड़साठहजार ६०००६०००० वर्षोंतक वासकरताहै फिर जब पुण्यक्षीण होजाता है तब पृथ्वी लोकमें जन्मलेकर महाभोगयुक्त उत्तमकुल समेत धार्मिकराजा होताहै और जो पुरुष कावेरी और नर्मदानदीके संगमका जलपीताहै वह चान्द्रायणव्रतके फलको प्राप्त होताहै १६।१८ उनके संगमका जलपीनेवाला गंगायमुना के संगमके पुण्यको प्राप्त होताहै और स्वर्गलोक

स्नात्वातत्फलंतस्यजायते १९ एवमादितुराजेन्द्र! कावेरीसङ्गमेमहत्। पुण्यंमहत्फलंतत्र सर्वपापप्रणाशनम् २० ॥ इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८८ ॥

(मार्कण्डेय उवाच) नार्मदेचोत्तरेकूले तीर्थयोजनविस्तृतम्। मन्त्रेश्वरेतिविख्यातं सर्वपापहरंपरम् १ तत्रस्नात्वानरोराजन्! दैवतैःसहमोदते। पञ्चवर्षसहस्राणि क्रीडतेकामरूपधृक् २ गर्जनञ्चततोगच्छेद्यत्रमेघस्तथोत्थितः। इन्द्राजिन्नामसंप्राप्तस्तस्य तीर्थप्रभावतः ३ मेघनादंततोगच्छेद्यत्रमेघानुगर्जितम्। मेघनादोगणस्तत्र परमांगणताङ्गतः ४ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! तीर्थमाम्रातकेश्वरम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! गोसहस्रफलंलभेत् ५ नर्मदोत्तरतीरेतु तीर्थन्तुविश्रुतंभवेत्। तस्मिंस्तीर्थेनरःस्नात्वा तर्पयेत् पितृदेवताः ६ सर्वान्कामानवाप्नोति मनसायेविचिन्तिताः। ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! ब्रह्मावर्तमितिस्मृतम् ७ तत्रसन्निहितोब्रह्मा नित्यमेवयुधिष्ठिर!। तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र! ब्रह्मलोकेमहीयते ८ ततोऽङ्गारेश्वरंगच्छेन्नियतोनियताशनः। सर्वपापविनिर्मुक्तो रुद्रलोकंसगच्छति ९ ततोगच्छेच्चराजेन्द्र! कपिलातीर्थमुत्तमम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! कपिलादानमाप्नुयात् १० गच्छेत्करजतीर्थन्तु देवर्षिगणसेवितम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! गोलोकंसमवाप्नुयात् ११ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! कुण्डलेश्वरमुत्तमम्। तत्रसन्निहितोरुद्रस्तिष्ठतेह्युमयासह १२ तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र! ह्यवध्यस्त्रिदशैरपि। पिप्पलेशन्ततोग

में भी वासकरताहै १९ हे राजेन्द्र इसप्रकार करके कावेरी और नर्मदानदी के संगमका महापुण्यहै यहां स्नान दानादि कर्मकरना सबपापोंका नाशकरनेवालाहै २० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः १८८ ॥

मार्कण्डेयजी बोले—इस नर्मदानदीके उत्तरके किनारेपर एकयोजनके विस्तारवाला सबपापोंका नाशक मन्त्रेश्वर नाम तीर्थहै १ हे राजन् वहां स्नान करनेवाला पुरुष स्वर्ग में प्राप्तहोकर देवताओं के साथ पांचहज़ार वर्षोंतक वासकरताहै उसके पासही गर्जना नाम तीर्थ है यह गर्जना तीर्थ मेघके स्थानसे उत्पन्नहुआहै उसी तीर्थके प्रभावसे रावणकापुत्र इन्द्रजित् नामको प्राप्तहुआहै उसके समीप मेघनाद तीर्थ है जहां जानेसे मेघनाद बड़ीसिद्धिको प्राप्तहुआ ३। ४ वहांसेआगे आम्रातकतीर्थ है वहां स्नानकरनेवाला पुरुष हजार गोदानके पुण्यको प्राप्तहोताहै ५ नर्मदानदीके उत्तर किनारे पर विश्रुतनाम तीर्थहै वहां स्नानकर पितर तथा देवताओं का तर्पण करनेसे मनोभीष्ट कामना सिद्ध होतीहै उसकेपीछे ब्रह्मावर्त्त तीर्थपर जाना योग्यहै ६। ७ हे युधिष्ठिर यहां ब्रह्मावर्त्त तीर्थ पर प्रतिदिन ब्रह्माजी निवास करते हैं वहां स्नान करनेवाला पुरुष ब्रह्मलोक में प्राप्तहोता है ८ इसके अनन्तर नियम व्रत धारण करके अंगारेश्वर तीर्थपर प्राप्त होनाचाहिये वहाँ प्राप्त होनेवाला पुरुष सबपापोंसे रहित होकर रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै ९ इसके पीछे कपिलातीर्थपर जानाचाहिये वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष कपिला गौके दानके पुण्यको प्राप्त होताहै १० जो पुरुष देवऋषि गणोंसे सेवित करंजनाम तीर्थ परजाकर स्नान करताहै वह गोलोकमें प्राप्त होताहै ११ इसके आगे

च्छेत् सर्वपापप्रणाशनम् १३ तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र! रुद्रलोकेमहीयते। ततोगच्छेत्तुरा जेन्द्र! विमलेश्वरमुत्तमम् १४ तत्रदेवशिलारम्या चेश्वरेणविनिर्मिता। तत्रप्राणपरि त्यागाद्रुद्रलोकमवाप्नुयात् १५ ततःपुष्करिणींगच्छेत् तत्रस्नानंसमाचरेत्। स्नातमात्रो नरस्तत्र हीन्द्रस्यार्द्धासनंलभेत् १६ नर्म्मदासरितांश्रेष्ठा रुद्रदेहाद्विनिःसृता। तारयेत् सर्वभूतानि स्थावराणिचराणिच १७ सर्वदेवाधिदेवेन त्वीश्वरेणमहात्मना। कथिताऋ षिसङ्घेभ्यो ह्यस्माकञ्चविशेषतः १८ मुनिभिःसंस्तुताह्येषा नर्म्मदाप्रवरानदी। रुद्रदे हाद्विनिष्क्रान्ता लोकानांहितकाम्यया १९ सर्वपापहरानित्यं सर्वदेवनमस्कृता। संस्तु तादेवगन्धर्वैरप्सरोभिस्तथैवच २० नमःपुण्यजलेह्याद्ये नमःसागरगामिनि!। नमस्ते पापशमनि! नमोदेवि! वरानने २१ नमोऽस्तुतेऋषिगणसिद्धसेविते! नमोऽस्तुतेशङ्कर देहनिःसृते!। नमोऽस्तुतेधर्म्मभृतांवरप्रदे! नमोऽस्तुतेसर्वपवित्रपावने! २२ यस्त्विदं पठतेस्तोत्रं नित्यंश्रद्धासमन्वितः। ब्राह्मणोवेदमाप्नोति क्षत्रियोविजयीभवेत् २३ वैश्य स्तुलभतेलाभं शूद्रश्चैवशुभाङ्गतिम्। अर्थार्थीलभतेह्यर्थं स्मरणादेवनित्यशः २४ न र्म्मदांसेवतेनित्यं स्वयंदेवोमहेश्वरः। तेनपुण्यानदीज्ञेया ब्रह्महत्यापहारिणी २५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकोननवत्यधिकशततमोऽध्यायः १८९॥

(मार्कण्डेय उवाच) तदाप्रभृतिब्रह्माद्या ऋषयश्चतपोधनाः। सेवन्तेनर्म्मदांराज न्! रागक्रोधविवर्जिताः १ (युधिष्ठिर उवाच) कस्मिन्निपतितंशूलं देवस्यतुमहीतले।

कुंडेश्वर तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ पार्वतीजी सहित महादेवजी स्थित हैं १३ वहाँ स्नानकरनेवा- ला पुरुष देवताओंसेभी नाशको प्राप्त नहींहोताहै इसके पीछे उत्तम विमलेश्वर तीर्थपर जहाँकि रम- णीक देवशिला महादेवजीने रची है वहाँ प्राण त्यागनेसे रुद्रलोककी प्राप्तिहोती है १४।१५ इसके पीछे पुष्करणी नदीहै वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष इन्द्रके अर्द्धासनका अधिकारी होताहै १६ इसीसे यह नर्मदा नदी शिवजीके शरीरसे निकलकर सब नदियोंमें श्रेष्ठहो अशेष स्थावर जंगमोंका उद्धार करती है १७ यह उत्तम नर्मदा नदी सब देवताओंके पति श्रीमहादेवजीने सब ऋषियोंके आगे श्रेष्ठबताई है सबलोगोंकी हितकारी है १८ यहनदी सब देवताओंसे पूजितहोकर सबपापोंकी हरनेवाली देवग- न्धर्व और अप्सराओंसे स्तुति कीजातीहै इस पवित्र जलवाली पापोंकी शांतकरनेवाली समुद्रगामी नर्मदा नदीको नमस्कारहै १९।२१ हे ऋषिगण सिद्धादि से सेवित शंकरशरीरोद्भव धर्मात्मापुरुषों को वरदेनेवाली नर्मदानदी तुमको नमस्कार है २२ इस स्तोत्रको जो पुरुष श्रद्धा भक्तियुक्त होकर पढ़ताहै वह ब्राह्मण होय तो वेदपारगहोताहै क्षत्री विजयी होताहै वैश्यधनी होताहै शूद्र उत्तमगति को प्राप्त होताहै और धनार्थी धनको प्राप्त होता है इस नर्मदा नदीको नित्य महादेवजी सेवतेहैं इस हेतुसे नर्मदा नदी महापवित्र सबपापोंकी नाशकरनेवाली है २३।२५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोननवत्यधिकशततमोऽध्यायः १८९॥

मार्कण्डेयजीबोले हेराजन् इस नर्मदानदीको ब्रह्मादिक सब देवता और ऋषि मुनिलोग क्रोधरागा-

तत्रपुण्यंसमाख्याहि यथावन्मुनिसत्तम! २ (मार्कण्डेय उवाच) शूलभेदेतिविख्यातं तीर्थंपुण्यतमंमहत्। तत्रस्नात्वार्चयेद्देवं गोसहस्रफलंलभेत् ३ त्रिरात्रङ्कारयेद्यस्तु तस्मिंस्तीर्थेनराधिप!। अर्चयित्वामहादेवं पुनर्जन्मनविद्यते ४ भीमेश्वरंततोगच्छे न्नारदेश्वरमुत्तमम्। आदित्येशंमहापुण्यं तथाघृतमधुस्रवम् ५ नन्दिकेशंपरिष्वज्य पर्य्याप्तंजन्मनःफलम्। वरुणेशंततःपश्येत् स्वतन्त्रेश्वरमेवच। सर्वतीर्थफलंतस्य पञ्चायतनदर्शनात् ६ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! युद्धंयत्रसुसाधितम्। कोटितीर्थन्तुवि ख्यातमसुरायत्रमोहिताः ७ यत्रैवनिहताराजन्! दानवाबलदर्पिताः। तेषांशिरांस्यगृ ह्णन्तसर्वे देवा·समागताः ८ तैस्तुसंस्थापितोदेवः शूलपाणिर्वृषध्वजः। कोटिर्विनिह तातत्र तेनकोटीश्वरःस्मृतः ९ दर्शनात्तस्यतीर्थस्य सदेहःस्वर्गमारुहेत्। यदात्विन्द्रे णक्षुद्रत्वाद्वज्रकीलेनयन्त्रितम् १० तदाप्रभृतिलोकानां स्वर्गमार्गोनिवारितः। सघृतं श्रीफलंजग्ध्वा कृत्वाचैवप्रदक्षिणम् ११ पार्वतंसहदीपन्तु शिरसाचैवधारयेत्। सर्वका मसुसम्पन्नो राजाभवतिपाण्डव! १२ मृतोरुद्रत्वमाप्नोति ततोऽसौजायतेपुनः। स्वर्गा देत्यभवेद्राजा राज्यंकृत्वादिवंव्रजेत् १३ बहुनेत्रंततःपश्येत् त्रयोदश्यान्तुमानवः। स्ना तमात्रोनरस्तत्र सर्वयज्ञफलंलभेत् १४ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! तीर्थंपरमशोभनम्। नरा

दिसे रहित होकर सेवन करते हैं १ युधिष्ठिरने पूछा कि हे मार्कण्डेयजी महादेवजी का त्रिशूल इस भूलोकमें कवगिरा और जहाँगिरा वहाँका क्या पुण्यहै यहहमसे वर्णनकीजिये २ मार्कण्डेयजी बोले कि जहाँ उनका त्रिशूल गिराहै वह शूल भेदनाम तीर्थ है वहाँ स्नानकर महादेवजीका पूजन करनेवाला पुरुष हज़ार गोदान के पुण्य को प्राप्त होता है ३ जो पुरुष वहाँ तीन दिनतक वास करता है और शिवार्चन करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होताहै ४ इसके पीछे भीमेश्वर तीर्थ और नारदेश्वर तीर्थपर आदित्येश घृतमधुस्रव और नन्दिकेश इन सब महादेवों के दर्शन करने से जन्म सफल होजाता है फिर वरुणेश और स्वतन्त्रेश्वर शिवजी के दर्शन करनेचाहिये इन पांचों स्थानों के दर्शन करनेसे सब तीर्थों के दर्शनका फल प्राप्त होताहै ५।६ इसके पीछे जहाँ देवता और दैत्यों का युद्ध हुआहै वहाँ कोटि तीर्थपर सब दैत्य मोहे गये हैं ७ और जो बलवान् दैत्य मारे गये हैं उन के शिरोंको देवताओंने गिरायाहै और वहीं देवताओंने शूलपाणि महादेवजी स्थापित किये हैं और शिवजीने देवताओंकी कोटि हतकी है इसीसे उसको कोटीश्वर तीर्थ कहते हैं इन कोटिश्वर महा-देवके दर्शन करनेसे इसी शरीरसे स्वर्गलोकमें चलाजाता है जबसे कि इन्द्रने वज्रकीलक मंत्रों से अवरोध करदियाहै तभीसे स्वर्गका मार्ग रुकगयाहै जो पुरुष घृत सहित नारियलको जलाके वहाँ महादेवजीके आगे अपने शिरपर धारण करलेताहै वह सम्पूर्ण समृद्धियों वाला राजाहोताहै और जो मरजाताहै वह रुद्रलोकमें प्राप्तहोताहै और दूसरे जन्ममें राजाहोताहै और फिरभी मरकर स्वर्ग लोकमें जाताहै ८।१३ त्रयोदशीके दिन बहु नेत्रवाले तीर्थपरजाके स्नानकरने वाला पुरुष सब यज्ञोंके फलोंको प्राप्तहोताहै १४ इसके पीछे परमसुन्दर अगस्त्येश्वर नाम उत्तम तीर्थपर जाकर

णांपापनाशाय ह्यगस्त्येश्वरमुत्तमम् १५ तत्रस्नात्वानरोराजन्! ब्रह्मलोकेमहीयते।
कार्तिकस्यतुमासस्य कृष्णपक्षेचतुर्दशी १६ घृतेनस्नापयेद्देवं समाधिस्थोजितेन्द्रियः।
एकविंशकुलोपेतोनच्यवेदीश्वरात्पुरात् १७ धेनुमुपानहच्छत्रं दद्याच्चघृतकम्बलम्।
भोजनंचैवविप्राणां सर्वंकोटिगुणंभवेत् १८ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! बलाकेश्वरमुत्तमम्।
तत्रस्नात्वानरोराजन्! सिंहासनपतिर्भवेत् १९ नर्मदादक्षिणेकूले तीर्थंशक्रस्यविश्रुत
म्। उपोष्यरजनीमेकां स्नानंतत्रसमाचरेत् २० स्नानंकृत्वायथान्यायमर्चयेच्चजनार्द
नम्। गोसहस्रफलंतस्य विष्णुलोकंसगच्छति २१ ऋषितीर्थंततोगच्छेत् सर्वपापहरंनृ
णाम्। स्नातमात्रोनरस्तत्र गोसहस्रफलंलभेत् २२ देवतीर्थंततोगच्छेद् ब्रह्मणानि
र्मितंपुरा। तत्रस्नात्वानरोराजन्! ब्रह्मलोकेमहीयते २३ अमरकण्टकंगच्छेदमरैः
स्थापितंपुरा। स्नातमात्रोनरस्तत्र रुद्रलोकेमहीयते २४ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! रावणे
श्वरमुत्तमम्। तत्पश्चायतनंदृष्ट्वा मुच्यतेब्रह्महत्यया २५ ऋणतीर्थंततोगच्छेदृणान्मु
मुच्यतेध्रुवम्। वटेश्वरंततोदृष्ट्वा पर्याप्तंजन्मनःफलम् २६ भीमेश्वरंततोगच्छेत् सर्व
व्याधिविनाशनम्। स्नातमात्रोनरोराजन्! सर्वदुःखैःप्रमुच्यते २७ ततोगच्छेत्तुरा
जेन्द्र! तुरासङ्गमनुत्तमम्। तत्रस्नात्वामहादेवमर्चयन्सिद्धिमाप्नुयात् २८ सोम
तीर्थंततोगच्छेत् पश्येच्चन्द्रमनुत्तमम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! भक्त्यापरमयायुतः २९

स्नानकरने वाला पुरुष ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै और कार्तिकमहीनेके कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको जो उनमहादेवजीको घृतसे स्नानकराताहै और जितेन्द्रियहोकर समाधिमें स्थितरहताहै वह अपनीइक्की स पीढ़ियों समेत महादेवजीके लोकमें वासकरताहै और वहाँसे फिर पतित नहींहोता १५।१७ औरजो वहाँ गौ उपानह छत्र घृत और कम्बल इत्यादिक वस्तुओंका दानकरताहै और ब्राह्मणोंको भोजन करवाताहै उसका सबपुण्य कोटिगुणा होजाताहै १८ इसकेपीछे बिल्वकेश्वर तीर्थपर जाना योग्यहै वहाँ स्नानकरने वाला पुरुष सिंहासनका पतिहोताहै १९ नर्मदानदीके दक्षिण तटपर इन्द्र का तीर्थ प्रसिद्धहै वहाँ एकरात्रि उपवास व्रतकर स्नानकरके जो पुरुष जनार्दन भगवान्का पूजन करताहै उसको हज़ार गौओंके दानका पुण्यहोताहै और विष्णुलोककी प्राप्तिहोतीहै २०।२१ फिर ऋषि तीर्थपर जाकर स्नानमात्रकेही करनेसे हज़ार गौ दानका पुण्यहोताहै २२ फिर ब्रह्माजीके रचेहुए तीर्थपर जानाचाहिये वहाँ स्नानकरनेसे ब्रह्मलोककी प्राप्तिहोतीहै २३ फिर देवताओंके स्था पित कियेहुए अमरकंटक महादेवजीके स्थानमें प्राप्तहोकर स्नानमात्रहीके करनेसे रुद्रलोककी प्राप्ति होतीहै २४ फिर रावणेश्वर महादेवके दर्शन करनेचाहिये उन महादेवजीके दर्शन करनेसे ब्रह्महत्या दूरहोजातीहै २५ फिर ऋषि तीर्थपर जानाउचितहै वहाँ जानेसे सब ऋण दूर होजाताहै फिर वटे श्वर तीर्थके दर्शन करनेसे जन्म सफलहोजाताहै २६ इसकेपीछे संपूर्ण व्याधियोंके नष्टकरने वाले भीमेश्वर महादेवके दर्शन करनेचाहिये वहाँके स्नानही करनेसे सब दुःख दूरहोजातेहैं फिर तुरासंग तीर्थपर स्नानकर महादेवका पूजनकरनेसे परम सिद्धिकी प्राप्तिहोतीहै २७।२८ फिर सोमतीर्थपर

तत्क्षणाद्दिव्यदेहस्थः शिववन्मोदतेचिरम्। षष्टिवर्षसहस्राणि रुद्रलोकेमहीयते ३० ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! पिङ्गलेश्वरमुत्तमम्। अहोरात्रोपवासेन त्रिरात्रफलमाप्नुयात् ३१ तस्मिंस्तीर्थेतुराजेन्द्र कपिलांयःप्रयच्छति। यावन्तितस्यारोमाणि तत्प्रसूतिकुलेषुच ३२ तावद्वर्षसहस्राणि रुद्रलोकेमहीयते। यस्तुप्राणपरित्यागं कुर्यात्तत्रनराधिप! ३३ अक्षयंमोदतेकालं यावच्चन्द्रदिवाकरौ। नर्म्मदातटमाश्रित्य तिष्ठेयुर्यत्रमानवाः ३४ ते मृताःस्वर्गमायान्ति सन्तःसुकृतिनोयथा। सुरेश्वरंततोगच्छेन्नाम्नाकर्कोटकेश्वरम् ३५ गङ्गावतरतेतत्र दिनेपुण्येनसंशयः। नन्दितीर्थंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत् ३६ तुष्यतेतस्यनन्दीशः सोमलोकेमहीयते। ततोदीपेश्वरंगच्छेद्व्यासतीर्थंतपोवनम् ३७ निवर्तितापुरातत्र व्यासभीतामहानदी। हुङ्कारितातुव्यासेन दक्षिणेनततोगता ३८ प्रदक्षिणंतुयःकुर्यात् तस्मिंस्तीर्थेनराधिप!। अक्षयंमोदतेकालं यावच्चन्द्रदिवाकरौ ३९ व्यासस्तस्यभवेत्प्रीतः प्राप्नुयादीप्सितंफलम्। सूत्रेणवेष्टयित्वातु दीपोदेयःसवेदिकः ४० क्रीडन्तिह्यक्षयंकालं यथारुद्रस्तथैवच। ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! ऐरण्डीतीर्थमुत्तमम् ४१ सङ्गमेतुनरःस्नात्वा मुच्यतेसर्वपातकैः। ऐरण्डीत्रिषुलोकेषु विख्यातापापनाशिनी ४२ अथवाश्वयुजेमासि शुक्लपक्षेतुचाष्टमी। शुचिर्भूत्वानरःस्नात्वा सोपवासपरायणः ४३ ब्रा

जाकर उत्तम चन्द्रमाके दर्शन करनेयोग्यहैं वहां भक्तिकरके स्नान करनेवाला पुरुष तत्काल दिव्य शरीरी होकर बहुतकालतक शिवजीके समान आनन्द करताहै और साठहज़ार वर्षोंतक रुद्रलोकमें वासकरताहै इसके अनन्तर उत्तम पिंगलेश्वर महादेवके दर्शन करने चाहिये वहां एक दिनरात्रिके उपवासव्रत करनेसे तीनरात्रिका फलहोताहै हे राजन् उसतीर्थपर जो कपिलागौका दानकरता है वह गौके शरीरके रोमोंकी संख्यावाले वर्षोंतक रुद्रलोकमें वासकरताहै और जो वहां प्राणोंको त्यागता है वह अक्षयकालतक चन्द्रमा और सूर्य्य की स्थितितक रुद्रलोकमें आनन्द करताहै और नर्मदानदीके तटपर वासकरनेवाले पुरुष साधु सुकृती पुरुषोंके समान स्वर्गलोकमें वास करतेहैं और सुरेश्वर तथा कर्कोटकेश्वर महादेवके भी दर्शन करने चाहिये २९। ३५ वहां पवित्र दिनमें निस्सन्देह श्रीगङ्गाजी प्रकटहोती हैं फिर नन्दीतीर्थपर जाकर स्नान करनेसे नन्दीश महादेवजी प्रसन्न होते हैं और चन्द्रलोककी प्राप्ति होती है इसके पीछे दीपेश्वर महादेवके दर्शन करने चाहिये वहां उत्तम तपोवनमें वेदव्यासजी का तीर्थ है पूर्व्वकालमें वहां वेदव्यासजीके भयसे नर्मदानदी उलटी बहने लगगई थीं जब वेदव्यासजीने हुंकारशब्द किया तब दक्षिणकीओर बहनेलगीं ३६। ३८ उस तीर्थकी जो प्रदक्षिणा करताहै वह अक्षयकालतक चन्द्रमा और सूर्य्य की स्थितितक शिवलोक में आनन्द करताहै ३९ वहां वेदव्यासजी प्रसन्न होकर मनोवाञ्छित फलोंको देतेहैं जो पुरुष सूत्रसे लपेटकर वेदिकाके ऊपर दीपक प्रकाश करताहै वह अक्षयकालतक रुद्रलोकमें वासकरताहै इसके पीछे उत्तम ऐरंडी तीर्थपरजाके नदीके संगममें स्नानकरनेवाला सबपापोंसे छुटजाताहै वह ऐरंडी नदी तीनोंलोकों में विख्यातहै और पापोंको नाशकरनेवाली है वहां आश्विनशुदीअष्टमीको स्नानसे

ह्मणंभोजयेदेकं कोटिर्भवतिभोजिता । मृत्तिकांशिरसिस्थाप्य ह्यवगाह्यचवैजलम् ४४
नर्मदोदकसंमिश्रं मुच्यतेसर्वकिल्विषैः । प्रदक्षिणंतुयःकुर्यात् तस्मिंस्तीर्थेनराधिप ! ४५
प्रदक्षिणीकृतातेन सप्तद्वीपावसुन्धरा। ततःसुवर्णसलिले स्नात्वादत्त्वातुकाञ्चनम्४६ का
ञ्चनेनविमानेन रुद्रलोकेमहीयते । ततःस्वर्गाच्च्युतःकालाद्राजाभवतिवीर्यवान् ४७
ततोगच्छेच्चराजेन्द्र ! हीक्षुनद्यास्तुसङ्गमम्। त्रैलोक्यविश्रुतंदिव्यं तत्रसंन्निहितःशिवः४८
तत्रस्नात्वानरोराजन् ! गाणपत्यमवाप्नुयात् । स्कन्दतीर्थंततोगच्छेत् सर्वपापप्रणाशन
म्४९तत्तीर्थेत्रिविधंपापं स्नानमात्राद्व्यपोहति । लिङ्गसारंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरे
त्५०गोसहस्रफलंतस्य रुद्रलोकेमहीयते । भङ्गतीर्थंततोगच्छेत् सर्वपापप्रणाशनम्५१
तत्रगत्वातुराजेन्द्र ! स्नानंतत्रसमाचरेत् । सप्तजन्मकृतैःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ५२ वटे
श्वरंततोगच्छेत् सर्वतीर्थमनुत्तमम् । तत्रस्नात्वानरोराजन् ! गोसहस्रफलंलभेत् ५३
सङ्गमेशन्ततोगच्छेत् सर्वदेवनमस्कृतम् । स्नानमात्रान्नरस्तत्र चेन्द्रत्वंलभतेध्रुवम् ५४
कोटितीर्थंततोगच्छेत् सर्वपापहरंपरम् । तत्रस्नात्वानरोराज्यंलभतेनात्रसंशयः ५५ तत्र
तीर्थेसमासाद्य दत्त्वादानंतुयोनरः । तस्यतीर्थप्रभावेणसर्वंकोटिगुणंभवेत् ५६ अथनारी
भवेत्काचित् तत्रस्नानंसमाचरेत् । गौरीतुल्याभवेत्सापि त्विन्द्रपत्नीनसंशयः ५७ अ

पवित्रहोकर निराहारव्रतकरे पीछे एक ब्राह्मणको भोजनकरवावे उसको किरोड़ ब्राह्मण जिमानेका पुण्य होताहै और वहांकी मृत्तिका शिरपर लगाकर जलमें गोतामार फिर नदीके जलमें जो गोता मारताहै वह पुरुष सब पापोंसे छुटजाताहै और जोकोई उसतीर्थकी प्रदक्षिणा करताहै उसकोसातों समुद्रों सहित संपूर्ण पृथ्वीकी प्रदक्षिणाकरनेका फलमिलताहै इसकेपीछे सुवर्णके जलसे स्नान करजो सुवर्णकाही दानकरताहै वह सुवर्णके विमानमें स्थितहोकर रुद्रलोकमें वासकरताहै फिर जब कालवशहोकर स्वर्गसे पतितहोताहै तब राजाहोताहै इसके अनन्तर हीक्षुनदीके संगमपर जाना चाहिये वह दिव्य तीर्थ त्रिलोकीमें विख्यातहै वहाँ शिवजीका निवासरहताहै ४०। ४८ वहाँस्नान करनेवाला पुरुष शिवके गणोंका अधिपतिहोताहै इसके पीछे सब पापोंके नष्टकरनेवाले स्वामिकार्तिक तीर्थपर जानाचाहिये वह तीर्थ स्नानहीके करनेसे तीनप्रकारके पापोंको नष्टकरदेताहै फिर लिंगसार तीर्थपर जाकर स्नानकरनाचाहिये वहाँ स्नानकरने वालेको हज़ार गौओंके दानकापुण्य होताहै और रुद्रलोकमें वासकरताहै सब पापोंका नाशकभंगतीर्थ है वहाँ स्नानकरनेसे सात जन्मके कियेहुए पापनष्टहोजातेहैं ४९। ५२ फिर सब तीर्थोंमें उत्तम वटेश्वर तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ स्नान करनेसे हज़ार गौकेदानका फल मिलता है ५३ फिर सबदेवताओंसे पूजित संगमेश तीर्थहै वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष इन्द्रहोताहै ५४ फिर कोटि तीर्थपर जानायोग्यहै वहाँ स्नान करनेवाले पुरुषको निस्सन्देह राज्यकी प्राप्ति होतीहै ५५ और उस तीर्थपर जो दानदेताहै वह कोटिगुणा फलदायी होजाताहै ५६ और जो कोई स्त्री उस तीर्थपर स्नान करतीहै वह पार्वतीजीके समान रूप वाली होकर इन्द्रकी स्त्री होतीहै ५७ इसके पीछे अंगारेश तीर्थमें जाके स्नान करना चाहिये वहाँ

ङ्गरेशंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत्। स्नातमात्रोनरस्तत्र रुद्रलोकेमहीयते ५८ अ
ङ्गारकचतुर्थ्यान्तु स्नानंतत्रसमाचरेत्। अक्षयंमोदतेकालं शुचिःप्रयतमानसः ५९ अयो
निसम्भवेस्नात्वा नपश्येद्योनिसङ्कटम्। पाण्डवेशन्तुतत्रैवस्नानंतत्रसमाचरेत् ६० अक्ष
यंमोदतेकालमवध्यैस्त्रिदशैरपि। विष्णुलोकंततोगत्वा क्रीडतेभोगसंयुतः ६१ तत्रभुक्त्वा
महाभोगान् मर्त्यराजोऽभिजायते। कठेश्वरंततोगच्छेत् तत्रस्नानंसमाचरेत् ६२ उत्तरा
यणसंप्राप्तेयदिच्छेत्तस्यतद्भवेत्। चन्द्रभागांततोगच्छेत् तत्रस्नानंसमाचरेत्६३ स्ना
तमात्रोनरोराजन्! सोमलोकेमहीयते। ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! तीर्थंशक्रस्यविश्रुतम् ६४
पूजितंदेवराजेन देवैरपिनमस्कृतम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्। दानंदत्त्वातुकाञ्चनम् ६५
अथवानीलवर्णाभं वृषभंयःसमुत्सृजेत्। वृषभस्यतुरोमाणि तत्प्रसूतिकुलेषुच ६६
तावद्वर्षसहस्राणि नरोहरपुरेवसेत्। ततःस्वर्गात्परिभ्रष्टो राजाभवतिवीर्यवान् ६७ अ
श्वानांश्वेतवर्णानां सहस्राणांनराधिप!। स्वामीभवतिमर्त्येषु तस्यतीर्थप्रभावतः ६८ त
तोगच्छेत्तुराजेन्द्र ब्रह्मावर्त्तमनुत्तमम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! तर्पयेत्पितृदेवताः ६९
उपोष्यरजनीमेकां पिण्डंदत्त्वायथाविधि। कन्यागतेतथादित्ये अक्षयंस्यान्नराधिप! ७०
ततोगच्छेच्चराजेन्द्र! कपिलातीर्थमुत्तमम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! कपिलांयःप्रयच्छति
७१ सम्पूर्णपृथिवींदत्त्वायत्फलंतदवाप्नुयात्। नर्मदेशंपरंतीर्थं नभूतंनभविष्यति ७२
तत्रस्नात्वानरोराजन्नश्वमेधफलंलभेत्। नर्मदादक्षिणेकूलेसङ्गमेश्वरमुत्तमम् ७३ तत्र

स्नान करनेवाला पुरुष अक्षयकाल पर्य्यन्त आनन्द करताहै ५८। ५९ जो पुरुष अयोनिसंभव नाम तीर्थपर स्नान करताहै वह कभी योनि संकटोंको नहीं देखता है इसके पीछे पांडवेश तीर्थपर स्नान करना उचितहै ६० उस तीर्थपर स्नान करनेसे बहुत कालतक आनन्दकी प्राप्ति होकर देवताओंसेभी वधनहीं होताहै और विष्णुलोकमें प्राप्त होके विष्णुलोकमें अनेक भोगोंको भोगताहुआ पतित होकर मृत्युलोकमें जन्म लेकर राजाहोताहै फिर कठेश्वर तीर्थपर स्नानकरै और जब उत्तरायण सूर्य्यहो तब वहाँ वास करनेवाला पुरुष मनोवांछित फलको प्राप्त होताहै फिर चन्द्रभागानदी में स्नान करना चाहिये ६१। ६३ चन्द्रभागा नदीमें स्नान करनेवाला पुरुष चन्द्रलोकमें प्राप्त होताहै फिर इन्द्रके तीर्थपर जाना चाहिये जहाँ इन्द्रने पूजन कियाहै वहाँ स्नान करके जो सुवर्णका दान करता है अथवा नील वृषभका दान करताहै वह उस बैलके शरीरपै और उसके पुत्रोंके शरीरपै जितने रोमहोतेहैं उतनेहीं वर्षोंतक शिवजीके पुरमें वास करताहै फिर स्वर्गसे पतितहोकर बलवान् राजा होताहै उस तीर्थके प्रभावसे श्वेत वर्णवाले उत्तम हज़ारों अश्वोंका पति होताहै ६४। ६८ फिर ब्रह्मावर्त्त तीर्थपर स्नानकर पितृदेवताओंका तर्पणकरके एकरात्रि उपवास व्रतकरे और कन्याकीसंक्रान्तिमें यथार्थ विधिसे जोपुरुष पिंडदान करताहै वह पुरुष अक्षय गुणित फलको प्राप्तहोताहै ६९। ७० फिर उत्तम कपिला तीर्थपर स्नानकरके जोकपिला गौकादान करताहै वहसंपूर्ण पृथ्वीके दानकाफल पाताहै एकनर्मदेशनाम परम उत्तम तीर्थ है उस तीर्थके समान न कोई तीर्थ है न होगा ७१। ७२ वहाँ

स्नात्वानरोराजन् ! सर्वयज्ञफलंलभेत् । तत्रसर्वोद्यतोराजा पृथिव्यामेवजायते ७४
सर्वलक्षणसम्पूर्णः सर्वव्याधिविवर्जितः । नार्मदेचोत्तरेकूले तीर्थंपरमशोभनम् ७५
आदित्यायतनंदिव्यमीश्वरेणतुभाषितम् । तस्यतीर्थप्रभावेण दत्तंभवतिचाक्षयम् ७६
हरिद्राव्याधिनोयेतु येचदुष्कृतकर्मिणः । मुच्यन्तेसर्वपापेभ्यःसूर्यलोकंतुयान्तिते ७७ माघ
मासेतुसंप्राप्ते शुक्लपक्षस्यसप्तमी । वसेदायतनेतत्र निराहारोजितेन्द्रियः ७८ नजराव्या
धितोमूको नचान्धोवधिरोऽथवा । सुभगोरूपसंपन्नः स्त्रीणांभवतिवल्लभः ७९ एवंतीर्थं
महापुण्यं मार्कण्डेयेनभाषितम् । येनजानन्तिराजेन्द्र ! वञ्चितास्तेनसंशयः ८० गर्गे
श्वरंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत् । स्नातमात्रोनरस्तत्र स्वर्गलोकमवाप्नुयात् ८१
मोदतेस्वर्गलोकस्थो यावदिन्द्राश्चतुर्दश । समीपतःस्थितंतस्य नागेश्वरतपोवनम् ८२
तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र ! नागलोकमवाप्नुयात् । बह्वीभिर्नागकन्याभिः क्रीडतेकालमक्षयम्
८३ कुबेरभवनंगच्छेत् कुबेरोयत्रसंस्थितः । कालेश्वरंपरंतीर्थं कुबेरोयत्रतोषितः ८४ तत्र
स्नात्वानुराजेन्द्र ! सर्वसम्पदमाप्नुयात् । ततःपश्चिमतोगच्छेत् मारुतालयमुत्तमम् ८५
तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र ! शुचिर्भूत्वासमाहितः । काञ्चनंतुततोदद्याद्यथाशक्तिसुबुद्धिमान्
८६ पुष्पकेणविमानेन वायुलोकंसगच्छति । यमतीर्थंततोगच्छन् माघमासेयुधिष्ठिर !
८७ कृष्णपक्षेचतुर्दश्यां स्नानंतत्रसमाचरेत् । नक्तम्भोज्यंततःकुर्य्यान्नपश्येद्योनिसङ्कट

स्नानकरनेवाला पुरुष अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै नर्मदा नदीके उत्तरतटपर संगमेश्वरनाम तीर्थहै वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष सबयज्ञोंके फलको प्राप्तहोताहै वहाँ कुछभी धर्मका उद्योग करने वाला पुरुष सब व्याधियोंसे रहित शुभ लक्षणोंसे सम्पन्न होकर राजा होताहै और नर्मदाके उत्तरी तटपर परमशोभन तीर्थ है वह आदित्य सूर्य्यका उत्तम स्थान है यह शिवजीने कहाहै उस तीर्थ केप्रभावसे दियाहुआ दान अक्षयगुणा होता है ७३ । ७६ जो खोटे कर्मवाले तथा पांडुरोगवाले पुरुष वहाँ स्नान करते हैं वह संपूर्ण रोगोंसे छुटजातेहैं और सूर्य्यलोकमें प्राप्त होते हैं ७७ माघमहीनेके शुक्लपक्षकी सप्तमी के दिन उस स्थानमें निराहार व्रतकरके जो वास करता है वह जरा व्याधि से रहित गूंगा अन्धा बहरा नहीं होता किन्तु सुन्दर रूपवाला और स्त्रियोंका प्रिय होताहै ७८ । ७९ इस रीति से यह महापवित्र तीर्थ है मार्कण्डेयजी कहते हैं कि जो पुरुष इस तीर्थको नहीं जानतेहैं वहनिस्सन्देह ठगेहुएहैं८० इसके पीछे गर्गेश्वर तीर्थपर जाकर स्नान करनाचाहिये वहाँ स्नान करनेसे स्वर्गलोककी प्राप्तिहोतीहै ८१ जबतक चौदह इन्द्रराज्यकरें तबतक स्वर्ग लोकमें आनन्दकरता है उस तीर्थके समीप नागेश्वरनाम तपोवनहै वहाँ स्नानकरनेवाला पुरुष नागलोकमें प्राप्तहोकर बहुत कालतक क्रीडाकरताहै ८२।८३ जहाँ कुबेर स्थितहैं उसकुबेरभवनमें जानाचाहिये वहाँकालेश्वर शिवहैं वहाँही कुबेर प्रसन्नहुआहै उसस्थानमें स्नानकरनेवाला पुरुष संपूर्ण सम्पत्तियोंको प्राप्तहोताहै फिर पश्चिमकी ओर मारुतालय तीर्थपर जानाचाहिये वहाँ स्नानसे पवित्रहो सावधानीसे शक्तिके अनुसार जो सुवर्णका दानकरताहै वह पुष्पकविमानमें बैठकर वायुलोकमें प्राप्तहोताहै फिर माघ

म् ८८ अहल्यातीर्थंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत्। स्नातमात्रोनरस्तत्र ह्यप्सरोभिः प्रमोदते ८९ अहल्याचतपस्तप्त्वा तत्रमुक्तिमुपागता। चैत्रमासेतुसंप्राप्ते शुक्लपक्षेचतुर्दशी ९० कामदेवदिनेतस्मिन्नहल्यांयस्तुपूजयेत्। यत्रयत्रनरोत्पन्नो वरस्तत्रप्रियोभवेत् ९१ स्त्रीवल्लभोभवेच्छ्रीमान् कामदेवइवापरः अयोध्यांतुसमासाद्य तीर्थंरामस्यविश्रुतम् ९२ स्नातमात्रोनरस्तत्र सर्वपापैःप्रमुच्यते। सोमतीर्थंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत् ९३स्नातमात्रोनरस्तत्र सर्वपापैःप्रमुच्यते। सोमग्रहेतुराजेन्द्र! पापक्षयकरंनृणाम् ९४त्रैलोक्यविश्रुतंराजन्! सोमतीर्थंमहाफलम्। यस्तुचान्द्रायणंकुर्यात्तस्मिंस्तीर्थेनराधिप! ९५ सर्वपापविशुद्धात्मा सोमलोकंसगच्छति। अग्निप्रवेशेऽथजले अथवापिह्यनाशके ९६ सोमतीर्थेमृतोयस्तु नाऽसौमर्त्येऽभिजायते। शुभतीर्थंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत् ९७ स्नातमात्रोनरस्तत्र गोलोकेषुमहीयते। ततोगच्छेन्नराजेन्द्र! विष्णुतीर्थमनुत्तमम्९८योधनीपुरमाख्यातं विष्णुस्थानमनुत्तमम्। असुरायोधितास्तत्र वासुदेवेनकोटिशः ९९तत्रतीर्थंसमुत्पन्नं विष्णुःप्रीतोभवेदिह। अहोरात्रोपवासेन ब्रह्महत्यांव्यपोहति१०० ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! तापसेश्वरमुत्तमम्। हरिणीव्याधसन्त्रस्ता पतितायत्रसामृगी १०१ जलेप्रक्षिप्तगात्रातु अन्तरिक्षंगताचसा। व्याधोविस्मितचित्तस्तु परंविस्मयमा

महीनेमें पयतीर्थपर जानाचाहिये ८४। ८७ फिर कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको वहाँ स्नानकर रात्रिमें भोजनकरे ऐसा पुरुष जन्मके दुःखको नहीं देखताहै ८८ फिर अहल्या तीर्थपरजाके स्नानकरे वहाँ स्नानकरने वाला पुरुष अप्सराओंके साथ क्रीडाकरता है ८९ वहाँही अहल्या तपकरके मुक्तिकोप्राप्तहुईहै वहाँ जोकोई मनुष्य चैत्रशुक्ला चतुर्दशीके दिन अहल्याका पूजनकरताहै वह सब जन्मोंमें पुरुषहीहोताहै और सब स्त्रियोंका प्रिय होकर कामदेवके समान शोभायमानहोता है अयोध्यापुरीमें श्रीरामचन्द्रजीकातीर्थ है वहाँ स्नानमात्रकेहीकरनेसे सबपापदूरहोजातेहैं फिरसोमतीर्थ परजाकर स्नानकरनाचाहिये ९०। ९३ वहाँ स्नानकरनेसे सब पापदूरहोजातेहैं हे राजन् यह सोमग्रहनाम तीर्थ त्रिलोकीमें विख्यात सब पापोंका नष्टकरनेवालाहै इसका महाफलहै जोपुरुष इस तीर्थपर चान्द्रायण व्रतकरताहै वह सब पापोंसे छुटकर चन्द्रमाकेलोकमें प्राप्तहोताहै और जोकोई वहाँ अग्निमें प्रवेश करताहै वा जलमें प्रवेशकरताहै अथवा मरणपर्य्यन्त अनशन व्रतकरताहै वह सोमतीर्थपर मरनेवाला पुरुष इस मृत्युलोकमें फिर जन्म नहीं लेताहै फिर शुभतीर्थपर स्नानकरनाचाहिये वहाँ स्नानकरनेवाला पुरुष गोलोकमें प्राप्तहोताहै फिर उत्तम विष्णु तीर्थ पर जाना चाहिये ९४। ९८ वहाँ विष्णुके स्थानमें योधनीपुर प्रसिद्धहै वहाँ विष्णु भगवान्ने किरोड़ों दैत्योंके साथ युद्धकियाहै ९९ शुक्लतीर्थपर एक दिनरात्रि निराहार व्रतकरनेसे विष्णु भगवान् प्रसन्नहोते हैं और ब्रह्महत्या दूरहोजाती है १०० इसके अनन्तर तापसेश्वर तीर्थपर जानाचाहिये वहाँ व्याधसे भयभीतहुई एकहिरणी गिरपडीथी और उसजलमें शरीर छोडनेसे वह स्वर्गलोकको चलीगई इस बातको देखकर वह व्याध अपने चित्तमें बड़ा आश्चर्य्य करताभया ऐसा वहतापेश्वर तीर्थहै उसके

गतः १०२ तेनतापेश्वरंतीर्थं नभूतंनभविष्यति। ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! ब्रह्मतीर्थमनुत्त
मम् १०३ अमोहकमितिख्यातं पितृंश्चैवात्रतर्पयेत्। पौर्णमास्याममायान्तु श्राद्धंकुर्या
द्यथाविधि १०४ तत्रस्नात्वानरोराजन्! पितृपिण्डन्तुदापयेत्। गजरूपाशिलातत्र तो
यमध्येप्रतिष्ठिता १०५ तस्यान्तुदापयेत्पिण्डं वैशाख्यान्तुविशेषतः। तृप्यन्तिपितर
स्तत्र यावत्तिष्ठतिमेदिनी १०६ ततोगच्छेन्नराजेन्द्र! सिद्धेश्वरमनुत्तमम्। तत्रस्नात्वा
नरोराजन्! गणगत्यन्तिकंव्रजेत् १०७ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! लिङ्गोयत्रजनार्दनः। त
त्रस्नात्वातुराजेन्द्र! विष्णुलोकेमहीयते १०८ नर्मदादक्षिणेकूले तीर्थंपरमशोभनम्।
वामदेवःस्वयंतत्र तपोऽतप्यतवैमहत् १०९ दिव्यंवर्षसहस्रन्तु शङ्करंपर्युपासत। समा
धिभङ्गदग्धास्तु शङ्करेणमहात्मना ११० श्वेतपर्वायमश्चैव हुताशःशुक्रपर्वणि। एतेद
ग्धास्तुतेसर्वे कुसुमेश्वरसंस्थिताः १११ दिव्यवर्षसहस्रेण तुष्टस्तेषांमहेश्वरः। उमया
सहितोरुद्रस्तुष्टस्तेषांवरप्रदः ११२ मोक्षयित्वातुतान्सर्वान् नर्मदातटमास्थितः। तत
स्तीर्थप्रभावेण पुनर्देवत्वमागताः ११३ त्वत्प्रसादान्महादेव! तीर्थंभवतुचोत्तमम्। अ
र्द्धयोजनविस्तीर्णं क्षेत्रंदिक्षुसमन्ततः ११४ तस्मिंस्तीर्थेनरःस्नात्वा चोपवासपरायणः।
कुसुमायुधरूपेण रुद्रलोकेमहीयते ११५ वैश्वानरोयमश्चैव कामदेवस्तथामरुत्। त

समान कोई तीर्थ नहीं है इसके पीछे उत्तम ब्रह्म तीर्थ पर जानाचाहिये १०१। १०२ इसको अमोहक कहते हैं यहाँ पितरों का तर्पण करना चाहिये और पूर्णिमा वा अमावास्या के दिन श्राद्धकरनाचाहिये १०४ वहाँ जलमें हाथी के समान स्वरूप वाली शिलापड़ी है उसके ऊपर पिण्डदानकरना और वैशाखकी पूर्णिमाको पिण्ड देनेका अधिक पुण्य है उसपर पिण्डदेने से जब तक पृथ्वी रहती है तबतक उसके पितर तृप्त रहते हैं १०५। १०६ फिर उत्तम सिद्धेश्वर तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष शिवजीके गणोंका अधिपति होताहै १०७ इसके पीछे जनार्दन लिंगके स्थानपर जाना चाहिये वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष विष्णुलोकमें प्राप्त होताहै १०८नर्मदाके दक्षिण तटपर शोभन कुसुमेश्वर तीर्थ है वहाँ वामदेव ऋषिने बड़ातप कियाथा अर्थात् देवताओंके हज़ार वर्षोंतक शिवजीकी उपासना करतेरहे और उसी स्थानमें शिवजीकी समाधिसे भंगहुए श्वेतपर्वा धर्मराज और अग्नि यहसब तप करतेभये और सबकामदेवके बाणमें स्थित होकर दग्ध होगयेथे तब इनसबने देवताओंके हज़ार वर्षोंतक तप कियाथा उससमय श्री पार्वतीजी समेत महादेवजी इनसबको प्रसन्न होकर वरदेतेभये और सबको तपस्यासे छुटवाकर महादेवजी नर्मदा के किनारे पर स्थित होतेभये तब उसी तीर्थके प्रभावसे यहसब लोग फिर देवता होगये १०९।११२ और देवताहोकर महादेवजी से बोले कि हे शिवजी आपकी प्रसन्नता से यह तीर्थ महाउत्तम होजाय यह हमको वर दीजिये इसके पीछे वह तीर्थ चारोओरको दोकोशके विस्तारमें होगया उस तीर्थपर स्नान करनेवाला और निराहार व्रतकरने वाला पुरुष कामदेवके रूपको धारण करके शिवलोकमें प्राप्त होताहै ११४।११५हे राजन् इस कुसुमेश्वर तीर्थमें अग्नि धर्मराज और वायु यह तीनों

पस्तप्त्वातुराजेन्द्र! परांसिद्धिमवाप्नुयुः ११६ अङ्कोलस्यसमीपेतु नातिदूरेतुतस्यवै।
स्नानंदानञ्चतत्रैव भोजनंपिण्डमेवच ११७ अग्निप्रवेशेऽथजले अथवातुह्यनाशके।
अनिवर्त्तिकागतिस्तस्य मृतस्यामुत्रजायते ११८ त्र्यम्बकेनतुतोयेनयश्चरुंश्रपयेन्नरः।
अङ्कोलमूलेदत्वातु पिण्डंचैवयथाविधि ११९ तृप्यन्तिपितरस्तस्य यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
उत्तरेत्वयनेप्राप्ते घृतस्नानङ्करोतियः १२० पुरुषोवाथस्त्रीवापि वसेदायतनेशुचिः। सि
द्धेश्वरस्यदेवस्य प्रातःपूजांप्रकल्पयेत् १२१ सयाङ्गतिमवाप्नोति नतांसर्वैर्महामखैः।
यदावतीर्णःकालेन रूपवाञ्छुभगोभवेत् १२२ मर्त्येभवतिराजाच त्वासमुद्रान्तगोचरे।
क्षेत्रपालंनपश्येत्तु दण्डपाणिंमहाबलम् १२३ वृथातस्यभवेद्यात्रा ह्यदृष्ट्वाकर्णकुण्डलम्।
एवंतीर्थफलंज्ञात्वा सर्वेदेवाःसमागताः। मुञ्चन्तिकुसुमैर्वृष्टिं तेनतत्कुसुमेश्वरम् १२४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९०॥

(मार्कण्डेय उवाच) भार्गवेशंततोगच्छेद्गत्वायत्रजनार्दनः। असुरैस्तुमहायुद्धे म
हाबलपराक्रमैः १ हुङ्कारितास्तुदेवेनदानवाःप्रलयङ्कताः। तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र! सर्वपा
पैःप्रमुच्यते २ शुक्लतीर्थस्यचोत्पत्तिं शृणुत्वंपाण्डुनन्दन!। हिमवच्छिखरेरम्ये नानाधा
तुविचित्रिते ३ तरुणादित्यसङ्काशे तप्तकाञ्चनसप्रभे। वज्रस्फटिकसोपाने चित्रवेदीशि

तपकरके परमसिद्धिको प्राप्त होगये हैं ११६ वहाँ अंकोलका वृक्ष है उस अंकोल तीर्थकेही समीप जो स्नान दान ब्राह्मणोंका भोजन पिण्डदान अग्नि प्रवेश अथवा अनशन व्रतकरके जो प्राणोंको त्यागताहै उस पुरुषकी मरे पीछे दूसरे जन्ममें सर्वत्र जानेकी गति होजातीहै और जो पुरुष अंकोल की जड़में यथार्थ विधिसे पिंड दान करताहै और त्र्यंबक मन्त्र करके साकल्यका हवन करताहै उस के पितरोंकी तृप्ति चन्द्रमा और सूर्य्यकी स्थिति पर्य्यन्ततक रहतीहै और जो पुरुष वा स्त्री उत्तरायण सूर्य्यमें वहाँ स्नान करताहै वह पवित्रस्थानमें बास करता है और प्रातःकाल सिद्धेश्वर महादेव जीकी पूजा करने वाले मनुष्यको वह गति प्राप्त होती है जो संपूर्ण यज्ञोंसे भी नहीं प्राप्त होसक्ती है वह पुरुष जब समय पाकर पृथ्वी में जन्म लेताहै तब समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका एकही महास्वरूपवान् प्रतापी राजा होताहै ११७।१२३ और कर्ण कुंडल तीर्थके दर्शन किये बिना सब यात्रा वृथा रहती हैं इस प्रकारके फलवाले इस तीर्थको जानके देवताओं ने पुष्पोंकी वर्षाकी है इसी से यह कुसुमेश्वर तीर्थ कहाताहै १२४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९०॥

मार्कण्डेयजी बोले हे राजेन्द्र फिर भार्गवेश तीर्थपर जानाचाहिये वहाँ जनार्दन भगवान्को जब महापराक्रम वाले दैत्यों ने पीड़ित कियाहै तब महादेवने हुंकार शब्दकरके उसीसमय सब दैत्योंका नाशकरदियाहै वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष सब पापोंसे छुटजाताहै १।२ हे पांडुनन्दन अब मैं शुक्ल तीर्थकी उत्पत्तिको तुम्हें सुनाताहूं अनेक प्रकारकी धातुओंसे चित्रविचित्र ३ रमणीक हिमवान् पर्व्वतके तरुण सूर्य्यके समान कान्तिवाले मणिरत्नों आदिकी सीढ़ीवाले सुन्दर शिलाओं से और

लातले ४ जाम्बूनदमयेदिव्ये नानापुष्पोपशोभिते । तत्रासीनंमहादेवं सर्वज्ञंप्रभुमव्यय
म् ५ लोकानुग्रहदंशान्तङ्गणवृन्दैःसमावृतम् । स्कन्दनन्दिमहाकालैर्वीरभद्रगणादिभिः६
उमयासहितंदेवं मार्कण्डेयःपर्यपृच्छत । देवदेवमहादेव ब्रह्मविष्ण्विन्द्रसंस्तुत ! ७ संसा
रभयभीतोऽहं सुखोपायंब्रवीहिमे । भगवन् ! भूतभव्येश ! सर्वपापप्रणाशनम् । तीर्थानां
परमंतीर्थं तद्वदस्वमहेश्वर ! ८ (ईश्वर उवाच) शृणुविप्र ! महाप्राज्ञ ! सर्वशास्त्रविशा
रद ! । स्नानायगच्छसुभग ! ऋषिसङ्घैःसमावृतः ९ मन्वत्रिकश्यपाश्चैव याज्ञवल्क्यो
शनोऽङ्गिराः । यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती १० नारदोगौतमश्चैव सेवन्तेध
र्म्मकाङ्क्षिणः । गङ्गांकनखलंपुण्यं प्रयागंपुष्करंगयाम् ११ कुरुक्षेत्रंमहापुण्यं राहुग्र
स्तेदिवाकरे । दिवावायदिवारात्रौ शुक्लतीर्थंमहाफलम् १२ दर्शनात्स्पर्शनाच्चैव स्नाना
द्दानात्तपोजपात् । होमाच्चैवोपवासाच्च शुक्लतीर्थंमहाफलम् १३ शुक्लतीर्थंमहापुण्यं नर्म्म
दायांव्यवस्थितम् । चाणक्योनामराजर्षिः सिद्धिंतत्रसमागतः १४ एतत्क्षेत्रंसुविपुलं
योजनंवृत्तसंस्थितम् । शुक्लतीर्थंमहापुण्यं सर्वपापप्रणाशनम् १५ पादपाग्रेणदृष्टेन ब्रह्म
हत्यांव्यपोहति । जगतीदर्शनाच्चैव भ्रूणहत्यांव्यपोहति १६ अहंतत्रऋषिश्रेष्ठ ! तिष्ठा
मिह्युमयासह । वैशाखेचैत्रमासेतु कृष्णपक्षेचतुर्दशी १७ कैलासाच्चापिनिष्क्रम्य तत्रस
न्निहितोह्यहम् । दैत्यदानवगन्धर्वाः सिद्धविद्याधरास्तथा १८ गणाश्चाप्सरसोनागाः
सर्वेदेवाःसमागताः । गगनस्थास्तुतिष्ठन्ति विमानैःसार्वकामिकैः १९ शुक्लतीर्थंतुराजे

दिव्य सुवर्णके समान अनेक पुष्पोंसे शोभित शिखरपर लोकोंके अनुग्रह करनेवाले स्वामिकार्तिक और नंदी आदि गणोंसे युक्त पार्वती समेत सर्वज्ञ प्रभु शिवजीको बैठेहुए देखकर मैंने पूछा हेदेव २ महादेव ब्रह्मा विष्णु आदिसे पूजित मैं संसारके भयसे युक्तहूं मुझको कोई सुखका उपाय बताइये हेभगवन् भूत भव्येश और सर्वपापनाशक आप मुझको सबसे उत्तम तीर्थ बताइये ४।८ शिवजी बोले हेमहाप्राज्ञ विप्र सुनो तुम सब ऋषियों समेत स्नान करने को चलो ९ और यह बात जानो कि मनु, अत्रि, कश्यप-याज्ञवल्क्य-शुक्र-अंगिरा-यमराज-आपस्तंब-संवर्त्त-कात्यायन-बृहस्पति-नारद और गौतमादिक धर्मकी इच्छा करनेवाले ऋषि गंगा, कनखल, प्रयाग, पुष्कर और गया आदि तीर्थोंका सेवन करते हैं और सूर्य्य ग्रहणमें महापुण्यवाले कुरुक्षेत्रको सेवते हैं परन्तु यह शुक्लतीर्थ अहर्निश सदैव पवित्र वर्णन किया है उसके दर्शन स्पर्श स्नान तथा दान तप जप होम उपवास और अन्य २ प्रकारके व्रतकरने से वह शुक्लतीर्थ सबसे उत्तम महाफल देनेवाला है १०।१३ नर्मदा नदीमें व्यवस्थित हुआ शुक्लतीर्थ महाफल वालाहै वहां चाणक्यनाम् राजऋषि सिद्धिको प्राप्तहुआ है १४ यह क्षेत्र परमसुन्दर गोलाकार एक योजनमें विस्तृत होकर सब पापोंका नाश करनेवाला है १५ इस क्षेत्रके वृक्षोंकी डालियोंके दर्शन होने से ब्रह्महत्यादूर होजाती है और वहां की पृथ्वी के दर्शन होने से भ्रूणहत्या निवृत्त होती है १६ हेऋषिश्रेष्ठ पार्वती समेत मैं वैशाख और चैत्र कृष्ण चतुर्दशीको अपने कैलाश से भी निकलकर वहां स्थित होताहूं और दैत्य दानव सिद्ध गन्धर्व विद्या-

न्द्र ! ह्यागताधर्मकाङ्क्षिणः। रजकेनयथावस्त्रं शुक्लम्भवतिवारिणा २० आजन्मजनि तंपापं शुक्लतीर्थंव्यपोहति। स्नानंदानंमहापुण्यं मार्कण्डेयऋषिसत्तम ! २१ शुक्लतीर्था त्परंतीर्थं नभूतंनभविष्यति। पूर्ववयसिकर्माणि कृत्वापापानिमानवः २२ अहोरात्रो पवासेन शुक्लतीर्थेव्यपोहति। तपसाब्रह्मचर्येण यज्ञैर्दानेनवापुनः २३ देवार्चनेनयापुष्टि र्नसाक्रतुशतैरपि। कार्त्तिकस्यतुमासस्य कृष्णपक्षेचतुर्दशी २४ घृतेनस्नापयेद्देवमुपो ष्यपरमेश्वरम्। एकविंशकुलोपेतो नच्यवेदैश्वरात्पदात् २५ शुक्लतीर्थंमहापुण्यमृषि सिद्धनिषेवितम्। तत्रस्नात्वानरोराजन् ! नपुनर्जन्मभाक्भवेत् २६ स्नात्वावैशुक्लतीर्थे तु ह्यर्चयेत्वृषभध्वजम्। कपालपूरणंकृत्वा तुष्यत्यत्रमहेश्वरः २७ अर्द्धनारीश्वरंदेवं प टेभक्त्यालिखापयेत्। शङ्खतूर्यनिनादैश्च ब्रह्मघोषैश्चसद्द्विजैः २८ जागरंकारयेत्तत्र नृत्यगीतादिमङ्गलैः। प्रभातेशुक्लतीर्थेतु स्नानंवैदेवतार्चनम् २९ आचार्यान्भोजयेत्प श्चाच्छिवव्रतपराङ्मुचीन्। दक्षिणाञ्चयथाशक्ति वित्तशाठ्यंविवर्जयेत् ३० प्रदक्षिणंततः कृत्वा शनैर्देवान्तिकंव्रजेत्। एवंवैकुरुतेयस्तु तस्यपुण्यफलंशृणु ३१ दिव्ययानंसमारू ढो गीयमानोऽप्सरोगणैः। शिवतुल्यबलोपेतस्तिष्ठत्याभूतसंप्लवम् ३२ शुक्लतीर्थेतुया नारी ददातिकनकंशुभम्। घृतेनस्नापयेद्देवं कुमारंचापिपूजयेत् ३३ एवंयाकुरुतेभक्त्या

धर अप्सरागण सब नाग और देवता यह सब अपनी२कामनाओंके निमित्त विमानोंमें स्थित होकर आकाश मार्गमें स्थित होजाते हैं १७।१९ हेराजेन्द्र धर्मकी इच्छासे उसशुक्लतीर्थ पर जानेवाले पुरुष ऐसेशुद्ध होजाते हैं जैसे कि धोबीके भागे वस्त्र शुद्ध और श्वेत होजाताहै यह शुक्लतीर्थ जन्मसे लेकर मरण पर्य्यन्तके पापोंको दूरकरदेताहै हेऋषिसत्तम मार्कण्डेय इसतीर्थपर स्नानदानका महापुण्य होताहै शुक्लतीर्थके समान कोई तीर्थ है न होगा प्रथम अवस्थाके कियेहुए पाप शुक्लतीर्थपर एकदिन रात्रिके निराहार व्रतकरनेसे दूरहोजातेहैं और वहां जप ब्रह्मभोज यज्ञ दान और देवार्चन करनेसे जोपुण्य होताहै वह अन्यत्र सैकड़ोंतीर्थ स्थानोंकेभी करनेसे नहीं होताहै वहां कार्त्तिकमासकी कृष्ण चतुर्दशीको जोकोई घृतसे महादेवजीका स्नान और पूजनकरताहै और एक रात्रि उपवासव्रतकर- ताहै वह अपनी इक्कीसपीढ़ियों समेत शिवजीके लोकमें प्राप्तहोताहै और पुनर्जन्मसे रहित भीहो- ताहै २०।२५ यह महापुण्यवाला शुक्लतीर्थ ऋषियोंसे सेवितहै वहाँ स्नान करने वालापुरुष संसारमें नहींजन्मताहै २६ वहांस्नानकरके कपालभरकर महादेवकापूजन करनाचाहिये और पार्वतीकेअर्द्धा- ङ्गवाले शिवजीकीमूर्त्ति एक काष्ठपीठपरलिखकर शंख भेरी और वेदादिकोंके घोषसमेत उनका पूज- नकरे और रात्रिमें जागरण करताहुआ नृत्यगीतादि मंगलकरे फिरप्रातःकालहोनेपर शुक्लतीर्थपर स्नानकरके शिवजीका पूजनकरे २७।२९ तदनन्तर शिवजीके व्रतधारी पवित्र आचार्य्योंकोभोजन कराकर शक्तिके अनुसार वित्तशाठ्यरहित दक्षिणा देवे ३० फिर उस तीर्थकी प्रदक्षिणा करके महा- देवजीके पासजाय इसप्रकारसे करनेवाला पुरुष३१ दिव्यविमानोंमें स्थित अप्सरागणोंके गीतोंसमेत महाशोभित शिवजी के समान बलसे युक्तहोके प्रलय कालतक स्वर्गमें स्थितहोताहै ३२ जो स्त्री

तस्याःपुण्यफलंश्रृणु। मोदतेशर्वलोकस्था यावदिन्द्राश्चतुर्दश ३४ पौर्णमास्यांचतुर्द्दश्यां संक्रान्तौविषुवेतथा। स्नात्वातुसोपवासःसन् विजितात्मासमाहितः ३५ दानंदद्या द्यथाशक्त्या प्रीयेतांहरिशङ्करौ। एवंतीर्थप्रभावेण सर्वंभवतिचाक्षयम् ३६ अनाथंदुर्गतंविप्रं नाथवन्तमथापिवा। उद्वाहयतियस्तीर्थे तस्यपुण्यफलंश्रृणु ३७ यावत्तद्रोमसंख्याच तत्प्रसूतिकुलेषुच। तावद्वर्षसहस्राणि शिवलोकेमहीयते ३८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९१॥

(मार्कण्डेयउवाच) ततस्त्वनरकंगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत्। स्नातमात्रोनरस्तत्र नरकञ्चनपश्यति १ तस्यतीर्थस्यमाहात्म्यं श्रृणुत्वंपाण्डुनन्दन!। तस्मिंस्तीर्थेतुराजेन्द्र! यस्यास्थीनिविनिक्षिपेत् २ विलयंयान्तिसर्वाणि रूपवान्जायतेनरः। गोतीर्थन्तुततोगत्वा सर्वपापात्प्रमुच्यते ३ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! कपिलातीर्थमुत्तमम्। तत्रगत्वानरोराजन्! गोसहस्रफलंलभेत् ४ ज्येष्ठमासेतुसंप्राप्ते चतुर्दश्यांविशेषतः। तत्रोपोष्यनरोभक्त्या कपिलांयःप्रयच्छति ५ घृतेनदीपंप्रज्वाल्य घृतेनस्नापयेच्छिवम्। सघृतंश्रीफलंजग्ध्वा दत्त्वाचान्तेप्रदक्षिणम् ६ घण्टाभरणसंयुक्तां कपिलांयःप्रयच्छति। शिवतुल्यबलोभूत्वा नैवासौजायतेपुनः ७ अङ्गारकदिनेप्राप्ते चतुर्थ्यांतुविशेषतः। पूजयेत्तुशिवंभक्त्या

शुक्ल तीर्थपर सुवर्णका दानकरती है और भक्तिपूर्वक घृतसे शिवजीको स्नानकराती है और स्वामिकार्त्तिकका भी पूजनकरती है वह जबतक चौदहइन्द्रराज्य करते हैं तबतक शिवलोकमें वासकरती है ३३।३४ और पूर्णिमा चतुर्दशी संक्रान्ति और समान अहोरात्र इनसब दिनोंमें जोस्नानकर जितेन्द्री हो शक्तिके अनुसार दानदेताहै उसके ऊपर विष्णु और महादेव प्रसन्नहोते हैं इस प्रकार इसतीर्थके प्रभावसे सब दानादिक अक्षयगुणित होजाताहै ३५।३६ और अनाथ गरीब ब्राह्मण तथा धनाढ्य ब्राह्मणको जो इसतीर्थपर विवाह देताहै वहजितने उस ब्राह्मणके शरीरपर रोमहोते हैं और उसकी सन्तानपरभी जितनेरोमहोतेहैं उतनेही वर्षोंतक शिवलोकमें वासकरताहै ३७।३८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांएकनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९१॥

मार्कण्डेयजी बोले कि अनरकनामएकतीर्थ है उसपर जाकर स्नान करनेवाला पुरुष नरकको नहीं देखताहै १ हे पाण्डुनन्दन उसतीर्थका यह माहात्म्यहै कि जिसपुरुषके अस्थि वहां गिरते हैं उसके सबपाप नष्ट होजाते हैं और उत्तम रूपवाला होजाता है फिर गोतीर्थपर जानेवाला पुरुष सबपापों से मुक्तहोताहै फिर उत्तम कपिलातीर्थपर जानेवाला पुरुष हज़ार गौदानके पुण्यको पाताहै२।४विशेषकरके जो कोई ज्येष्ठमासकी चतुर्दशी के दिन वहां निराहारव्रत करके भक्तिसे कपिलागौका दान करताहै और घृतका दीपक प्रकाश करता है और घृतहीसे महादेवजीको स्नानकरवाताहै और आप घृत सहित नारियलका भोजन करे फिर महादेवजी की प्रदक्षिणाकरे और घंटा आभूषणादिसे युक्तहुई कपिला गौ का दानकरे वह पुरुष शिवजीके समान बलवान्होके शिवलोकमें वासकरताहै और फिर जन्म नहीं लेताहै५।७ मंगलवारी चतुर्थी के दिन जो भक्तिपूर्वक शिवका पूजनकर ब्राह्मणों को

ब्राह्मणेभ्यश्चभोजनम् ८ अङ्गारकनवम्यांतु अमायाश्चविशेषतः। स्नापयेत्तत्रयत्नेन
रूपवान्सुभगोभवेत् ९ घृतेनस्नापयेल्लिङ्गं पूजयेद्भक्तितोद्विजान्। पुष्पकेणविमानेन स
हंसैःपरिवारितः १० शैवंपदमवाप्नोति यत्रचाभिमतंभवेत्। अक्षयंमोदतेकालं यथारुद्र
स्तथैवसः ११ यदातुकर्मसंयोगान् मर्त्यलोकमुपागतः। राजाभवतिधर्मिष्ठो रूपवान्
जायतेकुले १२ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! ऋषितीर्थमनुत्तमम्। तृणविन्दुर्नामऋषिःपापद
ग्धोव्यवस्थितः १३ तत्तीर्थस्यप्रभावेण शापमुक्तोऽभवद्द्विजः। ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! ग
ङ्गेश्वरमनुत्तमम् १४ श्रावणेमासिसंप्राप्ते कृष्णपक्षेचतुर्दशी। स्नातमात्रोनरस्तत्ररुद्रलो
केमहीयते १५ पितॄणांतर्पणंकृत्वा मुच्यतेचऋणत्रयात्। गङ्गेश्वरसमीपेतु गङ्गावदनमु
त्तमम् १६ अकामोवासकामोवा तत्रस्नात्वातुमानवः। आजन्मजनितैःपापैर्मुच्यतेनात्र
संशयः १७ तत्रतीर्थेनरःस्नात्वा व्रजेद्वैयत्रशङ्करः। सर्वदापर्वदिवसे स्नानंतत्रसमाचरेत्
१८ पितॄणांतर्पणंकृत्वा ह्यश्वमेधफलंलभेत्। प्रयागेयत्फलंदृष्टं शङ्करेणमहात्मना १९
तदेवनिखिलंदृष्टं गङ्गावदनसङ्गमे। तस्यैवपश्चिमेस्थाने समीपेनातिदूरतः २०दशाश्व
मेधजननं त्रिषुलोकेषुविश्रुतम्। उपोष्यरजनीमेकां मासिभाद्रपदेतथा २१ अमायांन
रःस्नात्वा व्रजतेयत्रशङ्करः। सर्वदापर्वदिवसे स्नानंतत्रसमाचरेत् २२ पितॄणांतर्पणंकृ
त्वा चाश्वमेधफलंलभेत्। दशाश्वमेधात्पश्चिमतो भृगुर्ब्राह्मणसत्तमः २३ दिव्यंवर्षसह

भोजनकरवाताहै औरमंगलवारी नवमीके दिन तथा मंगलवारी अमावास्याके दिन घृतसे शिवजीका स्नानकरवावे और ब्रह्मभोजकरे वह पुरुष पुष्पक विमानमें बैठके शिवजीके पुरमें प्राप्तहोताहै वहां रुद्रके समान अक्षयकालतक आनन्द भोगताहुआ कर्मक्षीण होनेपर पतितहो पृथ्वी में आकर धर्मवान् रूपवान् और तेजस्वीराजा होताहै ऐसा यह गो तीर्थकाफलहै ८। १२ हे राजेन्द्र इसके अनन्तर बड़ेउत्तम ऋषि तीर्थपर जानाचाहिये पूर्वकालमें एक तृणविन्दु नाम ऋषि पापसे दग्धहोकर वहां स्थितहोताभया तब उस तीर्थ के प्रभावसे वहपाप और शाप दोनोंसे मुक्त होजाताभया हेराजन् फिर उत्तम गंगेश्वर तीर्थपर जाना चाहिये श्रावणमासकी कृष्णचतुर्दशीको वहां स्नान करनेवाला पुरुष रुद्रलोकमें प्राप्तहोताहै वहां पितरोंका तर्पण करनेवाला पुरुष तीनोंऋणों से छुटजाताहै, गंगेश्वर तीर्थके समीप महाउत्तम गंगावदननाम तीर्थ है वहां स्नान करनेवाला पुरुष निस्सन्देह सबपापोंसे छुटजाताहै १३। १७ वहां स्नान करनेवाला शिवजीके समीप प्राप्तहोताहै संपूर्ण पर्व्वों के दिन वहां स्नानकरके पितरोंका तर्पण करनेवाला पुरुष अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोताहै जो प्रयागजी में शंकराचार्य्यने पुण्य कहाहै वही पुण्य इस गंगावदन तीर्थपरहोताहै और उसीतीर्थके समीप पश्चिम की ओर दशाश्वमेधजननतीर्थ है यह त्रिलोकी में विख्यातहै यहां भाद्रपद महीनेमें एक रात्रि उपवास करनेवाला और अमावास्याके दिन स्नान करनेवाला पुरुष शिवलोक में प्राप्तहोताहै वहां सब पर्वोंमें स्नान करना चाहिये १८। २२ इसस्थानमें पितरोंका तर्पण करनेवाला पुरुष अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोताहै और दशाश्वमेध तीर्थ के पश्चिम की ओर भृगुऋषिने दिव्य हज़ारवर्षोंतक शिवजी

स्नन्तु ईश्वरंपर्य्युपासत। वल्मीकवेष्टितश्चासौ पक्षिणाञ्चनिकेतनः२४ आश्चर्यंसुमहज्ज्ञा
तमुमायाःशङ्करस्यच। गौरीपप्रच्छदेवेशं कोऽयमेवन्तुसंस्थितः २५ देवोवादानवोवाथ
कथयस्वमहेश्वर! (महेश्वरउवाच) भृगुर्नामद्विजश्रेष्ठ ऋषीणांप्रवरोमुनिः२६मान्ध्या
यतेसमाधिस्थो वरंप्रार्थयतेप्रिये! । ततःप्रहसितादेवी ईश्वरंप्रत्यभाषत २७ धूमवत्त
च्छिखाजाता ततोऽद्यापिनतुष्यसे। दुराराध्योऽसितेनत्वं नात्रकार्याविचारणा २८ (महे
श्वर उवाच) नजानासिमहादेवि! ह्ययंक्रोधेनवेष्टितः। दर्शयामियथातथ्यं प्रत्ययंतेकरो
म्यहम् २९ ततःस्मृतोऽथदेवेन धर्म्मरूपोवृषस्तदा। स्मरणात्तस्यदेवस्य वृषःशीघ्रमुप
स्थितः ३० वदंस्तुमानुषींवाचमादेशोदीयतांप्रभो! (भगवानुवाच) वल्मीकंत्वंखन
स्वेनं विप्रंभूमौनिपातय ३१ योगस्थस्तुततोध्यायन् भृगुस्तेननिपातितः। तत्क्षणात्
क्रोधसन्तप्तो हस्तमुत्क्षिप्यसोऽशपत् ३२ एवंसभाषमाणस्तु कुत्रगच्छसिभोवृष!।अ
द्याहंसंप्रकोपेन प्रलयंत्वान्नयेवृष! ३३ धर्षितस्तुतदाविप्र श्चान्तरिक्षङ्गतोवृषम्। आका
शेप्रेक्षतेविप्र एतदद्भुतमुत्तमम् ३४ तत्रप्रहसितेरुद्र ऋषिरग्रेव्यवस्थितः। तृतीयलोच
नंदृष्ट्वा वैलक्ष्यात्पतितोभुवि ३५ प्रणम्यदण्डवद्भूमौ तुष्टावपरमेश्वरम्। प्रणिपत्यभूत
नाथं भवोद्भवंत्वामहंदिव्यरूपम्। भवातीतोभुवनपतेप्रभो! तुविज्ञापयेकिञ्चित् ३६ त्व
द्गुणनिकरान्वक्तुं कःशक्तोभवतिमानुषोनाम। वासुकिरपिहिकदाचिद्वदनसहस्रंभवे

की उपासनाकी थी उससमय उनके शरीर के ओर पासमें सर्पों की वामी और पक्षियों के घो-
सले होगये थे तब शिव और पार्वती को बड़ा आश्चर्य्यहुआ और पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा
कि इस प्रकारसे स्थित होने वाला यह कौन है २३।२५ यह देवहै अथवा दानव है यह सुनकर
शिवजीने कहा कि हेप्रिये यह भृगुनाम उत्तम ऋषि समाधिमें स्थित होकर मेरा ध्यान करता है
और प्रार्थना करताहै यह सुनकर पार्वतीजीने हंसकर महादेवजी से कहा २६।२७ कि इसकी शिखा
धूमके समान होगई है अबभी आप इसपर प्रसन्न नहींहोते आप निस्सन्देह दुराराध्यहैं २८ शिवजी
ने कहा हेदेवि तू नहीं जानती है यह ऋषि क्रोधसे युक्तहै मैं यह बात तुझको प्रत्यक्ष दिखाऊंगा २९
तब महादेवजीने धर्मस्वरूपी वृषभका ध्यान किया स्मरण करतेही वह वृषभआया ३० वह आकर
मनुष्यवाणी से यह वचन बोला हेप्रभो मुझे क्या आज्ञा होती है शिवजीने कहा कि इन वामी और
पक्षियोंके घोसलोंको खोदडालो और इस ब्राह्मणको भूमिमें गिरादो ३१ इसके पीछे योगमें स्थित हुए
भृगुऋषिको उस बैलने पटक दिया तब क्रोधमें भरेहुए भृगुऋषि हाथ उठाकर यह शाप देतेभये ३२
कि हेबैल अब तू कहाँ जाताहै मैं तुझको अपने क्रोधसे नष्ट करूंगा यह कहकर वह भृगुऋषि आकाश
में स्थित हुआ दिखाई पड़ा इस आश्चर्य्यको देखकर महादेवजी उस ऋषिके आगे खड़ेहोकर अपने
तीसरे नेत्रकी दृष्टिसे उसको ऊपर से नीचे गिरा देतेभये ३३।३५ तब वह भृगुऋषि महादेवजीको
दंडप्रणाम कर यह स्तुति करतेभये हेशिवजी आप दिव्यरूप हैं मैं आपकी शरणहूं हे अखिलभुवन-
पति प्रभुजी मैं यह प्रार्थनापूर्वक निवेदन करता हूं ३६ कि कौन मनुष्य तुम्हारे गुण वर्णन करने

यस्य ३७ भक्त्यातथापिशङ्कर भुवनपते! त्वत्स्तुतौ मुखरः। वदतः क्षमस्वभगवन्! प्र सीदमेतवचरणपतितस्य ३८ सत्वंरजस्तमस्त्वं स्थित्युत्पत्योर्विनाशनेदेव!। त्वांमुक्त्वा भुवनपते! भुवनेश्वर! नैवदेवतंकिञ्चित् ३९ यमनियमयज्ञदानवेदाभ्यासाश्चधारणायोगः। त्वद्भक्तेःसर्वमिदंनार्हतिहिकलासहस्रांशम् ४० उच्छिष्टरसरसायनखड्गांजनपादुका विवरसिद्धिर्वा। चिह्नंभवव्रतानांदृश्यतिचेहजन्मनिप्रकटम् ४१ शाठ्येननमतियद्यपिद दासित्वंभूतिमिच्छतोदेव! भक्तिर्भवभेदकरीमोक्षायविनिर्मितानाथ! ४२ परदारपरस्वर तंपरपरिभवदुःखशोकसन्तप्तम्। परवदनवीक्षणपरंपरमेश्वर! मांपरित्राहि ४३ मिथ्या भिमानदग्धंक्षणभंगुरविभवविलसन्तम्। क्रूरंकुपथ्याभिमुखंपतितंमांपाहिदेवेश! ४४ दीनेहिजगणसार्थैर्बन्धुजनेनैवदूषिताह्याशा। तृष्णातथापिशङ्कर! किंमूढंमांविडम्बय ति ४५ तृष्णांहरस्वशीघ्रंलक्ष्मींप्रदस्वयावदासिर्नीनित्यम्। छिन्धिमदमोहपाशानुत्तार यमांमहादेव! ४६ करुणाभ्युदयंनामस्तोत्रमिदंसर्वसिद्धिदंदिव्यम्। यःपठतिभक्तियुक्त स्तस्यतुष्येत्भृगोर्यथाचशिवः ४७ (ईश्वर उवाच) अहंतुष्टोऽस्मितेवत्स! प्रार्थयस्वे प्सितंवरम्। उमयासहितोदेवोवरंतस्यह्यदापयत् ४८ (भृगुरुवाच) यदितुष्टोसिदेवेश!

को समर्थ है हजार मुखवाले शेषनाग भी आपकी महिमा नहीं वर्णन करसके ३७ इस हेतुसे हेशंकर यद्यपि आपकी स्तुति करने को मैं असमर्थ हूं तथापि मैं आपके चरणों में पड़ाहूं मुझपर आप कृपा करने को योग्यहैं हेदेवदेव आप स्थिति उत्पत्ति और संहारके समय सतोगुण रजोगुण और तमोगुण इन तीनोंगुणोंके रूपोंको धारणकरलेतेहो आपके सिवाय दूसरा कोई देव नहींहै ३८।३९ यम, नियम, यज्ञ, दान, वेदाभ्यास, धारणा और योग यह सब तुम्हारी भक्तिकी सोलहवीं कलाभी नहीं हैं ४० आपकी भक्ति करनेवाले पुरुषोंके इस जन्ममें तो रसायनआदि अनेक प्रकारके रसोंकी सिद्धिके चिह्न दीखते हैं ४१ यद्यपि मूर्खावस्थामें आपका भक्त नम्रनहीं होता है उसके भी निमित्त आप विभूति देतेहो इस संसार सागरसे पारउतारकर मोक्ष पदार्थकी देनेवाली आपकी भक्तिहै ४२ पर स्त्री, धनमेंरत, निरादर, दुःख और शोक इन सबसे संतप्तहुए पराये मुखके देखने वाले मुझ सेवककी आप रक्षा करो ४३ हे देवेश मिथ्या अभिमान से युक्त क्षणभंगुर विभूतिके विलासवाले मुझ क्रूर और कुमार्गीपर आप कृपाकरिये ४४ यह मेरी आशा दीनबन्धु जनोंमेंभी दूरनहीं होती हे शंकरजी मुझ मूढ़ अज्ञानी को यह तृष्णा महादुःखदेरही है ४५ इस मेरी तृष्णाको आप नित्यरहनेवाली लक्ष्मी देकर बड़ी शीघ्रता से निवृत्त करदो हे महादेव इस मदमोहरूपी फाँसी को काटकर मेरा उद्धारकरो ४६ यह करुणाभ्युदय नाम स्तोत्र सब सिद्धियों का देनेवालाहोकर महा दिव्य है इसस्तोत्र को जो कोई भक्तिसे पढ़ताहै उसके ऊपर महादेवजी ऐसे प्रसन्नहोते हैं जैसे कि भृगुपै प्रसन्नहुए हैं ४७ मार्कण्डेयजी कहते हैं कि इस स्तुतिको सुनकर महादेवजी ने कहा कि हे वत्स मैं तुझपर प्रसन्नहूं तू अपने मनका अभीष्टमांग इस प्रकारसे पार्वती समेत शिवजीने उस भृगु से कहा ४८ तब भृगुजी ने कहा हे देव जो आप मुझपर प्रसन्नहुए हैं और वरदान दिया

यदिदेयोवरोमम। रुद्रवेदीभवेदेवमेतत्सम्पादयस्वमे ४९ (ईश्वर उवाच) एवंभवतुवि प्रेन्द्र! क्रोधस्त्वानभविष्यति। नपितापुत्रयोश्चैवत्वेकमत्यंभविष्यति ५० तदाप्रभृति ब्रह्माद्यास्सर्वेदेवाःसकिन्नराः। उपासन्तेभृगोस्तीर्थंतुष्टोयत्रमहेश्वरः ५१ दर्शनात्तस्यतीर्थ स्य सद्यःपापात्प्रमुच्यते। अवशाःस्ववशावापि म्रियन्तेयत्रमानवाः ५२ गुह्यातिगुह्यासु गतिस्तेषांनिःसंशयंभवेत्। एतत्क्षेत्रंसुविपुलं सर्वपापप्रणाशनम् ५३ तत्रस्नात्वादिवंया न्ति येमृतास्तेपुनर्भवाः। उपानहौचच्छत्रञ्च देयमन्नञ्चकाञ्चनम् ५४ भोजनञ्चयथाशक्त्या ह्यक्षयञ्चतथाभवेत्। सूर्योपरागेयोदद्याद्दानंचैवयथेच्छया ५५ दीयमानन्तुतद्दानमक्षयंत स्यतद्भवेत्। चन्द्रसूर्योपरागेषु यत्फलंत्वमरकण्टके ५६ तदेवनिखिलंपुण्यं भृगुतीर्थे नसंशयः। क्षरन्तिसर्वदानानि यज्ञदानतपःक्रियाः ५७ नक्षरेत्तुतपस्तप्तं भृगुतीर्थेयुधि ष्ठिर!। यस्यवैतपसोग्रेण तुष्टेनैवतुशम्भुना ५८ सान्निध्यंतत्रकथितं भृगुतीर्थेनराधिप!। प्रख्यातंत्रिषुलोकेषु यत्रतुष्टोमहेश्वरः ५९ एवंतुवदतोदेवीं भृगुतीर्थमनुत्तमम्। नजान न्तिनरामूढाविष्णुमायाविमोहिताः ६० नर्म्मदायांस्थितंदिव्यं भृगुतीर्थंनराधिप!। भृगु तीर्थस्यमाहात्म्यं यःशृणोतिनरःक्वचित् ६१ विमुक्तःसर्वपापेभ्योरुद्रलोकंसगच्छति। त तोगच्छेत्तुराजेन्द्र! गौतमेश्वरमुत्तमम् ६२ तत्रस्नात्वानरोराजन्नुपवासपरायणः। काञ्चने-

चाहते हैं तो मैं रुद्रवेदी अर्थात् रुद्रका जाननेवाला होजाऊं और इसस्थानपर मेरा तीर्थ भी हो- जाय ४९ यहसुनकर शिवजीने कहा कि ऐसाहीहोगा हेपुत्र अबतेरे क्रोधनहींरहैगा पिता और पुत्रा- दिकोंमेंतेरी एकमति रहैगी ५० तबसेलेकर ब्रह्मादिक सब देवता और किन्नरादिक उस भृगुतीर्थ की उपासना करतेहैं जहांकि महादेवजी ऋषिपर प्रसन्नहुए हैं ५१ उसतीर्थके दर्शनहोनेसे तत्का- लहीपापनष्ट होजातेहैं वहां जोपुरुष अवशहोकर अथवा स्ववशहोकर अपनेप्राणोंको त्यागते हैं उनकी बहुत उत्तमगतिहोतीहै यहक्षेत्र बड़ा विस्तृत और पापोंका नष्टकरनेवाला है ५२।५३ वहां स्नान करने वाले पुरुष स्वर्गमें जातेहैं और जोवहां प्राणोंकोत्यागतेहैं वह फिर जन्मनहीं पातेहैं और उ- पानह छत्री और अन्नसमेत शक्तिके अनुसार सुवर्ण भोजनादिक के दान देते हैं वहसबवहां असंख्य गुणेहोजाते हैं जो कोई वहां सूर्य्यग्रहणमें इच्छापूर्व्वक दान देते हैं वहभी अनन्त गुणे होजाते हैं चन्द्र और सूर्य्य ग्रहणमें जोपुण्य अमर कंटक तीर्थपर होताहै वही पुण्य निस्सन्देह इस भृगुतीर्थ परभीहोताहै हे युधिष्ठिर संपूर्ण दान यज्ञ तपतो क्षीणहो जातेहैं परन्तु भृगुतीर्थ पर कियाहुआ तप कभीक्षीण नहीं होताहै हेराजन् भृगुऋषिके उग्रतपसे प्रसन्नहुए महादेवजी वहां भृगुतीर्थ में अपनी स्थिति रखते हैं इस हेतुसे जहां महादेवजी भृगुजी पर प्रसन्न हुए हैं वह महाउत्तम तीर्थ त्रिलोकी में विख्यातहै ५८।५९ हेदेवि ऐसे कहतेहुए भी मूढ़जन विष्णुकी मायासे मोहितहोकर अति उत्तम भृगुतीर्थ को नहीं जानते हैं ६० हे युधिष्ठिर नर्मदानदीपर यह भृगुतीर्थ महाउत्तम है जो पुरुष इस भृगुतीर्थ के माहात्म्यको श्रवण करता है वह सबपापों से छूटकर रुद्रलोकमें प्राप्तहोता है ६१ हे पाण्डव इसके पीछे उत्तम गौतमेश्वर तीर्थपर जा स्नानपूर्व्वक निराहारव्रत करनेवाला पुरुष सु-

नविमानेन ब्रह्मलोकेमहीयते ६३ धौतपापंततोगच्छेत् क्षेत्रंयत्रवृषेणतु । नर्म्मदायांकृतं राजन्! सर्वपातकनाशनम् ६४ तत्रतीर्थेनरःस्नात्वाब्रह्महत्यांविमुञ्चति । तस्मिंस्तीर्थेतु राजेन्द्र! प्राणत्यागंकरोतियः ६५ चतुर्भुजस्त्रिनेत्रश्चशिवतुल्यबलोभवेत् । वसेत्कल्पा युतंसाग्रं शिवतुल्यपराक्रमः ६६ कालेनमहताप्राप्तः पृथिव्यामेकराट्भवेत् । ततोगच्छेच्च राजेन्द्र! ऐरण्डीतीर्थमुत्तमम् ६७ प्रयागेयत्फलंदृष्टं मार्कण्डेयेनभाषितम् । तत्फलंल भतेराजन्! स्नातमात्रोहिमानवः ६८ मासिभाद्रपदेचैव शुक्लपक्षेचतुर्दशी । उपोष्यरज नीमेकां तस्मिन्स्नानंसमाचरेत् ६९ यमदूतैर्नबाध्येत रुद्रलोकंसगच्छति । ततोगच्छेत्तु राजेन्द्र! सिद्धोयत्रजनार्दनः ७० हिरण्यद्वीपेतिख्यातं सर्वपापप्रणाशनम् । तत्रस्नात्वा नरोराजन्! धनवान्रूपवान्भवेत् ७१ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! तीर्थङ्कनखलंमहत् । गरु डेनतपस्तप्तं तस्मिंस्तीर्थेनराधिप! ७२ प्रख्यातंत्रिषुलोकेषु योगिनीतत्रतिष्ठति । क्रीडते योगिभिःसार्द्धं शिवेनसहनृत्यति ७३ तत्रस्नात्वानरोराजन्! रुद्रलोकेमहीयते । ततो गच्छेत्तुराजेन्द्र! हंसतीर्थमनुत्तमम् ७४ हंसास्तत्रविनिर्मुक्तागताऊर्ध्वंनसंशयः । ततोग च्छेत्तुराजेन्द्र! सिद्धोयत्रजनार्दनः ७५ वाराहंरूपमास्थाय अर्चितःपरमेश्वरः । वराहती र्थेनरःस्नात्वा द्वादश्यान्तुविशेषतः ७६ विष्णुलोकमवाप्नोति नरकंनचपश्यति । ततोग च्छेत्तुराजेन्द्र! चन्द्रतीर्थमनुत्तमम् ७७ पौर्णमास्यांविशेषेण स्नानंतत्रसमाचरेत् । स्ना

वर्ण के विमानमें बैठकर ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै ६१ । ६३ इसके विशेष जहां वृषभने पापोंको धोया है उस धौतपाप तीर्थपर जानाचाहिये वहांभी सबपापोंका नाशहोता है ६४ उस तीर्थपर स्नान क- रनेवाला पुरुष ब्रह्महत्याको दूरकरताहै हे राजेन्द्र उस तीर्थपर जो प्राणोंको त्यागताहै वह चतुर्भुज तीननेत्रवाला होकर शिवजी के समान बलवान् होजाताहै और दिव्य दशहजार कल्पोंतक शिव- लोकमें बासकरताहै ६५ । ६६ फिर पृथ्वीमें जन्मलेकर निष्कंटक पृथ्वीका राजाहोताहै हे राजेन्द्र इसके अनन्तर उत्तम एरंडी तीर्थपर जानायोग्यहै ६७ जो प्रयागजीके स्नानका फलकहाहै वहीपुण्य फल यहां स्नानकरनेसे होताहै ६८ भाद्रपदमहीने के शुक्लपक्षकी चतुर्दशीको एकरात्रि उपवासव्रत कर जो उसतीर्थमें स्नान करताहै वह पुरुष धर्मराजके दूतोंसे पीड़ित नहीं होताहै और रुद्रलोकमे चलाजाताहै इसके पीछे जहां जनार्दनसिद्धहै वहां हिरण्यदीप नाम तीर्थहै वह तीर्थभी सबपापोंका नाश करनेवालाहै वहां स्नान करनेवाला पुरुष धनवान् और रूपवान् होताहै ६९ । ७१ इसकेपीछे बड़े उत्तम कनखल तीर्थपर जानाचाहिये वहां गरुड़जी ने तपकियाहै यहां योगिनी रहती हैं योगियों के साथ क्रीड़ा करती हैं और शिवजी के साथनृत्यभी करती हैं यह तीर्थभी त्रिलोकी में विख्यात है हे राजन् यहां स्नान करनेवाला पुरुषरुद्रलोकमें प्राप्तहोताहै फिर उत्तम हंस नाम तीर्थपर जानाचा- हिये वहां मुक्तहुए परमहंस निश्चय ऊर्ध्वलोकों में प्राप्तहोगये हैं हे राजेन्द्र फिर जहां जनार्दन भग- वान् वाराहरूप धारणकर सिद्धहोकर पूजितहुए हैं वह वाराहतीर्थ है वहां विशेषकरके द्वादशीको जा- कर स्नान करनेवाला पुरुष विष्णुलोकमें प्राप्त होता है और नरकको नहीं देखताहै इसकेपीछे बड़े

नमात्रेनरस्तत्र चन्द्रलोकेमहीयते ७८ दक्षिणेनतुतीरेण कन्यातीर्थन्तुविश्रुतम्। शुक्ल पक्षेतृतीयायां स्नानंतत्रसमाचरेत् ७९ प्रणिपत्यतुचेशानं बलिस्तेनप्रसीदति। हरिश्च न्द्रपुरंदिव्यमन्तरिक्षेचदृश्यते ८० शक्रध्वजेसमावृत्ते सुप्तेनागरिकेजने। नर्म्मदासलि लौघेन तरूनसंप्लावयिष्यति ८१ अस्मिन्स्थानेनिवासःस्याद्विष्णुःशङ्करमब्रवीत्। दीपेश्वरेनरःस्नात्वा लभेद्बहुसुवर्णकम् ८२ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! कन्यातीर्थेसुसङ्गमे।स्ना नमात्रेनरस्तत्र देव्याःस्थानमवाप्नुयात् ८३ देवतीर्थंततोगच्छेत् सर्वतीर्थमनुत्तमम्। त त्रस्नात्वातुराजेन्द्र! दैवतैःसहमोदते ८४ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! शिखितीर्थमनुत्तमम्। यत्तत्रदीयतेदानं सर्वंकोटिगुणंभवेत् ८५ अपरपक्षेत्वमायान्तु स्नानंतत्रसमाचरेत्। ब्रा ह्मणंभोजयेदेकं कोटिर्भवतिभोजिता ८६ भृगुतीर्थन्तुराजेन्द्र! तीर्थकोटिर्व्यवस्थिता। अकामोवासकामोवा तत्रस्नानंसमाचरेत् ८७ अश्वमेधमवाप्नोति दैवतैःसहमोदते। तत्रसिद्धिंपरांप्राप्तो भृगुस्तुमुनिपुङ्गवः। अवतारःकृतस्तत्र शङ्करेणमहात्मना ८८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्विनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९२॥

(मार्कण्डेय उवाच) ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! ह्यंकुशेश्वरमुत्तमम्। दर्शनात्तस्यदेवस्य मुच्यतेसर्वपातकैः १ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! नर्मदेश्वरमुत्तमम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्!

पवित्र चन्द्रतीर्थपर जानाचाहिये ७१। ७७ वहां विशेषकरके पूर्णिमाको स्नानकरना योग्यहै वहांके स्नानसे चन्द्रलोककी प्राप्तिहोती है ७८ उस चन्द्रतीर्थ के दक्षिण तटपर कन्यातीर्थ प्रसिद्धहै वहां शु- क्लपक्षकी तृतीयाको स्नानकरनाचाहिये उस तीर्थपर महादेवके प्रणामकरनेसे बलिनाम दैत्य प्रसन्न होताहै जबकि नगरके सबलोग वहां रात्रिकेसमय सोजाते हैं उससमय कभी२ इन्द्रधनुष निकलताहै उसमें बहुधा हरिश्चन्द्रराजाका पुर दिखाई पड़ताहै और नर्मदानदी का जल वहांके वृक्षोंको डुबो देताहै पूर्वकालमें विष्णुभगवान्ने शिवजीसे कहाथा कि इसस्थानमें निवास करना चाहिये तभीसे वहां दीपेश्वर तीर्थ है वहां स्नान करनेवाला पुरुष बहुतने सुवर्णको प्राप्तकरताहै ७९। ८२ फिर कन्या तीर्थके संगमपर स्नान करनेवाला पुरुष देवी पार्वतीजीके स्थानमें प्राप्त होताहै ८३ फिर सब तीर्थोंमें श्रेष्ठ देवतीर्थ है वहांजाके उसमें स्नान करनेवालापुरुष देवताओंके साथ आनन्दकरताहै ८४ फिर महा उत्तम शिखि तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ जो कुछ दानदियाजाता है वह अनन्त गुणा हो जाताहै ८५ अमावास्याके दिन वहाँ स्नान करकेजो एकब्राह्मणको भोजन करवादेताहै उसको किरोड़ ब्राह्मणोंके भोजनकरवानेका पुण्य होताहै ८६ हे राजेन्द्र भृगुतीर्थ के समीपमें तीर्थोंकी कोटि व्यव- स्थितहै वहाँ कामनायुक्त अथवा निष्काम होकर पुरुषको स्नान करना चाहिये वहाँ स्नान करने वाला पुरुष अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होकर देवताओं के साथ आनन्द करता है उसीतीर्थपर जब भृगुमुनिने परम सिद्धिको पायाहै उसी समय शिवजीनेअपना अवतार धारण करलियाहै ८७। ८८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९२॥

मार्कण्डेयजी बोले हे राजेन्द्र इसके पीछे अंकुशेश्वर तीर्थपर जाना चाहिये उन महादेवजी के द-

स्वर्गलोकेमहीयते २ अश्वतीर्थंततोगच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत्। सुभगोदर्शनीयश्च भोगवान्जायतेनरः ३ पितामहंततोगच्छेत्ब्रह्मणानिर्मितंपुरा। तत्रस्नात्वानरोभक्त्या पितृपिण्डन्तुदापयेत् ४ तिलदर्भविमिश्रन्तु ह्युदकंतत्रदापयेत्। तस्यतीर्थप्रभावेण सर्वं भवतिचाक्षयम् ५ सावित्रीतीर्थमासाद्य यस्तुस्नानंसमाचरेत्। विधूयसर्वपापानि ब्रह्म लोकेमहीयते ६ मनोहरंततोगच्छेत् तीर्थंपरमशोभनम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! पितृ लोकेमहीयते ७ ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! मानसंतीर्थमुत्तमम्। तत्रस्नात्वानरोराजन्! रुद्र लोकेमहीयते ८ ततोगच्छेच्चराजेन्द्र! कुब्जतीर्थमनुत्तमम्। विख्यातंत्रिषुलोकेषु सर्व पापप्रणाशनम् ९ यान्यान्कामयतेकामान् पशुपुत्रधनानिच। प्राप्नुयात्तानिसर्वाणि तत्र स्नात्वानराधिप १० ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र! त्रिदशज्योतिविश्रुतम्। यत्रताऋषिकन्या स्तु तपोऽतप्यन्तसुव्रताः ११ भर्ताभवतुसर्वासा मीश्वरःप्रभुरव्ययः। प्रीतस्तासांमहादे वो दण्डरूपधरोहरः १२ विकृताननबीभत्सुस्तेतीतीर्थमुपागतः। तत्रकन्यांमहाराज! वरयन्परमेश्वरः १३ कन्यांऋषेर्वरयतः कन्यादानंप्रदीयताम्। तीर्थंतत्रमहाराज! ऋ षिकन्येतिविश्रुतम् १४ तत्रस्नात्वानरोराजन्! सर्वपापैःप्रमुच्यते। ततोगच्छेच्चराजेन्द्र! स्वर्णविन्दुत्वितिस्मृतम् १५ तत्रस्नात्वानरोराजन्! दुर्गतिंनचपश्यति। अप्सरेशंततो गच्छेत् स्नानंतत्रसमाचरेत् १६ क्रीडतेनागलोकस्थो ह्यप्सरैःसहमोदते। ततोगच्छेत्तु

र्शन करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छुटजाताहै १ फिर परमोत्तम नर्मदेश्वर तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष स्वर्गलोकमें प्राप्त होताहै २ इसके पीछे अश्व तीर्थपर स्नानकरनेवा- ला पुरुष सुन्दर ऐश्वर्य्यवान् दर्शनीय भोक्ता पुरुष होता है ३ इसके पीछे ब्रह्माजीके रचेहुए पिता- मह तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ भक्तिसे स्नानकर पितरोंके अर्थ पिण्डदान पूर्वक तिल कुश समे- त जो जलका दान करता है उसका वह संपूर्ण कर्म उस तीर्थ के प्रभावसे अक्षयगुणा होजाताहै ४। ५ सावित्री तीर्थपर स्नान करनेवाला पुरुष संपूर्ण पापोंको दूरकरके ब्रह्मलोकमें प्राप्त होताहै ६ फिर महा उत्तम मनोहर तीर्थपर स्नान करनेवाला पुरुष पितरों के लोकमें प्राप्त होताहै ७ हे राजन् इसके अनन्तर बड़े उत्तम मानस तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ स्नानकरनेवाला पुरुष रुद्रलो- कमें प्राप्त होताहै ८ फिर उत्तम कुंज तीर्थपर जाना योग्यहै यह तीर्थभी सबपापोंका हरनेवाला त्रि- लोकीमें विख्यातहै ९ वहाँ पशु पुत्र धन और जिन२ कामनाओंको विचारताहै वही सब प्राप्त हो- जातीहैं १० इसके पीछे त्रिदशज्योति तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ ऋषियोंकी कन्याओंने बड़ा तीव्र व्रतकियाहै ११ उनसब कन्याओंपर जब महादेवजी प्रसन्न हुएहैं तबउन सबोंके पति श्रीकृष्ण भग- वान् हुएहैं १२ इसके आगे ऋषिकन्यानाम तीर्थहै वहाँ किसी समय कोई पुरुष ऋषिसे कन्यामां- गताथा उसीको वह कन्या वहाँ विवाही गईहै उसतीर्थमें जो स्नान करताहै वह सब पापोंसे छुटजा ताहै इसके अनन्तर स्वर्णविन्दुनाम तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ स्नान करनेवाला पुरुष कभी दुर्ग- तिकोनहीं प्राप्त होताहै फिर अप्सरेश तीर्थपर जाकर स्नान करना चाहिये १३। १६ वहाँ स्नान

राजेन्द्र ! नरकंतीर्थमुत्तमम् १७ तत्रस्नात्वार्चयेद्देवं नरकंचनपश्यति। भारभूतिंततोग च्छेदुपवासपरोजनः १८ एतत्तीर्थंसमासाद्य चावतारंतुशाम्भवम्। अर्चयित्वाविरूपा क्षं रुद्रलोकेमहीयते १९ अस्मिंस्तीर्थेनरःस्नात्वा भारभूतौमहात्मनः। यत्रतत्रमृतस्या पि ध्रुवंगाणेश्वरीगतिः २० कार्तिकस्यतुमासस्य ह्यर्चयित्वामहेश्वरम्। अश्वमेधाद्दश गुणं प्रवदन्तिमनीषिणः २१ दीपकानांशतंतत्र घृतपूर्णन्तुदापयेत्। विमानैःसूर्य्यसङ्का शैः व्रजतेयत्रशङ्करः २२ वृषभंयःप्रयच्छेत्तु शङ्खकुन्देन्दुसप्रभम्। वृषयुक्तेनयानेन रु द्रलोकंसगच्छति २३ धेनुमेकान्तुयोदद्यात्तस्मिंस्तीर्थेनराधिप ! । पायसंमधुसंयुक्तं भ क्ष्याणिविविधानिच २४ यथाशक्त्याचराजेन्द्र ! ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः। तस्यतीर्थप्रभा वेण सर्वंकोटिगुणंभवेत् २५ नर्म्मदायाजलंपीत्वा ह्यर्चयित्वावृषध्वजम्। दुर्गतिंचनप श्यति तस्मिंस्तीर्थेनराधिप ! २६ हंसयुक्तेनयानेन रुद्रलोकंसगच्छति। यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च हिमवांश्चमहोदधिः २७ गङ्गाद्याःसरितोयावत्तावत्स्वर्गेमहीयते। अनाशकन्तु यःकुर्यात्तस्मिंस्तीर्थेनराधिप ! २८ गर्भवासेतुराजेन्द्र ! नपुनर्जायतेपुमान्। ततोगच्छेत्तु राजेन्द्र ! आषाढीतीर्थमुत्तमम् २९ तत्रस्नात्वानरोराजन्निन्द्रस्यार्द्धासनंलभेत्। स्त्रिया स्तीर्थंततोगच्छेत् सर्वपापप्रणाशनम् ३० तत्रापिस्नातमात्रस्य ध्रुवंगाणेश्वरीगतिः। ऐ रण्डीनर्म्मदयोश्च सङ्गमंलोकविश्रुतम् ३१ तच्चतीर्थंमहापुण्यं सर्वपापप्रणाशनम्। उ

करनेवाला पुरुष नागलोकमें स्थितहोकर अप्सराओंके साथ क्रीड़ा करताहै इसके पीछे बड़े उत्तम नरक तीर्थपर जाना चाहिये वहाँ स्नान करके महादेवजीका पूजन करनेवाला पुरुष नरक को न- हीं देखताहै फिर भारभूति तीर्थपर निराहार व्रतकर विरूपाक्ष महादेवका पूजन करनेवाला पुरुष रुद्रलोक में प्राप्त होताहै इसभारभूति तीर्थपर स्नान करनेवाला पुरुष जब कहीं मृत्युको प्राप्त होता है तब शिवजीका गण होताहै १७। २०. वहाँ कार्तिक मासकी चतुर्दशीको महादेवका पूजन करनेवाला पुरुष अश्वमेध यज्ञके दशगुणे पुण्यको प्राप्तहोताहै और घृतसे पूर्ण सौ १०० दीप कों को प्रकाश करनेवाला पुरुष सूर्य्यकी तुल्य प्रकाश वाले विमानपर बैठकर शिवजी के समीप प्राप्तहोता है २१। २२ जो पुरुष वहां शंख तथा चन्द्रकान्तिवाले वृषभका दानकरता है वह बै- लसे युक्तहुई सवारी में बैठकर रुद्रलोकमें प्राप्तहोता है २३ हे राजन् उस तीर्थपर जो एकगौदान करता है और शक्तिके अनुसार खीर खांड़से ब्राह्मणोंको भोजनकरवाताहै वह सबदान और पुण्य उस तीर्थ के प्रभावसे किरोड़गुणे फलदायी होते हैं २४। २५ नर्मदानदीके जलको पीकर महा- देवका पूजन करनेवाला पुरुष दुर्गतिको न प्राप्तहोकर हंसयुक्त विमानमें बैठकर रुद्रलोकमें प्राप्त होता है और जबतक चन्द्रमा सूर्य्य हिमवान् पर्व्वत समुद्र और गंगाआदिक नदी इन सबकी स्थिति रहती है तबतक वह स्वर्गलोक में वासकरता है हे पाण्डव उस तीर्थपर अनशनव्रत क- रनेवाला पुरुष कभी गर्भमें वासनहींकरता है इसकेपीछे आषाढ़ी तीर्थपर जानाचाहिये वहां स्नान करनेवाला पुरुष इन्द्रके अर्द्धासनको ग्रहण करताहै फिर सबपापों के दूरकरनेवाले स्त्री के तीर्थपर

पवासपरोभूत्वा नित्यव्रतपरायणः ३२ तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र ! मुच्यतेब्रह्महत्यया। ततो गच्छेत्तुराजेन्द्र ! नर्म्मदोदधिसङ्गमम् ३३ जामदग्न्यमितिख्यातं सिद्धोयत्रजनार्दनः। यत्रेष्ट्वाबहुभिर्यज्ञैरिन्द्रोदेवाधिपोऽभवत् ३४ तत्रस्नात्वातुराजेन्द्र ! नर्म्मदोदधिसङ्गमे। त्रिगुणंचाश्वमेधस्य फलंप्राप्नोतिमानवः ३५ पश्चिमस्योदधेःसन्धौ स्वर्गद्वारविघट्टनम्। तत्रदेवाःसगन्धर्वा ऋषयःसिद्धचारणाः ३६ आराधयन्तिदेवेशं त्रिसन्ध्यंविमलेश्वरम्। तत्रस्नात्वानरोराजन् ! रुद्रलोकेमहीयते ३७ विमलेशंपरंतीर्थं नभूतंनभविष्यति। तत्रोपवासंकृत्वाये पश्यन्तिविमलेश्वरम् ३८ सप्तजन्मकृतंपापं हित्वायान्त्यमरालयम्। ततोगच्छेत्तुराजेन्द्र ! कौशिकीतीर्थमुत्तमम् ३९ तत्रस्नात्वानरोराजन्नुपवासपरायणः। उपोष्यरजनीमेकां नियतोनियताशनः ४० एतत्तीर्थप्रभावेण मुच्यतेब्रह्महत्यया। सर्वतीर्थाभिषेकन्तु यःपश्येत्सागरेश्वरम् ४१ योजनाभ्यन्तरेतिष्ठन्नावर्त्तेसंस्थितःशिवः। तंदृष्ट्वासर्वतीर्थानि दृष्टान्येवनसंशयः ४२ सर्वपापविनिर्मुक्तो यत्ररुद्रःसगच्छति। नर्म्मदासङ्गमंयावद्यावच्चामरकण्टकम् ४३ अत्रान्तरेमहाराज ! तीर्थकोट्योदशस्मृताः। तीर्थात्तीर्थान्तरंयत्र ऋषिकोटिनिषेवितम् ४४ साग्निहोत्रैस्तुविद्वद्भिः सर्वैर्ध्यानपरायणैः। सेवितानेनराजेन्द्र ! त्वीप्सितार्थप्रदायिका ४५ यस्त्विदंवैपठेन्नित्यं शृणुयाद्वापिभावतः। त

जानाचाहिये वहां स्नान करनेवाला पुरुष निश्चय करके गणेश्वर होताहै ऐरंडी और नर्मदानदियों का उत्तम संगम त्रिलोकी में विख्यातहै वहां स्नानकर उपवासव्रत करनेवाला पुरुष ब्रह्महत्या से छुटजाताहै इसकेपीछे नर्मदा और समुद्रके संगममें जामदग्न्यनाम तीर्थपर जानाचाहिये वहां जनार्दन भगवान् सिद्धहुएहैं वहांही इन्द्रबहुतसे यज्ञकरके देवताओं का पतिहुआहै वहां स्नान करनेवाला पुरुष अश्वमेधयज्ञसे त्रिगुणितपुण्यको प्राप्तहोताहै और पश्चिमके समुद्रकी सन्धिमें स्वर्गद्वार तीर्थहै वहां देवता ऋषि गन्धर्व सिद्ध और चारण यहसब तीनों सन्धियोंमें विमलेश्वर महादेवजी का पूजन करते हैं वहां स्नान करनेवाला पुरुष रुद्रलोकमें प्राप्तहोता है इस विमलेश्वर के समान कोई उत्तम तीर्थ नहीं है वहां निराहारव्रत करके जो विमलेश्वर महादेवके दर्शनकरते हैं वह सात जन्मके संचित कियेहुए पापोंको दूरकरके स्वर्गलोकमें प्राप्त होते हैं हे राजेन्द्र इसके अनन्तर उत्तम कौशिकी तीर्थपर जानाचाहिये वहां स्नानकर एकरात्रि उपवासव्रत करना चाहिये इसतीर्थके प्रभाव से ब्रह्महत्या दूर होजाती है जहां सब तीर्थोंका अभिषेक होताहै ऐसे सागरेश महादेवजी के दर्शन करने चाहिये वहां महादेवजी एकयोजन के विस्तारमें स्थित हैं केवल उनकेही दर्शन करने से निस्सन्देह सब तीर्थोंके दर्शनका पुण्यहोजाताहै २६। ४२ और सबपापों से छुटकर रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै हे राजन् नर्मदानदी के संगम और अमरकंटक तीर्थके मध्यमें दशकिरोड़तीर्थ कहे हैं और प्रत्येक तीर्थमें अनेक२ ऋषियोंका वासहै ४३। ४४ अग्निहोत्रवाले और सम्पूर्ण ध्यानोंमें तत्पर ऐसे विद्वान् पुरुषोंने इसनर्मदानदीको सेवनकियाहै यहनदी मनोवांछितफलोंकी देनेवाली है इस नर्मदा नदी के माहात्म्यको जो पुरुष पढ़ैगा वा भक्तिपूर्वक सुनेगा उसको सब तीर्थों के जलोंको अभिषेक

स्यतीर्थानिसर्वाणि ह्यभिषिञ्चन्तिपाण्डव! ४६ नर्म्मदाचसदाप्रीता भवेद्वैनात्रसंशयः। प्रीतस्तस्यभवेद्रुद्रो मार्कण्डेयोमहामुनिः ४७ वन्ध्याचैवलभेत्पुत्रान् दुर्भगासुभगाभवेत्। कन्यालभेतभर्तारं यश्चवाञ्छेत्तुयत्फलम् ४८ तदेवलभतेसर्वं नात्रकार्याविचारणा। ब्राह्मणोवेदमाप्नोति क्षत्रियोविजयीभवेत् ४९ वैश्यस्तुलभतेलाभं शूद्रःप्राप्नोतिसद्गतिम्। मूर्खस्तुलभतेविद्यां त्रिसन्ध्यंयःपठेन्नरः। नरकञ्चनपश्येत्तु वियोगञ्चनगच्छति ५० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे त्रिनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९३ ॥

(सूत उवाच) इत्याकर्ण्यसराजेन्द्र ओङ्कारस्याभिवर्णनम्। ततःपप्रच्छदेवेशं मत्स्यरूपंजलार्णवे १ (मनुरुवाच) ऋषीणांनामगोत्राणि वंशावतरणंतथा। प्रवराणां तथासाम्यमसाम्यंविस्तराद्वद २ महादेवेनऋषयः शप्ताःस्वायम्भुवान्तरे। तेषांवैवस्वतेप्राप्ते सम्भवंममकीर्त्तय ३ दाक्षायणीनचतथा प्रजाःकीर्तयमेप्रभो। ऋषीणांचतथावंशं भृगुवंशविवर्धनम् ४ (मत्स्य उवाच) मन्वन्तरेऽस्मिन्संप्राप्ते पूर्वंवैवस्वतेतथा। चरित्रं कथ्यतेराजन्! ब्रह्मणःपरमेष्ठिनः ५ महादेवस्यशापेन त्यक्तादेहंस्वयंतथा। ऋषयश्च समुद्भूताश्च्युतेशुक्रेमहात्मनः ६ देवानांमातरोदृष्ट्वा देवपत्न्यस्तथैवच। स्कन्नंशुक्रंमहाराज! ब्रह्मणःपरमेष्ठिनः ७ तज्जुहावततोब्रह्मा ततोजाताहुताशनात्। ततोजातोमहातेजा भृगुश्चतपसांनिधिः ८ अङ्गारेष्वङ्गिराजातो ह्यर्चिभ्योऽत्रिस्तथैवच। मरीचिभ्यो

कियेका पुण्यहोगा और नर्मदानदी मार्कण्डेयमुनि और श्रीमहादेवजी यह तीनों उसपर प्रसन्न होंगे ४५। ४७ इसके माहात्म्य सुननेसे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती दुर्भगा सुभगा और कन्या निस्सन्देह उत्तमवरको प्राप्तहोजातीहै ब्राह्मण वेदपाठी होजाताहै क्षत्रिय विजयीहोताहै वैश्य धनवान् होताहै शूद्र उत्तम गतिको प्राप्त होजाताहै और तीनों सन्धियोंमें इस माहात्म्यका सुननेवाला मूर्खजन विद्यावान् होजाता है इसका सुननेवालापुरुष नरक और वियोगको कभीनहीं प्राप्त होताहै ४८।५०॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९३॥

सूतजी बोले कि वह राजा युधिष्ठिर इसप्रकार से नर्मदानदी के और ओंकारेश्वर महादेवजी के माहात्म्यको सुनकर जलार्णव में मत्स्यजी के कहेहुए इसप्रश्नको पूछताभया अर्थात् जो मनुजी ने श्रीभगवान् मत्स्यावतारसे पूछा है कि हे देव आप ऋषियों के गोत्र वंश अवतार और प्रवरों को विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये १। २ और स्वायंभुव मन्वन्तर में जो महादेवजी ने ऋषियों को शाप दियाथा उन सब समेत वैवस्वत मन्वन्तरकी उत्पत्तिको भी कहिये ३ दक्षकी सन्तानकहिये और भृगुवंश केबढ़ानेवाले ऋषियों के वंशको भी कहिये ४ मत्स्यजी बोले हे राजन् इसवैवस्वतमनुमें प्रथम ब्रह्माजी के चरित्रों को तू सुन ५ प्रथम महादेवजी के शापसे सब ऋषि अपने १ शरीरको आपही त्यागकर स्वर्गलोक में जातेभये, वहां ब्रह्माजी के वीर्य्यसे फिर सब ऋषि उत्पन्नहुए हैं तब देवताओं की माता और देवताओं की स्त्रियां ब्रह्माजी के वीर्य्यको स्खलित हुआ जानकर ब्रह्माजी के समीप से उस वीर्य्य को अग्नि में हवन करवा देतीभईं तब ब्रह्माजी ने

मरीचिस्तु ततोजातोमहातपाः ६ केशैस्तुकपिशोजातः पुलस्त्यश्चमहातपाः। केशैःप्रल म्बैःपुलहस्ततोजातोमहातपाः १० वसुमध्यात्समुत्पन्नो वसिष्ठस्तुतपोधनः। भृगुःपुलो म्नस्तुसुतां दिव्यांभार्य्यामविन्दत ११ यस्यामस्यसुताजाता देवाद्वादशयाज्ञिकाः। भुव नोभौवनश्चैव सुजन्यःसुजनस्तथा १२ शुचिःक्रतुश्चमूर्धाच त्याज्यश्चवसुदश्चह। प्रभ वश्चाव्ययश्चैव दक्षोऽथद्वादशस्तथा १३ इत्येतेभृगवोनाम देवाद्वादशकीर्तिताः। पौलो म्यांजनयन्विप्रान् देवानांतुकनीयसः १४ च्यवनन्तुमहाभागमाप्नुवानंतथैवच। आप्नु वानात्मजश्चौर्वो जमदग्निस्तदात्मजः १५ औवोंगोत्रकरस्तेषां भार्गवाणांमहात्मनाम्। तत्रगोत्रकरास्त्वन्ये भृगोर्वैदीप्ततेजसः १६ भृगुश्चच्यवनश्चैव आप्नुवानस्तथैवच। और्वश्चजमदग्निश्च वात्स्योदण्डिर्नडायनः १७ वैगायनोवीतिहव्यः पैलश्चैवात्रशौ नकः। शौनकायनजीवन्ति रावेदःकार्पणिस्तथा १८ वैहीनरिर्विरूपाक्षो रौहित्यायनिरे वच। वैश्वानरिस्तथानीलो लुब्धःसावर्णिकश्चसः १९ विष्णुःपौरोऽपिवालाकिरैलिकोऽ नन्तभागिनः। भृतभार्गेयमार्कण्डजाविनोवीतिनस्तथा २० मण्डमाण्डव्यमाण्डूक फेन पास्तनितस्तथा। स्थलःपिण्डःशिखावर्णः शार्कराक्षिस्तथैवच २१ जालधिःसौधिकःक्षु भ्यः कुत्सन्योमौद्गलायनः। कर्मायनोदेवपतिः पाण्डुरोचिःसगालवः २२ साङ्कृत्यश्चा तकिःसार्पियज्ञपिण्डायनस्तथा। गार्ग्यायनोगायनश्च ऋषिर्गार्हायनस्तथा २३ गोष्ठा

वीर्य्यका हवनकिया तब अग्निमें से महातेजवाले भृगुऋषि उत्पन्न हुए ६।८ उस समय उस अग्नि के अंगारोंसे अंगिरा ऋषि उत्पन्नहुए, अग्निकी शिखाओं से अत्रिऋषि उत्पन्न हुए अग्निकी झलों में से महातपस्वी मरीचि ऋषि उत्पन्न हुए ब्रह्माजी के बालों से कपिश ऋषि और पुलस्त्य ऋषि उत्पन्न हुए लंबे कियेहुए केशोंसे महातेजस्वी पुलहऋषि उत्पन्न हुए ९।१० वसु अर्थात् अग्निकी कान्तिमें से वसिष्ठ ऋषि उत्पन्न हुए, इनमें से भृगुऋषि से पुलोमा ऋषिकी दिव्य पुत्रीका विवाह हुआ ११ उन दोनोंके संयोग से इन नामोंवाले बारह १२ याज्ञिक देवता उत्पन्न भये, भुवन १ भौवन २ सुजन्य ३ सुजन ४ शुचि ५ क्रतु ६ मूर्द्धा ७ त्याज्य ८ वसुद ९ प्रभव १० अव्यय ११ और दक्ष १२ यह बारह भार्गव कहाते हैं और उसी पौलोमी स्त्री में देवताओंसे छोटे विप्र उत्पन्न होतेभये १३।१४ उनके नाम यह हैं च्यवन, और आप्नुवान फिर आप्नुवानके औवनाम पुत्रहुआ और्वके जमदग्नि हुए इन सबमें भार्गव ऋषियोंका बढ़ानेवाला और्वऋषि हुआहै अबबड़े २ दीप्ततेज वाले भृगुगोत्रके बढ़ाने वाले ऋषियोंको कहते हैं भृगु, च्यवन, आप्नुवान, और्व, जमदग्नि, वात्स्य, दंडि, नडायन १५।१७ वैगायन, वीतिहव्य, पैल, शौनक, शौनकायन, जीवन्ति, आवेद, कार्पणि, १८ वैहीनरि, विरूपाक्ष, रौहित्यायनि, वैश्वानरि, नील, लुब्ध, सावर्णिक, १९ विष्णु, पौर, वालाकिरै लिक, अनन्तभागी, भृत, भार्गेय, मार्कण्ड, जवी, वीती, २० मंड, मांडव्य, मांडूक, फेनप, तनित, स्थल, पिण्ड, शिखावर्ण, शार्कराक्षि, २१ जालधि, सौधिक, क्षुभ्य, कुत्सन्य, मौद्गलायन, कर्मायन, देवपति, पांडुरोचि, गालव, २२ सांकृत्य, चातकि, सार्पि, यज्ञपिण्डायन, गार्ग्यायन, गायन, गार्हायन,

यनोवात्यायनो वैशम्पायनएवच। वैकर्णिनिःशाङ्करवो याज्ञेयिर्भ्राष्ट्रकायनिः २४ लाला टिर्नाकुलिश्चैव लौक्षिण्योपरिमण्डली। आलुकिःसौचकिःकौत्सस्तथान्यःपैङ्गलाय निः २५ सात्यायनिर्मालायनिः कौटिलिःकौचहस्तिकः। सौहसोक्तिःसकौवाक्षिः कौसि श्चान्द्रमसिस्तथा २६ नैकजिह्वोजिह्वकश्च व्यधाद्योलोहवैरिणः। शारद्वतिकनेतिष्यौ लोलाक्षिश्चलकुण्डलः २७ वागायनिश्चानुमतिः पूर्णिमागतिकोऽसकृत्। सामान्ये नयथातेषां पञ्चैतेप्रवरामताः २८ भृगुश्चच्यवनश्चैव आप्नुवानस्तथैवच। और्वे श्चजमदग्निश्च पञ्चैतेप्रवरामताः २९ अतःपरंप्रवक्ष्यामि शृणुत्वन्यान्भृगूद्वहान्। जमदग्निर्विदश्चैव पौलस्त्योवैजभृत्तथा ३० ऋषिश्चोभयजातश्च कायनिःशाकटाय नः। और्वेयामारुताश्चैव सर्वेषांप्रवराःशुभाः ३१ भृगुश्चच्यवनश्चैव आप्नुवानस्तथैव च। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्त्तिताः ३२ भृगुदासोमार्गपथो ग्राम्यायनिकटायनी। आपस्तम्बिस्तथाविल्विर्नैकशिःकपिरेवच ३३ आर्ष्टिषेणोगार्दभिश्च कार्दमायनिरेवच। आश्वायनिस्तथारूपिर्येचार्षेयाःप्रकीर्तिताः ३४ भृगुश्चच्यवनश्चैव आप्नुवानस्तथैव वच। आर्ष्टिषेणस्तथारूपिः प्रवराःपञ्चकीर्तिताः ३५ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकी र्तिताः। यस्कोवावीतिहव्योवा मथितस्तुतथादमः ३६ जैवन्त्यायनिर्मौञ्जश्च पिलिश्चै वचलिस्तथा। भागिलोभागवित्तिश्च कौशापिस्त्वथकाश्यपिः ३७ वालपिःश्रमदागेपिः सौरस्तिथिस्तथैवच। गार्गीयस्त्वथजावालिस्तथापौष्ण्यायनोह्यृषिः ३८ ग्रामदश्चत

गोष्ठायन, वात्यायन, वैशंपायन, वैकर्णिनि, शांकरव, याज्ञेयि, भ्राष्ट्रकायनि, २३।२४ लालाटि, नाकुलि, लौक्षिण्य, परिमंडली, आलुकि, सौचकि, कौत्स, पैंगलायनि, २५ सात्यायनि, मालायनि, कौटिलि, कौचहस्तिक, सौहसोक्ति, कौवाक्षि, कौसि, चान्द्रमसि, २६ नैकजिह्व, जिह्वक, व्यधाद्य, लोहवैरी, शारद्वतिक, नैतिष्य, लोलाक्षि, चलकुंडल, वागायनि, अनुमति, पूर्णिमा, आगतिक, और असकृत् इन नामों वाले यह सब ऋषि भृगुवंश में हुए हैं सामान्यसे इन सबके पांच २ प्रवर कहे हैं २७।२८ भृगु, १ च्यवन २ आप्नुवान ३ और्व ४ जमदग्नि, यह पांच प्रवर कहे हैं २९ इसके अनन्तर भृगुवंशमें होने वाले अन्य ऋषियोंको भी सुनो, जमदग्नि, विद, पौलस्त्य, वैजभृत, ३० उभयजात ऋषि, कायनि, और शाकटायन इन सबको शुभ और्वेय, मारुत, भृगु, च्यवन, और आप्नुवान यह सब प्रवर कहाते हैं, यह ऋषि परस्परमें विवाहादिक संबंधनहीं करते हैं ३१।३२ और भृगुदास, मार्गपथ, ग्राम्यायनि, कटायनि, आपस्तंबि, विल्वि, नैकशि, कपि, ३३ आर्ष्टिषेण, गार्दभि, कार्दमायनि आश्वायनि, और रूपि यह सब आर्षेय कहातेहैं ३४ और भृगु, च्यवन आप्नुवान आर्ष्टिषेण और रूपि यह पांचप्रवर कहाते हैं ३५ इनऋषियोंका भी आपसमें विवाहादिक संबंधनहीं होताहै और यस्क, वीतिहव्य, माथित, दम, जैवंत्यायनि, मौंज, पिलि, चलि, भागिल, भागवित्ति, कौशापि, काश्यपि, ३६।३७ वालपि श्रमदागेपि, सौर, गार्गीय, जावालि, पौष्ण्यायन, ग्रामद यह इनके आर्षेय प्रवर कहाते हैं और भृगु वीतिहव्य रैवस वैवस, यह ऋषिभी परस्पर विवाहनहीं

थैतेषामार्षेयाःप्रवरामताः। भृगुश्चवीतिहव्यश्च तथारैवसवैवसौ ३९ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। शालायनिःशाकटाक्षो मैत्रेयःखाण्डवस्तथा ४० द्रौणायनोरौक्मायनः पिशलीचापिकायनिः। हंसजिह्वस्तथैतेषामार्षेयाःप्रवरामताः ४१ भृगुश्चैवाथवध्य्रश्वो दिवोदासस्तथैवच। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः ४२ एकायनोयाज्ञपतिर्मत्स्यगन्धस्तथैवच। प्रत्यूहश्चतथासौरिश्चौक्षिर्वैकार्दमायनिः ४३ तथागृत्समदो राजन्! सनकश्चमहानृषिः। प्रवरास्तुतथोक्तानामार्षेयाःपरिकीर्तिताः ४४ भृगुर्गृत्समदश्चैव आर्षावेतौप्रकीर्तितौ। परस्परमवैवाह्या ऋषीवेपरिकीर्तितौ ४५ एतेतवोक्ता भृगुवंशजाता महानुभावान्नृपगोत्रकाराः। एषांतुनाम्नापरिकीर्तितेन पापंसमग्रंविजहाति जन्तुः ४६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे चतुर्नवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९४॥

(मत्स्य उवाच) मरीचितनयाराजन्! सुरूपानामविश्रुता। भार्याचाङ्गिरसोदेवास्तस्याःपुत्रादशस्मृताः १ आत्मायुर्दमनोदक्षः सदःप्राणस्तथैवच। हविष्मांश्चगविष्ठश्च ऋतःसत्यश्चतेदश २ एतेचाङ्गिरसोनाम देवावैसोमपायिनः। सुरूपाजनयामास ऋषीन् सर्वेश्वरानिमान् ३ बृहस्पतिर्गौतमश्च संवर्त्तमृषिमुत्तमम्। उतथ्यंवामदेवंच अजास्यमृषिजन्तथा ४ इत्येतेऋषयःसर्वे गोत्रकाराःप्रकीर्तिताः। तेषांगोत्रसमुत्पन्नान् गोत्रकारान्निबोधमे ५ उतथ्योगौतमश्चैव तौलेयोऽभिजितस्तथा। सार्धनेमिःसलौगाक्षिः क्षीरःकौष्टिकिरेवच ६ राहुकर्णिःसौपुरिश्च कैरातिःसामलोमकिः। पौषजितिर्भार्गवतो ह्यृ

करतेहैं और शालायनि, शाकटाक्ष, मैत्रेय, खांडव, द्रौणायन, रौक्मायन, पिशली, कायनि, हंसजिह्व यह इनके आर्षेय प्रवरकहातेहैं और भृगु वध्य्रश्व, और दिवोदास यहभी आपसमें संबंधनहीं करतेहैं ३८।४२ और एकायन, याज्ञपति, मत्स्यगन्ध, प्रत्यूह, सौरि, औक्षि, कार्दमायनि, गृत्समद, और सनक यह सब इन उक्तोंके आर्षेय प्रवर कहातेहैं ४३।४४ और भृगु, गृत्समद, यहदो आर्ष प्रवरकहे हैं यहदोनों ऋषि प्रवरभी आपसमें परस्पर संबंधरहितहैं ४५हेराजन् यहसब भृगुवंशमें होनेवाले ऋषिजोतेरे आगे कहेहैं सब बड़े अनुभाव वालेहैं और गोत्रोंके बढ़ाने वाले हैं इनके नामोच्चारणही करनेसे सबपापदूरहोजातेहैं ४६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुर्नवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९४॥

मत्स्यजीबोले हेराजन् मरीचिके पुत्र सुरूपानामसे प्रसिद्धहैं और अंगिराऋषिकी स्त्री के दशपुत्र उत्पन्नहुए वह सब देवताहोतेभये १ आत्मा, आयु, दमन, दक्ष, सद, प्राण हविष्मान, गविष्ठ, ऋत, सत्य, यहदशों देवताहुए इनको सोमपायी देवताकहतेहैं और आगेलिखेहुए ऋषियोंको सुरूपाजनतीभई २।३ और बृहस्पति, गौतम, संवर्त्त, उतथ्य, वामदेव और अजास्य यह सब ऋषि गोत्रबढ़ानेवाले कहेहैं अब इनगोत्रोंमें उत्पन्न होनेवाले अन्यगोत्रकारोंको कहतेहैं ४।५ उतथ्य, गौतम, तौलेय, अभिजित, आर्धनेमि, लौगाक्षि, क्षीर, कौष्टिकि, ६ राहुकर्णी, सौपुरि, कैराति, सामलोमकि, पौषजिति,

पिश्चैरीडवस्तथा ७ कारोटकःसजीवीच उपबिन्दुसुरैषिणौ। वाहिनीपतिवैशाली क्रोष्टा
चैवारुणायनिः ८ सोमोत्रायनिकासोरु कौशल्याःपार्थिवास्तथा। रौहिण्यायनिरेवाग्नी
मूलपःपाण्डुरेवच ९ क्षपाविश्वकरोऽरिश्च पारिकारारिरेवच। त्र्यार्षेयाःप्रवराश्चैव तेषां
चप्रवरान्शृणु १० अङ्गिराःसुवचोतथ्य उशिजश्चमहानृषिः। परस्परमवैवाह्या ऋषयः
परिकीर्तिताः ११ आत्रेयायनिसौवेष्यावग्निवेश्यःशिलास्थलिः। बालिशायनिश्चैके
पी वाराहिर्वाष्कलिस्तथा १२ सौटिश्चत्रिणकर्णिश्च प्रावहिश्चाश्वलायनिः। वाराहिर्बं
र्हिसादीच शिखाग्रीविस्तथैवच १३ कारकिश्चमहाकापिस्तथाचोडुपतिःप्रभुः। कौचकि
र्धूमितश्चैव पुष्पान्वेषिस्तथैवच १४ सोमतान्विर्ब्रह्मतान्विः सालडिर्बालडिस्तथा। देव
रारिर्देवस्थानिर्हारिकर्णिःसरिद्भविः १५ प्रावेपिःसाद्यसुग्रीविस्तथागोमेदगन्धिकः। मत्
स्याच्छायोमूलहरः फलाहारस्तथैवच १६ गाङ्गोदधिःकौरुपतिः कौरुक्षेत्रिस्तथैवच।
नायकिर्जैत्यद्रोणिश्च जैह्वलायनिरेवच १७ आपस्तम्बिर्मौञ्जवृष्टिर्मार्ष्टिपिङ्गलिरेवच।
पैलश्चैवमहातेजाः शालङ्कायनिरेवच १८ द्व्याख्येयोमारुतश्चैषां त्र्यार्षेयःप्रवरोनृप!।
अङ्गिराःप्रथमस्तेषां द्वितीयश्चबृहस्पतिः १९ तृतीयश्चभरद्वाजः प्रवराःपरिकीर्तिताः।
परस्परमवैवाह्या इत्येतेपरिकीर्तिताः २० काण्वायनाःकोपचयास्तथावात्स्यतरायणाः।
भ्राष्ट्रकृद्राष्ट्रपिण्डीच लैन्द्राणिःसायकायनिः २१ क्रोष्टाक्षीबहुवीतीच तालकृन्मधुरावहः।
लावकृद्गालविद्गाथी मार्कटिःपौलिकायनिः २२ स्कन्दसश्चतथाचक्री गार्ग्यःश्यामायनि
स्तथा। बालाकिःसाहरिश्चैव पञ्चार्षेयाःप्रकीर्तिताः २३ अङ्गिराश्चमहातेजा देवाचार्यो

भार्गवत, ऐरीडवऋषि, कारोटक, सजीवी, उपविन्दु, सुरैपिण, वाहिनीपति, वैशालि, क्रोष्टा, अरुणा-
यनि ७।८ सोम, अत्रायनि, कासोरु, कोशल्य, येराजे, रौहिण्यायनि, रेवाग्नि, मूलप, पांडु, ९ क्षपाकर,
विश्वारि, पारिकारि, यह सबइन पूर्व ऋषियोंके आर्षेय प्रवरकहाते हैं अबइनकेभी प्रवरोंको सुनो
१० अंगिरा, सुवच, तथ्यबड़े महात्मा उशिज, यह सबभी परस्पर संबन्धनहीं करते ११ और आत्रे-
यायनि, सौवेष्टय, अग्निवेश्य, शिलास्थलि, बालिशायनि, ऐकेपि, वाराहि, वाष्कलि १२ सौटि,
त्रिणकर्णि, प्रावहि, आश्वलायनि, वाराहि बर्हिसादी, शिखाग्रीवि, १३ कारकि, महाकापि, उडुपति,
कौचकि धूमित, पुष्पान्वेषी १४ सोमतान्वि, ब्रह्मतान्वि, सालडि, बालडि, देवरारि, देवस्थानि,
हारिकर्णि, सरिद्भवि १५ प्रावेपि, साद्यसुग्रीवि, गोमेदगन्धिक, मत्स्याच्छाद, मूलहर, फलाहार,
गांगोदधि, कौरुपति, कौरुक्षेत्रि, नायकि, जैत्यद्रौणि, जैह्वलायनि, आपस्तंबि, मौंजवृष्टि, मार्ष्टि
पिंगलि, बड़ेतेजस्वीपैल, शालंकायनि, १६।१८ द्व्याख्येय, और मारुत यह ऋषिहैं और आगेकहे
हुए इनके तीनप्रवरहैं उनमें पहिला अंगिरा दूसरा बृहस्पति, और तीसराभरद्वाज यहतीन प्रवरहैं
यहतीन प्रवरवाले पूर्वोक्तऋषिभी आपसमें विवाह संबन्धनहीं करते हैं १९।२० और काण्वायन,
कोपचय, वात्स्यतरायण, भ्राष्ट्रकृत्, राष्ट्रपिण्डी, लैन्द्राणि, सायकायनि, क्रोष्टाक्षी, बहुवीती, तालकृत्

बृहस्पतिः। भरद्वाजस्तथागर्गः सैन्यश्चभगवान्नृपिः २४ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरि कीर्तिताः। कपीतरःस्वस्तितरो दाक्षिःशक्तिःपतञ्जलिः २५ भूयसिर्जलसन्धिश्च विन्दु र्मादिःकुसीदकिः। ऊर्वस्तुराजकेशीच वौषडिःशंसपिस्तथा २६ शालिश्चकलशीकण्ठ ऋषिःकारीरयस्तथा। काव्योधान्यायनिश्चैव भावास्यायनिरेवच २७ भारद्वाजिःसौबु धिश्च लघ्वीदेवमतिस्तथा। त्र्यार्षेयोऽभिमतश्चैषां प्रवरोभूमिपोत्तम! २८ अङ्गिरादमवाह्यश्च तथाचैवाप्युरुक्षयः। परस्पराय्यपर्णांच लौक्षिर्गार्ग्येहरिस्तथा २९ गालवि श्चैवत्र्यार्षेयः सर्वेषांप्रवरोमतः। अङ्गिराःसंकृतिश्चैव गौरवीतिस्तथैवच ३० परस्परम वैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। बृहदुकथोवामदेवस्तथात्रिःप्रवरामताः ३१ अङ्गिराबृहदु कथश्च वामदेवस्तथैवच। कुत्साकुत्सैरवैवाह्या एवमाहुःपुरातनाः ३२ रथीतराणांप्रवरा त्र्यार्षेयाःपरिकीर्तिताः। अङ्गिराश्चविरूपश्च तथैवचरथीतरः ३३ रथीतराह्यवैवाह्या नित्यमेवरथीतरैः। विष्णुवृद्धिःशिवमतिर्जतृणःकतृणस्तथा ३४ पुत्रवश्चमहातेजास्त थावैरपरायणः। त्र्यार्षेयोऽभिमतस्तेषां सर्वेषांप्रवरोनृप ३५ अङ्गिरामत्स्यदग्धश्च मुद्गलश्चमहातपाः। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः ३६ हंसजिह्वोदेवजिह्वो ह्यग्नि जिह्वोविराडपः। अपाग्नेयस्त्वश्वयुश्च परण्यस्ताविमौद्गलाः ३७ त्र्यार्षेयाभिमतास्तेषां सर्वेषांप्रवराःशुभाः। अङ्गिराश्चैवताण्डिश्च मौद्गल्यश्चमहातपाः ३८ परस्परमवैवाह्या

मधुरावह, लावकृत्, गालवित्, गार्थी, मार्कंडि, पौलिकायनि, स्कन्दस्, चक्री, गार्ग्य, श्यामायनि, वालाकि, साहरि, यह आगे लिखेहुए पांच आर्षेय प्रवरवाले हैं, महातेजस्वी अंगिरा १ देवाचार्य्य बृहस्पति २ भरद्वाज ३ गर्ग ४ और सैन्य यहपांच प्रवरहैं यह आपसमें विवाहादिक संबन्ध नहीं क-रते—और कपीतर, स्वस्तितर, दाक्षि, शक्ति, पतंजलि, भूयसि, जलसंधि, विन्दुमादि, कुसीदकि, ऊर्व, राजकेशी, वौपडि, शंसपि, २१। २६ शालि, कलशीकंठ, कारीरय, काव्य, धान्यायनि, भावास्यायनि, २७ भारद्वाजि, सौवुधि, लघ्वी, देवमति, इन ऋषियोंके अंगिरा १ दमवाह्य २ और उरुक्षय यहतीन आर्षेय प्रवरहैं यह तीनोंप्रवर वाले सब ऋषिभी आपसमें संवन्ध नहीं करते हैं इसके विशेष यहसव ऋषि लौक्षि, गार्ग्यहरि, और गालवि इनतीन प्रवरवाले भी कहेजातेहैं और इन ऋषियोंके अंगिरा १ संकृति २ गौरवीति, ३ यह तीनभी प्रवरहैं इसीप्रकार अंगिरा १ बृहदुकथ २ वामदेव ३ यहभी तीनप्रवरहैं यह सवभी परस्पर संवन्ध नहीं करते हैं और कुत्सगोत्रमे होनेवाले कुत्सप्रवरवालों से संवन्ध नहीं करते ऐसाप्राचीन ऋषियों ने कहाहै २८। ३२ और रथीतरगोत्रमें होनेवाले ऋषियोंके भी अंगिरा १ विरूप २ और रथीतर ३ यहतीन आर्षेयप्रवरहैं यहभी अपने गोत्रवालों से संवन्धनहीं करते—और विष्णुवृद्धि, शिवमति, जतृण कतृण, पुत्रव और वैरपरायण इनसव ऋषियों के भी तीनप्रवरकहेहैं ३३। ३५ अंगिरा, मत्स्यदग्ध, और महातपस्वी मुद्गलऋषि ३ यह तीनप्रवरहैं इनतीन प्रवरवाले ऋषियों को भी परस्पर संवन्ध न करनाचाहिये ३६ और हंसजिह्व, देवजिह्व, अग्निजिह्व, विराडप, अपाग्नेय, अश्वयु, परण्यस्तावि, मौद्गल, इनके भी तीनप्रवरहैं अंगिरा, तांडि, मौद्गल्य,

ऋषयःपरिकीर्त्तिताः। अपाण्डुश्चगुरुश्चैव तृतीयःशाकटायनः ३९ ततःप्रागाथमाना
री मार्कण्डोमरणःशिवः। कटुमर्कटपश्चैव तथानाडायनोह्यृषिः ४० श्यामायनस्तथैवैषां
त्र्यार्षेयाःप्रवराःशुभाः। अङ्गिराश्चाजमीढश्च कण्वश्चैवमहातपाः ४१ परस्परमवैवा
ह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। तित्तिरिःकपिभूश्चैव गार्ग्यश्चैवमहानृषिः ४२ त्र्यार्षेयोहिम
तस्तेषां सर्वेषांप्रवरःशुभः। अङ्गिरास्तित्तिरिश्चैव कपिभूश्चमहानृषिः ४३ परस्परमवैवा
ह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। अथऋक्षभरद्वाजौ ऋषिवान्मानवस्तथा ४४ ऋषिर्मित्रवर
श्चैव पञ्चार्षेयाःप्रकीर्तिताः। अङ्गिराःसभरद्वाजस्तथैवचबृहस्पतिः ४५ ऋषिर्मित्रवरश्चैव
ऋषिवान्मानवस्तथा। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः ४६ भारद्वाजोहुतःशौङ्गः
शैशिरेयस्तथैवच। इत्येतेकथिताःसर्वे द्व्यामुष्यायणगोत्रजाः ४७ पञ्चार्षेयास्तथाह्ये
षांप्रवराःपरिकीर्तिताः। अङ्गिराश्चभरद्वाजस्तथैवचबृहस्पतिः। मौद्गल्यःशैशिरश्चैवप्र
वराःपरिकीर्तिताः ४८ एतेतवोक्ताङ्गिरसस्तुवंशे महानुभावाऋषिगोत्रकाराः। येषान्तु
नाम्नापरिकीर्त्तितेन पापंसमग्रंपुरुषोजहाति ४९ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९५ ॥

(मत्स्य उवाच) अत्रिवंशसमुत्पन्नान् गोत्रकारान्निबोधमे। कर्दमायनशाखेयास्त
थाशारायणाश्चये १ उद्दालकिःशोणकर्णिरथौशौक्रतवश्चये। गौरग्रीवागौरजिनस्तथा
चैत्रायणाश्चये २ अर्द्धपण्यावामरथ्या गोपनास्तकिबिन्दवः। कणजिह्वोहरप्रीतिर्नैद्रा

यह तीनप्रवरहैं इन ऋषियोंको भी परस्पर संबन्ध नहीं करना चाहिये और अपांडु,गुरु,शाकटायन, प्रागाथमा स्त्री, मार्कण्ड, मरण, शिव, कटु, मर्कटप, नाडायन और श्यामायन, इन ऋषियों के भी तीनप्रवर कहे हैं, अंगिरा, अजमीढ, और महातप कण्वऋषि ३ यह तीनप्रवर हैं ३७।४१ इनको भी परस्पर संबन्ध करना अयोग्य है और तित्तिरि, कपिभू, और बड़ेमहात्मा गार्ग्यऋषि यह तीनप्रवर कहे हैं और अंगिरा १ तित्तिर और महान् कपिभूऋषि ३ यहतीनोंभी प्रवरहैं इनकाभी परस्पर संबन्ध अयोग्यहै, ऋक्ष१, भरद्वाज२, ऋषिवान् ३ मानव ४ मैत्रवरऋषि ५ यह पांचभी आर्षेय प्रवर कहाते हैं और अंगिरा १ भरद्वाज २ बृहस्पति ३ मित्रवरऋषि ४ ऋषिवान् ५, और मानव यहसब भी परस्पर संबन्ध नहींकरते ४२।४६ भरद्वाज हुत,शौंग, शैशिरेय यहसबऋषि द्व्यामुष्यायणगोत्र में उत्पन्नहुएहैं इनके भी पांच आर्षेय प्रवर कहे हैं, अंगिरा १ भरद्वाज २ बृहस्पति ३ मौद्गल्य, ४ और शैशिर यह पांचप्रवरहैं ४७।४८ हे राजन् यहसब अंगिरागोत्र में होनेवाले महानुभाववाले ऋषियों के गोत्रवर्द्धक ऋषि मैंने तेरेआगे वर्णन किये हैं इनकानाम लेनेवाला पुरुष सबपापोंको दूरकरके सद्गतिकोपाताहै ४९ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९५ ॥

मत्स्यजीबोले हे राजन् अब अत्रिवंशमें होनेवाले गोत्रचलानेवाले ऋषियोंको मुझसे श्रवणकरो, कार्दमायनशाखामें होनेवाले शारायण,१ उद्दालकि, शोण, कर्णिरथ, शौक्रतु,गौरग्रीवा, गौरजिन, चैत्रायण, २ अर्द्धपण्य, वामरथ्य, गोपन, तकिबिन्दु, कणजिह्व, हरप्रीति, नैद्राणि, शाकलायनि, तै-

णिःशाकलायनिः ३ तैलपश्चसवैलेय अत्रिर्गोणीपतिस्तथा। जलदोभगपादश्च सौपु ष्पिश्चमहातपाः ४ छन्दोगेयस्तथैतेषां त्र्यार्षेयाःप्रवरामताः। श्यावाश्वश्चतथात्रिश्च आर्चनानशएवच ५ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। दाक्षिर्वलिःपर्णविश्च ऊर्ण नाभिःशिलार्दनिः ६ वीजवापीशिरीषश्च मौञ्जकेशोगविष्ठिरः। भलन्दनस्तथैतेषां त्र्यार्षेयाःप्रवरामताः ७ अत्रिर्गविष्ठिरश्चैव तथापूर्वातिथिःस्मृतः। परस्परमवैवाह्या ऋ षयःपरिकीर्तिताः ८ आत्रेयपुत्रिकापुत्राननतऊर्ध्वंनिबोधमे। कालेयाश्चसवालेया वास रथ्यास्तथैवच ९ धात्रेयाश्चैवमैत्रेयास्त्र्यार्षेयाःपरिकीर्तिताः। अत्रिश्चवामरथ्यश्च पौ त्रिश्चैवमहानृषिः। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः १० इत्यत्रिवंशप्रभवास्तवो क्ता महानुभावानृपगोत्रकाराः। येषांतुनाम्नापरिकीर्त्तितेन पापंसमग्रंपुरुषोजहाति ११॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेषण्णवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९६ ॥

(मत्स्य उवाच) अत्रेरेवापरंवंशन्तववक्ष्यामिपार्थिव!। अत्रेःसोमःसुतःश्रीमांस्त स्यवंशोद्भवोनृप! १ विश्वामित्रस्तुतपसा ब्राह्मण्यंसमवाप्तवान्। तस्यवंशमहंवक्ष्ये त न्मेनिगदतःशृणु २ विश्वामित्रोदेवरातस्तथावैकृतिगालवः। वतण्डश्चसलङ्कश्च ह्यभ यश्चायतायनः ३ श्यामायनायाज्ञवल्क्या जाबालाःसैन्धवायनाः। बाभ्रव्याश्चकरीषा श्च संश्रुत्याअथसंश्रुताः ४ उलूपाश्रोपगहया पयोदजनपादपाः। खरवाचोहलयमाः साधितावास्तुकौशिकाः ५ त्र्यार्षेयाःप्रवरास्तेषां सर्वेषांपरिकीर्तिताः। विश्वामित्रोदेवरा

लप, वैलेय अत्रि, गोणीपति, जलद, भगपाद, महातपस्वी सौपुष्पि, ३।४ छन्दोगेय, यहऋषि अत्रि वंशमें होनेवालेहैं इनके श्यावाश्व १ अत्रि २ आर्चनानश ३ यह तीन प्रवरहैं इनसब ऋषियोंमें पर- स्पर संबन्धनहींहोता और दाक्षि, वलि, पर्णवि, ऊर्णनाभि, शिलार्दनि. ५। ६ वीजवापी, शिरीष, मौंजकेश, गविष्ठिर, भलंदन, इनऋषियोंकेभी अत्रि १ गविष्ठिर २ और पूर्वातिथि ३ यहतीन प्रव- रहैं इनमेंभी परस्पर संबन्ध नहींहोता ७। ८ अब आत्रेय ऋषिकी पुत्रीके पुत्रोंकोसुनो, कालेय, वा- लेय, वासरथ्य, धात्रेय, मैत्रेय, इननामोंवालेहैं इनकेभी अत्रि, वामरथ्य, और पौत्रि, यहतीन प्रव- रहैं इनमेंभी परस्पर विवाहादिक नहीं होते ९। १० हे राजन् यहसब अत्रिवंशमें होनेवाले ब्राह्मण मैंने तेरे आगे वर्णन किये यहसब महातेज वाले ब्राह्मणोंके गोत्रवर्द्धकहैं इनके नामका उच्चारण करने वाला पुरुष सब पापोंसे निवृत्त होजाताहै- ११॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषण्णवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९६॥

मत्स्यजी कहतेहैं कि हे राजा अबतेरे आगे अत्रिके अन्य वंशका वर्णन करतेहैं अत्रिके वंशमें श्री- मान् चन्द्रमा उत्पन्न हुएहैं उसके वंशमें विश्वामित्र उत्पन्न हुएहैं वह विश्वामित्र अपने तपके प्र- भावसे क्षत्रियसे ब्राह्मणपनेको प्राप्त होगये अबउन विश्वामित्रके वंशको मैं कहताहूं उसकोभी तुमसु- नो १। २ विश्वामित्र, देवरात, वैकृति, गालव, वतंड, लक, अभय, आयतायन, ३.श्यामायन, या- ज्ञवल्क्य, जाबाल, सैंधवायन, बाभ्रव्य, करीष, संश्रुत्य संश्रुत, उलूप, औपगहय, पयोद, जनपादप,

त उद्दालश्चमहायशाः ६ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्त्तिताः । देवश्रवाःसुजातेयाः सौसुकाःकारुकायनाः ७ तथावैदेहराताये कुशिकाश्चनराधिप !। त्र्यार्षेयोऽभिमतस्ते षां सर्वेषांप्रवरःशुभः ८ देवश्रवादेवरातो विश्वामित्रस्तथैवच। परस्परमवैवाह्या ऋष यःपरिकीर्तिताः ९ धनञ्जयःकपर्देयः परिकूटश्चपार्थिव !। पाणिनिश्चैवत्र्यार्षेयाः सर्वे एतेप्रकीर्तिताः १० विश्वामित्रस्तथाद्यश्च माधुच्छन्दसएवच। त्र्यार्षेयाःप्रवराह्येते ऋ षयःपरिकीर्त्तिताः ११ विश्वामित्रोमधुच्छन्दास्तथाचैवाघमर्षणः। परस्परमवैवाह्या ऋ षयःपरिकीर्त्तिताः १२ कमलायजिनश्चैव अश्मरथ्यस्तथैवच। वंजुलिश्चापित्र्यार्षेयः सर्वेषांप्रवरोमतः १३ विश्वामित्रश्चाश्वरथो वञ्जुलिश्चमहातपाः। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः १४ विश्वामित्रोलोहितश्चअष्टकःपूरणस्तथा। विश्वामित्रःपूरणश्च तयोर्द्वौप्रवरौस्मृतौ १५ परस्परमवैवाह्याः पूरणाश्चपरस्परम् । लोहिताअष्टकाश्चैषां त्र्यार्षेयाःपरिकीर्तिताः १६ विश्वामित्रोलोहितश्च अष्टकश्चमहातपाः। अष्टकालोहितै र्नित्यमवैवाह्याःपरस्परम् १७ उदरेणुःक्रथकश्चऋषिश्चोदावाहिस्तथा। शाट्यायनिःकरी राशीशालङ्कायनिलावकी १८ मौञ्जायनिश्चभगवान्त्र्यार्षेयाःपरिकीर्तिताः। खिलिखि लिस्तथाविद्यो विश्वामित्रस्तथैवच। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः १९ एतेनवो क्ताःकुशिकानरेन्द्र ! महानुभावाःसततंद्विजेन्द्राः। येषान्तुनाम्नापरिकीर्तितेन पापंसमग्रं पुरुषोजहाति २० ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्तनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९७॥

खरवाच, हलयम, साधित, और वस्तुकौशिक, इनसबके तीन आर्षेय प्रवरहैं अर्थात् विश्वामित्र १ देवरात २ और उद्दालक ३ यहतीन प्रवरहैं ४।६ इनसब ऋषियोंकाभी परस्पर विवाहादि संबंध नहींहोताहै, और देवश्रवा, सुजातेया, सौसुका, कारुकाय, वैदेहराता, कुशिका, इत्यादिकभी हैं इनसबकेभी तीन आर्षेय प्रवरहैं ७। ८ देवश्रवा, देवरात, और विश्वामित्र ३ यहतीन प्रवर हैं इन तीनों प्रवर वालोंका परस्पर विवाहादिक नहींहोता है, और धनंजय, कपर्देय, परिकूट, पाणिनि, यहऋषिभी तीन आर्षेय प्रवर वालेहैं, विश्वामित्र, मधुच्छन्द, अघमर्षण, यहतीन इनके प्रवर हैं इनमेंभी परस्पर संबंध नहीं है, और कमलायजिन, अश्मरथ्य, और वंजुलि ३ यहतीन प्रवरहैं यहभी परस्पर संबन्धसे रहित हैं, ९। १३ और विश्वामित्र, अश्वरथ २ और वंजुलि ३ यहतीन प्रवर हैं इन ऋषियोंकाभी परस्पर विवाहादि संबंध नहीं है, १४ विश्वामित्र, लोहित, अष्टक, पूरण, इनऋषियोंके विश्वामित्र १ और पूरण २ यहदो प्रवरहैं यह पूरण गोत्रके ऋषि आपसमें विवाहादि संबंध नहीं करतेहैं और लोहित अष्टक इनऋषियों के विश्वामित्र, लोहित और अष्टक यहतीन आर्षेय प्रवरहैं और अष्टक गोत्रके ऋषि लोहित गोत्रवालोंके साथ कभी विवाह संबंधनहीं करते हैं १५।१७ उदरेणु, क्रथक, उदावहिऋषि, शाट्यायनि, करीराशि, शालंकायनि, लावकि, मौंजायनि, यह ऋषिभी त्रिआर्षेय प्रवर कहाते हैं, खिलिखिलि, विद्य, और विश्वामित्र, यहतीन प्रवर हैं यहसब ऋषि संबन्ध नहीं करते हैं १८। १९ हेराजेन्द्र यह विश्वामित्रके कुलमें होनेवाले ऋषि तेरे आगे वर्णन

(मत्स्य उवाच) मरीचेःकश्यपःपुत्रः कश्यपस्यतथाकुलम्। गोत्रकारानृषीन्वक्ष्ये तेषांनामानिमेशृणु १ आश्रायणिऋषिगणो मेषकीरिटकायनाः। उदग्रजामाठराश्च भोजाविनयलक्षणाः २ शालाहलेयाःकौरिष्टाः कन्यकाश्चासुरायणाः। मन्दाकिन्यांवैमृगयाः श्रुतयोभोजयापनाः ३ देवयानागोमयानाह्यधश्छायाभयाश्चये। कात्यायनाःशाक्रयाणाः वर्हियोगगदायनाः ४ भवनन्दिर्महाचक्रि दाक्षपायनएवच। योधयानाःकार्त्तिवयो हस्तिदानास्तथैवच ५ वात्स्यायनानिकृतजा ह्याश्वलायनिनस्तथा। प्रागायणाः पौलमौलिराश्ववातायनस्तथा ६ कौवेरकाश्चश्याकारा अग्निशर्मायणश्चये। मेषपाः कैकरसपास्तथाचैवतुवभ्रवः ७ प्राचेयोज्ञानसंज्ञेया आग्नाप्रासेव्यएवच। श्यामोदरावैवशपास्तथाचैवोद्वलायनाः ८ काष्ठाहारिणमारीचा आजिहायनहास्तिकाः। वैकर्णेयाःकाश्यपेयाः सासिसाहारितायनाः ९ मान्तगिनश्चभृगवस्त्र्यार्षेयाःपरिकीर्तिताः। वत्सरःकश्यपश्चैव निध्रुवश्चमहातपाः १० परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। अतःपरंप्रवक्ष्यामि ह्यामुष्यायणगोत्रजान् ११ अनसूयोनाकुरयः स्नातपोराजवर्तपः। शैशिरोदवहिश्चैव सैरन्ध्रीरोपसेवकिः १२ यामुनिःकाद्रुपिङ्गाक्षिः सजातम्बिस्तथैवच। दिवावष्टाश्वइत्येते भक्त्याज्ञेयाश्चकाश्यपाः १३ त्र्यार्षेयाश्चतथैवेषांसर्वेषांप्रवराःशुभाः। वत्सरःकाश्यपश्चैव वसिष्ठश्चमहातपाः १४ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। सं

किये यह सब महाअनुभावी द्विजेन्द्र हैं इनके नामोच्चारण करने से मनुष्यके संपूर्ण पाप दूर होजाते हैं २० ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९७॥

मत्स्यजी बोले हेराजन् मरीचिके कश्यप नाम पुत्रहुए और कश्यपकुलके गोत्रकारक यह ऋषि हैं १ अर्थात् आश्रायणि, ऋषीगण, मेषकि, रिटकायन, उदग्रजा, माठरा, भोजा, विनयलक्षणा २ शाला, हलेया, कौरिष्टा, कन्यका, सुरायणा, मन्दाकिनी में उत्पन्न होनेवाले मृगया, श्रुतय, भोजयापना, ३ देवयाना, गोमयाना, अधश्छाया, कात्यायना, शाक्रयाणा, वर्हियोग, गदायना, भवनन्दि, महाचक्रि, दाक्षपायना, योधयाना, कार्त्तिवय, हस्तिदाना, ४।५ वात्स्यायन, कृतजा, आश्वलायनि, प्रागायणा, पौलमौलि, आश्ववातायन ६ कौवेरका, श्याकारा, अग्निशर्मायण, मेषपा, कैकरसपा, वभ्रु, प्राचेय, ज्ञानसंज्ञेय, आग्नाप्रासेव्य, श्यामोदरा, वैवशपा, उद्वलायन, काष्ठाहारिण, मारीच, आजिहायन, हास्तिक, वैकर्णेय, काश्यपेय, सासिसा, हारितायना, मान्तगिन और भृगव, यह ऋषि आर्षेय कहे हैं अर्थात् वत्सर १ काश्यप, २ और बड़े तपस्वी निध्रुव इन तीनप्रवरवाले हैं इन सब ऋषियोंका परस्पर विवाहादि संबंध नहींहोताहै, अब हम ह्यामुष्यायण गोत्रमें उत्पन्नहोनेवाले ऋषियोंका वर्णन करते हैं ७।११ अनसूय, नाकुरय, स्नातप, राजवर्त्तप, शैशिर, दवहि, सैरन्ध्रीरोपसेवकि १२ यामुनि, काद्रुपिङ्गाक्षि, जातंबि, दिवावष्टाश्व यहसब भक्तिकरके काश्यपगोत्रवाले कहे हैं इन सबके भी शुभ त्रि आर्षेय कहे हैं अर्थात् वत्सर, १ काश्यप, २ और वसिष्ठ यह तीन प्रवर कहे हैं इनसबका परस्पर विवाह संबंधनहीं होताहै और संयाति, नभ, पिप्पल्य, जलन्धर, भुजातपूर, पूर्व्य,

यातिश्चनभश्चोभौ पिप्पल्योऽथजलन्धरः १५ भुजातपूरःपूर्यश्च कर्दमोगर्दभीमुखः। हिरण्यबाहुकैरातावुभौकाश्यपगोभिलौ १६ कुलहोवृषकण्डश्च मृगकेतुस्तथोत्तरः। निदाघमसृणोमत्स्या महान्तःकेवलाश्चये १७ शाण्डिल्योदानवश्चैव तथावैदेवजातयः। पैप्पलादिस्तुप्रवरा ऋषयःपरिकीर्तिताः १८ त्र्यार्षेयाभिमताश्चैषां सर्वेषांप्रवराःशुभाः। असितोदेवलश्चैव कश्यपश्चमहातपाः। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः १९ ऋषिप्रधानस्यचकश्यपस्य दाक्षायणीभ्यःसकलंप्रसूतम्। जगत्समग्रंमनुसिंहपुण्यं किन्तु प्रवक्ष्याम्यहमन्तरेण २० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९८ ॥

(मत्स्य उवाच) वसिष्ठवंशजान्विप्रान्निबोधवदतोमम। एकार्षेयस्तुप्रवरो वासिष्ठानांप्रकीर्तितः १ वसिष्ठाएववासिष्ठा अविवाह्यावसिष्ठजैः। व्याघ्रपादाऔपगवा वैक्लवाः शाद्वलायनाः २ कपिष्ठलाऔपलोमा अलब्धाश्चपठाःकठाः। गौपायनाबोधपाश्च दाकव्याह्यथबाह्यकाः ३ वालिशयाःपालिशया स्ततोवाग्ग्रन्थयश्चये। आपस्थूणाःशीतवृत्तास्तथाब्राह्मपुरेयकाः ४ लोमायनाःस्वस्तिकराः शाण्डलिगौडिनिस्तथा। वाडोहलिश्चसुमनाश्चोपावृद्धिस्तथैवच ५ चौलिर्बौलिर्ब्रह्मबलः पौलिःश्रवसएवच। पौड्वोयाज्ञवल्क्यश्च एकार्षेयामहर्षयः ६ वसिष्ठएषांप्रवर अवैवाह्याःपरस्परम्। शैलालयोमहाकर्णः कौरव्यःक्रोधिनस्तथा ७ कपिञ्जलावालखिल्या भागवित्तायनाश्चये। कौलाय

कर्दम गर्दभीमुख, हिरण्यबाहु, कैरात, काश्यप, गोभिल, कुलह, वृषकंड, मृगकेतु, उत्तर, निदाघ, मसृण, मत्स्य, महान्त, केवल १३।१७ शांडिल्य, दानव और देव जातिवाले इन नामों वाले यह सब ऋषि प्रवरकहाते हैं इनके असित,देवल,और कश्यप यहतीन प्रवरहैं इसी से इनकोत्र्यार्षेयप्रवर कहते हैं इनका परस्पर विवाहादि संबंध नहीं होता १८।१९ हेमनु इस प्रकारसे यह कश्यपके योग से उत्पन्न हुए ऋषि वर्णन किये, और कश्यपसे दाक्षायणीस्त्रियों में तो सब जगत्ही उत्पन्न हुआ है उसका वर्णन हम कहाँतक करें २० ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९८ ॥

मत्स्यजी बोले—वसिष्ठ वंशमें उत्पन्न होनेवाले ब्राह्मणों को मुझसे सुनो, वासिष्ठ वंशवालोंका एक आर्षेय प्रवर है वसिष्ठ गोत्रवालेही वासिष्ठ कहाते हैं वह अपनेही वसिष्ठ गोत्रियोंमें विवाहादि संबंध नहीं करते इस प्रकारसे यह एक प्रवर है और व्याघ्रपाद औपगव, वैक्लव, शाद्वलायन, १।२ कपिष्ठला औपलोमा, अलब्धा, पठा, कठा, गोपायना, बोधपा, दाकव्या, बाह्यका, ३ वालिशया, पालिशया, वाग्ग्रंथय, आपस्थूणा, शीतवृत्ता, ब्राह्मपुरेयका, ४ लोमायना स्वस्तिकरा, शांडिलि, गौडिनि, वाडोहलि, सुमना, उपावृद्धि, ५ चौलि, बौलि, ब्रह्मबल, पौलि, श्रवस, पौड्व, याज्ञवल्क्य: यह सब ऋषिभी एक आर्षेय हैं इन सबका एक वसिष्ठ प्रवर है यह सब भी परस्पर विवाहादि सम्बन्ध नहीं करते हैं और शैलालय, महाकर्ण, कौरव्य, क्रोधिन ६।७ कपिंजला, वालखिल्या,

नःकालशिखः कोरकृष्णाःसुरायणाः ८ शाकाहार्योःशाकधियः काण्वाउपलपाश्चये। शाकायनाउहाकाश्च अथमाषशरावयः ९ दाकायनावालवयो वाकयोगोरथास्तथा। लम्बायनाःश्यामवयोयेचकोडोदरायणाः १० प्रलम्बायनाश्चऋषय औपमन्यवएवच। सांख्यायनाश्चऋषयस्तथावैवेदशेरकाः ११ पालङ्कायनउद्गाहा ऋषयश्चबलेक्षवः। मातेयाब्रह्मबलिनः पर्णागारिस्तथैवच १२ त्र्यार्षेयोऽभिमतश्चेषां सर्वेषांप्रवरस्तथा। भिगीवसुर्वसिष्ठश्च इन्द्रप्रमदिरेवच १३ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। औपस्थलास्वस्थलयो पालोहालोहलाश्चये १४ माध्यन्दिनोमाक्षतयःपैप्पलादिर्विचक्षुषः। त्रैशृङ्गायनसैवल्काः कुण्डिनश्चनरोत्तम! १५ त्र्यार्षेयाभिमताश्चैषां सर्वेषांप्रवराःशुभाः। वसिष्ठमित्रावरुणौ कुण्डिनश्चमहातपाः १६ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। शिवकर्णोवयश्चैव पादपश्चतथैवच १७ त्र्यार्षेयोऽभिमतश्चैषां सर्वेषांप्रवरस्तथा। जातूकर्ण्योवसिष्ठश्च तथैवात्रिश्चपार्थिव!। परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः १८ वसिष्ठवंशोऽभिहितामयैते ऋषिप्रधानाःसततंद्विजेन्द्राः। येषांतुनाम्नापरिकीर्तितेन पापं समग्रंपुरुषोजहाति १९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे नवनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९९॥

(मत्स्य उवाच) वसिष्ठस्तुमहातेजा निमेःपूर्वपुरोहितः। बभूवपार्थिवश्रेष्ठ! यज्ञास्तस्यसमन्ततः १ श्रान्तात्मापार्थिवश्रेष्ठ!विशश्रामतदागुरुः। तंगत्वापार्थिवश्रेष्ठो निमि

भागवित्तायना, कीलायना, कालशिख, कोरकृष्णा, सुरायणा, ८ शाकाहार्यो,शाकधिय, काण्वा,उपलपा, शाकायना, उहाका, माषशरावय ९ दाकायना, बालवय, वाकय, गोरथा,लंबायना,श्यामवय, कोडोदरायणा, १० प्रलंबायना, औपमन्यव, सांख्यायनऋषि, वेदशेरक ११ पालंकायन, उद्गाह, बलेक्षव, मातेय, ब्रह्मबलि,पर्णागारि, १२ इनसबका त्र्यार्षेयप्रवरकहाहै अर्थात् भिगीवसु, वसिष्ठ और इन्द्रप्रमदि ३ यहतीनप्रवरकहे हैं इन त्रिप्रवरवालों का आपसमें विवाह संबन्धनहीं होताहै और औपस्थल, स्वस्थलि, पालो, हालो,हल, माध्यंदिनी, माक्षतय, पैप्पलादि, विचक्षुप, त्रैशृंगायन, सैवल्क, कुंडिन, इनसबके त्र्यार्षेय प्रवरकहेहैं, अर्थात् वसिष्ठ, मित्रावरुण, और बड़ेतपस्वी कुंडिन ऋषि ३ यहतीनप्रवरहैं १३।१६ यह सब ऋषि परस्पर विवाहसंबंधकरने को योग्यनहीं हैं और शिवकर्ण,वय,और पादप,यहभी त्र्यार्षेयहैं अर्थात् तीनप्रवरहैं और इनसबोंके जातूकर्ण्य १ वसिष्ठ २ और अत्रि ३ यहभीतीन प्रवरकहे हैं यह सब ऋषिभीपरस्पर अवैवाह्यहैं अर्थात् आपसमें इनको विवाहादि संबंधनहीं करनाचाहिये १७।१८ हे मनुमैंने तेरे आगे यह वसिष्ठवंशके उत्तमप्रधानद्विज कहदिये हैं इनसबके नामोच्चारणकरनेवालापुरुष अपने सबपापोंको दूरकरदेताहै १९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांनवनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९९॥

मत्स्यजीबोले बड़ेतेजस्वी वसिष्ठ ऋषि प्रथम राजा निमिकेपुरोहितहुए तबउस निमिराजाने बहुत यज्ञकिये उनबहुत यज्ञोंके करानेसे वसिष्ठऋषि श्रमितहोकर बैठरहे तब निमिराजाने गुरू

वचनमब्रवीत् २ भगवन्यष्टुमिच्छामि तन्मांयाजयमाचिरम्। तमुवाचमहातेजा वसिष्ठः पार्थिवोत्तमम् ३ कञ्चित्कालंप्रतीक्षस्व तवयज्ञैस्सुसत्तमैः। श्रान्तोऽस्मिराजन्! विश्र म्ययाजयिष्यामितेनृप! ४ एवमुक्तःप्रत्युवाच वसिष्ठंनृपसत्तम!। पारलौकिककार्येतुकः प्रतीक्षितुमुत्सहेत् ५ नचमेसौहृदंब्रह्मन्! कृतान्तेनबलीयसा। धर्म्मकार्येत्वराकार्याच लंयस्माद्धिजीवितम् ६ धर्म्मपथ्योदनोजन्तुर्मृतोऽपिसुखमश्नुते। श्वःकार्य्यमद्यकुर्वीतपू र्वाह्णेचापराह्णिकम् ७ नहिप्रतीक्षतेमृत्युः कृतञ्चास्यनवाकृतम्। क्षेत्रापणगृहासक्तमन्य त्रगतमानसम् ८ वृकश्चोरणमासाद्य मृत्युरादायगच्छति। नैकान्तेनाप्रियःकश्चिद्वेष्य श्चास्यनविद्यते ९ आयुष्येकर्म्मणिक्षीणे प्रसह्यहरतेजनम्। प्राणवायोश्चलत्वञ्च त्वमावि दितमेवच १० यदत्रजीव्यतेब्रह्मन्! क्षणमात्रन्तदद्भुतम्। शरीरंशाश्वतंमन्ये विद्याभ्यासे धनार्जने ११ अशाश्वतंधर्म्मकार्ये ऋणवानस्मिसङ्कटे। सोऽहंसंभृतसंभारोभवन्मूलमुपा गतः १२ नचेद्याजयसेमांत्वमन्यंयास्यामियाजकम्। एवमुक्तस्तदातेन निमिनाब्राह्मणो त्तमः १३ शशापतंनिमिंक्रोधाद्विदेहस्त्वंभविष्यसि। श्रांतंमांत्वंसमुत्सृज्ययस्मादन्यंद्विजो त्तमम् १४ धर्मज्ञस्तुनरेंद्र! त्वं याजकंकर्तुमिच्छसि। निमिस्तंप्रत्युवाचाथ धर्मकार्यरतस्यमे १५ विघ्नङ्करोषिनान्येनयाजनंचतथेच्छसि। शापंददासियस्मात्त्वंविदेहोऽथभविष्यसि १६

वसिष्ठजीके समीप जाके यहवचनकहा १।२ हे भगवन् मैं यज्ञकरनेकी इच्छाकरताहूं सो आपमुझे शीघ्रयज्ञकरवाइये विलम्बनकीजिये निमि राजाके ऐसे वचन सुनकर वसिष्ठ जीने कहा ३ हे राजन् कुछेककालतक तुम विश्रामकरलो मैं तुमको बहुतसे यज्ञकराताहुआ थकितहोगयाहूं सो कुछदिन पीछेतुम्हारे यज्ञकरवाऊंगा ४ यह सुनकरवह निमिराजा वसिष्ठजी से कहताभयाकि हेमुने परलोक संबंधी कार्य्यकी बाट देखनेको कौनसमर्थ है इसकाल से मेराकोई वशनहीं चलसक्ता औरनकोई उससेप्यारहै इस जीवनकी स्थिरतानहीं है इसनिमित्तधर्मके कार्य्यमें शीघ्रताही करनीचाहिये ५।६ धर्मकार्य्य में लगाहुआजीव मरेपीछे सुखभोगताहै इसलिये दूसरेदिनके कार्य्यको प्रथमदिनमेंहीकरे, मृत्युयहनहीं बिचारती है कि इसको कुछकार्य्यकरना बाकीरहाहै, क्षेत्र दूकान घर अथवा अन्यस्थान इनसबमें मनको फसानेवाले पुरुषकीमृत्यु तत्काल होजातीहै इसमृत्युकी किसीके साथनतोशत्रुता हैनमित्रताहै प्रारब्धकर्मके क्षीणहोतेही यह मृत्यु जीवमात्रको भक्षण करलेती है और प्राणवायुचला यमानहै इसबातको आप सब प्रकारसे जानतेहैं ७।१० हे ब्रह्मन् इस संसारमें क्षणमात्रकाही जी वनाहै यही अद्भुतहै मैं विद्याके अभ्यासकरनेमें और धनसंचयकरनेमें इसशरीरको ध्रुवमानताहूं और धर्मके कार्य्यमें चलायमानही मानताहूं इस संकटमें मैं ऋणीहोरहाहूं मेरे ऊपरयज्ञोंकाभारहै उस भारके उतारने को मैं आपकीशरणमें आयाहूं ११।१२ जोतुमयज्ञनहीं करवाओगे तोमैं अन्यकिसी ब्राह्मणसे यज्ञकरवालूंगा जब ऐसे वचन राजाने कहे तब वसिष्ठजी ने क्रोधकरके राजाको शापदिया कि हे धर्मज्ञ राजानिमि तुम मुझथकेहुए याजकको त्यागकर अन्य याजकको बनानाचाहतेहो इस हेतुसे तुम देहरहितहोजाओगे तब राजा निमिनेभी वसिष्ठजीको शापदिया कि हेविन धर्म कार्य्य

एवमुक्तेतुतौजातौ विदेहौद्विजपार्थिवौ। देहहीनौतयोर्जीवौ ब्रह्माणमुपजग्मतुः १७ ता
वागतौसमीक्ष्याथ ब्रह्मावचनमब्रवीत्। अद्यप्रभृतितेस्थानं निमिजीवददाम्यहम् १८
नेत्रपक्ष्मसुसर्वेषां त्वंवसिष्यसिपार्थिव। त्वत्सम्बन्धात्तथातेषां निमेषःसम्भविष्यति १९
चालयिष्यन्तितुतदा नेत्रपक्ष्माणिमानवाः। एवमुक्तेमनुष्याणां नेत्रपक्ष्मसुसर्वशः २०
जगामनिमिजीवस्तु वरदानात्स्वयम्भुवः। वसिष्ठजीवंभगवान् ब्रह्मावचनमब्रवीत् २१
मित्रावरुणयोःपुत्रो वसिष्ठ! त्वंभविष्यसि। वसिष्ठेतिचतेनाम तत्रापिचभविष्यति २२
जन्मद्वयमतीतञ्च तत्रापित्वंस्मरिष्यसि। एतस्मिन्नेवकालेतु मित्रश्चवरुणस्तथा २३
बदर्याश्रममासाद्य तपस्तेपतुरव्ययम्। तपस्यतोस्तयोरेवं कदाचिन्माधवेऋतौ २४
पुष्पितद्रुमसंस्थाने शुभेदयितमारुते। उर्वशीतुवरारोहा कुर्वतीकुसुमोच्चयम् २५ सुसू
क्ष्मरक्तवसना तयोर्दृष्टिपथङ्गता। तांदृष्ट्वासुमुखींसुभ्रूं नीलनीरजलोचनाम् २६ उभौचु
क्षुभतुर्धैर्यात्तद्रूपपरिमोहितौ। तपस्यतोस्तयोर्वीर्यमस्खलच्चमृगासने २७ स्कन्नंरेतस्त
तोदृष्ट्वा शापभीतौपरस्परम्। चक्रतुःकलशेशुक्रं तोयपूर्णेमनोरमे २८ तस्माद्दृषिवरौजा
तौ तेजसाप्रतिमौभुवि। वसिष्ठश्चाप्यगस्त्यश्च मित्रावरुणयोर्द्वयोः २९ वसिष्ठस्तूपये

में मुझ प्रवर्त्त होनेवालेके आपविघ्नकरनेवालेहुए अर्थात् अन्ययाजकको निषेध करते हो इसलिये तुमभी विदेह अर्थात् शरीर रहित होजाओगे १३। १६ ऐसे परस्परके शापों से वह दोनों द्विज और राजा देह से रहितहोगये तब उनदोनों के जीव ब्रह्माजी के पासजातेभये १७ उनदोनों जीवों को आताहुआ देख कर ब्रह्माजी बोले हे निमिराजा अबसे आगे तुझको स्थान दूंगा तू सबजीवों के नेत्रों के पलकमें वासकरेगा तेरेही संबन्धसे उनसबजीवों के निमेष होगा अर्थात् नेत्र खुलेंगे और मिचेंगे सबमनुष्य अपने नेत्रोंको खोलें मूंदेंगे ऐसे ब्रह्माजी के कहतेही वरदान के द्वारा वह निमिराजाका जीव सबमनुष्यों के नेत्रोंके पलकों में वासकरता भया इसकेपीछे ब्रह्माजी ने वसिष्ठजीसे भी कहा कि हे वसिष्ठ तुम मित्रावरुणके पुत्रहोगे वहांभी तुम्हारा नामवसिष्ठही होगा १८। २२ और तुमको अपने दोनोंजन्मोंका स्मरण रहैगा इसवरदानके पीछे मित्र और वरुण जो दोनों बदरिकाश्रम में तपकरते थे तब एकसमय वसन्तऋतुके पुष्पों के वृक्षोंके निकट उत्तम प्रियवायु के चलनेके कारण महाउत्तम उर्वशीनाम अप्सरा अपना शृंगार पुष्पों से करतीभई २३। २५ सूक्ष्म रक्तवस्त्रवाली वह उर्वशी अप्सरा उन मित्रावरुण नाम देवताओं के दृष्टिगोचरहुई तब सुन्दरमुखी नीलकमल के समान नेत्रोंवाली उस अप्सराको देखकर उनदोनों मित्र और वरुणका धैर्य्य क्षीण होगया और अप्सराके रूपसे मोहित होगये और उन दोनों तपकरते हुओं का वीर्य्यस्खलित होताभया २६। २७ तब पतितहुए अपने वीर्य्यको देखकर शापसे डरतेहुए वह दोनों ऋषि जलके भरेहुए मनोहर कलशे में उस अपने वीर्य्यको डालदेते भये २८ तब उस कलशमेंसे उत्तमतेजवाले वसिष्ठ और अगस्त्य यहदोनों ऋषि मित्र और वरुण इनदोनों ऋषियों के वीर्य्यसे उत्पन्न होजातेभये २९ वसिष्ठ ऋषि नारदकी बहिन अरुन्धतीनामसे विवाहकरते भये उस अरुन्धती के शक्तिनामपुत्र

मेऽथ भगिनींनारदस्यतु। अरुन्धतींवरारोहां तस्यांशक्तिमजीजनत् ३० शक्तेःपराशरः पुत्रस्तस्यवंशंनिबोधमे। यस्यद्वैपायनःपुत्रः स्वयंविष्णुरजायत ३१ प्रकाशोजनितोयेन लोकेभारतचन्द्रमाः। पराशरस्यतस्यत्वं शृणुवंशमनुत्तमम् ३२ काण्डशपोवाहनपो जैह्मपोभौमतापनः। गोपालिरेषांपञ्चम एतेगौराःपराशराः ३३ प्रपोहयावाह्यमया स्यातेयाःकौतुजातयः। हर्यश्विःपञ्चमोह्येषां नीलाज्ञेयाःपराशराः ३४ काष्र्णायनाःकपिमुखाः काकेयस्थाजपातयः। पुष्करःपञ्चमश्चैषां कृष्णाज्ञेयाःपराशराः ३५ आविष्टायनवालेया स्वायष्टाश्चोपयाश्चये। इषीकहस्तश्चैतेवै पञ्चश्वेताःपराशराः ३६ पाटिकोबादरिश्चैव स्तम्बावैक्रोधनायनाः। क्षैमिरेषांपञ्चमस्तु एतेश्यामाःपराशराः ३७ खल्यायनावार्ष्णायनास्तैलेयःखलुयूथपाः। तन्तिरेषांपञ्चमस्तु एतेधूम्राःपराशराः ३८ उक्तास्तवैतेनृप! वंशमुख्याः पराशराःसूर्यसमप्रभावाः। येषांतुनाम्नापरिकीर्तितेन पापंसमग्रंपुरुषोजहाति ३९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणे द्विशततमोऽध्यायः २००॥

(मत्स्य उवाच) अतःपरमगस्त्यस्य वक्ष्येवंशोद्भवान्द्विजान्। अगस्त्यश्चकरम्भश्च कौशल्यःकरटस्तथा १ सुमेधसोमयोभुवस्तथागान्धारकायणाः। पौलस्त्याःपौलहाश्चैव क्रतुवंशभवास्तथा २ आर्षेयाभिमताश्चैषां सर्वेषांप्रवराःशुभाः। अगस्त्यश्च महेन्द्रश्च ऋषिश्चैवमयोभुवः ३ परस्परमवैवाह्या ऋषयःपरिकीर्तिताः। पौर्णमासाःपारणाश्च आर्षेयाःपरिकीर्तिताः ४ अगस्त्यःपौर्णमासश्च पारणश्चमहातपाः। परस्परमवै

उत्पन्न होताभया शक्तिके पराशरहुए अब उनपराशरके वंशको मुझसेसुनो जिनके कि वेदव्यासरूप से आप श्री विष्णुभगवान् उत्पन्न होतेभये ३०।३१ उन वेदव्यासजी ने इस संसार में भारतरूपी चन्द्रमा प्रकाशित किया उन पराशरजी के वंशको श्रवणकरो ३२ कांडपप १ वाहनप २ जैह्मप ३ भौमतापन ४ गोपालि ५ यह पांच गौर पराशर कहाते हैं ३३ और प्रपोहया १ वाह्यमया २ ख्यातेया ३ कौतुजातिवाले ४ हर्यश्वि ५ यहपांच नीलपराशर कहाते हैं ३४ काष्र्णायनो, कपिमुखो, काकेयस्थो, जपातयो, और पुष्करो, यह पांच कृष्णपराशर कहाते हैं ३५ आविष्टायन, १ वालेया २ स्वायष्ठा ३ उपया ४ इषीकहस्त ५ यहपांच श्वेतपराशर कहाते हैं ३६ पाटिक १ बादरि २ स्तंबा ३ क्रोधनायना ४ और क्षैमि ५ यहपांच श्यामपराशर कहाते हैं ३७ खल्यायना १ वार्ष्णायना २ तैलेय ३ यूथपा ४ और तंति ५ यहपांच धूम्रपराशर कहाते हैं ३८ हे राजा सूर्य्यके समान कान्तिवाले पराशरवंशमें होनेवाले यह बड़े २ मुख्य ऋषि तेरे आगे वर्णन कियेहैं इनका नामोच्चारण करनेवाला पुरुष अपने सम्पूर्ण पापोंको भस्मकरदेताहै ३९ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विशततमोऽध्यायः२००॥

मत्स्यजी बोले कि अब अगस्त्यके वंशमें होनेवाले ब्राह्मणोंका वर्णन सुनो, अगस्त्य, करंभ, कौशल्य, करट, सुमेधस, मयोभुव, गान्धारकायण, और पौलस्त्य वंशमें होनेवाले, पुलहवंशमें होनेवाले, और क्रतुवंशमें होनेवाले, इनसबोंको आर्षेय कहते हैं और इनके प्रवरभी बहुत अच्छे और शुभहैं और अगस्त्य, महेन्द्र, और मयोभुवऋषि, इनसबके परस्पर विवाहादि संबंध नहींहोतेहैं, पौर्ण-

वाह्याः पौर्णमासास्तुपारणैः ५ एवमुक्तोऋषीणान्तु वंशउत्तमपौरुषः । अतःपरंप्रवक्ष्या मि किम्भवानद्यकथ्यताम् ६ (मनुरुवाच) पुलहस्यपुलस्त्यस्य क्रतोश्चैवमहात्मनः । अगस्त्यस्यतथाचैव कथंवंशस्तदुच्यताम् ७ (मत्स्य उवाच) क्रतुःखल्वनपत्योऽभूद्रा जन्वैवस्वतेऽन्तरे । इध्मवाहंसपुत्रत्वे जग्राहऋषिसत्तमः ८ अगस्त्यपुत्रंधर्मज्ञं आग स्त्याःक्रतवस्ततः । पुलहस्यतथापुत्रास्त्रयश्चपृथिवीपते ! ९ तेषान्तुजन्मवक्ष्यामि उत्त रत्रयथाविधि । पुलहस्तुप्रजांदृष्ट्वा नातिप्रीतमनाःस्वकाम् १० अगस्त्यजंदृढास्यन्तु पु त्रत्वेवृतवांस्ततः । पौलहाश्चतथाराजन् ! आगस्त्याःपरिकीर्तिताः ११ पुलस्त्यान्वय सम्भूतान् दृष्ट्वारक्षःसमुद्भवान् । अगस्त्यस्यसुतन्धीमान् पुत्रत्वेवृतवांस्ततः १२ पौल स्त्याश्चतथाराजन्नागस्त्याःपरिकीर्तिताः । सगोत्रत्वादिमेसर्वे परस्परमनन्वयाः १३ ए तेतवोक्ताःप्रवराद्विजानां महानुभावान्नृपवंशकाराः । एषान्तुनाम्नापरिकीर्तितेन पापंसम ग्रंपुरुषोजहाति १४ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०१ ॥

(मत्स्य उवाच) अस्मिन्वैवस्वतेप्राप्ते शृणुधर्मस्यपार्थिव ! । दाक्षायणीभ्यःसकलं वंशंदैवतमुत्तमम् १ पर्वतादिमहादुर्गशरीराणिनराधिप ! । अरुन्धत्याःप्रसूतानि धर्मा द्वैवस्वतेऽन्तरे २ अष्टौचवसवःपुत्राः सोमपाश्चविभोस्तथा । धरोध्रुवश्चसोमश्च आप

मासवंशमें होनेवाले और पारणवंशमें होनेवालेभी आर्षेय कहाते हैं ।१४ अगस्त्य,पौर्णमा, सपारण, यह महातपवालेहैं इनकाभी परस्पर विवाहादिक संबंध नहींहै और पौर्णमासोंका विशेष करके पारणोंसे संबंध नहींहोताहै इस प्रकारसे यहमैंने उत्तम पौरुषवाले ऋषियोंका वंशतेरे आगे कहा अबजो तुम सुनना चाहतेहो उसको कहो ५।६ मनुजीने कहा कि पुलह, पुलस्त्य, क्रतु और अगस्त्य इन महात्माओंके वंशकैसेहैं वह आपकहिये ७ मत्स्यजी बोले- हे राजन् वैवस्वत मनुके अन्तरमें क्रतु, अनपत्य अर्थात् सन्तानरहित होताभया तबवह ऋषि अगस्त्य ऋषिके धर्मज्ञ पुत्र इध्मवाह नामको ग्रहण करके पुत्र करताभया इसी से इध्मवाहके वंशमें होनेवाले आगस्त्य और क्रतव कहातेहैं और हे राजा पुलहके तीन पुत्रहुए उनके जन्मके क्रमको कहताहूं,पुलह अपनी प्रजाको देखकर मनमें प्रसन्न नहीं हुआ ८।१० तब अगस्त्यके दृढास्यनाम पुत्रको अपनापुत्र मानताभया इसी से दृढास्यके वंशमें होनेवाले आगस्त्य और पौलह कहाते हैं ११ और पुलस्त्यभी अपने वंशमें राक्षसको उत्पन्न हुआ देखकर बड़े बुद्धिमान् अगस्त्यके पुत्रको अपने पुत्र धर्ममें वर्त्तताभया १२ हे राजन् इसीहेतुसे पौलस्त्य वंशमें होनेवाले आगस्त्य कहाते हैं और इन सबोंका एक गोत्र होनेसे परस्पर विवाहादि संबंध नहींहोताहै १३ यह महानुभाव वाले ब्राह्मणों के प्रवर और ब्राह्मणोंके वंशकरनेवाले तेरेआगे कहे इन सबकानाम कीर्त्तन करनेवाला पुरुष सबपापोंको त्यागदेताहै १४ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०१ ॥

मत्स्यजी बोले हे राजन् इस वैवस्वत मनुके प्राप्त होनेमें धर्मराजके सम्बन्धसे दक्षकी पुत्रियोंमें सब देवताओंके जो वंशहुएहैं उनको मैं सुनाताहूं १ वैवस्वत मनुके अन्तरमें धर्मके सम्बन्धसे दक्षकी

श्चैवानिलानलौ ३ प्रत्यूषश्चप्रभासश्च वसवोऽष्टौप्रकीर्तिताः। धरस्यपुत्रोद्रविणःकालः पुत्रोध्रुवस्यतु ४ कालस्यावयवानान्तु शरीराणिनराधिप!। मूर्तिमन्तिचकालादि संप्रसूतान्यशेषतः ५ सोमस्यभगवान्वर्चाः श्रीमांश्चापस्यकीर्त्यते। अनेकजन्मजननःकुमारस्त्वनलस्यतु ६ पुरोजवाश्चानिलस्य प्रत्यूषस्यतुदेवलः। विश्वकर्माप्रभासस्य त्रिदशानांसवर्धकिः ७ समीहितकराःप्रोक्ता नागवीथ्यादयोनव। लम्बापुत्रःस्मृतोघोषो भानोःपुत्राश्चभानवः ८ ग्रहर्क्षाणाञ्चसर्वेषामन्येषांचामितौजसाम्। मरुत्वत्यांमरुत्वन्तः सर्वे पुत्राःप्रकीर्तिताः ९ सङ्कल्पायाश्चसंकल्पस्तथापुत्रःप्रकीर्तितः। मुहूर्ताश्चमुहूर्तायाः साध्याःसाध्यासुताःस्मृताः १० मनोमनुश्चप्राणश्च नरोपानौचवीर्यवान्। चित्तहार्योऽयनश्चैव हंसोनारायणस्तथा ११ विभुश्चापिप्रभुश्चैव साध्याद्वादशकीर्तिताः। विश्वायाश्चतथापुत्रा विश्वेदेवाःप्रकीर्तिताः १२ क्रतुर्दक्षोवसुःसत्यः कालकामोमुनिस्तथा। कुरजोमनुजोवीजो रोचमानश्चतेदश १३ एतावदुक्तस्तवधर्मवंशः संक्षेपतःपार्थिववंशमुख्य!। व्यासेनवक्तुंनहिशक्यमस्ति राजन्विनावर्षशतैरनेकैः १४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेद्व्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २०२॥

(मत्स्य उवाच) एतद्वंशभवाविप्राः श्राद्धेभोज्याःप्रयत्नतः। पितॄणांवल्लभंयस्मादेषु

पुत्रियोंके पर्व्वत आदिक महादुर्ग शरीर उत्पन्न होतेभये २ धर्मके योगसे अरुन्धती स्त्रीमें अष्टवसुनाम पुत्र और अमृतके पीनेवाले सोमपनाम देवता जन्मेहैं उन आठों वसुओंके धर १ ध्रुव २ सोम ३ आप ४ अनिल ५ अनल ६ प्रत्यूष ७ और प्रभास ८ यह आठोंनामहैं, धरकापुत्र द्रविणनाम, और ध्रुवकापुत्र कालनाम हुआ ३।४ कालनाम वसुके कालके वर्षआदि अवयव शरीर धारण करके उत्पन्नहुए हैं और सोमके ऐश्वर्य्यवाला वर्चानामसे प्रसिद्ध पुत्रहुआ आपके श्रीमान्नाम पुत्रहुआ, अनलके अनेक जन्म जनननाम पुत्रहुआ, अनिलके पुरोजवा पुत्रहुआ, प्रत्यूपके देवलनाम पुत्रहुआ प्रभासके विश्वकर्मानाम पुत्रहुआ यही देवताओंके कारीगरहैं और नागवीथीआदि नववीथी चेष्टा करनेवाली कही हैं और लंबानाम वालीकापुत्र घोप कहाता है, भानुके पुत्र भानव कहेजाते हैं ५। ८ ग्रह नक्षत्र और सवतेजस्वी देवताओंकेपुत्र मरुत्वतीस्त्रीमें मरुत्वन्तनामवाले स्तंबकहे जातेहैं ९ संकल्पा स्त्रीके संकल्पनाम पुत्रहुआहै, मुहूर्ता के मुहूर्तनामपुत्र, और साध्यानाम स्त्री के साध्यसंज्ञकपुत्र हुए हैं १० मनो १ मनु २ प्राण ३ नरोपा ४ नौ ५ वीर्य्यवान् ६ चित्तहार्य्य ७ अयन ८ हंस ९ नारायण १० विभु ११ और प्रभु यहबारह साध्यकहे हैं और विश्वाके विश्वेदेवापुत्रवर्णन किये हैं ११।१२ क्रतु १ दक्ष २ वसु ३ सत्य ४ कालकाम ५ मुनि ६ कुरज ७ मनुज ८ वीज ९ रोचमान १० यहदश विश्वेदेवाकहे हैं १३ हे राजन् यह धर्मके वंश संक्षेपतासे तेरे आगे कहे इनको विस्तारसे कहनेको अत्यन्त समयके कारण कोईभी समर्थ नहीं है १४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्व्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २०२॥

मत्स्यजीबोले हे राजन् इन पूर्व्वोक्त ब्राह्मणोंके वंशोंमें होनेवाले ब्राह्मण श्राद्धमें भोजनकरवाने

श्राद्धंनरेश्वर ! १ अतःपरंप्रवक्ष्यामि पितृभिर्याःप्रकीर्तिताः। गाथाःपार्थिवशार्दूल ! का मयद्भिःपुरेस्वके २ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं योनोदद्याज्जलाञ्जलिम् । नदीषुबहुतोया सुशीतलासुविशेषतः ३ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं यःश्राद्धंनित्यमाचरेत् । पयोमूलफलैर्भ क्ष्यैस्तिलतोयेनवापुनः ४ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं योनोदद्यात्त्रयोदशीम्। पायसंमधुस र्पिर्भ्यांवर्षासुचमघासुच ५ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं खड्गमांसेनयःसकृत् । श्राद्धंकुर्या त्प्रयत्नेन कालशाकेनवापुनः ६ कालशाकंमहाशाकं मधुमुन्यन्नमेवच। विषाणवर्ज्यायेख ड्गा आसूर्यन्तदशीमहि ७ गयायांदर्शनेराहोः खड्गमांसेनयोगिनाम् । भोजयेत्कःकुले ऽस्माकञ्छायायांकुञ्जरस्यच ८ आकल्पकालिकीतृप्तिस्तेनास्माकंभविष्यति । दातास र्वेषुलोकेषु कामचारोभविष्यति ९ आभूतसंप्लवंकालं नात्रकार्याविचारणा। यदेतत्पञ्चकं तस्मादेकेनापिचयःसदा १० तृप्तिंप्राप्स्यामचानन्तां किंपुनःसर्वसम्पदा। अपिस्यात्स कुलेऽस्माकं दद्यात्कृष्णाजिनञ्चयः ११ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं कश्चित्पुरुषसत्तमः। प्रसूयमानांयोधेनुं दद्याद्ब्राह्मणपुङ्गवे १२ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं वृषभंयःसमुत्सृजे त्। सर्ववर्णविशेषेण शुक्लनीलंवृषन्तथा १३ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं यःकुर्यात्श्रद्धया न्वितः। सुवर्णदानंगोदानं पृथिवीदानमेवच १४ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं कश्चित्पुरुष

के योग्यहैं क्योंकि इन ब्राह्मणोंमें श्रद्धापूर्वक दियाहुआ दान पितरों की प्रसन्नता करनेवालाहै १ हे राजा अब अपनेपुरमें इच्छाकरनेवाले पितरोंने जो गाथा वर्णनकीहै उसकोमैं कहताहूं २ पितर कहतेहैं कि कोई ऐसापुरुष हमारेकुलमेंहो हमको अत्यन्तशीतलजल बहनेवाली नदियोंमें जलांज- लियोंकादानदेवे ३ और ऐसाभी कोई हमारेकुलमें निश्चयहोय जो दूध मूल फल और नानाभक्ष्य प- दार्थादिकोंसे हमारे निमित्त नित्य श्राद्धकरताहै ४ कोई हमारेकुलमें ऐसाहोवे कि त्रयोदशीकेदिन जब मघानक्षत्रहोय तब वर्षाऋतुमें हमारेनिमित्त दूध शहद और घृतादिक पदार्थोंका दानकरे५कोई ह- मारेकुलमें ऐसाहोय जोएकवार गैंडेकेमांससे अथवा कालशाकसे विधिपूर्वक हमारेनिमित्तश्राद्धकरे६ और कालशाक, महाशाक, शहद, शामक आदिक मुनियोंके अन्न विना सींगवाले गैंडेकामांस इनसब पदार्थों से हम तबतक तृप्तरहते हैं जबतक कि सूर्य रहते हैं ७ चन्द्रमा सूर्य्य के ग्रहणमें गंगा- जीपर हमको गैंडेके मांससे तृप्तकरनेवाला कोई पुरुष हमारे कुलमेंहोय और कुंजरछाया योगमेंजो हमको गैंडेके मांससे तृप्तकरदेवे तोहमारी तृप्ति प्रलयपर्य्यन्त रहती है और वह दानकरनेवालादाता पुरुष सबलोकों में इच्छापूर्वक विचरनेको समर्थ होजाताहै ८। ९ और निस्सन्देह वह पुरुष प्र- लयपर्य्यन्त सब लोकों में जानेको समर्थरहताहै और कालशाक आदिकजो इन पांचों वस्तुओंमेंसे एक वस्तुसेही हमारा श्राद्ध करताहै उससेभी अनन्त कालतक हमारी तृप्तिरहतीहै और जोकोई हमारे कुलमें ऐसाहोवे कि काले मृगके चर्मकादानदेवे १०।११ अथवा ऐसा हमारे कुलमें कोई उत्तम पुरुषहोवे जो वेदके पढ़ेहुए ब्राह्मणके अर्थ ब्याहतीहुई गौका दानदेवे १२ जो कोई हमारे कुलमें ऐसाहो जोवृषभको छोड़े इन वृषभोंमें विशेषकरके नीलवृषभ छोड़ना योग्यहै १३ कोईहमारेकुलमें

सत्तमः। कूपारामतडागानां वापीनांयश्चकारकः १५ अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं सर्वभावे नयोहरिम्। प्रयायाच्छरणंविष्णुं देवेशंमधुसूदनम् १६ अपिनःसकुलेभूयात् कश्चिद्वि द्वान्विचक्षणः। धर्मशास्त्राणियोदद्याद्विधिनाविदुषामपि १७ एतावदुक्तंतवभूमिपाल! श्राद्धस्यकल्पंमुनिसम्प्रदिष्टम्। पापापहंपुण्यविवर्द्धनञ्च लोकेषुमुख्यत्वकरन्तथैव१८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्र्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २०३॥

(मनुरुवाच) प्रसूयमानादातव्या धेनुर्ब्राह्मणपुङ्गवे। विधिनाकेनधर्मज्ञ! दानंदद्या त्र्किंफलम् १ (मत्स्य उवाच) स्वर्णशृङ्गीरौप्यखुरां मुक्तालांगूलभूषिताम्। कांस्योप दोहनांराजन्! सवत्सांद्विजपुङ्गवे २ प्रसूयमानांगांदत्त्वा महत्पुण्यफलंलभेत्। यावद्व त्सोयोनिगतो यावद्गर्भंनमुञ्चति ३ तावद्वैपृथिवीज्ञेया सशैलवनकानना। प्रसूयमानां योदद्याद्धेनुंद्रविणसंयुताम् ४ ससमुद्रगुहातेन सशैलवनकानना। चतुरन्ताभवेद्दत्तापृ थिवीनात्रसंशयः ५ यावन्तिधेनुरोमाणि वत्सस्यस्यचनराधिप!। तावत्संख्यंयुगगणं देव लोकेमहीयते ६ पितृन्पितामहांश्चैव तथैवप्रपितामहान्। उद्धरिष्यत्यसंदेहान्नरकाद् भूरिदक्षिणः ७ घृतक्षीरवहाःकुल्या दधिपायसकर्दमाः। यत्रतत्रगतिस्तस्य द्रुमाश्चेप्सि तकामदाः। गोलोकःसुलभस्तस्य ब्रह्मलोकश्चपार्थिव! ८ स्त्रियश्चतंचन्द्रसमानवक्त्राः

ऐसाहोवे जो श्रद्धायुक्तहोकर सुवर्णका दानकरे अथवा गोदानकरे तथा पृथ्वीकादानकरे १४कोई हमारे कुलमें ऐसा उत्तम पुरुषहोवे कि कूप तड़ाग बावड़ी और बागबनवावे १५कोई हमारे कुलमें ऐसाहोवे जोसंपूर्ण भावसे देवेश विष्णु भगवान्की शरणहोजावे १६ कोई हमारे कुलमें ऐसा विद्वान्होवेजो विद्यावाले ब्राह्मणोंके अर्थ धर्मशास्त्रों का दानकरे इसप्रकारसे पितर लोग बाट देखाकरतेहैं १७ हे राजन् यह मुनियोंसे वर्णन कियाहुआ श्राद्ध कल्पमैंने तेरे आगे कहाहै यह श्राद्धकल्प पापोंका हर नेवाला लोकोंमें पुण्यका बढ़ानेवाला और सुखका करनेवालाहै १८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्र्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २०३॥

मनुजी बोले हे धर्मज्ञ प्रसूतागौको ब्राह्मणके निमित्त किस विधिसे देनाचाहिये और ऐसे दानका क्याफलहै १ मत्स्यजीबोले- हे राजन् सुवर्णकी सींगड़ी चाँदी के खुर मोतियोंके पुच्छाभरण, कांसी का दोहनीपात्र इत्यादि वस्तु समेत सवत्सा गौ देनीचाहिये २ ऐसीगौ के दान करनेका महापुण्य होताहै जब तक बछड़ा योनिमेंहो और बाहरनहीं निकसाहो तबतक वह गौ पर्व्वतवन आदिकों समेत संपूर्ण पृथ्वीके समान होती है उस समय जो उस गौकादान करता है उसको निस्सन्देह समुद्रोंसहित सबपृथ्वी के दानका पुण्यप्राप्तहोताहै ३। ५ हे राजा उसगौके और बछड़े के शरीरोंमें जितने रोमहोते हैं उतनेही युगोंतक वह स्वर्गमें वासकरताहै ६ और पिता पितामह और प्रपिता मह इनसबको निश्चय नरकसे उद्धारकरताहै और जहाँ घृत दूधकी नदीबहती है दही दूध की कीचहै और सब अभीष्ट फल देनेवालेवृक्ष हैं ऐसे स्थानमें जानेकी उस दान करनेवाले की गति होजाती है और गोलोक समेत ब्रह्मलोक उसको सुगम होजाते हैं ७। ८ और चन्द्रमुखी तप्त सुवर्ण के

प्रतप्तजाम्बूनदतुल्यरूपाः। महानितम्वास्तनुवृत्तमध्या भजन्त्यजस्रंनलिनाभनेत्राः ६ ॥
इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुरधिकद्विशततमोऽध्यायः २०४ ॥

(मनुरुवाच) कृष्णाजिनप्रदानस्य विधिकालौममानघ !। ब्राह्मणञ्चतथाचक्ष्वतत्रमे संशयोमहान् १ (मत्स्यउवाच) वैशाखीपौर्णमासीच ग्रहणेशशिसूर्ययोः। पौर्णमासीतु यामाघे ह्याषाढीकार्तिकीतथा २ उत्तरायणेद्वादशीवा तस्यांदत्तंमहाफलम्। आहिताग्निर्द्विजोयस्तु तद्देयंतस्यपार्थिव ! ३ यथायेनविधानेन तन्मेनिगदतःशृणु। गोमयेनोपलिप्तेतुशुचौदेशेनराधिप ! ४ आदावेवसमास्तीर्य शोभनंशस्तमाविकम्। ततःसशृङ्गंसखुरमास्तरेत्कृष्णमार्गकम् ५ कर्तव्यंरुक्मशृङ्गंतद्रौप्यदन्तंतथैवच। लांगूलंमौक्तिकैर्युक्तं तिलच्छन्नंतथैवच ६ तिलैश्चाशिखितंकृत्वा वाससाच्छादयेच्छुचि। सुवर्णनाभंतत्कुर्यादलंकुर्याद्विशेषतः ७ रत्नैर्गन्धैर्यथाशक्त्या तस्यदिक्षुचविन्यसेत्। कांस्यपात्राणि चत्वारि तेषुदद्याद्यथाक्रमम् ८ मृण्मयेषुचपात्रेषु पूर्वादिषुयथाक्रमम्। घृतंक्षीरंदधि क्षौद्रमेवंदद्याद्यथाविधि ९ चम्पकस्यतथाशाखामव्रणंकुम्भमेवच। वाह्योपस्थापनंकृत्वाशुभचित्तोनिवेशयेत् १० सूक्ष्मवस्त्रंशुभम्पीतं मार्जनार्थंप्रयोजयेत्॥ तथाधातुमयीः पात्रीः पादयोस्तस्यदापयेत् ११ यानिकानिचपापानि मयालोभात्कृतानिवै। लोहपात्रादिदानेन प्रणश्यन्तुममाशुवै १२ तिलपूर्णंततःकृत्वा वामपादेनिवेशयेत्। यानिका

समान आभावाली उन्नत नितम्वयुक्त सूक्ष्मकटि कमलके समान नेत्रवाली महाउत्तम स्त्री उसको प्राप्त होजाती है ९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुरधिकद्विशततमोऽध्यायः २०४॥

मनुजी पूछते हैं हेदेव कृष्णाजिन अर्थात् काले मृगचर्मके दानकी विधि और उसके काल समेत दानके योग्य पात्र ब्राह्मणको भी मेरे आगे वर्णन करो जिस्से कि मेरा सन्देह निवृत्तहो १ मत्स्यजी बोले वैशाखकी पूर्णमासीको उत्तरायण सूर्य्यके द्वादशी के दिन काले चर्म अर्थात् कृष्ण मृगचर्म के दानकरने का महाफल होता है और यह दान अग्निहोत्री ब्राह्मणके अर्थ देना चाहिये २। ३ अब इसके विधानको मुझसे सुनो हेराजन् गोवरसे लिपीहुई पवित्र पृथ्वीमें प्रथम सुन्दर बकरे के चर्मको बिछावे उसके ऊपर सींग और खुरोंसमेत काले मृगके चर्मको बिछावे सुवर्णके सींग चांदीके खुर मोतियोंसे युक्त पूंछ इन सबको तिलों से आच्छादित करदेवे फिर सबको शुद्ध और श्रेष्ठवस्त्र से आच्छादित करे और सुवर्णकी नाभिवनावे इसप्रकार विभूषित कर शक्तिके अनुसार रत्नोंसे भी विभूषितकरके गन्धलगावे फिर उसके चारोंओरकी दिशाओंमें कांसीके या मृत्तिकाके चार पात्र स्थापितकरे उनपात्रोंमें पूर्वादि क्रमपूर्वक घृत दूध दही और शहद इनकोभरे और एक मार्जनके निमित्त सुन्दर छिद्ररहित कलश स्थापितकरे उस कलशमें चंपेकी डाली गेरकर उसको शुद्धमनसे एकान्तमें स्थापित करदेवे ४।१० उस मार्जनके कलशको बड़े सुन्दर महीन पीत वस्त्रसे आच्छादित करदे और चार धातुओं के पात्र बनवाकर उनचारों खुरोंके स्थानमें स्थापितकरे ११ और यह मंत्रपढ़े (यानिकानिचपापानि मयालोभात्कृतानिवै। लोहपात्रादिदानेन प्रणश्यन्तुममाशुवै) इस मंत्रका यह

निचपापानि कर्णोत्थानिकृतानिच १३ कांस्यपात्रप्रदानेन तानिनश्यन्तुमेसदा। मधुपू
र्णन्तुतत्कृत्वा पादेवैदक्षिणेन्यसेत् १४ परापवादपैशून्याद्वृथामांसस्यभक्षणात्। तत्रो
त्थितञ्चमेपापं ताम्रपात्रात्प्रणश्यतु १५ कन्यानृताद्गवाञ्चैव परदाराभिमर्शनात्। रौप्य
पात्रप्रदानाद्धि क्षिप्रंनाशंप्रयातुमे १६ ऊर्ध्वपादेत्विमेकार्य्ये ताम्रस्यरजतस्यच। जन्म
जन्मसहस्रेषु कृतंपापंकुबुद्धिना १७ सुवर्णपात्रदानात्तु नाशयाशुजनार्द्दन!। हेममुक्ताद्रि
द्रुमञ्च दाड़िमंबीजपूरकम् १८ प्रशस्तपत्रेश्रवणे खुरेश्वृङ्गाटकानिच। एवंकृत्वायथाशक्तेन
सर्वशाकफलानिच १९ तत्प्रतिग्रहविद्विद्वानाहिताग्निर्द्विजोत्तमः। स्नातोवस्त्रयुगच्छन्नः
स्वशक्त्याचाप्यलङ्कृतः २० प्रतिग्रहश्चतस्योक्तः पुच्छदेशेमहीपते!। ततएवंसमीपे
नु मन्त्रमेनमुदीरयेत् २१ कृष्णाःकृष्णगलोदेवः कृष्णाजिनधरस्तथा। तद्दानाद्धूतपाप
स्य प्रीयतांवृषभध्वजः २२ अनेनविधिनादत्त्वा यथावत्कृष्णमार्गकम्। नस्पृश्योसौहि
जोराजन्! चितियूपसमोहिसः २३ सदानेश्राद्धकालेच दूरतःपरिवर्जयेत्। स्वगृहात्प्रे
ष्यतंविप्रं मङ्गलस्नानमाचरेत् २४ पूर्णकुम्भेनराजेन्द्र! शाखयाचम्पकस्यतु। कृत्वाचार्य

अर्थ है कि जो कुछ मैंने लोभसे पापकिये हैं वह मेरे संपूर्ण पाप लोहपात्रके दान करने से शीघ्रनष्ट होजांय १२ ऐसे कहकर तिलसे भरे लोहेके पात्रको बायें पैरके पास रखदेवे, फिर यहकहे कि मैंने जो कानोंसे सुनकर पापकिये हैं वह संपूर्ण इसकांसीके पात्र दानकरने से नष्टहोजांय ऐसे कहशहद से भरे पात्रको दक्षिण चरणके पास रखदे १३। १४ पराये अपवादसे चुगली से तथा मांसभक्षण करने से जो मैंने पाप किये हैं वह सब तांबेके पात्र दान करने से नष्ट होजांय १५ कन्या और गौके कार्य्यमें मिथ्या बोलने से और पराई स्त्रियोंकी इच्छा करने से जो मैंने पाप किये हैं वह सब चांदी के पात्र दान करने से नष्ट होजांय १६ इस प्रकारसे इन तांबे और चांदीके दोनों पात्रोंको मृगके ऊपरके दोनों पैरोंकी जगह स्थापित करने चाहिये और कान तथा खुरोंके स्थानमें सुन्दर पत्तों में सुवर्ण मोती मूंगा अनार बिजौरा और सिंघाड़ा इत्यादि वस्तु स्थापितकरके संपूर्ण शाक और फलों को स्थापित करे फिर यह वचन कहे कि हे जनार्दन मैंने कुबुद्धि से हज़ारों जन्मों में जो पाप किये हैं वह सब इस सुवर्ण के दान से नष्ट होजांय १७। १९ ऐसे उस कृष्णाजिनके प्रतिग्रह लेनेवाले विद्वान् अग्निहोत्री द्विजोत्तमको अपनी शक्ति के अनुसार भूषित करना चाहिये और दो श्वेतवस्त्रभी उसको पहराने चाहिये हे राजन् इसकाप्रतिग्रहदान पूछके समीप में लेनाचाहिये और दानदेने के समय इस वचन का उच्चारण करे २०। २१ कि काले मृगचर्म के धारणक रनेवाले नीलग्रीवा से शोभित श्रीमहादेव हैं इस हेतुसे इस कालेमृगचर्म का दान करने से शिव जी महाराज प्रसन्नहों २२ इस विधि और यथार्थ रीति से उस कृष्णाजिन का दान करके फिर उस प्रतिग्रहलेनेवाले ब्राह्मण को स्पर्शनकरे क्योंकि वह ब्राह्मण चिताके काष्ठके समान अशुद्धहो जाताहै २३ उस ब्राह्मणको अन्यदानदेने में और श्राद्धकालमें दूरहीसे निषेधकरदे उस ब्राह्मणको अपने घरसे बिदाकरके मंगलस्नानकरे अर्थात् चंपेकीडालीसमेत जोकुंभकलशहै उससे स्नानकरना चाहिये प्रथम आचार्य्यको बुलाके उस कलशको मस्तकपरस्थापितकर आप्यायस्व० समुद्रज्येष्ठा०

इचकलशं मन्त्रेणानेनमूर्द्धनि २५ आप्यायस्वसमुद्रज्येष्ठा ऋचासंस्नाप्यषोडश। अह तेवाससीवीत आचान्तःशुचितामियात् २६ तद्वासःकुम्भसहितं नीत्वाक्षेप्यंचतुष्पथे। कृतेनानेनयातुष्टिर्नसाशक्यासुरैरपि २७ वक्तुंहिनृपतिश्रेष्ठ! तथाप्युद्देशतःशृणु। सम ग्रभूमिदानस्य फलंप्राप्नोत्यसंशयम् २८ सर्वाल्लोकांश्चजयति कामचारीविहङ्गवत्। आभूतसंप्लवंयावत्स्वर्गमाप्नोत्यसंशयम् २९ नपितापुत्रमरणं वियोगंभार्ययासह। धनदे शपरित्यागं नचैवेहाप्नुयात्क्वचित् ३० कृष्णेप्सितंकृष्णमृगस्यचर्म दत्वाद्विजेन्द्रायसमा हितात्मा। यथोक्तमेतन्मरणंनशोचेत् प्राप्नोत्यभीष्टंमनसःफलंतत् ३१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे पंचाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०५॥

(मनुरुवाच) भगवंच्छ्रोतुमिच्छामि वृषभस्यचलक्षणम्। वृषोत्सर्गविधिश्चैव तथा पुण्यफलंमहत् १ (मत्स्य उवाच) धेनुमादौपरीक्षेत सुशीलाञ्चगुणान्विताम्। अव्य ङ्गामपरिक्लिष्टां जीववत्सामरोगिणीम् २ स्निग्धवर्णांस्निग्धखुरां स्निग्धशृङ्गींतथैवच। मनोहराकृतिंसौम्यां सुप्रमाणामनुद्धताम् ३ आवर्तैर्दक्षिणावर्तैर्युक्तांदक्षिणतस्तथा। वा मावर्तैर्वामतश्च विस्तीर्णजघनांतथा ४ मृदुसंहतताम्रोष्ठीं रक्तग्रीवासुशोभिताम्। अ श्यामदीर्घोरस्फुटिता रक्तजिह्वातथाचया ५ विस्रावामलनेत्राच शफैरविरलैर्दृढैः। वैदूर्यम धुवर्णैश्च जलबुद्बुदसन्निभैः ६ रक्तस्निग्धैश्चनयनैस्तथारक्तकनीनिकैः। सप्तचतुर्दश दन्ताच तथावाश्यामतालुका ७ षडुन्नतासुपार्श्वोरुः पृथुपञ्चसमायता। अष्टायताशिरो

इत्यादि सोलह ऋचाओंसे स्नानकर अहतेवाससीवीत इसमंत्रसे आचमनकरके शुद्धहोताहै २५। २६ फिर वस्त्रसमेत उस कलशको उठाके चौराहेमें पटक आवे इसरीतिसे उस दानके करने का जोफलहोताहै उसको देवताभी पूरानहीं कहसके उसको संक्षेपतासे कहताहूं संपूर्ण पृथ्वी के दान करनेका पुण्य प्राप्त होताहै २७।२८ सबलोकोंको जीतताहै पक्षीके समान सर्वत्र इच्छापूर्वक विचर-ताहै और निश्चय प्रलय कालपर्य्यन्त स्वर्गलोकमें स्थितरहताहै २९ इस दानकरने वालेके पिता पुत्रादिकामरणनहींहोता स्त्रीसे वियोगनहीं होता और इसी देशमें कभीधन देश आदिका नाशभी नहींहोताहै ३० इस प्रकारसे काले मृगचर्मके दानका करने वालापुरुष मनोवाञ्छितफलको प्राप्त होताहै और मरनेका कुछशोचनहीं करताहै ३१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०५॥

मनुजी कहतेहैं हे भगवन् मैं वृषभकेभी लक्षणोंको सुननेकी इच्छा करताहूं और बड़े फलवाली वृषोत्सर्ग की विधिकोभी श्रवण किया चाहताहूं १ मत्स्यजीबोले हे राजा प्रथमतो सुन्दर स्वभाव गुणयुक्त व्यंग और क्लेशसे रहित अमृतवत्सा नीरोग शुभवर्ण खुर सींग मनोहर आकारवाली श्रेष्ठ प्रमाणभरी वाम दक्षिण उत्तम चिह्नवाली बृहत्जंघा रक्त ओष्ठ ग्रीवा और जिह्वावाली सुनेत्र दृढ खुरोंसे शोभित वैदूर्य कान्ति सहित रक्तकोये इक्कीस दांतोंसे युक्त श्याम तालुवाली उन्नत गंभीर और

ग्रीवा याराजन्! सासुलक्षणा ८ (मनुरुवाच) षडुन्नताःकेभगवन्! केचपञ्चसमायताः। आयताश्चतथैवाष्टौ धेनूनाङ्केशुभावहाः ९ (मत्स्य उवाच) उरःपृष्ठंशिरःकुक्षी श्रोणीचवसुधाधिप!। षडुन्नतानिधेनूनां पूजयन्तिविचक्षणाः १० कर्णौनेत्रेललाटञ्च पञ्चभास्करनन्दन!। समायतानिशस्यन्ते पुच्छंसास्नाचसक्थिनी ११ चत्वारउचस्तना राजन्! ज्ञेयाह्यष्टौमनीषिभिः। शिरोग्रीवायताश्चैते भूमिपाल! दशस्मृताः १२ तस्याः सुतंपरीक्षेत वृषभंलक्षणान्वितम्। उन्नतस्कन्धककुदं ऋजुलाङ्गूलकम्बलम् १३ महाकटितटस्कन्धं वैदूर्यमणिलोचनम्। प्रवालगर्भशृङ्गाग्रं सुदीर्घपृथुवालधिम् १४ नवाष्टादशसंख्यैर्वा तीक्ष्णाग्रैर्दशनैःशुभैः। मल्लिकाक्षश्चमोक्तव्यो गृहेऽपिधनधान्यदः १५ वर्णतस्ताम्रकपिलो ब्राह्मणस्यप्रशस्यते। श्वेतोरक्तश्चकृष्णश्च गौरःपाटलएवच १६ शृंगिणस्ताम्रपृष्ठश्च शवलःपञ्चवालके। पृथुकर्णोमहास्कन्धः श्लक्ष्णरोमाचयोभवेत्। रक्ताक्षःकपिलोयश्च रक्तशृङ्गतलोभवेत् १७ श्वेतोदरःकृष्णपार्श्वो ब्राह्मणस्यतुशस्यते। स्निग्धारक्तेनवर्णेन क्षत्रियस्यप्रशस्यते १८ काचनाभेनवैश्यस्य कृष्णेनाप्यन्त्यजन्मनः। यस्यप्रागायतेशृङ्गे भ्रूमुखाभिमुखेसदा १९ सर्वेषामेववर्णानां सर्वःसर्वार्थसाधकः। मार्जारपादःकपिलो धन्यःकपिलपिङ्गलः २० श्वेतोमार्जारपादस्तु धन्योमणिनिभेक्षणः। करटःपिङ्गलश्चैव श्वेतपादस्तथैवच २१ सर्वपादसितोयश्च द्विपादःश्वेतएवच। कपि

विस्तृत शिर ग्रीवावाली छः स्थानोंमें ऊंची पांच स्थानोंमें समान आठस्थानोंमें विस्तृत ऐसी गौ होनीचाहिये ९। ८ मनुजीनेकहा छः स्थानमें ऊंची पांच स्थानमें समान आठस्थानमें विस्तृत यह सब गौओंके अंगकहाँहोतेहैं ९ मत्स्यजीने कहा छाती १ पीठ २ शिर ३ दोनोंकोख ४। ५ और चौहड़ी यहछः स्थान गौओंके अंगमें ऊंचेकहेहैं १० कान २ नेत्र २ मस्तक १ इन पांच स्थानोंमें समान विस्तारवाली श्रेष्ठ कहीहै और पूंछ सास्ना अर्थात् गलेकी लटकतीहुई खाल २ चारथन ४ दोसांथल यहआठ स्थान विस्तारयुक्त श्रेष्ठ होतेहैं और शिर ग्रीवाभी विस्तृत अच्छेहैं ११। १२ ऐसी उत्तम गौके पुत्रको परीक्षित करे ऊंचे कन्धेवाला, कोमल सीधी पूंछवाला, कोमल गलगंडवाला भारीकटि वैदूर्य्य मणिके समान नेत्र तीक्ष्ण सींग उत्तम दीर्घ पूंछके अग्रभागके विस्तारयुक्त नौ वा अठारह पैने दाँतोंवाला ऐसा महा उत्तम बैल छोड़ना चाहिये ऐसा उत्तम वृषभ छोड़ाजाय तोघर में धन धान्यकी वृद्धि करता है १३। १५ लाल अथवा कपिल वर्णवाला बैल ब्राह्मणको छोड़ना चाहिये और श्वेत काला लाल पीला अच्छे सींग लालपीठ बड़े कान बड़े कन्धे सूक्ष्म रोमयुक्त रक्तनेत्र लाल वा कपिल वर्ण सींगों के स्थानवाला श्वेतउदर और कालीपांसू ऐसावृषभ ब्राह्मणको छोड़ना श्रेष्ठकहा है और रक्तवर्णवाला बैल क्षत्रियको छोड़ना चाहिये १६। १८ और सुवर्ण के समान वर्णवाला बैल वैश्यको छोड़ना चाहिये, शूद्रको काले वर्ण का छोड़ना चाहिये जिस बैलके सींग आगे की ओर लंबेहोंय भृकुटी मुखकेही सन्मुखहोंय ऐसावृषभ सबवर्णों को छोड़ना योग्य कहाहै बिल्ली के पैरों के समान पैरवाला कपिल पिंगल वृषभ सबको छोड़ना

ञ्जलनिभीधन्यस्तथातित्तिरिसन्निभः २२ आकर्णमूलश्वेतन्तु मुखंयस्यप्रकाशते। नन्दीमुखःसविज्ञेयो रक्तवर्णोविशेषतः २३ श्वेतन्तुजठरंयस्य भवेत्पृष्ठंचगोपतेः। वृषभः ससमुद्राख्यः सततंकुलवर्धनः २४ मल्लिकापुष्पचित्रश्च धन्योभवतिपुङ्गवः। कमलैर्मण्डलैश्चापि चित्रोभवतिभाग्यदः २५ अतसीपुष्पवर्णश्च तथाधन्यतरःस्मृतः। एतेधन्यास्तथाधन्यान् कीर्तयिष्यामितेनृप! २६ कृष्णताल्वोष्ठवदना रूक्षशृङ्गशफाश्चये। अव्यक्तवर्णाह्रस्वाश्च व्याघ्रसिंहनिभाश्चये २७ ध्वाङ्क्षगृध्रसवर्णाश्च तथामूषकसन्निभाः। कुण्ठाःकाणास्तथाखञ्जाः केकराक्षास्तथैवच २८ विषमश्वेतपादाश्च उद्भ्रान्तनयनास्तथा। नैतेवृषाःप्रमोक्तव्या नचधार्यास्तथागृहे २९ मोक्तव्यानाञ्चधार्याणां तेषां वक्ष्यामिलक्षणम्। स्वस्तिकाकारशृङ्गाश्च तथामेघौघनिस्वनाः ३० महाप्रमाणाश्चतथा मत्तमातङ्गगामिनः। महोरस्कामहोच्छ्राया महाबलपराक्रमाः ३१ शिरःकर्णौललाटञ्च वालधिश्चरणास्तथा। नेत्रेपार्श्वेचकृष्णानि शस्यन्तेचन्द्रभासिनाम् ३२ श्वेतान्येतानि शस्यन्तेकृष्णस्यतुविशेषतः। भूमीकर्षतिलाङ्गूलं प्रलम्बस्थूलवालधिः ३३ पुरस्तादुच्चतोनीलो वृषभश्चप्रशस्यते। शक्तिध्वजपताकाढ्या येषांराजीविराजते ३४ अनड्वाहस्तु तेधन्याश्चित्रसिद्धिजयावहाः। प्रदक्षिणंनिवर्तन्ते स्वयंयेविनिवर्तिताः ३५ समुन्नतशि

चाहिये और श्वेत बिलावकेसे पैरोंवाला मणिके समान स्वच्छ नेत्रोंवाला कसूमा वर्ण पिंगल सफेद पैरोंवाला चारोंश्वेत अथवा दोश्वेत पैरोंवाला कपोत वर्ण तीतर वर्ण ऐसा वृषभभी उत्तम है १९। २२ और कानोंतक जिसका मुख श्वेतहोय ऐसे वृषभको नन्दीमुख कहतेहैं और जो इसी प्रकारका लालमुखवालाहो वहभी नन्दीमुख कहाताहै २३ जिसका सफेद उदर और पीठहो वह समुद्रनाम वृषभकहाताहै ऐसाबैल संपूर्ण कुलकी वृद्धिकरनेवाला होताहै और चमेलीके पुष्पके समान विचित्र कमलके तुल्य विचित्र मंडलोंवाला वृषभ उत्तमहोताहै २४। २५ अतसीके पुष्प समान नीलवर्ण बैल बहुत अच्छाहोताहै यह सब वृषभ अतिश्रेष्ठहैं अब इनके सिवाय वर्जित वृषभोंकोसुनो कालातालु ओष्ठमुख रूखेसींग और खुर अप्रकटवर्ण छोटेभेड़िये और सिंहके समान मुख काक गिद्ध और मूसेके समान आकार खोंड़े कॉणे लंगड़े भेंगे विषमश्वेत पैरोंवाले भ्रमणीक नेत्र वाले ऐसे वृषभ नहीं छोड़ने चाहिये और घरमेंभी नहीं रखनेचाहिये २६। २९ और जो छोड़ने के और घरमें रखनेके योग्यहैं उनकेभी लक्षणकहताहूं स्वस्तिकआकार सींगोंसे युक्त मेघके समान गर्जनेवाले महाऊंचे प्रमाण वाले मदोन्मत्त हाथीके समान चलनेवाले बड़ी छातीके ऊंचे और महाबल पराक्रमवाले बैल अच्छेहोतेहैं ३०। ३१ और शिर, कान, मस्तक, पूंछके अग्रभागके वाल पैर नेत्र पांसू यह सब वस्तु श्वेत बैलोंके काली अच्छी वर्णनकीहैं ३२ और काले बैलके यह सब वस्तु सफेद अच्छी कहीहैं और लंबे पूंछके अग्रभागके वाल जिस बैलके पृथ्वीमें लटकतेहों और आगे महाप्रकाशित नीलाहोय वह वृषभ उत्तमहै जिन बैलों के शक्ति ध्वजा पताका आदि चिह्नों की रेखासी होवे वह बैल धन्यहैं विचित्र सिद्धियोंके दाताहैं और आपही बिना प्रेरेहुए दक्षिण वर्त्तके समान

रोग्रीवा धन्यास्तेयूथवर्द्धनाः। रक्तशृङ्गाग्रनयनः श्वेतवर्णोभवेद्यदि ३६ शफैःप्रवालस दृशैर्नास्तिधन्यतरस्ततः। एतेधार्य्याःप्रयत्नेन मोक्तव्यायदिवावृषाः ३७ धारिताश्चत थामुक्ता धनधान्यप्रवर्द्धनाः। चरणानिमुखंपुच्छं यस्यश्वेतानिगोपतेः ३८ लाक्षारसस वर्णश्च तंनीलमितिनिर्दिशेत्। वृषएषसमोक्तव्यो नसन्धार्योगृहेभवेत् ३९ तदर्थमेषा चरति लोकेगाथापुरातनी। एष्टव्यावहवःपुत्रा यद्येकोऽपिगयांव्रजेत् ४० गौरींवाप्युद्व हेत्कन्यां नीलंवावृषमुत्सृजेत् ४१ एवंवृषंलक्षणसंप्रयुक्तं गृहोद्भवंक्रीतमथापिराजन्। मुक्त्वानशोचेन्मरणंमहात्मा मोक्षंगतश्चाहमतोऽभिधास्ये ४२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे षडधिकद्विशततमोऽध्यायः २०६॥

(सूत उवाच) ततःसराजादेवेशं पप्रच्छामितविक्रमः। पतिव्रतानांमाहात्म्यं तत्सं बन्धांकथामपि १ (मनुरुवाच) पतिव्रतानांकाश्रेष्ठा कयामृत्युःपराजितः। नामसङ्की र्तनंकस्याः कीर्तनीयंसदानरैः। सर्वपापक्षयकरमिदानींकथयस्वमे २ (मत्स्य उवाच) वैलोम्यंधर्मराजोऽपि नाचरत्यथयोषिताम्। पतिव्रतानांधर्मज्ञ! पूज्यास्तस्यापिताःसदा ३ अत्रतेवर्णयिष्यामि कथांपापप्रणाशिनीम्। यथाविमोक्षितोभर्त्ता मृत्युपाशात्स्त्रिया ४ मद्रेषुशाकलोराजा वभूवाश्वपतिःपुरा। अपुत्रस्तप्यमानोऽसौ पुत्रार्थीसर्वकामदाम् ५

घूमजाय ऊँचे शिर और ऊँचीग्रीवा वाले होंय वह बैल यज्ञकर्मके बढ़ानेवाले होते हैं जिनके सींगके अग्रभाग और नेत्रलालहोंय श्वेत शरीर मूंगेसे खुरहोंय वह बैल सबसे उत्तम कहाहै यह सब बैल धर्म कार्योंमें श्रेष्ठ कहे हैं इससे विचार करके छोड़ना चाहिये ऐसे बैलोंके घरमें भी रखने से धन धान्यकी वृद्धि होती है और जिस बैलके पैर मुख और पूंछ यह सब सफेदहों लाखके रसके समान वर्णहो ऐसे बैलको नीलवृषभ कहते हैं यह नीलवृषभ छोड़देनाही चाहिये घरमें नहीं रखनाचाहिये क्योंकि इस नीलवृषभकी ऐसी गाथाप्रसिद्ध चलीआती है कि बहुतसे पुत्रोंमें जो एकभी पुत्रगयाजी कोजाताहै और गौरीसंज्ञक कन्याको विवाहता है अथवा नीलवृषभको छोड़ताहै वह धन्य है ३३।४१ हेराजा घरमें उत्पन्नहुए अथवा खरीदे हुए बैलोंके इसप्रकारके लक्षण कहे हैं इन उक्त लक्षणोंवाले बैलका छोड़नेवाला महात्मा पुरुष मृत्युका कभी शोचनकरे वहअवश्य मोक्षको प्राप्तहोजाताहै ४२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषडधिकद्विशततमोऽध्यायः २०६॥

सूतजी बोले कि राजाको पतिव्रता स्त्रियोंका देश पूछना चाहिये और उन स्त्रियोंकी कथाभी सुनना चाहिये १ मनुजी पूछते हैं कि पतिव्रता स्त्रियोंमें कौनसी स्त्री उत्तम है किस स्त्रीने मृत्युको वशमें किया है कौनसी स्त्रीका मनुष्योंको सदैव नाम कीर्त्तन करना चाहिये ऐसे सर्व पापोंके नाश करनेवाले वृत्तान्तको आप सुनाइये २ मत्स्यजी बोले कि धर्मराज भी अपनी पतिव्रता स्त्रियोंके विपरीतकोई कामनहीं करते क्योंकि धर्मराजकोभी पतिव्रता स्त्रीपूजने के योग्य हैं ३ अब मैंभी तेरे आगे वह पापोंकी नाशकरने वाली कथा कहताहूं जैसे किस्त्रीने मृत्युके पाशसे अपने भर्त्ताको छुटा याहै ४ मद्रदेशमें एक शाकलनाम राजाहोताभया वह राजपुत्र की इच्छाकरके ब्राह्मणों की आज्ञा

आराधयतिसावित्रीं लक्षितोऽसौद्विजोत्तमैः। सिद्धार्थकैर्हूयमानां सावित्रींप्रत्यहंद्विजैः ६
शतसंख्यैश्चतुर्थ्यान्तु दशमासागतेदिने। कालेतुदर्शयामास स्वान्तनुंमनुजेश्वरम् ७
(सावित्र्युवाच) राजन्! भक्तोऽसिमेनित्यं दास्यामित्वांसुतांसदा। तांदत्तांमत्प्रसादेन
पुत्रींप्राप्स्यसिशोभनाम् ८ एतावदुक्त्वासाराज्ञः प्रणतस्यैवपार्थिव!। जगामादर्शनंदेवी
यथावैनृप! चञ्चला ९ मालतीनामतस्यासीद्राज्ञःपत्नीपतिव्रता। सुषुवेतनयांकाले सा
वित्रीमिवरूपतः १० सावित्र्याहुतयादत्ता तद्रूपसदृशीतथा। सावित्रीचभवत्वेषा जगा
दनृपतिर्द्विजान् ११ कालेनयौवनंप्राप्ता ददौसत्यवतेपिता। नारदस्तुततःप्राह राजानं
दीप्ततेजसम् १२ संवत्सरेणक्षीणायुर्भविष्यतिनृपात्मजः। सकृत्कन्याःप्रदीयन्ते चिन्त
यित्वानराधिपः १३ तथापिप्रददौकन्यांद्युमत्सेनात्मजेशुभे। सावित्र्यपिचभर्तारमासा
द्यनृपमन्दिरे १४ नारदस्यतुवाक्येन दूयमानेनचेतसा। शुश्रूषांपरमांचक्रे भर्तृश्वशुर
योर्वने १५ राज्याद्भ्रष्टःसभार्यस्तु नष्टचक्षुर्नराधिपः। नतुतोषसमासाद्य राजपुत्रीतथा
स्नुषाम् १६ चतुर्थेऽहनिमर्त्तव्यं तथासत्यवताद्विजाः!। श्वशुरेणाभ्यनुज्ञाता तदाराज
सुतापिसा १७ चक्रेत्रिरात्रंधर्मज्ञा प्राप्तेतस्मिंस्तदादिने। चारुपुष्पफलाहारः सत्यवांस्तु
ययौवनम् १८ श्वशुरेणाभ्यनुज्ञाता याचनाभङ्गभीरुणा। सावित्र्यपिजगामार्ता सहभ

लेकर सावित्री देवीको पूजनेलगा प्रतिचतुर्थीको दशमहीनों तक ब्राह्मणोंके द्वारा अग्निमें सरसोंसे हवन करवाताभया तब प्रसन्नहुई सावित्री राजाको अपनादर्शन देतीभयी ६। ७ और यह वचन बोली कि हे राजा तुममेरे भक्तहो मैं तुमको पुत्रीदूंगी मेरीदीहुई पुत्री तुमको प्राप्तहोगी यह कहकर वह सावित्री देवी अन्तर्द्धानहोगई इसकेपीछे मालती नाम उस राजाकी पतिव्रतास्त्री सावित्रीकेही समान उत्तम रूपवाली कन्याको जनतीभई तब वहराजा ब्राह्मणोंसे कहनेलगाकि सावित्रीके हवन करनेसे सावित्री कीदीहुई यहकन्याप्राप्तहुई है इसहेतुसे इसकानामभी सावित्री होनाचाहिये८।११ तदनन्तर वह कन्यातरुणहुई तब उसकी सगाई वाग्दानके द्वारा राजासत्यवान् से करदेताभया उस समय नारदमुनिने आकर उसकन्याके पितासे कहाकि हे राजा जिसकोतैंने कन्या देनाविचारा है वहराजासत्यवान् तो एकही वर्षमें मरजायगा उसकी आयुक्षीण होगईहै यह सुनकर राजाने यह विचारकियाकि कन्यातो वचन करके मैं एक केही निमित्त देचुकाहूं अबदूसरी बातनहीं करूंगा इस विचारको दृढ़करके उसी द्युमत्सेनके पुत्र सत्यवान् कोही अपनी पुत्री देदेता भया तब वह सावित्री भी उसी पतिको प्राप्त तो होगईपरन्तु नारदके वचन से महादुःखित होकर चिन्ता करनेलगी और अपने स्वामी और सासुसुरकी चित्तसे सेवाकरनेलगी परन्तु अपने राज्यसे भ्रष्टहुआ नेत्रोंसेअन्धा वह उसका सुसरा राजाकी पुत्री सावित्रीको प्राप्तहोकर विशेषप्रसन्न नहींहुआ १२।१६ इसके अनन्तर उसके भर्त्तासत्यवान्के मरनेको, केवलचार दिनबाकी रहगये तब अपने सुसरकी आज्ञालेकर वह सावित्री तीन रात्रिका व्रतकरतीभई फिर जबवह उसका चौथादिवस प्राप्तहुआ तब सत्यवान् राजा सुन्दर पुष्प और फलाहार ग्रहण करने के लिये वनमें जाताभया तब वह सावित्री भी

श्रीमहद्भूलम् १६ चेतसाहूयमानेन गूहमानामहद्भयम्। वनेपप्रच्छभर्तारं द्रुमांश्चाप्यद्द शांस्तथा २० आश्वासयामाससराजपुत्रीं कान्तांवनेपद्मविशालनेत्राम्। सन्दर्शनेनाथ द्रुमद्विजानान्तथामृगाणांविपिनेनृवीरः २१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे सप्ताधिकद्विशततमोऽध्यायः २०७॥

(सत्यवानुवाच) वनेऽस्मिन्शाद्वलाकीर्णे सहकारंमनोहरन्। नेत्रघ्राणसुखंपश्य वसन्तंरतिवर्द्धनम् १ वनेऽप्यशोकंदृष्टनं रागवन्तंसुपुष्पितम्। वसन्तोहसतीवायं भामे वायतलोचने २ दक्षिणेदक्षिणेनैतां पश्यरम्यांवनस्थलीम्। पुष्पितैःकिंशुकैर्युक्तां ज्वलितानलसप्रभैः ३ सुगन्धिकुसुमामोदो वनराजिविनिर्गतः। करोतिवायुर्दाक्षिण्यमावयोः क्लमनाशनम् ४ पश्चिमेनविशालाक्षि! कर्णिकारैःसुपुष्पितैः। काञ्चनेनविभात्येषा वन राजीमनोरमा ५ अतिमुक्तलताजाल रुद्धमार्गावनस्थली। रम्यासाचारुसर्वाङ्गी कुसुमोत्करभूषणा ६ मधुमत्तालिझङ्कार व्याजेनवरवर्णिनी। चापाकृष्टिंकरोतीव कामःपान्थेजिघांसया ७ फलास्वादलसद्वक्त्र पुंस्कोकिलविनादिता। विभातिचारुतिलका त्वमिवेषावनस्थली ८ कोकिलश्चूतशिखरे मञ्जरीरेणुपिञ्जरः। गदितैर्व्यक्तनांयाति कुलीनश्चेष्टितैरिव ६ पुष्परेणुविलिप्ताङ्गीं प्रियामनुसरिद्वने। कुसुमंकुसुमंयाति कूजन्कामीशिलीमुखः १० मञ्जरीसहकारस्य कान्तावक्त्राग्रपीडिताम्। स्वदतेबहुपुष्पेऽपि पुं

अपने सुसरकी आज्ञालेकर पतिके साथही उस महावनमें जातीभई वहां वनमें दुःखितहुए चित्त करके पतिकी मृत्युके महान् भयकोरोकती हुई वह सावित्री अपने पतिसे वृक्षोंको पूछती भई तब वह उसकापति वनमें दुःखितहुई उस अपनी स्त्रीको वनके श्रेष्ठ वृक्षपक्षी और मृगादिकोंको दिखाकर धैर्य्य करवाताभया १७। २१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्ताधिकद्विशततमोऽध्यायः २०७॥

सत्यवान् बोला—हे प्रिये इस हरितघाससे शोभितहुए वनमें नेत्र और नासिका के आनन्ददेने वाले बातकरतेहुए कामदेवको देखो १ इस वनमें फूलेहुए सुन्दर अशोकवृक्षको देखो हेसुन्दरनेत्रों वाली प्रिये यहां वसन्तऋतु ऐसे खिलरहाहै मानों मुझको देखकरही हँसरहाहै २ इसवनके दक्षिणकी ओर जलतीहुई अग्निके समान प्रकाशित केशूके पुष्पोंसे शोभित वनस्थलीको देखो ३ हे सुन्दरनेत्रवाली इसवनमें सुगन्धित पुष्पोंसे गंधयुक्त हमारेदुःखकी दूरकरनेवाली शीतल और उत्तमवायु चलतीहै ४ और पश्चिमकी ओर सुवर्णके समान कान्तिवाले अमलतास प्रकाशित होरहेहैं और इस वनस्थली के मार्ग बहुतसे खिलेहुए पुष्पोंसे रुकगयेहैं यह सब वनस्थली उत्तम पुष्परूपी आभूषणोंसे शोभितहोरहीहै ५।६ देखो मदोन्मत्त भ्रमरोंका भंकार शब्दहोरहाहै ऐसेभवंरमें अपने बाणोंको धनुषमें चढ़ायेहुए कामदेव हमारे मारनेकेहीसमान होरहाहै और फलोंकास्वाद लेतेहुए पुंस्कोकिलाओं के शब्दों से यहवन शब्दायमान होरहाहै यह पुंस्कोकिलाओं के शब्द ऐसे अच्छे मनोहर ज्ञातहोतेहैं जैसे कि अच्छे कुलीनपुरुष बोलतहुए उत्तम दीखतेहैं और यह कामीभौंर पुष्पों

स्कोकिलयुवावने ११ काकःप्रसूतांवृक्षाग्रे स्वामेकाग्रेणचञ्चुना ॥ काकींसम्भावयत्येष पक्षाच्छादितपुत्रिकाम् १२ शुभाङ्गनिम्नमासाद्य दयितासहितोयुवा । नाहारमपिचोद ते कामाक्रान्तःकपिञ्जलः १३ कलविङ्कस्तुरमयन् प्रियोत्सङ्गंसमास्थितः । मुहुर्मुहुर्विशा लाक्षि! उत्कण्ठयतिकामिनः १४ वृक्षशाखांसमारूढः शुकोऽयंसहभार्यया । करेणालम्ब यन्शाखां करोतिसफलंशिरः १५ वनेऽत्रपिशितास्वाद तृप्तोनिद्रामुपागतः । शेतेसिंह युवाकान्ता चरणान्तरगामिनी १६ व्याघ्रयोर्मिथुनंपश्य शैलकन्दरसंस्थितम् । ययोर्ने त्रप्रभोलोके गुहाभिन्नेवलक्ष्यते १७ अयंद्वीपीप्रियांलेढि जिह्वाग्रेणपुनःपुनः । प्रीतिमा प्नोतिचतया लिह्यमानःस्वकान्तया १८ उत्सङ्गकृतमूर्धानं निद्रापहृतचेतसम् । जन्तूद्धर णतःकान्तंसुखयत्येववानरी १९ भूमौनिपतितांरामां मार्जारोदर्शितोदरीम् । नखैर्दन्तै र्दशत्येष नचपीडयतेतथा २० शशकःशशकीचोभे संसुप्तेपीडितेइमे । संलीनगात्रचर णे कर्णैर्व्यक्तिमुपागते २१ स्नात्वासरसिपद्माढ्ये नागस्तुमदनप्रियः । सम्भावयतितन्व ङ्गीं मृणालकवलैःप्रियाम् २२ कान्तप्रोथसमुत्थानैः कान्तमार्गानुगामिनी । करोतिकव लंमुस्तैर्वराहीपोतकानुगा २३ दृढाङ्गसन्धिर्माहिषः कर्दमाक्ततनुर्वने । अनुव्रजतिधाव न्तीं प्रियवृद्धचतुष्करः २४ पश्यचार्वङ्गि!सारङ्गं त्वंकटाक्षविभावनैः । सभार्यंमांहिपश्य

की रजसे लिप्तहुई अपनीप्रिया मोरनियोंके पीछे २ कूजतेफिरते हैं ७।१० यह तरुण पुंस्कोकिला अति सुगन्धित आमकी मंजरियोंपर बैठेहुए स्वादलेरहेहैं ११ देखो यहकाक वृक्षकीडालीपर बैठी हुई अपनेबच्चोंको पंखोंसे दबायेहुए नवीन बच्चादेनेवाली अपनी प्रिया काकनीको चोंचमें अन्नला लाकर पालरहाहै १२ और अपनी कपोतिनी समेत यह कपोत शुभभंगके आलिंगनहोनेसे काम- देवसे आच्छादितहोकर अपने आहारकोभी ग्रहण नहींकरताहै १३ देखो यहहंस अपनीप्रिया हंसी के परोंमें बैठाहुआ कामदेवसे आसक्तहोकर वारंवार प्यारकररहाहै १४ यहतोता वृक्षकी डालपर अपनी स्त्रीसमेत बैठाहुआ पैरसे डालीको नवाकर अपने शिरको सफलकरता है १५ यह सिंहभी इसवनमें अच्छेप्रकार मांसोंको भक्षणकरके सोरहाहै और यह उसकी स्त्रीभी इसकेपैरोंमें सोतीहै १६ इसगुफामें अपनीस्त्रीसमेत इनभेड़ियेको देख इन दोनोंके नेत्र गुहासे बाहरकी ओर कैसे प्रकाशित होरहेहैं १७ यह गैंडा जीभसे अपनी स्त्रीको वारंवार चाटरहाहै और उसकी देहके स्वादुसे कैसा प्रसन्नहोरहाहै १८ देखो यहवानरी गोदीमें शिरधरेहुये बेधड़क निद्रामें सोतेहुए अपनेपति वानरको कैसे सुखपूर्वक सुलारहीहै १९ यहबिलाव पृथ्वीमें पड़ीहुई अपनीप्रियाको देखकर नख और दांतों से कैसे काटरहाहै परन्तु अधिकपीड़ा नहींदेताहै २० नदीके तटपर यहसूंस और सूंसी दोनोंपीड़ि- तहोके शरीरसे शरीरलगायेहुए सोरहेहैं २१ यह कामदेवसे पीड़ितहुआ हाथी सरोवरमें स्नानकरके अपनीप्रिया हस्तिनीको कमलकी नालियोंसे लड़ाताहै २२ देखो यह शूकरी अपनेपतिके खोदेहुए स्थानोंमें पतिके पीछे२ चलतीहुई नागरमोथेके झुंडको ग्रासकरतीहै २३ कठोरअंगवाला कीचसे भराहुआ यह भैंसा भाजतीहुई भैंसके पीछे चौखड़ीबांधकर बड़ेप्यारसेभाजताहै २४ हेप्रिये इसकटा

न्तं कौतूहलसमन्वितम् २५ पश्यपश्चिमपादेन रोहीकण्डूयतेमुखम्। स्नेहार्द्रभावात्क
र्षन्ती भर्त्तारंशृंगकोटिना २६ द्रागिमाञ्चमरींपश्य सितबालामगच्छतीम्।अन्वास्तेच
मरःकामी माञ्चपश्यतिगर्वितः २७ आतपेगवयंपश्य प्रकृष्टंभार्ययासह। रोमन्थनं
प्रकुर्वाणं काकङ्कुदिवारयन् २८ पश्येमंभार्ययासार्द्धं न्यस्ताग्रचरणद्वयम्। विपुलेबद
रीस्कन्धे बदराशनकाम्यया २९ हंसंसभार्यंसरसि विचरन्तंसुनिर्मलम्। सुमुक्तस्येन्दु
बिम्बस्य पश्यवैश्रियमुद्वहन् ३० सभार्यश्चक्रवाकोऽयं कमलाकरमध्यगः। करोतिप
द्मिनींकान्तां सुपुष्पामिवसुन्दरी ३१ मयाफलोच्चयःसुभ्रु! त्वयापुष्पोच्चयःकृतः। इन्धनं
नकृतंसुभ्रु! तत्करिष्यामिसांप्रतम् ३२ त्वमस्यसरसस्तीरे द्रुमच्छायांसमाश्रिता।
क्षणमात्रंप्रतीक्षस्व विश्रमस्वचभामिनि ३३ (सावित्र्युवाच) एवमेतत्करिष्यामि म
मदृष्टिपथस्त्वया। दूरंकान्त! नकर्तव्यो बिभेमिगहनेवने ३४ (मत्स्यउवाच) ततःस
काष्ठानिचकारतस्मिन्वनेतदाराजसुतासमक्षम्। तस्याह्यदूरेसरसस्तदानीं मेनेचसातं
मृतमेवराजन् ३५॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०८॥

(मत्स्यउवाच) तस्यपाटयतःकाष्ठं जज्ञेशिरसिवेदना। सवेदनार्तःसङ्गम्य भार्या
वचनमब्रवीत् १ आयासेनममानेन जाताशिरसिवेदना। तमश्चप्रविशामीव नचजाना
मिकिञ्चन २ त्वदुत्सङ्गेशिरःकृत्वा स्वप्तुमिच्छामिसांप्रतम्। राजपुत्रीमेवमुक्ता तदासु

क्षोंसे देखतेहुए मोरकोदेख यहअपनी स्त्रीसमेत मुझकोदेखकर आश्चर्य्य मानरहाहै २५ पिछलेपैर
से मुखको खुजातेहुए इसहिरनकोदेख इसकीप्रिया हिरनीभी बड़ीप्रीतिभावसे अपनेसींगके अग्रभाग
के द्वारा इसको खुजारहाहै इस श्वेतबालोंवाली खड़ीहुई चमरी गौको तू शीघ्रतासेदेख यह कामी
चमर बैलभी इसके पीछेहै यहभी मुझको बड़े अभिमानसे देखरहाहै इसघामसें खड़ेहुए स्त्रीसमेत
रोझको देख इस बड़े बेरके वृक्षपर बैठेहुए स्त्री समेत काकको देखयह दोनों अगले चरणोंको टेकेहुए
बेर खारहेहैं २६।२९ इसस्त्रीसमेत सरोवरपर विचरतेहुए हंसको देख और चन्द्रमाकेसमान कान्ति
वालेखुलेहुए इस हंसके मुखको देख ३० और स्त्री सहित हुआ यहचकवा पक्षी पुष्पोंमें विचररहा
है ३१ हेप्रिये मैंने और तैंने दोनोंने फल तो चुगलियेहैं परन्तु इन्धन नहींलियाहै सोतू इसवृक्षकी
छायामें क्षणभर ठहर मैं इन्धनलिये आताहूं ३२। ३३ यह सब बातें सुनकर सावित्री बोली कि
मैं इसीप्रकार करूंगी तुम मेरी दृष्टिसे दूर मतहो मैं गहर वनमें डरतीहूं ३४ मत्स्यजी कहते हैंकि
इसके पीछे वह सत्यवान् राजा सावित्रीके आगेही उस वनमें काष्ठोंको इकट्ठा करताभया तब वह
सावित्री उसको मरेहुएके समान मानती भई ३५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०८॥

मत्स्यजी बोले-कि काष्ठ तोड़तेहुए उसके शिरमें पीड़ाहुई तब वह अपनी स्त्री सावित्री से यह
बचन कहताभया १ हेप्रिये इस परिश्रम करनेसे मेरे शिरमें पीड़ाहोगई है मुझको अंधेरीसी आतीहै
मुझे कुछ भी नहीं दिखाई देताहै सो मैं तेरीगोदमें शिर करके सोवनेकी इच्छा करताहूं मुझको निद्रा

ष्वापपार्थिवः ३ तदुत्सङ्गेशिरःकृत्वा निद्रयाविललोचनः। पतिव्रतामहाभागा ततःसा राजकन्यका ४ ददर्शधर्मराजंतु स्वयंतंदेशमागतम्। नीलोत्पलदलश्यामं पीताम्बर धरंप्रभुम् ५ विद्युल्लतानिबद्धाङ्गं सतोयमिवतोयदम्। किरीटेनार्कवर्णेन कुण्डलेश्चविराजितम् ६ हारभारार्पितोरस्कं तथाङ्गदविभूषितम्। तथानुगम्यमानंच कालेनसह मृत्युना ७ सतसंप्राप्यतंदेशं देहात्सत्यवतस्तदा। अंगुष्ठमात्रंपुरुषं पाशबद्धंवशंगतम् ८ आकृष्यदक्षिणामाशां प्रययौसत्वरंतदा। सावित्र्यपिवरारोहा दृष्ट्वातंगतजीवितम् ९ अनुवव्राजगच्छन्तन्धर्मराजमतन्द्रिता। कृताञ्जलिरुवाचाथहृदयेनप्रवेपता १० इमं लोकंमातृभक्त्या पितृभक्त्यातुमध्यमम्। गुरुशुश्रूषयाचैव ब्रह्मलोकंसमश्नुते ११ सर्वे तस्यादृताधर्मा यस्यैतेत्रयआदृताः। अनादृतास्तुयस्यैते सर्वास्तस्याफलाःक्रियाः १२ यावत्त्रयस्तेजीवेयु स्तावन्नान्यंसमाचरेत्। तेषांचनित्यंशुश्रूषां कुर्यात्प्रियहितेरतः १३ तेषामनुपरोधेन पारतन्त्र्यंयदाचरेत्। तत्तन्निवेदयेत्तेभ्यो मनोवचनकर्मभिः। त्रिष्वेतेषुकृत्यंहि पुरुषस्यसमस्यते १४ (यमउवाच) कृतेनकामेननिवर्त्तयाशु धर्मोनते भ्योऽपिहिउच्यतेच। ममोपरोधस्तवचक्रमःस्यात्तथाधुनातेनतवब्रवीमि १५ गुरुपूजा

जातीहै इसके अनन्तर वह राजाकी पुत्री भी उसको उसीप्रकार से सुलालेती भई फिर वह महा पतिव्रता सावित्री स्त्री उसी स्थानपर आयेहुए धर्मराजको देखतीभई अर्थात् उसने नील कमल के समान शरीर पीतवस्त्र धारणकिये चमकता विद्युत सहित मेघके समान आकारवाले सूर्य्य की समान कान्तिवाले कुंडलोंसे शोभित हारसे भूषित छाती बाजूबन्दोंसे अलंकृत भुजावाले काल मृत्युके साथ गमन करतेहुए सत्यवान्के देहमेंसे अंगुष्ठमात्र जीवको निकाल वशीभूत कियेहुए बड़े प्रबन्धसे उसको लेजातेहुए देखा ३।८ इसकेपीछे वह धर्मराज सत्यवान्के जीवको निकालकर शीघ्रही दक्षिण दिशाको चलदेता भया तब वह सावित्री भी उस निकलेहुए जीववाले अपने पति राजा सत्यवान्को देखकर गमन करतेहुए धर्मराजके पीछे ९ चलतीभई और अंजुलीबांध कांपतेहुए हृदय से यह वचन बोली कि माताकी भक्तिसे इसलोकमें पिताकी भक्तिसे मध्यम लोकमें और गुरु की सेवा करनेसे ब्रह्मलोकमें सुखकी प्राप्तिहोतीहै १०।११ जिसके घरमें इन तीनपुरुषोंका आदरहोताहै उसके सब धर्मोंका आदर होजाताहै और जिसके यहाँ इन तीनोंका आदर नहींहोताहै उसकी सब क्रिया निष्फल होतीहैं जबतक यह तीनों जीतेरहैं तबतक और किसीकी सेवा नहीं करनी चाहिये और प्रीतिसे युक्तहोके नित्य उनकी टहल करनी योग्यहै १२।१३ और इन तीनोंके सिवाय जो और किसीकी सेवा करनेसे अर्थात् नौकरी आदिक करनेसे जो कुछ धन मिले वह सब मन वचन और कर्म करके उनके आगे निवेदन करदेवे माता पिता और गुरु इन तीनोंमेंही मनुष्यका कृत्य समाप्त होताहै १४ धर्मराजबोले हे भद्रे अब तेरा कामहोलिया उनकी सेवाके सिवाय दूसरा कोई धर्म्म नहीं है अब मुझको रोकेमत मुझे विलम्ब होती है और तेरे यहाँ ठहरनेमें शोकहोताहै इसहेतु से अब मैं तुझसे कहताहूं कि तू गुरुकी सेवा करनेवाली और भक्तहै अब तू उलटी चलीजा तुझ

रतिर्भक्तात्वञ्चसाध्वीपतिव्रता। विनिवर्तस्वधर्मज्ञे! ग्लानिर्भवतितेऽधुना १६ (सावि
त्र्युवाच) पतिर्हिदैवतंस्त्रीणां पतिरेवपरायणम्। अनुगम्यःस्त्रिया साध्व्यापतिःप्राणध
नेश्वरः १७ मितन्ददातिहिपिता मितंभ्रातामितंसुतः। अमितस्यचदातारं भर्त्तारंकान
पूजयेत् १८ नीयतेयत्रभर्त्तामे स्वयंवायत्रगच्छति। मयापितत्रगन्तव्यं यथाशक्तिसुरो
त्तम! १९ पतिमादायगच्छन्त मनुगन्तुमहंयदा। त्वांदेव!नहिशक्ष्यामि तदात्यक्ष्यामि
जीवितम् २० मनस्विनीतुयाकाचित् वैधव्याक्षरदूषिता। मुहूर्त्तमपिजीवेत मण्डनार्हा
ह्ययमण्डिता २१ (यम उवाच) पतिव्रते! महाभागे! परितुष्टोऽस्मितेशुभे!। विनास
त्यव्रतःप्राणैर्वरं वरयमाचिरम् २२ (सावित्र्युवाच) विनष्टचक्षुषोराज्यञ्चक्षुषा सहकार
य। च्युतराष्ट्रस्यधर्मज्ञ!श्वशुरस्यमहात्मनः २३ (यम उवाच) दूरेपथेगच्छनिवर्तभद्रे!
भविष्यतीदंसकलंत्वयोक्तम्। ममोपरोधस्तवचक्लमः स्यात्तथाधुनातेनतवब्रवीमि२४

इतिश्रीमत्स्यपुराणे नवाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०९॥

(सावित्र्युवाच) कुतःक्लमःकुतोदुःखं सद्भिःसहसमागमे। सतान्तस्मान्नमेग्लानि
स्त्वत्समीपेसुरोत्तम! १ साधूनांवाप्यसाधूनां सन्तएवसदागतिः। नैवासतांनैवसतामस
न्तोनैवमात्मनः २ विषाग्निसर्पशस्त्रेभ्यो न तथाजायतेभयम्। अकारणंजगद्वैरिखले
भ्योजायतेयथा ३ सन्तःप्राणानपित्यक्त्वापरार्थंकुर्वतेयथा। तथासन्तोऽपिसन्त्यज्य परपी

को यहांके ठहरनेमें ग्लानि और शोक होताहै १५।१६ सावित्री बोली–स्त्रियोंके पतिही देवता
पतिही परम स्थान और पतिही प्राणोंसमेत सब धनका ईश्वरहै इसलिये साध्वीपतिव्रता स्त्रीको
पतिके पीछेही पीछे चलना योग्यहै १७ पिता प्रमाणका देनेवालाहै भ्राता और पुत्रभी प्रमाणकाही
देनेवालाहै परन्तु पति अतुल और असंख्यका देनेवालाहै इसहेतुसे ऐसी कौनसी स्त्रीहै जो अपने
पतिको नहींपूजतीहै १८ जहां आप मेरेभर्त्ताको लियेजातेहो वहांही शक्तिकेअनुसार मेराभी जाना
योग्य है १९ हे देव पतिको लेजातेहुये तुम्हारे साथ मैं जब नहीं चलसकूंगी तब अपने प्राणों को
त्यागदूंगी २० जोकोई मनस्विनी स्त्री वैधव्ययोगसे दूषितहोके मुहूर्त्तमात्रभी जीवतीहै वहशोभाय-
मानहोकर भी अशोभितहै २१ धर्मराजबोले–हेपतिव्रते महाभागे मैं तेरेऊपर प्रसन्नहोगयाहूं अब
तू मुझसे वरमांग विलम्बमतकरे २२ सावित्रीबोली–हेधर्मज्ञ नष्टनेत्रोंवाले और नष्टराज्यवाले मेरे
ससुरके नेत्रहोकर राज्यकी प्राप्तिहोजाय यहवरदीजिये २३ धर्मराजनेकहा हेभद्रे तू बहुतदूर आगई
है अब उलटी चलीजा यह तेराकहा सबमनोरथ सिद्धहो जायगा यहां अब मुझको देरहोती है और
तुझको यहां ठहरनेमें शोक और ग्लानि होतीहै इसनिमित्त तुझसे कहताहूं २४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांनवाधिकद्विशततमोऽध्यायः २०९॥

सावित्रीबोली–श्रेष्ठपुरुषोंके साथ समागमहोनेसे कभी किसीकोदुःख नहींहोता हेसुरोत्तम आप
की समीपतामें मुझको कुछभी ग्लानि नहींहोती है श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ दोनों पुरुषोंकीगति सन्तजन
होतेहैं और असन्तजन सत्पुरुष असत्पुरुष और अपनी इनमेंसे किसीकीभी गति नहींकरसकाहै और

ङ्गासु तत्पराः ४ त्यजत्यसूनयं लोकस्तृणवद्यस्य कारणात् । परोपघातशक्तास्तं परलो
कन्तथासतः ५ निकायेषुनिकायेषु तथाब्रह्माजगद्गुरुः । असतामुपघाताय राजानं
ज्ञातवान् स्वयम् ६ नरान् परीक्षयेद्राजा साधून् सम्मानयेत्सदा । निग्रहश्चासतां कु
र्यात्सलोकेलोकजित्तमः ७ निग्रहेणासतां राजासतांचपरिपालनात् । एतावदेव कर्तव्यं
राज्ञा स्वर्गमभीप्सुना ८ राजकृत्यंहिलोकेषु नास्त्यन्यज्जगतीपते! । असतांनिग्रहादेव
सतांचपरिपालनात् ९ राजभिश्चाप्यशास्तानामसतांशासिताभवान् । तेनत्वमधिको
देवो देवेभ्यः प्रतिभासिमे १० जगत्तुधार्यतेसद्भिःसतामग्र्यस्तथाभवान् । तेनत्वामनुया
न्त्यामे क्लमोदेव!नविद्यते ११ (यमउवाच) तुष्टोऽस्मितेविशालाक्षि! वचनैर्धर्मसङ्गतैः ।
विनासत्यवतःप्राणाद् वरंवरयमाचिरम् १२ (सावित्र्युवाच) सहोदराणांभ्रातॄणां का
मयामिशतंविभो । अनपत्यःपिताप्रीतिं पुत्रलाभात्प्रयातुमे १३ तामुवाचयमोगच्छ
यथागतमनिन्दिते! । और्ध्वदैहिककार्य्येषु यत्नंभर्तुःसमाचर १४ नानुगन्तुमयंशक्य
स्त्वयालोकान्तरंगतः । पतिव्रतासितेनत्वं मुहूर्तंममयास्यसि १५ गुरुशुश्रूषणाद्भद्रे!
तथासत्यवतोमहत् । पुण्यंसमार्जितंयेन नयाम्येनमहंस्वयम् १६ एतावदेवकर्तव्यं पुरु

विष, अग्नि, सर्प और शस्त्रादिकोंसे ऐसाभय नहींहोता जैसा कि विनाकारण जगत्से वैरकरनेवाले दुष्टपुरुषसे भयहोताहै सन्तजन परायेनिमित्त अपने प्राणोंकोभी त्यागदेतेहैं और असत्जन मरेपछि भी पराई पीड़ाकरनेमें तत्पररहतेहैं यह संपूर्णसंसार जिसके कारणसे तृणकसिमान प्राणोंकोत्याग देताहै उस परलोकको पराये अपघातमें तत्पररहनेवाले असत्जन नहीं जानते हैं ३-५ जगत् के गुरू ब्रह्माजीने असत्पुरुषोंके नाशकेनिमित्त सवस्थानोंमें राजाओंको कल्पितकियाहै ६ इसीसे राजा को सवजनोंकी परीक्षाकरके साधुजनोंका सदैव मान करनाचाहिये जोराजा दुष्टपुरुषोंको दण्डदेता है वही लोकजित् राजा कहाताहै राजाको सदैव दुष्टपुरुषोंका निग्रहकरके श्रेष्ठपुरुषोंका पालनकरना चाहिये यह स्वर्गकी इच्छावाले राजाकाकर्महै इसकेसिवाय दूसरी कोईबात करनी राजाको उचित नहीं है इस हेतुसे असत्पुरुषोंका निग्रहकरके श्रेष्ठपुरुषोंकी पालनाकरनेसे तुम राजाओंकेभी शिक्षा करनेवालेहो और सब दुष्टोंके दंडदेनेवालेहो इसीकारणसे आप मुझको देवताओंसेभी अधिक दीख- तेहो ७।१० यह सवजगत् श्रेष्ठही पुरुषोंकरके धारणहोरहाहै आप श्रेष्ठपुरुषोंकेभी शिरोमणिहो इस- लिये तुम्हारेपछि२ चलतीहुई मुझकोग्लानि नहींहोतीहै ११ धर्मराजबोले हे विशालाक्षि तेरे धर्म के वचनोंसे मैं प्रसन्नहोगयाहूं सो तू इस सत्यवान्के विना जोचाहै सो वरमांग विलंब मतकरे १२ सावित्री कहनेलगी हेविभो मैं सौ सहोदर भाइयोंकी इच्छाकरतीहूं सन्तानरहित मेरापिता पुत्रोंके प्राप्तहोजानेसे प्रसन्नहोजाय १३ तब धर्मराजने उससेकहा कि यहसव इसीप्रकारहोगा अब तू उलटी चलीजा अपने पतिके शरीर की दाहादि क्रियाकर १४ यहतो दूसरे लोकमें प्राप्तहोगया है तू इसके साथ चलनेको समर्थ नहीं है तू पतिव्रताहै इस निमित्त एक मुहूर्त मुझको प्राप्तहोगी और तैंने गुरुओंकी सेवाकरके जो पुण्य संचित कियाहै इसीके कारणसे मैं इसको उत्तम शुभस्थान में

षेणविजानता। मातुःपितुश्चशुश्रूषा गुरोश्चवरवर्णिनि! १७ तोषितंत्रयमेतच्च सदास
त्यवतावने। पूजितंविजितःस्वर्गस्त्वयानेनचिरंशुभे! १८ तपसाब्रह्मचर्येण अग्निशु
श्रूषयाशुभे!।पुरुषाःस्वर्गमायान्ति गुरुशुश्रूषयातथा १९ आचार्यश्चपिताचैव माता
भ्राताचपूर्वजः। नार्तेनाप्यवमन्तव्या ब्राह्मणानविशेषतः २० आचार्योब्रह्मणोमूर्तिः पि
तामूर्तिःप्रजापतेः। माताप्रथिव्यामूर्तिस्तु भ्रातावैमूर्तिरात्मनः २१ जन्मनापितरौक्लेशं
सहेतेसम्भवेनृणाम्। नतस्यनिष्कृतिःशक्या कर्तुंवर्षशतैरपि २२ तयोर्नित्यंप्रियंकुर्या
दाचार्यस्यतुसर्वदा। तेष्वेवत्रिषुतुष्टेषु तपःसर्वंसमाप्यते २३ तेषांत्रयाणांशुश्रूषा परम
न्तपउच्यते। नचतैरननुज्ञातो धर्ममन्यंसमाचरेत् २४ तएवहित्रयोलोकास्तएवत्रय
आश्रमाः। तएवचत्रयोवेदास्तथैवोक्तास्त्रयोऽग्नयः २५ पितावैगार्हपत्योऽग्निर्मातादः
क्षिणतःस्मृतः। गुरुराहवनीयश्च साग्नित्रेतागरीयसी २६ त्रिषुप्रमाद्यतेनैषु त्रीन्लो
कान्जयतेगृही। दीप्यमानःस्ववपुषा देववद्दिविमोदते २७ (यमउवाच) कृतेनकामेन
निवर्तभद्रे! भविष्यतीदंसकलंत्वयोक्तम्। ममोपरोधस्तवचक्लमःस्यात् तथाधुनातेनत
वब्रवीमि २८॥ इति श्रीमत्स्यपुराणे दशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१०॥

(सावित्र्युवाच) धर्मार्जनेसुरश्रेष्ठ! कुतोग्लानिःक्लमस्तथा। त्वत्पादमूलसेवाच
परमंधर्मकारणम् १ धर्मार्जनन्तथाकार्यं पुरुषेणविजानता। तल्लाभःसर्वलाभेभ्यो यदा

पहुंचाऊंगा १५। १६ हेवरवर्णिनि ज्ञानवान् पुरुषको यही करना योग्यहै कि माता पिता और गुरूकी सेवाकरे १७ हेशुभे तैंने इस सत्यवानके पूजन करनेसे इन तीनोंको प्रसन्न करदियाहै इसी से तैंने स्वर्गलोक जीतलियाहै १८ हेशुभे तप, ब्रह्मचर्य्य, अग्निकासेवा और गुरूकी सेवा इन सब के करनेसे पुरुष स्वर्ग लोकमें प्राप्तहोते हैं और आचार्य्य, पिता, माता, भ्राता, और बड़ा भाई इन सबकी भी सदैव पूजा करनी चाहिये, आचार्य्य ब्रह्माकी मूर्त्तिहै, पिता प्रजापतिकी मूर्त्तिहै माता पृथ्वीकी मूर्त्तिहै भ्राता अपनेआत्माकी मूर्त्तिहै जोकि मनुष्योंकी उत्पत्तिमें माता पिता जो क्लेशभोग तेहैं उस क्लेशका बदला हजारों वर्षोंमेंभी नहीं दियाजासका इसहेतुसे नित्यप्रति माता पितासेस्नेह और प्रीतिरखनीचाहिये और आचार्य्यसेभी प्यार रखना योग्यहै यहतीनों जब प्रसन्नहोतेहैं तभी तप समाप्तहोताहै १९।२३ इनतीनोंकी सेवाकरनाही परमतप कहाताहै इनकी आज्ञालिये बिना दूसरा कोई धर्मनहीं आचरण करनाचाहिये २४ यही तीनोंलोक हैं तीनों आश्रम हैं यही तीनोंवेद हैं यही तीनोंअग्निहैं २५ पिता गार्हपत्य अग्निहै माता दक्षिणाग्निहै और गुरू आहवनीय अग्निहै इसहेतुसे यहतीन अग्निहैं जो पुरुष इन तीनोंकी अच्छेप्रकारसे सेवाकरताहै वह दिव्यशरीरवाला होकर देवताओंके समान स्वर्गमें आनन्दकरता है २६।२७ धर्मराज कहते हैं हेभद्रे तैंने अपनाकाम करलिया है अब उलटी चलीजा मेरा ठहरना तेरेखेद और शोकका हेतुहै इसीसे तू चलीजा २८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१०॥

सावित्रीबोली हेसुरश्रेष्ठ धर्मके संचयकरनेमें कभी खेद और शोक नहींहै तुम्हारे चरणोंकी सेवा

देव! विशिष्यते २ धर्मश्चार्थश्चकामश्च त्रिवर्गोजन्मनःफलम् । धर्म्महीनस्यकामार्थौ वन्ध्यासुतसमौप्रभो! ३ धर्मादर्थस्तथाकामो धर्माल्लोकद्वयंतथा । धर्मएकोऽनुयात्येनं यत्रक्कचनगामिनम् ४ शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धिगच्छति । एकोहिजायतेजन्तुरेकएवविपद्यते ५ धर्मस्तमनुयात्येको नसुहृन्नचबान्धवाः । क्रियासौभाग्यलावण्यं सर्वंधर्मेणलभ्यते ६ ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रशर्वेन्दुयमार्काग्न्यनिलाम्भसाम् । वस्वश्विधनदाद्यानां येलोकाःसर्वकामदाः ७ धर्मेणतानवाप्नोति पुरुषःपुरुषान्तक! । मनोहराणिद्वीपानि वर्षाणि सुसुखानिच ८ प्रयान्तिधर्मेणनरस्तथैवनरगण्डिकाः । नन्दनादीनिमुख्यानि देवोद्यानानियानिच ९ तानिपुण्येनलभ्यन्ते नाकपृष्ठन्तथानरैः । विमानानिविचित्राणि तथैवाप्सरसःशुभाः १० तैजसानिशरीराणि सदापुण्यवतांफलम् । राज्यंनृपतिपूजाच कामसिद्धिस्तथेप्सिता ११ संस्काराणिचमुख्यानि फलंपुण्यस्यदृश्यते । रुक्मवैदूर्यदण्डानि चण्डांशुसदृशानिच १२ चामराणिसुराध्यक्ष! भवन्तिशुभकर्मणाम् । पूर्णेन्दुमण्डलाभेन रत्नांशुकविकाशिना १३ धार्यतांयातिछत्रेण नरःपुण्येनकर्मणा । जयशङ्खस्वरौघेण सूतमागधनिस्वनैः १४ वरासनंसश्रृंगारं फलंपुण्यस्यकर्मणः । वरान्नपानंगीतञ्चभृत्यमाल्यानुलेपनम् १५ रत्नवस्त्राणिमुख्यानि फलंपुण्यस्यकर्मणः । रूपौदार्यगुणोपेताःस्त्रियश्चातिमनो

करनाही धर्मका परमकारणहै १ ज्ञानवान् पुरुषको धर्मसंचितकरना चाहिये हेदेव धर्मकालाभसबलाभोंसे उत्तम कहाताहै २ जो धर्मसे हीनहै उसके काम और अर्थ यहदोनों वंध्याके पुत्रकेसमान कहेहैं ३ धर्मसेही अर्थ सिद्धहोताहै और कामहोताहै धर्महीसे दोनोंलोक सफलहोतेहैं यहपुरुष जहाँ कहीं जाताहै वहां उसके संग धर्महीचलताहै ४ धर्मके सिवाय और सबवस्तु शरीरके साथही नष्ट होजातीहैं यहजीव अकेलाही जन्मता है और अकेलाही मरजाता है इसके संग केवल एक धर्मही साथहोकर जाताहै कोई बान्धव मित्र स्त्री पुत्रादिक इसकेसंग नहीं चलताहै सौभाग्यआदिक सब वस्तु धर्मकेही प्रभावसे लब्धहोतीहैं ५।६ ब्रह्मा, इन्द्र, उपेन्द्र, शिवजी, चन्द्रमा, यम, सूर्य्य, अग्नि वायु, जल, वसु, अश्विनीकुमार और कुबेरइत्यादि देवताओंके जो सर्व समृद्धिवाले लोकहैं उनसब लोकोंको धर्मात्मापुरुषप्राप्तहोताहै और मनोहरद्वीप तथा सुन्दर सुखवालेखंडोंमें जन्मलेताहै ७।८ धर्मकेही प्रभावसे स्वर्ग और स्वर्गके नन्दनआदिक बगीचोंकी प्राप्तिहोतीहै इसकेविशेष सुन्दरविमान और उत्तम अप्सराओंकी भी प्राप्तिहोती है धर्मात्मापुरुषोंको सदैव सुवर्णके समान कान्तिवाले उत्तमशरीर मिलतेहैं राज्यकी प्राप्तिहोतीहै और मनोवांछित पूजा प्राप्तहोती है ९।११ जिसके श्रेष्ठ संस्कारहोतेहैं वहसब पुण्यकेही लक्षणहैं सुन्दरकर्मवाले पुरुषोंकेसुवर्ण और वैदूर्य्यमणिकीयष्टिका और चंवरढुलतेहैं और उनका मुखभी चन्द्रमाकेसमान सदाप्रकाशितरहताहै १२।१३ पुण्यकर्मी मनुष्यही छत्रधारी राजाहोताहै और जयशब्द शंखकेशब्द और सूतमागध वन्दीजनोंके स्तुतिशब्दोंकेद्वारा निद्रासे जगायाजाताहै १४ उत्तम आसन उत्तम अन्न पान उत्तमगीत भृत्य पुष्प और सुगंधि आदिकी प्राप्ति भी पुण्यकेहीप्रभावसे होतीहै १५ रत्न, उत्तमवस्त्र, रूप, उदारता, उत्तमगुण, मनोहर स्त्री यहसब भी पुण्यकेही

हराः१६वासःप्रासादपृष्ठेषु भवन्तिशुभकर्मिणः। सुवर्णकिङ्किणीमिश्रचामरापीडधारिणः
१७वहन्तितुरगादेव नरंपुण्येनकर्मणा। तस्यद्वाराणियजनन्तपोदानन्दमःक्षमा १८ब्रह्म
चर्यंतथासत्यन्तीर्थानुमरणंशुभम्। स्वाध्यायसेवासाधूनां सहवासःसुरार्चनम्१६गुरूणां
चैवशुश्रूषा ब्राह्मणानांचपूजनम्। इन्द्रियाणांजयश्चैव ब्रह्मचर्यममत्सरम् २० तस्माद्ध
र्मःसदाकार्यो नित्यमेवविजानता। नहिप्रतीक्षतेमृत्युः कृतमस्यनवाकृतम् २१ बालएव
चरेद्धर्ममनित्यंदेव! जीवितम्। कोहिजानातिकस्याद्य मृत्युरेवापतिष्यति २२ पश्य
तोऽप्यस्यलोकस्य मरणंपुरतःस्थितम्। अमरस्येवचरितमत्याश्चर्यंसुरोत्तम! २३ युव
त्वापेक्षयाबालो वृद्धत्वापेक्षयायुवा। मृत्योरुत्संगमारूढः स्थविरःकिमपेक्षते २४ त्रा
णंविन्दतस्त्राणं मृत्युनातस्यकागतिः। नभयंमरणञ्चैव प्राणिनामभयंक्वचित्। तत्रापि
निर्भयाःसन्तः सदासुतकृकारिणः २५ (यमउवाच) तुष्टोऽस्मितेविशालाक्षि! वचनै
धर्मसङ्गतैः। विनासत्यवतःप्राणान् वरंवरयमाचिरम् २६ (सावित्र्युवाच) वरयामि
त्वयादत्तं पुत्राणांशतमौरसम्। अनपत्यस्यलोकेषु गतिःकिलनविद्यते२७(यमउवाच)
कृतेनकामेननिवर्तभद्रे! भविष्यतीदंसकलंयथोक्तम्। ममोपरोधस्तवचक्लमःस्यात्तथा
धुनातेतवब्रवीमि २८॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणे एकादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २११॥

प्रभावसे प्राप्तहोते हैं शुभकर्मवाले पुरुषोंका वास भी अच्छे सुन्दर महलोंमें होताहै सुवर्णकी जाली चमर आदिकोंसे विभूषित हुए अश्वोंकी सवारी भी अच्छे शुभकर्मकेही प्रभावसे प्राप्तहोती हैं उस शुभकर्मके द्वार यहहैं यजन, तप, दान, इन्द्रिय दमन, क्षमा, ब्रह्मचर्य्य, उत्तम तीर्थोंपर मरना, वेदका पठन पाठन साधुपुरुषोंकी सेवा अथवा उनकेही साथ वास करना देवताओंका पूजन करना १६।१९ गुरुओंकी टहल करनी ब्राह्मणों का पूजन करना इन्द्रियों का जीतना और मत्सरता रहितहोके ब्रह्मचर्य्यमें रहना यह सब धर्मके लक्षणहैं वह सब धर्मके लक्षण विद्वान् पुरुषोंको अवश्य करना चाहिये मृत्यु कभी यह नहीं विचारतीहै कि इसने कोई कार्य्य कियाहै अथवा नहींकियाहै २०।२१ जीवन अनित्यहै इसहेतु बाल्यावस्थामेंही धर्मका आचरण करना चाहिये इसबातको कौनजानता है कि किसकी अब मृत्युहोगी २२ आगे स्थितहुए मरणको भी यह मनुष्य देखताहै परन्तु तौ भी अमर होनेकेही समान आचरण करताहै यह बड़ाही आश्चर्य्यहै २३ तरुण अवस्थाकी अपेक्षा में बाल्यावस्था है और वृद्धअवस्थाकी अपेक्षामें तरुणावस्था है परन्तु मृत्युकी गोदी में बैठाहुआ वृद्ध पुरुष किसकी अपेक्षा करताहै २४ ऐसी दशामें भी जो मृत्युसे प्राण बचाने की इच्छा करताहै उसकी क्या गति होतीहै सब प्राणियों को क्या कभी निर्भयता होतीहै किन्तु कभी नहीं निर्भयता होतीहै परन्तु शुभ कर्मवाले सुकृती पुरुष सदा निर्भय रहते हैं २५ धर्मराज कहते हैं कि हे विशालाक्षि मैं तुझपर बड़ा प्रसन्नहूं तू सत्यवान् के विना अन्य कुछ वरमांग २६ सावित्रीने कहा -कि हे देव आपके दियेहुये सौ पुत्रोंकी मैं इच्छाकरतीहूं क्योंकि पुत्रों के विना गति नहीं होतीहै २७ धर्मराजने कहा तेरा काम होगया है तेरा कहा हुआ यह

(सावित्र्युवाच) धर्माधर्मविधानज्ञ ! सर्वधर्मप्रवर्त्तक ! । त्वमेवजगतोनाथः प्रजा संयमनोयमः १ कर्मणामनुरूपेण यस्माद्यमयसेप्रजाः । तस्माद्वैप्रोच्यसेदेव ! यमइत्येव नामतः २ धर्मेणेमाःप्रजाःसर्वा यस्माद्रञ्जयसेप्रभो ! । तस्मात्तेधर्मराजेति नामसद्भिर्नि गद्यते ३ सुकृतंदुष्कृतंचोभे पुरोधाययदाजनाः । त्वत्सकाशंमृतायान्ति तस्मात्त्वंमृत्युरु च्यसे ४ कालंकलार्द्धकलयन् सर्वेषांत्वंहितिष्ठसि । तस्मात्कालेतितेनाम प्रोच्यतेतत्त्व दर्शिभिः ५ सर्वेषामेवभूतानां यस्मादन्तकरोमहान् । तस्मात्त्वमन्तकःप्रोक्तः सर्वदेवैर्म हाद्युते ६ विवस्वतस्त्वंतनयः प्रथमंपरिकीर्तितः । तस्माद्वैवस्वतोनाम्ना सर्वलोकेषुक थ्यते ७ आयुष्येकर्मणिक्षीणे गृह्णासिप्रसभञ्जनम् । तदात्वंकथ्यसेलोके सर्वप्राणहरे तिवै ८ तवप्रसादाद्देवेश ! सङ्करोनप्रजायते । सतांसदागतिर्देव ! त्वमेवपरिकीर्तितः ९ जगतोऽस्यजगन्नाथ ! मर्यादापरिपालकः । पाहिमांत्रिदशश्रेष्ठ ! दुःखितांशरणागताम् । पितरौचतथैवास्य राजपुत्रस्यदुःखितौ १० (यमउवाच) स्तवेनभक्त्याधर्मज्ञे ! मया तुष्टेनसत्यवान् । तवभर्ताविमुक्तोयं लब्धकामाव्रजावले ११ राज्यंकृत्वात्वयासार्द्धं वत्स राशीतिपञ्चकम् । नाकपृष्ठमथारुह्य त्रिदशैःसहरंस्यते १२ त्वयिपुत्रशतञ्चापि सत्य वान्जनयिष्यति । तेचापिसर्वेराजानः क्षत्रियास्त्रिदशोपमाः १३ मुख्यास्त्वन्नामपुत्राख्या

संपूर्ण मनोरथ इसी प्रकारसे होजायगा अब मेरे रोकनेमें तुझको खेद होताहै इसीसे मैं कहताहूं कि शीघ्रचलीजा २८ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांएकादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २११ ॥

सावित्रीबोली-धर्माधर्मके प्रभावके जाननेवाले सर्वधर्म प्रवर्त्तक आपही जगत्के पतिहो प्रजाको शिक्षादेनेवाले यमहो १ कर्मोंके अनुसार तुम सब प्रजाको शिक्षादेतेहो इसीसे आपको यम कहतेहैं २ हे प्रभो तुम धर्मकरके इस संपूर्ण प्रजाको पालतेहो इसहेतुसे आपको धर्मराज कहते हैं ३ और सब मनुष्य सुकृत और दुष्कृत कर्मोंको करके आपहीके पास मरकर जातेहैं इसी से तुमको मृत्यु कहतेहैं ४ आपही सब जनोंके कालकी संख्याकरतेहो और स्मरण रखतेहो इसीसे तत्त्वदर्शीलोग आपको काल कहतेहैं ५ तुम सब भूतोंके महान् अन्तकरनेवालेहो इसकारणसे आपको सब देवता अन्तक कहतेहैं ६ तुम प्रथम विवस्वान् सूर्य्यके पुत्रहुएहो इसीसे तुम सब लोकोंमें वैवस्वतनाम से प्रसिद्ध होरहेहो ७ और जब आयु क्षीणहोजाती है तब तुम हठकरके सबजनों के प्राणों को हरलेतेहो इसलिये तुमको सर्वप्राणहर कहते हैं हेदेवेश तुम्हारी कृपासे धर्मोंकी संकीर्णता नहीं होतीहै इससे आपही श्रेष्ठपुरुषोंकी गतिहो ८।९ हेजगन्नाथ आप इसजगत्की मर्यादाके पालने वालेहो इससे दुःखितहोकर शरणागत आनेवाली जो मैंहूं उसकी रक्षाकीजिये और इस राजपुत्रके माता पिताभी महाखेदयुक्त होरहेहैं १० धर्मराजने कहा हेधर्मज्ञे इस तेरेस्तोत्रसे प्रसन्नहोकर मैंने तेरे पतिको छोड़दियाहै सो तू अब अपने मनोरथोंको प्राप्तहोकर शीघ्र गमनकर ११ यह तेरा पति ४०० वर्षोंतक राज्यकोभोग तेरेसाथ रमणकरताहुआ स्वर्गलोकमें प्राप्तहोकर देवताओंकेसाथ बिहार करेगा और यह सत्यवान् जो तुझमें सौपुत्रोंको उत्पन्नकरेगा वह सबभी देवताओंकेही समान प्र-

भविष्यन्तिहिशाश्वताः। पितुश्चतेपुत्रशतं भवितातवमातरि १४ मालव्यांमालवानामशाश्वताःपुत्रपौत्रिणः। भ्रातरस्तेभविष्यंति क्षत्रियास्त्रिदशोपमाः १५ स्तोत्रेणानेनधर्मज्ञे! कल्यमुत्थाययस्तुमाम्। कीर्तयिष्यतितस्यापि दीर्घमायुर्भविष्यति १६ (मत्स्य उवाच) एतावदुक्त्वाभगवान्यमस्तु प्रमुच्यतंराजसुतंमहात्मा। अदर्शनंतत्रयमोजगाम कालेनसार्द्धंसहमृत्युनाच १७ इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्वादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१२॥

(मत्स्यउवाच) सावित्रीतुततःसाध्वी जगामवरवर्णिनी। यथायथागतेनैवयत्रासीत्सत्यवान्मृतः १ सासमासाद्यभर्तारं तस्योत्सङ्गगतंशिरः। कृत्वाविवेशतन्वङ्गी लम्बमानेदिवाकरे २ सत्यवानपिनिर्मुक्तो धर्मराजाच्छनैःशनैः। उन्मीलयतनेत्राभ्यां प्रास्फुरच्चनराधिप! ३ ततःप्रत्यागतप्राणः प्रियांवचनमब्रवीत्। क्वासौप्रयातःपुरुषो योमामप्यपकर्षति ४ नजानामिवरारोहे! कश्चासौपुरुषःशुभे! वनेऽस्मिन्चारुसर्वाङ्गि! सुप्तस्यचदिनंगतम् ५ उपवासपरिश्रान्तादुःखिताभवतीमया। अस्मद्दुर्हृदयेनाद्य पितरौदुःखितौतथा। द्रष्टुमिच्छाम्यहंसुभ्रु! गमनेत्वरिताभव ६ (सावित्र्युवाच) आदित्येऽस्तमनुप्राप्ते यदितेरुचितंप्रभो!। आश्रमन्तुप्रयास्यावःश्वशुरौहीनचक्षुषौ ७ यथावृत्तञ्चतत्रैवश्रृणुवक्ष्येयथाश्रमे। एतावदुक्त्वाभर्तारं सहभर्त्रातदाययौ ८ आससादाश्रमंचैव सहभर्त्रानृपात्मजा। एतस्मि

काशवान्होकर राजाहोंगे १२।१३ और सबपुत्र तेरेनामसे प्रसिद्धहोंगे और जोतेरेपिताके सौपुत्रहोंगे वह तेरी माताके नामसे प्रसिद्धहोंगे मालवी नाम जो तेरी माताहै उसकेपुत्र मालव नामसे प्रसिद्ध पुत्र पौत्रों समेतहोंगे वह सब तेरेभाई देवताओंके समान तेजस्वी राजाहोंगे १४। १५ हे धर्मज्ञे जो पुरुष इसस्तोत्र करके प्रातःकाल मेरी स्तुति करेगा वह भी दीर्घायु वालाहोगा १६ मत्स्यजी कहतेहैं कि वह धर्मराज इसप्रकारसे कहकर उससत्यवान् राजाको छोड़कर वहांहीं अपने कालमृत्यु समेत अन्तर्द्धान होगया १७॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१२॥

मत्स्यजी बोले इसके अनन्तर वह पतिव्रता सावित्री नाम स्त्री जहां बैठीथी उसी स्थानपर सत्यवान् के पास आती भई १ वहां अपने पतिके समीप आके उसके शिरको गोदी में लेके बैठती भई उसी समय सूर्य्य भी अस्त होता भया २ तब धर्मराज से छुटा हुआ सत्यवान् भी शरीर में प्राप्त हो नेत्रों को मीचता भया और प्राण आगये तबवह अपनी प्रिया सावित्रीसे यह वचन बोला हेप्रिये जो यह मुझको खैंचे लिये जाताथा वह कौन पुरुषथा हे शुभे उस पुरुषको मैं नहीं जानताथा और मुझको सोते हुये सब दिन व्यतीत होगया ३। ५ तू भी व्रतोंके करनेमें तत्परथी सो आज मेरे संगमें तू बड़ी दुःखित होगई है और वनमें मेरे माता पिता दुःख पा रहेहोंगे सो अब मैं शीघ्र गमन करके अपने माता पिताके दर्शनकिया चाहताहूं ६ सावित्री बोली हे प्रभो सूर्य्य अस्त होगयाहैसो जो आपकी रुचि और इच्छाहोय तो मेरेसाथ श्वशुर जो अन्धेहैं उनके पास आश्रममेंचलें ७ उसी अपने आश्रममें चलकर इस संपूर्ण वृत्तान्त को यथार्थ रीति से कहूंगी इसप्रकार कहकर अपनेपतिके संगहीं वहांसे चलती भई पीछे वह दोनों आश्रममें प्राप्त होतेभये उससमय प्राप्तनेत्रवाला वह द्युमत्सेनराजा

न्नेवकालेतु लब्धचक्षुर्महीपतिः ९ द्युमत्सेनःसभार्यस्तु पर्यतप्यतभार्गव ! । प्रियपुत्रमप
श्यन्वैस्नुषाञ्चैवाथकर्शिताम् १० आश्वास्यमानस्तुतथा सतुराजातपोधनैः । ददर्शपुत्र
मायान्तं स्नुषयासहकानने ११ सावित्रीतुवरारोहा सहसत्यवतातदा । ववन्देतत्रराजा
नं सभार्यंक्षत्रपुङ्गवम् १२ परिष्वक्तस्तदापित्रा सत्यवान्राजनन्दनः । अभिवाद्यततः
सर्वान् वनेतस्मिंस्तपोधनान् १३ उवासतत्रतांरात्रिमृषिभिःसर्वधर्मवित् । सावित्र्यपि
जगादाथ तथावृत्तमनिन्दिता १४ व्रतंसमापयामास तस्यामेवयथानिशि । ततस्तुर्ये
त्रियामान्ते ससैन्यस्तस्यभूपतेः १५ आजगामजनःसर्वो राज्यार्थायनिमन्त्रणे । विज्ञा
पयामासतदातत्रप्रकृतिशासनम् १६ विचक्षुषस्तेनृपते येनराज्यंपुराहृतम् । अमात्यैः
सहतोराजा भवांस्तस्मिन्पुरेनृपः १७ एतच्छ्रुत्वाययौराजा बलेनचतुरङ्गिणा । लेभेच
सकलंराज्यं धर्मराजान्महात्मनः १८ भ्रातॄणांतुशतंलेभे सावित्र्यपिवराङ्गना । एवम्प
तिव्रतासाध्वी पितृपक्षंनृपात्मजा १९ उज्जहारवरारोहा भर्तृपक्षंतथैवच । मोक्षयामास
भर्तारं मृत्युपाशगतंतदा २० तस्मात्साध्व्यःस्त्रियःपूज्याः सततंदेववन्नरैः । तासांराजन् !
प्रसादेन धार्यतेवैजगत्त्रयम् २१ तासान्तुवाक्यंभवतीहमिथ्यानजातुलोकेषुचराचरेषु ।
तस्मात्सदाताःपरिपूजनीयाः कामान्समग्रानभिकामयानैः २२ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रयोदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१३ ॥

भी अपनी स्त्री समेत उस वनमें पुत्र और पुत्रवधू का सन्देह कर रहाथा उसी समय आतेहुए अपने पुत्र और पुत्रवधू को देखकर प्रसन्न होता भया उस समय अन्य ऋषि लोग भी उसको धीरज दिलारहेथे ८ । ११ तब वह सावित्री अपने सत्यवान् पतिके सहित अपने श्वशुर द्युमत्सेन राजाको प्रणाम करती भई और वह सत्यवान् राजपुत्र भी अपने पितासे मिलकर सब तपोधन ऋषियोंको प्रणाम करता भया १२ । १३ उस दिनकी संपूर्ण रात्रि भर वह सब जन ऋषियों के साथ वास करते भये और वह सावित्री उस संपूर्ण वृत्तान्त को सबके आगे कहती भई और उसी रात्रि में अपने व्रतको भी समाप्त करती भई इसके अनन्तर तीन पहरके भीतर उस द्युमत्सेन राजा की संपूर्ण सेना और सब नगरके लोग वहां आवते भये वहां आकर वह सब लोग उस द्युमत्सेन राजा से कहने लगे कि जिस राजाने तुम्हारे नेत्र नष्ट किये थे और तुम्हारा सब राज्य भी छीन लियाथा वह राजा आपके मंत्रियों ने मारडाला सो आप चलकर राज्य कीजिये १४ । १७ यह सुनकर वह राजा अपनी चतुरंगिणी सेनाको साथ लेकर अपने पुर में पहुंच राज्य को प्राप्त होजाता भया और इसी प्रकार सावित्री को धर्म्मराज के प्रभाव से सौ १०० भाइयों की प्राप्ति होती भई इस प्रकार वह पतिव्रता स्त्री अपने पिताके सब मनोरथोंको भी पूर्ण करतीभई और अपने भर्त्ताके पक्ष का उद्धारकर अपने पतिको मृत्युकी फांसीसे छुटा लेतीभई १८।२० इस हेतुसे मनुष्योंको पतिव्रता स्त्री सदैव पूजनी चाहिये उन पतिव्रता स्त्रियोंकी प्रसन्नतासे संपूर्ण जगत् धारण होरहाहै २१ उन

(मनुरुवाच) राज्ञोऽभिषिक्तमात्रस्य किंनुकृत्यतमंभवेत्। एतन्मेसर्वमाचक्ष सम्यग्वेत्तियतोभवान् १ (मत्स्य उवाच) अभिषेकार्द्रशिरसा राज्ञाराज्यावलोकिना। सहायवरणंकार्यं तत्रराज्यंप्रतिष्ठितम् २ यदप्यल्पतरंकर्म तदप्येकेनदुश्चरम्। पुरुषेणासहायेन किमुराज्यंमहोदयम् ३ तस्मात्सहायान्वरयेत् कुलीनान्नृपतिःस्वयम्। शूरान्कुलीनजातीयान् बलयुक्तान्श्रियान्वितान् ४ रूपसत्वगुणोपेतान् सज्जनान्क्षमयान्वितान्। क्लेशक्षमान्महोत्साहान् धर्मज्ञांश्चप्रियंवदान् ५ हितोपदेशकान्राज्ञः स्वामिभक्तान्यशोऽर्थिनः। एवंविधान्सहायांश्च शुभकर्मसुयोजयेत् ६ गुणहीनापितथाविज्ञायन्नृपतिःस्वयम्। कर्मस्वेवनियुञ्जीत यथायोगेषुभागशः ७ कुलीनःशीलसम्पन्नो धनुर्वेदविशारदः। हस्तिशिक्षाऽश्वशिक्षासु कुशलःश्लक्ष्णभाषिता ८ निमित्तेशकुनेज्ञाते वेत्ताचैवचिकित्सिते। कृतज्ञःकर्मणांशूरस्तथाक्लेशसहोऽऋजुः ९ व्यूहतत्त्वविधानज्ञः फल्गुसारविशेषवित्। राज्ञासेनापतिःकार्यो ब्राह्मणःक्षत्रियोऽथवा १० प्रांशुःसुरूपोदक्षश्च प्रियवादीनचोद्धतः। चित्तग्राहश्चसर्वेषां प्रतीहारोविधीयते ११ यथोक्तवादीदूतः स्याद्देशभाषाविशारदः। शक्तःक्लेशसहोवाग्मी देशकालविभागवित् १२ विज्ञातादेशकालश्च

पतिव्रता स्त्रियोंका वचन संसारमें कभी मिथ्या नहीं होताहै इस निमित्त उत्तम मनोरथकी इच्छा वाले पुरुषोंको उन पतिव्रता स्त्रियोंकी सदैव पूजाकरनी चाहिये २२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रयोदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१३॥

मनुजी पूछते हैं हेमत्स्यजी राज्यगद्दीपर बैठेहुए राजाको कौन२सा कार्य्य करना योग्य है इसके सब वृत्तान्तको आप ब्योरे समेत वर्णन कीजिये क्योंकि आप सर्वज्ञ हैं १ मत्स्यजी बोले कि जिस राजाको राज्यसिंहासन प्राप्तहोजाय उसको राज्य करनेके निमित्त अच्छे उत्तम भृत्यजनोंकी परीक्षा करनी चाहिये २ जो छोटासा काम होताहै वह भी अकेले मनुष्यसे कठिनता पूर्वक होताहै और भृत्यजनोंकी सहायता बिना राज्यकी पालना होना तो अतिही कठिनतर है ३ इसलिये राजा अच्छे उत्तम कुलके पुरुषोंको अपना भृत्यबनावे वह लोग शूरवीर श्रेष्ठकुल, बल, शोभासे युक्त क्लेशोंके सहने वाले महा उत्साह वाले रूप सत्वगुण और क्षमासे युक्त सज्जन धर्म्मज्ञ प्रियभाषी हितोपदेशी स्वामिभक्त और यशकी इच्छा करनेवाले हों ऐसे भृत्योंको राजा शुभ कर्मोंमें नियुक्तकरे और जो गुणहीन भृत्यहों उनको राजा विचारके उनकेही गुणों के अनुसार यथायोग्य कर्मों में नियुक्त करदे ४।७ और अच्छा कुलीन शीलस्वभाव युक्त धनुष विद्यामें निपुण हाथीघोड़ोंकी परीक्षामें चतुर मधुर भाषी शकुनादि निमित्तोंका ज्ञाता वैद्य कर्मोंकी कृतज्ञताका ज्ञाता शूरवीर क्लेशोंका सहनेवाला सरल व्यूह अर्थात् सेनाकी कवाइदके तत्त्वका ज्ञाता ऐसा क्षत्री या ब्राह्मण राजाको सेनापति अर्थात् सेनाका अधिपति बनाना चाहिये ८।१० और ठिंगने शरीरवाला सुन्दर रूप सहित प्रियभाषी सब के चित्तों का वश करनेवाला ऐसा राजाको महामायावीदूत अर्थात् खोजपता और सुराग लगाने वाला रखनाचाहिये ११ और राजाकी आज्ञानुसार चलनेवाला देशभाषा का जाननेवाला क्लेशसहने

दूतःसस्यान्महीक्षितः। चक्तानयस्ययःकाले सदूतोनृपतेर्भवेत् १३ प्रांशवोव्यायताःशूराः
दृढभक्तानिराकुलाः। राज्ञातुरक्षिणः कार्याः सदाक्लेशसहाहिताः १४ अनाहार्योनृशंसश्च
दृढभक्तिश्चपार्थिवे। ताम्बूलधारीभवति नारीवाप्यथतद्गुणा १५ षाड्गुण्यविधितत्त्व
ज्ञो देशभाषाविशारदः। सन्धिविग्रहकः कार्यो राज्ञानयविशारदः १६ कृताकृतज्ञोभृत्यानां
ज्ञेयःस्याद्देशरक्षिता। आयव्ययज्ञोलोकज्ञो देशोत्पत्तिविशारदः १७ सुरूपस्तरुणःप्रांशु
र्दृढभक्तिःकुलोचितः। शूरःक्लेशसहश्चैव खड्गधारीप्रकीर्तितः १८ शूरश्चबलयुक्तश्च
गजाश्वरथकोविदः। धनुर्धारीभवेद्राज्ञः सर्वक्लेशसहःशुचिः १९ निमित्तशकुनज्ञानी ह
यशिक्षाविशारदः। हयायुर्वेदतत्त्वज्ञो भुवोभागविचक्षणः २० बलाबलज्ञोरथिनः स्थिरदृ
ष्टिःप्रियम्वदः। शूरश्चकृतविद्यश्च सारथिःपरिकीर्तितः २१ अनाहार्य्योरुचिर्दक्ष श्चि
कित्सितविदाम्वरः। सूपशास्त्रविशेषज्ञः सूदाध्यक्षःप्रशस्यते २२ सूदशास्त्रविधानज्ञाः
पराभेद्याकुलोद्गताः। सर्व्वेमहानसेधार्य्याः कृत्तकेशनखानराः २३ समःशत्रौचमित्रेच
धर्म्मशास्त्रविशारदः। विप्रमुख्यःकुलीनश्च धर्म्माधिकरणीभवेत् २४ कार्य्यास्तथावि
धास्तत्र द्विजमुख्याःसभासदः। सर्व्वदेशाक्षराभिज्ञः सर्व्वशास्त्रविशारदः २५ लेखकः

में समर्थमौनरहने वाला और देशकालके विभागका ज्ञाता ऐसा पुरुष राजाको दूतबनानाचाहिये
और वह दूत ऐसाहोनाचाहिये कि उसके बोलतेहुए दूसरा कोई नहीं बोलसके १२। १३ और
ठिंगने मोटेशरीरवाले शूरवीर दृढभक्त व्याकुलतारहित क्लेशके सहनेवाले और हितकारी ऐसे पुरुष
राजाको अपनी रक्षाकरनेमें पहरेवाले बनानेचाहिये १४ अनाहार्य अर्थात् किसीकी जालसाजीमें
कभी न आनेवाला क्रूरस्वभावी राजामें दृढभक्ति रखनेवाला ऐसे लक्षणोंवालापुरुष अथवा स्त्री राजा
को पानका खिलानेवाला रखनाचाहिये १५ राजाके छःगुणोंकी विधिके तत्त्वका ज्ञाता देशभाषाओंका
जाननेवाला ऐसापुरुष राजाको सन्धि और युद्ध करानेके कार्य्यमें युक्तकरनाचाहिये १६ औरभृत्योंके
कियेहुए अथवा नहीं कियेहुए कृत्योंका जाननेवाला पुरुष राजाको अपने देशोंका अधिपति रक्षक
बनानाचाहिये वहरक्षक लाभ खर्च और देशोंकेद्रव्य अथवा अन्नादिककी उत्पत्तियोंकाभी जाननेवाला
होनाचाहिये १७ सुन्दररूप तरुण ठिंगना राजामें दृढभक्ति रखनेवाला अच्छाकुलीन शूरवीर क्लेशोंका
सहनेवाला और खड्गधारी पुरुष होनाचाहिये १८ महाशूरवीर बलवान् हाथी घोड़े रथ आदिकका प-
हचाननेवाला महा पवित्र और धनुषधारीभी होनाचाहिये १९ कारणों सहित शकुनोंका ज्ञाता
घोड़ोंकी शिक्षा चिकित्सा और पृथ्वीके विभागोंकाज्ञाता योद्धाओंके बलाबलसेभिज्ञ स्थिर दृष्टि प्रि-
यभाषी विद्यावान् और सर्वकला सम्पन्न ऐसा पुरुष राजाका सारथी होनाचाहिये २०। २१ इसके
विशेष अनाहार्य सुन्दर चतुर वैद्य व्यंजनादि पाकशास्त्रोंकाज्ञाता और उदार बुद्धि ऐसापुरुष राजाको
रसोइयों और भंडारियोंका अधिपति बनानाचाहिये और रसोईके पाकालयमें व्यंजनपाकादिका जान
नेवाला और नखबालोंको कटानेवाला पुरुष होनाचाहिये २२। २३ शत्रु और मित्रोंमें समचित्त
धर्मशास्त्रज्ञ ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ अच्छा कुलवान् और धर्माधर्मका विचार करनेवालाभी होनाचाहिये २४-

कथितोराज्ञः सर्व्वाधिकरणेषुवै । शीर्षोपेतान्सुसम्पूर्णान् समश्रेणिगतान्समान् २६ अनन्तरान्वैलिखेद्यस्तु लेखकःसवरःस्मृतः । उपायवाक्यकुशलः सर्वशास्त्रविशारदः २७ बह्वर्थवक्ताचाल्पेन लेखकःस्यान्नृपोत्तम ! । पुरुषान्तरतत्त्वज्ञाः प्रांशवश्चाप्यलोलुपाः २८ धर्माधिकारिणःकार्याः जनादानकरानराः । एवम्विधास्तथाकार्या राज्ञादौवारिकाजनाः २९ लोहवस्त्राजिनादीनां रत्नानाञ्चविधानवित् । विज्ञाताफल्गुसाराणा मनाहार्यःशुचिः सदा ३० निपुणश्चाप्रमत्तश्च धनाध्यक्षःप्रकीर्तितः । आयद्वारेषुसर्वेषु धनाध्यक्षसमानगाः ३१ व्ययद्वारेषुचतथा कर्तव्याःपृथिवीक्षिता ३२ परम्परागतोयःस्यादष्टाङ्गेसुचिकित्सिते ३२ अनाहार्यःसवैद्यःस्यात् धर्मात्माचकुलोद्भवः । प्राणाचार्यःसविज्ञेयो वचनात्तस्यभूभुजा ३३ राजन् ! राज्ञासदाकार्यं यथाकार्यंपृथक्जनैः । हस्तिशिक्षाविधानज्ञोवनजातिविशारदः ३४ क्लेशक्षमस्तथाराज्ञो गजाध्यक्षःप्रशस्यते । एतैरेवगुणैर्युक्तः स्वासनश्चविशेषतः ३५ गजारोहीनरेन्द्रस्य सर्वकर्मसुशस्यते । हयशिक्षाविधानज्ञ श्चिकित्सितविशारदः ३६ अश्वाध्यक्षोमहीभर्तुः स्वासनश्चप्रशस्यते । अनाहार्यश्चशूरश्च तथा प्राज्ञःकुलोद्भवः ३७ दुर्गाध्यक्षःस्मृतोराज्ञ उद्युक्तःसर्वकर्मसु । वास्तुविद्याविधानज्ञोलघु

इसीप्रकार धर्म शास्त्र न्याय शास्त्र और नीतिशास्त्रके ज्ञाता विद्वान् लोग राजाको अपने सभासद अर्थात् कचहरीमें न्यायके देखनेवाले बनानेचाहिये और सब देशोंके अक्षरोंका जाननेवाला और सब शास्त्रोंमें निपुण ऐसा राजाको सब कामोंमें लेखक बनानाचाहिये जोउत्तम मध्यम और निकृष्ट सम्पूर्ण राज्यके नौकरोंको समान समझनेवालाहो और पक्षपातसे रहितहो ऐसा मुकद्दमोंका लिखने वाला लेखक होनाचाहिये ऐसे लेखकोंमेंभी जोउपायोंके वचनोंमें निपुणहो सब शास्त्रों को जानता हो बहुत अर्थयुक्त संक्षेपसे लिखनेवाला हो ऐसा लेखक श्रेष्ठहोताहै और अन्य पुरुषों के आशय और तत्त्वोंके ज्ञाता ठिंगने और लोभसे रहित ऐसे पुरुष धर्माध्यक्ष और दानाध्यक्ष बनाने चाहिये और ऐसेही मनुष्य राजाको द्वारपर रहनेवाले सिपाहीभी रखनेचाहिये २५। २९ और लोहा, वस्त्र, मृगछाला और रत्न इनसबके विधानोंका ज्ञाता सारासार वस्तुओंका जाननेवाला निपुण और आलस्यसे रहित ऐसा दानाध्यक्ष विचार पूर्वक राजाको बनानाचाहिये और जैसेकि धन के भंडारी हों उन्हींके समान पुरुषोंको लाभ और खर्चके स्थानोंपर नियुक्त करनाचाहिये और जो पूर्वसे चलाआताहो अष्टांग चिकित्साका ज्ञाताहो किसीके छलमें न आनेवालाहो धर्मात्माहो और अच्छे कुलमें उत्पन्नहुआहो ऐसा पुरुष राजाको अपना वैद्य बनानायोग्यहै इस वैद्यको राजा अपने प्राणों का आचार्य जानाकरे ३०।३३ हेराजन् राजाको सब यथायोग्य कार्य्य पृथक्२ जनोंसे कराने चाहिये जोहाथीकी शिक्षाके विधानको जानताहो बनकी जातिको जानताहो क्लेशको सहसकाहो ऐसा पुरुष हाथियोंका स्वामी बनानाचाहिये और इन्हीं गुणोंसे युक्त तथा राजाके आसनका जाननेवाला ऐसा पुरुष हाथीका हाँकनेवाला अर्थात् फीलवान् बनानाचाहिये औरघोड़ोंकी शिक्षाके विधानका जाननेवाला राजाके घोड़ेका सईसहोनाचाहिये और अनाहार्य्य शूरवीर, पण्डित, श्रेष्ठ कुलीन और

हस्तोजितश्रमः ३८ दीर्घदर्शीचशूरश्च स्थपतिःपरिकीर्तितः। यन्त्रमुक्तेपाणिमुक्ते विमुक्तेमुक्तधारिते ३९ अस्त्राचार्योनिरुद्वेगः कुशलश्चविशिष्यते। वृद्धःकुलोद्गतःसूक्तःपितृपैतामहःशुचिः४० राज्ञामन्तःपुराध्यक्षो विनीतश्चतथेष्यते। एवंसप्ताधिकारेषुपुरुषाः सप्ततेपुरे ४१ परीक्ष्यचाधिकार्याःस्यूराज्ञासर्वेषुकर्मसु। स्थापनाजातितत्त्वज्ञः सततंप्रतिजाग्रता ४२ राज्ञःस्यादायुधागारे दक्षःकर्मसुचोद्यतः। कर्माण्यपरिमेयानि राज्ञोनृपकुलोद्वह! ४३ उत्तमाधममध्यानि वुद्ध्वाकर्माणिपार्थिवः। उत्तमाधममध्येषु पुरुषेषुनियोजयेत् ४४ नरकर्मविपर्यासाद्राजानाशमवाप्नुयात्। नियोगंपौरुषंभक्तिं श्रुतंशौर्यंकुलंनयम् ४५ ज्ञात्वावृत्तिर्विधातव्या पुरुषाणांमहीक्षिता। पुरुषान्तरविज्ञानतत्त्वसारनिवन्धनात् ४६ वहुभिर्मन्त्रयेत्कामं राजामन्त्रंपृथक्पृथक्। मन्त्रिणामपिनोकुर्यान्मन्त्रिमन्त्रप्रकाशनम् ४७ क्वचिन्नकस्यविश्वासो भवतीहसदानृणाम्। निश्चयस्तुसदामन्त्रे कार्यएकेनसूरिणा ४८ भवेद्वानिश्चयावाप्तिः परवुद्ध्युपजीवनात्। एकस्यैवमहीभर्तुर्भूयःकार्योविनिश्चयः ४९ व्राह्मणान्पर्युपासीत त्रयीशास्त्रसुनिश्चितान्। नासच्छास्त्रवतोमूढास्तेहिलोकस्यकण्टकाः ५० वृद्धान्हिनित्यंसेवेत विप्रान्वेदविदःशुचीन्। तेभ्यः शिक्षेतविनयं विनीतात्माचनित्यशः ५१ समग्रांवशगांकुर्य्यात् पृथिवींनात्रसंशयः। वह

सवकार्य्योंमें उद्योगरखनेवाला ऐसापुरुष राजाको दुर्गाध्यक्ष अर्थात् किलेकाअधिपति वनानाचाहिये और वास्तु विद्याके विधानकाज्ञाता हलके हाथवाला श्रमरहित ऐसाशिल्पी अर्थात् कारीगर मिस्तरी अस्त्रशस्त्रादिकाभी वनानेवाला ऐसाहीकारीगर वनानाचाहिये ३४।३९ उद्वेगरहित सवकार्योंमें निपुण वृद्धअवस्थावाला अच्छे कुलमें जन्माहुआपिता पितामहादिकोंकाभक्त पवित्र औरविनय शील ऐसा पुरुषअन्तःपुर (महल) में रक्षकरखनाचाहिये इसप्रकारसे इनसातों अधिकारोंपर ऐसे २ पुरुषरखने चाहिये सव कामों में मनुष्योंकी परीक्षाकरके राजा अधिकारी करे ४०।४२ और राजाके शस्त्रों के स्थानमें रहनेवाला पुरुष चतुर और उद्योगीहो राजा सदैव कार्य्यकी उत्तम मध्यम और निकृष्टतादेखकर वैसेही दरजेके मनुष्य नियतकरे मनुष्योंके कर्मोंके विपरीत होजानेपर राजाका नाशहो जाताहै राजाको अपने भृत्योंके नियत करनेमें सदैव पौरुष भक्ति श्रुत शूरता, कुल, और विनय आदिकी परिक्षा करनीयोग्यहै यह सव परीक्षा अन्यचतुरों से सीखकर करनीचाहिये ४३।४६ राजा को एक कामकी सलाह पृथक् २ मनुष्यों से करना चाहिये और एक मंत्रीकी सलाह दूसरे मंत्री से नकहे क्योंकि मनुष्योंको सदैव विश्वासनहीं रहताहै इसलिये मुख्य सलाहतो एकही विद्वान् सेकरे परन्तु सवसे पूछनेसेकोई विशेषवातभी निकलआतीहै अन्यकी सलाह लेनेवाला राजाकार्य्य की सिद्धिकेपीछे उससलाहीपर सदैव विश्वासकरे ४७।४९ और वेदत्रयी पढ़ेहुए उत्तम ब्राह्मणोंको रखकर उनकीसेवाकरे असत् शास्त्रके जाननेवालोंका संग कभी न करे क्योंकि वहमूढ़लोग सव विद्वानोंके कंटकहैं ५० वेदपाठी पवित्रात्मा और वृद्धपुरुषोंकी सदैव सेवाकरे उनकेपाससे विनय और नीतिशास्त्रको सदैव सीखतारहै ५१ ऐसाराजा निस्सन्देह सव पृथ्वीको वशमें करलेताहै और

बोविनयाद्भ्रष्टा राजानःसपरिच्छदाः ५२ वनस्थाश्चैवराज्यानि विनयात्प्रतिपेदिरे।
त्रैविद्येभ्यस्त्रयीविद्यां दण्डनीतिंचशाश्वतीम् ५३ आन्वीक्षिकींत्वात्मविद्यांवार्तारम्भा
श्चलोकतः। इन्द्रियाणांजयेयोगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् ५४ जितेन्द्रियोहिशक्नोति वशे
स्थापयितुंप्रजाः। यजेतराजाबहुभिः क्रतुभिश्चसदक्षिणैः ५५ धर्मार्थंचैवविप्रेभ्यो दद्या
द्भोगान्धनानिच। सांवत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम् ५६ स्यात्स्वाध्यायपरो
लोके वर्त्तेतपितृवन्धुवत्। आवृत्तानांगुरुकुलात् द्विजानांपूजकोभवेत् ५७ नृपाणामक्ष
योह्येष विधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते। ततस्तेनानवामित्रा हरन्तिनविनश्यति ५८ तस्माद्राज्ञा
विधातव्यो ब्राह्मोवैह्यक्षयोविधिः। समोत्तमाधमैराजा ह्याहूयपालयेत्प्रजाः ५९ ननिव
र्त्तेतसंग्रामात् क्षात्रंव्रतमनुस्मरन्। संग्रामेष्वनिवर्तित्वं प्रजानांपरिपालनम् ६० शुश्रू
षाब्राह्मणानाञ्च राज्ञांनिःश्रेयसम्परम्। कृपणानाथवृद्धानां विधवानाञ्चपालनम् ६१
योगक्षेमञ्चवृत्तिञ्च तथैवपरिकल्पयेत्। वर्णाश्रमव्यवस्थानं तथाकार्यंविशेषतः ६२
स्वधर्मप्रच्युतान्राजा स्वधर्मेस्थापयेत्तथा। आश्रमेषुतथाकार्यमन्नंतैलञ्चभाजनम् ६३
स्वयमेवानयेद्राजा सत्कृतान्नावमानयेत्। तापसेसर्वकार्याणि राज्यमात्मानमेवच ६४
निवेदयेत्प्रयत्नेन देववच्चिरमर्चयेत्। द्वेप्रज्ञेवेदितव्येच ऋज्वीवक्राचमानवैः ६५ वक्रां

विनयसे भ्रष्टहोनेवाले बहुतसेराजा राज्यसहित नष्टहोगयेहैं ५२ विनयमें रहनेवाले बहुतसेराजा वनोवाससेभी फिर अपनेराज्यको प्राप्तहोगये हैं राजा वेदत्रयीके जाननेवालोंसे वेदत्रयी विद्यापढ़े और दण्डनीति, न्यायशास्त्र, ब्रह्मविद्या तथा लौकिकविद्याकोभी सीखकर इन्द्रियोंको वशमें रक्खे क्योंकि इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाला राजा संपूर्ण प्रजाको वशमें करसक्ताहै और राजाको बहुतसी दक्षिणा सहित यज्ञोंकोभी करनाचाहिये ५३।५५ इसके सिवाय धर्म्मके निमित्त ब्राह्मणोंको अनेक प्रकारके दानदेवे और प्रतिवर्ष अपने राज्यके लोगों से करलेतारहै वेदका पठन पाठन जारीरक्खे सब मनुष्योंमें पिता और बन्धुओंके समान बनारहै और अपने गुरुकुलके ब्राह्मणोंकी विशेष पूजा रक्खे ५६। ५७ यह राजालोगों की ब्राह्मविधि मैंने तेरे आगे कहीहै इस विधिसे रहनेवाला राजा कभी नष्ट नहीं होता और सबका मित्र बनारहताहै ५८ इसी से राजा को सदैव इस ब्राह्म विधिके अनुसार सब काम करना योग्यहै यह अक्षय विधि कहाती है राजा को सब छोटे बड़ों का समान पालन करना चाहिये ५९ और क्षत्रियधर्म्म को स्मरण करतेहुए राजाको कभी युद्धसे नहीं हटना चाहिये संग्राम युद्धसे कभी न हटना, प्रजाका पालन करना, ब्राह्मणों की सेवा करना, यह राजाओं का परमकल्याण कारक धर्म्म है और कृपण पुरुष वृद्धपुरुष और विधवा स्त्री इनसबका पालन और योग क्षेम की वृत्ति का कल्पित करना वर्णाश्रमों की व्यवस्था करना, अपने धर्म्म से भ्रष्ट हुए पुरुषों को उनके धर्म्म में स्थापित करना और सब आश्रमों में रहनेवाले साधुजनों के निमित्त अन्न वस्त्र तेल और पात्रादिकों का देना तपस्वी महात्माओं के सब कार्य्य सिद्ध करने इन सब बातों में ऐसा प्रवृत्त रहै कि अपना राज्य और शरीर भी देनेको समर्थ होजाय ६०। ६१ मनुष्योंकी सरल

ज्ञात्वानसेवेत प्रतिबाधेतचागताम्। नास्यच्छिद्रंपरोविन्द्याद्विन्द्याच्छिद्रंपरस्यतु ६६ गूहे
त्कूर्मइवाङ्गानि रक्षेद्विवरमात्मनः। नविश्वसेदविश्वस्ते विश्वस्तेनातिविश्वसेत् ६७ विश्वा
साद्भयमुत्पन्नं मूलादपिनिकृन्तति। विश्वासयेच्चाप्यपरन्तत्त्वभूतेनहेतुना ६८ वकव
च्चिन्तयेदर्थान् सिंहवच्चपराक्रमे। वृकवच्चापिलुम्पेत शशवच्चविनिक्षिपेत् ६९ दृढाहारी
चभवेत् तथाशूकरवन्नृपः। चित्राकारश्चशिखिवद्दृढभक्तस्तथाश्ववत् ७० तथाचमधुरा
भाषी भवेत्कोकिलवन्नृपः। काकशङ्कीभवेन्नित्यमज्ञातवसतिंवसेत् ७१ नापरीक्षितपूर्वं
ञ्चभोजनंशयनंव्रजेत्। वस्त्रंपुष्पमलङ्कारं यच्चान्यन्मनुजोत्तम! ७२ नगाहेज्जनसम्बा
धंनचाज्ञातजलाशयम्। अपरीक्षितपूर्वञ्च पुरुषैराप्तकारिभिः ७३ नारोहेत्कुञ्जरंव्या
लंनादान्तंतुरगंतथा। नाविज्ञातांस्त्रियंगच्छेन्नैवदेवोत्सवेवसेत् ७४ नरेन्द्रलक्ष्म्याधर्मज्ञ!
त्रातायत्तोभवेन्नृपः। सद्भृत्याश्चतथापुष्टाः सततंप्रतिमानिताः ७५ राज्ञासहायाःकर्त
व्याः पृथिवींजेतुमिच्छता। यथार्हञ्चाप्यसुभृतो राजाकर्मसुयोजयेत् ७६ धर्मिष्ठान्धर्म
कार्येषु शूरान्संग्रामकर्मसु। निपुणानर्थकृत्येषु सर्वत्रैवतथाशुचीन् ७७ स्त्रीषुषण्ढंनियु
ञ्जीत तीक्ष्णंदारुणकर्मसु। धर्मेचार्थेचकामेच नयेचरविनन्दन! ७८ राजायथार्हंकुर्या

और वक्र दोप्रकारकी बुद्धि कहीहै सो जिससमय वक्रबुद्धि प्राप्तहो उस समय बुद्धिको रोके और शान्तकरदे और अपने छिद्रको किसीपर प्रकटनहोनेदे और दूसरेके छिद्रको जानले ६५।६६ कर्मों केही समान अपने अंगोंकीभी रक्षारक्खे अपने छिद्रकी रक्षाकरे जिसका कोई मत और धर्म न हो उसका कभी विश्वास न करे किन्तु धर्मवालेकाभी सहसा विश्वास न करे उसकेभी विश्वासकरने से ऐसाभय उत्पन्न होताहै जिस्से कि मूलसमेत नाश होजाताहै और मुख्यहेतुसे दूसरेको विश्व-स्तित करदेवे ६७।६८ वगलेके समान सब प्रयोजनोंको देखे, सिंहके समान पराक्रमरक्खे वगलेही के समान उड़जाय हिरनेके समान छलांगमारे शूरवीरके समान दृढ़ आहारवालारहै, मोरके समान विचित्र आकार वालारहै, घोड़ेके समान दृढ़भक्तरहै ६९।७० कोकिलके समान मधुरबोले, काकके समान सदैव शंकायुक्तरहै, एकान्तमें वासकरे ७१ परीक्षा विनाकिये भोजन न करे शयन न करे परीक्षा कियेविना पुष्प, वस्त्र और आभूषणकोभी धारण नहीं करे ७२ बहुतसे मनुष्योंके युद्ध और समूहमें न जाय विनाजानेहुए जलमें गोता न मारे प्रथम जिसकी श्रेष्ठ पुरुषोंने परीक्षा नहीं कीहो ऐसे हाथी तथा घोड़ेकी सवारी न करे, सर्पको नहींछेड़े, अज्ञातस्त्रीके संग भोग न करे देवताके उ-त्सवमें वास न करे ७३।७४ सदैव अपनेराज्यकी शोभासेयुक्तरहै इसके विशेष संपूर्ण पृथ्वीके जीत-नेकी इच्छाकरनेवाले राजाको मानकियेहुए पुष्टशरीरवाले उत्तम सहायक भृत्यलोग रखनेचाहिये और जैसे कर्मकेयोग्य जो होय वैसेही कर्ममें उसको नियुक्तकरे ७५।७६ धर्मिष्ठ पुरुषोंको धर्म कार्य्यमें नियुक्तकरे शूरवीरोंको युद्धके कार्य्यमें नियुक्तकरे चतुरजनोंको द्रव्यके कार्य्यमें अशुचि पुरुषोंको अन्यत्र उनकेही योग्य कामोंपर नियुक्तकरे स्त्रियों के महलोंमें नपुंसक पुरुषोंको रक्खे तीक्ष्ण स्वभाववालेको दारुणकर्म में नियुक्त करे हे राजन् धर्म अर्थ और काम इन सब कामोंमें

ऋउपधाभिःपरीक्षणम्। समतीतोपदान्भृत्यान् कुर्याच्छस्तवनेचरान् ७९ तत्पादान्वेप णोयत्तांस्तदध्यक्षांस्तुकारयेत्। एवमादीनिकर्माणि नृपैःकार्याणिपार्थिव! ८० सर्वथानै व्यनेराज्ञस्तीक्ष्णोपकरणक्रमः। कर्माणिपापसाध्यानि यानिराज्ञोनराधिप! ८१ सन्त स्तानिनकुर्वन्ति तस्मात्तानिन्यजेन्नृपः। नेष्यतेपृथिवीशानान्तीक्ष्णोपकरणक्रिया ८२ यस्मिन्कर्मणियस्य स्याद्विशेषेणचकौशलम्। तस्मिन्कर्मणितंराज्ञा परीक्ष्यविनिवेश येत् ८३ पितृपैतामहान्भृत्यान् सर्वकर्मसुयोजयेत्। विनादायादकृत्येषु परीक्षांस्वकृता न्तरान् ८४ नियुञ्जीतमहाभाग! तस्यतेहितकारिणः। परराजगृहात्प्राप्तान् जनसंग्रह काम्यया ८५ दुष्टान्वाप्यथवादुष्टान् आश्रयीतप्रयत्नतः। दुष्टंविज्ञायविश्वासं नकुर्यात्त त्रभूमिपः ८६ वृत्तिंतस्यापिवर्तेत जनसंग्रहकाम्यया। राजादेशान्तरप्राप्तं पुरुषंपूजयेद् भृशम् ८७ मामयंदेशसम्प्राप्तो वहुमानेनचिन्तयेत्। कामंभृत्यार्जनंराजा नैवकुर्यान्नरा धिप! ८८ नचवासंविभक्तांस्तान् भृत्यान्कुर्यात्कथञ्चन। शत्रवोऽग्निर्विषंसर्पो निस्त्रिं शइतिचिन्तयेत् ८९ भृत्यामनुजशार्दूल! रुषिताश्चतथैकतः। तेषांचारेणचारित्रंराजा विज्ञायनित्यशः ९० गुणिनांपूजनंकुर्यात् निर्गुणानाञ्चशासनम्। कथिताःसततंराजन्! राजानश्चारचक्षुषः ९१ स्वकेदेशेपरेदेशे ज्ञानशीलान्विचक्षणान्। अनाहार्यान्क्लेशस हान्नियुञ्जीततथाचरान् ९२ जनस्याविदितान्सौम्यान् तथाज्ञातान्परस्परम्। वणिजो

राजा यथायोग्य पुरुषों को नियतकरे और अच्छे प्रकार कवायद जाननेवाले प्यादे पुरुषोंको वनमें विचरनेके निमित्त छोड़े और उन सबका अधिपति भी अन्यही कियाजाय इस प्रकारके कर्म राजाको करने चाहिये ७७।८० और सर्वथा तीक्ष्णदंड राजाको नहीं करना चाहिये जो राजाके पाप साध्य कर्म हैं उनको सन्तजन नहीं करसके हैं इसीसे राजाको तीक्ष्णदंड आदि क्रिया नहीं करनी चाहिये जो पुरुष जिसकर्ममें विशेष निपुणहोवे उसको राजा उसी कर्ममें नियुक्तकरे ८१।८३ और जो पिता पितामहादिकों से चलेआते हों उन भृत्योंको परीक्षाकिये विनाही सब कामोंमें नियुक्तकरे और पुत्र बंधुओंके कृत्योंमें भी उन्हीं पुराने नौकरोंको नियतकरे वह पुराने नौकर राजाके हितकारी होते हैं और दूसरे राजाके पुरसे आयेहुए दुष्ट पुरुषोंको अथवा सज्जन पुरुषोंको राजा यत्नपूर्वक आश्रयदेवे और दुष्टजन जानकर उनमें कभी राजाको विश्वास न करना चाहिये परन्तु मनुष्योंकी वृद्धिके लिये उनकी भी कुछ आजीविका करदेवे इस प्रकारसे दूसरे देशसे आयेहुए पुरुषको राजा बहुतसा पूजितकरे यह समझकर कि यह दूसरे देशसे मेरी शरणमें आयाहै उसकी अधिक शुश्रूषा करे और लोभी भृत्योंको कभी न रहनेदे और एकवार त्यागेहुए भृत्यको फिरकभी न रक्खे क्योंकि शत्रुजन लोग अग्नि, विष और खड्ग इन वस्तुओंके समान होते हैं ऐसा राजाको चिन्तवन करना चाहिये ८४।८९ हेराजन् जो भृत्य राजासे कुपित होकर दूसरहेहों उनकी दूतोंके द्वारा सदैव खबर रखनी चाहिये ९० गुणी भृत्योंका सत्कारकरे दुष्ट भृत्योंको दंडदेवे राजा सदैव गुप्तदूतोंके द्वारा सबकी खबर रक्खे ९१ अपने देशमें और परदेशमें ज्ञान रखनेवाले चतुर निर्लोभी क्लेशके सहनेवाले किसीके पहिचाननेमें न आवे

मन्त्रकुशलान् सांवत्सरचिकित्सकान् ९३ तथाप्रव्राजिताकारांश्चारान्राजानियोजयेत्। नैकस्यराजाश्रद्दध्यात् चारस्यापिसुभाषितम् ९४ द्वयोःसम्बन्धमाज्ञाय श्रद्दध्यान्नृपतिस्तदा। परस्परस्याविदितौ यदिस्यातांश्चतावुभौ ९५ तस्माद्राजाप्रयत्नेन गूढांश्चारान्नियोजयेत्। रागापरागौभृत्यानां जनस्यचगुणागुणान् ९६ सर्वेराज्ञांचरायत्तन्तेषुयत्नपरोभवेत्। कर्मणाकेनमेलोके जनःसर्वोऽनुरज्यते ९७ विरज्यतेकेनतथा विज्ञेयंतन्महीक्षिता। विरागजनकंलोके वर्जनीयंविशेषतः ९८ तथाचरागप्रभवाहिलक्ष्म्यो राज्ञांमताभास्करवंशचन्द्र!। तस्मात्प्रयत्नेननरेन्द्रमुख्यैः कार्योऽनुरागोभुविमानवेषु ९९ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेचतुर्दशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१४॥

(मत्स्य उवाच) यथानवर्तितव्यंस्यान्मनोराज्ञोऽनुजीविना। तथातेकथयिष्यामि निबोधगदतोमम १ राजायत्तुवदेद्वाक्यं श्रोतव्यंतत्प्रयत्नतः। आक्षिप्यवचनंतस्यनवक्तव्यंतथावचः २ अनुकूलंप्रियंतस्य वक्तव्यंजनसंसदि। रहोगतस्यवक्तव्यमप्रियंयद्धितंभवेत् ३ परार्थमस्यवक्तव्यं समेचेतसिपार्थिव!। स्वार्थःसुहृद्भिर्वक्तव्यो नस्वयंतुकथञ्चन ४ कार्य्यातिपातःसर्वेषु रक्षितव्यःप्रयत्नतः। नचहिंस्यंधनंकिञ्चित् नियुक्तेनचकर्मणि ५ नोपेक्ष्यस्तस्यमानश्च तथाराज्ञःप्रियोभवेत्। राज्ञश्चनतथाकार्य्यं वेषभाषितचेष्टितम् ६ राजलीलानकर्तव्या तद्विद्विष्टञ्चवर्जयेत्। राज्ञःसमोऽधिकोवान कार्य्योवेषोविजा

वाले सौम्य परस्पर जान पहचान वाले वणिजकरने में चतुर अथवा चिकित्सा करने में निपुण ऐसे चार पुरुषोंको तोड़फोड़ फूटकराने के निमित्त गुप्त भेजतारहे और राजाको एकही दूतके कहने पर कभी विश्वास न करना चाहिये ९३।९४ जब वह तोड़ फोड़ करनेवाले जासूस दो इकट्ठे होकर कहें उसी बातको राजामाने और जो वह दोनों जनेभी ठीक २ न जानतेहों तो अपने भृत्योंके गुण अवगुण जाननेके निमित्त अन्यगूढ़चारी जासूसोंको भेजकर यह खबर जाननी चाहिये कि सब लोग मेरे कौनसे कर्म करके प्रसन्न रहते हैं और कौनसे कर्मसे अप्रसन्न होते हैं ऐसी बात जानकर जिसबातसे प्रजा दुःखपावे वह बात राजाको कभी न करनाचाहिये ९५।९८ हेसूर्य्यवंशोद्भव राजन् संपूर्ण प्रजा की प्रसन्नतासेही राजाओंकी शोभारहती है इसलिये राजाको सबमनुष्योंमें स्नेह रखनाचाहिये९९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुर्दशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१४॥

मत्स्यजीबोले राजाके राज्यमें रहनेवाले भृत्य पुरुषको जो २ वृत्तान्त नहीं करने चाहिये उन वृत्तान्तोंको मैंतुम्हें सुनाताहूं १ राजा जो वचनकहै उसको चित्तसे सुने और उसके वचनको लौटा कर अपने वचन कभी न कहै २ मनुष्योंकी सभामें राजासे बहुत अनुकूलतापूर्व्वक प्रियवचन बोले और जो राजाका हितकारीहो ऐसा अप्रियवचन कहनाहो तो राजासे एकान्तमें कहे और जबराजा का समान चित्तहोय तब पराये प्रयोजनको कहै परन्तु अपने प्रयोजनको आप कभी न कहै किसी दूसरे अपने मित्रसे कहलादे ३।४ और किसी पुरुषसे अत्यन्त काम न करावे और राजाने भृत्यको जिस कार्य्यमें नियत कियाहो उसमेंसे कुछ धननहीं चुरावे५राजाका मानकभीभंग न करे सदैव प्रि-

नता ७ द्यूतादिषुतथैवान्यत् कौशलंतुप्रदर्शयेत्। प्रदर्श्यकौशलंचास्य राजानन्तुविशेष येत् ८ अन्तःपुरजनाध्यक्षैर्वैरिदूतैर्निराकृतैः। संसर्गंनव्रजेद्राजन्! विनापार्थिवशासनात् ९ निस्नेहताञ्चावमानं प्रयत्नेनतुगोपयेत्। यच्चगुह्यंभवेद्राज्ञो नतल्लोकेप्रकाशयेत् १० नृपेणश्राविर्तयत्स्याद्वाच्यावाच्यंनृपोत्तम!। नतत्संश्रावयेल्लोके तथाराज्ञोऽप्रियोभवेत् ११ आज्ञाप्यमानेवान्यस्मिन् समुत्थायत्वरान्वितः। किमहङ्करवाणीति वाच्योराजाविजानता १२ कार्यावस्थांचविज्ञाय कार्यमेवयथाभवेत्। सततंक्रियमाणेऽस्मिन् लाघवन्तुव्रजेद्ध्रुवम् १३ राज्ञःप्रियाणिवाक्यानि नचात्यर्थंपुनःपुनः। महासुशीलस्तुभवेत् नचापिभृकुटीमुखः १४ नातिवक्तानानिर्वक्ता नचमात्सरिकस्तथा। आत्मसम्भावितश्चैव नभवेत्तुकथञ्चन १५ दुष्कृतानिनरेन्द्रस्य नतुसङ्कीर्त्तयेत्क्वचित्। वस्त्रमस्त्रमलङ्कारं राज्ञादत्तंतुधारयेत् १६ औदार्येणनतद्देयमन्यस्मैभूतिमिच्छता। तत्रैवात्मासनंकार्यंदिवास्वप्नंनकारयेत् १७ नानिर्दिष्टेतथाद्वारे प्रविशेत्तुकथञ्चन। नचपश्येत्तुराजानमयोग्यासुचभूमिषु १८ राज्ञस्तुदक्षिणेपार्श्वे वामेचोपविशेत्तदा। पुरस्ताच्चतथापश्चादासनन्तुविगर्हितम् १९ जृम्भांनिष्ठीवनङ्कासं कोपंपर्यस्तिकाश्रयम्। भृकुटिंवान्तमुद्गारन्तत्समी-

यरहै राजाके स्वरूप आदिकी कभी नकल न करे राजाकी लीलानहींकरे राजासे शत्रुता न करे राजाके समान अथवा राजासे अधिक अपने स्वरूपका वेषनहीं बनावे ६।७ द्यूतपाशे आदिकोंके समयपर राजाके साथहोकर अपनी चतुराई दिखादेवे और राजाहीको जितादेवै ८ हे राजन् राजाकी स्त्रियोंके महलोंके रहनेवालोंके साथ, शत्रुओंके दूतोंकेसाथ और राजाके निकालेहुए नौकरोंके साथ राजाकी आज्ञाबिना गमन नहीं करे ९ और स्नेहरहित वार्त्ताको तथा राजाके अपमानको गुप्तरक्खे और जो राजासे गुप्तवार्त्ताहोवे उसको दूसरे मनुष्यके आगे नहीं कहै १० और राजाने जो कोई गुप्तवार्त्ता कहदीहो उसको अन्यके आगे नहींकहै और जो किसीके आगे कह देताहै वहराजाका प्रियनहीं रहता है ११ और राजा अन्य किसी भृत्यको जब आज्ञादेताहो तब आप राजा से कहै कि जो आपकी आज्ञाहोतो मैं इसकामको करूं और जो कार्य्यकी व्यवस्थाको जानकर निरन्तर कार्य्य करनेवाला पुरुष राजासे वारंवार पूछताहै वहनिश्चय अविश्वस्य होजाताहै १२।१३ और जो वचन कि राजाको प्याराहो उसको भी वारंवार नहीं कहै महासुशील स्वभाव वालारहै कभी भृकुटी न चढ़ावे १४ राजाके आगे विशेष न बोले चुपकाभी न रहै कभी कुटिलता और अहंकार न करे १५ राजाके दुष्कृत कर्मोंको न कहै, राजाके दियेहुए वस्त्र अस्त्र शस्त्र और आभूषणोंको धारण करले अपना कल्याण चाहनेवाला पुरुष राजाके दियेहुए द्रव्य और किसी प्रकारकी वस्तुको उदारता करके दूसरेको न दे और जहाँ पहराहोवे उसी स्थानपर अपना आसन रक्खे दिन में सोवे नहीं और जहाँ आज्ञा न होवे ऐसेद्वारमें होकर कभी गमन न करे और अयोग्य स्थानोंमें राजाके दर्शननहींकरे और राजाके दहिने अथवा बाईं ओरको बैठे राजाके आगे और पीछे आसन करना कभी योग्य नहीं है १६।१९ जंभाई थकना, खांसी, क्रोध, तकिया आदिक आश्रय भृकुटि वमन, और डकार, इन सब बातोंको राजाके

प्रेविवर्जयेत् २० स्वयंतत्रनकुर्वीत स्वगुणाख्यापनंबुधः। स्वगुणाख्यापनेयुक्ता परमेव प्रयोजयेत् २१ हृदयंनिर्मलंकृत्वा परांभक्तिमुपाश्रितैः। अनुजीविगणैर्भाव्यं नित्यंराज्ञामतन्द्रितैः २२ शाठ्यंलौल्यंचपैशून्यं नास्तिक्यंक्षुद्रतातथा। चापल्यञ्चपरित्याज्यं नित्यं राज्ञोऽनुजीविभिः २३ श्रुतिविद्यासुशीलैश्च संयोज्यात्मानमात्मना। राजसेवान्ततःकुर्याद्भूतयेभूतिवर्द्धनीम् २४ नमस्कार्याःसदाचास्य पुत्रवल्लभमन्त्रिणः। सचिवैश्चास्य विश्वासोनतुकार्यःकथञ्चन २५ अपृष्टश्चास्यनब्रूयात् कामंब्रूयात्तथायदि। हितंतथ्यञ्च वचनं हितैःसहसुनिश्चितम् २६ चित्तञ्चैवास्यविज्ञेयं नित्यमेवानुजीविना। भर्त्तुराराधनं कुर्याच्चित्तज्ञोमानवःसुखम् २७ रागापरागौचैवास्य विज्ञेयौभूतिमिच्छता। त्यजेद्विरक्तं नृपतीरक्तवृत्तिन्तुकारयेत् २८ विरक्तःकारयेन्नाशं विपक्षाभ्युदयंतथा। आशावर्द्धनकं कृत्वा फलनाशंकरोतिच २९ अकोपोऽपिसकोपाभः प्रसन्नोऽपिचनिष्फलः। वाक्यंचस मद्वंवक्ति वृत्तिच्छेदंकरोतिवै ३० प्रदेशवाक्यमुदितो नसम्भावयतेऽन्यथा। आराधनासु सर्वासु सुप्तवच्चविचेष्टते ३१ कथासुदोषंक्षिपति वाक्यभङ्गंकरोतिच। लक्ष्यतेविमुखश्चैव गुणसङ्कीर्तनेऽपिच ३२ दृष्टिंक्षिपतिचान्यत्र क्रियमाणेचकर्मणि। विरक्तलक्षणंचैतत् शृणुरक्तस्यलक्षणम् ३३ दृष्ट्वाप्रसन्नोभवति वाक्यंगृह्णातिचादरात्। कुशलादिपरिप्रश्नं संप्रयच्छतिचासनम् ३४ विविक्तदर्शनेचास्य रहस्येनंनशङ्कते। जायतेहृष्टवदनःश्रुत्वा

समीप कभी न करे २० अपनी बड़ाई आप न करे अपने गुण किसी अन्यसेही कहलावे २१ राज्य से आजीविका करनेवाले भृत्यजन अपना हृदय निर्मलकर परमभक्तिपूर्वक निरालस्य होकर राजाकी उपासना करें २२ और चंचलता शठता, चुगली नास्तिकपन और तुच्छ व्यवहार यह सब सदैव त्यागदेनाचाहिये २३ और वेदविद्या शील स्वभाव इनबातोंसे युक्तहुएभृत्यको अपने ऐश्वर्यकी वृद्धिके निमित्त राजाकी उत्तम सेवा करनी चाहिये २४ और राजाके पुत्र मित्र और मंत्री इनसबको नित्य नमस्कार करनाचाहिये राजाके मंत्रीका विश्वास नहीं करनाचाहिये २५ मंत्रीसे विनापूछे कुछ न बोले जो यह मंत्री हित सत्य और निश्चित वचन कहता होवे तो उसके चित्तको पहचानलेवे फिर उसके चित्तकी सचाई जानकर सदैव उसका सत्कार करे और उसके कहनेपरचले २६।२७ और जो विरक्त मंत्री होवे उसको राजा त्यागदेवे और अनुरक्तचित्तके साथ प्रसन्नमनवाले मन्त्रीकोरक्खे २८ विरक्तमंत्री राजाका नाशकरदेताहै और शत्रुकीभी प्राप्तिकरदेताहै एकबार आशाको बढ़ाकरफिर फल कानाशकरदेताहै २९ विनाहीक्रोधके क्रोधवालेके समानरहताहै प्रसन्नभी निष्फल रहताहै वह मद- युक्त बातेंकरके राजाकी वृत्तिका छेदन करदेता है ३० और परदेशी अन्यराजाके वाक्यको अच्छे प्रकारसे नहीं बताताहुआ सम्पूर्ण आराधनके कर्मोंमें राजाकेआगे सोतेहुएके समान चेष्टाकरताहै राजाकीवार्तामें दोषठहराकर वाक्यको भंगकरके उसके गुण कथनकरनेमें विमुख विदित होता है ३१।३२ कार्य्य करनेके समय अन्यत्र चित्तलगावे यह सब विरक्त मंत्रीके लक्षणहैं अब अनुरक्त और प्रसन्नचित्त होनेवाले मंत्रीके लक्षणोंकोसुनो ३३ कि जो राजाको देखकर प्रसन्नहो आदरसे उसके

तस्यतुतत्कथाम् ३५ अप्रियाण्यपिवाक्यानि तदुक्तान्यभिनन्दते। उपायनञ्चगृह्णानि
म्नोकमप्यादरात्तथा ३६ कथान्तरेषुस्मरति प्रहृष्टवदनस्तथा। इतिरक्तस्यकर्तव्या सेवा
रविकुलोद्वह! ३७ मित्रंनचापत्सुतथाचभृत्या भजन्तियेनिर्गुणमप्रमेयम्। विभुंविशेषेण
चतेव्रजन्ति सुरेन्द्रधामामरवृन्दजुष्टम् ३८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१५॥

(मत्स्य उवाच) राजासहायसंयुक्तः प्रभूतयवसेन्धनम्। रम्यमानतसामन्तं मध्य
मन्देशमावसेत् १ वैश्यशूद्रजनप्रायमनाहार्यंतथापरैः। किञ्चिद्ब्राह्मणसंयुक्तं बहुकर्म
करन्तथा २ अदेवमातृकंरम्यमनुरक्तजनान्वितम्। करैरपीडितञ्चापि बहुपुष्पफलंत
था ३ अगम्यंपरचक्राणां तद्वासगृहमापदि। समदुःखसुखंराज्ञः सततंप्रियमास्थितम् ४
सरीसृपविहीनञ्च व्याघ्रतस्करवर्जितम्। एवंविधंयथालाभं राजाविषयमावसेत् ५ तत्र
दुर्गंनृपःकुर्यात् षण्णामेकतमंबुधः। धनुर्दुर्गंमहीदुर्गं नरदुर्गंतथैवच ६ वार्क्षंचैवाम्बुदुर्गं
चगिरिदुर्गंचपार्थिव!। सर्वेषामेवदुर्गाणां गिरिदुर्गंप्रशस्यते ७ दुर्गंचपरिखोपेतं वप्रा
ट्टालकसंयुतम्। शतघ्नीयन्त्रमुख्यैश्च शतशश्चसमावृतम् ८ गोपुरंसकपाटञ्चतत्रस्या

वचनको ग्रहणकरे कुशलआदिक पूछे आसनदेवे एकान्तमें राजाके दर्शनहोनेमें कुछ शंका न करे
और राजाकी कहीहुई वार्ताको सुनकर प्रसन्नहोजाय ३४।३५ राजाके कहेहुए अप्रियवाक्योंको भी
अच्छे बतावे राजाके थोड़ेसेभी दियेहुए पारतोषिकको आदरसे ग्रहणकरे ३६ अन्यवार्त्ताओंमेंभी
राजाकाही स्मरणरक्खे यह अनुरक्त और प्रसन्न मनवाले मंत्रीका लक्षणहै इसमंत्रीकीसेवा सबभृ-
त्योंको करनी चाहिये ३७ जो राजाके भृत्यलोग विपत्तिकालमें मित्रआदि किसीकी सेवानहींकरते
हैं और निर्गुणी राजाकीही विशेषकर पूजाकरतेहैं वह देवताओंसे सेवित कियेहुए इन्द्रलोकमें प्राप्त
होतेहैं ३८॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१५॥

मत्स्यजी बोले कि राजाअपनी उत्तमसेनासेयुक्त होके जहां बहुतसी घास और काष्ठादि होवे ऐसे
रमणीक मध्यदेशमें अपने निवासके निमित्त किला बनवावे वह स्थान ऐसाहो जहां बहुतसे मनुष्य
वासकरते हों शत्रुकी गम्य न हो बहुतसे कर्म करनेवाले थोड़े ब्राह्मणरहते हों १।२ मनोहर प्रीतिवाले
जनोंसे युक्त बहुतसे पुष्पोंसे सुगन्धित जिसमें परायेराज्यके जन न आसके हों ऐसे स्थानमें राजा
विपत्तिकाल में वासकरे जहां विपत्तिकालमें राजाको सुख दुख समानहो सर्प बिच्छू सिंहादिक हिं-
सकजीव और चोरादिक दुष्ट न हों ऐसे प्रकारके देशमें राजा वासकरे ३।५ ऐसेही देशमें राजा अ-
पना किला बनवावे किला इन छः प्रकारोंका होताहै, धनुषदुर्ग, महीदुर्ग, नरदुर्ग, वृक्षदुर्ग, जलदुर्ग,
और गिरिदुर्ग इन छओं प्रकारके किलोंमें सबसे उत्तम गिरिदुर्ग कहाहै ६।७ खाही, कोटयुक्त, तोपों
के सैकड़ों मोरचोंवाला सुन्दर मनोहरद्वार और फाटकवाला दुर्ग होनाचाहिये और द्वारइतनाऊँचा
होनाचाहिये कि जिसमें ध्वजासहित हाथीपर बैठाहुआ राजा प्रवेश करसके और उसराजाकी पुरी
में चारचौपड़की सड़क होनीचाहिये एकसड़कके आगे देवताका मन्दिर बनाना चाहिये दूसरीसड़क

त्सुमनोहरम्। सपताकङ्गजारूढो येनराजाविशेत्पुरम् ९ चतस्रश्चतथातत्र कार्यास्त्वा यतवीथयः। एकस्मिंस्तत्रवीथ्यग्रे देववेश्मभवेद्दृढम् १० वीथ्यग्रेचद्वितीयेच राजवेश्म विधीयते। धर्माधिकरणंकार्यं वीथ्यग्रेचतृतीयके ११ चतुर्थेत्वथवीथ्यग्रे गोपुरञ्चविधीयते। आयतञ्चतुरस्रंवा वृत्तंवाकारयेत्पुरम् १२ मुक्तिहीनंत्रिकोणञ्चयवमध्यंतथैवच। आयतञ्चतुरस्रंवा वृत्तंवाकारयेत्पुरम् १३ अर्द्धचन्द्रंप्रशंसन्ति नदीतीरेषुतद्वसन्। अन्यत्तत्रनकर्तव्यं प्रयत्नेनविजानता १४ राज्ञाकोशगृहंकार्यं दक्षिणेराजवेश्मनः। तस्यापि दक्षिणेभागे गजस्थानंविधीयते १५ गजानांप्राङ्मुखीशाला कर्तव्यावाप्युदङ्मुखी। आग्नेयेचतथाभागे आयुधागारमिष्यते १६ महानसञ्चधर्मज्ञ! कर्मशालास्तथापराः। गृहंपुरोधसःकार्यं वामतोराजवेश्मनः १७ मन्त्रिवेदविदाञ्चैव चिकित्साकर्त्तुरेवच। तत्रैवचतथाभागे कोष्ठागारंविधीयते १८ गवांस्थानंतथैवात्र तुरगाणांतथैवच। उत्तराभिमुखाश्रेणी तुरगाणांविधीयते १९ दक्षिणाभिमुखावाथ परिशिष्टास्तुगर्हिताः। तुरगास्ते तथाधार्याः प्रदीपैःसार्वरात्रिकैः २० कुक्कुटान्वानरांश्चैव मर्कटांश्चविशेषतः। धारयेदश्वशालासु सवत्सांधेनुमेवच २१ अजाश्चधार्यायत्नेन तुरगाणांहितैषिणा। गोगजाश्वादिशालासु तत्पुरीषस्यनिर्गमः २२ अस्तंगतेनकर्तव्यो देवदेवेदिवाकरे। तत्रतत्रयथास्थानं राजाविज्ञायसारथीन् २३ दद्यादावसथस्थानं सर्वेषामनुपूर्वशः। योधानांशिल्पिनां

के आगे राजाके घर होनेचाहिये तीसरी सड़कके आगे न्यायकरनेवाले शास्त्र देखनेवाले मनुष्यों के स्थान हों और चौथी सड़कके आगे पुरका द्वार होनाचाहिये इसप्रकार राजाके बसनेकापुर लंबाहो वा चौखूंटाहो अथवा गोलहोवे तो सबसे श्रेष्ठहै अथवा जौके मध्य समान आकारवाला तिखूंटा किलाबनावे ८।१३ और नदी के किनारेपर अर्द्धचन्द्रमाके आकारवाला किलाबनाना कहाहै इसके सिवाय नदी के किनारेपर किसी अन्यप्रकारका किला बनाना योग्यनहीं है राजाको किलेके भीतर दक्षिणकी ओर खजाना रखना चाहिये और खजानेसे दक्षिण की सीमापर हाथीबांधनेका स्थान बनाना चाहिये इस गजबंधनशालाका मुख पूर्व अथवा उत्तरकी ओर रखना चाहिये और अग्निकोणकी दिशा में शस्त्रोंका मकान बनाना चाहिये १४।१६ और इसी अग्निकोण में रसोई बनाने का भी स्थानहोना योग्यहै राजाको अपने घरसे बाईंओरको पुरोहितका मकान बनाना चाहिये और उसीओरको मंत्री, वेदपाठी, विद्वान् और चिकित्साकरनेवाला वैद्य इनसबके स्थान बनाने चाहिये उसी दिशामें गौओं के और अश्वों के भी स्थान होनेचाहिये घोड़ोंका मुख उत्तरकीओरहो ऐसीपंक्ति खड़ीरहै १७।१८ अथवा घोड़ोंकामुख दक्षिणहीहो परन्तु उत्तमश्रेष्ठघोड़े तो दक्षिणकीओर मुखकरके कभी खड़े न करने चाहिये और जो संपूर्ण रात्रिमें दीपक के समान ज्वालप्रकाशित होतेरहैं ऐसे घोड़े रखनेचाहिये १९।२० और घोड़ोंकी शालामें कुक्कुट, वानर और सवत्सागौ इनसबको रक्खे और घोड़ोंके हितके निमित्त बकरियां भी रक्खे और हाथी घोड़े और गौ इनकी शालामें लीद तथा गोबर सूर्य्य अस्तहोनेके पीछे कभी न रक्खे और इन हस्तीआदि पशुओं के समीपमेंही इनके सारथी

चैवसर्वेषामविशेषतः २४ दद्यादावसथांदुर्गे कालमंत्रविदांशुभान्। गोवैद्यानश्ववैद्यांश्च गजवैद्यांस्तथैवच २५ आहरेतभृशंराजा दुर्गेहिप्रबलारुजः। कुशीलवानांविप्राणां दुर्गे स्थानंविधीयते २६ नबहूनामतोदुर्गे विनाकार्यंतथाभवेत्। दुर्गेचतत्रकर्तव्या नानाप्रहरणान्विताः २७ सहस्रघातिनोराजंस्तैस्तुरक्षाविधीयते। दुर्गेद्वाराणिगुप्तानि कार्याण्यपिच भूभुजा २८ सञ्चयश्चात्रसर्वेषामायुधानांप्रशस्यते। धनुषांक्षेपणीयानान्तोमराणांचपार्थिवः २९ शराणामथखड्गानां कवचानांतथैवच। लगुडानांगुडानाञ्चहुडानांपरिघैःसह३० अश्मनाञ्चप्रभूतानां मुद्गराणांतथैवच। त्रिशूलानांपट्टिशानां कुठाराणाञ्चपार्थिव! ३१ प्रासानाञ्चसशूलानां शक्तीनाञ्चनरोत्तमः। परश्वधानांचक्राणांवर्मणाञ्चर्मभिःसह ३२ कुद्दालक्षुरवेत्राणां पीठकानान्तथैवच। तुषाणाञ्चैवदात्राणामङ्गाराणाञ्चसञ्चयः ३३ सर्वेषांशिल्पिभाण्डानां सञ्चयश्चात्रचेष्यते। वादित्राणाञ्चसर्वेषामौषधीनान्तथैवच ३४ यवसानांप्रभूतानामिन्धनस्यचसञ्चयः। गुडस्यसर्वतैलानां गोरसानान्तथैवच ३५ वसानामथमज्जानां स्नायुनामस्थिभिःसह। गोचर्मपटहानाञ्च धान्यानांसर्वतस्तथा ३६ तथैवाभ्रपटानाञ्च यवगोधूमयोरपि। रत्नानांसर्ववस्त्राणां लोहानामप्यशेषतः ३७ कलापमुद्गमाषाणाञ्चणकानान्तिलैःसह। तथाचसर्वशस्यानां पांशुगोमययोरपि ३८ शणसर्जरसंभूर्जं जतुलाक्षाचटङ्कणम्। राजासञ्चिनुयाद्दुर्गे यच्चान्यदपिकिञ्चन ३९ कुम्भाश्चाशीविषैःकार्या व्यालसिंहादयस्तथा। मृगाश्चपक्षिणश्चैव रक्ष्यास्तेचपरस्परम् ४० स्थानानिचविरुद्धानां सुगुप्तानिपृथक्पृथक्। कर्तव्यानिमहाभाग! यत्नेनपृथि

और सहीसआदिके भी स्थान बनवादे इनके सिवाय योद्धा अथवा कारीगरोंके भी स्थान बनवावे काल और मंत्रकेजाननेवाले शुभपुरुष गौ वा अश्वोंकेवैद्य यहसवभी किलेमेंरक्खे और चारणोंकाभी निवास किलेमेंही रक्खे २५।२६ विना प्रयोजन किलेमें बहुतसे पुरुषोंको नहीं घुसनेदेवे और उसमें अनेकप्रकारके तोपआदि अस्त्र और शस्त्ररखनेचाहिये हे राजा हजारों मनुष्योंके मारडेनेवाले अस्त्रशस्त्रोंसे राजाकी रक्षारहतीहै इनवातोंके सिवाय राजाको अपने क़िलेमेंगुप्त दरवाजेभी रखनेचाहिये २७।२८ और ऐसेक़िलेमें धनुष, तोमर, वरछी, वाण, खड्ग, तंजोवा, लाठिका, वज्र, मूसल, पत्थरके भार, मुद्गर, त्रिशूल, गोफिया, खांडा, भाला, शूल, शक्ति, फरशा, चैत्र, और कुदाल इत्यादि सबशस्त्र तैयाररखनेचाहिये और तुष, फूंस, काष्ठ, कोयले आदिक सबवस्तुभीरखनीचाहियें संपूर्ण कारीगरोंके औजार, बाजे, और नानाऔषधीभी तैयाररखनीचाहिये २९।३४ बहुतसी घास, और इंधनआदिकाभी संचयरखनाचाहिये, गुड़ संपूर्ण तेल दूध आदिगोरस वसा मज्जा स्नायु गौकीचर्म ढोल और नगाड़ों के चर्मसंपूर्ण धान्य, रेशमी वस्त्र, जौ, गेहूं, रत्न सब वस्त्र सब प्रकारका लोहा इनसबवस्तुओं का संचय राजाको क़िलेमें रखनाचाहिये ३५।३७ मोठ, मूंग, उड़द, चने, तिल और सबप्रकारकेधान्य धूल, गोबर, सन, राल, भोजपत्र, लाख, सुहागा इत्यादिक वस्तुओंकाभी राजा संग्रहरक्खे ३८।३९ घड़ोंमें सर्प वन्द रक्खेसिंह, मृग और पक्षी आदिक जीवोंको भी यत्नपूर्वक पृथक् २ स्थानों में

वीक्षिता ४१ उक्तानिचाप्यनुक्तानि राजद्रव्याण्यशेषतः। सुगुप्तानिपुरेकुर्याज्जनानांहित काम्यया ४२ जीवकर्षभकाकोलमामलक्यांटरूषकान्। शालपर्णीपृश्निपर्णी मुद्गपर्णीतथै वच ४३ माषपर्णीचमेदद्वे सारिवेद्वेबलात्रयम्। श्वशन्तीवराह्यख्याच बृहतीकण्टका रिका ४४ शृङ्गीशृङ्गाटकीद्रोणी वर्षाभूर्दर्भरेणुकाः। मधुपर्णीविदार्येद्वे महाक्षीरामहातपाः ४५ धन्वनःसहदेवाह्वा कटुकैरण्डकंविषः। पर्णीशताह्वामृद्वीका ल्फागुखर्जूरयष्टिकाः ४६ शुक्रातिशुककाश्मर्यच्छत्रातिच्छत्रवीरणाः। इक्षुरिक्षुविकाराश्च फाणिताद्याश्चसत्तम! ४७ सिंहीचसहदेवीच विश्वेदेवाश्वरोधकम्। मधुकंपुष्पहंसाख्या शतपुष्पामधूलिका ४८ शतावरीमधूकेच पिप्पलन्तालमेवच। आत्मगुप्ताकट्फलाख्या दार्विकाराजशीर्षकी ४९ राजसर्षपधान्याक मृष्यप्रोक्तातथोत्कटा। कालशाकंपद्मवीजं गोवल्लीमधुवल्लिका ५० शीतपाकीकुवेराक्षी काकजिह्वोरुपुष्पिका। पर्वतत्रपुसौचोभौ गुञ्जातकपुनर्नवे ५१ कसे रुकारुकाश्मीरी वल्याशालूककेसरम्। तुषधान्यानिसर्वाणि शमीधान्यानिचैवहि ५२ क्षीरंक्षौद्रन्तथातक्रं तैलंमज्जावसाघृतम्। नीपश्चारिष्टकाक्षोड वातामसोमबाणकम् ५३ एवमादीनिचान्यानि विज्ञेयोमधुरोगणः। राजासञ्चिनुयात्सर्वं पुरेनिरवशेषतः ५४ दाड़िमाम्रातकौचैव तिन्तिड़ीकाम्लवेतसम्। भव्यककन्धुलकुचकरमर्दकरूषकम् ५५ वीजपूरककण्डूरे मालतीराजवन्धुकम्। कोलकद्वयपर्णानि द्वयोरास्नातयोरपि ५६ पा रावतंनागरकं प्राचीनोत्लकमेवच। कपित्थामलकंचुक्रफलन्दन्तशठस्यच ५७ जाम्ब वंनवनीतञ्च सौवीरेकरुषोदके। सुरासवञ्चमद्यानि मण्डतक्रदधीनिच ५८ शुक्तानिचैव

रक्खे जोपरस्पर विरोधी जीवहोवें उनकोगुप्तस्थानोंमें रक्खे ४०।४१ इनके विशेपसवकाहित चाहने वाला राजा कहेहुए अथवा विनाकहेहुए राजसंबन्धी द्रव्यों कोभी यत्नसे रक्षितकरै और जीवक, ऋषभक, काकोली, आंवले, वांसा, शालपवण, पिठवन, मूंगपर्णी, मापमर्णी, दोनों अनन्तमूल, तीनों प्रकारकी खरैटी, नेत्रवाला, असगंध, मूसापर्णी, दोनोंकटेरी, ४२।४४ काकड़ासिंगी, शृंगाट की, द्रोणपुष्पी, सांठी, कुश, मधुपर्णी, दोनों विदारीकन्द, महाक्षीरा, महातपा, धमासा, सहदेई, अरंड, विप, सतावरी, मुनक्का, दाख, फालसा, खिजूर, मुलहटी, श्वेतपुष्पी, खंभारी, बड़ीसौंफ, वीर- णातृण, ईख, अनेक प्रकारके क्वाथ ४५।४७ सिंहपुच्छी, कनेर, महुआ, हंसपुपी, सौंफ, धनुपकी उपयोगिनी, मोरबेल, वड़ीसतावरी, जलमेंहोनेवालामहुआ, पीपल, तालमखाना- कायफल--दारु- हल्दी-- राई ४८।४९ गोरीसिरसम, धनियां, कौंच, दालचीनी, कालाशाक, पद्माख, गोवल्ली, सोमलता, शातीयकी, पाडल, कांवड़ी- उरुपुष्पिका--पत्थर- रांग, चिमिठी- दोनोंप्रकारकी सांठी- कसेरू- पीलुपर्णी- उड़द आदिशमीधान्य, जवआदिशूकधान्य, नीवारआदि तृणधान्य दूध-- शहद-- तक्र, तैल, मज्जा, वसा, घृत-इत्यादिक वस्तुओंका मधुरगणहै सोइनसववस्तुओंको राजाअपनेकि- लेमेंरक्खे ५०।५४ अनार-लिहसौड़ा-अमली-चूका-बेर-बड़हल-करौंदा-विजौरा दोनोंप्रकारकेकौंच मालती- राजवन्धुक- लिहसौड़ेकेपत्ते- नागरमोथा-कैथ- आंवला- चूकाकाफल-जंवीरीनींबू- जामन-

सर्वाणिज्ञेयमाम्लगणांद्विज ॥ एवमादीनिचान्यानि राजा सञ्चिनुयात्पुरे ५९ सैन्धवोद्भि
द्पाठेयपाक्यसामुद्रलोमकम्। कुप्यसौवर्चलविडं वालकेयंयवाह्नकम् ६० औवैक्षारंका
लभस्म विज्ञेयोलवणोगणः। एवमादीनिचान्यानि राजासञ्चिनुयात्पुरे ६१ पिप्पलीपि
प्पलीमूलचव्यचित्रकनागरम्। कुबेरकंमरिचकंशिग्रुभल्लातसर्षपाः ६२ कुष्ठाजमोदाकि
णिहीहिंगुमूलकधान्यकम्। कारवीकुञ्चिकायाज्या सुमुखाकालमालिका ६३ फणिज्ज
कोथलशुनं भूस्तृणांसुरसन्तथा। कायस्थाचवयस्थाच हरितालंमनःशिला ६४ अमृता
चरुदन्तीच रोहिषंकुंकुमन्तथा। जयाएरण्डकाण्डीरं सल्लकीहञ्जिकातथा ६५ सर्व
पित्तानिमूत्राणि प्रायोहरितकानिच। फलानिचैवहितथा सूक्ष्मैलाहिंगुपत्रिका ६६ एव
मादीनिचान्यानि गणःकटुकसंज्ञितः। राजासञ्चिनुयाद्दुर्गे प्रयत्नेननृपोत्तम ६७ मुस्तच
न्दनह्रीवेरकृतमालकदारवः। दरिद्रानलदोशीरनक्तमालकदम्बकम् ६८ दूर्वापटोलक
टुका दीर्घत्वक्पत्रकंवचा। किराततिक्तभूतुम्बी विषाचातिविषातथा ६९ तालीशपत्रत
गरं सप्तपर्णविकङ्कताः। काकोदुम्बरिकादिव्या तथाचैवसुरोद्भवा ७० षड्ग्रन्थारोहिणी
मांसीपर्पटश्चाथदन्तिका। रसाञ्जनंभृङ्गराजं पतङ्गीपरिपेलवम् ७१ दुःस्पर्शागुरुणी
कामा श्यामाकंगन्धनाकुली। रूपपर्णीव्याघ्रनखं मञ्जिष्ठाचतुरंगुला ७२ रम्भाचैवांकु
रास्फोता तालास्फोताहरेणुका। वेत्राग्रवेतसस्तुम्बी विषाणीलोध्रपुष्पिणी ७३ मालती
करकृष्णाख्या वृश्चिकाजीवितातथा। पर्णिकाचगुडूचीच सगणस्तिक्तसंज्ञकः ७४ एव
मादीनिचान्यानि राजासञ्चिनुयात्पुरे। अभयामलकेचोभे तथैवचविभीतकम् ७५ प्रियंगु

नौनीघृत- मदिराके योगकाजल- मदिराकाआसव- मद्य- मांड़- तक्र- दही- और सबप्रकारकीकांजी यह अम्लगण अर्थात् खट्टी वस्तुओंकागण कहाता है इनसब वस्तुओं को राजा अपने पुरमेंरक्खे ५५।५९ सेंधानोन- सांभरिनोन- खारीनोन- समुद्रीनोन-कुओंकेजलसे बनायाहुआनोन-मणिपारीनोन-लालनोन-क्षार- कालभस्म- यहसब लवणगणकहाते हैं-इनसबलवणोंकोभी राजापुरमें रक्खे ६०।६१ और पीपल-पीपलामूल-चव्य-चीता-सोंठ-नादरूपी-मिरच-सहजना-भिलावां-सिरसम ६२ कूट-अजमोद-ओंगा-हींग-मूली-धनियां-सौंफ-अजवाइन-मंजीठ-जंबीर-लहसन-माला के आकारवाला जलतृण-हरड़-हरताल-मनसिल-गिलोय-रुदंती-रोहिषतृण-केशर-भरणी-अरंड-सल्लकी- भारंगी सम्पूर्ण हरेफल-छोटीइलायची-तेजपात-इत्यादिवस्तु कटुकगणहैं इनसबको विशेषकरके राजाअपने किलेमेंरक्खे ६३।६७ नागरमोथा-चन्दन-वालछड़-कंजुवा-हल्दी-विशखश-कदंब-दूब परवल-तेजपात-बच-चिरायता-विषा-अतीस-तालीसपत्र-तगर- सातला, खैर-कालीगूलर-अजारोहिड़ा-जटामांसी, पटोल-जमालगोटा-रसौत-भंगरा-पतंग-जलमोथा, धमासा-कैम-शामक, मुंगसवेल-रूपपर्णी-व्याघ्रनख मंजीठ-अमलतास ६८।७२ केला, अंकुरास्फोता, तालास्फोता, रेणुकबीज, बेंतकाअग्रभाग, वनतुंबी, काकड़ासिंगी, लोधपुष्पी, मालती, कलौंजी, पिठवन, जीवन्ती, पर्णिका और गिलोय यह कटु औषधियोंकागण है इनको राजा अपनेपुरमें संचितरक्खे, और हड़, बहेड़ा, आंवला, माल

धातकीपुष्पं मोचाख्याचार्जुनासनाः। अनन्ताखीतुवरिका स्योनाङ्कट्फलन्तथा ७६
भूर्जपत्रंशिलापत्रं पाटलापत्रलोमकम्। समङ्गात्रिवृतामूल कार्पासगैरिकाञ्जनम् ७७
विद्रुमंसमधूच्छिष्टं कुम्भिकाकुमुदोत्पलम्। न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थ किंशुकाःशिंशुपाश
मी ७८ प्रियालपीलुकासारिशिरीषाःपद्मकन्तथा। विल्वोऽग्निमन्थःप्लक्षश्च श्यामाकश्च
वकोघनम् ७९ राजादनंकरीरश्च धान्यकंप्रियकस्तथा। कङ्कोलाशोकबदराः कदम्बखदि
रद्वयम् ८० एषांपत्राणिसाराणि मूलानिकुसुमानिच। एवमादीनिचान्यानि कषायाख्यो
मतोरसः ८१ प्रयत्नेननृपश्रेष्ठ! राजासञ्चिनुयात्पुरे। कीटाश्चमारणेयोग्या व्यङ्गतायां
तथैवच ८२ वातधूमाश्चमार्गाणां दूषणानितथैवच। धार्याणिपार्थिवैर्दुर्गे तानिवक्ष्यामि
पार्थिव! ८३ विषाणांधारणंकार्यं प्रयत्नेनमहीभुजा। विचित्राश्चाङ्गदाधार्या विषस्यशम
नास्तथा ८४ रक्षोभूतपिशाचघ्नाः पापघ्नाःपुष्टिवर्धनाः। कलाविदश्चपुरुषाः पुरेधार्याः
प्रयत्नतः ८५ भीतान्प्रमत्तान्कुपितांस्तथैवचविमानितान्। कुभृत्यान्पापशीलांश्च न
राजावासयेत्पुरे ८६ यन्त्रायुधाट्टालचयोपपन्नं समग्रधान्यौषधिसम्प्रयुक्तम्। वणिग्ज
नैश्चवृतमावसेत दुर्गंसुगुप्तंनृपतिःसदैव ८७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेषोडशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१६॥

(मनुरुवाच) रक्षोघ्नानिविषघ्नानि यानिधार्याणिभूभुजा। अगदानिसमाचक्ष्व तानिधर्मभृताम्बर! १ (मत्स्य उवाच) विल्वाटकीयवक्षारं पाटलावाह्लिकोषणाः। श्री

कांगनी, धायकेफूल, मोचरस, अर्जुनवृक्ष, आसना, अनन्ता, मुल्तानीमट्टी, कायफल, भोजपत्र, शिलाजीत, पाटलवृक्ष, लोवान, मंजीठ, निशोथ, कपास, गेरू, अंजन, मूंगा, शहद, जलकुंभी, कुमोदिनी, कमल, वड़, गूलर, पीपल, केशू, सीसम, जाँटी, चिरोंजीकावृक्ष, पीलूवृक्ष, शिरस, पद्माक, वेलपत्र, अरणी, पिलखन, चिरोंजी, कैर, कंकोल, अशोकवृक्ष, वड़वेर, कदंब, दोनोंखैर, इनवृक्षोंकेपत्ते गोंद, जड़ और इनके पुष्पोंकेरसको काषाय कहते हैं यह सब औषधिभी राजाको अपनेपुर में यत्न सेरखनीचाहियें और जिनके विषोंसे शत्रुमरजांय ऐसे कीट और शत्रुओंके मार्गमें विघ्न करने के निमित्त विषोंकी धूनियांभी अपने पुरमें राजाको रखनीचाहियें- अबराजाके पुरमें धारण करनेवाली औषधियोंको कहताहूं- ७६।८३ राजाको यत्नपूर्वक विषधारण करने चाहियें और विषके शान्तकरनेवाले कवचपहरनेचाहियें ८४ राक्षस-भूत, पिशाच, और पाप इनसबके नष्टकरनेवाले पुष्टिकेबढ़ाने वाले चौंसठ कलाओंके ज्ञाता ऐसे पुरुषभी राजाको अपने क़िलेमें रखने चाहियें ८५ और भयभीत प्रमत्त-क्रोधी-और मानरहित ऐसे भृत्योंको राजा अपने पुरमें न बसनेदे ८६ और यंत्र-आयुध और अटारी आदिसे युक्त हुए संपूर्ण धान्य और औषधियों से युक्त वैश्यजन आदिकों से सेवित ऐसे गुप्त कियेहुए पुरमें राजा सदैव वासकरे ८७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषोडशाधिकद्विशततमोध्यायः २१६॥

मनुजी पूछते हैं हेदेवदेव राक्षसोंकी नष्ट करनेवाली और विषोंकी हर्ता जो औषधी हैं उनसब

पर्णीशल्लकीयुक्तो निकाथःप्रोक्षणंपरम् २ सविषंप्रोक्षितंतेन सद्योभवतिनिर्विषम्। यव सैन्धवपानीय वस्त्रशय्यासनोदकम् ३ कवचाभरणंछत्रं बालव्यजनवेश्मनाम्। शेलुःपा टलातिविषा शिग्रुमूर्वापुनर्नवा ४ समङ्गावृषमूलञ्च कपित्थवृषशोणितम्। महादन्तशठ न्तद्वत्प्रोक्षणंविषनाशनम् ५ लाक्षाप्रियंगुमञ्जिष्ठा सममेलाहरेणुका। यष्ट्याह्वामधुराचैव बभ्रुपित्तेनकल्पिताः ६ निखनेद्गोविषाणस्थं सप्तरात्रंमहीतले। ततःकृत्वामणिंहेम्ना बद्धं हस्तेनधारयेत् ७ संस्पृष्टंसविषन्तेन सद्योभवतिनिर्विषम्। मनोह्वयाशमीपत्रं तुम्बिकाश्वे तसर्षपाः ८ कपित्थकुष्ठमञ्जिष्ठाः पित्तेनश्लक्ष्णकल्पिताः। शुनोगोःकपिलायाश्च सौ म्याक्षिप्तोऽपरोगदः ९ विषजित्परमंकार्यं मणिरत्नश्चपूर्ववत्। मूषिकाजतुकाचापि हस्तेब द्धाविषापहा १० हरेणुमांसीमञ्जिष्ठा रजनीमधुकामधु। अक्षत्वक्सुरसंलाक्षा श्वपित्तं पूर्ववद्भुवि ११ वादित्राणिपताकाश्च पिष्टैरेतैःप्रलेपिताः। श्रुत्वादृष्ट्वासमाघ्राय सद्योभ वतिनिर्विषः १२ त्र्युषणंपञ्चलवणं मञ्जिष्ठारजनीद्वयम्। सूक्ष्मैलात्रिवृतापत्रं विडङ्गा नीन्द्रवारुणी १३ मधुकंवेतसंक्षौद्रं विषाणेचनिधापयेत्। तस्माद्दुष्णाम्बुनामात्रं प्रागु क्तंयोजयेत्ततः १४ शुक्लंसर्जरसोपेत सर्षपाएलवालुकैः १५ सुवेगातस्करसुरौ कुसुमैं

को आप वर्णन कीजिये १ मत्स्यजी बोले—विल्वाटकी-जवाखार-पाढलवृक्ष-हींग—पीपल-सालवन- शल्लकी इन सबका काथवनाके उसके जलसे विषवाली वस्तु शीघ्रही विषरहित होजाती है और जवाखार-सेंधानिमक और पीछे कहीहुई औषधि इन सबके पानीसे वस्त्र शय्या, आसन, कवच, आभूषण-छत्र और चंवर इन सबको छिड़क देने से लगाहुआ विष दूर होजाताहै और लसोड़ा-पाढ- लवृक्ष-अतीस-सहजना-मुर्वा सांठीकीजड़ और चूका इन सबके भी क्वाथके जल छिड़कने से विषका नाश होजाताहै २।५ लाख,मालकांगनी, मंजीठ, इलायची, रेणुकबीज, मुलहटी, सौंफ इनसबको नौलेके पित्तसे भावनादे महीन पीस गौके घृतमें डालकर सातदिन तक पृथ्वी में गाड़ रक्खे फिर सुवर्णके जड़ावसे मणि बनवावे उसमें उस औषधिको लगवाले और उस आभूषणको हाथमें धारण रक्खे वह आभूषण जिस विषकी वस्तुको स्पर्शकरेगा उसका विष दूर होजायगा और मनशिल,जां- टीकेपत्ते, श्वेततुंबी, सिरसम, कैथ, कूट और मंजीठ इन सबको कुत्तेके पित्तेमें बारीकपीस कपिला गौके सींगमें भरकर पृथ्वीमें गाड़देवे इसकोभी पूर्व्वके समान मणि रत्नादि आभूषणोंमें धारणरक्खे यह संपूर्ण विषोंकी हरनेवालीहै और मूषिका तथा चामचिसाई इन दोनोंजीवोंको जो हाथमें रक्खे तो विषका नाशहोताहै ६।१० रेणुकबीज, जटामांसी, मंजीठ, हल्दी, मुलहटी, शहद, बहेड़ेकीछाल, मुंगसबेल और लाख इन सबको भी कुत्तेके पित्तेमें पीसकर गौके सींगमेंभरके पृथ्वीमें गाड़देवे फिर इस औषधिको नक्कारे आदिक बाजोंपर लीपदेवे और ध्वजाओंके लगादेवे फिर इनबाजों के शब्द सुनने से और ध्वजादिके देखने और सूंघने से विषवाले पुरुषका विष दूर होजाताहै ११।१२ और सोंठि-मिरच-पीपरि, पांचोनोन—मंजीठ—दोनोंहल्दी—छोटीइलायची—निशोत—तेजपात—बायवि- डंग-इन्द्रायण-मुलहटी और बेत इनसबकोपीस शहदमेंमिला सींगमें भरकर धरे फिर इस औषधि

रर्जुनस्यतु। धूपोवासगृहेहन्ति विषंस्थावरजङ्गमम् १६ नतत्रकीटानविषन्दर्दुरानसरी सृपाः। नकृत्याकर्मणाश्चापि धूपोऽयंयत्रदह्यते १७ कल्पितैश्चन्दनक्षीर पलाशद्रुमव ल्कलैः। मूर्वैलावालुसरसा नाकुलीतण्डुलीयकैः १८ क्वाथःसर्वोदकार्येषु काकमाचीयु तोहितः। रोचनापत्रनेपाली कुंकुमैस्तिलकान्वहन् १९ विषैर्नबाध्यतेस्याच्च नरनारीनृप प्रियः। चूर्णैर्हरिद्रामञ्जिष्ठा किणिहीकणनिम्बजैः २० दिग्धंनिर्विषतामेति गात्रंसर्ववि षार्दितम्! शिरीषस्यफलंपत्रं पुष्पंत्वङ्मूलमेवच २१ गोमूत्रघृष्टोह्यगदः सर्वकर्मकरः स्मृतः। एकवीर! महौषध्यः शृणुचातःपरंनृप! २२ वन्ध्याकर्कोटकीराजन्! विष्णुक्रा न्तातथोत्कटा। शतमूलीसितानन्दा बलामोचापटोलिका २३ सोमापिण्डानिशाचैव तथादग्धरुहाचया। स्थलेकमलिनीयाच विशालीशङ्खमूलिका २४ चण्डालीहस्तिम गधा गोऽजापर्णीकरम्भिका। रक्ताचैवमहारक्ता तथाबर्हिशिखाचया २५ कोशातकीनक्त मालं प्रियालश्चसुलोचनी। वारुणीवसुगन्धाच तथावैगन्धनाकुली २६ ईश्वरीशिवग न्धाच श्यामलावंशनालिका। जतुकालीमहाश्वेताश्वेताचमधुयष्टिका २७ वज्रकःपारि भद्रश्च तथावैसिन्धुवारकाः। जीवानन्दावसुच्छिद्रा नतनागरकण्टका २८ नालश्चजा लीजातीच तथाचवटपत्रिका। कार्तस्वरंमहानीला कुन्दुरुर्हंसपादिका २९ मण्डूकपर्णी वाराही द्वेतथातण्डुलीयके। सर्पाक्षीलवलीब्राह्मी विश्वरूपासुखाकरा ३० रुजापहोद्व

को गरमजलसे मिलाकर छिड़कदेनेसे विषका नाशहोताहै १३।१४ अर्जुन वृक्षकीछाल-राल-सिर-सम-एलुआ-सुहागा-गठौना-अर्जुनवृक्षकेफूल इनसबकी घरमें धूपदेनेसे सब स्थावर और जंगम विषों का नाशहोजाताहै १५।१६ उसघरमें कीट नहींरहते हैं विषनहींरहता है मेंढक-सांप-बिच्छूआदिक जीवनहींरहतेहैं इसके सिवाय जिसकेघरमें यह धूपदीजाती है वहाँ घायल-मूंठ और प्रेतआदिकका भी प्रभाव नहींरहताहै और वटआदिक दूधकेवृक्षोंकी छाल- मूर्वा-एलुआ-सिरस-नाकुली अर्थात् मुंगसवेल-चौलाई-मकोह इनसबका काथबना जलमें छिड़कने से जलमें मिलाहुआ विष दूरहोजाताहै और गोरोचन—तेजपात—पाठा—केशर—तिलकपुष्पी वृक्षकीछाल इनकोपीस शरीर के लगानेसे विषनष्टहोताहै अथवा हल्दी मजीठ-ऊंगा-निंबौली-इनसबकोपीस विषसे विषभरे शरीरके लगाने से शरीरका संपूर्ण विषदूरहोजाताहै और सिरसके फल- फूल- पत्ते छाल और जड़ इनसबको गोमूत्रमें पीस शरीरके लगानेसे विष दूरहोजाताहै-अबमहान् ओषधिको कहतेहैं १७।२२ हे राजा बांझ ककोड़ी- विष्णुक्रान्ता- दालचीनी- शतावरि- धायटी-खरेहटी- मोचरस- परवल-सोमवल्ली- हल्दी-झूंड- स्थलकमलनी-इन्द्रायण-शंखमूलिका- गठौना-गजपीपरि-गोभी- करंभिका- लाजावन्ती- महा लाजावन्ती- मोरशिखा- कोशातकी-करंजुआ- चिरोंजी वृक्ष-वंशलोचन- वारुणीमदिरा- दीर्घ मुंगस-वेल-भूमिआंवली- शिवगन्धा-नील- बांसकीनाली- जतुकाली- श्वेता-महाश्वेता- मुलहटी- थोहर-नींब- संभालू- जीवन्ती- तगर- सोंठि- कटेहली- २३।२८ कमलनाली- सातला- वटपत्री- चोख महानीला- पालक- हंसपादिका- मंजीठ- वाराहीकन्द-चौलाई सर्पाक्षी- ब्राह्मी- विश्वरूपा- कुटकी

द्धिकरी तथाचैवतुशल्यदा। पत्रिकारोहिणीचैव रक्तमालामहौषधी ३१ तथामलकव न्दाकं श्यामचित्रफलाचया। काकोलीक्षीरकाकोली पीलुपर्णीतथैवच ३२ केशिनीवृ श्चिकालीच महानागाशतावरी। गरुडीचतथावेगा जलेकुमुदिनीतथा ३३ स्थलेचो त्पलिनीयाच महाभूमिलताचया। उन्मादिनीसोमराजी सर्वरत्नानिपार्थिव! ३४ विशे षान्मरकतादीनि कीटपक्षंविशेषतः। जीवजाताश्चमणयः सर्वेधार्याप्रयत्नतः ३५ रक्षो घ्नाश्चविषघ्नाश्च कृत्यावेतालनाशनाः। विशेषान्नरनागाश्च गोखरोष्ट्रसमुद्भवाः ३६ सर्पतित्तिरगोमायु बभ्रमण्डकजाश्चये। सिंहव्याघ्रर्क्षमार्जार द्वीपिवानरसंभवाः। कपि ञ्जलागजावाजि महिषैणभवाश्चये ३७ इत्येवमेतैःसकलैरुपेतन्द्रव्यैश्चसर्वैःस्वपुरं सुरक्षितम्। राजावसेत्तत्रगृहंसुशुभ्रंगुणान्वितंलक्षणसंप्रयुक्तम् ३८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्तदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१७॥

(मनुरुवाच) राजरक्षारहस्यानि यानिदुर्गेनिधापयेत्। कारयेद्वामहीभर्ता ब्रूहि त्वानितानिच १ (मत्स्यउवाच) शिरीषोदुम्बरशमीवीजपूरंघृतप्लुतम्। क्षुद्योगःकथि तोराजन्! मासार्द्धंतुपुरातनैः २ कशेरुफलमूलानि इक्षुमूलंतथाबिसम्। दूर्वाक्षीरघृतै र्मण्डः सिद्धोऽयंमासिकःपरः ३ नरंशस्त्रहतंप्राप्तो नतस्यमरणंभवेत्। कल्माषवेणुनातत्र जनयेत्तुविभावसुम्४ गृहेत्रिरपसव्यन्तु क्रियतेयत्रपार्थिव!। नान्योऽग्निर्ज्वलतेतत्र नात्रः कार्याविचारणा ५ कार्पासास्थ्नाभुजङ्गस्य तेननिर्मोचनंभवेत्। सर्पनिर्वासनेधूपःप्रशस्तः

वृद्धजावित्री- रोहिड़ा- सोंठि- भ्रमरवेल- त्रिफला-काकोली-क्षीर काकोली- पीलुपर्णी-सहस्तरंगी- क्रौंच- गंगेरन- शतावरी- गरुडी- जलकुमोदनी- स्थलकमलनी- महाभूमि- आंवला- उन्मादिनी- सोमलता- यहसवऔषधी और संपूर्ण प्रकारकेरत्न- मरकतमणि- जीवजातियोंकीमणि-यहसववस्तु राजाको यत्नकरके धारण करनीचाहिये ३१। ३५ यह सब वस्तु तथा नर हस्ती गौ- गधा और ऊँट इन्होंकीमणि राजाको विशेषकरके धारण करनी चाहिये और सर्प- तीतर-गीदड़- सिंह-व्याघ्र- रीछ- बिलाव- गेंडा- वानर- कपोत- घोड़ा- भैंसा- हिरण इन्हों से उत्पन्नहुए रत्नभी राजाको धा- रण करना चाहिये ३६। ३७ इन सब वस्तुओं से रक्षित कियेहुए अपने पुर में राजा अपना महासुन्दर और रमणीक उत्तम लक्षणोंसे युक्त स्थान बनाकर उसमें निवास करे ३८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तदशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१७॥

मनुजीने पूछा हेप्रभो राजाको अपने किलेमें जिन २ वस्तुओंकी गुप्तरक्षा करनी योग्यहै उन सब वस्तुओंको भी आप यथार्थ रीतिसे वर्णन कीजिये १ मत्स्यजी बोले हेराजा सिरस-गूलर और झांटी इनके फलोंको घृतमें पकाके पन्द्रह दिवस खाय यहक्षुतयोग कहाताहै २ कसेरूके फल और मूलईखकी जड़-बिसकन्द-कमलकन्द और दूब इन सबको दूध अथवा घृतमें सिद्धकरके एकमहीने तक भक्षणकरे यह एकमासका परम योग कहाताहै इस योगके करनेसे शस्त्रसे कटाहुआ पुरुषनहीं मरताहै और जिस स्थानपर कालेबाँसोंको जलादे उसस्थानपर निस्सन्देह दूसरीअग्निनहींजलतीहै

सततंगृहे ६ सामुद्रसैन्धवंयवा विद्युद्दग्धाचमृत्तिका। तयानुलिप्तंयद्वेश्म नाग्निना दह्यतेनृप! ७ दिवाचदुर्गेरक्ष्योऽग्निर्वातिवातेविशेषतः। विषाच्चरक्ष्योनृपतिस्तत्रयुक्तिं निबोधमे ८ क्रीड़ानिमित्तंनृपतिर्धारयेन्मृगपक्षिणः। अन्नंवैप्राक्परीक्षेत वह्नौचान्यतरेषु च ९ वस्त्रंपुष्पमलङ्कारं भोजनाच्छादनंतथा। नापरीक्षितपूर्वन्तु स्पृशेदपिमहामतिः १०, स्याच्चास्यैवक्त्रसन्तप्तः सोद्वेगश्चनिरीक्षते। विषदोऽथविषंदत्तं यच्चतत्रपरीक्षते ११ स्रस्तोत्तरीयोविमनाः स्तम्भकुड्यादिभिस्तथा। प्रच्छादयतिचात्मानं लज्जतेत्वरतेतथा १२ भुवंविलिखतिग्रीवां तथाचालयतेनृप!। कण्डूयतिचमूर्द्धानं परिलोड्याननन्तथा १३ क्रियासुत्वरितोराजन्! विपरीतास्वपिध्रुवम्। एवमादीनिचिह्नानि विषदस्यपरीक्षयेत् १४ समीपेवैक्षिपेद्वह्नौ तदन्नंत्वरयान्वितैः। इन्द्रायुधसवर्णन्तु रूक्षंस्फोटसमन्वितम् १५ एकावर्तन्तुदुर्गन्धि भृशञ्चटचटायते। तद्धूमसेवनाज्जन्तोः शिरोरोगश्चजायते १६ स विषेऽन्नेविलीयन्ते नचपार्थिव! मक्षिकाः। निलीनाश्चविपद्यन्ते संस्पृष्टेसविषेतथा १७ विरज्यतिचकोरस्य दृष्टिःपार्थिवसत्तम!। विकृतिञ्चस्वरोयाति कोकिलस्यतथानृप! १८ गतिस्खलतिहंसस्य भृङ्गराजश्चकूजति। क्रौञ्चोमदमथाभ्येति कृकवाकुर्विरौतिच १९ विक्रोशतिशुकोराजन्! सारिकावमतेततः। चामीकरोऽन्यतोयाति मृत्युंकारण्डवस्तथा २० मेहतेवानरोराजन्! ग्लायतेजीवजीवकः। हृष्टरोमाभवेद्बभ्रुः पृषतश्चैवरोदिति २१

है बिनौलोंकी अग्निमें सर्पकी काँचली जलाकर उसकी धूप देनेसे घरके सब सर्प चलेजातेहैं-और सांभर निमक सेंधानिमक-जवाखार और बिजलीसे जलीहुई मृत्तिका इन सबसे जो घरको लिपवावे वह घर अग्निसे नहीं जलसक्ताहै-जबकि दिनमें अत्यन्त वायु चलतीहो उससमय किलेमें अग्निकी रक्षा करनी चाहिये--अब विषसे राजाकी रक्षाकरनेकी युक्ति वर्णन करताहूं राजाको क्रीड़ाके निमित्त मृग और पक्षी भी रखने चाहिये प्रथम अग्निमें अथवा अन्यत्रही अन्नकी परीक्षा करनी चाहिये वस्त्र पुष्प-आभूषण और भोजन इन सबकी परीक्षा किये बिना राजा स्पर्श भी इनका न करे राजाके विष देनेवाले पुरुषका मुख लाल और उद्वेग संयुक्त दीखताहै यही उसकी परीक्षाहै ११ दुपट्टा गिरपड़े-उन्मना होजाय-क्रोधादिसे युक्तहोजाय अपने शरीरको छुपावे-लज्जाकरे १२ पृथ्वीको कुरेदने लगजाय-गर्दन हिलानेलगे-मुखमसलने लगजाय मस्तकको खुजाने लगजाय और सब कामोंमें शीघ्रता करने लगजाय यह सब लक्षण विषदेनेवाले पुरुषके होतेहैं १३। १४ विषवाले अन्नको अग्निमें डाले अगर वह अन्न शीघ्रतासे इन्द्रधनुषके समान विचित्र वर्णहोके दुर्गन्धितहो वारंवार चट २ शब्द करे और उसके धुएंसे मनुष्यके शिरमें दर्द होजाय तो विषयुक्त जानो-विषवाले अन्नपर मक्खी नहीं बैठती है जो कदाचित् बैठ भी जाय तो तत्काल मरजाती है १५। १७ विषवाले अन्नके देखनेसे चकोरकी दृष्टि लीन होजातीहै कोकिलाका स्वर बिगड़जाताहै १८ हंसकी गति बिगड़ती, भौंरे गुंजारने लगते, कूंज पक्षी मदोन्मत्त होजाते-और मुर्गावियां चिल्लाने लगजाती हैं १९ हे राजन् तोता पुकारने-सारिकावमनकरने-कारंडवपक्षी विषदेखतेही मरजाताहै-बन्दर

हर्षमायातिचशिखी विषसन्दर्शनान्नृप ! । अन्नञ्चसविषंराजंश्चिरेणचविपद्यते २२ तदाभवतिनिःश्राव्यं पक्षपर्युषितोपमम् । व्यापन्नरसगन्धश्च चन्द्रिकाभिस्तथायुतम् २३ व्यञ्जनानान्तुशुष्कत्वं द्रवाणांवुद्बुदोद्भवः।ससैन्धवानांद्रव्याणां जायतेफेनमालिता २४ सस्यराजिश्चताम्रास्यात् नीलाचपयसस्तथा । कोकिलाभाचमद्यस्य तोयस्यचनृपोत्तम ! २५ धान्याम्लस्यतथाकृष्णा कपिलाकोद्रवस्यच । मधुश्यामाचतक्रस्य नीलापीता तथैवच २६ घृतस्योदकसङ्काशा कपोताभाचसत्तनुः । हरितामाक्षिकस्यापि तैलस्यच तथारुणा २७ फलानामप्यपक्वानां पाकःक्षिप्रंप्रजायते । प्रकोपश्चैवपक्वानां माल्यानां म्लानतातथा २८ मृदुताकठिनानांस्यात् मृदूनांचविपर्ययः । सूक्ष्माणांरूपदलनं तथा चैवातिरंगता २९ श्याममण्डलताचैव वस्त्राणांवैतथैवच । लोहानांचमणीनांच मलपङ्कोपदिग्धता ३० अनुलेपनगन्धानां माल्यानाञ्चनृपोत्तम !। विगन्धताचविज्ञेया तथा राजन् ! जलस्यतु ३१ दन्तकाष्ठत्वचःश्यामास्तनुसत्वास्तथैवच । एवमादीनिचिह्नानि विज्ञेयानिनृपोत्तम ३२ तस्माद्राजासदातिष्ठेत् मणिमन्त्रौषधांगणैः। उक्तैःसंरक्षितोराजा प्रमादपरिवर्जकः ३३ प्रजातरोर्मूलमिहावनीशस्तद्रक्षणाद्राष्ट्रमुपैतिवृद्धिम् । तस्मात्प्रयत्नेननृपस्यरक्षा सर्वेणकार्यारविवंशचन्द्र ! ३४ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१८ ॥

मूतने लगजाताहै-जीवजीवक पक्षी ग्लानियुक्त होजाताहै-नौलेके रोम खड़ेहोजाते हैं-और विषको देखकर प्रसन्नहोजाताहै-और विषवाला अन्न थोड़ेही कालमें पन्द्रह दिनकेवासी अन्नकेसमान विगड़ जाताहै दुर्गन्ध होजातीहै तार छुटने लगतेहैं २० । २३ शाक तो विषयुक्त होनेसे सूखजाते हैं पतले भोजनों में बुलबुले उत्पन्न होजाते हैं और विषयुक्त सैंधव निमकवाले भोजनमें झाग उठाकरतेहैं २४ अन्न लालहोजाताहै, दूध नीला होजाताहै, मदिराका रंग कोकिला के रंग समान होजाताहै और जलका भी कोकिलाही के समान रंग होजाताहै २५ और धान्य की कॉंजीकाली होजाती है-कोदो धान्यकी कॉंजी कपिलरंगकी और तक्र काला नीला अथवा पीत वर्णका होजाताहै २६ घृत जलके समान दीखताहै और अच्छे शरीरकारंग कपोतके सदृशहोजाता है-मक्खीका हरितवर्ण-तेल लालवर्ण और कच्चे फल विषके योगसे शीघ्रही पकजाते हैं-पके हुए फलशीघ्र गलजाते हैं पुष्प मुरझा जाते हैं-कठोर फल विष के योगसे कोमल होजाता है-कोमल फल विगड़ जातेहैं-सूक्ष्म फलों का रूप नष्ट होजाताहै २७ । २९ विष लगे हुए वस्त्रों में काले मंडल और चकचेते होजातेहैं और लोहे और मणियोंके मलकी कीचसी लिपीहुई दीखने लगजाती है ३० हेराजा चन्दन-पुष्प और जल इनमें विष लगने से दुर्गन्धि होजातीहै-दांतन के विष लगनेसे उसकी त्वचा काली होजातीहै हेराजा यहसब चिह्न विषके कहेहैं ३१ । ३२ इसहेतुसे राजा को मणिमन्त्र औषधि और इनसब कही हुई वस्तुओं से युक्तहो प्रमादसे रहितहोकर अपने पुरमें

(मत्स्यउवाच) राजन्! पुत्रस्यरक्षाच कर्तव्यापृथिवीक्षिता। आचार्यश्चात्रकर्त व्यो नित्ययुक्तश्चरक्षिभिः १ धर्मकामार्थशास्त्राणि धनुर्वेदञ्चशिक्षयेत्। रथेचकुंजरेचैनं व्यायामङ्कारयेत्सदा २ शिल्पानिशिक्षयेच्चैनं नाप्तोमिथ्याप्रियंवदेत्। शरीररक्षाव्याजेन रक्षिणोऽस्यनियोजयेत् ३ नचास्यसङ्गोदातव्यः क्रुद्धलुब्धावमानितैः। तथाचविनयेदेनं यथायौवनगोचरे ४ इन्द्रियैर्नापकृष्येत सतांमार्गात्सुदुर्गमात्। गुणाधानमशक्यन्तु यस्य कर्तुंस्वभावयः ५ बन्धनंतस्यकर्तव्यं गुप्तदेशेसुखान्वितम्। अविनीतकुमारंहि कुलमाशु विशीर्यते ६ अधिकारेषुसर्वेषु विनीतंविनियोजयेत्। आदौस्वल्पेततःपश्चात् क्रमेणार्थ महत्स्वपि ७ मृगयापानमक्षांश्च वर्जयेत्पृथिवीपतिः। एतान्येसेवमानास्तु विनष्टाःपृ थिवीक्षितः ८ बहवोनरशार्दूल! तेषांसङ्ख्यानविद्यते। दिवास्वापंक्षितीशस्तु विशेषेण विवर्जयेत् ९ वाक्पारुष्यंनकर्तव्यंदण्डपारुष्यमेवच। परोक्षनिन्दाचतथावर्जनीया मही क्षिता १० अर्थस्यदूषणंराजाद्विप्रकारंविवर्जयेत्। अर्थानांदूषणंचैकंतथार्थेषुचदूषणम् ११ प्रकाराणांसमुच्छेदो दुर्गादीनामसत्क्रिया। अर्थानांदूषणंप्रोक्तं विप्रकीर्णत्वमेवच १२ अदेशकालेयद्दानमपात्रेदानमेवच। अर्थेषुदूषणंप्रोक्तमसत्कर्मप्रवर्तनम् १३ कामः

वास करना चाहिये ३३ प्रजारूपी वृक्षकी जड़ राजाहै राजाकी रक्षाहोनेसे संपूर्ण देशभरकी वृद्धि होतीहै इसहेतुसे सब लोगों को राजाकीरक्षा करना चाहिये ३४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टादशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २१८॥

मत्स्यजी बोले–हेराजन् राजाको पुत्रकीरक्षा करनी चाहिये अर्थात् गौरव बढ़ानेको पुत्रकीरक्षाके निमित्त बहुतसे भृत्य रखने चाहिये १ और धर्म काम और अर्थ के शास्त्र, धनुष विद्या, रथहाथी और घोड़े की सवारी सिखाकर २ शिल्पविद्या को पढ़ावे पुत्रके आगे कभी प्रिय मिथ्या बातनकरे उसके शरीर की रक्षा करनेके बहाने से इसकी रक्षा करने वाले जन ऐसे रखने चाहिये ३ जो क्रोधी–लोभी और निरादर वाले नहों क्योंकि लोभी क्रोधी और निरादरवाले पुरुषोंके संग तो कभी बैठने भी नदे यह सब लोग उसको विनय सिखावें और तरुण अवस्था होनेपर उसको विषयादि भोगोंसे न रोकें परन्तु श्रेष्ठ पुरुषोंकेही मार्ग में रक्खें जिस पुत्र को सबगुण न आसकें उसको एकान्त में बैठाके सुखपूर्वक सब गुण सिखवावे क्योंकि विना नीति वाले राजकुमारका कुलशीघ्रही नष्ट होजाताहै नीतिमें निपुण होने वाले राजकुमारों को राजा सब कामोंमें नियुक्तकर दे प्रथम तो स्वल्प अधिकारमें नियुक्त करे फिरक्रम २ से सब अधिकारोंमें नियुक्त करदेवे ४। ७ राजाकुमारों को शिकार खेलनेसे मदिरा पीनेसे और द्यूत खेलनेसे निषेध करदे क्योंकि इनतीनों बातोंके करनेवाले बहुतसे राजा नष्टहोगयेहैं हेराजा उनबहुतसे नष्टहुए राजाओंकी संख्या असंख्यहै इसके विशेष दिनके सोने को भी राजा निषेध करदे ८। ९ राजा कभी कठोर वचन न बोले कठोर दंड न दे पीठ पीछे किसीकी निन्दानकरे राजा आगेके दोप्रकारके अर्थ दोषोंका निषेध करदे पहलादोष यहहै कि खाईंको तुड़वाना और सब द्रव्यों की पर तालन करना कोईकाम देश और कालके विना

क्रोधोमदोमानो लोभोहर्षस्तथैवच। एतेवर्ज्याःप्रयत्नेन सादरंपृथिवीक्षिता १४ एतेषां विजयंकृत्वा कार्योभृत्यजयस्ततः। कृत्वाभृत्यजयंराजा पौरान्जानपदान्जयेत् १५ कृत्वाचविजयन्तेषां शत्रून्बाह्यांस्ततोजयेत्। बाह्याश्चविविधाज्ञेयास्तुल्याभ्यन्तरकृत्रिमाः १६ गुरवस्तेयथापूर्वं तेषुयत्नपरोभवेत्। पितृपैतामहंमित्रममित्रञ्चतथारिपोः १७ कृत्रिमञ्चमहाभाग! मित्रंत्रिविधमुच्यते। तथापिचगुरुःपूर्वंभवेत्तत्रापिचादृतः १८ स्वाम्यमात्योजनपदो दुर्गंदण्डस्तथैवच। कोशोमित्रञ्चधर्मज्ञ! सप्तांगंराज्यमुच्यते १९ सप्तांगस्यापिराज्यस्य मूलंस्वामीप्रकीर्तितः। तन्मूलत्वात्तथांगानां सतुरक्ष्यःप्रयत्नतः २० षडंगरक्षाकर्तव्या तथातेनप्रयत्नतः। अंगेभ्योयस्तथैकस्तु द्रोहमाचरतेऽल्पधीः २१ बन्धस्तस्यतुकर्तव्यः शीघ्रमेवमहीक्षिता। नराज्ञामृदुनाभाव्यं मृदुर्हिपरिभूयते २२ नभाव्यंदारुणेनातितीक्ष्णादुद्विजतेजनः। कालेमृदुर्योभवति कालेभवतिदारुणः २३ राजालोकद्वयापेक्षी तस्यलोकद्वयंभवेत्। भृत्यैःसहमहीपालः परिहासंविवर्जयेत् २४ भृत्याःपरिभवन्तीह नृपंहर्षवशंगतम्। व्यसनानिचसर्वाणि भूपतिःपरिवर्जयेत् २५ लोकसंग्रहणार्थाय कृतकव्यसनीभवेत्। शौण्डीरस्यनरेन्द्रस्य नित्यमुद्रिक्तचेतसः २६ जनाविरागमायान्ति सदादुःसेव्यभावतः। स्मितपूर्वाभिभाषीस्यात् सर्वस्यैवमहीपतिः २७

विचार न करना चाहिये और अन्यराजा को दानभेट देना और असत्कर्मोंकी प्रवृत्तिकरनी यहदूसरा दूषणहै १०। ११ काम-क्रोध-मद अभिमान-लोभ और हर्ष इन सबको राजा यत्न पूर्वक न रहनेदे प्रथम इन सबको अपने वश में करके अर्थात् बिजय करके अपने भृत्यों को वशमेंकरनायोग्य है इसके पीछेअपने देशपुरआदिको वशकरे फिर आगेलिखेहुए इनकईशत्रुओंको जीते वे शत्रुतुल्य अभ्यन्तर-और कृत्रिम आदिक अनेकप्रकारकेहैं १४।१६ इनमें उत्तरोत्तर बलवान् शत्रुहैंइनसबोंमेंयत्न पूर्व्वक रहनाचाहिये अपनेपिता और पितामहका मित्र,शत्रुकाशत्रु-और कृत्रिममित्र-यहतीनप्रकारके मित्रहोतेहैं-इनतीनोंमेंभी पूर्व्वके मित्र अधिकहैं १७।१८और राजा मन्त्री,देश,किला,दंड,खजाना,और मित्र यह सात राज्यके अंगहोतेहैं १९ इनसातों अंगवाले राज्यकामूल स्वामी राजाहोताहै इसलिये विशेषकरके राजाकी रक्षा करनी चाहिये और राजाको भी अपने छः अंगोंकी रक्षाकरनी चाहिये और जो मन्दबुद्धी मनुष्य राजाके इन छः अंगों से द्रोह करे उसको राजा शीघ्रही क़ैदमें करे राजा को कोमल और सरल स्वभाव न होना चाहिये कोमल स्वभाव वाले राजाका तिरस्कार होताहै और जिससे प्रजा बहुतसी भयभीत हो ऐसे उग्र तीक्ष्ण और दारुण स्वरूप से भी नहीं रहना चाहिये और जो कामपर कभी सरल और कभी दारुण हो जाताहै ऐसे राजाके यहलोक औरपरलोक दोनों बने रहते हैं और राजाको अपने भृत्यों के साथ कभी हास्य न करना चाहिये २०। २४ क्योंकि हर्ष के वशमें होजाने वाले राजा का भृत्यजन तिरस्कार करदेतेहैं इसके सिवाय राजा सब व्यसनों को त्यागदे परन्तु लोकों के संग्रह करने के निमित्त व्यसन करना भी योग्यहै मद वाले अभिमानी राजाके राज्य में बसने वाले सब जन प्रीति वाले नहीं रहते हैं इस हेतुसे राजा को सबसे हास्य

वध्येष्वपिमहाभाग ! भ्रूकुटिंनसमाचरेत् । भाव्यंधर्मभृतांश्रेष्ठ ! स्थूललक्ष्येणभूभु
जा २८ स्थूललक्ष्यस्यवशगा सर्वाभवतिमेदिनी । अदीर्घसूत्रश्चभवेत् सर्वकर्मसुपा
र्थिवः २९ दीर्घसूत्रस्यनृपतेः कर्महानिर्ध्रुवम्भवेत् । रागेदर्पेचमानेच द्रोहेपापेचकर्मणि
३० अप्रियेचैवकर्तव्ये दीर्घसूत्रःप्रशस्यते । राज्ञासंवृतमन्त्रेण सदाभाव्यंनृपोत्तम !
३१ तस्यासंवृतमन्त्रस्यराज्ञःसर्वापदोध्रुवम् । कृतान्येवतुकार्याणिज्ञायन्तेयस्यभूपतेः ३२
नारब्धानिमहाभाग! तस्यस्याद्वसुधावशे। मन्त्रमूलंसदाराज्यं तस्मान्मन्त्रस्सुरक्षितः ३३
कर्तव्यःपृथिवीपालैर्मन्त्रभेदभयात्सदा। मन्त्रवित्साधितोमन्त्रः सम्पत्तीनांसुखावहः ३४
मन्त्रच्छलेनबहवो विनष्टाःपृथिवीक्षितः। आकारैरिंगितैर्गत्या चेष्टयाभाषितेनच ३५
नेत्रवक्त्रविकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतंमनः । नयस्यकुशलैस्तस्य वशेसर्वावसुन्धरा ३६
भवतीहमहीपाले सदापार्थिवनन्दन ! । नैकस्तुमन्त्रयेन्मन्त्रं राजानबहुभिःसह ३७
नारोहेद्विषमांनावमपरीक्षितनाविकाम् । येचास्यभूमिजयिनो भवेयुःपरिपन्थिनः ३८
तानानयेद्वशेसर्वान् सामादिभिरुपक्रमैः । यथानस्यात्कृशीभावः प्रजानामनवेक्षया ३९
तथाराज्ञाप्रकर्तव्यं स्वराष्ट्रंपरिरक्षता । मोहाद्राजास्वराष्ट्रंयः कर्षयत्यनवेक्षया ४० सोऽ
चिराद्भ्रश्यते राज्याज्जीविताच्चसबान्धवः । भृतोवत्सोजातबलः कर्मयोग्योयथाभवेत्

पूर्वक बात करना अयोग्यहै २६ । २७ और जो मारने के योग्य होंय उन अपराधी पुरुषों परभी राजा को भृकुटी नहीं चढ़ानी चाहिये राजाको सदैव स्थूल लक्षणोंसे युक्त रहना चाहिये २८ स्थूल लक्षणोंसे रहने वाले राजाके वशमें संपूर्ण प्रजा होजाती हैं राजाको संपूर्ण कामों में आलस्यनहीं करना चाहिये और जो अप्रिय कर्त्तव्य हो उसमें राजा को दीर्घ सूत्रीही रहना चाहिये और राजा को अपनीसलाह सदैव गुप्तरखनी चाहिये जो राजा अपनी सलाह को प्रकटकरदेता है उसको अवश्यही विपत्ति प्राप्तहोजातीहै और जिस राजाके कर्मके आरंभको कोई नहींजानता और कर्म के सिद्धहोजानेहीपर सब जानतेहैं उसराजाके वशमें संपूर्णपृथ्वी होजातीहै राज्य सदैव मंत्रमूलवाला है इसहेतुसे सदैव मंत्रकी रक्षाकरनीचाहिये २९।३३ राजाओंको मन्त्र अर्थात् सलाहके भेदकेभय से मन्त्रवेत्ता पुरुषोंके द्वारा अपने मन्त्रको सिद्धकरलेनाचाहिये ऐसे करनेवाले राजाकामन्त्र सम्पत्तियोंके सुखका देनेवाला होताहै ३४ मन्त्रके छलहोनेसे पूर्व्वके बहुतसे राजा नष्टहोगयेहैं, आकार चिह्न- गमन- चेष्टा- और बोलना इत्यादिसे तथा नेत्र मुखके विकारकरके भीतरका मन पहचाना जाता है और नीतिमें निपुणरहनेवाले राजाके वशमें सम्पूर्ण पृथ्वी रहती है राजाको नतो केवल एकही मनुष्यकेसंग और न बहुतसेही मनुष्यों के संग सलाहकरनी चाहिये और विनाजाने पहचाननेवाले मल्लाहकी विषम नौकामेंभी राजाको कभी न बैठनाचाहिये और जो इस पृथ्वीजीतने वाले राजाको मार्गमें कोई लूटनेकोआवे तो उन लुटेरेपुरुषोंको राजा सामआदिक उपायोंसे शान्त करे और जिसरीतिसे प्रजाको खेदनहो वही व्यवहारकरना योग्यहै ३५।३९ राजाको अपने राज्य में सबप्रजाको सुखदेना योग्यहै, जोराजा अपनी प्रजाको अज्ञानसे दुःखदेताहै वह राजा अपने सब

४१ तथाराष्ट्रंमहाभाग ! भृतंकर्मसहम्भवेत् । योराष्ट्रमनुगृह्णाति राज्यंसपरिरक्षति
४२ सञ्जातमुपजीवेत्तु विन्दतेसमहत्फलम्। गृह्याद्धिरण्यंधान्यञ्चमहींराजासुरक्षितां
४३महतातुप्रयत्नेन स्वराष्ट्रस्यचरक्षिता। नित्यंस्वेभ्यःपरेभ्यश्च यथामातायथापिता४४
गोपितानिसदाकुर्यात् संयतानीन्द्रियाणिच। अजस्रमुपयोक्तव्यं फलन्तेभ्यस्तथैवच४५
सर्वंकर्मेदमायत्तं विधानेदैवमानुषे। तयोर्दैवमचिन्त्यञ्चपौरुषेविद्यतेक्रिया४६ एवंमहीं
पालयतोऽस्यभर्तुर्लोकानुरागः परमोभवेत्तु। लोकानुरागप्रभवाचलक्ष्मीर्लक्ष्मीवतश्चा-
पिपराचलक्ष्मीः ४७॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकोनविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २१९॥

(मनुरुवाच) दैवेपुरुषकारेच किंज्यायस्तद्ब्रवीहिमे। अत्रमेसंशयोदेव! च्छेत्तुम-
र्हस्यशेषतः१ (मत्स्यउवाच) स्वमेवकर्मदैवाख्यं विद्धिदेहान्तरार्जितम्। तस्मात्पौरुष
मेवेह श्रेष्ठमाहुर्मनीषिणः २ प्रतिकूलन्तथादैवं पौरुषेणविहन्यते। मङ्गलाचारयुक्तानां
नित्यमुत्थानशालिनाम् ३ येषांपूर्वकृतंकर्म सात्विकंमनुजोत्तम !। पौरुषेणविनातेषां के
षांचिद्दृश्यतेफलम् ४ कर्मणाप्राप्यतेलोके राजसस्यतथाफलम्। कृच्छ्रेणकर्मणाविद्धि
तामसस्यतथाफलम् ५ पौरुषेणाप्यतेराजन्! प्रार्थितव्यंफलंनरैः। दैवमेवविजानन्ति
नराःपौरुषवर्जिताः ६ तस्मात्त्रिकालसंयुक्तं दैवन्तुसफलंभवेत्। पौरुषंदैवसम्पत्त्या का

वन्धुगणोंसमेत शीघ्र नष्टहोजाताहै जैसे कि पालाहुआ वछडा भारआदिके कर्मकरनेके योग्यहोताहै
इसीप्रकार पालनकियाहुआ राज्य कर्मके सहनेकेयोग्य होजाताहै, जोराजा अपने राज्यके लोगोंपर
अनुग्रहकरताहै उसीकाराज्य रहताहै और वही वड़े२ फलोंकोभोगताहै, राजा अपने रक्षितकियेहुए
राज्यमेंसे माता पिताकेसमान सरलहोकर प्रतिदिन धन धान्य सुवर्ण और पृथ्वी इनसवको ग्रहण
करे और अन्यराज्य के पुरुषों से सदैव कररूपी दान लियाकरे ४०।४४ और राजाको अपनी सव
इन्द्रियांभी वशमें करनीचाहिये अर्थात् उन इन्द्रियोंसे निरन्तर फलभोगतारहे इसप्रकारसे पुरुषार्थ
करना योग्यहै ऐसे विधिपूर्वक पुरुषार्थकरनेवाले राजापर सवलोगोंकी प्रीतिरहतीहै और सवप्रजा
की प्रसन्नतासे राजाके धन लक्ष्मी वढ़ती है फिर अन्यराजाकीभी लक्ष्मी प्राप्तहोजातीहै ४५।४७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २१९॥

मनुजीनेपूछा हेप्रभो भाग्य और पुरुषार्थ इनदोनों में कौनवड़ा और श्रेष्ठ है इस मेरे सन्देहको
आप दूरकीजिये १ मत्स्यजीवोले- पहलेजन्ममें कियेहुए अपनेही कर्मको दैव तथा भाग्य कहते हैं
इसहेतुसे बुद्धिमान्लोगोंने पुरुषार्थहीको श्रेष्ठकहा है २ प्रतिदिन मंगलाचरण आदि सत्कर्म और
पुरुषार्थकरनेवाले पुरुषका प्रतिकूलदैवभी अनुकूलहोजाताहै ३ हेमनुजोत्तम, जिन्हों ने पूर्वजन्म में
सतोगुणसंयुक्त सत्कर्मकियाहै उनको पुरुषार्थ कियेविनाही कुछफल प्राप्तहोकर दीखताहै ४ रजोगुण
युक्त कर्मकरनेवालोंको कर्मकरनेसे फलमिलताहै और जिन्होंने तमोगुणके कर्मकियेहैं उनको कष्ट
से फलप्राप्तहोताहै, हेराजा मनुष्योंको पुरुषार्थकरनेसे मनोवांछितफल प्राप्तहोजाताहै और जोपुरुष
पुरुषार्थकरनेमें समर्थ नहींहोते हैं वह केवल दैवहीको प्रधान जानते हैं ५।६ इसहेतुसे त्रिकालमें

लेफलतिपार्थिव! ७ दैवंपुरुषकारश्च कालश्चपुरुषोत्तम!। त्रयमेतन्मनुष्यस्य पिण्डि तंस्यात्फलावहम् ८ कृष्टिवृष्टिसमायोगा दृश्यन्तेफलसिद्धयः। तास्तुकालेप्रदृश्यन्ते नै वाकालेकथञ्चन ९ तस्मात्सदैवकर्तव्यं सधर्मंपौरुषंनरैः। विपत्तावपियस्येह परलोकेध्रु वंफलम् १० नालसाःप्राप्नुवन्त्यर्थान् नचदैवपरायणाः। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन आचरेद्धर्म मुत्तमम् ११ त्यक्त्वालसान्दैवपरान् मनुष्यानुत्थानयुक्तान्पुरुषान्हिलक्ष्मीः। अन्विष्य यत्नाद्वृणुयान्नृपेन्द्र! तस्मात्सदोत्थानवताहिभाव्यम् १२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२०॥

(मनुरुवाच) उपायांस्त्वंसमाचक्ष्व सामपूर्वान्महाद्युते! लक्षणञ्चतथातेषां प्रयो गंचसुरोत्तम! १ (मत्स्यउवाच) सामभेदस्तथादानदण्डश्चमनुजेश्वर!। उपेक्षाचत थामाया इन्द्रजालंचपार्थिव! २ प्रयोगाःकथिताःसप्त तन्मेनिगदतःशृणु। द्विविधंकथि तंसाम तथ्यञ्चातथ्यमेवच ३ तत्राप्यतथ्यंसाधूना माक्रोशायैवजायते। तत्रसाधुःप्रयत्ने न सामसाध्योनरोत्तम! ४ महाकुलीनाऋजवो धर्मनित्याजितेन्द्रियाः। सामसाध्यानचा तथ्यन्तेषुसामप्रयोजयेत् ५ तथ्यंसामचकर्तव्यं कुलशीलादिवर्णनम्। तथातदुपचारा णां कृतानांचैववर्णनम् ६ अनयैवतथायुक्त्या कृतज्ञाख्यापनंस्वकम्। एवंसाम्नाचकर्त व्या वशगाधर्मतत्पराः ७ साम्नायद्यपिरक्षांसि गृह्णन्तीतिपराश्रुतिः। तथाप्येतदसाधू

युक्तहुआ दैव सफलहोताहै और पुरुषार्थतो दैवयोगसे कभी अपने समयमेंभी सफलहोताहै, हेमनु इस मनुष्यके दैव-पुरुषार्थ और काल यह तीनोंपदार्थ इकट्ठेहोके फलदायक होतेहैं ७।८ खेतियों की सिद्धि वर्षाके योगसे दीखतीहै वहतो अपने समयपरही सिद्धिदीखती है क्योंकि विनासमयके कभी फल फूल नहीं दीखताहै ९ इसकारण मनुष्यको सदैव धर्मसहित पुरुषार्थ करनाचाहिये धर्मसहित पुरुषार्थकरनेवाले पुरुषोंको विपत्तिकालमेंभी पारलौकिकफल मिलताहै १० आलसी तथा दैवकी बाट देखनेवाले पुरुष कभीभी मनोरथके फलको प्राप्त नहींहोतेहैं इसनिमित्त यत्नकरके उत्तम धर्म का आचरण करनाचाहिये ११ दैवके आधीनरहनेवाले आलसी पुरुषोंको त्यागकर उद्योगीपुरुषोंको ढूंढ़२कर लक्ष्मी वरलेतीहै इसलिये सदैव उद्योगी रहना चाहिये १२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२०॥

मनुजी बोले हे देव देव आप साम आदिक सब उपायों का वर्णन कीजिये और उनसब उपा- योंके लक्षण भी कहिये १ मत्स्यजीबोले साम-भेद-दान-दण्ड-उपेक्षा-माया-और इन्द्रजालविद्या यह सात प्रयोग अर्थात् उपाय राजाको करने कहे हैं इनमें से साम सत्यसाम और असत्यसाम इन दो प्रकारोंका है २।३ यह असत्यसाम साधु पुरुषोंसे कभी न कहे क्योंकि श्रेष्ठ साधु पुरुष तो सत्य साम उपायसेही सिद्ध होतेहैं-अच्छे कुलीन सुन्दर प्रकृतिके कृतज्ञ राजाओं के कुलकी प्रशंसाकरे और अपने कियेहुए कर्म को उनसेकहै ऐसे साम उपायोंसे तो धर्मज्ञ राजाओंको अपने वशमेंकरे ४।७ क्योंकि साम उपायों से सब वश में होजाते हैं यह परम श्रुतिहै परन्तु ऐसाहोने

नां प्रयुक्तंनोपकारकम् ८ अतिशङ्कितमित्येवं पुरुषंसामवादिनम्। असाधवोविजान्ति तस्मात्तत्तेषुवर्जयेत् ९ येशुद्धवंशाऋजवःप्रणीता धर्मेस्थिताःसत्यपराविनीताः। तेषामसाध्याःपुरुषाःप्रदिष्टा मानोन्नतायेसततञ्चराजन्! १० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२१॥

(मत्स्यउवाच) परस्परन्तुयेदुष्टाः क्रुद्धाभीतावमानिताः। तेषांभेदंप्रयुञ्जीत भेदसाध्याहितेमताः १ येतुयेनैवदोषेण परस्मान्नापिबिभ्यति। तेतुतद्दोषपातेन भेदनीयाभृन्ततः २ आत्मीयांदर्शयेदाशां परस्माद्दर्शयेद्भयम्। एवंहिभेदयेद्विद्वान् यथावद्वशमानयेत् ३ संहताहिविनाभेदं शक्रेणापिसुदुःसहाः। भेदमेवप्रशंसन्ति तस्मान्नयविशारदाः ४ स्वमुखेनाश्रयेद्भेदम्भेदम्परमुखेनच। परीक्ष्यसाधुमन्येत भेदंपरमुखाच्छ्रुतम् ५ सद्यःस्वकार्यमुद्दिश्य कुशलैर्येहिभेदिताः। भेदितास्तेविनिर्दिष्टा नैवराज्ञार्थवादिभिः ६ अन्तःकोपोवहिःकोपो यत्रस्यातांमहीक्षिताम्। अन्तःकोपोमहांस्तत्र नाशकःपृथिवीक्षिताम् ७ सामन्तकोपोवाह्यस्तु कोपःप्रोक्तोमहीभृतः। महिषीयुवराजभ्यां तथासेनापतेर्नृप! ८ अमात्यमन्त्रिणाञ्चैव राजपुत्रेतथैवच। अन्तःकोपोविनिर्दिष्टो दारुणःपृथिवीक्षिताम् ९

पर भी दुष्ट पुरुषोंके साथ साम उपाय नहीं करना चाहिये वह असाधु दुष्ट पुरुष सामवादी राजा को भयभीत मानते हैं इस निमित्त उनसे कभी साम उपाय न करे ८। ९ हे राजन् शुद्धवंशमेंहोने वाले सरल-धर्मरत-और सत्यवक्ता होते हैं ऐसे पुरुषों से अभिमानी और दुष्टजन कभी प्रसन्न नहीं होते हैं १० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२१ ॥

मत्स्यजीबोले-जोमनुष्य परस्परमें दुष्ट-क्रोधी और अभिमानीहों उनमें भेद उपाय करना चाहिये क्योंकि वहलोग भेद अर्थात् आपसकी फूटकरने सेही जीते जासक्तेहैं १ जो पुरुष जिस दोषकरके परजनोंसे नहींडरतेहैं उनके ऊपर वहीदोष लगाकर उनमें परस्पर फूटकरवा देनीचाहिये २ उनको अपनी ओरकी आशा दिखावे और पर पुरुषोंसे भय दिखवावे इसप्रकारके अन्य पुरुषोंके भेद करने से वह पुरुष यथार्थ रीतिसे वशमें होजातेहैं ३ और जो कदाचित् कईराजा आपसमें इकट्ठे होरहेहैं तो उनकी परस्परमें फूटहुए विना एकराजा कभी उनको नहीं जीतसक्ता है इस निमित्त उनके जीतनेके निमित्त नीतिज्ञ पुरुषोंने भेदकाही उपाय उत्तम कहाहै-परन्तु भेद उपाय अपने मुखसे नहीं करे अन्य जनोंके मुखसे करवावे क्योंकि वहलोग अन्यों के मुखसे कहेहुए भेद उपायोंकोसुन कर अच्छा जानलेतेहैं ४। ५ जो भेदकिये हुए पुरुष अपनेही कार्य्य का उद्देशकरतेहों अर्थात् अपनही प्रयोजन सिद्ध करने वालेहों वह भेद करवाने वाले राजा को श्रेष्ठ न समझने चाहिये ६ जिन राजाओंके वाहर तथा भीतर क्रोधहो उनदोनोंमें भीतर क्रोधवाले राजाओंका बड़ानाश होताहै, जो साम उपायसे शान्त होजाय वह राजाका वाहरी क्रोध कहाता है और रानी राजकुमार-सेनापति-मन्त्री-और राजपुत्री इनके क्रोधसे जो राजाको क्रोध उत्पन्न होताहै वह भीतरका क्रोध कहलाता

वाह्यकोपेसमुत्पन्ने सुमहत्यपिपार्थिवः। शुद्धान्तस्तुमहाभाग ! शीघ्रमेवजयीभवेत् १०
अपिशक्रसमोराजा अन्तःकोपेननश्यति। सोऽन्तःकोपःप्रयत्नेन तस्माद्रक्ष्योमहीभृता
११ परतःकोपमुत्पाद्य भेदेनविजिगीषुणा। ज्ञातीनांभेदनंकार्यं परेषांविजिगीषुणा १२
रक्ष्यश्चैवप्रयत्नेन ज्ञातिभेदस्तथात्मनः। ज्ञातयःपरितप्यन्ते सततंपरितापिताः १३ त
थापितेषांकर्तव्यं सुगम्भीरेणचेतसा। ग्रहणंदानमानाभ्यां भेदस्तेभ्योभयङ्करः १४ न
ज्ञातिमनुगृह्णन्ति नज्ञातिर्वैश्वसन्तिच। ज्ञातिभिर्भेदनीयास्तु रिपवस्तेनपार्थिवैः १५
भिन्नाहिशक्यारिपवःप्रभूताः स्वल्पेनसैन्येननिहन्तुमाजौ। सुसंहतानांहितदस्तुभेदः का
र्योरिपूणांनयशास्त्रविद्भिः १६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्वाविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२२॥

(मत्स्यउवाच) सर्वेषामप्युपायानां दानंश्रेष्ठतमंमतम्। सुदत्तेनेहभवति दानेनोभय
लोकजित् १ नसोऽस्तिराजन् ! दानेनवशगोयोनजायते। दानेनवशगादेवाभवन्तीह
सदानृणाम् २ दानमेवोपजीवन्ति प्रजाःसर्वानृपोत्तम !। प्रियोहिदानवान्लोके सर्वस्यै
वोपजायते ३ दानवानचिरेणैव तथाराजापरान्जयेत्। दानवानेवशक्नोति संहतान्भे-
दितुंपरान् ४यद्यप्यलुब्धगम्भीराः पुरुषाःसागरोपमाः। नगृह्णन्तितथाप्येते जायन्तेप
क्षपातिनः ५ अन्यत्रापिकृतंदानं करोत्यन्यान्यथावशे। उपायेभ्यःप्रशंसन्ति दानंश्रेष्ठतमं

है हे महाभाग राजाका बाहरी क्रोध जो बहुत अधिकभी होजाय तौ भी शुद्ध अन्तःकरणवाले राजा की शीघ्र विजय होती है ७। १० और भीतरका क्रोधकरनेवाला इन्द्र के समान भी राजा होकर नष्टहोजाताहै इस निमित्त वह भीतरका क्रोध बहुत यत्नकरके रक्षित करना चाहिये ११ भेदउपायसे अन्योंके जीतनेकी इच्छाकरनेवाले राजाको उन अन्य राजाओंके ज्ञाति बन्धुकी परस्पर फूटकरवानी चाहिये १२ परन्तु अपनेज्ञाति बन्धुओंका भेद बड़ेयत्नोंसे न होनेदे क्योंकि दुःखितहुए बन्धुजनराजाओंको दुःखितकरदेते हैं इसनिमित्त दान मानकरके उनको अपनेमें संयुक्तरक्खे उनकी फूटहोने से राजाको भयहोताहै १३।१४ बुद्धिमान् राजा शत्रुओंके बन्धुजनोंको फूटकरवाकर शत्रुकोजीते १५ परस्परमें भेद फूटवाले प्रबल शत्रुभी थोड़ीहीसेनासे नष्टहोजाते हैं इसहेतुसे इकट्ठेहुये शत्रुओं का भेद करनाही योग्यहै १६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वाविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२२॥

मत्स्यजीबोले- हेराजन् सब उपायोंमें दान उपाय श्रेष्ठहै अच्छीभेट देनेसे दोनोंलोकोंकी विजय होतीहै १ ऐसा कोई नहींहै जो दानकरके वशमें नहींहोय दानकरनेसे देवताभी मनुष्यों के वशमें होजातेहैं २ सबप्रजाका उपकार दानहीसे होताहै दानदेनेवाला पुरुष सबलोकोंका प्रिय होता है ३ दानवाला राजा शीघ्रही सबराजाओंको जीतलेताहै दान और भेटदेनेवाला राजा बहुतसे इकट्ठेहुए शत्रुओंकोभी निश्चय जीतलेताहै- लोभरहित समुद्रके समान गंभीरपुरुष कभी भेट दानादिक नहीं लेतेहैं परन्तु ऐसेलोगभी उस दानीराजाके पक्षपाती होजातेहैं ४।५ और अन्यत्र दियेहुएदान और

जनाः ६ दानंश्रेयस्करंपुंसां दानंश्रेष्ठतमंपरम्। दानवानेवलोकेषु पुत्रत्वेध्रियतेसदा७न
केवलंदानपराजयन्ति भूलोकमेकंपुरुषप्रवीराः। जयन्तितेराजसुरेन्द्रलोकं सुदुर्जयंयो
विबुधाधिवासः ८॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रयोविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२३॥

(मत्स्यउवाच) नशक्यायेवशेकर्तुमुपायत्रितयेनतु। दण्डेनतान्वशीकुर्यात् दण्डोहि
वशकृन्नृणाम् १ सम्यक्प्रणयनंतस्य तथाकार्यंमहीक्षिता। धर्मशास्त्रानुसारेण ससहायेन
धीमता २ तस्यसम्यक्प्रणयनं तथाकार्यंमहीक्षिता। वानप्रस्थांश्चधर्मज्ञान्निर्ममान्निष्प
रिग्रहान्३स्वदेशेपरदेशेवा धर्मशास्त्रविशारदान्। समीक्ष्यप्रणयेद्दण्डं सर्वंदण्डेप्रतिष्ठित
म्४आश्रमीयदिवावर्णी पूज्योवाथगुरुर्महान्। नादण्ड्योनामराज्ञोऽस्ति यःस्वधर्मेन
तिष्ठति५ अदण्ड्यान्दण्डयेद्राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्। इहराज्यात्परिभ्रष्टो नरकञ्च
प्रपद्यते ६ तस्माद्राज्ञाविनीतेन धर्मशास्त्रानुसारतः। दण्डप्रणयनंकार्यं लोकानुग्रहका
म्यया ७ यत्रश्यामोलोहिताक्षो दण्डश्चरतिनिर्भयः। प्रजास्तत्रनमुह्यन्ति नेताचेत्साधु
पश्यति ८ बालवृद्धातुरयति द्विजस्त्रीविधवायतः। मात्स्यन्यायेनभक्ष्येरन् यदिदण्डंन
पातयेत् ९ देवदैत्योरगगणाः सर्वेभूतपतत्रिणः। उत्क्रामयेयुर्मर्यादां यदिदण्डंनपातयेत्
१० एषब्रह्माभिशापेषु सर्वप्रहरणेषुच। सर्वविक्रमकोपेषु व्यवसायेचतिष्ठति ११ पूज्य

भेंटभी अन्यलोगोंको वशमें करलेतीहैं सबउपायोंमें दान उपाय श्रेष्ठहै लोकमें सदैव दानवालेही उ-
त्तम कहातेहैं हेराजेन्द्र दानीराजा केवल इसी भूलोकको नहीं जीतलेते हैं किन्तु देवताओंके वास
वाले उत्तम इन्द्रलोकको भी जीतलेतेहैं ६।८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रयोविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२३॥

मत्स्यजीबोले इन पिछले कहेहुए तीन उपायोंकरके जो वशमें न होसके उसको राजा दंडदेकर
वशीभूतकरे दंड सबको वशमें करनेवालाहै १ अपने सहायकोंसे युक्तहोकर राजा धर्मशास्त्र के अनु-
सार सबको दंडदेके वशमेंकरे अपनेदेशमें और परदेशमें सबको पहचानकर नीतिशास्त्रके अनुसार
दंडदेवे क्योंकि दंडमें सबवस्तु स्थितरहतीहैं और ममतारहित वानप्रस्थ आश्रममें रहनेवाले महा-
त्माजनोंको देखकर सबकोदंडदेवे आश्रमवाले तथा विनाआश्रमवाले पूज्य- महान् और गुरु इन
सबोंमें जोकोई अपनेधर्मसे चलायमानहोजावे उसीको राजादंडदेवे ऐसा कोईनहीं है जिसकोराजा
दंड न देसके और जोराजा दंडदेनेके अयोग्य पुरुषोंको दंडदेताहै और दंडके योग्योंकोनहीं दंडदेताहै
वह इसलोकमें राज्यसे भ्रष्टहोजाताहै और अन्तमें मरकर नरकमें प्राप्त होताहै ६ इस निमित्त
लोकके अनुग्रहकेलिये राजा धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्रके अनुसार सबकोदंडदे ७ जहां श्यामवर्ण
वाला रक्तनेत्रयुक्त दंड निर्भय विचरता है वहां जो राजाकी बुद्धि सरलस्वभावकी होय तो प्रजा
नहीं बिगड़तीहै ८ जो राजा दंड न देवे तो बालक-वृद्ध-रोगी और विधवास्त्री इनसबको बलवान
पुरुष मत्स्यजीवोंके समान भक्षणकरजायं ९ देवता- दैत्य- सर्पगण- भूत और पक्षी यहसबभी दंड
दियेविना मर्यादाओंको तोड़देतेहैं यहदंड, ब्राह्मणके अभिशाप-- सबप्रहार- संपूर्णपराक्रम क्रोध और

न्तेदण्डिनोदेवैर्न पूज्यन्तेत्वदण्डिनः। नब्रह्माणंविधातारं नपूषार्यमणावपि १२ यजन्ते मानवाःकेचित् प्रशान्ताःसर्वकर्मसु। रुद्रमग्निञ्चशक्रञ्चसूर्य्याचन्द्रमसौतथा १३ विष्णुं देवगणांश्चान्यान् दण्डिनःपूजयन्तिच। दण्डःशास्तिप्रजाःसर्वा दण्डएवाभिरक्षति १४ दण्डःसुप्तेषुजागर्ति दण्डंधर्मंविदुर्बुधाः। राजदण्डभयादेव पापाःपापंनकुर्वते १५ यम दण्डभयादेके परस्परभयादपि। एवंसांसिद्धिकेलोके सर्वंदण्डेप्रतिष्ठितम् १६ अन्धे तमसिमज्जेयुर्यदिदण्डंनपातयेत्। यस्माद्दण्डोदमयति अदण्ड्यान्दमयत्यपि। दम नाद्दण्डनाच्चैव तस्माद्दण्डंविदुर्बुधाः १७ दण्डस्यभीतैस्त्रिदशैःसमेतैर्भागोधृतःशूलध रस्ययज्ञे। दत्तंकुमारेध्वजिनीपतित्वं वरंशिशूनाञ्चभयाद्बलस्य १८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुर्विंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२४॥

(मत्स्यउवाच) दण्डप्रणयनार्थाय राजासृष्टःस्वयम्भुवा। देवभागानुपादाय सर्वभू तादिगुप्तये १ तेजसायदमुंकश्चिन्नैवशक्नोतिवीक्षितुम्। ततोभवतिलोकेषु राजाभास्क रवत्प्रभुः २ यदास्यदर्शनेलोकः प्रसादमुपगच्छति। नयनानन्दकारित्वात्तदाभवतिच न्द्रमाः ३ यथायमःप्रियद्वेष्ये प्राप्तेकालेप्रयच्छति। तथाराज्ञाविधातव्याः प्रजास्तद्धियम व्रतम् ४ वरुणेनयथापाशैर्बद्धएवप्रदृश्यते। तथापापान्निगृह्णीयाद्व्रतमेतद्धिवारुणम ५ परिपूर्णंयथाचन्द्रं दृष्ट्वाहृष्यतिमानवः। तथाप्रकृतयोयस्मिन् सचन्द्रप्रतिमोनृपः६

निश्चय इनसबोंमें नियुक्तकरना योग्यहै, दंडदेनेवाले राजाओंको देवता पूजते हैं परन्तु विना दंड देनेवालोंको नहींपूजते और कितनेही शान्तपुरुष ब्रह्मा- पूषादेव- अर्य्यमादेव- रुद्र- अग्नि- सूर्य्य- चन्द्रमा- विष्णु और देवताओंके गण इनसबोंसेभी विशेष दंडदेनेवाले राजाओंको पूजतेहैं दंड सब प्रजाको शिक्षादेताहै दंडही सबकी रक्षाकरताहै सबके सोजानेपर दंडही जागाकरताहै पंडितलोग दंडहीको धर्मकहतेहैं राजाके दंडकेभयसे पापीपुरुष पाप नहींकरतेहैं १०।१५कोई २ धर्मराजके दंड के भयसे पाप नहींकरते इसरीतिसे सर्वत्र संसारमें दंडही प्रबलहै १६ जो राजा दंड नहींकरता है वह अन्धतामिश्र नरकमेंपड़ताहै दंड सबपुरुषोंको दमनकरके अपनेवशमें करलेताहै इसीसे पंडितों ने इसको दंडकहा है १७ दंडसे डरतेहुए देवताओंने यज्ञमें शिवजीको भागदिया है दंडहीके भयसे स्वामिकार्त्तिकजी कुमारअवस्थाहीमें सेनाकेपति बनायेगयेहैं १८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुर्विंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२४॥

मत्स्यजी बोले ब्रह्माजीने दंडदेनेकेलिये संपूर्ण भूतमात्रकी रक्षाके निमित्त देवताओंके अंशोंसे राजाको रचाहै १ तेजकरके इसराजाको कोईनहीं देखसकाहै इसीसे राजाका शरीर सूर्य्यकेसमान है राजाके दर्शनकरनेसे सबजन प्रसन्नहोजातेहैं राजा सबकेनेत्रोंको आनन्दकरताहै इससे इसका चन्द्रशरीरहै २।३ जैसे कि धर्मराज कालसमयपर प्रजापर प्रीति और द्वेषकरताहै उसीप्रकार राजा भी सबप्रजापर कृपा और दंडकरताहै यह धर्मराजका स्वभावहै ४जैसे कि वरुणदेवता फांसीसे बांध- तेहैं इसीप्रकार राजाभी पापियोंको बेड़ियोंसे बांध लेताहै यह वरुणका नियम है ५ जैसे कि पूर्ण

प्रतापयुक्तस्तेजस्वी नित्यंस्यात्सर्वकर्मसु । दुष्टसामन्तहिंस्रेषु राजाग्नेयव्रतेस्थितः ७
यथासर्वाणिभूतानि विभ्रतःपार्थिवंव्रतम् । इन्द्रस्यार्कस्य वातस्ययमस्यवरुणस्यच ८
चन्द्रस्याग्नेःपृथिव्याश्च तेजोव्रतंनृपश्चरेत् । वार्षिकांश्चतुरोमासान्यथेन्द्रोप्यथवर्षति
९ तथाभिवर्षेत्स्वंराज्यं काममिन्द्रव्रतंस्मृतम् । अष्टौमासान्यथादित्यस्तोयंहरतिर
श्मिभिः । तथाहरेत्करंराष्ट्रान्नित्यमर्कव्रतंहितत् १० प्रविश्यसर्वभूतानि यथाचरतिमारु
तः । तथाचारैःप्रवेष्टव्यं व्रतमेतद्धिमारुतम् ११ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२५ ॥

(मत्स्य उवाच) निक्षेप्यस्यसमंमूल्यं दण्ड्योनिक्षेपभुक्तथा । वस्त्रादिकसमस्तस्य
तदाधर्म्मोनहीयते १ योनिक्षेपंनार्पयति यश्चानिक्षेप्ययाचते । तावुभौचोरवच्छास्यौ
दाप्यौवाद्विगुणन्धनम् २ उपधाभिश्चयःकश्चित्परद्रव्यंहरेन्नरः ॥ ससहायःसहन्त
व्यः प्रकामंविविधैर्वधैः ३ योयाचितंसमादाय नतद्दद्याद्यथाक्रमम् । सनिगृह्यबलाद्दाप्यो
दण्ड्योवापूर्वसाहसम् ४ अज्ञानाद्यदिवाकुर्यात्परद्रव्यस्यविक्रयम् । निर्दोषोज्ञानपूर्वन्तु
चोरवद्वधमर्हति ५ मूल्यमादाययोविद्यां शिल्पंवानप्रयच्छति । दण्ड्यःसमूल्यंसकलंध
र्मज्ञेनमहीक्षिता ६ द्विजभोज्येतुसंप्राप्ते प्रतिवेश्यमभोजयन् । हिरण्यमाषकंदण्ड्यः पा

चन्द्रमाको देखकर सबप्रजा प्रसन्नहोतीहैं ऐसेही सबलोग राजाकोभीदेख प्रसन्नहोजाते हैं यहराजा में चन्द्रमाका स्वभाव है राजा सबकर्मोंमें प्रताप और तेजसे युक्तरहता है यह राजामें अग्निकातेज है ६।७ और जैसे कि सबप्रजा राजाके व्रतमें स्थितरहतीहै उसीप्रकार राजाभी इन्द्र- सूर्य्य- वायु- यम- वरुण- चन्द्रमा- अग्नि और पृथ्वी इनसबोंके तेजोंका व्रत करतारहताहै, जैसे वर्षाऋतुमें चार महीनोंतक इन्द्र वर्षाकरताहै उसीप्रकार राजाभी अपनीप्रजाकी पालनाकरताहै यह इन्द्रव्रत कहाताहै- जैसे सूर्य्य आठमहीनेतक अपनीकिरणोंसे जलको शोषताहै उसीप्रकार राजाभी अपने देश भरसे करलेताहै यह सूर्य्यव्रत कहाताहै ८। १० जैसे वायु सबभूतोंमें प्रवेशकरके विचरता है उसी प्रकार राजाभी सबमें अपने आचरणोंसे प्रवेशरखताहै यह वायुका व्रतकहाताहै ११ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२५ ॥

मत्स्यजी बोले कि जो किसी की धरोहड़को मारले उसको राजा उसधरोहड़के धनके समान दण्डदेवे और जिसको उसधनके बराबरअन्यकुछ धनदेदिया हो उसका कुछदोषनहींहै १ जोधरोहड़ को नहींदे और जो झूठी धरोहड़मांगे इनदोनों को राजा चोरीका दण्डदेवे अथवा दूने धनकादण्ड देवे २ जो किसीके धनको जालसाजीसे हर ले उसको सब जालसाजी वाले सहायकजनों समेत अनेक प्रकारके वधदण्ड देवे ३ जो किसीकी मांगी लाई हुई वस्तुको यथार्थ रीतिसे नहींदेवे उस कोराजा बलसे दिला देवे और प्रथम साहसका २७० पण दण्ड देवे ४ जोबिनाजाने पराये द्रव्य कोबेचदेवे उस को कुछ दोष नहीं है परन्तु जानबूझकर जो पराये द्रव्यको बेच दे उसको चोर के समान दण्ड देनाचाहिये ५ जो मूल्य लेके किसी विद्याको अथवा शिल्प विद्याको नहीं बताताहो

पेनास्तिव्यतिक्रमः ७ आमन्त्रितोद्विजोयस्तु वर्त्तमानश्चस्वेगृहे। निष्कारणंनगच्छेद्यः सदाप्योऽष्टशतंदमम् ८ प्रतिश्रुत्याप्रदातारं सुवर्णंदण्डयेन्नृपः। भृत्यश्चाज्ञांनकुर्याद्योद र्पात्कर्मयथोदितम् ९ सदण्ड्यःकृष्णलान्यष्टौ नदेयञ्चास्यवेतनम्। संगृहीतंनदद्याद्यः कालेवेतनमेवच १० अकालेतुत्यजेद्भृत्यं दण्ड्यःस्याच्छतमेवच। योग्रामदेशसस्यानां कृत्वासत्येनसंविदम् ११ विसंवदेन्नरोलोभात् तंराष्ट्राद्विप्रवासयेत्। क्रीत्वाविक्रयवान् किञ्चित्यस्येहानुशयोभवेत् १२ सोऽन्तर्दशाहात्तत्साम्यन्दद्याच्चैवाददीतवा। परेणतद् शाहस्य नदद्यान्नैवदापयेत् १३ आददन्विददंश्चैव राज्ञादण्ड्यःशतानिषट्। यस्तुदो षवतींकन्यामनाख्यायप्रयच्छति १४ तस्यकुर्यान्नृपोदण्डं स्वयंषण्णवतिंपणान्। अकन्ये वेतियःकन्यां ब्रूयाद्दोषेणमानवः १५ सशतंप्राप्नुयाद्दण्डं तस्यादोषमदर्शयन्। यस्त्वन्यां दर्शयित्वान्यां वोढुःकन्यांप्रयच्छति १६ उत्तमन्तस्यकुर्वीत राजादण्डंतुसाहसम्। वरो दोषाननाख्याय यःकन्यांवरयेदिह १७ दत्ताप्यदत्तासातस्य राज्ञादण्ड्यःशतद्वयम्। प्र दायकन्यांयोऽन्यस्मै पुनस्तांसंप्रयच्छति १८ दण्डःकार्योनरेन्द्रेण तस्याप्युत्तमसाहसः। तत्प्रकारेणवाक्वाचा युक्तंपण्यमसंशयम् १९ लुब्धोह्यन्यत्रविक्रेता षट्शतंदण्डमर्हति।

उसको राजा सम्पूर्ण मूल्यका दण्डदेवे ६ जिसके ब्रह्म भोज्यहुआ हो और वह अपनेपड़ोसी ब्राह्मण को नहीं जिमावे तो राजा उसको सुवर्णके मासों का दण्ड देवे और जो पापी ब्राह्मणको नहीं जि- मावे तो उसको कुछ दोष नहीं है, निमन्त्रित कियाहुआ जो ब्राह्मण बुलानेके समय घरमेंबैठाहुआ विना कारणजीमने को न आवे तो उससे एकसौ आठ पण दण्ड लेवे७।८ जो कोई दानदेनेकी प्र- तिज्ञा करके फिर दान नहींदेवे उससे राजा सुवर्णकेमासे दण्डलेवे--जोकोई भृत्यस्वामीकीआज्ञा नहींमाने उसको आठरत्ती सुवर्णका दण्डकरे और उसकी नौकरी भी नहींदेवे--जो स्वामी भृत्यके समय पूरे होनेपर नौकरी नहीं देवे और विनाकालमें भृत्यको त्यागदे उसपरसौ१००पणका दण्डकरे- जो पुरुष ग्राम देश खेती आदिक वस्तुओं को सत्य प्रतिज्ञासे देनेका वचनकरे और फिर नहींदे उस को राजा अपने देशसे निकालदेवे, जो पुरुष किसी वस्तुको मोल लेकर फिर उलटी फेरनाचाहै उसका यह नियमहै कि कैतो मोललीहुई वस्तुको दश दिनके भीतर फेरदे वह दश दिन पीछेउ- लटी नहीं फेरे ९।१२ और दश दिन पीछे विकीहुई वस्तुको उलटा लेताहो और वहदेता न हो उस को राजा ६००पणका दण्डदेवे, जो पुरुषदोषवाली कन्या के दोष कहे विना विवाहदेवे उस पर राजा ९६ पणका दण्डकरे और जो पुरुष मिथ्या बोलके कन्याको नपुंसक बताता हो उस मिथ्या दोष बताने वालेको सौपणका दण्डदे जो एक कन्याको दिखाकर फिर और दूसरी कन्यासे विवाह करदेताहै उसको राजा उत्तम साहसका दण्ड अर्थात् १०८० पणका दण्ड दे जो वर कन्याके दोष सुनेविना अनजाने दोषवती कन्याको विवाह लेताहै वह उसकी अविवाहिही गिनीजाती है वह वर राजाको १०० पणदण्ड दे जो पुरुष अपनी कन्याकी सगाई एक पुरुषसे करके किसी अन्यसे विवाह करदेतो वह राजाको १०८० पणदण्डदे इसी प्रकार जो किसी बेचनेकी वस्तुका वचनसे सौदाकर

दुहितुःशुल्कविक्रेता सत्यंकारात्तुसन्त्यजेत् २० द्विगुणंदण्डयेदेनमितिधर्मोव्यवस्थितः। मूल्यैकदेशंदत्त्वातु यदिक्रेताधनन्त्यजेत् २१ सदण्ड्योमध्यमंदण्डं तस्यपण्यस्यमोक्षणम्। दुह्याद्धेनुश्चयःपालो गृहीत्वाभक्तवेतनम् २२ सतुदण्ड्यःशतंराज्ञा सुवर्णंवाप्यरक्षिता। दण्डंदत्त्वातुविरमेत् स्वामितःकृतलक्षणः २३ बद्धःकार्ष्णायसैःपाशैस्तस्यकर्मकरोभवेत्। धनुःशतपरीणाहो ग्रामस्यतुसमन्ततः २४ द्विगुणंत्रिगुणंवापि नगरस्यतुकल्पयेत्। वृतिंतत्रप्रकुर्वीत यामुष्ट्रोनावलोकयेत् २५ छिद्रंवावारयेत्सर्वं श्वसूकरमुखानुगम्। यत्रापरिवृतंधान्यं विहिंस्युःपशवोयदि २६ नतत्रकारयेद्दण्डं नृपतिःपशुरक्षिणे अनिर्दशाहाद्गांसूतां वृषंदेवपशुंतथा २७ छिद्रंवावारयेत्सर्वं नदण्ड्यामनुरब्रवीत्। अतोऽन्यथाविनष्टस्य दशांशंदण्डमर्हति २८ पालस्यपालकस्वामी विनाशेक्षत्रियस्यतु। भक्षयित्वोपविष्टस्तु द्विगुणंदण्डमर्हति २९ विशंदण्ड्याद्दशगुणं विनाशेक्षत्रियस्यतु। गृहंतडागमारामं क्षेत्रंवापिसमाहरन् ३० शतानिपञ्चदण्डःस्यादज्ञानाद्द्विशतोदमः। सीमाबन्धनकालेतु सीमान्तंयोहिकारयेत् ३१ तेषांसंज्ञांददानस्तु जिह्वाच्छेदनमाप्नुयात्। मथैनामपियोदद्यात्संविदंवाधिगच्छति ३२ उत्तमंसाहसंदण्ड्य इतिस्वायम्भुवोऽब्रवीत्।

के फिर दूसरेको बेचदे उसपर ६०० पणदण्डकरे जो अपनी पुत्रीके विवाह में रुपये लेनेका इकरार करनेवाला होके समयपर अधिक रुपये मांगता हो १४। २० उससे राजा उन रुपयोंसे दूना दण्ड लेवे यह धर्मकी व्यवस्था है जो मोल लेनेवाला पुरुष थोड़ासामूल्य देके फिर उस वस्तुको त्यागताहो उसपर राजा मध्यम साहसवाला अर्थात् ५४० पण दण्डकरे और उसकी वस्तुको उलटी फिरवादे जो कोई रक्षाकी नौकरी करनेवाला किसी रक्षित की हुई गौका दूधदुहले अथवा उसकी रक्षा न करे उसको राजा सुवर्णका मासा दण्ड देकर उसके स्वामी से मिलापकरवादे और लोहे की बेड़ी डलवाकर स्वामीके काम करवावे-२१।२२ ग्रामसे सौ धनुषके अन्तरपर गौके पड़ाव बाड़े बनाने चाहिये बड़े नगरोंमें दोसौ अथवा तीनसौ धनुष के अन्तरपर बनने चाहियें (एक धनुषचार हाथका होताहै) उनबाड़ोंकी मेंड या दीवार इतनी ऊंची बनानी चाहिये जहां कि धरेहुए तृण आदिको ऊंटनहीं देखसके २३।२५ और उसमें ऐसा कोई छिद्रभी न रहनेदे जिसमें कि कुत्ता और शूकर आदि जीव घुसजायं ऐसे सुप्रबन्धवाले बाड़ेमेंसे जोधरेहुए तृण धान्यादिकोईपशुचरजाय उसके रक्षकको राजा दण्ड न दे दशदिन ब्याई गौ और आंकिल बैल इन दोनोंको राजादण्डनदे यह मनुका वचन है इनसे अन्यपशुजो रक्षित कियेहुए खेतादिमें चरकरहानिकरदें उसके स्वामीसे राजा दशांश दण्डलेले २६।२८जो जो क्षत्रिय मनुष्य ब्राह्मणके खेतमें पशुओंसे हानि करवादे अथवा वहपशु चरकर उसी खेतमें बैठजाय तो राजा उससे पूर्वके दशांशदंडसे दूनादंड उसको दिलवावे, जो वैश्य क्षत्रियके खेतकी हानिकरवादे उसको दशगुणा दंडदेवे और जोकोईपुरुष किसीके गृह तड़ाग, बन उपवन और खेतआदिको हरताहो १९।३० उसपर राजा पांचसौ रुपयेका दंडकरे जो बिना जाने करताहो उसपर दोसौ रुपयेका दंडकरे और सीमबाँधनेके समय जो पुरुष उस सीमकोपाहि

वर्णानामानुपूर्व्येण त्रयाणामविशेषतः ३३ अकार्यकारिणःसर्वान् प्रायश्चित्तानिकार
यत्। असत्येनप्रमाप्यस्त्री शूद्रहत्याव्रतंचरेत् ३४ दानेनचधनेनैकं सर्पादीनामशक्नु
वन्। एकैकंसचरेत्कृच्छ्रं द्विजःपापापनुत्तये ३५ फलदानाञ्चवृक्षाणां छेदनेजप्यमृ
क्शतम्। गुल्मवल्लीलतानाञ्च पुष्पितानांचवीरुधाम् ३६ अस्थिमताञ्चसत्वानां स
हस्रस्यप्रमापणे। पूर्णेचानस्यनस्थातु शूद्रहत्याव्रतञ्चरेत् ३७ किञ्चिद्देयञ्चविप्राय द
द्यादस्थिमतांवधे। अनस्न्याञ्चैवाहिंसायां प्राणायामैर्विशुद्ध्यति ३८ अन्नादिजानांस
त्वानां रसजानाञ्चसर्वशः। फलपुष्पोद्भवानाञ्च घृतप्राशोविशोधनम् ३९ कृष्टाना
मोषधीनाञ्च जातानाञ्चस्वयंवने। वृथाच्छेदनगच्छत दिनमेकंपयोव्रती ४० एतैर्व्रते
रपोह्यंस्यादेनोहिंसासमुद्भवम्। स्तेयकर्तृपहर्तॄणां श्रूयतांव्रतमुत्तमम् ४१ धान्यान्नधन
चौर्याणि कृत्वाकामंद्विजोत्तमः। सजातियगृहादेव कृच्छ्रार्द्धेनविशुध्यति ४२ मनुष्याणा
न्तुहरणे स्त्रीणांक्षेत्रगृहस्यतु। कूपवापीजलानान्तु शुद्धिश्चान्द्रायणंस्मृतम् ४३ द्रव्या
णामल्पसाराणां स्तेयंकृत्वान्यवेश्मतः। चरेत्सान्तपनंकृच्छ्रन्तन्निर्यात्यविशुद्धये ४४
भक्ष्यभोज्यापहरणे यानशय्यासनस्यतु। पुष्पमूलफलानान्तु पञ्चगव्यंविशोधनम् ४५

चानको नष्टकरदें अथवा पुरुषोंको मिथ्या सलाह और झूठोंको सलाहदेतेहों उनकी जिह्वा कटवावे अथवा १०८० वाला उत्तम साहस दंडदेवे यह ब्रह्माजीका वचनहै ३१।३२ और ब्राह्मण आदिक तीनोंवर्ण यथाक्रमसे जो अकार्यको करडालें उनसे राजा प्रायश्चित्तकरवावे जो ब्राह्मण विनादोषके स्त्रीको मारडाले वह शूद्रहत्याके व्रतकोकरे ३४ जो पुरुष एक किसीप्रायश्चित्तके दानकरनेमें धनसे असमर्थहो वह उसएक प्रायश्चित्तके स्थानमें एककृच्छ्र व्रतकरे ३५ जो द्विजफलवाले वृक्षोंका छेदन करदेवे अथवा गुच्छेलता और पुष्पोंवाली लताओंको काटडाले वह सौऋचाओंके जप करनेसे शुद्ध होताहै ३६ और अस्थिवाले हजारजीव और विना अस्थि के मच्छरलीक आदिक करोड़ोंहों तब इनके और उनके मारनेका समानपापहो इसकी शुद्धिकेनिमित्त शूद्र की हत्याका व्रतकरे और अस्थिवालेजीवोंके वधहोने में ब्राह्मणको कुछदानभी देनायोग्य है और जो विना अस्थिवाले मच्छर कुटकी आदि जीव मरजायँ तो प्राणायामहीके करनेसे शुद्धीहोजातीहै ३७।३८ अन्नादिकोंमें तथा गुड़ आदि रसोंमें जो पड़ेहुए जीवोंकी हिंसाहोजाय अथवा फल पुष्पोंके जीवोंकी हिंसाहोजाय तो घृत का आचमनकरनेसे शुद्धिहोजाती है ३९ वनकी औषधियोंको जो विना प्रयोजनकाटे वह एकदिन दूधकेही आहार व्रतकरनेसे शुद्धहोजाता है ४० इन हिंसाओंका पाप इनव्रतोंसे दूरहोजाता है अब चोरीकरनेवालोंके व्रतोंका वर्णन करताहूं ४१ धान्य अन्न और रुपयाआदिक द्रव्योंकीचोरी जिसने अपनेही जातिके घरमेंकीहो तो अर्द्धकृच्छ्र व्रतकरनेसे शुद्धिहोजाती है ४२ और मनुष्य स्त्री गृह और खेत इनकी चोरीकरनेवाला पुरुष अथवा कूप, तड़ाग, वापीआदि जलाशयोंका हरनेवालापुरुष चान्द्रायणव्रत करनेसे शुद्धहोजाताहै ४३ थोड़े सारवाले द्रव्योंकी चोरीकरनेवालापुरुष सांतपन कृच्छ्रव्रतकरनेसे शुद्धहोताहै ४४ और भक्ष्य भोज्य पदार्थ, सवारी शय्या आसन पुष्प मूल और

तृणकाष्ठद्रुमाणान्तु शुष्कान्नस्यगुडस्यच। चेलचर्मामिषाणान्तु त्रिरात्रंस्यादभोजनम् ४६
मणिमुक्ताप्रवालानां ताम्रस्यरजतस्यच। अयकांस्योपलानाञ्च द्वादशाहंकणान्नभुक् ४७
कार्पासकीटवर्णानां द्विशफैकशफस्यच। पक्षिगन्धौषधीनाञ्च रज्वाश्चैवत्र्यहंपयः ४८ ए
तैर्व्रतैरपोहन्ति पापंस्तेयकृतंद्विजः। अगम्यागमनीयन्तु व्रतैरेभिरपानुदेत् ४९ गुरुतल्प
व्रतंकुर्याद्रेतःसिक्तास्वयोनिषु। सख्युःपुत्रस्यचस्त्रीषु कुमारीष्वंत्यजासुच ५० पितृष्वस्री
यभगिनीं स्वस्रीयांमातुरेवच। मातुश्चभ्रातुरार्यायाङ्गत्वाचान्द्रायणंचरेत् ५१ एतास्त्रिय
स्तुभार्यार्थे नोपगच्छेत्तुबुद्धिमान्। ज्ञातीश्चमातुलेयास्ते पतिताउपयन्तियेे ५२ अमानुषी
षुपुरुषो उदक्यायामयोनिषु। रेतःसिक्ताजलेचैव कृच्छ्रंसान्तपनंचरेत् ५३ मैथुनञ्चसमा
लोक्य पुंसियोषितिवाद्विजः। गोयानेप्सुदिवाचैव सवासास्नानमाचरेत् ५४ चाण्डालान्त्य
स्त्रियोगत्वा भुक्त्वाचप्रतिगृह्यच। पतत्यज्ञानतोविप्रो ज्ञानात्साम्यन्तुगच्छति ५५ विप्रदुष्टां
स्त्रियंभर्तानिरुन्ध्यादेकवेश्मनि। यत्पुंसःपरदारेषु तच्चैनाञ्चारयेद्व्रतम् ५६ साचेत्पुनःप्रदुष्ये
त्तु सदृशेनोपमन्त्रिता। कृच्छ्रंचान्द्रायणञ्चैव तत्तस्यापावनंस्मृतम् ५७ यःकरोत्येकरात्रेण
वृषलीसेवनंद्विजः। तदेकभुक्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति ५८ एषापापकृतामुक्ता चतुर्णा
मपिनिष्कृतिः। पतितैःसंप्रयुक्तानामिमांशृणुतनिष्कृतिम् ५९ संवत्सरेणपतति पतितेन

फल इनकाहरलेनेवाला पुरुष पंचगव्यपीने से शुद्धहोताहै ४५ तृण-काष्ठ-वृक्ष-सूखाअन्न-गुड़-वस्त्र चर्म और मांस इनका हरलेनेवाला पुरुष तीनदिन निराहार व्रतकरनेसे शुद्धहोता है ४६।४७ कपास रेशम-दोफटेखुरवाले पशु घोड़ाआदि एकखुरवाले पशु पक्षी गन्ध औषधी और रस्सी इनकाचुराने-वाला पुरुष तीनदिनके दूधके व्रतकरनेसे शुद्धहोताहै ४८ इनव्रतोंके करनेसे पुरुषचोरीके पापोंसे छूटजाताहै अब अगम्या स्त्रीके संग गमन करनेवालोंके व्रतोंको कहते हैं-अपने गोत्रकी स्त्रीकेसंग ग-मनकरनेवाला पुरुष गुरुपत्नीकेसंग भोगकरनेवालेके व्रतकोकरे और माताकीसखी, पुत्रवधू-कुमा-रीकन्या-चांडाली-भुवा- बहन-माता-माताकीबहन-और श्रेष्ठ पतिव्रतास्त्री इनसबका संगम करने-वाला पुरुष चान्द्रायण व्रतकरे ४९।५१ बुद्धिमान् पुरुष इनकहीहुई स्त्रियोंकेसाथ भोगनकरे और मामाकीबेटी-पतितस्त्री-पशुकीयोनि-रजस्वलास्त्री-गुदा और जल इनमें वीर्य्य छोड़नेवाला पुरुष कृच्छ्र सान्तपन व्रतकरनेसे शुद्धहोताहै ५२।५३ स्त्री पुरुषके मैथुनका देखनेवाला-दिनमें मैथुनकरने-वाला और बैलकी सवारीकरनेवाला पुरुष वस्त्रों सहित जलमें स्नानकरनेसे शुद्धहोताहै ५४ चां-डाल और अन्यजातिकी स्त्रीके संगभोग करनेवाला वा इनके अन्नकाभोक्ता अथवा इनका प्रतिग्रह लेनेवाला ब्राह्मण जो अज्ञानसे करनेवालाहै तो पतितहोजाय और जानकेकरनेवाला चांडालहीके स-मान होजाताहै ५५ जो स्त्री दुष्टाहै उसकापति उसको एकघरमें रोककर रक्खे और परस्त्री संगके करनेका जो पुरुषका व्रतहै वही उससेकरवावे ५६ इसके पीछे भी जो वह दुष्टाही रहे तोकृच्छ्र सांत-पन व्रत करवानेसे उसकी शुद्धि होती है ५७ एक रात्रि शूद्रा स्त्रीके साथभोग करनेवाला द्विज तीन वर्षतक एक-बार भोजनकरके गायत्री का जपकरे इन सबप्रकारों से चारोंवर्णोंके पाप दूरहोजाते हैं

समाचरन् । याजनाध्यापनाद्यौनादनुयानाशनासनात् ६० योयेनपतितेनैषां संसर्गंयातिमानवः । सतस्यैवव्रतंकुर्यात् तत्संसर्गविशुद्धये ६१ पतितस्योदकंकार्यं सपिण्डैर्बान्धवैःसह । निन्दितेऽहनिसायाह्ने ज्ञातिभिर्गुरुसन्निधौ ६२ दासीघटमपांपूर्णां पर्यस्येत्प्रेतवत्सदा । अहोरात्रमुपासीरन् नाशौचंबान्धवैःसह ६३ निवर्त्तयेरंस्तस्मात्तु सम्भाषणसहासनम् । दायादस्यप्रमाणञ्च यात्रामेवंचलौकिकीम् ६४ ज्येष्ठभावान्निवर्तेत ज्येष्ठ्यावाप्तंचयत्पुनः । ज्येष्ठांशंप्राप्नुयाच्चास्ययोवास्याद्गुणतोऽधिकः ६५ स्थापिताश्चापिमर्यादां येभिन्द्युःपापकर्मिणः । सर्वेपृथक्दण्डनीया राज्ञाप्रथमसाहसम् ६६ शतंब्राह्मणमाक्रुश्य क्षत्रियोदण्डमर्हति । वैश्यस्तुद्विशतंराजन्! शूद्रस्तुवधमर्हति ६७ पञ्चाशद्ब्राह्मणोदण्ड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने । वैश्यस्याप्यर्द्धपञ्चाशच्छूद्रेद्वादशकोदमः ६८ क्षत्रियस्याप्नुयाद्वैश्यः साहसंपुनरेवच । शूद्रःक्षत्रियमाक्रुश्य जिह्वाच्छेदनमाप्नुयात् ६९ पञ्चाशत्क्षत्रियोदण्ड्यस्तथावैश्याभिशंसने । शूद्रेचैवार्द्धपञ्चाशत्तथाधर्मोनहीयते ७० वैश्यस्याक्रोशनेदण्ड्यः शूद्रश्चोत्तमसाहसम् । शूद्राक्रोशेतथावैश्यः शतार्द्धंदण्डमर्हति ७१ सवर्णाक्रोशनेदण्ड्यस्तथाद्वादशकंस्मृतम् । वादेष्ववचनीयेषुतदेवद्विगुणंभवेत् ७२ एकजातिर्द्विजातिन्तु वाचादारुणयाक्षिपन्! जिह्वायाःप्राप्नुयाच्छेदं जघन्यःप्रथमोहिसः ७३ नाम

अबपतित पुरुषोंके संगवास करनेवालेपुरुषोंके प्रायश्चित्तको कहते हैं ५८।५९ पतित पुरुषके साथ एक वर्षतक रहनेवाला जनभी पतितहोजाताहै औरयज्ञकरानेसे पढ़ानेसे सम्बन्ध करनेसे औरभोजन करनेसे भी पतित होजाताहै और जिस दोषसे संग वास करनेवाला पुरुष पतित होताहै उसीदोषके व्रत करनेसे शुद्ध होताहै ६०।६१ पतित पुरुष होजानेसे उसको सब भाई बन्धुजन ग्रामसे बाहर ले जाकरदासीके घरकेजलकोपिलावें औरजब पतितपुरुष मरजाताहै तबअहोरात्रका पातक लगजाता है पतित पुरुषसे वार्त्तालाप न करे उसके आसन पर न बैठे उसकेनिर्वाहके योग्यविभागदे बड़ा भाई होकर अपने बड़े भाईपनेके भागकोनलेसके परन्तु शेष उसके भागको सबमें अधिकगुणवाला ज्येष्ठ भागको ग्रहणकरे ६२।६५ और जोपापीपुरुष राजाकी स्थापितकीहुई मर्य्यादाको तोड़डाले उसपर राजाप्रथम साहसका २७० पण दंडकरे ६६ जो क्षत्रियहोकर ब्राह्मणको गालीदेवे तोउसपर १०० पण दंड राजाकरे वैश्य ऐसाकरे तो उस्से २०० पण दंडले और जो शूद्र ब्राह्मणको गाली देतो उसका वधही करवादे ६७ और जो ब्राह्मण क्षत्रियको गाली देवे वह ५० पण दंड देवे जो वैश्यको गाली देवे तो २५ पणदंडदेवे, शूद्रको गालीदे तो बारह पण दंडलेवे ६८ वैश्यक्षत्रियको गाली दे तो ५० पण दंडदेवे, शूद्रको गाली देतो २५ पण दंड दे ७० शूद्र वैश्यको गालीदेतो उत्तम साहस, १०८० पण दंडदेवे वैश्यशूद्रको गाली देतो ५० पण दंड देनेके योग्यहै ७१ अपने वर्णके पुरुषको गाली देनेवाले बारह पण दंडके योग्यहैं और अवाच्य गाली देनेवालेको साधारण दंडसे दूना दंड देनाचाहिये ७२ शूद्र द्विजातियोंको गालीदेवे तो उसकी जिह्वा कटवादेवे क्योंकि वह सब वर्णों में छोटा है ७३ जो शूद्र पुरुष उन द्विजातियों के नाम ज्ञाति और घर इन सबसे द्रोहरक्खे उसकेमुख

जातिग्रहंतेषामभिद्रोहेणकुर्वतः । निक्षेप्योऽयोमयःशंकुर्ज्वलन्नास्येदशांगुलः ७४ ध
र्मोपदेशंशूद्रस्तु द्विजानामभिकुर्वतः। तप्तमासेचयेत्तैलं वक्त्रेश्रोत्रेचपार्थिवः ७५ श्रुति
देशञ्चजातिञ्च कर्मशारीरमेवच। वितथञ्चब्रुवन्दण्ड्यो राजाद्विगुणसाहसम् ७६ यस्तु
पातकसंयुक्तः क्षिपेद्वर्णान्तरंनरः। उत्तमंसाहसंदण्डःपात्यस्तस्मिन्यथाक्रमम् ७७ राज्ञो
निवेशनियमं वितथंयान्तिवैमिथः। सर्वेद्विगुणदण्ड्यास्ते विप्रलम्भान्नृपस्यतु ७८ प्री
त्यामयास्याभिहितं प्रमादेनाथवावदेत्। भूयोनचैवंवक्ष्यामि सतुदण्डार्द्धभाग्भवेत् ७९
काणंवाप्यथवाखञ्जमन्धंचापितथाविधम्। तथैवापिब्रुवन्दाप्यो दण्डंकार्षापणंधनम् ८०
मातरंपितरंज्येष्ठं भ्रातरंश्वशुरंगुरुम्। आक्रोशयन्शतंदण्ड्यः पन्थानञ्चार्थयन्गुरोः
८१ गुरुवर्ज्यन्तुमार्गार्हं योहिमार्गंनयच्छति। सदाप्यःकृष्णलंराज्ञः तस्यपापस्यशान्त
ये ८२ एकजातिर्द्विजातिन्तु येनाङ्गेनापराध्नुयात्। तदेवच्छेदयेत्तस्य क्षिप्रमेवाविचारय
न् ८३ अवनिष्ठीवतोदर्पात् द्वावोष्ठौच्छेदयेन्नृप ।। अवमूत्रयतोमेढ्रमपशब्दयतोगुदम्
८४ सहासनमभिप्रेप्सुरुत्कृष्टस्यापकृष्टजः। कट्यांकृताङ्कोनिर्वास्यः स्फिचंवाप्यस्यकर्त
येत् ८५ केशेषुगृह्णतोहस्तंछेदयेदविचारयन्। पादयोर्नासिकायाञ्च ग्रीवायांवृषणेषुच
८६ त्वग्भेदकःशतंदण्ड्यो लोहितस्यचदर्शकः। मांसभेत्ताचषण्णिष्कान् निर्वास्यस्त्व
स्थिभेदकः ८७ अङ्गभङ्गकरस्याङ्गं तदेवापहरेन्नृपः । दण्डपारुष्यकृद्दण्ड्यो समुत्थान

वा कानमें राजा तप्त तेलको डलवावे ७४ जो शूद्र द्विजोंके निमित्त धर्मका उपदेशकरे उसके भी मुख
तथा कानमें राजा तपायाहुआ तेल गिरवादे ७५ जो पुरुष अपनेवेददेश ज्ञाति औरशारीरक कर्मादि-
कों में मिथ्या बोले उसको उत्तम साहससे दूना २१६० पण दंड देना योग्यहै ७६ जो पातकीपापी
पुरुष किसी उत्तम वर्णको गालीदेवे वह क्रम से उत्तम साहस दंडके योग्यहै, जो पुरुष राजाकी सेना
के स्थानके नियमको तोड़डाले वह दूना दंडदेवे क्योंकि वह राजाकी प्रतिज्ञाको असत्य करनेवाला
है ७७।७८ जो किसीको गाली देनेवाला पुरुष यह बात कहे कि मैंने इससे यह बात विनोद और
प्रीति में अथवा प्रमादसे कहदी थी अब फिर कभी न कहूंगा ऐसे कहनेवाले पुरुषको राजा आधा
दंडदेवे ७९ जो पुरुष काणे, अन्धे, गंजे, और लूले आदि पुरुषोंको उनके रोगों के नाम लेलेकर चि-
ढ़ावे वह एक तोले चाँदीका दंडदेवे ८० जो माता पिता बड़ाभाई श्वशुर और गुरू इनको गाली देवे
और गुरूके अर्थ मार्ग नहीं छोड़े उससे १०० पण राजा दंडले ८१ जो पुरुषगुरूसे पृथक् अन्य किसी
महात्माके निमित्त मार्ग नहीं छोड़े वह एक रत्ती चाँदी के दंड योग्यहै ८२ जो शूद्र किसी द्विजाति
को जिस अंगसे पीड़ितकरे उसके उसीअंगको राजाकटवादे ८३ जो अभिमानकरके किसीकी ओर
खखारडाले उसके दोनों ओठ कटवादे जो किसीके आगे अर्थात् सन्मुख मूतदेवे उसके लिङ्गको
और अभिमानसे सन्मुख अपशब्द अर्थात् पादनेवालेकी गुदाको कटवावे ८४ जो नीचवर्ण उत्तम
वर्णके एक आसनपर बैठजाय उसके कूले कटवादेवे ८५ जो पुरुष किसी के केश, पाद, नासिका,
ग्रीवा और वृषण इनके पकड़ने को हाथ चलावे उसके हाथको कटवादेवे ८६ चोट मारकर रुधिर

व्ययन्तथा ८८ अर्द्धपादकरःकार्यो गोगजाश्वोष्ट्रघातकः। पशुक्षुद्रमृगाणाञ्च हिंसायां द्विगुणोदमः ८९ पञ्चाशन्नभवेद्दण्डयस्तथैवमृगपक्षिषु। कृमिकीटेषुदण्ड्यःस्याद्रजतरयचमाषकम् ९० तस्यानुरूपंमौल्यञ्च प्रदद्यात्स्वामिनेतथा। स्वस्वामिकानांसकलं शेषाणांसकलंतथा ९१ वृक्षन्तुसफलञ्छित्त्वा सुवर्णंदण्डमर्हति। द्विगुणंदण्डयेच्चैनंपथिसीम्निजलाशये ९२ छेदनादफलस्यापि मध्यमंसाहसंस्मृतम्। गुल्मवल्लीलतानाञ्च सुवर्णस्यचमाषकम् ९३ वृथाच्छेदीतृणस्यापि दण्ड्यःकार्षापणंभवेत्। त्रिभागं कृष्णलादण्ड्याः प्राणिनस्ताडनेतथा ९४ देशकालानुरूपेण मूल्यंराजाद्रुमादिषु। तत्स्वामिनस्तथादण्ड्या दण्डमुक्तन्तुपार्थिव! ९५ यत्रातिवर्ततेयुग्यं वैगुण्यात्प्राजकस्यतु। तत्रस्वामीभवेद्दण्ड्यो नाप्तश्चेत्प्राजकोभवेत् ९६ प्राजकश्चभवेदाप्तः प्राजकोदण्डमर्हति। नास्तिदण्डश्चतस्यापि तथावैहेतुकल्पकः ९७ द्रव्याणियोहरेद्यस्य जानतोऽजानतोऽपिवा। सतस्योत्पादयेत्तुष्टिं राज्ञोदद्यात्ततोदमम् ९८ यस्तुरज्जुंघटंकूपाद्धरेद्भिन्द्याच्चतांप्रपाम्। सदण्डंप्राप्नुयान्माषं तच्चसम्प्रतिपादयेत् ९९ धान्यंदशभ्यः कुम्भेभ्यो हरतोऽभ्यधिकंवधः। शेषेऽप्येकादशगुणं तस्यदण्डंप्रकल्पयेत् १०० तथाभ

निकालनेवाले पर सौपण मांसके छेदन करनेवालेको चौबीसतोले सुवर्ण वा चांदीका दंड और हाड़ तोड़नेवाले को देशसे बाहर निकालदेवे ८७ जो जिसके जिस अंगको तोड़दे उसके उसी अंगको राजा कटवादेवे जो किसीसे कठोर वचन बोले और कुछ दंडभी देदे उसको राजा उसके दंडकेही खर्चके प्रमाण दंडदेवे जो गौ बकरी, हाथी और ऊंट इनको मारडाले उसके आधे २ पैर और हाथ कटवाडाले और क्षुद्र पशु मृगकीट और पक्षी आदिके मारनेवालेको चांदीके माषेकादंडदेवे ८८।९० और उसजीवके मूल्यको स्वामीके निमित्त दिलवादेवे जो अपने स्वामीके वा अन्य किसी के वृक्षको काटडाले उसको एक तोले चांदीका दंडदेवे और मार्ग, सीमा और सरोवरके वृक्षके तोड़नेवाले पर चांदीका दंड ९१।९२ फलवाले गुच्छेवाले और लताप्रतान वेलवाले वृक्षों के तोड़नेवाले पर सुवर्णके मासेका दंडकरे ९३ वृथा जो तृणको भी छेदनकरे उसपर एक पणकादंडकरे, जो किसी प्राणीको ताड़नाकरे उसपर तीनरत्ती चांदी या सुवर्णका दंडकरे ९४ इन वृक्षादि छेदनका मूल्य राजा देशकालके अनुसार स्वामीको दिलवादेवे और दंडको आपले ले ९५ जहाँ सवारी का हाँकनेवाला सारथी मूर्खहोवे उस सवारी से जो कुछ हानि होजाय वह स्वामी का दोष है और सारथी चतुर बुद्धिमान् होवे तो स्वामी निर्दोष है सारथीकोही दंडदेना योग्य है, और जो कुछ दैव योगसे आपही हानिहोजाय तो किसीका भी दोषनहीं है ९६।९७ जो जानबूझकर अथवा विनाजाने किसी के धनको हरले वह उसको प्रसन्नकरे और राजाको दंडदेवे ९८ जो कुएके ऊपर से रस्सीको वा घटको चुराले अथवा प्याऊको तोड़डाले उस पर एक मासेचांदीका दंडकरे और इन नष्टकी हुई वस्तुओंको मंगाकर तैयार करवादेवे ९९ दशघटसे अधिक धान्यके चुरानेवाले को वधकरवादे इस्से न्यून धान्य वा अन्न चुरानेवाले को अन्न से ग्यारह गुणा दंडदेवे १०० भक्ष्य भोज्यादि पक्वान दश-

क्ष्यान्नपानानां नतथाप्यधिकेवधः। सुवर्णरजतादीनामुत्तमानाञ्चवाससाम् १०१ पुरु
षाणांकुलीनानां नारीणाञ्चविशेषतः। महापशूनांहरणे शस्त्राणामौषधस्यच १०२ मु
ख्यानाञ्चैवरत्नानां हरणेवधमर्हति। दध्नःक्षीरस्यतक्रस्य पानीयस्यरसस्यच १०३ वेणु
वैदलभाण्डानां लवणानांतथैवच। मृन्मयानाञ्चसर्वेषां मृदोभस्मनएवच १०४ काल
मासाद्यकार्य्यञ्च राजादण्डंप्रकल्पयेत्। गोषुब्राह्मणसंस्थासु महिषीषुतथैवच १०५ अश्वा
पहारकश्चैव सद्यःकार्योऽर्द्धपादकः। सूत्रकार्पासकिण्वानां गोमयस्यगुडस्यच १०६ म
त्स्यानांपक्षिणाञ्चैवतैलस्यचघृतस्यच। मांसस्यमधुनश्चैवयच्चान्यद्वस्तुसम्भवम् १०७ अ
न्येषांलवणादीनां मद्यानामोदनस्यच। पक्वान्नानाञ्चसर्वेषान्तन्मूल्याद्द्विगुणोदमः १०८
पुष्पेषुहरितेधान्ये गुल्मवल्लीलतासुच। अन्नेषुपरिपूर्णेषु दण्डःस्यात्पञ्चमाषकम्। परि
पूर्णेषुधान्येषु शाकमूलफलेषुच १०९ निरन्वयेशतंदण्ड्यः सान्वयेद्विशतन्दमः। येनये
नयथाङ्गेन स्तेनोऽन्येषुविचेष्टते ११० तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः। द्विजोऽध्व
गःक्षीणवृत्तिर्द्वाविक्षूद्वेचमूलके १११ त्रपुसोर्वारुकौद्वौच तावन्मात्रंफलेषुच। तथाचस
र्वधान्यानां मुष्टिग्राह्येणपार्थिव! ११२ शाकेशाकप्रमाणेन गृह्यमाणेनदुष्यति। वानस्प
त्यंफलंमूलं दार्वग्न्यर्थंतथैवच ११३ तृणञ्चोऽप्यवहारार्थमस्तेयंमनुरब्रवीत्। अदेववा
टिजंपुष्पं देवतार्थंतथैवच ११४ आददानःपरक्षेत्रात् नदण्डंदातुमर्हति। शृङ्गिणांनखि
नांराजन्! दंष्ट्रिणञ्चवधोद्यतम् ११५ योहन्यान्नसपापेन लिप्यतेमनुजेश्वर! गुरुंवा

घटसे अधिक चुरानेवालेको भी वध दंडकरे, सुवर्ण, चांदी, उत्तमवस्त्र, कुलीन पुरुषकीस्त्री, बैलआदि पशु, शस्त्र और औषध इनके हरने में और मुख्यरत्नोंके हरने में बधकरना योग्यहै और दही, दूध, तक्र, पानी, रस, वांस आदिके बरतन, मृत्तिकाकेपात्र और भस्म इन वस्तुओंके चुरानेवाले पुरुषको राजा समय और बुद्धिके अनुसार दंडदेवे इसी प्रकार गौ भैंस आदिके भी चुरानेवाले को बुद्धिकेही अनुसार दंडदेवे १०३।१०५ घोड़ेके चुरानेवालेके आधे २ पैर कटवादेवे और सूत, कपास, मदिरा, गोवर, गुड़ मत्स्य, पक्षी, तेल, घृत, मांस, शहद, लवण आदिकोंके चुरानेवाले को इन वस्तुओं के मूल्यसे दूना दंडदेवे १०६।१०८ खेतीमें पूर्णहुए अन्नके चुरानेवाले को पांचमासेका दंडदेवे और पकेहुए धान्य शाकमूल और फल इन सबके आधेके चुरानेवालेको सौ१००पणदंडदेवे मूलसमेत संपूर्ण चोरीकरनेवालेको दोसौपण दंडदेवे, जो चोर जिस२अंगसे चोरीकी चेष्टाकरे उसकेउसी२अंगको कटवादेवे और मार्गमें चलनेवाला भूखाब्राह्मण दोईखके गांडे तथा मूलियोंको उपाड़लेतो कुछदोष नहीं है १०९।१११ दोककड़ी, दोखरबूजे, वा कोई दोफल अथवा सब धान्यों में से दोमुट्ठी अन्न ग्रहण करले और अनुमानके समान शाकलेले, वनके वृक्षोंके फलमूल, इन्धन और तृण इनवस्तुओं केलेनेकी चोरी नहीं कहातीहै यह मनुका वचनहै और देवताकी वाटिकाके विना अन्य स्थानके पुष्पोंको देवताके निमित्त लेआवे उसको कुछ दंडनहींहै, जो सींगवाले, नखवाले, और डाढ़वाले सिंह सर्प आदि जीवोंको मारदेताहै उसको कुछ दोषनहींहोता है यहमनुका वचनहै, ब्राह्मण गुरु-

वालवृद्धंवा ब्राह्मणंवाबहुश्रुतम् ११६ आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्। आ
ततायिवधेदोषो हन्तुर्भवतिकश्चन ११७ प्रकाशंवाऽप्रकाशंवा मन्युस्तंमन्युमृच्छति। गृ
हक्षेत्राभिहर्तारस्तथागम्याभिगामिनः ११८ अग्निदोगरदश्चैव तथाचाभ्युद्यतायुधः।
अभिचारन्तुकुर्वाणो राजगामिचपैशुनम् ११९ एतेहिकथितालोके धर्मज्ञैराततायिनः।
परस्त्रीणान्तुसम्भाषे तीर्थेऽरण्येगृहेऽपिवा १२० नदीनाञ्चैवसम्भेदैः ससंग्रहणमाप्नुया
त्। नसम्भाषेत्सहस्त्रीभिः प्रतिषिद्धःसमाचरेत् १२१ प्रतिषिद्धेसमाभाष्य सुवर्णंदण्डम
र्हति। नैषचारणदारेषु विधिरात्मोपजीविषु १२२ सज्जयन्तिमनुष्यैस्ता निगूढंवाचर
न्त्युत। किञ्चिदेवतुदाप्यःस्यात्सम्भाषेणाचारयन् १२३ प्रेष्यासुचैवसर्वासु गृहप्रव्र
जितासुच। योऽकामांदूषयेत्कन्यां ससद्योवधमर्हति १२४ सकामांदूषमाणस्तु प्राप्नुया
द्विशतंदमम्। यश्चसंरक्षकस्तत्र पुरुषःसतथाभवेत् १२५ पारदारिकवद्दण्ड्योयोऽपि
स्यादवकाशदः। बलात्संदूषयेद्यस्तु परभार्यांनरःक्वचित् १२६ वधोदण्डोभवेत्तस्य ना
पराधोभवेत्स्त्रियः। रजस्तृतीयंयाकन्या स्वगृहेप्रतिपद्यते १२७ अदण्ड्यासाभवेद्राज्ञा
वरयन्तीपतिंस्वयम्। स्वदेशेकन्यकान्दत्त्वा तामादायतथाव्रजेत् १२८ परदेशेभवेद्व
ध्यः स्त्रीचोरःसयतोभवेत्। अद्रव्यांमृतपत्नीस्तु संगृह्णन्नापराध्यति १२९ सद्रव्यातां

वालक- और विद्वान् इनका मारनेवाला, आततायी पुरुष और चले आनेवाले पुरुषको जोविना विचारेहुए मारदेवे तोउसका कुछ दोषनहीं है ११२। ११७ गृह क्षेत्रका हरनेवाला- अगम्यास्त्रीके साथ भोग करनेवाला अग्नि लगानेवाला- विषदेने वाला शस्त्र उठाकर मारनेवाला अनुष्ठान करने वाला- रांड़के संग भोग करनेवाला और चुगलखोर-ऐसे ९ पुरुष आततायी कहातेहैं और तीर्थ वन और अपनागृह इन्होंमें पराई स्त्रीके संग वतलानेवाला और नदियों का तोड़नेवाला ऐसापुरुष प-कड़लेनेके योग्यहै और निषेधकियेहुए पुरुषको एकान्त स्थानमें स्त्रियोंसे कभी न वतरानाचाहि-ये ११८। १२१ जोनिषेध कियाहुआ पुरुष फिर पराई स्त्रियों से वतरावे उसको एकतोले चाँदी अथवा सुवर्णका दंड देवे औरचारण दास आदिकों की स्त्रियों के संग वतराने में ऐसी विधि नहीं है १२२क्योंकि यह नट चारण आदिकलोग अपनी स्त्रियोंको आजीविकाके निमित्त शृंगारकराकराकर साथलिये विचरतेहैं उनस्त्रियोंसे कुछ मूल्यदेकर वतरानाचाहिये १२३ विना कामनावाली घरकी दासियोंके संग जोमैथुन करताहै वह वधकरनेके योग्यहोताहै १२४कामनायुक्त स्त्रीके संग मैथुन करनेवालोंपर वीसपणका दंडयोग्यहै और जोपुरुष उसकी रक्षामें प्रवृत्तहो उसपरभी इतनाही दंड होनाचाहिये १२५ जोअपने घरमें ऐसे कर्मकरनेको स्थानदेताहै वहभी उसीजार पुरुषके समान दंडपानेके योग्यहै जोपुरुषबलसे पराई स्त्री के संगभोगकरले उसका वधही करनादंड है और उस स्त्रीमें कोई दोषनहीं है और कन्या अपने पिताके घरमें तीसरीवार रजस्वलाहोजावे उससमय जो वह अपना पति आपहीढूंढ़े उसको राजा दंडनहींदेवे जोपुरुष अपने देशमें कन्याका विवाहकरके उसको लेकर परदेश जाताहो वह स्त्रीका चोरहै और वधकरवाने के योग्य है और जोउसकी स्त्री

संगृहीता दण्डन्तुक्षिप्रमर्हति। उत्कृष्टंयाभजेत्कन्या देयातस्यैवसाभवेत् १३० यद्यान्यं सेवमानाञ्च संयतांवासयेद्गृहे। जघन्यमुत्तमानारी सेवमानातथैवच १३१ भर्त्तारंल ङ्घयेद्यास्त्री ज्ञातिभिर्बलदर्पिता। ताञ्चनिष्कासयेद्राजा संस्थानेबहुसंस्थिते १३२ इ ताधिकारांमलिनां पिण्डमात्रोपजीविनीम्। वासयेत्स्वैरिणींनित्यं संवर्णेनाभिदूषिता म् १३३ ज्यायसादूषितानारी मुण्डनंसमवाप्नुयात्। वासश्चमलिनंनित्यं शिखांसंप्राप्नु यादश १३४ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यः क्षत्रविट्शूद्रयोषितः। ब्रह्मदाप्योभवेद्राजा दण्डमुत्त मसाहसम् १३५ वैश्यागमेचविप्रस्य क्षत्रियस्यान्त्यजागमे। मध्यमंप्रथमंवैश्यो दण्ड्यः शूद्रागमाद्भवेत् १३६ शूद्रःसवर्णागमने शतंदण्ड्योमहीक्षिता। वैश्यस्तुद्विगुणंराजन्! क्षत्रस्तुत्रिगुणन्तथा १३७ ब्राह्मणश्चभवेद्दण्ड्यस्तथाराजंश्चतुर्गुणम्। अगुप्तासुभवे द्दण्डः स्वगुप्तास्वधिकोभवेत् १३८ मातापितृष्वसाश्वश्रूर्मातुलानीपितृव्यजा। पितृ व्यसखिशिष्यस्त्री गर्भिणीतत्सखीतथा १३९ भ्रातृभार्यागमेपूर्वाद्दण्डस्तुद्विगुणोभवेत्। चण्डालीश्श्वपाकीञ्च गच्छन्वधमवाप्नुयात् १४० तिर्यग्योनिञ्चगोवर्ज्यं मैथुनंयोनि षेवते। वपनंप्राप्नुयाद्दण्डं तस्याश्चयवसादिकम् १४१ सुवर्णञ्चभवेद्दण्ड्यो गांव्रजन्म नुजोत्तम!। वेश्यागामीद्विजोदण्ड्यो वेश्याशुल्कसमर्पणम् १४२ गृहीत्वावेतनंवेश्या

अर्थात् कन्याकी माता मरगईहो तब निर्द्रव्यहोकर अपनी कन्याको लेकर जाताहो तोउसकाकोई दोषनहींहै १२८।१२९ द्रव्ययुक्तहोके जो कन्याको लियेजाताहो तोवहशीघ्रही दंडके योग्यहै और जो कन्या उत्तम वर्णवाले पुरुषको भजतीहो तोउसको उसीके अर्थदेदे १३० और जोअन्य किसी नीच वर्णको सेवतीहो उसकन्याको रोककररक्खे १३१ जोस्त्री अपने भाई बन्धुओंके बलसे गर्वितहोके अपने पतिके वचनको नहींमाने उसको राजा घरसे बाहर निकलवादेवे १३२ अधिकारसे रहित करके मलिनवस्त्रदेवे क्षुधासे निवृत्तिहोजानेके योग्य भोजनदेवे ऐसा करके अपने पड़ोसमें निवा- सकरवादे १३३ जोअत्यन्त दूषित स्त्रीहोवे उसका मुंडनकरवादेवे और मलिनवस्त्र पहिरावे १३४ जोब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रकी स्त्रीके साथ मैथुनकरले उसको उत्तम साहसका दंडदेनायोग्यहै और ब्राह्मण वैश्यकी स्त्रीसे संगमकरे क्षत्रिय नीचजातिकी स्त्रीसे भोगकरे और वैश्य शूद्रकी स्त्री का संभोगकरे तोउनको मध्यम साहस और प्रथम साहसोंका दंडदेवे १३५।१३६ जो शूद्रअपने वर्णकीस्त्रीसे संभोगकरे वह १०० पणदंडदेवे वैश्यासेकरे तो दूना क्षत्रियासेकरे तो तिगुना और ब्राह्मणीसेकरे तो चौगुना दंडयोग्यहै यह दंड विना रक्षितकीहुई स्त्रियोंके विषयमें कहाहै, जो रक्षि- तकीहुई स्त्रियों के संग भोगकरे वह इसपूर्व दंडसे अधिक दंडके योग्य है १३७।१३८ जो माता पिता की बहिन, सास, मामी, चाचाकी बेटी-चाची-मित्र की और शिष्यकी स्त्री, गर्भिणी, और भाई की स्त्री इनकेसंग मैथुनकरे वह पूर्वदंडसे द्विगुणदंडका अधिकारीहै और मेहतर और चांडाल की स्त्री के संग मैथुनकरनेवाले का वधदंड योग्यहै १३९।१४० जो पुरुष गधीआदि पशुकी योनि में मैथुनकरे उसका मुंडनहीकरवादेनादंडहै, १४१ गौकेसाथ मैथुनकरनेवालेपर एकतोले चांदी का

लोभादन्यत्रगच्छति। वेतनंद्विगुणंदद्याद्दण्डञ्चद्विगुणंतथा १४३ अन्यमुद्दिश्ययोवेश्यां नयेदन्यस्यकारयेत्। तस्यदण्डोभवेद्राजन्! सुवर्णस्यचमाषकम् १४४ नीत्वाभोगान्न योदद्याद्दाप्योद्विगुणवेतनम्। राज्ञश्चद्विगुणंदण्ड तथाधर्म्मोनहीयते १४५ बहूनांव्रज तामेकां सर्वेतेद्विगुणन्दमम्। दद्युःपृथक्पृथक्सर्वे दण्डञ्चद्विगुणंपरम् १४६ नमातान पितानस्त्री नञ्चत्विक्याज्यमानवाः। अन्योन्यंपतितास्त्याज्या योगेदण्ड्याःशतानिष ट् १४७ पतितागुरवस्त्याज्या नतुमाताकथञ्चन। गर्भधारणपोषाभ्यां तेनमातागरीय सी १४८ अधीयानोऽप्यनध्याये दण्ड्यःकार्षापणत्रयम्। अध्यापकश्चद्विगुणं तथाचा रस्यलङ्घने १४९ अनुक्तस्यभवेद्दण्डः सुवर्णस्यचकृष्णलम्। भार्यापुत्रश्चदासश्च शि ष्योभ्राताचसोदरः १५० कृतापराधास्ताड्याःस्यूरज्ज्वावेणुदलेनवा। पृष्ठतस्तुशरीरस्य नोत्तमाङ्गंकथञ्चन १५१ अतोऽन्यथाप्रहरतः प्राप्तःस्याच्चोरकिल्बिषम्। दूतींसमाक्र यंश्चैव योनिषिद्धंसमाचरेत् १५२ आच्छन्नंवाप्रकाशंवा सदण्ड्यःपार्थिवेच्छया। वासां सिफलकैःश्लक्ष्णैर्निर्णिज्याद्रजकःशनैः १५३ अतोऽन्यथाहिकुर्वंस्तु दण्ड्यःस्याद्रुक्ममा षकम्। रक्षास्वधिकृतैश्चैव प्रदेयंयैर्विलुप्यते १५४ कर्षकेभ्योऽर्थमादाय य.कुर्यात्करम न्यथा। तस्यसर्वस्वमादाय तंराजाविप्रवासयेत् १५५ येनियुक्ताःस्वकार्येषु हन्युःकार्या

दंडयोग्यहै वेश्याके संग मैथुन करनेवाले द्विजजातिसे वेश्याके शुल्कमूल्यको दिवादेवे १४२ जो वेश्या अपने परिश्रमका मूल्यलेकर फिर किसी अन्यपुरुपकेपास चलीजाय तो उस वेश्यासे उसपुरुषको दियेहुए मूल्यसे द्विगुणमूल्य दिलादेवे १४३ जो अन्यका नाम लेकर किसी अन्यकेपास वेश्याको लेजावे वह एकमासे सुवर्ण के दंडयोग्य है १४४ जो पुरुप वेश्यासे भोगकरके उसकामूल्य नहीं देताहो उससे राजा उसमूल्यका द्विगुणदिवादेवे और उतनाही दंड आप लेले १४५ जो हठकरके बहुतसे पुरुप एक वेश्यासे मैथुन करलें उनकेपाससे राजा दूना२ मूल्य वेश्याको दिलवादेवे १४६ और पतितहुए माता, पिता, स्त्री-पुरोहित-और याजकोंको त्यागदेना योग्यहै परन्तु जो विनापतित हुए इनको त्यागदे वह सौ १०० पणदंडदेवे १४७ पतितहुए गुरुओंको त्यागदेवे परन्तु माताको कभी न त्यागे क्योंकि माता गर्भधारण करने से और पालन पोपणके करने से सबसे बड़ी है १४८ जो अनध्यायमें पढ़े वह तीन पणदंड देवे और इससे दूना अध्यापकको दंड देवे—और स्त्री पुत्र-दास-शिष्य-और सहोदरभाई यहसब अपराधकरें तो इनको रस्सी से वा वेतसे पीठकेऊपर ताड़नकरे मस्तकपर कभी न मारे इससे विपरीत मारनेवालेको चोरकासा दंड देवे, दूतीको बुलाताहुआ जो पुरुष निषिद्धवचनका आचरण करे उसको राजा अपनी इच्छाके अनुसार दंडदेवे और धोबीको सूक्ष्म वस्त्र बड़ेधीरेपने और सुघड़पने से धोनेचाहिये इसके विपरीत धोनेवाले धोबीपर एकमासे चांदीका दंडकरे और जो पुरुप किसीवस्तुकी रक्षाके निमित्त नियुक्त कियेगये हों उनके समक्षमें जो कोई वस्तुनष्टहोजाय वह वस्तु उन्हींसे लीजाय १४९।१५४ जो नम्बरदार किसानों से अधिक पृथ्वीकी भेजलेकर राजाको स्वल्प भेजदेवे उसका सर्वस्वधन छीनकर राजा अपने देशसे निकाल बाहरकरे

णिकार्यिणाम्। निर्घृणाःक्रूरमनसः सर्वेकर्मोपराधिनः १५६ धनोष्मणापच्यमानास्तान्निः स्वान्कारयेन्नृपः। कूटशासनकर्तॄंश्च प्रकृतीनाञ्चदूषकान् १५७ स्त्रीबालब्राह्मणघ्नांश्च वध्याद्विट्सेविनस्तथा। अमात्यःप्राड्विवाकोवायःकुर्यात्कार्यमन्यथा १५८ तस्यसर्वस्वमादाय तंराजाविप्रवासयेत्। ब्रह्मघ्नश्चसुरापश्चतस्करोगुरुतल्पगः १५९ एतान्सर्वान् पृथक्हिंस्यात्महापातकिनोनरान्। महापातकिनोवध्याब्राह्मणन्तुविवासयेत् १६० कृतचिह्नंस्वदेशाच्चशृणुचिह्नाकृतिन्ततः। गुरुतल्पेभगःकार्यःसुरापानेसुराध्वजः १६१ स्तेनेतुश्वपदन्तद्वद् ब्रह्महण्यशिराःपुमान्। असम्भाष्याह्यसम्भोज्या असंवाह्याविशेषतः १६२ त्यक्त्याश्चतथाराजन्! ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः। महापातकिनोवित्तमादायनृपतिःस्वयम् १६३ अप्सुप्रवेशयेद्दण्डवरुणायोपपादयेत्। सहोढंनविनाचोरंघातयेद्धार्मिकोनृपः १६४ सहोढंसोपकरणं घातयेदविचारयन्। ग्रामेष्वपिचयेकेचिच्चोराणांभक्ष्यदायकाः १६५ भाण्डावकाशदाश्चैव सर्वांस्तानपिघातयेत्। राष्ट्रेषुराज्ञाधिकृताः सामन्ताश्चैवदूषकाः १६६ अभ्यघातेषुमध्यस्थाः क्षिप्रंशास्यास्तुचोरवत्। ग्रामघातेमठाभङ्गे पथिमोषाभिमर्दने १६७ शक्तितोनाभिधावन्तो निर्वास्याःसपरिच्छदाः। राज्ञःकोशापहर्तॄंश्च प्रतिकू

१५५ जो अपने२ कार्य्योंपर नियुक्त होनेवाले राजपुरुष प्रजाके कार्य्योंको नष्टकरदें और दयारहित क्रूरस्वभाववाले होकर वर्त्ततेहों उन अपराधी पुरुषोंका सबधन राजा छीनलेवे इसीप्रकार मिथ्या आज्ञा प्रकटकरके प्रजाको दुःखदेतेहों उनकोभी यहीदंडदेवे १५६। १५७ स्त्री, बालक, और ब्राह्मण इनके मारनेवाले और राजाके शत्रुकी सेवाकरनेवालेको फाँसीदेवे जो मन्त्री अथवा न्यायकर्त्ता प्राड्विवाक अन्यथा कामकरताहो उसको सर्वस्वधन छीनकर राजा अपने देशसे बाहर निकलवादे और ब्रह्मघाती, मदिरापीनेवाले, चोर, और गुरुपत्नी से भोगकरनेवाले इनमहापातकी पुरुषों को पृथक्२ मारणकरदे और ब्राह्मणहोय तो उसे देशसे बाहर निकलवादे १५८। १६० अथवा इनसबको जुदे२ चिह्न अंकितकरके देशसे निकाले उनका यहक्रमहै कि गुरुपत्नी से भोगकरनेवालेके भगका चिह्न, मदिरा पीनेवालेके मदिराकी ध्वजाका चिह्न १६१ चोरके कुत्ते के पैरोंका चिह्न और ब्रह्महत्या करनेवाले के मनुष्यके शिरका चिह्नकरदे फिर इन चिह्नोंसमेत निकालेहुए पुरुषोंके साथ कोई संभाषण-भोजन-और वासकभी न करे १६२ हे राजा ऐसे सबलोग भाईबन्धुओंकरके भी त्याज्यहैं और इनके धनको राजालेकर जलमें डुबोकर वरुण देवताके निमित्त दानकरदे और चोरी करनेवाले जालनाज पुरुषकी जो चोरी के द्रव्यसे सत्यता न हो अर्थात् उसपर चोरीकरना निश्चय न हो तो उसे नहींमारे जिसपर निश्चयहोजाय उसे मरवाडाले और ग्राममें चोरोंके निमित्त जो खानपानदेते हों अथवा बरतनदेतेहों उनको भी मरवादेवे जो पुरुष राजाने अधिकारों परनियत रक्खेहों उन्होंने जो प्रजामें कोई दोष करदियाहो उनको भी चोरकेही तुल्य दंडदेवे जो ग्रामघाती स्थान भंग करनेवाले-मार्ग में लूटनेवाले औरनिर्बल न भागनेवालोंको लूटतेहों उन पुरुषोंकी सब वस्तुओंको छीनकर उन्हेंदेशसे बाहर निकाल देवे और जोराजाके खज़ानेको लूटे तथा राजाके शत्रुओंकी सहायता

लेषुसंस्थितान् १६८ अरीणामुपजप्तृंश्च घातयेद्विविधैर्वधैः। सन्धिंकृत्वातुयेचौर्यं रात्रौ कुर्वन्तितस्कराः। १६९ तेषांछित्वानृपोहस्तौ तीक्ष्णशूलेनिवेशयेत्। तडागभेदकंहन्यात् अप्सुशुद्धवधेनतु। १७० यस्तुपूर्वनिविष्टस्यात्तडागस्योदकंहरेत्। आगमञ्चाप्यपांभि न्द्यात्सदाप्यःपूर्वशासनम् १७१ कोष्ठागारायुधागारदेवागारविभेदकान्। पापान्पाप समाचारान् घातयेच्छीघ्रमेवच १७२ समुत्सृजेद्राजमार्गे यस्त्वमेध्यमनापदि। सहिकां र्षापणंदण्ड्यस्तत्त्वमेध्यञ्चशोधयेत् १७३ अजङ्गमोऽथवावृद्धो गर्भिणीबालएववा। परि भाषणमर्हन्तिनचशोध्यमितिस्थितिः १७४ प्रथमंसाहसंदण्ड्यो यश्चमिथ्याचिकित्सते। परुषेनमध्यमंदण्डमुत्तमञ्चतथोत्तमे १७५ छत्रस्यध्वजयष्टीनां प्रतिमानाञ्चभेदकाः। प्रतिकुर्युस्ततःसर्वे पञ्चदण्ड्याःशतानिच १७६ अदूषितानांद्रव्याणां दूषणेभेदनेतथा। मणीनामपिभेदेन दण्ड्याःप्रथमसाहसम् १७७ समञ्चविषमञ्चैव कुरुतेमूल्यतोऽपिवा। समाप्नुयात्सवैपूर्वं दममध्यममेवच १७८ बन्धनानिचसर्वाणि राजमार्गेनिवेशयेत्। क र्षन्तोयत्रदृश्यन्ते विकृताःपापकारिणः। १७९ प्राकारस्यचभेत्तारं परिखानाञ्चभेदकम्। द्वाराणांचैवभेत्तारं क्षिप्रंनिर्वासयेत्पुरात् १८० मूलकर्माभिचारेषु कर्तव्योद्विशतोदमः। अबीजविक्रयीयश्च बीजोत्कर्षकएवच १८१ मर्यादाभेदकश्चापि विकृतंबन्धमाप्नुयात्। सर्वसङ्करपापिष्ठं हेमकारनराधिप! १८२ अन्यायेवर्तमानञ्च च्छेदयेल्लवशःक्षुरैः। द्र

करतेहों उनकोभी अनेकप्रकारके वध उपायोंसे मरवादेवे जोपुरुष सेंधलगाकर या और प्रकारकासाज लगाकर रात्रिमें चोरीकरतेहों उनके हाथोंमें शूलगड़वादेवे और जो तड़ागको फुड़वावे उसको जलमें डुबोकर मारडाले १६९।१७० जो तड़ागादिक जलाशयोंमें आतेहुए जलकोरोके उसकोभी यही दंड देवे १७१ जो पुरुष राजाके शस्त्रोंके स्थानको फोड़डाले तथा देवताओंके मन्दिरको फोड़डाले ऐसे पापीपुरुषको शीघ्रही मरवाडाले १७२ जो पुरुष आपत्तिकाल के विना राजकार्यमें अपवित्रवस्तुको देकर वहाँसे शुद्धवस्तुओंको लेले उसपर तीन पणका दंडकरनायोग्यहै १७३ लंगड़ा-बंधाहुआ- गर्भिणी और बालक इनसे झगड़कर वस्तुलेले और वस्तुको शुद्ध नहीं करे १७४ और जो वैद्यहो- कर चिकित्साको बिगाड़दे उन सब पर प्रथम साहसका दंड करना योग्यहै १७५ छत्र-ध्वजा और मूर्त्ति इनके छेदन करनेवाले पर पांच सौ पण का दंड करना योग्यहै और सबोंको मरवादेवे १७६ अच्छे द्रव्योंमें दोष लगानेवाले और मणि आदिकोंके भेदकर देनेवाले इनको प्रथम साहसका दंड योग्यहै १७७ जो किसी वस्तुके मूल्यको विषमकरदेवे उसपर मध्यम साहसका दंड करना योग्यहै और राजा सबकारागृहों को अर्थात् जेलखानोंको अपने राजस्थानों के समीप ऐसे स्थलमें बनवावे जहाँ सब कैदी लोग दीखते रहैं १७८।१७९ नगरके कोट खाई और दरवाजोंके फोड़नेवाले पुरुषों को राजा अपने देशसे बाहर निकलवादेवे १८० और अज्ञानियों के कार्य्य में दोष करनेवाले पर दोसौ पण का दंड करे-जो कोई बुरेबीजको अच्छा बनलाकर बेचताहो तथा मर्य्यादाको तोड़ताहो उसका बंधनही करवादेवे जो सुनार अन्यायसे वर्त्ताव करनेवालाहोकर शुद्ध द्रव्यमें सब द्रव्योंको

ण्यमादायवणिजामनर्घेणावरुन्धताम् १८३ द्रव्याणांदूषकोयस्तु प्रतिच्छन्नस्यविक्रयी। मध्यमंप्राप्नुयाद्दण्डं कूटकर्तातथोत्तमम् १८४ राजापृथक्पृथक्कुर्याद्दण्डंचोत्तमसाहसम्। शास्त्राणांयज्ञतपसां देशानांक्षेपकोनरः १८५ देवतानांसतीनाञ्च उत्तमंदण्डमर्हति। एकस्यदण्डपारुष्ये बहूनांद्विगुणोदमः १८६ कलहोयद्धृतोदाप्यो दण्डश्चद्विगुणस्ततः। मध्यमंब्राह्मणंराजा विषयाद्विप्रवासयेत् १८७ लशुनञ्चपलाण्डुञ्च शूकरंग्रामकुक्कुटम्। तथापञ्चनखंसर्वं भक्ष्यादन्यत्तुभक्षयेत् १८८ विवासयेत्क्षिप्रमेव ब्राह्मणंविषयात्स्वकात्। अभक्ष्यभक्षणेदण्ड्यःशूद्रोभवतिकृष्णलम् १८९ ब्राह्मणक्षत्रियविशां चतुस्त्रिद्विगुणंस्मृतम्। यःसाहसंकारयति सदण्ड्योद्विगुणन्दमम् १९० यस्त्वेवमुक्त्वाहन्दाता कारयेत्सचतुर्गुणम्। सन्दिष्टस्याप्रदाताच समुद्रगृहभेदकः १९१ पञ्चाशत्पणिकोदण्डस्तत्रकार्य्योमहीक्षिता। अस्पृश्यञ्चास्पृशन्नार्य्यो ह्ययोग्योऽयोग्यकर्मकृत् १९२ पुंस्त्वहर्त्तापशूनाञ्च दासीगर्भविनाशकृत्। शूद्रप्रव्रजितानाञ्च दैवेपैत्रेचभोजकः १९३ अप्रजन्वाढमुक्त्वातु तथैवचनिमन्त्रणे। एतेकार्षापणशतं सर्वेदण्ड्यामहीक्षिता १९४ दुःखोत्पादिगृहेद्रव्यं क्षिपेदन्धस्यकृष्णलम्। पितापुत्रविरोधेच साक्षिणांद्विशतोदमः। स्यान्नरश्चतथार्य्यःस्यात्तस्याप्यष्टशतोदमः १९५ तुलाशासनमानानां कूटकृन्नाणकस्य च। एभिश्चव्यवहर्ताच सदण्ड्योदममुत्तमम् १९६ विषाग्निदाम्पतिगुरु निजापत्यप्र

मिलादेवे उसको शस्त्रों से राजा कटवाडाले, और जो वैश्य व्यवहार वाली वस्तुओंको सस्ताकरके रोकदेवे और द्रव्यों में दोष निकालदेवे और गुप्तकी हुई द्रव्यको बेचताहो उस पर राजा मध्यम साहसका दंड करे, जो मिथ्या बोलकर किसी द्रव्यको बेचताहो उस पर भी यही दंड करना योग्य है १८३। १८४ जो पुरुष शास्त्र-यज्ञ-तप-देश-देवता- और सती इनको नष्ट करदे उस पर उत्तम साहसका दंड योग्यहै और एक कामको बहुतजने बिगाड़तेहों उनको पृथक् २ दूना दंडदेवे १८५ १८६ और लहसन- प्याज-शूकर-मुरगा और पंचनख वाले जीव इनके भक्षण करनेवाले ब्राह्मण को राजा अपने देशसे निकालदेवे और जो इनको शूद्र भक्षणकरे उस पर एक रत्ती सुवर्णका दंड करे १८७। १८९ और ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य यह चौगुने तिगुने और दूने हैं जो शूद्र इनमें कलहकरवावे उसपर द्विगुणित दंडकरनायोग्यहै और जोकहै कि इसतुम्हारे झगड़ेका खर्च मैं दूंगा उतविवादी पुरुषपर चौगुनादंड करनायोग्यहै, जो किसीके संदेशेकोन कहे बन्दकियेहुए पिटारे और ताले आदिको तोड़डाले उसपर ५०पण दंडकरे १९०।१९१ और जो उत्तमपुरुष अस्पृश्य वस्तुको छूले अयोग्यकर्मकरे, पशुओंको बधिया अर्थात् नपुंसककरे दासीकेगर्भको नष्टकरदे शूद्रजातिके संन्यासियोंको देवकर्म और पितृकर्मोंमें भोजन करवावे और सत्यनिमंत्रणदेके फिर नहींबुलवावे ऐसेसब पुरुषोंको राजा तीनसौ पणका दंडदेवे १९२।१९४ जो श्रेष्ठपुरुषकेघरमें काँटे आदिक गेरदेवे वहएक रत्ती सुवर्ण दंडके योग्यहै और पितापुत्रके विरोधमें जो गवाही देवे वह दोसौ पण दंडकेयोग्यहै और श्रेष्ठ धर्मशास्त्र अर्थात् उत्तमकानूनका जाननेवालाहो जो मिथ्यासाक्षी अर्थात् गवाहीदेताहो उसपर

मापणीम्। विकर्णनासिकांव्योर्ष्ठौ कृत्वागोभिःप्रमापयेत् १९७ खलस्यंदाहकायेच येच क्षेत्रस्यवेश्मनः। राजपत्न्यभिगामीच दग्धव्यास्तेकटाग्निना १९८ ऊनंवाप्यधिक ञ्चापि लिखेद्योराजशासनम्। पारदारिकचौरंवा मुञ्चतोदण्डउत्तमः १९९ अभक्ष्येण द्विजंदूष्य दण्डउत्तमसाहसः। क्षत्रियंमध्यमंवैश्यं प्रथमंशूद्रमर्द्धकम् २०० मृताङ्गल ग्नविक्रेतुर्गोतुर्ताडयतस्तथा। राजयानासनारोढुर्दण्डउत्तमसाहसः २०१ योमन्येताजि तोऽस्मीति न्यायेनापिपराजितः। तमायान्तंपुनर्जित्वा दण्डयेद्द्विगुणन्दमम् २०२ आ ह्वानकरोमध्यःस्यादनाह्वानेतथाह्वयन्। दण्डिकस्यचयोहस्तादभियुक्तःपलायते २०३ हीनपुरुषकारेणतंदण्ड्याद्दाण्डिकोधनम्। प्रेष्यापराधात्प्रेष्यस्तु सदण्ड्यश्चार्द्धमेवच २०४ दण्ड्यार्थंनियमार्थञ्च नीयमानेषुबन्धनम्। यदिकश्चित्पलायेत दण्डश्चाष्टगुणो भवेत् २०५ अनिन्दितेविवादेतु नखरोमावतारणम्। कारयेद्यःसपुरुषो मध्यमंदण्डमर्ह ति २०६ बन्धनञ्चाप्यवध्यस्य बलान्मोचयतेतुयः। वध्यंविमोचयेद्यस्तु दण्डाद्द्विगुण माग्भवेत् २०७ दुर्दृष्टव्यवहाराणां सभ्यानांद्विगुणोदमः। राज्ञस्त्रिंशद्गुणोदण्डः प्रक्षे प्यउदकेभवेत् २०८ अल्पदण्डेऽधिकंकुर्य्याद्विपुलेचाल्पमेवच। ऊनाधिकन्तुतंदण्डं स भ्योदद्यात्स्वकाद्गृहात् २०९ यावानवध्यस्यवधे तावान्वध्यस्यरक्षणे। अधर्मोनृपतेर्दृ

८००पणका दंड करना योग्यहै जो पुरुप जाली तराजू और बांटवनाकर व्यवहारकरता हो उसपर उत्तम साहसका दंडकरना योग्यहै १९५। १९६ जोस्त्री अपने पुत्र पति और गुरुआदिको विप अग्नि आदिसे मारडाले उसके कान नाकको काटकर गौओंके समीप मरवावे-जो अन्यके अन्नके खरियान खेत और घरोंको जलावे अथवा जो रानीके संग मैथुनकरताहो इन सबलोगों को फसकी अग्निसे जलादे १९७। १९८ जो राजाके प्रचलित पत्रमें अर्थात् स्टाम्पके कागज़पर न्यूनाधक लिखदेवे और जिसने पराई स्त्री चुराली हो वह दोनों उत्तम साहस दंडकेयोग्य हैं १९९ जो ब्राह्मणको अभक्ष्य वस्तु खिलाकर दूपितकरडाले वहभी उत्तम साहसके दंडकेयोग्यहै क्षत्रियको दूपितकरनेपर मध्यम साहसदंड, वैश्यको दूपितकरनेपर प्रथम साहसदंड और शूद्रके दूपितकरनेवाले को प्रथमसे आधा अर्थात् १२५ पणकादंडदेवे २०० कफनवेचनेवाले-किसीको ताड़नकरनेवाले-और राजाकी सवारी पर बैठनेवाले इन सबपर उत्तम साहसका दंड करनायोग्यहै २०१ और जो न्यायसे हाराहुआ पु- रुप फिर अपना मुकद्दमा दायरकरे उसको हरानेके पीछे दूनादंडदेवे २०२ जो पुरुप बुलानेसे भी राजद्वारमें नहीं आवे अथवा किसी राजाके सिपाही के हाथसे अपराधी छूटकर भागजावे इन दोनों पर अपराधी से आधा दंडकरे, जो कोई पुरुप दंडदेने के लिये तथा नियमके निमित्त बाँधरक्खाहो वह भागजावे उसपर अष्टगुणित दंडकरे २०३। २०५ जो पुरुप निन्दारहित विवादों में किसी के नख तथा बालोंको कटवादेवे वह मध्यम साहस दंडके योग्यहै २०६ जो बंधन कियेहुए पुरुपके ब- न्धनको बलसे छुड़वादेवे और मारनेके योग्य पुरुपको छोड़देवे उसपर अपराधी पुरुपसे दूना दंड करना योग्य है २०७ जो राजाकी सभा के पुरुपों ने मिथ्या मुकद्दमा करदियाहो तो उन सभ्य

ष्टस्तथाऽवध्यस्यमोक्षणे २१० ब्राह्मणंनैवहन्यात्तु सर्वपापेष्ववस्थितम्। प्रवासयेत्स्वका द्राष्ट्रात्समग्रंधनसंयुतम् २११ नजातुब्राह्मणंवध्यात्पातकंत्वधिकंभवेत्। यस्मात्तस्मात्प्र यत्नेन ब्रह्महत्यांविवर्जयेत् २१२ अदण्ड्यान्दण्डयेद्राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्। अ यशोमहदाप्नोति नरकञ्चाधिगच्छति २१३ ज्ञात्वापराधंपुरुषस्यराजा कालंतथाज्ञानु मतंद्विजानाम्। दण्ड्येषुदण्डंपरिकल्पयेत्तु मोयस्ययुक्तःससमीक्ष्यकुर्य्यात् २१४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे षड्विंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २२६॥

(मनुरुवाच) दिव्यान्तरिक्षभौमेषु याशान्तिरभिधीयते। तामहंश्रोतुमिच्छामि म होत्पातेषुकेशव! १ (मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि त्रिविधामद्भुतादिषु। वि शेषेणतुभौमेषु शान्तिःकार्य्यातथाभवेत् २ अभयाचान्तरिक्षेषु सौम्यादिव्येषुपार्थिव!। विजिगीषुःपरंराजन्! भूतिकामस्तुयोभवेत् ३ विजिगीषुपरानेवमभियुक्तस्तथापरैः। तथाभिचारशङ्कायां शत्रूणामभिनाशने ४ भयेमहतिसंप्राप्ते अभयाशान्तिरिष्यते। रा जयक्ष्माभिभूतस्य क्षतक्षीणस्यचाप्यथ ५ सौम्याप्रशस्यतेशान्तिर्यज्ञकामस्यचाप्यथ। भूकम्पेचसमुत्पन्ने प्राप्तेचान्नक्षयेतथा ६ अतिवृष्ट्यामनावृष्ट्यां शलभानांभयेषुच। प्र

पुरुषोंको उस मुकद्दमे से दूना दंडदेना योग्यहै उस दंडके द्रव्यमें से राजा तृतीयांश वरुण देवताके निमित्त दानकरदे २०८ जो सभासद पुरुष थोड़े दंडमें विशेष और विशेषमें थोड़ादंडदेवे तो उसकी कमी अपने घरसे करदेवे २०९ राजाको अवध्य पुरुषके वधकरनेमें जो दोषहोताहै वही दोषवध्य अपराधी पुरुषकी रक्षाकरने और छोड़देने में होताहै २१० सब पापकरनेवाले भी ब्राह्मणको नहीं मरवावे किन्तु उसका धन छीनकर उसको राज्यसे बाहर निकलवादेवे २११ ब्राह्मणका वध कभी नकरे ब्राह्मण के वधकरने में अधिक पापहोताहै इस हेतुसे सदैव ब्रह्महत्या से बचना योग्यहै २१२ जो राजा दंडदेने के योग्य पुरुषको दंडनहीं देताहै औरअदण्ड्य पुरुषको दंडदेताहै उस राजाको महा भारी अपयश होताहै और नरककी भी अवश्य प्राप्ति होतीहै २१३ राजा अपराधी के अपराध और समयको विचारकर ब्राह्मणों के मतसे जैसा जिसको उचित समझे वही दंडदेवे २१४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषड्विंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २२६॥

मनुजी ने पूछा—हे भगवन् आकाश, पृथ्वीलोक और देवलोक में होनेवाले आन्तरिक्ष—भौम और दिव्य इन महान् उत्पातों के शान्त करनेवाली जो शान्ति है उसको मैं सुननेकी इच्छा करता हूं १ मत्स्यजी बोले कि मैं तीन प्रकारकी शान्तियों को तुमसे कहताहूं इन सबमें विशेष करके पृथ्वी के उत्पातों की शान्ति अवश्य करनी चाहिये २ हे राजन् आकाश में शान्ति अभय होतीहै और देवलोक में सौम्य होती है जो ऐश्वर्य्य की इच्छा करनेवाला पुरुष शत्रुओं से पीड़ित होरहा हो उसको शत्रुओं के नाशके निमित्त आकाशवाली अभया शान्ति करनी चाहिये और क्षयीरोग और क्षतक्षीण आदि रोगोंमें सौम्याशान्ति करनी योग्यहै, यज्ञकी कामनावालेको भूकम्प उत्पातमें—अन्न के क्षयमें—अतिवृष्टिमें—अनावृष्टिमें टीड़ियों के भयमें और प्रबलचोरों के भय में वैष्णवी शान्ति

मत्तेषुचचोरेषु वैष्णवीशान्तिरिष्यते ७ पशूनांमारणेप्राप्ते नराणामपिदारुणे। भूतेषुदृ
श्यमानेषु रौद्रीशांतिस्तथेष्यते ८ वेदनाशेसमुत्पन्ने जनेजातेचनास्तिके। अपूज्यपूजने
जाते ब्राह्मीशान्तिस्तथेष्यते ९ भविष्यत्यभिषेकेच परचक्रभयेऽपिच। स्वराष्ट्रभेदेऽरिव
धे रौद्रीशान्तिःप्रशस्यते १० त्र्यहातिरिक्तेपवने भक्ष्येसर्वविगर्हिते। वैकृतेवातजेव्याधौ
वायवीशान्तिरिष्यते ११ अनावृष्टिभयेजाते प्राप्तेविकृतिवर्षणे। जलाशयविकारेषु वारु
णीशान्तिरिष्यते १२ अभिशापभयेप्राप्ते भार्गवीचतथैवच। जातेप्रसववैकृत्ये प्राजाप
त्यामहाभुज! १३ उपस्कराणांवैकृत्ये त्वाष्ट्रीपार्थिवनन्दन!। बालानांशान्तिकामस्य कौ
मारीचतथानृप! १४ कुर्य्याच्छान्तिमथाग्नेयीं सम्प्राप्तेवह्निवैकृते। आज्ञाभङ्गेतुसञ्जा
ते तथाभृत्यादिसंक्षये १५ अश्वानांशान्तिकामस्य तद्विकारेसमुत्थिते। अश्वानांकाम
यानस्य गान्धर्व्वीशान्तिरिष्यते १६ गजानांशान्तिकामस्य तद्विकारेसमुत्थिते। गजा
नांकामयानस्य शान्तिराङ्गिरसीभवेत् १७ पिशाचादिभयेजाते शान्तिर्वैनैर्ऋतीस्मृता।
अपमृत्युभयेजाते दुःस्वप्नेचतथास्थिते १८ याम्यान्तुकारयेच्छान्तिं प्राप्तेतुनरकेतथा।
धननाशेसमुत्पन्ने कौवेरीशान्तिरिष्यते १९ वृक्षाणाञ्चतथार्थानां वैकृतेसमुपस्थिते। भू
तिकामस्तथाशान्तिं पार्थिवींप्रतियोजयेत् २० प्रथमेदिनयामेच रात्रौवामनुजोत्तम!।
हस्तेस्वातौचचित्रायामादित्येचाश्विनेतथा २१ अर्यम्णिसौम्य! जातेषु वायव्यांत्वद्
भुतेषुच। द्वितीयेदिनयामेतु रात्रौचरविनन्दन! २२ पुष्याग्नेयेविशाखासु पित्र्यासुभर

करनी योग्यकही है ३।७ पशुओं के मारने-मनुष्यों के मारने और भूतप्रेतोंके दीखनेमें रौद्री शान्ति करनी कही है ८ वेदके नाशहोनेमें-नास्तिकजनों की उत्पत्तिमें-और अपूज्यपुरुषों के पूजनहोने में ब्राह्मी शान्तिकरनी योग्यहै ९ राज्यतिलक होनेमें-अन्यराजाके भयहोनेमें-अपने राज्यके भेदमें-और शत्रुओं के बधके निमित्त में रौद्री शान्तिकरनी योग्यहै १० तीन दिनतक अति वायुचले और संपूर्ण भक्ष्यपदार्थ बिगड़जावे तब वायवी शान्ति करनी योग्यहै ११ जब अनावृष्टिका भयहोजाय-वर्षा की विकृतिहोजाय और खेतियोंका बिगाड़ होजाय तब प्राजापत्य नामवाली शान्ति करनी योग्यहै १२ शाप और मूठआदिके भयमें भार्गवीनाम शान्ति करनी योग्यहै और जब जलाशयों में विकार होजावे तब वारुणीनाम शान्ति और बालकोंके सुखके निमित्त कौमारी नाम शान्ति करनी योग्यहै, अग्निके विकारहोनेमें आग्नेयी शान्तिकरनीयोग्यहै-आज्ञाभगहोनेमें भृत्योंकेनाशहोनेमें अश्वोंके विकार होजानेमें गान्धर्वीनाम शान्ति करनी चाहिये १३।१६ हाथियों के रोगकी निवृत्ति में हाथियों की सवारी की प्राप्तिमें आंगिरसीनाम शान्ति करनी योग्यहै १७ पिशाचादि के भयहोनेमें नैर्ऋतिनाम शान्तिकरनी योग्यहै और अपमृत्युके भयहोनेमें दुस्स्वप्नमें-नरककी प्राप्तिहोनेमें याम्या नाम शान्ति करनी योग्यहै, जब धनकानाशहोनेलगे तब कौमारीनाम शान्तिकरनी योग्यहै १८।१९ वृक्षों के और द्रव्यों के विकार उत्पन्न होने में पार्थिवी नाम शान्ति करनी योग्यहै २० हे मनुजोत्तम हस्त-स्वाति-चित्रा और अश्विनी इन नक्षत्रों में दिवसके पहले पहरमें अथवा रात्रिमें जबकुछ

णीषुच । उत्पातेषुतथाभाग्ये आग्नेयींतेषुकारयेत् २३ तृतीयेदिनयामेच रात्रौचरविन न्दन!। रोहिण्यांवैष्णवेब्राह्मे वासवेवैश्वदेवते २४ ज्येष्ठायाञ्चतथामैत्रे येभवन्त्यद्भुताः क्वचित् । ऐन्द्रीतेषुप्रयोक्तव्या शान्तिःरविकुलोद्वह! २५ चतुर्थेदिनयामेच रात्रौवारवि नन्दन!। सार्पेपौष्णेतथार्द्रायामहिर्बुध्न्येचदारुणे २६ मूलेवरुणदैवत्ये येभवन्त्यद्भुता स्तथा। वारुणीतेषुकर्त्तव्या महाशान्तिर्महीक्षिता २७ मित्रमण्डलवेलासु येभवन्त्य द्भुताःक्वचित् । तत्रशान्तिद्वयंकार्य्यं निमित्तेषुचनान्यथा। निर्निमित्तकृताशान्तिर्निमित्ते नोपयुज्यते २८ वाणप्रहारानभवन्तियद्वद्राजन्नृणांसन्नहनैर्युतानाम् । दैवोपघातानभ वन्तितद्वद्धर्मात्मनांशान्तिपरायणानाम् २९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे सप्तविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२७॥

(मनुरुवाच) अद्भुतानांफलंदेव! शमनञ्चतथावद । त्वंहिवेत्सिविशालाक्ष! ज्ञे यंसर्वमशेषतः १ (मत्स्य उवाच) अत्रतेवर्णयिष्यामि यदुवाचमहातपाः। अत्रयेवृद्ध गर्गस्तु सर्वधर्मभृतांवरः २ सरस्वत्याःसुखासीनं गर्गस्रोतसिपार्थिव!। पप्रच्छासौमहा तेजा अत्रिर्मुनिजनप्रियम् ३ (अत्रिरुवाच) नश्यतांपूर्वरूपाणि जनानांकथयस्वमे। नगराणांतथाराज्ञा त्वंहिसर्वंवदस्वमाम् ४ (गर्ग उवाच) पुरुषापचारान्नियतमपरज्य न्तिदेवताः। ततोऽपरागाद्देवानामुपसर्गःप्रवर्तते ५ दिव्यान्तरिक्षभौमञ्च त्रिविधंसंप्रकी

उत्पातहोजावे तब वायवीनाम शान्ति करनी योग्यहै और पुष्य-विशाखा-मघा और भरणी इन न- क्षत्रोंमें दिनके दूसरे पहरमें अथवा रात्रिमें जब कोई उत्पात होजावे तब आग्नेयी नाम शान्ति क- रनी योग्यहै २१। २२ रोहिणी-श्रवण-धनिष्ठा इन नक्षत्रों के दिनके तीसरेपहरमें अथवा रात्रिमें जो कुछ उत्पात होजावे अथवा ज्येष्ठा और अनुराधा नक्षत्रमें उत्पात होजाय तब ऐन्द्रीनाम शान्ति करनी योग्यहै २४। २५ श्लेषा-आर्द्रा-रेवती-मूल और शतभिष इन नक्षत्रके दिनके चौथेपहरमें वा रात्रिमें जब उत्पात होजाय तब वारुणी नाम शान्ति करनी योग्यहै २६। २७ और सूर्य्य के मं- डल होनेके समय कभी जब उत्पात होजाय तब दोप्रकार की शान्ति करनी योग्यहै विना निमित्त की हुई शान्तिसे कोई निमित्त सिद्धनहींहोते हैं २८ जैसे कि लोहेका कवच पहरनेसे वाणोंके प्रहार शान्तहोजाते हैं उसीप्रकार दैवके उपघातोंको शान्ति निवारण करती है २९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२७॥

मनुजीनेपूछा-हे देव आप अद्भुतउत्पातोंके फलको और शान्तिको वर्णनकीजिये क्योंकि आप इन सबबातोंके ज्ञाताहैं १ मत्स्यजीबोले हेराजा वृद्ध गर्गऋषिने जो अत्रिमुनिकेआगे संवाद वर्णनकिया है वह मैं तेरेआगे वर्णनकरताहूं २ किसीसमय सरस्वतीनदीकेस्रोतपर बैठेहुए गर्गऋषिसे महातेजस्वी अत्रिमुनि यह पूछतेभये ३ कि हेमुने आप नष्टहोनेवाले मनुष्यों के वा नगरोंके सब राजाओं के पूर्व रूपको और जो पूर्व उत्पातहोते हैं उन सबको मेरे आगे वर्णन कीजिये ४ गर्गजीबोले कि मनुष्यों के दुष्ट आचरण करनेसे देवतालोग कुपितहोते हैं तब उपद्रव उत्पन्नहोते हैं-दिव्य-अन्तरिक्ष और

र्तितम्। ग्रहर्क्षवैकृतंदिव्यमान्तरिक्षंनिबोधमे ६ उल्कापातोदिशान्दाहः परिवेषस्तथैव च। गन्धर्वनगरञ्चैव वृष्टिश्चविकृतातुया ७ एवमादीनिलोकेऽस्मिन्नान्तरिक्षंविनिर्दिशेत्। चरस्थिरभवभौमो भूकम्पश्चापिभूमिजः ८ जलाशयानांवैकृत्यं भौमंतदपिकीर्तितम्। भौमेत्वल्पफलंज्ञेयं चिरेणचविपच्यते ९ अभ्रजंमध्यफलदं मध्यकालफलप्रदम्। अद्भुतेतुसमुत्पन्ने यदिवृष्टिःशिवाभवेत् १० सप्ताहाभ्यन्तरेज्ञेयमद्भुतंनिष्फलंभवेत्। अद्भुतस्याविपाकश्च विनाशान्त्यानदृश्यते ११ त्रिभिर्वर्षैस्तथाज्ञेयं सुमहद्भयकारकम्। राज्ञःशरीरेलोकेच पुरद्वारेपुरोहिते १२ पाकमायातिपुत्रेषु तथावैकोशवाहने। ऋतुस्वभावाद्राजेन्द्र! भवन्त्यद्भुतसंज्ञिताः १३ शुभावहास्तेविज्ञेयास्तांश्चमेगदतः शृणु। वज्राशनिमहीकम्प सस्यानिर्घातनिःस्वना १४ परिवेषरजोधूम रक्तार्कास्तमयोदयाः। द्रुमोद्भेदकरस्नेहो बहुशःसफलद्रुमः १५ गोपक्षिमधुवृद्धिश्च शुभानिमधुमाधवे। ऋक्षोल्कापातकलुषं कपिलार्केन्दुमण्डलम् १६ कृष्णश्वेतंतथापीतं धूसरध्वान्तलोहितम्। रक्तपुष्पारुणंसाध्यं नभःक्षुब्धार्णवोपमम् १७ सरिताञ्चाम्बुसंशोषं दृष्ट्वाग्रीष्मेशुभंवदेत्। शक्रायुधपरीवेषं विद्युदुल्काधिरोहणम् १८ कम्पोद्वर्तनवैकृत्यं हसनंदारणंक्षितेः। नद्योदपानंसरसां विधूनतरणप्लवाः १९ शृङ्गिणाञ्चवराहाणां वर्षासुशुभमिष्यते।

भौम यह तीनप्रकारके उपद्रवहोते हैं ग्रह नक्षत्रादिकों की विकृतिहोने को दिव्य उपद्रवकहते हैं, उल्कापात-दिग्दाह-सूर्य्यमंडल गन्धर्व नगर-और वर्षा के विकार इत्यादिक सब उपद्रव अन्तरिक्ष अर्थात् आकाशमें होनेवाले कहाते हैं और चरस्थिर भूतों के उपद्रव भूकम्पहोना औरजलाशयोंका विकार होना यह भौम अर्थात् पृथ्वीके उपद्रव कहाते हैं पृथ्वी लोकके उपद्रव बहुतकालमें थोड़ासा फलकरते हैं ५।६ आकाशके उपद्रव मध्यकालमें मध्यमफलदेते हैं और जोउपद्रवहुएके सातदिन भीतर बहुतउत्तम वर्षाहोजावे तो उसउपद्रवका कुछभीफल नहींहोता यहसबउपद्रव शान्तिकिये विना निष्फल नहींहोते हैं जो इनसबउपद्रवोंकी शान्ति न कीजाय तो तीनवर्षकेभीतर राजाकेशरीर में पुरमें औरपुरोहितमें बड़ाभारी भयउत्पन्नहोताहै १०।१२अथवा राजाके पुत्रोंको बुराफल होताहै खजाने औरवाहनों में निकृष्टफलहोताहै १३अब इनऋतुओंके स्वभावसे उपद्रवोंकीजोशान्तिहै वहभी वर्णनकरताहूं बिजलीका गिरना-भूकम्पहोना-खेतीनष्टहोनी-सूर्य्यमण्डलहोना धूलीसेआकाशढकना सूर्य्यके उदय और अस्तहोने के समय धुवाँ अथवा रक्तके सदृश लालदिशा होना-बहुतसे वृक्षोंसेगोंद चूने लगना-गौ-पक्षी और शहदकी वृद्धिहोना-यह सब लक्षण चैत्र वैशाखके महीने में बसन्तऋतुके समयमें अच्छे शुभफल देनेवाले होते हैं-पुच्छा तारा निकलना-चन्द्रमंडलकपिल वर्णहोना-काला-पीत-श्वेत-रक्त पुष्पोंके समान लहरियोंवाले समुद्रकासा रंग आकाशका होना और नदीका जलसे रहित होना यह सब लक्षण ग्रीष्मऋतु में शुभफलदायीहोते हैं, इन्द्रधनुष होना, विद्युत्पात होना, पृथ्वीका कांपना, नदियोंका जल बढ़कर बाहरहोना, सरोवर उमड़जाना, सींगवाले पशुओं का विकारहोना, यह सब लक्षण वर्षाऋतुमें शुभफलदेते हैं, अधिक शीतपड़ना, पालागिरना, मृग और

शीतानिलतुषारत्वं नर्दनंमृगपक्षिणाम् २० रक्षोभूतपिशाचानां दर्शनंवागमानुषी। दि-
शोधूमान्धकाराश्च सनभोवनपर्वताः २१ उच्चैःसूर्योदयास्तौच हेमन्तेशोभनाःस्मृताः।
दिव्यस्त्रीरूपगन्धर्व विमानाद्भुतदर्शनम् २२ ग्रहनक्षत्रताराणां दर्शनंवागमानुषी। गीत
वादित्रनिर्घोषो वनपर्वतसानुषु २३ सस्यवृद्धीरसोत्पत्तिः शरत्कालेशुभाःस्मृताः। हिम-
पातानिलोत्पात विरूपाद्भुतदर्शनम् २४ कृष्णाञ्जनाभमाकाशं तारोल्कापातपिञ्जरम्।
चित्रगर्भोद्भवःस्त्रीषु गोऽजाश्वमृगपक्षिषु । पत्राङ्कुरलतानाञ्च विकाराःशिशिरेशुभाः
२५ ऋतुस्वभावेनविनाद्भुतस्य जातस्यदृष्टस्यतुशीघ्रमेव। यथागमंशान्तिरनन्तरन्तु
कार्यायथोक्तावसुधाधिपेन २६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेऽष्टाविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२८॥

(गर्ग उवाच) देवतार्चाःप्रनृत्यन्ति वेपन्तेप्रज्वलन्तिच। वमन्त्यग्नितथाधूमं स्नेहं
रक्तंतथावसाम् १ आरयन्तिरुदन्त्येताः प्रस्विद्यन्तिहसन्तिच । उत्तिष्ठन्तिनिषीदन्ति
प्रधावन्तिधमन्तिच २ भुञ्जतेविक्षिपन्तेवा कोशप्रहरणध्वजान्। अवाङ्मुखाश्चभवन्ति
स्थानात्स्थानंभ्रमन्तिच ३ एवमाद्याहिदृश्यन्ते विकाराःसहसोत्थिताः। लिङ्गायतनविप्रे-
ष तत्रवासंनरोचयेत् ४ राज्ञीवाव्यसनन्तत्र सचदेशोविनश्यति। देवयात्रासुचोत्पातान्
दृष्ट्वादेशभयंवदेत् ५ पितामहस्यहर्म्येषु तत्रवासंनरोचयेत्। पशूनांरुद्रजंज्ञेयं नृपाणांलोक

पक्षियोंका गर्जना, राक्षस, भूत और पिशाच इन्होंका दर्शन होना और मनुष्य वाणीसे बोलना दि-
शाओंमें धुवाँ और अन्धकार होना-सूर्य्यके उदय और अस्तके समय बहुतसी वायुका चलना यह सब
लक्षण हेमन्तऋतुमें श्रेष्ठकहे हैं-दिव्य स्त्रीकारूप-गन्धर्व-विमानादिका दर्शनहोना-ग्रहनक्षत्र और ता-
राओंका मनुष्यके सदृश दर्शनहोना-पर्वतादिमें गीत वाद्यादिका सुनना-खेतियोंकी वृद्धि होजाना-
रसकी उत्पत्तिका होना-यह लक्षण शरदऋतुमें अच्छे शुभ फलदायी हैं-पालागिरना-वायुका चलना
विरूप अद्भुत दर्शनहोना-अंजनसाकाला आकाशका होना-तारोंका टूटना-स्त्रियों के गौओंके-बकरियों
के-घोड़ी और पक्षियोंके गर्भ उत्पन्नहोना-और पत्ते वा अंकुरोंका विकार होना यह सब लक्षण शि-
शिरऋतुमें शुभ फलवाले होतेहैं १४।२५ यह सब ऋतुओंके स्वभाववाले लक्षणकहेहैं इनसे वि-
शेष जो अन्यकोई उपद्रवहों तो राजाको बड़ी शीघ्रतासे उनकी शांतिकरवानीचाहिये २६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांअष्टाविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २२८॥

गर्गजीबोले-देवताओं की मूर्त्ति नृत्यकरें-कांपें अग्निके समान ज्वलित होजायँ-धुवां-रक्त-स्नेह और
वसा इनका वमनकरें-रोवें वाहँसें-पसीना आजाय-खड़ी होजावँ-श्वासलें- भोजनकरें-ध्वजा आदिक
को दूर फेंकदेवें-नीचेको मुखकरलेवें-जब ऐसे २ विकार जहाँ ज्ञात होजायँ वहाँ किसी स्थानमें भी
वासकरना न चाहिये-जिस राज्यमें यह लक्षण होते हैं अथवा राजाके राज्यमें जो व्यसन होजावे
वह राज्य नष्ट होजाता है इन देवताओं की यात्राके उत्पातों को देखकर राजाके देशको भयबता-
नाचाहिये स्थानों में ब्रह्माका कियाहुआ उपद्रव होताहै पशुओं में शिवजीका कियाहुआ उपद्रव

पालजम् ६ ज्ञेयंसेनापतीनान्तु यत्स्यात्स्कन्दविशाखजम्। लोकानांविष्णुवस्वीन्द्र-वि श्वकर्मसमुद्भवम् ७ विनायकोद्भवंज्ञेयं गणानांयेतुनायकाः। देवप्रेष्यान्नृपप्रेष्यादेवस्त्री भिर्नृपस्त्रियः ८ वासुदेवोद्भवंज्ञेयं ग्रहाणामेवनान्यथा। देवतानांविकारेषु श्रुतिवेत्तापुरो हितः ९ देवतार्चान्तुगत्वावै स्नानमाच्छाद्यभूषयेत्। पूजयेच्चमहाभाग! गन्धमाल्यान्न सम्पदा १० मधुपर्केणविधिवत् उपतिष्ठेदनन्तरम्। पुरोधाजुहुयाद्वह्नौ सप्तरात्रमतन्द्रितः ११ विप्राश्चपूज्यामधुरान्नपानैः सदक्षिणंसप्तदिनंनरेन्द्र!। प्राप्तेऽष्टमेह्निक्षितिगोप्रदानैः सकाञ्चनैःशान्तिमुपैतिपापम् १२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकोनत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २२९॥

(गर्ग उवाच) अनग्निर्दीप्यतेयत्र राष्ट्रंयस्यनिरन्धनः। नदीप्यतेचेन्धनवान् तद्रा ष्ट्रंपीड्यतेनृपैः १ प्रज्वलेदप्सुमांसंवा तथार्द्रंवापिकिञ्चन। प्राकारन्तोरणंद्वारं नृपवेश्मसु रालयम् २ एतानियत्रदीप्यन्ते तत्रराज्ञोभयंभवेत्। विद्युतावाप्रदह्यन्ते तदापिनृपतेर्भ यम् ३ अनैशानितमांसिस्युर्विनापांसुरजांसिच। धूमश्चानग्निजोयत्र तत्रविन्द्यान्महा भयम् ४ तडित्त्वनभ्रेगगने भयंस्याद्दक्षवर्जिते। दिवासतारेगगने तथैवभयमादिशेत् ५ ग्रहनक्षत्रवैकृत्ये ताराविषमदर्शने। पुरवाहनयानेषु चतुष्पान्मृगपक्षिषु ६ आयुधेषुच दीप्तेषु धूमायत्सुतथैवच। निर्गमत्सुचकोशाच्च संग्रामस्तुमुलोभवेत् ७ विनाग्निंविष्फु

होताहै, राजाओं को लोकपालों का उपद्रव होता है, सेनापतियों को स्वामिकार्तिक से भय होताहै और अन्य सब लोगोंको विष्णु, वसु, इन्द्र, और विश्वकर्मा इन सबसे भयहोताहै ६। ७ गण अर्थात् समूहके स्वामियोंको गणेशजीका कियाहुआ भयहोताहै, देवताओंके दूतोंसे राजाके दूतोंको, देवताओंकी स्त्रियोंसे राजाकी स्त्रियोंको भयहोताहै ८ वसुदेवसे घरोंको भयहोताहै, जब देवताओंकी मूर्तियोंमें कुछ विकारहोताहै तब वेदज्ञ, विद्वान्, और राजाके पुरोहितलोग देवताओं को स्नान पूजन करवाकर भूषणपहिरावें गंध पुष्प मधुपर्क आदिसे पूजके उपस्थानकरें और निरालस्यहोकर सातदिवस तक हवनकरें ९। ११ मधुर अन्नपानादिसे ब्राह्मणोंका पूजनभी सात दिनतककरें फिर आठवें दिन गौ पृथ्वी और सुवर्ण इनसबका दानकरें ऐसा करनेसे सबपाप शान्त होजातेहैं १२॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २२९॥

गर्गजी बोले जिसके राज्यमें इंधनविना अपने आप अग्नि जलउठे और कहीं इन्धनसेभी अग्नि नहीं प्रकाशितहोवे वह राज्य अन्यराजाओं से पीड़ितहोताहै १ जलमें गीलीवस्तु जलउठे किला, तोरण, द्वार, राजाके मकान और देवताओंके मन्दिर इन सब स्थानोंमें अग्नि लगजावे तो राजाको भयहोवे, और इनस्थानोंमें जोविद्युत्पातहोय तोभी राजाकोही भयहोताहै २। ३ विना रात्रिके दिन हीमें अन्धकार होजाय विना उठीधूलके आकाशमें रजफैलजाय और विना अग्निके धुवाँ उठे वहाँ बड़ाभारीभयहोताहै ४ जब बादलोंकेविना आकाशमें बिजलीदीखे दिनमेंनक्षत्रदीखें तबभी भयहोता है ५ ग्रह नक्षत्र, तारोंकी विकृतिदीखे, पुर, वाहन, सवारी, पशु, मृग, पक्षी और शस्त्र इन्होंमें अग्नि

लिङ्गाश्च दृश्यन्तेयत्रकुत्रचित् । स्वभावाच्चापिपूर्यन्ते धनूंषिविकृतानिच ८ विकारश्चा युधानांस्यात् तत्रसंग्राममादिशेत् । त्रिरात्रोपोषितश्चात्र पुरोधाःसुसमाहितः ९ समिद्भिःक्षीरवृक्षाणां सर्षपैश्चघृतेनच । होमंकुर्यादग्निमन्त्रैर्ब्राह्मणांश्चैवभोजयेत् १० दद्यात्सुवर्णञ्चतथाद्विजेभ्यो गाश्चैववस्त्राणितथाभुवञ्च । एवंकृतेपापमुपैतिनाशं यदग्निवैकृत्यभवंद्विजेन्द्र ! ११ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३० ॥

(गर्ग उवाच) पुरेषुयेषुदृश्यन्ते पादपादेवचोदिताः । रुदन्तोवाहसन्तोवा स्रवन्तोवा रसान्बहून् १ अरोगावाविनावातं शाखांमुञ्चत्यथद्रुमाः । फलंमूलंतथाकालं दर्शयन्ति त्रिहायनाः २ पूर्ववत्खंदर्शयन्ति फलंपुष्पंतथान्तरे । क्षीरंस्नेहंतथारक्तं मधुतोयंस्रवन्तिच ३ शुष्यन्त्यरोगाःसहसा शुष्कारोहन्तिवापुनः । उत्तिष्ठन्तीहपतिताः पतन्तिचतथोत्थिताः ४ तत्रवक्ष्यामितेब्रह्मन् ! विपाकंफलमेवच । रोदनेव्याधिमभ्येति हसनेदेशविभ्रमम् ५ शाखाप्रपतनंकुर्यात्संग्रामेयोधपातनम् । बालानांमरणंकुर्यात् बालानांबालपुष्पिता ६ स्वराष्ट्रभेदंकुरुते फलपुष्पमथांतरे । क्षयःसर्वत्रगोक्षीरे स्नेहेदुर्भिक्षलक्षणम् ७ वाहनापचयंमद्ये रक्तेसंग्राममादिशेत् । मधुस्रावेभवेद्व्याधिर्जलस्रावेनवर्षति ८ अरोगशोषणंज्ञेयं ब्रह्मन् ! दुर्भिक्षलक्षणम् । शुष्केषुसंप्ररोहस्तु वीर्यमन्नञ्चहीयते ९ उत्थानेपति

लगजाय जब ऐसे लक्षणहों तब बड़ा भारी युद्धहोताहै और जहाँ कहीं अग्निके विना स्फुलिंगनाम पतंगेउठें, आपही धनुष तनजावें और शस्त्रोंमें विकारहोजावे वहाँ अवश्यही युद्धहोताहै जब ऐसे लक्षणहोंय तब राजाका पुरोहित तीन दिनतक उपवास व्रतकरके सावधानीसे दूधवाले वृक्षोंकी समिधोंसे सरसों और घृतसे अग्निमें हवनकरे ब्राह्मणोंको भोजनकरवावे ९ । १० सुवर्णकादान, अनेकप्रकारके वस्त्र और पृथ्वीका दानभी ब्राह्मणोंकोदेवे ऐसा करनेसे अग्निके विकारसे उठेहुए सब पाप शान्तहोजातेहैं ११॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिंशदधिकद्विशततमोध्यायः २३०॥

गर्गजीबोले जिनपुरोंमें देवताओंके प्रेरेहुए वृक्ष रोवतेहों हंसतेहों बहुतसेरसोंको झिरातेहों विना वायुके अपने आप उनकी शाखाटूटतीहों- तीनवर्षके वृक्षोंमें फललगजावें- पूर्व कहेहुएके समान फल, पुष्प, दूध, स्नेह, रक्त, मधु, जलोंको झिरातेहों, रोगके विनाही अचानक सूखजावें, सूखेहुए फूटने लगजावें, पड़ेहुए वृक्ष खड़ेहोजावें, और खड़ेहुए गिरपड़ें यह सबवृक्षों के उपद्रव कहाते हैं अब इनके फलों को सुनो, वृक्षों के रोवनेसे मनुष्यों के रोग होतेहैं, हंसने से देश उजड़होताहै १ । ५ शाखा टूटने से युद्धहोताहै तीनवर्षके बालवृक्षों के फलआने से बालकों का मरण होताहै ६ फल और पुष्प आने से राज्यभंगहोताहै, वृक्षों के दूध गिरने से गौओं के दूधका नाश होताहै--स्नेह अर्थात् तेलके गिरने से दुर्भिक्ष होताहै ७ मदके निकसने से वाहनोंका नाशहोताहै--रक्त गिरने से युद्धहोताहै--मधु झिरने से व्याधिहोती है--जलके झिरने से वर्षा नहीं होती है ८ विना रोग वृक्षों के सूखने से दुर्भिक्ष होताहै--सूखेवृक्षों के फूटने से वीर्य्य और अन्नका नाशहोताहै ९ पड़ेहुएवृक्ष

तानाञ्च भयंभेदकरम्भवेत्। स्थानात्स्थानन्तुगमने देशभङ्गस्तथाभवेत् १० ज्वलतस्व पिचवृक्षेषु रुदत्स्वपिधनक्षयम्। एतत्पूजितवृक्षेषु सर्वराज्ञोविपद्यते ११ पुष्पेफलेवा विकृते राज्ञोमृत्युंतथादिशेत्। अन्येषुचैववृक्षेषु वृक्षोत्पातेष्वतन्द्रितः १२ आच्छादयित्वातंवृक्षं गन्धमाल्यैर्विभूषयेत्। वृक्षोपरितथाछत्रं कुर्यात्पापप्रशान्तये १३ शिवमभ्यर्च्य येद्देवं पशुञ्चास्मैनिवेदयेत्। रुद्रेभ्यइतिवृक्षेषु हुत्वारुद्रंजपेत्ततः १४ मध्वाज्ययुक्तेनतुपायसेन संपूज्यविप्रांश्चभुवञ्चदद्यात्। गीतेननृत्येनतथार्चयेत्तु देवंहरंपापविनाशहेतोः १५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३१॥

(गर्ग उवाच) अतिवृष्टिरनावृष्टिर्दुर्भिक्षादिभयंमतम्। अनृतौतुदिवानन्ता वृष्टिर्ज्ञेयाभयानका १ अनभ्रेवैकृताश्चैव विज्ञेयाराजमृत्यवे। शीतोष्णानांविपर्यासे नृपाणांरिपुजंभयम् २ शोणितंवर्षतेयत्र तत्रशस्त्रभयम्भवेत्। अङ्गारपांसुवर्षेषु नगरन्तद्विनश्यति ३ मज्जास्थिस्नेहमांसानां जनमारभयम्भवेत्। फलंपुष्पन्तथाधान्यं परेणातिभयाय तु ४ पांसुजन्तुफलानाञ्च वर्षतोरोगजंभयम्। छिद्रेवाभ्रप्रवर्षेण सस्यानांभीतिवर्द्धनम् ५ विरजस्केरवौव्यभ्रे यदाच्छायानदृश्यते। दृश्यतेतुप्रतीपावा तत्रदेशभयम्भवेत् ६ निरभ्रेवाथरात्रौवा श्वेतंयाम्योत्तरेणतु। इन्द्रायुधंतथादृष्ट्वा उल्कापातंतथैवच ७ दिग्दाहपरि

खडेहों और खडेहुए वृक्षोंके गिरनेसे भयहोताहै--एकस्थानसे दूसरेस्थानमें प्राप्तहोने से देशका नाश होताहै--१० जब वृक्षजलनेलगें अथवा रोनेलगें तब धनका नाशहोताहै यह संपूर्ण लक्षण राजाके पूजित कियेहुए वृक्षोंके जाननेचाहिये ११ वृक्षोंके पुष्पोंमें वा फलोंमें जबकुछ विकारहोवें तब राजा की मृत्युहोती है और अन्यवृक्षोंमें जो कुछ उत्पात होजावें तब उनकी शान्ति करनी चाहिये, जिस वृक्षमें कुछ उत्पात होजाय उसको वस्त्रसे आच्छादितकर गन्धपुष्पादिसे पूजन और विभूषितकरके उसके ऊपर छत्रधारण करे फिर शिवजीका पूजनकर पशुको निवेदनकरके रुद्रेभ्यः इत्यादिक मन्त्रों से वृक्षोंके समीपही हवनकरे १२।१४ और घृत-खीर और खांड इत्यादि भोजनों से ब्राह्मणों को तृप्तकरे पृथ्वीका दानकरे, नृत्यगीतादि मंगलाचरणसे महादेवजीका पूजनकरे--ऐसाकरनेसे वृक्षोंकी शान्ति होती है १५॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३१॥

गर्गजीबोले--अतिवृष्टि--अनावृष्टि--इनदोनों वर्षा के उपद्रवोंसे दुर्भिक्षका भयहोताहै--ऋतुके विना अधिकवर्षा होने से भयहोताहै--बादलों के विना वर्षाहोने से मृत्युहोती है--शीत और गरमीका विपरीत वर्त्तावहोने से राजाको शत्रुओंका भयहोताहै १।२ जहां रुधिर वर्षताहै वहां शस्त्रोंका भयहोता है, जहां अंगार और धूलकी वर्षा होती है वह नगर नष्टहोताहै ३ मज्जा अस्थि, स्नेह, मांस, इनकी वर्षाहोने में जनोंकी मृत्युका भयहोता है--फल, पुष्प और धान्यकी वर्षाहोने से शत्रुका भयहोता है धूल, फल, और जीवोंकी वर्षाहोने में रोगका भयहोताहै--छिद्रसहित अभ्रकी वर्षाहोने में खेतियोंको भयहोताहै ४।५ धूल और बादलरहित आकाशमें भी जो सूर्य्य की धूप अच्छेप्रकार से नहीं देखेतो देशमें भयहोताहै ६ बादलों विना--रात्रिमें दक्षिण तथा उत्तरकीओर इन्द्रधनुषदीखे--उल्कापातहोवे

त्रेषोचगन्धर्वनगरन्तथा। परचक्रभयंब्रूयाद्देशोपद्रवमेवच ८ सूर्य्येन्दुपर्जन्यसमीरणानां याग स्तुकार्यो विधिवद्विजेन्द्र! धनानिगोःकाञ्चनदक्षिणाच देयाद्विजानामघनाशहेतोः९॥
इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्वात्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३२॥

(गर्ग उवाच) नगरादपसर्पन्ते समीपमुपयान्तिच। नद्योहृदप्रस्रवाणि विरसाश्चभ वन्तिच १ विवर्णकलुषन्तप्तं फेनवज्जन्तुसंकुलम्। स्नेहंक्षीरंसुरांरक्तं वहन्तेवाकुलोद काः २ षण्मासाभ्यन्तरेतत्र परचक्रभयम्भवेत्। जलाशयानदन्तेवा प्रज्वलन्तिकथञ्च न ३ विमुञ्चन्तितथाब्रह्मन्! ज्वालाधूमरजांसिच। अथान्तेवाजलोत्पत्तिः सुसत्वावाज लाशयाः ४ सङ्गीतशब्दाः श्रूयन्तेजनमारभयम्भवेत्। दिव्यमम्भोमयं सर्पिर्मधुतैलाव सेचनम् ५ जप्तव्यावारुणामन्त्रास्तैश्चहोमोजलेभवेत् ६ मध्वाज्ययुक्तंपरमान्नमत्र दे यंद्विजानांद्विजभोजनार्थम्। गावश्चदेयाःसितवस्त्रयुक्तास्तथोदकुम्भाःसलिलाघशा न्त्यै ७॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रयस्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३३॥

(गर्ग उवाच) अकालप्रसवानार्यः कालातीतप्रजास्तथा। विकृतप्रसवाश्चैव युग्म संप्रसवास्तथा १ अमानुषाह्यतुण्डाश्च सञ्जातव्यसनास्तथा। हीनाङ्गाअधिकाङ्गाश्च जायन्तेयदिवास्त्रियः २ पशवःपक्षिणश्चैव तथैवचसरीसृपाः। विनाशन्तस्यदेशस्य कु

दिग्दाहहोवे-और गन्धर्वोंका नगरदीखे तो अन्यराजासेभय और देशमें उपद्रव होवे ७। ८ इन उप- द्रवों की शान्तिके निमित्त सूर्य्य, चन्द्रमा, वायु और मेघ इनसब का विधिपूर्वक यज्ञ करना चाहिये उसमें धन, गौ और सुवर्णकी दक्षिणा देकर ब्राह्मणोंका पूजनकरे--ऐसाकरनेसे पापशान्तहोते हैं ९॥
इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्वात्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३२॥

गर्गजी बोले-जो नदी नगरके समीप आजावें और तड़ाग, सरोवर आदिकों का जल अस्वादु होजावे और निकृष्ट कालेवर्णका उष्णझागोंसे युक्त जीव सहित स्नेह और दूध समेत मदिरा और रक्तके समान नदियोंका जलवहने लगजावे तो उस राज्यमें छः मासके भीतर दूसरे राजाका राज्य होताहै, जिन जलाशयोंमें शब्दहोवे अग्निसी लगजाय धुआं अग्नि और धूल यह सबवर्षतेसे विदित होवेंवा अचानक जलकी उत्पत्ति होजावे उसजलमें बहुतसे जीव पड़जावें सब जलाशयोंमें संगीत रागके से शब्द होजावें तो मनुष्योंको महाभयकारी महामारीका भय होताहै इसकी शान्तिके नि- मित्त जलाशयोंमें गंगाजल, घृत, मधु, और तेल इन सबको गेरकर वरुणके मंत्रोंका जप करके जलमेंही हवनकरे १।६ और मधु घृतसे युक्त बहुत उत्तम भोजनोंसे ब्राह्मणोंको तृप्तकरे और उन्हीं ब्राह्मणोंको श्वेत वस्त्रोंसे युक्त करीहुई गौओंका दानकरे और जलोंके पापों की शान्तिके अर्थ जलके कुंभोंकाभी दानकरे ७॥
इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रयस्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३३॥

गर्गजी बोले विना कालमें स्त्रियोंके सन्तानहोवे- दो बालक उत्पन्नहोवें- स्त्रियोंके उदरसे म- नुष्य योनिसे भिन्न जीव उत्पन्नहोजावें मुखरहितहीन अंगवाले अधिक अंगवाले बालक उत्पन्नहोवें

लस्यचविनिर्दिशेत् ३ विवासयेत्तान्नृपतिःस्वराष्ट्रात् स्त्रियश्चपूज्यांश्चततोद्विजेन्द्राः। कस्येच्छकैर्ब्राह्मणतर्पणञ्च लोकेततःशान्तिमुपैतिपापम् ४ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुस्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३४ ॥

(गर्गउवाच) यान्तियानान्ययुक्तानि युक्तान्यपिनयान्तिच। चोद्यमानानितत्रस्यात् महद्भयमुपस्थितम् १ वाह्यमानानवाह्यन्ते वाह्यन्तेनात्यनाहताः। अचलाश्चचलन्त्येव नचलन्तिचलानिच २ आकाशेतूर्य्यनादश्च गीतगन्धर्वनिस्वनाः। काष्ठदर्वीकुठारादि विकारंकुरुतेयदि ३ गावोलांगूलसङ्घैश्च स्त्रियःस्त्रीचविघातयेत्। उपस्करादिविकृतौ घोरंशस्त्रभयम्भवेत् ४ वायोस्तुपूजांद्विजसक्तुभिश्चकृत्वानियुक्तांश्चजपेच्चमन्त्रान्। दद्यात्प्रभूतंपरमान्नमत्र सदक्षिणन्तेनशमोऽस्यभूयात् ५ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपंचत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३५ ॥

(गर्ग उवाच) प्रविशन्तियदाग्राममारण्यामृगपक्षिणः। अरण्यंयान्तिवाग्राम्याः स्थलंयान्तिजलोद्भवाः १ स्थलजाश्चजलंयान्ति घोरंवाशन्तिनिर्भयाः। राजद्वारेपुरद्वारे शिवाचाप्यशिवप्रदा २ दिवारात्रिचरावापि रात्रावपिदिवाचराः। ग्राम्यास्त्यजन्तिग्रामञ्च शून्यतांतस्यनिर्दिशेत् ३ दीप्तावाशन्तिसन्ध्यासु मण्डलानिचकुर्वते। वाशन्तिविस्व

वा पशु, पक्षी, बिच्छू, सर्पआदि जीव उत्पन्नहोवें तो उस देशका और उसकुलका नाशहोताहै १ । ३ जिन स्त्रियोंके ऐसे और के और जीव उत्पन्नहोवें उनस्त्रियों को राजा अपने देशसे बाहर निकाल देवे और ब्राह्मणों की पूजाकरके उनकी इच्छापूर्वक भोजनसे तृप्तिकरे दानदेवे ऐसे करनेसे यह पाप शान्तहोजाताहै ४॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुस्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३४॥

गर्गजी बोले बहुत उत्तम योग्य सवारी प्रेरणा करनेसेभी न चले- और अयोग्य निकृष्ट सवारी जहाँ अच्छे प्रकारसे चले वहाँ बड़ाभारी भयहोताहै १ जो अच्छे चलनेके योग्य वाहनहोवें उनसे नहीं चलाजाय-अधम वाहन अच्छे प्रकारसे चलें-अचल वस्तु चलउठे-चलवस्तु नहीं चले-आकाश में भेरी आदिका शब्दसुने गन्धर्वोंके गीतसुने-काष्ठकी करछी कुल्हाड़े आदिमें विकार होजावे-गौपूंछों को इकट्ठी करके परस्पर लड़ें और स्त्रियोंको मारदेवें यह सब लक्षण जहाँ होते हैं वहाँ शस्त्रोंका भय होताहै २।४ जहाँ ऐसादोष वहाँ ब्राह्मणों से वायुका पूजनकरवावे वायुके मंत्रोंका जप और दक्षिणा सहित बहुत से अन्नका दानकरे ५ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३५ ॥

गर्गजीबोले-वनमें रहनेवाले मृग शृगालादिक पशु ग्राममें घुसजायँ ग्रामके कुत्तेआदि जीव वनमें चलेजायँ-जलके जीव थलमें और थलके जीव जलमें चलेजायँ और निर्भय होकर शृगाल राजद्वार के आगे शब्दसे पुकारें यह सब लक्षण अशुभ हैं १।२ दिनमें विचरनेवाले जीव रात्रिमें और रात्रिके विचरनेवाले दिनमें विचरें ग्राममें रहनेवाले जीव ग्रामको छोड़देवें ऐसे लक्षण होनेवाला ग्राम उजड़कर शून्य होजाताहै ३ और ग्राममें रहनेवाले कुत्तेआदिक संध्यासमयमें प्रकाशमान होकर फिरें

रंयत्र तदाप्येतत्फलंलभेत् ४ प्रदोषेकुक्कुटोवाशेद्धेमन्तेवापिकोकिलः। अर्कोदयेत्वभिमुखी शिवारौतिभयंवदेत् ५ गृहंकपोतःप्रविशेत् क्रव्यादोमूर्ध्निलीयते। मधुवामक्षिकाःकुर्युर्मृत्युर्गृहपतेर्भवेत् ६ प्राकारद्वारगेहेषु तोरणापणवीथिषु। केतुच्छत्रायुधाद्येषु क्रव्यादं प्रपतेद्यदि ७ जायन्तेवाथवल्मीका मधुवास्यन्दतेयदि। सदेशोनाशमायाति राजाचम्रियतेतथा ८ मूषकान्शलभान्दृष्ट्वा प्रभूतंक्षुद्भयम्भवेत्। काष्ठोल्मुकास्थिशृङ्गाढ्याः श्वानो मर्कटवेदनाः ९ दुर्भिक्षवेदनाज्ञेया काकाधान्यमुखायदि। जनानभिभवन्तीह निर्भयारणावेदिनः १० काकोमैथुनसक्तश्च श्वेतस्तुयदिदृश्यते। राजावाम्रियतेतत्रसचदेशोविनश्यति ११ उलूकोदृश्यतेयत्रनृपद्वारेतथागृहे। ज्ञेयोगृहपतेर्मृत्युर्धननाशस्तथैवच १२ मृगपक्षिविकारेषु कुर्याद्धोमंसदक्षिणम्। देवाःकपोताइतिवा जप्तव्याःपञ्चभिर्द्विजैः १३ गावश्चदेयाविधिवद्द्विजानां सकाञ्चनावस्त्रयुगोत्तरीयाः। एवंकृतेशान्तिमुपैतिपापं मृगैर्द्विजैर्वाविनिवेदितंयत् १४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेषट्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३६॥

(गर्ग उवाच) प्रासादतोरणाट्टालद्वारप्राकारवेश्मनाम्। निर्निमित्तन्तुपतनं दृढानां राजमृत्यवे १ रजसावाथधूमेन दिशोयत्रसमाकुलाः। आदित्यचन्द्रताराश्च विवर्णाभ

मंडलाकार फिरें-बुरे शब्दसे रोवें-ऐसा होनेपर भी ग्राम शून्य होजाताहै ४ प्रदोष समयमें मुरगेबोलें-हेमन्त समयमें कोकिला वासकरें-सूर्य्योदय के समय सूर्य्यके सन्मुख होकर शृगाली पुकारें ५ कपोत घरमें घुसजायँ-मस्तकपर काक बैठजाय-और जिसके घरमें मुहारकी मक्खी अपना छत्ताबनालें उस घरवालेकी मृत्युहोतीहै ६ जो कोटका द्वार, घरका द्वार, तोरण, दुकान, बाजार, ध्वजा, शस्त्र, इन सब के ऊपर चील्हगिरे-वा इन स्थानों में सर्पकी-बामी होजावे अथवा मक्खी शहदका छत्ता लगालेवें वह देश नष्ट होताहै और राजा मरजाताहै ७।८ जहाँ मूसोंको और टीड़ियोंको देखकर क्षुधा का बहुत सा भय होजाय-कुत्ते काष्ठ जलतीहुई लकड़ी-अस्थि और सींग इन्होंको ग्रहण करलेवें-बानरों में रोग होजावे-काक धान्योंको चुराने लगजावें यह सब जब लक्षण होते हैं तब दुर्भिक्ष काल का बड़ा भय होताहै और मनुष्यों को युद्धकी पीड़ाहोती है-जब राजाको मैथुन करताहुआ काक दीखजावे अथवा श्वेत काक दीखजावे तब वह राजामरताहै अथवा देश नष्ट होताहै ९।११ जिसे राजाके द्वारके आगे अथवा घरके भीतर उल्लू दीखे उस राजाकी मृत्युहोती है और धनका नाशहोताहै १२ इस प्रकारसे इन मृगपक्षियों के विकार होने में होमकरवावे ब्राह्मणों को दक्षिणादेवे-और देवाकपोता इस मंत्रका पांच ब्राह्मणों से जपकरवावे १३ पीछे विधिपूर्वक सुवर्ण वस्त्रादिसे युक्तहुई गौओंका दानकरे ऐसा करने से मृगआदि पशु और पक्षियों के नष्ट शकुन होनेकी शान्ति होजाती है १४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३६॥

गर्गजी बोले-बड़े दृढ़ राजाके महल, तोरण, अटारी, द्वार, कोट और घर यह सब विना कारण गिर पड़ें तो राजाको मृत्युका भयहोताहै १ धूल और धूमसे युक्त दिशा विदितहों और सूर्य्य-चन्द्रमा और तारे

यत्रद्धये २ राक्षसायत्रदृश्यन्ते ब्राह्मणाश्चविधर्मिणः । ऋतवश्चविपर्यस्ता अपूज्यःपू
ज्यतेजनैः ३ नक्षत्राणिवियोगीनि तन्महद्भयलक्षणम् । केतूदयोपरागौचछिद्रंवांशशि
सूर्य्ययोः ४ ग्रहर्क्षविकृतिर्यत्र तत्रापिभयमादिशेत् । स्त्रियश्चकलहायन्ते बालानिघ्न
न्तिबालकान् ५ क्रियाणामुचितानाञ्च विच्छित्तिर्यत्रजायते । हूयमानस्तुयत्राग्निर्दी
प्यतेनचशान्तिषु ६ पिपीलिकाश्चक्रव्यादा यान्तिचोत्तरतस्तथा । पूर्णकुम्भाःस्रवन्ते
च हविर्वाविप्रलुप्यते ७ मङ्गल्याश्चगिरोयत्र नश्रूयन्तेसमन्ततः । क्षवथुर्बाधतेवाथ
प्रहसन्तिस्रवन्तिच ८ नचदेवेषुवर्तन्ते यथावद्ब्राह्मणेषुच । मन्दघोषाणिवाद्यानि
वाद्यन्तेविस्वराणिच ९ गुरुमित्रद्विषोयत्र शत्रुपूजारतानराः । ब्राह्मणान् सुहृदो
मान्यान् जनोयत्रावमन्यते १० शान्तिमङ्गलहोमेषु नास्तिक्यंयत्रजायते । राजावा
म्रियतेतत्र सदेशोवाविनश्यति ११ राज्ञोविनाशेसम्प्राप्ते निमित्तानिनिबोधमे । ब्राह्म
णान्प्रथमंद्वेष्टि ब्राह्मणैश्चविरुध्यते १२ ब्राह्मणस्वानिचादत्ते ब्राह्मणांश्चजिघांसति ।
नचस्मरतिकृत्येषु याचितश्चप्रकुप्यति १३ रमतेनिन्दयातेषां प्रशंसांनाभिमन्दति ।
अपूर्वन्तुकरंलोभात्तथापातयतेजने १४ एतेष्वभ्यर्चयेच्छक्रं सपत्नीकंद्विजोत्तम ! । भो
ज्यानिचैवकार्याणि सुराणांबलयस्तथा । सन्तोविप्राश्चपूज्याःस्युस्तेभ्योदानञ्चदीयता
म् १५ गावश्चदेयाद्विजपुङ्गवेभ्यो भुवस्तथाकाञ्चनमम्बराणि । होमश्चकार्योऽमरपूजन
ञ्च एवंकृतेपापमुपैतिशान्तिम् १६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्तत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३७॥

इन सब का विवर्ण होजावे तौभी राजाको भयहोताहै २ जहाँ राक्षसदीखें-ब्राह्मण धर्मसे हीन हो-
जावें-ऋतुओंका विपरीत फल होजावे-अपूज्यलोगोंकी पूजाहोनेलगे-नक्षत्रोंका वियोग होजावे-पूछ-
ल तारादीखे-चन्द्रमा और सूर्य्यके मंडलमें छिद्रदीखें-ग्रह नक्षत्रोंका विकारहोवे-यह सबभी भयके
लक्षण हैं-जहाँ स्त्रियोंकी कलहहोवे-बालकों को बालक मारडालें-सब कर्मोंका नाशहोजावे-जब शान्ति
के कर्मोंमें अग्निका हवन कियाजावे-उस समय अग्नि प्रज्वलित न होवे-कीड़ी मांसको ग्रहणकरके
उत्तरकीओर गमन करनेलगे-जलके भरेहुए पूर्णकलश भिरने लगजावें-साकल्यका लोपहोजावे
मंगलकी वाणी नहीं सुने-छींककी बाधाहोवे-ब्राह्मणों के शब्द मंदहोजावें देवताओं के मन्दिरों में
मन्द २ बाजेबजें-गुरुके मित्रोंके और अपने शत्रुओंकी पूजाहोतीहो-ब्राह्मण और मित्रलोगोंका मान
नहो और जहाँ शान्ति,मंगल और हवन इन सब कर्मोंमें नास्तिकपनाहोवे-जहाँ ऐसे २ लक्षणहोते
हैं वह देश नष्टहोताहै अथवा राजाकी मृत्युहोती है ३।११ इन प्रकारों से राजाके नाशके लक्षणहोते
हैं-अब अन्य लक्षणोंको भी कहताहूं-राजा ब्राह्मणोंमें दोषनिकाले-ब्राह्मणों से विरोधकरे-ब्राह्मणों के
द्रव्यको छीनले-ब्राह्मणों को मारनेकी इच्छारक्खे-किसी कृत्यमें ब्राह्मणों को नहीं स्मरणकरे जब
ब्राह्मणमांगे तब क्रोधकरे- ब्राह्मणोंकी निन्दाकरनेमें प्रीतिरक्खे- प्रशंसा नहीं करे बहुत लोभ करके
ब्राह्मणोंको दुःख देवे इनसब उपद्रवों की शान्ति के निमित्त इन्द्राणी समेत इन्द्रकापूजनकरे ब्रह्म-
भोज्य करवाकर देवताओंकोभेंट बलिदानदेवे- सन्तब्राह्मणोंको पूजनकरके दानदेवे- १२।१५

(मनुरुवाच) ग्रहयज्ञःकथंकार्यो लक्षहोमःकथंनृपैः। कोटिहोमोऽपिवादेव! सर्वपाप प्रणाशनः १ क्रियतेविधिनायेन यद्दृष्टंशान्तिचिन्तकैः। तत्सर्वंविस्तराद्देव! कथयस्वज नार्दन २ (मत्स्यउवाच) इदानींकथयिष्यामि प्रसङ्गादेवतेनृप। राज्ञाधर्मप्रसक्तेन प्रजा नाञ्चहितेप्सुना ३ ग्रहयज्ञःसदाकार्योलक्षहोमसमन्वितः। नदीनांसङ्गमेचैवसुराणामग्रत स्तथा ४ सुसमेभूमिभागेच देवज्ञाधिष्ठितोनृपः। गुरुणाचैवऋत्विग्भिः सार्द्धंभूमिपरी क्षयेत् ५ खनेत्कुण्डञ्चतत्रैव सुसमंहस्तमात्रकम्। द्विगुणंलक्षहोमेतु कोटिहोमेचतुर्गुण म् ६ पुण्यासुऋत्विजःप्रोक्ता अष्टौवैवेदपारगाः। कन्दमूलफलाहारा दधिक्षीराशिनो ऽपिवा ७ वेद्यांनिधापयेच्चैव रत्नानिविविधानिच। सिकतापरिवेषाश्च ततोऽग्निञ्चसमिन्ध येत् ८ गायत्र्यादशसाहस्रं मानस्तोकेनषड्गुणः। त्रिंशद्ग्रहादिमन्त्रैश्च चत्वारोविष्णु दैवतैः ९ कूष्माण्डैर्जुहुयात्पञ्च कुसुमाद्यैस्तुषोडश। होतव्यादशसाहस्रं वादरैर्जातवेद सि १० श्रियोमन्त्रेणहोतव्याः सहस्राणिचतुर्दश। शेषाःपञ्चसहस्रास्तु होतव्यास्त्वि न्द्रदैवतैः ११ हुत्वाशतसहस्रन्तुपुण्यस्नानंसमाचरेत्। कुम्भैःषोडशसंख्यैश्च सहिरण्यैः सुमङ्गलैः १२ स्नापयेद्यजमानन्तु ततःशान्तिर्भविष्यति। एवंकृतेतुयत्किञ्चिद् ग्रहपीडा

उत्तम ब्राह्मणोंके अर्थ गौका दानकरे पृथ्वी देवे- सुवर्ण वस्त्रादि दान करे- होमकरे देवताओंका पूजन करे- ऐसे करने से सबपाप शान्तहोतेहैं- १६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३७॥

मनुजीबोले- ग्रहयज्ञ कैसे करनाचाहिये- लक्षहोम कैसेकरे- और सबपापोंका नाशकरनेवाला कोटि होमकैसे करनाचाहिये १ इस संपूर्ण विधिको आप विस्तार पूर्वक वर्णनकीजिये २ मत्स्य- जीबोले- हे राजन् अबमैं तेरे संपूर्ण प्रश्नको कहताहूं तूचित्तसे सुन- प्रजाके हितकी इच्छाकरने वाले राजाको ग्रह यज्ञ और लक्षहोम सदैव करनाचाहिये- नदियोंके संगमपर देवताओंकी मूर्त्तिके आगे ग्रहयज्ञ करनाचाहिये- प्रथम राजा गुरु- ऋत्विक् आदिकों समेत होकर उत्तम समान भूमि कीपरीक्षाकरे उस समान भूमिमें एक हाथ नीचा कुंडखोदे- लक्ष होममें इस्से द्विगुण अर्थात् दो हाथका कुंडबनावे और कोटि होममें इस्से चौगुना अर्थात् चारहाथका कुंडबनवावे ३।६ वेदपाठी आठ ऋत्विक् बनाने चाहिये वे यज्ञकरानेवाले ऋत्विक् कन्द मूल और फलोंका आहारकरें अथवा दही दूधका आहारकरें- वेदीके ऊपर अनेकप्रकारके रत्न स्थापितकरें- रेतकी मेखला और मंडलबनावें फिर अग्निको प्रकाशितकरें ७। ८ गायत्री मंत्रका दशहजार होमकरें- मानस्तोके इस मन्त्रकाछः हजार होमकरें ग्रहोंके मंत्रोंका तीसहजारहोमकरें विष्णुके मंत्रका चारहजार होमकरें- कूष्माण्ड संज्ञक ऋचाओंसे पांचहजार होमकरें- कुसुमादि मंत्रोंसे सोलहहजार होमकरें वादर संज्ञक मंत्रोंसे दशहजार- लक्ष्मीके मन्त्रसे चौदहहजार आहुतिकरनीचाहिये और इन्द्रके मंत्रकीपांच हजार आहुति करें- इसप्रकारसे १०००००लक्षहोमकरके मंगलाचरणके सुवर्णसे युक्त किये सोलहकलशोंकरकेस्नान करें इस प्रकारसे जबयजमान स्नानकरताहै तब शान्ति होती है ऐसेप्रकार ब्राह्मणोंको दक्षिणादेनेसे

समुद्भवम् १३ तत्सर्वंनाशमायाति दत्त्वावैदक्षिणांनृप !। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्रधानाद
क्षिणास्मृता १४ हस्त्यश्वरथयानानि भूमिवस्त्रयुगानिच। अनडुद्गोशतंदद्यादृत्विजांचै
वदक्षिणाम् १५ यथाविभवसारन्तु वित्तशाठ्यंनकारयेत्। मासेपूर्णेसमाप्तस्तु लक्षहो
मोनराधिप! १६ लक्षहोमस्यराजेन्द्र! विधानंपरिकीर्तितम्। इदानींकोटिहोमस्य शृणु
त्वंकथयाम्यहम् १७ गङ्गातटेऽथयमुनासरस्वत्योर्नरेश्वर!। नर्मदादेविकायास्तु तटे
होमोविधीयते १८ तत्रापिऋत्विजःकार्या रविनन्दन! षोडश। सर्वहोमेतुराजर्षे! दद्या
द्द्विप्रेऽथवाधनम् १९ ऋत्विगाचार्यसहितो दीक्षांसाम्वत्सरींस्थि तः। चैत्रेमासेतुसम्प्रा
प्ते कार्तिकेवाविशेषतः २० आरम्भःकरणीयोवा वत्सरंवत्सरंनृप!। यजमानःपयोभक्षी
फलाशीचतथानघ! २१ यवादिव्रीहयोमाषास्तिलाश्चसहसर्षपैः। पालाशाःसमिधः
शस्ता वसोर्धारातथोपरि २२ मासेऽथप्रथमेदद्यात् ऋत्विग्भ्यःक्षीरभोजनम्। द्वितीये
कृसरांदद्याद्धर्मकामार्थसाधनीम् २३ तृतीयेमासिसंयावो देयोवैरविनन्दन!। चतुर्थेमो
दकादेया विप्राणांप्रीतिमावहन् २४ पञ्चमेदधिभक्तन्तु षष्ठेवैसक्तुभोजनम्। पूपाश्चसप्त
मेदेया ह्यष्टमेघृतपूपकाः २५ षष्टयोदनञ्चनवमे दशमेयवषष्टिका। एकादशेसमाषन्तु भो
जनंरविनन्दन! २६ द्वादशेत्वथसम्प्राप्ते मासेरविकुलोद्वह!। षड्रसैःसहभक्ष्यैश्च भोज
नंसार्वकामिकम् २७ देयाद्द्विजानांराजेन्द्र! मासिमासिचदक्षिणाः। अहतवासाःसम्वीतो

ग्रहपीड़ासे उत्पन्नहुए सब उपद्रव शान्तहोजाते हैं यज्ञमें यत्नकरके उत्तम और प्रधान दक्षिणा कही है १।१४ हस्ती- अश्व- रथ- सवारी-भूमि- वस्त्रोंके जोड़े- बैल और सौगौ यह दक्षिणा ऋत्विजोंको देनीचाहिये १५ वित्तके अनुसार शक्तिपूर्वक दक्षिणा देनी योग्यहै कभी वित्तकीशठतासे नहीं देनी चाहिये- हे राजेन्द्र एकही महीनेमें लक्ष होमकी समाप्ति करनीचाहिये- अबकोटि होमकी विधिको सुनो १६।१७ गंगातट- यमुनातट- सरस्वतीके तट अथवा नर्मदा नदीके तटपर यह कोटि होम करना चाहिये १८ इस कोटिहोममें १६ ऋत्विजवनानेचाहिये हे राजन् संपूर्ण होमोंमें ब्राह्मणोंके अर्थ धन देनायोग्यहै १९ ऋत्विज और आचार्यको साथलेकर संवत्सरकी दीक्षाका विधानकरके चैत्रके महीनेमें कोटिहोमकरे अथवा वर्ष२ दिनमें सदैव यह होमकरे यजमान दूधका या फलोंका आहार करे २०।२१ और जौ-चावल-तिल और सरसों इनका साकल्यबनावे- ढाककी समिधलेवे वसोर्धारा अर्थात् घृतकी धारा छुटवावे प्रथममहीनेमें ब्राह्मणोंको दूधका भोजन करवावे- दूसरेमहीने में धर्म काम और अर्थकी सिद्धकरनेवाली खिचड़ी काभोजनकरवावे २२।२३ तीसरेमहीनेमें मोहनभोग- चौथेमहीनेमें ब्राह्मणोंके प्रीतिकरने वाले मोदक अर्थात् लड्डुओं काभोजनकरवावे २४ पांचवें महीनेमें दहीचावल- छठेमहीनेमें सत्तू- सातवें महीनेमें मालपुए- आठवें महीनेमें घेवर-नवें महीनेमें सांठीकेचावल- दशवें महीनेमें जवोंके पदार्थकाभोजन- ग्यारहवेंमें उड़दोंका भोजन इस क्रमसे ऋत्विज ब्राह्मणोंको भोजनकरवानाचाहिये २५।२६ हे राजा बारहवेंमहीनेमें छओंरसवाले संपूर्ण भोजन करवानेचाहिये और महीने२ प्रति ब्राह्मणोंको दक्षिणादेवे तव ब्राह्मण पवित्रहोशुद्ध

दिनार्द्धेहोमयेच्छुचिः २८ तस्मात्सदोत्थितैर्भाव्यं यजमानैःसहद्विजैः । इन्द्राद्यादिसु राणाञ्च प्रीणनंसर्वकामिकम् २९ कृत्वासुराणांराजेन्द्र! पशुघातसमन्वितम् । सर्वे दानानिदेवाना मग्निष्टोमञ्चकारयेत् ३० एवंकृत्वाविधानेन पूर्णाहुतिःशतेशते । सहस्रे द्विगुणादेया यावच्छतसहस्रकम् ३१ पुरोडाशस्ततःसाध्यो देवतार्थेचऋत्विजैः । यु क्तोवसनूमानवैश्च पुनःप्राशार्चनान्द्विजान् ३२ प्रीणयित्वासुरान्सर्वान् पितृनेवततः क्रमात् । कृत्वाशास्त्रविधानेन पिण्डानाञ्चसमर्पणम् ३३ समाप्तौतस्यहोमस्यविप्राणामथद क्षिणाम् । समाञ्चैवतुलांकृत्वा बद्ध्वाशिक्यद्वयंपुनः ३४ आत्मानंतोलयेत्तत्रपत्नींचैवद्वि तीयकाम् । सुवर्णेनतथात्मानं रजतेनतथाप्रियाम् ३५ तोलयित्वाददेद्राजावित्तशाठ्यवि वर्जितः । ददेच्छतसहस्रन्तुरूप्यस्यकनकस्यच ३६ सर्वस्वंवाददेत्तत्रराजसूयफलंलभेत् । एवंकृत्वाविधानेन विप्रांस्तांश्चविसर्जयेत् ३७ प्रीयतांपुण्डरीकाक्षः सर्वयज्ञेश्वरोहरिः । तस्मिंस्तुष्टेजगत्तुष्टं प्रीणितेप्रीणितंभवेत् ३८ एवंसर्वोपघातेतु देवमानुषकारिते । एवं शान्तिस्तवाख्याता यांकृत्वासुकृतीभवेत् ३९ नशोचेज्जन्ममरणे कृताकृतविचारणे । सर्वतीर्थेषुयत्स्नानं सर्वयज्ञेषुयत्फलम् ४० तत्फलंसमवाप्नोति कृत्वायज्ञत्रयंनृप! ४१

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३८॥

(मनुरुवाच) इदानींसर्वधर्मज्ञ! सर्वशास्त्रविशारद! । यात्राकालविधानंमे कथयस्वम

वस्त्रधारण करके मध्याह्नकहोमकरें और यजमानको सदैव ब्राह्मणोंके पास रहनाचाहिये ऐसाकरने से इन्द्रादिक सब देवता प्रसन्नहोतेहैं और देवताओं की प्रसन्नताके निमित्त पशुकीभी हिंसाकरके भेटदेनीचाहिये यह संपूर्ण दानकरके देवताओं के प्रसन्न करनेको अग्निष्टोम यज्ञकोभीकरे ऐसे वि- धानसे सौ२ आहुति पीछे अथवा हजार२ आहुति पीछे घृतकी धाराछुड़वावे- ऋत्विजोंको देवताओं के निमित्त पुरोडाशसंज्ञक देवताओंका भाग रखनाचाहिये फिर यजमान ब्राह्मणोंका पूजनकरके देवता और पितरों को प्रसन्नकरे और शास्त्रके विधानसे पिंडदानदेवे २७।३३ राजाको इस होम- की समाप्तिहोनेमें उत्तम दक्षिणा देनीयोग्यहै तुलानाम तराजूके एक पलड़ेमें बैठकर अपनी बराबर सुवर्णतोले और रानीके बराबर चांदीतोले फिर उस सुवर्ण और चांदीको ब्राह्मणोंके निमित्त बांट देवे- राजाको वित्तकी कृपणता नहीं करनीचाहिये अर्थात् यहतो क्या सर्वस्वदानभी देवे ऐसाकरने से राजसूय यज्ञके समान फलहोताहै यह सब विधान करके उन ऋत्विक्ब्राह्मणोंका विसर्जनकर देवे ३४।३७ संकल्पमें यही कहनायोग्यहै कि विष्णुभगवान् प्रसन्नहोंय भगवान्के प्रसन्न होनेमें सं- पूर्ण जगत् प्रसन्न होजाताहै ३८ इस प्रकारके करनेसे सब उपद्रवोंकी शान्तिहोजाती है और करने वाला पुरुष सुकृती होजाताहै फिर जन्म मरण काभी शोचनहीं रहता कुछ कर्म बाकी नहीं रहताहै ऐसे करने वाले पुरुषको संपूर्णतीर्थोंके स्नानकरनेका पुण्य प्राप्तहोजाताहै ३९।४१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टत्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३८॥

मनुजीने पूछा हे सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्र विशारद अबआप राजाओंके यात्राकालके विधानको वर्णन

ह्रीक्षिताम् १ (मत्स्यउवाच) यदामन्येत नृपतिराक्रन्देनवलीयसा। पार्ष्णिग्राहाभिभू तोऽयं तदायात्रांप्रयोजयेत् २ दुष्टायोधाभृताभृत्याःसाम्प्रतञ्चवलंमम। मूलरक्षासमर्थोऽस्मि तदायात्रांप्रयोजयेत् ३ अशुद्धपार्ष्णिर्नृपतिर्नतुयात्रांप्रयोजयेत्। पार्ष्णिग्राहाधिकंसैन्यं मूलेनिक्षिप्यचव्रजेत् ४ चैत्र्यांवामार्गशीर्ष्यांवा यात्रांयायान्नराधिपः। चैत्र्यांपश्येन्ननैदाघं हन्तिपुष्टिञ्चशारदीम् ५ एतदेवविपर्यस्तं मार्गशीर्ष्यांन्नराधिपः। शत्रोर्वाव्यसनेयायात् कालएवसुदुर्लभः ६ दिव्यान्तरिक्षक्षितिजैरुत्पातैःपीड़ितंपरम्। षडक्षपीड़ासन्तप्तं पीड़ितञ्चतथाग्रहैः ७ ज्वलन्तीचतथैवोल्का दिशंयाञ्चप्रपद्यते। भूकम्पोल्कादिशंयाति याञ्चकेतुःप्रसूयते ८ निर्घातश्चपतेद्यत्र तांयायाद्वसुधाधिपः। सबलव्यसनोपेतं तथादुर्भिक्षपीड़ितम् ९ सम्भूतान्तरकोपञ्च क्षिप्रंप्रायादरिंनृपः। यूकामाक्षीकबहुलं वहुपङ्कन्तथाविलम् १० नास्तिकंभिन्नमर्यादं तथामङ्गलवादिनम्। अपेतप्रकृतिञ्चव निःसारञ्चतथाजयेत् ११ विद्विष्टनायकंसैन्यं तथाभिन्नंपरस्परम्। व्यसनाशक्तनृपतिंबलं राजाभियोजयेत् १२ सैनिकानांनशस्त्राणि स्फुरन्त्यङ्गानियत्रच। दु:स्वप्नानिचपश्यन्ति बलन्तदभियोजयेत् १३ उत्साहबलसम्पन्नः स्वानुरक्तबलस्तथा। तुष्टपुष्टबलोराजा परानभिमुखोव्रजेत् १४ शरीरस्फुरणेधन्ये तथादुःस्वप्ननाशने। निमित्तेशकुनेधन्ये जातेशत्रुपुरंव्रजेत् १५ ऋक्षेषुषट्सुशुद्धेषु ग्रहेष्वनुगुणेषुच। प्रश्नकालेशुभेजाते परान्यायान्नराधिपः १६ एवन्तुदैवसम्पन्नस्तथापौरुषसंयुतः। देशकालोपपन्नान्तु यात्रां

कीजिये १ मत्स्यजीने कहा-राजा जब अपने शत्रुको किसी बलवान् राजासे पीड़ितहुआ-जानेउस समय शत्रुके सन्मुख यात्राकरनी चाहिये राजाको प्रथम अपनेस्थानकी मूलरक्षाके निमित्त बहुतसे योद्धारखकर पश्चात् शत्रुके सन्मुख यात्राकरनी चाहिये अपनी मूल रक्षाकिये विनाकभीयात्रानहीं करे बहुतसी सेनाको अपने राज्यकीरक्षामें स्थापितकरनेके पीछे यात्राकरे चैत्रकेमहीनेमें गरमीहोजाती है शरदऋतुकी पुष्टि जातीरहतीहै इसहेतुसे मार्गशिर महीनेमें यात्राकरे अथवा जबशत्रुपर कोई आपत्ति होवे उसी समय गमनकरे कालही बलवान् है २-६ और दिव्य अन्तरिक्ष भौम इत्यादिक उत्पातों से तथा ग्रहोंसे पीड़ितहुए शत्रुपर चढ़ाई करके यात्रा होनी चाहिये ७ और जिस दिशामें दिग्दाह-उल्कापात और भू कम्प होताहो और पुच्छातारा दीखताहो उस दिशामें राजागमन करे इसकेसि-वाय व्यसनवाले-दुर्भिक्षसे पीड़ित हुए देशमें गमनकरे और क्रोधसे दुखितहुए शत्रुके सन्मुख तो राजाको अवश्यही गमन करना चाहिये और जुआं मक्खियोंकी सरसाईवाले-नास्तिक-भिन्न म-र्यादावाले-सारवस्तुके नहीं देखनेवाले और बुरेसेनापति वाले ऐसे शत्रुके राज्यमें गमनकरनेवाला राजा शीघ्रही विजयको पाताहै ८। १३ उत्साह बलयुक्त महाप्रसन्न और पुष्ट सेनावाले राजाकोशत्रुके सन्मुख गमनकरना चाहिये-जब उत्तम दक्षिण अंग फड़कतेहों अच्छे शकुन होतेहों तबशत्रुकेजीत-ने के निमित्त गमन करना चाहिये १४। १५ जब शुभ नक्षत्र और ग्रहहोवें और अच्छाशुभ प्रश्न होवे तब राजाको शत्रु पर गमन करना योग्य है १६ ऐसेपुरुपार्थसे युक्तहुए राजाको देशकाल और

कुर्यान्नराधिपः १७ स्थलेनक्रस्तुनागस्यतस्यापिसजलेवशे । उलूकस्यनिशिध्वांक्षःसचतस्यदिवावशे १८ एवंदेशञ्चकालञ्च ज्ञात्वायात्रांप्रयोजयेत् पदातिनागबहुलां सेनांप्रावृषियोजयेत् १९ हेमन्तेशिशिरेचैवरथवाजिसमाकुलाम् । खरोष्ट्रबहुलांसेनांतथाग्रीष्मेनराधिपः २० चतुरङ्गबलोपेतां वसन्तेवाशरद्यथ । सेनापदातिबहुला यस्यस्यात्पृथिवीपतेः २१ अभियोज्योभवेत्तेन शत्रुर्विषममाश्रितः । गम्येवृक्षावृतेदेशे स्थितंशत्रुन्तथैव च २२ किञ्चित्पङ्केतथायायाद्बहुनागोनराधिपः । तथाश्वबहुलोयायाच्छत्रुंसमपथिस्थितम् २३ तमाश्रयन्तोबहुला स्तांस्तुराजाप्रपूजयेत् । खरोष्ट्रबहुलोराजा शत्रुर्बन्धेनसंस्थितः २४ बन्धनस्थोऽभियोज्योऽरिस्तथाप्रावृषिभूभुजा । हिमपातयुतेदेशे स्थितंग्रीष्मेऽभियोजयेत् २५ यवसेन्धनसंयुक्तः कालःपार्थिवहैमनः । शरद्वसन्तौधर्मज्ञ ! कालौसाधारणौस्मृतौ २६ विज्ञायराजाहितदेशकालौ दैवंत्रिकालञ्चतथैवबुद्ध्वा । यायात्परंकालविदांमतेन सञ्चिन्त्यसार्द्धंद्विजमन्त्रविद्भिः २७ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकोनचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३९ ॥

(मनुरुवाच) ब्रूहिमेत्वंनिमित्तानि अशुभानिशुभानिच । सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठ ! त्वंहि सर्वविदुच्यसे १ (मत्स्य उवाच) अङ्गदक्षिणभागेतु शस्तंप्रस्फुरणम्भवेत् । अप्रशस्तं

दैवसे पीड़ितहुए शत्रुके सन्मुख गमन करनाहीयोग्यहै--जैसे कि थलमें हाथीके वशीभूत मगरहोजाता है जलमें मगर के वशीभूत हाथी होताहै-- रात्रिमें उल्लूके वशमें काक--दिनमें काकके वशमें उल्लू होजाताहै इसीप्रकार देशकालको विचारकर राजाको शत्रुपर चढ़ाईकरनीचाहिये १७।१९ वर्षाकालमें बहुतसेपैदल और हाथियोंकी सेना रखना-हेमन्त और शिशिरऋतुमेंरथ घोड़ोंकी सेनारखना ग्रीष्म ऋतुमें बहुतसेऊंट और गधोंकी सेना रखना चाहिये--वसन्त और शरदऋतुमें चतुरंगिणी सेना अर्थात् सब प्रकारकी सेना रखनी चाहिये--जिस राजाकी सेनामें बहुतसे पैदलहोवें उसको विषमस्थानमें स्थितहोनेवाले शत्रुजीतनेचाहिये और साधारणवृक्षोंके देशमें स्थितहोनेवाले शत्रुकोभीजीते २०।२२ कुछ एककीचके देशमें स्थितहोनेवाले शत्रुको हाथियोंकी सेनासेजीते--समानदेशमें स्थितहुए शत्रुको घोड़ोंकी सेनासेजीते और शत्रुको जो बहुतसेजन आश्रयदेरहेहों तो उन आश्रयदेनेवालोंको कुछ लोभदेकर अपनी विजयकरे और गधे ऊंटआदि बहुतसी सेनावाले शत्रुको वर्षाकालमें बन्धनमेंकरे और शीतदेशमें बसनेवाले शत्रुको ग्रीष्मऋतुमें जीते २३।२५ हेमन्तऋतुमें घास इन्धन आदि से युक्तहोकर राजा अपने शत्रुको जीते और शरद वा वसन्त ऋतुका साधारण उत्तमकाल कहाताहै २६ उत्तमहितकारी देशकालकी परीक्षाकर--शत्रुके कालको पहचान अपने मंत्री और ब्राह्मणों से सलाहकरके राजाको शत्रुपर यात्रा करनीचाहिये २७ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २३९ ॥

मनुजी बोले--हे देव आप सम्पूर्ण धर्म्मवेत्ताओं में श्रेष्ठहो इसहेतुसे आप कृपाकरके मनुष्यों के शुभ और अशुभ लक्षणोंको मेरेआगे वर्णनकीजिये १ मत्स्यजी बोले-- दक्षिणअंगोंका फड़कना श्रेष्ठ

तथावामे पृष्ठस्यहृदयस्यच २ (मनुरुवाच) अङ्गानांस्पन्दनञ्चैव शुभाशुभविचेष्टितम्। तन्मेविस्तरतोब्रूहियेनस्यान्तद्विदोभुवि ३ (मत्स्यउवाच) पृथ्वीलाभोभवेन्मूर्द्ध्नि ललाटेरविनन्दन!। स्थानंविवृद्धिमायाति भ्रूनसोःप्रियसङ्गमः ४ भृत्यलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपान्तेधनागमः। उत्कण्ठोपगमोमध्ये दृष्टेराजन्! विचक्षणैः ५ दृग्बन्धनेसङ्गरेच जयंशीघ्रमवाप्नुयात्। योषिद्भोगोऽपाङ्गदेशे श्रवणान्तेप्रियाश्रुतिः ६ नासिकायांप्रीतिसौख्यं प्रजाप्तिरधरोष्ठजे। कण्ठेतुभोगलाभः स्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ७ सुहृत्स्नेहश्चबाहुभ्यां हस्तेचैवधनागमः। पृष्ठेपराजयःसद्यः जयोवक्षःस्थलेभवेत् ८ कुक्षिभ्यांप्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाःप्रजननंस्तने। स्थानभ्रंशोनाभिदेशे अन्त्रेचैवधनागमः ९ जानुसन्धौपरैः सन्धिर्बलवद्भिर्भवेन्नृप!। दिशैकदेशनाशोऽथ जङ्घायांरविनन्दन! १० उत्तमंस्थानमाप्नोति पद्भ्यांप्रस्फुरणान्नृप!। सलाभञ्चाध्वगमनं भवेत्पादतलेनृप! ११ लाञ्छनंपिटकञ्चैव ज्ञेयंस्फुरणवत्तथा। विपर्ययेणविहिता सर्वस्त्रीणांफलागमः। दक्षिणेऽपिप्रशस्तेऽङ्गे प्रशस्तंस्याद्विशेषतः १२ अतोऽन्यथासिद्धिप्रजल्पनात्तु फलस्यशस्तस्यचनिन्दितस्य। अनिष्टचिह्नोपगमेद्विजानां कार्यंसुवर्णेनतुतर्पणंस्यात् १३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४०॥

कहाहै और बाईंओरको हृदय और पीठका फड़कनाभी श्रेष्ठहै २ मनुजीने पूछा कि हे देव अंगों के फड़कनेसे शुभाशुभकी चेष्टा कैसेहोतीहै इसकोभी आप विस्तारपूर्वक मेरेआगे कहिये ३ मत्स्यजीने कहा हे रविनन्दन शिर अथवा मस्तक फड़के तो राज्यकालाभहोवे- भृकुटी और नासिका फड़के तो स्थानकी वृद्धिहो और प्रियजनका आगमनहोवे ४ आंखके फड़कनेसे भृत्यजनोंकी प्राप्तिहोतीहै काली पुतलीके फड़कनेसे धनकालाभहोताहै- और बीचमें आंखफड़के तो अत्यन्त प्रीतिवाले द्रव्यकी प्राप्तिहोतीहै- आंखोंके पलकफड़कें तो शीघ्रही विजयहोती है- और कटाक्षोंकी जगह फड़के तो स्त्री का भोगमिलताहै-कानोंके स्थानमें फड़के तोप्रियवचनोंको सुनें-नासिका फड़के तो प्रीति औरसुख होवे- ऊपरका ओष्ठफड़के तो सन्तानकी प्राप्तिहोवे- कंठके फड़कनेसे भोगकालाभहोवे- कन्धोंके फड़कनेसे भोगोंकी वृद्धिहोवे- ५।७ भुजाफड़के तो मित्रका मिलापहोवे- हाथफड़के तो धनका आगमहोवे- पीठफड़के तो हारहोवे- छातीफड़के तो शीघ्रही विजयहोवे ८ कुक्षिफड़के तो प्रीतिहोवे-स्तनफड़के तो कन्याकी उत्पत्तिहोवे-नाभिफड़के तो स्थानभ्रंशहोवे-आंतफड़कें तो धनका लाभ होवे-गोड़ोंकीपाली फड़के तो बलवाले अन्य राजाओंसे मिलाप और प्रीतिहोती है-पिण्डलीफड़के तोकिसी देशकानाशहोवे ९।१० पैरोंके फड़कनेसे उत्तमस्थानकी प्राप्तिहोतीहै-पैरोंके तलुए फड़कें तो धनकीप्राप्तिवाले मार्गमें चलनाहोताहै- ११ और यही सब अंग जो स्त्रियोंके फड़कें तो विपरीत फलहोताहै- पुरुषके यह सब दाहिने अंगफड़कें तोविशेषकरके उत्तमफलहोताहै १२ इससे विपरीत चिह्नहोवें तो निन्दितफलहोताहै अशुभ अंगफड़कें तो सुवर्णका दानकरके ब्राह्मणोंको तृप्तकरे १३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४०॥

(मनुरुवाच)स्वप्नाख्यानंकथंदेव! गमनेप्रत्युपस्थिते। दृश्यन्तेविविधाकाराः कथन्तेषांफलंभवेत् १ (मत्स्य उवाच) इदानींकथयिष्यामि निमित्तंस्वप्नदर्शने। नाभिंविनान्यगात्रेषु तृणवृक्षसमुद्भवः २ चूर्णनंमूर्ध्निकांस्यानां मुण्डनंनग्नतातथा। मलिनाम्बरधारित्वमभ्यङ्गः पङ्कदिग्धता ३ उच्चात्प्रपतनञ्चैव दोलारोहणमेवच। अर्जनंपक्वलोहानां हयानामपिमारणम् ४ रक्तपुष्पद्रुमाणाञ्च मण्डलस्यतथैवच। वराहर्क्षखरोष्ट्राणां तथाचारोहणक्रिया ५ भक्षणंपक्वमांसानां तैलस्यकृसरस्यच। नर्तनंहसनञ्चैव विवाहोगीतमेवच६ तन्त्रीवाद्यविहीनानां वाद्यानामभिवादनम्। स्रोतोऽवगाहगमनं स्नानंगोमयवारिणा ७ पङ्कोदकेनचतथा महीतोयेनचाप्यथ। मातुःप्रवेशोजठरे चितारोहणमेवच ८ शक्रध्वजाभिपतनं पतनंशशिसूर्ययोः। दिव्यान्तरिक्षभौमानामुत्पातानाञ्चदर्शनम् ९ देवद्विजातिभूपाल गुरूणांक्रोधएवच। आलिङ्गनंकुमारीणां पुरुषाणाञ्चमैथुनम् १० हानिश्चैवस्वगात्राणां विरेकवमनक्रिया। दक्षिणाशाभिगमनं व्याधिनाभिभवस्तथा ११ फलापहानिश्चतथा पुष्पहानिस्तथैवच। गृहाणाञ्चैवपातश्चगृहसम्मार्जनन्तथा १२ क्रीडापिशाचक्रव्यादवानरर्क्षनरैरपि। परादभिभवश्चैव तस्माच्चव्यसनोद्भवः १३ काषायवस्त्रधारित्वं तद्वत्स्त्रीक्रीडनन्तथा। स्नेहपानावगाहौच रक्तमाल्यानुलेपनम् १४ एवमादीनिचान्यानिदुःस्वप्नानिविनिर्दिशेत्। एषांसङ्कथनंधन्यं भूयःप्रस्वापनन्तथा १५ कल्कस्नानन्ति

मनुजी ने पूछा--हे देव जब राजा शत्रुके सन्मुख गमन करनेका विचार करे उस समय राजाको अनेक स्वप्न दीखें उनका कैसा२ फल होताहै यह आप वर्णन कीजिये १ मत्स्यजी ने कहा--अबतुम स्वप्न दर्शन के जो फलहैं उनको मुझसे चित्त लगाकर सुनो--जब स्वप्न में नाभिके विना शरीर के अन्य भाग में तृण वृक्षादि जमेहुए देखे--मस्तक के ऊपर कांशी का चूर्ण पड़ा हुआ देखे--मुंडन हुआ अपना शिर देखे--शरीर नंगा दीखे २। ३ ऊंचेसे गिरपड़े--डोलीमें बैठे--लोहेका संचय करे--घोड़ों को मरा हुआदेखे--लाल पुष्प--लालवृक्ष--लाल मंडल--वराह, रीछ--गधा और ऊंट इन्होंकी सवारी करे--पके हुए मांसका- तेलका और खिचड़ीका भोजन करे--नृत्य और हास्यदेखे और विवाहउत्सव गीतादि देखे ४। ६ बीन और सितारके विना अन्य बाजे बजते हुए देखे--नदीके स्रोत में गोता मारे--गोबर लगाकर स्नान करे--कीचड़के बुरेजलसे स्नान करे--माता के उदरमें प्रवेश हुआ दीखे अथवा अपने को चिन्ता युक्तदेखे--७। ८ इन्द्रकी ध्वजा का गिरना--सूर्य्य- चन्द्रमाका गिरना दिव्य अन्तरिक्ष--और भौम इत्यादि अनेक उत्पात देखे ९ देवता--द्विज राजा और गुरु इनसबको क्रोधित हुए देखे--कन्याओं के साथ आलिंगन करे--पुरुषों का मैथुन होता हुआ देखे--अपने किसी शरीरको हीन देखे--वमन और विरेचन अर्थात् जुलाब लगा हुआ देखे--दक्षिण दिशामें गमन करे १०। ११ व्याधि से दुखित हुआ अपनेको देखे--फलों की और पुष्पों की हानिको देखे--घरोंका गिरना और घरोंमें बुहारी लगना देखे--पिशाच--भूत--वानर--रीछ और मनुष्य इन सबके साथक्रीड़ा करना--शत्रुसे तिरस्कार होना--स्नेह पानकरना तेलही से स्नान करना लालपुष्पों का धारणकरना

लैर्होमो ब्राह्मणानाञ्चपूजनम्। स्तुतिश्चवासुदेवस्य तथातस्यैवपूजनम् १६ नागेन्द्रमो
क्षश्रवणं ज्ञेयंदुःस्वप्ननाशनम्। स्वमास्तुप्रथमेयामे संवत्सरविपाकिनः १७ षड्भिर्मा
सैर्द्वितीयेतु त्रिभिर्मासैस्तृतीयके। चतुर्थेमासमात्रेण पश्यतोनात्रसंशयः १८ अरुणो
दयवेलायां दशाहेनफलम्भवेत्। एकस्यांयदिवारात्रौ शुभंवायदिवाशुभम् १९ पश्चा
द्दृष्टस्तुयस्तत्र तस्यपाकंविनिर्दिशेत्। तस्माच्छोभनकेस्वप्ने पश्चात्स्वप्नोनपश्यति २०
शैलप्रासादनागाश्व वृषभारोहणंहितम्। द्रुमाणांश्वेतपुष्पाणां गमनेचतथाद्विज! २१
द्रुमतृणोद्भवोनाभौ तथैवबहुबाहुता। तथैवबहुशीर्षत्वं फलितोद्भवएवच २२ सुशुक्लमा
ल्यधारित्वं सुशुक्लाम्बरधारिता। चन्द्रार्कताराग्रहणं परिमार्जनमेवच २३ शक्रध्वजालि
ङ्गनश्च तदुच्छ्रायक्रियातथा। भूम्यम्बुधीनांग्रसनं शत्रूणाञ्चवधक्रिया २४ जयोविवादे
द्यूतेच संग्रामेचतथाद्विज!। भक्षणञ्चार्द्रमांसानां मत्स्यानांपायसस्यच २५ दर्शनं
रुधिरस्यापि स्नानंवारुधिरेणच। सुरारुधिरमद्यानां पानंक्षीरस्यचाथवा २६ अन्त्रै
र्वावेष्टनंभूमौ निर्मलंगगनंतथा। मुखेनदोहनंशस्तं महिषीणांतथागवाम् २७ सिंहीनां
हस्तिनीनाञ्च वडवानांतथैवच। प्रसादोदेवविप्रेभ्यो गुरुभ्यश्चतथाशुभः २८ अम्भ
सात्वभिषेकस्तु गवांशृङ्गाश्रितेनवा। चन्द्राद्भ्रष्टेनवाराजन्! ज्ञेयोराज्यप्रदोहिसः २९

इत्यादिक स्वप्नों का दर्शन होवे तो दुःख होताहै–इनबुरे स्वप्नों को दूसरे के आगे कहके फिर सो जाना अच्छा होताहै १२। १५ पिट्ठी लगाकर स्नान करना–तिलों से हवन करना–ब्राह्मणों का पूजनकरना विष्णु भगवान्‌की स्तुति करना और पूजन करना और गजेन्द्र मोक्ष की कथा सुनना–इन सबों के करने से बुरे स्वप्न का फल नहीं होताहै रात्रिके प्रथम प्रहरमें स्वप्न देखे तो वर्ष दिन के पहलेही महीने में फल होताहै–दूसरे प्रहरमें देखेतो छः महीनोंके भीतर फल होताहै तीसरे प्रहरमें स्वप्नदेखे तो तीन महीनों के भीतर फल होताहै और जो चौथे प्रहरमें स्वप्न देखेतो निस्सन्देह एकही महीने के भीतर फल होताहै १६। १८ सूर्योदय के समय पलिवादल होनेपर जो स्वप्न देखे तो दशदिनके भीतर फल होताहै–और एक दिन अथवा रात्रि में दोवार स्वप्न देखे तो पिछले स्वप्नका शुभाशुभ फल होताहै इस हेतुसे जो उत्तम स्वप्न दीख जावे तो फिर न सोवे जगताही रहे १९। २० और जोस्वप्नमें पर्वत–महल—घोड़ा और बैल इनके ऊपर चढ़े तो श्रेष्ठ है–स्वप्न में श्वेत पुष्पों वाले वृक्षपर चढ़े तो अच्छाहै २१ अपनी नाभिमें वृक्ष अथवा किसी प्रकारका तृणजमाहुआ देखे बहुतसी भुजा देखे–बहुतसे शिर देखे–फलों की उत्पत्ति देखे–श्वेत पुष्प और श्वेत वस्त्रों को धारण किये देखे–चन्द्रमा सूर्य्य और ताराग्रह इन्हों की शुद्धि करे–इन्द्र धनुपको पकड़े–पृथ्वी और समुद्र को अपने वशमें कियाहुआ देखे–शत्रुओं को मारे–विवाद जुवा और युद्ध में जीते गीले मांस–मछली–और खीर इनसबका भोजन करे रुधिर देखे–रुधिरसे स्नान करेमदिरा रुधिर और दूध इनकोपिये, आँतोंकरके लिपटाहुआ दीखे, आकाशको निर्मलदेखे सिंहिनी, हस्तिनी, और घोड़ी इनको प्रसन्नहुआदेखे- देवता, ब्राह्मण, और गुरू इन्होंकी प्रीतिदेखे, जलकरके अपना

राज्याभिषेकश्चतथाच्छेदनंशिरसस्तथा। मरणंवह्निदाहश्च वह्निदाहोगृहादिषु ३० ल
ब्धिश्चराज्यलिङ्गानां तन्त्रीवाद्याभिवादनम्। तथोदकानांतरणं तथाविषमलङ्घनम्
३१ हस्तिनीवडवानाञ्च गवाञ्चप्रसवोगृहे। आरोहणमथाश्वानां रोदनञ्चतथाशुभ
म् ३२ वरस्त्रीणांतथालाभस्तथालिङ्गनमेवच। निगडैर्बन्धनंधन्यं तथाविष्ठानुलेपनम्
३३ जीवितांभूमिपालानां सुहृदामपिदर्शनम्। दर्शनंदेवतानाञ्च विमलानांतथाम्भसा
न् ३४ शुभान्यथैतानिनरस्तुदृष्ट्वा प्राप्नोत्ययत्नाद्ध्रुवमर्थलाभम्। स्वप्नानिवैधर्मभृतांव
रिष्ठ! व्याधेर्विमोक्षञ्चतथातुरोऽपि ३५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे एकचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४१॥

(मनुरुवाच) गमनंप्रतिराज्ञान्तु संमुखादर्शनेचकिम्। प्रशस्तांश्चैवसम्भाष्य स
र्वानेतांश्चकीर्तय १ (मत्स्यउवाच) औषधानित्वयुक्तानि धान्यंकृष्णञ्चयद्भवेत्। कार्पा
सश्चतृणंराजन्! शुष्कंगोमयमेवच २ इन्धनञ्चतथाङ्गारं गुडंतैलंतथाऽशुभम्। अ
भ्यक्तंमलिनंमुण्डन्तथानग्नञ्चमानवम् ३ मुक्तकेशंरुजार्तञ्च काषायाम्बरधारिणम्।
उन्मत्तकन्तथासत्वं दीनञ्चाथनपुंसकम् ४ अयःपङ्कस्तथाचर्म केशबन्धनमेवच। तथे
वोद्धृतसाराणि पिण्याकादीनियानिच ५ चण्डालश्वपचाश्चैव राजबन्धनपालकाः। व
धकाःपापकर्माणो गर्भिणीस्त्रीतथैवच ६ तुषभस्मकपालास्थिभिन्नभाण्डानियानिच। र
क्तानिचैवभाण्डानि मृतंशार्ङ्गिकमेवच ७ एवमादीनिचान्यानि अप्रशस्तान्यभिदर्शने।

अभिषेकदेखे, गौओंके सींगके आश्रय होवे अथवा गिरेहुए चन्द्रमाके आश्रय होवे यह सब स्वप्न श्रेष्ठहैं राज्यके देने वालेहैं २२। २९ राज्य तिलक होताहुआ देखे, अपना शिरकटा देखे, मरनादेखे, घरमें वा अपने शरीरमें अग्नि लगीदेखे ३० राज्यके चिह्नोंकी प्राप्तिदेखे, वीन औरसितारको बजता देखे जलमेंतिरे, विषम स्थानको लांघे, हस्तिनी, घोड़ी और गौ इन्होंको अपनेघरमें व्याईहुई देखे, घोड़ेपैचढ़े रोवे, यह सब स्वप्नभी शुभहैं ३१। ३२ सुन्दर स्त्रियोंका लाभहोवे, सुन्दर स्त्रियोंसे आ- लिंगनकरे, वेड़ियोंसेवंधे, विष्ठामें लिप्तदेखे, यह सबभी शुभहैं, जीवतेहुए राजाओंका अथवा मित्र जनोंका समागमहोवे, देवता और स्वच्छजलोंका दर्शनहोवे ३३। ३४ इनसब शुभ स्वप्नोंका देखनेवाला पुरुष शीघ्रही द्रव्यकी प्राप्ति करताहै और इन स्वप्नोंको रोगी पुरुष देखे तो रोगसे रहितहोजावे ३५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४१॥

मनुजी बोले जब राजाकी यात्राहोतीहो उससमय कौनसे शकुन सन्मुख होतेहुए उत्तमहोतेहैं इसकोभी आप वर्णनकीजिये १ मत्स्यजी बोले हे राजन् अयोग्य औषधी, कालेधान्य, कपास, तृण, सूखा गोबर, इन्धन, अंगार, गुड़, तेलमलेहुए मलिन पुरुष मूंड़ मुड़ायेहुए नंगा मनुष्य, खुलेबालों वाला, रोगसे पीड़ित, रंगेहुए वस्त्र धारण करने वालासाधु, उन्मत्त, नपुंसक, लोहा, कीचड़, चमड़ा, केशबंध, खला आदिक असार वस्तु, व्याधपुरुष, पापीपुरुष, गर्भिणी स्त्री, तुष, भस्म, कपाल, फूटे हुए पात्र, लालपात्र, मृतक इत्यादिक वस्तु जो राजाके यात्राके समय सन्मुख आवें तो अशुभफल

अशस्तोवाह्यशब्दश्च भिन्नभैरवजर्जरः ८ पुरतःशब्दएहीति शस्यतेनतुपृष्ठतः। गच्छे तिपश्चाद्धर्मज्ञ! पुरस्तात्तुविगर्हितः ९ क्यासितिष्ठमागच्छ किन्तेतत्रगतस्यतु। अन्ये शब्दाश्चयेनिष्टास्ते विपत्तिकराअपि १० ध्वजादिषुतथास्थानं क्रव्यादानांविगर्हितम्। स्खलनंवाहनानाञ्च वस्त्रसङ्गस्तथैवच ११ निर्गतस्यतुद्वारादौ शिरसश्चाभिघातिता। छत्रध्वजानांवस्त्राणां पतनञ्चतथाऽशुभम् १२ दृष्टेनिमित्तेप्रथममङ्गल्यविनाशनम्। केशवंपूजयेद्विद्वान् स्तवेनमधुसूदनम् १३ द्वितीयेतुततोदृष्टे प्रतीपेप्रविशेद्गृहम्। अथे ष्टानिप्रवक्ष्यामि मङ्गल्यानितथानघ! १४ श्वेताःसुमनसःश्रेष्ठाः पूर्णकुम्भास्तथैवच। ज लजाःपक्षिणश्चैव मांसंमत्स्याश्चपार्थिव! १५ गावस्तुरङ्गमानागा बद्धएकःपशुस्त्वजः। त्रिदशाःसुहृदोविप्रा ज्वलितश्चहुताशनः १६ गणिकाचमहाभाग! दूर्वाचार्द्रञ्चगोमय म्। रुक्मरूप्यन्तथाताम्रं सर्वरत्नानिचाप्यथ १७ औषधानिचधर्मज्ञ! यवाःसिद्धार्थका स्तथा। नृवाह्यमानंयानञ्च भद्रपीठन्तथैवच १८ खड्गंछत्रंपताकाच मृदश्चायुधमेव च। राजलिङ्गानिसर्वाणि सर्वेरुदितवर्जिताः १९ घृतंदधिपयश्चैव फलानिविविधानि च। स्वस्तिकंवर्द्धमानञ्च नन्द्यावर्तंसकौस्तुभम् २० वादित्राणांमुखःशब्दः गम्भीरःसु मनोहरः। गान्धारषड्जऋषभा येचशस्तारतथास्वराः २१ वायुःसशर्करोरूक्षः सर्वत्र समुपस्थितः। प्रतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयोभयकृद्द्विज! २२ अनुकूलोमृदुःस्निग्धः सु

होताहै और बुरेस्वरवाला बाहरका शब्द होवे वहभी अशुभहै, आगे चलाआ ऐसाशब्द सुनाजाय तो श्रेष्ठ है यही शब्द जो पीछेकी ओरको होवे तोअशुभहै परन्तु पीछेसे कोई कहे कि चलाजा यह शुभ है फिर यही शब्द आगे होय तो अशुभहै ८।९ कहाँ जाताहै ठहरजा मतजाओ वहाँ जाकर क्याहोगा ऐसेसबशब्द गमन समयमें विपत्ति करनेवाले कहे हैं १० ध्वजा आदिकोंपर चील्ह आदिक पक्षी बैठ जावें तो अशुभद्योतकहैं, वाहनोंकागिरना, वस्त्रोंका संगहोना, द्वारमेंसे निकसते समय शिरमें चोटलगे छत्र, ध्वजा और वस्त्र गिरपड़े, यह संपूर्ण लक्षण गमनसमयमें अच्छे नहींकहे हैं ११।१२ प्रथम बुरा शकुन होजाय तो स्वस्ति वचन कहके विष्णुभगवान्का पूजनकरे और स्तुतिकरे और गमन समय पर दूसराभी अशुभ शकुन होजावे तो अपने घरमें चलाआवे, अब उत्तम शकुनोंको कहते हैं १३।१४ श्वेत पुष्पोंका दर्शन होना श्रेष्ठहै, पूर्णकुम्भोंका देखना श्रेष्ठहै, जलमें होनेवाले जीव, पक्षी, मांस, मत्स्य, गौ, घोड़े, हाथी, एकपशु, बकरा, देवता, मित्र, ब्राह्मण, और जलती हुई अग्नि इनसब वस्तु- ओंका देखना शुभहै वेश्या, गीला गोबर, सोना, चांदी, तांबा, सबरत्न, सब औषधि, जौ, सरसों, मनु- ष्योंकी सवारी, भद्रपीठ, खड्ग, छत्र, पताका, मृत्तिका, शस्त्र, राजाके सब चिह्न, रोने से रहितजीव- घृत, दही, दूध अनेक प्रकारके फल, नदीका अच्छा आवर्त्त, कौस्तुभमणि, बाजोंका मनोहर शब्द, गंभीर मनोहर शब्द, गान्धार, षड्ज और ऋषभ, इनस्वरोंका सुनना, यहसब लक्षण राजाके गमन समयमें अच्छे होते हैं, १५।२१ और धूल युक्त रूक्ष वायु जो चलताहो तो महाअशुभ भयकारी श- कुन है, क्योंकि शरीरका दुःख देनेवाला नीच वायु अशुभ कहाहै।२२ और अनुकूल, सरल, स्निग्ध

खस्पर्शःसुखावहः। रूक्षारूक्षस्वराभद्राः क्रव्यादाःपरिगच्छताम् २३ मेघाःशस्ताघनाः स्निग्धाः गजबृंहितसन्निभाः। अनुलोमास्तडिच्छन्नाः शक्रचापन्तथैवच २४ अप्रशस्ते तथाज्ञेये परिवेषप्रवर्षणे। अनुलोमाग्रहाःशस्ताः वाक्पतिस्तुविशेषतः २५ आस्तिक्यं श्रद्दधानत्वं तथापूज्याभिपूजनम्। शस्तान्येतानिधर्मज्ञ! यच्चस्यान्मनसःप्रियम् २६ मनसस्तुष्टिरेवात्र परमंजयलक्षणम्। एकतःसर्वलिङ्गानि मनसस्तुष्टिरेकतः २७ मनोत्सुकत्वंमनसःप्रहर्षः शुभस्यलाभोविजयप्रवादः। मङ्गल्यलब्धिःश्रवणञ्चराजन्! ज्ञेयानि नित्यंविजयावहानि २८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणे द्विचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४२॥

(ऋषय ऊचुः) राजधर्मस्त्वयासूत! कथितोविस्तरेणतु। तथैवाद्भुतमङ्गल्यं स्वप्नदर्शनमेवच १ विष्णोरिदानींमाहात्म्यं पुनर्वक्तुमिहार्हसि। कथंसवामनोभूत्वा बबन्ध बलिदानवम् २ क्रमतःकीदृशंरूपमासीलोकत्रयेहरेः। (सूतउवाच) एतदेवपुराऽपृष्टः कुरुक्षेत्रेतपोधनः ३ शौनकस्तीर्थयात्रायां वामनायतनेपुरा। यदासमयमेदित्वं द्रौपद्याः पार्थिवंप्रति ४ अर्जुनेनकृतन्तत्र तीर्थयात्रांतदाययौ। धर्मक्षेत्रेकुरुक्षेत्रे वामनायतने स्थितः ५ दृष्ट्वासवामनस्तत्र अर्जुनोवाक्यमब्रवीत्। (अर्जुनउवाच) किन्निमित्तमयंदेवो वामनाकृतिरिज्यते ६ वराहरूपीभगवान् कस्मात्पूज्योऽभवत्पुरा। कस्माच्चवामनस्ये

सुखदायी स्पर्श करनेवाला ऐसा वायु सुखकारी कहाहै और चील्ह आदिपक्षी अनेक प्रकारके शब्द करते होंय तो उत्तम शकुनहै, हाथियोंके आकारके समान बहुतसे चिकने २ बादल होरहेहों मधुर २ गर्जते भी हों और इन्द्रधनुष दीखे तो बहुतउत्तमशकुन है २३।२४ सूर्य्यमंडलके दर्शनहोवें तो अशुभ शकुनहै, गमन समयमें ग्रहोंकी अनुकूलता होवे विशेषकरके बृहस्पति अनुकूल होवें, आस्तिकपना श्रद्धायुक्त होना, पूज्य पुरुषोंका पूजनकरना और मनकी प्रिय वस्तुका दर्शन होना, यह सब वस्तु गमन समयमें शुभ कही हैं २५। २६ राजाको गमन समयमें मनकी प्रसन्नताका होना परम विजय होनेका लक्षण कहाहै, औरसब शकुन समेत लक्षण एक ओरहैं और मनकी प्रसन्नता एकओर है २७ जिस राजाके मनमें उत्साहपूर्वक हर्षहो उसकी अवश्य विजय होती है और जो गमन समय में मंगलकारी शब्दोंको सुनताहै उसकी भी निश्चय विजय होती है २८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४२॥

ऋषियोंने पूछा कि हेसूतजी आपने राजाओंके धर्म तो विशेष करके वर्णनकिये और उत्पातोंकी अशुभता समेत स्वप्नके दर्शन फलभी वर्णन किये १ अबहमको विष्णुभगवान्‌के माहात्म्यको सुनाइये उन विष्णुभगवान्‌ने वामन रूपधारण करके दैत्योंके राजा बलिको कैसे बांधा २ और पृथ्वीमापनेके समय अपनेरूपको त्रिलोकीमें कैसे फैलाया-सूतजीबोले-हे ऋषिवर्य्यलोगो इसीप्रश्नको पूर्वकाल तीर्थयात्रामें विचरतेहुए अर्जुननेभी शौनकजीसे पूछाथा अर्थात् द्रौपदीको स्वयंवरसे जीतकर समयके भेदसे तीर्थयात्रामें विचरतेहुए अर्जुनने वामनजीकी मूर्त्ति देखकर कुरुक्षेत्रमें शौनकजीसे यह प्रश्न

द् मिष्टंक्षेत्रमजायत ७ (शौनकउवाच) वामनस्यचवक्ष्यामि वराहस्यच धीमतः। पुत्रा
निवारितेशक्रे सुरेषुविजितेषुच ८ चिन्तयामासदेवानां जननीपुनरुद्भवम्। अदितिर्देव
माताच परमंदुश्चरंतपः ९ तीव्रञ्चचारवर्षाणां सहस्रंपृथिवीपते!। आराधनायकृष्ण
स्य वाताहाराह्यभोजना १० दैत्यैर्निराकृतान्दृष्ट्वा तनयान्कुरुनन्दन!। वृथापुत्राहमस्मी
ति निर्वेदात्प्रणताहरिम् ११ तुष्टाववाग्भिरिष्टाभिः परमार्थनिबोधनैः। देवदेवंहृषीकेशं
नत्वासर्वगतंहरिम् १२ (अदितिरुवाच) नमःस्मृतार्तिनाशाय नमःपुष्करमालिने।
नमःपरमकल्याण कल्याणायादिवेधसे १३ नमःपङ्कजनेत्राय नमःपङ्कजनाभये। श्रियः
कान्तायदान्ताय दान्तदृश्यायचक्रिणे १४ नमःपङ्कजसम्भूति सम्भवायात्मयोनये। नमः
शङ्खासिहस्ताय नमःकनकरेतसे १५ तथात्मज्ञातविज्ञात योगिचिन्त्यात्मयोगिने। नि
र्गुणायाविशेषाय हरयेब्रह्मरूपिणे १६ जगत्प्रतिष्ठितंयत्र जगतायोनदृश्यते। नमःस्थू
लातिसूक्ष्माय तस्मैदेवायशङ्खिने १७ यन्नपश्यन्तिपश्यन्तो जगदप्यखिलन्नराः। अप
श्यद्भिर्जगत्यत्र नदेवोहृदिसंस्थितः १८ यस्मिन्नन्नंपयश्चैव नद्यश्चैवाखिलंजगत्। त
स्मैसमस्तजगता माधारायनमोनमः १९ आद्यःप्रजापतिपतिः यःप्रभूणांपतिःपरः। प
तिःसुराणांयस्तस्मै नमःकृष्णायवेधसे २० यःप्रवृत्तौनिवृत्तौच इज्यतेकर्मभिःस्वकैः। स्व

किया कि यह आकृति वाले देव किसनिमित्त पूजेजातेहैं-प्रथम भगवान्ने वराहरूपको कैसेधारणकिया और यहक्षेत्र वामनजीको कैसे प्रिय होताभया ३।७ शौनकजीने कहा-किमैं वामनजी और वराहजीके माहात्म्यको तुमसे कहताहूं पूर्व्वकालमें जब दैत्योंसे देवताओं समेत इन्द्रहारगया तब देवताओंकीमाता अदिति परम दुश्चर तप करतीभई ८।९ हेराजन् हज़ारवर्षतक तो वायुका आहार करके कृष्णके आराधनमें तीव्रव्रतकरतभिई फिर दैत्योंसे दुःखितहुए पुत्रोंको देखकर यह विचार किया कि मेरे पुत्रवृथा हैं मैं विष्णुभगवान् को प्रणाम करतीहूं ऐसे विचारकर विष्णुभगवान्को उत्तम वाणी और स्तुतियोंसे प्रसन्नकरतीहुई १०।१२ अदिति कहतीभयी कि हे स्मरण करने वालोंके दुःखदूर करनेवाले- कमलोंकी मालाधारण करने वाले परम कल्याणरूप आपके अर्थ नमस्कार है १३ हे पंकजाक्ष पद्मनाभ लक्ष्मीके पति- दान्त- दान्तदृश्य और चक्रधारी आपके अर्थनमस्कारहै १४ कमलों की विभूतिवाले आत्मयोनि- शंख खड्गादि हाथ में रखनेवाले सुवर्णगर्भ आपके अर्थ नमस्कारहै- आत्मज्ञात- योगिजनोंसे विचिन्त्य निर्गुण अविशेष- हरि और ब्रह्मरूप आपके अर्थ नमस्कारहै १५।१६ जिसमें जगत् प्रतिष्ठितहै और वहजगत् जिसको नहीं जानता है ऐसे स्थूल और सूक्ष्म रूपकोमैं नमस्कारकरतीहूं- १७ संपूर्ण मनुष्य जगत्को देखतेहुएभी जिसकोनहीं देखतेहैं जो हृदय में बैठाहुआभी देव अज्ञानियों की दृष्टिमें नहीं आताहै और उसी देवमें अन्न-दूध-नदी और सबजगत् इन सबका वासहोताहै जो सबजगत्का आधारहै ऐसे विष्णुभगवान्के अर्थ नमस्कारहै- जो आद्य प्रजापतिहै सब प्रजाका प्रभु और पतिहै- देवताओंका पति है- कृष्णहै- वेधाहै-ऐसे देवको नमस्कारहै जोप्रवृत्ति समयमें और निवृत्ति मार्गमें सब कर्मोंकरके पूजा जाताहै और स्वर्ग मोक्षका दाताहै

गोपवर्गफलदो नमस्तस्मैगदाभृते २१ यश्चिन्त्यमानोमनसा सद्यःपापंव्यपोहति । न
मस्तस्मैविशुद्धाय परायहरिवेधसे २२ यंबुद्धासर्वभूतानि देवदेवेशमव्ययम् । नपुनर्ज
न्ममरणेप्राप्नुवन्तिनमामितम् २३ योयज्ञेयज्ञपरमै रिज्यतेयज्ञसंज्ञितः । तंयज्ञपुरुषंवि
ष्णुं नमामिप्रभुमीश्वरम् २४ गीयतेसर्ववेदेषु वेदविद्भिर्विदांपतिः । यस्तस्मैवेदवेद्याय
विष्णवेजिष्णवेनमः २५ यतोविश्वंसमुत्पन्नं यस्मिंश्चलयमेष्यति । विश्वागमप्रतिष्ठाय
नमस्तस्मैमहात्मने २६ ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं येनविश्वमिदंततम् । मायाजालंसमुत्तर्तु
न्तमुपेन्द्रंनमाम्यहम् २७ यस्तुतोयस्वरूपस्थो विभर्त्यखिलमीश्वरः । विश्वंविश्वपतिं
विष्णुन्तं नमामिप्रजापतिम् २८ यमाराध्यविशुद्धेन मनसाकर्मणागिरा । तरन्त्यविद्याम
खिलान्तमुपेन्द्रंनमाम्यहम् २९ विषादतोषरोषाद्यैर्योऽजस्रंसुखदुःखजैः । नृत्यत्यखिल
भूतस्थस्तमुपेन्द्रंनमाम्यहम् ३० मूर्तंतमोसुरमयन्तद्वधात्विनिहन्तियः । रात्रिरूपीसू
र्यरूपी तमुपेन्द्रंनमाम्यहम् ३१ यस्याक्षिणीचन्द्रसूर्यौ सर्वलोकशुभाशुभम् । पश्यतः
कर्मसततंमुपेन्द्रंतंनमाम्यहम् ३२ यस्मिन्सर्वेश्वरेसर्वं सत्यमेतन्मयोदितम् । नानृतंत
मजंविष्णुं नमामिप्रभवाव्ययम् ३३ यद्येतत्सत्यमुक्तं मेभूयांश्चातोजनार्दनः । सत्येनतेन
नसकलाः पूर्यन्तांमेमनोरथाः ३४ (शौनकउवाच) एवंस्तुतः सभगवान् वासुदेवउवा
चताम् । अदृश्यःसर्वभूतानां तस्याःसन्दर्शनेस्थितः ३५ (श्रीभगवानुवाच) मनोरथां

ऐसे विष्णुभगवान्को नमस्कारहै १८।२१ जो मनमें चिन्तवनकरतेही सबपापोंको दूरकरदेताहै ऐसे
विशुद्धपरमहरि वेधारूप विष्णुको नमस्कारहै २२ जिसदेवदेव विष्णुभगवान्को जानकर फिर जन्म
मरणनहीं होताहै उस विष्णुके अर्थ नमस्कारहै २३ जो यज्ञमें यज्ञसंज्ञिक देवपूजाजाता है उसयज्ञ
पुरुष विष्णुभगवान्को नमस्कार करतीहूं २४ जोवेदज्ञपुरुषोंसे सब देवताओंमें गाये जाते हैं ऐसे
वेदज्ञ जिष्णुरूप विष्णुभगवान्को नमस्कारहै- जिससे विश्वउत्पन्नहोताहै और जिसमें यह जगत्
लीनहोताहै ऐसे विश्वरूपी महात्मा विष्णुभगवान्को नमस्कारहै २५। २६ ब्रह्माको आदिले सब
स्थावर जंगम जगत् जिस देवकी मायाके जाल में विस्तृत होरहा है उस उपेन्द्र देवको नमस्कार
है २७ जो जलस्वरूपी भगवान् संपूर्ण जगत् का पालन करताहै उस विश्वपति विष्णु भगवान्
प्रजापतिको नमस्कार है २८ जिसको मनक्रम और वाणी आदिकसे आराधन करने वाले पुरुष
संपूर्ण अविद्याओं से पार उतर जाते हैं उस उपेन्द्र देवको नमस्कार करतीहूं जो विषाद तुष्टि-रोष
आदि प्रकारोंसे संपूर्ण प्राणियों के अन्तःकरणमें नृत्य करते हैं उस उपेन्द्रदेवको नमस्कार करती
हूं २९।३० जो सूर्य्यरूपी देवता दैत्योंकी अंधेरोरूप रात्रिको दूर करता है उनको नमस्कार करती
हूं ३१ चन्द्रमा और सूर्य्यरूपी अपने दोनों नेत्रोंसे जो संसारको देखताहै ऐसे उपेन्द्रजी को नम
स्कारकरतीहूं ३२ जिस विष्णु देवमें मेरा कहाहुआ यह सम्पूर्ण वृत्तान्त सत्यरूपसे स्थितहै तिस
उपेन्द्र देवको नमस्कारहै ३३ जोमैंने यह संपूर्ण स्तुति सत्यकहीहै तोमेरे इस स्तोत्रसे संपूर्ण म
नोरथ सिद्धहोजावे ३४ शौनकजी बोले ऐसे स्तुतिकियेहुए वह विष्णु भगवान् उस अदितिको कहि

स्त्वमदिते! यानिच्छस्यभिवाञ्छितान्। तांस्त्वंप्राप्स्यसिधर्मज्ञे! मत्प्रसादान्नसंशयः ३६ शृणुष्वसुमहाभागे वरोयस्तेहृदिस्थितः। तमाशुव्रियतांकामं श्रेयस्तेसम्भविष्यति। मे दर्शनंहिविफलं नकदाचिद्भविष्यति ३७ (अदितिरुवाच) यदिदेव! प्रसन्नस्त्वं मद्भक्त्याभक्तवत्सल!। त्रैलोक्याधिपतिःपुत्रस्तदस्तुममवासवः ३८ हृतंराज्यंहृताश्चास्य यज्ञभागामहासुरैः। त्वयिप्रसन्नेवरदे तान्प्राप्नोतुसुतोमम ३९ हृतंराज्यंनदुःखाय ममपुत्रस्यकेशव!। सापत्नाद्दायनिर्भ्रंशो बाधांनःकुरुतेहृदि ४० (श्रीभगवानुवाच) कृतःप्रमादोहिमया तवदेवि! यथेप्सितः। स्वांशेनचैवतेगर्भे सम्भविष्यामिकश्यपात् ४१ तव गर्भसमुद्भूतस्ततस्तेयेसुरारयः। तानहंनिहनिष्यामि निवृत्ताभवनन्दिनि! ४२ (अदितिरुवाच) प्रसीददेव! देवेश! नमस्तेविश्वभावन!। नाहंत्वामुदरेदेव! वोढुंशक्ष्यामिकेशव! ४३ यस्मिन्प्रतिष्ठितंविश्वं योविश्वंस्वयमीश्वरः। तमहंनोदरेणत्वां वोढुंशक्ष्यामिदुर्धरम् ४४ (श्रीभगवानुवाच) सत्यमात्थमहाभागे! मयिसर्वमिदंजगत्। प्रतिष्ठितंनमांशक्ता वोढुंसेन्द्रादिवौकसः ४५ किंत्वहंसकलान्लोकान् सदेवासुरमानुषान्। जङ्गमान्स्थावरान्सर्वान् त्वाञ्चदेवि!सकश्यपाम् ४६ धारयिष्यामिभद्रन्ते तदलंसम्भ्रमेणते। नतेग्लानिर्नतेखेदो गर्भस्थेभवितामयि ४७ दाक्षायणि! प्रसादन्ते करोम्यन्यैःसुदुर्लभम्। गर्भस्थेमयिपुत्राणां तवयोऽभिभविष्यति। तेजसस्तस्यहानिश्च करिष्येमाव्यथांकृथाः ४८ (शौनकउवाच) एवमुक्त्वाततःसद्यो यातोऽन्तर्धानमीश्वरः। सापिकालेन

ही दर्शन देतेभये ३५ और अदिति से बोले कि हे धर्मज्ञ अदिति तू अपने विचारेहुए मनोरथोंको निस्संदेह शीघ्रही प्राप्तहोजावेगी ३६ हे महाभागे तेरे हृदयमें जो वर स्थित है उसको शीघ्रही मांग तेरा कल्याण होवेगा मेरा दर्शन कभी निष्फल नहीं होताहै ३७ अदिति बोली हे देवदेव जो आप मेरी भक्तिसे प्रसन्नहुएहो तो यह वर मांगतीहूं कि मेरा पुत्र इन्द्र त्रिलोकीका पतिहो ३८ दैत्योंने उसका राज्य और यज्ञकाभाग सब हरलियाहै सो आपकी कृपासे मेरे पुत्रको यह सब वस्तु प्राप्तहोजावें हे देव राज्य हरे जानेका ऐसा सन्देह नहीं है जैसा कि सौतके पुत्रोंके राज्य होजानेकाहै यह मेरे हृदयमें बड़ा संतापहै ३९। ४० श्रीभगवान् बोले हे देवि मैं प्रसन्न होगयाहूं इसकारण अपने अंशसे कश्यपजीके वीर्यके द्वारा तेरे उदरमें उत्पन्नहूंगा औरतेरे गर्भसे उत्पन्न होकर मैं संपूर्ण दैत्यों कोमारूंगा, यहसुनकर अदिति कहनेलगी हे देवेश आपतो प्रसन्नहैं परन्तु मैं आपको गर्भमें धारण करनेको समर्थनहींहूं आपतो दुर्द्धरहो ४१ यह सुनकर भगवान् बोले हे महाभागे तू सत्य कहतीहै सब जगत् मुझमें स्थितहै मुझको इन्द्रादिक देवताभी नहीं धारण करसक्तेहैं परन्तु लोकों समेत देवता मनुष्य युक्त स्थावर जंगम जगत् और कश्यप सहित तुझको मैंही धारण करूंगा तू भ्रममत करे तेरा कल्याणहोगा जब मैं तेरेगर्भमें आकर स्थितहूंगा तब तुझको कुछभी सन्देहनहोगा ४२।४७ और जब मैं तेरे उदरमें स्थितहूंगा तब जोपुरुष तेरेपुत्रोंका तिरस्कार करेगा उसके तेजकी हानिकरूंगा ४८ शौनकजी कहते हैं कि ऐसा कहकर वह विष्णु भगवान् शीघ्रही अन्तर्द्धान होगये फिर समय

तंगर्भमवापकुरुसत्तम ! ४९ गर्भस्थितेततःकृष्णे चचालसकलाक्षितिः । चकम्पिरेम हाशैलाः क्षोभञ्जग्मुस्तथाब्धयः ५० यतोयतोदितिर्याति ददातिललितंपदम् । ततस्त तःक्षितिःखेदात् ननामवसुधाधिप ! ५१ दैत्यानामथसर्वेषां गर्भस्थेमधुसूदने । बभूवते जसांहानिर्यथोक्तंपरमेष्ठिना ५२ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रिचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४३॥

(शौनकउवाच) निस्तेजसोऽसुरान्दृष्ट्वा समस्तानसुरेश्वरः । प्रह्लादमथपप्रच्छ्ब लिरात्मपितामहम् १ (बलिरुवाच) तात ! निस्तेजसोदैत्या निर्दग्धाइववह्निना । कि मेतेसहसैवाद्य ब्रह्मदण्डहताइव २ दुरिष्टंकिन्नुदैत्यानां किंकृत्यावैरिनिर्मिता । नाशायैषा समुद्भूता ययानिस्तेजसोऽसुराः ३ (शौनकउवाच) इतिदैत्यपतिर्धीरःपृष्टःपौत्रेणपा र्थिव ! । चिरन्ध्यात्वाजगादैनमसुरेन्द्रंबलिन्तदा ४ चलन्तिगिरयोभूमिर्जहातिसहसा धृतिम् । सर्वेसमुद्राःक्षुभिता दैत्यानिस्तेजसःकृताः ५ सूर्योदयेयथापूर्वं तथागच्छन्ति नग्रहाः । देवानाञ्चपरालक्ष्मीःकारणैरनुमीयते ६ महदेतन्महाबाहो ! कारणंदानवेश्वर ! । नह्यल्पमितिमन्तव्यं त्वयाकार्यंसुरार्दन ! ७ (शौनकउवाच) इत्युक्त्वादानवपतिं प्रह्ला दःसोऽसुरोत्तमः । अत्यन्तभक्तोदेवेशं जगाममनसाहरिम् ८ सध्यानयोगंकृत्वाथ प्रह्ला दःसुमनोहरम् । विचारयामासततो यतोदेवजनार्दनः ९ सददर्शोदरेदित्या प्रह्लादोवा

पाकर वह अदितिभी उन विष्णुजीको गर्भमें धारण करतीभई ४९ जब विष्णु भगवान् अदितिके गर्भमें स्थितहोतेभये उससमय संपूर्ण पृथ्वी चलायमान होतीभई सबपर्व्वत काँपनेलगे और सातों समुद्र क्षोभितहुए जहाँ २ अदिति चलतीहुई पैरको टेक देतीथी वहाँ २ की पृथ्वी अदितिको प्रणाम करतीभई और जिस समय अदितिके गर्भमें विष्णु भगवान् प्राप्तहोतेभये उसी समय संपूर्ण दैत्यों के तेजोंकी हानि होजातीभई ५०।५२ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४३॥

शौनकजी बोले कि इसके पश्चात् बलिदैत्य दानवोंको तेजहत देखकर अपने पितामह प्रह्लाद जीसे पूछताभया १ कि हे तात सबदैत्य अग्नि से जलेहुओंकी समान तेज रहित होगये हैं इसीसे ब्रह्मदंडसे हतहुए के सदृश दिखाईदेते हैं यह क्या बातहै २ क्या ऐसा तेज बिगड़जानेसे दैत्यों का नाश होवेगा ३ शौनकजी कहते हैं कि पौत्रसे पूछाहुआ धैर्य्यवान् प्रह्लाद बहुत देरतक ध्यानक रके अपने पौत्र राजाबलि से यहबात कहताभया ४ कि यह संपूर्ण पृथ्वी चलायमान है पर्व्वत कांपते हैं दैत्य तेज रहित होगये हैं जैसे कि सूर्य्यके उदयमें ग्रहोंका तेज नहीं रहताहै इसीप्रकार दैत्यों का तेज नष्ट होजाने के कारण से देवताओं की परमलक्ष्मी का अनुमान किया जाता है-हे दान वेश्वर अब बड़ाभारी कारण उत्पन्नहुआहै इसको थोड़ासा कारण मतअनुमान करना ५।७ शौनक जी कहते हैं, कि इसप्रकारसे प्रह्लादजी बलिके आगे कहकर अत्यन्त भक्ति पूर्व्वक मनको एकाग्र कर विष्णुभगवान्की शरणमें जातेभये ८ वह प्रह्लादजी सुन्दर मनोहर ध्यान योगके द्वारा जहाँ

मनाकृतिम्। अन्तस्थान्बिभ्रतंसप्त लोकानादिप्रजापतिम् १० तदन्तस्थान्वसून्रु द्रानश्विनौमरुतस्तथा। साध्यान्विश्वांस्तथादित्यान् गन्धर्वोरगराक्षसान् ११ विरोच नंसतनयं बलिञ्चासुरनायकम्। जम्भंकुजम्भंनरकं तत्रैवान्यान्महासुरान् १२ आ त्मानमुर्वीङ्गगनं वायुमम्भोहुताशनम्। समुद्रान्वैद्रुमसरित् सरांसिचपशून्मृगान्। व योमनुष्यानखिलांस्तथैवचसरीसृपान् १३ (प्रह्लादउवाच) वत्सज्ञातंमयासर्वं यद र्थंभवतामियम्। तेजसोहानिरुत्पन्ना तच्छृणुत्वमशेषतः १४ देवदेवोजगद्योनिरयोनि र्ज्जगदादिकृत्। अनादिरादिर्विश्वस्य वरेण्योवरदोहरिः १५ परम्पराणांपरमः परः परवतामपि। प्रमाणञ्चप्रमाणानां सप्तलोकगुरोर्गुरुः १६ प्रभुःप्रभूणांपरमःपराणामना दिमध्योभगवाननन्तः। त्रैलोक्यमंशेनसनाथमेष कर्तुंमहात्मादितिजोऽवतीर्णः १७ नतस्यरुद्रोनचपद्मयोनिर्नेन्द्रोनसूर्य्येन्दुमरीचिमुख्याः। जानन्तिदैत्याधिप! यत्स्वरूपं सवासुदेवःकलयावतीर्णः १८ योऽसौकलांशेननृसिंहरूपी जघानपूर्व्वंम्पितरंममेशः। यःसर्वयोगीशमनोनिवासः सवासुदेवःकलयावतीर्णः १९ यमक्षरंवेदविदोविदित्वा विश न्तियंज्ञानविधूतपापाः। यस्मिन्प्रविष्टानपुनर्भवन्ति तंवासुदेवंप्रणमामिनित्यम् २० भूतान्यशेषाणियतोभवन्ति यथोर्मयस्तोयनिधेरजस्रम्। लयञ्चयस्मिन्प्रलयेप्रयान्तितं वासुदेवंप्रणमाम्यचिन्त्यम् २१ नयस्यरूपंनबलप्रभावौ नयस्यभावःपरमस्यपुंसः। वि

विष्णुभगवान् ये उसी स्थानको चिन्तवन करतेभये ९ अर्थात् वह प्रह्लादजी अदितिके गर्भमें वामन स्वरूपी विष्णुभगवान्को चिन्तवन करतेभये और उस वामन रूपी भगवान्के भीतर सातों लोकों समेत वसु, रुद्र, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, साध्यदेवता, विश्वेदेवा, साध्य, आदित्य गन्धर्व उरग, राक्षस, विरोचनदैत्य, बलि, जंभ, कुंभ, नरकासुर आदिक महाअसुरोंको और सप्तसमुद्र, वृक्ष नन्दी पशु, मृग सब मनुष्य, सर्प, बिच्छू आदि जीवोंको भी भगवान् के बीचमें देखताभया १०।१३ प्रह्लादने कहा, हेवत्स जिसकारणसे इन सबदैत्योंके तेजहत होगये हैं वह मैं सब जानताहूं उसको तुम मुझसे सुनो १४ देवदेव जगत्योनि अनादि विश्वकी आदि वरेण्य वरद परमों के भी परम प्रमाणोंके प्रमाण सातों लोकोंकेगुरु प्रभुओंके प्रभु आदि मध्य और अन्तसे रहित त्रिलोकीके नाथ अनन्त रूप श्रीविष्णुभगवान् ने अदितिके सकाशसे अवतार लिया है १५।१७ हेदैत्याधिप जिसके रूपको ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, इन्द्र सूर्य चन्द्रमा और मरीच्यादिक ऋषि यह सब नहीं जानते हैं वह वासुदेव भगवान् आप अपनी कलासे उतरे हैं १८ इसी देवने प्रथम अपनी कलासे नृसिंहरूप होकर मेरे पिताको माराथा यही संपूर्ण योगयुक्त शान्त और सबका निवास होकर अपनी कलासे उतरा है १९ यह अक्षर ब्रह्महै जिसके जाननेवाले वेदवेत्ता पुरुष अपने ज्ञानसे सब पापोंसे छुटकर उसीमें लीन होजाते हैं जिसमें कि प्रवेशहुए पुरुष फिर जन्म नहीं लेते हैं उसी वासुदेवको मैं नित्य प्रणाम करताहूं २० जैसे कि समुद्रमें से तरंगें उत्पन्न होती हैं उसी प्रकार संपूर्ण जगत्के भूतमात्र भी उसीसे उत्पन्न होते हैं जिसमें सब संसार लीन होजाता है उस वासुदेवको प्रणाम

ज्ञायतेशर्वपितामहाद्यैस्तंवासुदेवंप्रणमाम्यजस्रम् २२ रूपस्यचक्षुर्ग्रहणेत्वगिष्टा ! स्प र्शग्रहित्रीरसनारसस्य । श्रोत्रञ्चशब्दग्रहणेनराणां घ्राणञ्चगन्धग्रहणेनियुक्तम् २३ येनैक दंष्ट्राग्रसमुद्धृतेयं धराचलान्धारयतीहसर्वान् । यस्मिंश्चशेतेसकलंजगच्च तमीशमाद्यं प्रणतोऽस्मिविष्णुम् २४ नघ्राणग्राह्यःश्रवणादिभिर्यः सर्वेश्वरोवेदितुमक्षयात्मा । शक्य स्तमीड्यंमनसैवदेवं ग्राह्यन्ततोहंहरिमीशितारम् २५ अंशावतीर्णेनचयेनगर्भे हतानितेजांसिमहासुराणाम् । नमामितंदेवमनन्तमीशमशेषसंसारतरोःकुठारम् २६ देवोजगद्यो निरयंमहात्मा सषोडशांशेनमहासुरेन्द्र ! । सदेवमातुर्जठरंप्रविष्टो हतानिवस्तेनबलाद्व पूंषि २७ (बलिरुवाच) तात ! कोऽयंहरिर्नाम यतोनोभयमागतम् । सन्तिमेशतशोदैत्या वासुदेवबलाधिकाः २८ विप्रचित्तिःशिविःशंकुरयःशंकुस्तथैवच । अयःशिरास्त्वश्वशिरा भङ्गकारोमहाहनुः २९ प्रतापःप्रघसःशम्भुः कुकुरश्चसुदुर्जयः । एतेचान्येच मेसन्ति दैतेयादानवास्तथा ३० महाबलामहावीर्या भूभारोद्धरणक्षमाः । एषामेकैकशः कृष्णो नवीर्यार्द्धेनसम्मितः ३१ (शौनकउवाच) पौत्रस्यैतद्वचःश्रुत्वा प्रह्लादोदैत्यपुङ्गवः । धिग्धिगित्याहसबलिं वैकुण्ठाक्षेपवादिनम् ३२ (प्रह्लादउवाच) विनाशमुपयास्यन्ति मन्येदैतेयदानवाः ! । येषांत्वमीदृशोराजा दुर्बुद्धिरविवेकवान् ३३ देवदेवंमहा

करताहूं २१ जिसपरम पुरुषके रूप, बल, भाव ब्रह्मादिक देवताओंसे भी नहीं जानेजातेहैं उसवासुदेवको मैंनित्य प्रणाम करताहूं २२ जिसने सबमनुष्योंके शरीरमें रूपकेदेखनेकोचक्षु, स्पर्शकरनेको त्वचा, रसग्रहण करने को जिह्वा, शब्द ग्रहण करने को श्रोत्र और गन्धग्रहण करने को नासिका यह सब इन्द्रियां नियुक्त कर रक्खी हैं, जो बराह रूपसे अपनी एक डाढ़के द्वारा संपूर्ण पृथ्वीको पातालसे लाकर सबका उद्धार करतेभये, जिसमें कि संपूर्ण जगत् शयन करता है उस आद्यईश विष्णु को प्रणाम करता हूं, नासिका और श्रोत्रादिक इन्द्रियोंसे ग्रहण नहीं होता केवल मनहीसे विचार किया जाताहै ऐसे उस ईश्वरको प्रणाम करता हूं २३।२४ जिसने गर्भमें वास करतेही अपने अंशसे सब दैत्यों के तेज नष्ट करदिये हैं वह अनन्तहै संसार रूपी वृक्षका काटनेवालाहै ऐसे ईश्वरको मैं प्रणामकरताहूं २५।२६ हेमहासुरेन्द्र यह देव सबजगत्कीयोनिहै वह देवताओंकी माताकेउदरमें प्रविष्टहुआहै और तुमसबदैत्योंके तेजोंकोभी वहीनष्टकरदेनेवालाहै २७ बलिदैत्यबोला हेतात जिससे कि हमसबको भयहुआहै वहहरिनाम कौनसादेवताहै इसवासुदेवसेभी अधिक बलवाले सैकड़ोंदैत्य मेरे पासहैं २८ विप्रचित्ति शिवि, शंकुरय, शंकु, अयःशिरा, अश्वशिरा, भंगकार, महाहनु, प्रताप, प्रघस, शंभु, कुकुर और सुदुर्जय यहसब और अन्य बहुतसे दानव मेरे पास महाबल और पराक्रमवाले हैं, यह सब पृथ्वीकेभीभार उठाने में समर्थ हैं इन प्रत्येकके आधे २ बलके भी समान विष्णु देवनहीं हैं २९।३१ शौनकजी कहतेहैं कि दैत्योंमें महाउत्तम वह प्रह्लाद अपने पौत्रके मुखसे इसवचनको सुनकर उस बलिको धिक् २ शब्दोंसे धिक्कार देताभया ३२ और यह कहने लगाकि हेबलि जिनदानवोंके गर्वसे तू ऐसादुर्बुद्धि राजाहोरहाहै वह सब दैत्य और दैत्यों के राजा नष्टहोजावेंगे ३३ उन देव

भागं वासुदेवमजंविभुम्। त्वामृतेपापसङ्कल्पः कोऽन्यएवंवदिष्यति ३४ यएतेभवताप्रो
क्ताः समस्तादैत्यदानवाः। सब्रह्मकास्तथादेवाः स्थावरानन्तभूमयः ३५ त्वञ्चाहञ्चजग
च्चेदं साद्रिद्रुमनदीनदम्। समुद्रद्वीपलोकाश्च नसमंकेशवस्यहि ३६ यस्यातिवन्द्यवन्द्य
स्य व्यापिनःपरमात्मनः। एकांशेनजगत्सर्वं कस्तमेवंप्रवक्ष्यति ३७ ऋतेविनाशाभिमुखं
त्वामेकमविवेकिनम्।कुबुद्धिमजितात्मानं वृद्धानांशासनातिगम् ३८ शोच्योऽहंयस्यमेगे
हे जातस्तवपिताधमः। यस्यत्वमीदृशःपुत्रो देवदेवस्यनिन्दकः ३९ तिष्ठत्येषाहिसंसारस
म्भृताघविनाशिनी। कृष्णेभक्तिरहन्तावदवेक्ष्योभवतानुकिम् ४० नमेप्रियतमःकृष्णाद
पिदेहोमहात्मनः। इतिजानात्ययंलोकोनभवान्दितिजाधम!४१ नजानासिप्रियतरंप्राणे
भ्योऽपिहरिंमम। निन्दांकरोषितस्यत्वमकुर्वन्गौरवंमम ४२ विरोचनस्तवगुरुर्गुरुस्त
स्याप्यहंबले!। ममापिसर्वजगतां गुरोर्नारायणोगुरुः ४३ निन्दांकरोषियस्तस्मिन्कृष्णे
गुरुगुरोर्गुरो। यस्मात्तस्मादिहैश्वर्यादचिराद्भ्रंशमेष्यसि ४४ ममदेवोजगन्नाथोबले!
तावज्जनार्दनः।भवत्वहमुपेक्ष्यस्ते प्रीतिमानस्तुमेगुरुः४५ एतावन्मात्रमप्येवं निन्दितो
जगतोगुरुः।नावेक्षितंत्वयायस्मात् तस्माच्छापन्ददामिते ४६ यथामेशिरसश्छेदादिदं
गुरुतरंवचः।त्वयोक्तमच्युताक्षेपिराज्यभ्रष्टस्तथापत ४७यथाचकृष्णान्नपरंपरित्राणंभवा
र्णवे। तथाचिरेणपश्येयं भवन्तंराज्यविच्युतम् ४८ (शौनकउवाच) इतिदैत्यपतिःश्रुत्वा

देव महाभाग अज विभुश्रीवासुदेव भगवान् को तेरेविना अन्य कौनसा महापापी ऐसे वचन कहसका है ३४।३५ जोकितैंने यह सव दैत्य और दानव गिनाये हैं यह सव और ब्रह्मादिक देवता स्थावर जंगम जगत्- समुद्र- द्वीप- तू- मैं- नदी- वृक्ष और संपूर्णलोक यह सव उस विष्णुभगवान्की दृष्टि में समान हैं ३६ जिस सर्वव्यापी विष्णुभगवान्के एक अंशकरके संपूर्णजगत् व्याप्तहोरहा है उसको ऐसा वचन कौन कहसकाहै ३७ तूकुवुद्धी है विवेकरहितहै-वृद्धपुरुषोंका वचन नहींमानताहै इसहेतु से तेरे समान कोई मूर्ख नहीं है ३८ मेरे घरमें तू उत्पन्नहुआ है इस निमित्त मुझकोभी बड़ा शोचहै क्योंकि तू विष्णुभगवान्की निन्दा करने वाला पैदाहुआ है ३९ संसारके पापोंकी दूरकरने वाली विष्णुभगवान्की भक्तिहै मुझको कृष्णकी भक्तिके विना दूसरी कोई वस्तु प्रियनहीं है इस बातको सव मनुष्यजानतेहैं परन्तु तू दुष्ट नहीं जानताहै मुझको हरि प्राणोंसेभीप्यारे हैं तू इस बातकोभीन जानकर मेरे वड़प्पनको दूरकरके हरिभगवान्की निन्दाकरताहै ४०।४१ हे वलि तेरापिता विरोच- नहै मैं विरोचन काभीपिताहूं और मेरेभीगुरु सव जगतोंकेपति नारायणहैं उनकीभी तू निन्दाकरता है इसहेतुसे तू शीघ्रही राज्यसे भ्रष्ट होजायगा ४३।४४ जनार्दन विष्णुभगवान् मेरा देवहै- गुरुहै उसकीजोतूनिन्दा करताहै इस हेतुसे तैंने मुझको जोत्यागाहै इसीसे अव तुझको शापदेताहूं ४५।४६ तैंने भगवान्की निन्दाका यह ऐसा वचन कहाहै मानों मेराशिरहीकाट लियाहै सो अवतूभी राज्यसे पतितहोजायगा ४७ मैं श्रीकृष्णके सिवाय संसाररूपी सागर में अपनी रक्षाका करने वाला दूसरे किसीको नहींजानताहूं इसहेतुसे मैं वहुतशीघ्र तुझराज्यसे पतित होनेवालेको देखूंगा४८शौनकजी

गुरोर्वचनमप्रियम्। प्रसादयामासगुरुंप्रणिपत्यपुनःपुनः४९ (बलिरुवाच) प्रसीदतात!
माकोपंकुरुमोहहतेमयि। बलाबलेपमत्तेन मयैतद्वाक्यमीरितम् ५० मोहोपहतविज्ञानः
पापोऽहंदितिजोत्तम!। यच्छप्तोऽस्मिदुराचारस्तत्साधुभवताकृतम् ५१ राज्यभ्रंशंवसु
भ्रंशं प्राप्यैवनतथाप्यहम्। विषण्णोऽस्मियथातात! तवैवाविनयेकृते ५२ त्रैलोक्यरा
ज्यमैश्वर्यमन्यद्वानातिदुर्लभम्। संसारेदुर्लभास्तेतुगुरवोयेभवद्विधाः ५३ तत्प्रसीदनमे
कोपंकर्त्तुमर्हसिदैत्यप!। त्वत्कोपदग्ध्यातातांहं परितप्येनशापतः ५४ (प्रह्लादउवाच)
वत्स! कोपेनमोहेन जनितस्तेनतेमया। शापोदत्तोविवेकश्च मोहेनापहतोमम ५५ य
दिमोहेनमेज्ञानं नाक्षिप्तंस्यान्महासुर!। तत्कथंसर्वगंजानन् हरिंकिञ्चिच्छपाम्यहम् ५६
योऽयंशापोमयादत्तो भवतोऽसुरपुङ्गव!। भाव्यमेतेननूनन्ते तस्मान्मात्वंविषीदवै ५७
अद्यप्रभृतिदेवेशे भगवत्यच्युतेहरौ। भवेथाभक्तिमानीशे सतेत्राताभविष्यति ५८ शापं
प्राप्याथमांवीर! संस्मरेथाःस्मृतस्त्वया। तथातथायतिष्येऽहं श्रेयसायोज्यसेयथा ५९
एवमुक्त्वासदैत्येन्द्रं विरराममहाद्युतिः। अजायतसगोविन्दो भगवान्वामनाकृतिः ६०
अवतीर्णेजगन्नाथे तस्मिन्सर्वामरेश्वरे। देवाश्चमुमुचुर्दुःखं देवमातादितिस्तथा ६१ व
वुर्वाताःसुखस्पर्शा विरजस्कमभून्नभः। धर्मेचसर्वभूतानां तदामतिरजायत ६२ नोद्वेग

कहते हैं कि वह दैत्यबलि प्रह्लाद के इसप्रकारके वचनको सुनकर अपने वृद्ध प्रह्लाद को बारं
बार प्रसन्न करताभया ४९ बलि कहताहै हे तात आप प्रसन्न हूजिये मुझे अज्ञानहोगयाहै मैंने अ
भिमानसे प्रमत्तहोकर ऐसे वचन कहेहैं ५० मेराज्ञानमोहसे हतहोगयाहै मैं पापी हूं आपने जो मुभ
को शापदियाहै सो बहुत अच्छाकियाहै ५१ हे तात राज्य भ्रष्टहोनेसे और द्रव्यके हरनेसे मैं ऐसा
दुखितनहीं हूंगाजैसाकि आपको विनयकिये विना दुखितहोरहाहूं ५२ त्रैलोक्यका राज्य प्राप्तहोना
अथवा इससेभीकुछ अधिक प्राप्तहोना दुर्लभनहीं है परन्तु आपसरीखे गुरुजनों का मिलना इस सं
सारमें बड़ादुर्लभहै ५३ इसहेतुसे आपमुझपर प्रसन्नहोकर कोपकोत्यागदीजिये आपकी कोपकीदृष्टि
से मैं अत्यन्तदुःखपारहाहूं ५४ प्रह्लादनेकहा मेरेतोक्रोधनहीं है तेरेही अज्ञानसे मुझकोक्रोध उत्पन्न
होगयाहै तेरे अज्ञानसे मेरा विवेकनष्ट होगयाथा इसलिये तुझको शापदियाहै ५५ और जो तेरे अज्ञान
से मेराज्ञानदूरनहींहुआहोता तो सर्वज्ञहरिको जाननेवाला मैं तुझको क्या शाप देता ५६ हे असुर
श्रेष्ठ मैंने जो यह शापदियाहै वह अवश्यहोवेगा परन्तु अबसे आगे देवेश विष्णुभगवान् में तेरी प्रीति
निरन्तरहोगी और वही विष्णुभगवान् तेरीरक्षाकरने वालेहोवेंगे— ५७।५८ और इस शापको प्राप्त
होकर जबकभी तूमेरास्मरणकरेगा उसीसमय मैं तेरी सहायताकरूंगा ५९ ऐसे कहकर वह दैत्येन्द्र
प्रह्लादचुपकाहोरहा-इसकेअनन्तर विष्णुभगवान् वामनरूपधारणकरके जन्मलेतेभये ६० जबविष्णु
भगवान्ने जन्मलिया तबसंपूर्णदेवता और देवताओंकी माता आदिति अपनेदुःखकोत्यागतीभई ६१
सुखपूर्वक स्पर्श करनेवाली वायुचलनेलगी आकाशधूलसे रहितहोगया और सबप्राणी मात्रों की
बुद्धिधर्म में स्थितहोजाती भई ६२ और संपूर्ण देवता मनुष्य-असुर-भूमि-स्वर्ग और आकाश

श्चाप्यभूत्तत्र मनुजेन्द्रासुरेष्वपि। तदादिसर्वभूतानां भूम्यम्बरदिवौकसाम् ६३ तंजात मात्रंभगवान् ब्रह्मालोकपितामहः। जातकर्मादिकंकृत्वा कृष्णंदृष्ट्वाचपार्थिव!। तुष्टावदेवदेवेशमृषीणाञ्चैवशृण्वताम् ६४ (ब्रह्मोवाच) जयादेश! जयाजेय! जयसर्वात्मकात्मक। जयजन्मजरापेत! जयानन्त! जयाच्युत ६५ जयाजित! जयामेय! जयाव्यक्तस्थिते! जय। परमार्थार्थसर्वज्ञ! ज्ञानज्ञेयात्मनिःसृत! ६६ जयाशेष! जगत्साक्षिन्! जगत्कर्त! जगद्गुरो! जगतोऽस्यान्तकृद्देवस्थितिंपालयितुंजय ६७ जयाशेष! जयाशेष! जयाखिल! हृदिस्थित!। जयादिमध्यान्त! जय सर्वज्ञाननिधे! जय ६८ मुमुक्षुभिरनिर्देश्य! स्वयंदृष्टजनेश्वर! योगिनांमुक्तिफलदक! दमादिगुणभूषण! ६९ जयातिसूक्ष्म! दुर्ज्ञेय! जयस्थूल! जगन्मय!। जयस्थूलातिसूक्ष्म! त्वंजयातीन्द्रिय! सेन्द्रिय! ७० जयस्वमायायोगस्थ! शेषभोग! जयाक्षर!। जयैकदंष्ट्राप्रान्ताग्र समुद्धृतवसुन्धर! ७१ नृकेसरिन्! जयाराति वक्षस्थलविदारण!। सांप्रतंजयविश्वात्मन्! जयवामन! केशव! ७२ निजमायापटच्छन्न! जगन्मूर्ते! जनार्दन!। जयाजित! जयानेक स्वरूपैकविध! प्रभो! ७३ वर्द्धस्ववर्धिताशेषविकारप्रकृते! हरे!। त्वय्येषाजगतामीशे संस्थिताधर्मपद्धतिः ७४ नत्वामहंनचेशानो नेन्द्राद्यास्त्रिदशाहरे!। नज्ञातुमीशामुनयः सनकाद्यानयोगिनः ७५ त्वन्मायापटसम्वीते जगत्यत्रजगत्पते!। कस्त्वांवेत्स्यतिसर्वेश त्वत्प्रसादंविनानरः ७६ त्वमेवाराधितोयेन प्रसादसुमुख! प्रभो!। सएकःकेवलोदेव! वेत्तित्वां नेतरेजनाः७७ नन्दीश्वरेश्वरेशान! प्रभो! वर्धस्ववामन!। प्रभवायास्यविश्वस्य विश्वा

इन सब में किसी प्रकारका उपद्रवनहींरहा ६३ उन वामनजीका जन्महोतेही ब्रह्माजी जातकर्म करके सब ऋषियोंके सुनतेहुए स्तुति करतेभये ६४ ब्रह्माजीबोले हे आद्येश आपकीजयहो हे सर्वात्मक जन्म जरावस्थादि से रहित अनन्त अच्युत ६५ जयाजित–जयामेय–जयाव्यक्तस्थिते जय परमार्थसर्वज्ञ, जय अशेषजय जगत्साक्षिन् और हेजगद्गुरो हेदेव इसजगत्की स्थिति और पालन के निमित्त जयकरिये ६६।६७ जयाशेष, जय अखिलहृदिस्थित, जयादिमध्यान्त,जय सर्वज्ञाननिधे ६८ मुमुक्षुपुरुषोंको अनिर्देश्य दृष्टजनेश्वर–योगियोंके मुक्ति फलदेनेवाले दम आदि गुणोंके भूषण, अतिसूक्ष्म–दुर्ज्ञेय और स्थूल जगन्मय ऐसे आप हमारी जयकरो–स्थूल अतिसूक्ष्म–अतीन्द्रिय–सेन्द्रिय–अपनीमायाके योगमेंस्थित–अक्षर हे एकदंष्ट्राके अग्रभागसे पृथ्वीका उद्धार करनेवाले आपजयकीजिये ६९। ७१ हे शत्रुओं के हृदयफाड़नेवाले नृसिंह विश्वात्मन् वामन और केशवहमारीजयकरो ७२ हे अजित अपनी मायाके वस्त्रसे आच्छादित–जगन्मूर्त्ति–जनार्दन–और प्रभु हमारीजयकरो ७३ हेहरे संपूर्ण प्रकृतियोंके विकारोंको बढ़ानेवाले आपहीमेंसंपूर्णजगतों के धर्मका मार्गस्थितहै ७४ हे हरे आपके रूपोंको शिव इन्द्रादिक देवता–मुनि और सनकादिक योगीजनभी नहींजानसकेहैं ७५ हे देव यह संपूर्णजगत् आपकीही मायाके वस्त्रसे आच्छादितहोरहाहै इसहेतुसे तुम्हारी कृपाविनातुमको कौन जानसक्ताहै ७६ हे देवजो पुरुषकेवल एक तुम्हाराही ध्यान करताहै

त्मन्! पृथुलोचन! ७८ (शौनकउवाच) एवंस्तुतोहृषीकेशः सतदावामनाकृतिः। प्रह स्यभावगम्भीरमुवाचाब्जसमुद्भवम् ७९ स्तुतोऽहंभवतापूर्वमिन्द्राद्यैःकश्यपेनच। म याचवःप्रतिज्ञात मिन्द्रस्यभुवनत्रयम् ८० भूयश्चाहंस्तुतोदेव्या तस्याश्चापिप्रतिश्रुत म्। यथाशक्रायदास्यामि त्रैलोक्यंहतकण्टकम् ८१ सोऽहन्तथाकरिष्यामि महेन्द्रोजग तःपतिः। भविष्यतिसहस्राक्षः सत्यमेतद्ब्रवीमिवः ८२ ततःकृष्णाजिनंब्रह्माहृषीकेशाय दत्तवान्। यज्ञोपवीतंभगवान् ददौतस्मैबृहस्पतिः ८३ आषाढमददाद्दण्डं मरीचिर्ब्रह्म णःसुतः। कमण्डलुंवसिष्ठश्च कौशंवेदमथाङ्गिराः ८४ अक्षसूत्रञ्चपुलहः पुलस्त्यःसित वाससी। उपतस्थुश्चतंवेदाः प्रणवोङ्कारभूषणाः ८५ शास्त्राण्यशेषाणितथा सांख्ययोगो क्तयश्चयाः। सवामनोजटीदण्डी छत्रीधृतकमण्डलुः ८६ सर्वदेवमयोभूत्वा बलेरध्वर मभ्यगात्। यत्रयत्रपदम्भूयो भूभागेवामनोददौ ८७ ददातिभूमिर्विवरंतत्रतत्रापिपीडिता। सवामनोजडगतिर्मृदुगच्छन्सपर्वताम्। साब्धिद्वीपवतींसर्वांश्चालयामासमेदिनीम् ८८

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुश्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४४॥

(शौनकउवाच) सपर्व्वतवनामुर्व्वीं दृष्ट्वासंक्षोभितांबलिः। पप्रच्छोशनसंशुक्रं प्रणि पत्यकृताञ्जलिः १ आचार्य्य! क्षोभमायाता साब्धिभूभृद्वनामही। कस्मान्नासुरान्भा गान् प्रतिगृह्णन्तिवह्नयः २ इतिपृष्टोऽथबलिना काव्योवेदविदांवरः। उवाचदैत्याधि

वही आपकोजानताहै अन्यकोई जनभी आपको नहीं जानसकाहै ७७ हेनन्दीश्वर ईशान प्रभो वामन रूप आपहमारी वृद्धिकरो और संपूर्ण जगत्की रक्षाकरो ७८ शौनकजी कहतेहैं कि वह वामनस्व रूपीभगवान् जब इस प्रकारसे स्तुतकियेगये तवबड़ेगंभीर भावसे हंसकर ब्रह्माजीसे यह वचन क हतेभये ७९ हेब्रह्मन् तुम समेतइन्द्रादिक देवताओंने और कश्यपने पूर्व में मेरीस्तुतिकीथी उससम यमैंने तुम्हारा मनोरथ जानलियाथा इसके पीछे जब अदितिने स्तुतिकीथी तबभी मैंने यह वरदिया था कि इन्द्र त्रिलोकीकापतिहोगा ८०।८१ जैसाकहाथा उसीप्रकार निस्सन्देह इन्द्रजगत्कापतिहो वेगा मैं सत्यसत्यही कहताहूं ८२ इसके अनन्तर ब्रह्माने तो वामनजी को मृगचर्म दिया—बृहस्पतिने यज्ञोपवीत-ब्रह्माके पुत्र मरीचिने दंड—वसिष्ठमुनिने कमण्डलु—अंगिराने कुशा और वेद—पुलह ऋषि ने अक्षमाला— पुलस्त्य ऋषिने श्वेतवस्त्र और ओंकार युक्त संपूर्ण वेद ८३।८५ और सांख्ययोग आदि संपूर्णशास्त्रभी वामनजीको प्राप्तहोजातेभये फिरजटा-दंड-कमंडलु और छत्र इनसबको धारण कियेहुए सर्ववेदमय वामनजी राजाबलिके यज्ञमें जातेभये वामन पृथ्वीके जिस २ स्थानमें अपने चरणधरतेभये उस २ स्थानकी अत्यन्तपीड़ित पृथ्वीमें छिद्र होजातेभये और जड़गतिसे शनैःशनैः चलतेहुए वामनजी पर्व्वतों समेत सप्तद्वीपापृथ्वी को चलायमान करतेभये ८६।८८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुश्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४४॥

शौनकजीबोले कि वन पर्व्वतों सहित हिलतीहुई पृथ्वीको देखकर राजाबलि अपने गुरुशुक्राचार्य्य से अंजलीबांधप्रणामकर यह वचनबोला १ हे आचार्य्यजी समुद्र वन पर्व्वतों समेत यहसंपूर्ण पृथ्वी

पतिं चिरन्ध्यात्वामहामतिः ३ अवतीर्णोजगद्योनिः कश्यपस्यगृहेहरिः। वामनेनेहरूपे
ण जगदात्मासनातनः ४ सएषयज्ञमायाति तवदानवपुंगव !। तत्पादन्यासविक्षोभादि
यंप्रचलितामही ५ कम्पन्तेगिरयश्चामी क्षुभितोमकरालयः। नैनंभूतपतिंभूमिः समर्था
वोढुमीश्वरम् ६ सदेवासुरगन्धर्वा यक्षराक्षसकिन्नरा। अनेनैवधृताभूमिरापोऽग्निःपव
नोनभः ७ धारयत्यखिलान्देवो मन्वादींश्चमहासुरः। इयमेवजगद्धेतोर्मायाकृष्णस्यगह्व
री ८ धार्यधारकभावेन ययासंपीडितंजगत्। तत्सन्निधानादसुरा भागार्हानासुरोत्तम!
भुञ्जतेनासुरान्भागानमीतेनैवचाग्नयः। ९ (बलिरुवाच) धन्योऽहंकृतपुण्यश्च यन्मे
यज्ञपतिःस्वयम्। यज्ञमभ्यागतोब्रह्मन्! मत्तःकोऽन्योऽधिकःपुमान् १० यंयोगिनःसदा
युक्ताः परमात्मानमव्ययम्। द्रष्टुमिच्छन्तिदेवेश समेऽध्वरमुपैष्यति ११ होताभागप्र
दोऽयञ्च यमुद्गाताचगायति। तमध्वरेश्वरंविष्णुं मत्तःकोऽन्यउपैष्यति १२ सर्वेश्वरेश्वरे
कृष्णे मदध्वरमुपागते। यन्मयाकाव्य! कर्तव्यं तन्ममादेष्टुमर्हसि १३ (शुक्रउवाच)
यज्ञभागभुजोदेवा वेदप्रामाण्यतोऽसुर!। त्वयातुदानवादैत्या मखभागभुजःकृताः १४
अयञ्चदेवःसत्वस्थः करोतिस्थितिपालनम्। विसृष्टेरनुचान्नेन स्वयमत्तिप्रजाःप्रभुः १५
त्वत्कृतेभवितानूनं देवोविष्णुःस्थितोस्थितः। विदित्वैतन्महाभाग! कुरुयत्नमनागतम्

क्योंक्षोभको प्राप्त होरहीहै और अग्निदेवताभी दैत्योंके भागको नहींग्रहण करतेहैं २ जब बलिने इस प्रकारका प्रश्न शुक्राचार्य्यसे किया तब आचार्य्यजीने बहुत समयतक ध्यानकरके राजाबलिसे कहाकि कश्यपके घरमें हरिभगवान् वामनरूपहोकर उत्पन्नहुएहैं सो तेरे यज्ञमें आते हैं उन्हीं के चरणोंके रखने से यहसब पृथ्वीचलायमान होरही है ३।५ ग्रहकांपरहे हैं--समुद्र क्षोभितहोरहाहै इस भूतपति भगवान् को यह पृथ्वी सहनहीं सकी है ६ इसी विष्णुभगवान् ने देव, गन्धर्व, दैत्य, यक्षराक्षस--किन्नर भूमि- जल- अग्नि- वायु और आकाश यह सब धारणकर रक्खेहैं और यही देव मनु आदिकोंकोभी जगत्के कारणके निमित्त धारणकरताहै यही इसकी गह्वरमायाहै ७।८ धार्य्य धारक भावहोने से यह जगत्पीड़ित होरहाहै और इसकी समीपता होनेसे देवताओंके भागको दैत्यग्रहण नहीं करते हैं और अग्निभी नहींग्रहण करताहै ९ बलिने कहामैं धन्यहूं क्योंकि यज्ञपति विष्णुभगवान् आपही मेरे यज्ञ में आते हैं इस हेतुसे मुझसे अधिकधन्य कौनपुरुषहै १० जिस परमात्माको योगीजन योग में युक्त होकर देखनेकी इच्छाकरतेहैं वहदेवेश मेरे यज्ञमें आवेंगे ११ यज्ञमें होतालोग जिसको भोग देतेहैं उद्गाता जिसकोगाताहै उस अध्वरेश विष्णुभगवान्को मेरे विना अन्य कौनपुरुष प्राप्तहोवेगा १२ सर्वेश्वरकृष्णदेव जब मेरे यज्ञमें प्राप्तहोवेंगे हे आचार्य्यजी तब मुझको क्याकरना योग्यहै इस बातका आप उपदेशकीजिये १३ शुक्राचार्य्यने कहा-- हे असुर वेदके प्रमाणसे यज्ञकेभागके भोगने वाले देवताहैं और तैंने दैत्य दानवोंहीको यज्ञकाभागी कररक्खाहै १४ यह विष्णुदेव सत्वगुणमें स्थितहोकर स्थिति और पालन करताहै यही प्रभु विष्णु शिवरूप होकर प्रजाकानाश करता है सो अब यह विष्णुदेव प्रजाकी स्थितिकरने में स्थितहोरहा है सो इसको जानकर तुमको यत्न करना चाहिये हे

१६ त्वयाहिदैत्याधिपते ! स्वल्पकेऽपिहिवस्तुनि। प्रतिज्ञानहिवोढव्या वाच्यंसामत्था
फलम् १७ नालन्दातुमहन्देव ! दैत्य ! वाच्यंत्वयावचः। कृष्णस्यदेवभूत्यर्थं प्रवृत्तस्यम
हासुर ! १८ (बलिरुवाच) ब्रह्मन् ! कथमहंब्रूयामन्येनापिहियाचितः। नास्तीतिकि
मुदेवेन संसारौघौघहारिणा १६ व्रतोपवासैर्विविधैः प्रतिसंग्राह्यतेहरिः। सचेद्वक्ष्यति
देहीतिगोविन्दःकिमतोऽधिकम् २० यदर्थमुपहाराद्यास्तपःशौचगुणान्वितैः। यज्ञाःक्रि
यन्तेदेवेशः समादेहीतिवक्ष्यति २१ तत्साधुसुकृतंकर्मस्तपःसुचरितंमम। यन्मयादत्त
मीशेशः स्वयमादास्यतेहरिः २२ नास्तिनास्तीत्यहंवक्ष्ये तमप्यागतमीश्वरम्। यदाव
ञ्चामितंप्राप्तं वृथातज्जन्मनःफलम् २३ यज्ञेऽस्मिन्यदियज्ञेशो याचतेमांजनार्दनः। नि
जमूर्द्धानमप्यत्र तद्दास्याम्यविचारितम् २४ नास्तीतियन्मयानोक्तमन्येषामपियाचताम्।
वक्ष्यामिकथमायाते तदनभ्यस्तमच्युते २५ श्लाघ्यएवहिवीराणां दानादापत्समागमः।
नाबाधकारियद्दानं तदंगमलवत्स्मृतम् २६ मद्राज्येनासुखीकश्चिन्नदरिद्रोनचातुरः।
नाभूषितोनचोद्विग्नो नस्रगादिविवर्जितः २७ हृष्टस्तुष्टःसुगन्धिश्च तृप्तःसर्व्वसुखा
न्वितः। जनःसर्व्वोमहाभाग ! किमुताहंसदासुखी २८ एतद्विशिष्टपात्रोऽयं दानबीजं
फलंमम। विदितंभृगुशार्दूल ! मयैतत्त्वत्प्रसादतः २९ एतद्विजानतादानबीजंप

दैत्यपते तुमको अपने थोड़ेहीसे कार्य्यमें इससे कुछवचन प्रतिज्ञा नहीं करनीचाहिये इनको वृथा वचनोंसे समझा देनायोग्यहै १६।१७ हे दैत्य तुमको ऐसा वचन कह देना चाहिये कि हे देव मैं आपको कुछ देनेको समर्थ नहींहूं क्योंकि वह कृष्ण देव देवताओं की विभूतिकेही निमित्त विचरताहै १८ बलिने कहा हे देव मैं अन्यसे याचना कियाहुआभी कभी नहीं निषेधकरसक्ताहूं तो संसारके पापों के नष्टकरनेवाले विष्णुभगवान्को कैसे निषेध करूंगा १९ यह विष्णुभगवान् अनेक प्रकारके व्रतनियमोंसे धारणकियेजातेहैं जब वहमुझसे वचनकहेंगे कि मुझकोकुछ दो तो इससेअधिक क्याहै २० जिसके निमित्त तप शौच और यज्ञादिक कियेजाते हैं वह विष्णुभगवान् मुझसे याचना करेंगे इससे अधिक मेरा कौनसा उत्तम तपहोगा यह मेरे बड़े उत्तम कर्मोंका फलहै क्योंकि मेरे दिये हुए दानको आप विष्णुभगवान् ग्रहणकरेंगे २१।२२ जो मैं आयेहुए अपने ईश्वरसे मेरेपास नहीं है ऐसा वचन कहूंगा इससे और उनसे छलकरने से मेराजन्म निष्फल होजायगा २३ जो यह यज्ञेश विष्णुभगवान् इसयज्ञमें मुझसे याचनाकरें तो मैं अपने शिरकोभीदेदूंगा २४ जबकि अन्यमांगनेवालों को भी मैं कभी नाहींका वचन नहीं कहसक्ताहूं तो आप साक्षात् विष्णुभगवान् के याचनेपर मैं कैसे नदूंगा २५ दान देने से विपत्ति कालकाभी होजाना शूरवीरों को श्लाघ्य और उत्तम कहाहै जिस दानकरने में कुछभी नहीं बाधा होती है वह मंगलरहित दान गिनाजाताहै २६ मेरे राज्यमें दुःखी-दरिद्री-मूर्ख-मालाआदि विभूषणों से रहित, उद्विग्नचित्त और संतापयुक्त कोई नहीं है हे महाभाग मेरे सब जन हृष्ट पुष्ट और सुगन्धियुक्त हैं यह क्यावातहै मैं सब प्रकारसे सुखीहूं इसहेतुसे ऐसा दानदेने का समय मुझको आपकी कृपासे प्राप्तहुआ है सो अब जो विष्णु भगवान्रूपी पात्रमें मेरे

तितिचेद्गुरो । जनार्दनमहापात्रे किन्नप्राप्तन्ततोमया ३० मत्तोदानमवाप्येशो यदि पुष्णातिदेवताः । उपभोगाद्दशगुणं दानंश्लाघ्यतमंमम ३१ मत्प्रसादपरोनूनं यज्ञेनाराधितोहरिः । तेनाभ्येतिनसन्देहो दर्शनादुपकारकृत् ३२ अथकोपेनचाभ्येति देवभागोपरोधिनम् । मांनिहन्तुमनाश्चैव वधःश्लाघ्यतरोच्युतात् ३३ तन्मयंसर्वमेवेदं नाप्राप्यंयस्यविद्यते । समांयाचितुमभ्येति नानुग्रहस्ततेहरिः ३४ यःसृजत्यात्मभूः सर्वंत्रेतसैचसंहरेत् । समांहन्तुंहृषीकेशः कथंयत्नंकरिष्यति ३५ एतद्विदित्वानगुरो ! दानविघ्नकरेणच । त्वयाभाव्यंजगन्नाथे गोविन्देसमुपस्थिते ३६ (शौनक उवाच) इत्येवंवदतस्तस्य सम्प्राप्तःसजगत्पतिः । सर्वदेवमयोचिन्त्यो मायावामनरूपधृक् ३७ तंदृष्ट्वायज्ञवाटान्तः प्रविष्टमसुराःप्रभुम् । जग्मुःसभासदःक्षोभन्तेजसातस्यनिष्प्रभाः ३८ जेपुश्चमुनयस्तत्र येसमेतामहाध्वरे । बलिश्चैवाखिलंजन्ममेनेसफलमात्मनः ३९ ततःसंक्षोभमापन्नो नकश्चित्किंचिदुक्तवान् । प्रत्येकंदेवदेवेशं पूजयामासचेतसा ४० अथासुरपतिंप्रह्वं दृष्ट्वामुनिवरांश्चतान् । देवदेवपतिःसाक्षी विष्णुर्वामनरूपधृक् ४१ तुष्टावयज्ञवह्निञ्च यजमानमथर्त्विजः । यज्ञकर्माधिकारस्थान्सदस्यान्द्रव्यसम्पदः ४२ ततःप्रसन्नमखिलं

दानका बीज कदाचित् गिरेगा तो मुझको क्यानहीं प्राप्तहोगा और जो मेरे दानसे देवतालोग पुष्ट होजांयगे तौभी दशगुणा फलहोगा यह अत्यन्त शोभायुक्त कीर्त्तिहै और विष्णुके दर्शनसे सब कार्य्य सफल होते हैं इसके विशेष वह साक्षात् विष्णु यज्ञके आराधन करने से जो मुझपर प्रसन्न होजावेंगे तो इस्से अधिक कौनसा उत्तम फलहै ३०। ३२ और हे देव जो वह ईश्वर मुझ देवताओं के भाग रोकनेवाले के समीप क्रोधकरके आवें और मुझको मारडालें यहभी महाश्रेष्ठहै क्योंकि विष्णु के हाथसे मेरामरना होगा तो सद्गतिहोगी ३३ जिसको संसारकी सब वस्तुप्राप्तहोरही हैं वहविष्णु मुझसे जोमांगने को आते हैं यह उनका परम अनुग्रहहै ३४ जो विष्णु भगवान् इस संपूर्ण जगत् को आप रचताहै और अपनीही इच्छासे संसारका संहार करताहै वह हृषीकेश मेरे मारनेका कैसे यत्नकरेगा ३५ हे गुरुदेव ऐसाजानकर आपको दानमें विघ्न नहींकरनाचाहिये और जब वह गोविन्द भगवान् आवें तब आपको भी प्राप्तहोनाचाहिये ३६ शौनकजीबोले ऐसे प्रकारकी वह दोनों गुरुशिष्य वार्त्तालाप करहीरहेथे कि वह देव देव जगत्पति अचिन्त्य विष्णु भगवान् मायारूपी वामनरूप धारण कियेहुए प्राप्तहोतेभये ३७ उनके दर्शनहोतेही यज्ञशालामें बैठेहुए संपूर्ण दानव लोगोंका तेजनष्टहो गया और उस यज्ञमें जो ऋत्विजन प्राप्तहोरहेथे वह सब उनकी स्तुतिकरतेभये और बलिभी अपने जन्मको सफल जानताभया ३८। ३९ फिर क्षोभमें प्राप्तहुए दैत्य किसीसे कुछभी नबोलतेभये सब लोग उस देव देवेश ईश्वरको चित्तसे पूजतेभये ४० इस हेतुसे वह वामनरूपी भगवान् नम्रहुए राजा बलिको और सब मुनियों को देखकर अग्निकी प्रशंसा करते भये और यजमान ऋत्विजों की भी श्लाघा करतेभये इनके विशेष यज्ञ कर्म्म में प्रवृत्त होनेवाले सभासदों समेत यज्ञ की द्रव्यों की भी सराहना करतेभये ४१। ४२ फिर क्षणभरही पीछे वामनजी के ऊपर सब जन अति प्रसन्न होतेभये

वामनंप्रतितत्क्षणात् ॥ यज्ञवाटस्थितंवीरः साधुसाध्वित्युदीरयन् ४३ सचार्घमादायब
लिः प्रोद्भूतपुलकस्तदा। पूजयामासगोविन्दं प्राहचेदंमहासुरः ४४ (बलिरुवाच)
सुवर्णरत्नसंघातंगजाश्वममितन्तथा।स्त्रियोवस्त्राण्यलङ्कारांस्तथाग्रामांश्चपुष्कलान्४५
सर्वस्वंसकलामुर्वीं भवतोवायदीप्सितम्। तद्ददामिशृणुष्वत्वं येनार्थीवामनःप्रियः४६
इत्युक्तोदैत्यपतिनाप्रीतिगर्भान्वितंवचः। प्राहसस्मितगम्भीरंभगवान्वामनाकृतिः ४७
ममाग्निशरणार्थायदेहिराजन्! पदत्रयम्। सुवर्णग्रामरत्नानि तदर्थिभ्यःप्रदीयताम्४८
(बलिरुवाच) त्रिभिःप्रयोजनंकिन्ते पादैःपदवताम्बर!। शतंशतसहस्राणां पदानां
मार्गतांभवान् ४९ (वामनउवाच) एतावतैवदैत्येन्द्र! कृतकृत्योऽस्मिमार्गताम्। अ
न्येषामर्थिनांवित्तमीहितंदास्यतेभवान् ५० एतच्छ्रुत्वातुगदितं वामनस्यमहात्मनः।
ददौतस्मैमहाबाहुर्वामनायपदत्रयम् ५१ पाणौतुपतितेतोये वामनोऽभूदवामनः। सर्वदे
वमयंरूपं दर्शयामासतत्क्षणात् ५२ चन्द्रसूर्यौचनयने द्यौर्मूर्द्धाचरणौक्षितिः। पादांगु
ल्यःपिशाचास्तुहस्तांगुल्यश्चगुह्यकाः५३ विश्वेदेवाश्चजानुस्थाजङ्घेसाध्याःसुरोत्तमाः।
यक्षानखेषुसम्भूतारेखाश्चाप्सरसस्तथा५४ दृष्टोऽऋक्षाण्यशेषाणि केशाःसूर्यांशवःप्रभोः।
तारकारोमकूपाणि रोमाणिचमहर्षयः ५५ बाहवोविदिशस्तस्य दिशःश्रोत्रेमहात्मनः।

और यज्ञवाटिकामें स्थित होनेवाला राजाबलिभी साधु शब्दोंको कह रोमांचितहो अर्घको ग्रहणक रके विष्णुभगवान्को पूजताभया और यहवचन कहताभया ४३। ४४ कि सुवर्ण रत्नों के समूह हाथी घोड़े, स्त्री, वस्त्र, आभूषण, बहुतसे ग्राम, संपूर्ण द्रव्योंसमेत सप्तद्वीपापृथ्वी, इनसबमें से जो वस्तु आपको अच्छी लगती हो वह ग्रहणकीजिये मैं वहीवस्तु दूंगा क्योंकि तुम वामनस्वरूप मुझको बड़े प्यारे लगतेहो ४५-४६ जब प्रीति युक्तहोकर राजाबलिने इसप्रकारके वचन कहे तब वामनस्वरूपी विष्णुभगवान् बड़े गंभीरभावसे हँसकर यहवचन बोले-हे राजन् अग्निकी रक्षाके निमित्त आपहमको तीनपैंड पृथ्वीका दानदो और यहसुवर्ण रत्नादिक द्रव्य अन्यलोगोंको देना ४७।४८ बलिकहने लगा-हे उत्तमचरणवाले आप तीनहीचरण पृथ्वी क्यों मांगतेहो और तीनही पैंड पृथ्वी से आपका क्या प्रयोजनहै आप हजारों पैरोंसे मापकर पृथ्वी लेलो ४९ तब वामनजी ने कहा हे दानवेन्द्र मैं इतनी ही भूमिसे कृतकृत्य होजाऊंगा मुझे इतनीही पृथ्वी चाहिये शेष विशेष पृथ्वी आदिक धन अन्यलोगों को देना ५० वामनजी के इसप्रकारके वचनको सुनकर वह बलिदैत्य उन वामनजी को तीन पैंड पृथ्वीका दान देताभया ५१ इसके अनन्तर जब दानके संकल्पका जल वामनजी के हाथमें प्राप्तहुआ, उसीसमय वामनजीने अपनेरूपको बदलकर क्षणमात्रही में उस सर्वदेवमय शरीरको दिखाया ५२ जिसके कि सूर्य्य और चन्द्रमा नेत्रथे स्वर्ग मस्तकथा, पृथ्वीचरणहुई, पैरोंकी उंगलियों में पिशाच स्थितहुए,हाथकी उंगलियोंमें गुह्यकहुए ५३ घोंटुओंमें विश्वेदेवा, पींडियों में साध्यदेवता, नखों में यक्ष, रेखाओं में अप्सरागण, ५४ बालों में सबनक्षत्र और सूर्य्य किरणें, रोमों के छिद्रोंमें तारागण, रोमोंमें ऋषिगण, बाहुविदिशाहुईं, श्रोत्रदिशाहुईं, श्रोत्रोंमें अश्विनीकुमार स्थितहुए, नासिका में

अश्विनौश्रवणेतस्य नासावायुर्महात्मनः ५६ प्रसादश्चन्द्रमादेवो मनोधर्मःसमाश्रितः। सत्यंतस्याभवद्वाणी जिह्वादेवीसरस्वती ५७ ग्रीवादितिर्देवमाता विद्यास्तद्वलयस्तथा। स्वर्गद्वारमभून्मैत्रं त्वष्टापूषाचवैभ्रुवो ५८ मुखंवैश्वानरश्चास्य वृषणौतुप्रजापतिः। हृद यञ्चपरंब्रह्म पुंस्त्वंवैकश्यपोमुनिः ५९ पृष्ठेऽस्यवसवोदेवा मरुतःसर्वसन्धिषु। सर्वसूक्ता निदशना ज्योतींषिविमलप्रभाः ६० वक्षस्थलेमहादेवो धैर्येचास्यमहार्णवाः। उदरेचास्य गन्धर्वाः सम्भूताश्चमहाबलाः ६१ लक्ष्मीर्मेधाधृतिःकान्तिः सर्वविद्याश्चवैकटिः। सर्व ज्योतींषिजानीहि तस्यतत्परमंमहः ६२ तस्यदेवाधिदेवस्य तेजःप्रोद्भूतमुत्तमम्। स्त नौकुक्षीचवेदाश्च उदरञ्चमहामखाः ६३ इष्टयःपशुबन्धाश्च द्विजानांवीक्षितानिच। त स्यदेवमयंरूपं दृष्ट्वाविष्णोर्महाबलाः ६४ उपासर्पन्तदैत्येन्द्राः पतङ्गाइवपावकम्। प्रम थ्यसर्वानसुरान् पादहस्ततलैर्विभुः ६५ कृत्वारूपंमहाकायं जहाराशुसमेदिनीम्। तस्य विक्रमतोभूमिं चन्द्रादित्यौस्तनान्तरे ६६ नाभौविक्रममाणस्य सक्थिदेशस्थितावुभौ। परंविक्रमतस्तस्य जानुमूलेप्रभाकरौ ६७ विष्णोरास्तांमहीपाल! देवपालनकर्मणि। जित्वालोकत्रयंकृत्स्नं हत्वाचासुरपुङ्गवान् ६८ पुरन्दरायत्रैलोक्यं ददौविष्णुर्जगत्पतिः। सुतलंनामपातालमधस्ताद्वसुधातलात् ६९ वलेर्दत्तंभगवता विष्णुनाप्रभविष्णुना। अ

वायु प्राप्तहुआ, ५५।५६ प्रसन्नतामें चन्द्रमा प्राप्तहुआ, मनमें धर्म स्थितहुआ, सत्यवाणीमें स्थित हुआ, सरस्वतीदेवी जिह्वामें विराजमानहुई ५७ ग्रीवामें देवताओं की माता अदिति और विद्याओं की त्रिवली होतीभई स्वर्गद्वारके कपालस्थान में मैत्र देवता प्राप्तहुए, भृकुटियों में त्वष्टा और पूषा स्थितहुए, अग्निमुखहुआ, वृषणों में प्रजापति स्थितहुआ, हृदयही परब्रह्महुआ, पुरुषत्व कश्यपमुनि हुए, पीठमें वसु देवताहुए, सब संधियों में मरुद्गणहुए, संपूर्ण सूक्त और ऋचाएँतहुए, विमल कान्ति ज्योतिर्गणहुए ५८। ६० छातीमें महादेव स्थितहुए धैर्यपने में समुद्र स्थितहुए, उदरमें बड़े बलवान् गन्धर्व स्थितहुए, कटिमें लक्ष्मी, मेधा, धृति, कान्ति और संपूर्ण विद्या स्थितहोती भई फिर उस देवदेवके शरीरमें उत्तमतेज प्राप्त होताभया जिसके कि स्तन, कुक्षि, और उदर में वेद और पशु बधवाले यज्ञप्राप्त होते भये—इनसब बातों के सिवाय उस शरीरमें ब्राह्मणोंके दर्शन भी होतेभये ऐसे उस विष्णुके रूपको देखकर महाबलवाले दानव उस विश्वरूपी विष्णु के समीपमें प्राप्तहोतेभये— और समीपमें आतेही अग्निमें पतंगके समानसब नष्टहोजातेभये और वह विष्णुभ-गवान् अपने पैरोंके तलुए मल डालतेभये ६१।६५ ऐसे प्रकार अपने उस महारूपको फैलाकर शीघ्रही पृथ्वी लोककोमापतेभये ऐसे पराक्रम करनेवाले विष्णुके चन्द्रमा और सूर्य्यछातीके स्थान में प्राप्तहोतेभये—जब आकाशलोक को मापने लगे तब पसलियों के स्थानपर प्राप्तहुए और जब उ-स्सेभीऊपर के लोकमापनेलगे तब सूर्य्य और चन्द्रमा घोंटुओंके स्थानमें आजातेभये इस रीतिकर के देवताओं के पालन कर्म नें विष्णुभगवान्‌का रूप फैलताचलागया ऐसे विष्णुजी तीनोंलोकों कोजीत संपूर्ण दानवोंको विजयकर इन्द्रके निमित्त त्रिलोकी का राज्य देतेभये और पृथ्वीके नीचेजो

थदैत्येश्वरंप्राह विष्णुःसर्वेश्वरेश्वरः ७० यत्त्वयासलिलंदत्तं गृहीतंपाणिनामया। क
ल्पप्रमाणंतस्मात्ते भविष्यत्यायुरुत्तमम् ७१ वैवस्वतेतथातीते बलेमन्वन्तरेह्यथ। साव
र्णिकेतुसंप्राप्ते भवानिन्द्रोभविष्यति ७२ साम्प्रतंदेवराजाय त्रैलोक्यंसकलंमया। दत्तं
चतुर्युगानाञ्चसाधिकाह्येकसप्ततिः ७३ नियन्तव्यामयासर्वेयेतस्यपरिपन्थिनः। तेनाहं
परयाभक्त्या पूर्वमाराधितोबले! ७४ सुतलंनामपातालं त्वमासाद्यमनोरमम्। वसासुर!
ममादेशं यथावत्परिपालयन् ७५ तत्रदिव्यवनोपेते प्रासादशतसंकुले। प्रोत्फुल्लपद्मस
रसि स्रवच्छुद्धसरिद्वरे ७६ सुगन्धिधूपस्रग्वस्त्रवराभरणभूषितः। स्रक्चन्दनादिमुदितो
गेयनृत्यमनोरमे ७७ पानान्नभोगान्विविधान् उपभुङ्क्ष्वमहासुर!। ममाज्ञयाकालमि
मं तिष्ठत्वंसततंवृतः ७८ यावत्सुरैश्चविप्रैश्च नविरोधंकरिष्यसि। तावदेतान्महाभो
गानवाप्स्यसिमहासुर! ७९ यदाचदेवविप्राणां विरोधंत्वंकरिष्यसि। बन्धिष्यन्तितदा
पाशावारुणास्त्वामसंशयम् ८० एतद्विदित्वाभवता मयाज्ञप्तमशेषतः। नविरोधःसुरैः
कार्य्यो विप्रैर्वादैत्यसत्तम! ८१ इत्येवमुक्तोदेवेन विष्णुनाप्रभविष्णुना। बलिःप्राहमहा
राज! प्रणिपत्यमुदायुतः ८२ (बलिरुवाच) तत्रासतोमेपाताले भगवन्! भवदाज्ञया।
किंभविष्यत्युपादानमुपभोगोपपादकम् ८३ (श्रीभगवानुवाच) दानान्यविधिदत्तानि
श्राद्धान्यश्रोत्रियाणिच। हुतान्यश्रद्धयायानि तानिदास्यन्तितेफलम् ८४ अदक्षिणास्त

सुतलनाम पातालहै वह विष्णुभगवान्ने राजाबलिके रहने को देदिया और यह वचन कहदिया कि हे राजाबलि तैंने जो दानकाजल मेरे हाथमें देदियाहै जिसको कि मैंने ग्रहण कर लियाहै इस हेतु से तेरी आयु एक कल्पकीहोगी जब वैवस्वत मनुव्यतीतहोने पर सावर्णि नाम मनु प्राप्त होगा तब तू इन्द्रहोवेगा ६६।७२ और अवतो मैंने त्रिलोकीका राज्य इन्द्रकोदेदियाहै इसीसे जवतक चारों युगों की इकहत्तर चौकड़ियां व्यतीत होवेंगी तबतक मैं इन्द्रके शत्रुओं का नाश करूंगा हे बले इस इन्द्र नेभी पूर्वकालमें मेरा बड़ीभक्तिसे पूजन और ध्यानकियाहै और हे दैत्येन्द्र तू सुतलनाम रमणीक पाताल लोकमें प्राप्तहोकर निवास कर वहां मेरी आज्ञासे तूसवप्रजा का पालनकरियो दिव्य २ वन उत्तम महल सुगंधित पुष्प दिव्यसरोवर और दिव्य नदियोंसे युक्त उत्तम वरांगनाओं के नृत्योंसे मनोहर ऐसे सुगन्धि धूपमाला और विभूषणोंसमेत अतिरमणीय स्थानमें विराजमान हो भक्ष्य भोज्यादि अनेक भोजनके पदार्थोंको भोगेगा ७३।७९ और मेरी आज्ञासे पूर्वोक्त एक कल्प पर्य्यन्त निरन्तर भोगोंको भोगेगा जबतकतू देवता और ब्राह्मणोंके साथ विरोध न करेगा तबतक आनन्द करेगा परन्तु जबतू देवता और ब्राह्मणोंके साथ विरोध करेगा तब निस्सन्देह वरुणकी फांसीसे बांधाजायगा ८० यह बातजानकर तुझको देवता और ब्राह्मणोंसे कभी विरोध न करना चाहिये ८१ इस ऐसे प्रकारके विष्णुभगवान्के वचनोंको सुनकर राजाबलिप्रणाम करके बड़ी प्रसन्नतापूर्वक भगवान्से बोला ८२ कि हे भगवन् उस पाताललोक में मुझको कौनसे पुण्योंके प्रभावसे उत्तमभोग प्राप्त होंगे यह आप कृपाकरके मुझे बताइये ८३ श्रीभगवान् बोले कि हेबलितैंने जो विधिपूर्व्वक दानदिये हैं

थायज्ञाःक्रियाश्चाविधिनाकृताः। फलानितवदास्यन्ति अधीतान्यव्रतानिच ८५ (शौनक उवाच) बलेर्वरमिमंदत्त्वा शक्रायत्रिदिवंतथा। व्यापिनातेनरूपेण जगामादर्शनंहरिः ८६ प्रशशासयथापूर्वमिन्द्रस्त्रैलोक्यपूजितः। सिषेवेचपरान्कामान् बलिःपातालसंस्थितः ८७ इहैवदेवदेवेनबद्धोऽसौदानवोत्तमः। देवानांकार्य्यकरणेभूयोऽपिजगतिस्थितः ८८ सम्बन्धीतेमहाभाग! द्वारकायांव्यवस्थितः। दानवानांविनाशाय भारावतरणायच ८९ यतोयदुकुलेकृष्णो भवतःशत्रुनिग्रहे। सहायभूतःसारथ्यं करिष्यतिबलानुजः ९० एतत्सर्वंसमाख्यातं वामनस्यचधीमतः। अवतारंमहावीर! श्रोतुमिच्छोस्तवार्जुन! ९१ इत्येतद्देवदेवस्यविष्णोर्माहात्म्यमुत्तमम्। वामनस्यपठेद्यस्तु सर्वपापैःप्रमुच्यते ९२ बलिप्रह्लादसंवादंमन्त्रितंबलिशुक्रयोः। बलेर्विष्णोश्चकथितं यःस्मरिष्यतिमानवः९३ नाधयो व्याधयस्तस्यनचमोहाकुलंमनः।भविष्यतिकुरुश्रेष्ठ! पुंसस्तस्यकदाचन ९४च्युतराज्यो निजंराज्यमिष्टाप्तिञ्चवियोगवान्। अवाप्नोतिमहाभागो नरःश्रुत्वाकथामिमाम् ९५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेपञ्चचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४५॥

(अर्जुन उवाच) प्रादुर्भावान्पुराणेषु विष्णोरमिततेजसः। सतांकथयतांविप्र वा

श्राद्धकिये हैं अथवा श्रद्धापूर्व्वक हवनकिये हैं उनसबका उत्तम फल तुझको प्राप्त होवेगा ८४ और जो यज्ञ तैंने दक्षिणा और क्रियाओंसे रहितकियेहैं और विना नियमके जो पढ़ाहै यह सब तुझको बुराफलकरेंगे ८५ शौनकजी कहतेहैं-इस प्रकारसे विष्णुभगवान् राजाबलिको पाताल लोकदेकर और इन्द्रको स्वर्गसमेत त्रिलोकीकाराज्यदे उसी अपने अद्भुतरूपसे अन्तर्द्धानहोगये ८६ तदनन्तर इन्द्र भी पूर्वके समान त्रिलोकीका सुखपूर्व्वक पालन करता भया और पाताल लोकमें स्थितहुआ राजा बलिभी अनेकभोगोंको भोगताभया ८७ इसबलि दैत्यको विष्णुभगवान्ने देवताओंके कार्य्यके-निमित्त इसी लोकमें बांधदियाथा और अबभी यह दानव जगत् में ही स्थितहै और हेमहाभाग अर्जुन जोतेरासंबन्धी श्रीकृष्णद्वारकामें विराजमानहै वहभी केवल दानवोंकेही नाशके लिये और पृथ्वी के भार उतारनेके कारणसे पृथ्वीपर स्थितहै ८८।८९ वही विष्णु यदुकुलमें स्थितहोकर तुम्हारे शत्रुओंका नाशकरेगा और तेरा सारथीबनेगा ९० हे वामन अवतारकी कथाके सुननेकी इच्छावाले अर्जुन यह तेरे आगे वामन अवतारकी संपूर्ण कथाका माहात्म्यवर्णनकिया इसप्रकारके विष्णुके माहात्म्य को जो पुरुषश्रवण करेगा वा मनसे पढ़ेगा वह संपूर्ण पापोंसे छुट जायगा ९१।९२ बलिका और प्रह्लादका संवाद- बलि वा शुक्राचार्य्यका मंत्रित- और बलिका वा विष्णुभगवान्का कथन इन सबको जो पुरुष स्मरणकरेगा उस को मनका सन्देह और शरीरव्याधि कभीनहोगी और कभी वह पुरुष मनके मोहसे व्याकुलनहोगा ९३।९४ इसकथाके सुननेसे राज्यसे भ्रष्टहुआ अपने राज्यको पाताहै और वियोगी पुरुषको उसके परमप्रिय मित्रकी प्राप्ति होतीहै ९५॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४५॥

अर्जुननें कहा कि अतुलपराक्रमवाले विष्णुभगवान् ने बहुत से अवतारलिये हैं यह पुराणों में

राहइतिनःश्रुतम् १ जानेनतस्यचरितं नविधिंनचविस्तरम्। नकर्मगुणसंस्थानं नचा प्यन्तंमनीषिणः २ किमात्मकोवराहोऽसौ किंमूर्त्तिःकास्यदेवता। किंप्रमाणःकिंप्रभावः किंवातेनपुराकृतम् ३ एतन्मेशंसतत्त्वेन वाराहंश्रुतिविस्तरम्। यथाहंञ्चसमेतानां द्विजातीनांविशेषतः ४ (शौनक उवाच) एतत्तेकथयिष्यामि पुराणंब्रह्मसम्मितम्। महावराहचरितं कृष्णस्याद्भुतकर्मणः ५ यथानारायणोराजन्! वाराहंवपुरास्थितः। दंष्ट्रयागांसमुद्रस्थामुज्जहारारिमर्दनः ६ छन्दोगीभिरुदाराभिः श्रुतिभिःसमलंकृतः। मनः प्रसन्नतांकृत्वा निबोधविजयाधुना ७ इदंपुराणंपरमं पुण्यंवेदैश्चसम्मितम्। नानाश्रुतिसमायुक्तं नास्तिकायनकीर्तयेत् ८ पुराणंवेदमखिलं साङ्ख्यंयोगञ्चवेदयः। कार्त्स्न्येनविधिनाप्रोक्तंसोस्यार्थंवेवदिष्यति ९ विश्वेदेवास्तथासाध्यारुद्रादित्यास्तथाश्विनौ। प्रजानांपतयश्चैवसप्तचैवमहर्षयः १० मनःसङ्कल्पजाश्चैव पूर्वजाऋषयस्तथा। वसवोमरुतश्चैव गन्धर्व्वायक्षराक्षसाः ११ दैत्याःपिशाचानागाश्च भूतानिविविधानिच। ब्राह्मणाः क्षत्रियावैश्याः शूद्राम्लेच्छाश्चयेभुवि १२ चतुष्पदानिसर्व्वाणि तिर्य्यग्योनिशतानिच। जङ्गमानिचसत्वानि यच्चान्यज्जीवसंज्ञितम् १३ पूर्णेयुगसहस्रेतु ब्राह्मेऽहनितथागते। निर्व्वाणेसर्वभूतानां सर्व्वोत्पातसमुद्भवे १४ हिरण्यरेतास्त्रिशिखस्ततोभूत्वावृषाकपिः। शिखाभिर्विधमँल्लोकानशोषयतवह्निना १५ दह्यमानास्ततस्तस्य तेजोराशिभिरुद्धतैः।

लिखाहै उनमें जो वराहअवतार सुनाजाताहै उसके चरित्र विस्तार, गुण, बुद्धि और कर्मको मैं नहीं जानताहूं १।२ यह वराहजी कैसे शरीरयुक्त कैसी मूर्त्ति धारणकिये कौन से देवता समेत कैसे प्रमाण और प्रभाववाले होतेभये और इसअवतार ने प्रथम क्या किया था इस संपूर्ण वृत्तान्तको विस्तारयुक्त आप मेरे आगे वर्णन कीजिये ३।४ शौनकजीबोले हे अर्जुन इस अद्भुत पराक्रम वराह अवताररूप कृष्णचरित्र को मैं संपूर्णकथा के सहित तुम्हारे आगे वर्णन करताहूं ५ हे राजन् जैसे कि विष्णुभगवान् वराहरूप धारणकरके शत्रुओंको मार अपनी दंष्ट्रा पर समुद्रमेंसे पृथ्वी का उद्धार करते भये उसकथाको तू वेदकी अनेकश्रुतियों से मनको अलंकृत कर बड़ी प्रसन्नतापूर्व्वक चित्त से सुन यह कथा परमपवित्र और वेद से सम्मतकीहुई है इसको नास्तिक के आगे कभी न कहना चाहिये क्योंकि जो पुरुष इसकथाको वेद पुराण सांख्य और योगादिक शास्त्रों से सम्मित मानेगा वही सुखपूर्व्वक इसकथाको कहैगा ६।९ विश्वेदेवा, साध्य, रुद्र, आदित्य, अश्विनीकुमार, प्रजापति, सप्तऋषि १० मन और संकल्प से उत्पन्नहोनेवाले अन्यमहर्षि वसु, मरुद्गण, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, ११ दैत्य, पिशाच नाग, भूत, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, म्लेच्छ, पशु, पक्षी, सर्पादिक जीवों की जाति और अन्य सब जंगम जीव यहसब जब अधिक होकर सहस्रयुग व्यतीत होजाते हैं और ब्रह्मा का एकदिन पूराहोता है उससमय सबभूतों के नाश के निमित्त श्रीमहादेवजी अग्नि का रूप धारणकरके अपने तेजरूपी अङ्गों से तीनोंलोकों को भस्मकरदेते हैं तब अग्नि की ज्वालाओं से भस्महुए विवर्णरूप तेज से देवत उपनिषद्, वेद, पुराण, इतिहास, अखिलविद्या सब धर्म्मकी क्रिया और ब्रह्मा सहित तेंतीसकरोड़

विवर्णवर्णादग्धाङ्गा हतार्चिष्मद्भिराननैः १६ साङ्गोपनिषदोवेदा इतिहासपुरोगमाः। सर्वविद्याःक्रियाश्चैव सर्वधर्मपरायणाः १७ ब्रह्माणमग्रतःकृत्वा प्रभवंविश्वतोमुखम्। सर्वदेवगणाश्चैव त्रयस्त्रिंशत्तुकोटयः १८ तस्मिन्नहनिसम्प्राप्ते तंहंसंमहदक्षरम्। प्रविशन्तिमहात्मानं हरिंनारायणंप्रभुम् १९ तेषांभूयःप्रवृत्तानां निधनोत्पत्तिरुच्यते। यथा सूर्य्यस्यसततमुदयास्तमनेइह २० पूर्णेयुगसहस्रान्ते सर्वेनिःशेषउच्यते। यस्मिन्जीवकृतंसर्वं निःशेषंसमतिष्ठत २१ संहृत्यलोकानखिलान्सदेवासुरमानुषान्। कृत्वासुसंस्थांभगवानास्तएकोजगद्गुरुः २२ सस्रष्टासर्वभूतानां कल्पान्तेषुपुनःपुनः। अव्ययःशाश्वतोदेवो यस्यसर्वमिदंजगत् २३ नष्टार्ककिरणेलोके चन्द्रग्रहविवर्जिते। त्यक्तधूमाग्निपवने क्षीणयज्ञवषट्क्रिये २४ अपक्षिगणसम्पाते सर्वप्राणिहरेपथि। अमर्यादाकुलेरौद्रे सर्वतस्तमसावृते २५ अदृश्येसर्वलोकेऽस्मिन् अभावेसर्वकर्मणाम्। प्रशान्तेसर्वसम्पाते नष्टेवैरपरिग्रहे २६ गतेस्वभावसंस्थाने लोकेनारायणात्मके। परमेष्ठीहृषीकेशः शयनायोपचक्रमे २७ पीतवासालोहिताक्षः कृष्णोजीमूतसन्निभः। शिखासहस्रविकचजटाभारंसमुद्वहन् २८ श्रीवत्सलक्षणधरं रक्तचन्दनभूषितम्। वक्षोबिभ्रन्महाबाहुः सविष्णुरवितोयदः २९ पुण्डरीकसहस्रेण स्रगस्यशुशुभेशुभा। पत्नीचास्यस्वयंलक्ष्मीर्देहमावृत्यतिष्ठति ३० ततःस्वपितिशान्तात्मा सर्वलोकेशुभावहः। किमप्यमितयोगात्मा निद्रायोगमुपागतः ३१ ततोयुगसहस्रेतु पूर्णेसपुरुषोत्तमः। स्वयमेवविभुर्भूत्वा बुध्यतेविबुधाधिपः ३२ ततश्चिन्तयतेभूयः सृष्टिंलोकस्यलोककृत्। नरान्देवगणांश्चैव पारमेष्ठ्येन कर्मणा ३३ ततःसञ्चिन्तयन्कार्यं देवेषुसमितिञ्जयः। सम्भवंसर्वलोकस्य विदधातिस

देवता यह सब उस ब्रह्माजी के दिनके अन्त में महत् अक्षर महात्मा हरि नारायण में प्रवेश होजाते हैं और दूसरीवार फिर प्रवृत्तहोतेहैं यह इनका मृत्यु और जन्म कहाताहै जैसेकि सूर्य्यके उदय अस्त में सब प्रजा जागती और सोती है इसी प्रकार कल्प २ के आदि अन्तमें युग पूरेहोनेपर संपूर्ण जीवमात्र उस पूर्ण ब्रह्ममें जगते और शयन करते हैं १२। २१ अर्थात् यह विष्णु भगवान् देवता दैत्य और मनुष्यादिकों से पूर्ण सब लोकोंका संहारकरके अकेलेही स्थितरहते हैं वही विष्णु भगवान् कल्पके आदिमें सबको रचताहै और कल्पके अन्तमें संहारकरताहै वह आप अविनाशी है ध्रुवहै और उसी का सब जगत्है २२। २३ यह जब सूर्य्य, चन्द्रमा, तारागण, धूम, अग्नि, वायु और यज्ञकी क्रियाओं से रहित सब प्राणीमात्र का संहारकर्त्ता, मर्य्यादारहित तमोगुणसे व्याकुल लोक और सब कर्मोंके अभावसे युक्त प्रलयरूपकालके सब लोकों के नारायणमें स्थितहोने के और नारायण समेत ब्रह्माजी के शयनके समयमें २४। २७ पीतवस्त्रधारी रक्तनेत्र मेघवत् श्याम शरीरयुक्त श्रीवत्सचिह्न से शोभित रक्तचन्दनसे भूषित उत्तममालाधारी लक्ष्मीजी समेत शान्तात्मा विष्णु भगवान् योगनिद्रा में प्राप्तहोकर शयनकरताहै २८। ३१ फिर हज़ारयुग पूरेहोनेपर यही विष्णु भगवान् योगनिद्रासे उठकर सृष्टिके रचनेकी चिन्ताकरताहै और ब्रह्माजी के कर्मके द्वारा सब देवता मनुष्य और कीट

तांगतिः ३४ कर्त्ताचैवविकर्त्ताच संहर्त्तावैप्रजापतिः। नारायणःपरंसत्यं नारायणःपरंपद
म् ३५ नारायणःपरोयज्ञो नारायणःपरागतिः। सस्वयम्भूरितिज्ञेयः सस्रष्टाभुवनाधिपः
३६ ससर्वमितिविज्ञेयो ह्येषयज्ञःप्रजापतिः। यद्वेदितव्यंत्रिदशैस्तदेषपरिकीर्त्यते ३७
यत्तुवेद्यंभगवतो देवाअपिनतद्विदुः। प्रजानांपतयःसर्वे ऋषयश्चसहामरैः ३८ नास्या
न्तमधिगच्छन्ति विचिन्वन्तइतिश्रुतिः। यदस्यपरमंरूपं नतत्पश्यन्तिदेवताः ३९ प्रादु
र्भावेतुयद्रूपन्तदर्चन्तिदिवौकसः। दर्शितंयदितेनैव तदवेक्ष्यन्तिदेवताः ४० यन्नदर्शित
वानेष कस्तदन्वेष्टुमीहते। ग्राम्याणांसर्वभूतानामग्निमारुतयोर्गतिः ४१ तेजसस्तप
सश्चैव निधानममृतस्यच। चतुराश्रमधर्मेशश्चातुर्होत्रफलाशनः ४२ चतुःसागर
पर्यन्तश्चतुर्युगनिवर्तकः। तदेषसंहृत्यजगत्कृत्वागर्भस्थमात्मनः। मुमोचाण्डंमहायो
गीधृतंवर्षसहस्रकम् ४३ सुरासुरद्विजभुजगाप्सरोगणैर्द्रुमौषधिक्षितिधरयक्षगुह्यकैः।
प्रजापतिःश्रुतिभिरसंकुलंतदा सर्वेसृजज्जगदिदमात्मनाप्रभुः ४४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेषट्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४६॥

(शौनक उवाच) जगदण्डमिदंपूर्वमासीद्दिव्यंहिरण्मयम्। प्रजापतेरियंमूर्तिरिती
यंवैदिकीश्रुतिः!१ तत्तुवर्षसहस्रान्ते विभेदोर्द्ध्वमुखंविभुः। लोकसर्जनहेतोस्तु विभेदाधो
मुखंनृप!२ भूयोऽष्टधाविभेदाण्डं विष्णुर्वैलोकजन्मकृत्। चकारजगतश्चात्र विभागंसवि

पतंगादि समेत इस जगत्की उत्पत्ति करदेताहै वही नारायण कर्त्ता, विकर्त्ता, संहर्त्ता, और प्रजापति है नारायणही परमसत्य, परमपद, परमयज्ञ, परमगति, स्वयंभू, स्रष्टा, सर्व, यज्ञ, प्रजापति, और जो देवता आदिके जानने के योग्यहै वह यहीहै ३१। ३७ और जो वस्तु भगवान् के जाननेके योग्यहै उसको देवतादिक कोई नहीं जानसक्ते हैं इसी भगवान् के अन्तको प्रजापति समेत सब देवता और ऋषिलोग चिन्तवन करते हुए भी नहीं पाते हैं जो इसका परमरूपहै उसको देवताकोई नहीं देखसके जोइन विष्णुभगवानका प्रकट रूपहोताहै उसीको सब देवता पूजते और देखते हैं अर्थात् जिसरूप कोदिखानाचाहतेहैं उसीरूपको सब ब्रह्मादिक देवता देखसक्तेहैं ३८।४० और जिसरूप कोनहीं दिखा नाचाहते उसको कोई नहीं देखसक्ताहै वही देव अग्नि वायु आदि सब प्राणीमात्रोंकीगतिहै ४१ तेज तप—अमृत आदिकानिधानचारों आश्रमों समेत धर्मकापति चातुर्होत्रयज्ञके फलकाभोक्ता चारोंयुगों कानिवृत्त करनेवाला महायोगी भगवान् संपूर्ण जगत्को संहारके द्वारा अपने गर्भमें धारणकर हजार युगोंकेपीछे अण्डकोशको उत्पन्नकरताहै वह प्रभु अपने आत्माके प्रभावसे देवता-दैत्य-पशु पक्षी-सर्प-सिद्ध चारण-गन्धर्व-अप्सरा-मनुष्य-वृक्ष-औषधी आदिसे युक्त इस सब जगत्को रचताभया ४२।४४॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्चत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४६॥

शौनकजीबोले कि यह सब जगत् जो हिरण्मय अंडकोशमें उत्पन्न हुआहै वह प्रजापति विष्णुभगवान्की मूर्त्तिहै यह वेदकी श्रुतिका आशयहै १ हे नृप इसी अंडकोशको यही विष्णुभगवान् दिव्य हजारवर्षोंके अन्तमें ऊपर और नीचेमुख करके इसको तोड़ पृथक् २ विभाग कर देताभया २।३ तब इस

भागकृत् ३ यच्छिद्रमूर्ध्वमाकाशं विवराकृतितांगतम्। विहितंविश्वयोगेन यदधस्तद्रसात
लम् ४ यदण्डमकरोत्पूर्वं देवोलोकचिकीर्षया। तत्रयत्सलिलंस्कन्नं सोऽभवत्काञ्चनो
गिरिः ५ शैलैःसहस्रैर्महती मेदिनीविषमाभवत्। तैश्चपर्वतजालौघैर्बहुयोजनावस्तृतैः
६ पीडितागुरुभिर्देवी व्यथितामेदिनीतदा। महामतेभूरिबलं दिव्यंनारायणात्मकम् ७
हिरण्मयंसमुत्सृज्य तेजोवैजातरूपिणम्। अशक्तावैधारयितुमधस्तात्प्राविशत्तदा ८
पीड्यमानाभगवतस्तेजसातस्यसाक्षितिः। पृथ्वींविशन्तींदृष्ट्वातु तामधोमधुसूदनः९ उद्धा
रार्थंमनश्चक्रे तस्यावैहितकाम्यया १० (भगवानुवाच) मत्तेजएषावसुधा समासाद्यतप
स्विनी। रसातलंप्रविशति पङ्केगौरिवदुर्बला ११ (पृथिव्युवाच) त्रिविक्रमायामितविक्र
माय महावराहायसुरोत्तमाय। श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तुतेदेववर! प्रसीद १२
तवदेहाज्जगज्जातं पुष्करद्वीपमुत्थितम्। ब्रह्माणमिहलोकानां भूतानांशाश्वतंविदुः १३
तवप्रसादाद्देवोऽयं दिवंभुंक्तेपुरन्दरः। तवक्रोधाद्धिबलवान्जनार्दनजितोबलिः १४ धाता
विधातासंहर्तात्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम्। मनुःकृतान्तोऽधिपतिर्ज्वलनःपवनोघनः १५ वर्णाश्चा
श्रमधर्माश्च सागरास्तरवोजलम्। नद्योधर्मश्चकामश्च यज्ञायज्ञस्यचक्रियाः १६ विद्यावे
द्यञ्चसत्वञ्च ह्रीःश्रीःकीर्तिर्धृतिःक्षमा। पुराणंवेदवेदाङ्गं सांख्ययोगौभवाभवौ १७ जङ्गमंस्था
वरञ्चैव भविष्यञ्चभवच्चयत्। सर्वन्तच्चत्रिलोकेषु प्रभावोपहितन्तव १८ त्रिदशोदारफ

अंडके ऊपरकी ओर तो आकाश होजाताभया और नीचेके छिद्रमें रसातल पातालहोगया इस अंडे मेंसेजो प्रथम जलनिकसा उस जलसे कांचनगिरिहोगया ४।५ और जब हज़ारों पर्वतोंसे यह पृथ्वी विषमहोजातीभई तब उनपर्व्वतके समूहोंसे पीड़ितहोकर पृथ्वी गौकारूपधर महाबलवाले नारायणकी शरणमेंगई ६।७ अर्थात् जब इस हिरण्मय अग्निरूपी अंडको यह पृथ्वी धारण नहीं करसकी तब नीचेकोप्रवेशकरतीभई-जब पृथ्वी नीचेको प्रवेशकरनेलगी उस समय विष्णुभगवान् उस पृथ्वीके उद्धारकरनेकी इच्छा करतेभये और यहवचनबोले कि यह पृथ्वी मेरे तेजसे दुर्बलहोकर ऐसेधसती जाती है जैसे कि दहदलकीचमें फँसीहुई गौ नीचे को धसती जारहीहो ८।११ यह सुनकर पृथ्वी भगवान् की स्तुतिकरती भई कि हे तीनोंलोकों में पराक्रमी अतुलतेजवाले महावराह सुरोत्तमखड्ग चक्र-गदा आदि शस्त्रोंके धारणकरने वाले आपके अर्थ नमस्कार है आपके शरीरसे पुष्करद्वीपके द्वारा यह द्वीप उत्पन्नभया है आपको लोकोंका रचने वाला ब्रह्मा कहते हैं १२। १३ आपही के प्रसादसे यह इन्द्रदेवता स्वर्ग को भोगता है हे जनार्दन आपके क्रोधसे राजाबलि जीतागया है तुम धाता विधाता और संहर्त्ताहो यह सब जगत् आपही में स्थितहै मनु धर्मराज, अग्नि-वायु-मेघ वर्णाश्रम धर्म समुद्र वृक्ष जल नदी, धर्म-काम और क्रियाओंसमेत यज्ञ- यह सब तुम्हारेही अंगहैं १४।१६ आप ब्रह्म विद्यासे जाने जातेहो सतोगुणयुक्तहो लज्जा-लक्ष्मी-कीर्त्ति-धृति-क्षमा-पुराण-वेद वेदांग-सांख्ययोग जन्म मरण स्थावर जंगम और तीनोंकाल यह सब पदार्थ इस संसार में आपहीके प्रभावसे हैं १७।१८ तुम देवताओंको उदारफल देनेवालेहो स्वर्ग औभोगादिके देनेवाले

लदः स्वर्गस्त्रीचारुपल्लवः। सर्वलोकमनःकान्तः सर्वसत्वमनोहरः १९ विमानानेकविट पस्तोयदाम्बुमधुस्त्रवः। दिव्यलोकमहास्कन्धसत्यलोकप्रशाखवान् २० सागराकारनिर्या सी रसातलजलाश्रयः। नागेन्द्रपादपोपेतो जन्तुपक्षिनिषेवितः २१ शीलाचारार्यगन्धस्त्वं सर्वलोकमयोद्रुमः। द्वादशार्कमयद्वीपोरुद्रैकादशपत्तनः २२ वस्वष्टाचलसंयुक्तस्त्रैलोक्या म्भोमहोदधिः। सिद्धसाध्योर्मिकलिलःसुपर्णानिलसेवितः २३ दैत्यलोकमहाग्राहो रक्षो रगरुषाकुलः। पितामहमहाधैर्यःस्वर्गस्त्रीरत्नभूषितः २४ धीश्रीह्रीकान्तिभिर्नित्यं नदीभि रुपशोभितःकालयोगमहापर्व प्रयागगतिवेगवान् २५ त्वंस्वयोगमहावीर्योनारायणमहा र्णवः। कालोभूत्वाप्रसन्नाभिरद्भिर्ह्लादयसेपुनः २६ त्वयासृष्टास्त्रयोलोका स्त्वय्येवप्रतिसंहृ ताः। विशन्तियोगिनःसर्वेत्वामेवप्रतियोजिताः २७ युगेयुगेयुगान्ताग्निःकालमेघोयुगेयु गे। महाभारावतारायदेव! त्वंहियुगेयुगे २८ त्वंहिशुक्लःकृतयुगेत्रेतायांचम्पकप्रभः। द्वाप रेरक्तसङ्काशः कृष्णःकलियुगेभवान् २९ वैवर्ण्यमभिधत्सेत्वं प्राप्तेषुयुगसन्धिषु। वैव र्ण्यंसर्वधर्माणामुत्पादयसिवेदवित् ३० भासिवासिप्रतपसि त्वञ्चपासिविचेष्टसे। क्रुध्य सिक्षान्तिमायासि त्वंदीपयसिवर्षसि ३१ त्वंहास्यसिननिर्यासि निर्वापयसिजाग्रसि। निः शेषयसिभूतानि कालोभूत्वायुगक्षये ३२ शेषमात्मानमालोक्य विशेषयसित्वंपुनः। यु गान्ताग्न्यवलीढेषु सर्वभूतेषुकिञ्चन ३३ यातेषुशेषोभवसि तस्माच्छेषोऽसिकीर्तितः।

सबलोकोंकेमन-सबसे मनोहर विमानके स्थानरूप-वर्षाकरनेवाले दिव्यलोक और सत्यलोककी शा- खाके बढ़ानेवाले पृथ्वी पाताल और जल इन्होंके आश्रय शेषनागादिक सर्पजीव जन्तु पशु पक्षीआ- दिसे युक्त सबलोकोंके वृक्षरूप द्वादशात्मा और ग्यारहरुद्ररूपहो १९।२२ अष्टवसुओंसे युक्तत्रिलोकी के जलरूप समुद्र सिद्ध साध्यरूप तरंगोंसमेत गरुड़की वायुसे सेवित दैत्यलोकके महाग्राह राक्षस और सर्पादिकोंके क्रोधसे युक्त ब्रह्माजी के धीरजकरानेवाले स्वर्गकी स्त्रियोंके रत्नोंसे विभूषित बुद्धि लक्ष्मी लज्जा और लज्जारूपीनदियोंसे नित्यसेवित कालकेभी कालगति-वेग-वीर्य्यसे पूर्णनारायण और महार्णवहो आपही कालरूपहोके उत्तमजलोंसे ह्रदोंको भरतेहो २३।२६ आपकेहीरचेहुए तीनों लोक आपही के क्रोधसे नष्टहोजाते हैं सब योगीजन भी आपही के बीचमें लय होजाते हैं २७ आ- पही युग २ के अन्तकी अग्निहो कालहो मेघहो और आपहीयुग २ में महा भारउतारने को अवतार लेतेहो २८ सतयुगमें श्वेतरूप धारणकरतेहो त्रेतामें चंपेके समान लालवर्ण द्वापर युगमें भी रक्तवर्ण और कलियुगमें कालेवर्ण को धारण करतेहो युगों की सन्धियों में विकरालरूपको धारण करतेहो सब वर्णोंको वर्ण संकर करतेहो वायुरूपहो अग्निरूपहो सबकी रक्षाकरनेवाले हो आपही क्रोधकरते हो क्षोभकरते हो तुमही मायाहो तुमही वर्षते हो २८।३१ आपही त्यागते गमनकरते जागते और युगके अन्तमें कालरूपहो सब संसारका संहार करतेहो आपही शेष नागहो सब युगकी अग्निसे सब भूत नष्ट होजाते हैं उस समय आपही शेषरहजातेहो इसीसे आपको शेषकहते हैं और जब ब्रह्मा इन्द्र वरुण इत्यादि देवता च्युत अर्थात् पतित होजाते हैं-तबभी आप नहीं पतित होतेहो इसीसे आपको

च्यवनोत्पत्तियुक्तेषु ब्रह्मेन्द्रवरुणादिषु ३४ यस्मान्नच्यवसेस्थानात्तस्मात्सङ्कीर्त्यसेच्युतः। ब्रह्माणमिन्द्रञ्चयमं रुद्रंवरुणमेवच ३५ निगृह्यहरसेयस्मात्तस्माद्धरिरिहोच्यसे। स म्मानयसिभूतानि वपुषायशसाश्रिया ३६ परेणवपुषादेव! तस्मात्त्वासिसनातनः। यस्मा द्ब्रह्मादयोदेवा मुनयश्चोग्रतेजसः ३७ नतेऽन्तंत्वधिगच्छन्ति तेनानन्तस्त्वमुच्यसे। नक्षीयसेनक्षरसे कल्पकोटिशतैरपि ३८ तस्मात्त्वमक्षरत्वाच्च विष्णुरित्येवकीर्त्यसे। विष्ट ब्धंयत्त्वयासर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ३९ जगद्विष्टम्भनाच्चैव विष्णुरेवेतिकीर्त्यसे। विष्ट भ्यतिष्ठसेनित्यं त्रैलोक्यंसचराचरम् ४० यक्षगन्धर्वनगरं सुमहद्भूतपन्नगम्। व्याप्तं त्वयैवविशता त्रैलोक्यंसचराचरम् ४१ तस्माद्विष्णुरितिप्रोक्तः स्वयमेवस्वयम्भुवा। ना राइत्युच्यतेह्यापो ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ४२ अयनन्तस्यताःपूर्वन्तेननारायणःस्मृतः। युगेयुगेप्रनष्टाङ्गां विष्णो!विन्दसितत्त्वतः ४३ गोविन्देतिततोनाम्ना प्रोच्यसेऋषिभिस्त था। हृषीकाणीन्द्रियाण्याहुस्तत्त्वज्ञानविशारदाः ४४ ईशिताचत्वमेतेषां हृषीकेशस्तथो च्यसे। वसन्तित्वयिभूतानिब्रह्मादीनियुगक्षये ४५ त्वंवावससिभूतेषु वासुदेवस्तथोच्य से। सङ्कर्षयसिभूतानि कल्पेकल्पेपुनःपुनः ४६ ततःसङ्कर्षणःप्रोक्तस्तत्त्वज्ञानविशारदैः। प्रतिव्यूहेनतिष्ठन्ति सदेवासुरराक्षसाः ४७ प्रविद्युःसर्वधर्माणां प्रद्युम्नस्तेनचोच्यसे। निरोद्धाविद्यतेयस्मान्नतेभूतेषुकश्चन ४८ अनिरुद्धस्ततःप्रोक्तः पूर्वमेवमहर्षिभिः।

अच्युत कहते हैं ३२। ३४ ब्रह्मा, इन्द्र, यम, रुद्र, और वरुण इन सब देवताओं को वशमें करके हर- लेतेहो इसीसे आपको हरि कहते हैं आप शरीर यश और लक्ष्मीआदि करके सब भूतोंका सन्मान करते हो इसीसे आपको सनातन कहते हैं और ब्रह्मादिक देवता और सब मुनिजन लोग आपके अन्तको नहीं जानते हैं इसीसे आपको अनन्त कहते हैं ३५। ३८ तुम किरोड़ों कल्पों में भी क्षीण नहीं होते इसीसे आपको अक्षर विष्णु कहते हैं आपही सब जगत् में व्याप्तहोकर स्थित होतेहो इसी से आपको विष्णु कहते हैं तुम स्थावर जंगमआदि सबजगत् और यक्ष गन्धर्व सर्पादिकों में व्याप्त रहतेहो इसीसे आपको ब्रह्माजी ने विष्णु कहाहै और तत्त्वज्ञ ऋषि जलोंको नारा कहतेहैं उसमेंही आपने प्रथम अयन कियाथा अर्थात् स्थानकियाथा इसीसे तुमको नारायण कहते हैं युग २ में आप नष्टहुई गो रूप पृथ्वीको धारणकरते हो इसीसे आप गोविन्द कहाते हैं तुम हृषीक अर्थात् इन्द्रियों के तत्त्वको जानते हो और उनके पतिहो इसीसे हृषीकेश कहाते हो ३९। ४४ और युगोंके क्षयमें ब्रह्मादिक सब देवता और जगत्भर आपमें बासकरते हैं अथवा सब भूतोंमें बसतेहो इसीसे आपको वासुदेव कहते हैं कल्प २ में वारंवार आप सब भूतोंको आकर्षण करते हो इसी से संकर्षण कहाते हो और देवता दैत्य और राक्षसादिक सब समूह होकर ठहरते हैं और आपही से सब धर्मोंको जानते हैं इसीसे आपको प्रद्युम्न कहते हैं और सब भूतमात्रोंमें आपका रोकनेवाला कोई नहीं है इसीसे आपको अनिरुद्ध कहते हैं और आप संपूर्ण विश्वको धारण करते हो संहार करते हो और अपने तेजबलसे जो कुछ प्रथम वा पीछे धारण करते हो आपके पश्चात् मैं धारण करती हूं और आपके बिना धारण

यत्त्वयाधार्यतेविश्वं त्वयासंह्रियतेजगत् ४९ त्वंधारयसिभूतानि भुवनंत्वंबिभर्षिच यत्त्वयाधार्यतेकिञ्चित् तेजसाचबलेनच ५० मयाहिधार्यतेपश्चाद्धाधृतंधारयेत्वया नहितद्विद्यतेभूतं त्वयायन्नात्रधार्यते ५१ त्वमेवकुरुषेदेव! नारायणयुगेयुगे। महीभ रावतरणं जगतोहितकाम्यया ५२ तवैवतेजसाक्रान्तां रसातलतलङ्गताम्। त्रायस्वमां सुरश्रेष्ठ! त्वामेवशरणङ्गताम् ५३ दानवैःपीड्यमानाहं राक्षसैश्चदुरात्मभिः। त्वामेवश रणंनित्यमुपयामिसनातनम् ५४ तावन्मेऽस्तिभयंदेव! यावन्नत्वांककुद्मिनम्। शरणं यामिमनसा शतशोऽप्युपलक्षये ५५ उपमानंनतेशक्ताः कर्त्तुंसेन्द्रादिवौकसः। तत्त्वंत मेवतद्वेत्सि निरुत्तरमतःपरम् ५६ (शौनकउवाच) ततःप्रीतःसभगवान् पृथिव्यैशार्ङ्ग चक्रधृक्। काममस्यायथाकाममभिपूरितवान्हरिः ५७ अब्रवीच्चमहादेवि! माधवीयं स्तवोत्तमम्। धारयिष्यंतियोमर्त्यो नास्तितस्यपराभवः ५८ लोकान्निष्कल्मषांश्चैव वैष्णवान्प्रतिपत्स्यते। एतदाश्चर्यसर्वस्वं माधवीयंस्तवोत्तमम् ५९ अधीतवेदःपुरुषो मुनिःप्रीतमनाभवेत् ६० (श्रीभगवानुवाच) माभैर्धरणि! कल्याणि! शान्तिंव्रजममा ग्रतः। एषत्वामुचितंस्थानं प्रापयामिमनीषितम् ६१ (शौनकउवाच) ततोमहात्माम नसा दिव्यंरूपमचिन्तयत्। किन्नुरूपमहंकृत्वा उद्धरेयंधरामिमाम् ६२ जलक्रीडारुचि स्तस्माद्वाराहंवपुरास्थितः। अदृश्यंसर्वभूतानां वाङ्मयंब्रह्मसंस्थितम् ६३ शतयोजन विस्तीर्णमुच्छ्रितंद्विगुणंततः। नीलजीमूतसङ्काशं मेघस्तनितनिस्वनम् ६४ गिरिसंह

कियीहुई वस्तुको मैं कभी नहीं धारण करसक्तीहूं ४९।५१हे नारायण आपही युग२के अन्तमें जगत् के हितके अर्थ पृथ्वीके भारको उतारते हो ५२ हेसुरश्रेष्ठ तुम्हारे तेजसे आक्रान्त रसातलमें प्राप्तहुई मुझको उद्धारकरो मैं आपकी शरण आई हूं ५३ मैं दानव और दुष्टात्मा राक्षसों करके महापीड़ित हूं हेसनातन मैं सदैवसे आपकी शरणहूं ५४ हेदेव जबतक मैंने मनकरके तुम्हारी शरण नहीं लीथी तबतकही मुझेभयथा और जबआपकी शरणली है तब क्याभयहै हेदेवदेव आपकी उपमा और प्रशंसा करने को इन्द्रादिक देवता भी समर्थ नहीं हैं तो मैं आपकी क्या प्रशंसा करसक्तीहूं ५५।५६ शौनक जी कहतेहैं कि पृथ्वी की इस स्तुतिको सुनकर चक्रधारी विष्णुभगवान् बड़े प्रसन्न होकर उसकी कामनाको पूरण करतेभये और यह कहतेभये कि हेदेवि तेरी कीहुई इस माधवी स्तुतिको जो पुरुष धारणकरेगा उसको कभी किसीकालमें भी संकट न होगा और वैकुंठादिक लोकों को भी प्राप्तहोगा इस माधवी नाम मेरी स्तुतिका पाठ करनेवाले मुनियों को संपूर्ण वेदोंके पाठ करने का पुण्य होगा५७।६० श्रीभगवान् कहते हैं हेधरणि हेकल्याणि तू भयमतकर शान्तिको प्राप्तहोजा मैं तुझको उत्तम स्थानमें प्राप्त करूंगा ६१ शौनकजी कहते हैं कि इसके अनन्तर विष्णुभगवान् अपने दिव्य रूपों का चिन्तवन करके यह विचारतेभये कि कौनसे रूप करके पृथ्वी का उद्धार करना चाहिये ६२। ६३ फिर जलक्रीड़ा में रुचि करनेवाले विष्णुजी वराह अर्थात् शूकर रूपको धारण करते भये अर्थात् सब भूतों के मन वाणी से अगोचर ब्रह्म स्वरूप भगवान् अपने वराहरूपको सौ यो-

ननंभीमं श्वेततीक्ष्णाग्रदंष्ट्रिणम् । विद्युदग्निप्रतीकाशमादित्यसमतेजसम् ६५ पीनो
न्नतकटीदेशे वृषलक्षणपूजितम्। रूपमास्थायविपुलं वाराहमजितोहरिः ६६ पृथिव्यु
द्धरणायैव प्रविवेशरसातलम्। वेदपादोयूपदंष्ट्रः क्रतुदन्तश्चितीमुखः ६७ अग्निजिह्वो
दर्भलोमा ब्रह्मशीर्षोमहातपाः। अहोरात्रेक्षणधरो वेदाङ्गश्रुतिभूषणः ६८ आज्यनासः
स्रुवतुण्डः सामघोषस्वनोमहान् । सत्यधर्ममयःश्रीमान् कर्मविक्रमसत्क्रमः ६९ प्राय
श्चित्तनखोघोरः पशुजानुर्मखाकृतिः । उद्गाथाहोमलिङ्गोऽथ बीजौषधिमहाफलः ७०
वाय्वन्तरात्मायज्ञास्थिविकृतिःसोमशोणितः। वेदस्कन्धोहविर्गन्धो हव्यकव्यविभाग
वान् ७१ प्राग्वंशकायोद्युतिमान् नानादीक्षाभिरन्वितः। दक्षिणाहृदयोयोगी महासत्र
मयोमहान् ७२ उपाकर्मोष्ठरुचकः प्रवर्ग्यावर्तभूषणः। नानाच्छन्दोगतिपथो गुह्योपनि
षदासनः ७३ छायापत्नीसहायोवै मणिशृङ्ग इवोच्छ्रितः। रसातलतलेमग्नां रसातलंत
लङ्गताम् ७४ प्रभुर्लोकहितार्थाय दंष्ट्राग्रेणोज्जहारताम्। ततःस्वस्थानमानीय वराहः
पृथिवीधरः ७५ मुमोचपूर्वमनसा धारितांवसुन्धराम् । ततोजगामनिर्वाणं मेदिनीत
स्यधारणात् ७६ चकारचनमस्कारं तस्मैदेवायशम्भवे । एवंयज्ञवराहेण भूत्वाभूतहि
तार्थिना ७७ उद्धृतापृथिवीदेवी सागराम्बुगतापुरा। अथोद्धृत्यक्षितिंदेवो जगतःस्थाप
नेच्छया। पृथिवीप्रविभागाय मनश्चक्रेऽम्बुजेक्षणः ७८ रसाङ्गतामवनिमचिन्त्यविक्रमःसु

जनविस्तृत दोसौ योजनउन्नत नीलमेघके समान कान्ति और गर्जनाके समानशब्द वाला पर्व्वताकार श्वेतवर्णकी तीक्ष्णदंष्ट्रावाला विद्युत् अग्नि और सूर्य्य के समान महातेजयुक्त ऊंची कटि वृषभके लक्षणोंसे शोभित और विकराल वा भयंकर करतेभये और पृथ्वीके उद्धारके निमित्त पातालमें प्रवेश करके वेदरूपचरण यज्ञस्तंब रूप दाढ़ यज्ञरूप दांत- चितारूप मुख- अग्निरूप जिह्वा-डाभरूप रोमब्रह्माके समान शिर- महातपोमूर्ति- दिनरात्रिरूप नेत्रोंसे युक्त वेदांगरूपी कानोंसेशोभित घृतकीनासिका समेत स्रुवा रूपी तुंडवाला- सामवेदरूपी महाशब्दवाला सत्य धर्म में तत्पर-लक्ष्मीवान् कर्मरूपी विक्रमोंवाला—प्रायश्चित्तरूपी घोरनखोंवाला यज्ञ के पशु के समान घुटनों वाला होमके चिह्नों से युक्त बीज औषधरूपी महाफलवाला ६९। ७० यज्ञरूपी अस्थि सोमलतारूपी रुधिर—वेदरूप कन्धे—और साकल्यरूपी गंधवाला—हव्यकव्यके विभागयुक्त ७१ अनेक प्रकारकी दीक्षाओंसे संयुक्त दक्षिणारूपी हृदयवाला और योगीजन के समान महायज्ञरूप अनेक प्रकारके छन्दोंकी गतिवाला गुह्य उपनिषदोंके आसनवाला—छायारूप पत्नीकी सहायतावाला पर्व्वतके समान ऊंचा अपना रूप बनाकर विष्णुभगवान् ऐसे अपने वराहरूपसे लोकों के हितके निमित्त रसातल में डूबीहुई पृथ्वीको एक दंष्ट्रा पर धारण करके अपने स्थानमें लाकर जहां का तहां धरकर उद्धार करतेभये अर्थात् अपनी दंष्ट्रा में लगीहुई पृथ्वीको छोड़तेभये इसके अनन्तर यह पृथ्वी परमानन्दको प्राप्तहोकर उस वराहरूपी परमेश्वरको प्रार्थनापूर्व्वक नमस्कार करती भई इस रीतिसे यह यज्ञवराहरूपी विष्णुभगवान् जगत्के हितके निमित्त समुद्रके जल में प्राप्तहुई पृथ्वी

रोत्तमःप्रवरवराहरूपधृक्वृषाकपिःप्रसभमथैकदंष्ट्रया समुद्धरद्धरणिमतुल्यपौरुषः ७९

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्तचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४७॥

(ऋषयऊचुः) नारायणस्यमाहात्म्यं श्रुत्वासूत ! यथाक्रमम्। नतृप्तिर्जायतेऽस्मा कमतःपुनरिहोच्यताम् १ कथंदेवागताःपूर्वममरत्वंविचक्षणाः। तपसाकर्मणावापि प्रसादात्कस्यतेजसा २ (सूतउवाच) यत्रनारायणोदेवो महादेवश्चशूलधृक्। तत्रामरत्वेसर्वेषां सहायौतत्रतौस्मृतौ ३ पुरादेवासुरेयुद्धे हताश्चशतशःसुरैः। पुनःसञ्जीविनीं विद्यां प्रयोज्यभृगुनन्दनः ४ जीवापयतिदैत्येन्द्रान् यथासुप्तोत्थितानिव। तस्यतुष्टेनदेवेन शङ्करेणमहात्मना ५ मृतसञ्जीविनीनाम विद्यादत्तामहाप्रभा। तांतुमाहेश्वरींविद्यां महेश्वरमुखोद्गताम् ६ भार्गवेसंस्थितांदृष्ट्वा मुमुदुःसर्वदानवाः। ततोऽमरत्वंदैत्यानां कृतंशुक्रेणधीमता ७ यानास्तिसर्वलोकानां देवानांसर्वरक्षसाम्। ननागानामृषीणाञ्च न चब्रह्मेन्द्रविष्णुषु ८ तांलब्ध्वाशङ्कराच्छुक्रः परांनिर्वृतिमागतः। ततोदैवासुरोघोरः समरःसुमहानभूत् ९ तत्रदेवैर्हतान्दैत्यान् शुक्रोविद्याबलेनच। उत्थापयतिदैत्येन्द्रान् लीलयैवविचक्षणः १० एवंविधेनशक्रस्तु बृहस्पतिरुदारधीः। हन्यमानास्ततोदेवाः शतशोऽथसहस्रशः ११ विषण्णवदनाःसर्वे बभूवुर्विकलेन्द्रियाः। ततस्तेषुविषण्णेषु भगवान्कमलोद्भवः। मेरुपृष्ठे सुरेन्द्राणामिदमाह जगत्पतिः १२ (ब्रह्मोवाच) देवाः! शृ

का उद्धारकरके जगत्की स्थितिके अर्थ विभागकरनेकी इच्छा करतेभये ७२।७८ इसरीतिसे विष्णु भगवान् ने अपने उत्तम वराह रूपसे एक दंष्ट्राके द्वारा पृथ्वीका उद्धार किया है ७९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४७॥

ऋषिबोले—हे सूतजी हम सब लोगोंकी नारायण के माहात्म्य सुनने से तृप्तिनहीं होती है इस हेतुसे यहबात हम सुननेकी इच्छा कर रहेहैं प्रथमही देवतालोग कौनसे कर्म तप अथवा किसकी प्रसन्नतासे मृत्युसे रहित अमर होगयेहैं १।२ सूतजीबोले—जहांनारायण देव और शिवजी महाराज यह दोनों देवताओं पर प्रसन्नहुए हैं उसी स्थानपर सब देवता अमरहुए हैं ३ प्रथम युद्धमें देवताओंने हजारों दैत्योंको माराथा उस समय उन सब दैत्योंको शुक्राचार्य्यजीने अपनी संजीविनी विद्यासे जिलाया क्योंकि प्रथम महादेवजी ने प्रसन्नहोकर शुक्राचार्य्यको वह संजीविनी विद्या दी थी इसीसे उन्होंने सब दानवजिवादिये इसीकारण सब दैत्य शुक्राचार्य्यके पास संजीविनी विद्या जानकर अत्यन्त प्रसन्नहोतेभये औरसबलोक देवता-राक्षस-नाग-ऋषि ब्रह्मा इन्द्र औरविष्णु इनसबमें किसीकेभी पासजोविद्या न थी उससंजीविनी विद्याको पाकर शुक्राचार्य्यभी अत्यन्त प्रसन्न होजातेभये औरदेवता वा दानवोंका अत्यन्त घोरयुद्ध प्रवृत्तहुआ तबदेवताओंसे मारेहुएदैत्योंको शुक्राचार्य्य अपनी विद्याके बलसे जिवादेतेभये अपनी लीलाहीसे संपूर्ण दैत्योंको खड़ेकरदेतेथे जैसेकि शुक्रजी तत्काल उनमरे दैत्योंको खड़ाकर देतेथे वैसे इन्द्र और बृहस्पति समेत कोईभी देवतानहीं जिलासकताथा तबविकलहुए हजारों देवता महादुखी होजातेभये जबइन्द्रियोंसे और अनेक प्रकारसे देवता व्याकुल

एतमद्वाक्यं तत्तथैवनिरूप्यताम्। क्षिपतांदानवैःसार्द्धं सख्यमत्रप्रवर्त्तताम् १३ क्रिय
ताममृतोद्योगो मथ्यतांक्षीरवारिधिः। सहायंवरुणंकृत्वा चक्रपाणिर्विबोध्यताम् १४ म
न्थानंमन्दरंकृत्वा शेषनेत्रेणवेष्टितम्। दानवेन्द्रोबलिस्वामी स्तोककालंनिवेश्यताम् १५
प्रार्थ्यतांकूर्मरूपश्च पातालेविष्णुरव्ययः।प्रार्थ्यतांमन्दरःशैलः मन्थकार्यप्रवर्त्यताम् १६
तच्छ्रुत्वावचनंदेवा जग्मुर्दानवमन्दिरम्। अलंविरोधेनवयं भृत्यास्तवबले! ऽधुना १७
क्रियताममृतोद्योगो व्रीयतांशेषनेत्रकम्। त्वयाचोत्पादितेदैत्य! अमृतेऽमृतमन्थने १८
भविष्यामोऽमराःसर्वे त्वत्प्रसादान्नसंशयः। एवमुक्तस्ततोदेवैः परितुष्टःसदानवः १९
यथावदतहेदेवा! स्तथाकार्यंमयाधुना। शक्तोऽहमेकएवात्र मथितुंक्षीरवारिधिम् २०
आहरिष्येऽमृतंदिव्य ममृतत्वायवोऽधुना। सुदूरादाश्रयंप्राप्तान् प्रणतानपिवैरिणः २१
योनपूजयतेभक्त्या प्रेत्यचेहविनश्यति। पालयिष्यामिवःसर्वा नधुनास्नेहमास्थितः
२२ एवमुक्त्वासदैत्येन्द्रो देवैःसहययौतदा। मन्दरंप्रार्थयामास सहायत्वेधराधरम् २३
सखाभवत्वमस्माक मद्यनामृतमन्थने। सुरासुराणांसर्वेषां महत्कार्यमिदंजगत् २४ त
थेतिमन्दरःप्राह यद्याधारोभवेन्मम। यत्रस्थित्वाभ्रमिष्यामि मथिष्येवरुणालयम् २५

होगये उससमय सुमेरुपर्व्वतके शिखरपर बैठकर ब्रह्माजी यहवचन कहतेभये ११।१२ कि हेदेवताओ तुममेरे वचनको सुनकर मेरेकहनेके अनुसार करो अर्थात् मेरी आज्ञासे तुमको दानवोंके साथस्नेह करलेना चाहिये इसके पीछे तुम सबमिलकर अमृतके उत्पन्न करने के अर्थ समुद्रके मथनेका उद्योगकरो और अपना सहायक वरुण देवताको करके चक्रपाणि विष्णुभगवान्को बोधितकरो समुद्रके मथने में मन्दराचलकी रईबनाओ शेषनागकी नेतीकरो, दानवेन्द्र बलिदैत्यको थोड़े कालतक अपने में संयुक्तकरो पातालमें कूर्म अर्थात् कछुएकेरूप बनाने के निमित्त विष्णुभगवान् की प्रार्थनाकरो और मन्दराचलकी भी प्रार्थना करके मथने का कार्य्य प्रवृत्तकरो १३।१६ ब्रह्माजीके इस वचन को सुनकर सब देवता बलि दानवके स्थानको प्राप्त होतेभये और वहाँ बलि दैत्यसे कहनेलगे कि हेबले अब तुम हमसे विरोधमतकरो हम तुम्हारे दासहैं अब अमृतकेनिमित्त समुद्रकेमथनेका उद्योगकरना चाहिये वहाँ शेषनागकोतो नेती बननेकेनिमित्त वरनाचाहिये हेदैत्य तुमसे उत्पन्नहुए अमृतसे निस्सन्देह हम सब अमरहोजावेंगे जब ऐसेप्रकारसे देवताओंने कहा तब बलिदैत्य प्रसन्नहोकर देवताओंसे कहनेलगा कि हेदेवताओ जैसा तुमकहतेहो वैसाही मैंकरूंगा और इसक्षीरसमुद्रके मथनेको तो मैं अकेलाहीसमर्थहूं १७।२० तुम्हारे अमरहोनेके निमित्त मैं अवश्य अमृतको उत्पन्नकरूंगा क्योंकि जो दूरसे वैरी शरणमेंआतेहैं उनको जो भक्तिकरके नहीं पूजता है वह इसलोक और परलोकदोनोंमें नष्टहोजाता है इसहेतुसे मैं तुम सबकी पालनाकरूंगा २१।२२ ऐसाकहकर वह दैत्येन्द्रबलि देवताओंकेसाथ गमन करताभया और सबमिलकर मन्दराचलकी प्रार्थनाकरतेभये २३ और यह कहतेभये हेपर्वतोंमें श्रेष्ठ मन्दराचल तुम अमृत उत्पन्न के लिये समुद्र मथन में हमारी सहायता करो और हमारे मित्रबनो यह देवता और दैत्यों का महाकार्य्य है इसमें तुम सहायकहोजाओ २४ यह सुनकर मन्दरा-

कल्प्यतांनेत्रकार्येयः शक्तःस्याद्वेष्टनेमम। ततस्तुनिर्गतौदेवौ कूर्मशेषौमहाबलौ २६ वि
ष्णोर्भागौचतुर्थांशाद्धरण्याधारणेस्थितौ। ऊचतुर्गर्वसंयुक्तं वचनंशेषकच्छपौ २७ त्रै
लोक्यधारणेनापि नग्लानिर्ममजायते। किमुमन्दरकात्क्षुद्रात् घुटिकासन्निभादिह २८
(शेषउवाच) ब्रह्माण्डवेष्टनेनापि ब्रह्माण्डमथनेनवा। नमेग्लानिर्भवेद्देहे किमुमन्दर
वर्तने २९ ततउत्पाट्यतंशैलं तत्क्षणात्क्षीरसागरे। चिक्षेपलीलयानागः कूर्मश्चाधः
स्थितस्तदा ३० निराधारंयदाशैलं नशेकुर्देवदानवाः। मन्दरभ्रामणंकर्तुं क्षीरोदमथने
तथा ३१ नारायणनिवासन्ते जग्मुर्बलिसमन्विताः। यत्रास्तेदेवदेवेशः स्वयमेवजनार्द
नः ३२ तत्रापश्यन्ततन्देवं सितपद्मप्रभंशुभम्। योगनिद्रासुनिरतं पीतवाससमच्युत
म् ३३ हारकेयूरनद्धाङ्गमहिपर्यङ्कसंस्थितम्। पादपद्मेनपद्मायाः स्पृशन्तंनाभिमण्डल
म् ३४ स्वपक्षव्यजनेनाथवीज्यमानङ्गरुत्मता। स्तूयमानंसमन्ताच्चसिद्धचारणकिन्नरैः ३५
आम्नायैर्मूर्त्तिमद्भिश्च स्तूयमानंसमन्ततः। सव्यबाहूपधानंतन्तुष्टुवुर्देवदानवाः ३६
कृताञ्जलिपुटाःसर्वे प्रणताःसर्वतोदिशम्। (देवदानवाऊचुः) नमोलोकत्रयाध्यक्ष!
तेजसामितभास्कर! ३७ नमोविष्णो! नमोजिष्णो! नमस्तेकैटभार्दन!। नमःसर्गक्रि
याकर्त्रे जगत्पालयतेनमः ३८ रुद्ररूपायशर्वाय नमःसंहारकारिणे। नमःशूलायुधाधृष्य
नमोदानवघातिने ३९ नमःक्रमत्रयाक्रान्त त्रैलोक्यायाभवायच। नमःप्रचण्डदैत्येन्द्र

चल उनकी प्रार्थना को स्वीकार करता भया और कहता भया किमैं समुद्रमें रईके समान भ्रमण करके इस क्षीरसमुद्र को मथूंगा २५ जोमेरे लपेटने को समर्थ होय वहमुझे नेती बनावे तदनन्तर महाबलवाले कूर्म और शेषनाग यह दोनों देवता पृथ्वी के धारण करने के निमित्त विष्णु भगवान् के चौथाई अंशसे स्थित होते भये और गर्वसंयुक्त वचन कहते भये २६। २७ प्रथम कूर्मने कहा कि जब त्रिलोकी के धारण करनेमें मुझको कुछ क्लेश नहीं होताहै तो इस तुच्छ मन्दराचल पर्वत के धारण करनेमें क्याबाधाहोगी २८ फिर शेपनागनेकहा कि मुझको त्रिलोकीके लपेटनेमें कुछक्लेश नहीं होताहै तो इस तुच्छ मन्दराचल के लपेटनेमें क्या ग्लानि होगी २९ फिर वह सब दैत्यऔर देवता उस मन्दराचलको क्षीरसमुद्र में गेरतेभये तब शेपनाग अपनी लीलाहीमात्रसे उसमेंलिपट जातेभये और कूर्मरूपी विष्णु उसके नीचे स्थितहोतेभये फिर जब निराधार पर्वतकेद्वारा क्षीरसागर को वह सब दैत्य और देवता मथनेको समर्थ न होतेभये उससमय बलिदैत्य समेत सब देवता विष्णु भगवान् के स्थानमें जाकर श्वेत कमलकीसी कान्तिवाले योगनिद्रामें युक्त पीतवस्त्र और बाजूबन्दादि भूषणोंसे युक्त लक्ष्मी जिनके चरणोंको दाबरही गरुड़ अपने पक्षोंसे वायुकररहा चारोंओर सिद्धचारणा दिक स्तुति कररहे वामभुजा का तकिया लगायेहुए विष्णु भगवान् को सब देवताओर दैत्य अपनीर स्तुतियोंसे प्रसन्न करतेभये ३०। ३६ और चारो ओर अंजली बांधकर देवता समेत दैत्य प्रणामकर करके बोले कि हे लोकत्रयाध्यक्ष अनन्तसूर्य्यप्रकाश हे विष्णुकैटभ दैत्य के शत्रु सृष्टिकर्त्ता प्रजाका पालन करनेवाले आपको नमस्कार है ३७। ३८ हे रुद्ररूपसंहारकर्त्ता त्रिशूलधारी दानवों के शत्रु

कुलकालमहानल! ४० नमोनाभिहृदोद्भूतपद्मगर्भमहाचल!। पद्मभूत! महाभूत! क
र्त्रेहर्त्रेजगत्प्रिय! ४१ जनितासर्वलोकेश! क्रियाकारणकारिणे। अमरारिविनाशाय
महासमरशालिने ४२ लक्ष्मीमुखाब्जमधुप! नमःकीर्त्तिनिवासिने। अस्माकममरत्वा
य ध्रियतांध्रियतामयम् ४३ मन्दरःसर्वशैलानामयुतायुतविस्तृतः। अनन्तबलबाहु
भ्यामवष्टभ्यैकपाणिना ४४ मथ्यतामसृतंदेव! स्वधास्वाहार्थकामिनाम्। ततःश्रुत्वास
भगवान् स्तोत्रपूर्ववचस्तदा। विहाययोगनिद्रान्तामुवाचमधुसूदनः ४५ (श्रीभगवानु
वाच) स्वागतंविबुधाः! सर्वे किमागमनकारणम्। यस्मात्कार्यादिहप्राप्तास्तद्ब्रूतवि
गतज्वराः ४६ नारायणेनैवमुक्ताः प्रोचुस्तत्रदिवौकसः। अमरत्वायदेवेश! मथ्यमाने
महोदधौ ४७ यथामृतत्वंदेवेश! तथानःकुरुमाधव!। त्वयाविनानतच्छक्यमस्माभिः
कैटभार्दन! ४८ प्राप्तुंतदमृतंनाथ! ततोऽग्रेभवनोविभो!। इत्युक्तश्चततोविष्णुरप्र
धृष्योऽरिमर्दनः ४९ जगामदेवैःसहितो यत्रासौमन्दराचलः। वेष्टितोभोगिभोगेन धृत
श्चामरदानवैः ५० विषभीतास्ततोदेवा यतःपुच्छंततःस्थिताः। मुखतोदैत्यसङ्घास्तु
सैंहिकेयपुरःसराः ५१ सहस्रवदनंचास्य शिरःसव्येनपाणिना। दक्षिणेनबलिर्देहं नाग
स्याकृष्टवांस्तथा ५२ दधारामृतमन्थानं मन्दरंचारुकन्दरम्। नारायणःसभगवान्
भुजयुग्मद्वयेनतु ५३ ततोदेवासुरैःसर्वैर्जयशब्दपुरःसरम्। दिव्यंवर्षशतंसाग्रं मथितः

आपकेअर्थ नमस्कारहै ३९ हेतीनपैरोंसे त्रिलोकीके मापनेवाले त्रिलोकीके उत्पन्नकर्त्ता प्रचंड दैत्य
कुलोंके नाशके अर्थ महाअग्निस्वरूप आपको नमस्कारहै ४० नाभिरूप हृदकमलसे जगत् के
उत्पन्नकर्त्ता महाभूतकर्त्ता हर्त्ता जगत्के प्रिय आपकेअर्थ नमस्कार है ४१ सर्वलोकेश क्रिया और
कारणके कर्त्ता देवताओंके शत्रुओंका नाशकरनेवाले महायुद्धमें प्रवृत्तहोनेवाले आपको नमस्कार है
लक्ष्मीजीके मुखारविंदके पानकर्त्ता कीर्त्तिरूप आपकेअर्थ नमस्कारहै आप हमारे अमरहोनेके निमित्त
सबपर्व्वतों से दशगुणित इस मन्दराचलनाम पर्व्वतको धारणकरिये और इसी पर्व्वतरूप रईसे
समुद्रको अपनी अनन्तबलवाली भुजाओं से मथिये और एक हाथसे पकड़कर दूसरेहाथसे स्वधा
स्वाहाके निमित्त अमृतको मथिये इसस्तुतिको सुनकर विष्णु भगवान् अपनी योगनिद्राको त्याग
कर यहवचन बोले ४२।४५ कि हे देवताआदिलोगो तुम्हारा आना उत्तमहो तुमसब मिलकर यहां
जिसनिमित्त आयेहो उस सबकारणको वर्णनकरो ४६ नारायण के इसप्रकार के वचनको सुनकर
देवताबोले हेदेव हमसबने अमर होनेके निमित्त इस क्षीरसागरको वारंवार मथा है परन्तु आप के
विना हम अमृतनिकालनेको असमर्थहैं यहवचन सुनतेही विष्णु भगवान् देवताओं के साथहोकर
वहांआये जहां मन्दराचलथा फिर मन्दराचलमें लपेटेहुए शेषनागकी पूंछकी ओर देवतालगे और
मुखकीओर दैत्यलोग लगतेभये और विष्णुजीने अपने वामहाथसे पर्वतके शिरकोपकड़ा और दा-
हिनेहाथसे बलिदैत्य और शेषनागको पकड़ा ४७।५१ और शेष दोनोंभुजाओंसे रईके स्थानमें प्राप्त
होकर मन्दराचलको पकड़ा उससमय देवता और दैत्योंने दिव्य १०० वर्षोंतक जयजय शब्दकरके

क्षीरसागरः ५४ ततःश्रान्तास्तुतेसर्वे देवादैत्यपुरःसराः। श्रान्तेषुतेषुदेवेन्द्रो मेघोभूत्वा
म्बुशीकरान् ५५ ववर्षामृतकल्पांस्तान् ववौवायुश्चशीतलः। भग्नप्रायेषुदेवेषु शान्ते
षुकमलासनः ५६ मथ्यतांमथ्यतांसिन्धुरित्युवाचपुनःपुनः। अवश्यमुद्योगवतां श्रीर
पाराभवेत्सदा ५७ ब्रह्मप्रोत्साहितादेवा ममन्थुःपुनरम्बुधिम्। भ्राम्यमाणेततःशैले
योजनायुतशेखरे ५८ निपेतुर्हस्तियूथानि वराहशरभादयः। श्वापदायुतलक्षाणि तथा
पुष्पफलाद्रुमाः ५९ ततःफलानांवीर्येण पुष्पौषधिरसेनच। क्षीरसङ्घर्षणाच्चापि दधिरूप
मजायत ६० ततस्तुसर्वजीवेषु चूर्णितेषुसहस्रशः। तदम्बुमेदसोत्सर्गाद्वारुणीसमप
द्यत ६१ वारुणीगन्धमाघ्राय मुमुदुर्देवदानवाः। तदास्वादेनबलिनो देवदैत्यादयोऽभ
वन् ६२ ततोऽतिवेगाज्जगृहुर्नागेन्द्रंसर्वतोऽसुराः। मन्थानंमन्थयष्टिस्तु मेरुस्तत्राच
लोभवत् ६३ अभवच्चाग्रतोविष्णुर्भुजमन्दरबन्धनः। सवासुकिफणालग्न पाणिःकृष्णो
व्यराजत ६४ यथानीलोत्पलैर्युक्तो ब्रह्मदण्डोऽतिविस्तरः। ध्वनिर्मेघसहस्रस्य जलधे
रुत्थितस्तदा ६५ भागेद्वितीयेमघवानादित्यस्तुततःपरम्। ततोरुद्रामहोत्साहा वस
वोगुह्यकादयः ६६ पुरतोविप्रचित्तिश्च नमुचिर्वृत्रशम्बरौ। द्विमूर्द्धावज्रदंष्ट्रश्च सैंहिके
योबलिस्तथा ६७ एतेचान्येचबहवो मुखभागमुपस्थिताः। ममन्थुरम्बुधिंदृप्ता बलते
जोविभूषिताः ६८ बभूवात्रमहाघोषो महामेघरवोपमः। उदधेर्मथ्यमानस्य मन्दरेणसु

वह क्षीरसमुद्रमथा ५३।५४ इस समुद्रमथनमें जब वह सबदेवता और दैत्य बलकरकर महाथकि-
तहुए उससमय विष्णु भगवान् ने मेघरूपहोकर शीतलकिरणों से जलकोवर्षाकर महाशीतल वायु
चलाई ऐसेहोनेपरभी जब वह सबदेवता हारकर नष्टहोनेलगे उससमय वारंवार यहीशब्द कहा कि
मथो मथो उद्योगकरनेवालोंको अवश्य परमलक्ष्मीकी प्राप्तिहोतीहै ५५।५७ इसप्रकार ब्रह्माजी से
उत्साहकरायेहुए देवता फिर अच्छेप्रकारसे मथतेभये तब दशहज़ारयोजनवाले उसपर्व्वतके शिखर
के फिरानेसे उसक्षीरसागरमें हाथियोंकेसमूह गिरनेलगे लाखों वराहादिकजीव श्वापदजीव और
उसपर्व्वतके शिखरके अनेकवृक्षादिकभी गिरतेभये ५८।५९ इसकेपीछे फलोंकेवीर्य और पुष्प औष-
धियोंके रसोंकेद्वारा उसक्षीरसमुद्रके बिलोनेसे वहसमुद्रदहीके समान होगया ६० उसघर्षणमें हज़ा-
रोंजीवोंका चूर्णहोगया उनकेचूर्णसे और जलके योगसे उस समुद्रमें वारुणी मदिरा उत्पन्नहोतीभई
तब सबदेवता और दानव वारुणी मदिराकी गन्धिको सूंघकर आनन्दको प्राप्तहोतेभये और उसके
स्वादसे सब देव दानव बलवान्होगये और शेषनागको बड़ेबलसे ग्रहणकरके मथतेभये और सुमेरु
पर्व्वत अचलहोजाताभया ६१।६३ विष्णु भगवान् शेषनागके आगे हाथलगाकर जो स्थितहोतेभये
इसीसे विष्णुकारूप कृष्णहोगया उसपर्व्वतके एकओर जैसे कि हज़ारोंमेघ गर्जनाकरतेहैं उसप्रकार
विष्णुजी गर्जनाकाशब्द करतेभये और दूसरीओर इन्द्र, सूर्य्य, उत्साहयुक्त रुद्र- वसु और गुह्यक यह
सब शब्दकरनेलगे ६४।६६ और इनकेआगे विप्रचित्ति- नमुचि- वृत्र- शंबर- द्विमूर्द्धा- वज्रदंष्ट्र सैंहि-
केय और बलिआदिक अनेकदैत्य उससर्पके मुखकी ओर खड़ेहोकर अपने २ बल तेज और अभि-

रासुरैः ६९ तत्रनानाजलचरा विनिर्धूतामहाद्रिणा। विलयंसमुपाजग्मुः शतशोऽथ सहस्रशः ७० वारुणानिचभूतानि विविधानिमहेश्वरः। पातालतलवासीनि विलयंस मुपानयत् ७१ तस्मिंश्चभ्राम्यमाणेऽद्रौ संघृष्टाश्चपरस्परम्। न्यपतन्पतगोपेताः पर्व ताग्रान्महाद्रुमाः ७२ तेषांसङ्घर्षणाच्चाग्निरर्चिभिःप्रज्वलन्मुहुः। विद्युद्भिरिवनीलाभ्र मावृणोन्मंदरंगिरिम् ७३ ददाहकुञ्जरांश्चैवसिंहांश्चैवविनिःसृतान्। विगतासूनिसर्वा णि सत्वानिविविधानिच ७४ तमग्निममरश्रेष्ठः प्रदहन्तमितस्ततः। वारिणामेघजेनेन्द्रः शमयामाससर्वतः ७५ ततोनानारसास्तत्र सुस्रुवुःसागराम्भसि। महाद्रुमाणांनिर्यासा बहवश्चौषधीरसाः ७६ तेषाममृतवीर्य्याणां रसानांपयसैवच। अमरत्वंसुराजग्मुः का ञ्चनच्छविसन्निभाः ७७ अथतस्यसमुद्रस्य तज्जातमुदकंपयः। रसान्तरैर्विमिश्रञ्च त तःक्षीरादभूद्घृतम् ७८ ततोब्रह्माणमासीनं देवावचनमब्रुवन्। श्रान्ताःस्मसुभृशंब्रह्मन्नो द्भवत्यमृतञ्चयत् ७९ ऋतेनारायणात्सर्वे दैत्यादेवोत्तमास्तथा। चिरायितमिदञ्चापि सागरस्यतुमन्थनम् ८० ततोनारायणंदेव ब्रह्मावचनमब्रवीत्। विधत्स्वैषांबलंविष्णो! भवानेवपरायणम् ८१ (विष्णुरुवाच) बलददामिसर्वेषां कर्मैतद्येसमास्थिताः। क्षुभ्य तांक्रमशःसर्वैर्मन्दरःपरिवर्त्यताम् ८२॥इत्यष्टचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः२४८॥

मानसे युक्तहोके उस समुद्रको मथतेभये ६७। ६८ जहां समुद्रके मथनेमें मेघके समान महाघोर शब्द होताथा वहां उस समुद्रमें मन्दराचलकी चोट लगनेसे समुद्रके रहनेवाले हज़ारोंजीव नष्टहो-गये ६९। ७० जलवासी पाताल लोकमें रहनेवाले अनेकप्रकारके जीवभी नष्टहो जातेभये ७१ फिर उस पर्व्वतके भ्रमण करनेसे उसके शिखरकेवृक्ष परस्पर घिसघिसकर गिरनेलगे ७२ तब उन वृक्षोंके घिसनेसे विद्युत्के समान प्रकाशवाली अग्नि उत्पन्न होतीभई उस अग्निने उस सब पर्व्वत को आच्छादित करलिया और पर्व्वतके बसनेवाले हाथी और सिंहादिक जीवोंकोभी भस्म करदिया तब मृतकहुए हज़ारोंजीव गिरनेलगे इसके पीछे इन्द्रमेघके जलसे उस पर्व्वतकी अग्निको शान्त कर देताभया ७३। ७५ तब उस पर्व्वतमेंसे अनेकप्रकारके वृक्षोंके गोंद और अनेक ओषधियोंकेरस बहसब उस समुद्रमें गिरनेलगे ७६ उन अमृतके वीर्य्यवाली ओषधियोंके रसकेद्वारा सब देवतालोग सुवर्णकीसी कान्तिवाले होकर अमृतपने को प्राप्त होतेभये ७७ फिर सब समुद्रकाजल दूधहोगया तब उसदूधमें अन्यरसोंके मिलनेसे घृत उत्पन्न होताभया ७८ तब उन बैठेहुए ब्रह्माजीसे देवता यह वचन कहतेभये कि हे ब्रह्मन् हमसब हारगयेहैं और अमृत अबतक नहीं निकला है देव नारायण के पुरुषार्थ विना इनसब देवताओंको समुद्रके मथनेमें बड़ी विलम्ब होगईहै यहवचन सुनकर ब्रह्माजी नारायणजीसे प्रार्थना पूर्वक वचन कहतेभये कि हेनारायण आपही इन सबलोगोंके परायणहो इस निमित्त इनसबोंमें बल प्राप्तकरो ७९। ८१ विष्णुभगवान् कहनेलगे कि मैं इनसबमें बल प्राप्तकरे देताहूं अब तुमसब अच्छेप्रकार सावधानी से इस मन्दराचल पर्व्वतको भ्रमाओ ८२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४८॥

(सूत उवाच) नारायणवचःश्रुत्वा बलिनस्तेमहोदधिम्। तत्पयःसहितांभूत्वा चक्रि रेभृशमाकुलम् १ ततःशतसहस्रांशु समानइवसागरात्। प्रसन्नाभःसमुत्पन्नः सोमःशी तांशुरुज्ज्वलः २ श्रीरनन्तरमुत्पन्ना घृतात्पाण्डुरवासिनी। साचदेवीसमुत्पन्ना तुरगः पाण्डुरस्तथा ३ कौस्तुभश्चमणिर्दिव्यश्चोत्पन्नोऽमृतसम्भवः। मरीचिविकचःश्रीमान् नारायणउरोगतः ४ पारिजातश्चविकच कुसुमस्तवकाञ्चितः। अनन्तरमपश्यंस्ते धूम मम्बरसन्निभम् ५ आपूरितदिशाम्भागं दुःसहंसर्वदेहिनाम्। तमाघ्रायसुराःसर्वे मूर्च्छ तापरिलङ्घिताः ६ उपाविशन्नब्धितटे शिरःसंगृह्यपाणिना। ततःक्रमेणदुर्वारः सोऽनलः प्रत्यदृश्यत ७ ज्वालामालाकुलाकारः समन्ताद्भीषणोऽर्चिषा। तेनाग्निनापरिक्षिप्ताः प्राय शस्तुसुरासुराः ८ दग्धाश्चाप्यर्द्धदग्धाश्च बभ्रमुःसकलादिशः। प्रधानादेवदैत्याश्च भीषितास्तेनवह्निना ९ अनन्तरंसमुद्भूतास्तस्मात्कुण्डभजातयः। कृष्णाःसर्पामहादं ष्ट्रा रक्ताश्चपवनाशनाः १० श्वेतपीतास्तथाचान्ये तथागोनसजातयः। मशकाभ्रमरा दंशा मक्षिकाःशलभास्तथा ११ कर्णशल्याःकृकलासा अनेकाश्चैवबभ्रमुः। प्राणिनोदं ष्ट्रिणोरौद्रास्तथाहिविषजातयः १२ शार्ङ्गहालाहलामुस्तवत्सकंगुरुभस्मगाः। नीलप त्रादयश्चान्ये शतशोबहुभेदिनः। येषांगन्धेनदह्यन्ते गिरिशृंगाण्यपिद्रुतम् १३ अनन्त रंनीलरसौघभृङ्गभिन्नाञ्जनाभंविषमंश्वसन्तम्। कायेनलोकान्तरपूरकेण केशैश्चवह्नि प्रतिमैर्ज्वलद्भिः १४ सुवर्णमुक्ताफलभूषिताङ्गं किरीटिनंपीतदुकूलजुष्टम्। नीलोत्पला

सूतजीबोले-कि नारायणके ऐसे वचन सुनकर वह सब महाबलवाले देवता और दानव उस समुद्रके दूधको बहुतसा बिलोवतेभये १ तब सहस्र किरणवाला उत्तम शोभावान् शीतल किरणों से प्रकाशित चन्द्रमा उत्पन्न होताभया २ चन्द्रमाके पीछे उत्तम शोभावाली लक्ष्मी देवी उत्पन्नहुई इसके पीछे सातमुखों वाला उत्तम उच्चैःश्रवानाम घोड़ा उत्पन्नहुआ तदनन्तर दिव्य कौस्तुभमणि उत्पन्नहुई और उत्पन्न होतेही वह मणि विष्णु भगवान्‌की छातीमें प्राप्तहोगई फिर सुवर्ण सदृश पुष्पोंके गुच्छों से युक्त कल्प वृक्ष उत्पन्न होताभया इसके पीछे सब देवता और दैत्य धुएंसे युक्तहुए आकाशको देखतेभये तब सबदिशा धुएंसे व्याप्तहोगईं तब धुएंके सूंघनेसे सबजनों के शिरमें पीड़ाहो जातीभई और सबके सबलोग समुद्रके किनारेपर शिरोंको हाथोंमें पकड़कर बैठगये तब महादुस्सह वाड़वानल नाम अग्नि उत्पन्न होताभया उस अग्निकी ज्वालाओं से व्याकुल होकर बहुतसे दैत्य और देवता दग्ध अंगवाले होकर दिशाओं में भ्रमण करतेभये इसके पीछे काले और रक्तवर्ण महादंष्ट्रा युक्त वायुके भक्षण करनेवाले अनेक जातिके सर्प उत्पन्न होतेभये ३ । १० फिर सर्पा कार मच्छर मक्खी आदिक अनेक जीव उत्पन्न होकर कानसलाई किरलकीट बड़ी दाढ़ और विष वाले असंख्य जीव उत्पन्न होजातेभये ११ । १२ फिर हालाहल आदि अनेक प्रकारके ऐसे विष उत्पन्न होतेभये जिनकी कि गन्धिसे शीघ्रही पर्व्वतके शिखर दग्धहोगये १३ इसके पश्चात् नीलवर्ण भ्रमर सदृश अग्नि के समान तेज युक्त सबलोकों को पूर्ण करताहुआ सुवर्णमुक्ता

भैःकुसुमैःकृतार्घं गर्जन्तमम्भोधरभीमवेगम् १५ अद्राक्षुरम्भोनिधिमध्यसंस्थं सविग्रहं देहिभयाश्रयन्तम्। विलोक्यतंभीषणमुग्रनेत्रं भूताश्चवित्रेसुरथापिसर्वे १६ केचिद्विलोक्यैवगताह्यभावं निःसंज्ञतांचाप्यपरेप्रपन्नाः। वेमुर्मुखेभ्योऽपिचफेनमन्ये केचित्त्ववापा विषमामवस्थाम् १७ श्वासेनतस्यनिर्दग्धा ततोविष्ण्विन्द्रदानवाः। दग्धाङ्गारनिभाजाता येभूतादिव्यरूपिणः। ततस्तुसम्भ्रमाद्विष्णुस्तमुवाचसुरात्मकम् १८ (भगवानुवाच) कोभवानन्तकप्रख्यः किमिच्छसिकुतोऽपिच। किंकृत्वातेप्रियंजाये देवमाचक्ष्वमेऽखिलम् १९ तच्चतस्यवचःश्रुत्वा विष्णोःकालाग्निसन्निभः। उवाचकालकूटस्तु भिन्नदुन्दुभिनिस्वनः २० (कालकूटउवाच) अहंहिकालकूटाख्यो विषोऽम्बुधिसमुद्भवः। यदातीव्रतरामर्षैः परस्परवधैषिभिः २१ सुरासुरैर्विमथितो दुग्धाम्भोनिधिरद्भुतः। सम्भूतोऽहंतदासर्वान् हन्तुंदेवान्सदानवान् २२ सर्वानिहहनिष्यामि क्षणमात्रेणदेहिनः। मामांग्रसतवैसर्वे यातवागिरिशान्तिकम् २३ श्रुत्वैतद्वचनंतस्य ततोभीताःसुरासुराः। ब्रह्मविष्णूपुरस्कृत्य गतास्तेशङ्करान्तिकम् २४ निवेदितास्ततोद्वास्थैस्तेगणेशैःसुरासुराः। अनुज्ञाताःशिवेनाथ विविशुर्गिरिशान्तिकम् २५ मन्दरस्यगुहांहैमीं मुक्तामालाविभूषिताम्। सुस्वच्छमणिसोपानां वैदूर्यस्तम्भमण्डिताम् २६ तत्रदेवासुरैःसर्वैर्जानुभिर्धरणींगतैः। ब्रह्माणमग्रतःकृत्वा इदंस्तोत्रमुदाहृतम् २७ (देवदानवा ऊचुः) नमस्तुभ्यंविरूपाक्ष! सर्वतोऽनन्तचक्षुषे। नमःपिना

और वस्त्रोंके भूषणोंसे अलंकृत पीतवस्त्रधारी मेघके समान गर्जनेवाले समुद्रके मध्यमें स्थित हुए कालकूट विषको सब देवता और दैत्य देखतेभये ऐसे उग्रवेगवाले उस विषको देखकर सबजने महा भयभीत होकर कोई तो संज्ञारहित होगये कोई मुखसे झाग गेरनेलगे और कितनोंही को मूर्च्छा भी आगई १४। १७ इसके अनन्तर उस कालकूटके श्वाससे दग्धहुए विष्णु इन्द्र और दानव यह सब जले हुए अंगार और कोयलोंके समान विरूप होजातेभये तब विष्णुभगवान् यह वचन बोले १८ कि हे महा उग्ररूप तुम कौन हो क्या चाहते हो और क्या करने से प्रसन्न होगे यह सब हमारे आगे वर्णनकीजिये तब विष्णुजीके ऐसे प्रकारके वचनों को सुनकर वह काल कूट विष नक्कारोंके शब्दोंके समान महागर्जनापूर्वक बोला १९। २० कि मैं समुद्र में से उत्पन्नहुआ कालकूटनाम विषहूं जिस समय वड़े क्रोधकरके देवता और दैत्योंने इस समुद्र को मथा तब उन देवता और दानवोंके मारनेके निमित्त मैं उत्पन्नहुआहूं २१। २२ सो अब मैं इनसबोंको क्षणमात्रही में नष्टकरदूंगा, कैतो यह सब मुझे भक्षणकरें नहींतो शिवजी के समीप जांय २३ ऐसे इस वचनको सुनकर देवता और दैत्य ब्रह्मा और विष्णुको आगे करके शिवजीके पास जातेभये वहां जाकर सब लोग शिवजीके द्वारपर स्थितहोतेभये तब शिवजीके गणोंने शिवजीको खबरकरी तब शिवजीकी आज्ञापाकर सबलोक उनके स्थानके भीतर प्रवेश करतेभये अर्थात् मन्दराचल पर्व्वतकी स्वर्णमयी स्वच्छ मणियों से खचित सीढ़ियोंवाली वैदूर्य्यमणिके स्तंबोंवाली उस शिवजी की गुफामें प्रवेश करके ब्रह्माको आगे करके सबलोग स्तुति करतेभये २४। २७ देवता और दानवोंने कहा हे विरू-

कहस्ताय वज्रहस्तायधन्विने २८ नमस्त्रिशूलहस्ताय दण्डहस्तायधूर्जटे। नमस्त्रैलोक्य नाथाय भूतग्रामशरीरिणे २९ नमःसुरारिहन्त्रेच सोमाग्न्यर्काग्र्यचक्षुषे। ब्रह्मणेचैवरुद्राय नमस्तेविष्णुरूपिणे ३० ब्रह्मणेवेदरूपाय नमस्तेदेवरूपिणे। सांख्ययोगायभूतानांनमस्तेशम्भवायते ३१ मन्मथाङ्गविनाशाय नमःकालक्षयङ्करः। रंहसेदेवदेवायनमस्तेचसुरोत्तम! ३२ एकवीरायशर्वाय नमःपिङ्गकपर्दिने। उमाभर्त्रेनमस्तुभ्यं यज्ञत्रिपुरघातिने ३३ शुद्धबोधप्रबुद्धाय मुक्तकैवल्यरूपिणे। लोकत्रयविधात्रेच वरुणेन्द्राग्निरूपिणे ३४ ऋग्यजुःसामवेदाय पुरुषायेश्वरायच। अग्रयायचैवचोग्राय विप्रायश्रुतिचक्षुषे ३५ रजसेचैवसत्त्वाय नमस्तेस्तिमितात्मने। अनित्यानित्यभावाय नमोनित्यचरात्मने ३६ व्यक्तायचैवाव्यक्ताय व्यक्ताव्यक्तायवैनमः। भक्तानामार्तिनाशाय प्रियनारायणायच ३७ उमाप्रियायशर्वाय नन्दिवक्त्राञ्चितायच। ऋतुमन्वन्तकल्पाय पक्षमासदिनात्मने ३८ नानारूपायमुण्डाय वरूथपृथुदण्डिने। नमःकमलहस्ताय दिग्वासाय शिखण्डिने ३९ धन्विनेरथिनेचैव यतयेब्रह्मचारिणे। इत्येवमादिचरितैस्तुतंतुभ्यंनमोनमः ४० एवंसुरासुरैस्थाणुस्तुतस्तोषमुपागतः। उवाचवाक्यंभीतानांस्मितान्वितशुभाक्षरम् ४१ (श्रीशङ्करउवाच) किमर्थमागताब्रूत त्रासग्लानमुखाम्बुजाः!। किंवाभीष्टं ददाम्यद्य कामंप्रब्रूतमाचिरम्। इत्युक्तास्तेतुदेवेनप्रोचुस्तंससुरासुराः ४२ (सुरासुराऊचुः) अमृतार्थेमहादेव! मथ्यमानेमहोदधौ। विषमद्भुतमुद्भूतं लोकसंक्षयकारकम् ४३ सउ

पाक्ष अनेकनेत्रों वाले पिनाकधनुषधारी आपके अर्थ नमस्कार है २८. हे त्रिशूलदंडधारी त्रिलोकेश सब भूतों के धारण करनेवाले आपको नमस्कारहै २९ हे देवताओं के शत्रुनाशक सूर्यचन्द्रमा और अग्निरूपनेत्रधारी ब्रह्मा विष्णु और रुद्र इन तीनों रूपों के धारण करनेवाले सांख्ययोगस्वरूप आप के अर्थ नमस्कार है ३०। ३१ हे कामदेवके शरीर के नष्टकर्त्ता देवदेव आपके अर्थ नमस्कार है एकवीर, शर्व, जटाधारी पार्वतीजी के पति दक्ष यज्ञ और त्रिपुरके नाश करनेवाले शुद्धियुक्त मुक्तिके लक्षणों समेत तीनों लोकोंके विधायक इन्द्र--अग्नि--वरुण ऋक् यजु साम रूपवाले पुरुषेश्वर उग्र विप्र तथा श्रुतियों के नेत्रोंवाले रजो सतोगुणी और नित्य चिरात्मा आप के अर्थ नमस्कारहै ३२। ३६ व्यक्ताव्यक्त भक्तोंकी पीड़ा दूरकरनेवाले प्रिय नारायणरूप आपको नमस्कार है ३७ पार्वतीजी के प्रिय ऋतु और मनुओं के अन्तर करनेवाले कल्प पक्ष मास दिन इन सबके आत्मा अनेक रूपोंके धारण करनेवाले कमल हाथ में रखनेवाले, दिगम्बर रूप और शिखंडी आपके अर्थ नमस्कार है ३८। ३९ धनुषधारी-रथी-यती-ब्रह्मचारी इत्यादि चरित्रयुक्त आपको नमस्कारहै ४० यह सबकी स्तुति सुनकर शिवजी बोले कि हे देवता और दैत्यो तुमत्रास और ग्लानियुक्त होकर किस निमित्त आयेहो में तुम्हारे कौनसे मनोरथको सिद्ध करूं इस बातको शीघ्र कहो यह शिव के वचन सुनतेही देवता और दानव यह प्रार्थना करनेलगे ४१। ४२ कि हे महादेवजी हम सब ने मिलकर अमृतके निमित्त बड़ा समुद्रमथाहै उसमें से सबलोकोंका नष्ट करनेवाला बड़ा

वाचाथसर्वेषां देवानांभयकारकः। सर्वान्वोभक्षयिष्यामि अथवामापिवस्तथा ४४ तमं
शक्तावयंग्रस्तुं सोऽस्मान्शक्तोबलोत्कटः। एषनिश्वासमात्रेण शतपर्वसमद्युतिः ४५
विष्णुःकृष्णःकृतस्तेन यमश्चविषमात्मवान्। मूर्च्छिताःपतिताश्चान्ये विप्रणाशङ्गताःप
रे ४६ अर्थोऽनर्थक्रियांयाति दुर्भगानांयथाविभो!। दुर्बलानाञ्चसङ्कल्पो यथाभवतिचा
पदि ४७ विषमेतत्समुद्भूतं तस्माद्धामृतकांक्षया। अस्माद्भयान्मोचयत्वं गतिस्त्वञ्चपरा
यणम् ४८ भक्तानुकम्पीभावज्ञो भुवनादीश्वरोविभुः। यज्ञाग्रभुक्सर्वहविः सोम्यःसोमः
स्मरान्तकृत् ४९ त्वमेकोनोगतिर्देव गीर्वाणगणशर्मकृत्। रक्षास्मान्भक्षसङ्कल्पाद्वि
रूपाक्ष! विषज्वरात् ५० तच्छ्रुत्वाभगवानाह भगनेत्रान्तकृद्भवः। भक्षयिष्याम्यहंघोरं
कालकूटंमहाविषम् ५१ तथान्यदपियत्कृत्यं कृच्छ्रसाध्यंसुरासुराः! तच्चापिसाधयिष्यामि
तिष्ठध्वंविगतज्वराः ५२ इत्युक्ताहृष्टरोमाणो बाष्पगद्गदकण्ठिनः। आनन्दाश्रुपरीताक्षाः
सनाथाइवमेनिरे। सुराब्रह्मादयःसर्वे समाश्वस्ताःसुमानसाः ५३ ततोऽव्रजद्द्रुतगति
नाककुम्भिना हरोऽम्बरेपवनगतिर्जगत्पतिः। प्रधाविनैरसुरसुरेन्द्रनायकैः स्ववाहनैर्विगृ
हीतशुभ्रचामरैः। पुरःसरैःसतुशुशुभेशुभाश्रयैः शिवोवशीशिखिकपिशोर्ध्वजूटकः ५४
आसाद्यदुग्धसिन्धुंतं कालकूटंविषंयतः। ततोदेवोमहादेवो विलोक्यविषमंविषम् ५५
छायास्थानकमास्थाय सोऽपिबद्वामपाणिना। पीयमानेविषेतस्मिंस्ततोदेवाःमहासुराः

तीक्ष्ण हलाहलकालकूट नाम विषनिकलाहै वह विष हम सबसे कहताहै कि मैं तुम सबको भक्षण करूंगा नहीं तो तुम मुझको पियो ४३। ४४ जब हमारा उसपर वश न चलसका तब सब आपकी शरण में आये हैं वह विषबिजली के तेजके समान श्वास लेताहै उसने विष्णुको काला करदिया धर्मराजको विषम आत्मावाला किया कितनेही मूर्च्छित हो गिरे और कितनेही नष्ट करदिये ४५।४६ हे विभो जैसे कि दुर्भगा स्त्रियोंका अर्थ अनर्थ की क्रियाको प्राप्त होताहै और जैसे विपत्तिकालमें दुर्बल मनुष्यों के संकल्प सफल नहीं होते उसीप्रकार हम सब अमृतकी इच्छा करनेवालोंको यह विष प्राप्त होगया है सो हम सब आपकी शरण में आये हैं आप शरणागतवत्सल होकर हमारी रक्षाकीजिये ४७। ४८ आप भक्तोंपर अनुग्रह करनेवाले, सब भाव के ज्ञाता, महेश्वर यज्ञके अग्रभागी सौम्य सोम और कामदेव के अन्तकहो आपही केवल हमारी गति हो गणोंकी रक्षा करनेवाले हो हेदेव आपही हमको इस भक्षण करने की इच्छाकरनेवाले महाकाल रूप विषसे बचाइये ४९।५० यह वचन सुनकर महादेवजीने कहा कि उस कालकूटनामा विषको मैं भक्षण करूंगा ५१ और जो तुम सब देवता दैत्योंका अन्य कोई दुस्साध्य कार्य्यहोगा उसको भी मैंकरूंगा ५२ यह शिवजी के वचन सुनकर सबके रोमांचखड़े होकर नेत्रोंसे आनन्दके अश्रुपात गिरनेलगे सब प्रसन्न होगये ५३ इसके पीछे जगत्पति महादेवजी वायु की गति करके आकाश मार्गसे गमन करतेभये तब देवता और दानव भी अपने २ वाहनों समेत हाथों में श्वेत २ चमरोंको लेकर शिवजी के पीछे२भाजते भये ५४ तब महादेवजी क्षीरसमुद्रके समीप प्राप्तहोकर उस कालकूट विषको देखतेभये ५५ फिर

५६ जगुश्चननृतुश्चापि सिंहनादांश्चपुष्कलान्। चक्रुःशक्रमुखाद्याश्च हिरण्याक्षाद यस्तथा ५७ स्तुवन्तश्चैवदेवेशं प्रसन्नाश्चाभवंस्तदा। कण्ठदेशेततःप्राप्ते विषेदेवमथा ब्रुवन् ५८ विरिञ्चिप्रमुखादेवा बलिप्रमुखतोऽसुराः। शोभतेदेव! कण्ठस्ते गात्रेकुन्दनि भप्रभे ५९ भृङ्गमालानिभंकण्ठेऽप्यत्रैवास्तुविषंतव। इत्युक्तःशङ्करोदेवस्तथाप्राहपुरा न्तकृत् ६० पीतेविषेदेवगणान्विमुच्य गतोहरोमन्दरशैलमेव। तस्मिन्गतेदेवगणाः पुनस्तं ममन्थुरब्धिंविविधप्रकारैः ६१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकोनपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४९॥

(सूतउवाच) मथ्यमानेपुनस्तस्मिन् जलधौसमदृश्यत। धन्वन्तरिःसभगवान् आयुर्वेदप्रजापतिः १ मदिराचायताक्षीसा लोकचित्तप्रमाथिनी। ततोऽमृतञ्चसुरभिः स र्वभूतभयापहा २ जग्राहकमलांविष्णुः कौस्तुभञ्चमहामणिम्। गजेन्द्रञ्चसहस्राक्षो हय रत्नञ्चभास्करः ३ धन्वन्तरिञ्चजग्राह लोकारोग्यप्रवर्तकम्। छत्रंजग्राहवरुणः कुण्डले चशचीपतिः ४ पारिजाततरुंवायुर्जग्राहमुदितस्तथा। धन्वन्तरिस्ततोदेवो वपुष्मानुद तिष्ठत ५ श्वेतंकमण्डलुंबिभ्रदमृतंयत्रतिष्ठति। एतदत्यद्भुतंदृष्ट्वा दानवानांसमुत्थितः ६

छाया के स्थान में प्राप्तहोकर वह शिवजी अपने वाम हस्तसे उस विषको पीजातेभये जब शिव जी विषको पीनेलगे तब देवता और सब दानव सिंहके समान शब्द करनेलगे और गानपूर्वक नृत्यभी करतेभये और विष पानकरते महादेवजीकी ब्रह्माआदिक बड़े २ देवता स्तुतिकरते भये जब शिवजी के कण्ठमें विष प्राप्तहोगया उस समय देवता और दैत्यों समेत बलिदानव महा प्रसन्नहोकर यह वचन बोले हेकुन्दके समान श्वेत कान्तिवाले आपके कण्ठमें यह विष महाशोभा देरहाहै ५६।५९ इसके कारण भौंरों कीसी मालाधारण किये यह आपका कण्ठ अत्यन्तही शोभादेरहाहै यह सुनकर महादेवजीने कहा कि अच्छा यह विष कंठमें धारणकरूंगा नीचे न जानेदूंगा इस प्रकार शिवजी विष को पानकरके अपने स्थानको जातेभये और देवता दानव दोनों फिर उस समुद्रको मथनेलगे६०।६१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४९॥

सूतजीबोले--कि जब यह समुद्र फिर मथागया तब उसमें से आयुर्वेदका प्रजापति धन्वन्तरि नाम वैद्य निकलता भया १ इस वैद्य के पीछे चित्तकी मथन करनेवाली मदिरा निकली फिर अमृत निकला तदनन्तर सबके भयके दूरकरनेवाली सुरभि गौ उत्पन्न होतीभई २ फिर लक्ष्मी को और कौस्तुभ मणिको तो विष्णु भगवान् ग्रहणकरतेभये और फिर ऐरावत हाथी निकला उसको इन्द्र ग्रहण करलेताभया-सप्तमुख घोड़ेको सूर्य्यने ग्रहणकरलिया ३ और धन्वन्तरि वैद्य लोकों के आरोग्य करनेवाले होतेभये और छत्रभी निकला उसको वरुण ग्रहण करतेभये फिर दोकुंडल निकले उनको भी इन्द्रनेही ग्रहण करलिया ४ पारिजात कल्पवृक्षको वायुने ग्रहण करलिया फिर धन्वन्तरि वैद्य उत्तम शरीर को धारणकर हाथमें कमंडलु लेके वहाँ पहुंचे जहाँ कि वह अमृत वर्त्तमानथा तब दे वता और दैत्य अमृत के निमित्त हमाराहै हमाराहै यह शब्द पुकारतेभये उस समय विष्णु भगवान्

अमृतार्थेमहानादो ममेदमितिजल्पताम्। ततोनारायणोमायामास्थितोमोहिनींप्रभुः ७
स्त्रीरूपमतुलंकृत्वा दानवानभिसंस्तुतः। ततस्तदमृतंतस्यै ददुस्तेमूढचेतनाः। स्त्रियैदा
नवदैतेयाः सर्वेतद्गतमानसाः ८ अथास्त्राणिचमुख्यानि महाप्रहरणानिच। प्रगृह्याभ्य
द्रवन्देवान् सहितादैत्यदानवाः ९ ततस्तदमृतंदेवो विष्णुरादायवीर्यवान्। जहारदान
वेन्द्रेभ्यो नरेणसहितःप्रभुः १० ततोदेवगणाःसर्वे पपुस्तदमृतंतदा। विष्णोःसकाशात्
संप्राप्य संग्रामेतुमुलेसति ११ ततःपिबत्सुतत्कालं देवेष्वमृतमीप्सितम्। राहुर्विबुध
रूपेण दानवोऽप्यपिबत्तदा १२ तस्यकण्ठमनुप्राप्ते दानवस्यामृतेतदा। आख्यातंच
न्द्रसूर्याभ्यां सुराणांहितकाम्यया १३ ततोभगवतातस्य शिरश्छिन्नमलंकृतम्। चक्रायु
धेनचक्रेण पिबतोऽमृतमोजसा १४ तच्छैलशृङ्गप्रतिमं दानवस्यशिरोमहत्। चक्रेणो
त्कृतमपतच्चालयन्वसुधातलम् १५ ततोवैरविनिर्बन्धः कृतोराहुमुखेनवै। शाश्वतश्च
न्द्रसूर्याभ्यां प्रसह्याद्यापिबाधते १६ विहायभगवांश्चापि स्त्रीरूपमतुलंहरिः। नानाप्रह
रणैर्भीमैर्दानवान्समकम्पयत् १७ प्रासाःसुविपुलास्तीक्ष्णाः पतन्तश्चसहस्रशः। तेसु
राश्चक्रनिर्भिन्ना वमन्तोरुधिरंबहु १८ असिशक्तिगदाभिन्ना निपेतुर्धरणीतले। भिन्ना
निपट्टिशैश्चापि शिरांसियुधिदारुणैः १९ तप्तकाञ्चनमाल्यानि निपेतुरनिशन्तदा। रु
धिरेणावलिप्ताङ्गा निहताश्चमहासुराः २० अद्रीणामिवकूटानि धातुरक्तानिशेरते। त

अपनी मायाकरके मोहिनी स्त्रीके रूपको धारणकरतेभये ५।७ अर्थात् बड़ी उत्तम स्त्रीका रूपबना कर दानवोंको मोहित करतेभये उस स्त्रीरूपी विष्णु भगवान् के हाथमें वह दानव उस अमृत के कलश को देतेभये और सब दैत्य उसी मोहिनी स्त्रीके वशीभूत होगये फिर सब दैत्य अपने २ शस्त्रों को धारण करके देवताओं के सन्मुख भाजतेभये तब विष्णु भगवान् अपनी मायाके कपटसे सब देवताओंको अमृत पानकरातेभये जब देवताओं ने विष्णु के पाससे अमृत पानकिया तब देवता और दानवों का महायुद्ध होताभया जब देवताओं ने अमृत पानकिया उस समय राहुभी देवताका रूप धारणकरके अमृत पानकरने लगा ८।१२ जब राहुके कंठही तक अमृत पहुंचाथा तभी चन्द्रमा और सूर्य्यने देवताओं के हितके निमित्त इस दैत्यको बतादिया उसी समय विष्णु भगवान् ने अपने सुदर्शन चक्रके द्वारा उस राहुके शिरको काटलिया तभीसे पर्व्वतके आकारवाला इस राहुका शिरभी जीवसहित होगयाहै उसीको केतु कहतेहैं इस राहुके मुखरूप केतुने चन्द्रमा और सूर्य्यसे वैर भावकर लिया इसीसे वह राहुका मुख अवतक ग्रहण समयमें सूर्य्य और चन्द्रमाके साथ उस शत्रुताका बदला लिया करताहै १३।१६ इसके अनन्तर विष्णुभगवान् मोहिनी स्त्रीके रूपको त्याग कर अनेक प्रकार के शस्त्रोंके प्रहारसे दैत्योंको बाधा देतेभये १७ तीक्ष्ण धारके हजारों भालों से और सुदर्शनचक्रसे वह सब दैत्य रुधिरकी वमन करतेभये १८ खड्ग शक्ति गदा और शूल इन सब शस्त्रोंके लगनेसे बहुत से दैत्य पृथ्वी में गिरे और कितनेही दैत्योंके शिर दारुण गोफियोंके लगने से फटजातेभये १९ इसके पीछे रुधिरसे लिप्तांग तप्तसुवर्णके समान कान्तिवाले वह बड़े २ असुर मृत्युको प्राप्त

तोहलहलाशब्दः सम्बभूवसमन्ततः २१ अन्योऽन्यञ्छिन्दतांशस्त्रैरादित्येलोहिताय
ति। परिघैश्चायसैःपीतैः सन्निकर्षैश्चमुष्टिभिः २२ निघ्नतांसमरेऽन्योऽन्यंशब्दोदिव
मिवास्पृशत्। छिन्धिभिन्धिप्रधावेति पातयेभिसरेतिवै २३ विश्रूयन्तेमहाघोराः श
ब्दास्तत्रसमन्ततः। एवंसुतुमुलेयुद्धे वर्त्तमानेमहाभये २४ नरनारायणौदेवौ समाज
ग्मतुराहवम्। तत्रदिव्यंधनुर्दृष्ट्वा नरस्यभगवानपि। चिन्तयामासवैचक्रं विष्णुर्दान
वसत्तमान् २५ ततोऽम्बराच्चिन्तितमात्रमागतं महाप्रभंचक्रममित्रनाशनम्। विभा
वसोस्तुल्यमकुण्ठमण्डलं सुदर्शनंभीममसह्यमुत्तमम् २६ तदागतंज्वलितहुताशन
प्रभं भयङ्करंकरिकरबाहुरच्युतः। महाप्रभंदनुकुलदैत्यदारणं तथोज्ज्वलज्ज्वलनसमा
नविग्रहम् २७ मुमोचवैतपनमुदप्रवेगवान् महाप्रभंरिपुनगरावदारणम्। सम्वर्त्तकज्व
लनसमानवर्चसं पुनःपुनर्न्यपततवेगवत्तदा २८ व्यदारयद्दितितनयान्सहस्रशः करेरि
तंपुरुषवरेणसंयुगे। दहत्क्वचिज्ज्वलनइवानिलेरितं प्रसह्यतानसुरगणानकृन्तत २९
प्रवरितंवियतिमुहुःक्षितौतदा पपौरणेरुधिरमयःपिशाचवत्। अथासुरागिरिभिरदीन
मानसा मुहुर्मुहुःसुरगणमर्दयंस्तथा ३० महाचलाविगलितमेघवर्चसः सहस्रशोगगन
महाप्रपातिनः। अथान्तराभरजननाःप्रपेदिरे सपादपाबहुविधमेघरूपिणः ३१ महाद्र
यःप्रविगलिताग्रसानवः परस्परंद्रुतमभिपत्यभास्वराः। ततोमहीप्रचलितसाद्रिकानना

होकर पृथ्वी में गिरतेभये २० जैसे कि गेरूके पर्व्वतके शिखर कट २ कर गिर पड़े हों उसी प्रकार यह महान् असुरभी मर २ कर गिरतेभये उनके गिरने और युद्धकरने से बड़ाभारी कोलाहल शब्द होताभया २१ परस्पर प्रहार करते हुए उनसबके शस्त्रसूर्य्यके समान रक्तवर्ण होजातेभये इसी प्रकार परस्पर युद्धकरते हुए उन सब दैत्योंके महान् शब्द स्वर्ग में सुनेजातेभये इनके सिवाय परस्पर काटो २ तोड़ो २ भाजो २ गिरादो २ यह सब शब्दभी होतेभये २२।२३ जबचारों ओरके महाशब्दों वाला घोर युद्ध प्रवृत्तहुआ तब उस युद्ध में नरनारायण देव आतेभये और विष्णुभगवान्भी नर अवतारके धनुषको देखकर अपने सुदर्शनचक्रकी इच्छा करतेभये उसी समय आकाश से शत्रुओंका नाशक सुदर्शनचक्र उतरताभया, उस सूर्य्यके समान कान्तिवाले शत्रुओंके भय कर्त्ता ज्वलित अग्निके समान देदीप्त दैत्योंके कुलके नाश करनेवाले उस सुदर्शनचक्रको आताहुआ देखकर विष्णुभगवान् अति वेगकरके उस शत्रुहन्ता अपने अस्त्रको दैत्योंके ऊपर छोड़देते भये तब वह सुदर्शनचक्र बड़े वेगसे वारंवार शत्रुओंके ऊपर गिरताभया २४। २८ फिर उस भगवान्के हाथमें प्राप्तहोने वाले चक्रने हज़ारों दैत्योंको काटा और हज़ारोंहीको अपने बलकरके काट २ करगेरा २९ इस प्रकारसे उस चक्रने महा निर्दयीरूपहोकर हज़ारों दैत्योंको मार २ कर उनके रुधिरका पान किया उस समय उसचक्रकी झपटके वेगसे महामेघके समान आकार वाले बड़े २ वृक्षोंसे युक्त बहुत से पर्व्वतभी परस्पर मिल २ कर गिरतेभये फिर वायुसे हतहुए उन पर्व्वतोंके गिरनेसे संपूर्ण पृथ्वी चलायमान होगई और परस्पर गर्जनेके भी शब्दहोते भये उन देवता और दैत्योंके परस्पर

महीधराःपवनहताःसमन्ततः३२परस्परंभृशमभिगर्जितंमुहूरणाजिरेभृशमभिसम्प्रवर्त्तते। नरस्ततोवरकनकाग्रभूषणैर्महेषुभिःपवनपथंसमावृणोत् ३३ विदारयन्गिरिशिखराणिप त्रिभिर्महाभयेसुरगणविग्रहेतदा। ततोमहींलवणजलञ्चसागरं महासुराःप्रविविशुरर्दिताः सुरैः ३४ वियद्गतंज्वलितहुताशनप्रभंसुदर्शनंपरिकुपितंनिशाम्यच। ततःसुरैर्विजयम वाप्यमन्दरः स्वमेवदेशंगमितःसुपूजितः ३५ विनादयन्स्वदिशमुपेत्यसर्वशस्ततोगताः सलिलधरायथागतम्। ततोऽमृतंसुनिहितमेवचक्रिरे सुराःपरांमुदमभिगम्यपुष्कलाम्। ददुश्चतंनिधिममृतस्यरक्षितुं किरीटिनेबलिभिरथामरैःसह ३६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५० ॥

(ऋषय ऊचुः) प्रासादभवनादीनां निवेशंविस्तराद्वद। कुर्य्यात्केनविधानेन कश्च वास्तुरुदाहृतः १ (सूत उवाच) भृगुरत्रिर्वसिष्ठश्च विश्वकर्मामयस्तथा। नारदोनग्न जिच्चैव विशालाक्षःपुरन्दरः २ ब्रह्माकुमारोनन्दीशः शौनकोगर्गएवच। वासुदेवोऽनिरु द्धश्च तथाशुक्रबृहस्पती ३ अष्टादशैतेविख्याता वास्तुशास्त्रोपदेशकाः। सङ्क्षेपेणोप दिष्टन्तु मनवेमत्स्यरूपिणा ४ तदिदानींप्रवक्ष्यामि वास्तुशास्त्रमनुत्तमम्। पुरान्धकव धेघोरे घोररूपस्यशूलिनः ५ ललाटस्वेदसलिल मपतद्भुविभीषणम्। करालवदनं तस्माद् भूतमुद्भूतमुल्वणम् ६ ग्रसमानमिवाकाशं सप्तद्वीपांवसुन्धराम्। ततोऽन्धका

छोड़े हुए बाणों करके पर्व्वतोंके शिखरभी टूट२ कर गिरतेभये-इसके पीछे देवताओं से पीड़ित हुए दानव समुद्र में प्रवेश कर जाते भये ३०।३४ फिर अग्निकी ज्वालाकेसमान आकाशमें व्याप्तकोपभरे सुदर्शन चक्रसे वह मन्दराचल पर्व्वत विजय को प्राप्तहोकर सब देवताओं से पूजित होकर अपने स्थानमें प्राप्तहोताभया इसके अनन्तर संपूर्ण देवताभी अपने२ स्थानोंको जातेभये और परमानन्द को प्राप्तहोकर उस अमृतको गुप्तकरके रक्षित करते भये ३५।३६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५० ॥

ऋषि पूछतेहैं हे सूतजी तुम राजाके महल और अन्यलोगों के स्थानों के बनानेकी विधिवर्णन कीजिये स्थान किसविधि से चिने और वास्तु क्या पदार्थ है उस कोभी वर्णन कीजिये १ सूतजी बोले- भृगु अत्रि, वसिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, अनग्नजित्, विशालाक्ष, इन्द्र, ब्रह्मा, स्वामिकार्त्तिक, नन्दीश, शौनक, गर्ग, श्रीकृष्ण, अनिरुद्ध, शुक्र, और बृहस्पति यह अठारह जने वास्तु शास्त्र के उपदेश करनेवाले हैं और सब लोकों में विख्यात हैं परन्तु मत्स्यरूपी भगवान् ने तो मनुके आगे इस वास्तुशास्त्रको संक्षेपतासे वर्णन कियाहै २।४ उसी मत्स्यजी के कहे हुए वास्तु प्रकरणको मैं तुमसे कहताहूं तुम चित्त से सुनो कि पूर्व्वकाल में अन्धक दैत्यके घोर बध होने के समय घोररूपी महादेवजी के मस्तकमें से पसीने का जल निकलताभया उस जल से विकराल मुखवाला भयानक शरीरयुक्त सप्तद्वीपों समेत पृथ्वीको ग्रसतेहुए के समान एक उग्रगणदिखाई दिया वह शिवजीका गण अन्धक दैत्योंके पृथ्वीमें पड़ेहुए रुधिरको पान करताभया उस गणने सब

नांरुधिरमपिबत्पतितंक्षितौ ७ तेनतत्समरेसर्वं पतितंयन्महीतले। तथापितृप्तिमगम
न्नतद्भूतंयदातदा ८ सदाशिवस्यपुरतस्तपश्चक्रेसुदारुणम्। क्षुधाविष्टन्तुतद्भूत
माहर्तुंजगतीत्रयम् ९ ततःकालेनसन्तुष्टो भैरवस्तस्यचाहवे। वरंवृणीष्वभद्रन्ते यद
भीष्टन्तवानघ! १० तमुवाचततोभूतं त्रैलोक्यग्रसनक्षमम्। भवामिदेवदेवेश तथेत्युक्त
ञ्चशूलिना ११ ततस्तत्त्रिदिवंसर्वं भूमण्डलमशेषतः। स्वदेहेनान्तरिक्षञ्च रुन्धाने
प्रपतद्भुवि १२ भीतभीतैस्ततोदेवैर्ब्रह्मणाचाथशूलिना। दानवासुररक्षोभिरवष्टब्धंस
मन्ततः १३ येनयत्रैवचाक्रान्तं सतत्रैवावसत्पुनः। निवासात्सर्वदेवानां वास्तुरित्यभि
धीयते १४ अवष्टब्धाश्चतेनापि विज्ञप्ताःसर्वदेवताः। प्रसीदध्वंसुरास्सर्वे युष्माभिर्निश्च
लीकृतः १५ स्थास्याम्यहंकिमाकारो ह्यवष्टब्धोह्यधोमुखः। ततोब्रह्मादिभिःप्रोक्तं वास्तु
मध्येतुयोबलिः १६ आहारोवैश्वदेवान्ते नूनमस्मिन्भविष्यति। वास्तुपूजामकुर्वाणस्त
वाहारोभविष्यति १७ अज्ञानात्तुकृतोयज्ञस्तवाहारोभविष्यति। यज्ञोत्सवादौचबलि
स्तवाहारोभविष्यति १८ एवमुक्तस्ततोहृष्टः सवास्तुरभवत्तदा। वास्तुयज्ञःस्मृतस्तस्मा
त्ततःप्रभृतिशान्तये १९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५१॥

पड़ाहुआ रुधिर पीलिया तब भी वह तृप्त नहींहुआ फिर क्षुधायुक्त होकर वह शिवजीका गण त्रिलो-कीके नष्ट करनेके निमित्त शिवजीके समीप तप करताभया फिर समय पाकर उस अपने भैरवनाम गणपर महादेवजी प्रसन्न होकर युद्धमें यह वरदेतेभये कि हेवीर मैं तुम्हपर प्रसन्नहोगयाहूं तू अपनी इच्छापूर्वक वरमांग ५।१० यह सुनकर वह भैरवगण कहताभया कि हे देव मैं आपकी कृपासे त्रि-लोकी के भक्षणकरनेको समर्थ होजाऊं तब महादेवजीनेभी उसके इसवचनको अंगीकार करलिया। फिर स्वर्गलोक पृथ्वीलोक और आकाशको वह भैरव अपने शरीरसे रोकदेताभया ११।१२ तबभयभीत हुए देवताओंने ब्रह्माजीने शिवजीने और दैत्य दानव समेत सब राक्षसोंने अपने२ शरीरसे उसके शरीरको दाबकर अपना२ वासकरलिया फिर संपूर्ण देवताओंके निवासहोनेसे सबवरोंकानाम वास्तु प्रसिद्ध होगया १३।१४ फिर सब देवताओंने अपने२ लोकोंके घरोंमें वास करलिया तब वह भै-रव कहनेलगा कि हे देवताओ तुम प्रसन्नहो तुमने तो सर्वत्र अपने २ वास स्थान निश्चलकरलिये हैं अब मैं कहां वास करूंगा मैं तो नीचेको मुख करेहुए रुकगयाहूं इससे मैं कैसे आकारसे वासकरूं तब देवताओंने कहा कि वास्तुके मध्यमें जब वैश्वदेव कर्म के अन्तमें जो बलि दीजायेगी वही तु-म्हारा आहारहोवेगा और जोपुरुष वास्तुकी पूजानहींकरेगा वहपुरुष तुम्हारा आहारहोजावेगा अर्थात् उस पूजा न करने वाले को तुम भक्षण करोगे १५।१७ और जो बिना ज्ञानके यज्ञ करेगा उस यज्ञका आहार तुम करोगे और जो यज्ञ वा उत्सवों की आदिमें बलिदेंगे वह तुम्हारा आहार होगा यह सब सुनकर वह भैरव बड़ा प्रसन्न होकर वास्तु होताभया इसके पीछे उस भैरवकी शान्तिके निमित्त यह वास्तु पूजन प्रवृत्त हुआ है १८।१९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५१॥

(सूत उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि गृहकालविनिर्णयम्। यथाकालंशुभंज्ञात्वास
दाभवनमारभेत् १ चैत्रेव्याधिमवाप्नोति योगृहंकारयेन्नरः। वैशाखेधेनुरत्नानि ज्यैष्ठेमृत्युंत
थैवच २ आषाढेभृत्यरत्नानिपशुवर्गमवाप्नुयात्। श्रावणेभृत्यलाभन्तु हानिंभाद्रपदेतथा३
पत्नीनाशोऽश्विनेविन्द्यात्कार्तिकेधनधान्यकम्। मार्गशीर्षेतथाभक्तं पौषेतस्करतोभयम्४
लाभञ्चबहुशोविन्द्यादग्निंमाघेविनिर्दिशेत्। फाल्गुनेकाञ्चनंपुत्रानितिकालबलंस्मृ
तम् ५ अश्विनीरोहिणीमूलमुत्तरात्रयमैन्दवम्। स्वातीहस्तोऽनुराधाच गृहारम्भे
प्रशस्यते ६ आदित्यभौमवर्ज्यास्तु सर्ववाराःशुभावहाः। वर्ज्यंव्याघातशूलेच व्यतीपा
तातिगण्डयोः ७ विष्कुम्भगण्डपरिघ वज्रयोगेषुकारयेत्। श्वेतेमैत्रेऽथमाहेन्द्रे गान्ध
र्वाभिजितिरौहिणे ८ तथावैराजसावित्रेमुहूर्तेगृहमारभेत्। चन्द्रादित्यबलंलब्ध्वाशुभ
लग्नंनिरीक्षयेत् ९ स्तम्भोच्छ्रायादिकर्तव्यमन्यत्तुपरिवर्जयेत्। प्रासादेष्वेवमेवंस्यात्
कूपवापीषुचैवहि १० पूर्वंभूमिंपरीक्षेत् पश्चाद्वास्तुंप्रकल्पयेत्। श्वेतारक्तातथापीताकृ
ष्णाचैवानुपूर्वशः ११ विप्रादेःशस्यतेभूमिरतःकार्य्यंपरीक्षणम्। विप्राणांमधुरास्वादाकटु
काक्षत्रियस्यतु १२ तिक्ताकषायाचतथा वैश्यशूद्रेषुशस्यते। अरत्निमात्रेवैगर्ते स्वनुलि

सूतजी कहते हैं कि अब गृहके बनाने और चिनने के समयको कहता हूं कि समयको विचार कर घर चिनना चाहिये १ जो चैत्रमें घर बनवाता है उसके रोग उत्पन्न होताहै वैशाखमें घर बनवाने वाले को धेनु और रत्नादिकों की प्राप्ति होती है ज्येष्ठ में बनवावे तो मृत्यु होती है २ आषाढ़ में घरको बनावे तो भृत्य और रत्नोंकी प्राप्ति होकर पशुगणोंकी प्राप्ति होती है, श्रावणमें भृत्योंका लाभ होताहै भाद्रपदमें हानि होती है आश्विन में बनाने से स्त्री का नाश होताहै कार्त्तिक में धन धान्यकी वृद्धि मार्गशिर में घर चिनवाने वालेको भोजनकी प्राप्ति और पौष में बनवाने से चोरोंका भय होताहै ३। ४ माघ में घर बनवानेसे बहुतसा लाभ होताहै परन्तु अग्निका भी भय होजाताहै और फाल्गुनमें घर बनवानेवाले को पुत्रोंका लाभ होताहै यह सब समय का बल कहा है-अबनक्षत्रों केवल कहते हैं-अश्विनी-रोहिणी-मूल-तीनों उत्तरा-मृगशिर-स्वाति हस्त और अनुराधा यह सब नक्षत्र घर चिनने के आरंभ में श्रेष्ठ कहे हैं ५।६ और मंगल और रविवारको छोड़ कर सब वार श्रेष्ठ कहे हैं-व्याघात-शूल- व्यतीपात- अतिगंड-विष्कुंभ-गंड परिघ- और वज्र इनयोगोंके विना अन्य संपूर्ण योगोंमें घरका प्रारंभ करना श्रेष्ठहै और श्वेत,मैत्र, माहेन्द्र, गान्धर्व, अभिजित् और रौहिण इन नामोंवाले मुहूर्त्तोंमें और वैराज तथा सावित्र नाम मुहूर्त्तमें घरके चिनने का प्रारंभ करवानाचाहिये, इन सबके सिवाय चन्द्रमा सूर्य्यके बल समेत शुभ लग्नको भी देखलेना चाहिये ७।९ इन मुहूर्त्तोंमें स्तंभलगाना अथवा घरकी उंचाई करवाना योग्यहै और यही विधि महल, कूप, बावड़ी और तड़ाग की भी करनीचाहिये १० प्रथम पृथ्वीकी परीक्षा करके वास्तुदेव कल्पितकरने चाहिये, श्वेत भूमि ब्राह्मणको, लालक्षत्रीको, पीतवैश्यको और कालभूमि शूद्रके निमित्त श्रेष्ठ कही हैं इनकी परीक्षा खोदकर करनाचाहिये, जो पृथ्वी मधुर स्वादवालीहोवे वह ब्राह्मणको अच्छी है, कटुक और चर्चरी

ऽेचसर्वशः १३ घृतमामशरावस्थं कृत्वावर्तिचतुष्टयम्। ज्वालयेद्भूपरीक्षार्थं तत्पूर्णं
सर्वदिङ्मुखम् १४ दीप्तौपूर्वादिग्रह्णीयाद्वर्णानामनुपूर्वशः। वास्तुःसामुहिकोनाम दीप्य
तेसर्वतस्तुयः १५ शुभदःसर्ववर्णानां प्रासादेषुगृहेषुच। अरत्निमात्रमधोगर्ते परीक्ष्यंखा
तपूरणे १६ अधिकेश्रियमाप्नोति न्यूनेहानिंसमेसमम्। फालकृष्टेऽथवादेशे सर्वबीजानि
वापयेत् १७ त्रिपञ्चसप्तरात्रेच यत्रारोहन्तितान्यपि। ज्येष्ठोत्तमाकनिष्ठाभूर्वर्जनीयतरास
दा१८ पञ्चगव्यौषधिजलैः परीक्षित्वाचसेचयेत्। एकाशीतिपदंकृत्वा रेखाभिःकनकेनच
१९ पश्चात्पिष्टेनचालिप्य सूत्रेणालोड्यसर्वतः। दशपूर्वायतालेखादशचैवोत्तरायताः२०
सर्ववास्तुविभागेषु विज्ञेयानवकानव। एकाशीतिपदंकृत्वा वास्तुवित्सर्ववास्तुषु २१ प
दस्थान्पूजयेद्देवांस्त्रिंशत्पञ्चदशैवतु। द्वात्रिंशद्बाह्यतःपूज्याः पूज्याश्चान्तस्त्रयोदश २२
नामतस्तान्प्रवक्ष्यामि स्थानानिचनिबोधत। ईशानकोणादिषुतान् पूजयेद्धविषानरः२३
शिखीचैवाथपर्जन्यो जयन्तःकुलिशायुधः। सूर्य्यसत्यौभृशश्चैव आकाशोवायुरेवच२४
पूषाचवितथश्चैव वृहत्क्षतयमावुभौ। गन्धर्वोभृङ्गराजश्च मृगःपितृगणस्तथा २५ दौ

पृथ्वी क्षत्रियको श्रेष्ठहै और वैश्य वा शूद्रको कडुएस्वादवाली पृथ्वीमें घर चिनवानाचाहिये ११।१२
फैली कनिष्ठा समेत हथेलीके प्रमाण खोदीहुई और लिपीहुई पृथ्वीपर कच्ची सराई में घृतभरकर
उस में चारवत्ती चारों दिशाओं में मुखकरके रक्खे उनचारों वत्तियों में जो पूर्व दिशाकी वत्ती अधि-
कजले तो वह धरती ब्राह्मणको शुभदायकहै दक्षिणकी वत्ती अधिकजले तो क्षत्रियको शुभहै पश्चिम
की अधिकहोयतो वैश्यको और उत्तर में अधिक होयतो शूद्रको शुभहै यह चारों वर्णोंका क्रमहै और
जो चारोंही दिशाओंमें वत्ती अच्छे प्रकारसे जलें तो वह पृथ्वी सब वर्णोंके निमित्त शुभदायी होती
है पौन विलस्तके अनुमान खोदीहुई खातसे पूर्णहुई भूमिकी यह परीक्षा करनी योग्यहै १३।१६
जो अधिक खोदीहुई पृथ्वी में अच्छे प्रकारसे दीपक प्रकाशहोवे तो लक्ष्मी की प्राप्ति-न्यूनखोदीहुई
में हानि-और समान में समान फलहोताहै अथवा हलसे जोतकर उस पृथ्वी में वीज बुवादेवे जो
तीन-पांच वा सात दिनमें जो वीज जमजावें तो क्रमसे ज्येष्ठा उत्तमा और कनिष्ठा भूमिकहाती है
इस कनिष्ठा भूमिको सदैवत्यागदेवे १७।१८ इसप्रकारसे भूमिकी परीक्षाकरके फिर पंचगव्य और
सर्वौषधिके जलसे उस भूमिको छिड़क देवे इसके पीछे सुवर्ण से रेखा खेंचके इक्यासी ८१ पद के
चिह्न करलेवे फिर चूने वा अन्यकिसी रँगसे रँगे हुए सूत्रसे चारोंओरको रेखाका संकेत करे दश१०
रेखातो पूर्व्वकी ओर लंबीकरे-दश १० उत्तरकी ओर लंबीकरे ऐसे करनेसे संपूर्ण वास्तु में इतनो१
विभागों पर इक्यासी पद वनवादेवे फिर वास्तुके पैरों में पैंतालीस ४५ देवताओं को पूजे इन
में वत्तीस देवता तो वास्तुके वाहर पूजे और तेरह देवताओं को भीतर पूजे- इन पैंतालीस देवतों
के नामोंको सुनो-ईशान आदिचारों कोणों में इन देवताओं को हविष अन्नसे पूजे १९।२३ अग्नि
पर्जन्य-जयन्त-इन्द्र-सर्प-सत्य-भृश-आकाश-यह आठ८ईशानमें हैं वायु-पूषा-वितथ-वृहस्पति-
यम-गन्धर्व-मृग और भृंगराज ८ पितृगण २४। २५ दौवारिक-सुग्रीव-पुष्पदन्त-जलाधिप-असुर-

चारिकोऽथसुग्रीवः पुष्पदन्तोजलाधिपः। असुरःशोषपापौच रोगोहिर्मुख्यएवच २६ भ
ल्लाटःसोमसर्पौच अदितिश्चदितिस्तथा। बहिर्द्वात्रिंशदेतेतु तदन्तस्तुततःशृणु २७ ई
शानादिचतुष्कोणसंस्थितान्पूजयेद्बुधः। आपश्चैवाथसावित्रो जयोरुद्रस्तथैवच २८
मध्येनवपदेब्रह्मा तस्याष्टौचसमीपगान्। साध्यानेकान्तरान्विद्यात्पूर्वाद्यान्नामतःशृणु
२९ अर्य्यमासविताचैव विवस्वान्विबुधाधिपः। मित्रोऽथराजयक्ष्माच तथापृथ्वीधरः
स्मृतः ३० अष्टमश्चापवत्सस्तु परितोब्रह्मणःस्मृतः। आपश्चैवापवत्सश्च पर्ज्जन्योऽ
ग्निर्दितिस्तथा ३१ पदिकानान्तुवर्गोऽयमेवंकोणेष्वशेषतः। तन्मध्येतुबहिर्विंशद्द्विप
दास्तेतुसर्वशः ३२ अर्य्यमाचविवस्वांश्च मित्रःपृथ्वीधरस्तथा। ब्रह्मणःपरितोदिक्षु त्रि
पदास्तेतुसर्वशः ३३ वंशानिदानींवक्ष्यामि ऋजूनपिपृथक्पृथक्। वायुंयावत्तथारोगात्
पितृभ्यःशिखिनंपुनः ३४ मुख्याद्भृशंतथाशोषाद्वितथंयावदेवतु।सुग्रीवाददितिंयावन्मृ
गात्पर्जन्यमेवच ३५ एतेवंशाःसमाख्याताः क्वचिच्चजयमेवतु। एतेषांयस्तुसम्पातः पदं
मध्यंसमंतथा ३६ मर्मचैतत्समाख्यातं त्रिशूलंकोणगञ्चयत्। स्तम्भन्यासेषुवर्ज्यानि तु
लाविधिषुसर्वदा ३७ कीलोच्छिष्टोपघातादि वर्जयेद्यत्नतोजनः। सर्वत्रवास्तुर्निर्दिष्टो
पुरुषोऽधोमुखस्तथा ३८ मूर्द्धन्यग्निःसमादिष्टो मुखेचापःसमाश्रितः। पृथ्वीधरोऽर्य्यमा
चैवस्तनयोस्तावधिष्ठितौ ३९ वक्षस्थलेचापवत्सः पूजनीयःसदाबुधैः। नेत्रयोर्दितिपर्ज

शोष-पाप-रोग-अहिर्मुख्य-भल्लाट-सोम-सर्प-अदिति-दिति-यह बत्तीस देवता तो वास्तुके बाहर पूजेजाते हैं-और भीतर जो पूजे जातेहैं उनके नाम सुनो २६।२७ ईशान आदिक चारों कोणों में स्थित होनेवाले आप-सावित्र-जय और रुद्र यह चारों देवता चारों कोणों के भीतर वर्त्तमान हैं और वास्तु के मध्य के नव पदों में ब्रह्मा स्थित है ब्रह्मा के चारों ओर आठ देवता एक २ कोष्ठ के अन्तर में स्थित हैं अब इन आठों के नामों को सुनो २८।२९ अर्य्यमा-सविता-विवस्वान्-इन्द्र-मित्र-राजयक्ष्मा-पृथ्वीधर और आपवत्स यह आठ नाम हैं और आप-आपवत्स-पर्जन्य-अग्नि और दिति यह पांच देवताओं का समूह हर एक ईशानकोणके कोणका स्वामी है ऐसे क्रमसे चारोंकोणों में जान लेना चाहिये और बीस देवता बाहिर के दो २ पदोंके स्वामी हैं और अर्य्यमा-विवस्वान् मित्र-पृथ्वीधर-यह चार देवता ब्रह्मासे पूर्व्वादिक दिशाओं में स्थित तीन २ पदों के स्वामी हैं सबके मध्यमें ब्रह्माहैं इसरीति से यह ४५ देवता वास्तु में स्थित हैं ३०। ३३ अब इस वास्तुमें पृथक् २ सूत्र डालने की विधिको कहते हैं-रोग देवतासे अनिलपर्य्यन्त पितृ देवसे अग्निपर्य्यन्त- मुख्यसे भृशपर्य्यन्त- शोषसे वितथपर्य्यन्त- सुग्रीवसे अदितिपर्य्यन्त- मृगसे पर्जन्य पर्य्यन्त- इस प्रकारसे यह वंश अर्थात् सूत डालनेके जो संपात हैं और वा समान जो पद है वह मर्मस्थान कहाता है इसके सिवाय कोणों में भी मर्मस्थान होताहै इन वास्तुके मर्मस्थानों में स्तंभ नहीं लगावे और कील गाड़ने आदिका उपघातभी नहीं करे सर्वत्र यह वास्तु पुरुष नीचेको मुख वाला कहाताहै ३४। ३८ इस वास्तु पुरुषके मस्तक पर अग्निदेव स्थित है मुखपर आप देव हैं-

न्यो श्रोत्रेऽदितिजयन्तकौ ४० सर्वेन्द्रावंससंस्थौतु पूजनीयौप्रयत्नतः। सूर्यसोमादय स्तद्वत् वाह्वोःपञ्चपञ्चच ४१ रुद्रश्चराजयक्ष्माच वामहस्तेसमास्थितौ। सावित्रःस वितातद्वद् धस्तंदक्षिणमास्थितौ ४२ विवस्वानथमित्रश्च जठरेसंव्यवस्थितौ। पूषाच पापयक्ष्माच हस्तयोर्मणिबन्धने ४३ तथैवासुरशोषौच वामपार्श्वेसमाश्रितौ। पार्श्वेतु दक्षिणेतद्वत् वितथःसबृहत्क्षतः ४४ ऊर्वोर्यमांबुपौज्ञेयौ जान्वोर्गन्धर्वपुष्पकौ। जङ्घयो र्भृगसुग्रीवौस्फिक्स्थौदौवारिकोमृगः ४५ जयशक्रौतथामेढ्रे पादयोःपितरस्तथा। मध्ये नवपदेब्रह्मा हृदयेसतुपूज्यते ४६ चतुःषष्टिपदोवास्तुः प्रासादेब्रह्मणास्मृतः। ब्रह्माचतु ष्पदस्तत्र कोणेष्वर्धपदास्तथा ४७ बहिःकोणेषुवास्तौतु सार्धाश्चोभयसंस्थिताः। विंश तिद्विपदाश्चैव चतुःषष्टिपदेस्मृताः ४८ गृहारम्भेषुकण्डूतिः स्वाम्यङ्गेयत्रजायते। शल्यं त्वपनयेत्तत्र प्रासादेभवनेतथा ४९ सशल्यंभयदंयस्मादशल्यंशुभदायकम्। हीनाधि कांगतावास्तो सर्वथातुविवर्जयेत् ५० नगरग्रामदेशेषु सर्वत्रैवंविवर्जयेत्। चतुःशालं त्रिशालञ्च द्विशालंचैकशालकम्। नामतस्तान्प्रवक्ष्यामि स्वरूपेणद्विजोत्तमाः ५१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्विपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५२॥

पृथ्वीधर और अर्य्यमा यह दोनों देवता दोनों स्तनोंपर हैं छातीपर आपवत्स- देवका पूजन करना नेत्रोंपर दिति और पर्जन्य देवको पूजे कानोंपर अदितिको और जयन्तक को पूजे ३९।४० सूर्य्य और इन्द्र कन्धोंपर स्थितहैं और सूर्य्य से लेकर चन्द्रमा आदि पांच २ देवता दोनों भुजाओं पर स्थित हैं रुद्र वा राजयक्ष्मा- यह दोनों देवता वाम हाथ पर स्थित हैं ४१।४२ विवस्वान् और मित्र यह दोनों उदरमें स्थितहैं- पूषा और पापयक्ष्मा यह दोनों हाथोंके पहुंचोंके स्थानमें स्थित हैं ४३ असुर और शोष यह दो वाम पार्श्व में स्थितहैं वितथ और बृहत्क्षत यह दोनों दक्षिण पार्श्व में स्थित हैं ४४ जांघोंपर यम और जलाधिप यह दोनों स्थित हैं गोड़ोंपर गन्धर्व और पुष्पदन्त यह दोनों स्थित हैं, पिण्डिलियों पर भृग और सुग्रीव स्थित हैं, दौवारिक और मृग यह दोनों टकनों पर हैं, जय और इन्द्र यह लिंग पर स्थित हैं पैरोंपर पितर स्थितहैं मध्यके नव पदों में ब्रह्मा स्थितहैं वह हृदय में पूजाजाताहै ४५।४६ब्रह्माजीने हवेली चिननेमें चौंसठ पदका वास्तु स्थित वर्णन कियाहै वहां ब्रह्माचतुष्पद स्थितहै-कोणोंमें आधेपाद वाले देवता स्थितहैं-वास्तुके बाहर के कोणों में डेढ़ पदवाले देवता वर्त्तमान हैं बीस देवता दो पदवाले हैं ऐसे वास्तु के चौंसठ पद हैं ४७। ४८ गृह चिनने के आरम्भ के समय घरके स्वामीके जिस अंगमें खुजली लगजाय वास्तुके उसी अंगके स्थानमें गढ़ी हुई शल्य वा कील आदिको निकाल देवे ४९ क्योंकि वास्तुके मर्म में शल्य होय तो भय होता है और न होय तो शुभफल होताहै और वास्तुके अंगकी हीनता और अधिकता सर्वत्र निषेध करनी चाहिये ५० और इसीप्रकार से नगर, ग्राम और देश इनमें भी वास्तुके मर्मको त्यागकरदे-अब चतुःशाला त्रिशाला-द्विशाला और एकशाला इनके भी नाम और स्वरूपोंको सुनो ५१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५२॥

(सूतउवाच) चतुःशालंप्रवक्ष्यामि स्वरूपन्नामतस्तथा । चतुःशालश्चतुर्द्वारैरलिन्दैः सर्वतोमुखम् १ नाम्नातत्सर्वतोभद्रं शुभंदेवनृपालये । पश्चिमद्वारहीनञ्च नन्द्यावर्त्तःप्रच क्षते २ दक्षिणद्वारहीनन्तु वर्द्धमानमुपाहृतम् । पूर्वद्वारविहीनंतत्स्वस्तिकंनामविश्रुतम् ३ रुचकंचोत्तरद्वारविहीनंतत्प्रचक्षते । सौम्यशालाविहीनं यत्त्रिशालंधान्यकञ्चतत् ४ क्षेमवृद्धिकरंनृणां बहुपुत्रफलप्रदम् । शालयापूर्वयाहीनं सुक्षेत्रमितिविश्रुतम् ५ धन्यंय शस्यमायुष्यं शोकमोहविनाशनम् । शालयायाम्ययाहीनं यद्विशालंतुशालया ६ कुल क्षयकरंनृणां सर्वव्याधिविनाशनम् । हीनंपश्चिमयायत्तु पक्षघ्नंनामतत्पुनः ७ मित्रबन्धून्सु तान्हन्ति तथासर्वभयावहम् । याम्यापराभ्यांशालाभ्यां धनधान्यफलप्रदम् ८ क्षेमवृद्धि करंनृणां तथापुत्रफलप्रदम् । यमसूर्यञ्चविज्ञेयं पश्चिमोत्तरशालिकम् ९ राजाग्निभयदं नृणां कुलक्षयकरंचयत् । उदक्पूर्वेतुशालेद्वे दण्डाख्येयत्रतद्भवेत् १० अकालमृत्युभयदं परचक्रभयावहम् । धनाख्यंपूर्वयाम्याभ्यां शालाभ्यांयद्विशालकम् ११ तच्छस्त्रभयदंनृ णां पराभवभयावहम् । चुल्लीपूर्वापराभ्यांतु साभवेन्मृत्युसूचनी १२ वैधव्यदायकंस्त्री णा मनेकभयकारकम् । कार्यमुत्तरयाम्याभ्यां शालाभ्यांभयदंनृणाम् १३ सिद्धार्थवज्जव

सूतजीबोले—कि मैं प्रथम चार शालावाले स्थानके स्वरूप और नामोंको कहताहूं—द्वार और चौ- खटों समेत चारोंओर जिसका मुखहो वह सर्वतोभद्रनामस्थान देवता और राजा का होवे तो शुभहै— जिसके पश्चिमके विना अन्यतीन दिशाओंमें द्वारहोंय वह नंद्यावर्त्तनामस्थान कहाताहै १।२ जो द- क्षिण के द्वारसेहीन तीन द्वारोंवालाहोय वह वर्द्धमाननामस्थानहै-पूर्वके द्वारसेहीन तीन द्वारोंवाला स्थान स्वस्तिकनामसे प्रसिद्धहै—उत्तरकेद्वारसेहीन द्वारवाला स्थान रुचिकनामसे विख्यातहै—और जिस स्थानमें उत्तरकी ओर शालनहीं बने वह तीन शालावाला स्थान धान्यक नाम से प्रसिद्ध मनुष्योंके क्षेमकी वृद्धि करनेवाला और बहुत पुत्रोंका देनेवालाहोताहै—पूर्वकीशालासे हीन स्था- नको सुक्षेत्र कहते हैं ३।४।५ यह स्थान आयुवर्द्धक शोकमोहका नाशकरनेवालाहोकर बड़ाधन्य कहाता है—जोदक्षिणकी शालासेहीन स्थानहोवे वह कुलकाक्षयकरनेवाला है--और जो पश्चिमकी शाला से हीन अन्यतीन शाला वाला स्थान है वह पक्षघ्ननाम स्थानहै और पुत्रमित्रोंका नाशकरनेवाला है और भयकाभी दाताहै-- जिसघरके पश्चिम और दक्षिणकी ओर दोही शालाहोंय वहधन धान्यका बढ़ानेवाला है ६।८ यह स्थान मनुष्योंकी कुशल और पुत्रों की वृद्धिका करनेवाला है-- और जो पश्चिमतथा उत्तरकी ओर दोशालावालास्थानहै वह यम सूर्य नामसे विख्यातहै और राजा वा अग्नि से भयका करने वाला होकर कुलकाक्षय करनेवालाहै--और जो उत्तर तथा पूर्वकी ओर दोशाला होय वहदंड नाम वाली कहाती हैं वह स्थान अकालमृत्युके भयका और दूसरे राजाकाभय करने वालाहै--जो पूर्वतथा दक्षिण में दोशाला वाला स्थानहोवे वह धनाख्यनाम वाला स्थान मनुष्यों को शस्त्रोंकाभय करनेवाला और निरादरका करनेवालाहै—और जो पूर्व तथा पश्चिम में दोशाला वाला स्थान होताहै वह चुल्ली नाम स्थान कहाताहै यह स्थान मृत्यु करने वाला वर्णन किया

ज्यांणि विशालानितथाबुधैः। अथातःसंप्रवक्ष्यामि भवनंपृथिवीपतेः १४ पञ्चप्रकारंत त्प्रोक्तमुत्तमादिविभेदतः। अष्टोत्तरंहस्तशतं विस्तरश्चोत्तमोमतः १५ चतुर्ष्वन्येषुवि स्तारो हीयतेचाष्टभिःकरैः। चतुर्थांशाधिकंदैर्घ्यं पञ्चस्वपिनिगद्यते १६ युवराजस्यव क्ष्यामि तथाभवनपञ्चकम्। षड्भिःषड्भिस्तथाशीति हीयतेतत्रविस्तरात् १७ त्र्यंशे नचाधिकंदैर्घ्यं पञ्चस्वपिनिगद्यते। सेनापतेःप्रवक्ष्यामि तथाभवनपञ्चकम् १८ चतुः षष्टिस्तुविस्तारात् षड्भिःषड्भिस्तुहीयते।पञ्चस्वेतेषुदैर्घ्यंञ्च षड्भागेनाधिकंभवेत्१९ मन्त्रिणामथवक्ष्यामि तथाभवनपञ्चकम्। चतुश्चतुर्भिर्हीनास्यात् करषष्टिप्रविस्तरे२० अष्टांशेनाधिकंदैर्घ्यं पञ्चस्वपिनिगद्यते। सामन्तामात्यलोकानां वक्ष्येभवनपञ्चकम्२१ चत्वारिंशत्तथाष्टौच चतुर्भिर्हीयतेक्रमात्। चतुर्थांशाधिकंदैर्घ्यं पञ्चस्वेतेषुशस्यते २२ शिल्पिनांकञ्चुकीनाञ्च वेश्यानांगृहपञ्चकम्।अष्टाविंशत्कराणान्तु द्विहीनंविस्तरेक्रमात्२३ द्विगुणंदैर्घ्यमेवोक्तं मध्यमेष्वेवमेवतत्। दूतीकर्मान्तिकादीनां वक्ष्येभवनपञ्चकम् २४ च तुर्थांशाधिकंदैर्घ्यं विस्तारोद्वादशैवतु। अर्धार्धकरहानिःस्याद्विस्तारात्पञ्चशःक्रमात्२५ दैवज्ञगुरुवैद्यानां सभास्तारपुरोधसाम्। तेषामपिप्रवक्ष्यामि तथाभवनपञ्चकम् २६

जाताहै--९।१२ और स्त्रियोंको वैधव्ययोगका देनेवाला है--और उत्तर तथा दक्षिणकी ओर जिसमें दोशालाहोंय वह दोशालावाला मकानभी भयदुःखका देने वालाहै--ऐसे भयदुःखके देने वाले स्थान बुद्धिमान् पुरुषको नहीं बनाने चाहियें--अब राजाके स्थानके बनानेकी विधि वर्णन करते हैं--१३।१४ राजाके पांच स्थान होतेहैं एकसौ आठ हाथ चौड़ा तो राजाका उत्तम घरहोताहै और शेषचार स्था न क्रमसे आठ२ हाथ कमकी चौड़ाई वाले होतेहैं और इन सब मकानोंकी लंबाई अपनी२ चौड़ाई से सवाई होतीहै १५।१६ राजाके युवराजकुमारका घरभी पांच प्रकारकाहोता है पहला उत्तम घर अस्सी हाथ चौड़ा और अन्यचारघर छः२ हाथ कम चौड़ाई वाले होतेहैं इन सबोंकी लंबाई अपनी२ चौड़ाई में उसी चौड़ाईकी तिहाई जोड़देने से होती है--अब सेनापतिके घरकीविधि कहतेहैं १७।१८ सेनापतिका उत्तमघर चौंसठहाथ चौड़ाहोताहै और अन्य चारोंघर छःहाथ हीन चौड़ाईवाले होतेहैं इनपांचोंघरोंकी लंबाई चौड़ाई में चौड़ाई के छठे भाग युक्त अधिक होती है १९ राजाके मंत्री का उत्तमघर साठ हाथका चौड़ा होताहै और शेषचारोंघर चार २ हीनचौड़ाई वाले होते हैं--इन पांचों घरोंकी लंबाई चौड़ाईमें चौड़ाई के आठवेंभाग मिलानेसे होती है--अबराजाके मंडलके राजा और राजाके प्रधान पुरुषोंके पांच२ घरोंकी रीति कहतेहैं २०।२१ इनका उत्तमस्थान अड़तालीस हाथ चौड़ाहोताहै और बाकीके--चारघर चार२हाथ हीन चौड़ाई वालेहोतेहैं--इनपांचों घरोंकी लंबाई चौड़ाई से सवाई होती है २२ और शिल्पी कारीगर--राजाके घरों के समीपरहनेवाले कंचुकी,रक्षक, वेत्रधारी--और वेश्या इन सबकेभी पांच प्रकारके घरहोते हैं--उत्तमघर अट्ठाईसहाथ चौड़ाहोताहै--और शेषचारघर दो २ हाथहीन चौड़ाई वाले होते हैं २३ इनसब घरों की लंबाई चौड़ाईसेदूनी होती है-- अबदूती-दासीआदि के पांचघरोंको कहते हैं २४ इन दूतीआदिकों का उत्तमघर बारह हाथका चौड़ा होताहै शेष चारघर क्रमसे आधे २ हाथहीन चौड़ाईवाले होते हैं-इन सबघरोंकी लंबाई चौड़ाई से

चत्वारिंशत्तुविस्ताराच्चतुर्भिर्हीयतेक्रमात्। पञ्चस्वेतेषुदैर्घ्यञ्च षड्भागेनाधिकंभवेत् २७ चतुर्वर्णस्यवक्ष्यामि सामान्यंगृहपञ्चकम्। द्वात्रिंशतिकराणान्तु चतुर्भिर्हीयतेक्रमात् २८ आषोडशादितिपरं नूनमन्तेवसायिनाम्। दशांशेनाष्टभागेन षड्भागेनाथपादिकम् २९ अधिकंदैर्घ्यमित्याहुर्ब्राह्मणादेःप्रशस्यते। सेनापतेर्नृपस्यापि गृहयोरन्तरेणतु नृपवासगृहंकार्य्यं भाण्डागारन्तथैवच ३० सेनापतेर्गृहस्यापि चातुर्वर्ण्यस्यचान्तरे। वासायचगृहंकार्य्यं राजपूज्येषुसर्व्वदा ३१ पञ्चाश्रमिणाममितंधान्यायुधवह्निरतिगृहाणांच। नेच्छन्तिशास्त्रकारा हस्तशतादुच्छ्रितंपरतः ३२ सेनापतेर्नृपस्यापि सप्तत्यासहितेऽन्विते। चतुर्दशहृतेव्यासे शालान्यासःप्रकीर्तितः ३३ पञ्चत्रिंशान्वितेतास्मिन्नलिन्दःसमुदाहृतः। तथाषट्त्रिंशद्धस्तातु सप्ताङ्गुलसमन्विता ३४ विप्रस्यमहतीशाला नदैर्घ्यंपरतोभवेत्। दशाङ्गुलाधिकातद्वत् क्षत्रियस्यनविद्यते ३५ पञ्चत्रिंशत्करावै

सवाई होनीचाहिये २५ ज्योतिषी-राजाका गुरु-वैद्य-सभापति और पुरोहित इन सबके भी पांचों प्रकारके घरोंका वर्णनकरते हैं-इन सबका उत्तमघर चालीसहाथ चौढाहोताहै और अन्य चारोंघर चार २ हाथहीन चौढ़ाईवाले होते हैं और सबोंकी लम्बाइयां चौड़ाईमें चौड़ाई के छठेभाग अधिक होतीहै २६।२७ अब सामान्यसे चारों वर्णोंके पांचप्रकारके घरोंका वर्णन करते हैं-ब्राह्मणका उत्तम घर बत्तीसहाथ चौड़ाहोताहै शेष-चारोंघरचार २ हाथहीन चौड़े होते हैं-क्षत्रियका उत्तमघर २८ हाथ चौड़ा-वैश्यका २४ हाथ और शूद्रका २० हाथ चौड़ा होताहै और सोलह हाथसेहीन चौड़ाई इन चारों वर्णोंके नहीं होती है-नीचजातियों के होती है-ब्राह्मणके चौडाई के दशांश-क्षत्रियके अष्टमांश-वैश्यके षष्ठांश-शूद्रके चतुर्थांश अधिक होनेसे घरोंकी लम्बाई होती है-और सेनापति तथा राजाको घरके बीचमें वासकरने का घर बनवाना चाहिये और उसी स्थानमें शस्त्र आयुध और अस्त्रआदिकों का भांढागार बनानाचाहिये-सेनापति और चारों वर्णों के घरोंके बीचमें राजाके पूज्य पुरुषों के घर होने चाहिये- इन स्थानों के विशेष पशुओं के और परिव्राजक आदिक आश्रमियों के घरोंका कोई प्रमाण नहीं है ऐसेही धान्य-शस्त्र-रति अग्नि इन वस्तुओं के घरकाभी कुछ प्रमाण नहीं है चाहे जितनालंबा चौड़ा कोई बनवावे और शास्त्रके आचार्य्यों ने सौ १०० हाथसे अधिक ऊंचा घर बनाना नहीं कहाहै २८।३२ सेनापति और राजाके घरकी चौड़ाईमें ७०जोड़कर दोस्थानोंमें लिखे पूर्वके स्थानमें चौदहकाभागदेवे फिर जितनेहाथ और अंगुललब्धमिले वहीशालाका मानहोताहै-दूसरेस्थान में पैंतीस का भाग देने से जो लब्ध हो वह अलिन्दका मानहोताहै (शालासे बाहर गमनिका जाली से घिरीहुई आंगनके सन्मुख होती है उसको अलिन्द कहते हैं अर्थात् द्वारके बाहरका चौंतरा अथवा चौपाड़) बत्तीस हाथ आदिक जो ब्राह्मणआदि वर्णोंके घरका प्रमाण कहाहै उनकी शालाका प्रमाण कहते हैं-ब्राह्मणके उत्तम घरकी शाला ४ हाथ १७ अंगुल-दूसरे घरकी ४ हाथ ३ अंगुल-तीसरे की ३ हाथ १५ अंगुल चौथेमें ३ हाथ १३ अंगुल औरपांचवें घरकी शाला तीनहाथ ४ अंगुलकी होती है-यह ऐसे समझनाचाहिये कि ब्राह्मणका दूसराघरक्षत्रियका प्रधानघरहै-ब्राह्मणका तीसराघर वैश्य का प्रधान घरहै चौथा घर शूद्रका प्रधानघरहै इसी रीतिसे सबकीशालाका प्रमाण जानलेना-ब्राह्मण

र्ये अङ्गुलानित्रयोदश। तावत्करैवशूद्रस्य युतापञ्चदशाङ्गुलैः ३६ शालायास्तुत्रि
भागेन यस्याग्रेवीथिकाभवेत्। सोष्णीषंनामतद्वास्तु पश्चाच्छ्रेयोच्छ्रयंभवेत् ३७ पार्श्वे
योर्वीथिकायत्र सावष्टम्भन्तदुच्यते। समन्ताद्वीथिकायत्र सुस्थितंतदिहोच्यते ३८ शुभ
दंसर्वमेतत्स्याच्चातुर्वर्ण्येचतुर्विधम्। विस्तरात्षोड़शोभागस्तथाहस्तचतुष्टयम् ३९ प्रथ
मोभूमिकोच्छ्राय उपरिष्टात्प्रहीयते। द्वादशांशेनसर्वासु भूमिकासुतथोच्छ्रयः ४० पक्वेष्ट
काभवेद्भित्तिः षोड़शांशेनविस्तरात्। दारवैरविकल्पास्यात्तथामृन्मयाभित्तिका ४१ ग
र्भमानेनमानन्तु सर्ववास्तुपुशस्यते। गृहव्यासस्यपञ्चाशद्भ्यष्टादशभिरङ्गुलैः ४२ सं
युतोद्वारविष्कम्भो द्विगुणश्चोच्छ्रयोभवेत्। द्वारशाखासुबाहुल्यमुच्छ्रायकरसम्मितैः ४३
अङ्गुलैःसर्ववास्तूनां पृथुत्वंशस्यतेवुधैः। उदुम्बरोत्तमाङ्गञ्चतदर्धार्धप्रविस्तरात् ४४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रिपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५३॥

के प्रधान घरमें ३ हाथ १९ अंगुलका अलिन्द-दूसरे में ३ हाथ ८ अंगुल-तीसरे में २ हाथ २० अं-
गुल-चौथेमें २ हाथ १८ अंगुल और पांचवें घरमें अलिन्दका प्रमाण २ हाथ ३ अंगुलकाहै इसीरीति
अन्योंके भी जानलेना ३३।३६ शालाकी तिहाईके समान घरके बाहर वीथी अर्थात् गली बनावे-जो
वह वीथी वास्तुके आगे होय तो वह वास्तु सोष्णीष कहाता है-पिछली ओर होय तो श्रेयोच्छ्रय दा-
हिने बायें होय तो सावष्टंभ और वास्तुके चारों ओर वीथी होय तो उस वास्तुको सुस्थित कहते हैं
यह सब वीथी चारों वर्णों को शुभ और श्रेष्ठ कही हैं-घरकी चौड़ाई के मानमें सोलहका भागदेकर
जो लब्ध आवे उसमें चार हाथ और जोड़े वही घरकी पहली भूमिके खंडकी उंचाईका प्रमाण हो-
ताहै उसमें उसका द्वादशांश घटादेवे तो दूसरी भूमिकी उंचाई होजाती है इसीभांति दूसरीका द्वाद-
शांशघटाने से तीसरी की उंचाई तीसरीके द्वादशांश घटानेसे चौथी की उंचाई और चौथी के द्वाद-
शांश घटानेसे पांचवीं की उंचाईका प्रमाणहोताहै और सबघरों की भीतका प्रमाण घरकी चौथाई के
षोड़शांश के तुल्यहोताहै यह नियम पक्की ईंटों के घरका है और काष्ठ तथा मट्टी के घर में भीतकी
चौड़ाई लम्बाई और उंचाई का कुछ नियम नहीं हैं राजा और सेनापति के घर की चौड़ाई में उस
का एकादशांश जोड़कर ७० और जोड़े उस जोड़ने से जो अंकहोय उतने अंगुल के प्रमाण उनके
घरका द्वार बनाना चाहिये और द्वारकी उंचाई से आधी द्वारकी चौड़ाई रखनी चाहिये और ब्राह्मण
आदि वर्णोंके घरोंकी जो चौड़ाई होय उसका पंचमांश लेकर उसी में मिलावे लब्ध फलको अंगुल
माने फिर इसमें अठारह और मिलादेवे फिर मिलकर जितने अंगुल होवें उतनीही उनके द्वारोंकी
चौखटकी चौड़ाई होनीचाहिये और इस चौड़ाई से दूनी ऊंची चौखटहोनी चाहिये-और द्वारकी
चौखटकी दोनों भुजाओं को शाखा कहते हैं और ऊपर नीचेके काष्ठको शिरधर और देहलीको उदु-
म्बर कहते हैं द्वार जितने हाथ ऊंचाहोय उतने अंगुल शाखाओंकी मुटाई रखनी चाहिये औरशाखा-
ओंकी मुटाई से ड्योढ़ी मुटाई उदुम्बरों की होती है ३७।४४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५३॥

(सूत उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामिस्तम्भमानविनिर्णयम्। कृत्वास्वभुवनोच्छ्रायं स दासप्तगुणंबुधैः १ अशीत्यंशःपृथुत्वंस्यादग्रेणावगुणैःसह। रुचकश्चतुरस्रःस्यात्तु अष्टास्रोवज्रउच्यते २ द्विवज्रःषोडशास्रस्तु द्वात्रिंशास्रःप्रलीनकः। मध्यप्रदेशेयस्तम्भो वृत्तोवृत्तइतिस्मृतः ३ एतेपञ्चमहास्तम्भाः प्रशस्ताःसर्ववास्तुषु। पद्मवल्लीलताकुम्भ पत्रदर्पणरूपिताः४स्तम्भस्यनवमांशेन पद्मकुम्भान्तराणितु। स्तम्भतुल्यातुलाप्रोक्ता हीनाचोपतुलाततः५ त्रिभागेनेहसर्वत्रचतुर्भागेनवापुनः। हीनंहीनंचतुर्थांशात्तथासर्वासुभूमिषु६ वासगेहानिसर्वेषां प्रवेशेदक्षिणेनतु। द्वाराणितुप्रवक्ष्यामि प्रशस्तानीहयानितु ७ पूर्वेणेन्द्रजयन्तञ्च द्वारंसर्वत्रशस्यते। याम्यञ्चवितथंचैव दक्षिणेनविदुर्बुधाः ८ पश्चिमेपुष्पदन्तंच वारुणञ्चप्रशस्यते। उत्तरेणतुभल्लाटं सौम्यंतुशुभदंभवेत् ९ तथावास्तुषुसर्वत्र वेधंद्वारस्य वर्जयेत्। द्वारेतुरथ्ययाविद्धे भवेत्सर्वकुलक्षयः १० तरुणाद्वेषबाहुल्यं शोकःपङ्केनजायते। अपस्मारोभवेन्नूनं कूपवेधेनसर्वदा ११ व्यथाप्रस्रवणेनस्यात्कीलेनाग्निभयंभवेत्। विनाशोदेवताविद्धेस्तम्भेनस्त्रीकृतंभवेत् १२ गृहभर्तुर्विनाशःस्यात् गृहेणचगृहेकृते। अमेध्यावस्करैर्विद्धे गृहिणीबन्धकीभवेत् १३ तथाशस्त्रभयंविन्द्यादन्त्यजस्यगृहेणतु। उच्छ्रा

सूतजी बोले-अबस्तंभ अर्थात् खंभेवनानेकी विधि वर्णन करतेहैं-घरकी उंचाई को सातगुणा कर अस्सी का भागदेनेसे जोलब्धहोय वही सबस्तंभोंकी चौड़ाई होती है और स्तंभकी उंचाईको नौसे गुणाकर अस्सी का भागदेनेसे जोलब्धहोय वह स्तंभके मूलकी मुटाई होती है और उस स्तंभका दशांश उस में घटा देवे तो उस के अग्रभाग की मुटाई होती है जो स्तंभ मध्यभाग में चतुरस्रहोवे वह रुचक कहाताहै और जो अटास्र अष्टदलहोवे वह वज्रनाम स्तंभ कहाताहै १।२ सोलहदल वा अस्रोंवाला स्तंभद्विवज्रनामसे प्रसिद्धहोताहै जिसके मध्य में बत्तीसदल होते हैं वह प्रलीनक स्तंभ कहाताहै जो स्तंभमध्य में वृत्त अर्थात् गोलहोवे वह वृत्तनाम स्तंभ कहाता है ३ यहसब महास्तंभ कहातेहैं सब स्तंभ भरके नौ समान भागकर सबके नीचेकेभागको वहन बनावे (वहन उंस को कहते हैं जिसके कि ऊपर पृथ्वी में स्तंभ रहताहै) वहन के ऊपर प्रथम भाग में घट बनावे दूसरे भागमें कमल बनावे-फिर उत्तरोष्ट बनाके शेष पांचभागोंमें चतुरस्रबनादेवे (जिसमें कि अनेक प्रकार के चित्र बनायेजाते हैं उस को उत्तरोष्ट कहतेहैं) ४।६ अब संपूर्ण वास करने वाले घरों के दक्षिण आदि दिशाओंमें द्वारबनानेकी विधि वर्णन करतेहैं-पूर्वदिशा में इन्द्र तथा जयन्त देवताके पदके ऊपर घरका द्वार करना शुभहै-दक्षिण दिशा में धर्मराज और वितथ देवके ऊपर द्वार बनानाचाहिये ७।८ पश्चिमकी ओर पुष्पदन्त और वरुण देवता के ऊपर द्वार बनाना चाहिये-उत्तरकी ओर भल्लाट और सौम्य देवताके ऊपर द्वार बनानाचाहिये-९ और संपूर्ण वास्तुओं में द्वारका वेध वर्जदेनाचाहिये-मार्ग-वृक्ष-किसी दूसरे घरकी खूंट और गलीकी फेट यह अशुभहैं-रथ्या अर्थात् गली के वेधसे कुलकानाशहोताहै-कीचके वेधसे शोक होताहै-कूपके वेध से मृगीरोग होताहै-कीला और देवताके वेधसे अग्निका भय होताहै घरके आगे दूसरे घरका कोना होवे तो घरके स्वामीका नाशहै-

याद्विगुणांभूमिं त्यक्त्वावेधोनजायते १४ स्वयमुत्पाटितेद्वारे उन्मादोगृहवासिनाम्। स्व
यंवापिहितेविद्यात् कुलनाशंविचक्षणः १५ मानाधिकेराजभयं न्यूनेतस्करतोभवेत्। द्वा
रोपरिचयद्द्वारं तदन्तकमुखंस्मृतम् १६ अध्वनोमध्यदेशेतु अधिकोयस्यविस्तरः।
कुब्जन्तुसङ्कटंमध्ये सद्योभर्तुर्विनाशनम् १७ तथान्यपीडितंद्वारं वहुदोषकरंभवेत्। मूल
द्वारात्तथान्यत्तु नाधिकंशोभनंभवेत् १८ कुम्भश्रीपर्णिवल्लीभिर्मूलद्वारन्तुशोभयेत्। पू
जयेच्चापितन्नित्यं वलिनाचाक्षतोदकैः १९ भवनस्यवटःपूर्वे दिग्भागेसर्वकामिकः। उदु
म्बरस्तथायाम्ये वारुण्यांपिप्पलःशुभः २० प्लक्षश्चोत्तरतोधन्यो विपरीतास्त्वसिद्धये।
कण्टकीक्षीरवृक्षश्च आसन्नःसफलोद्रुमः २१ भार्य्याहानौप्रजाहानौ भवेतांक्रमशस्तदा।
नच्छिन्द्याद्यदितानन्यानन्तरेस्थापयेच्छुभान् २२ पुन्नागाशोकवकुलशमीतिलकचम्प
कान्। दाडिमीपिप्पलीद्राक्षा तथाकुसुममण्डपान् २३ जम्बीरपूगपनसद्रुमकेतकीभि
र्जातीसरोजशतपत्रिकमल्लिकाभिः। यन्नालिकेरकदलीदलपाटलाभिर्युक्तंतदत्रभवनं
श्रियमातनोति २४ ॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुःपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५४॥
(सूत उवाच) उदगादिप्लवंवास्तु समानशिखरंतथा। परीक्ष्यपूर्ववत्कुर्य्यात्स्तम्भो

ताहै जिसकी देहली के आगे अशुद्ध वस्तुओं को तथा मोरीका वेधहोवे तो उसका वन्धन होता है
द्वारकी उंचाई से दूने फासलेपर किसी वस्तुका वेधहोवे तो उसवेधका बुराफल नहींहोताहै १०।१४
जिसकेघर के द्वारका किवाड़ आपही खुलजावे अथवा आपही भिड़जावे उसके कुलका नाश होता
है १५ जो घर का द्वार कहेहुए मानसे अधिकहोवे उसको राजा से भय होताहै और न्यूनहोवे तो
चोरोंका भय होताहै द्वारके ऊपर जो द्वार होवे वह अन्तक मुख नाम वाला घर कहाताहै १६ मार्ग
के बीचमें जिसकेघर का अधिक विस्तारहोवे वा जिसका कुवड़ा द्वारहोवे उसघरके मालिककी मृत्यु
होतीहै १७ जो द्वार अन्य द्वारोंसे पीड़ित होताहै उस घर में वड़ा दोष होताहै औरघरके मुख्य द्वार
के समान अन्यद्वार नहीं वनाने चाहिये वल्कि उस मुख्य द्वारको कलश-फल पत्र अथवा शिवजीके
गण आदिकोंकी मूर्त्तियों से शोभित करना चाहिये १८।१९ घरके पूर्वभागमें वड़का वृक्ष शुभदायी
है-दक्षिणदिशामें गूलरका वृक्ष उत्तम है-घरसे पश्चिमकी ओर पीपलका वृक्ष शुभदायी है-उत्तर की
ओर पिलखनका वृक्षहोवे तो शुभदायी है और इनसे विपरीत होवें तो विपरीत फल होताहै और
घर के समीपमें कांटोंके वृक्ष होवें अथवा दूध और फल वाले वृक्ष होवें तो क्रमसेस्त्रीकी औरप्रजाकी
हानि होती है जो कोई इन वृक्षोंको नहींकाटे तो इनके समीपमें दूसरे शुभवृक्षोंको लगादेवे-नाग-
केशर-अशोक-वकुल-जांट-तिलकपुष्पी-चंपा-अनार-पीपली-दाख-अर्जुनवृक्ष-जम्बीरवृक्ष-सुपारीऔर
फालसे के वृक्ष-केतकी-जावित्री-कमल-चमेली-नारियल-केला-पाडलवृक्ष-इन वृक्षों से युक्त हुआ
घर शुभदायी होताहै २०।२४॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुःपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५४॥

सूतजी वोले-उदकप्लव अर्थात् उत्तरकी ओर झुकाव वाली भूमि ब्राह्मणोंको शुभहै ऐसेही पूर्व-

च्छ्रायंविचक्षणः १ नदेवधूर्तसचिव चत्वराणांसमन्ततः। कारयेद्भवनंप्राज्ञो दुःखशोक
भयंततः २ तस्यप्रदेशाश्चत्वारस्तथोत्सर्गोग्रतःशुभः। पृष्ठतःपृष्ठभागस्तु सव्यावर्तः
प्रशस्यते ३ अपसव्योविनाशाय दक्षिणेशीर्षकस्तथा। सर्वकामफलोनृणां सम्पूर्णोनाम
वामतः ४ एवंप्रदेशमालोक्य यत्नेनगृहमारभेत्। अथसांवत्सरेप्रोक्ते मुहूर्तेशुभलक्षणे ५
रत्नोपरि शिलांकृत्वा सर्वबीजसमन्विताम्। चतुर्भिर्ब्राह्मणैःस्तम्भं कारयित्वासुपूजितम् ६
शुक्लाम्बरधरःशिल्पि सहितोवेदपारगैः। स्नापितंविन्यसेत्तद्वत्सर्वौषधिसमन्वितम् ७
नानाक्षतसमोपेत वस्त्रालङ्कारसंयुतम्। ब्रह्मघोषेणवाद्येन गीतमङ्गलनिःस्वनैः ८ पाय
संभोजयेद्विप्रान् होमन्तुमधुसर्पिषा। वास्तोष्पतेप्रतिजानीहि मन्त्रेणानेनसर्वदा ९ सू
त्रपातेतथाकार्य्यमेवं स्तम्भोदयेपुनः। द्वारवंशोच्छ्रयेतद्वत्प्रवेशसमयेतथा १० वास्तूप
शमनेतद्वद्वास्तुयज्ञस्तुपञ्चधा। ईशानेसूत्रपातः स्यादाग्नेयेस्तम्भरोपणम् ११ प्रदक्षि
णञ्चकुर्वीत वास्तोःपदविलेखनम्। तर्जनीमध्यमाचैव तथाङ्गुष्ठस्तुदक्षिणे १२ प्रवा
लरत्नकनकफलं पिष्टाकृतोदकम्। सर्ववास्तुविभागेषु शस्तंपदविलेखने १३ नमस्माङ्गा
रकाष्ठेन नखशस्त्रेणचर्मभिः। नशृङ्गास्थिकपालैश्च क्वचिद्वास्तुविलेखयेत् १४ एभिर्वि
लिखितंकुर्य्याद्दुःखशोकभयादिकम्। यदागृहप्रवेशःस्याच्छिल्पीतत्रापिलक्षयेत् १५ स्त
म्भसूत्रादिकं तद्वच्छुभाशुभफलप्रदम्। आदित्याभिमुखंरौति शकुनिःपुरुषंयदि १६

दि क्रमसे बुद्धिमान् पुरुष अच्छे प्रकार परीक्षा करके समान शिखर और उत्तम उंचाई वाला स्तंभ बनावे १ देवता-धूर्त और चौराहा इनके समीपमें अपना घर नहीं बनाना चाहिये इन सबके समीप घर बनानेसे शोक दुःखादिकी प्राप्ति होतीहै २ यह सब घर आदि अपने घरके आगे की ओर होंय तो शुभ फल होताहै-पीठकी ओर वा बाईं ओर को होंय तो भी शुभ फल होताहै इसप्रकारसे उत्तम स्थानको विचार कर शुभ मुहूर्त्त में उत्तमरत्नों से युक्त शिला बनाके उसके ऊपर स्तंभको स्थापित करे फिर ब्राह्मणों के समीप कारीगर पुरुषको स्नानकरा श्वेत वस्त्र पहराय अक्षत चन्दनादि और गीत मंगलादिपूर्व्वक वेदपाठ के द्वारा मंगलाचरण करवाकर स्तंभको स्थापित करे उसी दिन ब्राह्मणोंको तो खीरका भोजन और मधु घृत से हवन करवावे और वास्तोष्पते प्रतिजानीहि इसमंत्र से घरका पूजनकरे यह संपूर्ण विधि घर में सूत भड़वाने के समय अथवा स्तंभ लगवाने के समय करनी चाहिये चौखट लगाने वा घर में प्रवेश करनेके समय करनी चाहिये ३। १० और वास्तुके शान्तिके समय भी यह संपूर्ण विधि करनी चाहिये ऐसे पांच प्रकारका वास्तु यज्ञ करना चाहिये-ईशानदिशा में सूत लगाना-अग्निकोण में स्तंभ लगाना घरके प्रदक्षिण क्रम करके तर्जनी-मध्यमा और अंगुष्ठ इन सब करके मूंगा-रत्न और सुवर्ण इन करके घर के स्थान में पद की रेखा लिखे ११। १३ पत्थर, अंगार, काष्ठ, नख, शस्त्र, चाम, सींग, अस्थि, कपाल, इत्यादिकों करके कभी सूत न झाड़े इन वस्तुओं के द्वारा पद लिखने से दुःख शोक और भय होता है और जिस समय गृहप्रवेश होय उससमयभी संपूर्ण शकुनोंकी परीक्षा करनी चा हिये १४। १५ जब अशुभ शकुन

तुल्यकालंस्पृशेदङ्गं गृहभर्तुर्यदात्मनः । वास्त्वङ्गेतद्विजानीयान्नरशल्यंभयप्रदम् १७
अङ्कनानन्तरंयत्र हस्त्यश्वश्वापदंभवेत् । तदङ्गसम्भवंविन्द्यात्तत्रशल्यंविचक्षणः १८
प्रसार्य्यमाणेसूत्रेतु श्वागोमायुर्विलङ्घते । तत्तुशल्यंविजानीयात् खरशब्देतिभैरवे १९
यदीशानेतुदिग्भागे मधुरंरौतिवायसः । धनंतत्रविजानीयाद् भागेवास्वाम्यधिष्ठिते २०
सूत्रच्छेदेभवेन्मृत्युर्व्याधिःकीलेत्वधोमुखे । अङ्गारेषुतथोन्मादं कपालेषुचसम्भ्रमम् २१
कंबुशल्येषुजानीयात्पौंश्चल्यंस्त्रीषुवास्तुवित् । गृहभर्तुर्गृहस्यापिविनाशःशिल्पिसंभ्रमे २२
स्तम्भेस्कन्धच्युतेकुम्भे शिरोरोगंविनिर्दिशेत् । कुम्भापहारेसर्वस्य कुलस्यापिक्षयोभवे
त् २३ मृत्युःस्थानच्युतेकुम्भे भग्नेबन्धंविदुर्बुधाः । करसङ्ख्याविनाशेतु नाशंगृहपते
र्विदुः २४ बीजौषधिविहीनेतु भूतेभ्योभयमादिशेत् । ततःप्रदक्षिणेनान्यान् न्यसेत्स्त
म्भान्विचक्षणः २५ यस्माद्भयकरंनृणां योजिताह्यप्रदक्षिणम् २६ रक्षांकुर्वीतयत्नेन स्त
म्भोपद्रवनाशिनीम् २६ तथाफलवतींशाखां स्तम्भोपरिनिवेशयेत् । प्रागुदक्प्रवणंकु
र्य्याद्दिङ्मूढन्तुनकारयेत् २७ स्तम्भंवाभवनंवापि द्वारंवासगृहंतथा । दिङ्मूढेकुलनाशः

होवे तब यह देखे कि घरका स्वामी वास्तु पुरुषके किस अंगपर बैठाहै और अपने किस अंगको स्पर्श कर रहाहै उस समय सूर्य्यके वशीभूत जो दीप्त दिशाहै उस दिशामें स्थितहुआ पक्षी रूखाशब्द बोलताहोय तो गृहपति जिस स्थानपरस्थितहो उसस्थानकी पृथ्वीमें मनुष्यकी हड्डी गड़ीहुई जानना और गृहपति जिस अंगको स्पर्श कर रहाहो उसी अंगकी हड्डी गड़ीहुई जानना १६ । १८ जिस समय घरकी नींवकी जगह सूत तानाहो और उस सूतको कुत्ता और शृगाल उल्लंघजावें अथवा गधे ने अत्यन्त भयानक शब्द कर दियाहो तो जान लेना कि इसजगह शल्यहै जो कदाचित् ईशानकोण में काक मधुर२ शब्द कर रहाहो अथवा जिस दिशामें स्वामी स्थितहो वहां शब्द कररहाहो तो वहां धन गड़ाहुआ जान लेना जो उस सूत्रकाछेदन होजावे तो मृत्यु होती है कीलेका मुख नीचेका हो जाय तो व्याधि होती है—कोयले निकस आवें तो उन्माद होजाय—कपाली निकसे तो गृहपति के संभ्रम होजाताहै १९ । २१ शंख निकस आवे तो घरकी स्त्री व्यभिचारिणी होती है—घरके चिनने वाले कारीगरके संभ्रम होजावे तो गृहपतिका अथवा घरकानाश होताहै २२ जो धराहुआ घरका स्तंभ कन्धेपर गिरपड़े अथवा कलश गिरपड़े तो गृहपतिके शिरमें रोग होजाताहै और संपूर्ण कलश खोय जावे तो कुलका क्षय होता है और वह जलका कलश फूटजावे तो मजदूरकी मृत्यु होती है और जो मापकी हाथोंकी संख्याका नाश होजावे तो घरके स्वामीका नाश होताहै २३ । २४ जिस घरमें बीज औषधियोंका नाश होजावे तो भूत प्रेतादिकोंसे भयहोता है और घरके प्रदक्षिण क्रमसे स्तंभ लगाने चाहिये जो घरमें बाईंओरके क्रम करके स्तंभ लगाये जावें भय होताहै इस निमित्त स्तंभके उपद्रवों की दूरकरनेवाली शान्ति करनी चाहिये २५ । २६ फलवाली शाखाको स्तंभ के ऊपर स्थापितकरे और स्तंभका विस्तार पूर्व वा उत्तरकी ओर करना चाहिये घरमें दिग्मूढता न करे अर्थात् ऐसा न करे जिसमे दिशाका ज्ञान न हो २७ स्तंभ—द्वार और वासस्थान इन तीनों में दि

स्यान्नचसंवर्द्धयेद् गृहम् २८ यदिसंवर्द्धयेद् गेहं सर्वदिक्षुविवर्द्धयेत् । पूर्वेणवर्द्धितंवास्तु कुर्य्याद्वैराणिसर्वदा २९ दक्षिणेवर्द्धितंवास्तु मृत्यवेस्यान्नसंशयः । पश्चाद्विवृद्धंयद्वास्तु त दर्थक्षयकारकम् ३० वर्द्धापितंतथासौम्ये बहुसन्तापकारकम् । आग्नेयेयत्रवृद्धिःस्यात् तदग्निभयदम्भवेत् ३१ वर्द्धितंराक्षसेकाणे शिशुक्षयकरंभवेत् । वर्द्धापितन्तुवायव्ये वा तव्याधिप्रकोपकृत् ३२ ईशान्यामन्नहानिःस्यात् वास्तौसंवर्द्धितेसदा । ईशानेदेवतागा रं तथाशांतिगृहंभवेत् ३३ महानसन्तथाग्नेये तत्पार्श्वेचोत्तरेजलम् । गृहस्योपस्करंस र्वं नैर्ऋत्येस्थापयेद् बुधः ३४ वधस्थानंबहिःकुर्य्यात् स्नानमण्डपमेवच । धनधान्यञ्च वायव्ये कर्मशालान्ततोबहिः । एवंवास्तुविशेषःस्यात् गृहभर्तुःशुभावहः ३५ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५५ ॥

(सूत उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि दार्वाहरणमुत्तमम् । धनिष्ठापञ्चकंमुक्त्वा विष्ट्या दिकमतःपरम् १ ततःसांवत्सरादिष्टे दिनेयायाद्वनंबुधः । प्रथमंबलिपूजाञ्च कुर्य्याद्वृक्ष स्यसर्वदा २ पूर्वोत्तरेणपतितं गृहदारुप्रशस्यते । अन्यथानशुभंविन्द्यात् याम्योपरिनि पातनम् ३ क्षीरवृक्षोद्भवंदारु नगृहेविनिवेशयेत् । कृताधिवासंविहगैरनिलानलपीड़ि तम् ४ गजावरुग्णञ्चतथा विद्युन्निर्घातपीड़ितम् । अर्द्धशुष्कंतथादारु भग्नशुष्कंतथै

इमूढ़ होय तो कुलका नाश होताहै घरको किसी एकही दिशामें ऊंचा न बढ़ावे जो एकही दिशामें ऊंचाहोय तो सब दिशाओंमें ऊंचा करवाले या करले जो पूर्व्वकी ओर ऊंचा बढ़ाहुआ वास्तुहोवे तो शत्रुता होती है २८ । २९ दक्षिणकी ओर बढ़ाहुआ वास्तु होवे तो मृत्यु होती है पश्चिमकी ओर बढ़ाहोवे तो धनका नाश होताहै उत्तरकी ओर बढ़ाहुआ होय तो बहुतसा संताप होवे-अग्निकोण में बढ़ाहुआ होवे तो अग्निका भयहोय--नैर्ऋत्य कोणमें बढ़ाहुआ होवे तो वात व्याधिका रोग होताहै ३० । ३२ ईशान कोणमें वास्तु बढ़ाहोवे तो अन्नकी हानि होती है घर के ईशान कोणमें घरही में देवताका घर तथा शान्तिगृह बनाना चाहिये--अग्निकोण में रसोई करनेका स्थान बनावे रसोई के समीप उत्तरकी ओर जलका स्थान बनावे-- घरकी संपूर्ण चीज वस्तुओंको नैर्ऋत्य कोणमें रक्खे ३३ । ३४ स्नान करने आदिका स्थान घरसे बाहर बनावे धन धान्य रखनेका स्थान वायव्य कोण में बनावे इसप्रकारसे बनायाहुआ घर घरके स्वामीको शुभदायी होताहै ३५ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५५ ॥

सूतजी बोले—अब घरके काष्ठके निमित्त वृक्ष काटने की विधिको कहते हैं—धनिष्ठादि पञ्चकों को और भद्राको त्यागकर शुभ दिन में गमन करे प्रथम वृक्षों के बलिदानकर फिर उनकी पूजाकरे १ । २ जो काटा हुआ वृक्ष पूर्व तथा उत्तर की ओर को गिरे तो शुभदायी होताहै और पश्चिम वा दक्षिणकी ओर गिरे तो अशुभहै ३ पीपल आदिक दूधवाले वृक्षों के काष्ठको घर में न लगावे और जिसमें बहुत से पक्षियोंने वासकर रक्खाहो अथवा जो अग्निसे जल रहाहो ऐसे वृक्षको नहीं लावे ४ और हस्ती या बिजली से पीड़ित वा दग्ध आधा सूखा सूखके फटेहुए यज्ञ स्थान तथा देवालय

वच ५ चैत्यदेवालयोत्पन्नं नदीसङ्गमजन्तथा। श्मशानकूपनिलयं तड़ागादिसमुद्भवम् ६
वर्जयेत्सर्वथादारु यदीच्छेद्विपुलांश्रियम्। तथाकण्टकिनोवृक्षान् नीपनिम्बविभीतकान्
७ श्लेष्मातकानाम्रतरूनवर्जयेद्गृहकर्मणि। आसनाशोकमधुकसर्जशालाःशुभाव
हाः ८ चन्दनंपनसन्धन्यं सुरदारुहरिद्रवः। द्वाभ्यामेकेनवाकुर्यात् त्रिभिर्वाभवनंशुभम्
९ बहुभिःकारितंयस्मादनेकभयदंभवेत्। एकैवशिंशपाधन्या श्रीपर्णीतिन्दुकीतथा १०
एतानान्यसमायुक्ताः कदाचिच्छुभकारकाः। स्यन्दनःपनसस्तद्वत्सरलार्जुनपद्मकाः ११
एतनान्यसमायुक्ता वास्तुकार्यफलप्रदाः। तरुच्छेदेमहापीते गोधाविन्द्याद्विचक्षणः १२
माञ्जिष्ठवर्णेभेकः स्यान्नीलेसर्पादिनिर्दिशेत्। अरुणेसरटंविद्यान्मुक्ताभेशुकमादिशेत्
१३ कपिलेमूषकान्विद्यात् खड्गाभेजलमादिशेत्। एवंविधंसगर्भन्तु वर्जयेद्वास्तुकर्मणि
१४ पूर्वच्छिन्नन्तुगृह्णीयान्निमित्तशकुनैःशुभैः। व्यासेनगुणितेदैर्घ्ये अष्टाभिर्वैहृतेतथा १५
यच्छेषमायतंविद्यादष्टभेदंवदामिवः। ध्वजोधूमश्चसिंहश्च वृषभःखरएवच १६ हस्ती
ध्वांक्षश्चपूर्वाद्याः करशेषाभवन्त्यमी। ध्वजःसर्वमुखोधन्यः प्रत्यग्द्वारोविशेषतः १७ उ
दङ्मुखोभवेत्सिंहः प्राङ्मुखोवृषभोभवेत्। दक्षिणाभिमुखोहस्ती ऋषिभिःसमुदाहृतः १८
एकेनध्वजउद्दिष्टस्त्रिभिःसिंहःप्रकीर्तितः। पञ्चभिर्वृषभःप्रोक्तो विकोणस्थाश्चवर्जयेत् १९

के समीप में उत्पन्न नदीके संगमपर श्मशान तथा कूपके स्थानमें उत्पन्न और तलाव के ऊपर होने वाला इन सब वृक्षोंका काष्ठ नहीं लगाना चाहिये ५। ६ कीकर आदि कांटोंके वृक्ष कदंब-नींब-बहेड़ा-लहसोड़ा और आंब-इन सब वृक्षोंको घरके काम में वर्जदेवे और आसना-अशोक-महुआ-सर्जवृक्ष साल-यह सब वृक्ष घरके काममें शुभकहे हैं ७। ८ चन्दन-फालसे का वृक्ष देवदारु इन सबसे अथवा एक वृक्षसे घर बनाना शुभ है ९ बहुत से काष्ठोंसे बनाया हुआ घर अनेकप्रकार के भयोंको करता है इसहेतु से अकेली सीसम अथवा सालवण और टेसू के वृक्ष यह सब अकेलेही लगाने चाहिये और यह नहीं मिलें तो साल वा अर्जुन आदि अकेले वृक्षोंका काष्ठ लगानेसे उत्तम फल होता है और वृक्ष काटनेके समय वृक्षमें से बहुत पीलावर्ण निकले तो उस वृक्षमें गोहका भय होताहै-मजीठी रंग निकले तो मेंडकका भय होताहै-नीलावर्ण निकले तो सर्पादि का भय होता है लाल निकले तो किरलकांटों का भय-मोती के समान रंग निकले तो वहां बहुतसे तोतेजाने १० । १३ कपिल वर्ण निकले तो मूसोंका भय-तलवारके समान आकार होय तो जलका भय ऐसे इन लक्षणोंवाले वृक्षोंको काटनेके समयमें निषेध करदेवे १४ और जो पहलेका कटा हुआ वृक्ष पड़ाहो उसको अच्छे शकुन होनेके समयले आवे-वृक्षकी मुटाईके हाथोंसे उसकी लम्बाईको गुणाकरे फिर आठका भाग देवे एकबचे तो ध्वज दो बचे से धूम तीनबचेसे सिंह चार बचे से वृषभ-पांच से गधा-छठे से हाथी और सातबचे तो ध्वांक्ष नाम जाने इनमें ध्वजका सब ओर को मुखहै शुभदायी है विशेष करके इसका मुख पश्चिम की ओर है १५। १७ सिंहनामवाले का मुख उत्तरको है-वृषभनामका पूर्व को हस्तीका मुख दक्षिणको है यह ऋषियोंका कथनहै यह सब शुभदायी हैं अन्यवृक्षों के मुखकोणों

तमेवाष्टगुणंकृत्वा कुरराशिंविचक्षणः। सप्तविंशाहृतेभागे ऋक्षंविद्याद्विचक्षणः २० अष्ट भिर्भाजितेऋक्षे यःशेषःसव्ययोमतः। व्ययाधिकंनकुर्वीत यतोदोषकरम्भवेत्। आया धिकेभवेच्छान्तिरित्याहभगवान्हरिः २१ कृत्वाग्रतोद्विजवरानथपूर्णकुम्भं दध्यक्षता म्रदलपुष्पफलोपशोभम्। कृत्वाहिरण्यवसनानितदाद्विजेभ्यो मङ्गल्यशान्तिनिलयाय गृहंविशेत्तु २२ गृह्योक्तहोमविधिनाबलिकर्मकुर्यात् प्रासादवास्तुशमनेचविधिर्यउक्तः। सन्तर्पयेद्विजवरानथभोज्यभक्ष्यैः शुक्लाम्बरःस्वभवनंप्रविशेत्सधूपम् २३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेषट्पञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५६॥

(ऋषय ऊचुः) क्रियायोगःकथंसिद्ध्येद्गृहस्थादिषुसर्वदा। ज्ञानयोगसहस्राद्धि कर्मयोगोविशिष्यते १ (सूत उवाच) क्रियायोगंप्रवक्ष्यामि देवतार्चानुकीर्तनम्। भुक्ति मुक्तिप्रदंयस्मान्नान्यत्लोकेषुविद्यते २ प्रतिष्ठायांसुराणांतुदेवतार्चानुकीर्तनम्। देवयज्ञो त्सवञ्चापिवन्धनाद्येनमुच्यते ३ विष्णोस्तावत्प्रवक्ष्यामि यादृग्रूपंप्रशस्यते। शङ्खचक्र धरंशान्तं पद्महस्तंगदाधरम् ४ छत्राकारंशिरस्तस्य कम्बुग्रीवंशुभेक्षणम्। तुङ्गनासं शुक्तिकर्णं प्रशान्तोरुभुजक्रमम् ५ क्वचिदष्टभुजंविद्याच्चतुर्भुजमथापरम्। द्विभुजश्चापि कर्तव्योभवनेषुपुरोधसा ६ देवस्याष्टभुजस्यास्य यथास्थानंनिबोधत। खड्गोगदाशरः

में हैं उनको निषेध करदेवे १८। १९ और इसप्रकार से गुणाकरके भागदियेहुए शेषरहे हाथोंको आठगुणाकर पीछे सत्ताईससे गुणाकरे फिर आठका भागदेवे एक बचे तो व्यय दो बचे तो लाभ इसीक्रम से जाने जिसमें व्यय अर्थात् खर्च अधिकबचे ऐसी मुटाईवाले वृक्षको नहीं लावे-जिस में लाभ अधिकहो उसमें शान्तिहोती है यहहरि भगवान् का मतहै २०। २१ इसप्रकारसे घरको चिंनवाकर पीछेसे जलपूर्ण कुंभको दधि अक्षत फलपुष्पादिसे शोभितकर सुवर्ण वस्त्र समेत ब्राह्म-णोंके हाथमेंदे उनब्राह्मणोंको आगेकर पीछे घरमें प्रवेशकरे और शास्त्रके अनुसार हवनकरे बलिदा-नदेवे उत्तम भक्ष्य भोज्यपदार्थोंसे ब्राह्मणोंको भोजनकरवा श्वेत वस्त्रोंको धारणकर घरमें प्रविष्टहो-वे २२। २३॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्पंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५६॥

ऋषियोंने पूछा-कि सब गृहस्थियोंका क्रियायोग कैसे सिद्धहोताहै हज़ारों ज्ञानयोगोंसे कर्मयोग उत्तम कहाहै १ सूतजी कहतेहैं-कि अब देवताके पूजन करने के कर्म्मयोगको कहताहूं क्योंकि त्रि-लोकी में इस के समान अन्यकोई भुक्ति मुक्तिका देने वाला नहीं है २ देवताओं की प्रतिष्ठा में देवता ओंकी पूजाका वर्णन कियाहै और देवयज्ञके उत्सवका वर्णन कियाहै इसको सुननेवाला मनुष्य ब-न्धनसे छुट जाताहै ३ अब विष्णुकी मूर्त्ति बनाने की विधि वर्णन करते हैं-शंख चक्र गदा और पद्म इनको हाथों में धारण करने वाली छत्राकार शिरवाली शंखसीग्रीवा सुन्दर नेत्र-ऊंची नासिका-सीपसे कान वाली शान्त स्वरूप ऐसी विष्णुभगवान्की मूर्त्ति बनानी चाहिये ४। ५ विष्णुकी मूर्त्तिके आठहाथ बनावे वा चारहाथ बनावे अथवा दोही हाथ बनावे-६ आठहाथवाली मूर्त्तिके शस्त्रोंके स्था-नोंको सुनो-खड्ग गदा-बाण-पद्म और कमल यह दाहिनी भुजाओंमें और धनुष-खेटक अर्थात् खाड़ा

पद्मं दिव्यंदक्षिणतोहरेः ७ धनुश्चखेटकञ्चैव शङ्खचक्रेचवामतः । चतुर्भुजस्यवक्ष्या
मि यथैवायुधसंस्थितिः ८ दक्षिणेनगदापद्मं वासुदेवस्यकारयेत् । वामतःशङ्खचक्रेच क
र्तव्येभूतिमिच्छता ९ कृष्णावतारेतुगदा वामहस्तेप्रशस्यते । यथेच्छयाशङ्खचक्रे चोप
रिष्टात्प्रकल्पयेत् १० अधस्तात्पृथिवीतस्य कर्तव्यापादमध्यतः । दक्षिणेप्रणतंतद्वद्
गरुत्मन्तंनिवेशयेत् ११ वामतस्तुभवेल्लक्ष्मीः पद्महस्ताशुभानना । गरुत्मानग्रतोवा
पिसंस्थाप्योभूतिमिच्छता १२ श्रीश्चपुष्टिश्चकर्तव्येपार्श्वयोःपद्मसंयुते। तोरणञ्चोपरि
ष्टात्तु विद्याधरसमन्वितम् १३ देवदुन्दुभिसंयुक्तं गन्धर्वमिथुनान्वितम् । पत्रवल्लीसमो
पेतं सिंहव्याघ्रसमन्वितम् १४ तथाकल्पलतोपेतं स्तुवद्भिरमरेश्वरैः । एवंविधोभवेद्वि
ष्णोस्त्रिभागेनास्यपीठिका १५ नवतालप्रमाणास्तु देवदानवकिन्नराः । अतःपरंप्रवक्ष्या
मि मानोन्मानंविशेषतः १६ जालान्तरप्रविष्टानां भानूनांयद्रजःस्फुटम् । त्रसरेणुःसवि
ज्ञेयो वालाग्रन्तैरथाष्टभिः १७ तदष्टकेनलिक्षातु यूकालिक्षाष्टकैर्मता। यवोयूकाष्टकंतद्व
दष्टभिस्तैस्तदङ्गुलम्१८स्वकीयाङ्गुलिमानेन मुखंस्याद्द्वादशाङ्गुलम्।मुखमानेन
कर्तव्या सर्वावयवकल्पना १९ सौवर्णीराजतीवापि ताम्रीरत्नमयीतथा। शैलीदारुमयी
चापि लोहसंघमयीतथा २० रीतिकाधातुयुक्तावा ताम्रकांस्यमयीतथा। शुभदारुमयी

और शंख चक्र यहवायें हाथ में धारण करानेचाहिये-अब चारहाथोंवाली विष्णुकी मूर्त्तिके शस्त्रोंको सुनो-७।८ दाहिने हाथों में गदा और पद्म धारण करावे और बायें हाथों में शंख चक्रोंको धारण करानाचाहिये ९ कृष्णावतार की मूर्त्ति के वाम हाथ मेंही गदाधारण करानी योग्यहै और उसके ऊपर इच्छापूर्व्वक शंख चक्रको धारण करावे १० और विष्णुकी मूर्त्तिके बायें पैरके नीचे पृथ्वीरहने देवे दाहिनेपैरके नीचे विनय करतेहुए गरुड़ को बैठावे-११ अथवा विष्णुके वामांगकी ओर लक्ष्मीजीको स्थापित करे और गरुड़को विष्णुके आगे स्थित करे और श्री-पुष्टि इन्हों को कमलसे युक्त करके दोनों बगलों में स्थितकरे- विष्णुकी मूर्त्तिके ऊपर विद्याधरसे युक्तकीहुई तोरण लगावे १२।१३ और देवताओंके नगाड़े गन्धर्वोंके मिथुन जोड़े और बेलबूटी सिंह आदिक चित्राम भी विष्णुभगवान्की मूर्त्तिके समीपमें बनाने चाहिये १४ और समीपवर्त्ती स्तुति करतेहुए देवताओंकी मूर्त्तिभी बनानी चाहिये ऐसे प्रकारकी विष्णुकी मूर्त्तिके तीसरे भागके प्रमाण तुल्य पीठिका स्थित होनेकी सीढ़ी बनानी चाहिये १५ और देवता दानव और मनुष्य यह सब ९ तालप्रमाणके होतेहैं (अंगुष्ठ से मध्यमाअंगुली तकके विस्तारको ताल कहते हैं) अब अन्य२ विशेष प्रमाण और वेदोंको कहते हैं १६ झरोखोंमें जो सूर्य्यकी किरणोंपर रजदिखाई देती है उसको त्रसरेणु कहते हैं आठत्रसरेणुओंको बालाग्र कहते हैं—आठबालाग्रोंकी लिक्षा—आठलिक्षाओंकी यूकाहोती है-आठयूकाओंका यव होताहै उन आठयवोंका अंगुलहोताहै १७।१८ और अपने बारहअंगुल प्रमाणका मुखहोताहै-मूर्त्ति के मुखके प्रमाणसे संपूर्ण अवयवोंकी कल्पना होती है १९ सुवर्ण चाँदी-तांबा-रत्न-पाषाण-काष्ठ-लोहवापीतलकी-अथवा तांबा काँशीकी मिलीहुई अथवा चन्दन आदि शुभकाष्ठकी इत्यादि अनेक

थापि देवतार्चाप्रशस्यते २१ अङ्गुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेवतु ।गृहेषुप्रतिमाकार्या नाधिकाशस्यतेवुधैः २२ आषोडशातुप्रासादे कर्तव्यानाधिकाततः। मध्योत्तमकनिष्ठातु कार्याविचानुसारतः २३ द्वारोच्छ्रायस्ययन्मानमष्टधातत्तुकारयेत् । भागमेकंतत स्त्यक्त्वा परिशिष्टन्तुयद्भवेत् २४ भागद्वयेनप्रतिमात्रिभागीकृत्यतत्पुनः। पीठिकाभागतःकार्या नातिनीचानचोच्छ्रिता २५ प्रतिमामुखमानेन नवभागान्प्रकल्पयेत् । चतुरङ्गुलाभवेद्ग्रीवा भागेनहृदयंपुनः २६ नाभिस्तस्मादधःकार्या भागेनैकेनशोभना। निम्नत्वेविस्तरत्वेच अङ्गुलंपरिकीर्तितम् २७ नाभेरधस्तथामेढ्रं भागेनैकेनकल्पयेत्। द्विभागेनायतावूरू जानुनीचतुरङ्गुले २८ जङ्घेद्विभागेविस्याते पादौचचतुरङ्गुलौ। चतुर्दशाङ्गुलस्तद्वन्मौलिरस्यप्रकीर्तितः २९ ऊर्द्ध्वमानमिदंप्रोक्तं पृथुत्वञ्चनिबोधत। सर्वावयवमानेषु विस्तारंशृणुतद्विजाः ! ३० चतुरङ्गुलंललाटं स्यादूर्ध्वंनासातथैवच। द्व्यङ्गुलन्तुहनुर्ज्ञेयमोष्ठः स्वाङ्गुलसम्मितः ३१ अष्टाङ्गुलेललाटेच तावन्मात्रेभ्रुवौमते। अर्द्धाङ्गुलाभ्रुवोर्लेखा मध्येधनुरिवानता ३२ उन्नताग्राभवेत्पार्श्वे श्लक्ष्णातीक्ष्णा प्रशस्यते। अक्षिणीद्व्यङ्गुलायामे तदर्धैचैवविस्तरे ३३ उन्नतोदरमध्येतु रक्तान्तेशुभलक्षणे। तारकार्धविभागेन दृष्टिःस्यात्पञ्चभागिका ३४ द्व्यङ्गुलन्तुभ्रुवोर्मध्ये नासामू

प्रकारकी मूर्त्ति वनानी श्रेष्ठ कहीहैं २०।२१ अंगूठेकी पोरीसे एक विलस्त तककी मूर्त्ति घरमें रखनी चाहिये इससे अधिक प्रमाणकी मूर्त्ति घरोंमें नहीं रखनी योग्यहै २२ और प्रासाद अर्थात् देवताओं के मन्दिरोंमें वा राजाओंके घरों में सोलह अंगुलकी वनावे इससे अधिक नहीं वनवावे और अपने वित्तके अनुसार मध्यमा-उत्तमा और कनिष्ठामूर्त्तिवनानी कही है २३ और मन्दिरके द्वारकी उंचाईके आठभाग करके एक भागको त्यागदेवे फिर उनवाकी वचेहुओंके तीनभाग कर दो भागमें तो देवता की मूर्त्ति वनवावे और तीसरे भागमें पीठिका अर्थात् मूर्त्तिके स्थितहोनेको पेंडीवनावे वह पेंडी अधिक नीची नहीं रखनी और अधिक ऊंचीभी नहीं रखनी चाहिये २४।२५ फिर मूर्त्तिके मुखके प्रमाण भरके नव ९ भाग कल्पित करले उसमें चार अंगुलकी तो ग्रीवावनावे और भागमें हृदय बनावे २६ उसहृदय से नीचे एकभागमें सुन्दर नाभिवनावे वह नाभि एकअंगुलगहरी और एकही अंगुल विस्तारवाली वनानी चाहिये २७ नाभिसे नीचे एक भागमें लिंगवनावे दो भागोंमें जंघा वनावे चार अंगुलमें घोंटू वनावे दो भागोंमें पिंडली वनावे और चार अंगुलमें पैरवनावे इसमूर्त्तिका मस्तक चौदह अंगुल ऊंचा होताहै यह तो मूर्त्तिकी उंचाई कही है-अब इसकी मुटाई को कहतेहैं-हे द्विजवर्य्यो तुम संपूर्ण अवयवों के विस्तारको श्रवण करो २८।३० मस्तक चार अंगुल मोटाहोता है मस्तकसे ऊपर दीखतीहुई नासिकावनावे दो अंगुलकी ठोढ़ीवनावे अपने एकअंगुलका ओष्ठ बनावे ३१ आठ अंगुलकी कनपटी वनावे आठअंगुलमें दोनों भ्रुकुटी वनावे और आधे अंगुलके प्रमाणमें भ्रुकुटीके वालोंकी रेखावनावे पर वह भ्रुकुटी धनुषके समान नमित अर्थात् नईहुई वनानी चाहिये ३२ मूर्त्तिके नेत्रोंके दोनों ओरोंको आगेसे ऊंचाकरे और सुन्दर महीन औरपैने २ करे दोअं-

लमथाङ्गुलम्। नासाग्रविस्तरंतद्वत् पुटद्वयमथानतम् ३५ नासापुटविलंतद्वदर्धाङ्गु
लमुदाहृतम्। कपोलेद्वयङ्गुलेतद्वत् कर्णमूलाद्विनिर्गते ३६ हन्वग्रमङ्गुलंतद्वद्विस्ता
रोद्वयङ्गुलोभवेत्। अर्द्धाङ्गुलाभ्रुवोराजी प्रणालसदृशीसमा ३७ अर्द्धाङ्गुलसमस्त
द्वदुत्तरोष्ठस्तुविस्तरे। निष्पावसदृशन्तद्वन्नासापुटदलंभवेत् ३८ सृक्किणीज्योतिस्तुल्ये
तु कर्णमूलात्षडङ्गुले। कर्णौतुभ्रूसमौज्ञेयो ऊर्द्धन्तुचतुरङ्गुलौ ३९ द्वयङ्गुलौकर्णपा
र्श्वौतु मात्रामेकान्तुविस्तृतौ। कर्णयोरुपरिष्टाच्च मस्तकंद्वादशाङ्गुलम् ४० ललाटात्
पृष्ठतोऽर्धेन प्रोक्तमष्टादशाङ्गुलम्। षट्त्रिंशदङ्गुलश्चास्य परिणाहःशिरोगतः ४१
सकेशनिचयोयस्य द्विचत्वारिंशदङ्गुलः। केशान्ताद्धनुकातद्वदङ्गुलानितुषोडश ४२
ग्रीवामध्यपरीणाहश्चतुर्विंशतिकाङ्गुलः। अष्टाङ्गुलाभवेद्ग्रीवा पृथुत्वेनप्रशस्यते ४३
स्तनग्रीवान्तरंप्रोक्तमेकतालंस्वयम्भुवा। स्तनयोरन्तरंतद्वद्द्वादशाङ्गुलमिष्यते ४४
स्तनयोर्मण्डलंतद्वद् द्वयङ्गुलंपरिकीर्तितम्। चूचुकौमण्डलस्यान्तर्यवमात्रावुभौस्मृ
तौ ४५ द्वितालश्चापिविस्ताराद्वक्षस्थलमुदाहृतम्। कक्षेषडङ्गुलेप्रोक्ते बाहुमूलस्तना
न्तरे ४६ चतुर्दशाङ्गुलौपादावङ्गुष्ठौतुत्रियङ्गुलौ। पञ्चाङ्गुलपरीणाहमङ्गुष्ठाग्रं
तथोन्नतम् ४७ अङ्गुष्ठकसमातद्वदायामास्यात्प्रदेशिनी। तस्याःषोडशभागेन हीयते

गुल विस्तारवाले नेत्रबनाने चाहिये नेत्रके वीचमें उंचाईकरे कोयोंको लालबनावे और आंखकेता-
रके आधेभागसे पांचगुनी नेत्रकी काली पुतली बनानी चाहिये ३३। ३४ दोनों भ्रुकुटियोंके वीच
की जगह दोअंगुलरखनी चाहिये एकअंगुलमें नासिकाको जड़बनावे एकअंगुलमें नासिकाका अग्र-
भागबनाकर दोनों पुटबनावे-नासिकाके पुटके छिद्रको आधे अंगुलके प्रमाणमें बनावे दो अं-
गुलमें कपोल बनावे दो अंगुलका ठोढ़ीका अग्रभाग बनावे और कमल की डंडीके समान आधे
अंगुल प्रमाणवाली भ्रुकुटियोंके वालोंकी रेखाबनावे आधअंगुलके ओठबनावे मोरके समानदल
वाला नासिकाकापुट बनावे ३५। ३८ भ्रुकुटियोंके समान चार अंगुल ऊंचेकान बनावे और कानों
के पगवारे दो अंगुल प्रमाणके बनावे-कानोंके ऊपर बारह अंगुलका मस्तकबनावे इससंपूर्ण मूर्त्ति
के शिर पर्य्यन्त छत्तीस अंगुलका प्रमाणहोना चाहिये शिखासे ठोढ़ी पर्य्यन्त सोलह अंगुल विस्तार
होताहै और पैरोंसे शिखापर्य्यन्त बयालीस ४२ अंगुलका विस्तारहोताहै ३९। ४२ ग्रीवा और क-
टिके बीचमें चोबीस अंगुलका विस्तारकरे और स्तन वा ग्रीवाका एकताल प्रमाण अन्तर करना-
यह सब ब्रह्माजीका वचन है और दोनों स्तनोंके वीचमें बारहअंगुल के प्रमाण जगह छोड़नी चा-
हिये ४३। ४४ स्तनोंके मंडल दो २ अंगुलके बनावे मंडलोंके वीचका चूचुक वीटकना जौके प्र-
माण बनावे छातीको दोताल विस्तारवाली बनावे छः अंगुल की दोनोंकोख बनावे और भुजाओंके
मूल और स्तनोंके वीचमें छः अंगुल जगह छोड़े चौदह अंगुल प्रमाणमें दोनों पैरबनावे तीनअंगुल
प्रमाणके दोनों अंगूठे बनावे और अग्रभागतक अंगूठेकी लंबाई और उँचाई पांच अंगुल की बनावे
अंगूठेके समान प्रदेशिनी नाम प्रथम उंगली बनावे इससे सोलहवें भाग हीन मध्यमा उंगली बना

मध्यमाङ्गुली ४८ अनामिकाष्टभागेन कनिष्ठाचापिहीयते। पर्वत्रयेणचाङ्गुल्योगुल्फौ द्व्यङ्गुलकोमतौ ४९ पार्ष्णिद्व्यंङ्गुलमात्रस्तु कलयोश्च प्रकीर्तितः। द्विपर्वाङ्गुष्ठकः प्रोक्तः परीणाहश्चद्व्यङ्गुलः ५० प्रदेशिनीपरीणाहस्त्र्यङ्गुलःसमुदाहृतः। कन्यसा चाष्टभागेन हीयतेक्रमशोद्विजाः ५१ अङ्गुलेनोच्छ्रयःकार्यो ह्यङ्गुष्ठस्यविशेषतः। तदर्धेनतुशेषाणामङ्गुलीनान्तथोच्छ्रयः ५२ जङ्घाग्रेपरिणाहस्तु अङ्गुलानिचतुर्दश। जङ्घामध्येपरीणाहस्तथैवाष्टादशाङ्गुलः ५३ जानुमध्येपरीणाह एकविंशतिरङ्गुलः। जानूच्छ्रयोऽङ्गुलःप्रोक्तो मण्डलन्तुत्रिरङ्गुलम् ५४ ऊरुमध्येपरीणाहो ह्यष्टाविंशतिकाङ्गुलः। एकत्रिंशोपरिष्टाच्च वृषणौतुत्रिरङ्गुलौ ५५ द्व्यङ्गुलञ्चतथामेढ्रं परीणाहः षडङ्गुलम्। मणिबन्धादधोविद्यात् केशरेखास्तथैवच ५६ मणिकोशपरीणाहश्चतुरङ्गुलइष्यते। विस्तरेणभवेत्तद्वत्कटिरष्टादशाङ्गुला ५७ द्वाविंशतितथास्त्रीणां स्तनौचद्वादशाङ्गुलौ। नाभिमध्यपरीणाहो द्विचत्वारिंशदङ्गुलः ५८ पुरुषेपञ्चपञ्चाशत् कट्यांञ्चवतुवेष्टनम्। कक्षयोरुपरिष्टात्तु स्कन्धौप्रोक्तौषडङ्गुलौ ५९ अष्टाङ्गुलान्तुविस्तारे ग्रीवाञ्चविनिर्दिशेत्। परीणाहेनतथाग्रीवां कलाद्वादशनिर्दिशेत् ६० आयामोभुजयोस्तद्वत् द्विचत्वारिंशदङ्गुलः। कार्यन्तुबाहुशिखरं प्रमाणेषोडशाङ्गुलम् ६१ शेषाणाम

वे ४५।४८ मध्यमासे आठवेंभागहीन अनामिकाबनावे दोअंगुलप्रमाणके गुल्फ अर्थात् टकनेबनावे ४९ दो अंगुलके प्रमाणकी एड़ीबनावे और अंगूठेके दोपोरुए और प्रदेशिनी अंगुलीके तीन पोरुए बनावे और अंगूठेकी उंचाई एक अंगुलकी अंगुलियोंके आधे अंगुलकी उंचाई होती है पिंडलियोंके अग्र-भागका विस्तार चौदह अंगुलका होताहै और मध्यभागका विस्तार अठारह अंगुलका होताहै और घोंटुओंके मध्यभागका विस्तार इक्कीस अंगुलका बनावे एक अंगुल ऊंचे घोंटूबनावे और घोंटुओंके मंडल तीन अंगुलके बनावे ५०।५४ जांघोंकेमध्यमें अट्ठाईसअंगुलका विस्तारहोताहै और ऊपरकी ओर इकतीस अंगुलका विस्तार होताहै, तीन अंगुलके वृषण बनावे और दो अंगुलका लिंग बनाना चाहिये लिंगका सब विस्तार छःअंगुल प्रमाणका बनावे और पहुँचे के नीचेके भागमें केशोंकीरेखा बनावे पहुंचे की मुटाई चार अंगुलके प्रमाणकी बनावे कटिका विस्तार अठारह अंगुलका होताहै और देवताओंकी मूर्त्तिकी कटिका विस्तार बत्तीस अंगुलका होताहै और नाभिके मध्यमें बयालीस अंगुलका विस्तार बनावे और पुरुषकी कटिमें पचपन अंगुलकी तागड़ी बनावे और कांखोंसे ऊपर छः अंगुलके कंधे होते हैं, ग्रीवाको आठ अंगुलके विस्तारमें बनावे दोनों भुजाओंकी सुरुपि बया-लीस अंगुलकी बनावे, बाहुकी शिखरको सोलह अंगुलकी बनावे, सात अगुलकी हथेली बनावे और पूर्व्वोक्त प्रकार से एकसे एकहीन भागवाली अंगुली बनावे और सब अंगुलियों के यव एकसे एक हीन भागवाले होतेहैं और अंगूठे के पोरुए मध्यमा अंगुली के पोरुए के समान होते हैं, अंगूठे का अगला पोरुआ दो यव अधिकका बनावे, आधे पोरुएमें नख बनावे नखोंको चिकना और लाल करे आगेसे कुछ थोड़े लालकरे अंगुलियोंकी पीठको डूंघीबनावे किनारों को कुछ ऊंचा बनावे और

ङ्गुलीनान्तु भागोभागेनहीयते। मध्यमामध्यभागन्तु अङ्गुलद्वयमायतम् ६२ यवो यवेनसर्वासान्तस्यास्तस्याःप्रहीयते। अङ्गुष्ठपर्वमध्यन्तु तर्जन्यासदृशंभवेत् ६३ यव द्वयाधिकंतद्वदग्रपर्वउदाहृतम्। पर्वार्धेतुनखान्विद्यादङ्गुलीषुसमन्ततः ६४ स्निग्धं श्लक्ष्णंप्रकुर्वीतईषद्रक्तंतथाग्रतः। निम्नपृष्ठंभवेन्मध्ये पार्श्वतःकलयोच्छ्रितम् ६५ तथै वकेशवल्लीयंस्कन्धोपरिदशाङ्गुला। स्त्रियःकार्यास्तुतन्वङ्ग्यः स्तनोरुजघनाधिकाः ६६ चतुर्दशाङ्गुलायाममुदरंनामनिर्दिशेत्। नानाभरणसम्पन्नाः किञ्चित्श्लक्ष्णभुजास्त तः ६७ किञ्चिद्दीर्घंभवेत्वक्त्रमलकावलिरुत्तमा। नासाग्रीवाललाटञ्च सार्द्धमात्रंत्रिरङ्गु लम् ६८ अध्यर्द्धाङ्गुलविस्तारः शस्यतेऽधरपल्लवः। अधिकंनेत्रयुग्मन्तु चतुर्भागेण निर्दिशेत्। ग्रीवावलिश्चकर्तव्या किञ्चिदर्धाङ्गुलोच्छ्रया ६९ एवंनारीषुसर्वासु देवानां प्रतिमासुच। तवचालमिदंप्रोक्तं लक्षणंपापनाशनम् ७० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्तपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५७॥

(सूत उवाच) अतःपरंप्रवक्ष्यामि देवाकारान्विशेषतः। दशतालःस्मृतोरामो बलि र्वैरोचनिस्तथा १ वराहोनारसिंहश्च सप्ततालस्तुवामनः। मत्स्यकूर्मौचनिर्दिष्टौ यथा शोभंस्वयम्भुवा २ अतःपरंप्रवक्ष्यामि रुद्राद्याकारमुत्तमम्। सपीनोरुभुजस्कन्धस्तप्त काञ्चनसप्रभः ३ शुक्लोऽर्करश्मिसंघातश्चन्द्राङ्कितजटोविभुः। जटामुकुटधारीच द्व्यष्टव र्षाकृतिश्चसः ४ बाहुवारणहस्ताभौ वृत्तजङ्घोरुमण्डलः। ऊर्ध्वकेशश्चकर्तव्यो दीर्घाय तविलोचनः ५ व्याघ्रचर्मपरीधानः कटिसूत्रत्रयान्वितः। हारकेयूरसम्पन्नो भुजङ्गाभरण

देवताओं की स्त्रियोंके पतले और सूक्ष्म अंग बनावे कुचा जंघा और नितम्बों को भारी स्थूलबनावे चौदह अंगुलके विस्तारमें उदरको बनावे इन संपूर्ण मूर्त्तियोंको अनेक प्रकारके आभूषणोंसे युक्तकरे भुजाओं को कुछ पतली बनावे मुख को भी पतला बनावे जुल्फों की रेखा बनावे ओष्ठ आधे २ अंगुलके बनावे दोनों नेत्रोंको ओष्ठोंके चतुर्थांशभाग अधिक बनावे ग्रीवा की वलिको आध अंगुलसे कुछ ऊंचीकरे यह संपूर्ण देवताओं की मूर्तिका लक्षण पापोंका नाश करनेवाला है वह सब तुम्हारे आगे वर्णन करदिया है ५५। ७०॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५७॥

सूतजी बोले—अब विशेष भेदके द्वारा अलग २ देवताओंकी मूर्त्तिके आकारों को कहते हैं राम- चन्द्रजी की मूर्त्तिको दशताल प्रमाणकी बनावे बलिकी मूर्त्तिको भी दशतालही ऊंची बनावे (एक ताल अंगूठे से लेकर मध्यमा अंगुली तकके विस्तारका होताहै) वाराह, नृसिंह और वामन यह सातताल्के होते हैं मत्स्यजी और कूर्म अवतारकी मूर्त्तिको जैसी अच्छलगे वैसीबनाले ११२ अब शिवजी आदिक देवताओंके आकारको कहते हैं कड़ी जांघ भुजा और कन्धोंसे युक्त तप्त सुवर्णकीसी कान्ति श्वेत चन्द्रमा से युक्त जटामुकुट समेत सोलह वर्षकी अवस्था संयुक्त ऐसी मूर्त्ति शिवजीकी बनावे ३।४ और भुजा हाथीकी सूंड़के समान जांघ और पिंडलियों को गोलबनावे ऊपरको खड़े

स्तथा ६ वाहवश्चापिकर्त्तव्या नानाभरणभूषिताः। पीनोरुगण्डफलकः कुण्डलाभ्याम लङ्कृतः ७ आजानुलम्बबाहुश्च सौम्यमूर्त्तिःसुशोभनः। खेटकंवामहस्तेतु शङ्खञ्चैव तुदक्षिणे ८ शक्तिंदण्डंत्रिशूलञ्च दक्षिणेषुनिवेशयेत्। कपालंवामपार्श्वेतु नागंखट्वाङ्गमे वच ९ एकश्चवरदोहस्तस्तथाक्षवलयोऽपरः। वैशाखस्थानकंकृत्वा नृत्याभिनयसंस्थि तः १० नृत्यन्दशभुजःकार्यो गजचर्मधरस्तथा। तथात्रिपुरदाहेच वाहवःषोडशैवतु ११ शङ्खंचक्रंगदाशार्ङ्गं घण्टातत्राधिकाभवेत्। तथाधनुःपिनाकञ्च शरोविष्णुमयस्तथा १२ चतुर्भुजोऽष्टबाहुर्वा ज्ञानयोगेश्वरोमतः। तीक्ष्णनासाग्रदशनः करालवदनोमहान् १३ भैरवःशस्यतेलोके प्रत्यायतनसंस्थितः। नमूलायतनेकार्यो भैरवस्तुभयङ्करः १४ नार सिंहवराहोवा तथान्येऽपिभयङ्कराः। नाधिकाङ्गानहीनाङ्गाः कर्तव्यादेवताःक्वचित् १५ स्वामिनंघातयेत्न्यूना करालवदनातथा। अधिकाशिल्पिनंहन्यात् कृशाचैवार्थनाशिनी १६ कृशोदरीतुदुर्भिक्षं निर्मांसाधननाशिनी। वक्रनासातुदुःखाय संक्षिप्ताङ्गीभयङ्करी १७ चिपिटादुःखशोकाय अनेत्रानेत्रनाशिनी। दुःखदाहीनवक्त्रातु पाणिपादकृशातथा १८ हीनाङ्गाहीनजङ्घाच भ्रमोन्मादकरीनृणाम्। शुष्कवक्त्रातुराजानं कटिहीनाचयाभवेत् १९ पाणिपादविहीनोयो जायतेमारकोमहान्। जङ्घाजानुविहीनाच शत्रुकल्याणका

हुए केशबनावे लम्बे और विस्तृत नेत्रबनावे व्याघ्रचर्म उढ़ावे कटिमें तीन लड़ी के सूतकी तागड़ी बांधे, हार वाजूबन्द और सर्प इत्यादि भूषणों से युक्तकरे और भुजाओंको भी अनेक प्रकारके आभूषणों से भूषित करे कपोल स्थूल बनाकर कुण्डलों की शोभा से विभूषित करे लम्बी भुजावाली सुन्दर सौम्य मूर्त्ति बनाकर वाम हाथ में खेटक शस्त्र, दहिने हाथमें शंख, शक्ति, दण्ड और त्रिशूल धारण करवावे बाईं ओर कपाल, सर्प और खट्वांग स्थापित करे एक हाथ को वर देने के समान बनावे दूसरे हाथ में रुद्राक्ष धारण करे और नृत्य देखने में तत्पर ऐसी मूर्त्ति बनावे ५। १० नृत्य करते हुए शिवजीकी दश भुजा बनावे और हस्ती के चर्मको उढ़ावे और त्रिपुरको दग्ध करतेहुए शिवजी की मूर्त्तिके सोलह भुजबनावे उन भुजाओं में शंख, चक्र, गदा, शार्ङ्ग धनुष, पिनाक धनुष और विष्णुरूपी बाण धारणकरे ११।१२ और जब शिवजी की चतुर्भुजी तथा अष्टभुजी मूर्त्तिबनावे तब ज्ञान योगेश्वर महादेव होते हैं और पैनी नासिका पैने दाँत और महान् विकरालमुख भैरवकी मूर्त्ति बनानी चाहिये और नृसिंह वराह इत्यादिक मूर्त्ति भी भयंकर होती हैं परन्तु देवता की किसी मूर्त्तिको भी अधिक वा न्यून अंगवाली न बनावे १३। १५ हीन अंगवाली तथा विकराल मुखवाली देवताकी मूर्त्ति स्वामी का नाश करती है अधिक अंगवाली मूर्त्ति कारीगर का नाशकरती है कृशमूर्त्ति धनका नाशकरती है कृश उदरवाली दुर्भिक्षकरती है, मांसरहित मूर्त्ति धनकानाशकरती है,टेढ़ी नासिका वाली दुःखकरती है संक्षिप्त अंगवाली भयकरतीहै १६।१७ चिपटे नेत्रोंवाली दुःख और शोक को करती है अंधी मूर्त्ति नेत्रोंका नाशकरती है मुखरहित तथा पंगे हाथ पैरोंवाली मूर्त्ति दुःखकरती है १८ हीन अंगवाली वा हीन जंघावाली भय और उन्माद करती है सूखे मुखवाली मूर्त्ति राजाका

रिणी २० पुत्रमित्रविनाशाय हीनवक्षस्थलातुया । सम्पूर्णावयवायातु आयुर्लक्ष्मीप्रदा सदा २१ एवंलक्षणमासाद्य कर्तव्यःपरमेश्वरः । स्तूयमानःसुरैःसर्वैः समन्तादर्शयेद्भवम् २२शक्रेणनन्दिनाचैव महाकालेनशङ्करम् । प्रणतालोकपालास्तु पार्श्वेतुगणनायकाः२३ नृत्यत्भृङ्गिरिटिश्चैव भूतवेतालसंवृताः । सर्वेहृष्टास्तुकर्तव्यास्तुवन्तःपरमेश्वरम् २४ गन्धर्वविद्याधरकिन्नराणामथाप्सरोगुह्यकनायकानाम् । गणैरनेकैःशतशोमहेन्द्रैर्मुनिप्रवीरैरपिनम्यमानम् २५ धृताक्षसूत्रैःशतशःप्रवालपुष्पोपहारप्रचयन्ददद्भिः । संस्तूयमानंभगवन्तमीड्यं नेत्रत्रयेणामरमर्त्यपूज्यम् २६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टपञ्चाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५८ ॥

(सूत उवाच) अधुनासम्प्रवक्ष्यामि अर्धनारीश्वरंपरम् । अर्धेनदेवदेवस्य नारीरूपंसुशोभनम् १ ईशार्द्धेतुजटाभागोबालेन्दुकलयायुतः । उमार्द्धेचापिदातव्यौ सीमन्ततिलकावुभौ २ वासुकिर्दक्षिणेकर्णेवामेकुंडलमादिशेत् । बालिकाचोपरिष्टात्तुकपालंदक्षिणेकरे । त्रिशूलंवापिकर्तव्यंदेवदेवस्यशूलिनः३ वामतोदर्पणंदद्यादुत्पलंतुविशेषतः४ वामबाहुश्च कर्तव्यः केयूरवलयान्वितः । उपवीतञ्चकर्तव्यंमणिमुक्तामयन्तथा ५ स्तनभारंतथार्धेतुवामेपीनंप्रकल्पयेत् । परार्ध्यमुज्ज्वलंकुर्याच्छ्रोण्यर्धेतुतथैवच ६ लिङ्गार्द्धमूर्ध्वगंकुर्यात्व्याला

नाशकरती है हाथ पैरोंसे रहित मूर्त्ति महामारी करती है पिंडली और घोंटुओं से हीन मूर्त्ति शत्रु को आनन्द करती है १९।२० छातीरहित मूर्त्ति पुत्र और मित्रोंका नाशकरती है और सांगोपांग संपूर्ण अंगोंवाली मूर्त्तिको बनवावे तो आयु और लक्ष्मी देती है ऐसे इन पूर्व्वोक्त लक्षणों से युक्त शिवजी की मूर्त्ति बनानीचाहिये, सबदेवताओं से स्तुति होतेहुए इन्द्र, नन्दिकेश्वर, लोकपाल, और गणेश्वर, इन प्रणतहुओं की मूर्त्ति बराबरमें बनावे और नृत्य करतेहुए भूत वेताल आदिकों की मूर्त्तियोंको भी बनावे इन सबकी मूर्त्ति शिवजी की स्तुतिमें तत्पर और आनन्दमें भरीहुई बनावें और गन्धर्व, विद्याधर, किन्नर, अप्सरा, गुह्यक, अनेक गणेश्वर मुनि सिद्ध इत्यादिकोंसे पूजित और पुष्पों के हार गूंथतेहुए महादेवजी की स्तुति करतेहुए अनेक गणोंसे संयुक्त त्रिनेत्र महादेवजी की मूर्त्ति बनवानी योग्यहै २१।२६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५८ ॥

सूतजीबोले-कि ऋषिलोगो अब मैं अर्धनारीश्वर महादेवजीकी मूर्त्तिका वर्णन करताहूं अर्थात् शिवजी का आधाअंग जो सुन्दर नारीकाहै उसको कहताहूं १ शिवजी के शिरकी आधीजटामें एक कलासे युक्त बालचन्द्रमा बनावे और आधे भागमें पार्वतीजी की मूर्त्तिबनावे यह दोनों शिवजी के मस्तक के तिलकहैं २ दाहिने कानमें वासुकिसर्प बायें में कुंडल धारणकरे दक्षिण हाथमें कपाल और वामहाथमें सीसा वा कमल धारण करावे ३।४ वाम भुजाको बाजूबन्दादि भूषणों से विभूषित करे फिर मणि वा मोतियों के यज्ञोपवीतसे अलंकृतकरे और बायें अंगमें स्थूल कुचा बनाकर आधीकटि में उज्ज्वल तागड़ी धारणकरवावे ५।६ फिर दूसरे आधेअंगमें ऊपरको लिंगका चिह्नकरे दक्षिण

जिनकृतांवरम्।वामेलम्वपरीधानं कटिसूत्रत्रयान्वितम् ७ नानारत्नसमोपेतं दक्षिणेभुज
गान्वितम्। देवस्यदक्षिणंपादं पद्मोपरिसुसंस्थितम् ८ कश्चिदर्धंतथावामं भूषितंनूपुरेणतु। र
त्नैर्विभूषितान्कुर्य्यादङ्गुलीष्वङ्गुलीयकान् ९ सालक्तकंतथापादं पार्वत्यादर्शयेत्सदा।
अर्धनारीश्वरस्येदं रूपमस्मिन्नुदाहृतम् १० उमामहेश्वरस्यापि लक्षणंशृणुतद्विजाः!।
संस्थानन्तुतयोर्वक्ष्ये लीलाललितविभ्रमम् ११ चतुर्भुजंद्विबाहुंवा जटाभारेन्दुभूषणम्।
लोचनत्रयसंयुक्तमुमैकरकन्धपाणिनम् १२ दक्षिणेनोत्पलंशूलं वामेकुचभरेकरम्। द्वी
पिचर्मपरीधानं नानारत्नोपशोभितम् १३ सुप्रतिष्ठंसुवेषञ्च तथार्धेन्दुकृताननम्। वामेतु
संस्थितादेवी तस्योरौबाहुगूहिता १४ शिरोभूषणसंयुक्तैरलकैर्ललिताननां। सवालि
काकर्णवती ललाटतिलकोज्ज्वला १५ मणिकुण्डलसंयुक्ता कर्णिकाभरणाक्वचित्। हारके
यूरबहुला हरवक्त्रावलोकिनी १६ वामांसन्देवदेवस्य स्पृशन्तीलीलयाततः। दक्षिणन्तु
वहिःकृत्वा बाहुंदक्षिणतस्तथा १७ स्कन्धंवादक्षिणेकुक्षौ स्पृशन्त्यङ्गुलजैःक्वचित्।वामे
तुदर्पणंदद्यात् उत्पलंवासुशोभनम् १८ कटिसूत्रत्रयञ्चैव नितम्बेस्यात्प्रलम्बकम्। ज
याचविजयाचैव कार्तिकेयविनायकौ १९ पार्श्वयोर्दर्शयेत्तत्र तोरणेगणगुह्यकान्।
मालाविद्याधरांस्तद्वद्वीणावानप्सरोगणः २० एतद्रूपमुमेशस्य कर्तव्यंभूतिमिच्छता।
शिवनारायणंवक्ष्ये सर्वपापप्रणाशनम् २१ वामार्धेमाधवंविद्यात् दक्षिणेशूलपाणिनम्।

भुजामेंअनेकप्रकारकेरत्न और सर्पोंकेआभूषणवनावे महादेवकेदक्षिणचरणकोकमलकेऊपरस्थितकरे और बायें चरणको नूपुर बिछुए और अंगूठी आदि से विभूषितकरे ७।९ पार्वतीजी के चरणको सदैव मेंहदीसे रंगाहुआ वनावे यह संपूर्ण अर्द्धनारीश्वररूप महादेवजीका कहा है हे द्विजवर्य्यो अ-व पार्वती और महादेवके पृथक्२ रूपको सुनो १०।११ चार भुजावाले वा दो भुजावाले जटाभार और चन्द्रमासे विभूषित तीन नेत्रोंवाले एकहाथको पार्वतीके कन्धेपै स्थितकिये हुये दाहिने हाथमें त्रिशूल और बायें हाथको पार्वतीजी की कुचांपै स्थितकियेहुए गैंडेके चर्मको धारण कियेहुए अनेक रत्नोंसे शोभित आधेचन्द्रमासे विभूषित सुन्दरवस्त्रको ओढ़ेहुए ऐसे शिवजीके स्वरूपको वनावे उस रूपकी बाईं जंघापर पार्वतीको बैठावे शिरके आभूषणोंसे युक्त जुल्फों से शोभित मुखवाली कुंडल और मस्तक की वेंदी आदिसे शोभित हार बाजूवन्दादिकों से विभूषित शिवजी के मुखको देखती हुई १२।१६ और क्रीड़ाकरके शिवजीके बायें कन्धेको स्पर्श करतीहुई अपनी बाईं भुजाको बाहर निकासके शिवजी की दक्षिण कुक्षिको उंगलियों से स्पर्श करती हुई बायें हाथ में दर्पण समे-त सुन्दर कमल को धारण किये हुए कटि में तागड़ी लंबायमान ऐसी मूर्त्ति श्रीपार्वतीजी की बनानी चाहिये और इस मूर्तिके बराबरमें जया, विजया, स्वामिकार्तिक और गणेश इन सबकी मू-र्त्तिको भी बनावे तोरणके ऊपर गुह्यकोंकी मूर्त्ति बनावे फिर मालाको धारण करनेवाले विद्याधर और बीनको धारण करनेवाली अप्सरागणों की मूर्त्ति समीप में बनावे १७।२० ऐश्वर्य्य की इच्छा करनेवाले पुरुषको इस प्रकारके स्वरूप बनाने चाहिये, अब शिवनारायणकी मूर्त्तिको कहते

बाहुद्वयञ्चकृष्णस्य मणिकेयूरभूषितम् २२ शङ्खचक्रधरंशान्तमारक्ताङ्गुलिविभ्रमम्। चक्रस्थानेगदांवापि पाणौदद्याद्गदाभृतः २३ शङ्खञ्चैवेतरेदद्यात् कट्यर्धंभूषणोज्ज्वलम्। पीतवस्त्रपरीधानं चरणंमणिभूषणम् २४ दक्षिणार्धेजटाभारमर्धेन्दुकृतभूषणम्। भुजङ्ग हारवलयं वरदंदक्षिणंकरम् २५ द्वितीयञ्चापिकुर्वीत त्रिशूलवरधारिणम्। व्यालोपवी तसंयुक्तं कट्यर्धंकृत्तिवाससम् २६ मणिरत्नैश्चसंयुक्तं पादंनागविभूषितम्। शिवनारा यणस्यैवं कल्पयेद्रूपमुत्तमम् २७ महावराहंवक्ष्यामि पद्महस्तंगदाधरम्। तीक्ष्णदंष्ट्राग्रघो णास्यं मेदिनीवामकूर्परम् २८ दंष्ट्राग्रेणोद्धृतांदान्तां धरणीमुत्पलान्विताम्। विस्मयोत्फु ल्लवदनामुपरिष्टात्प्रकल्पयेत् २९ दक्षिणंकटिसंस्थन्तु करंतस्याःप्रकल्पयेत्। कूर्मोपरि तथापादमेकंनागेन्द्रमूर्धनि ३० संस्तूयमानंलोकेशैः समन्तात्परिकल्पयेत्। नारसिंह न्तुकर्तव्यं भुजाष्टकसमन्वितम् ३१ रौद्रंसिंहासनंतद्वत् विदारितमुखेक्षणम्। स्तब्धपी नसटाकर्णं दारयन्तन्दितेःसुतम् ३२ विनिर्गतान्त्रजालञ्च दानवंपरिकल्पयेत्। वमन्तं रुधिरंघोरं भ्रुकुटीवदनेक्षणम् ३३ युध्यमानश्चकर्तव्यः क्वचित्करणबन्धनैः। परिश्रान्ते नदैत्येन तर्ज्यमानोमुहुर्मुहुः ३४ दैत्यंप्रदर्शयेत्तत्र खड्गखेटकधारिणम्। स्तूयमानंतथा विष्णुं दर्शयेदमराधिपैः ३५ तथात्रिविक्रमंवक्ष्ये ब्रह्माण्डक्रमलोल्बणम्। पादपार्श्वेत

हैं २१ बाईं ओर के आधे अंगमें नारायणको जाने और दाहिनी ओर शिवजी को जाने—विष्णु भगवान्‌की दोनों भुजाओं में मणि और बाजूबन्द पहरावे शंख चक्र और गदाको धारण करवावे लाल अंगुली बनावे, गदाभृत विष्णुके हाथके चक्रके स्थानमें गदाहीको धारण करवावे, दूसरे हाथमें शंख धारण करवावे, आधी कटिमें उज्ज्वल भूषण पहिरावे पीले वस्त्रकी धोती बाँधे और चरणमें आभूषण पहरावे २२। २४ दाहिनी ओरके आधे अंगको जटाभार और आधे चन्द्रमासे युक्तकरे सर्पोंकेहार पहिरावे दहिने हाथको वरदेनेवालारक्खे दूसरे हाथमें त्रिशूल धारणकरे, सर्पका यज्ञोपवीत और व्याघ्रचर्मको धारणकरावे मणिरत्न और सर्पोंसे विभूषितकरे ऐसे यह एकही मूर्त्ति शिव नारायण अर्थात् शिवजीकीओर श्रीकृष्णकी मिलीहुई बनती है २५। २७ अबवराह अवतारकी मूर्त्तिको कहतेहैं, वराहकी मूर्त्तिके हाथमें पद्म और गदाधारणकरे पैनी डाढ़ और पैनी नासिका बनावे और डाढ़ोंके अग्रभागमें उद्धारकीहुई पृथ्वीकी मूर्त्ति बनावे एक पैरकोतो कछुएके ऊपररक्खे एकको शेषनागके मस्तकपै और इस मूर्त्तिके चारोंओर स्तुतिकरतेहुए लोकपालोंकीमूर्त्ति बनावे और नृसिंहजीकी मूर्त्तिकी आठभुजा बनानी चाहिये ३०। ३१ नृसिंहकी मूर्त्तिके सिंहासनको भयानक बनावे मूर्त्तिके नेत्र फटेहुए बनावे, ग्रीवाके बालोंको प्रफुल्लितकरदे और हिरण्यकशिपु दैत्यकी छाती का फाड़ना आंतनिकालना दैत्यके मुखसे रुधिरका गिरना और नृसिंहजीकी भ्रुकुटीका चढ़ना यहसब आकारभी बनाने चाहिये ३२। ३३ दैत्योंके साथ युद्ध करताहुआ हारेहुए दैत्यसे बारबार ताड़ितहुआ स्वरूप बनानाचाहिये ३४ वहाँ खड्ग और खांड़ा धारणकियेहुए दैत्यकीभी मूर्त्ति बनानीयोग्यहै इस विष्णुकी मूर्त्तिकेसमीपमें स्तुतिकरतेहुए अनेक देवताओंकीमूर्त्तिभी बनादेवे ३५ अब वामनजी

थाबाहुमुपरिष्टात्प्रकल्पयेत् ३६ अधस्ताद्वामनंतद्वत्कल्पयेत्सकमण्डलुम्। दक्षिणेऽत्रत्रि कांदद्यान्मुखंदीनंप्रकल्पयेत् ३७ भृङ्गारधारिणंतद्वल्लिंतस्यचपार्श्वत। बन्धनश्चास्यकुर्वन्तं गरुडन्तस्यदर्शयेत् ३८ मत्स्यरूपंतथामात्स्यं कूर्मंकूर्माकृतिंन्यसेत्। एवंरूपस्तु भगवान् कार्य्योनारायणोहरिः ३९ ब्रह्माकमण्डलुधरः कर्त्तव्यःसचतुर्म्मुखः। हंसारूढःक्वचित्कार्य्यः क्वचिच्चकमलासनः ४० वर्णतःपद्मगर्भाभश्चतुर्बाहुःशुभेक्षणः। कमण्डलुंवामकरे स्रुवंहस्तेतुदक्षिणे ४१ वामेदण्डधरंतद्वत् स्रुवञ्चापिप्रदर्शयेत्। मुनिभिर्देवगन्धर्व्वैः स्तूयमानंसमन्ततः ४२ कुर्वाणमिवलोकांस्त्रीन् शुक्लाम्बरधरंविभुम्। मृगचर्म्मधरञ्चापि दिव्ययज्ञोपवीतिनम् ४३ आज्यस्थालिंन्यसेत्पार्श्वे वेदांश्चचतुरःपुनः। वामपार्श्वेऽस्यसावित्रीं दक्षिणेचसरस्वतीम् ४४ अग्रेचऋषयस्तद्वत्कार्य्याःपैतामहेपदे। कार्तिकेयंप्रवक्ष्यामि तरुणादित्यसप्रभम् ४५ कमलोदरवर्णाभं कुमारंसुकुमारकम्। दण्डकैश्चीरकैर्युक्तं मयूरवरवाहनम् ४६ स्थापयेत्स्वेष्टनगरे भुजान्द्वादशकारयेत्। चतुर्भुजःखर्वटेस्याद्वनेग्रामेद्विबाहुकः ४७ शक्तिःपाशस्तथाखड्गः शरश्शूलंतथैवच। वरदश्चैकहस्तःस्या दथचाभयदोभवेत् ४८ एतेदक्षिणतोज्ञेयाः केयूरकटकोज्ज्वलाः। धनुःपताकामुष्टिश्च तर्जनीतुप्रसारिता ४९ खेटकंताम्रचूडञ्च वामहस्तेतुशस्यते।

की मूर्तिको सुनो ब्रह्मांडको मापनेवाले वामनजीकी मूर्त्तिके चरणपसली औरभुजा इनसबकोऊपर को ऊंचाबनावे इसके नीचे वामनजीकी मूर्त्तिबनावे उसके हाथमें कमंडलु धारणकरे–दाहनेहाथमें छत्री लियेहुए बड़ेदीन मुखवाली मूर्त्ति बनावे ३६।३७ और मूर्त्तिके समीपमें गरुड़की मूर्त्ति बनावे और मत्स्य अवतारकी मूर्त्ति मत्स्यकी बनावे-कूर्म अवतारकी कछुएकी बनावे ऐसे अनेक रूपोंवाले विष्णुभगवान् बनाने चाहियें ३८।३९ ब्रह्माको कमंडलु समेत चारमुखवाला बनावे-कहीं हंसपर चढ़ाहुआ बनावे अथवा कमलासनपर स्थितहुआ बनादेवे ४० लाल वर्ण चतुर्भुज सुन्दरनेत्र युक्त ब्रह्माजीकी मूर्त्ति बनावे उनके बायें हाथ में दंडधारणकरे-दहिने में स्रुवा बनाकर चारों ओर स्तुति करतेहुए मुनि देवता और गन्धर्वोंकी मूर्त्तियांभी बनादेवे-इन ब्रह्माजीको त्रिलोकीको रचते हुए के समान श्वेतवस्त्रधारी मृगचर्म और दिव्य यज्ञोपवीत पहराकर बनावे ४१।४३ इस मूर्त्तिके दाहिनी ओर बराबर में घृतकी स्थाली और चारों वेदोंको स्थापित करदेवे बाईं ओर सावित्रीजी की मूर्त्ति बनावे दाहिनी ओर सरस्वतीको बनावे ब्रह्माजीके आगे चरणों में ऋषियोंकी मूर्त्ति बनावे, स्वामिकार्त्तिककी मूर्त्ति तरुण सूर्य्यके समान कान्तिवाली कमलके समान वर्णयुक्त सुकुमार अवस्थाकी दंड और चीरधारण किये हुए मयूरकी वाहनवाली होतीहै इसी प्रकारकी मूर्त्ति इनकी बनती है ४४।४६ यह मूर्त्ति बारह भुजावाली बनवावे तो अपनी इच्छावाले नगर में रक्खे-चार भुजावाली इनकी मूर्त्ति पर्वतके ग्राममें श्रेष्ठहै-और दोभुजावाली मूर्त्ति वनमें स्थापित करनीचाहिये ४७ इन षट्मुखजीके एक हाथमें-शक्ति-पाश-खड्ग-बाणऔर शूल इनसबकेभी चिह्न बनावे एक हाथ वरदेने वालारक्खे ४८ सब शस्त्र बाजूबन्द और कड़ूले आदि उज्ज्वल भूषण दाहिने हाथ में धारण करने

द्विभुजस्यकरेशक्तिर्वामेस्यात्कुक्कुटोपरि ५० चतुर्भुजेशक्तिपाशौ वामतोदक्षिणेत्वसिः।
वरदोभयदोवापि दक्षिणःस्यात्तुरीयकः ५१ विनायकंप्रवक्ष्यामि गजवक्त्रंत्रिलोचनम्।
लम्बोदरंशूर्पकर्णं व्यालयज्ञोपवीतिनम् ५२ ध्वस्तकर्णंबृहत्तुण्ड मेकदंष्ट्रंपृथूदरम्।
स्वदन्तंदक्षिणकरे उत्पलञ्चापरेतथा ५३ मोदकंपरशुञ्चैव वामतःपरिकल्पयेत्। बृहत्वा
त्क्षिप्तवदनं पीनस्कन्धांघ्रिपाणिकम् ५४ युक्तन्तुऋद्धिबुद्धिभ्यामधस्तान्मूषकान्वितम्।
कात्यायन्याःप्रवक्ष्यामि रूपंदशभुजंतथा ५५ त्रयाणामपिदेवानामनुकारानुकारिणीम्।
जटाजूटसमायुक्ता मर्द्धेन्दुकृतलक्षणाम् ५६ लोचनत्रयसम्पन्नां पद्मेन्दुसदृशाननाम्।
अतसीपुष्पसङ्काशां सुप्रतिष्ठांसुलोचनाम् ५७ नवयौवनसम्पन्नां सर्वाभरणभूषिताम्।
सुचारुदशनान्तद्वत्पीनोन्नतपयोधराम् ५८ त्रिभङ्गस्थानसंस्थानां महिषासुरमर्दिनीम्।
त्रिशूलंदक्षिणेदद्यात्खड्गंचक्रंतथैवच ५९ तीक्ष्णंवाणंतथाशक्तिं वामतोऽपिनिबोधत।
खेटकंपूर्णचापञ्च पाशमङ्कुशमेवच ६० घण्टांवापरशुञ्चापि वामतःसन्निवेशयेत्।
अधस्तान्महिषन्तद्वद्विशिरस्कंप्रदर्शयेत् ६१ शिरश्छेदोद्भवंतद्वद्दानवंखड्गपाणिनम्।
रक्तरक्तीकृताङ्गंच रक्तविस्फारतेक्षणम् ६२ वेष्टितंनागपाशेन भ्रुकुटीभीषणाननम्।
वमद्रुधिरवक्त्रञ्च देव्याःसिंहंप्रदर्शयेत् ६३ देव्यास्तुदक्षिणंपादं समंसिंहोपरि स्थितम्।
किञ्चिदूर्ध्वंतथावाम मङ्गुष्ठंमहिषोपरि ६४ स्तूयमानञ्चतद्रूप ममरैःसन्निवेशयेत्।
इदानींसुरराजस्य रूपंवक्ष्येविशेषतः ६५ सहस्रनयनंदेवं मत्तवारणसंस्थितम्। पृथूरु

चाहिये और खांड़ा वायें हाथमें शुभहै दोहाथोंवाली मूर्त्तिके बायें हाथ में शक्तिधारण करनीचाहिये-चतुर्भुजी मूर्त्तिके बायें हाथ में शक्ति और पाशधारण करे दक्षिण हाथमें खड्ग धारण कराके तुरीनाम बाजेकोभी देवे ४९।५१ अब गणेशजीकी मूर्त्तिको वर्णन करते हैं-हस्तिकामुख त्रिनेत्र लम्बा उदर सूर्पाकार कान यज्ञोपवीत युक्त लंबे दांत भारी उदर समेत दाहिने हाथ में अपने दांतको धारण किये हुए बायें हाथमें कमल मोदक और फरसाधारणकिये कन्धे और हाथ पैरोंसेभारी ऋद्धि सिद्धियोंसे पूर्ण करके मूसेकी सवारी पर गणेशजीकी मूर्त्ति बनावे-अब कात्यायनी देवीके दशभुजी रूप कावर्णन करते हैं ५२।५५ तीनों देवताओंके अनुसार करनेवाली जटाजूटोंसेयुक्तहुए मस्तकमें अर्द्ध चन्द्रधारणकिये हुए ५६ त्रिनेत्र युक्त कमल और चन्द्रमाके समान मुखवाली अलसीके पुष्पके समान कान्तिभरी उत्तम नेत्रोंसे शोभित नवीन यौवनसे युक्त संपूर्ण भूषणोंसे भूषित सुन्दर दांतवाली उन्नत और पृथुकुचा समेत ५७।५८ महिषासुर को मारने वाली चक्र-त्रिशूल तीक्ष्ण वाण और शक्ति इनसबको धारणकिये बायें हाथमें खांड़ा-धनुष-पाश-अंकुश-घंटा और परशा इनसब समेत कात्यायनीकी मूर्त्ति बनावे इस के नीचे दो शिरों वाले महिषासुरको बनावे-शिरकटाहुआ हाथ में खड्गधारणकिये रुधिरसे लिप्त रक्तांगफटे नेत्रोंसे भयानक पाश से बँधा हुआ मुखसे रुधिर गेरताहुआ ऐसा महिषासुर का रूप बनावे और देवीके सिंहकी मूर्त्ति कोभी बनावे देवीके दक्षिण चरणको सिंहके ऊपर करे और बायें पैरके अंगूठेकोकुछेक ऊपरको करके महिषासुरके ऊपर लगावे ऐसी देवी के रूपको

वक्षोवदनं सिंहस्कन्धंमहाभुजम् ६६ किरीटकुण्डलधरं पीवरोरुभुजेक्षणम् । वज्रोत्प
लधरंतद्वन्नानाभरणभूषितम् ६७ पूजितंदेवगन्धर्वैरप्सरोगणसेवितम् । छत्रचामरधा
रिण्यः स्त्रियःपार्श्वेप्रदर्शयेत् ६८ सिंहासनगतञ्चापि गन्धर्वगणसंयुतम् । इन्द्राणींवाम
तश्चास्य कुर्य्यादुत्पलधारिणीम् ६९ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकोनषष्ठ्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २५९ ॥

(सूतउवाच) प्रभाकरस्यप्रतिमामिदानींशृणुतद्विजाः ॥ रथस्थंकारयेद्देवं पद्महस्तं
सुलोचनम् १ सप्ताश्वञ्चैकचक्रञ्च रथंतस्यप्रकल्पयेत् । मुकुटेनविचित्रेण पद्मगर्भस
मप्रभम् २ नानाभरणभूषाभ्यां भुजाभ्यांधृतपुष्करम् । स्कन्धस्थेपुष्करेतेतु लीलयैवधृ
तेसदा ३ चोलकच्छन्नवपुषं क्वचित्चित्रेषुदर्शयेत् । वस्त्रयुग्मसमोपेतं चरणौतेजसावृ
तौ ४ प्रतिहारौचकर्तव्यौपार्श्वयोर्दण्डिपिङ्गलौ । कर्त्तव्यौखड्गहस्तौतौ पार्श्वयोःपुरुषा
वुभौ ५ लेखनीकृतहस्तञ्चपार्श्वेधातारमव्ययम् । नानादेवगणैर्युक्तमेवंकुर्य्याद्दिवाकर
म् ६ अरुणःसारथिश्चास्यपद्मिनीपत्रसन्निभः । अश्वौसुवलयग्रीवावन्तस्थौतस्यपार्श्व
योः ७ भुजङ्गरज्जुभिर्बद्धाःसप्ताश्वारश्मिसंयुताः । पद्मस्थंवाहनस्थंवा पद्महस्तंप्रकल्पये
त् ८ वह्नेस्तुलक्षणंवक्ष्येसर्वकामफलप्रदम् । दीप्तंसुवर्णवपुषमर्धचन्द्रासनेस्थितम् ९

देवताओं से स्तूयमान स्थापित करे—अब इन्द्र के रूपका वर्णन करते हैं ५९। ६५ हज़ार नेत्र युक्त मदोन्मत्त हाथीपर आरूढ़ भारी जंघा छाती और मुखवाला सिंह के समान कन्धे महाभुजों से युक्त मुकुट कुण्डल धारण किये हुए सुन्दर नेत्र वज्रधारी अनेक भूषणों से भूषित देवता और गन्धर्वों से पूजित अप्सरागणों से सेवित छत्र चामरादि डुलानेवाली उत्तम स्त्रियों से युक्त गन्धर्वगणों समेत सिंहासनपर विराजमान बाईं ओर कमलधारिणी इन्द्राणी को साथ लिये हुए इन्द्रका स्वरूप बनाना चाहिये ६६ । ६९ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २५९ ॥

सूतजी कहतेहैं हे द्विजो अब सूर्य्यकी मूर्त्तिको सुनो-सूर्य्य देवताको रथ में बैठाकर उनके हाथ में पद्म धारणकरे और सुन्दर नेत्र बनावे १ सात अश्वोंवाला एक चक्रयुक्त ऐसा सूर्य्यकारथ बनानाचाहिये और विचित्र लालकान्तियुक्त सूर्य्यको मुकुट धारण करवावे २ अनेक प्रकारके भूषणों से युक्त भुजामें कमल धारण करे और कन्धोंपरभी कमल धारण करवावे शरीरके किसी अंगको रक्त वस्त्रसे और किसीको विचित्ररंगवाले वस्त्रोंसे आच्छादनकरे दोनों चरणोंको लालकान्तिका बनावे ३।४ दोनों कमर और हाथ में खड्ग धारण किये हुए दोपुरुषोंको बनावे ५ एक बराबर बैठाकमल हाथमें लिये ब्रह्माजीकी मूर्त्ति बनावे ऐसे अनेक देवतागणों से युक्त हुए सूर्य्यको बनावे सूर्य्यका सारथी कमलिनीके पत्तोंके समान कान्तिवाला अरुण नामहै- सुवलय और ग्रीव यहदोनों अश्व उसके बराबर में स्थितरहतेहैं यह सब आकार बनावे और पूर्वोक्त सात अश्वोंको सर्पोंकी रस्सीसे बांधे इस प्रकारसे सूर्य्यकी मूर्त्तिको वाहनके ऊपर बनावे अथवा पद्मासन केही ऊपर बनादेवे ६।८

बालार्कसदृशंतस्यवदनञ्चापिदर्शयेत्। यज्ञोपवीतिनंदेवं लम्बकूर्चधरंतथा १० कमण्ड
लुंवामकरे दक्षिणेत्वक्षसूत्रकम्। ज्वालावितानसंयुक्तमजवाहनमुज्ज्वलम् ११ कुण्डस्थं
वापिकुर्वीत मूर्ध्निसप्तशिखान्वितम्। तथायमंप्रवक्ष्यामि दण्डपाशधरंविभुम् १२ महा
महिषमारूढं कृष्णाञ्जनचयोपमम्। सिंहासनगतञ्चापि दीप्ताग्निसमलोचनम् १३
महिषश्चित्रगुप्तश्चकरालाःकिङ्करास्तथा। समन्ताद्दर्शयेत्तस्य सौम्यासौम्यान्सुरासुरा
न् १४ राक्षसेन्द्रंतथावक्ष्ये लोकपालञ्चनैर्ऋतम्। नरारूढंमहामायं रक्षोभिर्बहुभिर्वृत
म् १५ खड्गहस्तंमहानीलं कज्जलाचलसन्निभम्। नरयुक्तविमानस्थं पीताभरणभूषि
तम् १६ वरुणञ्चप्रवक्ष्यामि पाशहस्तंमहाबलम्। शङ्खस्फटिकवर्णाभं सितहाराम्बरा
वृतम् १७ झषासनगतंशान्तं किरीटाङ्गदधारिणम्। वायुरूपंप्रवक्ष्यामि धूम्रन्तुमृगवा
हनम् १८ चित्राम्बरधरंशान्तं युवानंकुञ्चितभ्रुवम्। मृगाधिरूढंवरदं पताकाध्वजसंयु
तम्१९कुवेरञ्चप्रवक्ष्यामि कुण्डलाभ्यामलङ्कृतम्। महोदरंमहाकायं निध्यष्टकसमन्वि
तम् २० गुह्यकैर्बहुभिर्युक्तं धनव्ययकरैस्तथा। हारकेयूररचितं सिताम्बरधरंसदा २१
गदाधरञ्चकर्तव्यं वरदंमुकुटान्वितम्। नरयुक्तविमानस्थं एवंरीत्याचकारयेत् २२ तथै

अबसब कामनाओं के देनेवाले अग्निके लक्षणको कहते हैं-देदीप्त सुवर्णकी सी कान्तिवाला अर्द्ध-
चन्द्रासनपर बैठाहुआ उदयके सूर्य्यके समान मुखवाला यज्ञोपवीत धारण किये लम्बे मस्तकयुक्त
ऐसा अग्निकास्वरूप बनावे इसके बायें हाथमें कमंडलु और दक्षिण हाथ में अक्षोंकी माला धारण
करे ज्वालाकी तोरण और बकरेका वाहन बनाकर सातों शिखाओंको रथके कुंडल पहिरावे ऐसी
अग्निकी मूर्त्ति होती है-अब धर्मराजकी मूर्त्तिको सुनो—दंड और फांसीको धारण कियेहुए काले अं-
जनके समान रूपयुक्त बड़ेभारी भैंसे परचढ़ाहुआ अथवा सिंहासनपर बैठाहुआ ज्वलित अग्निके
समान नेत्रधारी ऐसे धर्मराजको बनावे इसके चारोंओर चित्रगुप्त-विकरालदूत-सौम्य और क्रूर
देवता इन सबकीभी मूर्त्ति बनादेवे ९।१४ अब राक्षसोंके स्वामी नैर्ऋत लोकपालकी मूर्त्तिको सुनो
मनुष्यकी सवारीपरबैठा महामायावी बहुतसे राक्षसोंसेयुक्त हाथमें खड्गलिये बड़े नीलकज्जलके
पर्व्वतके समान कान्तिवाला मनुष्यों से युक्तहुए विमान में बैठाहुआ पीले आभूषणों से विभूषित
ऐसारूप नैर्ऋत राक्षसका बनानाचाहिये-अब वरुणकी मूर्त्तिको सुनो हाथमें फांसी को धारणकिये
हुए महाबली शंखकेसमान श्वेतवर्ण श्वेतहार और वस्त्रोंसे युक्त मत्स्यकी सवारीपर आरूढ़ शान्त
होकर मुकुट बाजूबन्द धारणकिये ऐसावरुणका स्वरूप बनताहै-अब वायुकेरूपको कहते हैं-धूम्रवर्ण
मृगकीसवारी-विचित्रवस्त्रधारी तरुणअवस्थावाला पताका और ध्वजासे विभूषित वायुकीमूर्त्तिबना-
नीचाहिये अब कुवेरकीमूर्त्तिको कहतेहैं कुंडलोंसे विभूषित महाशरीर और उदरसेयुक्त आठखज़ानों
में आढ्य धनके खर्चनेवाले बहुत से गुह्यकों के साथ हार बाजूबन्द आदिक भूषणोंसे अलंकृत श्वेत
वस्त्रधारी गदा धारणकिये मुकुट पहिरेहुए मनुष्यों से युक्त विमानपर बैठाहुआ ऐसा कुवेरका स्व-
रूप बनानाचाहिये १५।२२ इसी प्रकारकी महादेवकी भी मूर्त्तिको कहताहूं श्वेतनेत्र त्रिशूलधारी

वेशंप्रवक्ष्यामि धवलंधवलेक्षणम्। त्रिशूलपाणिनंदेवं त्र्यक्षंवृषगतंप्रभुम् २३ मातृणां
लक्षणंवक्ष्ये यथावदनुपूर्वशः। ब्रह्माणीब्रह्मसदृशी चतुर्वक्त्राचतुर्भुजा २४ हंसाधिरूढा
कर्तव्या साक्षसूत्रकमण्डलुः। महेश्वरस्यरूपेण तथामाहेश्वरीमता २५ जटामुकुटसंयु
क्ता वृषस्थाचन्द्रशेखरा। कपालशूलखट्वाङ्गवरदाढ्याचतुर्भुजा २६ कुमाररूपाकौमा
री मयूरवरवाहना। रक्तवस्त्रधरातद्वच्छूलशक्तिधरामता २७ हारकेयूरसम्पन्ना कृकवा
कुधरातथा। वैष्णवीविष्णुसदृशा गरुडेसमुपस्थिता २८ चतुर्बाहुश्चवरदा शङ्खचक्र
गदाधरा। सिंहासनगतावापि बालकेनसमन्विता २९ वाराहीञ्चप्रवक्ष्यामि महिषोपरि
संस्थिताम्। वराहसदृशींदेवी शिरश्चामरधारिणी ३० गदाचक्रधरातद्वद्दानवेन्द्रविना
शिनी। इन्द्राणीमिन्द्रसदृशीं वज्रशूलगदाधराम् ३१ गजासनगतांदेवीं लोचनैर्बहुभि
र्वृताम्। तप्तकाञ्चनवर्णाभां दिव्याभरणभूषिताम् ३२ तीक्ष्णखड्गधरांतद्वद्वक्ष्येयोगे
श्वरीमिमाम्। दीर्घजिह्वामूर्ध्वकेशीमस्थिखण्डैश्चमण्डिताम् ३३ दंष्ट्राकरालवदनां कु
र्याच्चैवकृशोदरीम्। कपालमालिनींदेवीं मुण्डमालाविभूषिताम् ३४ कपालंवामहस्तेतु
मांसशोणितपूरितम्। मस्तिष्काक्तञ्चबिभ्राणां शक्तिकांदक्षिणेकरे ३५ गृध्रस्थावायस
स्थावा निर्मांसाविनतोदरी। करालवदनातद्वत्कर्तव्यासात्रिलोचना ३६ चामुण्डाबद्धघ

तीनों नेत्रोंको धारण किये और बैलपरचढ़ेहुए ऐसी मूर्त्ति सबके प्रभु महादेवजी की बनावे २३ अब
क्रमसे यथावत्षोडश मातृयोंका लक्षण कहताहूं चार मुख और भुजावाली २४ हंसका वाहन अक्ष
सूत्र और कमंडलु इन्होंसे युक्त ऐसी ब्रह्माजी के समान ब्रह्माणी की मूर्त्ति बनावे इसी प्रकार महे-
श्वर रूपके समान माहेश्वरी वर्णनकीहै २५ वह जटाजूटसे युक्त बैलकीसवारी मस्तक चन्द्रमासे
भूषित और कपाल शूल खट्वांगसे युक्त वरदाता चारभुजावाली माहेश्वरी की मूर्त्ति बनावे २६ और
मयूरकी सवारी रक्त वस्त्रसे आच्छादित शूल शक्ति धारणकिये २७हार बाजूबन्दादिसे भूषित मुर्गको
हाथमें लिये कुमारकेही समान कुमारी की मूर्त्ति बनावे और विष्णुके समान गरुडपर स्थित २८
वरदेनेवाली चारों भुजाओं में शंख चक्र गदादि धारणकिये सिंहासनपर विराजमान बालक करके
युक्त वैष्णवीकी मूर्त्ति बनावे २९ अब महिषके ऊपर स्थित वाराही देवी को कहते हैं वराहजी के स-
मान शिरपर चमर धारणकिये ३० गदा चक्रको धरेहुए दानवेन्द्रों की नष्टकरनेवाली वाराही देवीकी
मूर्त्ति बनावे और वज्र गदा धारणकिये ३१ हाथीपर सवार बहुत नेत्रयुक्त सुवर्णकीसी कान्तिवाली
दिव्य आभूषणों समेत तीक्ष्ण खड्गको धारणकिये इन्द्रकेही समान इन्द्राणी देवीकी मूर्त्तिबनावे ३२
अब योगेश्वरीकी मूर्त्तिको कहते हैं बड़ी जिह्वावाली खड़ेकेशोंसे युक्त अस्थिके टुकड़ोंसे भूषित ३३
दंष्ट्राओं से भयंकर मुखवाली सूक्ष्म कटि समेत कपालोंकी माला धारे मुंडमालाओं से भूषित ३४
मांसरुधिरसे पूरित वाम हस्तमें कपाल लिये मस्तिष्क अर्थात् शिरसे उत्पन्नहुए घृततुल्यपदार्थसे भी-
गीहुई दक्षिण हाथमें सीपकोलिये ३५ गिद्ध वा काककी सवारी मांसरहित सूखे उदर वाली भयंकर
मुख समेत योगेश्वरीजी की मूर्त्ति बनावे ३६ इसी प्रकार तीन नेत्रोंवाली घंटाधारण किये सुन्दर

एटावा द्वीपिचर्मधराशुभा। दिग्वासाःकालिकातद्वद्रासभस्थाकपालिनी ३७ सुरक्तपुष्पा
भरणा वर्धनीध्वजसंयुता। विनायकञ्चकुर्वीत मातॄणामन्तिकेसदा ३८ वीरेश्वरश्चभ
गवान् वृषारूढोजटाधरः। वीणाहस्तस्त्रिशूलीच मातॄणामग्रतोभवेत् ३९ श्रियंदेवींप्रव
क्ष्यामि नवेवयसिसंस्थिताम्। सुयौवनांपीनगण्डां रक्तोष्ठींकुञ्चितभ्रुवम् ४० पीनोन्नत
स्तनतटां मणिकुण्डलधारिणीम्। सुमण्डलंमुखंतस्याः शिरःसीमन्तभूषणम् ४१ पद्म
स्वस्तिकशंखैर्वा भूषितांकुण्डलालकैः। कञ्चुकाबद्धगात्रौच हारभूषौपयोधरौ ४२ नाग
हस्तोपमौबाहू केयूरकटकोज्ज्वलौ। पद्मंहस्तेप्रदातव्यं श्रीफलंदक्षिणेभुजे ४३ मेखला
भरणांतद्वत्तप्तकाञ्चनसप्रभाम्। नानाभरणसम्पन्नां शोभनाम्बरधारिणीम् ४४ पार्श्वेत
स्याःस्त्रियःकार्य्याश्चामरव्यग्रपाणयः। पद्मासनोपविष्टातु पद्मसिंहासनस्थिता ४५ करि
भ्यांस्नाप्यमानासौ भृङ्गाराभ्यामनेकशः। प्रक्षालयन्तौकरिणौ भृङ्गाराभ्यांतथापरौ ४६
स्तूयमानाचलोकेशैस्तथागन्धर्वगुह्यकैः। तथैवयक्षिणीकार्या सिद्धासुरनिषेविता ४७पा
र्श्वयोःकलशौतस्यास्तोरणेदेवदानवाः। नागाश्चैवतुकर्तव्याः खड्गखेटकधारिणः ४८
अधस्तात्प्रकृतिस्तेषां नाभेरूर्ध्वन्तुपौरुषी। फणाश्चमूर्ध्निकर्तव्या द्विजिह्वाबहवःसमाः
४९ पिशाचाराक्षसाश्चैव भूतवेतालजातयः। निर्मांसाश्चैवतेसर्वे रौद्राविकृतरूपिणः ५०
क्षेत्रपालश्चकर्तव्यो जटिलोविकृताननः। दिग्वासाजटिलस्तद्वच्छ्वागोमायुनिषेवितः ५१

हस्ति चर्मधारिणी श्रीचामुंडाजीकी मूर्त्ति बनावे-और दिगंबर गर्दभपरसवार कपाल धारणकिये ३७
रक्तपुष्पोंके आभूषणोंवाली वर्धनीध्वजा से युक्त कालिका जीकी मूर्त्ति बनावे-और महामातृकाओं के
समीप गणेशजीकी मूर्त्ति बनावे ३८ वृषभकी सवारी जटाधारी वीणा हाथमें त्रिशूलधारण किये
ऐसी वीरेश्वर भगवान्की मूर्त्ति मातृकाओं के आगेके भागमें स्थापनकरे ३९ अब श्रीदेवीकी मूर्त्तिको
कहतेहैं-नवीन अवस्था और यौवनयुक्त स्थूलकपोल रक्त ओष्ठ और टेढ़ीभ्रुकुटियों वाली ४० स्थूल
उन्नत कुचयुक्त मणि कुंडल समेत सुन्दर गोलमुखवाली शिरमें सीमन्त भूषण धारण कर-
ने वाली ४१ पद्म स्वस्तिक शंख कुंडल और अलकोंसे भूषित कंचुकसे बंधहारोंसे भूषित कुचोंको
धारण किये ४२ बाजूबन्द कटकोंसे भूषित हाथीकी सूंडके समान भुजाओंको धारणकिये वामहाथमें
कमल दक्षिणमें नारियललिये ४३ क्षुद्रघंटिका धारणकिये तप्त सुवर्णकीसी कान्तिवाली नाना आभ-
रणयुक्त शोभनवस्त्रोंको धारण करनेवाली ४४ उस श्रीदेवीके ओरपासचामर हाथमें लिये स्त्रियोंकी
मूर्त्ति और कमलके आसन और सिंहासनपर स्थित भृंगोंसे युक्त हस्तियोंसे स्नानकराईहुई ४५।४६
गन्धर्व-गुह्यक और लोकेशोंकरके स्तूयमान ऐसी श्रीबनावे-और इसीप्रकार सिद्ध सुरेशोंसे से-
वित यक्षिणीकी मूर्त्ति बनावे ४७ उसके ओर पास कलश स्थापनकरे और खड्ग खेटकधारणकिये
देव दानव और नाग बनावे ४८ नाभिके नीचेतो सर्पोंकी और नाभिसे ऊपर पुरुषकी मूर्त्ति बनावे
और मस्तकके ऊपर दो जीभोंवाले फण बनावे ४९ और पिशाच-राक्षस-वेताल और भूतजाति यह
सब मांससेरहित महाभयंकर और विकृत रूपके बनावे ५० अबक्षेत्रपालकी मूर्त्तिको कहतेहैं-जटा-

कपालंवामहस्तेतु शिरःकेशैःसमावृतम्। दक्षिणेशक्तिकांदद्यादसुरक्षयकारिणीम् ५२
अथातःसम्प्रवक्ष्यामि द्विभुजंकुसुमायुधम्। पार्श्वेचाश्वमुखंतस्य मकरध्वजसंयुत
म् ५३ दक्षिणेपुष्पबाणञ्च वामेपुष्पमयंधनुः। प्रीतिःस्याद्दक्षिणेतस्य भोजनोपस्करा
न्विता ५४ रतिश्चवामपार्श्वेतु शयनंसारसान्वितम्। पटश्चपटहश्चैव खरःकामातुर
स्तथा ५५ पार्श्वतोजलवापीच वनंनन्दनमेवच। सुशोभनश्चकर्तव्यो भगवान्कुसुमा
युधः ५६ संस्थानमीषद्वक्त्रंस्याद्विस्मयस्मितवक्त्रकम्। एतदुद्देशतःप्रोक्तं प्रतिमालक्षणं
मया। विस्तरेणनशक्नोति बृहस्पतिरपिद्विजाः! ५७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणे षष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६०॥

(सूत उवाच) पीठिकालक्षणंवक्ष्ये यथावदनुपूर्वशः। पीठोच्छ्रायंयथावच्च भागान्
षोड़शकारयेत् १ भूमावेकःप्रविष्टःस्याच्चतुर्भिर्जगतीमता। वृत्तोभागस्तथैकः स्याद्वृतः
पटलभागतः २ भागैस्त्रिभिस्तथाकण्ठः कण्ठपट्टास्त्रिभागतः। भागाभ्यामूर्ध्वपट्टश्च शे
षभागेनपट्टिका ३ प्रविष्टंभागमेकैकं जगतीयावदेवतु। निर्गमस्तुपुनस्तस्य यावद्वैशेष
पट्टिका ४ वारिनिर्गमनार्थन्तु तत्रकार्य्यःप्रणालकः। पीठिकानान्तुसर्वासा मेतत्सामान्य
लक्षणम् ५ विशेषान्देवताभेदान् शृणुध्वंद्विजसत्तमाः!। स्थण्डिलावाथवापीवा यक्षी

युक्त विकृतरूप दिगम्बरवेष कुत्ते और शृगालोंसे सेवित ५१ वामहाथमें शिरकेबालोंसे ढकाहुआ कपाल और दक्षिण हाथमें असुरोंकी नाशकरने वाली शक्ति ऐसी क्षेत्रपालकी मूर्त्ति बनावे ५२ इसके अनन्तर दोभुजवाला कामदेव बनावे और उसके ओरपास मकरध्वजसे युक्त घोड़े का मुख स्थापनकरे ५३ उसकामदेवके दक्षिणहाथमें पुष्पोंकाबाण बायें हाथमें पुष्पमयीधनुष दाहिनेभागमें भोजनकी सबसामग्रियोंसहित प्रीतिको विराजमानकर वामभागमें सारसलिये शयनसंयुक्त रतिकी मूर्त्तिबनावे और वस्त्र पट पटह बाजे अर्थात् ढोलका आकार और कामातुरहुए गधेकी भी सूरत बनावे५४।५५ओर पासमें जलकी बावडी समेत नन्दनवन बनावे ऐसेमहासुन्दर भगवान् कुसुमायुध नाम कामदेवकी मूर्त्तिकोबनावे५६सूतजीबोले कि हे ऋषीश्वरो यह प्रतिमालक्षण मैंने उद्देश करकेही कहाहै क्योंकि इसप्रतिमा लक्षणके विस्तार पूर्व्वक कहनेको बृहस्पतिजीभी समर्थ नहीं हैं ५७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषष्ठ्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६०॥

सूतजी कहतेहैं कि हेऋषीश्वरलोगो अब यथावत् आनुपूर्व्वी पीठिका अर्थात् जलहरी आदिमूर्त्ति स्थापनकी जगहका लक्षण कहताहूं पीठकी उंचाई के यथावत् सोलह भागकरे १ एकभागतो पृथ्वीमें प्रवेशकरे-चारभागकी पृथ्वीमाने फिरगोलाकार एकभाग पटलभागसे ढके२ फिर तीनभागों करकेकंठ और तीनही भागोंसे कंठपट्ट बनावे-दोभागोंकरके ऊर्ध्वपटबनावे और शेषसंपूर्ण भागोंकी पट्टिकाबनावे ३फिर प्रविष्टहुए एकभागसे ऊपर जो जगती अर्थात् पृथ्वीकाभागहै वहांसे लेकर शेषपट्टिकातक निर्गम अर्थात् निकलनेका मार्ग बनावे ४ और जलके निकलनेकी भी नालीबनावे संपूर्ण पीठिकाओंका यह

वेदीचमण्डला ६ पूर्णचन्द्राचवज्राच पद्मावार्धशशिस्तथा। त्रिकोणादशमीतासां सं स्थानंवानिबोधत ७ स्थण्डिलाचतुरस्त्रातु वर्जितामेखलादिभिः। वापीद्विमेखलाज्ञेया यक्षीचैवत्रिमेखला ८ चतुरस्त्रायतावेदी न तांलिङ्गेषुयोजयेत्। मण्डलावर्तुलायातु मेख लाभिर्गणप्रिया ९ रक्ताद्विमेखलामध्ये पूर्णचन्द्रातुसाभवेत्। मेखलात्रयसंयुक्ता षड़ स्त्रावज्रिकाभवेत् १० षोड़शास्त्राभवेत्पद्मा किञ्चिद्ध्रस्वातुमूलतः। तथैवधनुषाकारासा र्द्धचन्द्राप्रशस्यते ११ त्रिशूलसदृशीतद्वत् त्रिकोणाध्यूर्द्धतोमता। प्रागुदक्प्रवणातद्वत् प्रशस्तालक्षणान्विता १२ परिवेषंत्रिभागेन निर्गमंतत्रकारयेत्। विस्तारंतत्प्रमाणञ्च मूलेचाग्रेततोर्ध्वतः १३ जलमार्गश्चकर्तव्यस्त्रिभागेनसुशोभनः। लिङ्गस्यार्द्धविभागेन स्थौल्येनसमधिष्ठिता १४ मेखलातत्त्रिभागेन खातञ्चैवप्रमाणतः। अथवापादहीनन्तु शोभनंकारयेत्सदा १५ उत्तरस्थंप्रणालञ्च प्रमाणादधिकारयेत्। स्थण्डिलायामथारोग्यं धनंधान्यञ्चपुष्कलम् १६ गोप्रदाचभवेद्यक्षी वेदीसंपत्प्रदाभवेत्। मण्डलायांभवेत्की र्तिर्वरदापूर्णचन्द्रिका १७ आयुःप्रदाभवेद्वज्रा पद्मासौभाग्यदाभवेत्। पुत्रप्रदार्धचन्द्रा स्यात् त्रिकोणाशत्रुनाशिनी १८ देवस्ययजनार्थन्तु पीठिकादशकीर्तिताः। शैलेशैलम यींदद्यात् पार्थिवेपार्थिवींतथा १९ दारुजेदारुजांकुर्यात् मिश्रेमिश्रांतथैवच। नान्ययो

सामान्य लक्षणहै ५ सूतजीने कहा हे द्विजसत्तमलोगो अब इनका देवता और विशेष भेदोंको सुनो-एक स्थंडिलोवदी होती है-दूसरी वापी-तीसरी यक्षी-चौथी मंडला ६ पांचवीं पूर्णचन्द्रा-छठी वज्रा-सातवीं पद्मा-आठवीं अर्धशशि नवीं त्रिकोणा और दशवीं पंचकोणा होती है-अब इन सबकी संस्थासुनो ७ मेखलावर्जित चतुष्कोणवाली को स्थंडिलाकहते हैं-दो मेखलाकीवेदी को वापी कहते हैं-तीन मे-खलावाली को यक्षी कहते हैं-चतुष्कोण वेदीको लिंगोंमें योजन नहीं करे-मेखलाओं करके युक्त मं-डला और वर्त्तुलावेदी, गणोंको प्यारी होती है ८।९ जिसके बीचमें दो मेखलाहोवें उसको पूर्णचन्द्रा कहते हैं और तीन मेखलाओंसे युक्त छः कोणकी वेदीकों वज्रिका कहते हैं १० सोलहकोणकी वेदी को पद्मा कहते हैं वह नीचेसे कुछ २ न्यूनहोती है ऐसीही धनुषाकार सार्द्ध चन्द्रा कहाती है ११ और ऊपरसे त्रिशूलके सदृश त्रिकोणा कही है जो वेदी पूर्वोत्तरमें नीचीहो वह सुलक्षण युक्त श्रेष्ठ व-र्णनकी है १२ तीन भागोंकरके परिधि बनावे वहीं निर्गम बनावे और मूलमें वा ऊर्ध्व भागमें बराबर प्रमाणकरे तीन भागकरके श्रेष्ठ जल मार्ग बनावे और लिंगके अर्ध भागकरके स्थूलता बनावे१३।१४ उसके तीन भागकरके मेखला बनावे और खोदना प्रमाणलेकरे अथवा पादहीन शोभन खातकरे १५ और उत्तरमें प्रणालिका प्रमाण से अधिक बनावे-स्थंडिलावेदी आरोग्य युक्त पुष्कलधन धान्य की देनेवाली है १६ यक्षी वेदी गौओं समेत अनेक संपत्तियोंकी देनेवाली है-मंडला वेदीकीर्त्तिको ब-ढ़ातीहै और पूर्ण चन्द्रिकावेदी वरोंकी देनेवाली है १७ वज्रावेदी आयुको बढ़ाती है पद्मा वेदी सौ-भाग्यकी देनेवाली है-अर्द्धचन्द्रा वेदी पुत्रकी देनेवाली है और त्रिकोणा वेदी शत्रुकानाश करती है १८ ऐसे देव पूजनके निमित्त दशप्रकारकी वेदी कही हैं-पत्थरके ऊपर पत्थरकी वेदीकरे-मृत्तिकामें,

निस्तुकर्त्तव्या सदाशुभफलेप्सुभिः २० अर्च्चायामासमन्दैर्घ्यं लिङ्गायामसमन्तथा। यस्यदेवस्ययापत्नी तांपीठेपरिकल्पयेत्। एतत्सर्वंसमाख्यातं समासात्पीठलक्षणम् २१

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६१॥

(सूत उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि लिङ्गलक्षणमुत्तमम्। सुस्निग्धञ्चसुवर्णञ्च लिङ्गंकुर्याद्विचक्षणः १ प्रासादस्यप्रमाणेन लिङ्गमानंविधीयते। लिङ्गमानेनवाविद्यात् प्रासादंशुभलक्षणम् २ चतुरस्रेसमेगर्त्ते ब्रह्मसूत्रंनिपातयेत्। वामेनब्रह्मसूत्रस्य अर्च्चावा लिङ्गमेवच ३ प्रागुत्तरेणलीलन्तु दक्षिणापरयाश्रितम्। पुरस्यापरदिग्भागे पूर्वद्वारंप्रकल्पयेत् ४ पूर्वेणचापरंद्वारं माहेन्द्रंदक्षिणोत्तरम्। द्वारंविभज्यपूर्वन्तु एकविंशतिभागिकम् ५ ततोमध्यगतंज्ञात्वा ब्रह्मसूत्रंप्रकल्पयेत्। तस्यार्द्धन्तुत्रिधाकृत्वा भागञ्चोत्तरतस्त्यजेत् ६ एवंदक्षिणतस्त्यक्त्वा ब्रह्मस्थानंप्रकल्पयेत्। भागार्द्धेनतुयल्लिङ्गं कार्यन्तद्दिहश्यते ७ पञ्चभागविभक्तेवा त्रिभागेज्येष्ठमुच्यते। भाजितेनवधागर्भे मध्यसंपाञ्चभागिकम् ८ एकस्मिन्नेवनवधा गर्भे लिङ्गानिकारयेत्। समसूत्रंविभज्याथ नवधागर्भभाजितम् ९ ज्येष्ठमर्द्धकनीयोऽर्धं तथामध्यममध्यमम्। एवंगर्भःसमाख्यातस्त्रिभिर्भागैर्विभाजयेत् १० ज्येष्ठन्तुत्रिविधंज्ञेयं मध्यमन्त्रिविधन्तथा। कन्यसंत्रिविधंतद्वत् लिङ्गभेदानवै

मृत्तिकाकी १९ और काष्ठदेशमें काष्ठकी वेदीकरे मिश्रितदेशमें मिलीहुई वस्तुकीकरे इनके सिवाय शुभफलकी इच्छाकरनेवाला पुरुष अन्यवस्तुकी नहीं करे २० मूर्त्तिके चारोंओर बड़ा चौतराकरे और जिस देवताकी जो शक्तिरूप देवीस्त्रीहोय उसको पीठमें कल्पनाकरे-यह सामान्यरीतिसे संपूर्ण पीठ लक्षण कहा है २१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६१॥

सूतजीबोले हे ऋषीश्वरहो अब मैं उत्तम लिंगका लक्षण कहताहूं बुद्धिमान् पुरुष सुवर्णका स्निग्धलिंग बनावे १ प्रासाद अर्थात् स्थानके प्रमाणसे लिंगका प्रमाण कहा है अथवा लिंगके प्रमाण स्थानका शुभ लक्षणजानो २ बराबर चौकोने गर्त्तपर ब्रह्म सूत्रगेरै-ब्रह्म सूत्रकी बाईं ओर मूर्त्ति अथवा लिंग स्थापनकरे ३ पुरकी दिशाके पूर्वोत्तरके भागमें पूर्व द्वारकल्पनाकरे ४ और दक्षिणोत्तर भागमें माहेन्द्र द्वार बनावे इक्कीसवें भागको द्वार बनाकर प्रासाद बनावे ५ उसके बीचका भागजानकर ब्रह्म सूत्र कल्पनाकरे उससे अर्द्धभागको तीन भागकरके उत्तर भागको त्यागदेवे ६ इसीप्रकार दक्षिण भागको त्यागकर ब्रह्मस्थान कल्पनाकरे और अर्द्धभागमें लिंग स्थापनकरे यह कार्य्य श्रेष्ठ कहाहै ७ देव मन्दिर के भीतरके स्थानके पांचभाग करके एक भागमें तीन प्रकार का ज्येष्ठ अर्थात् बड़ा लिंग स्थापन करनाचाहिये और मन्दिरके भीतरकी जगहमें नौ ९ भाग कल्पित करके मध्यके पांचभागोंमें नौ ९ प्रकारके लिंग स्थापित करने चाहिये-समान सूत्रसे लिंगकेगर्भ के नवभाग कल्पितकरे आधाज्येष्ठ आधाकनिष्ठ और आधामध्यम फिर इनऐसे गर्भोंके तीनभाग कल्पितकरे-ज्येष्ठलिंग मध्यमलिंग और कनिष्ठलिंग यह तीनों तीन ३ प्रकारके होतेहैं इसरीतिसे सब लिंग नव प्रकारके होते हैं

वतु ११ नाभ्यर्धमष्टभागेन विभज्याथसमंबुधैः। भागत्रयंपरित्यज्य विष्कम्भञ्चतुरस्त्र
कम् १२ अष्टास्त्रंमध्यमंज्ञेयं भागंलिङ्गस्यवैध्रुवम्। विकीर्णेचेत्ततोगृह्य कोणाभ्यांलाञ्छये
द्बुधः १३ अष्टास्त्रंकारयेत्तद्वदूर्द्ध्वमप्येवमेवतु। षोड़शास्त्रीकृतंपश्चाद्वर्तुलंकारयेत्ततः १४
आयामातस्यदेवस्य नाभ्यांवैकुण्डलीकृतम्। माहेश्वरंत्रिभागन्तु ऊर्द्ध्ववृत्तंत्ववस्थितम्
१५ अधस्ताद्ब्रह्मभागस्तु चतुरस्त्रोविधीयते। अष्टास्त्रोवैष्णवोभागो मध्यस्तस्यउदाहृतः
१६ एवंप्रमाणसंयुक्तं लिङ्गंवृद्धिप्रदम्भवेत्। तथान्यदपिवक्ष्यामि गर्भमानंप्रमाणतः १७
गर्भमानप्रमाणेन यल्लिङ्गमुचितंभवेत्। चतुर्धातद्विभज्याथ विष्कुम्भन्तुप्रकल्पयेत् १८
देवतायतनेसूत्रं भागत्रयविकल्पितम्। अधस्ताच्चतुरस्त्रन्तु अष्टास्त्रंमध्यभागतः १९ पू
ज्यभागस्ततोऽर्द्धन्तु नाभिभागस्तथोच्यते। आयामेयद्भवेत्सूत्रं नाहस्यचतुरस्त्रके २०
चतुरस्त्रार्द्धंपरित्यज्य अष्टास्त्रस्तुयद्भवेत्। तस्याप्यर्द्धंपरित्यज्य ततोवृत्तन्तुकारयेत् २१
शिरःप्रदक्षिणंतस्य संक्षिप्तंमूलतोन्यसेत्। ज्येष्ठपूज्यंभवेलिङ्गं मधस्ताद्विपुलञ्चयत् २२
शिरसाचसदानिम्नं मनोज्ञंलक्षणान्वितम्। सौम्यन्तुदृश्यतेलिङ्गन्तल्लिङ्गंवृद्धिदंभवेत्
२३ अथमूलेचमध्येतु प्रमाणेसर्वतःसमम्। एवंविधन्तुयल्लिङ्गं भवेत्तत्सार्वकामिकम्
२४ अन्यथायद्भवेल्लिङ्गं तदसत्संप्रचक्षते। एवंरत्नमयंकुर्यात् स्फाटिकंपार्थिवंतथा।
शुभंदारुमयञ्चापि यद्वामनसिरोचते २५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्विषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६२॥

८।११ नाभिके ऊपर आठभाग कल्पितकरके तीनभागोंको त्याग कर शेष स्थानको चौखूंटीकरे मध्य में आठदलकरे और लिंगके ऊपरभी आठदलकरे फिर मस्तक को गोलकरे और लिंगकी नाभिकी जगह कुंडल सा बनादेवे-शिवजीके लिंगकेतीन भागोंमें ऊपर काभाग गोलरहताहै और नीचेके ब्रह्म स्थानको चौखूंटा बनावे और मध्यकाभाग अष्टकोणहोवे वह वैष्णव महादेव कहाते हैं १२।१६ ऐसे प्रमाणसे लिंगकी वृद्धिहोती है-अब अन्यप्रमाण कोभी कहताहूं-लिंगकी जलहरीके प्रमाणके चारभाग कल्पितकरे फिर एक भागमें शिवलिंग बनावे नीचेसे चौखूंटारक्खे मध्यमें अष्टकोणकरे और ऊपरके पूज्य भागको नाभिभागकहते हैं उसको गोलरक्खे-लिंगके चौखूंटे भागको भूमिमें गाड़ देवे मध्यके अष्टकोणवाले भागको जलहरी में रक्खे ऊपर गोलभाग रक्खे १७।२१ जिस शिवलिंगका शिर नीचे से सूक्ष्म और जलहरीमें भारीहो वह ज्येष्ठालिंग कहाताहै-और जिस लिंगका शिर मनोहर और नीचाहोय वह सौम्य कहाताहै और वृद्धिकरनेवालाहोताहै २२।२३ और मूलमें तथा मध्य भागमें सर्वत्र समान प्रमाणवाला शिव लिंगभी सार्वकामिक अर्थात् सब कामनाओंकासिद्ध करने वाला कहा है और इन लक्षणों से रहित जो अन्यथा बनरहाहो वह श्रेष्ठनहीं है और इन्हीं लक्षणोंके अनुसार मणि-हीरा-पन्ना-मृत्तिका रत्न और काष्ठ इनमेंसे जिसकी रुचिहो उसी वस्तुका बनालेवे२४।२५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६२॥

(ऋषयऊचुः) देवतानामथैतासां प्रतिष्ठाविधिमुत्तमम्। वदसूत! यथान्यायं सर्वेषां मण्शेषतः १ (सूत उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि प्रतिष्ठाविधिमुत्तमम्। कुण्डमण्ड पवेदीनां प्रमाणञ्चयथाक्रमम् २ चैत्रेवाफाल्गुनेवापि ज्येष्ठवामाधवेतथा। माघेवासर्वदे वानां प्रतिष्ठाशुभदाभवेत् ३ प्राप्यपक्षंशुभंशुक्लमतीतेदक्षिणायने। पञ्चमीचद्वितीयाच तृतीयासप्तमीतथा ४ दशमीपौर्णमासीचतथाश्रेष्ठात्रयोदशी। आसुप्रतिष्ठाविधिवत्कृत्वा बहुफलालभेत् ५ आषाढेद्वेतथामूल मुत्तराद्वयमेवच। ज्येष्ठाश्रवणरोहिण्यः पूर्वाभाद्रप दातथा ६ हस्ताश्विनीरेवतीच पुष्योमृगशिरस्तथा। अनुराधातथास्वाती प्रतिष्ठादिषु शस्यते ७ बुधोबृहस्पतिःशुक्रस्त्रयोऽप्येतेशुभग्रहाः। एभिर्निरीक्षितंलग्नं नक्षत्रञ्चप्रश स्यते ८ ग्रहताराबलंलब्ध्वा ग्रहपूजांविधायच॥ निमित्तंशकुनंलब्ध्वा वर्जयित्वाद्भुतादि कम् ९ शुभयोगेशुभस्थानेक्रूरग्रहविवर्जिते। लग्नेऋक्षेप्रकुर्वीतप्रतिष्ठादिकमुत्तमम् १० अयनेविषुवेतद्वत् षडशीतिमुखेतथा। एतेषुस्थापनंकार्यंविधिदृष्टेनकर्मणा ११ प्राजापत्ये तुशयनं श्वेतेतूत्थापनंतथा। मुहूर्तेस्थापनंकुर्यात् पुनर्ब्राह्मेविचक्षणः १२ प्रासादस्यो त्तरेवापिपूर्वेवामण्डपोभवेत्। हस्तान्षोडशकुर्वीत् दशद्वादशवापुनः १३ मध्येवेदिकया युक्तःपरिक्षिप्तःसमन्ततः। पञ्चसप्तापिचतुरः करान्कुर्वीतवेदिकाम् १४ चतुर्भिस्तोरणै र्युक्तोमण्डपःस्याच्चतुर्मुखः। प्लक्षद्वारंभवेत्पूर्वेयाम्येचौदुम्बरम्भवेत् १५ पश्चादश्वत्थघटि

यह सबविधान सुनकर ऋषियोंनेकहा हेसूतजी अबसब देवताओंकी उत्तमप्रतिष्ठाकीविधि न्याय से संपूर्ण वर्णनकीजिये १ सूतजीनेकहा हे ऋषीश्वरलोगो अब मैं उत्तमप्रतिष्ठा विधि वर्णन करताहूं तुम चित्त से सुनो इसकेसिवाय में कुंड मंडप और वेदियोंके भी प्रमाणकहूंगा-२ चैत्र-फाल्गुन-ज्येष्ठ-बै-शाख और माघ इनपांचों महीनोंमें देवताओंकीप्रतिष्ठा शुभदायकहै ३ उत्तरायणमें शुभ शुक्लपक्षकी पंचमी-द्वितीया-तृतीया-सप्तमी ४ दशमी पूर्णमासी और त्रयोदशी इनसबतिथियों में विधिपूर्व्वक की हुई प्रतिष्ठा बड़े २ फलोंकी देनेवालीहै ५ पूर्वाषाढ़-उत्तराषाढ़-मूल उत्तरा फाल्गुनी-उत्तराभाद्रपद-ज्येष्ठा-श्रवण-रोहिणी-पूर्व्वाभाद्रपद-अनुराधा और स्वाति इननक्षत्रोंमें प्रतिष्ठाश्रेष्ठहोतीहै ६।७ औरबुध बृहस्पति और शुक्र यहतीनोंग्रह प्रतिष्ठामेंशुभकेदेनेवालेहैं और इन्हींग्रहोंकरके देखेहुयेलग्न औरनक्षत्र भी श्रेष्ठ कहेहैं ८ ऐसे शुभदिनमें ग्रहबल और ताराबलको प्राप्तहोकर ग्रहोंकी पूजाकर शकुनके नि-मित्तको प्राप्तहोकर अद्भुतादिसे रहित ९ क्रूरग्रहोंसे बर्जित शुभस्थानमें शुभयोग लग्न और नक्षत्रमें उत्तम प्रतिष्ठादिक करे १० इसप्रकार विधि दृष्टकर्म करके उत्तरायण शुभदिनमें देवताओंका स्थापन करे ११ प्राजापत्यमुहूर्त्तमें शयनकरे और श्वेतमें उत्थापनकरे इसकेपीछे बुद्धिमानपुरुष ब्राह्ममुहूर्त्त में स्थापनकरे १२ और प्रासाद अर्थात् स्थानसे उत्तर वा पूर्व्वमें मंडपबनावे वह मंडप सोलह दश अथवा बारह हाथका बनानाचाहिये १३ उस मंडपके बीचमें वेदीबनावे वह वेदी पांचहाथकी-सात हाथकी अथवा चार हाथकी बनावे १४ और मंडपके चारद्वार तोरणों सहित बनावे उनमेंसे पूर्वका द्वार पिलखनका बनावे दक्षिणका द्वार गूलरका-पश्चिमकाद्वार पीपलसे और उत्तरकाद्वार वटवृक्षका

तंनैयग्रोधंतथोत्तरे। भूमौहस्तप्रविष्टानिचतुर्हस्तानिचोच्छ्रये १६ सूपलिप्तंतथाश्लक्ष्णं भूतलंस्यात्सुशोभनम्। वस्त्रैर्नानाविधैस्तद्वत् पुष्पपल्लवशोभितम् १७ कृत्वैवंमण्डपं पूर्वंचतुर्द्वारेषुविन्यसेत्। अव्रणान्कलशानष्टौ ज्वलत्काञ्चनगर्भितान् १८ चूतपल्लव संच्छन्नान्सितवस्त्रयुगान्वितान्।सर्वौषधिफलोपेतांश्चन्दनोदकपूरितान्१९एवंनिवेश्य तद्गर्भेगन्धधूपार्चनादिभिः।ध्वजादिरोहणंकार्यंमण्डपस्यसमन्ततः२० ध्वजांश्चलोक पालानांसर्वदिक्षुनिवेशयेत्।पताकाजलदाकारामध्येस्यान्मण्डपस्यतु२१गन्धधूपादिकं कुर्यात्स्वैःस्वैर्मन्त्रैरनुक्रमात्। बलिञ्चलोकपालेभ्यः स्वमंत्रेणनिवेदयेत्२२ऊर्ध्वन्तुब्रह्म णेदेयंत्वधस्ताच्छेषवासुकेः। संहितायान्तुयेमन्त्रा तद्दैवत्याःश्रुतौस्मृताः २३ तैःपूजा लोकपालानां कर्त्तव्याचसमन्ततः। त्रिरात्रमेकरात्रंवा पञ्चरात्रमथापिवा २४ अथवा सप्तरात्रन्तुकार्यंस्यादधिवासनम्। एवंसतोरणंकृत्वाअधिवासनमुत्तमम्२५तस्याप्युत्तर तःकुर्यात्स्नानमण्डपमुत्तमम्। तदर्धेनत्रिभागेनचतुर्भागेनवापुनः२६आनीयलिङ्गमर्चां वाशिल्पिनःपूजयेद्बुधः। वस्त्राभरणरत्नैश्चयेऽपितत्परिचारकाः २७क्षमध्वमितितान्ब्रू याद्यजमानोऽप्यतःपरम्। देवंप्रस्तरणेकृत्वानेत्रज्योतिःप्रकल्पयेत् २८ अक्ष्णोरुद्धरणं वक्ष्येलिङ्गस्यापिसमासतः। सर्वतस्तुबलिंदद्यात्सिद्धार्थघृतपायसैः २९ शुक्लपुष्पैरलं कृत्यघृतगुग्गुलधूपितम्। विप्राणाञ्चार्चनंकुर्य्याद्दद्याच्छक्त्याचदक्षिणाम् ३० गांमहीं

बनावे उस मंडपको एकहाथ तो पृथ्वीमें गाडे और चारहाथ ऊंचाकरे १५। १६ और भूतल को अच्छेप्रकारसे लीप स्वच्छकर अनेक प्रकारके वस्त्र पुष्प और पल्लवों करके भूषितकरे १७ ऐसे मंडप बनाकर चारों द्वारोंपर सुवर्णयुक्त छिद्रोंसे रहित आठ कलश स्थापन करे १८ उन कलशोंको आमके पत्तोंसे ढके और दो श्वेतवस्त्रों समेत सर्वौषधि फल चन्दन और जल इन्होंसे पूरितकरे १९ ऐसे उन कलशों में गंध धूपादिकों करके स्थापनकर मंडप के चारोंओर ध्वजा रोपण करे २० और सब दिशाओंमें लोकपालोंकी ध्वजा लगावे और मंडपके बीचमें मेघके आकारकी पताका लगावे २१ फिर लोकपालोंके मंत्रोंकरके क्रम पूर्वक गन्ध धूपकर अपने २ मंत्रोंकरके लोकपालों के अर्थ बलि निवेदनकरे२२ऊर्ध्वभागमें ब्रह्माजीको-अधोभागमें वासुकिको और दिशा विदिशाओं में लोकपालोंको बलिदेवे २३ उन्हीं मंत्रोंसे लोकपालों की चारोंओर पूजाकरे-तीनरात्रि-एकरात्रि पंचरात्रि २४ अथवा सप्तरात्रि मूर्तियों को अधिवासन करावे ऐसे तोरणसहित उत्तम अधिवासन करके २५ मंडपका त्रिभाग-चतुर्भाग अथवा अर्द्धभागके उत्तरमें स्नान मंडपबनावे-२६ फिर लिंग वा मूर्तिको लाकर बुद्धिमान् शिल्पीका पूजनकरे और वस्त्र आभूषण और रत्नादिकदे और जो पूजावाले हैं २७ उनकोयजमान क्षमध्व अर्थात् क्षमाकरो ऐसावचनकहे ऐसे देवप्रस्तरणकरके नेत्र ज्योतिको कल्पनाकरे २८ अब नेत्रोंका उद्धरण कहताहूं और लिंगकाभी सामान्य रीतिसे पूजनकहताहूं-प्रथम सरसों-घृत और खीरसे चारोंओरको बलिदेवे फिर श्वेत पुष्पोंसे शृंगारकरके घृतयुक्त गुग्गुलकी धूप देवे और ब्राह्मणोंकापूजनकरके यथाशक्ति दक्षिणादेवे२९।३० और गोपृथ्वी और सुवर्णादिक मूर्तिकी

कनकञ्चैवस्थापकायानिवेदयेत्। लक्षणंकारयेद्भक्त्यामन्त्रेणानेनवैद्विजः ३१ ॐनमोभ
गवतेतुभ्यंशिवायपरमात्मने। हिरण्यरेतसेविष्णो विश्वरूपायतेनमः ३२ मन्त्रोऽयंसर्व
देवानां नेत्रज्योतिष्व्वपिस्मृतः। एवमामन्त्र्यदेवेशंकाञ्चनेनाविलेखयेत् ३३ मङ्गल्यानि
चवाद्यानिब्रह्मघोषंसगीतकम्। वृद्ध्यर्थंकारयेत्विद्वान् अमङ्गल्यविनाशनम् ३४ लक्षणो
द्धरणंवक्ष्ये लिङ्गस्यसुसमाहितः। त्रिधाविभज्यपूज्यायां लक्षणंस्यात्विभाजकम् ३५ ले
खात्रयन्तुकर्तव्यं यवाष्टान्तरसंयुतम्। नस्थूलंनकृशंतदव न्नवक्रंछेदवर्जितम् ३६ नि
म्नंयवप्रमाणेन ज्येष्ठलिङ्गस्यकारयेत्। सूक्ष्मास्ततस्तुकर्तव्या यथामध्यमेकन्येसत् ३७
अष्टभक्तंततःकृत्वा त्यक्त्वाभागत्रयंबुधः। लम्बयेत्सप्तरेखास्तु पार्श्वयोरुभयोःसमाः ३८
तावत्प्रलम्बयेद्विद्वान् यावद्भागचतुष्टयम्। भ्राम्यतेपञ्चभागोर्ध्वं कारयेत्सङ्गमन्ततः
३९ रेखयोःसङ्गमेतद्वत् पृष्ठेभागद्वयंभवेत्। एवमेतत्समाख्यातं समासाल्लक्षणंमया४०
इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रिषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २६३ ॥

सूतउवाच। अतःपरंप्रवक्ष्यामि मूर्त्तिपानान्तुलक्षणम्। स्थापकस्यसमासेन लक्षणं
शृणुतद्विजाः! १ सर्वावयवसम्पूर्णो वेदमन्त्रविशारदः। पुराणवेत्तातत्त्वज्ञो दम्भलोभ
विवर्जितः २ कृष्णसारमयेदेशे उत्पन्नश्चशुभाकृतिः। शौचाचारपरोनित्यं पाखण्डकुल
निस्पृहः ३ समःशत्रौचमित्रेच ब्रह्मोपेन्द्रहरप्रियः। ऊहापोहार्थतत्त्वज्ञो वास्तुशास्त्रस्य

प्रतिष्ठा करानेवाले स्थापकको देवे और ब्राह्मण इस आगेकहेहुए मंत्रसे लक्षणकरावे ३१ ॐनमो
भगवतेतुभ्यंशिवायपरमात्मने हिरण्यरेतसेविष्णोविश्वरूपायतेनमः ३२ यहमंत्रसंपूर्ण देवताओंकी
नेत्र ज्योतियोंके निमित्त कहाहै इसप्रकारसे देवेशकाआमंत्रणकरके सुवर्णकी शलाकासे नेत्रखोले ३३
सुन्दर मांगल्य बाजे बजावे गीतोंसमेत वेद ध्वनिकरे-वृद्धिके निमित्त और अमंगल्यके नाशार्थ विद्वान्
ब्रह्मघोष अवश्यकरे ३४ अब सावधानहोकर लिंगका उद्धरण कहताहूं पूजाके विषयमें तीनभाग
समझकर विभाजक लक्षणकरे ३५ फिर आठ २ यवोंके अन्तरसे तीनरेखाकरे वह तीन तीनोरेखा
मोटीहोयें न पतलीहोयें और टेढ़ीभी न होयें और छेद न रहे ३६ ज्येष्ठलिंगमें यवसे प्रमाणसे स्थूल
करे और बाकीरेखा सूक्ष्मकरे ३७ फिर बुद्धिमान् आठभागकरके तीनभागोंको त्यागदेवे तदनन्तर
दोनोंओरों सातरेखा लम्बाकरे ३८ जिससे कि चारभागहोजायें उतनीहीरेखा लम्बीकरे पीछे पांच
भागोंके उपरान्त रेखाओंका संगमकरे ३९ परन्तु पीठमें दोही रेखाओंका संगमकरे ऐसे साधारण
रीतिसे रेखाओंसे लक्षण कहाहै ४० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषायांटीकात्रिषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६३ ॥

सूतजीबोले-अब मूर्तिकी रक्षाकरनेवाले और स्थापितकरनेवाले पुरुषोंके लक्षणकहतेहैं उसको
सुनो १ सम्पूर्ण अंगयुक्त वेदकेमंत्रोंमें निपुण पुराणवेत्ता तत्त्वज्ञ दम्भ लोभसेरहित जहाँ कालामृग
रहताहो ऐसेदेशमें उत्पन्न सुन्दर आकृतिवाला प्रतिदिन शौचाचार में प्रवृत्त पाखण्डरहित २। ३
शत्रुमित्रको समान जाननेवाला ब्रह्मा विष्णु और शिव इनतीनोंकी भक्तिरखनेवाला तर्कशास्त्रज्ञ

पारगः ४ आचार्य्यस्तुभवेन्नित्यं सर्वदोषविवर्जितः। मूर्त्तिपास्तुद्विजाश्चैव कुलीनाऋजवस्तथा ५ द्वात्रिंशत्षोडशाथापि अष्टौवाश्रुतिपारगाः। ज्येष्ठमध्यकनिष्ठेषु मूर्त्तिपाः प्रकीर्त्तिताः ६ ततोलिङ्गमथार्चांवा नीत्वास्नपनमण्डपम्। गीतमङ्गलशब्देन स्नपनं तत्रकारयेत् ७ पञ्चगव्यकषायेण मृद्भिर्भस्मोदकेनवा। शौचंतत्रप्रकुर्वीतवेदमन्त्रचतुष्टयात् ८ समुद्रज्येष्ठमन्त्रेण आपोदिव्येतिचापरः। यासांराजेतिमन्त्रस्तु आपोहिष्ठेतिचापरः ९ एवंस्नाप्यततोदेवं पूज्यगन्धानुलेपनैः। प्रच्छाद्यवस्त्रयुग्मेन अभिवस्त्रेत्युदाहृतम् १० उत्थापयेत्ततोदेव मुत्तिष्ठब्रह्मणस्पते। अमूरजेतिचतथा रथेतिष्ठेतिचापरः ११ रथेब्रह्मरथेवापि धृतांशिल्पिगणेनतु। आरोप्यचततोविद्वानाकृष्णेनप्रवेशयेत् १२ ततःप्रास्तीर्य्यशय्यायां स्थापयेच्छनकैर्बुधः। कुशानास्तीर्य्यपुष्पाणि स्थापयेत्प्राङ्मुखं ततः १३ ततस्तुनिद्राकलशं वस्त्रकाञ्चनसंयुतम्। शिरोभागेतुदेवस्य जपन्नेवंनिधापयेत् १४ आपोदेवीतिमन्त्रेण आपोऽस्मानमातरोऽपिच। ततोदुकूलपट्टैश्चच्छादयेत्रोपधानकम् १५ दद्याच्छिरसिदेवस्य कौशेयंवाविचक्षणः। मधुनासर्पिषाभ्यज्य पूज्यसिद्धार्थकैस्ततः १६ आप्यायस्वेतिमन्त्रेण यातेरुद्रशिवेतिच। उपविश्यार्चयेद्देवं गन्धपुष्पैः समन्ततः १७ सितंप्रतिसरंदद्यात् बार्हस्पत्येतिमन्त्रतः। दुकूलपट्टैःकार्पासै र्नानाचित्रैरथापिवा १८ आच्छाद्यदेवंसर्वत्र छत्रचामरदर्पणम्। पार्श्वतःस्थापयेत्तत्र वितानंपुष्पसंयुतम् १९ रत्नान्योषधयस्तत्र गृहोपकरणानिच। भाजनानिविचित्राणि शयनान्या

दोषरहित कुलीन ऐसा विद्वान् पुरुष मूर्त्तियों की विधिपूर्व्वक पूजनकर प्रतिष्ठाकरे बत्तीस सोलह अथवा आठविद्वान्पुरुष ज्येष्ठ-मध्यम और कनिष्ठ मूर्त्तियोंको क्रमसे स्थापितकरे और प्रतिष्ठके समय गीतमंगलकर प्रथम मूर्त्तिको स्नान मण्डप के स्थान में लेजाकर स्नानकरावे ४।७ फिर मंगल शब्दपूर्व्वक पंचगव्य-मृत्तिका-भस्म और जल इनसबसे स्नानकरवावे वहां चारवेदके मंत्रों से शौचकरे--समुद्रज्येष्ठ-इसमंत्रसे और आपोदिव्या-इसमंत्रसे-यासांराजा इसमंत्रसे फिर आपोहिष्ठा इसमंत्र से स्नानकरवावे फिर गन्धयुक्त चन्दनसे पूजनकरे फिर अभिवस्त्र-इसमंत्रसे दोवस्त्र पहरावे-फिर उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते--इसमंत्रसे उत्थापनकरे और देवताकी पूजा इसमंत्रसे तथा रथेतिष्ठ इसमंत्रसे मूर्त्तिको रथमें बैठाकर आकृष्णेन इसमंत्र से मन्दिरमें प्रवेशकरे ८।१२ तदनन्तर शनैःशनैः शय्यापर शयनकरवादेवे फिर कुशाबिछाके पूर्व्वाभिमुखकरके उनके ऊपर पुष्पोंको बिछावे फिर वस्त्र और सुवर्णसे युक्तकियेहुए कलशको देवके शिरके स्थानमें स्थापितकरे और आपोदेवी-आपोस्मान् मातर इनमंत्रोंका उच्चारणकरे फिर रेशमीवस्त्रसे आच्छादितकरदेवे अथवा देवके शिर केही स्थानमें रेशमीवस्त्रको स्थापितकरदेवे और शहद-घृत और सरसों से आपोदेवी इस मंत्रकरके पूजनकरे फिर आप्यायस्व-इसमंत्रसे और याते रुद्रशिव-इनमंत्रों से गन्ध पुष्पादि से चारोंओरको पूजे १३।१७ फिर बार्हस्पत्य इसमन्त्रसे हाथमेंश्वेत सूत्रबांधे और अनेकप्रकारके विचित्रवस्त्रोंसे देवको आच्छादितकरे फिर बराबर में छत्र-चामर और दर्पण इनसबको स्थापितकरे फिर यथाशक्ति

सनानिच २० अभिस्त्वाशूरमन्त्रेण यथाविभवतोन्यसेत्। क्षीरंक्षौद्रंघृतंतद्वत् भक्ष्यभो
ज्यान्नपायसैः २१ षड्विधैश्चरसैस्तद्वत् समन्तात्परिपूजयेत्। बलिंदद्यात्प्रयत्नेन म
न्त्रेणानेनभूरिशः २२ त्र्यम्बकंयजामहे इतिसर्वतःशनकैर्भुवि। मूर्त्तिपान्स्थापयेत्पश्चा
त्सर्वदिक्षुविचक्षणः २३ चतुरोद्वारपालांश्च द्वारेषुविनिवेशयेत्। श्रीसूक्तंपावमानञ्च सो
मसूक्तंसुमङ्गलम् २४ तथाचशान्तिकाध्यायमिन्द्रसूक्तंतथैवच। रक्षोघ्नञ्चतथासूक्तं
पूर्वतोबह्वृचोजपेत् २५ रौद्रंपुरुषसूक्तञ्च श्लोकाध्यायंसशुक्रियम्। तथैवमण्डलाध्याय
मध्वर्युर्दक्षिणेजपेत् २६ वामदेव्यंबृहत्साम ज्येष्ठसामरथन्तरम्। तथापुरुषसूक्तञ्च रुद्र
सूक्तंसशान्तिकम् २७ भारुण्डानिचसामानि च्छन्दोगःपश्चिमेजपेत्। अथर्वाङ्गिरसंत
द्वन्नीलंरौद्रंतथैवच २८ तथापराजितादेवी सप्तसूक्तंसरौद्रकम्। तथैवशान्तिकाध्याय
मथर्वाचोत्तरेजपेत् २९ शिरस्थानेतुदेवस्य स्थापकोहोममाचरेत्। शान्तिकैःपौष्टिकैस्त
द्वत् मन्त्रैर्व्याहृतिपूर्वकैः ३० पलाशोदुम्बराश्वत्थ अपामार्गःशमीतथा। हुत्वासहस्रमे
कैकं देवंपादेतुसंस्पृशेत् ३१ ततोहोमसहस्रेण हुत्वाहुत्वाततस्ततः। नाभिमध्यंतथाव
क्षः शिरश्चाप्यालभेत्पुनः ३२ हस्तमात्रेषुकुण्डेषु मूर्त्तिपाःसर्वतोदिशम्। समेखलेषुते
कुर्युर्योनिवक्त्रेषुचादरात् ३३ वितस्तिमात्रायोनिःस्याद्गजोष्ठसदृशीतथा। आयता
च्छिद्रसंयुक्ता पार्श्वतःकलयोच्छ्रिता ३४ कुण्डात्कलानुसारेण सर्वतश्चतुरङ्गुला। वि
स्तारेणोच्छ्रयात्तद्वच्चतुरस्रासमाभवेत् ३५ वेदीभित्तिंपरित्यज्य त्रयोदशभिरङ्गुलैः। ए

रत्न-सर्वौषधी और अनेकपात्र शय्या और आसन इन्होंकोस्थापितकरे यहसवपदार्थ अभिस्त्वाशूर इस मंत्रसे स्थापितकरे और दूध-शहद-घृत-भक्ष्य भोज्य पदार्थ खीर और छःप्रकारसे रस इनसबको देव के चारोंओर परोसकर त्र्यम्बकं यजामहे इसमंत्र से धीरे २ बलिदानदेवे और चारोंदिशाओंमें चार पुजारियोंको १८।२३ और चारद्वारपालोंको बैठावे तदनन्तर श्रीसूक्त पावमान-सोमसूक्त-सुमंगल शान्तिकाध्याय-इन्द्रसूक्त और रक्षोघ्नसूक्त इनसबऋचाओंको पूर्व्वमें बैठनेवालाविद्वान्जपै२४।२५ और रौद्र- पुरुषसूक्त श्लोकाध्याय- शुक्रिय और मंडलाध्याय इन ऋचाओंको दक्षिणमें बैठाहुआ अध्वर्युजपै २६ वामदेव-बृहत्साम-ज्येष्ठसाम- भामरथन्तर-पुरुषसूक्त-रुद्रसूक्त-शान्तिक और भारुंड साम इनको पश्चिममें बैठनेवाला विद्वान् जपै- अथर्ववेदनील- रौद्रपराजितादेवी-सप्तसूक्त और रौद्रकशान्तिकाध्याय इन सबको उत्तरमें बैठनेवाला अथर्ववेदपाठी विद्वान्जपै २७। २९ देव के शिरके स्थानमें स्थापक पुरुष व्याहृति पूर्वक शान्तिक पौष्टिक मंत्रों करकेहोमकरे ३० ढाक-गूलर पीपल-ऊंगा और जाटी-इन समिधोंमें एक २ हज़ार आहुति करके चरणोंको स्पर्शकरे फिर एक २ हज़ार आहुति करके क्रम पूर्व्वक देवकी मूर्तिकी नाभि छाती-शिर-इन सबको स्पर्शकरे फिर वह चारों मूर्तिके स्थापक विद्वान् एकहाथका चौकोनामेखलासहित कुंडबनावें-और हाथीके ओष्ठकेसमान एक बिलस्तिकीयोनि बनावें-वहयोनि छिद्रसे युक्त कुंडके विस्तारसे एककलाऊंची बनानी चाहिये और इसीप्रकारसे नवोंकुंडोंमें वेदीकी भीतिको तेरहअंगुल त्यागकर सबकुंडोंमें ऊंचीयोनि बनानी

वंनवसुकुण्डेषु लक्षणश्चैवदृश्यते ३६ आग्नेयशाक्रयाम्येषु होतव्यमुदगाननैः । शान्त
योलोकपालेभ्यो मूर्त्तिभ्यःक्रमशस्तथा ३७ तथामूर्त्यधिदेवानां होमंकुर्यात्समाहितः ।
वसुधावसुरेताच यजमानोदिवाकरः ३८ जलंवायुस्तथासोम आकाशश्चाष्टमःस्मृतः ।
देवस्यमूर्त्तयस्त्वष्टा वेताःकुण्डेषुसंस्मरेत् ३९ एतासामधिपान्वक्ष्ये पवित्रान्मूर्त्तिनामतः।
पृथ्वींपातिचशर्वश्च पशुपश्चाग्निमेवच ४० यजमानंतथैवोग्रो रुद्रश्चादित्यमेवच।भ
वोजलंसदापाति वायुमीशानएवच ४१ महादेवस्तथाचन्द्र भीमश्चाकाशमेवच। सर्व
देवप्रतिष्ठासु मूर्त्तिपाह्येतएवच ४२ एतेभ्योवैदिकैर्मन्त्रै र्यथास्वंहोममाचरेत्। तथाशा
न्तिघटंकुर्य्यात् प्रतिकुण्डेषुसन्न्यसेत्४३ शतान्तेवासहस्रान्ते सम्पूर्णाहुतिरिष्यते। स
मपादःपृथिव्यान्तु प्रशान्तात्माविनिक्षिपेत् ४४ आहुतीनान्तुसम्पातं पूर्णकुम्भेषुवैन्य
सेत्। मूलमध्योत्तमाङ्गेषु देवंतेनावसेचयेत् ४५ स्थितश्चस्नापयेत्तेन सम्पाताहुतिवारि
णा। प्रतियामेषुधूपन्तु नैवेद्यञ्चन्दनोदकम् ४६ पुनःपुनःप्रकुर्वीत होमःकार्यःपुनःपुनः।
पुनःपुनश्चदातव्या यजमानेनदक्षिणा ४७ सितवस्त्रैश्चतेसर्वे पूजनीयाःसमन्ततः। वि
चित्रैर्हैमकटकै र्हैमसूत्राङ्गुलीयकैः ४८ वासोभिःशयनीयैश्च परिधाप्याःस्वशक्तितः।
भोजनञ्चापिदातव्यं यावत्स्यादधिवासनम् ४९ बलिस्त्रिसन्ध्यंदातव्यो भूतेभ्यःसर्वतो

चाहिये ३३।३६ और उन चारों विद्वान्पुरुषोंको उत्तरको मुखकरके अग्नि· इन्द्र और धर्मराज इन तीनोंकेमन्त्रोंसे होमकरनाचाहिये फिर क्रमसे लोकपालोंके निमित्त शांतिकरे ३७ फिर देवकीमूर्त्ति के अधिदेवताके अर्थ होमकरे· पृथ्वी· अग्नि· यजमान· सूर्य· जल· वायु· चन्द्रमा· आकाश यह आठोंपुरुष देवकी मूर्त्तिहैं इनसबका स्मरणरखनाचाहिये ३८।३९ अब क्रमसे इनआठों की रक्षाकरनेवालोंको कहतेहैं-पृथ्वीकीरक्षा शर्वनाम महादेवजी करतेहैं-अग्निकीरक्षा पशुपतिजी करते हैं-यजमान की रक्षा उग्रनाम महादेव करतेहैं-सूर्य्यकीरक्षा रुद्रजी करते हैं-जलकीरक्षा भवनाम शिवजीकरतेहैं-वायुकीरक्षा ईशान महादेव करतेहैं ४०।४१ मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठाके समय चन्द्रमा की रक्षा महादेवजी करतेहैं-आकाशकीरक्षा भीमनाम शिव करतेहैं इसक्रमसे देवताओंकी प्रतिष्ठामें यहआठों मूर्त्तिपहैं अर्थात् उनकी रक्षाकरनेवालेहैं ४२ इनकेअर्थ वेदके मंत्रोंकरके शक्तिके अनुसार होमकरे और कुण्ड २ के प्रति शान्तिघटको स्थापितकरे ४३ सौ १०० आहुतियों के अथवा हज़ार आहुतियोंके अन्तमें पूर्णाहुति करनीचाहिये आहुतिदेनेके समय शान्तमनकरके पैरको समानस्थित रक्खे और आहुतियों के अन्तका सम्पात पूर्णकुम्भोंमेंगेरे फिर उसघृतको देवके मस्तकमें लगादेवे और जलसे स्नानकरवाके प्रहर २ के अन्तरमें धूपदीप नैवेद्यकरके चन्दन चढ़ावे-वारंवार हवन करे और वारंवारही यजमानको दक्षिणादेनीचाहिये ४४।४७ और वहसबकर्मकर्त्ता पुजारी ब्राह्मण श्वेतवस्त्रोंसे सुवर्णके कडूले तागडी अंगूठीइत्यादि आभूषणोंसे पूजने चाहिये अनेकप्रकार के वस्त्रों समेत शक्तिके अनुसार शय्यादान देनाचाहिये और जबतक मूर्त्तियों का अधिवासहोवे तबतक भोजनकाभी दानकरे ४८।४९ और तीनों संधियों में भूतोंके अर्थ सबदिशाओं में बलिदानकरे प्रथम

दिशम्। ब्राह्मणान्भोजयेत्पूर्वं शेषान्वर्णांस्तुकामतः ५० रात्रौमहोत्सवःकार्यो नृत्यगी
तकमङ्गलैः। सदापूज्याःप्रयत्नेन चतुर्थीकर्मयावता ५१ त्रिरात्रमेकरात्रंवा पञ्चरात्रम
थापिवा। सप्तरात्रमथोकुर्यात् क्वचित्सद्योऽधिवासनम्। सर्वयज्ञफलोयस्मादधिवासो
त्सवःसदा ५२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुःषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥ २६४॥

सूतउवाच॥ कृत्वाधिवासंदेवानां शुभंकुर्य्यात्समाहितः। प्रासादस्यानुरूपेण मा
नंलिङ्गस्यवापुनः १ पुष्पोदकेनप्रासादं प्रोक्ष्यमन्त्रयुतेनतु। पातयेत्पक्षसूत्रन्तु द्वारसूत्रं
तथैवच २ आश्रयेत्किञ्चिदीशानींमध्यंज्ञात्वादिशंबुधः। ईशानीमाश्रितंदेवं पूजयन्तिदि
वौकसः ३ आयुरारोग्यफलदमथोत्तरसमाश्रितम्। शुभंस्यादशुभंप्रोक्त मन्यथास्था प-
नंबुधैः ४ अधःकूर्मशिलाप्रोक्ता सदाब्रह्मशिलाधिका। उपर्यवस्थितातस्या ब्रह्मभागाधि
काशिला ५ ततस्तुपिण्डिकाकार्या पूर्वोक्तैर्नामलक्षणैः। ततःप्रक्षालितांकृत्वा पञ्चगव्ये
नपिण्डिकाम् ६ कषायतोयेनपुनर्मन्त्रयुक्तेनसर्वतः। देवतार्चाश्रयंमन्त्रं पिण्डिकासुनि
योजयेत् ७ ततउत्थाप्यदेवेशं उत्तिष्ठब्रह्मणेतिच। आनीयगर्भभवनंपीठान्तेस्थापयेत्पु
नः ८ अर्घ्यपाद्यादिकंतत्र मधुपर्कंप्रयोजयेत्। ततोमुहूर्त्तंविश्रम्य रत्नन्यासंसमाचरेत् ९
वज्रमौक्तिकवैदूर्यं शङ्खस्फटिकमेवच। पुष्परागेन्द्रनीलञ्च नीलंपूर्वादिदिक्क्रमात् १०
तालकञ्चशिलावज्र मञ्जनंश्याममेवच। काक्षीकाशीसमाक्षीकं गौरिकञ्चादितःक्रमात्

ब्राह्मणों को भोजनकरवावे पीछे इच्छापूर्वक चारोंवर्णोंको जिमावे ५० और रात्रि में नृत्य और मंगल गीतादिसे महोत्सवकरे—जबतक चतुर्थी कर्महोय तबतक यत्नकरके सदैव ब्राह्मणोंकी पूजा करनीचाहिये तीनरात्रि वा पांचरात्रि-सातरात्रि अथवा एकही रात्रितक अधिवासकरना योग्य है—मूर्त्तिके अधिवासके समय जो महोत्सव कियाजाताहै उसकाफल सम्पूर्णयज्ञोंके समानहै ५१।५२॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुःषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६४॥

सूतजीबोले—कि देवताओंका अधिवासकराके उनकेमन्दिरोंका मानकरके मन्दिरको पवित्रजल से छिड़क बराबर में और द्वारके आगे सूत्रडालके मन्दिरके मध्यभागसे ईशानदिशाको पहिचाने क्योंकि ईशानदिशाके आश्रितहुए देवताभी महादेवको पूजतेहैं १।३ और उत्तरदिशा के सन्मुख महादेवको स्थापनकरे तो आयु आरोग्य और सुखकी वृद्धिहोतीहै अन्यदिशाशुभनहींहैं ४ नीचे कूर्म शिलाको स्थापितकरे ऊपर अधिकस्थितहुई ब्रह्मशिलाको स्थितकरे उसकेऊपर पहलेकहेहुए नाम और लक्षणोंवाली महादेवकी पिंडीको स्थापितकरे पिंडीको पंचगव्यसे स्नानकरावे देवताकीपूजा के मंत्रों का उच्चारणकरे पीछे उत्तिष्ठ ब्रह्मणेति इसमंत्रसे उत्थापनकर मंदिरमेंला जलहरी के ऊपर स्थितकरे फिर अर्घपाद्यकरके मधुपर्कदेवे तदनन्तर एकमुहूर्त्त विश्रामकराके पूर्वादि दिशाओंमें रत्नों का न्यासकरे अर्थात् हीरे—मोती—वैदूर्य्यमणि—शंख—स्फटिकमणि—पुखराज नीलमणि और नील-रत्न इनमेंसे सबको या शक्तिकेअनुसार जोहोसके उसको पूर्वादिक दिशाओंमें न्यासपूर्वक स्थापित

११ गोधूमञ्चयवंतद्वत्तिलमुद्गंतथैवच ।नीवारमथश्यामाकं सर्षपंव्रीहिमेवच १२ न्य
स्यक्रमेणपूर्वादि चन्दनंरक्तचन्दनम् । अगरुश्चाञ्जनश्चापि उशीरश्चततःपरम् १३ वैष्ण
वींसहदेवीश्च लक्ष्मणाश्चततःपरम् । स्वलोकपालनाम्नातु न्यसेदोङ्कारपूर्वकम् १४ सर्व
बीजानिधातूंश्च रत्नान्योषधयस्तथा ।काञ्चनंपद्मरागन्तु पारदंपद्ममेवच १५ कूर्मधरांश्च
षंतत्र न्यसेत्पूर्वादितःक्रमात् । ब्रह्मस्थानेतुदातव्या संहतास्युःपरस्परम् १६ कनकंविद्रु
मंताम्रं कांस्यञ्चैवारकूटकम् । रजतंविमलंपुष्पं लोहञ्चैवक्रमेणतु १७ काञ्चनंहरितालञ्च
सर्वाभावेऽपिनिक्षिपेत् । दद्याद्बीजौषधिस्थानेसहदेवींयवानपि १८न्यासमन्त्रानतोवक्ष्ये
लोकपालात्मकानिह । इन्द्रस्तुसहसादीप्तः सर्वदेवाधिपोमहान् १९ वज्रहस्तोमहासत्व
स्तस्मैनित्यंनमोनमः। आग्नेयःपुरुषोरक्तः सर्वदेवमयःशिखी २० धूमकेतुरनाधृष्य स्त
स्मैनित्यंनमोनमः । यमश्चोत्पलवर्णाभः किरीटीदण्डधृक्सदा २१ धर्मसाक्षीविशुद्धा
त्मा तस्मैनित्यंनमोनमः । निर्ऋतिस्तुपुमान्कृष्णःसर्वरक्षोऽधिपोमहान् २२खड्गहस्तो
महासत्वस्तस्मैनित्यंनमोनमः । वरुणोधवलोविष्णुः पुरुषोनिम्नगाधिपः २३ पाशह
स्तोमहाबाहु स्तस्मैनित्यंनमोनमः । वायुश्चसर्ववर्णोवै सर्वगन्धवहःशुभः २४ पुरुषोध्व
जहस्तश्च तस्मैनित्यंनमोनमः । गौरोयश्चपुमान्सौम्यः सर्वौषधिसमन्वितः २५ नक्ष
त्राधिपतिःसोमस्तस्मैनित्यंनमोनमः । ईशानपुरुषःशुक्लः सर्वविद्याधिपोमहान् २६ शू

करे ९।१० फिर हरताल-शिलाजीत-अंजन-श्यामरत्न-मुल्तानीमिट्टी-सीसा-सोनामक्खी और
गेरू इनसबको पूर्वादि दिशाओंमें स्थापितकरे ११ और गेहूं-जव-तिल-मूंग-समा-सरसों और
चावल इनसबको स्थापितकरे १२ फिरचन्दन-रक्तचन्दन-अगर रसौत खश-विष्णुक्रान्ता-सहदेई
श्वेतकटेहली इनको पूर्वादि दिशाओं में स्थापितकरे इसरीतिसे स्वर्गलोक का नामलेके ॐकार
पूर्वक सबबीजों समेत-धातु-रत्न-औषधी-सुवर्ण-पद्मराग-पारा-पद्माक-कछुआ-बैल और
पृथ्वी इनसबकीमूर्त्ति पूर्वादि दिशाओंमें स्थापितकरे फिर ब्रह्मशिला जलहरीके स्थानमें सुवर्ण-मूंगा
तांबा-कांसी-पीतल-चांदी-सुन्दर पुष्प और लोहा इनसबको क्रमसे धरे सबवस्तुओंके अभावमें
सुवर्ण और हरताल को रक्खे और बीज ओषधियों के स्थानमें सहदेई अथवा जवधरे १३।१८ अब
लोकपालों के न्यासके मन्त्रोंको कहतेहैं-इन्द्रदेव बड़ातेजस्वी और देवताओं का पतिहै हाथमेंवज्र
धरेहुए बड़ेशरीरवालाहै ऐसे इन्द्रके अर्थ नित्यनमस्कारहै और अग्निदेव लालपुरुषहै सर्वदेवमय-
शिखी-और धूम्रकीध्वजावालाहै किसीसेभी नहींसहाजाताहै ऐसे अग्निदेवको नमस्कारहै १९।२१
धर्मराज नीलकमलकान्ति-मुकुट दण्डधारी-धर्मसाक्षी और विशुद्धात्मावालाहै उसदेवकेअर्थ नम-
स्कारहै- निर्ऋति राक्षस कालापुरुष- सबराक्षसोंका पति और हाथमेंखड्ग धारणकरताहै ऐसे उस
निर्ऋतिको नमस्कारहै २२।२३ वरुणदेवता श्वेतमूर्त्ति- विष्णुस्वरूप-जलोंकापति और हाथमें फां-
सी महाबाहु धारणकरताहै ऐसे वरुणजीको नमस्कारहै- वायुदेवता सबगंधोंको बहाता है पुरुषस्व-
रूपहै हाथमें ध्वजा धारणरखताहै ऐसे उसदेवको नमस्कार है- चन्द्रमा गौरपुरुष- सौम्य- सब

लहस्तोविरूपाक्षस्तस्मैनित्यंनमोनमः। पद्मयोनिश्चतुर्मूर्त्तिर्वेदवासाःपितामहः २७ य
ज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मैनित्यंनमोनमः। योऽसावनन्तरूपणे ब्रह्माण्डंसचराचरम् २८
पुष्पवद्धारयेन्मूर्ध्नि तस्मैनित्यंनमोनमः। ओङ्कारपूर्वकाह्येते न्यासेबलिनिवेदने २९ म
न्त्राःस्युःसर्वकार्य्याणांवृद्धिपुत्रफलप्रदाः। न्यासंकृत्वातुमन्त्राणां पायसेनानुलेपितम् ३०
पाटेनाच्छादयेत्श्वभ्रं शुक्लेनोपरियत्नतः। ततउत्थाप्यदेवेशमिष्टदेशेतुशोभने ३१ ध्रुवा
द्यौरितिमन्त्रेण श्वभ्रोपरिनिवेशयेत्। ततःस्थिरीकृतस्यास्य हस्तंदत्वातुमस्तके ३२
ध्यात्वापरमसद्भावाद्देवदेवञ्चनिष्कलम्। देवव्रतंतथासोमं रुद्रसूक्तंतथैवच ३३ आत्मा
नमीश्वरंकृत्वा नानाभरणभूषितम्। यस्यदेवस्ययद्रूपं तद्ध्यानेसंस्मरेत्तथा ३४ अतसी
पुष्पसङ्काशं शङ्खचक्रगदाधरम्। संस्थापयामिदेवेशं देवोभूत्वाजनार्दनम् ३५ त्र्यक्षञ्च
दशबाहुञ्च चन्द्रार्द्धकृतशेखरम्। गणेशंवृषसंस्थञ्च स्थापयामित्रिलोचनम् ३६ ऋषिभिः
संस्तुतंदेवं चतुर्वक्त्रंजटाधरम्। पितामहंमहाबाहुं स्थापयाम्यम्बुजोद्भवम् ३७ सहस्र
किरणंशान्तमप्सरोगणसंयुतम्। पद्महस्तंमहाबाहुं स्थापयामिदिवाकरम् ३८ देवम
न्त्रांस्तथारौद्रान् रुद्रस्यस्थापनेजपेत्। विष्णोस्तुवैष्णवांस्तद्वत् ब्राह्मणान्ब्रह्मणोबु
धैः ३९ सौराःसूर्यस्यजप्तव्यास्तथान्येषुतदाश्रयाः। वेदमन्त्रप्रतिष्ठातु यस्मादानन्ददा
यिनी ४० स्थापयेद्यन्तुदेवेशन्तंप्रधानंप्रकल्पयेत्। तस्यपार्श्वस्थितानन्यान् संस्मरेत्प

ओषधियोंसे युक्त और नक्षत्रोंका पतिहै उस सोमकेअर्थ नमस्कार है- ईशान महादेव शुक्लवर्ण सर्व विद्याधिप- शूलधारी और विरूपाक्षहै ऐसे उस देवकेअर्थ नित्य नमस्कार है- पद्मयोनि- चतुर्मूर्त्ति वेदके वस्त्रवाला यज्ञाध्यक्ष और चारमुखवालेहैं ऐसे ब्रह्माजीको सदैव नमस्कार है और जो विष्णु अनन्तरूपधर चराचर ब्रह्माण्डको पुष्पकेसदृश मस्तकपर धारण करता है उसकेअर्थ नमस्कार है- ऐसे इन दिक्पालों के मन्त्रोंको होमके अन्तमें बलिदानके समय ओंकारसहित कहे यह सबमंत्र अखिलकामना और पुत्रोंकी वृद्धिकरनेवालेहैं इनमंत्रोंसे न्यासकर मूर्त्तिपर घृतकालेपकर श्वेतवस्त्र उढ़ाके सुन्दर श्वेतहीवस्त्रपर स्थिरतासे स्थापितकरके अपने मस्तकपर हाथजोड़कर ध्यानकरे २४।३२ और अपने आत्माकोभी सोमसूक्त वा रुद्रसूक्त मंत्रोंकरके ईश्वरस्वरूपकरे फिर जिसदेवका जैसारूपहोवे वैसाही ध्यानकरे ३३। ३४ और कहे कि मैं देवस्वरूपहोके अलसीके पुष्पसमान कान्तिवाले शंखचक्रगदाधारी देवेश विष्णु भगवान्को स्थापनकरूंहूं ३५ त्रिनेत्र- दशभुज अर्द्ध- चन्द्रमौलि गणोंकेईश वृषपैस्थित ऐसे शिवको स्थापनकरताहूं ३६ ऋषियोंसे स्तुतिकियेहुए चार मुखोंवाले जटाधारी- पितामह महाभुजाओंवाले ऐसे ब्रह्माजीको स्थापनकरताहूं ३७ सहस्रकिरण- युक्त शान्तस्वरूप अप्सरागणसमेत हाथमें कमलधारणकरनेवाले ऐसे सूर्य्यदेवको स्थापनकरताहूं ३८ और शिवकेस्थापनमें शिवकेमंत्रोंको विष्णुके स्थापनमें विष्णुके वैष्णवमंत्रोंको ३९ और सूर्य्यके स्थापनमें सौरसंज्ञक मंत्रोंकोजपै और अन्यदेवके स्थापनमें अन्यमंत्रोंकोजपै क्योंकि वेदके मंत्रोंसे देवको स्थापन करनेका अनन्तफल होताहै ४० जिसदेवको स्थापनकरे उसको प्रधानसमझे और

रिवारितः ४१ गणंनन्दिमहाकालं वृषंभृङ्गिरिटिंगुहम् । देवींविनायकञ्चैव विष्णुंब्रह्माण
मेवच ४२ रुद्रंशक्रंजयन्तञ्च लोकपालान्समन्ततः । तथैवाप्सरसःसर्वा गन्धर्वगणगु
ह्यकान् ४३ योयत्रस्थाप्यतेदेवस्तस्यतान्परितःस्मरेत् । आवाहयेत्तथारुद्रं मन्त्रेणानेन
यत्नतः ४४ यस्यसिंहारथेयुक्ता व्याघ्रभूतास्तथोरगाः । ऋषयोलोकपालाश्च देवःस्कन्द
स्तथावृषः ४५ प्रियोगणोमातरश्च सोमोविष्णुःपितामहः । नागायक्षाःसगन्धर्वा येचदि
व्यानभश्चराः ४६ तमहंत्र्यक्षमीशानं शिवंरुद्रमुमापतिम् । आवाहयामिसगणं सपत्नी
कंवृषध्वजम् ४७ आगच्छभगवन्! रुद्राऽनुग्रहायाशिवोभव । शाश्वतोभवपूजांमे गृह्
णात्वंनमोनमः ४८ ॐनमःस्वागतंभगवतेनमःॐनमः सोमायसगणाय सपरिवारायप्रति
गृह्णातु भगवन्! मन्त्रपूतमिदंसर्वमर्घ्यपाद्यमाचमनीयमासनंब्रह्मणाभिहितं नमोनमः
स्वाहा ४९ ततःपुण्याहघोषेण ब्रह्मघोषैश्चपुष्कलैः । स्नापयेत्तुततोदेवं दधिक्षीरघृतेन
च ५० मधुशर्करयातद्वत् पुष्पगन्धोदकेनच । शिवध्यानैकचित्तस्तु मन्त्रानेतानुदीरये
त् ५१ यज्जाग्रतोदूरमुदेति । ततोविराडजायतइतिचसहस्रशीर्षापुरुषइतिच । अभि
त्वाशूरनोनमइतिच । पुरुषएवेदंसर्वमिति । त्रिपादूर्ध्वमितियेनेदंभूतमिति । नत्वाअवी
न्यइति । सर्वांश्चैतान्प्रतिष्ठासु मन्त्रान्जप्त्वापुनःपुनः । स्त्रुतुःकृत्वास्पृशेदङ्घ्रिमूलमध्येशि
रस्यपि ५२ स्थापितेतुततोदेवे यजमानोऽथमूर्तिपम् । आचार्यंपूजयेद्भक्त्या वस्त्रालङ्का

उसकेबराबरमें स्थितकियेहुए अन्यदेवताओंको साधारणतासे स्मरणकरे ४१ गण- नादिया- महा-
काल- वृष- पार्वतीदेवी- गणेश- विष्णु- ब्रह्मा- रुद्र- इन्द्र- लोकपाल- अप्सरागण- गन्धर्व- और
गुह्यक यहसब महादेवजीके चारों ओर स्थापितकरनेचाहिये ४२।४३ जोदेव जहां स्थापितकियाहो
वहांही उसका स्मरणकरे और महादेवजीका आवाहन इस अगले मंत्रसेकरे ४४ मंत्रार्थ- जिसके
रथमें सिंह- भूत- सर्प- ऋषि- लोकपाल- स्वामिकार्त्तिक और वृष यहसब जुड़ते हैं अर्थात् जोतेजाते
हैं और गण-मातर- सोम- विष्णु- ब्रह्मा- नाग- यक्ष- गन्धर्व और राक्षस यहभी जुड़ते हैं अर्थात्
लगते हैं उस ईशान उमापति स्त्रीसंयुक्त शिवजी को मैं आवाहन करताहूं अर्थात् बुलाताहूं हे
भगवन् आओ अनुग्रहकरो आपको नमस्कार करताहूं आपमेरी पूजाको ग्रहण कीजिये ४५ । ४८
आवाहनमंत्रः॥ ओंनमः स्वागतं भगवतेनमः ओंनमः सोमाय सगणाय परिवाराय प्रतिगृह्णातु
भगवन् मंत्रपूतमिदंसर्वमर्घपाद्यमाचमनीयमासनं ब्रह्मणाभिहितं नमोनमः स्वाहा ४९ तदन-
न्तर पुण्याहवाचनपूर्वक बहुतसे वेदघोषोंको कर दही दूध घृत और जल इन सब से महादेवजी
को स्नानकरावे और खांड़-शहद-पुष्प और गन्धयुक्त जलसे स्नान करावे फिर एकाग्रचित्तसे शिव-
जीका ध्यान करके आगेकहे हुए मंत्रोंको उच्चारण करे ५०।५१ मंत्राः॥ यज्जाग्रतोदूरमुदेति ततो
विराडजायत सहस्रशीर्षा पुरुषः अभित्वाशूरनोनमः पुरुषएवेदं त्रिपादूर्ध्वं येनेदंभूतम् नत्वा अ-
वन्यि इन सब मंत्रोंको प्रतिष्ठाओं में वारंवार जपै फिर जलसे मूर्त्तिके मूल मध्य और शिर इनस्था-
नोंको स्पर्श करे जब इस प्रकारसे देवताकी मूर्त्ति स्थापितहोजाय तब यजमान अपनी श्रद्धाभक्ति

रभूषणैः ५३ दीनान्धकृपणांस्तद्वद्ये चान्येसमुपस्थिताः। ततस्तुमधुनादेवं प्रथमेऽह्नि
लेपयेत् ५४ हरिद्रयाथसिद्धार्थैर्द्वितीयेऽह्नितत्वतः। चन्दनेनयवैस्तद्वत्तृतीयेऽह्निले
पयेत् ५५ मनःशिलाप्रियङ्गुभ्यां चतुर्थेऽह्निलेपयेत्। सौभाग्यशुभदंयस्माल्लेपनंव्या
धिनाशनम् ५६ परम्प्रीतिकरन्नृणामेतद्वेदविदोविदुः। कृष्णाञ्जनान्तिलंतद्वत् पञ्चमेऽपि
निवेदयेत् ५७ षष्ठेतुसघृतंदद्यात् चन्दनंपद्मकेसरम्। रोचनागुरुपुष्पंतु सप्तमेऽह्निदा
पयेत् ५८ यत्रसद्योऽधिवासःस्यात्तत्रसर्वंनिवेदयेत्। स्थितंनचालयेद्देवमन्यथादोषभा
ग्भवेत् ५९ पूरयेत्सिकताभिस्तु निश्छिद्रंसर्वतोभवेत्। लोकपालस्यदिग्भागे यस्यस
ञ्चलतेविभुः ६० तस्यलोकपतेःशान्तिर्देयाश्चेमाश्चदक्षिणाः। इन्द्रायाभरणंदद्यात् का
ञ्चनंचाल्पवित्तवान् ६१ अग्नेःसुवर्णमेवस्याद्यमस्यमाहिषंतथा। अन्नञ्चकाञ्चनंदद्यान्नैर्ऋ
तंराक्षसंप्रति ६२ वरुणंप्रतिमुक्तानि सशुक्तीनिप्रदापयेत्। रीतिकंवायवेदद्याद्वस्त्रयुग्मे
नसास्त्रतम् ६३ सोमायधेनुर्दातव्या रजतंसवृषंशिवे। यस्यांयस्यांसञ्चलनं शान्तिःस्या
त्तत्रतत्रतु ६४ अन्यथातुभवेद्घोरं भयङ्कुलविनाशनम्। अचलंकारयेत्तस्मात्सिक
ताभिःसुरेश्वरम् ६५ अन्नंवस्त्रञ्चदातव्यं पुण्याहजयमङ्गलम्। त्रिःपञ्चसप्तदशवादिना
निस्यान्महोत्सवः ६६ चतुर्थेऽह्निमहास्नानं चतुर्थीकर्मकारयेत्। दक्षिणाचपुनस्तद्वद्देया

से मूर्त्तिकी रक्षा करनेवाले आचार्य्य पुजारीको वस्त्र और आभूषणादि देवे ५२।५३ और दीन अन्धे कृपण आदिक जितने जन इकट्ठे होरहेहों उन सबको भोजन करवावे और अधिवास कराने के समय प्रथम दिन देवताको शहदसे लेपित करे-दूसरे दिन हल्दी और सरसों का लेपकरे-तीसरेदिन चन्दन और यवोंकालेपकरे ५४।५५ चौथेदिन मैनसिल और मालकांगनी का लेपकरे इनसव लेपोंके करनेसे मनुष्योंके सौभाग्यकी वृद्धि और रोगोंकानाशहोताहै-पांचवें दिन कालेअंजन वा तिल इनका निवेदनकरे-छठेदिन घृत-चन्दन कमल-केशरको-सातवें दिन गोरोचन अगर और पुष्पों का निवेदनकरे ५६।५८ जहां एकही दिन अधिवासकियाजावे वहां इनसव वस्तुओं को एकही वार निवेदनकरदेवे-और स्थितहुए देवको कभी चलायमान न करे चलायमानहोने से बड़ादोष होता है और वालू रेत औरचूने आदिसे छिद्रोंको भरदेवे जिसलोकपालकी दिशामेंदेवताकी मूर्त्तिचलायमान होजाय तो उसी लोकपालकी शान्ति कराकर आगे लिखीहुई दक्षिणादेवे ५९।६१ इन्द्रके अर्थ सुवर्ण का भूषण-अग्निकोभी सुवर्णकादान औरधर्मराजके निमित्त भैंसेकादान देवे-नैर्ऋत राक्षसकेअर्थ अन्न और सुवर्णका दानदेवे ६२ वरुणके अर्थ मोती और सीपियोंकादानदेवे-वायुके अर्थ पीतलका और वस्त्रोंका दान-चन्द्रमाके अर्थ गौकादान-शिवकेनिमित्त चांदी और वृषभकादानकरे जिस २ दिशा में देवकी मूर्त्तिका चलनाहोवे उसी २ लोकपालकी पूजाकरनी योग्यहै ६३।६४जो पूजा न करे तो घोर कुलनाशकभय उत्पन्न होताहै इस निमित्त रेत-चूना आदिसे शिवजीकी पिंडीको अचलकर देवे ६५ देवप्रतिष्ठाके समय अन्न वस्त्रकादान औरपुण्याह वाचनपूर्वक जपमंगलकरे तीन-पांच-सात अथवा दशादिनतक महोत्सव करे ६६ प्रतिष्ठाके अन्तमें चौथे दिन महास्नानकर चतुर्थी कर्म करे और उसी

तत्रातिभक्तितः ६७ देवप्रतिष्ठाविधिरेषतुभ्यं निवेदितःपापविनाशहेतोः। यस्माद्बुधैःपूर्वमनन्तमुक्तमनेकविद्याधरदेवपूज्यम् ६८ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपञ्चषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६५ ॥

(सूत उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि देवस्नपनमुत्तमम्। अर्घस्यापिसमासेन शृणु त्वंविधिमुत्तमम् १ दध्यक्षतकुशाग्राणि क्षीरंदूर्वातथामधु। यवाःसिद्धार्थकास्तद्वदष्टाङ्गोऽर्घःफलैःसह २ गजाश्वरथ्यावल्मीकवराहोत्खातमण्डलात्। अग्न्यागारात्तथातीर्थाद्गोष्ठाद्गोमण्डलादपि ३ कुम्भेतुमृत्तिकांदद्यादुद्धृतासीतिमन्त्रवित्। शन्नोदेवीत्यपांमन्त्रमापोहिष्ठेतिवैतथा ४ सावित्र्यादायगोमूत्रं गन्धद्वारेतिगोमयम्। आप्यायस्वेतिचक्षीरं दधिक्राव्णेतिवैदधि ५ तेजोसीतिघृतंतद्वद्देवस्यत्वेतिचोदकम्। कुशमिश्रंक्षिपेद्विद्वान् पञ्चगव्यंभवेत्ततः ६ स्नाप्याथपञ्चगव्येन दध्नाशुद्धेनवैततः। दधिक्राव्णेतिमन्त्रेण स्नापयेद्रत्नवारिणा ७ कुशाम्भसाततःस्नानं देवस्यत्वेतिकारयेत्। फलोदकेनचस्नानमग्नआयाहिकारयेत् ८ ततस्तुगन्धतोयेन सावित्र्याचाभिमन्त्रयेत्। ततोघटसहस्रेण सहस्रार्द्धेनवापुनः ९ तस्याप्यर्धेनवाकुर्यात् सपादेनशतेनवा। चतुःषष्ट्याततोर्धेन तदर्धार्धेनवापुनः १० चतुर्भिरथवाकुर्याद् घटानामल्पवित्तवान्। सौवर्णैराजतैर्वापि ताम्रैर्वारीतिकोद्भवैः ११ कांस्यैर्वापार्थिवैर्वापि स्नपनंशक्तितोभवेत्। सहदेवीवचाव्याघ्री बला

प्रकार भक्तिसे दक्षिणादेवे ६७ यह पापोंकी नाश करनेवाली प्रतिष्ठाकी विधि तेरे आगे वर्णनकी है यह उसी प्रकारसे कही है जैसे कि पूर्व्वके बुद्धिमान् पुरुषोंने कही है ६८ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६५॥

सूतजी बोले—अब देवताके स्नान पूजा विधिपूर्व्वक संक्षेपसे अर्घ दानकी भी विधिको कहता हूं १ दही, अक्षत, कुशा, दूध, दूब, शहद, यव और सरसों इन आठवस्तुओंका अर्घ होताहै और फलभी इसमें गिरते हैं, हस्ती, अश्व और रथ इनके नीचेकी, बांबीकी, वराहकी खोदीहुई, अग्निकुंडकी, गंगादिकतीर्थोंकी, और गोशालाकी मृत्तिकाओंको लेकर उद्धृतासिवराहेण इस मंत्रका उच्चारणकरे फिर इस मृत्तिकाको कलशमें गेर शन्नोदेवी इस मन्त्र करके वा आपोहिष्ठा मंत्रकरके कलशमें जलभरे २।४ गायत्री मंत्रसे गोमूत्रडाले गंधद्वारा० इस मंत्रसे गोबरडाले आप्यायस्व० इस मंत्रसे दूधडाले दधिक्राव्ण० मंत्रसे दहीगेरे तेजोसीति० इस मंत्रसे घृतडाले देवस्यत्वा स० ता० इस मंत्रसे जलडाले इस रीतिसे पूर्ण कियेहुए घटके जलसे स्नानकरावे फिर कुशा और पंचगव्यसे देवका स्नानकरावे ५।६ इसी प्रकार दही रत्न और जलसे फिर स्नानकरावे फिर अग्न आयाहि० इसमंत्रसे फलोंके जल करके स्नानकरावे और देवस्यत्वा इसमंत्रकेद्वारा कुशाके जलसे स्नानकरावे फिर गायत्री मंत्रसे गन्धयुक्त जलसे स्नानकरावे इसके अनन्तर हज़ार कलशों से वा पांचसौ कलशोंसे वा १२५ कलशों से ६४ से ३२ से १६ से ८ से अथवा अल्प धनवाला पुरुष चारही कलशोंसे महादेवको स्नानकरावे वह कलशेभी सुवर्णके चांदीके तांबेके पीतलके कांसीके

चातिबलातथा १२ शङ्खपुष्पीतथासिंही ह्यष्टमीचसुवर्चला। महौषध्यष्टकंह्येतत् म हास्नानेषुयोजयेत् १३ यवगोधूमनीवारतिलश्यामाकशालयः। प्रियङ्गवोव्रीहयश्च स्नानेषुपरिकल्पिताः १४ स्वस्तिकंपद्मकंशङ्खमुत्पलंकमलंतथा। श्रीवत्संदर्पणन्तद्वन्न न्द्यावर्तमथाष्टकम् १५ एतानिगोमयैःकुर्य्यान् मृदाचशुभयाततः। पञ्चवर्णादिकंतद्वत् पञ्चवर्णैरजस्तथा १६ दूर्वाकृष्णातिलान्दद्यान्नीराजनविधिंततः। एवंनीराजनंकृत्वा दद्यादाचमनंबुधः १७ मन्दाकिन्यास्तुतद्वारि सर्वपापापहंशुभम्। ततोवस्त्रयुगंदद्यान्म न्त्रेणानेनयत्नतः १८ देवसूत्रसमायुक्ते यज्ञदानसमन्विते। सर्ववर्णैशुभेदेव वाससीतेवि निर्मिते १९ ततस्तुचन्दनंदद्यात् समंकर्पूरकुंकुमैः। इममुच्चारयेन्मन्त्रं दर्भपाणिःप्रयत्न तः २० शरीरन्तेनजानामि चेष्टांनैवचनैवच। मयानिवेदितान्गन्धान् प्रतिगृह्यविलि प्यताम् २१ चत्वारिंशत्ततोदीपान् दद्याच्चैवप्रदक्षिणान्। त्वंसूर्यचन्द्रज्योतींषि विद्युद ग्निस्तथैवच २२ त्वमेवसर्वज्योतींपि दीपोऽयंप्रतिगृह्यताम्। ततस्त्वनेनमन्त्रेण धूपंद द्याद्विचक्षणः २३ वनस्पतिरसोदिव्यो गन्धाढ्योगन्धउत्तमः। मयानिवेदितोभक्त्या धू पोऽयंप्रतिगृह्यताम् २४ ततस्त्वाभरणंदद्यान् महाभूषायतेनमः। अनेनविधिनाकृत्वा स प्तरात्रंमहोत्सवम् २५ देवकुम्भैस्ततःकुर्य्याद्यजमानोऽभिषेचनम्। चतुर्भिरष्टभिर्वापिद्वा

अथवा अशक होय तो मिट्टीकेही बनाने चाहिये और स्नान कराने के समय सहदेई, बच, कटेहरी, खरहटी, गंगेरन, धवलपुष्पी, जवासा और ब्राह्मी इन बडे आठों ओषधियोंको भी जलमें मिलादेवे और यव, गेंहूं, नीवार, तिल, शामक, शालीचावल, मालकांगनी, और चावल इन सबकी पिढी पिसाकर स्नानके आदिमें लगाना योग्यहै ७।१४ और स्वस्तिक, पद्मक, शंख, कमल, सहस्र दलकमल, श्रीवत्सदर्पण और नंद्यावर्त्त यह आठ चिह्न होते हैं इनको गोबर से बनावे अथवा सुन्दर मृत्तिकासेही बनादेवे, और पांच प्रकारके वर्णकी रज बनालेनीचाहिये १५।१६ और दूब, कालेतिल इन दोनोंका नीराजन विधिमें वर्त्तावकरे इसप्रकार नीराजन करवाके आचमन करवावे फिर संपूर्ण पापोंके हरनेवाले गंगा जलसे आचमन कराना योग्यहै तदनन्तर आगे लिखेहुए इस मंत्रसे दोवस्त्र पहरावे १७। १८ मंत्रार्थः देवसूत्रसे और यज्ञ दानसे संयुक्त संपूर्ण वर्णवाले इन वस्त्रोंको आप धा- रण कीजिये १९ फिर हाथोंमें कुशाधारण करके कपूर और केशरसे संयुक्त चन्दन चढावे और इस मंत्रका उच्चारण करे कि हेदेव मैं तुम्हारे शरीरको और चेष्टाको नहीं जानताहूं आप इस मेरे दिये हुए गंधको ग्रहण कीजिये २०। २१ फिर प्रदक्षिण क्रमसे आगे के मंत्र द्वारा चालीस दीपक प्रज्वलित करे कि आप सूर्य्य चन्द्रमाकी ज्योतिहो विद्युत् और अग्निहो आपही सबकी ज्योतिहो मेरे दिये हुए इस दीपकको ग्रहण कीजिये फिर दूसरे लिखेहुए मंत्रसे धूपदेवे २२। २३ मंत्रार्थः हे देव वनस्पतियोंका दिव्यरस उत्तम सुगन्धियों से युक्त उस रसकी बनीहुई इस मेरी दीहुई धूपको आप ग्रहण कीजिये २४ फिर महाभूषायतेनमः इस मंत्रसे भूषण पहरावे इस विधिसे सात दिनतक महोत्सव करके देवताके अवशेष आठ चार अथवा एकही कलश करके यजमान अ-

भ्यामेकेनवापुनः २६ सपञ्चरत्नकलशैः सितवस्त्राभिवेष्टितैः। देवस्यत्वेतिमन्त्रेण सा म्नाचाथर्वणेनच २७ अभिषेकेचयेमन्त्रा नवग्रहमखेस्मृताः। सिताम्बरधरःस्नात्वा देवान्संपूज्ययत्नतः २८ स्थापकंपूजयेद्भक्त्या वस्त्रालङ्कारभूषणैः। यज्ञभाण्डानिसर्वाणि मण्डपोपस्करादिकम् २९ यच्चान्यदपितद्गेहे तदाचार्यायदापयेत्। सुप्रसन्नेगुरौयस्मात्तृप्यन्तेसर्वदेवताः ३० नैतद्द्विशीलेनचदाम्भिकेन नलिङ्गिनास्थापनमत्रकार्यम्। विप्रेणकार्यंश्रुतिपारगेण गृहस्थधर्माभिरतेननित्यम् ३१ पाषण्डिनंयस्तुकरोतिभक्त्या विहायविप्रान्श्रुतिधर्मयुक्तान्। गुरुंप्रतिष्ठादिषुतत्रनूनं कुलक्षयःस्यादचिरादपूज्यः ३२ स्थानंपिशाचैःपरिगृह्यतेवा अपूज्यतांयात्यचिरेणशोकः। विप्रैःकृतंयच्छुभदंकुलेस्यात् प्रपूज्यतांयातिचिरञ्चकालम् ३३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेषट्षष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६६॥

(ऋषय ऊचुः) प्रासादाःकीदृशाःसूत! कर्त्तव्याभूतिमिच्छता। प्रमाणंलक्षणंतद्वद्दविस्तरतोऽधुना १ (सूत उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि प्रासादविधिनिर्णयम्। वास्तौपरीक्षितेसम्यग्वास्तुदेहविचक्षणः २ वास्तूपशमनंकुर्यात् समिद्भिर्बलिकर्मणा। जीर्णोद्धारेतथोद्याने तथागृहनिवेशने ३ नवप्रासादभवने प्रासादपरिवर्तने। द्वाराभिवर्तने

पना अभिषेक करावे २५। २६ पंचरत्न से युक्त हुए श्वेत वस्त्र से लिपटेहुए कलशोंके जल से देवस्यत्वा सविता इसमंत्र से अभिषेक करे और अन्य अभिषेकोंके मंत्र नवग्रह यज्ञमें कहदिये हैं उनको पढ़े फिर स्नानकर श्वेत वस्त्र पहने देवताओंका पूजन करके प्रतिष्ठा करानेवाले आचार्य्य को बड़ी भक्तिसे वस्त्र आभूषण समेत द्रव्यदेवे और यज्ञके सब पात्र और मंडप आदि सब पदार्थोंको आचार्य्य के घर पहुंचा देवे क्योंकि गुरुके अच्छेप्रकार प्रसन्न होजानेसे सम्पूर्ण देवता तृप्त होजाते हैं २७।३० यह मूर्ति स्थापन अर्थात् प्रतिष्ठा कर्म क्रोधी पाखंडी और संन्यासी आदिकसे नहीं करवाना योग्य है किन्तु वेदपाठी धार्मिक गृहस्थी ब्राह्मण से सदैव प्रतिष्ठा करानी उचित है ३१ जो पुरुष वेद के पढ़ेहुए विद्वान् ब्राह्मणोंको त्यागकर पाखंडी पुरुषको भक्तिसे गुरु बनाकर प्रतिष्ठा कर्म करवाता है उसके कुलका अवश्य नाश होजाताहै अथवा उस मंदिरमें पिशाच प्रवेशकर जाते हैं और उस देवताकोभी कोई नहीं पूजता और जहां ब्राह्मण प्रतिष्ठा कराते हैं उस यजमान के कुलमें आनन्द रहताहै और उस देवताको बहुत कालतक सब लोग पूजते हैं ३२।३३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्षष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६६॥

ऋषियोंने पूछा कि हे सूतजी ऐश्वर्य्य के चाहनेवाले पुरुषोंको देवताओं के मन्दिर कैसे बनाने चाहिये और कितने प्रमाण के होंय यह सब आप वर्णन कीजिये १ सूतजी बोले—अब देवताओं के मन्दिरोंकी विधि और निर्णयको कहताहूं वास्तु विद्याका जाननेवाला विद्वान् पुरुष प्रथमतो अच्छे प्रकार से वास्तुकी परीक्षाकरे २ फिर बलिकर्म करके समिधोंसे वास्तुकी शान्तिकरे जीर्ण मन्दिरके उद्धार करनेमें बगीचा लगानेमें गृहप्रवेशके समय नवीन मन्दिर और गृह चिनवानेके समय वास्तु

तद्वत्प्रासादेषुगृहेषुच ४ वास्तूपशमनंकुर्यात् पूर्वमेवविचक्षणः। एकाशीतिपदंलिख्यवा स्तुमध्येचपृष्ठतः ५ होमस्त्रिमेखलेकार्यः कुण्डेहस्तप्रमाणके। सर्वैःकृष्णतिलैस्तद्वत्समि द्भिःक्षीरवृक्षजैः ६ पालाशैःखादिरैश्चापि मधुसर्पिसमन्वितैः। कुशदूर्वामयैर्वापि मधुस र्पिसमन्वितैः ७ कार्यस्तुपञ्चभिर्बिल्वैर्बिल्वबीजैरथापिवा। होमान्तेभक्ष्यभोज्यैस्तु वास्तु देशेबलिंहरेत् ८ तद्वद्विशेषनैवेद्यमेवन्दद्यात्क्रमेणतु। ईशकोणेघृतान्नन्तु शिखिनेविनिवे दयेत् ९ ओदनंसफलंदद्यात् पर्जन्यायघृतान्वितम्। जयायचध्वजान्पीतान् पैष्टंकूर्मञ्च सन्न्यसेत् १० इन्द्रायपञ्चरत्नानि पैष्टञ्चकुलिशन्तथा। वितानकञ्चसूर्याय धूम्रंसक्तुं तथैवच ११ सत्यायघृतगोधूमं मत्स्यंदद्याद्भृशायच। शष्कुलीश्चान्तरिक्षाय दद्यात्स क्तुंश्चवायवे १२ लाजाःपूष्णेतुदातव्याः वितथेचणकौदनम्। गृहक्षतायमध्वन्नं यमाय पिशितौदनम् १३ गन्धौदनञ्चगन्धर्वे भृंगराजस्यभृंगिकाम्। मृगाययावकंदद्यात् पि तृभ्यः कृसरामता १४ दौवारिकेदन्तकाष्ठं पैष्टंकृष्णाबलिन्तथा। सुग्रीवेपुष्पकंदद्यात् पु ष्पदन्तायपायसम् १५ कुशस्तंबेनसंयुक्तं तथापद्मञ्चवारुणम्। पिष्टंहिरण्मयंदद्यात् असुरायसुरामता १६ घृतौदनञ्चशोषाय यवान्नंपापयक्ष्मणे। घृतलड्डुकांस्तुरोगाय ना गेपुष्पफलानितु १७ सर्पिर्मुख्यायदातव्यं मुद्गौदनमतःपरम्। भल्लाटस्थानकेदद्यात् सोमायघृतपायसम् १८ भगायशालिकंपिष्टमदित्यैपोलिकास्तथा। दित्यैतुपूरिकांदद्या दित्येवंबाह्यतोबलिः १९ क्षीरंयमायदातव्यमापवत्सायवैदधि। सावित्रेलड्डुकान्दद्यात्

की शान्ति करवानी योग्य है वास्तुके मध्यमें पूर्व के समान इक्यासी पद लिखे फिर तीनमेखला वाला एक हाथ का कुंडबनावे फिर दूधवाले वृक्षोंकी समिधों लकड़ियों में कालेतिल और जवों से हवनकरे और ढाक खैर शहद घृत और बेलगिरी इन सबसे हवनकरे फिर वास्तुके स्थानमें बलि- दानकरे ईशानकोणमें अग्निदेवके निमित्त घृत और अन्नकी बलिदेवे और पर्जन्य देवके निमित्त घृत से युक्त कियेहुए ओदनकी बलिदेवे जयके अर्थ पीली ध्वजा पिट्ठी और कछुआ इन सबको निवेदन करे इन्द्रके निमित्त पञ्चरत्न पिट्ठी और वज्र इन वस्तुओंकी बलिदेवे सूर्य्यके अर्थ धूम्रवर्णकी चन्द- नवार और सत्तूकी बलिदेवे ११ सत्यके निमित्त घृत और गेहूंकी बलिदेवे भृशको मछलीकीबलि अन्तरिक्षको शष्कुली अर्थात् पूरियोंकी बलि वायुको सत्तूकी बलि १२ पूषाको धानकी खीलकी वित थको चनोंकी गृह क्षत देवको मधु और अन्नकी धर्मराजको मांस वा ओदनकी १३ गन्धर्वको गन्ध और ओदनकीबलि भृंगराज देवको भंगकी मृगको जवकूटके बलिदेवे पितृदेवको खिचड़ीकी दौवारिकको दातन और पिट्ठीकी बलिदेवे सुग्रीवको पुष्पोंकी बलिदेवे पुष्पदंतको खीरकी वरुणदेवताको कुशाके स्तंभ और कमलकी और सुवर्णकी बलिदेवे असुरको मदिराकी बलिदेवे १४।१६ शेषको घृत चावल की पाप यक्ष्माको जवान्नको, रोगको घृतलड्डूकी और नागको पुष्प और फलोंकीबलि देनी चाहिये १७ मुख्य देवको घृतकीबलि, भल्लाटके स्थानमें रंधेहुए मूंगोंकीबलि, सोमको घृत और खांडकी १८ भगको शाली चावलोंकी पिट्ठीकी, अदितिको पोलिका कचौरी और दितिको पूरीकीबलि देनीचाहिये यहसब

समरीचंकुशोदनम् २० सवितुर्गुडपूपांस्तु जयायघृतचन्दनम्। विवस्वतेपुनर्दद्याद्रक्त चन्दनपायसम् २१ हरितालोदनंदद्यादिन्द्रायघृतसंयुतम्। घृतोदनञ्चमित्राय रुद्राय घृतपायसम् २२ आमंपक्वंतथामांसं देयंस्याद्राजयक्ष्मणे। पृथ्वीधरायमांसानि कूष्मां डानिचदापयेत् २३ शर्करापायसंदद्यादर्यम्णेपुनरेवहि। पञ्चगव्यंयवांश्चैव तिलाक्षत मयंचरुम् २४ भक्ष्यंभोज्यञ्चविविधं ब्रह्मणेविनिवेदयेत्। एवंसम्पूजितादेवाः शान्ति कुर्वन्तितेसदा २५ सर्वेभ्यःकाञ्चनंदद्याद्ब्रह्मणेगांपयस्विनीम्। राक्षसीनांबलिर्देयो अपियाद्वय्यथाशृणु २६ मांसौदनंघृतंपद्म केसरंरुधिरान्वितम्। ईशानभागमाश्रित्य चरक्यैविनिवेदयेत् २७ मांसौदनञ्चरुधिरं हरिद्रौदनमेवच। आग्नेयींदिशमाश्रित्य विदार्यैविनिवेदयेत् २८ दध्योदनंसरुधिरमस्थिखण्डैश्चसंयुतम्। पीतरक्तंबलिंदद्यात् पूतनायैसरक्षसे २९ वायव्यांपापराक्षस्यै मत्स्यमांसंसुरासवम्। पायसञ्चापिदातव्यं स्वनाम्नासर्वतःक्रमात् ३० नमस्कारान्तयुक्तेन प्रणवाद्येनसंयुतः। ततःसर्वौषधीस्नानं यजमानस्यकारयेत् ३१ द्विजान्सुपूजयेद्भक्त्या येचान्येगृहमागताः। एतद्वास्तूपशम नं कृत्वाकर्मसमारभेत् ३२ प्रासादभवनोद्यान प्रारम्भेविनिवर्त्तने। पुरवेश्मप्रवेशेषु स र्वदोषापनुत्तये ३३ रक्षोघ्नपावमानेन सूक्तेनभवनादिकम्। नृत्यमंगलवाद्येन कुर्य्यात् ब्राह्मणवाचनम् ३४ अनेनविधिनायस्तुप्रतिसम्वत्सरम्बुधः। गृहेवायतनेकुर्य्यान्नसदुःख

कोष्ठोंसे बाहर देनेकी बलि है १९ यमकोदूध, आप वत्सकोदही, सावित्रको लड्डू मिर्च और कुशा के जलकीबलि देनीचाहिये २० सविताको गुड़केपुए, जयको घृतचन्दन, विवस्वान्को लालचन्दन और खीरकी २१ इन्द्रको हरताल, भात और घृतकी, मित्रको घृत और भातकी, रुद्रको घृत और खीरकी २२ राजयक्ष्माको कच्चे तथा पक्के मांसकी, पृथ्वी धरकोमांस ओहलाफलकी २३ अर्य्यमा को घृत खांडकी, ब्रह्माको पंचगव्य, तिल, जौ और चावलके शाकल्य और अनेक प्रकारके भक्ष्य भोज्य पदार्थोंकी बलिदेवे, इस प्रकारसे पूजितहुए वास्तुमें रहनेवाले देवता सदैव शान्तिकरतेहैं २४।२५ इन सबोंके अर्थ ब्राह्मणको सुवर्ण और दूधवाली गौका दानकरे और राक्षसियोंके निमित्तजो बलि देनीचाहिये उनकोभी मुझसे सुनो २६ मांस, भात, घृत, कमल, रुधिर आदिकी बलि देनीयोग्यहै परन्तु ईशान दिशामेंदेवे और मांस, भात, रुधिर, हल्दी और रंधाहुआ अन्न इन सबकी बलि अग्नि कोणमें विदारीके निमित्तदेवे २७। २८ दही, भात, रुधिर और हड्डियोंकेटुकड़े इन सबकी बलि पूतना राक्षसीको देवे और वायव्यदिशामें पाप राक्षसीके निमित्त मच्छीका मांस, मदिरा और खीरकीदेवे, सब स्थानमें क्रम पूर्व्वक अपनानाम लेके ओंकार सहित नमस्कार पूर्व्वक बलिदान करना चाहिये. फिर वह यजमान सर्वौषधीके जलसे स्नानकरे २९। ३१ और भक्तिसे घरमें आयेहुए ब्राह्मणोंका पूजनकरे, इस रीतिसे वास्तूपशमन कर्म करना चाहिये ३२ और प्रासाद, भवन, बगीचे आदिके प्रारंभमें, नगर और गृहके प्रवेशके समयमें, संपूर्ण दोषों के दूरकरने के निमित्त नृत्य मंगल वाद्ययुक्त रक्षोघ्न और पावमान इनदोनों सूक्तोंका पाठ ब्राह्मणों से करवावे ३३। ३४ जो पुरुष

मवाप्नुयात् ३५ नचव्याधिभयंतस्य नचबन्धुधनक्षयः। जीवेद्वर्षशतंस्वर्गे कल्पमेक ञ्चतिष्ठति ३६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्तषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६७॥

(सूत उवाच) एवंवास्तुबलिंकृत्वा भजेत्षोड़शभागिकम्। तस्यमध्येचतुर्भिस्तु भागैर्गर्भन्तुकारयेत् १ भागद्वादशकंसार्द्धं ततस्तुपरिकल्पयेत्। चतुर्दिक्षुतथाज्ञेयं निर्गमंतुततोबुधैः २ चतुर्भागेनभित्तीनामुच्छ्रायःस्यात्प्रमाणतः। द्विगुणःशिखरोच्छ्रायो भित्युच्छ्रायप्रमाणतः ३ शिखरार्द्धस्यचार्द्धेन विधेयातुप्रदक्षिणा। गर्भसूत्रद्वयंचाग्रे विस्तारोमण्डपस्यतु ४ आयतःस्यात्त्रिभिर्भागैर्भद्रयुक्तःसुशोभनः। पञ्चभागेनसंभज्य गर्भमानंविचक्षणः ५ भागैकंगृहीत्वातु प्राग्ग्रीवंकल्पयेद्बुधः। गर्भसूत्रसमाद्भागादग्रतोमुखमण्डपः ६ एतत्सामान्यमुद्दिष्टं प्रासादस्येहलक्षणम्। तथान्यन्तुप्रवक्ष्यामि प्रासादं लिंगमानतः ७ लिंगपूजाप्रमाणेन कर्त्तव्यापीठिकाबुधैः। पिण्डकार्द्धेविभागःस्यात्तन्मानेनतुभित्तयः ८ वाह्यभित्तिप्रमाणेन उत्सेधस्तुभवेत्पुनः। भित्युच्छ्रायात्तुद्विगुणः शिखरस्यसमुच्छ्रयः ९ शिखरस्यचतुर्भागात् कर्त्तव्याचप्रदक्षिणा। प्रदक्षिणायास्तुसमस्त्वग्रतोमण्डपोभवेत् १० तस्यचार्द्धेनकर्त्तव्यस्त्वग्रतोमुखमण्डपः। प्रासादान्निर्गतौकार्य्यौ कपालौगर्भमानतः ११ ऊर्ध्वंभित्त्युच्छ्रयात्तस्य मञ्जरीन्तुप्रकल्पयेत्। मंजर्य्याश्चार्द्धभागे

अपने घरमें अथवा देवताके मन्दिरमें इस विधिको प्रतिवर्ष करताहै उसको कभी दुःखनहीं होताहै रोगका भयनहीं होताहै बन्धुजन और धनका क्षयनहीं होताहै और सौवर्षतक जीवताहै मरनेके पीछे एक कल्पतक स्वर्गमें वासकरताहै ३५। ३६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६७॥

सूतजीबोले-इस पूर्व्वोक्त प्रकारसे वास्तुकी बलि देकर प्रासादकी भूमिके सोलह भाग बनावे उसके मध्यमें चार भागोंका गर्भ अर्थात् चौकरक्खे और बारह भागोंमें गृहबनावे, बुद्धिमान् पुरुष को देवमंदिरकी चारोंदिशाओंमें चारद्वार रखने चाहिये १। २ और भूमिके चौथेभाग के प्रमाणसे भीतोंकी उंचाई बनावे उसभीतकी उंचाईसे दूना ऊंचा शिखरका गुम्मज बनावे शिखरके चतुर्थांशके प्रमाण ऊंची प्रदक्षिणा बनवावे और देवमन्दिरके आगे चौकके द्वितियांश भागमें मंडपकी चौड़ाई बनावे और गर्भ अर्थात् चौकके तृतीयांश भागमें मंडपकी लंबाई बनावे और चौकके पांचभाग बनाकर एकभागकी पूर्व्वमें आगेको ओर टोडी लगावे और जितना चौडा आंगनहोवे उतनेही विस्तारमें मुखमंडप बनावे इस प्रकारसे देवमन्दिरके बनानेका लक्षण कहाहै, अब लिंगकेमानसे अन्य लक्षणंकोभी वर्णन करताहूं ३। ७ लिंगके प्रमाणसे जलहरी बनानी चाहिये, लिंगके आधे भागमें जलहरीकी दौलीबनावे और लिंग स्थापनकी ब्रह्मशिलाके समान ऊंची जलहरी बनावे और जितनी ऊंचीमन्दिर कीभीतहो उससे दूनी ऊंचीशिखर बनानीचाहिये और शिखरसेचौथाई ऊंचीप्रदक्षिणाबनावे प्रदक्षिणा केसमान ऊंचा आगे मुखमंडप अर्थात् द्वारबनावे-अथवा प्रदक्षिणसे आधा ऊंचा दरवाजा बनवावे और

न शुकनासांप्रकल्पयेत् १२ ऊर्ध्वंतथार्द्धभागेन वेदीबन्धोभवेदिह। वेद्याश्चोपरियच्छेषं कण्ठश्चामलसारकः १३ एवंविभज्यप्रासादं शोभनंकारयेद्बुधः। अथान्यत्रप्रवक्ष्यामि प्रासादस्येहलक्षणम् १४ गर्भमानप्रमाणेन प्रासादंशृणुतद्विजाः!। विभज्यनवधागर्भं मध्येस्याल्लिङ्गपीठिका १५ पादाष्टकंतुरुचिरं पार्श्वतःपरिकल्पयेत्। मानेनतेनविस्तारो भित्तीनान्तुविधीयते १६ पादंपञ्चगुणंकृत्वा भित्तीनामुच्छ्रयोभवेत्। सएवशिखरस्यापि द्विगुणःस्यातसमुच्छ्रयः १७ चतुर्धाशिखरंभज्य अर्द्धभागद्वयस्यतु। शुकनासंप्रकुर्वीत तृतीयेवेदिकामता १८ कण्ठमामलसारंतु चतुर्थेपरिकल्पयेत्। कपालयोस्तुसंहारो द्विगुणोऽत्रविधीयते १९ शोभनैःपत्रवल्लीभिरण्डकैश्चविभूषितः। प्रासादोऽयंतृतीयस्तु मयातुभ्यंनिवेदितः २० (सूत उवाच) सामान्यमपरंतद्वत् प्रासादंशृणुतद्विजाः!। त्रिभेदंकारयेत्क्षेत्रं यत्रतिष्ठन्तिदेवताः २१ रथाङ्कस्तेनमानेन बाह्यभागविनिर्गतः। नेमीपादेनविस्तीर्णा प्रासादेस्यात्समन्ततः २२ गर्भन्तुद्विगुणंकुर्यात् तस्यमानंभवेदिह। सएवभित्तेरुत्सेधोद्विगुणःशिखरोमतः २३ प्राक्ग्रीवःपञ्चभागेननिष्कासस्तस्यचोच्यते। कारयेत्सुषिरंतद्वत् प्राकारस्यत्रिभागतः २४ प्राक्ग्रीवंपञ्चभागेन निष्कासेणविशेषतः। कुर्य्यादापञ्चभागेन प्राक्ग्रीवेकर्णमूलतः २५ स्थापयेत्कनकंतत्र गर्भान्तेद्वारमूलतः। एवन्तुत्रिविधंकुर्य्यात् ज्येष्ठमध्यकनीयसम् २६ लिङ्गमानानुभेदेन रूपभेदेनवापुनः। ए

देवमन्दिरसे आगेको निकलेहुए मुखमंडप अर्थात् बारजाके कोले बनावे और उनकी भीतके ऊपर मंजरी बनावे मंजरीके आधेभाग में शुकनासा बनावे उसके ऊपर गुम्मजमें वेदी बनावे फिर उसके ऊपर शिखरका कंठा बनावे ऐसे शिवालय के विभाग करके शोभित बनावे-अब देव मन्दिर के अन्य२ लक्षणोंको भी मुझसे सुनो ८। १४ भीतर के चौकके प्रमाण से सब प्रमाण होताहै गर्भ अर्थात् चौकके नौ भाग करके बीचमें शिवलिंग स्थापित करे और शेषबचे आठ भागोंको शोभित बनावे उन्हीं से भीतों की उंचाईका मान होताहै उन आठ पद अर्थात् भागोंको पांचगुनाकरके उतनी ऊंची भीत बनावे भीतों से दूनी उंचाईका शिखर बनावे फिर शिखरके चार भाग करके आधे दो भागों में शुकनासा बनावे-तीसरे भागमें वेदिका बनावे १५। १८ चौथे भाग में शिखरका गोल कंठा बनावे और गुम्मजके भीतर का कपाल शिखर के प्रमाणसे दूने विस्तारमें बनावे बेल बूंटा आदिसे शोभित करदेवे इस रीतिसे यह तीसरे प्रकारका देवमंदिर कहागया१९।२० सूतजी कहते हैं हेद्विजो, अब सामान्यसे दूसरे मन्दिरकी रीति सुनो, जहाँ देवताकी मूर्त्ति स्थापितकी जावे उस स्थानके तीनभाग करके उसके चतुर्थांशमें चारोंओरको चौंतरा बनावे, मध्यमें देवमन्दिर बनावे भीतरका गर्भ दुगनारक्खे और गर्भका जितना विस्तार होवे उतनीही ऊंची भीत बनावे भीतसे द्विगुण ऊंचा शिखर बनावे और उस मन्दिरके पांचवें भागमें द्वारका बारजा बनावे और चारोंओर की गोल भीतोंके तीसरे भागके विस्तारमें गुम्मजके ऊपर छिद्ररक्खे और द्वारकी जड़ोंमें सुवर्णका रंग लगावे इस प्रकारसे ज्येष्ठ मध्य और कनिष्ठ यह तीन मन्दिर लिंगके मान भेदसे अथवा रूपभेदसे

ते समासतःप्रोक्ता नामतःशृणुताधुना २७ मेरुमन्दरकैलासकुम्भसिंहमृगास्तथा। वि मानच्छन्दकस्तद्वच्चतुरस्रस्तथैवच २८ अष्टास्रःषोडशास्रश्च वर्तुलःसर्वभद्रकः। सिं हास्योनन्दनश्चैव नन्दिवर्धनकस्तथा २९ हंसोवृषःसुपर्णेशः पद्मकोऽथसमुद्गकः। प्रा सादानामतःप्रोक्ता विभागंशृणुतद्द्विजाः! ३० शतशृङ्गश्चतुर्द्वारो भूमिकाषोडशोच्छ्रितः। नानाविचित्रशिखरो मेरु प्रासादउच्यते ३१ मन्दरोद्वादशप्रोक्तः कैलासोनवभूमिकः। विमानच्छन्दकस्तद्वदनेकशिखराननः ३२ सचाष्टभूमिकस्तद्वत् सप्तभिर्नन्दिवर्धनः। विषाणकसमायुक्तो नन्दनःसउदाहृतः ३३ षोडशास्रसमायुक्तो नानारूपसमन्वितः। अ नेकशिखरस्तद्वत्सर्वतोभद्रउच्यते ३४ चित्रशालासमोपेतो विज्ञेयःपञ्चभूमिकः। व लभीच्छन्दकस्तद्वदनेकशिखराननः ३५ वृषस्योच्छ्रायतस्तुल्यो मण्डलश्चास्रवर्जितः। सिंहःसिंहाकृतिर्ज्ञेयो गजोगजसमस्तथा ३६ कुम्भःकुम्भाकृतिस्तद्वद्भूमिकानवकोच्छ्रय। अङ्गुलीपुटसंस्थानः पञ्चाण्डकविभूषितः ३७ षोडशास्रःसमन्ताच्च विज्ञेयःससमुद्गकः। पार्श्वयोश्चन्द्रशालेऽस्य उच्छ्रायोभूमिकाद्वयम् ३८ तथैवपद्मकःप्रोक्त उच्छ्रायोभूमिका त्रयम्। षोडशास्रःसविज्ञेयो विचित्रशिखरःशुभः ३९ मृगराजस्तुविख्यातश्चन्द्रशा लाविभूषितः। प्राग्ग्रीवेणविशालेन भूमिकासुषडुन्नतः ४० अनेकश्चन्द्रशालश्च गजः प्रासादइष्यते। पर्यस्तगृहराजोवै गरुडोनामनामतः ४१ सप्तभूम्युच्छ्रयस्तद्वच्चन्द्रशा लात्रयान्वितः। भूमिकाषडशीतिस्तु वाह्यतःसर्वतोभवेत् ४२ तथान्योगरुडस्तद्वदुच्छ्र

कहे हैं, अब मन्दिरोंके नामोंको सुनो २६।२७ मेरु, मन्दर, कैलास, कुंभ, सिंह, मृग, विमानच्छन्दक, चतुरस्र,२८अष्टास्र, षोडशास्र, वर्तुल,सर्वभद्रक, सिंहास्य,नन्दन,नन्दिवर्धन,२९ हंस,वृष, सुपर्णेश अर्थात् गरुड नामक, पद्मक और समुद्गक,इन नामोंवाले प्रासाद अर्थात् मन्दिर कहातेहैं-अब इन के विभागोंको कहताहूं ३० सैकड़ों शृङ्गोंवाला-चारद्वारवाला-सोलह भूमिका गृहवाला ऊंचा-वि-चित्र-ऐसामेरु-प्रासादहोताहै ३१ बारह भूमिकावाला मन्दरहोताहै-नवभूमिकावाला कैलास कहा-ताहै-अनेक शिखर तथा अनेक मुखोंवाला विमानच्छन्दक कहलाताहै ३२वह विमानच्छन्दक आठ भूमिकावाला होताहै-सात भूमिकावाला नन्दिवर्द्धनहोताहै-अनेक शृंगोंवाला नन्दन कहाताहै-सोलहदलों वाला अनेक रूपवाला अनेक शिखरों से यक्त पांच भूमिकावाला ऐसा सर्वतोभद्र प्रा-साद कहाताहै ३३।३५ सिंहके समान आकृति वाला सिंह मूर्त्ति से विभूषित सिंह प्रासादहोताहै-हस्ती के समान आकारवाला गजकहाताहै-नवभूमिकाओंवाला कुंभ के समान आकार जिसका होता है वह कुम्भक कहाताहै-गोलाकार चारों ओर सोलह दलोंवाला समुद्गक प्रासाद होताहै-दोनों बराबरों में चन्द्रशाला युक्त दो भूमिका समेत पद्मक प्रासाद होताहै-सोलह दलों से युक्त विचित्र शिखरोंवाला षोडशास्र प्रासाद होताहै ३६।३९ चन्द्रशाला से विभूषित विशाल बारजे समेत छः भूमिकाओंवाला मृगराज कहाताहै-सात भूमिकावाला तीन चन्द्रशालाओं से विभूपित गरुडनाम प्रासाद कहाताहै-कितनेही आचार्य्य दशभूमिकायुक्त सोलह दलों समेत को गरुड़ कह-

यादृशभूमिकः। भूमिकाषोडशाश्रस्तु भूमिद्वयमथाधिकः ४३ पद्मतुल्यप्रमाणेन श्रीवृक्ष कइतिस्मृतः। पञ्चाण्डकोद्विभूमिश्च गर्भहस्तचतुष्टयम् ४४ वृषोभवतिनाम्नायं प्रासादः सार्वकामिकः। सप्तकाःपञ्चकाश्चैव प्रासादावैमयोदिताः ४५ सिंहास्येनसमाज्ञेया येचान्ये तत्प्रमाणकाः। चन्द्रशालैःसमोपेताःसर्वेप्राग्ग्रीवसंयुताः। ऐष्टकादारवाश्चैव शैलावास्युः सतोरणाः ४६ मेरुःपञ्चाशद्धस्तःस्यान्मन्दरःपञ्चहीनकः। चत्वारिंशत्तुकैलासश्चतुस्त्रिं शद्विमानकः ४७ नन्दिवर्द्धनकस्तद्वत् द्वात्रिंशत्समुदाहृतः। त्रिंशतानन्दनःप्रोक्तः सर्व तोभद्रकस्तथा ४८ वर्तुलःपद्मकश्चैव विंशद्धस्तउदाहृतः। गजःसिंहश्चकुम्भश्च वल भीच्छन्दकस्तथा ४९ एतेषोडशहस्ताःस्युश्चत्वारोदेववल्लभाः। कैलासोमृगराजश्चवि मानच्छन्दकोमतः ५० एतेद्वादशहस्ताःस्युरेतेषामिहमन्मतम्। गरुडोऽष्टकरोज्ञेयो हं सोदशउदाहृतः ५१ एवमेतेप्रमाणेन कर्तव्याःशुभलक्षणाः। यक्षराक्षसनागानां मातृह स्तान्प्रशंस्यते ५२ तथामेर्वादयःसप्त ज्येष्ठलिङ्गेशुभावहाः। श्रीवृक्षकादयश्चाष्टौ मध्य मस्यप्रकीर्तिताः ५३ तथाहंसादयःपञ्च कन्यसेशुभदामताः। वलभीच्छन्दकेगौरी ज टामुकुटधारिणी ५४ वरदाभयदातद्वत् साक्षसूत्रकमण्डलुः। गृहेतुरक्तमुकुटा उत्पलां कुशधारिणी। वरदाभयदाचापिपूजनीयासभर्तृका ५५ तपोवनस्थामितरां तांतुसंपूजये द्बुधः। देव्याविनायकस्तद्वत्वलभीच्छन्दकेशुभः ५६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टषष्ट्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६८ ॥

तेहैं ४०।४३ और अष्टास्र वा चतुरस्र यह दोनों अपने २ नामके अनुरूप वाले होतेहैं और हंसके समान आकार वालेको हंस कहतेहैं-एक भूमिका समेत एक शृंगदशहाथ प्रमाण और चारों ओर से गोल ऐसा वृष प्रासादहोताहै ४४।४५ इनके सिवाय विना कहेहुए अन्य सब मन्दिर सिंहास्यकी तुल्य और चन्द्र शालासे युक्त होतेहैं यह सब मन्दिर ईंटोंके वा काष्ठके अथवा पत्थरोंसे विनवाये जातेहैं इन सबोंके तोरण वन्दन वार बंधवा देवे ४६ मेरुनामवाला देवमन्दिर और बिमानक चौंती-स हाथ विस्तार वालाहोताहै ४७ नन्दिवर्धन बत्तीस हाथका नन्दन और सर्वतोभद्र यह दोनोंती-सहाय प्रमाणके होते हैं ४८ और वर्तुल पद्मक बीस२ हाथ विस्तारवाले होते हैं और गज-सिंह-कुम्भ और वलभीच्छन्दक यह चार मन्दिर सोलह २ हाथकेहोते हैं और सूतजीका वचनहै कि मेरे मतमें कैलास-मृगराज और विमानच्छन्दक यह बारह२ हाथकेहोते हैं-गरुड़ आठहाथका होताहै-हंसदश हाथकाहोताहै ४९।५१ इसप्रकारसे यह सब प्रमाणवाले मन्दिर शुभलक्षणवाले होतेहैं-यहां यक्ष-राक्षस-नाग और मातृका इन्होंके हाथ श्रेष्ठ कहे हैं-५२ और मेरु आदिक सात मन्दिरों में बड़ा शिवलिंग स्थापित करना शुभहै और श्रीवृक्षक आदि आठ मंदिर मध्यम लिंगके स्थापन में श्रेष्ठहैं हंस आदि पांच मन्दिरछोटे शिवलिंग स्थापन करने के योग्य हैं ५३ वलभीच्छन्दक नाम वाले मन्दिरमें जटामुकुट धारण करने वाली गौरी स्थापित करनीचाहिये ५४ और वरदेनेवाली साक्षसूत्र-कमंडलु और रक्तमुकुट कमल और अंकुश इन सबको धारण करनेवाली महादेव सहित

(सूत उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि मण्डपानान्तुलक्षणम्। मण्डपप्रवरान्वक्ष्ये प्रासादस्यानुरूपतः १ विविधामण्डपाःकार्या ज्येष्ठमध्यकनीयसः। नामतस्तान्प्रवक्ष्यामि शृणुध्वमृषिसत्तमाः २ पुष्पकःपुष्पभद्रश्च सुव्रतोऽमृतनन्दनः। कौशल्योबुद्धिसंकीर्णो गजभद्रोजयावहः ३ श्रीवत्सोविजयश्चैव वास्तुकीर्त्तिःश्रुतिंजयः। यज्ञभद्रोविशालश्च सुश्लिष्टःशत्रुमर्दनः ४ भागपञ्चोनन्दनश्च मानवोमानभद्रकः। सुग्रीवोहरितश्चैव कर्णिकारःशतार्द्धकः ५ सिंहश्चश्यामभद्रश्च सुभद्रश्चतथैवच। सप्तविंशतिराख्याता लक्षणं शृणुतद्विजाः! ६ स्तम्भायत्रचतुःषष्टि पुष्पकःसमुदाहृतः। द्विषष्टिपुष्पभद्रस्तु षष्टिः सुव्रतउच्यते ७ अष्टपञ्चाशकस्तम्भः कथ्यतेमृतनन्दनः। कौशल्यःषट्चपञ्चाशद्बुतुः पञ्चाशतापुनः ८ नाम्नातुबुद्धिसंकीर्णो द्विहीनोगजभद्रकः। जयावहस्तुपञ्चाशत् श्रीवत्सस्तद्विहीनकः ९ विजयस्तद्विहीनःस्यात् वास्तुकीर्तिस्तथैवच। द्वाभ्यामेवप्रहीयेतततःश्रुतिजयोऽपरः १० चत्वारिंशद्यज्ञभद्रस्तद्विहीनोविशालकः। षट्त्रिंशच्चैवसुश्लिष्टो द्विहीन शत्रुमर्दनः ११ द्वात्रिंशद्भागपञ्चस्तु त्रिंशद्भिर्नन्दन स्मृतः। अष्टाविंशन्मानवस्तु मानभद्रोद्विहीनकः १२ चतुर्विंशस्तुसुग्रीवो द्वाविंशोहरितोमतः। विंशतिःकर्णिकारःस्यादष्टादशशतार्धिकः १३ सिंहोभवेद्द्विहीनश्च श्यामभद्रोद्विहीनकः। सुभद्रस्तुतथाप्रोक्तोद्वादशस्तम्भउच्यते १४ मण्डपाःकथितास्तुभ्यं यथावल्लक्षणान्विता। त्रिकोणंवृत्तमर्द्धन्तु ह्य

पार्वती देवी सदैव घरमें पूजनीचाहिये ५५ और अन्य प्रकारकी गौरीकी मूर्त्तिको तपोवनमें स्थापित करके पूजे और गौरीपुत्र गणेशजीको वल्लभीच्छन्दकनामवाले मन्दिरमें स्थापितकरे ५६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टषष्ठ्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६८ ॥

सूतजीबोले—अब मंडपों के लक्षण और प्रासाद के रूपों के अनुसार उत्तम मण्डपों का वर्णन करते हैं १ उत्तम मध्यम और निकृष्ट इन सब प्रकारों से अनेक मंडपहोते हैं उनके यह नामहैं २ पुष्पक, पुष्पभद्र, सुव्रत, अमृतनन्दन, कौशल्य, बुद्धिसंकीर्ण, गजभद्र, जयावह ३ श्रीवत्स, विजय, वास्तुकीर्त्ति, श्रुतिंजय, यज्ञभद्र, विशाल, सुश्लिष्ट, शत्रुमर्द्दन ४ भागपंच, नन्दन, मानव, मानभद्रक, सुग्रीव, हरित, कर्णिकार, शतार्द्धक ५ सिंह, श्यामभद्र, सुभद्र, ऐसे यह सत्ताईस प्रकारके मंडपहोते हैं अब इनके नाम सुनो ६ जहां चौंसठ स्तंभ बनायेजावें वह पुष्पक मंडप कहाताहै बासठ स्तंभों वाला पुष्पभद्र कहाता है साठ स्तंभोंवाला सुव्रत कहाता है ७ अट्ठावन स्तंभोंवाला अमृतनन्दन कहाता है छप्पन स्तंभोंवाला कौशल्य चौवन स्तंभोंवाला बुद्धिसंकीर्ण बावन स्तंभोंवाला गजभद्रक मंडप, पचास स्तंभवाला जयावह और अड़तालीस स्तंभोंवाला श्रीवत्समंडप कहाताहै ८।९ छयालीस स्तंभोंवाला विजय चौवालीस स्तंभोंवाला वास्तुकीर्त्ति बयालीस स्तंभोंवाला श्रुतिजय मंडप कहाता है १० चालीस स्तंभवाला यज्ञभद्र ३८ का विशालक ३६ का सुश्लिष्ट ३४ का शत्रुमर्द्दन मंडपहै ११। ३२ का भागपंच ३० का नन्दन २८ का मानव २६ का मानभद्र २४ का सुग्रीव बाईसका हरित २० का कर्णिकार १८ का शतार्द्धिक मंडप होताहै १२।१३ सोलहका सिंह चौदहका श्यामभद्र

ष्टकोणंद्विरष्टकम् १५ चतुःकोणन्तुकर्त्तव्यं संस्थानंमण्डपस्यतु। राज्यञ्चविजयश्चैव आयु वर्द्धनमेवच १६ पुत्रलाभःश्रियःपुष्टिस्त्रिकोणादिक्रमाद्भवेत्। एवंतुशुभदाप्रोक्ताश्चान्यथात्व शुभावहाः १७ चतुःषष्टिपदंकृत्वा मध्येद्वारंप्रकल्पयेत्। विस्ताराद्द्विगुणोच्छ्रायं तत्त्रिभा गःकटिर्भवेत् १८ विस्तारार्द्धोभवेद्गर्भोभित्तयोऽन्याःसमन्ततः। गर्भपादेनविस्तीर्णं द्वारंत्रि गुणमायतम् १९ तथाद्विगुणविस्तीर्णमुखस्तद्वदुदुम्बरः। विस्तारपादप्रतिमं बाहुल्यंशाख योऽस्मृतम् २० त्रिपञ्चसप्तनवभिः शाखाभिर्द्वारमिष्यते। कनिष्ठमध्यमंज्येष्ठं यथायोगं प्रकल्पयेत् २१ अंगुलानांशतंसार्द्धं चत्वारिंशतथोन्नतम्। त्रिंशद्विंशोत्तरंचान्य द्धन्यमु त्तममेवच २२ शतञ्चाशीतिसहितं वातनिर्गमनेभवेत्। अधिकंदशभिस्तद्वत् तथाषोड शभिःशतम् २३ शतमानंतृतीयञ्च नवत्याशीतिभिस्तथा। दशद्वाराणिचैतानि क्रमेणो क्तानिसर्वदा २४ अन्यानिवर्जनीयानि मनसोद्वेगदानितु। द्वारवेधंप्रयत्नेन सर्ववास्तुषु वर्जयेत् २५ वृक्षकोणभ्रमिद्वारस्तम्भकूपध्वजादपि। कुड्यश्वभ्रेणवाविद्धं द्वारंनशुभद म्भवेत् २६ क्षयश्चदुर्गतिश्चैव प्रवासःक्षुद्भयंतथा। दौर्भाग्यंबंधनंरोगो दारिद्र्यंकलहंत था२७विरोधश्चार्थनाशश्च सर्ववेधाद्भवेत्क्रमात्। पूर्वेणफलिनोवृक्षाः क्षीरवृक्षास्तुदक्षि

और बारह स्तंभोंवाला सुभद्र होताहै १४ यह इसप्रकारके यथार्थ लक्षणवाले मंडप मैंने तुमसे कहे इनको त्रिकोणबनावे गोलबनावे अष्टकोण बनावे अथवा सोलह कोणके मंडप बनावे यहसब मंडप राज्य, विजय, आयु और कीर्तिको बढ़ातेहैं यहसब त्रिकोण आदि मंडप यथा क्रमसे पुत्रलाभ, लक्ष्मी और पुष्टिके कर्त्ता हैं और इनसे अन्यथा कियेहुए मंडपोंका अशुभफल होताहै १५। १७ मंडप के चौंसठपद करके मध्यमें द्वार कल्पितकरे मण्डपको विस्तारसे दूना ऊंचाकरे तीन भागकी कटि बनावे विस्तारसे आधा गर्भ अर्थात् चौक बनावे और चारों ओरको अन्य भीतें बनवावे और गर्भ मध्यभागके शिखरके विस्तारसे चौथाई चौड़ाकरे और चौथाईसे त्रिगुणितलंबा अथवा दूना लंबाद्वार रक्खे और द्वारकी चौथाईका चतुर्थांश द्वारकी चौखटके ऊपर सिरदर बनावे और नीचे देहलरक्खे और सिरदरकी चौड़ाईसे चौथाई चौड़ाई चौखटके बाजुओंकी रक्खे, यहाँ चौखटके तीन, पांच, सात अथवा नौबाजू लगाके निकृष्ट, मध्यम और उत्तम इन क्रमोंसे द्वार बनावे १८। २१ और एकसौ पचास अंगुल ऊंचा वा १४० अंगुलऊंचा वा १३० अंगुलऊँचा अथवा १२० अंगुलऊंचा यह ऐसे द्वारधन्य और उत्तम गिनेजातेहैं और एकसौ अस्सी अंगुलऊंचा द्वार वात निर्गमन अर्थात् वायु निकसनेके निमित्त श्रेष्ठ कहाहै और ११० अंगुलऊंचा वा ११६ अंगुलऊंचा वा १०० अंगुलऊंचा, वा ९० अंगुल ऊंचा अथवा ८० अंगुलऊंचा इस रीतिसे यहसब दशद्वार कहेहैं इनसे अन्यथा द्वार बनावे तो मनको उद्वेग होकर शुभफल नहीं होताहै और संपूर्ण वास्तुओं में यत्नपूर्वक द्वारके आगे वेधको न रहनेदेवे २२। २५ वृक्ष, कोण, भौंरी, स्तंभ, ध्वजा और भीत इन्होंके वेध अर्थात् फटफेंड़ वालाद्वार शुभदायी नहीं होता है २६ नाश, दुर्गति, देशनिकाला, भूखामरना, दुर्भाग्य, बन्धन, रोग दारिद्र्य, कलह, विरोध और द्रव्यकानाश यह संपूर्ण वस्तु यथा क्रमसे वृक्षआदिकोंके वेधसे होती हैं

णे २८ पश्चिमेनजलंश्रेष्ठं पद्मोत्पलविभूषितम्। उत्तरेसरलैस्तालैः शुभास्यात्पुष्पवाटि
का २९ सर्वतस्तुजलंश्रेष्ठं स्थिरमस्थिरमेवच । पार्श्वतश्चापिकर्तव्यं परिवारादिकाल
यम् ३० याम्येतपोवनस्थान मुत्तरेमातृकागृहम्। महानसंतथाग्नेये नैर्ऋत्येऽथविनाय
कम् ३१ वारुणेश्रीनिवासस्तु वायव्येगृहमालिका । उत्तरेयज्ञशालातु निर्माल्यस्थानमु
त्तरे३२वारुणेसोमदैवत्ये वलिनिर्वपणंस्मृतम्। पुरतोवृषभस्थानं शेषेस्यात्कुसुमायुधः
३३ जलंवापितथैशाने विष्णुस्तुजलशाय्यपि । एवमायतनंकुर्यात् कुण्डमण्डपसंयुत
म् ३४ घण्टावितानकसतोरणचित्रयुक्तं नित्योत्सवप्रमुदितेनजनेनसार्धम् । यः कार
येत्सुरगृहांविविधध्वजाढ्यं श्रीस्तं न मुञ्चतिसदादिविपूज्यते च ३५ एवंगृहार्चनविधा
वपिशक्तितःस्यात् संस्थापनंसकलमन्त्र विधानयुक्तम् ३६॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकोनसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६९॥

(ऋषय ऊचुः) पूरोर्वंशस्त्वयासूत! सभविष्योनिवेदितः। सूर्यवंशेनृपायेतु भविष्य
न्तिहितान्वद १ तथैवयादवेवंशे राजानःकीर्तिवर्धनाः । कलौयुगेभविष्यन्ति तानपीह
वदस्वनः २ वंशान्तेज्ञातयोयाश्च राज्यंप्राप्स्यन्तिसुव्रताः। ब्रूहिसंक्षेपतस्तासां यथाभा
व्यमनुक्रमात् ३ (सूत उवाच) बृहद्बलस्यदायादो वीरोराजाह्युरुक्षयः । उरुक्षयसुत

और द्वारसे पूर्वकीओर फलवाले वृक्ष, और दक्षिणओर दूधवाले वृक्ष शुभदायी होतेहैं—२७। २८
पश्चिमकीओर कमल आदिकोंसे विभूषित जलका स्थान, उत्तरमें सरल, तालवृक्ष और पुष्पोंकीवाड़ी
यहसब शुभदायकहैं २९ स्थिर वा अस्थिरजल सब दिशाओंमें श्रेष्ठहै और निजमन्दिर के मंडप आ-
दिके बराबरमें उसके उपयोगी देवताओंके स्थान बनवावे ३० दक्षिणमें तपोवन स्थान बनावे, उ-
त्तर मातृकागृह बनावे—अग्नि कोणमें रसोईका स्थान बनावे नैर्ऋत्यमें गणेशजीका स्थान बनावे३१
पश्चिममें लक्ष्मीका निवास बनावे—वायव्यमें ग्रहोंकी वेदी बनावे, उत्तरमें यज्ञशाला और निर्माल्य
स्थान बनावे ३२ पश्चिममें सोमदैवत्यवलिदेने का स्थान बनावे, शिवजीके आगे वृषभका स्थान
बनावे और अन्यत्र कामदेवका स्थान बनावे ३३ ईशान दिशामें जलका स्थान और विष्णुकी जल-
शय्या बनावे, ऐसे कुंड मंडपसे युक्त कियाहुआ देव मन्दिर बनाना चाहिये ३४ घंटा, तोरण और चि-
त्राम इन्होंसे तथा नित्योत्सवसे और प्रमुदित हुएजनोंसे युक्त हुए देवमन्दिरको जो बनाताहै उसके
घरमें सदा लक्ष्मीका निवास रहताहै और स्वर्ग लोकमें पूजाजाताहै ३५ इसीप्रकार शक्तिके अनु-
सार घरकी प्रतिष्ठामें भी संपूर्ण विधान और पूजन करना चाहिये ३६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २६९ ॥

ऋषिबोले—हे सूतजी आपने राजा पुरुके संपूर्ण वंशको हमसे कहा परन्तु सूर्य्यवंशमें जो राजा
हुएहैं वा होंगे उन सबको भी हमारे आगे वर्णन कीजिये १ और कीर्त्तिके बढ़ानेवाले जो राजा या-
दववंशके कलियुगमें होंगे उनका भी वर्णनकीजिये २ इनके विशेष वंशोंके अन्तमें जो सुन्दर आच-
रण करनेवाली जातिके लोग राज्यको प्राप्तहोंवेंगे उनको भी यथा क्रम संक्षेप पूर्वक जैसे हों वैसे

इचापि वत्सद्रोहोमहायशाः ४ वत्सद्रोहात्प्रतिव्योमस्तस्यपुत्रोदिवाकरः। तस्यैवमध्य
देशेनु अयोध्यानगरीशुभा ५ दिवाकरस्यभविता सहदेवोमहायशाः। सहदेवाच्चभविता
ध्रुवाश्वोवैमहामनाः ६ तस्यभाव्योमहाभागः प्रतीपाश्वश्चततसुतः। प्रतीपाश्वसुतश्चा
पि सुप्रतीपोभविष्यति ७ मरुदेवःसुनस्तस्य सुनक्षत्रस्ततोभवत्। किन्नराश्वःसुनक्ष
त्राद्भविष्यति ररन्तपः ८ किन्नराश्वादन्तरिक्षो भविष्यतिमहामनाः। सुषेणश्चान्तरिक्षा
च्च सुमित्रश्चाप्यमित्रजित् ९ सुमित्रजोबृहद्राजः बृहद्राजस्यवीर्यवान्। पुत्रःकृतञ्जयो
नाम धार्मिकश्चभविष्यति १० कृतञ्जयसुतोविद्वान् भविष्यतिरणेजयः। भवितासञ्ज
यश्चापि वीरोराजारणेजयात् ११ सञ्जयस्यसुतःशाक्यः शाक्याच्छुद्धोदनोनृपः। शु
द्धोदनस्यभविता सिद्धार्थःपुष्कलःसुतः १२ प्रसेनजिततोभाव्यः क्षुद्रकोभविताततः।
क्षुद्रकात्कुलकोभाव्यः कुलकात्सुरथःस्मृतः, १३ सुमित्रसुरथाज्जातो अन्यस्तुभविता
नृपः। एतेचैक्ष्वाकवःप्रोक्ता भविष्यायेकलौयुगे १४ बृहद्बलान्ववायेतु भविष्याःकुलव
र्द्धनाः। अत्रानुवंशश्लोकोऽयंविप्रैर्गीतःपुरातनैः १५ इक्ष्वाकूणामयंवंशःसुमित्रान्तोभवि
ष्यति। सुमित्रंप्राप्यराजानं संस्थांप्राप्स्यतिवैकलौ १६ इत्येवंमानवोवंशः प्रागेवसमुदाहृ
तः। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि मागधायेबृहद्रथाः १७ पूर्वेणयेजरासन्धात् सहदेवान्वयेनृपाः।
अतीतावर्त्तमानाश्च भविष्यांश्चनिबोधत १८ संग्रामेभारतेवृत्ते सहदेवेनिपातिते। सो
माधिस्तस्यदायादो राजाभूत्सगिरिव्रजे १९ पञ्चाशतंतथाष्टौच समाराज्यमकारयत्।

कहिये ३-सूतजीबोले- बृहद्बलके दायादनाम पुत्र, शूरवीर राजा उरुक्षय, उरुक्षयका पुत्र बड़ा य-
शस्वी वत्सद्रोह, वत्सद्रोहके प्रतिव्योम, प्रतिव्योमके दिवाकर पुत्र उसी के मध्यदेशमें अयोध्या-
नाम नगरी अति सुन्दरहै ४।५ दिवाकरके महायशी सहदेव पुत्रहोगा, सहदेवके ध्रुवाश्व ६ ध्रुवाश्वके
भाव्यनाम पुत्र, भाव्यमानके प्रतीपाश्व प्रतीपाश्वके सुप्रतीप ७ सुप्रतीपके मरुदेव, मरुदेवके सुन
क्षत्र, सुनक्षत्रके परम तपस्वी किन्नराश्व नामपुत्रहोगा, किन्नराश्वके अन्तरिक्ष अन्तरिक्षके सुषेण
और सुमित्रहोंगे ८।९ सुमित्रके बृहद्राज, बृहद्राजके महाधीर धर्मात्मा कृतंजय १० कृतंजयका विद्या-
वान् रणेजयहोगा, रणेजयका पुत्र संजयहोगा ११ संजयका पुत्र शाक्य, शाक्यका पुत्र शुद्धोदन, शु-
द्धोदनका सिद्धप्रयोजन पुष्कलनाम पुत्रहोगा, पुष्कलके प्रसेनजित्, प्रसेनजितका क्षुद्रकनाम पुत्र
होगा क्षुद्रकका कुलक, कुलकका सुरथ, सुरथका सुमित्रनाम राजा होगा जो इक्ष्वाकु वंशमें होने
वाले कलियुगमें राजाहोंगे वह सब तुमकहे और बृहद्बलके वंशमें जो कीर्तिके बढ़ानेवाले होंगे
वहभी कहे यह सब पूर्वहोनेवाले ब्राह्मणों ने पृथक् २ वंशोंके यशगाये हैं १२। १५ यह इक्ष्वाकुओं
का वंश सुमित्र राजा तकहोगा और इसी सुमित्र राजाको प्राप्तहोकर यह वंशनाशको प्राप्तहोजाय-
गा १६ इसीप्रकार हमने मनुकाभी वंश पूर्वहीं कहाहै, इसके आगे बृहद्रथ वंशमें होनेवाले मगध
देशवासी राजाओंको कहते हैं, जरासन्धसे आदिलेकर सहदेवके वंशमें जो राजा प्रथमहुए और व-
र्तमान हैं और जो आगे अन्यहोंयगे उनको भी सुनो, भारतके संग्राममें सहदेवके मरे पीछे सोमाधि

श्रुतश्रवाश्चतुःषष्टिं समास्तस्यान्वयेभवत् २० अप्रतीपीचषट्त्रिंशत् समाराज्यमकारयत्। चत्वारिंशत्समास्तस्य निरमित्रोदिवङ्गतः २१ पञ्चाशतंसमाःषट्च सुरक्षःप्राप्तवान्महीम्। वृहत्कर्माञयोविंशदब्दंराज्यमकारयत् २२ सेनाजित्सम्प्रयातश्च भुक्त्वापञ्चशतंमहीम्। श्रुतञ्जयस्तुवर्षाणिचत्वारिंशद्भविष्यति २३ अष्टाविंशतिवर्षाणि महीं प्राप्स्यतिवैविभुः। अष्टपञ्चाशतंषट्च राज्येस्थास्यतिवैशुचिः २४ अष्टाविंशत्समाराजा क्षेमोभोक्ष्यतिवैमहीम्। अनुव्रतश्चतुःषष्टि राज्यंप्राप्स्यतिवीर्यवान् २५ पञ्चत्रिंशतिवर्षाणि सुनेत्रोभोक्ष्यतेमहीम्। भोक्ष्यतेनिर्वृतिश्चेमा मष्टपञ्चाशतंसमाः २६ अष्टाविंशत्समाराज्यं त्रिनेत्रोभोक्ष्यतेततः। चत्वारिंशत्तथाष्टौच द्युमत्सेनोभविष्यति २७ त्रयस्त्रिंशत्तुवर्षाणि महीनेत्रःप्रकाश्यते। द्वात्रिंशत्तुसमाराजा ह्यचलस्तुभविष्यति २८ रिपुञ्जयस्तुवर्षाणि पञ्चाशत्प्राप्स्यतेमहीम्। द्वाविंशतिनृपाह्येते भवितारोबृहद्रथाः २९ पूर्णंवर्षसहस्रन्तु तेषांराज्यंभविष्यति। जयतांक्षत्रियाणाञ्च बालकःपुलकोभवेत् ३०॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७०॥

(सूत उवाच) बृहद्रथेष्वतीतेषु वीतिहोत्रेष्ववन्तिषु। पुलकःस्वामिनंहत्वा स्वपुत्रमभिषेक्ष्यति १ मिषतांक्षत्रियाणाञ्च बालकःपुलकोद्भवः। सर्वप्रणतसामन्तो भविष्योनचधर्मतः २ त्रयोविंशत्समाराजा भवितासनरोत्तमः। अष्टाविंशतिवर्षाणि पालकोभवि

राजा, सोमाधिके दायाद राजा गिरिव्रजनाम पुरीमेंहुआ और ५८ वर्ष राज्यकरताभया और उसीके वंशमें श्रुतश्रवानाम राजा ६४ वर्ष राज्यकरताभया १७।२० फिर सुप्रतीपनाम राजाने ३६ वर्ष राज्य किया और ४० वर्ष उसका मित्र राज्यकरके स्वर्गवासीहुआ २१ तदनन्तर सुरक्षने ५६ वर्ष राज्य किया और २३ वर्ष बृहत्कर्माने किया २२ सेनाजित् और संप्रयात यह दोनों ५०० वर्ष राज्यकरके ४० वर्षतक श्रुतंजय नाम राजा राज्यकरेगा २३ फिर २८ वर्ष विभुराजा राज्यकरेगा फिर ५६ वर्ष तक राजा शुचि स्थित रहैगा २४ फिर अट्ठाईस वर्ष क्षेमनाम राजा पृथ्वीको भोगेगा, फिर बड़ा पराक्रमी अनुव्रतनाम राजा ६४ वर्ष राज्यकरेगा २५ फिर ३५ वर्षतक राजा सुनेत्र राज्यकरेगा, फिर ५८ वर्ष निर्वृतिनाम राज्यकरेगा २६ फिर २८ वर्ष त्रिनेत्र राज्यकरेगा, फिर ४८ वर्ष द्युमत्सेन राज्यकरेगा २७ फिर ३३ वर्ष महीनेत्र राज्यकरेगा और ३२ वर्ष अचलनाम राज्य भोगेगा २८ फिर ५० वर्ष रिपुंजय पृथ्वीको भोगेगा, बृहद्रथके वंशके होनेवाले और जो आगे राज्यकरेंगे वह सब १००० वर्ष तक रहैंगे फिर विजयी क्षत्रियोंका बालक पुलकनाम राजाहोगा २९।३०॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७०॥

सूतजी बोलेकि वीतिहोत्र संज्ञक बृहद्रथोंसेपीछे पुलक अपने स्वामीको मारकर अपने राज्यमें अपने पुत्रको अभिषेक करेगा १ और वह पुलक का पुत्र क्षत्रियोंके देखतेही प्रणत सामन्त अर्थात् नम्र और स्नेह करनेवाला होगा कुछ धर्म स्वभावसे नहींहोगा २ वह नरोत्तम राजा २३ वर्ष राज्य

नानृपः ३ विशाखयूपोभविता त्रिपञ्चाशत्तथासमाः। एकविंशत्समाराजा सूर्यकस्तुभविष्यति ४ वाराणस्यांसुतंस्थाप्य श्रयिष्यतिगिरिव्रजम्। शिशुनाकस्तुवर्षाणि चत्वारिंशद्भविष्यति ५ काकवर्णःसुतस्तस्य षट्विंशत्प्राप्स्यतेमहीम्। षट्त्रिंशच्चैववर्षाणि क्षेमधर्माभविष्यति ६ चतुर्विंशत्समाःसोऽपि क्षेमजित्प्राप्स्यतेमहीम्। अष्टाविंशतिवर्षाणि विन्ध्यसेनोभविष्यति ७ भविष्यतिसमाराजा नवकाण्वायनोनृपः। भूमिमित्रःसुतस्तस्य चतुर्दशभविष्यति ८ अजातशत्रुर्भविता सप्तविंशत्समानृपः। चतुर्विंशत्समाराजा वंशकस्तुभविष्यति ९ उदासीभवितातस्मात्त्रयस्त्रिंशत्समानृपः। चत्वारिंशत्समाभाव्यो राजावैनन्दिवर्द्धनः १० चत्वारिंशत्त्रयश्चैव महानन्दीभविष्यति। इत्येतेभवितारोवै दशद्वौशिशुनाकजाः ११ शतानित्रीणिपूर्णानि षष्टिवर्षाधिकानितु। शिशुनाकाभविष्यन्ति राजानःक्षत्रबन्धवः १२ एतैःसार्द्धंभविष्यन्ति यावत्कलिनृपाःपरे। तुल्यकालंभविष्यन्ति सर्वेह्येतेमहीक्षितः १३ चतुर्विंशत्तथैक्ष्वाकाः पाञ्चालाःसप्तविंशतिः। काशेयास्तुचतुर्विंशदष्टाविंशत्तुहैहयाः १४ कलिङ्गाश्चैवद्वात्रिंशदश्मकाःपञ्चविंशतिः। कुरवश्चापिषट्विंशदष्टाविंशास्तुमैथिलाः १५ शूरसेनास्त्रयोविंशद्वीतिहोत्राश्चविंशतिः। एतेसर्वेभविष्यन्ति एककालंमहीक्षितः १६ महानन्दिसुतश्चापि शूद्रायां कलिकांशजः। उत्पत्स्यतेमहापद्मः सर्वक्षत्रान्तकोनृपः १७ ततःप्रभृतिराजानो भविष्याः शूद्रयोनयः। एकराट्समहापद्मो एकच्छत्रोभविष्यति १८ अष्टाशीतितुवर्षाणि पृथि

करेगा और १८वर्षतक पालक नाम राजा राज्यकरेगा ३ फिर ५३ वर्ष विशाखयूपनाम राजा राज्य करेगा-फिर २१ वर्ष सूर्यकराजा राज्यकरेगा ४ वह अपने पुत्रको काशी पुरीमें स्थापित करके पर्व्वतोंके व्रज अर्थात् समूहमें जायगा फिर ४० वर्ष शिशुनाक राजाहोवेगा ५ फिर शिशुनाकका पुत्र काकवर्ण २६ वर्षरहैगा-फिर ३६ हीवर्ष क्षेमधर्मा राजाराज्यकरेगा-६ फिर क्षेमजित् २४ वर्षराज्य करेगा-फिर २८ वर्ष विन्ध्यसेन राज्यकरेगा ७ फिर ९ वर्ष काण्वायन राज्यकरेगा और काण्वायनका पुत्र चौदह १४ वर्ष भोगेगा-और २७ वर्ष अजातशत्रुराज्यकरेगा-२४वर्ष वंशकराज्य करेगा-फिर वंशकका पुत्र उदासी नामराजा ३३ वर्षराज्यकरेगा और ४० वर्ष नन्दिवर्द्धन राजा राज्यकरेगा-८। १० फिर तेंतालीस वर्ष महानन्दी राज्यकरेगा-यह बारहपुत्र शिशुकके होंगे ११।३०८ वर्ष शिशुनाक वंश में होनेवाले और क्षत्रियों में अधमराजाहोंगे १२ कलियुगमें यह सबराजा एकसाथ एकहीकालमें होवेंगे और चौबीस इक्ष्वाकुराजा होवेंगे फिर अट्ठाईस हैहयनामवाले राजाहोंगे १३।१४ फिर ३२ कलिंगराजाहोंगे-फिर २५ अश्मक नाम राजाहोंगे और २६ कुरवनामके राजाहोंगे फिर २८मैथिल राजाहोंगे फिर २३ शूरसेनानामी राजाहोंगे फिर २० वीतिहोत्र नामके राजाहोंगे यह सबराजा एकही कालमें होवेंगे फिर कलियुगके अंशसे शूद्रा स्त्रीसे महानन्दि का पुत्र महापद्म नामसे विख्यातहोगा वह संपूर्ण क्षत्रियोंका अन्तकर देगा १५।१७ इसके अनन्तर सब राजा शूद्रयोनिहोजावेंगे-वह महाभाग नन्दिसुत एक छत्र राज्य करेगा और अट्ठासी वर्षतक पृथ्वी पै राज्य करेगा उसी

ल्याश्च भविष्यति । सर्वक्षत्रमथोत्साद्य भाविनार्थेनचोदितः १९ सुकल्पादिसुताह्यष्टौ समाद्वादशतेनृपाः। महापद्मस्यपर्य्याये भविष्यान्तिनृपाःक्रमात् २० उद्धरिष्यतिकौटिल्यः समेद्वाद्दशभिःसुतान्। भुक्त्वामहींवर्षशतं ततोमौर्य्यान्गमिष्यति २१ भविताशतधन्वाच तस्यपुत्त्ररतुषट्समाः। वृहद्रथस्तुवर्षाणि तस्यपुत्रश्चसप्ततिः २२ षट्त्रिंशत्तुसमाराजा भविताशकएवच। सप्तानांदशवर्षाणि तस्यनप्ताभविष्यति २३ राजादशरथोऽष्टौतु तस्यपुत्रोभविष्यति। भविताानववर्षाणि तस्यपुत्रश्चसप्ततिः २४ इत्येतेदशमौर्य्यास्तु येभोक्ष्यन्तिवसुन्धराम्। सप्तत्रिंशच्छतंपूर्णं तेभ्यःशुङ्गान्गमिष्यति २५ पुष्यमित्रस्तुसेनानीरुद्धृत्यसवृहद्रथान्। कारयिष्यतिवैराज्यं षट्त्रिंशतिसमानृपः २६ भवितापिवसुज्येष्ठः सप्तवर्षाणिवैनृपः। वसुमित्रस्तथाभाव्यो दशवर्षाणिवैततः २७ ततोन्तकः समेद्वेतु तस्यपुत्रोभविष्यति। भविष्यतिसमस्तस्मात्त्रीण्येवंसपुलिन्दकः २८ भविताव्ज्रमित्रस्तु समाराजापुनर्भवः। द्वात्रिंशत्तुसमाभागः समाभागात्ततोनृपः २९ भविष्यतिसुतस्तस्य देवभूमिःसमादश। दशैतेक्षुद्रराजानो भोक्ष्यन्तीमांवसुन्धराम् ३० शतंपूर्णशतेद्वेच ततःशुङ्गान्गमिष्यति। अमात्योवसुदेवस्तु प्रसह्यह्यवनींनृपः ३१ देवभूमिमथोत्साद्य शौङ्गस्तुभवितानृपः। भविष्यतिसमाराजा नवकाण्वायनोनृपः ३२ भूमिमित्रःसुतस्तस्य चतुर्दशभविष्यति। नारायणःसुतस्तस्य भविताद्वादशैवतु ३३ सुशर्मातत्सुतश्चापि भविष्यतिदशैवतु। इत्येतेशुङ्गभृत्यास्तु स्मृताःकाण्वायनानृपाः ३४ चत्वारिंशद्द्विजाह्येते काण्वाभोक्ष्यन्तिवैमहीम्। चत्वारिंशत्पञ्चचैव भोक्ष्यन्तीमांवसुन्ध

कालमें संपूर्ण क्षत्रियोंका नाश करेगा फिर महापद्मके पर्य्यायमें सुकल्प आदिक-आठ पुत्र होवेंगे फिर उन आठों के पाससे यह पृथ्वीसौ १०० वर्षमें मौर्यनामवाले राजाओंको प्राप्तहोगी उनमौर्यामें शतधन्वानाम एक राजाहोगा उसके बराबर छःवर्षतक राज्यहोगा-फिर वृहद्रथ राजा का पुत्रसत्तर वर्षतक राज्यकरेगा फिर छत्तीसवर्ष तक शकनाम राजा होगा उसका दौहित्र सत्तर वर्ष तक राज्य करेगा १८। २३ फिर दशरथनाम राजाहोगा उसका सप्ततिनाम पुत्रहोगा वह आठ वर्ष तकराज्यकरेगा इसप्रकार यह संपूर्ण मौर्यराजा एकसौसैंतीसवर्षतक राज्यकरेंगे-फिर शुंगनामवाले राजाहोंगे-पुष्य मित्र राजा का सेनापति वृहद्रथ वंश के राजाओं को मारकर छत्तीस वर्षतक राज्य करेगा २४। २६ फिर वसुज्येष्ठनाम राजा सातवर्षतक राज्यकरेगा और दशवर्ष सुमित्रनाम राजा होगा २७ फिर दोवर्षतक अन्तक और तीनवर्ष तक पुलिन्दकनाम राजाहोगा फिर बत्तीस वर्षतक वज्रमित्रनाम महाभागी राजाहोगा २८। २९ उसकापुत्र देवभूमि नामहोगा वह दश वर्षतक राज्य करेगा इस प्रकारसे यह दशक्षुद्र राजाहोंगे यह सब तीनसौ वर्षतक राज्य करेंगे इनकेपास वसुदेव नाममंत्री देवभूमि को मारकर राज्य छीनलेगा फिर नौ ९ काण्वायन नाम राजाहोंगे उस वसुदेव का पुत्र भूमिमित्र चौदहवर्षतक राज्य करेगा फिर इसका पुत्र नारायण बारह वर्ष तक राज्य करेगा ३०। ३३ फिर इस नारायणका पुत्र सुशर्मा दशवर्ष तक राज्यकरेगा-यह सब काण्वायन राजा

राम् ३५ एतेप्रणतसामन्ता भविष्याधार्मिकाश्चये। येषांपर्य्यायकालेतु भूमिरान्ध्रान् गमिष्यति ३६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७१॥

(सूत उवाच) काण्वायनास्ततोभूपाः सुशर्माणःप्रसह्यताम्। शुङ्गानाञ्चैवयच्छेषं क्षपित्वातुबलीयसः १ शिशुकोन्ध्रःसजातीयः प्राप्स्यतीमांवसुन्धराम्। त्रयोविंशत्स माराजा शिशुकस्तुभविष्यति २ श्रीमल्लकर्णिर्भविता तस्यपुत्रस्तुवैदश। पूर्णोत्सङ्गस्त तोराजा वर्षाण्यष्टादशैवतु ३ पञ्चाशतंसमाःषट्च शान्तकर्णिर्भविष्यति। दशचाष्टौच वर्षाणि तस्यलम्बोदरःसुतः ४ आपीतकोदशद्वेच तस्यपुत्रोभविष्यति। दशचाष्टौचव र्षाणि मेघस्वातिर्भविष्यति ५ स्वातिश्चभविताराजा समास्त्वष्टादशैवतु। स्कन्दस्वा तिस्तथाराजा सप्तैवतुभविष्यति ६ मृगेन्द्रस्वातिकर्णस्तु भविष्यतिसमास्त्रयः। कुन्तलः स्वातिकर्णस्तु भविताष्टौसमान्नृपः ७ एकसंवत्सरंराजा स्वातिवर्णोभविष्यति ८ भविता रिक्तवर्णस्तु वर्षाणिपञ्चविंशतिः। ततःसंवत्सरान्पञ्च हालोराजाभविष्यति ९ पञ्च मन्दुलकोराजा भविष्यतिसमान्नृपः। पुरीन्द्रसेनोभविता तस्मात्सौम्योभविष्यति १० सुन्दरःशान्तिकर्णस्तु अब्दमेकंभविष्यति। चकोरःस्वातिकर्णस्तु षण्मासान्वैभविष्यति ११ अष्टाविंशतिवर्षाणि शिवस्वातिर्भविष्यति। राजाचगौतमीपुत्रो ह्येकविंशत्यतोनृ पः १२ अष्टाविंशतिसुतस्तस्य सुलोमावैभविष्यति। शिवश्रीर्वैसुलोमात्तु सप्तैवभविता

शुंगराजाओंके भृत्यकहातेहैं और सबब्राह्मणहैं और पैंतालीसवर्षतक राज्यकरेंगे यहसामनीतिवाले और धार्मिक राजाहोंगे-इनके अन्तमें यहपृथ्वी आन्ध्रनामवाले राजाओंको प्राप्तहोजावेगी ३५। ३६॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७१॥

सूतजीबोले-शुंगराजाओंमें जो बलवाला राजा रहैगा उसको अन्ध्रजातिवाला शिशुकराजा मारेगा फिर तेईस वर्षतक शिशुकराजाहोगा १। २ फिर उसकापुत्र श्रीमल्लकर्णिहोगा वह दशवर्षतक राज्यकरेगा फिर पूर्णोत्संगनामराजा अठारह वर्षतक राज्यकरेगा ३ फिर छप्पन ५६ वर्षतक कर्णिनाम राजाहोगा, और उसकापुत्र लम्बोदर अठारह वर्ष राज्यकरेगा, उसकापुत्र आपीतकनाम राजा बीसवर्षतक राज्यकरेगा फिर मेघस्वातिनाम राजा अठारहवर्ष राज्यकरेगा ४। ५ फिर स्वातिनाम राजाभी अठारह वर्ष राज्यकरेगा, फिर सातवर्षतक स्कन्दस्वातिनाम राजाहोगा तीन वर्षतक मृगेन्द्रस्वाति कर्णनाम राजाहोगा-फिर कुंतलस्वातिकर्ण राजा आठ वर्षतक रहैगा ६। ७ फिर एक वर्ष स्वातिवर्णनाम राजाहोगा पच्चीस वर्षतक रिक्तवर्णनाम राजाहोगा और पांच वर्षतक हालनाम राजाहोगा ८। ९ फिर पांच वर्षतक मंदुलक नाम राजाहोगा फिर पुरीन्द्रसेन, उसकापुत्र सौम्य, उसकापुत्र शान्तिकर्ण होगा वहएकही वर्ष राज्यकरेगा फिर चकोर और स्वातिकर्ण यहदोनों छः महीनोंतक राज्यकरेंगे फिर अट्ठाईस वर्षतक शिवस्वातिनाम राजाहोगा फिर इकीस वर्षतक गोतमीपुत्र राजाहोगा उसकापुत्र सुलोमानाम अठारह वर्षतक राज्यकरेगा, और सुलोमाकापुत्र

नृपः १३ शिवस्कन्धःशान्तिकर्णाद्भविताह्यात्मजःसमाः। नवविंशतिवर्षाणि यज्ञश्रीःशा
न्तिकर्णिकः १४षड़ेवभवितातस्माद्विजयस्तुसमास्ततः। चण्डश्रीःशान्तिकर्णस्तु तस्य
पुत्रःसमादश १५ सुलोमासप्तवर्षाणि अन्यस्तेषांभविष्यति। एकोनविंशतिर्ह्येते आन्ध्रा
भोक्ष्यन्तिवैमहीम् १६ तेषांवर्षशतानिस्युश्चत्वारिंषष्टिरेवच । आन्ध्राणांसंस्थितारा
ज्ये तेषांभृत्यान्वयेनृपाः १७ सप्तैवान्ध्राभविष्यन्तिदशाभीरास्तथानृपाः। सप्तगर्दभि
लाश्चापि शकाश्चाष्टादशैवतु १८ यवनाष्टौभविष्यन्ति तुषाराश्चचतुर्दश। त्रयोदश
गुरुण्डाश्च हूणाह्येकोनविंशतिः १९ यवनाष्टौभविष्यन्ति सप्ताशीतिमहीमिमाम्। सप्त
गर्दभिलाभूयो भोक्ष्यन्तीमांवसुन्धराम् २० सप्तवर्षसहस्राणि तुषाराणांमहीस्मृता। श
तानित्रीण्यशीतिश्च शतान्यष्टादशैवतु २१ शतान्यर्द्धचतुष्काणि भवितव्यास्त्रयोदश।
गुरुण्डावृषलैःसार्धं भोक्ष्यन्तेम्लेच्छसम्भवाः २२ शतानित्रीणिभोक्ष्यन्ते वर्षाण्येकाद
शैवतु। आन्ध्राःश्रीपार्व्वतीयाश्च तेद्विपञ्चाशतंसमाः २३ सप्तषष्टिस्तुवर्षाणि दशाभीरा
स्तथैवच। तेषूत्सन्नेषुकालेन ततःकिलकिलानृपाः २४ भविष्यन्तीहयवना धर्मतःकाम
तोऽर्थतः। तैर्विमिश्राजनपदा आर्य्याम्लेच्छाश्चसर्वशः २५ विपर्ययेणवर्तन्ते क्षयमेष्य
न्तिवैप्रजाः। लुब्धानृतब्रुवाश्चैव भवितारोनृपास्तथा २६ कल्किनानुहताःसर्वे आर्य्या
म्लेच्छाश्चसर्वतः। अधार्मिकाश्चयेऽत्यर्थं पाषण्डाश्चैवसर्वशः २७ प्रणष्टेनृपवंशेतु स
न्ध्याशिष्टेकलौयुगे। किञ्चिच्छिष्टाःप्रजास्तावै धर्मेनष्टेऽपरिग्रहाः २८ असाधवोह्यस

शिवश्री सातवर्षतक राज्यकरेगा १० । १३ फिर शिवस्कन्ध, शान्तिकर्ण, यज्ञश्री और शान्तिक-
र्णिक यहसब नौ वर्षतक राज्यकरेंगे १४ फिर विजयराजा छः वर्ष राज्यकरेगा इनमेंसे एक सुलो-
मानाम अन्यराजा सात वर्षतक रहेगा यह आन्ध्र संज्ञक राजा उन्नीस वर्षतक राज्यकरेंगे १५।१६
भृत्योंसहित इनसब सातों आंध्रनाम राजाओंकी स्थिति एकसौ चालीस वर्षतक रहैगी इसकेपीछे
दशअहीर राजाहोंगे- फिर सात गर्दभिलनाम राजाहोंगे, अठारह शकनामवाले राजाहोंगे, फिर आ-
ठयवन राजाहोंगे फिर चौदह तुषारनाम राजाहोंगे फिर तेरह गोरण्डनाम गोरे राजाहोंगे, फिर उन्नी-
स हूणनाम राजाहोंगे इनमें आठयवन तो सत्तासी वर्ष राज्यकरेंगे फिर मध्यमें सात गर्दभिलनाम
राजाहोंगे १७।२० और वह १४ तुषार नामवाले राजा सातहजार तीनसौअस्सी वर्षतक राज्य
करेंगे और अठारहसौ पचास वर्षतक तेरहचतुष्कसंज्ञकनाम राजारहेंगे, फिर वह गुरुंड गोरे शूद्र
म्लेच्छादिकोंके साथ तीनसौग्यारह वर्षतक राज्यकरेंगे और पहाड़ी आन्ध्रनाम राजा बावन ५२
वर्षतक राज्यकरेंगे २१।२३ फिर दशआभीर राजा सड़सठ ६७ वर्षतक राज्यकरेंगे फिर कालके
योगसे वहसब नष्ट होजांयगे तब किलकिलानाम वाले राजाहोंगे वह अर्थ धर्म और कामके आच-
रण करके म्लेच्छहोवेंगे उनसे मिलेहुए सब आर्य जनभी म्लेच्छहोजांयगे और सब विपरीत आच-
रण करेंगे तब प्रजानष्टहोजायगी सबराजा लोभी और मिथ्यावादी होजांयगे २४।२६ कलियुगसे
हतहुए सबही म्लेच्छहोजावेंगे तब अधर्मी और पाषण्डी होजांयगे २७ राजाओं का वंश नष्टहोजा-

त्वाश्च व्याधिशोकेनपीड़िताः। अनावृष्टिहताश्चैव परस्परवधेप्सवः २९ अशरण्याः परित्रस्ताः सङ्कटंघोरमाश्रिताः। सरित्पर्वतवासिन्यो भविष्यन्त्यखिलाःप्रजाः ३० पत्र मूलफलाहाराश्चीरपत्राजिनाम्बराः। वृत्त्यर्थमभिलिप्सन्त्यश्चरिष्यन्तिवसुन्धराम् ३१ एवंकष्टमनुप्राप्ताः प्रजाःकालेयुगान्तके। निःशेषास्तुभविष्यन्ति सार्द्धंकलियुगेनतु ३२ क्षीणेकलियुगेतस्मिन् दिव्येवर्षसहस्रके। ससन्ध्यांशेसुनिःशेषे कृतंतुप्रतिपत्स्यते ३३ एवंवंशक्रमःकृत्स्नः कीर्त्तितोयोमयाक्रमात्। अतीतावर्त्तमानाश्च तथैवानागताश्चये ३४ महापद्माभिषेकात्तु यावज्जन्मपरीक्षितः। एवंवर्षसहस्रन्तु ज्ञेयंपञ्चाशदुत्तरम् ३५ पौलोमास्तुतथान्ध्रास्तु महापद्मान्तरेपुनः। अनन्तरंशतान्यष्टौ षट्त्रिंशत्तुसमास्तथा३६ तावत्कालान्तरंभाव्यमान्ध्रान्तादापरीक्षितः। भविष्यन्तेप्रसङ्ख्याताः पुराणज्ञैःश्रुतर्षिभिः ३७ सप्तर्षयस्तदाप्रांशु प्रदीप्तेनाग्निनासमाः। सप्तविंशतिभाव्यानामान्ध्राणान्तुयदा पुनः ३८ सप्तर्षयस्तुवर्त्तन्ते यत्रनक्षत्रमण्डले। सप्तर्षयस्तुतिष्ठन्ति पर्य्यायेणशतंशतम् ३९ सप्तर्षीणामुपर्य्येतत् स्मृतंवैदिव्यसंज्ञया। समादिव्याःस्मृताषष्टिर्दिव्याब्दानितु सप्तभिः ४० एभिःप्रवर्ततेकालो दिव्यःसप्तर्षिभिस्तुवै। सप्तर्षीणाञ्चयौपूर्वौ दृश्येतेह्युदितौनिशि ४१ तयोर्मध्येतुनक्षत्रं दृश्यतेयत्समंदिवि। तेनसप्तर्षयोज्ञेया युक्ताव्योम्नि शतंसमाः ४२ नक्षत्राणामृषीणाञ्च योगस्यैतन्निदर्शनम्। सप्तर्षयोमघायुक्ताः कालेपारिक्षितेशतम् ४३ ब्राह्मणस्तुचतुर्विंशा भविष्यन्तिशतंसमाः। ततःप्रभृत्ययंसर्वोलोको

वैगा और कलियुगकी जब सन्धि शेषरहजावेगी तबकुछ बाकी बचीहुई प्रजा दुष्टहोजावेगी धर्म नष्ट होजायगा व्याधि और शोकसे भी प्रजा महापीड़ित होजायगी फिर वर्षा न होनेसे परस्परमें मारने कीइच्छा रक्खेंगे २८।२९ बनमें रहेंगे कोई रक्षाकरनेवाला न रहैगा तब घोर संकटमें प्राप्तहोकर सब जन नदी और पर्व्वतोंपर बासकरेंगे पत्र मूल और फल इन्होंका आहार करेंगे पुराने फटे वस्त्र पत्र वक्कल और चर्म इन सबको ओढ़ेंगे भोजनकी इच्छा करतेहुए पृथ्वीपै विचरेंगे ३०।३१ ऐसे २ कष्ट को प्राप्तहुई प्रजा चौथे युग कलियुगके अन्तमें संपूर्णनष्टहोजाती है और जब दिव्य हज़ार वर्षमें सन्ध्यांश सहित संपूर्ण कलियुग नष्ट होजाताहै तब सत्ययुग प्राप्त होजाताहै ३२।३३ इस प्रकारसे मैंने व्यतीत, वर्त्तमान और आगे होनेवाले संपूर्ण राजाओं के वंश क्रम पूर्व्वक कहदिये हैं ३४ और महापद्मराजाके अभिषेकसे लेकर परीक्षितके जन्मतक संपूर्ण राजाओं के वंशकहे हैं सो इनकी संख्याका एक हज़ार पचास वर्षका यह काल व्यतीत होताहै ३५ और पौलोम वा आन्ध्र यह दोनों राजाओं के वंश महापद्मके अनन्तर आठसौ छत्तीस वर्षतक आन्ध्र पर्य्यन्त राजा होंगे यह सब पुराण के जाननेवालोंने कहरक्खे हैं उस समय सप्तऋषि ज्वलित अग्निके समान तेजवाले दीखेंगे फिर जब सत्ताईस २७ आन्ध्रराजा होलेंगे तब सप्तऋषि नक्षत्र मंडलमें स्थित दीखेंगे और इन सप्तऋषियों के अनुसार काल प्रवर्त्तहोताहै और रात्रिके समय जो तारे सप्तऋषियोंसे पहलेदीखते हैं और जो तारा समान नक्षत्रोंके बीचमें दीखताहै वहाँ यह सप्तऋषि आकाशमेंयुक्तहैं जब नक्षत्रोंका और सप्त-

व्यापत्स्यतेभृशम् ४४ अनृतोपहतालुब्धा धर्मतःकामतोऽर्थतः । श्रौतस्मार्तेतिशिथिले नष्टवर्णाश्रमेतथा ४५ शङ्करंदुर्बलात्मानःप्रतिपत्स्यन्तिमोहिताः।ब्राह्मणाःशूद्रयोनिस्थाः शूद्रावैमन्त्रयोनयः ४६ उपस्थास्यन्तितान्विप्रास्तदर्थमभिलिप्सवः । क्रमेणैवचहङ्यन्ते स्ववर्णान्तरदायकम् ४७ क्षयमेवगमिष्यन्तिक्षीणशेषायुगक्षये । यस्मिन्कृष्णोदिवंयात स्तस्मिन्नेवतदाहनि ४८ प्रतिपन्नंकलियुगंप्रमाणंतस्यमेशृणु । चतुःशतसहस्रन्तु वर्षाणां वैस्मृतंबुधैः४९ चत्वार्यष्टसहस्राणिसंख्यातंमानुषेणतु । दिव्यंवर्षसहस्रन्तु तदासंख्याप्रव र्तते ५० निःशेषेतुतदातस्मिन् कृतंवैप्रतिपत्स्यते । ऐलश्चेक्ष्वाकुवंशश्चसहदेवःप्रकीर्त्ति ताः५१इक्ष्वाकोःसंस्मृतंक्षत्रं सुमित्रान्तंभविष्यति। ऐलंक्षत्रंसमाक्रान्तंसोमवंशविदोविदुः ५२एतेविवस्वतःपुत्राःकीर्तिताःकीर्तिवर्धनाः।अतीतावर्तमानाश्चतथैवानागताश्चये ५३ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्यास्तथाशूद्राश्चवैस्मृताः । वैवस्वतेऽन्तरेतस्मिन्नितिवंशःसमाप्यते ५४देवापिःपौरवोराजा ऐक्ष्वाकोयश्चतेमतः । महायोगबलोपेतौ कलापग्राममाश्रितो५५ एतौक्षत्रप्रणेतारौ नवविंशेचतुर्युगे। सुवर्चामनुपुत्रस्तु ऐक्ष्वाकाद्योभविष्यति ५६ नववि शेयुगेसोवै वंशस्यादिर्भविष्यति । देवापिपुत्रःसत्यस्तु ऐलानांभवितानृपः ५७ क्षत्रप्रव र्तकावेतौ भविष्येतुचतुर्युगे । एवंसर्वेषुविज्ञेयं सन्तानार्थन्तुलक्षणम् ५८ क्षीणेकलियुगे

ऋषियों का योग । अर्थात् मघानक्षत्रमें जब सप्तऋषि आवेंगे तब ब्रह्माजी के सौवर्ष पूरे होजाने का कालआजावेगा तबसे लेके यह संपूर्ण लोक नष्ट होने लगजाताहै उस समय सबलोग मिथ्यावादी और लोभीहोजावेंगे और संपूर्ण श्रुति और स्मृतियोंका धर्मनष्ट होजावेगा ३६।४५ सबलोग वर्ण संकरहोजायंगे ब्राह्मण शूद्रहोजावेंगे शूद्रवेदको पढ़नेलग जायंगे ४६ और उन्हीं शूद्ररूपी द्विजोंकी सब उपासना करेंगे फिर क्रम२ करके सबही शूद्रहोजावेंगे इसके अनन्तर युगके अन्त में शेषरहे हुए सब लोगभी नष्टहोजावेंगे-और जिस दिन श्रीकृष्णजी स्वर्गलोक को पधारे हैं उसी दिन और उसी समय कलियुगका प्रवेशहोगयाहै ४७।४८ उस कलियुगका प्रमाण सुनो कि मनुष्योंके चार लाख बत्तीसहज़ार बर्षोंका कलियुगका प्रमाणहै और इतनीही संख्या में दिव्य हज़ार वर्ष होते हैं यही कलिका प्रमाणहै ४९।५० इस प्रकारसे जब यह संपूर्ण कलियुग व्यतीत होजाताहै तब सत्य-युगका प्रवेशहोताहै तबहीं ऐल-इक्ष्वाकु और सहदेव यह इक्ष्वाकु वंशके राजा प्रवृत्तहोतेहैं यह वंश सुमित्र राजाके अन्तमें समाप्त होजाताहै इस ऐल राजाको सोम वंशमें प्राप्तहुआ कहते हैं और इस के सिवाय इक्ष्वाकु आदिक अन्यराजा विवस्वान् सूर्य्यके पुत्रहुएहैं इसी प्रकारसे व्यतीत-वर्त्तमान और आगे होनेवाले राजा और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यह सब वर्णभी सनातन चलेआते हैं और देवापिनाम पौरवराजा और इक्ष्वाकु यह दोनों महायोग और बलसे युक्तहो उन्तीसवीं चौकड़ी में क्षत्रिय वंशके बढ़ानेवाले होंगे और सुवर्चानाम मनुका पुत्र इक्ष्वाकु वंशकी आदि में होगा यहभी उन्तीसवीं चौकड़ी में होगा और जो देवापिका पुत्र सत्यनाम होगा वह ऐल राजाओं के वंशको प्रवृत्तकरेगा ऐसे यह दोनों राजा अगले युगोंकी चौकड़ी में होकर क्षत्रिय वंशको प्रवत्त करेंगे इसी

चैव तिष्ठन्तीतिकृतेयुगे। सप्तर्षयस्तुतैःसार्द्धं मध्येत्रेतायुगेपुनः ५९ बीजार्थंवैभविष्यन्ति ब्रह्मक्षत्रस्तुवैपुनः। एवमेवंतुसर्वेषु तिष्यान्तेष्वन्तरेषुच ६० सप्तर्षयोनृपैःसार्द्धं सन्ताना र्थंयुगेयुगे। एवंक्षत्रस्यचोत्सेधः सम्बन्धोवैद्विजैःस्मृतः ६१ मन्वन्तराणांसन्ताने सन्ता नाश्चश्रुतास्मृताः। अतिक्रान्तयुगाश्चैव ब्रह्मक्षत्रस्यसम्भवाः ६२ यथाप्रशान्तिस्तेषां वैप्रकृतीनांयथाक्षयः। सप्तर्षयोविदुस्तेषां दीर्घायुस्त्वंक्षयोदयौ ६३ एतेनक्रमयोगेन ऐलाइक्ष्वाकवोनृपाः। उत्पद्यमानास्त्रेतायां क्षीयमाणाःकलौयुगे ६४ अनुयान्तियुगा ख्यान्तुयावन्मन्वन्तरक्षयम्। जामदग्न्येनरामेण क्षत्रेनिरवशेषिते ६५ रिक्तेयंवसुधा सर्वाक्षत्रियैर्वसुधाधिपैः। द्विवंशकरणंसर्वं कीर्तयिष्येनिबोधमे ६६ ऐलञ्चेक्ष्वाकुवंशञ्च प्रकृतिंपरिचक्षते। राजानःश्रेणिबद्धाश्च तथान्येक्षत्रियाभुवि ६७ ऐलवंशास्तुभूयां सोनतथेक्ष्वाकवोनृपाः। एषामेकशतंपूर्णं कुलानामभिरोचते ६८ तावदेवतुभोजानां विस्तराद्द्विगुणंस्मृतम्। भोजानांद्विगुणंक्षत्रं चतुर्द्धातद्यथातथम् ६९ तेह्यतीताः सनामानो ब्रुवतस्तान्निबोधमे। शतंवैप्रतिविन्ध्यानां शतंनागाःशतंहयाः ७० शत मेकंधार्तराष्ट्रा ह्यशीतिर्जनमेजयाः। शतंवैब्रह्मदत्तानां वीराणांकुरवःशतम् ७१ ततः शतञ्चपञ्चालाः शतंकाशिकुशादयः। तथापरेसहस्रेद्वे येनीपाःशशविन्दवः ७२ इष्ट वन्तश्चतेसर्वे सर्वेनियुतदक्षिणाः। एवंराजर्षयोऽतीताः शतशोऽथसहस्रशः ७३ मनोर्वै वस्वतस्यासन् वर्तमानेऽन्तरेविभोः। तेषांतुनिधनोत्पत्तौ लोकसंस्थितयःस्थिताः ७४ नशक्योविस्तरस्तेषां सन्तानस्यपरस्परम्। तत्पूर्वापरयोगेन वक्तुंवर्षशतैरपि ७५

प्रकारसे यही दोनों सबोंकी सन्तानके निमित्त कलियुगके क्षीणहोने के पीछे सत्ययुग में ठह- रते हैं और त्रेतायुगमें इन्हीं के साथ बीजके निमित्त सप्तऋषि भी जन्मलेते हैं इसी प्रकार युग२ के अन्तमें पुष्यनक्षत्र के अन्तरमें यह सप्तऋषि जब राजाओं के जन्मलेते हैं तब राजाओंका ब्राह्मणों के साथ संबंध होताहै ५९।६१ मन्वन्तरों के युगों के अन्तमें क्षत्रियोंके वंशको और ब्राह्मणोंकेवंश को बढ़ाने वाले सप्तऋषि होतेहैं यह सप्तऋषि संपूर्णप्रजाकी आयु नाश और उत्पत्तिकेजानने वाले हैं-इस प्रकारसे यह ऐलराजा और इक्ष्वाकु राजा त्रेतायुगमें उत्पन्न होते हैं फिर कलियुगमें क्षीण होजाते हैं मन्वन्तरके क्षयतक प्रसिद्ध रहते हैं और जमदग्निके पुत्र परशुरामजीने संपूर्ण क्षत्रीनष्ट करदिये तब इस पृथ्वीपर कोईक्षत्री नहीं रहाथा तब उनका वंश जैसेचलाथा उसको मुझसे सुनो ६२।६६ जब परशुरामके क्षयकरने के पीछे ऐल और इक्ष्वाकु वंशमें अन्य राजाओंकी श्रेणीइकट्ठी हुई है तब इनके सौपीढ़ियोंके जन प्रवर्त्तहुएहैं-औरभोजराजाओंका इनसेदूने विस्तारवालावंशप्रवृत्त हुआहै फिर यह भोजवंशी राजालोगचार प्रकारकेहोगये हैं उनव्यतीतहोने वालों के नाम कहताहूं प्रतिविंध्योंके सौ १०० वंश-नागकेसौ-१०० हयके-१०० ६७।७० धार्त्तराष्ट्रके १०० जनमेजयके अस्सी-शूर- वीर ब्रह्मदत्तके-१०० कुरव १०० पांचाल-काशिकुश १०० - और दो हजार नीप और शशबिन्दव यह सब इष्ट वाले और उत्तम राजाहुए हैं यह सब दश २ लक्षकी दक्षिणा देने वालेथे ऐसे हजारों राजर्षि व्यतीत

अष्टाविंशसमाख्याता गतावैवस्वतेऽन्तरे। एतेदेवगणैःसार्द्धं शिष्टायेतान्निबोधत ७६ च
त्वारिंशत्त्रयश्चैव भविष्यास्तेमहात्मनः। अवशिष्टायुगाख्यास्ते ततोवैवस्वतोह्ययम् ७७
एतद्वःकीर्तितंसम्यक् समासव्यासयोगतः। पुनर्वक्तुंबहुत्वात्तु नशक्यंविस्तरेणतु ७८ उ
क्ताराजर्षयोयेतु अतीतास्तेयुगैःसह। येतेययातिवंश्यानां येचवंशाविशाम्पते! ७९ की
र्तिताद्युतिमन्तस्तेय एतान्धारयेन्नरः। लभतेसवरान्पञ्च दुर्लभानिहलौकिकान् ८०
आयुःकीर्तिंधनंस्वर्गं पुत्रवांश्चाभिजायते। धारणाच्छ्रवणाच्चैव परंस्वर्गस्यधीमतः ८१

इति श्रीमत्स्यपुराणेद्विसप्तत्याधिकद्विशततमोऽध्यायः २७२॥

(ऋषय ऊचुः) न्यायेनार्जनमर्थानां वर्द्धनञ्चाभिरक्षणम्। सत्पात्रप्रतिपत्तिश्च स
र्वशास्त्रेषुपठ्यते १ कृतकृत्योभवेत्केन मनस्वीधनवान्बुधः। महादानेनदत्तेन तन्नोविस्त
रतोवद २ (सूत उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि महादानानुकीर्तनम्। दानधर्मेऽपिय
न्नोक्तं विष्णुनाप्रभविष्णुना ३ तदहंसम्प्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। सर्वपापक्षयकरं
नृणांदुःस्वप्ननाशनम् ४ यत्तत् षोड़शधाप्रोक्तं वासुदेवेनभूतले। पुण्यंपवित्रमायुष्यं स
र्वपापहरंशुभम् ५ पूजितंदेवताभिश्च ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः। आद्यन्तुसर्वदानानां तु
लापुरुषसंज्ञकम् ६ हिरण्यगर्भदानञ्च ब्रह्माण्डंतदनन्तरम्। कल्पपादपदानञ्च गोसह
स्रञ्चपञ्चमम् ७ हिरण्यकामधेनुश्च हिरण्याश्वस्तथैवच। हिरण्याश्वरथास्तद्वत् हे

होगये हैं इनसबके जन्ममरणके विस्तारको कोई सैकड़ों वर्षतकभी कहनेको समर्थनहीं है ७१।७५ यह अट्ठाईस राजा तो व्यतीत होकर वैवस्वतमनुके अन्तरमें देवतागणों के साथ स्वर्गलोकमें प्राप्त होगये हैं और तेंतालीस महात्मा राजा आगे होवेंगे इसप्रकारसे ययातिवंश में होनेवाले जो राजा व्यतीतहोगये हैं वहसब मैंने कहदिये-इन ययाति आदिक उत्तमराजाओंको जो धारण करता है वह इसलोकमें आगे कहेहुए उत्तम पांचवरोंको प्राप्तहोताहै ७६।८० अर्थात् इनके धारण करनेवाले को आयु-कीर्त्ति-धन-स्वर्ग और पुत्रकी प्राप्तिहोती है इनराजाओंके धारण करने वा सुनने से भी स्वर्ग की प्राप्तिहोती है ८१॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्विसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७२॥

ऋषियोंने पूछाकि हे सूतजी द्रव्यको न्यायसे संचितकरना बढ़ाना और रक्षित करनाभीचाहिये और सत्पात्रकी प्राप्ति सब शास्त्रोंमें श्रेष्ठकही है १ सो धनवान् विद्वान पुरुष कौनसे महादानके देने से कृतकृत्यहोताहै इस बातको आप विस्तापूर्वक वर्णनकीजिये २ सूतजीबोले-कि अब मैं उस महा दानका वर्णन करताहूं जोदान धर्म में भी विष्णुभगवान् ने नहीं कहाहै वह महागुह्यदान मनुष्योंके सबपाप और दुष्टस्वप्नोंका नाश करनेवाला है उसे सुनो ३।४ जो विष्णुभगवान्ने पृथ्वीपर सोलह प्रकारके दानकहे हैं उनसबमें आद्य-पुण्य-पवित्र-आयुवर्द्धन-सर्वपापनाशक ब्रह्मा विष्णु औरशिवा दिक देवताओं से पूजित सब दानोंमें मुख्य पहला तुलापुरुष नाम महादान है ५।६ दूसरा हिरण्य गर्भदान-तीसरा ब्रह्माण्डदान-चौथा कल्पपादपदान-पांचवां गोसहस्रक-छठा हिरण्यकामधेनु-सातवाँ

महस्तिरथस्तथा ८ पञ्चलाङ्गलकंतद्वत् धरादानंतथैवच। द्वादशंविश्वचक्रन्तु ततःक ल्पलतात्मकम् ९ सप्तसागरदानञ्च रत्नधेनुस्तथैवच। महाभूतघटस्तद्वत् षोडशंपरि कीर्तितम् १० सर्वाण्येतानिकृतवान् पुराशम्बरसूदनः। वासुदेवस्तुभगवान् अम्बरीषो ऽथभार्गवः ११ कार्तवीर्य्यार्जुनोनाम प्रह्लादःपृथुरेवच। कुर्युरन्येमहीपालाः केचिच्च भरतादयः १२ यस्माद्विघ्नसहस्रेण महादानानिसर्वदा। रक्षन्तेदेवताःसर्वा एकैकमपि भूतले १३ एषामन्यतमंकुर्य्याद्वासुदेवप्रसादतः। नशक्यमन्यथाकर्तुमपिशक्रेणभूतले १४ तस्मादाराध्यगोविन्दमुमापतिविनायकौ। महादानमखंकुर्य्याद्विप्रैश्चैवानुमोदितः १५ एतदेवाहमनवे परिपृष्टोजनार्दनः। यथावदनुवक्ष्यामि श्रृणुध्वमृषिसत्तमाः! १६ (मनुरुवाच) महादानानियानीह पवित्राणिशुभानिच। रहस्यानिप्रदेयानि तानिमेक थयाच्युत! १७ (मत्स्य उवाच) यानिनोक्तानिगुह्यानि महादानानिषोडश। तानिते कथयिष्यामि यथावदनुपूर्वशः १८ तुलापुरुषयागोऽयं येषामादौविधीयते। अयनेविषु वेपुण्ये व्यतीपातेदिनक्षये १९ युगादिषूपरागेषु तथामन्वन्तरादिषु। संक्रान्तौवैधृ तिदिनेचतुर्दश्यष्टमीषुच २० सितपञ्चदशीपर्व द्वादशीष्वष्टकासुच। यज्ञोत्सवविवाहेषु दुःस्वप्नाद्भुतदर्शने २१ द्रव्यब्राह्मणलाभेवा श्रद्धावायत्रजायते। तीर्थेवायतनेगोष्ठे कू पारामसरित्सुच २२ गृहेवायतनेवापि तड़ागेरुचिरेतथा। महादानानिदेयानि संसारभ यभीरुणा २३ अनित्यंजीवितंयस्मात् वसुचातीवचञ्चलम्। केशेष्वेवगृहीतःसन् मृत्यु

हिरण्याश्व-आठवां हिरण्याश्वरथ-नवां हेमहस्तिरथ-दशवां पंचलांगलक-ग्यारहवांधरादान-बारहवां विश्वचक्र-तेरहवां कल्पलतात्मक-चौदहवां सप्तसागरक-पन्द्रहवां रत्नधेनुदान और सोलहवां महा-भूतघट यह सोलहदान हैं इन सबोंको, प्रथम प्रद्युम्न-श्रीकृष्ण-अंबरीष-सहस्राबाहु-प्रह्लाद-पृथु-और भरतादिक बहुत से राजा करतेभये ७। १२ इनसब दानों में से एक २ दानको सब देवता हजारों विघ्नोंसे रक्षित करते हैं १३ सोविष्णुभगवान्की कृपासे इन में से कोई एकभी बनजावेतो, उस केफलको इन्द्रभी अन्यथानहीं करसक्ताहै १४ इसलिये विष्णु भगवान्काआराधनकर शिवजी समेत गणेशजीकोपूज ब्राह्मणोंकी आज्ञालेकर महादानोंका यज्ञकरना चाहिये १५ प्रथमयही प्रश्न विष्णु भगवान से मनुजीनेभी कियाथा उसीकोमैंभी अपनी बुद्धिके अनुसार यथार्थता पूर्वक कहताहूं तुम चित्तसे श्रवण करो १६ मनुने पूछा हे भगवन् इसपृथ्वीपर जितने महादान हैं उनसबको आप मेरे आगेकहो १७ मत्स्यजी कहने लगे कि जो सोलहमहादान कहीं नहीं कहे हैं उनको मैं तेरे आगे यथार्थ क्रमसे कहताहूं १८ इन सबके पूर्वमें तुलापुरुष संज्ञक दानयज्ञ कहा है यह महादान समान दिनरात्रि- विषवकाल, व्यतीपातके दिन, युगादिनोंमें, ग्रहणोंमें, मन्वन्तरों के दिनोंमें, संक्रान्ति तथा वैधृति योगकेदिन, चतुर्दशी, अष्टमी, पूर्णिमा, द्वादशी, अष्टकयोग, यज्ञ उत्सव और विवाहमें दुःस्वप्न दर्शन में अथवा द्रव्य और ब्राह्मणके लाभमें वा श्रद्धामें तीर्थपर, देवमन्दिरमें, गौकेस्थान में कूप, वापी और तडागादिपर करनेकेयोग्यहै १९। २३ जीवनअनित्यहै धनचञ्चलायमान है, मृत्युस-

नाधर्ममाचरेत् २४ पुण्यांतिथिमथासाद्य कृत्वाब्राह्मणवाचनम्। षोड़शारात्निमात्रन्तु द
शद्वादशवाकरान् २५ मण्डपंकारयेद्विद्वान् चतुर्भद्रासनंबुधः। सप्तहस्ताभवेद्वेदी मध्ये
पञ्चकरातथा २६ तन्मध्येतोरणंकुर्य्यात् सारदारुमयंबुधः। कुर्य्यात्कुण्डानिचत्वारि च
तुर्दिक्षुविचक्षणः २७ समेखलायोनियुतानिकुर्य्यात् सम्पूर्णकुम्भानिसहासनानि। सुता
म्रपात्रद्वयसंयुतानि सयज्ञपात्राणिसुविष्टराणि २८ हस्तप्रमाणानितिलाज्यधूप पुष्पोप
हाराणिसुशोभनानि। पूर्वोत्तरेहस्तमिताथवेदी ग्रहादिदेवेश्वरपूजनाय २९ अत्रार्चनंब्र
ह्मशिवाच्युतानां तत्रैवकार्य्यंफलमाल्यवस्त्रैः। लोकेशवर्णाःपरितःपताकामध्येध्वजः कि
ङ्किणिकायुतःस्यात् ३० द्वारेषुकार्य्याणिचतोरणानि चत्वार्य्यपिक्षीरवनस्पतीनाम्। द्वा
रेषुकुम्भद्वयमत्रकार्य्यं स्रग्गन्धधूपाम्बररत्नयुक्तम् ३१ शालेङ्गुदीचन्दनदेवदारु श्री
पर्णिविल्वप्रियकाञ्चनोत्थम्। स्तम्भद्वयंहस्तयुगावखातं कृत्वादृढंपञ्चकरोच्छ्रितञ्च ३२
तदन्तरंहस्तचतुष्टयंस्यादथोदरङ्गश्चतदङ्गमेव। समानजातिश्चतुलावलम्ब्या हैमेन
मध्येपुरुषेणयुक्ता ३३ दैर्घ्येणसाहस्तचतुष्टयंस्यात् पृथुत्वमस्यास्तुदशाङ्गुलानि। सु
वर्णपट्टाभरणातुकार्य्या सालोहपाशद्वयशृङ्खलाभिः ३४ युतासुवर्णेनतुरत्नमाला विभूषि
तामाल्यविलेपनाभ्याम्। चक्रंलिखेद्वारिजगर्भयुक्तं नानारजोभिर्भुविपुष्पकीर्णम् ३५ वि

दैववालोंको पकड़ेहिहुएहै ऐसीदशामें मनुष्यको धर्मका आचरण सदैव करना चाहिये २४ पुण्य
पवित्र तिथिकेदिन ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन करवाकर दश वा बारहहाथ अथवा सोलह अरत्नियों
का मंडप बनवावे (एकअरत्नि खुलीमुट्ठी अर्थात् हथेलीको कहतेहैं) विद्वान् पुरुष चतुर्भद्रासन मं-
डप बनवावे उसके सात वा पांच हाथकी वेदी बनवावे २५। २६ उसके मध्यमें उत्तमकाष्ठकी तो
रणबनवावे और चारों दिशाओंमें चार कुंडबनावे सबकुंडोंमें मेखला बनावे और पूर्णकुंभोंसे संयुक्त
करे फिर तांबेकेदो पात्रोंसमेत एकहाथ प्रमाणवाले यज्ञके विष्टरआदि पात्रोंको स्थापितकरे फिर
उनको तिल घृत धूप और पुष्पादिकोंसे शोभितकरे इसके सिवाय ईशानकोणमें एकहाथके विस्ता-
रकी ग्रहोंकीवेदी बनावे २७। २९ वहाँ ब्रह्मा विष्णु और शिव इनतीनोंका पूजनफल पुष्पादिसे
करे, चारोंओर लोकपालोंके वर्णकी पताकाबनावे मध्यमें किंकिणी जालीसेयुक्त ध्वजाबनावे और
द्वारपर दूधवाले पीपलआदि वृक्षोंकी चारतोरणबाँधे और मालावस्त्र और धूप इन्होंसे विभूषित कि-
येहुए कलशोंको स्थापितकरे और शाल इंगुदीवृक्ष चन्दन, देवदारु, लालवण, बेलपत्र और कचनार-
इतने वृक्षोंमेंसे किसीएक वृक्षके काष्ठके पांच २ हाथऊंचे और दो २ हाथ पृथ्वीमें गढ़ेहुए दोस्तंभ-
बनावे ३०। ३१ फिर समान जातिवाला पुरुष तुलाकोबांधे उसतुलाके मध्यमें सुवर्णके पुरुषको
स्थापितकरे उसतुलानाम तराजूमें चारहाथ लंबीडंडी लगाकर पलड़े दश १ अंगुलमोटे बनावे प-
लड़ोंमें सुवर्णकी पट्टी और आभूषण लगावे और दोनों ओरके पलड़ोंमें लोहेकी सांकल और इस
बनवावे फिर सुवर्ण रत्नोंकीमाला पुष्प और चन्दन इन्होंसे तुलाको विभूषितकर उसमें कमलका
चक्र लिखे और उसतुलाके नीचे पृथ्वीमें अनेक प्रकारकी रज और पुष्पोंको बखेरदेवे और तुला

नानकञ्चोपरिपञ्चवर्णं संस्थापयेत्पुष्पफलोपशोभम्। अथर्त्विजोवेदविदश्चकार्य्याः सुरू
पवेशान्वयशीलयुक्ताः ३६ विधानदक्षाःपटवोऽनुकूला येचार्य्यदेशप्रभवाद्विजेन्द्राः। गु
रुश्चवेदान्तविदार्य्यवंशसमुद्भवःशीलकुलाभिरूपः ३७ पुराणशास्त्राभिरतोऽतिदक्षः
प्रसन्नगम्भीरसरस्वतीकः। सिताम्बरःकुण्डलहेमसूत्र केयूरकण्ठाभरणाभिरामः ३८
पूर्वेणऋग्वेदविदावथास्तांयजुर्विदौदक्षिणतश्चशस्तौ। स्थाप्यौद्विजौसामविदौतुपश्चा
दाथर्वणावुत्तरतस्तुकार्य्यौ ३९ विनायकादिग्रहलोकपाल वस्वष्टकादित्यमरुद्गणानाम्।
ब्रह्माच्युतेशार्कवनस्पतीनां स्वमन्त्रतोहोमचतुष्टयंस्यात् ४० जप्यानिसूक्तानितथैवचे
षा मनुक्रमेणापियथास्वरूपम्। होमावसानेकृततूर्य्यनादो गुरुर्गृहीत्वाबलिपुष्पधूपम्।
आवाहयेल्लोकपतीन्क्रमेण मन्त्रैरमीभिर्यजमानयुक्तः ४१ एह्येहिसर्वामरसिद्धसाध्यै रभि
ष्टुतोवज्रधरोऽमरेशः। संवीज्यमानोऽप्सरसाङ्गणेन रक्षाध्वरन्नोभगवन्नमस्ते ४२ एह्येहि
सर्वामरहव्यवाह! मुनिप्रवीरैरभितोऽभिजुष्टः। तेजस्विनालोकगणेनसार्द्धं ममाध्वरंरक्ष
कवे! नमस्ते ४३ एह्येहिवैवस्वतधर्मराज! सर्वामरैरर्चितदिव्यमूर्ते!। शुभाशुभानन्द
शुचामधीश! शिवायनःपाहिमखंनमस्ते ४४ एह्येहिरक्षोगणनायकस्त्वं सर्वैस्तुवेताल
पिशाचसङ्घैः। ममाध्वरंपाहिशुभादिनाथ! लोकेश्वरस्त्वंभगवन्नमस्ते ४५ एह्येहियादो
गणवारिधीनाङ्गणेनपर्जन्यमहाप्सरोभिः। विद्याधरेन्द्रामरगीयमान!, पाहित्वमस्मान्न

काष्ठके ऊपर पांच रंगकी बन्दनवारबाँधे फिर वेदोंके ज्ञाता सुन्दररूप वेश और श्रेष्ठ स्वभावयुक्त सब विधानजाननेमें चतुर अनुकूल और आर्यदेशमें उत्पन्नहुए ऋत्विक वा पुरोहित बनाने चाहिये और वेदान्तज्ञ आर्य बंशोद्भव पुराणशास्त्रज्ञ प्रसन्न गंभीर बोलनेवाला श्वेतवस्त्र, कुंडल, सुवर्णकी तागड़ीवा जूबन्द और कंठ भूषणादिसे शोभितहुए पुरुषको गुरूबनावे ३३। ३८ और पूर्वदिशामें ऋग्वेदकेज्ञाता दो ब्राह्मण बैठावे, दक्षिणमें यजुर्वेदके जाननेवाले, पश्चिम में सामवेदके ज्ञाता दो ब्राह्मणों को और उत्तरमें अथर्व वेदके जाननेवाले दो ब्राह्मणों को बैठावे फिर वह सब विद्वान् अपने २ कुंडोंमें अपने २ वेदके मंत्रोंसे गणेश ग्रह, लोकपाल, अष्टवसु, आदित्य, मरुद्गण, ब्रह्मा विष्णु शिव और सूर्य इन सबके अर्थ हवनकरें ३९। ४० फिर अनुक्रमसे इन सब देवताओं के सूक्त और मंत्रोंको जपें हवनके अन्तमें वह पूर्वोक्त गुरु शंखभेरी आदिके शब्द करवाके पुष्प धूपादि से युक्तकीहुई बलियोंको ग्रहणकर क्रमपूर्वक मंत्रोंकरके लोकपालों का आवाहनकरे ४१ आवाहनमंत्रार्थ–हे सबदेवता समेत सिद्ध साध्यों से पूजित इन्द्र आप आइये, हे वज्रधारी अप्सरागणों से संवीज्यमान तुमको नमस्कार है आप हमारे यज्ञकी रक्षाकरिये ४२ हेअग्ने तुमआओ तुम मुनियोंसे सेवितहो आप तेज युक्त लोक गणों सहित होकर मेरे यज्ञकी रक्षाकरो मैं आपके अर्थ नमस्कार करताहूं ४३ हे धर्मराज आप आइये तुम सब देवताओं से पूजित दिव्य मूर्त्तिवाले होके शुभ अशुभ शोकादिके पतिहो आप हमारे कल्याण के अर्थ इस यज्ञकी रक्षाकरिये आपको नमस्कारहै ४४ हे रक्षोगणनायक नैर्ऋते आप आओ संपूर्ण बेताल पिशाच भूत प्रेतादिकों से युक्तहोकर मेरे इस यज्ञकी रक्षाकरो आपके अर्थ नमस्कारहै ४५

गवन्नमस्ते ४६ एह्येहियज्ञेममरक्षणाय मृगाधिरूढःसहसिद्धसङ्घैः। प्राणाधिपःकालक
वेःसहायः गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ४७ एह्येहियज्ञेश्वर! यज्ञरक्षां विधत्स्वनक्षत्रगणेन
सार्द्धम्। सर्वौषधीभिःपितृभिःसहैव गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ४८ एह्येहिविश्वेश्वर! न
स्त्रिशूल कपालखट्वाङ्गधरेणसार्द्धम्। लोकेशयज्ञेश्वरयज्ञसिद्ध्यै गृहाणपूजांभगवन्नम
स्ते ४९ एह्येहिपातालधराधरेन्द्र! नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान!। यक्षोरगेन्द्रामरलोकसा
र्द्धमनन्त! रक्षाध्वरमस्मदीयम् ५० एह्येहिविश्वाधिपते! मुनीन्द्र! लोकेनसार्द्धंपितृदे
वताभिः। सर्वस्यधातास्यमितप्रभाव विशाध्वरन्नोभगवन्नमस्ते ५१ त्रैलोक्येयानिभूता
नि स्थावराणिचराणिच। ब्रह्मविष्णुशिवैःसार्द्धं रक्षांकुर्वन्तुतानिमे ५२ देवदानवगन्धर्वा
यक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयोमनवोगावो देवमातरएवच ५३ सर्वेममाध्वरेरक्षां प्रकुर्वन्तुमु
दान्विताःइत्यावाह्यसुरान्दद्यादृत्विग्भ्योहेमभूषणम् ५४ कुण्डलानिचहैमानि सूत्राणिक
टकानिच। अङ्गुलीयपवित्राणि वासांसिशयनानिच ५५ द्विगुणंगुरवेदद्याद् भूषणाच्छा
दनानिच। जपेयुःशान्तिकाध्यायं जापकाःसर्वतोदिशम् ५६ तत्रोषितास्तुतेसर्व्वे कृत्वैवम
धिवासनम्। आदावन्तेचमध्येच कुर्य्याद्ब्राह्मणवाचनम् ५७ ततोमङ्गलशब्देन स्नापि

हे वरुण आप आओ तुम जलोंके गण- समुद्र और पर्जन्य इन्हों से युक्त रहनेवाले अप्सरा- विद्याधर और देवताओं से स्तुतिकियेहुए हो आपके अर्थ नमस्कारहै आप हमारे यज्ञकी रक्षाकरो ४६ हेवायो तुम मेरी रक्षाके निमित्त इस यज्ञमें आओ पूजाको ग्रहणकरो और मृगपर चढ़ेहुए सिद्धों से युक्त प्राणाधिप कालके सहायक आपके अर्थ नमस्कार है ४७ हेयज्ञेश्वर चन्द्रमा आप नक्षत्रगणों सहित मेरे यज्ञमें आकर सर्वौषधी पितर और अमृत से युक्त होकर पूजा ग्रहणकरो और रक्षाकरो आपके अर्थ नमस्कारहै ४८ हेविश्वेश्वर महादेव पूजाकोग्रहणकरो तुम्हारेअर्थ नमस्कारहै हेलोकेश यज्ञेश्वर तुम यक्ष सिद्धादिसे युक्त त्रिशूल, कपाल और खट्वाङ्ग धारणकरके मेरी रक्षाकरो और पूजा ग्रहणकरो आपको नमस्कार है ४९ हेअनन्त पाताल धराधरेन्द्र नागोंकी स्त्री और किन्नरों से पूजित यक्ष उ- रग आदिकों से युक्त होकर मेरी पूजाको ग्रहणकरो आपको नमस्कारहै ५० हेविश्वाधिपते तुम पितृ देवतादिकों से युक्त मेरे यज्ञमें प्राप्तहो और सबके रचनेवाले हो हे भगवन् और हेब्रह्मन् आपको न- मस्कार है ५१ त्रिलोकी में जितने स्थावर जंगमादिक भूतहैं वह सब ब्रह्मा विष्णु और शिवआदिकों से युक्त होकर मेरी रक्षाकरो ५२ और देव, दानव, यक्ष, गन्धर्व, पन्नग, राक्षस, ऋषि, मनुष्य, गौ और देवमातर यह सब आनन्द से युक्त हो मेरे यज्ञमें मेरी रक्षाकरो, इस प्रकारसे सब देवताओं का आवा- हन करके ऋत्विगोंके अर्थ सुवर्णके आभूषण देवे ५३।५४ कुंडल, सुवर्णकीतागड़ी, कढूले, अंगूठी, पवित्र वस्त्र, और शय्या यह सब देवे और इन सबसे दूनी दक्षिणा गुरुके निमित्त देवे और सबदि- शाओं में बैठेहुए जपकरनेवाले ब्राह्मण लोग शान्तिकाध्याय जपें ५५।५६ उपवास करनेवाले ब्रा- ह्मण लोगोंको वहाँ यह सब विधानकरना योग्यहै और आदिमध्य तथा अन्तमें ब्राह्मणों को स्वस्ति- वाचनकरनाभी योग्यहै ५७ फिर मंगल शब्द करके वेदके मंत्रोंकरके ब्राह्मणों से अपना स्नानकरवा

तोवेदपुङ्गवैः। त्रिःप्रदक्षिणमावृत्य गृहीतकुसुमाञ्जलिः ५८ शुक्लमाल्याम्बरोभूत्वा तांतु
लामभिमन्त्रयेत्। नमस्तेसर्वदेवानां शक्तिस्त्वंसत्यमास्थिता ५९ साक्षिभूताजगद्धात्री
निर्मिताविश्वयोनिना। एकतःसर्वसत्यानि तथान्ततशतानिच ६० धर्माधर्मकृतांमध्येस्था
पितासिजगद्धिते। त्वंतुले! सर्वभूतानां प्रमाणमिहकीर्तिता ६१ मांतोलयन्तीसंसाराद्‌
द्धरस्वनमोऽस्तुते। योऽसौतत्वाधिपोदेवः पुरुषःपञ्चविंशकः ६२ सएकोऽधिष्ठितोदेवि!
त्वयितस्मान्नमोनमः। नमोनमस्तेगोविन्द! तुलापुरुषसंज्ञक ६३ त्वंहरे! तारयस्वा
स्मान्नस्मात्संसारकर्दमात्। पुण्यकालंसमासाद्य कृत्वैवमधिवासनम् ६४ पुनःप्रदक्षि
णांकृत्वा तुलामारोहयेद्बुधः। सखड्गचर्मकवचः सर्वाभरणभूषितः ६५ धर्मराजमथादा
य हैमंसूर्य्येणसंयुतम्। कराभ्यांबद्धमुष्टिभ्यामास्तेपश्यन्हरेर्मुखम् ६६ ततोऽपरेतुला
भागे न्यसेयुर्द्विजपुङ्गवाः। समादभ्यधिकंयावत् काञ्चनंचातिनिर्मलम् ६७ पुष्टिकाम
स्तुकुर्वीत भूमिसंस्थंनरेश्वरः। क्षणमात्रंततःस्थित्वा पुनरेवमुदीरयेत् ६८ नमस्तेसर्व
भूतानां साक्षिभूते! सनातनि!। पितामहेनदेवित्वं निर्मितापरमेष्ठिना ६९ त्वयाधृतंज
गत्सर्वं सहस्थावरजङ्गमम्। सर्वभूतात्मभूतस्थे! नमस्तेविश्वधारिणि ७० ततोऽवती
र्य्यगुरवे पूर्वमर्द्धंनिवेदयेत्। ऋत्विग्भ्योपरमर्धन्तु दद्यादुदकपूर्वकम् ७१ गुरवेग्रामर

के तीन प्रदक्षिणापूर्वक पुष्पोंकी अंजली ग्रहणकर श्वेतमाल और वस्त्रोंकोपहर उस तुलाको अभि-
मंत्रितकरे और कहे कि हेतुले तुम सब देवताओं की शक्ति हो आपके अर्थ नमस्कारहै ५८। ५९
तुम सबकी साक्षी जगद्धात्री और ब्रह्माजी से रचीहुई हो तुम्हारे एक ओर को संपूर्ण सत्य स्थितहैं
तुही धर्म और अधर्म करनेवालोंके बीच में स्थितहै हेतुले तुम सबका प्रमाण करनेवाली हो ६०। ६१
आप मुझको तोलती हुई संसार रूपी सागर से मुझे पार उतारो आप के अर्थ नमस्कार है और हे
देवि जो चौबीस तत्त्वोंका अधिपति पंचविंशतिक पुरुष है सो तुझमेंही स्थित है इसलिये तुझको
नमस्कार है-हेतुलापुरुषसंज्ञक गोविन्द तुमको नमस्कार है हे हरे तुम मुझको इस संसाररूपी
कीच से पार उतारो इसप्रकारसे अधिवासन करे ६२। ६४ फिर प्रदक्षिणा करके खड्ग चर्म और
आभूषण धारण करके उस तुलामें स्थित होवे ६५ उसमें बैठेहुए सुवर्णसे बनाई हुई धर्मराज की
मूर्त्तिको और हेम पुरुषको हाथों की मुट्ठी बाँधकर दोनों भुजाओं से उठावे और इस मूर्त्ति उठाने के
समय हरि भगवान् की मूर्त्तिके मुखको ओर देखतारहै फिर उत्तम ब्राह्मण लोग उस यजमान को
एक ओर तराजूके दूसरे पलड़ेमें बैठादेवें फिर पुष्टिकी कामना करनेवाला राजा अपने तुल्य प्रमाण
से भी अधिक सुवर्ण को पृथ्वी में रखकर क्षणमात्र स्थित होके इस वचनका उच्चारण करे कि हे देवि
तू सब भूतोंकी साक्षी रूपहै इसलिये तुझे नमस्कार है तुमको प्रथम ब्रह्माजी ने रचा है और तुम्ही
से यह स्थावर जंगम सब जगत् धारण होरहा है तू सब भूतोंकी आत्मभूत है विश्वको धारण करने
वाली है ऐसाकह उस तुलामें से उतर के उस संपूर्ण धनमें से आधा धन तो गुरुके अर्थ देदेवे और
आधेधन को संकल्प करके ऋत्विजों के अर्थ दानकरदे और उन्हीं की आज्ञा पाकर उस धनके कुछ

त्नानि ऋत्विग्भ्यश्चनिवेदयेत्। प्राप्यतेषामनुज्ञांतु तथान्येभ्योऽपिदापयेत् ७२ दीना
नाथविशिष्टादीन् पूजयेद् ब्राह्मणैःसह। नचिरंधारयेद्गेहे सुवर्णंप्रोक्षितंबुधः ७३ तिष्ठद्भ
यावहंयस्माच्छोकव्याधिकरंनृणाम्। शीघ्रंपरस्वीकरणाच्छ्रेयःप्राप्नोतिमानवः ७४ अनेन
विधिनायस्तु तुलापुरुषमाचरेत्। प्रतिलोकाधिपस्थाने प्रतिमन्वन्तरंवसेत् ७५ विमा
नेनार्कवर्णेन किङ्किणीजालमालिना। पूज्यमानोऽप्सरोभिश्च ततोविष्णुपुरंव्रजेत्। क
ल्पकोटिशतंयावत्तस्मिन्लोकेमहीयते ७६ कर्मक्षयादिहपुनर्भुविराजराजो भूपालमौलि
मणिरञ्जितपादपीठः। श्रद्धान्वितोभवतियज्ञसहस्रयाजी दीप्तप्रतापजितसर्वमहीपलो
कः ७७ योदीयमानमपिपश्यतिभक्तियुक्तः कालान्तरेस्मरतिवाचयतीहलोके। योवा
शृणोतिपठतीन्द्रसमानरूपः प्राप्नोतिधामसपुरन्दरदेवजुष्टम् ७८ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्रिसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७३ ॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। नाम्नाहिरण्यगर्भाख्यं
महापातकनाशनम् १ पुण्यंदिनमथासाद्य तुलापुरुषदानवत्। ऋत्विग्मण्डपसम्भार
भूषणाच्छादनादिकम् २ कुर्य्यादुपोषितस्तद्वल्लोकेशावाहनंबुधः। पुण्याहवाचनंकृत्वात
द्वत्कृत्वाधिवासनम् ३ ब्राह्मणैरानयेत्कुम्भं तपनीयमयंशुभम्। द्विसप्तत्यंगुलोच्छ्रायंहे
मपङ्कजगर्भवत् ४ त्रिभागहीनविस्तारमाज्यक्षीराभिपूरितम्। दशास्त्राणिचरत्नानिदा

भाग को अन्यों के अर्थ भी बाँट देवे ६६। ७२ दीन-अनाथ-उत्तम शिष्ट पुरुष और ब्राह्मण इन
सबका पूजनकरे और संकल्प किये हुए इस तुलादान के सुवर्णको बुद्धिमान् पुरुष बहुत देरतक घर
में नहीं रक्खे-ऐसे धनको जो बहुत दिनतक घरमें रक्खे तो उस मनुष्यके भय शोक और व्याधि
उत्पन्न होती है और शीघ्रही अन्योंको बाँट देवे तो परमकल्याण होता है ७३। ७४ इस विधि से
जो पुरुष तुला दान करते हैं वह एक २ मन्वन्तर में एक २ लोकेशके स्थानमें वास करते हैं ७५
इस तुला दानका करनेवाला सूर्य्यके समान कान्तियुक्त किंकिणी जाली और मालाओंसे विभूषित
विमान में बैठ अप्सराओं से पूजित होकर विष्णुलोक में प्राप्तहोताहै और किरोड़ों कल्पोंतक वहां
वासकरताहै ७६ फिर क्षीण पुण्य होनेपर यहां पृथ्वी लोकमें जन्मलेकर संपूर्ण राजाओं का शिरोम-
णिराजा होताहै और श्रद्धायुक्त होकर हजारों यज्ञकरके अपनेप्रतापसे संपूर्णराजाओंको जीतलेताहै
और जो अन्यके दियेहुए भी इस दानको भक्ति से देखकर कालान्तर में स्मरण करता है अथवा
अन्योंको सुनाताहै वा इस विधिको पढ़तासुनताहै वह भी इन्द्रसे सेवित कियेहुए स्वर्ग लोक में प्राप्त
होता है ७७। ७८॥ इति श्री मत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्रिसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७३॥

मत्स्यजी बोले-अब उत्तम हिरण्यगर्भनाम वाले महापातकनाशक महादान को कहते हैं १
पुण्य पवित्र दिनमें तुला पुरुष दान के सदृश ऋत्विग् मण्डप-सामग्री-भूषण और आच्छादन
आदिको संचितकरे-पूर्वकेही समान उपवास व्रत करके लोकपालों का आवाहनकरे फिर पुण्या-
हवाचन करवाकर अधिवासन करवावे-फिर ब्राह्मणों करके सुन्दर शुभ सुवर्णके कलशको मँगवावे

त्रींसूचींतथैवच ५ हेमनालंसपिठकं वहिरादित्यसंयुतम्। तथैवावरणंनाभेरुपवीतश्चका
ञ्चनम् ६ पार्श्वतःस्थापयेत्तद्वत् हैमदण्डकमण्डलू। पद्माकारंपिधानंस्यात् समन्तादं
गुलादिकम् ७ मुक्तावलीसमोपेतं पद्मरागसमन्वितम्। तिलद्रोणोपरिगतंवेदिमध्येव्य
वस्थितम् ८ ततोमङ्गलशब्देन ब्रह्मघोषरवेणच। सर्वौषध्युदकस्नानस्नापितोवेदपुङ्ग
वैः ९ शुक्लमाल्याम्बरधरः सर्वाभरणभूषितः। इममुच्चारयेन्मन्त्रं गृहीतकुसुमाञ्जलिः १०
नमोहिरण्यगर्भाय हिरण्यकवचायच। सप्तलोकसुराध्यक्ष जगद्धात्रेनमोनमः ११ भूर्लो
कप्रमुखालोकास्तवगर्भेव्यवस्थिताः। ब्रह्मादयस्तथादेवाः नमस्तेविश्वधारिणे १२ न
मस्तेभुवनाधार! नमस्तेभुवनाश्रय!। नमोहिरण्यगर्भाय गर्भेयस्यपितामहः १३ यत
स्त्वमेवभूतात्मा भूतेभूतेव्यवस्थितः। तस्मान्मामुद्धराशेष दुःखसंसारसागरात् १४ एव
मामन्त्र्यतन्मध्यमाविश्यास्तउदङ्मुखः। मुष्टिभ्यांपरिसंगृह्य धर्मराजचतुर्मुखौ १५ जानु
मध्येशिरःकृत्वा तिष्ठेदुच्छ्वासपञ्चकम्। गर्भाधानंपुंसवनं सीमन्तोन्नयनंतथा १६ कुर्युर्हि
रण्यगर्भस्य ततस्तेद्विजपुङ्गवाः। गीतमङ्गलघोषेण गुरुरुत्थापयेत्ततः १७जातकर्मादिकाः
कुर्युः क्रियाःषोडशचापराः। सूच्यादिकञ्चगुरवे दद्यान्मन्त्रमिमंजपेत् १८ नमोहिरण्यग

वह बहत्तर अंगुल ऊंचा सुवर्ण कमलके गर्भ के समान तीन भागमें विस्ताररहित घृत और दूधसे भरा हुआ दश अस्त्र–रत्न-दरांती सूई-सुवर्ण की नाली और पिटारी इन सबको उसके भीतर भरकर वाहरकीओर सूर्य्यकी मूर्त्तिसे युक्तकरे फिर नाभिको ढककर सुवर्णका यज्ञोपवीत पहिरावे ९ – ६ उस हिरण्यगर्भ कलशके बराबर में सुवर्णका दंड और कमंडलु स्थापितकरे फिर इसको एकअंगुल लंबे कमलके आकारके समान वस्त्रसे ढकदेवे और मोतियोंकी लड़ी वा पुखराज रत्नको स्थापित करे फिर एकद्रोणभर तिलोंको अर्थात् ३२ सेर तिलोंको वेदीकेऊपर स्थापितकर हिरण्यगर्भ कल-शको वस्त्र सहित स्थापितकरै ७। ८ तदनन्तर मंगलशब्द करके और ब्राह्मणों से वेदकापाठकरवा सर्वौषधीके जलसे यजमान स्नान करके श्वेतमाला, वस्त्र और भूषणोंको धारणकरे फिर पुष्पांजली लेकर इसमंत्रका उच्चारणकरे ९–१० हिरण्यगर्भयुक्त हिरण्यकवचवाले सप्तलोक वा देवताओं के अधिपति और जगद्धाता ऐसेविष्णु भगवान्के अर्थ नमस्कारहै ११ हेदेव भूलोकआदि सवलोक तु-म्हारे गर्भमें स्थितहैं और ब्रह्मादिक देवताभी तुम्हारे गर्भमें स्थितहैं आप विश्वके धारण करनेवाले हो ऐसे आपके अर्थ नमस्कारहै १२ हे भुवनाधार भुवनाश्रय जो कि आपकेगर्भमें पितामह ब्रह्माजी ठहरतेहैं ऐसे आपके अर्थ नमस्कारहै १३ तुमही भूतात्मा और सवभूतोंमें पृथक् २ स्थितहो इसी से संसाररूपी सवदुःखोंको आपहरिये १४ ऐसेआमंत्रितकर फिर उस हिरण्यगर्भ के मध्यमें प्रवेश कर उत्तरको मुखकरके धर्मराज और ब्रह्माकी मूर्त्तिको हाथोंकी मुट्ठियोंमें पकड़लेवे और घोंटुओंके मध्यमें शिरकरके पांचदफे श्वासलेवे फिर वह उत्तम वेदपाठी ब्राह्मण उस हिरण्यगर्भका गर्भाधान, पुंसवन, और सीमन्तादिक कर्मकरे फिर गुरु ब्राह्मण गीतमंगल शब्दपूर्वक यजमानका उत्थापन करे १५। १७ पीछे जातकर्मादि सोलहकर्मोंकोकरे और वह यजमान उन सूई आदि वस्तुओंकोगुरु

र्भाय विश्वगर्भायवैनमः । चराचरस्यजगतो गृहभूतायवैनमः १९ यथाहंजनितःपूर्वम र्त्यधर्मासुरोत्तम! । त्वद्गर्भसम्भवादेष दिव्यदेहोभवाम्यहम् २० चतुर्भिःकलशैर्भूयःतत स्तेद्विजपुङ्गवाः । स्नापयेयुःप्रसन्नागाः सर्वाभरणभूषिताः २१ देवस्यत्वेतिमन्त्रेणस्थित स्यकनकासने । अद्यजातस्यतेऽङ्गानि अभिषेक्ष्यामहेवयम् २२ दिव्येनानेनवपुषाचिरं जीवसुखीभव । ततोहिरण्यगर्भंतन्तेभ्योदद्याद्विचक्षणः २३ तेपूज्याःसर्वभावेन बहवो वातदाज्ञया । तत्रोपकरणंसर्वंगुरवेविनिवेदयेत् २४ पादुकोपानहच्छत्र चामरासन भाजनम् । ग्रामंवाविषयंवापि यदन्यदपिसम्भवेत् २५ अनेनविधिनायस्तु पुण्येऽह्ननिनि वेदयेत् । हिरण्यगर्भदानंस ब्रह्मलोकेमहीयते २६ पुरेषुलोकपालानां प्रतिमन्वन्तरंवसे त् । कल्पकोटिशतंयावद् ब्रह्मलोकेमहीयते २७ कलिकलुषविमुक्तःपूजितःसिद्धसाध्यैरम रचमरमालावीज्यमानोप्सरोभिः । पितृशतमथबन्धून् पुत्रपौत्रान्प्रपौत्रान्अपिनरकनि मग्नांस्तारयेदेकएव२८इतिपठतियइत्थंयःशृणोतीहसम्यक् मधुरिपुरिवलोकेपूज्यतेसोऽ पिसिद्धैःमतिमपिचजनानांयोददातिप्रियार्थंविबुधपतिजनानांनायकःस्यादमोघम् २९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुःसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७४ ॥

के निमित्त देकर इस मंत्रका उच्चारणकरे १८ हिरण्यगर्भ विश्वगर्भ और चराचर जगत् के घररूप आपको नमस्कारहै १९ हे देव जैसे आपने प्रथम मर्त्य धर्मवाला मुझको उत्पन्नकियाहै वैसेही अब आपके गर्भसे उत्पन्नहोनेके कारण मैं दिव्यदेहवाला होजाऊं २० इसके पीछे वह ब्राह्मण संपूर्ण आभूषणोंसे विभूषित होके चार कलशोंसे यजमानको स्नान करवावे अर्थात् सुवर्णके आसनपर बैठाकर देवस्यत्वा सविता० इसमंत्रसे स्नानकरवावे और ऐसाकहैकि अब उत्पन्नहुए तेरे अंगोंकाहम अभिषेक करेंगे २१।२२ तुम इस दिव्यशरीरकरके बहुत कालतक जीतेहुए सुखीरहो फिर उसहिरण्यगर्भको ऋत्विग् ब्राह्मणोंके अर्थ देदेवे २३ वह ऋत्विग् थोड़ेहों या बहुतहों सबको पूजे और सामग्री की सब वस्तुगुरुको निवेदनकरे २४ और खड़ाऊं, जूती जोड़ा, छत्री, चँवर, आसन, पात्र ग्राम और देश इनमेंसे शक्तिके अनुसार जिन २ वस्तुओंकी श्रद्धा देनेकी हो उनकाही दानकरे २५ इस पूर्वोक्त विधिसे जो पुरुष इस हिरण्यगर्भ नामवाले दानको पवित्र दिनमें करेगा वह ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोगा २६ और मनु २ के अन्तरमें एक२ लोकपालोंके लोकों में क्रमपूर्वक वासकरके किरोड़ों कल्पों तक २७ कलियुगके पापोंसे छुटाहुआ सिद्ध साध्योंसे पूजित अप्सरागणोंसे सेवित होकर बड़े आनन्दपूर्वक ब्रह्मलोकमें वासकरेगा यह पुरुष अपने सैकड़ों पितर भाई बन्धु पुत्र पौत्रादिकोंकाभी अकेलाही उद्धार करनेवाला होताहै २८ इस दानको जो पढ़ताहै वा सुनता है वह विष्णुलोक में प्राप्त होताहै और जो पुरुष इस दानकरनेकी किसीको अनुमति देताहै वहभी स्वर्गलोक में देवताओंका पति इन्द्र होता है २९ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुःसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७४ ॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि ब्रह्माण्डविधिमुत्तमम्। यच्छ्रेष्ठंसर्वदानानां महापातकनाशनम् १ पुण्यंदिनमथासाद्य तुलापुरुषदानवत्। ऋत्विग्मण्डपसम्भार भूषणाच्छादनादिकम् २ लोकेशावाहनंकुर्य्यादधिवासनकंतथा। कुर्य्याद्विंशपलादूर्ध्वमा सहस्राच्चशक्तितः ३ कलशद्वयसंयुक्तं ब्रह्माण्डंकाञ्चनंबुधः। दिग्गजाष्टकसंयुक्तं षड्वेदाङ्गसमन्वितम् ४ लोकपालाष्टकोपेतं मध्यस्थितचतुर्मुखम्। शिवाच्युतार्कशिखरमुमालक्ष्मीसमन्वितम् ५ वस्वादित्यमरुद्गर्भं महारत्नसमन्वितम्। वितस्तेरंगुलशतं यावदायामविस्तरम् ६ कौशेयवस्त्रसंवीतं तिलद्रोणोपरिन्यसेत्। तथाष्टादशधान्यानि समन्तात्परिकल्पयेत् ७ पूर्वेणानन्तशयनं प्रद्युम्नंपूर्वदक्षिणे। प्रकृतिंदक्षिणेदेशे सङ्कर्षणमतःपरम् ८ पश्चिमेचतुरोवेदाननिरुद्धमतःपरम्। अग्निमुत्तरतोहैमं वासुदेवमतःपरम् ९ समन्तादुगुडपीठस्थानर्चयेत्काञ्चनान्बुधः। स्थापयेद्वस्त्रसंवीतान् पूर्णकुम्भान्दशैवतु १० दशैवधेनवोदेयाः सहेमाम्बरदोहनाः। पादुकोपानहच्छत्र चामरासनदर्पणैः। भक्ष्यभोज्यान्नदीपेक्षुफलमाल्यानुलेपनैः ११ होमाधिवासनान्तेचस्नापितोवेदपुङ्गवैः। इममुच्चारयेन्मंत्रंत्रिःकृत्वाथप्रदक्षिणम् १२ नमोऽस्तुविश्वेश्वर! विश्वधाम! जगत्सवित्रेभगवन्नमस्ते। सप्तर्षिलोकामरभूतलेश! गर्भेणसार्द्धंवितराभिरक्षाम् १३ येदुःखितास्तेसुखिनोभवन्तु

मत्स्यजीबोले-कियह दान महापातकोंका नाश करनेवाला और सब दानों में श्रेष्ठहै १ इसके अनन्तर तुलापुरुष दानके सदृश ऋत्विक्-मंडप और आभूषणादिक सामग्रियोंको इकट्ठीकरके पवित्र, दिनमें लोकपालोंका आवाहनकरे और अधिवासनकरे-बुद्धिमान् पुरुष २० पलसे ऊपर हजार पलतक अपनी शक्तिके अनुसार सुवर्णका ब्रह्मांड बनवावे यह ब्रह्माण्ड दोकलशोंसे युक्तहोकर बनता है और (पलचारतोलेकाहोताहै) इस ब्रह्माण्डके चारों ओर आठदिग्गज हाथी और छःवेदांग शास्त्र इनको स्थापित करे २।४ उस ब्रह्मांडके चारमुख बनाकर उसके चारोंओर अष्टलोकपालोंकी मूर्त्ति बनाकर शिव विष्णु-सूर्य्य-पार्वती और लक्ष्मी इनकीभी मूर्त्तियोंसे संयुक्तकरे औरवसु आदित्य और मरुद्गण इनको गर्भमें स्थापितकरे उस ब्रह्माण्डकी लंबाई एक बिलस्तसे लेकर सौअंगुलतककी करके रेशमी वस्त्रसे ढक उसको ३२ सेर तिलोंपर स्थापित करदे फिर उसकेचारों ओर आठधातु धरदे ५।७ पूर्व्वकी ओर अनन्त भगवान्की शय्या-दक्षिणमें प्रद्युम्नजीकी शय्या और दक्षिणही में माया-तथा संकर्षण नाम बलदेवजी की मूर्त्तिबनादे- पश्चिम में चारों वेदोंसमेत अनिरुद्धको स्थापितकरे-उत्तरमें अग्निकी मूर्त्ति और स्वर्णमयी वासुदेव भगवान्की मूर्त्ति स्थापितकरे ८।९ उसके चारों ओर दशसुवर्णके पूर्ण कलश स्थापितकरे और उनपर गुड़धरकर कसूमे वस्त्र ढकदे और पूजनकरे और सुवर्णवस्त्र-दोहनीपात्र-इन समेत दशगौओं का दानकरे खड़ाऊं-धोतीजोड़ा-छत्री-चँवर-आसन-दर्पण-भक्ष्यभोज्य पदार्थ दीपक-इक्षुफल-पुष्प और चन्दन इनसब काभी गौओंकेही साथ दानकरे १०।११ और होम वा अधिवासन कर्मके अन्तमें वह यजमान वेदपाठी ब्राह्मणोंके द्वारा स्नानकरवाकर तीनवार प्रदक्षिणाकर इसमंत्रका उच्चारणकरै १२ हे विश्वेश्वर विश्वधाम

प्रयान्तुपापानिचराचराणाम्। त्वद्दानशस्त्राहतपातकानां ब्रह्माण्डदोषाःप्रलयंव्रजन्तु १४ एवंप्रणम्यामरविश्वगर्भं दद्याद्द्विजेभ्योदशधाविभज्य। भागद्वयंतत्रगुरोःप्रकल्प्य समं भजेच्छेषमनुक्रमेण १५ स्वल्पेचहोमंगुरुरेकएव कुर्य्यादथैकाग्निविधानयुक्त्या। सए वसम्पूज्यतमोऽल्पवित्ते यथोक्तवस्त्राभरणादिकेन १६ इत्थंयएतदखिलंपुरुषोऽत्रकुर्य्या द् ब्रह्माण्डदानमधिगम्यमहद्विमानम्। निर्धूतकल्मषविशुद्धतनुर्मुरारेरानन्दकृत्पदमु पैतिसहाप्सरोभिः १७ सन्तारयेत्पितृपितामहपुत्रपौत्र बन्धुप्रियातिथिकलत्रशताष्टकं सः। ब्रह्माण्डदानशकलीकृतपातकौघमानन्दयेच्चजननीकुलमप्यशेषम् १८ इतिपठति शृणोतिवायएतत् सुरभवनेषुगृहेषुधार्मिकाणाम्। मतिमपिचददातिमोदतेऽसावमरपते र्भवनेसहाप्सरोभिः १९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेपंचसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७५॥

(मत्स्यउवाच) कल्पपादपदानाख्यमतःपरमनुत्तमम्। महादानंप्रवक्ष्यामि सर्वपा तकनाशनम् १ पुण्यंदिनमथासाद्य तुलापुरुषदानवत्। पुण्याहवाचनंकृत्वा लोकेशा वाहनंतथा २ ऋत्विग्मण्डपसम्भारभूषणाच्छादनादिकम्। काञ्चनंकारयेद्वृक्षं ना नाफलसमन्वितम् ३ नानाविहगवस्त्राणि भूषणानिचकारयेत्। शक्तितस्त्रिपलादूर्ध्वमा सहस्रंप्रकल्पयेत् ४ अर्धक्लृप्तसुवर्णस्य कारयेत्कल्पपादपम्। गुडप्रस्थोपरिष्टाच्च सितव

भगवन् आपको नमस्कारहै तुम सब लोकोंके ईशहो मेरीरक्षाकरो हे देव जोदुःखी पुरुषहैं वा पापी हैं वहभी आपकेदानरूपी शस्त्रसे अपने २ पापोंको काटके सुखी होजाते हैं इस प्रकारसे उस विश्व-गर्भको अर्थात् उक्त प्रकारसे बनाये हुए ब्रह्माण्डको प्रणाम करके उसके दशभागकर ब्राह्मणोंको बाँटदेवे-और स्वल्पधनके कार्य्य में अकेला गुरुही अग्निहोत्र विधानसे हवनकर देवे और उसी अ-केले गुरुको वह सब वस्त्र आभूषणादिक देनेकेयोग्यहैं १३।१६ जोपुरुष इस प्रकारसे इसब्रह्माण्ड दानको करताहै वहसब पापोंसे छुटकर विमानमें बैठ विष्णुलोकमें प्राप्तहो अप्सरागणोंसे सेवित होताहै १७ और इस ब्रह्माण्ड दानके प्रभावसे मातापिताके कुटुम्बभरके पापोंके खंडकरके पिता पितामह बंधु और स्त्री इनसबको आनन्दकरवाता है १८ जोपुरुष इस कथाको पढ़ता है वा सुन-ताहै अथवा किसीको करनेकी अनुमति देताहै वह इन्द्रके स्वर्गलोकमें प्राप्तहोके अप्सराओं के साथ रमण करताहै १९॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७५॥

मत्स्यजी बोले—अब कल्पपादप नाम महापातकोंके नाशक महादानको कहते हैं १ उक्त तुला पुरुषकेही समान पवित्रदिनमें पुण्याहवाचन करवाके लोकपालों का आवाहनकरे २ और ऋत्विक् मंडप-आभूषण और वस्त्र यह सब पूर्वकेही सदृश ग्रहण करने योग्यहैं अनेकप्रकार के फलों से युक्त सुवर्णका वृक्ष बनावे और वृक्षके पक्षियोंके अनेकप्रकारके वस्त्र और आभूषण बनावे यह वृक्ष शक्ति के अनुसार तीन पलसे ऊपर हज़ार पलतक सुवर्णका बनताहै (एक पल चार तोले का होता है)

स्त्रयुगान्वितम् ५ ब्रह्मविष्णुशिवोपेतं पञ्चशाखंसभास्करम्। कामदेवमधस्ताच्च सकल
त्रंप्रकल्पयेत् ६ सन्तानंपूर्वतस्तद्वत्तुरीयांशेनकल्पयेत्। मन्दारंदक्षिणेपार्श्वे श्रियासार्धं
घृतोपरि ७ पश्चिमेपारिजातन्तु सावित्र्यासहजीरके। सुरभीसंयुतंतद्वत्तिलेषुहरिचन्द
नम् ८ तुरीयांशेनकुर्वीत सौम्येनफलसंयुतम्। कौशेयवस्त्रसम्वीतानिक्षुमाल्यफलान्वि
तान् ९ तथाष्टौपूर्णकलशान् पादुकाशनभाजनम्। दीपिकोपानहच्छत्र चामरासनसंयु
तम् १० फलमाल्ययुतंतद्वदुपरिष्टात्वितानकम्। तथाष्टादशधान्यानि समन्तात्परि
कल्पयेत् ११ होमाधिवासनान्तेच स्नापितोवेदपुङ्गवैः। त्रिःप्रदक्षिणमावृत्य मन्त्रमेतमु
दीरयेत् १२ नमस्तेकल्पवृक्षाय चिन्तितार्थप्रदायिने। विश्वम्भरायदेवाय नमस्तेवि
श्वमूर्तये १३ यस्मात्त्वमेवविश्वात्मा ब्रह्मास्थाणुर्दिवाकरः। मूर्तोऽमूर्तपरंवीजमतःपा
हिसनातन! १४ त्वमेवामृतसर्वस्वमनन्तःपुरुषोऽव्ययः। सन्तानाद्यैरुपेतोस्मान् पा
हिसंसारसागरात् १५ एवमामन्त्र्यतंदद्यात् गुरवेकल्पपादपम्। चतुर्भ्यश्चाथऋत्वि
ग्भ्यः सन्तानादीन्प्रकल्पयेत् १६ स्वल्पेत्वेकाग्निवत्कुर्य्यात् गुरवेचाभिपूजनम्। न
वित्तशाठ्यंकुर्वीत नचविस्मयवान्भवेत् १७ अनेनविधिनायस्तु महादानंनिवेदयेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सोऽश्वमेधफलंलभेत् १८ अप्सरोभिःपरिवृतःसिद्धचारणकिन्नरैः। भू

३। ४ इस सुवर्णके कल्पवृक्षको ३२ सेर प्रमाण गुड़की राशिके ऊपर स्थापितकर श्वेत बस्त्र उढ़ा
देवे ५ और ब्रह्मा विष्णु-शिव-सूर्य्य और कामदेव इन पांचों देवताओं की मूर्त्तियों से युक्त पांचशा-
खा बनावे और स्त्री सहित कामदेवको नीचे की शाखा में बनावे और इस कल्पवृक्षसे चतुर्थांश
सन्तान वृक्षको पूर्व्वकी ओर स्थापित करे मंदार वृक्ष लक्ष्मी से युक्तकर घृतके ऊपर दक्षिण में स्था-
पितकरे पश्चिममें सावित्रीकी मूर्त्ति से युक्त किये हुए पारिजात वृक्षको जीरे के ऊपर स्थापितकरे
ऐसेही सुरभि गौ से युक्तहुए हरिचन्दन वृक्षको उत्तरदिशामें तिलोंके ऊपर स्थापित करे ६।७ इनसव
वृक्षोंको प्रथमसे चौथाई प्रमाणके बनावे और कुसुंभी वस्त्र ईखका गांडा और फल इत्यादिसे युक्त
करे ८ और आठ पूर्ण कलशों को, पादुका, भोजनपात्र, दीपक, जूतीजोड़ा, छत्री, चँवर और आसन
इत्यादि पदों सहित दानकरे और उनके ऊपर फल, पुष्प और तोरणादिक स्थापितकरे और चारों
ओर आठ वा दश धान्योंको स्थापितकरे ९।११ जब होम और अधिवास होजाय तब यजमान वेदके
मंत्रोंसे स्नानकरवा तीनवार प्रदक्षिणाकर इस मंत्रार्थका उच्चारणकरे १२ कि चिन्तित प्रयोजनके
दाता विश्वभरण विश्वमूर्त्ति कल्पवृक्षको नमस्कार है १३ तुमही विश्वात्मा ब्रह्मा हो दिवाकर हो
सनातन हो और परमबीज हो इस निमित्त मेरी रक्षाकरो १४ अमृत हो अनन्त हो अव्यय पुरुषहो
ऐसे सन्तानादि वृक्षोंसे युक्तहुए तुम संसार सागरसे मेरी रक्षाकरो १५ इस प्रकार अभिमंत्रितकरके
उस वृक्षको गुरुके अर्थ देदेवे और उन सन्तानादि वृक्षोंको चार ऋत्विगों के अर्थ देदेवे १६ जो स्वल्प
धनवालाहो तोकेवल गुरुकाही पूजनकरे वित्तके लोभसेरहित होकरकिसी प्रकार काभी आश्चर्य्य न
करे १७ इस विधिसे जोकोई इस महादानको देताहै वह सब पापोंसे रहितहोकर अश्वमेध यज्ञके

तान्भाव्यांश्चमनुजांस्तारयेत्गोत्रसंयुतान् १९ स्तूयमानोदिवःपृष्ठे पितृपुत्रप्रपौत्र
कान्। विमानेनार्कवर्णेन विष्णुलोकंसगच्छति २० दिविकल्पशतंतिष्ठेत् राजराजोभवे
त्ततः। नारायणबलोपेतो नारायणपरायणः। नारायणकथासक्तो नारायणपुरंव्रजेत् २१
योवापठेत्सकलकल्पतरुप्रदानं योवाशृणोतिपुरुषोऽल्पधनःस्मरेद्वा। सोऽपीन्द्रलोकम
धिगम्यसहाप्सरोभिर्मन्वन्तरंवसतिपापविमुक्तदेहः २२॥

इति श्रीषट्सप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७६॥

(मत्स्यउवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। गोसहस्रप्रदानाख्यं
सर्वपापहरंपरम् १ पुण्यांतिथिंसमासाद्य युगमन्वन्तरादिकीम्। पयोव्रतंत्रिरात्रंस्यादे
करात्रमथापिवा २ लोकेशावाहनंकुर्य्यात् तुलापुरुषदानवत्। पुण्याहवाचनंकुर्याद्धोमः
कार्यस्तथैवच ३ गोसहस्रंबहिःकुर्याद्वस्त्रमाल्यविभूषणम्। सुवर्णशृङ्गाभरणंरौप्यपादस
मन्वितम् ४ अन्तःप्रवेश्यदशकं वस्त्रमाल्यैश्चपूजयेत्। सुवर्णघण्टिकायुक्तं कांस्यदोहन
कान्वितम् ५ सुवर्णतिलकोपेतं हेमपट्टैरलंकृतम्। कौशेयवस्त्रसम्वीतं माल्यगन्धसम
न्वितम् ६ हेमरत्नमयैःशृङ्गैश्चामरैरुपशोभितम्। पादुकोपानहच्छत्रभाजनासनसंयुतम्
७ गवांदशकमध्येस्यात् काञ्चनोनन्दिकेश्वरः। कौशेयवस्त्रसम्वीतो नानाभरणभूषितः
८ लवणद्रोणशिखरे माल्येक्षुफलसंयुतः। कुर्यात्पलशतादूर्ध्वं सर्वमेतदशेषतः ९ श

फलको प्राप्तहोताहै १८ और अप्सरा सिद्ध चारण और किन्नरादिकों सेभी पूजाजाताहै इनबातोंके सिवाय वह अपने भूत वर्त्तमान और भविष्य पुरुखाओं कोभी पार उतार देता है १९ और सूर्य्यके सदृश कान्तिवाले विमानमें बैठ देवताओं से स्तूयमान होकर विष्णु लोकमें प्राप्त होताहै २० वहां सैकड़ों कल्पोंतक वासकरके दूसरे जन्ममें राजाहो नारायणकीकथा भक्ति में तत्परहो फिर नारायणहीके पुरमें प्राप्तहोजाताहै २१ जोपुरुष इस कल्पवृक्षके दानको पढ़ताहै वहभी अप्सरागणोंसे युक्त होकर एक मनुतक स्वर्गलोकमें वासकरताहै और सब पापोंसे छुटजाताहै २२॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषट्सप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७६॥

मत्स्यजीबोले अब सब पापोंके हरनेवाले गोसहस्रनामक उत्तम दानको कहते हैं १ युग अथवा मन्वंतर आदिकों की पवित्र तिथिमें जब इस दानको करे तो पहले तीनरात्रितक वा एकहीरात्रितक दूधकाव्रतकरे फिर तुलापुरुष दानके सदृश लोकपालोंका आवाहनकर स्वस्तिवाचन पूर्वक हवन करवावे फिर वस्त्र-पुष्प माला-और आभूषणादिकोंसे विभूषितकर हज़ार गौओंको सुवर्णके सींग रूपे के खुरोंसे युक्तकरके बाहरनिकाले २। ४ फिर दशगौओंको वस्त्रमाला सुवर्णकी घंटी कांसीके दोहनीपात्र सुवर्णकी पट्टीसे शोभित रक्तवस्त्रगन्ध और मालाओंसे युक्त पादुका, जूती जोड़ा, छत्री पात्र आसनादि समेत करके ५। ७ उन दशोंके मध्यमें सुवर्णका नन्दिकेश्वर वृषभ बनावे उसको रक्त वस्त्र और अनेकप्रकारके आभूषण पहरांके द्रोणभर तिलोंके शिखरपर स्थापितकर उसकेपास ईख और फलादिक रखदेवे यह नन्दिकेश्वर ४०० तोलेसे कमनहो जो विशेष श्रद्धाहोयतो आठसौ वा

क्तितःपलसाहस्त्रं त्रितयंयावदेवतु। गोशतेऽपिदशांशेन सर्वमेतत्समाचरेत् १० पुण्य कालंसमासाद्य गीतमङ्गलनिःस्वनैः। सर्वौषध्युदकस्नान स्नापितोवेदपुङ्गवैः ११ इम मुच्चारयेन्मन्त्रं गृहीतकुसुमाञ्जलिः। नमोऽस्तुविश्वमूर्तिभ्यो विश्वमातृभ्यएवच १२ लोकाधिवासिनीभ्यश्च रोहिणीभ्योनमोनमः। गवामङ्गेषुतिष्ठन्ति भुवनान्येकविंश तिः १३ ब्रह्मादयस्तथादेवा रोहिण्यःपान्तुमातरः। गावोमेअग्रतःसन्तु गावःपृष्ठत एवच १४ गावःशिरसिमेनित्यं गवांमध्येवसाम्यहम्। यस्मात्त्वंवृषरूपेण धर्मएवस नातनः १५ अष्टमूर्तेरधिष्ठान मतःपाहिसनातन!। इत्यामन्त्र्यततोदद्याद् गुरवेन न्दिकेश्वरम् १६ सर्वोपकरणोपेतं गोयुतञ्चविचक्षणः। ऋत्विग्भ्योधेनुमेकैकां दशका द्विनिवेदयेत् १७ गवाञ्चशतमेकैकं तदर्द्धंवाथविंशतिम्। दशपञ्चाथवादद्या दन्येभ्यस्त दनुज्ञया १८ नैकाबहुभ्योदातव्या यतोदोषकरीभवेत्। बह्व्यश्चैकस्यदातव्या धीमता रोग्यवृद्धये १९ पयोव्रतःपुनस्तिष्ठेदेकाहंगोसहस्रदः। श्रावयेच्छृणुयाद्वापि महादानानु कीर्तनम् २० तद्दिनेब्रह्मचारीस्यात् यदीच्छेद्विपुलांश्रियम्। अनेनविधिनायस्तु गो सहस्रप्रदोभवेत्। सर्वपापविनिर्मुक्तः सिद्धचारणसेवितः २१ विमानेनार्कवर्णेन किङ्कि णीजालमालिना। सर्वेषांलोकपालानां लोकेसंपूज्यतेऽमरैः २२ प्रतिमन्वन्तरंतिष्ठेत्पुत्र पौत्रसमन्वितः। सप्तलोकानतिक्रम्यततःशिवपुरंव्रजेत् २३ शतमेकोत्तरन्तद्वत्पितॄणां

बारहसौ तोलेतक सुवर्णका नन्दिकेश्वर बनावे और १०० गोदानकरे वहभी इस संपूर्ण विधान को दशांश द्रव्यसे करे ८–१० पवित्रदिनमें गीतमंगल शब्द करके वेदपाठी ब्राह्मणोंके द्वारा सर्वौ- षधीके जलसे स्नानकरवा पुष्पांजलि ग्रहण करके इस मंत्रार्थका उच्चारणकरे कि हे विश्वकी मूर्त्ति और विश्वकीमाता आपके अर्थ नमस्कारहै ११। १२ लोकाधि वासिनी गौहै और गौओंके अंगोंमें इक्कीस भुवन और ब्रह्मादिक सब देवता स्थितरहतेहैं इसलिये मेरी रक्षाकरो गौमेरे आगेरहो पीछेर हो शिरपैरहो और मैं गौओंके मध्यमें वासकरूं और नन्दिकेश्वर तुम वृषरूपसे धर्मही स्थितहो आ- ठमूर्त्तियोंके अधिष्ठानहो इससे आपमेरी रक्षाकरो ऐसे आमंत्रित करके उसवृषभको सब सामग्रि- योंसे युक्त करके गुरुके अर्थ देदेवे और दशगौओंमेंसे प्रत्येक गौको ऋत्विगोंके अर्थ देदेवे एक २ ऋ- त्विक् पुरोहितको सौसौ पचास २ बीस २ अथवा दश १ गौदेवे फिर उनकी आज्ञालेके अन्य ब्राह्म- णोंकोभी गौदेवे परन्तु बहुतोंके अर्थ एकगौ कभीनदेवे सुखकी वृद्धिके निमित्त बुद्धिमान् पुरुष एक ही ब्राह्मणको बहुतसी गौदेदेवे १२। १८ फिर एकदिनतक दूधका आहार करे और बहुतसीलक्ष्मी की इच्छाकरनेवाला मनुष्य जिसदिन इसमहादानको करे अथवा सुनावे उसदिन ब्रह्मचारी रहै इसविधिसे जो गोसहस्र अर्थात् हजार गौओंका दानकरताहै वह सब पापोंसे छुटकर सिद्धचारणा- दिसे सेवित सूर्यके सदृश देदीप्तजालीझरोखेवाले विमानमें बैठ सबलोकपालों के स्थानमें प्राप्त होके पूजाजाताहै वहां पुत्र पौत्रादिकों से युक्तहो एक २ मनुके राज्यतक वास करताहै ऐसे सात लोकोंमें प्राप्तहोकर शिवलोकमें प्राप्तहोताहै १६। २३ इसके विशेष १०१ पितरोंका तथा मातामे-

तारयेद्बुधः। मातामहानांतद्वच्च पुत्रपौत्रसमन्वितः। यावत्कल्पशतन्तिष्ठेद्राजराजोभ वेत्पुनः २४ अश्वमेधशतंकुर्याच्छिवध्यानपरायणः। वैष्णवंयोगमास्थाय ततोमुच्येत वन्धनात् २५ पितरश्चाभिनन्दन्ति गोसहस्रप्रदंसुतम्। अपिस्यात्सकुलेऽस्माकं पुत्रो दौहित्रएववा। गोसहस्रप्रदोभूत्वा नरकादुद्धरिष्यति २६ तस्यकर्मकरोवास्या दपिद्र ष्टातथैवच। संसारसागरादस्माद्योऽस्मान् सन्तारयिष्यति २७ इतिपठतियएतत् गो सहस्रप्रदानं सुरभुवनमुपेयात् संस्मरेद्वाथपश्येत्। अनुभवतिमुदंवामुच्यमानोनिकामं प्रहतकलुषदेहः सोऽपियातीन्द्रलोकम् २८॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेसप्तसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७७॥

(मत्स्यउवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि कामधेनुविधिंपरम्। सर्वकामप्रदंनृणांमहा पातकनाशनम् १ लोकेशावाहनंतद्वद्धोमःकार्योऽधिवासनम्। तुलापुरुषवत्कुर्यात् कु ण्डमण्डपवेदिकम् २ स्वल्पेत्वेकाग्निवत्कुर्यात् गुरुरेकःसमाहितः। काञ्चनस्याति शुद्धस्य धेनुंवत्सञ्चकारयेत् ३ उत्तमापलसाहस्री तदर्धेनतुमध्यमा। कनीयसीत दर्धेन कामधेनुःप्रकीर्तिता ४ शक्तितस्त्रिपलादूर्ध्वमशक्तोऽपीहकारयेत्। वेद्यांकृष्णा जिनंन्यस्य गुडप्रस्थसमन्वितम् ५ न्यसेदुपरितांधेनुं महारत्नैरलंकृताम्। कुम्भाष्ट कसमोपेतां नानाफलसमन्विताम् ६ तथाष्टादशधान्यानि समन्तात्परिकल्पयेत्। इक्षु

हादि मातृपक्षकाभी उद्धार करताहै और १०० कल्पतक वासकर दूसरे जन्ममें राजाहोकर शिव-जीके ध्यानमें तत्परहोके अश्वमेध यज्ञके द्वारा विष्णु लोकमें प्राप्तहो सबबंधनोंसे छुटजाताहै २४।२५ गो सहस्र दानकरनेवाले पुत्रकीबाट पितरलोगभीदेखा करतेहैं और ऐसे कहतेहैं कि हमारे कुलमें कोईपुत्र व दौहित्र ऐसाहो जो गो सहस्रका दानकरके इस नरकसे हमारा उद्धारकरे जोकोई हम को संसाररूपी सागरसे पारउतारेगा उसके कामोंको हमपितृलोग भृत्योंके समान करेंगे २६।२७ इस प्रकारसे इस गोसहस्र नामवालेदानको जो पढ़ैगा वा स्मरण करेगा वहभी संपूर्ण पापोंसे छुट-कर इन्द्रलोकमें प्राप्तहोगा २८॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्तसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७७॥

मत्स्यजीबोले- अब हमकामधेनु दानकी विधिको कहते हैं यह दानमनुष्योंकी सबकामनाओंको देकर महापातकोंका नाशकरनेवालाहै १ प्रथम तुलादानकेतुल्य लोकपालोंका आवाहनकर मंडप वेदी बनाकर हवनकरे- २ स्वल्पद्रव्य होवेतो एकाग्नि विधानके सदृश अकेले गुरूजीही हवनकरदें आधा द्रव्यखर्च करनेसे कनिष्ठा कामधेनु कहातीहै और बारहतोले सुवर्णसे कममें यह कामधेनु न-हीं बनसक्तीहै- काले मृगचर्मको वेदीपै बिछाउसपर प्रस्थभर गुड़धरे फिर उस गुड़पर सब रत्नोंसे शोभितकीहुई गौकोस्थापितकरे उसके पास आठ पूर्णकलशे और फलोंकोधरे ३।६ उसके चारों ओर आठवा दशधान्य इक्षुदंड-अनेक प्रकारकेफल-पात्र-आसन तांबेकी दोहनी कुसुमी वस्त्र-दीपक-छत्री-चँवर-कुण्डल-घण्टा और सुवर्ण की सींगड़ी- रूपेकेखुर इन्होंसे युक्तकर लवरस हल्दी-जीरा

दण्डाष्टकन्तद्वन्नानाफलसमन्वितम्। भाजनञ्चासनंतद्वत्ताम्रदोहनकन्तथा ७ कौशेयवस्त्रद्वयसंयुताङ्गीं दीपातपत्राभरणाभिरामाम्। सचामरांकुण्डलिनींसघण्टां सुवर्णशृङ्गींपरिरूप्यपादाम् ८ रसैश्चसर्वैःपरितोऽभिजुष्टां हरिद्रयापुष्पफलैरनेकैः। अजाजिकुस्तुम्बुरुशर्करादिभिर्वितानकञ्चोपरिपञ्चवर्णम् ९ स्नातस्ततोमङ्गलवेदघोषैः प्रदक्षिणीकृत्यसपुष्पहस्तः। आवाहयेत्तांगुरुणोक्तमन्त्रैर्द्विजायदद्यादथदर्भपाणिः १० त्वंसर्वदेवगणमन्दिरमङ्गभूता विश्वेश्वरि त्रिपथगोदधिपर्वतानाम्। त्वद्दानशस्त्रशकलीकृतपापकौघः प्राप्तोऽस्मिनिर्वृतिमतीवपरांनमामि ११ लोकेयथेप्सितफलार्थविधायिनींत्वा मासाद्यकोहिभुविदुःखमुपैतिमर्त्यः। संसारदुःखशमनाययतस्वकामं त्वांकामधेनुमितिदेवगणावदन्ति १२ आमन्त्र्यशीलकुलरूपगुणान्विताय विप्राययःकनकधेनुमिमांप्रदद्यात्। प्राप्नोतिधाम सपुरन्दरदेवजुष्टं कन्यागणैःपरिवृतःपदमिन्दुमौलेः १३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७८॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि हिरण्याश्वविधिंपरम्। यस्यप्रदानाद्भुवनेचानन्त्यंफलमश्नुते १ पुण्यांतिथिमथासाद्य कृत्वाब्राह्मणवाचनम्। लोकेशावाहनंकुर्या त्तुलापुरुषदानवत् २ ऋत्विक्मण्डपसम्भार भूषणाच्छादनादिकम्। स्वल्पेत्वेकाग्निवत्कुर्याद्धेमवाजिमखम्बुधः ३ स्थापयेद्वेदिमध्येतु कृष्णाजिनतिलोपरि। कौशेयवस्त्रसम्वीतं कारयेद्धेमवाजिनम् ४ शक्तितस्त्रिपलादूर्ध्वमासहस्रपलाद्बुधः। पादुकोपानहच्छत्र

धनियां-और खांड इत्यादिक वस्तुओंको भी उसके समीप रक्खे-उसके पांचवर्णकी वन्दनवार बांधे ७।९ फिर वेदके मंत्र और मंगलशब्दों करके स्नानपूर्वक तीनप्रदक्षिणाकर पुष्पांजलीले गुरुसे मंत्रोंका उच्चारणकर वा उस कामधेनुका आवाहनकरे १० और कहे कि हे कामधेनु तुम संपूर्ण देवताओंके शरीर रूपहो विश्वेश्वरी हो तुम्हारे दान करनेसे मैं सब पापों से छुटकर परमानन्दको प्राप्तहोगयाहूं और तुम्हें नमस्कार करताहूं ११ तुझ मनोवाञ्छितकी देने वालीको प्राप्तहोकर कौनमनुष्य दुःखको पासक्ताहै संसारके दुःख दूरकरने से तुमको कामधेनु कहते हैं १२ इस प्रकारसे आमंत्रित करके जो ब्राह्मण के निमित्त इस सुवर्णकी धेनुको देताहै वह देवताओंसे सेवितकियेहुए इन्द्रलोकमें प्राप्तहोताहै १३॥

इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७८॥

मत्स्यजीबोले-अब उत्तम हिरण्याश्व दानकी विधिको कहताहूं इस दानका अनन्त गुणा फल प्राप्तहोताहै १ पवित्र तिथिमें स्वस्तिवाचन पूर्वक तुलादान केही समान लोकपालों का आवाहन करे २ फिर ऋत्विक् मंडप, भूषण और आच्छादन आदि सामग्री इकट्ठीकरे और जो स्वल्प धनहोय तो एकाग्नि विधानसे एकही स्थानमें हवनकरवादेवे ३ फिर सुवर्णका घोड़ा बनवाकर वेदीके ऊपर काले मृगचर्मपर तिलोंके ऊपर स्थापितकर रेशमी वस्त्रसे ढकदेवे यह अश्व बारह तोलोंसे हज़ार तोलेतक श्रद्धाके अनुसार बनता है इस अश्वको पादुका, जूतीजोड़ा, छत्री, चंवर, आसन, पात्र,

चामरासनभाजनैः ५ पूर्णकुम्भाष्टकोपेतं माल्येक्षुफलसंयुतम्। शय्यांसोपस्करांतद्वद्धेम मार्तण्डसंयुताम् ६ ततःसर्वौषधीस्नान स्नापितोद्विजपुङ्गवैः।इममुच्चारयेन्मन्त्रं गृहीतकुसुमाञ्जलिः ७ नमस्तेसर्वदेवेश! वेदाहरणलम्पट!। वाजिरूपेणमामस्मात्पाहिसंसारसागरात् ८ त्वमेवसप्तधाभूत्वा छन्दोरूपेणभास्कर!। यस्माद्भासयसेलोकानतःपाहिसनातन! ९ एवमुच्चार्यगुरवे तमश्वंविनिवेदयेत्। दत्त्वापापक्षयाद्भानोर्लोकमभ्येतिशाश्वतम् १० गोभिर्विभवतःसर्वानृत्विजश्चापिपूजयेत्। सर्वधान्योपकरणं गुरवेविनिवेदयेत् ११ सर्वंशय्यादिकंदत्त्वा भुञ्जीतातैलमेवहि। पुराणश्रवणंतद्वत् कारयेद्भोजनादिकम् १२ इमंहिरण्याश्वविधिंकरोति यःसंपूज्यमानोदिविदेवसङ्घैः। विमुक्तपापःसपुरंमुरारेः प्राप्नोतिसिद्धैरभिपूजितःसन् १३ इतिपठतियएतद्धेमवाजिप्रदानं सकलकलुषमुक्तःसोऽश्वमेधेनयुक्तः। कनकमयविमानेनार्कलोकंप्रयाति त्रिदशपतिवधूभिःपूज्यतेयोऽभिपश्येत् १४ योवाशृणोतिपुरुषोऽल्पधनःस्मरेद्वा हेमाश्वदानमभिनन्दयतीहलोके। सोऽपिप्रयातिहतकल्मषशुद्धदेहः स्थानंपुरन्दरमहेश्वरदेवजुष्टम् १५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकोनाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७९॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। पुण्यमश्वरथंनाम महापातकनाशनम् १ पुण्यंदिनमथासाद्य कृत्वाब्राह्मणवाचनम्। लोकेशावाहनंकुर्यात्तुलापुरुषदानवत् २ ऋत्विक्मण्डपसम्भार भूषणाच्छादनादिकम्। कृष्णाजिनेतिलान्कृ

आठ पूर्ण कुंभ, माला, इक्षुदंड, इत्यादि सब सामग्रियों से युक्त शय्या और सुवर्णके सूर्य्य समेत कर वेदके मन्त्रों से स्नानकर पुष्पांजली ले इस मंत्रके अर्थको उच्चारण करे ४।७ हेसर्वदेवेश वेदों के लानेवाले विष्णु आप अश्वरूप करके संसाररूपी सागरसे मेरा उद्धार करो ८ तुमही सातप्रकार से स्थितहोकर सूर्य्यरूपसे सब लोकोंको प्रकाशित करते हो ऐसे आप होकर मेरी रक्षाकरो ९ इन सब बातोंको करके उस अश्वको गुरुको अर्पण करदेवे इस दानका करनेवाला पुरुष सूर्य्यलोकमें प्राप्तहोताहै इसकरनेके पीछे गौदानादिसे ऋत्विगोंका पूजनकर धान्यादि सबसामग्री गुरुकेअर्थ देदेवे १०।११ इस दानको करके इसका कर्त्ता तेलका भोजन नहीं करे और पुराणों की कथाओं को सुने १२ जो पुरुष इस हिरण्याश्व दानकी विधिको करताहै वह सब पापों से रहित होकर विष्णुलोकमें देवताओंसे पूजितहोताहै १३ जो इस हिरण्याश्व दानको पढ़ताहै वा सुनताहै अथवा स्वल्प धन वाला पुरुष सराहता है और स्मरण करताहै वह सब पापोंसे छुटकर सूर्य्यके समान कान्ति वाले विमानमें बैठ स्वर्गलोक में जाकर देवाङ्गनाओं से पूजाजाताहै १४। १५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोनाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७९॥

मत्स्यजीबोले-अब महापातक नाशक उत्तम अश्वरथ नामवाले दानको कहते हैं १ पवित्र दिवसमें ब्राह्मणों के स्वस्तिवाचन सहित तुलापुरुष दानके समान लोकपालों का आवाहन करे २ फिर ऋत्विक्, मंडप, भूषण और आच्छादन इनसब वस्तुओंको संचितकरे और कालेमृगके चर्मपर-

त्वा काञ्चनंस्थापयेद्रथम् ३ अष्टाश्वंचतुरश्वंवा चतुश्चक्रंसकूबरम् । ऐन्द्रनीलेनकुम्भेन ध्वजरूपेणसंयुतम् ४ लोकपालाष्टकंतद्वत्पद्मरागदलान्वितम्। चतुरःपूर्णकलशान् धान्यान्यष्टादशैवतु ५ कौशेयवस्त्रसंयुक्तमुपरिष्टाद्वितानकम् । माल्येक्षुफलसंयुक्तं पुरुषेणसमन्वितम् ६ योयद्भक्तःपुमान्कुर्यात् सतन्नाम्नाधिवासनम् । छत्रचामरकौशेय वस्त्रोपानहपादुकम् ७ गोभिर्विभवतःसार्द्धं दद्याच्छयनादिकम् । आभारात्रिपलादूर्ध्वं शक्तितःकारयेद्बुधः८ अश्वाष्टकेनसंयुक्तं चतुर्भिरथवाजिभिः । द्वाभ्यामपियुतंदद्याद्धेमसिंहध्वजान्वितम् ९ चक्ररक्षावुभौतस्य तुरगस्थावथाश्विनौ । पुण्यकालमथावाप्य पूर्ववत्स्नापितोद्विजैः १० त्रिःप्रदक्षिणमावृत्य गृहीतकुसुमाञ्जलिः । शुक्लमाल्याम्बरो दद्यादिमंमन्त्रमुदीरयेत् ११ नमोनमःपापविनाशनाय विश्वात्मनेवेदतुरङ्गमाय । धाम्नामधीशायदिवाकराय पापौघदावानलदेहिशान्तिम् १२ वस्वष्टकादित्यमरुद्गणानां त्वमेवधातापरमंनिधानम् । यतस्ततोमेहृदयंप्रयातु धर्मैकतानत्वमघौघनाशात् १३ इतितुरगरथप्रदानमेकं भवभयसूदनमत्रयःकरोति । सकलुषपटलैर्विमुक्तदेहः परमुपैति पदंपिनाकपाणेः १४ देदीप्यमानवपुषांविजितप्रभावमाक्रम्यमण्डलमखण्डितचण्डभानोः । सिद्धाङ्गनानयनषट्पदपीयमान वक्त्राम्बुजोऽम्बुजभवेनचिरंसहास्ते १५ इतिपठतिशृणोतिवायइत्थं कनकतुरगरथप्रदानमस्मिन्। नसनरकपुरंव्रजेत्कदाचिन्नरकरिपोर्भवनंप्रयातिभूयः १६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८० ॥

सुवर्णके रथको स्थापितकरे उसरथके चारघोड़े और चारपहिये बना इन्द्रनीलमणिके समान ध्वजा से शोभितकर पुखराजके लोकपालबनावे फिर चारपूर्ण कुंभों समेत अठारह प्रकारके धान्यों को स्थापित करके रेशमीवस्त्रसे ढकवन्दनवारबाँधे फिर माला इक्षुदंड-फल और पुरुषकी मूर्त्ति इनसब से युक्तकरे और जो पुरुष जिस देवताका भक्त हो वह उसी देवके नामसे अधिवासनकरे और छत्री, चंवर, कुसुंभी वस्त्र जूतीजोड़ा आदिक पद और सब सामग्रियों सहित गौ शय्यासे संयुक्तकरे यह रथ बारहतोले से अधिक एकभार सुवर्णतकका शक्तिकेअनुसार बनताहै इसमें आठ, चार वा दोही अश्वबनावे और सुवर्ण के सिंहसमेत ध्वजासे शोभितकर पूर्वकेही समान पवित्र दिनमें वेद मंत्रों से स्नान तीनवार प्रदक्षिणा, पुष्पांजली, सफेदमाला और श्वेतही वस्त्रोंको धारणकर इस मंत्रार्थ का उच्चारणकरे ३।११ हे पापोंके नाशक विश्वात्मा वेदरूपी अश्वोंवाले सूर्य्य स्वरूप तुमको नमस्कारहै आपमेरे शान्तिकरो आपही वसुआदित्य और मरुद्गणों के रचनेवालेहो परम निधान हो मेरे पापोंको नाशकरो और हृदयमें निरन्तर धर्मकी स्थिति करो १२।१३ इस प्रकारसे जो पुरुष संसारके भयके दूर करनेवाले इस हिरण्यरथ दानको करता है वह सब पापोंसे छुटकर शिवजी के परमपदको प्राप्त होता है १४ और उत्तम तेजस्वी हो सूर्य्य लोकमें प्राप्त होकर शिवलोकमें प्राप्त होताहै वहां जाकर इसके मुख कमलको सिद्धोंकी स्त्रियां भ्रमररूप होकर पान करती हैं १५

(मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि हेमहस्तिरथंशुभम्। यस्यप्रदानाद्भुवनं वैष्णवंयातिमानवः १ पुण्यांतिथिमथासाद्य तुलापुरुषदानवत्। विप्रवाचनकंकुर्याल्लो केशावाहनंबुधः। ऋत्विक्मण्डपसम्भार भूषणाच्छादनादिकम् २ अत्राप्युपोषितस्तद्व द्ब्राह्मणैःसहभोजनम्। कुर्यात्पुष्परथाकारं काञ्चनंमणिमण्डितम् ३ वलभीभिर्विचित्रा भिश्चतुश्चक्रसमन्वितम्। कृष्णाजिनेतिलद्रोणं कृत्वासंस्थापयेद्रथम् ४ लोकपालाष्ट कोपेतं ब्रह्मार्कशिवसंयुतम्। मध्येनारायणोपेतं लक्ष्मीपुष्टिसमन्वितम् ५ तथाष्टादशधा न्यानि भाजनासनचन्दनैः। दीपिकोपानहच्छत्र दर्पणंपादुकान्वितम् ६ ध्वजेतुगरुडं कुर्यात् कूवराग्रेविनायकम्। नानाफलसमायुक्तमुपरिष्टाद्वितानकम् ७ कौशेयंपञ्चवर्ण न्तु अम्लानकुसुमान्वितम्। चतुर्भिःकलशैःसार्द्धं गोभिरष्टाभिरन्वितम् ८ चतुर्भिर्हेममा तङ्गैर्मुक्तादामविभूषितैः। स्वरूपतःकरिभ्याञ्च युक्तंकृत्वानिवेदयेत् ९ कुर्यात्पञ्चपला दूर्ध्वमाभारादपिशक्तितः। तथामङ्गलशब्देन स्नापितोवेदपुङ्गवैः १० त्रिःप्रदक्षिणमावृ त्य गृहीतकुसुमाञ्जलिः। इममुच्चारयेन्मन्त्रं ब्राह्मणेभ्योनिवेदयेत् ११ नमोनमःशङ्कर पद्मजार्कलोकेशविद्याधरवासुदेवैः। त्वंसेव्यसेवेदपुराणयज्ञैस्तेजोमयस्यन्दनपाहित स्मात् १२ यत्तत्पदंपरमगुह्यतमंमुरारेर्ह्यानन्दहेतुगुणरूपविमुक्तवन्तः। योगैकमानस

जो पुरुष इस हिरण्यरथदानको पढ़ता व सुनता है वह कभी भी नरकमें नहीं पड़ताहै वारंवार स्वर्गही में जाताहै १६॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८०॥

मत्स्यजी बोले- अब सुन्दर हेमहस्तीरथके दानको कहते हैं इस दानका करनेवाला पुरुष विष्णुलोकमें प्राप्त होता है १ इसको भी पवित्र तिथिमें तुलादानकेही समान ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवा लोकपालोंका आवाहन करे और ऋत्विक् मंडप भूषण और वस्त्र इन सबको इकट्ठाकर उपवासव्रत करके ब्राह्मणोंके साथ भोजनकरे यहां पुष्परथके आकारका सुवर्ण और मणियोंका रथ अनेक प्रकारकी गुमटी और चक्रों सहित बनावे फिर काले मृगचर्मपर द्रोणभरतिल स्थापितकर उसपर रथको स्थापितकरे २।४ उसके चारों ओर आठलोकपाल ब्रह्मा सूर्य और शिव इनसबकी मूर्त्तिको बनाके मध्यमें लक्ष्मी और पुष्टिसंयुक्त नारायणकी मूर्त्तिबनावे ५ फिर दशप्रकारके धान्य, पात्र, चन्दन, दीपक,जूतीजोड़ा , छत्री दर्पण और पादुका से संयुक्तकरे और इस रथकी ध्वजापर गरुड़ बनाकर जुएके आगे गणेशजीकी मूर्त्तिको बनावे और अनेक फलोंसे युक्तकीहुई बन्दनवारको ऊपरबांधे ६।७पांचरंगके रेशमी वस्त्र,प्रफुल्लितपुष्प चारकलश और आठ गौ इनसबको भी उसरथके बराबरमें स्थितकरदे फिर मोतियोंसे भूषित सुवर्णके चारहाथी बनाकर रथमेंजोड़देवे यह हेम गज रथ बारह तोले से अधिक एकभारसुवर्ण पर्य्यन्तका अपनी शक्तिके अनुसार बनताहै इस रथको वेदके मंत्रोंसे स्नानकर तीनबार प्रदक्षिणापूर्वक पुष्पांजली सहित इस मन्त्रार्थका उच्चारण करके ब्राह्मणोंके ादानकरदेवे ८।११ तुम तेजस्वरूपी रथ शिव ब्रह्मा सूर्य्य लोकेश विद्याधर और वासुदेव इन सबसे सेवितकिये जातेहो इस निमित्त आपको नमस्कारहै १२ जो विष्णुका आनन्दस्वरूप परम

दृशोमुनयःसमाधौ पश्यन्तितत्त्वमसिनाथरथाधिरूढ ! १३ यस्मात्त्वमेवभवसागरसंप्लु तानामानन्दभागमृतमध्वगपारपत्रम्। तस्मादघौघशमनेनकुरुप्रसादञ्चामीकरेभरथ माधव! सम्प्रदानात् १४ इत्थंप्रणम्यकनकेभरथप्रदानं यःकारयेत्सकलपापविमुक्तदेहः। विद्याधरामरमुनीन्द्रगणाभिजुष्टं प्राप्नोत्यसौपदमतीन्द्रियमिन्दुमौलेः १५ कृतदुरितवितानप्रज्वलद्वह्निजाल व्यतिकरकृतदेहोद्वेगभाजोऽपिबन्धून्। नयतिसपितृपुत्रान्बान्धवानप्यशेषान् कृतगजरथदानाच्छाश्वतंसद्मविष्णोः १६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेएकाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८१ ॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। पञ्चलाङ्गलकंनाम महापातकनाशनम् १ पुण्यांतिथिमथासाद्य युगादिग्रहणादिकाम्। भूमिदानंनरोदद्यात् पञ्चलाङ्गलकान्वितम् २ खर्वटंखेटकंवापि ग्रामंवासस्यशालिनम्। निवर्तनशतंवापि तदर्धंवापिशक्तितः ३ सारदारुमयान्कृत्वा हलान्पञ्चविचक्षणः। सर्वोपकरणैर्युक्तान्न्यान्पञ्चचकाञ्चनान्। कुर्य्यात्पञ्चपलादूर्ध्वमासहस्रपलावधि ४ वृषान्लक्षणसंयुक्तान् दशचैवधुरन्धरान्। सुवर्णशृङ्गाभरणान् मुक्तालांगूलभूषणान् ५ रूप्यपादाग्रतिलकान् रक्तकौशेयभूषणान्। स्रग्दामचन्दनयुतान् शालायामधिवासयेत् ६ धरण्यादित्यरुद्रेभ्यः पायसंनिर्वपेच्चरुम्। एकस्मिन्नेवकुण्डेतु गुरुस्तेभ्योनिवेदयेत् ७ पलाशस

पदहै जिसको कि मुनिजन लोग समाधिमें देखतेहैं हे नाथ वही तुम इस रथमें स्थितहो १३ तुमही संसाररूपी सागरमें डूबेहुए पुरुषोंको पार उतारने वालेहो इसहेतुसे हे माधव मेरे पापोंके समूहका नाशकरके मेरी रक्षाकरो १४ इसप्रकारसे प्रणाम करके सुवर्णके हाथी समेत जोपुरुष इस रथका दानकरताहै वह संपूर्ण पापोंसे छुटके शिवलोकमें प्राप्तहो विद्याधर और मुनियोंसे पूजा जाताहै १५ इस हेमहस्तीरथ दानवाले महादानका करने वाला पापी पुरुषभी स्वच्छदेहयुक्तहोके पितर, बान्धव और पुत्र इनसबोंका उद्धार करदेताहै १६ ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८१ ॥

मत्स्यजी बोले–अब महापातकोंके नाशक पंचलांगलक अर्थात् पांचहलोंको कहते हैं १ युगादि तिथि अथवा ग्रहण आदिकी पवित्र तिथिमें पांचहलोंसे युक्तकीहुई भूमिका दान देनाचाहिये २ कोई पर्व्वतका ग्राम वा मार्गकाग्राम अथवा सामान्यग्राम इनसबको अच्छी खेतियोंसे युक्त करके दानकरे अथवा खेतीसे पूर्णहुई आधे ग्रामकी भूमिका दानकरे ३ और उत्तम काष्ठके पांचहलोंको सांगोपांग बनावे और पांचपल अर्थात् बीस तोलोंसे अधिक चारहज़ार तोलों तक शक्तिके अनुसार पांच सुवर्णके हल बनवावे और अच्छे लक्षणवाले दश धुरंधर बैललाके उनके सींगोंमें सुवर्णका और पूंछोंमें मोतियोंका भूषण पहराय रूपेके खुर लगाकर रेशमी वस्त्र उढ़ावे फिर माला, चन्दनादि सेपूज अपनी शालामें अधिवासकरावे ४। ६ और पृथ्वी आदित्य और रुद्र इन देवताओं के अर्थ एकही कुंडमें खीर और साकल्यका हवनकरे और होममें ढाककीलकड़ी, घृत और काले तिल इन

मिधस्तद्वदाज्यंकृष्णतिलास्तथा। तुलापुरुषवत्कुर्य्याल्लोकेशावाहनंबुधः ८ ततोमङ्गल शब्देन शुक्लमाल्याम्बरोबुधः। आहूयद्विजदाम्पत्यं हेमसूत्रांगुलीयकैः ९ कौशेयवस्त्र कटकैर्मणिभिश्चाभिपूजयेत्। शय्यांसोपस्करांदद्याद्धेनुमेकांपयस्विनीम् १० तथाष्टादश धान्यानि समन्तादधिवासयेत्। ततःप्रदक्षिणीकृत्य गृहीतकुसुमाञ्जलिः ११ इमममु च्चारयेन्मन्त्र मथसर्वंनिवेदयेत्। यस्माद्देवगणाःसर्वेस्थावराणिचराणिच १२ धुरन्धरा ङ्गेतिष्ठन्ति तस्माद्भक्तिःशिवेऽस्तुमे। यस्माच्चभूमिदानस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम् १३ दानान्यन्यानिमेभक्तिर्धर्मएवदृढाभवेत्। दण्डेनसप्तहस्तेन त्रिंशद्दण्डंनिवर्तनम् १४ त्रिभागहीनंगोचर्म मानमाहप्रजापतिः। मानेनानेनयोदद्यान्निवर्तनशतंबुधः। विधि नानेनतस्याशु क्षीयतेपापसंहतिः १५ तदर्द्धमथवादद्यादपिगोचर्ममात्रकम्। भवन स्थानमात्रंवा सोऽपिपापैःप्रमुच्यते १६ यावन्तिलाङ्गलकमार्गमुखानिभूमेर्भासांपतेर्दुहि तुरङ्गजरोमकाणि। तावन्तिशङ्करपुरेससमाहितिष्ठेत् भूमिप्रदानमिहयःकुरुतेमनुष्यः १७ गन्धर्वकिन्नरसुरासुरसिद्धसङ्घैराधूतचामरमुपेत्यमहद्विमानम्। संपूज्यतेपितृपि तामहबन्धुयुक्तः शम्भोःपदंव्रजतिचामरनायकःसन् १८ इन्द्रत्वमप्यधिगतंक्षयमभ्युपै ति गोभूमिलाङ्गलधुरन्धरसम्प्रदानात्। तस्मादघौघपटलक्षयकारिभूमेर्दानंविधेयमि तिभूतिभवोद्भवाय १९॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणेद्व्यशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८२॥

सबको काममेंलावे और तुला पुरुष दानमें कहेहुए विधानके तुल्यलोकपालोंका आवाहनकरे ७।८ फिर मंगलशब्दपूर्वक श्वेत वस्त्र धारणकर सस्त्रीक ब्राह्मणको बुलवाकर सुवर्ण की तागड़ी, अंगूठी, कसूमी वस्त्र,कड़ूले और मणि इन सब वस्तुओंसे पूजे और संपूर्ण उपयोगी वस्तुओंसे संयुक्त की हुई एक शय्या और गौको दानकरे और अठारह धान्योंको चारों ओर स्थापित कर अधिवासन करे फिर प्रदक्षिणापूर्वक पुष्पांजली ग्रहणकर इस मन्त्रार्थ का उच्चारणकरे कि संपूर्ण देवता और चराचर जगत् यह सब धुरंधर बैलके अंगपर विराजमान रहतेहैं इस हेतुसे शिवजी में मेरी भक्तिहो और भूमिदानकी सोलहवीं कलाकेभी समान कोई दान नहीं है इसहेतुसे मेरी बुद्धि धर्ममें दृढ़ होय ९।१।१३ सात ७ हाथके तीसडंडे जितनी भूमिमें आवें उतने प्रमाणको निवर्त्तन कहतेहैं इस निवर्त्तन प्रमाणमें से तीसराभाग घटानेसे गोचर्मसंज्ञक प्रमाण बनजाताहै यह ब्रह्माजीका कहाहुआ प्रमाणहै जोपुरुष इस निवर्त्तन शत अर्थात् सौ १०० निवर्त्तन प्रमाण वा पचास निवर्त्तन प्रमाण भूमिकोइस उक्तविधि से दानकरताहै उसके सब पाप नष्टहोजाते हैं और जो पीछे कहेहुए गोचर्ममात्र प्रमाणकी भूमिका अथवा घर बनजानेकेयोग्य भूमिका दानकरताहै वहभी संपूर्ण पापोंसेरहित होजाताहै १४।१६ इसके विशेष हलोंसे बीजबोनेके समय पृथ्वीमें जितने छिद्रहोवें तथा बैलोंके शरीरपर जितने रोम होवें उतनेही वर्षोतक इस दानका करनेवाला पुरुष शिवलोकमें वास करताहै १७ और गन्धर्व देवता दैत्य और सिद्ध यह सब चंवर ढुलाते हैं यह करनेवाला पुरुष अपने बन्धुगणों से युक्त बड़े विमानमें बैठ शिवलोकमें वास करताहै १८ और इन्द्रका राज्यभी सदा स्थिर नहीं रहताहै इस-

(मत्स्य उवाच) अथातःसम्प्रवक्ष्यामि धरादानमनुत्तमम्। पापक्षयकरंनृणाममङ्ग
ल्यविनाशनम् १ कारयेत्पृथिवींहैमीं जम्बुद्वीपानुकारिणीम्। मर्यादापर्वतवतीं मध्येमे
रुसमन्विताम् २ लोकपालाष्टकोपेतां नववर्षसमन्विताम्। नदीनदसमोपेतामन्तेसागर
वेष्टिताम् ३ महारत्नसमाकीर्णां वसुरुद्रार्कसंयुताम्। हेम्नःपलसहस्रेण तदर्द्धेनाथशक्ति
तः ४ शतत्रयेणवाकुर्यात् द्विशतेनशतेनवा। कुर्यात्पञ्चपलादूर्ध्वमशक्तोऽपिविचक्षणः
५ तुलापुरुषवत्कुर्याल्लोकेशावाहनंबुधः। ऋत्विङ्मण्डपसम्भारभूषणाच्छादनादिक
म् ६ वेद्यांकृष्णाजिनंकृत्वा तिलानामुपरिन्यसेत्। तथाष्टादशधान्यानि रसांश्चलवणा
दिकान् ७ तथाष्टौपूर्णकलशान् समंतात्परिकल्पयेत्। वितानकंचकौशेयं फलानिविवि
धानिच ८ तथांशुकानिरम्याणि श्रीखण्डशकलानिच। इत्येवंकारयित्वातामधिवासन
पूर्वकम् ९ शुक्लमाल्याम्बरधरः शुक्लाभरणभूषितः। प्रदक्षिणंततःकृत्वा गृहीतकुसुमाञ्ज
लिः १० पुण्यंकालमथासाद्य मन्त्रानेतानुदीरयेत्। नमस्तेसर्वदेवानां त्वमेवभवनंयतः
११ धात्रीचसर्वभूतानामतःपाहिवसुन्धरे!। वसुधारयसेयस्माद्वसुचातीवनिर्मलम् १२
वसुन्धराततोजाता तस्मात्पाहिभयादलम्। चतुर्मुखोऽपिनोगच्छेद्यस्मादन्तंतवाचले!
१३ अनन्तायैनमस्तस्मात्पाहिसंसारकर्दमात्। तमेवलक्ष्मीगोविन्दे शिवेगौरीतिचा

लिये धनवान् पुरुष अपने पापोंकेनाशके अर्थ वा विभूतिकी वृद्धिकेअर्थ इसपृथ्वीका दानकरे १९॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांद्व्यशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८२॥

मत्स्यजी बोले-अब उत्तम धरादान अर्थात् भूमिदानको कहते हैं-यह दान मनुष्यों के सबपापों का नाश करताहै और मंगलकी वृद्धिको करताहै १ जंबूद्वीपके आकारवाली, पर्व्वतोंकी मर्य्यादा वाली मध्यमें सुमेरुरूप वृत्तवाली अष्टलोकपाल और नवखण्डोंसे युक्त नदी वा समुद्रोंसे लिपटीहुई महारत्नोंसे पूर्ण वसु,रुद्र और सूर्य्य इन्होंसे युक्त हजारपल अर्थात्४०००तोले सुवर्णकी वा पांचसौ तोले वा तीनसौ तोले वा दोसौ वा सौ अथवा पचासपल सुवर्णकी पृथ्वीबनवावे पचासपलसे न्यून की पृथ्वी नहीं बनती है इस दानमेंभी तुला पुरुषके तुल्य लोकपालोंका आवाहन और ऋत्विक् मंडप भूषण और वस्त्रादिकोंका संग्रहकरे २।६ वेदीके ऊपर कालेमृगके चर्मपर तिलोंको बिछाके उसपर इस पृथ्वीकी मूर्त्तिको स्थापितकरे और इसके चारोंओर अठारहप्रकारके धान्य और लवणादिकरसों को स्थापितकरे और आठ पूर्ण कलश बन्दनवार रेशमी वस्त्र अनेक प्रकारके फल और गोलेके खंड इन सब वस्तुओंको स्थापितकरे इसप्रकार अधिवासन करके श्वेत वस्त्र माला और श्वेतही भूषणों को धारण कर पुष्पांजलीको ग्रहणकरे ७।१० और पवित्र कालमें इन मंत्रार्थों का उच्चारण करे कि हेपृथ्वी तुम सब देवताओंके स्थानहो इसलिये तुमको नमस्कार है हे वसुंधरे तुम सब भूतोंको धारण करती हो वसु अर्थात् धनोंको धारण करती हो इससे तुमको वसुन्धरा कहते हैं सो मेरी रक्षाकरो हे अचले चतुर्मुख ब्रह्माभी तेरे अन्तको नहीं जानते इस निमित्त तुझ अनन्त रूपवालीको नमस्कार है संसाररूपी सागरसे मेरी रक्षाकरो और विष्णुके पास लक्ष्मीरूपसे शिवजीके पासगौरी

स्थिता १४ गायत्रीब्रह्मणःपार्श्वे ज्योत्स्नाचन्द्रेरवौप्रभा। बुद्धिर्बृहस्पतौख्याता मेधा मुनिषुसंस्थिता १५ विश्वंव्याप्यस्थितायस्मात्ततोविश्वम्भरास्मृता। धृतिःस्थितिः क्षमाक्षोणी पृथ्वीवसुमतीरसा १६ एताभिर्मूर्तिभिः पाहि देवि! संसारसागरात्। एव मुच्चार्यतांदेवीं ब्राह्मणेभ्योनिवेदयेत् १७ धरार्द्धंवाचतुर्भागं गुरवेप्रतिपादयेत्। शेष ञ्चैवाथऋत्विग्भ्यः प्रणिपत्यविसर्जयेत्१८अनेनविधिनायस्तु कुर्याद्धेमधरांशुभाम्। पुण्यकालेतुसंप्राप्ते सपदंयातिवैष्णवम् १९ विमानेनार्कवर्णेन किङ्किणीजालमालिना। नारायणपुरंगत्वा कल्पत्रयमथावसेत्। पितॄन्पुत्रांश्चपौत्रांश्च तारयेदेकविंशतिम् २० इतिपठतियइत्थंयःशृणोतिप्रसङ्गादपिकलुषवितानैर्मुक्तदेहःसमन्तात्। दिवममरवधूभि र्यातिसंप्रार्थ्यमानो पदममरसहस्रैःसेवितंचन्द्रमौलेः २१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेत्र्यशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८३॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। विश्वचक्रमितिख्यातं. महापातकनाशनम् १ तपनीयस्यशुद्धस्य विषुवादिषुकारयेत्। श्रेष्ठंपलसहस्रेण तदर्द्धे नतुमध्यमम् २ तस्यार्द्धेनकनिष्ठंस्यात् विश्वचक्रमुदाहृतम्। अन्यद्विंशत्पलादूर्ध्वमश क्तोऽपिनिवेदयेत् ३ षोडशारंततश्चक्रं भ्रमन्नेम्यष्टकावृतम्। नाभिपद्मेस्थितंविष्णुं यो

रूपसे और ब्रह्माके पास सावित्रीरूपसे तुमही स्थितहो, चन्द्रमामें ज्योत्स्ना चांदनी, सूर्य्यमें प्रभा, बृहस्पतिमें बुद्धि और मुनियोंमें मेधारूप भी तुमही हो १४।१५ तुम सब विश्वमें व्याप्तहोकर स्थित होरही हो इसीसे तुमको विश्वम्भरा कहते हैं हे देवि तुम धृति स्थिति क्षमा क्षोणी पृथ्वी वसुमती और रसा इन अपने रूपोंसे संसार सागरसे मेरी रक्षाकरो ऐसे उच्चारण करके उस पृथ्वीको ब्रा-ह्मणोंके अर्थ बांटदेवे आधी पृथ्वी वा चतुर्थांश पृथ्वी तो गुरुको देवे बाकी अन्य ऋत्विगोंको देदेवे फिर प्रणाम करके उन ब्राह्मणोंका विसर्जन करदेवे १६।१८ इस विधि से जोपुरुष सुवर्णकी बनाई हुई पृथ्वीको किसी पुण्यकाल में दानकरता है वह विष्णुके परमपदको प्राप्तहोता है और सूर्य्य के समान कान्ति वाले जाली किंकिणियोंसे युक्त विमानमें बैठ नारायणकेपुरमें प्राप्तहो तीन कल्पतक वास करताहै और पितर पुत्र और पौत्र इनसबकी इक्कीस कुलियोंकाभी उद्धारकरताहै इसकथाको जोपढ़ताहै वा सुनताहै वहभी सब पापोंसे छूटकर हज़ारों देवताओं से सेवित कियेहुए शिवलोक में प्राप्तहोताहै और अनेक देवाङ्गना उसकी अभिलाषा करती हैं १९।-२१॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांत्र्यशीत्यधिकद्विशततमोध्यायः २८३॥

मत्स्यजी बोले-अब उत्तम महापातकोंको दूर करने वाले विश्वचक्रनाम दानको कहते हैं १ समान रात्रि दिनमें अथवा अन्य पवित्र दिनमें बहुत देदीप्त सुवर्णकी मूर्तिबनवावे इसमें हज़ारपलों की उत्तम पांचसोकी मध्यम और ढाई सौ पल सुवर्णकी कनिष्ठ विश्वचक्रकी मूर्ति बनतीहै और अ-समर्थहोतो बीस पलकी अर्थात् ८० तोलेकी होतीहै इस्से न्यून नहीं बन सक्तीहै २।३ सोलह आरे आठ नेमि अर्थात् मध्यकी पंखड़ी वाले विश्वचक्रको बनवावे उसकी नाभिके मध्यमें योग-

गारूढंचतुर्भुजम् ४ शङ्खचक्रेऽस्यपार्श्वेतु देव्यष्टकसमावृतम्। द्वितीयावरणेतद्वत् पूर्वे तोजलशायिनम् ५ अत्रिर्भृगुर्वशिष्ठश्च ब्रह्माकश्यपएवच। मत्स्यःकूर्मोवराहश्च नर सिंहोऽथवामनः ६ रामोरामश्चकृष्णश्च बुद्धःकल्कीतिचक्रमात्। तृतीयावरणेगौरी मा तृभिर्वसुभिर्युता ७ चतुर्थेद्वादशादित्या वेदाश्चत्वारएवच। पञ्चमेपञ्चभूतानि रुद्रा श्चैकादशैवतु ८ लोकपालाष्टकंषष्ठे दिग्मातङ्गास्तथैवच। सप्तमेऽस्त्राणिसर्वाणि मङ्गला निचकारयेत् ९ अन्तरान्तरतोदेवान् विन्यसेदष्टमेपुनः। तुलापुरुषवच्छेषं समन्तात् परिकल्पयेत् १० ऋत्विग्मण्डपसम्भारभूषणाच्छादनादिकम्। विश्वचक्रंततःकुर्यात् कृष्णाजिनतिलोपरि ११ तथाष्टादशधान्यानि रसांश्चलवणादिकान्। पूर्णकुम्भाष्टकञ्चै व वस्त्राणिविविधानिच १२ माल्येक्षुफलरत्नानि वितानञ्चापिकारयेत्। ततोमङ्गलश ब्देन स्नातःशुक्लाम्बरोगृही। होमाधिवासनान्तेवै गृहीतकुसुमाञ्जलिः १३ इममुच्चारये न्मन्त्रन्त्रिःकृत्वातुप्रदक्षिणम्। नमोविश्वमयायेति विश्वचक्रात्मनेनमः १४ परमानन्द रूपीत्वं पाहिनःपापकर्दमात्। तेजोमयमिदंयस्मात् सदापश्यन्तियोगिनः १५ हृदितत्वं गुणातीतं विश्वचक्रंनमाम्यहम्। वासुदेवेस्थितंचक्रं चक्रमध्येतुमाधवः १६ अन्योन्या धाररूपेण प्रणमामिस्थिताविह। विश्वचक्रमिदंयस्मात् सर्वपापहरंपरम् १७ आयुधं

रूढ चतुर्भुजी विष्णुकी मूर्ति बनवावे इन विष्णुके वाम पार्श्वमें शंख चक्र और आठ देवियोंकी मूर्ति बनवावे और चक्रके दूसरे आवरणमें जलशायी विष्णु भगवान्को पूर्वमें बनवावे और अत्रि, भृगु, वशिष्ठ, ब्रह्मा, कश्यप, मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, इनको क्रमसे बनवावे और तीसरे आवरणमें गौरी षोडशमातृका और अष्ट वसु इन सबको बनावे चौथे आवरणमें बारह आदित्य और चारों वेद बनवावे- पांचवेंमें पंचतत्त्व और ग्यारह रुद्रोंको ब- नवावे ४। ८ छठे आवरणमें अष्ट लोकपाल और दिग्गज हाथियोंको बनवावे- सातवेंमें अस्त्रों समेत मंगलों को बनवावे और आठवेंमें भीतर २ देवताओं को बनवावे इस रीति से यह आठ आवरण वाला विश्वचक्र बनता है फिर तुला पुरुषके कहेहुए विधानकीसंपूर्ण वस्तुओंको चारों ओर स्थापन करके ऋत्विक्, मंडप, आभूषण और आच्छादनादिकोंका भी संग्रहकरे इसके पीछे विश्वचक्रको काले मृगचर्म पर रक्खेहुए तिलोंके ऊपर स्थापित करदेवे ९। ११ और अठारह प्रकारके धान्य वा- लवणादिक रस अनेक प्रकारके वस्त्रोंसे ढकेहुए आठ कलश, माला, इक्षुदंड, फल, रत्न और वन्दन वार आदिसे युक्तकरे तदनन्तर मंगलशब्दपूर्वक स्नानकर श्वेत वस्त्र पहर होम और अधिवासन के अन्तमें पुष्पांजली ग्रहण कर तीन प्रदक्षिणाकर इस मंत्रार्थका उच्चारण करे हे विश्वमय विश्व चक्रके आत्मा आपके अर्थ नमस्कारहै १२। १४ तुम परमानन्द रूपहोकर संसार सागरसे मेरी रक्षाकरो- तेजोमय योगीजन लोग जिस विश्वचक्रको सदैव हृदयमें चिन्तवन करते हैं उसगुणा- तीत विश्वचक्रको मैं नमस्कार करताहूं विष्णु भगवान्में यह विश्वचक्र स्थित है और इस विश्व- चक्रमें विष्णु भगवान् स्थितहैं ऐसे अन्योन्य आधारणाभांते दोनों स्थितहैं इस हेतुसे यह विश्व-

चापिवासश्च भवादुद्धरमामितः। इत्यामन्त्र्यचयोदद्याद्विश्वचक्रंविमत्सरः १८ विमुक्तः सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकेमहीयते। वैकुण्ठलोकमासाद्य चतुर्बाहुःसनातनः १९ सेव्यते ऽप्सरसांसंघैस्तिष्ठेत्कल्पशतत्रयम्। प्रणमेद्वादशकृत्वा विश्वचक्रंदिनेदिने। तस्यायुर्व र्धतेनित्यं लक्ष्मीश्चविपुलाभवेत् २० इतिसकलजगत्सुराधिवासं वितरतियस्तपनीय षोडशारम्। हरिभवनमुपागतःससिद्धैश्चिरममिगम्यनमस्यतेशिरोभिः २१ शुभदर्शन तांप्रयातिशत्रोर्मदनसुदर्शनताञ्चकामिनीभ्यः। ससुदर्शनकेशवानुरूपः कनकसुदर्शनदा नदग्धपापः २२ कृतगुरुदुरितानिषोडशारप्रवितरणेप्रवराकृतिमुरारेः। अभिभवतिभ वोद्भवन्तिभीत्या भवमभितोभुवनेभयानिभूयः २३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेचतुरशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८४॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। महाकल्पलतानाम महापा तकनाशनम् १ पुण्यांतिथिमथासाद्य कृत्वाब्राह्मणवाचनम्। ऋत्विग्मंडपसंभारभूषणा च्छादनादिकम् २ तुलापुरुषवत्कुर्याल्लोकेशावाहनंबुधः। चामीकरमयीःकुर्याद्दशकल्पल ताःसमाः ३ नानापुष्पफलोपेता नानांशुकविभूषिताः। विद्याधरसुपर्णानांमिथुनैरुपशोभि ताः ४ हारानादित्सुभिःसिद्धैः फलानिच्चविहङ्गमैः। लोकपालानुकारिण्यःकर्तव्यास्तासुदेव ताः ५ ब्राह्मीमनंतशक्तिंचलवणस्योपरिविन्यसेत्। अधस्ताच्चतयोर्मध्येपद्मशङ्खकरेशुभे ६

चक्र सब पापोंका दूर करने वाला कहाहै १५।१७ हेविश्वचक्र तुम विष्णुके आयुधहो और वासस्था नहो इस निमित्त आप मेरी संसार सागरसे रक्षाकरो ऐसे आमन्त्रित करके जो पुरुष इस विश्वच क्रका दान करताहै वह सब पापों से छूटकर विष्णुलोकमें प्राप्तहो चतुर्भुजी रूपको धारण करता है १८।१९ और अप्सरागणोंसे सेवित तीनसौकल्पतक वास करताहै जो पुरुष भक्तिसे प्रतिदिन वासुदेव विश्वचक्र भगवान्को प्रणाम करताहै उसकी प्रतिदिन आयु और लक्ष्मीकी वृद्धि होतीहै २० जो पुरुष ऐसे सुवर्णके सोलहआरे और पंखडियों से युक्त विश्वचक्रको दान करताहै वह जब विष्णुलो कमें जाताहै उसको सिद्धजन अपने २ शिरोंसे प्रणाम करते हैं २१ उसका रूपभी स्त्रियोंके मनका हरनेवाला होजाताहै इस सुदर्शन चक्रका प्रभाव है कि शत्रुओंके नाशपूर्वक सबपापों का विध्वंस होजाताहै २२ इस षोड़शार सुदर्शन चक्रके दानके प्रभाव से बहुत बड़े २ महापाप भी भयभीत होकर भागजाते हैं और मनुष्य को कभी बाधा नहीं देते हैं २३॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांचतुरशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८४॥

मत्स्यजी बोले अब महापातकोंके नाश करनेवाले कल्पलता नाम दानको कहते हैं १ पवित्र तिथिमें ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवा ऋत्विक् लोगोंको बुलवावे और मंडप भूषण और आच्छा दन आदि सामग्री को संचितकरे २ तुला पुरुष दानके विधानके तुल्य लोकपालोंका आवाहनकरके सुवर्णकी दशकल्पलता बनवावे और उनको अनेक प्रकारके फल पुष्प और अनेक प्रकारके तोते आदिक पक्षियोंके जोड़ोंसे शोभितकरे ३।४ और फलाहार करने की इच्छा करनेवाले सिद्धों समेत

इभासनस्थातुगुडे पूर्वतःकुलिशायुधा। रजनीसंस्थिताग्नायी श्रुवपाणिरथानले ७ याम्ये चमाहिषारूढा गदिनीतंडुलोपरि। घृतेतुनैर्ऋतीस्थाप्या सखड्गादक्षिणापरे ८ वारुणीवारुणीक्षीरे झषस्थानागपाशिनी। पताकिनीचवायव्ये मृगस्थाशर्करोपरि ९ सौम्यातिलेषुसंस्थाप्या शङ्खिनीनिधिसंस्थिता। माहेश्वरीवृषारूढा नवनीतेत्रिशूलिनी १० मौलिन्योवरदास्तद्वत् कर्त्तव्याबालकान्विताः। शक्त्यापञ्चपलादूर्ध्वमासहस्रात्प्रकल्पयेत् ११ सर्वासामुपरिस्थाप्यं पञ्चवर्णवितानकम्। धेनवोदशकुम्भाश्च वस्त्रायुग्मानिचैवहि १२ मध्यमेद्वेतुगुरवे ऋत्विग्भ्योऽन्यास्तथैवच। ततोमङ्गलशब्देन स्नातःशुक्लाम्बरोबुधः १३ नमोनमःपापविनाशिनीभ्यो ब्रह्माण्डलोकेश्वरपालिनीभ्यः। आशंसिताधिक्यफलप्रदाभ्यो दिग्भ्यस्तथाकल्पलताबधूभ्यः १४ इतिसकलदिगङ्गनाप्रदानं भवभयसूदनकारियःकरोति। अभिमतफलदेसनागलोके वसतिपितामहवत्सराणित्रिंशत् १५ पितृशतमथतारयेद्भवाब्धेर्भवदुरितौघविघातशुद्धदेहः। सुरपतिवनितासहस्रसंख्यैः परिवृतमम्बुजसंसदाभिवन्द्यः १६ इतिविधानमिदंदिगङ्गनानां कनककल्पलताविनिवेदकम्। पठतियःस्मरतीहतथेक्षते सपदमेतिपुरन्दरसेवितम् १७॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेपञ्चाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८५॥

पक्षियोंकी मूर्त्ति बनवावे उन लताओंपर लोकपालोंके अनुचर देवताओंकी मूर्त्ति लिखे ५ और दो लताओंके नीचेलवणके ऊपर अनन्तशक्तिवाली ब्राह्मीदेवीको स्थितकरे इसके हाथों में सुन्दर कमल और शंख धारणकरे ६ और हस्तीके आसनपर विराजमान हाथमें वज्र धारण किये हुए इन्द्राणी को पूर्व दिशामें गुड़के ऊपर स्थापितकरे, अग्नि देवकी स्त्रीको हल्दीके ऊपर अग्निकोणमें स्थापित करेपर इसके हाथमें श्रुवाधारण करदे ७ दक्षिण दिशामें महिष्यापर स्थित हुई गदिनी देवीको स्थापितकरे, नैर्ऋत कोणमें नैर्ऋति देवी को घृतके ऊपर स्थापितकरे इसके हाथमें खड्ग धारणकरे ८ पश्चिम दिशामें वारुणी देवीको दूधके ऊपरमच्छीकी सवारीपर स्थापितकरे- वायुकोणमें पताकिनी देवीको मृगकी सवारी समेत खांड़ के ऊपर स्थितकरे ९ शंखिनी देवीको खजानेके ऊपर तिलोंपर उत्तर दिशामें स्थापितकरे, माहेश्वरी देवीको वृषभारूढ और त्रिशूल धारण किये ईशानकोणमें नवनीत घृतके ऊपर स्थापित करे १० यह सब देवी मुकुट धारण किये वरदेनेवाली शक्तिके अनुसार बीसतोले सुवर्णसे लेकर हज़ार तोले सुवर्ण तक बनती हैं ११ इन सब मूर्त्तियों के ऊपर अलग २ दश प्रकारके रंगोंकी बन्दनवार बांधे और इनके समीप दश गौ दश कलश और वस्त्रोंके जोड़े इन सबको भी स्थितकरे फिर मध्यकी दोमूर्त्ति दोगौ और दोकलश इनको तो गुरुके अर्थ देवे और शेष बची हुईओंको ऋत्विगोंके अर्थ दानदेवे, फिर मंगल शब्दपूर्वक स्नानकर श्वेत वस्त्र धारण किये हुए इस मंत्रार्थका उच्चारणकरे १२।१३ सब पापोंकी नाश करनेवाली ब्रह्मांड समेत लोकपालों की पालन करनेवाली वाञ्छित फलसे भी अधिक फल देनेवाली दिशाओंको कल्पलताकी बधुओं के अर्थ नमस्कारहै १४ इसप्रकारसे जो पुरुष संपूर्ण दिग्वधुओंका दान करताहै वह मनोवाञ्छित

(मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। सप्तसागरकंनाम सर्वपापप्रणाशनम् १ पुण्यंदिनमथासाद्य कृत्वाब्राह्मणवाचनम्। तुलापुरुषवत्कुर्याल्लोकेशावाहनंबुधः २ ऋत्विग्मण्डपसम्भार भूषणाच्छादनादिकम्। कारयेत्सप्तकुण्डानि काञ्चनानिविचक्षणः ३ प्रादेशमात्राणितथा रत्निमात्राणिवैपुनः। कुर्यात्सप्तपलादूर्ध्वमासहस्राच्चशक्तितः ४ संस्थाप्यानिचसर्वाणि कृष्णाजिनतिलोपरि। प्रथमंपूरयेत्कुण्डं लवणेन विचक्षणः ५ द्वितीयंपयसातद्वत्तृतीयंसर्पिषापुनः। चतुर्थन्तुगुडेनैव दध्नापञ्चममेवच ६ षष्ठंशर्करयातद्वत् सप्तमंतीर्थवारिणा। स्थापयेल्लवणस्थंतु ब्रह्माणंकाञ्चनंशुभम् ७ केशवंक्षीरमध्येतु घृतमध्येमहेश्वरम्। भास्करंगुडमध्येतु दधिमध्येनिशाधिपम् ८ शर्करायां न्यसेल्लक्ष्मीं जलमध्येतुपार्वतीम्। सर्वेषुसर्वरत्नानि धान्यानिचसमन्ततः ९ तुलापुरुषवच्छेषमत्रापिपरिकल्पयेत्। ततोवारुणहोमान्ते स्नापितोवेदपुङ्गवैः १० त्रिःप्रदक्षिणमावृत्य मन्त्रानेतानुदीरयेत्। नमोवःसर्वसिन्धूनामाधारेभ्यःसनातनाः। जन्तूनांप्राणदेभ्यश्च समुद्रेभ्योनमोनमः ११ क्षीरोदकाज्यदधिमाधुरलावणेक्षु सारामृतेनभुवनत्रय जीवसङ्घान्। आनन्दयन्तिवसुभिश्चयतोभवन्तस्तस्मान्ममाप्यघविघातमलंदिशन्तु

फलके देनेवाले नागलोकमें ब्रह्माजीके तीसवर्षतक वासकरताहै १५ और हज़ारों पितरोंको इस संसारसागरसे पार उतारता है संसारके पापोंका नाशकर शुद्ध शरीरी हो हज़ारों देवाङ्गनाओंसे वंदित होताहै–इसप्रकारसे इस कल्पलतादानको और दिक्पालोंकी स्त्रियों के दानको जो पुरुषपढ़ता वा स्मरण करताहै अथवा देखताहै वह इन्द्रलोक में प्राप्त होताहै १६। १७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांपंचाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८५॥

मत्स्यजी कहते हैं–अब सबपापों के नाश करनेवाले उत्तम सप्तसागरनाम महादानको कहते हैं १ पवित्र दिनमें ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन करवा तुलादानके विधानके सदृश लोकपालों का आवाहन करे–ऋत्विगों को बुलावे-भूषणाच्छादनादि सामग्रियोंको संचितकर सुवर्णके सातकुंड बनवावे २। ३ वह कुंड प्रादेशमात्र प्रमाण अथवा अरत्निमात्र प्रमाणके बनवाके यह कुंड अट्ठाईसतोले से लेकर हज़ार तोलोंतक शक्तिके अनुसार बनाने योग्य हैं ४ इनसबको कालेमृगचर्म्म पर तिलों के ऊपर स्थापितकर पहले कुंडको लवणसे दूसरेको दूधसे तीसरेको घृतसे, चौथेको गुड़से, पांचवेंको दही से ५। ६ छठेको खांड़से और सातवेंको तीर्थों के जलों से भर देवे–लवण भरेहुए कुंडमें सुवर्ण के ब्राह्मण को स्थापितकरे दूधवाले में केशवभगवान्को स्थितकरे घृतवाले में शिवजीको गुड़वाले में सूर्य्यको और दहीवाले में चन्द्रमाको स्थितकरे–खांड़वाले में लक्ष्मीजीको–और जलमें पार्वतीजी को स्थितकर सबकुंडों में सबरत्न रक्खे चारोंओरको धान्य स्थापितकरे ७। ९ यहां भी सबतुला पुरुष दानकी विधिके तुल्य क्रियाकरे और होमके अन्तमें वेदपाठी ब्राह्मणों के द्वारा स्नान करवावे फिर तीनप्रदक्षिणा करके इन मंत्रार्थोंका उच्चारणकरे कि तुम सब समुद्रों के आधारहो सनातनहो सबके प्राणदाताहो ऐसे समुद्ररूप आपको नमस्कार है १०। ११ तुम सब दूध, घृत, जल, दही, मधु, लवण, इक्षु इत्यादि रसोंकरके और रत्नादिक द्रव्योंसे तीनों लोकों के जीवोंको आनन्ददेते हो इस निमित्त

१२ यस्मात्समस्तभुवनेषुभवन्तएव तीर्थामरासुरसुबद्धमणिप्रदानम्। पापक्षयामृतवि
लेपनभूषणाय लोकस्यविभ्रातितदस्तुममापिलक्ष्मीः १३ इतिददातिरसामृतसंयुतान्
शुचिरविस्मयवानिहसागरान्। अमलकाञ्चनवर्णमयानसौ पदमुपैतिहरेरमरार्चितः १४
सकलपापविधौतविराजितः पितृपितामहपुत्रकलत्रकम्। नरकलोकसमाकुलमप्ययं भ
टितिसोऽपिनयेच्छिवमन्दिरम् १५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेषडशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८६॥

(मत्स्यउवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। रत्नधेन्वितिविख्यातं गो
लोकफलदंनृणाम्१ पुण्यंदिनमथासाद्य तुलापुरुषदानवत्। लोकेशावाहनंकृत्वा ततोधे
नुंप्रकल्पयेत् २ भूमौकृष्णाजिनंकृत्वा लवणद्रोणसंयुतम्। धेनुंरत्नमयींकुर्यात् सङ्कल्प्य
विधिपूर्वकम् ३ स्थापयेत्पद्मरागाणामेकाशीतिमुखेबुधः। पुष्परागशतंतद्वद्घोणायांपरि
कल्पयेत् ४ ललाटेहेमतिलकं मुक्ताफलशतंदृशोः। भ्रूयुगेविद्रुमशतं शुक्तीकर्णद्वयेस्मृ
तौ ५ काञ्चनानिचशृङ्गाणि शिरोवज्रशतात्मकम्। ग्रीवायांनेत्रपटकं गोमेदकशतान्वित
म् ६ इन्द्रनीलशतंपृष्ठे वैदूर्यशतपार्श्वके। स्फाटिकैरुदरंतद्वत्सौगन्धिकशतैःकटिम् ७
खुराहेममयाःकार्याः पुच्छंमुक्तावलीमयम्। सूर्यकान्तेन्दुकान्तौच घ्राणेकर्पूरचन्दने ८ कु
ङ्कुमानिचरोमाणि रौप्यनाभिंचकारयेत्। गारुत्मतशतंतद्वदपानेपरिकल्पयेत् ९ तथा

मेरे भी पापोंको नष्ट करिये १२ तुमही सब भुवनों में तीर्थ–देवता और दैत्य इनसबके भी पाप दूर करनेवाले हो इस निमित्त मेरे घरमें सदा लक्ष्मीका बासकरो १३ जो पुरुष इसप्रकारसे बनायेहुए इन सात समुद्रोंका दान करताहै वह देवताओं से पूजितहुए विष्णुलोकमें प्राप्त होताहै १४ और सब पापों से रहितहोके पुत्र स्त्री पिता और पितामह आदिक सब पुरुषों को नरकमें से निकालकर शीघ्रही स्वर्गलोकमें प्राप्त करदेता है १५॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांषडशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८६॥

मत्स्यजी बोले–अब उत्तम गोलोक के फलको देनेवाले रत्नधेनुदानको कहते हैं, १ पवित्रदिनमें, तुला पुरुष दान के सदृश लोकपालोंका आवाहनकर रत्नधेनुको कल्पित करे २ पृथ्वी में कालेमृग-चर्मको बिछा उस पर ३२ सेरतिलोंको बिछावे उस बिछे पर मुखके स्थानमें इक्यासी पद्मरागरत्नों को स्थापितकरे नासिका के स्थानपर सौ १०० पुखराजधरे ३।४ मस्तकपर सुवर्ण का तिलकबना कर नेत्रोंके स्थानपर सौ १०० मोती धरे दोनों भृकुटियों पै सौ १०० मूंगेधरे दोनों कानों के स्थान में सीपधरे सुवर्ण के सींगबनावे-शिरपर हीराधरे-ग्रीवा और नेत्रके स्थान पर सौ १०० गोमेद रत्न स्थित करे ५।६ पीठ पै सौ १०० इन्द्रनीलमणि पसलियों में सौ वैदूर्यमणि स्थापितकरे उदर के स्थान में स्फटिकमणिधरे-कटिके स्थानमें कस्तूरी आदि सुगन्धिकी वस्तुओंको धरे-खुर सुवर्ण के बनावे–पूंछ मोतियों की और सूर्यकान्ता चन्द्रकान्ता मणिओं की बनावे–नासिकामें कपूर समेत चन्दन धरे ७। ८ रोमोंके स्थानमें केशर धरे–नाभिमें रूपाधरे और सौ १०० गारुत्मत अर्थात् लाल

न्यानिचरत्नानि स्थापयेत्सर्वसन्धिषु। कुर्याच्छर्करयाजिह्वां गोमयञ्चगुडात्मकम् १०
गोमूत्रमाज्येनतथा दधिदुग्धेस्वरूपतः। पुच्छाग्रेचामरंदद्यात्समीपेताम्रदोहनम् ११ कु
ण्डलानिचहैमानि भूषणानिचशक्तितः। कारयेदेवमेवन्तु चतुर्थांशेनवत्सकम् १२ तथा
धान्यानिसर्वाणि पादाश्चेक्षुमयाःस्मृताः। नानाफलानिसर्वाणि पञ्चवर्णवितानकम् १३
एवंविरचनंकृत्वा तद्वद्धोमाधिवासनम्। ऋत्विग्भ्योदक्षिणांदद्याद्धेनुमामन्त्रयेत्ततः। गु
डधेनुवदावाह्य इदञ्चोदाहरेत्ततः १४ त्वांसर्वदेवगणधामयतःपठन्ति रुद्रेन्द्रसूर्यकमला
सनवासुदेवाः। तस्मात्समस्तभुवनत्रयदेहयुक्ता मांपाहिदेवि! भवसागरपीड्यमानम् १५
आमन्त्र्यचेत्थमभितःपरिहृत्यभक्त्या दद्याद्द्विजायगुरवेजलपूर्विकांताम्। यःपुण्यमा
प्यदिनमत्रकृतोपवासः पापैर्विमुक्ततनुरेतिपदंमुरारेः १६ इतिसकलविधिज्ञोरत्नधेनुप्रदा
नं वितरतिसविमानं प्राप्यदेदीप्यमानम्। सकलकलुषमुक्तोबन्धुभिःपुत्रपौत्रैः सहिमद
नस्वरूपःस्थानमभ्येतिशम्भोः १७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेसप्ताशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८७॥

(मत्स्य उवाच) अथातःसंप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम्। महाभूतघटंनाम महापात
कनाशनम् १ पुण्यांतिथिमथासाद्यकृत्वाब्राह्मणवाचनम्। ऋत्विग्मण्डपसम्भार भूषणा
च्छादनादिकम् २ तुलापुरुषवत्कुर्यात् लोकेशावाहनादिकम्। कारयेत्काञ्चनंकुम्भंमहा

मणियों को गुदाके स्थानमें धरे ९ और सब संधियों में अन्य २ रत्नोंको धरे-खांड़की जिह्वा बनावे-गोबर के स्थानापन्न गुड़धरे १० गोमूत्रके स्थानमें घृत-दूधके स्वरूप के स्थानमें दहीको कल्पितकरे पूंछ के आगे चँवरको धरे और समीपमेंही तांबे की दोहनीको स्थापितकरे ११ सुवर्ण के कुंडल बनवावे शक्तिके अनुसार आभूषण बनवावे और इसीप्रकार इसके चतुर्थांश प्रमाणसे बछड़ा बनावे १२ सब धान्य इक्षुदंड-अनेकप्रकारके फल-और पांच वर्ण की वन्दनवार-इन सबको स्थापित करे ऐसे विरचनकर होम पूर्व्वक अधिवासनकरे-ऋत्विजोंको दक्षिणा देवे फिर उस धेनुको आमंत्रितकर गुड़धेनु के सदृश आवाहन करके इस मंत्रार्थका उच्चारण करे १३। १४ हे गौ तुमको रुद्र-चन्द्रमा सूर्य्य-ब्रह्मा और वासुदेव यह सब बड़े २ ईश्वर देवगणोंका स्थान कहते हैं इस हेतुसे समस्तत्रिलोकी की देहवाली होकर मुझ संसार सागर से पीड़ित हुएकी रक्षाकरो १५ ऐसे आमन्त्रितकर भक्तिपूर्वक जल से संकल्पकर उस गौको गुरुको अर्थ देदेवे-फिर एक दिन उपवास भी करे ऐसे प्रकारसे जो पुरुष इस कर्मकोकरताहै वह विष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै १६ ऐसी संपूर्ण विधि से रत्नधेनुकादान करनेवालापुरुष प्रकाशित विमानमें बैठ कामदेवकेसमान दिव्यरूपहो पुत्रपौत्रादिकों समेतशिवलोकमें प्राप्तहोताहै १७॥ इति श्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांसप्ताशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८७॥

मत्स्यजीकहते हैं-अबमहापातकों के नष्ट करनेवाले महाभूत घटनाम उत्तमदानको कहताहूं १ पवित्र तिथिमें ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचनकरवा ऋत्विजोंको बुलवा मण्डप आभूषण औरवस्त्रादि सामग्रियोंको इकट्ठाकर २ तुला दान पुरुषके तुल्य लोकपालों का आवाहनकरे-महारत्नोंसे जटित सुवर्ण

रत्नाचितंबुधः ३ प्रादेशादंगुलशतं यावत्कुर्यात्प्रमाणतः। क्षीराज्यपूरितंतद्वत् कल्प वृक्षसमन्वितम् ४ पद्मासनगतांस्तत्र ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। लोकपालान्महेन्द्रांश्च स्वस्ववाहनमास्थितान्। वराहेणोद्धतांतद्वत् कुर्यात्पृथ्वींसपङ्कजाम् ५ वरुणंचासन गतं काञ्चनंमकरोपरि। हुताशनंमेषगतं वायुंकृष्णमृगासनम् ६ तथाकोशाधिपंकुर्यात् मूषकस्थंविनायकम्। विन्यस्यघटमध्येतान् वेदपञ्चकसंयुतान् ७ ऋग्वेदस्याक्षसूत्रं स्याद्यजुर्वेदस्यपङ्कजम्। सामवेदस्यवीणास्याद्वेणुंदक्षिणतोन्यसेत् ८ अथर्ववेदस्यपुनः स्रुक्स्रुचौकमलङ्करे। पुराणवेदोवरदःसाक्षसूत्रकमण्डलुः ९ परितःसर्वधान्यानि चाम रासनदर्पणम्। पादुकोपानहच्छत्रं दीपिकाभूषणानिच १० शय्याञ्चजलकुम्भांश्च प ञ्चवर्णवितानकम्। स्नात्वाधिवासनान्तेतु मन्त्रमेतमुदीरयेत् ११ नमोवःसर्वदेवानामा धारेभ्यश्चराचरे। महाभूताधिदेवेभ्यःशान्तिरस्तुशिवंमम १२ यस्मान्नकिञ्चिदप्यस्ति महाभूतैर्विनाकृतम्। ब्रह्माण्डेसर्वभूतेषु तस्माच्छ्रीरक्षयास्तुमे १३ इत्युच्चार्यमहाभूत घटंयोविनिवेदयेत्। सर्वपापविनिर्मुक्तः सयातिपरमाङ्गतिम् १४ विमानेनार्कवर्णेनपि तृबन्धुसमन्वितः। स्तूयमानोवरस्त्रीभिः पदमभ्येतिवैष्णवम् १५ षोडशैतानियःकुर्या त् महादानानिमानवः। नतस्यपुनरावृत्तिरिहलोकेऽभिजायते १६ इहपठंतियइत्थंवासु

के कलशको प्रादेशमात्र से लेकर सौअंगुल प्रमाणतकका शक्तिके अनुसार बनवावे और घृत दुग्धसे पूरितकर कल्पवृक्षसे संयुक्तकरे ३।४ यहां कमलासनके ऊपर ब्रह्मा विष्णु औरशिवजीको स्थितकरे और लोकपालोंको भी अपने २ आसनपर विराजमानकर वराहजीसेउद्धारकीहुई कमलसहितपृथ्वी कीमूर्त्तिबनावे और सुवर्णके वरुणको मछलीकी सवारीपर बैठाकर निकाले अग्निको मेढ़ेपर बैठा कर वायुको कालेमृगकी सवारीपर ५। ६ और गणेशजीको मूसेकीसवारी पर बैठाकर कोशाध्यक्ष बनावे इसप्रकार इनसब मूर्त्तियोंको वेदोंकी मूर्त्तियोंसे युक्तकरके उस कलशमें डालदेवे ऋग्वेदको अक्षमालासे और यजुर्वेदको कमलसे युक्तकर सामवेदके हाथमें बीणा और अथर्व वेदके हाथमें स्रुक्स्रुच और यज्ञपात्रोंको धारणकरे और अक्षमाला और कमंडलुसे युक्तहुए पुराणकोबनावे इन सबकोभी कलशमें स्थापितकरे ७। ९ इस कलशके चारोंओर सबधान्य, चँवर, आसन, दर्पण, पादुका, जूतीजोड़ा, दीवट, आभूषण, १० शय्या, जलकाकलश और पांच वर्णकी बन्दनवार, इनसब को स्थापितकर यजमान अधिवासके अन्तमें स्नानकरके इसमंत्रार्थका उच्चारणकरे ११ सब देवताओंके आधार स्वरूप महाभूतोंकेभी देवता आपके अर्थ नमस्कारहै आपमेरी शान्ति और कल्याणको करो १२ महाभूतोंके विना कोईभी दृश्यमान वस्तुनहीं है ब्रह्माण्डके सब भूतोंमें महाभूतहीहैं इस हेतुसे इस दानके फलकेद्वारा मुझको लक्ष्मीकी प्राप्तिहो १३ ऐसे उच्चारण करके जोकोई इसमहा भूतघटका दानकरताहै वहसब पापोंसे छुटकर परमगतिको प्राप्तहोजाताहै १४ अर्थात् सूर्य्यके समान कान्तिवाले विमानमें बैठकर अपने पितर और बन्धुगणों समेत अप्सराओंसे स्तूयमानहो विष्णु लोकमें प्राप्तहोताहै १५ जो पुरुष इन उक्तसोलह प्रकारके दानोंको करताहै वह फिर इस लो-

देवस्यपार्श्वे ससुतपितृकलत्रःसंशृणोतीहसम्यक्। मुररिपुभवनेवै मन्दिरेवार्कलक्ष्म्यां त्वमरपुरवधूभिर्मोदतेसोऽपिनित्यम् १७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणेऽष्टाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८८॥

(मनुरुवाच) कल्पमानंत्वयाप्रोक्तं मन्वन्तरयुगेषुच। इदानीकल्पनामानि समासात्कथयाच्युत! १ (मत्स्य उवाच) कल्पानांकीर्तनंवक्ष्ये महापातकनाशनम्। यस्यानुकीर्तनादेव वेदपुण्येनयुज्यते २ प्रथमंश्वेतकल्पस्तु द्वितीयोनीललोहितः। वामदेवस्तृतीयस्तु ततोराथन्तरोऽपरः ३ रौरवःपञ्चमःप्रोक्तः षष्ठोदेवइतिस्मृतः। सप्तमोऽथबृहत्कल्पः कन्दर्पोऽष्टमउच्यते ४ सद्योऽथनवमःप्रोक्त ईशानोदशमःस्मृतः। तमएकादशःप्रोक्तः तथासारस्वतःपरः ५ त्रयोदशउदानस्तु गारुडोऽथचतुर्दशः। कौर्मःपञ्चदशःप्रोक्तः पौर्णमास्यामजायत ६ षोडशोनारसिंहस्तु समानस्तुततोपरः। आग्नेयोऽष्टादशःप्रोक्तः सोमकल्पस्तथापरः ७ मानवोविंशतिःप्रोक्तस्तत्पुमानितिचापरः। वैकुण्ठश्चापरस्तद्वल्लक्ष्मीकल्पस्तथापरः ८ चतुर्विंशतिमःप्रोक्तः सावित्रीकल्पसंज्ञकः। पञ्चविंशस्ततोघोरो वाराहस्तुततोऽपरः ९ सप्तविंशोऽथवैराजो गौरिकल्पस्तथापरः। माहेश्वरस्तुसप्रोक्तस्त्रिपुरोयत्रघातितः १० पितृकल्पस्तथान्तेतु याकुहूर्ब्रह्मणःपरा। इत्येवंब्रह्मणोमासः सर्वपातकनाशनः ११ आदावेवहिमाहात्म्यं यस्मिन्यस्यविधीयते। तस्यकल्पस्यतन्नाम विहितंब्रह्मणापुरा १२ सङ्कीर्णास्तामसाश्चैव राजसाःसात्विकास्तथा। रजं

कर्मे जन्मनहींलेता १६ जो पुरुष अपनी स्त्री और पुत्र आदिकोंसे संयुक्त होकर इस कथाको विष्णुमन्दिरमें सुनताहै वहभी देवाङ्गनाओंसे युक्तहोकर विष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै १७॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामष्टाशीत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८८॥

मनुजीबोले हे मत्स्यजी आपने मन्वन्तरके युगोंमें जो कल्पोंका प्रमाण कहाहै अब कृपाकरके उन कल्पोंके नामोंकोभी सुनाइये १ मत्स्यजीबोले हे मनु अबमहापातकोंके नष्टकरनेवाले उन सब कल्पोंके नाम कहताहूं जिनके कि नाम कीर्त्तनसेही वेदके पाठका पुण्यहोताहै २ पहला श्वेत कल्पहै, दूसरा नीललोहित कल्पहै, तीसरा वामदेव कल्प, चौथा रथन्तरकल्प, पांचवां रौरवकल्प, छठादेवकल्प, सातवाँबृहत्कल्प, आठवाँ कन्दर्पकल्प, ३।४ नववाँ सद्यकल्प, दशवाँईशानकल्प, ग्यारहवाँ तमकल्प, बारहवाँ सारस्वतकल्प ५ तेरहवाँ उदानकल्प, चौदहवाँ गारुड़कल्प, पन्द्रहवाँ कौर्मकल्प, यह पौर्णमासीमें उत्पन्नहुआहै ६ सोलहवाँ नारसिंह, सत्तरहवाँ समान, अठारहवाँ आग्नेय उन्नीसवाँ सोमकल्प, बीसवाँ मानवकल्प, इक्कीसवाँ तत्पुमानकल्प, बाईसवाँ वैकुण्ठकल्प, तेईसवाँलक्ष्मीकल्प ७।८ चौबीसवाँ सावित्रीकल्प, पच्चीसवाँ घोरकल्प, छब्बीसवाँ वराह कल्प, सत्ताईसवाँ वैराजकल्प, अट्ठाईसवाँ गौरीकल्प, उन्तीसवाँ माहेश्वरकल्प है जिसमें कि त्रिपुरासुर मारागया है ९।१० तीसवाँ पितृकल्प है जिसमें कि ब्रह्माजी की परा कुहू अमावास्या होती है ऐसे इनकल्पों का ब्रह्माजी का एक महीना होताहै इसके सुनने से सब पाप नष्टहोजाते हैं

स्तमोमयास्तद्वदेतेत्रिंशदुदाहृताः १३ सङ्कीर्णेषुसरस्वत्याः पितृणांव्युष्टिरुच्यते। अग्नेःशिवस्यमाहात्म्यं तामसेषुदिवाकरे १४ राजसेषुचमाहात्म्यमधिकंब्रह्मणःस्मृतम्। यस्मिन्कल्पेतुयत्प्रोक्तं पुराणंब्रह्मणापुरा १५ तस्यतस्यतुमाहात्म्यं तत्स्वरूपेणवर्ण्यते। सात्त्विकेष्वधिकंतद्वद्विष्णोर्माहात्म्यमुत्तमम् १६ तथैवयोगसंसिद्धा गमिष्यन्तिपरां गतिम्। ब्राह्मंपाद्ममिमंयस्तु पठेत्पर्वणिपर्वणि १७ तस्यधर्मेमतिंब्रह्मा करोतिविपुलां श्रियम्। यस्तुदद्यादिमान्कृत्वा हैमान्पर्वणिपर्वणि १८ ब्रह्मविष्णुपुरेवासं मुनिभिःपूज्यतेदिवि। सर्वपापक्षयकरं कल्पदानंयतोभवेत् १९ मुनिरूपांस्ततःकृत्वा दद्यात्कल्पान्विचक्षणः। पुराणसंहिताचेयं तवभूप! मयोदिता २० सर्वपापहरानित्यमारोग्यश्रीफलप्रदा। ब्रह्मसंवत्सरशतादेकाहंशैवमुच्यते २१ शिववर्षशतादेकं निमेषंवैष्णवंविदुः। यदासौविष्णुर्जागर्ति तदेदंचेष्टतेजगत् २२ यदास्वपितिशान्तात्मातदासर्वंनिमीलति। इत्युक्त्वादेवदेवेशो मत्स्यरूपीजनार्दनः २३ पश्यतांसर्वभूतानां तत्रैवान्तरधीयत। वैवस्वतोहिभगवान् विसृज्यविविधाःप्रजाः २४ स्वान्तरंपालयामास मार्तण्डकुलवर्द्धनः। यस्यमन्वन्तरञ्चैतदधुनाचानुवर्तते २५ पुण्यंपवित्रमेतद्वः कथितंमतस्यभाषितम्। पुराणंसर्वशास्त्राणां यदेतन्मूर्ध्निसंस्थितम् २६ ॥

इति श्रीमत्स्यपुराणेएकोननवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८९ ॥

जिस २ कल्पकी आदिमें जो २ लीला और माहात्म्य होतेहैं उस कल्पका वहीनाम ब्रह्माजीने रख दियाहै ११।१२ यह सबसंकीर्ण अर्थात् मिलेहुए गुणोंवाले तीस ३० कल्प, तामस, राजस, सात्त्विक, रजोगुण और तमोगुण मिलेहुए पांच प्रकारके भेद वाले हैं १३ संकीर्ण संज्ञक कल्पों में सरस्वतीसे पितरोंकी उत्पत्ति होतीहै और तामस कल्पों में अग्निका और शिवजी का विशेष माहात्म्य होता है- राजस कल्पों में ब्रह्माजीका अधिक माहात्म्य होताहै- जिस कल्प में पहले ब्रह्माजी ने जो पुराण कहा है उसी २ का माहात्म्य उसही स्वरूपसे वर्णन किया है- सात्त्विककल्पों में विष्णुका अधिक माहात्म्य कहा है १४।१६ और सात्त्विकही कल्पों में योगसे सिद्धहुए जन परमगतिको प्राप्त होतेहैं इसब्राह्मपद्मको जोपुरुष पर्व २ में सुनेगा उसकी बुद्धिको ब्रह्माजी धर्म में स्थापित करेंगे- जो पुरुष पर्व २ में इनकल्पों को सुवर्ण के बनाकर दान करता है वह ब्रह्मा विष्णुके लोक में प्राप्त होकर मुनिजनों से पूजित होताहै--यहकल्पोंका दान सब पापों का नाशकरने वाला है १७। १९ इन कल्पोंके मुनियोंकी मूर्ति बनाकर दानदेना योग्यहै मत्स्यजीने कहा हेराजा यह संपूर्ण पुराण संहिता तेरे आगे मैंने कहदीहै २० यह सब पापोंकी हरने वाली और नित्य आरोग्यपूर्वक लक्ष्मी केफलकी देने वालीहै और ब्रह्माजीके सौ १०० वर्षका विष्णुका निमेष अर्थात् पलकका खोलना और मूंदना होताहै- जब वह विष्णु भगवान् जगताहै तब यह संपूर्ण विश्व चेष्टा करताहै और जब वह शान्तात्मा विष्णु सोवताहै तब सब जगत् प्रलय होजाताहै मत्स्यरूपी भगवान् ऐसा कहकर सब भूतोंके देखतेहीहुए वहाँही अन्तर्द्धान होजातेभये तब विवस्वान् सूर्य्यके वंशमें होने वाला वह

(सूतउवाच) एतद्वःकथितंसर्वं यदुक्तंविश्वरूपिणा। मात्स्यंपुराणमखिलं धर्मकामार्थसाधनम् १ यत्रादौमनुसंवादो ब्रह्माण्डकथनन्तथा। सांख्यंशारीरकंप्रोक्तं चतुर्मुखमुखोद्भवम् २ देवासुराणामुत्पत्तिर्मारुतोत्पत्तिरेवच। मदनद्वादशीतद्वल्लोकपालाभिपूजनम् ३ मन्वन्तराणामुद्देशो वैन्यराजाभिवर्णनम्। सूर्यवैवस्वतोत्पत्तिर्बुधस्यागमनंतथा ४ पितृवंशानुकथनं श्राद्धकालस्तथैवच। पितृतीर्थप्रवासश्च सोमोत्पत्तिस्तथैवच ५ कीर्तनंसोमवंशस्य ययातिचरितंतथा। कार्तवीर्यस्यमाहात्म्यं वृष्णिवंशानुकीर्तनम् ६ भृगुशापस्तथाविष्णोर्दैत्यशापस्तथैवच। कीर्तनंपुरुषेशस्य वंशोहौताशनस्तथा ७ पुराणकीर्तनंतद्वत्क्रियायोगस्तथैवच। व्रतंनक्षत्रसंख्याकं मार्तण्डशयनंतथा ८ कृष्णाष्टमीव्रतंतद्वद्रोहिणीचन्द्रसंज्ञितम्। तडागविधिमाहात्म्यं पादपोत्सर्वएवच ९ सौभाग्यशयनंतद्वदगस्त्यव्रतमेवच। तथानन्ततृतीयातु रसकल्याणिनीतथा १० आर्द्रानन्दकरीतद्वद्व्रतंसारस्वतंपुनः। उपरागाभिषेकश्च सप्तमीस्नपनंपुनः ११ भीमाख्याद्वादशीतद्वदनङ्गशयनंतथा। अशून्यशयनंतद्वत्तथैवाङ्गारकव्रतम् १२ सप्तमीसप्तकंतद्वद्विशोकद्वादशीतथा। मेरुप्रदानंदशधा ग्रहशान्तिस्तथैवच १३ ग्रहस्वरूपक॰

राजाभी वैवस्वत मनुहोके अपने अन्तरमें सब प्रजाकी पालना करताभया और अभी तक वही वैवस्वत मनु वर्त्तरहाहै २१।२५ सूतजी कहतेहैं हे ऋषिलोगो यह धर्म अर्थ और कामका सिद्ध करने वाला महापुण्य पवित्र मत्स्यपुराण मैंने तुम्हारे आगे कह दिया है यह पुराण सब शास्त्रों का मुकुट रूपहै २६॥ इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायामेकोननवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २८९॥

सूतजी बोले कि यह त्रिवर्गका देने वाला संपूर्ण मत्स्यपुराण जो विश्वरूपी भगवान्ने मनुके आगे वर्णन कियाहै वह अपनी बुद्धिके अनुसार मैंने तुमसे कह दियाहै १ इसके आदिमें मनुका संवादहै फिर ब्रह्माण्डका कथनहै- फिर ब्रह्माजीके मुखसे कहा शारीरक सांख्यहै २ फिर देवता दैत्यों समेत मरुद्गणों की उत्पत्ति, मदनद्वादशी व्रत, लोकपालों का पूजन, मन्वन्तरोंका वर्णन, वैन राजाकी कथा, वैवस्वत सूर्यकी उत्पत्ति और बुधका आगमन यह सब कथाहै ३।४ फिर पितरों का वंश, श्राद्धका समय, पितृ तीर्थका वास, चन्द्रमाकी उत्पत्ति, राजा ययातिका चरित्र, स्वामि-कार्त्तिक की कथा और वृष्णि यादव वंशका कथन यह सब कथा हैं ५।६ फिर भृगुजीका शाप, विष्णु और दैत्योंकाशाप, पुरुषेश भगवानका कीर्त्तन, अग्निका वंश, पुराणोंके नाम औरसंख्या, क्रिया योग, नक्षत्रोंकाशयन, मार्त्तण्ड शयन, कृष्णाष्टमीका व्रत, रोहिणी चन्द्रसंज्ञक व्रत, तड़ागकी विधि और माहात्म्य और वृक्ष लगानेका माहात्म्य यह सब कथा क्रमसे वर्णन की हैं ७।९ इसके पीछे सौभाग्यशयन व्रत, अगस्त्यव्रत, अनन्त तृतीयाकाव्रत, रस कल्याणिनी तृतीया का व्रत, आर्द्रानन्दकरी नाम तिथिका व्रत, सारस्वत व्रत, अर्थात् सरस्वतीका व्रत, उपरागो का अभिषेक और सप्तमी स्नपन यह सब कहे हैं १०।११ फिर भीमद्वादशी का व्रत और अनंग शयन व्रत, अशून्य शयन व्रत और अंगारक व्रत यह सब हैं १२ फिर सातप्रकारकी सप्तमी, विशोक द्वादशी, सुमेरु पर्व्वतका दान

थनं तथाशिवचतुर्दशी । तथासर्वफलत्यागः सूर्यवारव्रतंतथा १४ संक्रान्तिस्नपनंतद्व
द्विभूतिद्वादशीव्रतम्। षष्टिव्रतानांमाहात्म्यं तथास्नानविधिक्रमः १५ प्रयागस्यतुमाहा
त्म्यं सर्वतीर्थानुकीर्तनम् । पैलाश्रमफलंतद्वद्द्वीपलोकानुकीर्तनम् १६ तथान्तरिक्षचार
श्च ध्रुवमाहात्म्यमेवच। भुवनानिसुरेन्द्राणां त्रिपुराघोषणंतथा १७ पितृपिण्डदमाहा
त्म्यं मन्वन्तरविनिर्णयम्। वज्राङ्गस्यतुसंभूतिः तारकोत्पत्तिरेवच १८ तारकासुरमाहा
त्म्यं ब्रह्मदेवानुकीर्तनम्। पार्वतीसम्भवस्तद्वत् तथाशिवतपोवनम् १९ अनङ्गदेहदाह
स्तु रतिशोकस्तथैवच । गौरीतपोवनंतद्वद्विश्वनाथप्रसादनम् २० पार्वतीऋषिसंवा
दस्तथैवोद्वाहमङ्गलम्। कुमारसम्भवस्तद्वत् कुमारविजयस्तथा २१ तारकस्यवधोघो
रो नरसिंहोपवर्णनम् । पद्मोद्भवविसर्गस्तु तथैवान्धकघातनम् २२ वाराणस्यास्तुमा
हात्म्यं नर्मदायास्तथैवच। प्रवरानुक्रमस्तद्वत् पितृगाथानुकीर्तनम् २३ ततोभयमुखी
दानं दानंकृष्णाजिनस्यच। तथासावित्र्युपाख्यानं राजधर्मास्तथैवच २४ यात्रानिमित्त
कथनं स्वप्नमङ्गल्यकीर्तनम् । वामनस्यतुमाहात्म्यं तथैवाथवराहजम् २५ क्षीरोदमथ
नंतद्वत् कालकूटाभिशासनम् २६ प्रासादलक्षणंतद्वन्मण्डपानान्तुलक्षणम् । पुरु
वंशेतुसंप्रोक्तं भविष्यद्राजवर्णनम् २७ तुलादानादिबहुशो महादानानुकीर्तनम्। क

और दशप्रकार की ग्रह शान्ति यह सब कथा कही हैं १३ फिर ग्रहोंका स्वरूप कहा है और शिव च-तुर्दशी सब फलोंका त्याग और सूर्य्यवार का व्रत यह कहे हैं १४ फिर संक्रान्ति स्नपन, विभूति द्वादशी कावत. षष्टिव्रत अर्थात् साठव्रतोंका माहात्म्य, और स्नान विधिक्रम यह सब कहेहैं १५ फिर प्रयाग जीका माहात्म्य कहाहै फिर सब तीर्थोंके नाम गिनाये हैं पैलाश्रमका फल कहा है फिर सब द्वीप और लोक कहे हैं १६ फिर आकाशमें विचरने वालोंका वर्णन ध्रुव माहात्म्य, देवताओं के भुवन- और त्रिपुरासुरका घोष यह सब कहे हैं १७ फिर पितरोंके पिंडदेने वालेका माहात्म्य, मन्वन्तरों का निर्णय, वज्रांग दैत्यकी विभूति और तारकासुरकी उत्पत्ति यह सबकथा कही हैं, इसके पीछे ता-रकासुरका माहात्म्य, ब्रह्मदेवका अनुकीर्त्तन, पार्वतीजी की उत्पत्ति, शिवजी की तपस्या, कामदेव के शरीरका दग्धहोना, कामकी स्त्री रतिको शोकहोना, पार्वती का तपोवन में जाना और शिवजी का प्रसन्न होना यहसबकथा कहीहैं १८।२० इसके पीछे पार्वती और ऋषिका संवाद, पार्वतीजी के विवाहका मंगल, स्वामिकार्तिक का जन्म और तारकासुर का विजय होकर घोर वधहोना, नृसिंह जी का प्रकटहोना, कमलसे ब्रह्माण्डहोना और नाशहोना और अन्धक दैत्यका मारना यह सबकथा कही हैं २१।२२ फिर काशीपुरीका माहात्म्य, नर्मदानदीका माहात्म्य, गोत्र प्रवरोंका वर्णन, पितरों की कथा, उभयमुखी गौ का दान, कृष्णाजिनदान, सावित्रीकी कथा और राजाओं के धर्म यहसब कहे हैं २३।२४ फिर यात्राके निमित्तों का वर्णन, स्वप्नोंके शुभाशुभफल, वामनजी का माहात्म्य, वराहअवतार का वर्णन, क्षीरसागरका मथना और कालकूट विषको शान्त करदेना यहसबकथाकही है २५।२६ पीछे प्रासाद अर्थात् देवमंदिरों के लक्षण, मंडपों के लक्षण, पुरुवंशका वर्णन, भविष्य

ल्पानुकीर्तनंतद्वद् ग्रन्थानुक्रमणीतथा २८ एतत्पवित्रमायुष्यमेतत्कीर्तिविवर्धनम्।
एतत्पवित्रंकल्याणं महापापहरंशुभम् २९ अस्मात्पुराणादपिपादमेकं पठेत्तुयःसोऽपिवि
मुक्तपापः।नारायणाख्यंपदमेतिनूनमनङ्गवद्दिव्यसुखानिभुंक्ते ३० ॥
इति श्रीमत्स्यपुराणेनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २९० ॥
समाप्तंमत्स्यपुराणम्॥

अर्थात् आगे होनेवाले राजाओंका वर्णन, तुलादानादि सोलह दानोंकावर्णन कल्पों के नाम यहसब इस ग्रंथ की अनुक्रमणिका अर्थात् सूचीपत्र में कथा कही हैं २७। २८ यह मत्स्यपुराण महापवित्र आयु, कीर्ति और कल्याणोंका बढ़ानेवाला महापातकोंका हर्त्ता होकर महाशुभ है २९ इस पुराण मेंसे जोएक पदकाभी पाठ करताहै वह भी सब पापों से छुटकर विष्णुलोक में प्राप्तहो कामदेव के समान दिव्य शरीर वालाहोके अनेक सुखोंको भोगताहै ३० ॥

इतिश्रीमत्स्यपुराणभाषाटीकायांनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २९० ॥

समाप्तम्मत्स्यपुराणम्॥

वस्वब्ध्यङ्कमहीमितेशरदिवैशाखस्यकृष्णेकुहौ विद्वद्ब्रह्मकुलोद्भवावसतिरामाख्येनटीकाकृता।
मात्स्यस्यास्यनृभाषयाल्पसुधियांसाक्षान्मनोरञ्जिनीविद्वद्भूसुरवर्य्यकालिचरणाख्येनापिसंशोधिता १

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने लखनऊ में छपा॥

जौलाई सन् १८९२ ईसवी॥

विदितहो कि इस पुस्तकका तिलक इस मतबेने अपने व्ययसे करायाहै इसलिये इस मतबेकी आज्ञाविना कोई छापने का अधिकारी नहीं है